

Urdu Devanagari Script: Unlocked Literal Bible for 1 Chronicles, 1 Corinthians, 1 John, 1 Kings, 1 Peter, 1 Samuel, 1 Thessalonians, 1 Timothy, 2 Chronicles, 2 Corinthians, 2 John, 2 Kings, 2 Peter, 2 Samuel, 2 Thessalonians, 2 Timothy, 3 John, Acts, Amos, Colossians, Daniel, Deuteronomy, Ecclesiastes, Ephesians, Esther, Exodus, Ezekiel, Ezra, Galatians, Genesis, Habakkuk, Haggai, Hebrews, Hosea, Isaiah, James, Jeremiah, Job, Joel, John, Jonah, Joshua, Jude, Judges, Lamentations, Leviticus, Luke, Malachi, Mark, Matthew, Micah, Nahum, Nehemiah, Numbers, Obadiah, Philemon, Philippians, Proverbs, Psalms, Revelation, Romans, Ruth, Song of Solomon, Titus, Zechariah, Zephaniah

Formatted for Translators

©2022 Wycliffe Associates

Released under a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Bible Text: The English Unlocked Literal Bible (ULB)

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English Unlocked Literal Bible is based on the unfoldingWord® Literal Text, CC BY-SA 4.0. The original work of the unfoldingWord® Literal Text is available at <https://unfoldingword.bible/ult/>.

The ULB is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Notes: English ULB Translation Notes

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English ULB Translation Notes is based on the unfoldingWord translationNotes, under CC BY-SA 4.0. The original unfoldingWord work is available at <https://unfoldingword.bible/utn>.

The ULB Notes is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

To view a copy of the CC BY-SA 4.0 license visit <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/>

Below is a human-readable summary of (and not a substitute for) the license.

You are free to:

- Share — copy and redistribute the material in any medium or format.
- Adapt — remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

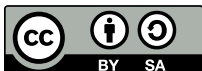
Under the following conditions:

- Attribution — You must attribute the work as follows: "Original work available at <https://BibleInEveryLanguage.org>." Attribution statements in derivative works should not in any way suggest that we endorse you or your use of this work.
- ShareAlike — If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.
- No additional restrictions — You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

Notices:

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.



पैदाइश

Chapter 1

¹खुदा ने सबसे पहले ज़मीन-ओ-आसमान को पैदा किया।²और ज़मीन वीरान और सुनसान थी और गहराओ के ऊपर अँधेरा था: और खुदा की रूह पानी की सतह पर जुम्बिश करती थी।

³और खुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई।⁴और खुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और खुदा ने रोशनी को अँधेरे से जुदा किया।⁵और खुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को रात। और शाम हुई और सुबह हुई- तब पहला दिन हुआ।

⁶और खुदा ने कहा कि पानियों के बीच फ़ज़ा हो ताकि पानी, पानी से जुदा हो जाए।⁷फिर खुदा ने फ़ज़ा को बनाया और फ़ज़ा के नीचे के पानी को फ़ज़ा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ।⁸और खुदा ने फ़ज़ा को आसमान कहा। और शाम हुई और सुबह हुई - तब दूसरा दिन हुआ।

⁹और खुदा ने कहा कि आसमान के नीचे का पानी एक जगह जमा' हो कि खुशकी नज़र आए, और ऐसा ही हुआ।¹⁰और खुदा ने खुशकी को ज़मीन कहा और जो पानी जमा' हो गया था उसको समुन्दर; और खुदा ने देखा कि अच्छा है।

¹¹और खुदा ने कहा कि ज़मीन घास और बीजदार बूटियों को, और फलदार दरख्तों को जो अपनी-अपनी क्रिस्म के मुताबिक़ फलें और जो ज़मीन पर अपने आप ही में बीज रखें उगाए और ऐसा ही हुआ।¹²तब ज़मीन ने घास, और बूटियों को, जो अपनी-अपनी क्रिस्म के मुताबिक़ बीज रखें और फलदार दरख्तों को जिनके बीज उन की क्रिस्म के मुताबिक़ उनमें हैं उगाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है।¹³और शाम हुई और सुबह हुई-तब तीसरा दिन हुआ।

¹⁴और खुदा ने कहा कि फ़लक पर सितारे हों कि दिन को रात से अलग करें; और वह निशानों और ज़मानों और दिनों और बरसों के फ़र्क़ के लिए हों | ¹⁵और वह फ़लक पर रोशनी के लिए हों कि ज़मीन पर रोशनी डालें, और ऐसा ही हुआ।

¹⁶फिर खुदा ने दो बड़े चमकदार सितारे बनाए ; एक बड़ा चमकदार सितारा, कि दिन पर हुक्म करे और एक छोटा चमकदार सितारा कि रात पर हुक्म करे और उसने सितारों को भी बनाया।¹⁷और खुदा ने उनको फ़लक पर रखवा कि ज़मीन पर रोशनी डालें,¹⁸और दिन पर और रात पर हुक्म करें, और उजाले को अन्धेरे से जुदा करें ; और खुदा ने देखा कि अच्छा है।¹⁹और शाम हुई और सुबह हुई - तब चौथा दिन हुआ।

²⁰और खुदा ने कहा कि पानी जानदारों को कसरत से पैदा करे, और परिन्दे ज़मीन के ऊपर फ़ज़ा में उड़ें।²¹और खुदा ने बड़े बड़े दरियाई जानवरों को, और हर क्रिस्म के जानदार को जो पानी से बकसरत पैदा हुए थे, उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ और हर क्रिस्म के परिन्दों को उनकी क्रिस्म के मुताबिक़, पैदा किया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है।

²²और खुदा ने उनको यह~कह कर बरकत दी कि फलो और बढ़ो और इन समुन्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे ज़मीन पर बहुत बढ़ जाएँ।²³और शाम हुई और सुबह हुई - तब पाँचवाँ दिन हुआ।

²⁴और खुदा ने कहा कि ज़मीन जानदारों ~को, उनकी क्रिस्म ~के मुताबिक़, चौपाये और रेंगनेवाले जानदार और जंगली जानवर उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ पैदा करे, और ऐसा ही हुआ।²⁵और खुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी क्रिस्म ~के मुताबिक़ और ज़मीन के रेंगने वाले जानदारों को उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ बनाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है।

²⁶फिर खुदा ने कहा कि हम इन्सान को अपनी सूरत पर अपनी शबीह की तरह बनाएँ और वह समुन्दर की मछलियों और आसमान के परिन्दों और चौपायों, और तमाम ज़मीन और सब जानदारों पर जो ज़मीन पर रेंगते हैं इख़्तियार रखें।²⁷और खुदा ने इन्सान को अपनी सूरत पर पैदा किया खुदा की सूरत पर उसको पैदा किया - नर-ओ-नारी उनको पैदा किया।

²⁸और खुदा ने उनको बरकत दी और कहा कि फलो और बढ़ो और ज़मीन को भर दो और हुक्मत करो और समुन्दर की मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो ज़मीन पर चलते हैं इख़्तियार रखें।²⁹और खुदा ने कहा कि देखो, मैं तमाम रू-ए-ज़मीन की कुल बीजदार सब्ज़ी और हर दरख़्त जिसमें उसका बीजदार फल हो, तुम को देता हूँ; यह तुम्हारे खाने को हों।

³⁰और ज़मीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो ज़मीन पर रेंगने वाले हैं जिनमें ज़िन्दगी का दम है, कुल हरी बूटियाँ खाने को देता हूँ, और ऐसा ही हुआ।³¹और खुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नज़र की, और देखा कि बहुत अच्छा है। और शाम हुई और सुबह हुई - तब छठा दिन हुआ।

Chapter 2

¹तब आसमान और ज़मीन और उनके कुल लश्कर का बनाना खत्म हुआ।²और खुदा ने अपने काम को, जिसे वह करता था सातवें दिन खत्म किया, और अपने सारे काम से जिसे वह कर रहा था, सातवें दिन फ़ारिग हुआ।³और खुदा ने सातवें दिन को बरकत दी, और उसे मुक़द्दस ठहराया; क्योंकि उसमें खुदा सारी कायनात से जिसे उसने पैदा किया और बनाया फ़ारिग हुआ।

⁴यह है आसमान और ज़मीन की पैदाइश, जब वह पैदा हुए जिस दिन खुदावन्द खुदा ने ज़मीन और आसमान को बनाया;⁵और ज़मीन पर अब तक खेत का कोई पौधा न था और न मैदान की कोई सब्ज़ी अब तक उगी थी, क्योंकि खुदावन्द खुदा ने ज़मीन पर पानी नहीं बरसाया था, और न ज़मीन जोतने को कोई इन्सान था।⁶बल्कि ज़मीन से कुहर उठती थी, और तमाम रू-ए-ज़मीन को सेराब करती थी।

⁷और खुदावन्द खुदा ने ज़मीन की मिट्टी से इन्सान को बनाया और उसके नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका इन्सान जीती जान हुआ।⁸और खुदावन्द खुदा ने मशरिक़ की तरफ़ 'अदन में एक बाग़ लगाया और इन्सान को जिसे उसने बनाया था वहाँ रखवा।

⁹और खुदावन्द खुदा ने हर दरख़्त को जो देखने में खुशनुमा और खाने के लिए अच्छा था ज़मीन से उगाया और बाग़ के बीच में ज़िन्दगी का दरख़्त और भले और बुरे की पहचान का दरख़्त भी लगाया।¹⁰और 'अदन से एक दरिया बाग़ के सेराब करने को निकला और वहाँ से चार नदियों में तक्रसीम हुआ।

¹¹पहली का नाम फ़ैसून है जो हवीला की सारी ज़मीन को जहाँ सोना होता है घेरे हुए है।¹²और इस ज़मीन का सोना चोखा है। और वहाँ मोती और संग-ए-सुलेमानी भी हैं।

¹³और दूसरी नदी का नाम जैहून है, जो कूश की सारी ज़मीन को घेरे हुए है।¹⁴और तीसरी नदी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती है। और चौथी नदी का नाम फ़ुरात है।

¹⁵और खुदावन्द खुदा ने 'आदम को लेकर बाग़-ए-'अदन में रखवा के उसकी बाग़वानी और निगहबानी करे।¹⁶और खुदावन्द खुदा ने आदम को हुक्म दिया और कहा कि तू बाग़ के हर दरख़्त का फल बे रोक टोक खा सकता है।¹⁷लेकिन भले और बुरे की पहचान के दरख़्त का कभी न खाना क्योंकि जिस रोज़ तूने उसमें से खायेगा तू मर जायेगा।

¹⁸और खुदावन्द खुदा ने कहा कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उसके लिए एक मददगार उसकी तरह बनाऊँगा।¹⁹और खुदावन्द खुदा ने सब जंगली जानवर और हवा के सब परिन्दे मिट्टी से बनाए और उनको आदम के पास लाया कि देखे कि वह उनके क्या नाम रखता है और आदम ने जिस जानवर को जो कहा वही उसका नाम ठहरा।²⁰और आदम ने सब चौपायों और हवा के परिन्दों और सब जंगली जानवरों के नाम रखे लेकिन आदम के लिए कोई मददगार उसकी तरह न मिला।

²¹और खुदावन्द खुदा ने आदम पर गहरी नींद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी पसलियों में से एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोशत भर दिया।

²²और खुदावन्द खुदा उस पसली से जो उसने आदम में से निकाली थी एक 'औरत बना कर उसे आदम के पास लाया।²³और आदम ने कहा कि यह तो अब मेरी हड्डियों में से हड्डी, और मेरे गोशत में से गोशत है; इसलिए वह 'औरत कहलाएगी क्योंकि वह मर्द से निकाली गई |

²⁴इसलिए आदमी अपने माँ बाप को छोड़ेगा और अपनी बीवी से मिला रहेगा और वह एक तन होंगे।²⁵और आदम और उसकी बीवी दोनों नंगे थे और शरमाते न थे।

Chapter 3

¹और साँप सब जंगली जानवरों से, जिनको खुदावन्द खुदा ने बनाया था चालाक था, और उसने 'औरत से कहा क्या वाक़ाई खुदा ने कहा है, कि बाग़ के किसी दरख़्त का फल तुम न खाना?'²'औरत ने साँप से कहा कि बाग़ के दरख़्तों का फल तो हम खाते हैं।³लेकिन जो दरख़्त बाग़ के बीच में है उसके फल के बारे में ~खुदा ने कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना वरना मर जाओगे।

⁴तब साँप ने 'औरत से कहा कि तुम हरगिज़ न मरोगे!⁵बल्कि खुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम खुदा की तरह भले और बुरे के जानने वाले बन जाओगे।'⁶'औरत ने जो देखा कि वह दरख़्त खाने के लिए अच्छा और आँखों को खुशनुमा मा'लूम होता है और अक्ल बख़्शने के लिए ख़ूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने खाया।

⁷तब दोनों की आँखें खुल गई और उनको मा'लूम हुआ कि वह नंगे हैं और उन्होंने अन्जीर के पत्तों को सी कर अपने लिए लूंगियाँ बनाई।⁸और उन्होंने खुदावन्द खुदा की आवाज़ जो ठंडे वक्रत बाग़ में फिरता था सुनी और आदम और उसकी बीवी ने अपने आप को खुदावन्द खुदा के सामने से बाग़ के दरख़्तों में छिपाया।

⁹तब खुदावन्द खुदा ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि तू कहाँ है? ¹⁰उसने कहा, "मैंने बाग़ में तेरी आवाज़ सुनी और मैं डरा क्योंकि मैं नंगा था और मैंने अपने आप को छिपाया।"¹¹उसने कहा, "तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझ को हुक्म दिया था कि उसे न खाना?"

¹²आदम ने कहा कि जिस 'औरत को तूने मेरे साथ किया है उसने मुझे उस दरख़्त का फल दिया और मैंने खाया।¹³तब खुदावन्द खुदा ने, 'औरत से कहा कि तूने यह क्या किया? 'औरत ने कहा कि साँप ने मुझ को बहकाया तो मैंने खाया।

¹⁴और खुदावन्द खुदा ने साँप से कहा, इसलिए कि तूने यह किया तू सब चौपायों और जंगली जानवरों में ला'नती ठहरा; तू अपने पेट के बल चलेगा, और अपनी 'उम्र भर खाक चाटेगा।¹⁵और मैं तेरे और 'औरत के बीच और तेरी नसल और औरत की नसल के बीच 'अदावत डालूँगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर काटेगा।

¹⁶फिर उसने 'औरत से कहा कि मैं तेरे दर्द-ए-हम्ल को बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रगबत अपने शौहर की तरफ़ होगी और वह तुझ पर हुक्मत करेगा।"

¹⁷और आदम से उसने कहा चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिस के बारे में मैंने तुझे हुक्म दिया था कि उसे न खाना इसलिए ज़मीन तेरी वजह से ला'नती हुई। मशक्क़त के साथ तू अपनी 'उम्र भर उसकी पैदावार खाएगा¹⁸और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी और तू खेत की सबज़ी खाएगा।¹⁹तू अपने मुँह के पसीने की रोटी खाएगा जब तक कि ज़मीन में तू फिर लौट न जाए इसलिए कि तू उससे निकाला गया है क्योंकि तू खाक है और खाक में फिर लौट जाएगा।

²⁰और आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा रखखा, इसलिए कि वह सब ज़िन्दों की माँ है।²¹और खुदावन्द खुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए चमड़े के कुर्ते बना कर उनको पहनाए।

²²और खुदावन्द खुदा ने कहा, "देखो इंसान भले और बुरे की पहचान में हम में से एक की तरह हो गया: अब कहीं ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाए और ज़िन्दगी के दरख़्त से भी कुछ लेकर खाए और हमेशा ज़िन्दा रहे।"²³इसलिए खुदावन्द खुदा ने उसको बाग़-ए-'अदन से बाहर कर दिया, ताकि वह उस ज़मीन की जिसमें से वह लिया गया था, खेती करे।²⁴चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग़-ए-'अदन के मशरिफ़ की तरफ़ करूबियों को और चारों तरफ़ घूमने वाली शो'लाज़न तलवार को रखखा, कि वह ज़िन्दगी के दरख़्त की राह की हिफ़ाज़त करें।

Chapter 4

¹और आदम अपनी बीवी हव्वा के पास गया, और वह हामिला हुई और उसके क्राइन पैदा हुआ। तब उसने कहा, "मुझे खुदावन्द से एक फ़र्ज़न्द मिला।"²फिर क्राइन का भाई हाबिल पैदा हुआ; और हाबिल भेड़ बकरियों का चरवाहा और क्राइन किसान था।

³कुछ दिन -के बा'द ऐसा हुआ कि क्राइन अपने खेत के फल का हदिया खुदावन्द के लिए लाया।⁴और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कुछ पहलौठे बच्चों का और कुछ उनकी चर्बी का हदिया लाया। और खुदावन्द ने हाबिल को और उसके हदिये को कुबूल किया,⁵लेकिन क्राइन को और उसके हदिये को कुबूल न किया। इसलिए क्राइन बहुत गुस्सा हुआ और उसका मुँह बिगड़ा।

⁶और खुदावन्द ने क्राइन से कहा, "तू क्यूँ गुस्सा हुआ? और तेरा मुँह क्यूँ बिगड़ा हुआ है?"⁷अगर तू भला करे तो क्या तू मक्बूल न होगा? और अगर तू भला न करे तो गुनाह दरवाज़े पर दुबका बैठा है और तेरा मुश्ताक़ है, लेकिन तू उस पर गालिब आ।"

⁸और क्राइन ने अपने भाई हाबिल को कुछ कहा और जब वह दोनों खेत में थे तो ऐसा हुआ कि क्राइन ने अपने भाई हाबिल पर हमला किया और उसे क्रल कर डाला।⁹तब खुदावन्द ने क्राइन से कहा कि तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" उसने कहा, "मुझे मा'लूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का मुहाफ़िज़ हूँ?"

¹⁰फिर उसने कहा कि तूने यह क्या किया? तेरे भाई का खून ज़मीन से मुझ को पुकारता है।¹¹और अब तू ज़मीन की तरफ़ से ला'नती हुआ, जिसने अपना मुँह पसारा कि तेरे हाथ से तेरे भाई का खून ले।¹²जब तू ज़मीन को जोतेगा, तो वह अब तुझे अपनी पैदावार न देगी और ज़मीन पर तू खानाखराब और आवारा होगा।

¹³तब क्राइन ने खुदावन्द से कहा कि मेरी सज़ा बर्दाश्त से बाहर है।¹⁴देख, आज तूने मुझे रू-ए-ज़मीन से निकाल दिया है, और मैं तेरे सामने से गायब हो जाऊँगा; और ज़मीन पर खानाखराब और आवारा रहूँगा, और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पाएगा क्रल कर डालेगा।¹⁵तब खुदावन्द ने उसे कहा, "नहीं, बल्कि जो क्राइन को क्रल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा।" और खुदावन्द ने क्राइन के लिए एक निशान ठहराया कि कोई उसे पा कर मार न डाले।

¹⁶इसलिए, क्राइन खुदावन्द के सामने से निकल गया और 'अदन के मशरिक की तरफ़ नूद के इलाक़े में जा बसा।¹⁷और क्राइन अपनी बीवी के पास गया और वह हामिला हुई और उसके हनूक पैदा हुआ; और उसने एक शहर बसाया और उसका नाम अपने बेटे के नाम पर हनूक रखवा।

¹⁸और हनूक से 'ईराद पैदा हुआ, और 'ईराद से महुयाएल पैदा हुआ, और महुयाएल से मतूसाएल पैदा हुआ, और मतूसाएल से लमक पैदा हुआ।¹⁹और लमक दो 'औरतें ब्याह लाया : एक का नाम 'अदा और दूसरी का नाम ज़िल्ला था।

²⁰और 'अदा के याबल पैदा हुआ : वह उनका बाप था जो खेमों में रहते और जानवर पालते हैं।²¹और उसके भाई का नाम यूबल था : वह बीन और बांसली बजाने वालों का बाप था।²²और ज़िल्ला के भी तूबलक्राइन पैदा हुआ : जो पीतल और लोहे के सब तेज़ हथियारों का बनाने वाला था; और ना'मा तूबलक्राइन की बहन थी।

²³और लमक ने अपनी बीवियों से कहा कि ऐ 'अदा और ज़िल्ला मेरी बात सुनो; ऐ लमक की बीवियों, मेरी बात पर कान लगाओ : मैंने एक आदमी को जिसने मुझे ज़ख्मी किया, मार डाला। और एक जवान को जिसने मेरे चोट लगाई, क्रल कर डाला।²⁴अगर क्राइन का बदला सात गुना लिया जाएगा, तो लमक का सत्तर और सात गुना।

²⁵और आदम फिर अपनी बीवी के पास गया और उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सेत रखवा : और वह कहने लगी कि खुदा ने हाबिल के बदले जिसको क्राइन ने क्रल किया, मुझे दूसरा फ़र्ज़न्द दिया।²⁶और सेत के यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम उसने अनूस रखवा; उस वक़्त से लोग यहोवा का नाम लेकर दु'आ करने लगे।

Chapter 5

¹यह आदम का नसबनामा है। जिस दिन खुदा ने आदम को पैदा किया; तो उसे अपनी शबीह पर बनाया।²मर्द और 'औरत उनको पैदा किया और उनको बरकत दी, और जिस दिन वह पैदा हुए उनका नाम आदम रख्खा।

³और आदम एक सौ तीस साल का था जब उसकी सूरत-ओ-शबीह का एक बेटा उसके यहाँ पैदा हुआ; और उसने उसका नाम सेत रख्खा।⁴और सेत की पैदाइश के बा'द आदम आठ सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।⁵और आदम की कुल 'उम्र नौ सौ तीस साल की हुई, तब वह मरा।

⁶और सेत एक सौ पाँच साल का था जब उससे अनूस पैदा हुआ।⁷और अनूस की पैदाइश के बा'द सेत आठ सौ सात साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।⁸और सेत की कुल 'उम्र नौ सौ बारह साल की हुई, तब वह मरा।

⁹और अनूस नव्वे साल का था जब उससे क्रीनान पैदा हुआ।¹⁰और क्रीनान की पैदाइश के बा'द अनूस आठ सौ पन्द्रह साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।¹¹और अनूस की कुल 'उम्र नौ सौ पाँच साल की हुई, तब वह मरा।

¹²और क्रीनान सत्तर साल का था जब उससे महललेल पैदा हुआ।¹³और महललेल की पैदाइश के बा'द क्रीनान आठ सौ चालीस साल ज़िन्दा रहा और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।¹⁴और क्रीनान की कुल 'उम्र नौ सौ दस साल की हुई, तब वह मरा।

¹⁵और महललेल पैंसठ साल का था जब उससे यारिद पैदा हुआ।¹⁶और यारिद की पैदाइश के बा'द महललेल आठ सौ तीस साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।¹⁷और महललेल की कुल 'उम्र आठ सौ पचानवे साल की हुई, तब वह मरा।

¹⁸और यारिद एक सौ बासठ साल का था जब उससे हनूक पैदा हुआ।¹⁹और हनूक की पैदाइश के बा'द यारिद आठ सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।²⁰और यारिद की कुल 'उम्र नौ सौ बासठ साल की हुई, तब वह मरा।

²¹और हनूक पैंसठ साल का था उससे मतूसिलह पैदा हुआ।²²और मतूसिलह की पैदाइश के बा'द हनूक तीन सौ साल तक खुदा के साथ-साथ चलता रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।²³और हनूक की कुल 'उम्र तीन सौ पैंसठ साल की हुई।²⁴और हनूक खुदा के साथ-साथ चलता रहा, और वह गायब हो गया क्योंकि खुदा ने उसे उठा लिया।

²⁵और मतूसिलह एक सौ सतासी साल का था जब उससे लमक पैदा हुआ।²⁶और लमक की पैदाइश के बा'द मतूसिलह सात सौ बयासी साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।²⁷और मतूसिलह की कुल 'उम्र नौ सौ उनहत्तर साल की हुई, तब वह मरा।

²⁸और लमक एक सौ बयासी साल का था जब उससे एक बेटा पैदा हुआ।²⁹और उसने उसका नाम नूह रख्खा और कहा, कि यह हमारे हाथों की मेहनत और मशक्कत से जो ज़मीन की वजह से है जिस पर खुदा ने ला'नत की है, हमें आराम देगा।

³⁰और नूह की पैदाइश के बा'द लमक पाँच सौ पंचानवे साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।³¹और ~लमक की कुल 'उम्र सात सौ सत्तर साल की हुई, तब वह मरा।

³²और नूह पाँच सौ साल का था, जब उससे सिम, हाम और याफ़त, पैदा हुए।

Chapter 6

¹जब रु-ए-ज़मीन पर आदमी बहुत बढ़ने लगे और उनके बेटियाँ पैदा हुईं² तो खुदा के बेटों ने आदमी की बेटियों को देखा कि वह खूबसूरत हैं; और जिनको उन्होंने चुना उनसे ब्याह कर लिया।³ तब खुदावन्द ने कहा कि मेरी रूह इन्सान के साथ हमेशा मुज़ाहमत न करती रहेगी। क्योंकि वह भी तो इन्सान है; तो भी उसकी 'उम्र एक सौ बीस साल की होगी।"

⁴उन दिनों में ज़मीन पर जब्बार थे, और बा'द में जब खुदा के बेटे इन्सान की बेटियों के पास गए, तो उनके लिए उनसे औलाद हुई। यही पुराने ~ज़माने के सूर्मा हैं, जो बड़े नामवर हुए हैं।

⁵और खुदावन्द ने देखा कि ज़मीन पर इन्सान की बंदी बहुत बढ़ गई, और उसके दिल के तसव्वुर और खयाल हमेशा बुरे ही होते हैं।⁶ तब खुदावन्द ज़मीन पर इन्सान के पैदा करने से दुखी हुआ और दिल में ग़म किया।

⁷और खुदावन्द ने कहा कि मैं इन्सान को जिसे मैंने पैदा किया, रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा; इन्सान से लेकर हैवान और रेंगनेवाले जानदार और हवा के परिन्दों तक; क्योंकि मैं उनके बनाने से दुखी हूँ।⁸ मगर नूह खुदावन्द की नज़र में मक्बूल हुआ।

⁹नूह का नसबनामा यह है : नूह मर्द-ए-रास्तबाज़ और अपने ज़माने के लोगों में बे'ऐब था, और नूह खुदा के साथ-साथ चलता रहा।¹⁰ और उससे तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए।

¹¹लेकिन ज़मीन खुदा के आगे नापाक हो गई थी, और वह जुल्म से भरी थी।¹² और खुदा ने ज़मीन पर नज़र की और देखा, कि वह नापाक हो गई है; क्योंकि ~हर इन्सान ने ज़मीन पर अपना तरीक़ा बिगाड़ लिया था।

¹³और खुदा ने नूह से कहा कि पूरे इन्सान का खातिमा मेरे सामने आ पहुँचा है; क्योंकि उनकी वजह से ज़मीन जुल्म से भर गई, इसलिए ~देख, मैं ज़मीन के साथ उनको हलाक करूँगा।¹⁴ तू गोफ़र की लकड़ी की एक कश्ती अपने लिए बना; उस कश्ती में कोठरियाँ तैयार करना और उसके अन्दर और बाहर राल लगाना।

¹⁵~और ऐसा करना कि कश्ती की लम्बाई तीन सौ हाथ, उसकी चौड़ाई पचास हाथ और उसकी ऊँचाई तीस हाथ हो।

¹⁶और उस कश्ती में एक रौशनदान बनाना, और ऊपर से हाथ भर छोड़ कर उसे खत्म कर देना; और उस कश्ती का दरवाज़ा उसके पहलू में रखना; और उसमें तीन हिस्से बनाना निचला, दूसरा और तीसरा।¹⁷ और देख, मैं खुद ज़मीन पर पानी का तूफ़ान लानेवाला हूँ, ताकि हर इन्सान को जिसमें जिन्दगी की साँस है, दुनिया से हलाक कर डालूँ, और सब जो ज़मीन पर हैं मर जाएँगे।

¹⁸लेकिन तेरे साथ मैं अपना 'अहद क़ायम करूँगा; और तू कश्ती में जाना-तू और तेरे साथ तेरे बेटे और तेरी बीवी और तेरे बेटों की बीवियाँ।¹⁹ और जानवरों की हर क्रिस्म ~में से दो-दो अपने साथ कश्ती में ले लेना, कि वह तेरे साथ जीते बचें, वह नर-ओ-मादा हों।

²⁰और परिन्दों की हर क्रिस्म में से, और चरिन्दों की हर क्रिस्म में से, और ज़मीन पर रेंगने वालों की हर क्रिस्म में से दो दो तेरे पास आएँ, ताकि वह जीते बचें।

²¹और तू हर तरह की खाने की चीज़ लेकर अपने पास जमा' कर लेना, क्योंकि यही तेरे और उनके खाने को होगा।²² और नूह ने ऐसा ही किया; जैसा खुदा ने उसे हुक्म दिया था, वैसा ही 'अमल किया।

Chapter 7

¹~और खुदावन्द ने नूह से कहा कि तू अपने पूरे खान्दान के साथ कश्ती में आ; क्योंकि मैंने तुझी को अपने सामने इस ज़माना में रास्तबाज़ देखा है।²सब पाक जानवरों में से सात-सात, नर और उनकी मादा; और उनमें से जो पाक नहीं हैं दो-दो, नर और उनकी मादा अपने साथ ले लेना।³और हवा के परिन्दों में से भी सात-सात, नर और मादा, लेना ताकि ज़मीन पर उनकी नसल बाक़ी रहे।

⁴क्योंकि सात दिन के बा'द मैं ज़मीन पर चालीस दिन और चालीस रात पानी बरसाऊंगा, और हर जानदार शय को जिसे मैंने बनाया ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।

⁵और नूह ने वह सब जैसा खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था किया।

⁶और नूह छः सौ साल का था, जब पानी का तूफ़ान ज़मीन पर आया।⁷तब नूह और उसके बेटे और उसकी बीवी, और उसके बेटों की बीवियाँ, उसके साथ तूफ़ान के पानी से बचने के लिए कश्ती में गए।

⁸और पाक जानवरों में से और उन जानवरों में से जो पाक नहीं, और परिन्दों में से और ज़मीन पर के हर रेंगनेवाले जानदार में से⁹दो-दो, नर और मादा, कश्ती में नूह के पास गए, जैसा खुदा ने नूह को हुक्म दिया था।¹⁰और सात दिन के बा'द ऐसा हुआ कि तूफ़ान का पानी ज़मीन पर आ गया।

¹¹नूह की 'उम्र का छः सौवां साल था, कि उसके दूसरे महीने के ठीक सत्रहवीं तारीख को बड़े समुन्दर के सब सोते फूट निकले और आसमान की खिड़कियाँ खुल गई।¹²और चालीस दिन और चालीस रात ज़मीन पर बारिश होती रही।

¹³उसी दिन नूह और नूह के बेटे सिम और हाम और याफ़त, और¹⁴और हर क्रिस्म का जानवर और हर क्रिस्म का चौपाया और हर क्रिस्म का ज़मीन पर का रेंगने वाला जानदार और हर क्रिस्म का परिन्दा और हर क्रिस्म की चिड़िया, यह सब कश्ती में दाखिल हुए।

¹⁵और जो ज़िन्दगी का दम रखते हैं उनमें से दो-दो कश्ती में नूह के पास आए।¹⁶और जो अन्दर आए वो, जैसा खुदा ने उसे हुक्म दिया था, सब जानवरों के नर-ओ-मादा थे। तब खुदावन्द ने उसको बाहर से बन्द कर दिया।

¹⁷और चालीस दिन तक ज़मीन पर तूफ़ान रहा, और पानी बढ़ा और उसने कश्ती को ऊपर उठा दिया; तब कश्ती ज़मीन पर से उठ गई।¹⁸और पानी ज़मीन पर चढ़ता ही गया और बहुत बढ़ा और कश्ती पानी के ऊपर तैरती रही।

¹⁹और पानी ज़मीन पर बहुत ही ज़्यादा चढ़ा और सब ऊँचे पहाड़ जो दुनिया में हैं छिप गए।²⁰पानी उनसे पंद्रह हाथ और ऊपर चढ़ा और पहाड़ डूब गए।

²¹और सब जानवर जो ज़मीन पर चलते थे, परिन्दें और चौपाए और जंगली जानवर और ज़मीन पर के सब रेंगनेवाले जानदार, और सब आदमी मर गए।²²और खुशकी के सब जानदार जिनके नथनों में ज़िन्दगी का दम था मर गए।

²³बल्कि हर जानदार शय जो इस ज़मीन पर थी मर मिटी - क्या इन्सान क्या हैवान क्या रेंगने वाले जानदार क्या हवा ~का परिन्दा, यह सब के सब ज़मीन पर से मर मिटे। सिर्फ़ एक नूह बाक़ी बचा, या वह जो उसके साथ कश्ती में थे।²⁴और पानी ज़मीन पर एक सौ पचास दिन तक बढ़ता रहा।

Chapter 8

¹~फिर खुदा ने नूह को और सब जानदार और सब चौपायों को जो उसके साथ कश्ती में थे याद किया; और खुदा ने ज़मीन पर एक हवा चलाई और पानी रुक गया।²और समुन्दर के सोते और आसमान के दरीचे बन्द किए गए, और आसमान से जो बारिश हो रही थी थम गई; ³और पानी ज़मीन पर से घटते-घटते एक सौ पचास दिन के बा'द कम हुआ।

⁴और सातवें महीने की सत्रहवीं तारीख को कश्ती अरारात के पहाड़ों पर टिक गई।⁵और पानी दसवें महीने तक बराबर घटता रहा, और दसवें महीने की पहली तारीख को पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आई।

⁶और चालीस दिन के बा'द ऐसा हुआ, कि नूह ने कश्ती की खिड़की जो उसने बनाई थी खोली, ⁷और उसने एक कौवे को उड़ा दिया; इसलिए वह निकला और जब तक कि ज़मीन पर से पानी सूख न गया इधर उधर फिरता रहा।

⁸फिर उसने एक कबूतरी अपने पास से उड़ा दी, ताकि देखे, कि ज़मीन पर पानी घटा या नहीं।⁹लेकिन कबूतरी ने पंजा टेकने की जगह न पाई और उसके पास कश्ती को लौट आई, क्योंकि तमाम रू-ए-ज़मीन पर पानी था। तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और अपने पास कश्ती में रखवा।

¹⁰और सात दिन ठहर कर उसने उस कबूतरी को फिर कश्ती से उड़ा दिया; ¹¹और वह कबूतरी शाम के वक़्त उसके पास लौट आई, और देखा तो जैतून की एक ताज़ा पत्ती उसकी चोंच में थी। तब नूह ने मा'लूम किया कि पानी ज़मीन पर से कम हो गया।¹²तब वह सात दिन और ठहरा, इसके बा'द फिर उस कबूतरी को उड़ाया, लेकिन वह उसके पास फिर कभी न लौटी।

¹³और छः सौ पहले साल के पहले महीने की पहली तारीख को ऐसा हुआ, कि ज़मीन पर से पानी सूख गया; और नूह ने कश्ती की छत खोली और देखा कि ज़मीन की सतह सूख गई है।¹⁴और दूसरे महीने की सताईस्वीं तारीख को ज़मीन बिल्कुल सूख गई।

¹⁵तब खुदा ने नूह से कहा कि¹⁶"कश्ती से बाहर निकल आ; तू और तेरे साथ तेरी बीवी और तेरे बेटे और तेरे बेटों की बीवियाँ।¹⁷और उन जानदारों को भी बाहर निकाल ला जो तेरे साथ हैं : क्या परिन्दे, क्या चौपाये, क्या ज़मीन के रेंगनेवाले जानदार; ताकि वह ज़मीन पर कसरत से बच्चे दें और फल दायक हों और ज़मीन पर बढ़ जाएँ।"

¹⁸तब नूह अपनी बीवी और अपने बेटों और अपने बेटों की बीवियों के साथ बाहर निकला।¹⁹और सब जानवर, सब रेंगनेवाले जानदार, सब परिन्दे और सब जो ज़मीन पर चलते हैं, अपनीअपनी क्रिस्म ~के साथ कश्ती से निकल गए।

²⁰तब नूह ने खुदावन्द के लिए एक मज़बूत बनाया; और सब पाक चौपायों और पाक परिन्दों में से थोड़े से लेकर उस मज़बूत पर सोखतनी कुर्बानियाँ पेश कीं।

²¹और खुदावन्द ने उसकी राहत अंगेज़ खुशबू ली, और खुदावन्द ने अपने दिल में कहा कि इन्सान की वजह से मैं फिर कभी ज़मीन पर ला'नत नहीं भेजूँगा, क्योंकि इन्सान के दिल का ख्याल लड़कपन से बुरा है; और न फिर सब जानदारों को जैसा अब किया है, मारूँगा।²²बल्कि जब तक ज़मीन क़ायम है बीज बोना और फ़सल कटना, सर्दी और तपिश, गर्मी और जाड़ा और रात ख़त्म न ~होंगे।

Chapter 9

¹और खुदा ने नूह और उसके बेटों को बरकत दी और उनको कहा कि फ़ायदेमन्द हो और बढ़ो और ज़मीन को भर दो।²और ज़मीन के सब ~जानदारों और हवा के सब परिन्दों पर तुम्हारी दहशत और तुम्हारा रौब होगा; | यह और तमाम कीड़े जिन से ज़मीन भरी पड़ी है, और समुन्दर की कुल मछलियाँ तुम्हारे क़ब्ज़े में की गई ।

³हर चलता फिरता जानदार तुम्हारे खाने को होगा; हरी सब्ज़ी की तरह मैंने सबका सब तुम को दे दिया।⁴मगर तुम गोश्त के साथ खून को, जो उसकी जान है न खाना।

⁵मैं तुम्हारे खून का बदला ज़रूर लूँगा, हर जानवर से उसका बदला लूँगा; आदमी की जान का बदला आदमी से और उसके भाई बन्द से लूँगा ।⁶जो आदमी का खून करे उसका खून आदमी से होगा, क्योंकि खुदा ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया है ।⁷और तुम फल दायक हो और बढ़ो और ज़मीन पर खूब अपनी नसल बढ़ाओ, और बहुत ज़्यादा हो जाओ।”

⁸और खुदा ने नूह और उसके बेटों से कहा,⁹”देखो, मैं खुद तुमसे और तुम्हारे बा’द तुम्हारी नसल से,¹⁰और सब जानदारों से जो तुम्हारे साथ हैं, क्या परिन्दे क्या चौपाए क्या ज़मीन के जानवर, या’नी ज़मीन के उन सब जानवरों के बारे में जो कश्ती से उतरे, 'अहद करता हूँ

¹¹मैं इस 'अहद को तुम्हारे साथ क़ायम रखूँगा कि सब जानदार तूफ़ान के पानी से फिर हलाक न होंगे, और न कभी ज़मीन को तबाह करने के लिए फिर तूफ़ान आएगा।¹²~और खुदा ने कहा कि जो अहद मैंने अपने और तुम्हारे बीच और सब जानदारों के बीच जो तुम्हारे साथ हैं, नसल -दर-नसल हमेशा के लिए करता हूँ, उसका निशान यह है, कि।¹³मैं अपनी कमान को बादल में रखता हूँ, वह मेरे और ज़मीन के बीच 'अहद का निशान होगी

¹⁴और ऐसा होगा कि जब मैं ज़मीन पर बादल लाऊँगा, तो मेरी कमान बादल में दिखाई देगी।¹⁵और मैं अपने 'अहद को, जो मेरे और तुम्हारे और हर तरह के जानदार के बीच है, याद करूँगा; और तमाम जानदारों की हलाकत के लिए पानी का तूफ़ान फिर न होगा।

¹⁶और कमान बादल में होगी और मैं उस पर निगाह करूँगा, ताकि उस अबदी 'अहद को याद करूँ जो खुदा के और ज़मीन के सब तरह के जानदार के बीच है।”¹⁷तब खुदा ने नूह से कहा कि यह उस 'अहद का निशान है जो मैं अपने और ज़मीन के कुल जानदारों के बीच क़ायम करता हूँ।

¹⁸नूह के बेटे जो कश्ती से निकले, शिम, हाम और याफ़त थे और हाम कना'न का बाप था ।¹⁹~यही तीनों नूह के बेटे थे और इन्हीं की नसल सारी ज़मीन फैली ।

²⁰और नूह काशतकारी करने लगा और उसने एक अँगूर का बाग़ लगाया।²¹और उसने उसकी मय पी और उसे नशा आया और वह अपने डेरे में नंगा हो गया।

²²और कना'न के बाप हाम ने अपने बाप को नंगा देखा, और अपने दोनों भाइयों को बाहर आ कर खबर दी।²³तब शिम और याफ़त ने एक कपड़ा लिया और उसे अपने कन्धों पर धरा, और पीछे को उल्टे चल कर गए और अपने बाप की नंगे पन को ~ढाँका, इसलिए उनके मुँह उल्टी तरफ़ थे और उन्होंने अपने बाप की नंगे पन को ~न देखा।

²⁴जब नूह अपनी मय के नशे से होश में आया, तो जो उसके छोटे बेटे ने उसके साथ किया था उसे मा'लूम हुआ ।²⁵और उसने कहा कि कना'न मल'ऊन हो, वह अपने भाइयों के गुलामों का गुलाम होगा

²⁶फिर कहा, "खुदावन्द शिम का खुदा मुबारक हो, और कना'न शिम का गुलाम हो।”²⁷खुदा याफ़त को फैलाए, कि वह शिम के डेरों में बसे, और कना'न उसका गुलाम”

²⁸और तूफ़ान के बा’द नूह साढ़े तीन सौ साल और ज़िन्दा रहा।²⁹और नूह की कुल 'उम्र साढ़े नौ सौ साल की हुई। तब उसने वफ़ात पाई।

Chapter 10

¹नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त की औलाद यह हैं। तूफ़ान के बा'द उनके यहाँ बेटे पैदा हुए।

²बनी याफ़त यह हैं : जुमर और माजूज और मादी, और यावान और तूबल और मसक और तीरास।³और जुमर के बेटे: अशकनाज़ और रीफ़त और तुजरमा।

⁴और यावान के बेटे: इलीसा और तरसीस, किती और दोदानी।⁵क्रौमों के जज़ीरे इन्हीं की नसल में बट कर, हर एक की ज़बान और क़बीले के मुताबिक़ मुखतलिफ़ मुल्क और गिरोह हो गए।

⁶और बनी हाम यह हैं : कूश और मिस्त्र और फ़ूत और कना'न।⁷और बनी कूश यह हैं | सबा और हवीला और सबता और रा'मा और सब्तीका। और बनी रा'मा यह हैं : सबा और ददान।

⁸और कूश से नमरूद पैदा हुआ | वह रू-ए-ज़मीन पर एक सूर्मा हुआ है।⁹ख़ुदावन्द के सामने वह एक शिकारी सूर्मा हुआ है, इसलिए यह मसल चली कि ख़ुदावन्द के सामने नमरूद सा शिकारी सूर्मा।"¹⁰और उस की बादशाही का पहला मुल्क सिन'आर में बाबुल और अरक और अक्काद और कलना से हुई।

¹¹उसी मुल्क से निकल कर वह असूर में आया, और नीनवा और रहोबोत 'ईर और कलह को,¹²और नीनवा और कलह के बीच रसन को, जो बड़ा शहर है बनाया।¹³और मिस्त्र से लूदी और 'अनामी और लिहाबी और नफ़तूही¹⁴और फ़तरूसी और कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और कफ़तूरी पैदा हुए।

¹⁵और कना'न से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित,¹⁶और यबूसी और अमोरी और जिरजासी,¹⁷और हव्वी और 'अरकी और सीनी,¹⁸और अरवादी और समारी और हमाती पैदा हुए; और बा'द में कना'नी क़बीले फैल गए।

¹⁹और कना'नियों की हद यह है : सैदा से ग़ज़ा तक जो जिरार के रास्ते पर है, फिर वहाँ से लसा' तक जो सदूम और 'अमूरा और अदमा और ज़िबयान की राह पर है।²⁰इसलिए बनी हाम यह हैं, जो अपने-अपने मुल्क और गिरोहों में अपने क़बीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक़ आबा'द हैं।

²¹और सिम के यहाँ भी जो तमाम बनी 'इब्र का बाप और याफ़त का बड़ा भाई था, औलाद हुई।²²और बनी सिम यह हैं : 'ऐलाम और असुर और अरफ़क़सद और लुद और आराम |²³और बनी आराम यह हैं ;'ऊज़ और हूल और जतर और मस |

²⁴और अरफ़क़सद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से 'इब्र।²⁵और 'इब्र के यहाँ दो बेटे पैदा हुए; एक का नाम फ़लज था क्योंकि ज़मीन उसके दिनों में बटी, और उसके भाई का नाम युक्तान था।

²⁶और युक्तान से अलमूदाद और सलफ़ और हसारमावत और इराख |²⁷और हदूराम और ऊज़ाल और दिक्ला |²⁸और 'ऊबल और अबी माएल और सिबा |

²⁹और ओफ़ीर और हवील और यूबाब पैदा हुए; यह सब बनी युक्तान थे |

³⁰और इनकी आबादी मेसा से मशरिक़ के एक पहाड़ सफ़ार की तरफ़ थी।³¹इसलिए बनी सिम यह हैं, जो अपने-अपने मुल्क और गिरोह में अपने क़बीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक़ आबा'द हैं |

³²नूह के बेटों के ख़ान्दान उनके गिरोह और नसलों के ऐतबार से यही हैं, और तूफ़ान के बा'द जो क्रौमें ज़मीन पर इधर उधर बट गई वह इन्हीं में से थीं।

Chapter 11

¹और तमाम ज़मीन पर एक ही ज़बान और एक ही बोली थी।²और ऐसा हुआ कि मशरिक की तरफ़ सफ़र करते करते उनको मुल्क-ए-सिन'आर में एक मैदान मिला और वह वहाँ बस गए।

³और उन्होंने आपस में कहा, 'आओ, हम ईंटें बनाएँ और उनको आग में खूब पकाएँ। तब उन्होंने पत्थर की जगह ईंट से और चूने की जगह गारे से काम लिया।
⁴फिर वह कहने लगे, कि आओ हम अपने लिए एक शहर और एक बुर्ज जिसकी चोटी आसमान तक पहुँचे बनाएँ और ~यहाँ अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हम तमाम रु-ए-ज़मीन पर बिखर जाएँ | |

⁵और खुदावन्द इस शहर और बुर्ज, को जिसे बनी आदम बनाने लगे देखने को उतरा।⁶और खुदावन्द ने कहा, "देखो, यह लोग सब एक हैं और इन सभी की एक ही ज़बान है। वह जो यह करने लगे हैं तो अब कुछ भी जिसका वह इरादा करें उनसे बाकी न छूटेगा।"⁷इसलिए आओ, हम वहाँ जाकर उनकी ज़बान में इख़िलाफ़ डालें, ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न सकें।"

⁸तब, खुदावन्द ने उनको वहाँ से तमाम रु-ए-ज़मीन में बिखेर दिया; तब वह उस शहर के बनाने से बाज़ आए।⁹इसलिए उसका नाम बाबुल हुआ क्योंकि खुदावन्द ने वहाँ सारी ज़मीन की ज़बान में इख़िलाफ़ डाला और वहाँ से खुदावन्द ने उनको तमाम रु-ए-ज़मीन पर बिखेर ~दिया।

¹⁰यह सिम का नसबनामा है : सिम एक सौ साल का था जब उससे तूफ़ान के दो साल बा'द अरफ़क़सद पैदा हुआ;¹¹और अरफ़क़सद की पैदाइश के बा'द सिम पाँच सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।

¹²जब अरफ़क़सद पैतीस साल का हुआ, तो उससे सिलह पैदा हुआ;¹³और सिलह की पैदाइश के बा'द अरफ़क़सद चार सौ तीन साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।

¹⁴सिलह जब तीस साल का हुआ, तो उससे 'इब्र पैदा हुआ;¹⁵और 'इब्र की पैदाइश के बा'द सिलह चार सौ तीन साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।

¹⁶जब 'इब्र चौतीस साल का था. तो उससे फ़लज पैदा हुआ;¹⁷और फ़लज की पैदाइश के बा'द इब्र चार सौ तीस साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं |

¹⁸फ़लज तीस साल का था, जब उससे र'ऊ पैदा हुआ;¹⁹और र'ऊ की पैदाइश के बा'द फ़लज दो सौ नौ साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।

²⁰और र'ऊ बत्तीस साल का था, जब उससे सरूज पैदा हुआ;²¹और सरूज की पैदाइश के बा'द र'ऊ दो सौ सात साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं |

²²और सरूज तीस साल का था, जब उससे नहूर पैदा हुआ |²³और नहूर की पैदाइश के बा'द सरूज दो सौ साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं |

²⁴नहूर उन्तीस साल का था, जब उससे तारह पैदा हुआ |²⁵और तारह की पैदाइश के बा'द नहूर एक सौ उन्नीस साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।²⁶और तारह सत्तर साल का था, जब उससे अब्राम और नहूर और हारान पैदा हुए |

²⁷और यह तारह का नसबनामा है : तारह से अब्राम और नहूर और हारान पैदा हुए और हारान से लूत पैदा हुआ।²⁸और हारान अपने बाप तारह के आगे अपनी पैदाइशी जगह ~या'नी कसदियों के ऊर में मरा।

²⁹और अब्राम और नहूर ने अपना-अपना ब्याह कर लिया। अब्राम की बीवी का नाम सारय ~और नहूर की बीवी का नाम मिल्का था जो हारान की बेटी थी। वही मिल्का का बाप और इस्का का बाप था।³⁰और सारय बाँझ थी; उसके कोई बाल-बच्चा न था।

³¹और तारह ने अपने बेटे अब्राम को और अपने पोते लूत को, जो हारान का बेटा था, और अपनी बहू सारय को जो उसके बेटे अब्राम की बीवी थी, साथ लिया और वह सब कसदियों के ऊर से रवाना हुए की कना'न के मुल्क में जाएँ; और वह हारान तक आए और वहीं रहने लगे।³²और तारह की 'उम्र दो सौ पाँच साल की हुई और उस ने हारान में वफ़ात पाई।

Chapter 12

¹खुदावन्द ने अब्राम से कहा, कि तू अपने वतन और अपने नातेदारों के बीच से और अपने बाप के घर से निकल कर उस मुल्क में जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।

²और मैं तुझे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा और बरकत दूँगा और तेरा नाम सरफ़राज़ करूँगा; इसलिए तू बरकत का ज़रिया हो।³जो तुझे मुबारक कहें उनको मैं बरकत दूँगा, और जो तुझ पर ला'नत करे उस पर मैं ला'नत करूँगा, और ज़मीन के सब क़बीले तेरे वसीले से बरकत पाएँगे।

⁴तब अब्राम खुदावन्द के कहने के मुताबिक़ चल पड़ा और लूत उसके साथ गया, और अब्राम पच्छत्तर साल का था जब वह हारान से रवाना हुआ।⁵और अब्राम ने अपनी बीवी सारय, और अपने भतीजे लूत को, और सब माल को जो उन्होंने जमा किया था, और उन आदमियों को जो उनको हारान में मिल गए थे साथ लिया, और वह मुल्क-ए-कना'न को रवाना हुए और मुल्क-ए-कना'न में आए।

⁶और अब्राम उस मुल्क में से गुज़रता हुआ मक्काम-ए-सिक्म में मोरा के बलूत तक पहुँचा। उस वक़्त ~मुल्क में कना'नी रहते थे।⁷तब खुदावन्द ने अब्राम को दिखाई देकर कहा कि यही मुल्क मैं तेरी नसल को दूँगा। और उसने वहाँ खुदावन्द के लिए जो उसे दिखाई दिया था, एक कुर्बानगाह बनाई।

⁸और वहाँ से कूच करके उस पहाड़ की तरफ़ गया जो बैत-एल के मशरिक़ में है, और अपना डेरा ऐसे लगाया कि बैत-एल मगरिब में और 'अई मशरिक़ में पड़ा; और वहाँ उसने खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाई और खुदावन्द से दु'आ की।⁹और अब्राम सफ़र करता करता दख्खिन की तरफ़ बढ़ गया।

¹⁰और उस मुल्क में काल पड़ा: और अब्राम मिस्र को गया कि वहाँ टिका रहे; क्योंकि मुल्क में सख़्त काल था।¹¹और ऐसा हुआ कि जब वह मिस्र में दाखिल होने को था तो उसने अपनी बीवी सारय से कहा कि देख, मैं जानता हूँ कि तू देखने में खूबसूरत 'औरत है।¹²और यूँ होगा कि मिस्री तुझे देख कर कहेंगे कि यह उसकी बीवी है, इसलिए वह मुझे तो मार डालेंगे मगर तुझे ज़िन्दा रख लेंगे।¹³इसलिए तू यह कह देना, कि मैं इसकी बहन हूँ, ताकि तेरी वजह से मेरा भला हो और मेरी जान तेरी बदौलत बची रहे।

¹⁴और यूँ हुआ कि जब अब्राम मिस्र में आया तो मिस्रियों ने उस 'औरत को देखा कि वह निहायत खूबसूरत है।¹⁵और फ़िर'औन के हाकिमों ने उसे देख कर फ़िर'औन के सामने में उसकी ता'रीफ़ की, और वह 'औरत फ़िर'औन के घर में पहुँचाई गई।¹⁶और उसने उसकी खातिर अब्राम पर एहसान किया; और भेड़ बकरियाँ और गाय, बैल और गधे और गुलाम और लौंडियाँ और गधियाँ और ऊँट उसके पास हो गए।

¹⁷लेकिन खुदावन्द ने फ़िर'औन और उसके खान्दान पर, अब्राम की बीवी सारय की वजह से बड़ी-बड़ी बलाएं नाज़िल कीं।¹⁸तब फ़िर'औन ने अब्राम को बुला कर उससे कहा, कि तूने मुझ से यह क्या किया? तूने मुझे क्यों न बताया कि यह तेरी बीवी है।¹⁹तूने यह क्यों कहा कि वह मेरी बहन है? इसी लिए मैंने उसे लिया कि वह मेरी बीवी बने इसलिए देख तेरी बीवी हाज़िर है। उसको ले और चला जा।"²⁰और फ़िर'औन ने उसके हक़ में अपने आदमियों को हिदायत की, और उन्होंने उसे और उसकी बीवी को उसके सब माल के साथ रवाना कर दिया।

Chapter 13

¹और अब्राहम मिस्र से अपनी बीवी और अपने सब माल और लूत को साथ ले कर कना'न के दख्खिन की तरफ़ चला।²और अब्राहम के पास चौपाए और सोना चाँदी बकसरत था।

³और वह कना'न के दख्खिन से सफ़र करता हुआ बैत-एल में उस जगह पहुँचा जहाँ पहले बैत-एल और 'अई के बीच उसका डेरा था।⁴या'नी वह मक़ाम जहाँ उसने शुरु' में कुर्बानगाह बनाई थी, और वहाँ अब्राहम ने खुदावन्द से दु'आ की।

⁵और लूत के पास भी जो अब्राहम का हमसफ़र था भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और डेरे थे।⁶और उस मुल्क में इतनी गुन्जाइश न थी कि वह इकट्ठे रहें, क्योंकि उनके पास इतना माल था कि वह इकट्ठे नहीं रह सकते थे।⁷और अब्राहम के चरवाहों और लूत के चरवाहों में झगड़ा हुआ; और कना'नी और फ़रिज़्ज़ी उस वक़्त मुल्क में रहते थे।

⁸तब अब्राहम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों और तेरे चरवाहों के-बीच झगड़ा न हुआ करे, क्योंकि-हम भाई हैं।⁹क्या यह सारा मुल्क तेरे सामने नहीं? इसलिए तू मुझ से अलग हो जा: अगर तू बाएँ जाए तो मैं दहने जाऊँगा, और अगर तू दहने जाए तो मैं बाएँ जाऊँगा।

¹⁰तब लूत ने आँख उठाकर यरदन की सारी तराई पर जो जुगार की तरफ़ है नज़र दौड़ाई। क्योंकि वह इससे पहले कि खुदावन्द ने सदूम और 'अमूरा को तबाह किया, खुदावन्द के बाग़ और मिस्र के मुल्क की तरह ख़ूब सेराब थी।¹¹तब लूत ने यरदन की सारी तराई को अपने लिए चुन लिया, और वह मशरिक़ की तरफ़ चला; और वह एक दूसरे से जुदा हो गए।

¹²अब्राहम तो मुल्क-ए-कना'न में रहा, और लूत ने तराई के शहरों में सुकूनत इख्तियार की और सदूम की तरफ़ अपना डेरा लगाया।¹³और सदूम के लोग खुदावन्द की नज़र में निहायत बदकार और गुनहगार थे।

¹⁴और लूत के जुदा हो जाने के बाद खुदावन्द ने अब्राहम से कह कि अपनी आँख उठा और जिस जगह तू है वहाँ से शिमाल दख्खिन और मशरिक़ और मग़रिब की-तरफ़ नज़र दौड़ा।¹⁵क्योंकि यह तमाम मुल्क जो तू देख रहा है, मैं तुझ को और तेरी नसल को हमेशा के लिए दूँगा।

¹⁶और मैं तेरी नसल को खाक के ज़रों की तरह बनाऊँगा, ऐसा कि अगर कोई शख्स खाक के ज़रों को गिन सके तो तेरी नसल भी गिन ली जाएगी।¹⁷उठ, और इस मुल्क की लम्बाई और चौड़ाई में घूम, क्योंकि मैं इसे तुझ को दूँगा।¹⁸और अब्राहम ने अपना डेरा उठाया, और ममरे के बलूतों में जो हबर्न में हैं जा कर रहने लगा; और वहाँ खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाई।

Chapter 14

¹और सिन'आर के बादशाह अमराफ़िल, और इल्लासर के बादशाह अर्युक, और 'ऐलाम के बादशाह किदरला 'उम्र, और जोइम के बादशाह तिद'आल के दिनों में,²~ऐसा हुआ कि उन्होंने सदूम के बादशाह बर'आ, और 'अमूरा के बादशाह बिरश'आ और अदमा के बादशाह सिनिअब, और ज़िबोईम के बादशाह शिमेबर, और बाला' या'नी जुग़ के बादशाह से जंग की।

³यह सब सिद्दीम या'नी दरिया-ए-शोर की वादी में इकट्ठे हुए।⁴बारह साल तक वह किदरला 'उम्र के फ़र्माबरदार रहे, लेकिन तेरहवें साल उन्होंने सरकशी की।

⁵और चौदहवें साल किदरला 'उम्र और उसके साथ के बादशाह आए, और रिफ़ाईम को 'असतारात क्रनेम में, और ज़ूज़ियों को हाम में, और ऐमीम को सवीक्र्यतैम में,⁶और होरियों को उनके कोह-ए-श'ईर में मारते-मारते एल-फ़ारान तक जो वीराने से लगा हुआ है आए।

⁷फिर वह लौट कर 'ऐन-मिसफ़ात या'नी क़ादिस पहुँचे, और 'अमालीक्रियों के तमाम मुल्क को, और अमोरियों को जो हसेसून तमर में रहते थे मारा।⁸तब सदूम का बादशाह, और 'अमूरा का बादशाह, और अदमा का बादशाह, और ज़िबोईम का बादशाह, और बाला' या'नी जुग़ार का बादशाह, निकले और उन्होंने सिद्दीम की वादी में लड़ाई की।⁹ताकि 'ऐलाम के बादशाह किदरला 'उम्र, और जोइम के बादशाह तिद'आल, और सिन'आर के बादशाह अमराफ़िल, और इल्लासर के बादशाह अर्युक से जंग करें; यह चार बादशाह उन पाँचों के मुकाबिले में थे।

¹⁰और सिद्दीम की वादी में जा-बजा नफ़्त के गढ़े थे; और सदूम और 'अमूरा के बादशाह भागते-भागते वहाँ गिरे, और जो बचे पहाड़ पर भाग गए।¹¹तब वह सदूम 'अमूरा का सब माल और वहाँ का सब अनाज लेकर चले गए;¹²और अब्राम के भतीजे लूत को और उसके माल को भी ले गए क्योंकि वह सदूम में रहता था

¹³तब एक ने जो बच गया था जाकर अब्राम 'इब्रानी को ख़बर दी, जो इस्काल और 'आनेर के भाई ममरे अमोरी के बलूतों में रहता था, और यह अब्राम के हम 'अहद थे।¹⁴जब अब्राम ने सुना कि उसका भाई गिरफ़्तार हुआ, तो उसने अपने तीन सौ अट्टारा माहिर लड़ाकों को लेकर दान तक उनका पीछा किया।

¹⁵और रात को उसने और उसके ख़ादिमों ने गोल-गोल होकर उन पर धावा किया और उनको मारा और खूबा तक, जो दमिश्क के बाएँ हाथ है, उनका पीछा किया।¹⁶और वह सारे माल को और अपने भाई लूत को और उसके माल और 'औरतों को भी और और लोगों को वापस फेर लाया।

¹⁷और जब वह किदरला 'उम्र और उसके साथ के बादशाहों को मार कर फिरा तो सदूम का बादशाह उसके इस्तक्रबाल को सवी की वादी तक जो बादशाही वादी है आया।¹⁸और मलिक-ए-सिदक्र, सालिम का बादशाह, रोटी और मय लाया और वह ख़ुदा ता'ला का काहिन था।

¹⁹और उसने उसको बरकत देकर कहा कि ख़ुदा ता'ला की तरफ़ से जो आसमान और ज़मीन का मालिक है, अब्राम मुबारक हो।²⁰और मुबारक है ख़ुदा ता'ला जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया। तब अब्राम ने सबका दसवाँ हिस्सा उसको ~दिया।

²¹और सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा कि आदमियों को मुझे दे दे और माल अपने लिए रख ले।²²लेकिन अब्राम ने सदूम के बादशाह से कहा कि मैंने ख़ुदावन्द ख़ुदा ता'ला, आसमान और ज़मीन के मालिक, की क्रसम खाई है,²³कि मैं न तो कोई धागा, न जूती का तस्मा, न तेरी और कोई चीज़ लूँ~ताकि तू यह न कह सके कि मैंने अब्राम को दौलतमन्द बना दिया।²⁴सिवा उसके जो जवानों ने खा लिया और उन आदमियों के हिस्से के जो मेरे साथ गए; इसलिए 'आनेर और इस्काल और ममरे अपना-अपना हिस्सा ले लें।"

Chapter 15

¹इन बातों के बा'द खुदावन्द का कलाम ख्वाब में अब्राहम पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, "ऐ अब्राहम, तू मत डर; मैं तेरी ढाल और तेरा बहुत बड़ा अज़्र हूँ।"²अब्राहम ने कहा, "ऐ खुदावन्द खुदा, तू मुझे क्या देगा? क्योंकि मैं तो बेऔलाद जाता हूँ, और मेरे घर का मुख्तार दमिशक़ी इली'अज़र है।"³फिर अब्राहम ने कहा, "देख, तूने मुझे कोई औलाद नहीं दी और देख मेरा खानाज़ाद मेरा वारिस होगा।"

⁴तब खुदावन्द का कलाम उस पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, "यह तेरा वारिस न होगा, बल्कि वह जो तेरे सुल्ब से पैदा होगा वही तेरा वारिस होगा।"⁵और वह उसको बाहर ले गया और कहा, कि अब आसमान कि तरफ़ निगाह कर और अगर तू सितारों को गिन सकता है तो गिन। और उससे कहा कि तेरी औलाद ऐसी ही होगी।

⁶और वह खुदावन्द पर ईमान लाया और इसे उसने उसके हक़ में रास्तबाज़ी शुमार किया।⁷और उसने उससे कहा कि मैं खुदावन्द हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, कि तुझ को यह मुल्क मीरास में दूँ।"⁸और उसने कहा, "ऐ खुदावन्द खुदा ! मैं क्यों कर जानूँ कि मैं उसका वारिस हूँगा?"

⁹उसने उस से कहा कि मेरे लिए तीन साल की एक बछिया, और तीन साल की एक बकरी, और तीन साल का एक मेंढा, और एक कुमरी, और एक कबूतर का बच्चा ले।¹⁰उसने उन सभी को लिया और उनके बीच से दो टुकड़े किया, और हर टुकड़े को उसके साथ के दूसरे टुकड़े के सामने रखवा, मगर परिन्दों के टुकड़े न किए।¹¹तब शिकारी परिन्दे उन टुकड़ों पर झपटने लगे पर अब्राहम उनकी हँकता रहा।

¹²सूरज डूबते वक़्त अब्राहम पर गहरी नींद ग़ालिब हुई और देखो, एक बड़ा ख़तरनाक अँधेरा उस पर छा गया।¹³और उसने अब्राहम से कहा, "यक़ीन जान कि तेरी नसल के लोग ऐसे मुल्क में जो उनका नहीं परदेसी होंगे और वहाँ के लोगों की गुलामी करेंगे और वह चार सौ साल तक उनको दुख देंगे।

¹⁴लेकिन मैं उस कौम की 'अदालत करूँगा जिसकी वह गुलामी करेंगे, और बा'द में वह बड़ी दौलत लेकर वहाँ से निकल आएँगे।"¹⁵और तू सही सलामत अपने बाप -दादा से जा मिलेगा और बहुत ही बुढ़ापे में दफ़न होगा।¹⁶और वह चौथी पुश्त में यहाँ लौट आएँगे, क्योंकि अमोरियों के गुनाह अब तक पूरे नहीं हुए।"

¹⁷और जब सूरज डूबा और अन्धेरा छा गया, तो एक तनूर जिसमें से धुंआ उठता था दिखाई दिया, और एक जलती मश'अल उन टुकड़ों के बीच में से होकर गुज़री।¹⁸उसी रोज़ खुदावन्द ने अब्राहम से 'अहद किया और फ़रमाया, "यह मुल्क दरिया-ए- मिस्र से लेकर उस बड़े दरिया या'नी दरयाए-फ़ुरात तक,¹⁹कैनियों और क़नीज़ियों और क़दमूनियों,²⁰और हित्तियों ~और फ़रिज़ियों और रिफ़ाईम,²¹और अमोरियों और कना'नियों और ज़िरजासियों और यबुसियों समेत मैंने तेरी औलाद को दिया है।

Chapter 16

¹और अब्राहम की बीवी सारय ~के कोई औलाद न हुई। उसकी एक मिस्री लौंडी थी जिसका नाम हाजिरा था।²और सारय ने अब्राहम से कहा कि देख, खुदावन्द ने मुझे तो औलाद से महरूम रखखा है, इसलिए तू मेरी लौंडी के पास जा शायद उससे मेरा घर आबा'द हो। और अब्राहम ने सारय की बात मानी।³और अब्राहम को मुल्क-ए-कना'न में रहते दस साल हो गए थे जब उसकी बीवी सारय ने अपनी मिस्री लौंडी उसे दी कि उसकी बीवी बने।⁴और वह हाजिरा के पास गया और वह हामिला हुई। और जब उसे मा'लूम हुआ कि वह हामिला हो गई तो अपनी बीवी को हक़ीर जानने लगी।

⁵तब सारय ने अब्राहम से कहा, "जो जुल्म मुझ पर हुआ वह तेरी गर्दन पर है। मैंने अपनी लौंडी तेरे आग़ोश में दी और अब जो उसने आपको हामिला देखा तो मैं उसकी नज़रों में हक़ीर हो गई; इसलिए खुदावन्द मेरे और तेरे बीच इंसाफ़ करे।"⁶अब्राहम ने सारय से कहा कि तेरी लौंडी तेरे हाथ में है; जो तुझे भला दिखाई दे वैसे ही उसके साथ कर।" तब सारय उस पर सख़्ती करने लगी और वह उसके पास से भाग गई।

⁷और वह खुदावन्द के फ़रिश्ता को वीराने में पानी के एक चश्मे के पास मिली। यह वही चश्मा है जो शोर की राह पर है।⁸और उसने कहा, "ऐ सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आई और किधर जाती है?" उसने कहा कि मैं अपनी बीबी सारय के पास से भाग आई हूँ।

⁹खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा कि तू अपनी बीबी के पास लौट जा और अपने को उसके कब्ज़े में कर दे।¹⁰और खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा, कि मैं तेरी औलाद को बहुत बढ़ाऊँगा यहाँ तक कि कसरत की वजह से उसका शुमार न हो सकेगा।

¹¹और खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा कि तू हामिला है और तेरा बेटा होगा, उसका नाम इस्मा'ईल रखना इसलिए कि खुदावन्द ने तेरा दुख सुन लिया।¹²वह गोरखर की तरह आज़ाद मर्द होगा, उसका हाथ सबके खिलाफ़ और सबके हाथ उसके खिलाफ़ होंगे और वह अपने सब भाइयों के सामने बसा रहेगा।

¹³और हाजिरा ने खुदावन्द का जिसने उससे बातें कीं, अताएल-रोई नाम रखखा या'नी ऐ खुदा तू बसीर है; क्योंकि उसने कहा, "क्या मैंने यहाँ भी अपने देखने वाले को जाते हुए देखा?"¹⁴इसी वजह से उस कुएँ का नाम बैरलही रोई पड़ गया; वह क़ादिस और बरिद के बीच है।

¹⁵और अब्राहम से हाजिरा के एक बेटा हुआ, और अब्राहम ने अपने उस बेटे का नाम जो हाजिरा से पैदा हुआ इस्मा'ईल रखखा।¹⁶और जब अब्राहम से हाजिरा के इस्मा'ईल पैदा हुआ तब अब्राहम छियासी साल का था।

Chapter 17

¹जब अब्राहम निनानवे साल का हुआ तब खुदावन्द अब्राहम को नज़र आया और उससे कहा कि मैं खुदा-ए-क्लादिर हूँ; तू मेरे सामने में चल और कामिल हो।² और मैं अपने और तेरे बीच 'अहद बाँधूंगा और तुझे बहुत ज़्यादा बढ़ाऊँगा।

³तब अब्राहम सिज्दे में हो गया और खुदा ने उससे हम-कलाम होकर फ़रमाया | "कि देख मेरा 'अहद तेरे साथ है और तू बहुत क़ौमों का बाप होगा।⁴ और तेरा नाम फिर अब्राहम नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम होगा, क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप ठहरा दिया है।⁵ और मैं तुझे बहुत कामयाब करूँगा और क़ौमों तेरी नसल से होंगी और बादशाह तेरी औलाद में से निकलेंगे।

⁷और मैं अपने और तेरे बीच, और तेरे बा'द तेरी नसल के बीच उनकी सब नसलो के लिए अपना 'अहद जो अबदी 'अहद होगा, बाँधूंगा ताकि मैं तेरा और तेरे बा'द तेरी नसल का खुदा रहूँ।⁸ और मैं तुझ को और तेरे बा'द तेरी नसल को, कना'न का तमाम मुल्क जिसमें तू परदेसी है ऐसा दूँगा, कि वह हमेशा की मिल्कियत हो जाए; और मैं उनका खुदा हूँगा।

⁹फिर खुदा ने इब्राहीम से कहा ~कि तू मेरे 'अहद को मानना और तेरे बा'द तेरी नसल पुश्त दर पुश्त उसे माने।¹⁰ और मेरा 'अहद जो मेरे और तेरे बीच और तेरे बा'द तेरी नसल के बीच है, और जिसे तुम मानोगे वह यह है: कि तुम में से हर एक फ़र्ज़न्द-ए-नरीना का खतना किया जाए।¹¹ और तुम अपने बदन की खलड़ी का खतना किया करना, और यह उस 'अहद का निशान होगा जो मेरे और तुम्हारे बीच है।

¹²तुम्हारे यहाँ नसल -दर-नसल हर लड़के का खतना, जब वह आठ रोज़ का हो, किया जाए; चाहे वह घर में पैदा हो चाहे उसे किसी परदेसी से खरीदा हो जो तेरी नसल से नहीं।¹³ लाज़िम है कि तेरे खानाज़ाद और तेरे गुलाम का खतना किया जाए, और मेरा 'अहद तुम्हारे जिस्म में अबदी 'अहद होगा।¹⁴ और वह फ़र्ज़न्द-ए-नरीना जिसका खतना न हुआ हो, अपने लोगों में से काट डाला जाए क्योंकि ~उसने मेरा 'अहद तोड़ा।

¹⁵और खुदा ने इब्राहीम से कहा, कि सारय जो तेरी बीवी है इसलिए उसको सारय न पुकारना, उसका नाम सारा होगा।¹⁶ और मैं उसे बरकत दूँगा और उससे भी तुझे एक बेटा बख़्शूँगा; यक़ीनन मैं उसे बरकत दूँगा कि ~क़ौमों उसकी नसल से होंगी और 'आलम के बादशाह उससे पैदा होंगे।"

¹⁷तब इब्राहीम सिज्दे में हुआ और हँस कर दिल में कहने लगा कि क्या सौ साल के बूढ़े से कोई बच्चा होगा, और क्या सारा के जो नव्वे साल की है औलाद होगी?¹⁸ और इब्राहीम ने खुदा से कहा कि काश इस्मा'ईल ही तेरे सामने ज़िन्दा रहे,

¹⁹तब खुदा ने फ़रमाया, कि बेशक तेरी बीवी सारा के तुझ से बेटा होगा, तू उसका नाम इस्हाक़ रखना; और मैं उससे और फिर उसकी औलाद से अपना 'अहद जो अबदी 'अहद है बाँधूँगा।²⁰ और इस्मा'ईल के हक़ में भी मैंने तेरी दु'आ सुनी; देख मैं उसे बरकत दूँगा और उसे कामयाब करूँगा और उसे बहुत बढ़ाऊँगा; और उससे बारह सरदार पैदा होंगे और मैं उसे बड़ी क़ौम बनाऊँगा।²¹ लेकिन मैं अपना 'अहद इस्हाक़ से बाँधूँगा जो अगले साल इसी वक़्त-ए-मुकर्रर पर सारा से पैदा होगा।"

²²और जब खुदा इब्राहीम से बातें कर चुका तो उसके पास से ऊपर चला गया।²³ तब इब्राहीम ने अपने बेटे इस्मा'ईल की और सब खानाज़ादों और अपने सब गुलामों को या'नी अपने घर के सब आदमियों को लिया और उसी दिन खुदा के हुक्म के मुताबिक़ उन का खतना किया।

²⁴इब्राहीम निनानवे साल का था जब उसका खतना हुआ।²⁵ और जब उसके बेटे इस्मा'ईल का खतना हुआ तो वह तेरह साल का था।²⁶ इब्राहीम और उसके बेटे इस्मा'ईल का खतना एक ही दिन हुआ।²⁷ और उसके घर के सब आदमियों का खतना, खानाज़ादों और उनका भी जो ~परदेसियों से खरीदे गए थे, उसके साथ हुआ।

Chapter 18

¹फिर खुदावन्द ममरे के बलूतों में उसे नज़र आया और वह दिन को गर्मी के वक़्त अपने खेमे के दरवाज़े पर बैठा था।²और उसने अपनी आँखें उठा कर नज़र की और क्या देखता है कि तीन मर्द उसके सामने खड़े हैं। वह उनको देख कर खेमे के दरवाज़े से उनसे मिलने को दौड़ा और ज़मीन तक झुका।

³और कहने लगा कि ऐ मेरे खुदावन्द, अगर मुझ पर आपने करम की नज़र की है तो अपने खादिम के पास से चले न जाएँ।⁴बल्कि थोड़ा सा पानी लाया जाए, और आप अपने पाँव धो कर उस दरख्त के नीचे आराम करें।⁵मैं कुछ रोटी लाता हूँ, आप ताज़ा-दम हो जाएँ; तब आगे बढ़ें क्योंकि आप इसी लिए अपने खादिम के यहाँ आए हैं उन्होंने कहा, "जैसा तूने कहा है, वैसा ही कर।"

⁶और इब्राहीम डेरे में सारा के पास दौड़ा गया और कहा, कि तीन पैमाना बारीक आटा जल्द ले और उसे गूंध कर फुल्के बना।⁷और इब्राहीम गल्ले की तरफ़ दौड़ा और एक मोटा ताज़ा बछड़ा लाकर एक जवान को दिया, और उस ने जल्दी-जल्दी उसे तैयार किया।⁸फिर उसने मक्खन और दूध और उस बछड़े को जो उस ने पकवाया था, लेकर उनके सामने रखवा; और खुद उनके पास दरख्त के नीचे खड़ा रहा और उन्होंने खाया।

⁹फिर उन्होंने उससे पूछा कि तेरी बीवी सारा कहाँ है? उसने कहा, "वह डेरे में है।"¹⁰तब उसने कहा, "मैं फिर मौसम-ए-बहार में तेरे पास आऊँगा, और देख तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।" उसके पीछे डेरे का दरवाज़ा था, सारा वहाँ से सुन रही थी।

¹¹और इब्राहीम और सारा ज़ईफ़ और बड़ी 'उम्र के थे, और सारा की वह हालत नहीं रही थी जो 'औरतों की होती है।¹²तब सारा ने अपने दिल में हँस कर कहा, "क्या इस क्रदर 'उम्र-दराज़ होने पर भी मेरे लिए खुशी हो सकती है, जबकि मेरा शौहर भी बूढ़ा है?"

¹³फिर खुदावन्द ने इब्राहीम से कहा कि सारा क्यों यह कह कर हँसी की क्या मेरे जो ऐसी बुढ़िया हो गई हूँ वाकई बेटा होगा?¹⁴क्या खुदावन्द के नज़दीक कोई बात मुश्किल है? मौसम-ए-बहार में मुक़र्रर वक़्त पर मैं तेरे पास फिर आऊँगा और सारा के बेटा होगा।¹⁵तब सारा इन्कार कर गई, कि मैं नहीं हँसी।" क्योंकि वह डरती थी, लेकिन उसने कहा, "नहीं, तू ज़रूर हँसी थी।"

¹⁶तब वह मर्द वहाँ से उठे और उन्होंने सदूम का रुख किया, और इब्राहीम उनको रुखसत करने को उनके साथ हो लिया।¹⁷और खुदावन्द ने कहा कि जो कुछ मैं करने को हूँ, क्या उसे इब्राहीम से छिपाए रखूँ?¹⁸इब्राहीम से तो यक़ीनन एक बड़ी और ज़बरदस्त क्रौम पैदा होगी, और ज़मीन की सब क्रौमों उसके वसीले से बरकत पाएँगी।¹⁹क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने बेटों और घराने को जो उसके पीछे रह जाएँगे, वसीयत करेगा कि ~वह खुदावन्द की राह में क़ायम रह कर 'अद्ल और इंसाफ़ करें; ताकि जो कुछ खुदावन्द ने इब्राहीम के हक़ में फ़रमाया है उसे पूरा करे।

²⁰फिर खुदावन्द ने फ़रमाया, "चूँकि सदूम और 'अमूरा का गुनाह बढ़ गया और उनका जुर्म निहायत संगीन हो गया है।²¹इसलिए मैं अब जाकर देखूँगा कि क्या उन्होंने सरासर वैसा ही किया है जैसा गुनाह मेरे कान तक पहुँचा है, और अगर नहीं किया तो मैं मा'लूम कर लूँगा।"

²²इसलिए वह मर्द वहाँ से मुड़े और सदूम की तरफ़ चले, लेकिन इब्राहीम खुदावन्द के सामने खड़ा ही रहा।²³तब इब्राहीम ने नज़दीक जा कर कहा, "क्या तू नेक को बद के साथ हलाक करेगा?"

²⁴शायद उस शहर में पचास रास्तबाज़ हों; क्या तू उसे हलाक करेगा और उन पचास रास्तबाज़ों की खातिर जो उसमें हों उस मक़ाम को न छोड़ेगा?²⁵ऐसा करना तुझ से दूर है कि नेक को बद के साथ मार डाले और नेक बद के बराबर हो जाएँ। ये तुझ से दूर है। क्या तमाम दुनिया का इंसाफ़ करने वाला इंसाफ़ न करेगा?"²⁶और खुदावन्द ने फ़रमाया, कि अगर मुझे सदूम में शहर के अन्दर पचास रास्तबाज़ मिलें, तो मैं उनकी खातिर उस मक़ाम को छोड़ दूँगा।"

²⁷तब इब्राहीम ने जवाब दिया और कहा, कि देखिए! मैंने खुदावन्द से बात करने की हिम्मत की, अगर चे मैं मिट्टी और राख हूँ।²⁸शायद पचास रास्तबाज़ों में पाँच कम हों; क्या उन पाँच की कमी की वजह से तू तमाम शहर को बर्बाद करेगा? उस ने कहा अगर मुझे वहाँ पैतालीस मिलें तो मैं उसे बर्बाद नहीं करूँगा।"

²⁹फिर उसने उससे कहा कि शायद वहाँ चालीस मिलें। तब उसने कहा कि मैं उन चालीस की खातिर भी यह नहीं करूँगा।³⁰फिर उसने कहा, "खुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं कुछ और 'अर्ज़ करूँ। शायद वहाँ तीस मिलें।" उसने कहा, "अगर मुझे वहाँ तीस भी मिलें तो भी ऐसा नहीं करूँगा।"³¹फिर उसने कहा, "देखिए! मैंने खुदावन्द से बात करने की हिम्मत की; शायद वहाँ बीस मिलें।" उसने कहा, 'मैं बीस के लिए भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।"

³²तब उसने कहा, "खुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं एक बार और कुछ 'अर्ज़ करूँ; शायद वहाँ दस मिलें।" उसने कहा, "मैं दस के लिए भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।"³³जब खुदावन्द इब्राहीम से बातें कर चुका तो चला गया और इब्राहीम अपने मकान को लौटा।

Chapter 19

¹और वह दोनों फ़रिश्ता शाम को सदूम में आए और लूत सदूम के फाटक पर बैठा था। और लूत उनको देख कर उनके इस्तक्रबाल के लिए उठा और ज़मीन तक झुका,² और कहा, "ऐ मेरे खुदावन्द, अपने खादिम के घर तशरीफ़ ले चलिए और रात भर आराम कीजिए और अपने पाँव धोइये और सुबह उठ कर अपनी राह लीजिए।" और उन्होंने कहा, "नहीं, हम चौक ही में रात काट लेंगे।"³लेकिन जब वह बहुत बजिद् हुआ तो वह उसके साथ चल कर उसके घर में आए; और उसने उनके लिए खाना तैयार की और बेखमीरी रोटी पकाई; और उन्होंने खाया।

⁴और इससे पहले कि वह आराम करने के लिए लेटें सदूम शहर के आदमियों ने, जवान से लेकर बूढ़े तक सब लोगों ने, हर तरफ़ से उस घर को घेर लिया।⁵और उन्होंने लूत को पुकार कर उससे कहा -कि वह आदमी जो आज रात तेरे यहाँ आए, कहाँ हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ ताकि हम उनसे सोहबत करें।

⁶तब लूत निकल कर उनके पास दरवाज़ा ~पर गया और अपने पीछे किवाड़ बन्द कर दिया।⁷और कहा कि ऐ भाइयो! ऐसी बदी तो न करो।⁸देखो! मेरी दो बेटियाँ हैं जो आदमी से वाकिफ़ नहीं; मर्ज़ी हो तो मैं उनको तुम्हारे पास ले आऊँ और जो तुम को भला मा'लूम हो उनसे करो, मगर इन आदमियों से कुछ न कहना क्योंकि वह इसलिए मेरी पनाह में आए हैं।"

⁹उन्होंने कहा, "यहाँ से हट जा!" फिर कहने लगे, कि यह शख्स हमारे बीच क्रयाम करने आया था और अब हुक्मत जताता है; इसलिए हम तेरे साथ उनसे ज़्यादा ~बद सलूकी करेंगे।" तब वह ~उस आदमी या'नी लूत पर पिल पड़े और नज़दीक आए ताकि किवाड़ तोड़ डालें।

¹⁰लेकिन उन आदमियों ने अपना हाथ बढ़ा कर लूत को अपने पास घर में खींच लिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया।¹¹और उन आदमियों को जो घर के दरवाज़े पर थे क्या छोटे क्या बड़े, अन्धा कर दिया; तब वह दरवाज़ा ढूँडते-ढूँडते थक गए।

¹²~तब उन आदमियों ने लूत से कहा, "क्या यहाँ तेरा और कोई है? दामाद और अपने बेटों और बेटियों और जो कोई तेरा इस शहर में हो, सबको इस मक़ाम से बाहर निकाल ले जा।"¹³क्योंकि हम इस मक़ाम को बर्बाद करेंगे, इसलिए कि उनका गुनाह खुदावन्द के सामने बहुत बुलन्द हुआ है और खुदावन्द ने उसे बर्बाद करने को हमें भेजा है।"

¹⁴तब लूत ने बाहर जाकर अपने दामादों से जिन्होंने उसकी बेटियाँ ब्याही थीं बातें कीं और कहा कि उठो और इस मक़ाम से निकलो क्योंकि खुदावन्द इस शहर को बर्बाद करेगा।" लेकिन वह अपने दामादों की नज़र में मज़ाक़ सा मा'लूम हुआ।¹⁵जब सुबह हुई तो फ़रिश्तों ने लूत से जल्दी कराई और कहा कि उठ अपनी बीवी और अपनी दोनों बेटियों को जो यहाँ हैं ले जा; ऐसा न हो कि तू भी इस शहर की बदी में गिरफ़्तार होकर हलाक हो जाए।

¹⁶मगर उसने देर लगाई तो उन आदमियों ने उसका और उसकी बीवी और उसकी दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा, क्योंकि ~खुदावन्द की मेहरबानी उस पर हुई और उसे निकाल कर शहर से बाहर कर दिया।¹⁷और यूँ हुआ कि जब वह उनको बाहर निकाल लाए तो उसने कहा, "अपनी जान बचाने को भाग; न तो पीछे मुड़ कर देखना न कहीं मैदान में ठहरना; उस पहाड़ को चला जा, ऐसा न हो कि तू हलाक हो जाए।"

¹⁸और लूत ने उनसे कहा कि ऐ मेरे खुदावन्द, ऐसा न कर।¹⁹देख, तूने अपने खादिम पर करम की नज़र की है और ऐसा बड़ा फ़ज़ल किया कि मेरी जान बचाई; मैं पहाड़ तक जा नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो कि मुझ पर मुसीबत आ पड़े और मैं मर जाऊँ।²⁰देख, यह शहर ऐसा नज़दीक है कि वहाँ भाग सकता हूँ और यह~छोटा भी है। इजाज़त हो तो मैं वहाँ चला जाऊँ, वह छोटा सा भी है और मेरी जान बच जाएगी।

²¹उसने उससे कहा कि देख, मैं इस बात में भी तेरा लिहाज़ करता हूँ कि इस शहर को जिसका तू ने ज़िक्र किया, बर्बाद नहीं करूँगा।²²जल्दी कर और वहाँ चला जा, क्योंकि मैं कुछ नहीं कर सकता जब तक कि तू वहाँ पहुँच न जाए। इसीलिए उस शहर का नाम जुग्र ~कहलाया।

²³और ज़मीन पर धूप निकल चुकी थी, जब लूत जुग्र में दाखिल हुआ।²⁴तब खुदावन्द ने अपनी तरफ़ से सदूम और 'अमूरा पर गन्धक और आग आसमान से बरसाई,²⁵ और उसने उन शहरों को और उस सारी तराई को और उन शहरों के सब रहने वालों को और सब कुछ जो ज़मीन से उगा था बर्बाद किया।

²⁶मगर उसकी बीवी ने उसके पीछे से मुड़ कर देखा और वह ~नमक का सुतून बन गई।²⁷और इब्राहीम सुबह सवेरे उठ कर उस जगह गया जहाँ वह खुदावन्द के सामने खड़ा हुआ था;²⁸ और उसने सदूम और 'अमूरा और उस तराई की सारी ज़मीन की तरफ़ नज़र की, और क्या देखता है कि ज़मीन पर से धुवाँ ऐसा उठ रहा है जैसे भट्टी का धुवाँ।

²⁹और यूँ हुआ कि जब खुदा ने उस तराई के शहरों को बर्बाद किया, तो खुदा ने इब्राहीम को याद किया और उन शहरों की जहाँ लूत रहता था, बर्बाद करते वक़्त लूत को उस बला से बचाया।

³⁰और लूत~जुग्रसे निकल कर पहाड़ पर जा बसा और उसकी दोनों बेटियाँ उसके साथ थीं; क्योंकि उसे जुग्र में बसते~डर लगा, और वह और उसकी दोनों बेटियाँ एक ग़ार में रहने लगे।

³¹तब पहलौठी ने छोटी से कहा, कि हमारा बाप बूढ़ा है और ज़मीन पर कोई आदमी नहीं जो दुनिया के दस्तूर के मुताबिक़ हमारे पास आए।³²आओ, हम अपने बाप को मय पिलाएँ और उससे हम-आगोश हों, ताकि अपने बाप से नसल बाक़ी रखें।³³इसलिए उन्होंने उसी रात अपने बाप को मय पिलाई और पहलौठी अन्दर गई और अपने बाप से हम-आगोश हुई, लेकिन उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई।

³⁴और दूसरे दिन यूँ हुआ कि पहलौठी ने छोटी से कहा कि देख, कल रात को मैं अपने बाप से हम-आगोश हुई, आओ, आज रात भी उसको मय पिलाएँ और तू भी जा कर उससे हमआगोश हो, ताकि हम अपने बाप से नसल बाक़ी रखें।"³⁵फिर उस रात भी उन्होंने अपने बाप को मय पिलाई और छोटी गई और उससे हम-आगोश हुई, लेकिन उसने न जाना कि वह ~कब लेटी और कब उठ गई।

³⁶फिर लूत की दोनों बेटियाँ अपने बाप से हामिला हुई।³⁷और बड़ी के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम मोआब रखवा; वही मोआबियों का बाप है जो अब तक मौजूद हैं।³⁸और छोटी के भी एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम बिन-'अम्मी रखवा; वही बनी-'अम्मोन का बाप है जो अब तक मौजूद हैं।

Chapter 20

¹और इब्राहीम वहाँ से दख्खिन के मुल्क की तरफ़ चला और क़ादिस और शोर के बीच ठहरा और जिरार में क़याम किया।²और इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा के हक़ में कहा, कि वह मेरी बहन है, "और जिरार के बादशाह अबीमलिक ने सारा को बुलवा लिया।³लेकिन रात को ख़ुदा अबीमलिक के पास ख़्वाब में आया और उसे कहा कि देख, तू उस 'औरत की वजह से जिसे तूने लिया है हलाक होगा क्योंकि वह शौहर वाली है।"

⁴लेकिन अबीमलिक ने उससे सोहबत नहीं की थी; तब उसने कहा, "ऐ ख़ुदावन्द, क्या तू सादिक़ क़ौम को भी मारेगा?⁵क्या उसने ख़ुद मुझ से नहीं कहा, कि यह मेरी बहन है?" और वह ख़ुद भी यही कहती थी, कि वह मेरा भाई है; मैंने तो अपने सच्चे दिल और पाकीज़ा हाथों से यह किया।

⁶और ख़ुदा ने उसे ख़्वाब में कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि तूने अपने सच्चे दिल से यह किया, और मैंने भी तुझे रोका कि तू मेरा गुनाह न करे; इसी लिए मैंने तुझे उसको छूने न दिया।⁷अब तू उस आदमी की बीवी को वापस कर दे; क्योंकि वह ~नबी है और वह तेरे लिए दु'आ करेगा और तू ज़िन्दा रहेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस न करे तो जान ले कि तू भी और जितने तेरे हैं सब ज़रूर हलाक होंगे।"

⁸तब अबीमलिक ने सुबह सवेरे उठ कर अपने सब नौकरों को बुलाया और उनको ये सब बातें कह सुनाई, तब वह लोग बहुत डर गए।⁹और अबीमलिक ने इब्राहीम को बुला कर उससे कहा, कि तूने हम से यह क्या किया? और मुझ से तेरा क्या कुसूर हुआ कि तू मुझ पर और मेरी बादशाही पर एक गुनाह-ए-अज़ीम लाया? तूने मुझ से वह काम किए जिनका करना मुनासिब न था।

¹⁰अबीमलिक ने इब्राहीम से यह~भी कहा कि तूने क्या समझ कर ये बात की?¹¹इब्राहीम ने कहा, कि मेरा ख़याल था कि ख़ुदा का ख़ौफ़ तो इस जगह हरगिज़ न होगा, और वह ~मुझे मेरी बीवी की वजह से मार डालेंगे।¹²और फ़िल-हक़ीक़त वह मेरी बहन भी है, क्योंकि वह मेरे बाप की बेटी है अगरचे मेरी माँ की बेटी नहीं; फिर वह मेरी बीवी हुई।

¹³और जब ख़ुदा ने मेरे बाप के घर से मुझे आवारा किया तो मैंने इससे कहा कि मुझ पर यह तेरी मेहरबानी होगी कि जहाँ कहीं हम जाएँ तू मेरे हक़ में यही कहना कि यह मेरा भाई है।¹⁴तब अबीमलिक ने भेड़ बकरियाँ और गायें बैल और गुलाम और लौंडियाँ इब्राहीम को दीं, और उसकी बीवी सारा को भी उसे वापस कर दिया।

¹⁵और अबीमलिक ने कहा कि देख, मेरा मुल्क तेरे सामने है, जहाँ जी चाहे रह।¹⁶और उसने सारा से कहा कि देख, मैंने तेरे भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के दिए हैं, वह उन सब के सामने जो तेरे साथ हैं तेरे लिए आँख का पर्दा है, और सब के सामने तेरी बड़ाई हो गी।

¹⁷तब इब्राहीम ने ख़ुदा से दु'आ की, और ख़ुदा ने अबीमलिक और उसकी बीवी और उसकी-लौंडियों की शिफ़ा बख़्शी ~और उनके औलाद होने लगी।¹⁸क्योंकि ख़ुदावन्द ने इब्राहीम की बीवी सारा की वजह से अबीमलिक के ख़ान्दान के सब रहम बन्द कर दिए थे।

Chapter 21

¹और खुदावन्द ने जैसा उसने फ़रमाया था, सारा पर नज़र की और उसने अपने वादे के मुताबिक सारा से किया।²तब सारा हामिला हुई और इब्राहीम के लिए उसके बुढ़ापे में उसी मुकर्रर वक़्त पर जिसका ज़िक्र खुदा ने उससे किया था, उसके बेटा हुआ।³और इब्राहीम ने अपने बेटे का नाम जो उससे, सारा के पैदा हुआ इस्हाक रखवा।⁴और इब्राहीम ने खुदा के हुक्म के मुताबिक अपने बेटे इस्हाक का ख़तना, उस वक़्त किया जब वह आठ दिन का हुआ।

⁵और जब उसका बेटा इस्हाक उससे पैदा हुआ तो इब्राहीम सौ साल का था।⁶और सारा ने कहा, कि खुदा ने मुझे हँसाया और सब सुनने वाले मेरे साथ हँसेंगे।

⁷और यह भी कहा कि भला कोई इब्राहीम से कह सकता था कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी? क्योंकि उससे उसके बुढ़ापे में मेरे एक बेटा हुआ।

⁸और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया और इस्हाक के दूध छुड़ाने के दिन इब्राहीम ने बड़ी दावत की।⁹और सारा ने देखा कि हाजिरा मिस्री का बेटा जो उसके इब्राहीम से हुआ था, ठट्टे मारता है।

¹⁰तब उसने इब्राहीम से कहा कि इस लौंडी को और उसके बेटे को निकाल दे, क्योंकि इस लौंडी का बेटा मेरे बेटे इस्हाक के साथ वारिस न होगा।¹¹लेकिन इब्राहीम को उसके बेटे के ज़रिए यह बात निहायत बुरी मा'लूम हुई।

¹²और खुदा ने इब्राहीम से कहा कि तुझे इस लड़के और अपनी लौंडी की वजह से बुरा न लगे; जो कुछ सारा तुझ से कहती है तू उसकी बात मान क्योंकि इस्हाक से तेरी नसल का नाम चलेगा।¹³और इस लौंडी के बेटे से भी मैं एक क़ौम पैदा करूँगा, इसलिए कि वह तेरी नसल है।

¹⁴तब इब्राहीम ने सुबह सवेरे उठ कर रोटी और पानी की एक मश्क ली और उसे हाजिरा को दिया, बल्कि उसे उसके कन्धे पर रख दिया और लड़के को भी उसके हवाले करके उसे रुखसत कर दिया। इसलिए वह चली गई और बैरसबा' के वीराने में आवारा फिरने लगी।¹⁵और जब मश्क का पानी खत्म हो गया तो उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे डाल दिया।¹⁶और खुद उसके सामने एक टप्पे के किनारे पर दूर जा कर बैठी और कहने लगी कि मैं इस लड़के का मरना तो न देखूँ। इसलिए वह उसके सामने बैठ गई और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

¹⁷और खुदा ने उस लड़के की आवाज़ सुनी और खुदा के फ़रिश्ता ने आसमान से हाजिरा को पुकारा और उससे कहा, "ऐ हाजिरा, तुझ को क्या हुआ? मत डर, क्योंकि खुदा ने उस जगह से जहाँ लड़का पड़ा है उसकी आवाज़ सुन ली है।¹⁸उठ, और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से संभाल; क्योंकि मैं उसको एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"

¹⁹फिर खुदा ने उसकी आँखें खोलीं और उसने पानी का एक कुआँ देखा, और जाकर मश्क को पानी से भर लिया और लड़के को पिलाया।²⁰और खुदा उस लड़के के साथ था और वह बढ़ा हुआ और वीराने में रहने लगा और तीरंदाज़ बना।²¹और वह फ़ारान के वीराने में रहता था, और उसकी माँ ने मुल्क-ए-मिस्र से उसके लिए बीवी ली।

²²फिर उस वक़्त यूँ हुआ, कि अबीमलिक और उसके लश्कर के सरदार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा कि हर काम में जो तू करता है खुदा तेरे साथ है।²³इसलिए तू अब मुझ से खुदा की क़सम खा, कि तू न मुझ से न मेरे बेटे से और न मेरे पोते से दगा करेगा; बल्कि जो मेहरबानी मैंने तुझ पर की है वैसे ही तू भी मुझ पर और इस मुल्क पर, जिसमें तूने क़याम किया है, करेगा।²⁴तब इब्राहीम ने कहा, "मैं क़सम खाऊँगा।"

²⁵और इब्राहीम ने पानी के एक कुएँ की वजह से, जिसे अबीमलिक के नौकरों ने ज़बरदस्ती छीन लिया था, अबीमलिक को झिड़का।²⁶अबीमलिक ने कहा, "मुझे ख़बर नहीं कि किसने यह काम किया, और तूने भी मुझे नहीं बताया, न मैंने आज से पहले इसके बारे में कुछ सुना।"²⁷फिर इब्राहीम ने भेड़ बकरियाँ और गाय-बैल लेकर अबीमलिक को दिए और दोनों ने आपस में 'अहद किया।

²⁸इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को लेकर अलग रखवा।²⁹और अबीमलिक ने इब्राहीम से कहा कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को अलग रखने से तेरा मतलब क्या है?"³⁰उसने कहा, कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को तू मेरे हाथ से ले ताकि वह मेरे गवाह हों कि मैंने यह कुआँ खोदा।

³¹इसीलिए उसने उस मक़ाम का नाम बैरसबा' रखवा, क्योंकि वहीं उन दोनों ने क़सम खाई।³²तब उन्होंने बैरसबा' में 'अहद किया, तब अबीमलिक और उसके लश्कर का सरदार फ़ीकुल दोनों उठ खड़े हुए और फ़िलिस्तिनियों के मुल्क को लौट गए।

³³तब इब्राहीम ने बैरसबा' में झाऊ का एक दरख़्त लगाया और वहाँ उसने खुदावन्द से जो अबदी खुदा है दु'आ की।³⁴और इब्राहीम बहुत दिनों तक फ़िलिस्तिनियों के मुल्क में रहा।

Chapter 22

¹—इन बातों के बा'द यूँ हुआ कि ख़ुदा ने इब्राहीम को आजमाया और उसे कहा, "ऐ इब्राहीम!" उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।"²तब उसने कहा कि तू अपने बेटे इस्हाक़ को जो तेरा इकलौता है और जिसे तू प्यार करता है, साथ लेकर मोरियाह के मुल्क में जा और वहाँ उसे पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं तुझे बताऊँगा, सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ा।³तब इब्राहीम ने सुबह सवेरे उठ कर अपने गधे पर चार जामा कसा और अपने साथ दो जवानों और अपने बेटे इस्हाक़ को लिया, और सोख़्तनी कुर्बानी के लिए लकड़ियाँ चिरी और उठ कर उस जगह को जो ख़ुदा ने उसे बताई थी रवाना हुआ।

⁴तीसरे दिन इब्राहीम ने निगाह की और उस जगह को दूर से देखा।⁵तब इब्राहीम ने अपने जवानों से कहा, "तुम यहीं गधे के पास ठहरो, मैं और यह लड़का दोनों ज़रा वहाँ तक जाते हैं, और सिज्दा करके फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे।"⁶और इब्राहीम ने सोख़्तनी कुर्बानी की लकड़ियाँ लेकर अपने बेटे इस्हाक़ पर रखीं, और आग और छुरी अपने हाथ में ली और दोनों इकट्ठे रवाना हुए।

⁷तब इस्हाक़ ने अपने बाप इब्राहीम से कहा, "ऐ बाप !" उसने जवाब दिया कि ऐ मेरे बेटे, मैं हाज़िर हूँ। उसने कहा, "देख, आग और लकड़ियाँ तो हैं, लेकिन सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बर्क़ा कहाँ है?"⁸इब्राहीम ने कहा, "ऐ मेरे बेटे ख़ुदा ख़ुद ही अपने लिए सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बर्क़ा मुहय्या कर लेगा।" तब वह दोनों आगे चलते गए।

⁹और उस जगह पहुँचे जो ख़ुदा ने बताई थी; वहाँ इब्राहीम ने कुर्बान गाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ चुनीं और अपने बेटे इस्हाक़ को बाँधा और उसे कुर्बानगाह पर लकड़ियों के ऊपर रखवा।¹⁰और इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी ली कि अपने बेटे को ज़बह करे।

¹¹तब ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता ने उसे आसमान से पुकारा, कि ऐ इब्राहीम, ऐ इब्राहीम!" उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।"¹²फिर उसने कहा कि तू अपना हाथ लड़के पर न चला और न उससे कुछ कर; क्योंकि मैं अब जान गया कि तू ख़ुदा से डरता है, इसलिए कि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है मुझ से दरेग न किया।"

¹³और इब्राहीम ने निगाह की और अपने पीछे एक मेंढा देखा जिसके सींग झाड़ी में अटके थे; तब इब्राहीम ने जाकर उस मेंढे को पकड़ा और अपने बेटे के बदले सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ाया।¹⁴और इब्राहीम ने उस मक़म का नाम यहोवा यरी रखवा। चुनौचे आज तक यह कहावत है कि ख़ुदावन्द के पहाड़ पर मुहय्या किया जाएगा।

¹⁵और ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने आसमान से दोबारा इब्राहीम को पुकारा और कहा कि |¹⁶ख़ुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि तूने यह काम किया कि अपने बेटे की भी जो तेरा इकलौता है दरेग न रखवा; इसलिए मैंने भी अपनी ज़ात की क्रसम खाई है कि¹⁷मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा, और तेरी नसल को बढ़ाते-बढ़ाते आसमान के तारों और समुन्दर के किनारे की रेत की तरह कर दूँगा, और तेरी औलाद अपने दुश्मनों के फाटक की मालिक होगी।

¹⁸और तेरी नसल के वसीले से ज़मीन की सब क्रौमें बरकत पाएँगी, क्योंकि तूने मेरी बात मानी।"¹⁹तब इब्राहीम अपने जवानों के पास लौट गया, और वह उठे और इकट्ठे बैरसबा' को गए; और इब्राहीम बैरसबा' में रहा।

²⁰इन बातों के बा'द यूँ हुआ कि इब्राहीम को यह ख़बर मिली, कि मिल्काह के भी तेरे भाई नहूर से बेटे हुए हैं।²¹या'नी ऊज़ जो उसका पहलौठा है, और उसका भाई बूज़ और क्रमूएल, अराम का बाप,²²और कसद और हज़ू और फ़िल्दास और इदलाफ़ और बैतूएल।

²³और बैतूएल से रिबका पैदा हुई। यह आठों इब्राहीम के भाई नहूर से मिल्काह के पैदा हुए।²⁴और उसकी बाँदी से भी जिसका नाम रूमा था, तिबख और जाहम और तखस और मा'का पैदा हुए।

Chapter 23

¹और सारा की 'उम्र एक सौ सताईस साल की हुई, सारा की ज़िन्दगी के इतने ही साल थे।'²और सारा ने करयतअरबा' में वफ़ात पाई। यह कना'न में है और हब्रून भी कहलाता है। और इब्राहीम सारा के लिए मातम और नौहा करने को वहाँ गया।

³फिर इब्राहीम मय्यत के पास से उठ कर बनी-हित से बातें करने लगा और कहा कि | 'मैं तुम्हारे बीच परदेसी और गरीब-उल-वतन हूँ। तुम अपने यहाँ क़ब्रिस्तान के लिए कोई मिलिकयत मुझे दो, ताकि मैं अपने मुर्दे को आँख के सामने से हटाकर दफ़न कर दूँ।

⁵तब बनीहित ने इब्राहीम को जवाब दिया कि | 'ऐ खुदावन्द, हमारी सुन: तू हमारे बीच ज़बरदस्त सरदार है। हमारी कब्रों में जो सबसे अच्छी हो उसमें तू अपने मुर्दे को दफ़न कर; हम में ऐसा कोई नहीं जो तुझ से अपनी क़ब्र का इन्कार करे, ताकि तू अपना मुर्दा दफ़न न कर सके।

⁷इब्राहीम ने उठ कर और बनी-हित के आगे, जो उस मुल्क के लोग हैं, आदाब बजा लाकर⁸ उनसे यूँ बातें की, कि अगर तुम्हारी मर्जी हो कि मैं अपने मुर्दे को आँख के सामने से हटाकर दफ़न कर दूँ, तो मेरी 'अज़ सुनो, और सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश करो,⁹ कि वह मक़फ़ीला के ग़ार को जो उसका है और उसके खेत के किनारे पर है, उसकी पूरी क़ीमत लेकर मुझे दे दे, ताकि वह क़ब्रिस्तान के लिए तुम्हारे बीच मेरी मिलिकयत हो जाए।

¹⁰और 'इफ़रोन बनी-हित के बीच बैठा था। तब 'इफ़रोन हिती ने बनी हित के सामने, उन सब लोगों के आमने सामने जो उसके शहर के दरवाज़े से दाख़िल होते थे इब्राहीम को जवाब दिया,¹¹ "ऐ मेरे खुदावन्द! यूँ न होगा, बल्कि मेरी सुन! मैं यह खेत तुझे देता हूँ, और वह ग़ार भी जो उसमें है तुझे दिए देता हूँ। यह मैं अपनी क़ौम के लोगों के सामने तुझे देता हूँ, तू अपने मुर्दे को दफ़न कर।"

¹²तब इब्राहीम उस मुल्क के लोगों के सामने झुका।¹³ फिर उसने उस मुल्क के लोगों के सुनते हुए 'इफ़रोन से कहा कि अगर तू देना ही चाहता है तो मेरी सुन, मैं तुझे उस खेत का दाम दूँगा; यह तू मुझ से ले ले, तो मैं अपने मुर्दे को वहाँ दफ़न करूँगा।

¹⁴इफ़रोन ने इब्राहीम को जवाब दिया,¹⁵ "ऐ मेरे खुदावन्द, मेरी बात सुन; यह ज़मीन चाँदी की चार सौ मिस्काल की है इसलिए मेरे और तेरे बीच यह है क्या? तब अपना मुर्दा दफ़न कर।"¹⁶ और इब्राहीम ने 'इफ़रोन की बात मान ली; इसलिए इब्राहीम ने इफ़रोन को उतनी ही चाँदी तौल कर दी, जितनी का ज़िक्र उसने बनी-हित के सामने किया था, या'नी चाँदी के चार सौ मिस्काल जो सौदागरों में राइज थी।

¹⁷इसलिए इफ़रोन का वह खेत जो मक़फ़ीला में ममरे के सामने था, और वह ग़ार जो उसमें था, और सब दरख़्त जो उस खेत में और उसके चारों तरफ़ की हदूद में थे,¹⁸ यह सब बनी-हित के और उन सबके आमने सामने जो उसके शहर के दरवाज़े से दाख़िल होते थे, इब्राहीम की ख़ास मिलिकयत क़रार दिए गए।

¹⁹इसके बाद इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मक़फ़ीला के खेत के ग़ार में, जो मुल्कए-कना'न में ममरे या'नी हब्रून के सामने है, दफ़न किया।²⁰ चुनाँचे वह खेत और वह ग़ार जो उसमें था, बनी-हित की तरफ़ से क़ब्रिस्तान के लिए इब्राहीम की मिलिकयत क़रार दिए गए।

Chapter 24

¹और इब्राहीम ज़ईफ़ और 'उम्र दराज़ हुआ और खुदावन्द ने सब बातों में इब्राहीम को बरकत बख़शी थी।²और इब्राहीम ने अपने घर के खास नौकर से, जो उसकी सब चीज़ों का मुख्तार था कहा, "तू अपना हाथ ज़रा मेरी रान के नीचे रख कि |³~मैं तुझ से खुदावन्द की जो ज़मीन-ओ-आसमान का खुदा है क्रसम लें, कि तू कना'नियों की बेटियों में से जिनमें मैं रहता हूँ, किसी को मेरे बेटे से नहीं ब्याहेगा।⁴बल्कि तू मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर मेरे बेटे इस्हाक़ के लिए बीवी लाएगा।

⁵उस नौकर ने उससे कहा, "शायद वह 'औरत इस मुल्क में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मैं तेरे बेटे को उस मुल्क में जहाँ से तू आया फिर ले जाऊँ?"⁶तब इब्राहीम ने उससे कहा खबरदार तू मेरे बेटे को वहाँ हरगिज़ न ले जाना।⁷खुदावन्द, आसमान का खुदा, जो मुझे मेरे बाप के घर और मेरी पैदाइशी जगह से निकाल लाया, और जिसने मुझ से बातें कीं और क्रसम खाकर मुझ से कहा, कि मैं तेरी नसल को यह मुल्क दूँगा; वही तेरे आगे-आगे अपना फ़िरिश्ता भेजेगा कि तू वहाँ से मेरे बेटे के लिए बीवी लाए।

⁸और अगर वह 'औरत तेरे साथ आना न चाहे, तो तू मेरी इस क्रसम से छूटा, लेकिन मेरे बेटे को हरगिज़ वहाँ न ले जाना।"⁹उस नौकर ने अपना हाथ अपने आक्का इब्राहीम की रान के नीचे रख कर उससे इस बात की क्रसम खाई।

¹⁰तब वह नौकर अपने आक्का के ऊँटों में से दस ऊँट लेकर रवाना हुआ, और उसके आक्का की अच्छी अच्छी चीज़ें उसके पास थीं, और वह उठकर मसोपतामिया में नहूर के शहर को गया।¹¹और शाम को जिस वक़्त 'औरतें पानी भरने आती हैं उस ने उस शहर के बाहर बावली के पास ऊँटों को बिठाया |

¹²और कहा, "ऐ खुदावन्द, मेरे आक्का इब्राहीम के खुदा, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ के आज तू मेरा काम बना दे, और मेरे आक्का इब्राहीम पर करम कर।"¹³देख, मैं पानी के चश्मा पर खड़ा हूँ और इस शहर के लोगों की बेटियाँ पानी भरने को आती हैं;¹⁴इसलिए ऐसा हो कि जिस लड़की से मैं कहूँ, कि तू ज़रा अपना घड़ा झुका दे तो मैं पानी पी लूँ और वह कहे, कि ले पी, और मैं तेरे ऊँटों को भी पिला दूँगी"; तो वह वही हो जिसे तूने अपने बन्दे इस्हाक़ के लिए ठहराया है; और इसी से मैं समझ लूँगा कि तूने मेरे आक्का पर करम किया है।"

¹⁵वह यह कह ही रहा था कि रिबका, जो इब्राहीम के भाई नहूर की बीवी मिल्काह के बेटे बैतूल से पैदा हुई थी, अपना घड़ा कंधे पर लिए हुए निकली।¹⁶वह लड़की निहायत खूबसूरत और कुंवारी, और मर्द से नवाकिफ़ थी। वह नीचे पानी के चश्मा के पास गई और अपना घड़ा भर कर ऊपर आई।

¹⁷तब वह नौकर उससे मिलने को दौड़ा और कहा कि ज़रा अपने घड़े से थोड़ा सा पानी मुझे पिला दे।¹⁸उसने कहा, "पीजिए साहब;" और फ़ौरन घड़े को हाथ पर उतार उसे पानी पिलाया।

¹⁹जब उसे पिला चुकी तो कहने लगी, कि मैं तेरे ऊँटों के लिए भी पानी भर-भर लाऊँगी, जब तक वह पी न चुके।"²⁰और फ़ौरन अपने घड़े को हौज़ में खाली करके फिर बावली की तरफ़ पानी भरने दौड़ी गई, और उसके सब ऊँटों के लिए भरा।

²¹वह आदमी चुप-चाप उसे गौर से देखता रहा, ताकि मा'लूम करे कि खुदावन्द ने उसका सफ़र मुबारक किया है या नहीं।²²और जब ऊँट पी चुके तो उस शख्स ने आधे मिस्काल सोने की एक नथ, और दस मिस्काल सोने के दो कड़े उसके हाथों के लिए निकाले।²³और कहा कि ज़रा मुझे बता कि तू किसकी बेटी है? और क्या तेरे बाप के घर में हमारे टिकने की जगह है?

²⁴उसने उससे कहा कि मैं बैतूल की बेटी हूँ। वह मिल्काह का बेटा है जो नहूर से उसके हुआ।²⁵और यह भी उससे कहा कि हमारे पास भूसा और चारा बहुत है, और टिकने की जगह भी है।

²⁶तब उस आदमी ने झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया,²⁷और कहा, "खुदावन्द मेरे आक्का इब्राहीम का खुदा मुबारक हो, जिसने मेरे आक्का को अपने करम और सच्चाई से महरूम नहीं रखखा और मुझे तो खुदावन्द ठीक राह पर चलाकर मेरे आक्का के भाइयों के घर लाया।"

²⁸तब उस लड़की ने दौड़ कर अपनी माँ के घर में यह सब हाल कह सुनाया।²⁹और रिबका का एक भाई था जिसका नाम लाबन था; वह बाहर पानी के चश्मा पर उस आदमी के पास दौड़ा गया।³⁰और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नथ देखी, और वह कड़े भी जो उसकी बहन के हाथों में थे, और अपनी बहन रिबका का बयान भी सुन लिया कि उस शख्स ने मुझ से ऐसी-ऐसी बातें कहीं, तो वह उस आदमी के पास आया और देखा कि वह चश्मा के नज़दीक ऊँटों के पास खड़ा है।

³¹तब उससे कहा, "ऐ, तू जो खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक है। अन्दर चल, बाहर क्यूँ खड़ा है? मैंने घर को और ऊँटों के लिए भी जगह को तैयार कर लिया है।"³²तब वह आदमी घर में आया, और उसने उसके ऊँटों को खोला और ऊँटों के लिए भूसा और चारा, और उसके और उसके साथ के आदमियों के पॉव धोने को पानी दिया।

³³और खाना उसके आगे रखखा गया, लेकिन उसने कहा कि मैं जब तक अपना मतलब बयान न कर लूँ नहीं खाऊँगा। उसने कहा, "अच्छा, कह।"³⁴तब उसने कहा कि मैं इब्राहीम का नौकर हूँ।³⁵और खुदावन्द ने मेरे आक्का को बड़ी बरकत दी है, और वह बहुत बड़ा आदमी हो गया है; और उसने उसे भेड़-बकरियाँ, और गाय बैल और सोना चाँदी और लौंडिया और गुलाम और ऊँट और गधे बख़शे हैं।

³⁶और मेरे आक्का की बीवी सारा के जब वह बुढ़िया हो गई, उससे एक बेटा हुआ। उसी को उसने अपना सब कुछ दे दिया है।³⁷और मेरे आक्का ने मुझे क्रसम दे कर कहा है, कि तू कना'नियों की बेटियों में से, जिनके मुल्क में मैं रहता हूँ किसी को मेरे बेटे से न ब्याहना।³⁸बल्कि तू मेरे बाप के घर और मेरे रिश्तेदारों में जाना और मेरे बेटे के लिए बीवी लाना |

³⁹तब मैंने अपने आक्का से कहा, 'शायद वह 'औरत मेरे साथ आना न चाहे।'⁴⁰तब उसने मुझ से कहा, 'खुदावन्द, जिसके सामने मैं चलता रहा हूँ, अपना फ़िरिश्ता तेरे साथ भेजेगा और तेरा सफ़र मुबारक करेगा; तू मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के खान्दान में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाना।'⁴¹और जब तू मेरे खान्दान में जा पहुँचेगा, तब मेरी क्रसम से छूटेगा; और अगर वह कोई लड़की न दें, तो भी तू मेरी क्रसम से छूटा।'

⁴²इसलिए मैं आज पानी के उस चश्मा पर आकर कहने लगा, 'ऐ खुदावन्द, मेरे आक्का इब्राहीम के खुदा, अगर तू मेरे सफ़र को जो मैं कर रहा हूँ मुबारक करता है।'⁴³तो देख, मैं पानी के चश्मा के पास खड़ा होता हूँ, और ऐसा हो कि जो लड़की पानी भरने निकले और मैं उससे कहूँ, 'ज़रा अपने घड़े से थोड़ा पानी मुझे

पिला दे;"⁴⁴ और वह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं तेरे ऊँटों के लिए भी भर दूँगी, " तो वो वही 'औरत हो जिसे खुदावन्द ने मेरे आक्का के बेटे के लिए ठहराया है।'

⁴⁵मैं दिल में यह कह ही रहा था कि रिब्का अपना घड़ा कन्धे पर लिए हुए बाहर निकली, और नीचे चश्मा के पास गई, और पानी भरा। तब मैंने उससे कहा, 'ज़रा मुझे पानी पिला दे।'⁴⁶ उसने फ़ौरन अपना घड़ा कन्धे पर से उतारा और कहा, 'ले पी और मैं तेरे ऊँटों को भी पिला दूँगी।' तब मैंने पिया और उसने मेरे ऊँटों को भी पिलाया।

⁴⁷फिर मैंने उससे पूछा, 'तू किसकी बेटी है?' उसने कहा, 'मैं बैतूल की बेटी हूँ, वह नहर का बेटा है जो मिल्काह से पैदा हुआ;' फिर मैंने उसकी नाक में नथ और उसके हाथों में कड़े पहना दिए।⁴⁸ और मैंने झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया और खुदावन्द, अपने आक्का इब्राहीम के खुदा को मुबारक कहा, जिसने मुझे ठीक राह पर चलाया कि अपने आक्का के भाई की बेटी उसके बेटे के लिए ले जाऊँ।

⁴⁹इसलिए अब अगर तुम करम और सच्चाई से मेरे आक्का के साथ पेश आना चाहते हो तो मुझे बताओ, और अगर नहीं तो कह दो, ताकि मैं दहनी या बाएँ तरफ़ फिर जाऊँ।"

⁵⁰तब लाबन और बैतूल ने जवाब दिया, कि यह बात खुदावन्द की तरफ़ से हुई है, हम तुझे कुछ बुरा या भला नहीं कह सकते।⁵¹ देख, रिब्का तेरे सामने मौजूद है, उसे ले और जा, और खुदावन्द के क़ौल के मुताबिक़ अपने आक्का के बेटे से उसे ब्याह दे।"

⁵²जब इब्राहीम के नौकर ने उनकी बातें सुनीं, तो ज़मीन तक झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया।⁵³ और नौकर ने चाँदी और सोने के ज़ेवर, और लिबास निकाल कर रिब्का को दिए, और उसके भाई और उसकी माँ को भी क़ीमती चीज़ें दीं।

⁵⁴और उसने और उसके साथ के आदमियों ने खाया पिया और रात भर वहीं रहे; सुबह को वह उठे और उसने कहा, कि मुझे मेरे आक्का के पास रवाना कर दो।"⁵⁵ रिब्का के भाई और माँ ने कहा, कि लड़की को कुछ दिन, कम से कम दस दिन, हमारे पास रहने दे; इसके बा'द वह चली जाएगी।"

⁵⁶उसने उनसे कहा, कि मुझे न रोको क्योंकि खुदावन्द ने मेरा सफ़र मुबारक किया है, मुझे रुख़सत कर दो ताकि मैं अपने आक्का के पास जाऊँ।"⁵⁷ उन्होंने कहा, "हम लड़की को बुलाकर पूछते हैं कि वह क्या कहती है।"⁵⁸ तब उन्होंने रिब्का को बुला कर उससे पूछा, "क्या तू इस आदमी के साथ जाएगी?" उसने कहा, "जाऊँगी।"

⁵⁹तब उन्होंने अपनी बहन रिब्का और उसकी दाया और इब्राहीम के नौकर और उसके आदमियों को रुख़सत किया।⁶⁰ और उन्होंने रिब्का को दु'आ दी और उससे कहा, "ऐ हमारी बहन, तू लाखों की माँ हो और तेरी नसल अपने कीना रखने वालों के फ़ाटक की मालिक हो।"

⁶¹और रिब्का और उसकी सहेलियाँ उठकर ऊँटों पर सवार हुई, और उस आदमी के पीछे हो लीं। तब वह ~आदमी रिब्का को साथ लेकर रवाना हुआ।⁶² और इस्हाक़ बेरलही-रोई से होकर चला आ रहा था, क्योंकि वह दख्खिन के मुल्क में रहता था।

⁶³और शाम के वक़्त इस्हाक़ बैतुलखला को ~मैदान में गया, और उसने जो अपनी आँखें उठाई और नज़र की तो क्या देखता है कि ऊँट चले आ रहे हैं।⁶⁴ और रिब्का ने निगाह की और इस्हाक़ को देख कर ऊँट पर से उतर पड़ी।⁶⁵ और उसने नौकर से पूछा, 'यह शख्स कौन है जो हम से मिलने की मैदान में चला आ रहा है?' उस नौकर ने कहा, "यह मेरा आक्का है।" तब उसने बुरका लेकर अपने ऊपर डाल लिया।

⁶⁶नौकर ने जो-जो किया था सब इस्हाक़ को बताया।⁶⁷ और इस्हाक़ रिब्का को अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। तब उसने रिब्का से ब्याह कर लिया और उससे मुहब्बत की, और इस्हाक़ ने अपनी माँ के मरने के बा'द तसल्ली पाई।

Chapter 25

¹और इब्राहीम ने फिर एक और बीवी की जिसका नाम कतूरा था।²और उससे ज़िम्नान और युक्सान और मिदान और मिदियान और इसबाक और सूख पैदा हुए।
³और युक्सान से सिबा और ददान पैदा हुए, और ददान की औलाद से असूरी और लतूसी और लूमी थे।⁴और मिदियान के बेटे ऐफ़ा और इफ़िर और हनूक और अबीदा'आ और इल्दू'आ थे; यह सब बनी कतूरा थे।

⁵और इब्राहीम ने अपना सब कुछ इस्हाक़ को दिया।⁶और अपनी बाँदियों के बेटों को इब्राहीम ने बहुत कुछ इनाम देकर अपने जीते जी उनको अपने बेटे इस्हाक़ के पास से मशरिक़ की तरफ़ या'नी मशरिक़ के मुल्क में भेज दिया।

⁷और इब्राहीम की कुल 'उम्र जब तक कि वह जिन्दा रहा एक सौ पिच्छत्तर साल की हुई।⁸तब इब्राहीम ने दम छोड़ दिया और खूब बुढ़ापे में निहायत ज़ईफ़ और पूरी 'उम्र का होकर वफ़ात पाई, और अपने लोगों में जा मिला।

⁹और उसके बेटे इस्हाक़ और इस्मा'ईल ने मक़फ़ीला के ग़ार में, जो ममरे के सामने हिती सुहर के बेटे इफ़रोन के खेत में है, उसे दफ़न किया।¹⁰यह वही खेत है जिसे इब्राहीम ने बनी-हित से खरीदा था; वहीं इब्राहीम और उसकी बीवी सारा दफ़न हुए।¹¹और इब्राहीम की वफ़ात के बा'द खुदा ने उसके बेटे इस्हाक़ को बरकत बख़्शी और इस्हाक़ बैर-लही-रोई के नज़दीक रहता था।

¹²यह नसबनामा इब्राहीम के बेटे इस्मा'ईल का है जो इब्राहीम से सारा की लौंडी हाजिरा मिस्री के बत्न से पैदा हुआ।

¹³और इस्मा'ईल के बेटों के नाम यह है : यह नाम तरतीबवार उनकी पैदाइश के मुताबिक़ हैं, इस्मा'ईल का पहलौठा नबायोत था, फिर कीदार और अदबिएल और मिसाम,¹⁴और मिशमा' और दूमा और मस्सा,¹⁵हदद और तैमा और यतूर और नफ़ीस और क्रिदमा।¹⁶यह इस्मा'ईल के बेटे हैं और इन्हीं के नामों से इनकी बस्तियाँ और छावनियाँ नामज़द हुई और यही बारह अपने अपने क़बीले के सरदार हुए।

¹⁷और इस्मा'ईल की कुल 'उम्र एक सौ सैंतीस साल की हुई तब उसने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और अपने लोगों में जा मिला।¹⁸और उसकी औलाद हवीला से शोर तक, जो मिस्र के सामने उस रास्ते पर है जिस से असूर को जाते हैं आबा'द थी। यह लोग अपने सब भाइयों के सामने बसे हुए थे।

¹⁹और इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ का नसबनामा यह है : इब्राहीम से इस्हाक़ पैदा हुआ।²⁰इस्हाक़ चालीस साल का था जब उसने रिबका से ब्याह किया, जो फ़द्दान अराम के बाशिन्दे बैतूएल अरामी की बेटी और लाबन अरामी की बहन थी।

²¹और इस्हाक़ ने अपनी बीवी के लिए खुदावन्द से दु'आ की, क्योंकि वह बाँझ थी; और खुदावन्द ने उसकी दु'आ कुबूल की, और उसकी बीवी रिबका हामिला हुई।²²और उसके पेट में दो लड़के आपस में मुज़ाहमत करने लगे। तब उसने कहा, "अगर ऐसा ही है तो मैं जीती क्यों हूँ?" और वह खुदावन्द से पूछने गई।

²³खुदावन्द ने उससे कहा: 'दो क्रौमें तेरे पेट में हैं, और दो क़बीले तेरे बत्न से निकलते ही अलग-अलग हो जाएँगे। और एक क़बीला दूसरे क़बीले से ताक़तवर होगा, और बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।"

²⁴और जब उसके बच्चा पैदा होने के दिन पूरे हुए, तो क्या देखते हैं कि उसके पेट में जुड़वा बच्चे हैं।²⁵और पहला जो पैदा हुआ तो सुख़ था और ऊपर से ऐसा जैसे ऊनी कपड़ा, और उन्होंने उसका नाम 'ऐसौ रखखा।²⁶उसके बा'द उसका भाई पैदा हुआ और उसका हाथ 'ऐसौ की एड़ी को पकड़े हुए था, और उसका नाम या'क़ूब रखखा गया; जब वह रिबका से पैदा हुए तो इस्हाक़ साठ साल का था।

²⁷और वह लड़के बढ़े, और 'ऐसौ शिकार में माहिर हो गया और जंगल में रहने लगा, और या'क़ूब सादा मिजाज़ डेरों में रहने वाला आदमी था।²⁸और इस्हाक़ 'ऐसौ को प्यार करता था क्योंकि वह उसके शिकार का गोश्त खाता था और रिबका या'क़ूब को प्यार करती थी।

²⁹और या'क़ूब ने दाल पकाई, और 'ऐसौ जंगल से आया और वह बहुत भूका ~था।³⁰और 'ऐसौ ने या'क़ूब से कहा, "यह जो लाल-लाल है मुझे खिला दे, क्योंकि मैं बे-दम हो रहा हूँ।" इसी लिए उसका नाम अदोम भी हो गया।

³¹तब या'क़ूब ने कहा, "तू आज अपने पहलौठे का हक़ मेरे हाथ बेच दे।"³²'ऐसौ ने कहा, "देख, मैं तो मरा जाता हूँ, पहलौठे का हक़ मेरे किस काम आएगा?"³³तब या'क़ूब ने कहा कि आज ही मुझ से क़सम खा, उसने उससे क़सम खाई; और उसने अपना पहलौठे का हक़ या'क़ूब के हाथ बेच दिया।³⁴तब या'क़ूब ने 'ऐसौ को रोटी और मसूर की दाल दी; वह खा-पीकर उठा और चला गया। यूँ 'ऐसौ ने अपने पहलौठे के हक़ की क़द्र न जाना।

Chapter 26

¹और उस मुल्क में उस पहले काल के 'अलावा जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था, फिर काल पड़ा। तब इस्हाक़ ज़िरार को फ़िलिस्तिनियों के बादशाह अबीमलिक के पास गया।

²और खुदावन्द ने उस पर ज़ाहिर हो कर कहा कि मिस्र को न जा; बल्कि जो मुल्क मैं तुझे बताऊँ उसमें रह।³तू इसी मुल्क में क़याम रख और मैं तेरे साथ रहूँगा और तुझे बरकत बख्शूँगा क्योंकि मैं तुझे और तेरी नसल को यह सब मुल्क दूँगा, और मैं उस क़सम को जो मैंने तेरे बाप इब्राहीम से खाई पूरा करूँगा।

⁴और मैं तेरी औलाद को बढ़ा कर आसमान के तारों की तरह कर दूँगा, और यह सब मुल्क तेरी नसल को दूँगा, और ज़मीन की सब कौमों तेरी नसल के वसीले से बरकत पाएँगी।⁵इसलिए कि इब्राहीम ने मेरी बात मानी, और मेरी नसीहत और मेरे हुक्मों और कवानीन-ओ-आईन पर 'अमल किया।

⁶फिर इस्हाक़ ज़िरार में रहने लगा;⁷और वहाँ के बाशिन्दों ने उससे उसकी बीवी के बारे में पूछा। उसने कहा, "वह मेरी बहन है, " क्योंकि वह उसे अपनी बीवी बताते डरा, यह सोच कर कि कहीं रिबका की वजह से वहाँ के लोग उसे क़त्ल न कर डालें, क्योंकि वह ख़ूबसूरत थी।⁸जब उसे वहाँ रहते बहुत दिन हो गए तो, फ़िलिस्तिनियों के बादशाह अबीमलिक ने खिड़की में से झाँक कर नज़र की और देखा कि इस्हाक़ अपनी बीवी रिबका से हँसी खेल कर रहा है।

⁹तब अबीमलिक ने इस्हाक़ को बुला कर कहा, "वह तो हकीक़त में तेरी बीवी है; फिर तूने क्यों कर उसे अपनी बहन बताया?" इस्हाक़ ने उससे कहा, "इसलिए कि मुझे ख़याल हुआ कि कहीं मैं उसकी वजह से मारा न जाऊँ।"¹⁰अबीमलिक ने कहा, "तूने हम से क्या किया? यूँ तो आसानी से इन लोगों में से कोई तेरी बीवी के साथ मुवाश्रत कर लेता, और तू हम पर इल्ज़ाम लाता।"¹¹तब अबीमलिक ने सब लोगों को यह हुक्म किया कि जो कोई इस आदमी को या इसकी बीवी को छुएगा वह मार डाला जाएगा।"

¹²और इस्हाक़ ने उस मुल्क में खेती की और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला; और खुदावन्द ने उसे बरकत बख्शी।¹³और वह बढ़ गया और उसकी तरक्की होती गई, यहाँ तक कि वह बहुत बड़ा आदमी हो गया।¹⁴और उसके पास भेड़ बकरियाँ और गाय बैल और बहुत से नौकर चाकर थे, और फ़िलिस्तिनियों को उस पर रश्क आने लगा।

¹⁵और उन्होंने सब कुएँ जो उसके बाप के नौकरों ने उसके बाप इब्राहीम के वक़्त में खोदे थे, बन्द कर दिए और उनको मिट्टी से भर दिया।¹⁶और अबीमलिक ने इस्हाक़ से कहा कि तू हमारे पास से चला जा, क्योंकि तू हम से ज़्यादा ताक़तवर हो गया है।¹⁷तब इस्हाक़ ने वहाँ से ज़िरार की वादी में जाकर अपना डेरा लगाया और वहाँ रहने लगा।

¹⁸और इस्हाक़ ने पानी के उन कुओं को जो उसके बाप इब्राहीम के दिनों में खोदे गए थे फिर खुदवाया, क्योंकि फ़िलिस्तिनियों ने इब्राहीम के मरने के बाद उनको बन्द कर दिया था, और उसने उनके फिर वही नाम रखे जो उसके बाप ने रखे थे।

¹⁹और इस्हाक़ के नौकरों को वादी में खोदते-खोदते बहते पानी का एक सोता मिल गया।²⁰तब ज़िरार के चरवाहों ने इस्हाक़ के चरवाहों से झगड़ा किया और कहने लगे कि यह पानी हमारा है। और उसने उस कुएँ का नाम 'इस्कर -रख्खा, क्योंकि उन्होंने उससे झगड़ा किया।

²¹और उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा, और उसके लिए भी वह झगड़ने लगे; और उसने उसका नाम सितना रखवा।²²इसलिए वह वहाँ से दूसरी जगह चला गया और एक और कुआँ खोदा, जिसके लिए उन्होंने झगड़ा न किया और उसने उसका नाम रहोबूत रखवा और कहा कि अब खुदावन्द ने हमारे लिए जगह निकाली और हम इस मुल्क में कामयाब होंगे।

²³वहाँ से वह बैरसबा' को गया।²⁴और खुदावन्द उसी रात उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा कि मैं तेरे बाप इब्राहीम का खुदा हूँ! मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ और तुझे बरकत दूँगा, और अपने बन्दे -इब्राहीम की खातिर तेरी नसल बढ़ाऊँगा।²⁵और उसने वहाँ मज़बूत बनाया और खुदावन्द से दु'आ की, और अपना डेरा वहीं लगा लिया; और वहाँ इस्हाक़ के नौकरों ने एक कुआँ खोदा।

²⁶तब अबीमलिक अपने दोस्त अखूज़त और अपने सिपहसालार फ़ीकुल को साथ ले कर, ज़िरार से उसके पास गया।²⁷इस्हाक़ ने उनसे कहा कि तुम मेरे पास क्यों कर आए, हालाँकि मुझ से कीना रखते हो और मुझ को अपने पास से निकाल दिया।

²⁸उन्होंने कहा, "हम ने ख़ूब सफ़ाई से देखा कि खुदावन्द तेरे साथ है, तब हम ने कहा कि हमारे और तेरे बीच क़सम हो जाए और हम तेरे साथ 'अहद करें,²⁹कि जैसे हम ने तुझे छुआ तक नहीं, और अलावा नेकी के तुझ से और कुछ नहीं किया और तुझ को सलामत रखसत, किया तू भी हम से कोई बदी न करेगा क्योंकि तू अब खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक है।"

³⁰तब उसने उनके लिए दावत तैयार की और उन्होंने खाया पिया।³¹और वह सुबह सवेरे उठे और आपस में क़सम खाई; और इस्हाक़ ने उन्हें रखसत किया और वह उसके पास से सलामत चले गए।

³²उसी रोज़ इस्हाक़ के नौकरों ने आ कर उससे उस कुएँ का ज़िक्र किया जिसे उन्होंने खोदा था और कहा कि हम को पानी मिल गया।³³तब उसने उसका नाम सबा' रखवा : इसीलिए वह शहर आज तक बैरसबा' कहलाता है।

³⁴जब 'ऐसी चालीस साल का हुआ, तो उसने बैरी हिती की बेटी यहूदिथ और ऐलोन हिती की बेटी बशामथ से ब्याह किया;³⁵और वह इस्हाक़ और रिबका के लिए वबाल-ए-जान हुई।

Chapter 27

¹जब इस्हाक़ ज़ईफ़ हो गया, और उसकी आँखें ऐसी धुन्धला गई कि उसे दिखाई न देता था तो उसने अपने बड़े बेटे 'ऐसौ' को बुलाया और कहा, "ऐ मेरे बेटे!" उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।"²तब उसने कहा, "देख! मैं तो ज़ईफ़ हो गया और मुझे अपनी मौत का दिन मा'लूम नहीं।

³इसलिए अब तू ज़रा अपना हथियार, अपना तरकश और अपनी कमान लेकर जंगल को निकल जा और मेरे लिए शिकार मार ला।⁴और मेरी हस्ब-ए-पसन्द लज़ीज़ खाना मेरे लिए तैयार करके मेरे आगे ले आ, ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले दिल से तुझे दु'आ दूँ।

⁵और जब इस्हाक़ अपने बेटे 'ऐसौ' से बातें कर रहा था तो रिबका सुन रही थी, और 'ऐसौ' जंगल को निकल गया कि शिकार मार कर लाए।⁶तब रिबका ने अपने बेटे या'क़ूब से कहा, कि देख, मैंने तेरे बाप को तेरे भाई 'ऐसौ' से यह कहते सुना कि |⁷'मेरे लिए शिकार मार कर लज़ीज़ खाना मेरे लिए तैयार कर ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले खुदावन्द के आगे तुझे दु'आ दूँ।'

⁸इसलिए ऐ मेरे बेटे, इस हुक्म के मुताबिक़ जो मैं तुझे देती हूँ मेरी बात को मान |⁹और जाकर रेवड़ में से बकरी के दो अच्छे-अच्छे बच्चे मुझे ला दे, और मैं उनको लेकर तेरे बाप के लिए उसकी हस्ब-ए-पसन्द लज़ीज़ खाना तैयार कर दूँगी।¹⁰और तू उसे अपने बाप के आगे ले जाना, ताकि वह खाए और अपने मरने से पहले तुझे दु'आ दे।

¹¹तब या'क़ूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, "देख, मेरे भाई 'ऐसौ' के जिस्म पर बाल हैं और मेरा जिस्म साफ़ है।¹²शायद मेरा बाप मुझे टटोले, तो मैं उसकी नज़र में दगाबाज़ ठहरूँगा; और बरकत नहीं बल्कि ला'नत कमाऊँगा।"

¹³उसकी माँ ने उसे कहा, "ऐ मेरे बेटे! तेरी ला'नत मुझ पर आए; तू सिर्फ़ मेरी बात मान और जाकर वह बच्चे मुझे ला दे।"¹⁴तब वह गया और उनको लाकर अपनी माँ को दिया, और उसकी माँ ने उसके बाप की हस्ब-ए-पसन्द लज़ीज़ खाना तैयार किया।

¹⁵और रिबका ने अपने बड़े बेटे 'ऐसौ' के नफ़ीस लिबास, जो उसके पास घर में थे लेकर उनकी अपने छोटे बेटे या'क़ूब को पहनाया।¹⁶और बकरी के बच्चों की खालें उसके हाथों और उसकी गर्दन पर जहाँ बाल न थे लपेट दीं।¹⁷और वह लज़ीज़ खाना और रोटी जो उसने तैयार की थी, अपने बेटे या'क़ूब के हाथ में दे दी।

¹⁸तब उसने बाप के पास आ कर कहा, "ऐ मेरे बाप!" उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ, तू कौन है मेरे बेटे?"¹⁹या'क़ूब ने अपने बाप से कहा, "मैं तेरा पहलौठा बेटा 'ऐसौ' हूँ। मैंने तेरे कहने के मुताबिक़ किया है; इसलिए ज़रा उठ और बैठ कर मेरे शिकार का गोश्त खा, ताकि तू दिल से मुझे दु'आ दे।"

²⁰तब इस्हाक़ ने अपने बेटे से कहा, "बेटा! तुझे यह इस क्रदर जल्द कैसे मिल गया?" उसने कहा, "इसलिए कि खुदावन्द तेरे खुदा ने मेरा काम बना दिया।"²¹तब इस्हाक़ ने या'क़ूब से कहा, "ऐ मेरे बेटे, ज़रा नज़दीक आ कि मैं तुझे टटोलूँ कि तू मेरा ही बेटा 'ऐसौ' है या नहीं।"

²²और या'क़ूब अपने बाप इस्हाक़ के नज़दीक गया; और उसने उसे टटोलकर कहा, "आवाज़ तो या'क़ूब की है लेकिन हाथ 'ऐसौ' के हैं।"²³और उसने उसे न पहचाना, इसलिए कि उसके हाथों पर उसके भाई 'ऐसौ' के हाथों की तरह बाल थे; इसलिए उसने उसे दु'आ दी।

²⁴और उसने पूछा कि क्या तू मेरा बेटा 'ऐसौ' ही है?" उसने कहा, "मैं वही हूँ।"²⁵तब उसने कहा, "खाना मेरे आगे ले आ, और मैं अपने बेटे के शिकार का गोश्त खाऊँगा, ताकि दिल से तुझे दु'आ दूँ।" तब वह उसे उसके नज़दीक ले आया, और उसने खाया; और वह उसके लिए मय लाया और उसने पी।

²⁶फिर उसके बाप इस्हाक़ ने उससे कहा, "ऐ मेरे बेटे! अब पास आकर मुझे चूम।"²⁷उसने पास जाकर उसे चूमा। तब उसने उसके लिबास की खशबू पाई और उसे दु'आ दे कर कहा, "देखो! मेरे बेटे की महक उस खेत की महक की तरह है जिसे खुदावन्द ने बरकत दी हो।

²⁸खुदा आसमान की ओस और ज़मीन की फ़र्बही, और बहुत सा अनाज और मय तुझे बरख़्शे।

²⁹कौमों तेरी ख़िदमत करें, और क़बीले तेरे सामने झुकें। तू अपने भाइयों का सरदार हो, और तेरी माँ के बेटे तेरे आगे झुकें, जो तुझ पर ला'नत करे वह खुद ला'नती हो, और जो तुझे दु'आ दे वह बरकत पाए।"

³⁰जब इस्हाक़ या'क़ूब को दु'आ दे चुका, और या'क़ूब अपने बाप इस्हाक़ के पास से निकला ही था कि उसका भाई 'ऐसौ' अपने शिकार से लौटा।³¹वह भी लज़ीज़ खाना पका कर अपने बाप के पास लाया, और उसने अपने बाप से कहा, "मेरा बाप उठ कर अपने बेटे के शिकार का गोश्त खाए, ताकि दिल से मुझे दु'आ दे।

³²उसके बाप इस्हाक़ ने उससे पूछा कि तू कौन है?" उसने कहा, "मैं तेरा पहलौठा बेटा 'ऐसौ' हूँ।"³³तब तो इस्हाक़ शिदत से काँपने लगा और उसने कहा, "फिर वह कौन था जो शिकार मार कर मेरे पास ले आया, और मैंने तेरे आने से पहले सबमें से थोड़ा-थोड़ा खाया और उसे दु'आ दी? और मुबारक भी वही होगा।"

³⁴ऐसौ अपने बाप की बातें सुनते ही बड़ी बुलन्दी और हसरतनाक आवाज़ से चिल्ला उठा, और अपने बाप से कहा, "मुझ को भी दु'आ दे, ऐ मेरे बाप! मुझ को भी।"³⁵उसने कहा, "तेरा भाई दगा से आया, और तेरी बरकत ले गया।"

³⁶तब उसने कहा, "क्या उसका नाम या'क़ूब ठीक नहीं रखखा गया? क्यूँकि उसने दोबारा मुझे अड़गा मारा। उसने मेरा पहलौठे का हक़ तो ले ही लिया था, और देख, अब वह मेरी बरकत भी ले गया।" फिर उसने कहा, "क्या तूने मेरे लिए कोई बरकत नहीं रख छोड़ी है?"³⁷इस्हाक़ ने 'ऐसौ' को जवाब दिया, कि देख, मैंने उसे तेरा सरदार ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके सुपर्द किया कि ख़ादिम हों, और अनाज और मय उसकी परवरिश के लिए बताई। अब ऐ मेरे बेटे, तेरे लिए मैं क्या करूँ?"

³⁸तब 'ऐसौ' ने अपने बाप से कहा, "क्या तेरे पास एक ही बरकत है, ऐ मेरे बाप? मुझे भी दु'आ दे, ऐ मेरे बाप, मुझे भी।" और 'ऐसौ' ज़ोर-ज़ोर से रोया।

³⁹तब उसके बाप इस्हाक़ ने उससे कहा, "देख ज़रख़ेज़ ज़मीन में तेरा घर हो, और ऊपर से आसमान की शबनम उस पर पड़े।"⁴⁰तेरी अौकात-बसरी तेरी तलवार से हो, और तू अपने भाई की ख़िदमत करे, और जब तू आज़ाद हो; तो अपने भाई का जुआ अपनी गर्दन पर से उतार फेंके।"

⁴¹और 'ऐसौ' ने या'क़ूब से, उस बरकत की वजह से जो उसके बाप ने उसे बख़्शी, कीना रखखा; और 'ऐसौ' ने अपने दिल में कहा, कि "मेरे बाप के मातम के दिन नज़दीक हैं, फिर मैं अपने भाई या'क़ूब को मार डालूँगा।"⁴²और रिबका को उसके बड़े बेटे 'ऐसौ' की यह बातें बताई गई; तब उसने अपने छोटे बेटे या'क़ूब को बुलवा कर उससे कहा, "देख, तेरा भाई 'ऐसौ' तुझे मार डालने पर है, और यही सोच-सोचकर अपने को तसल्ली दे रहा है।

⁴³इसलिए ऐ मेरे बेटे, तू मेरी बात मान, और उठकर हारान को मेरे भाई लाबन के पास भाग जा;⁴⁴और थोड़े दिन उसके साथ रह, जब तक तेरे भाई की नाराज़गी उतर न जाए।⁴⁵या'नी जब तक तेरे भाई का क्रहर तेरी तरफ़ से ठंडा न हो, और वह उस बात को जो तूने उससे की है भूल न जाए; तब मैं तुझे वहाँ से बुलवा भेजूँगी। मैं एक ही दिन में तुम दोनों को क्यूँ खो बैहूँ?"

⁴⁶और रिब्का ने इसहाक़ से कहा, 'मैं हिती लड़कियों की वजह से अपनी ज़िन्दगी से तंग हूँ, इसलिए अगर या'क़ूब हिती लड़कियों में से, जैसी इस मुल्क की लड़कियाँ हैं, किसी से ब्याह कर ले तो मेरी ज़िन्दगी में क्या लुत्फ़ रहेगा?'

Chapter 28

¹तब इस्हाक़ ने या'क़ूब को बुलाया और उसे दु'आ दी और उसे ताकीद की, कि तू कना'नी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना।²तू उठ कर फ़द्दान अराम को अपने नाना बैतूएल के घर जा, और वहाँ से अपने मामूँ लाबन की बेटियों में से एक को ब्याह ला।

³और क़ादिर-ए-मुतलक़ खुदा तुझे बरकत बरख़्शे और तुझे कामयाब करे और बढ़ाए, कि तुझ से क़ौमों के क़बीले ~पैदा हों।⁴और वह इब्राहीम की बरकत तुझे और तेरे साथ तेरी नसल को दे, कि तेरी मुसाफ़िरत की यह सरज़मीन जो खुदा ने इब्राहीम को दी तेरी मीरास हो जाए।

⁵तब इस्हाक़ ने या'क़ूब को रुख़्सत किया और वह फ़द्दान अराम में लाबन के पास, जो अरामी बैतूएल का बेटा और या'क़ूब और 'ऐसौ की माँ रिबका का भाई था गया।

⁶फिर जब 'ऐसौ ने देखा कि इस्हाक़ ने या'क़ूब को दु'आ देकर उसे फ़द्दान अराम भेजा है, ताकि वह वहाँ से बीवी ब्याह कर लाए; और उसे दु'आ देते वक़्त यह ताकीद भी की है कि तू कना'नी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना।⁷और या'क़ूब अपने माँ बाप की बात मान कर फ़द्दान अराम को चला गया।

⁸और 'ऐसौ ने यह भी देखा कि कना'नी लड़कियाँ उसके बाप इस्हाक़ को बुरी लगती हैं,⁹तो 'ऐसौ इस्मा'ईल के पास गया और महलत को, जो इस्मा'ईल-बिन-इब्राहीम की बेटी और नबायोत की बहन थी, ब्याह कर उसे अपनी और बीवियों में शामिल किया।

¹⁰और या'क़ूब बैर-सबा' से निकल कर हारान की तरफ़ चला।¹¹और एक जगह पहुँच कर सारी रात वहीं रहा क्योंकि सूरज डूब गया था, और उसने उस जगह के पत्थरों में से एक उठा कर अपने सरहाने रख लिया और उसी जगह सोने को लेट गया।

¹²और ख़्वाब में क्या देखता है कि एक सीढ़ी ज़मीन पर खड़ी है, और उसका सिरा आसमान तक पहुँचा हुआ है। और खुदा के फ़रिश्ता उस पर से चढ़ते उतरते हैं।¹³और खुदावन्द उसके ऊपर खड़ा कह रहा है, कि मैं खुदावन्द, तेरे बाप इब्राहीम का खुदा और इस्हाक़ का खुदा हूँ। मैं यह ज़मीन जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरी नसल को दूँगा।

¹⁴और तेरी नसल ज़मीन की गर्द के ज़रों की तरह होगी और तू मशरिक़ और मग़रिब और शिमाल और दख्खिनमें फैल जाएगा, और ज़मीन के सब क़बीले तेरे और तेरी नसल के वसीले से बरकत पाएंगे।¹⁵और देख, मैं तेरे साथ हूँ और हर जगह जहाँ कहीं तू जाए तेरी हिफ़ाज़त करूँगा और तुझ को इस मुल्क में फिर लाऊँगा, और जो मैंने तुझे से कहा है जब तक उसे पूरा न कर लें तुझे नहीं छोड़ूँगा।

¹⁶तब या'क़ूब जाग उठा और कहने लगा, कि यक़ीनन खुदावन्द इस जगह है और मुझे मा'लूम न था।¹⁷और उसने डर कर कहा, "यह कैसी ख़ौफ़नाक जगह है! तो यह खुदा के घर और आसमान के आसताने के अलावा और कुछ न होगा।"

¹⁸और या'क़ूब सुब्ह-सवेरे उठा, और उस पत्थर की जिसे उसने अपने सरहाने रखवा ~था लेकर सुतून की तरह खड़ा किया और उसके सिरे पर तेल डाला।¹⁹और उस जगह का नाम बैतएल रखवा, लेकिन पहले उस बस्ती का नाम लूज़ था।

²⁰और या'क़ूब ने मन्नत मानी और कहा कि अगर खुदा मेरे साथ रहे, और जो सफ़र मैं कर रहा हूँ उसमें मेरी हिफ़ाज़त करे, और मुझे खाने को रोटी और पहनने की कपड़ा देता रहे,²¹और मैं अपने बाप के घर सलामत लौट आऊँ; तो खुदावन्द मेरा खुदा होगा।²²और यह पत्थर जो मैंने सुतून सा खड़ा किया है, खुदा का घर होगा; और जो कुछ तू मुझे दे उसका दसवाँ हिस्सा ज़रूर ही तुझे दिया करूँगा।

Chapter 29

¹और या'कूब आगे चल कर मशरिकी लोगों के मुल्क में पहुँचा।²और उसने देखा कि मैदान में एक कुआँ है और कुएँ के नज़दीक भेड़ बकरियों के तीन रेवड़ बैठे हैं; क्योंकि चरवाहे इसी कुएँ से रेवड़ों को पानी पिलाते थे और कुएँ के मुँह पर एक बड़ा पत्थर रखवा ~रहता था।³और जब सब रेवड़ वहाँ इकट्ठे होते थे, तब वह उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलकाते और भेड़ों को पानी पिला कर उस पत्थर को ~फिर उसी जगह कुएँ के मुँह पर रख देते थे।

⁴तब या'कूब ने उनसे कहा, "ऐ मेरे भाइयों, तुम कहाँ के हो?" उन्होंने कहा, "हम हारान के हैं।" फिर उसने पूछा कि तुम नहर के बेटे लाबन से वाकिफ़ हो? उन्होंने कहा, "हम वाकिफ़ हैं।"⁶उसने पूछा, "क्या वह खेरियत से है?" उन्होंने कहा, "खेरियत से है, और वह देख, उसकी बेटी राखिल भेड़ बकरियों के साथ चली आती है।"

⁷और उसने कहा, "देखो, अभी तो दिन बहुत है, और चौपायों के जमा' होने का वक़्त नहीं। तुम भेड़ बकरियों को पानी पिला कर फिर चराने को ले जाओ।

⁸उन्होंने कहा, "हम ऐसा नहीं कर सकते, जब तक कि सब रेवड़ जमा' न हो जाएँ। तब हम उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलकाते हैं, और भेड़ बकरियों को पानी पिलाते हैं।"

⁹वह उनसे बातें कर ही रहा था कि राखिल अपने बाप की भेड़ बकरियों के साथ आई, क्योंकि वह उनको चराया करती थी।¹⁰जब या'कूब ने अपने मामूँ लाबन की बेटी राखिल को और अपने मामूँ लाबन के रेवड़ को देखा, तो वह नज़दीक गया और पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलका कर अपने मामूँ लाबन के रेवड़ को पानी पिलाया।

¹¹और या'कूब ने राखिल को चूमा और ज़ोर ज़ोर से रोया।¹²और या'कूब ने राखिल से कहा, कि मैं तेरे बाप का रिश्तेदार और रिबका का बेटा हूँ। तब उसने दौड़ कर अपने बाप को खबर दी।

¹³लाबन अपने भांजे की खबर पाते ही उससे मिलने को दौड़ा, और उसको गले लगाया और चूमा और उसे अपने घर लाया; तब उसने लाबन को अपना सारा हाल बताया।¹⁴लाबन ने उसे कहा, "तू वाक्र'ई मेरी हड्डी और मेरा गोश्त है।" फिर वह एक महीना उसके साथ रहा।

¹⁵तब लाबन ने या'कूब से कहा, "चूँकि तू मेरा रिश्तेदार है, तो क्या इसलिए लाज़िम है कि तू मेरी खिदमत मुफ़्त करे? इसलिए ~मुझे बता कि तेरी मजदूरी क्या होगी?"¹⁶और लाबन की दो बेटियाँ थीं, बड़ी का नाम लियाह और छोटी का नाम राखिल था।¹⁷लियाह की आखें भूरी थीं लेकिन राखिल हसीन और खूबसूरत थी।¹⁸और या'कूब राखिल पर फ़िदा था, तब उसने कहा, "तेरी छोटी बेटी राखिल की खातिर मैं सात साल तेरी खिदमत करूँगा।"

¹⁹लाबन ने कहा, "उसे ग़ैर आदमी को देने की जगह तुझी को देना बेहतर है, तू मेरे पास रह।"²⁰चुनाँचे या'कूब सात साल तक राखिल की खातिर खिदमत करता रहा लेकिन वह उसे राखिल की मुहब्बत की वजह से चन्द दिनों के बराबर मा'लूम हुए।

²¹या'कूब ने लाबन से कहा कि मेरी मुद्दत पूरी हो गई, इसलिए मेरी बीवी मुझे दे ताकि मैं उसके पास जाऊँ।²²तब लाबन ने उस जगह के सब लोगों को बुला कर जमा' किया और उनकी दावत की।

²³और जब शाम हो गई तो अपनी बेटी लियाह को उसके पास ले आया, और या'कूब उससे हम आगोश हुआ।²⁴और लाबन ने अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा अपनी बेटी लियाह के साथ कर दी कि उसकी लौंडी हो।²⁵जब सुबह को मा'लूम हुआ कि यह तो लियाह है, तब उसने लाबन से कहा, कि तूने मुझ से ये क्या किया? क्या मैंने जो तेरी खिदमत की, वह राखिल की खातिर न थी? फिर तूने क्यों मुझे धोका दिया?"

²⁶लाबन ने कहा कि हमारे मुल्क में ये दस्तूर नहीं के पहलौठी से पहले छोटी को ब्याह दें।²⁷तू इसका हफ़्ता पूरा कर दे, फिर हम दूसरी भी तुझे दे देंगे; जिसकी खातिर तुझे सात साल और मेरी खिदमत करनी होगी।

²⁸या'कूब ने ऐसा ही किया, कि लियाह का हफ़्ता पूरा किया; तब लाबन ने अपनी बेटी राखिल भी उसे ब्याह दी।²⁹और अपनी लौंडी बिल्हाह अपनी बेटी राखिल के साथ कर दी कि उसकी लौंडी हो।³⁰इसलिए वह राखिल से भी हमआगोश हुआ, और वह लियाह से ज़्यादा राखिल को चाहता था; और सात साल और साथ रह कर लाबन की खिदमत की।

³¹और जब खुदावन्द ने देखा कि लियाह से नफ़रत की गई, तो उसने उसका रिहम खोला, मगर राखिल बाँझ रही।³²और लियाह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उसने उसका नाम रूबिन रखवा क्योंकि उसने कहा कि खुदावन्द ने मेरा दुख देख लिया, इसलिए मेरा शौहर अब मुझे प्यार करेगा।

³³वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा कि खुदावन्द ने सुना कि मुझ से नफ़रत की गई, इसलिए उसने मुझे यह~भी बख़्शा।" तब उसने उसका नाम शमा'ऊन रखवा।³⁴और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा, "अब इस बार मेरे शौहर को मुझ से लगन होगी, क्योंकि उससे मेरे तीन बेटे हुए।" इसलिए उसका नाम लावी रखवा गया।

³⁵और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा कि अब मैं खुदावन्द की हम्द करूँगी।" इसलिए उसका नाम यहूदाह रखवा। फिर उसके औलाद होने में देरी हुई।

Chapter 30

¹और जब राखिल ने देखा कि या'कूब से उसके औलाद नहीं होती तो राखिल को अपनी बहन पर रश्क आया, तब वह या'कूब से कहने लगी, "मुझे भी औलाद दे नहीं तो मैं मर जाऊँगी।" ²तब या'कूब का क्रहर राखिल पर भड़का और उस ने कहा, "क्या मैं खुदा की जगह हूँ जिसने तुझ को औलाद से महरूम रखखा है?"

³उसने कहा, "देख, मेरी लौंडी बिल्हाह हाज़िर है, उसके पास जा ताकि मेरे लिए उससे औलाद हो और वह औलाद मेरी ठहरे।" ⁴और उसने अपनी लौंडी बिल्हाह को उसे दिया के उसकी बीवी बने, और या'कूब उसके पास गया।

⁵और बिल्हाह हामिला हुई, और या'कूब से उसके बेटा हुआ। ⁶तब राखिल ने कहा कि खुदा ने मेरा इंसाफ़ किया और मेरी फ़रियाद भी सुनी और मुझ को बेटा बख़्शा।" इसलिए उसने उसका नाम दान रखखा।

⁷और राखिल की लौंडी बिल्हाह फिर हामिला हुई और या'कूब से उसके दूसरा बेटा हुआ। ⁸तब राखिल ने कहा, "मैं अपनी बहन के साथ निहायत ज़ोर मार-मारकर कुश्ती लड़ी और मैंने फ़तह पाई।" इसलिए उसने उसका नाम नफ़्ताली रखखा।

⁹जब लियाह ने देखा कि वह जनने से रह गई तो उसने अपनी लौंडी ज़िलफ़ा को लेकर या'कूब को दिया कि उसकी बीवी बने। ¹⁰और लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के भी या'कूब से एक बेटा हुआ। ¹¹तब लियाह ने कहा, "ज़हे-किस्मत!" तब उसने उसका नाम ज़द रखखा।

¹²लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के या'कूब से फिर एक बेटा हुआ। ¹³तब लियाह ने कहा, "मैं खुश किस्मत हूँ: 'औरतें मुझे खुश किस्मत कहेंगी।" और उसने उसका नाम आशर रखखा।

¹⁴और रूबिन गेहूँ काटने के मौसम में घर से निकला और उसे खेत में मदुम गियाह मिल गए, और वह अपनी माँ लियाह के पास ले आया। तब राखिल ने लियाह से कहा ~किअपने बेटे के मदुम गियाह में से मुझे भी कुछ दे दे। ¹⁵उसने कहा, "क्या ये छोटी बात है कि तूने मेरे शौहर को ले लिया, और अब क्या मेरे बेटे के मदुम गियाह भी लेना चाहती है?" राखिल ने कहा, "बस तो आज रात वह तेरे बेटे के मदुम गियाह की खातिर तेरे साथ सोएगा।"

¹⁶जब या'कूब शाम को खेत से आ रहा था तो लियाह आगे से उससे मिलने को गई और कहने लगी कि तुझे मेरे पास आना होगा, क्योंकि मैंने अपने बेटे के मदुम गियाह के बदले तुझे मज़दूरी पर लिया है। ~वह उस रात उसी के साथ सोया। ¹⁷और खुदा ने लियाह की सुनी और वह हामिला हुई, और या'कूब से उसके पाँचवाँ बेटा हुआ। ¹⁸तब लियाह ने कहा कि खुदा ने मेरी मज़दूरी मुझे दी क्योंकि मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी।" और उसने उसका नाम इश्कार रखखा।

¹⁹और लियाह फिर हामिला हुई और या'कूब से उसके छठा बेटा हुआ। ²⁰तब लियाह ने कहा कि खुदा ने अच्छा महर मुझे बख़्शा; अब मेरा शौहर मेरे साथ रहेगा क्योंकि मेरे उससे छः बेटे हो चुके हैं। इसलिए उसने उसका नाम ज़बूलून रखखा। ²¹इसके बाद उसके एक बेटी हुई और उसने उसका नाम दीना रखखा।

²²और खुदा ने राखिल को याद किया, और खुदा ने उसकी सुन कर उसके रहम को खोला। ²³और वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, तब उसने कहा कि खुदा ने मुझ से रुस्वाई दूर की। ²⁴और उस ने उसका नाम युसुफ़ यह कह कर रखखा कि खुदा वन्द मुझ को एक और बेटा बख़्शे।

²⁵और जब राखिल से युसुफ़ पैदा हुआ तो या'कूब ने लाबन से कहा, "मुझे रुख़सत कर कि मैं अपने घर और अपने वतन को जाऊँ।" ²⁶मेरी बीवियाँ और मेरे बाल बच्चे जिनकी खातिर मैं ने तेरी खिदमत की है ~मेरे हवाले कर और मुझे जाने दे, क्योंकि तू खुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी खिदमत की है।"

²⁷तब लाबन ने उसे कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो यहीं रह क्योंकि मैं जान गया हूँ कि खुदावन्द ने तेरी वजह से मुझ को बरकत बख़्शी है।" ²⁸और यह भी कहा कि मुझ से तू अपनी मज़दूरी ठहरा ले, और मैं तुझे दिया करूँगा।

²⁹उसने उसे कहा कि तू खुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी खिदमत की और तेरे जानवर मेरे साथ कैसे रहे। ³⁰क्योंकि मेरे आने से पहले यह थोड़े थे और अब बढ़ कर बहुत से हो गए हैं, और खुदावन्द ने जहाँ जहाँ मेरे क़दम पड़े तुझे बरकत बख़्शी। अब मैं अपने घर का बन्दोबस्त कब करूँ?"

³¹उसने कहा, "तुझे मैं क्या दूँ?" या'कूब ने कहा, "तू मुझे कुछ न देना, लेकिन अगर तू मेरे लिए एक काम कर दे तो मैं तेरी भेड़-बकरियों को फिर चराऊँगा और उनकी निगहबानी करूँगा।" ³²मैं आज तेरी सब भेड़-बकरियों में चक्कर लगाऊँगा, और जितनी भेड़ें चितली और अबलक और काली हों और जितनी बकरियाँ अबलक और चितली हों उन सबको अलग एक तरफ़ कर दूँगा, इन्हीं को मैं अपनी मज़दूरी ठहराता हूँ।

³³और आइन्दा जब कभी मेरी मज़दूरी का हिसाब तेरे सामने ही तो मेरी सच्चाई आप मेरी तरफ़ से इस तरह बोल उठेगी, कि जो बकरियाँ चितली और अबलक नहीं और जो भेड़े काली नहीं अगर वह मेरे पास हों तो चुराई हुई समझी जाएँगी।" ³⁴लाबन ने कहा, "मैं राज़ी हूँ, जो तू कहे वही सही।"

³⁵और उसने उसी रोज़ धारीदार और अबलक बकरों की और सब चितली और अबलक बकरियों को जिनमें कुछ सफ़ेदी थी, और तमाम काली भेड़ों को अलग करके उनकी अपने बेटों के हवाले किया। ³⁶और उसने अपने और या'कूब के बीच तीन दिन के सफ़र का फ़ासला ठहराया; और या'कूब लाबन के बाक़ी रेवड़ों को चराने लगा।

³⁷और या'कूब ने सफ़ेदा और बादाम, और चिनार की हरी हरी छड़ियाँ लीं उनको छील छीलकर इस तरह गन्डेदार बना लिया के उन छड़ियों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी। ³⁸और उसने वह गन्डेदार छड़ियाँ भेड़-बकरियों के सामने हाँजों और नालियों में जहाँ वह पानी पीने आती थीं खड़ी कर दीं, और जब वह पानी पीने आई तब गाभिन हो गई।

³⁹और उन छड़ियों के आगे गाभिन होने की वजह से उन्होंने धारीदार, चितले और अबलक बच्चे दिए। ⁴⁰और या'कूब ने भेड़ बकरियों के उन बच्चों को अलग किया, और लाबन की भेड़-बकरियों के मुँह धारीदार और काले बच्चों की तरफ़ फेर दिए और उसने अपने रेवड़ों को जुदा किया, और लाबन की भेड़ बकरियों में मिलने न दिया।

⁴¹और जब मज़बूत भेड़-बकरियाँ गाभिन होती थीं तो या'कूब छड़ियों को नालियों में उनकी आँखों के सामने रख देता था, ताकि वह उन छड़ियों के आगे गाभिन हों। ⁴²लेकिन जब भेड़ बकरियाँ दुबली होतीं तो वह उनको वहाँ नहीं रखता था। इसलिए दुबली तो लाबन की रहीं और मज़बूत या'कूब की हो गई।

⁴³चुनौचे वह निहायत बढ़ता गया और उसके पास बहुत से रेवड़ और लौंडिया और नौकर चाकर और ऊँट और गधे हो गये।

Chapter 31

¹और उसने लाबन के बेटों की यह बातें सुनीं, कि या'कूब ने हमारे बाप का सब कुछ ले लिया और हमारे बाप के माल की बदौलत उसकी यह सारी शान-ओ-शौकत है।² और या'कूब ने लाबन के चेहरे को देख कर ताड़ लिया कि उसका रुख पहले से बदला हुआ है।³ और खुदावन्द ने या'कूब से कहा, कि तू अपने बाप दादा के मुल्क को और अपने रिश्तेदारों के पास लौट जा, और मैं तेरे साथ रहूँगा।

⁴तब या'कूब ने राखिल और लियाह को मैदान में जहाँ उसकी भेड़-बकरियाँ थीं बुलवाया⁵ और उनसे कहा, "मैं देखता हूँ कि तुम्हारे बाप का रुख पहले से बदला हुआ है, लेकिन मेरे बाप का खुदा मेरे साथ रहा।⁶ तुम तो जानती हो कि मैंने अपनी ताक़त के मुताबिक़ तुम्हारे बाप की खिदमत की है।

⁷लेकिन तुम्हारे बाप ने मुझे धोका दे देकर दस बार मेरी मज़दूरी बदली, लेकिन खुदा ने उसको मुझे नुक़सान पहुँचाने न दिया।⁸ जब उसने यह कहा कि चितले बच्चे तेरी मज़दूरी होंगे, तो भेड़ बकरियाँ चितले बच्चे देने लगीं, और जब कहा कि धारीदार बच्चे तेरे होंगे, तो भेड़-बकरियाँ ने धारीदार बच्चे दिए।⁹ यूँ खुदा ने तुम्हारे बाप के जानवर लेकर मुझे दे दिए।

¹⁰और जब भेड़ बकरियाँ गाभिन हुईं, तो मैंने ख़्वाब में देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं वो धारीदार, चितले और चितकबरे हैं।¹¹ और खुदा के फ़रिश्ते ने ख़्वाब में मुझ से कहा, 'ऐ या'कूब!' मैंने कहा, 'मैं हाज़िर हूँ।'।

¹²तब उसने कहा कि अब तू अपनी आँख उठा कर देख, कि सब बकरे जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं धारीदार चितले और चितकबरे हैं, क्योंकि जो कुछ लाबन तुझ से करता है मैंने देखा।¹³ मैं बैतएल का खुदा हूँ, जहाँ तूने सुतून पर तेल डाला और मेरी मन्त्रत मानी, इसलिए अब उठ और इस मुल्क से निकल कर अपने वतन ~को लौट जा'।

¹⁴तब राखिल और लियाह ने उसे जवाब दिया, "क्या, अब भी हमारे बाप के घर में कुछ हमारा बख़रा या मीरास है?"¹⁵ क्या वह हम को अजनबी के बराबर नहीं समझता? क्योंकि उसने हम को भी बेच डाला और हमारे रुपये भी खा बैठ।¹⁶ इसलिए अब जो दौलत खुदा ने हमारे बाप से ली वह हमारी और हमारे फ़र्ज़न्दों की है, फिर जो कुछ खुदा ने तुझ से कहा है वही कर।"

¹⁷तब या'कूब ने उठ कर अपने बाल बच्चों और बीवियों को ऊँटों पर बिठाया।¹⁸ और अपने सब जानवरों और माल-ओ-अस्बाब को जो उसने इकट्ठा किया था, या'नी वह जानवर जो उसे फ़दान-अराम में मज़दूरी में मिले थे, लेकर चला ताकि मुल्क-ए-कना'न में अपने बाप इस्हाक़ के पास जाए।

¹⁹और लाबन अपनी भेड़ों की ऊन कतरने को गया हुआ था, तब राखिल अपने बाप के बुतों को चुरा ले गई।²⁰ और या'कूब लाबन अरामी के पास से चोरी से चला गया, क्योंकि उसे उसने अपने भागने की ख़बर न दी।²¹ फिर वह अपना सब कुछ लेकर भागा और दरिया पार होकर अपना रुख़ कोह-ए-जिल'आद की तरफ़ किया।

²²और तीसरे दिन लाबन की ख़बर हुई कि या'कूब भाग गया।²³ तब उसने अपने भाइयों को हमराह लेकर सात मन्ज़िल तक उसका पीछा किया, और जिल'आद के पहाड़ पर उसे जा पकड़ा।

²⁴और रात को खुदा लाबन अरामी के पास ख़्वाब में आया और उससे कहा कि ख़बरदार, तू या'कूब को बुरा या भला कुछ न कहना।²⁵ और लाबन या'कूब के बराबर जा पहुँचा और या'कूब ने अपना खेमा पहाड़ पर खड़ा कर रखवा था। इसलिए लाबन ने भी अपने भाइयों के साथ जिल'आद के पहाड़ पर डेरा लगा लिया।

²⁶तब लाबन ने या'कूब से कहा, कि तूने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को भी इस तरह ले आया गोया वह तलवार से क़ैद की गई हैं?²⁷ तू छिप कर क्यों भागा और मेरे पास से चोरी से क्यों चला आया और मुझे कुछ कहा भी नहीं, वरना मैं तुझे खुशी-खुशी तबले और बरबत के साथ गाते बजाते रवाना करता?²⁸ और मुझे अपने बेटों और बेटियों को चूमने भी न दिया? यह तूने बेहूदा काम किया।

²⁹मुझ में इतनी ताक़त है कि तुम को दुख दूँ, लेकिन तेरे बाप के खुदा ने कल रात मुझे यूँ कहा, कि ख़बरदार तू या'कूब को बुरा या भला कुछ न कहना।³⁰ ख़ैर! अब तू चला आया तो चला आया क्योंकि तू अपने बाप के घर का बहुत ख़्वाहिश मन्द है, लेकिन मेरे बुतों को क्यों चुरा लाया?"

³¹तब या'कूब ने लाबन से कहा, "इसलिए कि मैं डरा, क्योंकि कि मैंने सोचा कि कहीं तू अपनी बेटियों को जबरन मुझ से छीन न ले।³² अब जिसके पास तुझे तेरे बुत मिलें वह ज़िन्दा नहीं बचेगा। तेरा जो कुछ मेरे पास निकले उसे इन भाइयों के आगे पहचान कर ले।" क्योंकि या'कूब को मा'लूम न था कि राखिल उन बुतों को चुरा लाई है।

³³चुनांचे लाबन या'कूब और लियाह और दोनों लौंडियों के खेमों में गया लेकिन उनको वहाँ न पाया, तब वह लियाह के खेमा से निकल कर राखिल के खेमे में दाखिल हुआ।

³⁴और राखिल उन बुतों को लेकर और उनकी ऊँट के कजावे में रख कर उन पर बैठ गई थी, और लाबन ने सारे खेमों में टटोल टटोल कर देख लिया पर उनको न पाया।³⁵ तब वह अपने बाप से कहने लगी, "ऐ मेरे बुज़ुर्ग! तू इस बात से नाराज़ न होना कि मैं तेरे आगे उठ नहीं सकती, क्योंकि मैं ऐसे हाल में हूँ जो 'औरतों का हुआ करता है।" तब उसने ढूँडा पर वह बुत उसको न मिले।

³⁶तब या'कूब ने गुस्सा होकर लाबन को मलामत की और या'कूब लाबन से कहने लगा कि मेरा क्या जुर्म और क्या कुसूर है कि तूने ऐसी तेज़ी से मेरा पीछा किया?³⁷ तूने जो मेरा सारा सामान टटोल-टटोल कर देख लिया तो तुझे तेरे घर के सामान में से क्या चीज़ मिली? अगर कुछ है तो उसे मेरे और अपने इन भाइयों के आगे रख, कि वह हम दोनों के बीच इँसाफ़ करें।

³⁸मैं पूरे बीस साल तेरे साथ रहा; न तो कभी तेरी भेड़ों और बकरियों का गाभ गिरा, और न तेरे रेवड़ के मेंढे मैंने खाए।³⁹ जिसे दरिन्दों ने फाड़ा मैं उसे तेरे पास न लाया, उसका नुक़सान मैंने सहा; जो दिन की या रात को चोरी गया उसे तूने मुझ से तलब किया।⁴⁰ मेरा हाल यह रहा कि मैं दिन को गर्मी और रात को सर्दी में मरा और मेरी आँखों से नींद दूर रहती थी।

⁴¹मैं बीस साल तक तेरे घर में रहा, चौदह साल तक तो मैंने तेरी दोनों बेटियों की खातिर और छः साल तक तेरी भेड़ बकरियों की खातिर तेरी खिदमत की, और तूने दस बार मेरी मज़दूरी बदल डाली।⁴² अगर मेरे बाप का खुदा इब्राहीम का मा'बूद जिसका रौब इस्हाक़ मानता था, मेरी तरफ़ न होता तो ज़रूर ही तू अब मुझे ख़ाली हाथ जाने देता। खुदा ने मेरी मुसीबत और मेरे हाथों की मेहनत देखी है और कल रात तुझे डाँटा भी।"

⁴³तब लाबन ने या'क़ूब को जवाब दिया, "यह बेटियाँ भी मेरी और यह लड़के भी मेरे और यह भेड़ बकरियाँ भी मेरी हैं, बल्कि जो कुछ तुझे दिखाई देता है वह सब मेरा ही है। इसलिए मैं आज के दिन अपनी ही बेटियों से या उनके लड़कों से जो उनके हुए क्या कर सकता हूँ?"⁴⁴ फिर अब आ, कि मैं और तू दोनों मिल कर आपस में एक 'अहद बाँधे और वही मेरे और तेरे बीच गवाह रहे।

⁴⁵तब या'क़ूब ने एक पत्थर लेकर उसे सुतून की तरह खड़ा किया।⁴⁶ और या'क़ूब ने अपने भाइयों से कहा, "पत्थर जमा' करो!" उन्होंने पत्थर जमा' करके ढेर लगाया और वहीं उस ढेर के पास उन्होंने खाना खाया।⁴⁷ और लाबन ने उसका नाम यज़्र शाहदूथा और या'क़ूब ने जिल'आद रखखा।

⁴⁸और लाबन ने कहा कि यह ढेर आज के दिन मेरे और तेरे बीच गवाह हो। इसी लिए उसका नाम जिल'आद रखखा गया।⁴⁹ और मिस्रफ़ाह भी क्योंकि लाबन ने कहा कि जब हम एक दूसरे से ग़ैर हाज़िर हों तो खुदावन्द मेरे और तेरे बीच निगरानी करता रहे।⁵⁰ अगर तू मेरी बेटियों को दुख दे और उनके अलावा और बीवियाँ करे तो कोई आदमी हमारे साथ नहीं है लेकिन देख खुदा मेरे और तेरे बीच में गवाह है।

⁵¹लाबन ने या'क़ूब से यह भी कहा कि इस ढेर को देख और उस सुतून को देख जो मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है।⁵² यह ढेर गवाह हो और ये सुतून गवाह हो, नुक़सान पहुँचाने के लिए न तो मैं इस ढेर से उधर तेरी तरफ़ हद से बढ़ूँ और न तू इस ढेर और सुतून से इधर मेरी तरफ़ हद से बढ़े।⁵³ इब्राहीम का खुदा और नहूर का खुदा और उनके बाप का खुदा हमारे बीच में इंसाफ़ करे।" और या'क़ूब ने उस ज़ात की क़सम खाई जिसका रौ'ब उसका बाप इस्हाक़ मानता था।

⁵⁴तब या'क़ूब ने वहीं पहाड़ पर कुर्बानी पेश की और अपने भाइयों को खाने पर बुलाया, और उन्होंने खाना खाया और रात पहाड़ पर काटी।⁵⁵ और लाबन सुबह-सवेरे उठा और अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उनको दु'आ देकर खाना हो गया और अपने मकान को लौटा।

Chapter 32

¹और या'कूब ने भी अपनी राह ली और ख़ुदा के फ़रिश्ता उसे मिले।²और या'कूब ने उनको देख कर कहा, कि यह ख़ुदा का लश्कर है और उस जगह का नाम महनाइम रखवा।

³और या'कूब ने अपने आगे-आगे क्रासिदों को अदोम के मुल्क को, जो श'ईर की सर-ज़मीन में है, अपने भाई 'ऐसौ के पास भेजा,⁴और उनको हुक्म दिया, कि तुम मेरे ख़ुदावन्द 'ऐसौ से यह कहना कि आपका बन्दा या'कूब कहता है, कि मैं लाबन के यहाँ मुक़ीम था और अब तक वहीं रहा।⁵और मेरे पास गाय बैल गधे और भेड़ बकरियाँ और नौकर चाकर और लौंडियाँ हैं और मैं अपने ख़ुदावन्द के पास इसलिए खबर भेजता हूँ कि मुझ पर आप के करम की नज़र हो।⁶फिर क्रासिद या'कूब के पास लौट कर आए और कहने लगे कि हम भाई 'ऐसौ के पास गए थे; वह चार सौ आदमियों को साथ लेकर तेरी मुलाक़ात को आ रहा है⁷तब या'कूब निहायत डर गया और परेशान हो और उस ने अपने साथ के लोगों और भेड़ बकरियों और गाये बैलों और ऊँटों के दो गोल किए⁸और सोचा कि 'ऐसौ एक गोल पर आ पड़े और उसे मारे तो दुसरा गोल बच कर भाग जाएगा।

⁹और या'कूब ने कहा ऐ मेरे बापअब्राहम के ख़ुदा और मेरे बाप इस्हाक के ख़ुदा !ऐ ख़ुदावन्द जिस ने मुझे यह-फ़रमाया कि तू अपने मुल्क को अपने रिश्तादारों के पास लौट जा और मैं तेरे साथ भलाई करूँगा¹⁰मैं तेरी सब रहमतों और वफ़ादारी के मुक़ाबला में जो तूने अपने बन्दा के साथ बरती है बिल्कुल हेच हूँ क्योंकि मैं सिर्फ़ अपनी लाठी लेकर इस यरदन के पार गया था और अब ऐसा हूँ कि मेरे दो गोल हैं

¹¹मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे मेरे भाई 'ऐसौ के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस से डरता हूँ कि कहीं वह आकर मुझे और बच्चों को माँ समेत मार न डाले¹²यह तेरा ही फ़रमान है कि मैं तेरे साथ ज़रूर भलाई करूँगा और तेरी नसल को दरिया की रेत की तरह बनाऊँगा जो कसरत की वजह से गिनी नहीं जा सकती।

¹³और वह उस रात वही रहा और जो उसके पास था उस में से अपने भाई 'ऐसौ के लिए यह नज़राना लिया।¹⁴दो सौ बकरियाँ और बीस बकरे; दो सौ भेड़ें और बीस मेंढ़े।¹⁵और तीस दूध देने वाली ऊँटनीयाँ बच्चों समेत और चालीस गाय और दस बैल बीस गधियाँ और दस गधे¹⁶और उनको जुदा-जुदा गोल कर के नौकरों को सौंपना और उन से कहा कि तुम मेरे आगे आगे पार जाओ और गोलों को ज़रा दूर दूर रखना।

¹⁷और उसने सब से अगले गोल के रखवाले को हुक्म दिया कि जब मेरा भाई 'ऐसौ तुझे मिले और तुझ से पूछे कि तू किस का नौकर है और कहाँ जाता है और यह-जानवर जो तेरे आगे आगे हैं किस के हैं? ¹⁸तू कहना कि यह तेरे खादिम या'कूब के हैं, यह नज़राना है जो मेरे ख़ुदावन्द 'ऐसौ के लिए भेजा गया है और वह ख़ुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है।

¹⁹और उस ने दूसरे और तीसरे को गोलों के सब रखवालों को हुक्म दिया कि जब 'ऐसौ तुमको मिले तो तुम यही बात कहना।²⁰और यह भी कहना कि तेरा खादिम या'कूब ख़ुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है, उस ने यह सोचा कि मैं इस नज़राना से जो मुझ से पहले वहाँ जायेगा उसे खुश कर लूँ, तब उस का मुँह देखूँगा, शायद यूँ वह मुझको कुबूल कर ले।²¹चुनाँचे वह नज़राना उसके आगे आगे पार गया लेकिन वह ख़ुद उस रात अपने डेरे में रहा।

²²और वह उसी रात उठा और अपनी दोनों बीवियों दोनों लौंडियों और ग्यारह बेटों को लेकर उनको यबूक के घाट से पार उतारा।²³और उनको लेकर नदी पार कराया और अपना सब कुछ पार भेज दिया।

²⁴और या'कूब अकेला रह गया और पौ फटने के वक़्त तक एक शख्स वहाँ उस से कुश्ती लड़ता रहा।²⁵जब उसने देखा कि वह उस पर ग़ालिब नहीं होता, तो उसकी रान को अन्दर की तरफ़ से छुआ और या'कूब की रान की नस उसके साथ कुश्ती करने में चढ़ गई।²⁶और उसने कहा, "मुझे जाने दे क्योंकि पौ फट चली, " या'कूब ने कहा, "जब तक तू मुझे बरकत न दे, मैं तुझे जाने नहीं दूँगा।"

²⁷तब उसने उससे पूछा, "तेरा क्या नाम है? उसने जवाब दिया, "या'कूब।"²⁸उसने कहा, "तेरा नाम आगे को या'कूब नहीं बल्कि इस्राईल होगा, क्योंकि तूने ख़ुदा और आदमियों के साथ ज़ोर आजमाई की और ग़ालिब हुआ।"

²⁹तब या'कूब ने उससे कहा, "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, तू मुझे अपना नाम बता दे।" उसने कहा, "तू मेरा नाम क्या पूछता है?" और उसने उसे वहाँ बरकत दी।

³⁰और या'कूब ने उस जगह का नाम फ़नीएल रखवा और कहा, "मैंने ख़ुदा को आमने सामने देखा, तो भी मेरी जान बची रही।"

³¹और जब वह फ़नीएल से गुज़र रहा था तो आफ़ताब तुलू हुआ और वह अपनी रान से लंगड़ाता था।³²इसी वजह से बनी इस्राईल उस नस की जो रान में अन्दर की तरफ़ है आज तक नहीं खाते, क्योंकि उस शख्स ने या'कूब की रान की नस को जो अन्दर की तरफ़ से चढ़ गई थी छू दिया था।

Chapter 33

¹और या'कूब ने अपनी आँखें उठा कर नज़र की ओर क्या देखता है कि 'ऐसी चार सौ आदमी साथ लिए चला आ रहा है। तब उसने लियाह और राखिल और दोनों लौंडियों को बच्चे बाँट दिए।²और लौंडियों और उनके बच्चों को सबसे आगे, और लियाह और उसके बच्चों को पीछे, और राखिल और यूसुफ़ को सबसे पीछे रखवा।³और वह खुद उनके आगे-आगे चला और अपने भाई के पास पहुँचते-पहुँचते सात बार ज़मीन तक झुका।

⁴और 'ऐसी उससे मिलने को दौड़ा, और उससे बगलगीर ~हुआ और उसे गले लगाया और चूमा, और वह दोनों रोए।⁵फिर उसने आँखें उठाई और 'औरतों और बच्चों को देखा और कहा कि यह तेरे साथ कौन हैं? उसने कहा, 'यह वह बच्चे हैं जो खुदा ने तेरे खादिम को इनायत किए हैं।"

⁶तब लौंडियाँ और उनके बच्चे नज़दीक आए और अपने आप को झुकाया।⁷फिर लियाह अपने बच्चों के साथ नज़दीक आई और वह झुके, आखिर को यूसुफ़ और राखिल पास आए और उन्होंने अपने आप को झुकाया।⁸फिर उसने कहा कि उस बड़े गोल से जो मुझे मिला तेरा क्या मतलब है?" उसने कहा, "यह कि मैं अपने खुदावन्द की नज़र में मक्बूल ठहरूँ।

⁹तब 'ऐसी ने कहा, "मेरे पास बहुत हैं; इसलिए ऐ मेरे भाई जो तेरा है वह तेरा ही रहे।"¹⁰या'कूब ने कहा, "नहीं अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हुई है तो मेरा नज़राना मेरे हाथ से कुबूल कर, क्योंकि मैंने तो तेरा मुँह ऐसा देखा जैसा कोई खुदा का मुँह देखता है, और तू मुझ से राज़ी हुआ।"¹¹इसलिए मेरा नज़राना जो तेरे सामने पेश हुआ उसे कुबूल कर ले, क्योंकि खुदा ने मुझ पर बड़ा फ़ज़ल किया है और मेरे पास सब कुछ है।" गर्ज़ उसने उसे मजबूर किया, तब उसने उसे ले लिया।

¹²और उसने कहा कि अब हम कूच करें और चल पड़ें, और मैं तेरे आगे-आगे हो लूँगा।¹³उसने उसे जवाब दिया, "मेरा खुदावन्द जानता है कि मेरे साथ नाज़ुक बच्चे और दूध पिलाने वाली भेड़-बकरियाँ और गाय हैं। अगर उनकी एक दिन भी हद से ज़्यादा हंकाएँ तो सब भेड़ बकरियाँ मर जाएँगी।"¹⁴इसलिए मेरा खुदावन्द अपने खादिम से पहले खाना हो जाए, और मैं चौपायों और बच्चों की रफ़्तार के मुताबिक़ आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ अपने खुदावन्द के पास श'ईर में आ जाऊँगा।"

¹⁵तब 'ऐसी ने कहा कि मर्ज़ी हो तो मैं जो लोग मेरे साथ हैं उनमें से थोड़े तेरे साथ छोड़ता जाऊँ। उसने कहा, "इसकी क्या ज़रूरत है? मेरे खुदावन्द की नज़र-ए-करम मेरे लिए काफ़ी है।"¹⁶तब 'ऐसी उसी रोज़ उल्टे पाँव श'ईर को लौटा।¹⁷और या'कूब सफ़र करता हुआ सुक्कात में आया, और अपने लिए एक घर बनाया और अपने चौपायों के लिए झोंपड़े खड़े किए। इसी वजह से इस जगह का नाम सुक्कात पड़ गया।

¹⁸और या'कूब जब फ़दान अराम से चला तो मुल्क-ए-कना'न के एक शहर सिक्म के नज़दीक सही-ओ-सलामत पहुँचा और उस शहर के सामने अपने डेरे लगाए।¹⁹और ज़मीन के जिस हिस्से पर उसने अपना खेमा खड़ा किया था, उसे उसने सिक्म के बाप हमीर के लड़कों से चाँदी के सौ सिक्के देकर खरीद लिया।

²⁰और उसने वहाँ एक मसबह बनाया और उसका नाम ~एल-इलाह-ए-इसाईल रखवा।

Chapter 34

¹और लियाह की बेटी दीना जो या'कूब से उसके पैदा हुई थी, उस मुल्क की लड़कियों के देखने को बाहर गई।²तब उस मुल्क के अमीर हवी हमोर के बेटे सिक्म ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ मुबाश्रत की और उसे ज़लील किया।³और उसका दिल या'कूब की बेटी दीना से लग गया, और उसने उस लड़की से 'इश्क में मीठी-मीठी बातें की।

⁴और सिक्म ने अपने बाप हमीर से कहा कि इस लड़की को मेरे लिए ब्याह ला दे।⁵और या'कूब को मा'लूम हुआ कि उसने उसकी बेटी दीना को बे इज़्ज़त किया है। लेकिन उसके बेटे चौपायों के साथ जंगल में थे इसलिए या'कूब उनके आने तक चुपका रहा।

⁶तब सिक्म का बाप हमीर निकल कर या'कूब से बातचीत करने को उसके पास गया।⁷और या'कूब के बेटे यह बात सुनते ही जंगल से आए। यह शख्स बड़े नाराज़ और खौफ़नाक थे, क्योंकि उसने जो या'कूब की बेटी से मुबाश्रत की तो बनी-इस्राईल में ऐसा मकरूह फ़ैल किया जो हरगिज़ मुनासिब न था।

⁸तब हमूर उन से कहने लगा कि मेरा बेटा सिक्म तुम्हारी बेटी को दिल से चाहता है, उसे उसके साथ ब्याह दो।⁹हम से समधियाना कर लो; अपनी बेटियाँ हम को दो और हमारी बेटियाँ आप लो।¹⁰तो तुम हमारे साथ बसे रहोगे और यह मुल्क तुम्हारे सामने है, इसमें ठहरना और तिजारत करना और अपनी जायदादें खड़ी कर लेना।"

¹¹और सिक्म ने इस लड़की के बाप और भाइयों से कहा, कि मुझ पर बस तुम्हारे करम की नज़र हो जाए, फिर जो कुछ तुम मुझ से कहोगे मैं दूँगा।¹²मैं तुम्हारे कहने के मुताबिक़ जितना मेहर और जहेज़ तुम मुझ से तलब करो, दूँगा लेकिन लड़की को मुझ से ब्याह दो।"¹³तब या'कूब के बेटों ने इस वजह से कि उसने उनकी बहन दीना को बे'इज़्ज़त किया था, रिया से सिक्म और उसके बाप हमीर को जवाब दिया,

¹⁴और कहने लगे, "हम यह नहीं कर सकते कि नामख़तून ~आदमी को अपनी बहन दें, क्योंकि इसमें हमारी बड़ी रुस्वाई है।¹⁵लेकिन जैसे हम हैं अगर तुम वैसे ही हो जाओ, कि तुम्हारे हर आदमियों का ख़तना कर दिया जाए तो हम राज़ी हो जाएँगे।¹⁶और हम अपनी बेटियाँ तुम्हें देंगे और तुम्हारी बेटियाँ लेंगे और तुम्हारे साथ रहेंगे और हम सब एक क़ौम हो जाएँगे।¹⁷और अगर तुम ख़तना कराने के लिए हमारी बात न मानी तो हम अपनी लड़की लेकर चले जाएँगे।"

¹⁸उनकी बातें हमीर और उसके बेटे सिक्म को पसन्द आई।¹⁹और उस जवान ने इस काम में ताख़ीर न की क्योंकि उसे या'कूब की बेटी की चाहत थी, और वह अपने बाप के सारे घराने में सबसे ख़ास था।

²⁰फिर हमीर और उसका बेटा सिक्म अपने शहर के फाटक पर गए और अपने शहर के लोगों से यूँ बातें करने लगे कि,²¹यह लोग हम से मेल जोल रखते हैं; तब वह इस मुल्क में रह कर सौदागरी करें, क्योंकि इस मुल्क में उनके लिए बहुत गुन्जाइश है, और हम उनकी बेटियाँ ब्याह लें और अपनी बेटियाँ उनकी दें।

²²और वह भी हमारे साथ रहने और एक क़ौम बन जाने को राज़ी हैं, मगर सिर्फ़ इस शर्त पर कि हम में से हर आदमी का ख़तना किया जाए जैसा उनका हुआ है।

²³क्या उनके चौपाए और माल और सब जानवर हमारे न हो जाएँगे? हम सिर्फ़ उनकी मान लें और वह हमारे साथ रहने लगेंगे।

²⁴तब उन सभी ने जो उसके शहर के फाटक से आया-जाया करते थे, हमीर और उसके बेटे सिक्म की बात मानी और जितने उसके शहर के फाटक से आया-जाया करते थे उनमें से हर आदमी ने ख़तना कराया।²⁵और तीसरे दिन जब वह दर्द में मुब्तिला थे, तो यूँ हुआ कि या'कूब के बेटों में से दीना के दो भाई, शमा'ऊन और लावी, अपनी-अपनी तलवार लेकर अचानक शहर पर आ पड़े और सब आदमियों को क़त्ल किया।²⁶और हमोर और उसके बेटे सिक्म को भी तलवार से क़त्ल कर डाला और सिक्म के घर से दीना को निकाल ले गए।

²⁷और या'कूब के बेटे मक्त्तूलों पर आए और शहर को लूटा, इसलिए कि उन्होंने उनकी बहन को बे'इज़्ज़त किया था।²⁸उन्होंने उनकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल, गधे और जो कुछ शहर और खेत में था ले लिया।²⁹और उनकी सब दौलत लूटी और उनके बच्चों और बीवियों को क़ब्ज़े में कर लिया, और जो कुछ घर में था सब लूट-घसूट कर ले गए।

³⁰तब या'कूब ने शमा'ऊन और लावी से कहा, कि तुम ने मुझे कुड़ाया क्योंकि तुम ने मुझे इस मुल्क के बाशिन्दों, या'नी कना'नियों और फ़रिज़ियों में नफ़रतअंगेज बना दिया, क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही आदमी हैं; अब वह मिल कर मेरे मुकाबिले को आएँगे और मुझे क़त्ल कर देंगे, और मैं अपने घराने समेत बर्बाद हो जाऊँगा।³¹उन्होंने कहा, "तो क्या उसे मुनासिब था कि वह हमारी बहन के साथ कसबी की तरह बर्ताव करता?"

Chapter 35

¹और खुदा ने या'कूब से कहा, कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और वहाँ खुदा के लिए, जो तुझे उस वक्रत दिखाई दिया जब तू अपने भाई 'ऐसौ के पास से भागा जा रहा था, एक मज़बह बना।²तब या'कूब ने अपने घराने और अपने सब साथियों से कहा गैर मा'बूदों को जो तुम्हारे बीच हैं दूर करो, और पाकी हासिल करके अपने कपड़े बदल डालो।³और आओ, हम रवाना हों और बैत-एल को जाएँ, वहाँ मैं खुदा के लिए जिसने मेरी तंगी के दिन मेरी दु'आ कुबूल की और जिस राह में मैं चला मेरे साथ रहा, मज़बह बनाऊँगा।"

⁴तब उन्होंने सब गैर मा'बूदों को जो उनके पास थे और मुन्दरों को जो उनके कानों में थे, या'कूब को दे दिया और या'कूब ने उनको उस बलूत के दरख्त के नीचे जो सिक्म के नज़दीक था दबा दिया।⁵और उन्होंने कूच किया और उनके आस पास के शहरों पर ऐसा बड़ा खौफ़ छाया हुआ था कि उन्होंने या'कूब के बेटों का पीछा न किया।

⁶और या'कूब उन सब लोगों के साथ जो उसके साथ थे लूज पहुँचा, बैत-एल यही है और मुल्क-ए-कना'न में है।⁷और उसने वहाँ मज़बह बनाया और उस मुकाम का नाम एल-बैतएल रखवा, क्योंकि जब वह अपने भाई के पास से भागा जा रहा था तो खुदा वहीं उस पर ज़ाहिर हुआ था।⁸और रिबका की दाया दबोरा मर गई और वह बैतएल की उतराई में बलूत के दरख्त के नीचे दफ़न हुई, और उस बलूत का नाम अल्लोन बकूत रखवा गया।

⁹और या'कूब के फ़द्दान अराम से आने के बाद खुदा उसे फिर दिखाई दिया और उसे बरकत बख़शी।¹⁰और खुदा ने उसे कहा कि तेरा नाम या'कूब है; तेरा नाम आगे को या'कूब न कहलाएगा, बल्कि तेरा नाम इस्राईल होगा। तब उसने उसका नाम इस्राईल रखवा।

¹¹फिर खुदा ने उसे कहा, कि मैं खुदा-ए-क्रादिर-ए-मुतलक हूँ, तू कामयाब हो और बहुत हो जा। तुझ से एक क्रौम, बल्कि क्रौमों के कबीले पैदा होंगे और बादशाह तेरे सुल्ब से निकलेंगे।¹²और यह मुल्क जो मैंने इब्राहीम और इस्हाक़ को दिया है, वह तुझ को दूँगा और तेरे बाद तेरी नसल को भी यही मुल्क दूँगा।¹³और खुदा जिस जगह उससे हम कलाम हुआ, वहीं से उसके पास से ऊपर चला गया।

¹⁴तब या'कूब ने उस जगह जहाँ वह उससे हम-कलाम हुआ, पत्थर का एक सुतून खड़ा किया और उस पर तपावन किया और तेल डाला।¹⁵और या'कूब ने उस मक़ाम का नाम जहाँ खुदा उससे हम कलाम हुआ 'बैतएल' रखवा।

¹⁶और वह बैतएल से चले और इफ़रात थोड़ी ही दूर रह गया था कि राखिल के दर्द-ए-ज़िह लगा, और वज़ा'-ए-हम्ल में निहायत दिक्कत हुई।¹⁷और जब वह सख्त दर्द में मुब्तिला थी तो दाई ने उससे कहा, "डर मत, अब के भी तेरे बेटा ही होगा।"¹⁸और यूँ हुआ कि उसने मरते-मरते उसका नाम बिनऊनी रखवा और मर गई, लेकिन उसके बाप ने उसका नाम बिनयमीन रखवा।¹⁹और राखिल मर गई और इफ़रात, या'नी बैतलहम के रास्ते में दफ़न हुई।²⁰और या'कूब ने उसकी क़ब्र पर एक सुतून खड़ा कर दिया। राखिल की क़ब्र का यह सुतून आज तक मौजूद है।

²¹और इस्राईल आगे बढ़ा और 'अद्र के बुर्ज की परली तरफ़ अपना डेरा लगाया।²²और इस्राईल के उस मुल्क में रहते हुए ऐसा हुआ कि रूबिन ने जाकर अपने बाप की हरम बिल्हाह से मुबाश्रत की और इस्राईल को यह मा'लूम हो गया।

²³उस वक्रत या'कूब के बारह बेटे थे लियाह के बेटे यह थे : रूबिन या'कूब का पहलौठा, और शमा'ऊन और लावी और यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून।²⁴और राखिल के बेटे : यूसुफ़ और बिनयमीन थे।²⁵और राखिल की लौंडी बिल्हाह के बेटे, दान और नफ़्ताली थे।

²⁶और लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के बेटे, ज़द और आशर थे। यह सब या'कूब के बेटे हैं जो फ़द्दान अराम में पैदा हुए।²⁷और या'कूब ममरे में जो करयत अरबा' या'नी हबरून है जहाँ इब्राहीम और इस्हाक़ ने डेरा किया था, अपने बाप इस्हाक़ के पास आया।

²⁸और इस्हाक़ एक सौ अस्सी साल का हुआ।²⁹तब इस्हाक़ ने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और बूढ़ा और पूरी 'उम्र का हो कर अपने लोगों में जा मिला, और उसके बेटों 'ऐसौ और या'कूब ने उसे दफ़न किया।

Chapter 36

¹और 'ऐसौ या'नी अदोम का नसबनामा यह है।²'ऐसौ कना'नी लड़कियों में से हिती ऐलोन की बेटी 'अद्दा को, और हवी सबा'ओन की नवासी और 'अना की बेटी उहलीबामा की,³और इस्मा'ईल की बेटी और नबायोत की बहन बशामा को ब्याह लाया।

⁴और 'ऐसौ से 'अद्दा के इलीफ़ज़ पैदा हुआ, और बशामा के र'ऊएल पैदा हुआ,⁵और उहलीबामा के य'ओस और यालाम और कोरह पैदा हुए। यह 'ऐसौ के बेटे हैं जो मुल्क-ए-कना'न में पैदा हुए।

⁶और 'ऐसौ अपनी बीवियों और बेटे बेटियों और अपने घर के सब नौकर चाकरों और अपने चौपायों और तमाम जानवरों और अपने सब माल अस्बाब को, जो उसने मुल्क-ए-कना'न में जमा' किया था, लेकर अपने भाई या'कूब के पास से एक दूसरे मुल्क को चला गया।⁷क्योंकि उनके पास इस क्रदर सामान हो गया था कि वह एक जगह रह नहीं सकते थे, और उनके चौपायों की कसरत की वजह से उस ज़मीन में जहाँ उनका क्रयाम था गुंजाइश न थी।⁸तब 'ऐसौ जिसे अदोम भी कहते हैं, कोह-ए-श'ईर में रहने लगा।

⁹और 'ऐसौ का जो कोह-ए-श'ईर के अदोमियों का बाप है यह नसबनामा है।¹⁰'ऐसौ के बेटों के नाम यह हैं : इलीफ़ज़, 'ऐसौ की बीवी 'अद्दा का बेटा; और र'ऊएल, 'ऐसौ की बीवी बशामा का बेटा।¹¹इलीफ़ज़ के बेटे, तेमान और ओमर और सफ़ी और जा'ताम और कनज़ थे।¹²और तिम्ना' 'ऐसौ के बेटे इलीफ़ज़ की हरम थी, और इलीफ़ज़ से उसके 'अमालीक पैदा हुआ; और 'ऐसौ की बीवी 'अद्दा के बेटे यह थे।

¹³र'ऊएल के बेटे यह हैं : नहत और ज़ारह और सम्मा और मिज़ज़ा, यह 'ऐसौ की बीवी बशामा के बेटे थे।¹⁴और उहलीबामा के बेटे, जो 'अना की बेटी सबा'ओन की नवासी और 'ऐसौ की बीवी थी, यह हैं : 'ऐसौ से उसके य'ओस और या लाम और कोरह पैदा हुए।

¹⁵और 'ऐसौ की औलाद में जो रईस थे वह यह हैं : 'ऐसौ के पहलौटे बेटे इलीफ़ज़ की औलाद में रईस तेमान, रईस ओमर, रईस सफ़ी, रईस कनज़,¹⁶रईस कोरह, रईस जा'ताम, रईस 'अमालीक। यह वह रईस हैं जो इलीफ़ज़ से मुल्क-ए-अदोम में पैदा हुए और 'अद्दा के फ़र्ज़न्द थे।

¹⁷और र'ऊएल-बिन 'ऐसौ के बेटे यह हैं : रईस नहत, रईस ज़ारह, रईस सम्मा, रईस मिज़ज़ा। यह वह रईस हैं जो र'ऊएल से मुल्क-ए-अदोम में पैदा हुए और 'ऐसौ की बीवी बशामा के फ़र्ज़न्द थे।¹⁸और 'ऐसौ की बीवी उहलीबामा की औलाद यह हैं : रईस य'ऊस, रईस या'लाम, रईस कोरह। यह वह रईस हैं जो 'ऐसौ की बीवी उहलीबामा बिन 'अना के फ़र्ज़न्द थे।¹⁹और 'ऐसौ या'नी अदोम की औलाद और उनके रईस यह हैं।

²⁰और श'ईर होरी के बेटे जो उस मुल्क के बाशिन्दे थे, यह हैं : लोप्तान और सोबल और सबा'ओन और 'अना²¹और दीसोन और एसर और दीसान; बनी श'ईर में से जो होरी रईस मुल्क-ए-अदोम में हुए थे हैं।²²होरी और हीमाम लोतान के बेटे, और तिम्ना' लोतान की बहन थी।

²³और यह सोबल के बेटे हैं : 'अलवान और मानहत और 'एबाल और सफ़ी और ओनाम।²⁴और सबा'ओन के बेटे यह हैं : आया और 'अना; यह वह 'अना है जिसे अपने बाप के गधों को वीराने में चराते वक्त गर्म चश्मे मिले।

²⁵और 'अना की औलाद यह हैं : दीसोन और उहलीबामा बिन 'अना।²⁶और दीसोन के बेटे यह हैं : हमदान और इशबान और यित्रान और किरान।²⁷यह एसर के बेटे हैं : बिलहान और ज़ावान और 'अकान।²⁸दीसान के बेटे यह हैं : 'ऊज़ और इरान।

²⁹जो होरियों में से रईस हुए वह यह हैं : रईस 'लुतान, रईस, सोबल 'रईस सब'उन और रईस 'अना,³⁰रईस दीसोन, रईस एसर, रईस दीसान; यह उन होरियों के रईस हैं जो मुल्क-ए-श'ईर में थे।

³¹यही वह बादशाह हैं जो मुल्क-ए-अदोम से पहले उससे कि इस्त्राईल का कोई बादशाह हो, मुसल्लत थे।³²बाला'-बिनब'ओर अदोम में एक बादशाह था, और उसके शहर का नाम दिन्हाबा था।³³बाला' मर गया और यूबाब-बिन ज़ारह जो बुराही था, उसकी जगह बादशाह हुआ।

³⁴फिर यूबाब मर गया और हुशीम जो तेमानियों के मुल्क का बाशिन्दा था, उसका जानशीन हुआ।³⁵और हुशीम मर गया और हदद-बिन-बदद जिसने मोआब के मैदान में मिदियानियों को मारा, उसका जानशीन हुआ और उसके शहर का नाम 'अवीत था।³⁶और हदद मर गया और शम्ला जो मुसरिका का था उसका जानशीन हुआ।

³⁷और शमला ~मर गया और साउल उसका ~जानशीन हुआ ये रहबुत का था जो दरियाई फुरत के बराबर है।³⁸और साऊल मर गया और बा'लहनान-बिन-'अकबूर उसका जानशीन हुआ।³⁹और बा'लहनान-बिन-'अकबूर मर गया और हदर उसका जानशीन हुआ, और उसके शहर का नाम पाऊ और उसकी बीवी का नाम महेतबएल था, जो मतरिद की बेटी और मेज़ाहाब की नवासी थी।

⁴⁰फिर 'ऐसौ के रईसों के नाम उनके खान्दानों और मक़ामों और नामों के मुताबिक़ यह है : रईस', तिम्ना', रईस 'अलवा, रईस यतेत,⁴¹रईस उहलीबामा, रईस एला, रईस फिनोन,⁴²रईस कनज़, रईस तेमान, रईस मिबसार,⁴³रईस मज्दाएल, रईस 'इराम; अदोम का रईस यही है, जिनके नाम उनके मक्बूज़ा मुल्क में उनके घर के मुताबिक़ दिए गए हैं। यह हाल अदोमियों के बाप 'ऐसौ का है।

Chapter 37

¹और या'कूब मुल्क-ए-कना'न में रहता था, जहाँ उसका बाप मुसाफिर की तरह रहा था।²या'कूब की नसल का हाल यह है : कि यूसुफ सत्रह साल की 'उम्र में अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरियाँ चराया करता था। यह लड़का अपने बाप की बीवियों, बिल्हाह और ज़िल्फा के बेटों के साथ रहता था और वह उनके बुरे कामों की खबर बाप तक पहुँचा देता था।

³और इस्राईल यूसुफ को अपने सब बेटों से ज़्यादा प्यार करता था क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का बेटा था, और उसने उसे एक बूकलमून क़बा भी बनवा दी।⁴और उसके भाइयों ने देखा कि उनका बाप उसके सब भाइयों से ज़्यादा उसी को प्यार करता है, इसलिए वह उससे अदावत रखने लगे और ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे।

⁵और यूसुफ ने एक ख़्वाब देखा जिसे उसने अपने भाइयों को बताया, तो वह उससे और भी अदावत रखने लगे।⁶और उसने उनसे कहा, "ज़रा वह ख़्वाब तो सुनो, जो मैंने देखा है :

⁷हम खेत में पूले बांधते थे और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठा और सीधा खड़ा हो गया, और तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ़ से घेर लिया और उसे सिज्दा किया।"⁸तब उसके भाइयों ने उससे कहा, कि क्या तू सचमुच हम पर सल्तनत करेगा या हम पर तेरा तसल्लुत होगा?" और उन्होंने उसके ख़्वाबों और उसकी बातों की वजह से उससे और भी ज़्यादा अदावत रखी।

⁹फिर उसने दूसरा ख़्वाब देखा और अपने भाइयों को बताया। उसने कहा, "देखो! मुझे एक और ख़्वाब दिखाई दिया है, कि सूरज और चाँद और ग्यारह सितारों ने मुझे सिज्दा किया।"¹⁰और उसने इसे अपने बाप और भाइयों दोनों को बताया; तब उसके बाप ने उसे डाँटा और कहा कि यह ख़्वाब क्या है जो तूने देखा है? क्या मैं और तेरी माँ और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे ज़मीन पर झुक कर तुझे सिज्दा करेंगे?¹¹और उसके भाइयों को उससे हसद हो गया, लेकिन उसके बाप ने यह बात याद रखी।

¹²और उसके भाई अपने बाप की भेड़-बकरियाँ चराने सिक्म को गए।¹³तब इस्राईल ने यूसुफ से कहा, "तेरे भाई सिक्म में भेड़-बकरियों को चरा रहे होंगे, इसलिए आ कि मैं तुझे उनके पास भेजें।" उसने उसे कहा, "मैं तैयार हूँ।"¹⁴तब उसने कहा, "तू जा कर देख कि तेरे भाइयों का और भेड़-बकरियों का क्या हाल है, और आकर मुझे ख़बर दे।" तब उसने उसे हबरून की वादी से भेजा और वह सिक्म में आया।

¹⁵और एक शख्स ने उसे मैदान में इधर-उधर आवारा फिरते पाया; यह देख कर उस शख्स ने उससे पूछा, "तू क्या ढूँडता है?"¹⁶उसने कहा, "मैं अपने भाइयों को ढूँडता हूँ। ज़रा मुझे बता दे कि वह भेड़ बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?"¹⁷उस शख्स ने कहा, "वह यहाँ से चले गए, क्योंकि मैंने उनको यह कहते सुना, 'चलो, हम दूतैन को जाएँ।' चुनौचे यूसुफ अपने भाइयों की तलाश में चला और उनको दूतैन में पाया।

¹⁸और जूँ ही उन्होंने उसे दूर से देखा, ~इससे पहले कि वह नज़दीक पहुँचे, उसके क़ल्ल का मन्सूबा बाँधा।¹⁹और आपस में कहने लगे, 'देखो! ख़्वाबों का देखने वाला आ रहा है।'²⁰आओ, अब हम उसे मार डालें और किसी गढ़े में डाल दें और यह कह देंगे कि कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया; फिर देखेंगे कि उसके ख़्वाबों का अन्जाम क्या होता है।"

²¹तब, रूबिन ने यह सुन कर उसे उनके हाथों से बचाया और कहा, "हम उसकी जान न लें।"²²और रूबिन ने उनसे यह भी कहा ~कि खून न बहाओ बल्कि उसे इस गढ़े में जो वीराने में है डाल दो, लेकिन उस पर हाथ न उठाओ।" वह चाहता था कि उसे उनके हाथ से बचा कर उसके बाप के पास सलामत पहुँचा दे।

²³और यूँ हुआ कि जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा, तो उन्होंने उसकी बू क़लमून क़बा की जो वह पहने था उतार लिया,²⁴और उसे उठा कर गढ़े में डाल दिया। वह गढ़ा सूखा था, उसमें ज़रा भी पानी न था।

²⁵और वह खाना खाने बैठे और आँखें उठाई तो देखा कि इस्मा'ईलियों का एक काफ़िला ज़िल'आद से आ रहा है, और गर्म मसाले और रौगन बलसान और मुर्र ऊँटों पर लादे हुए मिस्र को लिए जा रहा है।²⁶तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा कि अगर हम अपने भाई को मार डालें और उसका खून छिपाएँ तो क्या नफ़ा होगा?

²⁷आओ, उसे इस्मा'ईलियों के हाथ बेच डालें कि हमारे हाथ उस पर न उठे क्योंकि वह हमारा भाई और हमारा खून है। उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली।

²⁸फिर वह मिदिया'नी सौदागर उधर से गुज़रे, तब उन्होंने यूसुफ को खींच कर गढ़े से बाहर निकाला और उसे इस्मा'ईलियों के हाथ बीस रुपये को बेच डाला और वह यूसुफ को मिस्र में ले गए।

²⁹जब रूबिन गढ़े पर लौट कर आया और देखा कि यूसुफ उसमें नहीं है तो अपना लिबास चाक किया।³⁰और अपने भाइयों के पास उल्टा फिरा और कहने लगा, कि लड़का तो वहाँ नहीं है, अब मैं कहाँ जाऊँ?

³¹फिर उन्होंने यूसुफ की क़बा लेकर और एक बकरा ज़बह करके उसे उसके खून में तर किया।³²और उन्होंने उस बूक़लमून क़बा को भिजवा दिया। फिर वह उसे उनके बाप के पास ले आए और कहा, "हम को यह चीज़ पड़ी मिली; अब तू पहचान कि यह तेरे बेटे की क़बा है या नहीं?"³³और उसने उसे पहचान लिया और कहा, "यह तो मेरे बेटे की क़बा है। कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया है, यूसुफ़ बेशक फाड़ा गया।"

³⁴तब या'कूब ने अपना लिबास चाक किया और टाट अपनी कमर से लपेटा, और बहुत दिनों तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा।³⁵और उसके सब बेटे बेटियाँ उसे तसल्ली देने जाते थे, लेकिन उसे तसल्ली न होती थी। वह यही कहता रहा, कि मैं तो मातम ही करता हुआ क़ब्र में अपने बेटे से जा मिलूँगा।"

इसलिए उसका बाप उसके लिए रोता रहा।³⁶और मिदियानियों ने उसे मिस्र में फूतीफ़ार के हाथ जो फ़िर'औन का एक हाकिम और जिलौदारों का सरदार था बेचा।

Chapter 38

¹~उन्ही दिनों में ऐसा हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से जुदा हो कर एक 'अदूल्लामी आदमी के पास, जिसका नाम हीरा था गया।²और यहूदाह ने वहाँ सुवा' नाम किसी कना'नी की बेटी को देखा और उससे ब्याह करके उसके पास गया।

³वह हामिला हुई और उसके एक बेटा हुआ, जिसका नाम उसने 'एर रख्खा।⁴और वह फिर हामिला हुई और एक बेटा हुआ और उसका नाम ओनान रख्खा।⁵फिर उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सेला रख्खा, और यहूदाह कज़ीब में था जब इस 'औरत के यह लड़का हुआ।

⁶और यहूदाह अपने पहलौठे बेटे 'एर के लिए एक 'औरत ब्याह लाया जिसका नाम तमर था।⁷और यहूदाह का पहलौठा बेटा 'एर खुदावन्द की निगाह में शरीर था, इसलिए खुदावन्द ने उसे हलाक कर दिया।

⁸तब यहूदाह ने ओनान से कहा कि अपने भाई की बीवी के पास जा और देवर का हक़~अदा कर ताकि तेरे भाई के नाम से नसल चले।⁹और ओनान जानता था कि यह नसल मेरी न कहलाएगी, इसलिए यूँ हुआ कि जब वह अपने भाई की बीवी के पास जाता तो नुत्फ़े को ज़मीन पर गिरा देता था कि मबादा उसके भाई के नाम से नसल चले।¹⁰और उसका यह काम खुदावन्द की नज़र में बहुत बुरा था, इसलिए उसने उसे भी हलाक किया।

¹¹तब यहूदाह ने अपनी बहू तमर से कहा कि मेरे बेटे सेला के बालिग होने तक तू अपने बाप के घर बेवा बैठी रह। क्योंकि उसने सोचा कि कहीं यह भी अपने भाइयों की तरह हलाक न हो जाए। तब तमर अपने बाप के घर में जाकर रहने लगी।

¹²और एक 'अरसे के बा'द ऐसा हुआ कि सुवा' की बेटी जो यहूदाह की बीवी थी मर गई, और जब यहूदाह को उसका ग़म भूला तो वह अपने 'अदूल्लामी दोस्त हीरा के साथ अपनी भेड़ों की ऊन के कतरने वालों के पास तिमनत को गया।¹³और तमर की यह ख़बर मिली कि तेरा ख़ुसर अपनी भेड़ों की ऊन कतरने के लिए तिमनत को जा रहा है।"¹⁴तब उसने अपने रंडापे के कपड़ों को उतार फेंका और बुर्का ओढ़ा और अपने को ढांका और 'ऐनीम के फाटक के बराबर जो तिमनत की राह पर है, जा बैठी क्योंकि उसने देखा कि सेला बालिग हो गया मगर यह उससे ब्याही नहीं गई।

¹⁵यहूदाह उसे देख कर समझा कि कोई कस्बी है, क्योंकि उसने अपना मुँह ढाँक रख्खा था।¹⁶इसलिए वह रास्ते से उसकी तरफ़ को फिरा और उससे कहने लगा कि जरा मुझे अपने साथ मुबास्रत कर लेने दे, क्योंकि इसे बिल्कुल नहीं मा'लूम था कि वह इसकी बहू है। उसने कहा, "तू मुझे क्या देगा ताकि मेरे साथ मुबाश्रत करे।"

¹⁷उसने कहा, "मैं रेवड़ में से बकरी का एक बच्चा तुझे भेज दूँगा।" उसने कहा कि उसके भेजेन तक तू मेरे पास कुछ रहन कर देगा।"¹⁸उसने कहा, "तुझे रहन क्या दूँ?" उसने कहा, "अपनी मुहर ~और अपना बाजू बंद और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है।" उसने यह चीजें उसे दीं और उसके साथ मुबाश्रत की, और वह उससे हामिला हो गई।

¹⁹फिर वह उठ कर चली गई और बुरका उतार कर रंडापे का जोड़ा पहन लिया।²⁰और यहूदाह ने अपने 'अदूल्लामी दोस्त के हाथ बकरी का बच्चा भेजा ताकि उस 'औरत के पास से अपना रहन वापिस मंगाए, लेकिन वह 'औरत उसे न मिली।

²¹तब उसने उस जगह के लोगों से पूछा, "वह कस्बी जो ऐनीम में रास्ते के बराबर बैठी थी कहाँ है?" उन्होंने कहा, "यहाँ कोई कस्बी नहीं थी।"²²तब उसने यहूदाह के पास लौट कर उसे बताया कि वह मुझे नहीं मिली; और वहाँ के लोग भी कहते थे कि वहाँ कोई कस्बी नहीं थी।²³यहूदाह ने कहा, "खैर ! उस रहन को वही रख्खे, हम तो बदनाम न हों; मैंने तो बकरी का बच्चा भेजा लेकिन वह तुझे नहीं मिली।"

²⁴और करीबन तीन महीने के बा'द यहूदाह को यह ख़बर मिली ~कि तेरी बहू तमर ने ज़िना किया और उसे छिनाले का हम्ल भी है। यहूदाह ने कहा कि उसे बाहर निकाल लाओ कि वह जलाई जाए।²⁵जब उसे बाहर निकाला तो उसने अपने ख़ुसर को कहला भेजा कि मेरे उसी शख्स का हम्ल है जिसकी यह चीजें हैं। इसलिए तू पहचान तो सही कि यह मुहर और बाजूबन्द और लाठी किसकी है।²⁶तब यहूदाह ने इक्रार किया और कहा, "वह मुझ से ज़्यादा सच्ची है, क्योंकि मैंने उसे अपने बेटे सेला से नहीं ब्याहा।" और वह फिर कभी उसके पास न गया।

²⁷और उसके वज़ा-ए-हम्ल के वक़्त मा'लूम हुआ कि उसके पेट में तौअम हैं।²⁸और जब वह जनने लगी तो एक बच्चे का हाथ बाहर आया और दाई ने पकड़ कर उसके हाथ में लाल डोरा बाँध दिया, और कहने लगी, "यह पहले पैदा हुआ।"

²⁹और यूँ हुआ कि उसने अपना हाथ फिर खींच लिया, इतने में उसका भाई पैदा हो गया। तब वह दाई बोल उठी कि तू कैसे ज़बरदस्ती निकल पड़ा तब ~ उसका नाम फ़ारस रख्खा गया।³⁰फिर उसका भाई जिसके हाथ में लाल डोरा बंधा था, पैदा हुआ और उसका नाम ज़ारह रख्खा गया।

Chapter 39

¹और यूसुफ को मिस्र में लाए, और फूतीफ़ार मिस्री ने जो फ़िर'औन का एक हाकिम और जिलौदारों का सरदार था, उसकी इस्मा'ईलियों के हाथ से जो उसे वहाँ ले गए थे खरीद लिया।²और खुदावन्द यूसुफ के साथ था और वह इक्रबालमन्द हुआ, और अपने मिस्री आक्रा के घर में रहता था।

³और उसके आक्रा ने देखा कि खुदावन्द उसके साथ है और जिस काम को वह हाथ लगाता है खुदावन्द उसमें उसे इकबालमंद करता है।⁴चुनाँचे यूसुफ उसकी नज़र में मज़बूल ठहरा और वही उसकी खिदमत करता था; और उसने उसे अपने घर का मुख्तार बना कर अपना सब कुछ उसे सौंप दिया।

⁵और जब उसने उसे घर का और सारे माल का मुख्तार बनाया, तो खुदावन्द ने उस मिस्री के घर में यूसुफ की खातिर बरकत बख़्शी; और उसकी सब चीज़ों पर जो घर में और खेत में थीं, खुदावन्द की बरकत होने लगी।⁶और उसने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में छोड़ दिया, और सिवा रोटी के जिसे वह खा लेता था, उसे अपनी किसी चीज़ का होश न था। और यूसुफ खूबसूरत और हसीन था।

⁷इन बातों के बा'द यूँ हुआ कि उसके आक्रा की बीवी की आँख यूसुफ पर लगी और उसने उससे कहा कि मेरे साथ हमबिस्तर हो।⁸लेकिन उसने इन्कार किया; और अपने आक्रा की बीवी से कहा कि देख, मेरे आक्रा को खबर भी नहीं कि इस घर में मेरे पास क्या-क्या है, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में छोड़ दिया है।⁹इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उसने तेरे अलावा कोई चीज़ मुझ से बाज़ नहीं रख्खी, क्योंकि तू उसकी बीवी है। इसलिए भला मैं क्यों ऐसी बड़ी बुराई करूँ और खुदा का गुनहगार बनूँ?

¹⁰और वह हर दिन यूसुफ को मजबूर करती-रही, लेकिन उसने उसकी बात न मानी कि उससे हमबिस्तर होने के लिए उसके साथ लेटे।¹¹और एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपना काम करने के लिए घर में गया, और घर के आदमियों में से कोई भी अन्दर न था।¹²तब उस 'औरत ने उसका लिबास पकड़ कर कहा, "मेरे साथ हम बिस्तर हो, "वह अपना लिबास उसके हाथ में छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया।

¹³जब उसने देखा कि वह अपना लिबास उसके हाथ में छोड़ कर भाग गया,¹⁴तो उसने अपने घर के आदमियों को बुला कर उनसे कहा, "देखो, वह एक 'इब्री को हम से मज़ाक करने के लिए हमारे पास ले आया है। यह मुझ से हम बिस्तर होने को अन्दर घुस आया, और मैं बुलन्द आवाज़ से चिल्लाने लगी।¹⁵जब उसने देखा कि मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही हूँ, तो अपना लिबास मेरे पास छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया।"

¹⁶और वह उसका लिबास उसके आक्रा के घर लौटने तक अपने पास रख्खे रही।¹⁷तब उसने यह बातें उससे कहीं, "यह इब्री गुलाम, जो तू लाया है मेरे पास अन्दर घुस आया कि मुझ से मज़ाक करे।¹⁸जब मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी तो वह अपना लिबास मेरे ही पास छोड़ कर बाहर भाग गया।"

¹⁹जब उसके आक्रा ने अपनी बीवी की वह बातें जो उसने उससे कहीं, सुन लीं, कि तेरे गुलाम ने मुझ से ऐसा ऐसा किया तो उसका ग़ज़ब भड़का।²⁰और यूसुफ के आक्रा ने उसको लेकर कैद खाने में जहाँ बादशाह के कैदी बन्द थे डाल दिया, तब वह वहाँ कैद खाने में रहा।

²¹लेकिन खुदावन्द यूसुफ के साथ था; उसने उस पर रहम किया और कैद खाने के दारोगा की नज़र में उसे मज़बूल बनाया।²²और कैद खाने के दारोगा ने सब कैदियों को जो कैद में थे, यूसुफ के हाथ में सौंपा; और जो कुछ वह करते उसी के हुक्म से करते थे।²³और कैद खाने का दारोगा सब कामों की तरफ़ से, जो उसके हाथ में थे बेफ़िक्र था, इसलिए कि खुदावन्द उसके साथ था; और जो कुछ वह करता खुदावन्द उसमें इक्रबाल मन्दी बख़्शता था।

Chapter 40

¹इन बातों के बा'द यूँ हुआ कि शाह ए-मिस का साकी और नानपज़ अपने खुदावन्द शाह-ए-मिस के मुजरिम हुए।² और फिर'औन अपने इन दोनों हाकिमों से जिनमें एक साकियों और दूसरा नानपज़ों का सरदार था, नाराज़ हो गया।³ और उसने इनको जिलौदारों के सरदार के घर में उसी जगह जहाँ यूसुफ़ हिरासत में था, कैद खाने में नज़रबन्द करा दिया।

⁴जिलौदारों के सरदार ने उनको यूसुफ़ के हवाले किया, और वह उनकी खिदमत करने लगा और वह एक मुद्दत तक नज़रबन्द रहे।⁵ और शाह-ए-मिस के साकी और नानपज़ दोनों ने, जो कैद खाने में नज़रबन्द थे एक ही रात में अपने-अपने होनहार के मुताबिक़ एक-एक ख़्वाब देखा।

⁶और यूसुफ़ सुबह को उनके पास अन्दर आया और देखा कि वह उदास हैं।⁷ और उसने फिर'औन के हाकिमों से जो उसके साथ उसके आक्रा के घर में नज़रबन्द थे, पूछा कि आज तुम क्यों ऐसे उदास नज़र आते हो?⁸ उन्होंने उससे कहा, "हम ने एक ख़्वाब देखा है, जिसकी ता'बीर करने वाला कोई नहीं।" यूसुफ़ ने उनसे कहा, "क्या ता'बीर की कुदरत ख़ुदा को नहीं? मुझे ज़रा वह ख़्वाब बताओ।"

⁹तब सरदार साकी ने अपना ख़्वाब यूसुफ़ से बयान किया। उसने कहा, "मैंने ख़्वाब में देखा कि अंगूर की बेल मेरे सामने है।¹⁰ और उस बेल में तीन शाखें हैं, और ऐसा दिखाई दिया कि उसमें कलियाँ लगीं और फूल आए और उसके सब गुच्छों में पक्के-पक्के अंगूर लगे।¹¹ और फिर'औन का प्याला मेरे हाथ में है, और मैंने उन अंगूरों को लेकर फिर'औन के प्याले में निचोड़ा और वह प्याला मैंने फिर'औन के हाथ में दिया।"

¹²यूसुफ़ ने उससे कहा, "इसकी ता'बीर यह है कि वह तीन शाखें तीन दिन हैं।¹³ इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फिर'औन तुझे सरफ़राज़ फ़रमाएगा, और तुझे फिर तेरे 'ओहदे पर बहाल कर देगा; और पहले की तरह जब तू उसका साकी था, प्याला फिर'औन के हाथ में दिया करेगा।

¹⁴लेकिन जब तू खुशहाल हो जाए तो मुझे याद करना और ज़रा मुझ से मेहरबानी से पेश आना, और फिर'औन से मेरा ज़िक्र करना और मुझे इस घर से छुटकारा दिलवाना।¹⁵ क्योंकि इब्रानियों के मुल्क से मुझे चुरा कर ले आए हैं, और यहाँ भी मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसकी वजह से कैद खाने में डाला जाऊँ।"

¹⁶जब सरदार नानपज़ ने देखा कि ता'बीर अच्छी निकली तो यूसुफ़ से कहा, "मैंने भी ख़्वाब में देखा, कि मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं;¹⁷ और ऊपर की टोकरी में हर क्रिस्म का पका हुआ खाना फिर'औन के लिए है, और परिन्दे मेरे सिर पर की टोकरी में से खा रहे हैं।"

¹⁸यूसुफ़ ने उसे कहा, "इसकी ता'बीर यह है कि वह तीन टोकरियाँ तीन दिन हैं।¹⁹ इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फिर'औन तेरा सिर तेरे तन से जुदा करा के तुझे एक दरख़्त पर टंगवा देगा, और परिन्दे तेरा गोश्त नोंच-नोंच कर खाएँगे।"

²⁰और तीसरे दिन जो फिर'औन की सालगिरह का दिन था, यूँ हुआ कि उसने अपने सब नौकरों की दावत की और उसने सरदार साकी और सरदार नानपज़ को अपने नौकरों के साथ याद फ़रमाया।²¹ और उसने सरदार साकी को फिर उसकी खिदमत पर बहाल किया, और वह फिर'औन के हाथ में प्याला देने लगा।

²²लेकिन उसने सरदार नानपज़ को फाँसी दिलवाई, जैसा यूसुफ़ ने ता'बीर करके उनको बताया था।²³ लेकिन सरदार साकी ने यूसुफ़ को याद न किया बल्कि उसे भूल गया।

Chapter 41

¹पूरे दो साल के बा'द फिर'औन ने ख्वाब में देखा कि वह दरिया के किनारे खड़ा है;²और उस दरिया में से सात खूबसूरत और मोटी-मोटी गायें निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं।³उनके बा'द और सात बदशक्ल और दुबली-दुबली गायें दरिया से निकलीं और दूसरी गायों के बराबर दरिया के किनारे जा खड़ी हुई।

⁴और यह बदशक्ल और दुबली दुबली गायें उन सातों खूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गई, तब फिर'औन जाग उठा।⁵और वह फिर सो गया और उसने दूसरा ख्वाब देखा कि एक टहनी में अनाज की सात मोटी और अच्छी-अच्छी बालें निकलीं।⁶उनके बा'द और सात पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं।

⁷यह पतली बालें उन सातों मोटी और भरी हुई बालों को निगल गई। और फिर'औन जाग गया और उसे मा'लूम हुआ कि यह ख्वाब था।⁸और सुबह को यूँ हुआ कि उसका जी घबराया तब उसने मिस्र के सब जादूगरों और सब अक्लमन्दों को बुलवा भेजा, और अपना ख्वाब उनको बताया। लेकिन उनमें से कोई फिर'औन के आगे उनकी ता'बीर न कर सका।

⁹उस वक्त्र सरदार साक्री ने फिर'औन से कहा, "मेरी खताएँ आज मुझे याद आई।"¹⁰जब फिर'औन अपने खादिमों से नाराज़ था और उसने मुझे और सरदार नानपज़ को जिलौदारों के सरदार के घर में नज़रबन्द करवा दिया।¹¹तो मैंने और उसने एक ही रात में एक-एक ख्वाब देखा, यह-ख्वाब हम ने अपनेअपने होनहार के मुताबिक़ ~देखे।

¹²वहाँ एक 'इब्री जवान, जिलौदारों के सरदार का नौकर, हमारे साथ था। हम ने उसे अपने ख्वाब बताए और उसने उनकी ता'बीर की, और हम में से हर एक को हमारे ख्वाब के मुताबिक़ उसने ता'बीर बताई।¹³और जो ता'बीर उसने बताई थी वैसा ही हुआ, क्योंकि मुझे तो उसने मेरे मन्सब पर बहाल किया था और उसे फ़ाँसी दी थी।

¹⁴तब फिर'औन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा: तब उन्होंने जल्द उसे कैद खाने से बाहर निकाला, और उसने हजामत बनवाई और कपड़े बदल कर फिर'औन के सामने आया।¹⁵फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, "मैंने एक ख्वाब देखा है जिसकी ता'बीर कोई नहीं कर सकता, और मुझ से तेरे बारे में कहते हैं कि तू ख्वाब को सुन कर उसकी ता'बीर करता है।"¹⁶यूसुफ़ ने फिर'औन को जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं जानता, खुदा ही फिर'औन को सलामती बख़्श जवाब देगा।"

¹⁷तब फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, "मैंने ख्वाब में देखा कि मैं दरिया के किनारे खड़ा हूँ।"¹⁸और उस दरिया में से सात मोटी और खूबसूरत गायें निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं।

¹⁹उनके बा'द और सात खराब और निहायत बदशक्ल और दुबली गायें निकलीं, और वह इस क्रंदर बुरी थीं कि मैंने सारे मुल्क-ए-मिस्र में ऐसी कभी नहीं देखीं।

²⁰और वह दुबली और बदशक्ल गायें उन पहली सातों मोटी गायों को खा गईं;²¹और उनके खा जाने के बा'द यह मा'लूम भी नहीं होता था कि उन्होंने उनको खा लिया है, बल्कि वह पहले की तरह जैसी की तैसी बदशक्ल रहीं। तब मैं जाग गया।

²²और फिर ख्वाब में देखा कि एक टहनी में सात भरी और अच्छी-अच्छी बालें निकलीं।²³और उनके बा'द और सात सूखी और पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं।²⁴और यह पतली बाले उन सातों अच्छी-अच्छी बालों को निगल गई। और मैंने इन जादूगरों से इसका बयान किया लेकिन ऐसा कोई न निकला जो मुझे इसका मतलब बताता।"

²⁵तब यूसुफ़ ने फिर'औन से कहा कि फिर'औन का ख्वाब एक ही है, जो कुछ खुदा करने को है उसे उसने फिर'औन पर ज़ाहिर किया है।²⁶वह सात अच्छी-अच्छी गायें सात साल हैं, और वह सात अच्छीअच्छी बालें भी सात साल हैं; ख्वाब एक ही है।

²⁷और वह सात बदशक्ल और दुबली गायें जो उनके बा'द निकलीं, और वह सात खाली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें भी सात साल ही हैं; मगर काल के सात बरस।²⁸यह वही बात है जो मैं फिर'औन से कह चुका हूँ कि जो कुछ खुदा करने को है उसे उसने फिर'औन पर ज़ाहिर किया है।²⁹देख! सारे मुल्क-ए-मिस्र में सात साल तो पैदावार ज़्यादा के होंगे।

³⁰उनके बा'द सात साल काल के आएँगे और तमाम मुल्क ए-मिस्र में लोग इस सारी पैदावार को भूल जाएँगे और यह काल मुल्क को तबाह कर देगा।³¹और अज़ानी मुल्क में याद भी नहीं रहेगी, क्योंकि जो काल बा'द में पड़ेगा वह निहायत ही सख़्त होगा।³²और फिर'औन ने जो यह ख्वाब दो दफ़ा' देखा तो इसकी वजह यह है कि यह बात खुदा की तरफ़ से मुकर्रर हो चुकी है, और खुदा इसे जल्द पूरा करेगा।

³³इसलिए फिर'औन को चाहिए कि एक समझदार और 'अक्लमन्द आदमी को तलाश कर ले और उसे मुल्क-ए-मिस्र पर मुख्तार बनाए।³⁴फिर'औन यह करे ताकि उस आदमी को इख़्तियार हो कि वह मुल्क में नाज़ि़रों को मुकर्रर कर दे, और अज़ानी के सात बरसों में सारे मुल्क-ए-मिस्र की पैदावार का पाँचवा हिस्सा ले ले।

³⁵और वह उन अच्छे बरसों में जो आते हैं सब खाने की चीज़ें जमा' करें और शहर-शहर में गल्ला जो फिर'औन के इख़्तियार में हो, ख़ुराक के लिए फ़राहम करके उसकी हिफ़ाज़त करें।³⁶यही गल्ला मुल्क के लिए ज़ख़ीरा होगा, और सातों साल के लिए जब तक मुल्क में काल रहेगा काफ़ी होगा, ताकि काल की वजह से मुल्क बर्बाद न हो जाए।"

³⁷य बात फिर'औन और उसके सब खादिमों को पसंद आई।³⁸तब फिर'औन ने अपने खादिमों से कहा कि क्या हम को ऐसा आदमी जैसा यह है, जिसमें खुदा का रूह है मिल सकता है?

³⁹और फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, "चूँकि खुदा ने तुझे यह सब कुछ समझा दिया है, इसलिए तेरी तरह-समझदार-और-अक्लमन्द कोई नहीं।"⁴⁰इसलिए तू मेरे घर का मुख्तार होगा और मेरी सारी रि'आया तेरे हुक्म पर चलेगी, सिर्फ़ तख़्त का मालिक होने की वजह से मैं बुजुर्गतर हूँगा।⁴¹और फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि देख, मैं तुझे सारे मुल्क-ए-मिस्र का हाकिम बनाता हूँ

⁴²और फिर'औन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकाल कर यूसुफ़ के हाथ में पहना दी, और उसे बारीक कतान के लिबास में आरास्ता करवा कर सोने का हार उसके गले में पहनाया।⁴³और उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार करा कर उसके आगे-आगे यह 'ऐलान करवा दिया, कि घुटने टेको और उसने उसे सारे मुल्क-ए-मिस्र का हाकिम बना दिया ।

⁴⁴और फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, "मैं फिर'औन हूँ और तेरे हुक्म के बग़ैर कोई आदमी इस सारे मुल्क-ए-मिस्र में अपना हाथ या पाँव हिलाने न पाएगा।"⁴⁵और फिर'औन ने यूसुफ़ का नाम सिफ़नात फ़ा'नेह रखवा, और उसने ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ को उससे ब्याह दिया, और यूसुफ़ मुल्क-ए-मिस्र में दौरा करने लगा।

⁴⁶और यूसुफ़ तीस साल का था जब वह मिस्र के बादशाह फिर'औन के सामने गया, और उसने फिर'औन के पास से रुख़सत हो कर सारे मुल्क-ए-मिस्र का दौरा किया।⁴⁷और अज़ानी के सात बरसों में इफ़्रात से फ़स्ल हुई।

⁴⁸और वह लगातार सातों साल हर क्रिस्म की ख़ुराक, जो मुल्क-ए-मिस्र में पैदा होती थी, जमा' कर करके शहरों में उसका ज़ख़ीरा करता गया। हर शहर की चारों तरफ़ों की ख़ुराक वह उसी शहर में रखता गया।⁴⁹और यूसुफ़ ने ग़ल्ला समुन्दर की रेत की तरह निहायत कसरत से ज़ख़ीरा किया, यहाँ तक कि हिसाब रखना भी छोड़ दिया क्योंकि वह बे-हिसाब था।

⁵⁰और काल से पहले ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ के यूसुफ़ से दो बेटे पैदा हुए।⁵¹और यूसुफ़ ने पहलौठे का नाम मनस्सी यह कह कर रखवा, कि 'ख़ुदा ने मेरी और मेरे बाप के घर की सब मुसीबत मुझ से भुला दी।'⁵²और दूसरे का नाम इफ़्राईम यह कह कर रखवा, कि 'ख़ुदा ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फ़लदार किया।'

⁵³और अज़ानी के वह सात साल जो मुल्क-ए-मिस्र में हुए तमाम हो गए, और यूसुफ़ के कहने के मुताबिक़ काल के सात साल शुरू' हुए।⁵⁴और सब मुल्कों में तो काल था लेकिन मुल्क-ए-मिस्र में हर जगह ख़ुराक मौजूद थी।

⁵⁵और जब मुल्क-ए-मिस्र में लोग भूकों मरने लगे तो रोटी के लिए फिर'औन के आगे चिल्लाए। फिर'औन ने मिस्रियों से कहा कि यूसुफ़ के पास जाओ, जो कुछ वह तुम से कहे वह करो।⁵⁶और तमाम रू-ए-ज़मीन पर काल था; और यूसुफ़ अनाज के ज़ख़ीरह को खुलवा कर मिस्रियों के हाथ बेचने लगा, और मुल्क-ए-मिस्र में सख़्त काल हो गया।⁵⁷और सब मुल्कों के लोग अनाज मोल लेने के लिए यूसुफ़ के पास मिस्र में आने लगे, क्योंकि सारी ज़मीन पर सख़्त काल पड़ा था।

Chapter 42

¹और या'कूब को मा'लूम हुआ कि मिस्र में गल्ला है, तब उसने अपने बेटों से कहा कि तुम क्यों एक दूसरे का मुँह ताकते हो?"देखो, मैंने सुना है कि मिस्र में गल्ला है। तुम वहीं जाओ और वहाँ से हमारे लिए अनाज मोल ले आओ, ताकि हम ज़िन्दा रहें और हलाक न हों।²तब यूसुफ़ के दस भाई गल्ला मोल लेने को मिस्र में आए।³लेकिन या'कूब ने यूसुफ़ के भाई बिनयमीन को उसके भाइयों के साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, कि कहीं उस पर कोई आफ़त न आ जाए।

⁵इसलिए जो लोग गल्ला खरीदने आए उनके साथ इस्राईल के बेटे भी आए, क्योंकि कना'न के मुल्क में काल था।⁶और यूसुफ़ मुल्क-ए-मिस्र का हाकिम था और वही मुल्क के सब लोगों के हाथ गल्ला बेचता था। तब यूसुफ़ के भाई आए और अपने सिर ज़मीन पर टेक कर उसके सामने आदाब बजा लाए।

⁷यूसुफ़ अपने भाइयों को देख कर उनको पहचान गया; लेकिन उसने उनके सामने अपने आप को अन्जान बना लिया और उनसे सख्त लहजे में पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्होंने कहा, "कना'न के मुल्क से अनाज मोल लेने को।"⁸यूसुफ़ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया था लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना।

⁹और यूसुफ़ उन ख़्वाबों को जो उसने उनके बारे में देखे थे याद करके उनसे कहने लगा कि तुम जासूस हो। तुम आए हो कि इस मुल्क की बुरी हालत दरियाफ़्त करो।¹⁰उन्होंने उससे कहा, "नहीं खुदावन्द! तेरे गुलाम अनाज मोल लेने आए हैं।"¹¹हम सब एक ही शख्स के बेटे हैं। हम सच्चे हैं; तेरे गुलाम जासूस नहीं हैं।"

¹²उसने कहा, "नहीं; बल्कि तुम इस मुल्क की बुरी हालत दरियाफ़्त करने को आए हो।"¹³तब उन्होंने कहा, "तेरे गुलाम बारह भाई एक ही शख्स के बेटे हैं जो मुल्क-ए-कना'न में हैं। सबसे छोटा इस वक़्त हमारे बाप के पास है और एक का कुछ पता नहीं।"

¹⁴तब यूसुफ़ ने उनसे कहा, "मैं तो तुम से कह चुका कि तुम जासूस हो।"¹⁵इसलिए तुम्हारी आजमाइश इस तरह की जाएगी कि फ़िर'औन की हयात की क्रसम, तुम यहाँ से जाने न पाओगे; जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ न आ जाए।¹⁶इसलिए अपने में से किसी एक को भेजो कि वह तुम्हारे भाई को ले आए और तुम कैद रहो, ताकि तुम्हारी बातों की तसदीक़ हो कि तुम सच्चे हो या नहीं; वरना फ़िर'औन की हयात की क्रसम तुम ज़रूर ही जासूस हो।"¹⁷और उसने उन सब को तीन दिन तक इकट्ठे नज़रबन्द रखवा।

¹⁸और तीसरे दिन यूसुफ़ ने उनसे कहा, "एक काम करो तो ज़िन्दा रहोगे; क्योंकि मुझे खुदा का ख़ौफ़ है।¹⁹अगर तुम सच्चे हो तो अपने भाइयों में से एक को कैद खाने में बन्द रहने दो, और तुम अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज ले जाओ।²⁰और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, यूँ तुम्हारी बातों की तसदीक़ हो जाएगी और तुम हलाक न होगे।" इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया।

²¹और वह आपस में कहने लगे, "हम दरअसल अपने भाई की वजह से मुजरिम ठहरे हैं; क्योंकि जब उसने हम से मिन्नत की तो हम ने यह देखकर भी, कि उसकी जान कैसी मुसीबत में है उसकी न सुनी; इसी लिए यह मुसीबत हम पर आ पड़ी है।"²²तब रूबिन बोल उठा, "क्या मैंने तुम से न कहा था कि इस बच्चे पर जुल्म न करो, और तुम ने न सुना; इसलिए देख लो, अब उसके खून का बदला लिया जाता है।"

²³और उनको मा'लूम न था कि यूसुफ़ उनकी बातें समझता है, इसलिए कि उनके बीच एक तरजुमान था।²⁴तब वह उनके पास से हट गया और रोया, और फिर उनके पास आकर उनसे बातें कीं और उनमें से शमा'ऊन को लेकर उनकी आँखों के सामने उसे बन्धवा दिया।²⁵फिर यूसुफ़ ने हुक्म किया, कि उनके बोरों में अनाज भरें और हर शख्स की नकदी उसी के बोरे में रख दें, और उनको सफ़र का सामान भी दे दें। चुनांचे उनके लिए ऐसा ही किया गया।

²⁶और उन्होंने अपने गधों पर गल्ला लाद लिया और वहाँ से रवाना हुए।²⁷जब उनमें से एक ने मन्जिल पर अपने गधे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला, तो अपनी नकदी बोरे के मुँह में रखी देखी।²⁸तब उसने अपने भाइयों से कहा कि मेरी नकदी वापस कर दी गई है, वह मेरे बोरे में है, देख लो !" फिर तो वह घबरा ~गाए और हक्का-बक्का होकर एक दूसरे को देखने और कहने लगे, "खुदा ने हम से यह क्या किया?"

²⁹और वह मुल्क-ए-कना'न में अपने बाप या'कूब के पास आए, और सारी वारदात उसे बताई और कहने लगे कि³⁰उस शख्स ने जो उस मुल्क का मालिक है हम से सख्त लहजे में बातें कीं, और हम को उस मुल्क के जासूस समझा।³¹हम ने उससे कहा कि हम सच्चे आदमी हैं; हम जासूस नहीं।³²हम बारह भाई एक ही बाप के बेटे हैं; हम में से एक का कुछ पता नहीं और सबसे छोटा इस वक़्त हमारे बाप के पास मुल्क-ए-कना'न में है।

³³तब उस शख्स ने जो मुल्क का मालिक है हम से कहा, 'मैं इसी से जान लूँगा कि तुम सच्चे हो कि अपने भाइयों में से किसी को मेरे पास छोड़ दो और अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज लेकर चले जाओ।³⁴और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; तब मैं जान लूँगा कि तुम जासूस नहीं बल्कि सच्चे आदमी हो। और मैं तुम्हारे भाई को तुम्हारे हवाले कर दूँगा, फिर तुम मुल्क में सौदागरी करना'।

³⁵और यूँ हुआ कि जब उन्होंने अपनेअपने बोरे खाली किए तो हर शख्स की नकदी की थैली उसी के बोरे में रखी देखी, और वह और उनका बाप नकदी की थैलियाँ देख कर डर गए।³⁶और उनके बाप या'कूब ने उनसे कहा, "तुम ने मुझे बेऔलाद कर दिया। यूसुफ़ नहीं रहा और शमा'ऊन भी नहीं है, और अब बिनयमीन को भी ले जाना चाहते हो। ये सब बातें मेरे खिलाफ़ हैं।"

³⁷तब रूबिन ने अपने बाप से कहा, 'अगर मैं उसे तेरे पास न ले आऊँ तो तू मेरे दोनों बेटों को क्रल्ल कर डालना। उसे मेरे हाथ में सौंप दे और मैं उसे फिर तेरे पास पहुँचा दूँगा।"³⁸उसने कहा, "मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर गया और वह अकेला रह गया है। अगर रास्ते में जाते-जाते उस पर कोई आफ़त आ पड़े तो तुम मेरे सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क्रब्र में उतारोगे।

Chapter 43

¹और काल मुल्क में और भी सख्त हो गया।²और यूँ हुआ कि जब उस गल्ले को जिसे मिस्र से लाए थे, खा चुके तो उनके बाप ने उनसे कहा कि जाकर हमारे लिए फिर कुछ अनाज मोल ले आओ।"

³तब यहूदाह ने उसे कहा कि उस शख्स ने हम को निहायत ताकीद से कह दिया था कि तुम मेरा मुँह न देखोगे, जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो।⁴इसलिए अगर तू हमारे भाई को हमारे साथ भेज दे, तो हम जाएँगे और तेरे लिए अनाज मोल लाएँगे।⁵और अगर तू उसे न भेजे तो हम नहीं जाएँगे; क्योंकि उस शख्स ने कह दिया है कि तुम मेरा मुँह न देखोगे जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो।"

⁶तब इस्राईल ने कहा कि तुम ने मुझ से क्यों यह बदसुलूकी की, कि उस शख्स को बता दिया कि हमारा एक भाई और भी है?⁷उन्होंने कहा, "उस शख्स ने बजिह्र हो कर हमारा और हमारे खानदान का हाल पूछा कि 'क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िन्दा है? और क्या तुम्हारा कोई और भाई है?' तो हम ने इन सवालों के मुताबिक उसे बता दिया। हम क्या जानते थे कि वह कहेगा, 'अपने भाई को ले आओ'।"

⁸तब यहूदाह ने अपने बाप इस्राईल से कहा कि उस लड़के को मेरे साथ कर दे तो हम चले जाएँगे; ताकि हम और तू और हमारे बाल बच्चे ज़िन्दा रहें और हलाक न हों।⁹और मैं उसका ज़िम्मेदार होता हूँ, तू उसको मेरे हाथ से वापस माँगना। अगर मैं उसे तेरे पास पहुँचा कर सामने खड़ा न कर दूँ, तो मैं हमेशा के लिए गुनहगार ठहरूँगा।¹⁰अगर हम देर न लगाते तो अब तक दूसरी दफ़ा लौट कर आ भी जाते।"

¹¹तब उनके बाप इस्राईल ने उनसे कहा, "अगर यही बात है तो ऐसा करो कि अपने बर्तनों में इस मुल्क की मशहूर पैदावार में से कुछ उस शख्स के लिए नज़राना लेते जाओ; जैसे थोड़ा सा रौगान-ए-बलसान, थोड़ा सा शहद, कुछ गर्म मसाले, और मुर्र और पिस्ता और बादाम,¹²और दूना दाम अपने हाथ में ले लो, और वह नक़दी जो फेर दी गई और तुम्हारे बोरों के मुँह में रखी मिली अपने साथ वापस ले जाओ; क्योंकि शायद भूल हो गई होगी।

¹³और अपने भाई को भी साथ लो, और उठ कर फिर उस शख्स के पास जाओ।¹⁴और खुदा-ए-क्रादिर उस शख्स को तुम पर मेहरबानी करे, ताकि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिनयमीन को तुम्हारे साथ भेज दे। मैं अगर बे-औलाद हुआ तो हुआ।"¹⁵तब उन्होंने नज़राना लिया और दूना दाम भी हाथ में ले लिया, और बिनयमीन को लेकर चल पड़े; और मिस्र पहुँच कर यूसुफ़ के सामने जा खड़े हुए।

¹⁶जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर के मुन्तज़िम से कहा, "इन आदमियों को घर में ले जा, और कोई जानवर ज़बह करके खाना तैयार करवा; क्योंकि यह आदमी दोपहर को मेरे साथ खाना खाएँगे।"¹⁷उस शख्स ने जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया था किया, और इन आदमियों को यूसुफ़ के घर में ले गया।

¹⁸जब इनको यूसुफ़ के घर में पहुँचा दिया तो डर के मारे कहने लगे, "वह नक़दी जो पहली दफ़ा हमारे बोरों में रख कर वापस कर दी गई थी, उसी की वजह से हम को अन्दर करवा दिया है; ताकि उसे हमारे खिलाफ़ बहाना मिल जाए और वह हम पर हमला करके हम को गुलाम बना ले और हमारे गधों को छीन ले।"¹⁹और वह यूसुफ़ के घर के मुन्तज़िम के पास गए और दरवाज़े पर खड़े होकर उससे कहने लगे,²⁰"जनाब, हम पहले भी यहाँ अनाज मोल लेने आए थे;

²¹और यूँ हुआ कि जब हम ने मंज़िल पर उतर कर अपने बोरों को खोला, तो अपनी अपनी पूरी तौली हुई नक़दी अपने अपने बोरे के मुँह में रखी देखी, इसलिए हम उसे अपने साथ वापस लेते आए हैं।"²²और हम अनाज मोल लेने को और भी नक़दी साथ लाए हैं, ये हम नहीं जानते के हमारी नक़दी किसने हमारे बोरों में रख दी।"²³उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो, मत डरो! तुम्हारे खुदा और तुम्हारे बाप के खुदा ने तुम्हारे बोरों में तुम को खज़ाना दिया होगा, मुझे तो तुम्हारी नक़दी मिल चुकी। फिर वह शमा'ऊन को निकाल कर उनके पास ले आया।

²⁴और उस शख्स ने उनको यूसुफ़ के घर में लाकर पानी दिया, और उन्होंने अपने पाँव धोए; और उनके गधों को चारा दिया।²⁵फिर उन्होंने यूसुफ़ के इन्तिज़ार में कि वह दोपहर को आएगा, नज़राना तैयार करके रखवा; क्योंकि उन्होंने सुना था कि उनको वहीं रोटी खानी है।

²⁶जब यूसुफ़ घर आया, तो वह उस नज़राने को जो उनके पास था उसके सामने ले गए, और ज़मीन पर झुक कर उसके सामने आदाब बजा लाए।²⁷उसने उनसे खैर-ओ-आफियत पूछी और कहा कि तुम्हारा बूढ़ा बाप जिसका तुम ने ज़िक्र किया था अच्छा तो है? क्या वह अब तक ज़िन्दा है?

²⁸उन्होंने जवाब दिया, "तेरा ख़ादिम हमारा बाप खैरियत से है; और अब तक ज़िन्दा है।" फिर वह सिर झुका-झुका कर उसके सामने आदाब बजा लाए।²⁹फिर उसने आँख उठा कर अपने भाई बिनयमीन को जो उसकी माँ का बेटा था, देखा और कहा कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई जिसका ज़िक्र तुम ने मुझ से किया था यही है? फिर कहा कि ऐ मेरे बेटे! खुदा तुझ पर-मेहरबान-रहे।"

³⁰तब यूसुफ़ ने जल्दी की क्योंकि भाई को देख कर उसका जी भर आया, और वह चाहता था कि कहीं जाकर रोए। तब वह अपनी कोठरी में जा कर वहाँ रोने लगा।³¹फिर वह अपना मुँह धोकर बाहर निकला और अपने को बर्दाश्त करके हुक्म दिया कि खाना लगाओ।

³²और उन्होंने उसके लिए अलग और उनके लिए जुदा, और मिस्रियों के लिए, जो उसके साथ खाते थे, जुदा खाना लगाया; क्योंकि मिस्र के लोग इब्रानियों के साथ खाना नहीं खा सकते थे, क्योंकि मिस्रियों को इससे कराहियत है।³³और यूसुफ़ के भाई उसके सामने तरतीबवार अपनी 'उम्र की बड़ाई और छोटाई के मुताबिक बैठे और आपस में हैरान थे।³⁴फिर वह अपने सामने से खाना उठा कर हिस्से कर-कर के उनको देने लगा, और बिनयमीन का हिस्सा उनके हिस्सों से पाँच गुना ज़्यादा था। और उन्होंने मय पी और उसके साथ खुशी मनाई।

Chapter 44

¹फिर उसने अपने घर के मुन्ताज़िम को यह हुक्म किया कि इन आदमियों के बोरों में जितना अनाज वह लेजा सकें भर दे, और हर शख्स की नक़दी उसी के बोरे के मुँह में रख दे;² और मेरा चाँदी का प्याला सबसे छोटे के बोरे के मुँह में उसकी नक़दी के साथ रखना।" चुनांचे उसने यूसुफ़ के फ़रमाने के मुताबिक़ 'अमल किया।

³सुबह रौशनी होते ही यह आदमी अपने गधों के साथ रुख़सत कर दिए गए।⁴वह शहर से निकल कर अभी दूर भी नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने घर के मुन्ताज़िम से कहा, "जा! उन लोगों का पीछा कर; और जब तू उनको पा ले तो उनसे कहना, 'नेकी के बदले तुम ने बदी क्यूँ की?' क्या यह वही चीज़ नहीं जिससे मेरा आक्रा पीता और इसी से ठीक फ़ाल भी खोला करता है? तुम ने जो यह किया इसलिए बुरा किया'

⁶और उसने उनको पा लिया और यही बातें उनसे कहीं।⁷तब उन्होंने उससे कहा कि हमारा ख़ुदावन्द, ऐसी बातें क्यूँ कहता है? ख़ुदा न करे कि तेरे ख़ादिम ऐसा काम करें

⁸भला, जो नक़दी हम को अपने बोरों के मुँह में मिली, उसे तो हम मुन्क-ए-कना'न से तेरे पास वापस ले आए; फिर तेरे आक्रा के घर से चाँदी या सोना क्यूँ कर चुरा सकते हैं?⁹इसलिए तेरे ख़ादिमों में से जिस किसी के पास वह निकले वह मार दिया जाए, और हम भी अपने ख़ुदावन्द के गुलाम हो जाएँगे।¹⁰उसने कहा कि तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह निकल आए वह मेरा गुलाम होगा, और तुम बेगुनाह ठहरोगे।

¹¹तब उन्होंने जल्दी की, और एक-एक ने अपना बोरा ज़मीन पर उतार लिया और हर शख्स ने अपना बोरा खोल दिया।¹²तब वह ढूँढ़ने लगा और सबसे बड़े से शुरू करके सबसे छोटे पर तलाशी ख़त्म की, और प्याला बिनयमीन के बोरे में मिला।¹³तब उन्होंने अपने लिबास चाक किए और हर एक अपने गधे को लादकर उल्टा शहर को फिरा।

¹⁴और यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर आए, वह अब तक वहीं था; तब वह उसके आगे ज़मीन पर गिरे।¹⁵तब यूसुफ़ ने उनसे कहा, "तुम ने यह कैसा काम किया? क्या तुम को मा'लूम नहीं कि मुझ सा आदमी ठीक फ़ाल खोलता है?"

¹⁶यहूदाह ने कहा कि हम अपने ख़ुदावन्द से क्या कहें? हम क्या बात करें? या क्यूँ कर अपने को बरी ठहराएँ? ख़ुदा ने तेरे ख़ादिमों की बदी पकड़ ली। इसलिए देख, हम भी और वह भी जिसके पास प्याला निकला, दोनों अपने ख़ुदावन्द के गुलाम हैं।¹⁷उसने कहा कि ख़ुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ; जिस शख्स के पास यह प्याला निकला वही मेरा गुलाम होगा, और तुम अपने बाप के पास सलामत चले जाओ।

¹⁸तब यहूदाह उसके नज़दीक जाकर कहने लगा, "ऐ मेरे ख़ुदावन्द! ज़रा अपने ख़ादिम को इजाज़त दे कि अपने ख़ुदावन्द के कान में एक बात कहे; और तेरा ग़ज़ब तेरे ख़ादिम पर न भड़के, क्यूँकि तू फिर'औन की तरह है।¹⁹मेरे ख़ुदावन्द ने अपने ख़ादिमों से सवाल किया था कि तुम्हारा बाप या तुम्हारा भाई है?"

²⁰और हम ने अपने ख़ुदावन्द से कहा था, 'हमारा एक बूढ़ा बाप है और उसके बुढ़ापे का एक छोटा लड़का भी है; और उसका भाई मर गया है और वह अपनी माँ का एक ही रह गया है, इसलिए उसका बाप उस पर जान देता है।²¹तब तूने अपने ख़ादिमों से कहा, 'उसे मेरे पास ले आओ कि मैं उसे देखूँ।²²हम ने अपने ख़ुदावन्द को बताया, 'वह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, क्यूँकि अगर वह अपने बाप को छोड़े तो उसका बाप मर जाएगा।'

²³फिर तूने अपने ख़ादिमों से कहा कि जब तक तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे साथ न आए, तुम फिर मेरा मुँह न देखोगे।²⁴और यूँ हुआ कि जब हम अपने बाप के पास, जो तेरा ख़ादिम है, पहुँचे तो हम ने अपने ख़ुदावन्द की बातें उससे कहीं।²⁵हमारे बाप ने कहा, "फिर जा कर हमारे लिए कुछ अनाज मोल लाओ।"²⁶हम ने कहा, 'हम नहीं जा सकते; अगर हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ हो तो हम जाएँगे। क्यूँकि जब तक हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ न हो, हम उस शख्स का मुँह न देखेंगे।"

²⁷और तेरे ख़ादिम मेरे बाप ने हम से कहा, 'तुम जानते हो कि मेरी बीवी के मुझ से दो बेटे हुए।²⁸एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैंने ख़याल किया कि वह ज़रूर फाड़ डाला गया होगा; और मैंने उसे उस वक़्त से फिर नहीं देखा।²⁹अब अगर तुम इसको भी मेरे पास से ले जाओ और इस पर कोई आफ़त आ पड़े, तो तुम मेरे सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क़ब्र में उतारोगे।"

³⁰इसलिए अब अगर मैं तेरे ख़ादिम अपने बाप के पास जाऊँ और यह लड़का हमारे साथ न हो, तो चूँकि उसकी जान इस लड़के की जान के साथ जुड़ी है।³¹वह यह देख कर कि लड़का नहीं आया मर जाएगा, और तेरे ख़ादिम अपने बाप के, जो तेरा ख़ादिम है, सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क़ब्र में उतारेंगे।³²और तेरा ख़ादिम अपने बाप के सामने इस लड़के का ज़िम्मेदार भी हो चुका है और यह कहा है कि अगर मैं इसे तेरे पास वापस न पहुँचा दूँ तो मैं हमेशा के लिए अपने बाप का गुनहगार ठहरूँगा।'

³³इसलिए अब तेरे ख़ादिम की इजाज़त हो कि वह इस लड़के के बदले अपने ख़ुदावन्द का गुलाम हो कर रह जाए, और यह लड़का अपने भाइयों के साथ चला जाए।³⁴क्यूँकि लड़के के बग़ैर मैं क्या मुँह लेकर अपने बाप के पास जाऊँ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे वह मुसीबत देखनी पड़े, जो ऐसे हाल में मेरे बाप पर आएगी।"

Chapter 45

¹तब यूसुफ़ उनके आगे जो उसके आस पास खड़े थे, अपने को रोक न कर सका और चिल्ला कर कहा, "हर एक आदमी को मेरे पास से बाहर कर दो।" चुनांचे जब यूसुफ़ ने अपने आप को अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया उस वक़्त और कोई उसके साथ न था।²और वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और फ़िर'औन के महल में भी आवाज़ गई।³और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ! क्या मेरा बाप अब तक ज़िन्दा है?" और उसके भाई उसे कुछ जवाब न दे सके, क्योंकि वह उसके सामने घबरा गए।

⁴और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "ज़रा नज़दीक आ जाओ।" और वह नज़दीक आए। तब उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ, जिसको तुम ने बेच कर मिस्र पहुँचाया।⁵और इस बात से कि तुम ने मुझे बेच कर यहाँ पहुँचाया, न तो ग़मगीन हो और न अपने-अपने दिल में परेशान हो; क्योंकि ख़ुदा ने जानों को बचाने के लिए मुझे तुम से आगे भेजा।⁶इसलिए कि अब दो साल से मुल्क में काल है, और अभी पाँच साल और ऐसे हैं जिनमें न तो हल चलेगा और न फसल कटेगी।

⁷और ख़ुदा ने मुझ को तुम्हारे आगे भेजा, ताकि तुम्हारा बक्रिया ज़मीन पर सलामत रखे और तुम को बड़ी रिहाई के वसीले से ज़िन्दा रखे।⁸फिर तुम ने नहीं बल्कि ख़ुदा ने मुझे यहाँ भेजा, और उसने मुझे गोया फ़िर'औन का बाप और उसके सारे घर का ख़ुदावन्द और सारे मुल्क-ए-मिस्र का हाकिम बनाया।

⁹इसलिए तुम जल्द मेरे बाप के पास जाकर उससे कहो, 'तेरा बेटा यूसुफ़ यँ कहता है, कि ख़ुदा ने मुझ को सारे मिस्र का मालिक कर दिया है। तू मेरे पास चला आ, देर न कर।'¹⁰तू ज़शन के इलाक़े में रहना, और तू और तेरे बेटे और तेरे पोते और तेरी भेड़ बकरियाँ और गायें बैल और तेरा माल ओ-मता'अ, यह सब मेरे नज़दीक होंगे।¹¹और वहीं मैं तेरी परवरिश करूँगा; ऐसा न हो कि तुझ को और तेरे घराने और तेरे माल-ओ-मता'अ को ग़रीबी आ दबाए, क्योंकि काल के अभी पाँच साल और हैं।'

¹²और देखो, तुम्हारी आँखें और मेरे भाई बिनयमीन की आँखें देखती हैं कि खुद मेरे मुँह से ये बातें तुम से हो रही हैं।¹³और तुम मेरे बाप से मेरी सारी शान-ओ-शौकत का जो मुझे मिस्र में हासिल है, और जो कुछ तुम ने देखा है सबका ज़िक्र करना; और तुम बहुत जल्द मेरे बाप को यहाँ ले आना।"

¹⁴और वह अपने भाई बिनयमीन के गले लग कर रोया और बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोया।¹⁵और उसने सब भाइयों को चूमा और उनसे मिल कर रोया, इसके बाद उसके भाई उससे बातें करने लगे।

¹⁶और फ़िर'औन के महल में इस बात का ज़िक्र हुआ कि यूसुफ़ के भाई आए हैं और इस से फ़िर'औन के नौकर चाकर बहुत खुश हुए।¹⁷और फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि अपने भाइयों से कह, तुम यह काम करो कि अपने जानवरों को लाद कर मुल्क-ए-कना'न को चले जाओ।¹⁸और अपने बाप को और अपने-अपने घराने को लेकर मेरे पास आ जाओ, और जो कुछ मुल्क-ए-मिस्र में अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम को दूँगा और तुम इस मुल्क की उम्दा उम्दा चीज़ें खाना।

¹⁹तुझे हुक्म मिल गया है, कि उनसे कह, 'तुम यह करो कि अपने बाल बच्चों और अपनी बीवियों के लिए मुल्क-ए-मिस्र से अपने साथ गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने बाप को भी साथ लेकर चले आओ।'²⁰और अपने अस्बाब का कुछ अफ़सोस न करना, क्योंकि मुल्क-ए-मिस्र की सब अच्छी चीज़ें तुम्हारे लिए हैं।"

²¹और इस्राईल के बेटों ने ऐसा ही किया; और यूसुफ़ ने फ़िर'औन के हुक्म के मुताबिक़ उनको गाड़ियाँ दीं और सफ़र का सामान भी दिया।²²और उसने उनमें से हर एक को एक-एक जोड़ा कपड़ा दिया, लेकिन बिनयमीन को चाँदी के तीन सौ सिक्के और पाँच जोड़े कपड़े दिए।²³और अपने बाप के लिए उसने यह चीज़ें भेजीं, या'नी दस गधे जो मिस्र की अच्छी चीज़ों से लदे हुए थे, और दस गधियाँ जो उसके बाप के रास्ते के लिए ग़ल्ला और रोटी और सफ़र के सामान से लदी हुई थीं।

²⁴चुनांचे उसने अपने भाइयों को रवाना किया और वह चल पड़े; और उसने उनसे कहा, "देखना, कहीं रास्ते में तुम झगड़ा न करना।"²⁵और वह मिस्र से रवाना हुए और मुल्क-ए-कना'न में अपने बाप या'कूब के पास पहुँचे,²⁶और उससे कहा, "यूसुफ़ अब तक ज़िन्दा है और वही सारे मुल्क-ए-मिस्र का हाकिम है।" और या'कूब का दिल धक से रह गया, क्योंकि उसने उनका यक़ीन न किया।

²⁷तब उन्होंने उसे वह सब बातें जो यूसुफ़ ने उनसे कही थीं बताई, और जब उनके बाप या'कूब ने वह गाड़ियाँ देख लीं जो यूसुफ़ ने उसके लाने को भेजीं थीं, तब उसकी जान में जान आई।²⁸और इस्राईल कहने लगा, "यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ़ अब तक ज़िन्दा है। मैं अपने मरने से पहले जाकर उसे देख तो लूँगा।"

Chapter 46

¹और इस्राईल अपना सब कुछ लेकर चला और बैरसबा' में आकर अपने बाप इसहाक के खुदा के लिए कुर्बानियाँ पेश कीं।²और खुदा ने रात को ख्वाब में इस्राईल से बातें कीं और कहा, "ऐ या'कूब, ऐ या'कूब!" उसने जवाब दिया, "मैं हाज़िर हूँ।"³उसने कहा, "मैं खुदा, तेरे बाप का खुदा हूँ! मिस्र में जाने से न डर, क्योंकि मैं वहाँ तुझे से एक बड़ी क्रौम पैदा करूँगा।⁴मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊँगा और फिर तुझे ज़रूर लौटा भी लाऊँगा, और यूसुफ़ अपना हाथ तेरी आँखों पर लगाएगा।"

⁵तब या'कूब बैरसबा' से रवाना हुआ, और इस्राईल के बेटे अपने बाप या'कूब को और अपने बाल बच्चों और अपनी बीवियों को उन गाड़ियों पर ले गए जो फ़िर'औन ने उनके लाने को भेजी थीं।⁶और वह अपने चौपायों और सारे माल-ओ-अस्बाब को जो उन्होंने मुल्क-ए-कना'न में जमा' किया था लेकर मिस्र में आए, और या'कूब के साथ उसकी सारी औलाद थी।⁷वह अपने बेटों और बेटियों और पोतों और पोतियों, और अपनी कुल नसल को अपने साथ मिस्र में ले आया।

⁸और या'कूब के साथ जो इस्राइली या'नी उसके बेटे वगैरा मिस्र में आए उनके नाम यह हैं: रूबिन, या'कूब का पहलौठा।⁹और बनी रूबिन यह हैं: हनूक और फ़ल्लू और हसरोन और करमी।¹⁰और बनी शमा'उन यह हैं: यमूल और यमीन और उहद और यकीन और सुहर और साऊल, जो एक कना'नी 'औरत से पैदा हुआ था।¹¹और बनी लावी यह हैं: जैरसोन और किहात और मिरारी।

¹²और बनी यहूदाह यह हैं: 'एर और ओनान और सीला, और फ़ारस और ज़ारह - इनमें से 'एर और ओनान मुल्क-ए-कना'न में मर चुके थे। और फ़ारस के बेटे यह हैं: हसरोन और हमूल।¹³और बनी इश्कार यह हैं: तोला' और फूवा और योब और सिमरोन।¹⁴और बनी ज़बूलून यह हैं: सरद और एलोन और यहलीएल।

¹⁵यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो फ़द्दान अराम में लियाह से पैदा हुए, इसी के बल्न से उसकी बेटी दीना थी। यहाँ तक तो उसके सब बेटे बेटियों का शुमार तैंतीस हुआ।

¹⁶बनी जद्द यह हैं: सफ़्रियान और हज्जी और सूनी और असबान और 'एरी और अरूदी और अरेली।¹⁷और बनी आशर यह हैं: यिमना और इसवाह और इसवी और बरि'आह और सिराह उनकी बहन और ~बनी बरी'आह यह हैं: हिब्र और मलकीएल।¹⁸यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो ज़िल्फ़ा लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था। उनका शुमार सोलह था।

¹⁹और या'कूब के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन राखिल से पैदा हुए थे।²⁰और यूसुफ़ से मुल्क-ए-मिस्र में ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ के मनस्सी और इफ़्राईम पैदा हुए।²¹और बनी बिनयमीन यह हैं: बाला' और बक्र और अशबेल और जीरा और ना'मान, अखी और रोस, मुफ़्फ़ीम और हुफ़्फ़ीम और अरद।

²²यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो राखिल से पैदा हुए। यह सब शुमार में चौदह थे।

²³और दान के बेटे का नाम हशीम था।²⁴और बनी नफ़्ताली यह हैं: यहसीएल और जूनी और यिस्र और सलीम।²⁵यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो बिल्हाह लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया था। इनका शुमार सात था।

²⁶या'कूब के सुल्ब से जो लोग पैदा हुए और उसके साथ मिस्र में आए वह उसकी बहुओं को छोड़ कर शुमार में छियासठ थे।²⁷और यूसुफ़ के दो बेटे थे जो मिस्र में पैदा हुए, इसलिए या'कूब के घराने के जो लोग मिस्र में आए वह सब मिल कर सत्तर हुए।

²⁸और उसने यहूदाह को अपने से आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह उसे जशन का रास्ता दिखाए, और वह जशन के 'इलाक़े में आए।²⁹और यूसुफ़ अपना रथ तैयार करवा के अपने बाप इस्राईल के इस्तक्रबाल के लिए जशन को गया, और उसके पास जाकर उसके गले से लिपट गया और वहीं लिपटा हुआ देर तक रोता रहा।³⁰तब इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, "अब चाहे मैं मर जाऊँ; क्योंकि तेरा मुँह देख चुका कि तू अभी ज़िन्दा है।"

³¹और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से और अपने बाप के घराने से कहा, "मैं अभी जाकर फ़िर'औन को खबर कर दूँगा और उससे कह दूँगा कि मेरे भाई और मेरे बाप के घराने के लोग, जो मुल्क-ए-कना'न में थे मेरे पास आ गए हैं।"³²और वह चौपान हैं; क्योंकि बराबर चौपायों को पालते आए हैं, और वह अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय-बैल और जो कुछ उनका है सब ले आए हैं।

³³तब जब फ़िर'औन तुम को बुला कर पूछे कि तुम्हारा पेशा क्या है?³⁴तो तुम यह कहना कि तेरे खादिम, हम भी और हमारे बाप दादा भी, लड़कपन से लेकर आज तक चौपाये पालते आए हैं।' तब तुम जशन के इलाक़े में रह सकोगे, इसलिए कि मिस्रियों को चौपानों से नफ़रत है।

Chapter 47

¹तब यूसुफ़ ने आकर फ़िर'औन को खबर दी कि मेरा बाप और मेरे भाई और उनकी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल और उनका सारा माल-ओ-सामान' ~मुल्क-ए-कना'न से आ गया है, और अभी तो वह सब जशन के 'इलाक़े में हैं।'फिर उसने अपने भाइयों में से पाँच को अपने साथ लिया और उनको फ़िर'औन के सामने हाज़िर किया।

³और फ़िर'औन ने उसके भाइयों से पूछा, "तुम्हारा पेशा क्या है?" उन्होंने फ़िर'औन से कहा, तेरे खादिम चौपान हैं जैसे हमारे बाप दादा ~थे।"⁴फिर उन्होंने फ़िर'औन से कहा कि हम इस मुल्क में मुसाफ़िराना तौर पर रहने आए हैं, क्योंकि मुल्क-ए-कना'न में सख्त काल होने की वजह से वहाँ तेरे खादिमों के चौपायों के लिए चराई नहीं रही। इसलिए करम करके अपने खादिमों को जशन के 'इलाक़े में रहने दे।

⁵तब फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि तेरा बाप और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं।⁶मिस्र का मुल्क तेरे आगे पड़ा है, यहाँ के अच्छे से अच्छे इलाक़े में अपने बाप और भाइयों को बसा दे, या'नी जशन ही के 'इलाक़े में उनको रहने दे, और अगर तेरी समझ में उनमें होशियार आदमी भी हों तो उनको मेरे चौपायों पर मुकर्रर कर दे।"

⁷और यूसुफ़ अपने बाप या'कूब को अन्दर लाया और उसे फ़िर'औन के सामने हाज़िर किया, और या'कूब ने फ़िर'औन को दु'आ दी।⁸और फ़िर'औन ने या'कूब से पूछा कि तेरी 'उम्र कितने साल की है?' या'कूब ने फ़िर'औन से कहा कि मेरी मुसाफ़िरत के साल एक सौ तीस हैं; मेरी ज़िन्दगी के दिन थोड़े और दुख से भरे हुए रहे, और अभी यह इतने हुए भी नहीं हैं जितने मेरे बाप दादा की ज़िन्दगी के दिन उनके दौर-ए-मुसाफ़िरत में हुए।¹⁰और या'कूब फ़िर'औन को दु'आ दे कर उसके पास से चला गया।

¹¹और यूसुफ़ ने अपने बाप और अपने भाइयों को बसा दिया और फ़िर'औन के हुक्म के मुताबिक़ रा'मसीस के इलाक़े को, जो मुल्क-ए-मिस्र का निहायत हरा भरा 'इलाक़ा है उनकी जागीर ठहराया।¹²और यूसुफ़ अपने बाप और अपने भाइयों और अपने बाप के घर के सब आदमियों की परवरिश, एक-एक के ख़ानदान की ज़रूरत के मुताबिक़ अनाज से करने लगा।

¹³और उस सारे मुल्क में खाने को कुछ न रहा, क्योंकि काल ऐसा सख्त था कि मुल्क-ए-मिस्र और मुल्क-ए-कना'न दोनों काल की वजह से तबाह हो गए थे।

¹⁴और जितना रुपया मुल्क-ए-मिस्र और मुल्क-ए-कना'न में था वह सब यूसुफ़ ने उस ग़ल्ले के बदले, जिसे लोग ख़रीदते थे, ले ले कर जमा' कर लिया और सब रुपये को उसने फ़िर'औन के महल में पहुँचा दिया।

¹⁵और जब वह सारा रुपया, जो मिस्र और कना'न के मुल्कों में था, खर्च हो गया तो मिस्री यूसुफ़ के पास आकर कहने लगे, "हम को अनाज दे; क्योंकि रुपया तो हमारे पास रहा नहीं। हम तेरे होते हुए क्यों मरें?"¹⁶यूसुफ़ ने कहा कि अगर रुपया नहीं है तो अपने चौपाये दो; और मैं तुम्हारे चौपायों के बदले तुम को अनाज दूँगा।¹⁷तब वह अपने चौपाये यूसुफ़ के पास लाने लगे ~और गाय बैलों और गधों के बदले उनको अनाज देने लगा; और पूरे साल भर उनको उनके सब चौपायों के बदले अनाज खिलाया।

¹⁸जब यह साल गुज़र गया तो वह दूसरे साल उसके पास आ कर कहने लगे कि इसमें हम अपने ख़ुदावन्द से कुछ नहीं छिपाते कि हमारा सारा रुपया ~खर्च हो चुका और हमारे चौपायों के ग़ल्लों का मालिक भी हमारा ख़ुदावन्द हो गया है। और हमारा ख़ुदावन्द देख चुका है कि अब हमारे जिस्म और हमारी ज़मीन के अलावा कुछ बाक़ी नहीं।¹⁹फिर ऐसा क्यों हो कि तेरे देखते-देखते हम भी मरें और हमारी ज़मीन भी उजड़ जाए? इसलिए तू हम को और हमारी ज़मीन को अनाज के बदले ख़रीद ले कि हम फ़िर'औन के गुलाम बन जाएँ, और हमारी ज़मीन का मालिक भी वही हो जाए और हम को बीज दे ताकि हम हलाक न हों बल्कि ज़िन्दा रहें और मुल्क भी वीरान न हो।

²⁰~और ~यूसुफ़ ने मिस्र की सारी ज़मीन फ़िर'औन के नाम पर ख़रीद ली; क्योंकि काल से तंग आ कर मिस्रियों में से हर शख्स ने अपना खेत बेच डाला। तब सारी ज़मीन फ़िर'औन की हो गई।²¹और मिस्र के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जो लोग रहते थे उनको उसने शहरों में बसाया।²²लेकिन पुजारियों की ज़मीन उसने न ख़रीदी, क्योंकि फ़िर'औन की तरफ़ से पुजारियों को ख़ुराक मिलती थी। इसलिए वह अपनी-अपनी ख़ुराक, जो फ़िर'औन उनको देता था खाते थे इसलिए उन्होंने अपनी ज़मीन न बेची।

²³तब यूसुफ़ ने वहाँ के लोगों से कहा, कि देखो, मैंने आज के दिन तुम को और तुम्हारी ज़मीन को फ़िर'औन के नाम पर ख़रीद लिया है। इसलिए तुम अपने लिए यहाँ से बीज लो और खेत बो ~डालो।²⁴और फ़सल पर पाँचवाँ हिस्सा फ़िर'औन को दे देना और बाक़ी चार तुम्हारे रहे, ताकि खेती के लिए बीज के भी काम आएँ, और तुम्हारे और तुम्हारे घर के आदमियों और तुम्हारे बाल बच्चों के लिए खाने को भी हो।

²⁵उन्होंने कहा, कि तूने हमारी जान बचाई है, हम पर हमारे ख़ुदावन्द के करम की नज़र रहे और हम फ़िर'औन के गुलाम बने रहेंगे।²⁶और यूसुफ़ ने यह कानून जो आज तक है मिस्र की ज़मीन के लिए ठहराया, के फ़िर'औन पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा लिया करे। इसलिए सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन ऐसी थी जो फ़िर'औन की न हुई।

²⁷और इस्राइली मुल्क-ए-मिस्र में जशन के इलाक़े में रहते थे, और उन्होंने अपनी जायदादें खड़ी कर लीं और वह बढ़े और बहुत ज़्यादा हो गए।²⁸और या'कूब मुल्क-ए-मिस्र में सत्रह साल और जिया; तब या'कूब की कुल 'उम्र एक सौ सैंतालीस साल की हुई।

²⁹और इस्राइल के मरने का वक़्त नज़दीक आया; तब उसने अपने बेटे यूसुफ़ को बुला कर उससे कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख, और देख, मेहरबानी और सच्चाई से मेरे साथ पेश आना; मुझ को मिस्र में दफ़न न करना।³⁰बल्कि जब मैं अपने बाप-दादा के साथ सो जाऊँ तो मुझे मिस्र से ले जाकर उनके कब्रिस्तान में दफ़न करना।" उसने जवाब दिया, 'जैसा तूने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।'³¹और उसने कहा कि तू मुझ से क्रसम खा। और उसने उससे क्रसम खाई, तब इस्राइल अपने बिस्तर पर सिरहाने की तरफ़ सिजदे में हो गया।

Chapter 48

¹इन बातों के बा'द यूँ हुआ कि किसी ने यूसुफ से कहा, "तेरा बाप बीमार है।" तब वह अपने दोनो बेटों, मनस्सी और इफ्राईम को साथ लेकर चला।²और या'कूब से कहा गया, "तेरा बेटा यूसुफ तेरे पास आ रहा है," और इस्राईल अपने को संभाल कर पलंग पर बैठ गया।

³और या'कूब ने यूसुफ से कहा, "खुदा-ए-क्रादिर-ए-मुतलक मुझे लूज में जो मुल्क-ए-कना'न में है, दिखाई दिया और मुझे बरकत दी।⁴और उसने मुझ से कहा मैं तुझे कामयाब करूँगा और बढ़ाऊँगा और तुझ से क़ौमों का एक गिरोह पैदा करूँगा; और तेरे बा'द यह ज़मीन तेरी नसल को दूँगा, ताकि यह उनकी हमेशा की जायदाद ~हो जाए।'

⁵तब तेरे दोनो बेटे, जो मुल्क-ए-मिस्र में मेरे आने से पहले पैदा हुए मेरे हैं, या'नी रूबिन और शमा'ऊन की तरह इफ्राईम और मनस्सी भी मेरे ही होंगे।⁶और जो औलाद अब उनके बा'द तुझ से होगी वह तेरी ठहरेगी, लेकिन अपनी मीरास में अपने भाइयों के नाम से वह लोग नामज़द होंगे।⁷और मैं जब फ़द्दान से आता था तो राखिल ने रास्ते ही में जब इफ़रात थोड़ी दूर रह गया था, मेरे सामने मुल्क-ए-कना'न में वफ़ात पाई। और मैंने उसे वहीं इफ़रात के रास्ते में दफ़न किया। बैतलहम वही है।"

⁸फिर इस्राईल ने यूसुफ के बेटों को देख कर पूछा, "यह कौन हैं?"⁹यूसुफ ने अपने बाप से कहा, "यह मेरे बेटे हैं जो खुदा ने मुझे यहाँ दिए हैं।" उसने कहा, "उनको ज़रा मेरे पास ला, मैं उनको बरकत दूँगा।"¹⁰लेकिन इस्राईल की आँखें बुढ़ापे की वजह से धुन्धला गई थीं, और उसे दिखाई नहीं देता था। तब यूसुफ उनको उसके नज़दीक ले आया। तब उसने उनको चूम कर गले लगा लिया।

¹¹और इस्राईल ने यूसुफ से कहा, "मुझे तो ख्याल भी न था कि मैं तेरा मुँह देखूँगा लेकिन खुदा ने तेरी औलाद भी मुझे दिखाई।"¹²और यूसुफ उनको अपने घुटनों के बीच से हटा कर मुँह के बल ज़मीन तक झुका।¹³और यूसुफ उन दोनों को लेकर, या'नी इफ्राईम को अपने दहने हाथ से इस्राईल के बाएं हाथ के सामने और मनस्सी को अपने बाएं हाथ से इस्राईल के दहने हाथ के सामने करके, उनको उसके नज़दीक लाया।

¹⁴और इस्राईल ने अपना दहना हाथ बढ़ा कर इफ्राईम के सिर पर जो छोटा था, और बाँया हाथ मनस्सी के सिर पर रख दिया। उसने जान बूझ कर अपने हाथ यूँ रखे, क्योंकि पहलौठा तो मनस्सी ही था।¹⁵और उसने यूसुफ को बरकत दी और कहा कि खुदा, जिसके सामने मेरे बाप इब्राहीम और इस्हाक़ ने अपना दौर पूरा किया; वह खुदा, जिसने सारी 'उम्र आज के दिन तक मेरी रहनुमाई ~की।¹⁶और वह फ़रिश्ता, जिसने मुझे सब बलाओं से बचाया, इन लड़कों को बरकत दे; और जो मेरा और मेरे बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ का नाम है उसी से यह नामज़द हों, और ज़मीन पर बहुत कसरत से बढ़ जाएँ।"

¹⁷और यूसुफ यह देखकर कि उसके बाप ने अपना दहना हाथ इफ्राईम के सिर पर रखवा, नाखुश हुआ और उसने अपने बाप का हाथ थाम लिया, ताकि उसे इफ्राईम के सिर पर से हटाकर मनस्सी के सिर पर रखे।¹⁸और यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसा न कर; क्योंकि पहलौठा यह है, अपना दहना हाथ इसके सिर पर रख।"

¹⁹उसके बाप ने न माना, और कहा, "ऐ मेरे बेटे, मुझे खूब मा'लूम है। इससे भी एक गिरोह पैदा होगी और यह भी बुज़ुर्ग होगा, लेकिन इसका छोटा भाई इससे बहुत बड़ा होगा और उसकी नसल से बहुत सी क़ौमें होंगी।"²⁰और उसने उनको उस दिन बरकत बरख़्शी और कहा, "इस्राइली तेरा नाम ले लेकर यूँ दु'आ दिया करेंगे, 'खुदा तुझ को इफ्राईम और मनस्सी को तरह कामयाब ~करे' !' तब उसने इफ्राईम को मनस्सी पर फ़ज़ीलत दी।

²¹और इस्राईल ने यूसुफ से कहा, "मैं तो मरता हूँ लेकिन खुदा तुम्हारे साथ होगा और तुम को फिर तुम्हारे बाप दादा के मुल्क में ले जाएगा।"²²और मैं तुझे तेरे भाइयों से ज़्यादा एक हिस्सा, जो मैंने अमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और कमान से लिया देता हूँ ।

Chapter 49

¹और या'कूब ने अपने बेटों को यह कह कर बुलवाया कि तुम सब जमा' हो जाओ, ताकि मैं तुम को बताऊँ कि आखिरी दिनों में तुम पर क्या-क्या गुज़रेगा।²~ऐ, या'कूब के बेटों जमा' हो कर सुनो, और अपने बाप इस्राईल की तरफ़ कान लगाओ।

³ऐ रूबिन! तू मेरा पहलौठा, मेरी कुव्वत और मेरी शहज़ोरी का पहला फल है। तू मेरे रौब की और मेरी ताक़त की शान है। तू पानी की तरह बे सबात है, इसलिए मुझे फ़ज़ीलत नहीं मिलेगी ~क्योंकि तू अपने बाप के बिस्तर पर चढ़ा तूने उसे नापाक किया; रूबिन मेरे बिछोने पर चढ़ गया।

⁵शमा'ऊन और लावी तो भाई-भाई हैं, उनकी तलवारें जुल्म के हथियार हैं।⁶ऐ मेरी जान! उनके मधरे में शरीक न हो, ऐ मेरी बुजुर्गी! उनकी मजलिस में शामिल न हो, क्योंकि उन्होंने अपने ग़ज़ब में एकआदमी को क़त्ल किया, और अपनी खुदराई से बैलों की कूँचें काटीं।

⁷~ला'नत उनके ग़ज़ब पर, क्योंकि वह तुन्द था। और उनके क़हर पर, क्योंकि वह सख़्त था; मैं उन्हें या'कूब में अलग अलग और इस्राईल में बिखेर दूँगा।

⁸ऐ यहूदाह, तेरे भाई तेरी मदद करेंगे, तेरा हाथ तेरे दुश्मनों की गर्दन पर होगा। तेरे बाप की औलाद तेरे आगे सिज्दा करेंगी।

⁹यहूदाह शेर-ए-बबर का बच्चा है ~ऐ मेरे बेटे! तू शिकार मार कर चल दिया है। वह शेर-ए-बबर, बल्कि शेरनी की तरह दुबक कर बैठ गया, कौन उसे छेड़े?

¹⁰यहूदाह से सल्लतन नहीं छूटेगी। और न उसकी नसल से हुकूमत का 'असा मौकूफ़ होगा। जब तक शीलोह न आए और क्रौमें उसकी फ़रमाबरदार होंगी।

¹¹वह अपना जवान गधा अंगूर के दरख़्त से, और अपनी गध़ी का बच्चा 'आला दरजे के अंगूर के दरख़्त से बाँधा करेगा; वह अपना लिबास मय में, और अपनी पोशाक आब-ए अंगूर में ~धोया करेगा।¹²उसकी आँखें मय की वजह से लाल, और उसके दाँत दूध की वजह से सफ़ेद रहा करेंगे।

¹³ज़बूलन समुन्दर के किनारे बसेगा, और जहाज़ों के लिए बन्दरगाह का काम देगा, और उसकी हद सैदा तक फैली होगी।

¹⁴इश्कार मज़बूत गधा है, जो दो भेड़सालों के बीच बैठा है;¹⁵ उसने एक अच्छी आरामगाह और खुशनुमा ज़मीन को ~देख कर अपना कन्धा बोझ उठाने को झुकाया, और बेगार में गुलाम की तरह काम करने लगा।

¹⁶दान इस्राईल के क़बीलों में से एक की तरह अपने लोगों का इन्साफ़ करेगा।¹⁷दान रास्ते का साँप है, वह राहगुज़र का अज़दहा है, जो घोड़े के 'अकब को ऐसा डसता है कि उसका सवार पछाड़ खा कर गिर पड़ता है।¹⁸ऐ खुदावन्द, मैं तेरी नजात की राह देखता आया हूँ।

¹⁹जद पर एक फौज़ हमला करेगी लेकिन वह उसके दुम्बाला पर छापा मारेगा।²⁰आशर नफ़ीस अनाज पैदा किया करेगा और बादशाहों के लायक़ लज़ीज़ सामान मुहय्या करेगा।²¹नफ़्ताली ऐसा है जैसा छूटी हुई हरनी, वह मीठी-मीठी बातें करता है।

²²यूसुफ़ एक फलदार पौधा है, ऐसा फलदार पौधा जो पानी के चश्में के पास लगा हुआ हो, और उसकी शाखें। दीवार पर फैल गई हों।²³तीरंदाज़ों ने उसे बहुत छेड़ा और मारा और सताया है;

²⁴लेकिन उसकी कमान मज़बूत रही, और उसके हाथों और बाजुओं ने या'कूब के क़ादिर के हाथ से ताक़त पाई, वहीं से वह चौपान उठा है जो इस्राईल ~की चट्टान ~है।

²⁵यह तेरे बाप के खुदा का काम है, जो तेरी मदद करेगा, उसी क़ादिर-ए-मुतलक का काम जो ऊपर से आसमान की बरकतें, और नीचे से गहरे समुन्दर कि बरकतें 'अता करेगा।

²⁶तेरे बाप की बरकतें, मेरे बाप दादा की बरकतों से कहीं ज़्यादा हैं, और क़दीम पहाड़ों की इन्तिहा तक पहुँची हैं; वह यूसुफ़ के सिर, बल्कि उसके सिर की चाँदी पर जो अपने भाइयों से जुदा हुआ नाज़िल होंगी।

²⁷बिनयमीन फाड़ने वाला भेड़िया है, वह सुबह को शिकार खाएगा और शाम को लूट का माल बाँटेगा।

²⁸इस्राईल के बारह क़बीले यही हैं : और उनके बाप ने जो-जो बातें कह कर उनको बरकत दीं वह भी यही हैं; हर एक को, उसकी बरकत के मुवाफ़िक़ उसने बरकत दी।²⁹फिर उसने उनको हुक्म किया और कहा, कि मैं अपने लोगों में शामिल होने पर हूँ; मुझे मेरे बाप दादा के पास उस मग़ारह मारे में जो इफ़रोन हिती के खेत में है दफ़न करना,³⁰या'नी उस मग़ारे में जो मुल्क-ए-कना'न में ममरे के सामने मक़फ़ीला के खेत में है, जिसे इब्राहीम ने खेत के साथ 'इफ़रोन हिती से मोल लिया था, ताकि क़ब्रिस्तान के लिए वह उसकी मिलिकयत बन जाए।

³¹वहाँ उन्होंने इब्राहीम को और उसकी बीवी सारा को दफ़न किया, वहीं उन्होंने इस्राक़ और उसकी बीवी रिबका को दफ़न किया, और वहीं मैंने भी लियाह को दफ़न किया,³²या'नी उसी खेत के मग़ारे में जो बनी हिती से ख़रीदा था।³³और जब या'कूब अपने बेटों को वसीयत कर चुका तो, उसने अपने पाँव बिछौने पर समेट लिए और दम छोड़ दिया और अपने लोगों में जा मिला।

Chapter 50

¹तब यूसुफ अपने बाप के मुँह से लिपट कर उस पर रोया और उसको चूमा।²और यूसुफ ने उन हकीमों को जो उसके नौकर थे, अपने बाप की लाश में खुशबू भरने का हुक्म दिया। तब हकीमों ने इस्राईल की लाश में खुशबू भरी।³और उसके चालीस दिन पूरे हुए, क्योंकि खुशबू भरने में इतने ही दिन लगते हैं। और मिस्री उसके लिए सत्तर दिन तक मातम करते रहे।

⁴और जब मातम के दिन गुज़र गए तो यूसुफ ने फिर 'औन के घर के लोगों से कहा, "अगर मुझ पर तुम्हारे करम की नज़र है तो फिर 'औन से ज़रा 'अर्ज़ कर दो, 'कि मेरे बाप ने यह मुझ से क्रसम लेकर कहा है, 'मैं तो मरता हूँ, तू मुझ को मेरी क़ब्र में जो मैंने मुल्क-ए-कना'न में अपने लिए खुदवाई है, दफ़न करना।' इसलिए ज़रा मुझे इजाज़त दे कि मैं वहाँ जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ, और मैं लौट कर आ जाऊँगा।"⁶फिर 'औन ने कहा, कि जा और अपने बाप को जैसे उसने तुझ से क्रसम ली है दफ़न कर।"

⁷तब यूसुफ अपने बाप को दफ़न करने चला, और फिर 'औन के सब ख़ादिम और उसके घर के बुज़ुर्ग, और मुल्क-ए-मिस्र के सब बुज़ुर्ग,⁸और यूसुफ के घर के सब लोग और उसके भाई, और उसके बाप के घर के आदमी उसके साथ गए; वह सिर्फ़ अपने बाल बच्चे और भेड़ बकरियाँ और गाय-बैल ज़शन के 'इलाक़े में छोड़ गए।⁹और उसके साथ रथ और सवार भी गए, और एक बड़ा क़ाफ़िला उसके साथ था।

¹⁰और वह अतद के खलिहान पर जो यरदन के पार है पहुंचे, और वहाँ उन्होंने बुलन्द और दिलसोज़ आवाज़ से नौहा किया; और यूसुफ ने अपने बाप के लिए सात दिन तक मातम कराया।¹¹और जब उस मुल्क के बाशिन्दों या 'नी कना'नियों ने अतद में खलिहान पर इस तरह का मातम देखा, तो कहने लगे, "मिस्रियों का यह बड़ा दर्दनाक मातम है।" इसलिए वह जगह अबील मिस्रयीम कहलाई, और वह यरदन के पार है।

¹²और या'क़ूब के बेटों ने जैसा उसने उनको हुक्म किया था, वैसा ही उसके लिए किया।¹³क्योंकि उन्होंने उसे मुल्क-ए-कना'न में ले जाकर ममरे के सामने मकफ़ीला के खेत के मगारे में, जिसे इब्राहीम ने 'इफ़रोन हित्ती से खरीदकर क़ब्रिस्तान के लिए अपनी मिल्कियत बना लिया था दफ़न किया।¹⁴और यूसुफ अपने बाप को दफ़न करके अपने भाइयों, और उनके साथ जो उसके बाप को दफ़न करने के लिए उसके साथ गए थे, मिस्र को लौटा।

¹⁵और यूसुफ के भाई यह देख कर कि उनका बाप मर गया कहने लगे, कि यूसुफ शायद हम से दुश्मनी करे, और सारी बुराई का जो हम ने उससे की है पूरा बदला ले।¹⁶तब उन्होंने यूसुफ को यह कहला भेजा, "तेरे बाप ने अपने मरने से आगे ये हुक्म किया था,¹⁷'तुम यूसुफ से कहना कि अपने भाइयों की ख़ता और उनका गुनाह अब बख़्श दे, क्योंकि उन्होंने तुझ से बुराई की; इसलिए अब तू अपने बाप के ख़ुदा के बन्दों की ख़ता बख़्श दे।" और यूसुफ उनकी यह बातें सुन कर रोया।

¹⁸और उसके भाइयों ने ख़ुद भी उसके सामने जाकर अपने सिर टेक दिए और कहा, "देख! हम तेरे ख़ादिम हैं।"¹⁹यूसुफ ने उनसे कहा, "मत डरो! क्या मैं ख़ुदा की जगह पर हूँ?²⁰तुम ने तो मुझ से बुराई करने का इरादा किया था, लेकिन ख़ुदा ने उसी से नेकी का क़र्रद किया, ताकि बहुत से लोगों की जान बचाए चुनाँचे आज के दिन ऐसा ही हो रहा है।"²¹इसलिए तुम मत डरो, मैं तुम्हारी और तुम्हारे बाल बच्चों की परवरिश करता रहूँगा।" इस तरह उसने अपनी मुलायम बातों से उनको तसल्ली दी।

²²और यूसुफ और उसके बाप के घर के लोग मिस्र में रहे, और यूसुफ एक सौ दस साल तक ज़िन्दा रहा।²³और यूसुफ ने इफ़्राईम की औलाद तीसरी नसल तक देखी, और मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद को भी यूसुफ ने अपने घुटनों पर खिलाया।

²⁴और यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं मरता हूँ; और ख़ुदा यक़ीनन तुम को याद करेगा, और तुम को इस मुल्क से निकाल कर उस मुल्क में पहुँचाएगा जिसके देने की क्रसम उसने अब्राहम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई थी।"²⁵और यूसुफ ने बनी-इस्राईल से क्रसम लेकर कहा, "ख़ुदा यक़ीनन तुम को याद करेगा, इसलिए तुम ज़रूर ही मेरी हडिडुयों को यहाँ से ले जाना।"²⁶और यूसुफ ने एक सौ दस साल का होकर वफ़ात पाई; और उन्होंने उसकी लाश में खुशबू भरी और उसे मिस्र ही में ताबूत में रखवा।

खुर्रूज

Chapter 1

¹इस्राईल के बेटों के नाम जो अपने-अपने घराने को लेकर या'क़ूब के साथ मिस्र में आए यह हैं:²~रूबिन, शमा'ऊन, लावी, यहूदाह,³~इश्कार, ज़बूलून, बिनयमीन,⁴~दान, नफ़ताली, जद्, आशर⁵~और सब जानें जो या'क़ूब के सुल्ब से पैदा हुई सत्तर थीं, और यूसुफ तो मिस्र में पहले ही से था।

⁶और यूसुफ और उसके सब भाई और उस नसल के सब लोग मर मिटे।⁷और इस्राईल की औलाद क़ामयाब और ज़्यादा ता'दाद और फ़िरावान और बहुत ताक़तवर हो गई और वह मुल्क उनसे भर गया।

⁸~तब मिस्र में एक नया बादशाह हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था।⁹~और उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, "देखो इस्राइली हम से ज़्यादा और ताक़तवर हो गए हैं।"¹⁰~इसलिए आओ, हम उनके साथ हिकमत से पेश आएँ, ऐसा न हो कि जब वह और ज़्यादा हो जाएँ और उस वक़्त जंग छिड़ जाए तो वह हमारे दुश्मनों से मिल कर हम से लड़ें और मुल्क से निकल जाएँ।"

¹¹~इसलिए उन्होंने उन पर बेगार लेने वाले मुकर्रर किए जो उनसे सख़्त काम लेकर उनको सताएँ। तब उन्होंने फिर 'औन के लिए ज़ख़ीरे के शहर पितोम और रा'मसीस बनाए।¹²~तब उन्होंने जितना उनको सताया वह उतना ही ज़्यादा बढ़ते और फैलते गए, इसलिए वह लोग बनी-इस्राईल की तरफ़ से फ़िक्रमन्द ही गए।

¹³~और मिसियों ने बनी-इसाईल पर तशद्दुद कर-कर के उनसे काम कराया।¹⁴और उन्होंने उनसे सख्त मेहनत से गारा और ईंट बनवा-बनवाकर और खेत में हर क्रिस्म की खिदमत ले-लेकर उनकी ज़िन्दगी कड़वी की; उनकी सब खिदमतें जो वह उनसे कराते थे दुख की थीं।

¹⁵तब मिस्र के बादशाह ने 'इब्रानी दाइयों से जिनमें एक का नाम सिफ़रा और दूसरी का नाम फू'आ था बातें की,¹⁶~और कहा, "जब 'इब्रानी 'औरतों के तुम बच्चा जनाओ और उनको पत्थर की बैठकों पर बैठी देखो, तो अगर बेटा हो तो उसे मार डालना, और अगर बेटी हो तो वह जीती रहे।"¹⁷~लेकिन वह दाइयाँ खुदा से डरती थीं, तब उन्होंने मिस्र के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को ज़िन्दा छोड़ देती थीं।

¹⁸~फिर मिस्र के बादशाह ने दाइयों को बुलवा कर उनसे कहा, "तुम ने ऐसा क्यों किया कि लड़कों को ज़िन्दा रहने दिया?"¹⁹दाइयों ने फिर'औन से कहा, 'इब्रानी 'औरतें मिस्री 'औरतों की तरह नहीं हैं। वह ऐसी मज़बूत होती हैं कि दाइयों के पहुँचने से पहले ही जनकर फ़ारिग हो जाती हैं।"

²⁰तब खुदा ने दाइयों का भला किया और लोग बढ़े और बहुत ज़बरदस्त हो गए।²¹और इस वजह से कि दाइयाँ खुदा से डरी, उसने उनके घर आबाद कर दिए।

²²~और फिर'औन ने अपनी क़ौम के सब लोगों को ताकीदन कहा, "उनमें जो बेटा पैदा हो तुम उसे दरिया में डाल देना, और जो बेटी हो उसे ज़िन्दा छोड़ना।"

Chapter 2

¹और लावी के घराने के एक शख्स ने जाकर लावी की नसल की एक 'औरत से ब्याह किया।²~वह 'औरत हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उस ने यह देखकर कि बच्चा खूबसूरत है तीन महीने तक उसे छिपा कर रखा।

³और जब उसे और ज़्यादा छिपा न सकी तो उसने सरकन्डों का एक टोकरा लिया, और उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगा कर लड़के को उसमें रखवा, और उसे दरिया के किनारे झाऊ में छोड़ आई।⁴और उसकी बहन दूर खड़ी रही ताकि देखे कि उसके साथ क्या होता है।

⁵और फिर 'औन की बेटी दरिया पर गुस्ल करने आई और उसकी सहेलियाँ दरिया के किनारे-किनारे टहलने लगीं। तब उसने झाऊ में वह टोकरा देख कर अपनी सहेली की भेजा कि उसे उठा लाए।⁶जब उसने उसे खोला तो लड़के को देखा, और वह बच्चा रो रहा था। उसे उस पर रहम आया और कहने लगी, "यह-किसी 'इब्रानी का बच्चा है।"

⁷~तब उसकी बहन ने फिर 'औन की बेटी से कहा, "क्या मैं जा कर 'इब्रानी 'औरतों में से एक दाईं तेरे पास बुला लाऊँ, जो तेरे लिए इस बच्चे को दूध पिलाया करे?"⁸~फिर 'औन की बेटी ने उसे कहा, "जा! "वह लड़की जाकर उस बच्चे की माँ को बुला लाई।

⁹~फिर 'औन की बेटी ने उसे कहा, "तू इस बच्चे को ले जाकर मेरे लिए दूध पिला, मैं तुझे तेरी मज़दूरी दिया करूँगी। "वह 'औरत उस बच्चे को ले जाकर दूध पिलाने लगी।¹⁰जब बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो वह उसे फिर 'औन की बेटी के पास ले गई और वह उसका बेटा ठहरा और उसने उसका नाम मूसा यह कह कर रखवा, "मैंने उसे पानी से निकाला।"

¹¹~इतने में जब मूसा बड़ा हुआ तो बाहर अपने भाइयों के पास गया। और उनकी मशक्कतों पर उसकी नज़र पड़ी और उसने देखा कि एक मिस्री उसके एक 'इब्रानी भाई को मार रहा है।¹²~फिर उसने इधर उधर निगाह की और जब देखा कि वहाँ कोई दूसरा आदमी नहीं है, तो उस मिस्री को जान से मार कर उसे रेत में छिपा दिया।

¹³~फिर दूसरे दिन वह बाहर गया और देखा कि दो 'इब्रानी आपस में मार पीट कर रहे हैं। तब उसने उसे जिसका कुसूर था कहा, कि "तू अपने साथी को क्यों मारता है?"¹⁴~उसने कहा, "तुझे किसने हम पर हाकिम या मुन्सिफ़ मुकर्रर किया? क्या जिस तरह तूने उस मिस्री को मार डाला, मुझे भी मार डालना चाहता है?" तब मूसा यह सोच कर डरा, "बिला शक यह राज़ खुल गया।"

¹⁵~जब फिर 'औन ने यह सुना तो चाहा कि मूसा को क्रल्ल करे। पर मूसा फिर 'औन के सामने से भाग कर मुल्क-ए-मिदियान में जा बसा। वहाँ वह एक कुएँ के नज़दीक बैठा था।¹⁶और मिदियान के काहिन की सात बेटियाँ थी। वह आई और पानी भर-भर कर कठरों में डालने लगीं ताकि अपने बाप की भेड़-बकरियों को पिलाएँ।¹⁷~और गड़रिये आकर उनको भगाने लगे, लेकिन मूसा खड़ा हो गया और उसने उनकी मदद की और उनकी भेड़-बकरियों को पानी पिलाया।

¹⁸~और जब वह अपने बाप र'ऊएल के पास लौटीं तो उसने पूछा, "आज तुम इस क्रदर जल्द कैसे आ गई?"¹⁹~उन्होंने कहा, 'एक मिस्री ने हम को गड़रियों के हाथ से बचाया, और हमारे बदले पानी भर-भर कर भेड़ बकरियों को पिलाया।'²⁰~उसने अपनी बेटियों से कहा, "वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यों छोड़ आई? उसे बुला लाओ कि रोटी खाए।"

²¹और मूसा उस शख्स के साथ रहने को राज़ी हो गया। तब उसने अपनी बेटी सप्पूरा मूसा को ब्याह दी।²²~और उसके एक बेटा हुआ, और मूसा ने उसका नाम जैरसोम यह कहकर रखवा, "मैं अजनबी मुल्क में मुसाफिर हूँ।"

²³और एक मुद्दत के बाद यूँ हुआ कि मिस्र का बादशाह मर गया। और बनी-इसाईल अपनी गुलामी की वजह से आह भरने लगे और रोए; और उनका रोना जो उनकी गुलामी की वजह था खुदा तक पहुँचा।²⁴~और खुदा ने उनका कराहना सुना, और खुदा ने अपने 'अहद को जो इब्राहीम और इसहाक और या'कूब के साथ था याद किया।²⁵~और खुदा ने बनी-इसाईल पर नज़र की और उनके हाल को मा'लूम किया।

Chapter 3

¹और मूसा के ससुर यित्रो कि जो मिदियान का काहिन था, भेड़-बकरियाँ चराता था। और वह भेड़-बकरियों को हंकाता हुआ उनको वीराने की परली तरफ़ से खुदा के पहाड़ होरिब के नज़दीक ले आया।²और खुदावन्द का फ़रिश्ता एक झाड़ी में से आग के शो'ले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने निगाह की और क्या देखता है, कि एक झाड़ी में आग लगी हुई है पर वह झाड़ी भसम नहीं होती।³तब मूसा ने कहा, "मैं अब ज़रा उधर कतरा कर इस बड़े मन्ज़र को देखूँ कि यह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।"

⁴~जब खुदावन्द ने देखा कि वह देखने को कतरा कर आ रहा है, तो खुदा ने उसे झाड़ी में से पुकारा और कहा, "ऐ मूसा! ऐ मूसा!" उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।"⁵~तब उसने कहा, "इधर पास मत आ। अपने पाँव से जूता उतार, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है वह पाक ज़मीन है।"⁶~फिर उसने कहा कि मैं तेरे बाप का खुदा, या'नी इब्राहीम का खुदा और इस्हाक़ का खुदा और या'क़ूब का खुदा हूँ।" मूसा ने अपना मुँह छिपाया क्योंकि वह खुदा पर नज़र करने से डरता था।

⁷~और खुदावन्द ने कहा, "मैंने अपने लोगों की तक्लीफ़ जो मिस्र में हैं ख़ूब देखी, और उनकी फ़रियाद जो बेगार लेने वालों की वजह से है सुनी, और मैं उनके दुखों को जानता हूँ।"⁸~और मैं उतरा हूँ कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँ, और उस मुल्क से निकाल कर उनको एक अच्छे और बड़े मुल्क में जहाँ दूध और शहद बहता है या'नी कना'नियों और हित्तियों और अमोरियों और फ़रिज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में पहुँचाऊँ।

⁹देख बनी-इस्राईल की फ़रियाद मुझ तक पहुँची है, और मैंने वह जुल्म भी जो मिस्री उन पर करते हैं देखा है।¹⁰~इसलिए अब आ मैं तुझे फिर'औन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी क़ौम बनी-इस्राईल को मिस्र से निकाल लाए।"

¹¹मूसा ने खुदा से कहा, "मैं कौन हूँ जो फिर'औन के पास जाऊँ और बनी-इस्राईल को मिस्र से निकाल लाऊँ?"¹²उसने कहा, "मैं ज़रूर तेरे साथ रहूँगा और इसका कि मैंने तुझे भेजा है तेरे लिए यह निशान होगा, कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल लाएगा तो तुम इस पहाड़ पर खुदा की 'इबादत करोगे।"

¹³~तब मूसा ने खुदा से कहा, "जब मैं बनी-इस्राईल के पास जाकर उनको कहूँ कि तुम्हारे बाप-दादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, " और वह मुझे कहें कि उसका नाम क्या है?" तो मैं उनको क्या बताऊँ?"¹⁴~खुदा ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो मैं हूँ।इसलिए तू बनी-इस्राईल से यूँ कहना, 'मैं जो हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।"¹⁵~फिर खुदा ने मूसा से यह भी कहा कि तू बनी-इस्राईल से यूँ कहना कि खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा के खुदा, इब्राहीम के खुदा और इस्हाक़ के खुदा और या'क़ूब के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। हमेशा तक मेरा यही नाम है और सब नसलों में इसी से मेरा ज़िक्र होगा।"

¹⁶~जा कर इस्राइली बुजुर्गों को एक जगह जमा' कर और उनको कह, 'खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा के खुदा, इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब के खुदा ने मुझे दिखाई देकर यह कहा है कि मैंने तुम को भी, और जो कुछ बरताव तुम्हारे साथ मिस्र में किया जा रहा है उसे भी ख़ूब देखा है।'¹⁷~और मैंने कहा है कि मैं तुम को मिस्र के दुख में से निकाल कर कना'नियों और हित्तियों और अमोरियों और फ़रिज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले चलूँगा, जहाँ दूध और शहद बहता है।'¹⁸और वह तेरी बात मानेंगे और तू इस्राइली बुजुर्गों को साथ लेकर मिस्र के बादशाह के पास जाना और उससे कहना कि ~'खुदावन्द इब्रानियों के खुदा की हम से मुलाक़ात हुई। अब तू हम को तीन दिन की मंज़िल तक वीराने में जाने दे ताकि हम खुदावन्द अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें।"

¹⁹~और मैं जानता हूँ कि मिस्र का बादशाह तुम को न यूँ जाने देगा, न बड़े ज़ोर से।²⁰तब मैं अपना हाथ बढ़ाऊँगा और मिस्र को उन सब 'अजाइब से जो मैं उसमें करूँगा, मुसीबत में डाल दूँगा। इसके बाद वह तुम को जाने देगा।²¹~और मैं उन लोगों को मिस्रियों की नज़र में इज़ज़त बख़्शूँगा और यूँ होगा कि जब तुम निकलोगे तो खाली हाथ न निकलोगे।²²~बल्कि तुम्हारी एक-एक 'औरत अपनी अपनी पड़ौसन से और अपने-अपने घर की मेहमान से सोने चाँदी के ज़ेवर और लिबास माँग लेगी। इनको तुम अपने बेटों और बेटियों को पहनाओगे और मिस्रियों को लूट लोगे।"

Chapter 4

¹तब मूसा ने जवाब दिया, "लेकिन वह तो मेरा यक्रीन ही नहीं करेंगे न मेरी बात सुनेंगे। वह कहेंगे, 'खुदावन्द तुझे दिखाई नहीं दिया'।"²~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि यह तेरे हाथ में क्या है?" उसने कहा, "लाठी।"³फिर उसने कहा कि उसे ज़मीन पर डाल दे।" उसने उसे ज़मीन पर डाला और वह साँप बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा।

⁴तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "हाथ बढ़ा कर उसकी दुम पकड़ ले। (उसने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया, वह उसके हाथ में लाठी बन गया।)⁵~ताकि वह यक्रीन करें कि खुदावन्द उनके बाप-दादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इस्हाक़ का खुदा और या'कूब का खुदा तुझ को दिखाई दिया।"

⁶~फिर खुदावन्द ने उसे यह भी कहा, कि तू अपना हाथ अपने सीने पर रख कर ढाँक ले।" उसने अपना हाथ अपने सीने पर रख कर उसे ढाँक लिया, और जब उसने उसे निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद था।⁷~उसने कहा कि तू अपना हाथ फिर अपने सीने पर रख कर ढाँक ले। (उसने फिर उसे सीने पर रख कर ढाँक लिया। जब उसने उसे सीने पर से बाहर निकाल कर देखा तो वह फिर उसके बाकी जिस्म की तरह हो गया।)

⁸और यूँ होगा कि अगर वह तेरा यक्रीन न करें और पहले मोअजिज़े को भी न मानें तो वह दूसरे मोअजिज़े की वजह से यक्रीन करेंगे।⁹~और अगर वह इन दोनों मो'अजिज़ों की वजह से भी यक्रीन न करें और तेरी बात न सुनें, तो तू दरिया का पानी लेकर खुश्क ज़मीन पर छिड़क देना और वह पानी जो तू दरिया से लेगा खुश्क ज़मीन पर खून हो जाएगा।"

¹⁰~तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, "ऐ खुदावन्द! मैं फ़सीह नहीं, न तो पहले ही था और न जब से तूने अपने बन्दे से कलाम किया बल्कि रुक-रुक कर बोलता हूँ और मेरी ज़बान कुन्द है।"¹¹~तब खुदावन्द ने उसे कहा कि आदमी का मुँह किसने बनाया है? और कौन गूँगा या बहरा या बीना या अन्धा करता है? क्या मैं ही जो खुदावन्द हूँ यह नहीं करता?¹²~इसलिए अब तू जा और मैं तेरी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ और तुझे सिखाता रहूँगा कि तू क्या-क्या करे।"¹³~तब उसने कहा कि ऐ खुदावन्द! मैं तेरी मित्रता करता हूँ, किसी और के हाथ से जिसे तू चाहे यह पैग़ाम भेज।"

¹⁴~तब खुदावन्द का क्रहर मूसा पर भड़का और उसने कहा, "क्या लावियों में से हारून तेरा भाई नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह फ़सीह है और वह तेरी मुलाक़ात को आ भी रहा है, और तुझे देख कर दिल में खुश होगा।"¹⁵~इसलिए तू उसे सब कुछ बताना और यह सब बातें उसे सिखाना और मैं तेरी और उसकी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ, और तुम को सिखाता रहूँगा कि तुम क्या-क्या करो।¹⁶और वह तेरी तरफ़ से लोगों से बातें करेगा और वह तेरा मुँह बनेगा और तू उसके लिए जैसे खुदा होगा।¹⁷और तू इस लाठी को अपने हाथ में लिए जा और इसी से इन मो'अजिज़ों को दिखाना।

¹⁸~तब मूसा लौट कर अपने ससुर यित्री के पास गया और उसे कहा, "मुझे ज़रा इजाज़त दे कि अपने भाइयों के पास जो मिस्र में हैं, जाऊँ और देखूँ कि वह अब तक ज़िन्दा हैं कि नहीं।" यित्री ने मूसा से कहा, कि सलामत जा।"¹⁹और खुदावन्द ने मिदियान में मूसा से कहा, कि "मिस्र को लौट जा, क्योंकि वह सब जो तेरी जान के ख़्वाहों थे मर गए।"²⁰तब मूसा अपनी बीवी और अपने बेटों को लेकर और उनको एक गधे पर चढ़ा कर मिस्र को लौटा, और मूसा ने खुदा की लाठी अपने हाथ में ले ली।

²¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "जब तू मिस्र में पहुँचे तो देख वह सब करामात जो मैंने तेरे हाथ में रख रखी हैं फिर'औन के आगे दिखाना, लेकिन मैं उसके दिल को सख्त करूँगा, और वह उन लोगों को जाने नहीं देगा।"²²~तू फिर'औन से कहना, कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि इस्राईल मेरा बेटा बल्कि मेरा पहलौठा है।"²³और मैं तुझे कह चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी 'इबादत करे, और तूने अब तक उसे जाने देने से इन्कार किया है; और देख मैं तेरे बेटे को बल्कि तेरे पहलौटे को ~मार डालूँगा।"

²⁴~और रास्ते में मंज़िल पर खुदावन्द उसे मिला और चाहा कि उसे मार डाले।²⁵तब सफ़्फ़ूरा ने चक्रमक़ का एक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे मूसा के पाँव पर फेंक कर कहा, "तू बेशक मेरे लिए खूनी दूल्हा ठहरा।"²⁶~तब उसने उसे छोड़ दिया। लेकिन उसने कहा, कि "खतने की वजह से तू खूनी दूल्हा है।"

²⁷~और खुदावन्द ने हारून से कहा, कि "वीराने में जा कर मूसा से मुलाक़ात कर।" वह गया और खुदा के पहाड़ पर उससे मिला और उसे बोसा दिया।²⁸~और मूसा ने हारून को बताया, कि खुदा ने क्या-क्या बातें कह कर उसे भेजा और कौन-कौन से मो'अजिज़े दिखाने का उसे हुक्म दिया है।

²⁹~तब मूसा और हारून ने जाकर बनी-इसाईल के सब बुजुर्गों को एक जगह जमा' किया।³⁰~और हारून ने सब बातें जो खुदावन्द ने मूसा से कहीं थी उनको बताई और लोगों के सामने मो'जिज़े किए।³¹~तब लोगों ने उनका यक्रीन किया और यह सुन कर कि खुदावन्द ने बनी-इसाईल की ख़बर ली और उनके दुखों पर नज़र की, उन्होंने अपने सिर झुका कर सिज्दा किया।

Chapter 5

¹~इसके बा'द मूसा और हारून ने जाकर फिर'औन से कहा कि, "खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि 'मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह वीराने में मेरे लिए 'ईद करें'।"²~फ़िर'औन ने कहा, कि "खुदावन्द कौन है कि मैं उसकी बात को मान कर बनी-इसाईल को जानें दूँ? मैं खुदावन्द को नहीं जानता और मैं बनी-इसाईल को जाने भी नहीं दूँगा।"

³~तब उन्होंने कहा, कि 'इब्रानियों का खुदा हम से मिला है; इसलिए हम को इजाज़त दे कि हम तीन दिन की मन्ज़िल वीराने में जा कर खुदावन्द अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें, ऐसा न हो कि वह हम पर वबा भेज दे या हम को तलवार से मरवा दे।"⁴~तब मिस्र के बादशाह ने उनको कहा, कि "ऐ मूसा और ऐ हारून! तुम क्यों इन लोगों को इनके काम से छुड़वाते हो? तुम जाकर अपने-अपने बोझ को उठाओ।"⁵~और फिर'औन ने यह भी कहा, कि "देखो, यह लोग इस मुल्क में बहुत हो गए हैं, और तुम इनको इनके काम से बिठाते हो।"

⁶~और उसी दिन फिर'औन ने बेगार लेने वालों और सरदारों को जो लोगों पर थे हुक्म किया,⁷~"अब आगे को तुम इन लोगों को ईंटें बनाने के लिए भुस न देना जैसे अब तक देते रहे, वह खुद ही जाकर अपने लिए भुस बटोरें।"⁸~और इनसे उतनी ही ईंटें बनवाना जितनी वह अब तक बनाते आए हैं; तुम उसमें से कुछ न घटाना क्योंकि वह काहिल हो गए हैं, इसीलिए चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं, 'हम को जाने दो कि हम अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें।"⁹~इसलिए इनसे ज़्यादा सख्त मेहनत ली जाए, ताकि काम में मशगूल रहें और झूठी बातों से दिल न लगाएँ।"

¹⁰~तब बेगार लेने वालों और सरदारों ने जो लोगों पर थे जाकर उनसे कहा, कि फिर'औन कहता है, कि 'मैं तुम को भुस नहीं देने का।"¹¹~तुम खुद ही जाओ और जहाँ कहीं तुम को भुस मिले वहाँ से लाओ, क्योंकि तुम्हारा काम कुछ भी घटाया नहीं जाएगा।"

¹²~चुनाँचे वह लोग तमाम मुल्क-ए-मिस्र में मारे-मारे फिरने लगे कि ~भुस के 'बदले खूँटी जमा' करें।"¹³~और बेगार लेने वाले यह कह कर जल्दी कराते थे कि तुम अपना रोज़ का काम जैसे भुस पा कर करते थे अब भी करो।"¹⁴~और बनी-इसाईल में से जो-जो फिर'औन के बेगार लेने वालों की तरफ़ से इन लोगों पर सरदार मुक़र्रर हुए थे, उन पर मार पड़ी और उनसे पूछा गया, कि "क्या वजह है कि तुम ने पहले की तरह आज और कल पूरी-पूरी ईंटें नहीं बनवाई?"

¹⁵~तब उन सरदारों ने जो बनी-इसाईल में से मुक़र्रर हुए थे फिर'औन के आगे जा कर फ़रियाद की और कहा कि तू अपने खादिमों से ~ऐसा सुलूक क्यों करता है?

¹⁶~तेरे खादिमों को भुस तो दिया नहीं जाता और वह हम से कहते रहते हैं ईंटें बनाओ', और देख तेरे खादिम मार भी खाते हैं पर कुसूर तेरे लोगों का है।"¹⁷~उसने कहा, "तुम सब काहिल हो काहिल, इसी लिए तुम कहते हो कि हम को जाने दे कि खुदावन्द के लिए कुर्बानी करें।"¹⁸~इसलिए अब तुम जाओ और काम करो, क्योंकि भुस तुम को नहीं मिलेगा और ईंटों को तुम्हें उसी हिसाब से देना पड़ेगा।"

¹⁹~जब बनी-इसाईल के सरदारों से यह कहा गया, कि तुम अपनी ईंटों और रोज़ मर्रा के काम में कुछ भी कमी नहीं करने पाओगे तो वह जान गए कि वह कैसे वबाल में फँसे हुए हैं।"²⁰~जब वह फिर'औन के पास से निकले आ रहे थे तो उनको मूसा और हारून मुलाक़ात के लिए रास्ते पर खड़े मिले।"²¹~तब उन्होंने उन से कहा, कि खुदावन्द ही देखे और तुम्हारा इन्साफ़ करे, क्योंकि तुम ने हम को फिर'औन और उसके खादिमों की निगाह में ऐसा घिनौना किया है, कि हमारे क़त्ल के लिए उनके हाथ में तलवार दे दी है।"

²²~तब मूसा खुदावन्द के पास लौट कर गया और कहा, कि ऐ खुदावन्द! तूने इन लोगों को क्यों दुख में डाला और मुझे क्यों भेजा?"²³~क्योंकि जब से मैं फिर'औन के पास तेरे नाम से बातें करने गया, उसने इन लोगों से बुराई ही बुराई की और तूने अपने लोगों को ज़रा भी रिहाई न बख़्शी।"

Chapter 6

¹तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि 'अब तू देखेगा कि मैं फ़िर'औन के साथ क्या करता हूँ, तब वह ताक़तवर हाथ की वजह से उनको जाने देगा और ताक़तवर हाथ ही की वजह से वह उनको अपने मुल्क से निकाल देगा।"

²~फिर खुदा ने मूसा से कहा, कि मैं खुदावन्द हूँ।³~और मैं इब्राहीम ~और इस्हाक़ और या'क़ूब को खुदा-ए-क्रादिर-ए-मुतलक के तौर पर दिखाई दिया, लेकिन अपने यहोवा नाम से उन पर ज़ाहिर न हुआ।⁴और मैंने उनके साथ अपना 'अहद भी बाँधा है कि मुल्क-ए- कना'न जो उनकी मुसाफ़िरत का मुल्क था और जिसमें वह परदेसी थे उनको दूँगा।⁵~और मैंने बनी-इसाईल के कराहने को भी सुन कर, जिनको मिस्रियों ने गुलामी में रख छोड़ा है, अपने उस 'अहद को याद किया है।

⁶इसलिए तू बनी-इसाईल से कह, कि 'मैं खुदावन्द हूँ, और मैं तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल लूँगा और मैं तुम को उनकी गुलामी से आज़ाद करूँगा, और मैं अपना हाथ बढ़ा कर और उनको बड़ी-बड़ी सज़ाएँ देकर तुम को रिहाई दूँगा।'⁷~और मैं तुम को ले लूँगा कि मेरी क्रौम बन जाओ और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा, और तुम जान लोगे के मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालता हूँ।

⁸~और जिस मुल्क को इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब को देने की क्रसम मैंने खाई थी उसमें तुम को पहुँचा कर उसे तुम्हारी मीरास कर दूँगा। खुदावन्द मैं हूँ।"⁹~और मूसा ने बनी-इसाईल को यह बातें सुना दीं, लेकिन उन्होंने दिल की कुढ़न और गुलामी की सख्ती की वजह से मूसा की बात न सुनी।

¹⁰~फिर खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया,¹¹~कि जा कर मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कह कि बनी-इसाईल को अपने मुल्क में से जाने दे।"¹²~मूसा ने खुदावन्द से कहा, कि "देख, बनी-इसाईल ने तो मेरी सुनी नहीं; तब मैं जो ना मख़्तून होंट रखता हूँ फ़िर'औन मेरी क्यूँ कर सुनेगा?"¹³~तब खुदावन्द ने मूसा और हारून को बनी-इसाईल और मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के हक़ में इस मज़मून का हुक्म दिया कि वह बनी-इसाईल को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल ले जाएँ।

¹⁴~उनके आबाई ख़ान्दानों के सरदार यह थे: रूबिन, जो इसाईल का पहलौठा था, उसके बेटे: हनूक और फ़ल्लू और हसरोन और करमी थे; यह रूबिन के घराने थे।¹⁵बनी शमा'ऊन यह थे: यमूएल और यमीन और उहद और यक्कीन और सुहर और साऊल, जो एक कना'नी 'औरत से पैदा हुआ था; यह शमा'ऊन के घराने थे।

¹⁶~और बनी लावी जिनसे उनकी नसल चली उनके नाम यह हैं: जैरसोन और किहात और मिरारी; और लावी की 'उम्र एक सौ सैंतीस बरस की हुई।¹⁷~बनी जैरसोन: लिबनी और सिमई थे; इन ही से इनके ख़ान्दान चले।¹⁸~और बनी किहात: 'अमराम और इज़हार और हबरून और 'उज़्ज़ीएल थे; और किहात की 'उम्र एक सौ तैतीस बरस की हुई।¹⁹और बनी मिरारी: महली और मूर्शी थे। लावियों के घराने जिनसे उनकी नसल चली यही थे।

²⁰और 'अमराम ने अपने बाप की बहन यूकबिद से ब्याह किया, उस 'औरत के उससे हारून और मूसा पैदा हुए; और 'अमराम की 'उम्र एक सौ सैंतीस बरस की हुई।²¹~बनी इज़हार: कोरह और नफ़ज और ज़िकरी थे।²²~और बनी उज़्ज़ीएल: मीसाएल और इलसफ़न और सितरी थे।

²³और हारून ने नहसोन की बहन 'अमीनदाब की बेटी इलीसिबा' से ब्याह किया; उससे नदब और अबीहू और इली'अज़र और इतमर पैदा हुए।²⁴और बनी क्रोरह: अस्सीर और इलाकना और अबियासफ़ थे, और यह कोरहियों के घराने थे।²⁵~और हारून के बेटे इली'अज़र ने फूतिएल की बेटियों में से एक के साथ ब्याह किया, उससे फ़ीन्हास पैदा हुआ; लावियों के बाप-दादा के घरानों के सरदार जिनसे उनके ख़ान्दान चले यही थे।

²⁶~यह वह हारून और मूसा हैं जिनको खुदावन्द ने फ़रमाया: कि बनी-इसाईल को उनके लश्कर के मुताबिक़ मुल्क-ए-मिस्र से निकाल ले जाओ।"²⁷~यह वह हैं जिन्होंने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कहा, कि हम बनी-इसाईल को मिस्र से निकाल ले जाएँगे; यह वही मूसा और हारून हैं।

²⁸~जब खुदावन्द ने मुल्क-ए-मिस्र में मूसा से बातें कीं तो यूँ हुआ,²⁹~कि खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि मैं खुदावन्द हूँ जो कुछ मैं तुझे कहूँ तू उसे मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कहना।"³⁰~मूसा ने खुदावन्द से कहा, कि देख, मेरे तो होटों का खतना नहीं हुआ। फ़िर'औन क्यूँ कर मेरी सुनेगा?"

Chapter 7

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, देख, मैंने तुझे फिर'औन के लिए जैसे खुदा ठहराया और तेरा भाई पैगम्बर होगा।²~जो-जो हुक्म मैं तुझे दूँ तब तू कहना, और तेरा भाई हारून उसे फिर'औन से कहे कि वह बनी-इसाईल को अपने मुल्क से जाने दे।

³~और मैं फिर'औन के दिल को सख्त करूँगा और अपने निशान अज़ाईब मुल्क-ए-मिस्र में कसरत से दिखाऊँगा।⁴तो भी फिर'औन तुम्हारी न सुनेगा, तब मैं मिस्र को हाथ लगाऊँगा और उसे बड़ी-बड़ी सज़ाएँ देकर अपने लोगों, बनी-इसाईल के लश्करो को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाऊँगा।⁵और मैं जब मिस्र पर हाथ चलाऊँगा और बनी-इसाईल को उनमें से निकाल लाऊँगा, तब मिस्री जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

⁶~मूसा और हारून ने जैसा खुदावन्द ने उनको हुक्म दिया वैसा ही किया।⁷~और मूसा अस्सी बरस और हारून तिरासी बरस का था, जब वह फिर'औन से हम कलाम हुए।

⁸~और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,⁹~"जब फिर'औन तुम को कहे, कि अपना मो'अजिज़ा दिखाओ, " तो हारून से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फिर'औन के सामने डाल दे, ताकि वह साँप बन जाए'।"¹⁰~और मूसा और हारून फिर'औन के पास गए और उन्होंने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ किया; और हारून ने अपनी लाठी फिर'औन और उसके खादिमों के सामने डाल दी और वह साँप बन गई।

¹¹~तब फिर'औन ने भी 'अक्लमन्दों और जादूगरों को बुलवाया, और मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया।¹²~क्योंकि उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी सामने डाली और वह साँप बन गई, लेकिन हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई।¹³और फिर'औन का दिल सख्त हो गया और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

¹⁴~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर'औन का दिल मुतास्सिब है, वह इन लोगों को जाने नहीं देता।¹⁵~अब तू सुबह को फिर'औन के पास जा। वह दरिया पर जाएगा इसलिए तू दरिया के किनारे उसकी मुलाकात के लिए खड़ा रहना, और जो लाठी साँप बन गई थी उसे हाथ में ले लेना।

¹⁶और उससे कहना, कि 'खुदावन्द 'इब्रानियों के खुदा ने मुझे तेरे पास यह कहने को भेजा है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह वीराने में मेरी 'इबादत करें; और अब तक तूने कुछ सुनी नहीं।¹⁷~तब खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू इसी से जान लेगा कि मैं खुदावन्द हूँ, देख, मैं अपने हाथ की लाठी को दरिया के पानी पर मारूँगा और वह खून हो जाएगा।¹⁸और जो मछलियाँ दरिया में हैं मर जाएँगी, और दरिया से झाग उठेगा और मिस्रियों को दरिया का पानी पीने से कराहियत होगी'।"

¹⁹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि हारून से कह, अपनी लाठी ले और मिस्र में जितना पानी है, या'नी दरियाओं और नहरों और झीलों और तालाबों पर, अपना हाथ बढ़ा ताकि वह खून बन जाएँ; और सारे मुल्क-ए-मिस्र में पत्थर और लकड़ी के बर्तनों में भी खून ही खून होगा।"

²⁰~और मूसा और हारून ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ किया; उसने लाठी उठाकर उसे फिर'औन और उसके खादिमों के सामने दरिया के पानी पर मारा, और दरिया का पानी सब खून हो गया।²¹~और दरिया की मछलियाँ मर गई, और दरिया से झाग उठने लगा और मिस्री दरिया का पानी पी न सके, और तमाम मुल्क-ए-मिस्र में खून ही खून हो गया।²²~तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया, लेकिन फिर'औन का दिल सख्त हो गया; और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

²³और फिर'औन लौट कर अपने घर चला गया, और उसके दिल पर कुछ असर न हुआ।²⁴~और सब मिस्रियों ने दरिया के आस पास पीने के पानी के लिए कुएँ खोद डाले, क्योंकि वह दरिया का पानी नहीं पी सकते थे।²⁵~और जब से खुदावन्द ने दरिया को मारा उसके बा'द सात दिन गुज़रे।

Chapter 8

¹फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि ~फिर'औन के पास जा और उससे कह कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी 'इबादत करें।

²और अगर तू उनको जाने न देगा, तो देख, मैं तेरे मुल्क को मेंढकों से मारूँगा।³~और दरिया बेशुमार मेंढकों से भर जाएगा, और वह आकर तेरे घर में और तेरी आरामगाह में और तेरे पलंग पर और तेरे मुलाज़िम्ओं के घरों में और तेरी र'इयत पर और तेरे तनूरों और आटा गूँधने के लगनों में घुसते फिरेंगे,⁴~और तुझ पर और तेरी र'इयत और तेरे नौकरों पर चढ़ जाएँगे।"

⁵~और खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, "हारून से कह, कि अपनी लाठी लेकर अपने हाथ दरियाओं और नहरों और झीलों पर बढ़ा और मेंढकों को मुल्क-ए-मिस्र पर चढ़ा ला।"⁶चुनाँचे ~जितना पानी मिस्र में था उस पर हारून ने अपना हाथ बढ़ाया, और मेंढक चढ़ आए और मुल्क-ए-मिस्र को ढाँक लिया।⁷~और जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया और मुल्क-ए-मिस्र पर मेंढक चढ़ा लाए

⁸~तब फ़िर'औन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, कि ~"खुदावन्द से सिफ़ारिश करो के मेंढकों को मुझ से और मेरी र'इयत से दफ़ा' करे, और मैं इन लोगों को जाने दूँगा ताकि वह खुदावन्द के लिए कुर्बानी करें।"⁹~मूसा ने फ़िर'औन से कहा, कि तुझे मुझ पर यही फ़ख़ रहे ! मैं तेरे और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत के वास्ते कब के लिए सिफ़ारिश करूँ कि मेंढक तुझ से और तेरे घरों से दफ़ा' हों और दरिया ही में रहें?"

¹⁰~उसने कहा, कल के लिए।" तब उसने कहा, तेरे ही कहने के मुताबिक़ होगा ताकि तू जाने कि खुदावन्द हमारे खुदा की तरह कोई नहीं¹¹ और मेंढक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे नौकरों से और तेरी र'इयत से दूर होकर दरिया ही में रहा करेंगे।"¹²~फिर मूसा और हारून फ़िर'औन के पास से निकल कर चले गए; और मूसा ने खुदावन्द से मेंढकों के बारे में जो उसने फ़िर'औन पर भेजे थे फ़रियाद की।

¹³और खुदावन्द ने मूसा की दरख्वास्त के मुवाफ़िक़ किया, और सब घरों और सहनों और खेतों के मेंढक मर गए।¹⁴और लोगों ने उनको जमा' कर करके उनके ढेर लगा दिए, और ज़मीन से बदबू आने लगी।¹⁵~फिर जब फ़िर'औन ने देखा कि छुटकारा मिल गया तो उसने अपना दिल सख़्त कर लिया, और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उनकी न सुनी।

¹⁶~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, हारून से कह, 'अपनी लाठी बढ़ा कर ज़मीन की गर्द को मार, ताकि वह तमाम मुल्क-ए-मिस्र में जूएँ बन जाएँ।"¹⁷~उन्होंने ऐसा ही किया, और हारून ने अपनी लाठी लेकर अपना हाथ बढ़ाया और ज़मीन की गर्द को मारा, और इन्सान और हैवान पर जूएँ हो गई और तमाम मुल्क-ए-मिस्र में ज़मीन की सारी गर्द जूएँ बन गई।

¹⁸~और जादूगरों ने कोशिश की कि अपने जादू से जूएँ पैदा करें लेकिन न कर सके। और इन्सान और हैवान दोनों पर जूएँ चढ़ी रहीं।¹⁹~तब जादूगरों ने फ़िर'औन से कहा, कि ~"यह खुदा का काम है।" लेकिन फ़िर'औन का दिल सख़्त हो गया, और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

²⁰~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "सुबह-सवेरे उठ कर फ़िर'औन के आगे जा खड़ा होना, वह दरिया पर आएगा तब तू उससे कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे कि वह मेरी 'इबादत करें।"²¹~वर्ना अगर तू उनको जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत पर और तेरे घरों में मच्छरों के गोल के गोल भेजूँगा; और मिस्रियों के घर और तमाम ज़मीन जहाँ जहाँ वह हैं, मच्छरों के गोलों से भर जाएगी।

²²~और मैं उस दिन जशन के 'इलाके को उसमें मच्छरों के गोल न होंगे; ताकि तू जान ले कि दुनिया में खुदावन्द मैं ही हूँ।"²³और मैं और अपने लोगों और तेरे लोगों में फ़र्क़ करूँगा और कल तक यह निशान जुहूर में आएगा।"²⁴~चुनाँचे खुदावन्द ने ऐसा ही किया, और फ़िर'औन के घर और उसके नौकरों के घरों और सारे मुल्क-ए-मिस्र में मच्छरों के गोल के गोल भर गए, और इन मच्छरों के गोलों की वजह से मुल्क का नास हो गया।

²⁵~तब फ़िर'औन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, कि तुम जाओ और अपने खुदा के लिए इसी मुल्क में कुर्बानी करो।"²⁶~मूसा ने कहा, "ऐसा करना मुनासिब नहीं, क्योंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के लिए उस चीज़ की कुर्बानी करेंगे जिससे मिस्री नफ़रत रखते हैं; तब अगर हम मिस्रियों की आँखों के आगे उस चीज़ की कुर्बानी करें जिससे वह नफ़रत रखते हैं तो क्या वह हम को संगसार न कर डालेंगे?"²⁷~तब हम तीन दिन की राह वीराने में जाकर खुदावन्द अपने खुदा के लिए जैसा वह हम को हुक्म देगा कुर्बानी करेंगे।"

²⁸~फ़िर'औन ने कहा, "मैं तुम को जाने दूँगा ताकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के लिए वीराने में कुर्बानी करो, लेकिन तुम बहुत दूर मत जाना और मेरे लिए सिफ़ारिश करना।"²⁹~मूसा ने कहा, ~देख, मैं तेरे पास से जाकर खुदावन्द से सिफ़ारिश करूँगा के मच्छरों के गोल फ़िर'औन और उसके नौकरों और उसकी र'इयत के पास से कल ही दूर हो जाएँ, सिर्फ़ इतना हो कि फ़िर'औन आगे को दगा करके लोगों को खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को जाने देने से इन्कार न कर दे।"

³⁰~और मूसा ने फ़िर'औन के पास से जा कर खुदावन्द से सिफ़ारिश की।³¹~खुदावन्द ने मूसा की दरख्वास्त के मुवाफ़िक़ किया; और उसने मच्छरों के गोलों को फ़िर'औन और उसके नौकरों और उसकी र'इयत के पास से दूर कर दिया, यहाँ तक कि एक भी बाक़ी न रहा।³²~फिर फ़िर'औन ने इस बार भी अपना दिल सख़्त कर लिया, और उन लोगों को जाने न दिया।

Chapter 9

¹तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि फिर'औन के पास जाकर उससे कह, खुदावन्द 'इब्रानियों का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी 'इबादत करें'²~क्योंकि अगर तू इन्कार करे और उनको जाने न दे और अब भी उनको रोके रखे,³ तो देख, खुदावन्द का हाथ तेरे चौपायों पर जो खेतों में हैं या'नी घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय बैलों और भेड़-बकरियों पर ऐसा पड़ेगा कि उनमें बड़ी भारी मरी फैल जाएगी।⁴~और खुदावन्द इस्राईल के चौपायों को मिस्रियों के चौपायों से जुदा करेगा, और जो बनी-इस्राईल के हैं उनमें से एक भी नहीं मरेगा।"

⁵~और खुदावन्द ने एक वक्रत मुक़र्रर कर दिया और बता दिया कि कल खुदावन्द इस मुल्क में यही काम करेगा।⁶और खुदावन्द ने दूसरे दिन ऐसा ही किया और मिस्रियों के सब चौपाए मर गए लेकिन बनी-इस्राईल के चौपायों में से एक भी न मरा।⁷~चुनाँचे फिर'औन ने आदमी भेजे तो मा'लूम हुआ कि ~इस्राईलियों के चौपायों में से एक भी नहीं मरा है, लेकिन फिर'औन का दिल ता'अस्सुब में~था और उसने लोगों को जाने न दिया।

⁸~और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि तुम दोनों भट्टी की राख अपनी मुठियों में ले लो, और मूसा उसे फिर'औन के सामने आसमान की तरफ़ उड़ा दे।

⁹~और वह सारे मुल्क-ए-मिस्र में बारीक गर्द हो कर मिस्र के आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन जाएगी।¹⁰~फिर वह भट्टी की राख लेकर फिर'औन के आगे जा खड़े हुए, और मूसा ने उसे आसमान की तरफ़ उड़ा दिया और वह आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन गयी।

¹¹~और जादूगर फोड़ों की वजह से मूसा के आगे खड़े न रह सके, क्योंकि जादूगरों और सब मिस्रियों के फोड़े निकले हुए थे।¹²और खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख़्त कर दिया, और उसने जैसा खुदावन्द ने मूसा से कह दिया था उनकी न सुनी।

¹³~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "सुबह-सवेरे उठ कर फिर'औन के आगे जा खड़ा हो और उसे कह, कि 'खुदावन्द 'इब्रानियों का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी 'इबादत करें'¹⁴~क्योंकि मैं अब की बार अपनी सब बलाएँ तेरे दिल और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत पर नाज़िल करूँगा, ताकि तू जान ले कि तमाम दुनिया में मेरी तरह कोई नहीं है।

¹⁵~और मैंने तो अभी हाथ बढ़ा कर तुझे और तेरी र'इयत को वबा से मारा होता और तू ज़मीन पर से हलाक हो जाता।¹⁶~लेकिन मैंने तुझे हकीकत में इसलिए क़ायम रखवा है कि अपनी ताक़त तुझे दिखाऊँ, ताकि मेरा नाम सारी दुनिया में मशहूर हो जाए।¹⁷~क्या तू अब भी मेरे लोगों के मुक़ाबले में तकब्बुर करता है कि उनको जाने नहीं देता?

¹⁸देख, मैं कल इसी वक्रत ऐसे बड़े-बड़े ओले बरसाऊँगा जो मिस्र में जब से उसकी बुनियाद डाली गई आज तक नहीं पड़े।¹⁹~तब आदमी भेज कर अपने चौपायों को, जो कुछ तेरा माल खेतों में है उसको अन्दर कर ले; क्योंकि जितने आदमी और जानवर मैदान में होंगे और घर में नहीं पहुँचाए जाएँगे, उन पर ओले पड़ेंगे और वह हलाक हो जाएँगे।"

²⁰~तब फिर'औन के खादिमों में जो-जो खुदावन्द के कलाम से डरता था, वह अपने नौकरों और चौपायों को घर में भगा ले आया।²¹~और जिन्होंने खुदावन्द के कलाम का लिहाज़ न किया, उन्होंने अपने नौकरों और चौपायों को मैदान में रहने दिया।

²²और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा ताकि सब मुल्क-ए-मिस्र में इन्सान और हैवान और खेत की सबज़ी पर जो मुल्क-ए-मिस्र में है ओले गिरें।²³~और मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई, और खुदावन्द ने रा'द और ओले भेजे और आग ज़मीन तक आने लगी, और खुदावन्द ने मुल्क-ए-मिस्र पर ओले बरसाए।²⁴~तब ओले गिरे और ओलों के साथ आग मिली हुई थी, और वह ओले ऐसे भारी थे कि जब से मिस्री क़ौम आबाद हुई ऐसे ओले मुल्क में कभी नहीं पड़े थे।

²⁵~और ओलों ने सारे मुल्क-ए-मिस्र में उनको जो मैदान में थे क्या इन्सान, क्या हैवान, सबको मारा और खेतों की सारी सबज़ी को भी ओले मार गए और मैदान के सब दरख़्तों को तोड़ डाला।²⁶~मगर जशन के 'इलाक़ा में जहाँ बनी-इस्राईल रहते थे ओले नहीं गिरे।

²⁷~तब फिर'औन ने मूसा और हारून को बुला कर उनसे कहा, कि मैंने इस दफ़ा' गुनाह किया; खुदावन्द सच्चा है और मैं और मेरी क़ौम हम दोनों बदकार हैं।

²⁸खुदावन्द से सिफ़ारिश करो क्योंकि यह ज़ोर का गरजना और ओलों का बरसना बहुत हो चुका, और मैं तुम को जाने दूँगा और तुम अब रुके नहीं रहोगे।"

²⁹~तब मूसा ने उसे कहा, कि मैं शहर से बाहर निकलते ही खुदावन्द के आगे हाथ फैलाऊँगा और गरज ख़त्म हो जाएगी और ओले भी फिर न पड़ेंगे, ताकि तू जान ले कि ~दुनिया खुदावन्द ही की है।³⁰~लेकिन मैं जानता हूँ कि ~तू और तेरे नौकर अब भी खुदावन्द खुदा से नहीं डरोगे।"

³¹~अब सुन और जौ को तो ओले मार गए, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे;³²~पर गेहूँ और कठिया गेहूँ मारे न गए क्योंकि वह बढ़े न थे।³³और मूसा ने फिर'औन के पास से शहर के बाहर जाकर खुदावन्द के आगे हाथ फैलाए, तब गरज और ओले ख़त्म हो गए और ज़मीन पर बारिश थम गई।

³⁴~जब फिर'औन ने देखा कि मेंह और ओले और गरज ख़त्म हो गए, तो उसने और उसके खादिमों ने और ज़्यादा गुनाह किया कि अपना दिल सख़्त कर लिया।

³⁵~और फिर'औन का दिल सख़्त हो गया, और उसने बनी-इस्राईल को जैसा खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' कह दिया था जाने न दिया।

Chapter 10

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर'औन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने उसके दिल और उसके नौकरों के दिल को सख्त कर दिया है, ताकि मैं अपने यह निशान उनके बीच दिखाऊँ;²~और तू अपने बेटे और अपने पोते को मेरे निशान और वह काम जो मैंने मिस्र में उनके बीच किए सुनाए और तुम जान लो कि खुदावन्द मैं ही हूँ।"

³और मूसा और हारून ने फिर'औन के पास जाकर उससे कहा कि खुदावन्द, 'इब्रानियों का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि 'तू कब तक मेरे सामने नीचा बनने से इन्कार करेगा? मेरे लोगों को जाने दे कि वह मेरी 'इबादत करें।'वर्ना, अगर तू मेरे लोगों को जाने न देगा, तो देख, कल मैं तेरे मुल्क में टिड़ियाँ ले आऊँगा।

⁵और वह ज़मीन की सतह को ऐसा ढाँक लेंगी कि कोई ज़मीन को देख भी न सकेगा; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है वह उसे खा जाएँगी, और तुम्हारे जितने दरख्त मैदान में लगे हैं उनको भी चट कर जाएँगी,⁶~और वह तेरे और तेरे नौकरों बल्कि सब मिस्रियों ~के घरों में भर जाएँगी; और ऐसा तेरे बाप दादाओं ने जब से वह पैदा हुए उस वक़्त से आज तक नहीं देखा होगा।" और वह लौट कर फिर'औन के पास से चला गया।

⁷~तब फिर'औन के नौकर फिर'औन से कहने लगे कि "ये शख्स कब तक हमारे लिए फन्दा बना रहेगा? इन लोगों को जाने दे ताकि वह खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत करें। क्या तुझे खबर नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया?"⁸~तब मूसा और हारून फिर'औन के पास फिर बुला लिए गए, और उसने उनको कहा, कि 'जाओ, और खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत करो, लेकिन वह कौन-कौन हैं जो जाएँगे?"

⁹~मूसा ने कहा, कि "हम अपने जवानों और बूढ़ों और अपने बेटों और बेटियों और अपनी भेड़ बकरियों और अपने गाये बैलों समेत जाएँगे, क्योंकि हम को अपने खुदा की 'ईद करनी है।"¹⁰~तब उसने उनको कहा कि "खुदावन्द ही तुम्हारे साथ रहे, ~मैं तो ज़रूर ही तुम को बच्चों समेत जाने दूँगा, खबरदार हो जाओ इसमें तुम्हारी खराबी है।"¹¹~नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तब तुम मर्द ही मर्द जाकर खुदावन्द की 'इबादत करो क्योंकि तुम यही चाहते थे।" और वह फिर'औन के पास से निकाल दिए गए।

¹²~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "मुल्क-ए-मिस्र पर अपना हाथ बढ़ा ताकि टिड़ियाँ मुल्क-ए-मिस्र पर आएँ और हर क्रिस्म की सब्ज़ी को जो इस मुल्क में ओलों से बच रही है चट कर जाएँ।"¹³~तब मूसा ने मुल्क-ए-मिस्र पर अपनी लाठी बढ़ाई, और खुदावन्द ने उस सारे दिन और सारी रात पुरवा आँधी चलाई; और सुबह होते होते पुरवा आँधी टिड़ियाँ ले आई।

¹⁴~और टिड़ियाँ सारे मुल्क-ए-मिस्र पर छा गई और वहीं मिस्र की हदों में बसेरा किया, और उनका दल ऐसा भारी था कि न तो उनसे पहले ऐसी टिड़ियाँ कभी आई न उनके बा'द फिर आएँगी।¹⁵~क्योंकि उन्होंने इस ज़मीन को ढाँक लिया, ऐसा कि मुल्क में अन्धेरा हो गया; और उन्होंने उस मुल्क की एक-एक सब्ज़ी को और दरख्तों के मेवह को, जो ओलों से बच गए थे चट कर लिया। और मुल्क-ए-मिस्र में न तो किसी दरख्त की, न खेत की किसी सब्ज़ी की हरियाली बाक़ी रही।

¹⁶~तब फिर'औन ने जल्द मूसा और हारून को बुलवा कर कहा कि "मैं खुदावन्द तुम्हारे खुदा का और तुम्हारा गुनहगार हूँ।¹⁷~ इसलिए सिर्फ़ इस बार मेरा गुनाह बख़्शो, और खुदावन्द अपने खुदा से सिफ़ारिश करो कि वह सिर्फ़ इस मौत को मुझ से दूर कर दे।"¹⁸~फिर उसने फिर'औन के पास से निकल कर खुदावन्द से सिफ़ारिश की।

¹⁹~और खुदावन्द ने पछुवा आँधी भेजी जो टिड़ियों को उड़ा कर ले गई और उनको बहर-ए-कुलज़म में डाल दिया, और मिस्र की हदों में एक टिड़ी भी बाक़ी न रही।²⁰~लेकिन खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने बनी-इसाईल को जाने न दिया।

²¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा ताकि मुल्क-ए-मिस्र में तारीकी छा जाए, ऐसी तारीकी जिसे टटोल सकें।"²²और मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ाया और तीन दिन तक सारे मुल्क-ए-मिस्र में गहरी तारीकी रही।²³~तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा और न कोई अपनी जगह से हिला, लेकिन सब बनी-इसाईल के मकानों में उजाला रहा।

²⁴~तब फिर'औन ने मूसा को बुलवा कर कहा कि "तुम जाओ और खुदावन्द की 'इबादत करो सिर्फ़ अपनी भेड़ बकरियों और गाये बैलों को यहीं छोड़ जाओ और जो तुम्हारे बाल-बच्चे हैं उनको भी साथ लेते जाओ।"²⁵~मूसा ने कहा, कि तुझे हम को कुर्बानियों और सोखतनी कुर्बानियों के लिए जानवर देने पड़ेंगे, ताकि हम खुदावन्द अपने खुदा के आगे कुर्बानी करें।²⁶~इसलिए हमारे चौपाये भी हमारे साथ जाएँगे और उनका एक खुर तक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हम को खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत का सामान लेना पड़ेगा, और जब तक हम वहाँ पहुँच न जाएँ हम नहीं जानते कि ~क्या-क्या लेकर हम को खुदावन्द की 'इबादत करनी होगी।"

²⁷~लेकिन खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने उनको जाने ही न दिया।²⁸और फिर'औन ने उसे कहा, मेरे सामने से चला जा; और होशियार रह, फिर मेरा मुँह देखने को मत आना क्योंकि जिस दिन तूने मेरा मुँह देखा तो मारा जाएगा।"²⁹~तब मूसा ने कहा, कि तूने ठीक कहा है, मैं फिर तेरा मुँह कभी नहीं देखूँगा

Chapter 11

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "मैं फ़िर'औन और मिस्रियों पर एक बला और लाऊँगा, उसके बा'द वह तुम को यहाँ से जाने देगा, और जब वह तुम को जाने देगा तो यक़ीनन तुम सब को यहाँ से बिल्कुल निकाल देगा।"²इसलिए अब तू लोगों के कान में यह बात डाल दे कि उनमें से हर शख्स अपने पड़ोसी और हर 'औरत अपनी पड़ोसन से सोने, चाँदी के ज़ेवर ले।"³और खुदावन्द ने उन लोगों पर मिस्रियों को मेहरबान कर दिया, और यह आदमी मूसा भी मुल्क-ए-मिस्र में फ़िर'औन के खादिमों के नज़दीक और उन लोगों की निगाह में बड़ा बुजुर्ग था।

⁴~और मूसा ने कहा, कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं आधी रात को निकल कर मिस्र के बीच में जाऊँगा;⁵~और मुल्क-ए-मिस्र के सब पहलौटे, फ़िर'औन जो तख़्त पर बैठा है उसके पहलौटे से लेकर वह लौंडी जो चक्की पीसती है उसके पहलौटे तक और सब चौपायों के पहलौटे मर जाएँगे।

⁶और सारे मुल्क-ए-मिस्र में ऐसा बड़ा मातम होगा जैसा न कभी पहले हुआ और न फिर कभी होगा।⁷~लेकिन इस्राईल में से किसी पर चाहे इन्सान हो चाहे हैवान एक कुत्ता भी नहीं भौँकेगा, ताकि तुम जान लो कि खुदावन्द मिस्रियों और इस्राईलियों में कैसा फ़र्क करता है।⁸~और तेरे यह सब नौकर मेरे पास आकर मेरे आगे सर झुकाएंगे और कहेंगे, कि 'तू भी निकल और तेरे सब पैरों भी निकलें, " इसके बा'द मैं निकल जाऊँगा।" यह कह कर वह बड़े गुस्से में फ़िर'औन के पास से निकल कर चला गया।

⁹और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि ~फ़िरऔन तुम्हारी इसी वजह से नहीं सुनेगा; ताकि 'अजाइब मुल्क-ए-मिस्र में बहुत ज़्यादा हो जाएँ।"¹⁰~और मूसा और हारून ने यह करामात फ़िरऔन को दिखाई, और खुदावन्द ने फ़िर'औन के दिल को सख़्त कर दिया कि उसने अपने मुल्क से बनी-इस्राईल को जाने न दिया।

Chapter 12

¹~फिर खुदावन्द ने मुल्क-ए-मिस्र में मूसा और हारून से कहा कि²"यह महीना तुम्हारे लिए महीनों का शुरू'-और साल का पहला महीना हो।

³~तब इस्राईलियों की सारी जमा'अत से यह कह दो कि इसी महीने के दसवें दिन, हर शख्स अपने आबाई खानदान के मुताबिक घर पीछे एक बर्रा ले;⁴~और अगर किसी के घराने में बर्रे को खाने के लिए आदमी कम हों, तो वह और उसका पड़ोसी जो उसके घर के बराबर रहता हो, दोनों मिल कर नफ़री के शुमार के मुवाफ़िक़ एक बर्रा ले रखें, तुम हर एक आदमी के खाने की मित्रदार के मुताबिक़ बर्रे का हिसाब लगाना।

⁵~तुम्हारा बर्रा बे"ऐब और यक साला नर हो, और ऐसा बच्चा या तो भेड़ों में से चुन कर लेना या बकरियों में से।⁶~और तुम उसे इस महीने की चौदहवीं तक रख छोड़ना, और इस्राईलियों के कबीलों की सारी जमा'अत शाम को उसे ज़बह करे।⁷~और थोड़ा सा खून लेकर जिन घरों में वह उसे खाएँ, उनके दरवाज़ों के दोनों बाजुओं और ऊपर की चौखट पर लगा दें।⁸~और वह उसके गोश्त को उसी रात आग पर भून कर बेख़मीरी रोटी और कड़वे साग पात के साथ खा लें।

⁹~उसे कच्चा या पानी में उबाल कर हरगिज़ न खाना, बल्कि उसको सिर और पाये और अन्दरूनी 'अज़ा समेत आग पर भून कर खाना।¹⁰~और उसमें से कुछ भी सुबह तक बाक़ी न छोड़ना और अगर कुछ उसमें से सुबह तक बाक़ी रह जाए तो उसे आग में जला देना।¹¹~और तुम उसे इस तरह खाना अपनी कमर बाँधे और अपनी जूतियाँ पाँव में पहने और अपनी लाठी हाथ में लिए हुए तुम उसे जल्दी-जल्दी खाना, क्योंकि यह फ़सह खुदावन्द की है।

¹²इसलिए कि मैं उस रात मुल्क-ए-मिस्र में से होकर गुज़रूँगा और इन्सान और हैवान के सब पहलौठों को जो मुल्क-ए-मिस्र में हैं, मारूँगा और मिस्र के सब मा'बूदों को भी सज़ा दूँगा; मैं खुदावन्द हूँ।¹³और जिन घरों में तुम हो उन पर वह खून तुम्हारी तरफ़ से निशान ठहरेगा और मैं उस खून को देख कर तुम को छोड़ता जाऊँगा, और जब मैं मिस्रियों को मारूँगा तो वबा तुम्हारे पास फटकने की भी नहीं कि तुम को हलाक करे।¹⁴~और वह दिन तुम्हारे लिए एक यादगार होगा और तुम उसको खुदावन्द की 'ईद का दिन समझ कर मानना। तुम उसे हमेशा की रस्म करके उस दिन को नसल दर नसल 'ईद का दिन मानना।

¹⁵~सात दिन तक तुम बेख़मीरी रोटी खाना, और पहले ही दिन से ख़मीर अपने अपने घर से बाहर कर देना; इसलिए कि जो कोई पहले दिन से सातवें दिन तक ख़मीरी रोटी खाए वह शख्स इस्राईल में से काट डाला जाएगा।¹⁶और पहले दिन तुम्हारा मुक़द्दस मजमा' हो, और सातवें दिन भी मुक़द्दस मजमा' हो; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए सिवा उस खाने के जिसे हर एक आदमी खाए, सिर्फ़ यही किया जाए।

¹⁷~और तुम बेख़मीरी रोटी की यह 'ईद मनाना, क्योंकि मैं उसी दिन तुम्हारे लश्कर को मुल्क-ए-मिस्र से निकालूँगा; इस लिए तुम उस दिन को हमेशा की रस्म करके नसल दर नसल मानना।¹⁸~पहले महीने की चौदहवीं तारीख़ की शाम से इक्कीसवीं तारीख़ की शाम तक तुम बेख़मीरी रोटी खाना।

¹⁹सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी ख़मीर न हो, क्योंकि जो कोई किसी ख़मीरी चीज़ को खाए, वह चाहे मुसाफ़िर हो चाहे उसकी पैदाइश उसी मुल्क की हो, इस्राईल की जमा'अत से काट डाला जाएगा।²⁰~तुम कोई ख़मीरी चीज़ न खाना बल्कि अपनी सब बस्तियों में बेख़मीरी रोटी खाना।"

²¹~तब मूसा ने इस्राईल के सब बुजुर्गों को बुलवाकर उनको कहा, कि अपने-अपने खानदान के मुताबिक़ एक-एक बर्रा निकाल रखो, और यह फ़सह का बर्रा ज़बह करना।²²और तुम जूफ़े का एक गुच्छा लेकर उस खून में जो तसले में होगा डुबोना और उसी तसले के खून में से कुछ ऊपर की चौखट और दरवाज़े के दोनों बाजुओं पर लगा देना; और तुम में से कोई सुबह तक अपने घर के दरवाज़े से बाहर न जाए।

²³~क्योंकि खुदावन्द मिस्रियों को मारता हुआ गुज़रेगा, और जब खुदावन्द ऊपर की चौखट और दरवाज़े के दोनों बाजुओं पर खून देखेगा तो वह उस दरवाज़े को छोड़ जाएगा; और हलाक करने वाले को तुम को मारने के लिए घर के अन्दर आने न देगा।

²⁴और तुम इस बात को अपने और अपनी औलाद के लिए हमेशा की रिवायत करके मानना।²⁵~और जब तुम उस मुल्क में जो खुदावन्द तुम को अपने वा'दे के मुवाफ़िक़ देगा दाख़िल हो जाओ, तो इस 'इबादत को बराबर जारी रखना।

²⁶और जब तुम्हारी औलाद तुम से पूछे, कि इस 'इबादत से तुम्हारा मक़सद क्या है?"²⁷~तो तुम यह कहना, कि 'यह खुदावन्द की फ़सह की कुर्बानी है, जो मिस्र में मिस्रियों को मारते वक़्त बनी-इस्राईल के घरों को छोड़ गया और यूँ हमारे घरों को बचा लिया।" तब लोगों ने सिर झुका कर सिज्दा किया।²⁸और बनी-इस्राईल ने जाकर, जैसा खुदावन्द ने मूसा और हारून को फ़रमाया था वैसा ही किया।

²⁹~और आधी रात को खुदावन्द ने मुल्क-ए-मिस्र के सब पहलौठों को फ़िर'औन जो अपने तख़्त पर बैठा था उसके पहलौठे से लेकर वह कैदी जो कैदखानों में था उसके पहलौठे तक, बल्कि चौपायों के पहलौठों को भी हलाक कर दिया।³⁰~और फ़िर'औन और उसके सब नौकर और सब मिस्री रात ही को उठ बैठे और मिस्र में बड़ा कोहराम मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई न मरा हो।

³¹~तब उसने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, कि "तुम बनी-इस्राईल को लेकर मेरी क़ौम के लोगों में से निकल जाओ और जैसा कहते हो जाकर खुदावन्द की 'इबादत करो।³²और अपने कहने के मुताबिक़ अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल भी लेते जाओ और मेरे लिए भी दुआ' करना।"³³~और मिस्री उन लोगों से बजिद होने लगे, ताकि उनको मुल्क-ए-मिस्र से जल्द बाहर चलता करें, क्योंकि वह समझे कि हम सब मर जाएँगे।

³⁴~तब इन लोगों ने अपने गुन्धे गुन्धाए आटे को बग़ैर ख़मीर दिए लगनों समेत कपड़ों में बाँध कर अपने कंधों पर धर लिया।³⁵~और बनी-इस्राईल ने मूसा के कहने के मुवाफ़िक़ यह भी किया, कि मिस्रियों से सोने चाँदी के ज़ेवर और कपड़े माँग लिए।³⁶~और खुदावन्द ने उन लोगों को मिस्रियों की निगाह में ऐसी 'इज़ज़त बख़शी कि जो कुछ उन्होंने माँगा उन्होंने दे दिया। तब उन्होंने मिस्रियों को लूट लिया।

³⁷~और बनी-इस्राईल ने रा'मसीस से सुक्कात तक पैदल सफ़र किया और बाल बच्चों को छोड़ कर वह कोई छः लाख मर्द थे।³⁸और उनके साथ एक मिली-जुली गिरोह भी गई और भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल और बहुत चौपाये उनके साथ थे।³⁹~और उन्होंने उस गुन्धे हुए आटे की जिसे वह मिस्र से लाए थे बेख़मीरी रोटियाँ पकाई, क्योंकि वह उसमें ख़मीर देने न पाए थे इसलिए कि वह मिस्र से ऐसे जबरन निकाल दिए गए कि वहाँ ठहर न सके और न कुछ खाना अपने लिए तैयार करने पाए।⁴⁰और बनी-इस्राईल को मिस्र में रहते हुए हुए चार सौ तीस बरस हुए थे।

⁴¹~और उन चार सौ तीस बरसों के गुज़र जाने पर ठीक उसी दिन खुदावन्द का सारा लश्कर मुल्क-ए-मिस्र से निकल गया।⁴²~ये वह रात है जिसे खुदावन्द की खातिर मानना बहुत मुनासिब है क्योंकि ~इसमें वह उनको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, खुदावन्द की यह वही रात है जिसे ज़रूरी है कि सब बनी-इस्राईल नसल-दर-नसल खूब मानें।

⁴³~फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, कि 'फ़सह की रिवायत यह है, कि कोई बेगाना उसे खाने न पाए।'⁴⁴~लेकिन अगर कोई शख्स किसी का खरीदा हुआ गुलाम हो, और तूने उसका खतना कर दिया हो तो वह उसे खाए।

⁴⁵~पर अजनबी और मज़दूर उसे खाने न पाए।⁴⁶~और उसे एक ही घर में खाएँ या'नी उसका ज़रा भी गोश्त तू घर से बाहर न ले जाना और न तुम उसकी कोई हड्डी तोड़ना।

⁴⁷~इस्राईल की सारी जमा'अत इस पर 'अमल करे।'⁴⁸~और अगर कोई अजनबी तेरे साथ मुक्रीम हो और खुदावन्द की फ़सह को मानना चाहता हो उसके ~यहाँ के सब मर्द अपना खतना कराएँ, तब वह पास आकर फ़सह करे; यूँ वह ऐसा समझा जाएगा जैसे उसी मुल्क की उसकी पैदाइश है लेकिन कोई नामख़तून आदमी उसे खाने न पाए।

⁴⁹~वतनी और उस अजनबी के लिए जो तुम्हारे बीच मुक्रीम हो एक ही शरी'अत होगी।'⁵⁰~तब सब बनी-इस्राईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा और हारून को फ़रमाया वैसा ही किया।⁵¹~और ठीक उसी दिन खुदावन्द बनी-इस्राईल के सब लश्करों को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल ले गया।

Chapter 13

¹~और खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, कि |²~"सब पहलौठों को या'नी जो बनी-इस्राईल में, चाहे इन्सान हो चाहे हैवान पहलौठे बच्चे हों उनको मेरे लिए पाक ठहरा क्योंकि वह मेरे हैं।"

³और मूसा ने लोगों से कहा, कि "तुम इस दिन को याद रखना जिस में तुम मिस्र से जो गुलामी का घर है निकले, क्योंकि खुदावन्द अपनी ताक़त से तुम को वहाँ से निकाल लाया; इसमें खमीरी रोटी खाई न जाए।⁴तुम अबीब के महीने में आज के दिन निकले हो।⁵~फिर जब खुदावन्द तुझ को कना'नियों और हितियों और अमोरियों और हवियों और यबूसियों के मुल्क में पहुँचा दे जिसे तुझ को देने की क्रसम उसने तेरे बाप दादा से खाई थी और जिसमें दूध और शहद बहता है, तो तू इसी महीने में यह 'इबादत किया करना।

⁶~सात दिन तक तो तू बेखमीरी रोटी खाना और सातवें दिन खुदावन्द की 'ईद मनाना।⁷~बेखमीरी रोटी सातों दिन खाई जाए, और खमीरी रोटी तेरे पास दिखाई भी न दे और न तेरे मुल्क की हदों में कहीं कुछ खमीर नज़र आए।

⁸~और तू उस दिन अपने बेटे को यह बताना, कि इस दिन को मैं उस काम की वजह से मानता हूँ जो खुदावन्द ने मेरे लिए उस वक़्त किया जब मैं मुल्क-ए-मिस्र से निकला।⁹और यही तेरे पास जैसे तेरे हाथ में एक निशान और तेरी दोनों आँखों के सामने एक यादगार ठहरे, ताकि खुदावन्द की शरी'अत ~तेरी ज़बान पर हो; क्योंकि खुदावन्द ने तुझ को अपनी ताक़त से मुल्क-ए-मिस्र से निकाला।¹⁰तब तू इस रिवायत को इसी वक़्त -ए-मु'अय्यन में हर साल माना करना।

¹¹~"और जब खुदावन्द उस क्रसम के मुताबिक़, जो उसने तुझ से और तेरे बाप दादा से खाई, तुझ को कना'नियों के मुल्क में पहुँचा कर वह मुल्क तुझ को दे दे।

¹²तो तू पहलौठे बच्चों को और जानवरों के पहलौठों को खुदावन्द के लिए अलग कर देना। सब नर बच्चे खुदावन्द के होंगे।¹³और गधे के पहले बच्चे के फ़िदिये में बर्ग़ देना, और अगर तू उसका फ़िदिया न दे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना। और तेरे बेटों में जितने पहलौठे हों उन सबका फ़िदिया तुझ को देना होगा।

¹⁴और जब अगले ज़माने में तेरा बेटा तुझसे सवाल करे, कि 'यह क्या है?' तो तू उसे यह जवाब देना, 'खुदावन्द हम को मिस्र से जो गुलामी का घर है अपनी ताक़त से निकाल लाया।¹⁵~और जब फिर'औन ने हम को जाने देना न चाहा, तो खुदावन्द ने मुल्क-ए-मिस्र में इन्सान और हैवान दोनों के पहलौठे मार दिए। इसलिए मैं जानवरों के सब नर बच्चों को जो अपनी अपनी माँ के रिहम को खोलते हैं खुदावन्द के आगे कुर्बानी करता हूँ, लेकिन अपने बेटों के सब पहलौठों का फ़िदिया देता हूँ।"¹⁶~और यह तेरे हाथ पर एक निशान और तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों, क्योंकि खुदावन्द अपने ताक़त से हम को मिस्र से निकाल लाया।"

¹⁷~और जब फिर'औन ने उन लोगों को जाने की इजाज़त दे दी तो खुदा इनको फ़िलिस्तीयों के मुल्क के रास्ते से नहीं ले गया, अगरचे उधर से नज़दीक पड़ता; क्योंकि खुदा ने कहा, "ऐसा न हो कि यह लोग लड़ाई-भिड़ाई देख कर पछताने लगें और मिस्र को लौट जाएँ।"¹⁸~बल्कि खुदा इनको चक्कर खिला कर बहर-ए-कुलजुम के वीरान के रास्ते से ले गया और बनी-इस्राईल मुल्क-ए-मिस्र से हथियार बन्द निकले थे।

¹⁹और मूसा यूसुफ़ की हड्डियों को साथ लेता गया, क्योंकि उसने बनी-इस्राईल से यह कह कर, कि "खुदा ज़रूर तुम्हारी ख़बर लेगा इस बात की सख़्त क्रसम ले ली थी, कि "तुम यहाँ से मेरी हड्डियाँ अपने साथ लेते जाना।"²⁰~और उन्होंने सुक्कात से खाना करके वीराने के किनारे ईताम में खेमा लगाया।²¹~और खुदावन्द उनको दिन को रास्ता दिखाने के लिए बादल के सुतून में और रात को रौशनी देने के लिए आग के सुतून में हो कर उनके आगे-आगे चला करता था, ताकि वह दिन और रात दोनों में चल सके।²²~वह बादल का सुतून दिन को और आग का सुतून रात को उन लोगों के आगे से हटता न था।

Chapter 14

¹~और खुदावन्द ने मूसा से फ़रमाया, कि²~"बनी-इसाईल को हुक्म दे कि ~वह लौट कर मिजदाल और समुन्दर के बीच फ़ी हखीरोत के सामने बाल-सफ़ोन के आगे खेमे लगाएँ, उसी के आगे समुन्दर के किनारे किनारे खेमें लगाना।³~फ़िर'औन बनी-इसाईल के हक़ में कहेगा कि वह ज़मीन की उलझनों में आकर वीरान में घिर गए हैं।

⁴~और मैं फ़िर'औन के दिल को सख़्त करूँगा और वह उनका पीछा करेगा, और मैं फ़िर'औन और उसके सारे लश्कर पर मुस्ताज़ हूँगा और मिस्री जान लेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।" और उन्होंने ऐसा ही किया।⁵जब मिस्र के बादशाह को ख़बर मिली कि वह लोग चल दिए, तो फ़िर'औन और उसके खादिमों का दिल उन लोगों की तरफ़ से फिर गया, और वह कहने लगे कि हम ने यह क्या किया, कि इस्राईलियों को अपनी ख़िदमत से छुट्टी देकर उनको जाने दिया?"

⁶~तब उसने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी क़ौम के लोगों को साथ लिया,⁷और उसने छः सौ चुने हुए रथ बल्कि मिस्र के सब रथ लिए और उन सभों में सरदारों को बिठाया।⁸और खुदावन्द ने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के दिल को सख़्त कर दिया और उसने बनीइसाईल का पीछा किया, क्योंकि बनी-इसाईल बड़े फ़ख़्र से निकले थे।⁹~और मिस्री फ़ौज ने फ़िर'औन के सब घोड़ों और रथों और सवारों समेत उनका पीछा किया और उनको जब वह समुन्दर के किनारे फ़ी-हखीरोत के पास बाल सफ़ोन के सामने खेमा लगा रहे थे जा लिया।

¹⁰और जब फ़िर'औन नज़दीक आ गया तब बनी-इसाईल ने आँख उठा कर देखा कि मिस्री उनका पीछा किए चले आते हैं, और वह बहुत ख़ौफ़ज़दा हो गए। तब बनी-इसाईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की,¹¹~और मूसा से कहने लगे, "क्या मिस्र में क़ब्रें न थीं जो तू हम को वहाँ से मरने के लिए वीराने में ले आया है? तूने हम से यह क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया?"¹²क्या हम तुझ से मिस्र में यह बात न कहते थे कि हम को रहने दे कि हम मिस्रियों की ख़िदमत करें? क्योंकि हमारे लिए मिस्रियों की ख़िदमत करना वीराने में मरने से बेहतर होता।"

¹³~तब मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत, चुपचाप खड़े होकर खुदावन्द की नज़ात के काम को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए करेगा। क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उनको फिर कभी हमेशा तक न देखोगे।"¹⁴~खुदावन्द तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा और तुम ख़ामोश रहोगे।"

¹⁵~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि तू क्यों मुझ से फ़रियाद कर रहा है? बनी-इसाईल से कह कि वह आगे बढ़ें।¹⁶~और तू अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ा और उसे दो हिस्से कर, और बनीइसाईल समुन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल जाएँगे।¹⁷~और देख, ~मिस्रियों के दिल सख़्त कर दूँगा और वह उनका पीछा करेंगे, और मैं फ़िर'औन और उसकी सिपाह और उसके रथों और सवारों पर मुस्ताज़ हूँगा।¹⁸और जब मैं फ़िर'औनऔर उसके रथों और सवारों पर मुस्ताज़ हो जाऊँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं ही खुदावन्द हूँ।

¹⁹और खुदा उसका फ़रिश्ता जो इस्राइली लश्कर के आगे-आगे चला करता था जा कर उनके पीछे हो गया और बादल का वह सुतून उनके सामने से हट कर ~उनके पीछे जा ठहरा।²⁰इस तरह वह मिस्रियों के लश्कर और इस्राईली लश्कर के बीच में हो गया, तब वहाँ बादल भी था और अन्धेरा भी तो भी रात को उससे रौशनी रही। तब वह रात भर एक दूसरे के पास नहीं आए।

²¹फिर मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया और खुदावन्द ने रात भर तुन्द पूरबी आँधी चला कर और समुन्दर को पीछे हटा कर उसे खुशक ज़मीन बना दिया और पानी दो हिस्से हो गया।²²और बनी-इसाईल समुन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल गए और उनके दाहने और बाएँ हाथ पानी दीवार की तरह था।

²³और मिस्रियों ने पीछा किया और फ़िर'औन सब घोड़े और रथ और सवार उनके पीछे-पीछे समुन्दर के बीच में चले गए।²⁴और रात के पिछले पहर खुदावन्द ने आग और बादल के सुतून में से मिस्रियों के लश्कर पर नज़र की और उनके लश्कर को घबरा दिया।²⁵और उसने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला इसलिए उनका चलना मुश्किल हो गया तब मिस्री कहने लगे, "आओ, हम इस्राईलियों के सामने से भागें, क्योंकि खुदावन्द उनकी तरफ़ से मिस्रियों के साथ जंग करता है।"

²⁶और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ा, ताकि पानी मिस्रियों और उनके रथों और सवारों पर फिर बहने लगे।²⁷और मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया, और सुबह होते होते समुन्दर फिर अपनी असली ताक़त पर आ गया; और मिस्री उल्टे भागने लगे और खुदावन्द ने समुन्दर के बीच ही में मिस्रियों को हलाक कर दिया।²⁸और पानी पलट कर आया और उसने रथों और सवारों और फ़िर'औन सारे लश्कर जो इस्राईलियों का पीछा करता हुआ समुन्दर में गया था डुबो दिया और उसमें से एक भी बाक़ी न छोड़ा।

²⁹लेकिन बनी-इसाईल समुन्दर के बीच में खुशक ज़मीन पर चलकर निकल गए और पानी उनके दहने और बाएँ हाथ दीवार की तरह रहा।³⁰फिर खुदावन्द ने उस दिन इस्राईलियों को मिस्रियों को हाथ से इस तरह बचाया, और इस्राईलियों ने मिस्रियों को समुन्दर के किनारे मरे हुए पड़े देखा।³¹और इस्राईलियों ने बड़ी कुदरत जो खुदावन्द ने मिस्रियों पर ज़ाहिर की देखी, और वह लोग खुदावन्द से और खुदावन्द पर और उसके बन्दे मूसा पर ईमान लाए।

Chapter 15

¹तब मूसा ~और बनी-इसाईल ने खुदावन्द के लिए यह गीत गाया और यूँ कहने लगे, मैं खुदा वन्द की सना गाऊँगा क्योंकि वह जलाल के साथ फ़तहमन्द हुआ; उस ने घोड़े को सवार समेत समुन्द्र में डाल दिया।

²खुदावन्द मेरी ताक़त और राग है, वही मेरी नजात भी ठहरा | वह मेरा खुदा है, मैं उसकी बड़ाई करूँगा, वह मेरे बाप का खुदा है मैं उसकी बुजुर्गी करूँगा।

³~खुदावन्द साहिब-ए-जंग है, यहीवा उसका नाम है।

⁴~"फ़िर'औन के रथों और लश्कर को उसने समुन्द्र में डाल दिया; और उसके चुने सरदार बहर-ए-कुलज़म में ~डूब गये।⁵~गहरे पानी ने उनको छिपा लिया;वह पत्थर की तरह तह में चले गए।

⁶ऐ खुदावन्द, तेरा दहना हाथ कुदरत की वजह से जलाली है। ऐ खुदावन्द तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।⁷तू अपनी 'अज़मत के ज़ोर से अपने मुखालिफ़ों को हलाक करता है; तू अपना क्रहर भेजता है, और वह उनको खूँटी की तरह भस्म कर डालता है।⁸~तेरे नथनों के दम से पानी का ढेर लग गया, सैलाब तूदे की तरह सीधे खड़े हो गए, और गहरा पानी समन्दर के बीच में जम गया।

⁹~दुश्मन ने तो यह कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा, मैं लूट का माल बाटूँगा, उनकी तबाही से मेरा कलेजा ठंडा होगा। मैं अपनी तलवार खींच कर अपने ही हाथ से उनको हलाक करूँगा।¹⁰~तूने अपनी आँधी की फूँक मारी, तो समन्दर ने उनको छिपा लिया। वह ज़ोर के पानी में शीसे की तरह डूब गए।¹¹~मा'बूदों में ऐ खुदावन्द तेरी तरह कौन है? कौन है जो तेरी तरह अपनी पाकीज़गी की वजह से जलाली और अपनी मदह की वजह से रौ'ब वाला और साहिब-ए-करामात है?

¹²~तूने अपना दहना हाथ बढ़ाया, तो ज़मीन उनको निगल गई।¹³~"अपनी रहमत से तूने उन लोगों की जिनको तूने छुटकारा बख़्शा रहनुमाई की, और अपने ज़ोर से तू उनको अपने मुक़द्दस मकान को ले चला है।

¹⁴~क्रौमें सुन कर काँप गई हैं। और फ़िलिस्तीन के रहने वालों की जान पर आ बनी है।¹⁵~अदोम के रईस हैरान हैं, मोआब के पहलवानों को कपकपी लग गई है; कना'न के सब रहने वालों के दिल पिघले जाते हैं।

¹⁶~खौफ़-ओ-हिरास उन पर तारी है; तेरे बाजू की 'अज़मत की वजह से वह पत्थर की तरह बेहिस-ओ-हरकत हैं। जब तक ऐ खुदावन्द, तेरे लोग निकल न जाएँ, जब तक तेरे लोग जिनको तूने खरीदा है पार न हो जाएँ,

¹⁷~तू उनको वहाँ ले जाकर अपनी मीरास के पहाड़ पर दरख़्त की तरह लगाएगा, तू उनको उसी जगह ले जाएगा जिसे तूने अपनी सुकूनत के लिए बनाया है। ऐ खुदावन्द! वह तेरी जा-ए-मुक़द्दस है, जिसे तेरे हाथों ने कायम किया है।¹⁸~खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक सल्तनत करेगा।"

¹⁹~इस हम्द की वजह यह थी कि ~फ़िर'औन के सवार घोड़ों और रथों समेत समन्दर में गए, और खुदावन्द समन्दर के पानी को उन पर लौटा लाया; लेकिन बनी-इसाईल समन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल गए।²⁰~तब हारून की बहन मरियम नबिया ने दफ़ हाथ में लिया, और सब 'औरतें दफ़ लिए नाचती हुई उसके पीछे चलीं।²¹और मरियम उनके हम्द के जवाब में यह गाती थी, "खुदावन्द की हम्द-ओ-सना गाओ, क्योंकि वह जलाल के साथ फ़तहमन्द हुआ है; उसने घोड़े को उसके सवार समेत समन्दर में डाल दिया है।"

²²~फ़िर मूसा बनी-इसाईल को बहर -ए-कुलज़म से आगे ले गया और वह शोर के वीराने में आए, और वीराने में चलते हुए तीन दिन तक उनको कोई पानी का चश्मा न मिला।²³~और जब वह मारह में आए तो मारह का पानी पी न सके क्योंकि वह कड़वा था, इसीलिए उस जगह का नाम मारह पड़ गया।

²⁴तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ा कर कहने लगे, कि हम क्या पिँएँ? "²⁵उसने खुदावन्द से फ़रियाद की; खुदावन्द ने उसे एक पेड़ दिखाया जिसे जब उसने पानी में डाला तो पानी मीठा हो गया।वहीं खुदावन्द ने उनके लिए एक क़ानून और शरी'अत बनाई और वहीं यह कह कर उनकी आजमाइश की,²⁶कि "अगर तू दिल लगा कर खुदावन्द अपने खुदा की बात सुने और वही काम करे जो उसकी नज़र में भला है और उसके हुक्मों को माने और उसके क़ानूनों पर 'अमल करे, तो मैं उन बीमारियों में से जो मैंने मिस्त्रियों पर भेजीं तुझ पर कोई न भेजूँगा क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा शाफ़ी हूँ।"

²⁷~फ़िर वह एलीम में आए जहाँ पानी के बारह चश्मे और खज़ूर के सत्तर दरख़्त थे, और वहीं पानी के करीब उन्होंने अपने खेमे लगाए।

Chapter 16

¹~फिर वह एलीम से रवाना हुए और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत मुल्क-ए-मिस्र से निकलने के बा'द दूसरे महीने की पंद्रहवीं तारीख को सीन के वीराने में जो एलीम और सीना के बीच है पहुँची।²~और उस वीराने में बनी-इसाईल की सारी जमा'अत मूसा और हारून पर बड़बड़ाने लगी।³~और बनी-इसाईल कहने लगे, "काश कि हम खुदावन्द के हाथ से मुल्क-ए-मिस्र में जब ही मार दिए जाते जब हम गोश्त की हॉडियों के पास बैठ कर दिल भर कर रोटी खाते थे, क्योंकि तुम तो हम को इस वीराने में इसीलिए ले आए हो कि सारे मजमे' को भूका मारो।"

⁴तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "मैं आसमान से तुम लोगों के लिए रोटियाँ बरसाऊँगा, फिर यह लोग निकल निकल कर सिर्फ़ एक-एक दिन का हिस्सा हर दिन बटोर लिया करें कि इस से मैं इनकी आजमाइश करूँगा कि वह मेरी शरी'अत पर चलेंगे या नहीं।⁵ और छठे दिन ऐसा होगा कि जितना वह ला कर पकाएँगे वह उससे जितना रोज़ जमा' करते हैं दूना होगा।"

⁶तब मूसा और हारून ने सब बनी-इसाईल से कहा, कि "शाम को तुम जान लोगे कि जो तुम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया है वह खुदावन्द है।⁷~और सुबह को तुम खुदावन्द का जलाल देखोगे, क्योंकि तुम जो खुदावन्द पर बड़बड़ाने लगते हो उसे वह सुनता है। और हम कौन हैं जो तुम हम पर बड़बड़ाते हो?"⁸~और मूसा ने यह भी कहा, कि "शाम को खुदावन्द तुम को खाने को गोश्त और सुबह को रोटी पेट भर के देगा; क्योंकि तुम जो खुदावन्द पर बड़बड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हमारी क्या हकीकत है? तुम्हारा बड़बड़ाना हम पर नहीं बल्कि खुदावन्द पर है।"

⁹~फिर मूसा ने हारून से कहा, कि "बनी इसाईल की सारी जमा'अत से कह, कि तुम खुदावन्द के नज़दीक आओ क्योंकि उसने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है।"¹⁰ और जब हारून बनी-इसाईल की जमा'अत से यह बातें कह रहा था, तो उन्होंने वीराने की तरफ़ नज़र की और उनको खुदावन्द का जलाल बादल में दिखाई दिया।¹¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹²"मैंने बनी-इसाईल का बड़बड़ाना सुन लिया है, इसलिए तू उनसे कह दे कि शाम को तुम गोश्त खाओगे और सुबह को तुम रोटी से सेर होगे, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

¹³और यूँ हुआ कि शाम को इतनी बटेरें आईं कि उनकी खेमागाह को ढाँक लिया, और सुबह को खेमागाह के आस पास ओस पड़ी हुई थी।¹⁴~और जब वह ओस जो पड़ी थी। सूख गई तो क्या देखते हैं, कि वीराने में एक छोटी-छोटी गोल गोल चीज़ ऐसी छोटी जैसे पाले के दाने होते हैं ज़मीन पर पड़ी है।¹⁵~बनी-इसाईल उसे देखकर आपस में कहने लगे, मन्त्र? क्योंकि वह नहीं जानते थे कि वह क्या है। तब मूसा ने उनसे कहा, "यह वही रोटी है जो खुदावन्द ने खाने को तुम को दी है।"

¹⁶इसलिए खुदावन्द का हुक्म यह है कि तुम उसे अपने-अपने खाने की मित्रदार के मुवाफ़िक़ या'नी अपने-अपने आदमियों के शुमार के मुताबिक़ हर शख्स एक ओमर जमा' करना, और हर शख्स उतने ही आदमियों के लिए जमा' करे जितने उसके खेमे में हों।"¹⁷~चुनाँचे बनी-इसाईल ने ऐसा ही किया और किसी ने ज़्यादा और किसी ने कम जमा' किया।¹⁸ और जब उन्होंने उसे ओमर से नापा तो जिसने ज़्यादा जमा' किया था कुछ ज़्यादा न पाया और उसका जिसने कम जमा' किया था कम न हुआ। उनमें से हर एक ने अपने खाने की मित्रदार के मुताबिक़ जमा' किया था।

¹⁹और मूसा ने उनसे कह दिया था ~कि~कोई उसमें से कुछ सुबह तक बाक़ी न छोड़े।"²⁰तोभी उन्होंने मूसा की बात न मानी बल्कि बा'ज़ों ने सुबह तक कुछ रहने दिया, इसलिए उसमें कीड़े पड़ गए और वह सड़ गया; तब मूसा उनसे नाराज़ हुआ।²¹~और वह हर सुबह को अपने-अपने खाने की मित्रदार के मुताबिक़ जमा' कर लेते थे और धूप तेज़ होते ही वह पिघल जाता था।

²²और छठे दिन ऐसा हुआ कि जितनी रोटी वह रोज़ जमा' करते थे उससे दूनी जमा' की या'नी हर शख्स दो ओमर, और जमा'अत के सब सरदारों ने आकर यह मूसा को बताया।²³~उसने उनको कहा, कि "खुदावन्द का हुक्म यह है कि कल खास आराम का दिन या'नी खुदावन्द का मुक़द्दस सबत है, जो तुम को पकाना हो पका लो और जो उबालना हो उबाल लो और वह जो बच रहे उसे अपने लिए सुबह तक महफूज़ रखो।"

²⁴चुनाँचे उन्होंने जैसा मूसा ने कहा था उसे सुबह तक रहने दिया, और वह न तो सड़ा और न उसमें कीड़े पड़े।²⁵ और मूसा ने कहा कि आज उसी को खाओ क्योंकि आज खुदावन्द का सबत है, इसलिए वह आज तुम को मैदान में नहीं मिलेगा।

²⁶~छः दिन तक तुम उसे जमा' करना लेकिन सातवें दिन सबत है, उसमें वह नहीं मिलेगा।"²⁷~और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उनमें से कुछ आदमी मन बटोरने गए पर उनको कुछ नहीं मिला।

²⁸~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "तुम लोग कब तक मेरे हुक्मों और शरी'अत के मानने से इन्कार करते रहोगे?"²⁹~देखो, चूँकि खुदावन्द ने तुम को सबत का दिन दिया है, इसीलिए वह तुम को छठे दिन दो दिन का खाना देता है। इसलिए तुम अपनी-अपनी जगह रहो और सातवें दिन कोई अपनी जगह से बाहर न जाए।"³⁰~चुनाँचे लोगों ने सातवें दिन आराम किया।

³¹~और बनी-इसाईल ने उसका नाम मन्त्र रखबा, और वह धनिये के बीज की तरह सफ़ेद और उसका मज़ा शहद के बने हुए पूए की तरह था।³²~और मूसा ने कहा, "खुदावन्द यह हुक्म देता है, कि इसका एक ओमर भर कर अपनी नसल के लिए रख लो, ताकि वह उस रोटी को देखें जो मैंने तुम को वीराने में खिलाई जब मैं तुम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया।"

³³~और मूसा ने हारून से कहा, "एक मर्तबान ले और एक ओमर मन उसमें भर कर उसे खुदावन्द के आगे रख दे, ताकि वह तुम्हारी नसल के लिए रखबा रहे।"³⁴ और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उसी के मुताबिक़ हारून ने उसे शहादत के सन्दूक के आगे रख दिया ताकि वह रखबा रहे।³⁵~और बनी-इसाईल जब तक आबाद मुल्क में न आए या'नी चालीस बरस तक मन्त्र खाते रहे, अलगरज़ जब तक वह मुल्क -ए-कना'न की हद तक न आए मन्त्र खाते रहे।

³⁶और एक ओमर ऐफ़ा का दसवाँ हिस्सा है।

Chapter 17

¹~फिर बनी-इसाईल की सारी जमा'अत सीन के वीराने से चली और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक सफ़र करती हुई रफ़ीदीम में आकर खेमा लगाया; वहाँ उन लोगों के पीने को पानी न मिला।²~वहाँ वह लोग मूसा से झगड़ा करके कहने लगे, कि "हम को पीने को पानी दे।" मूसा ने उनसे कहा, कि "तुम मुझ से क्यों झगड़ते हो और खुदावन्द को क्यों आजमाते हो?"³~वहाँ उन लोगों को बड़ी प्यास लगी, तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ाने लगे और कहा, कि तू हम को और हमारे बच्चों और चौपायों को प्यासा मारने के लिए हम लोगों को क्यों मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया?"

⁴~मूसा ने खुदावन्द से फ़रियाद करके कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूँ? वह सब तो अभी मुझे संगसार करने को तैयार हैं।"⁵खुदावन्द ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे होकर चल और बनी-इसाईल के बुजुर्गों में से कुछ को अपने साथ ले ले और जिस लाठी से तूने दरिया पर मारा था उसे अपने हाथ में लेता जा।⁶~देख, मैं तेरे आगे जाकर वहाँ होरिब की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा, और तू उस चट्टान पर मारना तो उसमें से पानी निकलेगा कि यह लोग पिँ।" चुनाँचे मूसा ने बनी-इसाईल के बुजुर्गों के सामने यही किया,⁷~और उसने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा रखवा; क्योंकि बनी-इसाईल ने वहाँ झगड़ा किया और यह कह कर खुदावन्द का इम्तिहान किया, "खुदावन्द हमारे बीच में है या नहीं?"

⁸~तब 'अमालीक्री आकर रफ़ीदीम में बनी-इसाईल से लड़ने लगे।⁹~और मूसा ने यशू'अ से कहा, "हमारी तरफ़ के कुछ आदमी चुन कर ले जा और 'अमालीकियों से लड़, और मैं कल खुदा की लाठी अपने हाथ में लिए हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा रहूँगा।"¹⁰~फिर मूसा के हुक्म के मुताबिक यशू'अ 'अमालीकियों से लड़ने लगा, और मूसा और हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए।

¹¹और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था बनी-इसाईल ग़ालिब रहते थे, और जब वह हाथ लटका देता था तब 'अमालीक्री ग़ालिब होते थे।¹²~और जब मूसा के हाथ भर गए तो उन्होंने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया, और हारून और हूर एक इधर से दूसरा उधर से उसके हाथों को संभाले रहे। तब उसके हाथ आफ़ताब के गुरूब होने तक मज़बूती से उठे रहे।¹³~और यशू'अ ने 'अमालीक और उसके लोगों की तलवार की धार से शिकस्त दी।

¹⁴~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "इस बात की यादगारी के लिए किताब में लिख दे और यशू'अ को सुना दे कि मैं 'अमालीक का नाम-ओ-निशान दुनिया से बिल्कुल मिटा दूँगा।"¹⁵~और मूसा ने एक कुर्बानगाह बनाई और उसका नाम 'यहोवा निस्सी' रखवा।¹⁶और उसने कहा खुदावन्द ने क्रसम खाई है; इसलिए खुदावन्द 'अमालीकियों से नसल दर नसल जंग करता रहेगा |

Chapter 18

¹~और जो कुछ खुदावन्द ने मूसा और अपनी क्रौम इस्राईल के लिए किया और जिस तरह से खुदावन्द ने इस्राईल को मिस्र से निकाला, सब मूसा के ससुर यित्रो ने जो मिदियान का काहिन था सुना।²~और मूसा के ससुर यित्रो ने मूसा की बीवी सप्रफूरा को जो मायके भेज दी गई थी,³और उसके दोनों बेटों को साथ लिया। इनमें से एक का नाम मूसा ने यह कह कर जैरसोम रखखा था कि "मैं परदेस में मुसाफिर हूँ।"⁴~और दूसरे का नाम यह कह कर इली'अज़र रखखा था कि "मेरे बाप का खुदा मेरा मददगार हुआ, और उसने मुझे फ़िर'औन की तलवार से बचाया।"

⁵~और मूसा का ससुर यित्रो उसके बेटों और बीवी को लेकर मूसा के पास उस वीराने में आया, जहाँ खुदा के पहाड़ के पास उसका खेमा लगा था,⁶और मूसा से कहा, कि "मैं तेरा ससुर यित्रो तेरी बीवी को और उसके साथ उसके दोनों बेटों को लेकर तेरे पास आया हूँ।"

⁷~तब मूसा अपने ससुर से मिलने को बाहर निकला और कोर्निश बजा लाकर उसको चूमा, और वह एक दूसरे की खैर-ओ-'आफ़ियत पूछते हुए खेमे में आए।

⁸~और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि खुदावन्द ने इस्राईल की खातिर फ़िर'औन के साथ क्या क्या किया, और इन लोगों पर रास्ते में क्या-क्या मुसीबतें पड़ीं और खुदावन्द उनको किस किस तरह बचाता आया।

⁹और यित्रो इन सब एहसानों की वजह से जो खुदावन्द ने इस्राईल पर किए कि उनको मिस्रियों के हाथ से नजात बख्शी बहुत खुश हुआ।¹⁰~और यित्रो ने कहा, "खुदावन्द मुबारक हो, जिसने तुम को मिस्रियों के हाथ और फ़िर'औन के हाथ से नजात बख्शी, और जिसने इस क्रौम को मिस्रियों के पंजे से छुड़ाया।"¹¹~अब मैं जान गया कि खुदावन्द सब मा'बूदों से बड़ा है, क्योंकि वह उन कामों में जो उन्होंने गुरूर से किए उन पर ग़ालिब हुआ।"

¹²और मूसा के ससुर यित्रो ने खुदा के लिए सोखतनी कुर्बानी और ज़बीहे चढ़ाए, और हारून और इस्राईल के सब बुजुर्ग मूसा के ससुर के साथ खुदा के सामने खाना खाने आए।

¹³~और दूसरे दिन मूसा लोगों की 'अदालत करने बैठा और लोग मूसा के आसपास सुबह से शाम तक खड़े रहे।¹⁴और जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वह लोगों के लिए करता था देख लिया तो उससे कहा, "यह क्या काम है जो तू लोगों के लिए करता है? तू क्यों आप अकेला बैठता है और सब लोग सुबह से शाम तक तेरे आस-पास खड़े रहते हैं?"

¹⁵~मूसा ने अपने ससुर से कहा, "इसकी वजह यह है कि लोग मेरे पास खुदा से मा'लूम करने के लिए आते हैं।"¹⁶जब उनमें कुछ झगड़ा होता है तो वह मेरे पास आते हैं, और मैं उनके बीच इन्साफ़ करता और खुदा के अहकाम और शरी'अत उनको बताता हूँ।"

¹⁷~तब मूसा के ससुर ने उससे कहा, कि "तू अच्छा काम नहीं करता।"¹⁸~इससे तू क्या बल्कि यह लोग भी जो तेरे साथ हैं क़त'ई घुल जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिए बहुत भारी है।"¹⁹~तू अकेला इसे नहीं कर सकता। इसलिए अब तू मेरी बात सुन, मैं तुझे सलाह देता हूँ और खुदा तेरे साथ रहे! तू इन लोगों के लिए खुदा के सामने जाया कर और इनके सब मु'आमिले खुदा के पास पहुँचा दिया कर।"²⁰~और तू रिवायतों और शरी'अत की बातें इनको सिखाया कर, और जिस रास्ते इनको चलना और जो काम इनको करना हो वह इनको बताया कर।

²¹~और तू इन लोगों में से ऐसे लायक़ शख्सों को चुन ले जो खुदातरस और सच्चे और रिश्त के दुश्मन हों, और उनको हज़ार- हज़ार और सौ-सौ और पचास-पचास और दस-दस आदमियों पर हाकिम बना दे;²²~कि वह हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ किया करें और ऐसा हो कि बड़े-बड़े मुक़द्दमें तो वह तेरे पास लाएँ और छोटी-छोटी बातों का फ़ैसला खुद ही कर दिया करें। यूँ तेरा बोझ हल्का हो जाएगा और वह भी उसके उठाने में तेरे शरीक होंगे।"²³~अगर तू यह काम करे और खुदा भी तुझे ऐसा ही हुक्म दे, तो तू सब कुछ झेल सकेगा और यह लोग भी अपनी जगह इत्मीनान से जाएँगे।

²⁴और मूसा ने अपने ससुर की बात मान कर जैसा उसने बताया था वैसा ही किया।²⁵~चुनाँचे मूसा ने सब इस्राईलियों में से लायक़-शख्सों को-चुना और उन को हज़ार-हज़ार और सौ-सौ और-पचास-पचास और दस-दस आदमियों के ऊपर हाकिम मुक़र्रर किया।²⁶इसलिए यही हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ करने लगे, मुश्किल मुक़द्दमात तो वह मूसा के पास ले आते थे पर छोटी-छोटी बातों का फ़ैसला खुद ही कर देते थे।"²⁷~फिर मूसा ने अपने ससुर को रुख़सत किया और वह अपने वतन को रवाना हो गया।

Chapter 19

¹और बनी-इसाईल को जिस दिन मुल्क-ए-मिस्र से निकले तीन महीने हुए उसी दिन वह सीना के वीराने में आए।²~और जब वह रफ़ीदीम से खाना होकर सीना के वीराने में आए तो वीराने ही में खेमे लगा लिए, इसलिए वहीं पहाड़ के सामने इसाईलियों के डेरे लगे।

³~और मूसा उस पर चढ़ कर खुदा के पास गया और खुदावन्द ने उसे पहाड़ पर से पुकार कर कहा, "तू या'कूब के खान्दान से यूँ कह और बनी-इसाईल को यह सुना देः"⁴~'तुम ने देखा कि मैंने मिस्रियों से क्या-क्या किया, और तुम को जैसे 'उक्काब के परो पर बैठा कर अपने पास ले आया।'⁵~इसलिए अब अगर तुम मेरी बात मानो और मेरे 'अहद पर चलो तो सब क्रौमों में से तुम ही मेरी खास मिल्कियत ठहरोगे क्योंकि सारी ज़मीन मेरी है।'⁶~और तुम मेरे लिए काहिनों की एक मम्लुकत और एक मुकद्दस क्रौम होगे, इन्हीं बातों को तू बनी-इसाईल को सुना देना।"

⁷~तब मूसा ने आ कर और उन लोगों के बुजुर्गों को बुलाकर उनके आमने-सामने वह सब बातें जो खुदावन्द ने उसे फ़रमाई थीं बयान कीं।⁸और सब लोगों ने मिल कर जवाब दिया, "जो कुछ खुदावन्द ने फ़रमाया है वह सब हम करेंगे।" और मूसा ने लोगों का जवाब खुदावन्द को जाकर सुनाया।⁹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "देख, मैं काले बादल में इसलिए तेरे पास आता हूँ कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तो यह लोग सुनें और हमेशा तेरा यक़ीन करें।" और मूसा ने लोगों की बातें खुदावन्द से बयान कीं।

¹⁰~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "लोगों के पास जा, और आज और कल उनको पाक कर, और वह अपने कपड़े धो लें,¹¹और तीसरे दिन तैयार रहें, क्योंकि खुदावन्द तीसरे दिन सब लोगों के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा।

¹²और तू लोगों के लिए चारों तरफ़ हद बाँध कर उनसे कह देना, खबरदार तुम न तो इस पहाड़ पर चढ़ना और न इसके दामन को छूना; जो कोई पहाड़ को छुए ज़रूर जान से मार डाला जाए।¹³~मगर उसे कोई हाथ न लगाए बल्कि वह ला-कलाम संगसार किया जाए, या तीर से छेदा जाए चाहे वह इन्सान हो चाहे हैवान, वह जीता न छोड़ा जाए; और जब नरसिंगा देर तक फूँका जाए तो वह सब पहाड़ के पास आ जाएँ।"

¹⁴~तब मूसा पहाड़ पर से उतरकर लोगों के पास गया और उसने लोगों को पाक साफ़ किया, और उन्होंने अपने कपड़े धो लिए।¹⁵और उसने लोगों से कहा कि "तीसरे दिन तैयार रहना और 'औरत के नज़दीक न जाना।"

¹⁶~जब तीसरा दिन आया तो सुबह होते ही बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पहाड़ पर काली घटा छा गई और करना की आवाज़ बहुत बुलन्द हुई और सब लोग खेमों में काँप गए।¹⁷~और मूसा लोगों को खेमा गाह से बाहर लाया कि खुदा से मिलाए, और वह पहाड़ से नीचे आ खड़े हुए।¹⁸~और कोह-ए-सीना ऊपर से नीचे तक धुएँ से भर गया क्योंकि खुदावन्द शोले में होकर उस पर उतरा, और धुआँ तनूर के धुएँ की तरह ऊपर को उठ रहा था और वह सारा पहाड़ ज़ोर से हिल रहा था।

¹⁹~और जब करना की आवाज़ निहायत ही बुलन्द होती गई तो मूसा बोलने लगा और खुदा ने आवाज़ के ज़रिए' से उसे जवाब दिया।²⁰~और खुदावन्द कोह-ए-सीना की चोटी पर उतरा, और खुदावन्द ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया; तब मूसा ऊपर चढ़ गया।²¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "नीचे उतर कर लोगों को ताकीदन समझा देता ऐसा न हो कि वह देखने के लिए हदों को तोड़ कर खुदावन्द के पास आ जाएँ और उनमें से बहुत से हलाक हो जाएँ।"²²और काहिन भी जो खुदावन्द के नज़दीक आया करते हैं अपने आपको पाक करें, कहीं ऐसा न हो कि खुदावन्द उन पर टूट पड़े।"

²³~तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, "लोग कोह-ए-सीना पर नहीं चढ़ सकते क्योंकि तूने तो हम को ताकीदन कहा है, कि पहाड़ के चौगिर्द हद बन्दी करके उसे पाक रखखो।"²⁴~खुदावन्द ने उसे कहा, "नीचे उतर जा, और हारून को अपने साथ लेकर ऊपर आ; लेकिन काहिन और अवाम हदें तोड़कर खुदावन्द के पास ऊपर न आए, ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े।"²⁵चुनाँचे मूसा नीचे उतर कर लोगों के पास गया और यह बातें उन को बताई।

Chapter 20

¹और खुदा ने यह सब बातें फ़रमाई: कि²~"खुदावन्द तेरा खुदा जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से और गुलामी के घर से निकाल लाया मैं हूँ।"³मेरे सामने तू ग़ैर मा'बूदों को न मानना।

⁴~"तू अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना, न किसी चीज़ की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर या ज़मीन के नीचे पानी में है।"⁵~तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी 'इबादत करना, क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा गय्यूर खुदा हूँ और जो मुझ से 'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक बाप दादा की बदकारी की सज़ा देता हूँ।⁶और हज़ारों पर जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे हुक्मों को मानते हैं। रहम करता हूँ।

⁷~"तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेफ़ाइदा न लेना, क्योंकि जो उसका नाम बेफ़ायदा लेता है खुदावन्द उसे बेगुनाह न ठहराएगा।

⁸~"याद कर कि तू सबत का दिन पाक मानना।⁹~छः दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम-काज करना।¹⁰~लेकिन सातवाँ दिन खुदावन्द तेरे खुदा का सबत है; उसमें न तू कोई काम करे न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा गुलाम, न तेरी लौंडी, न तेरा चौपाया, न कोई मुसाफ़िर जो तेरे यहाँ तेरे फाटकों के अन्दर हो।¹¹~क्योंकि खुदावन्द ने छः दिन में आसमान और ज़मीन और समन्दर और जो कुछ उनमें है वह सब बनाया, और सातवें दिन आराम किया; इसलिए खुदावन्द ने सबत के दिन को बरकत दी और उसे पाक ठहराया।

¹²~"तू अपने बाप और अपनी माँ की इज़ज़त करना ताकि तेरी 'उम्र उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझे देता है दराज़ हो।"¹³~"तू खून न करना।"¹⁴~"तू ज़िना न करना।

¹⁵~"तू चोरी न करना।"¹⁶~"तू अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूठी गवाही न देना।"¹⁷~"तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना; तू अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न उसके गुलाम और उसकी लौंडी और उसके बैल और उसके गधे का, और न अपने पड़ोसी की किसी और चीज़ का लालच करना।"

¹⁸~और सब लोगों ने बादल गरजते और बिजली चमकते और करना की आवाज़ होते और पहाड़ से धुआँ उठते देखा, और जब लोगों ने यह देखा तो काँप उठे और दूर खड़े हो गए;¹⁹~और मूसा से कहने लगे, "तू ही हम से बातें किया कर और हम सुन लिया करेंगे; लेकिन खुदा हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।"²⁰~मूसा ने लोगों से कहा, "तुम डरो मत, क्योंकि खुदा इसलिए आया है कि तुम्हारा इम्तिहान करे और तुम को उसका खौफ़ हो ~ताकि तुम गुनाह न करो।"²¹~और वह लोग दूर ही खड़े रहे और मूसा उस गहरी तारीकी के नज़दीक गया जहाँ खुदा था।

²²और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "तू बनी-इस्राईल से यह कहना कि 'तुम ने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें कीं।"²³~तुम मेरे साथ किसी को शरीक न करना, या'नी चाँदी या सोने के देवता अपने लिए न गढ़ लेना।

²⁴~और तू मिट्टी की एक कुर्बानगाह मेरे लिए बनाया करना, और उस पर अपनी भेंड़ बकरियों और गाय-बैल की सोखतनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश करना और जहाँ-जहाँ मैं अपने नाम की यादगारी कराऊँगा वहाँ मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा।"²⁵~और अगर तू मेरे लिए पत्थर की कुर्बानगाह बनाए तो तराशे हुए पत्थर से न बनाना, क्योंकि अगर तू उस पर अपने औज़ार लगाए तो तू उसे नापाक कर देगा।"²⁶और तू मेरी कुर्बानगाह पर सीढ़ियों से हरगिज़ न चढ़ना ऐसा न हो कि तेरा नंगापन उस पर ज़ाहिर हो।'

Chapter 21

¹~"वह अहकाम जो तुझे उनको बताने हैं यह हैं:

²अगर तू कोई 'इब्रानी गुलाम खरीदे तो वह छः बरस खिदमत करे और सातवें बरस मुफ्त आज़ाद होकर चला जाए।³~अगर वह अकेला आया हो तो अकेला ही चला जाए और अगर वह शादी शुदा हो तो उसकी बीवी भी उसके साथ जाए।⁴अगर उसके आक्रा ने उसकी शादी कराया हो और उस 'औरत के उससे बेटे और बेटियाँ हुई हों तो वह 'औरत और उसके बच्चे उस आक्रा के होकर रहें और वह अकेला चला जाए।

⁵~पर अगर वह गुलाम साफ़ कह दे कि मैं अपने आक्रा से और अपनी बीवी और बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद होकर नहीं जाऊँगा।⁶~तो उसका आक्रा उसे खुदा के पास ले जाए, और उसे दरवाज़े पर या दरवाज़े की चौखट पर लाकर सुतारी से उसका कान छेदे; तब वह हमेशा उसकी खिदमत करता रहे।

⁷और अगर कोई शख्स अपनी बेटी को लौंडी होने के लिए बेच डाले तो वह गुलामों की तरह चली न जाए।⁸अगर उसका आक्रा जिसने उससे निस्बत की है उससे खुश न हो, तो वह उसका फ़िदिया मंज़ूर करे पर उसे यह इख़्तियार न होगा कि उसको किसी अजनबी क़ौम के हाथ बेचे, क्योंकि उसने उससे दशाबाज़ी की।

⁹और अगर वह उसकी निस्बत अपने बेटे से कर दे तो वह उससे बेटियों का सा सुलूक करे।¹⁰अगर वह दूसरी 'औरत कर ले तो भी वह उसके खाने, कपड़े और शादी के फ़र्ज़ में क़ासिर न हो।¹¹~और अगर वह उससे यह तीनों बातें न करे तो वह मुफ्त बे-रुपये दिए चली जाए।

¹²~'अगर कोई किसी आदमी को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो वह क़तई' जान से मारा जाए।¹³~लेकिन अगर वह शख्स घात लगाकर न बैठा हो बल्कि खुदा ही ने उसे उसके हवाले कर दिया हो, तो मैं ऐसे हाल में एक जगह बता दूँगा जहाँ वह भाग जाए।¹⁴~और अगर कोई दीदा-ओ-दानिस्ता अपने पड़ोसी पर चढ़ आए ताकि उसे धोखे से मार डाले, तो तू उसे मेरी कुर्बानगाह से जुदा कर देना ताकि वह मारा जाए।

¹⁵और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ को मारे वह क़तई' जान से मारा जाए।¹⁶~"और जो कोई किसी आदमी को चुराए चाहे वह उसे बेच डाले चाहे वह उसके यहाँ मिले, वह क़तई' मार डाला जाए।¹⁷~'और जो अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करे वह क़तई' मार डाला जाए।

¹⁸~"और अगर दो शख्स झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर या मुक्का मारे और वह मरे तो नहीं पर बिस्तर पर पड़ा रहे,¹⁹~तो जब वह उठ कर अपनी लाठी के सहारे बाहर चलने-फिरने लगे, तब वह जिसने मारा था बरी हो जाए और सिर्फ़ उसका हरजाना भर दे और उसका पूरा 'इलाज करा दे।

²⁰और अगर कोई अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से ऐसा मारे कि वह उसके हाथ से मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा दी जाए।²¹~लेकिन अगर वह एक-दो दिन जीता रहे तो आक्रा को सज़ा न दी जाए, इसलिए कि वह गुलाम उसका माल है।

²²~"अगर लोग आपस में मार पीट करें और किसी हामिला को ऐसी चोट पहुँचाएँ कि उसे इस्कात हो जाए, लेकिन और कोई नुक़सान न हो तो उससे जितना जुर्माना उसका शौहर तजवीज़ करे लिया जाए, और वह जिस तरह क़ाज़ी फ़ैसला करें जुर्माना भर दे।²³लेकिन अगर नुक़सान हो जाए तो तू जान के बदले जान ले,²⁴~और आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, और हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव,²⁵जलाने के बदले जलाना, ज़ख़म के बदले ज़ख़म और चोट के बदले चोट।

²⁶~"और अगर कोई अपने गुलाम या अपनी लौंडी की आँख पर ऐसा मारे कि वह फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे आज़ाद कर दे।²⁷~अगर कोई अपने गुलाम या अपनी लौंडी का दाँत मार कर तोड़ दे, तो वह उसके दाँत के बदले उसे आज़ाद कर दे।

²⁸~'अगर बैल किसी मर्द या 'औरत को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो वह बैल ज़रूर संगसार किया जाय और उसका गोश्त खाया न जाए, लेकिन बैल का मालिक बेगुनाह ठहरे।²⁹~लेकिन अगर उस बैल की पहले से सींग मारने की 'आदत थी और उसके मालिक को बता भी दिया गया था तोभी उसने उसे बाँध कर नहीं रखखा, और उसने किसी मर्द या 'औरत को मार दिया हो तो बैल संगसार किया जाए और उसका मालिक भी मारा जाए।³⁰~और अगर उससे खूनबहा माँगा जाए, तो उसे अपनी जान के फ़िदिया में जितना उसके लिए ठहराया जाए उतना ही देना पड़ेगा।

³¹~चाहे उसने किसी के बेटे को मारा हो या बेटी को, इसी हुक्म के मुवाफ़िक़ उसके साथ 'अमल किया जाए।³²~अगर बैल किसी के गुलाम या लौंडी को सींग से मारे तो मालिक उस गुलाम या लौंडी के मालिक को तीस मिस्काल रुपये दे और बैल संगसार किया जाए।

³³~'और अगर कोई आदमी ग़दा खोले या खोदे और उसका मुँह न ढाँपे, और कोई बैल या ग़धा उसमें गिर जाए;³⁴~तो ग़ढ़े का मालिक इसका नुक़सान भर दे और उनके मालिक को क़ीमत दे और मरे हुए जानवर को ख़ुद ले ले।

³⁵और अगर किसी का बैल दूसरे के बैल को ऐसी चोट पहुँचाए कि वह मर जाए, तो वह जीते बैल को बेचें और उसका दाम आधा आधा आपस में बाँट लें और इस मरे हुए बैल को भी ऐसे ही बाँट लें।³⁶~और अगर मा'लूम हो जाए कि उस बैल की पहले से सींग मारने की 'आदत थी और उसके मालिक ने उसे बाँध कर नहीं रखखा, तो उसे क़तई' बैल के बदले बैल देना होगा और वह मरा हुआ जानवर उसका होगा।

Chapter 22

¹"अगर कोई आदमी बैल या भेड़ चुरा ले और उसे ज़बह कर दे या बेच डाले, तो वह एक बैल के बदले पाँच बैल और एक भेड़ के बदले चार भेड़े भरे।²अगर चोर सेंध मारते हुए पकड़ा जाए और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए तो उसके खून का कोई जुर्म नहीं।³~अगर सूरज निकल चुके तो उसका खून जुर्म होगा; बल्कि उसे नुक़सान भरना पड़ेगा और अगर उसके पास कुछ न हो तो वह चोरी के लिए बेचा जाए।⁴~अगर चोरी का माल उसके पास जीता मिले चाहे वह बैल हो या गधा या भेड़ तो वह उसका दूना भर दे।

⁵~'अगर कोई आदमी किसी खेत या ताकिस्तान को खिलवा दे और अपने जानवर को छोड़ दे कि वह दूसरे के खेत को चर लें, तो अपने खेत या ताकिस्तान की अच्छी से अच्छी पैदावार में से उसका मु'आवज़ा दे।

⁶~'अगर आग भड़के और काँटों में लग जाए और अनाज के ढेर या खड़ी फ़सल या खेत को जला कर भस्म कर दे, तो जिस ने आग जलाई हो वह ज़रूर मु'आवज़ा दे।

⁷"अगर कोई अपने पड़ोसी की नक़द या जिन्स रखने को दे और वह उस शख्स के घर से चोरी हो जाए, तो अगर चोर पकड़ा जाए तो दूना उसको भरना पड़ेगा।⁸~लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो उस घर का मालिक खुदा के आगे लाया जाए, ताकि मालूम हो जाए कि उसने अपने पड़ोसी के माल को हाथ नहीं लगाया।⁹~हर किस्म की ख़ियानत के मु'आमिले में चाहे बैल का चाहे गधे या भेड़ या कपड़े या किसी और खोई हुई चीज़ का हो, जिसकी निस्बत कोई बोल उठे कि वह चीज़ यह है तो फ़रीक़ीन का मुक़द्दमा खुदा के सामने लाया जाए और जिसे खुदा मुजरिम ठहराए वह अपने पड़ोसी को दूना भर दे।

¹⁰~'अगर कोई अपने पड़ोसी के पास गधा या बैल या भेड़ या कोई और जानवर अमानत रखे और वह बग़ैर किसी के देखे मर जाए या चोट खाए या हंका दिया जाए,¹¹~तो उन दोनों के बीच खुदावन्द की क़सम हो कि उसने अपने हमसाये के माल को हाथ नहीं लगाया, और मालिक इसे सच माने और दूसरा उसका मु'आवज़ा न दे।¹²~लेकिन अगर वह उसके पास से चोरी हो जाए तो वह उसके मालिक को मु'आवज़ा दे।¹³~और अगर उसको किसी दरिन्दे ने फाड़ डाला हो तो वह उसको गवाही के तौर पर पेश कर दे और फाड़े हुए का नुक़सान न भरे।

¹⁴~'अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी से कोई जानवर 'आरियत ले और वह ज़ख्मी हो जाए या मर जाए, और मालिक वहाँ मौजूद न हो तो वह ज़रूर उसका मु'आवज़ा दे।¹⁵~लेकिन अगर मालिक साथ हो तो उसका नुक़सान न भरे और अगर किराया की हुई चीज़ हो तो उसका नुक़सान उसके किराये में आ गया

¹⁶~"अगर कोई आदमी किसी कुँवारी को जिसकी निस्बत न हुई हो, फ़ुसला कर उससे मुबाश्रत करे तो वह ज़रूर ही उसे महर देकर उससे शादी करे।¹⁷लेकिन अगर उसका बाप हरगिज़ राज़ी न हो कि उस लड़की को उसे दे, तो वह कुँवारियों के महर के मुवाफ़िक़ उसे नक़दी दे।

¹⁸~"तू जादूगरनी को जीने न देना।¹⁹~"जो कोई किसी जानवर से मुबाश्रत करे वह क़तई जान से मारा जाए।

²⁰~"जो कोई एक खुदावन्द को छोड़ कर किसी और मा'बूद के आगे कुर्बानी चढ़ाए वह बिल्कुल नाबूद कर दिया जाए।²¹~"और तू मुसाफ़िर को न तो सताना न उस पर सितम करना, इस लिए के तुम भी मुल्क-ए-मिस्र में मुसाफ़िर थे।

²²तुम किसी बेवा या यतीम लड़के को दुख न देना।²³~अगर तू उनको किसी तरह से दुख दे और वह मुझ से फ़रियाद करें तो मैं ज़रूर उनकी फ़रियाद सुनूँगा।

²⁴~और मेरा क्रहर भड़केगा और मैं तुम को तलवार से मार डालूँगा और तुम्हारी बीवियाँ बेवा और तुम्हारे बच्चे यतीम हो जाएँगे।

²⁵~"अगर तू मेरे लोगों में से किसी मोहताज को जो तेरे पास रहता हो कुछ क़र्ज़ दे तो उससे क़र्ज़दार की तरह सुलूक न करना और न उससे सूद लेना।²⁶अगर तू किसी वक़्त अपने पड़ोसी के कपड़े गिरवी रख भी ले तो सूरज के डूबने तक उसको वापस कर देना।²⁷क्यूँकि सिर्फ़ वही उसका एक ओढ़ना है, उसके जिस्म का वही लिबास है फिर वह क्या ओढ़ कर सोएगा? फिर जब वह फ़रियाद करेगा तो मैं उसकी सुनूँगा क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ।

²⁸~"तू खुदा को न कोसना और न अपनी क्रौम के सरदार पर ला'नत भेजना।

²⁹~"तू अपनी ज़्यादा पैदावार और अपने कोल्हू के रस में से मुझे नज़्र-ओ-नियाज़ देने में देर न करना और अपने बेटों में से पहलौठे को मुझे देना।³⁰~अपनी गायों और भेड़ों से भी ऐसा ही करना; सात दिन तक तो बच्चा अपनी माँ के साथ रहे, आठवें दिन तू उसे मुझ को देना।³¹~"और तू मेरे लिए पाक आदमी होना, इसी वजह से दरिन्दों के फाड़े हुए जानवर का गोश्त जो मैदान में पड़ा हुआ मिले मत खाना; तुम उसे कुत्तों के आगे फेंक देना।

Chapter 23

¹तू झूठी बात ना फैलाना और नारास्त गवाह होने के लिए शरीरों का साथ न देना।²~बुराई करने के लिए किसी भीड़ की पैरवी न करना, और न किसी मुकदमें में इन्साफ़ का खून कराने के लिए भीड़ का मुँह देखकर कुछ कहना।³~और न मुकदमों में कंगाल की तरफ़दारी करना।

⁴अगर तेरे दुश्मन का बैल या गधा तुझे भटकता हुआ मिले, तो तू ज़रूर उसे उसके पास फेर कर ले आना।⁵~अगर तू अपने दुश्मन के गधे को बोझ के नीचे दबा हुआ देखे और उसकी मदद करने को जी भी न चाहता हो तो भी ज़रूर उसे मदद देना।

⁶~"तू अपने कंगाल लोगों के मुकदमों में इन्साफ़ का खून न करना।⁷झूटे मु'आमिले से दूर रहना और बेगुनाहों और सादिकों को क़त्ल न करना क्योंकि मैं शरीर को रास्त नहीं ठहराऊँगा।⁸~तू रिश्त न लेना क्योंकि रिश्त बीनाओं को अन्धा कर देती है और सादिकों की बातों को पलट देती है।⁹~"परदेसी पर जुल्म न करना क्योंकि तुम परदेसी के दिल को जानते हो, इसलिए कि तुम खुद भी मुल्क-ए-मिस्र में परदेसी थे।

¹⁰~"छ: बरस तक तू अपनी ज़मीन में बोना और उसका ग़ल्ला जमा' करना,¹¹~पर सातवें बरस उसे यूँ ही छोड़ देना कि पड़ती रहे, ताकि तेरी क्रौम के ग़रीब उसे खाएँ और जो उनसे बचे उसे जंगल के जानवर चर लें। अपने अंगूर और जैतून के बाग़ से भी ऐसा ही करना।

¹²~छ: दिन तक अपना काम काज करना और सातवें दिन आराम करना, ताकि तेरे बैल और गधे को आराम मिले और तेरी लौंडी का बेटा और परदेसी ताज़ा दम हो जाएँ।¹³और तुम सब बातों में जो मैंने तुम से कहीं हैं होशियार रहना और दूसरे मा'बूदों का नाम तक न लेना बल्कि वह तेरे मुँह से सुनाई भी न दे।

¹⁴~"तू साल भर में तीन बार मेरे लिए 'ईद मनाना।¹⁵~ईद-ए-फ़तीर को मानना, उसमें मेरे हुक्म के मुताबिक़ अबीब महीने के मुकर्ररा वक़्त पर सात दिन तक बेख़मीरी रोटियाँ खाना (क्योंकि उसी महीने में तू मिस्र से निकला था) और कोई मेरे आगे खाली हाथ न आए।

¹⁶और जब तेरे खेत में जिसे तूने मेहनत से बोया पहला फल आए तो फ़स्ल काटने की 'ईद मानना, और साल के आखिर में जब तू अपनी मेहनत का फल खेत से जमा' करे तो जमा' करने की 'ईद मनाना।¹⁷और साल में तीनों मर्तबा तुम्हारे यहाँ के सब मर्द खुदावन्द खुदा के आगे हाज़िर हुआ करें।

¹⁸~"तू ख़मीरी रोटी के साथ मेरे ज़बीहे का खून न चढ़ाना और मेरी 'ईद की चर्बी सुबह तक बाक़ी न रहने देना।¹⁹~तू अपनी ज़मीन के पहले फलों का पहला हिस्सा खुदावन्द अपने खुदा के घर में लाना। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न पकाना।

²⁰~"देख, मैं एक फ़रिश्ता तेरे आगेआगे भेजता हूँ कि रास्ते में तेरा निगहबान हो और तुझे उस जगह पहुँचा दे जिसे मैंने तैयार किया है।²¹~तुम उसके आगे होशियार रहना और उसकी बात मानना, उसे नाराज़ न करना क्योंकि वह तुम्हारी ख़ता नहीं बख़्शेगा इसलिए कि मेरा नाम उसमें रहता है।²²~लेकिन अगर तू सचमुच उसकी बात माने और जो मैं कहता हूँ वह सब करे, तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुखालिफ़ों का मुखालिफ़ हूँगा।

²³इसलिए कि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे-आगे चलेगा और तुझे अमोरियों और हितियों और फ़रिज़ियों और कना'नियों और हव्वियों यबूसियों में पहुँचा देगा और मैं उनको हलाक कर डालूँगा।²⁴~तू उनके मा'बूदों को सिज्दा न करना, न उनकी 'इबादत करना, न उनके से काम करना बल्कि तू उनको बिल्कुल उलट देना और उनके सुतूनो को टुकड़े टुकड़े कर डालना।²⁵~और तुम खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत करना, तब वह तेरी रोटी और पानी पर बरकत देगा और मैं तेरे बीच से बीमारी को दूर कर दूँगा।

²⁶~और तेरे मुल्क में न तो किसी के इस्कात होगा और न कोई बाँझ रहेगी और मैं तेरी उम्र पूरी करूँगा।²⁷~मैं अपने ख़ौफ़ को तेरे आगे-आगे भेजूँगा और मैं उन सब लोगों को जिनके पास तू जाएगा शिकस्त दूँगा, और मैं ऐसा करूँगा कि तेरे सब दुश्मन तेरे आगे अपनी पुश्त फेर देंगे।²⁸~मैं तेरे आगे ज़म्बूरों को भेजूँगा, जो हव्वी और कना'नी और हिक्ती को तेरे सामने से भगा देंगे।²⁹~मैं उनको एक ही साल में तेरे आगे से दूर नहीं करूँगा ऐसा न हो के ज़मीन वीरान हो जाए और जंगली दरिन्दे ज़्यादा होकर तुझे सताने लगे।

³⁰~बल्कि मैं थोड़ा थोड़ा करके उनको तेरे सामने से दूर करता रहूँगा, जब तक तू शुमार में बढ़ कर मुल्क का वारिस न हो जाए।³¹~मैं बहर-ए-कुलजुम से लेकर फ़िलिस्तियों के समन्दर तक और वीरान से लेकर नहर-ए-फुरात तक तेरी हर्दे बाँधूँगा। क्योंकि मैं उस मुल्क के बाशिन्दों को तुम्हारे हाथ में कर दूँगा और तू उनको अपने आगे से निकाल देगा।³²~तू उनसे या उनके मा'बूदों से कोई 'अहद न बाँधना।³³वह तेरे मुल्क में रहने न पाएँ ऐसा न हो कि वह तुझ से मेरे खिलाफ़ गुनाह कराएँ, क्योंकि अगर तू उनके मा'बूदों की 'इबादत करे तो यह तेरे लिए ज़रूर फंदा हो जाएगा।"

Chapter 24

¹~और उसने मूसा से कहा, कि "तू हारून और नदब और अबीहू और बनी-इसाईल के सत्तर बुजुर्गों को लेकर खुदावन्द के पास ऊपर आ, और तुम दूर ही से सिज्दा करना।"²~और मूसा अकेला खुदावन्द के नज़दीक आए पर वह नज़दीक न आएँ और लोग उसके साथ ऊपर न चढ़ें।"

³~और मूसा ने लोगों के पास जाकर खुदावन्द की सब बातें और अहकाम उनको बता दिए और सब लोगों ने हम आवाज़ होकर जवाब दिया, "जितनी बातें खुदावन्द ने फ़रमाई हैं, हम उन सब को मानेंगे।"⁴~और मूसा ने खुदावन्द की सब बातें लिख लीं और सुबह को सवेरे उठ कर पहाड़ के नीचे एक कुर्बानगाह और बनी-इसाईल के बारह कबीलों के हिसाब से बारह सुतून बनाए।

⁵और उसने बनी-इसाईल के जवानों को भेजा, जिन्होंने सोख्तनी कुर्बानियाँ चढ़ाई और बैलों को ज़बह करके सलामती के ज़बीहे खुदावन्द के लिए पेश किया।

⁶~और मूसा ने आधा खून लेकर तसलों में रखवा और आधा कुर्बानगाह पर छिड़क दिया।

⁷फिर उसने 'अहदनामा लिया और लोगों को पढ़ कर सुनाया। उन्होंने कहा, कि "जो कुछ खुदावन्द ने फ़रमाया है उस सब को हम करेंगे और ताबे' रहेंगे।"⁸~तब मूसा ने उस खून को लेकर लोगों पर छिड़का और कहा, "देखो, यह उस 'अहद का खून है जो खुदावन्द ने इन सब बातों के बारे में तुम्हारे साथ बाँधा है।"

⁹~तब मूसा और हारून और नदब और अबीहू और बनी-इसाईल के सत्तर बुजुर्ग ऊपर गए।¹⁰और उन्होंने इस्राईल के खुदा को देखा, और उसके पाँव के नीचे नीलम के पत्थर का चबूतरा सा था जो आसमान की तरह शम्फ़ाफ़ था।¹¹~और उसने बनी-इसाईल के शरीफ़ों पर अपना हाथ न बढ़ाया। फिर उन्होंने खुदा को देखा और खाया और पिया।

¹²और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि~"पहाड़ पर मेरे पास आ और वहीं ठहरा रह; और मैं तुझे पत्थर की लोहें और शरी'अत और अहकाम जो मैंने लिखे हैं दूँगा ताकि तू उनको सिखाए।"¹³~और मूसा और उसका खादिम यशू'अ उठे और मूसा खुदा के पहाड़ के ऊपर गया।

¹⁴~और बुजुर्गों से कह गया कि "जब तक हम लौट कर तुम्हारे पास न आ जाएँ तुम हमारे लिए यहीं ठहरे रहो, और देखो हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं, जिस किसी का कोई मुक़दमा हो वह उनके पास जाए।"¹⁵~तब मूसा पहाड़ के ऊपर गया और पहाड़ पर घटा छा गई।

¹⁶~और खुदावन्द का जलाल कोह-ए-सीना पर आकर ठहरा और छः दिन तक घटा उस पर छाई रही और सातवें दिन उसने घटा में से मूसा को बुलाया।¹⁷~और बनी-इसाईल की निगाह में पहाड़ की चोटी पर खुदावन्द के जलाल का मन्ज़र भसम करने वाली आग की तरह था।¹⁸~और मूसा घटा के बीच में होकर पहाड़ पर चढ़ गया और वह पहाड़ पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

Chapter 25

¹~और खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया,²'बनी-इसाईल से यह कहना कि मेरे लिए नज़्र लाएँ, और तुम उन्हीं से मेरी नज़्र लेना जो अपने दिल की खुशी से दें।

³और जिन चीज़ों की नज़्र तुम को उनसे लेनी है वह यह हैं: सोना और चाँदी और पीतल,⁴और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग का कपड़ा और बारीक कतान और बकरी की पशम,⁵और मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें और तुखस की खालें और कीकर की लकड़ी,⁶~और चराग के लिए तेल और मसह करने के तेल के लिए और खुशबूदार खुशबू के लिए मसाले,⁷और संग-ए-सुलेमानी और अफ़ोद और सीनाबन्द में जड़ने के नगीने।

⁸~और वह मेरे लिए एक मक़दिस बनाएँ ताकि मैं उनके बीच सुकूनत करूँ।⁹~और घर और उसके सारे सामान का जो नमूना मैं तुझे दिखाऊँ ठीक उसी के मुताबिक़ तुम उसे बनाना।

¹⁰~'और वह कीकर की लकड़ी का एक सन्दूक बनाये जिस की लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ हो।¹¹~और तू उसके अन्दर और बाहर ख़ालिस सोना मंढ़ना और उसके ऊपर चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना।

¹²और उसके लिए सोने के चार कड़े ढालकर उसके चारों पायों में लगाना, दो कड़े एक तरफ़ हों और दो ही दूसरी तरफ़।¹³~और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उन पर सोना मंढ़ना।¹⁴और इन चोबों को सन्दूक के पास के कड़ों में डालना कि उनके सहारे सन्दूक उठ जाए।

¹⁵~चोबें सन्दूक के कड़ों के अन्दर लगी रहें और उससे अलग न की जाएँ।¹⁶और तू उस शहादत नामे को जो मैं तुझे दूँगा उसी सन्दूक में रखना।¹⁷"और तू कफ़फ़ारे का सरपोश ख़ालिस सोने का बनाना जिसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो।¹⁸और सोने के दो करूबी सरपोश के दोनों सिरों पर गढ़ कर बनाना।

¹⁹~एक करूबी को एक सिर पर और दूसरे करूबी को दूसरे सिर पर लगाना, और तुम सरपोश को और दोनों सिरों के करूबियों को एक ही टुकड़े से बनाना।

²⁰~और वह करूबी इस तरह ऊपर को अपने पर फैलाए हुए हों कि सरपोश को अपने परों से ढाँक लें और उनके मुँह आमने-सामने सरपोश की तरफ़ हों।

²¹~और तू उस सरपोश को उस सन्दूक के ऊपर लगाना और वह 'अहदनामा जो मैं तुझे दूँगा उसे उस सन्दूक के अन्दर रखना।

²²वहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा और उस सरपोश के ऊपर से और करूबियों के बीच में से जो 'अहदनामे के सन्दूक के ऊपर होंगे, उन सब अहकाम के बारे में जो मैं बनी-इसाईल के लिए तुझे दूँगा तुझ से बातचीत किया करूँगा।

²³~"और तू दो हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ ऊँची कीकर की लकड़ी की एक मेज़ भी बनाना।²⁴~और उसको ख़ालिस सोने से मंढ़ना और उसके चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना।

²⁵~और उसके चौगिर्द चार उंगल चौड़ी एक कंगनी लगाना और उस कंगनी के चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना।²⁶~और सोने के चार कड़े उसके लिए बना कर उन कड़ों को उन चारों कोनों में लगाना जो चारों पायों के सामने होंगे।²⁷~वह कड़े कंगनी के पास ही हों, ताकि चोबों के लिए जिनके सहारे मेज़ उठाई जाए घरों का काम दें।

²⁸~और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उनको सोने से मंढ़ना ताकि मेज़ उन्हीं से उठाई जाए।²⁹~और तू उसके तबाक़ और चमचे और आफ़ताबे और उंडेलने के बड़े-बड़े कटोरे सब ख़ालिस सोने के बनाना।³⁰और तू उस मेज़ पर नज़्र की रोटियाँ हमेशा मेरे सामने रखना।

³¹~"और तू ख़ालिस सोने का एक शमा'दान बनाना। वह शमा'दान और उसका पाया और डन्डी सब घड़ कर बनाए जाएँ और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और उसके फूल सब एक ही टुकड़े के बने हों।³²और उसके दोनों पहलुओं से छः शाँखे बाहर को निकलती हों, तीन शाखें शमा'दान के एक पहलू से निकलें और तीन दूसरे पहलू से।

³³~एक शाख में बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो; और दूसरी शाख में भी बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो; इसी तरह शमा'दान की छहों शाखों में यह सब लगा हुआ हो।³⁴~और खुद शमादान में बादाम के फूल की सूरत की चार प्यालियाँ अपने-अपने लट्टू और फूल समेत हों।

³⁵~और दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों शमा'दान की छहों बाहर को निकली हुई शाखें ऐसी ही हों।³⁶~या'नी लट्टू और शाखें और शमा 'दान सब एक ही टुकड़े के बने हों, यह सबका सब ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से गढ़ कर बनाया जाए।

³⁷~और तू उसके लिए सात चराग़ बनाना, यही चराग़ जलाए जाएँ ताकि शमा'दान के सामने रौशनी हो।³⁸~और उसके गुलगीर और गुलदान ख़ालिस सोने के हों।

³⁹~शमा'दान और यह सब बर्तन एक किन्तार ख़ालिस सोने के बने हुए हों।⁴⁰~और देख, तू इनको ठीक इनके नमूने के मुताबिक़ जो तुझे पहाड़ पर दिखाया गया है बनाना।

Chapter 26

¹~"और तू घर के लिए दस पर्दे बनाना; यह बटे हुए बारीक कतान और आसमानी किरमिज़ी और सुर्ख रंग के कपड़ों के हों और इनमें किसी माहिर उस्ताद से करूबियों की सूरत कढ़वाना।²~हर पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ हो और सब पर्दे एक ही नाप के हों।³~और पाँच पर्दे एक दूसरे से जोड़े जाएँ और बाक़ी पाँच पर्दे भी एक दूसरे से जोड़े जाएँ।

⁴~और तू एक बड़े पर्दे के हाशिये में बटे हुए किनारे की तरफ़ जो जोड़ा जाएगा आसमानी रंग के तुकमे बनाना और ऐसे ही दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा तुकमे बनाना।⁵~पचास तुकमे एक बड़े पर्दे में बनाना और पचास ही दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा बनाना, और सब तुकमे एक दूसरे के आमने सामने हों।⁶~और सोने की पचास घुन्डियाँ बना कर इन पर्दों को इन्हीं घुन्डियों से एक दूसरे के साथ जोड़ देना, तब वह घर एक हो जाएगा।

⁷~और तू बकरी के बाल के पर्दे बनाना ताकि घर के ऊपर खेमा का काम दें, ऐसे पर्दे ग्यारह हों।⁸और हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ हो, वह ग्यारह हों, पर्दे एक ही नाप के हों।⁹~और तू पाँच पर्दे एक जगह और छः पर्दे एक जगह आपस में जोड़ देना, और छठे पर्दे को खेमे के सामने मोड़ कर दोहरा कर देना।

¹⁰~और तू पचास तुकमे उस पर्दे के हाशिये में, जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही तुकमे दूसरी तरफ़ के पर्दे के हाशिये में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनाना।¹¹~और पीतल की पचास घुन्डियाँ बना कर इन घुन्डियों को तुकमों में पहना देना और खेमे को जोड़ देना ताकि वह एक हो जाए।

¹²और खेमे के पर्दों का लटका हुआ हिस्सा, या'नी आधा पर्दा जो बचा रहेगा वह घर की पिछली तरफ़ लटका रहे।¹³~और खेमे के पर्दों की लम्बाई के बाक़ी हिस्से में से एक हाथ पर्दा इधर से और एक हाथ पर्दा उधर से घर की दोनों तरफ़ इधर और उधर लटका रहे ताकि उसे ढाँक ले।¹⁴~और तू इस खेमे के लिए मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालों का गिलाफ़ और उसके ऊपर तुख्सों की खालों का गिलाफ़ बनाना।

¹⁵~"और तू घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाना कि खड़े किए जाएँ।¹⁶~हर तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो।¹⁷~और हर तख्ते में दो-दो चूल्हे हों जो एक दूसरे से मिली हुई हों, घर के सब तख्ते इसी तरह के बनाना।¹⁸और घर के लिए जो तख्ते तू बनाएगा उनमें से बीस तख्ते दाख़िखनी रुख के लिए हों।

¹⁹~और इन बीसों तख्तों के नीचे चाँदी के चालीस खाने बनाना या'नी हर एक तख्ते के नीचे उसकी दोनों चूल्हों के लिए दो-दो खाने।²⁰~और घर~की दूसरी तरफ़ या'नी उत्तरी रुख के लिए बीस तख्ते हों।²¹~और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही खाने हों, या'नी एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो खाने।

²²~और घर~के पिछले हिस्से के लिए पश्चिमी रुख में छः तख्ते बनाना।²³~और उसी पिछले हिस्से में घर के कोनों के लिए दो तख्ते बनाना।²⁴~यह नीचे से दोहरे हों और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक हल्के में मिलाए जाएँ, दोनों तख्ते इसी ढब के हों, यह तख्ते दोनों कोनों के लिए होंगे।²⁵~तब आठ तख्ते और चाँदी के सोलह खाने होंगे, या'नी एक एक तख्ते के लिए दो दो खाने।

²⁶~"और तू कीकर की लकड़ी के बेन्डे बनाना, पाँच बेन्डे घर के एक पहलू के तख्तों के लिए,²⁷~और पाँच बेन्डे घर के दूसरे पहलू के तख्तों के लिए, और पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से या'नी पश्चिमी रुख के तख्तों के लिए,²⁸~और वस्ती बेन्डा जो तख्तों के बीच में हो, वह खेमे की एक हद से दूसरी हद तक पहुँचे।

²⁹और तू तख्तों को सोने से मंढ़ना और बेन्डों के घरों के लिए सोने के कड़े बनाना और बेन्डों को भी सोने से मंढ़ना।³⁰~और तू घर~को उसी नमूने के मुताबिक़ बनाना जो पहाड़ पर दिखाया गया है।

³¹~"और तू आसमानी-अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का एक पर्दा बनाना, और उसमें किसी माहिर उस्ताद से करूबियों की सूरत कढ़वाना।³²~और उसे सोने से मंढ़े हुए कीकर के चार सुतूनों पर लटकाना, इनके कुन्डे सोने के हों और चाँदी के चार खानों पर खड़े किए जाएँ,³³~और पर्दे को घुन्डियों के नीचे लटकाना और शहादत के सन्दूक को वहीं पर्दे के अन्दर ले जाना और यह पर्दा तुम्हारे लिए पाक मक्काम को पाकतरीन मक्काम से अलग करेगा।

³⁴~और तू सरपोश को पाकतरीन मक्काम में शहादत के सन्दूक पर रखना।³⁵~और मेज़ को पर्दे के बाहर रख कर शमा'दान को उसके सामने घर की दाख़िखनी रुख में रखना या'नी मेज़ उत्तरी रुख में रखना।

³⁶~और तू एक पर्दा खेमे के दरवाज़े के लिए आसमानी अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना और उस पर बेल बूटे कढ़े हुए हों।³⁷~और इस पर्दे के लिए कीकर की लकड़ी के पाँच सुतून बनाना और उनको सोने से मंढ़ना और उनके कुन्डे सोने के हों, जिनके लिए तू पीतल के पाँच खाने ढाल कर बनाना।

Chapter 27

¹"और तू कीकर की लकड़ी की कुर्बानगाह पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनाना; वह कुर्बानगाह चौखुन्टी और उसकी ऊँचाई तीन हाथ हो।²और तू उसके लिए उसके चारों कोनों पर सींग बनाना, और वह सींग और कुर्बानगाह सब एक ही टुकड़े के हों और तू उनको पीतल से मढ़ना।

³और तू उसकी राख उठाने के लिए देगें और बेलचे और कटोरे और सीखें और अन्नोठियाँ बनाना; उसके सब बर्तन पीतल के बनाना।⁴और उसके लिए पीतल की जाली की झंजरी बनाना और उस जाली के चारों कोनों पर पीतल के चार कड़े लगाना।

⁵और उस झंजरी को कुर्बानगाह की चारों तरफ़ के किनारे के नीचे इस तरह लगाना कि वह ऊँचाई में कुर्बानगाह की आधी दूर तक पहुँचे।⁶और तू कुर्बानगाह के लिए कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको पीतल से मढ़ना।

⁷और तू उन चोबों को कड़ों में पहना देना कि जब कभी कुर्बानगाह उठाई जाए, वह चोबें उसकी दोनों तरफ़ रहें।⁸तख्तों से वह कुर्बानगाह बनाना और वह खोखली हो। वह उसे ऐसी ही बनाएँ जैसी तुझे पहाड़ पर दिखाई गई है।

⁹"फिर तू घर के लिए सहन बनाना, उस सहन की दाखिखनी तरफ़ के लिए बारीक बटे हुए कतान के पर्दे हों जो मिला कर सौ हाथ लम्बे हों; यह सब एक ही रुख में हों।¹⁰और उनके लिए बीस सुतून बनें और सुतूनों के लिए पीतल के बीस ही खाने बनें और इन सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की हों।

¹¹इसी तरह उत्तरी रुख के लिए पर्दे सब मिला कर लम्बाई में सौ हाथ हों, उनके लिए भी बीस ही सुतून और सुतूनों के लिए बीस ही पीतल के खाने बनें और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की हों।¹²और सहन की पश्चिमी रुख की चौड़ाई में पचास हाथ के पर्दे हों, उनके लिए दस सुतून और सुतूनों के लिए दस ही खाने बनें।¹³और पूर्वी रुख में सहन हो।

¹⁴और सहन के दरवाज़े के एक पहलू के लिए पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, जिनके लिए तीन सुतून और सुतूनों के लिए तीन ही खाने बनें।¹⁵और दूसरे पहलू के लिए भी पन्द्रह हाथ के पर्दे और तीन सुतून और तीन ही खाने बनें।¹⁶और सहन के दरवाज़े के लिए बीस हाथ का एक पर्दा हो जो आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ हो और उस पर बेल-बूटे कड़े हों, उसके सुतून चार और सुतूनों के खाने भी चार ही हों।

¹⁷और सहन के आस पास सब सुतून चाँदी की पट्टियों से जड़े हुए हों और उनके कुन्डे चाँदी के और उनके खाने पीतल के हों।¹⁸सहन की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई हर जगह पचास हाथ और कनात की ऊँचाई पाँच हाथ ही, पर्दे बारीक बटे हुए कतान के और सुतूनों के खाने पीतल के हों।¹⁹घर के तरह तरह के काम के सब सामान और वहाँ की मेखें और सहन की मेखे यह सब पीतल के हों।

²⁰और तू बनी-इसाईल को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूट कर निकाला हुआ जैतून का खालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ ताकि चरागा हमेशा जलता रहे।²¹खेमा-ए-इजितमा'अ में उस पर्दे के बाहर, जो शहादत के सन्दूक के सामने होगा, हारून और उसके बेटे शाम से सुबह तक शमा 'दान को खुदावन्द के सामने अरास्ता रखें, यह दस्तूर-उल'अमल बनी-इसाईल के लिए नसल-दर-नसल हमेशा क़ायम रहेगा।

Chapter 28

¹"और तू बनी-इसाईल में से हारून को जो तेरा भाई है, और उसके साथ उसके बेटों को अपने नज़दीक कर लेना; ताकि हारून और उसके बेटे नदब और अबीहू और इली'अज़र और इतमर कहानत के 'उहदे पर होकर मेरी खिदमत करें'² और तू अपने भाई हारून के लिए 'इज़ज़त और ज़ीनत के लिए पाक लिबास बना देना।³~और तू उन सब रोशन ज़मीरों से जिनको मैंने हिकमत की रूह से भरा है, कह कि वह हारून के लिए लिबास बनाएँ ताकि वह पाक होकर मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे।

⁴और जो लिबास वह बनाएँगे यह हैं: या'नी सीना बन्द और अफूद और जुब्बा और चार खाने का कुरता, और 'अमामा, और कमरबन्द, वह तेरे भाई हारून और उसके बेटों के लिए यह पाक लिबास बनाएँ, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे।⁵ और वह सोना और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़े और महीन कतान लें।

⁶~"और वह अफ़ोद सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाएँ, जो किसी माहिर उस्ताद के हाथ का काम हो।⁷ और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों मोंढों के सिरे आपस में मिला दिए जाएँ।⁸ और उसके ऊपर जो कारीगरी से बना हुआ पटका उसके बाँधने के लिए होगा, उस पर अफ़ोद की तरह काम हो और वह उसी कपड़े का हो, और सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बुना हुआ हो।⁹ और तू दो सुलेमानी पत्थर लेकर उन पर इसाईल के बेटों के नाम कन्दा कराना।

¹⁰~उनमें से छः के नाम तो एक पत्थर पर और बाक़ियों के छः नाम दूसरे पत्थर पर उनकी पैदाइश की तरतीब के मुवाफ़िक हों।¹¹ तू पत्थर के कन्दाकार को लगा कर अँगूठी के नक्श की तरह इसाईल के बेटों के नाम उन दोनों पत्थरों पर खुदवा कर के उनको सोने के खानों में जड़वाना।¹² और दोनों पत्थरों को अफ़ोद के दोनों मोंढों पर लगाना ताकि यह पत्थर इसाईल के बेटों की यादगारी के लिए हों, और हारून उनके नाम खुदावन्द के सामने अपने दोनों कन्थों पर यादगारी के लिए लगाए रहे।

¹³"और तू सोने के खाने बनाना,¹⁴ और खालिस सोने की दो ज़ंजीरें डोरी की तरह गुन्थी हुई बनाना और इन गुन्थी हुई ज़ंजीरों को खानों में जड़ देना।

¹⁵"और 'अदल का सीना बन्द किसी माहिर उस्ताद से बनवाना और अफ़ोद की तरह सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना।¹⁶~वह चौखुन्टा और दोहरा हो, उसकी लम्बाई एक बालिशत और चौड़ाई भी एक ही बालिशत हो।

¹⁷और चार कतारों में उस पर जवाहर जड़ना, पहली क़तार में याकूत-ए-सुर्ख और पुखराज और गौहर-ए-शब चरागा हो।¹⁸~दूसरी क़तार में ज़मुरूद और नीलम और हीरा,¹⁹~तीसरी क़तार में लश्म और यश्म और याकूत,²⁰~चौथी क़तार में फ़ीरोज़ा और संग-ए-सुलेमानी और ज़बरजद; यह सब सोने के खानों में जड़े जाएँ।

²¹~यह जवाहर इसाईल के बेटों के नामों के मुताबिक़ शुमार में बारह हों और अँगूठी के नक्श की तरह यह नाम जो बारह क़बीलों के नाम होंगे, उन पर खुदवाए जाएँ।²²~और तू सीनाबन्द पर डोरी की तरह गुन्थी हुई खालिस सोने की दो ज़ंजीरें लगाना।²³~और सीनाबन्द के लिए सोने के दो हल्के बना कर उनको सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाना,²⁴ और सोने की दोनों गुन्थी हुई ज़ंजीरों को उन दोनों हल्कों में जो सीनाबन्द के दोनों सिरों पर होंगे लगा देना।

²⁵और दोनों गुन्थी हुई ज़ंजीरों के बाक़ी दोनों सिरों को दोनों पत्थरों के खानों में जड़ कर उनको अफ़ोद के दोनों मोंढों पर सामने की तरफ़ लगा देना।²⁶~और सोने के और दो हल्के बनाकर उनको सीनाबन्द के दोनों सिरों के उस हाशिये में लगाना जो अफ़ोद के अन्दर की तरफ़ है।

²⁷~फिर सोने के दो हल्के और बनाकर उनको अफ़ोद के दोनों मोंढों के नीचे उसके अगले हिस्से में लगाना जहाँ अफ़ोद जोड़ा जाएगा, ताकि वह अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए पटके के ऊपर रहे।²⁸ और वह सीनाबन्द को लेकर उसके हल्कों को एक नीले फ़ीते से बाँधे, ताकि यह सीनाबन्द अफ़ोद के कारीगरी से बने हुए पटके के ऊपर भी रहे और अफ़ोद से भी अलग न होने पाए।

²⁹और हारून इसाईल के बेटों के नाम 'अदल के सीनाबन्द पर अपने सीने पर पाक मक़ाम में दाखिल होने के वक़्त खुदावन्द के आमने सामने लगाए रहे, ताकि हमेशा उनकी यादगारी हुआ करे।³⁰~और तू 'अदल के सीनाबन्द में ऊरीम और तुम्मीम को रखना और जब हारून खुदावन्द के सामने जाए तो यह उसके दिल के ऊपर हों, यूँ हारून बनी-इसाईल के फ़ैसले को अपने दिल के ऊपर खुदावन्द के आमने सामने ~हमेशा लिए रहेगा।

³¹"और तू अफ़ोद का जुब्बा बिल्कुल आसमानी रंग का बनाना।³²~और उसका गिरेबान बीच में हो, और ज़िरह के गिरेबान की तरह उसके गिरेबान के चारों तरफ़ बुनी हुई गोद हो ताकि वह फटने न पाए।

³³और उसके दामन के घेर में चारों तरफ़ आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के अनार बनाना और उनके बीच चारों तरफ़ सोने की घंटियाँ लगाना।³⁴~या'नी जुब्बे के दामन के पूरे घेर में एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद अनार, फिर एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद अनार।³⁵~इस जुब्बे को हारून खिदमत के वक़्त पहना करे, ताकि जब-जब वह पाक मक़ाम के अन्दर खुदावन्द के सामने जाए या वहाँ से निकले तो उसकी आवाज़ सुनाई दे, कहीं ऐसा न हो कि वह मर जाए।

³⁶~"और तू खालिस सोने का एक पत्तर बना कर उस पर अँगूठी के नक्श की तरह यह ~खुदावना: 'खुदावन्द के लिए मुक़द्दस'।³⁷~और उसे नीले फ़ीते से बाँधना, ताकि वह 'अमामे पर या'नी 'अमामे के सामने के हिस्से पर हो।³⁸~और यह हारून की पेशानी पर रहे ताकि जो कुछ बनी-इसाईल अपने पाक हदियों के ज़रिए' से पाक ठहराएँ, उन पाक ठहराई हुई चीज़ों की बदी हारून उठाए और यह उसकी पेशानी पर हमेशा रहे, ताकि वह खुदावन्द के सामने मक़बूल हों।

³⁹"और कुरता बारीक कतान का बुना हुआ और चार खाने का हो और 'अमामा भी बारीक कतान ही का बनाना, और एक कमरबन्द बनाना जिस पर बेल बूटे कढ़ें हों।

⁴⁰"और हारून के बेटों के लिए कुरते बनाना और 'इज़ज़त और ज़ीनत के लिए उनके लिए कमरबन्द और पगड़ियाँ बनाना।⁴¹~और तू यह सब अपने भाई हारून और उसके साथ उसके बेटों को पहनाना, और उनको मसह और मख्सूस और पाक करना ताकि वह सब मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दें।

⁴²~और तू उनके लिए कतान के पाजामे बना देना ताकि उनका बदन ढंका रहे, यह कमर से रान तक के हों।⁴³और हारून और उसके बेटे जब-जब खेमा-ए-इजितमा'अ में दाखिल हों या खिदमत करने को पाक मक्काम के अन्दर कुर्बानगाह के नज़दीक जाएँ, उनको पहना करें कहीं ऐसा न हो कि गुनाहगार ठहरें और मर जाएँ। यह दस्तूर-उल-अमल उसके और उसकी नसल के लिए हमेशा रहेगा।

Chapter 29

¹और उनको पाक करने की खातिर ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दें, तू उनके लिए यह करना कि एक बछड़ा और दो बे- 'ऐब मेंढे लेना,

²~और बेखमीरी रोटी और बे-खमीर के कुल्चे जिनके साथ तेल मिला हो और तेल की चुपड़ी हुई बे-खमीरी चपातियाँ लेना। यह सब गेहूँ के मैदे की बनाना।

³~और इनको एक टोकरी में रख कर उस टोकरी को बछड़े और दोनों मेंढों समेत आगे ले आना।⁴~फिर हारून और उसके बेटों को खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर लाकर उनको पानी से नहलाना।

⁵~और वह लिबास लेकर हारून को कुरता और अफ़ोद का जुब्बा और अफ़ोद और सीनाबन्द पहनाना, और अफ़ोद का कारीगरी से बुना हुआ कमरबन्द उसके बांध देना।⁶~और 'अमामे को उसके सिर पर रख कर उस 'अमामे के ऊपर पाक ताज लगा देना।⁷~और मसह करने का तेल लेकर उसके सिर पर डालना और उसको मसह करना।

⁸~फिर उसके बेटों को आगे लाकर उनको कुरते पहनाना।⁹~और हारून और उसके बेटों के कमरबन्द लपेट कर उनके पगड़ियाँ बाँधना ताकि कहानत के 'उहदे पर हमेशा के लिए उनका हक़ रहे; और हारून और उसके बेटों को मख्सूस करना।

¹⁰~"फिर तू उस बछड़े को खेमा-ए-इजितमा'अ के सामने लाना, और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस बछड़े के सिर पर रखें।¹¹~फिर उस बछड़े को खुदावन्द के आगे खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर ज़बह करना।

¹²~और उस बछड़े के खून में से कुछ लेकर उसे अपनी उंगली से कुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी सारा खून कुर्बानगाह के पाये पर उंडेल देना।¹³~फिर उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और जिगर पर की झिल्ली को और दोनों गुदों को और उनके ऊपर की चर्बी को लेकर सब कुर्बानगाह पर जलाना।

¹⁴~लेकिन उस बछड़े के गोश्त और खाल और गोबर को खेमागाह के बाहर आग से जला देना इसलिए कि यह खता की कुर्बानी है।

¹⁵~"फिर तू एक मेंढे को लेना, और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखें।¹⁶और तू उस मेंढे को ज़बह करना और उसका खून लेकर कुर्बानगाह पर चारों तरफ़ छिड़कना।¹⁷~और तू मेंढे को टुकड़े-टुकड़े काटना और उसकी अंतड़ियाँ और पायों को धो कर उसके टुकड़ों और उसके सिर के साथ मिला देना।¹⁸~फिर इस पूरे मेंढे को कुर्बानगाह पर जलाना। यह खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानी है। यह राहतअंगेज़ खुशबू या'नी खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी है।

¹⁹~"फिर दूसरे मेंढे को लेना और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखें।²⁰~और तू इस मेंढे को ज़बह करना और उसके खून में से कुछ लेकर हारून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर और दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाना, और खून को कुर्बानगाह पर चारों तरफ़ छिड़क देना।

²¹~और कुर्बानगाह पर के खून और मसह करने के तेल में से कुछ कुछ लेकर हारून और उसके लिबास पर, और उसके साथ उसके बेटों और उनके लिबास पर छिड़कना, तब वह अपने लिबास समेत और उसके साथ ही उसके बेटे अपने-अपने लिबास समेत पाक होंगे।

²²~और तू मेंढे की चर्बी और मोटी दुम को, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं उसको और जिगर पर की झिल्ली को, और दोनों गुदों को और उनके ऊपर की चर्बी को और दहनी रान को लेना; इस लिए कि यह खास मेंढा है।²³~और बेखमीरी रोटी की टोकरी में से जो खुदावन्द के आगे रखी होगी, रोटी का एक गिरदा और एक कुल्चा जिसमें तेल मिला हुआ हो और एक चपाती लेना।

²⁴~और इन सभों को हारून और उसके बेटों के हाथों पर रख कर इनको खुदावन्द के सामने हिलाना, ताकि यह हिलाने का हदिया हो।²⁵~फिर इनको उनके हाथों से लेकर कुर्बानगाह पर सोख्तनी कुर्बानी के ऊपर जला देना, ताकि वह खुदावन्द के आगे राहतअंगेज़ खुशबू हो; यह खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी है।

²⁶~"और तू हारून के खास मेंढे का सीना लेकर उसको खुदावन्द के सामने हिलाना ताकि वह हिलाने का हदिया हो, यह तेरा हिस्सा ठहरेगा।²⁷और तू हारून और उसके बेटों के खास मेंढे के हिलाने के हदिये के सीने को जो हिलाया जा चुका है, और उठाए जाने के हदिये की रान को जो उठाई जा चुकी है, लेकर उन दोनों को पाक ठहराना,²⁸~ताकि यह सब बनी-इसाईल की तरफ़ से हमेशा के लिए हारून और उसके बेटों का हक़ हो क्योंकि यह उठाए जाने का हदिया है। इसलिए यह बनी-इसाईल की तरफ़ से उनकी सलामती के ज़बीहों में से उठाए जाने का हदिया होगा, जो उनकी तरफ़ से खुदावन्द के लिए उठाया गया है।

²⁹~'और हारून के बा'द उसके पाक लिबास उसकी औलाद के लिए होंगे ताकि उन ही में वह मसह-ओ-मख्सूस किए जाएँ।³⁰~उसका जो बेटा उसकी जगह काहिन हो वह जब पाक मक़ाम में खिदमत करने को खेमा-ए-इजितमा'अ में दाखिल हो तो उनको सात दिन तक पहने रहे।

³¹~और तू खास मेंढे को लेकर उसके गोश्त को किसी पाक जगह में उबालना।³²~और हारून और उसके बेटे मेंढे का गोश्त और टोकरी की रोटियाँ खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खाएँ।³³~और जिन चीज़ों से उनको मख्सूस और पाक करने के लिए कफ़़ारा दिया जाए वह उनको भी खाएँ, लेकिन अजनबी शख्स उनमें से कुछ न खाने पाए क्योंकि यह चीज़ें पाक हैं।³⁴और अगर मख्सूस करने के गोश्त या रोटी में से कुछ सुबह तक बचा रह जाए तो उस बचे हुए को आग से जला देना, वह हरगिज़ न खाया जाए इसलिए कि वह पाक है।

³⁵~"और तू हारून और उसके बेटों के साथ जो कुछ मैंने हुक्म दिया है वह सब 'अमल में लाना, और सात दिन तक उनको मख्सूस करते रहना।³⁶~और तू हर रोज़ खता की कुर्बानी के बछड़े को कफ़़ारे के लिए ज़बह करना; और तू कुर्बानगाह को उसके कफ़़ारा देने के वक़्त साफ़ करना, और उसे मसह करना ताकि वह पाक हो जाए,³⁷~तू सात दिन तक कुर्बानगाह के लिए कफ़़ारा देना और उसे पाक करना तो कुर्बानगाह निहायत पाक हो जाएगी, और जो कुछ उससे छू जाएगा वह भी पाक ठहरेगा

³⁸~"और तू हर रोज़ सदा एक-एक बरस के दो-दो बर्रे कुर्बानगाह पर चढ़ाया करना।³⁹~एक बर्रा सुबह को और दूसरा बर्रा ज़वाल और गुरूब के बीच चढ़ाना।

⁴⁰~और एक बर्रे के साथ ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा देना, जिसमें हीन के चौथे हिस्से की मिक्कदार में कूट कर निकाला हुआ तेल मिला हुआ हो और हीन के चौथे हिस्से की मिक्कदार में तपावन के लिए मय भी देना।

⁴¹~और तू दूसरे बर्रे को ज़वाल और गुरूब के बीच चढ़ाना और उसके साथ सुबह की तरह नज़ की कुर्बानी और वैसा ही तपावन देना, जिससे वह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू और आतिशीन कुर्बानी ठहरे।⁴²ऐसी ही सोख्तनी कुर्बानी तुम्हारी नसल दर नसल खेमा-ए- इज्जिमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के आगे हमेशा हुआ करे। वहाँ मैं तुम से मिलूँगा और तुझ से बातें करूँगा ।

⁴³~और वहीं मैं बनी इस्राईल से मुलाक़ात करूँगा और वह मक़ाम मेरे जलाल से पाक होगा।⁴⁴और मैं खेमा-ए-इज्जितमा'अ को और कुर्बानगाह को पाक करूँगा, और मैं हारून और उसके बेटों को पाक करूँगा ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत की अन्जाम दें।

⁴⁵और मैं बनी-इस्राईल के बीच सुकूनत करूँगा और उनका खुदा हूँगा।⁴⁶~तब वह जान लेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ जो उनको मुल्क -ए-मिस्र से इसलिए निकाल कर लाया कि मैं उनके बीच सुकूनत करूँ। मैं ही खुदावन्द उनका खुदा हूँ।

Chapter 30

¹और तू खुशबू जलाने के लिए कीकर की लकड़ी की एक कुर्बानगाह बनाना।²उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ हो, वह चौखुन्टी रहे और उसकी ऊँचाई दो हाथ हो और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ।

³और तू उसकी ऊपर की सतह और चारों पहलूओं को जो उसके चारों ओर हैं, और उसके सींगों को खालिस सोने से मढ़ना और उसके लिए चारों ओर एक ज़रीन ताज बनाना।⁴और तू उस ताज के नीचे उसके दोनों पहलुओं में सोने के दो कड़े उसकी दोनों तरफ़ बनाना। वह उसके उठाने की चोबों के लिए खानों का काम देंगे।

⁵और चोबों कीकर की लकड़ी की बना कर उनको सोने से मढ़ना।⁶और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो शहादत के सन्दूक के सामने है; वह सरपोश के सामने रहे जो शहादत के सन्दूक के ऊपर है, जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा।

⁷इसी पर हारून खुशबूदार खुशबू जलाया करे, हर सुबह चरागों को ठीक करते वक़्त खुशबू जलाएँ।⁸और ज़वाल और गुरूब के बीच भी जब हारून चरागों को रोशन करे तब खुशबू जलाए, यह खुशबू खुदावन्द के सामने तुम्हारी नसल-दर-नसल हमेशा जलाया जाए।⁹और तुम उस पर और तरह की खुशबू न जलाना, न उस पर सोखतनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी चढ़ाना और कोई तपावन भी उस पर न तपाना।

¹⁰और हारून साल में एक बार उसके सींगों पर कफ़्रारा दे। तुम्हारी नसल-दर-नसल साल में एक बार इस ख़ता की कुर्बानी के खून से जो कफ़्रारे के लिए हो, उसके लिए कफ़्रारा दिया जाए। यह खुदावन्द के लिए सबसे ज़्यादा पाक है।

¹¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹²"जब तू बनी-इसाईल का शुमार करे तो जितनों का शुमार हुआ हो वह फ़ी-मर्द शुमार के वक़्त अपनी जान का फ़िदिया खुदावन्द के लिए दें, ताकि जब तू उनका शुमार कर रहा हो उस वक़्त कोई वबा उनमें फैलने न पाए।¹³हर एक जो निकल-निकल कर शुमार किए हुआओं में मिलता जाए, वह मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से नीम मिस्काल दे। मिस्काल बीस जीरहों की होती है। यह नीम मिस्काल खुदावन्द के लिए नज़र है।¹⁴जितने बीस बरस के या इससे ज़्यादा उम्र के निकल निकल कर शुमार किए हुआओं में मिलते जाएँ, उनमें से हर एक खुदावन्द की नज़र दे।

¹⁵जब तुम्हारी जानों के कफ़्रारे के लिए खुदावन्द की नज़र दी जाए, तो दौलतमन्द नीम मिस्काल से ज़्यादा न दे और न ग़रीब उससे कम दे।¹⁶और तू बनी-इसाईल से कफ़्रारे की नव़दी लेकर उसे खेमा -ए-इजितमा'अ के काम में लगाना, ताकि वह बनी-इसाईल की तरफ़ से तुम्हारी जानों के कफ़्रारे के लिए खुदावन्द के सामने यादगार हो।"

¹⁷फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,¹⁸"तू धोने के लिए पीतल का एक हौज़ और पीतल ही की उसकी कुर्सी बनाना, और उसे खेमा-ए-इजितमा'अ और कुर्बानगाह के बीच में रख कर उसमें पानी भर देना।

¹⁹और हारून और उसके बेटे अपने हाथ पाँव उससे धोया करें।²⁰खेमा-ए-इजितमा'अ में दाखिल होते वक़्त पानी से धो लिया करें ताकि हलाक न हों, या जब वह कुर्बानगाह के नज़दीक खिदमत के लिए या'नी खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानी पेश करने को आएँ,²¹तो अपने-अपने हाथ पाँव धो लें ताकि मर न जाएँ। यह उसके और उसकी औलाद के लिए नसल-दर-नसल हमेशा की रिवायत हो।"

²²और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²³"कि तू मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से खास-खास खुशबूदार मसाले लेना; या'नी अपने आप निकला हुआ मुर्र पाँच सौ मिस्काल, और उसका आधा या'नी ढाई सौ मिस्काल दारचीनी, और खुशबूदार अगर ढाई सौ मिस्काल,²⁴और तज पाँच सौ मिस्काल, और जैतून का तेल एक हीन;²⁵और तू उनसे मसह करने का पाक तेल बनाना, या'नी उनकी गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ मिला कर एक खुशबूदार रौगन तैयार करना। यही मसह करने का पाक तेल होगा।

²⁶इसी से तू खेमा -ए- इजितमा'अ को, और शहादत के सन्दूक को,²⁷और मेज़ को उसके बर्तन के साथ, और शमा'दान को उसके बर्तन के साथ, और खुशबू जलाने की कुर्बानगाह को²⁸और सोखतनी कुर्बानी पेश करने के मज़बह को उसके सब बर्तन के साथ, और हौज़ को और उसकी कुर्सी को मसह करना;

²⁹और तू उनको पाक करना ताकि वह निहायत पाक हो जाएँ, जो कुछ उनसे छू जाएगा वह पाक ठहरेगा।³⁰और तू हारून और उसके बेटों को मसह करना और उनको ~पाक करना ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दें।³¹और तू बनी-इसाईल से कह देना, 'यह तेल मेरे लिए तुम्हारी नसल दर नसल मसह करने का पाक तेल होगा।

³²यह किसी आदमी के जिस्म पर न डाला जाए, और न तुम कोई और रौगन इसकी तरकीब से बनाना; इस लिए के यह पाक है और तुम्हारे नज़दीक पाक ठहरे।

³³जो कोई इसकी तरह कुछ बनाए या इसमें, से कुछ किसी अजनबी पर लगाए वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।"

³⁴और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "तू खुशबूदार मसाले मुर्र और मस्तकी और लौन और खुशबूदार मसाले के साथ खालिस लुबान वज्ज में बराबर-बराबर लेना,

³⁵और नमक मिलाकर उनसे गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ खुशबूदार रौगन की तरह साफ़ और पाक खुशबू बनाना।³⁶और इसमें से कुछ खूब बारीक पीस कर खेमा-ए-इजितमा'अ में शहादत के सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा रखना। यह तुम्हारे लिए निहायत पाक ठहरे।

³⁷और जो खुशबू तू बनाए उसकी तरकीब के मुताबिक़ तुम अपने लिए कुछ न बनाना। वह खुशबू तेरे नज़दीक खुदावन्द के लिए पाक हो।³⁸~जो कोई सूघने के लिए भी उसकी तरह कुछ बनाए वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।"

Chapter 31

¹फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, ²"देख मैंने बज़लीएल-बिन-ऊरी, बिन हूर को यहूदाह के क़बीले में से नाम लेकर बुलाया है।

³और मैंने उसको हिकमत और समझ और 'इल्म और हर तरह की कारिगरी में अल्लाह के रूह ~से मा'मूर किया है।⁴ताकि हुनरमन्दी के कामों को ईजाद करे, और सोने और चाँदी और पीतल की चीज़ें बनाए।⁵और पत्थर को जड़ने के लिए काटे और लकड़ी को तराशे, जिससे सब तरह की कारिगरी का काम हो।

⁶और देख, मैंने अहलियाब को जो अख़ीसमक का बेटा और दान के क़बीले में से है उसका साथी मुकर्रर किया है, और मैंने सब रौशन ज़मीरो के दिल में ऐसी समझ रख रखी है कि जिन-जिन चीज़ों का मैंने तुझ को हुक्म दिया है उन सभी को वह बना सके।⁷या'नी खेमा -ए-इजितमा'अ और शहादत का सन्दूक और सरपोश जो उसके ऊपर रहेगा, और खेमों का सब सामान,⁸और मेज़ और उसके बर्तन, और ख़ालिस सोने का शमा'दान और उसके सब बर्तन, और खुशबू जलाने की कुर्बानगाह,⁹और सब बर्तन, और हौज़ और उसकी कुर्सी,

¹⁰और बेल-बूटे कढ़े हुए जामे और हारून काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि काहिन की खिदमत को अन्जाम दें।¹¹और मसह करने का तेल, और मक़दिस के लिए खुशबूदार मसाल्ले का खुशबू: इन सभी को वह जैसा मैंने तुझे हुक्म दिया है वैसा ही बनाएँ।"

¹²और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹³"कि तू बनी-इसाईल से यह भी कह देना, 'तुम मेरे सबतों को ज़रूर मानना, इस लिए कि यह मेरे और तुम्हारे बीच तुम्हारी नसल दर नसल एक निशान रहेगा, ताकि तुम जानों कि मैं खुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ।'¹⁴फिर तुम सबत को मानना इस लिए कि वह तुम्हारे लिए पाक है, जो कोई उसकी बे हुरमती करे वह ज़रूर मार डाला जाए। जो उसमें कुछ काम करे वह अपनी क्रौम में से काट डाला जाए।¹⁵~छ: दिन काम काज किया जाए लेकिन सातवाँ दिन आराम का सबत है जो खुदावन्द के लिए पाक है, जो कोई सबत के दिन काम करे वह ज़रूर मार डाला जाए।

¹⁶~तब बनी-इसाईल सबत को मानें और नसल दर नसल उसे हमेशा का 'अहद' जानकर उसका लिहाज़ रखें।¹⁷~मेरे और बनी-इसाईल के बीच यह हमेशा के लिए एक निशान रहेगा, इस लिए कि छ: दिन में खुदावन्द ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम करके ताज़ा दम हुआ।"

¹⁸~और जब खुदावन्द कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें कर चुका तो उसने उसे शहादत की दो तख्तियाँ दीं, वह~तख्तियाँ पत्थर की और खुदा के हाथ की लिखी हुई थीं।

Chapter 32

¹और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में देर लगाई तो वह हारून के पास जमा' होकर उससे कहने लगे, कि "उठ, हमारे लिए देवता बना दे जो हमारे आगे-आगे चले; क्योंकि हम नहीं जानते कि इस मर्द मूसा को, जो हम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया?"²हारून ने उनसे कहा, "तुम्हारी बीवियों और लड़कों और लड़कियों के कानों में जो सोने की बालियाँ हैं उनको उतार कर मेरे पास ले आओ।"

³चुनाँचे सब लोग उनके कानों से सोने की बालियाँ उतार-उतार कर उनको हारून के पास ले आए।⁴और उसने उनको उनके हाथों से लेकर एक ढाला हुआ बछड़ा बनाया, जिसकी सूरत छेनी से ठीक की। तब वह कहने लगे, "ऐ इस्राईल, यही तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया।"

⁵~यह देख कर हारून ने उसके आगे एक कुर्बानगाह बनाई और उसने 'ऐलान कर दिया कि "कल खुदावन्द के लिए 'ईद होगी।"⁶और दूसरे दिन सुबह सवेरे उठ कर उन्होंने कुर्बानियाँ पेश कीं और सलामती की कुर्बानियाँ पेश अदा कीं ~फिर उन लोगों ने बैठ कर खाया-पिया और उठकर खेल-कूद में लग गए।

⁷तब खुदावन्द ने मूसा को कहा, "नीचे जा, क्योंकि तेरे लोग जिनको तू मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गए हैं।⁸वह उस राह से जिसका मैंने उनको हुक्म दिया था बहुत जल्द फिर गए हैं; उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उसके लिए कुर्बानी चढ़ाकर यह भी कहा, कि "ऐ इस्राईल, यह तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया।"

⁹और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "मैं इस क्रौम को देखता हूँ कि यह बागी क्रौम है।¹⁰इसलिए तू मुझे अब छोड़ दे कि मेरा ग़ज़ब उन पर भड़के और मैं उनको भसम कर दूँ, और मैं तुझे एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा।"¹¹तब मूसा ने खुदावन्द अपने खुदा के आगे मिन्नत करके कहा, "ऐ खुदावन्द, क्यों तेरा ग़ज़ब अपने लोगों पर भड़कता है जिनको तू कुव्वत-ए-'अज़ीम और ताक़तवर हाथों से मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया है?

¹²मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएँ, कि 'वह उनको बुराई के लिए निकाल ले गया, ताकि उनको पहाड़ों में मार डाले और उनको ~इस ज़मीन पर से फ़ना कर दे'? इसलिए तू अपने क्रहर-ओ- ग़ज़ब से बाज़ रह और अपने लोगों से इस बुराई करने के खयाल को छोड़ दे।¹³तू अपने बन्दों, इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब, को याद कर जिनसे तूने अपनी ही क्रसम खा कर यह कहा था, कि मैं तुम्हारी नसल को आसमान के तारों की तरह बढ़ाऊँगा; और यह सारा मुल्क जिसका मैंने ज़िक्र किया है तुम्हारी नसल को बख़्शूँगा कि वह सदा उसके मालिक रहें।"¹⁴तब खुदावन्द ने उस बुराई के खयाल को छोड़ दिया जो उसने कहा था कि अपने लोगों से करेगा।

¹⁵~और मूसा शहादत की दोनों-तख्तिरों-हाथ में लिए हुए उल्टा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा; और वह-तख्तिरों इधर से और उधर से दोनों तरफ़ से लिखी हुई थीं।¹⁶~और वह-तख्तिरों खुदा ही की बनाई हुई थीं, और जो लिखा हुआ था वह भी खुदा ही का लिखा और उन पर खुदा हुआ था।

¹⁷~और जब यशू'अ ने लोगों की ललकार की आवाज़ सुनी तो मूसा से कहा, कि "लश्करगाह में लड़ाई का शोर हो रहा है।"¹⁸मूसा ने कहा, "यह आवाज़ न तो फ़तहमन्दों का नारा है, न मग़लूबों की फ़रियाद; बल्कि मुझे तो गाने वालों की आवाज़ सुनाई देती है।"

¹⁹और लश्करगाह के नज़दीक आकर उसने वह बछड़ा और उनका नाचना देखा। तब मूसा का ग़ज़ब भड़का, और उसने उन-तख्तिरों को अपने हाथों में से पटक दिया और उनकी पहाड़ के नीचे तोड़ डाला।²⁰और उसने उस बछड़े को जिसे उन्होंने बनाया था लिया, और उसको आग में जलाया और उसे बारीक पीस कर पानी पर छिड़का और उसी में से बनी-इस्राईल को पिलवाया।

²¹और मूसा ने हारून से कहा, कि "इन लोगों ने तेरे साथ क्या किया था जो तूने इनको इतने बड़े गुनाह में फँसा दिया?"²²हारून ने कहा, कि "मेरे मालिक का ग़ज़ब न भड़के; तू इन लोगों को जानता है कि गुनाह पर तुले रहते हैं, ~²³चुनाँचे इन्हीं ने मुझ से कहा, कि 'हमारे लिए देवता बना दे जो हमारे आगे-आगे चले, क्योंकि हम नहीं जानते कि इस आदमी मूसा को जो हम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया?'²⁴~तब मैंने इनसे कहा, कि "जिसके यहाँ सोना हो वह उसे उतार लाए।"तब इन्होंने उसे मुझ को दिया और मैंने उसे आग में डाला, तो यह बछड़ा निकल पड़ा।"

²⁵~जब मूसा ने देखा कि लोग बेक्राबू हो गए, क्योंकि हारून ने उनको बेलगाम छोड़कर उनको उनके दुश्मनों के बीच ज़लील कर दिया,²⁶~तो मूसा ने लश्करगाह के दरवाज़े पर खड़े होकर कहा, "जो-जो खुदावन्द की तरफ़ है वह मेरे पास आ जाए।" तब सभी बनी लावी उसके पास जमा' हो गए।²⁷और उसने उनसे कहा, कि "खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि तुम अपनी-अपनी रान से तलवार लटका कर फाटक-फाटक घूम-घूम कर सारी लश्करगाह में अपने अपने भाइयों और अपने अपने साथियों और अपने अपने पड़ोसियों को क्रल्ल करते फिरो।"

²⁸और बनी लावी ने मूसा के कहने के मुवाफ़िक़ 'अमल किया; चुनाँचे उस दिन लोगों में से करीबन तीन हज़ार मर्द मारे गए।²⁹और मूसा ने कहा, कि "आज खुदावन्द के लिए अपने आपको मख़सूस करो; बल्कि हर शख्स अपने ही बेटे और अपने ही भाई के खिलाफ़ हो ताकि वह तुम को आज ही बरकत दे।"

³⁰और दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, कि "तुम ने बड़ा गुनाह किया; और अब मैं खुदावन्द के पास ऊपर जाता हूँ शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़फ़ारा दे सकूँ।"³¹और मूसा खुदावन्द के पास लौट कर गया और कहने लगा, 'हाय, इन लोगों ने बड़ा गुनाह किया कि अपने लिए सोने का देवता बनाया।'³²और अब अगर तू इनका गुनाह मु'आफ़ कर दे तो ख़ैर वरना मेरा नाम उस किताब में से जो तूने लिखी है मिटा दे।"

³³और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "जिसने मेरा गुनाह किया है मैं उसी के नाम को अपनी किताब में से मिटाऊँगा।³⁴अब तू रवाना हो और लोगों को उस जगह ले जा जो मैंने तुझे बताई है। देख, मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे-आगे चलेगा। लेकिन मैं अपने मुतालबे के दिन उनको उनके गुनाह की सज़ा दूँगा।"³⁵और खुदावन्द ने उन लोगों में वबा भेजी, क्योंकि जो बछड़ा हारून ने बनाया वह उन्हीं का बनवाया हुआ था।

Chapter 33

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "उन लोगों को अपने साथ लेकर, जिनको तू मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया, यहाँ से उस मुल्क की तरफ़ रवाना हो जिसके बारे में इब्राहीम और इस्हाक़ और या'कूब से मैंने क़सम खाकर कहा था कि इसे मैं तेरी नसल को दूँगा।²~और मैं तेरे आगे-आगे एक फ़रिश्ते को भेजूँगा; और मैं कना'नियों और अमोरियों और हितियों और फ़रिज़ियों और हवियों और यबूसियों को निकाल दूँगा।³~उस मुल्क में दूध और शहद बहता है; और चूँकि तू बागी-क्रौम है इस लिए मैं तेरे बीच में होकर न चलूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझ को राह में फ़ना कर डालूँ।"

⁴~लोग इस दहशतनाक ख़बर को सुन कर ग़मगीन हुए और किसी ने अपने ज़ेवर न पहने।⁵~क्योंकि खुदावन्द ने मूसा से कह दिया था, कि "बनी-इस्राईल से कहना, कि 'तुम बागी लोग हो, अगर मैं एक लम्हा भी तेरे बीच में होकर चलूँ तो तुझ को फ़ना कर दूँगा। फिर तू अपने ज़ेवर उतार डाल ताकि मुझे मा'लूम हो कि तेरे साथ क्या करना चाहिए।"⁶~चुनाँचे बनी-इस्राईल होरिब पहाड़ से लेकर आगेआगे अपने ज़ेवरों को उतारे रहे।

⁷और मूसा खेमे को लेकर उसे लश्करगाह से बाहर बल्कि लश्करगाह से दूर लगा लिया करता था, और उसका नाम खेमा ए-इजितमा'अ रख्खा। और जो कोई खुदावन्द का तालिब होता वह लश्करगाह के बाहर उसी खेमे की तरफ़ चला जाता था।⁸और जब मूसा बाहर खेमे की तरफ़ जाता तो सब लोग उठकर अपने-अपने खेमे के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और मूसा के पीछे देखते रहते थे, जब तक वह खेमे के अन्दर दाखिल न हो जाता।⁹~और जब मूसा खेमे के अन्दर चला जाता तो बादल का सुतून उतरकर खेमे के दरवाज़े पर ठहरा रहता, और खुदावन्द मूसा से बातें करने लगता।

¹⁰~और सब लोग बादल के सुतून को खेमे के दरवाज़े पर ठहरा हुआ देखते थे, और सब लोग उठ-उठकर अपने-अपने खेमे के दरवाज़े पर से उसे सिज्दा करते थे।¹¹~और जैसे कोई शख्स अपने दोस्त से बात करता है वैसे ही खुदावन्द आमने सामने होकर मूसा से बातें करता था। और मूसा लश्करगाह को लौट आता था, लेकिन उसका खादिम यशू'अ जो नून का बेटा और जवान आदमी था खेमे से बाहर नहीं निकलता था।

¹²~और मूसा ने खुदावन्द से कहा, "देख, तू मुझ से कहता है, कि "इन लोगों को ले चल, 'लेकिन मुझे यह नहीं बताया कि तू किसको मेरे पास भेजेगा। हालाँकि तूने यह भी कहा है, कि मैं तुझ को नाम से जानता हूँ और तुझ पर मेरे क़रम की नज़र है।"¹³तब अगर मुझ पर तेरे क़रम की नज़र है तो मुझ को अपनी राह बता, जिससे मैं तुझे पहचान लूँ ताकि मुझ पर तेरे क़रम की नज़र रहे; और यह खयाल रख कि यह क्रौम तेरी ही उम्मत है।"

¹⁴~तब उसने कहा, "मैं साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।"¹⁵~मूसा ने कहा, "अगर तू साथ न चले तो हम को यहाँ से आगे न ले जा।"¹⁶~क्योंकि यह क्यूँ कर मा'लूम होगा कि मुझ पर और तेरे लोगों पर तेरे क़रम की नज़र है? क्या इसी तरह से नहीं कि तू हमारे साथ-साथ चले, ताकि मैं और तेरे लोग इस ज़मीन की सब क्रौमों से निराले ठहरें?

¹⁷~खुदावन्द ने मूसा से कहा, "मैं यह काम भी जिसका तूने ज़िक्र किया है, करूँगा क्योंकि तुझ पर मेरे क़रम की नज़र है और मैं तुझ को नाम से पहचानता हूँ।"¹⁸~तब वह बोल उठा, कि "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, मुझे अपना जलाल दिखा दे।"

¹⁹उसने कहा, "मैं अपनी सारी नेकी तेरे सामने ज़ाहिर करूँगा और तेरे ही सामने खुदावन्द के नाम का 'ऐलान करूँगा; और मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ मेहरबान हूँगा, और जिस पर रहम करना चाहूँ रहम करूँगा।"²⁰~और यह भी कहा, "तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि इन्सान मुझे देख कर ज़िन्दा नहीं रहेगा।"

²¹~फिर खुदावन्द ने कहा, "देख, मेरे करीब ही एक जगह है, इसलिए तू उस चट्टान पर खड़ा हो।"²²~और जब तक मेरा जलाल गुज़रता रहेगा मैं तुझे उस चट्टान के शिगाफ़ में रखवूँगा, और जब तक मैं निकल न जाऊँ तुझे अपने हाथ से ढाँके रहूँगा।"²³~इसके बा'द मैं अपना हाथ उठा लूँगा, और तू मेरा पीछा देखेगा लेकिन मेरा चेहरा दिखाई नहीं देगा।"

Chapter 34

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा पहली~तख्तियों की तरह दो~तख्तियाँ अपने लिए तराश लेना; और मैं उन~तख्तियों पर वही बातें लिख दूँगा जो पहली~तख्तियों पर, जिनको तूने तोड़ डाला मरकूम थीं।² और सुबह तक तैयार हो जाना, और सवेरे ही कोह-ए-सीना पर आकर वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने हाज़िर होना।

³~लेकिन तेरे साथ कोई और आदमी न आए, और न पहाड़ पर कहीं कोई दूसरा शख्स दिखाई दे। भेड़ बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के सामने चरने न पाएँ।

⁴~और मूसा ने पहली~तख्तियों की तरह पत्थर की दो~तख्तियाँ~तराशीं, और सुबह सवेरे उठ कर पत्थर की दोनों~तख्तियाँ~हाथ में लिए हुए खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक कोह-ए-सीना पर चढ़ गया।

⁵~तब खुदावन्द बादल में हो कर उतरा और उसके साथ वहाँ खड़े हो कर खुदावन्द के नाम का 'ऐलान किया।⁶ और खुदावन्द उसके आगे से यह पुकारता हुआ गुज़रा खुदावन्द खुदावन्द खुदा-ए-रहीम और मेहरबान, क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त और वफ़ा में ग़नी।⁷~हज़ारों पर फ़ज़ल करने वाला, गुनाह और तक्रसीर और ख़ता का बख़्शने वाला; लेकिन वह मुजरिम को हरगिज़ बरी नहीं करेगा, बल्कि बाप-दादा के गुनाह की सज़ा उनके बेटों और पोतों को तीसरी और चौथी नसल तक देता है।"

⁸तब मूसा ने जल्दी से सिर झुका कर सिज्दा किया,⁹~और कहा, "ऐ खुदावन्द, अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है, तो ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि हमारे बीच में होकर चल, अगरचे यह क़ौम बागी है, और तू हमारे गुनाह और ख़ता को मु'आफ़ कर और हम को अपनी मीरास कर ले।"

¹⁰~उसने कहा, "देख, मैं 'अहद बाँधता हूँ, कि तेरे सब लोगों के सामने ऐसी करामात करूँगा जो दुनिया भर में और किसी क़ौम में कभी की नहीं गई; और वह सब लोग जिनके बीच तू रहता है, खुदावन्द के काम को देखेंगे क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने को हूँ वह हैबतनाक काम होगा।¹¹~आज के दिन जो हुक्म मैं तुझे देता हूँ, तू उसे याद रखना। देख, मैं अमोरियों और कना'नियों और हितियों और फ़रिज़ियों और हव्वियों और यबूसियों को तेरे आगे से निकालता हूँ।

¹²~इसलिए ख़बरदार रहना कि जिस मुल्क को तू जाता है उसके बाशिन्दों से कोई 'अहद न बाँधना, ऐसा न हो कि वह तेरे लिए फ़न्दा ठहरें।¹³~बल्कि तुम उनकी कुर्बानगाहों को ढा देना, और उनके सुतुनों के टुकड़े-टुकड़े कर देना, और उनकी यसीरतों को काट डालना।¹⁴~क्योंकि तुझ को किसी दूसरे मा'बूद की परस्तिश नहीं करनी होगी, इसलिए कि खुदावन्द जिसका नाम ग़य्यूर है वह खुदा-ए-ग़य्यूर है भी।

¹⁵~कहीं ऐसा न हो कि तू उस मुल्क के बाशिन्दों से कोई 'अहद बाँध ले और जब वह अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें और अपने मा'बूदों के लिए कुर्बानी करें, और कोई तुझ को दा'वत दे और तू उसकी कुर्बानी में से कुछ खा ले;¹⁶~और तू उनकी बेटियाँ अपने बेटों से ब्याहे और उनकी बेटियाँ अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें, और तेरे बेटों को भी अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार बना दें।¹⁷~"तू अपने लिए ढाले हुए देवता न बना लेना।

¹⁸~"तू बेखमीरी रोटी की 'ईद माना करना। मेरे हुक्म के मुताबिक सात दिन तक अबीब के महीने में वक्रत-ए-मुअय्यना पर बेखमीरी रोटियाँ खाना; क्योंकि माह-ए-अबीब में तू मिस्र से निकला था।

¹⁹~सब पहलौठे मेरे हैं: और तेरे चौपायों में जो नर पहलौठे हों, क्या बछड़े, क्या बरें सब मेरे होंगे।²⁰~लेकिन गधे के पहले बच्चे का फ़िदिया बर्ग़ देकर होगा, और अगर तू फ़िदिया देना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना; लेकिन अपने सब पहलौठे बेटों का फ़िदिया ज़रूर देना। और कोई मेरे सामने ख़ाली हाथ दिखाई न दे।

²¹~"छ: दिन काम काज करना लेकिन सातवें दिन आराम करना, हल जोतने और फ़सल काटने के मौसम में भी आराम करना।²²~और तू गेहूँ के पहले फल के काटने के वक्रत हफ़्तों की 'ईद, और साल के आखिर में फ़सल जमा' करने की 'ईद माना करना।

²³~तेरे सब मर्द साल में तीन बार खुदावन्द खुदा के आगे जो इस्राईल का खुदा है, हाज़िर हों।²⁴~क्योंकि मैं क़ौमों को तेरे आगे से निकाल कर तेरी सरहदों को बढ़ा दूँगा, और जब साल में तीन बार तू खुदावन्द अपने खुदा के आगे हाज़िर होगा तो कोई शख्स तेरी ज़मीन का लालच न करेगा।

²⁵~"तू मेरी कुर्बानी का खून खमीरी रोटी के साथ न पेश करना, और 'ईद-ए-फ़सह की कुर्बानी में से कुछ सुबह तक बाक़ी न रहने देना।²⁶ अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का पहला फल खुदावन्द अपने खुदा के घर में लाना। हलवान को उसकी माँ के दूध में न पकाना।"

²⁷और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "तू यह बातें लिख; क्योंकि इन्हीं बातों के मतलब के मुताबिक मैं तुझ से और इस्राईल से 'अहद बाँधता हूँ।"²⁸~तब वह चालीस दिन और चालीस रात वहीं खुदावन्द के पास रहा और न रोटी खाई और न पानी पिया, और उसने उन~तख्तियों पर उस 'अहद की बातों को या'नी दस अहकाम को लिखा।

²⁹~और जब मूसा शहादत की दोनों~तख्तियाँ अपने हाथ में लिए हुए कोह-ए-सीना से उतरा आता था, तो पहाड़ से नीचे उतरते वक्रत उसे ख़बर न थी कि खुदावन्द के साथ बातें करने की वजह से उसका चेहरा चमक रहा है।³⁰~और जब हारून और बनीइसाईल ने मूसा पर नज़र की और उसके चेहरे को चमकते देखा तो उसके नज़दीक आने से डरे।³¹~तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून और जमा'अत के सब सरदार उसके पास लौट आए और मूसा उन से बातें करने लगा।

³²~और बा'द में सब बनीइसाईल नज़दीक आए और उसने वह सब अहकाम जो खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बातें करते वक्रत उसे दिए थे उनको बताए।

³³~और जब मूसा उनसे बातें कर चुका तो उसने अपने मुँह पर नक्राब डाल लिया।

³⁴~और जब मूसा खुदावन्द से बातें करने के लिए उसके सामने जाता तो बाहर निकलने के वक्रत तक नक्राब को उतारे रहता था; और जो हुक्म उसे मिलता था, वह उसे बाहर आकर बनी-इसाईल को बता देता था।³⁵~और बनी-इसाईल मूसा के चेहरे को देखते थे कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है; और जब तक मूसा खुदावन्द से बातें करने न जाता तब तक अपने मुँह पर नक्राब डाले रहता

Chapter 35

¹~और मूसा ने बनी-इसाईल की सारी जमा'अत को जमा' करके कहा, "जिन बातों पर 'अमल करने का हुक्म खुदावन्द ने तुम को दिया है वह यह हैं।"²~छः दिन काम लिए रोज़-ए-मुकद्दस या'नी खुदावन्द के आराम का सबत हो; जो कोई उसमें कुछ काम करे वह मार डाला जाए।³~तुम सबत के दिन अपने घरों में कहीं भी आग न जलाना।"

⁴~और मूसा ने बनी-इसाईल की सारी जमा'अत से कहा, "जिस बात का हुक्म खुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि⁵~तुम अपने पास से खुदावन्द के लिए हदिया लाया करो। जिस किसी के दिल की खुशी हो वह खुदावन्द का हदिया लाये सोना और चाँदी और पीतल,⁶~और आसमानी रंग और अर्गवानी रंग और सुर्ख रंग के कपड़े, और महीन कतान, और बकरियों की पशम,⁷~और मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें और तुख्स की खालें और कीकर की लकड़ी,⁸ और जलाने का तेल, और मसह करने के तेल के लिए और खुशबूदार खुशबू के लिए मसाल्हे,⁹~और अफ़ोद और सीनाबन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और और जड़ाऊ पत्थर।

¹⁰~"और तुम्हारे बीच जो रौशन ज़मीर हैं, वह आकर वह चीजें बनाएँ जिनका हुक्म खुदावन्द ने दिया है।"¹¹~या'नी घर और उसका खेमा और ग़िलाफ़ और उसकी घुन्डियाँ और तख्तें और बेंडे और उसके ~सुतून, और खाने,¹²~सन्दूक और उसकी चोबें, सरपोश और बीच का पर्दा,

¹³~मेज़ और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन, और नज़र की रोटियाँ,¹⁴~और रोशनी के लिए शमा 'दान और उसके बर्तन और चराग़ और जलाने का तेल;

¹⁵~और खुशबू जलाने की कुर्बान ग़ाह और उसकी चोबें और मसह करने का तेल, और खुशबूदार खुशबू; और घर के दरवाज़े के लिए दरवाज़े का पर्दा,¹⁶~और सोख़्तनी कुर्बानी का मज़बह, और उसके लिए पीतल की झंजरी और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन, और हौज़ और उसकी कुर्सी;

¹⁷~और सहन के पर्दे सुतूनों के साथ और उनके खाने, और सहन के दरवाज़े का पर्दा,¹⁸ और घर की मेंखे, और सहन की मेंखें, और उन दोनों की रस्सियाँ,¹⁹ और मकदिस की खिदमत के लिए बेल बूटे कढ़े हुए लिबास, और हारून काहिन के लिए पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि वह काहिन की खिदमत को अन्जाम दें।

²⁰~तब बनी-इसाईल की सारी जमा'अत मूसा के पास से रुख़सत हुई।²¹~और जिस जिस का जी चाहा और जिस-जिस के दिल में राबत । हुई, वह खेमा -ए-इजतिमा'अ के काम और वहाँ की 'इबादत और पाक लिबास के लिए खुदावन्द का हदिया लाया।²²~और क्या मर्द, क्या 'औरत, जितनों का दिल चाहा वह सब जुगनू बालियाँ, अँगूठियाँ और बाजूबन्द, जो सब सोने के ज़ेवर थे लाने लगे। इस तरीके से लोगों ने खुदावन्द को सोने का हदिया दिया।

²³~और जिस-जिस के पास आसमानी रंग ~और अर्गवानी रंग और सुर्ख रंग के कपड़े, और महीन कतान और बकरियों की पशम और मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खाले और तुख्स की खालें थीं, वह उनको ले आए।²⁴~जिसने चाँदी या पीतल का हदिया देना चाहा वह वैसा ही हदिया खुदावन्द के लिए लाया, और जिस किसी के पास कीकर की लकड़ी थी वह उसी को ले आया।

²⁵~और जितनी 'औरतें होशियार थीं उन्होंने अपने हाथों से कात-कात कर आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के और महीन कतान के तार लाकर दिए।

²⁶~और जितनी 'औरतों के दिल हिकमत की तरफ़ मायल थे उन्होंने बकरियों की पशम काटी।

²⁷~और जो सरदार थे वह अफ़ोद और सीना बन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और जड़ाऊ पत्थर,²⁸~और रोशनी और मसह करने के तेल, और खुशबूदार खुशबू के लिए मसाल्हे और तेल लाए।²⁹~यूँ बनी-इसाईल अपनी ही खुशी से खुदावन्द के लिए हदिये लाए, या'नी जिस-जिस मर्द या 'औरत का जी चाहा कि इन कामों के लिए जिनके बनने का हुक्म खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' दिया था, कुछ दे वह उन्होंने दिया

³⁰~और मूसा ने बनी-इसाईल से कहा, "देखो, खुदावन्द ने बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को जो यहूदाह के क़बीले में से है नाम लेकर बुलाया है।³¹ और उसने उसे हिकमत और समझ और अक्ल और हर तरह की कारीगरी ~के लिए रूह उल्लाह से मा'मूर किया है।³²~और कारीगरी ~में और सोना, चाँदी और पीतल के काम में,³³~और जड़ाऊ पत्थर और लकड़ी के तराशने में गरज़ हर एक नादिर काम के बनाने में माहिर किया है।

³⁴~और उसने उसे और अखीसमक के बेटे अहलियाब को भी जो दान के क़बीले का है, हुनर सिखाने की क़ाबिलियत बख़शी है।³⁵~और उनके दिलों में ऐसी हिकमत भर दी है जिससे वह हर तरह की कारीगरी में माहिर हों, और कन्दाकार का और माहिर उस्ताद का और ज़रदोज़ का जो आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और महीन कतान पर गुलकारी करता है, और जूलाहे का और हर तरह के दस्तकार का काम कर सके और 'अजीब और नादिर चीजें ईजाद करें।

Chapter 36

¹फिर~बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर आदमी काम करें, जिनको खुदावन्द ने हिकमत और समझ से मालामाल किया है ताकि वह मक़दिस की ' इबादत के सब काम को खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ अन्जाम दें।

²तब मूसा ने बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर आदमियों को बुलाया, जिनके दिल में खुदावन्द ने हिकमत भर दी थी, या'नी जिनके दिल में तहरीक हुई कि जाकर काम करें।³~और जो-जो हृदिये बनी-इसाईल लाए थे कि उनसे मक़दिस की 'इबादत की चीज़ें बनाई जाएँ, वह सब उन्होंने मूसा से ले लिए, और लोग फिर भी अपनी खुशी से हर सुबह उसके पास हृदिये लाते रहे।⁴तब वह सब 'अक्लमन्द कारीगर जो मक़दिस के सब काम बना रहे थे, अपने-अपने काम को छोड़कर मूसा के पास आए,

⁵~और वह मूसा से कहने लगे, कि लोग इस काम के सरअन्जाम के लिए, जिसके बनाने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है, ज़रूरत से बहुत ज़्यादा ले आए हैं।⁶~तब मूसा ने जो हुक्म दिया उसका 'ऐलान उन्होंने तमाम लश्करगाह में करा दिया: कि कोई मर्द या 'औरत अब से मक़दिस के लिए हृदिया देने की ग़र्ज़ से कुछ और काम न बनाएँ।" यूँ वह लोग और लाने से रोक दिए गए।⁷~क्यूँकि जो सामान उनके पास पहुँच चुका था वह सारे काम को तैयार करने के लिए न सिर्फ़ काफ़ी बल्कि ज़्यादा था।

⁸~और काम करनेवालों में जितने रोशन ज़मीर थे, उन्होंने मक़दिस के लिए बारीक बटे हुए कतान के और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों के दस पर्दे बनाए, जिन पर माहिर उस्ताद के हाथ के कढ़े हुए करूबी थे।⁹~हर पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी और वह सब पर्दे एक ही नाप के थे।¹⁰और उसने पाँच पर्दे एक दूसरे के साथ जोड़ दिए और दूसरे पाँच पर्दे भी एक दूसरे के साथ जोड़ दिए।

¹¹~और उसने एक बड़े पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के रुख़ पर आसमानी रंग के तुकमे बनाए। ऐसे ही तुकमे उसने दूसरे बड़े पर्दे की उस तरफ़ के हाशिये में बनाए जिधर मिलाने का रुख़ था।¹²~पचास तुकमे उसने एक पर्दे में और पचास ही दूसरे पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के रुख़ पर बनाए, यह तुकमे आपस में एक दूसरे के सामने थे।¹³~और उसने सोने की पचास घुन्डियाँ बनाई और उन्हीं घुन्डियों से पर्दों को आपस में ऐसा जोड़ दिया कि घर मिलकर एक हो गया।

¹⁴~और बकरी के बालों से ग्यारह पर्दे घर के ऊपर के खेमे के लिए बनाए।¹⁵~हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी, और वह ग्यारह पर्दे एक ही नाप के थे।¹⁶~और उसने पाँच पर्दे तो एक साथ जोड़े और छः एक साथ।¹⁷~और पचास तुकमे उन जुड़े हुए पर्दों में से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए और पचास ही तुकमे उन दूसरे जुड़े हुए पर्दों में से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए।

¹⁸~और उसने पीतल की पचास घुन्डियाँ भी बनाई ताकि उनसे उस खेमे को ऐसा जोड़ दे कि वह एक हो जाए।¹⁹और खेमे के लिए एक ग़िलाफ़ मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालों का और उसके लिए ग़िलाफ़ तुख़स की खालों का बनाया।

²⁰~और उसने घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाए कि खड़े किए जाएँ।²¹~हर तख़्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी।²²और उसने एक एक तख़्ते के लिए दो-दो जुड़ी हुई चूल्हे बनाई, घर के सब तख़्तों की चूल्हे ऐसी ही बनाई।²³और घर के लिए जो तख़्ते बने थे उनमें से बीस तख़्ते दाख़िखनी रुख़ में लगाए।

²⁴~और उसने उन बीसों तख़्तों के नीचे चाँदी के चालीस खाने बनाए, या'नी हर तख़्ते की दोनों चूल्हों के लिए दो-दो खाने।²⁵~और घर की दूसरी तरफ़ या'नी उत्तरी रुख़ के लिए बीस तख़्ते बनाए।²⁶~और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही खाने बनाए, या'नी एक-एक तख़्ते के नीचे दो-दो खाने।

²⁷~और घर के पिछले हिस्से या'नी पश्चिमी रुख़ के लिए छः तख़्ते बनाए।²⁸~और दो तख़्ते घर के दोनों कोनों के लिए पिछले हिस्से में बनाए।

²⁹~यह नीचे से दोहरे थे और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक ही हल्के में मिला दिए गए थे, उसने दोनों कोनों के दोनों तख़्ते इसी ढब के बनाए।³⁰~वह, आठ तख़्ते थे और उनके लिए चाँदी के सोलह खाने, या'नी एक-एक तख़्ते के लिए दो-दो खाने।

³¹~और उसने कीकर की लकड़ी के~बेन्डे~बनाये पाँच~बेन्डे~घर के एक तरफ़~के तख़्तों के लिए,³²और पाँच बेन्डे घर के दूसरी तरफ़ के तख़्तों के लिए, और पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से में पश्चिम की तरफ़ के तख़्तों के लिए बनाए।³³~और उसने वस्ती बेन्डे को ऐसा बनाया कि तख़्तों के बीच में से होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचे।³⁴~और तख़्तों को सोने से मंदा और सोने के कड़े बनाए, ताकि बेन्डों के लिए खानों का काम दें और बेन्डों को सोने से मंदा।

³⁵~और उसने बीच का पर्दा आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया जिस पर माहिर उस्ताद के हाथ के करूबी कढ़े हुए थे।³⁶~और उसके लिए कीकर के चार सुतून बनाए और उनको सोने से मंदा, उनके कुन्डे सोने के थे और उसने उनके लिए चाँदी के चार खाने ढाल कर बनाए।

³⁷~और उसने खेमे के दरवाज़े के लिए एक पर्दा आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया, वह बेल-बूटेदार था।³⁸और उसके लिए पाँच सुतून कुन्डों समेत बनाए और उनके सिरों और पट्टियों को सोने से मंदा, उनके लिए जो पाँच खाने थे वह पीतल के बने हुए थे।

Chapter 37

¹~और बज़लीएल ने वह सन्दूक कीकर की लकड़ी का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी।²~और उसने उसके अन्दर और बाहर खालिस सोना मँढ़ा और उसके लिए चारों तरफ़ एक सोने का ताज बनाया।³~और उसने उसके चारों पायों पर लगाने को सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े तो उसकी एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़ थे।

⁴~और उसने कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको सोने से मँढ़ा।⁵~और उन चोबों को सन्दूक के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाला ताकि सन्दूक उठाया जाए।

⁶~और उसने सरपोश खालिस सोने का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी।

⁷और उसने सरपोश के दोनों सिरों पर सोने के दो करूबी गढ़ कर बनाए।⁸~एक करूबी को उसने एक सिरे पर रखखा और दूसरे को दूसरे सिरे पर, दोनों सिरों के करूबी और सरपोश एक ही टुकड़े से बने थे।⁹~और करूबियों के बाजू ऊपर से फैले हुए थे और उनके बाजूओं से सरपोश ढका हुआ था, और उन करूबियों के चेहरे सरपोश की तरफ़ और एक दूसरे के सामने थे।

¹⁰~और उसने वह मेज़ कीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी।¹¹~और उसने उसको खालिस सोने से मँढ़ा और उसके लिए चारों तरफ़ सोने का एक ताज बनाया।¹²और उसने एक कंगनी चार उंगल चौड़ी उसके चारों तरफ़ रखखी और उस कंगनी पर चारों तरफ़ सोने का एक ताज बनाया।¹³~और उसने उसके लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उनको उसके चारों पायों के चारों कोनों में लगाया।

¹⁴~यह कड़े कंगनी के पास थे, ताकि मेज़ उठाने की चोबों के खानों का काम दें।¹⁵और उसने मेज़ उठाने की वह चोबें कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से मँढ़ा।¹⁶और उसने मेज़ पर के सब बर्तन, या'नी उसके तबाक़ और चमचे और बड़े-बड़े प्याले और उंडेलने के लोटे खालिस सोने के बनाए।

¹⁷~और उसने शमा'दान खालिस सोने का बनाया। वह शमा'दान और उसका पाया और उसकी डन्डी गढ़े हुए थे। यह सब और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और फूल एक ही टुकड़े के बने हुए थे।¹⁸~और छः शाखें उसकी दोनों तरफ़ से निकली हुई थीं। शमा'दान की तीन शाखें तो उसकी एक तरफ़ से और तीन शाखें उसकी दूसरी तरफ़ से।¹⁹और एक शाख में बादाम के फूल की शक्ल की तीन प्यालियाँ और एक लट्टू और एक फूल था, और दूसरी शाख में भी बादाम के फूल की शक्ल की तीन प्यालियाँ और एक लट्टू और एक फूल था। गर्ज़ उस शमा'दान की छहों शाखों में सब कुछ ऐसा ही था।

²⁰और खुद शमा'दान में बादाम के फूल की शक्ल की चार प्यालियाँ अपने-अपने लट्टू और फूल समेत बनी थीं।²¹~और शमा'दान की छहों निकली हुई शाखों में से हर दो-दो शाखें और एक-एक लट्टू एक ही टुकड़े के थे।²²~उनके लट्टू और उनकी शाखें सब एक ही टुकड़े के थे। सारा शमा'दान खालिस सोने का और एक ही टुकड़े का गढ़ा हुआ था।

²³~और उसने उसके लिए सात चरागा बनाए और उसके गुलगीर और गुलदान खालिस सोने के थे।²⁴और उसने उसको और उसके सब बर्तन को एक किन्तार खालिस सोने से बनाया

²⁵~और उसने खुशबू जलाने की कुर्बानगाह कीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ थी। वह चौकोर थी और उसकी ऊँचाई दो हाथ थी और वह और उसके सींग एक ही टुकड़े के थे।²⁶~और उसने उसके ऊपर की सतह और चारों तरफ़ की अतराफ़ और सींगों को खालिस सोने से मँढ़ा और उसके लिए सोने का एक ताज चारों तरफ़ बनाया।

²⁷~और उसने उसकी दोनों तरफ़ के दोनों पहलुओं में ताज के नीचे सोने के दो कड़े बनाए जो उसके उठाने की चोबों के लिए खानों का काम दें।²⁸~और चोबें कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से मँढ़ा।²⁹~और उसने मसह करने का पाक तेल और खुशबूदार मसालहे का खालिस खुशबू गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ तैयार किया।

Chapter 38

¹~और उसने सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह कीकर की लकड़ी का बनाया; उसकी लम्बाई पाँच हाथ और चौड़ाई पाँच हाथ थी, वह चौकोर था और उसकी ऊँचाई तीन हाथ थी।²~और उसने उसके चारों कोनों पर सींग बनाए सींग और वह मज़बह दोनों एक ही टुकड़े के थे, और उसने उसको पीतल से मंढ़ा।³~और उसने मज़बह के सब बर्तन, या'नी देगें और बेलचे और कटोरे और सीहें और अंगूठियाँ बनायीं उसके सब बर्तन पीतल के थे।

⁴~और उसने मज़बह के लिए उसकी चारों तरफ़ किनारे के नीचे पीतल की जाली की झंजरी इस तरह लगाई कि वह उसकी आधी दूर तक पहुँचती थी।⁵~और उसने पीतल की झंजरी के चारों कोनों में लगाने के लिए चार कड़े ढाले ताकि चोबों के लिए खानों का काम दें।

⁶और चोबों कीकर की लकड़ी की बनाकर उनको पीतल से मंढ़ा।⁷और उसने वह चोबें मज़बह की दोनों तरफ़ के कड़ों में उसके उठाने के लिए डाल दीं। वह खोखला तख़्तों का बना हुआ था।

⁸~और जो खिदमत गुज़ार 'औरतें खेमा-ए-इज्जितमा'अ के दरवाज़े पर खिदमत करती थीं, उनके आईनों के पीतल से उसने पीतल का हौज़ और पीतल ही की उसकी कुर्सी बनाई

⁹फिर उसने सहन बनाया, और दखिखनी रुख के लिए उस सहन के पर्दे बारीक बटे हुए कतान के थे और सब मिला कर सौ हाथ लम्बे थे।¹⁰उनके लिए बीस सुतून और उनके लिए पीतल के बीस खाने थे, और सुतून के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।

¹¹~और उत्तरी रुख में भी वह सौ हाथ लम्बे और उनके लिए बीस सुतून और उनके लिए बीस ही पीतल के खाने थे, और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।¹²~और पश्चिमी रुख के लिए सब पर्दे मिला कर पचास हाथ के थे, उनके लिए दस सुतून और दस ही उनके खाने थे और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।

¹³~और पूर्वी रुख में भी वह पचास ही हाथ के थे।¹⁴~उसके दरवाज़े की एक तरफ़ पन्द्रह हाथ के पर्दे और उनके लिए तीन सुतून और तीन खाने थे।¹⁵और दुसरी तरफ़ भी वैसा ही था तब सहन के दरवाज़े के इधर और उधर पंद्रह-पन्द्रह हाथ के पर्दे थे। उनके लिए तीन-तीन सुतून और तीन ही तीन खाने थे।¹⁶सहन के चारों तरफ़ के सब पर्दे बारीक बटे हुए कतान के बुने हुए थे।

¹⁷और सुतूनों के खाने पीतल के और उनके कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं। उनके सिरे चाँदी से मंढ़े हुए और सहन के कुल सुतून चाँदी की पट्टियों से जड़े हुए थे।

¹⁸और सहन के दरवाज़े के पर्दे पर बेल बूटे का काम था, और वह आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़े और बारीक बटे हुए कतान का बुना हुआ था; उसकी लम्बाई बीस हाथ और ऊँचाई सहन के पर्दे की चौड़ाई के मुताबिक़ पाँच हाथ थी।¹⁹उनके लिए चार सुतून और चार ही उनके लिए पीतल के खाने थे, उनके कुन्डे चाँदी के थे और उनके सिरों पर चाँदी मंढी हुई थी और उनकी पट्टियाँ भी चाँदी की थीं।²⁰और घर के और सहन के चारो तरफ़-की सब मेखें पीतल की थीं

²¹और ~घर या'नी मस्कन-ए-शहादत के जो सामान लावियों की खिदमत के लिए बने और जिनको मूसा के हुक्म के मुताबिक़ हारून काहिन के बेटे इतमर ने गिना, उनका हिसाब यह है।²²बज़लीएल बिन-ऊरी बिन-हूर ने जो यहूदाह के क़बीले का था, सब कुछ जो खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया था बनाया।²³और उसके साथ दान के क़बीले का अहलियाब बिन अखीसमक था जो खोदने में माहिर कारीगर था और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक कतान पर बेल-बूटे काढ़ता था

²⁴सब सोना जो मक़दिस की चीज़ों के काम में लगा, या'नी हृदिये का सोना उन्तीस किन्तार और मक़दिस की मिस्क़ाल के हिसाब से एक हज़ार सात सौ पिछत्तर मिस्क़ाल था।²⁵और जमा'त में से गिने हुए लोगों के हृदिये की चाँदी एक सौ किन्तार और मक़दिस की मिस्क़ाल के हिसाब से एक हज़ार सात सौ पिछत्तर-मिस्क़ाल थी।²⁶मक़दिस की मिस्क़ाल के हिसाब से हरआदमी जो निकल कर शुमार किए हुआओं में मिल गया एक बिका, या'नी नीम मिस्क़ाल बीस बरस और उससे ज़्यादा 'उम्र लोगों से लिया गया था यह छःलाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ मर्द थे।

²⁷इस सौ-किन्तार चाँदी से मक़दिस के और बीच के पर्दे के खाने ढाले गए, सौ-किन्तार से सौ ही खाने बने या'नी एक-एक किन्तार। एक-एक खाने में लगा²⁸और एक हज़ार सात सौ पिछत्तर मिस्क़ाल चाँदी से सुतूनों के कुन्डे बने और उनके सिरे मंढ़े गए और उनके लिए पट्टियाँ तैयार हुईं।²⁹और हृदिये का पीतल सत्तर किन्तार और दो हज़ार चार सौ मिस्क़ाल था।

³⁰इससे उसने खेम-ए-इज्जितमा'अ के दरवाज़े के खाने और पीतल का मज़बह और उसके लिए पीतल की झंजरी और मज़बह के सब बर्तन,³¹और सहन के चारों तरफ़ के खाने और सहन के दरवाज़े के खाने और घर की मेखें और सहन के चारों तरफ़ की मेखें ~बनाई।

Chapter 39

¹~और उन्होंने मक़दिस में खिदमत करने के लिए आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख बेल बूटे कढ़े हुए लिबास और हारून के लिए पाक लिबास, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था बनाए।

²~और उसने सोने, और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का अफ़ोद बनाया।³~और उन्होंने सोना पीट पीट कर पतले-पतले पत्तर और पतरों को काट-काट कर तार बनाए, ताकि आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के ~कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान पर माहिर उस्ताद की तरह उनसे ज़रदोज़ी करें।

⁴~और अफ़ोद को जोड़ने के लिए उन्होंने दो मोँढे बनाए और उनके दोनों सिरों को मिलाकर बाँध दिया।⁵~और उसके कसने के लिए कारीगरी से बुना हुआ कमरबन्द जो उसके ऊपर था, वह भी उसी टुकड़े और बनावट का था, या'नी सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ था; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

⁶और उन्होंने सुलेमानी पत्थर काट कर साफ़ किए जो सोने के खानों में जड़े गए, और उन पर अँगूठी के नक्श की तरह बनीइसाईल के नाम खुदे थे।⁷~और उसने उनको अफ़ोद के मोँढों पर लगाया ताकि वह बनी-इसाईल की यादगारी के पत्थर हों, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

⁸~और उसने अफ़ोद की बनावट का सीनाबन्द तैयार किया जो माहिर उस्ताद के हाथ का काम था, या'नी वह सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ था।⁹~वह चौकोर था; उन्होंने उस सीनाबन्द को दोहरा बनाया और दोहरा होने पर उसकी लम्बाई एक बालिशत और चौड़ाई एक बालिशत थी।

¹⁰इस पर चार कतारों में उन्होंने जवाहर जड़े। याकूत-ए-सुर्ख, और पुखराज, और ज़मरुद की कतार तो पहली कतार थी।¹¹~और दूसरी कतार में गौहर-ए-शब चरागा, और नीलम, और हीरा।¹²~तीसरी कतार में लश्म, और यश्म, और याकूत।¹³~चौथी कतार में फ़ीरोज़ा, और संग-ए-सुलेमानी, और ज़बरजद; यह सब अलग-अलग सोने के खानों में जड़े हुए थे।

¹⁴~और यह पत्थर इसाईल के बेटों के नामों के शुमार के मुताबिक़ बारह थे और अँगूठी के नक्श की तरह बारह क़बीलों में से एक-एक का नाम अलग-अलग एक एक पत्थर पर खुदा था।¹⁵~और उन्होंने सीना बन्द पर डोरी की तरह गुन्धी हुई खालिस सोने की ज़न्जीरें बनाई।¹⁶~और उन्होंने सोने के दो खाने और सोने के दो कड़े बनाए और दोनों कड़ों को सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाया।

¹⁷~और सोने की दोनों गुन्धी हुई ज़न्जीरें उन कड़ों में पहनाई जो सीनाबन्द के सिरों पर थे।¹⁸~और दोनों गुन्धी हुई ज़न्जीरों के बाक़ी दोनों सिरों को दोनों खानों में जड़कर उनको अफ़ोद के दोनों मोँढों पर सामने के रुख लगाया।

¹⁹~और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको सीना बन्द के दोनों सिरों के उस हाशिये में लगाया जिस का रुख अन्दर अफ़ोद की तरफ़ था।²⁰~और उन्होंने सोने ~के दो कड़े और बना कर उनको अफ़ोद के दोनों मेढों के सामने के हिस्से में अन्दर के रुख जहाँ अफ़ोद जुड़ा था लगाया ताकि वह अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए पटके के ऊपर रहे।

²¹और उन्होंने सीना बन्द को लेकर उसके कड़े को अफ़ोद के कड़ों के साथ एक नीले फ़ीते से इस तरह बाँधा कि वह अफ़ोद के कारीगरी से बने हुए पटके के ऊपर रहे और सीना बन्द ढीला होकर अफ़ोद से अलग न होने पाए जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था।

²²और उसने अफ़ोद का जुब्बा बुन कर बिल्कुल आसमानी रंग का बनाया।²³और उसका गिरेबान ज़िरह के गिरेबान की तरह बीच में था और उसके चारों तरफ़ गोट लगी ~हुई थी ताकि वह फट न जाए।²⁴और उन्होंने उसके दामन के घेरे में आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के बटे हुए तार से अनार बनाये।

²⁵और खालिस सोने की घंटियाँ बना कर उनको जुब्बे के दामन के घेरे में चारों तरफ़ अनारों के बीच लगाया।²⁶तब जुब्बे के दामन के सारे घेरे में खिदमत करने के लिए एक-एक घन्टी थी और फिर एक-एक अनार जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था।

²⁷और उन्होंने बारीक कतान के बुने हुए कुरते हारून और उसके बेटों के लिए बनाये।²⁸और बारीक कतान का 'अमामा, और बारीक कतान की खूबसूरत पगड़ियाँ, और बारीक बटे हुए कतान के पजामे,²⁹और बारीक बटे हुए कतान, और आसमानी अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों का बेल बूटेदार कमरबन्द~भी बनाया; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

³⁰और उन्होंने पाक ताज का पत्तर खालिस सोने का बनाकर उस पर अँगूठी के नक्श की तरह यह खुदावाया: खुदावन्द के लिए पाक।³¹और उसे 'अमामे के साथ ऊपर बाँधने के लिए उसमें एक नीला फ़ीता लगाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

³²इस तरह खेमा-ए-इज्तिमा'अ के घर का सब काम खत्म हुआ और बनी इसाईल ने सब कुछ जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।³³और वह घर को मूसा के पास लाए, या'नी खेमा, और उसका सारा सामान, उसकी घुड़ियाँ, और तख्ते, बेन्डे और सुतून और खाने;³⁴और घटा टोप, मेढों की सुर्ख रंगी हुई खालों का गिलाफ़ और तुख़स की खालों का~~गिलाफ़ और बीच का पर्दा;³⁵शहादत का सन्दूक और उसकी चोबें और सरपोश,

³⁶और मेज़ और उसके सब बर्तन और नज़्ज़ की रोटी;³⁷और पाक शमा'दान और उसकी सजावट के चरागा और उसके सब बर्तन और जलाने का तेल;³⁸और ज़र्रीन कुर्बानगाह, और मसह करने का तेल और खुशबूदार खुशबू और खेमे के दरवाज़े का पर्दा;³⁹और पीतल मढ़ा हुआ मज़बह, और पीतल की झंजरी, और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन और हौज़ और उसकी कुर्सी;

⁴⁰सहन के पर्दे और उनके सुतून और खाने और सहन के दरवाज़े का पर्दा और उसकी रस्सियाँ और मेखे और खेमा-ए-इज्तिमा'अ के काम के लिए घर की 'इबादत के सब सामान;⁴¹और पाक मुक़ाम कि खिदमत के लिए कढ़े हुए लिबास और हारून काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास जिनको पहन कर उनको काहिन की खिदमत को अन्जाम देना था।

⁴²जो कुछ खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था उसी के मुताबिक़ बनीइसाईल ने सब काम बनाया।⁴³और मूसा ने सब काम का मुलाहज़ा किया और देखा कि उन्होंने उसे कर लिया है जैसा खुदावन्द ने हुक्म दिया था उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया, और मूसा ने उनको बरकत दी।

Chapter 40

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²पहले महीने की पहली तारीख को तू खेमा इज्जिमा' के घर को खड़ा कर देना ।

³और उस में शहादत का संदूक रख कर संदूक पर बीच का पर्दा खींच देना ।⁴और मेज़ को अन्दर ले जाकर उस पर की सब चीज़ें तरतीब से सजा देना और शमा'दान को अन्दर करके उसके चरागा रोशन कर देना ।

⁵और खुशबू जलाने की ज़रीन कुर्बानगाह को शहादत के संदूक के सामने रखना और घर के दरवाज़े का पर्दा लगा देना ।⁶और सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह खेमा-ए-इज्जिमा'आ के घर के दरवाज़े के सामने रखना ।⁷और हौज़ को खेमा-ए-इज्जिमा'अ और मज़बह के बीच में रख ~कर~उसमे पानी भर देना

⁸और सहन के चारो तरफ़ से घेर कर सहन के दरवाज़े में पर्दा ~लटका देना ।⁹और मसह करने का तेल लेकर घर को और उसके अन्दर के सब चीज़ों को मसह करना; और यूँ उसे और उसके सब बर्तन को पाक करना तब वह पाक ठहरेगा ।¹⁰और तू सोख्तनी कुर्बानी के मज़बह और उसके सब बर्तन को मसह करके मज़बह को पाक करना, और मज़बह निहायत ही पाक ठहरेगा¹¹और तू हौज़ और उसकी कुर्सी को भी मसह करके पाक करना ।

¹²और हारून और उसके बेटे को खेमा-ए-इज्जिमा'अ के दरवाज़े पर लाकर उसको पानी से गुस्ल दिलाना¹³और हारून को पाक लिबास पहनाना और उसे मसह और पाक करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे

¹⁴और उनके बेटों को लाकर उनको कुरते पहनाना,¹⁵और जैसा उनके बाप को मसह करे वैसा ही उनको भी मसह करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे;और उनका मसह होना उनके लिए नसल-दर-नसल हमेशा की कहानत का निशान होगा । "¹⁶और मूसा ने सब कुछ जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म किया था उसके मुताबिक़ किया ।

¹⁷और दूसरे साल के पहले महीने की पहली तारीख को घर खड़ा किया गया ।¹⁸और मूसा ने घर को खड़ा किया और खानों को रख कर उनमे तख्ते लगा उनके बेन्डे खींच दिए और उसके सुतनों खड़ा कर दिया ।¹⁹और घर के ऊपर खेमे को तान दिया और खेमा पर उसका गिलाफ़ चढ़ा दिया, जैसे खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था ।²⁰और शहादतनामे को लेकर सन्दूक में रखवा, और चोबों को सन्दूक में लगा सरपोश को सन्दूक के ऊपर रखवा;

²¹फिर उस सन्दूक को घर के अन्दर लाया, और बीच का पर्दा लगा कर शहादत के सन्दूक को पर्दे के अन्दर किया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था ।

²²~और मेज़ को उस पर्दे के बाहर घर को उत्तरी रुख में खेमा-ए-इज्जिमा'अ के अन्दर रखवा,²³~और उस पर खुदावन्द के आमने सामने रोटी सजाकर रखवी, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था ।

²⁴~और खेमा-ए-इज्जिमा'अ के अन्दर ही मेज़ के सामने घर की दाखिलखनी रुख में शमा'दान को रखवा,²⁵~और चरागा खुदावन्द के सामने रोशन कर दिए, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था ।

²⁶~और ज़रीन कुर्बानगाह को खेमा-ए-इज्जिमा'अ के अन्दर पर्दे के सामने रखवा,²⁷~और उस पर खुशबूदार मसालहे का खुशबू ~जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था

²⁸और उसने घर के दरवाज़े में पर्दा लगाया था ।²⁹~और खेमा-ए-इज्जिमा'अ के घर के दरवाज़े पर सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह रखकर उस पर सोख्तनी कुर्बानी और नज़ की कुर्बानी पेश की, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया,³⁰~और उसने हौज़ को खेमा-ए-इज्जिमा'अ और मज़बह के बीच में रखकर उसमें धोने के लिए पानी भर दिया ।

³¹~और मूसा और हारून और उसके बेटों ने अपने-अपने हाँथ-पाँव उसमे धोए ।³²~जब-जब वह खेमा-ए-इज्जिमा'अ के अन्दर दाखिल होते, और जब-जब वह मज़बह के नज़दीक जाते तो अपने आपको धोकर जाते थे, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था ।³³~और उसने घर और मज़बह के चारों तरफ़ सहन को घेर कर सहन के दरवाज़े का पर्दा डाल दिया यूँ मूसा ने उस काम को खत्म किया ।

³⁴~तब खेमा-ए-इज्जिमा'अ पर बादल छा गया, और घर खुदावन्द के जलाल से भरा हो गया ।³⁵और मूसा खेमा-ए-इज्जिमा'अ में दाखिल न हो सका क्योंकि वह बादल उस पर ठहरा हुआ था, और घर खुदावन्द के जलाल से भरा था ।

³⁶~और बनी-इसाईल के सारे सफ़र में यह होता रहा कि जब वह बादल घर के ऊपर से उठ जाता तो वह आगे बढ़ाते,³⁷लेकिन अगर वह बादल न उठता तो उस दिन तक सफ़र नहीं करते थे जब तक वह उठ न जाता ।³⁸क्योंकि खुदावन्द का बादल इसाईल के सारे घराने ~के समाने और उनके सारे सफ़र में दिन के वक़्त तो घर के ऊपर ठहरा रहता और रात को उसमें आग रहती थी ।

अहबार

Chapter 1

¹~और खुदावन्द ने खेमा-ए-इज्जिमा'अ में से मूसा को बुलाकर उससे कहा,²बनी-इसाईल से कह, कि जब तुम में से कोई खुदावन्द के लिए चढ़ावा चढ़ाए, तो तुम चौपायों या'नी गाय-बैल और भेड़-बकरी का हदिया देना ।

³अगर उसका चढ़ावा गाय-बैल की सोख्तनी कुर्बानी हो, तो वह बे'ऐब नर को लाकर उसे खेमा-ए-इज्जिमा'अ के दरवाज़े पर चढ़ाए ताकि वह खुद खुदावन्द के सामने मक़बूल ठहरे ।⁴और वह सोख्तनी कुर्बानी के जानवर के सिर पर अपना हाथ रखे, तब वह उसकी तरफ़ से मक़बूल होगा ताकि उसके लिए कफ़़ारा हो ।

⁵~और वह उस बछड़े को खुदावन्द के सामने ज़बह करे, और हारून के बेटे जो काहिन हैं खून को लाकर उसे उस मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़के जो खेमा-ए-इज्जिमा'अ के दरवाज़े पर है ।⁶तब वह उस सोख्तनी कुर्बानी के जानवर की खाल खींचे और उसके 'उज़व-'उज़व को काट कर जुदा-जुदा करे ।

⁷~फिर हारून काहिन के बेटे मज़बह पर आग रखें, और आग पर लकड़ियाँ तरतीब से चुन दें।⁸और हारून के बेटे जो काहिन हैं, उसके 'आज़ा को और सिर और चर्बी ~को उन लकड़ियों पर जो मज़बह की आग पर होंगी तरतीब से रख दें।⁹~लेकिन वह उसकी अंतड़ियों और पायों को पानी से धो ले, तब काहिन सबको मज़बह पर जलाए कि वह सोखतनी कुर्बानी या'नी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी हों।

¹⁰और अगर उसका चढ़ावा रेवड़ में से भेड़ या बकरी की सोखतनी कुर्बानी हो, तो वह बे-'ऐब नर को लाए।¹¹~और वह उसे मज़बह की उत्तरी सिम्त में खुदावन्द के आगे ज़बह करे, और हारून के बेटे जो काहिन हैं उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़कें।

¹²~फिर वह उसके 'उज़्व-'उज़्व को और सिर और चर्बी को काट कर जुदा-जुदा करे, और काहिन उनकी तरतीब से उन लकड़ियों पर जो मज़बह की आग पर होंगी चुन दे;¹³~लेकिन वह अंतड़ियों और पायों को पानी से धो ले। तब काहिन सबको लेकर मज़बह पर जला दे, वह सोखतनी कुर्बानी या'नी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी है।

¹⁴~"और अगर उसका चढ़ावा खुदावन्द के लिए परिन्दों की सोखतनी कुर्बानी हो, तो वह कुमरियों या कबूतर के बच्चों का चढ़ावा चढ़ाए।¹⁵और काहिन उसको मज़बह पर लाकर उसका सिर मरोड़ डाले, और उसे मज़बह पर जला दे; और उसका खून मज़बह के पहलू पर गिर जाने दे।

¹⁶और उसके पोटे को आलाइश के साथ ले जाकर मज़बह की पूरबी सिम्त में राख की जगह में डाल दे।¹⁷~ और वह उसके दोनों बाज़ुओं को पकड़ कर उसे चीरे पर अलग-अलग न करे। तब काहिन उसे मज़बह पर उन लकड़ियों के ऊपर रख कर जो आग पर होंगी जला दे, वह सोखतनी कुर्बानी या'नी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी है।

Chapter 2

¹और अगर कोई खुदावन्द के लिए नज़ की कुर्बानी का हदिया लाए, तो अपने हृदिये के लिए मैदा ले और उसमें तेल डाल कर उसके ऊपर लुबान रखे;²~और वह उसे हारून के बेटों के पास जो काहिन हैं लाए, और तेल मिले हुए मैदे में से इस तरह अपनी मुट्ठी भर कर निकाले कि सब लुबान उसमें आ जाए। तब काहिन उसे नज़ की कुर्बानी की यादगारी के तौर पर मज़बह के ऊपर जलाए। यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी।³~और जो कुछ उस नज़ की कुर्बानी में से बाक़ी रह जाए, वह हारून और उसके बेटों का होगा। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में पाकतरीन चीज़ है।

⁴~"और जब तू तनूर का पका हुआ नज़ की कुर्बानी का हदिया लाए, तो वह तेल मिले हुए मैदे के बेखमीरी गिरदे या तेल चुपड़ी हुई बेखमीरी चपातियाँ हों।

⁵~और अगर तेरी नज़ की कुर्बानी का चढ़ावा तवे का पका हुआ हो, तो वह तेल मिले हुए बेखमीरी मैदे का हो।

⁶~उसको टुकड़े-टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तो वह नज़ की कुर्बानी होगी।⁷~और अगर तेरी नज़ की कुर्बानी का चढ़ावा कढ़ाई का तला हुआ हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए।

⁸~तू इन चीज़ों की नज़ की कुर्बानी का चढ़ावा खुदावन्द के पास लाना, वह काहिन को दिया जाए। और वह उसे मज़बह के पास लाए।⁹और काहिन उस नज़ की कुर्बानी में से उसकी यादगारी का हिस्सा उठा कर मज़बह पर जलाए, यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी।¹⁰और जो कुछ उस नज़ की कुर्बानी में से बच रहे वह हारून और उसके बेटों का होगा। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में पाकतरीन चीज़ है।

¹¹कोई नज़ की कुर्बानी जो तुम खुदावन्द के सामने चढ़ाओ, वह खमीर मिला कर न बनाई जाए; तुम कभी आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने खमीर या शहद न जलाना।¹²~तुम इनको पहले फलों के हृदिये के तौर पर खुदावन्द के सामने लाना, लेकिन राहतअंगेज़ खुशबू के लिए वह मज़बह पर न पेश किये जाएँ।¹³~और तू अपनी नज़ की कुर्बानी के हर हृदिये को नमकीन बनाना, और अपनी किसी नज़ की कुर्बानी को अपने खुदा के 'अहद के नमक बग़ैर न रहने देना; अपने सब हृदियों के साथ नमक भी पेश करना।

¹⁴~'और अगर तू पहले फलों की नज़ का हदिया खुदावन्द के सामने पेश करे तो अपने पहले फलों की नज़ के चढ़ावे के लिए अनाज की भुनी हुई बालें, या'नी हरी-हरी बालों में से हाथ से मलकर निकाले हुए अनाज को चढ़ाना।¹⁵~और उसमें तेल डालना और उसके ऊपर लुबान रखना, तो वह नज़ की कुर्बानी होगी।

¹⁶~और काहिन उसकी यादगारी के हिस्से को, या'नी थोड़े से मल कर निकाले हुए दानों को और थोड़े से तेल को और सारे लुबान को जला दे; यह खुदावन्द के लिए आतिशी कुर्बानी होगी।

Chapter 3

¹और अगर उसका हृदया सलामती का ज़बीहा हो और वह गाय बैल में से किसी को अदा करे, तो चाहे वह नर हो या मादा; लेकिन जो बे-'ऐब हो उसी को वह खुदावन्द-के सामने पेश करे।²और वह अपना हाथ अपने हृदिये के जानवर के सिर पर रखे, और खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर उसे ज़बह करे; और हारून के बेटे जो काहिन हैं उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़कें।

³और वह सलामती के ज़बीहे में से खुदावन्द के लिए अतिशी कुर्बानी पेश करे, या'नी जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं,⁴और वह सारी चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है, और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दों के साथ; इन सभी को वह जुदा करे।

⁵और हारून के बेटे उन्हें मज़बह पर सोखतनी कुर्बानी के ऊपर जलाएँ जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर हैं; यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की अतिशी कुर्बानी है।

⁶और अगर उसका सलामती के ज़बीहे का हृदिया खुदावन्द के लिए भेड़-बकरी में से हो, तो चाहे नर हो या मादा, लेकिन जो बे-'ऐब हो उसी को वह अदा करे।

⁷और वह बर्षा पेश करता हो, तो उसे खुदावन्द के सामने अदा करे,⁸और अपना हाथ अपने चढ़ावे के जानवर के सिर पर रखे, और उसे खेमा-ए-इजितमा'अ के सामने ज़बह करे; और हारून के बेटे उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़कें।

⁹और वह सलामती के ज़बीहे में से खुदावन्द के लिए अतिशी कुर्बानी पेश करे; या'नी उसकी पूरी चर्बी भरी दुम को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सारी चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है,¹⁰और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दों के साथ; इन सभी को वह अलग करे।¹¹और काहिन उन्हें मज़बह पर जलाए; यह उस अतिशी कुर्बानी की ग़िज़ा है जो खुदावन्द को पेश की जाती है।

¹²और अगर वह बकरा या बकरी पेश करता हो, तो उसे खुदावन्द के सामने अदा करे।¹³और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसे खेमा-ए-इजितमा'अ के सामने ज़बह करे; और हारून के बेटे उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़कें।¹⁴और वह उसमें से अपना चढ़ावा अतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करे; या'नी जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सब चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है,

¹⁵और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दों के साथ, इन सभी को वह अलग करे।¹⁶और काहिन इनको मज़बह पर जलाए; यह उस अतिशी कुर्बानी की ग़िज़ा है, जो राहतअंगेज़ खुशबू के लिए होती है; सारी चर्बी खुदावन्द की है।¹⁷यह तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल-दर-नसल एक हमेशा का क़ानून रहेगा, कि तुम चर्बी या खून मुतलक़ न खाओ।'

Chapter 4

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, ²~बनी इस्राईल से कह कि अगर कोई उन कामों में से जिनको खुदावन्द ने मना' किया है, किसी काम को करे और उससे अनजाने में खता हो जाए। ³अगर काहिन-ए-मम्सूह ऐसी खता करे जिससे क्रौम मुजरिम ठहरती हो, तो वह अपनी उस खता के लिए जो उसने की है, एक बे-'ऐब बछड़ा खता की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करे।

⁴~वह उस बछड़े को खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के आगे लाए, और बछड़े के सिर पर अपना हाथ रखे और उसको खुदावन्द के आगे ज़बह करे। ⁵~और वह काहिन-ए-मम्सूह उस बछड़े के खून में से कुछ लेकर उसे खेमा-ए-इजितमा'अ में ले जाए।

⁶~और काहिन अपनी उँगली खून में डुबो-डुबो कर, और खून में से ले लेकर उसे हैकल के पर्दे के सामने सात बार खुदावन्द के आगे छिड़के। ⁷~और काहिन उसी खून में से खुशबूदार खुशबू जलाने की कुर्बानगाह के सींगों पर, जो खेमा-ए-इजितमा'अ में है, खुदावन्द के आगे लगाए; और उस बछड़े के बाक़ी सब खून को सोखतनी कुर्बानी के मज़बह के पाये पर, जो खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर है उँडेल दे।

⁸~फिर वह खता की कुर्बानी के बछड़े की सब चर्बी को उससे अलग करे; या'नी जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सब चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है, ⁹~और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दों के साथ; इन सभी को वह वैसे ही अलग करे।

¹⁰~जैसे सलामती के ज़बीहे के बछड़े से वह अलग किए जाते हैं; और काहिन उनको सोखतनी कुर्बानी के मज़बह पर जलाए।

¹¹~और उस बछड़े की खाल, और उसका सब गोश्त, और सिर और पाये, और अंतड़ियाँ और गोबर; ¹²~या'नी पूरे बछड़े को लश्कर गाह के बाहर किसी साफ़ जगह में जहाँ राख पड़ती है, ले जाए; और सब कुछ लकड़ियों पर रख कर आग से जलाए, वह वहीं जलाया जाए जहाँ राख डाली जाती है।

¹³~'अगर बनी-इस्राईल की सारी जमा'अत से अनजाने चूक हो जाए, और यह बात जमा'अत की आँखों से छिपी तो हो तो भी वह उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना'~किया है, किसी काम को करके मुजरिम हो गई हो, ¹⁴~तो उस खता के जिसके वह कुसूरवार हों, मा'लूम हो जाने पर जमा'अत एक बछड़ा खता की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाने के लिए खेमा-ए-इजितमा'अ के सामने लाए। ¹⁵~और जमा'अत के बुजुर्ग अपने-अपने हाथ खुदावन्द के आगे उस बछड़े के सिर पर रखें, और बछड़ा खुदावन्द के आगे ज़बह किया जाए।

¹⁶~और काहिन-ए-मम्सूह उस बछड़े के खून में से कुछ खेमा-ए-इजितमा'अ में ले जाए; ¹⁷~और काहिन अपनी उँगली उस खून में डुबो-डुबो कर उसे पर्दे के सामने सात बार खुदावन्द के आगे छिड़के,

¹⁸और उसी खून में से मज़बह के सींगों पर जो खुदावन्द के आगे खेमा-ए-इजितमा'अ में है लगाए, और बाक़ी सारा खून सोखतनी कुर्बानी के मज़बह के पाये पर, जो खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर है, उँडेल दे। ¹⁹~और उसकी सब चर्बी उससे अलग करके उसे मज़बह पर जलाए।

²⁰~ वह बछड़े से यही करे, या'नी जो कुछ खता की कुर्बानी के बछड़े से किया था, वही इस बछड़े से करे। यूँ काहिन उनके लिए कफ़़ारा दे, तो उन्हें मु'आफ़ी मिलेगी; ²¹~और वह उस बछड़े को लश्करगाह के बाहर ले जा कर जलाए, जैसे पहले बछड़े को जलाया था; यह जमा'अत की खता की कुर्बानी है।

²²~और जब किसी सरदार से खता हो जाए, और वह उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है किसी काम को अनजाने में कर बैठे और मुजरिम हो जाए। ²³~तो जब वह खता जो उससे सरज़द हुई है उसे बता दी जाए, तो वह एक बे-'ऐब बकरा अपनी कुर्बानी के लिए लाए;

²⁴~और अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रखे, और उसे उस जगह ज़बह करे जहाँ सोखतनी कुर्बानी के जानवर खुदावन्द के आगे ज़बह करते हैं; यह खता की कुर्बानी है। ²⁵~और काहिन खता की कुर्बानी का कुछ खून अपनी उँगली पर लेकर उसे सोखतनी कुर्बानी के मज़बह के सींगों पर लगाए, और उसका बाक़ी सब खून सोखतनी कुर्बानी के मज़बह के पाए पर उँडेल दे।

²⁶~और सलामती के ज़बीहे की चर्बी की तरह उसकी सब चर्बी मज़बह पर जलाए। यूँ काहिन उसकी खता का कफ़़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।

²⁷~'और अगर कोई 'आम आदमियों में से अनजाने में खता करे, और उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है किसी काम को करके मुजरिम हो जाए;

²⁸~तो जब वह खता जो उसने की है उसे बता दी जाए, तो वह अपनी उस खता के लिए जो उससे सरज़द हुई है, एक बे-'ऐब बकरी लाए।

²⁹~और वह अपना हाथ खता की कुर्बानी के जानवर के सिर पर रखे, और खता की कुर्बानी के उस जानवर को सोखतनी कुर्बानी की जगह पर ज़बह करे।

³⁰और काहिन उसका कुछ खून अपनी उँगली पर ले कर उसे सोखतनी कुर्बानी के मज़बह के सींगों पर लगाए, और उसका बाक़ी सब खून मज़बह के पाए पर उँडेल दे;

³¹~और वह उसकी सारी चर्बी को अलग करे जैसे सलामती के ज़बीहे की चर्बी अलग की जाती है, और काहिन उसे मज़बह पर राहतअंगेज़ खुशबू के तौर पर खुदावन्द के लिए जलाए। यूँ काहिन उसके लिए कफ़़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।

³²~और अगर खता की कुर्बानी के लिए उसका हदिया बर्बा हो, तो वह बे-'ऐब मादा लाए; ³³और अपना हाथ खता की कुर्बानी के जानवर के सिर पर रखे; और उसे खता की कुर्बानी के तौर पर उस जगह ज़बह करे जहाँ सोखतनी कुर्बानी ज़बह करते हैं। "

³⁴और काहिन खता की कुर्बानी का कुछ खून अपनी उँगली पर लेकर उसे सोखतनी कुर्बानी के मज़बह के सींगों पर लगाए, और उसका बाक़ी सब खून मज़बह के पाये पर उँडेल दे। ³⁵~और उसकी सब चर्बी को अलग करे जैसे सलामती के ज़बीहे के बर्रे की चर्बी अलग की जाती है। और काहिन उसको मज़बह पर खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों के ऊपर जलाए। यूँ काहिन उसके लिए उसकी खता का जो उससे हुई है कफ़़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।

Chapter 5

¹और ~अगर कोई इस तरह खता करे कि~वह गवाह हो और उसे क्रसम दी जाए कि जैसे उसने कुछ देखा या उसे कुछ मा'लूम है, और वह न बताए, तो उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।²~या अगर कोई शख्स किसी नापाक चीज़ को छू ले, चाहे वह नापाक जानवर या नापाक चौपाये या नापाक रेंगनेवाले जानदार की लाश हो, तो चाहे उसे मा'लूम भी न हो कि वह नापाक हो गया है तो भी वह मुजरिम ठहरेगा।

³या अगर वह इन्सान की उन नजासतों में से जिनसे वह नजिस हो जाता है, किसी नजासत को छू ले और उसे मा'लूम न हो, तो वह उस वक़्त मुजरिम ठहरेगा जब उसे मा'लूम हो जाएगा।⁴~या अगर कोई बग़ैर सोचे अपनी ज़बान से बुराई या भलाई करने की क्रसम खाले, तो क्रसम खा कर वह आदमी चाहे कैसी ही बात बग़ैर सोचे कह दे, बशर्ते कि उसे मा'लूम न हो, तो ऐसी बात में मुजरिम उस वक़्त ठहरेगा जब उसे मा'लूम हो जाएगा।

⁵और जब वह इन बातों में से किसी में मुजरिम हो, तो जिस अम्र में उससे खता हुई है वह उसका इक्रार करे,⁶~और खुदावन्द के सामने अपने जुर्म की कुर्बानी लाए; या'नी जो खता उससे हुई है उसके लिए रेवड़ में से एक मादा, या'नी एक भेड़ या बकरी खता की कुर्बानी के तौर पर पेश करे, और काहिन उसकी खता का कफ़फ़ारा दे

⁷~"और अगर उसे भेड़ देने का मक़दूर न हो, तो वह अपनी खता के लिए जुर्म की कुर्बानी के तौर पर दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे खुदावन्द के सामने पेश करे; एक खता की कुर्बानी के लिए और दूसरा सोखतनी कुर्बानी के लिए।⁸वह उन्हें काहिन के पास ले आए जो पहले उसे जो खता की कुर्बानी के लिए है पेश करे, और उसका सिर गर्दन के पास से मरोड़ डाले पर उसे अलग न करे,⁹और खता की कुर्बानी का कुछ खून मज़बह के पहलू पर छिड़के और बाक़ी खून को मज़बह के पाये पर गिर जाने दे; यह खता की कुर्बानी है।

¹⁰~और दूसरे परिन्दे को हुक्म के मुवाफ़िक़ सोखतनी कुर्बानी के तौर पर अदा करे यूँ काहिन उसकी खता का जो उसने की है कफ़फ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।

¹¹~और अगर उसे दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लाने का भी मक़दूर न हो, तो अपनी खता के लिए अपने हृदिये के तौर पर, ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा खता की कुर्बानी के लिए लाए। उस पर न तो वह तेल डाले, न लुबान रखवे, क्योंकि यह खता की कुर्बानी है।

¹²~वह उसे काहिन के पास लाए, और काहिन उसमें से अपनी मुट्ठी भर कर उसकी यादगारी का हिस्सा मज़बह पर खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानी के ऊपर जलाए। यह खता की कुर्बानी है।¹³यूँ काहिन उसके लिए इन बातों में से, जिस किसी में उससे खता हुई है उस खता का कफ़फ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी; और जो कुछ बाक़ी रह जाएगा, वह नज़्र की कुर्बानी की तरह काहिन का होगा।"

¹⁴~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;¹⁵अगर खुदावन्द की पाक चीज़ों में किसी से तक्रसीर हो और वह अनजाने में खता करे, तो वह अपने जुर्म की कुर्बानी के तौर पर रेवड़ में से बे-'ऐब मेंढा खुदावन्द के सामने अदा करे। जुर्म की कुर्बानी के लिए उसकी क्रीमत हैकल की मिस्काल के हिसाब से चाँदी की उतनी ही मिस्कालें हों, जितनी तू मुक्रर कर दे।¹⁶~और जिस पाक चीज़ में उससे तक्रसीर हुई है वह उसका मु'आवज़ा दे, और उसमें पाँचवाँ हिस्सा और बढ़ा कर उसे काहिन के हवाले करे। यूँ काहिन जुर्म की कुर्बानी का मेंढा पेश कर उसका कफ़फ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।

¹⁷~'और अगर कोई खता करे, और उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह यह बात जानता भी न हो तो भी मुजरिम ठहरेगा; और उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।¹⁸तब वह रेवड़ में से एक बे-'ऐब मेंढा उतने ही दाम का, जो तू मुक्रर कर दे, जुर्म की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाए। यूँ काहिन उसकी उस बात का, जिसमें उससे अनजाने में चूक हो गई कफ़फ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।¹⁹~यह जुर्म की कुर्बानी है, क्योंकि वह यक़ीनन खुदावन्द के आगे मुजरिम है।"

Chapter 6

¹फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"अगर किसी से यह खता हो कि वह खुदावन्द का कुसूर करे, और अमानत या लेन-देन या लूट के मु'आमिले में अपने पड़ोसी को धोखा दे, या अपने पड़ोसी पर जुल्म करे,³~या किसी खोई हुई चीज़ को पाकर धोखा दे, और झूठी क़सम भी खा ले; तब इनमें से चाहे कोई बात हो जिसमें किसी शख्स से खता हो गई है,⁴इसलिए अगर उससे खता हुई है और वह मुजरिम ठहरा है, तो जो चीज़ उसने लूटी, या जो चीज़ उसने जुल्म करके छीनी, या जो चीज़ उसके पास अमानत थी, या जो खोई हुई चीज़ उसे मिली,

⁵~या जिस चीज़ के बारे में उसने झूठी क़सम खाई; उस चीज़ को वह ज़रूर पूरा-पूरा वापस करे, और असल के साथ पाँचवा हिस्सा भी बढ़ा कर दे। जिस दिन यह मा'लूम हो कि वह मुजरिम है, उसी दिन वह उसे उसके मालिक को वापस दे;⁶~और अपने जुर्म की कुर्बानी खुदावन्द के सामने अदा करे, और जितना दाम तू मुक़र्रर करे उतने दाम का एक बे-'ऐब मेंढा रेवड़ में से जुर्म की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाए।"⁷यूँ कहिन उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दे, तो जिस काम को करके वह मुजरिम ठहरा है उसकी उसे मु'आफ़ी मिलेगी।"

⁸~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,⁹~"हारून और उसके बेटों को यूँ हुक्म दे कि सोख्तनी कुर्बानी के बारे में शरा' यह है, कि सोख्तनी कुर्बानी मज़बह के ऊपर आतिशदान पर तमाम रात सुबह तक रहे, और मज़बह की आग उस पर जलती रहे।

¹⁰और काहिन अपना कतान का लिबास पहने और कतान के पाजामे को अपने तन पर डाले और आग ने जो सोख्तनी कुर्बानी को मज़बह पर भसम करके राख कर दिया है, उस राख को उठा कर उसे मज़बह की एक तरफ़ रखे।"¹¹~फिर वह अपने लिबास को उतार कर दूसरे कपड़े पहने, और उस राख को उठा कर लश्करगाह के बाहर किसी साफ़ जगह में ले जाए।

¹²और मज़बह पर आग जलती रहे, और कभी बुझने न पाए; और काहिन हर सुबह को उस पर लकड़ियाँ जला कर सोख्तनी कुर्बानी को उसके ऊपर चुन दे, और सलामती के ज़बीहों की चर्बी को उसके ऊपर जलाया करे।"¹³~मज़बह पर आग हमेशा जलती रखी जाए; वह कभी बुझने न पाए।

¹⁴नज़्र की कुर्बानी~'और नज़्र की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है, कि हारून के बेटे उसे मज़बह के आगे खुदावन्द के सामने पेश करें।"¹⁵और वह नज़्र की कुर्बानी में से अपनी मुट्ठी भर इस तरह निकाले कि उसमें थोड़ा सा मैदा और कुछ तेल जो उसमें पड़ा होगा और नज़्र की कुर्बानी का सब लुबान आ जाए, और इस~यादगारी के हिस्से को मज़बह पर खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू के तौर पर जलाए।

¹⁶~और जो बाक़ी बचे उसे हारून और उसके बेटे खाएँ, वह बग़ैर खमीर के पाक जगह में खाया जाए, या'नी वह खेमा-ए- इजितमा'अ के सहन में उसे खाएँ।

¹⁷वह खमीर के साथ पकाया न जाए; मैंने यह अपनी आतिशीन कुर्बानियों में से उनका हिस्सा दिया है, और यह खता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी की तरह बहुत पाक है।"¹⁸~हारून की औलाद के सब मर्द उसमें से खाएँ। तुम्हारी नसल-दर-नसल की आतिशी कुर्बानियों में से यह उनका हक़ होगा। जो कोई उन्हें छुए वह पाक ठहरेगा।"

¹⁹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,²⁰~'जिस दिन हारून को मसह किया जाए उस दिन वह और उसके बेटे खुदावन्द के सामने यह हदिया अदा करें, कि ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, आधा सुबह को और आधा शाम को, हमेशा नज़्र की कुर्बानी के लिए लाएँ।

²¹~वह तवे पर तेल में पकाया जाए; जब वह तर हो जाए तो तू उसे ले आना। इस नज़्र ~की कुर्बानी को पकवान के टुकड़ों की सूरत में पेश करना ताकि वह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू भी हो।"²²और जो उसके बेटों में से उसकी जगह काहिन मम्सूह हो वह उसे पेश करे। यह हमेशा का क़ानून होगा कि वह खुदावन्द के सामने बिल्कुल जलाया जाए।"²³~काहिन की हर एक नज़्र की कुर्बानी बिल्कुल जलाई जाए; वह कभी खाई न जाए।"

²⁴~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²⁵~"हारून और उसके बेटों से कह कि खता की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है, कि जिस जगह सोख्तनी कुर्बानी का जानवर ज़बह किया जाता है, वहीं खता की कुर्बानी का जानवर भी खुदावन्द के आगे ज़बह किया जाए; वह बहुत पाक है।"²⁶~जो काहिन उसे खता के लिए पेश करे वह उसे खाए: वह पाक जगह में, या'नी खेमा-ए-इजितमा'अ के सहन में खाया जाए।

²⁷~जो कुछ उसके गोश्त से छू जाए वह पाक ठहरेगा, और अगर किसी कपड़े पर उसके खून की छिट पड़ जाए, तो जिस कपड़े पर उसकी छींट पड़ी है तू उसे किसी पाक जगह में धोना।"²⁸~और मिट्टी का वह बर्तन जिसमें वह पकाया जाए तोड़ दिया जाए, लेकिन अगर वह पीतल के बर्तन में पकाया जाए तो उस बर्तन की माँज कर पानी से धो लिया जाए।

²⁹~और काहिनों में से हर मर्द उसे खाए; वह बहुत पाक है।"³⁰~लेकिन जिस खता की कुर्बानी का कुछ खून खेमा-ए-इजितमा'अ के अन्दर पाक मक़ाम में कफ़ारे के लिए पहुँचाया गया है, उसका गोश्त कभी न खाया जाए; बल्कि वह आग से जला दिया जाए।

Chapter 7

¹~"और जुर्म की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है। वह बहुत पाक है।²~जिस जगह सोखतनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह करते हैं, वहीं वह जुर्म की कुर्बानी के जानवर को भी ज़बह करें; और वह उसके खून को मज़बह के चारों तरफ़ छिड़के।³~और वह उसकी सब चर्बी को चढ़ाए, या'नी उसकी मोटी दुम को, और उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं⁴~और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दों के साथ: इन सबको वह अलग करे।

⁵~और काहिन उनको मज़बह पर खुदावन्द के सामने आतिशीन कुर्बानी के तौर पर जलाए, यह जुर्म की कुर्बानी है।⁶~और काहिनों में से हर मर्द उसे खाए और किसी पाक जगह में उसे खाएँ; वह बहुत पाक है।

⁷~जुर्म की कुर्बानी वैसी ही है ~जैसी खता की कुर्बानी है और उनके लिए एक ही शरा' है, और उन्हें वही काहिन ले जो उनसे कफ़ारा देता है⁸~और जो काहिन किसी शख्स की तरफ़ से सोखतनी कुर्बानी पेश करता है वही काहिन उस सोखतनी कुर्बानी की खाल को जो उसने पेश की, अपने लिए ले-ले।

⁹और हर एक नज़्र ~की कुर्बानी जो तनूर में पकाई जाए, और वह भी जी कड़ाही में तैयार की जाए, और तवे की पकी हुई भी उसी~काहिन की है जो उसे पेश करे।¹⁰~और हर एक नज़्र की कुर्बानी चाहे उसमें तेल मिला हुआ हो या वह खुश्क हो, बराबर-बराबर हारून के सब बेटों के लिए हो।

¹¹और सलामती के ज़बीहे के बारे में जिसे कोई खुदावन्द के सामने चढ़ाए शरा' यह है,¹²~कि वह अगर शुक्राने के तौर पर उसे अदा करे तो वह शुक्राने के ज़बीहे के साथ, तेल मिले हुए बे-खमीरी कुल्चे और तेल चुपड़ी हुई बे-खमीरी चपातियाँ और तेल मिले हुए मैदे के तर कुल्चे भी पेश करे।

¹³~और सलामती के ज़बीहे की कुर्बानी के साथ जो शुक्राने के लिए होगी, वह खमीरी रोटी के गिर्द अपने हृदिये पर पेश करे।¹⁴~और हर हृदिये में से वह एक को लेकर उसे खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर अदा करे; और यह उस काहिन का ही जो सलामती के ज़बीहे का खून छिड़कता है।

¹⁵~और सलामती के ज़बीहों की उस कुर्बानी का गोश्त, जो उस की तरफ़ से शुक्राने के तौर पर होगी, कुर्बानी अदा करने के दिन ही खा लिया जाए; वह उसमें से कुछ सुबह तक बाक़ी न छोड़े।¹⁶~लेकिन अगर उसके चढ़ावे की कुर्बानी मिन्नत का या रज़ा का हृदिया हो, तो वह उस दिन खाई जाए जिस दिन वह अपनी कुर्बानी पेश करे; और जो कुछ उस में से बच रहे, वह दूसरे दिन खाया जाए।

¹⁷~लेकिन जो कुछ उस कुर्बानी के गोश्त में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए।¹⁸~और उसके सलामती के ज़बीहों की कुर्बानी के गोश्त में से अगर कुछ तीसरे दिन खाया जाए तो वह मंज़ूर न होगा, और न उस का सवाब कुर्बानी देने वाले की तरफ़ मन्सूब होगा, बल्कि यह मकरूह बात होगी; और जो उस में से खाए उस का गुनाह उसी के सिर लगेगा।

¹⁹और जो गोश्त किसी नापाक चीज़ से छू जाए, खाया न जाए; वह आग में जलाया जाए। और ज़बीहे के गोश्त को, जो पाक है वह तो खाए,²⁰~लेकिन जो शख्स नापाकी की हालत में खुदावन्द की सलामती के ज़बीहे का गोश्त खाए, वह अपने लोगों में से काट डाला जाए।

²¹~और जो कोई किसी नापाक चीज़ को छुए, चाहे वह इन्सान की नापाकी हो या नापाक जानवर हो या कोई नजिस मकरूह शय हो, और फिर खुदावन्द के सलामती के ज़बीहे के गोश्त में से खाए, वह भी अपने लोगों में से काट डाला जाए।"

²²~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²³~"बनी-इसाईल से कह, कि तुम लोग न तो बैल की न भेड़ की और न बकरी की कुछ चर्बी खाना।²⁴जो जानवर खुद-ब-खुद मर गया हो और जिस को दरिन्दों ने फाड़ा हो, उनकी चर्बी ~और-और काम में लाओ तो लाओ पर उसे तुम किसी हाल में न खाना।

²⁵~क्योंकि जो कोई ऐसे चौपाये की चर्बी खाए, जिसे लोग आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने चढ़ाते हैं, वह खाने वाला आदमी अपने लोगों में से काट डाला जाए।²⁶~और तुम अपनी सुकूनतगाहों में कहीं भी किसी तरह का खून चाहे परिन्दे का हो या चौपाये का, हरगिज़ न खाना।²⁷~जो कोई किसी तरह का खून खाए, वह शख्स अपने लोगों में से काट डाला जाए।"

²⁸और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²⁹"बनी-इसाईल से कह कि जो कोई अपना सलामती का ज़बीहा खुदावन्द के सामने पेश करे, वह खुद ही अपने सलामती के ज़बीहे की कुर्बानी में से अपना हृदिया खुदावन्द के सामने लाए "³⁰~वह अपने ही हाथों में खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी को लाए, या'नी चर्बी को सीने के साथ लाए कि सीना हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए।

³¹~और काहिन चर्बी ~को मज़बह पर जलाए, लेकिन सीना हारून और उसके बेटों का हो।³²~और तुम सलामती के ज़बीहों की दहनी रान उठाने की कुर्बानी के तौर पर काहिन को देना।

³³~हारून के बेटों में से जो सलामती के ज़बीहों का खून और चर्बी पेश करे, वही वह दहनी रान अपना हिस्सा ले।³⁴~क्योंकि बनीइसाईल के सलामती के ज़बीहों में से हिलाने की कुर्बानी का सीना और उठाने की कुर्बानी की रान को लेकर, मैंने हारून काहिन और उसके बेटों को दिया है, कि यह हमेशा बनीइसाईल की तरफ़ से उन का हक़ हो।

³⁵~"यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से हारून के मन्सूह होने का और उसके बेटों के मन्सूह होने का हिस्सा है, जो उस दिन मुकर्रर हुआ जब वह खुदावन्द के सामने काहिन की खिदमत को अंजाम देने के लिए हाज़िर किए गए।³⁶~या'नी जिस दिन खुदावन्द ने उन्हें मसह किया, उस दिन उसने यह हुक्म दिया कि बनी-इसाईल की तरफ़ से उन्हें यह मिला करे; इसलिए उन की नसल-दर-नसल यह उन का हक़ रहेगा।"

³⁷~सोखतनी कुर्बानी, और नज़्र की कुर्बानी, और खता की कुर्बानी, और जुर्म की कुर्बानी, और तख़सीस और सलामती के ज़बीहे के बारे में शरा' यह है।

³⁸~जिसका हुक्म खुदावन्द ने मूसा को उस दिन कोह-ए-सीना पर दिया जिस दिन उसने बनी-इसाईल को फ़रमाया, कि सीना के वीराने में खुदावन्द के सामने अपनी कुर्बानी पेश करें।

Chapter 8

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"हारून और उसके साथ उसके बेटों को, और लिबास, को और मसह करने के तेल को, और खता की कुर्बानी के बछड़े और दोनों मेंढों और बे-खमीरी रोटियों की टोकरी को ले;³~और सारी जमा'अत को खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर जमा' कर।"

⁴चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक 'अमल किया; और सारी जमा'अत खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर जमा' हुई।⁵~तब मूसा ने जमा'अत से कहा, 'यह वह काम है, जिसके करने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है।"

⁶~फिर मूसा हारून और उसके बेटों को आगे लाया और उन को पानी से गुस्ल दिलाया।⁷~और उसको कुरता पहना कर उस पर कमरबन्द लपेटा, और उसको जुब्बा पहना कर उस पर अफ़ोद लगाया और अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए कमरबन्द को उस पर लपेटा, और उसी से उसको उसके ऊपर कस दिया।

⁸~और सीनाबन्द को उसके ऊपर लगा कर सीनाबन्द में ऊरीम और तुम्मीम लगा दिए।⁹~और उसके सिर पर 'अमामा रखवा और 'अमामे पर सामने सोने के पत्तर या'नी पाक ताज को लगाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

¹⁰~और मूसा ने मसह करने का तेल लिया; और घर को और जो कुछ उसमें था सब को मसह कर के पाक किया।¹¹~और उस में से थोड़ा सा लेकर मज़बह पर सात बार छिड़का; और मज़बह और उसके सब बर्तनों को, और हौज़ और उसकी कुर्सी को मसह किया, ताकि उन्हें पाक करे।

¹²~और मसह करने के तेल में से थोड़ा सा हारून के सिर पर डाला और उसे मसह किया ताकि वह पाक हो।¹³~फिर मूसा हारून के बेटों को आगे लाया और उन को कुरते पहनाए, और उन पर कमरबन्द लपेटे, और उनको पगड़ियाँ पहनाई जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

¹⁴~और वह खता की कुर्बानी के बछड़े को आगे लाया, और हारून और उसके बेटों ने अपने-अपने हाथ खता की कुर्बानी के बछड़े के सिर पर रखे।¹⁵~फिर उसने उसको ज़बह किया, और मूसा ने खून को लेकर मज़बह के चारों तरफ उसके सींगों पर अपनी उँगली से लगाया और मज़बह को पाक किया; और बाक़ी खून मज़बह के पाये पर उँडेल कर उसका कफ़फ़ारा दिया, ताकि वह पाक हो।

¹⁶~और मूसा ने अंतड़ियों के ऊपर की सारी चर्बी, और जिगर पर की झिल्ली, और दोनों गुर्दों और उन की चर्बी को लिया और उन्हें मज़बह पर जलाया;

¹⁷~लेकिन बछड़े को, उसकी खाल और गोशत और गोबर के साथ, लश्करगाह के बाहर आग में जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

¹⁸~फिर उसने सोखतनी कुर्बानी के मेंढे को हाज़िर किया, और हारून और उसके बेटों ने अपने-अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखे।¹⁹और उसने उसको ज़बह किया, और मूसा ने खून को मज़बह के ऊपर चारों तरफ छिड़का।

²⁰~फिर उसने मेंढे के 'उज़्व-उज़्व को काट कर अलग किया, और मूसा ने सिर और 'आज़ा और चर्बी को जलाया।²¹और उसने अंतड़ियों और पायों को पानी से धोया, और मूसा ने पूरे मेंढे को मज़बह पर जलाया। यह सोखतनी कुर्बानी राहतअंगेज़ खुशबू के लिए थी, यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी थी, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

²²और उसने दूसरे मेंढे को जो तख्सीसी मेंढा था हाज़िर किया, और हारून और उसके बेटों ने अपने-अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखे।²³और उसने उस को ज़बह किया, और मूसा ने उसका कुछ खून लेकर उसे हारून के दहने कान की लौ पर, और दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर लगाया।²⁴~फिर वह हारून के बेटों को आगे लाया, और उसी खून में से कुछ उनके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर लगाया; और बाक़ी खून को उसने मज़बह के ऊपर चारों तरफ छिड़का।

²⁵~और उसने चर्बी और मोटी दुम, और अंतड़ियों के ऊपर की चर्बी, और जिगर पर की झिल्ली, और दोनों गुर्दों और उन की चर्बी, और दहनी रान इन सभों को लिया,²⁶और बे-खमीरी रोटियों की टोकरी में से जो खुदावन्द के सामने रहती थी, बे-खमीरी रोटी का एक गिर्दा, और तेल चुपड़ी हुई रोटी का एक गिर्दा, और एक चपाती निकाल कर उन्हें चर्बी और दहनी रान पर रखवा।²⁷और इन सभों को हारून और उसके बेटों के हाथों पर रखकर उन्हें हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खदावन्द के सामने हिलाया।

²⁸~फिर मूसा ने उनको उनके हाथों से ले लिया, और उनको मज़बह पर सोखतनी कुर्बानी के ऊपर जलाया। यह राहतअंगेज़ खुशबू के लिए तख्सीसी कुर्बानी थी। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी थी।²⁹~फिर मूसा ने सीने को लिया, और उसको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। उस तख्सीसी मेंढे में से यही मूसा का हिस्सा था, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

³⁰~और मूसा ने मसह करने के तेल और मज़बह के ऊपर के खून में से कुछ-कुछ लेकर उसे हारून और उसके लिबास पर, और साथ ही उसके बेटों पर और उनके लिबास पर छिड़का; और हारून और उसके लिबास को, और उसके बेटों को और उनके लिबास को पाक किया।

³¹~और मूसा ने हारून और उसके बेटों से कहा कि, "ये गोशत खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर पकाओ, और इसको वहीं उस रोटी के साथ जो तख्सीसी टोकरी में है, खाओ, जैसा मैंने हुक्म किया है कि हारून और उसके बेटे उसे खाएँ।"³²~और इस गोशत और रोटी में से जो कुछ बच रहे उसे आग में जला देना;

³³~और जब तक तुम्हारी तख्सीस के दिन पूरे न हों, तब तक या'नी सात दिन तक, तुम खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े से बाहर न जाना; क्योंकि सात दिन तक वह तुम्हारी तख्सीस करता रहेगा।

³⁴~जैसा आज किया गया है, वैसा ही करने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है ताकि तुम्हारे लिए कफ़फ़ारा हो।³⁵~इसलिए तुम खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर सात रोज़ तक दिन रात ठहरे रहना, और खुदावन्द के हुक्म को मानना, ताकि तुम मर न जाओ; क्योंकि ऐसा ही हुक्म मुझको मिला है।"³⁶तब हारून और उसके बेटों ने सब काम खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक किया जो उस ने मूसा के ज़रिए' दिया था।

Chapter 9

¹~आठवें दिन मूसा ने हारून और उसके बेटों को और बनी-इसाईल के बुजुर्गों को बुलाया और हारून से कहा कि, ²~"खता की-कुर्बानी के लिए एक बे-'ऐब बछड़ा और सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बे-'ऐब मेंढा तू अपने वास्ते ले और उन को खुदावन्द के सामने पेश कर।

³~और बनी-इसाईल से कह, कि तुम खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा, और सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, और एक बर्बा जो यकसाला और बे-'ऐब हों लो।⁴और सलामती के ज़बीहे के लिए खुदावन्द के सामने चढ़ाने के वास्ते एक बैल और एक मेंढा, और तेल मिली हुई नज़ की कुर्बानी भी लो; क्योंकि आज खुदावन्द तुम पर ज़ाहिर होगा।"⁵और वह जो कुछ मूसा ने हुक्म किया था सब खेमा-ए-इज्तिमा'अ के सामने ले आए, और सारी जमा'अत नज़दीक आकर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई।

⁶~मूसा ने कहा, "ये वह काम है जिसके बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है कि तुम उसे करो, और खुदावन्द का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।"⁷और मूसा ने हारून से कहा, कि मज़बह के नज़दीक जा और अपनी खता की कुर्बानी और अपनी सोखतनी कुर्बानी पेश कर और अपने लिए और क्रौम के लिए कफ़ारा दे, और जमा'अत के हृदये को पेश कर और उनके लिए कफ़ारा दे जैसा खुदावन्द ने हुक्म किया है।"

⁸~तब हारून ने मज़बह के पास जाकर उस बछड़े को जो उसकी खता की कुर्बानी के लिए था ज़बह किया।⁹और हारून के बेटे खून को उसके पास ले गए, और उस ने अपनी उँगली उस में डुबो-डुबो कर उसे मज़बह के सींगों पर लगाया और बाक़ी खून मज़बह के पाये पर उँडेल दिया।

¹⁰~लेकिन खता की कुर्बानी की चर्बी, और गुर्दों और जिगर पर की झिल्ली को उसने मज़बह पर जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।¹¹~और गोश्त और खाल को लश्करगाह के बाहर आग में जलाया।

¹²~फिर उसने सोखतनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह किया, और हारून के बेटों ने खून उसे दिया और उसने उसको मज़बह के चारों तरफ़ छिड़का।¹³~और सोखतनी कुर्बानी को एक-एक टुकड़ा कर के, सिर के साथ उसको दिया और उसने उन्हें मज़बह पर जलाया।¹⁴~और उसने अंतड़ियों और पायों को धोया और उनको मज़बह पर सोखतनी कुर्बानी के उपर जलाया।

¹⁵~फिर जमा'अत के हृदये को आगे लाकर, और उस बकरे को जो जमा'अत की खता की कुर्बानी के लिए था लेकर उस को ज़बह किया, और पहले की तरह उसे भी खता के लिए पेश करा।¹⁶और सोखतनी कुर्बानी के जानवर को आगे लाकर, उसने उसे हुक्म के मुताबिक़ पेश किया।¹⁷ फिर नज़ की कुर्बानी को आगे लाया, और उसमें से एक मुट्ठी लेकर सुबह की सोखतनी कुर्बानी के 'अलावा उसे जलाया।

¹⁸और उसने बैल और मेंढे को, जो लोगों की तरफ़ से सलामती के ज़बीहे थे, ज़बह किया; और हारून के बेटों ने खून उसे दिया, और उसने उसको मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़का।¹⁹और उन्होंने बैल की चर्बी को, और मेंढे की मोटी दुम को, और उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और दोनों गुर्दों, और जिगर पर की झिल्ली को भी उसे दिया;

²⁰~और चर्बी सीनों पर धर दी। तब उसने वह चर्बी मज़बह पर जलाई,²¹~और सीना और दहनी रान को हारून ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया।

²²~और हारून ने जमा'अत की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाकर उनको बरकत दी; ~और खता की कुर्बानी और सोखतनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी पेश करके नीचे उतर आया।²³~और मूसा और हारून खेमा-ए- इज्तिमा'अ में दाखिल हुए, और बाहर निकल कर लोगों को बरकत दी; तब सब लोगों पर खुदावन्द का जलाल नमूदार हुआ।²⁴~और खुदावन्द के सामने से आग निकली और सोखतनी कुर्बानी और चर्बी को मज़बह के ऊपर भसम कर दिया; लोगों ने यह देख कर ना'रे मारे और-सरनगूँ हो गए।

Chapter 10

¹~और नदब और अबीहू ने जो हारून के बेटे थे, अपने-अपने खुशबूदान को लेकर उनमें आग भरी, और उस पर और ऊपरी आग जिस का हुक्म खुदावन्द ने उनको नहीं दिया था, खुदावन्द के सामने पेश कीं।²और खुदावन्द के सामने से आग निकली और उन दोनों को खा गई, और वह खुदावन्द के सामने मर गए।

³~तब मूसा ने हारून से कहा, "यह वही बात है जो खुदावन्द ने कही थी, कि जो मेरे नज़दीक आएँ ज़रूर है कि वह मुझे पाक जानें, और सब लोगों के आगे मेरी तम्जीद करें।" और हारून चुप रहा।⁴~फिर मूसा ने मीसाएल और अलसफ़न को जो हारून के चचा उज़्ज़ीएल के बेटे थे, बुला कर उन से कहा, "नज़दीक आओ, और अपने भाइयों को हैकल के सामने से उठा कर लश्करगाह के बाहर ले जाओ।"

⁵~तब वह नज़दीक गए, और उन्हें उनके कुरतों के साथ उठाकर मूसा के हुक्म के मुताबिक़ लश्करगाह के बाहर ले गए।⁶~और मूसा ने हारून और उसके बेटों, इली'अज़र और इतमर से कहा, कि न तुम्हारे सिर के बाल बिखरने पाएँ, और न तुम अपने कपड़े फाड़ना, ताकि न तुम ही मरो, और न सारी जमा'अत पर उसका ग़ज़ब नाज़िल हो; लेकिन इस्राईल के सब घराने के लोग जो तुम्हारे भाई हैं, उस आग पर जो खुदावन्द ने लगाई है नोहा करें।⁷~और तुम खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े से बाहर न जाना, ता ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; क्योंकि खुदावन्द का मसह करने का तेल तुम पर लगा हुआ है। इसलिए उन्होंने मूसा के कहने के मुताबिक़ 'अमल किया।

⁸~और खुदावन्द ने हारून से कहा, कि⁹~"तू या तेरे बेटे मय या शराब पीकर कभी खेमा-ए-इजितमा'अ के अन्दर दाखिल न होना, ताकि तुम मर न जाओ। यह तुम्हारे लिए नसल-दर-नसल हमेशा तक एक क़ानून रहेगा;¹⁰~ताकि तुम पाक और 'आम अशिया में, और पाक और नापाक में तमीज़ कर सको;¹¹और बनी-इस्राईल को वह सब तौर-तरीक़े सिखा सको जो खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' उनको फ़रमाए हैं।"

¹²~फिर मूसा ने हारून और उसके बेटों, इली'अज़र और इतमर से जो बाक़ी रह गए थे कहा, कि "खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से जो नज़ की कुर्बानी बच रही है उसे ले लो, और बग़ैर खमीर के उसको मज़बह के पास खाओ, क्योंकि यह बहुत पाक है;¹³और तुम उसे किसी पाक जगह में खाना, इसलिए खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से तेरा और तेरे बेटों का यह हक़ है; क्योंकि मुझे ऐसा ही हुक्म मिला है।

¹⁴~और हिलाने की कुर्बानी के सीने को, और उठाने की कुर्बानी की रान को तुम लोग या'नी तेरे साथ तेरे बेटे और बेटियाँ भी, किसी साफ़ जगह में खाना; क्योंकि बनी-इस्राईल की सलामती के ज़बीहो में से यह तेरा और तेरे बेटों का हक़ है जो दिया गया है।¹⁵~और उठाने की कुर्बानी की रान और हिलाने की कुर्बानी का सीना, जिसे वह चर्बी की आतिशी कुर्बानियों के साथ लाएँगे, ताकि वह खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाए जाएँ। यह दोनों हमेशा के लिए खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ तेरा और तेरे बेटों का हक़ होगा।"

¹⁶~फिर मूसा ने खता की कुर्बानी के बकरे को जो बहुत तलाश किया, तो क्या देखता है कि वह जल चुका है। तब वह हारून के बेटों इली'अज़र और इतमर पर, जो बच रहे थे, नाराज़ हुआ और कहने लगा कि,¹⁷~"खता की कुर्बानी जो बहुत पाक है और जिसे खुदावन्द ने तुम को इसलिए दिया है कि तुम जमा'अत के गुनाह को अपने ऊपर उठा कर खुदावन्द के सामने उनके लिए कफ़़ारा दो, तुम ने उसका गोشت हैकल में क्यूँ न खाया?"¹⁸~देखो, उसका खून हैकल में तो लाया ही नहीं गया था। पस तुम्हें लाज़िम था कि मेरे हुक्म के मुताबिक़ तुम उसे हैकल में खा लेते।"

¹⁹~तब हारून ने मूसा से कहा, "देख, आज ही उन्होंने अपनी खता की कुर्बानी और अपनी सोखतनी कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश कीं, और मुझ पर ऐसे-ऐसे हादसे गुज़र गए। तब अगर मैं आज खता की कुर्बानी का गोشت खाता तो क्या यह बात खुदावन्द की नज़र में भली होती?"²⁰~जब मूसा ने यह सुना तो उसे पसन्द आया।

Chapter 11

¹फिर ~खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,²~"तुम बनी-इसाईल से कहो कि ज़मीन के सब ~हैवानात में से जिन जानवरों को तुम खा सकते हो वह यह हैं।

³~जानवरों में जिनके पाँव अलग और चिरे हुए हैं और वह जुगाली करते हैं, तुम उनको ~खाओ।⁴~मगर जो जुगाली करते हैं या जिनके पाँव अलग हैं, उन में से तुम इन जानवरों को न खाना; या'नी ऊँट को, क्योंकि वह जुगाली करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, इसलिए वह तुम्हारे लिए नापाक है।

⁵~और साफ़ान को, क्योंकि वह जुगाली करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है।⁶~और खरगोश को, क्योंकि वह जुगाली तो करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है।⁷~और सूअर को, क्योंकि उसके पाँव अलग और चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है।⁸~तुम उनका गोشت न खाना और उन की लाशों को न छूना, वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

⁹~"जो जानवर पानी में रहते हैं उन में से तुम इनको खाना, या'नी समन्दरों और दरियाओं वगैरह के जानवरों में, जिनके पर और छिल्के हों तुम उन्हें खाओ।

¹⁰~लेकिन वह सब जानदार जो पानी में या'नी समन्दरों और दरियाओं~वगैरह~में चलते फिरते और रहते हैं, लेकिन उनके पर और छिल्के नहीं होते, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

¹¹~और वह तुम्हारे लिए मकरूह ही रहें। तुम उनका गोشت न खाना और उन की लाशों से कराहियत करना।¹²~पानी के जिस किसी जानदार के न पर हों और न छिल्के, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

¹³~'और परिन्दों में जो मकरूह होने की वजह से कभी खाए न जाएँ और जिन से तुम्हें कराहियत करना है वो यह हैं। 'उक्काब और उस्तख्वान ख्वार और लगड़,

¹⁴और चील और हर क्रिस्म का बाज़,¹⁵~और हर क्रिस्म के कव्वे,¹⁶~और शूतरमुर्ग और चुगद और कोकिल और हर क्रिस्म के शाहीन,

¹⁷~और बूम और हड़गीला और उल्लू,¹⁸और क्राज़ और हवासिल और गिद्ध,¹⁹~और लकलक और सब क्रिस्म के बगुले और हुद-हुद, और चमगादड़।

²⁰~"और सब परदार रेंगेने वाले जानदार जितने चार पाँवों के बल चलते हैं, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।²¹~मगर परदार रेंगेने वाले जानदारों में से जो चार पाँव के बल चलते हैं तुम उन जानदारों को खा सकते हो, जिनके ज़मीन के ऊपर कूदने फाँदने को पाँव के ऊपर टाँगें होती हैं,²²~वह जिन्हें तुम खा सकते हो यह हैं, हर क्रिस्म की टिड्डी और हर क्रिस्म का सुलि'आम और हर क्रिस्म का झींगर और हर क्रिस्म का टिड्डा।²³~लेकिन सब परदार रेंगेने वाले जानदार जिनके चार पाँव हैं, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

²⁴~'और इन से तुम नापाक ठहरोगे, जो कोई इन में से किसी की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।²⁵और जो कोई इन की लाश में से कुछ भी उठाए वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा।

²⁶और सब चारपाए जिनके पाँव अलग हैं लेकिन वह चिरे हुए नहीं और न वह जुगाली करते हैं, वह तुम्हारे लिए नापाक हैं; जो कोई उन को छुए वह नापाक ठहरेगा।²⁷~और चार पाँवों पर चलने वाले जानवरों में से जितने अपने पंजों के बल चलते हैं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक हैं। जो कोई उन की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।²⁸~और जो कोई उन की लाश को उठाए वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा। यह सब तुम्हारे लिए नापाक हैं।

²⁹~"और ज़मीन पर के रेंगेने वाले जानवरों में से जो तुम्हारे लिए नापाक हैं वह यह हैं, या'नी नेवला और चूहा और हर क्रिस्म की बड़ी छिपकली,³⁰और हिरजून और गोह और छिपकली और सान्धा और गिरगिट।

³¹~सब रेंगेने वाले जानदारों में से यह तुम्हारे लिए नापाक हैं, जो कोई उनके मरे पीछे उन को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।³²और जिस चीज़ पर वह मरे पीछे गिरे वह चीज़ नापाक होगी, चाहे वह लकड़ी का बर्तन हो या कपड़ा या चमड़ा या बोरा हो, चाहे किसी का कैसा ही बर्तन हो, ज़रूर है कि वह पानी में डाला जाए और वह शाम तक नापाक रहेगा, इस के बा'द वह पाक ठहरेगा।³³~और अगर इनमें से कोई किसी मिट्टी के बर्तन में गिर जाए तो जो कुछ उस में है वह नापाक होगा, और बर्तन को तुम तोड़ डालना।

³⁴~उसके अन्दर अगर खाने की कोई चीज़ हो जिस में पानी पड़ा हुआ हो, तो वह भी नापाक ठहरेगी; और अगर ऐसे बर्तन में पीने के लिए कुछ हो तो वह नापाक होगा।³⁵~और जिस चीज़ पर उनकी लाश का कोई हिस्सा गिरे, चाहे वह तनूर हो या चूल्हा, वह नापाक होगी और तोड़ डाली जाए। ऐसी चीज़ें नापाक होती हैं और वह तुम्हारे लिए भी नापाक हों,

³⁶~मगर चश्मा या तालाब जिस में बहुत पानी हो वह पाक रहेगा, लेकिन जो कुछ उन की लाश से छू जाए वह नापाक होगा।³⁷~और अगर उन की लाश का कुछ हिस्सा किसी बौने के बीज पर गिरे तो वह बीज पाक रहेगा,³⁸~लेकिन अगर बीज पर पानी डाला गया हो और इसके बा'द उन की लाश में से कुछ उस पर गिरा हो, तो वह तुम्हारे लिए नापाक होगा।

³⁹~"और जिन जानवरों को तुम खा सकते हो, अगर उन में से कोई मर जाए तो जो कोई उस की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।⁴⁰और जो कोई उनकी लाश में से कुछ खाए, वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा; और जो कोई उन की लाश को उठाए, वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा।

⁴¹~'और सब रेंगेने वाले जानदार जो ज़मीन पर रेंगेते हैं, मकरूह हैं और कभी खाए न जाएँ।⁴²~और ज़मीन पर के सब रेंगेने वाले जानदारों में से, जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते हैं या जिनके बहुत से पाँव होते हैं, उनको तुम न खाना क्योंकि वह मकरूह हैं।

⁴³~और तुम किसी रेंगेने वाले जानदार की वजह से जो ज़मीन पर रेंगता है, अपने आप को मकरूह न बना लेना और न उन से अपने आप को नापाक करना के नजिस हो जाओ;⁴⁴क्योंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, इसलिए अपने आप को पाक करना और पाक होना क्योंकि मैं कुदूस हूँ, इसलिए तुम किसी तरह के रेंगेने वाले जानदार से जो ज़मीन पर चलता है, अपने आप को नापाक न करना;⁴⁵~क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ, और तुमको मुल्क-ए-मिस्र से इसी लिए निकाल कर लाया हूँ कि मैं तुम्हारा खुदा ठहरूँ। इसलिए तुम पाक होना क्योंकि मैं कुदूस हूँ।"

⁴⁶~हैवानात, और परिन्दों, और आबी जानवरों, और ज़मीन पर के सब रेंगेने वाले जानदारों के बारे में शरा' यही है;⁴⁷~ताकि पाक और नापाक में, और जो जानवर खाए जा सकते हैं और जो नहीं खाए जा सकते, उनके बीच इम्तियाज़ किया जाए।

Chapter 12

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"बनी-इस्राईल से कह कि अगर कोई 'औरत हामिला हो, और उसके लड़का हो तो वह सात दिन तक नापाक रहेगी; जैसे हैज़ के दिनों में रहती है।'³~और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए।

⁴~इसके बा'द तैतीस दिन तक वह तहारत के खून में रहे, और जब तक उसकी तहारत के दिन पूरे न हों तब तक न तो किसी पाक चीज़ को छुए और न हैकल में दाखिल हो।⁵~और अगर उसके लड़की हो तो वह दो हफ़्ते नापाक रहेगी, जैसे हैज़ के दिनों में रहती है। इसके बा'द वह छियासठ दिन तक तहारत के खून में रहे।

⁶~'और जब उसकी तहारत के दिन पूरे हो जाएँ, तो चाहे उसके बेटा हुआ हो या बेटी, वह सोख्तनी कुर्बानी के लिए एक यक-साला बर्ग, और खता की कुर्बानी के लिए कबूतर का एक बच्चा या एक कुमरी खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए;

⁷~और काहिन उसे खुदावन्द के सामने पेश करे और उसके लिए कफ़़ारा दे। तब वह अपने जिरयान-ए-खून से पाक ठहरेगी। जिस 'औरत के लड़का या लड़की हो उसके बारे में शरा' यह है।⁸~और अगर उस को बर्ग लाने का मक़दूर न हो तो वह दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे, एक सोख्तनी कुर्बानी के लिए और दूसरा खता की कुर्बानी के लिए लाए। यूँ कहिन उसके लिए कफ़़ारा दे तो वह पाक ठहरेगी।"

Chapter 13

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,²~"अगर किसी के जिस्म की जिल्द में वर्म, या पपड़ी, या सफ़ेद चमकता हुआ दाग़ हो, और उसके जिस्म की जिल्द में कोढ़ जैसी बला हो, तो उसे हारून काहिन के पास या उसके बेटों में से जो काहिन हैं किसी के पास ले जाएँ।

³और काहिन उसके जिस्म की जिल्द की बला को देखे, अगर उस बला की जगह के बाल सफ़ेद हो गए हों और वह बला देखने में खाल से गहरी हो, तो वह कोढ़ का मर्ज़ है; और काहिन उस शख्स को देख कर उसे नापाक करार दे।⁴और अगर उसके जिस्म की जिल्द का चमकता हुआ दाग़ सफ़ेद तो हो लेकिन खाल से गहरा न दिखाई दे, और न उसके ऊपर के बाल सफ़ेद हो गए हों, तो काहिन उस शख्स को सात दिन तक बन्द रखे;

⁵~और सातवें दिन काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर वह बला उसे वहीं के वहीं दिखाई दे और जिल्द पर फैल न गई हो, तो काहिन उसे सात दिन और बन्द रखे;⁶~और सातवें दिन काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि उस बला की चमक कम है और वह जिल्द के ऊपर फैली भी नहीं है; तो काहिन उसे पाक करार दे क्योंकि वह पपड़ी है। इसलिए वह अपने कपड़े धो डाले और साफ़ हो जाए।

⁷~लेकिन अगर काहिन के उस मुलाहिज़े के बाद जिस में वह साफ़ करार दिया गया था, वह पपड़ी उसकी जिल्द पर बहुत फैल जाए, तो वह शख्स काहिन को फिर-दिखाया जाए;⁸और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह पपड़ी जिल्द पर फैल गई है तो वह उसे नापाक करार दे; क्योंकि वह कोढ़ है।

⁹~"अगर किसी शख्स को कोढ़ का मर्ज़ हो, तो उसे काहिन के पास ले जाएँ,¹⁰और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि जिल्द पर सफ़ेद वर्म है और उसने बालों को सफ़ेद कर दिया है, और उस वर्म की जगह का गोश्त ज़िन्दा और कच्चा है,¹¹~तो यह उसके जिस्म की जिल्द में पुराना कोढ़ है, इसलिए काहिन उसे नापाक करार दे लेकिन उसे बन्द न करे क्योंकि वह नापाक है।

¹²और अगर कोढ़ जिल्द में चारों तरफ़ फूट आए, और जहाँ तक काहिन को दिखाई देता है, यही मा'लूम हो कि उस की जिल्द सिर से पाँव तक कोढ़ से ढंक गई है,¹³~तो काहिन गौर से देखे और अगर उस शख्स का सारा जिस्म कोढ़ से ढका हुआ निकले, तो काहिन उस मरीज़ को पाक करार दे, क्योंकि वह सब सफ़ेद हो गया है और वह पाक है।¹⁴~लेकिन जिस दिन जीता और कच्चा गोश्त उस पर दिखाई दे, वह नापाक होगा।

¹⁵~और काहिन उस कच्चे गोश्त को देख कर उस शख्स को नापाक करार दे, कच्चा गोश्त नापाक होता है; वह कोढ़ है।¹⁶~और अगर वह कच्चा गोश्त फिर कर सफ़ेद हो जाए, तो वह काहिन के पास जाए;¹⁷~और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि मर्ज़ की जगह सब सफ़ेद हो गई है तो काहिन मरीज़ को पाक करार दे; वह पाक है।

¹⁸~और अगर किसी के जिस्म की जिल्द पर फोड़ा हो कर अच्छा हो जाए,¹⁹~और फोड़े की जगह सफ़ेद वर्म या सुखी माइल चमकता हुआ सफ़ेद दाग़ हो तो वह दिखाया जाए;²⁰और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह खाल से गहरा नज़र आता है और उस पर के बाल भी सफ़ेद हो गए हैं, तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे; क्योंकि वह कोढ़ है जो फोड़े में से फूट कर निकला है।

²¹~लेकिन अगर काहिन देखे कि उस पर सफ़ेद बाल नहीं, और वह खाल से गहरा भी नहीं है और उसकी चमक कम है; तो काहिन उसे सात दिन तक बन्द रखे।²²~और अगर वह जिल्द पर चारों तरफ़ फैल जाए, तो काहिन उसे नापाक करार दे; क्योंकि वह कोढ़ की बला है।²³~लेकिन अगर वह चमकता हुआ दाग़ अपनी जगह पर वहीं का वहीं रहे, और फैल न जाए तो वह फोड़े का दाग़ है; तब काहिन उस शख्स को पाक करार दे।

²⁴~"या अगर जिस्म की खाल कहीं से जल जाए, और उस जली हुई जगह का ज़िन्दा गोश्त एक सुखी माइल चमकता हुआ सफ़ेद दाग़ या बिल्कुल ही सफ़ेद दाग़ बन जाए²⁵~तो काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि उस चमकते हुए दाग़ के बाल सफ़ेद हो गए हैं और वह खाल से गहरा दिखाई देता है; तो वह कोढ़ है जो उस जल जाने से पैदा हुआ है; और काहिन उस शख्स को नापाक करार दे क्योंकि उसे कोढ़ की बीमारी है।

²⁶~लेकिन अगर काहिन देखे कि उस चमकते हुए दाग़ पर सफ़ेद बाल नहीं, और न वह खाल से गहरा है बल्कि उसकी चमक भी कम है, तो वह उसे सात दिन तक बन्द रखे;²⁷~और सातवें दिन काहिन उसे देखे, अगर वह जिल्द पर बहुत फैल गया हो तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे; क्योंकि उसे कोढ़ की बीमारी है।²⁸~और अगर वह चमकता हुआ दाग़ अपनी जगह पर वहीं का वहीं रहे और जिल्द पर फैला हुआ न हो, बल्कि उसकी चमक भी कम हो, तो वह सिर्फ़ जल जाने की वजह से फूला हुआ है; और काहिन उस शख्स को पाक करार दे क्योंकि वह दाग़ जल जाने की वजह से है।

²⁹~"अगर किसी मर्द या 'औरत के सिर या ठोड़ी में दाग़ हो,³⁰~तो काहिन उस दाग़ को मुलाहिज़ा करे और अगर देखे कि वह खाल से गहरा मा'लूम होता है और उस पर ज़र्द-ज़र्द बारीक रोंगटे हैं तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे क्योंकि वह सा'फ़ा है जो सिर या ठोड़ी का कोढ़ है।

³¹~और अगर काहिन देखे कि वह सा'फ़ा की बला खाल से गहरी नहीं मा'लूम होती और उस पर स्याह बाल नहीं हैं, तो काहिन उस शख्स को जिसे सा'फ़ा का मर्ज़ है, सात दिन तक बन्द रखे;

³²~और सातवें दिन काहिन उस बला का मुलाहिज़ा करे और अगर देखे कि सा'फ़ा फैला नहीं और उस पर कोई ज़र्द बाल भी नहीं और सा'फ़ा खाल से गहरा नहीं मा'लूम होता;³³तो उस शख्स के बाल मूँडे जाएँ, लेकिन जहाँ सा'फ़ा हो वह जगह न मूँडी जाए। और काहिन उस शख्स को जिसे सा'फ़ा का मर्ज़ है, सात दिन और बन्द रखे।

³⁴~फिर सातवें रोज़ काहिन सा'फ़े का मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि सा'फ़ा जिल्द में फैला नहीं और न वह खाल से गहरा दिखाई देता है तो काहिन उस शख्स को पाक करार दे; और वह अपने कपड़े धोए और साफ़ हो जाए।

³⁵~लेकिन अगर उस की सफ़ाई के बाद सा'फ़ा उसकी जिल्द पर बहुत फैल जाए तो काहिन उसे देखे,³⁶~और अगर सा'फ़ा उसकी जिल्द पर फैला हुआ नज़र आए तो काहिन ज़र्द बाल को न ढूँढे क्योंकि वह शख्स नापाक है।³⁷~लेकिन अगर उस को सा'फ़ा अपनी जगह पर वहीं का वहीं दिखाई दे और उस पर स्याह बाल निकले हुए हों, तो सा'फ़ा अच्छा हो गया; वह शख्स पाक है और काहिन उसे पाक करार दे।

³⁸~और अगर किसी मर्द या 'औरत के जिस्म की जिल्द में चमकते हुए दाग़ या सफ़ेद चमकते हुए दाग़ हों,³⁹~तो काहिन देखे, और अगर उनके जिस्म की जिल्द के दाग़ स्याही माइल सफ़ेद रंग के हों, तो वह छीप है जो जिल्द में फूट निकली है; वह शख्स पाक है।

⁴⁰~'और जिस शख्स के सिर के बाल गिर गए हों, वह गंजा तो है मगर पाक है।'⁴¹और जिस शख्स के सर के बाल पेशानी की तरफ से गिर गए हों, वह चँदुला तो है मगर पाक है।

⁴²~लेकिन उस गंजे या चँदले सिर पर~सुखी~माइल सफ़ेद दाग़ हों, तो यह कोढ़ है जो उसके गंजे या चँदले सिर पर निकला~है;⁴³~इसलिए काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर वह देखे कि उसके गंजे या चँदले सिर पर वह दाग़ ऐसा सुखी माइल सफ़ेद रंग लिए हुए है, जैसा जिल्द के कोढ़ में होता है,⁴⁴~तो वह आदमी कोढ़ी है, वह नापाक है और काहिन उसे ज़रूर ही नापाक करार दे क्योंकि वह मर्ज़ उसके सिर पर है।

⁴⁵~और जो कोढ़ी इस बला में मुब्तिला हो, उसके कपड़े फटे और उसके सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपने ऊपर के होंट को ढाँके और चिल्ला-चिल्ला कर कहे, नापाक, नापाक।⁴⁶जितने दिनों तक वह इस बला में मुब्तिला रहे, वह नापाक रहेगा और वह है भी नापाक। तब वह अकेला रहा करे, उसका मकान लश्करगाह के बाहर हो।

⁴⁷~और वह कपड़ा भी जिस में कोढ़ की बला हो, चाहे वह ऊन का हो या कतान का;⁴⁸और वह बला भी चाहे कतान या ऊन के कपड़े के ताने में या उसके बाने में हो, या वह चमड़े में हो या चमड़े की बनी हुई किसी चीज़ में हो;⁴⁹~अगर वह बला कपड़े में या चमड़े में, कपड़े के ताने में या बाने में या चमड़े की किसी चीज़ में सबज़ी माइल या~सुखी~माइल रंग की हो, तो वह कोढ़ की बला है और काहिन को दिखाई जाए।

⁵⁰~और काहिन उस बला को देखे, और उस चीज़ को जिस में वह बला है सात दिन तक बन्द रखे;⁵¹~और सातवें दिन उस को देखें। अगर वह बला कपड़े के ताने में या बाने में, या चमड़े पर या चमड़े की बनी हुई किसी चीज़ पर फैल गई हो, तो वह खा जाने वाला कोढ़ है और नापाक है।⁵²~और उस ऊन या कतान के कपड़े को जिसके ताने में या बाने में वह बला है, या चमड़े की उस चीज़ को जिस में वह है जला दे; क्योंकि यह खा जाने वाला कोढ़ है। वह आग में जलाया जाए।

⁵³~"और अगर काहिन देखे, कि वह बला कपड़े के ताने में या बाने में, या चमड़े की किसी चीज़ में फैली हुई नज़र नहीं आती,⁵⁴~तो काहिन हुक्म करे कि उस चीज़ को जिस में वह बला है धोएँ, और वह फिर उसे और सात दिन तक बन्द रखे;⁵⁵~और उस बला के धोए जाने के बा'द काहिन फिर उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि उस बला का रंग नहीं बदला और वह फैली भी नहीं है, तो वह नापाक है। तू उस कपड़े को आग में जला देना; क्योंकि वह खा जाने वाली बला है, चाहे उस का फ़साद अन्दरूनी हो या बैरूनी।

⁵⁶~और अगर काहिन देखे कि धोने के बा'द उस बला की चमक कम हो गई है, तो वह उसे उस कपड़े से या चमड़े से, ताने या बाने से, फाड़ कर निकाल फेंके।

⁵⁷~और अगर वह बला फिर भी कपड़े के ताने या बाने में या चमड़े की चीज़ में दिखाई दे, तो वह फूटकर निकल रही है। तब तू उस चीज़ को जिस में वह बला है आग में जला देना।⁵⁸~और अगर उस कपड़े के ताने या बाने में से, या चमड़े की चीज़ में से, जिसे तूने धोया है, वह बला जाती रहे तो वह चीज़ दोबारा धोई जाए और वह पाक ठहरेगी।"

⁵⁹~ऊन या कतान के ताने या बाने में, या चमड़े की किसी चीज़ में अगर कोढ़ की बला हो, तो उसे पाक या नापाक करार देने के लिए शरा' यही है।

Chapter 14

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~'कोढ़ी के लिए जिस दिन वह पाक करार दिया जाए यह शरा' है, कि उसे काहिन के पास ले जाएँ,

³और काहिन लश्करगाह के बाहर जाए, और काहिन खुद कोढ़ी को मुलाहिजा करे और अगर देखे कि उसका कोढ़ अच्छा हो गया है,⁴तो काहिन हुक्म दे कि वह जो पाक करार दिए जाने को है, उसके लिए दो ज़िन्दा पाक परिन्दे और देवदार की लकड़ी और सुख कपड़ा और जूफा लें।⁵और काहिन हुक्म दे कि उनमें से एक परिन्दा किसी मिट्टी के बर्तन में बहते हुए पानी के ऊपर ज़बह किया जाए।

⁶फिर वह ज़िन्दा परिन्दे को और देवदार की लकड़ी और सुख कपड़े और जूफे को ले, और इन को और उस ज़िन्दा परिन्दे को उस परिन्दे के खून में गोता दे जो बहते पानी पर ज़बह हो चुका है।⁷~और उस शख्स पर जो कोढ़ से पाक करार दिया जाने को है, सात बार छिड़क कर उसे पाक करार दे और ज़िन्दा परिन्दे को खुले मैदान में छोड़ दे।

⁸~और वह जो पाक करार दिया जाएगा अपने कपड़े धोए और सारे बाल मुंडाए और पानी में गुस्ल करे, तब वह पाक ठहरेगा; इसके बा'द वह लश्करगाह में आए, लेकिन सात दिन तक अपने खेमे के बाहर ही रहे।⁹~और सातवें रोज़ अपने सिर के सब~बाल और अपनी दाढ़ी और अपने अबरू ग़र्ज़ अपने सारे बाल मुंडाए, और अपने कपड़े धोए और पानी में नहाए, तब वह पाक ठहरेगा।

¹⁰~और वह आठवें दिन दो बे-'ऐब नर बर्रे और एक बे-'ऐब यक-साला मादा बर्रा और नज़ की कुर्बानी के लिए ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर तेल मिला हुआ मैदा और लोज भर तेल ले।¹¹~तब वह काहिन जो उसे पाक करार देगा, उस शख्स को जो पाक करार दिया जाएगा और इन चीज़ों को खुदावन्द के सामने खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर हाज़िर करे।

¹²~और काहिन नर बर्रों में से एक को लेकर जुर्म की कुर्बानी के लिए उसे और उस लोज भर तेल की नज़दीक लाए, और उनको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए;¹³~और उस बर्रे को हैकल में उस जगह ज़बह करे जहाँ खता की कुर्बानी और सोखतनी कुर्बानी के जानवर ज़बह किए जाते हैं, क्योंकि जुर्म की कुर्बानी खता की कुर्बानी की तरह काहिन का हिस्सा ठहरेगी; वह बहुत पाक है।

¹⁴और काहिन जुर्म की कुर्बानी का कुछ खून ले और जो शख्स पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अँगूठे पर और दहने पाँव के अँगूठे पर उसे लगाए,¹⁵~और काहिन उस लोज भर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले;¹⁶और काहिन अपनी दहनी उँगली को अपने बाएँ हाथ के तेल में डुबोए, और खुदावन्द के सामने कुछ तेल सात बार अपनी उँगली से छिड़के।

¹⁷~और काहिन अपने हाथ के बाक़ी तेल में से कुछ ले और जो शख्स पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ के अँगूठे और दहने पाँव के अँगूठे पर, जुर्म की कुर्बानी के खून के ऊपर लगाए।¹⁸~और जो तेल काहिन के हाथ में बाक़ी बचे उसे वह उस शख्स के सिर में डाल दे जो पाक करार दिया जाएगा, यूँ काहिन उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दे।

¹⁹~और काहिन खता की कुर्बानी भी पेश करे, और उसके लिए जो अपनी नापाकी से पाक करार दिया जाएगा कफ़फ़ारा दे; इसके बा'द वह सोखतनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह करे।²⁰~फिर काहिन सोखतनी कुर्बानी और नज़ की कुर्बानी को मज़बह पर अदा करे। यूँ काहिन उसके लिए कफ़फ़ारा दे तो वह पाक ठहरेगा।

²¹~"और अगर वह ग़रीब हो और इतना उसे मक़दूर न हो तो वह हिलाने के लिए जुर्म की कुर्बानी के लिए एक नर बर्रा ले ताकि उसके लिए कफ़फ़ारा दिया जाए और नज़ की कुर्बानी के लिए ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर तेल मिला हुआ मैदा और लोज भर तेल,²²~और अपने मक़दूर के मुताबिक़ दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे भी ले, जिन में से एक तो खता की कुर्बानी के लिए और दूसरा सोखतनी कुर्बानी के लिए हो।²³इन्हें वह आठवें दिन अपने पाक करार दिए जाने के लिए काहिन के पास खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने लाए।

²⁴~और काहिन जुर्म की कुर्बानी के बर्रे को और उस लोज भर तेल को लेकर उनको खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाए।²⁵~फिर काहिन जुर्म की कुर्बानी के बर्रे को ज़बह करे, और वह जुर्म की कुर्बानी का कुछ खून लेकर जो शख्स पाक करार दिया जाएगा, उसके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अँगूठे और दहने पाँव के अँगूठे पर उसे लगाए।

²⁶~फिर काहिन उस तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले,²⁷और वह अपने बाएँ हाथ के तेल में से कुछ अपनी दहनी उँगली से खुदावन्द के सामने सात बार छिड़के।

²⁸~फिर काहिन कुछ अपने हाथ के तेल में से ले, और जो शख्स पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ के अँगूठे और दहने पाँव के अँगूठे पर, जुर्म की कुर्बानी के खून की जगह उसे लगाए;²⁹~और जो तेल काहिन के हाथ में बाक़ी बचे उसे वह उस शख्स के सिर में डाल दे जो पाक करार दिया जाएगा, ताकि उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दिया जाए।

³⁰~फिर वह कुमरियों या कबूतर के बच्चों में से जिन्हें वह ला सका हो एक को अदा करे,³¹~या'नी जो कुछ उसे मयस्सर हुआ हो उस में से एक को खता की कुर्बानी के तौर पर और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के तौर पर, नज़ की कुर्बानी के साथ पेश करे। यूँ काहिन उस शख्स के लिए जो पाक करार दिया जाएगा, खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दे।³²~उस कोढ़ी के लिए जो अपने पाक करार दिए जाने के सामान को लाने का मक़दूर न रखता हो शरा' यह है।"

³³फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,³⁴~"जब तुम मुल्क-ए-कनान में जिसे मैं तुम्हारी मिल्कियत किए देता हूँ दाखिल हो, और मैं तुम्हारे मीरासी मुल्क के किसी घर में कोढ़ की बला भेजूँ³⁵~तो उस घर का मालिक जाकर काहिन को खबर दे कि मुझे ऐसा मा'लूम होता है कि उस घर में कुछ बला सी है।

³⁶~तब काहिन हुक्म करे कि इससे पहले कि उस बला को देखने के लिए काहिन वहाँ जाए लोग उस घर को खाली करें, ताकि जो कुछ घर में हो वह नापाक न ठहराया जाए। इसके बा'द काहिन घर देखने को अन्दर जाए।³⁷और उस बला को मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि वह बला उस घर की दीवारों में सबज़ी या सुख्खीमाइल गहरी लकीरों की सूरत में है, और दीवार में सतह के अन्दर नज़र आती है,³⁸तो काहिन घर से बाहर निकल कर घर के दरवाज़े पर जाए और घर को सात दिन के लिए बन्द कर दे;

³⁹~और वह सातवें दिन फिर आकर उसे देखें। अगर वह बला घर की दीवारों में फैली हुई नज़र आए,⁴⁰~तो काहिन हुक्म दे कि उन पत्थरों को जिन में वह बला है, निकालकर उन्हें शहर के बाहर किसी नापाक जगह में फेंक दें।

⁴¹~फिर वह उस घर को अन्दर ही अन्दर चारों तरफ़ से खुरचवाए, और उस खुरची हुई मिट्टी को शहर के बाहर किसी नापाक जगह में डालें।⁴²~और वह उन पत्थरों की जगह और पत्थर लेकर लगाएं और काहिन ताज़ा गारे से उस घर की अस्तरकारी कराए।

⁴³और अगर पत्थरों के निकाले जाने और उस घर के खुरच और अस्तरकारी कराए जाने के बाद भी वह बला फिर आ जाए और उस घर में फूट निकले,⁴⁴~तो काहिन अन्दर जाकर मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह बला घर में फैल गई है तो उस घर में खा जाने वाला कोढ़ है; वह नापाक है।

⁴⁵~तब वह उस घर को, उसके पत्थरों और लकड़ियों और उसकी सारी मिट्टी को गिरा दे; और वह उनको शहर के बाहर निकाल कर किसी नापाक जगह में ले जाए।⁴⁶~इसके सिवा, अगर कोई उस घर के बन्द कर दिए जाने के दिनों में उसके अन्दर दाखिल हो तो वह शाम तक नापाक रहेगा;⁴⁷और जो कोई उस घर में सोए वह अपने कपड़े धो डाले, और जो कोई उस घर में कुछ खाए वह भी अपने कपड़े धोए।

⁴⁸और अगर काहिन अन्दर जाकर मुलाहिज़ा करे और देखे कि घर की अस्तरकारी के बाद वह बला उस घर में नहीं फैली, तो वह उस घर को पाक करार दे क्योंकि वह बला दूर हो गई।

⁴⁹और वह उस घर को पाक करार देने के लिए दो परिन्दे और देवदार की लकड़ी और सुख कपड़ा और जूफ़ा ले,⁵⁰~और वह उन परिन्दों में से एक को मिट्टी के किसी बर्तन में बहते हुए पानी पर ज़बह करे;⁵¹फिर वह देवदार की लकड़ी और जूफ़े और~सुख~कपड़े और उस ज़िन्दा परिन्दे को लेकर उनको उस ज़बह किए हुए~परिन्दे के खून में और उस बहते हुए पानी में गोता दे, और सात बार उस घर पर छिड़के।

⁵²और वह उस परिन्दे के खून से, और बहते हुए पानी और ज़िन्दा परिन्दे और देवदार की लकड़ी और जूफ़े और~सुख~कपड़े से उस घर को पाक करे;⁵³और उस ज़िन्दा परिन्दे को शहर के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे; यूँ वह घर के लिए कफ़्फ़ारा दे, तो वह पाक ठहरेगा।"

⁵⁴कोढ़ की हर किस्म की बला के, और साफ़े के लिए,⁵⁵और कपड़े और घर के कोढ़ के लिए,⁵⁶और वर्म और पपड़ी, और चमकते हुए दाग के लिए शरा' यह है;

⁵⁷~ ताकि बताया जाए कि कब वह नापाक और कब पाक करार दिए जाएँ। कोढ़ के लिए शरा' यही है।

Chapter 15

¹~और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि;²~"बनी-इसाईल से कहो कि अगर किसी शख्स की जिरयान का मर्ज़ हो तो वह जिरयान की वजह से नापाक है;³~और जिरयान की वजह से उसकी नापाकी यूँ होगी, कि चाहे धात बहती हो या धात का बहना खत्म हो गया हो वह नापाक है।

⁴~जिस बिस्तर पर जिरयान का मरीज़ सोए वह बिस्तर नापाक होगा, और जिस चीज़ पर वह बैठे वह चीज़ नापाक होगी।⁵और जो कोई उसके बिस्तर को छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।

⁶और जो कोई उस चीज़ पर बैठे जिस पर जिरयान का मरीज़ बैठा हो, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।⁷~और जो कोई जिरयान के मरीज़ के जिस्म को छुए, वह भी अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।

⁸और अगर जिरयान का मरीज़ किसी शख्स पर जो पाक है। थूक दे, तो वह शख्स अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।⁹~और जिस ज़मीन पर जिरयान का मरीज़ सवार हो, वह ज़मीन नापाक होगा।

¹⁰~और जो कोई किसी चीज़ को जो उस मरीज़ के नीचे रही हो छुए, वह शाम तक नापाक रहे; और जो कोई उन चीज़ों को उठाए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।¹¹~और जिस शख्स की जिरयान का मरीज़ बग़ैर हाथ धोए छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।¹²~और मिट्टी के जिस बर्तन को जिरयान का मरीज़ छुए, वह तोड़ डाला जाए; लेकिन चोबी बर्तन पानी से धोया जाए।

¹³~और जब जिरयान के मरीज़ को शिफ़ा हो जाए, तो वह अपने पाक ठहरने के लिए सात दिन गिने; इस के बाद वह अपने कपड़े धोए और बहते हुए पानी में नहाए तब वह पाक होगा।¹⁴~और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लेकर वह खुदावन्द के सामने खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर जाए, और उन को काहिन के हवाले करे;¹⁵~और काहिन एक को खता की-कुर्बानी के लिए, और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करे। यूँ काहिन उसके लिए उसके जिरयान की वजह से खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दे।

¹⁶~'और अगर किसी मर्द की धात बहती हो, तो वह पानी में नहाए और शाम तक नापाक रहे।¹⁷~और जिस कपड़े या चमड़े पर नुत्फ़ा लग जाए, वह कपड़ा या चमड़ा पानी से धोया जाए और शाम तक नापाक रहे।¹⁸और वह 'औरत भी जिसके साथ मर्द सुहबत करे और मुन्ज़िल हो, तो वह दोनों पानी से गुस्ल करें और शाम तक नापाक रहे।

¹⁹~और अगर किसी 'औरत को ऐसा जिरयान हो कि उसे हैज़ का ख़ून आए, तो वह सात दिन तक नापाक रहेगी, और जो कोई उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।²⁰और जिस चीज़ पर वह अपनी नापाकी की हालत में सोए वह चीज़ नापाक होगी, और जिस चीज़ पर बैठे वह भी नापाक हो जाएगी।

²¹~और जो कोई उसके बिस्तर को छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।²²~और जो कोई उस चीज़ को जिस पर वह बैठी हो छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए और शाम तक नापाक रहे।²³~और अगर उसका ख़ून उसके बिस्तर पर या जिस चीज़ पर वह बैठी हो उस पर लगा हुआ हो और उस वक़्त कोई उस चीज़ को छुए, तो वह शाम तक नापाक रहे।

²⁴~और अगर मर्द उसके साथ सुहबत करे और उसके हैज़ का ख़ून उसे लग जाए, तो वह सात दिन तक नापाक रहेगा और हर एक बिस्तर जिस पर वह मर्द सोएगा नापाक होगा।

²⁵~'और अगर किसी 'औरत को हैज़ के दिन को छोड़कर यूँ बहुत दिनों तक ख़ून आए या हैज़ की मुद्दत गुज़र जाने पर भी ख़ून जारी रहे, तो जब तक उस को यह मैला ख़ून आता रहेगा तब तक वह ऐसी ही रहेगी जैसी हैज़ के दिनों में रहती है, वह नापाक है।²⁶~और इस जिरयान-ए-ख़ून के कुल दिनों में जिस-जिस बिस्तर पर वह सोएगी, वह हैज़ के बिस्तर की तरह नापाक होगा; और जिस-जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह चीज़ हैज़ की नजासत की तरह नापाक होगी।²⁷~और जो कोई उन चीज़ों को छुए वह नापाक होगा, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।

²⁸~और जब वह अपने जिरयान से शिफ़ा पा जाए तो सात दिन गिने, तब इसके बाद वह पाक ठहरेगी।²⁹~और आठवें दिन वह दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लेकर उनको खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए।³⁰~और काहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करे, यूँ काहिन उसके नापाक ख़ून के जिरयान के लिए खुदावन्द के सामने उस की तरफ़ से कफ़फ़ारा दे।

³¹~"इस तरीक़े से तुम बनी-इसाईल को उन की नजासत से अलग रखना, ताकि वह मेरे हैकल की जो उनके बीच है नापाक करने की वजह से अपनी नजासत में हलाक न हों।"

³²~उसके लिए जिसे जिरयान का मर्ज़ हो, और उसके लिए जिस की धात बहती हो, और वह उसकी वजह से नापाक हो जाए,³³और उसके लिए जो हैज़ से हो, और उस मर्द और 'औरत के लिए जिनको जिरयान का मर्ज़ हो, और उस मर्द के लिए जो नापाक 'औरत के साथ सुहबत करे शरा' यही है।

Chapter 16

¹~और हारून के दो बेटों की वफ़ात के बा'द जब वह खुदावन्द के नज़दीक आए और मर गए।²~खुदावन्द मूसा से हम कलाम हुआ; और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "अपने भाई हारून से कह कि वह हर वक़्त पर्दे के अन्दर के पाकतरीन मक़ाम में सरपोश के पास जो सन्दूक के ऊपर है न आया करे, ताकि वह मर न जाए; क्योंकि मैं सरपोश पर बादल में दिखाई दूँगा।

³~और हारून पाकतरीन मक़ाम में इस तरह आए कि ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बछड़ा और सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक मेंढा लाए।⁴और वह कतान का पाक कुरता पहने, और उसके तन पर कतान का पाजामा हो, और कतान के कमरबन्द से उसकी कमर कसी हुई हो, और कतान ही का 'अमामा उसके सिर पर बँधा हो; यह पाक लिबास हैं और वह इन को पानी से नहा कर पहने⁵और बनी-इसाईल की जमा'अत से ख़ता की कुर्बानी के लिए दो बकरे और सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक मेंढा ले।

⁶और हारून ख़ता की कुर्बानी के बछड़े को जो उसकी तरफ़ से है पेश कर अपने और अपने घर के लिए कफ़़ारा दे।⁷फिर उन दोनों बकरों को लेकर उन को ख़ेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने खड़ा करे।

⁸और हारून उन दोनों बकरों पर चिट्ठियाँ डाले, एक चिट्ठी खुदावन्द के लिए और दूसरी 'अज़ाज़ेल के लिए हो।⁹और जिस बकरे पर खुदावन्द के नाम की चिट्ठी निकले उसे हारून लेकर ख़ता की कुर्बानी के लिए अदा करे;¹⁰~लेकिन जिस बकरे पर 'अज़ाज़ेल के नाम की चिट्ठी निकले वह खुदावन्द के सामने ज़िन्दा खड़ा किया जाए, ताकि उससे कफ़़ारा दिया जाए और वह 'अज़ाज़ेल के लिए वीराने में छोड़ दिया जाए।

¹¹~"और हारून ख़ता की कुर्बानी के बछड़े की जो उस की तरफ़ से है, आगे लाकर अपने और अपने घर के लिए कफ़़ारा दे, और उस बछड़े को जो उस की तरफ़ से ख़ता की कुर्बानी के लिए है ज़बह करे।

¹²~और वह एक खुशबूदान को ले जिसमें खुदावन्द के मज़बह पर की आग के अंगारे भर हों और अपनी मुठियाँ बारीक खुशबूदार खुशबू से भर ले और उसे पर्दे के अन्दर लाए¹³~और उस-खुशबू-को खुदावन्द के सामने आग में डाले, ताकि-खुशबू-का धुआँ सरपोश को जो शहादत के सन्दूक के-ऊपर है-छिपा ले, कि वह हलाक न हो।

¹⁴~फिर वह उस बछड़े का कुछ खून लेकर उसे अपनी उँगली से पूरब की तरफ़ सरपोश के ऊपर छिड़के, और सरपोश के आगे भी कुछ खून अपनी उँगली से सात बार छिड़के।

¹⁵~फिर वह ख़ता की कुर्बानी के उस बकरे को ज़बह करे जो जमा'अत की तरफ़ से है और उसके खून को पर्दे के अन्दर लाकर जो कुछ उसने बछड़े के खून से किया था वही इससे भी करे, और उसे सरपोश के ऊपर और उसके सामने छिड़के।¹⁶~और बनी-इसाईल की सारी नापाकियों, और गुनाहों, और ख़ताओं की वजह से पाकतरीन मक़ाम के लिए कफ़़ारा दे; और ऐसा ही वह ख़ेमा-ए-इजितमा'अ के लिए भी करे जो उनके साथ उन की-नापाकियों-के बीच रहता है।

¹⁷~और जब वह कफ़़ारा देने को पाकतरीन मक़ाम के अन्दर जाए, तो जब तक वह अपने और अपने घराने और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत के लिए कफ़़ारा देकर बाहर न आ जाए उस वक़्त तक कोई आदमी ख़ेमा-ए-इजितमा'अ के अन्दर न रहे¹⁸~फिर वह निकल कर उस मज़बह के पास जो खुदावन्द के सामने है जाए और उसके लिए कफ़़ारा दे, और उस बछड़े और बकरे का थोड़ा-थोड़ा सा खून लेकर मज़बह के सींगों पर चारों तरफ़ लगाए;¹⁹~और कुछ खून उसके ऊपर सात बार अपनी उँगली से छिड़के और उसे बनी-इसाईल की-नापाकियों-से पाक और पाक करे।

²⁰और जब वह पाकतरीन मक़ाम और ख़ेमा-ए-इजितमा'अ और मज़बह के लिए कफ़़ारा दे चुके तो उस ज़िन्दा बकरे को आगे लाए;²¹~और हारून अपने दोनों हाथ उस ज़िन्दा बकरे के सिर पर रख कर उसके ऊपर बनी-इसाईल की सब बदकारियों, और उनके सब गुनाहों, और ख़ताओं का इक्रार करे और उन को उस बकरे के सिर पर धर कर उसे किसी शख्स के हाथ जो इस काम के लिए तैयार ही वीराने में भिजवा दे।²²और वह बकरा उनकी सब बदकारियाँ अपने ऊपर लादे हुए किसी वीराने में ले जाएगा, इसलिए वह उस बकरे को वीराने में छोड़े दे।

²³~"फिर हारून ख़ेमा-ए-इजितमा'अ में आकर कतान के सारे लिबास को जिसे उसने पाकतरीन मक़ाम में जाते वक़्त पहना था उतारे और उसकी वहीं रहने दे।

²⁴~फिर वह किसी पाक जगह में पानी से गुस्ल करके अपने कपड़े पहन ले, और बाहर आ कर अपनी सोख़तनी कुर्बानी और जमा'अत की-सोख़तनी कुर्बानी-पेश करे और अपने लिए और जमा'अत के लिए कफ़़ारा दे।

²⁵~और ख़ता की कुर्बानी की चर्बी को मज़बह पर जलाए।²⁶~और जो आदमी बकरे को 'अज़ाज़ेल के लिए छोड़ कर आए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, इसके बा'द वह लश्करगाह में दाखिल हो।

²⁷~और ख़ता की कुर्बानी के बछड़े को और ख़ता की कुर्बानी के बकरे को जिन का खून पाकतरीन मक़ाम में कफ़़ारे के लिए पहुँचाया जाए, उन को वह लश्करगाह से बाहर ले जाएँ, और उनकी खाल और गोश्त और फुज़लात को आग में जला दें:²⁸~और जो उन को जलाए वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे, उसके बा'द वह लश्करगाह में दाखिल हो।

²⁹~"और यह तुम्हारे लिए एक हमेशा का क़ानून हो कि सातवें महीने की दसवीं तारीख को तुम अपनी अपनी जान को दुख देना, और उस दिन कोई चाहे वह देसी हो या परदेसी जो तुम्हारे बीच बूद-ओ-बाश रखता हो किसी तरह का काम न करे;³⁰~क्योंकि उस रोज़ तुम्हारे लिए तुम को पाक करने के लिए कफ़़ारा दिया जाएगा, इसलिए तुम अपने सब गुनाहों से खुदावन्द के सामने पाक ठहरोगे।³¹~यह तुम्हारे लिए ख़ास आराम का सबत होगा। तुम उस दिन अपनी अपनी जान को दुख देना; यह हमेशा का क़ानून है।

³²~और जो अपने बाप की जगह काहिन होने के लिए मसह और मख्सूस किया जाए, वह काहिन कफ़़ारा दिया करे; या'नी कतान के पाक लिबास को पहनकर³³~वह हैकल के लिए कफ़़ारा दे, और ख़ेमा-ए-इजितमा'अ और मज़बह के लिए कफ़़ारा दे, और काहिनों और जमा'अत के सब लोगों के लिए कफ़़ारा दे।

³⁴~इसलिए यह तुम्हारे लिए एक ~हमेशा क़ानून हो कि तुम बनी-इस्राईल के लिए साल में एक दफ़ा' उनके सब गुनाहों का कफ़़ारा दो।" और उसने जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।

Chapter 17

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~'हारून और उसके बेटों से और सब बनी-इस्राईल से कह कि खुदावन्द ने यह हुक्म दिया है कि³" इस्राईल के घराने का जो कोई शख्स बैल या बरें या बकरे को चाहे लश्करगाह में या लश्करगाह के बाहर ज़बह कर के⁴उसे खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर, खुदावन्द के घर के आगे, खुदावन्द के सामने चढ़ाने को न ले जाए, उस शख्स पर खून का इल्ज़ाम होगा कि उसने खून किया है; और वह शख्स अपने लोगों में से काट डाला जाए।

⁵~इससे मक़सूद यह है कि बनी-इस्राईल अपनी कुर्बानियाँ, जिनको वह खुले मैदान में ज़बह करते हैं, उन्हें खुदावन्द के सामने खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाएँ और उनको खुदावन्द के सामने सलामती के ज़बीहों के तौर पर पेश करें,⁶~और काहिन उस खून को खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के मज़बह के ऊपर छिड़के और चर्बी को जलाए, ताकि खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू हो।

⁷और आइन्दा कभी वह उन बकरों के लिए जिनके पैरौ होकर वह ज़िनाकार ठहरें हैं, अपनी कुर्बानियाँ न पेश करे। उनके लिए नसल-दर-नसल यह हमेशा क़ानून होगा।

⁸~"इसलिए तू उन से कह दे कि इस्राईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई सोख्तनी कुर्बानी या कोई ज़बीहा पेश कर,⁹~उसे खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने चढ़ाने को न लाए; वह अपने लोगों में से काटडाला जाए।

¹⁰~"और इस्राईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई किसी तरह का खून खाए, मैं उस खून खाने वाले के खिलाफ़ हूँगा और उसे उसके लोगों में से काट डालूँगा।¹¹~क्यूँकि जिस्म की जान खून में है; और मैंने मज़बह पर तुम्हारी जानों के क़फ़ारे के लिए उसे तुम को दिया है कि उससे तुम्हारी जानों के लिए क़फ़ारा हो; क्यूँकि जान रखने ही की वजह से खून क़फ़ारा देता है।

¹²~इसीलिए मैंने बनी-इस्राईल से कहा है कि तुम में से कोई शख्स खून कभी न खाए, और न कोई परदेसी जो तुम में क़याम करता हो कभी खून को खाए।

¹³~और बनी-इस्राईल में से या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई शिकार में ऐसे जानवर या परिन्दे को पकड़े जिसका खाना ठीक है, तो वह उसके खून को निकाल कर उसे मिट्टी से ढॉक दे।

¹⁴~क्यूँकि जिस्म की जान जो है वह उस का खून है, जो उसकी जान के साथ एक है। इसीलिए मैंने बनी-इस्राईल को हुक्म किया है कि तुम किसी क्रिस्म के जानवर का खून न खाना, क्यूँकि हर जानवर की जान उसका खून ही है; जो कोई उसे खाए वह काट डाला जाएगा।

¹⁵~और जो शख्स मुरदार को या दरिन्दे के फाड़े हुए जानवर को खाए, वह चाहे देसी हो या परदेसी अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे; तब वह पाक होगा।¹⁶~लेकिन अगर वह उनको न धोए और न गुस्ल करे, तो उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।"

Chapter 18

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"बनी-इसाईल से कह कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।³~तुम मुल्क-ए-मिस्र के से काम जिसमें तुम रहते थे, न करना और मुल्क-ए-कना'न के से काम भी जहाँ मैं तुम्हें लिए जाता हूँ, न करना और न उनकी रस्मों पर चलना।

⁴~तुम मेरे हुक्मों पर 'अमल करना और मेरे क़ानून को मान कर उन पर चलना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।⁵~इसलिए तुम मेरे आईन और अहकाम मानना, जिन पर अगर कोई 'अमल करे तो वह उन ही की बदौलत ज़िन्दा रहेगा। मैं खुदावन्द हूँ।

⁶"तुम में से कोई अपनी किसी क़रीबी रिश्तेदार के पास उसके बदन को बे-पर्दा करने के लिए न जाए। मैं खुदावन्द हूँ।⁷~तू अपनी माँ के बदन को जो तेरे बाप का बदन है बे-पर्दा न करना; क्योंकि वह तेरी माँ है, तू उसके बदन को बे-पर्दा न करना।⁸~तू अपने बाप की बीवी के बदन को बे-पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे बाप का बदन है।

⁹~तू अपनी बहन के बदन को, चाहे वह तेरे बाप की बेटी हो चाहे तेरी माँ की और चाहे वह घर में पैदा हुई हो चाहे और कहीं, बे-पर्दा न करना।¹⁰~तू अपनी पोती या नवासी के बदन को बे-पर्दा न करना क्योंकि उनका बदन तो तेरा ही बदन है।¹¹तेरे बाप की बीवी की बेटी, जो तेरे बाप से पैदा हुई है, तेरी बहन है; तू उसके बदन को बे-पर्दा न करना।

¹²~तू अपनी फूफी के बदन को बे-पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे बाप की क़रीबी रिश्तेदार है।¹³~तू अपनी खाला के बदन को बेपर्दा न करना, क्योंकि वह तेरी माँ की क़रीबी रिश्तेदार है।¹⁴~तू अपने बाप के भाई के बदन को बे-पर्दा न करना, या'नी उस की बीवी के पास न जाना, वह तेरी चची है।

¹⁵~तू अपनी बहू के बदन को बे-पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे बेटे की बीवी है, इसलिए तू उसके बदन को बे-पर्दा न करना।¹⁶~तू अपनी भावज के बदन को बे-पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे भाई का बदन है।

¹⁷~तू किसी 'औरत और उसकी बेटी दोनों के बदन को बेपर्दा न करना; और न तू उस 'औरत की पोती या नवासी से ब्याह कर के उस में से किसी के बदन को बे-पर्दा करना, क्योंकि वह दोनों उस 'औरत की क़रीबी रिश्तेदार हैं : यह बड़ी ख़बासत है।¹⁸~तू अपनी साली से ब्याह कर के उसे अपनी बीवी की सौतन न बनाना, कि दूसरी के जीते जी उसके बदन को भी बेपर्दा करे।

¹⁹~"और तू 'औरत के पास जब तक वह हैज़ की वज़ह से नापाक है, उसके बदन को बे-पर्दा करने के लिए न जाना।²⁰~और तू अपने को नजिस करने के लिए अपने पड़ोसी की बीवी से सुहबत न करना।

²¹~तू अपनी औलाद में से किसी को मोलक की ख़ातिर आग में से पेश करने के लिए न देना, और न अपने खुदा के नाम को नापाक ठहराना। मैं खुदावन्द हूँ।

²²~तू मर्द के साथ सुहबत न करना जैसे 'औरत से करता है; यह बहुत मकरूह काम है।²³~तू अपने को नजिस करने के लिए किसी जानवर से सुहबत न करना, और न कोई 'औरत किसी जानवर से हम-सुहबत होने के लिए उसके आगे खड़ी हो; क्योंकि यह औंधी बात है।

²⁴~"तुम इन कामों में से किसी में फँस कर आलूदा न हो जाना, क्योंकि जिन क़ौमों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ वह इन सब कामों की वज़ह से आलूदा हैं।

²⁵और उन का मुल्क भी आलूदा हो गया है; इसलिए मैं उसकी बदकारी की सज़ा उसे देता हूँ, ऐसा कि वह अपने बाशिन्दों को उगले देता है।

²⁶~लिहाज़ा तुम मेरे आईन और अहकाम को मानना और तुम में से कोई, चाहे वह देसी हो या परदेसी जो तुम में क़याम रखता हो, इन मकरूहात में से किसी काम को न करे;²⁷~क्योंकि उस मुल्क के बाशिन्दों ने जो तुमसे पहले थे यह सब मकरूह काम किये हैं और मुल्क आलूदा हो गया है।²⁸~इसलिए ऐसा न हो कि जिस तरह उस मुल्क ने उस क़ौम को जो तुमसे पहले वहाँ थी उगल दिया, उसी तरह तुम को भी जब तुम उसे आलूदा करो तो उगल दे।

²⁹क्योंकि जो इन मकरूह कामों में से किसी को करेगा, वह अपने लोगों में से काट डाला जाएगा।³⁰~इसलिए मेरी शरी'अत को मानना, और यह मकरूह रस्में जो तुमसे पहले अदा की जाती थीं, इनमें से किसी को 'अमल में न लाना और इन में फँस कर आलूदा न हो जाना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

Chapter 19

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"बनी-इस्राईल की सारी जमा'अत से कह कि तुम पाक रहो; क्योंकि मैं जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ पाक हूँ तुम में से हर एक अपनी माँ और अपने बाप से डरता रहे, और तुम मेरे सबतों को मानना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।⁴~तुम बुतों की तरफ़ रुजू' न होना, और न अपने लिए ढाले हुए मा'बूद बनाना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

⁵~"और जब तुम खुदावन्द के सामने सलामती के ज़बीहे पेश करो, तो उनको इस तरह पेश करना कि तुम मक़बूल हो।⁶~और जिस दिन उसे पेश करो उस दिन और दूसरे दिन वह खाया जाए, और अगर तीसरे दिन तक कुछ बचा रह जाए तो वह आग में जला दिया जाए।⁷और अगर वह ज़रा भी तीसरे दिन खाया जाए, तो मकरूह ठहरेगा और मक़बूल न होगा;⁸~बल्कि जो कोई उसे खाए उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा, क्योंकि उसने खुदावन्द की पाक चीज़ को नजिस किया; इसलिए वह शख्स अपने लोगों में से काट डाला जाएगा।

⁹~और जब तुम अपनी ज़मीन की पैदावार की फ़सल काटो, तो अपने खेत के कोने-कोने तक पूरा-पूरा न काटना और न कटाई की गिरी-पड़ी बालों को चुन लेना।

¹⁰~और तू अपने अंगूरिस्तान का दाना-दाना न तोड़ लेना, और न अपने अंगूरिस्तान के गिरे हुए दानों को जमा' करना; उनको ग़रीबों और मुसाफ़िरों के लिए छोड़ देना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

¹¹~"तुम चोरी न करना और न दगा देना और न एक दूसरे से झूट बोलना।¹²और तुम मेरा नाम लेकर झूटी क़सम न खाना जिससे तू अपने खुदा के नाम को नापाक ठहराए; मैं खुदावन्द हूँ।

¹³~"तू अपने पड़ोसी पर न जुल्म करना, न उसे लूटना। मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास सारी रात सुबह तक रहने न पाए।¹⁴~तू बहरे को न कोसना, और न अन्धे के आगे ठोकर खिलाने की चीज़ को धरना, बल्कि अपने खुदा से डरना। मैं खुदावन्द हूँ।

¹⁵~"तुम फ़ैसले में नारास्ती न करना, न तो ग़रीब की रि'आयत करना और न बड़े आदमी का लिहाज़; बल्कि रास्ती के साथ अपने पड़ोसी का इन्साफ़ करना।

¹⁶~तू अपनी क़ौम में इधर-उधर लुतरापन न करते फिरना, और न अपने पड़ोसी का खून करने पर आमादा होना; मैं खुदावन्द हूँ।

¹⁷~तू अपने दिल में अपने भाई से बुग़ज़ न रखना; और अपने पड़ोसी को ज़रूर डाँटते भी रहना, ताकि उसकी वजह से तेरे सिर गुनाह न लगे।¹⁸~तू इन्तक़ाम न लेना, और न अपनी क़ौम की नसल से कीना रखना, बल्कि अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत करना; मैं खुदावन्द हूँ।

¹⁹~"तू मेरी शरी'अतों को मानना: तू अपने चौपायों को ग़ैर जिन्स से भरवाने न देना, और अपने खेत में दो क्रिस्म के बीज एक साथ न बोना, और न तुझ पर दो क्रिस्म के मिले जुले तार का कपड़ा हो।

²⁰~"अगर कोई ऐसी 'औरत से सुहबत करे जो लौंडी और किसी शख्स की मंगेतर हो, और न तो उसका फ़िदिया ही दिया गया हो और न वह आज़ाद की गई हो, तो उन दोनों की सज़ा मिले लेकिन वह जान से मारे न जाएँ इसलिए कि वह 'औरत आज़ाद न थी।²¹~और वह आदमी अपने जुर्म की कुर्बानी के लिए खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने एक मेंढा लाए कि वह उसके जुर्म की कुर्बानी हो।²²~और काहिन उसके जुर्म की कुर्बानी के मेंढे से उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दे, तब जो ख़ता उसने की है वह उसे मु'आफ़ की जाएगी।

²³और जब तुम उस मुल्क में पहुँचकर क्रिस्म-क्रिस्म के फल के दरख़्त लगाओ तो~तुम ~उनके फल को जैसे नामख़तून समझना वह तुम्हारे लिए तीन बरस तक नामख़तून के बराबर हों और खाए न जाएँ।²⁴~और चौथे साल उनका सारा फल खुदावन्द की तम्जीद करने के~लिए पाक होगा।²⁵~तब पाँचवे साल से उनका फल खाना ताकि वह तुम्हारे लिए इफ़रात के साथ पैदा हों। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

²⁶~"तुम किसी चीज़ को खून के साथ न खाना। और न जादू मंतर करना, न शगुन निकालना।²⁷तुम अपने अपने सिर के गोशों को बाल काट कर गोल न बनाना, और न तू अपनी दाढ़ी के कोनों को बिगाड़ना।²⁸तुम मुर्दों की वजह से अपने जिस्म को ज़ख्मी न करना, और न अपने ऊपर कुछ गुदवाना। मैं खुदावन्द हूँ।

²⁹~तू अपनी बेटी को कस्बी बना कर नापाक न होने देना, कहीं ऐसा न हो कि मुल्क में ~रण्डी बाज़ी फैल जाए और सारा मुल्क बदकारी से भर जाए।³⁰~तुम मेरे सबतों को मानना और मेरे हैकल की ता'ज़ीम करना; मैं खुदावन्द हूँ।

³¹~जो जिन्नात के यार हैं और जो जादूगर हैं, तुम उनके पास न जाना और न उनके तालिब होना कि वह तुम को नजिस बना दें। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

³²~"जिनके सिर के बाल सफ़ेद हैं, तुम उनके सामने उठ खड़े होना और बड़े-बूढ़े का अदब करना, और अपने खुदा से डरना। मैं खुदावन्द हूँ।

³³और अगर कोई परदेसी तेरे साथ तुम्हारे मुल्क में क़याम करता हो तो तुम उसे आज़ार न पहुँचाना;³⁴बल्कि जो परदेसी तुम्हारे साथ रहता हो उसे देसी की तरह समझना, बल्कि तू उससे अपनी तरह मुहब्बत करना; इसलिए कि तुम मुल्क-ए-मिस्र में परदेसी थे। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

³⁵~तुम इन्साफ़, और पैमाइश, और वज़न, और पैमाने में नारास्ती न करना।³⁶ठीक तराजू, ठीक बाट, पूरा ऐफ़ा और पूरा हीन रखना। जो तुम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया मैं ही हूँ, खुदावन्द तुम्हारा खुदा।³⁷इसलिए तुम मेरे सब आईन और सब अहक़ाम मानना और उन पर 'अमल करना; मैं खुदावन्द हूँ।"

Chapter 20

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, ²"तू बनी-इसाईल से यह भी कह दे कि बनी-इसाईल में से या उन परदेसियों में से जो इसाईलियों के बीच क़ायम करते हैं, जो कोई शख्स अपनी औलाद में से किसी की मोलक की नज़्ज़ करे वह ज़रूर जान से मारा जाए; अहल-ए-मुल्क उसे संगसार करें।

³~और मैं भी उस शख्स का मुखालिफ़ हूँगा और उसे उसके लोगों में से काट डालेंगा, इसलिए कि उस ने अपनी औलाद को मोलक की नज़्ज़ कर के मेरे हैकल और मेरे पाक नाम को नापाक ठहराया। ⁴और अगर उस वक़्त जब वह अपनी औलाद में से किसी की मोलक की नज़्ज़ करे, अहल-ए-मुल्क उस शख्स की तरफ़ से चश्मपोशी कर के उसे जान से न मारे ⁵~तो मैं खुद उस शख्स का और उसके घराने का मुखालिफ़ हो कर उसको और उन सभी को जो उसकी पैरवी में ज़िनाकार बनें और मोलक के साथ ज़िना करें, उनकी क़ौम में से काट डालूँगा।

⁶~और जो शख्स जिन्नात के यारों और जादूगरों के पास जाए कि उनकी पैरवी में ज़िना करे, मैं उसका मुखालिफ़ हूँगा और उसे उस की क़ौम में से काट डालूँगा।

⁷इसलिए तुम अपने आप को पाक करो और पाक रहो, मैं खुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

⁸~और तुम मेरे क़ानून को मानना और उस पर 'अमल करना। मैं खुदावन्द हूँ जो तुम को पाक करता हूँ। ⁹~और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करे वह ज़रूर जान से मारा जाए, उसने अपने बाप या माँ पर ला'नत की है, इसलिए उस का खून उसी की गर्दन पर होगा।

¹⁰~और जो शख्स दूसरे की बीवी से या 'नी अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे, वह ज़ानी और ज़ानिया दोनों ज़रूर जान से मार दिए जाएँ। ¹¹और जो शख्स अपनी सौतेली माँ से सुहबत करे उसने अपने बाप के बदन को बे-पर्दा किया, वह दोनों ज़रूर जान से मारे जाएँ, उन का खून उन ही की गर्दन पर होगा। ¹²~और अगर कोई शख्स अपनी बहू से सुहबत करे तो वह दोनों ज़रूर जान से मारे जायें उन्होंने औंधी बात की है उनका खून उन-ही की गर्दन पर होगा।

¹³और अगर कोई मर्द से सुहबत करे जैसे 'औरत से करते हैं तो उन दोनों ने बहुत मकरूह काम किया है, इसलिए वह दोनों ज़रूर जान से मारे जाएँ, उनका खून उनही की गर्दन पर होगा। ¹⁴~और अगर कोई शख्स अपनी बीवी और अपनी सास दोनों को रखे तो यह बड़ी ख़बासत है, इसलिए वह आदमी और वह 'औरतें तीनों के तीनों जला दिए जाएँ ताकि तुम्हारे बीच-ख़बासत न रहे;

¹⁵और अगर कोई मर्द किसी जानवर से जिमा'अ करे तो वह ज़रूर जान से मारा जाए और तुम उस जानवर को भी मार डालना। ¹⁶~और अगर कोई 'औरत किसी जानवर के पास जाए और उससे हम सुहबत हो तो उस 'औरत और जानवर दोनों को मार डालना, वह ज़रूर जान से मारे जाएँ; उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा।

¹⁷~और अगर कोई मर्द अपनी बहन को जो उसके बाप की या उसकी माँ की बेटी हो, लेकर उसका बदन देखे और उसकी बहन उसका बदन देखे, तो यह शर्म की बात है; वह दोनों अपनी क़ौम के लोगों की आँखों के सामने क़त्ल किए जाएँ, उसने अपनी बहन के बदन को बे-पर्दा किया, उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। ¹⁸और अगर मर्द उस 'औरत से जो कपड़ों से हो सुहबत कर के उसके बदन को बे-पर्दा करे, तो उसने उसका चश्मा खोला और उस 'औरत ने अपने खून का चश्मा खुलवाया। इसलिए वह दोनों अपनी क़ौम में से काट डाले जाएँ।

¹⁹और तू अपनी ख़ाला या फूफी के बदन को बे-पर्दा न करना, क्योंकि जो ऐसा करे उसने अपनी क़रीबी रिश्तेदार को बे-पर्दा किया; इसलिए उन दोनों का गुनाह उन ही के सिर लगेगा। ²⁰और अगर कोई अपनी चची या ताई से सुहबत करे तो उसने अपने चचा या ताऊ के बदन को बे-पर्दा किया; इसलिए उनका गुनाह उनके सिर लगेगा, वह बे-औलाद मरेंगे। ²¹~अगर कोई शख्स अपने भाई की बीवी को रखे तो यह नजासत है, उसने अपने भाई के बदन को बे-पर्दा किया है; वह बे-औलाद रहेंगे।

²²इसलिए तुम मेरे सब आईन और अहक़ाम मानना और उन पर 'अमल करना, ताकि वह मुल्क जिसमें मैं तुम को बसाने को लिए जाता हूँ तुम को उगल न दे।

²³~तुम उन क़ौमों के दस्तूरों पर जिनको मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ मत चलना, क्योंकि उन्होंने यह सब काम किए इसीलिए मुझे उन से नफ़रत हो गई।

²⁴लेकिन मैंने तुमसे कहा है कि तुम उनके मुल्क के वारिस होगे, और मैं तुम को वह मुल्क जिस में दूध और शहद बहता है तुम्हारी मिल्कियत होने के लिए दूँगा। मैं खुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जिसने तुम को और क़ौमों से अलग किया है। ²⁵इसलिए तुम पाक और नापाक चौपायों में, और पाक और नापाक परिन्दों में फ़र्क़ करना, और तुम किसी जानवर या परिन्दे या ज़मीन पर के रेंगनेवाले जानदार से, जिनको मैंने तुम्हारे लिए नापाक ठहराकर अलग किया है अपने आप को मकरूह न बना लेना।

²⁶~और तुम मेरे लिए पाक बने रहना, क्योंकि मैं जो खुदावन्द हूँ पाक हूँ; और मैंने तुम को और क़ौमों से अलग किया है ताकि तुम मेरे ही रहो।

²⁷~' और वह मर्द या 'औरत जिसमें जिन्न हो या वह जादूगर हो तो वह ज़रूर जान से मारा जाए, ऐसों को लोग संगसार करें; उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा।"

Chapter 21

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि 'हारून के बेटों से जो काहिन हैं कह कि अपने कबीले के मुर्दे की वजह से कोई अपने आप को नजिस न कर ले।'²अपने क़रीबी रिश्तेदारों की वजह से जैसे अपनी माँ की वजह से, और अपने बाप की वजह से, और अपने बेटे-बेटी की वजह से, और अपने भाई की वजह से,³~और अपनी सगी कुँवारी बहन की वजह से जिसने शौहर न किया हो, इन की खातिर वह अपने को नजिस कर सकता है।

⁴~चूँकि वह अपने लोगों में सरदार है, इसलिए वह अपने आप को ऐसा आलूदा न करे कि नापाक हो जाए।⁵~वह न अपने सिर उनकी खातिर बीच से घुटवाएँ और न अपनी दाढ़ी के कोने मुण्डवाएँ, और न अपने को ज़ख्मी करें।⁶~वह अपने खुदा के लिए पाक बने रहें और अपने खुदा के नाम को बेहुरमत न करें, क्योंकि वह खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानियाँ जो उनके खुदा की गिज़ा है पेश करते हैं; इसलिए वह पाक रहें।

⁷~वह किसी फ़ाहिशा या नापाक 'औरत से ब्याह न करें, और न उस 'औरत से ब्याह करें जिसे उसके शौहर ने तलाक़ दी हो; क्योंकि काहिन अपने खुदा के लिए पाक है।⁸तब तू काहिन को पाक जानना क्योंकि वह तेरे खुदा की गिज़ा पेश करता है; इसलिए वह तेरी नज़र में पाक ठहरे, क्योंकि मैं खुदावन्द जो तुम को पाक करता हूँ कुदूस हूँ।⁹~और अगर काहिन की बेटी फ़ाहिशा बनकर अपने आप को नापाक करे तो वह अपने बाप को नापाक ठहराती है, वह 'औरत आग में जलाई जाए।

¹⁰ और वह जो अपने भाइयों के बीच सरदार काहिन हो, जिसके सिर पर मसह करने का तेल डाला गया और जो पाक लिबास पहनने के लिए मख्सूस किया गया, वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे और अपने कपड़े न फाड़े।¹¹वह किसी मुर्दे के पास न जाए, और न अपने बाप या माँ की खातिर अपने आप को नजिस करे।¹²और वह हैकल के बाहर भी न निकले और न अपने खुदा के हैकल को बेहुरमत करे, क्योंकि उसके खुदा के मसह करने के तेल का ताज उस पर है; मैं खुदावन्द हूँ।

¹³~और वह कुँवारी 'औरत से ब्याह करे;¹⁴जो बेवा या मुतल्लका या नापाक 'औरत या फ़ाहिशा हो, उनसे वह ब्याह न करे बल्कि वह अपनी ही क़ौम की कुँवारी को ब्याह ले।¹⁵~और वह अपने तुख्म को अपनी क़ौम में नापाक न ठहराए, क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ जो उसे पाक करता हूँ।"

¹⁶~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,¹⁷~"हारून से कह दे कि तेरी नसल में नसल-दर-नसल अगर कोई किसी तरह का 'ऐब रखता हो, तो वह अपने खुदा की गिज़ा पेश करने को नज़दीक न आए;

¹⁸~चाहे कोई हो जिसमें 'ऐब हो वह नज़दीक न आए चाहे वह अन्था हो या लंगड़ा, या नकचपटा हो, या ज़ाइद-उल-'आज़ा,¹⁹~या उसका पाँव टूटा हो, या~हाथ टूटा हो²⁰, या वह कुबड़ा या बौना हो, या उसकी आँख में कुछ नुक्स हो, या खुजली भरा हो, या उसके पपड़ियाँ हों, या उसके खुसिए पिचके हों।²¹~हारून काहिन की नसल में से कोई जो 'ऐबदार हो खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियाँ पेश करने को नज़दीक न आए, वह 'ऐबदार है; वह हरगिज़ अपने खुदा की गिज़ा पेश करने को पास न आए।

²²~वह अपने खुदा की बहुत ही मुकद्दस और पाक दोनों तरह की रोटी खाए,²³~लेकिन पर्दे के अन्दर दाखिल न हो, न मज़बह के पास आए इसलिए कि वह 'ऐबदार है; कहीं ऐसा न हो कि वह मेरे पाक मक़ामों को बे-हुरमत करे, क्योंकि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।"²⁴~तब मूसा ने हारून और उसके बेटों और सब बनी-इस्राईल से यह बातें कहीं।

Chapter 22

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"हारून और उसके बेटों से कह कि वह बनी-इसाईल की पाक चीज़ों से जिनको वह मेरे लिए पाक करते हैं अपने आप को बचाए रखवें, और मेरे पाक नाम को बे-हुरमत न करें; मैं खुदावन्द हूँ।³उनको कह दे कि तुम्हारी नसल-दर-नसल जो कोई तुम्हारी नसल में से अपनी नापाकी की हालत में उन पाक चीज़ों के पास जाए, जिनको बनी-इसाईल खुदावन्द के लिए पाक करते हैं, वह शख्स मेरे सामने से काट डाला जाएगा; मैं खुदावन्द हूँ।

⁴~हारून की नसल में जो कोढ़ी, या जिरयान का मरीज़ हो वह जब तक पाक न हो जाए, पाक चीज़ों में से कुछ न खाए; और जो कोई ऐसी चीज़ को जो मुर्दे की वजह से नापाक हो गई है, या उस शख्स की जिस की धात बहती हो छुए⁵~या जो कोई किसी रंगने वाले जानदार को जिसके छूने से वह नापाक हो सकता है, छुए या किसी ऐसे शख्स को छुए जिससे उसकी नापाकी चाहे वह किसी क्रिस्म की हो उसको भी लग सकती हो;⁶तो वह आदमी जो इनमें से किसी को छुए शाम तक नापाक रहेगा, और जब तक पानी से गुस्ल न कर ले पाक चीज़ों में से कुछ न खाए;

⁷और वह उस वक़्त पाक ठहरेगा जब आफ़ताब गुरूब हो जाए, इसके बा'द वह पाक चीज़ों में से खाए, क्योंकि यह उसकी खुराक है।⁸और मुरदार या दरिन्दों के फाड़े हुए जानवर को खाने से वह अपने आप को नजिस न कर ले; मैं खुदावन्द हूँ~इसलिए वह मेरी शरा' को माने, ऐसा न हो कि उस की वजह से उनके सिर गुनाह लगे और उसकी बेहुरमती करने की वजह से वह मर भी जाएँ, मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।

¹⁰~'कोई अजनबी पाक चीज़ की न खाने पाए चाहे वह काहिन ही के यहाँ ठहरा हो, या उसका नौकर हो तो भी वह कोई पाक चीज़ न खाए;¹¹~लेकिन वह जिसे काहिन ने अपने ज़र से खरीदा हो उसे खा सकता है, और वह जो उसके घर में पैदा हुए हों वह भी उसके खाने में से खाएँ।

¹²~अगर काहिन की बेटी किसी अजनबी से ब्याही गई हो, तो वह पाक चीज़ों की कुर्बानी में से कुछ न खाए।¹³~लेकिन अगर काहिन की बेटी बेवा हो जाए, या मुतल्लका हो और बे-आलदा हो, और लड़कपन के दिनों की तरह अपने बाप के घर में फिर आ कर रहे तो वह अपने बाप के खाने में से खाए; लेकिन कोई अजनबी उसे न खाए।

¹⁴~और अगर कोई अनजाने में पाक चीज़ को खा जाए तो वह उसके पाँचवें हिस्से के बराबर अपने पास से उस में मिला कर वह पाक चीज़ काहिन को दे¹⁵~और वह बनी-इसाईल की पाक चीज़ों को जिनको वह खुदावन्द की नज़ करते हों बेहुरमत करके,¹⁶उनके सिर उस गुनाह का जुर्म न लादें जो उनकी पाक चीज़ों को खाने से होगा; क्योंकि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।"

¹⁷~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,¹⁸~"हारून और उसके बेटों और सब बनी-इसाईल से कह कि इसाईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो इसाईलियों के बीच रहते हैं, जो कोई शख्स अपनी कुर्बानी लाए, चाहे वह कोई मिन्नत की कुर्बानी हो या रज़ा की कुर्बानी, जिसे वह सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करते हैं;¹⁹~तो अपने मक़बूल होने के लिए तुम बैलों या बर्रों~या बकरों में से बे-'ऐब नर चढ़ाना।

²⁰~और जिसमें 'ऐब हो उसे न अदा करना क्योंकि वह तुम्हारी तरफ़ से मक़बूल न होगा।²¹~और जो कोई अपनी मिन्नत पूरी करने के लिए या रज़ा की कुर्बानी के तौर पर गाय, बैल या भेड़ बकरी में से सलामती का ज़बीहा खुदावन्द के सामने पेश करे, तो वह जानवर मक़बूल ठहरने के लिए बे-'ऐब हो; उसमें कोई नुक्स न हो।

²²~जो अन्धा या शिकस्ता-ए-'उज़्व या लूला हो, जिसके रसौली या खुजली या पपड़ियाँ हों, ऐसों को खुदावन्द के सामने न चढ़ाना और न मज़बह पर उनकी आतिशी कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश करना।²³~जिस बछड़े या बर्र का कोई 'उज़्व ज़्यादा या कम हो उसे तो रज़ा की कुर्बानी के तौर पर पेश कर सकता है, लेकिन मिन्नत पूरी करने के लिए वह मक़बूल न होगा।

²⁴~जिस जानवर के खुसिए कुचले हुए या चूर किए हुए या टूटे या कटे हुए हों, उसे तुम खुदावन्द के सामने न चढ़ाना और न अपने मुल्क में ऐसा काम करना;

²⁵और न इनमें से किसी को लेकर तुम अपने खुदा की ग़िज़ा परदेसी या अजनबी के हाथ से अदा करवाना, क्योंकि उनका बिगाड़ उनमें मौजूद होता है, उनमें 'ऐब है इसलिए वह तुम्हारी तरफ़ से मक़बूल न होंगे।"

²⁶~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²⁷~"जिस वक़्त बछड़ा या भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा हो, तो सात दिन तक वह अपनी माँ के साथ रहे और आठवें दिन से और उसके बा'द से वह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी के लिए मक़बूल होगा।

²⁸और चाहे गाय हो या भेड़, बकरी, तुम उसे और उसके बच्चे दोनों को एक ही दिन ज़बह न करना।²⁹~और जब तुम खुदावन्द के शुक्राने का ज़बीहा कुर्बानी करो, तो उसे इस तरह कुर्बानी करना कि तुम मक़बूल ठहरो;³⁰~और वह उसी दिन खा भी लिया जाए, तुम उसमें से कुछ भी दूसरे दिन की सुबह तक बाक़ी न छोड़ना; मैं खुदावन्द हूँ।

³¹~"इसलिए तुम मेरे हुक्मों को मानना और उन पर 'अमल करना; मैं खुदावन्द हूँ।³²~तुम मेरे पाक नाम को नापाक न ठहराना, क्योंकि मैं बनी-इसाईल के बीच ज़रूर ही पाक माना जाऊँगा; मैं खुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ;³³~जो तुम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा खुदा बना रहूँ, मैं खुदावन्द हूँ।"

Chapter 23

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि²~"बनी-इसाईल से कह कि खुदावन्द की 'ईदें जिनका तुम को पाक मजम'ओं के लिए 'ऐलान देना होगा, मेरी वह 'ईदें यह हैं।

³~छ: दिन काम-काज किया जाए लेकिन सातवाँ दिन खास आराम का और पाक मजमे' का सबत है, उस रोज़ किसी तरह का काम न करना; वह तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में खुदावन्द का सबत है।

⁴~"खुदावन्द की 'ईदें जिनका 'ऐलान तुम को पाक मजम'ओं के लिए वक़्त-ए- मु'अय्यन पर करना होगा इसलिए यह हैं।⁵~पहले महीने की चौदहवीं तारीख की शाम के वक़्त खुदावन्द की फ़सल हुआ करे।⁶~और उसी महीने की पंद्रहवीं तारीख को खुदावन्द के लिए 'ईद-ए-फ़तीर हो, उसमें तुम सात दिन तक बे-खमीरी रोटी खाना।

⁷~पहले दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो उसमें तुम कोई खादिमाना काम न करना।⁸और सातों दिन तुम खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना और और सातवें दिन फिर पाक मजमा' हो उस रोज़ तुम कोई खादिमाना काम न करना।"

⁹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,¹⁰~"बनी-इसाईल से कह कि जब तुम उस मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ दाखिल हो जाओ और उसकी फ़सल काटो, तो तुम अपनी फ़सल के पहले फलों का एक पूला काहिन के पास लाना;¹¹~और वह उसे खुदावन्द के सामने हिलाए, ताकि वह तुम्हारी तरफ़ से कुबूल हो और काहिन उसे सबत के दूसरे दिन सुबह को हिलाए।

¹²~और जिस दिन तुम पूले को हिलाओ उसी दिन एक नर बे-'ऐब यक-साला बर्रा सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करना।¹³~और उसके साथ नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा ऐफ़ा के दो दहाई हिस्से के बराबर हो, ताकि वह आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू के लिए जलाई जाए; और उसके साथ मय का तपावन हीन के चौथे हिस्से के बराबर मय लेकर करना।¹⁴~और जब तक तुम अपने खुदा के लिए यह हदिया न ले आओ, उस दिन तक नई फ़सल की रोटी या भुना हुआ अनाज, या हरी बालें हरगिज़ न खाना। तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल-दर-नसल हमेशा यही क़ानून रहेगा।

¹⁵~"और तुम सबत के दूसरे दिन से जिस दिन हिलाने की कुर्बानी के लिए पूला लाओगे गिनना शुरू' करना, जब तक सात सबत पूरे न हो जाएँ।¹⁶~और सातवें सबत के दूसरे दिन तक पचास दिन गिन लेना, तब तुम खुदावन्द के लिए नज़्र की नई कुर्बानी पेश करना।

¹⁷~तुम अपने घरों में से ऐफ़ा के दो दहाई हिस्से के वज़न के मैदे के दो गिदें हिलाने की कुर्बानी के लिए ले आना; वह खमीर के साथ पकाए जाएँ ताकि खुदावन्द के लिए पहले फल ठहरें।¹⁸और उन गिदों के साथ ही तुम सात यक-साला बे-'ऐब बरें और एक बछड़ा और दो मेंढे लाना, ताकि वह अपनी अपनी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के साथ खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर पेश करे जाएँ, और खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरें।

¹⁹और तुम खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा और सलामती के ज़बीहे के लिए दो यकसाला नर बरें चढ़ाना।²⁰~और काहिन इनको पहले फल के दोनों गिदों के साथ लेकर उन दोनों बरों के साथ हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए, वह खुदावन्द के ~लिए पाक और काहिन का हिस्सा ठहरें।²¹~और तुम ऐन उसी दिन 'ऐलान कर देना, उस रोज़ तुम्हारा पाक मजमा' हो, तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना; तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल-दर-नसल सदा यही तौर तरीक़ा रहेगा।

²²~"और जब तुम अपनी ज़मीन की पैदावार की फ़सल काटो, तो तू अपने खेत को कोने-कोने तक पूरा न काटना और न अपनी फ़सल की गिरी-पड़ी बालों को जमा' करना, बल्कि उनको ग़रीबों और मुसाफ़िरों के लिए छोड़ देना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

²³~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²⁴~"बनी-इसाईल से कह कि सातवें महीने की पहली तारीख तुम्हारे लिए खास आराम का दिन हो, उसमें यादगारी के लिए नरसिंगे फूके जाएँ और पाक मजमा' हो।²⁵~तुम उस रोज़ कोई खादिमाना काम न करना और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना।"

²⁶~खुदावन्द ने मूसा से कहा²⁷~'उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख की क़फ़ारे का दिन है; उस रोज़ तुम्हारा पाक मजमा' हो, और तुम अपनी जानों को दुख देना और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना।

²⁸~तुम उस दिन किसी तरह का काम न करना, क्योंकि वह क़फ़ारे का दिन है जिसमें खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारे लिए क़फ़ारा दिया जाएगा।²⁹जो शख्स उस दिन अपनी जान को दुख न दे वह अपने लोगों में से काट डाला जाएगा। '

³⁰और जो शख्स उस दिन किसी तरह का काम करे, उसे मैं उसके लोगों में से फ़ना कर दूँगा।³¹~तुम किसी तरह का काम मत करना, तुम्हारी सब सुकूनत गाहों में नसल-दर-नसल हमेशा यही तौर तरीक़े रहेंगे।³²~यह तुम्हारे लिए खास आराम का सबत हो, इसमें तुम अपनी जानों को दुख देना; तुम उस महीने की नौवीं तारीख की शाम से दूसरी शाम तक अपना सबत मानना।"

³³~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,³⁴~'बनी-इसाईल से कह कि उसी सातवें महीने की पंद्रहवीं तारीख से लेकर सात दिन तक खुदावन्द के लिए 'ईद-ए-ख़ियाम होगी।

³⁵पहले दिन पाक मजमा हो; तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना।³⁶~तुम सातों दिन बराबर खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना। आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो और फिर खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना; वह खास मजमा' है, उसमें कोई खादिमाना काम न करना।

³⁷~"यह खुदावन्द की मुकर्ररा 'ईदें हैं जिनमें तुम पाक मजम'ओं का 'ऐलान करना; ताकि खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी, और सोख्तनी कुर्बानी, और नज़्र की कुर्बानी और ज़बीहा और तपावन हर एक अपने अपने मुअ'य्यन दिन में पेश किया जाए।³⁸~इनके अलावा खुदावन्द के सबतों को मानना, और अपने हदियों और मिन्नतों और रज़ा की कुर्बानियों को जो तुम खुदावन्द के सामने लाते हो पेश करना।

³⁹~"और सातवें महीने की पंद्रहवीं तारीख से, जब तुम ज़मीन की पैदावार जमा' कर चुको तो सात दिन तक खुदावन्द की 'ईद मानना। पहला दिन खास आराम का हो, और अठारहवें दिन भी खास आराम ही का हो।

⁴⁰~इसलिए तुम पहले दिन खुशनुमा दरख्तों के फल और खजूर की डालियाँ, और घने दरख्तों की शाखे और नदियों की बेद-ए-मजनूँ लेना; और तुम खुदावन्द अपने खुदा के आगे सात दिन तक खुशी मनाना।⁴¹~और तुम हर साल खुदावन्द के लिए सात रोज़ तक यह 'ईद माना करना। तुम्हारी नसल दर नसल हमेशा यही क़ानून रहेगा कि तुम सातवें महीने इस 'ईद को मानो।

⁴²~सात रोज़ तक बराबर तुम सायबानों में रहना, जितने इस्राईल की नसल के हैं सब के सब सायबानों में रहें;⁴³~ताकि तुम्हारी नसल को मा'लूम हो कि जब मैं बनी-इस्राईल को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर ला रहा था तो मैंने उनको सायबानों में टिकाया था; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"⁴⁴~इसलिए मूसा ने बनी-इस्राईल को खुदावन्द की मुक़र्ररा 'ईदें बता दीं।

Chapter 24

¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"बनी-इसाईल को हुक्म कर कि वह तेरे पास जैतून का कूट कर निकाला हुआ खालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ, ताकि चरागाह हमेशा जलता रहे।

³~हारून उसे शहादत के पर्दे के बाहर खेमा-ए-इजितमा'अ में शाम से सुबह तक खुदावन्द के सामने करीने से रखवा करे; तुम्हारी नसल-दर-नसल सदा यही क़ानून रहेगा।⁴~वह हमेशा उन चरागाहों की तरतीब से पाक शमा'दान पर खुदावन्द के सामने रखवा करे।

⁵"और तू मैदा लेकर बारह गिर्दे पकाना, हर एक गिर्दे में ऐफ़ा के दो दहाई हिस्से के बराबर मैदा हो;⁶और तू उनको दो क़तारें कर कि हर क़तार में छः छः रोटियाँ, पाक मेज़ पर खुदावन्द के सामने रखना।

⁷~और तू हर एक क़तार पर खालिस लुबान रखना, ताकि वह रोटी पर यादगारी या'नी खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी के तौर पर हो।⁸वह हमेशा हर सबत के रोज़ उनको खुदावन्द के सामने तरतीब दिया करे, क्योंकि यह बनी-इसाईल की जानिब से एक हमेशा 'अहद है।⁹~और यह रोटियाँ हारून और उसके बेटों की होंगी वह इन को किसी पाक जगह में खाएँ, क्योंकि वह एक जाविदानी क़ानून के मुताबिक़ खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से हारून के लिए बहुत पाक हैं।"

¹⁰~और एक इस्राइली 'औरत का बेटा जिसका बाप मिस्री था, इस्राइलियों के बीच चला गया और वह इस्राइली 'औरत का बेटा और एक इस्राइली लश्करगाह में आपस में मार पीट करने लगे,¹¹~और इस्राइली 'औरत के बेटे ने पाक नाम पर कुफ़्र बका और ला'नत की। तब लोग उसे मूसा के पास ले गए। उसकी माँ का नाम सलोमीत था, जो दिव्री की बेटी थी जो दान के क़बीले का था।¹²~और उन्होंने उसे हवालात में डाल दिया ताकि खुदावन्द की जानिब से इस बात का फ़ैसला उन पर ज़ाहिर किया जाए।

¹³~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,¹⁴"उस ला'नत करने वाले को लश्करगाह के बाहर निकाल कर ले जा : और जितनों ने उसे ला'नत करते सुना, वह सब अपने-अपने हाथ उसके सिर पर रखें और सारी जमा'अत उसे संगसार करे।

¹⁵~और तू बनी-इसाईल से कह दे कि जो कोई अपने खुदा पर ला'नत करे उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।¹⁶~और वह जो खुदावन्द के नाम पर कुफ़्र बके, ज़रूर जान से मारा जाए; सारी जमा'अत उसे कत'ई संगसार करे, चाहे वह देसी हो या परदेसी; जब वह पाक नाम पर कुफ़्र बके तो वह ज़रूर जान से मारा जाए।

¹⁷~और जो कोई किसी आदमी को मार डाले वह ज़रूर जान से मारा जाए।¹⁸और जो कोई किसी चौपाए को मार डाले, वह उसका मु'आवज़ा जान के बदले जान दे।

¹⁹"और अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी को 'ऐबदार बना दे, जो जैसा उसने किया वैसा ही उससे किया जाए;²⁰~या'नी 'उज़्व तोड़ने के बदले 'उज़्व तोड़ना हो, और आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। जैसा ऐब उसने दूसरे आदमी में पैदा कर दिया है वैसा ही उसमें भी कर दिया जाए²¹अलगाज़, जो कोई किसी चौपाए को मार डाले वह उसका मु'आवज़ा दे; लेकिन इन्सान का क़ातिल जान से मारा जाए।

²²~तुम एक ही तरह का क़ानून देसी और परदेसी दोनों के लिए रखना,क्योंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"²³~और मूसा ने यह बनी-इसाईल को बताया। तब वह उस ला'नत करने वाले को निकाल कर लश्करगाह के बाहर ले गए और उसे संगसार कर दिया। इसलिए बनी-इसाईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।

Chapter 25

¹~और खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से कहा कि;²~"बनी-इसाईल से कहा कि,~जब तुम उस मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ दाखिल हो जाओ, तो उसकी ज़मीन भी खुदावन्द के लिए सबत को माने।

³~तू अपने खेत को छः बरस बोना, और अपने अंगूरिस्तान को छः बरस छाँटना और उसका फल जमा' करना।⁴लेकिन सातवें साल ज़मीन के लिए खास आराम का सबत हो। यह सबत खुदावन्द के लिए हो। इसमें तू न अपने खेत को बोना और न अपने अंगूरिस्तान को छाँटना।

⁵~और न अपनी खुदरो फ़सल को काटना और न अपनी बे-छटी ताकों के अंगूरों को तोड़ना; यह ज़मीन के लिए खास आराम का साल हो।⁶और ज़मीन का यह सबत तेरे, और तेरे गुलामों और तेरी लौंडी और मज़दूरों ~और उन परदेसियों के लिए जो तेरे साथ रहते हैं, तुम्हारी खुराक का ज़रिया' होगा;⁷और उसकी सारी पैदावार तेरे चौपायों और तेरे मुल्क के और जानवरों के लिए ख़ूराक ठहरेगी।

⁸~और तू बरसों के सात सबतों को, या'नी सात गुना सात साल गिन लेना, और तेरे हिसाब से बरसों के सात सबतों की मुद्दत कुल उन्चास साल होंगे।⁹~तब तू सातवें महीने की दसवीं तारीख की बड़ा नरसिंगा ज़ोर से फुँकवाना, तुम कफ़फ़ारे के रोज़ अपने सारे मुल्क में यह नरसिंगा फुँकवाना।

¹⁰~और तुम पचासवें बरस को पाक जानना और तमाम मुल्क में सब बाशिनदों के लिए आज़ादी का 'ऐलान कराना, यह तुम्हारे लिए यूबली हो। इसमें तुम में से हर एक अपनी मिल्कियत का मालिक हो, और हर शख्स अपने ख़ानदान में फिर शामिल हो जाए।

¹¹~वह पचासवाँ बरस तुम्हारे लिए यूबली हो, तुम उसमें कुछ न बोना और न उसे जो अपने आप पैदा हो जाए काटना और न बे-छटी ताकों का अंगूर जमा' करना।¹²क्यूँकि वह साल-ए-यूबली होगा; इसलिए वह तुम्हारे लिए पाक ठहरे, तुम उसकी पैदावार की खेत से लेकर खाना।

¹³~उस साल-ए-यूबली में तुम में से हर एक अपनी मिल्कियत का फिर मालिक हो जाए।¹⁴और अगर तू अपने पड़ोसी के हाथ कुछ बेचे या अपने पड़ोसी से कुछ खरीदे, तो तुम एक दूसरे पर अन्धे न करना।

¹⁵यूबली के बा'द जितने बरस गुज़रें हो उनके शुमार के मुताबिक़ तू अपने पड़ोसी से उसे खरीदना, और वह उसे फ़सल के बरसों के शुमार के मुताबिक़ तेरे हाथ बेचे।¹⁶जितने ज़्यादा बरस हों उतना ही दाम ज़्यादा करना और जितने कम बरस हों उतनी ही उस की क़ीमत घटाना; क्यूँकि बरसों के शुमार के मुताबिक़ वह उनकी फ़सल तेरे हाथ बेचता है।¹⁷और तुम एक दूसरे पर अन्धे न करना, बल्कि अपने खुदा से डरते रहना; क्यूँकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

¹⁸~इसलिए तुम मेरी शरी' अत पर 'अमल करना और मेरे हुक्मों को मानना और उन पर चलना, तो तुम उस मुल्क में अम्न के साथ बसे रहोगे।¹⁹~और ज़मीन फलेगी और तुम पेट भर कर खाओगे, और वहाँ अम्न के साथ रहा करोगे।

²⁰~और अगर तुम को खयाल हो ~कि हम सातवें बरस क्या खाएँगे? क्यूँकि देखो, हम को न तो बोना है और न अपनी पैदावार की जमा' करना है।²¹~तो मैं छठे ही बरस ऐसी बरकत तुम पर नाज़िल करूँगा कि तीनों साल के लिए काफ़ी ग़ल्ला पैदा हो जाएगा।²²~और आठवें बरस फिर जीतना बोना और पिछला ग़ल्ला खाते रहना, बल्कि जब तक नौवें साल के बोए हुए की फ़सल न काट लो उस वक़्त तक ~वही पिछला ग़ल्ला खाते रहोगे।

²³~और ज़मीन हमेशा के लिए बेची न जाए क्यूँकि ज़मीन मेरी है, और तुम मेरे मुसाफ़िर और मेहमान हो।²⁴बल्कि तुम अपनी मिल्कियत के मुल्क में हर जगह ज़मीन को छुड़ा लेने देना।²⁵~और अगर तुम्हारा भाई ग़रीब हो जाए और अपनी मिल्कियत का कुछ हिस्सा बेच डाले, तो जो उस का सबसे करीबी रिश्तेदार है वह आकर उस को जिसे उसके भाई ने बेच डाला है छुड़ा ले।

²⁶और अगर उस आदमी का कोई न हो जो उसे छुड़ाए, और वह खुद मालदार हो जाए और उसके छुड़ाने के लिए उसके पास काफ़ी हो।²⁷तो वह फ़रोख़्त के बा'द के बरसों को गिन कर बाक़ी दाम उसकी जिसके हाथ ज़मीन बेची है फेर दे; तब वह फिर अपनी मिल्कियत का मालिक हो जाए।²⁸लेकिन अगर उसमें इतना मक़दूर न हो कि अपनी ज़मीन वापस करा ले, तो जो कुछ सन बेच डाला है वह साल-ए-यूबली तक खरीदार के हाथ में रहे; और साल-ए-यूबली में छुट जाए, तब यह आदमी अपनी मिल्कियत का फिर मालिक हो जाए।

²⁹और अगर कोई शख्स रहने के ऐसे मकान को बेचे जो किसी फ़सीलदार शहर में हो, तो वह उसके बिक जाने के बा'द साल भर के अन्दर-अन्दर उसे छुड़ा सकेगा; या'नी पूरे एक साल तक वह उसे छुड़ाने का हक़दार रहेगा।³⁰~और अगर वह पूरे एक साल की मी'आद के अन्दर छुड़ाया न जाए, तो उस फ़सीलदार शहर के मकान पर खरीदार का नसल-दर-नसल हमेशा का क़ब्ज़ा हो जाए और वह साल-ए-यूबली में भी न छूटे।

³¹~लेकिन जिन देहात के गिर्द कोई फ़सील नहीं उनके मकानों का हिसाब मुल्क के खेतों की तरह होगा, वह छुड़ाए भी जा सकेंगे और साल-ए-यूबली में वह छूट भी जाएँगे।³²~तो भी लावियों के जो शहर हैं, लावी अपनी मिल्कियत के शहरों के मकानों को चाहे किसी वक़्त छुड़ा लें।

³³और अगर कोई दूसरा लावी उनको छुड़ा ले, तो वह मकान जो बेचा गया और उसकी मिल्कियत का शहर दोनों साल ए-यूबली में छूट जाएँ; क्यूँकि जो मकान लावियों के शहरों में हैं वही बनी-इसाईल के बीच लावियों की मिल्कियत हैं।³⁴लेकिन उनके शहरों की 'इलाक़े के खेत नहीं बिक सकते, क्यूँकि वह उनकी हमेशा की ~मिल्कियत हैं।

³⁵और अगर तेरा कोई भाई ग़रीब हो जाए और वह तेरे सामने तंगदस्त हो, तो तू उसे संभालना। वह परदेसी और मुसाफ़िर की तरह तेरे साथ रहे।³⁶~तू उससे सूद या नफ़ा' मत लेना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ रखना, ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िन्दगी बसर कर सके।³⁷तू अपना रुपया उसे सूद पर मत देना और अपना खाना भी उसे नफ़े' के खयाल से न देना।³⁸~मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को इसी लिए मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया कि मुल्क-ए-कना'न तुम को दूँ और तुम्हारा खुदा ठहरे।

³⁹और अगर तेरा कोई भाई तेरे सामने ऐसा ग़रीब हो जाए कि अपने को तेरे हाथ बेच डाले, तो तू उससे गुलाम की तरह खिदमत न लेना।⁴⁰बल्कि वह मज़दूर और मुसाफ़िर की तरह तेरे साथ रहे और साल-ए-यूबली तक तेरी खिदमत करे।⁴¹उसके बा'द वह बाल-बच्चों के साथ तेरे पास से चला जाए, और अपने घराने के पास और अपने बाप दादा की मिल्कियत की जगह को लौट जाए।

⁴²~इसलिए कि वह मेरे खादिम हैं जिनको मैं मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया हूँ, वह गुलामों की तरह बेचे न जाएँ।⁴³~तू उन पर सख्ती से हुक्मरानी न करना, बल्कि अपने खुदा से डरते रहना।⁴⁴~और तेरे जो गुलाम और तेरी जो लौंडियाँ हों, वह उन क्रौमों में से हों जो तुम्हारे चारों तरफ़ रहती हैं; उन ही में से तुम गुलाम और लौंडियाँ खरीदा करना।

⁴⁵इनके सिवा उन परदेसियों के लड़के बालों में से भी जो तुम में क्रयाम करते हैं और उनके घरानों में से जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए और तुम्हारे साथ हैं तुम खरीदा करना और वह तुम्हारी ही मिल्कियत होंगे।⁴⁶और तुम उनको मीरास के तौर पर अपनी औलाद के नाम कर देना कि वह उनकी मौरूसी मिल्कियत हों। इनमें से तुम हमेशा अपने लिए गुलाम लिया करना; लेकिन बनी-इसाईल जो तुम्हारे भाई हैं, उनमें से किसी पर तुम सख्ती से हुक्मरानी न करना।

⁴⁷~और अगर कोई परदेसी या मुसाफ़िर जो तेरे साथ हो, दौलतमन्द हो जाए और तेरा भाई उसके सामने ग़रीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या मुसाफ़िर या परदेसी के खान्दान के किसी आदमी के हाथ बेच डाले,⁴⁸ तो बिक जाने के बा'द वह छुड़ाया जा सकता है, उसके भाइयों में से कोई उसे छुड़ा सकता है,

⁴⁹या उसका चचा या ताऊ, या उसके चचा या ताऊ का बेटा, या उसके खान्दान का कोई और आदमी जो उसका करीबी रिश्तेदार हो वह उस को छुड़ा सकता है; या अगर वह मालदार हो जाए, तो वह अपना फ़िदिया दे कर छूट सकता है।⁵⁰ वह अपने खरीदार के साथ अपने को फ़रोख्त कर देने के साल से लेकर साल-ए-यूबली तक हिसाब करे और उसके बिकने की क़ीमत बरसों की ता'दाद के मुताबिक़ हो; या'नी उसका हिसाब मज़दूर के दिनों की तरह उसके साथ होगा।

⁵¹~अगर यूबली के अभी बहुत से बरस बाक़ी हों, तो जितने रुपयों में वह खरीदा गया था उनमें से अपने छूटने की क़ीमत उतने ही बरसों के हिसाब के मुताबिक़ फेर दे।⁵²~और अगर साल-ए-यूबली के थोड़े से बरस रह गए हों, तो वह उसके साथ हिसाब करे और अपने छूटने की क़ीमत उतने ही बरसों के मुताबिक़ उसे फेर दे;

⁵³~और वह उस मज़दूर की तरह अपने आक्रा के साथ रहे जिसकी मज़दूरी साल-ब-साल ठहराई जाती हो, और उसका आक्रा उस पर तुम्हारे सामने सख्ती से हुक्मत न करने पाए।⁵⁴~और अगर वह इन तरीक़ों से छुड़ाया न जाए तो साल-ए-यूबली में बाल बच्चों के साथ छूट जाए।⁵⁵~क्यूँकि बनी-इसाईल मेरे लिए खादिम हैं, वह मेरे खादिम हैं जिनको मैं मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया हूँ; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

Chapter 26

¹~तुम अपने लिए बुत न बनाना और न कोई तराशी हुई मूरत या लाट अपने लिए खड़ी करना, और न अपने मुल्क में कोई शबीहदार पत्थर रखना कि उसे सिज्दा करो; इसलिए कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।²~तुम मेरे सबतों को मानना और मेरे हैकल की ता'ज़ीम करना; मैं खुदावन्द हूँ।

³~"अगर तुम मेरी शरी'अत पर चलो और मेरे हुक्मों को मानो और उन पर 'अमल करो,⁴~तो मैं तुम्हारे लिए सही वक़्त में बरसाऊँगा और ज़मीन से अनाज पैदा होगा और मैदान के दरख़्त फलेंगे;

⁵यहाँ तक कि अंगूर जमा' करने के वक़्त तक तुम दावते रहोगे, और जोतने बोन के वक़्त तक अंगूर जमा' करोगे, और पेट भर अपनी रोटी खाया करोगे, और चैन से अपने मुल्क में बसे रहोगे।⁶~और मैं मुल्क में अम्न बख्शूँगा, और तुम सोओगे और तुम को कोई नहीं डराएगा; और मैं बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक कर दूँगा, और तलवार तुम्हारे मुल्क में नहीं चलेगी।

⁷और तुम अपने दुश्मनों का पीछा करोगे, और वह तुम्हारे आगे-आगे तलवार से मारे जाएँगे।⁸और तुम्हारे पाँच आदमी सौ को दौड़ाएँगे, और तुम्हारे सौ आदमी दस हज़ार को खदेड़ देंगे, और तुम्हारे दुश्मन तलवार से तुम्हारे आगे-आगे मारे जाएँगे;

⁹~और मैं तुम पर नज़र-ए-'इनायत रखूँगा, और तुम को कामयाब करूँगा और बढ़ाऊँगा, और जो मेरा 'अहद तुम्हारे साथ है उसे पूरा करूँगा।¹⁰और तुम 'अरसे का ज़ख़ीरा किया हुआ पुराना अनाज खाओगे, और नये की वजह से पुराने को निकाल बाहर करोगे।

¹¹~और मैं अपना घर तुम्हारे बीच क़ायम रखूँगा और मेरी रूह तुमसे नफ़रत न करेगी।¹²~और मैं तुम्हारे बीच चला फ़िरा करूँगा, और तुम्हारा खुदा हूँगा, और तुम मेरी क्रौम होगे।¹³~मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को मुल्क-ए-मिस्र से इसलिए निकाल कर ले आया कि तुम उनके गुलाम न बने रहो; और मैंने तुम्हारे जूए की चोबें तोड़ डाली हैं और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया।

¹⁴~लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और इन सब हुक्मों पर 'अमल न करो,¹⁵~और मेरी शरी'अत को छोड़ दो, और तुम्हारी रूहों को मेरे फ़ैसलों से नफ़रत हो, और तुम मेरे सब हुक्मों पर 'अमल न करो बल्कि मेरे 'अहद को तोड़ो;

¹⁶~तो मैं भी तुम्हारे साथ इस तरह पेश आऊँगा कि दहशत और तप-ए-दिक्क़ और बुखार को तुम पर मुकर्रर कर दूँगा, जो तुम्हारी आँखों को चौपट कर देंगे और तुम्हारी जान को घुला डालेंगे, और तुम्हारा बीज बोना फ़िज़ूल होगा क्योंकि तुम्हारे दुश्मन उसकी फ़सल खाएँगे;¹⁷~और मैं खुद भी तुम्हारा मुखालिफ़ हो जाऊँगा, और तुम अपने दुश्मनों के आगे शिकस्त खाओगे; और जिनको तुमसे 'अदावत है वही तुम पर हुक्मरानी करेंगे, और जब कोई तुमको दौड़ाता भी न होगा तब भी तुम भागोगे।

¹⁸~और अगर इतनी बातों पर भी तुम मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के ज़रिए' तुम को सात गुनी सज़ा और दूँगा।¹⁹~और मैं तुम्हारी शहज़ोरी के फ़ख़ को तोड़ डालूँगा, और तुम्हारे लिए आसमान को लोहे की तरह और ज़मीन को पीतल की तरह कर दूँगा।²⁰~और तुम्हारी कुव्वत बेफ़ायदा सफ़्र होगी क्योंकि तुम्हारी ज़मीन से कुछ पैदा न होगा और मैदान के दरख़्त फलने ही के नहीं।

²¹~और अगर तुम्हारा चलन मेरे खिलाफ़ ही रहे और तुम मेरा कहा न मानो, तो मैं तुम्हारे गुनाहों के मुवाफ़िक़ तुम्हारे ऊपर और सातगुनी बलाएँ लाऊँगा।²²जंगली दरिन्दे तुम्हारे बीच छोड़ दूँगा जो तुम को बेऔलाद कर देंगे और तुम्हारे चौपायों को हलाक करेंगे और तुम्हारा शुमार घटा देंगे, और तुम्हारी सड़कें सूनी पड़ जाएँगी।

²³~और अगर इन बातों पर भी तुम मेरे लिए न सुधरो बल्कि मेरे खिलाफ़ ही चलते रहो,²⁴~तो मैं भी तुम्हारे खिलाफ़ चलूँगा, और मैं आप ही तुम्हारे गुनाहों के लिए तुम को और सात गुना मारूँगा।

²⁵और तुम पर एक ऐसी तलवार चलवाऊँगा जो 'अहदशिकनी का पूरा पूरा इन्तक़ाम ले लेगी, और जब तुम अपने शहरों के अन्दर जा जाकर इकट्ठे हो जाओ, तो मैं वबा को तुम्हारे बीच भेजूँगा और तुम गनीम के हाथ में सौंप दिए जाओगे।²⁶और जब मैं तुम्हारी रोटी का सिलसिला तोड़ दूँगा, तो दस 'औरतें एक ही तनूर में तुम्हारी रोटी पकाएँगी। और तुम्हारी उन रोटियों को तोल-तोल कर देती जाएँगी; और तुम खाते जाओगे पर सेर न होगे।

²⁷~"और अगर तुम इन सब बातों पर भी मेरी न सुनो और मेरे खिलाफ़ ही चलते रहो,²⁸~तो मैं अपने ग़ज़ब में तुम्हारे बरख़िलाफ़ चलूँगा, और तुम्हारे गुनाहों के ज़रिए' तुम को सात गुनी सज़ा भी दूँगा।

²⁹~और तुम को अपने बेटों का गोशत और अपनी बेटियों का गोशत खाना पड़ेगा।³⁰और मैं तुम्हारी परस्तिश के बलन्द मक़ामों को ढा दूँगा, और तुम्हारी सूरज की मूरतों को काट डालूँगा और तुम्हारी लाशें तुम्हारे शिकस्ता बुतों पर डाल दूँगा, और मेरी रूह को तुमसे नफ़रत हो जाएगी।

³¹~और मैं तुम्हारे शहरों को वीरान कर डालूँगा, और तुम्हारे हैकलों को उजाड़ बना दूँगा, और तुम्हारी खुशबू-ए-शीरीन की लपट को मैं सूघने का भी नहीं।

³²~और मैं मुल्क को सूना कर दूँगा, और तुम्हारे दुश्मन जो वहाँ रहते हैं इस बात से हैरान होंगे।³³और मैं तुम को गैर क्रौमों में बिखेर दूँगा और तुम्हारे पीछे-पीछे तलवार खींचे रहूँगा; और तुम्हारा मुल्क सूना हो जाएगा, और तुम्हारे शहर वीरान बन जाएँगे।

³⁴और यह ज़मीन जब तक वीरान रहेगी और तुम दुश्मनों के मुल्क में होगे, तब तक वह अपने सबत मनाएगी; तब ही इस ज़मीन को आराम भी मिलेगा और वह अपने सबत भी मनाने पाएगी।³⁵~ये जब तक वीरान रहेगी तब ही तक आराम भी करेगी, जो इसे कभी तुम्हारे सबतों में जब तुम उसमें रहते थे नसीब नहीं हुआ था।³⁶~और जो तुम में से बच जाएँगे और अपने दुश्मनों के मुल्कों में होंगे, उनके दिल के अन्दर मैं बेहिम्मती पैदा कर दूँगा उड़ती हुई पट्टी की आवाज़ उनको खदेड़ेगी, और वह ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागता हो और हालाँकि कोई पीछा भी न करता होगा तो भी वह गिर-गिर पड़ेंगे।

³⁷और वह तलवार के खौफ़ से एक दूसरे से टकरा-टकरा जाएँगे बावजूद यह कि कोई खदेड़ता न होगा, और तुम को अपने दुश्मनों के मुक़ाबले की ताब न होगी।

³⁸और तुम गैर क्रौमों के बीच बिखर कर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम को खा जाएगी।³⁹और तुम में से जो बाक़ी बचेंगे वह अपनी बदकारी की वजह से तुम्हारे दुश्मनों के मुल्कों में घुलते रहेंगे, और अपने बाप दादा की बदकारी की वजह से भी वह उन्हीं की तरह घुलते जाएँगे।

⁴⁰तब वह अपनी और अपने बाप दादा की इस बदकारी का इक्रार करेंगे कि उन्होंने मुझ से खिलाफवर्ज़ी कर कि मेरी हुक्म-उदूली की; और यह भी मान लेंगे कि चूँकि वह मेरे खिलाफ चले थे,⁴¹~इसलिए मैं भी उनका मुखालिफ़ हुआ और उनको उनके दुश्मनों के मुल्क में ला छोड़ा। अगर उस वक़्त उनका नामःख़तून दिल 'आजिज़ बन जाए और वह अपनी बदकारी की सज़ा को मन्ज़ूर करें,⁴² तब मैं अपना 'अहद जो या'क़ूब के साथ था याद करूँगा, और जो 'अहद मैंने इस्हाक़ के साथ, और जो 'अहद मैंने इब्राहीम के साथ बान्धा था उनको भी याद करूँगा, और इस मुल्क को याद करूँगा।

⁴³~और वह ज़मीन भी उनसे छूट कर जब तक उनकी ग़ैर हाज़िरी में सूनी पड़ी रहेगी तब तक अपने सबतों को मनाएगी; और वह अपनी बदकारी की सज़ा को मन्ज़ूर कर लेंगे, इसी वजह से कि उन्होंने मेरे हुक्मों को छोड़ दिया था, और उनकी रूहों को मेरी शरी'अत से नफ़रत ही गई थी।

⁴⁴इस पर भी जब वह अपने दुश्मनों के मुल्क में होंगे तो मैं उनको ऐसा नहीं छोड़ूँगा करूँगा और न मुझे उनसे ऐसी नफ़रत होगी कि मैं उनकी बिल्कुल फ़ना कर दूँ, और मेरा जो 'अहद उनके साथ है उसे तोड़ दूँ क्योंकि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ।⁴⁵ बल्कि मैं उनकी खातिर उनके बाप दादा के 'अहद की याद करूँगा, जिनको मैं ग़ैरक़ौमों की आँखों के सामने मुल्क-ए-मिस्र से निकाल कर लाया ताकि मैं उनका खुदा ठहरूँ; मैं खुदावन्द हूँ।"

⁴⁶यह वह शरी'अत और अहकाम और क़वानीन हैं जो खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर अपने और बनी-इस्राईल के बीच मूसा की ज़रिए' मुक़रर किए।

Chapter 27

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;²~"बनी-इसाईल से कह,~कि जब कोई शख्स अपनी मिन्नत पूरी करने लगे, तो मिन्नत के आदमी तेरी क्रीमत ठहराने के मुताबिक़ खुदावन्द के होंगे।

³इसलिए बीस बरस की 'उम्र से लेकर साठ बरस की 'उम्र तक के मर्द के लिए तेरी ठहराई हुई क्रीमत हैकल की ~मिस्क़ाल के हिसाब से चाँदी की पचास मिस्क़ाल हों।⁴~और अगर वह 'औरत हो, तो तेरी ठहराई हुई क्रीमत तीस मिस्क़ाल हों।

⁵~और अगर पाँच बरस से लेकर बीस बरस तक की 'उम्र हो, तो तेरी ठहराई हुई क्रीमत मर्द के लिए बीस मिस्क़ाल और 'औरत के लिए दस मिस्क़ाल हों।

⁶~लेकिन अगर 'उम्र एक महीने से लेकर पाँच बरस तक की हो, तो लड़के के लिए चाँदी के पाँच मिस्क़ाल और लड़की के लिए चाँदी के तीन मिस्क़ाल ठहराई जाएँ।

⁷~. और अगर साठ बरस से लेकर ऊपर ऊपर की 'उम्र हो, तो मर्द के लिए पन्द्रह मिस्क़ाल और 'औरत के लिए दस मिस्क़ाल मुकर्रर हों।⁸लेकिन अगर कोई तेरे अन्दाज़े की निस्बत कम मक़दूर रखता हो, तो वह काहिन के सामने हाज़िर किया जाए और काहिन उसकी क्रीमत ठहराए, या'नी जिस शख्स ने मिन्नत मानी है उसकी जैसी हैसियत ही वैसी ही क्रीमत काहिन उसके लिए ठहराए।

⁹और अगर वह मिन्नत किसी ऐसे जानवर की है जिसकी कुर्बानी लोग खुदावन्द के सामने चढ़ाया करते हैं, तो जो जानवर कोई खुदावन्द की नज़ करे वह पाक ठहरेगा।¹⁰~वह उसे फिर किसी तरह न बदले, न तो अच्छे की बदले बुरा दे और न बुरे की बदले अच्छा दे; और अगर वह किसी हाल में एक जानवर के बदले दूसरा जानवर दे तो वह और उसका बदल दोनों पाक ठहरेंगे।

¹¹और अगर वह कोई नापाक जानवर हो जिसकी कुर्बानी खुदावन्द के सामने नहीं पेश करते, तो वह उसे काहिन के सामने खड़ा करे,¹² और चाहे वह अच्छा हो या बुरा काहिन उसकी क्रीमत ठहराए और ऐ काहिन, जो कुछ तू उसका दाम ठहराएगा वही रहेगा।¹³~और अगर वह चाहे कि उसका फ़िदिया देकर उसे छुड़ाए, तो जो क्रीमत तूने ठहराई है उसमें उसका पाँचवा हिस्सा वह और मिला कर दे।

¹⁴और अगर कोई अपने घर को पाक करार दे ताकि वह खुदावन्द के लिए पाक हो, तो ख़्वाह वह अच्छा हो या बुरा काहिन उसकी क्रीमत ठहराए, और जो कुछ वह ठहराए वही उसकी क्रीमत रहेगी।¹⁵और जिसने उस घर को पाक करार दिया है अगर वह चाहे कि घर का फ़िदिया देकर उसे छुड़ाए, तो तेरी ठहराई हुई क्रीमत में उसका पाँचवाँ हिस्सा और मिला दे तब वह घर उसी का रहेगा।

¹⁶और अगर कोई शख्स अपने मौरूसी खेत का कोई हिस्सा खुदावन्द के लिए पाक~करार दे, तो तू क्रीमत का अन्दाज़ा करते यह देखना कि उसमें कितना बीज बोया जाएगा। जितनी ज़मीन में एक खोमर के वज़न के बराबर जौ बो सकें उसकी क्रीमत चाँदी की पचास मिस्क़ाल हो।

¹⁷अगर कोई साल-ए-यूबली से अपना खेत पाक करार दे, तो उसकी क्रीमत जो तू ठहराए वही रहेगी।¹⁸लेकिन अगर वह साल-ए-यूबली के बा'द अपने खेत को पाक करार दे, तो जितने बरस दूसरे साल-ए-यूबली के बाक़ी हों उन्हीं के मुताबिक़ काहिन उसके लिए रुपये का हिसाब करे; और जितना हिसाब में आए उतना तेरी ठहराई हुई क्रीमत से कम किया जाए।

¹⁹~और अगर वह जिसने उस खेत को पाक करार दिया है यह चाहे कि उसका फ़िदिया देकर उसे छुड़ाए, वह तेरी ठहराई हुई क्रीमत का पाँचवाँ हिस्सा उसके साथ और मिला कर दे तो वह खेत उसी का रहेगा।²⁰~और अगर वह उस खेत का फ़िदिया देकर उसे न छुड़ाए या किसी दूसरे शख्स के हाथ उसे बेच दे, तो फिर वह खेत कभी न छुड़ाया जाए;²¹बल्कि वह खेत जब साल-ए-यूबली में छूटे तो वक्फ़ किए हुए खेत की तरह वह खुदावन्द के लिए पाक होगा, और काहिन की मिल्कियत ठहरेगा

²²~और अगर कोई शख्स किसी खरीदे हुए खेत को जो उसका मौरूसी नहीं, खुदावन्द के लिए पाक करार दे,²³~तो काहिन जितने बरस दूसरे साल-ए-यूबली के बाक़ी हों उनके मुताबिक़ तेरी ठहराई हुई क्रीमत का हिसाब उसके लिए करे, और वह उसी दिन तेरी ठहराई हुई क्रीमत को खुदावन्द के लिए पाक जानकर दे दे।

²⁴और साल-ए-यूबली में वह खेत उसी को वापस हो जाए जिससे वह खरीदा गया था और जिसकी वह मिल्कियत है।²⁵और तेरे सारे क्रीमत के अन्दाज़े हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से हों; और एक मिस्क़ाल बीस जीरह का हो।

²⁶लेकिन सिर्फ़ चौपायों के पहलौठों को जो पहलौठे होने की वजह से खुदावन्द के ठहर चुके हैं, कोई शख्स पाक करार न दे, चाहे वह बैल हो या भेड़-बकरी वह तो खुदावन्द ही का है।²⁷~लेकिन अगर वह किसी नापाक जानवर का पहलौठा हो तो वह शख्स तेरी ठहराई हुई क्रीमत का पाँचवा हिस्सा क्रीमत में और मिलाकर उसका फ़िदिया दे और उसे छुड़ाए; और अगर उसका फ़िदिया न दिया जाए तो वह तेरी ठहराई हुई क्रीमत पर बेचा जाए।

²⁸"तोभी कोई मख्सूस की हुई चीज़ जिसे कोई शख्स अपने सारे माल में से खुदावन्द के लिए मख्सूस करे, चाहे वह उसका आदमी या जानवर या मौरूसी ज़मीन ही बेची न जाए और न उसका फ़िदिया दिया जाए; हर एक मख्सूस की हुई चीज़ खुदावन्द के लिए बहुत पाक है।²⁹~अगर आदमियों में से कोई मख्सूस किया जाए तो उसका फ़िदिया न दिया जाए, वह ज़रूर जान से मारा जाए।

³⁰और ज़मीन की पैदावार की सारी दहेकी चाहे वह ज़मीन के बीज की या दरख़्त के फल की हो, खुदावन्द की है और ~खुदावन्द के लिए पाक है।³¹~और अगर कोई अपनी दहेकी में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो वह उसका पाँचवाँ हिस्सा उसमें और मिला कर उसे छुड़ाए।

³²और गाय, बैल और भेड़ बकरी, या जो जानवर चरवाहे की लाठी के नीचे से गुज़रता हो, उनकी दहेकी या'नी दस पीछे एक-एक जानवर खुदावन्द के लिए पाक ठहरे।³³~कोई उसकी देख भाल न करे कि वह अच्छा है या बुरा है और न उसे बदलें और अगर कहीं कोई उसे बदले तो वह असल और बदल दोनों के दोनों पाक ठहरे और उसका फ़िदिया भी न दिया जाए |

³⁴जो हुक्म खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बनी इसाईल के लिए मूसा को दिए वह यही हैं।

गिनती

Chapter 1

¹~बनी-इसाईल के मुल्क-ए-मिस्र से निकल आने के दूसरे बरस के दूसरे महीने की पहली तारीख को सीना के वीरान में खुदावन्द ने खेमा-ए-इजितमा'अ में मूसा से कहा कि, ²"तुम एक-एक मर्द का नाम ले लेकर गिनो, और उनके नामों की ता'दाद से बनी-इसाईल की सारी जमा'अत की मर्दुमशुमारी का हिसाब उनके क़बीलों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़ करो। ³~बीस बरस और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के जितने इसाईली जंग करने के क़ाबिल हों, उन सभों के अलग-अलग दलों को तू और हारून दोनों मिल कर गिन डालो।

⁴~और हर क़बीले से एक-एक आदमी जो अपने आबाई खान्दान का सरदार है तुम्हारे साथ हो। ⁵~और जो आदमी तुम्हारे साथ होंगे उनके नाम यह हैं: रूबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर⁶ शमा'ऊन के क़बीले से सलूमीएल बिन सूरी शद्दी,

⁷~यहूदाह के क़बीले से नहसोन बिन 'अम्मीनदाब,⁸~इश्कार के क़बीले से नतनीएल बिन जुगार,⁹~ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,

¹⁰~यूसुफ़ की नसल में से इफ़्राईम के क़बीले का इलीसमा'अ बिन 'अम्मीहूद, और मनस्सी के क़बीले का जमलीएल बिन फ़दाहसूर,¹¹~बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदा'ऊनी

¹²~दान के क़बीले से अख़ी'अज़र बिन 'अम्मीशद्दी,¹³~आशर के क़बीले से फ़ज'ईएल बिन 'अकरान,¹⁴~जद्द के क़बीले से इलियासफ़ बिन द'ऊएल,¹⁵~नफ़ताली के क़बीले से अख़िरा' बिन 'एनान।"

¹⁶~यही अश्खास जो अपने आबाई क़बीलों के रईस और बनी-इसाईल में हज़ारों के सरदार थे जमा'अत में से बुलाए गए।

¹⁷~और मूसा और हारून ने इन अश्खास को जिनके नाम मज़कूर हैं अपने साथ लिया। ¹⁸~और उन्होंने दूसरे महीने की पहली तारीख को सारी जमा'अत को जमा' किया, और इन लोगों ने बीस बरस और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के सब आदमियों का शुमार करवा के अपने-अपने क़बीले, और आबाई खान्दान के मुताबिक़ अपना अपना हस्ब-ओ-नसब लिखवाया। ¹⁹~इसलिए जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उसी के मुताबिक़ उसने उनको दशत-ए-सीना में गिना।

²⁰~और इसाईल के पहलौठे रूबिन की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ अपने नाम से गिना गया। ²¹~इसलिए रूबिन के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह छियालीस हज़ार पाँच सौ थे।

²²~और शमा'ऊन की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ अपने नाम से गिना गया। ²³इसलिए शमा'ऊन के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह उन्सठ हज़ार तीन सौ थे।

²⁴~और जद्द की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ²⁵~इसलिए जद्द के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह पैतालीस हज़ार छः सौ पचास थे।

²⁶~और यहूदाह की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ²⁷~इसलिए यहूदाह के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चौहत्तर हज़ार छः सौ थे।

²⁸~और इश्कार की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ²⁹~इसलिए इश्कार के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चव्वन हज़ार चार सौ थे।

³⁰~और ज़बूलून की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ³¹~इसलिए ज़बूलून के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह सतावन हज़ार चार सौ थे।

³²~और यूसुफ़ की औलाद या'नी इफ़्राईम की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ³³इसलिए इफ़्राईम के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चालीस हज़ार पाँच सौ थे।

³⁴~और मनस्सी की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ³⁵इसलिए मनस्सी के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बत्तीस हज़ार दो सौ थे।

³⁶~और बिनयमीन की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ³⁷~इसलिए बिनयमीन के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह पैतिस हज़ार चार सौ थे।

³⁸~और दान की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ³⁹~इसलिए दान के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बासठ हज़ार सात सौ थे।

⁴⁰~और आशर की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ⁴¹~इसलिए आशर के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह इकतालीस हज़ार पाँच सौ थे।

⁴²~और नफ़ताली की नसल के लोगों में से एक-एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक़ गिना गया। ⁴³~इसलिए, नफ़ताली के क़बीले के जो आदमी शुमार किए गए वह तिरपन हज़ार चार सौ थे।

⁴⁴~यही वह लोग हैं जो गिने गए। इन ही को मूसा और हारून और बनी-इसाईल के बारह रईसों ने जो अपने-अपने आबाई खान्दान के सरदार थे, गिना।

⁴⁵~इसलिए बनी-इसाईल में से जितने आदमी बीस बरस या उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के और जंग करने के क़ाबिल थे, वह सब गिने गए। ⁴⁶~और उन सभों का शुमार छः लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास था।

⁴⁷~पर लावी अपने आबाई कबीले के मुताबिक उनके साथ गिने नहीं गए।⁴⁸~क्यूँकि खुदावन्द ने मूसा से कहा था कि,⁴⁹~'तू लावियों के कबीले को न गिनना और न बनी-इसाईल के शुमार में उनका शुमार दाखिल करना,

⁵⁰~बल्कि तू-लावियों को शहादत के घर और उसके सब बर्तनों और उसके सब लवाज़िम के मुतवल्ली मुकर्रर करना।~वही घर और उसके सब बर्तनों को उठाया करें और वहीं उसमें खिदमत भी करें और घर के आस-पास वही अपने खेमे लगाया करें।

⁵¹~और जब घर को आगे रवाना करने का वक़्त हो तो लावी उसे उतारें, और जब घर को लगाने का वक़्त हो तो लावी उसे खड़ा करें; और अगर कोई अजनबी शख्स उसके नज़दीक आए तो वह जान से मारा जाए।⁵² और बनी-इसाईल अपने-अपने दल के मुताबिक अपनी-अपनी छावनी और अपने-अपने झंडे के पास अपने-अपने खेमे डालें;

⁵³~लेकिन लावी शहादत के घर के चारों तरफ़ खेमे लगाएँ, ताकि बनी-इसाईल की जमा'अत पर ग़ज़ब न हो; और लावी ही शहादत के घर की निगाहबानी करें।"⁵⁴ चुनौचे बनी-इसाईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।

Chapter 2

¹और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि²~"बनी-इसाईल अपने-अपने खेमे अपने-अपने झंडे के पास और अपने-अपने आबाई खान्दान के 'अलम के साथ खेमा-ए-इज्जिमा'अ के सामने और उसके चारों तरफ लगाएँ।

³और जो पश्चिम की तरफ जिधर से सूरज निकलता है, अपने खेमे अपने दलों के मुताबिक लगाएँ वह यहूदाह की छावनी के झंडे के लोग हों, और अम्मीनदाब का बेटा नहसोन बनी यहूदाह का सरदार हो;⁴~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह सब चौहत्तर हजार छः सौ थे।

⁵~और इनके करीब इश्कार के कबीले के लोग खेमे लगायें, और जुगार का बेटा नतनीएल बनी इश्कार का सरदार हो;⁶~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे चव्वन हजार चार सौ थे।

⁷~फिर ज़बूलून का कबीला हो, और हेलोन का बेटा इलियाब बनी ज़बूलून का सरदार हो;⁸~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह सत्तावन हजार चार सौ थे।

⁹इसलिए जितने यहूदाह की छावनी में अपने-अपने दल के मुताबिक गिने गए वह एक लाख छियासी हजार चार सौ थे। पहले यही रवाना हुआ करें।

¹⁰~"और दख्खिन की तरफ अपने दलों के मुताबिक रूबिन की छावनी के झंडे के लोग हों, और शदियूर का बेटा इलीसूर बनी रूबिन का सरदार हो;¹¹और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह छियालीस हजार पाँच सौ थे।

¹²~और इनके करीब शमा'ऊन के कबीले के लोग खेमे लगायें, और सूरीशद्दी का बेटा सलूमीएल बनी शमा'ऊन का सरदार हो;¹³~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह उनसठ हजार तीन सौ थे।

¹⁴फिर जद्द का कबीला हो, और र'ऊएल का बेटा इलियासफ़ बनी जद्द का सरदार हो;¹⁵~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह पैन्तालीस हजार छः सौ पचास थे।

¹⁶~इसलिए जितने रूबिन की छावनी में अपने-अपने दल के मुताबिक गिने गए वह एक लाख इक्कावन हजार चार सौ पचास थे। रवानगी के वक़्त दूसरी नौबत इन लोगों की हो।

¹⁷~"फिर खेमा-ए-इज्जिमा'अ लावियों की छावनी के साथ जो और छावनियों के बीच में होगी आगे जाए और जिस तरह से लावी खेमे लगाएँ उसी तरह से वह अपनी-अपनी जगह और अपने-अपने झंडे के पास-पास चलें।

¹⁸~'और पश्चिम की तरफ अपने दलों के मुताबिक इफ़्राईम की छावनी के झंडे के लोग हों, और 'अम्मीहूद का बेटा इलीसमा' बनी इफ़्राईम का सरदार हो;¹⁹~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे, वह चालीस हजार पाँच सौ थे।

²⁰~और इनके करीब मनस्सी का कबीला हो, और फ़दाहसूर का बेटा जमलीएल बनी मनस्सी का सरदार हो;²¹~उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे बत्तीस हजार दो सौ थे।

²²~फिर बिनयमीन का कबीला हो, और जिद'औनी का बेटा अबिदान बनी बिनयमीन का सरदार हो;²³~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह पैतीस हजार चार सौ थे।

²⁴~इसलिए जितने इफ़्राईम की छावनी में अपने-अपने दल के मुताबिक गिने गए वह एक लाख आठ हजार एक सौ थे। रवाना के वक़्त तीसरी नौबत इन लोगों की हो।

²⁵~'और शिमाल की तरफ अपने दलों के मुताबिक दान की छावनी के झंडे के लोग हों और 'अम्मीशद्दी का बेटा अखी 'अज़र बनी दान का सरदार हो;²⁶~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे, वह बासठ हजार सात सौ थे।

²⁷~इनके करीब आशर के कबीले के लोग खेमे लगाएँ, और 'अकरान का बेटा फ़ज'ईएल बनी आशर का सरदार हो;²⁸~और उसके दल के लोग जो शुमार किए गए थे वह, इक्तालीस हजार पाँच सौ थे।

²⁹फिर नफ़ताली का कबीला हो, और 'एनान का बेटा अखीरा' बनी नफ़ताली का सरदार हो;³⁰और उसके दल के लोग जो शुमार किये गए, वह तिरपन हजार चार सौ थे।

³¹~फिर जितने दान की छावनी में गिने गए वह एक लाख सत्तावन हजार छः सौ थे। यह लोग अपने-अपने झंडे के पास-पास होकर सब से पीछे रवाना हुआ करें।"

³²~बनी-इसाईल में से जो लोग अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक गिने गए वह यही हैं; और सब छावनियों के जितने लोग अपने-अपने दल के मुताबिक गिने गए वह छः लाख तीन हजार पाँच सौ पचास थे।³³~लेकिन लावी जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था, बनी-इसाईल के साथ गिने नहीं गए।

³⁴~इसलिए बनी-इसाईल ने ऐसा ही किया और जो-जो हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया था उसी के मुताबिक वह अपने-अपने झंडे के पास और अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक, अपने-अपने घराने के साथ खेमे लगाते और रवाना होते थे।

Chapter 3

¹~और जिस दिन खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें कीं, तब हारून और मूसा के पास यह औलाद थी।²और हारून के बेटों के नाम यह हैं: नदब जो पहलौठा था, और अबीहू और इली'अज़र और इतमर।

³~हारून के बेटे जो कहानत के लिए मम्सूह हुए और जिनको उसने कहानत की खिदमत के लिए मख्सूस किया था उनके नाम यही हैं।⁴~और नदब और अबीहू तो जब उन्होंने~दशत-ए-सीना में खुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश कीं तब ही खुदावन्द के सामने मर गए, और वह बे-औलाद भी थे। और इली'अज़र और इतमर अपने बाप हारून के सामने कहानत की खिदमत को अन्जाम देते थे।

⁵और खुदावन्द ने मूसा से कहा,⁶~"लावी के कबीले को नज़दीक लाकर हारून काहिन के आगे हाज़िर कर ताकि वह उसकी खिदमत करें।

⁷और जो कुछ उसकी तरफ़ से और जमा'अत की तरफ़ से उनको सौंपा जाए वह सब की खेमा-ए-इजितमा'अ के आगे निगहबानी करें ताकि घर की खिदमत बजा लाएँ।⁸~और वह खेमा-ए-इजितमा'अ के सब सामान की और बनी-इसाईल की सारी अमानत की हिफ़ाज़त करें ताकि घर की खिदमत बजा लाएँ।

⁹~और तू लावियों को हारून और उसके बेटों के हाथ में सुपर्द कर; बनी-इसाईल की तरफ़ से वह बिल्कुल उसे दे दिए गए हैं।¹⁰और हारून और उसके बेटों को मुकर्रर कर, और वह अपनी कहानत को महफूज़ रखे और अगर कोई अजनबी नज़दीक आये तो वह जान से मारा जाए।"

¹¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,¹²~"देख, मैंने बनी-इसाईल में से लावियों को उन सभों के बदले में ले लिया है जो इसाईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं, इसलिए लावी मेरे हों।¹³~क्यूँकि सब पहलौठे मेरे हैं, इसलिए कि जिस दिन मैंने मुल्क-ए-मिस्र में सब पहलौठों को मारा, उसी दिन मैंने बनी-इसाईल के सब पहलौठों को, क्या इन्सान और क्या हैवान, अपने लिए पाक किया; इसलिए वह ज़रूर मेरे हों। मैं खुदावन्द हूँ।"

¹⁴~फिर खुदावन्द ने दशत-ए-सीना में मूसा से कहा,¹⁵~"बनी लावी को उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक़ शुमार कर, या'नी एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर के हर लड़के को गिनना।"¹⁶~चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ जो उसने उसे दिया, उनको गिना।

¹⁷~और लावी के बेटों के नाम यह हैं: जैरसोन और क्रिहात और मिरारी।¹⁸~जैरसोन के बेटों के नाम जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं: लिबनी और सिम'ई।

¹⁹और क्रिहात के बेटों के नाम जिनसे उनके खान्दान चले 'अमराम और इज़हार और हब्रून और 'उज़्ज़ीएल हैं।²⁰~और मिरारी के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले, महली और मूशी हैं। लावियों के घराने उनके आबाई खान्दानों के मुवाफ़िक़ यही हैं।

²¹~और जैरसोन से लिबनियों और सिम'इयों के खान्दान चले; यह जैरसोनियों के खान्दान हैं।²²~इनमें जितने फ़रज़न्द-ए-नरीना एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर के थे वह सब गिने गए और उनका शुमार सात हज़ार पाँच सौ था।²³~जैरसोनियों के खान्दानों के आदमी घर के पीछे पश्चिम की तरफ़ अपने खेमे लगाया करें।

²⁴और लाएल का बेटा इलियासफ़न, जैरसोनियों के आबाई खान्दानों का सरदार हो।²⁵~और खेमा-ए-इजितमा'अ के जो सामान बनी जैरसोन की हिफ़ाज़त में सौंपे जाएँ वह यह हैं: घर और खेमा, और उसका ग़िलाफ़, और खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े का पर्दा,²⁶~और घर और मज़बह के गिर्द के सहन के पर्दे, और सहन के दरवाज़े का पर्दा, और वह सब रस्सियाँ जो उसमें काम आती हैं।

²⁷~और क्रिहात से 'अमरामियों और इज़हारियों और हबरूनियों और 'उज़्ज़ीएलियों के खान्दान चले; ये~क्रिहातियों के~खान्दान हैं।²⁸~उनके फ़रज़न्द-ए-नरीना एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर के आठ हज़ार छः सौ थे। हैकल की निगहबानी इनके ज़िम्मे थी।²⁹~बनी क्रिहात के खान्दानों के आदमी घर की दखिबनी सिम्त में अपने खेमे डाला करें।

³⁰और 'उज़्ज़ीएल का बेटा इलीसफ़न क्रिहातियों के घरानों के आबाई खान्दान का सरदार हो।³¹और सन्दूक और मेज़ और शमा'दान और दोनों मज़बहे और हैकल के बर्तन, जो 'इबादत के काम में आते हैं, और पर्दे और हैकल में बर्तन का सारा सामान, यह सब उनके ज़िम्मे हों।³²~और हारून काहिन का बेटा इलि'अज़र लावियों के सरदारों का सरदार और हैकल के मुत्वल्लियों का नाज़िर हो।

³³~मिरारी से महलियों और मूशियों के खान्दान चले; यह मिरारियों के खान्दान हैं।³⁴~इनमें जितने फ़रज़न्द-ए-नरीना एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर के थे वह छः हज़ार दो सौ थे।³⁵~और अबीखेल का बेटा सूरीएल मिरारियों के घरानों के आबाई खान्दान का सरदार हो। यह लोग घर की उत्तरी सिम्त में अपने खेमे डाला करें।

³⁶और घर के तख्तों और उसकी बेड़ों और सुतूनों और ~खानों और उसके सब आलात, और उसकी खिदमत के सब लवाज़िम की मुहाफ़िज़त,³⁷~और सहन के चारों तरफ़ के सुतूनों, और खानों और मेखों और रस्सियों की निगरानी बनी मिरारी के ज़िम्मे हो।

³⁸~और घर के आगे पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता है, या'नी खेमा-ए-इजितमा'अ के आगे, मूसा और हारून और उसके बेटे अपने खेमे लगाया करें और बनी-इसाईल के बदले हैकल की हिफ़ाज़त किया करें; और जो अजनबी शख्स उसके नज़दीक आए वह जान से मारा जाए।³⁹~इसलिए लावियों में से जितने एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के थे उनको मूसा और हारून ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक़ उनके घरानों के मुताबिक़ गिना, वह शुमार में बाईस हज़ार थे।

⁴⁰~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "बनी-इसाईल के सब नरीना पहलौठे, एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर के गिन ले और उनके नामों का शुमार लगा।

⁴¹~और बनी-इसाईल के सब पहलौठों के बदले लावियों को, और बनी-इसाईल के चौपायों के सब पहलौठों के बदले लावियों के चौपायों को मेरे लिए ले। मैं खुदावन्द हूँ।"

⁴²~चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ बनी-इसाईल के सब पहलौठों को गिना।⁴³~तब जितने नरीना पहलौठे एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के गिने गए, वह नामों के शुमार के मुताबिक़ बाईस हज़ार दो सौ तिहतर थे।

⁴⁴~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,⁴⁵~"बनी-इसाईल के सब पहलौठों के बदले लावियों को, और उनके चौपायों के बदले लावियों के चौपायों को ले; और लावी मेरे हों, मैं खुदावन्द हूँ।

⁴⁶~और बनी-इसाईल के पहलौठों में जो दो सौ तिहत्तर लावियों के शुमार से ज़्यादा हैं, उनके फ़िदिये के लिए⁴⁷ तू हैकल की मिस्काल के हिसाब से हर शख्स पाँच मिस्काल लेना (एक मिस्काल बीस जीरह का होता है)।⁴⁸~और इनके फ़िदिये का रुपया जो शुमार में ज़्यादा हैं तू हारून और उसके बेटों को देना।”⁴⁹~तब जो उनसे जिनको लावियों ने छुड़ाया था, शुमार में ज़्यादा निकले थे उनके फ़िदिये का रुपया मूसा ने उनसे लिया।⁵⁰~ये रुपया उसने बनी-इसाईल के पहलौठों से लिया, इसलिए हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक हजार तीन सौ पैंसठ मिस्कालें वसूल हुई।⁵¹~और मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ फ़िदिये का रुपया जैसा खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया था, हारून और उसके बेटों को दिया।

Chapter 4

¹और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि; ²~"बनी लावी में से क्रिहातियों को उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक, ³~तीस बरस से लेकर पचास बरस की 'उम्र तक के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल हैं, उन सभी को गिनो। ⁴और खेमा-ए-इजितमा'अ में पाकतरीन चीज़ों की निस्बत बनी क्रिहात का यह काम होगा,

⁵कि जब लश्कर रवाना हो तो हारून और उसके बेटे आएँ और बीच के पर्दे को उतारें और उससे शहादत के सन्दूक को ढाँकें, ⁶~और उस पर तुखस की खालों का एक गिलाफ़ डालें, और उसके ऊपर बिल्कुल आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ, और उसमें उसकी चोबें लगाएँ।

⁷और नज़ की रोटी की मेज़ पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाकर, उसके ऊपर तबाक़ और चमचे और उँडेलने के कटोरे और प्याले रखें; और दाइमी रोटी भी उस पर हो। ⁸~फिर वह उन पर सुर्ख रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुखस की खालों के एक गिलाफ़ से ढाँकें, और मेज़ में उसकी चोबें लगा दें।

⁹~फिर आसमानी रंग का कपड़ा लेकर उससे रोशनी देने वाले शमा'दान को, और उसके चराग़ों और गुलगीरों और गुलदानों और तेल के सब बर्तनों को, जो शमा'दान के लिए काम में आते हैं ढाँकें; ¹⁰~और उसको और उसके सब बर्तनों को तुखस की खालों के एक गिलाफ़ के अन्दर रख कर उस गिलाफ़ को चौखटे पर धर दें। ¹¹~और ज़रीन मज़बह पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुखस की खालों के एक गिलाफ़ से ढाँकें और उसकी चोबें उसमें लगाएँ।

¹²~और सब बर्तनों को जो हैकल की खिदमत के काम में आते हैं लेकर उनको आसमानी रंग के कपड़े में लपेटें और उनको तुखस की खालों के एक गिलाफ़ से ढाँक कर चौखटे पर धरें। ¹³~फिर वह मज़बह पर से सब राख को उठाकर उसके ऊपर अर्गवानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। ¹⁴उसके सब बर्तन जिनसे उसकी खिदमत करते हैं जैसे अंगीठियाँ और सेखें और बेल्ले और कटोरे, ग़र्ज़ मज़बह के सब बर्तन उस पर रखें, और उस पर तुखस की खालों का एक गिलाफ़ बिछाएँ और मज़बह में चोबें लगा दें।

¹⁵~और जब हारून और उसके बेटे हैकल की और हैकल के सब अस्बाब को ढाँक चुकें, तब खेमागाह के रवानगी के वक़्त बनी क्रिहात उसके उठाने के लिए आएँ लेकिन वह हैकल को न छुएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ। खेमा-ए-इजितमा'अ की यही चीज़ें बनी क्रिहात के उठाने की हैं। ¹⁶~और रोशनी के तेल, और खुशबूदार खुशबू और दाइमी नज़ की कुर्बानी और मसह करने के तेल, और सारे घर, और उसके लवाज़िम और हैकल और उसके सामान की निगहबानी हारून काहिन के बेटे इली'अज़र के ज़िम्मे हो।"

¹⁷~और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि; ¹⁸~"तुम लावियों में से क्रिहातियों के क़बीले के खान्दानों को मुनक़ता' होने न देना; ¹⁹~बल्कि इस मक़सूद से कि जब वह पाकतरीन चीज़ों के पास आएँ तो ज़िन्दा रहें, और मर न जाएँ, तुम उनके लिए ऐसा करना कि हारून और उसके बेटे अन्दर आ कर उनमें से एक-एक का काम और बोझ मुक़र्रर कर दें। ²⁰~लेकिन वह हैकल को देखने की खातिर दम भर के लिए भी अन्दर न आने पाएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ।"

²¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा; ²²~"बनी जैरसोन में से भी उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक, ²³~तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की 'उम्र के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत के वक़्त हाज़िर रहते हैं उन सभी को गिन।

²⁴~जैरसोनियों के खान्दानों का काम खिदमत करने और बोझ उठाने का है। ²⁵वह घर के पर्दों को, और खेमा-ए-इजितमा'अ और उसके गिलाफ़ को, और उसके ऊपर के गिलाफ़ को जो तुखस की खालों का है, और खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े के पर्दे को; ²⁶~और घर और मज़बह के चारों तरफ़ के सहन के पर्दों को, और सहन के दरवाज़े के पर्दे को और उनकी रस्सियों को, और खिदमत के सब बर्तनों को उठाया करें; और इन चीज़ों से जो-जो काम लिया जाता है वह भी यही लोग किया करें।

²⁷~जैरसोनियों की औलाद का खिदमत करने और बोझ उठाने का सारा काम हारून और उसके बेटों के हुक्म के मुताबिक़ हो, और तुम उनमें से हर एक का बोझ मुक़र्रर करके उनके सुपुर्द करना। ²⁸~खेमा-ए-इजितमा'अ में बनी जैरसोन के खान्दानों का यही काम रहे और वह हारून काहिन के बेटे इतमर के मातहत होकर खिदमत करें।

²⁹~और बनी मिरारी में से उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक़, ³⁰~तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की 'उम्र के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत के वक़्त हाज़िर रहते हैं उन सभी को गिन।

³¹~और खेमा-ए-इजितमा'अ में जिन चीज़ों के उठाने की खिदमत उनके ज़िम्मे हो वह यह हैं : घर के तख्ते और उसके बेंडे, और सुतून और सुतूनों के खाने,

³²~और चारों तरफ़ के सहन के सुतून और उनके सब आलात और सारे सामान; और जो चीज़ें उनके उठाने के लिए तुम मुक़र्रर करो उनमें से एक-एक का नाम लेकर उसे उनके सुपुर्द करो।

³³~बनी मिरारी के खान्दानों को जो कुछ खिदमत खेमा-ए-इजितमा'अ में हारून काहिन के बेटे इतमर के मातहत करना है वह यही है।"

³⁴~चुनाँचे मूसा और हारून और जमा'अत के सरदारों ने क्रिहातियों की औलाद में से उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़, ³⁵~तीस बरस की 'उम्र से लेकर पचास बरस की 'उम्र तक के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, उन सभी की गिन लिया; ³⁶और उनमें से जितने अपने घरानों के मुवाफ़िक़ गिने गए वह दो हज़ार सात सौ पचास थे।

³⁷~क्रिहातियों के खान्दानों में से जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में खिदमत करते थे उन सभी का शुमार इतना ही है; जो हुक्म खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए दिया था उसके मुताबिक़ मूसा और हारून ने उनको गिना।

³⁸~और बनी जैरसोन में से अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़, ³⁹~तीस बरस से लेकर पचास बरस की 'उम्र तक के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, वह सब गिने गए; ⁴⁰और जितने अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़ गिने गए वह दो हज़ार छः सौ तीस थे।

⁴¹~इसलिए बनी जैरसोन के खान्दानों में से जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में खिदमत करते थे और जिनको मूसा और हारून ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ शुमार किया वह इतने ही थे।

⁴²~और बनी मिरारी के घरानों में से अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक, ⁴³~तीस बरस से लेकर पचास बरस की 'उम्र तक के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, ⁴⁴~वह सब गिने गए; और जितने उनमें से अपने घरानों के मुवाफ़िक़ गिने गए वह तीन हज़ार दो सौ थे।

⁴⁵~इसलिए खुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ जो उसने मूसा के ज़रिए' दिया था, जितनों को मूसा और हारून ने बनी मिरारी के खान्दानों में से गिना वह यही हैं।

⁴⁶~अलगरज़ लावियों में से जिनको मूसा और हारून और इस्राईल के सरदारों ने उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़ गिना, ⁴⁷~या'नी तीस बरस से लेकर पचास बरस की 'उम्र तक के जितने खेमा-ए-इजितमा'अ में खिदमत करने और बोझ उठाने के काम के लिए हाज़िर होते थे, ⁴⁸~उन सभों का शुमार आठ हज़ार पाँच सौ अस्सी था।

⁴⁹~वह खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ मूसा के ज़रिए' अपनी अपनी खिदमत और बोझ उठाने के काम के मुताबिक़ गिने गए। यूँ वह मूसा के ज़रिए' जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म दिया था गिने गए।

Chapter 5

¹फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;²~"बनी-इसाईल को हुक्म दे कि वह हर कोढ़ी को, और जिरयान के मरीज़ को, और जो मुर्दे की वजह से से नापाक हो, उसको लश्करगाह से बाहर कर दें;³~ऐसों को चाहे वह मर्द हों या 'औरत, तुम निकाल कर उनको लश्करगाह के बाहर रखो ताकि वह उनकी लश्करगाह को जिसके बीच मैं रहता हूँ, नापाक न करें।"⁴~चुनाँचे बनी-इसाईल ने ऐसा ही किया और उनको निकाल कर लश्करगाह के बाहर रखवा; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही बनी-इसाईल ने किया।

⁵~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;⁶~"बनी-इसाईल से कह कि अगर कोई मर्द या 'औरत खुदावन्द की हुक्म उदूली करके कोई ऐसा गुनाह करे जो आदमी करते हैं और कुसूरवार हो जाए,⁷~तो जो गुनाह उसने किया है वह उसका इक्रार करे, और अपनी तक्रसीर के मु'आवज़े में पूरा दाम और उसमें पाँचवाँ हिस्सा और मिलकर उस शख्स को दे जिसका उसने कुसूर किया है।

⁸~लेकिन अगर उस शख्स का कोई रिश्तेदार न हो जिसे~उस तक्रसीर का मु'आवज़ा दिया जाए, तो तक्रसीर का जो मु'आवज़ा खुदावन्द को दिया जाए वह काहिन का हो 'अलावा कफ़ारे के उस मेंढे के जिससे उसका कफ़ारा दिया जाए।'⁹~और जितनी पाक चीज़ें बनीइसाईल उठाने की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाएँ वह उसी की हों।'¹⁰~और हर शख्स की पाक की हुई चीज़ें उसकी हों और जो चीज़ कोई शख्स काहिन को दे वह भी उसी की हो।"

¹¹~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "बनीइसाईल से कह कि¹²~अगर किसी की बीवी गुमराह हो कर उससे बेवफ़ाई करे,

¹³~और कोई दूसरा आदमी उस 'औरत के साथ मुबाश्रत करे और उसके शौहर को मा'लूम न हो बल्कि यह उससे पोशीदा रहे, और वह नापाक हो गई हो लेकिन न तो कोई शाहिद ही और न वह 'ऐन फ़ेल के वक़्त पकड़ी गई हो।'¹⁴~और उसके शौहर के दिल में ग़ैरत आए: और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे हालाँकि वह नापाक हुई हो, या उसके शौहर के दिल में ग़ैरत आए और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे हालाँकि वह नापाक नहीं हुई।

¹⁵~तो वह शख्स अपनी बीवी को काहिन के पास हाज़िर करे, और उस 'औरत के चढ़ावे के लिए ऐफ़ा के दस्वें हिस्से के बराबर जौ का आटा लाए लेकिन उस पर न तेल डाले न लुबान रखे; क्योंकि यह नज़्र की कुर्बानी ग़ैरत की है, या'नी यह यादगारी की नज़्र की कुर्बानी है जिससे गुनाह याद दिलाया जाता है।

¹⁶~"तब काहिन उस 'औरत की नज़दीक लाकर खुदावन्द के सामने खड़ी करे,¹⁷~और काहिन मिट्टी के एक बासन में पाक पानी ले और घर के फ़र्श की गर्द लेकर उस पानी में डाले।

¹⁸~फिर काहिन उस 'औरत को खुदावन्द के सामने खड़ी करके उसके सिर के बाल खुलवा दे, और यादगारी की नज़्र की कुर्बानी को जो ग़ैरत की नज़्र की कुर्बानी है उसके हाथों पर धरे, और काहिन अपने हाथ में उस कड़वे पानी को ले जो ला'नत को लाता है।'¹⁹~फिर काहिन उस 'औरत को क्रसम खिला कर कहे कि अगर किसी शख्स ने तुझसे सुहबत नहीं की है और तू अपने शौहर की होती हुई नापाकी की तरफ़ माइल नहीं हुई, तो तू इस कड़वे पानी की तासीर से जो ला'नत लाता है बची रह।

²⁰~लेकिन अगर तू अपने शौहर की होती हुई गुमराह होकर नापाक हो गई है और तेरे शौहर के 'अलावा किसी दूसरे शख्स ने तुझ से सुहबत की है,²¹~तो काहिन उस 'औरत को ला'नत की क्रसम खिला कर उससे कहे, कि खुदावन्द तुझे तेरी क्रौम में तेरी रान को सड़ा कर और तेरे पेट को फुला कर ला'नत और फटकार का निशाना बनाए;²²~और यह पानी जो ला'नत लाता है तेरी अंतड़ियों में जा कर तेरे पेट को फुलाए और तेरी रान को सड़ाए। और 'औरत आमीन, आमीन कहे।

²³~"फिर काहिन उन ला'नतों को किसी किताब में लिख कर उनको उसी कड़वे पानी में धो डाले।

²⁴~और वह कड़वा पानी जो ला'नत को लाता है उस 'औरत को पिलाए, और वह पानी जो ला'नत को लाता है उस 'औरत के पेट में जा कर कड़वा हो जाएगा।

²⁵~और काहिन उस 'औरत के हाथ से ग़ैरत की नज़्र की कुर्बानी को लेकर खुदावन्द के सामने उसको हिलाए, और उसे मज़बूह के पास लाए,²⁶~फिर काहिन उस नज़्र की कुर्बानी में से उसकी यादगारी के तौर पर एक मुट्ठी लेकर उसे मज़बूह पर जलाए, बा'द उसके वह पानी उस 'औरत को पिलाए।

²⁷~और जब वह उसे वह पानी पिला चुकेगा, तो ऐसा होगा कि अगर वह नापाक हुई और उसने अपने शौहर से बेवफ़ाई की, तो वह पानी जो ला'नत को लाता है उसके पेट में जा कर कड़वा हो जाएगा और उसका पेट फूल जाएगा और उसकी रान सड़ जाएगी; और वह 'औरत अपनी क्रौम में ला'नत का निशाना बनेगी।

²⁸~पर अगर वह नापाक नहीं हुई बल्कि पाक है, तो बे-इल्ज़ाम ठहरेगी और उससे औलाद होगी।

²⁹~"ग़ैरत के बारे में यही शरा' है, चाहे 'औरत अपने शौहर की होती हुई गुमराह होकर नापाक हो जाए या मर्द पर ग़ैरत सवार हो,³⁰~और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे; ऐसे हाल में वह उस 'औरत को खुदावन्द के आगे खड़ी करे और काहिन उस पर यह सारी शरी'अत 'अमल में लाए।

³¹~तब मर्द गुनाह से बरी ठहरेगा और उस 'औरत का गुनाह उसी के सिर लगेगा।"

Chapter 6

¹फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;²~'बनी-इसाईल से कह कि जब कोई मर्द या 'औरत नज़ीर की मिन्नत, या'नी अपने आप को खुदावन्द के लिए अलग रखने की खास मिन्नत माने,³~तो वह मय और शराब से परहेज़ करे, और मय का या शराब का सिरका न पिए और न अंगूर का रस पिए और न ताज़ा या खुश्क अंगूर खाए।⁴और अपनी नज़ारत के तमाम दिनों में बीज से लेकर छिल्के तक जो कुछ अंगूर के दरख्त में पैदा हो उसे न खाए।

⁵~और उसकी नज़ारत की मिन्नत के दिनों में उसके सिर पर उस्तरा न फेरा जाए; जब तक वह मुद्दत जिसके लिए वह खुदावन्द का नज़ीर बना है पूरी न हो, तब तक वह पाक रहे और अपने सिर के बालों की लटों को बढ़ने दे।

⁶~उन तमाम दिनों में जब वह खुदावन्द का नज़ीर हो वह किसी लाश के नज़दीक न जाए।⁷~वह अपने बाप या माँ या भाई या बहन की खातिर भी जब वह मरें, अपने आप को नजिस न करे। क्योंकि उसकी नज़ारत जो खुदा के लिए है, उसके सिर पर है।⁸वह अपनी नज़ारत की पूरी मुद्दत तक खुदावन्द के लिए पाक है।

⁹~"और अगर कोई आदमी नागहान उसके पास ही मर जाए और उसकी नज़ारत के सिर को नापाक कर दे, तो वह अपने पाक होने के दिन अपना सिर मुण्डवाए, या'नी सातवें दिन सिर मुण्डवाए।

¹⁰और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए।¹¹~और काहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के लिए पेश करे और उसके लिए कफ़ारा दे, क्योंकि वह मुर्दे की वजह से से गुनहगार ठहरा है; और उसके सिर को उसी दिन पाक करे।

¹²~फिर वह अपनी नज़ारत की मुद्दत को खुदावन्द के लिए पाक करे, और एक यकसाला नर बर्बा जुर्म की कुर्बानी के लिए लाए; लेकिन जो दिन गुज़र गए हैं वह गिने नहीं जाएँगे क्योंकि उसकी नज़ारत* नापाक हो गई थी।

¹³~'और नज़ीर के लिए शरा' यह है, कि जब उसकी नज़ारत के दिन पूरे हो जाएँ तो वह खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर हाज़िर किया जाए।¹⁴और वह खुदावन्द के सामने अपना चढ़ावा चढ़ाए, या'नी सोख्तनी कुर्बानी के लिए एक बे-'ऐब यक-साला नर बर्बा, और खता की कुर्बानी के लिए एक बे-'ऐब यक-साला मादा बर्बा, और सलामती की कुर्बानी के लिए एक बे-'ऐब मेंढा,¹⁵~और बेखमीरी रोटियों की एक टोकरी, और तेल मिले हुए मैदे के कुल्चे, और तेल चुपड़ी हुई बे-खमीरी रोटियाँ, और उनकी नज़ की कुर्बानी, और उनके तपावन लाए।

¹⁶~और काहिन उनको खुदावन्द के सामने ला कर उसकी तरफ़ से खता की कुर्बानी और सोख्तनी कुर्बानी पेश करे।¹⁷~और उस मेंढे को बेखमीरी रोटियों की टोकरी के साथ खुदावन्द के सामने सलामती की कुर्बानी के तौर पर पेश करे, और काहिन उसकी नज़ की कुर्बानी और उसका तपावन भी अदा करे।

¹⁸~फिर वह नज़ीर खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवाए, और नज़ारत के बालों को उस आग में डाल दे जो सलामती की कुर्बानी के नीचे होगी।

¹⁹~और जब नज़ीर अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवा चुके, तो काहिन उस मेंढे का उबाला हुआ शाना और एक बे-खमीरी रोटी टोकरी में से और एक बे-खमीरी कुल्चा लेकर उस नज़ीर के हाथों पर उनको धरे।²⁰~फिर काहिन उनको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए। हिलाने की कुर्बानी के सीने और उठाने की कुर्बानी के शाने के साथ यह भी काहिन के लिए पाक है। इसके बाद नज़ीर मय पी सकेगा।

²¹~"नज़ीर जो मिन्नत माने और जो चढ़ावा अपनी नज़ारत के लिए खुदावन्द के सामने लाये 'अलावा उसके जिसका उसे मक़दूर हो उन सभों के बारे में शरा' यह है। जैसी मिन्नत उसने मानी हो वैसा ही उसको नज़ारत की शरा' के मुताबिक़ 'अमल करना पड़ेगा।"

²²~और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;²³~"हारून और उसके बेटों से कह कि तुम बनी-इसाईल को इस तरह दु'आ दिया करना। तुम उनसे कहना :²⁴~'खुदावन्द तुझे बरकत दे और तुझे महफूज़ रखे।

²⁵~"खुदावन्द अपना चेहरा तुझ पर जलवागर फ़रमाए, और तुझ पर मेहरबान रहे।²⁶~"खुदावन्द अपना चेहरा तेरी तरफ़ मुतवज्जिह करे, और तुझे सलामती बरख़्शे।²⁷~"इस तरह वह मेरे नाम को बनी-इसाईल पर रखे और मैं उनको बरकत बरख़्शूँगा।"

Chapter 7

¹और जिस दिन मूसा घर को खड़ा करने से फ़ारिग हुआ और उसको और उसके सब सामान को मसह और पाक किया, और मज़बह और उसके सब मसह को भी मसह और पाक किया;²~तो इस्राईली रईस जो अपने आबाई ख़ान्दानों के सरदार और क़बीलों के रईस और शुमार किए हुआँ-के ऊपर मुकर्रर थे नज़राना लाए।³वह अपना हदिया छः पर्देदार गाड़ियाँ और बारह बैल ख़ुदावन्द के सामने लाये दो-दो रईसों की तरफ़ से एक-एक गाड़ी और हर रईस की तरफ़ से एक बैल था, इनको उन्होंने घर के सामने हाज़िर किया।

⁴~तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि;⁵~"तू इनको उनसे ले ताकि वह खेमा-ए-इजितमा'अ के काम में आएँ, और तू लावियों में हर शख्स की खिदमत के मुताबिक़ उनको तक्रसीम कर दे।"

⁶~तब मूसा ने वह गाड़ियाँ और बैल लेकर उनको लावियों को दे दिया।⁷~बनी जैरसोन को उसने उनकी खिदमत के लिहाज़ से दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए।

⁸और चार गाड़ियाँ और आठ बैल उसने बनी मिरारी को उनकी खिदमत के लिहाज़ से हारून काहिन के बेटे इतमर के माताहत करके दिए।

⁹~लेकिन बनी क्रिहात को उसने कोई गाड़ी नहीं दी, क्योंकि उनके ज़िम्मे हैकल की खिदमत थी; वह उसे अपने कन्धों पर उठाते थे

¹⁰और जिस दिन मज़बह मसह किया गया उस दिन वह रईस उसकी तक्रदीस के लिए हदिये लाए, और अपने हदियों को वह रईस मज़बह के आगे ले जाने लगे।

¹¹~तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, "मज़बह की-तक्रदीस-के लिए एक-एक रईस एक-एक दिन अपना हदिया पेश करे।"

¹²~इसलिए पहले दिन यहूदाह के क़बीले में से 'अम्मीनदाब के बेटे नहसोन ने अपना हदिया पेश करा।¹³~और उसका हदिया यह था : हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से एक सौ तीस-मिस्क़ाल-चाँदी का एक तबाक्र, और सत्तर-मिस्क़ाल-चाँदी का एक कटोरा, उन-दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;¹⁴~दस-मिस्क़ाल-सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था;

¹⁵~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;¹⁶~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;¹⁷~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह 'अम्मीनदाब के बेटे नहसोन का हदिया था।

¹⁸~दूसरे दिन जुग़र के बेटे नतनीएल ने जो इश्कार के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।¹⁹और उसका हदिया यह था : हैकल की-मिस्क़ाल-के हिसाब से एक सौ तीस-मिस्क़ाल-चाँदी का एक तबाक्र, और-सत्तर-मिस्क़ाल-चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;

²⁰~दस-मिस्क़ाल-सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था;²¹~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;²²~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;²³~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह जुग़र के बेटे नतनीएल का हदिया था।

²⁴और तीसरे दिन हेलोन के बेटे इलियाब ने जो ज़बूलून के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।²⁵और उसका हदिया यह था : हैकल की-मिस्क़ाल-के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक्र, और-सत्तर-मिस्क़ाल-चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;²⁶दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था;

²⁷~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;²⁸~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;²⁹~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह हेलोन के बेटे इलियाब का हदिया था।

³⁰~चौथे दिन शदियूर के बेटे इलीसूर ने जो रूबिन के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।³¹~और उसका हदिया यह था: हैकल की-मिस्क़ाल-के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक्र, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;³²~दस-मिस्क़ाल-सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था;

³³सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;³⁴~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;³⁵और सलामती की कुर्बानी लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह शदियूर के बेटे इलीसूर का हदिया था।

³⁶और पाँचवे दिन सूरीशद्दी के बेटे सलूमीएल ने जो शमा'ऊन के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।³⁷और उसका हदिया यह था : हैकल की-मिस्क़ाल-के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक्र और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;³⁸दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो-खुशबू-से भरा था;

³⁹~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁴⁰~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁴¹~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल पाँच मेंढे पाँच बकरे पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह सूरीशद्दी के बेटे सलूमीएल का हदिया था।

⁴²~और छठे दिन द'ऊएल के बेटे इलियासफ़ ने जो जद्द के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।⁴³और उसका हदिया यह था: हैकल की-मिस्क़ाल-के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक्र, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁴⁴दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो-खुशबू-से भरा था;

⁴⁵~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁴⁶~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁴⁷~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह द'ऊएल के बेटे इलियासफ़ का हदिया था।

⁴⁸और सातवें दिन 'अम्मीहूद के बेटे इलीसमा' ने जो इफ़्राईम के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा।⁴⁹~और उसका हदिया यह था: हैकल की-मिस्क़ाल-के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक्र, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁵⁰दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो-खुशबू-से भरा था;

⁵¹~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁵²~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁵³~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह 'अम्मीहूद के बेटे इलीसमा' का हदिया था।

⁵⁴और आठवें दिन फ़दाहसूर के बेटे जमलीएल ने जो मनस्सी के क़बीले का सरदार था, अपना हृदिया पेश करा।⁵⁵~और उसका~हृदिया यह था : हैकल की~मिस्क़ाल~के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁵⁶दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो~ख़ुशबू~से भरा था;

⁵⁷~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁵⁸~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁵⁹~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह फ़दाहसूर के बेटे जमलीएल का हृदिया था।

⁶⁰~और नवें दिन जिद'औनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन के क़बीले का सरदार था, अपना हृदिया पेश करा।⁶¹~और उसका हृदिया यह था: हैकल की~मिस्क़ाल~के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और~सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁶²दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच जो~ख़ुशबू~से भरा था;

⁶³सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁶⁴~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁶⁵~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह जिद'औनी के बेटे अबिदान का हृदिया था।

⁶⁶और दसवें दिन 'अम्मीशद्दी के बेटे अख़ी' अज़र ने जो दान के क़बीले का सरदार था, अपना हृदिया पेश करा।⁶⁷~और उसका हृदिया यह था: हैकल की~मिस्क़ाल~के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁶⁸दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो~ख़ुशबू~से भरा था;

⁶⁹~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁷⁰~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁷¹~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह 'अम्मीशद्दी के बेटे अख़ी' अज़र का हृदिया~था।

⁷²और ग्यारहवें दिन 'अकरान के बेटे फ़ज़'ईएल ने जो आशर के क़बीले का सरदार था, अपना हृदिया पेश करा।⁷³~और उसका हृदिया यह था: हैकल की~मिस्क़ाल~के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁷⁴दस मिस्क़ाल चाँदी का एक चम्मच, जो~ख़ुशबू~से भरा था;

⁷⁵~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁷⁶~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁷⁷और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक-साला बर्ग़। यह 'अकरान के बेटे फ़ज़'ईएल का हृदिया था।

⁷⁸~और बारहवें दिन 'एनान के बेटे अख़ीरा' ने जो बनी नफ़्ताली के क़बीले का सरदार था, अपना हृदिया पेश करा।⁷⁹और उसका हृदिया यह था : हैकल की~मिस्क़ाल~के हिसाब से एक सौ तीस मिस्क़ाल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्क़ाल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था;⁸⁰दस मिस्क़ाल सोने का एक चम्मच, जो~ख़ुशबू~से भरा था;

⁸¹~सोख़तनी कुर्बानी के लिए एक~बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक-साला बर्ग़;⁸²~ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा;⁸³~और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यकसाला बर्ग़। यह 'एनान के बेटे अख़ीरा' का हृदिया था।

⁸⁴मज़बह के मम्सूह होने के दिन जो हृदिये उसकी तक्रदीस के लिए इस्राईली रईसों की तरफ़ से पेश करे गए वह यही थे : या'नी चाँदी के बारह तबाक़, चाँदी के बारह कटोरे, सोने के बारह चम्मच।⁸⁵चाँदी का हर तबाक़ वज़न में एक सौ तीस मिस्क़ाल और हर एक कटोरा सत्तर मिस्क़ाल का था। इन बर्तनों की सारी~चाँदी~हैकल की~मिस्क़ाल~के हिसाब से दो हज़ार चार सौ~मिस्क़ाल~थी।⁸⁶ख़ुशबू से भरे हुए सोने के बारह चम्मच जो हैकल की~मिस्क़ाल~की तौल के मुताबिक़ वज़न में दस-दस मिस्क़ाल के थे,~इन~चम्मचों का सारा सोना एक सौ बीस मिस्क़ाल था। सोख़तनी कुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंढे, बारह नर यक-साला बर्ग़ अपनी-अपनी नज़्र की कुर्बानी के साथ थे; और ख़ता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे थे;

⁸⁷~सोख़तनी कुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंढे, बारह नर यक-साला बर्ग़ अपनी-अपनी नज़्र की कुर्बानी के साथ थे; और ख़ता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे थे;⁸⁸और सलामती की कुर्बानी के लिए कुल चौबीस बैल, साठ मेंढे, साठ बकरे, साठ नर यक-साला बर्ग़ थे। मज़बह की तक्रदीस के लिए जब वह मम्सूह हुआ इतना हृदिया पेश करा गया।

⁸⁹~और जब मूसा ख़ुदा से बातें करने को खेमा-ए- इजितमा'अ में गया, तो उसने सरपोश पर से जो शहादत के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करूबियों के बीच से वह आवाज़ सुनी जो उससे मुखातिब थी; और उसने उससे बातें की।

Chapter 8

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,²"हारून से कह, जब तू चरागों को रोशन करे तो सातों चरागों की रोशनी शमा'दान के सामने हो।"

³चुनाँचे हारून ने ऐसा ही किया, उसने चरागों को इस तरह जलाया कि शमा'दान के सामने रोशनी पड़े, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था।⁴~और शमा'दान की बनावट ऐसी थी कि वह पाये से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बना हुआ था। जो नमूना खुदावन्द ने मूसा को दिखाया उसी के मुवाफ़िक उसने शमा'दान को बनाया।

⁵और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि⁶~"लावियों को बनी-इसाईल से अलग करके उनको पाक कर।

⁷और उनको पाक करने के लिए उनके साथ यह करना, कि खता का पानी लेकर उन पर छिड़कना; फिर वह अपने सारे जिस्म पर उस्तरा फिरवाएँ, और अपने कपड़े धोएँ, और अपने को साफ़ करें।⁸~तब वह एक बछड़ा और उसके साथ की नज़्र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा लें, और तू खता की कुर्बानी के लिए एक दूसरा बछड़ा भी लेना।

⁹~और तू लावियों को खेमा-ए- इजितमा'अ के आगे हाज़िर करना और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत को जमा' करना।¹⁰~फिर लावियों को खुदावन्द के आगे लाना, तब बनी-इसाईल अपने-अपने हाथ लावियों पर रखें।¹¹और हारून लावियों की बनी-इसाईल की तरफ़ से हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करे, ताकि वह खुदावन्द~की खिदमत करने पर रहें।

¹²~फिर लावी अपने-अपने हाथ बछड़ों के सिरों पर रखें, और तू एक को खता की कुर्बानी और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करना, ताकि लावियों के वास्ते कफ़फ़ारा दिया जाए।¹³~फिर तू लावियों को हारून और उसके बेटों के आगे खड़ा करना और उनको हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करना।

¹⁴~"तू लावियों को बनी-इसाईल से अलग करना और लावी मेरे ही ठहरेंगे।¹⁵~इसके बा'द लावी खेमा-ए-इजितमा'अ की खिदमत के लिए अन्दर आया करें, इसलिए तू उनको पाक कर और हिलाने की कुर्बानी के लिए उनको पेश करना।

¹⁶~इसलिए कि वह सब बनी-इसाईल में से मुझे बिल्कुल दे दिए गए हैं, क्योंकि मैंने इन ही को उन सभों के बदले जो इसाईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं, अपने लिए ले लिया है।¹⁷~इसलिए कि बनी-इसाईल के सब पहलौठे, क्या इन्सान क्या हैवान मेरे हैं, मैंने जिस दिन मुल्क-ए- मिस्र के पहलौठों को मारा उसी दिन उनको अपने लिए पाक किया।

¹⁸और बनी-इसाईल के सब पहलौठों के बदले मैंने लावियों को ले लिया है।¹⁹और मैंने बनी-इसाईल में से लावियों को लेकर उनको हारून और उसके बेटों को 'अता किया है, ताकि वह खेमा-ए-इजितमा'अ में बनी-इसाईल की जगह खिदमत करें और बनी-इसाईल के लिए कफ़फ़ारा दिया करें; ताकि जब बनी-इसाईल हैकल के नज़दीक आएँ तो उनमें कोई वबा न फैले।"

²⁰~चुनाँचे मूसा और हारून और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत ने लावियों से ऐसा ही किया; जो कुछ खुदावन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हुक्म दिया था, वैसा ही बनी-इसाईल ने उनके साथ किया।²¹~और लावियों ने अपने आप को गुनाह से पाक करके अपने कपड़े धोए, और हारून ने उनको हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करा, और हारून ने उनकी तरफ़ से कफ़फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ।

²²~इसके बा'द लावी अपनी खिदमत बजा लाने को हारून और उसके बेटों के सामने खेमा-ए-इजितमा'अ में जाने लगे। इसलिए जैसा खुदावन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हुक्म दिया था उन्होंने वैसा ही उनके साथ किया।

²³~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²⁴"लावियों के मुत'अल्लिक्र जो बात है वह यह है, कि पच्चीस बरस से लेकर उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र में वह खेमा-ए-इजितमा'अ की खिदमत के काम के लिए अन्दर हाज़िर हुआ करें।

²⁵और जब पचास बरस के हों तो फिर उस काम के लिए न आएँ और न खिदमत करें,²⁶~बल्कि खेमा-ए-इजितमा'अ में अपने भाइयों के साथ निगहबानी के काम में मशगूल हों, और कोई खिदमत न करें। लावियों को जो-जो काम सौंपे जाएँ उनके~मुत'अल्लिक्र~तू उनसे ऐसा ही करना।"

Chapter 9

¹~बनी-इसाईल के मुल्क-ए-मिस्र से निकलने के दूसरे बरस के पहले महीने में खुदावन्द ने दश-ए-सीना में मूसा से कहा कि;²~"बनी इसाईल 'ईद-ए-फ़सह' उसके मु'अय्यन वक़्त पर मनाएँ।"³~इसी महीने की चौदहवीं तारीख की शाम को तुम वक़्त-ए-मु'अय्यन पर यह 'ईद मनाना, और जितने उसके तौर तरीक़े और रसूम हैं, उन सभी के मुताबिक़ उसे मनाना।"

⁴~इसलिए मूसा ने बनी-इसाईल को हुक्म किया कि 'ईद-ए-फ़सह करें।'⁵~और उन्होंने पहले महीने-की चौदहवीं तारीख की शाम को दश-ए- सीना में 'ईद-ए-फ़सह की और बनी-इसाईल ने सब पर, जो खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था 'अमल किया।

⁶और कई आदमी ऐसे थे जो किसी लाश की वजह से से नापाक हो गए थे, वह उस दिन फ़सह न कर सके। इसलिए वह उसी दिन मूसा और हारून के पास आए,⁷~और मूसा से कहने लगे, "हम एक लाश की वजह से से नापाक हो रहे हैं; फिर भी हम और इसाईलियों के साथ वक़्त-ए-मु'अय्यन पर खुदावन्द की कुर्बानी पेश करने से क्यों रोके जाएँ?"⁸मूसा ने उनसे कहा, "ठहर जाओ, मैं ज़रा सुन लूँ किखुदावन्द तुम्हारे हक़ में क्या हुक्म करता है।"

⁹और खुदावन्द ने मूसा से कहा,¹⁰~"बनी-इसाईल से कह कि अगर कोई तुम में से या तुम्हारी नसल में से, किसी लाश की वजह से से नापाक हो जाए या वह कहीं दूर सफ़र में हो तोभी वह खुदावन्द के लिए 'ईद-ए-फ़सह करे।

¹¹~वह दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख की शाम को यह 'ईद मनाएँ और कुर्बानी के गोश्त को बे-खमीरी रोटियों और कड़वी तरकारियों के साथ खाएँ।"¹²~वह उसमें से कुछ भी सुबह के लिए बाक़ी न छोड़ें, और न उसकी कोई हड्डी तोड़ें, और फ़सह को उसके सारे तौर तरीक़े के मुताबिक़ मानें।

¹³~लेकिन जो आदमी पाक हो और सफ़र में भी न हो, अगर वह फ़सह करने से बाज़ रहे तो वह आदमी अपनी क़ौम में से अलग कर डाला जाएगा; क्योंकि उसने मु'अय्यन वक़्त पर खुदावन्द की कुर्बानी नहीं पेश कीं इसलिए उस आदमी का गुनाह उसी के सिर लगेगा।"¹⁴और अगर कोई परदेसी तुम में क़याम करता हो और वह खुदावन्द के लिए फ़सह करना चाहे, तो वह फ़सह के तौर तरीक़े और रसूम के मुताबिक़ उसे माने; तुम देसी और परदेसी दोनों के लिए एक ही क़ानून रखना।"

¹⁵और जिस दिन घर या'नी खेमा-ए-शहादत नस्ब हुआ उसी दिन बादल उस पर छा गया, और शाम को वह घर पर आग सा दिखाई दिया और सुबह तक वैसा ही रहा।"¹⁶और हमेशा ऐसा ही हुआ करता था, कि बादल उस पर छाया रहता और रात को आग दिखाई देती थी।"¹⁷~और जब घर पर से वह बादल उठ जाता तो बनी-इसाईल रवाना होते थे, और जिस जगह वह बादल जा कर ठहर जाता वहीं बनी-इसाईल खेमा लगाते थे।

¹⁸~खुदावन्द के हुक्म से बनी-इसाईल रवाना होते, और खुदावन्द ही के हुक्म से वह खेमे लगाते थे; और जब तक बादल घर पर ठहरा रहता वह अपने खेमे डाले पड़े रहते थे।"¹⁹~और जब बादल घर पर बहुत दिनों ठहरा रहता, तो बनी-इसाईल खुदावन्द के हुक्म को मानते और रवाना नहीं होते थे।

²⁰और कभी-कभी वह बादल चंद दिनों तक घर पर रहता, और तब भी वह खुदावन्द के हुक्म से खेमे लगाये रहते और खुदावन्द ही के हुक्म से वह~रवाना होते थे।"²¹~फिर कभी-कभी वह बादल शाम से सुबह तक ही रहता, तो जब वह सुबह को उठ जाता तब वह रवाना ते थे; और अगर वह रात दिन बराबर रहता, तो जब वह उठ जाता तब ही वह~रवाना होते थे।

²²और जब तक वह बादल घर पर ठहरा रहता, चाहे दो दिन या एक महीने या एक बरस हो, तब तक बनी-इसाईल अपने खेमों में मक़ीम रहते और रवाना नहीं होते थे; पर~जब वह उठ जाता तो वह रवाना होते थे।"²³~गरज़ वह खुदावन्द के हुक्म से मक़ाम करते और खुदावन्द ही के हुक्म से रवाना होते थे; और जो हुक्म खुदावन्द मूसा के ज़रिए' देता, वह खुदावन्द के उस हुक्म को माना करते थे।

Chapter 10

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, ²'अपने लिए चाँदी के दो नरसिंगे बनवा; वह दोनों गढ़कर बनाए जाएँ, तू उनको जमा'अत के बुलाने और लश्करी की रवानगी के लिए काम में लाना।

³~और जब वह दोनों नरसिंगे फूँके, तो सारी जमा'अत खेमा-ए- इज्तिमा'अ के दरवाज़े पर तेरे पास इकट्ठी हो जाए।⁴और अगर एक ही फूँके, तो वह रईस जो हज़ारों इस्राइलियों के सरदार हैं तेरे पास जमा' हो।⁵और जब तुम साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको, तो वह लश्कर जो पश्चिम की तरफ़ हैं रवानगी करें।

⁶~जब तुम दोबारा साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको, तो उन लश्करी को जो दख्खिन की तरफ़ हैं रवाना हो। इसलिए रवानगी के लिए साँस बाँध कर ज़ोर से नरसिंगा फूँका करें। लेकिन जब जमा'अत को जमा' करना हो तब भी फूँकना, लेकिन साँस बाँध कर ज़ोर से न फूँकना।⁸~और हारून के बेटे जो काहिन हैं वह नरसिंगे-फूँका-करें। यही तौर तरीक़े हमेशा तुम्हारी नसल-दर-नसल क़ायम रहे।

⁹और जब तुम अपने मुल्क में ऐसे दुश्मन से जो तुम को सताता हो लड़ने को निकलो, तो तुम नरसिंगों को साँस बाँध कर ज़ोर से फूँकना। इस हाल में खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारी याद होगी और तुम अपने दुश्मनों से नजात पाओगे।

¹⁰~और तुम अपनी खुशी के दिन और अपनी मुक़र्ररा 'ईदों के दिन और अपने महीनों के शुरू' में अपनी सोख़्तनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों के वक़्त नरसिंगे फूँकना ताकि उनसे तुम्हारे खुदा-के सामने तुम्हारी यादगारी हो; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

¹¹और दूसरे साल के दूसरे महीने की बीसवीं तारीख़ को वह बादल शहादत के घर पर से उठ गया।¹²~तब बनी-इस्राईल सीना के जंगल से रवाना होकर निकले और वह बादल फ़ारान के जंगल में ठहर गया।¹³इसलिए खुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ जो उसने मूसा के ज़रिए' दिया था, उनकी पहली रवानगी हुई।

¹⁴और सब से पहले बनी यहूदाह के लश्कर का झंडा रवाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीनदाब का बेटा नहसोन था।¹⁵और इश्कर के क़बीले के लश्कर का सरदार जुगार का बेटा नतनीएल था।¹⁶और ज़बूलून के क़बीले के लश्कर का सरदार हेलोन का बेटा इलियाब था।

¹⁷~फिर घर उतारा गया और बनी जैरसोन और बनी मिरारी, जो घर को उठाते थे रवाना हुए।¹⁸~फिर रूबिन के लश्कर का झंडा आगे बढ़ा और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, शदियूर का बेटा इलीसूर उनके लश्कर का सरदार था।¹⁹~और शमा'ऊन के क़बीले के लश्कर का सरदार सूरीशदी का बेटा सलूमीएल था।²⁰~और जद के क़बीले के लश्कर का सरदार द'ऊएल का बेटा इलियासफ़ था।

²¹~फिर किहातियों ने जो हैकल को उठाते थे रवानगी की, और उनके पहुँचने तक घर खड़ा कर दिया जाता था।²²~फिर बनी इफ़्राईम के लश्कर का झंडा निकला और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीहूद का बेटा इलीसमा' था।²³~और मनस्सी के क़बीले के लश्कर का सरदार फ़दाहसूर का बेटा जमलीएल था।²⁴और बिनयमीन के क़बीले के लश्कर का सरदार जिद'औनी का बेटा अबिदान था।

²⁵और बनी दान के लश्कर का झंडा उनके सब लश्करी के पीछे-पीछे रवाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीशदी का बेटा अख़ी' अज़र था।²⁶और आशर के क़बीले के लश्कर का सरदार 'अकरान का बेटा फ़ज'ईएल था।²⁷~और नफ़्ताली के क़बीले के लश्कर का सरदार एनान का बेटा अख़ीरा' था।²⁸~तब बनी-इस्राईल इसी तरह अपने दलों के मुताबिक़ कूच करते और आगे रवाना होते थे।

²⁹~इसलिए मूसा ने अपने ससुर र'ऊएल मिदियानी के बेटे होबाब से कहा कि "हम उस जगह जा रहे हैं जिसके बारे में खुदावन्द ने कहा है कि मैं उसे तुम को दूँगा; इसलिए तू भी साथ चल और हम तेरे साथ नेकी करेंगे, क्योंकि खुदावन्द ने बनी-इस्राईल से नेकी का वा'दा किया है।"³⁰उसने उसे जवाब दिया, "मैं नहीं चलता, बल्कि मैं अपने वतन को और अपने रिश्तेदारों में लौट कर जाऊँगा।"

³¹~तब मूसा ने कहा, "हम को छोड़ मत, क्योंकि यह तुझ को मा'लूम है कि हमको वीराने में किस तरह खेमाज़न होना चाहिए, इसलिए तू हमारे लिए आँखों का काम देगा;³²~और अगर तू हमारे साथ चले, तो इतनी बात ज़रूर होगी कि जो नेकी खुदावन्द हम से करे वही हम तुझ से करेंगे।"

³³~फिर वह खुदावन्द के पहाड़ से सफ़र करके तीन दिन की राह चले, और तीनों दिन के सफ़र में खुदावन्द के 'अहद का संदूक उनके लिए आरामगाह तलाश करता हुआ उनके आगे-आगे चलता रहा।³⁴और जब वह लश्करगाह से रवाना होते तो खुदावन्द का बादल दिन भर उनके ऊपर छाया रहता था।

³⁵और संदूक की रवानगी के वक़्त मूसा यह कहा करता, "उठ, ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ, और जो तुझ से कीना रखते हैं वह तेरे आगे से भागें।"³⁶और जब वह ठहर जाता तो वह यह कहता था, "ऐ खुदावन्द, हज़ारों-हज़ार इस्राइलियों में लौट कर आ जा।"

Chapter 11

¹फिर वह लोग कुड़कुड़ाने और खुदावन्द के सुनते बुरा कहने लगे; चुनाँचे खुदावन्द ने सुना और उसका ग़ज़ब भड़का और खुदावन्द की आग उनके बीच जल उठी, और लश्करगाह को एक किनारे से भसम करने लगी।²~तब लोगों ने मूसा से फ़रियाद की; और मूसा ने खुदावन्द से दु'आ की, तो आग बुझ गई।³और उस जगह का नाम तबे'रा पड़ा, क्योंकि खुदावन्द की आग उनमें जल उठी थी।

⁴और जो मिली-जुली भीड़ इन लोगों में थी वह तरह-तरह की लालच करने लगी, और बनी-इसाईल भी फिर रोने और कहने-लगे, "हम को कौन गोश्त खाने को देगा?"⁵~हम को वह मछली याद आती है जो हम मिस्र में मुफ़्त खाते थे; और हाय! वह खीरे, और वह खरबूज़े, और वह गन्दने, और प्याज़, और लहसन;⁶लेकिन अब तो हमारी जान खुश्क हो गई, यहाँ कोई चीज़ मयस्सर नहीं और मन के अलावा हम को और कुछ दिखाई नहीं देता।

⁷~और मन धनिये की तरह था और ऐसा नज़र आता था जैसे मोती।⁸~लोग इधर-उधर जा कर उसे जमा' करते और उसे चक्की में पीसते या ओखली में कूट लेते थे, फिर उसे हाण्डियों में उबाल कर रोटियाँ बनाते थे; उसका मज़ा ताज़ा तेल का सा था।

⁹~और रात को जब लश्करगाह में ओस पड़ती तो उसके साथ मन भी गिरता था।¹⁰और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने-अपने खेमे के दरवाज़े पर रोते सुना, और खुदावन्द का क्रहर बहुत भड़का और मूसा ने भी बुरा माना।

¹¹~तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, "तूने अपने खादिम से यह सख़्त बर्ताव क्यों किया? और मुझ पर तेरे करम की नज़र क्यों नहीं हुई, जो तू इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डालता है?"¹²~क्या यह सब लोग मेरे पेट में पड़े थे? क्या यह मुझ ही से पैदा हुए थे जो तू मुझे कहता है कि जिस तरह से बाप दूध पीते बच्चे को उठाए-उठाए फिरता है, उसी तरह मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठा कर उस मुल्क में ले जाऊँ जिसके देने की क़सम तूने उनके बाप दादा से खाई है?

¹³~मैं इन सब लोगों को कहाँ से गोश्त ला कर दूँ? क्योंकि वह यह कह-कह कर मेरे सामने रोते हैं, कि हम को गोश्त खाने को दे।¹⁴~मैं अकेला इन सब लोगों को नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी ताक़त से बाहर है।¹⁵~और जो तुझे मेरे साथ यही बर्ताव करना है तो मेरे ऊपर अगर तेरे करम की नज़र हुई है, तो मुझे एक ही बार में जान से मार डाल ताकि मैं अपनी बुरी हालत देखने न पाऊँ।"

¹⁶खुदावन्द ने मूसा से कहा, "बनी-इसाईल के बुजुर्गों में से सत्तर मर्द, जिनको तू जानता है कि क्रौम के बुजुर्ग और उनके सरदार हैं मेरे सामने जमा' कर और उनको खेमा-ए- इजितमा'अ के पास ले आ; ताकि वह तेरे साथ वहाँ खड़े हों।"¹⁷~और मैं उतर कर तेरे साथ वहाँ बातें करूँगा, और मैं उस रूह में से जो तुझ में है, कुछ लेकर उनमें डाल दूँगा कि वह तेरे साथ क्रौम का बोझ उठाएँ, ताकि तू उसे अकेला न उठाए।

¹⁸~और लोगों से कह कि कल के लिए अपने को पाक कर रखो तो तुम गोश्त खाओगे, क्योंकि तुम खुदावन्द के सुनते हुए यह कह-कह कर रोए हो कि हम को कौन गोश्त खाने को देगा? हम तो मिस्र ही में मौज से थे। इसलिए खुदावन्द तुम को गोश्त देगा और तुम खाना।¹⁹~और तुम एक या दो दिन नहीं और न पाँच या दस या बीस दिन,²⁰~बल्कि एक महीना कामिल उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथुनों से निकलने न लगे और तुम उससे घिन न खाने लगे; क्योंकि तुम ने खुदावन्द को जो तुम्हारे बीच है छोड़ दिया, और उसके सामने यह कह-कह कर रोए हो कि हम मिस्र से क्यों निकल आए?"

²¹~फिर मूसा कहने लगा, "जिन लोगों में मैं हूँ उनमें छः लाख तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है कि मैं उनको इतना गोश्त दूँगा कि वह महीने भर उसे खाते रहेंगे।

²²~इसलिए क्या भेड़बकरियों के यह रेवड़ और गाय-बैलों के झुण्ड उनकी खातिर ज़बह हों कि उनके लिए बस हो? या समन्दर की सब मछलियाँ उनकी खातिर इकट्ठी की जाएँ कि उन सब के लिए काफ़ी हो?"²³~खुदावन्द ने मूसा से कहा, "क्या खुदावन्द का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देख लेगा कि जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है या नहीं।"

²⁴~तब मूसा ने बाहर जाकर खुदावन्द की बातें उन लोगों को कह सुनाई, और क्रौम के बुजुर्गों में से सत्तर शख्स इकट्ठे करके उनको खेमे के चारों तरफ़ खड़ा कर दिया।²⁵तब खुदावन्द बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें कीं, और उस रूह में से जो उसमें थी कुछ लेकर उसे उन सत्तर बुजुर्गों में डाला; चुनाँचे जब रूह उनमें आई तो वह नबुव्वत करने लगे, लेकिन बा'द में फिर कभी न की।

²⁶लेकिन उनमें से दो शख्स लश्करगाह ही में रह गए, एक का नाम इलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी रूह आई; यह भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गए थे लेकिन यह खेमे के पास न गए, और लश्करगाह ही में नबुव्वत करने लगे।²⁷~तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को खबर दी और कहने लगा, कि इलदाद और मेदाद लश्करगाह में नबुव्वत कर रहे हैं।

²⁸इसलिए मूसा के खादिम नून के बेटे यशू'आ ने, जो उसके चुने हुए जवानों में से था मूसा से कहा, "ऐ मेरे मालिक मूसा, तू उनको रोक दे।"²⁹~मूसा ने उससे कहा, "क्या तुझे मेरी खातिर रश्क आता है? काश खुदावन्द के सब लोग नबी होते, और खुदावन्द अपनी रूह उन सब में डालता।"³⁰फिर मूसा और वह इसाईली बुजुर्ग लश्करगाह में गए।

³¹और खुदावन्द की तरफ़ से एक आँधी चली और समन्दर से बटेरें उड़ा लाई, और उनको लश्करगाह के बराबर और उसके चारों तरफ़ एक दिन की राह तक इस तरफ़ और एक ही दिन की राह तक दूसरी तरफ़ ज़मीन से क़रीबन दो-दो हाथ ऊपर डाल दिया।³²~और लोगों ने उठ कर उस सारे दिन और उस सारी रात और उसके दूसरे दिन भी बटेरें जमा' कीं, और जिसने कम से कम जमा' की थीं उसके पास भी दस खोमर के बराबर जमा' हो गई; और उन्होंने अपने लिए लश्करगाह की चारों तरफ़ उनको फैला दिया।

³³~और उनका गोश्त उन्होंने दाँतों से काटा ही था और उसे चबाने भी नहीं पाए थे कि खुदावन्द का क्रहर उन लोगों पर भड़क उठा, और खुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी सख़्त वबा से मारा।³⁴इसलिए उस मक़ाम का नाम क़ब्रत हतावा रखा गया, क्योंकि उन्होंने उन लोगों को जिन्होंने लालच किया था वहीं दफ़न किया।

³⁵~और वह लोग क़ब्रत हतावा से सफ़र करके हसेरात को गए और वहीं हसेरात में रहने लगे।

Chapter 12

¹~और मूसा ने एक कूशी 'औरत से ब्याह कर लिया। तब उस कूशी 'औरत की वजह से से जिसे मूसा ने ब्याह लिया था, मरियम और हारून उसकी बदगोई करने लगे।²~वह कहने लगे, "क्या खुदावन्द ने सिर्फ मूसा ही से बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं कीं?" और खुदावन्द ने यह सुना।³और मूसा तो इस ज़मीन के सब आदमियों से ज़्यादा हलीम था।

⁴तब खुदावन्द ने अचानक मूसा और हारून और मरियम से कहा, "तुम तीनों निकल कर खेमा-ए-इज्तिमा'अ के पास हाज़िर हो।" तब वह तीनों वहाँ आए।⁵और खुदावन्द बादल के सुतून में होकर उतरा और खेमे के दरवाज़े पर खड़े होकर~हारून और मरियम को बुलाया। वह दोनों पास गए।

⁶तब उसने कहा, "मेरी बातें सुनो, अगर तुम में कोई नबी हो, तो मैं जो खुदावन्द हूँ उसे रोया में दिखाई दूँगा और ख़्वाब में उससे बातें करूँगा।⁷~पर मेरा खादिम मूसा ऐसा नहीं है, वह मेरे सारे खानदान में अमानतदार है;⁸मैं उससे राज़ों में नहीं बल्कि आमने-सामने और सरीह तौर पर बातें करता हूँ, और उसे खुदावन्द का दीदार भी नसीब होता है। इसलिए तुम को मेरे खादिम मूसा की बदगोई करते खौफ़ क्यों न आया?"

⁹और खुदावन्द का ग़ज़ब उन पर भड़का और वह चला गया।¹⁰~और बादल खेमे के ऊपर से हट गया, और मरियम कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गई; और हारून ने जो मरियम की तरफ़ नज़र की तो देखा कि वह कोढ़ी हो गई है।

¹¹~तब हारून मूसा से कहने लगा, "हाय मेरे मालिक, इस गुनाह को हमारे सिर न लगा, क्योंकि हम से नादानी हुई और हम ने ख़ता की।¹²~और मरियम की उस मरे हुए की तरह न रहने दे, जिसका जिस्म उसकी पैदाइश ही के वक़्त आधा ग़ला हुआ होता है।"

¹³~तब मूसा खुदावन्द से फ़रियाद करने लगा, "ऐ खुदा, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, उसे शिफ़ा दे।"¹⁴~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "अगर उसके बाप ने उसके मुँह पर सिर्फ़ थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह शर्मिन्दा न रहती ? इसलिए वह सात दिन तक लश्करगाह के बाहर बन्द रहे, इसके बा'द वह फिर अन्दर आने पाए।"¹⁵चुनाँचे मरियम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर बन्द रही, और लोगों ने जब तक वह अन्दर आने न पाई रवाना न हुए।

¹⁶~इसके बा'द वह लोग हसेरात से रवाना हुए और फ़ारान के जंगल में पहुँच कर उन्होंने खेमे लगाए।

Chapter 13

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,²~"तू आदमियों को भेज कि वह मुल्क-ए-कना'न का, जो मैं बनी-इसाईल को देता हूँ हाल दरियाफ्त करें; उनके बाप-दादा के हर कबीले से एक आदमी भेजना जो उनके यहाँ का रईस हो।"

³~चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के इरशाद के मुवाफ़िक़ फ़ारान के जंगल से ऐसे आदमी खाना किए जो बनी-इसाईल के सरदार थे।⁴~उनके यह नाम थे: रूबिन के कबीले से ज़कूर का बेटा सम्मूअ,

⁵~और शमा'ऊन के कबीले से होरी का बेटा साफ़त,⁶~और यहूदाह के कबीले से यफुना का बेटा कालिब,⁷~और इश्कार के कबीले से युसुफ़ का बेटा इजाल,

⁸~और इफ़्राईम के कबीले से नून का बेटा होसे'अ,

⁹~और बिनयमीन के कबीले से रफू का बेटा फ़ल्ली,¹⁰ और ज़बूलून के कबीले से सोदी का बेटा जदीएल,¹¹ और यूसुफ़ के कबीले या'नी मनस्सी के कबीले से सूसी का बेटा जदी,¹²~और दान के कबीले से जमल्ली का बेटा 'अम्मीएल,

¹³और आशर के कबीले से मीकाएल का बेटा सतूर,¹⁴ और नफ़ताली के कबीले से वुफ़सी का बेटा नखबी,¹⁵~और जद के कबीले से माकी का बेटा ज्यूएल।¹⁶~यही उन लोगों के नाम हैं जिनको मूसा ने मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा था। और नून के बेटे होसे'अ का नाम मूसा ने यशू'अ रखवा।

¹⁷और मूसा ने उनको खाना किया ताकि मुल्क-ए-कना'न का हाल दरियाफ़्त करें और उनसे कहा, "तुम इधर दख्खिन की तरफ़ से जाकर पहाड़ों में चले जाना।

¹⁸और देखना कि वह मुल्क कैसा है, और जो लोग~वहाँ बसे हुए हैं वह कैसे हैं, ज़ोरावर हैं या कमज़ोर और थोड़े से हैं या बहुत।¹⁹~और जिस मुल्क में वह आबाद हैं वह कैसा है, अच्छा है या बुरा; जिन शहरों में वह रहते हैं वह कैसे हैं, आया वह ख़ेमों में रहते हैं या किलों में।²⁰ और वहाँ की ज़मीन कैसी है, ज़रखेज़ है या बंजर और उसमें दरख़्त हैं या नहीं; तुम्हारी हिम्मत बन्धी रहे और तुम उस मुल्क का कुछ फल लेते आना।" और वह मौसम अंगूर की पहली फ़सल का था।

²¹~तब वह खाना हुए और दशत-ए-सीन से रहोब तक जो हमात के रास्ते में है, मुल्क को ख़ूब देखा भाला।²²~और वह दख्खिन की तरफ़ से होते हुए हबरून तक गए, जहाँ 'अनाक के बेटे अख़ीमान और सीसी और तलमी रहते थे (और हबरून जुअन से जो मिस्र में है, सात बरस आगे बसा था)।

²³और वह वादी-ए-इस्काल में पहुँचे, वहाँ से उन्होंने अंगूर की एक डाली काट ली जिसमें एक ही गुच्छा था, और जिसे दो आदमी एक लाठी पर लटकाए हुए लेकर गए; और वह कुछ अनार और अंजीर भी लाए।²⁴ उसी गुच्छे की वजह से से जिसे इस्राईलियों ने वहाँ से काटा था, उस जगह का नाम वादी-ए-इस्काल पड़ गया।

²⁵~और चालीस दिन के बा'द वह उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करके लौटे।²⁶~और वह चले और मूसा और हारून और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत के पास दशत-ए-फ़ारान के क़ादिस में आए, और उनकी और सारी जमा'अत को सब हाल सुनाया, और उस मुल्क का फल उनको दिखाया।

²⁷और मूसा से कहने लगे, "जिस मुल्क में तूने हम को भेजा था हम वहाँ गए; वाक़'ई दूध और शहद उसमें बहता है, और यह वहाँ का फल है।²⁸~लेकिन जो लोग वहाँ बसे हुए हैं वह ज़ोरावर हैं और उनके शहर बड़े-बड़े और फ़सीलदार हैं, और हम ने बनी 'अनाक को भी वहाँ देखा।²⁹ उस मुल्क के दख्खिनी हिस्से में तो अमालीकी आबाद हैं, और हिती और यबूसी और अमोरी पहाड़ों पर रहते हैं, और समन्दर के साहिल पर और यरदन के किनारे-किनारे कना'नी बसे हुए हैं।"

³⁰~तब कालिब ने मूसा के सामने लोगों को चुप कराया और कहा, "चलो, हम एक दम जा कर उस पर क़ब्ज़ा करें, क्योंकि हम इस क़ाबिल हैं कि उस पर हासिल कर लें।"³¹~लेकिन जो और आदमी उसके साथ गए थे वह कहने लगे, "हम इस लायक़ नहीं हैं कि उन लोगों पर हमला करें, क्योंकि वह हम से ज़्यादा ताक़तवर हैं।"

³²~इन आदमियों ने बनी-इसाईल को उस मुल्क की, जिसे वह देखने गए थे बुरी ख़बर दी, और यह कहा, "वह मुल्क जिसका हाल दरियाफ़्त करने को हम उसमें से गुज़रे, एक ऐसा मुल्क है जो अपने बाशिन्दों को खा जाता है; और वहाँ जितने आदमी हम ने देखे वह सब बड़े क़द्दावर हैं।³³ और हम ने वहाँ बनी 'अनाक को भी देखा जो जब्बार हैं और जब्बारों की नसल से हैं, और हम तो अपनी ही निगाह में ऐसे थे जैसे टिड्डे होते हैं और ऐसे ही उनकी निगाह में थे।"

Chapter 14

¹तब सारी जमा'अत ज़ोर ज़ोर से चीखने लगी और वह लोग उस रात रोते ही रहे।²~और कुल बनी-इसाईल मूसा और हारून की शिकायत करने लगे, और सारी जमा'त उनसे कहने लगी हाय काश ~हम मिस्र ही में मर जाते या काश इस वीरान ही में मरते।³~खुदावन्द क्यूँ हम को उस मुल्क में ले जा कर तलवार से क़त्ल कराना चाहता है?

⁴फिर तो हमारी बीवियाँ और बाल बच्चे लूट का माल ठहरेंगे, क्या हमारे लिए बेहतर न होगा कि हम मिस्र को वापस चले जाएँ?" फिर वह आपस में कहने लगे, "आओ हम किसी को अपना सरदार बना लें, और मिस्र को लौट चलें।" तब मूसा और हारून बनी-इसाईल की सारी जमा'अत के सामने औंधे मुँह हो गए।

⁶और नून का बेटा यशू'अ और यफ़ुन्ना का बेटा कालिब, जो उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने वालों में से थे, अपने-अपने कपड़े फाड़ कर बनी-इसाईल की सारी जमा'अत से कहने लगे कि "वह मुल्क जिसका हाल दरियाफ़्त करने को हम उसमें से गुज़रे, बहुत अच्छा मुल्क है।⁸ अगर खुदा हम से राज़ी रहे तो वह हम को उस मुल्क में पहुँचाएगा, और वही मुल्क जिस में दूध और शहद बहता है हम को देगा।

⁹~सिर्फ़ इतना हो कि तुम खुदावन्द से बगावत न करो और न उस मुल्क के लोगों से डरो; वह तो हमारी ख़ुराक हैं, उनकी पनाह उनके सिर पर से जाती रही है और हमारे साथ खुदावन्द है; इसलिए उनका ख़ौफ़ न करो।"¹⁰ तब सारी जमा'अत बोल उठी कि इनको संगसार करो। उस वक़्त खेमा-ए-इजितमा'अ में सब बनी-इसाईल के सामने खुदावन्द का जलाल नुमायाँ हुआ।

¹¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "यह लोग कब तक मेरी तौहीन करते रहेंगे? और बावजूद उन सब मो'जिज़ों के जो मैंने इनके बीच किए हैं, कब तक मुझ पर ईमान नहीं लाएँगे?"¹² में इनको वबा से मारूँगा और मीरास से ख़ारिज करूँगा, और तुझे एक ऐसी क़ौम बनाऊँगा जो इनसे कहीं बड़ी और ज़्यादा ज़ोरावर हो।"

¹³मूसा ने खुदावन्द से कहा, "तब तो मिस्री, जिनके बीच से तू इन लोगों को अपने ज़ोर-ए-बाजू से निकाल ले आया यह सुनेंगे,¹⁴ और उसे इस मुल्क के बाशिन्दों को बताएँगे। उन्होंने सुना है कि तू जो खुदावन्द है इन लोगों के बीच रहता है, क्यूँकि तू ऐ खुदावन्द सरीह तौर पर दिखाई देता है, और तेरा बादल इन पर साया किए रहता है, और तू दिन को बादल के सुतून में और रात को आग के सुतून में हो कर इनके आगे-आगे चलता है।

¹⁵तब अगर तू इस क़ौम को एक अकेले आदमी की तरह जान से मार डाले, तो वह क़ौम जिन्होंने तेरी शोहरत सुनी कहेंगी; ¹⁶कि चूँकि खुदावन्द इस क़ौम को उस मुल्क में, जिसे उसने इनको देने की क़सम खाई थी पहुँचा न सका, इसलिए उसने इनको वीरान में हलाक कर दिया।

¹⁷तब खुदावन्द की कुदरत की 'अज़मत तेरे ही इस क़ौल के मुताबिक़ ज़ाहिर हो, ¹⁸~कि खुदावन्द क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त में गनी है, वह गुनाह और ख़ता को बख़्श देता है लेकिन मुजरिम को हरगिज़ बरी नहीं करेगा, क्यूँकि वह बाप दादा के गुनाह की सज़ा उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक देता है।¹⁹ इसलिए तू अपनी रहमत की फ़िरावानी से इस उम्मत का गुनाह, जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक इन लोगों को मु'आफ़ करता रहा है अब भी मु'आफ़ कर दे।"

²⁰खुदावन्द ने कहा, "मैंने तेरी दरख़वास्त के मुताबिक़ मुआफ़ किया,²¹ लेकिन मुझे अपनी हयात की क़सम और खुदावन्द के जलाल की क़सम जिससे सारी ज़मीन मा'भूर होगी, ²²~चूँकि इन सब लोगों ने जिन्होंने बावजूद मेरे जलाल के देखने के, और बावजूद उन मो'जिज़ों के जो मैंने मिस्र में और इस वीरान में दिखाए, फिर भी दस बार मुझे आज़माया और मेरी बात नहीं मानी;

²³इसलिए वह उस मुल्क को जिसके देने की क़सम मैंने उनके बाप दादा से खाई थी देखने भी न पायेंगे और जिन्होंने मेरी तौहीन की है उन में से भी कोई उसे देखने नहीं पाएगा।²⁴~लेकिन इसलिए कि मेरे बन्दे कालिब का कुछ और ही मिज़ाज था और उसने मेरी पूरी पैरवी की है, मैं उसको उस मुल्क में जहाँ वह हो आया है पहुँचाऊँगा और उसकी औलाद उसकी वारिस होगी।²⁵ और वादी में तो 'अमालीकी और कना'नी बसे हुए हैं, इसलिए कल तुम घूम कर उस रास्ते से जो बहर-ए-कुलजुम को जाता है वीरान में दाख़िल हो जाओ।"

²⁶और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा,²⁷~"मैं कब तक इस ख़बीस गिरोह की जो मेरी शिकायत करती रहती है, बर्दाश्त करूँ? बनी-इसाईल जो मेरे बरख़िलाफ़ शिकायतें करते रहते हैं, मैंने वह सब शिकायतें सुनी हैं।

²⁸~इसलिए तुम उससे कह दो, खुदावन्द कहता है, मुझे अपनी हयात की क़सम है कि जैसा तुम ने मेरे सुनते कहा है, मैं तुम से ज़रूर वैसा ही करूँगा।²⁹ तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी, और तुम्हारी सारी ता'दाद में से या 'नी बीस बरस से लेकर उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के तुम सब जितने गिने गए, और मुझ पर शिकायत करते रहे,³⁰~इनमें से कोई उस मुल्क में, जिसके बारे में मैंने क़सम खाई थी कि तुमको वहाँ बसाऊँगा, जाने न पाएगा, अलावा यफ़ुन्ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यशू'अ के।

³¹~और तुम्हारे बाल-बच्चे जिनके बारे में तुम ने यह कहा कि वह तो लूट का माल ठहरेंगे, उनको मैं वहाँ पहुँचाऊँगा, और जिस मुल्क को तुम ने हक़ीर जाना वह उसकी हक़ीक़त पहचानेंगे।³²~और तुम्हारा यह हाल होगा कि तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी।³³ और तुम्हारे लड़के बाले चालीस बरस तक वीरान में आवारा फिरते और तुम्हारी जिनाकारियों का फल पाते रहेंगे, जब तक कि तुम्हारी लाशें वीरान में गल न जाएँ।

³⁴उन चालीस दिनों के हिसाब से जिनमें तुम उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करते रहे थे, अब दिन पीछे एक-एक बरस या 'नी चालीस बरस तक, तुम अपने गुनाहों का फल पाते रहोगे; तब तुम मेरे मुख़ालिफ़ हो जाने को समझोगे।³⁵ मैं खुदावन्द यह कह चुका हूँ कि मैं इस पूरी ख़बीस गिरोह से जो मेरी मुख़ालिफ़त पर मुत्तफ़िक़ है क़त'ई ऐसा ही करूँगा, इनका ख़ातमा इसी वीरान में होगा और वह यहीं मरेंगे।"

³⁶और जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा था, जिन्होंने लौट कर उस मुल्क की ऐसी बुरी ख़बर सुनाई थी, जिससे सारी जमा'अत मूसा पर कुड़कुड़ाने लगी,³⁷ इसलिए वह आदमी जिन्होंने मुल्क की बुरी ख़बर दी थी खुदावन्द के सामने वबा से मर गए।³⁸~लेकिन जो आदमी उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने गए थे उनमें से नून का बेटा यशू'अ और यफ़ुन्ना का बेटा कालिब दोनों जीते बचे रहे।

³⁹और मूसा ने यह बातें सब बनीइसाईल से कहीं, तब वह लोग ज़ार-ज़ार रोए।⁴⁰~और वह दूसरे दिन सुबह सवेरे उठ कर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम हाज़िर हैं और जिस जगह का वा'दा खुदावन्द ने किया है वहाँ जाएँगे क्योंकि हम से खता हुई है।

⁴¹~मूसा ने कहा, "तुम क्यों अब खुदावन्द की हुक्म उटूली करते हो? इससे कोई फ़ाइदा न होगा।"⁴²ऊपर मत चढ़ो क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे बीच नहीं है ऐसा न हो कि अपने दुश्मनों के मुकाबले में शिकस्त खाओ।⁴³क्योंकि वहाँ तुम से आगे 'अमालीक्री और कना'नी लोग हैं, इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; क्योंकि खुदावन्द से तुम फिर गए हो, इसलिए खुदावन्द तुम्हारे साथ नहीं रहेगा।"

⁴⁴लेकिन वह शोखी करके पहाड़ की चोटी तक चढ़े चले गए, लेकिन खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक और मूसा लश्करगाह से बाहर न निकले।⁴⁵तब 'अमालीक्री और कना'नी जो उस पहाड़ पर रहते थे, उन पर आ पड़े और उनको क़त्ल किया और हुश्मा तक उनको मारते चले आए।

Chapter 15

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा,²"बनी-इसाईल से कह कि जब तुम अपने रहने के मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ पहुँचो³और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी, या'नी सोखतनी कुर्बानी या खास मिन्नत का ज़बीहा या रज़ा की कुर्बानी पेश करो, या अपनी मु'अय्यन 'ईदों में राहतअंगेज़ खुशबू के तौर पर खुदावन्द के सामने गाय बैल या भेड़ बकरी चढ़ाओ।

⁴~तो जो शख्स अपना हृदया लाए, वह खुदावन्द के सामने नज़्र की कुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के दस्वें हिस्से के बराबर मैदा जिसमें चौथाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो,⁵और तपावन के तौर पर चौथाई हीन के बराबर मय भी लाए; तू अपनी सोखतनी कुर्बानी या अपने ज़बीहे के हर बर्रे के साथ इतना ही तैयार किया करना।

⁶और हर मेंढे के साथ ऐफ़ा के पाँचवे हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तिहाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो, नज़्र की कुर्बानी के तौर पर लाना।⁷और तपावन के तौर पर तिहाई हीन के बराबर मय देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे।

⁸और जब तू खुदावन्द के सामने सोखतनी कुर्बानी या खास मिन्नत के ज़बीहे या सलामती के ज़बीहे के तौर पर बछड़ा पेश करे,⁹तो वह उस बछड़े के साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें आधे हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो चढ़ाए।¹⁰और तू तपावन के तौर पर आधे हीन के बराबर मय पेश करना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे।

¹¹"हर बछड़े, और हर मेंढे, और हर नर बर्रे या बकरी के बच्चे के लिए ऐसा ही किया जाए।¹²तुम जितने जानवर लाओ, उनके शुमार के मुताबिक़ एक-एक के साथ ऐसा ही करना।¹³जितने देसी खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी पेश करें वह उस वक्रत यह सब काम इसी तरीक़े से करें।

¹⁴और अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ क्रयाम करता हो या जो कोई नसलों से तुम्हारे साथ रहता आया हो, और वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की~आतिशी कुर्बानी पेश करना चाहे तो जैसा तुम करते हो वह भी वैसा ही करे।¹⁵मजमे' के लिए, या'नी तुम्हारे लिए और उस परदेसी के लिए जो तुम में रहता हो नसल-दर-नसल हमेशा एक ही क़ानून रहेगा; खुदावन्द के आगे परदेसी भी वैसे ही हों जैसे तुम हो।¹⁶तुम्हारे लिए और परदेसियों के लिए जो तुम्हारे साथ रहते हैं एक ही शरी'अत और एक ही क़ानून हो।"

¹⁷और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;¹⁸~"बनी-इसाईल से कह, जब तुम उस मुल्क में पहुँचो, जहाँ मैं तुम को लिए जाता हूँ,¹⁹~और उस मुल्क की रोटी खाओ तो खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी पेश करना।

²⁰~तुम अपने पहले गूँधे हुए आटे का एक गिर्दा उठाने की कुर्बानी के तौर पर अदा करना, जैसे खलीहान की उठाने की कुर्बानी को लेकर उठाते हो वैसे ही इसे भी उठाना।²¹तुम अपनी नसल-दर-नसल अपने पहले ही गूँधे हुए आटे में से कुछ लेकर उसे खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करना।

²²~"और अगर तुम से भूल हो जाए और तुमने उन सब हुक्मों पर जो खुदावन्द ने मूसा को दिए 'अमल न किया हो,²³या'नी जिस दिन से खुदावन्द ने हुक्म देना शुरू किया उस दिन से लेकर आगे-आगे, जो कुछ हुक्म खुदावन्द ने तुम्हारी नसल-दर-नसल मूसा के ज़रिए' तुम को दिया है,²⁴~उसमें अगर अनजाने में कोई खता हो गई हो और जमा'अत उससे वाकिफ़ न हो तो सारी जमा'अत एक बछड़ा सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करे, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू हो,और उसके साथ शरा' के मुताबिक़ उसकी नज़्र की कुर्बानी और उसका तपावन भी चढ़ाए, और खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा पेश करे।

²⁵यूँ काहिन बनी-इसाईल की सारी जमा'अत के लिए कफ़फ़ारा दे तो उनकी मु'आफ़ी मिलेगी, क्योंकि यह महज़ भूल थी और उन्होंने उस भूल के बदले वह कुर्बानी भी चढ़ाई जो खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी ठहरती है, और खता की कुर्बानी भी खुदावन्द के सामने पेश कीं।²⁶तब बनी-इसाईल की सारी जमा'अत को और उन परदेसियों को भी जो उनमें रहते हैं मु'आफ़ी मिलेगी, क्योंकि जमा'अत के ऐतबार से यह अनजाने में हुआ।

²⁷और अगर एक ही शख्स अनजाने में खता करे तो वह एक-साला बकरी खता की कुर्बानी के लिए चढ़ाए।"²⁸~यूँ काहिन उस शख्स की तरफ़ से जिसने अनजाने में खता की, उसकी खता के लिए खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दे तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।²⁹जिस शख्स ने अनजाने में खता की हो, उसके लिए तुम एक ही शरा' रखना चाहे वह बनी-इसाईल में से देसी हो या परदेसी जो उनमें रहता हो।

³⁰लेकिन जो शख्स बेख़ौफ़ हो कर गुनाह करे, चाहे वह देसी हो या परदेसी, वह खुदावन्द की बे'इज़ज़ती करता है; वह शख्स अपने लोगों में से अलग किया जाएगा।³¹क्योंकि उसने खुदावन्द के कलाम की हिक्कारत की और उसके हुक्म को तोड़ डाला, वह शख्स बिल्कुल अलग कर दिया जाएगा, उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।"

³²और जब बनी-इसाईल वीरान में रहते थे, उन दिनों एक आदमी उनको सबत के दिन लकड़ियाँ जमा' करता हुआ मिला।³³~और जिनकी वह लकड़ियाँ जमा' करता हुआ मिला वह उसे मूसा और हारून और सारी जमा'अत के पास ले गए।³⁴~उन्होंने उसे हवालात में रखवा, क्योंकि उनको यह नहीं बताया गया था कि उसके साथ क्या करना चाहिए

³⁵तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "यह शख्स ज़रूर जान से मारा जाए; सारी जमा'अत लश्करगाह के बाहर उसे पथराव करे।"³⁶चुनाँचे जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, उसके मुताबिक़ सारी जमा'अत ने उसे लश्करगाह के बाहर ले जाकर पथराव किया और वह मर गया।

³⁷और खुदावन्द ने मूसा से कहा,³⁸"बनी-इसाईल से कह कि वह नसल-दर-नसल अपने लिबासों के किनारों पर झालर लगाएँ, और हर किनारे की झालर के ऊपर आसमानी रंग का डोरा टाँके।³⁹यह झालर तुम्हारे लिए ऐसी हो कि जब तुम उसे देखो तो खुदावन्द के सारे हुक्मों को याद करके उन पर 'अमल करो और अपने दिल और आँखों ~की ख्वाहिशों की पैरवी में ज़िनाकारी न करते फिरो जैसा करते आए हो;

⁴⁰बल्कि मेरे सब हुक्मों को याद करके उनको 'अमल में लाओ और अपने खुदा के लिए पाक हो।"⁴¹~मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को मुल्क-ए-मिस से निकाल कर लाया ताकि तुम्हारा खुदा ठहरूँ। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

Chapter 16

¹और कोरह बिन इज़हार बिन किहात बिन लावी ने बनी रूबिन में से-इलियाब के बेटों दातन और अबीराम, और पलत के बेटे ओन के साथ मिल कर और आदमियों को साथ लिया;²~और वह और बनी-इसाईल में से ढाई सौ और अशखास जो जमा'अत के सरदार और चीदा और मशहूर आदमी थे, मूसा के मुकाबले में उठे;³और वह मूसा और हारून के खिलाफ़ इकट्ठे होकर उनसे कहने लगे, "तुम्हारे तो बड़े दा'वे हो चले, क्योंकि जमा'अत का एक-एक आदमी पाक है और खुदावन्द उनके बीच रहता है। इसलिए तुम अपने आप को खुदावन्द की जमा'अत से बड़ा क्योंकर ठहराते हो?"

⁴मूसा यह सुन कर मुँह के बल गिरा।⁵फिर उसने कोरह और उसके कुल फ़रीक़ से कहा कि "कल सुबह खुदावन्द दिखा देगा कि कौन उसका है और कौन पाक है और वह उसी को अपने नज़दीक आने देगा, क्योंकि जिसे वह खुद चुनेगा उसे वह अपनी कुरबत भी देगा।

⁶इसलिए ऐ कोरह और उसके फ़रीक़ के लोगों, तुम यूँ करो कि अपना अपना खुशबूदान लो,⁷और उनमें आग भरो और खुदावन्द के सामने कल उनमें खुशबू जलाओ, तब जिस शख्स को खुदावन्द चुन ले वही पाक ठहरेगा। ऐ लावी के बेटों, बड़े-बड़े दा'वे तो तुम्हारे हैं।"

⁸फिर मूसा ने कोरह की तरफ़ मुखातिब होकर कहा, "ऐ बनी लावी सुनो,⁹क्या यह तुम को छोटी बात दिखाई देती है कि इसाईल के खुदा ने तुम को बनी-इसाईल की जमा'अत में से चुन कर अलग किया, ताकि तुम को वह अपनी कुरबत बख़्शे और तुम खुदावन्द के घर की खिदमत करो, और जमा'अत के आगे खड़े हो कर उसकी भी खिदमत बजा लाओ।¹⁰और तुझे और तेरे सब भाइयों को जो बनी लावी हैं, अपने नज़दीक आने दिया? इसलिए क्या अब तुम कहानत को भी चाहते हो?"¹¹इसीलिए तू और तेरे फ़रीक़ के लोग, यह सब के सब खुदावन्द के खिलाफ़ इकट्ठे हुए हैं; और हारून कौन है जो तुम उस की शिकायत करते हो?"

¹²फिर मूसा ने दातन और अबीराम को जो इलियाब के बेटे थे बुलवा भेजा; उन्होंने कहा, "हम नहीं आते;¹³क्या यह छोटी बात है कि तू हम को एक ऐसे मुल्क से, जिसमें दूध और शहद बहता है निकाल लाया है, कि हमको वीरान में हलाक करे, और उस पर भी यह तुरा है कि अब तू सरदार बन कर हम पर हुकूमत जताता है?"¹⁴इसके अलावा तूने हम को उस मुल्क में भी नहीं पहुँचाया जहाँ दूध और शहद बहता है, और न हम को खेतों और ताकिस्तानों का वारिस बनाया; क्या तू इन लोगों की आँखें निकाल डालेगा? हम तो नहीं आने के।"

¹⁵तब मूसा बहुत तैश में आ कर खुदावन्द से कहने लगा, "तू उनके हृदिये की तरफ़ तवज्जुह मत कर। मैंने उनसे एक गधा भी नहीं लिया, न उनमें से किसी को कोई नुक़सान पहुँचाया है।"¹⁶फिर मूसा ने कोरह से कहा, "कल तू अपने सारे फ़रीक़ के लोगों को लेकर खुदावन्द के आगे हाज़िर हो; तू भी हो और वह भी हों, और हारून भी हो।"¹⁷और तुम में से हर शख्स अपना खुशबूदान लेकर उसमें-खुशबू-डाले, और तुम अपने-अपने-खुशबूदान को जो शुमार-में-ढाई सौ होंगे, खुदावन्द के सामने लाओ और तू भी अपना-खुशबूदान लाना और हारून भी लाए।"

¹⁸तब उन्होंने अपना अपना-खुशबूदान लेकर और उनमें आग रख कर उस पर-खुशबू-डाला, और खेमा-ए-इजितमा'अ-के-दरवाज़े पर मूसा और हारून के साथ आ कर खड़े हुए।¹⁹और कोरह ने सारी जमा'अत को उनके खिलाफ़ खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर जमा' कर लिया था। तब खुदावन्द का जलाल सारी जमा'अत के सामने नुमायाँ हुआ।

²⁰और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा;²¹कि "तुम अपने आप को इस जमा'अत से बिल्कुल अलग कर लो, ताकि मैं उनको एक पल में भसम कर दूँ।"²²तब वह मुँह के बल गिर कर कहने लगे, "ऐ खुदा, सब बशर की रूहों के खुदा ! क्या एक आदमी के गुनाह की वजह से से तेरा क्रहर सारी जमा'अत पर होगा?"

²³तब खुदावन्द ने मूसा से कहा,²⁴"तू जमा'अत से कह कि तुम कोरह और दातन और अबीराम के खेमों के आस पास से दूर हट जाओ।"

²⁵~और मूसा उठ कर दातन और अबीराम की तरफ़ गया, और बनी-इसाईल के बुजुर्ग उसके पीछे पीछे गए।²⁶और उसने जमा'अत से कहा, "इन शरीर आदमियों के खेमों से निकल जाओ और उनकी किसी चीज़ को हाथ न लगाओ, ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब गुनाहों की वजह से से हलाक हो जाओ।"²⁷~तब वह लोग कोरह और दातन और अबीराम के खेमों के आस पास से दूर हट गए; और दातन और अबीराम अपनी बीवियों और बेटों और बाल-बच्चों समेत निकल कर अपने खेमों के दरवाज़ों पर खड़े हुए।

²⁸तब मूसा ने कहा, "इस से तुम जान लोगे के खुदावन्द ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैंने अपनी मज़ी से कुछ नहीं किया।"²⁹अगर यह आदमी वैसी ही मौत से मरे जो सब लोगों को आती है, या इन पर वैसे ही हादसे गुज़रें जो सब पर गुज़रते हैं, तो मैं खुदावन्द का भेजा हुआ नहीं हूँ।³⁰लेकिन अगर खुदावन्द कोई-नया करिश्मा दिखाए, और ज़मीन अपना मुँह खोल दे और इनको इनके घर-बार के साथ निगल जाए और यह जीते जी पाताल में समा जाएँ, तो तुम जानना कि इन लोगों ने खुदावन्द की तहकीर की है।"

³¹उसने यह बातें ख़त्म ही की थीं कि ज़मीन उनके पाओं तले फट गई।³²और ज़मीन ने अपना मुँह खोल दिया और उनको और उनके घर-बार को, और कोरह के यहाँ के सब आदमियों को और उनके सारे माल-ओ-अस्बाब को निगल गई।

³³तब वह और उनका सारा घर-बार जीते जो पाताल में समा गए और ज़मीन उनके ऊपर बराबर हो गई, और वह जमा'अत में से ख़त्म हो गए।³⁴और सब इसाईली जो उनके आस पास थे उनका चिल्लाना सुन कर यह कहते हुए भागे, कि कहीं ज़मीन हम को भी निगल न ले।³⁵और खुदावन्द के सामने से आग निकली और उन ढाई सौ आदमियों को जिन्होंने-खुशबू-पेश करा था भसम कर डाला।

³⁶और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;³⁷~'हारून काहिन के बेटे इली'अज़र से कह कि वह-खुशबूदान को शोलों में से उठा ले और आग के अंगारों को उधर ही-बिखेर दे क्योंकि वह पाक है।³⁸जो खताकार अपनी ही जान के दुश्मन हुए, उनके-खुशबूदानों के पीट पीट कर पत्तर बनाए जाएँ ताकि वह मज़बह पर-मंढे जाएँ, क्योंकि उन्होंने उनको खुदावन्द के सामने रखखा था इसलिए वह पाक हैं, और वह बनी-इसाईल के लिए एक निशान भी ठहरेंगे।"

³⁹तब इली'अज़र काहिन ने पीतल के उन-खुशबूदानों को उठा लिया जिनमें उन्होंने जो भसम कर दिए गए थे-खुशबू-पेश करा-था, और मज़बह पर मंढने के लिए उनके पत्तर बनवाए;⁴⁰~ताकि बनी-इसाईल के लिए एक यादगार हो कि कोई ग़ैर शख्स जो हारून की नसल से नहीं, खुदावन्द के सामने-खुशबू-जलाने को नज़दीक न जाए, ऐसा न हो कि वह कोरह और उसके फ़रीक़ की तरह हलाक हो, जैसा खुदावन्द ने उसको-मूसा के ज़रिए' बता दिया था।

⁴¹~लेकिन दूसरे ही दिन बनी-इसाईल की सारी जमाअत ने मूसा और हारून की शिकायत की और कहने लगे, कि तुम ने खुदावन्द के लोगों को मार डाला है।

⁴²और जब वह जमा'अत मूसा और हारून के खिलाफ़ इकट्ठी हो रही थी तो उन्होंने खेमा-ए-इजितमा'अ की तरफ़ निगाह की, और देखा कि बादल उस पर छाया हुआ है और खुदावन्द का जलाल नुमायों है।⁴³ तब मूसा और हारून खेमा-ए-इजितमा'अ के सामने आए।

⁴⁴और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;⁴⁵ ~"तुम इस जमा'अत के बीच से हट जाओ, ताकि मैं इनको एक पल में भसम कर डालूँ।" तब वह मुँह के बल गिरे।⁴⁶~और मूसा ने हारून से कहा, "अपना~खुशबूदान ले और मज़बूह पर से आग लेकर उसमें डाल और उस पर~खुशबू~जला, और जल्द जमा'अत के पास जाकर उनके लिए कफ़ारा दे क्योंकि खुदावन्द का क्रहर नाज़िल हुआ है और~वबा शुरू' हो गई।"

⁴⁷~मूसा के कहने के मुताबिक़ हारून~खुशबूदान लेकर जमा'अत के बीच में दौड़ता हुआ गया और देखा कि वबा लोगों में~फैलने लगी है, तब उसने~खुशबू~जलायी और उन लोगों के लिए कफ़ारा दिया।⁴⁸और वह मुदों और ज़िन्दों के बीच~में खड़ा हुआ, तब वबा खत्म हुई।

⁴⁹~तब 'अलावा उनके जो क्रोरह के मुआ'मिले की वजह से से हलाक हुए थे, चौदह हज़ार सात सौ आदमी वबा से हलाक गए।⁵⁰फिर हारून लौट कर खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर मूसा के पास आया और वबा खत्म हो गई।

Chapter 17

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;²"बनी-इसाईल से गुप्तगू करके उनके सब सरदारों से उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक, हर खान्दान एक लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ ले; और हर सरदार का नाम उसी की लाठी पर लिख,

³और लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना। क्योंकि उनके आबाई खान्दानों के हर सरदार के लिए एक लाठी होगी।⁴और उनको लेकर खेमा-ए-इजितमा'अ में शहादत के सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुम से मुलाक़ात करता हूँ रख देना।⁵और जिस शख्स को मैं चुनूँगा उसकी लाठी से कलियाँ फूट निकलेंगी, और बनी-इसाईल जो तुम पर कुड़कुड़ाते रहते हैं, वह कुड़कुड़ाना मैं अपने पास से दफ़ा' करूँगा।"

⁶तब मूसा ने बनी-इसाईल से गुप्तगू की, और उनके सब सरदारों ने अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक हर सरदार एक लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ उस को दीं; और हारून की लाठी भी उनकी लाठियों में थी।⁷और मूसा ने उन लाठियों को शहादत के खेमे में खुदावन्द के सामने रख दिया।

⁸और दूसरे दिन जब मूसा शहादत के खेमे में गया, तो देखा कि हारून की लाठी में जो लावी के खान्दान के नाम की थी कलियाँ फूटी हुई और शगूफ़े खिले हुए और पक्के बादाम लगे हैं।⁹~और मूसा उन सब लाठियों को खुदावन्द के सामने से निकाल कर सब बनी-इसाईल के पास ले गया, और उन्होंने देखा और हर शख्स ने अपनी लाठी ले ली।

¹⁰और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "हारून की लाठी शहादत के सन्दूक के आगे धर दे, ताकि वह फ़िल्ताअंगेज़ों के लिए एक निशान के तौर पर रखी रहे, और इस तरह तू उनकी शिकायतें जो मेरे खिलाफ़ होती रहती हैं बन्द कर दे ताकि वह हलाक न हों।"¹¹और मूसा ने जैसा खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था वैसा ही किया।

¹²और बनी-इसाईल ने मूसा से कहा, "देख, हम हलाक हुए जाते, हम हलाक हुए जाते, हम सब के सब हलाक हुए जाते हैं।"¹³जो कोई खुदावन्द के घर के नज़दीक जाता है, मर जाता है। तो क्या हम सब के सब हलाक ही हो जाएँगे?"

Chapter 18

¹और खुदावन्द ने हारून से कहा कि, "हैकल का बार-ए-गुनाह तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे आबाई खानदान पर होगा, और तुम्हारी कहानत का बार-ए-गुनाह भी तुझ पर और तेरे बेटों पर होगा।"²~और तू लावी के कबीले या'नी अपने बाप के कबीले के लोगों को भी जो तेरे भाई हैं अपने साथ ले आया कर, ताकि वह तेरे साथ होकर तेरी खिदमत करें; लेकिन शहादत के खेमे के आगे तू और तेरे बेटे ही आया करें।

³~वह तेरी खिदमत और सारे खेमे की मुहाफ़िज़त करें; सिर्फ़ वह हैकल के बर्तनों और मज़बह के नज़दीक न जाएँ, ऐसा न हो कि वह भी और तुम भी हलाक हो जाओ।⁴इसलिए वह तेरे साथ होकर खेमा-ए-इजितमा'अ और खेमे के इस्ते'माल की सब चीज़ों की मुहाफ़िज़त करें,~और कोई ग़ैर शख्स तुम्हारे नज़दीक न आने पाए।⁵और तुम हैकल और मज़बह की मुहाफ़िज़त करो ताकि आगे को फिर बनी इस्राईल पर क्रहर नाज़िल न हो।

⁶और देखो, मैंने बनी लावी को जो तुम्हारे भाई हैं बनी-इस्राईल से अलग करके खुदावन्द की खातिर बख़्शिश के तौर पर तुम को सुपुर्द किया, ताकि वह खेमा-ए-इजितमा'अ की खिदमत करें।⁷लेकिन मज़बह की ओर पर्दे के अन्दर की खिदमत तेरे और तेरे बेटों के ज़िम्मे है; इसलिए उसके लिए तुम अपनी कहानत की हिफ़ाज़त करना, वहाँ तुम ही खिदमत किया करना, कहानत की खिदमत का शर्फ़ मैं तुम को बख़्शता हूँ और जो ग़ैर शख्स नज़दीक आए वह जान से मारा जाए।"

⁸फिर खुदावन्द ने हारून से कहा, "देख, मैंने बनी-इस्राईल की सब पाक चीज़ों में से उठाने की कुर्बानियाँ तुझे दे दीं; मैंने उनको तेरे मम्सूह होने का हक़ ठहराकर तुझे और तेरे बेटों को हमेशा के लिए दिया।⁹सबसे पाक चीज़ों में से जो कुछ आग से बचाया जाए वह तेरा होगा; उनके सब चढ़ावे, या'नी नज़्र की कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी जिनको वह मेरे सामने गुजराने, वह तेरे और तेरे बेटों के लिए बहुत पाक ठहरें।

¹⁰और तू उनको बहुत पाक जान कर खाना; मर्द ही मर्द उनको खाएँ, वह तेरे लिए पाक हैं।¹¹और अपने हृदिये में से जो कुछ बनी-इस्राईल उठाने की कुर्बानी और हिलाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करें वह भी तेरा ही हो, इनको मैं तुझ को और तेरे बेटे-बेटियों को हमेशा के हक़ के तौर पर देता हूँ; तेरे घराने में जितने पाक हैं वह उनको खाएँ।

¹²अच्छे से अच्छा तेल और अच्छी से अच्छी मय और अच्छे से अच्छा गेहूँ, या'नी इन चीज़ों में से जो कुछ वह पहले फल के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें वह सब मैंने तुझे दिया।¹³~उनके मुल्क की सारी पैदावार के पहले पक्के फल, जिनको वह खुदावन्द के सामने लाएँ तेरे होंगे; तेरे घराने में जितने पाक हैं वह उनको खाएँ।

¹⁴बनी-इस्राईल की हर एक मख्सूस की हुई चीज़ तेरी होगी।¹⁵~उन जानदारों में से जिनको वह खुदावन्द के सामने पेश करते हैं, जितने पहलौठी के बच्चे हैं चाहे वह इंसान के हों चाहे हैवान के वह सब तेरे होंगे; लेकिन इंसान के पहलौठों का फ़िदिया लेकर उनको ज़रूर छोड़ देना और नापाक जानवरों के पहलौठे भी फ़िदिये से छोड़ दिए जाएँ।¹⁶और जिनका फ़िदिया दिया जाए वह जब एक महीने के हों, तो उनको अपनी ठहराई हुई क्रीमत के मुताबिक़ हैकल की मिस्काल के हिसाब से जो बीस जीरे की होती है चाँदी की पाँच मिस्काल लेकर छोड़ देना।

¹⁷~लेकिन गाय और भेड़-बकरी के पहलौठों का फ़िदिया न लिया जाए, वह पाक हैं; तू उनका खून मज़बह पर छिड़कना और उनकी चर्बी आतिशीन कुर्बानी के तौर पर जला देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे।¹⁸और उनका गोश्त तेरा होगा जिस तरह हिलाई हुई कुर्बानी का सीना और दहनी रान तेरे हैं।

¹⁹~जितनी पाक चीज़ें बनी-इस्राईल उठाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें, उन सभों को मैंने तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को हमेशा के हक़ के तौर पर दिया; यह खुदावन्द के सामने तेरे और तेरी नसल के लिए नमक का दाइमी 'अहद है।"²⁰और खुदावन्द ने हारून से कहा, "उनके मुल्क में तुझे कोई मीरास नहीं मिलेगी और न उनके बीच तेरा कोई हिस्सा होगा क्योंकि बनी-इस्राईल में तेरा हिस्सा और तेरी मीरास मैं हूँ।

²¹और बनी लावी को उस खिदमत के मु'आवज़े में जो वह खेमा-ए-इजितमा'अ में करते हैं मैंने बनी इस्राईल की सारी दहेकी मौरूसी हिस्से के तौर पर दी।"²²और आगे को बनी-इस्राईल खेमा-ए-इजितमा'अ के नज़दीक हरगिज़ न आएँ, ऐसा न हो कि गुनाह उनके सिर लगे और वह मर जाएँ।

²³बल्कि बनी लावी खेमा-ए-इजितमा'अ की खिदमत करें और वहीं उनका बार-ए-गुनाह उठाएँ; तुम्हारी नसल-दर-नसल यह एक दाइमी क़ानून हो, और बनीइस्राईल के बीच उनको कोई मीरास न मिले।"²⁴~क्योंकि मैंने बनी-इस्राईल की दहेकी को, जिसे वह उठाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करेंगे उनका मौरूसी हिस्सा कर दिया है; इसी वजह से मैंने उनके हक़ में कहा है कि बनी-इस्राईल के बीच उनकी कोई मीरास न मिले।"

²⁵और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,²⁶~"तू लावियों से इतना कह देना कि जब तुम बनी-इस्राईल से उस दहेकी को लो जिसे मैंने उनकी तरफ़ से तुम्हारा मौरूसी हिस्सा कर दिया है, तो तुम उस दहेकी की दहेकी खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी के लिए पेश करना।"²⁷और यह तुम्हारी उठाई हुई कुर्बानी तुम्हारी तरफ़ से ऐसी ही समझी जाएगी जैसे खलिहान का गल्ला और कोल्हू की मय समझी जाती है।

²⁸इस तरीक़े से तुम भी अपनी सब दहेकियों में से जो तुम को बनी इस्राईल की तरफ़ से मिलेगी खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी पेश करना, और खुदावन्द की यह उठाई हुई कुर्बानी हारून काहिन को देना।"²⁹जितने नज़राने तुम को मिलें उनमें से उनका अच्छे से अच्छा हिस्सा, जो पाक किया गया है और खुदावन्द का है, तुम उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करना।

³⁰इसलिए तू उनसे कह देना कि जब तुम इनमें से उनका अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो वह लावियों के हक़ में खलिहान के भरे गल्ले और कोल्हू की भरी मय के बराबर का हिसाब होगा।"³¹~और इनको तुम अपने घरानों के साथ हर जगह खा सकते हो, क्योंकि यह उस खिदमत के बदले तुम्हारा मजदूरी है जो तुम खेमा-ए-इजितमा'अ में करोगे।"³²~और जब तुम उसमें से अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो तुम उसकी वजह से गुनाहगार न ठहरोगे; और खबरदार बनी इस्राईल की पाक चीज़ों को नापाक न करना ताकि तुम हलाक न हो।

Chapter 19

¹और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, ²कि "शरी'अत के जिस क़ानून का हुक्म खुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि तू बनी-इसाईल से कह कि वह तेरे पास एक बेदाग़ और बे-'ऐब सुख रंग की बछिया लाएँ, जिस पर कभी बोझ न रखवा गया हो।

³और तुम उसे लेकर इली'अज़र काहिन को देना कि वह उसे लश्करगाह के बाहर ले जाए, और कोई उसे उसी के सामने ज़बह कर दे; ⁴और इली'अज़र काहिन अपनी उंगली से उसका कुछ खून लेकर उसे खेमा-ए-इजितमा'अ के आगे की तरफ़ सात बार छिड़के। ⁵फिर कोई उसकी आँखों के सामने उस गाय को जला दे; या'नी उसका चमड़ा, और गोशत, और खून, और गोबर, इन सब को वह जलाए। ⁶फिर काहिन देवदार की लकड़ी और जूफ़ा और सुख कपड़ा लेकर उस आग में जिसमें गाय जलती हो डाल दे।

⁷तब काहिन अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे; इसके बाद वह लश्करगाह के अन्दर आए, फिर भी काहिन शाम तक नापाक रहेगा। ⁸और जो उस गाय को जलाए वह भी अपने कपड़े पानी से धोए और पानी से गुस्ल करे और वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

⁹और कोई पाक शख्स उस गाय की राख को बटोरे, और उसे लश्करगाह के बाहर किसी पाक जगह में धर दे; यह बनी-इसाईल की जमा'अत के लिए नापाकी दूर करने के पानी के लिए रखवी रहे, क्योंकि यह खता की कुर्बानी है। ¹⁰और जो उस गाय की राख को बटोरे वह भी अपने कपड़े धोए और वह भी शाम तक नापाक रहेगा, और यह बनी-इसाईल के और उन परदेसियों के लिए जो उनमें क़याम करते हैं एक दाइमी क़ानून होगा।

¹¹~'जो कोई किसी आदमी की लाश को छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। ¹²~ऐसा आदमी तीसरे दिन उस राख से अपने को साफ़ करे तो वह सातवें दिन पाक ठहरेगा लेकिन अगर वह तीसरे दिन अपने को साफ़ न करे तो वह सातवें दिन पाक नहीं ठहरेगा। ¹³जो कोई आदमी की लाश को छूकर अपने को साफ़ न करे वह खुदावन्द के घर को नापाक करता है, वह शख्स इसाईल में से अलग किया जाएगा क्योंकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है उसकी नापाकी अब तक उस पर है।

¹⁴~अगर कोई आदमी किसी खेमे में मर जाए तो उसके बारे में शरा' यह है, कि जितने उस खेमे में आएँ और जितने उस खेमे में रहते हों वह सात दिन तक नापाक रहेंगे। ¹⁵और हर एक खुला बर्तन जिसका ढकना उस पर बन्धा न हो नापाक ठहरेगा। ¹⁶और जो कोई मैदान में तलवार के मक़तूल को या मुर्दे को या आदमी की हड्डी को या किसी क़ब्र को छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा।

¹⁷और नापाक आदमी के लिए उस जली हुई खता की कुर्बानी की राख को किसी बर्तन में लेकर उस पर बहता पानी डालें। ¹⁸फिर कोई पाक आदमी जूफ़ा लेकर और उसे पानी में डुबो-डुबोकर उस खेमे पर, और जितने बर्तन और आदमी वहाँ हों उन पर और जिस शख्स ने हड्डी को, या-मक़तूलको, या मुर्दे को, या क़ब्र को छुआ है उस पर छिड़के। ¹⁹~वह पाक आदमी तीसरे दिन और सातवें दिन उस नापाक आदमी पर इस पानी को छिड़के और सातवें दिन उसे साफ़ करे फिर वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, तो वह शाम को पाक होगा।

²⁰~'लेकिन जो कोई नापाक हो और अपनी सफ़ाई न करे, वह शख्स जमा'अत में से अलग किया जाएगा क्योंकि उसने खुदावन्द के हैकल को नापाक किया नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है। ²¹और यह उनके लिए एक दाइमी क़ानून हो; जो नापाकी दूर करने के पानी को लेकर छिड़के वह अपने कपड़े धोए, और जो कोई नापाकी दूर करने के पानी को छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा। ²²और जिस किसी चीज़ को वह नापाक आदमी छुए-वह चीज़ नापाक ठहरेगी, और जो कोई उस चीज़ को छू ले वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

Chapter 20

¹और पहले महीने में बनी-इसाईल की सारी जमा'अत सीन के जंगल में आ गई और वह लोग क्रादिस में रहने लगे, और मरियम ने वहाँ वफ़ात पाई और वहीं दफ़न हुई।

²और जमा'अत के लोगों के लिए वहाँ पानी न मिला, इसलिए वह मूसा और हारून के बरखिलाफ़ इकट्ठे हुए।³और लोग मूसा से झगड़ने और यह कहने लगे, "हाय, काश हम भी उसी वक़्त मर जाते जब हमारे भाई खुदावन्द के सामने मरे।

⁴तुम खुदावन्द की जमा'अत को इस जंगल में क्यों ले आए हो कि हम भी और हमारे जानवर भी यहाँ मरें?" और तुम ने क्यों हम को मिस्र से निकाल कर इस बुरी जगह पहुँचाया है? यह तो बोन की और अंजीरों और ताकों और अनार की जगह नहीं है बल्कि यहाँ तो पीने के लिए पानी तक हासिल नहीं।"

⁶और मूसा और हारून जमा'अत के पास से जाकर खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर आँधे मुँह गिरे। तब खुदावन्द का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ,

⁷और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,⁸~"उस लाठी को ले और तू और तेरा भाई हारून, तुम दोनों जमा'अत को इकट्ठा करो और उनकी आँखों के सामने उस चट्टान से कहो कि वह अपना पानी दे; और तू उनके लिए~चट्टान-ही से पानी निकालना, यूँ जमा'अत को और उनके चौपायों को पिलाना।"⁹चुनौचे मूसा ने खुदावन्द के सामने से उसी के हुक्म के मुताबिक़ वह लाठी ली।

¹⁰और मूसा और हारून ने जमा'अत को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, और उसने उनसे कहा, "सुनो, ऐ बागियों, क्या हम तुम्हारे लिए इसी चट्टान से पानी निकालें?"¹¹तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस चट्टान पर दो बार लाठी मारी, और कसरत से पानी बह निकला और जमा'अत ने और उनके चौपायों ने पिया।

¹²लेकिन मूसा और हारून से खुदावन्द ने कहा, "चूँकि तुम ने मेरा यक़ीन नहीं किया कि बनी-इसाईल के सामने मेरी तक्रदीस करते, इसलिए तुम इस जमा'अत को उस मुल्क में जो मैंने उनको दिया है नहीं पहुँचाने पाओगे।"¹³मरीबा का चश्मा यही है क्योंकि बनी-इसाईल ने खुदावन्द से झगड़ा किया और वह उनके बीच कुदूस साबित हुआ।

¹⁴और मूसा ने क्रादिस से अदोम के बादशाह के पास क्रासिद रवाना किए और कहला भेजा कि "तेरा भाई इसाईल यह 'अज़ करता है, कि तू हमारी सारी मुसीबतों से जो हम पर आई वाकिफ़ है;¹⁵~कि हमारे बाप दादा मिस्र में गए और हम बहुत मुद्दत तक मिस्र में रहे, और मिस्रियों ने हम से और हमारे बाप दादा से बुरा सुलूक किया।¹⁶और जब हमने खुदावन्द से फ़रियाद की तो उसने हमारी सुनी, और एक फ़रिश्ते को भेज कर हम को मिस्र से निकाल ले आया है, और अब हम क्रादिस शहर में हैं जो तेरी सरहद के आखिर में वाक़े' है।

¹⁷इसलिए हम को अपने मुल्क में से होकर जाने की इजाज़त दे। हम खेतों और ताकिस्तानों~में से होकर नहीं गुज़रेंगे, और न कुओं का पानी पीएँगे; हम शाहराह पर चल कर जाएँगे और दहने या बाएँ हाथ नहीं मुड़ेंगे, जब तक तेरी सरहद से बाहर निकल न जाएँ।"

¹⁸लेकिन शाह-ए-अदोम ने कहला भेजा, "तू मेरे मुल्क से होकर जाने नहीं पाएगा, वरना मैं तलवार लेकर तेरा सामना करूँगा।"¹⁹बनी-इसाईल ने उसे फिर कहला भेजा कि "हम सड़क ही सड़क जाएँगे, और अगर हम या हमारे चौपाये तेरा पानी भी पीएँ तो उसका दाम देंगे; हम को और कुछ नहीं चाहिए अलावा इसके कि हम को पॉव-पॉव चल कर निकल जाने दे।"

²⁰लेकिन उसने कहा, "तू हरगिज़ निकलने नहीं पाएगा।" और अदोम उसके मुकाबले के लिए बहुत से आदमी और हथियार लेकर निकल आया।²¹~यूँ अदोम ने इसाईल को अपनी हदों से गुज़रने का रास्ता देने से इन्कार किया, इसलिए इसाईल उसकी तरफ़ से मुड़ गया।

²²और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत क्रादिस से रवाना होकर कोह-ए-हूर पहुँची।²³और खुदावन्द ने कोह-ए-हूर पर, जो अदोम की सरहद से मिला हुआ था, मूसा और हारून से कहा,²⁴~"हारून अपने लोगों में जा मिलेगा, क्योंकि वह उस मुल्क में जो मैंने बनी-इसाईल को दिया है जाने नहीं पाएगा, इसलिए कि मरीबा के चश्मे पर तुम ने मेरे कलाम के खिलाफ़ 'अमल किया।

²⁵~इसलिए तू हारून और उसके बेटे इली'अज़र को अपने साथ लेकर कोह-ए-हूर के ऊपर आ जा।²⁶और हारून के लिबास को उतार कर उसके बेटे इली'अज़र को पहना देना, क्योंकि हारून वहीं वफ़ात पाकर अपने लोगों में जा मिलेगा।"

²⁷और मूसा ने खुदा के हुक्म के मुताबिक़ 'अमल किया, और वह सारी जमा'अत की आँखों के सामने कोह-ए-हूर पर चढ़ गए।²⁸और मूसा ने हारून के लिबास को उतार कर उस के बेटे इली'अज़र को पहना दिया, और हारून ने वहीं पहाड़ की चोटी पर रहलत की। तब मूसा और इली'अज़र पहाड़ पर से उतर आए।

²⁹~जब जमा'अत ने देखा कि हारून ने वफ़ात पाई तो इसाईल के सारे घराने के लोग हारून पर तीस दिन तक मातम करते रहे।

Chapter 21

¹और जब 'अराद के कना'नी बादशाह ने जो दख्खिन की तरफ़ रहता था सुना, कि इस्राईली अथारिम की राह से आ रहे हैं, तो वह इस्राईलियों से लड़ा और उनमें से कई एक को गुलाम कर लिया।²~तब इस्राईलियों ने खुदावन्द के सामने मिन्नत मानी और कहा कि "अगर तू सचमुच उन लोगों को हमारे हवाले कर दे तो हम उनके शहरों को बर्बाद कर देंगे।"³और खुदावन्द ने इस्राईल की फ़रियाद सुनी और कना'नियों को उन के हवाले कर दिया; और उन्होंने उनको और उनके शहरों को बर्बाद कर दिया, चुनाँचे उस जगह का नाम भी हुरमा पड़ गया।

⁴फिर उन्होंने कोह-ए-होर से रवाना होकर बहर-ए-कुलजुम का रास्ता लिया, ताकि मुल्क-ए-अदोम के बाहर-बाहर घूम कर जाएँ; लेकिन उन लोगों की जान उस रास्ते से 'आजिज़ आ गई।'⁵और लोग खुदा की और मूसा की-शिकायत करके कहने लगे कि "तुम क्यों हम को मिस्र से वीरान में मरने के लिए ले आए? यहाँ तो न रोटी है, न पानी, और हमारा जी इस निकम्मी ख़ुराक से कराहियत करता है।"

⁶तब खुदावन्द ने उन लोगों में जलाने वाले साँप भेजे, उन्होंने लोगों को काटा और बहुत से इस्राईली मर गए।⁷तब वह लोग मूसा के पास आकर कहने लगे कि "हम ने गुनाह किया, क्योंकि हम ने खुदावन्द की और तेरी शिकायत की; इसलिए तू खुदावन्द से दु'आ कर कि वह इन साँपों को हम से दूर करे।" चुनाँचे मूसा ने लोगों के लिए दु'आ की।

⁸~तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "एक जलाने वाला साँप बना ले और उसे एक बल्ली पर लटका दे, और जो साँप का डसा हुआ उस पर नज़र करेगा वह ज़िन्दा बचेगा।"⁹चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर उसे बल्ली पर लटका दिया; और ऐसा हुआ कि जिस जिस साँप के डसे हुए आदमी ने उस पीतल के साँप पर निगाह की वह ज़िन्दा बच गया।

¹⁰और बनी-इस्राईल ने वहाँ से रवानगी की और ओबूत में आकर ख़ेमे डाले।¹¹फिर ओबूत से कूच किया और 'अय्ये' अबारीम में, जो पश्चिम की तरफ़ मोआब के सामने के वीरान में वाके' है ख़ेमे डाले।

¹²और वहाँ से रवाना होकर वादी-ए-ज़रद में ख़ेमे डाले।¹³~जब वहाँ से चले तो अरनोन से पार हो कर, जो अमोरियों की सरहद से निकल कर वीरान में बहती है, ख़ेमे डाले: क्योंकि मोआब और अमोरियों के बीच अरनोन मोआब की सरहद है।

¹⁴इसी वजह से खुदावन्द के जंग नामे में यूँ लिखा है : "वाहेब जो सूफ़ा में है, और अरनोन के नाले¹⁵ और उन नालों का ढलान जो 'आर शहर तक जाता है, और मोआब की सरहद से मुत्तसिल है।"

¹⁶फिर इस जगह से वह बैर को गए; यह वही कुवाँ है जिसके बारे में खुदावन्द ने मूसा से कहा था कि "इन लोगों को एक जगह जमा' कर, और मैं इनको पानी ढूँगा।"

¹⁷तब इस्राईल ने यह गीत गाया: 'ऐ कुएँ, तू उबल आ! तुम इस कुएँ की ता'रीफ़ गाओ।'¹⁸यह वही कुआँ है जिसे रईसों ने बनाया, और क्रौम के अमीरों ने अपने 'असा और लाठियों से खोदा।" तब वह उस जंगल से मत्तना को गए,

¹⁹और मत्तना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामात को,²⁰और बामात से उस वादी में पहुँच कर जो मोआब के मैदान में है, पिसगा की उस चोटी तक निकल गए जहाँ से यशीमोन नज़र आता है।

²¹और इस्राईलियों ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के पास क़ासिद रवाना किए और यह कहला भेजा कि;²²"हम को अपने मुल्क से गुज़र जाने दे; हम खेतों और अँगूर के बाग़ों में नहीं घुसंगे, और न कुओं का पानी पीएँगे, बल्कि शाहराह से सीधे चले जाएँगे जब तक तेरी हद के बाहर न हो जाएँ।"²³लेकिन सीहोन ने इस्राईलियों को अपनी हद में से गुज़रने न दिया; बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को इकट्ठा करके इस्राईलियों के मुक़ाबले के लिए वीरान में पहुँचा, और उसने यहज़ में आकर इस्राईलियों से जंग की।

²⁴और इस्राईल ने उसे तलवार की धार से मारा और उसके मुल्क पर, अरनोन से लेकर यब्बोक तक जहाँ बनी 'अम्मोन की सरहद है क़ब्ज़ा कर ~लिया; क्योंकि बनी 'अम्मोन की सरहद मज़बूत थी।²⁵तब बनी-इस्राईल ने यहाँ के सब शहरों को ले लिया और अमोरियों के सब शहरों में, या'नी हस्बोन और उसके आस पास के कस्बों में बनी-इस्राईल बस गए।²⁶हस्बोन अमोरियों के बादशाह सीहोन का शहर था, इसने मोआब के अगले बादशाह से लड़कर उसके सारे मुल्क को, अरनोन तक उससे छीन लिया था।

²⁷~इसी वजह से मिसाल कहने वालों की यह कहावत है कि "हस्बोन में आओ, ताकि सीहोन का शहर बनाया और मज़बूत किया जाए।"²⁸क्योंकि हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला बरामद हुआ, इसने मोआब के 'आर शहर को और अरनोन के ऊँचे मक़ामात के सरदारों को भसम कर दिया।

²⁹ऐ, मोआब! तुझ पर नोहा है। ऐ कमोस के मानने वालों! तुम हलाक हुए, उसने अपने बेटों को जो भागे थे और अपनी बेटियों को गुलामों की तरह अमोरियों के बादशाह सीहोन के हवाले किया।³⁰हमने उन पर तीर चलाए, इसलिए हस्बोन दीबोन तक तबाह हो गया, बल्कि हम ने नुफ़ा तक सब कुछ उजाड़ दिया। वह नुफ़ा जो मीदबा से मुत्तसिल है।"

³¹~तब बनी-इस्राईल अमोरियों के मुल्क में रहने लगे।³²और मूसा ने या'ज़ेर की जासूसी कराई; फिर उन्होंने उसके गाँव ले लिए और अमोरियों को जो वहाँ थे निकाल दिया।

³³और वह घूम कर बसन के रास्ते से आगे को बढ़े और बसन का बादशाह 'ओज अपने सारे लश्कर को लेकर निकला, ताकि अदर'ई में उनसे जंग करे।³⁴~और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "उससे मत डर, क्योंकि मैंने उसे और उसके सारे लश्कर को और उसके मुल्क को तेरे हवाले कर दिया है। इसलिए जैसा तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ जो हस्बोन में रहता था किया है, वैसा ही इसके साथ भी करना।"³⁵चुनाँचे उन्होंने उसको और उसके बेटों और सब लोगों को यहाँ तक मारा कि उसका कोई बाक़ी न रहा, और उसके मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लिया।

Chapter 22

¹फिर बनी-इसाईल रवाना हुए और दरिया-ए-यरदन के पार मोआब के मैदानों में यरीहू के सामने खेमे खड़े किए।

²और जो कुछ बनी-इसाईल ने अमोरियों के साथ किया था वह सब बलक़ बिन सफ़ोर ने देखा था।³इसलिए मोआबियों को इन लोगों से बड़ा खौफ़ आया, क्योंकि यह बहुत से थे; गर्ज़ मोआबी बनी-इसाईल की वजह से से परेशान हुए।⁴तब मोआबियों ने मिदियानी बुजुर्गों से कहा, "जो कुछ हमारे आस पास है उसे यह लश्कर ऐसा चट कर जाएगा जैसे बैल मैदान की घास को चट कर जाता है।" उस वक़्त बलक़ बिन सफ़ोर मोआबियों का बादशाह था।

⁵इसलिए उस ने ब'ओर के बेटे बल'आम के पास फ़तोर को, जो बड़े दरिया कि किनारे उसकी क़ौम के लोगों का मुल्क था, क़ासिद रवाना किए कि उसे बुला लाएँ और यह कहला भेजा, "देख, एक क़ौम मिस्र से निकलकर आई है, उनसे ज़मीन की सतह छिप गई है; अब वह मेरे सामने ही आकर जम गए हैं।⁶इसलिए अब तू आकर मेरी खातिर इन लोगों पर ला'नत कर, क्योंकि यह मुझ से बहुत क़वी हैं; फिर मुम्किन है कि मैं ग़ालिब आऊँ, और हम सब इनको मार कर इस मुल्क से निकाल दें; क्योंकि यह मैं जानता हूँ कि जिसे तू बरकत देता है उसे बरकत मिलती है, और जिस पर तू ला'नत करता है वह मला'ऊन होता है।"

⁷तब मोआब के बुजुर्ग और मिदियान के बुजुर्ग फ़ाल खोलने का इनाम साथ लेकर रवाना हुए और बल'आम के पास पहुँचे और बलक़ का पैग़ाम उसे दिया।

⁸उसने उनसे कहा, "आज रात यहीं ठहरो और जो कुछ खुदावन्द मुझ से कहेगा, उसके मुताबिक़ मैं तुम को जवाब दूँगा।" चुनौचे मोआब के हाकिम बल'आम के साथ ठहर गए।

⁹और खुदा ने बल'आम के पास आकर कहा, "तेरे यहाँ यह कौन आदमी हैं?"¹⁰बल'आम ने खुदा से कहा, "मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मेरे पास कहला भेजा है, कि¹¹जो कौम मिस्र से निकल कर आई है उससे ज़मीन की सतह छिप गई है, इसलिए तू अब आकर मेरी खातिर उन पर ला'नत कर, फिर मुम्किन है कि मैं उनसे लड़ सकूँ और उनको निकाल दूँ।"

¹²खुदा ने बल'आम से कहा, "तू इनके साथ मत जाना, तू उन लोगों पर ला'नत न करना, इसलिए कि वह मुबारक हैं।"¹³बल'आम ने सुबह को उठ कर बलक़ के हाकिमों से कहा, "तुम अपने मुल्क को लौट जाओ, क्योंकि खुदावन्द मुझे तुम्हारे साथ जाने की इजाज़त नहीं देता।"¹⁴और मोआब के हाकिम चले गए और जाकर बलक़ से कहा, 'बल'आम हमारे साथ आने से इंकार करता है।"

¹⁵तब दूसरी दफ़ा बलक़ ने और हाकिमों को भेजा, जो पहलों से बढ़ कर मु'अज़िज़ और शुमार में भी ज़्यादा थे।¹⁶उन्होंने बल'आम के पास जाकर उस से कहा, "बलक़ बिन सफ़ोर ने यूँ कहा है, कि मेरे पास आने में तेरे लिए कोई रुकावट न हो,¹⁷क्योंकि मैं बहुत 'आला मन्सब पर तुझे मुस्ताज़ करूँगा, और जो कुछ तू मुझ से कहे मैं वही करूँगा; इसलिए तू आ जा और मेरी खातिर इन लोगों पर ला'नत कर।"

¹⁸बल'आम ने बलक़ के खादिमों को जवाब दिया, "अगर बलक़ अपना घर भी चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे, तो भी मैं खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म से तजावुज़ नहीं कर सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ा कर माँऊँ।"¹⁹इसलिए अब तुम भी आज रात यहीं ठहरो, ताकि मैं देखूँ कि खुदावन्द मुझ से और क्या कहता है।"²⁰और खुदा ने रात को बल'आम के पास आ कर उससे कहा, "अगर यह आदमी तुझे बुलाने को आए हुए हैं तो तू उठ कर उनके साथ जा; मगर जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी पर 'अमल करना।"

²¹तब बल'आम सुबह को उठा, और अपनी गधी पर ज़ीन रख कर मोआब के हाकिमों के साथ चला।²²और उसके जाने की वजह से खुदा का ग़ज़ब भड़का, और खुदावन्द का फ़रिश्ता उससे मुज़ाहमत करने के लिए रास्ता रोक कर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गधी पर सवार था और उसके साथ उसके दो मुलाज़िम थे।

²³और उस गधी ने खुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा, कि वह अपने हाथ में नंगी तलवार लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है; तब गधी रास्ता छोड़कर एक तरफ़-हो गई और खेत में चली गई। तब बल'आम ने गधी को मारा ताकि उसे रास्ते पर ले आए।

²⁴तब खुदावन्द का फ़रिश्ता एक नीची राह में जा खड़ा हुआ, जो ताकिस्तानों के बीच से होकर निकलती थी और उसकी दोनों तरफ़ दीवारें थीं।²⁵गधी खुदावन्द के फ़रिश्ते को देख कर दीवार से जा लगी और बल'आम का पाँव दीवार से पिचा दिया, इसलिए उसने फिर उसे मारा।

²⁶तब खुदावन्द का फ़रिश्ता आगे बढ़ कर एक ऐसे तंग मक़ाम में खड़ा हो गया, जहाँ दहनी या बाई तरफ़ मुड़ने की जगह न थी।²⁷फिर जो गधी ने खुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा तो बल'आम को लिए हुए बैठ गई; फिर तो बल'आम झल्ला उठा और उसने गधी को अपनी लाठी से मारा।

²⁸तब खुदावन्द ने गधी की ज़बान खोल दी और उसने बल'आम से कहा, "मैंने तेरे साथ क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?"²⁹बल'आम ने गधी से कहा, "इसलिए कि तूने मुझे चिढ़ाया; काश मेरे हाथ में तलवार होती, तो मैं तुझे अभी मार डालता।"³⁰गधी ने बल'आम से कहा, "क्या मैं तेरी वही गधी नहीं हूँ जिस पर तू अपनी सारी 'उम्र आज तक सवार होता आया है? क्या मैं तेरे साथ पहले कभी ऐसा करती थी?" उसने कहा, "नहीं।"

³¹तब खुदावन्द ने बल'आम की आँखें खोलीं, और उसने खुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा कि वह अपने हाथ में नंगी तलवार लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है, तब उसने अपना सिर झुका लिया और आँधा हो गया।³²खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे कहा, "तू ने अपनी गधी को तीन बार क्यों मारा? देख, मैं तुझ से मुज़ाहमत करने को आया हूँ, इसलिए कि तेरी चाल मेरी नज़र में टेढ़ी है।"³³और गधी ने मुझ को देखा, और वह तीन बार मेरे सामने से मुड़ गई। अगर वह मेरे सामने से न हटती तो मैं ज़रूर तुझ को मार ही डालता, और उसको ज़िन्दा छोड़ देता।"

³⁴बल'आम ने खुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा, "मुझ से खता हुई, क्योंकि मुझे मा'लूम न था कि तू मेरा रास्ता रोके खड़ा है। इसलिए अगर अब तुझे बुरा लगता है तो मैं लौट जाता हूँ।"³⁵खुदावन्द के फ़रिश्ते ने बल'आम से कहा, "तू इन आदमियों के साथ चला ही जा, लेकिन सिर्फ़ वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूँ।" तब बल'आम बलक़ के हाकिमों के साथ गया।

³⁶जब बलक़ ने सुना कि बल'आम आ रहा है, तो वह उसके इस्तक्रबाल के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो अरनोन की सरहद पर उसकी हदों के इन्तिहाई हिस्से में वाक़े था।³⁷तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "क्या मैंने बड़ी उम्मीद के साथ तुझे नहीं बुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यों न चला आया? क्या मैं इस क़ाबिल नहीं कि तुझे 'आला मन्सब पर मुस्ताज़ करूँ?"

³⁸बल'आम ने बलक़ को जवाब दिया, "देख, मैं तेरे पास आ तो गया हूँ लेकिन क्या मेरी इतनी मजाल है कि मैं कुछ बोलूँ? जो बात खुदा मेरे मुँह में डालेगा, वही मैं कहूँगा।"³⁹और बल'आम बलक़ के साथ-साथ चला और वह करयत हुसात में पहुँचे।⁴⁰~बलक़ ने बैल और भेड़ों की कुर्बानी पेश की, और बल'आम और उन हाकिमों के पास जो उसके साथ थे कुर्बानी का गोشت भेजा।

⁴¹दूसरे दिन सुबह को बलक़ बल'आम को साथ लेकर उसे बा'ल के बुलन्द मक़ामों पर ले गया। वहाँ से उसने दूर दूर के इस्राईलियों को देखा।

Chapter 23

¹और बल'आम ने बलक़ से कहा, मेरे लिए यहाँ सात मज़बहे बनवा दे, और सात बछड़े और सात मेंढे मेरे लिए यहाँ तैयार कर रख।"²बलक़ ने बल'आम के कहने के मुताबिक़ किया, और बलक़ और बल'आम ने हर मज़बह पर एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया।³फिर बल'आम ने बलक़ से कहा, "तू अपनी सोख़तनी कुर्बानी के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूँ, मुम्किन है कि खुदावन्द मुझ से मुलाक़ात करने को आए। इसलिए जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करेगा, मैं तुझे बताऊँगा।" और वह एक बरहना पहाड़ी पर चला गया।

⁴और खुदा बल'आम से मिला; उसने उससे कहा मैंने सात मज़बहे तैयार किए हैं और उन पर एक-एक बछड़ा और एक-एक मेंढा चढ़ाया है।"⁵तब खुदावन्द ने एक बात बल'आम के मुँह में डाली और कहा कि "बलक़ के पास लौट जा, और यूँ कहना।"⁶तब वह उसके पास लौट कर आया और क्या देखता है, कि वह अपनी सोख़तनी कुर्बानी के पास मोआब के सब हाकिमों के साथ खड़ा है।

⁷तब उसने अपनी मिसाल शुरू की, और कहने लगा, "बलक़ ने मुझे अराम से, या'नी शाह-ए-मोआब ने पश्चिम के पहाड़ों से बुलवाया, कि आ जा, और मेरी खातिर या'कूब पर ला'नत कर, आ, इस्राईल को फटकार!"⁸मैं उस पर ला'नत कैसे करूँ, जिस पर खुदा ने ला'नत नहीं की? मैं उसे कैसे फटकाऊँ, जिसे खुदावन्द ने नहीं फटकारा

⁹चट्टानों की चोटी पर से वह मुझे नज़र आते हैं, और पहाड़ों पर से मैं उनको देखता हूँ। देख, यह वह क्रौम है जो अकेली बसी रहेगी, और दूसरी क्रौमों के साथ मिल कर इसका शुमार न होगा।

¹⁰~या'कूब की गर्द के ज़रों को कौन गिन सकता है, और बनीइस्राईल की चौथाई को कौन शुमार कर सकता है? काश, मैं सादिकों की मौत मरूँ और मेरी 'आक्रबत भी उन ही की तरह हो।"

¹¹तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "ये तूने मुझ से क्या किया? मैंने तुझे बुलवाया ताकि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, और तू ने उनको बरकत ही बरकत दी।"¹²उसने जवाब दिया और कहा क्या मैं उसी बात का खयाल न करूँ, जो खुदावन्द मेरे मुँह में डाले?"

¹³फिर बलक़ ने उससे कहा, "अब मेरे साथ दूसरी जगह चल, जहाँ से तू उनको देख भी सकेगा; वह सब के सब तो तुझे नहीं दिखाई देंगे, लेकिन जो दूर दूर पड़े हैं उनको देख लेगा; फिर तू वहाँ से मेरी खातिर उन पर ला'नत करना।"¹⁴तब वह उसे पिसगा की चोटी पर, जहाँ ज़ोफ़ीम का मैदान है ले गया; वहीं उसने सात मज़बहे बनाए और हर मज़बह पर एक-एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया।¹⁵तब उसने बलक़ से कहा, "तू यहाँ अपनी सोख़तनी कुर्बानी के पास ठहरा रह, जब कि मैं उधर जाकर खुदावन्द से मिल कर आऊँ।"

¹⁶और खुदावन्द बल'आम से मिला, और उसने उसके मुँह में एक बात डाली, और कहा, 'बलक़ के पास लौट जा, और यूँ कहना।"¹⁷और जब वह उसके पास लौटा तो क्या देखता है, कि वह अपनी सोख़तनी कुर्बानी के पास मोआब के हाकिमों के साथ खड़ा है। तब बलक़ ने उससे पूछा, "खुदावन्द ने क्या कहा है?"¹⁸तब उसने अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, "उठ ऐ बलक़, और सुन, ऐ सफ़ोर के बेटे! मेरी बातों पर कान लगा,

¹⁹~खुदा इन्सान नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमज़ाद है कि अपना इरादा बदले। क्या, जो कुछ उसने कहा उसे न करे? या, जो फ़रमाया है उसे पूरा न करे?

²⁰देख, मुझे तो बरकत देने का हुक्म मिला है; उसने बरकत दी है, और मैं उसे पलट नहीं सकता।

²¹वह या'कूब में बदी नहीं पाता, और न इस्राईल में कोई खराबी देखता है। खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ है, और बादशाह के जैसी ललकार उन लोगों के बीच में है।²²खुदा उनको मिस्र से निकाल कर लिए आ रहा है, उनमें जंगली साँड के जैसी ताक़त है।

²³या'कूब पर कोई जादू नहीं चलता, और न इस्राईल के खिलाफ़ फ़ाल कोई चीज़ है; बल्कि या'कूब और इस्राईल के हक़ में अब यह कहा जाएगा, कि खुदा ने कैसे कैसे काम किए।

²⁴~देख, यह गिरोह शेरनी की तरह उठती है। और शेर की तरह तन कर खड़ी होती है। वह अब नहीं लेटने को, जब तक शिकार न खा ले। और मक़तूलों~का खून न पी ले।"

²⁵तब बलक़ ने बल'आम से कहा, "न तो तू उन पर ला'नत ही कर और न उनको बरकत ही दे।"²⁶~बल'आम ने जवाब दिया, और बलक़ से कहा, "क्या मैंने तुझ से नहीं कहा कि जो कुछ खुदावन्द कहे, वही मुझे करना पड़ेगा?"²⁷तब बलक़ ने बल'आम से कहा, 'अच्छा आ, मैं तुझ को एक और जगह ले जाऊँ; शायद खुदा को पसन्द आए कि तू मेरी खातिर वहाँ से उन पर ला'नत करे।"

²⁸तब बलक़ बल'आम को फ़गूर की चोटी पर, जहाँ से यशीमोन नज़र आता है ले गया।²⁹और बल'आम ने बलक़ से कहा कि "मेरे लिए यहाँ सात मज़बहे बनवा और सात बैल और सात ही मेंढे मेरे लिए तैयार कर रख।"³⁰चुनाँचे बलक़ ने, जैसा बल'आम ने कहा वैसा ही किया और हर मज़बह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया।

Chapter 24

¹जब बल'आम ने देखा कि खुदावन्द को यही मन्ज़ूर है कि इस्राईल को बरकत दे, तो वह पहले की तरह शगून देखने को इधर उधर न गया, बल्कि वीरान की तरफ अपना मुँह कर लिया।

²और बल'आम ने निगाह की, और देखा कि बनी-इस्राईल अपने-अपने क़बीले की तरतीब से मुकीम हैं। और खुदा की रूह उस पर नाज़िल हुई।³और उसने अपनी मसल शुरू की और कहने लगा, ब'ओर का बेटा बल'आम कहता है, या'नी वही शख्स जिसकी आँखें बन्द थीं यह कहता है,

⁴बल्कि यह उसी का कहना है जो खुदा की बातें सुनता है, और सिज्दे में पड़ा हुआ खुली आँखों से क़ादिर-ए-मुतलक का ख़्वाब देखता है।⁵ऐ या'क़ूब, तेरे डेरे, ऐ इस्राईल, तेरे खेमों कैसे खुशनुमा हैं!

⁶वह ऐसे फैले हुए हैं, जैसे वादियाँ और दरिया कि किनारे बाग़, और खुदावन्द के लगाए हुए 'ऊद के दरख़्त और नदियों के किनारे देवदार के दरख़्त।

⁷उसके चरसों से पानी बहेगा, और सेराब खेतों में उसका बीज पड़ेगा। उसका बादशाह अज़ाज़ से बढ़कर होगा, और उसकी सल्तनत को 'उरूज़ हासिल होगा।

⁸खुदा उसे मिस्र से निकाल कर लिए आ रहा उसमें जंगली सांड के जैसी ताक़त है, वह उन क़ौमों को जो उसकी दुश्मन हैं, चट कर जाएगा, और उनकी हड्डियों को तोड़ डालेगा और उनको अपने तीरों से छेद-छेद कर मारेगा।

⁹वह दुबक कर बैठा है, वह शेर की तरह बल्कि शेरनी की तरह लेंट गया है, अब कौन उसे छेड़े? जो तुझे बरकत दे वह मुबारक, और जो तुझ पर ला'नत करे वह मला'ऊन हो।"

¹⁰तब बलक़ को बल'आम पर बड़ा गुस्सा आया, और वह अपने हाथ पीटने लगा। फिर उसने बल'आम से कहा, "मैंने तुझे बुलाया कि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, लेकिन तू ने तीनों बार उनको बरकत ही बरकत दी।"¹¹इसलिए अब तू अपने मुल्क को भाग जा। मैंने तो सोचा था कि तुझे 'आला मन्सब पर मुस्ताज़ करूँ, लेकिन खुदावन्द ने तुझे ऐसे ऐज़ाज़ से महरूम रखवा।"

¹²बल'आम ने बलक़ को जवाब दिया, "क्या मैंने तेरे उन क़ासिदों से भी जिनको तूने मेरे पास भेजा था। यह नहीं कह दिया था, कि¹³अगर बलक़ अपना घर चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे तोभी मैं अपनी मर्ज़ी से भला या बुरा करने की खातिर खुदावन्द के हुक्म से तज़ावुज़ नहीं कर सकता, बल्कि जो कुछ खुदावन्द कहे मैं वही कहूँगा?"¹⁴और अब मैं अपनी क़ौम के पास लौट कर जाता हूँ, इसलिए तू आ, मैं तुझे आगाह कर दूँ कि यह लोग तेरी क़ौम के साथ आखिरी दिनों में क्या क्या करेंगे।"

¹⁵चुनौचे उसने अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, ब'ओर का बेटा बल'आम कहता है, या'नी वही शख्स जिसकी आँखें बन्द थीं यह कहता है,

¹⁶बल्कि यह उसी का कहना है जो खुदा की बातें सुनता है, और हक़ता'ला का इरफ़ान रखता है, और सिज्दे में पड़ा हुआ खुली आँखों से क़ादिर-ए-मुतलक का ख़्वाब देखता है;

¹⁷मैं उसे देखूँगा तो सही, लेकिन अभी नहीं; वह मुझे नज़र भी आएगा, लेकिन नज़दीक से नहीं; या'क़ूब में से एक सितारा निकलेगा और इस्राईल में से एक 'असा उठेगा, और मोआब के 'इलाक़े को मार मार कर साफ़ कर देगा, और सब हंगामा करने वालों को हलाक कर डालेगा।

¹⁸और उसके दुश्मन अदोम और श'ईर दोनों उसके क़ब्ज़े में होंगे, और इस्राईल दिलावरी करेगा।¹⁹और या'क़ूब ही की नसल से वह फ़रमौरवाँ उठेगा, जो शहर के बाक़ी मान्दा लोगों को हलाक कर डालेगा।"

²⁰फिर उसने 'अमालीक़ पर नज़र करके अपनी यह मसल शुरू की, और कहने लगा, 'क़ौमोंमें पहली क़ौम 'अमालीक़ की थी, लेकिन उसका अन्जाम हलाकत है।"

²¹और कीनियों की तरफ़ निगाह करके यह मिसाल शुरू की, और कहने लगा तेरा घर मज़बूत है और तेरा आशियाना भी चट्टान पर बना हुआ है।²²तोभी क़ीन ख़ाना ख़राब होगा, यहाँ तक कि असूर तुझे गुलाम करके ले जाएगा।"

²³और उसने यह मसल भी शुरू की, और कहने लगा, "हाय, अफ़सोस! जब खुदा यह करेगा तो कौन जीता बचेगा?"²⁴लेकिन कितीम के साहिल से जहाज़ आएँगे, और वह असूर और इब्र दोनों को दुख देंगे। फिर वह भी हलाक हो जाएगा।"²⁵इसके बाद बल'आम उठ कर रवाना हुआ और अपने मुल्क को लौटा, और बलक़ ने भी अपनी राह ली।

Chapter 25

¹और इस्राईली शिक्तीम में रहते थे, और लोगों ने मोआबी 'औरतों के साथ हरामकारी शुरू' कर दी।²क्योंकि वह~'औरतें इन लोगों को अपने मा'बूदों की कुर्बानियों में आने की दावत देती थीं, और यह लोग जाकर खाते और उनके मा'बूदों को सिज्दा करते थे।³~यूँ इस्राईली बा'ल फ़गूर की 'इबादत लगे। तब खुदावन्द का क्रहर बनीइस्राईल पर भड़का,

⁴और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "क्रौम के सब सरदारों को पकड़कर खुदावन्द के सामने धूप में टाँग दे, ताकि खुदावन्द का शदीद क्रहर इस्राईल पर से टल जाए।"⁵तब मूसा ने बनी-इस्राईल के हाकिमों से कहा, "तुम्हारे जो-जो आदमी बा'ल फ़गूर की 'इबादत करने लगे हैं उनको क्रत्ल कर डालो।"

⁶और जब बनी-इस्राईल की जमा'अत खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर रो रही थी, तो एक इस्राईली मूसा और तमाम लोगों की आँखों के सामने एक मिदियानी 'औरत को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया।⁷जब फ़ीन्हास बिन इली'अज़र बिन हारून काहिन ने यह देखा, तो उसने जमा'अत में से उठ हाथ में एक बछी ली,

⁸और उस मर्द के पीछे जाकर खेमे के अन्दर घुसा और उस इस्राईली मर्द और उस 'औरत दोनों का पेट छेद दिया। तब बनी-इस्राईल में से वबा जाती रही।⁹और जितने इस वबा से मरे उनका शुमार चौबीस हज़ार था।

¹⁰और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,¹¹'फ़ीन्हास बिन इली'अज़र बिन हारून काहिन ने मेरे क्रहर को बनी-इस्राईल पर से हटाया क्योंकि उनके बीच उसे मेरे लिए ग़ैरत आई, इसीलिए मैंने बनी-इस्राईल को~अपनी ग़ैरत के जोश में हलाक नहीं किया।

¹²इसलिए तू कह दे कि मैंने उससे अपना सुलह का 'अहद बाँधा,¹³~और वह उसके लिए और उसके बा'द उसकी नसल के लिए कहानत का 'दाइमी 'अहद होगा; क्योंकि वह अपने खुदा के लिए ग़ैरतमन्द हुआ और उसने बनी-इस्राईल के लिए कफ़़ारा दिया।"

¹⁴उस इस्राईली मर्द का नाम जो उस मिदियानी 'औरत के साथ मारा गया ज़िमरी था, जो सलू~का बेटा और शमाऊन के क़बीले के एक आबाई खान्दान का सरदार था।¹⁵~और जो मिदियानी 'औरत मारी गई उसका नाम कज़बी था, वह सूर की बेटी थी जो मिदियान में एक आबाई खान्दान के लोगों का सरदार था।

¹⁶और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,¹⁷"मिदियानियों को सताना और उनको मारना,¹⁸क्योंकि वह तुम को अपने धोखे के दाम में फँसाकर सताते हैं, जैसा फ़गूर के मु'आमिले में हुआ और कज़बी के मु'आमिले में भी हुआ।" जो मिदियान के सरदार की बेटी और मिदियानियों की बहन थी, और फ़गूर ही के मु'आमिले में वबा के दिन मारी गई।

Chapter 26

¹और वबा के बा'द खुदावन्द ने मूसा और हारून काहिन के बोटे इली'अज़र से कहा कि,²"बनी-इसाईल की सारी जमा'अत में बीस बरस और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के जितने इसाईली जंग करने के क़ाबिल हैं, उन सभों को उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक़ गिनो।"

³चुनाँचे मूसा और इली'अज़र काहिन ने मोआब के मैदानों में जो यरदन के किनारे किनारे यरीहू के सामने हैं, उन लोगों से कहा,⁴कि "बीस बरस और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र के आदमियों को वैसे ही गिन लो जैसे खुदावन्द ने मूसा और बनी-इसाईल को, जब वह मुल्क-ए-मिस्र से निकल आए थे हुक्म किया था।"⁵रूबिन जो इसाईल का पहलौठा था-उसके बेटे यह हैं, या'नी हनूक, जिससे हनूकियों का खान्दान चला; और फ़ल्लू, जिससे फ़लवियों का खान्दान चला;⁶और हसरोन, जिससे हसरोनियों का खान्दान चला; और करमी, जिससे करमियों का खान्दान चला।⁷ये बनी रूबिन के खान्दान हैं, और इनमें से जो गिने गए वह तैन्तालीस हज़ार सात सौ तीस थे।

⁸और फ़ल्लू का बेटा इलियाब था,⁹और इलियाब के बेटे नमूएल और दातन और अबीराम थे। यह वही दातन और अबीराम हैं जो जमा'अत के चुने हुए थे, और जब क्रोरह के फ़रीक़ ने खुदावन्द से झगड़ा किया तो यह भी उस फ़रीक़ के साथ मिल कर मूसा और हारून से झगड़े;

¹⁰और जब उन ढाई सौ आदमियों के आग में भसम हो जाने से वह फ़रीक़ हलाक हो गया, उसी मौक़े पर ज़मीन ने मुँह खोल कर क्रोरह के साथ उनको भी निगल लिया था; और वह सब 'इबरत का निशान ठहरे।¹¹लेकिन क्रोरह के बेटे नहीं मरे थे।

¹²और शमा'ऊन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी नमूएल, जिससे नमूएलियों का खान्दान चला; और यमीन, जिससे यमीनियों का खान्दान चला; और यकीन, जिससे यकीनियों का खान्दान चला;¹³और ज़ारह, जिससे ज़ारहियों का खान्दान चला; और साऊल, जिससे साऊलियों का खान्दान चला।¹⁴तब बनी शमा'ऊन के खान्दानों में से बाईस हज़ार दो सौ आदमी गिने गए।

¹⁵और जद् के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सफ़ोन, जिससे सफ़ोनियों का खान्दान चला; और हज्जी, जिससे हज्जियों का खान्दान चला; और सूनी, जिससे सूनीयों का खान्दान चला;¹⁶और उज़नी, जिससे उज़नियों का खान्दान चला; और 'एरी, जिससे 'एरियों का खान्दान चला;¹⁷और अरूद, जिससे अरूदियों का खान्दान चला; और अरेली, जिससे अरेलियों का खान्दान चला।¹⁸बनी जद् के यही घराने हैं, जो इनमें से गिने गए वह चालीस हज़ार पाँच सौ थे।

¹⁹यहूदाह के बेटों में से 'एर और ओनान तो मुल्क-ए-कना'न ही में मर गए।²⁰और यहूदाह के और बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सीला, जिससे सीलानियों का खान्दान चला; और फ़ारस, जिससे फ़ारसियों का खान्दान चला; और ज़ारह, जिससे ज़ारहियों का खान्दान चला।²¹फ़ारस के बेटे यह हैं, या'नी हसरोन, जिससे हसरोनियों का खान्दान चला; और हमूल, जिससे हमूलियों का खान्दान चला।²²ये बनी यहूदाह के घराने हैं। इनमें से छिहत्तर हज़ार पाँच सौ आदमी गिने गए।

²³और इश्कार के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी तोला', जिससे तोल'इयों का खान्दान चला; और फ़ुव्वा, जिससे फ़ुवियों का खान्दान चला:

²⁴यसूब, जिससे यसूबियों का खान्दान चला; सिमरोन, जिससे सिमरोनियों का खान्दान चला।²⁵यह बनी इश्कार के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह चौंसठ हज़ार तीन सौ थे।

²⁶और ज़बूलून के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सरद, जिससे सरदियों का खान्दान चला; एलोन, जिससे एलोनियों का खान्दान चला; यहलीएल, जिससे यहलीएलियों का खान्दान चला।²⁷यह बनी ज़बूलून के घराने हैं। इनमें से साठ हज़ार पाँच सौ आदमी गिने गए।

²⁸और यूसुफ़ के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी मनस्सी और इफ़्राईम।²⁹और मनस्सी का बेटा मकीर था, जिससे मकीरियों का खान्दान चला; और मकीर से-जिल'आद पैदा हुआ, जिससे जिल'आदियों का खान्दान चला।

³⁰और जिल'आद के बेटे यह हैं, या'नी ई'अज़र, जिससे ई'अज़रियों का खान्दान चला; और खलक़, जिससे खलक़ियों का खान्दान चला;³¹और असरीएल, जिससे असरीएलियों का खान्दान चला; और सिक्म, जिससे सिक्मियों का खान्दान चला;³²और समीदा', जिससे समीदा'इयों का खान्दान चला; और हिफ़्र, जिससे हिफ़्रियों का खान्दान चला।

³³और हिफ़्र के बेटे सिलाफ़िहाद के यहाँ कोई बेटा नहीं बल्कि बेटियाँ ही हुई, और सिलाफ़िहाद की बेटियों के नाम यह हैं: महलाह, और नू'आह, और हुजलाह, और मिल्काह, और तिरज़ाह।³⁴यह बनी मनस्सी के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बावन हज़ार सात सौ थे।

³⁵और इफ़्राईम के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सुतलह, जिससे सुतलहियों का खान्दान चला; और बकर, जिससे बकरियों का खान्दान चला; और तहन जिससे तहनियों का खान्दान चला।³⁶और सूतलह का बेटा 'ईरान था, जिससे 'ईरानियों का खान्दान चला।³⁷यह बनी इफ़्राईम के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बत्तीस हज़ार पाँच सौ थे। यूसुफ़ के बेटों के खान्दान यही हैं।

³⁸और बिनयमीन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी बला', जिससे बला'इयों का खान्दान चला; और अशबील, जिससे अशबीलियों का खान्दान चला; और अख़ीराम, जिससे अख़ीरामियों का खान्दान चला;³⁹और सूफ़ाम, जिससे सूफ़ामियों का खान्दान चला; और हूफ़ाम, जिससे हूफ़ामियों का खान्दान चला।⁴⁰~बाला' के दो बेटे थे एक अर्द, जिससे अर्दियों का खान्दान चला; दूसरा ना'मान, जिससे ना'मानियों का खान्दान चला।⁴¹~यह बनी बिनयमीन के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह पैंतालस हज़ार छः सौ थे।

⁴²और दान का बेटा जिससे उसका खान्दान चला सुहाम था, उससे सूहामियों खान्दान चला। दानियों का खान्दान यही था।⁴³सूहामियों के खान्दान के जो आदमी गिने गए वह चौंसठ हज़ार चार सौ थे।

⁴⁴~और आशर के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी यिमना, जिससे यिमनियों का खान्दान चला; और इसवी, जिससे इसवियों का खान्दान चला; और बरी'अह, जिससे बरी'अहियों का खान्दान चला।⁴⁵बनी बरी'आह यह हैं, या'नी हिब्र, जिससे हिब्रियों का खान्दान चला; और मलकीएल, जिससे मलकीएलियों का खान्दान चला।⁴⁶और आशर की बेटी का नाम सारा था।⁴⁷यह बनी आशर के घराने हैं, और जो इनमें से गिने गए वह तिरपन हज़ार चार सौ थे।

⁴⁸और नप्ताली के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी यहसीएल, जिससे यहसीएलियों का खान्दान चला; और जूनी, जिससे जूनियों का खान्दान चला;⁴⁹~और यिस्र, जिससे यिस्रियों का खान्दान चला; और सलीम, जिससे सलीमियों का खान्दान चला।⁵⁰यह बनी नप्ताली के घराने हैं, और जितने इनमें से गिने गए वह पैंतालीस हज़ार चार सौ थे।

⁵¹फिर बनी-इसाईल में से जितने गिने गए वह सब मिला कर छः लाख एक हज़ार सात सौ तीस थे।

⁵²और खुदावन्द ने मूसा से कहा,⁵³"इन ही को, इनके नामों के शुमार के मुवाफ़िक़ वह ज़मीन मीरास के तौर पर बाँट दी जाए।

⁵⁴~जिस क़बीले में ज़्यादा आदमी हों उसे ज़्यादा हिस्सा मिले, और जिसमें कम हों उसे कम हिस्सा मिले। हर क़बीले की मीरास उसके गिने हुए आदमियों के शुमार पर ख़त्म हो।⁵⁵~लेकिन ज़मीन पर्ची से तक्सीम की जाए। वह अपने आबाई क़बीलों के नामों के मुताबिक़ मीरास पाएँ।⁵⁶और चाहे ज़्यादा आदमियों का क़बीला हो या थोड़ों का, पर्चीसे उनकी मीरास~तक्सीम~की~जाए।"

⁵⁷और जो लावियों में से अपने-अपने खान्दान के मुताबिक़ गिने गए वह यह हैं, या'नी जैरसोन से जैरसोनियों का घराना, क्रिहात से क्रिहातियों का घराना, मिरारी से मिरारियों का घराना।⁵⁸और यह भी लावियों के घराने हैं, या'नी लिबनी का घराना, हबरून का घराना, महली का घराना, और मूशी का घराना, और कोरह का घराना। और क़िहात से अमराम पैदा हुआ।⁵⁹और अमराम की बीवी का नाम यूकबिद था, जो लावी की बेटी थी और मिस्र में लावी के यहाँ पैदा हुई; इसी के हारून और मूसा और उनकी बहन मरियम अमराम से पैदा हुए।

⁶⁰~और हारून के बेटे यह थे: नदब और अबीहू और अली 'अज़र और ~इतमर।⁶¹और~नदब और अबीहू तो उसी वक़्त मर गए जब उन्होंने खुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश कीं थीं।⁶²फिर उनमें से जितने एक महीने और उससे ऊपर-ऊपर के नरीना फ़र्ज़न्द गिने गए वह तेईस हज़ार थे। यह बनी-इसाईल के साथ नहीं गिने गए क्योंकि इनको बनी-इसाईल के साथ मीरास नहीं मिली।

⁶³तब मूसा और इली'अज़र काहिन ने जिन बनी-इसाईल को मोआब के मैदानों में जो यरदन के किनारे किनारे यरीहू के सामने हैं शुमार किया वह यही हैं।

⁶⁴लेकिन जिन इस्राईलियों को मूसा और हारून काहिन ने सीना के जंगल में गिना था, उनमें से एक शख्स भी इनमें न था।

⁶⁵क्योंकि खुदावन्द ने उनके हक़ में कह दिया था कि वह यक़ीनन वीरान में मर जाएँगे, चुनाँचे उनमें से अलावा युफ़न्ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यशू'अ के एक भी बाक़ी नहीं बचा था।

Chapter 27

¹तब यूसुफ़ के बेटे मनस्सी की औलाद के घरानों में से सिलाफ़िहाद बिन हिफ़्र बिन जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी की बेटियाँ, जिनके नाम महलाह और नो'आह और हुजलाह और मिलकाह और तिरज़ाह हैं, पास आकर

²खेमा-ए-इजितमा'अ के दरवाज़े पर मूसा और इली'अज़र काहिन और अमीरों और सब जमा'अत के सामने खड़ी हुई और कहने लगीं कि;³~"हमारा बाप वीरान में मरा, लेकिन वह उन लोगों में शामिल न था जिन्होंने कोरह के फ़रीक से मिल कर खुदावन्द के खिलाफ़ सिर उठाया था; बल्कि वह अपने गुनाह में मरा और उसके कोई बेटा न था।

⁴~इसलिए बेटा न होने की वजह से से हमारे बाप का नाम उसके घराने से क्यूँ मिटने पाए? इसलिए हम को भी हमारे बाप के भाइयों के साथ हिस्सा दो।"⁵मूसा उनके मु'आमिले को खुदावन्द के सामने ले गया।

⁶~खुदावन्द ने मूसा से कहा, ⁷"सिलाफ़िहाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; तू उनको उनके बाप के भाइयों के साथ ज़रूर ही मीरास का हिस्सा देना, या'नी उनको उनके बाप की मीरास मिले।⁸और बनी-इसाईल से कह, कि अगर कोई शख्स मर जाए और उसका कोई बेटा न हो, तो उस की मीरास उसकी बेटी को देना।

⁹अगर उसकी कोई बेटी भी न हो, तो उसके भाइयों को उसकी मीरास देना।¹⁰अगर उसके भाई भी न हों, तो तुम उसकी मीरास उसके बाप के भाइयों को देना।

¹¹अगर उसके बाप का भी कोई भाई न हो, तो जो शख्स उसके घराने में उसका सब से करीबी रिश्तेदार हो उसे उसकी मीरास देना; वह उसका वारिस होगा। और यह हुक्म बनी-इसाईल के लिए, जैसा खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया वाजिबी फ़र्ज़ होगा।"

¹²फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, "तू 'अबारीम के इस पहाड़ पर चढ़कर उस मुल्क को, जो मैंने बनी-इसाईल को 'इनायत किया है देख ले।¹³~और जब तू उसे देख लेगा, तो तू भी अपने लोगों में अपने भाई हारून की तरह जा मिलेगा।¹⁴क्यूँकि सीन के जंगल में जब जमा'अत ने मुझ से झगड़ा किया, तो बर'अक्स इसके कि वहाँ पानी के चश्मे पर तुम दोनों उनकी आँखों के सामने मेरी तकदीस करते, तुम ने मेरे हुक्म से सरकशी की।" यह वही मरीबा का चश्मा है जो दश्त-ए-सीन के क़ादिस में है।

¹⁵मूसा ने खुदावन्द से कहा कि;¹⁶"खुदावन्द सारे बशर की रूहों का खुदा, किसी आदमी को इस जमा'अत पर मुकर्रर करे;¹⁷जिसकी आमद-ओ-रफ़्त उनके सामने हो और वह उनको बाहर ले जाने और अन्दर ले आने में उनका रहबर हो, ताकि खुदावन्द की जमा'अत उन भेड़ों की तरह न रहे जिनका कोई चरवाहा नहीं।"

¹⁸~खुदावन्द ने मूसा से कहा, "तू नून के बेटे यशू'अ को लेकर उस पर अपना हाथ रख, क्यूँकि उस शख्स में रूह है;¹⁹और उसे इली'अज़र काहिन और सारी जमा'अत के आगे खड़ा करके उनकी आँखों के सामने उसे वसीयत कर।

²⁰और अपने रोबदाब से उसे बहरावर कर दे, ताकि बनी-इसाईल की सारी जमा'अत उसकी फ़रमाबरदारी करे।²¹वह इली 'काहिन के आगे खड़ा हुआ करे, जो उसकी जानिब से खुदावन्द के सामने ऊरीम का हुक्म दरियाफ़्त किया करेगा। उसी के कहने से वह और बनी-इसाईल की सारी जमा'अत के लोग निकला करें, और उसी के कहने से लौटा भी करें।"

²²~इसलिए मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ 'अमल किया, और उसने यशू'अ को लेकर उसे इली'अज़र काहिन और सारी जमा'अत के सामने खड़ा किया;²³और उसने अपने हाथ उस पर रखे, और जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म दिया था उसे वसीयत की।

Chapter 28

¹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि;²~"बनी-इसाईल से कह कि मेरा हृदया, या'नी मेरी वह गिज़ा जो राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशीन कुर्बानी है, तुम याद करके मेरे सामने वक्रत-ए-मु'अय्यन पर पेश करा करना।

³तू उन से कह दे कि जो आतिशी कुर्बानी तुम को खुदावन्द के सामने पेश करना है वह यह है: कि दो बे-'ऐब यक-साला नर बरें हर दिन दाइमी सोख्तनी कुर्बानी के लिए 'अदा करो।⁴एक बर्रा सुबह और दूसरा बर्रा शाम को चढ़ाना;⁵और साथ ही ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें कूट कर निकाला हुआ तेल चौथाई हीन के बराबर मिला हो, नज़्र की कुर्बानी के तौर पर पेश करना।

⁶यह वही दाइमी सोख्तनी कुर्बानी है जो कोह-ए-सीना पर मुकर्रर की गई, ताकि खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे।⁷और हीन की चौथाई के बराबर मय हर एक बर्रा तपावन के लिए लाना। हैकल ही में खुदावन्द के सामने मय का यह तपावन चढ़ाना।⁸और दूसरे बर्रे को शाम के वक्रत चढ़ाना, और उसके साथ भी सुबह की तरह वैसी ही नज़्र की कुर्बानी और तपावन हो, ताकि यह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे।

⁹और सबत के दिन दो बे-'ऐब यकसाला नर बरें और नज़्र की कुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, तपावन के साथ पेश करना।¹⁰दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा यह हर सब्त की सोख्तनी कुर्बानी है।

¹¹~"और अपने महीनों के शुरू' में हर माह दो। बछड़े और एक मेंढा और सात बे-'ऐब यक-साला नर बरें सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने चढ़ाया करना।¹²और ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर बछड़े के साथ; और ऐफ़ा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर मेंढे के साथ; और ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो,¹³हर बर्रे के साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर लाना। ताकि यह राहतअंगेज़ खुशबू की सोख्तनी कुर्बानी, या'नी खुदावन्द के सामने आतिशीन कुर्बानी ठहरे।

¹⁴और इन के साथ तपावन के लिए मय हर एक बछड़ा आधे हीन के बराबर, और हर एक मेंढा तिहाई हीन के बराबर, और हर एक बर्रा चौथाई हीन के बराबर हो। यह साल भर के हर महीने की सोख्तनी कुर्बानी है।¹⁵और उस दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा एक बकरा खता की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करा जाए।

¹⁶और पहले महीने की चौदहवीं तारीख को खुदावन्द की फ़सह हुआ करे।¹⁷और उसी महीने की पंद्रहवीं तारीख को 'ईद हो, और सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाई जाए।¹⁸पहले दिन लोगों का पाक मजमा' हो, तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना।

¹⁹बल्कि तुम आतिशी कुर्बानी, या'नी खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर दो बछड़े और एक मेंढा और सात यक-साला नर बरें चढ़ाना। यह सब के सब बे-'ऐब हों।²⁰और उनके साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर एक बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर एक मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर।²¹और सातों बर्रों में से हर बर्रा पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर पेश करा करना।²²और खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा हो, ताकि उससे तुम्हारे लिए कफ़़ारा दिया जाए।

²³~तुम सुबह की सोख्तनी कुर्बानी के 'अलावा, जो दाइमी सोख्तनी कुर्बानी है, इनको भी पेश करना।²⁴इसी तरह तुम हर दिन सात दिन तक आतिशी कुर्बानी की यह गिज़ा चढ़ाना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे; दिन-मर्रा की दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और तपावन के 'अलावा यह भी पेश करा जाए।

²⁵और सातवें दिन फिर तुम्हारा पाक मजमा हो उसमें कोई खादिमाना काम न करना।

²⁶और पहले फलों के दिन, जब तुम नई नज़्र की कुर्बानी हफ़्तों की 'ईद में खुदावन्द के सामने पेश करो, तब भी तुम्हारा पाक मजमा' हो; उस दिन कोई खादिमाना काम न करना।²⁷बल्कि तुम सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर दो बछड़े, एक मेंढा और सात यक-साला नर बरें पेश करना; ताकि यह खुदावन्द के सामने राहत अंगेज़ खुशबू हो,²⁸और इनके साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर,

²⁹और सातों बर्रों में से हर बर्रे पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो।³⁰और एक बकरा हो ताकि तुम्हारे लिए कफ़़ारा दिया जाए।³¹~दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी के 'अलावा तुम इनको भी पेश करना। यह सब बे-'ऐब हों और इनके तपावन साथ हों।

Chapter 29

¹और सातवें महीने की पहली तारीख को तुम्हारा पाक मजमा' हो, उसमें कोई खादिमाना काम न करना। यह तुम्हारे लिए नरसिंगे फूँकने का दिन है।

²तुम सोखतनी कुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और सात बे-'ऐब यक-साला नर बरें चढ़ाना ताकि यह खुदावन्द के सामने राहत अंगेज़ खुशबू ठहरे।

³और इनके साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; "बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर,⁴और सातों बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो।⁵और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो, ताकि तुम्हारे वास्ते क़फ़ारा दिया जाए।

⁶नये चाँद की-सोखतनी कुर्बानी और-उसकी नज़्र की कुर्बानी, और दाइमी सोखतनी कुर्बानी और-उसकी नज़्र की कुर्बानी-और-उनके तपावनों के 'अलावा, जो अपने-अपने क़ानून के मुताबिक़ पेश करे जाएँगे, यह भी राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने अदा किये जाए।

⁷~'फिर उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख को तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम अपनी अपनी जान को दुख देना और किसी-तरह का काम न करना,⁸बल्कि सोखतनी कुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और सात यक-साला नर बरें खुदावन्द के सामने चढ़ाना, ताकि यह राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे; यह सब के सब बे-'ऐब हों,

⁹~और इनके साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर,¹⁰और सातों बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो,¹¹और ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा हो; यह भी उस ख़ता की कुर्बानी के 'अलावा, जो क़फ़ारे के लिए है और दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी, और तपावनों के 'अलावा अदा किये जाएँ।

¹²और सातवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख को फिर तुम्हारा पाक मजमा' हो; उस दिन तुम कोई खादिमाना काम न करना, और सात दिन तक खुदावन्द की खातिर 'ईद मनाना।¹³और तुम सोखतनी कुर्बानी के तौर पर तेरह बछड़े, दो मेंढे, और चौदह यक-साला नर बरें चढ़ाना ताकि यह राहत अंगेज़ खुशबू की आतिशीन कुर्बानी ठहरे; यह सब के सब बे-'ऐब हों।

¹⁴और इनके साथ नज़्र की कुर्बानी के तौर पर तेरह बछड़ों में से हर बछड़े पीछे तेल मिला हुआ मैदा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और दोनों मेंढों में से हर मेंढे पीछे पाँचवें हिस्से के बराबर,¹⁵~और चौदह बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो।¹⁶और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

¹⁷"और दूसरे दिन बारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह बे-'ऐब यक-साला नर बरें चढ़ाना।¹⁸~और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,¹⁹और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावनों के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

²⁰~'और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक-साला बे-'ऐब नर बरें हों।²¹और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,²²और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

²³~'और चौथे दिन दस बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक-साला बे-'ऐब नर बरें हों।²⁴~और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,²⁵और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

²⁶~'और पाँचवें दिन नौ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक-साला बे-'ऐब नर बरें हों।²⁷और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और क़ानून के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,²⁸और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

²⁹और छठे दिन आठ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक-साला बे-'ऐब नर बरें हों।³⁰और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और क़ानून के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,³¹और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा अदा की जाएँ।

³²और सातवें दिन सात बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक-साला बे-'ऐब नर बरें हों।³³और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,³⁴और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा अदा की जाएँ।

³⁵और आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना,³⁶बल्कि तुम एक बछड़ा, एक मेंढा, और सात यक-साला बे-'ऐब नर बरें सोखतनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ाना ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे।

³⁷~और बछड़े और मेंढे और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन हों,³⁸और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़्र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ।

³⁹"तुम अपनी मुकर्रर 'ईदों में अपनी मिन्नतों और रज़ा की कुर्बानियों के 'अलावा यहीं सोखतनी कुर्बानियाँ और नज़्र की कुर्बानियाँ और तपावन और सलामती की कुर्बानियाँ पेश करना।"⁴⁰और जो कुछ खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया, वह सब मूसा ने बनीइसाईल को बता दिया।

Chapter 30

¹और मूसा ने बनी-इसाईल के कबीलों के सरदारों से कहा, "जिस बात का खुदावन्द ने हुक्म दिया है वह यह है, कि जब कोई मर्द खुदावन्द की मिन्नत माने या क़सम खाकर अपने ऊपर कोई ख़ास फ़र्ज़ ठहराए, तो वह अपने 'अहद को न तोड़े; बल्कि जो कुछ उसके मुँह से निकला है उसे पूरा करे।

³और अगर कोई 'औरत खुदावन्द की मिन्नत माने और अपनी नौ जवानी के दिनों में अपने बाप के घर होते हुए अपने ऊपर कोई फ़र्ज़ ठहराए।⁴और उसका बाप उसकी-मिन्नत और उसके फ़र्ज़ का हाल जो उसने अपने ऊपर ठहराया है सुनकर चुप हो रहे, तो वह सब मिन्नतें और सब फ़र्ज़ जो उस 'औरत ने अपने ऊपर ठहराए हैं क़ायम रहेंगे।

⁵लेकिन अगर उसका बाप जिस दिन यह सुने उसी दिन उसे मना' करे, तो उसकी कोई मिन्नत या कोई फ़र्ज़ जो उसने अपने ऊपर ठहराया है, क़ायम नहीं रहेगा; और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रखेगा क्योंकि उसके बाप ने उसे इजाज़त नहीं दी।

⁶और अगर किसी आदमी से उसकी निस्बत हो जाए, हालाँकि उसकी मिन्नतें या मुँह की निकली हुई बात जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई है, अब तक पूरी न हुई हो;⁷और उसका आदमी यह हाल सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे तो उसकी मनतें क़ायम रहेंगी, और जो बातें उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई हैं वह भी क़ायम रहेंगी।

⁸लेकिन अगर उसका आदमी जिस दिन यह सब सुने, उसी दिन उसे मना' करे तो उसने जैसे उस 'औरत की मिन्नत को और उसके मुँह की निकली हुई बात को जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई थी तोड़ दिया; और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रखेगा।

⁹लेकिन बेवा और तलाक़शुदा की मिन्नतें और फ़र्ज़ ठहरायी हुई बातें क़ायम रहेंगी।¹⁰और अगर उसने अपने शौहर के घर होते हुए कुछ मिन्नत मानी या क़सम खाकर अपने ऊपर कोई फ़र्ज़ ठहराया हो,¹¹और उसका शौहर यह हाल सुन कर ख़ामोश रहा हो और उसे मना' न किया हो, तो उसकी मिन्नतें और सब फ़र्ज़ जो उसने अपने ऊपर ठहराए क़ायम रहेंगे।

¹²लेकिन अगर उसके शौहर ने जिस दिन यह सब सुना उसी दिन उसे बातिल ठहराया हो, तो जो कुछ उस 'औरत के मुँह से उसकी मिन्नतों और ठहराए हुए फ़र्ज़ के बारे में निकला है, वह क़ायम नहीं रहेगा; उसके शौहर ने उनको तोड़ डाला है, और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रखेगा।

¹³उसकी हर मिन्नत को और अपनी जान को दुख देने की हर क़सम को उसका शौहर चाहे तो क़ायम रखे, या अगर चाहे तो बातिल ठहराए।¹⁴लेकिन अगर उसका शौहर दिन-ब-दिन ख़ामोश ही रहे, तो वह जैसे उसकी सब मिन्नतों और ठहराए हुए फ़र्ज़ों को क़ायम कर देता है; उसने उनको क़ायम यूँ किया कि जिस दिन से सब सुना वह ख़ामोश ही रहा।

¹⁵लेकिन अगर वह उनको सुन कर बा'द में उनको बातिल ठहराए तो वह उस 'औरत का गुनाह उठाएगा।"¹⁶शौहर और बीवी के बीच और बाप बेटी के बीच, जब बेटी नौ-जवानी के दिनों में बाप के घर हो, इन ही तौर तरीक़े का हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया।

Chapter 31

¹~फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा,²~"मिदियानियों से बनी-इसाईल का इन्तक़ाम ले; इसके बा'द तू अपने लोगों में जा मिलेगा।"

³तब मूसा ने लोगों से कहा, "अपने में से जंग के लिए आदमियों को~हथियारबन्द~करो, ताकि वह~मिदियानियों पर हमला करें और मिदियानियों से खुदावन्द का इन्तक़ाम लें।⁴और इसाईल के सब क़बीलों में से हर क़बीला एक हज़ार आदमी लेकर जंग के लिए भेजना।"⁵फिर हज़ारों हज़ार बनी-इसाईल में से हर क़बीला एक हज़ार के हिसाब से बारह हज़ार हथियारबन्द आदमी जंग के लिए चुने गए।

⁶यूँ मूसा ने हर क़बीले से एक हज़ार आदमियों को जंग के लिए भेजा और इली'अज़र काहिन के बेटे फ़ीन्हास को भी जंग पर रवाना किया, और हैकल के बर्तन और बलन्द आवाज़ के नरसिंगे उसके साथ कर दिए।⁷और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, उसके मुताबिक़ उन्होंने मिदियानियों से जंग की और सब मर्दों को क़त्ल किया।⁸और उन्होंने उन मक्कूलों के अलावा 'अव्वी और रक़म और सूर और होर और रबा' को भी, जो मिदियान के पाँच बादशाह थे, जान से मारा और ब'ओर के बेटे बल'आम को भी तलवार से क़त्ल किया।

⁹और बनी-इसाईल ने मिदियान की 'औरतों और उनके बच्चों को गुलाम किया, और उनके चौपाये और भेड़ बकरियाँ और माल-ओ-अस्बाब सब कुछ लूट लिया।¹⁰और उनकी सुकुनतगाहों के सब शहरों को जिनमें वह रहते थे, और उनकी सब छावनियों को आग से फूँक दिया।

¹¹और उन्होंने सारा माल-ए-ग़नीमत और सब गुलाम, क्या इन्सान और क्या हैवान साथ लिए,¹²और उन गुलामों और माल-ए-ग़नीमत को मूसा और अली 'अज़र काहिन और बनी इसाईल की सारी-जमा'अत के पास उस लश्करगाह में ले आए जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे मोआब के मैदानों में थी।

¹³~तब मूसा और इली'अज़र काहिन और जमा'अत के सब सरदार उनके इस्तक़बाल के लिए लश्करगाह के बाहर गए।¹⁴और मूसा उन फ़ौजी सरदारों पर जो हज़ारों और सैकड़ों के सरदार थे और जंग से लौटे थे झल्लाया,¹⁵और उनसे कहने लगा, 'क्या तुम ने सब 'औरतें जीती बचा रखी हैं?

¹⁶~देखो, इन ही ने बल'आम की सलाह से~फ़गूर के मु'आमिले में बनी-इसाईल से खुदावन्द की हुक्म उदूली कराई, और यूँ खुदावन्द की जमा'अत में वबा फैली।¹⁷इसलिए इन बच्चों में जितने लड़के हैं सब को मार डालो, और जितनी 'औरतें मर्द का मुँह देख चुकी हैं उनको क़त्ल कर डालो।

¹⁸लेकिन उन लड़कियों को जो मर्द से वाकिफ़ नहीं और अछूती हैं, अपने लिए ज़िन्दा रखो।¹⁹और तुम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर ही खेमे डाले पड़े रहो, और तुम में से जितनों ने किसी आदमी की जान से मारा हो और जितनों ने किसी मक्कूल को छुआ हो, वह सब अपने आप को और अपने कैदियों को तीसरे दिन और सातवें दिन पाक करें।²⁰~तुम अपने सब कपड़ों और चमड़े की सब चीज़ों को और बकरी के बालों की बुनी हुई चीज़ों को और लकड़ी के सब बर्तनों को पाक करना।"

²¹और इली'अज़र काहिन ने उन सिपाहियों से जो जंग पर गए थे कहा, "शरी'अत का वह क़ानून जिसका हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया यही है, कि²²~सोना और चाँदी और पीतल और लोहा और रांगा और सीसा,²³~गरज़ जो कुछ आग में ठहर सके वह सब तुम आग में डालना तब वह साफ़ होगा, तो भी नापाकी दूर करने के पानी से उसे पाक करना पड़ेगा; और जो कुछ आग में न ठहर सके उसे तुम पानी में डालना।²⁴और तुम सातवें दिन अपने कपड़े धोना तब तुम पाक ठहरोगे, इसके बा'द लश्करगाह में दाख़िल होना।"

²⁵और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,²⁶"इली'अज़र काहिन और जमा'अत के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों को साथ लेकर, तू उन आदमियों और जानवरों को शुमार कर जो लूट में आए हैं।²⁷और लूट के इस माल को दो हिस्सों में तक्सीम कर कि, एक हिस्सा उन जंगी मर्दों को दे जो लड़ाई में गए थे और दूसरा हिस्सा जमा'अत को दे।

²⁸और उन जंगी मर्दों से जो लड़ाई में गए थे, खुदावन्द के लिए चाहे आदमी हों या गाय-बैल या गधे या भेड़ बकरियाँ, हर पाँच सौ पीछे एक को हिस्से के तौर पर ले;²⁹इनही के आधे में से इस हिस्से को लेकर इली'अज़र काहिन को देना, ताकि यह खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी ठहरे।

³⁰और बनी-इसाईल के आधे में से चाहे आदमी हों या गाय-बैल या गधे या भेड़-बकरियाँ, या'नी सब किस्म के चौपायों में से पचास-पचास पीछे एक-एक को लेकर लावियों को देना जो खुदावन्द के घर की मुहाफ़िज़त करते हैं।"³¹चुनाँचे मूसा और इली'अज़र काहिन ने जैसा खुदावन्द ने मूसा से कहा था वैसा ही किया।

³²और जो कुछ माल-ए-ग़नीमत जंगी मर्दों के हाथ आया था उसे छोड़कर लूट के माल में छः लाख पिछतर हज़ार भेड़-बकरियाँ थीं,³³और बहतर हज़ार गाय-बैल,

³⁴और इकसठ हज़ार गधे,³⁵और नुफूस-ए-इन्सानी में से बतीस हज़ार ऐसी 'औरतें जो मर्द से नावाकिफ़ और अछूती थीं।

³⁶~और लूट के माल के उस आधे में जो जंगी मर्दों का हिस्सा था, तीन लाख सैंतीस हज़ार पाँच सौ भेड़-बकरियाँ थीं,³⁷जिनमें से छः सौ पिछतर भेड़-बकरियाँ खुदावन्द के हिस्से के लिए थीं।³⁸और छत्तीस हज़ार गाय-बैल थे, जिनमें से बहतर खुदावन्द के हिस्से के थे।

³⁹~और तीस हज़ार पाँच सौ गधे थे, जिनमें से इकसठ गधे खुदावन्द के हिस्से के थे।⁴⁰और नुफूस-ए-इन्सानी का शुमार सोलह हज़ार था, जिनमें से बतीस जानें खुदावन्द के हिस्से की थीं।⁴¹तब मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक़ उस हिस्से को जो खुदावन्द के उठाने की कुर्बानी थी, इली'अज़र काहिन को दिया।

⁴²अब रहा बनी-इसाईल का आधा हिस्सा, जिसे मूसा ने जंगी मर्दों के हिस्से से अलग रखवा था;⁴³फिर ~इस आधे में भी जो जमा'अत को दिया गया तीन लाख सैंतीस हज़ार पाँच सौ भेड़-बकरियाँ थीं,⁴⁴~और छत्तीस हज़ार गाय-बैल⁴⁵और तीस हज़ार पाँच सौ गधे,⁴⁶और सोलह हज़ार नुफूस-ए-इन्सानी।

⁴⁷~और बनी-इसाईल के इस आधे में से मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक़, क्या इन्सान और क्या हैवान हर पचास पीछे एक को लेकर लावियों को दिया जो खुदावन्द के घर की मुहाफ़िज़त करते थे।

⁴⁸तब वह फ़ौजी सरदार जो हज़ारों और सैकड़ों सिपाहियों के सरदार थे, मूसा के पास आकर⁴⁹उससे कहने लगे, "तेरे ख़ादिमों ने उन सब जंगी मर्दों को जो हमारे मातहत हैं गिना, और उनमें से एक जवान भी कम न हुआ।

⁵⁰~इसलिए हम में से जो कुछ जिसके हाथ लगा, या'नी सोने के ज़ेवर और पाज़ेब और कंगन और अंगूठियाँ और मुन्दरें और बाज़ूबन्द यह सब हम खुदावन्द के हदिये के तौर पर ले आए हैं ताकि हमारी जानों के लिए खुदावन्द के सामने कफ़़ारा दिया जाए।"⁵¹~चुनाँचे मूसा और इली'अज़र काहिन ने उनसे यह सब सोने के घड़े हुए ज़ेवर ले लिए।

⁵²और उस हदिये का सारा सोना जो हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों ने खुदावन्द के सामने पेश कर, वह या'नी , तकरीबन 190 कि. ग्रा.-या'नीसोलह हज़ार सात सौ पचास मिस्काल था।⁵³क्यूँकि जंगी मदों में से हर एक कुछ न कुछ लूट कर ले आया था।⁵⁴तब मूसा और इली'अज़र काहिन उस सोने को जो उन्होंने हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों से लिया था, खेमा-ए-इजितमा'अ में लाए ताकि वह खुदावन्द के सामने बनी-इस्राईल की यादगार ठहरे।

Chapter 32

¹और बनी रूबिन और बनी जद् के पास चौपायों के बहुत बड़े बड़े गोल थे। इसलिए जब उन्होंने या'ज़ेर और जिल'आद के मुल्कों को देखा कि यह मक़ाम चौपायों के लिए बहुत अच्छे हैं,² तो उन्होंने जाकर मूसा और इली'अज़र काहिन और जमा'अत के सरदारों से कहा कि,³ 'अतारात और दीबोन और या'ज़ेर और निमरा और हस्बोन, इली'आली और शबाम और नबू और बऊन,

⁴~या'नी वह मुल्क जिस पर खुदावन्द ने इस्राईल की जमा'अत को फ़तह दिलाई है, चौपायों के लिए बहुत अच्छा है और तेरे खादिमों के पास चौपाये हैं।⁵ इसलिए अगर हम पर तेरे करम की नज़र है तो इसी मुल्क को अपने खादिमों की मीरास कर दे, और हम को यरदन पार न ले जा।"

⁶~मूसा ने बनी रूबिन और बनी जद् से कहा, "क्या तुम्हारे भाई लड़ाई में जाएँ और तुम यहीं बैठे रहो?"⁷ तुम क्यूँ बनी-इस्राईल को पार उतर कर उस मुल्क में जाने से, जो खुदावन्द ने उन को दिया है, बेदिल करते हो?

⁸तुम्हारे बाप दादा ने भी, जब मैंने उनको क़ादिस बरनी' से भेजा कि मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें तो ऐसा ही-किया था।⁹ क्यूँकि जब वह वादी-ए-इस्काल में पहुँचे और उस मुल्क को देखा, तो उन्होंने बनी-इस्राईल को बे-दिल कर दिया, ताकि वह उस मुल्क में जो खुदावन्द ने उनको 'इनायत किया न जाएँ।

¹⁰और उसी दिन खुदावन्द का ग़ज़ब भड़का और उसने क्रसम खाकर कहा, कि¹¹ उन लोगों में से जो मिस्र से निकल कर आये हैं बीस बरस और उससे ऊपर-ऊपर की 'उम्र का कोई शख्स उस मुल्क को नहीं देखने पाएगा, जिसके देने की क्रसम मैंने इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई; क्यूँकि उन्होंने मेरी पूरी पैरवी नहीं की।¹² ~मगर युफ़ना किन्ज़ी का बेटा कालिब और नून का बेटा यशू'अ उसे देखेंगे, क्यूँकि उन्होंने खुदावन्द की पूरी पैरवी की है।

¹³सो खुदावन्द का क्रहर इस्राईल पर भड़का और उसने उनकी वीरान में चालीस बरस तक आवारा फिराया, जब तक कि उस नसल के सब लोग जिन्होंने खुदावन्द के सामने गुनाह किया था, नाबूद न हो गए।¹⁴ और देखो, तुम जो गुनाहगारों की नसल हो, अब अपने बाप दादा की जगह उठे हो, ताकि खुदावन्द के क्रहर-ए-शदीद की इस्राईलियों पर ज़्यादा कराओ।¹⁵ क्यूँकि अगर तुम उस की पैरवी से फिर जाओ तो वह उनको फिर वीरान में छोड़ देगा, और तुम इन सब लोगों को हलाक कराओगे।"

¹⁶~तब वह उसके नज़दीक आकर कहने लगे, "हम अपने चौपायों के लिए यहाँ भेड़साले और अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाएँगे,¹⁷ लेकिन हम खुद हथियार बाँधे हुए तैयार रहेंगे के बनी-इस्राईल के आगे आगे चलें, जब तक कि उनको उनकी जगह तक न पहुँचा दें; और हमारे बाल-बच्चे इस मुल्क के बाशिन्दों की वजह से से फ़सीलदार शहरों में रहेंगे।

¹⁸~और हम अपने घरों को फिर वापस नहीं आएँगे जब तक बनी-इस्राईल का एक-एक आदमी अपनी मीरास का मालिक न हो जाए।¹⁹ और हम उनमें शामिल होकर यरदन के उस पार या उससे आगे, मीरास न लेंगे क्यूँकि हमारी मीरास यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ़ हम को मिल गई।"

²⁰मूसा ने उनसे कहा, "अगर तुम यह काम करो और खुदावन्द के सामने हथियारबन्द होकर लड़ने जाओ,²¹ और तुम्हारे हथियार बन्द जवान खुदावन्द के सामने यरदन पार जाएँ, जब तक कि खुदावन्द अपने दुश्मनों को अपने सामने से दफ़ा' न करे,²² और वह मुल्क खुदावन्द के सामने क़ब्ज़े में न आ जाए; तो इसके बा'द तुम वापस आओ, फिर तुम खुदावन्द के सामने और इस्राईल के आगे बेगुनाह ठहरोगे और यह मुल्क खुदावन्द के सामने तुम्हारी मिल्कियत हो जाएगा।

²³लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो तुम खुदावन्द के गुनाहगार ठहरोगे; और यह जान लो कि तुम्हारा गुनाह तुम को पकड़ेगा।²⁴ इसलिए तुम अपने बाल बच्चों के लिए शहर और अपनी भेड़-बकरियों के लिए भेड़साले बनाओ; जो तुम्हारे मुँह से निकला है वही करो।"²⁵ तब बनी जद् और बनी रूबिन ने मूसा से कहा कि "तेरे खादिम, जैसा हमारे मालिक का हुक्म है वैसा ही करेंगे।

²⁶हमारे बाल बच्चे और हमारी बीवियाँ, हमारी भेड़ बकरियाँ और हमारे सब चौपाये जिल'आद के शहरों में रहेंगे;²⁷ लेकिन हम जो तेरे खादिम हैं, इसलिए हमारा एक-एक हथियारबन्द जवान खुदावन्द के सामने लड़ने को पार जाएगा, जैसा हमारा मालिक कहता है।"

²⁸~तब मूसा ने उनके बारे में इली'अज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और इस्राईली क़बाइल के आबाई खान्दानों के सरदारों को~वसीयत की²⁹ ~और उनसे यह कहा कि "अगर बनी जद् और बनी रूबिन का एक-एक मर्द खुदावन्द के सामने तुम्हारे साथ यरदन के पार हथियारबन्द होकर लड़ाई में जाए और उस मुल्क पर तुम्हारा क़ब्ज़ा हो जाए, तो तुम जिल'आद का मुल्क उनकी मीरास कर देना।³⁰ लेकिन अगर वह हथियार बाँध कर तुम्हारे साथ पार न जाएँ, तो उनको भी मुल्क-ए-कना'न ही में तुम्हारे बीच मीरास मिले।"

³¹तब बनी जद् और बनी रूबिन ने जवाब दिया, "जैसा खुदावन्द ने तेरे खादिमों को हुक्म दिया है, हम वैसा ही करेंगे।³² हम हथियार बाँध कर खुदावन्द के सामने उस पार मुल्क-ए-कना'न को जाएँगे, लेकिन यरदन के इस पार ही हमारी मीरास रहे।"

³³तब मूसा ने अमोरियों के बादशाह सीहोन की मम्लकत और बसन के बादशाह 'ओज की मम्लकत को, या'नी उनके मुल्कों को और शहरों को जो उन अतराफ़ में थे, और उस सारी नवाही के शहरों को बनी जद् और बनी रूबिन और मनस्सी बिन यूसुफ़ के आधे क़बीले को दे दिया।

³⁴तब बनी जद् ने तब बनी जद् ने दिबोन] और 'अतारात और अरो'ईर,³⁵ और 'अतारात, शोफ़ान, और या'ज़ेर, और युगबिहा,³⁶ और बैत निमरा, और बैत हारन, फ़सीलदार शहर और भेड़साले बनाए।

³⁷और बनी रूबिन ने हस्बोन, और इली'आली, और करयताइम,³⁸ और नबो, और बालम'ऊन के नाम बदलकर उनको और शिबमाह को बनाया, और उन्होंने अपने बनाए हुए शहरों के दूसरे नाम रखे।³⁹ और मनस्सी के बेटे मकीर की नसल के लोगों ने जाकर जिल'आद को ले लिया, और अमोरियों को जो वहाँ बसे हुए थे निकाल दिया।

⁴⁰तब मूसा ने जिल'आद मकीर बिनमनस्सी को दे दिया। तब उसकी नसल के लोग वहाँ सुकूनत करने लगे।⁴¹ और मनस्सी के बेटे या'ईर ने उस नवाही की बस्तियों की जाकर ले लिया और उनका नाम हव्वहत या'ईर रखवा⁴² और नूबह ने कनात और उसके देहात को अपने क़ब्ज़े में कर लिया और अपने ही नाम पर उस का भी नाम नूबह रखवा ।

Chapter 33

¹जब बनी-इसाईल मूसा और हारून के मातहत दल बाँधे हुए मुल्क-ए-मिस्र से निकल कर चले तो जैल की मंज़िलों पर उन्होंने क्रयाम किया।²और मूसा ने उनके सफ़र का हाल उनकी मंज़िलों के मुताबिक़ खुदावन्द के हुक्म से लिखा किया; इसलिए उनके सफ़र की मंज़िलें यह हैं।

³पहले महीने की पंद्रहवी तारीख की उन्होंने रा'मसीस से रवानगी की। फ़सह के दूसरे दिन सब बनी-इसाईल के लोग सब मिस्रियों की आँखों के सामने बड़े फ़ख़ से रवाना हुए।⁴उस वक़्त मिस्री अपने पहलौठों को, जिनको खुदावन्द ने मारा था दफ़न कर रहे थे। खुदावन्द ने उनके मा'बूदों को भी सज़ा दी थी।

⁵इसलिए बनी-इसाईल ने रा'मसीस से रवाना होकर सुक्कात में ख़ेमे डाले।⁶और सुक्कात से रवाना होकर एताम में, जो वीरान से मिला हुआ है मुक़ीम हुए।⁷फिर एताम से रवाना होकर हर हखीरोत को, जो बा'ल सफ़ोन के सामने है मुड़ गए और मिजदाल के सामने ख़ेमे डाले।

⁸फिर उन्होंने फ़ी हखीरोत के सामने से कूच किया और समन्दर के बीच से गुज़र कर वीरान में दाखिल हुए, और दशत-ए-एताम में तीन दिन की राह चल कर-मारा में पड़ाव किया।⁹और मारा से रवाना होकर एलीम में आए। और एलीम में पानी के बारह चश्मे और खजूर के सत्तर दरख़्त थे, इसलिए उन्होंने यहीं ख़ेमे डाल लिए।¹⁰और एलीम से रवाना होकर उन्होंने बहर-ए-कुलज़ूम के किनारे ख़ेमे खड़े किए।

¹¹और बहर-ए-कुलज़ूम से चल कर सीन के जंगल में ख़ेमाज़न हुए।¹²और-सीन के जंगल-से रवाना होकर दफ़का में ठहरे।¹³और दफ़का से रवाना होकर अलूस में मुक़ीम हुए।¹⁴और अलूस से चल कर रफ़ीदीम में ख़ेमे डाले। यहाँ इन लोगों को पीने के लिए पानी न मिला।

¹⁵और रफ़ीदीम से रवाना होकर दशत-ए-सीना में ठहरे।¹⁶और-सीना के जंगल-से चल कर क़बरोत हतावा में ख़ेमें खड़े किए।¹⁷और क़बरोत हतावा से रवाना होकर हसीरात में ख़ेमे डाले।¹⁸और हसीरात से रवाना होकर रितमा में ख़ेमे डाले।

¹⁹और रितमा से रवाना होकर रिमोन फ़ारस में ख़ेमें खड़े किए।²⁰और रिमोन फ़ारस से जो चले तो लिबना में जाकर मुक़ीम हुए।²¹और लिबना से रवाना होकर रैस्सा में ख़ेमे डाले।²²और रैस्सा से चलकर कहीलाता में ख़ेमे खड़े किए।

²³और कहीलाता से चल कर कोह-ए-साफ़र के पास ख़ेमा किया।²⁴कोह-ए-साफ़र से रवाना होकर हरादा में ख़ेमाज़न हुए।²⁵और हरादा से सफ़र करके मकहीलोत में क्रयाम किया।²⁶और मकहीलोत से रवाना होकर तहत में ख़ेमें खड़े किए।

²⁷तहत से जो चले तो तारह में आकर ख़ेमे डाले।²⁸और तारह से रवाना होकर मितका में क्रयाम किया।²⁹और मितका से रवाना होकर हशमूना में ख़ेमे डाले।³⁰और हशमूना से चल कर मौसीरोत में ख़ेमे खड़े किए।

³¹और मौसीरोत से रवाना होकर बनी या'कान में ख़ेमे डाले।³²और बनी या'कान से चल कर होर हज्जिदजाद में ख़ेमाज़न हुए।³³और हीर हज्जिदजाद से रवाना होकर यूतबाता में ख़ेमें खड़े किए।³⁴और यूतबाता से चल कर 'अबरूना में ख़ेमे डाले।

³⁵और 'अबरूना से चल कर "अस्यून जाबर में ख़ेमा किया।³⁶और 'अस्यून जाबर से रवाना होकर-सीन के जंगल-में, जो क़ादिस है क्रयाम किया।³⁷और क़ादिस से चल कर कोह-ए-होर के पास, जो मुल्क-ए-अदोम की सरहद है ख़ेमाज़न हुए।

³⁸यहाँ हारून काहिन खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ कोह-ए-होर पर चढ़ गया और उसने बनी-इसाईल के मुल्क-ए-मिस्र से निकलने के चालीसवें बरस के पाँचवें महीने की पहली तारीख को वहीं वफ़ात पाई।³⁹और जब हारून ने कोह-ए-होर पर वफ़ात पाई तो वह एक सौ तेईस बरस का था।

⁴⁰और 'अराद के कना'नी बादशाह को, जो मुल्क-ए-कना'न के दख्खिन में रहता था, बनीइसाईल की आमद की खबर मिली।

⁴¹और इस्राईली कोह-ए-होर से रवाना होकर ज़लमूना में ठहरे।⁴²और ज़लमूना से रवाना होकर फूनोन में ख़ेमे डाले।⁴³और फूनोन से रवाना होकर ओबोत में क्रयाम किया।

⁴⁴और ओबोत से रवाना होकर 'अय्यी अबारीम में जो मुल्क-ए-मोआब की सरहद पर है ख़ेमे डाले,⁴⁵और 'अय्यीम से रवाना होकर दीबोन जद् में ख़ेमाज़न हुए।

⁴⁶और दीबोन जद् से रवाना होकर 'अलमून दबलातायम में ख़ेमे खड़े किए।

⁴⁷और 'अलमून दबलातायम से रवाना होकर 'अबारीम के कोहिस्तान में, जो नबी के सामने है ख़ेमा किया।⁴⁸और 'अबारीम के कोहिस्तान से चल कर मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाके' है ख़ेमाज़न हुए।⁴⁹और यरदन के किनारे बैत यसीमोत-से लेकर अबील सतीम तक मोआब के मैदानों में उन्होंने ख़ेमे डाले।

⁵⁰और खुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाके' है, मूसा से कहा कि, ⁵¹"बनी-इसाईल से यह कह दे कि जब तुम यरदन को उबूर करके मुल्क-ए-कना'न में दाखिल हो, ⁵²तो तुम उस मुल्क के सारे बाशिन्दों को वहाँ से निकाल देना, और उनके शबीहदार पत्थरों को ~और उनके ढाले हुए बुतों को तोड़ डालना, और उनके सब ऊँचे मक़ामों को तबाह कर देना।

⁵³और तुम उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें बसना, क्योंकि मैंने वह मुल्क तुम को दिया है कि तुम उसके मालिक बनो।⁵⁴और तुम पर्ची डाल कर उस मुल्क को अपने घरानों में मीरास के तौर पर बाँट लेना। जिस ख़ान्दान में ज़्यादा आदमी हों उसको ज़्यादा, और जिसमें थोड़े हों उसको थोड़ी मीरास देना; और जिस आदमी का पर्चा जिस जगह के लिए निकले वही उसके हिस्से में मिले। तुम अपने आबाई क़बाइल के मुताबिक़ अपनी अपनी मीरास लेना।

⁵⁵~लेकिन अगर तुम उस मुल्क के बाशिन्दों को अपने आगे से दूर न करो, तो जिनको तुम बाक़ी रहने दोगे वह तुम्हारी आँखों में खार और तुम्हारे पहलुओं में काँट होंगे, और उस मुल्क में जहाँ तुम बसोगे तुम को दिक्क करोगे।⁵⁶और आखिर को यूँ होगा कि जैसा मैंने उनके साथ करने का इरादा किया वैसा ही तुम से करूँगा।"

Chapter 34

¹फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, ²"बनी-इसाईल को हुक्म कर, और उनको कह दे कि जब तुम मुल्क-ए-कना'न में दाखिल हो; (यह वही मुल्क है जो तुम्हारी मीरास होगा, या'नी कना'न का मुल्क म'ए अपनी हुदूद-ए-अरबा' के) ³तो तुम्हारी दख्खिनी सिम्त-सीन के जंगल-से लेकर मुल्क-ए-अदोम के किनारे किनारे हो, और तुम्हारी-दख्खिनी सरहद दरिया-ए-शोर के आखिर से शुरू' होकर पश्चिम को जाए।

⁴वहाँ से तुम्हारी सरहद 'अक्राबियम की चढ़ाई के दख्खिन तक पहुँच कर मुड़े, और सीन से होती हुई क्रादिस बर्नी'अ के दख्खिन में जाकर निकले, और हसर अद्दार से होकर 'अज़मून तक पहुँचें। ⁵फिर यही सरहद 'अज़मून से होकर घूमती हुई मिस्र की नहर तक जाए और समन्दर के किनारे पर खत्म हो।

⁶"और पश्चिमी सिम्त में बड़ा समन्दर और उसका साहिल हो, इसलिए यही तुम्हारी पश्चिमी सरहद ठहरे।

⁷"और उत्तरी सिम्त में तुम बड़े समन्दर से कोह-ए-होर तक अपनी हद्द रखना। ⁸फिर कोह-ए-होर से हम्रात के मदखल तक तुम इस तरह अपनी हद्द मुकर्रर करना कि वह सिदाद से जा मिले। ⁹और वहाँ से होती हुई ज़िफ़रून को निकल जाए और हसर 'एनान पर जाकर खत्म हो, यह तुम्हारी उत्तरी सरहद हो।

¹⁰"और तुम अपनी पूरबी सरहद हसर 'एनान से लेकर सफ़ाम तक बाँधना। ¹¹~ और यह सरहद सफ़ाम से रिबला तक जो 'ऐन के पश्चिम में है जाए, और वहाँ से नीचे को उतरती हुई किन्नरत की झील के पूरबी किनारे तक पहुँचें: ¹²और फिर यरदन के किनारे किनारे नीचे को जाकर दरिया-ए-शोर पर खत्म हो। इन हदों के अन्दर का मुल्क तुम्हारा होगा।"

¹³तब मूसा ने बनी-इसाईल को हुक्म दिया, "यही वह ज़मीन है जिसे तुम पर्ची डाल कर मीरास में लोगे, और इसी के बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है कि वह साढ़े नौ क़बीलों को दी जाए। ¹⁴क्योंकि बनी रूबिन के क़बीले ने अपने आबाई खान्दानों के मुवाफ़िक, और बनी जद् के क़बीले ने भी अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक मीरास पा ली, और बनी मनस्सी के आधे क़बीले ने भी अपनी मीरास पा ली; ¹⁵या'नी इन ढाई क़बीलों को यरदन के इसी पार यरीहू के सामने पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता है मीरास मिल चुकी है।"

¹⁶और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, ¹⁷"जो अश्खास इस मुल्क को मीरास के तौर पर तुम को बाँट देंगे उन के नाम यह हैं, या'नी इली'अज़र काहिन और नून का बेटा यशू'अ। ¹⁸और तुम ज़मीन को मीरास के तौर पर बाँटने के लिए हर क़बीले से एक सरदार को लेना।

¹⁹~और उन आदमियों के नाम यह हैं : यहूदाह के क़बीले से यफुना का बेटा कालिब, ²⁰और बनी शमा'ऊन के क़बीले से अम्मीहूद का बेटा समूएल,

²¹और बिनयमीन के क़बीले से किसलून का बेटा इलीदाद, ²²और बनी दान के क़बीले से एक सरदार बुक्की बिन युगली, ²³और बनी यूसुफ़ में से या'नी बनी मनस्सी के क़बीले से एक सरदार हनीएल बिन अफूद,

²⁴और बनी इफ़्राईम के क़बीले से एक सरदार क्रमूएल बिन सिप्रतान, ²⁵और बनी ज़बूलून के क़बीले से एक सरदार इलीसफ़न बिन फ़रनाक, ²⁶और बनी इश्कार के क़बीले से एक सरदार फ़लतीएल बिन 'अज़ज़ान,

²⁷और बनी आशर के क़बीले से एक सरदार अखीहूद बिन शलूमी, ²⁸और बनी नफ़्ताली के क़बीले से एक सरदार फ़िदाहेल बिन 'अम्मीहूद।" ²⁹यह वह लोग हैं जिनको खुदावन्द ने हुक्म दिया कि मुल्क-ए-कना'न में बनी-इसाईल को मीरास तब्रसीम कर दें।

Chapter 35

¹~फिर खुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाके' हैं, मूसा से कहा कि,²~"बनी इस्राईल को हुक्म कर, कि अपनी मीरास में से जो उनके क़ब्ज़े में आए लावियों की रहने के लिए शहर दें, और उन शहरों के 'इलाक़े भी तुम लावियों को दे देना।

³यह शहर उनके रहने के लिए हों; उनके 'इलाक़े उनके चौपायों और माल और सारे जानवरों के लिए हों।⁴और शहरों के 'इलाक़े जो तुम लावियों को दो वह हर शहर की दीवार से शुरू' करके बाहर चारों तरफ़ हज़ार-हज़ार हाथ के फेर में हों।

⁵और तुम शहर के बाहर पश्चिम की तरफ़ दो हज़ार हाथ, और दख्खिन की तरफ़ दो हज़ार हाथ, और पश्चिम की तरफ़ दो हज़ार हाथ, और उत्तर की तरफ़ दो हज़ार हाथ इस तरह पैमाइश करना के शहर उनके बीच में आ जाए। उनके शहरों के इतनी ही 'इलाक़े हों।

⁶और लावियों के उन शहरों में से जो तुम उनको दो, छः पनाह के शहर ठहरा देना जिनमें ख़ूनी भाग जाएँ। इन शहरों के 'अलावा बयालीस शहर और उनको देना; 'या'नी सब मिला कर अड़तालीस शहर लावियों की देना और इन शहरों के साथ इनके 'इलाक़े भी हों।

⁸और वह शहर बनी-इस्राईल की मीरास में से यूँ दिए जाएँ। जिनके क़ब्ज़े में बहुत से-हों उनसे थोड़े शहर लेना। हर क़बीला अपनी मीरास के मुताबिक़ जिसका वह वारिस हो लावियों के लिए शहर दे।"

⁹और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,¹⁰"बनी-इस्राईल से कह दे कि जब तुम यरदन को पार करके मुल्क-ए-कना'न में पहुँच जाओ,¹¹~तो तुम कई ऐसे शहर मुकर्रर करना जो तुम्हारे लिए पनाह के शहर हों, ताकि वह ख़ूनी जिससे अनजाने में ~खून हो जाए वहाँ भाग जा सके।

¹²इन शहरों में तुम को इन्तक़ाम लेने वाले से पनाह मिलेगी, ताकि ख़ूनी जब तक वह फ़ैसले के लिए जमा'अत के आगे हाज़िर न हो तब तक मारा न जाए।¹³और पनाह के जो शहर तुम दोगे वह छः हों।

¹⁴तीन शहर तो यरदन के पार और तीन मुल्क-ए-कना'न में देना। यह पनाह के शहर होंगे।¹⁵इन छहों शहरों में बनी-इस्राईल को और उन मुसाफ़िरों और परदेसियों को जो तुम में क़याम करते हैं, पनाह मिलेगी ताकि जिस किसी से अनजाने में खून हो जाए वह वहाँ भाग जा सके।

¹⁶और अगर कोई किसी को लोहे के हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह ख़ूनी ठहरेगा और वह ख़ूनी ज़रूर मारा जाए।¹⁷या अगर कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर जिससे आदमी मर सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह ख़ूनी ठहरेगा और वह ख़ूनी ज़रूर मारा जाए।¹⁸या अगर कोई चोबी आला हाथ में लेकर जिससे आदमी मर सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह ख़ूनी ठहरेगा और वह ख़ूनी ज़रूर मारा जाए।

¹⁹खून का इन्तक़ाम लेने वाला ख़ूनी को आप ही क़त्ल करे; जब वह उसे मिले तब ही उसे मार डाले।²⁰और अगर कोई किसी को 'अदावत से धकेल दे या घात लगा कर कुछ उस पर फेंक दे और वह मर जाए,²¹या दुश्मनी से उसे अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए; तो वह जिसने मारा हो ज़रूर क़त्ल किया जाए क्योंकि वह ख़ूनी है। खून का इन्तक़ाम लेने वाला इस ख़ूनी को जब वह उसे मिले मार डाले।

²²लेकिन अगर कोई किसी को बग़ैर 'अदावत के नाग़हान धकेल दे या बग़ैर घात लगाए उस पर कोई चीज़ डाल दे,²³या उसे बग़ैर देखे कोई ऐसा पत्थर उस पर फेंके जिससे आदमी मर सकता हो, और वह मर जाए; लेकिन यह न तो उसका दुश्मन और न उसके नुक़सान का ख़्वाहान था;

²⁴तो जमा'अत ऐसे क़ातिल और खून के इन्तक़ाम लेने वाले के बीच इन ही हुक्मों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे;²⁵और जमा'अत उस क़ातिल को खून के इन्तक़ाम लेने वाले के हाथ से छुड़ाए और जमा'अत ही उसे पनाह के उस शहर में जहाँ वह भाग गया था वापस पहुँचा दे, और जब तक सरदार काहिन जो पाक तेल से मम्सूह हुआ था मर न जाए तब तक वह वहीं रहे।

²⁶लेकिन अगर वह ख़ूनी अपने पनाह के शहर की सरहद से, जहाँ वह भाग कर गया हो किसी वक़्त बाहर निकले,²⁷और खून के इन्तक़ाम लेने वाले की वह पनाह के शहर की सरहद के बाहर मिल जाए और इन्तक़ाम लेने वाला क़ातिल को क़त्ल कर डाले, तो वह खून करने का मुजरिम न होगा;²⁸क्योंकि ख़ूनी को लाज़िम था कि सरदार काहिन की वफ़ात तक उसी पनाह कि शहर में रहता, लेकिन सरदार काहिन के मरने के बाद ख़ूनी अपनी मौरूसी जगह को लौट जाए।

²⁹"इसलिए तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल-दर-नसल यह बातें फ़ैसले के लिए क़ानून ठहरेंगी।³⁰अगर कोई किसी को मार डाले तो क़ातिल गवाहों की शहादत पर क़त्ल किया जाए, लेकिन एक गवाह की शहादत से कोई मारा न जाए।

³¹और तुम उस क़ातिल से जो वाजिब-उल-क़त्ल हो दियत न लेना बल्कि वह ज़रूर ही मारा जाए।³²और तुम उससे भी जो किसी पनाह के शहर को भाग गया हो, इस गर्ज़ से दियत न लेना कि वह सरदार काहिन की मौत से पहले फिर मुल्क में रहने को लौटने पाए।

³³इसलिए तुम उस मुल्क को जहाँ तुम रहोगे नापाक न करना, क्योंकि खून मुल्क को नापाक कर देता है; और उस मुल्क के लिए जिसमें खून बहाया जाए अलावा क़ातिल के खून के और किसी चीज़ का क़फ़ारा नहीं लिया जा सकता।³⁴~और तुम अपनी क़याम के मुल्क को जिसके अन्दर मैं रहूँगा, गन्दा भी न करना; क्योंकि मैं जो खुदावन्द हूँ, इसलिए बनी-इस्राईल के बीच रहता हूँ।"

Chapter 36

¹और बनी यूसुफ के घरानों में से बनी जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के आबाई खान्दानों के सरदार मूसा और उन अमीरों के पास जाकर जो बनी इस्राईल के आबाई खान्दानों के सरदार थे कहने लगे, ²"खुदावन्द ने हमारे मालिक को हुक्म दिया था कि ~पर्ची डाल कर यह मुल्क मीरास के तौर पर बनी-इस्राईल को देना; और हमारे मालिक को खुदावन्द की तरफ से हुक्म मिला था, कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की मीरास उसकी बेटियों को दी जाए।

³लेकिन अगर वह बनी-इस्राईल के और क़बीलों के आदमियों से ब्याही जाएँ, तो उनकी मीरास हमारे बाप-दादा की मीरास से निकल कर उस क़बीले की मीरास में शामिल की जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी; यूँ वह हमारे हिस्से की मीरास से अलग हो जाएगी।⁴और जब बनी-इस्राईल का साल-ए-यूबली आएगा, तो उनकी मीरास उसी क़बीले की मीरास से मुल्हक़ की जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी। यूँ हमारे बाप-दादा के क़बीले की मीरास से उनका हिस्सा निकल जाएगा।"

⁵तब मूसा ने खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बनी-इस्राईल को हुक्म दिया और कहा कि "बनी यूसुफ़ के क़बीले के लोग ठीक कहते हैं।⁶इसलिए सिलाफ़िहाद की बेटियों के हक़ में खुदावन्द का हुक्म यह है कि वह जिनको पसन्द करें उन्हीं से ब्याह करें, लेकिन अपने बापदादा के क़बीले ही के खान्दानों में ब्याही जाएँ।

⁷~यूँ बनी-इस्राईल की मीरास एक क़बीले से दूसरे क़बीले में नहीं जाने जाएगी; क्योंकि हर इस्राईली को अपने बाप-दादा के क़बीले की मीरास को अपने क़ब्ज़े में रखना होगा।

⁸और अगर बनी इस्राईल के किसी क़बीले में कोई लड़की हो जो मीरास की, मालिक हो तो वह अपने बाप के क़बीले के किसी खानदान में ब्याह करे ताकि हर इस्राईली अपने बाप दादा की मीरास पर क़ायम रहे।⁹यूँ किसी की मीरास एक क़बीले से दूसरे क़बीले में नहीं जाने जाएगी; क्योंकि बनी-इस्राईल के क़बीलों को लाज़िम है कि अपनी अपनी मीरास अपने-अपने क़ब्ज़े में रखें।"

¹⁰और सिलाफ़िहाद की बेटियों ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।¹¹क्यूँकि महलाह और तिरज़ाह और हुजलाह और मिल्काह और नू'आह जो सिलाफ़िहाद की बेटियाँ थीं, वह अपने चचेरे भाइयों के साथ ब्याही गईं, ¹²या'नी वह यूसुफ़ के बेटे मनस्सी की नसल के खान्दानों में ब्याही गईं, और उनकी मीरास, उनके आबाई खान्दान के क़बीले में क़ायम रही।

¹³जो हुक्म और फ़ैसले खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' मोआब के मैदानों में जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाक़े' है बनी इस्राईल को दिए वह यही हैं।

इस्तिस्ना

Chapter 1

¹यह~वही बातें हैं जो मूसा ने यरदन के उस पार वीराने में, या'नी उस मैदान में जो सूफ़ के सामने और फ़ारान और तोफ़ल और लाबन और हसीरात और दीज़हब के बीच है, सब इस्राईलियों से कही।²कोह-ए-श'ईर की राह से होरिब से क़ादिस बर्नी'अ तक ग्यारह दिन की मन्ज़िल है।

³~और चालीसवें बरस के ग्यारहवें महीने की पहली तारीख़ को मूसा ने उन सब अहक़ाम के मुताबिक़ जो खुदावन्द ने उसे बनी-इस्राईल के लिए दिए थे, उनसे यह बातें कही: 'या'नी जब उसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को जो हस्बोन में रहता था मारा, और बसन के बादशाह 'ओज को जो 'इस्तारात में रहता था, अदर'ई में क़त्ल किया;

⁵तो इसके बा'द यरदन के पार मोआब के मैदान में मूसा इस शरी'अत को यूँ बयान करने लगा कि, ⁶~"खुदावन्द हमारे खुदा ने होरिब में हमसे यह कहा था, कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रह चुके हो

⁷इसलिए अब फ़िरो और कूच करो और अमोरियों के पहाड़ी मुल्क, और उसके आस-पास के मैदान और पहाड़ी क़ता'अ और नशेब की ज़मीन और दख़िनी अतराफ़ में, और समन्दर के साहिल तक जो कना'नियों का मुल्क है बल्कि कोह-ए-लुबनान और दरिया-ए-फ़रात तक जो एक बड़ा दरिया है, चले जाओ।⁸देखो, मैंने इस मुल्क को तुम्हारे सामने कर दिया है। इसलिए जाओ और उस मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लो, जिसके बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप-दादा इब्राहीम, इस्हाक़, और या'क़ूब से क़सम खाकर यह कहा था, कि वह उसे उनको और उनके बा'द उनकी नसल को देगा।

⁹~उस वक़्त मैंने तुमसे कहा था, कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा सकता।¹⁰खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको बढ़ाया है और आज के दिन आसमान के तारों की तरह तुम्हारी कसरत है।¹¹खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा का खुदा तुमको इससे भी हज़ार चँद बढ़ाए, और जो वा'दा उसने तुमसे किया है उसके मुताबिक़ तुमको बरकत बख़्शे।

¹²मैं अकेला तुम्हारे जंजाल और बोझ और झंझट को कैसे उठा सकता हूँ?¹³इसलिए तुम अपने-अपने क़बीले से ऐसे आदमियों को चुनो जो दानिश्वर और 'अक्लमन्द और मशहूर हों, और मैं उनको तुम पर सरदार बना दूँगा।¹⁴इसके जवाब में तुमने मुझसे कहा था, कि जो कुछ तूने फ़रमाया है उसका करना बेहतर है।

¹⁵इसलिए मैंने तुम्हारे क़बीलों के सरदारों को जो 'अक्लमन्द और मशहूर थे, लेकर उनको तुम पर मुकर्रर किया ताकि वह तुम्हारे क़बीलों के मुताबिक़ हज़ारों के सरदार, और सैकड़ों के सरदार, और पचास-पचास के सरदार, और दस-दस के सरदार हाकिम हों।¹⁶और उसी मौक़े' पर मैंने तुम्हारे क़ाज़ियों से ताकीदन ये कहा, कि तुम अपने भाइयों के मुक़द्दमों को सुनना, पर चाहे भाई-भाई का मुआ'मिला हो या परदेसी का तुम उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ करना।

¹⁷तुम्हारे फ़ैसले में किसी की रू-रि'आयत न हो, जैसे बड़े आदमी की बात सुनोगे वैसे ही छोटे की सुनना और किसी आदमी का मुँह देख कर डर न जाना; क्यूँकि यह 'अदालत खुदा की है; और जो मुक़द्दमा तुम्हारे लिए मुश्किल हो उसे मेरे पास ले आना मैं उसे सुनूँगा।¹⁸और मैंने उसी वक़्त सब कुछ जो तुमको करना है बता दिया।

¹⁹ और हम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म के मुताबिक़ होरिब से सफ़र करके उस बड़े और खतरनाक वीराने में से होकर गुज़रे, जिसे तुमने अमोरियों के पहाड़ी मुल्क के रास्ते में देखा। फिर हम क़ादिस बनी'अ में पहुँचे।

²⁰ वहाँ मैंने तुमको कहा, कि तुम अमोरियों के पहाड़ी मुल्क तक आ गए हो जिसे खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है।²¹ देख, उस मुल्क को खुदावन्द तेरे खुदा ने तेरे सामने कर दिया है। इसलिए तू जा, और जैसा खुदावन्द तेरे बाप-दादा के खुदा ने तुझ से कहा है तू उस पर क़ब्ज़ा कर और न खौफ़ खा न हिरासान हो।

²² तब तुम सब मेरे पास आकर मुझसे कहने लगे, कि हम अपने जाने से पहले वहाँ आदमी भेजें, जो जाकर हमारी खातिर उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें और आकर हमको बताएँ कि हमको किस राह से वहाँ जाना होगा और कौन-कौन से शहर हमारे रास्ते में पड़ेंगे।²³ यह बात मुझे बहुत पसन्द आई चुनौचे मैंने क़बीले पीछे एक-एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी चुने।²⁴ और वह रवाना हुए और पहाड़ पर चढ़ गए और वादी-ए-इसकाल में पहुँच कर उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त किया।

²⁵ और उस मुल्क का कुछ फल हाथ में लेकर उसे हमारे पास लाए, और हमको यह खबर दी कि जो मुल्क खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है वह अच्छा है।

²⁶ तो भी तुम वहाँ जाने पर राज़ी न हुए, बल्कि तुमने खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म से सरकशी की,²⁷ और अपने खेमों में कुड़कुड़ाने और कहने लगे, कि खुदावन्द को हमसे नफ़रत है इसीलिए वह हमको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया ताकि वह हमको अमोरियों के हाथ में गिरफ़्तार करा दे और वह हमको हलाक कर डालें।²⁸ हम किधर जा रहे हैं? हमारे भाइयों ने तो यह बता कर हमारा हौसला तोड़ दिया है, कि वहाँ के लोग हमसे बड़े-बड़े और लम्बे हैं, और उनके शहर बड़े-बड़े और उनकी फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। इसके अलावा हमने वहाँ 'अनाक़ीम की औलाद को भी देखा।

²⁹ तब मैंने तुमको कहा, कि खौफ़ज़दा मत हो और न उनसे डरो।³⁰ खुदावन्द तुम्हारा खुदा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है, वही तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा जैसे उसने तुम्हारी खातिर मिस्र में तुम्हारी आँखों के सामने सब कुछ किया³¹ और वीराने में भी तुमने यही देखा के जिस तरह इन्सान अपने बेटे को उठाए हुए चलता है उसी तरह खुदावन्द तुम्हारा खुदा तेरे इस जगह पहुँचने तक सारे रास्ते जहाँ-जहाँ तुम गए तुमको उठाए रहा

³² तो भी इस बात में तुमने खुदावन्द अपने खुदा का यकीन न किया,³³ जो राह में तुमसे आगे-आगे तुम्हारे वास्ते खेमे लगाने की जगह तलाश करने के लिए, रात को आग में और दिन को बादल में होकर चला, ताकि तुमको वह रास्ता दिखाए जिस से तुम चलो।

³⁴ और खुदावन्द तुम्हारी बातें सुन कर ग़ज़बनाक हुआ और उसने क़सम खाकर कहा, कि³⁵ इस बुरी नसल के लोगों में से एक भी उस अच्छे मुल्क को देखने नहीं पाएगा, जिसे उनके बाप-दादा को देने की क़सम मैंने खाई है,³⁶ सिवा यफ़ुना के बेटे कालिब के; वह उसे देखेगा, और जिस ज़मीन पर उसने क़दम रखखा है उसे मैं उसकी और उसकी नसल को दूँगा; इसलिए के उसने खुदावन्द की पैरवी पूरे तौर पर की,

³⁷ और तुम्हारी ही वजह से खुदावन्द मुझ पर भी नाराज़ हुआ और यह कहा, कि तू भी वहाँ जाने न पाएगा।³⁸ नून का बेटा यशू'अ जो तेरे सामने खड़ा रहता है वहाँ जाएगा, इसलिए तू उसकी हौसला अफ़ज़ाई कर क्योंकि वही बनी इस्राईल को उस मुल्क का मालिक बनाएगा।

³⁹ और तुम्हारे बाल-बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा था, कि लूट में जाएँगे, और तुम्हारे लड़के बाले जिनको आज भले और बुरे की भी तमीज़ नहीं, यह-वहाँ जाएँगे; और यह मुल्क मैं इन ही को दूँगा और यह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे।⁴⁰ पर तुम्हारे लिए यह है, कि तुम लौटो और बहर-ए-कुलजुम की राह से वीराने में जाओ।

⁴¹ तब तुमने मुझे जवाब दिया, कि हमने खुदावन्द का गुनाह किया है और अब जो कुछ खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको हुक्म दिया है, उसके मुताबिक़ हम जाएँगे और जंग करेंगे। इसलिए तुम सब अपने-अपने जंगी हथियार बाँध कर पहाड़ पर चढ़ जाने को तैयार हो गए।⁴² तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि उनसे कह दे के ऊपर मत चढ़ो और न जंग करो क्योंकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूँ; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने दुश्मनों से शिकस्त खाओ।

⁴³ और मैंने तुमसे कह भी दिया पर तुमने मेरी न सुनी, बल्कि तुमने खुदावन्द के हुक्म से सरकशी की और शोखी से पहाड़ पर चढ़ गए।⁴⁴ तब अमोरी जो उस पहाड़ पर रहते थे तुम्हारे मुकाबले को निकले, और उन्होंने शहद की मक्खियों की तरह तुम्हारा पीछा किया और श'ईर में मारते-मारते तुमको हुरमा तक पहुँचा दिया।

⁴⁵ तब तुम लौट कर खुदावन्द के आगे रोने लगे, लेकिन खुदावन्द ने तुम्हारी फ़रियाद न सुनी और न तुम्हारी बातों पर कान लगाया।⁴⁶ इसलिए तुम क़ादिस में बहुत दिनों तक पड़े रहे, यहाँ तक के एक ज़माना हो गया।

Chapter 2

¹~"और जैसा खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया था, उसके मुताबिक हम लौटे और बहर-ए-कुलजुम की राह से वीराने में आए और बहुत दिनों तक कोह-ए-श'ईर के बाहर-बाहर चलते रहे।²तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि:³~तुम इस पहाड़ के बाहर-बाहर बहुत चल चुके; उत्तर की तरफ मुड़ जाओ,

⁴और तू इन लोगों को ताकीद कर दे कि तुमको बनी 'ऐसौ, तुम्हारे भाई जो श'ईर में रहते हैं उनकी सरहद के पास से होकर जाना है, और वह तुमसे हिरासान होंगे। इसलिए तुम खूब एहतियात रखना,⁵और उनको मत छेड़ना; क्योंकि मैं उनकी ज़मीन में से पाँव धरने तक की जगह भी तुमको नहीं दूँगा, इसलिए कि मैंने कोह-ए-श'ईर 'ऐसौ को मीरास में दिया है।

⁶तुम रुपये देकर अपने खाने के लिए उनसे खुराक खरीदना, और पीने के लिए पानी भी रुपया देकर उनसे मोल लेना।⁷क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तेरे हाथ की कमाई में बरकत देता रहा है, और इस बड़े वीराने में जो तुम्हारा चलना फिरना है वह उसे जानता है। इन चालीस बरसों में खुदावन्द तेरा खुदा बराबर तुम्हारे साथ रहा और तुझको किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।

⁸इसलिए हम अपने भाइयों बनी 'ऐसौ के पास से जो श'ईर में रहते हैं, कतरा कर मैदान की राह से ऐलात और 'अस्यून जाबर होते हुए गुज़रे।⁹फिर हम मुड़े और मोआब के वीराने के रास्ते से चले।

⁹फिर खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मोआबियों को न तो सताना और न उनसे जंग करना; इसलिए कि मैं तुझको उनकी ज़मीन का कोई हिस्सा मिल्कियत के तौर पर नहीं दूँगा, क्योंकि मैंने 'आर को बनी लूत की मीरास कर दिया है।

¹⁰~(वहाँ पहले ऐमीम बसे हुए थे जो 'अनाक्रीम की तरह बड़े-बड़े और लम्बे-लम्बे और शुमार में बहुत थे।¹¹और 'अनाक्रीम ही की तरह वह भी रफ़ाईम में गिने जाते थे, लेकिन मोआबी उनको ऐमीम कहते हैं।

¹²और पहले श'ईर-में होरी क्रौम के लोग बसे हुए थे, लेकिन बनी 'ऐसौ ने उनको निकाल दिया और उनको अपने सामने से बर्बाद करके आप उनकी जगह बस गए, जैसे इस्राईल ने अपनी मीरास के मुल्क में किया जिसे खुदावन्द ने उनको दिया।)

¹³अब उठो और वादी-ए-ज़रद के पार जाओ। चुनाँचे हम वादी-ए-ज़रद से पार हुए।¹⁴~और हमारे क्रादिस बर्नी'अ से खाना होने से लेकर वादी-ए-ज़रद के पार होने तक अड़तीस बरस का 'अरसा गुज़रा। इस असना में खुदावन्द की क्रसम के मुताबिक उस नसल के सब जंगी मर्द लश्कर में से मर खप गए।¹⁵~और जब तक वह नाबूद न हो गए तब तक खुदावन्द का हाथ उनको लश्कर में से हलाक करने को उनके खिलाफ़ बढ़ा ही रहा।

¹⁶जब सब जंगी मर्द मर गए और क्रौम में से फ़ना हो गए।¹⁷तो खुदावन्द ने मुझसे कहा, "आज तुझे 'आर शहर से होकर जो मोआब की सरहद है गुज़रना है।

¹⁹~और जब तू बनी 'अम्मोन के करीब जा पहुँचे, तो उन को मत सताना और न उनको छेड़ना, क्योंकि मैं बनी 'अम्मोन की ज़मीन का कोई हिस्सा तुझे मीरास के तौर पर नहीं दूँगा इसलिए कि उसे मैंने बनी लूत को मीरास में दिया है।

²⁰(वह मुल्क भी रफ़ाईम का गिना जाता था, क्योंकि पहले रफ़ाईम जिनको 'अम्मोनी लोग ज़मज़मीम कहते थे वहाँ बसे हुए थे।²¹यह लोग भी 'अनाक्रीम की तरह बड़े-बड़े और लम्बे-लम्बे और शुमार में बहुत थे, लेकिन खुदावन्द ने उनको 'अम्मोनियों के सामने से हलाक किया, और वह उनको निकाल कर उनकी जगह आप बस गए।²²ठीक वैसे ही जैसे उसने बनी 'ऐसौ के सामने से जो श'ईर में रहते थे होरियों को हलाक किया, और वह उनको निकाल कर आज तक उन ही की जगह बसे हुए हैं।

²³ऐसे ही 'अवियों को जो अपनी बस्तियों में गज़ज़ा तक बसे हुए थे, कफ़तूरियों ने जो कफ़तूरा से निकले थे हलाक किया और उनकी जगह आप बस गए)

²⁴इसलिए उठो, और वादी-ए-अरनून के पार जाओ। देखो, मैंने हस्बोन के बादशाह सीहोन को, जो अमोरी है उसके मुल्क समेत तुम्हारे हाथ में कर दिया है; इसलिए उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू' करो और उससे जंग छेड़ दो।²⁵मैं आज ही से तुम्हारा ख़ौफ़ और रौब उन क्रौमों के दिल में डालना शुरू' करूँगा जो इस ज़मीन पर रहती हैं, वह तुम्हारी खबर सुनेंगी और काँपेंगी, और तुम्हारी वजह से बेताब हो जाएँगी।

²⁶~"और मैंने दशत-ए-क़दीमात से हस्बोन के बादशाह सीहोन के पास सुलह के पैग़ाम के साथ क़ासिद खाना किए और कहला भेजा, कि²⁷मुझे अपने मुल्क से गुज़र जाने दे; मैं शाहराह से होकर चलूँगा और दहने और बाएँ हाथ नहीं मुड़ूँगा

²⁸तू रुपये लेकर मेरे हाथ मेरे खाने के लिए खुराक बेचना, और मेरे पीने के लिए पानी भी मुझे रुपया लेकर देना; सिर्फ़ मुझे पाँव-पाँव निकल जाने दे,²⁹जैसे बनी 'ऐसौ ने जो श'ईर में रहते हैं, और मोआबियों ने जो 'आर शहर में बसते हैं। मेरे साथ किया; जब तक कि मैं यरदन को उबूर करके उस मुल्क में पहुँच न जाऊँ जो खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है।

³⁰लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमको अपने हाँ से गुज़रने न दिया; क्योंकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उसका मिज़ाज कड़ा और उसका दिल सख़्त कर दिया ताकि उसे तेरे हाथ में हवाले कर दे, जैसा आज ज़ाहिर है।³¹~और खुदावन्द ने मुझसे कहा, "देख, मैं सीहोन और उसके मुल्क को तेरे हाथ में हवाले करने को हूँ, इसलिए तू उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू' कर, ताकि वह तेरी मीरास ठहरे।'

³²तब सीहोन अपने सब आदमियों को लेकर हमारे मुक़ाबले में निकला और जंग करने के लिए यहज़ में आया।³³और खुदावन्द हमारे खुदा ने उसे हमारे हवाले कर दिया; और हमने उसे, और उसके बेटों को, और उसके सब आदमियों को मार लिया।

³⁴और हमने उसी वक़्त उसके सब शहरों को ले लिया, और हर आबाद शहर को 'औरतों और बच्चों समेत बिल्कुल नाबूद कर दिया और किसी को बाक़ी न छोड़ा;³⁵~लेकिन चौपायों को और शहरों के माल को जो हमारे हाथ लगा लूट कर हमने अपने लिए रख लिया।

³⁶और 'अरो'ईर से जो वादी-ए-अरनोन के किनारे है, और उस शहर से जो वादी में है, ज़िल'आद तक ऐसा कोई शहर न था जिसको सर करना हमारे लिए मुश्किल हुआ; खुदावन्द हमारे खुदा ने सबको हमारे क़ब्ज़े में कर दिया।³⁷लेकिन बनी 'अम्मोन के मुल्क के नज़दीक और दरिया-ए- यबोक़ का 'इलाक़ा और कोहिस्तान के शहरों में और जहाँ-जहाँ खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको मना' किया था तो नहीं गया।

Chapter 3

¹"फिर हमने मुड़ कर बसन का रास्ता लिया और बसन का बादशाह 'ओज अदर'ई में अपने सब आदमियों को लेकर हमारे मुकाबले में जंग करने को आया।

²और खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उससे मत डर, क्योंकि मैंने उसको और उसके सब आदमियों और मुल्क को तेरे कब्जे में कर दिया है; जैसा तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन से जो हस्बोन में रहता था किया, वैसा ही तू इससे भी करेगा।'

³चुनाँचे खुदावन्द हमारे खुदा ने बसन के बादशाह 'ओज को भी उसके सब आदमियों समेत हमारे क्राबू में कर दिया, और हमने उनको यहाँ तक मारा के उनमें से कोई बाक़ी न रहा।⁴ और हमने उसी वक़्त उसके सब शहर ले लिए, और एक शहर भी ऐसा न रहा जो हमने उनसे ले न लिया हो। यूँ अरजुब का सारा मुल्क जो बसन में 'ओज की सल्तनत में शामिल था और उसमें साठ शहर थे, हमारे कब्जे में आया।

⁵यह सब शहर फ़सीलदार थे और इनकी ऊँची-ऊँची दीवारें और फाटक और बेंडे थे। इनके 'अलावा बहुत से ऐसे क़स्बे भी हमने ले लिए जो फ़सीलदार न थे।

⁶और जैसा हमने हस्बोन के बादशाह सीहोन के यहाँ किया वैसा ही इन सब आबाद शहरों को म'ए' औरतों और बच्चों के बिल्कुल नाबूद कर डाला।⁷ लेकिन सब चौपायों और शहरों के माल को लूट कर हमने अपने लिए रख लिया।

⁸यूँ हमने उस वक़्त अमोरियों के दोनों बादशाहों के हाथ से, जो यरदन पार रहते थे उनका मुल्क वादी-ए-अरनोन से कोह-ए-हरमून तक ले लिया।⁹ (इस हरमून को सैदानी सिरयून, और अमोरी सनीर कहते हैं)¹⁰ और सलका और अदर'ई तक मैदान के सब शहर और सारा जिल'आद और सारा बसन या'नी 'ओज की सल्तनत के सब शहर जो बसन में शामिल थे हमने ले लिए।

¹¹(क्योंकि रफ़ाईम की नसल में से सिर्फ़ बसन का बादशाह 'ओज बाक़ी रहा~था। उसका पलंग लोहे का बना हुआ था और वह बनी अम्मोन के शहर रब्बा में मौजूद है, और आदमी के हाथ के नाप के मुताबिक़ नौ हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा है।)

¹²~इसलिए इस मुल्क पर हमने उस वक़्त क़ब्ज़ा कर लिया, और 'अरो'ईर जो वादी-ए-अरनोन के किनारे है और जिल'आद के पहाड़ी मुल्क का आधा हिस्सा और उसके शहर मैंने रूबीनियों और जहियों को दिए।¹³ और जिल'आद का बाक़ी हिस्सा और सारा बसन या'नी अरजुब का सारा मुल्क जो 'ओज की क़लमरौ में था, मैंने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया। (बसन रफ़ाईम का मुल्क कहलाता था।

¹⁴और मनस्सी के बेटे याईर ने जसूरियों और मा'कातियों की सरहद तक अरजुब के सारे मुल्क को ले लिया और अपने नाम पर बसन के शहरों को हव्वत याईर का नाम दिया, जो आज तक चला आता है)

¹⁵और जिल'आद मैंने मकीर को दिया,¹⁶ और रूबीनियों और जहियों को मैंने जिल'आद से वादी-ए-अरनोन तक का मुल्क, या'नी उस वादी के बीच के हिस्से को उनकी एक हद ठहरा कर दरिया-ए-यबोक़ तक, जो 'अम्मोनियों की सरहद है उनको दिया।

¹⁷और मैदान को और किन्नरत से लेकर मैदान के दरिया या'नी दरिया-ए-शोर तक, जो पूरब में पिसगा के ढाल तक फैला हुआ है और यरदन और उसका सारा इलाके को भी मैंने इन ही को दे दिया।

¹⁸~"और मैंने उस वक़्त तुमको हुक्म दिया, कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको यह मुल्क दिया है कि तुम उस पर क़ब्ज़ा करो। इसलिए तुम सब जंगी मर्द हथियारबंद होकर अपने भाइयों बनी-इसाईल के आगे-आगे पार चलो;

¹⁹मगर तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये (क्योंकि मुझे मा'लूम है कि तुम्हारे पास चौपाये बहुत हैं), इसलिए यह सब तुम्हारे उन ही शहरों में रह जाँएँ जो मैंने तुमको दिए हैं;²⁰ आख़ीर तक कि खुदावन्द तुम्हारे भाइयों को चैन न बरख़्शे जैसे तुमको बरख़्शा, और वह भी उस मुल्क पर जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा यरदन के उस पार तुमको देता है क़ब्ज़ा न कर लें। तब तुम सब अपनी मिलिक़ियत में जो मैंने तुमको दी है लौट कर आने पाओगे।

²¹और उसी मौक़े' पर मैंने यशू'अ को हुक्म दिया, कि जो कुछ खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने इन दो बादशाहों से किया वह सब तूने अपनी आँखों से देखा; खुदावन्द ऐसा ही उस पार उन सब सल्तनतों का हाल करेगा जहाँ तू जा रहा है।²² तुम उनसे न डरना, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारी तरफ़ से आप जंग कर रहा है।

²³उस वक़्त मैंने खुदावन्द से 'आजिज़ी के साथ दरख़्वास्त की कि,²⁴ खुदावन्द खुदा तूने अपने बन्दे को अपनी 'अज़मत और अपना ताक़तवर हाथ दिखाना शुरू' किया है क्योंकि आसमान में या ज़मीन पर ऐसा कौन मा'बूद है जो तेरे से काम या करामात कर सके।²⁵ इसलिए मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे पार जाने दे कि मैं भी अच्छे मुल्क को जो यरदन के पार है और उस खुशनुमा पहाड़ और लुबनान को देखूँ।

²⁶लेकिन खुदावन्द तुम्हारी वजह से मुझसे नाराज़ था और उसने मेरी न सुनी; बल्कि खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि बस कर इस मज़मून पर मुझसे फिर कभी कुछ न कहना।²⁷ तू कोह-ए-पिसगा की चोटी पर चढ़ जा और पश्चिम और उत्तर और दख्खिन और पूरब की तरफ़ नज़र दौड़ा कर उसे अपनी आँखों से देख ले, क्योंकि तू इस यरदन के पार नहीं जाने पाएगा।

²⁸पर यशू'अ को वसीयत कर और उसकी हौसला अफ़ज़ाई करके उसे मज़बूत कर क्योंकि वह इन लोगों के आगे पार जाएगा; और वही इनको उस मुल्क का, जिसे तू देख लेगा मालिक बनाएगा।²⁹ चुनाँचे हम उस वादी में जो बैत फ़ग़ूर है ठहरे रहे।

Chapter 4

¹"और अब ऐ इसाईलियो, जो आईन और अहकाम मैं तुमको सिखाता हूँ तुम उन पर 'अमल करने के लिए उनको सुन लो, ताकि तुम ज़िन्दा रहो और उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा का खुदा तुमको देता है, दाखिल हो कर उस पर क़ब्ज़ा कर लो।" जिस बात का मैं तुमको हुक्म देता हूँ, उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना; ताकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को जो मैं तुमको बताता हूँ मान सको।

³जो कुछ खुदावन्द ने बा'ल फ़गूर की वजह से किया, वह तुमने अपनी आँखों से देखा है; क्योंकि उन सब आदमियों को जिन्होंने बा'ल फ़गूर की पैरवी की, खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे बीच से नाबूद कर दिया।⁴पर तुम जो खुदावन्द अपने खुदा से लिपटे रहे हो, सब के सब आज तक ज़िन्दा हो।

⁵देखो, जैसा खुदावन्द मेरे खुदा ने मुझे हुक्म दिया, उसके मुताबिक मैंने तुमको आईन और अहकाम सिखा दिए हैं; ताकि उस मुल्क में उन पर 'अमल करो जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए जा रहे हो।⁶इसलिए तुम इनको मानना और 'अमल में लाना, क्योंकि और क्रौमों के सामने यही तुम्हारी 'अक़ल और दानिश ठहरेंगे। वह इन तमाम क़वानीन को सुन कर कहेंगे, कि यक़ीनन ये बुजुर्ग क्रौम निहायत 'अक़लमन्द और समझदार है।

⁷क्योंकि ऐसी बड़ी क्रौम कौन है जिसका मा'बूद इस क़द्र उसके नज़दीक हो जैसा खुदावन्द हमारा खुदा, कि जब कभी हम उससे दु'आ करें हमारे नज़दीक है?

⁸और कौन ऐसी बुजुर्ग क्रौम है जिसके आईन और अहकाम ऐसे रास्त हैं जैसी ये सारी शरी'अत है, जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ।

⁹"इसलिए तुम ज़रूर ही अपनी एहतियात रखना और बड़ी हिफ़ाज़त करना, ऐसा न हो कि तुम वह बातें जो तुमने अपनी आँख से देखी हैं भूल जाओ और वह ज़िन्दगी भर के लिए तुम्हारे दिल से जाती रहें; बल्कि तुम उनको अपने बेटों और पोतों को सिखाना।¹⁰~खासकर उस दिन की बातें, जब तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने होरिब में खड़ा हुआ; क्योंकि खुदावन्द ने मुझसे कहा था, कि क्रौम को मेरे सामने जमा' कर और मैं उनको अपनी बातें सुनाऊँगा ताकि वह ये सीखें कि ज़िन्दगी भर, जब तक ज़मीन पर ज़िन्दा रहें मेरा ख़ौफ़ मानें और अपने बाल-बच्चों को भी यही सिखाएँ।

¹¹चुनाँचे तुम नज़दीक जाकर उस पहाड़ के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से दहक रहा था और उसकी लौ आसमान तक पहुँचती थी और चारों तरफ़ तारीकी और घटा और जुलमत थी।¹²~और खुदावन्द ने उस आग में से होकर तुमसे कलाम किया; तुमने बातें तो सुनीं लेकिन कोई सूरत न देखी, सिर्फ़ आवाज़ ही आवाज़ सुनी।

¹³और उसने तुमको अपने 'अहद के दसों अहकाम बताकर उनके मानने का हुक्म दिया, और उनको पत्थर की दो तख्तियों पर लिख भी दिया।¹⁴उस वक़्त खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया, कि तुमको यह आईन और अहकाम सिखाऊँ ताकि तुम उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए जा रहे हो, उन पर 'अमल करो।

¹⁵"इसलिए तुम अपनी ख़ुब ही एहतियात रखना; क्योंकि तुमने उस दिन जब खुदावन्द ने आग में से होकर होरिब में तुमसे कलाम किया, किसी तरह की कोई सूरत नहीं देखी।¹⁶~ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर किसी शक़ल या सूरत की खोदी हुई मूरत अपने लिए बना लो, जिसकी शबीह किसी मर्द या 'औरत,¹⁷या ज़मीन के किसी हैवान या हवा में उड़ने वाले परिन्दे,¹⁸~या ज़मीन के रेंगनेवाले जानदार या मछली से, जो ज़मीन के नीचे पानी में रहती है मिलती हो;

¹⁹~या जब तू आसमान की तरफ़ नज़र करे और तमाम अजराम-ए-फ़लक या'नी सूरज और चाँद और तारों को देखे, तो गुमराह होकर उन्हीं को सिज्दा और उनकी 'इबादत करने लगे जिनको खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने इस ज़मीन की सब क्रौमों के लिए रखखा है।²⁰लेकिन खुदावन्द ने तुमको चुना, और तुमको जैसे लोहे की भट्टी या'नी मिस्स से निकाल ले आया है ताकि तुम उसकी मीरास के लोग ठहरो, जैसा आज ज़ाहिर है।

²¹और तुम्हारी ही वजह से खुदावन्द ने मुझसे नाराज़ होकर क़सम खाई, कि मैं यरदन पार न जाऊँ और न उस अच्छे मुल्क में पहुँचने पाऊँ, जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है;²²बल्कि मुझे इसी मुल्क में मरना है, मैं यरदन पार नहीं जा सकता; लेकिन तुम पार जाकर उस अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे।

²³इसलिए तुम एहतियात रखो, ऐसा न हो कि तुम खुदावन्द अपने खुदा के उस 'अहद को जो उसने तुमसे बाँधा है भूल जाओ, और अपने लिए किसी चीज़ की शबीह की खोदी हुई मूरत बना लो जिसे खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको मना' किया है²⁴क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा भसम करने वाली आग है; वह ग़यूर खुदा है।

²⁵और जब तुझसे बेटे और पोते पैदा हों और तुमको उस मुल्क में रहते हुए एक ज़माना हो जाए, और तुम बिगड़कर किसी चीज़ की शबीह की खोदी हुई मूरत बना लो, और खुदावन्द अपने खुदा के सामने शरारत करके उसे गुस्सा दिलाओ;²⁶तो मैं आज के दिन तुम्हारे बरखिलाफ़ आसमान और ज़मीन को गवाह बनाता हूँ कि तुम उस मुल्क से, जिस पर क़ब्ज़ा करने को यरदन पार जाने पर हो, जल्द बिल्कुल फ़ना हो जाओगे; तुम वहाँ बहुत दिन रहने न पाओगे बल्कि बिल्कुल नाबूद कर दिए जाओगे।

²⁷और खुदावन्द तुमको क्रौमों में तितर बितर करेगा; और जिन क्रौमों के बीच खुदावन्द तुमको पहुँचाएगा उनमें तुम थोड़े से रह जाओगे।²⁸और वहाँ तुम आदमियों के हाथ के बने हुए लकड़ी और पत्थर के मा'बूदों की 'इबादत करोगे, जो न देखते न सुनते न खाते न सूँघते हैं।

²⁹लेकिन वहाँ भी अगर तुम खुदावन्द अपने खुदा के तालिब हो तो वह तुझको मिल जाएगा, बशर्त कि तुम अपने पूरे दिल से और अपनी सारी जान से उसे ढूँढो।

³⁰~जब तू मुसीबत में पड़ेगा और यह सब बातें तुझ पर गुज़रेंगी तो आखिरी दिनों में तू ~खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ फिरेगा और उसकी मानेगा,³¹~क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा रहीम खुदा है, वह तुझको न तो छोड़ेगा और न हलाक करेगा और न उस 'अहद को भूलेगा जिसकी क़सम उसने तुम्हारे बाप-दादा से खाई।

³²~"और जब से खुदा ने इन्सान को ज़मीन पर पैदा किया, तब से शुरू' करके तुम उन गुज़रे दिनों का हाल जो तुमसे पहले हो चुके पूछ, और आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दरियाफ़्त कर, कि इतनी बड़ी वारदात की तरह कभी कोई बात हुई या सुनने में भी आई?³³~क्या कभी कोई क्रौम खुदा की आवाज़ जैसे तू ने सुनी, आग में से आती हुई सुन कर ज़िन्दा बची है?

³⁴या कभी खुदा ने एक क्रौम को किसी दूसरी क्रौम के बीच से निकालने का इरादा करके, इम्तिहानों और निशानों और मो'जिज़ों और जंग और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाजू और हौलनाक माज्रों के वसीले से, उनको अपनी खातिर बरगुज़ीदा करने के लिए वह काम किए जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारी आँखों के सामने मिस्स में तुम्हारे लिए किए?

³⁵~यह सब कुछ तुझको दिखाया गया, ताकि तू जाने कि खुदावन्द ही खुदा है और उसके अलावा और कोई है ही नहीं।³⁶~उसने अपनी आवाज़ आसमान में से तुमको सुनाई ताकि तुझको तरबियत करे, और ज़मीन पर उसने तुझको अपनी बड़ी आग दिखाई; और तुमने उसकी बातें आग के बीच में से आती हुई सुनी।

³⁷~और चूँकि उसे तेरे बाप-दादा से मुहब्बत थी, इसीलिए उसने उनके बा'द उनकी नसल को चुन लिया, और तेरे साथ होकर अपनी बड़ी कुदरत से तुझको मिस्र से निकाल लाया;³⁸ ताकि तुम्हारे सामने से उन क्रौमों को जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं दफ़ा' करे, और तुझको उनके मुल्क में पहुँचाए, और उसे तुझको मीरास के तौर पर दे, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।

³⁹इसलिए आज के दिन तू जान ले और इस बात को अपने दिल में जमा ले, कि ऊपर आसमान में और नीचे ज़मीन पर खुदावन्द ही खुदा है और कोई दूसरा नहीं।⁴⁰~इसलिए तू उसके आईन और अहकाम को जो मैं तुझको आज बताता हूँ मानना, ताकि तेरा और तेरे बा'द तेरी औलाद का भला हो, और हमेशा उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है तेरी 'उम्र दराज़ हो।"

⁴¹फिर मूसा ने यरदन के पार पूरब की तरफ़ तीन शहर अलग किए,⁴² ताकि ऐसा खूनी जो अनजाने बग़ैर क़दीमी 'अदावत के अपने पड़ोसी को मार डाले, वह वहाँ भाग जाए और इन शहरों में से किसी में जाकर जीता बच रहे।⁴³ या'नी रूबीनियों के लिए तो शहर-ए-बसर हो जो तराई में वीरान के बीच वाक़े' है, और जदियों के लिए शहर-ए-रामात जो जिल'आद में है, और मनस्सियों के लिए बसन का शहर-ए-जौलान।

⁴⁴यह वह शरी'अत है जो मूसा ने बनी-इसाईल के आगे पेश की।⁴⁵~यही वह शहादतें और आईन और अहकाम हैं जिनको मूसा ने बनी-इसाईल को उनके मिस्र से निकलने के बा'द,⁴⁶~यरदन के पार उस वादी में जो बैत फ़गूर के सामने है, कह सुनाया; या'नी अमोरियों के बादशाह सीहोन के मुल्क में जो हस्बोन में रहता था, जिसे मूसा और बनी इस्राईल ने मुल्क-ए-मिस्र से निकलने के बा'द मारा।

⁴⁷और फिर उसके मुल्क को, और बसन के बादशाह 'ओज के मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लिया। अमोरियों के इन दोनों बादशाहों का यह मुल्क यरदन पार पूरब की तरफ़,⁴⁸ 'अरो'ईर से जो वादी-ए-अरनोन के किनारे वाक़े' है, कोह-ए-सियून तक जिसे हरमून भी कहते हैं, फैला हुआ है।⁴⁹~इसी में यरदन पार पूरब की तरफ़ मैदान के दरिया तक जो पिसगा की ढाल के नीचे बहता है, वहाँ का सारा मैदान शामिल है।

Chapter 5

¹फिर मूसा ने सब इसराईलियों को बुलावा कर उनको कहा, "ऐ इसराईलियों। तुम उन आईन और अहकाम को सुन लो, जिनको मैं आज तुमको सुनाता हूँ, ताकि तुम उनको सीख कर उन पर 'अमल करो।'²~खुदावन्द हमारे खुदा ने होरिब में हमसे एक 'अहद बाँधा।³खुदावन्द ने यह 'अहद हमारे बाप-दादा से नहीं, बल्कि खुद हम सब से जो यहाँ आज के दिन जीते हैं बाँधा।

⁴~खुदावन्द ने तुमसे उस पहाड़ पर, आमने-सामने आग के बीच में से बातें कीं।⁵उस वक़्त मैं तुम्हारे और खुदावन्द के बीच खड़ा हुआ ताकि खुदावन्द का कलाम तुम पर ज़ाहिर करूँ क्योंकि तुम आग की वजह से डरे हुए थे और पहाड़ पर न चढ़ें।⁶"तब उसने कहा, 'खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझको मुल्क-ए-मिस्र या 'नी गुलामी के घर से निकाल लाया, मैं हूँ।

⁷'मेरे आगे तू और मा'बूदों को न मानना।⁸तू अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना, न किसी चीज़ की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर या ज़मीन के नीचे पानी में है।

⁹तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी 'इबादत करना, क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा ग़यूर खुदा हूँ। और जो मुझसे 'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक बाप-दादा की बदकारी की सज़ा देता हूँ¹⁰ और हज़ारों पर जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे हुक्मों को मानते हैं, रहम करता हूँ।

¹¹~'तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेफ़ायदा न लेना; क्योंकि खुदावन्द उसको जो उसका नाम बेफ़ायदा लेता है, बेगुनाह न ठहराएगा।

¹²~'तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म के मुताबिक़ सबत के दिन को याद करके पाक मानना।¹³छः दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम-काज करना;

¹⁴लेकिन सातवाँ दिन खुदावन्द तेरे खुदा का सबत है उसमें न तू कोई काम करे, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा गुलाम, न तेरी लौंडी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा और कोई जानवर और न कोई मुसाफ़िर जो तेरे फाटकों के अन्दर हों; ताकि तेरा गुलाम और तेरी लौंडी भी तेरी तरह आराम करें।

¹⁵और याद रखना कि तू मुल्क-ए-मिस्र में गुलाम था, और वहाँ से खुदावन्द तेरा खुदा अपने ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू से तुझको निकाल लाया; इसलिए खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको सबत के दिन को मानने का हुक्म दिया।

¹⁶~'अपने बाप और अपनी माँ की 'इज़ज़त करना, जैसा खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है; ताकि तेरी 'उम्र दराज़ हो और जो तेरा मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझे देता है उसमें तेरा भला हो।

¹⁷~'तू खून न करना।¹⁸~'तू ज़िना न करना।¹⁹~'तू चोरी न करना।²⁰तू अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूठी गवाही न देना।

²¹~'तू अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न अपने पड़ोसी के घर, या उसके खेत, या गुलाम, या लौंडी, या बैल, या गधे, या उसकी किसी और चीज़ का ख्वाहिश मन्द ~होना।'

²²"यही बातें खुदावन्द ने उस पहाड़ पर, आग और घटा और जुलमत में से तुम्हारी सारी जमा'अत को बलन्द आवाज़ से कहीं, और इससे ज़्यादा और कुछ न कहा और इन ही को उसने पत्थर की दो तख्तियों पर लिखा और उनको मेरे सुपुर्द किया।

²³और जब वह पहाड़ आग से दहक रहा था, और तुमने वह आवाज़ अन्धेरे में से आती सुनी तो तुम और तुम्हारे क़बीलों के सरदार और बुजुर्ग मेरे पास आए।

²⁴और तुम कहने लगे, कि खुदावन्द हमारे खुदा ने अपनी शौकत और 'अज़मत हमको दिखाई, और हमने उसकी आवाज़ आग में से आती सुनी; आज हमने देख लिया के खुदावन्द इन्सान से बातें करता है तो भी इन्सान ज़िन्दा रहता है।

²⁵इसलिए अब हम क्यों अपनी जान दें? क्योंकि ऐसी बड़ी आग हमको भसम कर देगी, अगर हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ फिर सुनें तो मर ही जाएँगे।

²⁶क्योंकि ऐसा कौन सा बशर है जिसने ज़िन्दा खुदा की आवाज़ हमारी तरह आग में से आती सुनी हो और फिर भी ज़िन्दा रहा?²⁷इसलिए तू ही नज़दीक जाकर जो कुछ खुदावन्द हमारा खुदा कहे उसे सुन ले, और तू ही वह बातें जो खुदावन्द हमारा खुदा तुझ से कहे हमको बताना; और हम उसे सुनेंगे और उस पर 'अमल करेंगे।

²⁸~"और जब तुम मुझसे गुप्तगू कर रहे थे तो खुदावन्द ने तुम्हारी बातें सुनीं। तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मैंने इन लोगों की बातें, जो उन्होंने तुझ से कहीं सुनी हैं; जो कुछ उन्होंने कहा ठीक कहा।²⁹~काश उनमें ऐसा ही दिल हो ताकि वह मेरा ख़ौफ़ मान कर हमेशा मेरे सब हुक्मों पर 'अमल करते, ताकि हमेशा उनका और उनकी औलाद का भला होता।³⁰~इसलिए तू जाकर उनसे कह दे, कि तुम अपने खेमों को लौट जाओ।

³¹लेकिन तू यहीं मेरे पास खड़ा रह और मैं वह सब फ़रमान और सब आईन और अहकाम जो तुझे उनको सिखाने हैं, तुझको बताऊँगा; ताकि वह उन पर उस मुल्क में जो मैं उनको क़ब्ज़ा करने के लिए देता हूँ, 'अमल करें।

³²~इसलिए तुम एहतियात रखना और जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको हुक्म दिया है वैसा ही करना, और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ना।³³~तुम उस सारे रास्ते पर जिसका हुक्म खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको दिया है चलना; ताकि तुम ज़िन्दा रहो और तुम्हारा भला हो, और तुम्हारी 'उम्र उस मुल्क में जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे दराज़ हो।

Chapter 6

¹~यह वह फ़रमान और आईन और अहकाम हैं, जिनको खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको सिखाने का हुक्म दिया है; ताकि तुम उन पर उस मुल्क में 'अमल करो, जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए पार जाने को हो।² और तुम अपने बेटों और पोतों समेत खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मान कर उसके तमाम आईन और अहकाम पर, जो मैं तुमको बताता हूँ, ज़िन्दगी भर 'अमल करना ताकि तुम्हारी 'उम्र दराज़ हो।

³इसलिए, ऐ इस्राईल सुन, और एहतियात करके उन पर 'अमल कर, ताकि तेरा भला हो और तुम खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के वा'दे के मुताबिक़ उस मुल्क में, जिस में दूध और शहद बहता है बहुत बढ़ जाओ।

⁴~'सुन, ऐ इस्राईल, खुदावन्द हमारा खुदा एक ही खुदावन्द है।⁵तू अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान, और अपनी सारी ताक़त से खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रख।

⁶और ये बातें जिनका हुक्म आज मैं तुझे देता हूँ तेरे दिल पर नज़र रहें।⁷और तू इनको अपनी औलाद के ज़हन नशीं करना, और घर बैठे और राह चलते और लेटते और उठते वक़्त इनका ज़िक्र किया करना।

⁸और तू निशान के तौर पर इनको अपने हाथ पर बाँधना, और वह तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों।⁹और तू उनको अपने घर की चौखटों और अपने फाटकों पर लिखना।

¹⁰और जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में पहुँचाए, जिसे तुझको देने की क़सम उसने तेरे बाप-दादा इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई, और जब वह तुझको बड़े-बड़े और अच्छे शहर जिनको तूने नहीं बनाया,¹¹और अच्छी-अच्छी चीज़ों से भरे हुए घर जिनको तूने नहीं भरा, और खोदे-खुदाए हौज़ जो तूने नहीं खोदे, और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून के दरख़्त जो तूने नहीं लगाए 'इनायत करे, और तू खाए और सेर हो,¹²~तो तू होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू खुदावन्द को जो तुझको मुल्क-ए-मिस्र या'नी गुलामी के घर से निकाल लाया भूल जाए।

¹³तू खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना, और उसी की 'इबादत करना, और उसी के नाम की क़सम खाना।¹⁴तुम और मा'बूदों की या'नी उन क़ौमों के मा'बूदों की, जो तुम्हारे आस-पास रहती हैं पैरवी न करना।¹⁵~क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा जो तुम्हारे बीच है ग़प्पूर खुदा है। इसलिए ऐसा न हो कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा का ग़ज़ब तुझ पर भड़के, और वह तुझको इस ज़मीन पर से फ़ना कर दे।

¹⁶"तुम खुदावन्द अपने खुदा को मत आज़माना, जैसा तुमने उसे मस्सा में आज़माया था।¹⁷~तुम मेहनत से खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों और शहादतों और आईन को, जो उसने तुझको फ़रमाए हैं मानना।

¹⁸और तुम वह ही करना जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त और अच्छा है ताकि तेरा भला हो ~और जिस अच्छे मुल्क के बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप-दादा से क़सम खाई तू उसमें दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा कर सके।¹⁹और खुदावन्द तेरे सब दुश्मनों को तुम्हारे आगे से दफ़ा' करे, जैसा उसने कहा है।

²⁰~"और जब आइन्दा ज़माने में तुम्हारे बेटे तुझसे सवाल करें, कि जिन शहादतों और आईन और फ़रमान के मानने का हुक्म खुदावन्द हमारे खुदा ने तुमको दिया है उनका मतलब क्या है?²¹तो तू अपने बेटों को यह जवाब देना, कि जब हम मिस्र में फ़िर'औन के गुलाम थे, तो खुदावन्द अपने ताक़तवर हाथ से हमको मिस्र से निकाल लाया;²²और खुदावन्द ने बड़े-बड़े और हौलनाक अजायब-ओ-निशान हमारे सामने अहल-ए-मिस्र, और फ़िर'औन और उसके सब घराने पर करके दिखाए;²³और हमको वहाँ से निकाल लाया ताकि हमको इस मुल्क में, जिसे हमको देने की क़सम उसने हमारे बाप दादा से खाई पहुँचाए।

²⁴इसलिए खुदावन्द ने हमको इन सब हुक्मों पर 'अमल करने और हमेशा अपनी भलाई के लिए खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानने का हुक्म दिया है, ताकि वह हमको ज़िन्दा रखे, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।²⁵और अगर हम एहतियात रखें कि खुदावन्द अपने खुदा के सामने इन सब हुक्मों को मानें, जैसा उस ने हमसे कहा है, तो इसी में हमारी सदाक़त होगी।

Chapter 7

¹"जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको~उस मुल्क में, जिस पर कब्ज़ा करने के लिए तू जा रहा है पहुँचा दे, और तेरे ~आगे से उन बहुत सी क्रौमों को या'नी हितियों,~और जिरजासियों, और अमोरियों, और कना'नियों,और फ़रिज़ियों, और हवियों,और~यबूसियों को, जो सातों क्रौमों तुझसे बड़ी और ताक़तवर हैं निकाल दे।

²और जब खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे ~आगे शिकस्त दिलाए और तू ~उनको मार ले, तो तू उनको बिल्कुल हलाक कर डालना; तू उनसे कोई 'अहद न बांधना और न उन पर रहम करना।³तू उनसे ब्याह शादी भी न करना, न उनके बेटों को अपनी बेटियाँ देना और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लेना।

⁴क्योंकि वह तेरे बेटों को मेरी पैरवी से बरग़श्ता कर देंगी, ताकि वह और मा'बूदों की 'इबादत करें। यूँ खुदावन्द का ग़ज़ब तुम पर भड़केगा और वह तुझको जल्द हलाक कर देगा।⁵बल्कि तुम उनसे यह सुलूक करना, कि उन के मज़बहों को ढा देना, उन के सुतूनों को टुकड़े-टुकड़े कर देना और उनकी यसीरतों को काट डालना, और उनकी तराशी हुई मूरतों आग में जला देना।

⁶क्योंकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के लिए एक मुक़द्दस क्रौम हो, खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुझको इस ज़मीन की और सब क्रौमों में से चुन लिया है ताकि उसकी खास उम्मत ठहरो।

⁷~खुदावन्द ने जो तुमसे मुहब्बत की और तुमको चुन लिया, तो इसकी वजह यह न थी कि तुम शुमार में और क्रौमों से ज़्यादा थे, क्योंकि तुम सब क्रौमों से शुमार में कम थे;⁸बल्कि चूँकि खुदावन्द को तुमसे मुहब्बत है और वह उस क्रसम को जो उसने तुम्हारे बाप-दादा से खाई पूरा करना चाहता था, इसलिए खुदावन्द तुमको अपने ताक़तवर हाथ से निकाल लाया, और गुलामी के घर या'नी मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के हाथ से तुमको छुटकारा बख़्शा।

⁹इसलिए जान लो कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा वही खुदा है। वह वफ़ादार खुदा है, और जो उससे मुहब्बत रखते और उसके हुक्मों को मानते हैं, उनके साथ हज़ार नसल तक वह अपने 'अहद को क़ायम रखता और उन पर रहम करता है।¹⁰और जो उससे 'अदावत रखते हैं, उनको उनके देखते ही देखते बदला देकर हलाक कर डालता है, वह उसके बारे में जो उससे 'अदावत रखता है देर न करेगा, बल्कि उसी के देखते-देखते उसे बदला देगा।¹¹इसलिए जो फ़रमान और आईन और अहक़ाम मैं आज के दिन तुझको बताता हूँ तू उनको मानना और उन पर 'अमल करना।

¹²~और तुम्हारे इन हुक्मों को सुनने और मानने और उन पर 'अमल करने की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा भी तेरे साथ उस 'अहद और रहमत को क़ायम रखेगा, जिसकी क्रसम उसने तुम्हारे बाप-दादा से खाई,¹³और तुझसे मुहब्बत रखेगा और तुझको बरकत देगा और बढ़ाएगा; और उस मुल्क में जिसे तुझको देने की क्रसम उसने तेरे बाप-दादा से खाई वह तेरी औलाद पर, और तेरी ज़मीन की पैदावार या'नी तुम्हारे ग़ल्ले, और मय, और तेल पर, और तेरे गाय-बैल के और भेड़-बकरियों के बच्चों पर बरकत नाज़िल करेगा।

¹⁴तुझको सब क्रौमों से ज़्यादा बरकत दी जाएगी, और तुम मैं या तुम्हारे चौपायों में न तो कोई 'अक़ीम होगा न बाँझ।¹⁵और खुदावन्द हर क्रिस्म की बीमारी तुझ से दूर करेगा और मिस्र के उन बुरे रोगों को जिनसे तुम वाक़िफ़ हो तुझको लगने न देगा, बल्कि उनको उन पर जो तुझ से 'अदावत रखते हैं नाज़िल करेगा।

¹⁶और तू उन सब क्रौमों को, जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तेरे क़ाबू में कर देगा नाबूद कर डालना। तू उन पर तरस न खाना और न उनके मा'बूदों की 'इबादत करना, वरना यह तुम्हारे लिए एक जाल होगा।

¹⁷और अगर तेरा दिल भी यह कहे कि ये क्रौमों तो मुझसे ज़्यादा हैं, हम उनको क्यों कर निकालें?¹⁸तोभी तू उनसे न डरना, बल्कि जो कुछ खुदावन्द तेरे खुदा ने फ़िर'औन और सारे मिस्र से किया उसे ख़ूब याद रखना;¹⁹या'नी उन बड़े-बड़े तज़रिबों को जिनको तेरी आँखों ने देखा, और उन निशानों और मो'जिज़ों और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू को जिनसे खुदावन्द तेरा ~खुदा~तुझको निकाल लाया; क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा ऐसा ही उन सब क्रौमों से~करेगा जिनसे तू डरता है।

²⁰बल्कि खुदावन्द तेरा खुदा उनमें ज़म्बूरों को भेज देगा, यहाँ तक कि जो उनमें से बाक़ी बच कर छिप जाएँगे वह भी तेरे आगे से हलाक हो जाएँगे।²¹इसलिए तू उनसे दहशत न खाना; क्योंकि खुदावन्द तेरा ~खुदा तेरे ~बीच में है, और वह खुदा-ए-'अज़ीम और मुहीब है।²²और खुदावन्द तेरा ~खुदा उन क्रौमों को तेरे आगे से थोड़ा-थोड़ा करके दफ़ा' करेगा। तू एक ही दम उनको हलाक न करना, ऐसा न हो कि जंगली दरिन्दे बढ़ कर तुझ पर हमला करने लगें।

²³बल्कि खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे हवाले करेगा, और उनको ऐसी शिकस्त-ए-फ़ाश देगा कि वह हलाक हो जाएँगे।²⁴और वह उनके बादशाहों को तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू उनका नाम सफ़ह-ए-रोज़गार से मिटा डालेगा ; और कोई मर्द तेरा सामना न कर सकेगा, यहाँ तक कि तू उनको हलाक कर देगा।

²⁵तुम उनके मा'बूदों की तराशी हुई मूरतों को आग में जला देना और जो चाँदी या सोना उन पर हो उसका तू ~लालच न करना और न उसे लेना, ऐसा न हो कि तू उसके फन्दे में फँस जाए क्योंकि ऐसी बात खुदावन्द तेरे खुदा के आगे मकरूह है।²⁶इसलिए तू ऐसी मकरूह चीज़ अपने घर में लाकर उसकी तरह नेस्त कर दिए जाने के लायक़ न बन जाना, बल्कि तू उससे बहुत ही नफ़रत करना और उससे बिल्कुल नफ़रत रखना; क्योंकि वह मलाऊन चीज़ है।

Chapter 8

¹सब हुक्मों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तुम एहतियात करके 'अमल करना ताकि तुम जीते और बढ़ते रहो; और जिस मुल्क के बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप-दादा से क्रसम खाई है, तुम उसमें जाकर उस पर क़ब्ज़ा करो।' और तू उस सारे तरीक़े को याद रखना जिस पर इन चालीस बरसों में खुदावन्द तेरे ~खुदा ने तुझको इस वीराने में चलाया, ताकि वह तुझको 'आजिज़ कर के आजमाए और तेरे ~दिल की बात दरियाफ़्त करे कि तू उसके हुक्मों को मानेगा या नहीं।

³और उसने~तुझको 'आजिज़ किया भी और~तुझको भूका होने दिया, और वह मन्न जिसे न तू न तेरे बाप-दादा~जानते~थे~तुझको खिलाया; ताकि~तुझको सिखाए कि इन्सान सिर्फ़ रोटी ही से ज़िन्दा नहीं रहता, बल्कि हर बात से~जो~खुदावन्द के मुँह से निकलती है वह ज़िन्दा रहता है।

⁴इन चालीस बरसों में न तो तेरे तन पर तेरे ~कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव सूजे।⁵ और तू अपने दिल में खयाल रखना कि जिस तरह आदमी अपने बेटों को तम्बीह करता है, वैसे ही खुदावन्द तेरा खुदा तुमको तम्बीह करता है।⁶~इसलिए तू खुदावन्द अपने खुदा की राहों पर चलने और उसका ख़ौफ़ मानने के लिए उसके हुक्मों पर 'अमल करना।

⁷क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा तुझको एक अच्छे मुल्क में लिए जाता है। वह पानी की नदियों और ऐसे चश्मों और सोतों का मुल्क है जो वादियों और पहाड़ों से फूट कर निकलते हैं।⁸ वह ऐसा मुल्क है जहाँ गेहूँ और जौ और अंगूर और अंजीर के दरख़्त और अनार होते हैं। वह ऐसा मुल्क है जहाँ रौशनदार ज़ैतून और शहद भी है।

⁹उस मुल्क में~तुझको रोटी इफ़रात से मिलेगी और~तुझको किसी चीज़ की कमी न होगी, क्योंकि उस मुल्क के पत्थर~भी~लोहा हैं और वहाँ के पहाड़ों से तू ~ताँबा खोद कर निकाल सकेगा।¹⁰ और तू खाएगा और सेर होगा, और उस अच्छे मुल्क के लिए जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है उसका शुक्र बजा लाएगा।

¹¹इसलिए खबरदार रहना, कि कहीं ऐसा न हो कि तू ~खुदावन्द अपने खुदा को भूलकर, उसके फ़रमानों और हुक्मों और आईन को जिनको आज मैं~तुझको सुनाता हूँ मानना छोड़ दे; ¹²ऐसा न हो कि जब तू खाकर सेर हो और खुशनुमा घर बना कर उनमें रहने लगे,

¹³और तेरे गाय-बैल के गल्ले और भेड़ बकरियाँ बढ़ जाएँ और तेरे पास चाँदी, और सोना और माल बा-कसरत हो जाए; ¹⁴तो तेरे दिल में गुरूर समाए और तू ~खुदावन्द अपने खुदा को भूल जाए ~जो~तुझ~को मुल्क-ए-मिस्र या 'नी गुलामी के घर~से निकाल लाया है,

¹⁵और ऐसे बड़े और हौलनाक वीराने में तेरा रहबर हुआ जहाँ जलाने वाले साँप और बिच्छू थे; और जहाँ की ज़मीन बग़ैर पानी के सूखी पड़ी थी। वहाँ उसने तेरे लिए चक्रमक़ की चट्टान से पानी निकाला। ¹⁶~और तुझको वीरान में वह मन्न खिलाया जिसे तेरे ~बाप-दादा जानते भी न थे; ताकि तुझको 'आजिज़ करे और तेरी आजमाइश करके आखिर में तेरा भला करे। ¹⁷~और ऐसा न हो कि तू अपने दिल में कहने लगे, कि मेरी ही ताक़त और हाथ के ज़ोर से मुझको यह दौलत नसीब हुई है।

¹⁸~बल्कि तू ~खुदावन्द अपने खुदा को याद रखना, क्योंकि वही~तुझको दौलत हासिल करने की कुव्वत इसलिए देता है कि अपने उस 'अहद को जिसकी क्रसम उसने तेरे बाप-दादा से खाई थी, क़ायम रखे जैसा आज के दिन ज़ाहिर है। ¹⁹और अगर तू कभी खुदावन्द अपने खुदा को भूले, और और मा'बूदों के पैरौ बन कर उनकी 'इबादत और परस्तिश करे, तो मैं आज के दिन तुमको आगाह किए देता हूँ कि तुम ज़रूर ही हलाक हो जाओगे। ²⁰~जिन क़ौमों को खुदावन्द तुम्हारे सामने हलाक करने को है, उन्हीं की तरह तुम भी खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानने की वजह से हलाक हो जाओगे।

Chapter 9

¹—सुन ले ऐ इस्राईल, आज तुझे यरदन पार इसलिए जाना है, कि तू ऐसी क्रौमों पर जो तुझ से बड़ी और ताकतवर हैं, और ऐसे बड़े शहरों पर जिनकी फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं, क़ब्ज़ा करे।² वहाँ 'अनाक्रौम की औलाद हैं जो बड़े-बड़े और क्रदआवर लोग हैं। तुझे उनका हाल मा'लूम है, और तूने उनके बारे में यह कहते सुना है कि बनी 'अनाक्र का मुक्राबला कौन कर सकता है?

³ फिर तू आज कि दिन जान ले, कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे आगे आगे भसम करने वाली आग की तरह पार जा रहा है। वह उनको फ़ना करेगा और वह उनको तेरे आगे पस्त करेगा, ऐसा कि तू उनको निकाल कर जल्द हलाक कर डालेगा, जैसा ख़ुदावन्द ने तुझ से कहा है।

⁴ "और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उनको तेरे आगे से निकाल चुके, तो तू अपने दिल में यह न कहना कि मेरी सदाक़त की वजह से ख़ुदावन्द मुझे इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को यहाँ लाया क्योंकि हकीक़त में इनकी शरारत ~की वजह से ख़ुदावन्द इन क्रौमों को तेरे आगे से निकालता है।

⁵ तू अपनी सदाक़त या अपने दिल की रास्ती की वजह से उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को नहीं जा रहा है बल्कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा इन क्रौमों की शरारत की वजह से इनको तेरे आगे से ख़ारिज करता है, ताकि यूँ वह उस वा'दे को जिसकी क़सम उसने तेरे बाप-दादा इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई पूरा करे।

⁶ "गरज़ तू समझ ले कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी सदाक़त की वजह से यह अच्छा मुल्क तुझे क़ब्ज़ा करने के लिए नहीं दे रहा है, क्योंकि तू एक बागी क्रौम है।

⁷ इस बात को याद रख और कभी न भूल, कि तूने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को वीराने में किस किस तरह गुस्सा दिलाया; बल्कि जब से तुम मुल्क-ए-मिस्र से निकले हो तब से इस जगह पहुँचने तक, तुम बराबर ख़ुदावन्द से बगावत ही करते रहे।⁸ और होरिब में भी तुमने ख़ुदावन्द को गुस्सा दिलाया, चुनौचे ख़ुदावन्द नाराज़ होकर तुमको हलाक करना चाहता था।

⁹ जब मैं पत्थर की दोनों तख़्तियों को, या'नी उस अहद की~तख़्तियों~को जो ख़ुदावन्द ने तुमसे बाँधा था लेने को पहाड़ पर चढ़ गया; तो मैं चालीस दिन और चालीस रात वहीं पहाड़ पर रहा और न रोटी खाई न पानी पिया।¹⁰ और ख़ुदावन्द ने अपने हाथ की लिखी हुई पत्थर की दोनों~तख़्तियाँ~मेरे सुपुर्द की, और उन पर वही बातें लिखी थीं जो ख़ुदावन्द ने पहाड़ पर आग के बीच में से मजमे' के दिन तुमसे कही थीं।

¹¹ और चालीस दिन और चालीस रात के बा'द ख़ुदावन्द ने पत्थर की वह दोनों~तख़्तियाँ~या'नी 'अहद की~तख़्तियाँ~मुझको दीं।¹² और ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ कर जल्द यहाँ से नीचे जा, क्योंकि तेरे लोग जिनको तू मिस्र से निकाल लाया है बिगड़ गए हैं वह उस राह से जिसका मैंने ~उनको हुक्म दिया जल्द नाफ़रमान हो गए, और अपने लिए एक मूरत ढाल कर बना ली है।"

¹³ ~"और ख़ुदावन्द ने मुझसे यह भी कहा, कि मैंने इन लोगों को देख लिया, ये बागी लोग हैं।"¹⁴ इसलिए अब तू मुझे इनको हलाक करने दे ताकि मैं इनका नाम सफ़ह-ए- रोज़गार से मिटा डालूँ, और मैं तुझ से एक क्रौम जो इन से ताक़तवर और बड़ी हो बनाऊँगा।

¹⁵ तब मैं उल्टा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा, और पहाड़ आग से दहक रहा था; और 'अहद की वह दोनों~तख़्तियाँ~मेरे दोनों हाथों में थीं।¹⁶ और मैंने देखा कि तुमने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का गुनाह किया; और अपने लिए एक बछड़ा ढाल कर बना लिया है, और बहुत जल्द उस राह से जिसका हुक्म ख़ुदावन्द ने तुमको दिया था, नाफ़रमान हो गए।

¹⁷ ~तब मैंने उन दोनों~तख़्तियों~को अपने दोनों हाथों से लेकर फेंक दिया और तुम्हारी आँखों के सामने उनको तोड़ डाला।¹⁸ और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात ख़ुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, मैंने न रोटी खाई न पानी पिया; क्योंकि तुमसे बड़ा गुनाह सरज़द हुआ था, और ख़ुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए तुमने वह काम किया जो उसकी नज़र में बुरा था।

¹⁹ और मैं ख़ुदावन्द के क्रहर और ग़ज़ब से डर रहा था, क्योंकि वह तुमसे सख़्त नाराज़ होकर तुमको हलाक करने को था; लेकिन ख़ुदावन्द ने उस बार भी मेरी सुन ली।²⁰ ~और ख़ुदावन्द हारून से ऐसे गुस्सा था कि उसे हलाक करना चाहा, लेकिन मैंने उस वक़्त हारून के लिए भी दु'आ की।

²¹ और मैंने तुम्हारे गुनाह को या'नी उस बछड़े को, जो तुमने बनाया था लेकर आग में जलाया; फिर उसे कूट कूटकर ऐसा पीसा कि वह गर्द की तरह बारीक हो गया; और उसकी उस राख को उस नदी में जो पहाड़ से निकल कर नीचे बहती थी डाल दिया।

²² "और तबेरा और मस्सा और क़बरोत हत्तावा में भी तुमने ख़ुदावन्द को गुस्सा दिलाया।²³ और जब ख़ुदावन्द ने तुमको क़ादिस बर्नी'अ से यह कह कर रवाना किया, कि जाओ और उस मुल्क को जो मैंने तुमको दिया है क़ब्ज़ा करो, तो उस वक़्त भी तुमने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म को 'उदूल किया, और उस पर ईमान न लाए और उसकी बात न मानी।"²⁴ ~जिस दिन से मेरी तुमसे वाक़फ़ियत हुई है, तुम बराबर ख़ुदावन्द से सरकशी करते रहे हो।

²⁵ ~"इसलिए वह चालीस दिन और चालीस रात जो मैं ख़ुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, इसी लिए पड़ा रहा क्योंकि ख़ुदावन्द ने कह दिया था कि वह तुमको हलाक करेगा।²⁶ और मैंने ख़ुदावन्द से यह दु'आ की, कि ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा तू अपनी क्रौम और अपनी मीरास के लोगों को, जिनको तूने अपनी कुदरत से नजात बख़्शी और जिनको तू ताक़तवर हाथ से मिस्र से निकाल लाया, हलाक न कर।

²⁷ अपने ख़ादिमों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब को याद फ़रमा, और इस क्रौम की ख़ुदसरी और शरारत और गुनाह पर नज़र न कर,²⁸ कहीं ऐसा न हो कि जिस मुल्क से तू हमको निकाल लाया है वहाँ के लोग कहने लगें, कि चूँकि ख़ुदावन्द उस मुल्क में जिसका वा'दा उसने उनसे किया था पहुँचा न सका, और चूँकि उसे उनसे नफ़रत भी थी, इसलिए वह उनको निकाल ले गया ताकि उनको वीराने में हलाक कर दे।²⁹ आखिर यह लोग तेरी क्रौम और तेरी मीरास हैं जिनको तू अपने बड़े ज़ोर और बलन्द बाज़ू से निकाल लाया है।

Chapter 10

¹"उस वक़्त खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि पहली-तख्तियों की तरह पत्थर की दो और-तख्तियों-तराश ले, और मेरे पास पहाड़ पर आ जा, और एक चोबी संदूक भी बना ले।² और जो बातें पहली-तख्तियों-पर जिनको तूने तोड़ डाला लिखी थीं, वही मैं इन-तख्तियों-पर भी लिख दूँगा; फिर तू इनको उस सन्दूक में रख देना।

³इसलिए मैंने कीकर की लकड़ी का एक संदूक बनाया और पहली-तख्तियों-की तरह पत्थर की दो-तख्तियाँ-तराश लीं, और उन दोनों-तख्तियों-को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया।⁴ और जो दस हुक्म खुदावन्द ने मजमे' के दिन पहाड़ पर आग के बीच में से तुमको दिए थे, उन ही को पहली तहरीर के मुताबिक उसने इन-तख्तियों-पर लिख दिया; फिर इनको खुदावन्द ने मेरे सुपुर्द किया।

⁵तब मैं पहाड़ से लौट कर नीचे आया और इन-तख्तियों को उस संदूक में जो मैंने बनाया था रख दिया, और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक जो उसने मुझे दिया था, वह वहीं रखी हुई हैं।

⁶फिर बनी-इसाईल बेरोत-ए-बनी या'कान से रवाना होकर मौसीरा में आए। वहीं हारून ने वफ़ात पाई और दफ़न भी हुआ, और उसका बेटा इली'अज़र कहानत के 'उहदे पर मुक़र्रर होकर उसकी जगह खिदमत करने लगा।⁷ वहाँ से वह जुदजूदा को और जुदजूदा से यूतबात को चले, इस मुल्क में पानी की नदियाँ हैं।

⁸उसी मौक़े' पर खुदावन्द ने लावी के क़बीले को इस वजह से अलग किया, कि वह खुदावन्द के 'अहद के संदूक को उठाया करे और खुदावन्द के सामने खड़ा होकर उसकी खिदमत को अन्जाम दे, और उसके नाम से बरकत दिया करे, जैसा आज तक होता है।⁹ ~इसीलिए लावी को कोई हिस्सा या मीरास उसके भाइयों के साथ नहीं मिली, क्योंकि खुदावन्द उसकी मीरास है, जैसा खुद खुदावन्द तेरे खुदा ने उससे कहा है।)

¹⁰ और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर ठहरा रहा, और इस दफ़ा' भी खुदावन्द ने मेरी सुनी और न चाहा कि तुझको हलाक करे।

¹¹ फिर खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ, और इन लोगों के आगे रवाना हो, ताकि ये उस मुल्क पर जाकर क़ब्ज़ा कर लें जिसे उनको देने की क़सम मैंने उनके बाप-दादा से खाई थी।'।

¹² ~"इसलिए ऐ इसाईल, खुदावन्द तेरा खुदा तुझ से इसके अलावा और क्या चाहता है कि तू खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ माने, और उसकी सब राहों पर चले, और उससे मुहब्बत रखे, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने खुदा की बन्दगी करे,¹³ और खुदावन्द के जो अहक़ाम और आईन मैं तुझको आज बताता हूँ उन पर 'अमल करो, ताकि तेरी ख़ैर हो ?

¹⁴ ~देख, आसमान और आसमानों का आसमान, और ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है, यह सब खुदावन्द तेरे खुदा ही का है।¹⁵ तो भी खुदावन्द ने तेरे बाप-दादा से खुश होकर उनसे मुहब्बत की, और उनके बा'द उनकी औलाद को या'नी तुमको सब क़ौमों में से बरगुज़ीदा किया, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।

¹⁶ इसलिए अपने दिलों का खतना करो और आगे को बागी न रहो।¹⁷ क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा इलाहों का इलाह खुदावन्दों का खुदावन्द है, वह बुजुर्गवार और क़ादिर और मुहीब खुदा है, जो रूरि'आयत नहीं करता और न रिश्तत लेता है।

¹⁸ ~वह यतीमों और बेवाओं का इन्साफ़ करता है, और परदेसी से ऐसी मुहब्बत रखता है कि उसे खाना और कपड़ा देता है।¹⁹ इसलिए तुम परदेसियों से मुहब्बत रखना क्योंकि तुम भी मुल्क-ए-मिस्र में परदेसी थे।

²⁰ तुम खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना, उसकी बन्दगी करना और उससे लिपटे रहना और उसी के नाम की क़सम खाना।²¹ ~वही तेरी हम्द का सज़ावार है और वही तेरा खुदा है जिसने तेरे ~लिए वह बड़े और हौलनाक काम किए जिनको तू ने अपनी आँखों से देखा।

²² तेरे बाप-दादा जब मिस्र में गए तो सत्तर आदमी थे, लेकिन अब खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुझको बढ़ा कर आसमान के सितारों की तरह कर दिया है।

Chapter 11

¹~"इसलिए तुम खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखना, और उसकी शरी' अत और आईन और अहकाम और फ़रमानों पर सदा 'अमल करना।

²~और तुम आज के दिन ख़ूब समझ लो, क्योंकि मैं तुम्हारे बाल बच्चों से कलाम नहीं कर रहा हूँ, जिनको न तो मा'लूम है और न उन्होंने देखा कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा की तम्बीह, और उसकी 'अज़मत, और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू से क्या क्या हुआ;³ और मिस्र के बीच मिस्र के बादशाह फ़िर' और उसके मुल्क के लोगों को कैसे कैसे निशान और कैसी करामात दिखाई।

⁴और उसने मिस्र के लश्कर और उनके घोड़ों और रथों का क्या हाल किया, और कैसे उसने बहर-ए-कुलजुम के पानी में उनको डुबो दिया जब वह तुम्हारा पीछा कर रहे थे, और खुदावन्द ने उनको कैसा हलाक किया कि आज के दिन तक वह नाबूद हैं;⁵ और तुम्हारे इस जगह पहुँचने तक उसने वीराने में तुमसे क्या क्या किया;

⁶और दातन और अबीराम का जो इलीयाब बिन रूबिन के बेटे थे, क्या हाल बनाया कि सब इस्राईलियों के सामने ज़मीन ने अपना मुँह पसार कर उनको और उनके घरानों और खेमों और हर आदमी को जो उनके साथ था निगल लिया;⁷ लेकिन खुदावन्द के इन सब बड़े-बड़े कामों को तुमने अपनी आँखों से देखा है।

⁸"इसलिए इन सब हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ तुम मानना, ताकि तुम मज़बूत होकर उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए तुम पार जा रहे हो, पहुँच जाओ और उस पर क़ब्ज़ा भी कर लो।⁹~और उस मुल्क में तुम्हारी 'उम्र दराज़ हो जिसमें दूध और शहद बहता है, और जिसे तुम्हारे बाप-दादा और उनकी औलाद को देने की क़सम खुदावन्द ने उनसे खाई थी।

¹⁰~क्योंकि जिस मुल्क पर तू क़ब्ज़ा करने को जा रहा है वह मुल्क मिस्र की तरह नहीं है, जहाँ से तुम निकल आए हो वहाँ तो तू बीज बोकर उसे सब्ज़ी के बाग़ की तरह पाँव से नालियाँ बना कर सींचता था।¹¹~लेकिन जिस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने के लिए तुम पार जाने को हो वह पहाड़ों और वादियों का मुल्क है, और बारिश के पानी से सेराब हुआ करता है।¹²~उस मुल्क पर खुदावन्द तेरे ~खुदा की तवज्जुह रहती है, और साल के शुरू' से साल के आखिर तक खुदावन्द तेरे ~खुदा की आँखें उस पर लगी रहती हैं।

¹³और अगर तुम मेरे हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ दिल लगा कर सुनो, और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से उसकी बन्दगी करो,¹⁴~तो मैं तुम्हारे मुल्क में सही वक़्त पर पहला और पिछला मेंह बरसाऊँगा, ताकि तू अपना ग़ल्ला और मय और तेल जमा' कर सके।¹⁵ और मैं तेरे चौपायों के लिए मैदान में घास पैदा करूँगा, और तू खायेगा और सेर होगा।

¹⁶इसलिए तुम ख़बरदार रहना कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे दिल धोका खाएँ और तुम बहक कर और मा'बूदों की 'इबादत और परस्तिश करने लगे।¹⁷ और खुदावन्द का ग़ज़ब तुम पर भड़के और वह आसमान को बन्द कर दे ताकि मेंह न बरसे, और ज़मीन में कुछ पैदावार न हो, और तुम इस अच्छे मुल्क से जो खुदावन्द तुमको देता है जल्द फ़ना हो जाओ।

¹⁸इसलिए मेरी इन बातों को तुम अपने दिल और अपनी जान में महफूज़ रखना और निशान के तौर पर इनको अपने हाथों पर बाँधना, और वह तुम्हारी पेशानी पर टीकों की तरह हों।¹⁹ और तुम इनको अपने लड़कों को सिखाना, और तुम घर बैठे और राह चलते और लेटते और उठते वक़्त इन ही का ज़िक्र किया करना।

²⁰और तुम इनको अपने घर की चौखटों पर और अपने फाटकों पर लिखा करना,²¹ ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान का साया है, तुम्हारी और तुम्हारी औलाद की 'उम्र उस मुल्क में दराज़ हो, जिसको खुदावन्द ने तुम्हारे बाप-दादा को देने की क़सम उनसे खाई थी।

²²क्योंकि अगर तुम उन सब हुक्मों को जो मैं तुमको देता हूँ, पूरी जान से मानो और उन पर 'अमल करो, और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो, और उसकी सब राहों पर चलो, और उससे लिपटे रहो;²³ तो खुदावन्द इन सब क़ौमों को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा, और तुम उन क़ौमों पर जो तुमसे बड़ी और ताक़तवर हैं क़ाबिज़ होगे।

²⁴जहाँ जहाँ तुम्हारे पाँव का तलवा टिके वह जगह तुम्हारी हो जाएगी, या'नी वीराने और लुबनान से और दरिया-ए-फ़ुरात से पश्चिम के समन्दर तक तुम्हारी सरहद होगी।²⁵ और कोई शख्स वहाँ तुम्हारा मुकाबला न कर सकेगा, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारा रौब और ख़ौफ़ उस तमाम मुल्क जहाँ कहीं तुम्हारे क़दम पड़े पैदा कर देगा जैसा उसने तुमसे कहा है।

²⁶"देखो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे बरकत और ला'नत दोनों रखे देता हूँ²⁷~बरकत उस हाल में जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ मानो;²⁸ और ला'नत उस वक़्त जब तुम खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाँबरदारी न करो, और उस राह को जिसके बारे में मैं आज तुमको हुक्म देता हूँ छोड़ कर और मा'बूदों की पैरवी करो, जिनसे तुम अब तक वाकिफ़ नहीं।

²⁹और जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू जा रहा है पहुँचा दे, तो कोह-ए-गरिज़ीम पर से बरकत और कोह-ए-'ऐबाल पर से ला'नत सुनाना।³⁰ वह दोनों पहाड़ यरदन पार पश्चिम की तरफ़ उन कना'नियों के मुल्क में वाके' हैं जो जिलजाल के सामने मोरा के बलूतों के क़रीब मैदान में रहते हैं।

³¹और तुम यरदन पार इसी लिए जाने को हो, कि उस मुल्क पर जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको देता है क़ब्ज़ा करो, और तुम उस पर क़ब्ज़ा करोगे भी और उसी में बसोगे।³² इसलिए तुम एहतियात कर के उन सब आईन और अहकाम पर 'अमल करना जिनको मैं आज तुम्हारे सामने पेश करता हूँ।

Chapter 12

¹"जब तक तुम दुनिया में जिन्दा-रहो तुम एहतियात करके इन ही आईन और अहकाम पर उस मुल्क में 'अमल करना जिसे खुदावन्द तेरे ~बाप-दादा के खुदा ने तुझको दिया है, ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे।' वहाँ तुम ज़रूर उन सब जगहों को बर्बाद कर देना जहाँ-जहाँ वह क़ौमों ~जिनके तुम वारिस होगे, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक हरे दरख्त के नीचे अपने मा'बूदों की पूजा करती थीं।

³तुम उनके मज़बहों को ढा देना, और उनके सुतूनों को तोड़ डालना, और उनकी यसीरतों को आग लगा देना, और उनके मा'बूदों की खुदी हुई मूरतों को काट कर गिरा देना, और उस जगह से उनके नाम तक को मिटा डालना।⁴लेकिन खुदावन्द अपने खुदा से ऐसा न करना।

⁵बल्कि जिस जगह को खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारे सब क़बीलों में से चुन ले, ताकि वहाँ अपना नाम क़ायम करे, तुम उसके उसी घर के तालिब होकर वहाँ जाया करना।⁶और वहीं तुम अपनी सोख्तनी कुर्बानियों और ज़बीहों और दहेकियों और उठाने की कुर्बानियों और अपनी मिन्नतों की चीज़ों और अपनी रज़ा की कुर्बानियों और गाय बैलों और भेड़ बकरियों के पहलौठों को पेश करना।

⁷और वहीं खुदावन्द अपने खुदा के सामने खाना और अपने घरानों समेत अपने हाथ की कमाई की खुशी भी करना, जिसमें खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको बरकत बख़्शी हो।

⁸और जैसे हम यहाँ जो काम जिसको ठीक दिखाई देता है वही करते हैं, ऐसे तुम वहाँ न करना।⁹क्योंकि तुम अब तक उस आरामगाह और मीरास की जगह तक, जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है नहीं पहुँचे हो।

¹⁰लेकिन जब तुम यरदन पार जाकर उस मुल्क में जिसका मालिक खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको बनाता है बस जाओ, और वह तुम्हारे सब दुश्मनों की तरफ़ से जो चारों तरफ़ हैं तुमको राहत दे, और तुम अमन से रहने लगे;¹¹~तो वहाँ जिस जगह को खुदावन्द तुम्हारा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुन ले, वहीं तुम ये सब कुछ जिसका मैं तुमको हुक्म देता हूँ ले जाया करना; या'नी अपनी सोख्तनी कुर्बानियाँ ~और ज़बीहे और ~अपनी दहेकियाँ, और अपने हाथ के उठाए हुए हृदिये, और अपनी खास नज़्म की चीज़ें जिनकी मन्नत तुमने खुदावन्द के लिए मानी हो।

¹²और वहीं तुम और तुम्हारे बेटे बेटियाँ और तुम्हारे नौकर चाकर और लौंडियाँ ~और वह लावी भी जो तुम्हारे फाटकों के अन्दर रहता हो और जिसका कोई हिस्सा या मीरास तुम्हारे साथ नहीं, सब के सब मिल कर खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना।

¹³और तुम खबरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जिस जगह को देख ले। वहीं अपनी सोख्तनी कुर्बानी पेश करो।¹⁴~बल्कि सिर्फ़ उसी जगह जिसे खुदावन्द तेरे किसी क़बीले में चुन ले, तू अपनी सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश करना और वहीं सब कुछ जिसका मैं तुमको हुक्म देता हूँ करना।

¹⁵"लेकिन गोश्त को तुम अपने सब फाटकों के अन्दर अपने दिल की चाहत और खुदावन्द अपने खुदा की दी हुई बरकत के मुवाफ़िक़ ज़बह कर के खा सकेगा। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी उसे खा सकेंगे, जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं।"¹⁶~लेकिन तुम खून को बिल्कुल न खाना, बल्कि तुम उसे पानी की तरह ज़मीन पर उँडेल देना।

¹⁷और तू अपने फाटकों के अन्दर अपने ग़ल्ले और मय और तेल की दहेकियाँ, और गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौठे, और अपनी मन्नत मानी हुई चीज़ें और रज़ा की कुर्बानियाँ और अपने हाथ की उठाई हुई कुर्बानियाँ कभी न खाना।

¹⁸बल्कि तू और तेरे ~बेटे बेटियाँ और तेरे नौकर-चाकर और लौंडियाँ, और वह लावी भी जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, उन चीज़ों को खुदावन्द अपने खुदा के सामने उस जगह खाना जिसे खुदावन्द तेरा ~खुदा चुन ले, और तुम खुदावन्द अपने खुदा के सामने अपने हाथ की कमाई की खुशी मनाना।¹⁹~और खबरदार जब तक तू ~अपने मुल्क में ज़िन्दा रहे ~लावियों को छोड़ न देना।

²⁰~"जब खुदावन्द तेरा ~खुदा उस वा'दे के मुताबिक़ जो उसने तुझ से किया है तुम्हारी सरहद को बढ़ाए, और तेरा जी गोश्त खाने को करे और तू कहने लगे कि मैं तो गोश्त खाऊँगा, तो तू जैसा तेरा जी चाहे गोश्त खा सकता है।

²¹और अगर वह जगह जिसे खुदावन्द तेरे खुदा ने अपने नाम को वहाँ क़ायम करने के लिए चुना है तेरे मकान से बहुत दूर हो, तो तू अपने गाय बैल और भेड़-बकरी में से जिनको खुदावन्द ने तुझको दिया है किसी को ज़बह कर लेना और जैसा मैंने तुझको हुक्म दिया है तू उसके गोश्त को अपने दिल की चाहत के ~मुताबिक़ अपने फाटकों के अन्दर खाना;²²जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसे ही तू उसे खाना। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी उसे एक जैसे खा सकेंगे।

²³सिर्फ़ इतनी एहतियात ज़रूर रखना कि तू ~खून को न खाना; क्योंकि खून ही तो जान है, इसलिए तू गोश्त के साथ जान को हरगिज़ न खाना।²⁴तू ~उसको खाना मत, बल्कि उसे पानी की तरह ज़मीन पर उँडेल देना;²⁵तू उसे न खाना; ताकि तेरे ~उस काम के करने से जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, तेरा ~और तेरे ~साथ तेरी ~औलाद का भी भला हो।

²⁶~लेकिन अपनी पाक चीज़ों को जो तेरे पास हों और अपनी मन्नतों की चीज़ों ~को उसी जगह ले जाना जिसे खुदावन्द चुन ले।²⁷और वहीं अपनी सोख्तनी कुर्बानियों का गोश्त और खून दोनों खुदावन्द अपने खुदा के मज़बह पर पेश करना; और खुदावन्द तेरे ~खुदा ही के मज़बह पर तेरे ~ज़बीहों का खून उँडेला जाए, मगर उनका गोश्त तू खाना।

²⁸इन सब बातों को जिनका मैं तुझको हुक्म देता हूँ ग़ौर से सुन ले, ताकि तेरे ~उस काम के करने से जो खुदावन्द तेरे खुदा की नज़र में अच्छा और ठीक है, तेरा ~और तेरे ~बा'द तेरी औलाद का भला हो।

²⁹"जब खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सामने से उन क़ौमों को उस जगह जहाँ तू उनके वारिस होने को जा रहा है काट डाले, और तू उनका वारिस होकर उनके मुल्क में बस जाये,³⁰ तो तू खबरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जब वह तेरे आगे से ख़त्म हो जाएँ तो तू इस फंदे में फँस जाये, कि उनकी पैरवी करे और उनके मा'बूदों के बारे में ये दरियाफ़्त करे कि ये क़ौमों किस तरह से अपने मा'बूदों की पूजा करती है? मैं भी वैसा ही करूँगा।

³¹~तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए ऐसा न करना, क्योंकि जिन जिन कामों से खुदावन्द को नफ़रत और 'अदावत है वह सब उन्होंने अपने मा'बूदों के लिए किए हैं, बल्कि अपने बेटों और बेटियों को भी वह अपने मा'बूदों के नाम पर आग में डाल कर जला देते हैं।³²~"जिस जिस बात का मैं हुक्म करता हूँ, तुम एहतियात करके उस पर 'अमल करना और उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न उसमें से कुछ घटाना।

Chapter 13

¹अगर तेरे बीच कोई नबी या ख़्वाब ~देखने वाला ज़ाहिर हो और तुझको किसी निशान या अजीब बात की खबर दे।²और वह निशान या 'अजीब बात जिसकी उसने तुझको खबर दी वजूद में आए और वह तुझ से कहे, कि आओ हम और मा'बूदों की जिनसे तुम वाकिफ़ नहीं पैरवी करके उनकी पूजा करें; तो तू हरगिज़ उस नबी या ख़्वाब देखने वाले की बात को न सुनना; क्योंकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुमको आजमाएगा, ताकि जान ले कि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मुहब्बत रखते हो या नहीं।

⁴तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की पैरवी करना, और उसका ख़ौफ़ मानना, और उसके हुक्मों ~पर चलना, और उसकी बात सुनना; तुम उसी की बन्दगी करना और उसी से लिपटे रहना।⁵वह नबी या ख़्वाब देखने वाला क़त्ल किया जाए, क्योंकि उसने तुमको ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा से (जिसने तुमको मुल्क-ए-मिस्र से निकाला और तुझको गुलामी के घर से रिहाई बख़्शी), बगावत करने की तरगीब दी ताकि तुझको उस राह से जिस पर ख़ुदावन्द तेरे ~ख़ुदा ने तुझको चलने का हुक्म दिया है बहकाए। तू तुम अपने बीच में से ऐसे गुनाह को दूर कर देना।

⁶"अगर तेरा भाई, या तेरी माँ का बेटा, या तेरा बेटा या बेटी, या तेरी हमआगोश बीवी, या तेरा दोस्त जिसको तू अपनी जान के बराबर 'अज़ीज़ रखता है, तुझको चुपके चुपके फुसलाकर कहे, कि चलो, हम और मा'बूदों की पूजा करें जिनसे तू और तेरे बाप-दादा वाकिफ़ भी नहीं,⁷ ~या'नी उन लोगों के मा'बूद जो तेरे चारों तरफ़ तेरे नज़दीक रहते हैं, या तुझ से दूर ज़मीन के इस सिरे से उस सिरे तक बसे हुए हैं;

⁸तो तू इस पर उसके साथ रज़ामन्द न होना, और न उनकी बात सुनना। तू उस पर तरस भी न खाना और न उसकी रि'आयत करना और न उसे छिपाना।⁹बल्कि तू उसको ज़रूर क़त्ल करना और उसको क़त्ल ~करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पड़े, इसके बा'द सब क़ौम का हाथ।

¹⁰~और तू उसे संगसार करना ताकि वह मर जाए; क्योंकि उसने तुझको ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा से, जो तुझको मुल्क-ए-मिस्र से या'नी गुलामी के घर से निकाल लाया, नाफ़रमान करना चाहा।¹¹तब सब इस्राईल सुन कर डरेंगे और तेरे बीच फिर ऐसी शरारत नहीं करेंगे।

¹²~"और जो शहर ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको रहने को दिए हैं, अगर उनमें से किसी के बारे में तू ये अफ़वाह सुने, कि,¹³~कुछ ~ख़बीस आदमियों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने शहर के लोगों को ये कहकर गुमराह कर दिया है, कि चलो, हम और मा'बूदों की जिनसे तू वाकिफ़ नहीं पूजा करें;¹⁴तो तू दरियाफ़्त और ख़ूब तफ़्तीश करके पता लगाना; और देखो, अगर ये सच हो और क़त'ई यही बात निकले, कि ऐसा मकरूह काम तेरे बीच किया गया,

¹⁵तो तू उस शहर के बाशिन्दों को तलवार से ज़रूर क़त्ल कर डालना, और वहाँ का सब कुछ और चौपाये वग़ैरा तलवार ही से हलाक कर देना।¹⁶और वहाँ की सारी लूट को चौक के बीच जमा' कर के उस शहर को और वहाँ की लूट को, तिनका तिनका ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने आग से जला देना; और वह हमेशा को एक ढेर सा पड़ा रहे, और फिर कभी बनाया न जाए।

¹⁷और उनकी मख़सूस की हुई चीज़ों में से कुछ भी तेरे हाथ में न रहे; ताकि ख़ुदावन्द अपने क्रहर-ए-शदीद से बाज़ आए, और जैसा उसने तेरे बाप-दादा से क़सम खाई है, उस के मुताबिक़ तुझ पर रहम करे और तरस खाए और तुझको बढ़ाए।¹⁸ये तब ही होगा जब तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात मान कर उसके हुक्मों पर जो आज मैं तुझको देता हूँ चले, और जो कुछ ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की नज़र में ठीक है उसी को करे।

Chapter 14

¹~"तुम खुदावन्द अपने खुदा के फ़र्ज़न्द हो, तुम मुर्दों ~की वजह से अपने आप को ज़ख्मी न करना, और न अपने अबरू के बाल मुंडवाना।²~क्यूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा की मुक़द्दस क्रौम है और खुदावन्द ने तुझको इस ज़मीन की और सब क्रौमों में से चुन लिया है ताकि तू उसकी खास क्रौम ठहरे।

³~"तू किसी धिनौनी चीज़ को मत खाना।⁴जिन चौपायों को तुम खा सकते हो वह ये हैं, या'नी गाय-बैल, और भेड़, और बकरी,⁵और हिरन, और चिकारा, और ~छोटा हिरन और बुज़कोही और साबिर और नीलगाय और, जंगली भेड़।

⁶और चौपायों में से जिस जिस के पाँव अलग और चिरे हुए हैं और वह जुगाली भी करता हो तुम उसे खा सकते हो।⁷लेकिन उनमें से जो जुगाली करते हैं या उनके पाँव चिरे हुए हैं तुम उनको, या'नी ऊँट, और खरगोश, और साफ़ान को न खाना, क्यूँकि ये जुगाली करते हैं लेकिन इनके पाँव चिरे हुए नहीं हैं; इसलिए ये तुम्हारे लिए नापाक हैं।

⁸और सूअर तुम्हारे लिए इस वजह से नापाक है कि उसके पाँव तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। तुम न तो उनका गोश्त खाना और न उनकी लाश को हाथ लगाना।

⁹~'आबी जानवरों में से तुम उन ही को खाना जिनके पर और छिल्के हों।¹⁰~लेकिन जिसके पर और छिल्के न हों तुम उसे मत खाना, वह तुम्हारे लिए नापाक है।

¹¹~"पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खा सकते हो,¹²लेकिन इनमें से तुम किसी को न खाना, या'नी 'उक्काब, और उस्तुख्वानख्वार, और बहरी 'उक्काब,¹³और चील और बाज़ और गिद्ध और उनकी क्रिस्म के :

¹⁴हर क्रिस्म का कौवा,¹⁵और शतुरमुर्ग और चुगद और कोकिल और क्रिस्म क्रिस्म के शाहीन,¹⁶और बूम, और उल्लू, और क्राज़,¹⁷और हवासिल, और रखम, और हड़गीला,

¹⁸और लक़-लक़, और हर क्रिस्म का बगुला, और हुद-हुद, और चमगादड़।¹⁹और सब परदार रेंगने वाले जानदार तुम्हारे लिए नापाक हैं, वह खाए न जाएँ।²⁰और पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खाओ।

²¹~"जो जानवर आप ही मर जाए तू उसे मत खाना; तू उसे किसी परदेसी को, जो तेरे फाटकों के अन्दर हो खाने को दे सकता है, या उसे किसी अजनबी आदमी के हाथ बेच सकता है; क्यूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा की मुक़द्दस क्रौम है। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न उबालना।

²²~"तू अपने गल्ले में से, जो हर साल तुम्हारे खेतों में पैदा हो दहेकी देना।²³और तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने उसी मक़ाम में जिसे वह अपने नाम के घर के लिए चुने, अपने गल्ले और मय और तेल की दहेकी को, और अपने गाय-बैल और भेड़-बकरियों के पहलौठों को खाना, ताकि तू हमेशा खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे।

²⁴और अगर वह जगह जिसको खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम को वहाँ क़ायम करने के लिए चुने तेरे घर से बहुत दूर हो, और रास्ता भी इस क़दर लम्बा हो कि तू अपनी दहेकी को उस हाल में जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको बरकत बख़्शे वहाँ तक न ले जा सके,²⁵तो तू उसे बेच कर रुपये को बाँध, हाथ में लिए हुए उस जगह चले जाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुने।

²⁶और इस रुपये से जो कुछ तेरा जी चाहे, चाहे गाय-बैल, या भेड़-बकरी, या मय, या शराब मोल लेकर उसे अपने घराने समेत वहाँ खुदावन्द अपने खुदा के सामने खाना और खुशी मनाना।²⁷~और लावी को जो तेरे फाटकों के अन्दर है छोड़ न देना, क्यूँकि उसका तेरे साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं है।

²⁸तीन तीन बरस के बा'द तू तीसरे बरस के माल की सारी दहेकी निकाल कर उसे अपने फाटकों के अन्दर इकट्ठा करना।²⁹तब लावी जिसका तेरे ~साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं, और परदेसी और यतीम और बेवा 'औरतें जो तेरे फाटकों के अन्दर हों आएँ, और खाकर सेर हों, ताकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शे।

Chapter 15

¹हर सात साल के बा'द तू ~छुटकारा दिया करना।²और छुटकारा देने का तरीका ये हो, कि अगर किसी ने अपने पड़ोसी को कुछ कर्ज़ दिया हो तो वह उसे छोड़ दे, और अपने पड़ोसी से या भाई से उसका मुताल्बा न करे; क्योंकि खुदावन्द के नाम से इस छुटकारे का 'ऐलान हुआ है।³परदेसी से तू उसका मुताल्बा कर सकता है, पर जो कुछ तेरा तेरे भाई पर आता हो उसकी तरफ़ से दस्तबरदार हो जाना।

⁴तेरे बीच कोई कंगाल न रहे; क्योंकि खुदावन्द तुझको इस मुल्क में ज़रूर बरकत बख़्शेगा, जिसे खुद खुदावन्द तेरा ~खुदा मीरास के तौर पर तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है।⁵बशर्ते कि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात मान कर इन सब अहकाम पर चलने की एहतियात रखे, जो मैं आज तुझको देता हूँ।⁶क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा, जैसा उसने तुझ से वा'दा किया है, तुझको बरकत बख़्शेगा और तू बहुत सी क़ौमों को क़र्ज़ देगा, पर तुझको उनसे क़र्ज़ लेना न पड़ेगा; और तू बहुत सी क़ौमों पर हुक्मरानी करेगा, लेकिन वह तुझ पर हुक्मरानी करने न पाएँगी।

⁷जो मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है, अगर उसमें कहीं तेरे फाटकों के अन्दर तेरे भाइयों में से कोई ग़रीब हो, तो तू अपने उस ग़रीब भाई की तरफ़ से न अपना दिल सख़्त करना और न अपनी मुट्ठी बन्द कर लेना;⁸बल्कि उसकी ज़रूरत दूर करने को जो चीज़ उसे दरकार हो, उसके लिए तू ज़रूर खुले दिल से उसे क़र्ज़ देना।

⁹ख़बरदार रहना कि तेरे दिल में ये बुरा खयाल न गुज़रने पाए कि सातवाँ साल, जो छुटकारे का साल है, नज़दीक है और तेरे ग़रीब भाई की तरफ़ से तेरी नज़र बंद हो जाए और तू उसे कुछ न दे; और वह तेरे खिलाफ़ खुदावन्द से फ़रियाद करे और ये तेरे लिए गुनाह ठहरे।¹⁰बल्कि तुझको उसे ज़रूर देना होगा; और उसको देते वक़्त तेरे दिल को बुरा भी न लगे, इसलिए कि ऐसी बात की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में, और सब मु'आमिलों में जिनको तू अपने हाथ में लेगा तुझको बरकत बख़्शेगा।

¹¹और चूँकि मुल्क में कंगाल हमेशा पाए जाएँगे, इसलिए मैं तुझको हुक्म करता हूँ कि तू अपने मुल्क में अपने भाई या'नी कंगालों और मुहताजों के लिए अपनी मुट्ठी खुली रखना।

¹²~'अगर तेरा कोई भाई, चाहे वह 'इब्रानी मर्द हो या 'इब्रानी 'औरत तेरे हाथ बिके और वह छः बरस तक तेरी ख़िदमत करे, तो तू सातवें साल उसको आज़ाद होकर जाने देना।¹³और जब तू उसे आज़ाद कर के अपने पास से रुख़सत करे, तो उसे खाली हाथ न जाने देना।¹⁴बल्कि तू अपनी भेड़ बकरी और खत्ते और कोल्हू में से दिल खोलकर उसे देना, या'नी खुदावन्द तेरे खुदा ने जैसी बरकत तुझको दी हो उसके मुताबिक़ उसे देना।

¹⁵और याद रखना कि मुल्क-ए-मिस्र में तू भी गुलाम था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको छुड़ाया; इसीलिए मैं तुझको इस बात का हुक्म आज देता हूँ।¹⁶और अगर वह इस वजह से कि उसे तुझसे और तेरे घराने से मुहब्बत हो और वह तेरे साथ खुशहाल हो, तुझ से कहने लगे कि मैं तेरे पास से नहीं जाता।¹⁷~तो तू एक सुतारी लेकर उसका कान दरवाज़े से लगाकर छेद देना, तो वह हमेशा तेरा गुलाम बना रहेगा। और अपनी लौंडी से भी ऐसा ही करना।

¹⁸और अगर तू उसे आज़ाद करके अपने पास से रुख़सत करे तो उसे मुश्किल न गरदानना; क्योंकि उसने दो मज़दूरों के बराबर छः बरस तक तेरी ख़िदमत की, और खुदावन्द तेरा ~खुदा तेरे ~सब कारोबार में तुझको बरकत बख़्शेगा।

¹⁹~"तेरे ~गाय-बैल और भेड़-बकरियों में जितने पहलौठे नर पैदा हों, उन सब को खुदावन्द अपने खुदा के लिए मुक़द्दस करना। अपने गाय-बैल के पहलौठे से कुछ काम न लेना और न अपनी भेड़-बकरी के पहलौठे के बाल कतरना।²⁰तू उसे अपने घराने समेत खुदावन्द अपने खुदा के सामने उसी जगह जिसे खुदावन्द चुन ले, साल-ब-साल खाया करना।²¹~और अगर उसमें कोई नुक्स हो मसलन वह लंगड़ा या अन्धा हो या उसमें और कोई बुरा 'ऐब हो, तो खुदावन्द अपने खुदा के लिए उसकी कुर्बानी न गुज़रानना।

²²तू उसे अपने फाटकों के अन्दर खाना। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसे ही उसे खाएँ।²³लेकिन उसके खून को हरगिज़ न खाना; बल्कि तू उसको पानी की तरह ज़मीन पर उँडेल देना।

Chapter 16

¹तू अबीब के महीने को याद रखना और उसमें खुदावन्द अपने खुदा की फ़सह करना क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा अबीब के महीने में रात के वक़्त तुझको मिस्र से निकाल लाया।²और जिस जगह को खुदावन्द अपने नाम के घर के लिए चुने, वहीं तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए अपने गाय-बैल और भेड़-बकरी में से फ़सह की कुर्बानी पेश करना।

³~तू उसके साथ खमीरी रोटी न खाना, बल्कि सात दिन तक उसके साथ बेखमीरी रोटी जो दुख की रोटी है खाना; क्योंकि तू मुल्क-ए-मिस्र से हड़बड़ी में निकला था। यूँ तू 'उम्र भर उस दिन को जब तू मुल्क-ए-मिस्र से निकले याद रख सकेगा।' और तेरी हदों के अन्दर सात दिन तक कहीं खमीर नज़र न आए, और उस कुर्बानी में से जिसको तू पहले दिन की शाम को चढ़ाए कुछ गोश्त सुबह तक बाक़ी न रहने पाए।

⁵तू फ़सह की कुर्बानी को अपने फाटकों के अन्दर, जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको दिया हो कहीं न चढ़ाना; बल्कि जिस जगह को खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुनेगा, वहाँ तू फ़सह की कुर्बानी को उस वक़्त जब तू मिस्र से निकला था, या 'नी शाम को सूरज डूबते वक़्त अदा करना।

⁷और जिस जगह को खुदावन्द तेरा खुदा चुने वहीं उसे भून कर खाना और फिर सुबह को अपने-अपने खेमे को लौट जाना।⁸छः दिन तक बेखमीरी रोटी खाना और सातवें दिन खुदावन्द तेरे खुदा की खातिर पाक मजमा' हो, उसमें तू कोई काम न करना।

⁹फिर तू सात हफ़्ते यूँ गिनना, कि जब से हँसुआ लेकर फ़सल काटनी शुरू' करे~तब से सात हफ़्ते गिन लेना।¹⁰तब जैसी बरकत खुदावन्द तेरे खुदा ने दी हो, उसके मुताबिक़ अपने हाथ की रज़ा की कुर्बानी का हदिया लाकर खुदावन्द अपने खुदा के लिए हफ़्तों की 'ईद मनाना।

¹¹और उसी जगह जिसे खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुनेगा, तू और तेरे बेटे बेटियाँ और तेरे गुलाम और लौंडियाँ और वह लावी जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा जो तेरे बीच हों, सब मिल कर खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना।¹²और याद रखना के तू मिस्र में गुलाम था और इन हुक्मों पर एहतियात करके 'अमल करना।

¹³जब तू अपने खलीहान और कोल्हू का माल जमा' कर चुके, तो सात दिन तक 'ईद-ए-खियाम करना।¹⁴और तू और तेरे बेटे बेटियाँ और गुलाम और लौंडियाँ और लावी, और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा जो तेरे फाटकों के अन्दर हों, सब तेरी इस 'ईद में खुशी मनाएँ।

¹⁵सात दिन तक तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए उसी जगह जिसे खुदावन्द चुने, 'ईद करना, इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सारे माल में और सब कामों में जिनको तू ~हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शेगा, इसलिए तू पूरी-पूरी खुशी करना।

¹⁶और साल में तीन बार, या 'नी बेखमीरी रोटी की 'ईद और हफ़्तों की 'ईद और 'ईद-ए-खियाम के मौक़े' पर तेरे यहाँ के सब मर्द खुदावन्द अपने खुदा के आगे, उसी जगह हाज़िर हुआ करें जिसे वह चुनेगा। और जब आएँ तो खुदावन्द के सामने खाली हाथ न आएँ; ¹⁷बल्कि हर मर्द जैसी बरकत खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको बख़्शी हो अपनी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ दे।

¹⁸तू अपने क़बीलों की सब बस्तियों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तुझको दे, क़ाज़ी और हाकिम मुक़र्रर करना जो सदाक़त से लोगों की 'अदालत करें।¹⁹तू इन्साफ़ का खून न करना। तू न तो किसी की रूरि' आयत करना और न रिश्तत लेना, क्योंकि रिश्तत 'अक्लमन्द की आँखों को अन्धा कर देती है और सादिक़ की बातों को पलट देती है।²⁰जो कुछ बिल्कुल हक़ है तू उसी की पैरवी करना, ताकि तू ज़िन्दा रहे और उस मुल्क का मालिक बन जाये जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है।

²¹जो मज़बूह तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए बनाये उसके क़रीब किसी किस्म के दरख़्त की यसीरत न लगाना,²²और न कोई सुतून अपने लिए खड़ा कर लेना, जिससे खुदावन्द तेरे खुदा को नफ़रत है।

Chapter 17

¹तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए कोई बैल या भेड़-बकरी, जिसमें कोई 'ऐब या बुराई हो, ज़बह मत करना क्योंकि यह खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मकरूह है।

²'अगर तेरे बीच तेरी बस्तियों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तुझको दे, कहीं कोई मर्द या 'औरत मिले जिसने खुदावन्द तेरे खुदा के सामने यह बदकारी की हो कि उसके 'अहद को तोड़ा हो,³ और जाकर और मा'बूदों की या सूरज या चाँद या अजराम-ए-फलक में से किसी की, जिसका हुक्म मैंने तुझको नहीं दिया, 'इबादत और परस्तिश की हो,⁴ और यह बात तुझको बताई जाए और तेरे सुनने में आए, तो तू जॉफ़िशानी से तहक़ीक़ात करना और अगर यह ठीक हो और कत'ई तौर पर साबित हो जाए कि इस्राईल में ऐसा मकरूह काम हुआ,

⁵तो तू उस मर्द या उस 'औरत को जिसने यह बुरा काम किया हो, बाहर अपने फाटकों पर निकाल ले जाना और उनको ऐसा संगसार करना कि वह मर जाएँ।

⁶~जो वाजिब-उल-क़त्ल ठहरे वह दो या तीन आदमियों की गवाही से मारा जाए, सिर्फ़ एक ही आदमी की गवाही से वह मारा न जाए।⁷ उसको क़त्ल करते वक़्त गवाहों के हाथ पहले उस पर उठे उसके बा'द बाक़ी सब लोगों के हाथ, यूँ तू अपने बीच से शरारत को दूर किया करना।

⁸'अगर तेरी बस्तियों में कहीं आपस के खून या आपस के दा'वे या आपस की मार पीट के बारे में कोई झगड़े की बात उठे, और उसका फ़ैसला करना तेरे लिए निहायत ही मुश्किल हो, तो तू उठ कर उस जगह जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुनेगा जाना।⁹ और लावी काहिनों और उन दिनों के क़ाज़ियों के पास पहुँच कर उनसे दरियाफ़्त करना, और वह तुझको फ़ैसले की बात बताएँगे;

¹⁰और तू उसी फ़ैसले के मुताबिक़ जो वह तुझको उस जगह से जिसे खुदावन्द चुनेगा बताए 'अमल करना। जैसा वह तुमको सिखाएँ उसी के मुताबिक़ सब कुछ एहतियात करके मानना।¹¹ शरी'अत की जो बात वह तुझको सिखाएँ और जैसा फ़ैसला तुझको बताएँ, उसी के मुताबिक़ करना और जो कुछ फ़तवा वह दें उससे दहने या बाएँ न मुड़ना।

¹²~और अगर कोई शख्स गुस्ताख़ी से पेश आए कि उस काहिन की बात, जो खुदावन्द तेरे खुदा के सामने ख़िदमत के लिए खड़ा रहता है या उस क़ाज़ी का कहा न सुने, तो वह शख्स मार डाला जाए और तू इस्राईल में से ऐसी बुराई को दूर कर देना।¹³ और सब लोग सुन कर डर जाएँगे और फिर गुस्ताख़ी से पेश नहीं आएँगे।

¹⁴~जब तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है पहुँच जाये,~और उस पर क़ब्ज़ा कर के वहाँ रहने और कहने लगे, कि उन क़ौमों की तरह जो मेरे चारों तरफ़ हैं मैं भी किसी को अपना बादशाह बनाऊँ।¹⁵ तो तू बहरहाल सिर्फ़ उसी को अपना बादशाह बनाना जिसको खुदावन्द तेरा खुदा चुन ले, तू अपने भाइयों में से ही किसी को अपना बादशाह बनाना, और परदेसी को जो तेरा भाई नहीं अपने ऊपर हाकिम न कर लेना।

¹⁶इतना ज़रूर है कि वह अपने लिए बहुत घोड़े न बढ़ाए, और न लोगों को मिस्र में भेजे ताकि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएँ, इसलिए कि खुदावन्द ने तुमसे कहा है कि तुम उस राह से फिर कभी उधर न लौटना।¹⁷ और वह बहुत सी बीवियाँ भी न रखे ऐसा न हो कि उसका दिल फिर जाए, और न वह अपने लिए सोना चाँदी ज़ख़ीरा करे।

¹⁸~और जब वह तख़्त-ए-सल्तनत पर बैठा करे तो उस शरी'अत की जो लावी काहिनों के पास रहेगी, एक नक़ल अपने लिए एक किताब में उतार ले।¹⁹ और वह उसे अपने पास रखे और अपनी सारी 'उम्र उसको पढ़ा करे, ताकि वह खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना और उस शरी'अत और आईन की सब बातों पर 'अमल करना सीखे;

²⁰~जिससे उसके दिल में ग़ुरूर न हो कि वह अपने भाइयों को हक़ीर जाने, और इन अहक़ाम से न तो दहने न बाएँ मुड़े; ताकि इस्राईलियों के बीच उसकी और उसकी औलाद की सल्तनत ज़माने तक रहे।

Chapter 18

¹लावी काहिनो या 'नी लावी के कबीले का कोई हिस्सा और मीरास इसाईल के साथ न हो; वह खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानियाँ और उसी की मीरास खाया करें।²~इसलिए उनके भाइयों के साथ उनको मीरास न मिले; खुदावन्द उनकी मीरास है, जैसा उसने खुद उनसे कहा है।

³और जो लोग गाय-बैल या भेड़ या बकरी की कुर्बानी गुजरानते हैं उनकी तरफ से काहिनो का यह हक होगा, कि वह काहिन को शाना और कनपटियाँ और झोझ दें।⁴और तू अपने अनाज और मय और तेल के पहले फल में से, और अपनी भेड़ों के बाल में से जो पहली दफ़ा कतरे जाएँ उसे देना।⁵~क्योंकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उसको तेरे सब कबीलों में से चुन लिया है, ताकि वह और उसकी औलाद हमेशा खुदावन्द के नाम से खिदमत के लिए हाज़िर रहें।

⁶और तेरी जो बस्तियाँ सब इसाईलियों में हैं उनमें से अगर कोई लावी किसी बस्ती से जहाँ वह बूद-ओ-बाश करता था आए, और अपने दिल की पूरी चाहत से उस जगह हाज़िर हो जिसको खुदावन्द चुनेगा:⁷तो अपने सब लावी भाइयों की तरह जो वहाँ खुदावन्द के सामने खड़े रहते हैं, वह भी खुदावन्द अपने खुदा के नाम से खिदमत करे।⁸और उन सबको खाने को बराबर हिस्सा मिले, 'अलावा उस क्रीमत के जो उसके बाप-दादा की मीरास बेचने से उसे हासिल हो।

⁹जब तू उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुमको देता है पहुँच जाओ, तो वहाँ की क्रीमों की तरह मकरूह काम करने न सीखना।¹⁰तुझमें हरगिज़ कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में चलवाए, या फ़ालगीर या शगुन निकालने वाला या अफ़सूँगर या जादूगर¹¹या मंतरी या जिन्नात का आशना या रम्माल या साहिर हो।

¹²क्योंकि वह सब जो ऐसा काम करते हैं खुदावन्द के नज़दीक मकरूह हैं, और इन ही मकरूहात की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे सामने से निकालने पर है।¹³तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने कामिल रहना।¹⁴क्योंकि वह क्रीमों जिनका तू वारिस होगा शगुन निकालने वालों और फ़ालगीर की सुनती हैं; लेकिन तुझको खुदावन्द तेरे खुदा ने ऐसा करने न दिया।

¹⁵~खुदावन्द तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही बीच से, या 'नी तेरे ही भाइयों में से मेरी तरह एक नबी खड़ा करेगा तुम उसकी सुनना;¹⁶यह तेरी उस दरख्वास्त के मुताबिक़ होगा जो तूने खुदावन्द अपने खुदा से मजमे' के दिन होरिब में की थी, 'मुझको न तो खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ फिर सुननी पड़े और न ऐसी बड़ी आग ही का नज़ारा हो, ताकि मैं मर न जाऊँ।'

¹⁷और खुदावन्द ने मुझसे कहा कि "वह जो कुछ कहते हैं इसलिए ठीक कहते हैं।¹⁸~मैं उनके लिए उन ही के भाइयों में से तेरी तरह एक नबी खड़ा करूँगा, और अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा, और जो कुछ मैं उसे हुक्म दूँगा वही वह उनसे कहेगा।¹⁹और जो कोई मेरी उन बातों की जिनकी वह मेरा नाम लेकर कहेगा न सुने, तो मैं उनका हिसाब उनसे लूँगा।

²⁰लेकिन जो नबी गुस्ताख बन कर कोई ऐसी बात मेरे नाम से कहे, जिसके कहने का मैंने उसको हुक्म नहीं दिया या और मा'बूदों के नाम से कुछ कहे, तो वह नबी क़त्ल किया जाए।²¹और अगर तू अपने दिल में कहे कि '~जो बात खुदावन्द ने नहीं कही है, उसे हम क्यों कर पहचानें?'

²²तो पहचान यह है, कि जब वह नबी खुदावन्द के नाम से कुछ कहे और उसके कहे कि मुताबिक़ कुछ वाक़े' या पूरा न हो, तो वह बात खुदावन्द की कही हुई नहीं; बल्कि उस नबी ने वह बात खुद गुस्ताख बन कर कही है, तू उससे ख़ौफ़ न करना।

Chapter 19

¹जब खुदावन्द तेरा खुदा उन क़ौमों को, जिनका मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है काट डाले, और तू उनकी जगह उनके शहरों और घरों में रहने लगे,²~तो तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, तीन शहर अपने लिए अलग कर देना।³ और तू एक रास्ता भी अपने लिए तैयार करना, और अपने उस मुल्क की ज़मीन को जिस पर खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा दिलाता है तीन हिस्से करना, ताकि हर एक खूनी वहीं भाग जाए।

⁴और उस क़ातिल का जो वहाँ भाग कर अपनी जान बचाए हाल यह हो, कि उसने अपने पड़ोसी को अनजाने में और बग़ैर उससे पुरानी दुश्मनी रखखे मार डाला हो।⁵मसलन कोई शख्स अपने पड़ोसी के साथ लकड़ियाँ काटने को जंगल में जाए और कुल्हाड़ा हाथ में उठाए ताकि दरख्त काटे, और कुल्हाड़ा दस्ते से निकल कर उसके पड़ोसी के जा लगे और वह मर जाए, तो वह इन शहरों में से किसी में भाग कर ज़िन्दा बचे।

⁶~कहीं ऐसा न हो कि रास्ते की लम्बाई की वजह से खून का इन्तक़ाम लेने वाला अपने जोश-ए-ग़ज़ब में क़ातिल का पीछा करके उसको जा पकड़े और उसको क़त्ल करे, हालाँकि वह वाजिब-उल-क़त्ल नहीं क्योंकि उसे मक्क़ूल से पुरानी दुश्मनी न थी।⁷इसलिए मैं तुझको हुक्म देता हूँ कि तू अपने लिए तीन शहर अलग कर देना।

⁸और अगर खुदावन्द तेरा खुदा उस क्रसम के मुताबिक़ जो उसने तेरे बाप-दादा से खाई, तेरी सरहद को बढ़ाकर वह सब मुल्क जिसके देने का वा'दा उसने तेरे बाप दादा से किया था तुझको दे।⁹ और तू इन सब हुक्मों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ ध्यान करके 'अमल करे और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखखे और हमेशा उसकी राहों पर चले, तो इन तीन शहरों के आलावा तीन शहर और अपने लिए अलग कर देना।¹⁰ ताकि तेरे मुल्क के बीच जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास में देता है, बेगुनाह का खून बहाया न जाए और वह खून यूँ तेरी गर्दन पर हो।

¹¹~लेकिन अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी से दुश्मनी रखता हुआ उसकी घात में लगे, और उस पर हमला कर के उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए और वह खुद उन शहरों में से किसी में भाग जाए।¹²~तो उसके शहर के बुजुर्ग लोगों को भेजकर उसे वहाँ से पकड़वा मँगवाएँ, और उसको खून के इन्तक़ाम लेने वाले के हाथ में हवाले करें ताकि वह क़त्ल हो।¹³ तुझको उस पर ज़रा तरस न आए, बल्कि तू इस तरह बेगुनाह के खून को इसाईल से दफ़ा' करना ताकि तेरा भला हो।

¹⁴तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, अपने पड़ोसी की हद का निशान जिसको अगले लोगों ने तेरी मीरास के हिस्से में ठहराया हो मत हटाना।

¹⁵~किसी शख्स के खिलाफ़ उसकी किसी बदकारी या गुनाह के बारे में जो उससे सरज़द हो, एक ही गवाह बस नहीं बल्कि दो गवाहों या तीन गवाहों के कहने से बात पक्की समझी जाए।¹⁶ अगर कोई झूटा गवाह उठ कर किसी आदमी की बदी की निस्बत गवाही दे,

¹⁷तो वह दोनों आदमी जिनके बीच यह झगड़ा हो, खुदावन्द के सामने काहिनों और उन दिनों के क़ाज़ियों के आगे खड़े हों,¹⁸ और क़ाज़ी खूब तहक़ीक़ात करें, और अगर वह गवाह झूटा निकले और उसने अपने भाई के खिलाफ़ झूटी गवाही दी हो;¹⁹~तो जो हाल उसने अपने भाई का करना चाहा था, वही तुम उसका करना; और यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' कर देना।

²⁰और दूसरे लोग सुन कर डरेंगे और तेरे बीच फिर ऐसी बुराई नहीं करेंगे।²¹ और तुझको ज़रा तरस न आए; जान का बदला जान, आँख का बदला आँख, दाँत का बदला दाँत, हाथ का बदला हाथ, और पाँव का बदला पाँव हो।

Chapter 20

¹~जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को जाये, और घोड़ों और रथों और अपने से बड़ी फ़ौज को देखे तो उनसे डर न जाना; क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा जो तुझको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया तेरे साथ है।

²~और जब मैदान-ए-जंग में तुम्हारा मुकाबला होने को हो तो काहिन फ़ौज के आदमियों के पास जाकर उनकी तरफ़ मुखातिब हो,³और उनसे कहे, 'सुनो ऐ इस्राईलियों, तुम आज के दिन अपने दुश्मनों के मुकाबले के लिए मैदान-ए-जंग में आए हो; इसलिए तुम्हारा दिल परेशान न हो, तुम न खौफ़ करो, न काँपों, न उनसे दहशत खाओ।'⁴~क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारे साथ-साथ चलता है, ताकि तुमको बचाने को तुम्हारी तरफ़ से तुम्हारे दुश्मनों से जंग करे।"

⁵~फिर फ़ौजी अफ़सरान लोगों से यूँ कहें कि 'तुम में से जिस किसी ने नया घर बनाया हो और उसे मख्सूस न किया हो तो वह अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में क़त्ल हो और दूसरा शख्स उसे मख्सूस करे।

⁶और जिस किसी ने ताकिस्तान लगाया हो लेकिन अब तक उसका फल इस्ते'माल न किया हो वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और दूसरा आदमी उसका फल खाए।'⁷और जिसने किसी 'औरत से अपनी मंगनी तो कर ली हो लेकिन उसे ब्याह कर नहीं लाया है वह अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जाए और दूसरा मर्द उससे ब्याह करे।'

⁸और फ़ौजी हाकिम लोगों की तरफ़ मुखातिब हो कर उनसे यह भी कहें कि 'जो शख्स डरपोक और कच्चे दिल का हो वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसकी तरह उसके भाइयों का हौसला भी टूट जाए।'⁹और जब फ़ौजी हाकिम यह सब कुछ लोगों से कह चुकें, तो लश्कर के सरदारों को उन पर मुकर्रर कर दें।

¹⁰जब तू किसी शहर से जंग करने को उसके नज़दीक पहुँचे, तो पहले उसे सुलह का पैग़ाम देना।¹¹और अगर वह तुझको सुलह का जवाब दे और अपने फाटक तेरे लिए खोल दे, तो वहाँ के सब बाशिन्दे तेरे बाजगुज़ार बन कर तेरी खिदमत करें।

¹²~और अगर वह तुझसे सुलह न करें बल्कि तुझसे लड़ना चाहें, तो तुम उसका मुहासिरा करना,¹³और जब खुदावन्द तेरा खुदा उसे तेरे क़ब्ज़े में कर दे तो वहाँ के हर मर्द को तलवार से क़त्ल कर डालना।

¹⁴~लेकिन 'औरतों और बाल बच्चों और चौपायों और उस शहर का सब माल और लूट को अपने लिए रख लेना, और तू अपने दुश्मनों की उस लूट को जो खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको दी हो खाना।'¹⁵उन सब शहरों का यही हाल करना जो तुझसे बहुत दूर हैं और इन क़ौमों के शहर नहीं हैं।

¹⁶लेकिन इन क़ौमों के शहरों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है, किसी आदमी को ज़िन्दा न बाक़ी रखना।¹⁷बल्कि तू इनको या'नी हिंती और अमोरी और कना'नी और फ़रिज़्जी और हव्वी और यबूसी क़ौमों को, जैसा खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको हुक्म दिया है बिल्कुल हलाक कर देना।

¹⁸~ताकि वह तुमको अपने से मकरूह काम करने न सिखाएँ जो उन्होंने अपने मा'बूदों के लिए किए हैं, और यूँ तुम खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़ गुनाह करने लगे।

¹⁹जब तू किसी शहर को फ़तह करने के लिए उससे जंग करे और ज़माने तक उसको घेरे रहे, तो उसके दरख्तों को कुल्हाड़ी से न काट डालना क्योंकि उनका फल तेरे खाने के काम में आएगा इसलिए तू उनको मत काटना। क्योंकि क्या मैदान का दरख्त इन्सान है कि तू उसको घेरे रहे?²⁰इसलिए सिर्फ़ उन्हीं दरख्तों को काट कर उड़ा देना जो तेरी समझ में खाने के मतलब के न हों, और तू उस शहर के सामने जो तुझसे जंग करता हो बुर्जों को बना लेना जब तक वह सर न हो जाए।

Chapter 21

¹अगर उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, किसी मक्तूल की लाश मैदान में पड़ी हुई मिले और यह मा'लूम न हो कि उसका क़ातिल कौन है,² तो तेरे बुजुर्ग और क़ाज़ी निकल कर उस मक्तूल के चारों तरफ़ के शहरों के फ़ासले को नापें,

³और जो शहर उस-मक्तूल-के सब से नज़दीक हो, उस शहर के बुजुर्ग एक बछिया लें जिससे कभी कोई काम न लिया गया-हो और न वह जुए में जोती गई हो;⁴ और उस शहर के बुजुर्ग उस बछिया को बहते पानी की वादी में, जिसमें न हल चला हो और न उसमें कुछ बोया गया हो ले जाएँ, और वहाँ उस वादी में उस बछिया की गर्दन तोड़ दें।

⁵तब बनी लावी जो काहिन है नज़दीक आयें क्योंकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उनको चुन लिया है कि खुदावन्द की खिदमत करें और उसके नाम से बरकत दिया करें, और उन ही के कहने के मुताबिक़ हर झगड़े और मार पीट के मुकद्दमे का फ़ैसला हुआ करे।

⁶फिर इस शहर के सब बुजुर्ग जो उस मक्तूल के सब से नज़दीक रहने वाले हों, उस बछिया के ऊपर जिसकी गर्दन उस वादी में तोड़ी गई अपने अपने हाथ धोएँ,

⁷और यूँ कहें, 'हमारे हाथ से यह खून नहीं हुआ और न यह हमारी आँखों का देखा हुआ है।

⁸इसलिए ऐ खुदावन्द, अपनी क़ौम इस्राईल को जिसे तुने छुड़ाया है मु'आफ़ कर, और बेगुनाह के खून को अपनी क़ौम इस्राईल के ज़िम्मे न लगा।' तब वह खून उनको मु'आफ़ कर दिया जाएगा।⁹ यूँ तू उस काम को करके जो खुदावन्द के नज़दीक दुरुस्त है, बेगुनाह के खून की जवाबदेही को अपने ऊपर से दूर-ओ-दफ़ा' करना।

¹⁰~जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को निकले और खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे ~हाथ में कर दे, और तू उनको गुलाम कर लाए,¹¹ और उन गुलामों में किसी खूबसूरत 'औरत को देख कर तुम उस पर फ़रेफ़ता हो जाओ और उसको ब्याह लेना चाहो,¹² तो तू उसे अपने घर ले आना और वह अपना सिर मुण्डवाए और अपने नाखून तरशवाए,

¹³और अपनी गुलामी का लिबास उतार कर तेरे घर में रहे और एक महीने तक अपने माँ बाप के लिए मातम करे; इसके बाद तू उसके पास जाकर उसका शौहर होना और वह तेरी बीवी बने।¹⁴ और अगर वह तुझको न भाए तो जहाँ वह चाहे उसको जाने देना, लेकिन रुपये की खातिर उसको हरगिज़ न बेचना और उससे लौंडी का सा सुलूक न करना, इसलिए कि तूने उसकी हुरमत ले ली है।

¹⁵~'अगर किसी मर्द की दो बीवियाँ हों और एक महबूबा और दूसरी ग़ैर महबूबा हो, और महबूबा और ग़ैर महबूबा दोनों से लड़के हों और पहलौठा बेटा ग़ैर महबूबा से हो,¹⁶ तो जब वह अपने बेटों को अपने माल का वारिस करे, तो वह महबूबा के बेटे को ग़ैर महबूबा के बेटे पर जो हक़ीक़त में पहलौठा है तर्ज़ीह देकर पहलौठा न ठहराए।¹⁷ बल्कि वह ग़ैर महबूबा के बेटे को अपने सब माल का दूना हिस्सा दे कर उसे पहलौठा माने, क्योंकि वह उसकी कुव्वत की शुरू'आत है और पहलौठे का हक़ उसी का है।

¹⁸अगर किसी आदमी का ज़िद्दी और बागी, बेटा हो, जो अपने बाप या माँ की बात न मानता हो और उनके तम्बीह करने पर भी उनकी न सुनता हो,¹⁹ तो उसके माँ बाप उसे पकड़ कर और निकाल कर उस शहर के बुजुर्गों के पास उस जगह के फाटक पर ले जाएँ,

²⁰और वह उसके शहर के बुजुर्गों से 'अज़ करें कि यह हमारा बेटा ज़िद्दी और बागी है, यह हमारी बात नहीं मानता और उड़ाऊ और शराबी है।²¹ तब उसके शहर के सब लोग उसे संगसार करें कि वह मर जाए, यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दूर करना। तब सब इस्राईली सुन कर डर जाएँगे।

²²और अगर किसी ने कोई ऐसा गुनाह किया हो जिससे उसका क़त्ल वाजिब हो, और तू उसे मारकर दरख़्त से टॉंग दे,²³ तो उसकी लाश रात भर दरख़्त पर लटकी न रहे बल्कि तू उसी दिन उसे दफ़न कर देना, क्योंकि जिसे फाँसी मिलती है वह खुदा की तरफ़ से मला'ऊन है; ऐसा न हो कि तू उस मुल्क को नापाक कर दे जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास के तौर पर देता है।

Chapter 22

¹~तू अपने भाई के बैल या भेड़ को भटकती देख कर उस से मुँह न फेरना, बल्कि ज़रूर तू उसको अपने भाई के पास पहुँचा देना।²और अगर तेरा भाई तेरे नज़दीक न रहता हो या तू उससे वाकिफ़ न हो, तो तू उस जानवर को अपने घर ले आना और वह तेरे पास रहे जब तक तेरा भाई उसकी तलाश न करे, तब तू उसे उसको दे देना।

³तू उसके गधे और उसके कपड़े से भी ऐसा ही करना; गरज़ जो कुछ तेरे भाई से खोया जाए और तुझको मिले, तू उससे ऐसा ही करना और मुँह न फेरना।⁴तू अपने भाई का गधा या बैल रास्ते में गिरा हुआ देखकर उससे मुँह न फेरना, बल्कि ज़रूर उसके उठाने में उसकी-मदद करना।

⁵~'औरत मर्द का लिबास न पहने और न मर्द 'औरत की पोशाक पहने, क्योंकि जो ऐसा काम करता है वह खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मकरूह है।

⁶~अगर राह चलते अचानक किसी परिन्दे का घोंसला दरख़्त या ज़मीन पर बच्चों या अण्डों के साथ तुझको मिल जाए, और माँ बच्चों या अण्डों पर बैठी हुई हो तो तू बच्चों को माँ के साथ न पकड़ लेना;⁷बच्चों को तू ले तो ले लेकिन माँ को ज़रूर छोड़ देना, ताकि तेरा भला हो और तेरी 'उम्र दराज़ हो।

⁸जब तू कोई नया घर बनाये तो अपनी छत पर मुण्डेर ज़रूर लगाना, ऐसा न हो कि कोई आदमी वहाँ से गिरे और तेरी वजह से वह खून तेरे ही घरवालों पर हो।

⁹तू अपने ताकिस्तान में दो क्रिस्म के बीज न बोना, ऐसा न हो कि सारा फल या 'नी जो बीज तूने बोया और ताकिस्तान की पैदावार दोनों ज़ब्त कर लिए जाएँ।

¹⁰~तू बैल और गधे दोनों को एक साथ जोत कर हल न चलाना।¹¹~तू ऊन और सन दोनों की मिलावट का बुना हुआ कपड़ा न पहनना।

¹²तू अपने ओढ़ने की चादर के चारों किनारों पर झालर लगाया करना।

¹³~अगर कोई मर्द किसी 'औरत को ब्याहें और उसके पास जाए, और बा'द उसके उससे नफ़रत करके,¹⁴शर्मनाक बातें उसके हक़ में कहे और उसे बदनाम करने के लिए यह दा'वा करे कि 'मैंने इस 'औरत से ब्याह किया, और जब मैं उसके पास गया तो मैंने कुँवारेपन के निशान उसमें नहीं पाए।'।

¹⁵~तब उस लड़की का बाप और उसकी माँ उस लड़की के कुँवारेपन के निशानों को उस शहर के फाटक पर बुजुर्गों के पास ले जाएँ,

¹⁶~और उस लड़की का बाप बुजुर्गों से कहे कि 'मैंने अपनी बेटी इस शख्स को ब्याह दी, लेकिन यह उससे नफ़रत रखता है;¹⁷और शर्मनाक बातें उसके हक़ में कहता है, और यह दा'वा करता है कि मैंने तेरी बेटी में कुँवारेपन के निशान नहीं पाए; हालाँकि मेरी बेटी के कुँवारेपन के निशान यह मौजूद हैं।' फिर वह उस चादर को शहर के बुजुर्गों के आगे फैला दें।

¹⁸~तब शहर के बुजुर्ग उस शख्स को पकड़ कर उसे कोड़े लगाएँ,¹⁹और उससे चाँदी के सौ मिस्काल जुर्माना लेकर उस लड़की के बाप को दें, इसलिए कि उसने एक इस्राईली कुँवारी को बदनाम किया; और वह उसकी बीवी बनी रहे और वह ज़िन्दगी भर उसको तलाक़ न देने पाए।

²⁰लेकिन अगर यह बात सच हो कि लड़की में कुँवारेपन के निशान नहीं पाए गए,²¹तो वह उस लड़की को उसके बाप के घर के दरवाज़े पर निकाल लाएँ, और उसके शहर के लोग उसे संगसार करें कि वह मर जाए; क्योंकि उसने इस्राईल के बीच शरारत की, कि अपने बाप के घर में फ़ाहिशापन किया। यूँ-तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना।

²²~अगर कोई मर्द किसी शौहर वाली 'औरत से ज़िना करते पकड़ा जाए तो वह दोनों मार डाले जाएँ, या 'नी वह मर्द भी जिसने उस 'औरत से सुहबत की और वह 'औरत भी; यूँ तू इस्राईल में से ऐसी बुराई को दफ़ा' करना।

²³~अगर कोई कुंवारी लड़की किसी शख्स से मन्सूब हो गई हो, और कोई दूसरा आदमी उसे शहर में पाकर उससे सुहबत करे;²⁴तो तू उन दोनों को उस शहर के फाटक पर निकाल लाना, और उनको तू संगसार कर देना कि वह मर जाएँ, लड़की को इसलिए कि वह शहर में होते हुए न चिल्लाई, और मर्द को इसलिए कि उसने अपने पड़ोसी की बीवी को बेहुरमत किया। यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना।

²⁵लेकिन अगर उस आदमी को वही लड़की जिसकी निस्बत हो चुकी हो किसी मैदान या खेत में मिल जाए, और वह आदमी जबरन उससे सुहबत करे, तो सिर्फ़ वह आदमी ही जिसने सुहबत की मार डाला जाए;²⁶~लेकिन उस लड़की से कुछ न करना क्योंकि लड़की का ऐसा गुनाह नहीं जिससे वह क़त्ल के लायक ठहरे, इसलिए कि यह बात ऐसी है जैसे कोई अपने पड़ोसी पर हमला करे और उसे मार डाले।²⁷~क्योंकि वह लड़की उसे मैदान में मिली और वह मन्सूबा लड़की चिल्लाई भी लेकिन वहाँ कोई ऐसा न था जो उसे छुड़ाता।

²⁸अगर किसी आदमी को कोई कुंवारी लड़की मिल जाए जिसकी निस्बत न हुई हो, और वह उसे पकड़कर उससे सुहबत करे और दोनों पकड़े जाएँ,²⁹~तो वह मर्द जिसने उससे सुहबत की हो, लड़की के बाप को चाँदी के पचास मिस्काल दे और वह लड़की उसकी बीवी बने; क्योंकि उसने उसे बेहुरमत किया, और वह उसे अपनी जिन्दगी भर तलाक़ न देने पाए।

³⁰~कोई शख्स अपने बाप की बीवी से ब्याह न करे और अपने बाप के दामन को न खोले।

Chapter 23

¹जिसके खुसिये कुचले गए हों या आलत काट डाली गई हो, वह खुदावन्द की जमा'अत में आने न पाए।²कोई हरामज़ादा खुदावन्द की जमा'अत में दाखिल न हो, दसवीं नसल तक उसकी नसल में से कोई खुदावन्द की जमा'अत में आने न पाए।

³कोई 'अम्मोनी या मोआबी खुदावन्द की जमा'अत में दाखिल न हो, दसवीं नसल तक उनकी नसल में से कोई खुदावन्द की जमा'अत में कभी आने न पाए;

⁴~इसलिए कि जब तुम मिस्र से निकल कर आ रहे थे तो उन्होंने रोटी और पानी लेकर रास्ते में तुम्हारा इस्तक्रबाल नहीं किया, बल्कि ब'ओर के बेटे बल'आम को मसोपतामिया के फ़तोर से उजरत पर बुलवाया ताकि वह तुझ पर ला'नत करे।

⁵लेकिन खुदावन्द तेरे खुदा ने बल'आम की न सुनी, बल्कि खुदावन्द तेरे खुदा ने तेरे लिए उस ला'नत को बरकत से बदल दिया इसलिए कि खुदावन्द तेरे खुदा को तुझसे मुहब्बत थी।⁶तू अपनी ज़िन्दगी भर कभी उनकी सलामती या स'आदत की चाहत न रखना।

⁷तू किसी अदोमी से नफ़रत न रखना, क्योंकि वह तेरा भाई है; तू किसी मिस्री से भी नफ़रत न रखना, क्योंकि तू उसके मुल्क में परदेसी हो कर रहा था।⁸उनकी तीसरी नसल के जो लड़के पैदा हों वह खुदावन्द की जमा'अत में आने पाएँ।

⁹जब तू अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए दल बाँध कर निकले तो अपने को हर बुरी चीज़ से बचाए रखना।¹⁰अगर तुम्हारे बीच कोई ऐसा आदमी हो जो रात को एहतिलाम की वजह से नापाक हो गया हो, तो वह खेमागाह से बाहर निकल जाए और खेमागाह के अन्दर न आए;¹¹लेकिन जब शाम होने लगे तो वह पानी से गुस्ल करे, और जब आफ़ताब गुरूब हो जाए तो खेमागाह में आए।

¹²और खेमागाह के बाहर तू कोई जगह ऐसी ठहरा देना, जहाँ तू अपनी हाजत के लिए जा सके;¹³और अपने साथ अपने हथियारों में एक मेख भी रखना, ताकि जब बाहर तुझे हाजत के लिए बैठना हो तो उससे जगह खोद लिया करे और लौटते वक़्त अपने फुज़ले को ढाँक दिया करे।¹⁴इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरी खेमागाह में फिरा करता है ताकि तुझको बचाए, और तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दे; इसलिए तेरी खेमागाह पाक रहे, ऐसा न हो कि वह तुझमें नजासत को देख कर तुझ से फिर जाए।

¹⁵अगर किसी का गुलाम अपने आक्रा के पास से भाग कर तेरे पास पनाह ले, तो तू उसे उसके आक्रा के हवाले न कर देना;¹⁶बल्कि वह तेरे साथ तेरे ही बीच तेरी बस्तियों में से, जो उसे अच्छी लगे उसे चुन कर उसी जगह रहे; इसलिए तू उसे हरगिज़ न सताना।

¹⁷इसाईली लड़कियों में कोई फ़ाहिशा न हो, और न इसाईली लड़कों में कोई लूती हो।¹⁸~तू किसी फ़ाहिशा की खर्ची या कुत्ते की मज़दूरी, किसी मिन्नत के लिए खुदावन्द अपने खुदा के घर में न लाना; क्योंकि ये दोनों खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मकरूह हैं।

¹⁹तू अपने भाई को सूद पर क़र्ज़ न देना, चाहे वह रुपये का सूद ~हो या अनाज का सूद या किसी ऐसी चीज़ का सूद हो जो ब्याज पर दी जाया करती है।²⁰तू परदेसी को सूद पर क़र्ज़ दे तो दे, लेकिन अपने भाई को सूद पर क़र्ज़ न देना; ताकि खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में जिस पर तू क़ब्ज़ा करने जा रहा है, तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाए तुझको बरकत दे।

²¹जब तू खुदावन्द अपने खुदा की खातिर मिन्नत माने तो उसके पूरा करने में देर न करना, इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा ज़रूर उसको तुझसे तलब करेगा तब तू गुनहगार ठहरेगा।²²लेकिन अगर तू मिन्नत न माने तो तेरा कोई गुनाह नहीं |²³जो कुछ तेरे मुँह से निकले उसे ध्यान कर के पूरा करना, और जैसी मिन्नत तूने खुदावन्द अपने खुदा के लिए मानी हो, उसके मुताबिक़ रज़ा की कुर्बानी जिसका वा'दा तेरी ज़बान से हुआ अदा करना।

²⁴~जब तू अपने पड़ोसी के ताकिस्तान में जाए, तो जितने अंगूर चाहे पेट भर कर खाना, लेकिन कुछ अपने बर्तन में न रख लेना।²⁵जब तू अपने पड़ोसी के खड़े खेत में जाए, तो अपने हाथ से बालें तोड़ सकता है लेकिन अपने पड़ोसी के खड़े खेत को हँसुआ न लगाना।

Chapter 24

¹~अगर कोई मर्द किसी 'औरत से ब्याह करे और पीछे उसमें कोई ऐसी बेहूदा बात पाए जिससे उस 'औरत की तरफ उसकी उनसियत न रहे, तो वह उसका तलाक़ नामा लिख कर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे।²~और जब वह उसके घर से निकल जाए, तो वह दूसरे मर्द की हो सकती है।

³लेकिन अगर दूसरा शौहर भी उससे नाखुश रहे, और उसका तलाक़नामा लिखकर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे या वह दूसरा शौहर जिसने उससे ब्याह किया हो मर जाए, 'तो उसका पहला शौहर जिसने उसे निकाल दिया था उस 'औरत के नापाक हो जाने के बा'द फिर उससे ब्याह न करने पाए, क्योंकि ऐसा काम खुदावन्द के नज़दीक मकरूह है। इसलिए तू उस मुल्क को जिसे खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है, गुनाहगार न बनाना।

⁵~जब किसी ने कोई नई 'औरत ब्याही हो, तो वह जंग के लिए न जाए और न कोई काम उसके सुपुर्द हो। वह साल भर तक अपने ही घर में आज़ाद रह कर अपनी ब्याही हुई बीवी को खुश रखे।

⁶कोई शख्स चक्की को या उसके ऊपर के पाट को गिरवी न रखे, क्योंकि यह तो जैसे आदमी की जान को गिरवी रखना है।

⁷~अगर कोई शख्स अपने इसाईली भाइयों में से किसी को गुलाम बनाए या बेचने की नियत से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो वह चोर मार डाला जाए। यूँ तू ऐसी बुराई अपने बीच से दफ़ा' करना।

⁸~तू कोढ़ की बीमारी की तरफ़ से होशियार रहना, और लावी काहिनों की सब बातों को जो वह तुमको बताएँ जानफ़िशानी से मानना और उनके मुताबिक़ 'अमल करना; जैसा मैंने उनको हुक्म किया है वैसा ही ध्यान देकर करना।⁹तू याद रखना कि खुदावन्द तेरे खुदा ने जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे, तो रास्ते में मरियम से क्या किया।

¹⁰~जब तू अपने भाई को कुछ क़र्ज़ दे, तो गिरवी की चीज़ लेने को उसके घर में न घुसना।¹¹~तू बाहर ही खड़े रहना, और वह शख्स जिसे तू ~क़र्ज़ दे खुद गिरवी की चीज़ बाहर तेरे पास लाए।

¹²और अगर वह शख्स गरीब हो, तो उसकी गिरवी की चीज़ को पास रखकर सो न जाना;¹³बल्कि जब आफ़ताब गुरूब होने लगे, तो उसकी चीज़ उसे लौटा देना ताकि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझको दु'आ दे; और यह बात तेरे लिए खुदावन्द तेरे खुदा के सामने रास्तबाज़ी ठहरेगी।

¹⁴~तू अपने गरीब और मोहताज खादिम पर जुल्म न करना, चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे उन परदेसियों में से जो तेरे मुल्क के अन्दर तेरी बस्तियों में रहते हों।¹⁵~तू उसी दिन इससे पहले कि आफ़ताब गुरूब हो उसकी मज़दूरी उसे देना, क्योंकि वह गरीब है और उसका दिल मज़दूरी में लगा रहता है; ऐसा न हो कि वह खुदावन्द से तेरे खिलाफ़ फ़रियाद करे और यह तेरे हक़ में गुनाह ठहरे।

¹⁶बेटों के बदले बाप मारे न जाएँ न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ। हर एक अपने ही गुनाह की वजह से मारा जाए।

¹⁷तू परदेसी या यतीम के मुक़द्दमे को न बिगाड़ना, और न बेवा के कपड़े को गिरवी रखना;¹⁸~बल्कि याद रखना कि तू मिस्र में गुलाम था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको वहाँ से छुड़ाया; इसीलिए मैं तुझको इस काम के करने का हुक्म देता हूँ।

¹⁹~जब तू अपने खेत की फ़सल काटे और कोई पूला खेत में भूल से रह जाए, तो उसके लेने को वापस न जाना, वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे; ताकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शे।²⁰जब तू अपने ज़ैतून के दरख़्त को झाड़े, तो उसके बा'द उसकी शाखों को दोबारा न झाड़ना; बल्कि वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहें।

²¹~जब तू अपने ताकिस्तान के अंगूरों को जमा' करे, तो उसके बा'द उसका दाना-दाना न तोड़ लेना; वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे।²²और याद रखना कि तू मुल्क-ए-मिस्र में गुलाम था; इसी लिए मैं तुझको इस काम के करने का हुक्म देता हूँ।

Chapter 25

¹~अगर लोगों में किसी तरह का झगड़ा हो और वह 'अदालत में आएँ ताकि क्राज़ी उनका इन्साफ़ करें, तो वह सादिक को बेगुनाह ठहराएँ और शरीर पर फ़तवा दें।'²~और अगर वह शरीर पिटने के लायक़ निकले, तो क्राज़ी उसे ज़मीन पर लिटवाकर अपनी आँखों के सामने उसकी शरारत के मुताबिक़ उसे गिन गिनकर कोड़े लगावाए।

³वह उसे चालीस कोड़े लगाए, इससे ज़्यादा न मारे; ऐसा न हो कि इससे ज़्यादा कोड़े लगाने से तेरा भाई तुझको हक़ीर मा'लूम देने लगे।

⁴~तू दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना।

⁵अगर कोई भाई मिलकर साथ रहते हों और एक उनमें से बे-औलाद मर जाए, तो उस मरहूम की बीवी किसी अजनबी से ब्याह न करे; बल्कि उसके शौहर का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी बीवी बना ले, और शौहर के भाई का जो हक़ है वह उसके साथ अदा करे।⁶और उस 'औरत के जो पहला बच्चा हो वह इस आदमी के मरहूम भाई के नाम का कहलाए, ताकि उसका नाम इस्राईल में से मिट न जाए।

⁷और अगर वह आदमी अपनी भावज से ब्याह करना न चाहे, तो उसकी भावज फाटक पर बुजुर्गों के पास जाए और कहे, 'मेरा देवर इस्राईल में अपने भाई का नाम बहाल रखने से इनकार करता है, और मेरे साथ देवर का हक़ अदा करना नहीं चाहता।'⁸तब उसके शहर के बुजुर्ग उस आदमी को बुलवाकर उसे समझाएँ, और अगर वह अपनी बात पर कायम रहे और कहे, 'मुझको उससे ब्याह करना मंज़ूर नहीं।'

⁹तो उसकी भावज बुजुर्गों के सामने उसके पास जाकर उसके पावों से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थूक दे और यह कहे, 'जो आदमी अपने भाई का घर आबाद न करे उससे ऐसा ही किया जाएगा।'¹⁰तब इस्राईलियों में उसका नाम यह पड़ जाएगा, कि यह उस शख्स का घर है जिसकी जूती उतारी गई थी।

¹¹~जब दो शख्स आपस में लड़ते हों और एक की बीवी पास जाकर अपने शौहर को उस आदमी के हाथ से छुड़ाने के लिए जो उसे मारता हो अपना हाथ बढ़ाए और उसकी शर्मगाह को पकड़ ले,¹²तो तू उसका हाथ काट डालना और ज़रा तरस न खाना।

¹³तू अपने थैले में तरह-तरह के छोटे और बड़े बाट न रखना।¹⁴तू अपने घर में तरह-तरह के छोटे और बड़े पैमाने भी न रखना।

¹⁵तेरा बाट पूरा और ठीक और तेरा पैमाना भी पूरा और ठीक हो, ताकि उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है तेरी 'उम्र दराज़ हो।'¹⁶इसलिए कि वह सब जो ऐसे ऐसे फ़रेब के काम करते हैं, खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मकरूह हैं।

¹⁷याद रखना कि जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे तो रास्ते में 'अमालीकियों ने तेरे साथ क्या किया।'¹⁸क्योंकि वह रास्ते में तेरे सामने आए और जबकि तू थका माँदा था, तोभी उन्होंने उनको जो कमज़ोर और सब से पीछे थे मारा, और उनको खुदा का खौफ़ न आया।¹⁹~इसलिए जब खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में, जिसे खुदावन्द तेरा ~खुदा मीरास के तौर पर तुझको कब्ज़ा करने को देता है, तेरे सब दुश्मनों से जो आस-पास हैं तुझको राहत बख़्शे, तो तू 'अमालीकियों के नाम-ओ-निशान को सफ़ह-ए-रोज़गार से मिटा देना; तू इस बात को न भूलना।

Chapter 26

¹~और जब तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास के तौर पर देता है पहुँचे, और उस पर कब्ज़ा~कर के उस में बस जाये;²~तब जो मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है उसकी ज़मीन में जो क्रिस्म-क्रिस्म की चीज़ें तू लगाये, उन सब के पहले फल को एक टोकरे में रख कर उस जगह ले जाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुने।

³और उन दिनों के काहिन के पास जाकर उससे कहना, 'आज के दिन मैं खुदावन्द तेरे खुदा के सामने इक्रार करता हूँ, कि मैं उस मुल्क में जिसे हमको देने की क़सम खुदावन्द ने हमारे बाप-दादा से खाई थी आ गया हूँ।'⁴तब काहिन तेरे हाथ से उस टोकरे को लेकर खुदावन्द तेरे खुदा के मज़बह के आगे रखे।

⁵फिर तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने यूँ कहना, 'मेरा बाप एक अरामी था जो मरने पर था, वह मिस्र में जाकर वहाँ रहा और उसके लोग थोड़े से थे, और वहीं वह एक बड़ी और ताक़तवर और ज़्यादा ता'दाद वाली क़ौम बन गयी।

⁶~फिर मिस्रियों ने हमसे बुरा सुलूक किया और हमको दुख दिया और हमसे सख़्त-ख़िदमत ली।'⁷और हमने खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के सामने फ़रियाद की, तो खुदावन्द ने हमारी फ़रियाद सुनी और हमारी मुसीबत और मेहनत और मज़लूमी देखी।

⁸और खुदावन्द क़वी हाथ और बलन्द बाजू से बड़ी हैबत और निशानों और मो'जिज़ों के साथ हमको मिस्र से निकाल लाया।⁹और हमको इस जगह लाकर उसने यह मुल्क जिसमें दूध और शहद बहता है हमको दिया है।

¹⁰इसलिए अब ऐ खुदावन्द, देख, जो ज़मीन तूने मुझको दी है, उसका पहला फल मैं तेरे पास ले आया हूँ।' फिर तू उसे खुदावन्द अपने खुदा के आगे रख देना और खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा करना।¹¹और तू और लावी और जो मुसाफ़िर तेरे बीच रहते हों, सब के सब मिल कर उन सब ने'मतों के लिए, जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको और तेरे घराने को बख़्शा हो खुशी करना।

¹²और जब तू तीसरे साल जो दहेकी का साल है अपने सारे माल की दहेकी निकाल चुके, तो उसे लावी और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा को देना ताकि वह उसे तेरी बस्तियों में खाएँ और सेर हों।¹³फिर तू खुदावन्द अपने खुदा के आगे यूँ कहना, 'मैंने तेरे हुक्मों के मुताबिक़ जो तूने मुझे दिए मुकद्दस चीज़ों को अपने घर से निकाला और उनको लावियों और मुसाफ़िरों और यतीमों और बेवाओं को दे भी दिया: और मैंने तेरे किसी हुक्म को नहीं टाला और न उनको भूला।

¹⁴और मैंने अपने मातम के वक़्त उन चीज़ों में से कुछ नहीं खाया, और नापाक हालत में उनको अलग नहीं किया, और न उनमें से कुछ मुर्दों के लिए दिया। मैंने खुदावन्द अपने खुदा की बात मानी है, और जो कुछ तूने हुक्म दिया उसी के मुताबिक़ 'अमल किया।¹⁵आसमान पर से जो तेरा मुकद्दस घर है नज़र कर और अपनी क़ौम इस्राईल को और उस मुल्क को बरकत दे, जिस मुल्क में दूध और शहद बहता है और जिसको तूने उस क़सम के मुताबिक़ जो तूने हमारे बाप दादा से खाई हमको 'अता किया है।

¹⁶~खुदावन्द तेरा खुदा, आज तुझको इन आईन और अहकाम के मानने का हुक्म देता है; इसलिए तू अपने सारे दिल और सारी जान से इनको मानना और इन पर 'अमल करना।¹⁷~तूने आज के दिन इक्रार किया है कि खुदावन्द तेरा खुदा है, और तू उसकी राहों पर चलेगा, और उसके आईन और फ़रमान और अहकाम को मानेगा, और उसकी बात सुनेगा।

¹⁸और खुदावन्द ने भी आज के दिन तुझको, जैसा उसने वा'दा किया था, अपनी ख़ास क़ौम क़रार दिया है ताकि तू उसके सब हुक्मों को माने;¹⁹और वह सब क़ौमों से, जिनको उसने पैदा किया है, ता'रीफ़ और नाम और 'इज़ज़त में तुझको मुस्ताज़ करे; और तू उसके कहने के मुताबिक़ खुदावन्द अपने खुदा की पाक क़ौम बन जाये।"

Chapter 27

¹~फिर मूसा ने बनी-इसाईल के बुजुर्गों के साथ हो कर लोगों से कहा कि "जितने हुक्म आज के दिन मैं तुमको देता हूँ उन सब को मानना।² और जिस दिन तुम यरदन पार हो कर उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है पहुँचो, तो तू बड़े-बड़े पत्थर खड़े करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना;³ और पार हो जाने के बाद इस शरी'अत की सब बातें उन पर लिखना, ताकि उस वा'दे के मुताबिक जो खुदावन्द तेरे बाप-दादा के खुदा ने तुझ से किया, उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है या'नी उस मुल्क में जहाँ दूध और शहद बहता है तू पहुँच जाये।

⁴इसलिए तुम यरदन के पार हो कर उन पत्थरों को जिनके बारे में मैं तुमको आज के दिन हुक्म देता हूँ, कोह-ए-'ऐबाल पर नस्ब करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना।⁵ और वहीं तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए पत्थरों का एक मज़बूत बनाना, और लोहे का कोई औज़ार उन पर न लगाना।

⁶और तू खुदावन्द अपने खुदा का मज़बूत बे तराशे पत्थरों से बनाना, और उस पर खुदावन्द अपने खुदा के लिए सोखतनी कुर्बानियाँ पेश करना।⁷ और वहीं सलामती की कुर्बानियाँ अदा करना और उनको खाना और खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना।⁸ और उन पत्थरों पर इस शरी'अत की सब बातें साफ़-साफ़ लिखना।"

⁹फिर मूसा और लावी काहिनों ने सब बनी-इसाईल से कहा, "ऐ इसाईल, खामोश हो जा और सुन, तू आज के दिन खुदावन्द अपने खुदा की क़ौम बन गया है।

¹⁰~इसलिए तू खुदावन्द अपने खुदा की बात सुनना और उसके सब आईन और अहकाम पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ 'अमल करना।"

¹¹और मूसा ने उसी दिन लोगों से ताकीद करके कहा कि;¹²"जब तुम यरदन पार हो जाओ, तो कोह-ए-गरिज़ीम पर शमा'ऊन, और लावी, और यहूदाह, और इश्कार, और यूसुफ़, और बिनयमीन खड़े हों और लोगों को बरकत सुनाएँ।

¹³और रूबिन, और जह्द, और आशर, और जबूलून, और दान, और नफ़्ताली कोह-ए-'ऐबाल पर खड़े होकर ला'नत सुनाएँ।¹⁴ और लावी बलन्द आवाज़ से सब इसाईली आदमियों से कहें कि :

¹⁵~'ला'नत उस आदमी पर जो कारीगरी की सन'अत की तरह खोदी हुई या ढाली हुई मूरत बना कर जो खुदावन्द के नज़दीक मकरूह है, उसको किसी पोशीदा जगह में नस्ब करे।' और सब लोग जवाब दें और कहें, 'आमीन।'

¹⁶~'ला'नत उस पर जो अपने बाप या माँ को हक़ीर जाने।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'¹⁷~'ला'नत उस पर जो अपने पड़ोसी की हद के निशान को हटाये।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'

¹⁸~'ला'नत उस पर जो अन्धे को रास्ते से गुमराह करे।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'¹⁹~'ला'नत उस पर जो परदेसी और यतीम और बेवा के मुकद्दमे को बिगाड़े।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'

²⁰~'ला'नत उस पर जो अपने बाप की बीवी से मुबाश्रत करे, क्योंकि वह अपने बाप के दामन को बेपर्दा करता है।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'²¹~'ला'नत उस पर जो किसी चौपाए के साथ जिमा'अ करे।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'

²²~'ला'नत उस पर जो अपनी बहन से मुबाश्रत करे, चाहे वह उसके बाप की बेटी हो चाहे माँ की।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'²³~'ला'नत उस पर जो अपनी सास से मुबाश्रत करे।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'

²⁴~'ला'नत उस पर जो अपने पड़ोसी को पोशीदगी में मारे।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'²⁵~'लानत उस पर जो बे-गुनाह को क़त्ल करने के लिए इनाम ले।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'

²⁶~'ला'नत उस पर जो इस शरी'अत की बातों पर 'अमल करने के लिए उन पर क़ायम न रहे।' और सब लोग कहें, 'आमीन।'

Chapter 28

¹और अगर तू खुदावन्द अपने खुदा की बात को जाँफिशानी से मान कर उसके इन सब हुक्मों पर, जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, एहतियात से 'अमल करे तो खुदावन्द तेरा खुदा दुनिया की सब क़ौमों से ज़्यादा तुझको सरफ़राज़ करेगा।²~और अगर तू खुदावन्द अपने खुदा की बात सुने तो यह सब बरकतें तुझ पर नाज़िल होंगी और तुझको मिलेंगी।

³~शहर में भी तू मुबारक होगा, और खेत में भी मुबारक होगा।⁴तेरी औलाद, और तेरी ज़मीन की पैदावार, और तेरे चौपायों के बच्चे, या'नी गाय-बैल की बढ़ती और तेरी भेड़-बकरियों के बच्चे मुबारक होंगे।

⁵~तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों मुबारक होंगे।⁶और तू अन्दर आते वक़्त मुबारक होगा, और बाहर जाते वक़्त भी मुबारक होगा।

⁷खुदावन्द तेरे दुश्मनों को जो तुझ पर हमला करें, तेरे सामने शिकस्त दिलाएगा; वह तेरे मुकाबले को तो एक ही रास्ते से आएँगे, लेकिन सात सात रास्तों से हो कर तेरे आगे से भागेंगे।⁸खुदावन्द तेरे अम्बारखानों में और सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाये बरकत का हुक्म देगा, और खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में जिसे वह तुझको देता है तुझको बरकत बख़्शेगा।

⁹अगर तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को माने और उसकी राहों पर चले, तो खुदावन्द अपनी उस क़सम के मुताबिक़ जो उसने तुझ से खाई तुझको अपनी पाक क़ौम बना कर क़ायम रखेगा।¹⁰~और दुनिया की सब क़ौमों यह देखकर कि तू खुदावन्द के नाम से कहलाता है, तुझ से डर जाएँगी।

¹¹~और जिस मुल्क को तुझको देने की क़सम खुदावन्द ने तेरे बाप-दादा से खाई थी, उसमें खुदावन्द तेरी औलाद को और तेरे चौपायों के बच्चों को और तेरी ज़मीन की पैदावार को ख़ूब बढ़ा कर तुझको बढ़ाएगा।¹²खुदावन्द आसमान को जो उसका अच्छा खज़ाना है तेरे लिए खोल देगा कि तेरे मुल्क में वक़्त पर मेंह बरसाए, और वह तेरे सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाए बरकत देगा; और तू बहुत सी क़ौमों को क़र्ज़ देगा, लेकिन खुद क़र्ज़ नहीं लेगा।

¹³और खुदावन्द तुझको दुम नहीं बल्कि सिर ठहराएगा, और तू पस्त नहीं बल्कि सरफ़राज़ ही रहेगा; बशर्ते कि तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को, जो मैं तुझको आज के दिन देता हूँ, सुनो और एहतियात से उन पर 'अमल करो,¹⁴और जिन बातों का मैं आज के दिन तुझको हुक्म देता हूँ, उनमें से किसी से दहने या बाएँ हाथ मुड़ कर और मा'बूदों की पैरवी और 'इबादत न करे।

¹⁵~लेकिन अगर तू ऐसा न करे, कि खुदावन्द अपने खुदा की बात सुनकर उसके सब अहक़ाम और आईन पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ एहतियात से 'अमल करे, तो यह सब ला'नतें तुझ पर नाज़िल होंगी और तुझको लगेंगी।

¹⁶~शहर में भी तू ला'नती होगा, और खेत में भी ला'नती होगा।¹⁷तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों ला'नती ठहरेंगे।

¹⁸तेरी औलाद और तेरी ज़मीन की पैदावार, और तेरे गाय-बैल की बढ़ती और तेरी भेड़-बकरियों के बच्चे ला'नती होंगे।¹⁹तू अन्दर आते ला'नती ठहरेगा, और बाहर जाते भी ला'नती ठहरेगा।

²⁰~खुदावन्द उन सब कामों में जिनको तू हाथ लगाए, ला'नत और इज़तिराब और फटकार को तुझ पर नाज़िल करेगा जब तक कि तू हलाक होकर जल्द बर्बाद न हो जाए, यह तेरी उन बद'आमालियों की वजह से होगा जिनको करने की वजह से तू मुझको छोड़ देगा।²¹~खुदावन्द ऐसा करेगा कि वबा तुझ से लिपटी रहेगी, जब तक कि वह तुझको उस मुल्क से जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू वहाँ जा रहा है फ़ना न कर दे।

²²खुदावन्द तुझको तप-ए-दिक् और बुखार और सोज़िश और शदीद हरारत और तलवार और बाद-ए-समूम और गेरूई से मारेगा, और यह तेरे पीछे पड़े रहेंगे जब तक कि तू फ़ना न हो जाये।

²³और आसमान जो तेरे सिर पर है पीतल का, और ज़मीन जो तेरे नीचे है लोहे की हो जाएगी।²⁴~खुदावन्द मेंह के बदले तेरी ज़मीन पर खाक और धूल बरसाएगा; यह आसमान से तुझ पर पड़ती ही रहेगी, जब तक कि तू हलाक न हो जाये।

²⁵~"खुदावन्द तुझको तेरे दुश्मनों के आगे शिकस्त दिलाएगा; तू उनके मुकाबले के लिए तो एक ही रास्ते से जाएगा, और उनके सामने से सात-सात रास्तों से होकर भागेगा, और दुनिया की तमाम सल्तनतों में तू मारा-मारा फिरेगा।²⁶और तेरी लाश हवा के परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होगी, और कोई उनको हंका कर भगाने को भी न होगा।

²⁷~खुदावन्द तुझको मिस्र के फोड़ों, और बवासीर, और खुजली, और खारिश में ऐसा मुब्तिला करेगा कि तू कभी अच्छा भी नहीं होने का।²⁸~खुदावन्द तुझको जुनून और नाबीनाई और दिल की घबराहट में भी मुब्तिला कर देगा।²⁹और जैसे अँधा अँधेरे में टटोलता है वैसे ही तू ~दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने धन्धों में ~नाकाम रहेगा; और तुझ पर हमेशा जुल्म ही होगा, और तू लुटता ही रहेगा और कोई न होगा जो तुझको बचाए।

³⁰औरत से मंगनी तो तू करेगा लेकिन दूसरा उससे मुबाश्रत करेगा, तू घर बनाएगा लेकिन उसमें बसने न पाएगा, तू ताकिस्तान लगाएगा लेकिन उसका फल इस्ते'माल न करेगा।³¹तेरा बैल तेरी आँखों के सामने ज़बह किया जाएगा लेकिन तू उसका गोशत खाने न पाएगा, तेरा गधा तुझ से जबरन छीन लिया जाएगा और तुझको फिर न मिलेगा, तेरी भेड़ें तेरे दुश्मनों के हाथ लगेंगी और कोई न होगा जो तुझको बचाए।

³²~तेरे बेटे और बेटियाँ दूसरी क़ौम को दी जाएँगी, और तेरी आँखें देखेंगी और सारे दिन उनके लिए तरसते-तरसते रह जाएँगी; और तेरा कुछ बस नहीं चलेगा।

³³तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी सारी कमाई को एक ऐसी क़ौम खाएगी जिससे तू वाकिफ़ नहीं; और तू हमेशा मज़लूम और दबा ही रहेगा,³⁴~यहाँ तक कि इन बातों को अपनी आँखों से देख देखकर दीवाना हो जाएगा।³⁵खुदावन्द तेरे घुटनों और टाँगों में ऐसे बुरे फोड़े पैदा करेगा, कि उनसे तू पाँव के तलवे से लेकर सिर की चाँद तक शिफ़ा न पा सकेगा।

³⁶खुदावन्द तुझको और तेरे बादशाह को, जिसे तू अपने ऊपर मुक़र्र करेगा, एक ऐसी क़ौम के बीच ले जाएगा जिसे तू और तेरे बाप-दादा जानते भी नहीं; और वहाँ तू और मा'बूदों की जो महज़ लकड़ी और पत्थर है 'इबादत करेंगे।³⁷और उन सब क़ौमों में, जहाँ-जहाँ खुदावन्द तुझको पहुँचाएगा, तू बाइस-ए-हैरत और ज़र्ब-उल-मसल और अंगुशतनुमा बनेगा।

³⁸तू खेत में बहुत सा बीज ले जाएगा लोकन थोड़ा सा जमा' करेगा, क्योंकि टिड्डी उसे चाट लेंगी।³⁹तू ताकिस्तान लगाएगा और उन पर मेहनत करेगा, लेकिन न तो मय पीने और न अंगूर जमा' करने पायेगा; क्योंकि उनको कीड़े खा जाएंगे।

⁴⁰~तेरी सब हदों में ज़ैतून के दरख्त लगे होंगे, लेकिन तू उनका तेल नहीं लगाने पाएगा; क्योंकि तेरे ज़ैतून के दरख्तों का फल झड़ जाया करेगा।⁴¹तेरे बेटे और बेटियाँ पैदा होंगी लेकिन वह सब तेरे न रहेंगे, क्योंकि वह गुलाम हो कर चले जाएंगे।

⁴²~तेरे सब दरख्तों और तेरी सब ज़मीन की पैदावार पर टिड्डीयाँ क़ब्ज़ा कर लेंगी।⁴³~परदेसी जो तेरे बीच होगा वह तुझसे बढ़ता और सरफ़राज़ होता जाएगा, लेकिन तू पस्त ही पस्त होता जाएगा।⁴⁴~वह तुझको क़र्ज़ देगा, लेकिन तू उसे क़र्ज़ न दे सकेगा; वह सिर होगा और तू दुम ठहरेगा।

⁴⁵और चूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा के उन हुक्मों और आईन पर जिनको उसने तुझको दिया है, 'अमल करने के लिए उसकी बात नहीं सुनेंगे; इसलिए यह सब ला'नतें तुझ पर आएँगी और तेरे पीछे पड़ी रहेंगी और तुझको लगेंगी, जब तक तेरा नास न हो जाए।⁴⁶और वह तुझ पर और तेरी औलाद पर हमेशा निशान और अचम्बे के तौर पर रहेंगी।

⁴⁷और चूँकि तू बावजूद सब चीज़ों की फ़िरावानी के फ़रहत और खुशदिली से खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत नहीं करेगा।⁴⁸इसलिए भूका और प्यासा और नंगा और सब चीज़ों का मुहताज होकर तू अपने दुश्मनों की खिदमत करेगा जिनको खुदावन्द तेरे बरखिलाफ़ भेजेगा; और ग़नीम तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखे रहेगा, जब तक वह तेरा नास न कर दे।

⁴⁹खुदावन्द दूर से बल्कि ज़मीन के किनारे से एक क़ौम को तुझ पर चढ़ा जाएगा जैसे 'उक्काब टूट कर आता है, उस क़ौम की ज़बान को तू नहीं समझेगा;⁵⁰उस क़ौम के लोग तुर्रु होंगे, जो न बुद्धों का लिहाज़ करेंगे न जवानों पर तरस खाएँगे।⁵¹और वह तेरे चौपायों के बच्चों और तेरी ज़मीन की पैदावार को खाते रहेंगे, जब तक तेरा नास न हो जाए और वह तेरे लिए अनाज, या मय, या तेल, या गाय-बैल की बढ़ती, या तेरी भेड़-बकरियों के बच्चे कुछ नहीं छोड़ेंगे, जब तक वह तुझको फ़ना न कर दें।

⁵²और वह तेरे तमाम मुल्क में तेरा घिराव तेरी ही बस्तियों में किए रहेंगे; जब तक तेरी ऊँची-ऊँची फ़सीलें जिन पर तेरा भरोसा होगा, गिर न जाएँ। तेरा घिराव वह तेरे ही उस मुल्क की सब बस्तियों में करेंगे, जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है।⁵³तब उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में तू अपने दुश्मनों से तंग आकर अपने ही जिस्म के पहले फल को, या'नी अपने ही बेटों और बेटियों का गोश्त जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको 'अता किया होगा खायेगा।

⁵⁴वह शख्स जो तुम में नाजुक मिज़ाज और नाजुक बदन होगा, उसकी भी अपने भाई और अपनी हमआग़ोश बीवी और अपने बाक़ी मांदा बच्चों की तरफ़ बुरी नज़र होगी;⁵⁵यहाँ तक कि वह इनमें से किसी को भी अपने ही बच्चों के गोश्त में से, जिनको वह खुद खाएगा कुछ नहीं देगा; क्योंकि उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में जब तेरे दुश्मन तुझको तेरी ही सब बस्तियों में तंग कर मारेंगे, तो उसके पास और कुछ बाक़ी न रहेगा।

⁵⁶वह 'औरत भी जो तुम्हारे बीच ऐसी नाजुक मिज़ाज और नाजुक बदन होगी कि नर्मी-ओ-नज़ाकत की वजह से अपने पाँव का तलवा भी ज़मीन से लगाने की ज़ुर'अत न करती हो, उसकी भी अपने पहलू के शौहर और अपने ही बेटे और बेटी,⁵⁷और अपने ही नौज़ाद बच्चे की तरफ़ जो उसकी रानों के बीच से निकला हो, बल्कि अपने सब लड़के बालों की तरफ़ जिनको वह जनेगी बुरी नज़र होगी; क्योंकि वह तमाम चीज़ों की क़िल्लत की वजह से उन्हीं को छुप-छुप कर खाएगी, जब उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में तेरे दुश्मन तेरी ही बस्तियों में तुझको तंग कर मारेंगे।

⁵⁸~अगर तू उस शरी'अत की उन सब बातों पर जो इस किताब में लिखी हैं, एहतियात रख कर इस तरह 'अमल न करे कि तुमको खुदावन्द अपने खुदा के जलाली और मुहीब नाम का ख़ौफ़ हो;⁵⁹तो खुदावन्द तुम पर 'अजीब आफ़तें नाज़िल करेगा, और तुम्हारी औलाद की आफ़तों को बढ़ा कर बढ़ी और देरपा आफ़तें और सख़्त और देरपा बीमारियाँ कर देगा।

⁶⁰और मिस्र के सब रोग जिनसे तू डरता था तुझको लगाएगा और वह तुझको लगे रहेंगे।⁶¹और उन सब बीमारियों और आफ़तों को भी जो इस शरी'अत की किताब में मज़कूर नहीं हैं, खुदावन्द तुझको लगाएगा जब तक तेरा नास न हो जाए।⁶²और चूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात नहीं सुनेगा, इसलिए कहाँ तो तुम कसरत में आसमान के तारों की तरह हो, और कहाँ शुमार में थोड़े ही से रह जाओगे।

⁶³तब यह होगा कि जैसे तुम्हारे साथ भलाई करने और तुमको बढ़ाने से खुदावन्द खुशनूद हुआ, ऐसे ही तुमको फ़ना कराने और हलाक कर डालने से खुदावन्द खुशनूद होगा; और तुम उस मुल्क से उखाड़ दिए जाओगे, जहाँ तू उस पर क़ब्ज़ा करने को जा रहा है।⁶⁴और खुदावन्द तुझको ज़मीन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तमाम क़ौमों में तितर-बितर करेगा, वहाँ तू लकड़ी और पत्थर के और मा'बूदों को जिनको तू या तेरे बाप-दादा जानते भी नहीं 'इबादत करेगा।

⁶⁵~उन क़ौमों के बीच तुझको चैन नसीब न होगा और न तेरे पाँव के तलवे को आराम मिलेगा, बल्कि खुदावन्द तुझको वहाँ दिल-ए-लरज़ाँ और आँखों को धुंधलाहट और जी को कुढ़न देगा।⁶⁶और तेरी जान शक में अटकी रहेगी और तू रात-दिन डरता रहेगा, और तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई ठिकाना न होगा।

⁶⁷~और तू अपने दिली ख़ौफ़ के और उन नज़ारों की वजह से जिनको तू अपनी आँखों से देखेगा, सुबह को कहेगा कि ऐ काश कि शाम होती और शाम को कहेगा ऐ काश कि सुबह होती।⁶⁸और खुदावन्द तुझको किश्तियों में चढ़ा कर उस रास्ते से मिस्र में लौटा ले जाएगा, जिसके बारे में मैंने तुझसे कहा कि तू उसे फिर कभी न देखना; और वहाँ तुम अपने दुश्मनों के गुलाम और लौंडी होने के लिए अपने को बेचोगे लेकिन कोई ख़रीदार न होगा।"

Chapter 29

¹इस्राईलियों के साथ जिस 'अहद के बाँधने का हुक्म खुदावन्द ने मूसा को मोआब के मुल्क में दिया उसी की यह बातें हैं। यह उस 'अहद से अलग हैं जो उसने उनके साथ होरिब में बाँधा था।

²इसलिए मूसा ने सब इस्राईलियों को बुलवा कर उनसे कहा, "तुमने सब कुछ जो खुदावन्द ने तुम्हारी आँखों के सामने, मुल्क-ए-मिस्र में फिर'औन और उसके सब खादिमों और उसके सारे मुल्क से किया देखा है।³इम्तिहान के वह बड़े-बड़े काम और निशान और बड़े-बड़े करिश्मे, तुमने अपनी आँखों से देखे।⁴लेकिन खुदावन्द ने तुमको आज तक न तो ऐसा दिल दिया जो समझे, और न देखने की आँखें और सुनने के कान दिए।

⁵~और मैं चालीस बरस वीराने में तुमको लिए फिरा, और न तुम्हारे तन के कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव की जूती पुरानी हुई।⁶और तुम इसी लिए रोटी खाने और मय या शराब पीने नहीं पाए ताकि तुम जान लो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

⁷और जब तुम इस जगह आए तो हस्बोन का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह 'ओज हमारा मुकाबला करने को निकले, और हमने उनको मारकर⁸उनका मुल्क ले लिया और उसे रूबीनियों को और जदियों को और मनस्सियों के आधे क़बीले को मीरास के तौर पर दे दिया।⁹तब तुम इस 'अहद की बातों को मानना और उन पर 'अमल करना, ताकि जो कुछ तुम करो उसमें कामयाब हो।

¹⁰~आज के दिन तुम और तुम्हारे सरदार, तुम्हारे क़बीले और तुम्हारे बुजुर्ग और तुम्हारे 'उहदेदार और सब इस्राईली मर्द,¹¹~और तुम्हारे बच्चे और तुम्हारी बीवियाँ और वह परदेसी भी जो तेरी खेमागाह में रहता है, चाहे वह तेरा लकड़हारा हो चाहे सक्क्रा, सबके सब खुदावन्द अपने खुदा के सामने खड़े हों,

¹²ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद में, जिसे वह तेरे साथ आज बाँधता और उसकी क़सम में जिसे वह आज तुझसे खाता है शामिल हो।¹³और वह तुझको आज के दिन अपनी क़ौम करार दे और वह तेरा खुदा हो, जैसा उसने तुझसे कहा, जैसी उसने तेरे बाप-दादा इब्राहीम और इस्हाक और या'क़ूब से क़सम खाई।

¹⁴और मैं इस 'अहद और क़सम में सिर्फ़ तुम्हीं को नहीं,¹⁵लेकिन उसको भी जो आज के दिन खुदावन्द हमारे खुदा के सामने यहाँ हमारे साथ खड़ा है, और उसकी भी जो आज के दिन यहाँ हमारे साथ नहीं, उनमें शामिल करता हूँ।¹⁶~(तुम खुद जानते हो कि मुल्क-ए-मिस्र में हम कैसे रहे और क्यूँ कर उन क़ौमों के बीच से होकर आए, जिनके बीच से तुम गुज़रे।

¹⁷और तुमने खुद उनकी मकरूह चीज़ें और लकड़ी और पत्थर और चाँदी और सोने की मूर्तें देखीं जो उनके यहाँ थीं।¹⁸~इसलिए ऐसा न हो कि तुम में कोई मर्द या 'औरत या ख़ानदान या क़बीला ऐसा हो जिसका दिल आज के दिन खुदावन्द हमारे खुदा से बरग़श्ता हो, और वह जाकर उन क़ौमों के मा'बूदों की 'इबादत करे या ऐसा न हो कि तुम में कोई ऐसी जड़ हो जो इन्द्रायन और नागदौना पैदा करे;¹⁹और ऐसा आदमी ला'नत की यह बातें सुनकर दिल ही दिल में अपने को मुबारकबाद दे और कहे, कि चाहे मैं कैसा ही ज़िद्दी हो कर तर के साथ खुश्क को फ़ना कर डालूँ तोभी मेरे लिए सलामती है।

²⁰लेकिन खुदावन्द उसे मु'आफ़्र नहीं करेगा, बल्कि उस वक़्त खुदावन्द का क्रहर और उसकी ग़ैरत उस आदमी पर नाज़िल होगी और सब ला'नतों जो इस किताब में लिखी हैं उस पर पड़ेंगी, और खुदावन्द उसके नाम को सफ़ह-ए-रोज़गार से मिटा देगा।²¹और खुदावन्द इस 'अहद की उन सब ला'नतों के मुताबिक़ जो इस शरी'अत की किताब में लिखी हैं, उसे इस्राईल के सब क़बीलों में से बुरी सज़ा के लिए जुदा करेगा।

²²~और आने वाली नसलों में तुम्हारी नसल के लोग जो तुम्हारे बा'द पैदा होंगे और परदेसी भी जो दूर के मुल्क से आएँगे, जब वह इस मुल्क की बलाओं और खुदावन्द की लगाई हुई बीमारियों को देखेंगे,²³और यह भी देखेंगे कि सारा मुल्क जैसे गन्धक और नमक बना पड़ा है और ऐसा जल गया है कि इसमें न तो कुछ बोया जाता न पैदा होता, और न किसी क्रिस्म की घास उगती है और वह सदूम और 'अमूरा और 'अदमा और ज़िबोर्डम की तरह उजड़ गया जिनको खुदावन्द ने अपने ग़ज़ब और क्रहर में तबाह कर डाला।²⁴तब वह बल्कि सब क़ौमे पूछेंगी, 'खुदावन्द ने इस मुल्क से ऐसा क्यूँ किया? और ऐसे बड़े क्रहर के भड़कने की वजह क्या है?'

²⁵~उस वक़्त लोग जवाब देंगे, 'खुदावन्द इनके बाप-दादा के खुदा ने जो 'अहद इनके साथ इनको मुल्क-ए-मिस्र से निकालते वक़्त बाँधा था, उसे इन लोगों ने छोड़ दिया;²⁶और जाकर और मा'बूदों की 'इबादत और परस्तिश की, जिनसे वह वाकिफ़ न थे और जिनको खुदावन्द ने इनको दिया भी न था।

²⁷इसीलिए इस किताब की लिखी हुई सब ला'नतों को इस मुल्क पर नाज़िल करने के लिए खुदावन्द का ग़ज़ब इस पर भड़का।²⁸और खुदावन्द ने क्रहर और गुस्से और बड़े ग़ज़ब में इनको इनके मुल्क से उखाड़कर दूसरे मुल्क में फेंका, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।'

²⁹~ग़ैब का मालिक तो खुदावन्द हमारा खुदा ही है; लेकिन जो बातें ज़ाहिर की गई हैं वह हमेशा तक हमारे और हमारी औलाद के लिए हैं, ताकि हम इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें।

Chapter 30

¹~और जब यह सब बातें या'नी बरकत और ला'नत जिनको मैंने आज तेरे आगे रखखा है तुझ पर आएँ, और तू उन क़ौमों के बीच जिनमें ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको हँका कर पहुँचा दिया हो उनको याद करें।²और तू और तेरी औलाद दोनों ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की तरफ़ फ़िरे, और उसकी बात इन सब हुक्मों के मुताबिक़ जो मैं आज तुझको देता हूँ अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से माने।³तो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी गुलामी को पलटकर तुझ पर रहम करेगा, और फिरकर तुझको सब क़ौमों में से, जिनमें ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको तितर-बितर किया हो जमा' करेगा।

⁴अगर तेरे आवारागर्द दुनिया के इन्तिहाई हिस्सों में भी हों, तो वहाँ से भी ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको जमा' करके ले आएगा।⁵और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उसी मुल्क में तुमको लाएगा जिस पर तुम्हारे बाप-दादा ने क़ब्ज़ा किया था, और तू उसको अपने क़ब्ज़े में लाएगा; फिर वह तुझसे भलाई करेगा और तेरे बाप-दादा से ज़्यादा तुमको बढ़ाएगा।

⁶और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी औलाद के दिल का खतना करेगा, ताकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मुहब्बत रखे और ज़िन्दा रहे।⁷और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा यह सब ला'नतें तुम्हारे दुश्मनों और कीना रखने वालों पर, जिन्होंने तुझको सताया नाज़िल करेगा।⁸और तू लौटेगा और ख़ुदावन्द की बात सुनेगा, और उसके सब हुक्मों पर जो मैं आज तुझको देता हूँ 'अमल करेगा।

⁹और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको तेरे कारोबार और आस औलाद और चौपायों के बच्चों और ज़मीन की पैदावार के लिहाज़ से तेरी भलाई की खातिर तुझको~बढ़ाएगा; फिर तुझसे ख़ुश होगा, जैसे वह तेरे बाप-दादा से ख़ुश था।¹⁰बशर्ते कि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात को सुनकर उसके अहकाम और आईन को माने जो शरी'अत की इस किताब में लिखे हैं, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की तरफ़ फ़िरे।

¹¹~क्यूँकि वह हुक्म जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तेरे लिए बहुत मुश्किल नहीं और न वह दूर है।¹²वह आसमान पर तो है नहीं कि तू कहे कि 'आसमान पर कौन हमारी खातिर चढ़े, और उसको हमारे पास लाकर सुनाए ताकि हम उस पर 'अमल करें?'

¹³और न वह समन्दर पार है कि तू कहे, 'समन्दर पर कौन हमारी खातिर जाए, और उसको हमारे पास ला कर सुनाए ताकि हम उस पर 'अमल करें?'¹⁴बल्कि वह कलाम तेरे बहुत नज़दीक है; वह तुम्हारे मुँह में और तुम्हारे दिल में है, ताकि तुम उस पर 'अमल करो।

¹⁵~देखो, मैंने आज के दिन ज़िन्दगी और भलाई को, और मौत और बुराई को तुम्हारे आगे रखखा है।¹⁶~क्यूँकि मैं आज के दिन तुमको हुक्म करता हूँ, कि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत रखे और उसकी राहों पर चले, और उसके फ़रमान और आईन और अहकाम को माने ताकि तू ज़िन्दा रहे और बढ़े; और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस मुल्क में तुझको बरकत बरख़्शे, जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू वहाँ जा रहा है।

¹⁷लेकिन अगर तेरा दिल फिर जाए और तू न सुने, बल्कि गुमराह होकर और मा'बूदों की परस्तिश और 'इबादत करने लगे;¹⁸तो आज के दिन मैं तुमको जता देता हूँ कि तुम ज़रूर फ़ना हो जाओगे, और उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने को तुम यरदन पार जा रहे हो तुम्हारी 'उम्र दराज़ न होगी।

¹⁹मैं आज के दिन आसमान और ज़मीन को तुम्हारे बरखिलाफ़ गवाह बनाता हूँ, कि मैंने ज़िन्दगी और मौत की और बरकत और ला'नत को तुम्हारे आगे रखखा है; इसलिए तुम ज़िन्दगी को इख्तियार करो कि तुम भी ज़िन्दा रहो और तुम्हारी औलाद भी;²⁰~ताकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत रखे, और उसकी बात सुने और उसी से लिपटा रहे; क्यूँकि वही तेरी ज़िन्दगी और तेरी 'उम्र की दराज़ी है, ताकि तू उस मुल्क में बसा रहे जिसको तेरे बाप-दादा इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब को देने की क़सम ख़ुदावन्द ने उनसे खाई थी।"

Chapter 31

¹और मूसा ने जा कर यह बातें सब इस्राईलियों को सुनाई,²और उनको कहा कि "मैं तो आज कि दिन एक सौ बीस बरस का हूँ, मैं अब चल फिर नहीं सकता; और खुदावन्द ने मुझसे कहा है कि तू इस यरदन पार नहीं जाएगा।³इसलिए खुदावन्द तेरा खुदा ही तेरे आगे-आगे पार जाएगा, और वही उन क्रौमों को तेरे आगे से फ़ना करेगा और तू उसका वारिस होगा; और जैसा खुदावन्द ने कहा है, यशू'अ तुम्हारे आगे-आगे पार जाएगा।

⁴और खुदावन्द उनसे वही करेगा जो उसने अमोरियों के बादशाह सीहोन और 'ओज और उनके मुल्क से किया, कि उनको फ़ना कर डाला।⁵और खुदावन्द उनको तुमसे शिकस्त दिलाएगा, और तुम उनसे उन सब हुक्मों के मुताबिक पेश आना जो मैंने तुमको दिए हैं।⁶तू मज़बूत हो जा और हौसला रख; मत डर और न उनसे खौफ़ खा, क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा खुद ही तेरे साथ जाता है; वह तुझसे दस्तबरदार नहीं होगा, और न तुमको छोड़ेगा।"

⁷फिर मूसा ने यशू'अ को बुलाकर सब इस्राईलियों के सामने उससे कहा, "तू मज़बूत हो जा और हौसला रख; क्योंकि तू इस क्रौम के साथ उस मुल्क में जाएगा, जिसको खुदावन्द ने उनके बाप-दादा से क्रसम खाकर देने को कहा था, और तू उनको उसका वारिस बनाएगा।⁸और खुदावन्द ही तेरे आगे-आगे चलेगा; वह तेरे साथ रहेगा, वह तुझ से न दस्तबरदार होगा, न तुझे छोड़ेगा; इसलिए तू खौफ़ न कर और बे-दिल न हो।"

⁹और मूसा ने इस शरी'अत को लिखकर उसे काहिनों के, जो बनी लावी और खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले थे, और इस्राईल के सब बुजुर्गों के सुपर्द किया।¹⁰फिर मूसा ने उनको यह हुक्म दिया, "हर सात बरस के आखिर में छुटकारे के साल के मु'अय्यन वक्रत पर झोपड़ियों के 'ईद में,¹¹जब सब इस्राइली खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने उस जगह आ कर हाज़िर हों जिसे वह खुद चुनेगा, तो तुम इस शरी'अत को पढ़कर सब इस्राईलियों को सुनाना।

¹²तुम सारे लोगों को, या'नी मर्दों और 'औरतों और बच्चों और अपनी बस्तियों के मुसाफ़िरों को जमा' करना, ताकि वह सुनें और सीखें और खुदावन्द तुम्हारे खुदा का खौफ़ मानें और इस शरी'अत की सब बातों पर एहतियात रखकर 'अमल करें;¹³और उनके लड़के जिनको कुछ मा'लूम नहीं वह भी सुनें, और जब तक तुम उस मुल्क में जीते रहो जिस पर क़ब्ज़ा करने को तुम यरदन पार जाते हो, तब तक वह बराबर खुदावन्द तुम्हारे खुदा का खौफ़ मानना सीखें।"

¹⁴फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, "देख, तेरे मरने के दिन आ पहुँचे। इसलिए तू यशू'अ को बुला ले और तुम दोनों खेमा-ए-इजितमा'अ में हाज़िर हो जाओ, ताकि मैं उसे हिदायत करूँ।"चुनाँचे मूसा और यशू'अ खाना होकर खेमा-ए-इजितमा'अ में हाज़िर हुए।¹⁵और खुदावन्द बादल के सुतून में होकर खेमे में नमूदार हुआ, और बादल का सुतून खेमे के दरवाज़े पर ठहर गया।

¹⁶तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "देख, तू अपने बाप-दादा के साथ सो जाएगा; और यह लोग उठकर उस मुल्क के अजनबी मा'बूदों की पैरवी में, जिनके बीच वह जाकर रहेंगे ज़िनाकार हो जाएँगे और मुझको छोड़ देंगे, और उस 'अहद को जो मैंने उनके साथ बाँधा है तोड़ डालेंगे।

¹⁷तब उस वक्रत मेरा क्रहर उन पर भड़केगा, और मैं उन को छोड़ दूँगा और उनसे अपना मुँह छिपा लूँगा; और वह निगल लिए जाएँगे और बहुत सी बलाएँ और मुसीबतें उन पर आएँगी, चुनाँचे वह उस दिन कहेंगे, 'क्या हम पर यह बलाएँ इसी वजह से नहीं आई कि हमारा खुदा हमारे बीच नहीं?'¹⁸उस वक्रत उन सब बंदियों की वजह से, जो और मा'बूदों की तरफ़ माइल होकर उन्होंने की होंगी मैं ज़रूर अपना मुँह छिपा लूँगा।

¹⁹इसलिए तुम यह गीत अपने लिए लिख लो, और तुम उसे बनी-इस्राईल को सिखाना और उनको हिफ़ज़ करा देना, ताकि यह गीत बनी इस्राईल के खिलाफ़ मेरा गवाह रहे।²⁰इसलिए कि जब मैं उनको उस मुल्क में, जिस की क्रसम मैंने उनके बाप-दादा से खाई और जहाँ दूध और शहद बहता है पहुँचा दूँगा, और वह खूब खा-खाकर मोटे हो जाएँगे; तब वह और मा'बूदों की तरफ़ फिर जाएँगे और उनकी 'इबादत करेंगे और मुझको हक़ीर जानेंगे और मेरे 'अहद को तोड़ डालेंगे।

²¹और यूँ होगा कि जब बहुत सी बलाएँ और मुसीबतें उन पर आएँगी, तो ये गीत गवाह की तरह उन पर शहादत देगा; इसलिए कि इसे उनकी औलाद कभी नहीं भूलेगी, क्योंकि इस वक्रत भी उनको उस मुल्क में पहुँचाने से पहले जिसकी क्रसम मैंने खाई है, मैं उनके खयाल को जिसमें वह हैं जानता हूँ।"

²²इसलिए मूसा ने उसी दिन इस गीत को लिख लिया और उसे बनी-इस्राईल को सिखाया।²³और उसने नून के बेटे यशू'अ को हिदायत की और कहा, "मज़बूत हो जा, और हौसला रख; क्योंकि तू बनी-इस्राईल को उस मुल्क में ले जाएगा जिसकी क्रसम मैंने उनसे खाई थी, और मैं तेरे साथ रहूँगा।"

²⁴और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस शरी'अत की बातों को एक किताब में लिख चुका और वह खत्म हो गई,²⁵तो मूसा ने लावियों से, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उठाया करते थे कहा,²⁶"इस शरी'अत की किताब को लेकर खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद के सन्दूक के पास रख दो, ताकि वह तुम्हारे बरखिलाफ़ गवाह रहे।

²⁷क्योंकि मैं तुम्हारी बगावत और गर्दनकशी को जानता हूँ। देखो, अभी तो मेरे जीते जी तुम खुदावन्द से बगावत करते रहे हो, तो मेरे मरने के बाद कितना ज़्यादा न करोगे?²⁸तुम अपने क़बीले के सब बुजुर्गों और 'उहदेदारों को मेरे पास जमा' करो, ताकि मैं यह बातें उनके कानों में डाल दूँ और आसमान और ज़मीन को उनके बरखिलाफ़ गवाह बनाऊँ।²⁹क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम अपने को बिगाड़ लोगे, और उस रास्ते से जिसका मैंने तुमको हुक्म दिया है फिर जाओगे; तब आखिरी दिनों में तुम पर आफ़त टूटेगी, क्योंकि तुम अपने कामों से खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए वह काम करोगे जो उसकी नज़र में बुरा है।"

³⁰इसलिए मूसा ने इस गीत की बातें इस्राईल की सारी जमा'अत को आखिर तक कह सुनाई।

Chapter 32

¹कान लगाओ, ऐ आसमानो, और मैं बोलूँगा; और ज़मीन मेरे मुँह की बातें सुने।²मेरी ता'लीम में ही की तरह बरसेगी, मेरी तक्ररीर शबनम की तरह टपकेगी; जैसे नर्म घास पर फुआर पड़ती हो, और सब्जी पर झड़ियाँ।

³क्योंकि मैं खुदावन्द के नाम का इश्तिहार दूँगा। तुम हमारे खुदा की ता'ज़ीम करो।⁴~"वह वही चट्टान है, उसकी सन'अत कामिल है; क्योंकि उसकी सब राहें इन्साफ़ की हैं, वह वफ़ादार खुदा, और बदी से मुबरी है, वह मुन्सिफ़ और बर-हक़ है।

⁵यह लोग उसके साथ बुरी तरह से पेश आए, यह उसके फ़र्ज़न्द नहीं। यह उनका 'ऐब है, यह सब कजरौ और टेढ़ी नसल हैं।⁶क्या तुम ऐ बेवकूफ़ और कम'अक़ल लोगों, इस तरह खुदावन्द को बदला दोगे? क्या वह तुम्हारा बाप नहीं, जिसने तुमको खरीदा है? उस ही ने तुमको बनाया और क़याम बख़्शा।

⁷क़दीम दिनों को याद करो, नसल दर नसल के बरसों पर ग़ौर करो; अपने बाप से पूछो, वह तुमको बताएगा; बुजुर्गों से सवाल करो, वह तुमसे बयान करेंगे।⁸जब हक़ त'आला ने क्रौमों को मीरास बाँटी, और बनी आदम को जुदा-जुदा किया, तो उसने क्रौमों की सरहदें, बनी इस्राईल के शुमार के मुताबिक़ ठहराई।

⁹क्योंकि खुदावन्द का हिस्सा उसी के लोग हैं। या क़ूब उसकी मीरास का हिस्सा है।¹⁰वह खुदावन्द को वीराने और सूने ख़तरनाक वीराने में मिला; खुदावन्द उसके चारों तरफ़ रहा, उसने उसकी ख़बर ली, और उसे अपनी आँख की पुतली की तरह रखखा।

¹¹जैसे 'उक़ाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों पर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने बाजूओं को फैलाया, और उनको लेकर अपने परों पर उठा लिया।¹²~सिर्फ़ खुदावन्द ही ने उनकी रहबरी की, और उसके साथ कोई अजनबी मा'बूद न था।

¹³उसने उसे ज़मीन की ऊँची-ऊँची जगहों पर सवार कराया, और उसने खेत की पैदावार खाई; उसने उसे चट्टान में से शहद, और मुश्किल जगह में से तेल चुसाया।

¹⁴और गायों का मक्खन और भेड़-बकरियों का दूध और बरों की चर्बी, और बसनी नसल के मेंढे और बकरे, और ख़ालिस ग़ेहू का आटा भी; और तू अंगूर के ख़ालिस रस की मय पिया करता था।

¹⁵लेकिन यसरून मोटा हो कर लारें मारने लगा; तू मोटा हो कर सुस्त हो गया है, और तुझ पर चर्बी छा गई है; तब उसने खुदा को जिसने उसे बनाया छोड़ दिया, और अपनी नज़ात की चट्टान की हिक़ारत की।¹⁶उन्होंने अजनबी मा'बूदों के ज़रिए' उसे ग़ैरत, और मकरूहात से उसे गुस्सा दिलाया।

¹⁷उन्होंने जिन्नत के लिए जो खुदा न थे, बल्कि ऐसे मा'बूदों के लिए जिनसे वह वाकिफ़ न थे, या'नी नये-नये मा'बूदों के लिए जो हाल ही में ज़ाहिर हुए थे, जिनसे उनके बाप दादा कभी डरे नहीं कुर्बानी की।¹⁸तू उस चट्टान से गाफ़िल हो गया, जिसने तुझे पैदा किया था; तू खुदा को भूल गया, जिसने तुझे पैदा किया।

¹⁹"खुदावन्द ने यह देख कर उनसे नफ़रत की, क्योंकि उसके बेटों और बेटियों ने उसे गुस्सा दिलाया।²⁰तब उसने कहा, 'मैं अपना मुँह उनसे छिपा लूँगा, और देखूँगा कि उनका अन्जाम कैसा होगा; क्योंकि वह बागी नसल और बेवफ़ा औलाद हैं।

²¹~उन्होंने उस चीज़ के ज़रिए' जो खुदा नहीं, मुझे ग़ैरत और अपनी बातिल बातों से मुझे गुस्सा दिलाया; इसलिए मैं भी उनके ज़रिए' से जो कोई उम्मत नहीं उनको ग़ैरत और एक नादान क्रौम के ज़रिए' से उनको गुस्सा दिलाऊँगा।

²²इसलिए कि मेरे गुस्से के मारे आग भड़क उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी, और ज़मीन को उसकी पैदावार समेत भसम कर देगी, और पहाड़ों की बुनियादों में आग लगा देगी।

²³'मैं उन पर आफ़तों का ढेर लगाऊँगा, और अपने तीरों को उन पर ख़त्म करूँगा।²⁴वह भूक के मारे घुल जाएँगे, और शदीद हरातर और सख़्त हलाक़त का लुक्का हो जाएँगे; और मैं उन पर दरिन्दों के दाँत और ज़मीन पर के सरकने वाले कीड़ों का ज़हर छोड़ दूँगा।

²⁵बाहर वह तलवार से मरेगे, और कोठरियों के अन्दर ख़ौफ़ से, जवान मर्द और कुँवारियों, दूध पीते बच्चे और पक्के बाल वाले सब यूँ ही हलाक़ होंगे।²⁶मैंने कहा, मैं उनको दूर-दूर तितर-बितर करूँगा, और उनका तज़किरा नौ'-ए-बशर में से मिटा डालूँगा।

²⁷लेकिन मुझे दुश्मन की छेड़ छाड़ का अन्देशा था, कि कहीं मुखालिफ़ उल्टा समझ कर, यूँ न कहने लगे, कि हमारे ही हाथ बाला हैं और यह सब खुदावन्द से नहीं हुआ।"

²⁸"वह एक ऐसी क्रौम हैं जो मसलहत से ख़ाली हो उनमें कुछ समझ नहीं।²⁹काश वह 'अक़लमन्द होते कि इसको समझते, और अपनी 'आक़बत पर ग़ौर करते।

³⁰क्यूँ कर एक आदमी हज़ार का पीछा करता, और दो आदमी दस हज़ार को भगा देते, अगर उनकी चट्टान ही उनको बेच न देती, और खुदावन्द ही उनको हवाले न कर देता?³¹क्योंकि उनकी चट्टान ऐसी नहीं जैसी हमारी चट्टान है, चाहे हमारे दुश्मन ही क्यूँ न मुन्सिफ़ हों।

³²क्योंकि उनकी ताक़ सटूम की ताक़ों में से और 'अमूरा के खेतों की है; उनके अंगूर हलाहल के बने हुए हैं, और उनके गुच्छे कड़वे हैं।

³³उनकी मय अज़दहाओं का बिस, और काले नागों का ज़हर-ए-क्रातिल है।³⁴क्या यह मेरे ख़ज़ानों में सर-ब-मुहर होकर भरा नहीं पड़ा है?

³⁵उस वक़्त जब उनके पाँव फिसलें, तो इन्तक़ाम लेना और बदला देना मेरा काम होगा: क्योंकि उनकी आफ़त का दिन नज़दीक है, और जो हादिसे उन पर गुज़रने वाले हैं वह जल्द आएँगे।

³⁶~क्योंकि खुदावन्द अपने लोगों का इन्साफ़ करेगा, और अपने बन्दों पर तरस खाएगा; जब वह देखेगा कि उनकी कुव्वत जाती रही, और कोई भी, न क़ैदी और न आज़ाद बाक़ी बचा।

³⁷और वह कहेगा, उन के मा'बूद कहाँ हैं? वह चट्टान कहाँ, जिस पर उनका भरोसा था;³⁸जो उनके कुर्बानियों की चर्बी खाते, और उनके तपावन की मय पीते थे? वही उठ कर तुम्हारी मदद करें, वही तुम्हारी पनाह हों।

³⁹~'इसलिए अब तुम देख लो, कि मैं ही वह हूँ। और मेरे साथ कोई मा'बूद नहीं। मैं ही मार डालता और मैं ही जिलाता हूँ। मैं ही ज़ख़मी करता और मैं ही चंगा करता हूँ, और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ाए।⁴⁰क्योंकि मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर कहता हूँ, कि चूँकि मैं हमेशा हमेशा ज़िन्दा हूँ,

⁴¹इसलिए अगर मैं अपनी झलकती तलवार को, तेज़ करूँ, और 'अदालत को अपने हाथ में ले लूँ, तो अपने मुखालिफ़ों से इन्तक़ाम लूँगा, और अपने कीना रखने वालों को बदला दूँगा।

⁴²~मैं अपने तीरों को खून पिला-पिलाकर मस्त कर दूँगा, और मेरी तलवार गोشت खाएगी- वह खून~मक्खन~और गुलामों~का, और वह गोشت दुश्मन के सरदारों के सिर का होगा।'

⁴³'ऐ क्रौमों, उसके लोगों के साथ खुशी मनाओ क्योंकि वह अपने बन्दों के खून का बदला लेगा, और अपने मुखालिफ़ों को बदला देगा, और अपने मुल्क और लोगों के लिए क़फ़ारा देगा।"

⁴⁴तब मूसा और नून के बेटे होसे'अ ने आ कर इस गीत की सारी बातें लोगों को कह सुनाईं।⁴⁵ और जब मूसा यह सब बातें सब इस्राईलियों को सुना चुका,

⁴⁶तो उसने उनसे कहा, "जो बातें मैंने तुमसे आज के दिन बयान की हैं, उन सब से तुम दिल लगाना और अपने लड़कों को हुक्म देना कि वह एहतियात रखकर इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें।'⁴⁷~क्योंकि यह तुम्हारे लिए कोई बे फ़ायदा बात नहीं, बल्कि यह तुम्हारी ज़िन्दगानी है; और इसी से उस मुल्क में, जहाँ तुम यरदन पार जा रहे हो कि उस पर क़ब्ज़ा करो, तुम्हारी 'उम्र दराज़ होगी।"

⁴⁸और उसी दिन खुदावन्द ने मूसा से कहा कि,⁴⁹"तू इस कोह-ए-'अबारीम पर चढ़ कर नबू की चोटी को जा, जो यरीहू के सामने मुल्क-ए-मोआब में है; और कना'न के मुल्क की जिसे मैं मीरास के तौर पर बनी-इस्राईल को देता हूँ देख ले।

⁵⁰और उसी पहाड़ पर जहाँ तू जाए वफ़ात पाकर अपने लोगों में शामिल हो, जैसे तेरा भाई हारून होर के पहाड़ पर मरा और अपने लोगों में जा मिला।

⁵¹~इसलिए कि तुम दोनों ने बनी-इस्राईल के बीच सीन के जंगल के क़ादिस में मरीबा के चश्मे पर मेरा गुनाह किया, क्योंकि तुमने बनी-इस्राईल के बीच मेरी बड़ाई न की।⁵² इसलिए तू उस मुल्क को अपने आगे देख लेगा, लेकिन तू वहाँ उस मुल्क में जो मैं बनी-इस्राईल को देता हूँ जाने न पाएगा।"

Chapter 33

¹~और मर्द-ए-खुदा मूसा ने जो दु'आ-ए-खैर देकर अपनी वफ़ात से पहले बनी-इसाईल को बरकत दी, वह यह है।²~और उसने कहा : "खुदावन्द सीना से आया और श'ईर से उन पर ज़ाहिर हुआ, वह कोह-ए-फ़ारान से जलवागर हुआ, और लाखों फ़रिश्तों ~में से आया; उसके दहने हाथ पर उनके लिए आतिशी शरी'अत थी।

³वह बेशक क़ौमों से मुहब्बत रखता है, उसके सब मुक़द्दस लोग तेरे हाथ में हैं, और वह तेरे क़दमों में बैठे, एक एक तेरी बातों से मुस्तफ़ीज़ होगा।⁴मूसा ने हमको शरी'अत और या'क़ूब की जमा'अत के लिए मीरास दी।

⁵और वह उस वक़्त यूसूरून में बादशाह था, जब क़ौम के सरदार इकट्ठे और इसाईल के क़बीले जमा' हुए।⁶"रूबिन ज़िन्दा रहे और मर न जाए, तोभी उसके आदमी थोड़े ही हों।"

⁷और यहूदाह के लिए यह है जो मूसा ने कहा, "ऐ खुदावन्द, तू यहूदाह की सुन, और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा; वह अपने लिए आप अपने हाथों से लड़ा, और तू ही उसके दुश्मनों के मुक़ाबले में उसका मददगार होगा।"

⁸और लावी के हक़ में उसने कहा, "तेरे तुम्मीन और ऊरीम उस मर्द-ए-खुदा के पास हैं जिसे तूने मस्सा पर आज़मा लिया, और जिसके साथ मरीबा के चश्मे पर तेरा तनाज़ा' हुआ;

⁹जिसने अपने माँ बाप के बारे में कहा, कि मैंने इन को देखा नहीं; और न उसने अपने भाइयों को अपना माना, और न अपने बेटों को पहचाना। क्योंकि उन्होंने तेरे कलाम की एहतियात की और वह तेरे 'अहद को मानते हैं।

¹⁰वह या'क़ूब को तेरे हुक्मों और इसाईल को तेरी शरी'अत सिखाएँगे। वह तेरे आगे खुशबू और तेरे मज़बह पर पूरी सोख़्तनी कुर्बानी रखेंगे।

¹¹~ऐ खुदावन्द, तू उसके माल में बरकत दे और उसके हाथों की खिदमत को कुबूल कर; जो उसके ख़िलाफ़ उठे उनकी कमर तोड़ दे, और उनकी कमर भी जिनको उससे 'अदावत है ताकि वह फिर न उठे।

¹²और बिनयमीन के हक़ में उस ने कहा, "खुदावन्द का प्यारा, सलामती के साथउसके पास रहेगा; वह सारे दिन उसे ढाँके रहता है, और वह उसके कन्धों के बीच सुकूनत करता है।"

¹³~और यूसुफ़ के हक़ में उसने कहा, "उसकी ज़मीन खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हो, आसमान की बेशक़ीमत अशया और शबनम और वह गहरा पानी जो नीचे है,

¹⁴और सूरज के पकाए हुए बेशक़ीमत फल,और चाँद की उगाई हुई बेशक़ीमती चीज़ें।¹⁵और क़दीम पहाड़ों की बेशक़ीमत चीज़ें,और अबदी पहाड़ियों की बेशक़ीमत चीज़ें।

¹⁶और ज़मीन और उसकी मा'मूरी की बेशक़ीमती चीज़ें और उसकी खुशनूदी जो झाड़ी में रहता था, इन सबके ऐतबार से यूसुफ़ के सिर पर या'नी उसी के सिर के चाँद पर, जो अपने भाइयों से जुदा रहा बरकत नाज़िल हो।

¹⁷उसके बैल के पहलूठे की सी उसकी शौकत है; और उसके सींग जंगली साँड के से हैं; उन्हीं से वह सब क़ौमों को, बल्कि ज़मीन की इन्तिहा के लोगों को ढकेलेगा; वह इफ़्राईम के लाखों लाख,और मनस्सी के हज़ारों हज़ार हैं।"

¹⁸और ज़बूलून के बारे में उसने कहा, "ऐ ज़बूलून, तू अपने बाहर जाते वक़्त और ऐ इश्कार, तू अपने खेमों में खुश रह।¹⁹वह लोगों को पहाड़ों पर बुलाएँगे, और वहाँ सदाक़त की कुर्बानियाँ पेश करेंगे; क्योंकि वह समन्दरों के फ़ैज़ और रेत के छिपे हुए खज़ानों से बहरावर होंगे।"

²⁰और जद्द के हक़ में उसने कहा, "जो कोई जद्द को बढ़ाए वह मुबारक हो। वह शेरनी की तरह रहता है,और बाज़ू बल्कि सिर के चाँद तक को फाड़ डालता है

²¹और उसने पहले हिस्से को अपने लिए चुन लिया, क्योंकि शरा' देने वाले का हिस्सा वहाँ अलग किया हुआ था; और उसने लोगों के सरदारों के साथ आकर खुदावन्द के इन्साफ़ को और उसके हुक्मों को जो इसाईल के लिए था पूरा किया।"

²²और दान के हक़ में उसने कहा, "दान उस शेर-ए-बबर का बच्चा है जो बसन से कूद कर आता है।"

²³और नफ़्ताली के हक़ में उसने कहा, "ऐ नफ़्ताली, जो लुत्फ़-ओ-करम से आसूदा, और खुदावन्द की बरकत से मा'मूर है; तू पश्चिम और दख्खिन का मालिक हो।"

²⁴और आशर के हक़ में उसने कहा, "आशर आस-औलाद से मालामाल हो; वह अपने भाइयों का मक्बूल हो और अपना पाँव तेल में डुबोए।²⁵तेरे बेन्डे लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी कुव्वत हो।

²⁶"ऐ यूसूरून, खुदा की तरह और कोई नहीं, जो तेरी मदद के लिए आसमान पर और अपने जाह-ओ-जलाल में आसमानों पर सवार है।

²⁷अबदी खुदा तेरी सुकूनतगाह है और नीचे दाइमी बाज़ू है, उसने ग़नीम को तेरे सामने से निकाल दिया और कहा, "उनको हलाक कर दे।"

²⁸और इसाईल सलामती के साथ या'क़ूब का सोता, अकेला अनाज और मय के मुल्क में बसा हुआ है; बल्कि आसमान से उस पर ओस पड़ती रहती है

²⁹मुबारक है तू, ऐ इसाईल; तू खुदावन्द की बचाई हुई क़ौम है, इसलिए कौन तेरी तरह है? वही तेरी मदद की सिपर, और तेरे जाह-ओ-जलाल की तलवार है।तेरे दुश्मन तेरे मुती' होंगे और तू उन के ऊँचे मक़ामों को पस्त करेगा।"

Chapter 34

¹और मूसा मोआब के मैदानों से कोह-ए-नबू के ऊपर पिसगा की चोटी पर, जो यरीहू के सामने है चढ़ गया; और खुदावन्द ने जिल'आद का सारा मुल्क दान तक, और नफ़्ताली का सारा मुल्क,²और इफ़्राईम और मनस्सी का मुल्क, और यहूदाह का सारा मुल्क पिछले समन्दर तक,³~और दख्खिन का मुल्क, और वादी-ए-यरीहू जो खुरमों का शहर है उसकी वादी का मैदान जुगर तक उसको दिखाया।

⁴और खुदावन्द ने उससे कहा, "यही वह मुल्क है, जिसके बारे में मैंने इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब से क्रसम खाकर कहा था, कि इसे मैं तुम्हारी नसल को दूँगा। इसलिए मैंने ऐसा किया कि तू इसे अपनी आँखों से देख ले, लेकिन तू उस पार वहाँ जाने न पाएगा।"⁵तब खुदावन्द के बन्दे मूसा ने खुदावन्द के कहे के मुवाफ़िक़, वहीं मोआब के मुल्क में वफ़ात पाई,⁶और उसने उसे मोआब की एक वादी में बैत फ़गूर के सामने दफ़न किया; लेकिन आज तक किसी आदमी को उसकी क़ब्र मा'लूम नहीं।

⁷और मूसा अपनी वफ़ात के वक़्त एक सौ बीस बरस का था, और न तो उसकी आँख धुंधलाने पाई और न उसकी अपनी कुव्वत कम हुई।⁸और बनी इस्राईल मूसा के लिए मोआब के मैदानों में तीस दिन तक रोते रहे; फिर मूसा के लिए मातम करने और रोने-पीटने के दिन ख़त्म हुए।

⁹और नून का बेटा यशू'अ 'अक्लमन्दी की रूह से मा'मूर था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और बनी-इस्राईल उसकी बात मानते रहे, और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उन्होंने वैसा ही किया।

¹⁰और उस वक़्त से अब तक बनी-इस्राईल में कोई नबी मूसा की तरह, जिससे खुदावन्द ने आमने-सामने बातें कीं नहीं उठा।¹¹और उसको खुदावन्द ने मुल्क-ए-मिस्र में फ़िर'औन और उसके सब खादिमों और उसके सारे मुल्क के सामने, सब निशानों और 'अजीब कामों के दिखाने को भेजा था।¹²यूँ मूसा ने सब इस्राईलियों के सामने ताक़तवर हाथ और बड़ी हैबत के काम कर दिखाए।

यशू'अ

Chapter 1

¹वीराने और उस लुबनान से लेकर बड़े दरिया-ए-फ़रात तक हितियों का सारा मुल्क और पश्चिम की तरफ़ बड़े समन्दर तक तुम्हारी हद होगी।²तेरी ज़िन्दगी भर कोई शख्स तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा; जैसे मैं मूसा के साथ था वैसे ही तेरे साथ रहूँगा मैं न तुझ से अलग हूँगा और न तुझे छोड़ूँगा।

³इसलिए मज़बूत हो जा और हौसला रख, क्योंकि तू इस क़ौम को उस मुल्क का वारिस करायेगा जिसे मैंने उनको देने की क्रसम उनके बाप दादा से खाई।⁴तू सिर्फ़ मज़बूत और निहायत दिलेर हो जा कि एहतियात रख कर उस सारी शरी'अत पर 'अमल करे जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा ने तुझ को दिया; उस से न दहिने मुड़ना न बायें ताकि जहाँ कहीं तू जाये तुझे ख़ूब कामयाबी हासिल हो।

⁵शरी'अत की यह किताब तेरे मुँह से न हटे, बल्कि तुझे दिन और रात इसी का ध्यान हो ताकि जो कुछ उस में लिखा है उस सब पर तू एहतियात करके 'अमल कर सके; ~क्योंकि तब ही तुझे कामयाबी ~की राह नसीब होगी और तू ख़ूब कामयाब होगा।⁶क्या मैंने तुझको हुक्म नहीं दिया? इसलिए मज़बूत हो जा और हौसला रख; ख़ौफ़ न खा और बेदिल न हो, क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा जहाँ जहाँ तू जाए तेरे साथ रहेगा। "

⁷तब यशू'अ ने लोगों के मनसबदारों को हुक्म दिया कि⁸तुम लश्कर के बीच से होकर गुज़रो और लोगों को यह हुक्म दो कि तुम अपने अपने लिए सफ़र का सामान ~तैयार कर लो क्योंकि तीन दिन के अन्दर तुम को इस यरदन के पार होकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को जाना है जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको देता है ताकि तुम उसके मालिक हो जाओ।

⁹और बनी रुबिन और बनी जद और मनस्सी के आधे क़बीले~से यशू'अ ने यह कहा कि¹⁰उस बात को जिसका हुक्म खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुमको दिया याद रखना कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको आराम बख़्शता है और वह यह मुल्क तुमको देगा।

¹¹तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये इसी मुल्क में जिसे मूसा ने यरदन के इस पार तुमको दिया है रहें, लेकिन तुम सब जितने बहादुर और सूरमा हो हथियार लगाए हुए अपने भाइयों के आगे आगे पार जाओ और उनकी मदद करो।¹²जब तक खुदावन्द तुम्हारे भाइयों को तुम्हारी तरह आराम न बख़्शे और वह उस मुल्क पर जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा उनको देता है क़ब्ज़ा न कर लें। बा'द में तुम अपनी मिलिकियत के मुल्क में लौटना जिसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने यरदन के इस पार पूरब की तरफ़ तुम को दिया है और उसके मालिक होना।

¹³और उन्होंने यशू'अ को जवाब दिया कि जिस जिस बात का तूने हम को हुक्म दिया है हम वह सब करेंगे, और जहाँ जहाँ तू हमको भेजे वहाँ हम जाएँगे।¹⁴जैसे हम सब उमूर में मूसा की बात सुनते थे वैसे ही तेरी सुनेंगे; सिर्फ़ ~इतना हो कि खुदावन्द तेरा खुदा जिस तरह मूसा के साथ रहता था तेरे साथ भी रहे।¹⁵जो कोई तेरे हुक्म की मुखालिफ़त करे और सब मु'आमिलों में जिनकी तू ताकीद करे तेरी बात न माने वह जान से मारा जाए। तू सिर्फ़ मज़बूत हो जा और हौसला रख।

Chapter 2

¹तब नून के बेटे यशू'अ ने शित्तीम से दो आदमियों को चुपके से जासूस के तौर पर भेजा और उन से कहा, कि जा कर उस मुल्क को और यरीहू को देखो भालो। चुनाँचे वह रवाना हुए और एक कस्बी के घर में जिसका नाम राहब था आए और वहीं सोए।² और यरीहू के बादशाह को खबर मिली कि देख आज की रात बनी इस्राईल में से कुछ आदमी इस मुल्क की जासूसी करने को यहाँ आए हैं।³ और यरीहू के बादशाह ने राहब को कहला भेजा कि उन लोगों को जो तेरे पास आये और तेरे घर में दाखिल हुए हैं निकाल ला इस लिए कि वह इस सारे मुल्क की जासूसी करने को आए हैं।

⁴तब उस 'औरत ने उन दोनों आदमियों को लेकर और उनको छिपा कर यूँ कह दिया कि वह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मा'लूम न हुआ कि वह कहाँ के थे।⁵ और फाटक बंद होने के वक़्त के करीब जब अँधेरा हो गया, वह आदमी चल दिए और मैं नहीं जानती हूँ कि वह कहाँ गये। इसलिए जल्द उनका पीछा करो क्योंकि तुम ज़रूर उनको पा लोगे।

⁶लेकिन उसने उनको अपनी छत पर चढ़ा कर सन की लकड़ियों के नीचे जो छत पर तरतीब से धरी थी छिपा दिया था।⁷ और यह लोग यरदन के रास्ते पर पाँव के निशानों ~तक उनके पीछे गये और ज़ुँही उनका पीछा करने वाले फाटक से निकले उन्होंने फाटक बंद कर लिया।

⁸तब राहब छत पर उन आदमियों ~के लेट जाने से पहले उन के पास गई और उन से यूँ कहने लगी कि मुझे यक़ीन है कि खुदावन्द ने यह मुल्क तुमको दिया है और तुम्हारा रौ'ब हम लोगों पर छा गया है और इस मुल्क के सब बाशिन्दे तुम्हारे आगे डरे जा रहे हैं।

¹⁰क्योंकि हम ने सुन लिया है कि जब तुम मिस्र से निकले तो खुदावन्द ने तुम्हारे आगे बहरे कुलजुम के पानी को सुखा दिया, और तुम ने अमूरियों के दोनों बादशाहों सीहोन और 'ओज़ से जो यरदन के उस पार थे और जिनको तुमने बिल्कुल हलाक कर डाला क्या क्या किया।¹¹ यह सब कुछ सुनते ही हमारे दिल पिघल गये और तुम्हारी वजह से ~फिर किसी शख्स में जान बाक़ी न रही क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही ऊपर आसमान का और नीचे ज़मीन का खुदा है।

¹²इसलिए अब मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूँ कि मुझ से खुदावन्द की क़सम खाओ कि चूँकि मैंने तुम पर मेहरबानी की है तुम भी मेरे बाप के घराने पर मेहरबानी करोगे और मुझे कोई सच्चा निशान दो;¹³ कि तुम मेरे बाप और माँ और भाइयों और बहनों को और जो कुछ उनका है सबको सलामत बचा लोगे और हमारी जानों को मौत से महफ़ूज़ रखोगे।

¹⁴उन आदमियों ने उस से कहा कि हमारी जान तुम्हारी जान की ज़िम्मेदार होगी बशर्ते कि तुम हमारे इस काम का ज़िक्र न कर दो और ऐसा होगा कि जब खुदावन्द इस मुल्क को हमारे क़ब्ज़े में कर देगा तो हम तेरे साथ मेहरबानी और वफ़ादारी से पेश आयेंगे।

¹⁵तब उस 'औरत ने उनको खिड़की के रास्ते रस्सी से नीचे उतार दिया क्योंकि उस का घर शहर की दीवार पर बना था और वह दीवार पर रहती थी।¹⁶ और उस ने उस से कहा कि पहाड़ को चल दो ऐसा न हो कि पीछा करने वाले तुम को मिल जायें; और तीन दिन तक वहीं छिपे रहना जब तक पीछा करने वाले लौट न आयें, इस के बाद अपना रास्ता लेना।¹⁷ तब उन आदमियों ने उस से कहा कि हम तो उस क़सम की तरफ़ से जो तूने हम को खिलाई है बे इल्ज़ाम रहेंगे।

¹⁸इसलिए देख! जब हम इस मुल्क में आएँ तो तू सुख रंग के सूत की इस डोरी को उस खिड़की में जिससे तूने हम को नीचे उतारा है बांध देना; और अपने बाप और माँ और भाईयों बल्कि अपने बाप के सारे घराने को अपने पास घर में जमा' कर रखना।¹⁹ फिर जो कोई तेरे घर के दरवाज़ों से निकल कर गली में जाये, उस का खून उसी के सर पर होगा और हम बे गुनाह ठहरेंगे; और जो कोई तेरे साथ घर में होगा उस पर अगर किसी का हाथ चले, तो उसका खून हमारे सर पर होगा।

²⁰और अगर तू हमारे इस काम का ज़िक्र कर दे, तो हम उस क़सम की तरफ़ से जो तूने हम को खिलाई है बेइल्ज़ाम हो जाएँगे।²¹ उसने कहा, "जैसा तुम कहते हो वैसा ही हो। " इसलिए उसने उनको रवाना किया और वह चल दिए; तब उसने सुख रंग की वह डोरी खिड़की में बाँध दी।

²²और वह जाकर पहाड़ पर पहुँचे और तीन दिन तक वहीं ठहरे रहे, जब तक उनका पीछा करने वाले लौट न आए; और उन पीछा करने वालों ने उनको सारे रास्ते ढूँढा पर कहीं न पाया।

²³फिर यह दोनों आदमी लौटे और पहाड़ से उतर कर पार गये, और नून के बेटे यशू'अ के पास जाकर सब कुछ जो उन पर गुज़रा था उसे बताया।²⁴ और उन्होंने यशू'अ से कहा "यक़ीनन खुदावन्द ने वह सारा मुल्क हमारे क़ब्ज़े में कर दिया है क्योंकि उस मुल्क के सब बाशिन्दे हमारे आगे डरे जा रहे हैं। "

Chapter 3

¹तब यशू'अ सुबह सवेरे उठा, और वह सब बनी इस्राईल शितीम से रवाना हो कर यरदन पर आए, और पार उतरने से पहले वहीं टिके।

²और तीन दिन के बाद मनसबदार लश्कर के बीच होकर गुजरे।³और उन्होंने लोगों को हुक्म दिया कि जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के अहद के सन्दूक को देखो और काहिनों और लावी उसे उठाये हुए हों, तो तुम अपनी जगह से उठ कर उसके पीछे पीछे चलना।⁴लेकिन तुम्हारे और उस के बीच पैमाइश करके क़रीब दो हजार हाथ का फ़ासला रहे, उसके नज़दीक न जाना; ताकि तुम को मा'लूम हो कि किस रास्ते तुमको चलना है, क्योंकि तुम अब तक इस राह से कभी नहीं गुज़रे।

⁵और यशू'अ ने लोगों से कहा, "तुम अपने आप को पाक करो क्योंकि कल के दिन खुदावन्द तुम्हारे बीच 'अजीब-ओ-ग़रीब काम करेगा।" "फिर यशू'अ ने काहिनों से कहा कि तुम 'अहद के सन्दूक को ले कर लोगों के आगे आगे पार उतरो। चुनाँचे वह 'अहद के सन्दूक को लेकर लोगों के आगे आगे चले।

⁷और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, "आज के दिन से मैं तुझे सब इस्राईलियों के सामने सरफ़राज़ करना शुरू" करूँगा, ताकि वह जान लें कि जैसे मैं मूसा के साथ रहा वैसे ही तेरे साथ रहूँगा।⁸और तू उन काहिनों को जो 'अहद के सन्दूक को उठाये यह हुक्म देना, कि जब तुम यरदन के पानी के किनारे पहुँचो तो यरदन में खड़े रहना। "

⁹और यशू'अ ने बनी इस्राईल से कहा कि पास आकर खुदावन्द अपने खुदा की बातें सुनो।¹⁰और यशू'अ कहने लगा कि इस से तुम जान लोगे कि ज़िन्दा खुदा तुम्हारे बीच है, और वही ज़रूर कना'नियों और हितियों और हव्वियों, और फ़रिज़ियों और जरजासियों, और अमोरियों और यबूसियों को तुम्हारे आगे से दफ़ा करेगा।¹¹देखो, सारी ज़मीन के मालिक के 'अहद का सन्दूक तुम्हारे आगे आगे यरदन में जाने को है।

¹²इसलिए अब तुम हर क़बीला पीछे एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी इस्राईल के क़बीलों में से चुन लो।¹³और जब यरदन के पानी में उन काहिनों के पाँव के तलवे टिक जाएँगे, जो खुदावन्द या'नी सारी दुनिया के मालिक के 'अहद का सन्दूक उठाते हैं तो यरदन का पानी या'नी वह पानी जो उपर से बहता हुआ नीचे आता है थम जायेगा, और उस का ढेर लग जाएगा।

¹⁴और जब लोगों ने यरदन के पार जाने को अपने खेमों से रवानगी की और वह काहिन जो 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे, लोगों के आगे आगे हो लिए।¹⁵और जब 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले यरदन पर पहुँचे और उन काहिनों के पाँव जो सन्दूक को उठाये हुए थे, किनारे के पानी में डूब गए (क्योंकि फ़सल के तमाम दिनों में यरदन का पानी चारों तरफ़ अपने किनारों से ऊपर चढ़कर बहा करता है),¹⁶तो जो पानी ऊपर से आता था वह खूब दूर 'अदम के पास जो ज़रतान के बराबर एक शहर है, रुक कर एक ढेर हो गया; और वह पानी जो मैदान के दरिया या'नी दरिया-ए-शोर की तरफ़ बह कर गया था बिल्कुल अलग हो गया और लोग 'ऐन यरीहू के मुक्काबिल पार उतरे।

¹⁷और वह काहिन जो खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे यरदन के बीच में सूखी ज़मीन पर खड़े रहे; और सब इस्राईली खुशक ज़मीन पर हो कर गुज़रे, यहाँ तक कि सारी क़ौम साफ़ यरदन के पार हो गयी।

Chapter 4

¹और जब सारी क्रौम यरदन के पार हो गई तो खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि | ²कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी लोगों में से चुन लो | ³और उन को हुक्म दो कि तुम यरदन के बीच में से जहाँ काहिनों के पाँव जमे हुए थे बारह पत्थर लो और उनको अपने साथ ले जा कर उस मंज़िल पर जहाँ तुम आज की रात टिकोगे रख देना |

⁴तब यशू'अ ने उन बारह आदमियों को जिनको उस ने बनी इस्राईल में से कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से तैयार कर रखा था बुलाया | ⁵और यशू'अ ने उन से कहा, " तुम खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद के सन्दूक के आगे आगे यरदन के बीच में जाओ, और तुम में से हर शख्स बनी इस्राईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक एक एक पत्थर अपने कन्धे पर उठा ले |

⁶ताकि यह तुम्हारे बीच एक निशान हो, और जब तुम्हारी औलाद आइन्दा ज़माने में तुम से पूछे, कि इन पत्थरों से तुम्हारा क्या मतलब है ? ⁷तो तुम उन को जवाब देना कि यरदन का पानी खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे दो हिस्से हो गया था; क्योंकि जब वह यरदन पार आ रहा था तब यरदन का पानी दो हिस्से होगया | यूँ यह पत्थर हमेशा के लिए बनी इस्राईल के वास्ते यादगार ठहरेंगे | "

⁸चुनाँचे बनी इस्राईल ने यशू'अ के हुक्म के मुताबिक किया, और जैसा खुदावन्द ने यशू'अ से कहा था उन्होंने बनी इस्राईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक यरदन के बीच में से बारह पत्थर उठा लिए; और उन को उठा कर अपने साथ उस जगह ले गये जहाँ वह टिके और वहीं उनको रख दिया | ⁹और यशू'अ ने यरदन के बीच में उस जगह जहाँ 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले काहिनों ने पाँव जमाये थे बारह पत्थर खड़े किये; चुनाँचे वह आज के दिन तक वहीं हैं |

¹⁰क्योंकि वह काहिन जो सन्दूक को उठाये हुए थे यरदन के बीच ही में खड़े रहे, जब तक उन सब बातों के मुताबिक जिनका हुक्म मूसा ने यशू'अ को दिया था हर एक बात पूरी न हो चुकी, जिसे लोगों को बताने का हुक्म खुदावन्द ने यशू'अ को किया था; और लोगों ने जल्दी की और पार उतरे | ¹¹और ऐसा हुआ कि जब सब लोग साफ़ पार हो गये, ~तो खुदावन्द का सन्दूक और काहिन भी लोगों के रूबरू पार हुए |

¹²और बनी रुबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे कबीले के लोग मूसा के कहने के मुताबिक हथियार बांधे हुए बनी इस्राईल के आगे पार गये; ¹³या'नी क़रीब चालीस हजार आदमी लड़ाई के लिए तैयार और हथियार बांधे हुए ~खुदावन्द के सामने पार होकर यरीहू के मैदान में पहुँचे ताकि जंग करें | ¹⁴उस दिन खुदावन्द ने सब इस्राईलियों के सामने यशू'अ को सरफ़राज़ किया; और जैसा वह मूसा से डरते थे, वैसे ही उससे उसकी ज़िन्दगी भर डरते रहे |

¹⁵और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि | ¹⁶इन काहिनों को जो 'अहद का सन्दूक उठाये हुए हैं, हुक्म कर कि वह यरदन में से निकल आयें |

¹⁷चुनाँचे यशू'अ ने काहिनो को हुक्म दिया कि यरदन में से निकल आओ | ¹⁸और जब वह काहिन जो खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पाँव के तलवे खुशकी पर आ टिके तो यरदन का पानी फिर अपनी जगह पर आ गया और पहले की तरह अपने सब किनारों पर बहने लगा |

¹⁹और लोग पहले महीने की दसवीं तारीख को यरदन में से निकल कर यरीहू की पूरबी सरहद पर जिल्जाल में खेमाज़न हुए | ²⁰और यशू'अ ने उन बारह पत्थरों को जिनको उन्होंने यरदन में से लिया था जिल्जाल में खड़ा किया | ²¹और उस ने बनी इस्राईल से कहा कि जब तुम्हारे लड़के आइन्दा ज़माने में अपने अपने बाप दादा से पूछें, कि इन पत्थरों का मतलब क्या है ? |

²²तो तुम अपने लड़कों को यही बताना कि इस्राईली खुशकी खुशकी हो कर इस यरदन के पार आए थे | ²³क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने जब तक तुम पार न हो गये, यरदन के पानी को तुम्हारे सामने से हटा कर सुखा दिया; जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने बहर-ए- कुल्ज़ुम से किया, कि उसे हमारे सामने से हटा कर सुखा दिया जब तक हम पार न हो गये | ²⁴ताकि ज़मीन की सब क्रौम जान लें कि खुदावन्द का हाथ ताक़तवर है | और खुदावन्द तुम्हारे खुदा से हमेशा डरती रहें |

Chapter 5

¹और जब उन अमोरियों के सब बादशाहों ने जो यरदन के पार पश्चिम की तरफ थे, और उन कना'नियों के तमाम बादशाहों ने जो समन्दर के नज़दीक थे सुना, कि खुदावन्द ने बनी इस्राईल के सामने से यरदन के पानी को हटा कर सुखा दिया, जब तक हम पार न आ गये तो उनके दिल डर गये और उन में बनी इस्राईल की वजह से जान बाक़ी न रही।

²उस वक़्त खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि चक्रमक्र की छुरियां बना कर बनी इस्राईल का खतना फिर दूसरी बार कर दे।³और यशू'अ ने चक्रमक्र की छुरियां बनार्यी और खलिङ्गियों की पहाड़ी पर बनी इस्राईल का खतना किया।

⁴और यशू'अ ने जो खतना किया उसकी वजह यह है, कि वह लोग जो मिस्र से निकले, उन में जितने जंगी मर्द थे वह सब वीराने में मिस्र से निकलने के बा'द रास्ते ही में मर गये।⁵तब वह सब लोग जो निकले थे उनका खतना हो चुका था, लेकिन वह सब लोग जो वीराने में मिस्र से निकलने के बा'द रास्ते ही में पैदा हुए थे उनका खतना नहीं हुआ था।

⁶क्योंकि बनी इस्राईल चालीस बरस तक वीराने में फिरते रहे, जब तक सारी क्रौम या'नी सब जंगी मर्द जो मिस्र से निकले थे फ़ना न हो गये। इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द की बात नहीं मानी थी। उन ही से खुदावन्द ने क्रसम खा कर कहा था, कि वह उनको उस मुल्क को देखने भी न देगा जिसे हमको देने की क्रसम उस ने उनके बाप दादा से खाई और जहाँ दूध और शहद बहता है।⁷तब उन ही के लड़कों का जिनको उस ने उनकी जगह बरपा किया था, यशू'अ ने खतना किया क्योंकि वह नामख़तून थे इसलिए कि रास्ते में उनका खतना नहीं हुआ था।

⁸और जब सब लोगों का खतना कर चुके तो यह लोग खेमागाह में अपनी अपनी जगह रहे जब तक अच्छे न हो गये।⁹फिर खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि आज के दिन में मिस्र की मलामत को तुम पर से ढलका दिया। इसी वजह से आज के दिन तक उस जगह का नाम जिल्लाल है।

¹⁰और बनी इस्राईल ने जिल्लाल में डेरे डाल लिए, और उन्होंने यरीहू के मैदानों में उसी महीने की चौदहवीं तारीख को शाम के वक़्त 'ईद-ए-फ़सह मनाई।¹¹और 'ईद-ए-फ़सह के दूसरे दिन उस मुल्क के पुराने अनाज की बेखमीरी रोटियां और उसी रोज़ भुनी हुई बालें भी खार्यीं।

¹²और दूसरे ही दिन से उनके उस मुल्क के पुराने अनाज के खाने के बा'द मन्न रोक दिया गया और आगे फिर बनी इस्राईल को मन्न कभी न मिला, लेकिन उस साल उन्होंने मुल्क कना'न की पैदावार खाई।

¹³और जब यशू'अ यरीहू के नज़दीक था तो उस ने अपनी आँखें उठायीं और क्या देखा कि उसके मुकाबिल एक शख्स हाथ में अपनी गंगी तलवार लिए खड़ा है; और यशू'अ ने उस के पास जा कर उस से कहा, " तू हमारी तरफ़ है या हमारे दुश्मनों की तरफ़ ?"

¹⁴उस ने कहा, " नहीं! बल्कि मैं इस वक़्त खुदावन्द के लश्कर का सरदार हो कर आया हूँ। " तब यशू'अ ने ज़मीन पर सरनगूँ हो कर सिज्दा किया और उससे कहा, " मेरे मालिक का अपने खादिम से क्या इरशाद है ?"¹⁵और खुदावन्द के लश्कर के सरदार ने यशू'अ से कहा कि तू अपने पाँव से अपनी जूती उतार दे क्योंकि यह जगह जहाँ तू खड़ा है पाक है। इसलिए यशू'अ ने ऐसा ही किया।

Chapter 6

¹(और यरीहू बनी इस्राईल की वजह -से निहायत मज़बूती से बंद था और न तो कोई बाहर जाता और न कोई अन्दर आता था)।²और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि देख मैं ने यरीहू को और उसके बादशाह और ज़बरदस्त सूरमाओं को तेरे हाथ में कर दिया है।

³इसलिए तुम जंगी मर्द शहर को घेर लो, और एक दफ़ा' उसके चौगिर्द गश्त करो। छः दिन तक तुम ऐसा ही करना।⁴और सात काहिन सन्दूक के आगे आगे मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए चलें! और सातवें दिन तुम शहर की चारों तरफ़ सात बार घूमना, और काहिन नरसिंगे फूँकें।

⁵और यूँ होगा कि जब वह मेंढे के सींग को ज़ोर से फूँकें और तुम नरसिंगे की आवाज़ सुनो तो सब लोग निहायत ज़ोर से ललकारें; तब शहर की दीवार बिल्कुल गिर जायेगी और लोग अपने अपने सामने सीधे चढ़ जायें।

⁶और नून के बेटे यशू'अ ने काहिनों को बुला कर उन से कहा कि 'अहद के सन्दूक को उठाओ, और सात काहिन मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के सन्दूक के आगे आगे चलें।'⁷और उन्होंने लोगों से कहा, " बढ़ कर शहर को घेर लो और जो आदमी हथियार लिए हैं वह खुदा के सन्दूक के आगे आगे चलें। "

⁸और जब यशू'अ लोगों से यह बातें कह चुका, तो सात काहिन मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के आगे आगे चले और वह नरसिंगे फूँकते गये और खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उनके पीछे पीछे चला।⁹और वह हथियार लिए आदमी उन काहिनों के आगे आगे चले जो नरसिंगे फूँक रहे थे, और दुम्बाला सन्दूक के पीछे पीछे चला, और काहिन चलते चलते नरसिंगे फूँकते जाते थे।

¹⁰और यशू'अ ने लोगों को हुक्म दिया कि न तुम ललकारना, और न तुम्हारी आवाज़ सुनायी दे और न तुम्हारे मुँह से कोई बात निकले। जब मैं तुम को ललकारने को कहूँ तब तुम ललकारना।¹¹इसलिए उसने खुदावन्द के सन्दूक को शहर के गिर्द एक बार फिरवाया। तब वह खेमागाह में आए और वहीं रात काटी।

¹²और यशू'अ सुबह सवेरे उठा और काहिनों ने खुदावन्द का सन्दूक उठा लिया।¹³और वह सात काहिन मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के सन्दूक के आगे आगे बराबर चलते और नरसिंगे फूँकते जाते थे और वह हथियार लिए आदमी आगे आगे हो लिए और दुम्बाला खुदावन्द के सन्दूक के पीछे पीछे चला, और काहिन चलते चलते नरसिंगे फूँकते जाते थे।¹⁴और दूसरे दिन भी वह एक बार शहर के गिर्द घूम कर खेमागाह में फिर आए। उन्होंने छे दिन तक ऐसा ही किया।

¹⁵और सातवें दिन यूँ हुआ कि वह सुबह को पौ फटने के वक़्त उठे और उसी तरह शहर के गिर्द सात बार फिरे; सात बार शहर के गिर्द सिर्फ़ उसी दिन फिरे।

¹⁶और सातवीं बार ऐसा हुआ कि जब काहिनों ने नरसिंगे फूँके तो यशू'अ ने लोगों से कहा, " ललकारो! क्योंकि खुदावन्द ने यह शहर तुम को दे दिया है।

¹⁷और वह शहर और जो कुछ उस में है सब खुदावन्द की खातिर बर्बाद होगा। सिर्फ़ राहब कस्बी और जितने उसके साथ घर में हैं वह सब जीते बचेंगे, इसलिए कि उस ने उन क्रासिदों को जिनको हम ने भेजा छुपा रखा था।¹⁸और तुम बहरहाल अपने आप को मख्सूस की हुई चीज़ों से बचाए रखना, ऐसा न हो कि उनको मख्सूस करने के बा'द तुम किसी मख्सूस की हुई चीज़ को लो और यूँ इस्राईल की खेमागाह को ला'नती कर डालो और उसे दुख दो।¹⁹लेकिन सब चाँदी और सोना और बरतन जो पीतल और लोहे के हों खुदावन्द के लिए पाक हैं-इसलिए वह खुदावन्द के खज़ाने में दाखिल किये जाएँ। "

²⁰तब लोगों ने ललकारा और काहिनों ने नरसिंगे फूँके, और ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे की आवाज़ सुनी तो उन्होंने बुलंद आवाज़ से ललकारा और दीवार बिल्कुल गिर पड़ी और लोगों में से हर एक आदमी अपने सामने से चढ़ कर शहर में घुसा और उन्होंने उस को ले लिया।²¹और उन्होंने उन सब को जो शहर में थे क्या मर्द क्या 'औरत, क्या जवान क्या बुढ़े, क्या बैल क्या भेड़ क्या गधे सब को तलवार की धार से बिल्कुल हलाक कर दिया।

²²और यशू'अ ने उन दोनों आदमियों से जिन्होंने उस मुल्क की जासूसी की थी कहा कि उस कस्बी के घर जाओ, और वहाँ से जैसी तुम ने उस से क्रसम खाई है उसके मुताबिक़ उस 'औरत को और जो कुछ उसके पास है सब को निकाल लाओ।

²³तब वह दोनों जवान जासूस अन्दर गये और राहब को और उसके बाप और उसकी माँ और उसके भाइयों को, और उसके अस्बाब बल्कि उसके सारे खानदान को निकाल लाये, और उनको बनी इस्राईल की खेमागाह के बाहर बिठा दिया।²⁴फिर उन्होंने उस शहर को और जो कुछ उस में था सब को आग से फूँक दिया और सिर्फ़ चाँदी और सोने को और पीतल और लोहे के बरतनों को खुदावन्द के घर के खज़ाने में दाखिल किया।

²⁵लेकिन यशू'अ ने राहब कस्बी और उस के बाप के घराने को और जो कुछ उसका था सब को सलामत बचा लिया। उसकी रिहाइश आज के दिन तक इस्राईल में है, क्योंकि उस ने उन क्रासिदों को जिनको यशू'अ ने यरीहू में जासूसी के लिए भेजा था छिपा रखा था।

²⁶और यशू'अ ने उस वक़्त उन को क्रसम दे कर ताकीद की और कहा कि जो शख्स उठ कर इस यरीहू शहर को फिर बनाये वह खुदावन्द के सामने मला'ऊन हो। वह अपने पहलौठे को उसकी नींव डालते वक़्त और अपने सब से छोटे बेटे को उसके फाटक लगवाते वक़्त खो बैठेगा।²⁷इसलिए खुदावन्द यशू'अ के साथ था और उस सारे मुल्क में उसकी शोहरत फैल गयी।

Chapter 7

¹लेकिन बनी इस्राईल ने मख्सूस की हुई चीज़ में खयानत की, क्योंकि 'अकन बिन करमी बिन ज़ब्दी बिन ज़ारह ने जो यहूदाह के क़बीले का था उन मख्सूस की हुई चीज़ों में से कुछ ले लिया; ~इसलिए खुदावन्द का क्रहर बनी इस्राईल पर भड़का।

²और यशू'अ ने यरीहू से 'ए को जो बैतएल की पूरबी सिम्त में बैतआवन के क़रीब आबाद है, कुछ लोग यह कहकर भेजे, कि जाकर मुल्क का हाल दरियाफ़्त करो! और इन लोगों ने जाकर 'ए का हाल दरियाफ़्त किया।³और वह यशू'अ के पास लौटे और उस से कहा, " सब लोग न जाएँ सिर्फ़ दो तीन हज़ार मर्द चढ़ जाएँ और 'ए को मार लें। सब लोगों को वहाँ जाने की तकलीफ़ न दे, क्योंकि वह थोड़े से हैं"

⁴चुनाँचे लोगों में से तीन हज़ार मर्द के क़रीब वहाँ चढ़ गये, और 'ए के लोगों के सामने से भाग आए।⁵और 'ए के लोगों ने उन में से तक्ररीबन छत्तीस आदमी मार लिए; और फाटक के सामने से लेकर शबरीम तक उनको खदेड़ते आए और उतार पर उनको मारा। इसलिए उन लोगों के दिल पिघल कर पानी की तरह हो गये।

⁶तब यशू'अ और सब इस्राईली बुजुर्गों ने अपने अपने कपड़े फाड़े और खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे शाम तक ज़मीन पर औंधे पड़े रहे, और अपने अपने सर पर खाक डाली।⁷और यशू'अ ने कहा, " हाय ऐ मालिक खुदावन्द! तू हमको अमोरियों के हाथ में हवाला करके, हमारा नास कराने की खातिर इस क़ौम को यरदन के इस पार क्यों लाया? काश कि हम सब्र करते और यरदन के उस पार ही ठहरे रहते।

⁸ऐ मालिक, इस्राईलियों के अपने दुश्मनों के आगे पीठ फेर देने के बा'द मैं क्या कहूँ!।⁹क्योंकि कना'नी और इस मुल्क के सब बाशिन्दे यह सुन कर हम को घेर लेंगे, और हमारा नाम मिटा डालेंगे। फिर तू अपने बुजुर्ग नाम के लिए क्या करेगा?"

¹⁰और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, " उठ खड़ा हो। तू क्यों इस तरह औंधा पड़ा है?"¹¹इस्राईलियों ने गुनाह किया, और उन्होंने उस 'अहद को जिसका मैंने उनको हुक्म दिया तोड़ा है; उन्होंने मख्सूस की हुई चीज़ों में से कुछ ले भी लिया, और चोरी भी की और रियाकारी भी की और अपने सामान में उसे मिला भी लिया है।

¹²इस लिए बनी इस्राईल अपने दुश्मनों के आगे ठहर नहीं सकते। वह अपने दुश्मनों के आगे पीठ फेरते हैं, क्योंकि वह मल'ऊन हो गये मैं आगे को तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा, जब तक तुम मख्सूस की हुई चीज़ को अपने बीच से मिटा न दो।

¹³उठ लोगों को पाक कर और कह कि तुम अपने को कल के लिए पाक करो, क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ इस्राईलियों! तुम्हारे बीच मख्सूस की हुई चीज़ मौजूद है तुम अपने दुश्मनों के आगे ठहर नहीं सकते जब तक तुम उस मख्सूस की हुई चीज़ को अपने बीच से दूर न कर दो। "

¹⁴इसलिए तुम कल सुबह को अपने क़बीले के मुताबिक़ हाज़िर किये जाओगे; और जिस क़बीले को खुदावन्द पकड़े वह एक एक खानदान कर के पास आए; और जिस खानदान को खुदावन्द पकड़े वह एक एक घर कर के पास आए; और जिस घर को खुदावन्द पकड़े वह एक-एक आदमी करके पास आए।¹⁵तब जो कोई मख्सूस की हुई चीज़ रखता हुआ पकड़ा जाये, वह और जो कुछ उसका हो सब आग से जला दिया जाये; इस लिए कि उस ने खुदावन्द के 'अहद को तोड़ डाला और बनी इस्राईल के बीच शरारत का काम किया।

¹⁶तब यशू'अ ने सुबह सवेरे उठ कर इस्राईलियों को क़बीला बा क़बीला हाज़िर किया, और यहूदाह का क़बीला पकड़ा गया।¹⁷फिर वह यहूदाह के खानदानों को नज़दीक लाया, और ज़ारह का खानदान पकड़ा गया। फिर वह ज़ारह के खानदान के एक एक आदमी को नज़दीक लाया, और ज़ब्दी पकड़ा गया।¹⁸फिर वह उसके घराने के एक एक आदमी को नज़दीक लाया, और 'अकन बिन करमी बिन ज़ब्दी बिन ज़ारह जो यहूदाह के क़बीले का था पकड़ा गया।

¹⁹तब यशू'अ ने 'अकन से कहा, " ऐ मेरे फ़र्जन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तमजीद कर और उसके आगे इक्रार कर, अब तू मुझे बता दे कि तूने क्या किया है और मुझ से मत छिपा। "²⁰और 'अकन ने यशू'अ को जवाब दिया, " हक़ीक़त में मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा का गुनाह किया है, और यह यह मुझ से सरज़द हुआ है।²¹कि जब मैंने लूट के माल में बाबुल की एक नफ़ीस चादर, और दो सौ मिस्काल चाँदी और पचास मिस्काल सोने की एक ईंट देखी तो मैंने ललचा कर उन को ले लिया; और देख वह मेरे खेमे में ज़मीन में छिपाई हुई है और चाँदी उनके नीचे है। "

²²तब यशू'अ ने क़ासिद भेजे; वह उस डेरे को दौड़े गये, और क्या देखा कि वह उसके डेरे में छिपाई हुई है और चाँदी उनके नीचे है।²³वह उनको डेरे में से निकाल कर यशू'अ और सब बनी इस्राईल के पास लाये, और उनको खुदावन्द के सामने रख दिया।

²⁴तब यशू'अ और सब इस्राईलियों ने ज़ारह के बेटे 'अकन को, और उस चाँदी और चादर और सोने की ईंट को, और उसके बेटों और बेटियों को, और उसके बैलों और गधों और भेड़ बकरियों और डेरे को, और जो कुछ उसका था सबको लिया और वादी-ए-अकूर में उनको ले गये।

²⁵और यशू'अ ने कहा कि तूने हम को क्यों दुख दिया? खुदावन्द आज के दिन तुझे दुख देगा! तब सब इस्राईलियों ने उसे संगसार किया; और उन्होंने उनको आग में जलाया और उनको पत्थरों से मारा।²⁶और उन्होंने उसके पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक है तब खुदावन्द अपने क्रहर-ए-शदीद से बा'ज़ आया। इस लिए उस जगह का नाम आज तक वादी-ए-'अकूर है।

Chapter 8

¹और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, " खौफ न खा और न हिरासाँ हो सब जंगी मर्दों को साथ ले और उठ कर 'ए पर चढ़ाई कर देख मैंने 'ए के बादशाह और उसकी क्रौम और उसके शहर और उसके 'इलाक़े को तेरे क़ब्ज़े में कर दिया है।² और तू 'ए और उसके बादशाह से वही करना जो तूने यरीहू और उसके बादशाह से किया। सिर्फ़ वहाँ के माल-ए-गनीमत और चौपायों को तुम अपने लिए लूट के तौर पर ले लेना। इसलिए तू उस शहर के लिए उसी के पीछे अपने आदमी घात में लगा दे। "

³तब यशू'अ और सब जंगी मर्द 'ए पर चढ़ाई करने को उठे; और यशू'अ ने तीस हज़ार मर्द जो ज़बरदस्त सूरमा थे, चुन कर रात ही को उनको रवाना किया।

⁴और उनको यह हुक्म दिया कि देखो! तुम उस शहर के मुकाबिल शहर ही के पीछे घात में बैठना; शहर से बहुत दूर न जाना बल्कि तुम सब तैयार रहना।

⁵और मैं उन सब आदमियों को लेकर जो मेरे साथ हैं, शहर के नज़दीक आऊँगा; और ऐसा होगा कि जब वह हमारा सामना करने को पहले की तरह निकल आएंगे, तो हम उनके सामने से भागेंगे।⁶ और वह हमारे पीछे पीछे निकल चले आयेंगे, यहाँ तक कि हम उनको शहर से दूर निकाल ले जायेंगे; क्योंकि वह कहेंगे कि यह तो पहले की तरह हमारे सामने से भागे जाते हैं; -इसलिए हम उनके आगे से भागेंगे।⁷ और तुम घात में से उठ कर शहर पर क़ब्ज़ा कर लेना, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा उसे तुम्हारे क़ब्ज़े में कर देगा।

⁸और जब तुम उस शहर को ले लो तो उसे आग लगा देना; खुदावन्द के कहने के मुताबिक़ काम करना। देखो, मैंने तुमको हुक्म कर दिया।⁹ और यशू'अ ने उनको रवाना किया, और वह आराम गाह में गये और बैत एल और 'ए के पश्चिम की तरफ़ जा बैठे; लेकिन यशू'अ उस रात को लोगों के बीच टिका रहा।

¹⁰और यशू'अ ने सुबह सवेरे उठ कर लोगों की मौजूदात ली, और वह बनी इस्राईल के बुजुर्गों को साथ लेकर लोगों के आगे आगे 'ए की तरफ़ चला।¹¹ और सब जंगी मर्द जो उसके साथ थे चले, और नज़दीक पहुँचकर शहर के सामने आए और 'ए के उत्तर में डेरे डाले, और यशू'अ और 'ए के बीच एक वादी थी।¹² तब उस ने कोई पाँच हज़ार आदमियों को लेकर बैतएल और 'ए के बीच शहर के पश्चिम की तरफ़ उनको आराम गाह में बिठाया।

¹³इसलिए उन्होंने लोगों को या'नी सारी फ़ौज जो शहर के उत्तर में थी, और उनको जो शहर की पश्चिमी तरफ़ घात में थे ठिकाने पर कर दिया; और यशू'अ उसी रात उस वादी में गया।¹⁴ और जब 'ए के बादशाह ने देखा, तो उन्होंने जल्दी की और सवेरे उठे और शहर के आदमी या'नी वह और उसके सब लोग निकल कर मु'अय्यन वक़्त पर लड़ाई के लिए बनी इस्राईल के मुकाबिल मैदान के सामने आए; और उसे ख़बर न थी कि शहर के पीछे उसकी घात में लोग बैठे हुए हैं।

¹⁵तब यशू'अ और सब इस्राईलियों ने ऐसा दिखाया, गोया उन्होंने उन से शिकस्त खाई और वीराने के रास्ते होकर भागे।¹⁶ और जितने लोग शहर में थे वह उनका पीछा करने के लिए बुलाये गये; और उन्होंने यशू'अ का पीछा किया और शहर से दूर निकले चले गये।¹⁷ और 'ए और बैतएल में कोई आदमी बाक़ी न रहा जो इस्राईलियों के पीछे न गया हो; और उन्होंने शहर को खुला छोड़ कर इस्राईलियों का पीछा किया।

¹⁸तब खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि जो बरछा तेरे हाथ में है उसे 'ए की तरफ़ बढ़ा दे, क्योंकि मैं उसे तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा और यशू'अ ने उस बरछे को जो उसके हाथ में था शहर की तरफ़ बढ़ाया।¹⁹ तब उसके हाथ बढ़ाते ही जो घात में थे अपनी जगह से निकले, और दौड़ कर शहर में दाख़िल हुए और उसे सर कर लिया, और जल्द शहर में आग लगा दी।

²⁰और जब 'ए के लोगों ने पीछे मुड़ कर नज़र की, तो देखा, कि शहर का धुंआ आसमान की तरफ़ उठ रहा है और उनका बस न चला कि वह इधर या उधर भागें, और जो लोग वीराने की तरफ़ भागे थे वह पीछा करने वालों पर उलट पड़े।²¹ और जब यशू'अ और सब इस्राईलियों ने देखा कि घात वालों ने शहर ले लिया और शहर का धुंआ उठ रहा है, तो उन्होंने पलट कर 'ए के लोगों को क़त्ल किया।

²²और वह दूसरे भी उनके मुकाबले को शहर से निकले; इसलिए वह सब के सब इस्राईलियों के बीच में, जो कुछ तो इधर और उधर थे पड़ गये, और उन्होंने उनको मारा यहाँ तक कि किसी को न बाक़ी छोड़ा न भागने दिया।²³ और वह 'ए के बादशाह को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके यशू'अ के पास लाये।

²⁴और जब इस्राईली 'ए के सब बाशिंदों को मैदान में उस वीराने के बीच जहाँ उन्होंने इनका पीछा किया था क़त्ल कर चुके, और वह सब तलवार से मारे गये यहाँ तक कि बिल्कुल फ़ना हो गये, तो सब इस्राईली 'ए को फिरे और उसे बर्बाद कर दिया।²⁵ चुनौचे वह जो उस दिन मारे गये, मर्द 'औरत मिला कर बारह हज़ार या'नी 'ए के सब लोग थे।²⁶ क्योंकि यशू'अ ने अपना हाथ जिस से वह बरछे को बढ़ाये हुए था नहीं खींचा, जब तक कि उस ने 'ए के सब रहने वालों को बिल्कुल हलाक न कर डाला।

²⁷और इस्राईलियों ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़, जो उस ने यशू'अ को दिया था अपने लिए सिर्फ़ शहर के चौपायों और माल-ए-गनीमत को लूट में लिया।

²⁸तब यशू'अ ने 'ए को जला कर हमेशा के लिए उसे एक ढेर और वीराना बना दिया, जो आज के दिन तक है।

²⁹और उस ने 'ए के बादशाह को शाम तक दरख़्त पर टांग रखा; और जूँ ही सूरज डूबने लगा, उन्होंने यशू'अ के हुक्म से उसकी लाश को दरख़्त से उतार कर शहर के फाटक के सामने डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया जो आज के दिन तक है।

³⁰तब यशू'अ ने कोह-ए-'एबाल पर खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए एक मज़बूह बनाया।³¹ जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया था, और जैसा मूसा की शरी'अत की किताब में लिखा है; यह मज़बूह बे खड्डे पत्थरों का था जिस पर किसी ने लोहा नहीं लगाया था, और उन्होंने उस पर खुदावन्द के सामने सोखतनी कुर्बानियाँ और सलामती के ज़बीहे पेश किये।³² और उस ने वहाँ उन पत्थरों पर मूसा की शरी'अत की जो उस ने लिखी थीं, सब बनी इस्राईल के सामने एक नक़ल कन्दा की।

³³और सब इस्राईली और उनके बुजुर्ग और मनसबदार और क़ाज़ी, या'नी देसी और परदेसी दोनों लावी काहिनों के आगे जो खुदावन्द के आगे, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले थे, सन्दूक के इधर और उधर खड़े हुए। इन में से आधे तो कोह-ए-गरज़ीम के मुकाबिल थे जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने पहले हुक्म दिया था कि वह इस्राईली लोगों को बरकत दें।

³⁴इसके बा'द उस ने शरी'अत की सब बातें, या'नी बरकत और ला'नत जैसी वह शरी'अत की किताब में लिखी हुई हैं, पढ़ कर सुनायीं।³⁵ चुनाँचे जो कुछ मूसा ने हुक्म दिया था, उस में से एक बात भी ऐसी न थी जिसे यशू'अ ने बनी इस्राईल की सारी जमा'अत, और 'औरतों और बाल बच्चों और उन मुसाफ़ि़रों के सामने जो उनके साथ मिल कर रहते थे न पढ़ा हो।

Chapter 9

¹और जब उन सब हिन्दी, अमोरी, कना'नी, फ़रिज़्ज़ी, हव्वी और यबूसी बादशाहों ने जो यरदन के उस पार पहाड़ी मुल्क और नशेब की ज़मीन और बड़े समन्दर के उस साहिल पर जो लुबनान के सामने है रहते थे यह सुना।²तो वह सब के सब इकट्ठा हुए ताकि मुत्तफ़ि़क़ हो कर यशू'अ और बनी इस्राईल से जंग करें।

³और जब जिबा'ऊन के बाशिंदों ने सुना कि यशू'अ ने यरीहू और 'ए से क्या क्या किया है।⁴तो उन्होंने भी हीला बाज़ी की और जाकर सफ़ीरों का भेस भरा, और पुराने बोरे और पुराने फटे हुए और मरम्मत किये हुए शराब के मश्कीज़े अपने गधों पर लादे।⁵और पाँव में पुराने पैवन्द लगे हुए जूते और तन पर पुराने कपड़े डाले, और उनके सफ़र का खाना सूखी फफूँदी लगी हुई रोटियां थीं।

⁶और वह जिल्लाल में खेमागाह को यशू'अ के पास जाकर उस से और इस्राईली मदों से कहने लगे, "हम एक दूर मुल्क से आये हैं; इसलिए अब तुम हम से 'अहद बाँधो।" ⁷तब इस्राईली मदों ने उन हव्वियों से कहा, कि शायद तुम हमारे बीच ही रहते हो; फिर हम तुम से क्यूँकर 'अहद बाँधें ?⁸उन्होंने यशू'अ से कहा, " हम तेरे खादिम हैं। तब यशू'अ ने उन से पूछा, " तुम कौन हो और कहाँ से आए हो ?"

⁹उन्होंने ने उस से कहा, " तेरे खादिम एक बहुत दूर मुल्क से खुदावन्द तेरे खुदा के नाम के ज़रिये आए हैं क्योंकि हम ने उसकी शोहरत और जो कुछ उस ने मिस्र में किया।¹⁰और जो कुछ उस ने अमोरियों के दोनों बादशाहों से जो यरदन के उस पार थे, या'नी हसबून के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह 'ओज़ से जो असतारात में था किया सब सुना है।

¹¹इसलिए हमारे बुजुर्गों और हमारे मुल्क के सब बाशिंदों ने हम से यह कहा कि तुम सफ़र के लिए अपने हाथ में खाना ले लो और उन से मिलने को जाओ और उन से कहो कि हम तुम्हारे खादिम हैं~इसलिए ~तुम अब हमारे साथ 'अहद बाँधो।¹²जिस दिन हम तुम्हारे पास आने को निकले हमने अपने अपने घर से अपने खाने की रोटी गरम गरम ली, और अब देखो वह सूखी है और उसे फफूँदी लग गई।¹³और मय के यह मश्कीज़े जो हम ने भर लिए थे नये थे, और देखो यह तो फट गये; और यह हमारे कपड़े और जूते दूर-ओ-दराज़ सफ़र की वजह से पुराने हो गये।

¹⁴तब इन लोगों ने उनके खाने में से कुछ लिया और खुदावन्द से मशवरत न की।¹⁵और यशू'अ ने उन से सुलह की और उनकी जान बख़्शी करने के लिए उन से 'अहद बाँधा, और जमा'अत के अमीरों ने उन से क्रसम खाई।

¹⁶और उनके साथ 'अहद बाँधने से तीन दिन के बा'द उनके सुनने में आया, कि यह उनके पड़ोसी हैं और उनके बीच ही रहते हैं।¹⁷और बनी इस्राईल खाना हो कर तीसरे दिन उनके शहरों में पहुँचे; जिबा'ऊन और कफ़ीरह और बैरूत और क़रयत या'रीम उनके शहर थे।

¹⁸और बनी इस्राईल ने उनको क़त्ल न किया इसलिए कि जमा'अत के अमीरों ने उन से खुदावन्द इस्राईल के खुदा की क्रसम खाई थी; और सारी जमा'अत उन अमीरों पर कुड़कुड़ाने लगी।¹⁹लेकिन उन सब अमीरों ने सारी जमा'अत से कहा कि हम ने उन से खुदावन्द इस्राईल के खुदा की क्रसम खाई है, इसलिए हम उन्हें छू नहीं सकते।

²⁰हम उन से यही करेंगे और उनको जीता छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस क्रसम की वजह से जो हम ने उन से खाई है, हम पर ग़ज़ब टूटे।²¹इसलिए अमीरों ने उन से यही कहा कि उनको जीता छोड़ो। तब वह सारी जमा'अत के लिए लकड़हारे और पानी भरने वाले बने जैसा अमीरों ने उन से कहा था।

²²तब यशू'अ ने उनको बुलवा कर उन से कहा जिस हाल कि तुम हमारे बीच रहते हो, तुम ने यह कह कर हमको क्यूँ फ़रेब दिया कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं ?²³इसलिए अब तुम ला'नती ठहरे, और तुम में से कोई ऐसा न रहेगा जो गुलाम या'नी मेरे खुदा के घर के लिए लकड़हारा और पानी भरने वाला न हो।

²⁴उन्होंने यशू'अ को जवाब दिया कि तेरे खादिमों को तहक़ीक़ यह ख़बर मिली थी, कि खुदावन्द तेरे खुदा ने अपने बन्दे मूसा को फ़रमाया कि सारा मुल्क तुमको दे और उस मुल्क के सब बाशिंदों को तुम्हारे सामने से हलाक करे। इसलिए हमको तुम्हारी वजह से अपनी अपनी जानों के लाले पड़ गये, इस लिए हम ने यह काम किया।²⁵और अब देख, हम तेरे हाथ में हैं जो कुछ तू हम से करना भला और ठीक जाने सो कर।

²⁶फिर उसने उन से वैसा ही किया, और बनी इस्राईल के हाथ से उनको ऐसा बचाया कि उन्होंने उनको क़त्ल न किया।²⁷और यशू'अ ने उसी दिन उनको जमा'अत के लिए और उस मुक़ाम पर जिसे खुदावन्द खुद चुने उसके मज़बह के लिए, लकड़हारे और पानी भरने वाले मुक़र्रर किया जैसा आज तक है

Chapter 10

¹और जब यरुशलीम के बादशाह अदूनी सिदक ने सुना कि यशू'अ ने 'ए को सर करके उसे हलाक कर दिया और जैसा उस ने यरीहू और वहाँ के बादशाह से किया वैसा ही 'ए और उसके बादशाह से किया; और जिबा'ऊन के बाशिंदों ने बनीइसाईल से सुलह कर ली और उनके बीच रहने लगे हैं।²तो वह सब बहुत ही डरे, क्योंकि जिबा'ऊन एक बड़ा शहर बल्कि बादशाही शहरों में से एक की तरह और 'ए से बड़ा था और उसके सब मर्द बड़े बहादुर थे।

³इस लिए यरुशलीम के बादशाह अदूनी सिदक ने हबरून के बादशाह हुहाम , और यरमूत के बादशाह पीराम, और लकीस के बादशाह याफ़ी' और अजलून के बादशाह दबीर को यूँ कहला भेजा कि।⁴मेरे पास आओ और मेरी मदद करो और चलो हम जिबा'ऊन को मारें; क्योंकि उस ने यशू'अ और बनीइसाईल से सुलह कर ली है।

⁵इसलिए अमोरियों के पाँच बादशाह, या'नी यरुशलीम का बादशाह और हबरून का बादशाह और यरमूत का बादशाह और लकीस का बादशाह और 'अजलून का बादशाह इकट्ठे हुए; और उन्होंने अपनी सब फ़ौजों के साथ चढ़ाई की और जिबा'ऊन के मुक़ाबिल डेरे डाल कर उस से जंग शुरू' की।

⁶तब जिबा'ऊन के लोगों ने यशू'अ को जो जिलजाल में खेमाज़न था कहला भेजा कि अपने खादिमों की तरफ़ से अपना हाथ मत खींच। जल्द हमारे पास पहुँच कर हमको बचा और हमारी मदद कर, इसलिए कि सब अमूरी बादशाह जो पहाड़ी मुल्क में रहते हैं हमारे खिलाफ़ इकट्ठे हुए हैं।⁷तब यशू'अ सब जंगी मर्दों और सब ज़बरदस्त सूरमाओं को हमराह लेकर जिलजाल से चल पड़ा।

⁸और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, " उन से न डर इस लिए कि मैंने उनको तेरे क़ब्ज़े में कर दिया है; उन में से एक आदमी भी तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा। "

⁹तब यशू'अ रातों रात जिलजाल से चल कर अचानक उन पर आ पड़ा।¹⁰और खुदावन्द ने उनको बनीइसाईल के सामने शिकस्त दी; और उस ने उनको जिबा'ऊन में बड़ी खून रेज़ी के साथ क़त्ल किया और बैत हौरून की चढ़ाई के रास्ते पर उनको दौड़ाया और 'अज़ीक्राह और मुक्क़ैदा तक उनको मारता गया।

¹¹और जब वह इस्राईलियों के सामने से भागे और बैतहौरून के उतार पर थे, तो खुदावन्द ने 'अज़ीक्राह तक आसमान से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाए और वह मर गये; और जो ओलों से मरे वह उनसे जिनको बनीइसाईल ने तलवार से मारा कहीं ज़्यादा थे।

¹²और उस दिन जब खुदावन्द ने अमोरियों को बनीइसाईल के क़ाबू में कर दिया यशू'अ ने खुदावन्द के हुज़ूर बनी इस्राईल के सामने यह कहा कि, ऐ सूरज तू जिबा'ऊन पर और ऐ चाँद! तू वादी-ए-अयालून में ठहरा रह।

¹³और सूरज ठहर गया और चाँद थमा रहा। जब तक क्रौम ने अपने दुश्मनों से अपना इन्तिक़ाम न ले लिया। क्या यह आशर की किताब में नहीं लिखा है? और सूरज आसमान के बीचो बीच ठहरा रहा, और तक्ररीबन सारे दिन डूबने में जल्दी न की।¹⁴और ऐसा दिन कभी उस से पहले हुआ और न उसके बाद, जिस में खुदावन्द ने किसी आदमी की बात सुनी हो; क्योंकि खुदावन्द इस्राईलियों की खातिर लड़ा।

¹⁵फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली जिलजाल को खेमागाह में लौटे।¹⁶और वह पाँचों बादशाह भाग कर मुक्क़ैदा के गार में जा छिपे।¹⁷और यशू'अ को यह ख़बर मिली कि वह पाँचों बादशाह मुक्क़ैदा के गार में छिपे हुए मिले हैं।

¹⁸यशू'अ ने हुक्म किया कि बड़े बड़े पत्थर उस गार के मुँह पर लुढ़का दो और आदमियों को उसके पास उनकी निगहबानी के लिए बिठा दो।¹⁹लेकिन तुम न रुको, तुम अपने दुश्मनों का पीछा करो और उन में के जो जो पीछे रह गए ~हैं उनको मार डालो, उनको मोहलत न दो कि वह अपने अपने शहर में दाखिल हों; इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने उनको तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया है।

²⁰और जब यशू'अ और बनी इस्राईल बड़ी ख़ूँरेज़ी के साथ उनको क़त्ल कर चुके, यहाँ तक कि वह हलाक-ओ-बर्बाद हो गये; और वह जो उन में से बाक़ी बचे फ़सील दार शहरों में दाखिल हो गये।²¹तो सब लोग मुक्क़ैदा में यशू'अ के पास लश्कर गाह को सलामत लौटे, और किसी ने बनीइसाईल में से किसी के बरखिलाफ़ ज़बान न हिलाई।

²²फिर यशू'अ ने हुक्म दिया कि गार का मुँह खोलो और उन पाँचों बादशाहों को गार से बाहर निकाल कर मेरे पास लाओ²³उन्होंने ऐसा ही किया और वह पाँचों बादशाहों को या'नी शाह यरुशलीम और शाह-ए-हबरोन और शाह-ए-यारमोत और शाह-ए-लकीस और शाह-ए-अजलून को गार से निकाल कर उसके पास लाये।

²⁴और जब वह उनको यशू'अ के सामने लाये तो यशू'अ ने सब इस्राईलियों को बुलवाया और उन जंगी मर्दों के सरदारों से जो उसके साथ गये थे यह कहा कि नज़दीक आकर अपने अपने पाँव इन बादशाहों की गरदनों पर रखो।²⁵और यशू'अ ने उन से कहा खौफ़ न करो और हिरासों मत हो मज़बूत हो जाओ और हौसला रखो इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे सब दुश्मनों से जिनका मुक़ाबिला तुम करोगे ऐसा ही करेगा।

²⁶इसके बाद यशू'अ ने उनको मारा और क़त्ल किया और पाँच दरख्तों पर उनको टांग दिया। इसलिए वह शाम तक दरख्तों पर टंगे रहे।²⁷और सूरज डूबते वक़्त उन्होंने यशू'अ के हुक्म से उनको दरख्तों पर से उतार कर उसी गार में जिस में वह जा छिपे थे डाल दिया, और गार के मुँह पर बड़े बड़े पत्थर रख दिए जो आज तक हैं।

²⁸और उसी दिन यशू'अ ने मुक्क़ैदा को घेर कर के उसे हलाक किया, और उसके बादशाह को और उसके सब लोगों को बिल्कुल हलाक कर डाला और एक भी बाक़ी न छोड़ा; और मुक्क़ैदा के बादशाह से उसने वही किया जो यरीहू के बादशाह से किया था।

²⁹फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली मुक्क़ैदा से लिबनाह को गये, और वह लिबनाह से लड़ा।³⁰और खुदावन्द ने उसको भी और उसके बादशाह को भी बनीइसाईल के क़ब्ज़े में कर दिया; और उस ने उसे और उसके सब लोगों को हलाक किया और एक को भी बाक़ी न छोड़ा, और वहाँ के बादशाह से वैसा ही किया जो यरीहू के बादशाह से किया था।

³¹फिर लिबनाह से यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली लकीस को गये और उसके मुक़ाबिल डेरे डाल लिए और वह उस से लड़ा।³²और खुदावन्द ने लकीस को इस्राईल के क़ब्ज़े में कर दिया उस ने दूसरे दिन उस पर फ़तह पायी और उसे हलाक किया और सब लोगों को जो उस में थे क़त्ल किया जिस तरह उस ने लिबनाह से किया था।

³³उस वक्रत जज़र का बादशाह हरम लकीस को मदद करने को आया-इसलिए यशू'अ ने उसको और उसके आदमियों को मारा यहाँ तक कि उसका एक भी जीता न छोड़ा। |

³⁴और यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली लकीस से 'अजलून को गये और उसके मुक्काबिल डेरे डालकर उस से जंग शुरू' की | ³⁵और उसी दिन उसे घेर लिया उसे हलाक किया और उन सब लोगों को जो उस में थे उस ने उसी दिन बिल्कुल हलाक कर डाला जैसा उस ने लकीस से किया था।

³⁶फिर 'अजलून से यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली हबरून को गये और उस से लड़े | ³⁷और उन्होंने उसे घेर करके उसे और उसके बादशाह और उसकी सब बस्तियों और वहाँ के सब लोगों को बर्बाद किया और जैसा उस ने 'अजलून से किया था एक को भी जीता न छोड़ा बल्कि उसे और वहाँ के सब लोगों को बिल्कुल हलाक कर डाला।

³⁸फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली दबीर को लौटे और उससे लड़े | ³⁹और उसने उसे और उसके बादशाह और उसकी सब बस्तियों को फ़तह कर लिया और उन्होंने उनको बर्बाद किया और सब लोगों को जो उस में थे बिल्कुल हलाक कर दिया उसने एक को भी बाक़ी न छोड़ा जैसा उसने हबरून और उसके बादशाह से किया था वैसा ही दबीर और उसके बादशाह से किया, ऐसा ही उस ने लिबनाह और उसके बादशाह से भी किया था।

⁴⁰तब यशू'अ ने सारे मुल्क को या'नी पहाड़ी मुल्क और दख्खिनी हिस्सा और नशीब की ज़मीन और ढलानों और वहाँ के सब बादशाहों को मारा। उस ने एक को भी जीता न छोड़ा बल्कि वहाँ के हर इन्सान को जैसा खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने हुक्म किया था बिल्कुल हलाक कर डाला। ⁴¹और यशू'अ ने उनको क़ादिस बरनी' से लेकर ग़ज़ा तक और जशन के सारे मुल्क के लोगों को जिबा'ऊन तक मारा।

⁴²और यशू'अ ने उन सब बादशाहों पर और उनके मुल्क पर एक ही वक्रत में क़ब्ज़ा हासिल किया इसलिए कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा इस्राईल की खातिर लड़ा। ⁴³फिर यशू'अ और सब इस्राईली उसके साथ जिल्जाल को खेमागाह में लौटे।

Chapter 11

¹जब हसूर के बादशाह याबीन ने यह सुना तो उस ने मदन के बादशाह यूआब और समरून के बादशाह और इक्शाफ के बादशाह को।²और उन बादशाहों को जो उत्तर की तरफ पहाड़ी मुल्क और किन्नरत के दख्खिनी मैदान और नशेब की ज़मीन और पश्चिम की तरफ डोर की मुर्तफ़ा ज़मीन में रहते थे।³और पूरबी और पश्चिम के कना'नियों और अमूरीयों और हितियों और फ़रिज़ियों और पहाड़ी मुल्क के यबूसियों और हव्वियों को जो हरमून के नीचे मिसफ़ाह के मुल्क में रहते थे बुलवा भेजा।

⁴तब वह और उनके साथ उनके लश्कर या'नी एक बड़ी भीड़ जो ता'दाद में समन्दर के किनारे की रेत की तरह ~थे बहुत से घोड़ों और रथों को साथ लेकर निकले।⁵और यह सब बादशाह मिलकर आए और उन्होंने मेरूम की झील पर इकठ्ठे डेरे डाले ताकि इस्राईलियों से लड़ें।

⁶तब खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि उन से न डरो क्योंकि कल इस वक़्त मैं उन सब को इस्राईलियों के सामने मार कर डाल दूँगा तू उनके घोड़ों की कूचें काट डालना और उनके रथ आग से जला देना।⁷चुनोंचे यशू'अ और सब जंगी मर्द उसके साथ मेरूम की झील पर अचानक उनके मुक्काबिले को आए और उन पर टूट पड़े।

⁸और खुदावन्द ने उनको इस्राईलियों के क्रब्जे में कर दिया~इसलिए उन्होंने उनको मारा और बड़े सैदा और मिसरफ़ात अलमाइम और पूरब में मिसफ़ाह की वादी तक उनको दौड़ाया और क़त्ल किया यहाँ तक कि उन में से एक भी बाक़ी न छोड़ा।⁹और यशू'अ ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक़ उन से किया कि उनके घोड़ों की कूचें काट डालीं और उनके रथ आग से जला दिए।

¹⁰फिर यशू'अ उसी वक़्त लौटा और उस ने हसूर को घेर करके उसके बादशाह को तलवार से मारा, क्योंकि अगले वक़्त में हसूर उन सब सल्लतनों का सरदार था।¹¹और उन्होंने उन सब लोगों को जो वहाँ थे तहस नहस ~करके उनको, बिल्कुल हलाक कर दिया; वहाँ कोई आदमी बाक़ी न रहा, फिर उस ने हसूर को आग से जला दिया।

¹²और यशू'अ ने उन बादशाहों के सब शहरों को और उन शहरों के सब बादशाहों को लेकर और उनको तहस नहस कर के बिल्कुल हलाक कर दिया, जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने हुक्म किया था।¹³लेकिन जो शहर अपने टीलों पर बने हुए थे उन में से किसी को इस्राईलियों ने नहीं जलाया, सिवा हसूर के जिसे यशू'अ ने फूँक दिया था।

¹⁴और उन शहरों के तमाम माल-ए-गनीमत और चौपायों को बनीइसाईल ने अपने वास्ते लूट में ले लिया, लेकिन हर एक आदमी को तलवार की धार से क़त्ल किया, यहाँ तक कि उनको ख़त्म ~कर दिया और एक आदमी ~को भी न छोड़ा।¹⁵जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दे मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही मूसा ने यशू'अ को हुक्म दिया, और यशू'अ ने वैसा ही किया; और जो हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया था उन में से किसी को उस ने बग़ैर पूरा किये न छोड़ा।

¹⁶इसलिए ~यशू'अ ने उस सारे मुल्क को, या'नी पहाड़ी मुल्क, और सारे दख्खिनी हिस्से और जशन के सारे मुल्क, और नशेब की ज़मीन, और मैदान और इस्राईलियों के पहाड़ी मुल्क, और उसी के नशेब की ज़मीन, |¹⁷कोह-ए-ख़ल्क से लेकर जो सि'ईर की तरफ़ जाता है, बा'ल जद् तक जो वादी-ए-लुबनान में कोह-ए-हरमून के नीचे है सब को ले लिया, और उनके बादशाहों पर फ़तह हासिल करके उस ने उनको मारा और क़त्ल किया।

¹⁸और यशू'अ मुद्दत तक उन सब बादशाहों से लड़ता रहा।¹⁹सिवा हव्वियों के जो जिबा'ऊन के बाशिंदे थे और किसी शहर ने बनीइसाईल से सुलह नहीं की, बल्कि ~सब को उन्होंने लड़ कर फ़तह किया।²⁰क्योंकि यह खुदावन्द ही की तरफ़ से था कि वह उनके दिलों को ऐसा सख़्त कर दे कि वह जंग में इस्राईल का मुक्काबला करें ताकि वह उनको बिल्कुल हलाक कर डाले और उन पर कुछ मेहरबानी न हो बल्कि वह उनको बर्बाद ~कर दे, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था।

²¹फिर उस वक़्त यशू'अ ने आकर, अनाक़ीम की पहाड़ी मुल्क, या'नी हबरून और दबीर और 'अनाब से बल्कि यहूदाह के सारे पहाड़ी मुल्क और इस्राईल के सारे पहाड़ी मुल्क से काट डाला; यशू'अ ने उनको उनके शहरों के साथ बिल्कुल हलाक कर दिया।²²इसलिए ~अ'नाक़ीम में मैं से कोई बनीइसाईल के मुल्क में बाक़ी न रहा, सिर्फ़ गज़ज़ा और जात और अशदूद में थोड़े से बाक़ी रहे।

²³तब जैसा खुदावन्द ने मूसा से कहा था, उसके मुताबिक़ यशू'अ ने सारे मुल्क को लिया यशू'अ ने उसे इस्राईलियों को उनके क़बीलों के हिस्से ~के मुवाफ़िक़ मीरास के तौर पर दिया, और मुल्क को जंग से फरागत मिली।

Chapter 12

¹उस मुल्क के वह बादशाह जिनको बनीइसाईल ने क़त्ल करके उनके मुल्क पर, यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ अरनोन की वादी से लेकर कोह-ए-हरमून तक और तमाम पूरबी मैदान पर, क़ब्ज़ा कर लिया यह हैं ~|²अमूरियों का बादशाह सीहून जो हसबून में रहता था और 'अरो'ईर से लेकर जो वादी-ए-अरनून के किनारे है, और उस वादी के बीच के शहर से वादी-ए-यब्बूक तक जो बनी 'अम्मून की सरहद है आधे जिल'आद पर, |

³और मैदान से बहरे-ए-किन्नरत तक जो पूरब की तरफ़ है, बल्कि पूरब ही की तरफ़ बैत यसीमोत से होकर मैदान के दरिया तक जो दरयाई शोर है, और दख्खिन में पिसगा के दामन के नीचे नीचे हुकूमत करता था|⁴और बसन के बादशाह 'ऊज़ की सरहद , जो रफ़ाईम की बक्रिया नसल से था और 'असतारात और अदर'ई में रहता था, |⁵और वह कोह-ए-हरमून और सिल्का और सारे बसन में जसूरियों और मा'कातियों की सरहद तक, आधे जिल'आद में जो हसबून के बादशाह सीहून की सरहद थी, हुकूमत करता था|

⁶उनको खुदावन्द के बन्दे मूसा और बनीइसाईल ने मारा, और खुदावन्द के बन्दा मूसा ने बनीरूबिन और बनीजद और मनस्सी के आधे क़बीले को उनका मुल्क, मीरास के तौर पर दे दिया|

⁷और यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ़ बा'ल जद से जो वादी-ए-लुबनान में है, कोह-ए-ख़ल्क तक जो स'ईर को निकल गया है, जिन बादशाहों को यशू'अ और बनीइसाईल ने मारा और जिनके मुल्क को यशू'अ ने इस्राईलियों के क़बीलों को उनकी तक्सीम के मुताबिक़ मीरास के तौर पर दे दिया वह यह हैं|⁸पहाड़ी मुल्क और नशीब की ज़मीन और मैदान और ढलानों में और वीरान और दख्खिनी हिस्से में हित्ती और अमूरी और कना'नी और फ़रिज़्ज़ी और हव्वी और यबूसी क़ौमों में से; |

⁹एक यरीहू का बादशाह, एक 'ए का बादशाह जो बैतएल के नज़दीक आबाद है|¹⁰एक यरूशलीम का बादशाह, एक हबरून का बादशाह, |¹¹एक यरमूत का बादशाह, एक लकीस का बादशाह, |¹²एक 'अजलून का बादशाह, एक जज़र का बादशाह, |

¹³एक दबीर का बादशाह, एक जदर का बादशाह, |¹⁴एक हुरमा का बादशाह, एक 'अराद का बादशाह, |¹⁵एक लिब्नाह का बादशाह, एक उद्लाम का बादशाह, |¹⁶एक मक्कीदा का बादशाह, एक बैत एल का बादशाह, |

¹⁷एक तफूह का बादशाह, एक हफ़र का बादशाह, |¹⁸एक अफ़्रीक का बादशाह, एक लशरून का बादशाह, |¹⁹एक मदून का बादशाह, एक हसूर का बादशाह, |²⁰एक सिमरून मरून का बादशाह, एक इक्शाफ़ का बादशाह, |

²¹एक ता'नक का बादशाह, एक मजिदो का बादशाह, |²²एक क़ादिस का बादशाह, एक कर्मिल के यक़'नियाम का बादशाह, |²³एक दोर की मुर्तफ़ा' ज़मीन के दोर का बादशाह, एक गोइम का बादशाह, जो जिलजाल में था|²⁴एक तिरज़ा का बादशाह, यह सब इकतीस बादशाह, थे|

Chapter 13

¹और यशू'अ बूढ़ा और 'उम्र रसीदा हुआ और खुदावन्द ने उस से कहा, कि तू बूढ़ा और 'उम्र रसीदा है और कब्ज़ा करने को अभी बहुत सा मुल्क बाक़ी है।

²और वह मुल्क जो बाक़ी है~इसलिए ~ये है; फिलिस्तिनों की सब इक़लीम और सब हबसूरी।³सीहूर से जो मिस्र के सामने है उत्तर की तरफ़ 'अक्रून की हद तक जो कना'नियों का गिना जाता है, | फिलिस्तिनों के पाँच सरदार या'नी गज़ी और अशदूदी असकलूनी और जातीऔर अक्रूनी और 'अव्वीम भी।

⁴जो दख्खिन की तरफ़ हैं ~और कना'नियों का सारा मुल्क और मग़ारह जो सैदानियों का है, | अफ़्रीक़ या'नी अमूरियों की सरहद तक।⁵और ज़िब्बियों का मुल्क और पूरब की तरफ़ बा'ल ज़द से जो कोह-ए-हरमून के नीचे है, हिमात के मद्खल तक सारा लुबनान।

⁶फिर लुबनान से मिसरफ़ात अलमाईम तक पहाड़ी मुल्क के सब बाशिंदे या'नी सब सैदानी। उनको मैं बनीइसाईल के सामने से निकाल डालूँगा, | तू सिर्फ़ जैसा मैंने तुझको हुक्म दिया है, मीरास के तौर पर उसे इस्राईलियों को तक्रसीम कर दे, |⁷इसलिए तू~इस मुल्क को उन नौ क़बीलों और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास के तौर पर बाँट दे, |

⁸मनस्सी के साथ बनी रूबिन और बनी ज़द ने अपनी अपनी मीरास पा ली थी जिसे मूसा ने यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ उनको दिया था, क्योंकि खुदावन्द के बन्दे मूसा ने उसे उन ही को दिया था, या'नी: |⁹'अरो'ईर से जो वादी-ए-अरनून के किनारे आबाद है शुरू', करके वह शहर जो वादी के बीच में है, मिदबा का सारा मैदान दीबोन तक, |

¹⁰और अमूरियों के बादशाह सीहून के सब शहर जो हसबून में सलतनत करता था बनी 'अम्मून की सरहद तक।¹¹और ज़िल'आद और जसूरियों और मा'कातियों की नवाही और सारा कोह-ए-हरमून और सारा बसन सलका तक।¹²और 'ओज जो रफ़ाईम की बक़िया नसल से था और 'इस्तारात और अदर'ई में हुक्मरान था उसका सारा 'इलाक़ा जो बसन में था क्योंकि मूसा ने उनको मार कर अलग कर दिया था।

¹³तो भी बनीइसाईल ने जसूरियों और मा'कातियों को नहीं निकाला चुनाँचे जसूरी और मा'काती आज तक इस्राईलियों के बीच ~बसे हुए हैं।

¹⁴सिर्फ़ लावी के क़बीले को उस ने कोई मीरास नहीं दी; क्योंकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की आतिशीन कुर्बानियाँ उसकी मीरास हैं, जैसा उसने उससे कहा था।

¹⁵और मूसा ने बनी रूबिन के क़बीले को उनके घरानों के मुताबिक़ मीरास दी, |¹⁶और उनकी सरहद यह थी: या'नी 'अरो'ईर से जो वादी-ए-अरनोन के किनारे आबाद ~है, और वह शहर जो पहाड़ के बीच में है, और मिदबा के पास का सारा मैदान;

¹⁷हस्बोन और उसके सब शहर जो मैदान में हैं, दीबोन और बामात बा'ल, बैत बा'ल म'ऊन,¹⁸और यहसाह, और क़दीमात, और मफ़'अत,¹⁹और क़रीताईम, और सिबमाह, और ज़रत-उल-सहर जो पहाड़ के किनारे ~में हैं,

²⁰और बैत फ़गूर, और पिसगा के दामन की ज़मीन, और बैत यसीमोत,²¹और मैदान के सब शहर और अमोरियों के बादशाह सीहोन का सारा मुल्क जो हसबोन में सलतनत करता था, जिसे मूसा ने मिदियान के रईसों अवी और रक़म और सूर और हूर और रब्बा, सीहोन के रईसों के साथ जो उस मुल्क में बसते थे, क़त्ल किया था।

²²और ब'ओर के बेटे बल'आम को भी जो नजूमि था, बनीइसाईल ने तलवार से क़त्ल करके उनके मक़तूलों के साथ मिला दिया था।²³और यरदन और उसके 'इलाक़े बनी रूबिन की सरहद थी। यही शहर और उनके गाँव बनी रूबिन के घरानों के मुताबिक़ उनके वारिस ठहरे।

²⁴और मूसा ने ज़द के क़बीले या'नी बनी ज़द को उनके घरानों के मुताबिक़ मीरास दी।²⁵और उनकी सरहद यह थी: या'ज़ीर और ज़िल'आद के सब शहर और बनी 'अम्मोन का आधा मुल्क, 'अरो'ईर तक जो रब्बा के सामने है।²⁶और हसबोन से रामात उल मिसफ़ाह और बतूनीम तक, और महनाईम से दबीर की सरहद तक।

²⁷और वादी ~में बैत हारम, और बैत निमरा, और सुक्कात, और सफ़ोन, या'नी हस्बोन के बादशाह सीहोन की अक़लीम का बाक़ी हिस्सा, और यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ किन्नरत की झील के उस सिरे तक, यरदन और उस की सारी नवाही।²⁸यही शहर और इनके गाँव बनी ज़द के घरानों के मुताबिक़ उनकी मीरास ~ठहरे।

²⁹और मूसा ने मनस्सी के आधे क़बीले को भी मीरास दी, यह बनी मनस्सी के घरानों के मुताबिक़ उनके आधे क़बीले के लिए थी।³⁰और उनकी सरहद यह थी: महनाईम से लेकर सारा बसन और बसन के बादशाह 'ओज़ की तमाम अक़लीम, और या'ईर के सब क़स्बे जो बसन में हैं वह साठ शहर हैं,³¹और आधा ज़िल'आद और 'इस्तारात और अदर'ई जो बसन के बादशाह 'ओज़ के शहर थे, मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद को मिले, या'नी मकीर की औलाद के आधे को उनके घरानों के मुताबिक़ यह मिले।

³²यही वह हिस्से हैं जिनको मूसा ने यरीहू के पास मोआब के मैदानों में यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ मीरास ~के तौर पर तक्रसीम किया।³³लेकिन लावी के क़बीले को मूसा ने कोई मीरास नहीं दी; क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा उनकी मीरास है, जैसा उसने उनसे खुद कहा।

Chapter 14

¹और वह हिस्से जिनको कन'आन के मुल्क में बनीइसाईल ने वारिस ~के तौर पर पाया, और जिनको इली'अज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनीइसाईल के क़बीलों के आबाई खानदानों के सरदारों ने उनको तक्रसीम किया यह हैं।

²उनकी मीरास पचीं से दी गयी, जैसा ख़ुदावन्द ने साढ़े नौ क़बीलों के हक़ में मूसा को हुक्म दिया था।³क्योंकि मूसा ने यरदन के उस पार ढाई क़बीलों की मीरास ~उनको दे दी थी, लेकिन उसने लावियों को उनके बीच कुछ मीरास ~नहीं दी।⁴क्योंकि बनी यूसुफ़ के दो क़बीले थे, मनस्सी और इफ़्राईम, ~इसलिए लावियों को उस मुल्क में कुछ हिस्सा न मिला सिवा शहरों के जो उनके रहने के लिए थे और उनकी नवाही के जो उनके चौपायों और माल के लिए थी।⁵जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, वैसा ही बनीइसाईल ने किया और मुल्क को बाँट लिया।

⁶तब बनी यहूदाह जिल्जाल में यशू'अ के पास आये; और किन्ज़ी युफ़न्ना के बेटे कालिब ने उससे कहा, "तुझे मा'लूम है कि ख़ुदावन्द ने मर्द-ए-ख़ुदा मूसा से मेरी और तेरी बारे में क़ादिस बरनी' में क्या कहा था।⁷जब ख़ुदावन्द के बन्दे मूसा ने क़ादिस बरनी' से मुझको इस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा उस वक़्त मैं चालीस बरस का था; और मैंने उसको वही ख़बर ला कर दी जो मेरे दिल में थी।

⁸तो भी मेरे भाइयों ने जो मेरे साथ गये थे, लोगों के दिलों को पिघला दिया; लेकिन मैंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की पूरी पैरवी की है।⁹तब मूसा ने उस दिन क्रसम खा कर कहा, "जिस ज़मीन पर तेरा क़दम पड़ा है वह हमेशा के लिए तेरी और तेरे बेटों की मीरास ठहरेगी, क्योंकि तूने ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा की पूरी पैरवी की है।"

¹⁰और अब देख जब से ख़ुदावन्द ने यह बात मूसा से कही तब से इन पैंतालीस बरसों तक, जिनमें बनीइसाईल वीराने में आवारा फिरते रहे, ख़ुदावन्द मुझे अपने क़ौल के मुताबिक़ जीता रखा और अब देख, मैं आज के दिन पिचासी बरस का हूँ।¹¹और आज के दिन भी मैं वैसा ही हूँ जैसा उस दिन था, जब मूसा ने मुझे भेजा था और जंग के लिए और बाहर जाने और लौटने के लिए जैसी कुव्वत मुझ में उस वक़्त थी वैसी ही अब भी है।

¹²इसलिए यह पहाड़ी जिसका ज़िक़्र ख़ुदावन्द ने उस रोज़ किया था मुझ को दे दे, क्योंकि तूने उस दिन सुन लिया था कि 'अनाक़ीम वहाँ बसते हैं और वहाँ के शहर बड़े फ़सील दार हैं; यह मुमकिन है कि ख़ुदावन्द मेरे साथ हो और मैं उनको ख़ुदावन्द के क़ौल के मुताबिक़ निकाल दूँ। "

¹³तब यशू'अ ने युफ़न्ना के बेटे कालिब को दु'आ दी, और उसको हबरून मीरास के तौर पर दे दिया।¹⁴इसलिए हबरून उस वक़्त से आज तक किन्ज़ी युफ़न्ना के बेटे कालिब की मीरास ~है, इस लिए कि उस ने ख़ुदावन्द इसाईल के ख़ुदा की पूरी पैरवी की।¹⁵और अगले वक़्त में हबरून का नाम क्रयत अरबा' था, और वह अरबा' 'अनाक़ीम में सब से बड़ा आदमी था। और उस मुल्क को जंग से फ़रागत मिली।

Chapter 15

¹और बनी यहूदाह के कबीले का हिस्सा उनके घरानों के मुताबिक पर्वी डालकर अदोम की सरहद तक, और दख्खिन में दशत-ए-सीन तक जो जुनुब के इन्तिहाई हिस्से में आबाद है ठहरा।² और उनकी दख्खिनी हद दरिया-ए-शोर के इन्तिहाई हिस्से की उस खाड़ी से जिसका रुख दख्खिन की तरफ है शुरू" हुई;

³और वह 'अकरबबीम की चढ़ाई की दख्खिनी सिम्त से निकल सीन होती हुई क़ादिस बरनी' के दख्खिन को गयी, फिर हसरून के पास से अदार को जाकर क़रका' को मुड़ी,⁴ और वहाँ से 'अज़मून होती हुई मिस्र के नाले को जा निकली, और उस हद का खातिमा समन्दर पर हुआ; यही तुम्हारी दख्खिनी सरहद होगी।

⁵और पूरबी सरहद यरदन के दहाने तक दरिया-ए-शोर ही ठहरा, और उसकी उत्तरी हद उस दरिया की उस खाड़ी से जो यरदन के दहाने पर है शुरू" हुई,⁶ और यह हद बैत हजला को जाकर और बैत उल 'अराबा के उत्तर से गुज़र कर रूबिन के बेटे बोहन के पत्थर को पहुँची;

⁷फिर वहाँ से वह हद 'अकूर की वादी होती हुई दबीर को गई और वहाँ से उत्तर की सिम्त चल कर जिलजाल के सामने जो अदुम्मीम की चढ़ाई के मुकाबिल है जा निकली, यह चढ़ाई नदी के दख्खिन में है; फिर वह हद 'ऐन शम्स के चश्मों के पास होकर 'ऐन राजिल पहुँची।⁸ फिर वही हद हिन्नूम के बेटे की वादी में से होकर यबूसियों की बस्ती के दख्खिन को गयी, यरुशलीम -वही है; और वहाँ से उस पहाड़ की चोटी को जा निकली, जो वादी-ए-हिन्नूम के मुकाबिल पश्चिम की तरफ और रिफ़ाईम की वादी के उत्तरी इन्तिहाई हिस्से में आबाद है;

⁹फिर वही हद पहाड़ की चोटी से आब-ए-नफ़्तूह के चश्मों को गयी, और वहाँ से कोह-ए-'अफ़रोन के शहरों के पास जा निकली, और उधर से बा'ला तक जो क़रयत या'रीम है पहुँची;¹⁰ और बा'ला से होकर पश्चिम की सिम्त कोह-ए-श'ईर को फिरी, और कोह-ए-या'रीम के जो कसलून भी कहलाता है, उत्तरी दामन के पास से गुज़र कर बैत शम्स की तरफ़ उतरती हुई तिम्ना को गयी;

¹¹और वहाँ से वह हद 'अकरून के उत्तर को जा निकली; फिर वह सिक्रून से हो कर कोह-ए-बा'ला के पास से गुज़रती हुई यबनीएल पर जा निकली; और इस हद का खातिमा समन्दर पर हुआ¹² और पश्चिमी सरहद बड़ा समन्दर और उसका साहिल था। बनी यहूदाह की चारों तरफ़ की हद उनके घरानों के मुताबिक यही है।

¹³और यशू'अ ने उस हुक्म के मुताबिक जो खुदावन्द ने उसे दिया था, युफ़न्ना के बेटे कालिब को बनी यहूदाह के बीच 'अनाक के बाप अरबा' का शहर क़रयत अरबा'जो हबरून है हिस्सा दिया।¹⁴ इसलिए कालिब ने वहाँ से 'अनाक के तीनों बेटों, या'नी सीसी और अखीमान और तलमी को जो बनी 'अनाक हैं निकाल दिया।¹⁵ और वह वहाँ से दबीर के बाशिदों पर चढ़ गया। दबीर का क़दीमी नाम क़रयत सिफ़र था।

¹⁶और कालिब ने कहा, "जो कोई क़रयत सिफ़र को मार कर उसको सर करले, उसे मैं अपनी बेटी 'अकसा ब्याह दूँगा"।¹⁷ तब कालिब के भाई क़नज़ के बेटे ग़तनीएल ने उसको सर कर लिया, इसलिए उसने अपनी बेटी 'अकसा उसे ब्याह दी।

¹⁸जब वह उसके पास आई, तो उसने उस आदमी को उभारा कि वह उसके बाप से एक खेत माँगे; इसलिए वह अपने गधे पर से उतर पड़ी, तब कालिब ने उससे कहा, "तू क्या चाहती है?"

¹⁹उस ने कहा, "मुझे बरकत दे; क्योंकि तूने दख्खिन के मुल्क में कुछ ज़मीन मुझे 'इनायत की है, इसलिए मुझे पानी के चश्मों भी दे।" तब उसने उसे ऊपर के चश्मों और नीचे के चश्मों 'इनायत किये।

²⁰बनीयहूदाह के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह है।

²¹और अदूम की सरहद की तरफ़ दख्खिन में बनी यहूदाह के इन्तिहाई शहर यह हैं: क़बज़ीएल और 'एदर और यज़ूर,²² और कैना और दैमूना और 'अद 'अदा,

²³और क़ादिस और हसूर और इतनान,²⁴ ज़ीफ़ और तलम और बा'लूत,

²⁵और हसूर और हदता और क़रयत और हसरून जो हसूर हैं,²⁶ और अमाम और समा' और मोलादा,²⁷ और हसार जद्दा और हिशमोन और बैत फ़लत,²⁸ और हसर सु'आल और बैरसबा'और बिज़योट्याह,

²⁹बा'ला और 'इय्मीम और 'अज़म,³⁰ और इलतोलद और कसील और हुरमा,³¹ और सिक़लाज और मदमन्ना और सनसन्ना,³² और लबाऊत और सिलहीम और 'ऐन और रिम्मोन; यह सब उन्तीस शहर हैं, और इनके गाँव भी हैं।

³³और नशेब की ज़मीन में इस्ताल और सुर'आह और असनाह,³⁴ और ज़नूह और 'ऐन जन्नीम, तप्फ़ूह और 'एनाम,³⁵ यरमोट और 'अदुल्लाम, शोका और 'अज़ीक्रा,³⁶ और शा'रीम और अदीतीम और जदीरा और जदीरतीम; और यह चौदह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

³⁷ज़िनान और हदाशा और मिजदल जद,³⁸ और दिल'आन और मिस्रह और यक्तीएल,³⁹ लकीस और बूसक्रत और 'इजलून,

⁴⁰और कब्बून और लहमान और कितलीस,⁴¹ और जदीरोत और बैत दज़ून और ना'मा और मुक्क़ैदा; यह सोलह शहर हैं, और इनके गाँव भी हैं।

⁴²लिबना और 'अत्र और 'असन,⁴³ और यफ़्ताह और असना और नसीब;⁴⁴ और क़'ईला और अकज़ीब और मरेसा; यह नौ शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

⁴⁵अकरून और उसके क़स्बे और गाँव।⁴⁶ अकरून से समन्दर तक अशदूद के पास के सब शहर और उनके गाँव।⁴⁷ अशदूद अपने शहरों और गाँवों के साथ, और गज़ज़ा अपने शहरों और गाँव के साथ; मिस्र की नदी और बड़े समन्दर और साहिल तक।

⁴⁸और पहाड़ी मुल्क में समीर और यतीर और शोका,⁴⁹ और दन्ना और क़रयत सन्ना जो दबीर है,⁵⁰ और 'अनाब और इस्मतोह और 'इनीम,⁵¹ और जशन और हौलून और जिलोह; यह ग्यारह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

⁵²अराब और दोमाह और इश'आन,⁵³ और यनीम और बैत तप्फ़ूह और अफ़ीका,⁵⁴ और हुमता और क़रयत अरबा' जो हबरून है और सी'ऊर; यह नौ शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

⁵⁵म'ऊन, कर्मिल और ज़ीफ़ और यूत्ता,⁵⁶ और यज़रएल और याक्रदि'आम और ज़नूह,⁵⁷ कैन, जिब'आ और तिम्ना; यह दस शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

⁵⁸हालहूल और बैत सूर और जदूर,⁵⁹ और मा' रात और बैत 'अनोत और इलतिकून; यह छह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

⁶⁰करयत बा'ल जो करयत या'रीम है, और रब्बा; यह दो शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।⁶¹ और वीराने में बैत 'अराबा और मदीन और सकाका,⁶² और नबसान और नमक का शहर और 'ऐन जदी; यह छः शहर हैं और इनके गाँव भी हैं।

⁶³ और यबूसियों को जो यरूशलीम के बाशिन्दे थे, बनी यहूदाह निकाल न सके; इसलिए यबूसी बनी यहूदाह के साथ आज के दिन तक यरूशलीम में बसे हुए हैं।

Chapter 16

¹और बनी यूसुफ़ का हिस्सा पर्ची डालकर यरीहू के पास के यरदन से शुरू' हुआ, या'नी पूरब की तरफ़ यरीहू के चश्में बल्कि वीराना पड़ा। फिर उसकी हद यरीहू से पहाड़ी मुल्क होती हुई बैत एल को गयी। ²फिर बैत एल से निकल कर लूज़ को गई और अर्कियों की सरहद के पास से गुज़रती हुई 'अतारात पहुँची;

³और वहाँ से पश्चिम की तरफ़ यफ़लीतियों की सरहद से होती हुई नीचे के बैत हौरून बल्कि जज़र को निकल गयी, और उसका खातिमा समन्दर पर हुआ। ⁴तब बनी यूसुफ़ या'नी मनस्सी और इफ़्राईम ने अपनी अपनी मीरास ~पर क़ब्ज़ा किया।

⁵और बनी इफ़्राईम की सरहद उनके घरानों के मुताबिक़ यह थी: पूरब की तरफ़ ऊपर के बैत हौरून तक 'अतारात अदार उनकी हद ठहरी; ⁶मैं उत्तर की तरफ़ वह हद पश्चिम के मिक्मता होती हुई पूरब की तरफ़ तानत सैला को मुड़ी, और वहाँ से यनूहाह के पूरब को गयी; | ⁷और यनूहाह से 'अतारात और ना'राता होती हुई यरीहू पहुँची, और फिर यरदन को जा निकली;

⁸और वह हद तफ़्फ़ूह से निकल कर पश्चिम की तरफ़ क़ानाह के नाले को गई और उसका खातिमा समन्दर पर हुआ। बनी इफ़्राईम के क़बीला की मीरास उनके घरानों के मुताबिक़ यही है। ⁹और इसके साथ बनी इफ़्राईम के लिए बनी मनस्सी की मीरास में भी शहर अलग किए गये और उन सब शहरों के साथ उनके गाँव भी थे।

¹⁰और उन्होंने कना'नियों को जो जज़र में रहते थे न निकाला, बल्कि वह कना'नी आज के दिन तक इफ़्राईमियों में बसे हुए हैं, और खादिम बनकर बेगार का काम करते हैं।

Chapter 17

¹और मनस्सी के कबीले का हिस्सा पर्ची डालकर यह ठहरा। क्योंकि वह यूसुफ का पहलौठा था, और चूँकि मनस्सी का पहलौठा बेटा मकीर जो जिल'आद का बाप था जंगी मर्द था इसलिए उस को जिल'आद और बसन मिले।²इसलिए यह हिस्सा बनी मनस्सी के बाक्री लोगों के लिए उनके घरानों के मुताबिक था या'नी बनी अबी'अज़र और बनी खलक और बनी इसरीएल और बनी सिक्म और बनी हिफ्र और बनी समीदा' के लिए, यूसुफ के बेटे मनस्सी के फ़र्ज़न्द-ए-नरीना अपने अपने घराने के मुताबिक यही थे।

³और सिलाफ़िहाद बिन हिफ्र बिन जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं बल्कि बेटियाँ थी और उसकी बेटियों के नाम यह हैं, महलाह और नू'आह और हुजला और मिलकाह और तिरज़ाह।⁴इसलिए ~वह इली'अज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और सरदारों के आगे आकर कहने लगीं कि खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमको हमारे भाईयों के बीच मीरास दे चुनाँचे खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक उस ने उनके भाईयों के बीच उनको विरासत दी।

⁵इसलिए ~मनस्सी को जिल'आद और बसन के मुल्क को छोड़ कर जो यरदन के उस पार है दस हिस्से और मिले।⁶क्योंकि मनस्सी की बेटियों ने भी बेटों के साथ मीरास पाई और मनस्सी के बेटों को जिल'आद का मुल्क मिला।

⁷और आशर से लेकर मिकमताह तक जो सिक्म के मुकाबिल है मनस्सी की हद थी, और वही हद दहने हाथ पर, 'ऐन तप्फूह के बाशिन्दों तक चली गयी।⁸यू तप्फूह की ज़मीन तो मनस्सी की हुई लेकिन तप्फूह शहर जो मनस्सी की सरहद पर था बनी इफ़्राईम ~का हिस्सा ठहरा,।

⁹फिर वहाँ से वह हद क़ानाह के नाले को उतर कर उसके दख्खिन की तरफ़ पहुँची, यह शहर जो मनस्सी के शहरों के बीच हैं इफ़्राईम के ठहरे और मनस्सी की हद उस नाले के उत्तर की तरफ़ से होकर समन्दर पर खत्म हुई।¹⁰इसलिए ~दख्खिन की तरफ़ इफ़्राईम ~की और उत्तर की तरफ़ मनस्सी की मीरास पड़ी और उसकी सरहद समन्दर थी यूँ वह दोनों उत्तर की तरफ़ आशर से और पूरब की तरफ़ इश्कार से जा मिलीं।

¹¹और इश्कार और आशर की हद में बैत शान और उसके क़स्बे और इबली'आम और उसके क़स्बे और अहल-ए-दोर और उसके क़स्बे और अहल-ए-'ऐन दोर और उसके क़स्बे और अहल-ए-ता'नाक और उसके क़स्बे और अहल-ए-मजिद्दो और उसके क़स्बे बल्कि तीनों मुर्तफ़ा' मक्रामात ~मनस्सी को मिले।¹²तो भी बनी मनस्सी उन शहरों के रहने वालों को निकाल न सके बल्कि उस मुल्क में कना'नी बसे ही रहे,।

¹³और जब बनी इस्राईल ताक़तवर हो गये तो उन्होंने कना'नियों से बेगार का काम लिया और उनको बिल्कुल निकाल बाहर न किया।

¹⁴बनी यूसुफ ने यशू'अ से कहा कि तूने क्यूँ पर्ची डालकर हम को सिर्फ़ एक ही हिस्सा मीरास के लिए दिया अगरचे हम बड़ी क़ौम हैं क्यूँकि खुदावन्द ने हम को बरकत दी है ?।¹⁵यशू'अ ने उनको जवाब दिया कि अगर तुम बड़ी क़ौम हो तो जंगल में जाओ, और वहाँ फ़रिज़ियों और रिफ़ाईम के मुल्क को अपने लिए काट कर साफ़ कर लो क्यूँकि इफ़्राईम का पहाड़ी मुल्क तुम्हारे लिए बहुत तंग है।

¹⁶बनी यूसुफ ने कहा कि यह पहाड़ी मुल्क हमारे लिए काफ़ी नहीं है और सब कना'नियों के पास जो नशेब के मुल्क में रहते हैं या'नी वह जो बैत शान और उसके क़स्बों में और वह जो यज़र 'एल की वादी में रहते हैं दोनों के पास लोहे के रथ हैं।¹⁷यशू'अ ने बनी यूसुफ या'नी इफ़्राईम और मनस्सी से कहा कि तुम बड़ी क़ौम हो और बड़े ज़ोर रखते हो, ~इसलिए~तुम्हारे लिए सिर्फ़ एक ही हिस्सा न होगा।¹⁸बल्कि यह पहाड़ी मुल्क भी तुम्हारा होगा क्यूँकि अगरचे वह जंगल है तुम उसे काट कर साफ़ कर डालना और उसके मख़ारिज भी तुम्हारे ही ठहरेंगे क्यूँकि तुम कना'नियों को निकाल दोगे अगरचे उनके पास लोहे के रथ हैं और वह ताक़तवर भी हैं।

Chapter 18

¹और बनी इस्राईल की सारी जमा'अत ने सैला में जमा' होकर खेमा'-ए-इज्तिमा'अ को वहाँ खड़ा किया और वह मुल्क उनके आगे मगालूब हो चुका था।²और बनी इस्राईल में सात क़बीले ऐसे रह गये थे जिनकी मीरास उनको तक्रसीम होने न पाई थी।

³और यशू'अ ने बनी इस्राईल से कहा, कि तुम कब तक उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने से जो ख़ुदावन्द तुम्हारे बाप दादा के ख़ुदा ने तुम को दिया है सुस्ती करोगे ?।

⁴इसलिए ~तुम अपने लिए हर क़बीले में से तीन शख्स चुन लो, मैं उनको भेजूँगा और वह जाकर उस मुल्क में सैर करेंगे और अपनी अपनी मीरास के मुवाफ़िक़ उसका हाल लिख कर मेरे पास आएँगे।

⁵वह उसके सात हिस्से करेंगे, यहूदाह अपनी सरहद में दख्खिन की तरफ़ और यूसुफ़ का ख़ानदान अपनी सरहद में उत्तर की तरफ़ रहेगा।⁶इसलिए तुम उस मुल्क के सात हिस्से लिख कर मेरे पास यहाँ लाओ ताकि मैं ख़ुदावन्द के आगे जो हमारा ख़ुदा है तुम्हारे लिए पर्ची डालूँ।

⁷क्योंकि तुम्हारे बीच लावियों का कोई हिस्सा नहीं इसलिए कि ख़ुदावन्द की कहानत उनकी मीरास है और जद् और रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले को यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ मीरास मिल चुकी है जिसे ख़ुदावन्द के बन्दे मूसा ने उनको दिया।

⁸तब वह आदमी उठ कर रवाना हुए और यशू'अ ने उनको जो उस मुल्क का हाल लिखने के लिए गये ताकीद की कि तुम जाकर उस मुल्क में सैर करो और उसका हाल लिख कर फिर मेरे पास आओ और मैं सैला में ख़ुदावन्द के आगे तुम्हारे लिए पर्ची डालूँगा।⁹चुनौंचे उन्होंने जाकर उस मुल्क में सैर की और शहरों के सात हिस्से कर के उनका हाल किताब में लिखा और सैला की खेमागाह में यशू'अ के पास लौटे।

¹⁰तब यशू'अ ने सैला में उनके लिए ख़ुदावन्द के सामने पर्ची डाली और वहीं यशू'अ ने उस मुल्क को बनी इस्राईल की हिस्सों ~के मुताबिक़ उनको बाँट दिया।

¹¹और बनी बिन यमीन के क़बीले की पर्ची उनके घरानों के मुताबिक़ निकली और उनके हिस्से की हद बनी यहूदाह और बनी यूसुफ़ के बीच पड़ी।¹²इसलिए ~उनकी उत्तरी हद यरदन से शुरू'' हुई और यह हद यरीहू के पास से उत्तर की तरफ़ गुज़र कर पहाड़ी मुल्क से होती हुई पश्चिम की तरफ़ बैत आवन के वीराने तक पहुँची।

¹³और वह हद वहाँ से लूज़ को जो बैत एल है गयी और लूज़ के दख्खिन से उस पहाड़ के बराबर होती हुई जो नीचे के बैत हौरून के दख्खिन में है 'अतारात अदार को जा निकली।¹⁴और वह पश्चिम की तरफ़ से मुड़ कर दख्खिन को झुकी और बैत हौरून के सामने के पहाड़ से होती हुई दख्खिन की तरफ़ बनी यहूदाह के एक शहर क़रयत बा'ल तक जो क़रयत या'रीम है चली गयी, यह पश्चिमी हिस्सा था।

¹⁵और दख्खिनी हद क़रयत या'रीम की इन्तिहा से शुरू'' हुई और वह हद पश्चिम की तरफ़ आब-ए-नफ़तूह के चश्मे तक चली गयी; ¹⁶और वहाँ से वह हद उस पहाड़ के सिरे तक जो हिन्म के बेटे की वादी के सामने है गयी, यह रिफ़ाईम की वादी के उत्तर में है और वहाँ से दख्खिन की तरफ़ हिन्म की वादी और यबूसियों के बराबर से गुज़रती हुई 'ऐन राजिल पहुँची; |

¹⁷वहाँ से वह उत्तर की तरफ़ मुड़ कर और 'ऐन शम्स से गुज़रती हुई जलीलौत को गयी जो अदुम्मीम की चढ़ाई के मुकाबिल है और वहाँ से रूबिन के बेटे बोहन के पत्थर तक पहुँची; |¹⁸और फिर उत्तर को जाकर मैदान के मुकाबिल के रुख से निकलती हुयी मैदान ही में जा उतरी।

¹⁹फिर वह हद वहाँ से बैत हुजला के उत्तरी पहलू तक पहुँची और उस हद का ख़ातिमा दरिया-ए-शोर की उत्तरी खाड़ी पर हुआ जो यरदन के दख्खिनी सिरे पर है, यह दख्खिन की हद थी।²⁰और उसकी पूरबी सिम्त की हद यरदन ठहरा, बनी बिनयमीन की मीरास उनकी चौगिर्द की हदों के 'ऐतबार से और उनके घरानों के मुवाफ़िक़ यह थी।

²¹और बनी बिन यमीन के क़बीले के शहर उनके घरानों के मुवाफ़िक़ यह थे, यरीहू और बैत हुजला और 'ईमक़ क़सीस।²²और बैत 'अराबा और समरीम और बैतएल।²³और 'अव्वीम और फ़ारा और 'उफ़रा।²⁴और कफ़रउल'उम्मूनी और 'उफ़नी और जबा', यह बारह शहर थे और इनके गाँव भी थे।

²⁵और जिबा'ऊन और रामा और बैरोत।²⁶मिस्फ़ाह और कफ़ीरह और मोज़ा।²⁷और रक़म और अरफ़ील और तराला।²⁸और ज़िला', अलिफ़ और यबूसियों का शहर जो यरूशलीम है और जिब'अत और क़रयत, यह चौदह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं, बनी बिनयमीन की मीरास उनके घरानों के मुताबिक़ यह है

Chapter 19

¹और दूसरा पर्चा शमा'ऊन के नाम पर बनी शमा'ऊन के कबीले के वास्ते उनके घरानों के मुवाफ़िक़ निकला और उनकी मीरास बनी यहूदाह की मीरास के बीच थी।

²और उनकी मीरास में बैरसबा' यासबा' था और मोलादा।³और हसार स'ऊल और बालाह और 'अज़म।⁴और इलतोलद और बतूल और हुरमा

⁵और सिक़लाज और बैत मरकबोत और हसार सूसा।⁶और बैत लिबाउत और सरोहन, यह तेरह शहर थे और इनके गाँव भी थे।⁷ऐन और रिम्मोन और 'अतर और 'असन, यह चार शहर थे और इनके गाँव भी थे।

⁸और वह सब गाँव भी इनके थे जो इन शहरों के आस पास बा'लात बैर या'नी दख्खिन के रामा तक हैं, बनी शमा'ऊन के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक़ यह ठहरी।⁹बनी यहूदाह की मिल्कियत में से बनी शमा'ऊन की मीरास ली गयी क्योंकि बनी यहूदाह का हिस्सा उनके वास्ते बहुत ज़्यादा था, इसलिए बनी शमा'ऊन को उनकी मीरास के बीच मीरास मिली।

¹⁰और तीसरा पर्चा ~बनी ज़बूलून का उनके घरानों के मुवाफ़िक़ निकला और उनकी मीरास की हद सारीद तक थी।¹¹और उनकी हद पश्चिम की तरफ़ मर'अला होती हुई दब्बासत तक गयी, और उस नदी से जो युक्रनि'आम के आगे है जा मिली।

¹²और सारीद से पूरब की तरफ़ मुड़ कर वह किसलोत तबूर की सरहद को गई और वहाँ से दबरत होती हुई यफ़ी'को जा निकली।¹³और वहाँ से पूरब की तरफ़ जित्ता हीफ़ और इत्ता क्राज़ीन से गुज़रती हुई रिम्मोन को गयी, जो नी'आ तक फैला हुआ है।

¹⁴और वह हद उस के उत्तर से मुड़ कर हन्नातोन को गई, और उसका खातिमा इफ़ताएल की वादी पर हुआ।¹⁵और क़त्तात और नहलाल और सिमरोन और इदाला और बैतलहम, यह बारह शहर और उनके गाँव इन लोगों के ठहरे।¹⁶यह सब शहर और इनके गाँव बनी ज़बूलून के घरानों के मुवाफ़िक़ उनकी मीरास है।

¹⁷और चौथा पर्चा ~इश्कार के नाम पर बनी इश्कार के लिए उनके घरानों के मुवाफ़िक़ निकला।¹⁸और उनकी हद यज़र 'एल और किसूलोत और शूनीम।¹⁹और हफ़ारीम और शियून और अनाखरात।

²⁰और रबैत क़सयोन और अबिज़।²¹और रीमत और 'ऐन जन्नीम और 'ऐन हद्दा और बैत क़सीस तक थी।²²और वह हद तबूर और शख़सीमाह और बैत शम्स से जा मिली और उनकी हद का खातिमा यरदन पर हुआ, यह सोलह शहर थे और इनके गाँव भी थे।

²³यह शहर और इनके गाँव बनी इश्कार के घरानों के मुवाफ़िक़ उनकी मीरास है।

²⁴और पाँचवाँ पर्चा बनी आशर के कबीले के लिए उनके घरानों के मुताबिक़ निकला।²⁵और खिलक़त और हली और बतन और इक्शाफ़।²⁶और अलम्मलक और 'अमाद और मिसाल उनकी हद ठहरे और पश्चिम की तरफ़ वह कर्मिल और सैहूर लिबनात तक पहुँची।

²⁷और वह पूरब की तरफ़ मुड़ कर बैत दज़ून को गयी और फिर ज़बूलून तक और वादी-ए-इफ़ताहएल के उत्तर से होकर बैत उल 'अमक़ और नगीएल तक पहुँची और फिर कबूल के बाएँ को गयी।²⁸और 'अबरून और रहोब और हम्मून और क़ानाह बल्कि बड़े सैदा तक पहुँची।

²⁹फिर वह हद रामा ज़ूर के फ़सील दार शहर की तरफ़ को झुकी और वहाँ से मुड़ कर हूसा तक गयी और उसका खातिमा अकज़ीब की नवाही के समन्दर पर हुआ।³⁰और 'उम्मा और अफ़्रीक़ और रहोब भी इनको मिले, यह बाईस शहर थे और इनके गाँव भी थे।

³¹बनी आशर के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक़ यह शहर और इनके गाँव थे।

³²छठा पर्चा ~बनी नफ़ताली के नाम पर बनी नफ़ताली के कबीले के लिए उनके घरानों के मुताबिक़ निकला।³³और उनकी सरहद हलफ़ से ज़ा'नन्नीम के बलूत से अदामी नक़ब और यबनीएल होती हुई लकूम तक थी और उसका खातिमा यरदन पर हुआ।³⁴और वह हद पश्चिम की तरफ़ मुड़ कर अज़नूत तबूर से गुज़रती हुई हुक्कूक़ को गई और दख्खिन में ज़बूलून तक और पश्चिम में आशर तक और पूरब में यहूदाह के हिस्सा के यरदन तक पहुँची।

³⁵और फ़सील दार शहर यह हैं या'नी सिद्दीम और सैर और हम्मात और रक़त और किन्नरत।³⁶और अदामा और रामा और हसूर।³⁷और क़ादिस और अद'रई और 'ऐन हसूर।

³⁸और इरून और मिजदालएल और हुरीम और बैत 'अनात और बैत शम्स, यह उन्तीस शहर थे और इनके गाँव भी थे।³⁹यह शहर और इनके गाँव बनी नफ़ताली के कबीले के घरानों के मुताबिक़ उनकी मीरास हैं।

⁴⁰और सातवाँ पर्चा ~बनी दान के कबीले के लिए उनके घरानों के मुवाफ़िक़ निकला।⁴¹और उनकी मीरास की हद यह है, सुर'आह और इस्ताल और 'ईर शम्स।

⁴²और शा'लबीन और अय्यालोन और इतलाह।

⁴³और एलोन और तिम्नाता और 'अक़रून।⁴⁴और इलतिक़िया और जिब्बातोन और बा'लात।⁴⁵और यहूदी और बनी बरक़ और जात रिम्मोन।⁴⁶और मेयरकून और रिक्कूनमा' उस सरहद के जो याफ़ा के मुक़ाबिल है।

⁴⁷और बनी दान की हद उनकी इस हद के 'अलावा भी थी, क्योंकि बनी दान ने जाकर लशम से जंग की और उसे घेर करके उसको तलवार की धार से मारा और उस पर क़ब्ज़ा करके वहाँ बसे, और अपने बाप दान के नाम पर लशम का नाम दान रखा।⁴⁸यह सब शहर और इनके गाँव बनी दान के कबीले के घरानों के मुताबिक़ उनकी मीरास है।

⁴⁹तब वह उस मुल्क को मीरास के लिए उसकी सरहदों के मुताबिक़ तक्रसीम करने से फ़ारिग़ हुए और बनी इस्राईल ने नून के बेटे यशू'अ को अपने बीच मीरास दी।⁵⁰उन्होंने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ वही शहर जिसे उसने माँगा था या'नी इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क का तिम्नत सरह उसे दिया और वह उस शहर को ता'मीर करके उसमें बस गया।

⁵¹यह वह मीरासी हिस्से हैं जिनको इली'अज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्राईल के कबीलों के आबाई खानदानों के सरदारों ने सैला में ख़ेमा-ए-इज्तिमा' के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने पर्ची डालकर मीरास के लिए तक्रसीम किया, यूँ वह उस मुल्क की तक्रसीम से फ़ारिग़ हुए।

Chapter 20

¹और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि, |²बनी इस्राईल से कह कि अपने लिए पनाह के शहर जिनकी वजह मैं ने मूसा के बारे में ~तुमको हुक्म किया मुकर्रर करो, |³ताकि वह खूनी जो भूल से और ना दानिस्ता किसी को मार डाले वहाँ भाग जाए और वह खून के बदला लेने वाले से तुम्हारी पनाह ठहरें।

⁴वह उन शहरों में से किसी में भाग जाए , और उस शहर के दरवाज़े पर खड़ा हो कर उस शहर के बुजुर्गों को अपना हाल कह सुनाए; तब वह उसे शहर में अपने हाँ ले जाकर कोई जगह दें ताकि वह उनके बीच रहे।

⁵और अगर खून का बदला लेने वाला उसका पीछा करे तो वह उस खूनी को उसके हवाला न करें क्योंकि उस ने अपने पड़ोसी को अन्जाने में ~मारा और पहले से उसकी उस से 'अदावत न थी।⁶और वह जब तक फ़ैसले के लिए जमा'त के आगे खड़ा न हो, और उन दिनों का सरदार काहिन मर न जाये तब तक उसी शहर में रहे इसके बा'द वह खूनी लौट कर अपने शहर और अपने घर में या'नी उस शहर में आए जहाँ से वह भागा था।

⁷तब उन्होंने नफ़्ताली के पहाड़ी मुल्क में जलील के क़ादिस को और इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में सिक्म को और यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में करयत अरबा' को जो हबरून है अलग किया।⁸और यरीहू के पास के यरदन के पूरब की तरफ़ रूबिन के क़बीले के मैदान में बसर को जो वीराने में है और जद् के क़बीले के हिस्से में रामा को जो जिल'आद में है और मनस्सी के क़बीले के हिस्सा में जो लान को जो बसन में है मुकर्रर किया।

⁹यही वह शहर हैं जो सब बनी इस्राईल और उन मुसाफ़िरों के लिए जो उनके बीच बसते हैं इसलिए ठहराये गये कि जो कोई अन्जाने में किसी को क़त्ल करे वह वहाँ भाग जाये, और जब तक वह जमा'त के आगे खड़ा न हो तब तक खून के बदला लेने वाले के हाथ से मारा न जाये।

Chapter 21

¹तब लावियों के आबाई खानदानों के सरदार इली'अज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्राईल के कबीलों के आबाई खानदानों के सरदारों के पास आये।²और मुल्क-ए-कना'न के सैला में उन से कहने लगे कि खुदावन्द ने मूसा के बारे में ~हमारे रहने के लिए शहर और हमारे चौपायों के लिए उनकी नवाही के देने का हुक्म किया था।

³इसलिए बनी इस्राईल ने अपनी अपनी मीरास में से खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक यह शहर और उनकी नवाही लावियों को दीं।

⁴और पर्चा क्रिहातियों के नाम पर निकला और हारून काहिन की औलाद को जो लावियों में से थी पर्ची से यहूदाह के कबीले और शमा'ऊन के कबीले और बिनयमीन के कबीले में से तेरह शहर मिले।⁵और बाक़ी बनी क्रिहात को इफ़्राईम के कबीले के घरानों और दान के कबीले और मनस्सी के आधे कबीले में से दस शहर पर्ची से मिले।

⁶और बनी जैरसोन को इश्कार के कबीले के घरानों और आशर के कबीले और नफ़ताली के कबीले और मनस्सी के आधे कबीले में से जो बसन में है तेरह शहर पर्ची से मिले।⁷और बनी मिरारी को उनके घरानों के मुताबिक रूबिन के कबीले और जदू के कबीले और ज़बूलून के कबीले में से बारह शहर मिले।

⁸और बनी इस्राईल ने पर्ची डालकर इन शहरों और इनकी नवाही को जैसा खुदावन्द ने मूसा के बारे में ~फ़रमाया था लावियों को दिया।⁹उन्होंने बनी यहूदाह के कबीले और बनी शमा'ऊन के कबीले में से यह शहर दिए जिनके नाम यहाँ मज़कूर हैं।¹⁰और यह क्रिहातियों के खानदानों में से जो लावी की नसल में से थे बनी हारून को मिले क्योंकि पहला पर्चा ~उनके नाम का था।

¹¹इसलिए उन्होंने यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में 'अनाक के बाप अरबा' का शहर करयत अरबा' जो हबरून कहलाता है म'ए उसके 'इलाक़े के उनको दिया।

¹²लेकिन उस शहर के खेतों और गाँव को उन्होंने युफ़न्ना के बेटे कालिब को मीरास के तौर पर दिया।

¹³इसलिए ~उन्होंने हारून का काहिन की औलाद को हबरून जो खूनी की पनाह का शहर था और उसके 'इलाक़े और लिबनाह और उसके 'इलाक़े।¹⁴और यतीर और उसके 'इलाक़े और इस्तिमू'अ और उसके 'इलाक़े।¹⁵और हौलून और उसके 'इलाक़े और दबीर और उसके 'इलाक़े।¹⁶और 'ऐन और उसके 'इलाक़े और यूता और उसके 'इलाक़े और बैत शम्स और उसके 'इलाक़े या'नी यह नौ शहर उन दोनों कबीलों से ले कर दिए।

¹⁷और बिनयमीन के कबीले से जिबा'ऊन और उसके 'इलाक़े और जिबा' और उसके 'इलाक़े।¹⁸और 'अनतोत और उसके 'इलाक़े और 'अलमोन और उसके 'इलाक़े यह चार शहर दिए गए ~।¹⁹इसलिए बनी हारून के जो काहिन हैं सब शहर तेरह थे जिनके साथ उनकी नवाही भी थी।

²⁰और बनी क्रिहात के घरानों को जो लावी थे या'नी बाक़ी बनी क्रिहात को इफ़्राईम के कबीले से यह शहर पर्ची से मिले।²¹और उन्होंने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में उनको सिक्म शहर और उसके 'इलाक़े तो खूनी की पनाह के लिए और जज़र और उसके 'इलाक़े।²²और क्रिबज़ैम और उसके 'इलाक़े और बैत हौरून और उसके 'इलाक़े यह चार शहर दिए।

²³और दान के कबीला से इलतिक्रिया और उसके 'इलाक़े और जिब्वतून और उसके 'इलाक़े।²⁴और अय्यालोन और उसके 'इलाक़े और जात रिम्मोन और उसके 'इलाक़े यह चार शहर दिए।

²⁵और मनस्सी के आधे कबीले से ता'नाक और उसके 'इलाक़े और जात रिम्मोन और उसके 'इलाक़े, यह दो शहर दिए।²⁶बाक़ी बनी क्रिहात के घरानों के सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ दस थे।

²⁷और बनी जैरसोन को जो लावियों के घरानों में से हैं मनस्सी के दूसरे आधे कबीले में से उन्होंने बसन में जो लान और उसके 'इलाक़े तो खूनी की पनाह के लिए और बि'अस्तराह और उसके 'इलाक़े यह दो शहर दिए।

²⁸और इश्कार के कबीले से क्रिसयून और उसके 'इलाक़े और दबरत और उसके 'इलाक़े।²⁹यरमोट और उसके 'इलाक़े और 'ऐन जन्नीम और उसके 'इलाक़े, यह चार शहर दिए।³⁰और आशर के कबीले से मसाल और उसके 'इलाक़े और अबदोन और उसके 'इलाक़े।³¹खिलक़त और उसके 'इलाक़े और रहोब और उसके 'इलाक़े यह चार शहर दिए।

³²और नफ़ताली के कबीले से जलील में क्रादिस और उसके 'इलाक़े तो खूनी की पनाह के लिए और हम्मात दूर और उसके 'इलाक़े और करतान और उसके 'इलाक़े, यह तीन शहर दिए।³³इसलिए जैरसोनियों के घरानों के मुताबिक उनके सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ तेरह थे।

³⁴और बनी मिरारी के घरानों को जो बाक़ी लावी थे ज़बूलून के कबीला से युक्नि'याम और उसके 'इलाक़े, करताह और उसके 'इलाक़े।³⁵दिमना और उसके 'इलाक़े, नहलाल और उसके 'इलाक़े, यह चार शहर दिए।

³⁶और रूबिन के कबीले से बसर और उसके 'इलाक़े, यहसा और उसके 'इलाक़े।³⁷क्रदीमात और उसके 'इलाक़े और मिफ़'अत और उसके 'इलाक़े, यह चार शहर दिये।³⁸और जद के कबीले से जिल'आद में रामा और उसके 'इलाक़े तो खूनी की पनाह के लिए और महनाइम और उसके 'इलाक़े।

³⁹हस्बोन और उसके 'इलाक़े, या'ज़ीर और उसके 'इलाक़े, कुल चार शहर दिए।⁴⁰इसलिए ~ये सब शहर उनके घरानों के मुताबिक बनी मिरारी के थे, जो लावियों के घरानों के बाक़ी लोग थे उनको पर्ची से बारह शहर मिले।

⁴¹तब बनी इस्राईल की मिक्कियत के बीच लावियों के सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ अड़तालीस थे।⁴²उन शहरों में से हर एक शहर अपने गिर्द की नवाही के साथ था सब शहर ऐसे ही थे।

⁴³यू खुदावन्द ने इस्राईलियों को वह सारा मुल्क दिया जिसे उनके बाप दादा को देने की क़सम उस ने खाई थी और वह उस पर क़ाबिज़ हो कर उसमें बस गये।

⁴⁴और खुदावन्द ने उन सब बातों के मुताबिक जिनकी क़सम उस ने उनके बाप दादा से खाई थी चारों तरफ़ से उनको आराम दिया और उनके सब दुश्मनों में से एक आदमी भी उनके सामने खड़ा न रहा, खुदावन्द ने उनके सब दुश्मनों को उनके क़ब्ज़े में कर दिया।⁴⁵और जितनी अच्छी बातें खुदावन्द ने इस्राईल के घराने से कही थीं उन में से एक भी न छूटी, सब की सब पूरी हुई।

Chapter 22

¹उस वक़्त यशू'अ ने रोबिनियों और जह्दियों और मनस्सी के आधे क़बीले को बुला कर।²उन से कहा कि सब कुछ जो खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुम को फ़रमाया तुम ने माना, और जो कुछ मैं ने तुम को हुक्म दिया उस में तुम ने मेरी बात मानी।³तुमने अपने भाईयों को इस मुद्दत में आज के दिन तक नहीं छोड़ा बल्कि खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म की ताकीद पर 'अमल किया।

⁴और अब खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे भाईयों को जैसा उस ने उन से कहा था आराम बख़्शा है~इसलिए तुम अब लौट कर अपने अपने ख़ेमे को अपनी मीरासी सर ज़मीन में जो खुदावन्द के बन्दे मूसा ने यरदन के उस पार तुम को दी है चले जाओ।⁵सिर्फ़ उस फ़रमान और शरा' पर 'अमल करने की निहायत एहतियात रखना जिसका हुक्म खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुम को दिया, कि तुम खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो और उसकी सब राहों पर चलो, और उसके हुक्मों को मानो और उस से लिपटे रहो और अपने सारे दिल, और सारी जान, से उसकी बन्दगी करो।⁶और यशू'अ ने बरकत दे कर उनको रुख़्सत किया और वह अपने अपने ख़ेमे को चले गये।

⁷मनस्सी के आधे क़बीले को तो मूसा ने बसन में मीरास दी, थी लेकिन उस के दूसरे आधे को यशू'अ ने उनके भाईयों के बीच यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ़ हिस्सा दिया; और जब यशू'अ ने उनको रुख़्सत किया की अपने अपने ख़ेमे को जाएँ, तो उनको भी बरकत देकर।⁸उन से कहा कि, बड़ी दौलत और बहुत से चौपाये, और चाँदी और सोना और पीतल और लोहा और बहुत सी पोशाक लेकर तुम अपने अपने ख़ेमे को लौटो; और अपने दुश्मनों के माल-ए-ग़नीमत को अपने भाईयों के साथ बाँट लो।

⁹तब बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी का आधा क़बीला लौटा और वह बनी इस्राईल के पास से सैला से जो मुल्क-ए-कना'न में है रवाना हुए, ताकि वह अपने मीरासी मुल्क जिल'आद को लौट, जाएँ जिसके मालिक वह खुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ हुए थे जो उस ने मूसा के बारे में ~दिया था।

¹⁰और जब वह यरदन के पास के उस मुक़ाम में पहुँचे जो मुल्क कना'न में है, तो बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे क़बीले ने वहाँ यरदन के पास एक मज़बह जो देखने में बड़ा मज़बह था बनाया।¹¹और बनी इस्राईल के सुनने में आया की देखो बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे क़बीला ने मुल्क-ए-कना'न के सामने, यरदन के गिर्द के मक़ाम में उस रुख़ पर जो बनी इस्राईल का है एक मज़बह बनाया है।

¹²जब बनी इस्राईल ने यह सुना तो बनी इस्राईल की सारी जमा'त सैला में इकट्ठा हुई, ताकि उन पर चढ़ जाये और लड़े, ।

¹³और बनी इस्राईल ने इली'अज़र काहिन के बेटे फ़ीन्हास को बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे क़बीले के पास जो मुल्क जिल'आद में थे भेजा।

¹⁴और बनी इस्राईल के क़बीलों से हर एक के आबाई ख़ानदान से एक अमीर के हिसाब से दस अमीर उसके साथ किये, उन में से हर एक हज़ार दर हज़ार इस्राईलियों में अपने आबाई ख़ानदान का सरदार था।

¹⁵इसलिए वह बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे क़बीले के पास मुल्क जिल'आद में आये और उन से कहा कि, ¹⁶'खुदावन्द की सारी जमा'अत यह कहती, है कि तुम ने इस्राईल के खुदा से यह क्या सरकशी की कि, आज के दिन खुदावन्द की पैरवी से फिरकर ~अपने लिए एक मज़बह बनाया, और आज के दिन तुम खुदावन्द से बागी हो गये ?।

¹⁷क्या हमारे लिए फ़ग़ूर की बदकारी कुछ कम थी जिस से हम आज के दिन तक पाक नहीं हुए, अगरचे खुदावन्द की जमा'त में वबा भी आई कि।¹⁸तुम आज के दिन खुदावन्द की पैरवी से फिर जाते हो ?और चूँकि तुम आज खुदावन्द से बागी होते हो, इसलिए कल यह होगा कि इस्राईल की सारी जमा'त पर उसका क्रहर नाज़िल होगा

¹⁹और अगर तुम्हारा मीरासी मुल्क नापाक है, तो तुम खुदावन्द के मीरासी मुल्क में पार आ जाओ जहाँ खुदावन्द का घर है और हमारे बीच मीरास लो, लेकिन खुदावन्द हमारे खुदा के मज़बह के सिवा अपने लिए कोई और मज़बह बना कर, न तो खुदावन्द से बागी हो और न हम से बगावत करो।²⁰क्या ज़ारह के बेटे 'अकन की ख़यानत की वजह से जो उस ने मख़सूस की हुई चीज़ में की इस्राईल की सारी जमा'त पर ग़ज़ब नाज़िल न हुआ ?वह शख़्स अकेला ही अपनी बदकारी में हलाक नहीं हुआ।

²¹तब बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे क़बीला ने हज़ार दर हज़ार इस्राईलियों के सरदारों को जवाब दिया कि।²²खुदावन्द खुदाओं का खुदा, खुदावन्द खुदाओं का खुदा जानता है और इस्राईली भी जान लेंगे, अगर इस में बगावत या खुदावन्द की मुख़ालिफ़त है (तूने तो हमको आज जीता न छोड़ा)।

²³अगर हम ने आज के दिन इसलिए यह मज़बह बनाया हो कि खुदावन्द से फिर जाएँ या उस पर सोख़्तनी कुर्बानी या नज़र की कुर्बानी या सलामती के ज़बीहे चढ़ाएँ तो खुदावन्द ही इसका हिसाब ले।

²⁴बल्कि हम ने इस ख़याल और ग़रज़ से यह किया कि कहीं आइन्दा ज़माना में तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से यह न कहने लगे, ' कि तुम को खुदावन्द इस्राईल के खुदा से क्या लेना है ?

²⁵क्योंकि खुदावन्द तो हमारे और तुम्हारे बीच 'ऐ बनी रूबिन और बनी जद् यरदन को हद ठहराया है इसलिए खुदावन्द में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है, यूँ तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से खुदावन्द का ख़ौफ़ छुड़ा देगी।

²⁶इसलिए हम ने कहा कि आओ हम अपने लिए एक मज़बह बनाना शुरू करें जो न सोख़्तनी कुर्बानी के लिए हो और न ज़बीहे के लिए।²⁷बल्कि वह हमारे और तुम्हारे और हमारे बा'द हमारी नसलों के बीच ~गवाह ठहरे, ताकि हम खुदावन्द के सामने उसकी 'इबादत अपनी सोख़्तनी कुर्बानियों और अपने ज़बीहों और सलामती के हदियों से करें, और आइन्दा ज़माना में तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से कहने न पाए कि खुदावन्द में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं। '

²⁸इसलिए हम ने कहा कि, जब वह हम से या हमारी औलाद से आइन्दा ज़माना में यूँ कहेंगे तो हम उनको जवाब देंगे कि देखो खुदावन्द के मज़बह का नमूना जिसे हमारे बाप दादा ने बनाया, यह न सोख़्तनी कुर्बानी के लिए है न ज़बीहा के लिए बल्कि यह हमारे और तुम्हारे बीच गवाह है।²⁹खुदा न करे कि हम खुदावन्द से बागी हों और आज खुदावन्द की पैरवी से फिर कर खुदावन्द अपने खुदा के मज़बह के सिवा जो उसके ख़ेमें के सामने है सोख़्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और ज़बीहा के लिए कोई मज़बह बनाएँ।

³⁰जब फ़िन्हास काहिन और जमा'त के अमीरों या'नी हज़ार दर हज़ार इस्राईलियों के सरदारों ने जो उसके साथ आए थे यह बातें सुनीं जो बनी रूबिन और बनीजद और बनी मनस्सी ने कहीं तो वह बहुत खुश हुए। ³¹तब इली'अज़र के बेटे फ़िन्हास काहिन ने बनी रूबिन और बनी जद और बनी मनस्सी से कहा आज हम ने जान लिया कि खुदावन्द हमारे बीच है क्योंकि तुम से खुदावन्द की यह खता नहीं हुई, ~इसलिए ~तुम ने बनी इस्राईल को खुदावन्द के हाथ से छुड़ा लिया है।

³²और इली'अज़र काहिन का बेटा फ़िन्हास और वह सरदार जिल'आद से बनी रूबिन और बनी जद के पास से मुल्क-ए-कना'न में बनी इस्राईल के पास लौट आये और उनको यह माजरा सुनाया ? | ³³तब बनी इस्राईल इस बात से खुश हुए और बनी इस्राईल ने खुदा की हम्द की और फिर जंग के लिए उन पर चढ़ाई करने और उस मुल्क को तबाह करने का नाम न लिया जिस में बनी रूबिन और बनी जद रहते थे।

³⁴तब बनी रूबिन और बनी जद ने उस मज़बह का नाम 'ईद यह कह कर रखा की वह हमारे बीच ~गवाह है कि यहोवाह खुदा है।

Chapter 23

¹इसके बहुत दिनों बाद जब खुदावन्द ने बनी इस्राईल को उनके सब चारों तरफ़ के दुश्मनों से आराम दिया और यशू'अ बुढ़ा और 'उम्र रसीदा हुआ। ²तो यशू'अ ने सब इस्राईलियों और उनके बुजुर्गों और सरदारों और क्राज़ियों और मनसबदारों को बुलवा कर उन से कहा कि, मैं बूढ़ा और 'उम्र रसीदा हूँ। ³और जो कुछ खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे वजह से इन सब क्रौमों के साथ किया वह सब तुम देख चुके हो क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने आप तुम्हारे लिए जंग की।

⁴देखो मैं ने पर्ची डाल कर इन क्रौमों को तुम में तकसीम किया कि यह इन सब क्रौमों के साथ जिनको मैंने काट डाला यरदन से लेकर पश्चिम की तरफ़ बड़े समन्दर तक तुम्हारे क़बीलों की मीरास ठहरें। ⁵और खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही उनको तुम्हारे सामने से निकालेगा और तुम्हारी नज़र से उनको दूर कर देगा और तुम उनके मुल्क पर क़ाबिज़ होगे जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम से कहा है, ।

⁶इसलिए तुम ख़ूब हिम्मत बाँध कर जो कुछ मूसा की शरी'अत की किताब में लिखा है उस पर चलना और 'अमल करना ताकि तुम उस से दहने या बाएं हाथ को न मुड़ो। ⁷और उन क्रौमों में जो तुम्हारे बीच हुनूज़ बाक़ी हैं न जाओ और न उनके म'बूदों के नाम का ज़िक्र करो और न उनकी क़सम खिलाओ और न उनकी 'इबादत करो और न उनको सिज्दा करो। ⁸बल्कि खुदावन्द अपने खुदा से लिपटे रहो जैसा तुम ने आज तक किया है।

⁹क्योंकि खुदावन्द ने बड़ी बड़ी और ज़ोरावर क्रौमों को तुम्हारे सामने से दफ़ा' किया बल्कि तुम्हारा यह हाल रहा कि आज तक कोई आदमी तुम्हारे सामने ठहर न सका। ¹⁰तुम्हारा एक-एक आदमी एक-एक हज़ार को दौड़ायेगा, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही तुम्हारे लिए लड़ता है जैसा उसने तुम से कहा। ¹¹इसलिए तुम ख़ूब चौकसी करो कि खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो।

¹²वरना अगर तुम किसी तरह फिर कर उन क्रौमों के बक्रिया से या'नी उन से जो तुम्हारे बीच बाक़ी हैं घुल मिल ~जाओ और उनके साथ ब्याह शादी करो और उन से मिलो और वह तुम से मिलें। ¹³तो यक़ीन जानो कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा फिर इन क्रौमों को तुम्हारे सामने से दफ़ा' नहीं करेगा; बल्कि यह तुम्हारे लिए जाल और फंदा और तुम्हारे पहलुओं के लिए कोड़े, और तुम्हारी आँखों में काँटों की तरह होंगी, यहाँ तक कि तुम इस अच्छे मुल्क से जिसे खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम को दिया है मिट जाओगे।

¹⁴और देखो, मैं आज उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सारे जहान का है और तुम ख़ूब जानते हो कि उन सब अच्छी बातों में से जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे हक़ में कहीं एक बात भी न छूटी, सब तुम्हारे हक़ में पूरी हुई और एक भी उन में से न रह गयी। ¹⁵इसलिए ~ऐसा होगा कि जिस तरह वह सब भलाइयाँ जिनका खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम से ज़िक्र किया था तुम्हारे आगे आयीं उसी तरह खुदावन्द सब बुराईयाँ तुम पर लाएगा जब तक इस अच्छे मुल्क से जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम को दिया है वह तुम को बर्बाद न कर डाले।

¹⁶जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के उस 'अहद को जिसका हुक्म उस ने तुम को दिया तोड़ डालो और जाकर और मा'बूदों की 'इबादत करने और उनको सिज्दा करने लगे तो खुदावन्द का क्रहर तुम पर भड़केगा और तुम इस अच्छे मुल्क से जो उस ने तुम को दिया है जल्द हलाक हो जाओगे।

Chapter 24

¹इसके बा'द यशू'अ ने इस्राईल के सब क़बीलों को सिक्म में जमा' किया, और इस्राईल के बुजुर्गों और सरदारों और क़ाज़ियों और मनसबदारों को बुलवाया, और वह खुदा के सामने हाज़िर हुए।²तब यशू'अ ने उन सब लोगों से कहा कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि तुम्हारे आबा या'नी अब्रहाम और नहूर का बाप तारह वग़ैरह पुराने ज़माने में बड़े दरिया के पार रहते और दूसरे मा'बूदों की 'इबादत करते थे।

³और मैंने तुम्हारे बाप अब्रहाम को बड़े दरिया के पार से लेकर कना'न के सारे मुल्क में उसकी रहबरी की, और उसकी नसल को बढ़ाया और उसे इज़्हाक़ 'इनायत किया।⁴और मैंने इस्हाक़ को या'क़ूब और 'ऐसौ बख़्शे; और 'ऐसौ को कोह-ए-श'ईर दिया की वह उसका मालिक हो, और या'क़ूब अपनी औलाद के साथ मिस्र में गया।

⁵और मैंने मूसा और हारून को भेजा, और मिस्र पर जो मैंने उस में किया उसके मुताबिक़ मेरी मार पड़ी और उसके बा'द मैं तुमको निकाल लाया।⁶तुम्हारे बाप दादा को मैंने मिस्र से निकाला, और तुम समन्दर पर आये, तब मिस्रियों ने रथों और सवारों को लेकर बहर-ए-कुलजुम तक तुम्हारे बाप दादा का पीछा किया।

⁷और जब उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की तो उसने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच अन्धेरा कर दिया, और समन्दर को उन पर चढ़ा लाया और उनको छिपा दिया और तुमने जो कुछ मैंने मिस्र में किया अपनी आँखों से देखा और तुम बहुत दिनों तक वीराने में रहे।

⁸फिर मैं तुम को अमोरियों के मुल्क में जो यरदन के उस पार रहते थे ले आया, वह तुमसे लड़े और मैंने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया; और तुमने उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया, और मैंने उनको तुम्हारे आगे से हलाक़ किया।

⁹फिर सफ़ोर का बेटा बलक़, मोआब का बादशाह, उठ कर इस्राईलियों से लड़ा और तुम पर ला'नत करने को ब'ऊर के बेटे बिल'आम को बुलवा भेजा।¹⁰और मैंने न चाहा बिल'आम की सुनूँ; इसलिए वह तुम को बरकत ही देता गया, ~इसलिए ~मैं ने तुम को उसके हाथ से छुड़ाया।

¹¹फिर तुम यरदन पार हो कर यरीहू को आये, और यरीहू के लोग या'नी अमोरी और फ़िरिज़्ज़ी और कना'नी और हिती और जिरजासी और हव्वी और यबूसी तुम से लड़े, और मैंने उनको तुम्हारे क़ब्ज़ा में कर दिया।¹²और मैंने तुम्हारे आगे ज़म्बूरों को भेजा, जिन्होंने दोनों अमोरी बादशाहों को तुम्हारे सामने से भगा दिया; यह न तुम्हारी तलवार और न तुम्हारी कमान से हुआ।

¹³और मैंने तुम को वह मुल्क जिस पर तुम ने मेहनत न की, और वह शहर जिनको तुम ने बनाया न था 'इनायत किये, और तुम उन में बसे हो और तुम ऐसे ताकिस्तानो और ज़ैतून के बाग़ों का फल खाते हो जिनको तुमने नहीं लगाया।

¹⁴इसलिए अब तुम खुदावन्द का ख़ौफ़ रखो और नेक नियती और सदाक़त से उसकी 'इबादत करो; और उन माँ'बूदों को दूर कर दो जिनकी 'इबादत तुम्हारे बाप दादा बड़े दरिया के पार और मिस्र में करते थे, और खुदावन्द की 'इबादत करो।¹⁵और अगर खुदावन्द की 'इबादत तुम को बुरी मा'लूम होती हो, तो आज ही तुम उसे जिसकी 'इबादत करोगे चुन लो, ख़्वाह वह वही मा'बूद हों जिनकी 'इबादत तुम्हारे बाप दादा बड़े दरिया के उस पार करते थे या अमोरी के मा'बूद हों जिनके मुल्क में तुम बसे हो; अब रही मेरी और मेरे घराने की बात~इसलिए हम तो खुदावन्द की 'इबादत करेंगे।

¹⁶तब लोगों ने जवाब दिया कि खुदा न करे कि हम खुदावन्द को छोड़ कर और मा'बूदों की 'इबादत करें।¹⁷क्योंकि खुदावन्द हमारा खुदा वही है जिस ने हमको और हमारे बाप दादा को मुल्क मिस्र या'नी गुलामी के घर से निकाला और वह बड़े-बड़े निशान हमारे सामने दिखाए और सारे रास्ते जिस में हम चले और उन सब क़ौमों के बीच जिन में से हम गुज़रे हम को महफूज़ रखा।¹⁸और खुदावन्द ने सब क़ौमों या'नी अमोरियों को जो उस मुल्क में बसते थे हमारे सामने से निकाल दिया, ~इसलिए ~हम भी खुदावन्द की 'इबादत करेंगे क्योंकि वह हमारा खुदा है।

¹⁹यशू'अ ने लोगों से कहा, " तुम खुदावन्द की 'इबादत नहीं कर सकते; क्योंकि वह पाक़ खुदा है, वह ग़यूर खुदा है, वह तुम्हारी खताएँ और तुम्हारे गुनाह नहीं बख़्शेगा।²⁰अगर तुम खुदावन्द को छोड़ कर अजनबी मा'बूदों की 'इबादत करो तो अगरचे वह तुम से नेकी करता रहा है तो भी वह फिर कर तुम से बुराई करेगा और तुम को फ़ना कर डालेगा। "

²¹लोगों ने यशू'अ से कहा, " नहीं बल्कि हम खुदावन्द ही की 'इबादत करेंगे। "²²यशू'अ ने लोगों से कहा, " तुम आप ही अपने गवाह हो कि तुम ने खुदावन्द को चुना है कि उसकी 'इबादत करो। " उन्होंने ने कहा, " हम गवाह हैं। "²³तब उसने कहा, "इसलिए अब तुम अजनबी मा'बूदों को जो तुम्हारे बीच हैं दूर कर दो और अपने दिलों को खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तरफ़ लाओ। "

²⁴लोगों ने यशू'अ से कहा, " हम खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत करेंगे और उसी की बात मानेंगे। "²⁵इसलिए ~यशू'अ ने उसी रोज़ लोगों के साथ 'अहद बांधा, और उनके लिए सिक्म में कायदा और क़ानून ठहराया।²⁶और यशू'अ ने यह बातें खुदा की शरी'अत की किताब में लिख दीं, और एक बड़ा पत्थर लेकर उसे वहीं उस बलूत के दरख़्त के नीचे जो खुदावन्द के मक़्दिस के पास था खड़ा किया।

²⁷और यशू'अ ने सब लोगों से कहा कि देखो यह पत्थर हमारा गवाह रहे, क्योंकि उस ने खुदावन्द की सब बातें जो उस ने हम से कहीं सुनी हैं इसलिए यही तुम पर गवाह रहे ऐसा न हो की तुम अपने खुदा का इन्कार कर जाओ।²⁸फिर यशू'अ ने लोगों को उनकी अपनी अपनी मीरास की तरफ़ रुख़्सत कर दिया।

²⁹और इन बातों के बा'द यूँ हुआ कि नून का बेटा यशू'अ खुदावन्द का बन्दा एक सौ दस बरस का होकर वफ़ात कर गया।³⁰~और उन्होंने उसी की मीरास की हद पर तिमनत सिरह में जो इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में कोह-ए-जा'स की उत्तर की तरफ़ को है उसे दफ़न किया।

³¹और इस्राईली खुदावन्द की 'इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुजुर्गों के जीते जी करते रहे जो यशू'अ के बा'द ज़िन्दा रहे, और खुदावन्द के सब कामों से जो उस ने इस्राईलियों के लिए किये वाकिफ़ थे।

³²और उन्होंने यूसुफ़ की हड्डियों को, जिनको बनी इस्राईल मिस्र से ले आये थे, सिक्म में उस ज़मीन के हिस्से में दफ़न किया जिसे या'क़ूब ने सिक्म के बाप हमोर के बेटों से चाँदी के सौ सिक्कों में ख़रीदा था; और वह ज़मीन बनी यूसुफ़ की मीरास ठहरी।³³और हारून के बेटे इली'अज़र ने वफ़ात की और उन्होंने उसे उसके बेटे फ़ीन्हास की पहाड़ी पर दफ़न किया, जो इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में उसे दी गयी थी।

कुज़ात

Chapter 1

¹~और यशू'अ की मौत के बा'द यूँ हुआ कि बनी-इसाईल ने खुदावन्द से पूछा कि हमारी तरफ़ से कन'आनियों से जंग करने को पहले कौन चढ़ाई करे ?

²खुदावन्द ने कहा कि यहूदाह चढ़ाई करे; और देखो, मैंने यह मुल्क उसके हाथ में कर दिया है।³तब यहूदाह ने अपने भाई शमा'ऊन से कहा कि तू मेरे साथ मेरे बँटवारे के हिस्से में चल, ताकि हम कन'आनियों से लड़ें: और इसी तरह मैं भी तेरे बँटवारे के हिस्से में तेरे साथ चलूँगा। इसलिए शमा'ऊन उसके साथ गया।

⁴और यहूदाह ने चढ़ाई की, और खुदावन्द ने कन'आनियों और फ़रिज़ियों को उनके क़ब्ज़े में कर दिया; और उन्होंने बज़क़ में उनमें से दस हज़ार आदमी क़त्ल किए।⁵और अदूनी बज़क़ को बज़क़ में पाकर वह उससे लड़े, और कन'आनियों और फ़रिज़ियों को मारा।

⁶लेकिन अदूनी बज़क़ भागा, और उन्होंने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया, और उसके हाथ और पाँव के अँगूठे काट डाले।⁷तब अदूनी बज़क़ ने कहा कि हाथ और पाँव के अँगूठे कटे हुए सत्तर बादशाह मेरी मेज़ के नीचे रेज़ाचीनी करते थे, इसलिए जैसा मैंने किया वैसा ही खुदा ने मुझे बदला दिया। फिर वह उसे यरुशलीम में लाए और वह वहाँ मर गया।

⁸और बनी यहूदाह ने यरुशलीम से लड़ कर उसे ले लिया, और उसे बर्बाद करके शहर को आग से फूंक दिया।⁹इसके बा'द बनी यहूदाह उन कन'आनियों से जो पहाड़ी मुल्क और दक्खिनी हिस्से और नशेब की ज़मीन में रहते थे, लड़ने को गए।¹⁰और यहूदाह ने उन कन'आनियों पर जो हबरून में रहते थे चढ़ाई की (और हबरून का नाम पहले क़रयत अरबा' था); वहाँ उन्होंने सीसी और अखीमान और तलमी को मारा।

¹¹वहाँ से वह दबीर के बाशिदों पर चढ़ाई करने को गया (दबीर का नाम पहले क़रयत सिफ़र था)।¹²तब कालिब ने कहा, "जो कोई क़रयत सिफ़र को मार कर उसे ले ले, मैं उसे अपनी बेटी 'अकसा ब्याह दूँगा।"¹³और कालिब के छोटे भाई क़नज़ के बेटे गुतनीएल ने उसे ले लिया; फिर उसने अपनी बेटी 'अकसा उसे ब्याह दी।

¹⁴और जब वह उसके पास गई, तो उसने उसे सलाह दी कि वह उसके बाप से एक खेत माँगे; फिर वह अपने गधे पर से उतर पड़ी, तब कालिब ने उससे कहा, "तू क्या चाहती है?"¹⁵उसने उससे कहा, "मुझे बरकत दे; चूँकि तूने मुझे दक्खिन के मुल्क में रखखा है, इसलिए पानी के चश्मे भी मुझे दे।" तब कालिब ने ऊपर के चश्मे और नीचे के चश्मे उसे दिए।

¹⁶और मूसा के साले कीनी की औलाद खजूरों के शहर में बनी यहूदाह के साथ याहूदाह के वीराने ~को जो 'अराद के दक्खिन में है, चली गयी और जाकर लोगों के साथ रहने लगी।¹⁷और यहूदाह अपने भाई शमा'ऊन के साथ गया और उन्होंने उन कन'आनियों को जो सफ़त में रहते थे मारा, और शहर को मिटा दिया; इसलिए उस शहर का नाम 'हुरमा' कहलाया।

¹⁸और यहूदाह ने गज़ज़ा और उसका 'इलाक़ा, और अस्क़लोन और उसका 'इलाक़ा अक़रून और उसका 'इलाक़ा को भी ले लिया।¹⁹और खुदावन्द यहूदाह के साथ था, इसलिए उसने पहाड़ियों को निकाल दिया, लेकिन वादी के बाशिदों को निकाल न सका, क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे।

²⁰तब उन्होंने मूसा के कहने के मुताबिक़ हबरून कालिब को दिया; और उसने वहाँ से 'अनाक़ के तीनों बेटों को निकाल दिया।²¹और बनी बिनयमीन ने उन यबूसियों को जो यरुशलीम में रहते थे न निकाला, ~इसलिए यबूसी बनी बिनयमीन के साथ आज तक यरुशलीम में रहते हैं।

²²और यूसुफ़ के घराने ने भी बैतएल लेकिन चढ़ाई की, और खुदावन्द उनके साथ था।²³और यूसुफ़ के घराने ने बैतएल का हाल दरियाप्राप्त करने को जासूस भेजे (और उस शहर का नाम पहले लूज़ था)।²⁴और जासूसों ने एक शख्स को उस शहर से निकलते देखा और उससे कहा, कि शहर में दाखिल होने की राह हम को दिखा दे, तो हम तुझ से मेहरबानी से पेश आएँगे।

²⁵इसलिए~उसने शहर में दाखिल होने की राह उनको दिखा दी। उन्होंने शहर को बर्बाद किया, पर उस शख्स और उसके सारे घराने को छोड़ दिया।²⁶और वह शख्स हितियों के मुल्क में गया, और उसने वहाँ एक शहर बनाया और उसका नाम लूज़ रखखा; चुनाँचे आज तक उसका यही नाम है।

²⁷और मनस्सी ने भी बैत शान और उसके क़स्बों और ता'नाक और उसके क़स्बों और दोर और उसके क़स्बों के बाशिदों, और इबली'आम और उसके क़स्बों के बाशिदों, और मजिटो और उसके क़स्बों के बाशिदों को न निकाला; बल्कि कन'आनी उस मुल्क में बसे ही रहे।²⁸लेकिन जब इसाईल ने ज़ोर पकड़ा, तो वह कन'आनियों से बेगार का काम लेने लगे लेकिन उनको बिल्कुल निकाल न दिया।

²⁹और इफ़्राईम~ने उन कन'आनियों को जो जज़र में रहते थे न निकाला, ~इसलिए~कन'आनी उनके बीच जज़र में बसे रहे।

³⁰और ज़बूलून ने क़ितरोन और नहलाल के लोगों को न निकाला, इसलिए~कन'आनी उनमें क़याम करते रहे और उनके फ़रमाबरदार हो गए।

³¹और आशर ने 'अक्को और सैदा और अहलाब और अकज़ीब और हिलबा और अफ़ीक़ और रहोब के बाशिदों को न निकाला;³²बल्कि आशरी उन कन'आनियों के बीच जो उस मुल्क के बाशिदे थे बस गए, क्योंकि उन्होंने उनको निकाला न था।

³³और नफ़ताली ने बैत शम्स और बैत 'अनात के बाशिदों को न निकाला, बल्कि वह उन कन'आनियों में जो वहाँ रहते थे बस गया; तो भी बैत शम्स और बैत 'अनात के बाशिदे उनके फ़रमाबरदार हो गए।

³⁴और अमोरियों ने बनी दान को पहाड़ी मुल्क में भगा दिया, क्योंकि उन्होंने उनको वादी में आने न दिया।³⁵बल्कि अमोरी कोह-ए-हरिस पर और अय्यालोन और सा'लबीम में बसे ही रहे, तो भी बनी यूसुफ़ का हाथ ग़ालिब हुआ, ऐसा कि यह फ़रमाबरदार हो गए।³⁶और अमोरियों की सरहद 'अक़रब्बीम की चढ़ाई से या'नी चट्टान से शुरू' करके ऊपर ऊपर थी।

Chapter 2

¹और खुदावन्द का फ़रिश्ता जिल्जाल से बोकीम को आया और कहने लगा, "मैं तुम को मिस्र से निकाल कर, उस मुल्क में जिसके बारे में मैं ने तुम्हारे बाप-दादा से क्रसम खाई थी, ले आया और मैंने कहा, 'मैं हरगिज़ तुम से वा'दा खिलाफ़ी नहीं करूंगा।' और तुम उस मुल्क के बाशिंदों के साथ 'अहद न बाँधना, बल्कि तुम उनके मज़बहों को ढा देना।' लेकिन तुम ने मेरी बात नहीं मानी। तुमने क्यों ऐसा किया?

³इसी लिए मैंने भी कहा, 'कि मैं उनको तुम्हारे आगे से दफ़ा' न करूंगा, बल्कि वह तुम्हारे पहलुओं के कॉटे और उनके मा'बूद तुम्हारे लिए फंदा होंगे।' ⁴"जब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने सब बनी इस्राईल से यह बातें कहीं, तो वह ज़ोर-ज़ोर रोने से लगे। ⁵और उन्होंने उस जगह का नाम बोकीम रखवा; और वहाँ उन्होंने खुदावन्द के लिए कुर्बानी अदा की।

⁶और जिस वक़्त यशू'अ ने जमा'अत को रखसत किया था, तब बनी-इस्राईल में से हर एक अपनी मीरास को लौट गया था ताकि उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे।

⁷और वह लोग खुदावन्द की 'इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुजुर्गों के जीते जी करते रहे, जो यशू'अ के बा'द ज़िन्दा रहे और जिन्होंने खुदावन्द के सब बड़े काम जो उसने इस्राईल के लिए किए देखे थे। ⁸और नून का बेटा यशू'अ, खुदावन्द का बंदा, एक सौ दस बरस का होकर वफ़ात कर गया।

⁹और उन्होंने उसी की मीरास की हद पर, तिमनत हरिस में इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में जो कोह-ए-जा'स के उत्तर की तरफ़ है, उसको दफ़न किया। ¹⁰और वह सारी नसल भी अपने बाप-दादा से जा मिली; और उनके बा'द एक और नसल पैदा हुई, जो न खुदावन्द को और न उस काम को जो उसने इस्राईल के लिए किया जानती थी।

¹¹और बनी-इस्राईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और बा'लीम की 'इबादत करने लगे। ¹²और उन्होंने खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा को जो उनको मुल्क-ए- मिस्र से निकाल लाया था छोड़ दिया, और दूसरे मा'बूदों की जो उनके चारों तरफ़ की क़ौमों के मा'बूदों में से थे पैरवी करने और उनको सिज्दा करने लगे और खुदावन्द को गुस्सा दिलाया। ¹³और वह खुदावन्द को छोड़ कर बा'ल और 'इस्तारात की 'इबादत करने लगे।

¹⁴और खुदावन्द का क्रहर इस्राईल पर भड़का, और उसने उनको ग़ारतग़रों के हाथ में कर दिया जो उनको लूटने लगे; और उसने उनको उनके दुश्मनों के हाथ जो आस पास थे बेचा, ~इसलिए वह फिर अपने दुश्मनों के सामने खड़े न हो सके। ¹⁵और वह जहाँ कहीं जाते खुदावन्द का हाथ उनकी तकलीफ़ ही पर तुला रहता था, जैसा खुदावन्द ने कह दिया था और उनसे क्रसम खाई थी; इसलिए वह निहायत तंग आ गए।

¹⁶फिर खुदावन्द ने उनके लिए ऐसे क़ाज़ी खड़े किए, जिन्होंने उनको उनके ग़ारतग़रों के हाथ से छुड़ाया। ¹⁷लेकिन उन्होंने अपने क़ाज़ियों की भी न सुनी, बल्कि और मा'बूदों की पैरवी में ज़िन्ना करते और उनको सिज्दा करते थे; और वह उस राह से जिस पर उनके बाप-दादा चलते और खुदावन्द की फ़रमाँबरदारी करते थे, बहुत जल्द फिर गए और उन्होंने उनके से काम न किए।

¹⁸और जब खुदावन्द उनके लिए क़ाज़ियों को बरपा करता तो खुदावन्द उस क़ाज़ी के साथ होता, और उस क़ाज़ी के जीते जी उनको उनके दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया करता था; इसलिए कि जब वह अपने सताने वालों और दुख देने वालों के ज़रिए' कुढ़ते थे, तो खुदावन्द ग़मगीन होता था। ¹⁹लेकिन जब वह क़ाज़ी मर जाता, तो वह फिरकर और मा'बूदों की पैरवी में अपने बाप-दादा से भी ज़्यादा बिगड़ जाते और उनकी 'इबादत करते और उनको सिज्दा करते थे; वह न तो अपने कामों से और न अपनी घमंडी के चाल-चलन से बाज़ आए।

²⁰इसलिए खुदावन्द का ग़ज़ब इस्राईल पर भड़का और उसने कहा, "चूँकि इन लोगों ने मेरे उस 'अहद को जिसका हुक्म मैं ने उनके बाप-दादा को दिया था, तोड़ डाला और मेरी बात नहीं सुनी। ²¹इसलिए मैं भी अब उन क़ौमों में से जिनको यशू'अ छोड़ कर मरा है, किसी को भी इनके आगे से दफ़ा' नहीं करूंगा। ²²ताकि मैं इस्राईल को उन ही के ज़रिए' से आजमाऊँ, कि वह खुदावन्द की राह पर चलने के लिए अपने बाप-दादा की तरह क़ायम रहेंगे या नहीं।" ²³~इसलिए~खुदावन्द ने उन कौमों को रहने दिया और उनको जल्द न निकाल दिया और यशू'अ. के हाथ में भी उनको हवाले न किया।

Chapter 3

¹और यह वह क्रौमें हैं जिनको खुदावन्द ने रहने दिया, ताकि उनके वसीले से इस्राईलियों में से उन सब को जो कन'आन की सब लड़ाइयों से वाकिफ़ न थे आजमाए,²~सिर्फ़ मक़सद यह था कि बनी-इस्राईल की नसल के खासकर उन लोगों को, जो पहले लड़ना नहीं जानते थे लड़ाई सिखाई जाए ताकि वह वाकिफ़ हो जाएँ,³या'नी फ़िलिस्तिनों के पाँचों सरदार, और सब कन'आनी और सैदानी, और कोह-ए-बा'ल हरमून से हमत के मदख़ल तक के सब हव्वी जो कोह-ए-लुबनान में बसते थे।

⁴यह इसलिए थे कि इनके वसीले से इस्राइली आजमाए जाएँ, ताकि मा'लूम हो जाए के वह खुदावन्द के हुक्मों को जो उसने मूसा के ज़रिए' उनके बाप-दादा को दिए थे सुनेंगे या नहीं।⁵~इसलिए~बनी-इस्राईल कन'आनियों और हितियों और अमूरियों और फ़रिज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के बीच बस गए;⁶और उनकी बेटियों से आप निकाह करने और अपनी बेटियाँ उनके बेटों को देने, और उनके मा'बूदों की 'इबादत करने लगे।

⁷और बनी-इस्राईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द अपने खुदा को भूल कर बा'लीम और यसीरतों की 'इबादत करने लगे।⁸इसलिए खुदावन्द का क्रहर इस्राईलियों पर भड़का, और उसने उनको मसोपतामिया के बादशाह कोशन रिसा'तीम के हाथ बेच डाला; इसलिए वह आठ बरस तक कोशन रिसा'तीम के फ़रमाँबरदार रहे।

⁹और जब बनी-इस्राईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की तो खुदावन्द ने बनी-इस्राईल के लिए एक रिहाई देने वाले को खड़ा किया, और कालिब के छोटे भाई क्रनज़ के बेटे गुतनीएल ने उनको छुड़ाया।¹⁰और खुदावन्द की रूह उस पर उतरी और वह इस्राईल का क्राज़ी हुआ और जंग के लिए निकला; तब खुदावन्द ने मसोपतामिया के बादशाह कोशन रिसा'तीम को उसके हाथ में कर दिया,~इसलिए~उसका हाथ कोशन रिसा'तीम पर ग़ालिब हुआ।¹¹और उस मुल्क में चालीस बरस तक चैन रहा और क्रनज़ के बेटे गुतनीएल ने वफ़ात पाई।

¹²और बनी-इस्राईल ने फिर खुदावन्द के आगे बुराई की; तब खुदावन्द ने मोआब के बादशाह 'अजलून को इस्राईलियों के खिलाफ़ ज़ोर बख़्शा, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द के आगे बदी की थी।¹³और उसने बनी 'अम्मून और बनी 'अमालीक को अपने यहाँ जमा' किया और जाकर इस्राईल को मारा, और उन्होंने खजूरों का शहर ले लिया।¹⁴इसलिए बनीइस्राईल अठारह बरस तक मोआब के बादशाह 'अजलून के फ़रमाँबरदार रहे।

¹⁵लेकिन जब बनी-इस्राईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की तो खुदावन्द ने बिनयमीनी जीरा के बेटे अहूद को जो बेसहारा था, उनका छुड़ाने वाले मुकर्रर किया और बनी इस्राईल ने उसके ज़रिए' मोआब के बादशाह 'अजलून के लिए हदिया भेजा।

¹⁶और अहूद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार एक हाथ लम्बी बनवाई, और उसे अपने जामे के नीचे दहनी रान पर बाँध लिया।¹⁷फिर उसने मोआब के बादशाह 'अजलून के सामने वह हदिया पेश किया, और 'अजलून बड़ा मोटा आदमी था।¹⁸और जब वह हदिया पेश कर चुका तो उन लोगों को जो हदिया लाए थे रुख़सत किया।

¹⁹और वह उस पत्थर के कान के पास जो जिल्लाल में है, कहने लगा, "ऐ बादशाह मेरे पास तेरे लिए एक खूफ़िया पैग़ाम है | " उसने कहा, " ख़ामोश रह | " तब वह पास सब जो उसके खड़े थे उसके पास से बाहर चले गए।²⁰फिर अहूद उसके पास आया, उस वक़्त वह अपने हवादार बालाख़ाने में अकेला बैठा था। तब अहूद ने कहा, "तेरे लिए मेरे पास खुदा की तरफ़ से एक पैग़ाम है।" तब वह कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ।

²¹और अहूद ने अपना बायाँ हाथ बढ़ा कर अपनी दहनी रान पर से वह तलवार ली और उसकी पेट में घुसेड़ दी।²²और फल क़ब्ज़े समेत दाख़िल हो गया, और चर्बी फल के ऊपर लिपट गई; क्योंकि उसने तलवार को उसकी पेट से न निकाला, बल्कि वह पार हो गई।²³तब अहूद ने बरआमदे में आकर और बालाख़ाने के दरवाज़ों के अन्दर उसे बन्द कर के ताला लगा दिया।

²⁴और जब वह चलता बना तो उसके ख़ादिम आए और उन्होंने देखा कि बालाख़ाने के दरवाज़ों में ताला लगा है; वह कहने लगे, "वह ज़रूर हवादार कमरे में फरागत कर रहा है।"²⁵और वह ठहरे ठहरे शरमा भी गए, और जब देखा के वह बालाख़ाने के दरवाज़े नहीं खोलता, तो उन्होंने कुंजी ली और दरवाज़े खोले, और देखा कि उनका आक्रा ज़मीन पर मरा पड़ा है।

²⁶और वह ठहरे ही हुए थे के अहूद इतने में भाग निकला, और पत्थर की कान से आगे बढ़ कर स'ईरत में जा पनाह ली।²⁷और वहाँ पहुँच कर उसने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में नरसिंगा फूँका। तब बनी इस्राईल उसके साथ पहाड़ी मुल्क से उतरे, और वह उनके आगे आगे हो लिया।

²⁸उसने उनको कहा, "मेरे पीछे पीछे चले चलो, क्योंकि खुदावन्द ने तुम्हारे दुश्मनों या'नी मोआबियों को तुम्हारे क़ब्ज़ा में कर दिया है।"~इसलिए उन्होंने उसके पीछे पीछे जाकर यरदन के घाटों को जो मोआब की तरफ़ थे अपने क़ब्ज़े में कर लिया, और एक को भी पार उतरने न दिया।²⁹उस वक़्त उन्होंने मोआब के दस हज़ार शख्स के क़रीब जो सब के सब मोटे ताज़े और बहादुर थे, क़त्ल किए और उनमें से एक भी न बचा।³⁰~इसलिए~मोआब उस दिन इस्राईलियों के हाथ के नीचे दब गया, और उस मुल्क में अस्सी बरस चैन रहा।

³¹इसके बा'द 'अनात का बेटा शमजर खड़ा हुआ, और उसने फ़िलिस्तिनों में से छः सौ आदमी बैल के पैसे से मारे; और उसने भी इस्राईल को रिहाई दी।

Chapter 4

¹और अहूद की वफ़ात के बाद बनी-इसाईल ने फिर खुदावन्द के सामने बुराई की।²~इसलिए~खुदावन्द ने उनको कन'आन के बादशाह याबीन के हाथ जो हसूर में सलतनत करता था बेचा, और उसके लश्कर के सरदार का नाम सीसरा था; वह~दीगर अक्रवाम के शहर हरूसत में रहता था।³तब बनी-इसाईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की; क्योंकि उसके पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और उसने बीस बरस तक बनी-इसाईल को शिदत से सताया।

⁴उस वक़्त लफ़ीदोत की बीवी दबोरा नबिया, बनी-इसाईल का इन्साफ़ किया करती थी।⁵और वह इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में रामा और बैतएल के बीच दबोरा के खजूर के दरख़्त के नीचे रहती थी, और बनी-इसाईल उसके पास इन्साफ़ के लिए आते थे।

⁶और उसने क़ादिस नफ़्ताली से अबीनू'अम के बेटे बरक़ को बुला भेजा और उससे कहा, "क्या खुदावन्द इसाईल के खुदा ने हुक्म नहीं किया, कि तू तबूर के पहाड़ पर चढ़ जा, और बनी नफ़्ताली और बनी ज़बूलून में से दस हज़ार आदमी अपने साथ ले ले?"⁷और मैं नहर-ए-क्रीसोन पर याबीन के लश्कर के सरदार सीसरा को और उसके रथों और फ़ौज को तेरे पास खींच लाऊँगा, और उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।"

⁸और बरक़ ने उससे कहा, "अगर तू मेरे साथ चलेगी तो मैं जाऊँगा, लेकिन अगर तू मेरे साथ नहीं चलेगी तो मैं नहीं जाऊँगा।"⁹उसने कहा, "मैं ज़रूर तेरे साथ चलूँगी; लेकिन इस सफ़र से जो तू करता है तुझे कुछ इज़ज़त हासिल न होगी, क्योंकि खुदावन्द सीसरा को एक 'औरत के हाथ बेच डालेगा।" और दबोरा उठ कर बरक़ के साथ क़ादिस को गई।

¹⁰और बरक़ ने ज़बूलून और नफ़्ताली को क़ादिस में बुलाया; और दस हज़ार आदमी अपने साथ लेकर चढ़ा, और दबोरा भी उसके साथ चढ़ी।

¹¹और हिब्र क्रीनी ने जो मूसा के साले हुबाब की नसल से था, क्रीनियों से अलग होकर क़ादिस के क़रीब ज़ाननीम में बलूत के दरख़्त के पास अपना डेरा डाल लिया था।

¹²तब उन्होंने सीसरा को ख़बर पहुँचाई कि बरक़ बिन अबीनू'अम कोह-ए-तबूर पर चढ़ गया है।¹³और सीसरा ने अपने सब रथों को, या'नी लोहे के नौ सौ रथों और अपने साथ के सब लोगों को दीगर अक्रवाम के शहर हरूसत से क्रीसोन की नदी पर जमा' किया।

¹⁴तब दबोरा ने बरक़ से कहा कि उठ! क्योंकि यही वह दिन है, जिसमें खुदावन्द ने सीसरा को तेरे क़ब्ज़े में कर दिया है। क्या खुदावन्द तेरे आगे नहीं गया है? तब बरक़ और वह दस हज़ार आदमी उसके पीछे पीछे कोह-ए-तबूर से उतरे।

¹⁵और खुदावन्द ने सीसरा को और उसके सब रथों और सब लश्कर को, तलवार की धार से बरक़ के सामने शिकस्त दी; और सीसरा रथ पर से उतर कर पैदल भागा।¹⁶और बरक़ रथों और लश्कर को दीगर अक्रवाम के हरूसत शहर तक दौड़ाता गया; चुनौचे सीसरा का सारा लश्कर तलवार से मिटा, और एक भी न बचा।

¹⁷लेकिन सीसरा हिब्र क्रीनी की बीवी या'एल के डेरे को पैदल भाग गया, इसलिए कि हसूर के बादशाह याबीन और हिब्र क्रीनी के घराने में सुलह थी।¹⁸तब या'एल सीसरा से मिलने को निकली, और उससे कहने लगी, "ऐ मेरे खुदावन्द, आ मेरे पास आ, और परेशान न हो।" इसलिए वह उसके पास डेरे में चला गया, और उसने उसको कम्बल उढ़ा दिया।

¹⁹तब सीसरा ने उससे कहा कि ज़रा मुझे थोड़ा सा पानी पीने को दे, क्योंकि मैं प्यासा हूँ। तब उसने दूध का मश्कीज़ा खोलकर उसे पिलाया, और फिर उसे उढ़ा दिया।²⁰तब उसने उससे कहा कि तू डेरे के दरवाज़े पर खड़ी रहना, और अगर कोई शख्स आकर तुझ से पूछे कि यहाँ कोई आदमी है? तो कह देना कि नहीं।

²¹तब हिब्र की बीवी या'एल डेरे की एक मेख और एक मेखचू को हाथ में ले, दबे पौव उसके पास गई और मेख उसकी कनपट्टियों पर रख कर ऐसी ठोंकी कि वह पार होकर ज़मीन में जा धँसी, क्योंकि वह गहरी नींद में था, पस वह बेहोश होकर मर गया।²²और जब बरक़ सीसरा को दौड़ाता आया तो या'एल उससे मिलने को निकली और उससे कहा, "आ जा, और मैं तुझे वही शख्स जिसे तू ढूँडता है दिखा दूँगी।" पस उसने उसके पास आकर देखा कि सीसरा मरा पड़ा है, और मेख उसकी कनपट्टियों में है।

²³~इसलिए~खुदा ने उस दिन कन'आन के बादशाह याबीन को बनी-इसाईल के सामने नीचा दिखाया।²⁴और बनी-इसाईल का हाथ कन'आन के बादशाह याबीन पर ज़्यादा ग़ालिब ही होता गया, यहाँ तक कि उन्होंने शाह-ए-कन'आन याबीन को बर्बाद कर डाला।

Chapter 5

¹उसी दिन दबोरा और अबीनू'अम के बेटे बरक ने यह गीत गाया कि :²~पेशवाओं ने जो इस्राईल की पेशवाई की और लोग खुशी खुशी भर्ती हुए इसके लिए खुदावन्द को मुबारक कहो।

³ऐ बादशाहों, सुनो! ऐ शाहज़ादों, कान लगाओ! मैं खुद खुदावन्द की ता'रीफ़ करूंगी, मैं खुदावन्द, इस्राईल के खुदा की बड़ाई गाऊंगी।⁴ऐ खुदावन्द, जब तू श'ईर से चला, जब तू अदोम के मैदान से बाहर निकला, तो ज़मीन कॉप उठी, और आसमान टूट पड़ा, हाँ, बादल बरसे।

⁵पहाड़ खुदावन्द की हुजूरी की वजह से, और वह सीना भी खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हुजूरी की वजह से कॉप गए।⁶'अनात के बेटे शमजर के दिनों में, और या'एल के दिनों में शाहराहें सूनी पड़ी थीं, और मुसाफ़िर पगडंडियों से आते जाते थे।

⁷इस्राईल में हाकिम बन्द रहे, वह बन्द रहे, जब तक कि मैं दबोरा खड़ी न हुई, जब तक कि मैं इस्राईल में माँ होकर न उठी।⁸उन्होंने नए नए मा'बूद चुन लिए, तब जंग फाटकों ही पर होने लगी। क्या चालीस हज़ार इस्त्राईलियों में भी कोई ढाल या बर्छी दिखाई देती थी?

⁹मेरा दिल इस्राईल के हाकिमों की तरफ़ लगा है जो लोगों के बीच खुशी खुशी भर्ती हुए। तुम खुदावन्द को मुबारक कहो।¹⁰~ऐ तुम सब जो सफ़ेद गर्थों पर सवार हुआ करते हो, और तुम जो नफ़ीस गालीचों पर बैठते हो, और तुम लोग जो रास्ते चलते हो, सब इसका चर्चा करो।

¹¹तीरअंदाज़ों के शोर से दूर पनघटों में, वह ~खुदावन्द के सच्चे कामों का, या'नी उसकी हुक्मत के उन सच्चे कामों का जो इस्राईल में हुए ज़िक्र करेंगे। उस वक़्त खुदावन्द के लोग उतर उतर कर फाटकों पर गए।

¹²"जाग, जाग, ऐ दबोरा! जाग, जाग और गीत गा! उठ, ऐ बरक, और अपने गुलामों को बाँध ले जा, ऐ अबीनू'अम के बेटे।¹³उस वक़्त थोड़े से ~रईस और लोग उतर आए: खुदावन्द मेरी तरफ़ से ताक़तवरों के मुक़ाबिले के लिए आया।

¹⁴~इफ़्राईम ~में से वह ~लोग आए जिनकी जड़ 'अमालीक में है; तेरे पीछे पीछे ऐ बिनयमीन, तेरे लोगों के बीच, मकीर में से हाकिम उतर कर आए; और ज़बूलून में से वह ~लोग आए जो सिपहसालार की लाठी लिए रहते हैं;

¹⁵और इश्कार के सरदार दबोरा के साथ साथ थे, जैसा इश्कार वैसा ही बरक था; वह ~लोग उसके साथी ~झपट कर वादी में गए। रूबिन की नदियों के पास बड़े बड़े इरादे दिल में ठाने गए।

¹⁶तू उन सीटियों को सुनने के लिए, जो भेड़ बकरियों के लिए बजाते हैं भेड़ सालों के बीच क्यों बैठा रहा? रूबिन की नदियों के पास दिलों में बड़ी घबराहट थी।

¹⁷'जिल'आद यरदन के पार रहा; और दान किशतियों में क्यों रह गया? आशर समुन्दर के बन्दर के पास बैठा ही रहा, और अपनी खाड़ियों के आस पास जम गया।

¹⁸ज़बूलून अपनी जान पर खेलने वाले लोग थे; और नफ़ताली भी मुल्क के ऊँचे ऊँचे मक़ामों पर ऐसा ही निकला।

¹⁹~बादशाह आकर लड़े, तब कन'आन के बादशाह ता'नाक में मजिदो के चश्मों के पास लड़े: लेकिन उनको कुछ रूपये हासिल न हुए।²⁰आसमान की तरफ़ से भी लड़ाई हुई; बल्कि सितारे भी अपनी अपनी मंजिल में सीसरा से लड़े।

²¹~क्रीसोन नदी उनको बहा ले गई, या'नी वही पुरानी नदी जो क्रीसोन नदी है। ऐ मेरी जान! तू ज़ोरों में चल।²²उनके कूदने, उन ताक़तवर घोड़ों के कूदने की वजह से, खुरों की टांप की आवाज़ होने लगी।

²³खुदावन्द के फ़रिश्ते ने कहा, कि तुम मीरोज़ पर ला'नत करो, उसके बाशिंदों पर सख़्त ला'नत करो क्योंकि वह खुदावन्द की मदद को ताक़तवर के मुक़ाबिल खुदावन्द की मदद को आए।

²⁴~हिब्र क्रीनी की बीवी या'एल, सब 'औरतों से मुबारक ठहरेगी; जो 'औरतें डेरों में हैं उन से वह मुबारक होगी।²⁵सीसरा ने पानी माँगा, उसने उसे दूध दिया, अमीरों की थाल में वह उसके लिए मक्खन लाई।

²⁶उसने अपना हाथ मेख को, और अपना दहना हाथ बड़इयों के मेखचू को लगाया; और मेखचू से उसने सीसरा को मारा, उसने उसके सिर को फोड़ डाला, और उसकी कनपट्टियों को आर पार छेद दिया।²⁷उसके पाँव पर वह ~झुका, वह गिरा, और पड़ा रहा; उसके पाँव पर वह झुका और गिरा; जहाँ वह झुका था, वहीं वह मर कर गिरा।

²⁸सीसरा की माँ खिड़की से झाँकी और चिल्लाई, उसने झिलमिली की ओट से पुकारा, 'उसके रथ के आने में इतनी देर क्यों लगी? उसके रथों के पहिए क्यों अटक गए?'

²⁹उसकी अक्लमन्द 'औरतों ने जवाब दिया, बल्कि उसने अपने को आप ही जवाब दिया,³⁰'क्या उन्होंने लूट को पाकर उसे बाँट नहीं लिया है? क्या हर आदमी को एक एक बल्कि दो दो कुँवारियाँ, और सीसरा को रंगारंग कपड़ों की लूट, बल्कि बेल बूटे कढ़े हुए रंगारंग कपड़ों की लूट, और दोनों तरफ़ बेल बूटे कढ़े हुए जो गुलामों की गरदनो पर लदी हों, नहीं मिली ?'

³¹~ऐ खुदावन्द, तेरे सब दुश्मन ऐसे ही हलाक हो जाएँ! लेकिन उसके प्यार करने वाले आफ़ताब की तरह हों जब वह ज़ोश के साथ उगता है।" और मुल्क में चालीस बरस अमन रहा।

Chapter 6

¹और बनी-इसाईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द ने उनको सात बरस तक मिदियानियों के हाथ में रखवा।²और मिदियानियों का हाथ इसाईलियों पर गालिब हुआ; और मिदियानियों की वजह से बनी-इसाईल ने अपने लिए पहाड़ों में खोह और गार और किले बना लिए।

³और ऐसा होता था कि जब बनी-इसाईल कुछ बोते थे, तो मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग उन पर चढ़ आते थे; और उनके मुकाबिल डरे लगा कर गज़ा तक खेतों की पैदावार को बर्बाद कर डालते, और बनी-इसाईल के लिए न तो कुछ खुराक, न भेड़-बकरी, न गाय बैल, न गधा छोड़ते थे।

⁵क्योंकि वह अपने चौपायों और डेरों को साथ लेकर आते, और टिड्डियों के दल की तरह आते; और वह और उनके ऊँट बेशुमार होते थे। यह लोग मुल्क को तबाह करने के लिए आ जाते थे।⁶~इसलिए-इसाईली मिदियानियों की वजह से निहायत बर्बाद हो गए, और बनी-इसाईल खुदावन्द से फ़रियाद करने लगे।

⁷और जब बनी-इसाईल मिदियानियों की वजह से खुदावन्द से फ़रियाद करने लगे,⁸तो खुदावन्द ने बनी-इसाईल के पास एक नबी को भेजा। उसने उनसे कहा कि खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फ़रमाता है: मैं तुम को मिस्र से लाया, और मैंने तुम को गुलामी के घर से बाहर निकाला।

⁹मैंने मिस्त्रियों के हाथ से और उन सभों के हाथ से जो तुम को सताते थे तुम को छुड़ाया, और तुम्हारे सामने से उनको दफ़ा किया और उनका मुल्क तुम को दिया।¹⁰और मैंने तुम से कहा था कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा मैं हूँ;~इसलिएतुम उन अमोरियों के मा'बूदों से जिनके मुल्क में बसते हो, मत डरना। लेकिन तुम ने मेरी बात न मानी।

¹¹फिर खुदावन्द का फ़रिश्ता आकर उफ़रा में बलूत के एक दरख्त के नीचे जो यूआस अबी'अज़री का था बैठा, और उसका बेटा जिदाऊन मय के एक कोल्हू में गेहूँ झाड़ रहा था ताकि उसको मिदियानियों से छिपा रखे।¹²और खुदावन्द का फ़रिश्ता उसे दिखाई देकर उससे कहने लगा कि ऐ ताक़तवर सूर्मा, खुदावन्द तेरे साथ है।

¹³जिदा'ऊन ने उससे कहा, "ऐ मेरे मालिक! अगर खुदावन्द ही हमारे साथ है तो हम पर यह सब हादसे क्यों गुज़रे? और उसके वह सब 'अजीब काम कहाँ गए, जिनका ज़िक्र हमारे बाप-दादा हम से यूँ करते थे, कि क्या खुदावन्द ही हम को मिस्र से नहीं निकाल लाया? लेकिन अब तो खुदावन्द ने हम को छोड़ दिया, और हम को मिदियानियों के हाथ में कर दिया।"

¹⁴तब खुदावन्द ने उस पर निगाह की और कहा कि तू अपने इसी ताक़त में जा, और बनी-इसाईल की मिदियानियों के हाथ से छुड़ा। क्या मैंने तुझे नहीं भेजा?

¹⁵उसने उससे कहा, "ऐ मालिक! मैं किस तरह बनी-इसाईल को बचाऊँ? मेरा घराना मनस्सी में सब से ग़रीब है, और मैं अपने बाप के घर में सब से छोटा हूँ।"

¹⁶खुदावन्द ने उससे कहा, "मैं ज़रूर तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को ऐसा मार लेगा जैसे एक आदमी को।"¹⁷तब उसने उससे कहा कि अगर अब मुझ पर तेरे करम की नज़र हुई है, तो इसका मुझे कोई निशान दिखा कि मुझ से तू ही बातें करता है।¹⁸और मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तू यहाँ से न जा जब तक मैं तेरे पास फिर न आऊँ और अपना हृदिया निकाल कर तेरे आगे न रखूँ। उसने कहा कि जब तक तू फिर आ न जाए, मैं ठहरा रहूँगा।

¹⁹तब जिदा'ऊन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक ऐफ़ा आटे की फ़तीरी रोटियाँ तैयार कीं, और गोश्त को एक टोकरी में और शोरबा एक हॉण्डी में डालकर उसके पास बलूत के दरख्त के नीचे लाकर पेश किया।²⁰तब खुदा के फ़रिश्ते ने उससे कहा, "इस गोश्त और फ़तीरी रोटियों को ले जाकर उस चट्टान पर रख, और शोरबे को उंडेल दे।" उसने वैसा ही किया।

²¹तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उस लाठी की नोक से जो उसके हाथ में थी, गोश्त और फ़तीरी रोटियों को छुआ; और उस पत्थर से आग निकली और उसने गोश्त और फ़तीरी रोटियों को भसम कर दिया। तब खुदावन्द का फ़रिश्ता उसकी नज़र से ग़ायब हो गया।

²²और जिदा'ऊन ने जान लिया के वह खुदावन्द का फ़रिश्ता था;~इसलिए ~जिदा'ऊन कहने लगा, "अफ़सोस है ऐ मालिक, खुदावन्द, कि मैंने खुदावन्द के फ़रिश्ते को आमने-सामने देखा।"²³खुदावन्द ने उससे कहा, "तेरी सलामती हो, ख़ौफ़ न कर, तू मरेगा नहीं।"²⁴तब जिदाऊन ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बह बनाया, और उसका नाम यहोवा सलोम रखवा; वह अबी'अज़रियों के 'उफ़रा में आज तक मौजूद है।

²⁵और उसी रात खुदावन्द ने उसे कहा कि अपने बाप का जवान बैल, या'नी वह दूसरा बैल जो सात बरस का है ले, और बा'ल के मज़बह को जो तेरे बाप का है ढा दे, और उसके पास की यसीरत को काट डाल;²⁶और खुदावन्द अपने खुदा के लिए इस गद्दी की चोटी पर क्रा'इदे के मुताबिक़ एक मज़बह बना; और उस दूसरे बैल को लेकर, उस यसीरत की लकड़ी से जिसे तू काट डालेगा, सोख्तनी कुर्बानी गुज़ार।

²⁷तब जिदा'ऊन ने अपने नौकरों में से दस आदमियों को साथ लेकर जैसा खुदावन्द ने उसे फ़रमाया था किया; और चूँकि वह यह काम अपने बाप के खानदान और उस शहर के बाशिंदों के डर से दिन को न कर सका, इसलिए उसे रात को किया।

²⁸जब उस शहर के लोग सुबह सवेरे उठे तो क्या देखते हैं, कि बा'ल का मज़बह ढाया हुआ, और उसके पास की यसीरत कटी हुई, और उस मज़बह पर जो बनाया गया था वह दूसरा बैल चढ़ाया हुआ है।²⁹और वह आपस में कहने लगे, "किसने यह काम किया?" और जब उन्होंने तहक़ीकात और पूछ-ताछ की तो लोगों ने कहा, "यूआस के बेटे जिदा'ऊन ने यह काम किया है।"

³⁰तब उस शहर के लोगों ने यूआस से कहा, "अपने बेटे को निकाल ला ताकि क़त्ल किया जाए, इसलिए कि उसने बा'ल का मज़बह ढा दिया, और उसके पास की यसीरत काट डाली है।"

³¹यूआस ने उन सभों को जो उसके सामने खड़े थे कहा, "क्या तुम बा'ल के वास्ते झगड़ा करोगे? या तुम उसे बचा लोगे? जो कोई उसकी तरफ़ से झगड़ा करे वह इसी सुबह मारा जाए। अगर वह खुदा है तो आप ही अपने लिए झगड़े, क्योंकि किसी ने उसका मज़बह ढा दिया है।"³²इसलिए उसने उस दिन जिदा'ऊन का नाम यह कहकर यरुब्बा'ल रखवा, कि बा'ल आप इससे झगड़ ले, इसलिए कि इसने उसका मज़बह ढा दिया है।

³³तब सब मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग इकट्ठे हुए, और पार होकर यज़र'एल की वादी में उन्होंने डेरा किया।

³⁴तब खुदावन्द की रूह जिदा'ऊन पर नाज़िल हुई,~इसलिए~उसने नरसिंगा फूँका और अबी'अज़र के लोग उसकी पैरवी में इकट्ठे हुए।³⁵फिर उसने सारे मनस्सी के पास क़ासिद भेजे, तब वह भी उसकी पैरवी में इकट्ठे हुए। और उसने आशर और ज़बूलून और नफ़्ताली के पास भी क़ासिद रवाना किए,~इसलिए वह उनके इस्तक्रबाल को आए।

³⁶तब जिदा'ऊन ने खुदा से कहा, "अगर तू अपने क़ौल के मुताबिक़ मेरे हाथ के वसीले से बनी-इस्राईल को रिहाई देना चाहता है,³⁷तो देख, मैं भेड़ की ऊन खलिहान में रख दूँगा;~इसलिए~अगर ओस सिर्फ़ ऊन ही पर पड़े और आस- पास की ज़मीन सब सूखी रहे, तो मैं जान लूँगा कि तू अपने क़ौल के मुताबिक़ बनी-इस्राईल को मेरे हाथों के वसीले से रिहाई बख़्शेगा।"

³⁸और ऐसा ही हुआ। क्योंकि वह सुबह को जूँ ही सवेरे उठा, और उस ऊन को दबाया और ऊन में से ओस निचोड़ी तो प्याला भर पानी निकला।

³⁹तब जिदा'ऊन ने खुदा से कहा कि तेरा गुस्सा मुझ पर न भड़के, मैं सिर्फ़ एक बार और 'अर्ज़ करता हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि सिर्फ़ एक बार और इस ऊन से आजमाइश कर लूँ, अब सिर्फ़ ऊन ही ऊन ख़ुशक रहे और आस पास की सब ज़मीन पर ओस पड़े।⁴⁰~तब खुदा ने उस रात ऐसा ही किया क्योंकि ऊन ही ख़ुशक रही और सारी ज़मीन पर ओस पड़ी।

Chapter 7

¹तब यरुब्बा'ल या'नी जिदा'ऊन और सब लोग जो उसके साथ थे सवेरे ही उठे, और हरोद के चश्मे के पास डेरा किया, और मिदियानियों की लश्कर गाह उनके उत्तर की तरफ़ कोह-ए-मोरा के मुत्तसिल वादी में थी

²तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा, "तेरे साथ के लोग इतने ज़्यादा हैं, कि मैं मिदियानियों को उनके हाथ में नहीं कर सकता; ऐसा न हो कि इस्राइली मेरे सामने अपने ऊपर फ़ख़्र कर के कहने लगे कि हमारी ताक़त ने हम को बचाया।"³~इसलिए~तू लोगों में सुना सुना कर ऐलान कर दे कि जो कोई तरसान और हिरासान हो, वह लौट कर कोह-ए-जिल'आद से चला जाए'। चुनाचें उन लोगों में से बाइस हज़ार तो लौट गए, और दस हज़ार बाक़ी रह गए।

⁴तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि लोग अब भी ज़्यादा हैं;~इसलिए~तू उनको चश्मे के पास नीचे ले आ, और वहाँ मैं तेरी खातिर उनको आजमाऊँगा; और ऐसा होगा कि जिसके बारे में मैं तुझ से कहूँ, 'यह तेरे साथ जाए, वही तेरे साथ जाए; और जिसके हक़ में मैं कहूँ कि यह तेरे साथ न जाए,' वह न जाए।

⁵~इसलिए~वह उन लोगों को चश्मे के पास नीचे ले गया, और खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि जो जो अपनी ज़बान से पानी चपड़ चपड़ कर के कुत्ते की तरह पिपे उसको अलग रख, और वैसे ही हर ऐसे शख्स को जो घुटने टेक कर पिपे।⁶~इसलिए~जिन्होंने अपना हाथ अपने मुँह से लगा कर चपड़ चपड़ कर के पिया वह गिनती में तीन सौ शख्स थे, और बाक़ी सब लोगों ने घुटने टेक कर पानी पिया।

⁷तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि मैं इन तीन सौ आदमियों के वसीले से जिन्होंने चपड़ चपड़ कर के पिया तुम को बचाऊँगा, और मिदियानियों को तेरे हाथ में कर दूँगा; और बाक़ी सब लोग अपनी अपनी जगह को लौट जाएँ।⁸तब उन लोगों ने अपना-अपना खाना और नरसिंगा अपने अपने हाथ में लिया; और उसने सब इस्राइली आदमियों को उनके डेरों की तरफ़ रवाना कर दिया पर उन तीन सौ आदमियों रख लिया; और मिदियानियों की लश्कर गाह उसके नीचे वादी में थी।

⁹और उसी रात खुदावन्द ने उससे कहा, "उठ, और नीचे लश्कर गाह में उतर जा: क्योंकि मैंने उसे तेरे क़ब्ज़ा में कर दिया है।"¹⁰लेकिन अगर तू नीचे जाते डरता है, तो तू अपने नौकर फ़ूराह के साथ लश्कर गाह में उतर जा,¹¹और तू सुन लेगा कि वह क्या कह रहे हैं; इसके बाद तुझ को हिम्मत होगी कि तू उस लश्कर गाह में उतर जाए। चुनाचें वह अपने नौकर फ़ूराह को साथ लेकर उन सिपाहियों के पास जो उस लश्कर गाह के किनारे थे गया।

¹²और मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग कसरत से वादी के बीच टिड्डियों की तरह फैले पड़े थे; और उनके ऊँट कसरत की वजह से समुन्दर के किनारे की रेत की तरह बेशुमार थे।

¹³और जब जिदा'ऊन पहुँचा तो देखो, वहाँ एक शख्स अपना ख़्वाब अपने साथी से बयान करता हुआ कह रहा था, "देख, मैंने एक ख़्वाब देखा है कि जौ की एक रोटी मिदियानी लश्कर गाह में गिरी और लुढ़कती हुई डेरे के पास पहुँची, और उससे ऐसी टकराई कि वह गिर गया और उसको ऐसा उलट दिया कि वह डेरा फ़र्श हो गया।"¹⁴तब उसके साथी ने जवाब दिया कि यह यूआस के बेटे जिदा'ऊन इस्राइली आदमी की तलवार के 'अलावा और कुछ नहीं; खुदा ने मिदियान की और सारे लश्कर को उसके क़ब्ज़े में कर दिया है।

¹⁵जब जिदा'ऊन ने ख़्वाब का मज़मून और उसकी ता'बीर सुनी तो सिज्दा किया, और इस्राइली लश्कर में लौट कर कहने लगा, "उठो, क्योंकि खुदावन्द ने मिदियानी लश्कर को तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया है।"¹⁶और उसने उन तीन सौ आदमियों के तीन ग़ोल किए, और उन सभी के हाथ में एक एक नरसिंगा, और उसके साथ एक एक खाली घड़ा दिया हर घड़े के अन्दर एक मशाल थी।

¹⁷और उसने उनसे कहा कि मुझे देखते रहना और वैसा ही करना; और देखो, जब मैं लश्कर गाह के किनारे जा पहुँचूँ, तो जो कुछ मैं करूँ तुम भी वैसा ही करना।¹⁸जब मैं और वह सब जो मेरे साथ हैं। नरसिंगा फूँके, तो तुम भी लश्कर गाह की हर तरफ़ नरसिंगे फूँकना और ललकारना, ~यहोवा की और जिदा'ऊन की तलवार।"

¹⁹~इसलिए बीच के पहर के शुरू' में जब नए पहर के बदले गए, तो जिदा'ऊन और वह सौ आदमी जो उसके साथ थे लश्कर गाह के किनारे आए; और उन्होंने नरसिंगे फूँके और उन घड़ों को जो उनके हाथ में थे तोड़ा।

²⁰और उन तीनों ग़ोलों ने नरसिंगे फूँके और घड़े तोड़े और मशालों को अपने बाएँ हाथ में और नरसिंगों को फूँकने के लिए अपने दहने हाथ में ले लिया और चिल्ला उठे कि यहोवा की और जिदा'ऊन की तलवार।²¹और यह सब के सब लश्कर गाह के चारों तरफ़ अपनी अपनी जगह खड़े हो गए, तब सारा लश्कर दौड़ने लगा और उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर उनको भगाया।

²²और उन्होंने तीन सौ नरसिंगों को फूँका, और खुदावन्द ने हर शख्स की तलवार उसके साथी और सब लश्कर पर चलवाई और सारा लश्कर सरीरात की तरफ़ बैत-सित्ता तक और तब्बात के करीब अबील महूला की सरहद तक भागा।²³तब इस्राइली आदमी नफ़्ताली और आशर और मनस्सी की सरहदों से जमा' होकर निकले और मिदियानियों का पीछा किया।

²⁴और जिदा'ऊन ने इफ़्राईम के तमाम पहाड़ी मुल्क में क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा कि मिदियानियों के मुक़ाबिले को उतर आओ, और उनसे पहले पहले दरिया-ए-यरदन के घाटों पर बैतबरा तक क़ाबिज़ हो जाओ। तब सब इफ़्राईमी जमा' होकर दरिया-ए-यरदन के घाटों पर बैतबरा तक क़ाबिज़ हो गए।

²⁵और उन्होंने मिदियान के दो सरदारों 'ओरेब और ज़ईब को पकड़ लिया, और 'ओरेब को 'ओरेब की चट्टान पर और ज़ईब को ज़ईब के कोल्हू के पास क़त्ल किया; और मिदियानियों को दौड़ाया और 'ओरेब और ज़ईब के सिर यरदन पार जिदा'ऊन के पास ले आए।

Chapter 8

¹और इफ़्राईम के बाशिन्दों ने उससे कहा कि तूने हम से यह सलूक क्यों किया, कि जब तू मिदियानियों से लड़ने को चला तो हम को न बुलवाया? ~इसलिए~उन्होंने उसके साथ बड़ा झगड़ा किया।

²उसने उनसे कहा, "मैंने तुम्हारी तरह भला किया ही क्या है? क्या इफ़्राईम के छोड़े हुए अंगूर भी अबी'अज़र की फ़सल से बेहतर नहीं हैं? ³ख़ुदा ने मिदियान के सरदार 'ओरेब और ज़ईब को तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया; इसलिए तुम्हारी तरह मैं कर ही क्या सका हूँ?" जब उसने यह कहा, तो उनका गुस्सा उसकी तरफ़ से धीमा हो गया।

⁴तब जिदा'ऊन और उसके साथ के तीन सौ आदमी जो बावजूद थके माँदे होने के फिर भी पीछा करते ही रहे थे, यरदन पर आकर पार उतरे।⁵ तब उसने सुक्कात के बाशिंदों से कहा कि इन लोगों को जो मेरे पैरों हैं, रोटी के गिर्दे दो क्योंकि यह थक गए हैं; और मैं मिदियान के दोनों बादशाहों ज़िबह और ज़िलमना' का पीछा कर रहा हूँ।

⁶सुक्कात के सरदारों ने कहा, "क्या ज़िबह और ज़िलमना' के हाथ अब तेरे क़ब्ज़े में आ गए हैं, जो हम तेरे लश्कर को रोटियाँ दें?" जिदा'ऊन ने कहा, "जब ख़ुदावन्द ज़िबह और ज़िलमना' को मेरे क़ब्ज़े में कर देगा, तो मैं तुम्हारे गोश्त को बबूल और हमेशा गुलाब के काँटों से नुचवाऊँगा।"

⁸फिर वहाँ से वह फ़नूएल को गया, और वहाँ के लोगों से भी ऐसी ही बात कही; और फ़नूएल के लोगों ने भी उसे वैसा ही जवाब दिया जैसा सुक्कातियों ने दिया था।⁹ ~इसलिए~उसने फ़नूएल के बाशिंदों से भी कहा कि जब मैं सलामत लौटूँगा, तो इस बुर्ज को ढा दूँगा।

¹⁰और ज़िबह और ज़िलमना' अपने क़रीबन पंद्रह हज़ार आदमियों के लश्कर के साथ करकूर में थे, क्योंकि सिर्फ़ इतने ही मशरिक के लोगों के लश्कर में से बच रहे थे; इसलिए कि एक लाख बीस हज़ार शमशीर ज़न आदमी क़त्ल हो गए थे।

¹¹~तब जिदा'ऊन उन लोगों के रास्ते से जो नुबह और युगबिहा के मशरिक की तरफ़ डेरों में रहते थे गया, और उस लश्कर को मारा क्योंकि वह लश्कर बेफ़िक़्र पड़ा था।¹² और ज़िबह और ज़िलमना' भागे, और उसने उनका पीछा करके उन दोनों मिदियानी बादशाहों, ज़िबह और ज़िलमना' को पकड़ लिया और सारे लश्कर को भगा दिया।

¹³और यूआस का बेटा जिदा'ऊन हर्स की चढ़ाई के पास से जंग से लौटा।¹⁴ और उसने सुक्कातियों में से एक जवान को पकड़ कर उससे दरियाफ़त किया; ~इसलिए उसने उसे सुक्कात के सरदारों और बुज़ुर्गों का हाल बता दिया जो शुमार में सत्तर थे।

¹⁵तब वह सुक्कातियों के पास आकर कहने लगा कि ज़िबह और ज़िलमना' को देख लो, जिनके बारे में तुम ने तन्ज़न मुझ से कहा था, 'क्या ज़िबह और ज़िलमना' के हाथ तेरे क़ब्ज़े में आ गए हैं, कि हम तेरे आदमियों को जो थक गए हैं रोटियाँ दें?'¹⁶ तब उसने शहर के बुज़ुर्गों को पकड़ा और बबूल और सदा गुलाब के काँटों लेकर उनसे सुक्कातियों की तादीब की।¹⁷ और उसने फ़नूएल का बुर्ज ढा कर उस शहर के लोगों को क़त्ल किया।

¹⁸फिर उसने ज़िबह और ज़िलमना' से कहा कि वह लोग जिनको तुम ने तबूर में क़त्ल किया कैसे थे? उन्होंने जवाब दिया, "जैसा तू है वैसा ही वह थे; उनमें से हर एक शहज़ादों की तरह था।"¹⁹ तब उसने कहा कि वह मेरे भाई, मेरी माँ के बेटे थे, ~इसलिए~ख़ुदावन्द की हयात की क़सम, अगर तुम उनको जीता छोड़ते तो मैं भी तुम को न मारता।

²⁰फिर उसने अपने बड़े बेटे यतर को हुक्म किया कि उठ, उनको क़त्ल कर। लेकिन उस लड़के ने अपनी तलवार न खींची, क्योंकि उसे डर लगा, इसलिए कि वह अभी लड़का ही था।²¹ तब ज़िबह और ज़िलमना' ने कहा, "तू आप उठ कर हम पर वार कर, क्योंकि जैसा आदमी होता है वैसी ही उसकी ताक़त होती है।" इसलिए जिदा'ऊन ने उठ कर ज़िबह और ज़िलमना' को क़त्ल किया, और उनके ऊँटों के गले के चन्दन हार ले लिए।

²²तब बनी-इसाईल ने जिदा'ऊन से कहा कि तू हम पर हुक्मत कर, तू और तेरा बेटा और तेरा पोता भी; क्योंकि तूने हम को मिदियानियों के हाथ से छुड़ाया।²³ तब जिदा'ऊन ने उनसे कहा कि न मैं तुम पर हुक्मत करूँ और न मेरा बेटा, बल्कि ख़ुदावन्द ही तुम पर हुक्मत करेगा।

²⁴और जिदा'ऊन ने उनसे कहा कि मैं तुम से यह 'अर्ज़ करता हूँ, कि तुम में से हर शख्स अपनी लूट की बालियाँ मुझे दे दे। (यह लोग इस्माईली थे, इसलिए इनके पास सोने की बालियाँ थीं।)²⁵ उन्होंने जवाब दिया कि हम इनको बड़ी ख़ुशी से देंगे। फिर उन्होंने एक चादर बिछाई और हर एक ने अपनी लूट की बालियाँ उस पर डाल दीं।

²⁶~इसलिए~वह सोने की बालियाँ जो उसने माँगी थीं, वज़न में एक हज़ार सात सौ मिस्काल थीं; 'अलावह उन चन्दन हारों और झुमकों और मिदियानी बादशाहों की इरावानी पोशाक के जो वह पहने थे, और उन ज़न्जीरों के जो उनके ऊँटों के गले में पड़ी थीं।

²⁷और जिदा'ऊन ने उनसे एक अफ़ूद बनवाया और उसे अपने शहर उफ़रा में रखखा; और वहाँ सब इसाइली उसकी पैरवी में ज़िनाकारी करने लगे, और वह जिदा'ऊन और उसके घराने के लिए फ़ंदा ठहरा।²⁸ यूँ मिदियानी बनी-इसाईल के आगे मग़लूब हुए और उन्होंने फिर कभी सिर न उठाया। और जिदा'ऊन के दिनों में चालीस बरस तक उस मुल्क में अमन रहा।

²⁹और यूआस का बेटा यरुब्बा'ल जाकर अपने घर में रहने लगा।³⁰ और जिदा'ऊन के सत्तर बेटे थे जो उस ही के सुल्ब से पैदा हुए थे, क्योंकि उसकी बहुत सी बीवियाँ थीं।³¹ और उसकी एक हरम के भी जो सिक्म में थी उस से एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम अबीमलिक रखखा।

³²और यूआस के बेटे जिदा'ऊन ने ख़ूब 'उम्र रसीदा होकर वफ़ात पाई, और अबी'अज़रियों के उफ़रा में अपने बाप यूआस की क़ब्र में दफ़न हुआ।³³ और जिदा'ऊन के मरते ही बनीइसाईल फिर कर बा'लीम की पैरवी में ज़िनाकारी करने लगे, और बा'ल बरीत को अपना मा'बूद बना लिया।

³⁴और बनीइसाईल ने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को, जिसने उनको हर तरफ़ उनके दुश्मनों के हाथ से रिहाई दी थी याद न रखखा;³⁵ और न वह यरुब्बा'ल या'नी जिदा'ऊन के ख़ान्दान के साथ, उन सब नेकियों के बदले में जो उसने बनीइसाईल से की थीं महेरबानी से पेश आए।

Chapter 9

¹तब यरुब्बा'ल का बेटा अबीमलिक सिक्म में अपने मामुओं के पास गया, और उनसे और अपने सब ननिहाल के लोगों से कहा कि;²~सिक्म के सब आदमियों से पूछ देखो कि तुम्हारे लिए क्या बेहतर है, यह कि यरुब्बा'ल के सब बेटे जो सत्तर आदमी हैं वह तुम पर सल्तनत करें, या यह कि एक ही की तुम पर हुकूमत हो? और यह भी याद रखो, कि मैं तुम्हारी ही हड्डी और तुम्हारा ही गोशत हूँ।

³और उसके मामुओं ने उसके बारे में सिक्म के सब लोगों के कानों में यह बातें डालीं; और उनके दिल अबी मलिक की पैरवी पर माइल हुए, क्योंकि वह कहने लगे कि यह हमारा भाई है।⁴और उन्होंने बा'ल बरीत के घर में से चाँदी के सत्तर सिक्के उसको दिए, जिनके वसीले से अबी मलिक ने शुहदे और बदमाश लोगों को अपने यहाँ लगा लिया, जो उसकी पैरवी करने लगे।

⁵और वह उफ़रा में अपने बाप के घर गया और उसने अपने भाइयों यरुब्बा'ल के बेटों को जो सत्तर आदमी थे, एक ही पत्थर पर क़त्ल किया; लेकिन यरुब्बा'ल का छोटा बेटा यूताम बचा रहा, क्योंकि वह छिप गया था।⁶तब सिक्म के सब आदमी और सब अहल-ए-मिल्लो जमा' हुए, और जाकर उस सुतून के बलूत के पास जो सिक्म में था अबीमलिक को बादशाह बनाया।

⁷जब यूताम को इसकी खबर हुई तो वह जाकर कोह-ए-गरिज़ीम की चोटी पर खड़ा हुआ और अपनी आवाज़ बुलन्द की, और पुकार पुकार कर उनसे कहने लगा, "ऐ सिक्म के लोगों, मेरी सुनो। ताकि ख़ुदा तुम्हारी सुने।⁸एक ज़माने में दरख़्त चले, ताकि किसी को मसह करके अपना बादशाह बनाएँ;~इसलिए~उन्होंने ज़ैतून के दरख़्त से कहा, 'तू हम पर सल्तनत कर।'

⁹तब ज़ैतून के दरख़्त ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी चिकनाहट की, जिसके ज़रिए' मेरे वसीले से लोग ख़ुदा और इन्सान की बड़ाई करते हैं, छोड़ कर दरख़्तों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?'¹⁰तब दरख़्तों ने अंजीर के दरख़्त से कहा, 'तू आ और हम पर सल्तनत कर।'¹¹लेकिन अंजीर के दरख़्त ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे अच्छे फलों को छोड़ कर दरख़्तों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?'

¹²तब दरख़्तों ने अंगूर की बेल से कहा कि तू आ और हम पर सल्तनत कर।¹³अंगूर की बेल ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी मय को जो ख़ुदा और इन्सान दोनों को खुश करती है, छोड़ कर दरख़्तों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?'¹⁴तब उन सब दरख़्तों ने ऊँट कटारे से कहा, 'चल, तू ही हम पर सल्तनत कर।'

¹⁵ऊँटकटारे ने दरख़्तों से कहा, 'अगर तुम सचमुच मुझे अपना बादशाह मसह करके बनाओ, तो आओ, मेरे साये में पनाह लो; और अगर नहीं, तो ऊँटकटारे से आग निकलकर लुबनान के देवदारों को खा जाए।'¹⁶~इसलिए~बात यह है कि तुम ने जो अबी मलिक को बादशाह बनाया है, इसमें अगर तुम ने सच्चाई और ईमानदारी बरती है, और यरुब्बा'ल और उसके घराने से अच्छा सुलूक किया और उसके साथ उसके एहसान के हक़ के मुताबिक़ सुलूक किया है।

¹⁷(क्योंकि मेरा बाप तुम्हारी खातिर लड़ा, और उसने अपनी जान खतरे में डाली, और तुम को मिदियान के क़ब्ज़े से छुड़ाया।¹⁸और तुम ने आज मेरे बाप के घराने से बग़ावत की, और उसके सत्तर बेटे एक ही पत्थर पर क़त्ल किए, और उसकी लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिक्म के लोगों का बादशाह बनाया इसलिए कि वह तुम्हारा भाई है।)

¹⁹~इसलिए~अगर तुम ने यरुब्बा'ल और उसके घराने के साथ आज के दिन सच्चाई और ईमानदारी बरती है, तो तुम अबी मलिक से खुश रहो और वह तुम से खुश रहे।²⁰और अगर नहीं, तो अबी मलिक से आग निकलकर सिक्म के लोगों को और अहल-ए-मिल्लो खा जाए; और सिक्म के लोगों और अहल-ए-मिल्लो के बीच से आग निकलकर अबी मलिक को खा जाए।²¹फिर यूताम दौड़ता हुआ भागा और बैर को चलता बना, और अपने भाई अबी मलिक के ख़ौफ़ से वहीं रहने लगा।

²²और अबीमलिक इसाईलियों पर तीन बरस हाकिम रहा।²³तब ख़ुदा ने अबीमलिक और सिक्म के लोगों के बीच एक बुरी रूह भेजी, और सिक्म के लोग अबी मलिक से दगा बाज़ी करने लगे;²⁴~ताकि जो जुल्म उन्होंने यरुब्बा'ल के सत्तर बेटों पर किया था वह उन ही पर आए, और उनका खून उनके भाई अबीमलिक के सिर पर जिस ने उनको क़त्ल किया, और सिक्म के लोगों के सिर पर हो जिन्होंने उसके भाइयों के क़त्ल में उसकी मदद की थी।

²⁵तब सिक्म के लोगों ने पहाड़ों की चोटियों पर उसकी घात में लोग बिठाए, और वह उनको जो उस रास्ते के पास से गुज़रते लूट लेते थे; और अबीमलिक को इसकी खबर हुई।

²⁶तब जा'ल बिन 'अबद अपने भाइयों के साथ सिक्म में आया; और सिक्म के लोगों ने उस पर भरोसा किया।²⁷और वह खेतों में गए और अपने अपने ताकिस्तानों का फल तोड़ा और अंगूरों का रस निकाला और ख़ूब ख़ुशी मनाई, और अपने मा'बूद के हैकल में जाकर खाया-पिया और अबीमलिक पर ला'नतें बरसाई।

²⁸और जा'ल बिन 'अबद कहने लगा, "अबीमलिक कौन है, और सिक्म कौन है कि हम उसकी फ़रमाँबरदारी करें? क्या वह यरुब्बा'ल का बेटा नहीं, और क्या ज़बूल उसका मन्सबदार नहीं? तुम ही सिक्म के बाप हमूर के लोगों की~फ़रमाँबरदारी~करो, हम उसकी~फ़रमाँबरदारी~क्यूँ करें?"²⁹काश कि यह लोग मेरे क़ब्ज़े में होते, तो मैं अबीमलिक को किनारे कर देता।" और उसने अबीमलिक से कहा, "तू अपने लश्कर को बढ़ा और निकल आ।"

³⁰जब उस शहर के हाकिम ज़बूल ने ज़ाल बिन 'अबद की यह बातें सुनीं तो उसका क्रहर भड़का।³¹और उसने चालाकी से अबीमलिक के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा, "देख, जा'ल बिन 'अबद और उसके भाई सिक्म में आए हैं, और शहर को तुझ से बग़ावत करने की तहरीक कर रहे हैं।

³²~इसलिए तू अपने साथ के लोगों को लेकर रात को उठ, और मैदान में घात लगा कर बैठ जा।³³और सुबह को सूरज निकलते ही सवेरे उठ कर शहर पर हमला कर, और जब वह और उसके साथ के लोग तेरा सामना करने को निकलें तो जो कुछ तुझ से बन आए तू उन से कर।"

³⁴~इसलिए अबीमलिक और उसके साथ के लोग रात ही को उठ चार गोल हो सिक्म के मुकाबिल घात में बैठ गए।³⁵और जा'ल बिन 'अबद बाहर निकल कर उस शहर के फाटक के पास जा खड़ा हुआ; तब अबीमलिक और उसके साथ के आदमी आरामगाह से उठे।

³⁶और जब जा'ल ने फ़ौज को देखा तो वह ~ज़बूल से कहने लगा, "देख, पहाड़ों की चोटियों से लोग उतर रहे हैं।" ज़बूल ने उससे कहा कि तुझे पहाड़ों का साया ऐसा दिखाई देता है जैसे आदमी।³⁷जा'ल फिर कहने लगा, "देख, मैदान के बीचों बीच से लोग उतरे आते हैं; और एक गोल म'ओननीम के बलूत के रास्ते आ रहा है।"

³⁸तब ज़बूल ने उससे कहा, "अब तेरा वह मुँह कहाँ है जो तू कहा करता था, कि अबी मलिक कौन है कि हम उसकी फ़रमाँबरदारी करें? क्या यह वही लोग नहीं हैं जिनकी तूने हिक्कारत की है? इसलिए अब ज़रा निकल कर उनसे लड़ तो सही।"³⁹तब जा'ल सिक्म के लोगों के सामने बाहर निकला और अबीमलिक से लड़ा।⁴⁰और अबीमलिक ने उसको दौड़ाया और वह उसके सामने से भागा, और शहर के फाटक तक बहुत से ~ज़ख्मी हो हो कर गिरे।

⁴¹और अबीमलिक ने अरोमा में क्रयाम किया; और ज़बूल ने जा'ल और उसके भाइयों को निकाल दिया, ताकि वह सिक्म में रहने न पाएँ।⁴²और दूसरे दिन सुबह को ऐसा हुआ कि लोग निकल कर मैदान को जाने लगे, और अबी मलिक को खबर हुई।⁴³~इसलिए~अबी मलिक ने फ़ौज लेकर उसके तीन गोल किए और मैदान में घात लगाई; और जब देखा कि लोग शहर से निकले आते हैं, तो वह उनका सामना करने को उठा और उनको मार लिया।

⁴⁴और अबीमलिक उस~गोल~समेत जो उसके साथ था आगे लपका, और शहर के फाटक के पास आकर खड़ा हो गया; और वह दो~गोल~उन सभों पर जो मैदान में थे झपटे और उनको काट डाला।⁴⁵और अबीमलिक उस दिन शाम तक शहर से लड़ता रहा, और शहर को घेर कर के उन लोगों को जो वहाँ थे क्रल्ल किया, और शहर को बर्बाद कर के उसमें नमक छिड़कवा दिया।

⁴⁶और जब सिक्म के बुर्ज के सब लोगों ने यह सुना, तो वह अलबरीत के हैकल के क़िले' में जा घुसे।⁴⁷और अबी मलिक को यह खबर हुई कि सिक्म के बुर्ज के सब लोग इकट्ठे हैं।

⁴⁸तब अबीमलिक अपनी फ़ौज समेत ज़लमोन के पहाड़ पर चढ़ा; और अबी मलिक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में ले दरख्तों में से एक डाली काटी और उसे उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया, और अपने साथ के लोगों से कहा, "जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है, तुम भी जल्द वैसा ही करो।"⁴⁹तब उन सब लोगों में से हर एक ने उसी तरह एक डाली काट ली, और वह अबीमलिक के पीछे हो लिए और उनको क़िले' पर डालकर क़िले' में आग लगा दी; चुनाँचे सिक्म के बुर्ज के सब आदमी भी जो शख्स और 'औरत मिलाकर क़रीबन एक हज़ार थे मर गए।

⁵⁰फिर अबीमलिक तैबिज़ को जा तैबिज़ के मुकाबिल खेमाज़न हुआ और उसे ले लिया।⁵¹लेकिन वहाँ शहर के अन्दर एक बड़ा मज़बूत बुर्ज था,~इसलिए~सब शख्स और 'औरतें और शहर के सब बाशिन्दे भाग कर उस में जा घुसे और दरवाज़ा बन्द कर लिया, और बुर्ज की छत पर चढ़ गए।

⁵²और अबीमलिक बुर्ज के पास आकर उसके मुकाबिल लड़ता रहा, और बुर्ज के दरवाज़े के नज़दीक गया ताकि उसे जला दे।⁵³तब किसी 'औरत ने चक्की का ऊपर का पाट अबी मलिक के सिर पर फेंका, और उसकी खोपड़ी को तोड़ डाला।⁵⁴तब अबीमलिक ने फ़ौरन एक जवान को जो उसका सिलाहबरदार था बुला कर उससे कहा कि अपनी तलवार खींच कर मुझे क्रल्ल कर डाल, ताकि मेरे हक़ में लोग यह न कहने पाएँ कि एक 'औरत ने उसे मार डाला।~इसलिए~उस जवान ने उसे छेद दिया और वह मर गया।

⁵⁵जब इस्राईलियों ने देखा के अबीमलिक मर गया, तो हर शख्स अपनी जगह चला गया।⁵⁶यूँ खुदा ने अबी मलिक की उस बुराई का बदला जो उसने अपने सत्तर भाइयों को मार कर अपने बाप से की थी उसको दिया।⁵⁷और सिक्म के लोगों की सारी बुराई खुदा ने उन ही के सिर पर डाली, और यरुब्बा'ल के बेटे यूताम की ला'नत उनको लगी।

Chapter 10

¹और अबीमलिक के बा'द तोला' बिन फुव्वा बिन दोदो जो इश्कार के कबीले का था, इस्राईलियों की हिमायत करने को उठा; वह इफ्राईम के पहाड़ी मुल्क में समीर में रहता था।²वह तेईस बरस इस्राईलियों का क्राज़ी रहा; और मर गया और समीर में दफ़न हुआ।

³इसके बा'द जिल'आदी याईर उठा, और वह बाइस बरस इस्राईलियों का क्राज़ी रहा।⁴उसके तीस बेटे थे जो तीस जवान गधों पर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस शहर थे जो आज तक हव्वोत याईर कहलाते हैं, और जिल'आद के मुल्क में हैं।⁵और याईर मर गया और क़ामोन में दफ़न हुआ।

⁶और बनी-इस्राईल खुदावन्द के हुज़ूर फिर बुराई करने, और बा'लीम और 'इस्तारात और अराम के मा'बूदों और सैदा के मा'बूदों और मोआब के मा'बूदों और बनी 'अम्मोन के मा'बूदों और फ़िलिस्तिनों के मा'बूदों की 'इबादत करने लगे, और खुदावन्द को छोड़ दिया और उसकी 'इबादत न की।⁷तब खुदावन्द का क्रहर इस्राईल पर भड़का, और उसने उनको फ़िलिस्तिनों के हाथ और बनी 'अम्मोन के हाथ बेच डाला।

⁸और उन्होंने उस साल बनी इस्राईल को तंग किया और सताया, बल्कि अठारह बरस तक वह सब बनी-इस्राईल पर जुल्म करते रहे, जो यरदन पार अमोरियों के मुल्क में जो जिल'आद में है रहते थे।⁹और बनी 'अम्मून-यरदन पार होकर यहूदाह और बिनयमीन और इफ्राईम के खान्दान से लड़ने को भी आ जाते थे, इसलिए इस्राईली बहुत तंग आ गए।

¹⁰और बनी-इस्राईल खुदावन्द से फ़रियाद करके कहने लगे, "हमने तेरा गुनाह किया कि अपने खुदा को छोड़ा और बा'लीम की 'इबादत की।"¹¹और खुदावन्द ने बनी-इस्राईल से कहा, "क्या मैंने तुम को मिस्त्रियों और अमोरियों और बनी 'अम्मोन और फ़िलिस्तिनों के हाथ से रिहाई नहीं दी?¹²और सैदानियों और 'अमालीकियों और मा'ओनियों ने भी तुम को सताया, और तुम ने मुझ से फ़रियाद की और मैंने तुम को उनके हाथ से छुड़ाया।

¹³तो भी तुम ने मुझे छोड़ कर और मा'बूदों की 'इबादत की, इसलिए-अब मैं तुम को रिहाई नहीं दूँगा।¹⁴तुम जाकर उन मा'बूदों से, जिनको तुम ने इख्तियार किया है फ़रियाद करो, वही तुम्हारी मुसीबत के वक़्त तुम को छुड़ाएँ।"

¹⁵बनी इस्राईल ने खुदावन्द से कहा, "हम ने तो गुनाह किया, इसलिए-जो कुछ तेरी नज़र में अच्छा हो हम से कर; लेकिन आज हम को छुड़ा ही ले।"¹⁶और वह अजनबी मा'बूदों को अपने बीच से दूर करके खुदावन्द की 'इबादत करने लगे; तब उसका जी इस्राईल की परेशानी से ग़मगीन हुआ।

¹⁷फिर बनी 'अम्मून इकट्ठे होकर जिल'आद में खेमाज़न हुए; और बनी-इस्राईल भी फ़राहम होकर मिस्रफ़ाह में खेमाज़न हुए।¹⁸तब जिल'आद के लोग और सरदार एक दूसरे से कहने लगे, "वह-कौन शख्स है जो बनी 'अम्मून से लड़ना शुरू करेगा? वही जिल'आद के सब बाशिर्दों का हाकिम होगा।"

Chapter 11

¹और जिल'आदी इफ़ताह बड़ा ज़बरदस्त सूरमा और कस्बी का बेटा था; और जिल'आद से इफ़ताह पैदा हुआ था।²और जिल'आद की बीवी के भी उससे बेटे हुए, और जब उसकी बीवी के बेटे बड़े हुए, तो उन्होंने इफ़ताह को यह कहकर निकाल दिया कि हमारे बाप के घर में तुझे कोई मीरास नहीं मिलेगी, क्योंकि तू ग़ैर 'औरत का बेटा है।³तब इफ़ताह अपने भाइयों के पास से भाग कर तोब के मुल्क में रहने लगा और इफ़ताह के पास शुहदे जमा' हो गए, और उसके साथ फिरने लगे।

⁴और कुछ 'अरसे के बा'द बनी 'अम्मून ने बनी-इसाईल से जंग छेड़ दी।⁵और जब बनी 'अम्मून-बनी-इसाईल से लड़ने लगे, तो जिल'आदी बुजुर्ग चले कि इफ़ताह को तोब के मुल्क से ले आएँ।⁶इसलिए-वह इफ़ताह से कहने लगे कि हम बनी 'अम्मून-से लड़ें।

⁷और इफ़ताह ने जिल'आदी बुजुर्गों से कहा, "क्या तुम ने मुझ से 'अदावत करके मुझे मेरे बाप के घर से निकाल नहीं दिया?-इसलिए-अब जो तुम मुसीबत में पड़ गए हो तो मेरे पास क्यों आए?"⁸जिल'आदी बुजुर्गों ने इफ़ताह से कहा कि अब हम ने फिर इसलिए तेरी तरफ़ रुख किया है, कि तू हमारे साथ चलकर बनी 'अम्मून-से जंग करे; और तू ही जिल'आद के सब बाशिंदों पर हमारा हाकिम होगा।

⁹और इफ़ताह ने जिल'आदी-बुजुर्गों-से कहा, "अगर तुम मुझे बनी 'अम्मून-से लड़ने को मेरे घर ले चलो, और खुदावन्द-उनको मेरे हवाले कर दे, तो क्या मैं तुम्हारा हाकिम हूँगा?"¹⁰जिल'आदी-बुजुर्गों-ने इफ़ताह को जवाब दिया कि खुदावन्द हमारे बीच गवाह हो, यकीनन जैसा तूने कहा, हम वैसा ही-करेंगे।¹¹तब इफ़ताह जिल'आदी-बुजुर्गों-के साथ रवाना हुआ, और लोगों ने उसे अपना हाकिम और सरदार बनाया; और इफ़ताह-ने मिस्रफ़ाह में खुदावन्द के आगे अपनी सब बातें कह सुनाई।

¹²और इफ़ताह ने बनी 'अम्मून-के बादशाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा कि तुझे मुझ से क्या काम, जो तू मेरे मुल्क में लड़ने को मेरी तरफ़ आया है?¹³बनी 'अम्मून-के बादशाह ने इफ़ताह के क़ासिदों को जवाब दिया, "इसलिए कि जब इसाइली मिस्र से निकल कर आए, तो अरनून से यब्बूक और यरदन तक जो मेरा मुल्क था उसे उन्होंने छीन लिया;-इसलिए-अब तू उन 'इलाकों को सुलह-ओ-सलामती से मुझे लौटा दे।"

¹⁴तब इफ़ताह ने फिर क़ासिदों को बनी 'अम्मून-के बादशाह के पास रवाना किया,¹⁵और यह कहला भेजा कि इफ़ताह यूँ कहता है कि; इसाईलियों ने न तो मोआब का मुल्क और न बनी 'अम्मोन का मुल्क छीना;¹⁶बल्कि इसाइली जब मिस्र से निकले और वीराने छानते हुए बहर-ए-कुलज़ुम तक आए और क़ादिस में पहुँचे,

¹⁷तो इसाईलियों ने अदोम के बादशाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा कि हम को ज़रा अपने मुल्क से होकर गुज़र जाने दे, लेकिन अदोम का बादशाह न माना। इसी तरह उन्होंने मोआब के बादशाह को कहला भेजा, और वह भी राज़ी न हुआ। चुनौचे इसाइली क़ादिस में रहे।¹⁸तब वह वीराने में होकर चले, और अदोम के मुल्क और मोआब के मुल्क के बाहर बाहर चक्कर काट कर मोआब के मुल्क के मशरिफ़ की तरफ़ आए, और अरनून के उस पार डेरे डाले, पर मोआब की सरहद में दाख़िल न हुए, इसलिए कि मोआब की सरहद अरनून था।

¹⁹फिर इसाईलियों ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के पास जो हस्बोन का बादशाह था, क़ासिद रवाना किए; और इसाईलियों ने उसे कहला भेजा कि 'हम को ज़रा इजाज़त दे दे, कि तेरे मुल्क में से होकर अपनी जगह को चले जाएँ।²⁰लेकिन सीहोन ने इसाईलियों का इतना ऐ'तबार न किया कि उनको अपनी सरहद से गुज़रने दे, बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को जमा' करके यहस में खेमाज़न हुआ और इसाईलियों से लड़ा।

²¹और खुदावन्द इसाईल के खुदा ने सीहोन और उसके सारे लश्कर को इसाईलियों के क़ब्ज़े में कर दिया, और उन्होंने उनको मार लिया; इसलिए इसाईलियों ने अमोरियों के जो वहाँ के बाशिंदे थे, सारे मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया।²²और वह अरनून से यब्बूक तक, और वीरान से यरदन तक अमोरियों की सब सरहदों पर क़ाबिज़ हो गए।

²³तब खुदावन्द इसाईल के खुदा ने अमोरियों को उनके मुल्क से अपनी क़ौम इसाईल के सामने से खारिज किया;-इसलिए क्या तू अब उस पर क़ब्ज़ा करने पाएगा?²⁴क्या जो कुछ तेरा मा'बूद क़मोस तुझे क़ब्ज़ा करने को दे, तू उस पर क़ब्ज़ा न करेगा? इसलिए जिस जिस को खुदावन्द हमारे खुदा ने हमारे सामने से खारिज कर दिया है, हम भी उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे।²⁵और क्या तू सफ़ोर के बेटे बलक़ से जो मोआब का बादशाह था, कुछ बेहतर है? क्या उसने इसाईलियों से कभी झगड़ा किया या कभी उन से लड़ा?

²⁶जब इसाइली हस्बोन और उसके क़स्बों, और 'अरो'ईर और उसके क़स्बों और उन सब शहरों में जो अरनून के किनारे-किनारे हैं तीन सौ बरस से बसे हैं, तो इस 'अरसे में तुम ने उनको क्यों न छुड़ा लिया?²⁷गरज़ मैंने तेरी ख़ता नहीं की, बल्कि तेरा मुझ से लड़ना तेरी तरफ़ से मुझ पर जुल्म है; इसलिए खुदावन्द ही जो मुन्सिफ़ है, बनी-इसाईल और बनी 'अम्मोन के बीच आज इन्साफ़ करे।²⁸लेकिन बनी 'अम्मोन के बादशाह ने इफ़ताह की यह बातें, जो उसने उसे कहला भेजी थीं न मानीं।

²⁹तब खुदावन्द की रूह इफ़ताह पर नाज़िल हुई, और वह जिल'आद और मनस्सी से गुज़र कर जिल'आद के मिस्रफ़ाह में आया; और जिल'आद के मिस्रफ़ाह से बनी 'अम्मोन की तरफ़ चला।³⁰और इफ़ताह ने खुदावन्द की मिन्नत मानी और कहा कि अगर तू यकीनन बनी 'अम्मोन को मेरे हाथ में कर दे;³¹तो जब मैं बनी 'अम्मोन की तरफ़ से सलामत लौटूँगा, उस वक़्त जो कोई पहले मेरे घर के दरवाज़े से निकलकर मेरे इस्तक्रबाल को आए वह खुदावन्द का होगा; और मैं उसको सोख़तनी कुर्बानी के तौर पर पेश करूँगा।

³²तब इफ़ताह बनी 'अम्मून-की तरफ़ उनसे लड़ने को गया, और खुदावन्द ने उनको उसके हाथ में कर दिया।³³और उसने 'अरो'ईर से मिनियत तक जो बीस शहर हैं, और अबील करामीम तक बड़ी ख़ूरैज़ी के साथ उनको मारा; इस तरह बनी 'अम्मून बनी-इसाईल से मग़लूब हुए।

³⁴और इफ़ताह मिस्रफ़ाह को अपने घर आया, और उसकी बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसके इस्तक्रबाल को निकलकर आई; और वही एक उसकी औलाद थी, उसके सिवा उसके कोई बेटी बेटा न था।³⁵जब उसने उसको देखा, तो अपने कपड़े फाड़ कर कहा, "हाय, मेरी बेटी! तूने मुझे पस्त कर दिया, और जो मुझे दुख देते हैं उनमें से एक तू है; क्योंकि मैंने खुदावन्द को ज़बान दी है, और मैं पलट नहीं सकता।"

³⁶उसने उससे कहा, "ऐ मेरे बाप, तूने खुदावन्द को ज़बान दी है,इसलिए~जो कुछ तेरे मुँह से निकला वही मेरे साथ कर, इसलिए कि खुदावन्द ने तेरे दुश्मनों बनी 'अम्मून से तेरा इन्तक़ाम लिया।"³⁷फिर उसने अपने बाप से कहा, "मेरे लिए इतना कर दिया जाए कि दो महीने की मोहलत मुझ को मिले, ताकि मैं जाकर पहाड़ों पर अपनी हमजोलियों के साथ अपने कुँवारेपन पर मातम करती फिरूँ।"

³⁸उसने कहा, "जा!" और उसने उसे दो महीने की रुख़्तस दी, और वह अपनी हमजोलियों को लेकर गई, और पहाड़ों पर अपने कुँवारेपन पर मातम करती फिरी।³⁹और दो महीने के बा'द वह अपने बाप के पास लौट आई, और वह उसके साथ वैसा ही पेश आया जैसी मिन्नत उसने मानी थी। इस लड़की ने शख्स का मुँह न देखा था; इसलिए बनी इस्राईल में यह दस्तूर चला,⁴⁰~कि साल-ब-साल इस्राइली 'औरतें जाकर बरस में चार दिन तक इफ़ताह जिल'आदी की बेटी की यादगारी करती थीं

Chapter 12

¹तब इफ़्राईम के लोग जमा' होकर उत्तर की तरफ गए और इफ़ताह से कहने लगे कि जब तू बनी 'अम्मून से जंग करने को गया तो हम को साथ चलने को क्यों न बुलवाया? इसलिए हम तेरे घर को तुझ समेत जलाएँगे।' इफ़ताह ने उनको जवाब दिया कि मेरा और मेरे लोगों का बड़ा झगड़ा बनी 'अम्मून के साथ हो रहा था, और जब मैंने तुम को बुलवाया तो तुम ने उनके हाथ से मुझे न बचाया।

³और जब मैंने यह देखा कि तुम मुझे नहीं बचाते, तो मैंने अपनी जान हथेली पर रखी और बनी 'अम्मून के मुक़ाबिले को चला, और खुदावन्द ने उनको मेरे क़ब्ज़े में कर दिया; फिर तुम आज के दिन मुझ से लड़ने को मेरे पास क्यों चले आए? तब इफ़ताह सब जिल'आदियों को जमा' करके इफ़्राईमियों से लड़ा, और जिल'आदियों ने इफ़्राईमियों को मार लिया क्योंकि वह कहते थे कि तुम जिल'आदी इफ़्राईम ही के भगोड़े हो, जो इफ़्राईमियों और मनस्सियों के बीच रहते हो।
⁵और जिल'आदियों ने इफ़्राईमियों का रास्ता रोकने के लिए यरदन के घाटों को अपने क़ब्ज़े में कर लिया, और जो भागा हुआ इफ़्राईमी कहता कि मुझे पार जाने दो तो जिल'आदी उससे कहते क्या कि तू इफ़्राइमी ~है? और अगर वह ~जवाब देता, "नहीं।" ⁶तो वह उससे कहते, "शिबुलत तो बोल," तो वह "शिबुलत" कहता, क्योंकि उससे उसका सही तलफ़ुज़ नहीं हो सकता था। तब वह उसे पकड़कर यरदन के घाटों पर क़त्ल कर देते थे। इसलिए उस वक़्त बयालीस हज़ार इफ़्राइमी क़त्ल हुए।

⁷और इफ़ताह छः बरस तक बनीइसाईल का क़ाज़ी रहा। फिर जिल'आदी इफ़ताह ने वफ़ात पाई, और जिल'आद के शहरों में से एक में दफ़न हुआ।

⁸उसके बा'द बैतलहमी इबसान इसाईलियों का क़ाज़ी हुआ।⁹उसके तीस बेटे थे; और तीस बेटियाँ उसने बाहर ब्याह दीं, और बाहर से अपने बेटों के लिए तीस बेटियाँ ले आया। वह सात बरस तक इसाईलियों का क़ाज़ी रहा।

¹⁰और इबसान मर गया और बैतलहम में दफ़न हुआ।¹¹और उसके बा'द ज़बूलूनी अय्यालोन इसाईल का क़ाज़ी हुआ; और वह दस बरस इसाईल का क़ाज़ी रहा।

¹²और ज़बूलूनी अय्यालोन मर गया, और अय्यालोन में जो ज़बूलून के मुल्क में है दफ़न हुआ।

¹³इसके बा'द फिर'अतोनी हिल्लेल का बेटा 'अबदोन इसाईल का क़ाज़ी हुआ।¹⁴और उसके चालीस बेटे और तीस पोते थे जो सत्तर जवान गधों पर सवार होते थे; और वह आठ बरस इसाईलियों का क़ाज़ी रहा।¹⁵और फिर'आतोनी हिल्लेल का बेटा 'अबदोन मर गया, और 'अमालीक्रियों के पहाड़ी 'इलाके में, फिर'आतोन में जो इफ़्राईम के मुल्क में है दफ़न हुआ।

Chapter 13

¹और बनी-इसाईल ने फिर खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द ने उनकी चालीस बरस तक फ़िलिस्तियों के हाथ में कर रखवा।²और दानियों के घराने में सुर'आ का एक शख्स था जिसका नाम मनोहा था। उसकी बीवी बाँझ थी, इसलिए~उसके कोई बच्चा न हुआ।

³और खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उस 'औरत को दिखाई देकर उससे कहा, "देख, तू बाँझ है और तेरे बच्चा नहीं होता; लेकिन तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा।

⁴~इसलिए~खबरदार, मय या नशे की चीज़ न पीना, और न कोई नापाक चीज़ खाना।⁵क्योंकि देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा। उसके सिर पर कभी उस्तार न फिरे, इसलिए कि वह लड़का पेट ही से खुदा का नज़ीर होगा; और वह इसाईलियों को फ़िलिस्तियों के हाथ से रिहाई देना शुरू करेगा।"

⁶उस 'औरत ने जाकर अपने शौहर से कहा कि एक शख्स-ए-खुदा मेरे पास आया, उसकी सूरत खुदा के फ़रिश्ते की सूरत की तरह निहायत खौफ़नाक थी; और मैंने उससे नहीं पूछा कि तू कहाँ का है? और न उसने मुझे अपना नाम बताया।⁷लेकिन उसने मुझ से कहा, "देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा

होगा;~इसलिए~तू मय या नशे की चीज़ न पीना, और न कोई नापाक चीज़ खाना, क्योंकि वह लड़का पेट ही से अपने मरने के दिन तक खुदा का नज़ीर रहेगा।"

⁸तब मनोहा ने खुदावन्द से दरख्वास्त की और कहा, "ऐ मेरे मालिक, मैं तेरी मित्रता करता हूँ कि वह शख्स-ए-खुदा जिसे तूने भेजा था, हमारे पास फिर आए और हम को सिखाए कि हम उस लड़के से जो पैदा होने को है क्या करें।"⁹और खुदा ने मनोहा की 'अर्ज़ सुनी, और खुदा का फ़रिश्ता उस 'औरत के पास जब वह खेत में बैठी थी फिर आया, लेकिन उसका शौहर मनोहा उसके साथ नहीं था।

¹⁰~इसलिए~उस 'औरत ने जल्दी की और दौड़ कर अपने शौहर को खबर दी और उससे कहा कि देख, वही शख्स जो उस दिन मेरे पास आया था अब फिर मुझे दिखाई दिया।¹¹तब मनोहा उठ कर अपनी बीवी के पीछे पीछे चला, और उस शख्स के पास आकर उससे कहा, "क्या तू वही शख्स है जिसने इस 'औरत से बातें की थीं?" उसने कहा, "मैं वही हूँ।"

¹²तब मनोहा ने कहा, "तेरी बातें पूरी हों, लेकिन उस लड़के का कैसा तौर-ओ-तरीक़ और क्या काम होगा?"¹³खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मनोहा से कहा, "उन सब चीज़ों से जिनका ज़िक्र मैंने इस 'औरत से किया यह परहेज़ करे।"¹⁴वह ऐसी कोई चीज़ जो ताक से पैदा होती है न खाए, और मय या नशे की चीज़ न पिए, और न कोई नापाक चीज़ खाए; और जो कुछ मैंने उसे हुक्म दिया यह उसे माने।"

¹⁵मनोहा ने खुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा कि इजाज़त हो तो हम तुझ को रोक लें, और बकरी का एक बच्चा तेरे लिए तैयार करें।¹⁶तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मनोहा को जवाब दिया, "अगर तू मुझे रोक भी ले, तो भी मैं तेरी रोटी नहीं खाने का; लेकिन अगर तू सोख्तनी कुर्बानी तैयार करना चाहे, तो तुझे लाज़िम है कि उसे खुदावन्द के लिए पेश करे।" (क्योंकि मनोहा नहीं जानता था कि वह खुदावन्द का फ़रिश्ता है।)

¹⁷फिर मनोहा ने खुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा कि तेरा नाम क्या है? ताकि जब तेरी बातें पूरी हों तो हम तेरा इकराम कर सकें।¹⁸खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उससे कहा, "तू क्यों। मेरा नाम पूछता है? क्योंकि वह तो 'अजीब है।"

¹⁹तब मनोहा ने बकरी का वह बच्चा म'ए उसकी नज़ की कुर्बानी के लेकर एक चट्टान पर खुदावन्द के लिए उनको पेश किया, और फ़रिश्ते ने मनोहा और उसकी बीवी के देखते देखते 'अजीब काम किया।²⁰क्योंकि ऐसा हुआ कि जब शो'ला मज़बह पर से आसमान की तरफ़ उठा, तो खुदावन्द का फ़रिश्ता मज़बह के शो'ले में होकर ऊपर चला गया, और मनोहा और उसकी बीवी देखकर औंधे मुँह ज़मीन पर गिरे।

²¹लेकिन खुदावन्द का फ़रिश्ता न फिर मनोहा को दिखाई दिया न उसकी बीवी को। तब मनोहा ने जाना कि वह खुदावन्द का फ़रिश्ता था।²²और मनोहा ने अपनी बीवी से कहा कि हम अब ज़रूर मर जाएँगे, क्योंकि हम ने खुदा को देखा।

²³उसकी बीवी ने उससे कहा, "अगर खुदावन्द यही चाहता कि हम को मार दे, तो सोख्तनी और नज़ की कुर्बानी हमारे हाथ से कुबूल न करता, और न हम को यह वाक्कि'आत दिखाता और न हम से ऐसी बातें कहता।"

²⁴और उस 'औरत के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम समसून रखवा; और वह लड़का बढ़ा, और खुदावन्द ने उसे बरकत दी।²⁵और खुदावन्द की रूह उसे महने दान में, जो सुर'आ और इस्ताल के बीच में है तहरीक देने लगी।

Chapter 14

¹और समसून तिमनत को गया, और तिमनत में उसने फ़िलिस्तियों की बेटियों में से एक 'औरत देखी।²और उसने आकर अपने माँ बाप से कहा, "मैंने फ़िलिस्तियों की बेटियों में से तिमनत में एक 'औरत देखी है,~इसलिए~तुम उससे मेरा ब्याह करा दो।"

³उसके माँ बाप ने उससे कहा, "क्या तेरे भाइयों की बेटियों में, या मेरी सारी क्रौम में कोई 'औरत नहीं है जो तू नामख़तून फ़िलिस्तियों में ब्याह करने जाता है?" समसून ने अपने बाप से कहा, "उसी से मेरा ब्याह करा दे, क्योंकि वह मुझे बहुत पसंद आती है।"⁴लेकिन उसके माँ बाप को मा'लूम न था, यह खुदावन्द की तरफ़ से है; क्योंकि वह फ़िलिस्तियों के खिलाफ़ बहाना ढूँडता था। उस वक़्त फ़िलिस्ती इस्राईलियों पर हुक्मरान थे।

⁵फिर समसून और उसके माँ बाप तिमनत को चले, और तिमनत के ताकिस्तानों में पहुँचे, और देखो, एक जवान शेर समसून के सामने आकर गरजने लगा।⁶तब खुदावन्द की रूह उस पर ज़ोर से नाज़िल हुई, और उसने उसे बकरी के बच्चे की तरह चीर डाला, गो उसके हाथ में कुछ न था। लेकिन जो उसने किया उसे अपने बाप या माँ को न बताया।

⁷और उसने जाकर उस 'औरत से बातें कीं: और वह समसून को बहुत पसंद आई।⁸और कुछ 'अरसे के बा'द वह~उसे लेने को लौटा; और शेर की लाश देखने को कतरा गया, और देखा कि शेर के पिंजरे में शहद की मक्खियों का हुजूम और शहद है।⁹उसने उसे हाथ में ले लिया और खाता हुआ चला, और अपने माँ बाप के पास आकर उनको भी दिया और उन्होंने भी खाया, लेकिन उसने उनको न बताया कि यह शहद उसने शेर के पिंजरे में से निकाला था।

¹⁰फिर उसका बाप उस 'औरत के यहाँ गया, वहाँ समसून ने बड़ी ज़ियाफ़त की क्योंकि जवान ऐसा ही करते थे।¹¹वह उसे देखकर उसके लिए तीस साथियों को ले आए कि उसके साथ रहें।

¹²समसून ने उनसे कहा, "मैं तुम से एक पहेली पूछता हूँ;~इसलिए~अगर तुम ज़ियाफ़त के सात दिन के अन्दर अन्दर उसे बूझकर मुझे उसका मतलब बता दो, तो मैं तीस कतानी कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े तुम को दूँगा।¹³और अगर तुम न बता सको, तो तुम तीस कतानी कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े मुझ को देना।" उन्होंने उससे कहा कि तू अपनी पहेली बयान कर, ताकि हम उसे सुनें।

¹⁴उसने उनसे कहा, "खाने वाले में से तो खाना निकला, और ज़बरदस्त में से मिठास निकली" और वह तीन दिन तक उस पहेली को हल न कर सके।

¹⁵और सातवें दिन उन्होंने समसून की बीवी से कहा कि अपने शौहर को फुसला, ताकि इस पहेली का मतलब वह हम को बता दे; नहीं तो हम तुझ को और तेरे बाप के घर को आग से जला देंगे। क्या तुम ने हम को इसीलिए बुलाया है कि हम को फ़क़ीर कर दो? क्या बात भी यूँ ही नहीं?

¹⁶और समसून की बीवी उसके आगे रो कर कहने लगी, "तुझे तो मुझ से नफ़रत है, तू मुझ को प्यार नहीं करता। तूने मेरी क्रौम के लोगों से पहेली पूछी, लेकिन वह मुझे न बताई।" उसने उससे कहा, "ख़ूब! मैंने उसे अपने माँ बाप को तो बताया नहीं और तुझे बता दूँ?"¹⁷~इसलिए वह उसके आगे जब तक ज़ियाफ़त रही सातों दिन रोती रही; और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उसने उसे बता ही दिया, क्योंकि उसने उसे निहायत परेशान किया था। और उस 'औरत ने वह पहेली अपनी क्रौम के लोगों को बता दी।

¹⁸और उस शहर के लोगों ने सातवें दिन सूरज के डूबने से पहले उससे कहा, "शहद से मीठा और क्या होता है? और शेर से ताक़तवर और कौन है?" उसने उनसे कहा, "अगर तुम मेरी बछिया को हल में न जोतते, तो मेरी पहेली कभी न बूझते"।

¹⁹फिर खुदावन्द की रूह उस पर जोर से नाज़िल हुई, और वह अस्क़लोन को गया। वहाँ उसने उनके तीस आदमी मारे, और उनको लूट कर कपड़ों के जोड़े पहेली बूझने वालों को दिए। और उसका क्रहर भड़क उठा, और वह अपने माँ बाप के घर चला गया।²⁰लेकिन समसून की बीवी उसके एक साथी को, जिसे समसून ने दोस्त बनाया था दे दी गई।

Chapter 15

¹लेकिन कुछ 'अरसे बा'द गेहूँ की फ़सल के मौसम में, समसून बकरी का एक बच्चा लेकर अपनी बीवी के यहाँ गया और कहने लगा, "मैं अपनी बीवी के पास कोठरी में जाऊँगा।" लेकिन उसके बाप ने उसे अन्दर जाने न दिया।² और उसके बाप ने कहा, "मुझ को यकीनन यह खयाल हुआ कि तुझे उससे सख़्त नफ़रत हो गई है, इसलिए मैंने उसे तेरे साथी को दे दिया। क्या उसकी छोटी बहन उससे कहीं खूबसूरत नहीं है?~इसलिए उसके बदले तू इसी को ले ले।"

³समसून ने उनसे कहा, "इस बार मैं फ़िलिस्तिनियों की तरफ़ से, जब मैं उनसे बुराई करूँ बेकुसूर ठहरूँगा।"⁴ और समसून ने जाकर तीन सौ लोमड़ियाँ पकड़ीं; और मशा'लें ली और दुम से दुम मिलाई, और दो दो दुमों के बीच में एक एक मशा'ल बाँध दी।

⁵और मशा'लों में आग लगा कर उसने लोमड़ियों को फ़िलिस्तिनियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया, और पूलियों और खड़े खेतों दोनों को, बल्कि ज़ैतून के बाग़ों को भी जला दिया।⁶ तब फ़िलिस्तिनियों ने कहा, "किसने यह किया है?" लोगों ने बताया कि तिमनती के दामाद समसून ने; इसलिए कि उसने उसकी बीवी छीन कर उस के साथी को दे दी। तब फ़िलिस्तिनियों ने आकर उस 'औरत को और उसके बाप को आग में जला दिया।

⁷समसून ने उनसे कहा कि तुम जो ऐसा काम करते हो, तो ज़रूर ही मैं तुम से बदला लूँगा और इसके बा'द बाज़ आऊँगा।⁸ और उस ने उनको बड़ी खूँरेज़ी के साथ मार मार कर उनका कचूमर कर डाला; और वहाँ से जाकर 'ऐताम की चट्टान की दराड़ में रहने लगा।

⁹तब फ़िलिस्ती जाकर यहूदाह में खेमाज़न हुए और लही में फैल गए।¹⁰ और यहूदाह के लोगों ने उनसे कहा, "तुम हम पर क्यों चढ़ आए हो?" उन्होंने कहा, "हम समसून को बाँधने आए हैं, ताकि जैसा उसने हम से किया हम भी उससे वैसा ही करें।"

¹¹तब यहूदाह के तीन हज़ार आदमी ऐताम की चट्टान की दराड़ में उतर गए, और समसून से कहने लगे, "क्या तू नहीं जानता के फ़िलिस्ती हम पर हुक्मरान हैं?~इसलिए~तूने हम से यह क्या किया है?" उसने उनसे कहा, "जैसा उन्होंने मुझ से किया, मैंने भी उनसे वैसा ही किया।"

¹²उन्होंने उससे कहा, "अब हम आए हैं कि तुझे बाँध कर फ़िलिस्तिनियों के हवाले कर दें।" समसून ने उनसे कहा, "मुझ से क़सम खाओ के तुम खुद मुझ पर हमला न करोगे।"¹³ उन्होंने उसे जवाब दिया, "नहीं! बल्कि हम तुझे कस कर बाँधेंगे और उनके हवाले कर देंगे; लेकिन हम हरगिज़ तुझे जान से न मारेंगे।" फिर उन्होंने उसे दो नई रस्सियों से बाँधा और चट्टान से उसे ऊपर लाए।

¹⁴जब वह लही में पहुँचा, तो फ़िलिस्ती उसे देख कर ललकारने लगे। तब खुदावन्द की रूह उस पर ज़ोर से नाज़िल हुई, और उसके बाजूओं पर की रस्सियाँ आग से जले हुए सन की तरह हो गई, और उसके बन्धन उसके हाथों पर से उतर गए।

¹⁵और उसे एक गधे के जबड़े की नई हड्डी मिल गई:~इसलिए~उसने हाथ बढ़ा कर उसे उठा लिया, और उससे उसने एक हज़ार आदमियों को मार डाला।¹⁶ फिर समसून ने कहा, 'गधे के जबड़े की हड्डी से ढेर के ढेर लग गए, गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने एक हज़ार आदमियों को मारा'।

¹⁷और जब वह अपनी बात ख़त्म कर चुका, तो उसने जबड़ा अपने हाथ में से फेंक दिया; और उस जगह का नाम रामत लही पड़ गया।¹⁸ और उसको बड़ी प्यास लगी, तब उसने खुदावन्द को पुकारा और कहा, "तूने अपने बन्दे के हाथ से ऐसी बड़ी रिहाई बरख़्शी। अब क्या मैं प्यास से मरूँ, और नामख़तूनों के हाथ में पड़ूँ?"

¹⁹लेकिन खुदा ने उस गढ़े को जो लही में है चाक कर दिया, और उसमें से पानी निकला; और जब उसने उसे पी लिया तो उसकी जान में जान आई, और वह ताज़ा दम हुआ। इसलिए उस जगह का नाम ऐन हक्क़ोरे रखवा गया, वह लही में आज तक है।²⁰ और वह फ़िलिस्तिनियों के दिनों में बीस बरस तक इसाईलियों का क़ाज़ी रहा।

Chapter 16

¹फिर समसून गज़्ज़ा को गया। वहाँ उसने एक कस्बी देखी, और उसके पास गया।²और गज़्ज़ा के लोगों को खबर हुई के समसून यहाँ आया है। उन्होंने उसे घेर लिया और सारी रात शहर के फाटक पर उसकी घात में बैठे रहे; लेकिन रात भर चुप चाप रहे और कहा कि सुबह की रोशनी होते ही हम उसे मार डालेंगे।

³और समसून आधी रात तक लेटा रहा, और आधी रात को उठ कर शहर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर चौखट समेत उखाड़ लिया; और उनको अपने कंधों पर रख कर उस पहाड़ की चोटी पर, जो हबरून के सामने है ले गया।

⁴इसके बाद सूरिक्र की वादी में एक 'औरत से जिसका नाम दलीला था, उसे 'इश्क हो गया।⁵और फ़िलिस्तिनियों के सरदारों ने उस 'औरत के पास जाकर उससे कहा कि तू उसे फुसलाकर दरियाफ़्त कर ले कि उसकी ताक़त ~का राज़ क्या है और हम क्यूँकर उस पर ग़ालिब आएँ, ताकि हम उसे बाँधकर उसको अज़ियत पहुँचाएँ; और हम में से हर एक ग़्यारह सौ चाँदी के सिक्के तुझे देगा।

⁶तब दलीला ने समसून से कहा कि मुझे तो बता दे तेरी ताक़त का राज़ क्या है, और तुझे तकलीफ़ पहुँचाने के लिए किस चीज़ से तुझे बाँधना चाहिए।⁷समसून ने उससे कहा कि अगर वह मुझ को सात हरी हरी बेदों से जो सुखाई न गई हों बाँधे, तो मैं कमज़ोर होकर और आदमियों की तरह हो जाऊँगा।

⁸तब फ़िलिस्तिनियों के सरदार सात हरी हरी बेदें जो सुखाई न गई थीं, उस 'औरत के पास ले आए और उसने समसून को उनसे बाँधा।⁹और उस 'औरत ने कुछ आदमी अन्दर की कोठरी में घात में बिठा लिए थे।-इसलिए उस ने समसून से कहा कि ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए! तब उसने उन बेदों को ऐसा तोड़ा जैसे सन का सूत आग पाते ही टूट जाता है; -इसलिए उसकी ताक़त का राज़ न खुला।

¹⁰तब दलीला ने समसून से कहा, "देख, तूने मुझे धोका दिया और मुझ से झूट बोला। अब तू ज़रा मुझ को बता दे, कि तू किस चीज़ से बाँधा जाए।"¹¹उसने उससे कहा, "अगर वह मुझें नई नई रस्सियों से जो कभी काम में न आई हों, बाँधे तो मैं कमज़ोर होकर और आदमियों की तरह हो जाऊँगा।"¹²तब दलीला ने नई रस्सियाँ लेकर उसको उनसे बाँधा और उससे कहा, "ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए!" और घात वाले अन्दर की कोठरी में ठहरे ही हुए थे। तब उसने अपने बाजुओं पर से धागे की तरह उनको तोड़ डाला।

¹³~तब~दलीला समसून से कहने लगी, "अब तक तो तूने मुझे धोका ही दिया और मुझ से झूट बोला; अब तो बता दे, कि तू किस चीज़ से बाँध सकता है?" उसने उसे कहा, "अगर तू मेरे सिर की सातों लटें ताने के साथ बुन दे।"¹⁴तब उसने खूँटे से उसे कसकर बाँध दिया और उससे कहा, "ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए!" तब वह नींद से जाग उठा, और बल्ली के खूँटे को ताने के साथ उखाड़ डाला।

¹⁵फिर वह उससे कहने लगी, "तू क्यूँकर कह सकता है, कि मैं तुझे चाहता हूँ, जब कि तेरा दिल मुझ से लगा नहीं? तूने तीनों बार मुझे धोका ही दिया और न बताया कि तेरी ताक़त का राज़ क्या है।"¹⁶जब वह उसे रोज़ अपनी बातों से तंग और मजबूर करने लगी, यहाँ तक कि उसका दम नाक में आ गया।

¹⁷तो उसने अपना दिल खोलकर उसे बता दिया कि मेरे सिर पर उस्तरा नहीं फिरा है, इसलिए कि मैं अपनी माँ के पेट ही से खुदा का नज़ीर हूँ, -इसलिए~अगर मेरा सिर मूँडा जाए तो मेरी ताक़त मुझ से जाती रहेगा, और मैं कमज़ोर होकर और आदमियों की तरह हो जाऊँगा।

¹⁸जब दलीला ने देखा के उसने दिल खोलकर सब कुछ बता दिया, तो उसने फ़िलिस्तिनियों के सरदारों को कहला भेजा कि इस बार और आओ, क्यूँकि उसने दिल खोलकर मुझे सब कुछ बता दिया है।" तब फ़िलिस्तिनियों के सरदार उसके पास आए, और रुपये अपने हाथ में लेते आए।¹⁹तब उसे उसने अपने ज़ानों पर सुला लिया, और एक आदमी को बुलवाकर सातों लटें जो उसके सिर पर थीं, मुण्डवा डालीं, और उसे तकलीफ़ देने लगी; और उसका ज़ोर उससे जाता रहा।

²⁰फिर उसने कहा, "ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए!" और वह नींद से जागा और कहने लगा कि मैं और दफ़ा की तरह बाहर जाकर अपने को झटकुँगा। लेकिन उसे खबर न थी कि खुदावन्द उससे अलग हो गया है।²¹तब फ़िलिस्तिनियों ने उसे पकड़ कर उसकी आँखें निकाल डालीं, और उसे ग़ज़्ज़ा में ले आए और पीतल की बेड़ियों से उसे जकड़ा, और वह कैदख़ाने में चक्की पीसा करता था।²²तो भी उसके सिर के बाल मुण्डवाए जाने के बाद फिर बढ़ने लगे।

²³और फ़िलिस्तिनियों के सरदार फ़राहम हुए ताकि अपने मा'बूद दजोन के लिए बड़ी कुर्बानी गुज़ारें और खुशी करें क्यूँकि वह कहते थे कि हमारे मा'बूद ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे क़ब्ज़े में कर दिया है।²⁴और जब लोग उसको देखते तो अपने मा'बूद की ता'रीफ़ करते और कहते थे कि हमारे मा'बूद ने हमारे दुश्मन और हमारे मुल्क को उजाड़ने वाले को, जिसने हम में से बहुतों को हलाक किया हमारे हाथ में कर दिया है।

²⁵और ऐसा हुआ कि जब उनके दिल निहायत शाद हुए, तो वह कहने लगे कि समसून को बुलाओ, कि हमारे लिए कोई खेल करे।-इसलिए~उन्होंने समसून को कैदख़ाने से बुलवाया, और वह उनके लिए खेल करने लगा; और उन्होंने उसको दो खम्बों के बीच खड़ा किया।²⁶तब समसून ने उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े था कहा, "मुझे उन खम्बों को जिन पर यह घर क़ायम है, थामने दे ताकि मैं उन पर टेक लगाऊँ।"

²⁷और वह~घर शख्सों और 'औरतों से भरा था, और फ़िलिस्तिनियों के सब सरदार वहीं थे, और छत पर क़रीबन तीन हज़ार शख्स और 'औरत थे जो समसून के खेल देख रहे थे।

²⁸तब समसून ने खुदावन्द से फ़रियाद की और कहा, "ऐ मालिक, खुदावन्द! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे याद कर; और मैं तेरी मिन्नत करता हूँ ऐ खुदा सिर्फ़ इस बार और तू मुझे ताक़त बख़्श, ताकि मैं एक बार फ़िलिस्तिनियों से अपनी दोनों आँखों का बदला लूँ।"²⁹और समसून ने दोनों बीच के खम्बों को जिन पर घर क़ायम था पकड़ कर, एक पर दहने हाथ से और दूसरे पर बाएँ हाथ से ज़ोर लगाया।

³⁰और समसून कहने लगा कि फ़िलिस्तिनियों के साथ मुझे भी मरना ही है।-इसलिए~वह अपने सारी ताक़त से झुका; और वह घर उन सरदारों और सब लोगों पर जो उसमें थे गिर पड़ा। इसलिए वह मुर्दे जिनको उसने अपने मरते दम मारा, उनसे भी ज़्यादा थे जिनको उसने जीते जी क़त्ल किया।³¹तब उसके भाई और उसके बाप का सारा घराना आया, और वह उसे उठा कर ले गए और सुर'आ और इस्ताल के बीच उसके बाप मनोहा के क़ब्रिस्तान में उसे दफ़न किया। वह बीस बरस तक इसाईलियों का क़ाज़ी रहा।

Chapter 17

¹और इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क का एक शख्स था जिसका नाम मीकाह था।²उसने अपनी माँ से कहा, "चाँदी के वह ग्यारह सौ सिक्के जो तेरे पास से लिए गए थे, और जिनके बारे में तूने ला'नत भेजी और मुझे भी यही सुना कर कहा;~इसलिए देख वह चाँदी मेरे पास है, मैंने उसको ले लिया था।" उसकी माँ ने कहा, "मेरे बेटे को खुदावन्द की तरफ़ से बरकत मिले।"

³और उसने चाँदी के वह ग्यारह सौ सिक्के अपनी माँ को लौटा दिए, तब उसकी माँ ने कहा, "मैं इस चाँदी को अपने बेटे की खातिर अपने हाथ से खुदावन्द के लिए मुक़द्दस किए देती हूँ, ताकि वह एक बुत तराशा हुआ और एक ढाला हुआ बनाए~इसलिए, अब मैं इसको तुझे लौटा देती हूँ।"⁴लेकिन जब उसने वह नक़दी अपनी माँ को लौटा दी, तो उसकी माँ ने चाँदी के दो सौ सिक्के लेकर उनको ढालने वाले को दिया, जिसने उनसे एक तराशा हुआ और एक ढाला हुआ बुत बनाया; और वह मीकाह के घर में रहे।

⁵और इस शख्स मीकाह के यहाँ एक बुत खाना था, और उसने एक अफ़ूद और तराफ़ीम को बनवाया; और अपने बेटों में से एक को मख्सूस किया जो उसका काहिन हुआ।⁶उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह न था, और हर शख्स जो कुछ उसकी नज़र में अच्छा मा'लूम होता वही करता था।

⁷और बैतलहम यहूदाह में यहूदाह के घराने का एक जवान था जो लावी था; यह वहीं टिका हुआ था।⁸यह शख्स उस शहर या'नी बैतलहम-ए-यहूदाह से निकला, कि और कहीं जहाँ जगह मिले जा टिके। तब वह सफ़र करता हुआ इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में मीकाह के घर आ निकला।⁹और मीकाह ने उससे कहा, "तू कहाँ से आता है?" उसने उससे कहा, "मैं बैतलहम-ए-यहूदाह का एक लावी हूँ, और निकला हूँ कि जहाँ कहीं जगह मिले वहीं रहूँ।"

¹⁰मीकाह ने उससे कहा, "मेरे साथ रह जा, और मेरा बाप और काहिन हो; मैं तुझे चाँदी के दस सिक्के सालाना और एक जोड़ा कपड़ा और खाना दूँगा।" तब वह लावी अन्दर चला गया।¹¹और वह उस आदमी के साथ रहने पर राज़ी हुआ; और वह जवान उसके लिए ऐसा ही था जैसा उसके अपने बेटों में से एक बेटा।

¹²और मीकाह ने उस लावी को मख्सूस किया, और वह जवान उसका काहिन बना और मीकाह के घर में रहने लगा।¹³तब मीकाह ने कहा, "मैं अब जानता हूँ कि खुदावन्द मेरा भला करेगा, क्योंकि एक लावी मेरा काहिन है।"

Chapter 18

¹उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह न था, और उन ही दिनों में दान का क़बीला अपने रहने के लिए मीरास ढूँढता था, क्योंकि उनको उस दिन तक इस्राईल के क़बीलों में मीरास नहीं मिली थी।²~इसलिए~बनी दान ने अपने सारे शुमार में से पाँच सूर्माओं को सुर'आ और इस्ताल से रवाना किया, ताकि मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें और उसे देखें भालें और उनसे कह दिया कि जाकर उस मुल्क को देखो भालो।~इसलिए~वह इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में मीकाह के घर आए और वहीं उतरे।

³जब वह मीकाह के घर के पास पहुँचे, तो उस लावी जवान की आवाज़ पहचानी, पस वह उधर को मुड़ गए और उससे कहने लगे, "तुझ को यहाँ कौन लाया? तू यहाँ क्या करता है और यहाँ तेरा क्या है?"⁴उसने उनसे कहा, "मीकाह ने मुझ से ऐसा ऐसा सुलूक किया, और मुझे नौकर रख लिया है और मैं उसका काहिन बना हूँ।"

⁵उन्होंने उससे कहा कि ख़ुदा से ज़रा सलाह ले, ताकि हम को मा'लूम हो जाए कि हमारा यह सफ़र मुबारक होगा या नहीं।⁶उस काहिन ने उनसे कहा, "सलामती से चले जाओ, क्योंकि तुम्हारा यह सफ़र ख़ुदावन्द के हुज़ूर है।"

⁷~इसलिए~वह पाँचों शख्स चल निकले और लैस में आए। उन्होंने वहाँ के लोगों को देखा कि सैदानियों की तरह कैसे इत्मिनान और अमन और चैन से रहते हैं; क्योंकि उस मुल्क में कोई हाकिम नहीं था जो उनको किसी बात में ज़लील करता। वह सैदानियों से बहुत दूर थे, और किसी से उनको कुछ सरोकार न था।

⁸~इसलिए~वह सुर'आ और इस्ताल को अपने भाइयों के पास लौटे, और उनके भाइयों ने उनसे पूछा कि तुम क्या कहते हो?

⁹उन्होंने कहा, "चलो, हम उन पर चढ़ जाएँ; क्योंकि हम ने उस मुल्क को देखा कि वह बहुत अच्छा है; और तुम क्या चुप चाप ही रहे? अब चलकर उस मुल्क पर क़ाबिज़ होने में सुस्ती न करो।¹⁰ अगर तुम चले तो एक मुत्तम'इन क़ौम के पास पहुँचोगे, और वह मुल्क वसी' है; क्योंकि ख़ुदा ने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है। वह ऐसी जगह है जिसमें दुनिया की किसी चीज़ की कमी नहीं।"

¹¹तब बनी दान के घराने के छः सौ शख्स जंग के हथियार बाँधे हुए सुर'आ और इस्ताल से रवाना हुए।¹²और जाकर यहूदाह के करयत या'रीम में ख़ैमाज़न हुए। इसीलिए आज के दिन तक उस जगह को महने दान कहते हैं, और यह करयत या'रीम के पीछे है।

¹³और वहाँ से चलकर इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में पहुँचे और मीकाह के घर आए।¹⁴तब वह पाँचों शख्स जो लैस के मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने गए थे, अपने भाइयों से कहने लगे, "क्या तुम को ख़बर है, कि इन घरों में एक अफ़ूद और तराफ़ीम और एक तराशा हुआ बुत और एक ढाला हुआ बुत है?~इसलिए अब सोच लो कि तुम को क्या करना है।"

¹⁵तब वह उस तरफ़ मुड़ गए और उस लावी जवान के मकान में या'नी मीकाह के घर में दाख़िल हुए, और उससे ख़ैर-ओ-सलामती पूछी।¹⁶और वह छः सौ आदमी जो बनी दान में से थे, जंग के हथियार बाँधे फाटक पर खड़े रहे।

¹⁷और उन पाँचों शख्सों ने जो ज़मीन का हाल दरियाफ़्त करने को निकले थे, वहाँ आकर तराशा हुआ बुत और अफ़ूद और तराफ़ीम और ढाला हुआ बुत सब कुछ ले लिया, और वह काहिन फाटक पर उन छः सौ आदमियों के साथ जो जंग के हथियार बाँधे थे खड़ा था।¹⁸जब वह मीकाह के घर में घुस कर तराशा हुआ बुत और अफ़ूद और तराफ़ीम और ढाला हुआ बुत ले आए, तो उस काहिन ने उनसे कहा, "तुम यह क्या करते हो?"

¹⁹तब उन्होंने उसे कहा, "चुप रह, मुँह पर हाथ रख ले; और हमारे साथ चल और हमारा बाप और काहिन बन। क्या तेरे लिए एक शख्स के घर का काहिन होना अच्छा है, या यह कि तू बनी-इस्राईल के एक क़बीले और घराने का काहिन हो?"²⁰तब काहिन का दिल ख़ुश हो गया और वह अफ़ूद और तराफ़ीम और तराशे हुए बुत को लेकर लोगों के बीच चला गया।

²¹फिर वह मुड़े और रवाना हुए, और बाल बच्चों और चौपायों और सामन को अपने आगे कर लिया।²²जब वह मीकाह के घर से दूर निकल गए, तो जो लोग मीकाह के घर के पास के मकानों में रहते थे वह जमा' हुए और चलकर बनी दान को जा लिया।²³और उन्होंने बनी दान को पुकारा, तब उन्होंने उधर मुँह करके मीकाह से कहा, "तुझ को क्या हुआ जो तू इतने लोगों की जमिय'त को साथ लिए आ रहा है?"

²⁴उसने कहा, "तुम मेरे मा'बूदों को जिनको मैंने बनवाया, और मेरे काहिन को साथ लेकर चले आए, अब मेरे पास और क्या बाक़ी रहा?~इसलिए~तुम मुझ से यह क्यूँकर कहते हो कि तुझ को क्या हुआ?"²⁵बनी दान ने उससे कहा कि तेरी आवाज़ हम लोगों में सुनाई न दे, ऐसा न हो कि झल्ले मिज़ाज के आदमी तुझ पर हमला कर बैठें और तू अपनी जान अपने घर के लोगों की जान के साथ खो बैठे।²⁶~इसलिए बनी दान तो अपने रास्ते ही चले गए: और जब मीकाह ने देखा, कि वह उसके मुकाबले में बड़े ज़बरदस्त हैं, तो वह मुड़ा और अपने घर को लौटा।

²⁷यूँ वह मीकाह की बनवाई हुई चीज़ों को और उस काहिन को जो उसके यहाँ था, लेकर लैस में ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अमन और चैन से रहते थे; और उनको बर्बाद किया और शहर जला दिया।²⁸और बचाने वाला कोई न था, क्यूँकि वह सैदा से दूर था और यह लोग किसी आदमी से सरोकार नहीं रखते थे। और वह शहर बैत रहोब के पास की वादी में था। फिर उन्होंने वह शहर बनाया और उसमें रहने लगे।²⁹और उस शहर का नाम अपने बाप दान के नाम पर जो इस्राईल की औलाद था दान ही रखखा, लेकिन पहले उस शहर का नाम लैस था।

³⁰और बनी दान ने वह तराशा हुआ बुत अपने लिए खड़ा कर लिया; और यूनतन बिन जैरसोम बिन मूसा और उसके बेटे उस मुल्क की असीरी के दिन तक बनी दान के क़बीले के काहिन बने रहे।³¹और सारे वक़्त जब तक ख़ुदा का घर सैला में रहा, वह मीकाह के तराशे हुए बुत को जो उसने बनवाया था अपने लिए खड़े किए रहे।

Chapter 19

¹उन दिनों में जब इस्राईल में कोई बादशाह न था, ऐसा हुआ कि एक शख्स ने जो लावी था और इफ्राईम के पहाड़ी मुल्क के दूसरे सिरे पर रहता था, बैतलहम-ए-यहूदाह से एक हरम अपने लिए कर ली।²उसकी हरम ने उस से बेवफ़ाई की और उसके पास से बैतलहम यहूदाह में अपने बाप के घर चली गई, और चार महीने वहीं रही।

³और उसका शौहर उठकर और एक नौकर और दो गधे साथ लेकर उसके पीछे रवाना हुआ, कि उसे मना फुसला कर वापस ले आए।-इसलिए-वह उसे अपने बाप के घर में ले गई, और उस जवान 'औरत का बाप उसे देख कर उसकी मुलाक़ात से खुश हुआ।⁴और उसके खुसर या'नी उस जवान 'औरत के बाप ने उसे रोक लिया, और वह उसके साथ तीन दिन तक रहा; और उन्होंने खाया पिया और वहाँ टिके रहे।

⁵चौथे रोज़ जब वह सुबह सवेरे उठे, और वह चलने को खड़ा हुआ; तो उस जवान 'औरत के बाप ने अपने दामाद से कहा, "एक टुकड़ा रोटी खाकर ताज़ा दम हो जा, इसके बा'द तुम अपनी राह लेना।"⁶-इसलिए-वह दोनों बैठ गए और मिलकर खाया पिया फिर उस जवान 'औरत के बाप ने उस शख्स से कहा कि रात भर और टिकने को राज़ी हो जा, और अपने दिल को खुश कर।

⁷लेकिन वह शख्स चलने को खड़ा हो गया, लेकिन उसका खुसर उससे बजिद हुआ;-इसलिए-फिर उसने वहीं रात काटी।⁸और पाँचवें रोज़ वह सुबह सवेरे उठा, ताकि रवाना हो; और उस जवान 'औरत के बाप ने उससे कहा, "ज़रा इत्मिनान रख और दिन ढलने तक ठहरे रहो।" तब दोनों ने रोटी खाई।

⁹और जब वह शख्स और उसकी हरम और उसका नौकर चलने को खड़े हुए, तो उसके खुसर या'नी उस जवान 'औरत के बाप ने उससे कहा, "देख, अब तो दिन ढला और शाम हो चली;-इसलिए-मैं तुम से मिन्नत करता हूँ कि तुम रात भर ठहर जाओ। देख, दिन तो खातिमें पर है, इसलिए यहीं टिक जा, तेरा दिल खुश हो और कल सुबह ही सुबह तुम अपनी राह लगाना, ताकि तू अपने घर को जाए।"

¹⁰लेकिन वह शख्स उस रात रहने पर राज़ी न हुआ, बल्कि उठ कर रवाना हुआ और यबूस के सामने पहुँचा (यरुशलीम यही है); और दो गधे ज़ीन कसे हुए उसके साथ थे, और उसकी हरम भी साथ थी।¹¹जब वह यबूस के बराबर पहुँचे तो दिन बहुत ढल गया था, और नौकर ने अपने आक्रा से कहा, "आ, हम यबूसियों के इस शहर में मुड़ जाएँ और यहीं टिकें।"

¹²उसके आक्रा ने उससे कहा, "हम किसी अजनबी के शहर में, जो बनी-इस्राईल में से नहीं दाखिल न होंगे, बल्कि हम जिब'आ को जाएँगे।"¹³फिर उसने अपने नौकर से कहा कि आ, हम इन जगहों में से किसी में चले चलें, और जिब'आ या रामा में रात काटें।"

¹⁴-इसलिए-वह आगे बढ़े और रास्ता चलते ही रहे, और बिनयमीन के जिब'आ के नज़दीक पहुँचते पहुँचते सूरज डूब गया।¹⁵इसलिए-वह उधर को मुड़े, ताकि जिब'आ में दाखिल होकर वहाँ टिकें। वह दाखिल होकर शहर के चौक में बैठ गया, क्योंकि वहाँ कोई आदमी उनको टिकाने को अपने घर न ले गया।

¹⁶शाम को एक बूढ़ा शख्स अपना काम करके वहाँ आया। यह आदमी इफ्राईम के पहाड़ी मुल्क का था, और जिब'आ में आ बसा था; लेकिन उस मक़ाम के बाशिंदे बिनयमीनी थे।¹⁷उसने जो आँखें उठाई तो उस मुसाफ़िर को उस शहर के चौक में देखा, तब उस बूढ़े शख्स ने कहा, "तू किधर जाता है और कहाँ से आया है?"

¹⁸उसने उससे कहा, "हम यहूदाह के बैतलहम से इफ्राईम के पहाड़ी मुल्क के दूसरे सिरे को जाते हैं। मैं वहीं का हूँ, और यहूदाह के बैतलहम को गया हुआ था; और अब खुदावन्द के घर को जाता हूँ, यहाँ कोई मुझे अपने घर में नहीं उतारता।"¹⁹हालाँकि हमारे साथ हमारे गधों के लिए भूसा और चारा है; और मेरे और तेरी लौंडी के वास्ते, और इस जवान के लिए जो तेरे बन्दों के साथ है रोटी और मय भी है, और किसी चीज़ की कमी नहीं।"

²⁰उस बूढ़े शख्स ने कहा, "तेरी सलामती हो; तेरी सब ज़रूरतें हरसूरत मेरे ज़िम्मे हों, लेकिन इस चौक में हरगिज़ न टिक।"²¹वह उसे अपने घर ले गया और उसके गधों को चारा दिया, और वह अपने पाँव धोकर खाने पीने लगे।

²²जब वह अपने दिलों को खुश कर रहे थे, तो उस शहर के लोगों में से कुछ खबीसों ने उस घर को घेर लिया और दरवाज़ा पीटने लगे, और साहिब-ए-खाना या'नी बूढ़े शख्स से कहा, "उस शख्स को जो तेरे घर में आया है, बाहर ले आ ताकि हम उसके साथ सुहबत करें।"²³वह ~आदमी जो साहिब-ए-खाना था, बाहर उनके पास जाकर उनसे कहने लगा, "नहीं, मेरे भाइयों ऐसी शरारत न करो; चूँकि यह शख्स मेरे घर में आया है, इसलिए यह बेवकूफी न करो।

²⁴देखो, मेरी कुंवारी बेटी और इस शख्स की हरम यहाँ हैं, मैं अभी उनको बाहर लाए देता हूँ, तुम उनकी आबरू लो और जो कुछ तुम को भला दिखाई दे उनसे करो, लेकिन इस शख्स से ऐसा घिनौना काम न करो।"²⁵लेकिन वह लोग उसकी सुनते ही न थे। तब वह शख्स अपनी हरम को पकड़ कर उनके पास बाहर ले आया। उन्होंने उससे सुहबत की और सारी रात सुबह तक उसके साथ बदज़ाती करते रहे, और जब दिन निकलने लगा तो उसको छोड़ दिया।²⁶वह 'औरत पौ फटते हुए आई, और उस शख्स के घर के दरवाज़े पर जहाँ उसका खाविन्द था गिरी और रोशनी होने तक पड़ी रही।

²⁷और उसका खाविन्द सुबह को उठा और घर के दरवाज़े खोले और बाहर निकला कि रवाना हों और देखो वह 'औरत जो उसकी हरम थी घर के दरवाज़े पर अपने आस्ताना पर फैलाये हुए पड़ी थी।²⁸उसने उससे कहा, "उठ, हम चलें।" लेकिन किसी ने जवाब न दिया। तब उस शख्स ने उसे अपने गधे पर लाद लिया, और वह शख्स उठा और अपने मकान को चला गया।

²⁹और उसने घर पहुँच कर छुरी ली, और अपनी हरम को लेकर उसके आ'ज़ा काटे और उसके बारह टुकड़े करके इस्राईल की सब सरहदों में भेज दिए।³⁰और जितनों ने यह देखा, वह कहने लगे कि जब से बनी-इस्राईल मुल्क-ए-मिस्र से निकल आए, उस दिन से आज तक ऐसा बुरा काम न कभी हुआ न कभी देखने में आया,-इसलिए-इस पर ग़ौर करो और सलाह करके बताओ।

Chapter 20

¹तब सब बनी इस्राईल निकले और सारी जमा'अत जिल'आद के मुल्क समेत दान से बैरसबा' तक यकतन होकर खुदावन्द के सामने मिसफ़ाह में इकट्ठी हुई।

²और तमाम क्रौम के सरदार बल्कि बनी इस्राईल के सब क़बीलों के लोग जो चार लाख शमशीर ज़न प्यादे थे, खुदा के लोगों के मजमे' में हाज़िर हुए।

³(और बनी बिनयमीन ने सुना कि बनी-इस्राईल मिसफ़ाह में आए हैं।) और बनी-इस्राईल पूछने लगे कि बताओ तो सही यह शरारत क्योंकर हुई? तब उस लावी ने जो उस मक्नूल 'औरत का शौहर था जवाब दिया कि मैं अपनी हरम को साथ लेकर बिनयमीन के जिब'आ में टिकने को गया था।

⁵और जिब'आ के लोग मुझ पर चढ़ आए, और रात के वक़्त उस घर को जिसके अन्दर मैं था चारों तरफ़ से घेर लिया, और मुझे तो वह मार डालना चाहते थे; और मेरी हरम को जबरन ऐसा बेआबरू किया कि वह मर गई।⁶~इसलिए~मैंने अपनी हरम को लेकर उसको टुकड़े टुकड़े किया, और उनको इस्राईल की मीरास के सारे मुल्क में भेजा, क्योंकि इस्राईल के बीच उन्होंने शुहदापन और घिनीना काम किया है।⁷ए बनी-इस्राईल, तुम सब के सब देखो, और यहीं अपनी सलाह-ओ-मशवरत दो।

⁸और सब लोग यकतन होकर उठे और कहने लगे, "हम में से कोई अपने डेरे को नहीं जाएगा, और न हम में से कोई अपने घर की तरफ़ रुख करेगा।⁹बल्कि हम जिब'आ से यह करेंगे, कि पर्ची डाल कर उस पर चढ़ाई करेंगे।

¹⁰और हम इस्राईल के सब क़बीलों में से सौ पीछे दस, और हज़ार पीछे सौ, और दस हज़ार पीछे एक हज़ार आदमी लोगों के लिए रसद लाने को जुदा करें; ताकि वह लोग जब बिनयमीन के जिब'आ में पहुँचें, तो जैसा मकरूह काम उन्होंने इस्राईल में किया है उसके मुताबिक़ उससे कारगुज़ारी कर सकें।¹¹तब~सब बनी-इस्राईल उस शहर के मुक़ाबिल गठे हुए यकतन होकर जमा' हुए।

¹²और बनी-इस्राईल के क़बीलों ने बिनयमीन के सारे क़बीले में लोग रवाना किए और कहला भेजा कि यह क्या शरारत है जो तुम्हारे बीच हुई?¹³इसलिए अब उन आदमियों या'नी उन ख़बीसों को जो जिब'आ में हैं हमारे हवाले करो, कि हम उनको क़त्ल करें और इस्राईल में से बुराई को दूर कर डालें। लेकिन बनी बिनयमीन ने अपने भाइयों बनी इस्राईल का कहना न माना।¹⁴बल्कि बनी बिनयमीन शहरों में से जिब'आ में जमा' हुए, ताकि बनी-इस्राईल से लड़ने को जाएँ।

¹⁵और बनी बिनयमीन जो शहरों में से उस वक़्त जमा' हुए, वह शुमार में छब्बीस हज़ार शमशीर ज़न शख्स थे, 'अलावा जिब'आ के बाशिंदों के जो शुमार में सात सौ चुने हुए जवान थे।¹⁶~इन सब लोगों में से सात सौ चुने हुए बेहत्ये जवान थे, जिनमें से हर एक फ़लाखन से बाल के निशाने पर बग़ैर ख़ता किए पत्थर मार सकता था।

¹⁷और इस्राईल के लोग, बिनयमीन के 'अलावा, चार लाख शमशीर ज़न शख्स थे, यह सब साहिब-ए-जंग थे।¹⁸और बनी-इस्राईल उठ कर बैतएल को गए और खुदा से मश्वरत चाही और कहने लगे कि हम में से कौन बनी बिनयमीन से लड़ने को पहले जाए? खुदावन्द ने फ़रमाया, "पहले यहूदाह जाए।"

¹⁹~इसलिए~बनी-इस्राईल सुबह सवेरे उठे और जिब'आ के सामने डेरे खड़े किए।²⁰और इस्राईल के लोग बिनयमीन से लड़ने को निकले, और इस्राईल के लोगों ने जिब'आ में उनके मुक़ाबिल सफ़आराई की।²¹तब बनी बिनयमीन ने जिब'आ से निकल कर उस दिन बाइस हज़ार इस्राईलियों को क़त्ल करके खाक में मिला दिया।

²²लेकिन बनी-इस्राईल के लोग हौसला करके दूसरे दिन उसी मक़ाम पर जहाँ पहले दिन सफ़ बाँधी थी फिर सफ़आरा हुए।²³~(और बनी-इस्राईल जाकर शाम तक खुदावन्द के आगे रोते रहे; और उन्होंने खुदावन्द से पूछा कि हम अपने भाई बिनयमीन की औलाद से लड़ने के लिए फिर बढ़े या नहीं? खुदावन्द ने फ़रमाया, "उस पर चढ़ाई करो)।"

²⁴~इसलिए~बनी-इस्राईल दूसरे दिन बनी बिनयमीन के मुक़ाबले के लिए नज़दीक आए।²⁵और उस दूसरे दिन बनी बिनयमीन उनके मुक़ाबिल जिब'आ से निकले और अठारह हज़ार इस्राईलियों को क़त्ल करके खाक में मिला दिया, यह सब शमशीर ज़न थे।

²⁶तब सब बनी-इस्राईल और सब लोग उठे और बैतएल में आए और वहाँ खुदावन्द के हुज़ूर बैठे रोते रहे, और उस दिन शाम तक रोज़ा रखवा और सोख्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द के आगे पेश कीं।

²⁷और बनी-इस्राईल ने इस वजह से कि खुदा के 'अहद का सन्दूक उन दिनों वहीं था,²⁸और हारून के बेटे इली'अज़र का बेटा फ़ीन्हास उन दिनों उसके आगे खड़ा रहता था, खुदावन्द से पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन की औलाद से एक दफ़ा' और लड़ने को जाऊँ या रहने दूँ? खुदावन्द ने फ़रमाया कि जा, मैं कल उसको तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।

²⁹~इसलिए~बनी-इस्राईल ने जिब'आ के चारों तरफ़ लोगों को घात में बिठा दिया।³⁰और बनी-इस्राईल तीसरे दिन बनी बिनयमीन के मुक़ाबिले को चढ़ गए, और पहले की तरह जिब'आ के मुक़ाबिल फिर सफ़आरा हुए।

³¹और ~बनी बिनयमीन इन लोगों का सामना करने ~निकले, और शहर से दूर खिंचे चले गए; और उन शाहराहों पर जिनमें से एक बैतएल को और दूसरी मैदान में से जिब'आ को जाती थी, पहले की तरह लोगों को मारना और क़त्ल करना शुरू' किया और इस्राईल के तीस आदमी के क़रीब मार डाले |

³²और बनी बिनयमीन कहने लगे कि वह पहले की तरह हम से मग़लूब हुए। लेकिन बनी-इस्राईल ने कहा, "आओ, भागें और उन को शहर से दूर शाहराहों पर खींच लाएँ।"³³तब सब इस्राईली शख्स अपनी अपनी जगह से उठ खड़े हुए, और बा'ल तमर में सफ़आरा हुए; इस वक़्त वह इस्राइली जो कमीन में बैठे थे, मा'रे जिब'आ से जो उनकी जगह थी निकले।

³⁴और सारे इस्राईल में से दस हज़ार चुने हुए आदमी जिब'आ के सामने आए और लड़ाई सख़्त होने लगी; लेकिन उन्होंने न जाना कि उन पर आफ़त आने वाली है।³⁵और खुदावन्द ने बिनयमीन को इस्राईल के आगे मारा, और बनी-इस्राईल ने उस दिन पच्चीस हज़ार एक सौ बिनयमीनियों को क़त्ल किया, यह सब शमशीर ज़न थे।

³⁶~तब बनी बिनयमीन ने देखा कि वह मगालूब हुए क्योंकि इसाइली~शख्स उन लोगों का भरोसा करके जिनकी उन्होंने जिब'आ के खिलाफ़ घात में बिठाया था, बिनयमीन के सामने से हट गए।³⁷ तब कमीन वालों ने जल्दी की और जिब'आ पर झपटे, और इन कमीन वालों ने आगे बढ़कर सारे शहर को बर्बाद किया।³⁸ और इसाइली आदमियों और उन कमीनवालों में यह निशान मुकर्रर हुआ था, कि वह ऐसा करें कि धुवें का बहुत बड़ा बादल शहर से उठाएँ।

³⁹इसलिए~इसाइली शख्स लड़ाई में हटने लगे और बिनयमीन ने उनमें से करीब तीस के आदमी क़त्ल कर दिए क्योंकि उन्होंने कहा कि वह यकीनन हमारे सामने मगालूब हुए जैसे पहली लड़ाई में।

⁴⁰लेकिन जब धुएँ के सुतून में बादल सा उस शहर से उठा, तो बनी बिनयमीन ने अपने पीछे निगाह की और क्या देखा कि शहर का शहर धुवें में आसमान को उड़ा जाता है।⁴¹ फिर तो इसाइली~शख्स पलटे और बिनयमीन के लोग हक्का-बक्का हो गए, क्योंकि उन्होंने देखा कि उन पर आफ़त आ पड़ी।

⁴²~इसलिए~उन्होंने इसाइली शख्सों के आगे पीठ फेर कर वीराने की की राह ली; लेकिन लड़ाई ने उनका पीछा न छोड़ा, और उन लोगों ने जो और शहरों से आते थे उनको उनके बीच में फ़ना कर दिया।

⁴³यूँ उन्होंने बिनयमीनियों को घेर लिया और उनको दौड़ाया, और मशरिक़ में जिब'आ के मुक़ाबिल उनकी आराम गाहों में उनको लताड़ा।⁴⁴~इसलिए~अठारह हज़ार बिनयमीनी मारे गए, यह सब सूर्मा थे।

⁴⁵और वह लौट कर रिम्मोन की चट्टान की तरफ़ वीराने में भाग गए; लेकिन उन्होंने शाहराहों में चुन-चुन कर उनके पाँच हज़ार और मारे और जिदोम तक उनको ख़ूब दौड़ा कर उनमें से दो हज़ार~शख्स और मार डाले।⁴⁶~इसलिए सब बनी बिनयमीन जो उस दिन मारे गए पच्चीस हज़ार शमशीर ज़न शख्स थे, और यह सब के सब सूर्मा थे।

⁴⁷लेकिन छः सौ आदमी लौट कर और वीराने की तरफ़ भाग कर रिम्मोन की चट्टान को चल दिए, और रिम्मोन की चट्टान में चार महीने रहे।⁴⁸ और इसाइली~शख्स~लौट कर फिर बनी बिनयमीन पर टूट पड़े, और उनको बर्बाद किया, या'नी सारे शहर और चौपायों और उन सब को जो उनके हाथ आए। और जो-जो शहर उनको मिले उन्होंने उन सबको फ़ूँक दिया।

Chapter 21

¹और इस्राईल के लोगों ने मिस्रफाह में क्रसम खाकर कहा था कि हम में से कोई अपनी बेटी किसी बिनयमीनी को न देगा।²और लोग बैतएल में आए, और शाम तक वहाँ खुदा के आगे बुलन्द आवाज़ से ज़ार ज़ार रोते रहे,³और उन्होंने कहा, "ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा! इस्राईल में ऐसा क्यों हुआ, कि इस्राईल में से आज के दिन एक क़बीला कम हो गया?"

⁴और दूसरे दिन वह लोग सुबह सवेरे उठे और उस जगह एक मज़बूह बना कर सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं।⁵और बनी-इस्राईल कहने लगे कि इस्राईल के सब क़बीलों में ऐसा कौन है जो खुदावन्द के हुज़ूर जमा'अत के साथ नहीं आया क्योंकि उन्होंने सख्त क्रसम खाई थी कि जो खुदावन्द के सामने मिस्रफाह में हाज़िर न होगा वह ज़रूर क़त्ल किया जाएगा।

⁶इसलिए बनी-इस्राईल अपने भाई बिनयमीन की वजह से पछताए और कहने लगे कि आज के दिन बनी-इस्राईल का एक क़बीला कट गया।⁷और वह जो बाक़ी रहे हैं, हम उनके लिए बीवियों की निस्बत क्या करें? क्योंकि हम ने तो खुदावन्द की क्रसम खाई है कि हम अपनी बेटियाँ उनको नहीं ब्याहेंगे।

⁸इसलिए वह कहने लगे कि बनी-इस्राईल में से वह कौन सा क़बीला है जो मिस्रफाह में खुदावन्द के सामने नहीं आया? और देखो, लश्कर गाह में जमा'अत में शामिल होने के लिए यबीस जिल'आद से कोई नहीं आया था।⁹क्योंकि जब लोगों का शुमार किया गया तो यबीस जिल'आद के बाशिंदों में से वहाँ कोई नहीं मिला।¹⁰तब जमा'अत ने बारह हज़ार सूर्मा खाना किए और उनको हुक्म दिया कि जाकर याबीस जिल'आद के बाशिंदों को 'औरतों और बच्चों समेत क़त्ल करो।

¹¹और जो तुम को करना होगा वह यह है, कि सब-शख्सों-और ऐसी 'औरतों को जो-शख्ससे वाकिफ़ हो चुकी हों हलाक कर देना।¹²और उनको यबीस जिल'आद के बाशिंदों में चार सौ कुंवारी 'औरतें मिलीं जो-शख्स से नावाकिफ़ और अछूती थीं, और वह उनको मुल्क-ए-कन'आन में सैला की लश्करगाह में ले आए।

¹³तब सारी जमा'अत ने बनी बिनयमीन को जो रिम्मोन की चट्टान में थे कहला भेजा, और सलामती का पैग़ाम उनको दिया।¹⁴तब बिनयमीनी लौटे; और उन्होंने वह 'औरतें उनको दे दीं, जिनको उन्होंने यबीस जिल'आद की 'औरतों में से ज़िन्दा बचाया था, लेकिन वह उनके लिए बस न हुई।¹⁵और लोग बिनयमीन की वजह से पछताए, इसलिए कि खुदावन्द ने इस्राईल के क़बीलों में रखना डाल दिया था।

¹⁶तब जमा'अत के बुजुर्ग कहने लगे किउनके लिए जो बच रहे हैं बीवियों की निस्बत हम क्या करें, क्योंकि बनी बिनयमीन की सब 'औरतें मिट गईं? ¹⁷इसलिए उन्होंने कहा, 'बनी बिनयमीन के बाक़ी मान्दा लोगों के लिए मीरास ज़रूरी है, ताकि इस्राईल में से एक क़बीला मिट न जाए।

¹⁸तो भी हम तो अपनी बेटियाँ उनको ब्याह नहीं सकते; क्योंकि बनी-इस्राईल ने यह कहकर क्रसम खाई थी, कि जो किसी बिनयमीनी को बेटी दे वह ला'नती हो।¹⁹फिर वह कहने लगे, "देखो, सैला में जो बैतएल के उत्तर में, और उस शाहराह की मशरिफ़ी तरफ़ में है जो बैतएल से सिक्म को जाती है, और लबूना के दखिखन में है, साल-ब-साल खुदावन्द की एक 'ईद होती है।"

²⁰तब उन्होंने बनी बिनयमीन को हुक्म दिया कि जाओ, और ताकिस्तानों में घात लगाए बैठे रहो;²¹और देखते रहना, कि अगर सैला की लड़कियाँ नाच नाचने को निकलें, तो तुम ताकिस्तानों में से निकलकर सैला की लड़कियों में से एक एक बीवी अपने अपने लिए पकड़ लेना, और बिनयमीन के मुल्क को चल देना।

²²और जब उनके बाप या भाई हम से शिकायत करने को आएँगे, तो हम उनसे कह देंगे कि उनको महेरबानी से हमें 'इनायत करो, क्योंकि उस लड़ाई में हम उनमें से हर एक के लिए बीवी नहीं लाए; और तुम ने उनको अपने आप नहीं दिया, वरना तुम गुनहगार होते।

²³ग़रज़ बनी बिनयमीन ने ऐसा ही किया, और अपने शुमार के मुताबिक़ उनमें से जो नाच रही थीं जिनको पकड़ कर ले भागे, उनको ब्याह लिया और अपनी मीरास को लौट गए, और उन शहरों को बना कर उनमें रहने लगे।²⁴तब बनी-इस्राईल वहाँ से अपने अपने क़बीले और घराने को चले गए, और अपनी मीरास को लौटे।

²⁵और उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह न था; हर एक शख्स जो कुछ उसकी नज़र में अच्छा मा'लूम होता था वही करता था।

रूत

Chapter 1

¹उन ही दिनों में जब क़ाज़ी इन्साफ़ किया करते थे, ऐसा हुआ कि-उस सरज़मीन में काल पड़ा, बैतलहम का एक आदमी अपनी बीवी और दो बेटों को लेकर चला कि मोआब के मुल्क में-जाकर बसे।²उस आदमी का नाम इलीमलिक और उसकी बीवी का नाम न'ओमी उसके दोनों बेटों के नाम महलोन-और किलयोन थे।ये यहूदाह के बैतलहम के इफ़्राती थे। तब वह मोआब के मुल्क में आकर रहने लगे।

³और न'ओमी का शौहर इलीमलिक मर गया, वह और उसके दोनों बेटे बाक़ी रह गए।⁴उन दोनों ने एक एक मोआबी 'औरत ब्याह ली।-इनमें से एक का नाम 'उर्फ़ा और दूसरी का रूत था;और वह दस बरस के क़रीब वहाँ रहे।⁵और महलोन और किलयोन दोनों मर गए ,तब वह 'औरत अपने दोनों बेटों और शौहर से महरूम हो-गई।

⁶तब वह अपनी दोनों बहुओं को लेकर उठी कि मोआब के मुल्क से लौट जाएँ इसलिए कि उस ने मोआब के मुल्क में यह हाल सुना कि खुदावन्द ने अपने लोगों को रोटी दी और यून उनकी खबर ली।⁷इसलिए वह उस जगह से जहाँ वह थी, दोनों बहुओं को साथ लेकर चल निकली,और वह सब यहूदाह की सरज़मीन को लौटने के लिए रास्ते पर हो लीं।

⁸और न'ओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, "दोनों अपने अपने मैके को जाओ। जैसा तुम ने मरहूमों के साथ और मेरे साथ किया, वैसा ही खुदावन्द तुम्हारे साथ मेहरबानी से पेश आए।⁹खुदावन्द यह करे कि तुम को अपने अपने शौहर के घर में आराम मिले। तब उसने उनको चूमा और वह ज़ोर-ज़ोर से-रोने लगीं।

¹⁰~फिर उन दोनों ने उससे कहा, ~"नहीं! बल्कि हम तेरे साथ लौट कर तेरे लोगों में जाएँगी।"

¹¹~न'ओमी ने कहा, "ऐ मेरी बेटियों, लौट जाओ! मेरे साथ क्यों चलो? क्या मेरे रिहम में और बेटे हैं जो तुम्हारे शौहर हों?¹²ऐ मेरी बेटियों, लौट जाओ! अपना रास्ता लो, क्योंकि मैं ज़्यादा बुढ़िया हूँ और शौहर करने के लायक नहीं। अगर मैं कहती कि मुझे उम्मीद है बल्कि अगर आज ~की रात मेरे पास शौहर भी होता, और मेरे लड़के पैदा होते;¹³तो भी क्या तुम उनके बड़े होने तक इंतज़ार करतीं ~और शौहर कर लेने से बाज़ रहतीं ? नहीं मेरी बेटियों मैं तुम्हारी वजह से ज़ियादा दुखी हूँ इसलिए कि खुदावन्द का हाथ मेरे खिलाफ़ बढ़ा हुआ है

¹⁴वह फिर ~ज़ोर ज़ोर से रोई, और उर्फ़ा ने अपनी सास को चूमा लेकिन रूत उससे लिपटी रही।¹⁵तब उसने कहा, जिठानी अपने ~कुन्बे और अपने मा'बूद के पास लौट गई; तू भी अपनी जिठानी के पीछे चली जा । "

¹⁶रूत ~ने कहा, "तू मिन्नत न कर कि मैं तुझे छोड़ूँ और तेरे पीछे से लौट जाऊँ; क्योंकि जहाँ तू जाएगी मैं जाऊँगी और जहाँ तू रहेगी ~मैं रहूँगी, | तेरे लोग मेरे लोग और तेरा खुदा मेरा खुदा होगा।¹⁷जहाँ तू मरेगी मैं मरूँगी और वहीं दफ़न भी हूँगी; खुदावन्द मुझ से ऐसा ही बल्कि इस से भी ज़्यादा करे, अगर मौत के अलावा कोई और चीज़ मुझ को तुझ से जुदा न कर दे।"¹⁸~जब उसने देखा कि उसने उसके साथ चलने की ठान ली है, तो उससे और कुछ न कहा।

¹⁹इसलिए वह~दोनों चलते चलते बैतलहम में आई। जब वह बैतलहम में दाखिल हुई तो सारे शहर में धूम मची, और 'औरतें ~कहने लगीं, कि क्या ये न'ओमी है ?²⁰उसने उनसे कहा, "मुझ को न'ओमी ~नहीं बल्कि मारह कहो, कि क़ादिर-ए-मुतलक मेरे साथ बहुत तल्खी से पेश आया है।²¹मैं भरी पूरी गई, खुदावन्द मुझ को खाली लौटा लाया। इसलिए तुम क्यों मुझे न'ओमी कहती हो, हालाँकि खुदावन्द मेरे खिलाफ़ दा'वेदार हुआ और क़ादिर-ए-मुतलक ने मुझे दुख दिया ?"

²²~गरज़ ~न'ओमी ~लौटी और उसके साथ उसकी बहू मोआबी रूत थी, जो मोआब के मुल्क से यहाँ आई। और वह दोनों जौ काटने के मौसम में बैतलहम में दाखिल हुई ।

Chapter 2

¹और न'ओमी के शौहर का एक रिश्तेदार था, जो इलीमलिक के घराने का और बड़ा मालदार था; और उसका नाम बो'अज़ था।²~इसलिए मोआबी रूत ने न'ओमी से कहा, "मुझे इजाज़त दे, तो मैं खेत में जाऊँ और जो कोई करम की नज़र मुझ पर करे, उसके पीछे पीछे बाले चुनूँ।" उस ने उससे कहा, "जा मेरी बेटी।"

³~इसलिए वह गई और खेत में जाकर काटने वालों के पीछे बालें चुनने लगी, इत्तफ़ाक से वह बो'अज़ ही के खेत के हिस्से में जा पहुँची जो इलीमलिक के खानदान का था।⁴और बो'अज़ ने बैतलहम से आकर काटने वालों से कहा, खुदावन्द ~तुम्हारे साथ हो। उन्होंने उससे जवाब दिया खुदावन्द तुझे बरकत दे!"
⁵फिर बो'अज़ ने अपने उस नौकर से जो काटने वालों पर मुकर्रर था पूछा, किसकी लड़की है?"⁶उस नौकर ने जो काटने वालों पर मुकर्रर था जवाब दिया, "ये वह मोआबी लड़की है जो न'ओमी के साथ मोआब के मुल्क से आई है।"⁷उस ने मुझ से कहा था, 'कि मुझ को ज़रा काटने वालों के पीछे पूलियों के बीच बालें चुनकर जमा' करने दे इसलिए यह आकर सुबह से अब तक यहीं रही, सिर्फ़ ज़रा सी देर घर में ठहरी। थी।"

⁸तब बो'अज़ ने रूत से कहा, "ऐ मेरी बेटी! क्या तुझे सुनाई नहीं देता? तू दूसरे खेत में बालें चुनने को न जाना और न यहाँ से निकलना, मेरी लड़कियों के साथ साथ रहना। इस खेत पर जिसे वह काटते हैं तेरी आखें जमी रहें और तू इन्हीं के पीछे पीछे चलना। क्या मैंने इन जवानों को हुक्म नहीं किया कि वह तुझे न छुएँ? और जब तू प्यासी हो, बर्तनों के पास जाकर उसी पानी में से पीना जो मेरे जवानों ने भरा है।"

¹⁰तब वह औंधे मुँह गिरी और ज़मीन पर सरनगू होकर उससे कहा, क्या वजह है कि तू मुझ पर करम की नज़र करके मेरी ख़बर लेता है, हालाँकि मैं परदेसन हूँ?"¹¹बो'अज़ ने उसे जवाब दिया, कि "जो कुछ तूने अपने शौहर के मरने के बाद अपनी सास के साथ किया सब मुझे पूरे तौर पर बताया गया तूने कैसे अपने माँ-बाप और रहने की जगह को छोड़ा, उन लोगों में जिनको तू इससे पहले न जानती थी आई।¹²खुदावन्द ~तेरे काम का बदला दे, खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तरफ़ से, जिसके परों के नीचे तू पनाह के लिए आई है, तुझ को पूरा अज़ मिले।"

¹³तब उसने कहा, "ऐ मेरे मालिक! तेरे करम की नज़र मुझ पर रहे, क्योंकि तूने मुझे दिलासा दिया और मेहरबानी के साथ अपनी लौंडी से बातें कीं जब कि मैं तेरी लौंडियों में से एक के बराबर भी नहीं।"

¹⁴फिर बो'अज़ ने उससे खाने के वक़्त कहा कि यहाँ आ और रोटी खा और अपना निवाला सिरके में भिगो। तब वह काटने वालों के पास बैठ गई, और उन्होंने भुना ~हुआ अनाज उसके पास कर दिया; तब उसने खाया और सेर हुई और कुछ रख छोड़ा।

¹⁵और जब वह बालें चुनने उठी, तो बो'अज़ ने अपने जवानों से कहा कि उसे पूलियों के बीच में भी चुनने देना और उसे ~न डॉटना।¹⁶और उसके लिए गधुरों में से थोड़ा सा निकाल कर छोड़ देना, और उसे चुनने देना और झिड़कना मत।

¹⁷इसलिए वह शाम तक खेत में चुनती रही, जो कुछ उसने चुना था उसे फटका और वह करीब एक ऐफ़ा जौ निकला।¹⁸और वह उसे उठा कर शहर में गई, जो कुछ उसने चुना था उसे उसकी सास ने देखा, और उसने वह भी जो उसने सेर होने के बाद रख छोड़ा था, निकालकर अपनी सास को दिया।

¹⁹उसकी सास ने उससे पूछा, तूने आज कहाँ बालें चुनीं और कहाँ काम किया? मुबारक हो वह जिसने तेरी ख़बर ली।" तब ~उसने अपनी सास को बताया कि उसने किसके पास काम किया था, और कहा कि उस शख्स का नाम, जिसके यहाँ आज मैंने काम किया बो'अज़ है।²⁰न'ओमी ने अपनी बहू से कहा, :वह खुदावन्द की तरफ़ से बरकत पाए, जिसने ज़िंदों और मुर्दों से अपनी मेहरबानी बा'ज़ न रखी!" और न'ओमी ने उससे कहा, ये शख्स हमारे करीबी रिश्ते का है और हमारे नज़दीक के करीबी रिश्तेदारों में से एक है।"

²¹मोआबी रूत ने कहा, उसने मुझ से ये भी कहा था कि तू मेरे जवानों के साथ रहना, जब तक वह मेरी सारी फ़सल काट न चुके।²²न'ओमी ने अपनी बहू रूत से कहा, मेरी बेटी ये अच्छा है कि तू उसकी लड़कियों के साथ जाया करे, और वह तुझे किसी और खेत में न पायें।

²³तब वह बालें चुनने के लिए जौ और गेहूँ की फ़सल के खातिम तक बो'अज़ की लड़कियों के साथ-साथ लगी रही; और वह अपनी सास के साथ रहती थी।

Chapter 3

¹फिर उसकी सास न'ओमी ने उससे कहा, "मेरी बेटी क्या मैं ~तेरे आराम की तालिब न बनूँ, जिससे तेरी भलाई हो?² और क्या बो'अज़ हमारा रिश्तेदार नहीं, जिसकी लड़कियों के साथ तू थी? देख वह आज की रात खलीहान में जौ फटकेगा।

³इसलिए तू नहा-धोकर खुशबू लगा, अपनी पोशाक पहन और खलीहान को जा जब तक वह मर्द खा पी न चुके, तब तक तू अपने आप उस पर ज़ाहिर न करना | ⁴जब वह लेट जाए, तो उसके लेटने की जगह को देख लेना; तब तू अन्दर जा कर और उसके पाँव खोलकर लेट जाना और जो ~कुछ तुझे करना मुनासिब है वह तुझ को बताएगा।"⁵उसने अपनी सास से कहा, "जो कुछ तू मुझ से कहती है, वह सब मैं करूँगी।"

⁶फिर वह खलीहान को गई और जो कुछ उसकी सास ने हुक्म दिया था वह सब किया | ⁷और जब बो'अज़ खा पी चुका, उसका दिल खुश हुआ; तो वह गल्ले के ढेर की एक तरफ़ जाकर लेट गया। तब वह चुपके-चुपके आई और उसके पाँव खोलकर लेट गई।

⁸और आधी रात को ऐसा हुआ कि वह मर्द डर गया, और उसने करवट ली और देखा कि एक "औरत उसके पाँव के पास पड़ी है।"⁹तब उसने पूछा, "तू कौन है?" उस ने कहा, "तेरी लौंडी रूत हूँ; इसलिए तू अपनी लौंडी पर अपना दामन फैला दे, क्योंकि तू नज़दीक का क़रीबी रिश्तेदार ~है।"

¹⁰उसने कहा, "तू खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हो, ऐ मेरी बेटी क्योंकि तूने शुरू' की तरह आखिर में ज़्यादा मेहरबानी कर दिखाई कि तूने जवानों का चाहे अमीर हों या ग़रीब पीछा न किया | ¹¹अब ऐ मेरी बेटी, मत डर! मैं सब कुछ जो तू कहती है तुझ से करूँगा क्योंकि मेरी क़ौम का तमाम शहर जानता है कि तू पाक दामन 'औरत है |

¹²और यह सच है कि मैं नज़दीक का क़रीबी रिश्तेदार हूँ, लेकिन एक और भी है जो क़रीब के रिश्तों ~में मुझ से ज़्यादा नज़दीक है।"¹³~इस रात तू ठहरी रह, सुबह को अगर वह क़रीब के रिश्ते का हक्क अदा करना चाहे, तो ख़ैर वह क़रीब के रिश्ते का हक्क अदा करे; और अगर वह तेरे साथ क़रीबी रिश्ते का हक्क अदा करना न चाहे, तो ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम है मैं तेरे क़रीबी रिश्ते का हक्क अदा करूँगा। सुबह तक तो तू लेटी रह।"

¹⁴इसलिए वह सुबह तक उसके पाँव के पास लेटी रही, और पहले इससे कि कोई एक दूसरे को पहचान सके उठ खड़ी हुई; क्योंकि उसने कह दिया था कि ये ज़ाहिर होने न पाए कि खलीहान में ये 'औरत आई थी।"¹⁵फिर उसने कहा, उस चादर को जो तेरे ऊपर है ला, और उसे थामे रह। "जब उसने उसे थामा तो उसने जौ के छह पैमाने नाप कर उस पर लाद दिए | फिर वह शहर को चला गया।

¹⁶फिर वह अपनी सास के पास आई तो उसने कहा, "ऐ मेरी बेटी, तू कौन है?" तब उसने सब कुछ जो उस मर्द ने उससे किया था उसे बताया,¹⁷और कहने लगी कि मुझको उसने यह छः पैमाने जौ के दिए, क्योंकि उसने कहा, "तू अपनी सास के पास खाली हाथ न जा।"¹⁸तब उसने कहा, "ऐ मेरी बेटी, जब तक इस बात के अंजाम का तुझे पता न लगे, तू चुप चाप बैठी रह इसलिए कि उस शख्स को चैन न मिलेगा जब तक वह इस काम को आज ही तमाम न कर ले।"

Chapter 4

¹तब बो'अज़ फाटक के पास जाकर वहाँ बैठ गया और देखो जिस नज़दीक के करीबी रिश्ते का ज़िक्र बो'अज़ ने किया था वह आ निकला। उसने उससे कहा अरे भाई इधर आ! ज़रा यहाँ बैठ जा। तब वह उधर आकर बैठ गया।²~फिर उसने शहर के बुजुर्गों में से दस आदमियों को बुला कर कहा, "यहाँ बैठ जाओ।" तब वह बैठ गए।

³तब उसने उस नज़दीक के करीबी रिश्तेदार से कहा, न'ओमी जो मोआब के मुल्क से लौट आई है ज़मीन के उस टुकड़े को जो हमारे भाई इलीमलिक का माल था बेचती है।⁴इसलिए मैंने सोचा कि तुझ पर इस बात को ज़ाहिर करके कहूँगा कि तू इन लोगों के सामने जो बैठे हैं और मेरी क्रौम के बुजुर्गों के सामने उसे मोल ले। अगर तू उसे छुड़ाता है तो छुड़ा और अगर नहीं छुड़ाता तो मुझे बता दे ताकि मुझे को मा'लूम हो जाए क्योंकि तेरे अलावा और कोई नहीं जो उसे छुड़ाए और मैं तेरे बा'द हूँ। उसने कहा, "मैं छुड़ाऊँगा।"

⁵तब बो'अज़ ने कहा, " जिस दिन तू वह ज़मीन न'ओमी के हाथ से मोल ले तो तुझे उसको मोआबी रूत के हाथ से भी जो मरहूम की बीवी है मोल लेना होगा ताकि उस मरहूम ~का नाम उसकी मीरास पर क़ायम करे।⁶तब उसके नज़दीक के करीबी रिश्तेदार ने कहा, " मैं अपने लिए ~उसे छुड़ा नहीं सकता ~ऐसा न हो कि मैं अपनी मीरास खराब कर दूँ। उसके छुड़ाने का जो मेरा हक़ है उसे तू ले ले क्योंकि मैं उसे छुड़ा नहीं सकता।"

⁷और अगले ज़माने में इस्राईल में मु'आमिला पक्का करने के लिए छुड़ाने और बदलने के बारे में यह मा'मूल था कि आदमी अपनी जूती उतार कर अपने पड़ोसी को दे देता था। इस्राईल में तस्दीक़ करने का यही तरीक़ा था⁸तब उस नज़दीक के करीबी रिश्तेदार ने बो'अज़ से कहा, " तू आप ही उसे मोल ले ले। फिर उसने अपनी जूती उतार डाली।

⁹और बो'अज़ ने बुजुर्गों और सब लोगों से कहा, " तुम आज के दिन गवाह हो कि मैंने इलीमलिक और किलयोन और महलोन का सब कुछ न'ओमी के हाथ से मोल ले लिया है।¹⁰सिर्फ़ इसके मैंने महलोन की बीवी मोआबी रूत को भी अपनी बीवी बनाने के लिए ख़रीद लिया है ताकि उस मरहूम के नाम को उसकी मीरास में क़ायम करूँ और उस मरहूम का नाम उसके भाइयों और उसके मकान के दरवाज़े से मिट न जाए तुम आज के दिन गवाह हो।"

¹¹तब सब लोगों ने जो फाटक पर थे और उन बुजुर्गों ने कहा कि हम गवाह हैं। खुदावन्द उस 'औरत को जो तेरे घर में आई है राखिल और लियाह की तरह करे जिन दोनों ने इस्राईल का घर आबाद किया और तू इफ़्राता ~में भलाई का काम करे, और बैतलहम में तेरा नाम हो¹²और तेरा घर उस नसल से जो खुदावन्द तुझे इस 'औरत से दे फ़ारस के घर की तरह हो जो यहूदाह से तमर के हुआ।

¹³इसलिए बो'अज़ ने रूत को लिया और वह उसकी बीवी बनी और उसने उससे सोहबत की और खुदावन्द के फ़ज़ल से वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ।

¹⁴और 'औरतों ने न'ओमी से कहा, " खुदावन्द मुबारक हो जिसने आज के दिन तुझ को नज़दीक के करीबी रिश्ते ~के बग़ैर नहीं छोड़ा और उसका नाम इस्राईल में मशहूर हुआ।¹⁵और वह तेरे लिए तेरी जान का बहाल करनेवाला और तेरे बुढ़ापे का पालने वाला होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से मुहब्बत रखती है और तेरे लिए सात बेटों से भी बढ़ कर है वह उसकी माँ है।

¹⁶और न'ओमी ने उस लड़के को लेकर उसे अपनी छाती से लगाया और उसकी दाया बनी।¹⁷और उसकी पड़ोसनों ने उस बच्चे को एक नाम दिया और कहने लगीं न'ओमी के लिए बेटा पैदा हुआ इसलिए उन्होंने उसका नाम 'ओबेद रखा। वह यस्सी का बाप था जो दाऊद का बाप है।

¹⁸~और फ़ारस का नसबनामा ये है फ़ारस से हसरोन पैदा हुआ¹⁹और हसरोन से राम पैदा हुआ और राम से 'अम्मीनदाब पैदा हुआ²⁰और 'अम्मीनदाब से नहसोन पैदा हुआ और नहसोन से सलमोन पैदा हुआ,²¹~और सलमोन से बो'अज़ पैदा हुआ और बो'अज़ से 'ओबेद पैदा हुआ²²और ओबेद से यस्सी पैदा हुआ और यस्सी से दाऊद पैदा हुआ।

१-समूएल

Chapter 1

¹इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में रामातीम सोफ़ीम का एक शख्स था जिसका नाम इल्काना था। वह इफ़्राईमी था और यरोहाम बिन इलीहू बिन तूहू बिन सूफ़ का बेटा था।²उसके दो बीवियाँ थीं, एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फ़निन्ना :और फ़निन्ना के औलाद हुई लेकिन हन्ना बे औलाद थी।

³यह शख्स हर साल अपने शहर से सैला में रब्ब-उल-अफ़्वाज़ के हुज़ूर सज्दा करने कुर्बानी पेश करने को जाता था और एली के दोनों बेटे हुप्नी और फ़िन्हास जो खुदावन्द के काहिन थे वहीं रहते थे⁴और जिस दिन इल्काना कुर्बानी अदा करता वह अपनी बीवी फ़निन्ना को और उस के सब बेटे बेटियों को हिस्से देता था⁵लेकिन हन्ना को दूना हिस्सा दिया करता था इसलिए कि वह हन्ना को चाहता था लेकिन खुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रखखा था⁶और उसकी सौत उसे कुढ़ाने के लिए बे तरह छेड़ती थी क्योंकि खुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रखखा था

⁷और चूँकि वह हर साल ऐसा ही करता था जब वह खुदावन्द के घर जाती इसलिए फ़निन्ना उसे छेड़ती थी चुनौचे वह रोती खाना न खाती थी⁸इसलिए उसके खाविंद इल्काना ने उससे कहा, "ऐ हन्ना तू क्यों रोती है और क्यों नहीं खाती और तेरा दिल क्यों गमगीन है ?क्या मैं तेरे लिए दस बेटों से बढ़ कर नहीं ?"

⁹और जब वह सैला में खा पी चुके तो हन्ना उठी; उस वक़्त 'एली काहिन खुदावन्द की हैकल की चौखट के पास कुर्सी पर बैठा हुआ था¹⁰और वह निहायत दुखी थी, तब वह खुदावन्द से दु'आ करने और ज़ार ज़ार रोने लगी

¹¹और उसने मिन्नत मानी और कहा, "ऐ रब्ब-उल-अफ़वाज़ अगर तू अपनी लौंडी की मुसीबत पर नज़र करे और मुझे याद फ़रमाए और अपनी लौंडी को फ़रामोश न करे और अपनी लौंडी को फ़र्ज़न्द-ए-नरीना बख़्शे तो मैं उसे ज़िन्दगी भर के लिए खुदावन्द को सुपुर्द कर दूँगी और उस्तरा उसके सर पर कभी न फिरेगा।"

¹²और जब वह खुदावन्द के सामने दु'आ कर रही थी, तो एली उसके मुँह को ग़ौर से देख रहा था।¹³और हन्ना तो दिल ही दिल में कह रही थी सिर्फ़ उसके होंट हिलते थे लेकिन उसकी आवाज़ नहीं सुनाई देती थी तब ~एली को गुमान हुआ कि वह नशे में है।¹⁴इसलिए एली ने उस से कहा, "कि तू कब तक नशे में रहेगी ? अपना नशा उतार।"

¹⁵हन्ना ने जवाब दिया "नहीं ऐ मेरे मालिक, मैं तो ग़मगीन औरत हूँ-मैंने न तो मय न कोई नशा पिया लेकिन खुदावन्द के आगे अपना दिल उँडेला है।"¹⁶तू अपनी लौंडी को ख़बीस 'औरत न समझ, मैं तो अपनी फ़िक्रों और दुखों के हुज़ूम के ज़रिए' अब तक बोलती रही।"

¹⁷तब एली ने जवाब दिया, "तू सलामत जा और इसाईल का खुदा तेरी मुराद जो तूने उससे माँगी है पूरी करे।"¹⁸उसने कहा, "तेरी ख़ादिमा पर तेरे करम की नज़र हो।" तब वह 'औरत चली गई और खाना खाया और फिर उसका चेहरा उदास न रहा।

¹⁹और सुबह को वह सवेरे उठे और खुदावन्द के आगे सज्दा किया और रामा को अपने घर लोट गये। और इल्क़ाना ने अपनी बीवी हन्ना से मुबाशरत की और खुदावन्द ने उसे याद किया।²⁰और ऐसा हुआ कि वक़्त पर हन्ना हामिला हुई और उस के बेटा हुआ और उस ने उसका नाम समुएल ~रख़खा क्योंकि वह कहने लगी, "मैंने उसे खुदावन्द से माँग कर पाया है।"

²¹और वह शख्स इल्क़ाना अपने सारे घराने के साथ खुदावन्द के हुज़ूर सालाना कुर्बानी पेश करने और अपनी मिन्नत पूरी करने को गया।²²लेकिन हन्ना न गई क्योंकि उसने अपने ख़ाविंद से कहा, "जब तक लड़के का दूध छुड़ाया न जाए मैं यहीं रहूँगी और तब उसे लेकर जाऊँगी ताकि वह खुदावन्द के सामने हाज़िर हो और फिर हमेशा वहीं रहे"²³और उस के ख़ाविन्द इल्क़ाना ने उससे कहा, जो तुझे अच्छा लगे ~वह कर। जब तक तू उसका दूध न छुड़ाये ठहरी रह सिर्फ़ इतना हो कि ~खुदावन्द अपनी बात को बरकरार रखे इसलिए वह 'औरत ठहरी रही और अपने बेटे को दूध छुड़ाने के वक़्त तक पिलाती रही।

²⁴और जब उस ने उसका दूध छुड़ाया तो उसे अपने साथ लिया और तीन बछड़े और एक एफ़ा आटा मय की एक मशक अपने साथ ले गई, और उस लड़के को सैला में खुदावन्द के घर लाई, और वह लड़का बहुत ही छोटा था²⁵और उन्होंने एक बछड़े को ज़बह किया और लड़के को एली के पास लाए :

²⁶और वह कहने लगी, ऐ मेरे मालिक तेरी जान की क्रसम ऐ मेरे मालिक मैं वही 'औरत हूँ जिसने तेरे पास यहीं खड़ी होकर खुदावन्द से दु'आ की थी।"²⁷मैंने इस लड़के के लिए दु'आ की थी और खुदावन्द ने मेरी मुराद जो मैंने उससे माँगी पूरी की।²⁸इसी लिए मैंने भी इसे खुदावन्द को दे दिया; यह अपनी ज़िन्दगी भर के लिए खुदावन्द को दे दिया गया है "तब उसने वहाँ खुदावन्द के आगे सज्दा किया।

Chapter 2

¹और हन्ना ने दु'आ की और कहा, "मेरा दिल खुदावन्द मैं खुश है: मेरा सींग खुदावन्द के तुफ़ैल से ऊँचा हुआ | मेरा मुँह मेरे दुश्मनों पर खुल गया है क्योंकि मैं तेरी नजात से खुश हूँ |

²"खुदावन्द की तरह कोई पाक नहीं क्योंकि तेरे सिवा और कोई है ही नहीं और न कोई चट्टान है जो हमारे खुदा की तरह हो

³इस क्रदर गुरूर से और बातें न करो और बड़ा बोल तुम्हारे मुँह से न निकले; क्योंकि खुदावन्द खुदा-ए-'अलीम है, और 'आमाल का तोलने वाला है | ⁴ताक़तवरों की कमाने टूट गई और जो लड़खड़ाते थे वह ताक़त से कमर बस्ता हुए |

⁵वह जो आसूदा थे रोटी की खातिर मज़दूर बनें और जो भूके थे ऐसे न रहे, बल्कि जो बाँझ थी उस के साथ हुए, और जिसके पास बहुत बच्चे हैं वह घुलती जाती है |

⁶खुदावन्द मारता है और जिलाता है; वही क्रब्र मैं उतारता और उससे निकालता है | ⁷खुदावन्द ग़रीब कर देता और दौलतमंद बनाता है, वही पस्त करता और बुलंद भी करता है |

⁸वह ग़रीब को खाक पर से उठाता, और कंगाल को घूरे में से निकाल खड़ा करता है ताकि इनको शहज़ादों के साथ बिठाए, और जलाल के तख़्त का वारिस बनाए; क्योंकि ज़मीन के सुतून खुदावन्द के हैं उसने दुनिया को उन ही पर क़ायम किया है |

⁹"वह अपने मुक़द्दसों के पाँव को संभाले रहेगा, लेकिन शरीर अँधेरे में ख़ामोश किए जायेंगे क्योंकि ताक़त ही से कोई फ़तह नहीं पाएगा |

¹⁰जो खुदावन्द से झगड़ते हैं वह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएँगे; वह उन के खिलाफ़ आस्मान में गरजेगा खुदावन्द ज़मीन के किनारों का इंसाफ़ करेगा: वह अपने बादशाह को ताक़त बख़्शेगा, और अपने मम्सूह के सींग को बुलंद करेगा "

¹¹तब इल्क़ाना रामा को अपने घर चला गया; और एली काहिन के सामने वह लड़का खुदावन्द की ख़िदमत करने लगा |

¹²और एली के बेटे बहुत शरीर थे; उन्होंने खुदावन्द को न पहचाना | ¹³और कहिनों का दस्तूर लोगों के साथ यह था, कि जब कोई शख्स कुर्बानी करता था तो काहिन का नौकर गोश्त उबालने के वक़्त एक सप्ताखा काँटा अपने हाथ में लिए हुए आता था; ¹⁴और उसको कढ़ाह या दिग्घे या हांडे या हांडी में डालता और जितना गोश्त उस काँटे में लग जाता उसे काहिन अपने आप लेता था | यूँ ही वह सैला में सब इसाईलियों से किया करते थे जो वहाँ आते थे

¹⁵बल्कि चर्बी जलाने से पहले काहिन का नौकर आ मौजूद होता, और उस शख्स से जो कुर्बानी पेश करता यह कहने लगता था, "काहिन के लिए कबाब के वास्ते गोश्त दे, क्योंकि वह तुझ से उबला हुआ गोश्त नहीं बल्कि कच्चा लेगा | " ¹⁶और अगर वह शख्स यह कहता कि अभी वह चर्बी को ज़रूर जलायेंगे तब जितना तेरा जी चाहे ले लेना "तो वह उसे जवाब देता नहीं तू मुझे अभी दे नही तो मैं छीन कर ले जाऊँगा | " ¹⁷इसलिए उन जवानों का गुनाह खुदावन्द के सामने बहुत बड़ा था क्योंकि लोग खुदावन्द की कुर्बानी से नफ़रत करने लगे थे |

¹⁸लेकिन समुएल जो लड़का था, कतान का अफ़ूद पहने हुए खुदावन्द के सामने ख़िदमत करता था | ¹⁹और उस की माँ उस के लिए एक छोटा सा जुब्बा बनाकर साल ब साल लाती जब वह अपने शौहर के साथ सालाना कुर्बानी पेश करने ~आती थी |

²⁰और एली ने इल्क़ाना और उस की बीवी को दु'आ दी और कहा, "खुदावन्द तुझको इस 'औरत से उस क़र्ज़ के बदले में जो खुदावन्द को दिया गया नसल दे | " फिर वह अपने घर गये | ²¹और खुदावन्द ने हन्ना पर नज़र की और वह हामिला हुई, और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुई, और वह लड़का समुएल खुदावन्द के सामने बढ़ता गया |

²²एली बहुत बुढ़ा हो गया था, और उसने सब कुछ सुना कि उसके बेटे सारे इसाईल से क्या किया करते हैं और उन 'औरतों से जो खेमा-ए-इज्जिमा'अ के दरवाज़े पर ख़िदमत करती थी हम आगोशी करते हैं | ²³और उस ने उन से कहा, तुम ऐसा क्यों करते हो? क्योंकि मैं तुम्हारी बदज़ातियाँ पूरी क्रौम से सुनता हूँ? ²⁴नहीं मेरे बेटों ये अच्छी बात नहीं जो मैं सुनता हूँ; तुम खुदावन्द के लोगों से नाफ़रमानी कराते हो |

²⁵अगर एक आदमी दूसरे का गुनाह करे तो खुदा उसका इंसाफ़ करेगा लेकिन अगर आदमी खुदावन्द का गुनाह करे तो उस की शफ़ा'अत क्रौम करेगा?" बावजूद इसके उन्होंने अपने बाप का कहना न माना; क्योंकि खुदावन्द उनको मार डालना चाहता था | ²⁶और वह लड़का समुएल बढ़ता गया और खुदावन्द और इन्सान दोनों का मक़बूल था |

²⁷तब एक नबी एली के पास आया और उससे कहने लगा, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है क्या मैं तेरे आबाई खानदान पर जब वह मिस्र में फिर'औन के खानदान की गुलामी में था ज़ाहिर नहीं हुआ? ²⁸और क्या मैंने उसे बनी इसाईल के सब क़बीलों में से चुन न लिया, ताकि वह मेरा काहिन हो और मेरे मज़बह के पास जाकर खुशबू जलाये और मेरे सामने अफ़ूद पहने और क्या मैंने सब कुर्बानियाँ जो बनी इसाईल आग से अदा करते हैं तेरे बाप को न दी?

²⁹तब तुम क्यों मेरे उस कुर्बानी और हदिये को जिनका हुक्म मैंने अपने घर में दिया लात मारते हो? और क्यों तू अपने बेटों की मुझ से ज़्यादा 'इज़ज़त करता है, ताकि तुम मेरी क्रौम इसाईल के अच्छे से अच्छे हदियों को खाकर मोटे बनो | ³⁰इसलिए खुदावन्द इसाईल का खुदा फ़रमाता है कि मैंने तो कहा, था कि तेरा घराना और तेरे बाप का घराना हमेशा मेरे सामने चलेगा लेकिन अब खुदावन्द फ़रमाता है कि यह बात अब मुझ से दूर हो, क्योंकि वह जो मेरी 'इज़ज़त करते हैं मैं उन की 'इज़ज़त करूँगा लेकिन वह जो मेरी हिक़ारत करते हैं बेक्रद होंगे

³¹देख वह दिन आते हैं कि मैं तेरा बाजू और तेरे बाप के घराने का बाजू काट डालूँगा, कि तेरे घर में कोई बुढ़ा होने न पाएगा | ³²और तू मेरे घर की मुसीबत देखेगा बावजूद उस सारी दौलत के जो खुदा इसाईल को देगा और तेरे घर में कभी कोई बुढ़ा होने न पाएगा ³³और तेरे जिस आदमी को मैं अपने मज़बह से काट नहीं डालूँगा वह तेरी आँखों को घुलाने और तेरे दिल को दुख देने के लिए रहेगा और तेरे घर की सब बढ़ती अपनी भरी जवानी में मर मिटेगी |

³⁴और जो कुछ तेरे दोनों बेटों हुप्नी फ़िन्हास पर नाज़िल होगा वही तेरे लिए निशान ठहरेगा; वह दोनों एक ही दिन मर जाएँगे | ³⁵और मैं अपने लिए एक वफ़ादार काहिन पैदा करूँगा जो सब कुछ मेरी मर्ज़ी और मंशा के मुताबिक़ करेगा, और मैं उस के लिए एक पायदार घर बनाऊँगा और वह हमेशा मेरे मम्सूह के आगे आगे चलेगा

³⁶और ऐसा होगा की हर एक शख्स जो तेरे घर में बच रहेगा, एक टुकड़े चाँदी और रोटी के एक टुकड़े के लिए उस के सामने आकर सिज्दा करेगा और कहेगा, कि कहानत का कोई काम मुझे दीजिए ताकि मैं रोटी का निवाला खा सकूँ।"

Chapter 3

¹और वह लड़का समुएल एली के सामने खुदावन्द की खिदमत करता था, और उन दिनों खुदावन्द का कलाम गिराँक़द्र था कोई ख़्वाब ज़ाहिर न होता था | ²और उस वक़्त ऐसा हुआ कि जब एली अपनी जगह लेटा था उस की आँखें धुन्दलाने लगी थी, और वह देख नहीं सकता था | ³और खुदा का चरागा अब तक बुझा नहीं था और समुएल खुदावन्द की हैकल में जहाँ खुदा का संदूक़ था लेटा हुआ था ⁴तो खुदावन्द ने समुएल को पुकारा; उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।"

⁵और वह दौड़ कर एली के पास गया और कहा, "तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ" उसने कहा, "मैंने नहीं पुकारा फिर लेट जा इसलिए वह जाकर लेट गया | ⁶और खुदावन्द ने फिर पुकारा "समुएल |" समुएल उठ कर एली के पास गया और कहा, "तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ |" उसने कहा, "ऐ, मेरे बेटे मैंने नहीं पुकारा; फिर लेट जा |"

⁷और समुएल ने अभी खुदावन्द को नहीं पहचाना था और न खुदावन्द का कलाम उस पर ज़ाहिर हुआ था | ⁸फिर खुदावन्द ने तीसरी दफ़ा समुएल को पुकारा और वह उठ कर एली के पास गया और कहा, "तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ" तब एली जान गया कि खुदावन्द ने उस लड़के को पुकारा |

⁹इसलिए एली ने समुएल से कहा, "जा लेट रह और अगर वह तुझे पुकारे तो तू कहना ऐ खुदावन्द फ़रमा; क्योंकि तेरा बन्दा सुनता है।" तब समुएल जाकर अपनी जगह पर लेट गया

¹⁰तब खुदावन्द आ मौजूद हुआ, और पहले की तरह पुकारा "समुएल, समुएल" समुएल ने कहा, "फ़रमा, क्योंकि तेरा बन्दा सुनता है।" ¹¹खुदावन्द ने समुएल से कहा, "देख मैं इस्राईल में ऐसा काम करने पर हूँ जिस से हर सुनने वाले के कान भन्ना जाएँगे।"

¹²उस दिन मैं एली पर सब कुछ जो मैंने उस के घराने के हक़ में कहा है शुरू' से आखिर तक पूरा करूँगा ¹³क्योंकि मैं उसे बता चुका हूँ कि मैं उस बदकारी की वजह से जिसे वह जानता है हमेशा के लिए उसके घर का ~फ़ैसला करूँगा क्योंकि उसके बेटों ने अपने ऊपर ला'नत बुलाई और उसने उनको न रोका | ¹⁴इसी लिए एली के घराने के बारे में मैंने क्रसम खाई कि एली के घराने की बदकारी न तो कभी किसी ज़बीहा से साफ़ होगी न हदिये से।"

¹⁵और समुएल सुबह तक लेटा रहा; तब उसने खुदावन्द के घर के दरवाज़े खोले और समुएल एली पर ख़्वाब ज़ाहिर करने से डरा | ¹⁶तब एली ने समुएल को बुलाकर कहा, "ऐ मेरे बेटे समुएल" उसने कहा, "मैं ~हाज़िर हूँ।"

¹⁷तब उसने पूछा वह "क्या बात है जो खुदावन्द ने तुझ से कही है? मैं तेरी मिन्नत करता हूँ उसे मुझ से पोशीदा न रख ,अगर तू कुछ भी उन बातों में से जो उसने तुझ से कहीं हैं छिपाए तो खुदा तुझ से ऐसा ही करे बल्कि उससे भी ज़्यादा |" ¹⁸तब समुएल ने उसको पूरा हाल बताया और उससे कुछ न छिपाया, उसने कहा, "वह खुदावन्द है जो वह भला जाने वह करे।"

¹⁹और समुएल बड़ा होता गया और खुदावन्द उसके साथ था और उसने उसकी बातों में से किसी को मिट्टी में मिलने न दिया | ²⁰और सब बनी इस्राईल ने दान से बैरसबा' तक जान लिया कि समुएल खुदावन्द का नबी मुकर्रर हुआ | ²¹और खुदावन्द सैला में फिर ज़ाहिर हुआ, क्योंकि खुदावन्द ने अपने आप को सैला में समुएल पर अपने कलाम के ज़रिए' से ज़ाहिर किया

Chapter 4

¹और समुएल की बात सब इस्राईलीयों के पास पहुँची, और इसराईली फ़िलिस्तिनियों से लड़ने को निकले और इब्न-ए-अज़र के आस पास डेरे लगाए और फ़िलिस्तिनियों ने अफ़ीक्र में खेमे खड़े किए। ²और फ़िलिस्तिनियों ने इस्राईल के मुकाबिले के लिए सफ़ आराई की और जब वह इकठ्ठा लड़ने लगे तो इस्राईलीयों ने फ़िलिस्तिनियों से शिकस्त खाई; और उन्होंने उनके लश्कर में से जो मैदान में था क़रीबन चार हज़ार आदमी क़त्ल किए।

³और जब लोग लश्कर गाह में फिर आए तो इस्राईल के बुजुर्गों ने कहा, "कि आज ख़ुदावन्द ने हमको फ़िलिस्तिनियों के सामने क्यूँ शिकस्त दी आओ हम ख़ुदावन्द के 'अहद का संदूक सैला से अपने पास ले आये ताकि वह हमारे बीच आकर हमको हमारे दुश्मनों से बचाए।" "तब उन्होंने सैला में लोग भेजे, और वह करुबियों के ऊपर बैठने वाले रब्ब-उल-अप्रवाज ~के 'अहद के संदूक को वहाँ से ले आए और एली के दोनों बेटे हुप्नी और फ़ीन्हास ख़ुदा के 'अहद का संदूक के साथ वहाँ हाज़िर थे।

⁵और जब ख़ुदावन्द के 'अहद का संदूक लश्कर गाह में आ पहुँचा तो सब इस्राईली ऐसे ज़ोर से ललकारने लगे, कि ज़मीन गूँज उठी। ⁶और फ़िलिस्तिनियों ने जो ललकारने की आवाज़ सुनी तो वह कहने लगे, कि इन 'इब्रानियों की लश्कर गाह में इस बड़ी ललकार के शोर के क्या मा'ना हैं? "फिर उनको मा'लूम हुआ कि ख़ुदावन्द का संदूक लश्कर गाह में आया है।

⁷तब फ़िलिस्ती डर गए क्यूँकि वह कहने लगे, "कि ख़ुदा लश्कर गाह में आया है और उन्होंने कहा, "कि हम पर बर्बादी है इस लिए कि इस से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ ~।" हम पर बर्बादी है, ऐसे ज़बरदस्त मा'बूदों के हाथ से हमको क़ौन बचाएगा? यह वहीं मा'बूद हैं जिन्होंने मिस्रियों को वीराने में हर क्रिस्म की बला से मारा। ⁹ऐ फ़िलिस्तिनियों तुम मज़बूत हो और मर्दानगी करो ताकि तुम 'इब्रानियों के गुलाम न बनो जैसे वह तुम्हारे बने बल्कि मर्दानगी करो और लड़ो।"

¹⁰और फ़िलिस्ती लड़े और बनी इस्राईल ने शिकस्त खाई और हर एक अपने डेरे को भागा, और वहाँ बहुत बड़ी ख़ूँरेज़ी हुई क्यूँकि तीस हज़ार इस्राईली पियादे वहाँ मारे गए। ¹¹और ख़ुदावन्द का संदूक छिन गया, और 'एली के दोनों बेटे हुप्नी और फ़ीन्हास मारे गये।

¹²और बिनयमीन का एक आदमी लश्कर में से दौड़ कर अपने कपड़े फाड़े और सर पर खाक डाले हुए उसी दिन सैला में आ पहुँचा। ¹³और जब वह पहुँचा तो एली रास्ते ~के किनारे कुर्सी पर बैठा इंतज़ार कर रहा था क्यूँकि उसका दिल ख़ुदा के संदूक के लिए काँप रहा था और जब उस शख्स ने शहर में आकर हाल ~सुनाया, तो सारा शहर चिल्ला उठा।

¹⁴और एली ने चिल्लाने की आवाज़ सुनकर कहा, "इस हुल्लड़ की आवाज़ के क्या मा'ने हैं" और उस आदमी ने जल्दी की और आकर एली को हाल सुनाया।

¹⁵और एली अठानवे साल का था और उसकी आँखें रह गई थीं और उसे कुछ नहीं सूझता था।

¹⁶तब उस शख्स ने एली से कहा, "मैं फ़ौज में से आता हूँ और मैं आज ही फ़ौज के बीच से भागा हूँ," उसने कहा, "ऐ मेरे बेटे क्या ~हाल रहा?" ¹⁷उस खबर ~लाने वाले ने जवाब दिया इस्राईली फ़िलिस्तिनियों के आगे से भागे और लोगों में भी बड़ी ख़ूँरेज़ी हुई और तेरे दोनों बेटे हुप्नी और फ़ीन्हास भी मर गये और ख़ुदा का संदूक छिन गया।"

¹⁸जब उसने ख़ुदा के संदूक का ज़िक्र किया तो वह कुर्सी पर से पछाड़ खाकर फाटक के किनारे गिरा, और उसकी गर्दन टूट गई और वह मर गया क्यूँकि वह बुढ़ा और भारी आदमी था, वह चालीस बरस बनी इस्राईल का क़ाज़ी रहा।

¹⁹और उसकी बहू, फ़ीन्हास की बीवी हमल से थी, और उसके जनने का वक़्त नज़दीक था और जब उसने यह खबरें सुनीं कि ख़ुदा का संदूक छिन गया और उसका ससुर और शौहर मर गये तो वह झुक कर जनी क्यूँकि दर्द ऐ ज़िह उसके लग गया था। ²⁰और उसने उसके मरते वक़्त उन 'औरतों ने जो उस के पास खड़ी थीं उसे कहा, "मत डर क्यूँकि तेरे बेटा हुआ है।" लेकिन उसने न जवाब दिया और न कुछ तवज्जुह की।

²¹और उसने उस लड़के का नाम यकबोद रखवा और कहने लगी, "कि हशमत इस्राईल से जाती रही।" इसलिए कि ख़ुदा का संदूक छिन गया था, और उसका ससुर और शौहर जाते रहे थे। ²²इसलिए उसने कहा, "हशमत इस्राईल से जाती रही, क्यूँकि ख़ुदा का संदूक छिन गया है।"

Chapter 5

¹और फ़िलिस्तिनियों ने खुदा का संदूक छीन लिया और वह उसे इब्न-ए- 'अज़र से अशदुद को ले गए;²और फ़िलिस्ती खुदा के संदूक को लेकर उसे दजोन के घर में लाए और दजोन के पास उसे रखवा;³और अशदूदी जब सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन खुदावन्द के संदूक के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है | तब उन्होंने दजोन को लेकर उसी की जगह उसे फिर खड़ा कर दिया |

⁴फिर वह जो दूसरे दिन की सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन खुदावन्द के संदूक के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है, और दजोन का सर और उसकी हथेलियाँ दहलीज़ पर कटी पड़ी थीं, सिर्फ़ दजोन का धड़ ही धड़ रह गया था;⁵तब दजोन के पुजारी और जितने दजोन के घर में आते हैं, आज तक अशदूद में दजोन की दहलीज़ पर पाँव नहीं रखते |

⁶तब खुदावन्द का हाथ अशदूदियों पर भारी हुआ,और वह उनको हलाक करने लगा, और अशदूद और उसकी 'इलाके के लोगों को गिल्टियों से मारा |⁷और अशदूदियों ने जब यह हाल देखा तो कहने लगे, "कि इस्राईल के खुदा का संदूक हमारे साथ न रहे, क्योंकि उसका हाथ बुरी तरह हम पर और हमारे मा'बूद दजोन पर है |"

⁸तब उन्होंने फ़िलिस्तिनियों के सब सरदारों को बुलवा कर अपने यहाँ जमा' किया और कहने लगे, "हम इस्राईल के खुदा के संदूक को क्या करें?" उन्होंने जवाब दिया, "कि इस्राईल के खुदा का संदूक जात को पहुँचाया जाए | " इसलिए वह इस्राईल के खुदा के संदूक को वहाँ ले गए |⁹और जब वह उसे ले गए तो ऐसा हुआ कि खुदावन्द का हाथ उस शहर के खिलाफ़ ऐसा उठा कि उस में बड़ी भारी हल चल मच गई; और उसने उस शहर के लोगों को छोटे से बड़े तक मारा और उनके गिल्टियाँ निकलने लगीं |

¹⁰जब उन्होंने खुदा का संदूक 'अक्रून को भेज दिया | और जैसे ही खुदा का संदूक 'अक्रून को पहुँचा,अक्रूनी चिल्लाने लगे, "वह इस्राईल के खुदा का संदूक हम में इसलिए लाए हैं, कि हमको और हमारे लोगों को मरवा डालें |"

¹¹तब उन्होंने फ़िलिस्तिनियों के सरदारों को बुलवा कर जमा'-किया और कहने लगे, "कि इस्राईल के खुदा के संदूक को रवाना कर दो कि वह फिर अपनी जगह पर जाए, और हमको और हमारे लोगों को मार डालने न पाए | " क्योंकि वहाँ सारे शहर में मौत की हलचल मच गई थी, और खुदा का हाथ वहाँ बहुत भारी हुआ |¹²और जो लोग मरे नहीं वह गिल्टियों के मारे पड़े रहे, और शहर की फ़रियाद आसमान तक पहुँची |

Chapter 6

¹इसलिए खुदावन्द का संदूक सात महीने तक फिलिस्तिनियों के मुल्क में रहा | ²तब फिलिस्तिनियों ने काहिनों और नजूमियों को बुलवाया और कहा, "कि हम खुदावन्द के इस संदूक को क्या करें? हमको बताओ कि हम क्या साथ कर के उसे उसकी जगह भेजें?"

³उन्होंने कहा, "कि अगर तुम इस्राईल के खुदा के संदूक को वापस भेजते हो, तो उसे खाली न भेजना बल्कि जुर्म की कुर्बानी उसके लिए ज़रूर ही साथ करना तब तुम शिफ़ा पाओगे और तुमको मा'लूम हो जाएगा कि वह तुम से किस लिए अलग नहीं होता | " ⁴उन्होंने पूछा कि "वह जुर्म की कुर्बानी जो हम उसको दें क्या हो" उन्होंने जवाब दिया, "कि फिलिस्ती सरदारों के शुमार के मुताबिक़ सोने की पाँच गिल्टियाँ और सोने की पाँच चुहियाँ क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही दुख में मुब्तिला हुए |

⁵इसलिए तुम अपनी गिल्टियों की मूरतें और उन चूहियों की मूरतें, जो मुल्क को ख़राब करती हैं बनाओ और इस्राईल के खुदा की बड़ाई करो; शायद यूँ वह तुम पर से और तुम्हारे मा'बूदों पर से और तुम्हारे मुल्क पर से अपना हाथ हल्का कर ले | ⁶तुम क्यों अपने दिल को सख़्त करते हो, जैसे मिस्रियों ने और फिर'औन ने अपने दिल को सख़्त किया? जब उसने उनके बीच 'अजीब काम किए, तो क्या उन्होंने लोगों को जाने न दिया और क्या वह चले न गये?

⁷अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और दो दूध वाली गायों को जिनके जुआ न लगा हो लो, और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उनके बच्चों को घर लौटा लाओ |

⁸और खुदावन्द का संदूक लेकर उस गाड़ी पर रखो, और सोने की चीज़ों को जिनको तुम जुर्म की कुर्बानी के तौर पर साथ करोगे एक सन्दूक में करके उसके पहलू में रख दो और उसे रवाना न कर दो कि चला जाए | ⁹और देखते रहना, अगर वह अपनी ही सरहद के रास्ते बैत शम्स को जाए, तो उसी ने हम पर यह बलाए 'अज़ीम भेजी और अगर नहीं तो हम जान लेंगे कि उसका हाथ हम पर नहीं चला, बल्कि यह हादसा जो हम पर हुआ इत्तिफ़ाकी था | "

¹⁰तब उन लोगों ने ऐसा ही किया, और दो दूध वाली गायें लेकर उनको गाड़ी में जोता और उनके बच्चों को घर में बन्द कर दिया | ¹¹और खुदावन्द के सन्दूक और सोने की चुहियाँ और अपनी गिल्टियों की मूरतों के सन्दूक को गाड़ी पर रख दिया | ¹²उन गायों ने बैत शम्स का सीधा रास्ता लिया, वह सड़क ही सड़क डकारती गई, और दहने या बाएँ हाथ न मुड़ी, और फिलिस्ती सरदार उनके पीछे-पीछे बैत शम्स की सरहद तक गये |

¹³और बैत शम्स के लोग वादी में गेहूँ की फ़सल काट रहे थे | उन्होंने ने जो आँख उठाई तो संदूक को देखा, और देखते ही खुश हो गए |

¹⁴और गाड़ी बैतशम्सी यशु 'अ के खेत में आकर वहाँ खड़ी हो गई, जहाँ एक बड़ा पत्थर था | तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को सोखतनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश किया | ¹⁵और लावियों ने खुदावन्द के संदूक को और उस सन्दूक को जो उसके साथ था, ~जिसमें सोने की चीज़ें थीं, नीचे उतारा और उनको उस बड़े पत्थर पर रखवा | और बैत शम्स के लोगों ने उसी दिन खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानियाँ पेश कीं और ज़बीहे पेश किए |

¹⁶जब उन पाँचों फिलिस्ती सरदारों ने यह देख लिया तो वह उसी दिन 'अकून को लौट गए |

¹⁷सोने की गिल्टियाँ जो फिलिस्तिनियों ने जुर्म की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द को पेश कीं वह यह हैं, एक अशदूद की तरफ़ से, एक गज़्ज़ा की तरफ़ से, एक अस्क़लोन की तरफ़ से, एक जात की तरफ़ से, और एक 'अकून की तरफ़ से | ¹⁸और वह सोने की चुहियाँ फिलिस्तिनियों के उन पाँचो सरदारों के शहरों के शुमार के मुताबिक़ थीं, जो फ़सीलदार शहरों और दिहात के मालिक उस बड़े पत्थर तक थे जिस पर उन्होंने खुदावन्द के संदूक को रखवा था जो आज के दिन तक बैत शम्सी यशु 'अ के खेत में मौजूद है |

¹⁹और उसने बैत शम्स के लोगों को मारा इस लिए कि उन्होंने खुदावन्द के संदूक के अंदर झाँका था तब उसने उनके पचास हज़ार और सत्तर आदमी मार डाले, और वहाँ के लोगों ने मातम किया, इसलिए कि खुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी वबा से मारा | ²⁰तब बैत शम्स के लोग कहने लगे, "कि किसकी मजाल है कि इस खुदावन्द खुदा-ए-कुहूस के आगे खड़ा हो? और वह हमारे पास से किस की तरफ़ जाए?"

²¹और उन्होंने क्रयत या 'रीम के बाशिंदों के पास क़ासिद भेजे और कहला भेजा, कि फिलिस्ती खुदावन्द के संदूक को वापस ले आए हैं इसलिये तुम आओ और उसे अपने यहाँ ले जाओ |

Chapter 7

¹तब क्रयत या'रीम के लोग आए और खुदावन्द के संदूक को लेकर अबीनदाब के घर में जो टीले पर है, लाए, और उसके बेटे एली 'अज़र को पाक किया कि वह खुदावन्द के संदूक की निगरानी करे |²और जिस दिन से संदूक क्रयत या'रीम में रहा, तब से एक मुद्दत हो गई, या'नी बीस बरस गुज़रे और इस्राईल का सारा घराना खुदावन्द के पीछे नौहा करता रहा |

³और समुएल ने इस्राईल के सारे घराने से कहा कि "अगर तुम अपने सारे दिल से खुदावन्द की तरफ़ फिरते हो तो ग़ैर मा'बूदों और ~'इस्तारात को अपने बीच से दूर करो और खुदावन्द के लिए अपने दिलों को मुसत'इद करके सिर्फ़ उसकी 'इबादत करो, और वह फ़िलिस्तिनों के हाथ से तुमको रिहाई देगा | "⁴तब बनी इस्राईल ने बा'लीम और 'इस्तारात को दूर किया, और सिर्फ़ खुदावन्द की 'इबादत करने लगे |

⁵फिर समुएल ने कहा कि "सब इस्राईल को मिसफ़ाह में जमा' करो, और मैं तुम्हारे लिए खुदावन्द से दु'आ करूंगा | "⁶तब ~वह सब मिसफ़ाह में इकठ्ठा हुए और पानी भर कर खुदावन्द के आगे उँडेला, और उस दिन रोज़ा रखबा और वहाँ कहने लगे, कि "हमने खुदावन्द का गुनाह किया है | "और समुएल मिसफ़ाह में बनी इस्राईल की 'अदालत करता था |

⁷और जब फ़िलिस्तिनों ने सुना कि बनी इस्राईल मिसफ़ाह में इकठ्ठा हुए हैं, तो उनके सरदारों ने बनी इस्राईल पर हमला किया, और जब बनी- इस्राईल ने यह सुना तो वह फ़िलिस्तिनों से डरे |⁸और बनी-इस्राईल ने समुएल से कहा, "खुदावन्द हमारे खुदा के सामने हमारे लिए फ़रियाद करना न छोड़, ताकि वह हमको फ़िलिस्तिनों के हाथ से बचाए | "

⁹और समुएल ने एक दूध पीता बर्ग़ लिया और उसे पूरी सोखतनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश किया, और समुएल बनी -इस्राईल के लिए खुदावन्द के सामने फ़रियाद करता रहा और खुदावन्द ने उस की सुनी |

¹⁰और जिस वक़्त समुएल उस सोखतनी कुर्बानी को अदा कर रहा था उस वक़्त फ़िलिस्ती इस्रायियों से जंग करने को नज़दीक आए, लेकिन खुदावन्द फ़िलिस्तिनों के उपर उसी दिन बड़ी कड़क के साथ गरजा और उनको घबरा दिया; और उन्होंने इस्रायियों के आगे शिकस्त खाई |¹¹और इस्राईल के लोगों ने मिसफ़ाह से निकल कर फ़िलिस्तिनों को दौड़ाया, और बैतकर्क के नीचे तक उन्हें मारते चले गए |

¹²तब समुएल ने एक पत्थर ले कर उसे मिसफ़ाह और शेन के बीच में खड़ा किया, और उसका नाम इब्न-ए-'अज़र यह कहकर रखबा, कि यहाँ तक खुदावन्द ने हमारी मदद की | "

¹³इस लिए फ़िलिस्ती मग़लूब हुए और इस्राईल की सरहद में फिर न आए, और समुएल की ज़िन्दगी भर खुदावन्द का हाथ फ़िलिस्तिनों के खिलाफ़ रहा |

¹⁴और~'अकून से जात तक के शहर जिनको फ़िलिस्तिनों ने इस्राईलियों से ले लिया था, वह फिर इस्रायियों के कब्ज़े में आए; और इस्राईलियों ने उनकी 'इलाक़ा भी फ़िलिस्तिनों के हाथ से छुड़ा लिया और इस्राईलियों और अमोरियों में सुलह थी |

¹⁵और समुएल अपनी ज़िन्दगी भर इस्राईलियों की 'अदालत करता रहा |¹⁶और वह हर साल बैतएल और जिल्जाल और मिसफ़ाह में दौरा करता, और उन सब मक़ामों में बनी-इस्राईल की 'अदालत करता था |¹⁷फिर वह रामा को लौट आता क्योंकि ~वहाँ उसका घर था, और वहाँ इस्राईल की 'अदालत करता था, और वहीं उसने खुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाया |

Chapter 8

¹जब समुएल बुढ़ा हो गया, तो उसने अपने बेटों को इस्राईलियों के क्राज़ी ठहराया | ²उसके पहलौठे का नाम यूएल, और उसके दूसरे बेटे का नाम अबियाह था | वह दोनों बैरसबा' के क्राज़ी थे | ³लेकिन उसके बेटे उसकी रास्ते पर न चले, बल्कि वह नफ़ा' के लालच से रिश्तित लेते और इन्साफ़ का खून कर देते थे |

⁴तब सब इस्राईली बुजुर्ग जमा' होकर रामा में समुएल के पास आए | ⁵और उससे कहने लगे "देख, तू ज़र्ई'फ़ है, और तेरे बेटे तेरी राह पर नहीं चलते; अब तो किसी को हमारा बादशाह मुकर्रर करदे, जो और क्रौमों ~की तरह हमारी 'अदालत करे | "

⁶लेकिन जब उन्होंने कहा, "कि हमको कोई बादशाह दे जो हमारी 'अदालत करे, तो यह बात समुएल को बुरी लगी, "और समुएल ने खुदावन्द से दु'आ की |

⁷और खुदावन्द ने समुएल से कहा, कि "जो कुछ यह लोग तुझ से कहते हैं, तू उसको मान क्योंकि उन्होंने तेरी नहीं बल्कि मेरी हिक़ारत की है कि मैं उनका बादशाह न रहूँ |

⁸जैसे काम वह उस दिन से जब से मैं उनको मिस्र से निकाल लाया आज तक करते आए हैं, कि मुझे छोड़ करके और मा'बूदों की 'इबादत करते रहे हैं, वैसा ही वह तुझ से करते हैं | ⁹इसलिए तू उसकी बात मान, तो भी तू संजीदगी से उनको खूब जता दे और उनको बता भी दे, कि जो बादशाह उनपर हुकूमत करेगा उसका तरीक़ा कैसा होगा | "

¹⁰और समुएल ने उन लोगों को जो उससे बादशाह के तालिब थे, खुदावन्द की सब बातें कह सुनाई | ¹¹और उसने कहा, कि जो बादशाह तुम पर हुकूमत करेगा उसका तरीक़ा यह होगा, कि वह तुम्हारे बेटों को लेकर अपने रथों के लिए और अपने रिसाले में नौकर रखेगा और वह उसके रथों के आगे आगे दौड़ेंगे | ¹²और वह उनको हज़ार-हज़ार के सरदार और पचास-पचास के जमा'दार बनाएगा और कुछ से हल जुतवायेगा और फ़सल कटवाएगा और अपने लिए जंग के हथियार और अपने रथों के साज़ बनवाएगा |

¹³और तुम्हारी बेटियों को लेकर गंधिन और बावरचिन और नानबज़ बनाएगा | ¹⁴और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों और ज़ैतून के बाग़ों को जो अच्छे से अच्छे होंगे लेकर अपने खिदमत गारों को 'अता करेगा, | ¹⁵और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने खोजों और खादिमों को देगा |

¹⁶और तुम्हारे नौकर चाकरों और लौंडियों और तुम्हारे खूबसूरत जवानों और तुम्हारे गदहों को लेकर अपने काम पर लगाएगा | ¹⁷और वह तुम्हारी भेड़ बकरियों का भी दसवाँ हिस्सा लेगा इस लिए तुम उसके गुलाम बन जाओगे | ¹⁸और तुम उस दिन उस बादशाह की वजह से जिसे तुमने अपने लिए चुना होगा, फ़रियाद करोगे पर उस दिन खुदावन्द तुम को जवाब न देगा |

¹⁹तो भी लोगों ने समुएल की बात न सुनी और कहने लगे, "नहीं हम तो बादशाह चाहते हैं जो हमारे ऊपर हो | ²⁰ताकि हम भी और सब क्रौमों की तरह हों और हमारा बादशाह हमारी 'अदालत करे, और हमारे आगे आगे चले और हमारी तरफ़ से लड़ाई करे | "

²¹और समुएल ने लोगों की सब बातें सुनीं और उनको खुदावन्द के कानों तक पहुँचाया | ²²और खुदावन्द ने समुएल को फ़रमाया तू उनकी बात मान और उनके लिए एक बादशाह मुकर्रर कर तब समुएल ने इस्राईल के लोगों से कहा कि तुम सब अपने अपने शहर को चले जाओ |

Chapter 9

¹और बिनयमीन के क़बीले का एक शख्स था जिसका नाम क़ीस, बिन अबिएल, बिन सरोर, बिन बकोरत, बिन अफ़ीख़ था वह एक बिनयमीनी का बेटा और ज़बरदस्त सूरमा था।²उसका एक जवान और ख़ूबसूरत बेटा था जिसका नाम साऊल था, और बनी-इसाईल के बीच उससे ख़ूबसूरत कोई शख्स न था। वह ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते थे।

³और साऊल के बाप क़ीस के गधे खो गए, इसलिए क़ीस ने अपने बेटे साऊल से कहा, "कि नौकरों में से एक को अपने साथ ले और उठ कर गधों को ढूँड ला।"⁴इसलिए वह इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क और सलीसा की सर ज़मीन से होकर गुज़रा, लेकिन वह उनको न मिले। तब वह सा'लीम की सर ज़मीन में गए और वह वहाँ भी न थे, फिर वह बिन यमीनियों के मुल्क में आए लेकिन उनको वहाँ भी न पाया।

⁵जब वह सूफ़ के मुल्क में पहुँचे तो साऊल अपने नौकर से जो उसके साथ था कहने लगा, "आ हम लौट जाएँ, ऐसा न हो कि मेरा बाप गधों की फ़िक्र छोड़ कर हमारी फ़िक्र करने लगे।"⁶उसने उससे कहा, "देख इस शहर में एक नबी है जिसकी बड़ी 'इज़ज़त होती है, जो कुछ वह कहता है, वह सब ज़रूर ही पूरा होता है। इसलिए हम उधर चलें, शायद वह हमको बता दे कि हम किधर जाएँ।"

⁷साऊल ने अपने नौकर से कहा, "लेकिन देख अगर हम वहाँ चलें तो उस शख्स के लिए क्या लेते जाएँ? रोटियाँ तो हमारे तोशेदान की हो चुकीं और कोई चीज़ हमारे पास है नहीं, जिसे हम उस नबी को पेश करें हमारे पास है क्या?"⁸नौकर ने साऊल को जवाब दिया, "देख, पाव मिस्काल चाँदी मेरे पास है, उसी को मैं उस नबी को दूँगा ताकि वह हमको रास्ता बता दे।"

⁹अगले ज़माने में इस्राईलियों में जब कोई शख्स खुदा से मशवरा करने जाता तो यह कहता था, "कि आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें, "क्यूँकि जिसको अब नबी कहते हैं, उसको पहले ग़ैबबीन कहते थे।¹⁰तब साऊल ने अपने नौकर से कहा, "तू ने क्या ख़ूब कहा, आ हम चलें इस लिए वह उस शहर को जहाँ वह नबी था चले।"¹¹और उस शहर की तरफ़ टीले पर चढ़ते हुए, उनको कई जवान लड़कियाँ ~मिलीं जो पानी भरने जाती थीं; उन्होंने उन से पूछा, "क्या ग़ैबबीन यहाँ है?"

¹²उन्होंने उनको जवाब दिया, "हाँ है, देखो वह तुम्हारे सामने ही है, इसलिए जल्दी करो क्यूँकि वह आज ही शहर में आया है, इसलिए कि आज के दिन ऊँचे मक़ाम में लोगों की तरफ़ से कुर्बानी होती है।"¹³जैसे ही तुम शहर में दाख़िल होगे, वह तुमको पहले उससे कि वह ऊँचे मक़ाम में खाना खाने जाए मिलेगा, क्यूँकि जब तक वह न पहुँचे लोग खाना नहीं खायेंगे, इसलिए कि वह कुर्बानी को बरकत देता है, उसके बा'द मेहमान खाते हैं, इसलिए अब तुम चढ़ जाओ, क्यूँकि इस वक़्त वह तुमको मिल जाएगा।"

¹⁴इसलिए वह शहर को चले और शहर में दाख़िल होते ही देखा कि समुएल उनके सामने आ रहा है कि वह ऊँचे मक़ाम को जाए।

¹⁵और खुदावन्द ने साऊल के आने से एक दिन पहले समुएल पर ज़ाहिर कर दिया था कि¹⁶कल इसी वक़्त मैं एक शख्स को बिन यमीन के मुल्क से तेरे पास भेजूँगा, तू उसे मसह करना ताकि वह मेरी क़ौम इस्राईल का सरदार हो, और वह मेरे लोगों को फ़िलिस्तिनियों के हाथ से बचाएगा, क्यूँकि मैंने अपने लोगों पर नज़र की है, इसलिए कि उनकी फ़रियाद मेरे पास पहुँची है।

¹⁷इसलिए जब समुएल साऊल से मिला, तो खुदावन्द ने उससे कहा, "देख यही वह शख्स है जिसका ज़िक्र मैंने तुझ से किया था, यही मेरे लोगों पर हुक्मत करेगा।"¹⁸फिर साऊल ने फाटक पर समुएल के नज़दीक जाकर उससे कहा, "कि मुझको ज़रा बता दे कि ग़ैबबीन का घर कहा, है?"¹⁹समुएल ने साऊल को जवाब दिया कि वह ग़ैबबीन मैं ही हूँ, मेरे आगे आगे ऊँचे मक़ाम को जा, क्यूँकि तुम आज के दिन मेरे साथ खाना खाओगे और सुबह को मैं तुझे रुख़सत करूँगा, और जो कुछ तेरे दिल में है सब तुझे बता दूँगा।

²⁰और तेरे गधे जिनको खोए हुए तीन दिन हुए, उनका ख़याल मत कर, क्यूँकि वह मिल गए और इस्राईलियों में जो कुछ दिलकश हैं वह किसके लिए हैं, क्या वह तेरे और तेरे बाप के सारे घराने के लिए नहीं?²¹साऊल ने जवाब दिया "क्या मैं बिन यमीनी, या'नी इस्राईल के सब से छोटे क़बीले का नहीं? और क्या मेरा घराना बिन यमीन के क़बीले के सब घरानों में सब से छोटा नहीं? इस लिए तू मुझ से ऐसी बातें क्यूँ कहता है?"

²²और समुएल साऊल और उसके नौकर को मेहमानखाने में लाया, और उनको मेहमानों के बीच जो कोई तीस आदमी थे सद्र जगह में बिठाया।

²³और समुएल ने बावर्ची से कहा "कि वह टुकड़ा जो मैंने तुझे दिया, जिसके बारे में तुझ से कहा, था कि उसे अपने पास रख छोड़ना, लेआ।"²⁴बावर्ची ने वह रान म'अ उसके जो उसपर था, उठा कर साऊल के सामने रख दी, तब समुएल ने कहा, "यह देख जो रख लिया गया था, उसे अपने सामने रख कर खा ले क्यूँकि वह इसी मु'अय्यन वक़्त के लिए, तेरे लिए रख रखी क्यूँकि मैंने कहा कि मैंने इन लोगों की दा'वत की है।" इस लिए साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना खाया।

²⁵और जब वह ऊँचे मक़ाम से उतर कर शहर में आए तो उसने साऊल से उस के घर की छत पर बातें की²⁶और वह सवेरे उठे, और ऐसा हुआ, कि जब दिन चढ़ने लगा, तो समुएल ने साऊल को फिर घर की छत पर बुलाकर उससे कहा, "उठ कि मैं तुझे रुख़सत करूँ।" इस लिए साऊल उठा, और वह और समुएल दोनों बाहर निकल गए।

²⁷और शहर के सिरे के उतार पर चलते चलते समुएल ने साऊल से कहा कि अपने नौकर को हुक्म कर कि वह हम से आगे बढ़े, इसलिए वह आगे बढ़ गया, लेकिन तू अभी ठहरा ~रह ताकि मैं तुझे खुदा की बात सुनाऊँ।

Chapter 10

¹फिर समुएल ने तेल की कुप्पी ली और उसके सर पर उँडेली और उसे चूमा और कहा, "कि क्या यही बात नहीं कि खुदावन्द ने तुझे मसह किया, ताकि तू उसकी मीरास का रहनुमा हो?" जब तू आज मेरे पास से चला जाएगा, तो ज़िलज़ह में जो बिनयमीन की सरहद में है, राखिल की क़ब्र के पास दो शख्स तुझे मिलेंगे, और वह तुझ से कहेंगे, कि वह गधे जिनको तू ढूँडने गया था मिल गए; और देख अब तेरा बाप गधों की तरफ़ से बेफ़िक्र होकर तुम्हारे लिए फ़िक्र मंद है, और कहता है, कि मैं अपने बेटे के लिए क्या करूँ?

³फिर वहाँ से आगे बढ़ कर जब तू तबूर के बलूत के पास पहुँचेगा, तो वहाँ तीन शख्स जो बैतएल को खुदा के पास जाते होंगे तुझे मिलेंगे, एक तो बकरी के तीन बच्चे, दूसरा रोटी के तीन टुकड़े, और तीसरा मय का एक मश्कीज़ा लिए जाता होगा। ⁴और वह तुझे सलाम करेंगे, और रोटी के दो टुकड़े तुझे देंगे, तू उनको उनके हाथ से ले लेना।

⁵और बा'द उसके तू खुदा के पहाड़ को पहुँचेगा, जहाँ फ़िलिस्तिनियों की चौकी है, और जब तू वहाँ शहर में दाखिल होगा तो नबियों की एक जमा'अत जो ऊँचे मक़ाम से उतरती होगी, तुझे मिलेगी, और उनके आगे सितार और दफ़ और बाँसुली और बरबत होंगे और वह नबुव्वत करते होंगे। ⁶तब खुदावन्द की रूह तुझ पर ज़ोर से नाज़िल होगी, और तू उनके साथ नबुव्वत करने लगेगा, और बदल कर और ही आदमी हो जाएगा।

⁷इसलिए जब यह निशान तेरे आगे आएँ, तो फिर जैसा मौक़ा हो वैसा ही काम करना क्योंकि ~खुदा तेरे साथ है। ⁸और तु मुझ से पहले जिलज़ाल को जाना; और देख मैं तेरे पास आऊँगा ताकि सोख़तनी कुर्बानियाँ करूँ और सलामती के ज़बीहों को ज़बह करूँ। तू~सात दिन तक वहीं रहना जब तक मैं तेरे पास आकर तुझे बता न दूँ कि तुझको क्या करना होगा।"

⁹और ऐसा हुआ कि जैसे ही उसने समुएल से रुख़सत होकर पीठ फेरी, खुदा ने उसे दूसरी तरह का दिल दिया और वह सब निशान उसी दिन वजूद में आए।

¹⁰और जब वह उधर उस पहाड़ के पास आए तो नबियों की एक जमा'अत उसको मिली, और खुदा की रूह उस पर ज़ोर से नाज़िल हुई, और वह भी उनके बीच नबुव्वत करने लगा।

¹¹और ऐसा हुआ कि जब उसके अगले जान पहचानों ने यह देखा कि वह नबियों के बीच नबुव्वत कर रहा है तो वह एक दूसरे से कहने लगे, "क़ीस के बेटे को क्या हो गया? क्या साऊल भी नबियों में शामिल है?" ¹²और वहाँ के एक आदमी ने जवाब दिया, कि भला उनका बाप कौन है?" तब ही से यह मिसाल चली, क्या साऊल भी नबियों में है?" ¹³और जब वह नबुव्वत कर चुका तो ऊँचे मक़ाम में आया।

¹⁴वहाँ साऊल के चचा ने उससे और उसके नौकर से कहा, "तुम कहाँ गए थे?" उसने कहा, गधे ढूँडने और जब हमने देखा कि वह नहीं मिलते, तो हम समुएल के पास आए।" ¹⁵फिर साऊल के चचा ने कहा, "कि मुझको ज़रा बता तो सही कि समुएल ने तुम से क्या क्या कहा।" ¹⁶साऊल ने अपने चचा से कहा, "उसने हमको साफ़-साफ़ बता दिया, कि गधे मिल गए," लेकिन हुकूमत का मज़मून जिसका ज़िक्र समुएल ने किया था न बताया।

¹⁷और समुएल ने लोगों को मिसफ़ाह में खुदावन्द के सामने बुलवाया। ¹⁸और उसने बनीइस्राईल से कहा "कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैं इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और मैंने तुमको मिस्रियों के हाथ से और सब सल्तनतों के हाथ से जो तुम पर जुल्म करती थीं रिहाई दी।" ¹⁹लेकिन तुमने आज अपने खुदा को जो तुम को तुम्हारी सब मुसीबतों और तकलीफ़ों से रिहाई बख़्शी है, हक़ीर जाना और उससे कहा, हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर, इसलिए अब तुम क़बीला-क़बीला होकर और हज़ार हज़ार करके सब के सब खुदावन्द के सामने हाज़िर हो।"

²⁰जब समुएल इस्राईल के सब क़बीलों को नज़दीक लाया, और पर्ची बिनयमीन के क़बीले के नाम पर निकली। ²¹तब वह बिनयमीन के क़बीला को ख़ानदान-ख़ानदान करके नज़दीक लाया, तो मतरियों के ख़ानदान का नाम निकला और फिर क़ीस के बेटे साऊल का नाम निकला लेकिन जब उन्होंने उसे ढूँढा, तो वह न मिला।

²²तब उन्होंने खुदावन्द से फिर पूछा, क्या यहाँ किसी और आदमी को भी आना है, खुदावन्द ने जवाब दिया, देखो वह असबाब के बीच ~छिप गया है। ²³तब वह दौड़े और उसको वहाँ से लाए, और जब वह लोगों के बीच खड़ा हुआ, तो ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते थे।

²⁴और समुएल ने उन लोगों से कहा तुम उसे देखते हो जिसे खुदावन्द ने चुन लिया, कि उसकी तरह सब लोगो में एक भी नहीं, तब सब लोग ललकार कर बोल उठे, "कि बादशाह जीता रहे।"

²⁵फिर समुएल ने लोगों को हुकूमत का तरीक़ा बताया और उसे किताब में लिख कर खुदावन्द के सामने रख दिया, उसके बा'द समुएल ने सब लोगों को रुख़सत कर दिया, कि अपने अपने घर जाएँ।

²⁶और साऊल भी जिबा' को अपने घर गया, और लोगों का एक जत्था, भी जिनके दिल को खुदा ने उभारा था उसके साथ, हो लिया। ²⁷लेकिन शरीरों में से कुछ कहने लगे, "कि यह शख्स हमको किस तरह बचाएगा?" इसलिए उन्होंने उसकी तहक़ीर की और उसके लिए नज़राने न लाए तब वह अनसुनी कर गया।

Chapter 11

¹तब अम्मूनी नाहस चढ़ाई कर के यबीस जिल'आद के मुकाबिल खेमाज़न हुआ; और यबीस के सब लोगों ने नाहस से कहा, "हम से 'अहद-ओ-पैमान कर ले, और हम तेरी खिदमत करेंगे।" ²तब अम्मूनी नाहस ने उनको जवाब दिया, इस शर्त पर मैं तुम से 'अहद करूँगा, कि तुम सब की दहनी आँख निकाल डाली जाए और मैं इसे सब इसाईलियों के लिए ज़िल्लत का निशान ठहराऊँ।"

³तब यबीस के बुजुर्गों ने उस से कहा, "हमको सात दिन की मोहलत दे ताकि हम इसाईल की सब सरहदों में क्रासिद भेजें, तब अगर हमारा हिमायती कोई न मिले तो हम तेरे पास निकल आएँगे।"

⁴और वह क्रासिद साऊल के जिबा' में आए और उन्होंने लोगों को यह बातें कह सुनाई और सब लोग चिल्ला चिल्ला कर रोने लगे। ⁵और साऊल खेत से बैलों के पीछे पीछे चला आता था, और साऊल ने पूछा, "कि इन लोगों को क्या हुआ, कि रोते हैं?" उन्होंने यबीस के लोगों की बातें उसे बताईं।

⁶जब साऊल ने यह बातें सुनीं तो खुदा की रूह उसपर ज़ोर से नाज़िल हुई, और उसका गुस्सा निहायत भड़का तब उसने एक जोड़ी बैल लेकर उनको टुकड़े-टुकड़े काटा और क्रासिदों के हाथ इसाईल की सब सरहदों में भेज दिया, और यह कहा कि "जो कोई आकर साऊल और समुएल के पीछे न हो ले, उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा, "और खुदावन्द का खौफ़ लोगों पर छा गया, और वह एक तन हो कर निकल आए। ⁸और उसने उनको बज़क़ में गिना, इसलिए बनी इसाईल तीन लाख और यहूदाह के आदमी तीस हज़ार थे।

⁹और उन्होंने उन क्रासिदों से जो आए थे कहा कि तुम यबीस जिल'आद के लोगों से यूँ कहना कि कल धूप तेज़ होने के वक़्त तक तुम रिहाई पाओगे इस लिए क्रासिदों ने जाकर यबीस के लोगों को खबर दी और वह खुश हुए। ¹⁰तब अहल-ए-यबीस ने कहा, "कल हम तुम्हारे पास निकल आएँगे, और जो कुछ तुमको अच्छा लगे, हमारे साथ करना।"

¹¹और दूसरी सुबह को साऊल ने लोगों के तीन गोल किए; और वह रात के पिछले पहर लश्कर में घुस कर 'अम्मूनियों को क़त्ल करने लगे, यहाँ तक कि दिन बहुत चढ़ गया, और जो बच निकले वह ऐसे तितर बितर हो गए, कि दो आदमी भी कहीं एक साथ न रहे।

¹²और लोग समुएल से कहने लगे "किसने यह कहा, था कि क्या साऊल हम पर हुकूमत करेगा? उन आदमियों को लाओ, ताकि हम उनको क़त्ल करें।" ¹³साऊल ने कहा "आज के दिन हरगिज़ कोई मारा नहीं जाएगा, इसलिए कि खुदावन्द ने इसाईल को आज के दिन रिहाई दी है।"

¹⁴तब समुएल ने लोगों से कहा, "आओ जिल्जाल को चलें ताकि वहाँ हुकूमत को नए सिरे से क़ायम करें।" ¹⁵तब सब लोग जिल्जाल को गए, और वहीं उन्होंने खुदावन्द के सामने साऊल को बादशाह बनाया, फिर उन्होंने वहाँ खुदावन्द के आगे, सलामती के ज़बीहे ज़बह किए, और वहीं साऊल और सब इसाईली मर्दों ने बड़ी खुशी मनाई।

Chapter 12

¹तब समुएल ने सब इसाईलियों से कहा, "देखो जो कुछ तुमने मुझ से कहा, मैंने तुम्हारी एक एक बात मानी और एक बादशाह तुम्हारे ऊपर ठहराया है।" ²और अब देखो यह बादशाह तुम्हारे आगे आगे चलता है, मैं तो बुढ़ा हूँ और मेरा सिर सफ़ेद हो गया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ हैं, मैं लड़कपन से आज तक तुम्हारे सामने ही चलता रहा हूँ।

³मैं हाज़िर हूँ, इसलिए तुम खुदावन्द और उसके मम्सूह के आगे मेरे मुँह पर बताओ, कि मैंने किसका बैल ले लिया या किसका गधा लिया? मैंने किसका हक़ मारा या किस पर ज़ुल्म किया, या किस के हाथ से मैंने रिश्तत ली, ताकि अँधा बन जाऊँ? बताओ और यह मैं तुमको वापस कर दूँगा।"

⁴उन्होंने जवाब दिया "तूने हमारा हक़ नहीं मारा और न हम पर ज़ुल्म किया, और न तूने किसी के हाथ से कुछ लिया।" ⁵तब उसने उनसे कहा, "कि खुदावन्द तुम्हारा गवाह, और उसका मम्सूह आज के दिन गवाह है, कि मेरे पास तुम्हारा कुछ नहीं निकला।" उन्होंने कहा, "वह गवाह है।"

⁶फिर समुएल लोगों से कहने लगा, "वह खुदावन्द ही है जिसने मूसा और हारून को मुकर्रर किया, और तुम्हारे बाप दादा को मुल्क मिस्र से निकाल लाया।" ⁷इस लिए अब ठहरे रहो ताकि मैं खुदावन्द के सामने उन सब नेकियों के बारे में जो खुदावन्द ने तुम से और तुम्हारे बाप दादा से कीं बातें करूँ।

⁸जब या'कूब मिस्र में गया, और तुम्हारे बाप दादा ने खुदावन्द से फ़रियाद की तो खुदावन्द ने मूसा और हारून को भेजा, जिन्होंने तुम्हारे बाप दादा को मिस्र से निकाल कर इस जगह बसाया। ⁹लेकिन वह खुदावन्द अपने खुदा को भूल गए, तब उसने उनको हसूर की फ़ौज के सिपह सालार सीसरा के हाथ और फ़िलिस्तियों के हाथ और शाह-ए-मोआब के हाथ बेच डाला, और वह उनसे लड़े।

¹⁰फिर उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की और कहा कि हमने गुनाह किया, इसलिए कि हमने खुदावन्द को छोड़ा, और बा'लीम और इस्तारात की 'इबादत की लेकिन अब तू हमको हमारे दुश्मनों के हाथ, से छुड़ा, तो हम तेरी 'इबादत करेंगे।" ¹¹इस लिए खुदावन्द ने यरुब्बा'ल और बिदान और इप्ताह और समुएल को भेजा और तुम को तुम्हारे दुश्मनों के हाथ से जो तुम्हारी चारों तरफ़ थे, रिहाई दी और तुम चैन से रहने लगे।

¹²और जब तुमने देखा कि बनी अम्मून का बादशाह नाहस तुम पर चढ़ आया, तो तुमने मुझ से कहा कि हम पर कोई बादशाह हुकूमत करे हालाँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारा बादशाह था। ¹³इसलिए अब उस बादशाह को देखो जिसे तुमने चुन लिया, और जिसके लिए तुमने दरख्वास्त की थी, देखो खुदावन्द ने तुम पर बादशाह मुकर्रर कर दिया है।

¹⁴अगर तुम खुदावन्द से डरते और उसकी 'इबादत करते और उस की बात मानते रहो, और खुदावन्द के हुक्म से सरकशी न करो और तुम और वह बादशाह भी जो तुम पर हुकूमत करता है खुदावन्द अपने खुदा के पैरों बने रहो तो भला, ¹⁵लेकिन अगर तुम खुदावन्द की बात न मानों बल्कि खुदावन्द के हुक्म से सरकशी करो तो खुदावन्द का हाथ तुम्हारे खिलाफ़ होगा, जैसे वह तुम्हारे बाप दादा के खिलाफ़ होता था।

¹⁶इसलिए अब तुम ठहरे रहो और इस बड़े काम को देखो जिसे खुदावन्द तुम्हारी आँखों के सामने करेगा। ¹⁷क्या आज गेहूँ काटने का दिन नहीं, मैं खुदावन्द से दरख्वास्त करूँगा, कि बादल गरजे और पानी बरसे, और तुम जान लोगे, और देख भी लोगे कि तुमने खुदावन्द के सामने अपने लिए, बादशाह माँगने से कितनी बड़ी शरारत की। ¹⁸चुनाँचे समुएल ने खुदावन्द से दरख्वास्त की और खुदावन्द की तरफ़ से उसी दिन बादल गरजा और पानी बरसा; तब सब लोग खुदावन्द और समुएल से निहायत डर गए।

¹⁹और सब लोगों ने समुएल से कहा, कि अपने खादिमों के लिए खुदावन्द अपने खुदा से दु'आ कर कि हम मर न जाएँ क्योंकि हमने अपने सब गुनाहों पर यह शरारत भी बढ़ा दी है कि अपने लिए एक बादशाह माँगा। ²⁰समुएल ने लोगों से कहा, "खौफ़ न करो, यह सब शरारत तो तुमने की है तो भी खुदावन्द की पैरवी से किनारा कशी न करो बल्कि अपने सारे दिल से खुदावन्द की 'इबादत करो।" ²¹तुम किनारा कशी न करना: वरना ~बातिल चीज़ों की पैरवी करने लगोगे जो न फ़ायदा पहुंचा सकती न रिहाई दे सकती हैं, इसलिए कि वह सब बातिल हैं।

²²क्योंकि खुदावन्द अपने बड़े नाम के ज़रिए अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, इस लिए कि खुदावन्द को यही पसंद आया कि तुम को अपनी क्रौम बनाए। ²³अब रहा मैं इसलिए खुदा न करे कि तुम्हारे लिए दु'आ करने से बाज़ आकर खुदावन्द का गुनहगार ठहरूँ, बल्कि मैं वही रास्ता जो अच्छा और सीधा है, तुमको बताऊँगा।

²⁴सिर्फ़ इतना हो कि तुम खुदावन्द से डरो, और अपने सारे दिल और सच्चाई से उसकी 'इबादत करो क्योंकि सोचो कि उसने तुम्हारे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।

²⁵लेकिन अगर तुम अब भी शरारत ही करते जाओ, तो तुम और तुम्हारा बादशाह दोनों के दोनों मिटा दिए जाओगे।"

Chapter 13

¹साऊल तीस बरस की 'उम्र में हुकूमत करने लगा, और इस्राईल पर दो बरस हुकूमत कर चुका | ²तो साऊल ने तीन हज़ार इस्राईली जवान अपने लिए चुने, उनमें से दो हज़ार मिक्मास में और बैत'एल के पहाड़ पर साऊल के साथ और एक हज़ार बिनयमीन के जिबा' में यूनतन के साथ रहे और बाक़ी लोगों को उसने रुख़सत किया, कि अपने अपने डेरे को जाएँ।

³और यूनतन ने फ़िलिस्तिनों की चौकी के सिपाहियों को जो जिबा' में थे क़त्ल कर डाला और फ़िलिस्तिनों ने यह सुना, और साऊल ने सारे मुल्क में नरसिंगा फुंकवा ~कर ~कहला भेजा कि 'इब्रानी लोग सुनें | ⁴और सारे इस्राईल ने यह कहते सुना, कि साऊल ने फ़िलिस्तिनों की चौकी के सिपाही मार डाले और यह भी कि इस्राईल से फ़िलिस्तिनों को नफ़रत हो गई है, तब लोग साऊल के पीछे चल कर जिल्लाल में जमा' हो गए।

⁵और फ़िलिस्ती इस्राईलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए या'नी तीस हज़ार रथ और छः हज़ार सवार और एक बड़ा गिरोह जैसे समन्दर के किनारे की रेत | इसलिए वह चढ़ आए और मिक्मास में बैतआवन के पूरब की तरफ़ खेमाज़न हुए |

⁶जब बनी इस्राईल ने देखा, कि वह आफ़त में मुब्तिला हो गए, क्योंकि लोग परेशान थे, तो वह ग़ारों और झाड़ियों और चट्टानों और गढ़वों और गढ़ों में जा छिपे।

⁷और कुछ 'इब्रानी यरदन के पार जद और जिल'आद के 'इलाक़े को चले गए लेकिन साऊल जिल्लाल ही में रहा, और सब लोग काँपते हुए उसके पीछे पीछे रहे।

⁸और वह वहाँ सात दिन समुएल के मुकर्रर वक्त्र के मुताबिक़ ठहरा रहा, लेकिन समुएल जिल्लाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर उधर हो गए। ⁹तब साऊल ने कहा, "सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियों को मेरे पास लाओ, " तब उसने सोख़्तनी कुर्बानी अदा की। ¹⁰और जैसे ही वह सोख़्तनी कुर्बानी अदा कर चुका तो क्या, देखता है, कि समुएल आ पहुँचा और साऊल उसके इस्तक्रबाल को निकला ताकि उसे सलाम करे

¹¹समुएल ने पूछा, "कि तूने क्या किया?" साऊल ने जवाब दिया कि जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो गए, और तू ठहराए, हुए दिनों के अन्दर नहीं आया, और फ़िलिस्ती मिक्मास में जमा' हो गए हैं। ¹²तो मैंने सोचा कि फ़िलिस्ती जिल्लाल में मुझ पर आ पड़ेंगे, और मैंने खुदावन्द के करम के लिए अब तक दु'आ भी नहीं की है, इस लिए मैंने मजबूर होकर सोख़्तनी कुर्बानी अदा की। "

¹³समुएल ने साऊल से कहा, "तूने बेवकूफी की, तूने खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म को जो उसने तुझे दिया, नहीं माना वरना खुदावन्द तेरी बादशाहत बनी इस्राईल में हमेशा तक क़ायम रखता। ¹⁴लेकिन अब तेरी हुकूमत क़ायम न रहेगी क्योंकि खुदावन्द ने एक शख्स को जो उसके दिल के मुताबिक़ है, तलाश कर लिया है और खुदावन्द ने उसे अपनी क़ौम का सरदार ठहराया है, इसलिए कि तूने वह बात नहीं मानी जिसका हुक्म खुदावन्द ने तुझे दिया था। "

¹⁵और समुएल ~उठकर जिल्लाल से बिनयमीन के जिबा' को गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उसके साथ हाज़िर थे, गिना और वह क़रीबन छःसौ थे। ¹⁶और साऊल और उसका बेटा यूनतन और उनके साथ के लोग बिनयमीन के जिबा' में रहे, लेकिन फ़िलिस्ती मिक्मास में खेमाज़न थे।

¹⁷और ग़ारतगर फ़िलिस्तिनों के लश्कर में से तीन गोल होकर निकले एक गोल तो सु'आल के 'इलाक़े को उफ़रह के रास्ते से गया। ¹⁸और दूसरे गोल ने बैतहोरून की राह ली और तीसरे गोल ने उस सरहद की राह ली जिसका रुख़ वादी -ए-ज़ुबू'ईम की तरफ़ जंगल के सामने है।

¹⁹और इस्राईल के सारे मुल्क में कहीं लुहार नहीं मिलता था क्योंकि फ़िलिस्तिनों ने कहा था कि, 'इब्रानी लोग अपने लिए तलवारें और भाले न बनाने पाएँ।

²⁰इसलिए सब इस्राईली अपनी अपनी फाली और भाले और कुल्हाड़ी और कुदाल को तेज़ कराने के लिए फ़िलिस्तिनों के पास जाते थे | ²¹लेकिन कुदालों और फालियों और काँटों और कुल्हाड़ों के लिए, और पैनों को दुरुस्त करने के लिए, वह रेती रखते थे |

²²इस लिए लड़ाई के दिन साऊल और यूनतन के साथ के लोगों में से किसी के हाथ में न तो तलवार थी न भाला, लेकिन साऊल और उसके बेटे यूनतन के पास तो यह थे। ²³और फ़िलिस्तिनों की चौकी के सिपाही, निकल कर मिक्मास की घाटी को गए।

Chapter 14

¹और एक दिन ऐसा हुआ, कि साऊल के बेटे यूनतन ने उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार था कहा कि आ हम फ़िलिस्तिनियों की चौकी को जो उस तरफ़ है चलें, पर उसने अपने बाप को न बताया।

²और साऊल जिबा' के निकास पर उस अनार के दरख्त के नीचे जो मजरून में है मुकीम ~था, और करीबन छः सौ आदमी उसके साथ थे।³और अखियाह बिन अखीतोब जो यक्रबोद बिन फ़िन्हास बिन 'एली का भाई और सैला में खुदावन्द का काहिन था अफ़ूद पहने हुए था और लोगों को खबर न थी कि यूनतन चला गया है।

⁴और उन की घाटियों के बीच जिन से होकर यूनतन फ़िलिस्तिनियों की ~चौकी को जाना चाहता था एक तरफ़ एक बड़ी नुकीली चट्टान थी और दूसरी तरफ़ भी एक बड़ी नुकीली चट्टान थी, एक का नाम बुसीस था दूसरी का सना।⁵एक तो शिमाल की तरफ़ मिक्मास के मुकाबिल और दूसरी जुनूब की तरफ़ जिबा' के मुकाबिल थी।

⁶इसलिए यूनतन ने उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार था, कहा, "आ हम उधर उन नामख़तूनों ~की चौकी को चलें -मुम्किन है, कि खुदावन्द हमारा काम बना दे, क्योंकि खुदावन्द के लिए बहुत सारे या थोड़ों के ज़रिए' से बचाने की कैद नहीं।"⁷उसके सिलाह बरदार ने उससे कहा, "जो कुछ तेरे दिल में है इसलिए कर और उधर चल मैं तो तेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ तेरे साथ हूँ।"

⁸तब यूनतन ने कहा, "देख हम उन लोगों के पास इस तरफ़ जाएँगे, और अपने को उनको दिखाएँगे।"⁹अगर वह हम से यह कहें, कि हमारे आने तक ठहरो, तो हम अपनी जगह चुप चाप खड़े रहेंगे और उनके पास नहीं जाएँगे।¹⁰लेकिन अगर वह यूँ कहें, कि हमारे पास तो आओ, तो हम चढ़ जाएँगे, क्योंकि खुदावन्द ने उनको हमारे क़ब्ज़े में कर दिया, और यह हमारे लिए निशान होगा।"

¹¹फिर इन दोनों ने अपने आप को फ़िलिस्तिनियों की चौकी के सिपाहियों को दिखाया, और फ़िलिस्ती कहने लगे, "देखो ये 'इब्रानी उन सुराखों में से जहाँ वह छिप गए थे, बाहर निकले आते हैं।"¹²और चौकी के सिपाहियों ने यूनतन और उसके सिलाह बरदार से कहा, "हमारे पास आओ, तो सही, हम तुमको एक चीज़ दिखाएँ।" इसलिए यूनतन ने अपने सिलाह बरदार से कहा, "अब मेरे पीछे पीछे चढ़ा, चला आ, क्योंकि खुदावन्द ने उनको इसाईल के क़ब्ज़े में कर दिया है।"

¹³और यूनतन अपने हाथों और पाँव के बल चढ़ गया, और उसके पीछे पीछे उसका सिलाह बरदार था, और वह यूनतन के सामने गिरते गए और उसका सिलाह बरदार उसके पीछे पीछे उनको क़त्ल करता गया।¹⁴यह पहली ख़ूरेज़ी जो यूनतन और उसके सिलाह बरदार ने की करीबन बीस आदमियों की थी जो कोई एक बीघा ज़मीन की रेघारी में मारे गए।

¹⁵तब लश्कर और मैदान और सब लोगों में लरज़िश हुई और चौकी के सिपाही, और ग़ारतगर भी काँप गए, और ज़लज़ला ~आया इसलिए निहायत तेज़ कपकपी हुई।

¹⁶और साऊल के निगहबानों ने जो बिनयमीन के जिबा' में थे नज़र की और देखा कि भीड़ घटती जाती है और लोग इधर उधर जा रहे हैं।¹⁷तब साऊल ने उन लोगों से जो उसके साथ थे, कहा, "गिनती करके देखो, कि हम में से कौन चला गया है, इसलिए उन्होंने शुमार किया तो देखो, यूनतन और उसका सिलाह बरदार ग़ायब थे।"

¹⁸और साऊल ने अखियाह से कहा, "खुदा का संदूक यहाँ ला।" क्योंकि खुदा का संदूक उस वक़्त बनी इसाईल के साथ वहीं था।¹⁹और जब साऊल काहिन से बातें कर रहा था तो फ़िलिस्तिनियों की लश्कर गाह, में जो हलचल मच गई थी वह और ज़्यादा हो गई तब साऊल ने काहिन से कहा कि "अपना हाथ खींच ले।"

²⁰और साऊल और सब लोग जो उसके साथ थे, एक जगह जमा' हो गए, और लड़ने को आए और देखा कि हर एक की तलवार अपने ही साथी पर चल रही है, और सख़्त तहलका मचा हुआ है।²¹और वह 'इब्रानी भी जो पहले की तरह फ़िलिस्तिनियों के साथ थे और चारो तरफ़ से उनके साथ लश्कर में आए थे फिर कर उन इसाईलियों से मिल गए जो साऊल और यूनतन के साथ थे।

²²इसी तरह उन सब इसाईली मर्दों ने भी जो इफ़्राईम ~के पहाड़ी मुल्क में छिप गए थे, यह सुन कर कि फ़िलिस्ती भागे जाते हैं, लड़ाई में आ उनका पीछा किया।²³तब खुदावन्द ने उस दिन इसाईलियों को रिहाई दी और लड़ाई बैत आवन के उस पार तक पहुँची।

²⁴और इसाईली मर्द उस दिन बड़े परेशान थे, क्योंकि साऊल ने लोगों को क़सम देकर यूँ कहा, था कि जब तक शाम न हो और मैं अपने दुश्मनों से बदला न ले लूँ उस वक़्त तक अगर कोई कुछ खाए तो वह ला'नती हो। इस वजह से उन लोगों में से किसी ने खाना चखा तक न था।²⁵और सब लोग जंगल में जा पहुँचे और वहाँ ज़मीन पर शहद था।²⁶और जब यह लोग उस जंगल में पहुँच गए तो देखा कि शहद टपक रहा है तो भी कोई अपना हाथ अपने मुँह तक नहीं ले गया इसलिए कि उनको क़सम का ख़ौफ़ था।

²⁷लेकिन यूनतन ने अपने बाप को उन लोगों को क़सम देते नहीं सुना था, इसलिए उसने अपने हाथ की लाठी के सिरे को शहद के छत्ते में भोंका और अपना हाथ अपने मुँह से लगा लिया और उसकी आँखों में रोशनी आई।²⁸तब उन लोगों में से एक ने उससे कहा, "तेरे बाप ने लोगों को क़सम देकर सख़्त ताकीद की थी, और कहा, था कि जो शख्स आज के दिन कुछ खाना खाए, वह ला'नती हो और लोग बेदम से हो रहे थे।"

²⁹तब यूनतन ने कहा कि मेरे बाप ने मुल्क को दुख ~दिया है, देखो मेरी आँखों में ज़रा सा शहद चखने की वजह से कैसी रोशनी आई।³⁰कितना ज़्यादा अच्छा होता अगर सब लोग दुश्मन की लूट में से जो उनको मिली दिल खोल कर खाते क्योंकि अभी तो फ़िलिस्तिनियों में कोई बड़ी ख़ूरेज़ी भी नहीं हुई है।

³¹और उन्होंने उस दिन मिक्मास से अय्यालोन तक फ़िलिस्तिनियों को मारा और लोग बहुत ही बे दम हो गए।³²इसलिए वह लोग लूट पर गिरे और भेड़ बकरियों और बैलों और बछड़ों को लेकर उनको ज़मीन पर ज़बह, किया और खून समेत खाने लगे।

³³तब उन्होंने साऊल को खबर दी कि देख लोग खुदावन्द का गुनाह करते हैं कि खून समेत खा रहे हैं। उसने कहा, "तुम ने बेईमानी की, इसलिए एक बड़ा पत्थर आज मेरे सामने ढलका लाओ।"³⁴फिर साऊल ने कहा कि लोगों के बीच इधर उधर जाकर उन से कहो कि हर शख्स अपना बैल और अपनी भेड़ यहाँ मेरे पास

लाए और यहीं, ज़बह करे और खाए और खून समेत खाकर खुदा का गुनहगार न बने। चुनाँचे उस रात लोगों में से हर शख्स अपना बैल वहीं लाया और वहीं ज़बह किया।

³⁵और साऊल ने खुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाया, यह पहला मज़बह है, जो उसने खुदावन्द के लिए बनाया।

³⁶फिर साऊल ने कहा, "आओ, रात ही को फ़िलिस्तिनों का पीछा करें और पौ फटने तक उनको लूटें और उन में से एक आदमी को भी न छोड़ें।" उन्होंने कहा, "जो कुछ तुझे अच्छा लगे वह कर तब काहिन ने कहा, कि आओ, हम यहाँ खुदा के नज़दीक हाज़िर हों।" ³⁷और साऊल ने खुदा से सलाह ली, कि क्या मैं फ़िलिस्तिनों का पीछा करूँ? क्या तू उनको इस्राईल के हाथ में कर देगा। तो भी-उसने उस दिन उसे कुछ जवाब न दिया।

³⁸तब साऊल ने कहा कि तुम सब जो लोगों के सरदार हो यहाँ, नज़दीक आओ, और तहक़ीक़ करो और देखो कि आज के दिन गुनाह क्यूँकर हुआ है। ³⁹क्यूँकि खुदावन्द की हयात की क्रसम जो इस्राईल को रिहाई देता है अगर वह मेरे बेटे यूनतन ही का गुनाह हो, वह ज़रूर मारा जाएगा, लेकिन उन सब लोगों में से किसी आदमी ने उसको जवाब न दिया।

⁴⁰तब उस ने सब इस्राईलियों से कहा, "तुम सब के सब एक तरफ़ हो जाओ, और मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी तरफ़ हो जायेंगे।" लोगों ने साऊल से कहा, "जो तू मुनासिब जाने वह कर।" ⁴¹तब साऊल ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा से कहा, "हक़ को ज़ाहिर कर दे, इसलिए पर्ची यूनतन और साऊल के नाम पर निकली, और लोग बच गए।" ⁴²तब साऊल ने कहा कि "मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम पर पर्ची डालो, तब यूनतन पकड़ा गया।"

⁴³और साऊल ने यूनतन से कहा, "मुझे बता कि तूने क्या किया है?" यूनतन ने उसे बताया कि मैंने बेशक अपने हाथ की लाठी-के सिरे से ज़रा सा शहद चख़ा था इसलिए देख मुझे मरना होगा। ⁴⁴साऊल ने कहा, "खुदा ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करे क्यूँकि ऐ यूनतन तू ज़रूर मारा जाएगा।"

⁴⁵तब लोगों ने साऊल से कहा, "क्या यूनतन मारा जाए, जिसने इस्राईल को ऐसा बड़ा छुटकारा दिया है ऐसा न होगा, खुदावन्द की हयात की क्रसम है कि उसके सर का एक बाल भी ज़मीन पर गिरने नहीं पाएगा क्यूँकि उसने आज खुदा के साथ हो कर काम किया है।" इसलिए लोगों ने यूनतन को बचा लिया और वह मारा न गया। ⁴⁶और साऊल फ़िलिस्तिनों का पीछा छोड़ कर लौट गया और फ़िलिस्ती अपने मक़ाम को चले गए

⁴⁷जब साऊल बनी इस्राईल पर बादशाहत करने लगा, तो वह हर तरफ़ अपने दुश्मनों या 'नी मोआब और बनी 'अम्मून और अद्रूम और जुबाह के बादशाहों और फ़िलिस्तिनों से लड़ा और वह जिस जिस तरफ़ फिरता उनका बुरा हाल करता था। ⁴⁸और उसने बहादुरी करके अमालीक्रियों को मारा, और इस्राईलियों को उनके हाथ से छुड़ाया जो उनको लूटते थे।

⁴⁹साऊल के बेटे यूनतन और इसवी और मलकीशू'अ थे; और उसकी दोनों बेटियों के नाम यह थे, बड़ी का नाम मेरब और छोटी का नाम मीकल था। ⁵⁰और साऊल कि बीवी का नाम अख़ीनु'अम था जो अख़ीमा'ज़ की बेटी थी, और उसकी फ़ौज के सरदार का नाम अबनेर था, जो साऊल के चचा नेर का बेटा था।

⁵¹और साऊल के बाप का नाम क्रीस था और अबनेर का बाप नेर अबीएल का बेटा था।

⁵²और साऊल की ज़िन्दगी भर फ़िलिस्तिनों से सख़्त जंग रही, इसलिए जब साऊल किसी ताक़तवर मर्द या सूरमा को देखता था तो उसे अपने पास रख लेता था।

Chapter 15

¹और समुएल ने साऊल से कहा कि "खुदावन्द ने मुझे भेजा है कि मैं तुझे मसह करूँ ताकि तू उसकी क्रौम इस्राईल का बादशाह हो, इसलिए अब तू खुदावन्द की बातें सुन।²रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि मुझे इसका ख्याल है कि 'अमालीक्र ने इस्राईल से क्या किया और जब यह मिस्र से निकल आए तो वह रास्ते में उनका मुखालिफ़ हो कर आया।³इस लिए अब तू जा और 'अमालीक्र को मार और जो कुछ उनका है, सब को बिलकुल मिटा दे, और उनपर रहम मत कर बल्कि मर्द और 'औरत नन्हे, बच्चे और दूध पीते, गाय बैल और भेड़ बकरियाँ, ऊँट और गधे सब को क्रल्ल कर डाल।"

⁴चुनाँचे साऊल ने लोगों को जमा किया और तलाइम में उनको गिना; इस लिए वह दो लाख पियादे, और यहूदा के दस हजार जवान थे।⁵और साऊल 'अमालीक्र के शहर को आया और वादी के बीच घात लगा कर बैठा।

⁶और साऊल ने क्रीनियों से कहा कि तुम चल दो 'अमालीक्रियों के बीच से निकल जाओ; ऐसा न हो कि मैं तुमको उनके साथ हलाक कर डालूँ इसलिए कि तुम सब इस्राईलियों से जब वह मिस्र से निकल आए महेरबानी के साथ पेश आए। इसलिए क्रीनी अमालीक्रियों में से निकल गए।⁷और साऊल ने 'अमालीक्रियों को हवीला से शोर तक जो मिस्र के सामने है मारा।

⁸और 'अमालीक्रियों के बादशाह अजाज को जीता पकड़ा और सब लोगों को तलवार की धार से ~मिट दिया।⁹लेकिन साऊल ने और उन लोगों ने अजाज को और अच्छी अच्छी भेड़ बकरियों गाय -बैलों और मोटे मोटे बच्चों और बरों को और जो कुछ अच्छा था उसे जीता रखखा और उनको बरबाद करना न चाहा लेकिन उन्होंने हर एक चीज़ को जो नाक्रिस और निकम्मी थी बरबाद कर दिया।

¹⁰तब खुदावन्द का कलाम समुएल को पहुँचा कि।¹¹मुझे अफ़सोस है कि मैंने साऊल को बादशाह होने के लिए मुकर्रर किया है, क्योंकि वह मेरी पैरवी से फिर गया है, और उसने मेरे हुक्म नहीं माने, तब समुएल का गुस्सा भड़का और वह सारी रात खुदावन्द से फ़रियाद करता रहा।

¹²और समुएल सवेरे उठा कि सुबह को साऊल से मुलाक़ात करे, और समुएल को ख़बर मिली, कि साऊल करमिल को आया था, और अपने लिए लाट खड़ी की और फिर गुज़रता हुआ जिल्लाल को चला गया है।¹³फिर समुएल साऊल के पास गया और साऊल ने उस से कहा, "तू खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हुआ, मैंने खुदावन्द के हुक्म पर 'अमल किया।"

¹⁴समुएल ने कहा, "फिर यह भेड़ बकरियों का मिम्याना और गाय,और बैलों का बनबाना कैसा है,जो मैं सुनता हूँ?"¹⁵साऊल ने कहा कि "यह लोग उनको 'अमालीक्रियों के यहाँ से ले आए है, इसलिए कि लोगों ने अच्छी अच्छी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को जीता रखखा ताकि उनको खुदावन्द तेरे खुदा के लिए ज़बह करें और बाक़ी सब को तो हम ने बरबाद कर दिया।"¹⁶तब समुएल ने साऊल से कहा, "ठहर जा और जो कुछ खुदावन्द ने आज की रात मुझ से कहा है, वह मैं तुझे बताऊँगा।" उसने कहा, "बताइये।"

¹⁷समुएल ने कहा, "अगरचें तू अपनी ही नज़र में हकीर था तो भी क्या तू बनी इस्राईल के क़बीलों का सरदार न बनाया गया? और खुदावन्द ने तुझे मसह किया ताकि तू बनी इस्राईल का बादशाह हो।¹⁸और खुदावन्द ने तुझे सफ़र पर भेजा और कहा कि जा और गुनहगार 'अमालीक्रियों को मिटा कर और जब तक वह फ़ना न हो जायें उन से लड़ता रह।"¹⁹तब तूने खुदावन्द की बात क्यूँ न मानी बल्कि लूट पर टूट कर वह काम कर गुज़रा जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है?"

²⁰साऊल ने समुएल से कहा, "मैंने तो खुदावन्द का हुक्म माना और जिस रास्ते पर खुदावन्द ने मुझे भेजा चला,और 'अमालीक्र के बादशाह अजाज को ले आया हूँ,और 'अमालीक्रियों को बरबाद कर दिया।²¹जब लोग लूट के माल में से भेड़ बकरियाँ और गाय बैल या'नी अच्छी अच्छी चीज़ें जिनको बरबाद करना था, ले आए ताकि जिल्लाल में खुदावन्द तेरे खुदा के सामने कुर्बानी करें।"

²²समुएल ने कहा, "क्या खुदावन्द सोख़्तनी कुर्बानियों और जबीहों से इतना ही खुश होता है जितना इस बात से कि खुदावन्द का हुक्म माना जाए? देख फ़रमा बरदारी कुर्बानी से और बात मानना मद्दों की चर्बी से बेहतर है।²³क्यूँकि बगावत और जादूगरी बराबर हैं और सरकशी ऐसी ही है जैसी मूरतों और बुतों की 'इबादत इस लिए चूँकि तूने खुदावन्द के हुक्म को रद्द किया है इसलिए उसने भी तुझे रद्द किया है कि बादशाह न रहे।"

²⁴साऊल ने समुएल से कहा, "मैंने गुनाह किया कि मैंने ~खुदावन्द के फ़रमान को और तेरी बातों को टाल दिया है, क्यूँकि मैं लोगों से डरा और उनकी बात सुनी।²⁵इसलिए अब मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरा गुनाह बख़्श दे, और मेरे साथ लौट चल ताकि मैं खुदावन्द को सिज्दा करूँ।

²⁶समुएल ने साऊल से कहा, "मैं तेरे साथ नहीं लौटूँगा क्यूँकि तूने खुदावन्द के कलाम को रद्द कर दिया है और खुदावन्द ने तुझे रद्द किया, कि इस्राईल का बादशाह न रहे।"²⁷और जैसे ही समुएल जाने को मुड़ा साऊल ने उसके जुब्बा का दामन पकड़ लिया, और वह फट गया।

²⁸तब समुएल ने उससे कहा, "खुदावन्द ने इस्राईल की बादशाही तुझ से आज ही चाक कर के छीन ली और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से बेहतर है दे दी है।

²⁹और जो इस्राईल की ताक़त है,वह न तो झूट बोलता और न पछताता है, क्यूँकि वह इंसान नहीं है कि पछताए।"

³⁰उसने कहा, "मैंने गुनाह तो किया है तो भी मेरी क्रौम के बुजुर्गों और इस्राईल के आगे मेरी 'इज्ज़त कर और मेरे साथ, लौट कर चल ताकि मैं खुदावन्द तेरे खुदा को सिज्दा करूँ।"³¹तब समुएल लौट कर साऊल के पीछे हो लिया और साऊल ने खुदावन्द को सिज्दा किया।

³²तब समुएल ने कहा कि 'अमालीक्रियों के बादशाह अजाज को यहाँ मेरे पास लाओ, इसलिए अजाज खुशी खुशी उसके पास आया और अजाज कहने लगा, हकीक़त में मौत की कड़वाहट गुज़र गयी।³³समुएल ने कहा, "जैसे तेरी तलवार ने 'औरतों को बे औलाद किया वैसे ही तेरी माँ 'औरतों में बे औलाद होगी और समुएल ने अजाज को जिल्लाल में खुदावन्द के सामने टुकड़े टुकड़े किया।

³⁴और समुएल रामा को चला गया और साऊल अपने घर साऊल के ज़िबा' को ~गया।³⁵और समुएल अपने मरते दम तक साऊल ~को फिर देखने न गया क्यूँकि साऊल के लिए ग़म खाता रहा,और खुदावन्द साऊल को बनी इस्राईल का बादशाह करके दुखी हुआ।"

Chapter 16

¹और खुदावन्द ने समुएल से कहा, "तू कब तक साऊल के लिए गम खाता रहेगा, जिस हाल कि मैंने उसे बनी इसाईल का बादशाह होने से रद्द कर दिया है? तू अपने सींग में तेल भर और जा, मैं तुझे बैतलहमी यस्सी के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को अपनी तरफ से बादशाह चुना है।"

²समुएल ने कहा, "मैं क्योंकर जाऊँ? अगर साऊल सुन लेगा, तो मुझे मार ही डालेगा।" खुदावन्द ने कहा, "एक बछिया अपने साथ लेजा और कहना कि मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को आया हूँ।"³और यस्सी को कुर्बानी की दा'वत देना फिर मैं तुझे बता दूँगा कि तुझे क्या करना है, और उसी को जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ मेरे लिए मसह करना।"

⁴और समुएल ने वही जो खुदावन्द ने कहा था किया और बैतलहम में आया, तब शहर के बुजुर्ग काँपते हुए उससे मिलने को गए और कहने लगे, "तू सुलह के ख्याल से आया है?"⁵उसने कहा, "सुलह के ख्याल से, मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी पेश करने आया हूँ। तुम अपने आप को पाक साफ़ करो और मेरे साथ कुर्बानी के लिए आओ" और उसने यस्सी को और उसके बेटों को पाक किया और उनको कुर्बानी की दा'वत दी।

⁶जब वह आए तो वह इलियाब को देख कर कहने लगा, "यक्रीनन खुदावन्द का मसह उसके आगे है।"⁷तब खुदावन्द ने समुएल से कहा कि "तू उसके चेहरा और उसके क्रद की ऊँचाई को न देख इसलिए कि मैंने उसे ना पसंद किया है, क्योंकि खुदावन्द इंसान की तरह नज़र नहीं करता इसलिए कि इन्सान ज़ाहिरी सूरत को देखता है, पर खुदावन्द दिल पर नज़र करता है।"

⁸तब यस्सी ने अबीनदाब को बुलाया और उसे समुएल के सामने से निकाला, उसने कहा, "खुदावन्द ने इसको भी नहीं चुना।" "फिर यस्सी ने सम्मा को आगे किया, उसने कहा, "खुदावन्द ने इसको भी नहीं चुना।"¹⁰और यस्सी ने अपने सात बेटों को समुएल के सामने से निकाला और समुएल ने यस्सी से कहा कि "खुदावन्द ने उनको नहीं चुना है।"

¹¹फिर समुएल ने यस्सी से पूछा, "क्या तेरे सब लड़के यहीं हैं?" उसने कहा, "सब से छोटा अभी रह गया, वह भेड़ बकरियाँ चराता है।" समुएल ने यस्सी से कहा, "उसे बुला भेज क्योंकि जब तक वह यहाँ न आ जाए हम नहीं बैठेंगे।"¹²इसलिए वह उसे बुलवाकर अंदर लाया। वह सुर्ख रंग और खूबसूरत और हसीन था और खुदावन्द ने फ़रमाया, "उठ, और उसे मसह कर क्योंकि वह यही है।"

¹³तब समुएल ने तेल का सींग लिया और उसे उसके भाइयों के बीच मसह किया; और खुदावन्द की रूह उस दिन से आगे को दाऊद पर ज़ोर से नाज़िल होती रही, तब समुएल उठकर रामा को चला गया।

¹⁴और खुदावन्द की रूह साऊल से जुदा हो गई और खुदावन्द की तरफ़ से एक बुरी रूह उसे सताने लगी।¹⁵और साऊल के मुलाज़िमों ने उससे कहा, "देख अब एक बुरी रूह खुदा की तरफ़ तुझे सताती है।"¹⁶इसलिए हमारा मालिक अब अपने खादिमों को जो उसके सामने हैं, हुक्म दे कि वह एक ऐसे शख्स को तलाश कर लाएँ जो बरबत बजाने में क़ाबिल हो, और जब जब खुदा की तरफ़ से यह बुरी रूह तुझ पर चढ़े वह अपने हाथ से बजाए, और तू बहाल हो जाए।"

¹⁷साऊल ने अपने खादिमों से कहा, "खैर एक अच्छा बजाने वाला मेरे लिए ढूँढो और उसे मेरे पास लाओ।"¹⁸तब जवानों में से एक यूँ बोल उठा कि देख मैंने बैतलहम के यस्सी के एक बेटे को देखा जो बजाने में क़ाबिल और ज़बरदस्त सूरमा और जंगी जवान और बात में साहिबे तमीज़ और खूबसूरत आदमी है और खुदावन्द उसके साथ है।"¹⁹तब साऊल ने यस्सी के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा कि "अपने बेटे दाऊद को जो भेड़ बकरियों के साथ रहता है, मेरे पास भेज दे।"

²⁰तब यस्सी ने एक गधा जिस पर रोटियाँ लदी थीं, और मय का एक मश्कीज़ा और बकरी का एक बच्चा लेकर उनको अपने बेटे दाऊद के हाथ साऊल के पास भेजा।²¹और दाऊद साऊल के पास आकर उसके सामने खड़ा हुआ, और साऊल उससे मुहब्बत करने लगा, और वह उसका सिलह बरदार हो गया।

²²और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि दाऊद को मेरे सामने रहने दे क्योंकि वह मेरा मंजूर नज़र हुआ है।²³इसलिए जब वह बुरी रूह खुदा की तरफ़ से साऊल पर चढ़ती थी तो दाऊद बरबत लेकर हाथ से बजाता था, और साऊल को राहत होती और वह बहाल हो जाता था, और वह बुरी रूह उस पर से उतर जाती थी।

Chapter 17

¹फिर फ़िलिस्तिनियों ने जंग के लिए अपनी फ़ौजें जमा कीं, और यहूदाह के शहर शोके में इकट्ठे हुए. और शोके और 'अजीका के बीच अफ़सदम्मीम में ख़ैमाज़न हुए।

²और साऊल और इस्राईल के लोगों ने जमा' ~होकर एला की वादी में डरे डाले और लड़ाई के लिए फ़िलिस्तिनियों के मुकाबिल सफ़ आराई की।³और एक तरफ़ के पहाड़ पर फ़िलिस्ती और दूसरी तरफ़ के पहाड़ पर बनी इस्राईल खड़े हुए और इन दोनों के बीच वादी थी।

⁴और फ़िलिस्तिनियों के लश्कर से एक पहलवान निकला जिसका नाम जाती जूलियत था, उसका क्रद छ हाथ और एक बालिशत था।⁵और उसके सर पर पीतल का टोपा था, और वह पीतल ही की ज़िरह पहने हुए था जो तोल में पाँच हज़ार पीतल की मिस्काल के बराबर थी।

⁶और उसकी टाँगों पर पीतल के दो साकपोश थे और उसके दोनों शानों के बीच पीतल की बरछी थी।⁷और उसके भाले की छड़ ऐसी थी जैसे जुलाहे का शहतीर और उसके नेज़े का फ़ल छः सौ मिस्काल लोहे का था और एक शख्स ढाल ~लिए हुए उसके आगे आगे चलता था।

⁸वह खड़ा हुआ, और इस्राईल के लश्करों को पुकार कर उन से कहने लगा कि तुमने आकर जंग के लिए क्यूँ सफ़ आराई की? क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं और तुम साऊल के खादिम नहीं? इसलिए अपने लिए किसी शख्स को चुनो जो मेरे पास उतर आए।⁹अगर वह मुझे से लड़ सके और मुझे क्रल कर डाले तो हम तुम्हारे खादिम हो जाएँगे लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आऊँ और उसे क्रल कर डालूँ तो तुम हमारे खादिम हो जाना और हमारी खिदमत करना।

¹⁰फिर उस फ़िलिस्ती ने कहा कि मैं आज के दिन इस्राईली फ़ौजों की बे'इज़ज़ती करता हूँ कोई जवान निकालो ताकि हम लड़ें।¹¹जब साऊल और सब इस्राईलियों ने उस फ़िलिस्ती की बातें सुनीं, तो परेशान हुए और बहुत डर गए।

¹²और दाऊद बैतल हम यहूदाह के उस इफ़्राती आदमी का बेटा था जिसका नाम यस्सी था, उसके आठ बेटे थे और वह खुद साऊल के ज़माना के लोगों के बीच बुद्धा और उम्र दराज़ था।¹³और यस्सी के तीन बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे जंग में गए थे और उसके तीनों बेटों के नाम जो जंग में गए थे यह थे इलियाब जो पहलौठा था, और दूसरा अबीनदाब और तीसरा सम्मा।

¹⁴और दाऊद सबसे छोटा था और तीनों बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे थे।¹⁵और दाऊद बैतलहम में अपने बाप की भेड़ बकरियाँ चराने को साऊल के पास से आया जाया करता था।¹⁶और वह फ़िलिस्ती सुबह और शाम नज़दीक आता और चालिस दिन तक निकल कर आता रहा।

¹⁷और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि "इस भुने अनाज में से एक ऐफ़ा और यह दस रोटियाँ अपने भाइयों के लिए लेकर इनको जल्द लश्कर गाह, मैं अपने भाइयों के पास पहुँचा दे।¹⁸और उनके हज़ारी सरदार के पास पनीर की यह दस टिकियाँ लेजा और देख कि तेरे भाइयों का क्या हाल है, और उनकी कुछ निशानी ले आ।"

¹⁹और साऊल और वह भाई और सब इस्राईली जवान एला की वादी में फ़िलिस्तिनियों से लड़ रहे थे।²⁰और दाऊद सुबह को सवेरे उठा, और भेड़ बकरियों को एक रखवाले ~के पास छोड़ कर यस्सी के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ लेकर रवाना हुआ, और जब वह लश्कर जो लड़ने जा रहा था, जंग के लिए ललकार रहा था, उस वक़्त वह छकड़ों के पड़ाव में पहुँचा।²¹और इस्राईलियों और फ़िलिस्तिनियों ने अपने-अपने लश्कर को आमने सामने करके सफ़ आराई की।

²²और दाऊद अपना सामान असबाब के निगहबान के हाथ में छोड़ कर आप लश्कर में दौड़ गया और जाकर अपने भाइयों से ख़ैर-ओ- 'आफ़ियत पूछी।²³और वह उनसे बातें करता ही था कि देखो वह पहलवान जात का फ़िलिस्ती जिसका नाम जूलियत था फ़िलिस्ती सफ़ों में से निकला और उसने फिर वैसी ही बातें कहीं और दाऊद ने उनको सुना।²⁴और सब इस्राईली जवान उस शख्स को देख कर उसके सामने से भागे और बहुत डर गए।

²⁵तब इस्राईली जवान ऐसा कहने लगे, "तुम इस आदमी को जो निकला है देखते हो? यकीनन यह इस्राईल की बे'इज़ज़ती करने को आया है, इसलिए जो कोई उसको मार डाले उसे बादशाह बड़ी दौलत से माला माल करेगा और अपनी बेटी उसे ब्याह देगा, और उसके बाप के घराने को इस्राईल के बीच आज़ाद कर देगा।"

²⁶और दाऊद ने उन लोगों से जो उसके पास खड़े थे पूछा कि जो शख्स इस फ़िलिस्ती को मार कर यह नंग इस्राईल से दूर करे उस से क्या सुलूक किया जाएगा? क्योंकि यह ना मख़तून फ़िलिस्ती होता कौन है कि वह जिंदा ख़ुदा की फ़ौजों की बे'इज़ज़ती करे?।²⁷और लोगों ने उसे यही जवाब दिया कि उस शख्स से जो उसे मार डाले यह सुलूक किया जाएगा।

²⁸और उसके सब से बड़े भाई इलयाब ने उसकी बातों को जो वह लोगों से करता था सुना और इलयाब का गुस्सा दाऊद पर भड़का और वह कहने लगा, "तू यहाँ क्यूँ आया है? और वह थोड़ी सी भेड़ बकरियाँ तूने जंगल में किस के पास छोड़ीं? मैं तेरे घमंड और तेरे दिल की शरारत से वाकिफ़ हूँ, तू लड़ाई देखने आया है।"²⁹दाऊद ने कहा, ~"मैंने अब क्या किया? क्या बात ही नहीं हो रही है?"³⁰और वह उसके पास से फिर कर दूसरे की तरफ़ गया और वैसी ही बातें करने लगा और लोगों ने उसे फिर पहले की तरह जवाब दिया।

³¹और जब वह बातें जो दाऊद ने कहीं सुनने में आईं तो उन्होंने साऊल के आगे उनका ज़िक़्र किया और उसने उसे बुला भेजा।³²और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस शख्स की वजह से किसी का दिल न घबराए, तेरा खादिम जाकर उस फ़िलिस्ती से लड़ेगा।³³साऊल ने दाऊद से कहा कि तू इस क़ाबिल नहीं कि उस फ़िलिस्ती से लड़ने को उसके सामने जाए; क्योंकि तू महज़ लड़का है और वह अपने बचपन से जंगी जवान है।

³⁴तब दाऊद ने साऊल को जवाब दिया कि तेरा खादिम अपने बाप की भेड़ बकरियाँ चराता था और जब कभी कोई शेर या रीछ आकर झुंड में से कोई बर्रा उठा ले जाता।³⁵तो मैं उसके पीछे पीछे जाकर उसे मारता और उसे उसके मुँह से छुड़ाता था और जब वह मुझ पर झपटता तो मैं उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसे मारता और हलाक कर देता था।

³⁶तेरे खादिम ने शेर और रीछ दोनों को जान से मारा इसलिए यह नामख़तून फ़िलिस्ती उन में से एक की तरह होगा, इसलिए कि उसने ज़िन्दा ख़ुदा की फ़ौजों की बे'इज़ज़ती की है।

³⁷फिर दाऊद ने कहा, "खुदावन्द ने मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचाया, वही मुझको इस फ़िलिस्ती के हाथ से बचाएगा।" ~साऊल ने दाऊद से कहा, जा खुदावन्द तेरे साथ रहे। ³⁸तब साऊल ने अपने कपड़े दाऊद को पहनाए, और पीतल का टोप उसके सर पर रखवा और उसे ज़िरह भी पहनाई।

³⁹और दाऊद ने उसकी तलवार अपने कपड़ों पर कस ली और चलने की कोशिश की क्योंकि उसने इनको आजमाया नहीं था, तब दाऊद ने साऊल से कहा, "मैं इनको पहन कर चल नहीं सकता क्योंकि मैंने इनको आजमाया नहीं है।" इसलिए दाऊद ने उन सबको उतार दिया। ⁴⁰और उसने अपनी लाठी अपने हाथ में ली, और उस नाला से पाँच चिकने-चिकने पत्थर अपने वास्ते चुन कर उनको चरवाहे के थैले में जो उसके पास था, या'नी झोले में डाल लिया, और उसका गोफ़न उसके हाथ में था फिर वह फ़िलिस्ती के नज़दीक चला।

⁴¹और वह फ़िलिस्ती बढ़ा, और दाऊद के नज़दीक आया और उसके आगे-आगे उसका सिपर बरदार था। ⁴²और जब उस फ़िलिस्ती ने इधर उधर निगाह की और दाऊद को देखा तो उसे नाचीज़ जाना क्योंकि वह महज़ लड़का था, और सुखरु और नाजुक चेहरे का था। ⁴³तब फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, "क्या मैं कुत्ता हूँ, जो तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?" और उस फ़िलिस्ती ने अपने मा'बूदों का नाम लेकर दाऊद पर ला'नत की।

⁴⁴और उस फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, "तू मेरे पास आ, और मैं तेरा गोश्त हवाई परिंदों और जंगली जानवरों को दूँगा।" ⁴⁵और दाऊद ने उस फ़िलिस्ती से कहा कि "तू तलवार भाला और बरछी लिए हुए मेरे पास आता है, लेकिन मैं रब्ब-उल-अफ़वाज़ के नाम से जो इस्राईल के लश्करों का खुदा है, जिसकी तूने बे'इज़ज़ती की है तेरे पास आता हूँ।

⁴⁶और आज ही के दिन खुदावन्द तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझको मार कर तेरा सर तुझ पर से उतार लूँगा और मैं आज के दिन फ़िलिस्तीयों के लश्कर की लाशें हवाई परिंदों और ज़मीन के जंगली जानवरों को दूँगा ताकि दुनिया जान ले कि इस्राईल में एक खुदा है। ⁴⁷और यह सारी जमा'अत जान ले कि खुदावन्द तलवार और भाले के ज़रिए' से नहीं बचाता इसलिए कि जंग तो खुदावन्द की है, और वही तुमको हमारे हाथ में कर देगा।"

⁴⁸और ऐसा हुआ, कि जब वह फ़िलिस्ती उठा, और बढ़ कर दाऊद के मुकाबिला के लिए नज़दीक आया, तो दाऊद ने जल्दी की और लश्कर की तरफ़ उस फ़िलिस्ती से मुकाबिला करने को दौड़ा। ⁴⁹और दाऊद ने अपने थैले में अपना हाथ डाला और उस में से एक पत्थर लिया और गोफ़न में रख कर उस फ़िलिस्ती के माथे पर मारा और वह पत्थर उसके माथे के अंदर घुस गया और वह ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ा।

⁵⁰इसलिए दाऊद उस गोफ़न और एक पत्थर से उस फ़िलिस्ती पर गालिब आया और उस फ़िलिस्ती को मारा और क़त्ल किया और दाऊद के हाथ में तलवार न थी। ⁵¹और दाऊद दौड़ कर उस फ़िलिस्ती के ऊपर खड़ा हो गया, और उसकी तलवार पकड़ कर मियाँन से खींची और उसे क़त्ल किया और उसी से उसका सर काट डाला और फ़िलिस्तीयों ने जो देखा कि उनका पहलवान मारा गया तो वह भागे।

⁵²और इस्राईल और यहूदाह के लोग उठे और ललकार कर फ़िलिस्तीयों को गई और 'अक्रून के फाटकों तक दौड़ाया और फ़िलिस्तीयों में से जो ज़ख्मी हुए थे वह शा'रीम के रास्ते ~में और जात और 'अक्रून तक गिरते गए। ⁵³तब बनी इस्राईल फ़िलिस्तीयों के पीछे से उलटे फिरे और उनके खेमों को लूटा। ⁵⁴और दाऊद उस फ़िलिस्ती का सर लेकर उसे यरूशलीम में लाया और उसके हथियारों को उसने अपने डेरे में रख दिया।

⁵⁵जब साऊल ने दाऊद को उस फ़िलिस्ती का मुकाबिला करने के लिए जाते देखा तो उसने लश्कर के सरदार अबनेर से पूछा अबनेर यह लड़का किसका बेटा है? अबनेर ने कहा, ऐ बादशाह तेरी जान की क़सम में नहीं जानता। ⁵⁶तब बादशाह ने कहा, तू मा'लूम कर कि यह नौजवान किस का बेटा है।

⁵⁷और जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को क़त्ल कर के फ़िरा तो अबनेर उसे लेकर साऊल के पास लाया और फ़िलिस्ती का सर उसके हाथ में था। ⁵⁸तब साऊल ने उससे कहा, "ऐ जवान तू किसका बेटा है?" दाऊद ने जवाब दिया, "मैं तेरे खादिम बैतलहमी यस्सी का बेटा हूँ।"

Chapter 18

¹जब वह साऊल से बातें कर चुका, तो यूनतन का दिल दाऊद के दिल से ऐसा मिल गया कि यूनतन उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत करने लगा।² और साऊल ने उस दिन से उसे अपने साथ रखखा और फिर उसे उसके बाप के घर जाने न दिया।

³और यूनतन और दाऊद ने आपस में 'अहद किया, क्योंकि वह उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था।⁴ तब यूनतन ने वह क़बा जो वह पहने हुए था उतार कर दाऊद को दी और अपनी पोशाक बल्कि अपनी तलवार और अपनी कमान और अपना कमर बन्द तक दे दिया।

⁵और जहाँ, कहीं साऊल दाऊद को भेजता वह जाता और 'अक्लमन्दी से काम करता था, और साऊल ने उसे जंगी मदों पर मुकर्रर कर दिया और यह बात सारी क्रौम की और साऊल के मुलाज़िमों की नज़र में अच्छी थी।

⁶जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को क़त्ल कर के लौटा आता था, और वह सब भी आ रहे थे, तो इस्राईल के सब शहरों से 'औरतें गाती और नाचती हुई दफ़ों और खुशी के ना'रों और बाजों के साथ साऊल बादशाह के इस्तक्रबाल को निकलीं।⁷ और वह 'औरतें नाचती हुई गाती जाती थीं, कि साऊल ने तो हज़ारों को पर दाऊद ने लाखों को मारा।

⁸और साऊल निहायत ख़फ़ा हुआ क्योंकि वह बात उसे बड़ी बुरी लगी, और वह कहने लगा, कि उन्होंने दाऊद के लिए तो लाखों और मेरे लिए सिर्फ़ हज़ारों ही ठहराए। इसलिए बादशाही के 'अलावा उसे और क्या मिलना बाकी है? इसलिए उस दिन से आगे को साऊल दाऊद को बद गुमानों से देखने लगा।

¹⁰और दूसरे दिन ऐसा हुआ, कि खुदा कि तरफ़ से बुरी रूह साऊल पर ज़ोर से नाज़िल हुई और वह घर के अंदर नबुव्वत करने लगा, और दाऊद हर दिन ~की तरह अपने हाथ से बजा रहा था, और साऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए था।¹¹ तब साऊल ने भाला चलाया क्योंकि उसने कहा, कि मैं दाऊद को दीवार के साथ छेद दूँगा, और दाऊद उसके सामने से दो बार हट गया।¹² इसलिए साऊल दाऊद से डरा करता था क्योंकि खुदावन्द उसके साथ था और साऊल से अलग हो गया था।

¹³इसलिए साऊल ने उसे अपने पास से अलग कर के उसे हज़ार जवानों का सरदार बना दिया, और वह लोगों के सामने आया जाया करता था।¹⁴ और दाऊद अपनी सब राहों में 'अक्लमन्दी के साथ चलता था, और खुदावन्द उसके साथ था।

¹⁵जब साऊल ने देखा कि वह 'अक्लमन्दी से काम करता है, तो वह उससे डरने लगा।¹⁶ लेकिन पूरा इस्राईल और यहूदाह के लोग दाऊद को प्यार करते थे, इसलिए कि वह उनके सामने आया जाया करता था।

¹⁷तब साऊल ने दाऊद से कहा कि देख मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब को तुझ से ब्याह दूँगा, तू सिर्फ़ मेरे लिए बहादुरी का काम कर और खुदावन्द की लड़ाइयाँ लड़, क्योंकि साऊल ने कहा ~कि मेरा हाथ नहीं बल्कि फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर चले।¹⁸ दाऊद ने साऊल से कहा, "मैं क्या हूँ और मेरी हस्ती ही क्या और इस्राईल में मेरे बाप का खानदान क्या है, कि मैं बादशाह का दामाद बनूँ?"।

¹⁹लेकिन जब वक़्त आ गया कि साऊल की बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए, तो वह महुलाती 'अदरीएल से ब्याह दी गई।

²⁰और साऊल की बेटी मीकल दाऊद को चाहती थीं, इसलिए उन्होंने साऊल को बताया और वह इस बात से खुश हुआ।²¹ तब साऊल ने कहा, मैं उसी को उसे दूँगा, ताकि यह उसके लिए फंदा हो और फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े, इसलिए साऊल ने दाऊद से कहा कि इस दूसरी दफ़ा 'तो तू आज के दिन मेरा दामाद हो जाएगा।

²²और साऊल ने अपने ख़ादिमों को हुक्म किया कि दाऊद से चुपके चुपके बातें करो और कहो कि देख बादशाह तुझ से खुश है और उसके सब ख़ादिम तुझे प्यार करते हैं इसलिए अब तू बादशाह का दामाद बन जा।

²³चुनाँचे साऊल के मुलाज़िमों ने यह बातें दाऊद के कान तक पहुँचाई, दाऊद ने कहा, "क्या बादशाह का दामाद बनना तुमको कोई हल्की बात मा'लूम होती है, जिस हाल कि मैं गरीब आदमी हूँ और मेरी कुछ औक्रात नहीं?"²⁴ तब साऊल के मुलाज़िमों ने उसे बताया कि दाऊद ऐसा कहता है।

²⁵तब साऊल ने कहा, "तुम दाऊद से कहना कि बादशाह मेहर नहीं माँगता वह सिर्फ़ फ़िलिस्तियों की सौ खलड़ियाँ चाहता है, ताकि बादशाह के दुश्मनों से इन्तक़ाम लिया जाए, साऊल का यह इरादा था, कि दाऊद को फ़िलिस्तियों के हाथ से मरवा डाले।²⁶ जब उसके ख़ादिमों ने यह बातें दाऊद से कहीं तो दाऊद बादशाह का दामाद बनने को राज़ी हो गया और अभी दिन पूरे भी नहीं हुए थे।

²⁷कि दाऊद उठा, और अपने लोगों को लेकर गया और दो सौ फ़िलिस्ती क़त्ल कर डाले और दाऊद उनकी खलड़ियाँ लाया और उन्होंने उनकी पूरी ता'दाद में बादशाह को दिया ताकि वह बादशाह का दामाद हो, और साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे ब्याह दी।²⁸ और साऊल ने देखा और जान लिया कि खुदावन्द दाऊद के साथ है, और साऊल की बेटी मीकल उसे चाहती थी।²⁹ और साऊल दाऊद से और भी डरने लगा, और साऊल बराबर दाऊद का दुश्मन रहा।

³⁰फिर फ़िलिस्तियों के सरदारों ने धावा किया और जब जब उन्होंने धावा किया साऊल के सब ख़ादिमों की निस्बत दाऊद ने ज़्यादा 'अक्लमन्दी का काम किया इस से उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

Chapter 19

¹और साऊल ने अपने बेटे यूनतन और अपने सब खादिमों से कहा, कि दाऊद को मार डालो | ²लेकिन साऊल का बेटा यूनतन दाऊद से बहुत खुश था इसलिए यूनतन ने दाऊद से कहा, मेरा बाप तेरे क्रल की फ़िफ़्र में है, इसलिए तू सुबह को अपना खयाल रखना और किसी पोशीदा जगह में छिपे रहना | ³और मैं बाहर जाकर उस मैदान में जहाँ तू होगा अपने बाप के पास खड़ा हूँगा और अपने बाप से तेरे ज़रिए' बात करूँगा और अगर मुझे कुछ मा'लूम हो जाए तो तुझे बता दूँगा" |

⁴और यूनतन ने अपने बाप साऊल से दाऊद की ता'रीफ़ की और कहा, कि बादशाह अपने खादिम दाऊद से बुराई न करे क्योंकि उसने तेरा कुछ गुनाह नहीं किया बल्कि तेरे लिए उसके काम बहुत अच्छे रहे हैं | ⁵क्योंकि उसने अपनी जान हथेली पर रखी और उस फ़िलिस्ती को क्रल किया और खुदावन्द ने सब इसाईलियों के लिए बड़ी फ़तह कराई, तूने यह देखा और खुश हुआ, तब तू किस लिए दाऊद को बे वजह क्रल करके बे गुनाह के खून का मुजरिम बनना चाहता है?

⁶और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने क्रसम खाकर कहा कि खुदावन्द की हयात की क्रसम है वह मारा नहीं जाएगा | ⁷और यूनतन ने दाऊद को बुलाया और उसने वह सब बातें उसको बताई और यूनतन दाऊद को साऊल के पास लाया और वह पहले की तरह उसके पास रहने लगा |

⁸और फिर जंग हुई और दाऊद निकला और फ़िलिस्तीयों से लड़ा और बड़ी खूँरेज़ी के साथ उनको क्रल किया और वह उसके सामने से भागे | ⁹और खुदावन्द की तरफ़ से एक बुरी रूह साऊल पर जब वह अपने घर में अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था, चढ़ी और दाऊद हाथ से बजा रहा था, |

¹⁰और साऊल ने चाहा, कि दाऊद को दीवार के साथ भाले से छेद दे लेकिन वह साऊल के आगे से हट गया, और भाला दीवार में जा घुसा और दाऊद भागा और उस रात बच गया | ¹¹और साऊल ने दाऊद के घर पर क्रासिद भेजे कि उसकी ताक में रहें और सुबह को उसे मार डालें, इसलिए दाऊद की बीवी मीकल ने उससे कहा, "अगर आज की रात तू अपनी जान न बचाए तो कल मारा जाएगा |"

¹²और मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया, इसलिए वह चल दिया और भाग कर बच गया | ¹³और मीकल ने एक बुत को लेकर पलंग पर लिटा दिया, और बकरियों के बाल का तकिया सिरहाने रखकर उसे कपड़ों से ढांक दिया |

¹⁴और जब साऊल ने दाऊद के पकड़ने को क्रासिद भेजे तो वह कहने लगी, कि वह बीमार है | ¹⁵और साऊल ने क्रासिदों को भेजा कि दाऊद को देखें और कहा, कि उसे पलंग समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे क्रल करूँ |

¹⁶और जब वह क्रासिद अंदर आए, तो देखा कि पलंग पर बुत पड़ा है और उसके सिरहाने बकरियों के बाल का तकिया है | ¹⁷तब साऊल ने मीकल से कहा, "कि तू ने मुझ से क्यों ऐसी दगा की और मेरे दुश्मन को ऐसे जाने दिया कि वह बच निकला?" मीकल ने साऊल को जवाब दिया, कि वह मुझ से कहने लगा, मुझे जाने दे, मैं क्यों तुझे मार डालूँ?

¹⁸और दाऊद भाग कर बच निकला और रामा में समुएल के पास आकर जो कुछ साऊल ने उससे किया था, सब उसको बताया, तब वह और समुएल दोनों नयोत में जाकर रहने लगे | ¹⁹और साऊल को खबर मिली कि दाऊद रामा के बीच नयोत में है | ²⁰और साऊल ने दाऊद को पकड़ने को क्रासिद भेजे और उन्होंने जो देखा कि नबियों का मजमा' नबुव्वत कर रहा है और समुएल उनका सरदार बना खड़ा है तो खुदा की रूह साऊल के क्रासिदों पर नाज़िल हुई और वह भी नबुव्वत करने लगे |

²¹और जब साऊल तक यह खबर पहुँची तो उसने और क्रासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे और साऊल ने फिर तीसरी बार और क्रासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे | ²²तब वह खुद रामा को चला और उस बड़े कुर्वे पर जो सीको में है पहुँच कर पूछने लगा कि समुएल और दाऊद कहाँ ~हैं? और किसी ने कहा, कि देख वह रामा के बीच नयोत में हैं |

²³तब वह उधर रामा के नयोत की तरफ़ चला और खुदा की रूह उस पर भी नाज़िल हुई और वह चलते चलते नबुव्वत करता हुआ, रामा के नयोत में पहुँचा |

²⁴और उसने भी अपने कपड़े उतारे और वह भी समुएल के आगे नबुव्वत करने लगा, और उस सारे दिन और सारी रात गंगा पड़ा रहा, इसलिए यह कहावत चली, "क्या साऊल भी नबियों में है?"

Chapter 20

¹और दाऊद रामा के नयोत से भागा, और यूनतन के पास जाकर कहने लगा कि मैंने क्या किया है? मेरा क्या गुनाह है? मैंने तेरे बाप के आगे कौन सी गलती की है, जो वह मेरी जान चाहता है? ²उसने उससे कहा कि खुदा न करे, तू मारा नहीं जाएगा, देख मेरा बाप कोई काम बड़ा हो या छोटा नहीं करता जब तक उसे मुझ को न बताए, फिर भला मेरा बाप इस बात को क्यों मुझसे छिपाएगा? ऐसा नहीं।

³तब दाऊद ने क्रसम खाकर कहा कि तेरे बाप को अच्छी तरह मा'लूम है, कि मुझ पर तेरे करम की नज़र है इस लिए वह सोचता होगा, कि यूनतन को यह मा'लूम न हो नहीं तो वह दुखी होगा लेकिन यक़ीनन खुदावन्द की हयात और तेरी जान की क्रसम मुझ में और मौत में सिर्फ़ एक ही क्रदम का फ़ासला है।

⁴तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहता हो मैं तेरे लिए वही करूँगा। ⁵दाऊद ने यूनतन से कहा कि देख कल नया चाँद है, और मुझे लाज़िम है कि बादशाह के साथ खाने बैठूँ; लेकिन तू मुझे इजाज़त दे कि मैं परसों शाम तक मैदान में छिपा रहूँ।

⁶अगर मैं तेरे बाप को याद आऊँ तो कहना कि दाऊद ने मुझ से बजिद होकर इजाज़त माँगी ताकि वह अपने शहर बैतलहम को जाए, इसलिए कि वहाँ, सारे घराने की तरफ़ से सालाना कुर्बानी है। ⁷अगर वह कहे कि अच्छा तो तेरे चाकर की सलामती है लेकिन अगर वह गुस्से से भर जाए तो जान लेना कि उसने बदी की ठान ली है।

⁸तब तू अपने खादिम के साथ नरमी से पेश आ, क्योंकि तूने अपने खादिम को अपने साथ खुदावन्द के 'अहद में दाखिल कर लिया है, लेकिन अगर मुझ में कुछ बुराई हो तो तू खुद ही मुझे क्रल कर डाल तू मुझे अपने बाप के पास क्यों पहुँचाए ?। ⁹यूनतन ने कहा, "ऐसी बात कभी न होगी, अगर मुझे 'इल्म होता कि मेरे बाप का 'इरादा है कि तुझ से बदी करे तो क्या मैं तुझे खबर न करता?"

¹⁰फिर दाऊद ने यूनतन से कहा, "अगर तेरा बाप तुझे सख़्त जवाब दे तो कौन मुझे बताएगा?" ¹¹यूनतन ने दाऊद से कहा, "चल हम मैदान को निकल जाएँ।" चुनौचे वह दोनों मैदान को चले गए।

¹²तब यूनतन दाऊद से कहने लगा, "खुदावन्द इस्राईल का खुदा गवाह रहे, कि जब मैं कल या परसों 'अनक़रीब इसी वक़्त अपने बाप का राज़ लूँ और देखूँ कि दाऊद के लिए भलाई है तो क्या मैं उसी वक़्त तेरे पास कहला न भेजूँगा और तुझे न बताऊँगा?" ¹³खुदावन्द यूनतन से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करे अगर मेरे बाप की यही मर्जी हो कि तुझ से बुराई करे और मैं तुझे न बताऊँ और तुझे रुख़सत न करदूँ ताकि तू सलामत चला जाए और खुदावन्द तेरे साथ रहे, जैसा वह मेरे बाप के साथ रहा।

¹⁴और सिर्फ़ यहीं नहीं कि जब तक मैं जीता रहूँ तब ही तक तू मुझ पर खुदावन्द का सा करम करे ताकि मैं मर न जाऊँ; ¹⁵बल्कि मेरे घराने से भी कभी अपने करम को बाज़ न रखना और जब खुदावन्द तेरे दुश्मनों में से एक एक को ज़मीन पर से मिटा और बर्बाद कर डाले तब भी ऐसा ही करना। ¹⁶इसलिए यूनतन ने दाऊद के खानदान से 'अहद किया और कहा कि "खुदावन्द दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।

¹⁷और यूनतन ने दाऊद को उस मुहब्बत की वजह से जो उसको उससे थी दोबारा क्रसम खिलाई क्योंकि उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था। ¹⁸तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि "कल नया चाँद है और तू याद आएगा, क्योंकि तेरी जगह खाली रहेगी।" ¹⁹और अपने तीन दिन ठहरने के बाद तू जल्द जाकर उस जगह आ जाना जहाँ, तू उस काम के दिन छिपा था, और उस पत्थर के नज़दीक रहना जिसका नाम अज़ल है।

²⁰और मैं उस तरफ़ तीन तीर इस तरह चलाऊँगा, गोया निशाना मारता हूँ। ²¹और देख, मैं उस वक़्त लड़के को भेजूँगा कि जा तीरों को ढूँड ले आ, इसलिए अगर मैं लड़के से कहूँ कि देख, तीर तेरी इस तरफ़ हैं तो तू ~उनको उठा, कर ले आना क्योंकि खुदावन्द की हयात की क्रसम तेरे लिए सलामती होगी न कि नुक्सान।

²²लेकिन अगर मैं छोकरे से पूँ ~कहूँ कि देख, तीर तेरी उस तरफ़ हैं तो तू अपनी रास्ता लेना क्योंकि खुदावन्द ने तुझे रुख़सत किया है। ²³रहा वह मु'आमिला जिसका ज़िक्र तूने और मैंने किया है इस लिए देख, खुदावन्द हमेशा तक मेरे और तेरे बीच रहे।"

²⁴तब दाऊद मैदान में जा छिपा और जब नया चाँद हुआ तो बादशाह खाना खाने बैठा। ²⁵और बादशाह अपने दस्तूर के मुताबिक़ अपनी मसनद पर या'नी उसी मसनद पर जो दीवार के बराबर थी बैठा, और यूनतन खड़ा हुआ, और अबनेर साऊल के पहलू में बैठा, और दाऊद की जगह खाली रही।

²⁶लेकिन उस रोज़ साऊल ने कुछ न कहा, क्योंकि उसने गुमान किया कि उसे कुछ हो गया होगा, वह नापाक होगा, वह ज़रूर नापाक ही होगा। ²⁷और नए चाँद के बाद दूसरे दिन दाऊद की जगह फिर खाली रही, तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि "क्या वजह है, कि यस्सी का बेटा न तो कल खाने पर आया न आज आया है?"

²⁸तब यूनतन ने साऊल को जवाब दिया कि दाऊद ने मुझ से बजिद होकर बैतलहम जाने को इजाज़त माँगी। ²⁹वह कहने लगा कि "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ मुझे जाने दे क्योंकि शहर में हमारे घराने का ज़बीहा है और मेरे भाई ने मुझे हुक्म किया है कि हाज़िर रहूँ, अब अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूँ, इसीलिए वह बादशाह के दस्तरख़वान पर हाज़िर नहीं हुआ।"

³⁰तब साऊल का गुस्सा यूनतन पर भड़का और उसने उससे कहा, "ए कजरफ़तार चण्डालन के बेटे क्या मैं नहीं जानता कि तूने अपनी शर्मिंदगी और अपनी माँ की बरहन्गी की शर्मिंदगी के लिए यस्सी के बेटे को चुन लिया है?" ³¹क्योंकि जब तक यस्सी का यह बेटा इस ज़मीन पर ज़िन्दा है, न तो तुझ को क्रयाम होगा न तेरी बादशाहत को, इसलिए अभी लोग भेज कर उसे मेरे पास ला क्योंकि उसका मरना ज़रूर है।"

³²तब यूनतन ने अपने बाप साऊल को जवाब दिया "वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?" ³³तब साऊल ने भाला फेंका कि उसे मारे, इससे यूनतन जान गया कि उसके बाप ने दाऊद के क्रल का पूरा 'इरादा किया है। ³⁴इसलिए यूनतन बड़े गुस्सा में दस्तरख़वान पर से उठ गया और महीना के उस दूसरे दिन कुछ खाना न खाया क्योंकि वह दाऊद के लिए दुखी था इसलिए कि उसके बाप ने उसे रुसवा किया।

³⁵और सुबह को यूनतन उसी वक़्त जो दाऊद के साथ ठहरा था मैदान को गया और एक लड़का उसके साथ था। ³⁶और उसने अपने लड़के को हुक्म किया कि दौड़ और यह तीर जो मैं चलाता हूँ ढूँड ला और जब वह लड़का दौड़ा जा रहा था, तो उसने ऐसा तीर लगाया जो उससे आगे गया। ³⁷और जब वह लड़का उस तीर की जगह पहुँचा जिसे यूनतन ने चलाया था, तो यूनतन ने लड़के के पीछे पुकार कर कहा, "क्या वह तीर तेरी उस तरफ़ नहीं?"

³⁸ और यूनतन उस लड़के के पीछे चिल्लाया, तेज़ जा, ज़ल्दी कर ठहरमत ,इस लिए यूनतन के लड़के ने तीरों को जमा' किया और अपने आक्रा के पास लौटा।

³⁹ लेकिन उस लड़के को कुछ मा'लूम न हुआ, सिर्फ़ दाऊद और यूनतन ही इसका राज़ जानते थे ।⁴⁰ फिर यूनतन ने अपने हथियार उस लड़के को दिए और उससे कहा "इनको शहर को ले जा।"

⁴¹ जैसे ही वह लड़का चला गया दाऊद जुनूब की तरफ़ से निकला और ज़मीन पर औँधा ~होकर तीन बार सिज्दा किया और उन्होंने आपस में एक दूसरे को चूमा और आपस में रोए लेकिन दाऊद बहुत रोया ।⁴² और यूनतन ने दाऊद से कहा कि सलामत चला जा क्योंकि हम दोनों ने खुदावन्द के नाम की क़सम खाकर कहा है कि खुदावन्द मेरे और तेरे बीच और मेरी और तेरी नसल के बीच हमेशा तक रहे, इसलिए वह उठ कर रवाना हुआ और यूनतन शहर में चला गया ।

Chapter 21

¹और दाऊद नोब में अखीमलिक काहिन के पास आया; और अखीमलिक दाऊद से मिलने को काँपता हुआ आया और उससे कहा, "तू क्यूँ अकेला है, और तेरे साथ कोई आदमी नहीं?" ²दाऊद ने अखीमलिक काहिन से कहा कि "बादशाह ने मुझे एक काम का हुक्म करके कहा है, कि जिस काम पर मैं तुझे भेजता हूँ, और जो हुक्म मैंने तुझे दिया है वह किसी शख्स पर ज़ाहिर न हो इस लिए मैंने जवानों को फुलानी फुलानी जगह बिठा दिया है।

³इसलिए अब तेरे यहाँ क्या है? मेरे हाथ में रोटियों के पाँच टुकड़े या जो कुछ मौजूद हो दे।" ⁴काहिन ने दाऊद को जवाब दिया मेरे यहाँ 'आम रोटियाँ तो नहीं लेकिन पाक रोटियाँ हैं; बशर्ते कि वह जवान 'औरतों से अलग रहे हों।"

⁵दाऊद ने काहिन को जवाब दिया "सच तो यह है कि तीन दिन से 'औरतें हमसे अलग रहीं हैं, और अगरचे यह मा'मूली सफ़र है तोभी जब मैं चला था तब इन जवानों के बर्तन पाक थे, तो आज तो ज़रूर ही वह बर्तन पाक होंगे।" ⁶तब काहिन ने पाक रोटी उसको दी क्यूँकि और रोटी वहाँ नहीं थी, सिर्फ़ नज़र की रोटी थी, जो खुदावन्द के आगे से उठाई गई थी ताकि उसके बदले उस दिन जब वह उठाई जाए गर्म रोटी रखी जाए।

⁷और वहाँ उस दिन साऊल के खादिमों में से एक शख्स खुदावन्द के आगे रुका हुआ था, उसका नाम अदोमी दोएग था। यह साऊल के चरवाहों का सरदार था।

⁸फिर दाऊद ने अखीमलिक से पूछा "क्या यहाँ तेरे पास कोई नेज़ह या तलवार नहीं? क्यूँकि मैं अपनी तलवार और अपने हथियार अपने साथ नहीं लाया क्यूँकि बादशाह के काम की जल्दी थी।" ⁹उस काहिन ने कहा, कि "फ़िलिस्ती जोलियत की तलवार जिसे तूने एला की वादी में क़त्ल किया कपड़े में लिपटी हुई अफ़ूद के पीछे रखी है, अगर तु उसे लेना चाहता है तो ले, उसके 'अलावा यहाँ कोई और नहीं है।" दाऊद ने कहा, "वैसे तो कोई है ही नहीं, वही मुझे दे।"

¹⁰और दाऊद उठा, और साऊल के खौफ़ से उसी दिन भागा और जात के बादशाह अकीस के पास चला गया। ¹¹और अकीस के मुलाज़िमों ने उससे कहा, "क्या यही उस मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं? क्या इसी के बारे में नाचते वक्रत गा-गा कर उन्होंने आपस में नहीं कहा था कि साऊल ने तो हज़ारों को लेकिन दाऊद ने लाखों को मारा?"

¹²दाऊद ने यह बातें अपने दिल में रखीं और जात के बादशाह अकीस से निहायत डरा। ¹³इसलिए वह उनके आगे दूसरी चाल चला और उनके हाथ पड़ कर अपने को दीवाना सा बना लिया, और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचने और अपनी थूक को अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा।

¹⁴तब अकीस ने अपने नौकरों से कहा, "लो यह आदमी तो दीवाना है, तुम उसे मेरे पास क्यूँ लाए? ¹⁵क्या मुझे दीवानों की ज़रूरत है जो तुम उसको मेरे पास लाए हो कि मेरे सामने दीवाना पन करे? क्या ऐसा आदमी मेरे घर में आने पाएगा?"

Chapter 22

¹और दाऊद वहाँ से चला और 'अदूल्लाम के मगारे में भाग आया, और उसके भाई और उसके बाप का सारा घराना यह सुनकर उसके पास वहाँ पहुँचा।²और सब कंगाल और सब कर्जदार और सब बिगड़े दिल उसके पास जमा' हुए और वह उनका सरदार बना और उसके साथ क़रीबन चार सौ आदमी हो गए।

³और वहाँ से दाऊद मोआब के मिसफ़ाह को गया और मोआब के बादशाह से कहा, "मेरे माँ बाप को ज़रा यहीं आकर अपने यहाँ रहने दे जब तक कि मुझे मा'लूम न हो कि खुदा मेरे लिए क्या करेगा।"⁴और वह उनको शाहे मोआब के सामने ले आया, इसलिए वह जब तक दाऊद गढ़ में रहा, उसी के साथ रहे।⁵तब जाद नबी ने दाऊद से कहा, "इस गढ़ में मत रह, रवाना हो और यहूदाह के मुल्क में जा, इसलिए दाऊद रवाना हुआ, और हारत के बन में चला गया।

⁶और साऊल ने सुना कि दाऊद और उसके साथियों का पता लगा है, और साऊल उस वक़्त रामा के ज़िब'आ में झाऊ के दरख़्त के नीचे अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था और उसके खादिम उसके चारों तरफ़ खड़े थे।

⁷तब साऊल ने अपने खादिमों से जो उसके चारों तरफ़ खड़े थे कहा, "सुनों तो ऐ बिनयमीनों। क्या यस्सी का बेटा तुम मैं से हर एक को खेत और ताकिस्तान देगा और तुम सबको हज़ारों और सैकड़ों का सरदार बनाएगा?" जो तुम सब ने मेरे खिलाफ़ साज़िश की है और जब मेरा बेटा यस्सी के बेटे से 'अहद-ओ-पैमान करता है तो तुम मैं से कोई मुझ पर ज़ाहिर नहीं करता और तुम मैं कोई नहीं जो मेरे लिए ग़मगीन हो और मुझे बताए कि मेरे बेटे ने मेरे नौकर को मेरे खिलाफ़ घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है?"

⁹तब अदोमी दोएग ने जो साऊल के खादिमों के बराबर खड़ा था जवाब दिया कि मैंने यस्सी के बेटे को नोब में अखीतोब के बेटे अखीमलिक काहिन के पास आते देखा।¹⁰और उसने उसके लिए खुदावन्द से सवाल किया और उसे ज़ाद-ए-राह दिया और फ़िलिस्ती जूलियत की तलवार दी।"

¹¹तब बादशाह ने अखीतोब के बेटे अखीमलिक काहिन को और उसके बाप के सारे घराने को या'नी उन काहिनों को जो नोब में थे बुलवा भेजा और वह सब बादशाह के पास हाज़िर हुए।¹²और साऊल ने कहा, "ऐ अखीतोब के बेटे तू सुन। उसने कहा, "ऐ मेरे मालिक मैं हाज़िर हूँ।"¹³और साऊल ने उससे कहा कि "तुम ने या'नी तूने और यस्सी के बेटे ने क्यूँ मेरे खिलाफ़ साज़िश की है, कि तूने उसे रोटी और तलवार दी और उसके लिए खुदा से सवाल किया ताकि वह मेरे बर खिलाफ़ उठ कर घात लगाए जैसा आज के दिन है?"

¹⁴तब अखीमलिक ने बादशाह को जवाब दिया कि "तेरे सब खादिमों में दाऊद की तरह आमानतदार कौन है? वह बादशाह का दामाद है, और तेरे दरबार में हाज़िर हुआ, करता और तेरे घर में मु'अज़िज़ है।"¹⁵और क्या मैंने आज ही उसके लिए खुदा से सवाल करना शुरू किया? ऐसी बात मुझ से दूर रहे, बादशाह अपने खादिम पर और मेरे बाप के सारे घराने पर कोई इल्ज़ाम न लगाए क्यूँकि तेरा खादिम उन बातों को कुछ नहीं जानता, न थोड़ा न बहुत।"

¹⁶बादशाह ने कहा, "ऐ अखीमलिक! तू और तेरे बाप का सारा घराना ज़रूर मार डाला जाएगा।"¹⁷फिर बादशाह ने उन सिपाहियों को जो उसके पास खड़े थे हुक्म किया कि "मुझे और खुदावन्द के काहिनों को मार डालो क्यूँकि दाऊद के साथ इनका भी हाथ है और इन्होंने यह जानते हुए भी कि वह भागा हुआ है मुझे नहीं बताया।" लेकिन बादशाह के खादिमों ने खुदावन्द के काहिनों पर हमला करने के लिए हाथ बढाना न चाहा।

¹⁸तब बादशाह ने दोएग से कहा, "तू मुझे और उन काहिनों पर हमला कर इसलिए अदोमी दोएग ने मुझे कर काहिनों पर हमला किया" और उस दिन उसने पचासी आदमी जो कतान के अफ़ूद पहने थे क़त्ल किए।¹⁹और उसने काहिनों के शहर नोब को तलवार की धार से मारा और मर्दों और औरतों और लड़कों और दूध पीते बच्चों और बैलों और गधों और भेड़ बकरियों को बरबाद किया।

²⁰और अखीतोब के बेटे अखीमलिक के बेटों में से एक जिसका नाम अबीयातर था बच निकला और दाऊद के पास भाग गया।²¹और अबीयातर ने दाऊद को ख़बर दी कि "साऊल ने खुदावन्द के काहिनों को क़त्ल कर डाला है।"

²²दाऊद ने अबीयातर से कहा, "मैं उसी दिन जब अदोमी दोएग वहाँ मिला जान गया था कि वह ज़रूर साऊल को ख़बर देगा तेरे बाप के सारे घराने के मारे जाने की वजह ~मैं हूँ।"²³इसलिए तू मेरे साथ रह और मत डर -जो तेरी जान चाहता ~है, वह मेरी जान चाहता है, इसलिए तू मेरे साथ सलामत रहेगा।"

Chapter 23

¹और उन्होंने दाऊद को खबर दी कि "देख, फ़िलिस्ती क़'ईला से लड़ रहे हैं और खलिहानों को लूट रहे हैं।" ²तब दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि "क्या मैं जाऊँ और उन फ़िलिस्तियों को मारूँ?" खुदावन्द ने दाऊद को फ़रमाया, "जा फ़िलिस्तियों को मार और क़'ईला को बचा।"

³और दाऊद के लोगों ने उससे कहा कि "देख, हम तो यहीं यहूदाह में डरते हैं, तब हम क़'ईला को जाकर फ़िलिस्ती लश्करों का सामना करें तो कितना ज़्यादा न डर लगेगा?" तब दाऊद ने खुदावन्द से फिर सवाल किया, खुदावन्द ने जवाब दिया कि "उठ क़'ईला को जा क्योंकि मैं फ़िलिस्तियों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।"

⁵इसलिए दाऊद और उसके लोग क़'ईला को गए और फ़िलिस्तियों से लड़े और उनकी मवाशी ले आए और उनको बड़ी खूँरज़ी के साथ क़त्ल किया, वूँ दाऊद ने क़'ईलियों को बचाया। ⁶जब अखीमलिक का बेटा अबीयातर दाऊद के पास क़'ईला को भागा तो उसके हाथ में एक अफ़ूद था जिसे वह साथ ले गया था।

⁷और साऊल को खबर हुई कि दाऊद क़'ईला में आया है इसलिए साऊल कहने लगा कि "खुदा ने उसे मेरे क़ब्ज़े में कर दिया क्योंकि वह जो ऐसे शहर में घुसा है, जिस में फाटक और अड़बंगे हैं तो कैद हो गया है।" ⁸और साऊल ने जंग के लिए अपने सारे लश्कर को बुला लिया ताकि क़'ईला में जाकर दाऊद और उसके लोगों को घेर ले। ⁹और दाऊद को मा'लूम हो गया कि साऊल उसके खिलाफ़ बुराई की तदबीरें कर रहा है, इसलिए उसने अबीयातर काहिन से कहा कि "अफ़ूद यहाँ ले आ।"

¹⁰और दाऊद ने कहा, "ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा तेरे बन्दे ने यह क़त'ई सुना है कि साऊल क़'ईला को आना चाहता है ताकि मेरी वजह से शहर को बरबाद करदे।" ¹¹तब क्या क़'ईला के लोग मुझको उसके हवाले कर देंगे? क्या साऊल जैसा तेरे बन्दे ने सुना है आया? ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपने बन्दे को बता दे।" खुदावन्द ने कहा, "वह आया।"

¹²तब दाऊद ने कहा कि "क्या क़'ईला के लोग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?" खुदावन्द ने कहा, "वह तुझे हवाले कर देंगे।"

¹³तब दाऊद और उसके लोग जो क़रीबन छः सौ थे उठकर क़'ईला से निकल गए और जहाँ कहीं जा सके चल दिए और साऊल को खबर मिली कि दाऊद क़'ईला से निकल गया तब वह जाने से बाज़ रहा। ¹⁴और दाऊद ने वीराने के क़िलों में सुकूनत की और दशत ऐ ज़ीफ़ के पहाड़ी मुल्क में रहा, और साऊल हर रोज़ उसकी तलाश में रहा, लेकिन खुदावन्द ने उसको उसके क़ब्ज़े में हवाले न किया।

¹⁵और दाऊद ने देखा कि साऊल उसकी जान लेने को निकला है, उस वक़्त दाऊद दशत-ए-ज़ीफ़ के बन में था। ¹⁶और साऊल का बेटा यूनतन उठकर दाऊद के पास बन में गया और खुदा में उसका हाथ मज़बूत किया।

¹⁷उसने उससे कहा, "तू मत डर क्योंकि तू मेरे बाप साऊल के हाथ में नहीं पड़ेगा और तू इस्राईल का बादशाह होगा और मैं तुझ से दूसरे दर्जे पर हूँगा, यह मेरे बाप साऊल को भी मा'लूम है।" ¹⁸और उन दोनों ने खुदावन्द के आगे 'अहद ओ पैमान किया और दाऊद बन में ठहरा रहा, और यूनतन अपने घर को गया।

¹⁹तब ज़ीफ़ के लोग जिबा' में साऊल के पास जाकर कहने लगे, "क्या दाऊद हमारे बीच कोहे हकीला के बन के क़िलों में जंगल के जुनूब की तरफ़ छिपा नहीं है?" ²⁰इसलिए अब ऐ बादशाह तेरे दिल को जो बड़ी आरजू आने की है उसके मुताबिक़ आ और उसको बादशाह के हाथ में हवाले करना हमारा ज़िम्मा रहा।"

²¹तब साऊल ने कहा, "खुदावन्द की तरफ़ से तुम मुबारक हो क्योंकि तुमने मुझ पर रहम किया।" ²²इसलिए अब ज़रा जाकर सब कुछ और पक्का कर लो और उसकी जगह को देख, कर जान लो कि उसका ठिकाना कहाँ है, और किसने उसे वहाँ देखा है, क्योंकि मुझ से कहा, गया है कि वह बड़ी चालाकी से काम करता है। ²³इसलिए तुम देख भाल कर जहाँ-जहाँ वह छिपा करता है उन ठिकानों का पता लगा कर ज़रूर मेरे पास फिर आओ और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और अगर वह इस मुल्क में कहीं भी हो तो मैं उसे यहूदाह के हज़ारों हज़ार में से ढूँड निकालूँगा।"

²⁴इसलिए वह उठे और साऊल से पहले ज़ीफ़ को गए लेकिन दाऊद और उसके लोग म'ऊन के वीराने में थे जो जंगल के जुनूब की तरफ़ मैदान में था। ²⁵और साऊल और उसके लोग उसकी तलाश में निकले और दाऊद को खबर पहुँची, इसलिए वह चट्टान पर से उतर आया और म'ऊन के वीराने में रहने लगा, और साऊल ने यह सुनकर म'ऊन के वीराने में दाऊद का पीछा किया।

²⁶और साऊल पहाड़ की इस तरफ़ और दाऊद और उसके लोग पहाड़ की उस तरफ़ चल रहे थे, और दाऊद साऊल के खौफ़ से निकल जाने की जल्दी कर रहा था इसलिए कि साऊल और उसके लोगों ने दाऊद को और उसके लोगों को पकड़ने के लिए घेर लिया था। ²⁷लेकिन एक क़ासिद ने आकर साऊल से कहा कि "जल्दी चल क्योंकि फ़िलिस्तियों ने मुल्क पर हमला किया है।"

²⁸इसलिए साऊल दाऊद का पीछा छोड़ कर फ़िलिस्तियों का मुकाबिला करने को गया इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम सिला'हम्मखल्कोत रखखा। ²⁹और दाऊद वहाँ से चला गया और 'ऐन जदी के क़िलों में रहने लगा।

Chapter 24

¹जब साऊल फ़िलिस्तिनियों का पीछा करके लौटा तो उसे खबर मिली कि दाऊद 'ऐन जदी के वीराने में हैं'।²इसलिए साऊल सब इसाईलियों में से तीन हज़ार चुने हुए जवान लेकर जंगली बकरों की चट्टानों पर दाऊद और उसके लोगों की तलाश में चला।

³और वह रास्ता में भेड़ सालो के पास पहुँचा जहाँ एक ग़ार था, और साऊल उस ग़ार में फ़रागत करने घुसा और दाऊद अपने लोगों के साथ उस ग़ार के अंदरूनी खानों में बैठा था।⁴और दाऊद के लोगों ने उससे कहा, "देख, यह वह दिन है, जिसके बारे में ~खुदावन्द ने तुझ से कहा था कि देख, मैं तेरे दुश्मन को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा और जो तेरा जी चाहे वह तू उससे करना" इसलिए दाऊद उठकर साऊल के जुब्बे का दामन चुपके से काट ले गया।

⁵और उसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद का दिल बेचैन हुआ, इसलिए कि उसने साऊल के जुब्बे का दामन काट लिया था।⁶और उसने अपने लोगों से कहा कि "खुदावन्द न करे कि मैं अपने मालिक से जो खुदावन्द का मम्सूह ~है, ऐसा काम करूँ कि अपना हाथ उस पर चलाऊँ इसलिए कि वह खुदावन्द का मम्सूह है।"⁷इसलिए दाऊद ने अपने लोगों को यह बातें कह कर रोका और उनको साऊल पर हमला करने न दिया और साऊल उठ कर ग़ार से निकला और अपनी राह ली।

⁸और बाद उसके दाऊद भी उठा, और उस ग़ार में से निकला और साऊल के पीछे पुकार कर कहने लगा, "ऐ मेरे मालिक बादशाह!" जब साऊल ने पीछे फिर कर देखा तो दाऊद ने आँधे मुँह गिरकर सिज्दा किया।⁹और दाऊद ने साऊल से कहा, "तू क्यों ऐसे लोगों की बातों को सुनता है, जो कहते हैं कि दाऊद तेरी बदी चाहता है?"

¹⁰देख, आज के दिन तूने अपनी आँखों से देखा कि खुदावन्द ने ग़ार में आज ही तुझे मेरे क़ब्ज़े में कर दिया और कुछ ने मुझ से कहा, भी कि तुझे मार डालूँ लेकिन मेरी आँखों ने तेरा लिहाज़ किया और मैंने कहा कि मैं अपने मालिक पर हाथ नहीं चलाऊँगा क्योंकि वह खुदावन्द का मम्सूह है।¹¹अलावा इसके ऐ मेरे बाप देख, यह भी देख, कि तेरे जुब्बे का दामन मेरे हाथ में है, और चूँकि मैंने तेरे जुब्बे का दामन काटा और तुझे मार नहीं डाला इसलिए तू जान ले और देख, ले कि मेरे हाथ में किसी तरह, की बदी या बुराई नहीं और मैंने तेरा कोई गुनाह नहीं किया अगर मैं ~तू मेरी जान लेने के दर्पे है।

¹²खुदावन्द मेरे और तेरे बीच इन्साफ़ करे और खुदावन्द तुझ से मेरा बदला ले लेकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा।¹³~पुराने लोगों कि मिसाल है, कि बुरों से बुराई होती है लेकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा।

¹⁴इसाईल का बादशाह किस के पीछे निकला? तू किस के पीछे पड़ा है? एक मरे हुए कुत्ते के पीछे, एक पिस्सू के पीछे।¹⁵जब खुदावन्द ही मुंसिफ हो और मेरे और तेरे बीच फ़ैसला करे और देखे, और मेरा मुक़द्दमा लड़े और तेरे हाथ से मुझे छुड़ाए।"

¹⁶और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद यह बातें साऊल से कह चुका तो साऊल ने कहा, "ऐ मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज़ है? और साऊल चिल्ला कर रोने लगा।"

¹⁷और उसने दाऊद से कहा, "तू मुझ से ज़्यादा सच्चा है इसलिए कि तूने मेरे साथ भलाई की है, हालाँकि मैंने तेरे साथ बुराई की।"¹⁸और तूने आज के दिन ज़ाहिर कर दिया कि तूने मेरे साथ भलाई की है क्योंकि जब खुदावन्द ने मुझे तेरे क़ब्ज़े में कर दिया तो तूने मुझे क़त्ल न किया।

¹⁹भला क्या कोई अपने दुश्मन को पाकर उसे सलामत जाने देता है? इसलिए खुदावन्द उसने की के बदले जो तूने मुझ से आज के दिन की तुझ को नेक अज़्र दे।²⁰और अब देख, मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू यक़ीनन बादशाह होगा और इसाईल की सल्तनत तेरे हाथ में पड़ कर क़ायम होगी।

²¹इसलिए अब मुझ से खुदावन्द की क़सम खा कि तू मेरे बाद मेरी नसल को हलाक नहीं करेगा और मेरे बाप के घराने में से मेरे नाम को मिटा नहीं डालेगा।²²इसलिए दाऊद ने साऊल से क़सम खाई और साऊल घर को चला गया पर दाऊद और उसके लोग उस गढ़ में जा बैठे।

Chapter 25

¹और समुएल मर गया और सब इसाईली जमा' हुए और उन्होंने उस पर नौहा किया और उसे रामा में उसी के घर में दफन किया और दाऊद उठ कर फ़ारान के जंगल को चला गया ।

²और म'ऊन में एक शख्स रहता था जिसकी जायदाद करमिल में थी यह शख्स बहुत बड़ा था और उस के पास तीन हज़ार भेड़ें और एक हज़ार बकरियाँ थीं और यह करमिल में अपनी भेड़ों के बाल कतर रहा था । ³इस शख्स का नाम नाबाल और उसकी बीवी का नाम अबीजेल था ,यह 'औरत बड़ी समझदार और खूबसूरत थी लेकिन वह आदमी बड़ा बे अदब और बदकार था और वह कालिब के खानदान से था ।

⁴और दाऊद ने वीराने में सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों के बाल कतर रहा,है । ⁵इसलिए दाऊद ने दस जवान रवाना किए और उसने उन जवानों से कहा,कि तुम करमिल पर चढ़कर नाबाल के पास जाओ,और मेरा नाम लेकर उसे सलाम कहो । ⁶और उस खुश हाल आदमी से यूँ कहो कि तेरी और तेरे घर कि और तेरे माल असबाब की सलामती हो ।

⁷मैंने अब सुना है कि तेरे यहाँ बाल कतरने वाले हैं और तेरे चरवाहे हमारे साथ रहे और हमने उनको नुक्सान नहीं पहुँचाया और जब तक वह करमिल में हमारे साथ रहे उनकी कोई चीज़ खोई न गई। ⁸तू अपने जवानों से पूछ और वह तुझे बताएँगे ,तब इन जवानों पर तेरे करम की नज़र हो इसलिए कि हम अच्छे दिन आए हैं ,मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि जो कुछ तेरे क़ब्ज़े में आए अपने खादिमों को और अपने बेटे दाऊद को 'अता कर। "

⁹इसलिए दाऊद के जवानों ने जाकर नाबाल से दाऊद का नाम लेकर यह बातें कहीं और चुप हो रहे । ¹⁰नाबाल ने दाऊद के खादिमों को जवाब दिया "कि दाऊद कौन है ?और यस्सी का बेटा कौन है ?इन दिनों बहुत से नौकर ऐसे हैं जो अपने आक्रा के पास से भाग जाते हैं । ¹¹क्या मैं अपनी रोटी और पानी और ज़बीहे जो मैंने अपने कतरने वालों के लिए ज़बह किए हैं ,लेकर उन लोगों को दूँ जिनको मैं नहीं जानता कि वह कहाँ के हैं ? । "

¹²इसलिए दाऊद के जवान उलटे पाँव फिरे और लौट गए और आकर यह सब बातें उसे बताईं । ¹³तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "अपनी अपनी तलवार बाँध लो ,इसलिए हर एक ने अपनी तलवार बाँधी और दाऊद ने भी अपनी तलवार लटकाई ,तब क़रीबन चार सौ जवान दाऊद के पीछे चले और दो सौ सामान के पास रहे ।

¹⁴और जवानों में से एक ने नाबाल की बीवी अबीजेल से कहा,कि देख,दाऊद ने वीराने से हमारे आक्रा को मुबारकबाद देने को क़ासिद भेजे लेकिन वह उन पर झुंझलाया । ¹⁵लेकिन इन लोगों ने हम से बड़ी नेकी की और हमारा नुक्सान नहीं हुआ,और मैदानों में जब तक हम उनके साथ रहे हमारी कोई चीज़ गुम न हुई ।

¹⁶बल्कि जब तक हम उनके साथ भेड़ बकरी चराते रहे वह रात दिन हमारे लिए गोया दीवार थे । ¹⁷इसलिए अब सोच समझ ले कि तू क्या करेगी क्योंकि हमारे आक्रा और उसके सब घराने के खिलाफ़ बदी का मंसूबा बाँधा गया है ,क्योंकि यह ऐसा खबीस आदमी है कि कोई इस से बात नहीं कर सकता । "

¹⁸तब अबीजेल ने जल्दी की और दो सौ रोटियाँ और मय के दो मश्कीज़े और पाँच पकी पकाई भेंड़ें और भुने हुए अनाज के पाँच पैमाने और किशमिश के एक सौ खोशे और इन्ज़ीर की दो सौ टिकियाँ साथ लीं और उनको गर्थों पर लाद लिया । ¹⁹और अपने चाकरों से कहा, "तुम मुझ से आगे जाओ,देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूँ "और उसने अपने शोहर नाबाल को खबर न की ।

²⁰और ऐसा हुआ,कि जैसे ही वह गधे पर चढ़ कर पहाड़ की आड़ से उतरी दाऊद अपने लोगों के साथ उतरते हुए उसके सामने आया और वह उनको मिली ।

²¹और दाऊद ने कहा, था "कि मैं इस पाजी के सब माल की जो वीराने में था बे फ़ाइदा इस तरह निगहबानी की कि उसकी चीज़ों में से कोई चीज़ गुम न हुई क्योंकि उसने नेकी के बदले मुझ से बदी की । ²²इसलिए अगर मैं सुबह की रोशनी होने तक उसके-लोगों में से एक लड़का भी बाकी छोड़ूँ तो खुदावन्द दाऊद के दुश्मनों से ऐसा ही बल्कि इससे ज़्यादा ही करे। "

²³और अबीजेल ने जो दाऊद को देखा,तो जल्दी की और गधे से उतरी और दाऊद के आगे औंधी गिरीं और ज़मीन पर सरनूँ-हो गई । ²⁴और वह उसके पाँव पर गिर कर कहने लगी, "मुझ पर ऐ मेरे मालिक मुझी पर यह गुनाह हो और ज़रा अपनी लौंडी को इजाज़त दे कि तेरे कान में कुछ कहे और तू अपनी लौंडी की दरख्वास्त सुन ।

²⁵मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि मेरा मालिक उस खबीस आदमी नाबाल का कुछ खयाल न करे क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह है उसका नाम नाबाल है और हिमाक़त उसके साथ है लेकिन मैंने जो तेरी लौंडी हूँ अपने मालिक के जवानों को जिनको तूने भेजा था नहीं देखा । ²⁶और अब ऐ मेरे मालिक !खुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान ही की क़सम कि खुदावन्द ने जो तुझे ख़ूँरज़ी से और अपने ही हाथो अपना इन्तक़ाम लेने से बाज़ रखखा है इसलिए तेरे दुश्मन और मेरे मालिक के बुराई चाहने वाले नाबाल की तरह ठहरें ।

²⁷अब यह हदिया जो तेरी लौंडी अपने मालिक के सामने लाई है,उन जवानों को जो मेरे खुदावन्द की पैरवी करते हैं दिया जाए । ²⁸तू अपनी लौंडी का गुनाह मु'आफ़ करदे क्योंकि खुदावन्द य़कीनन मेरे मालिक का घर कायम रखखेगा इसलिए कि मेरे मालिक खुदावन्द की लड़ाईयाँ लड़ता है और तुझ में तमाम 'उम्र बुराई नहीं पाई जाएगी ।

²⁹और जो इन्सान तेरा पीछा करने और तेरी जान लेने को उठे तोभी मेरे मालिक की जान ज़िन्दगी के बूक़चे में खुदावन्द तेरे खुदा के साथ बंधी रहेगी लेकिन तेरे दुश्मनों की जानें वह गोया गोफ़न में रखकर फेंक देगा ।

³⁰और जब खुदावन्द मेरे मालिक से वह सब नेकियाँ जो उसने तेरे हक़ में फ़रमाई हैं कर चुकेगा और तुझ को इसाईल का सरदार बना देगा । ³¹तो तुझे इसका ग़म और मेरे मालिक को यह दिली सदमा न होगा कि तूने बे वजह खून बहाया या मेरे मालिक ने अपना बदला लिया और जब खुदावन्द मेरे मालिक से भलाई करे तो तू अपनी लौंडी को याद करना । "

³²दाऊद ने अबीजेल से कहा, "कि खुदावन्द इसाईल का खुदा मुबारक हो जिसने तुझे आज के दिन मुझ से मिलने को भेजा । ³³और तेरी 'अक़लमंदी मुबारक तू खुद भी मुबारक हो जिसने मुझको आज के दिन ख़ूँरज़ीऔर अपने हाथों अपना बदला लेने से बाज़ रखखा ।

³⁴क्योंकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हयात की क्रसम जिसने मुझे तुझको नुक्सान पहुंचाने से रोका कि अगर तू जल्दी न करती और मुझ से मिलने को न आती तो सुबह की रोशनी तक नाबाल के लिए एक लड़का भी न रहता।" ³⁵और दाऊद ने उसके हाथ से जो कुछ वह उसके लिए लाई थी कुबूल किया और उससे कहा, "अपने घर सलामत जा, देख मैंने तेरी बात मानी और तेरा लिहाज़ किया।"

³⁶और अबीजेल नाबाल के पास आई और देखा कि उसने अपने घर में शाहाना ज़ियाफ़त की तरह दावत कर रखी है और नाबाल का दिल उसके पहलू में खुश है इसलिए कि वह नशे में चूर था, इसलिए उसने उससे सुबह की रोशनी तक न थोड़ा न बहुत कुछ न कहा,।

³⁷सुबह को जब नाबाल का नशा उतर गया तो उसकी बीवी ने यह बातें उसे बताईं तब उसका दिल उसके पहलू में मुर्दा हो गया और वह पत्थर की तरह सुन पड़ गया। ³⁸और दस दिन के बाद ऐसा हुआ कि खुदावन्द ने नाबाल को मारा और वह मर गया।

³⁹जब दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया तो वह कहने लगा, "कि खुदावन्द मुबारक हो जो नाबाल से मेरी रुसवाई का मुकद्दमा लड़ा और अपने बन्दे को बुराई से बाज़ रखवा और खुदावन्द ने नाबाल की शरारत को उसी के सिर पर लादा।" और दाऊद ने अबीजेल के बारे में पैग़ाम भेजा ताकि उससे शादी करे। ⁴⁰और जब दाऊद के खादिम करमिल में अबीजेल के पास आए तो उन्होंने उससे कहा, "कि दाऊद ने हमको तेरे पास भेजा है ताकि हम तुझे उससे शादी करने को लें जाएँ।"

⁴¹इसलिए वह उठी, और ज़मीन पर ओंठे मुँह गिरी और कहने लगी "कि देख, तेरी लौंडी तो नौकर है ताकि अपने मालिक के खादिमों के पाँव धोए।" ⁴²और अबीजेल ने जल्दी की और उठकर गधे पर सवार हुई और अपनी पाँच लौंडियाँ जो उसके जिलौ में थीं साथ लेलीं और वह दाऊद के क़ासिदों के पीछे पीछे गई और उसकी बीवी बनी।

⁴³और दाऊद ने यज़र'एल की अखीनु'अम को भी ब्याह लिया, इसलिए वह दोनों उसकी बीवियाँ बनीं। ⁴⁴और साऊल ने अपनी बेटी मीकल को जो दाऊद की बीवी थी लैस के बेटे जिल्लीमी फिल्ती को दे दिया था।

Chapter 26

¹और ज़ीफ़ी जिबा' में साऊल के पास जाकर कहने लगे, "क्या दाऊद हकीला के पहाड़ में जो जंगल के सामने है, छिपा हुआ, नहीं?"²तब साऊल उठा, और तीन हज़ार चुने हुए इस्राईली जवान अपने साथ लेकर ज़ीफ़ के जंगल को गया ताकि उस जंगल में दाऊद को तलाश करे।

³और साऊल हकीला के पहाड़ में जो जंगल के सामने है रास्ता के किनारे खेमा ज़न हुआ, पर दाऊद जंगल में रहा, और उसने देखा कि साऊल उसके पीछे जंगल में आया है।⁴तब दाऊद ने जासूस भेज कर मा'लूम कर लिया कि साऊल ~हक्कीक़त में आया है?

⁵तब दाऊद उठ कर साऊल की खेमागाह, में आया और वह जगह देखी जहाँ साऊल और नेर का बेटा अबनेर भी जो उसके लश्कर का सरदार था आराम कर रहे थे और साऊल गाड़ियों की जगह के बीच सोता था और लोग उसके चारों तरफ़ डेरे डाले हुए थे।

⁶तब दाऊद ने हिती अखीमलिक जरुयाह के बेटे अबीशै से जो योआब का भाई था कहा "कौन मेरे साथ साऊल के पास खेमागाह में चलेगा?" अबीशै ने कहा, "मैं तेरे साथ चलूँगा।"⁷इसलिए दाऊद और अबीशै रात को लश्कर में घुसे और देखा कि साऊल गाड़ियों की जगह के बीच में पड़ा सो रहा है और उसका नेज़ा उसके सरहाने ज़मीन में गड़ा हुआ है और अबनेर और लश्कर के लोग उसके चारों तरफ़ पड़े हैं।⁸तब अबीशै ने दाऊद से कहा, "खुदा ने आज के दिन तेरे दुश्मन को तेरे हाथ में कर दिया है इसलिए अब तू ज़रा मुझको इजाज़त दे कि नेज़े के एक ही वार में उसे ज़मीन से पैवंद कर दूँ और मैं उस पर दूसरा वार करने का भी नहीं।

⁹दाऊद ने अबीशै से कहा, "उसे क़त्ल न कर क्योंकि कौन है जो खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ उठाए और बे गुनाह ठहरे।"¹⁰और दाऊद ने यह भी कहा, "कि खुदावन्द की हयात की क़सम खुदावन्द आप उसको मारेगा या उसकी मौत का दिन आएगा या वह जंग में जाकर मर जाएगा।

¹¹लेकिन खुदावन्द न करे कि मैं खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ चलाऊँ पर ज़रा उसके सरहाने से यह नेज़ा और पानी की सुराही उठा, ले फिर हम चले चलें।"¹²इसलिए दाऊद ने नेज़ा और पानी की सुराही साऊल के सरहाने से उठा ली और वह चल दिए और न किसी आदमी ने यह देखा और न किसी को खबर हुई और न कोई जागा क्योंकि वह सब के सब सोते थे इसलिए कि खुदावन्द की तरफ़ से उन पर गहरी नींद आई हुई थी।

¹³फिर दाऊद दूसरी तरफ़ जाकर उस पहाड़ की चोटी पर दूर खड़ा रहा, और उनके बीच एक बड़ा फ़ासला था।¹⁴और दाऊद ने उन लोगों को और नेर के बेटे अबनेर को पुकार कर कहा, "ऐ अबनेर तु जवाब नहीं देता? अबनेर ने जवाब दिया "तू कौन है जो बादशाह को पुकारता है?"

¹⁵दाऊद ने अबनेर से कहा, "क्या तू बड़ा बहादुर नहीं और कौन बनी इस्राईल में तेरा नज़ीर है? फिर किस लिए तूने अपने मालिक बादशाह की निगहबानी न की? क्योंकि एक शख्स तेरे मालिक बादशाह को क़त्ल करने घुसा था।¹⁶तब यह काम तूने कुछ अच्छा न किया खुदावन्द कि हयात की क़सम तुम क़त्ल के लायक़ हो क्योंकि तुमने अपने मालिक की जो खुदावन्द का मम्सूह है, निगहबानी न की अब ज़रा देख, कि बादशाह का भाला और पानी की सुराही जो उसके सरहाने थी कहाँ हैं।

¹⁷तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचानी और कहा, "ऐ मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज़ है?" दाऊद ने कहा, ऐ मेरे मालिक बादशाह यह मेरी ही आवाज़ है।"¹⁸और उसने कहा, "मेरा मालिक क्यों अपने खादिम के पीछे पड़ा है? मैंने क्या किया है और मुझ में क्या बुराई है?"

¹⁹इसलिए अब ज़रा मेरा मालिक बादशाह अपने बन्दे की बातें सुने अगर खुदावन्द ने तुझ को मेरे खिलाफ़ उभारा हो तो वह कोई हदिया मंज़ूर करे और अगर यह आदमियों का काम हो तो वह खुदावन्द के आगे ला'नती हों क्योंकि उन्होंने आज के दिन मुझको खारिज किया है कि मैं खुदावन्द की दी हुई मीरास में शामिल न रहूँ और मुझ से कहते हैं जा और मा'बूदों की 'इबादत कर।"²⁰इसलिए अब खुदावन्द की सामने से अलग मेरा खून ज़मीन पर न बहे क्योंकि बनी इस्राईल का बादशाह एक पिस्सू ढूँढ़ने को इस तरह, निकला है जैसे कोई पहाड़ों पर तीतर का शिकार करता हो।"

²¹तब साऊल ने कहा, "कि मैंने खता की -ऐ मेरे बेटे दाऊद लौट आ क्योंकि मैं फिर तुझे नुक्सान नहीं पहुँचाऊँगा इसलिए की मेरी जान आज के दिन तेरी निगाह में क़ीमती ठहरी -देख, मैंने हिमाक़त की और निहायत बड़ी भूल मुझ से हुई।"

²²दाऊद ने जवाब दिया "ऐ बादशाह इस भाला को देख, इसलिए जवानों में से कोई आकर इसे ले जाए।"²³और खुदावन्द हर शख्स को उसकी सच्चाई और दियानतदारी के मुताबिक़ बदला देगा क्योंकि खुदावन्द ने आज तुझे मेरे हाथ में कर दिया था लेकिन मैंने न चाहा कि खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ उठाऊँ।

²⁴और देख, जिस तरह, तेरी ज़िन्दगी आज मेरी नज़र में क़ीमती ठहरी इसी तरह मेरी ज़िंदगी खुदावन्द की निगाह में क़ीमती हो और वह मुझे सब तकलीफ़ों से रिहाई बख़्शे।"²⁵तब साऊल ने दाऊद से कहा, "ऐ मेरे बेटे दाऊद तू मुबारक हो तू बड़े बड़े काम करेगा और ज़रूर फ़तहमंद होगा। इसलिए दाऊद अपनी रास्ते~चला गया और साऊल अपने मकान को लौटा।

Chapter 27

¹और दाऊद ने अपने दिल में कहा कि अब मैं किसी न किसी दिन साऊल के हाथ से हलाक हूँगा, तब मेरे लिए इससे बेहतर और कुछ नहीं कि मैं फ़िलिस्तिनों की सर ज़मीन को भाग जाऊँ और साऊल मुझ से न उम्मीद हो कर बनी इस्राईल की सरहदों में फिर मुझे नहीं ढूँडेगा, यूँ मैं उसके हाथ से बच जाऊँगा।

²इसलिए दाऊद उठा और अपने साथ के छः सौ जवानों को लेकर जात के बादशाह म'ओक के बेटे अकीस के पास गया। ³और दाऊद उसके लोग जात में अखीस के साथ अपने अपने खानदान समेत रहने लगे और दाऊद के साथ भी उसकी दोनों बीवियाँ या'नी यज़र'एली अखीनु'अम और नाबाल की बीवी कर्मिली अबीजेल थीं। ⁴और साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद जात को भाग गया, तब उस ने फिर कभी उसकी तलाश न की।

⁵और दाऊद ने अखीस से कहा, "कि अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो मुझे उस मुल्क के शहरों में कहीं जगह दिला दे ताकि मैं वहाँ बसूँ, तेरा खादिम तेरे साथ दार-उस -सल्लतनत में क्यूँ रहें?" ⁶इसलिए अखीस ने उस दिन सिक़लाज उसे दिया इसलिए सिक़लाज आज के दिन तक यहूदाह के बादशाहों का है। ⁷और दाऊद फ़िलिस्तिनों की सर ज़मीन में कुल एक बरस और चार महीने तक रहा।

⁸और दाऊद और उसके लोगों ने जाकर जसूरियों और जज़ीरियों और 'अमालीक्रियों पर हमला किया क्यूँकि वह शोर कि राह से मिस की हद तक उस सर ज़मीन के पुराने बाशिंदे थे। ⁹और दाऊद ने उस सर ज़मीन को तबाह कर डाला और 'औरत मर्द किसी को ज़िन्दा न छोड़ा और उनकी भेड़ बकरियाँ और बैल और गधे और ऊँट और कपड़े लेकर लौटा और अखीस के पास गया।

¹⁰अखीस ने पूछा, "कि आज तुम ने किधर लूट मार की", दाऊद ने कहा, "यहूदाह के-दख्खिन-और यरहमीलियों के दख्खिन और-क्रीनियों के-दख्खिनमें।"

¹¹और दाऊद उन में से एक मर्द 'औरत को भी ज़िन्दा बचा कर जात में नहीं लाता था और कहता था कि "कहीं वह हमारी हक़ीक़त न खोल दें, और कह दें कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया और जब से वह फ़िलिस्तिनों के मुल्क में बसा है, तब से उसका यहीं तरीक़ा रहा, है।" ¹²और अखीस ने दाऊद का यक़ीन कर के कहा, "कि उसने अपनी कौम इस्राईल को अपनी तरफ़ से कमाल नफ़रत दिला दी है इसलिए अब हमेशा यह मेरा खादिम रहेगा।"

Chapter 28

¹और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि फ़िलिस्तिनियों ने अपनी फ़ौजें जंग के लिए जमा कीं ताकि इस्राईल से लड़ें और अखीस ने दाऊद से कहा, "तू -यक़ीन जान कि तुझे और तेरे लोगों को लश्कर में हो कर मेरे साथ जाना होगा।" ²दाऊद ने अखीस से कहा, "फिर जो कुछ तेरा खादिम करेगा वह तुझे मा'लूम भी हो जाएगा।" अखीस ने दाऊद से कहा, "फिर तो हमेशा के लिए तुझ को मैं अपने बुराई का निगहबान ठहराऊँगा।"

³और समुएल मर चुका था और सब इस्राईलियों ने उस पर नौहा कर के उसे -उसके शहर रामा में दफ़न किया था और साऊल ने जिन्नात के आशनाओं और अफ़सूंगरों को मुल्क से खारिज कर दिया था। ⁴और फ़िलिस्ती जमा हुए और आकर शूनीम में डरे डाले और साऊल ने भी सब इस्राईलियों को जमा किया और वह जिलबु'आ में खेमाज़न हुए।

⁵और जब साऊल ने फ़िलिस्तिनियों का लश्कर देखा तो परेशान हुआ, और उसका दिल बहुत काँपने लगा। ⁶और जब साऊल ने खुदावन्द से सवाल किया तो खुदावन्द ने उसे न तो ख्वाबों और न उरीम और न नबियों के वसीले से कोई जवाब दिया। ⁷तब साऊल ने अपने मुलाज़िम्ओं से कहा, "कोई ऐसी औरत मेरे लिए तलाश करो जिसका आशना जिन्न हो ताकि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूँ।" उसके मुलाज़िम्ओं ने उससे कहा, "देख, ऐन दोर में एक औरत है जिसका आशना जिन्न है।"

⁸इसलिए साऊल ने अपना भेस बदल कर दूसरी पोशाक पहनी और दो आदमियों को साथ लेकर चला और वह रात को उस औरत के पास आए और उसने कहा, "ज़रा मेरी खातिर जिन्न के ज़रिए से मेरा फ़ाल खोल और जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ उसे ऊपर बुला दे।" तब उस औरत ने उससे कहा, "देख, तू जानता है कि साऊल ने क्या किया कि उसने जिन्नात के आशनाओं और अफ़सूंगरों को मुल्क से काट डाला है, फिर तू क्यों -मेरी जान के लिए फ़ँदा लगाता है ताकि मुझे मरवा डाले।" ¹⁰तब साऊल ने खुदावन्द की क़सम खा कर कहा, "कि खुदावन्द की हयात की क़सम इस बात के लिए तुझे कोई सज़ा नहीं दी जाएगी।"

¹¹तब उस औरत ने कहा, "मैं किस को तेरे लिए ऊपर बुला दूँ?" उसने कहा, "समुएल को मेरे लिए बुला दे।" ¹²जब उस औरत ने समुएल को देखा तो बुलंद आवाज़ से चिल्लाई और उस औरत ने साऊल से कहा, "तूने मुझ से क्यों दगा की क्योंकि तू -तो साऊल है।"

¹³तब बादशाह ने उससे कहा, "परेशान मत हो, तुझे क्या दिखाई देता है?" उसने साऊल से कहा, "मुझे एक मा'बूद ज़मीन से उपर आते दिखाई देता है।" ¹⁴तब उसने उससे कहा, "उसकी शक्ल कैसी है?" उसने कहा, "एक बुढ़ा ऊपर को आ रहा है और जुब्बा पहने है," तब साऊल जान गया कि वह समुएल है और उसने मुँह के बल गिर कर ज़मीन पर सिज्दा किया।

¹⁵समुएल ने साऊल से कहा, "तूने क्यों मुझे बेचैन किया कि मुझे ऊपर बुलवाया?" साऊल ने जवाब दिया, "मैं सख़्त परेशान हूँ, क्योंकि फ़िलिस्ती मुझ से लड़ते हैं और खुदा मुझ से अलग हो गया है और न तो नबियों और न तो ख्वाबों के वसीले से मुझे जवाब देता है इसलिए मैंने तुझे बुलाया ताकि तू मुझे बताए कि मैं क्या करूँ।"

¹⁶समुएल ने कहा, "फिर तू मुझ से किस लिए पूछता है जिस हाल कि खुदावन्द तुझ से अलग हो गया और तेरा दुश्मन बना है?" ¹⁷और खुदावन्द ने जैसा मेरे ज़रिए कहा, था वैसा ही किया है, खुदावन्द ने तेरे हाथ से सल्लनत चाक कर ली और तेरे पड़ोसी दाऊद को 'इनायत की है।

¹⁸इसलिए कि तूने खुदावन्द की बात नहीं मानी और 'अमालीक्रियों से उसके क्रहर-ए-शदीद के मुताबिक़ पेश नहीं आया इसी वजह से खुदावन्द ने आज के दिन तुझ से यह बरताव किया। ¹⁹अलावा इसके खुदावन्द तेरे साथ इस्राईलियों को भी फ़िलिस्तिनियों के हाथ में कर देगा और कल तू और तेरे बेटे मेरे साथ होंगे और खुदावन्द इस्राइली लश्कर को भी फ़िलिस्तिनियों के हाथ में कर देगा।

²⁰तब साऊल फ़ौरन ज़मीन पर लम्बा होकर गिरा और समुएल की बातों की वजह से निहायत डर गया और उस में कुछ ताक़त बाक़ी न रही क्योंकि उसने उस सारे दिन और सारी रात रोटी नहीं खाई थी। ²¹तब वह औरत साऊल के पास आई और देखा कि वह निहायत परेशान है, इसलिए उसने उससे कहा, "देख, तेरी लौंडी ने तेरी बात मानी और मैंने अपनी जान अपनी हथेली पर रखी और जो बातें तूने मुझ से कहीं मैंने उनको माना है।

²²इसलिए अब मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि तू अपनी लौंडी की बात सुन और मुझे 'इजाज़त दे कि रोटी का टुकड़ा तेरे आगे रख दूँ, तू खा कि जब तू अपनी राह ले तो तुझे ताक़त मिले।" ²³लेकिन उसने इनकार किया और कहा, कि मैं नहीं खाऊँगा लेकिन उसके मुलाज़िम उस औरत के साथ मिलकर उससे बजिद हुए, तब उसने उनका कहा, माना और ज़मीन पर से उठ कर पलंग पर बैठ गया।

²⁴उस औरत के घर में एक मोटा बछड़ा था, इसलिए उसने जल्दी की और उसे ज़बह किया और आटा लेकर गूँधा और बे ख़मीरी रोटियाँ पकाईं ~ ²⁵और उनको साऊल और उसके मुलाज़िम्ओं के आगे लाई और उन्होंने खाया तब वह उठे और उसी रात चले गए।

Chapter 29

¹और फ़िलिस्ती अपने सारे लश्कर को अफ़्रीक़ में जमा' करने लगे और इसाईली उस चश्मा के नज़दीक़ जो यज़रएल में है खेमा ज़न हुए।²और फ़िलिस्तियों के उमरा सैकड़ों और हज़ारों के साथ आगे-आगे चल रहे थे और दाऊद अपने लोगों के साथ अख़ीस के साथ पीछे-पीछे जा रहा था ।

³तब फ़िलिस्ती अमीरों ने कहा, "इन 'इब्रानियों का यहाँ क्या काम है ? "अख़ीस ने फ़िलिस्ती अमीरों से कहा "क्या यह इसाईल के बादशाह साऊल का खादिम दाऊद नहीं जो इतने दिनों बल्कि इतने बरसों से मेरे साथ है और मैंने जब से वह मेरे पास भाग आया है आज के दिन तक उस में कुछ बुराई नहीं पाई?"

⁴लेकिन फ़िलिस्ती हाकिम उससे नाराज़ हुए और फ़िलिस्ती ने उससे कहा, "इस शख्स को लौटा दे कि वह अपनी जगह को जो तूने उसके लिए ठहराई है वापस जाए , उसे हमारे साथ जंग पर न जाने दे ऐसा न हो कि जंग में वह हमारा मुखालिफ़ हो क्योंकि वह अपने आक्रा से कैसे मेल करेगा? क्या इन ही लोगों के सिरों से नहीं ?

⁵क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में उन्होंने नाचते वक्रत गा-गा कर एक दूसरे से कहा कि "साऊल ने तो हज़ारों को पर दाऊद ने लाखों को मारा?"

⁶तब अक़ीस ने दाऊद को बुला कर उससे कहा, "खुदवन्द की हयात की क्रसम कि तू सच्चा है और मेरी नज़र में तेरा आना जाना मेरे साथ लश्कर में अच्छा है क्योंकि मैंने ~जिस दिन से तू मेरे पास आया आज के दिन तक तुझ में कुछ बुराई नहीं पाई तोभी यह हाकिम तुझे नहीं चाहते ।⁷इसलिए तू अब लौट कर सलामत चला जा ताकि फ़िलिस्ती हाकिम तुझ से नाराज़ न हों। "

⁸दाऊद ने अक़ीस से कहा, "लेकिन मैंने क्या किया है? और जब से मैं तेरे सामने हूँ तब से आज के दिन तक मुझ में तूने क्या बात पाई जो मैं अपने मालिक बादशाह के दुश्मनों से जंग करने को न जाऊँ। "⁹अक़ीस ने दाऊद को जवाब दिया "मैं जानता हूँ कि तू मेरी नज़र में खुदा के फ़रिश्ता की तरह नेक है तोभी फ़िलिस्ती हाकिम ने कहा है कि वह हमारे साथ जंग के लिए न जाए ।

¹⁰इसलिए अब तू सुबह सवेरे अपने आक्रा के खादिमों को लेकर जो तेरे साथ यहाँ आए हैं उठना और जैसे ही तुम सुबह सवेरे उठो रोशनी होते होते रवाना हो जाना। "¹¹इसलिए दाऊद अपने लोगों के साथ तड़के उठा ताकि सुबह को रवाना होकर फ़िलिस्तियों के मुल्क को लौट जाए और फ़िलिस्ती यज़र'एल को चले गए।

Chapter 30

¹और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद और उसके लोग तीसरे दिन सिक्रलाज में पहुँचे तो देखा कि 'अमालीकियों ने~दख्खिनी~हिस्से और~सिक्रलाज पर चढ़ाई कर के सिक्रलाज को मारा और आग से फूँक दिया |²और 'औरतों को और जितने छोटे बड़े वहाँ थे सब को क्रैद कर लिया है, उन्होंने किसी को क्रल्ल नहीं किया बल्कि उनको लेकर चल दिए थे |

³इसलिए जब दाऊद और उसके लोग शहर में पहुँचे तो देखा कि शहर आग से जला पड़ा है, और उनकी बीवियाँ और बेटे और बेटियाँ क्रैद हो गई हैं |⁴तब दाऊद और उसके साथ के लोग ज़ोर ज़ोर से रोने लगे यहाँ तक कि उन में रोने की ताकत न रही |

⁵और दाऊद की दोनों बीवियाँ यज़र'एली अखीनु'अम और कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल क्रैद हो गई थीं |⁶और दाऊद बड़े शिकंजे में था क्योंकि लोग उसे संगसार करने को कहते थे इसलिए कि लोगों के दिल अपने बेटों और बेटियों के लिए निहायत गमगीन थे लेकिन दाऊद ने खुदावन्द अपने खुदा में अपने आप को मज़बूत किया |

⁷और दाऊद ने अखीमलिक के बेटे अबीयातर काहिन से कहा, "कि ज़रा अफूद को यहाँ मेरे पास ले आ," इसलिए अबीयातर अफूद को दाऊद के पास ले आया |⁸और दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि "अगर मैं उस फ़ौज का पीछा करूँ तो क्या मैं उनको जा लूँगा?" उसने उससे कहा कि "पीछा कर क्योंकि तू यक्रीनन उनको पालेगा और ज़रूर सब कुछ छुड़ा लाएगा |"

⁹इसलिए दाऊद और वह छःसौ आदमी जो उसके साथ थे चले और बसोर की नदी पर पहुँचे जहाँ वह लोग जो पीछे छोड़े गए ठहरे रहे |¹⁰लेकिन दाऊद और चार सौ आदमी पीछा किए चले गए क्योंकि दो सौ जो ऐसे थक गए थे कि बसोर की नदी के पार न जा सके पीछे रह गए |

¹¹और उनको मैदान में एक मिस्री मिल गया, उसे वह दाऊद के पास ले आए और उसे रोटी दी, इसलिए उसने खाई और उसे पीने को पानी दिया |¹²और उन्होंने अंजीर की टिकया का टुकड़ा और किशमिश के दो खोशे उसे दिए, जब वह खा चुका तो उसकी जान में जान आई क्योंकि उस ने तीन दिन और तीन रात से न रोटी खाई थी न पानी पिया था |

¹³तब दाऊद ने पूछा ~"तू किस का आदमी है ?और तू कहाँ का है?" उस ने कहा "मैं एक मिस्री जवान और एक 'अमालीक्री का नौकर हूँ और मेरा आक्रा मुझ को छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ गया था |¹⁴हमने करेतियों के दख्खिन में और यहूदाह के मुल्क में और कालिब के दख्खिन में लूट मार की और सिक्रलाज को आग से फूँक दिया |

¹⁵दाऊद ने उस से कहा ~"क्या तू मुझे उस फ़ौज तक पहुँचा देगा?" उसने कहा "तू मुझे से खुदा की क़सम खा कि न तू मुझे क्रल्ल करेगा और न मुझे मेरे आक्रा के हवाले करेगा तो मैं तुझ को उस फ़ौज तक पहुँचा दूँगा |"

¹⁶जब उसने उसे वहाँ पहुँचा दिया तो देखा कि वह लोग उस सारी ज़मीन पर फैले हुए थे और उसे बहुत से माल की वजह से जो उन्होंने फ़िलिस्तिनियों के मुल्क और यहूदाह के मुल्क से लूटा था खाते पीते और ज़ियाफतें उड़ा रहे थे |¹⁷इसलिए दाऊद रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की शाम तक उनको मारता रहा, और उन में से एक भी न बचा सिवा चार सौ जवानों के जो ऊँटों पर चढ़ कर भाग गए |

¹⁸और दाऊद ने सब कुछ जो 'अमालीक्री ले गए थे छुड़ा लिया और अपनी दोनों बीवियों को भी दाऊद ने छुड़ाया |¹⁹और उनकी कोई चीज़ गुम न हुई न छोटी न बड़ी न लड़के न लड़कियाँ न लूट का माल न और कोई चीज़ जो उन्होंने ली थी दाऊद सब का सब लौटा लाया |²⁰और दाऊद ने सब भेड़ बकरियाँ और गाय और बैल ले लिए और वह उनको बाक्री जानवर के आगे यह कहते हुए हाँक लाए कि यह दाऊद की लूट है |

²¹और दाऊद उन दो सौ जवानों के पास आया जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके और जिनको उन्होंने बसोर की नदी पर ठहराया था, वह दाऊद और उसके साथ के लोगों से मिलने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के नज़दीक पहुँचा तो उसने उनसे खैर-ओ- 'आफ़ियत पूछी |²²तब उन लोगों में से जो दाऊद के साथ गए थे सब बद ज़ात और खबीस लोगों ने कहा, 'चूँकि यह हमारे साथ न गए ,इसलिए हम इनको उस माल में से जो हम ने छुड़ाया है कोई हिस्सा नहीं देंगे 'अलावा हर शख्स की ~बीवी और बाल बच्चों के ताकि वह उनको लेकर चलें जाएँ |

²³तब दाऊद ने कहा, "ऐ मेरे भाइयों तुम इस माल के साथ जो खुदावन्द ने हमको दिया है ऐसा नहीं करने पाओगे क्योंकि उसी ने हमको बचाया और उस फ़ौज को जिसने हम पर चढ़ाई की हमारे क़ब्ज़े में कर दिया |²⁴और इस काम में तुम्हारी मानेगा कौन? क्योंकि जैसा उसका हिस्सा है जो लड़ाई में जाता है वैसा ही उसका हिस्सा होगा जो सामान के पास ठहरता है, दोनों बराबर हिस्सा पाएँगे |"²⁵और उस दिन से आगे को ऐसा ही रहा कि उसने इस्राईल के लिए यही क़ानून और आईन मुकर्रर किया जो आज तक है |

²⁶और जब दाऊद सिक्रलाज में आया तो उसने लूट के माल में से यहूदाह के बुजुर्गों के पास जो उसके दोस्त थे कुछ कुछ भेजा और कहा,कि देखो खुदावन्द के दुश्मनों के माल में से यह तुम्हारे लिए हदिया है |²⁷यह उनके पास जो बैतएल में और उनके पास जो रामात-उल-जुनूब में और उनके पास जो यतीर में |²⁸और उनके पास जो 'अरो'ईर में, और उनके पास जो सिफ़मोत में और उनके पास जो इस्तमु' में |

²⁹और उनके पास जो रकिल में और उनके पास जो यरहमीलियों के शहरों में और उनके पास जो क्रीनियों के शहरों में |³⁰और उनके पास जो हुरमा में और उनके पास जो कोर'आसान में, और उनके पास जो 'अताक में |³¹और उनके पास जो हबरून में थे और उन सब जगहों में जहाँ जहाँ दाऊद और उसके लोग फ़िरा करते थे, भेजा |

Chapter 31

¹और फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़े और इस्राईली जवान फ़िलिस्तियों ~के सामने से भागे और पहाड़ी-ए-जिल्बू'आ में क़त्ल होकर गिरे।²और फ़िलिस्तियों ने साऊल और उसके बेटों का ख़ूब पीछा किया और फ़िलिस्तियों ने साऊल के बेटों यूनतन और अबीनदाब, और मलकीशु'अ को मार डाला।³और यह जंग साऊल पर निहायत भारी हो गई और तीरअंदाज़ों ने उसे पा लिया और वह तीरअंदाज़ों की वजह से सख़्त मुश्किल में पड़ गया।

⁴तब साऊल ने अपने सिलाह बरदार से कहा, "अपनी तलवार खींच और उससे मुझे छेद दे ऐसा न हो कि यह नामख़तून आएँ और मुझे छेद लें, और मुझे बे 'इज़ज़त करें लेकिन उसके सिलाह बरदार ऐसा करना न चाहा, क्योंकि वह बहुत डर गया था इसलिए साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा।⁵जब उसके सिलाह बरदार ने देखा, कि साऊल मर गया तो वह भी अपनी तलवार पर गिरा और उसके साथ मर गया।⁶इसलिए साऊल और उसके तीनों बेटे और उसका सिलाह बरदार और उसके सब लोग उसी दिन एक साथ मर मिटे।

⁷जब उन इस्राईली मर्दों ने जो उस वादी की दूसरी तरफ़ और यरदन के पार थे यह देखा कि इस्राईल के लोग भाग गए और साऊल और उसके बेटे मर गए तो वह शहरों को छोड़ कर भाग निकले और फ़िलिस्ती आए और उन में रहने लगे।⁸दूसरे दिन जब फ़िलिस्ती लाशों के कपड़े उतारने आए तो उन्होंने साऊल और उसके तीनों बेटों को कोहे जिल्बू'आ पर मुर्दा पाया।

⁹इसलिए उन्होंने उसका सर काट लिया और उसके हथियार उतार लिए और फ़िलिस्तियों के मुल्क में क़ासिद रवाना कर दिए, ताकि उनके बुतखानों और लोगों को यह खुशख़बरी पहुँचा दें।¹⁰इसलिए उन्होंने उसके हथियारों को 'अस्तारात के मन्दिर में रखवा और उसकी लाश को बैतशान की दीवार पर जड़ दिया।

¹¹जब यबीस जिल'आद के बाशिंदों ने इसके बारे में वह बात जो फ़िलिस्तियों ने साऊल से की सुनी।¹²तो सब बहादुर उठे, और रातों रात जाकर साऊल और उसके बेटों की लाशें बैतशान की दीवार पर से ले आए और यबीस में पहुँच कर वहाँ उनको जला दिया।¹³और उनकी हड्डियाँ लेकर यबीस में झाड़ू के दरख़्त के नीचे दफ़न कीं और सात दिन तक रोज़ा रखवा।

२-समूएल

Chapter 1

¹और साऊल की मौत के बाद जब दाऊद 'अमालीकियों को मार कर लौटा और दाऊद को सिकलाज में रहते हुए दो दिन हो गए।²तो तीसरे दिन ऐसा हुआ कि एक शख्स लश्करगाह में से साऊल के पास से अपने लिबास को फाड़े और सिर पर खाक डाले हुए आया और जब वह दाऊद के पास पहुँचा तो ज़मीन पर गिरा और सिज़्दा किया।

³दाऊद ने उससे कहा, "तू कहाँ से आता है?" उसने उससे कहा, "मैं इस्राईल की लश्करगाह में से बच निकला हूँ।"⁴तब दाऊद ने उससे पूछा, "क्या हाल रहा? ज़रा मुझे बता।" उसने कहा कि लोग जंग में से भाग गए, और बहुत से गिरे मर गए और साऊल और उसका बेटा यूनतन भी मर गये हैं।⁵तब दाऊद ने उस जवान से जिसने उसको यह ख़बर दी कहा, "तुझे कैसे मा'लूम है कि साऊल और उसका बेटा यूनतन मर गये?"

⁶वह जवान जिसने उसको यह ख़बर दी कहने लगा कि मैं कूह-ए-जिलबू'आ पर अचानक पहुँच गया और क्या देखा कि साऊल अपने नेज़ह पर झुका हुआ है रथ और सवार उसका पीछा किए आ रहे हैं।⁷और जब उसने अपने पीछे नज़र की तो मुझको देखा और मुझे पुकारा, मैंने जवाब दिया मैं हाज़िर हूँ।

⁸उसने मुझे कहा तू कौन है? मैंने उसे जवाब दिया मैं 'अमालीकी हूँ।⁹फिर उसने मुझसे कहा, "मेरे पास खड़ा होकर मुझे क़त्ल कर डाल क्योंकि मैं बड़े तकलीफ़ में हूँ और अब तक मेरी जान मुझ में है।"¹⁰तब मैंने उसके पास खड़े होकर उसे क़त्ल किया क्योंकि मुझे यक़ीन था कि अब जो वह गिरा है तो बचेगा नहीं और मैं उसके सिर का ताज़ और बाज़ू पर का कंगन लेकर उनको अपने खुदावन्द के पास लाया हूँ।

¹¹तब दाऊद ने अपने कपड़ों को पकड़ कर उनको फाड़ डाला और उसके साथ सब आदमियों ने भी ऐसा ही किया।¹²और वह साऊल और उसके बेटे यूनतन और खुदावन्द के लोगों और इस्राईल के घराने के लिये मातम करने लगे और रोने लगे और शाम तक रोज़ा रखा इसलिए कि वह तलवार से मारे गये थे।¹³फिर दाऊद ने उस जवान से जो यह ख़बर लाया था पूछा कि तू कहाँ का है? उसने कहा, "मैं एक परदेसी का बेटा और 'अमालीकी हूँ।"

¹⁴दाऊद ने उससे कहा, "तू खुदावन्द के ममसूह को हलाक करने के लिए उस पर हाथ चलाने से क्यों न डरा?"¹⁵फिर दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा, "नज़दीक जा और उसपर हमला कर।" इसलिए उसने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया।¹⁶और दाऊद ने उससे कहा, ~"तेरा खून तेरे ही सिर पर हो क्योंकि तू ही ने अपने मुँह से ख़ुद अपने ऊपर गवाही दी। और कहा कि मैंने खुदावन्द के ममसूह को जान से मारा।"

¹⁷और दाऊद ने साऊल और उसके बेटे यूनतन पर इस मर्सिया के साथ मातम किया।¹⁸और उसने उनको हुक्म दिया कि बनी यहूदाह को कमान का गीत सिखायें। देखो वह याशर की किताब में लिखा है।¹⁹"ए इस्राईल! तेरे ही ऊँचे मक़ामों पर तेरा गुरूर मारा गया, हाय! पहलवान कैसे मर गए।²⁰यह जात में न बताना, अस्क़लोन की गलियों में इसकी ख़बर न करना, ऐसा न हो कि फ़िलिस्तियों की बेटियाँ खुश हों, ऐसा न हो कि नामख़तूनों की बेटियाँ गुरूर ~करें।

²¹ऐ जिलबू'आ के पहाड़ों! तुम पर न ओस पड़े और न बारिश हो और न हदिया की चीज़ों के खेत हों, क्योंकि वहाँ पहलवानों ~की ढाल बुरी तरह से फेंक दी गई, या'नी साऊल की ढाल जिस पर तेल नहीं लगाया गया था।²²मक़तूलों के खून से ज़बरदस्तों की चर्बी से यूनतन की कमान कभी न टली, और साऊल की तलवार खाली न लौटी।

²³साऊल और यूनतन अपने जीते जी 'अज़ीज़ और दिल पसन्द थे और अपनी मौत के वक़्त अलग न हुए, वह 'उक्राबों से तेज़ और शेर बबरों से ताक़त वर थे।

²⁴जिसने तुमको अच्छे अच्छे अर्ग़वानी लिबास पहनाए और सोने के ज़ेवरों से तुम्हारे लिबास को आरास्ता किया।

²⁵हाय! लड़ाई में पहलवान कैसे मर गये !यूनतन तेरे ऊँचे मक़ामों पर क़त्ल हुआ।²⁶ऐ मेरे भाई यूनतन! मुझे तेरा ग़म है, तू मुझको बहुत ही प्यारा था, तेरी मुहब्बत मेरे लिए 'अजीब थी, 'औरतों की मुहब्बत से भी ज़्यादा,।²⁷हाय, पहलवान कैसे मर गये और जंग के हथियार बरबाद ~हो गये। "

Chapter 2

¹और इसके बा'द ऐसा हुआ कि दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि क्या मैं यहूदाह के शहरों में से किसी में चला जाऊँ। खुदावन्द ने उस से कहा, "ज़ा।" दाऊद ने कहा, "किधर जाऊँ" उस ने फ़रमाया, "हब्रून को।" ²इसलिए दाऊद अपनी दोनों बीवियों यज़र'एली आख़ीन'अम और कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल के साथ वहाँ गया। ³और दाऊद अपने साथ के आदमियों को भी एक एक घराने समेत वहाँ ले गया और वह हब्रून के शहरों में रहने लगे।

⁴तब यहूदाह के लोग आए और वहाँ उन्होंने दाऊद को मसह करके यहूदाह के खानदान का बादशाह बनाया, और उन्होंने दाऊद को बताया कि यबीस जिल'आद के लोगों ने साऊल को दफ़न किया था। ⁵इसलिए दाऊद ने यबीस जिल'आद के लोगों के पास क़ासिद रवाना किए और उनको कहला भेजा कि खुदावन्द की तरफ़ से तुम मुबारक हो इसलिए कि तुमने अपने मालिक साऊल पर यह एहसान किया और उसे दफ़न किया।

⁶इसलिए खुदावन्द तुम्हारे साथ रहमत और सच्चाई को 'अमल में लाये और मैं भी तुमको इस नेकी का बदला दूँगा इसलिए कि तुमने यह काम किया है। ⁷तब तुम्हारे बाजू ताक़तवर ~हों और तुम दिलेर रहो क्योंकि तुम्हारा मालिक साऊल मर गया और यहूदाह के घराने ने मसह कर के मुझे अपना बादशाह बनाया है।

⁸लेकिन नेर के बेटे अबनेर ने जो साऊल के लश्कर का सरदार था साऊल के बेटे इश्बोसत को लेकर उसे महनायम में पहुँचाया। ⁹और उसे जिल'आद और आशर्यों और यज़र'ईल और इफ़्राईम और बिनयामीन और तमाम इस्राईल का बादशाह बनाया।

¹⁰और साऊल के बेटे इश्बोसत की 'उम्र चालीस बरस की थी जब वह इस्राईल का बादशाह हुआ और उसने दो बरस बादशाही की लेकिन यहूदाह के घराने ने दाऊद की पैरवी की। ¹¹और दाऊद हब्रून में बनी यहूदाह पर सात बरस छः महीने तक हाकिम रहा।

¹²फिर नेर का बेटा अबनेर और साऊल के बेटे इश्बोसत के खादिम महनायम से ज़िब'ऊन में आए। ¹³और ज़रोयाह का बेटा योआब और दाऊद के मुलाज़िम निकले और ज़िब'ऊन के तालाब पर उनसे मिले और दोनों अलग अलग बैठ गये, एक तालाब की इस तरफ़ और दूसरा तालाब की दूसरी तरफ़।

¹⁴तब अबनेर ने योआब से कहा, "ज़रा यह जवान उठकर हमारे सामने एक दूसरे का मुकाबला करें", योआब ने कहा "ठीक।" ¹⁵तब वह उठकर ता'दाद के मुताबिक़ आमने सामने हुए या'नी साऊल के बेटे इश्बोसत और बिनयामीन की तरफ़ से बारह जवान और दाऊद के खादिमों में से बारह आदमी।

¹⁶और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़ कर अपनी अपनी तलवार अपने मुखालिफ़ के पेट में भोंक दी, इसलिए वह एक ही साथ गिरे इसलिए वह जगह हलक़त हस्सोरीम कहलाई वह ज़िब'ऊन में है। ¹⁷और उस रोज़ बड़ी सख़्त लड़ाई हुई और अबनेर और इस्राईल के लोगों ने दाऊद के खादिमों से शिकस्त खाई।

¹⁸और ज़रोयाह के तीनों बेटे योआब, और अबीशे और 'असाहील वहाँ मौजूद थे और 'असाहील जंगली हिरन की तरह दौड़ता था। ¹⁹और 'असाहील ने अबनेर का पीछा किया और अबनेर का पीछा करते वक़्त वह दहने या बाएं हाथ न मुड़ा।

²⁰तब अबनेर ने अपने पीछे नज़र करके उससे कहा, "ऐ 'असाहील क्या तू है।" उसने कहा, "हाँ।" ²¹अबनेर ने उससे कहा, "अपनी दहनी या बायीं तरफ़ मुड़ जा और जवानों में से किसी को पकड़ कर उसके हथियार लूट ले।" लेकिन 'असाहेल उसका पीछा करने से बाज़ न आया।

²²अबनेर ने 'असाहील से फिर कहा, "मेरा पीछा करने से बाज़ रह मैं कैसे तुझे ज़मीन पर मार कर डाल दूँ क्योंकि फिर मैं तेरे भाई योआब को क्या मुँह दिखाऊँगा।" ²³इस पर भी उसने मुड़ने से इनकार किया, अबनेर ने अपने भाले के पिछले सिरे से उसके पेट पर ऐसा मारा कि वह पार हो गया तब ~वह वहाँ गिरा और उसी जगह मर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस जगह आए जहाँ 'असाहील गिर कर मरा था वह वहीं खड़े रह गये।

²⁴लेकिन योआब और अबीशे अबनेर का पीछा करते रहे और जब वह कोह-ए-अम्मा जो दश्त-ए-ज़िबऊन के रास्ते में जियाह के मुक़ाबिल है पहुँचे तो सूरज डूब गया। ²⁵और बनी बिनयामीन अबनेर के पीछे इकट्ठे हुए और एक झुण्ड बन गए और एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए।

²⁶तब अबनेर ने योआब को पुकार कर कहा, "क्या ~तलवार हमेशा तक हलाक करती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका अंजाम कड़वाहट होगा? तू कब लोगों को हुक्म देगा कि अपने भाइयों का पीछा छोड़ कर लौट जायें।" ²⁷योआब ने कहा, "ज़िन्दा खुदा की क़सम अगर तू न बोला होता तो लोग सुबह ही को ज़रूर चले जाते और अपने भाइयों का पीछा न करते।"

²⁸फिर योआब ने नरसिंगा फूँका और सब लोग ठहर गये और इस्राईल का पीछा फिर न किया और न फिर लड़े ²⁹और अबनेर और उसके लोग उस सारी रात मैदान चले, और यरदन के पार हुए, और सब बितारोन से गुज़र कर महनायम में आ पहुँचे।

³⁰और योआब अबनेर का पीछा छोड़ कर लौटा, और उसने जो सब आदमियों को जमा किया, तो दाऊद के मुलाज़िमों में से उन्नीस आदमी और 'असाहील कम निकले। ³¹लेकिन दाऊद के मुलाज़िमों ने बिनयामीन में से और अबनेर के लोगों में से इतने मार दिए कि तीन सौ साठ आदमी मर गये। ³²और उन्होंने 'असाहील को उठा कर उसे उसके बाप की क़ब्र में जो बैतलहम में थी दफ़न किया और योआब और उसके लोग सारी रात चले और हब्रून पहुँच कर उनको दिन निकला।

Chapter 3

¹असल में साऊल के घराने और दाऊद के घराने में मुद्दत तक जंग रही और दाऊद रोज़ ब रोज़ ताक़तवर होता गया और साऊल का खानदान कमज़ोर होता गया।

²और हब्रून में दाऊद के यहाँ बेटे पैदा हुए, अमनून उसका पहलौठा था, जो यज़र ऐली अखनूअम के बतन से था।³और दूसरा किलयाब था जो कर्मिली नाबाल की बीवी अबिजेल् से हुआ, तीसरा अबी सलोम था जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी मा'का से हुआ।

⁴चौथा अदुनियाह था जो हज्जीत का बेटा था और पाँचवाँ सफतियाह जो अबीताल का बेटा था।⁵और छठा इत्रि'आम था जो दाऊद की बीवी 'इज्ज़ाह से हुआ, यह दाऊद के यहाँ हब्रून में पैदा हुआ।

⁶और जब साऊल के घराने और दाऊद के घराने में जंग हो रही थी, तो अबनेर ने साऊल के घराने में ख़ूब ज़ोर पैदा कर लिया।⁷और साऊल के एक बाँदी थी जिसका नाम रिसफ़ाह था, वह अय्याह की बेटी थी इसलिए इशबोसत ने अबनेर से कहा, "तू मेरे बाप की बाँदी के पास क्यूँ गया?"

⁸अबनेर इशबोसत की इन बातों से बहुत गुस्सा होकर कहने लगा, "क्या मैं यहूदाह के किसी कुत्ते का सिर हूँ? आज तक मैं तेरे बाप साऊल के घराने और उसके भाइयों और दोस्तों से मेहरबानी से पेश आता रहा हूँ और तुझे दाऊद के हवाले नहीं किया, तो भी तू आज इस 'औरत के साथ मुझ पर 'ऐब लगाता है।

⁹ख़ुदा अबनेर से वैसा ही बल्कि उससे ज़्यादा करे अगर मैं दाऊद से वही सुलूक न करूँ जिसकी क्रसम ख़ुदावन्द ने उसके साथ खाई थी।¹⁰ताकि हुकूमत को साऊल के घराने से हटा कर के दाऊद के तख़्त को इस्राईल और यहूदाह दोनों पर दान से बैरसबा' तक क़ायम करूँ।"¹¹और वह अबनेर को एक लफ़्ज़ जवाब न दे सका इसलिए कि उससे डरता था।

¹²और अबनेर ने अपनी तरफ़ से दाऊद के पास क़ासिद ख़ाना किए और कहला भेजा कि "मुल्क किसका है? तू मेरे साथ अपना 'अहद बाँध और देख मेरा हाथ तेरे साथ होगा ताकि सारे इस्राईल को तेरी तरफ़ मायल करूँ।"¹³उसने कहा, "अच्छा मैं तेरे साथ 'अहद बाँधूँगा पर मैं तुझसे एक बात चाहता हूँ और वह यह है कि जब तू मुझसे मिलने को आए तो जब तक साऊल की बेटी मीकल को पहले अपने साथ न लाये तू मेरा मुँह देखने नहीं पाएगा।"

¹⁴और दाऊद ने साऊल के बेटे इशबोसत को क़ासिदों कि ज़रिए' कहला भेजा कि "मेरी बीवी मीकल को जिसको मैंने फ़िलिस्तिनियों की सौ खलड़ियाँ देकर ब्याहा था मेरे हवाले कर।"¹⁵इसलिए इशबोसत ने लोग भेज कर उसे उसके शौहर लैस के बेटे फ़लतीएल से छीन लिया।¹⁶और उसका शौहर उसके साथ चला, और उसके पीछे पीछे बहुरीम तक रोता हुआ चला आया, तब अबनेर ने उससे कहा, "लौट जा।" इसलिए वह लौट गया।

¹⁷और अबनेर ने इस्राईली बुज़ुर्गों के पास ख़बर भेजी, "गुज़रे दिनों में तुम यह चाहते थे कि दाऊद तुम पर बादशाह हो।"¹⁸तब अब ऐसा करलो, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने दाऊद के हक़ में फ़रमाया है कि मैं अपने बन्दा दाऊद के ज़रिए' अपनी क़ौम इस्राईल को फ़िलिस्तिनियों और उनके सब दुश्मनों के हाथ से रिहाई दूँगा।"

¹⁹और अबनेर ने बनी बिनयमीन से भी बातें कीं और अबनेर चला कि जो कुछ इस्राईलियों और बिनयमीन के सारे घराने को अच्छा लगा उसे हब्रून में दाऊद को कह सुनाये।²⁰इसलिए अबनेर हब्रून में दाऊद के पास आया और बीस आदमी उसके साथ थे तब दाऊद ने अबनेर और उन लोगों की जो उसके साथ थे मेहमान नवाज़ी की।

²¹अबनेर ने दाऊद से कहा, "अब मैं उठकर जाऊँगा और सारे इस्राईल को अपने मालिक बादशाह के पास इकट्ठा करूँगा ताकि वह तुझसे 'अहद बाँधे और तू जिस जिस पर तेरा जी चाहे हुकूमत करे।" ~इसलिए दाऊद ने अबनेर को रुखसत किया और वह सलामत चला गया।

²²दाऊद के लोग और योआब किसी जंग से लूट का बहुत सा माल अपने साथ लेकर आए : लेकिन अबनेर हब्रून में दाऊद के पास नहीं था, क्यूँकि उसे उसने रुखसत कर दिया था और वह सलामत चला गया था।²³और जब योआब और लश्कर के सब लोग जो उसके साथ थे आए तो उन्होंने योआब को बताया कि "नेर का बेटा अबनेर बादशाह के पास आया था और उसने उसे रुखसत कर दिया और वह सलामत चला गया।"

²⁴तब योआब बादशाह के पास आकर कहने लगा, "यह तूने क्या किया? देख ! अबनेर तेरे पास आया था, इसलिए तूने उसे क्यूँ रुखसत कर दिया कि वह निकल गया।?"²⁵तू नेर के बेटे अबनेर को जानता है कि वह तुझको धोका देने और तेरे आने जाने और तेरे सारे काम का राज़ लेने आया था।"²⁶जब योआब दाऊद के पास से बाहर निकला तो उसने अबनेर के पीछे क़ासिद भेजे और वह उसको सीरह के कुँवों से लौटा ले आए, लेकिन यह दाऊद को मा'लूम नहीं था।

²⁷जब अबनेर हब्रून में लौट आया तो योआब उसे अलग फाटक के अन्दर ले गया, ताकि उसके साथ चुपके चुपके बात करे, और वहाँ अपने भाई 'असाहील के खून के बदले में उसके पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया।

²⁸'बा'द में जब दाऊद ने यह सुना तो कहा कि "मैं और मेरी हुकूमत दोनों हमेशा तक ख़ुदावन्द के आगे नेर के बेटे अबनेर के खून की तरफ़ से बे गुनाह हूँ।"²⁹वह योआब और उसके बाप के सारे घराने के सिर लगे, और योआब के घराने में कोई न कोई ऐसा होता रहे जिसे जरयान हो या कोढ़ी या बैसाखी पर चले या तलवार से मरे या टुकड़े टुकड़े को मोहताज हों।"³⁰इसलिए योआब और उसके भाई अबीशे ने अबनेर को मार दिया इसलिए कि उसने जिब'ऊन में उनके भाई 'असाहेल को लड़ाई में क़त्ल किया था

³¹और दाऊद ने योआब से और उन सब लोगों से जो उसके साथ थे कहा कि "अपने कपड़े फाड़ो और टाट पहनो और अबनेर के आगे आगे मातम करो।" और दाऊद बादशाह ख़ुद जनाज़े के पीछे पीछे चला।³²और उन्होंने अबनेर को हब्रून में दफ़न किया और बादशाह अबनेर की क़ब्र पर ज़ोर ज़ोर से रोया और सब लोग भी रोए।

³³और बादशाह ने अबनेर पर मर्सिया कहा, "क्या अबनेर को ऐसा ही मरना था जैसे बेवकूफ़ मरता है?।"³⁴तेरे हाथ बंधे न थे और न तेरे पाँव बेड़ियों में थे, जैसे कोई बदकारों के हाथ से मरता है वैसे ही तू मारा गया।" तब उसपर सब लोग दोबारह रोए।

³⁵और सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए लेकिन दाऊद ने क्रसम खाकर कहा, "अगर मैं सूरज के गुरूब होने से पहले रोटी या और कुछ चखूँ तो ख़ुदा मुझ से ऐसा बल्कि इससे ज़्यादा करे।"³⁶और सब लोगों ने इस पर गौर किया और इससे खुश हुए क्यूँकि जो कुछ बादशाह करता था सब लोग उससे खुश होते थे।

³⁷तब सब लोगों ने और तमाम इस्राईल ने उसी दिन जान लिया कि नेर के बेटे अबनेर का क़त्ल होना बादशाह की तरफ़ से न था।³⁸ और बादशाह ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक सरदार बल्कि एक बहुत बड़ा आदमी इस्राईल में मरा है?”³⁹ और अगर्चे में मम्सूह बादशाह हूँ तो भी आज के दिन बेबस हूँ और यह लोग बनी ज़रोयाह मुझसे ~ताक़तवर हैं खुदावन्द बदकारों को उसकी गुनाह के मुताबिक़ बदला दे।”

Chapter 4

¹जब साऊल के बेटे इश्बोसत ने सुना कि अबनेर हब्रून में मर गया तो उसके हाथ ढीले पड़ गए, और सब इसाईली घबरा गए।²और साऊल के बेटे इश्बोसत के दो आदमी थे जो फ़ौजों के सरदार थे, एक का नाम बा'ना और दूसरे का रेकाब था, यह दोनों बिनयमीन की नसल के बैरूती रिम्मोन के बेटे थे, क्योंकि बैरूत भी बनी बिनयमीन का गिना जाता है।³और बैरूती जितीम को भाग गए थे चुनौचे आज के दिन तक वह वहीं रहते हैं।

⁴और साऊल के बेटे यूनतन का एक लंगड़ा बेटा था, जब साऊल और यूनतन की खबर यज़र'एल से पहुँची तो एह पाँच बरस का था, तब उसकी दाया उसको उठा कर भागी और और उसने जो भागने में जल्दी की तो ऐसा हुआ कि वह गिर पड़ा और वह लंगड़ा हो गया उसका नाम मिफ़ीबोसत था।

⁵और बैरूती रिम्मोन के बेटे रेकाब और बा'ना चले और कड़ी धूप के वक़्त इश्बोसत के घर आए जब दोपहर को आराम कर रहा था।⁶तब वह वहाँ घर के अन्दर गेहूँ लेने के बहाने से घुसे और उसके पेट में मारा और रेकाब और उसका भाई बा'ना भाग निकले।⁷जब वह घर में घुसे तो वह अपनी आरामगाह में अपने बिस्तर पर सोता था, तब उन्होंने उसे मारा और क़त्ल किया और उसका सिर काट दिया और उसका सिर लेकर तमाम रात मैदान की राह चले।

⁸और इश्बोसत का सिर हब्रून में दाऊद के पास ले आए और बादशाह से कहा, "तेरा दुश्मन साऊल जो तेरी जान का तालिब था यह उसके बेटे इश्बोसत का सिर है, इसलिए खुदावन्द ने आज के दिन मेरे मालिक बादशाह का बदला साऊल और उसकी नसल से लिया।"⁹तब दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बा'ना को बैरूती रिम्मोन के बेटे थे जवाब दिया कि "खुदावन्द की हयात की क़सम जिसने मेरी जान को हर मुसीबत से रिहाई दी है।"¹⁰जब एक शख्स ने मुझसे कहा कि देख साऊल मर गया और समझा कि खुशख़बरी देता है तो मैंने उसे पकड़ा और सिक़लाज में उसे क़त्ल किया यही सज़ा मैंने उसे उसकी ख़बर के बदले दिया।

¹¹तब जब बदकारों ने एक सच्चे इन्सान को उसी के घर में उसके बिस्तर पर क़त्ल किया है, तो क्या मैं अब उसके खून का बदला तुमसे ज़रूर न ~लूँ और तुमको ज़मीन पर से मिटा न ~डालूँ ?।"¹²तब दाऊद ने अपने जवानों को हुक्म दिया, और उन्होंने उनको क़त्ल किया और उनके हाथ और पाँव काट डाले, और उनको हब्रून में तालाब के पास टाँग दिया और इश्बोसत के सिर को लेकर उन्होंने हब्रून में अबनेर की क़ब्र में दफ़न किया।

Chapter 5

¹तब इस्राईल के सब कबीले हब्रून में दाऊद के पास आकर कहने लगे, "देख हम तेरी हड्डी और तेरा गोश्त हैं।" ²और गुज़रे ज़माने में जब साऊल हमारा बादशाह था, तो तू ही इस्राईलियों को ले जाया और ले आया करता था: और खुदावन्द ने तुझसे कहा कि तू मेरे इस्राईली लोगों की गल्ला बानी करेगा और तू इस्राईल का सरदार होगा।"

³गर्ज़ इस्राईल के सब बुजुर्ग हब्रून में बादशाह के पास आए और दाऊद बादशाह ने हब्रून में उनके साथ खुदावन्द के सामने 'अहद बाँधा और उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया। ⁴और दाऊद जब हुकूमत करने लगा तो तीस बरस का था और उसने चालीस बरस बादशाहत की। ⁵उसने हब्रून में सात बरस छ: महीने यहूदाह पर हुकूमत की और यरुशलीम में सब इस्राईल और यहूदाह पर तैंतीस बरस बादशाहत की।

⁶फिर बादशाह और उसके लोग यरुशलीम को यबूसियों पर जो उस मुल्क के बाशिंदे थे चढ़ाई करने लगे, उन्होंने दाऊद से कहा, "जब तक तू अंधों और लंगड़ों को न ले जाए यहाँ नहीं आने पायेगा।" वह समझते थे कि दाऊद यहाँ नहीं आ सकता है। ⁷तो भी दाऊद ने सीय्योन का क़िला' ले लिया, वही दाऊद का शहर है।

⁸और दाऊद ने उस दिन कहा कि "जो कोई यबूसियों को मारे वह नाले को जाए और उन लंगड़ों और अंधों को मारे जिन से दाऊद के दिल को नफ़रत है।"

~इसी लिए यह कहावत है कि "अंधे और लंगड़े वहाँ हैं, इसलिए वह घर में नहीं आ सकता।" ⁹और दाऊद उस क़िला' में रहने लगा और उसने उसका नाम दाऊद का शहर रखा और दाऊद ने चारों तरफ़ मिल्लो से लेकर अन्दर के रुख तक बहुत कुछ ता'मीर किया। ¹⁰और दाऊद बढ़ता ही गया क्योंकि खुदावन्द लश्करों का खुदा उसके साथ था।

¹¹और सूर के बादशाह हेरान ने क़ासिदों को और देवदार की लकड़ियों और बढ़इयों और राजगीरों को दाऊद के पास भेजा और उन्होंने दाऊद के लिए एक महल बनाया। ¹²और दाऊद को यक्कीन हुआ कि खुदावन्द ने उसे इस्राईल का बादशाह बनाकर क़यास बख़्शा, और उसने उसकी हुकूमत को अपनी क़ौम इस्राईल की खातिर मुम्ताज़ किया है।

¹³और हब्रून से चले आने के बा'द दाऊद ने यरुशलीम से और बाँदियों ~रख लीं और बीवियाँ कीं और दाऊद के यहाँ और बेटे बेटियाँ पैदा हुईं। ¹⁴और जो यरुशलीम में उसके यहाँ पैदा हुए, उनके नाम यह हैं सम्मू'आ, और सोबाब और नातन और सुलैमान। ¹⁵और इबहार और इलीसू और नफ़ज और यफ़ी'। ¹⁶और इलीसमा' और इलयदा और इलीफ़ालत।

¹⁷और जब फ़िलिस्तिनों ने सुना कि उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया है, तो सब फ़िलिस्ती दाऊद की तलाश में चढ़ आए और दाऊद को ख़बर हुई, तब वह क़िला' में चला गया। ¹⁸और फ़िलिस्ती आकर रिफ़ाईम की वादी में फ़ैल गये।

¹⁹तब दाऊद ने खुदा से पूँछा, "क्या मैं फ़िलिस्तिनों के मुकाबला को जाऊँ? क्या तू उनको मेरे क़ब्ज़े ~में कर देगा?" ~खुदावन्द ने दाऊद से कहा कि "जा।" क्योंकि मैं ज़रूर फ़िलिस्तिनों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।" ²⁰फिर दाऊद बा'ल प्राज़ीम में आया और वहाँ दाऊद ने उनको मारा और कहने लगा कि "खुदावन्द ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने तोड़ डाला जैसे पानी टूट कर बह निकलता है।" ~तब उसने उस जगह का नाम बा'ल प्राज़ीम रखा। ²¹और वहीं उन्होंने अपने बुतों को छोड़ दिया था तब दाऊद और उसके लोग उनको ले गए।

²²और फ़िलिस्ती फिर चढ़ आए और रिफ़ाईम की वादी में फ़ैल गये। ²³और जब दाऊद ने खुदावन्द से पूँछा तो उसने कहा, "तू चढ़ाई न कर, उनके पीछे से घूम कर तूत के दरख़्तों के सामने से उन पर हमला कर।

²⁴और जब तूत के दरख़्तों की फुन्गियों में तुझे फ़ौज के चलने की आवाज़ सुनाई दे तो चुस्त हो जाना, क्योंकि उस वक़्त खुदावन्द तेरे आगे आगे निकल चुका होगा, ताकि फ़िलिस्तिनों के लश्कर को मारे।" ²⁵और दाऊद ने जैसा खुदावन्द ने उसे फ़रमाया था वैसा ही किया और फ़िलिस्तिनों को जिबा' से जज़र तक मारता गया।

Chapter 6

¹और दाऊद ने फिर इस्राईलियों के सब चुने हुए तीस हज़ार मर्दों को जमा किया।²और दाऊद उठा और सब लोगों को जो उसके साथ थे लेकर बा'ला यहूदाह से चला ताकि खुदा के संदूक को उधर से ले आए, जो उस नाम का या'नी रब्ब-उल-अप्रवाज के नाम का कहलाता है, जो करुबियों पर बैठता है।

³तब उन्होंने खुदा के संदूक को नई गाड़ी पर रखा और उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था निकाल लाये, और उस नई गाड़ी को अबीनदाब के बेटे उज़्ज़ह और अखियो हॉकने लगे।⁴और वह उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था खुदा के संदूक के साथ निकाल लाये, और अखियो संदूक के आगे आगे चल रहा था।⁵और दाऊद और इस्राईल का सारा घराना सनोबर की लकड़ी के सब तरह के साज़ और सितार बरबत और दफ़ और खन्जरी और झाँझ खुदावन्द के आगे आगे बजाते चले।

⁶और जब वह नकोन के खलियान पर पहुँचे तो उज़्ज़ह ने खुदा के संदूक की तरफ़ हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी।⁷तब खुदावन्द का गुस्सा उज़्ज़ह पर भड़का और खुदा ने वहीं उसे उसकी खता की वजह से मारा, और वह वहीं खुदा के संदूक के पास मर गया।

⁸और दाऊद इस वजह से कि खुदा उज़्ज़ह पर टूट पड़ा नाखुश हुआ, और उसने उस जगह का नाम परज़ उज़्ज़ह रखवा जो आज के दिन तक है।⁹और दाऊद उस दिन खुदावन्द से डर गया और कहने लगा कि "खुदावन्द का संदूक मेरे यहाँ क्योंकर आए ?।"

¹⁰और दाऊद ने खुदावन्द के संदूक को अपने यहाँ, दाऊद के शहर में ले जाना न चाहा, बल्कि दाऊद उसे एक तरफ़ जाती 'ओबेदअदूम के घर ले गया।¹¹और खुदावन्द का संदूक जाती ओबेदअदूम के घर में तीन महीने तक रहा और खुदावन्द ने ओबेदअदूम को और उसके सारे घराने को बरकत दी।

¹²और दाऊद बादशाह को खबर मिली कि खुदावन्द ने 'ओबेदअदूम के घराने को और उसकी हर चीज़ में खुदा के संदूक की वजह से बरकत दी है, तब दाऊद गया और खुदा के संदूक को 'ओबेदअदूम के घर से दाऊद के शहर में खुशी खुशी ले आया।¹³और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द के संदूक के उठाने वाले छः क्रदम चले तो दाऊद ने एक बैल और एक मोटा बछड़ा ज़बह किया।

¹⁴और दाऊद खुदावन्द के सामने अपने सारे ज़ोर से नाचने लगा, और दाऊद कतान का अफूद पहने था।¹⁵तब दाऊद और इस्राईल का सारा घराना खुदावन्द के संदूक को ललकारते और नरसिंगा फूँकते हुए लाये।

¹⁶और जब खुदावन्द का संदूक दाऊद के शहर के अन्दर आ रहा था, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की से निगाह की और दाऊद बादशाह को खुदावन्द के सामने उछलते और नाचते देखा, तब उसने अपने दिल ही दिल में हक़ीर जाना।¹⁷और वह खुदा के संदूक को अन्दर लाये और उसे उसकी जगह पर उस खेमा के बीच जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था रखवा, और दाऊद ने सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द के आगे पेश कीं।

¹⁸और जब दाऊद सोख्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कर चुका, तो उसने रब्बुल अप्रवाज के नाम से लोगों को बरकत दी।¹⁹और उसने सब लोगों या'नी इस्राईल के सारे जमा'त के मर्दों और 'औरतों दोनों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोश्त और किशमिश की एक एक टिकिया बाँटी, फिर सब लोग अपने अपने घर चले गये।

²⁰तब दाऊद लौटा ताकि अपने घराने को बरकत दे और साऊल की बेटी मीकल दाऊद के इस्तक्रबाल को निकली और कहने लगी कि "इस्राईल का बादशाह आज कैसा शानदार मा'लूम होता था जिसने आज के दिन अपने मुलाज़िमों की लौंडियों के सामने अपने को नंगा किया जैसे कोई नौजवान बेहयाई से नंगा हो जाता है।"

²¹दाऊद ने मीकल से कहा, "यह तो खुदावन्द के सामने था जिसने तेरे बाप और उसके सारे घराने को छोड़ कर मुझे पसन्द किया, ताकि वह मुझे खुदावन्द की क्रौम इस्राईल का रहनुमा बनाये, इसलिए मैं खुदावन्द के आगे नाचूँगा।²²बल्कि मैं इससे भी ज़्यादा ज़लील हूँगा और अपनी ही नज़र में नीच हूँगा और जिन लौंडियों का ज़िक्र तूने किया है वहीं मेरी इज़ज़त करेंगी।"²³इसलिए साऊल की बेटी मीकल मरते दम तक बे औलाद रही।

Chapter 7

¹जब बादशाह अपने महल में रहने लगा, और खुदावन्द ने उसे उसको चारों तरफ़ के सब दुश्मनों से आराम बख़्शा। ²तो बादशाह ने नातन नबी से कहा, "देख मैं तो देवदार की लकड़ियों के घर में रहता हूँ लेकिन खुदावन्द का संदूक पर्दों के अन्दर रहता है।"

³तब नातन ने बादशाह से कहा, "जा जो कुछ तेरे दिल में है कर क्योंकि खुदावन्द तेरे साथ है।" ⁴और उसी रात को ऐसा हुआ कि खुदावन्द का कलाम नातन को पहुँचा कि। ⁵"जा और मेरे बन्दा दाऊद से कह, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि क्या तू मेरे रहने के लिए एक घर बनाएगा ?

⁶क्योंकि जब से मैं बनी इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया आज के दिन तक किसी घर में नहीं रहा, बल्कि खेमा और मसकन में फिरता रहा हूँ। ⁷और जहाँ जहाँ मैं सब बनी इस्राईल के साथ फिरता रहा, क्या मैं ने कहीं किसी इस्राईली क़बीले से जिसे मैंने हुक्म किया कि मेरी क़ौम इस्राईल की गल्ला बानी करो यह कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार की लकड़ियों का घर क्यों नहीं बनाया ?।

⁸इसलिए अब तू मेरे बन्दा ~दाऊद से कहा ~कि रब्बुल अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे भेड़साला से जहाँ तू भेड़ बकरियों के पीछे पीछे फिरता था लिया, ताकि तू मेरी क़ौम इस्राईल का रहनुमा हो। ⁹और मैं जहाँ जहाँ तू गया तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं दुनिया के बड़े बड़े लोगों के नाम की तरह तेरा नाम बड़ा करूँगा।

¹⁰और मैं अपनी क़ौम इस्राईल के लिए एक जगह मुक़र्रर करूँगा, और वहाँ उनको जमाऊँगा ताकि वह अपनी ही जगह बसें और फिर हटायें न जायें, और शरारत के फ़र्ज़न्द उनको फिर दुख नहीं देने पायेंगे जैसा पहले होता था। ¹¹और जैसा उस दिन से होता आया, जब मैंने हुक्म दिया, कि मेरी क़ौम इस्राईल पर क़ाज़ी हों और मैं ऐसा करूँगा, कि तुझको तेरे सब दुश्मनों से आराम मिले ~इसके अलावा खुदावन्द तुझको बताता है कि खुदावन्द तेरे घरको बनाये रखेगा।

¹²और जब तेरे दिन पूरे हो जायेंगे और तू अपने बाप दादा के साथ मर जाएगा, तो मैं तेरे बा'द तेरी नसल को जो तेरे सुल्ब से होगी, खड़ा करके उसकी हुक्मत को क़ायम करूँगा। ¹³वही मेरे नाम का एक घर बनाएगा और मैं उसकी बादशाहत का तख़्त हमेशा के लिए क़ायम करूँगा। ¹⁴और मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा, अगर वह ख़ता करे तो मैं उसे आदमियों की लाठी और बनी आदम के ताज़िया नों से नसीहत करूँगा।

¹⁵लेकिन मेरी रहमत उससे जुदा न होगी, जैसे मैंने उसे साऊल से जुदा किया जिसे मैंने तेरे आगे से हटा दिया। ¹⁶और तेरा घर और तेरी बादशाहत हमेशा बनी रहेगी, तेरा तख़्त हमेशा के लिए क़ायम किया जायेगा। ¹⁷जैसी यह सब बातें और यह सारा ख़्वाब था वैसा ही दाऊद से नातन ने कहा।

¹⁸तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर खुदावन्द के आगे बैठा, और कहने लगा, "ऐ मालिक खुदावन्द मैं कौन हूँ और मेरा घराना क्या है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया।" ¹⁹तो भी ऐ मालिक खुदावन्द यह तेरी नज़र में छोटी बात थी क्योंकि तूने अपने बन्दा के घराने के हक़ में बहुत मुदत तक का ज़िक्र किया है और वह भी ऐ मालिक खुदावन्द आदमियों के तरीक़े पर। ²⁰और दाऊद तुझसे और क्या कह सकता है ? क्योंकि ऐ मालिक खुदावन्द तू अपने बन्दा को जानता है।

²¹तूने अपने कलाम की खातिर और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ यह सब बड़े काम किए, ताकि तेरा बन्दा उनसे वाकिफ़ हो जाए। ²²इसलिए तू ऐ खुदावन्द खुदा, बुज़ुर्ग़ है, क्योंकि जैसा हमने अपने कानों से सुना है उसके मुताबिक़ कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावह कोई खुदा नहीं।' ²³और दुनिया में वह कौन सी एक क़ौम है जो तेरे लोगों या'नी इस्राईल की तरह है, जिसे खुदा ने जाकर अपनी क़ौम बनाने को छुड़ाया, ताकि वह अपना नाम करे, और तुम्हारी खातिर बड़े बड़े काम और अपने मुल्क के लिए और अपनी क़ौम के आगे जिसे तूने मिस्र की क़ौमों से और उनके मा'बूदों से रिहाई बख़्शी होलनाक काम करे।

²⁴और तूने अपने लिए अपनी क़ौम बनी इस्राईल को मुक़र्रर किया, ताकि वह हमेशा के लिए तेरी क़ौम ठहरे और तू खुद ऐ खुदावन्द उनका खुदा हुआ। ²⁵और अब तू ऐ खुदावन्द उस बात को जो तूने अपने बन्दा और उसके घराने के हक़ में फ़रमाई है, हमेशा के लिए क़ायम करदे और जैसा तूने फ़रमाया है वैसा ही कर।

²⁶और हमेशा यह कह कहकर तेरे नाम की बड़ाई की जाए, कि रब्ब-उल-अफ़वाज इस्राईल का खुदा है और तेरे बन्दा दाऊद का घराना तेरे सामने क़ायम किया जाएगा।

²⁷क्योंकि तूने ऐ रब्ब-उल-अफ़वाज इस्राईल के खुदा अपने बन्दा पर ज़ाहिर किया, और फ़रमाया कि मैं तेरा घराना बनाए रखूँगा, तब तेरे बन्दा के दिल में यह आया कि तेरे आगे यह मुनाज़ात करे। ²⁸और ऐ मालिक खुदावन्द तू खुदा है और तेरी बातें सच्ची हैं, और तूने अपने बन्दे से इस नेकी का वा'दा किया है।

²⁹इसलिए अब अपने बन्दा के घराने को बरकत देना मंज़ूर कर, ताकि वह हमेशा तेरे नज़दीक़ वफ़ादार रहे, कि तू ही ने ऐ मालिक खुदावन्द यह कहा है, और तेरी ही बरकत से तेरे बन्दे का घराना हमेशा मुबारक रहे !।"

Chapter 8

¹इसके बा'द दाऊद ने फ़िलिस्तिनों को मारा, और उनको मगलूब किया और दाऊद ने दारुल हुकूमत 'इनान फ़िलिस्तिनों के हाथ से छीन ली।

²और उसने मोआब को मारा और उनको ज़मीन पर लिटा कर रस्सी से नापा, तब उसने क़त्ल करने के लिए दो रस्सियों से नापा और जीता छोड़ने के लिए एक पूरी रस्सी से, यूँ मोआबी दाऊद के खादिम बनकर हदिये लाने लगे।

³और दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अज़र को भी जब वह दरिया-ए-फ़रात पर बादशाहत पर भी क़ब्ज़ा करने को जा रहा था मार लिया।⁴ और दाऊद ने उसके एक हज़ार सात सौ सवार और बीस हज़ार पियादे पकड़ लिए और दाऊद ने रथों के सब घोड़ों की नालें काटीं पर उनमें से सौ रथों के लिए घोड़े बचा रखे।

⁵और जब दमिश्क के अरामी ज़ूबाह के बादशाह हदद अज़र की मदद को आए तो दाऊद ने अरामियों के बाईस हज़ार आदमी क़त्ल किए।⁶ जब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई तब अरामी भी दाऊद के खादिम बन कर हदिये लाने लगे, और खुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फ़तह बख़्शी।

⁷और दाऊद ने हदद'अज़र के मुलाज़िमें को सोने की ढालें छीन लीं और उनको यरुशलीम में ले आया।⁸ और दाऊद बादशाह बताह और बैरूती से जो हदद'अज़र के शहर थे बहुत सा पीतल ले आया।

⁹और जब हमात के बादशाह तूगी ने सुना कि दाऊद ने हदद'अज़र का सारा लश्कर मार लिया।¹⁰ तो तूगी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद बादशाह के पास भेजा, कि उसे सलाम कहे और ~मुबारकबाद दे, इसलिए कि उसने हदद'अज़र तूगी से लड़ा करता था और यूराम चाँदी और सोने और पीतल के बरतन अपने साथ लाया।

¹¹और दाऊद बादशाह ने उनको खुदावन्द के लिए मख्सूस किया, ऐसे ही उसने उनसब क़ौमों के सोने चाँदी को मख्सूस किया जिनको उसने मगलूब किया था।

¹²या'नी अरामियों और मोआबियों और बनी अम्मोन और फ़िलिस्तिनों और 'अमालीकियों के सोने चाँदी और ज़ूबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अज़र की लूट को।

¹³और दाऊद का बड़ा नाम हुआ जब वह नमक की वादी में अरामियों के अठारह हज़ार आदमी मार कर लौटा।¹⁴ और उसने अदूम में चौकियाँ बिठायीं बल्कि सारे अदूम में चौकियाँ बिठायीं और सब अदूमी दाऊद के खादिम बने और खुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फ़तह बख़्शी।

¹⁵और दाऊद ने कुल इस्राईल पर बादशाहत की और दाऊद अपनी सब र'इयत के साथ 'अदल-ओ- इन्साफ़ करता था¹⁶ और ज़रोयाह का बेटा योआब लश्कर का सरदार था, और अखीलूद का बेटा यहूसफ़त मुवरिख़ था।¹⁷ और अखीतोब का बेटा सदूक़ और अबियातर का बेटा अखीमलिक कहिन थे और शरायाह मुंशी था।¹⁸ और यहूयदाह का बेटा बनायाह करेतियों और फ़िलिस्तिनों का सरदार था, और दाऊद के बेटे कहिन थे।

Chapter 9

¹फिर दाऊद ने कहा, "क्या साऊल के घराने में से कोई बाक़ी है, जिस पर मैं यूनतन की खातिर महेरबानी करूँ।" ²और साऊल के घराने का एक खादिम जिसका नाम ~ज़ीबा था, उसे दाऊद के पास बुला लाये, बादशाह ने उससे कहा, "क्या तू ज़ीबा है?" उसने कहा, "हाँ तेरा बन्दा वही है।"

³तब बादशाह ने उससे कहा, "क्या साऊल के घराने में से कोई नहीं रहता ताकि मैं उसपर खुदा की तरह महेरबानी करूँ?" ज़ीबा ने बादशाह से कहा, "यूनतन का एक बेटा रह गया है जो लंगड़ा है।" ⁴तब बादशाह ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?" ~ज़ीबा ने बादशाह को जवाब दिया, "देख वह लूदबार में 'अम्मी ऐल के बेटे मकीर के घर में है।"

⁵तब दाऊद बादशाह ने लोग भेज कर लूदबार से 'अम्मी ऐल के बेटे मकीर के घर से उसे बुलवा लिया। ⁶और साऊल के बेटे यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत दाऊद के पास आया, और उसने मुँह के बल गिरकर सिज्दा किया, तब दाऊद ने कहा, "मिफ़ीबोसत!" ~उसने जवाब दिया, "तेरा बन्दा हाज़िर है।"

⁷दाऊद ने उससे कहा, "मत डर क्योंकि मैं तेरे बाप यूनतन की खातिर ज़रूर तुझ पर महेरबानी करूँगा, और तेरे बाप साऊल की ज़मीन पर तुझे फेर दूँगा, और तू हमेशा मेरे दस्तरख़्वान पर खाना खाया कर।" ⁸तब उसने सिज्दा किया और कहा, "कि तेरा बन्दा है क्या चीज़ जो तू मुझ जैसे मरे कुत्ते पर निगाह करे?"

⁹तब बादशाह ने साऊल के खादिम ज़ीबा को बुलाया और उससे कहा कि "मैंने सब कुछ जो साऊल और उसके सारे घराने का था तेरे आक्रा के बेटे को बख़्श दिया।" ¹⁰इसलिए तू अपने बेटों और नौकरों समेत ज़मीन को उसकी तरफ़ से जोत कर पैदावार को ले आया कर ताकि तेरे आक्रा के बेटे के खाने को रोटी हो पर मिफ़ीबोसत जो तेरे आक्रा का बेटा है मेरे दस्तरख़्वान पर हमेशा खाना खायेगा।" और ज़ीबा के पन्दरह बेटे और बीस नौकर थे।

¹¹तब ज़ीबा ने बादशाह से कहा, "जो कुछ मेरे मालिक बादशाह ने अपने खादिम को हुक्म दिया है तेरा खादिम वैसा ही करेगा।" लेकिन मिफ़ीबोसत के हक़ में बादशाह ने फ़रमाया कि वह मेरे दस्तरख़्वान पर इस तरह खाना खायेगा कि गोया वह बादशाह जादों मेंसे एक है। ¹²और मिफ़ीबोसत का एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था, और जितने ज़ीबा के घर में रहते थे वह सब मिफ़ीबोसत के खादिम थे। ¹³इसलिए मिफ़ीबोसत यरुशलीम में रहने लगा, क्योंकि वह हमेशा बादशाह के दस्तरख़्वान पर खाना खाता था और वह दोनों पाँव से लंगड़ा था।

Chapter 10

¹इसके बा'द ऐसा हुआ कि बनी अम्मोन का बादशाह मर गया और उसका बेटा हनून उसका जानशीन हुआ।²तब दाऊद ने कहा कि "मैं नाहस के बेटे हनून के साथ महेरबानी करूँगा, जैसे उसके बाप ने मेरे साथ महेरबानी की।" तब दाऊद ने अपने खादिम भेजे ताकि उनके ज़रिए' उसके बाप के बारे में उसे तसल्ली दे, चुनाँचे दाऊद के खादिम बनी अम्मोन की सर ज़मीन पर आए।³बनी अम्मोन के सरदारों ने अपने मालिक हनून से कहा, "तुझे क्या यह गुमान है कि दाऊद तेरे बाप की ता'ज़ीम करता है कि उसने तसल्ली देने वाले तेरे पास भेजे हैं ? क्या दाऊद ने अपने खादिम तेरे पास इसलिए नहीं भेजे हैं कि शहर का हाल दरयाफ़्त करके और इसका भेद लेकर वह इसको बरबाद करे ?"

⁴तब हनून ने दाऊद के खादिमों को पकड़ कर उनकी आधी आधी दाढ़ी मुंडवाई और उनकी लिबास बीच से सुरीन तक कटवा कर उनको रूख़सत कर दिया।

⁵जब दाऊद को ख़बर पहुँची तो उसने उनसे मिलने को लोग भेजे इसलिए यह आदमी बहुत ही शर्मिन्दा थे, इसलिए बादशाह ने फ़रमाया कि "जब तक तुम्हारी दाढ़ी न बढ़े यरीहू में रहो, उसके बा'द चले आना।"

⁶जब बनी अम्मोन ने देखा कि वह दाऊद के आगे गुस्सा ~हो गया तो बनी अम्मोन ने लोग भेजे और बैतरहोब के अरामियों और ज़ूबाह के अरामियों में से बीस हज़ार पियादों को और मा'का के बादशाह को एक हज़ार सिपाहियों समेत और तोब के बारह हज़ार आदमियों को मज़दूरी पर बुलाया।⁷और दाऊद ने यह सुनकर योआब और बहादुरों के सारे लश्कर को भेजा।⁸तब बनी अम्मोन निकले और उन्होंने फाटक के पास ही लड़ाई के लिए सफ़ बाँधी और ज़ूबाह और रहोब के अरामी और तोब और मा'का के लोग मैदान में अलग थे।

⁹जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे दोनों तरफ़ लड़ाई के लिए सफ़ बंधी है तो उसने बनी इस्राईल के ख़ास लोगों को चुन लिया और अरामियों के सामने उनकी सफ़ बाँधी।¹⁰और बाक़ी लोगों को अपने भाई अबीशे के हाथ सौंप दिया, और उसने बनी अम्मोन के सामने सफ़ बाँधी।

¹¹फिर उसने कहा, "अगर अरामी मुझ पर ग़ालिब होने लगे तो तू मेरी मदद करना और अगर बनी अम्मोन तुझ पर ग़ालिब होने लगे तो मैं आकर तेरी मदद करूँगा।"¹²इसलिए ख़ूब हिम्मत रख और हम सब अपनी क़ौम और अपने ख़ुदा के शहरों की खातिर मर्दानगी करें और ख़ुदावन्द जो बेहतर जाने वह करे।

¹³तब योआब और वह लोग जो उसके साथ थे अरामियों पर हमला करने को आगे बढ़े और वह उसके आगे भागे।¹⁴जब बनी अम्मोन ने देखा कि अरामी भाग गए तो वह भी अबीशे के सामने से भाग कर शहर के अन्दर घुस गए, तब योआब बनी अम्मोन के पास से लौट कर यरुशलीम में आया।

¹⁵जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने इस्राईलियों से शिकस्त खाई तो वह सब जमा' हुए।¹⁶और हदद'अज़र ने लोग भेजे और अरामियों को जो दरिया-ए-फ़रात के पार थे ले आया और वह हिलाम में आए और हदद'अज़र की फ़ौज का सिपह सालार सूबक उनका सरदार था।

¹⁷और दाऊद को ख़बर मिली, इसलिए उसने सब इस्राईलियों को इकठ्ठा किया और यर्दन के पार होकर हिलाम में आया और अरामियों ने दाऊद के सामने सफ़ आराई की और उससे लड़े।¹⁸और अरामी इस्राईलियों के सामने से भागे और दाऊद ने अरामियों के सात सौ रथों के आदमी और चालीस हज़ार सवार क़त्ल कर डाले, और उनकी फ़ौज के सरदार सूबक को ऐसा मारा कि वह वहीं मर गया।¹⁹और जब बादशाहों ने जो हदद'अज़र के खादिम थे देखा कि वह इस्राईलियों से हार गए, तो उन्होंने इस्राईलियों से सुलह कर ली और उनकी ख़िदमत करने लगे, तब अरामी बनी अम्मोन की फिर मदद करने से डरे।

Chapter 11

¹और ऐसा हुआ कि दूसरे साल जिस वक्रत बादशाह जंग के लिए निकलते हैं, दाऊद ने योआब और उसके साथ अपने खादिमों और सब इसाईलियों को भेजा, और उन्होंने बनी अम्मोन को क़त्ल किया और रब्बा को जा घेरा पर दाऊद यरुशलीम ही में रहा।

²और शाम के वक्रत दाऊद अपने पलंग पर से उठकर बादशाही महल की छत पर टहलने लगा, और छत पर से उसने एक 'औरत को देखा जो नहा रही थी, और वह 'औरत निहायत खूबसूरत थी।³तब दाऊद ने लोग भेजकर उस 'औरत का हाल दरयाफ़्त किया, और किसी ने कहा, "क्या वह इल'आम की बेटी बतसबा नहीं जो हिती औरय्याह की बीवी है ?।"

⁴और दाऊद ने लोग भेजकर उसे बुला लिया, वह उसके पास आई और उसने उससे सोहबत की {क्योंकि वह अपनी नापाकी से पाक हो चुकी थी }फिर वह अपने घर को चली गई।⁵और वह औरत हाम्ला हो गई, तब उसने दाऊद के पास खबर भेजी कि "मैं हाम्ला हूँ।"

⁶और दाऊद ने योआब को कहला भेजा कि "हिती औरय्याह को मेरे पास भेज दे।" इसलिए योआब ने औरय्याह को दाऊद के पास भेज दिया।⁷और जब औरय्याह आया तो दाऊद ने पूछा कि योआब कैसा है और लोगों का क्या हाल है और जंग कैसी हो रही है ?।⁸फिर दाऊद ने औरय्याह से कहा कि "अपने घर जा और अपने पाँव धो।" और औरय्याह बादशाह के महल से निकला और बादशाह की तरफ़ से उसके पीछे पीछे एक ख़वान भेजा गया।

⁹लेकिन औरय्याह बादशाह के घर के आस्ताना पर अपने मालिक के और सब खादिमों के साथ सोया और अपने घर न गया।¹⁰और जब उन्होंने दाऊद को यह बताया कि "औरय्याह अपने घर नहीं गया। तो दाऊद ने औरय्याह से कहा, "क्या तू सफ़र से नहीं आया ?तब तू अपने घर क्यों नहीं गया ?।"¹¹औरय्याह ने दाऊद से कहा कि "संदूक और इसाईल और यहूदाह झोंपड़ियों में रहते हैं और मेरा मालिक योआब और मेरे मालिक के खादिम खुले मैदान में डेरे डाले हुए हैं तो क्या मैं अपने घर जाऊँ और खाऊँ पिऊँ और अपनी बीवी के साथ सोऊँ ? तेरी हयात और तेरी जान की क़सम मुझसे यह बात न होगी।"

¹²फिर दाऊद ने औरय्याह से कहा कि "आज भी तू यहीं रह जा, कल मैं तुझे रवाना कर दूँगा।" इसलिए औरय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरुशालीम में रहा।¹³और जब दाऊद ने उसे बुलाया तो उसने उसके सामने खाया पिया और उसने उसे पिलाकर मतवाला किया और शाम को वह बाहर जाकर अपने मालिक के और खादिमों के साथ अपने बिस्तर पर सो रहा पर अपने घर को न गया।

¹⁴सुबह को दाऊद ने योआब के लिए ख़त लिखा और उसे औरय्याह के हाथ भेजा।¹⁵और उसने ख़त में यह लिखा कि "औरय्याह को जंग में सबसे आगे रखना और तुम उसके पास से हट जाना ताकि वह मारा जाए और जाँ बहक़ हो।"

¹⁶और यँ हुआ कि जब योआब ने उस शहर का जाइज़ा कर लिया तो उसने औरय्याह को ऐसी जगह रखखा जहाँ वह जानता था कि बहादुर मर्द हैं।¹⁷और उस शहर के लोग निकले ओर योआब से लड़े और वहाँ दाऊद के खादिमों में से थोड़े से लोग काम आए और हिती औरय्याह भी मर गया।

¹⁸तब योआब ने आदमी भेज कर जंग का सब हाल दाऊद को बताया।¹⁹और उसने क़ासिद को नसीहत कर दी कि "जब तू बादशाह से जंग का सब हाल byaa कर चुके।²⁰तब अगर ऐसा हो कि बादशाह को गुस्सा आ जाये और वह तुझसे कहने लगे कि तुम लड़ने को शहर के ऐसे नज़दीक क्यों चले गये? क्या तुम नहीं जानते थे कि वह दीवार पर से तीर मारेंगे ?।

²¹यरोब्बुसत के बेटे अबीमलिक को किसने मारा? क्या एक 'औरत ने चक्की का पात दीवार परसे उसके ऊपर ऐसा नहीं फेंका कि वह तैबिज़ में मर गया? ~इसलिए तुम शहर की दीवार के नज़दीक क्यों गये? तो फिर तू कहना कि तेरा खादिम हिती औरय्याह भी मर गया।"

²²तब वह क़ासिद चला और आकर जिस काम के लिए योआब ने उसे भेजा था वह सब दाऊद को बताया।²³और उस क़ासिद ने दाऊद से कहा कि "वह लोग हमपर ग़ालिब हुए और निकल कर मैदान में हमारे पास आगए, फिर हम उनको दौड़ाते हुए फाटक के मदख़ल तक चले गये।

²⁴तब तीरंदाज़ों ने दीवार पर से तेरे खादिमों पर तीर छोड़े, इसलिए बादशाह के थोड़े खादिम भी मरे और तेरा खादिम हिती औरय्याह भी मर गया।"²⁵तब दाऊद ने क़ासिद से कहा कि, "तू योआब से यँ कहना कि तुझे इस बात से ना खुशी न हो इसलिए कि तलवार जैसा एक को उड़ाती है वैसा ही दूसरे को, इसलिए तू शहर से और सख़्त जंग करके उसे ढा दे और तू उसे हिम्मत देना।"

²⁶जब औरय्याह की बीवी ने सुना कि उसका शौहर औरय्याह मर गया तो वह अपने शौहर के लिए मातम करने लगी।²⁷और जब मातम के दिन गुज़र गए तो दाऊद ने बुलवाकर उसको अपने महल में रख लिया और वह उसकी बीवी हो गई और उससे उसके एक लड़का हुआ पर उस काम से जिसे दाऊद ने किया था खुदावन्द नाराज़ हुआ।

Chapter 12

¹और खुदावन्द ने नातन को दाऊद के पास भेजा, उसने उसके पास आकर उससे कहा, "किसी शहर में दो शख्स थे, एक अमीर दूसरा गरीब।² उस अमीर के पास बहुत से रेवड़ और गल्ले थे।³ लेकिन उस गरीब के पास भेड़ की एक पठिया के 'अलावा कुछ न था, जिसे उसने खरीद कर पाला था और वह उसके और उसके बाल बच्चों के साथ बड़ी थी, वह उसी के नेवाले में से खाती और उसके पियाला से पीती और उसकी गोद में सोती थी, और उसके लिए बतौर बेटी के थी।

⁴और उस अमीर के यहाँ कोई मुसाफिर आया, इसलिए उसने उस मुसाफिर के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाने को अपने रेवड़ और गल्ला में से कुछ न लिया, बल्कि उस गरीब की भेड़ ले ली, और उस शख्स के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाई।⁵ तब दाऊद का गज़ब उस शख्स पर बशिददत भड़का और उसने नातन से कहा कि "खुदावन्द की हयात की क्रसम कि वह शख्स जिसने यह काम किया वाजिबुल क़ल्ल है।⁶ इसलिए उस शख्स को उस भेड़ का चौ गुना भरना पड़ेगा क्योंकि उसने ऐसा काम किया और उसे तरस न आया।"

⁷तब नातन ने दाऊद से कहा, "वह शख्स तूही है, खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया और मैंने तुझे साऊल के हाथ से छुड़ाया।⁸ और मैंने तेरे आक्रा का घर तुझे दिया और तेरे आक्रा की बीवियाँ तेरी गोद में करदीं, और इस्राईल और यहूदाह का घराना तुझको दिया, और अगर यह सब कुछ थोड़ा था तो मैं तुझको और और चीजें भी देता।

⁹इसलिए तूने क्यों खुदा की बात की तहक़ीर करके उसके सामने बुराई की? तूने हिंती औरय्याह को तलवार से मारा और उसकी बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी बने और उसको बनी अम्मोन की तलवार से क़ल्ल करवाया।¹⁰ इसलिए अब तेरे घरसे तलवार कभी अलग न होगी क्योंकि तूने मुझे हक़ीर जाना और हिंती औरय्याह की बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी हो।

¹¹इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख मैं बुराई को तेरे ही घर से तेरे खिलाफ़ उठाऊँगा और मैं तेरी बीवियों को लेकर तेरी आँखों के सामने तेरे पड़ोसी को दूँगा, और वह दिन दहाड़े तेरी बीवियों से सोहबत करेगा।¹² क्योंकि तूने छिपकर यह किया लेकिन मैं सारे इस्राईल के सामने दिन दहाड़े यह करूँगा।"¹³ तब दाऊद ने नातन से कहा, "मैंने खुदावन्द का गुनाह किया।" ~नातन ने दाऊद से कहा कि "खुदावन्द ने भी तेरा गुनाह बख़्शा, तू मरेगा नहीं।

¹⁴तोभी चूँकि तूने इस काम से खुदावन्द के दुश्मनों को कुफ़्र बकने का बड़ा मौ'का दिया है इसलिए वह लड़का भी जो तुझसे पैदा होगा मर जाएगा।"¹⁵ फिर नातन अपने घर चला गया और खुदावन्द ने उस लड़के को जो औरय्याह की बीवी के दाऊद से पैदा हुआ था मारा और वह बहुत बीमार हो गया।

¹⁶इसलिए दाऊद ने उस लड़के की खातिर खुदा से मिन्नत की और दाऊद ने रोज़ा रखा और अन्दर जाकर सारी रात ज़मीन पर पड़ा रहा।¹⁷ और उसके घराने के बुजुर्ग उठकर उसके पास आए कि उसे ज़मीन पर से उठायें पर वह न उठा और न उसने उनके साथ खाना खाया।¹⁸ और सातवें दिन वह लड़का मर गया और दाऊद के मुलाज़िम उसे डर के मारे यह न बता सके कि लड़का मर गया, क्योंकि उन्होंने कहा कि "जब वह लड़का ज़िन्दा ही था और हमने उससे बात की तो उसने हमारी बात न मानी तब अगर हम उसे बतायें कि लड़का मर गया तो वह बहुत ही दुखी होगा।"

¹⁹लेकिन जब दाऊद ने अपने मुलाज़िमों को आपस में फुसफुसाते देखा तो दाऊद समझ गया कि लड़का मर गया, इसलिए दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से पूछा, "क्या लड़का मर गया?" उन्होंने जवाब दिया, "मर गया।"²⁰ तब दाऊद ज़मीन पर से उठा और उसने गुस्ल करके उसने तेल लगाया और लिबास बदली और खुदावन्द के घर में जाकर सज्दा किया फिर वह अपने घर आया और उसके हुक्म देने पर उन्होंने उसके आगे रोटी रखी और उसने खाई

²¹तब उसके मुलाज़िमों ने उससे कहा, "यह कैसा काम है जो तूने किया? जब वह लड़का जीता था तो तूने उसके लिए रोज़ा रखवा और रोता भी रहा और जब वह लड़का मर गया तो तूने उठकर रोटी खाई।"²² उसने कहा कि "जब तक वह लड़का ज़िन्दा था मैंने रोज़ा रखवा और मैं रोता रहा क्योंकि मैंने सोचा क्या जाने खुदावन्द को मुझपर रहम आजाये कि वह लड़का जीता रहे?।"²³ लेकिन अब तो मर गया तब मैं किस लिए रोज़ा रखूँ? क्या मैं उसे लौटा के ला सकता हूँ? मैं तो उसके पास जाऊँगा पर वह मेरे पास नहीं लौटने का।"

²⁴फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत सबा'को तसल्ली दी और उसके पास गया और उससे सोहबत की और उसके एक बेटा हुआ और दाऊद ने उसका नाम सुलैमान रखवा और खुदावन्द का प्यारा हुआ।²⁵ और उसने नातन नबी की ज़रिए पैग़ाम भेजा तब उसने उसका नाम खुदावन्द की खातिर यदीदियाह रखवा।

²⁶और योआब बनी अम्मोन के रब्बा से लड़ा और उसने दारुल हुकूमत को ले लिया।²⁷ और योआब ने क़ासिदों के ज़रिए ~दाऊद को कहला भेजा कि "मैं रब्बा से लड़ा और मैंने पानियों के शहर को ले लिया।"²⁸ फिर अब तू बाक़ी लोगों को जमा' कर और इस शहर के नज़दीक ख़ेमा ज़न हो और इस पर क़ब्ज़ा कर ले ऐसा न हो कि मैं इस शहर को बरबाद करूँ और वह मेरे नाम से कहलाए।"

²⁹तब दाऊद ने लोगों को जमा' किया और रब्बा को गया और उससे लड़ा और उसे ले लिया।³⁰ और उसने उनके बादशाह का ताज उसके सर पर से उतार लिया, उसका वज़न सोने का एक क़िन्तार था और उसमें जवाहर जड़े हुए थे, फिर वह दाऊद के सर पर रखवा गया और वह उस शहर से लूट का बहुत सा माल निकाल लाया।

³¹और उसने उन लोगों को जो उसमें थे बाहर निकाल कर उनको आरों और लोहे के हेंगों और लोहे के कुल्हाड़ों के नीचे कर दिया, और उनको ईंटों के पज़ावे में से चलवाया और उसने बनी अम्मोन के सब शहरों से ऐसा ही किया, फिर दाऊद और सब लोग यरुशलीम को लौट आए।

Chapter 13

¹और इसके बा'द ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबी सलोम की एक खूबसूरत बहन थी, जिसका नाम तमर था, उस पर दाऊद का बेटा अमनून 'आशिक्र हो गया।² और अमनून ऐसा कुढ़ने लगा कि वह अपनी बहन तमर की वजह से बीमार पड़ गया, क्योंकि वह कुँवारी थी इसलिए अमनून को उसके साथ कुछ करना दुशवार मा'लूम हुआ।

³और दाऊद के भाई सम'आ का बेटा यूनदब अमनून का दोस्त था, और यूनदब बड़ा चालाक आदमी था।⁴ फिर उसने उनसे कहा, "ऐ बादशाह ज़ादे! तू क्यों दिन ब दिन दुबला होता जाता है? क्या तू मुझे नहीं बताएगा?" तब अमनून ने उससे कहा कि "मैं अपने भाई अबीसलोम की बहन तमर पर 'आशिक्र हूँ।"

⁵यूनदब ने उससे कहा, "तू अपने बिस्तर पर लेट जा और बीमारी का बहाना कर ले और जब तेरा बाप तुझे देखने आए, तो तू उससे कहना, मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मुझे खाना दे और मेरे सामने खाना पकाये, ताकि मैं देखूँ और उसके हाथ से खाऊँ।"⁶ तब अमनून पड़ गया और उसने बीमारी का बहाना कर लिया और ~जब बादशाह उसको देखने आया, तो अमनून ने बादशाह से कहा, "मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मेरे सामने दो पूरियाँ बनाये, ताकि मैं उसके हाथ से खाऊँ।"

⁷तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि "तू अभी अपने भाई अमनून के घर जा और उसके लिए खाना पका।"⁸ फिर तमर अपने भाई अमनून के घर गई और वह बिस्तर पर पड़ा हुआ था और उसने आटा लिया और गूँधा, और उसके सामने पूरियाँ बनायीं और उनको पकाया।⁹ और तब को लिया और उसके सामने उनको उंडेल दिया, लेकिन उसने खाने से इन्कार किया, तब अमनून ने कहा कि "सब आदमियों को मेरे पास से बाहर कर दो।" तब हर एक आदमी उसके पास से चला गया।

¹⁰तब अमनून ने तमर से कहा कि "खाना कोठरी के अन्दर ले आ ताकि मैं तेरे हाथ से खाऊँ।" इसलिए तमर वह पूरियाँ जो उसने पकाई थीं उठा कर उनको कोठरी में अपने भाई अमनून के पास लायी।¹¹ और जब वह उनको उसके नज़दीक ले गई कि वह खाए तो उसने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, "ऐ मेरी बहन मुझसे सोहबत कर।"¹² उसने कहा, "नहीं मेरे भाई मेरे साथ ज़बरदस्ती न कर क्योंकि इस्राईलियों में कोई ऐसा काम नहीं होना चाहिए, तू ऐसी हिमाक़त न कर।"

¹³और भला मैं अपनी रुसवाई कहाँ लिए फिर्छूँगी? और तू भी इस्राईलियों के बेवकूफ़ों-में से एक की तरह-ठहरेगा, इसलिए तू बादशाह से दरख्वास्त कर क्योंकि वह मुझको तुझसे रोक नहीं रखेगा।"¹⁴ लेकिन उसने उसकी बात न मानी और चूँकि वह उससे ताक़तवर था इसलिए उसने उसके साथ ज़बरदस्ती की, और उससे सोहबत की।

¹⁵फिर अमनून को उससे बड़ी सख़्त नफ़रत हो गई क्योंकि उसकी नफ़रत उसके जज़्ब-ए-इश्क़ से कहीं बढ़कर थी, इसलिए अमनून ने उससे कहा, "उठ चली जा।"¹⁶ वह कहने लगी, "ऐसा न होगा क्योंकि यह जुल्म कि तू मुझे निकालता है उस काम से जो तूने मुझसे किया बदतर है।" लेकिन उसने उसकी एक न सुनी।

¹⁷तब उसने अपने एक मुलाज़िम को जो उसकी खिदमत करता था बुला कर कहा, "इस 'औरत को मेरे पास से बाहर निकाल दे और पीछे दरवाज़े की चटकनी लगा दे।"

¹⁸और वह रंग बिरंग जोड़ा पहने हुए थी क्योंकि बादशाहों की कुँवारी बेटियाँ ऐसी ही लिबास पहनती थीं फिर उसके खादिम ने उसको बाहर कर दिया और उसके पीछे चटकनी लगा दी।¹⁹ और तमर ने अपने सर पर खाक डाली और अपने रंग बिरंग के जोड़े को जो पहने हुए थी फाड़ लिया, और सर पर हाथ धर कर रोती हुई चली।

²⁰उसके भाई अबीसलोम ने उससे कहा, "क्या तेरा भाई अमनून तेरे साथ रहा है? खैर ऐ मेरी बहन अब चुप हो रह क्योंकि वह तेरा भाई है और इस बात का ग़म न कर।" ~तब तमर अपने भाई अबीसलोम के घर में बे बस पड़ी रही।²¹ और जब दाऊद बादशाह ने यह सब बातें सुनी तो निहायत गुस्सा हुआ।²² और अबी सलोम ने अपने भाई अमनून से कुछ बुरा भला न कहा क्योंकि अबीसलोम को अमनून से नफ़रत थी इसलिए कि उसने उसकी बहन तमर के साथ ज़बरदस्ती किया था।

²³और ऐसा हुआ कि पूरे दो साल के बा'द भेड़ों के बाल कतरने वाले अबीसलोम के यहाँ बा'ल हसोर में थे जो इफ़्राईम के पास है और अबीसलोम ने बादशाह के सब बेटों को दा'वत दी।²⁴ तब अबीसलोम बादशाह के पास आकर कहने लगा, "तेरे खादिम के यहाँ भेड़ों के बाल कतरने वाले आए हैं इसलिए मैं मिन्नत करता हूँ कि बादशाह अपने मुलाज़िमों और अपने खादिम के साथ चले।"

²⁵तब बादशाह ने अबीसलोम से कहा, "नहीं मेरे बेटे हम सबके सब न चलें ऐसा न हो कि तुझ पर हम बोझ हो जाएँ और वह उससे बजिद हुआ तो भी वह न गया पर उसे दु'आ दी।"²⁶ तब अबीसलोम ने कहा, "अगर ऐसा नहीं हो सकता तो मेरे भाई अमनून को तो हमारे साथ जाने दे" बादशाह ने उससे कहा, "वह तेरे साथ क्यों जाए ?।"

²⁷लेकिन अबीसलोम ऐसा बजिद हुआ कि उसने अमनून और सब शहज़ादों को उसके साथ जाने दिया।²⁸ और अबीसलोम ने अपने खादिमों को हुक्म दिया कि "देखो जब अमनून का दिल मय से सुरूर में हो और मैं तुम को कहूँ कि अमनून को मारो तो तुम उसे मार डालना खोफ़ न करना, क्या मैंने तुमको हुक्म नहीं दिया? ~हिम्मतवर और बहादुर बने रहो।"²⁹ चुनौचे अबीसलोम के नौकरों ने अमनून से वैसा ही किया जैसा अबीसलोम ने हुक्म दिया था, तब सब शहज़ादे उठे और हर एक अपने खच्चर पर चढ़ कर भागा।

³⁰और वह अभी रास्ते ही में थे कि दाऊद के पास यह खबर पहुँची कि "अबीसलोम ने सब शहज़ादों को क़त्ल कर डाला है और उनमें से एक भी बाक़ी नहीं बचा।"³¹ तब बादशाह ने उठकर अपने लिबास को फाड़ा और ज़मीन पर गिर पड़ा और उसके सब मुलाज़िम लिबास फाड़े हुए उसके सामने खड़े रहे।

³²तब दाऊद के भाई सिम'आ का बेटा यूनदब कहने लगा कि "मेरा मालिक यह ख्याल न करे, कि उन्होंने सब जवानों को जो बादशाह ज़ादे हैं मार डाला है इसलिए कि सिर्फ़ अमनून ही मरा है, क्योंकि अबीसलोम के इन्तिज़ाम से उसी दिन से यह बात ठान ली गई थी जब उसने उसकी बहन तमर के साथ ज़बरदस्ती की थी।"³³ इसलिए मेरा मालिक बादशाह ऐसा ख्याल करके कि सब शहज़ादे मर गये इस बात का ग़म न करे क्योंकि सिर्फ़ अमनून ही मरा है।"

³⁴और अबीसलोम भाग गया और उस जवान ने जो निगहबान था अपनी आँखें उठाकर निगाह की और क्या देखा कि बहुत से लोग उसके पीछे की तरफ़ से पहाड़ के किनारे के रास्ते से चले आ रहे हैं। ³⁵तब यूनदब ने बादशाह से कहा कि "देख शहज़ादे आ गए जैसा तेरे खादिम ने कहा ~था वैसा ही है।" ³⁶उसने अपनी बात खत्म ही की थी कि शहज़ादे आ पहुँचे और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे और बादशाह और उसके सब मुलाज़िम भी ज़ोर ज़ोर से रोए।

³⁷लेकिन अबीसलोम भाग कर जसूर के बादशाह 'अम्मीहूद के बेटे तल्मी के पास चला गया और दाऊद हर रोज़ अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। ³⁸इसलिए अबीसलोम भाग कर जसूर को गया और तीन बरस तक वहीं रहा। ³⁹और दाऊद बादशाह के दिल में अबीसलोम के पास जाने की बड़ी आरज़ू थी क्योंकि अमनून की तरफ़ से उसे तसल्ली हो गई थी इसलिए कि वह मर चुका था

Chapter 14

¹और ज़रोयाह के बेटे योआब ने जान लिया कि बादशाह का दिल अबीसलोम की तरफ़ लगा है।²तब योआब ने तक्रू'अ को आदमी भेज कर वहाँ से एक 'अक्लमन्द' औरत बुलवाई और उससे कहा कि "ज़रा सोग वाली सा भेस करके मातम के कपड़े पहन ले, और तेल न लगा बल्कि ऐसी 'औरत की तरह बन जा, जो बड़ी मुदत से मुर्दा के लिए मातम कर रही हो।"³और बादशाह के पास जाकर उससे इस तरह कहना। फिर योआब ने जो बातें कहनी थीं सिखायीं।

⁴और जब तक्रू'अ ~की वह 'औरत बादशाह से बातें करने लगी, तो ज़मीन पर औंधे मुँह होकर गिरी और सिज्दा करके कहा, "ऐ बादशाह तेरी दुहाई है!"⁵बादशाह ने उससे कहा, "तुझे क्या हुआ?" उसने कहा, "मैं सच मुच एक बेवा हूँ और मेरा शौहर मर गया है।"⁶तेरी लौंडी के दो बेटे थे, वह दोनों मैदान पर आपस में मार पीट करने लगे, और कोई न था जो उनको छुड़ा देता, इसलिए एक ने दूसरे को ऐसी मार लगाई कि उसे मार डाला।

⁷और अब देख कि सब कुम्बे का कुम्बा तेरी लौंडी के खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है, और वह कहते हैं, कि उसको जिसने अपने भाई को मारा हमारे हवाले कर ताकि हम उसको उसके भाई की जान के बदले, जिसे उसने मार डाला क़त्ल करें, और यूँ वारिस को भी हलाक कर दें, इस तरह वह मेरे अंगारे को जो बाक़ी रहा है बुझा देंगे, और मेरे शौहर का न तो नाम न बक़िया रू-ए-ज़मीन पर छोड़ेंगे।"

⁸बादशाह ने उस 'औरत से कहा, "तू अपने घर जा और मैं तेरे बारे में हुक्म करूँगा।"⁹तक्रू'अ की उस 'औरत ने बादशाह से कहा, "ऐ मेरे मालिक! ऐ बादशाह! सारा गुनाह मुझ पर और मेरे बाप के घराने पर हुआ और बादशाह और उसका तख़्त बे गुनाह रहे।"

¹⁰तब बादशाह ने फ़रमाया, "जो कोई तुझसे कुछ कहे उसे मेरे पास ले आना और फिर वह तुझको छूने नहीं पायेगा।"¹¹तब उसने कहा कि "मैं 'अज़्र करती हूँ कि बादशाह खुदावन्द अपने खुदा को याद करे, कि खून का बदला लेने~वाला और हलाक ~न करने पाए, ऐसा न हो कि वह मेरे बेटे को हलाक कर दें" उसने जवाब दिया, "खुदावन्द की हयात की क्रम तेरे बेटे का एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरने पायेगा।"

¹²तब उस 'औरत ने कहा, "ज़रा मेरे मालिक बादशाह से तेरी लौंडी एक बात कहे ?"¹³उसने जवाब दिया, "कह" तब उस 'औरत ने कहा कि "तूने खुदा के लोगों के खिलाफ़ ऐसी तदबीर क्यों निकाली है? क्योंकि बादशाह इस बात के कहने से मुजरिम सा ठहरता है, इसलिए कि बादशाह अपने जिला वतन को फिर घर लौटा कर नहीं आता।"¹⁴क्योंकि हम सबको मरना है, और हम ज़मीन पर गिरे हुए पानी की तरह हो जाते हैं जो फिर जमा' नहीं हो सकता, और खुदा किसी की जान नहीं लेता बल्कि ऐसे ज़रिए' निकालता है, कि जिला वतन उसके यहाँ से निकाला हुआ न रहे।

¹⁵और मैं जो अपने मालिक से यह बात कहने आई हूँ, तो इसकी वजह यह है कि लोगों ने मुझे डरा दिया था, इसलिए तेरी लौंडी ने कहा कि मैं खुद बादशाह से दरख्वास्त ~करूँगी, शायद बादशाह अपनी लौंडी की गुज़ारिश~पूरी करे।"¹⁶क्योंकि बादशाह सुनकर ज़रूर अपनी लौंडी को उस शख्स के हाथ से छुड़ाएगा, जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को खुदा की मीरास में से मिटा ~डालना चाहता है।"¹⁷इसलिए तेरी लौंडी ने कहा कि मेरे मालिक बादशाह की बात तसल्ली बख़्स हो, क्योंकि मेरा मालिक बादशाह नेकी और गुनाह के फ़र्क ~करने में खुदा के फ़रिश्ता की तरह है, इसलिए खुदावन्द तेरा खुदा तेरे साथ हो।"

¹⁸तब बादशाह ने उस 'औरत से कहा, "मैं तुझसे जो कुछ पूछूँ तो उसको ज़रा भी मुझसे मत छिपाना। उस 'औरत ने कहा, "मेरा मालिक बादशाह फ़रमाए।"¹⁹बादशाह ने कहा, "क्या इस सारे मु'आमले में योआब का हाथ तेरे साथ है ?" उस 'औरत ने जवाब दिया, "तेरी जान की क्रम ऐ मेरे मालिक बादशाह कोई इन बातों से जो मेरे मालिक बादशाह ने फ़रमाई हैं दहनी याँ बायीं तरफ़ नहीं मुड़ सकता क्योंकि तेरे खादिम योआब ही ने मुझे हुक्म दिया और उसी ने यह सब बातें तेरी लौंडी को सिखायीं।"²⁰और तेरे खादिम योआब ने यह काम इसलिए किया ताकि उस मज़मून के रंग ही को पलट दे और मेरा मालिक 'अक्लमन्द है, जिस तरह खुदा के फ़रिश्ता में समझ होती है कि दुनिया की सब बातों को जान ले।"

²¹तब बादशाह ने योआब से कहा, "देख, मैंने यह बात मान ली इसलिए तू जा और उस जवान अबीसलोम को फिर ले आ।"²²तब योआब ज़मीन पर औंधे होकर गिरा और सज्दा किया और बादशाह को मुबारक बाद दी और योआब कहने लगा, "आज तेरे बन्दा को यक़ीन हुआ ऐ मेरे मालिक बादशाह मुझ पर तेरे करम की नज़र है इसलिए कि बादशाह ने अपने खादिम की गुज़ारिश पूरी की।"

²³फिर योआब उठा, और जसूर को गया और अबीसलोम को यरुशलीम में ले आया।²⁴तब बादशाह ने फ़रमाया, "वह अपने घर जाए और मेरा मुँह न देखे।" तब अबीसलोम अपने घर गया और वह बादशाह का मुँह देखने न पाया।

²⁵और सारे इस्राईल में कोई शख्स अबी सलोम की तरह उसके हुस्न की वजह से ता'रीफ़ के क़ाबिल न था क्योंकि उसके पाँव के तलवे से सर के चाँद तक उसमें कोई ऐब न था।²⁶जब वह अपना सिर मुंडवाता था क्योंकि हर साल के आखिर में वह उसे मुंडवाता था इसलिए कि उसके बाल घने थे, इसलिए वह उनको मुंडवाता था तो अपने सिर के बाल वज़न में शाही तौल के मुताबिक़ दो सौ मिस्क़ाल के बराबर पाता था।²⁷और अबीसलोम से तीन बेटे पैदा हुए और एक बेटी जिसका नाम तमर था वह बहुत खूबसूरत 'औरत थी।

²⁸और अबीसलोम पूरे दो बरस यरुशलीम में रहा और बादशाह का मुँह न देखा।²⁹तब अबीसलोम ने योआब को बुलवाया ताकि उसे बादशाह के पास भेजे, लेकिन उसने उसके पास आने से इन्कार किया, और उसने दोबारह बुलवाया लेकिन वह न आया।

³⁰तब उसने अपने मुलाज़िम्ओं से कहा, "देखो योआब का खेत मेरे खेत से लगा है और उसमें जौ हैं इसलिए जाकर उसमें आग लगा दो।" और अबीसलोम के मुलाज़िम्ओं ने उस खेत में आग लगा दी।³¹तब योआब उठा और अबीसलोम के पास उसके घर जाकर उससे कहने लगा, "तेरे खादिमों ने मेरे खेत में आग क्यों लगा दी ?।"

³²अबीसलोम ने योआब को जवाब दिया कि "देख मैंने तुझे कहला भेजा कि यहाँ आ ताकि मैं तुझे बादशाह के पास यह कहने को भेजूँ, कि मैं जसूर से यहाँ क्यों आया? मेरे लिए वहीं रहना बेहतर होता, इसलिए बादशाह अब मुझे अपना दीदार दे और अगर मुझमें कोई बुराई हो तो मुझे मार डाले।"³³तब योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैग़ाम दिया और जब उसने अबीसलोम को बुलवाया तब वह बादशाह के पास आया और बादशाह के आगे ज़मीन पर सर झुका दिया, और बादशाह ने अबीसलोम को बोसा दिया।

Chapter 15

¹इसके बाद ऐसा हुआ कि अबीसलोम ने अपने लिए एक रथ और घोड़े और पचास आदमी तैयार किए, जो उसके आगे आगे दौड़ें।² और अबीसलोम सवेरे उठकर फाटक के रास्ता के बराबर खड़ा हो जाता और जब कोई ऐसा आदमी आता जिसका मुकद्दमा फैसला के लिए बादशाह के पास जाने को होता, तो अबीसलोम उसे बुलाकर पूछता था कि "तू किस शहर का है?" और वह कहता कि "तेरा खादिम इस्राईल के फ़लाँ क़बीले का है?"

³फिर अबीसलोम उससे कहता, "देख तेरी बातें तो ठीक और सच्ची हैं लेकिन कोई बादशाह की तरफ़ से मुकर्रर नहीं है जो तेरी सुने।"⁴ और अबीसलोम यह भी कहा करता था कि "काश मैं मुल्क का क़ाज़ी बनाया गया होता तो हर शख्स जिसका कोई मुकद्दमा या दा'वा होता मेरे पास आता और मैं उसका इन्साफ़ करता।"

⁵और जब कोई अबीसलोम के नज़दीक आता था कि उसे सज्दा करे तो वह हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेता और उसको बोसा देता था।⁶ और अबीसलोम सब इस्राईलियों से जो बादशाह के पास फैसला के लिए आते थे, इसी तरह पेश आता था।⁷ अबीसलोम ने इस्राईल के दिल जीत लिए।

⁷और चालीस बरस के बाद⁸ हुआ कि अबीसलोम ने बादशाह से कहा, "मुझे ज़रा जाने दे कि मैं अपनी मिन्नत जो मैंने खुदावन्द के लिए मानी है हब्रून में पूरी करूँ।"⁸ क्योंकि जब मैं अराम के जसूर में था तो तेरे खादिम ने यह मिन्नत मानी थी कि अगर खुदावन्द मुझे फिर यरुशलीम में सच मुच पहुँचा दे, तो मैं खुदावन्द की 'इबादत करूँगा।"

⁹बादशाह ने उससे कहा कि "सलामत जा।" इसलिए वह उठा और हब्रून को गया।¹⁰ और अबीसलोम ने बनी इस्राईल के सब क़बीलों में जासूस भेजकर ऐलान करा दिया कि जैसे ही तुम नरसिंगे की आवाज़ सुनो तो बोल उठना कि "अबीसलोम हब्रून में बादशाह ~हो गया है।"

¹¹और अबीसलोम के साथ यरुशलीम से दो सौ आदमी जिनको दा'वत दी गई थी गये थे वह सादा दिली से गये थे और उनको किसी बात की ~ख़बर नहीं थी।

¹²और अबीसलोम ने कुर्बानियाँ अदा करते वक़्त जिलोनी अख़ीतुफ़्रल को जो दाऊद का सलाहकार था, उसके शहर जल्वा से बुलवाया, यह बड़ी भारी साज़िश थी और अबीसलोम के पास लोग बराबर बढ़ते ही जाते थे।

¹³और एक क़ासिद ने आकर दाऊद को ख़बर दी कि "बनी इस्राईल के दिल अबीसलोम की तरफ़ हैं।"¹⁴ और दाऊद ने अपने सब मुलाज़िमों से जो यरुशलीम में उसके साथ थे कहा, "उठो भाग चलें नहीं तो हममें से एक भी अबीसलोम से नहीं बचेगा चलने की जल्दी न करो ऐसा न हो कि वह हम को झट आले और हम पर आफ़त लाये और शहर को तहस नहस ~करे।"¹⁵ बादशाह के खादिमों ने बादशाह से कहा, "देख तेरे खादिम जो कुछ हमारा मालिक बादशाह चाहे उसे करने को तैयार हैं।"

¹⁶तब बादशाह निकला और उसका सारा घराना उसके पीछे चला और बादशाह ने दस 'औरतें जो बाँदी ~थीं घर की निगहबानी के लिए पीछे छोड़ दीं।¹⁷ और बादशाह निकला और सब लोग उसके पीछे चले और वह बैत मिर्हक़ में ठहर गये।¹⁸ और उसके सब खादिम उसके बराबर से होते हुए आगे गए और सब करैती और सब फ़लैती और सब जाती या'नी वह छःसौ आदमी जो जात से उसके साथ आए थे बादशाह के सामने आगे चले।

¹⁹तब बादशाह ने जाती इती से कहा, "तू हमारे साथ क्यों चलता है? तू लौट जा और बादशाह के साथ रह क्योंकि तू परदेसी और जिला वतन भी है, इसलिए अपनी जगह को लौट जा।"²⁰ तू कल ही तो आया है, तो क्या आज मैं तुझे अपने साथ इधर उधर फिराऊँ? जिस ~हाल कि मुझे जिधर जा सकता हूँ जाना है? इसलिए तू लौट जा और अपने भाइयों को साथ लेता जा, रहमत और सच्चाई तेरे साथ हों।"

²¹तब इती ने बादशाह को जवाब दिया, "खुदावन्द की हयात की क़सम और मेरे मालिक बादशाह की जान की क़सम जहाँ कहीं मेरा मालिक बादशाह चाहे मरते चाहे जीते होगा, वहीं ज़रूर तेरा खादिम भी होगा।"²² तब दाऊद ने इती से कहा, "चल पार जा।" और जाती इती और उसके सब लोग और सब नन्हे बच्चे जो उसके साथ थे पार गये।²³ और सारा मुल्क ऊँची आवाज़ से रोया और सब लोग पार हो गये, और बादशाह खुद नहर क्रिद्रोन के पार हुआ, और सब लोगों ने पार हो कर जंगल की राह ली।

²⁴और सदूक़ भी और उसके साथ सब लावी खुदा के 'अहद का संदूक़ लिए हुए आए और उन्होंने खुदा के संदूक़ को रख दिया, और अबियातर ऊपर चढ़ गया और जब तक सब लोग शहर से निकल न आए वहीं रहा।²⁵ तब बादशाह ने सदूक़ से कहा कि "खुदा का संदूक़ शहर को वापस ले जा, तब अगर खुदावन्द के करम की नज़र मुझ पर होगी तो वह मुझे फिर ले आएगा, और उसे और अपने घर को मुझे फिर दिखाएगा।"²⁶ लेकिन अगर वह यूँ फ़रमाए, कि मैं तुझसे खुश नहीं, तो देख मैं हाज़िर हूँ जो कुछ उसको अच्छा मा'लूम हो मेरे साथ करे।"

²⁷और बादशाह ने सदूक़ काहिन से यह भी कहा, "क्या तू ग़ैब बीन नहीं? शहर को सलामत लौट जा और तुम्हारे साथ तुम्हारे दोनों बेटे हों, अख़ीमा'ज़ जो तेरा बेटा है और यूनतन जो अबियातर का बेटा है।"²⁸ और देख, मैं उस जंगल के घाटों के पास ठहरा रहूँगा जब तक तुम्हारे पास से मुझे हक़ीक़त हाल की ख़बर न मिले।"²⁹ इसलिए सदूक़ और अबियातर खुदा का संदूक़ यरुशलीम को वापस ले गये और वहीं रहे।

³⁰और दाऊद कोह-ए-ज़ैतून की चढ़ाई पर चढ़ने लगा और रोता जा रहा था, उसका सिर ढका था और वह नंगे पाँव चल रहा था, और वह सब लोग जो उसके साथ थे उनमें से हर एक ने अपना सिर ढाँक रखखा था, वह ऊपर चढ़ते जाते थे और रोते जाते थे।³¹ और किसी ने दाऊद को बताया कि "अख़ीतुफ़्रल भी फ़सादियों में शामिल और अबीसलोम के साथ है।" तब दाऊद ने कहा, "ऐ खुदावन्द! मैं तुझसे मिन्नत करता हूँ कि अख़ीतुफ़्रल की सलाह को बेवकूफी से बदल दे।"

³²जब दाऊद चोटी पर पहुँचा जहाँ खुदा को सज्दा किया करते थे, तो अरकी हूसी अपनी चोगा फाड़े और सिर पर खाक डाले उसके इस्तक़बाल को आया।³³ और दाऊद ने उससे कहा, "अगर तू मेरे साथ जाए तो मुझ पर बोझ होगा।"³⁴ लेकिन अगर तू शहर को लौट जाए और अबीसलोम से कहे कि, ऐ बादशाह मैं तेरा खादिम हूँगा जैसे गुज़रे ज़माना में तेरे बाप का खादिम रहा वैसे ही अब तेरा खादिम हूँ तो तू मेरी खातिर अख़ीतुफ़्रल की सलाह को रद कर देगा

³⁵ और क्या वहाँ तेरे साथ सदूक और अबियातर काहिन न होंगे? इसलिए जो कुछ तू बादशाह के घर से सुने उसे सदूक और अबियातर काहिनों को बता देना।
³⁶ देख वहाँ उनके साथ उनके दोनों बेटे हैं या 'नी सदूक का बेटा अखीमा'ज़ और अबियातर का बेटा यूनतन इसलिए जो कुछ तुम सुनो, उसे उनके ज़रिए' मुझे कहला भेजना।"³⁷ इसलिए दाऊद का दोस्त हूसी शहर में आया और अबीसलोम भी यरुशलीम में पहुँच गया।

Chapter 16

¹और जब दाऊद चोटी से आगे बढ़ा तो मिफ्रीबोसत का खादिम ज़ीबा दो गधे लिए हुए उसे मिला, जिन पर जिन कसे थे और उनके ऊपर दो सौ रोटियाँ और किशमिश के सौ गुच्छे और ताबिस्तानी मेवों के सौ दाने और मय का एक मश्कीज़ा था।²और बादशाह ने ज़ीबा से कहा, "इन से तेरा क्या मतलब है?" ज़ीबा ने कहा, "यह गधे बादशाह के घराने की सवारी के लिए और रोटियाँ और गर्मी के फल जवानों के खाने के लिए हैं और यह शराब इसलिए है कि जो बयाबान में थक जायें उसे पियें।"

³और बादशाह ने पूछा, "तेरे आक्रा का बेटा कहाँ है?" ज़ीबा ने बादशाह से कहा, "देख वह यरुशलीम में रह गया है क्योंकि उसने कहा आज इस्राईल का घराना मेरे बाप की बादशाहत मुझे लौटा देगा।"⁴तब बादशाह ने ज़ीबा से कहा, "देख! जो कुछ मिफ्रीबोसत का है वह सब तेरा हो गया। तब ज़ीबा ने कहा, "मैं सिज्दा करता हूँ ऐ मेरे मालिक बादशाह तेरे करम की नज़र मुझ पर रहे!"

⁵जब दाऊद बादशाह बहरेम पहुँचा तो वहाँ से साऊल के घर के लोगों में से एक शख्स जिसका नाम सिम'ई बिन जीरा था निकला और ला'नत करता हुआ आया।⁶और उसने दाऊद पर और दाऊद बादशाह के सब खादिमों पर पत्थर फेंके और सब लोग और सब सूरमा उसके दहने और बायें हाथ थे।

⁷और सिम'ई ला'नत करते वक़्त यूँ कहता था, "दूर हो! दूर हो! ऐ खूनी आदमी ऐ खबीस!"⁸खुदावन्द ने साऊल के घराने के सब खून को जिसके बदले तू बादशाह हुआ तेरे ही ऊपर लौटाया, और खुदावन्द बादशाहत तेरे बेटे अबीसलोम के हाथ में दे दी, है और देख तू अपनी ही बुराई में खुद आप फंस गया है इसलिए कि तू खूनी आदमी है।"

⁹तब ज़रोयाह के बेटे अबीशे ने बादशाह से कहा, "यह मरा हुआ कुत्ता मेरे मालिक बादशाह पर क्यों ला'नत करे? मुझको ज़रा उधर जाने दे कि उसका सिर उड़ा दूँ।"¹⁰बादशाह ने कहा, "ऐ ज़रोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या काम? वह जो ला'नत कर रहा है, और खुदावन्द ने उससे कहा है कि दाऊद पर ला'नत कर इसलिए कौन कह सकता है कि तूने क्यों ऐसा किया?"

¹¹और दाऊद ने अबीशे से और अपने सब खादिमों से कहा, "देखो मेरा बेटा ही जो मेरे सुल्ब से पैदा हुआ मेरी जान का तालिब है तब अब यह बिनयमीनी कितना ज़्यादा ऐसा न करे? उसे छोड़ दो और ला'नत करने दो क्योंकि खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया है।¹²शायद खुदावन्द उस जुल्म पर जो मेरे ऊपर हुआ है, नज़र करे और खुदावन्द आज के दिन उसकी ला'नत के बदले मुझे नेक बदला दे।"

¹³तब दाऊद और उसके लोग रास्ता चलते रहे और सिम'ई उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर चलता रहा और चलते चलते ला'नत करता और उसकी तरफ़ पत्थर फेंकता और खाक डालता रहा।¹⁴और बादशाह और उसके सब साथी थके हुए आए और वहाँ उसने आराम किया।

¹⁵और अबीसलोम और सब इस्राईली मर्द यरुशलीम में आए और अखीतुफ़्रल उसके साथ था।¹⁶और ऐसा हुआ कि जब दाऊद का दोस्त अरकी हूसी अबीसलोम के पास आया तो हूसी ने~अबीसलोम से कहा, "बादशाह जीता रहे! बादशाह जीता रहे!"

¹⁷और अबीसलोम ने हूसी से कहा, "क्या तूने अपने दोस्त पर यही महेरबानी की? तू अपने दोस्त के साथ क्यों न गया?"¹⁸हूसी ने अबीसलोम से कहा, "नहीं बल्कि जिसको खुदावन्द ने और इस क्रौम ने और इस्राईल के सब आदमियों ने चुन लिया है मैं उसी का हूँगा और उसी के साथ रहूँगा।"

¹⁹और फिर मैं किसकी खिदमत करूँ? क्या मैं उसके बेटे के सामने रह कर खिदमत न करूँ? जैसे मैंने तेरे बाप के सामने रहकर की वैसे ही तेरे सामने रहूँगा।"

²⁰तब अबीसलोम ने अखीतुफ़्रल से कहा, "तुम सलाह दो कि हम क्या करें।"²¹तब अखीतुफ़्रल ने अबीसलोम से कहा कि "अपने बाप की बाँदियों~के पास जा जिनको वह घर की निगह बानी को छोड़ गया है, इसलिए कि जब इस्राईली सुनेंगे कि तेरे बाप को तुझ से नफ़रत है, तो उन सबके हाथ जो तेरे साथ हैं तत्क़तवर हो जायेंगे।"

²²फिर उन्होंने महल की छत पर अबीसलोम के लिए एक तम्बू खड़ा कर दिया और अबी सलोम सब इस्राईल के सामने अपने बाप की बाँदियों के पास गया।

²³और अखीतुफ़्रल की सलाह जो इन दिनों होती वह ऐसी समझी जाती थी, कि गोया खुदा के कलाम से आदमी ने बात पूछ ली, यूँ अखीतुफ़्रल की सलाह दाऊद और अबी सलोम की खिदमत में ऐसी ही होती थी।

Chapter 17

¹और अखीतुप्फ़ल ने अबीसलोम से यह भी कहा कि "मुझे अभी बारह हज़ार जवान चुन लेने दे और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूँगा।"²और ऐसे हाल में कि वह थका माँदा हो और उसके हाथ ढीले हों, मैं उस पर जा पड़ूँगा और उसे डराऊँगा, और सब लोग जो उसके साथ हैं भाग जायेंगे, और मैं सिर्फ़ बादशाह को मारूँगा।"³और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊँगा, जिस आदमी का तू तालिब है वह ऐसा है कि जैसे सब लौट आए, यूँ सब लोग सलामत रहेंगे।"⁴यह बात अबीसलोम को और इस्राईल के सब बुजुर्गों को बहुत अच्छी लगी।"

⁵और अबीसलोम ने कहा, "अब अरकी हूसी को भी बुलाओ और जो वह कहे हम उसे भी सुनें।"⁶जब हूसी अबीसलोम के पास आया तो अबीसलोम ने उससे कहा कि, "अखीतुप्फ़ल ने तो यह यह कहा है, क्या हम उसके कहने के मुताबिक़ 'अमल करें? अगर नहीं तो तू बता।'"हूसी ने अबीसलोम से कहा कि, "वह सलाह जो अखीतुप्फ़ल ने इस बार दी है अच्छी नहीं।"

⁸~इसके 'अलावा हूसी ने यह भी कहा कि, "तू अपने बाप को और उसके आदमियों को जानता है कि वह बहादुर लोग हैं, और वह अपने दिल ही दिल में उस रीछनी की तरह, जिसके बच्चे जंगल में छिन गये हों झल्ला रहे होंगे और तेरा बाप जंगी मर्द है, और वह लोगों के साथ नहीं ठहरेगा।"और देख अब तो वह किसी ग़ार में या किसी दूसरी जगह छिपा हुआ होगा। और जब शुरू' ही में थोड़े से क़त्ल हों जायेंगे, तो जो कोई सुनेगा यही कहेगा, कि अबीसलोम के पैरोकार के बीच तो ख़ूँरेज़ी शुरू' है।"¹⁰तब वह भी जो बहादुर है और जिसका दिल शेर के दिल की तरह है बिल्कुल पिघल जाएगा क्योंकि सारा इस्राईल जानता है कि तेरा बाप बहादुर आदमी है और उसके साथ के लोग सूरमा हैं।

¹¹तो मैं यह सलाह देता हूँ कि दान से बेर सबा' तक के सब इस्राईली समुन्दर के किनारे की रेत की तरह तेरे पास कसरत से इकट्ठे किए जायें और तू आप ही लड़ाई पर जा।"¹²यूँ हम किसी न किसी जगह जहाँ वह मिले उस पर जा ही पड़ेंगे और हम उस पर ऐसे गिरेंगे जैसे शबनम ज़मीन पर गिरती है, फिर न तो हम उसे और न उसके साथ के सब आदमियों में से किसी को जीता छोड़ेंगे।

¹³~इसके 'अलावा अगर वह किसी शहर में घुसा हुआ होगा तो सब इस्राईली उस शहर के पास रस्सियाँ ले आयेंगे और हम उसको खींचकर दरया में कर देंगे यहाँ तक कि उसका एक छोटा सा पत्थर भी वहाँ नहीं मिलेगा।"¹⁴तब अबी सलोम और सब इस्राईली कहने लगे कि "यह सलाह जो अरकी हूसी ने दी है अखीतुप्फ़ल की सलाह से अच्छी है।" क्योंकि यह तो खुदावन्द ही ने ठहरा दिया था कि अखीतुप्फ़ल की अच्छी सलाह बातिल हो जाए ताकि खुदावन्द अबीसलोम पर बला नाज़िल करे।

¹⁵तब हूसी ने सद्रूक और अबियातर काहिनों से कहा कि "अखीतुप्फ़ल ने अबीसलोम को और बनी इस्राईल के बुजुर्गों को ऐसी ऐसी सलाह दी और मैंने ~यह सलाह दी।"¹⁶इसलिए अब जल्द दाऊद के पास कहला भेजो कि आज रात को जंगल के घाटों पर न ठहर बल्कि जिस तरह हो सके पार उतर जा ताकि ऐसा न हो कि बादशाह और सब लोग जो उसके साथ हैं निगल लिए जायें।"

¹⁷और यूनतन और अखीमा'ज़ 'ऐन राजिल के पास ठहरे थे और एक लौंडी जाती और उनको खबर दे आती थी और वह जाकर दाऊद को बता देते थे क्योंकि मुनासिब न था कि वह शहर में आते दिखाई देते।"¹⁸लेकिन एक लड़के ने उनको देख लिया और अबीसलोम को खबर दी लेकिन वह दोनों जल्दी करके निकल गये और बहरीम में एक शख्स के घर गये जिसके सहन में एक कुआँ था इसलिए वह उसमें उतर गये।

¹⁹और उस 'औरत ने पर्दा ले कर कुर्वे के मुहँ पर बिछाया और उस पर दला हुआ अनाज फैला दिया और कुछ मा'लूम नहीं होता था।"²⁰और अबीसलोम के खादिम उस घर पर उस 'औरत के पास आए और पूछा कि "अखीमा'ज़ और यूनतन कहाँ हैं?" उस 'औरत ने उनसे कहा, "वह नाले के पार गये।" और जब उन्होंने उनको ढूँढा और न पाया तो यरुशलीम को लौट गये।

²¹और ऐसा हुआ कि जब यह चले गये तो वह कुर्वे से निकले और जाकर दाऊद बादशाह को खबर दी और वह दाऊद से कहने लगे, कि "उठो और दरया पार हो जाओ क्योंकि अखीतुप्फ़ल ने तुम्हारे खिलाफ़ ऐसी ऐसी सलाह दी है।"²²तब दाऊद और सब लोग जो उसके साथ थे उठे और यर्दन के पार गये, और सुबह की रोशनी तक उनमें से एक भी ऐसा न था जो यर्दन के पार न हो गया हो।

²³जब अखीतुप्फ़ल ने देखा कि उसकी सलाह पर 'अमल नहीं किया गया तो उसने अपने गधे पर ज़ीन कसा और उठ कर अपने शहर को अपने घर गया और अपने घराने का बन्दोबस्त करके अपने को फाँसी दी और मर गया और अपने बाप की क़ब्र में दफ़न हुआ।

²⁴तब दाऊद महनायम में आया और अबीसलोम और सब इस्राईली जवान जो उसके साथ थे यर्दन के पार हुए।"²⁵और अबीसलोम ने योआब के बदले 'अमासा को लश्कर का सरदार किया, यह 'अमासा एक इस्राईली आदमी का बेटा था जिसका नाम इतरा था उसने नाहस की बेटी अबीजेल से जो योआब की माँ ज़रोयाह की बहन थी सोहबत की थी।"²⁶और इस्राईली और अबीसलोम जिल'आद के मुल्क में खेमा ज़न हुए।

²⁷और जब दाऊद महनायम में पहुँचा तो ऐसा हुआ कि नाहस का बेटा सोबी, बनी अम्मोन के रब्बा से और अम्मी ऐल का बेटा मकीर लूदबार से और बरज़िली जिल'आदी राजिलीम से।"²⁸पलंग और चार पाइयाँ और बासन और मिट्टी के बर्तन और गेहूँ और जौ और आटा और भुना हुआ अनाज और लोबिये की फलियाँ और मसूर और भुना हुआ चबेना।"²⁹और शहद और मख़खन और भेड़ और गाय के दूध का पनीर दाऊद के और उसके साथ के लोगों के खाने के लिए लाये क्योंकि उन्होंने कहा कि "लोग बयाबान में भूके और थके और प्यासे हैं।"

Chapter 18

¹और दाऊद ने उन ~लोगों को जो उसके साथ थे गिना और हज़ारों के और सैकड़ों के सरदार मुकर्रर किए।²और दाऊद ने लोगों की एक तिहाई योआब के मातहत और एक तिहाई योआब के भाई अबीशे बिन ज़रोयाह के मातहत और तिहाई जाती इत्ती के मातहत करके उनको रवाना किया और बादशाह ने लोगों से कहा कि "मैं खुद भी ज़रूर तुम्हारे साथ चलूँगा।"

³लेकिन लोगों ने कहा कि "तू नहीं जाने पायेगा क्योंकि हम अगर भागें तो उनको कुछ हमारी परवा न होगी और अगर हम में से आधे मारे जायें तो भी उनको कुछ परवा न होगी लेकिन तू हम जैसे दस हज़ार के बराबर है इसलिए बेहतर यह है कि तू शहर में से हमारी मदद करने को तैयार रहे।"⁴बादशाह ने उनसे कहा, "जो तुमको बेहतर मा'लूम होता है मैं वही करूँगा।" ~इसलिए बादशाह शहर के फाटक की एक तरफ़ खड़ा रहा और सब लोग सौ सौ और हज़ार हज़ार करके निकलने लगे।

⁵और बादशाह ने योआब और अबीशे और इती को फ़रमाया कि "मेरी खातिर उस जवान अबीसलोम के साथ नरमी से पेश आना।" जब बादशाह ने सब सरदारों को अबीसलोम के हक़ में नसीहत की तो सब लोगों ने सुना।

⁶इसलिए वह लोग निकल कर मैदान में इस्राईल के मुकाबिले को गये और इफ़्राईम के जंगल में हुई।⁷और वहाँ इस्राईल के लोगों ने दाऊद के खादिमों से शिकस्त खाई और उस दिन ऐसी बड़ी ख़ूँरज़ी हुई कि बीस हज़ार आदमी मारे गए।⁸इसलिए कि उस दिन सारी बादशाहत में जंग थी और लोग इतने तलवार का लुकमा नहीं बने जितने बन का शिकार हुए।

⁹और अचानक अबीसलोम दौड़ के खादिमों के सामने आ गया और अबीसलोम अपने खच्चर पर सवार था और वह खच्चर एक बड़े बलूत के दरख़्त की घनी डालियों के नीचे से गया, इसलिए उसका सिर बलूत में अटक गया और वह आसमान और ज़मीन के बीच में लटका रह गया और वह खच्चर जो उसके रान तले था निकल गया।¹⁰किसी शख्स ने यह देखा और योआब को खबर दी कि "मैंने अबीसलोम को बलूत के दरख़्त में लटका हुआ देखा।"¹¹और योआब ने उस शख्स से जिसने उसे खबर दी थी कहा, "तूने यह देखा फिर क्यों नहीं तूने उसे मार कर वहीं ज़मीन पर गिरा दिया? क्योंकि मैं तुझे चाँदी के दस टुकड़े और कमर बंद देता।"

¹²उस शख्स ने योआब से कहा कि "अगर मुझे चाँदी के हज़ार टुकड़े भी मेरे हाथ में मिलते तो भी मैं बादशाह के बेटे पर हाथ न उठाता क्योंकि बादशाह ने हमारे सुनते तुझे और अबीशे और इती को नसीहत की थी कि खबरदार कोई उस जवान अबीसलोम को न छुए।"¹³वरना अगर मैं उसकी जान के साथ दगा खेलता और बादशाह से तो कोई बात छुपी भी नहीं तो तू खुद भी किनारा कर लेता।"

¹⁴तब योआब ने कहा, "मैं तेरे साथ यूँ ही ठहरा नहीं रह सकता।" फिर उसने तीन तीर हाथ में लिए और उनसे अबी सलोम के दिल को जो अभी बलूत के दरख़्त के बीच ज़िन्दा ही था छेद डाला।¹⁵और दस जवानों ने जो योआब के सलह बरदार थे अबी सलोम को घेर कर उसे मारा और क़त्ल कर दिया।

¹⁶तब योआब ने नरसिंगा फूँका और लोग इस्राईलियों का पीछा करने से लौटे क्योंकि योआब ने लोगों को रोक लिया।¹⁷और उन्होंने अबीसलोम को लेकर बन के उस बड़े गढ़े में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया और सब इस्राईली अपने अपने डेरे को भाग गये।

¹⁸और अबीसलोम ने अपने जीते जी एक लाट लेकर खड़ी कराई थी जो शाही वादी में है क्योंकि उसने कहा, "मेरे कोई बेटा नहीं जिससे मेरे नाम की यादगार रहे इसलिए उसने उस लाट को अपना नाम दिया।" और वह आज तक अबी सलोम की यादगार कहलाती है।

¹⁹तब सदूक के बेटे अखीमा'ज़ ने कहा कि "मुझे दौड़ कर बादशाह को खबर पहुँचाने दे कि खुदावन्द ने उसके दुश्मनों से उसका बदला ले लिया।"²⁰लेकिन योआब ने उससे कहा कि आज के दिन तू कोई खबर न पहुँचा बल्कि दूसरे दिन खबर पहुँचा देना लेकिन आज तुझे कोई खबर नहीं ले जाना होगा इसलिए बादशाह का बेटा मर गया है।

²¹तब योआब ने कूशी से कहा कि ~जा कर जो कुछ तूने देखा है इसलिए बादशाह को जाकर बता दे। तब वह कूशी योआब को सज्दा करके दौड़ गया।²²तब सदूक के बेटे अखीमा'ज़ ने फिर योआब से कहा, "चाहे कुछ ही हो तू मुझे भी उस कूशी के पीछे दौड़ जाने दे।" ~योआब ने कहा, "ऐ मेरे बेटे तू क्यों दौड़ जाना चाहता है जिस हाल कि इस खबर के बदले तुझे कोई इन'आम नहीं मिलेगा?"²³उसने कहा, "चाहे कुछ ही हो मैं तो जाऊँगा" उसने कहा, "दौड़ जा।" तब अखीमा'ज़ मैदान से होकर दौड़ गया और कूशी से आगे बढ़ गया।

²⁴और दाऊद दोनों फाटकों के दरमियान बैठा था और पहरे वाला फाटक की छत से होकर दीवार पर गया और क्या देखता है कि एक शख्स अकेला दौड़ा आता है।²⁵उस पहरे वाले ने पुकार कर बादशाह को खबर दी, बादशाह ने फ़रमाया, "अगर वह अकेला है तो मुँह ज़बानी खबर लाता होगा।" और वह तेज़ आया और नज़दीक पहुँचा।

²⁶और पहरे वाले ने एक और आदमी को देखा कि दौड़ा आता है, तब उस पहरे वाले ने दरबान को पुकार कर कहा कि "देख एक शख्स और अकेला दौड़ा आता है।" बादशाह ने कहा, वह भी खबर लाता होगा।²⁷और पहरे वाले ने कहा, "मुझे अगले का दौड़ना सदूक के बेटे अखीमा'ज़ के दौड़ने की तरह मा'लूम देता है।" तब बादशाह ने कहा, "वह भला आदमी है और अच्छी खबर लाता होगा।"

²⁸और अखीमा'ज़ ने पुकार कर बादशाह से कहा, "खैर है!" और बादशाह के आगे ज़मीन पर झुक कर सिज्दा किया और कहा कि "खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो जिसने उन आदमियों को जिन्होंने मेरे मालिक बादशाह के खिलाफ़ हाथ उठाये थे क़ाबू में कर दिया है।"²⁹बादशाह ने पूछा क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है? अखीमा'ज़ ने कहा कि "जब योआब ने बादशाह के खादिम को या'नी मुझको जो तेरा खादिम हूँ रवाना किया तो मैंने एक बड़ी हलचल तो देखी लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या थी।"³⁰तब बादशाह ने कहा, "एक तरफ़ हो जा और यहीं खड़ा रह।" इसलिए वह एक तरफ़ होकर चुप चाप खड़ा हो गया।

³¹फिर वह कूशी आया और कूशी ने कहा, "मेरे मालिक बादशाह के लिए खबर है क्योंकि खुदावन्द ने आज के दिन उन सबसे जो तेरे खिलाफ़ उठे थे तेरा बदला लिया।"³²तब बादशाह ने कूशी से पूछा, "क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है?" कूशी ने जवाब दिया कि "मेरे मालिक बादशाह के दुश्मन और जितने तुझे तकलीफ़ पहुँचाने को तेरे खिलाफ़ उठे वह उसी जवान की तरह हो जायें।"³³तब बादशाह बहुत बेचैन हो गया और उस कोठरी की तरफ़ जो फाटक के ऊपर थी

रोता हुआ चला और चलते चलते यूँ कहता जाता था, "हाय मेरे बेटे अबीसलोम! मेरे बेटे! मेरे बेटे अबीसलोम! काश मैं तेरे बदले मर जाता !ऐ अबी सलोम !मेरे बेटे !मेरे बेटे " |

Chapter 19

¹और योआब को बताया गया कि "देख बादशाह अबीसलोम के लिए नौहा और मातम कर रहा है।" ²इसलिए तमाम लोगों के लिए उस दिन की फ़तह मातम से बदल गई क्योंकि लोगों ने उस दिन यह कहते सुना कि "बादशाह अपने बेटे के लिए दुखी ~है।"

³इसलिए वह लोग उस दिन चोरी से शहर में घुसे जैसे वह लोग जो लड़ाई से भागते हैं शर्म के मारे चोरी चोरी चलते हैं। ⁴और बादशाह ने अपना मुँह ढाँक लिया और बादशाह ऊँची आवाज़ से चिल्लाने लगा कि "हाय मेरे बेटे अबीसलोम! हाय अबी सलोम मेरे बेटे! मेरे बेटे।"

⁵तब योआब घर में बादशाह के पास जाकर कहने लगा कि "तूने आज अपने सब ख़ादिमों को शर्मिन्दा किया, जिन्होंने आज के दिन तेरी जान और तेरे बेटों और तेरी बेटियों की जानें और तेरी बीवियों की जानें और तेरी बाँदियों की जानें बचायीं।" ⁶क्योंकि तू अपने 'अदावत रखने वालों' को प्यार करता है, और अपने दोस्तों से 'अदावत रखता है, इसलिए कि तूने आज के दिन ज़ाहिर कर दिया कि सरदार और ख़ादिम तेरे नज़दीक बेक़द्र हैं, क्योंकि आज के दिन मैं देखता हूँ कि अगर अबी सलोम जीता रहता और हम सब मर जाते, तो तू बहुत ख़ुश होता।

⁷इसलिए उठ बाहर निकल और अपने ख़ादिमों से तसल्ली बख़्श बातें कर क्योंकि मैं ख़ुदावन्द की क़सम खाता हूँ कि अगर तू बाहर न जाए तो आज रात को एक आदमी भी तेरे साथ न रहेगा और यह तेरे लिए उन सब आफ़तों से बदतर होगा जो तेरी नौजवानी से लेकर अब तक तुझ पर आई है।" ⁸तब बादशाह उठकर फ़ाटक में जा बैठा और सब लोगों को बताया गया कि देखो बादशाह फ़ाटक में बैठा है, तब सब लोग बादशाह के सामने आए और इस्राईली अपने अपने डेरे को भाग गये थे।

⁹और इस्राईल के क़बीलों के सब लोगों में झगड़ा था और वह कहते थे कि "बादशाह ने हमारे दुश्मनों के हाथ से और फ़िलिस्तिनियों के हाथ से बचाया और अब वह अबी सलोम के सामने से मुल्क छोड़ कर भाग गया।" ¹⁰और अबी सलोम जिसे हमने मसह करके अपना हाकिम बनाया था, लड़ाई में मर गया है इसलिए तुम अब बादशाह को वापस लाने की बात क्यों नहीं करते?"

¹¹तब दाऊद बादशाह ने सद्क और अबियातर काहिनों को कहला भेजा कि "यहूदाह के बुज़ुर्गों से कहो कि तुम बादशाह को उसके महल में पहुँचाने के लिए सबसे पीछे क्यों होते हो जिस हाल कि सारे इस्राईल की बात उसे उसके महल में पहुँचाने के बारे में बादशाह तक पहुँची है।" ¹²तुम तो मेरे भाई और मेरी हड्डी हो फिर तुम बादशाह को वापस ले जाने के लिए सबसे पीछे क्यों हो?"

¹³और 'अमासा से कहना क्या तू मेरी हड्डी और गोश्त नहीं? इसलिए अगर तू योआब की जगह मेरे सामने हमेशा के लिए लश्कर का सरदार न हो तो ख़ुदा मुझसे ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करे।" ¹⁴और उसने सब बनी यहूदाह का दिल एक आदमी के दिल की तरह माएल कर लिया चुनौचे उन्होंने बादशाह को पैग़ाम भेजा कि "तू अपने सब ख़ादिमों को साथ लेकर लौट आ।" ¹⁵इसलिए बादशाह लौट कर यर्दन पर आया और सब बनी यहूदाह ज़िलजाल को गये कि बादशाह का इस्तक्रबाल करें और उसे यर्दन के पार ले आयें।

¹⁶और ज़ीरा के बेटे बिनयमीनी सिम'ई ने जो बहरीम का था जल्दी की और बनी यहूदाह के साथ दाऊद बादशाह के इस्तक्रबाल को आया। ¹⁷और उसके साथ एक हज़ार बिनयमीनी जवान थे और साऊल के घराने का ख़ादिम ज़ीबा अपने पन्दरह बेटों और बीस नौकरों समेत आया और बादशाह के सामने यर्दन के पार उतरे। ¹⁸और एक कश्ती पार गई कि बादशाह के घराने को ले आये और जो काम उसे मुनासिब मा'लूम हो उसे करे और ज़ीरा का बेटा सिम'ई बादशाह के सामने जैसे ही वह यर्दन पार हुआ औंधा हो कर गिरा।

¹⁹और बादशाह से कहने लगा कि मेरा मालिक मेरी तरफ़ गुनाह मंसूब न करे और जिस दिन मेरा मालिक बादशाह यरुशलीम से निकला उस दिन जो कुछ तेरे ख़ादिम ने बद मिज़ाजी से किया उसे ऐसा याद न रख कि बादशाह उसको अपने दिल में रखे।" ²⁰क्योंकि तेरा बन्दा यह जानता है कि "मैंने गुनाह किया है और देख आज के दिन मैं ही यूसुफ़ के घराने में से पहले आया हूँ कि अपने मालिक बादशाह का इस्तक्रबाल करूँ।

²¹और ज़रोयाह के बेटे अबीशे ने जवाब, "दिया क्या सिम'ई इस वजह से मारा न जाए कि उसने ख़ुदावन्द के ममसूह पर ला'नत की?" ²²दाऊद ने कहा, "ऐ ज़रोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या काम कि तुम आज के दिन मेरे मुखालिफ़ हुए हो? क्या इस्राईल में से कोई आदमी आज के दिन क़त्ल किया जाए? क्या मैं यह नहीं जानता कि मैं आज के दिन इस्राईल का बादशाह हूँ?" ²³और बादशाह ने सिम'ई से कहा, "तू मारा नहीं जाएगा" और बादशाह ने उससे क़सम खाई।

²⁴फिर साऊल का बेटा मिफ़ीबोसत बादशाह के इस्तक्रबाल को आया, उसने बादशाह के चले जाने के दिन से लेकर उसे सलामत घर आजाने के दिन तक न तो अपने पाँव पर पट्टियाँ बाँधी और न अपनी दाढ़ी कतरवाई और न अपने कपड़े धुलवाए थे। ²⁵और ऐसा हुआ कि जब वह यरुशलीम में बादशाह से मिलने आया तो बादशाह ने उससे कहा, "ऐ मिफ़ीबोसत तू मेरे साथ क्यों नहीं गया था?"

²⁶उसने जवाब दिया, "ऐ मेरे मालिक बादशाह मेरे नौकर ने मुझसे दगा की क्योंकि तेरे ख़ादिम ने कहा था कि मैं अपने लिए गधे पर जीन कसूँगा ताकि मैं सवार हो कर बादशाह के साथ जाऊँ इसलिए कि तेरा ख़ादिम लंगड़ा है।" ²⁷तब उसने मेरे मालिक बादशाह के सामने तेरे ख़ादिम पर ~इल्ज़ाम लगाया, लेकिन मेरा मालिक बादशाह तू ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता की तरह है, इसलिए जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम हो वह कर।" ²⁸क्योंकि मेरे बाप का सारा घराना, मेरे मालिक बादशाह के आगे मुर्दों के तरह था तो भी तूने अपने ख़ादिम को उन लोगों के बीच बिठाया जो तेरे दस्तरख़वान~पर खाते थे तब क्या अब भी मेरा कोई हक़ है कि मैं बादशाह के आगे फिर फ़रयाद करूँ?"

²⁹बादशाह ने उनसे कहा, "तू अपनी बातें क्यों बयान करता जाता है? मैं कहता हूँ कि तू और ज़ीबा दोनों उस ज़मीन को आपस में बाँट लो।" ³⁰और मिफ़ीबोसत ने बादशाह से कहा, "वही सब ले ले इसलिए कि मेरा मालिक बादशाह अपने घर में फिर सलामत आ गया है।"

³¹और बरज़िली जिल'आदी रजिलीम से आया और बादशाह के साथ यर्दन पार गया ताकि उसे यर्दन के पार पहुँचाये। ³²और यह बरज़िली बहुत ही 'उम्र दराज़ आदमी या'नी अस्सी बरस का था, उसने बादशाह को जब तक वह मेहनायम में रहा ख़ुराक पहुँचाई थी इसलिए कि वह बहुत बड़ा आदमी था। ³³तब बादशाह ने बरज़िली से कहा कि "तू मेरे साथ चल और मैं यरुशलीम में अपने साथ तेरी परवरिश करूँगा।"

³⁴और बरज़िली ने बादशाह को जवाब दिया कि "मेरी ज़िन्दगी के दिन ही कितने हैं जो मैं बादशाह के साथ यरुशलीम को जाऊँ? ³⁵आज मैं अस्सी बरस का हूँ, क्या मैं भले और बुरे में फ़र्क कर सकता हूँ? क्या तेरा बन्दा जो कुछ खाता पीता है उसका मज़ा जान सकता है? क्या मैं गाने वालों और गाने वालियों की फिर आवाज़ सुन सकता हूँ? तब तेरा बन्दा अपने बादशाह पर क्यों बोझ हो? ³⁶तेरा बन्दा सिर्फ़ यर्दन के पार तक बादशाह के साथ जाना चाहता है, इसलिए बादशाह मुझे ऐसा बड़ा बदला क्यों दे?"

³⁷अपने बन्दा को लौट जाने दे ताकि मैं अपने शहर में अपने बाप और माँ की क़ब्र के पास मरूँ लेकिन देख तेरा बन्दा किम्हाम हाज़िर है, वह मेरे मालिक बादशाह के साथ पार जाए और जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम दे उससे कर।"

³⁸तब बादशाह ने कहा, "किम्हाम मेरे साथ पार चलेगा और जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम हो वही मैं उसके साथ करूँगा और जो कुछ तू चाहेगा मैं तेरे लिए वही करूँगा।" ³⁹और सब लोग यर्दन के पार हो गये और बादशाह भी पार हुआ, फिर बादशाह ने बरज़िली को चूमा और उसे दु'आ दी और वह अपनी जगह को लौट गया।

⁴⁰तब बादशाह जिलजाल को रवाना हुआ और किम्हाम उसके साथ चला और यहूदाह के सब लोग और इस्राईल के लोगों में से भी आधे बादशाह को पार लाये।

⁴¹तब इस्राईल के सब लोग बादशाह के पास आकर उससे कहने लगे कि "हमारे भाई बनी यहूदाह तुझे क्यों चोरी से ले आए और बादशाह को और उसके घराने को और दाऊद के साथ जितने थे उनको यर्दन के पार से लाये?"

⁴²तब सब बनी यहूदाह ने बनी इस्राईल को जवाब दिया, "इसलिए कि बादशाह का हमारे साथ नज़दीक का रिश्ता है, तब तुम इस बात की वजह से नाराज़ क्यों हुए? क्या हमने बादशाह के दाम का कुछ खा लिया है या उसने हमको कुछ इन'आम दिया है?" ⁴³फिर बनी इस्राईल ने बनी यहूदाह को जवाब दिया कि "बादशाह में हमारे दस हिस्से हैं और हमारा हक़ भी दाऊद पर तुम से ज़्यादा है तब तुमने क्यों हमारी हिक़ारत की, कि बादशाह को लौटा लाने में पहले हमसे सलाह नहीं ली?" और बनी यहूदाह की बातें बनी इस्राईल की बातों से ज़्यादा सख़्त थीं।

Chapter 20

¹और वहाँ एक शरीर बिनयमीनी था और उसका नाम सबा' बिन बिक्री था, उसने नरसिंगा फूँका और कहा कि "दाऊद में हमारा कोई हिस्सा नहीं और न हमारी मीरास यस्सी के बेटे के साथ है, ऐ इस्राईलियों अपने अपने डेरे को चले जाओ।" ²इसलिए सब इस्राईली दाऊद की पैरवी छोड़ कर सबा' बिन बिक्री के पीछे हो लिए लेकिन यहूदाह के लोग यर्दन से यरुशलीम तक अपने बादशाह के साथ ही रहे।

³और दाऊद यरुशलीम में अपने महल में आया और बादशाह ने अपनी उन दस बाँदियों को जिनको वह अपने घर की निगहबानी के लिए छोड़ गया था, लेकर उनको नज़र बंद कर दिया और उनकी परवरिश करता रहा लेकिन उनके पास न गया, इसलिए उन्होंने अपने मरने के दिन तक नज़र बंद रहकर रंडापे की हालत में ज़िन्दगी काटी।

⁴और बादशाह ने 'अमासा को हुक्म किया कि "तीन दिन के अन्दर बनी यहूदाह को मेरे पास जमा' कर और तू भी यहाँ हाज़िर हो।" ⁵तब 'अमासा बनी यहूदाह को बुलाने गया, लेकिन वह मुताअय्यन वक्रत से जो उसने उसके लिए मुकर्रर किया था ज़्यादा ठहरा।

⁶तब दाऊद ने अबीशे से कहा कि "सबा' बिन बिक्री तो हमको अबी सलोम से ज़्यादा नुकसान पहुँचायेगा फिर तू अपने मालिक के खादिमों को लेकर उसका पीछा कर ऐसा न हो कि वह दीवारदार शहरों को लेकर हमारी नज़र से बच निकले।" ⁷तब योआब के आदमी और करैती और फ़लेती और सब बहादुर उसके पीछे हो लिए और यरुशलीम से निकले ताकि सबा' बिन बिक्री का पीछा करें।

⁸और जब वह उस बड़े पत्थर के नज़दीक पहुँचे जो जिब'ऊन में है तो 'अमासा उनसे मिलने को आया और योआब अपना जंगी लिबास पहने था और उसके ऊपर एक पटका था जिस से एक तलवार मियान में पड़ी हुई उसके कमर में बंधी थी और उसके चलते चलते वह निकल पड़ी।

⁹तब योआब ने 'अमासा से कहा, "ऐ मेरे भाई तू ~खैरियत से है?" और योआब ने 'अमासा की दाढ़ी अपने दहने हाथ से पकड़ी कि उसको बोसा दे।" ¹⁰और 'अमासा ने उस तलवार का जो योआब के हाथ में थी ख्याल न किया, इसलिए उसने उससे उसके पेट में ऐसा मारा कि उसकी अंतड़ियाँ ज़मीन पर निकल पड़ीं ~और उसने दूसरा वार न किया, इसलिए वह मर गया, फिर योआब और उसका भाई अबीशे सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले।"

¹¹और योआब के जवानों में से एक शख्स उसके पास खड़ा हो गया और कहने लगा कि "जो कोई योआब से राज़ी है और जो कोई दाऊद की तरफ़ है वह योआब के पीछे होले।" ¹²और 'अमासा सड़क के बीच अपने खून में लोट रहा था और उस शख्स ने देखा कि सब लोग खड़े हो गये हैं, तो वह 'अमासा को सड़क पर से मैदान को उठा ले गया और जब यह देखा कि जो कोई उसके पास आता है खड़ा हो जाता है, तो उस पर एक कपड़ा डाल दिया।" ¹³और जब वह सड़क पर से हटा लिया गया, तो सब लोग योआब के पीछे सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले।

¹⁴और वह इस्राईल के सब कबीलों ~में से होता हुआ अबील और बैत मा'का और सब बेरियों तक पहुँचा और वह भी जमा' होकर उसके पीछे चले।" ¹⁵और उन्होंने आकर उसे बैत मा'का में घेर लिया शहर के सामने ऐसा दमदमा बाँधा कि वह दीवार के बराबर रहा और सब लोगों ने जो योआब के साथ थे दीवार को तोड़ना शुरू किया ताकि उसे गिरा दें।" ¹⁶तब एक 'अक्ल मन्द 'औरत शहर में से पुकार कर कहने लगी कि "'ज़रा योआब से कह दो कि यहाँ आए ताकि मैं उससे कुछ कहूँ।

¹⁷तब वह उसके नज़दीक आया, उस 'औरत ने उससे कहा, "क्या तू योआब है?" उसने कहा, "हाँ" तब वह उससे कहने लगी, "अपनी लौंडी की बातें सुन। उसने कहा, "मैं सुनता हूँ।" ¹⁸तब वह कहने लगी कि "पुराने ज़माना में यूँ कहा करते थे कि वह ज़रूर अबील में सलाह पूँछेंगे और इस तरह वह बात को खत्म करते थे।" ¹⁹और मैं इस्राईल में उन लोगों में से हूँ जो सुलह पसंद और दयानतदार हैं, तू चाहता है कि एक शहर और माँ को इस्राईलियों के बीच हलाक करे, फिर तू क्यूँ खुदावन्द की मीरास को निगलना चाहता है?"

²⁰योआब ने जवाब दिया, "मुझसे हरगिज़ हरगिज़ ऐसा न हो कि मैं निगल जाऊँ या हलाक करूँ।" ²¹बात यह नहीं है बल्कि इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क के एक शख्स ने जिसका नाम सबा' बिन बिक्री है बादशाह या'नी दाऊद के खिलाफ़ हाथ उठाया है इसलिए सिर्फ़ उसी को मेरे हवाले कर देते तो मैं शहर से चला जाऊँगा।" उस 'औरत ने योआब से कहा, "देख उसका सिर दीवार पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा।" ²²तब वह 'औरत अपनी दानाई से सब लोगों के पास गई, फिर उसने सबा'बिन बिक्री का सिर काट कर उसे बाहर योआब की तरफ़ फेंक दिया, तब उसने नरसिंगा फूँका और लोग शहर से अलग होकर अपने अपने डेरे को चले गये और योआब यरुशलीम को बादशाह के पास लौट आया।

²³और योआब इस्राईल के सारे लश्कर का सरदार था, और बिनायाह बिन यहूयदा' करेतियों और फ़लेतियों का सरदार था।" ²⁴और आदूराम खिराज का दरोगा था और अखीलूद का बेटा यहूसफ़त मुवरिख़ था।" ²⁵और सिवा मुन्शी था और सदूक और अबियातर काहिन थे।" ²⁶और 'ईरा याइरी भी दाऊद का एक काहिन था।

Chapter 21

¹और दाऊद के दिनों में लगातार तीन साल काल पड़ा, और दाऊद ने खुदावन्द से दरियाफ्त किया, खुदावन्द ने फ़रमाया, "यह साऊल और उसके खूँरेज़ घराने की वजह से है, क्योंकि उसने ज़िब'ऊनियों को क़त्ल किया।"

²तब बादशाह ने ज़िब'ऊनियों को बुलाकर उनसे बात की, यह ज़िब'ऊनी बनी इस्राईल में से नहीं बल्कि बचे हुए अमूरियों में से थे और बनी इस्राईल ने उनसे क्रसम खाई थी और साऊल ने बनी इस्राईल और बनी यहूदाह की खातिर अपनी गरम जोशी में उनको क़त्ल कर डालना चाहा था।³इसलिए दाऊद ने ज़िब'ऊनियों से कहा, "मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ और मैं किस चीज़ से कफ़ारा दूँ, ताकि तुम खुदावन्द की मीरास को दु'आ दो?"

⁴ज़िब'ऊनियों ने उससे कहा कि "हमारे और साऊल या उसके घराने के दरमियान चाँदी या सोने का कोई मु'आमला नहीं और न हमको यह इख्तियार है कि हम इस्राईल के किसी आदमी को जान से मारें।" उसने कहा, "जो कुछ तुम कहो मैं वही तुम्हारे लिए करूँगा।"

⁵उन्होंने बादशाह को जवाब दिया कि जिस शख्स ने हमारा नास किया और हमारे खिलाफ़ ऐसी तदबीर निकाली कि हम मिटा दिए जायें, और इस्राईल की किसी बादशाहत में बाक़ी न रहें।⁶उसी के बेटों में से सात आदमी हमारे हवाले कर दिए जायें, और हम उनको खुदावन्द के लिए चुने हुए साऊल के ज़िबा' में लटका देंगे।" बादशाह ने कहा, "मैं दे दूँगा।"

⁷लेकिन बादशाह ने मिफ़ीबोसत बिन यूनतन बिन साऊल को खुदावन्द की क्रसम की वजह से जो उनके दाऊद और साऊल के बेटे यूनतन के दरमियान हुई थी बचा रखवा।⁸लेकिन बादशाह ने अय्याह की बेटी रिस्फ़ह के दोनों बेटों अरमोनी और मिफ़ीबोसत को जो साऊल से हुए थे और साऊल की बेटी मीकल के पाँचों बेटों को जो बरज़िली महुलाती के बेटे 'अदरी ऐल से हुए थे लेकर।⁹उनको ज़िब'ऊनियों के हवाले किया और उन्होंने उनको पहाड़ पर खुदावन्द के सामने लटका दिया, इसलिए वह सातों एक साथ मारे, यह सब फ़सल काटने के दिनों में या'नी जौ की फ़सल के शुरू' में मारे गये।

¹⁰तब अय्याह की बेटी रिस्फ़ह ने टाट लिया और फ़सल के शुरू' से उसको अपने लिए चट्टान पर बिछाए रही जब तक आसमान से उन पर बारिश न हुई और उसने न तो दिन के वक्रत हवा के परिन्दों को और न रात के वक्रत जंगली दरिन्दों को उन पर आने दिया।¹¹और दाऊद को बताया गया कि साऊल की बाँदी अय्याह की बेटी रिस्फ़ह ने ऐसा ऐसा किया।

¹²तब दाऊद ने जाकर साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को यबीस ज़िल'आद के लोगों से लिया जो उनको बैत शान के चौक में से चुरा लाये थे, जहाँ फ़िलिस्तिनों ने उनको जिस दिन कि उन्होंने साऊल को ज़िलबू'आ में क़त्ल किया टाँग दिया था।¹³इसलिए वह साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को वहाँ से ले आया, और उन्होंने उनकी भी हड्डियाँ जमा' कीं जो लटकाए गये थे।

¹⁴और उन्होंने साऊल और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को ज़िला' में जो बिनयमीन की सर ज़मीन में है उसी के बाप क्रैस की क़ब्र में दफ़न किया और उन्होंने जो कुछ बादशाह ने फ़रमाया था सब पूरा किया, इसके बा'द खुदा ने उस मुल्क के बारे में दु'आ सुनी।

¹⁵और फ़िलिस्ती फिर इस्राईलियों से लड़े और दाऊद अपने खादिमों के साथ निकला और फ़िलिस्तिनों से लड़ा और दाऊद बहुत थक गया।¹⁶और इश्बी बनोब ने जो देवज़ादों में से था और जिसका नेज़ह वज़न में पीतल की तीन सौ मिस्क़ाल था और वह एक नई तलवार बाँधे था चाहा कि दाऊद को क़त्ल करे।¹⁷लेकिन ज़रोयाह के बेटे अबीशे ने उसकी मदद की और उस फ़िलिस्ती को ऐसी मार लगाई कि उसे मार दिया, तब दाऊद के लोगों ने क्रसम खाकर उससे कहा कि ~"तू फिर कभी हमारे साथ जंग पर नहीं जाएगा ऐसा न हो कि तू इस्राईल का चरागा बुझादे।"

¹⁸इसके बा'द फ़िलिस्तिनों के साथ जूब में लड़ाई हुई, तब हूसाती सिब्बकी ने सफ़ को जो देवज़ादों में से था क़त्ल किया।¹⁹और फिर फ़िलिस्तिनों से जूब में एक और लड़ाई हुई, तब इलहनान बिन या'अरी अरज़ीम ने जो बैतल हम का था जाती ज़ोलियत को क़त्ल किया जिसके नेज़ह की छड़ जुलाहे के शहतीर की तरह थी।

²⁰फिर जात में लड़ाई हुई और वहाँ एक बड़ा लम्बा शख्स था, उसके दोनों हाथों और दोनों पावों में छः छः उंगलियाँ थीं जो सब की सब गिनती में चौबीस थीं और यह भी उस देव से पैदा हुआ था।²¹जब इसने इस्राईलियों की फ़ज़ीहत की तो दाऊद के भाई सिम'ई के बेटे यूनतन ने उसे क़त्ल किया।²²यह चारों उस देव से जात में पैदा हुए थे, और वह दाऊद के हाथ से और उसके खादिमों के हाथ से मारे गये।

Chapter 22

¹जब खुदावन्द ने दाऊद को उसके सब दुश्मनों और साऊल के हाथ से रिहाई दी तो उसने खुदावन्द के सामने इस मज़मून का हम्द सुनाया। ²वह कहने लगा, "खुदावन्द मेरी चट्टान और मेरा किला" और मेरा छुड़ाने वाला है।

³खुदा मेरी चट्टान है, मैं उसी पर भरोसा रखूँगा, वही मेरी ढाल और मेरी नजात का सींग है, मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरी पनाह है, मेरे नजात देने वाले! तूही मुझे ज़ुल्म से बचाता है। ⁴मैं खुदावन्द को जो ता'रीफ़ के लायक है पुकारूँगा, यूँ मैं अपने दुश्मनों से बचाया जाऊँगा।

⁵क्योंकि मौत की मौजों ने मुझे घेरा, बेदीनी के सैलाबों ने मुझे डराया। ⁶पाताल की रस्सियाँ मेरे चारो तरफ़ थीं—मौत के फंदे मुझ पर आते थे।

⁷अपनी मुसीबत में मैंने खुदावन्द को पुकारा, मैं अपने खुदा के सामने चिल्लाया। उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज़ सुनी—और मेरी फ़रयाद उसके कान में पहुँची।

⁸तब ज़मीन हिल गई और काँप उठी—और आसमान की बुनियादों ने जुम्बिश खाई—और हिल गयीं, इसलिए कि वह गुस्सा हुआ। ⁹उसके नथुनों से धुवौं उठा—और उसके मुँह से आग निकल कर भस्म करने लगी, कोयले उससे दहक उठे।

¹⁰उसने आसमानों को भी झुका दिया और नीचे उतर आया—और उसके पाँव तले गहरा अँधेरा था। ¹¹वह करूबी पर सवार होकर उदा—और हवा के बाजुओं पर दिखाई दिया। ¹²और उसने अपने चारों तरफ़ अँधेरे को और पानी के इज्तिमा' और आसमान के दलदार बादलों को शामियाने बनाया।

¹³उस झलक से जो उसके आगे आगे थी—आग के कोयले सुलग गये। ¹⁴खुदावन्द आसमान से गरजा—और हक़ त'आला ने अपनी आवाज़ सुनाई। ¹⁵उसने तीर चला कर उनको तितर बितर—किया, और बिजली से उनको शिकस्त दी।

¹⁶तब खुदावन्द की डॉट से :उसके नथुनों के दम के झोंके से, समुन्दर की गहराई दिखाई देने लगी, और जहान की बुनियादें नमूदार हुईं।

¹⁷उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे बहुत पानी में से खींच कर बाहर निकाला। ¹⁸उसने मेरे ताक़तवर दुश्मन और मेरे 'अदावत रखने वालों' से, मुझे छुड़ा लिया क्योंकि वह मेरे लिए निहायत बहादुर थे।

¹⁹वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े, पर खुदावन्द मेरा सहारा था। ²⁰वह मुझे चौड़ी जगह में निकाल भी लाया, उसने मुझे छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझसे खुश था। ²¹खुदावन्द ने मेरी रास्तबाज़ी के मुवाफ़िक़ मुझे बदला दिया, और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ मुझे बदला दिया।

²²क्योंकि मैं खुदावन्द की राहों पर चलता रहा, और ग़लती से अपने खुदा से अलग न हुआ। ²³क्योंकि उसके सारे फ़ैसले मेरे सामने थे, और मैं उसके क़ानून से अलग न हुआ।

²⁴मैं उसके सामने कामिल भी रहा, और अपनी बदकारी से बा'ज़ रहा। ²⁵इसीलिए खुदावन्द ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी के मुवाफ़िक़ बल्कि मेरी उस पाकीज़गी के मुताबिक़ जो उसकी नज़र के सामने थी बदला दिया।

²⁶रहम दिल के साथ तू रहीम होगा, और कामिल आदमी के साथ कामिल। ²⁷नेकों के साथ नेक होगा, और टेढ़ों के साथ टेढ़ा।

²⁸मुसीबत ज़दा लोगों को तू बचाएगा, लेकिन तेरी आँखें मगरूरों पर लगी हैं ताकि तू उन्हें नीचा करे। ²⁹क्योंकि ऐ खुदावन्द! तू मेरा चराग़ है, और खुदावन्द मेरे अँधेरे को उजाला कर देगा।

³⁰क्योंकि तेरी बदौलत मैं फ़ौज पर जंग करता हूँ, और अपने खुदा की बदौलत दीवार फाँद जाता हूँ। ³¹लेकिन खुदा की राह कामिल है, खुदावन्द का कलाम ताया हुआ है, वह उन सबकी ढाल है जो उसपर भरोसा रखते हैं।

³²क्योंकि खुदावन्द के 'अलावा और कौन खुदा है? और हमारे खुदा को छोड़ कर और कौन चट्टान है? ³³खुदा मेरा मज़बूत किला' है, वह अपनी राह में कामिल शख्स की रहनुमाई करता है।

³⁴वह उसके पाँव हरनियों के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में क़ायम करता है। ³⁵वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है, यहाँ तक कि मेरे बाजू पीतल की कमान को झुका देते हैं।

³⁶तूने मुझको अपनी नजात की ढाल भी बख़्शी, और तेरी नरमी ने मुझे बुज़ुर्ग बना दिया। ³⁷तूने मेरे नीचे मेरे क़दम चौड़े कर दिए, और मेरे पाँव नहीं फिसले।

³⁸मैंने अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको हलाक किया, और जब तक वह फ़ना न हो गये मैं वापस नहीं आया। ³⁹मैंने उनको फ़ना कर दिया और ऐसा छेद डाला है कि वह उठ नहीं सकते, बल्कि वह तो मेरे पाँव के नीचे गिरे पड़े हैं।

⁴⁰क्योंकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताक़त से तैयार किया, और मेरे मुखालिफ़ों को मेरे सामने नीचा किया। ⁴¹तूने मेरे दुश्मनों की पीठ मेरी तरफ़ फेरदी, ताकि मैं अपने 'अदावत रखने वालों' को काट डालूँ।

⁴²उन्होंने इन्तिज़ार किया लेकिन कोई न था जो बचाए, बल्कि खुदावन्द का भी इन्तिज़ार किया, लेकिन उसने उनको जवाब न दिया। ⁴³तब मैंने उनको कूट कूट कर ज़मीन की गर्द की तरह कर दिया, मैंने उनको गली कूचों के कीचड़ की तरह रौंद रौंद कर चारो तरफ़ फैला दिया।

⁴⁴तूने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से भी छुड़ाया, तूने मुझे क़ौमों का सरदार होने के लिए रख छोड़ा है, जिस क़ौम से मैं वाफ़िक़ भी नहीं वह मेरी फ़रमा बरदार—होगी। ⁴⁵परदेसी मेरे ताबे' हो जायेंगे, वह मेरा नाम सुनते ही मेरी फ़रमाबर्दारी करेंगे। ⁴⁶परदेसी मुरझा जायेंगे—और अपने किलों'से थरथराते हुए निकलेंगे।

⁴⁷खुदावन्द ज़िन्दा है, मेरी चट्टान मुबारक हो! और खुदा मेरे नजात की चट्टान मुस्ताज़ हो ! ⁴⁸वही खुदा जो मेरा बदला लेता है, और उम्मतों को मेरे ताबे' कर देता है। ⁴⁹और मुझे मेरे दुश्मनों के बीच से निकालता है, हाँ तू मुझे मेरे मुखालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता है, तू मुझे टेढ़े आदमियों से रिहाई देता है।

⁵⁰इसलिए ऐ खुदावन्द ! मैं क़ौमों के बीच तेरी शुक्रगुज़ारी और तेरे नाम की मदह सराई करूँगा। ⁵¹वह अपने बादशाह को बड़ी नजात 'इनायत करता है, और अपने ममसूह दाऊद और उसकी नसल पर हमेशा शफ़क़त करता है।

Chapter 23

¹दाऊद की आखरी बातें यह हैं: दाऊद बिन यस्सी कहता है, "या'नी यह उस शख्स का कलाम है जो सरफ़राज़ किया गया, और या'कूब के खुदा का ममसूह~और इस्राईल का शीरी नगमा साज़ है।"²"खुदावन्द की रूह ने मेरी ज़रिए' कलाम किया, और उसका सुखन मेरी ज़बान पर था।

³इस्राईल के खुदा ने फ़रमाया। इस्राईल की चटटान ने मुझसे कहा। एक है जो सच्चाई से लोगों पर हुकूमत करता है। जो खुदा के खौफ़ के साथ हुकूमत करता है।

⁴वह सुबह की रोशनी की तरह होगा जब सूरज निकलता है, ऐसी सुबह जिसमें बादल न हो, जब नरम नरम घास ज़मीन में से, बारिश के बा'द की साफ़ चमक के ज़रिए' निकलती है।

⁵मेरा घर तो सच मुच खुदा के सामने ऐसा है भी नहीं, तो भी उसने मेरे साथ एक हमेशा का 'अहद, जिसकी सब बातें मु'अय्यन और पाएदार हैं बाँधा है, क्योंकि यही मेरी सारी नजात और सारी मुराद है, अगर चे वह उसको बढ़ाता नहीं।

⁶लेकिन झूठे लोग सब के सब काँटों की तरह ठहरेंगे जो हटा दिए जाते हैं, क्योंकि वह हाथ से पकड़े नहीं जा सकते।⁷बल्कि जो आदमी उनको छुए, ज़रूर है कि वह लोहे और नेज़ह की छड़ से मुसल्लह हो, इसलिए वह अपनी ही जगह में आग से बिल्कुल भस्म कर दिए जायेंगे।

⁸और दाऊद के बहादुरों के नाम यह हैं :या'नी तहकमोनी योशेब बशेबत जो सिपह सालार का सरदार था, वही ऐज़नी अदीनो था जिससे आठ सौ एक ही वक्रत में मक़तूल हुए।

⁹उसके बा'द एक अखूही के बेटे दोदे का बेटा इली'अज़र था, यह उन तीनों सूरमाओं में से एक था जो दाऊद के साथ उस वक्रत थे, जब उन्होंने उन फ़िलिस्तिनियों को जो लड़ाई के लिए जमा' हुए थे लत्कारा हालाँकि सब बनी इस्राईल चले गये थे।¹⁰और उसने उठकर फ़िलिस्तिनियों को इतना मारा कि उसका हाथ थक कर तलवार से चिपक गया और खुदावन्द ने उस दिन बड़ी फ़तह कराई और लोग फिर कर सिर्फ़ लूटने के लिए उसके पीछे हो लिए।

¹¹बा'द उसके हरारी अजी का बेटा सम्मा था और फ़िलिस्तिनियों ने उस क़त-ए-ज़मीन के पास जो मसूर के पेड़ों से भरा था जमा' होकर दिल बाँध लिया था और लोग फ़िलिस्तिनियों के आगे से भाग गये थे।¹²लेकिन उसने उस क़ता' के बीच में खड़े होकर उसको बचाया और फ़िलिस्तिनियों को क़त्ल किया और खुदावन्द ने बड़ी फ़तह कराई।

¹³और उन तीस सरदारों में से तीन सरदार निकले और फ़सल काटने के मौसम में दाऊद के पास 'अदुल्लाम के मगारा में आए और फ़िलिस्तिनियों की फ़ौज रिफ़ाईम की वादी में खेमा ज़न थी।¹⁴और दाऊद उस वक्रत गढ़ी में था और फ़िलिस्तिनियों के पहरे की चौकी बैतल हम में थी।

¹⁵और दाऊद ने तरसते हुए कहा, "ऐ काश कोई मुझे बैतल हम के उस कुँवें का पानी पीने को देता जो फाटक के पास है।"¹⁶और उन तीनों बहादुरों ने फ़िलिस्तिनियों के लश्कर में से जाकर बैतल हम के कुँवें से जो फाटक के बराबर है पानी भर लिया और उसे दाऊद के पास लाये लेकिन उसने ~न चाहा कि पिए बल्कि उसे खुदावन्द के सामने उंडेल दिया।¹⁷और कहने लगा, "ऐ खुदावन्द मुझसे यह बात हरगिज़ न हो कि मैं ऐसा करूँ, क्या मैं उन लोगों का खून पियूँ जिन्होंने अपनी जान जोखों में डाली?" इसी लिए उसने न चाहा कि उसे पिए, उन तीनों बहादुरों ने ऐसे ऐसे काम किए।

¹⁸और ज़रोयाह के बेटे योआब का भाई अबीशे उन तीनों में अफ़ज़ल था, उसने तीन सौ पर अपना भाला चला ~कर उनको क़त्ल किया और तीनों में नामी था।

¹⁹क्या वह उन तीनों में खास न था ? इसीलिए वह उनका सरदार हुआ तो भी वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया।

²⁰और यहूयदा' का बेटा बिनायाह क़बज़ील के एक सूरमा का बेटा था, जिसने बड़े बड़े काम किए थे, इसने मोआब के अरीएल के दोनों बेटों को क़त्ल किया और जाकर बर्फ़ के मौसम में एक ग़ार के बीच एक शेर बबर को मारा।²¹और उसने एक जसीम मिस्री को क़त्ल किया, उस मिस्री के हाथ में भला था लेकिन यह लाठी ही लिए हुए उस पर लपका और मिस्री के हाथ से भला छीन लिया और उसी के भाले से उसे मारा।

²²तब यहूयदा' के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किए और तीनों बहादुरों में नामी था।²³वह उन तीनों से ज़्यादा खास था लेकिन वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया और दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ सिपाहियों पर मुक़र्रर किया।

²⁴और तीनों में योआब का भाई 'असाहील और इल्हनान बैतल हम के दोदो का बेटा।²⁵हरोदी सम्मा, हरोदी इल्का।²⁶फ़लती खलिस,~'ईरा बिन 'अक्रीस तकू'ई।²⁷अन्तोती अबी अज़र, ~हूसाती मबूनी।²⁸अखूसी ज़ल्मोन, नतोफ़ाती महरी।

²⁹नतोफ़ाती बा'ना के बेटा हलिब, ~इती बिन रीबी बनी बिनयमीन के जिब्बा'का।³⁰फिर'आतोनी, ~बिनायाह, ~और जा'स के नालों कब हिदी।³¹अरबाती अबी 'अल्बून, बर्हूमी 'अज़मावत।³²सा'लाबूनी इल्याहब, ~ बनी यासीन यूनतन।

³³हरारी सम्मा, ~अखीआम ~बिन सरार हरारी।³⁴इलीफ़लत बिन अहसबी मा'काती का बेटा, इली'आम बिन अखीतुफ़ल जिलोनी।³⁵कर्मिली हसरो, अरबी फ़ा'री।³⁶ज़ोबाह के नातन का बेटा इज़ाल, जद्दी बानी।

³⁷'अम्मोनी सिलक, बैरोती नहरी, ज़रोयाह के बेटे योआब के सिलहबरदार।³⁸इतरी 'ईरा, इतरी जरीब।³⁹और हिस्ती औरय्याह : यह सब सैंतीस थे।

Chapter 24

¹इसके बा'द खुदावन्द का गुस्सा इस्राईल पर फिर भड़का और उसने दाऊद के दिल को उनके खिलाफ़ यह कहकर उभारा कि "जाकर इस्राईल और यहूदाह को गिन।" ²और बादशाह ने लश्कर के सरदार योआब को जो उसके साथ था हुक्म किया कि "इस्राईल के सब क़बीलों में दान से बेर सबा' तक गश्त करो और लोगों को गिनो ताकि लोगों की ता'दाद मुझे मा'लूम हो।"

³तब योआब ने बादशाह से कहा कि "खुदावन्द तेरा खुदा उन लोगों को चाहे वह कितने ही हों सौ गुना बढ़ाए और मेरे मालिक बादशाह की आँखें इसे देखें, लेकिन मेरे मालिक बादशाह को यह बात क्यों भाती है ?" ⁴"तो भी बादशाह की बात योआब और लश्कर के सरदारों पर ग़ालिब ही रही, और योआब और लश्कर के सरदार बादशाह के सामने से इस्राईल के लोगों का शुमार करने निकले।

⁵और वह यर्दन पार उतरे और उस शहर की दहनी तरफ़ 'अरो'ईर में खेमाज़न हुए जो ज़ेद की वादी में उया'ज़ेर की जानिब है। ⁶'फिर जिल'आद और तहतीम हदसी के 'इलाक़े में गए, और दान या'न को गए, और घूम कर सैदा तक पहुँचे। ⁷और वहाँ से सूर के क़िला' को और हव्वियों और कन'आनियों के सब शहरों को गए और यहूदाह के जुनुब में बेरसबा' तक निकल गए।

⁸चुनाँचे सारी हुक्मत में गश्त करके नौ महीने बीस दिन के बा'द वह यरुशलीम को लौटे। ⁹और योआब ने मर्दुम शुमारी-की ता'दाद-बादशाह को दी वह इस्राईल में आठ लाख बहादुर मर्द निकले जो शमशीर ज़न थे और यहूदाह में आदमी पाँच लाख निकले।

¹⁰और लोगों का शुमार करने के बा'द दाऊद का दिल बेचैन हुआ और दाऊद ने खुदावन्द से कहा, "यह जो मैंने किया वह बड़ा गुनाह किया, अब ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपने बन्दा का गुनाह दूर कर दे क्योंकि मुझसे बड़ी बेवकूफी हुई।"

¹¹इसलिए जब दाऊद सुबह को उठा तो खुदावन्द का कलाम जाद ~पर जो दाऊद का ग़ैब बीन था नाज़िल हुआ और उसने कहा कि ¹²"जा और दाऊद से कह खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि ~मैं तेरे सामने तीन बलाएँ पेश करता हूँ, तू उनमें से एक को चुन ले ताकि मैं उसे तुझ पर नाज़िल करूँ।"

¹³तब जाद ने दाऊद के पास जाकर उसको यह बताया और उस से पुछा, "क्या तेरे मुल्क में सात बरस क़हत रहे या तू तीन महीने तक अपने दुश्मनों से भागता फिरे और वह तेरा पीछा करें या तेरी हुक्मत में तीन दिन तक मौतें हों? इसलिए तू सोच ले और ग़ौर कर ले कि मैं उसे जिसने मुझे भेजा नै क्या जवाब दूँ।" ¹⁴दाऊद ने जाद से कहा, "मैं बड़े शिकंजे में हूँ, हम खुदावन्द के हाथ में पड़ें क्योंकि उसकी रहमतें 'अजीम हैं लेकिन मैं इन्सान के हाथ में न पड़ूँ।"

¹⁵तब खुदावन्द ने इस्राईल पर वबा भेजी जो उस सुबह से लेकर वक़्त मु'अय्यना तक रही और दान से बेर सबा' तक लोगों मेंसे सत्तर हज़ार आदमी मर गए।

¹⁶और जब फ़रिश्ते ने अपना हाथ बढ़ाया कि यरुशलीम को हलाक करे तो खुदावन्द उस वबा से मलूल हुआ और उस फ़रिश्ते से जो लोगों को हलाक कर रहा था कहा, "यह बस है, अब अपना हाथ रोक ले।" उस वक़्त खुदावन्द का फ़रिश्ता याबूसी अरोनाह के खलिहान के पास ~खड़ा था।

¹⁷और दाऊद ने जब उस फ़रिश्ता को जो लोगों को मार रहा था देखा तो खुदावन्द से कहने लगा, "देख गुनाह तो मैंने किया और ख़ता मुझसे हुई लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? ~इसलिए तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के खिलाफ़ हो।"

¹⁸उसी दिन जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, ~"जा और याबूसी अरोनाह के खलिहान में खुदावन्द के लिए एक मज़बह बना।" ¹⁹इसलिए दाऊद जाद के कहने के मुताबिक़ जैसा खुदावन्द का हुक्म था गया। ²⁰और अरोनाह ने निगाह की और बादशाह और उसके खादिमों को अपनी तरफ़ आते देखा, तब अरोनाह निकला और ज़मीन पर सरनगूँ ~होकर बादशाह के आगे सज्दा किया।

²¹और अरोनाह कहने लगा, "मेरा मालिक बादशाह अपने बन्दा के पास क्यों आया?" दाऊद ने कहा, "यह खलिहान तुझसे खरीदने और खुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाने आया हूँ ताकि लोगों में से वबा जाती रहे।" ²²अरोनाह ने दाऊद से कहा, "मेरा मालिक बादशाह जो कुछ उसे अच्छा मा'लूम हो लेकर पेश करे, देख सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बैल हैं और दायें चलाने के औज़ार और बैलों का सामान ईधन के लिए हैं।" ²³यह सब कुछ ऐ बादशाह अरोनाह बादशाह की नज़र करता है।" और अरोनाह ने बादशाह से कहा कि "खुदावन्द तेरा खुदा तुझको कुबूल फ़रमाए।"

²⁴तब बादशाह ने अरोनाह से कहा, "नहीं बल्कि मैं ज़रूर क़ीमत देकर उसको तुझसे खरीदूँगा और मैं खुदावन्द अपने खुदा के सामने ऐसी सोख़्तनी कुर्बानियाँ अदा करूँगा जिन पर मेरा कुछ खर्च न हुआ हो" फिर दाऊद ने वह खलिहान और वह बैल चाँदी के पचास मिस्क़ालें देकर खरीदे। ²⁵और दाऊद ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बह बनाया और सोख़्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं और खुदावन्द ने उस मुल्क के बारे में दु'आ सुनी और वबा इस्राईल में से जाती रही।

१-सलातीन

Chapter 1

¹और दाऊद बादशाह बुढ़ा और 'उम्र दराज़ हुआ; और वह उसे कपड़े उढ़ाते, लेकिन वह गर्म न होता था। ²तब उसके खादिमों ने उससे कहा, "कि हमारे मालिक बादशाह के लिए एक जवान कुँवारी ~ढूँडी ~जाए, जो बादशाह-के सामने खड़ी रहे और उसकी देख भाल किया करे, और तेरे पहलू में लेट रहा करे ताकि हमारे मालिक बादशाह को गर्मी पहुँचे।"

³~चुनाँचे उन्होंने इस्राईल की सारी हुक्मत में एक खूबसूरत लड़की तलाश करते करते शून्मीत अबीशाग को पाया, और उसे बादशाह के पास लाए। ⁴~और वह लड़की बहुत हसीन थी, तब वह बादशाह की देख भाल और उसकी खिदमत करने लगी; लेकिन बादशाह उससे वाक़िफ़ न हुआ।

⁵~तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने सर उठाया और कहने लगा, "मैं बादशाह हूँगा।" और अपने लिए रथ और सवार और पचास आदमी, जो उसके आगे-आगे दौड़ें, तैयार किए।⁶उसके बाप ने उसको कभी इतना भी कहकर गमगीन नहीं किया, "कि तू ने यह क्यों किया है?" और वह बहुत खूबसूरत भी था, और अबीसलोम के बा'द पैदा हुआ था।

⁷और उसने ज़रोयाह के बेटे योआब और अबीयातर काहिन से बात की; और यह दोनों अदूनियाह के पैरोकार होकर उसकी मदद करने लगे।⁸~लेकिन सद्कू काहिन, और यहूयदा' के बेटे बिनायाह, और नातन नबी, और सिम'ई और रे'ई और दाऊद के बहादुर लोगों ने अदूनियाह का साथ न दिया।

⁹~और अदूनियाह ने भेड़ें और बैल और मोटे-मोटे जानवर जुहलत के पत्थर के पास, जो 'ऐन राजिल के बराबर है, ज़बह किए, और अपने सब भाइयों या'नी बादशाह के बेटों की, और सब यहूदाह के लोगों की, जो बादशाह के मुलाज़िम थे, दा'वत की;¹⁰लेकिन नातन नबी और बिनायाह और बहादुर लोगों और अपने भाई सुलेमान को न बुलाया।

¹¹~तब नातन ने सुलेमान की माँ ~बतसबा' से कहा, "क्या तू ने नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और हमारे मालिक दाऊद को यह मालूम नहीं?"¹²अब तू आ कि मैं तुझे सलाह दूँ, ताकि तू अपनी और अपने बेटे सुलेमान की जान बचा सके।

¹³तू दाऊद बादशाह के सामने जाकर उससे कह, 'ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह, क्या तू ने अपनी लौंडी से क्रसम खाकर नहीं कहा कि यक़ीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बा'द हुकूमत ~करेगा, और वही मेरे तख़्त पर बैठेगा? पस अदूनियाह क्यों बादशाही करता है?'¹⁴और देख, तू बादशाह से बात करती ही होगी कि मैं भी तेरे बा'द आ पहुँचूँगा, और तेरी बातों की तस्दीक करूँगा।"

¹⁵~तब बतसबा' अन्दर कोठरी में बादशाह के पास गई; और बादशाह बहुत बुढ़ा था, और शूनमीत अबीशाग बादशाह की खिदमत करती थी।¹⁶और बतसबा' ने झुककर बादशाह को सिज्दा किया। बादशाह ने कहा, "तू क्या चाहती है?"¹⁷उसने उससे कहा, "ऐ मेरे मालिक, तू ने खुदावन्द अपने खुदा की क्रसम खाकर अपनी लौंडी से कहा था, "यक़ीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बा'द हुकूमत करेगा, और वही मेरे तख़्त पर बैठेगा।"

¹⁸~पर देख, अब तो अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और ऐ मेरे मालिक बादशाह, तुझ को इसकी खबर नहीं।¹⁹और उसने बहुत से बैल और मोटे मोटे जानवर और भेड़ें ज़बह की हैं; और बादशाह के सब बेटों और अबीयातर काहिन, और लश्कर के सरदार योआब की दा'वत की है, लेकिन तेरे बन्दे सुलेमान को उसने नहीं बुलाया।

²⁰~लेकिन ऐ मेरे मालिक, सारे इस्राईल की निगाह तुझ पर है, ताकि तू उनको बताए कि मेरे मालिक बादशाह के तख़्त पर कौन उसके बा'द बैठेगा।²¹वरना यह होगा कि जब मेरा मालिक बादशाह अपने बाप-दादा के साथ सो जाएगा, तो मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों कुसूरवार ठहरेंगे।"

²²~वह अभी बादशाह से बात ही कर रही थी कि नातन नबी आ गया।²³और उन्होंने बादशाह को खबर दी, "देख, नातन नबी हाज़िर है।" और जब वह बादशाह के सामने आया, तो उसने मुँह के बल गिर कर बादशाह को सिज्दा किया।

²⁴और नातन कहने लगा, "ऐ मेरे मालिक बादशाह ! क्या तू ने फ़रमाया है, कि मेरे बा'द अदूनियाह बादशाह हो, और वही मेरे तख़्त पर बैठे?"²⁵~क्योंकि उसने आज जाकर बैल और मोटे-मोटे जानवर और भेड़ें कसरत से ज़बह की हैं, और बादशाह के सब बेटों और लश्कर के सरदारों और अबीयातर काहिन की दा'वत की है; और देख, वह उसके सामने खा पी रहे हैं और कहते हैं, 'अदूनियाह बादशाह ज़िन्दा रहे!'"

²⁶~लेकिन मुझ तेरे खादिम को, और सद्कू काहिन और यहूयदा' के बेटे बिनायाह और तेरे खादिम सुलेमान को उसने नहीं बुलाया।²⁷~क्या यह बात मेरे मालिक बादशाह की तरफ़ से है? और तू ने अपने खादिमों को बताया भी नहीं कि मेरे मालिक बादशाह के बा'द, उसके तख़्त पर कौन बैठेगा?"

²⁸~तब दाऊद बादशाह ने जवाब दिया और फ़रमाया, 'बतसबा' को मेरे पास बुलाओ।" तब वह बादशाह के सामने आई और बादशाह के सामने खड़ी हुई।

²⁹बादशाह ने क्रसम खाकर कहा कि, "खुदावन्द की हयात की क्रसम ~जिसने मेरी जान को हर तरह की आफ़त से रिहाई दी,³⁰~कि सचमुच जैसी मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की क्रसम तुझ से खाई और कहा, 'कि यक़ीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बा'द बादशाह होगा, और वही मेरी जगह मेरे तख़्त पर बैठेगा, "तो सचमुच मैं आज के दिन वैसा ही करूँगा।"³¹तब बतसबा' ज़मीन पर मुँह के बल गिरी और बादशाह को सिज्दा करके कहा कि "मेरा मालिक दाऊद बादशाह, हमेशा ज़िन्दा रहे |"

³²और दाऊद बादशाह ने फ़रमाया, कि सद्कू काहिन आयर नातन नबी और यहूयदा' के बेटे बिनायाह को मेरे पास बुलाओ।" तब वह बादशाह के सामने आए।

³³बादशाह ने उनको फ़रमाया कि "तुम अपने मालिक के मुलाज़िमों को अपने साथ लो, और मेरे बेटे सुलेमान को मेरी ही खच्चर पर सवार कराओ; और उसे जैहून को ले जाओ;³⁴~और वहाँ सद्कू काहिन और नातन नबी उसे मसह करें, कि वह इस्राईल का बादशाह हो; और तुम नरसिंगा फूँकना और कहना कि सुलेमान बादशाह ज़िन्दा रहे!"

³⁵~फिर तुम उसके पीछे-पीछे चले आना, और वह आकर मेरे तख़्त पर बैठे; क्योंकि वही मेरी जगह बादशाह होगा, और मैंने उसे मुकर्रर किया है कि वह इस्राईल और यहूदाह का हाकिम हो।"³⁶तब यहूयदा' के बेटे बिनायाह ने बादशाह के जवाब में कहा, "आमीन! खुदावन्द मेरे मालिक बादशाह का खुदा भी ऐसा ही कहे।

³⁷जैसे खुदावन्द मेरे मालिक बादशाह के साथ रहा, वैसे ही वह सुलेमान के साथ रहे; और उसके तख़्त को मेरे मालिक दाऊद बादशाह के तख़्त से बड़ा बनाए।"

³⁸~इसलिए सद्कू काहिन और नातन नबी और यहूयदा' का बेटा बिनायाह और करेती और फ़लेती गए, और सुलेमान को दाऊद बादशाह के खच्चर पर सवार कराया और उसे जैहून पर लाए।³⁹~और सद्कू काहिन ने खेमे से तेल का सींग लिया और सुलेमान को मसह किया। और उन्होंने नरसिंगा फूँका और सब लोगों ने कहा, "सुलेमान बादशाह ज़िन्दा रहे!"⁴⁰और सब लोग उसके पीछे आए और उन्होंने बाँसुलियाँ बजाई और बड़ी खुशी मनाई, ऐसा कि ज़मीन उनके शोरओ-गुल से गूँज उठी।

⁴¹और अदूनियाह और उसके सब मेहमान जो उसके साथ थे, खा ही चुके थे कि उन्होंने यह सुना। और जब योआब को नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी तो उसने कहा, "शहर में यह हंगामा और शोर क्यों मच रहा है?"⁴²~वह यह ~कह ही रहा था कि देखो, अबीयातर काहिन का बेटा यूनतन आया; और अदूनियाह ने उससे कहा, "भीतर आ; क्योंकि तू लायक शख्स है, और अच्छी खबर लाया होगा।"

⁴³यूनतन ने अदूनियाह को जवाब दिया, "वाक़ई हमारे मालिक दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है।"⁴⁴और बादशाह ने सद्कू काहिन और नातन नबी और यहूयदा' के बेटे बिनायाह और करेतियों और फ़लेतियों को उसके साथ भेजा। तब उन्होंने बादशाह के खच्चर पर उसे सवार कराया।⁴⁵~और सद्कू

काहिन और नातन नबी ने जैहून पर उसको मसह करके बादशाह बनाया है; तब वह वहीं से खुशी करते आए हैं, ऐसा कि शहर गूँज गया। वह शोर जो तुम ने सुना यही है।

⁴⁶और सुलेमान तख्त-ए-हुकूमत पर बैठ भी गया है।⁴⁷इसके 'अलावा बादशाह के मुलाज़िम हमारे मालिक दाऊद बादशाह को मुबारकबाद देने आए और कहने लगे कि तेरा खुदा, सुलेमान के नाम को तेरे नाम से ज़्यादा मुस्ताज़ करे, और उसके तख्त को तेरे तख्त से बड़ा बनाए;' और बादशाह अपने बिस्तर पर सिजदे में हो गया।⁴⁸और बादशाह ने भी ऐसा फ़रमाया कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो, जिसने एक वारिस बख़्शा कि वह मेरी ही आँखों के देखते हुए आज मेरे तख्त पर बैठे।"

⁴⁹~फिर तो अदूनियाह के सब मेहमान डर गए, और उठ खड़े हुए और हर एक ने अपना रास्ता लिया।⁵⁰और अदूनियाह सुलेमान की वजह से डर के मारे उठा, और जाकर मज़बह के सींग पकड़ लिए।⁵¹और सुलेमान को यह बताया गया कि "देख, अदूनियाह सुलेमान बादशाह से डरता है, क्योंकि उसने मज़बह के सींग पकड़ रखे हैं; और कहता है कि ~सुलेमान बादशाह आज के दिन मुझ से क्रसम खाए, कि वह ~अपने खादिम को तलवार से क़त्ल नहीं करेगा। "

⁵²सुलेमान ने कहा, "अगर वह अपने को लायक़ साबित करे, तो उसका एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरेगा; लेकिन अगर उसमें शरारत पाई जाएगी तो वह मारा जाएगा।"⁵³तब सुलेमान बादशाह ने लोग भेजे, और वह उसे मज़बह पर से उतार लाए। उसने आकर सुलेमान बादशाह को सिजदा किया; और सुलेमान ने उससे कहा, "अपने घर जा।"

Chapter 2

¹और दाऊद के मरने के दिन नज़दीक आए, तब उसने अपने बेटे सुलेमान को वसीयत की और कहा कि, ²~"मैं उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सारे ज़हान का है; इसलिए तू मज़बूत हो और मर्दानगी दिखा।"³~और जो मूसा की शरी'अत में लिखा है, उसके मुताबिक़ खुदावन्द अपने खुदा की हिदायत को मानकर उसके रास्तों पर चल; और उसके क़ानून पर और उसके फ़रमानों और हुक्मों और शहादतों पर 'अमल कर, ताकि जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, सब में तुझे कामयाबी हो,⁴ और खुदावन्द अपनी उस बात को क़ायम रखे, जो उसने मेरे हक़ में कही कि, 'अगर तेरी औलाद अपने रास्ते की हिफ़ाज़त करके अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मेरे सामने सच्चाई से चले, तो इसाईल के तख़्त पर तेरे यहाँ आदमी की कमी न होगी।'

⁵"और तू खुद जानता है कि ज़रोयाह के बेटे योआब ने मुझ से क्या-क्या किया, या'नी उसने इसाइली लश्कर के दो सरदारों, नेर के बेटे अबनेर और यतर के बेटे 'अमासा से क्या किया, जिनको उसने क़त्ल किया और सुलह के वक़्त खून-ए-जंग बहाया, और खून-ए-जंग को अपने पटके पर जो उसकी कमर में बंधा था और अपनी जूतियों पर जो उसके पाँवों में थी लगाया।⁶इसलिए तू अपनी हिंमत से काम लेना और उसके सफ़ेद सर को क़ब्र में सलामत उतरने न देना।⁷लेकिन बरज़िली ज़िल'आदी के बेटों पर महेरबानी करना, और वह उनमें शामिल हों जो तेरे दस्तरख़वान पर खाना खाया करेंगे, क्योंकि वह ऐसा ही करने को मेरे पास आए जब मैं तेरे भाई अबीसलोम की वजह से भागा था।

⁸और देख, बिनयमीनी जीरा का बेटा बहरीमी सिम'ई तेरे साथ है, जिसने उस दिन जब कि मैं महेनायम को जाता था बहुत बुरी तरह मुझ पर ला'नत की, लेकिन वह यरदन पर मुझ से मिलने को आया, और मैंने खुदावन्द की क़सम खाकर उससे कहा कि "मैं तुझे तलवार से क़त्ल नहीं करूँगा।"⁹~तब तू उसको बेगुनाह न ठहराना, क्योंकि तू 'अक्लमन्द आदमी है और तू जानता है कि तुझे उसके साथ क्या करना चाहिए, इसलिए तू उसका सफ़ेद सर लहू लुहान करके क़ब्र में उतारना।"

¹⁰~और दाऊद अपने बाप-दादा के साथ सो गया और दाऊद के शहर में दफ़न हुआ।¹¹और कुल मुह्रत जिसमें दाऊद ने इसाईल पर हुकूमत की चालीस साल की थी; सात साल तो उसने हब्रून में हुकूमत की, और सैंतीस साल यरूशलीम में।¹²और सुलेमान अपने बाप दाऊद के तख़्त पर बैठा और उसकी हुकूमत बहुत ही मज़बूत हुई।

¹³~तब हज़्जीत का बेटा अदूनियाह, सुलेमान की माँ बतसबा' के पास आया; उसने पूछा, "तू सुलह के ख़याल से आया है?" उसने कहा, "सुलह के ख़याल से।"¹⁴~फिर उसने कहा, "मुझे तुझ से कुछ कहना है।" उसने कहा, "कह।"¹⁵~उसने कहा, "तू जानती है कि हुकूमत मेरी थी, और सब इसाइली मेरी तरफ़ मुतवज्जिह थे कि मैं हुकूमत करूँ, लेकिन हुकूमत पलट गई और मेरे भाई की हो गई, क्योंकि खुदावन्द की तरफ़ से यह उसी की थी।

¹⁶~इसलिए मेरी तुझ से एक दरख़वास्त है, नामंजूर न कर।" उसने कहा, "बयान कर।"¹⁷~उसने कहा, "ज़रा सुलेमान बादशाह से कह, क्योंकि वह तेरी बात को नहीं टालेगा, कि अबीशाग शून्मीत को मुझे ब्याह दे।"¹⁸~बतसबा' ने कहा, "अच्छा, मैं तेरे लिए बादशाह से 'दरख़वास्त करूँगी।"

¹⁹तब बतसबा' सुलेमान बादशाह के पास गई, ताकि उससे अदूनियाह के लिए 'दरख़वास्त करे। बादशाह उसके इस्तक्रबाल के वास्ते उठा और उसके सामने झुका, फिर अपने तख़्त पर बैठा; और उसने बादशाह की माँ के लिए एक तख़्त लगवाया, तब वह उसके दहने हाथ बैठी,²⁰~और कहने लगी, "मेरी तुझ से एक छोटी सी दरख़वास्त है; तू मुझ से इन्कार न करना।" बादशाह ने उससे कहा, "ऐ मेरी माँ, इरशाद फ़रमा; मुझे तुझ से इन्कार न होगा।"²¹~उसने कहा, 'अबीशाग शून्मीत तेरे भाई अदूनियाह को ब्याह दी जाए।"

²²~सुलेमान बादशाह ने अपनी माँ को जवाब दिया, "तू अबीशाग शून्मीत ही को अदूनियाह के लिए क्यों माँगती है? उसके लिए हुकूमत भी माँग, क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है; बल्कि उसके लिए क्या, अबीयातर काहिन और ज़रोयाह के बेटे योआब के लिए भी माँग।"²³तब सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द की क़सम खाई और कहा कि अगर अदूनियाह ने यह बात अपनी ही जान के खिलाफ़ नहीं कही, तो खुदा मुझ से ऐसा ही, बल्कि इससे भी ज़्यादा करे।

²⁴~इसलिए अब खुदावन्द की हयात की क़सम जिसने मुझ को क़याम बख़्शा, और मुझ को मेरे बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाया, और मेरे लिए अपने वा'दे के मुताबिक़ एक घर बनाया, यज़ीनन अदूनियाह आज ही क़त्ल किया जाएगा।"²⁵~और सुलेमान बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को भेजा: उसने उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया।

²⁶फिर बादशाह ने अबीयातर काहिन से कहा, "तू अनतोत को अपने खेतों में चला जा क्योंकि तू क़त्ल के लायक़ है, लेकिन मैं इस वक़्त तुझ को क़त्ल नहीं करता क्योंकि तू मेरे बाप दाऊद के सामने खुदावन्द यहोवाह का सन्दूक उठाया करता था; और जो जो मुसीबत मेरे बाप पर आई वह तुझ पर भी आई।"²⁷तब सुलेमान ने अबीयातर को खुदावन्द के कहिन के उहदे से बरतरफ़ किया, ताकि वह~खुदावन्द के उस क़ौल को पूरा करे जो उसने सैला में एली के घराने के हक़ में कहा था।

²⁸और यह ख़बर योआब तक पहुँची: क्योंकि योआब अदूनियाह का तो पैरोकार हो गया था, अगर्चे वह अबीसलोम का पैरोकार नहीं हुआ था। इसलिए योआब खुदावन्द के ख़ेमे को भाग गया, और मज़बूत के सींग पकड़ लिए।²⁹~और सुलेमान बादशाह को ख़बर हुई, "योआब खुदावन्द के ख़ेमे को भाग गया है; और देख, वह मज़बूत के पास है।" तब सुलेमान ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को यह कहकर भेजा कि, "जाकर उस पर वार कर।"

³⁰~तब बिनायाह खुदावन्द के ख़ेमे को गया, और उसने उससे कहा, "बादशाह तू फ़रमाता है कि "तू बाहर निकल आ।" उसने कहा, "नहीं, बल्कि मैं यहीं मरूँगा।" तब बिनायाह ने लौट कर बादशाह को ख़बर दी कि "योआब ने ऐसा कहा है, और उसने मुझे ऐसा जवाब दिया।"³¹तब बादशाह ने उससे कहा, "जैसा उसने कहा वैसा ही कर, और उस पर वार कर और उसे दफ़न कर दे; ताकि तू उस खून को जो योआब ने बे वजह बहाया, मुझ पर से और मेरे बाप के घर पर से दूर कर दे।

³²और खुदावन्द उसका खून उल्टा उसी के सर पर लाएगा, क्योंकि उसने दो शख्सों पर जो उससे ज़्यादा रास्तबाज़ और अच्छे थे, या'नी नेर के बेटे अबनेर पर जो इसाइली लश्कर का सरदार था और यतर के बेटे 'अमासा पर जो यहूदाह की फ़ौज का सरदार था, वार किया और उनको तलवार से क़त्ल किया, और मेरे बाप

दाऊद को मा'लूम न था।³³ इसलिए उनका खून योआब के सर पर और उसकी नसल के सर पर हमेशा तक रहेगा, लेकिन दाऊद पर और उसकी नसल पर और उसके घर पर और उसके तख्त पर हमेशा तक खुदावन्द की तरफ से सलामती होगी।"

³⁴~तब यहूयदा' का बेटा बिनायाह गया, और उसने उस पर वार करके उसे क़त्ल किया; और वह वीरान के बीच अपने ही घर में दफ़न हुआ।³⁵ ~ और बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को उसकी जगह लश्कर पर मुकर्रर किया; और सदूक़ काहिन को बादशाह ने अबीयातर की जगह रखा |

³⁶फिर बादशाह ने सिम'ई को बुला भेजा और उससे कहा कि "यरूशलीम में अपने लिए एक घर बना ले और वहीं रह, और वहाँ से कहीं न जाना;³⁷ क्योंकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और नहर-ए-किद्रोन के पार जाएगा, तू यक़ीन जान ले कि तू ज़रूर मारा जाएगा, और तेरा खून तेरे ही सर पर होगा।"³⁸ और सिम'ई ने बादशाह से कहा, "यह बात अच्छी है; जैसा मेरे मालिक बादशाह ने कहा है, तेरा खादिम वैसा ही करेगा।" इसलिए सिम'ई बहुत दिनों तक यरूशलीम में रहा।

³⁹और तीन साल के आखिर में ऐसा हुआ कि सिम'ई के नौकरों में से दो आदमी जात के बादशाह अकीस-बिन-मा'काह के यहाँ भाग गए। और उन्होंने सिम'ई को बताया कि, "देख, तेरे नौकर जात में हैं।"⁴⁰~तब सिम'ई ने उठकर अपने गधे पर ज़ीन कसा, और अपने नौकरों की तलाश में जात को अकीस के पास गया; और सिम'ई जाकर अपने नौकरों को जात से ले आया।

⁴¹और यह खबर सुलेमान को मिली कि सिम'ई यरूशलीम से जात को गया था और वापस आ गया है,⁴² तब बादशाह ने सिम'ई को बुला भेजा और उससे कहा, "क्या मैंने तुझे खुदावन्द की क़सम न खिलाई और तुझ को बता न दिया कि, 'यक़ीन जान ले कि जिस दिन तू बाहर निकला और इधर-उधर कहीं गया, तो ज़रूर मारा जाएगा'? और तू ने मुझ से यह कहा कि जो बात मैंने सुनी, वह अच्छी है।"

⁴³~इसलिए तूने खुदावन्द की क़सम को, और उस हुक्म को जिसकी मैंने तुझे ताकीद की, क्यूँ न माना?"⁴⁴ और बादशाह ने सिम'ई से यह भी कहा, "तू उस सारी शरारत को जो तू ने मेरे बाप दाऊद से की, जिससे तेरा दिल वाकिफ़ है जानता है; इसलिए ~खुदावन्द तेरी शरारत को उल्टा तेरे ही सर पर लाएगा।

⁴⁵लेकिन सुलेमान बादशाह मुबारक होगा, और दाऊद का तख्त खुदावन्द के सामने हमेशा क़ायम रहेगा।"⁴⁶ और बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को हुक्म दिया, तब उसने बाहर जाकर उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया। और हुक्मत सुलेमान के हाथ में मज़बूत हो गई।

Chapter 3

¹~और सुलेमान ने मिस्र के बादशाह फिर'औन से रिश्तेदारी की, और फिर'औन की बेटी ब्याह ली; और जब तक अपना महल और खुदावन्द का घर और यरूशलीम के चरों तरफ़ दीवार न बना चुका, उसे दाऊद के शहर में लाकर रखवा।²~ लेकिन लोग ऊँची जगहों में कुर्बानी करते थे, क्योंकि उन दिनों तक कोई घर खुदावन्द के नाम के लिए नहीं बना था।³~और सुलेमान खुदावन्द से मुहब्बत रखता और अपने बाप दाऊद के क़ानून पर चलता था। इतना ज़रूर है कि वह ऊँची जगहों में कुर्बानी करता और बख़ूर जलाता था।

⁴और बादशाह जिबा'ऊन को गया ताकि कुर्बानी करे, क्योंकि वह खास ऊँची जगह थी, और सुलेमान ने उस मज़बह पर एक हज़ार सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं।

⁵~जिबाऊन में खुदावन्द रात के वक़्त सुलेमान को ख़्वाब में दिखाई दिया, और खुदावन्द ने कहा, "माँग, मैं तुझे क्या दूँ।"

⁶सुलेमान ने कहा, "तू ने अपने खादिम मेरे बाप दाऊद पर बड़ा एहसान किया, इसलिए कि वह तेरे सामने सच्चाई और सदाक़त और तेरे साथ सीधे दिल से चलता रहा, और तू ने उसके वास्ते यह बड़ा एहसान रख छोड़ा था कि तू ने उसे एक बेटा इनायत किया जो उसके तख़्त पर बैठे, जैसा आज के दिन है।

⁷और अब ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! तू ने अपने खादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह बादशाह बनाया है, और मैं छोटा लड़का ही हूँ और मुझे बाहर जाने और भीतर आने का तमीज़ नहीं।⁸और तेरा खादिम तेरी क़ौम के बीच में है, जिसे तू ने चुन लिया है; वह ऐसी क़ौम है जो कसरत के ज़रिए' न गिनी जा सकती है न शुमार हो सकती है।⁹तब तू अपने खादिम को अपनी क़ौम का इन्साफ़ करने के लिए समझने वाला दिल 'इनायत कर, ताकि मैं बुरे और भले में फ़र्क़ कर सकूँ; क्योंकि तेरी इस बड़ी क़ौम का इन्साफ़ कौन कर सकता है?"

¹⁰और यह बात खुदावन्द को पसन्द आई कि सुलेमान ने यह चीज़ माँगी।¹¹और खुदा ने उससे कहा, "चूँकि तू ने यह चीज़ माँगी, और अपने लिए लम्बी 'उम्र की दरख्वास्त न की और न अपने लिए दौलत का सवाल किया और न अपने दुश्मनों की जान माँगी, बल्कि इन्साफ़ पसन्दी के लिए तू ने अपने वास्ते 'अक्लमन्दी की दरख्वास्त की है।¹²इसलिए देख, मैंने तेरी दरख्वास्त के मुताबिक़ किया; मैंने एक 'अक्लमन्दी ~और समझने वाला दिल तुझ को बख़्शा, ऐसा कि तेरी तरह न तो कोई तुझ से पहले हुआ और न कोई तेरे बाद तुझ सा पैदा होगा।

¹³और मैंने तुझ को कुछ और भी दिया जो तू ने नहीं माँगा, या'नी दौलत और 'इज़ज़त ऐसा कि बादशाहों में तेरी 'उम्र भर कोई तेरी तरह न होगा।¹⁴~और अगर तू मेरे रास्तों पर चले, और मेरे क़ानून और मेरे अहक़ाम को माने जैसे तेरा बाप दाऊद चलता रहा, तो मैं तेरी 'उम्र लम्बी करूँगा।"

¹⁵~फिर सुलेमान जाग गया, और देखा कि एक ख़्वाब था; और वह यरूशलीम में आया और खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे खड़ा हुआ और सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं और अपने सब मुलाज़िमों की दा'वत की।

¹⁶~उस वक़्त दो 'औरतें जो कस्बियाँ थीं, बादशाह के पास आई और उसके आगे खड़ी हुई।¹⁷~और एक 'औरत कहने लगी, "ऐ मेरे मालिक! मैं और यह 'औरत दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके साथ घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ।

¹⁸~और मेरे जच्चा हो जाने के बाद, तीसरे दिन ऐसा हुआ कि यह 'औरत भी जच्चा हो गई; और हम एक साथ ही थीं कोई ग़ैर-शाख्स उस घर में न था, सिवा हम दोनों के जो घर ही में थीं।¹⁹और इस 'औरत का बच्चा रात को मर गया, क्योंकि यह उसके ऊपर ही लेट गई थी।²⁰तब यह आधी रात को उठी; और जिस वक़्त तेरी लौड़ी सोती थी। मेरे बेटे को मेरी बग़ल से लेकर अपनी गोद में लिटा लिया, और अपने मरे हुए बच्चे को मेरी गोद में डाल दिया।

²¹सुबह को जब मैं उठी कि अपने बच्चे को दूध पिलाऊँ, तो क्या देखती हूँ कि वह मरा पड़ा है; लेकिन जब मैंने सुबह को ग़ौर किया, तो देखा कि यह मेरा लड़का नहीं है जो मेरे हुआ था।²²"फिर वह दूसरी 'औरत कहने लगी, "नहीं, यह जो ज़िन्दा है मेरा बेटा है और मरा हुआ तेरा बेटा है।" इसने जवाब दिया, "नहीं, मरा हुआ तेरा बेटा है और ज़िन्दा मेरा बेटा है।" तब वह बादशाह के सामने इसी तरह कहती रहीं।

²³तब बादशाह ने कहा, "एक कहती है, 'यह जो ज़िन्दा है मेरा बेटा है, और जो मर गया है वह तेरा बेटा है, " और दूसरी कहती है, 'नहीं, बल्कि जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और जो ज़िन्दा है वह मेरा बेटा है।"²⁴तब बादशाह ने कहा, "मुझे एक तलवार ला दो।" तब वह बादशाह के पास तलवार ले आए।²⁵फिर बादशाह ने फ़रमाया, "इस जीते बच्चे को चीर कर दो टुकड़े कर डालो, और आधा एक को और आधा दूसरी को दे दो।"

²⁶तब उस 'औरत ने जिसका वह ज़िन्दा बच्चा था बादशाह से दरख्वास्त की, क्योंकि उसके दिल में अपने बेटे की ममता थी, तब वह कहने लगी, 'ऐ मेरे मालिक! यह ज़िन्दा बच्चा उसी को दे दे, लेकिन उसे जान से न मरवा।" लेकिन दूसरी ने कहा, 'यह न मेरा हो न तेरा, उसे चीर डालो।"²⁷तब बादशाह ने हुक्म किया, "ज़िन्दा बच्चा उसी को दो, और उसे जान से न मारो; क्योंकि वही उसकी माँ है।"²⁸और सारे इस्त्राईल ने यह इन्साफ़ जो बादशाह ने किया सुना, और वह बादशाह से डरने लगे; क्योंकि उन्होंने देखा कि 'अदालत करने के लिए खुदा की हिकमत उसके दिल में है।

Chapter 4

¹और सुलेमान बादशाह तमाम इस्राईल का बादशाह था।²और जो सरदार उसके पास थे, वह यह थे: सदूक का बेटा अज़रियाह काहिन,³और सीसा के बेटे इलीहोरिफ और अखियाह मुंशी थे, और अखीलूद का बेटा यहूसफ़त मुवरिख था;⁴और यहूयदा का बेटा बिनायाह लश्कर का सरदार, और सदूक और अबीयातर काहिन थे;

⁵और नातन का बेटा अज़रियाह मन्सबदारों का दारोगा था, और नातन का बेटा ज़बूद काहिन और बादशाह का दोस्त था;⁶और अखीसर महल का दीवान, और 'अबदा का बेटा अदूनिराम बेगार का मुन्सरिम था।

⁷और सुलेमान ने सब इस्राईल पर बारह मन्सबदार मुकर्रर किए, जो बादशाह और उसके घराने के लिए खुराक पहुँचाते थे। हर एक को साल में महीना भर खुराक पहुँचानी पड़ती थी।⁸उनके नाम यह हैं: इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में बिनहूर;⁹और मक्रस और सा'लबीम और बैतशम्स~और ऐलोन बैतहनान में बिन दिक्कर¹⁰और अरबूत में बिन हसद था, और शोकह और हिफ़र की सारी सर-ज़मीन उसके 'इलाक़े में थी;

¹¹और दोर के सारे मुर्तफ़ा' इलाक़े में बिन अबीनदाब था, और सुलेमान की बेटी ताफ़त उसकी बीवी थी;¹²और अखीलूद का बेटा बा'ना था, जिसके ज़िम्मा ता'नाक और मजिदो और सारा बैतशान था, जो ज़रतान से मुत्तसिल और यज़रएल के नीचे बैतशान से अबीलमहूला तक या'नी युक्रम'आम से उधर तक था;¹³और बिन जबर रामात जिल'आद में था, और मनस्सी के बेटे याईर की बस्तियाँ जो जिल'आद में हैं उसके ज़िम्मा थीं, और बसन में अरजूब का 'इलाक़ा भी इसी के ज़िम्मा था जिसमें साठ बड़े शहर थे जिनकी शहर पनाहें और पीतल के बेंडे थे;¹⁴और इददु का बेटा अखीनदाब महनायम में था;

¹⁵और अखीमा'ज़ नफ़ताली में था, इसने भी सुलेमान की बेटी बसीमत को ब्याह लिया था;¹⁶~और हूसी का बेटा बा'ना आशर और 'अलोत में था;¹⁷~और फ़रूह का बेटा यहूसफ़त इश्कार में था;

¹⁸~ और ऐला का बेटा सिमई बिनयमीन में था;¹⁹~और ऊरी का बेटा जबर जिल'आद के 'इलाक़े में था, जो अमोरियों के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह 'ओज का मुल्क था, उस मुल्क का वही अकेला मन्सबदार था।

²⁰और यहूदाह और इस्राईल के लोग कसरत में समुन्दर के किनारे की रेत की तरह थे, और खाते-पीते और खुश रहते थे।²¹और सुलेमान दरिया-ए-फ़ुरात से फ़िलिस्तियों के मुल्क तक, और मिस्र की सरहद तक सब हुक्मतों पर हाकिम था। वह उसके लिए हदिये लाती थीं, और सुलेमान की उम्र भर उसकी फ़रमाबरदार रहीं।²²~और सुलेमान की एक दिन की खुराक यह थी: तीस कोर मैदा और साठ कोर आटा,²³और दस मोटे-मोटे बैल और चराई पर के बीस बैल, एक सौ भेड़ें, और इनके 'अलावा चिकारे और हिरन और छोटे हिरन और मोटे ताज़ा मुर्ग।

²⁴क्यूँकि वह दरिया-ए- फ़ुरात की इस तरफ़ के सब मुल्क पर, तिफ़सह से ग़ज़ा तक, या'नी सब बादशाहों पर जो दरिया-ए-फ़ुरात की इस तरफ़ थे फ़रमानरवा था, और उसके चारों तरफ़ सब पास पड़ोस में सबसे उसकी सुलह थी।²⁵~ और सुलेमान की 'उम्र भर यहूदाह और इस्राईल का एक-एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त के नीचे, दान से बैरसबा' तक अमन से रहता था।

²⁶और सुलेमान के यहाँ उसके रथों के लिए चालीस हज़ार थान और बारह हज़ार सवार थे।²⁷~ और उन मन्सबदारों में से हर एक अपने महीने में सुलेमान बादशाह के लिए, और उन सबके लिए जो सुलेमान बादशाह के दस्तरख़वान पर आते थे, खुराक पहुँचाता था; वह किसी चीज़ की कमी न होने देते थे।²⁸~ और लोग अपने-अपने फ़र्ज़ के मुताबिक़ घोंड़ों और तेज़ रफ़्तार समन्दों के लिए जौ और भूसा उसी जगह ले आते थे जहाँ वह मन्सबदार होते थे।

²⁹और खुदा ने सुलेमान को हिकमत और समझ बहुत ही ज़्यादा, और दिल की बड़ाई भी 'इनायत की जैसी समुन्दर के किनारे की रेत होती है।³⁰और सुलेमान की हिकमत सब अहल-ए-मशरिक की हिकमत, और मिस्र की सारी हिकमत पर फ़ोक़ियत रखती थी;³¹~इसलिए कि वह सब आदमियों से, बल्कि अज़राखी ऐतान और हैमान और कलकूल और दरदा' से, जो बनी महूल थे, ज़्यादा दानिशमन्द था; और चारों तरफ़ की सब क्रौमों में उसकी शोहरत थी।

³²और उसने तीन हज़ार मिसालें कहीं और उसके एक हज़ार पाँच गीत थे;³³और उसने दरख़्तों का, या'नी लुबनान के देवदार से लेकर जूफ़ा तक का जो दीवारों पर उगता है, बयान किया;और चौपायों और परिन्दों और रेंगने वाले जानदारों और मछलियों का भी बयान किया।³⁴और सब क्रौमों में से ज़मीन के सब बादशाहों की तरफ़ से जिन्होंने उसकी हिकमत की शोहरत सुनी थी, लोग सुलेमान की हिकमत को सुनने आते थे।

Chapter 5

¹और सूर के बादशाह हीराम ने अपने खादिमों को सुलेमान के पास भेजा, क्योंकि उसने सुना था कि उन्होंने उसे उसके बाप की जगह मसह करके बादशाह बनाया है; इसलिए कि हीराम हमेशा दाऊद का दोस्त रहा था।²और सुलेमान ने हीराम को कहला भेजा,³"तू जानता है कि मेरा बाप दाऊद, खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए घर न बना सका; क्योंकि उसके चारों ओर हर तरफ़ लड़ाइयाँ होती रहीं, जब तक कि खुदावन्द ने उन सब को उसके पाँवों के तलवों के नीचे न कर दिया।

⁴और अब खुदावन्द मेरे खुदा ने मुझ को हर तरफ़ अमन दिया है; न तो कोई मुखालिफ़ है, न आफ़त की मार।⁵इसलिए देख, खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाने का मेरा इरादा है, जैसा खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा था, 'तेरा बेटा, जिसको मैं तेरी जगह तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा, वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।'

⁶इसलिए अब तू हुक्म कर कि वह मेरे लिए लुबनान से देवदार के दरख़्तों को काटें; और मेरे मुलाज़िम तेरे मुलाज़िमों के साथ रहेंगे, और मैं तेरे मुलाज़िमों के लिए जितनी मज़दूरी तू कहेगा तुझे दूँगा; क्योंकि तू जानता है कि हम में ऐसा कोई नहीं जो सैदानियों की तरह लकड़ी काटना जानता हो।"

⁷~जब हीराम ने सुलेमान की बातें सुनी, तो बहुत ही खुश हुआ और कहने लगा कि "आज के दिन खुदावन्द मुबारक हो, जिसने दाऊद को इस बड़ी क़ौम के लिए एक 'अक्लमन्द बेटा बख़्शा।"⁸~और हीराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि "जो पैग़ाम तू ने मुझे भेजा मैंने उसको सुन लिया है, और मैं देवदार की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी के बारे में तेरी मज़ी पूरी करूँगा।

⁹~मेरे मुलाज़िम उनको लुबनान से उतारकर समुन्दर तक लाएँगे, और मैं उनके बेड़े बन्धवा दूँगा; ताकि समुन्दर ही समुन्दर उस जगह जाएँ जिसे तू ठहराए। और वहाँ उनको खुलवा दूँगा, फिर तू उनको ले लेना, और तू मेरे घराने के लिए ख़ुराक देकर मेरी मज़ी पूरी करना।

¹⁰~ फिर हीराम ने सुलेमान को उसकी मज़ी के मुताबिक़ देवदार की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी दी;¹¹~और सुलेमान ने हीराम को उसके घराने के खाने के लिए बीस हज़ार कोर' गेहूँ और बीस कोर ख़ालिस तेल दिया; इसी तरह सुलेमान हीराम को ~हर साल देता रहा।¹²और खुदावन्द ने सुलेमान को, जैसा उसने उससे वा'दा किया था हिकमत बख़्शी; और हीराम और सुलेमान के दर्मियान सुलह थी, और उन दोनों ने बाहम 'अहद बाँध लिया।

¹³और सुलेमान बादशाह ने सारे इस्राईल में से बेगारी लगाए, वह बेगारी ~तीस हज़ार आदमी थे,¹⁴और वह हर महीने उनमें से दस-दस हज़ार को बारी-बारी से लुबनान भेजता था। तब वह एक महीने लुबनान पर और दो महीने अपने घर रहते; और अदूनिराम उन बेगारियों के ऊपर था।

¹⁵और सुलेमान के सत्तर हज़ार बोझ उठाने वाले, और अस्सी हज़ार दरख़्त काटने वाले पहाड़ों में थे।¹⁶इनके 'अलावा सुलेमान के तीन हज़ार तीन सौ ख़ास मन्सबदार थे, जो इस काम पर मुख़्तार थे और उन लोगों पर जो काम करते थे सरदार थे।

¹⁷और बादशाह के हुक्म से वह बड़े बड़े बेशक़ीमत पत्थर निकाल कर लाए, ताकि घर की बुनियाद घड़े हुए पत्थरों की डाली जाए।¹⁸और सुलेमान के राजगीरों, और हीराम के राजगीरों, और जिबलियों ने उनको तराशा और घर की ता'मीर के लिए लकड़ी और पत्थरों को तैयार किया।

Chapter 6

¹और बनी-इसाईल के मुल्क-ए-मिस्र से निकल आने के बा'द चार सौ अस्सीवें साल, इसाईल पर सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल, ज़ीव के महीने में जो दूसरा महीना है, ऐसा हुआ कि उसने खुदावन्द का घर बनाना शुरू किया।²और जो घर सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के लिए बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी।

³और उस घर की हैकल के सामने एक बरआमदा, उस घर की चौड़ाई के मुताबिक़ बीस हाथ लम्बा था, और उस घर के सामने उसकी चौड़ाई दस हाथ थी।⁴और उसने उस घर के लिए झरोके बनाए जिनमें जाली जड़ी हुई थी।

⁵और उसने चारों तरफ़ घर की दीवार से लगी हुई, या'नी हैकल और इल्हामगाह की दीवारों से लगी हुई, चारों तरफ़ मन्ज़िलें बनाई और हुजरे भी-चारों तरफ़-बनाए।⁶सबसे निचली मन्ज़िल पाँच हाथ चौड़ी, और बीच की छः हाथ चौड़ी, और तीसरी सात हाथ चौड़ी थी; क्योंकि उसने घर की दीवार के चारों तरफ़ बाहर के रुख पुश्ते बनाए थे, ताकि कड़ियाँ घर की दीवारों को पकड़े हुए न हों।

⁷और वह घर जब ता'मीर हो रहा था, तो ऐसे पत्थरों का बनाया गया जो कान पर तैयार किए जाते थे; इसलिए उसकी ता'मीर के वक़्त न मार तोल, न कुल्हाड़ी, न लोहे के किसी औज़ार की आवाज़ उस घर में सुनाई दी।⁸और बीच के हुज्रों का दरवाज़ा उस घर की दहनी तरफ़ था, और चक्करदार सीढ़ियों से बीच की मन्ज़िल के हुज्रों में, और बीच की मन्ज़िल से तीसरी मन्ज़िल को जाया करते थे।

⁹तब उसने वह घर बनाकर उसे पूरा किया, और उस घर को देवदार के शहतीरों और तख्तों से पाटा।¹⁰और उसने उस पूरे घर से लगी हुई पाँच-पाँच हाथ ऊँची मन्ज़िलें बनाई, और वह देवदार की लकड़ियों के सहारे उस घर पर टिकी हुई थीं।

¹¹और खुदावन्द का कलाम सुलेमान पर नाज़िल हुआ,¹²~"यह घर जो तू बनाता है, इसलिए अगर तू मेरे क़ानून पर चले और मेरे हुक्मों को पूरा करे और मेरे फ़रमानों को मानकर उन पर 'अमल करे, तो मैं अपना वह क़ौल जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया तेरे साथ क़ायम रखूँगा।"¹³और मैं बनी-इसाईल के दर्मियान रहूँगा और अपनी क़ौम इसाईल को तर्क न करूँगा।"

¹⁴~इसलिए सुलेमान ने वह घर बनाकर उसे पूरा किया।¹⁵और उसने अन्दर घर की दीवारों पर देवदार के तख्ते लगाए। इस घर के फ़र्श से छत की दीवारों तक उसने उन पर लकड़ी लगाई, और उसने उस घर के फ़र्श को सनोबर के तख्तों से पाट दिया।

¹⁶और उसने उस घर के पिछले हिस्से में बीस हाथ तक, फ़र्श से दीवारों तक देवदार के तख्ते लगाए, उसने इसे उसके अन्दर बनाया ताकि वह इल्हामगाह या'नी पाकतरीन मकान हो।¹⁷और वह घर या'नी इल्हामगाह के सामने की हैकल चालीस हाथ लम्बी थी।¹⁸और उस घर के अन्दर-अन्दर देवदार था, जिस पर लट्टू और खिले हुए फूल खुदे हुए थे; सब देवदार ही था और पत्थर अलग नज़र नहीं आता था।

¹⁹और उसने उस घर के अन्दर बीच में इल्हामगाह तैयार की, ताकि खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक वहाँ रखवा जाए।²⁰और इल्हामगाह अन्दर ही अन्दर से बीस हाथ लम्बी और बीस हाथ चौड़ी और बीस हाथ ऊँची थी; और उसने उस पर खालिस सोना मंडा, और मज़बह को देवदार से पाटा।

²¹और सुलेमान ने उस घर को अन्दरअन्दर खालिस सोने से मंडा, और इल्हामगाह के सामने उसने सोने की ज़ज़ीरें तान दीं और उस पर भी सोना मंडा।²²और उस पूरे घर को, जब तक कि वह सारा घर पूरा न हो गया, उसने सोने से मंडा; और इल्हामगाह के पूरे मज़बह पर भी उसने सोना मंडा।

²³और इल्हामगाह में उसने ज़ैतून की लकड़ी के दो करूबी दस-दस हाथ ऊँचे बनाए।²⁴और करूबी का एक बाजू पाँच हाथ का और उसका दूसरा बाजू भी पाँच ही हाथ का था; एक बाजू के सिरे से दूसरे बाजू के सिरे तक दस हाथ का फ़ासला था।²⁵और दस ही हाथ का दूसरा करूबी था; दोनों करूबी एक ही नाप और एक ही सूरत के थे।²⁶एक करूबी की ऊँचाई दस हाथ थी, और इतनी ही दूसरे करूबी की थी।

²⁷और उसने दोनों करूबियों को भीतर के मकान के अन्दर रखा; और करूबियों के बाजू फैले हुए थे, ऐसा कि एक का बाजू एक दीवार से, और दूसरे का बाजू दूसरी दीवार से लगा हुआ था; और इनके बाजू घर के बीच में एक दूसरे से मिले हुए थे।²⁸और उसने करूबियों पर सोना मंडा।

²⁹उसने उस घर की सब दीवारों पर, चारों तरफ़ अन्दर और बाहर करूबियों और खजूर के दरख्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सूरतें कन्दा की।³⁰और उस घर के फ़र्श पर उसने अन्दर और बाहर सोना मंडा।

³¹और इल्हामगाह में दाखिल होने के लिए उसने ज़ैतून की लकड़ी के दरवाज़े बनाए: ऊपर की चौखट और बाजूओं का चौड़ाई ~दीवार का पाँचवा हिस्सा था।

³²दोनों दरवाज़े ज़ैतून की लकड़ी के थे; और उसने उन पर करूबियों और खजूर के दरख्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सूरतें कन्दा कीं, और उन पर सोना मंडा और इस सोने को करूबियों पर और खजूर के दरख्तों पर फैला दिया।

³³~ऐसे ही हैकल में दाखिल होने के लिए उसने ज़ैतून की लकड़ी की चौखट बनाई, जो दीवार का चौथा हिस्सा थी।³⁴और सनोबर की लकड़ी के दो दरवाज़े थे; एक दरवाज़े के दोनों पट दुहरे हो जाते, और दूसरे दरवाज़े के भी दोनों पट दुहरे हो जाते थे।³⁵~ और इन पर करूबियों और खजूर के दरख्तों और खिले हुए फूलों को उसने खुदावाया, और खुदे हुए काम पर सोना मंडा।

³⁶और अन्दर के सहन की तीन सफ़े तराशे हुए पत्थर की बनाई, और एक सफ़े देवदार के शहतीरों की।

³⁷चौथे साल ज़ीव के महीने में खुदावन्द के घर की बुनियाद डाली गई;³⁸और ग्यारहवें साल बूल के महीने में, जो आठवाँ महीना है, वह घर अपने सब हिस्सों समेत अपने नक्शे के मुताबिक़ बनकर तैयार हुआ। ऐसा उसको बनाने में उसे सात साल लगे।

Chapter 7

¹और सुलेमान तेरह साल अपने महल की ता'मीर में लगा रहा, और अपने महल को खत्म किया;²क्योंकि उसने अपना महल लुबनान के बन की लकड़ी का बनाया, उसकी लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी, और वह देवदार के सुतूनों की चार क्रतारों पर बना था; और सुतूनों पर देवदार के शहतीर थे।

³और वह पैंतालीस शहतीरों के ऊपर जो सुतूनों पर टिके थे, पाट दिया गया था। हर क्रतार में पन्द्रह शहतीर थे।⁴और खिड़कियों की तीन क्रतारें थी, और तीनों क्रतारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था।⁵और सब दरवाज़े और चौखटें मुरब्बा' शक्ल की थीं, और तीनों क्रतारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था।

⁶और उसने सुतूनों का बरआमदा बनाया; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ, और इनके सामने एक डयोढ़ी थी, और इनके आगे सुतून और मोटे-मोटे शहतीर थे।

⁷और उसने तख्त के लिए एक बरआमदा, या'नी 'अदालत का बरआमदा बनाया जहाँ वह 'अदालत कर सके; और फ़र्श-से-फ़र्श तक उसे देवदार से पाट दिया।

⁸और उसके रहने का महल जो उसी बरआमदे के अन्दर दूसरे सहन में था, ऐसे ही काम का बना हुआ था। और सुलेमान ने फ़िर'औन की बेटी के लिए, जिसे उसने ब्याहा था, उसी बरआमदे के तरह का एक महल बनाया

⁹~यह सब अन्दर और बाहर बुनियाद से मुन्डेर तक बेशक्रीमत पत्थरों, या'नी तराशे हुए पत्थरों के बने हुए थे, जो नाप के मुताबिक़ आरों से चीरे गए थे, और ऐसा ही बाहर बाहर बड़े सहन तक था।¹⁰और बुनियाद बेशक्रीमत पत्थरों, या'नी बड़े-बड़े पत्थरों की थी; यह पत्थर दस-दस हाथ और आठ-आठ हाथ के थे।

¹¹और ऊपर नाप के मुताबिक़ बेशक्रीमत पत्थर, या'नी घड़े हुए पत्थर और देवदार की लकड़ी लगी हुई थी।¹²और बड़े सहन में चारों तरफ़ घड़े हुए पत्थरों की तीन क्रतारें और देवदार के शहतीरों की एक क्रतार, वैसी ही थी जैसी खुदावन्द के घर के अन्दरूनी सहन और उस घर के बरआमदे में थी।

¹³~फिर सुलेमान बादशाह ने सूर से हीराम को बुलवा लिया।¹⁴वह नफ़्ताली के क़बीले की एक बेवा 'औरत का बेटा था, और उसका बाप सूर का बाशिन्दा था और ठेरा था; और वह पीतल के सब काम की कारीगरी में हिकमत और समझ और महारत रखता था। इसलिए ~उसने सुलेमान बादशाह के पास आकर उसका सब काम बनाया।

¹⁵क्योंकि उसने अठारह-अठारह हाथ ऊँचे पीतल के दो सुतून बनाए, और एक-एक का घेर बारह हाथ के सूत के बराबर था (यह अन्दर से खोखले और इसके पीतल की मोटाई चार उंगल थी)।¹⁶और उसने सुतूनों की चोटियों पर रखने के लिए पीतल ढाल कर दो ताज बनाये एक ताज की ऊँचाई पाँच और दूसरे ताज की ऊँचाई भी पाँच हाथ थी।¹⁷और उन ताजों के लिए जो सुतूनों की चोटियों पर थे, चारखाने की जालियाँ और जंजीरनुमा हार थे, सात एक ताज के लिए और सात दूसरे ताज के लिए।

¹⁸तब उसने वह सुतून बनाए, और सुतूनों की चोटी के ऊपर के ताजों को ढाँकने के लिए एक जाली के काम पर चारों तरफ़ दो क्रतारें थीं, और दूसरे ताज के लिए भी उसने ऐसा ही किया।¹⁹और उन चार-चार हाथ के ताजों पर जो बरआमदे के सुतूनों की चोटी पर थे सोसन का काम था;

²⁰और उन दोनों सुतूनों पर, ऊपर की तरफ़ भी जाली के बराबर की गोलाई के पास ताज बने थे; और उस दूसरे ताज पर क्रतार दर क्रतार चारों तरफ़ दो सौ अनार थे।²¹और उसने हैकल के बरआमदे में वह सुतून खड़े किए; और उसने दहने सुतून को खड़ा करके उसका नाम याकिन" रखा, और बाएँ सुतून को खड़ा करके उसका नाम बो'अज़र रखा।²²और सुतूनों की चोटी पर सोसन का काम था; ऐसे सुतूनों का काम खत्म हुआ।

²³फिर उसने ढाला हुआ एक बड़ा हौज़ बनाया, वह एक किनारे से दूसरे किनारे तक दस हाथ था; वह गोल था, और ऊँचाई उसकी पाँच हाथ थी, और उसका घेर चारों तरफ़ तीस हाथ के सूत के बराबर था।²⁴~और उसके किनारे के नीचे चारों तरफ़ दसों हाथ तक लट्टू थे, जो उसे या'नी बड़े हौज़ को घेरे हुए थे; यह लट्टू दो क्रतारों में थे, और जब वह ढाला गया तब ही यह भी ढाले गए थे।

²⁵और वह बारह बैलों पर रखा गया; तीन के मुँह शिमाल की तरफ़, और तीन के मुँह मगरिब की तरफ़, और तीन के मुँह जुनूब की तरफ़, और तीन के मुँह मशरिक् की तरफ़ थे; और वह बड़ा हौज़ उन ही पर ऊपर की तरफ़ था, और उन सभों का पिछला धड़ अन्दर के रुख़ था।²⁶और दिल उसका चार उंगल था, और उसका किनारा प्याले के किनारे की तरह गुल-ए-सोसन की तरह था, और उसमें दो हज़ार बत की समाई थी।

²⁷और उसने पीतल की दस कुर्सियाँ बनाई, एक एक कुर्सी की लम्बाई चार हाथ और चौड़ाई चार हाथ और उँचाई तीन हाथ थी।²⁸और उन कुर्सियों की कारीगरी इस तरह की थी; इनके हाशिये थे, और पटरों के दर्मियान भी हाशिये थे;²⁹और उन हाशियों पर जो पटरों के दर्मियान थे, शेर और बैल और क़रूबी बने थे; और उन पटरों पर भी एक कुर्सी ~ऊपर की तरफ़ थी, और शेरों और बैलों के नीचे लटकते काम के हार थे।

³⁰और हर कुर्सी ~के लिए चार चार पीतल के पहिये और पीतल ही के धुरे थे, और उसके चारों पायों में टेकें लगी थीं; यह ढली हुई टेकें हौज़ के नीचे थीं, और हर एक के पहलू में हार बने थे।³¹और उसका मुँह ताज के अन्दर और बाहर एक हाथ था, और वह मुँह डेढ़ हाथ था और उसका काम कुर्सी के काम की तरह गोल था; और उसी मुँह पर नक्राशी का काम था और उनके हाशिये गोल नहीं बल्कि चौकोर थे।

³²और वह चारों पहिये हाशियों के नीचे थे, और पहियों के धुरे कुर्सी ~में लगे थे; और हर पहिये की उँचाई डेढ़ हाथ थी।³³और पहियों का काम रथ के पहिये के जैसा था, और उनके धुरे और उनकी पुठियाँ और उनके आरे और उनकी नाभें सब के सब ढाले हुए थे।

³⁴और हर कुर्सी ~के चारों कोनों पर चार टेकें थीं, और टेकें और कुर्सी ~एक ही टुकड़े की थीं।³⁵और हर कुर्सी के सिरे पर आध हाथ ऊँची चारों तरफ़ गोलाई थी, और कुर्सी ~के सिरे की कंगनियाँ और हाशिये उसी के टुकड़े के थे।

³⁶और उसकी कंगनियों के पाटों पर और उसके हाशियों पर उसने करूबियों और शेरों और खजूर के दरख्तों को, हर एक की जगह के मुताबिक़ कन्दा किया, और चारों तरफ़ हार थे।³⁷दसों कुर्सियों को उसने इस तरह बनाया, और उन सबका एक ही साँचा और एक ही नाप और एक ही सूरत थी।

³⁸और उसने पीतल के दस हौज़ बनाए, हर एक हौज़ में चालीस बत की समाई थी; और हर एक हौज़ चार हाथ का था; और उन दसों कुर्सियों में से हर एक पर एक हौज़ था।³⁹उसने पाँच कुर्सियाँ घर की दहनी तरफ़, और पाँच घर की बाई तरफ़ रखीं, और बड़े हौज़ को घर के दहने मशरिक़ की तरफ़ जुनूब के रुख़ पर रखखा।

⁴⁰हीराम ने हौज़ों और बेलचों और कटोरों को भी बनाया। इसलिए हीराम ने वह सब काम जिसे वह सुलेमान बादशाह की खातिर खुदावन्द के घर में बना रहा था पूरा किया;⁴¹या'नी दोनों सुतून और सुतूनों की चोटी पर ताजों के दोनों प्याले, और सुतूनों की चोटी पर के ताजों के दोनों प्यालों की ढाँकने की दोनों जालियाँ;

⁴²और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार, या'नी सुतूनों पर के ताजों के दोनों प्यालों के ढाँकने की हर जाली के लिए अनारों की दो दो क़तारें;⁴³और दसों कुर्सियाँ और दसों कुर्सियों पर के दसों हौज़;

⁴⁴~और वह बड़ा हौज़ और बड़े हौज़ के नीचे के बारह बैल;⁴⁵~ और वह देंगे और बेलचे और कटोरे। यह सब बर्तन ~जो हीराम ने सुलेमान बादशाह की खातिर खुदावन्द के घर में बनाए, झलकते हुए पीतल के थे।

⁴⁶~ बादशाह ने उन सबको यरदन के मैदान में सुकात और ज़रतान के बीच की चिकनी मिट्टी वाली ज़मीन में ढाला।⁴⁷~और सुलेमान ने उन सब बर्तन ~को बग़ैर तोले छोड़ दिया, क्योंकि वह बहुत से थे; इसलिए ~उस पीतल का वज़न मा'लूम न हो सका।

⁴⁸~और सुलेमान ने वह सब बर्तन बनाए जो खुदावन्द के घर में थे, या'नी वह सोने का मज़बह, और सोने की मेज़ जिस पर नज़र ~की रोटी रहती थी,⁴⁹~और ख़ालिस सोने के वह शमा'दान जो इल्हामगाह के आगे पाँच दहने और पाँच बाएँ थे, और सोने के फूल और चिराग, और चिमटे;

⁵⁰~और ख़ालिस सोने के प्याले और गुलतराश और कटोरे और चमचे और ऊदसोज़; और अन्दरूनी घर, या'नी पाकतरीन मकान के दरवाज़े के लिए और घर के या'नी हैकल के दरवाज़े के लिए सोने के क़ब्ज़े।

⁵¹~ऐसे वह सब काम जो सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के घर में बनाया ख़त्म हुआ; और सुलेमान अपने बाप दाऊद की मख़सूस की हुई चीज़ों, या'नी सोने और चाँदी और बर्तनों को अन्दर लाया, और उनको खुदावन्द के घर के खज़ानों में रखा।

Chapter 8

¹तब सुलेमान ने इस्राईल के बुजुर्गों और क़बीलों के सब सरदारों को, जो बनी इस्राईल के आबाई खान्दानों के रईस थे, अपने पास यरूशलीम में जमा' किया ताकि वह दाऊद के शहर से, जो सिथ्यून है, खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को ले आएँ।²~ इसलिए उस 'ईद में इस्राईल के सब लोग माह-ए-ऐतानीम में, जो सातवाँ महीना है, सुलेमान बादशाह के पास जमा' हुए।

³और इस्राईल के सब बुजुर्ग आए, और काहिनों ने सन्दूक उठाया।⁴~और वह खुदावन्द के सन्दूक को, और खेमा-ए- इजितमा'अ को, और उन सब मुकद्दस बर्तनों ~को जो खेमे के अन्दर थे ले आए; उनको काहिन और लावी लाए थे।⁵~और सुलेमान बादशाह ने और उसके साथ इस्राईल की सारी जमा'अत ने, जो उसके पास जमा' थी, सन्दूक के सामने खड़े होकर इतनी भेड़-बकरियाँ और बैल ज़बह किए कि ~उनको कसरत की वजह से उनकी गिनती या हिसाब न हो सका।

⁶~और काहिन खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उसकी जगह पर, उस घर की इल्हामगाह में, या'नी पाकतरीन मकान में 'ऐन करूबियों के बाज़ुओं के नीचे ले आए।⁷~ क्योंकि करूबी अपने बाज़ुओं को सन्दूक की जगह के ऊपर फैलाए हुए थे, और वह करूबी सन्दूक को और उसकी चोबों को ऊपर से ढाँके हुए थे।⁸~ और वह चोबें ऐसी लम्बी थीं के उन चोबों के सिरे पाक मकान से इल्हामगाह के सामने दिखाई देते थे, लेकिन बाहर से नहीं दिखाई देते थे। और वह आज तक वहीं हैं।

⁹~उस सन्दूक में कुछ न था सिवा पत्थर की उन दो लौहों के जिनको वहाँ मूसा ने होरिब में रख दिया था, जिस वक़्त के खुदावन्द ने बनी इस्राईल से जब वह मुल्क-ए-मिस्र से निकल आए, 'अहद बाँधा था।¹⁰~फिर ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से बाहर निकल आए, तो खुदावन्द का घर अब्र से भर गया:

¹¹~इसलिए काहिन उस अब्र की वजह से खिदमत के लिए खड़े न हो सके, इसलिए कि खुदावन्द का घर उसके जलाल से भर गया था।

¹²~तब सुलेमान ने कहा कि ~"खुदावन्द ने फ़रमाया था कि वह गहरी तारीकी में रहेगा।¹³~मैंने हकीक़त में ~एक घर तेरे रहने के लिए, बल्कि तेरी हमेशा की सुकूनत के वास्ते एक जगह बनाई है।"

¹⁴~और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इस्राईल की सारी जमा'अत को बरकत दी, और इस्राईल की सारी जमा'अत खड़ी रही,¹⁵~और उसने कहा कि "खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो! जिसने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया, और उसे अपने हाथ से यह कह कर पूरा किया कि |¹⁶~"जिस दिन से मैं अपनी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया, मैंने इस्राईल के सब क़बीलों में से भी किसी शहर को नहीं चुना कि एक घर बनाया जाए, ताकि मेरा नाम वहाँ हो; लेकिन मैंने दाऊद को चुन लिया कि वह मेरी क़ौम इस्राईल पर हाकिम हो।"

¹⁷~ और मेरे बाप दाऊद के दिल में था कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए एक घर बनाए।¹⁸~लेकिन खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, 'चूँकि मेरे नाम के लिए एक घर बनाने का ख़याल तेरे दिल में था, तब तू ने अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना;¹⁹~तोभी तू उस घर को न बनाना, बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब से निकलेगा वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।'

²⁰~और खुदावन्द ने अपनी बात, जो उसने कही थी, क़ायम की है; क्योंकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ, और जैसा खुदावन्द ने वा'दा किया था, मैं इस्राईल के तख़्त पर बैठा हूँ और मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया है।²¹~और मैंने वहाँ एक जगह उस सन्दूक के लिए मुक़र्रर कर दी है, जिसमें खुदावन्द का वह 'अहद है जो उसने हमारे बाप-दादा से, जब वह उनको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, बाँधा था।"

²²~और सुलेमान ने इस्राईल की सारी जमा'अत के सामने खुदावन्द के मज़बह के आगे खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैलाए²³~और कहा, "ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा ! तेरी तरह न तो ऊपर आसमान में, न नीचे ज़मीन पर कोई खुदा है; तू अपने उन बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते हैं, 'अहद और रहमत को निगाह रखता है।²⁴~तू ने अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के हक़ में वह बात क़ायम रखी, जिसका तू ने उससे वा'दा किया था; तू ने अपने मुँह से फ़रमाया और अपने हाथ से उसे पूरा किया, जैसा आज के दिन है।

²⁵~ इसलिए अब ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा! तू अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के साथ उस क़ौल को भी पूरा कर जो तूने उससे किया था कि 'तेरे आदमियों से मेरे सामने इस्राईल के तख़्त पर बैठने वाले की कमी न होगी; बशर्ते कि तेरी औलाद, जैसे तू मेरे सामने चलता रहा वैसे ही मेरे सामने चलने के लिए, अपने रास्ते की एहतियात रखे।²⁶~इसलिए अब ऐ इस्राईल के खुदा, तेरा वह क़ौल सच्चा साबित किया जाए, जो तू ने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद से किया।

²⁷~"लेकिन क्या खुदा ~हकीक़त में ज़मीन पर सुकूनत करेगा? देख, आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी तू समा नहीं सकता, तो यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया।²⁸~तोभी, ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, अपने बन्दा की दु'आ और मुनाजात का लिहाज़ करके, उस फ़रियाद और दु'आ को सुन ले जो तेरा बन्दा आज के दिन तेरे सामने करता है,

²⁹~ताकि तेरी आँखें इस घर की तरफ़, या'नी उसी जगह की तरफ़ जिसकी ज़रिए' तू ने फ़रमाया कि 'मैं अपना नाम वहाँ रखूँगा, ' दिन और रात खुली रहें; ताकि तू उस दु'आ को सुने जो तेरा बन्दा इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके तुझ से करेगा।³⁰~ और तू अपने बन्दा और अपनी क़ौम इस्राईल की मुनाजात को, जब वह इस जगह की तरफ़ रुख़ करके करे सुन लेना, बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना, और सुनकर मु'आफ़ कर देना।

³¹~"अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी का गुनाह करे, और उसे क़सम खिलाने के लिए उसको हलफ़ दिया जाए, और वह आकर इस घर में तेरे मज़बह के आगे क़सम खाए:³²~तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों का इन्साफ़ करना, और बदकार पर फ़तवा लगाकर उसके 'आमाल को उसी के सिर डालना, और सादिक़ को सच्चा ठहराकर उसकी सदाक़त के मुताबिक़ उसे बदला देना।

³³~"जब तेरी क़ौम इस्राईल तेरा गुनाह करने के ज़रिए' अपने दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ़ रुजू' लाये और तेरे नाम का इकरार करके इस घर में तुझ से दु'आ और मुनाजात करे;³⁴~तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी क़ौम इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ करना, और उनको इस मुल्क में जो तूने उनके बाप दादा को दिया फिर ले आना |

³⁵~"जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हो, आसमान बन्द हो जाए और बारिश न हो, और वह इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दु'आ करें और तेरे नाम का इक़रार करें, और अपने गुनाह से बाज़ आएँ जब तू उनको दुख़ दे,"³⁶ तो तू आसमान पर से सुन कर अपने बन्दों और अपनी क़ौम इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ कर देना, क्योंकि तू उनको उस अच्छी रास्ते की ता'लीम देता है जिस पर उनको चलना फ़र्ज़ है, और अपने मुल्क पर जिसे तू ने अपनी क़ौम को मीरास के लिए दिया है, पानी बरसाना।

³⁷"अगर मुल्क में काल हो, अगर वबा हो, अगर बाद-ऐ-समूम या गेरूई या टिड्डी या कमला हो, अगर उनके दुश्मन उनके शहरों के मुल्क में उनको घेर लें, गरज़ कैसी ही बला कैसा ही रोग हो;"³⁸~तो जो दु'आ और मुनाजात किसी एक शख्स या तेरी क़ौम इस्राईल की तरफ़ से ही, जिनमें से हर शख्स अपने दिल का दुख़ जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ़ फैलाए;

³⁹~तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकुनतगाह है सुनकर मु'आफ़ कर देना, और ऐसा करना कि हर आदमी को, जिसके दिल को तू जानता है, उसी की सारे चाल चलन के मुताबिक़ बदला देना; क्योंकि सिर्फ़ तू ही सब बनी-आदम के दिलों को जानता है;⁴⁰~ताकि जितनी मुद्दत तक वह उस मुल्क में जिसे तू ने हमारे बाप-दादा को दिया ज़िन्दा रहें, तेरा ख़ौफ़ माने।

⁴¹~'अब रहा वह परदेसी जो तेरी क़ौम इस्राईल में से नहीं है, वह जब दूर मुल्क से तेरे नाम की खातिर आए, ⁴²क्योंकि वह तेरे बुजुर्ग़ नाम और क़वी हाथ और बुलन्द बाजू का हाल सुनेंगे) इसलिए जब वह आए और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दु'आ करें, ⁴³~तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकुनत गाह है सुन लेना, और जिस-जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फ़रयाद करे तू उसके मुताबिक़ करना, ताकि ज़मीन की सब क़ौमों तेरे नाम को पहचाने मानें, और जान लें कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है।

⁴⁴अगर तेरे लोग चाहे किसी रास्ते से तू उनको भेजे, अपने दुश्मनों से लड़ने को निकलें, और वह खुदावन्द से उस शहर की तरफ़ जिसे तू ने चुना है, और उस घर की तरफ़ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, रुख़ करके दु'आ करें, ⁴⁵तो तू आसमान पर से उनकी दु'आ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना।

⁴⁶अगर वह तेरा गुनाह करें (क्योंकि कोई ऐसा आदमी नहीं जो गुनाह न करता हो) और तू उनसे नाराज़ होकर उनको दुश्मन के हवाले कर दे, ऐसा कि वह दुश्मन उनको गुलाम करके अपने मुल्क में ले जाए, ख़्वाह वह दूर हो या नज़दीक, ⁴⁷~तोभी अगर वह उस मुल्क में जहाँ वह गुलाम होकर पहुँचाए गए, होश में आवें और रुजू' लायें और अपने गुलाम करने वालों के मुल्क में तुझसे मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया, हम टेढ़ी चाल चले, और हम ने शरारत की;

⁴⁸~इसलिए अगर वह अपने दुश्मनों के मुल्क में जो उनको कैद करके ले गए, अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ़ फ़िरें और अपने मुल्क की तरफ़, जो तू ने उनके बाप-दादा को दिया, और इस शहर की तरफ़, जिसे तू ने चुन लिया, और इस घर की तरफ़, जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, रुख़ करके तुझ से दु'आ करें,

⁴⁹~तो तू आसमान पर से, जो तेरी सुकुनत गाह है, उनकी दु'आ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना, ⁵⁰~और अपनी क़ौम को, जिसने तेरा गुनाह किया, और उनकी सब ख़ताओं को, जो उनसे तेरे खिलाफ़ सरज़द हों, मु'आफ़ कर देना, और उनके गुलाम करने वालों के आगे उन पर रहम करना ताकि वह उन पर रहम करें।

⁵¹क्योंकि वह तेरी क़ौम और तेरी मीरास हैं, जिसे तू मिस्र से लोहे के भट्टे के बीच में से निकाल लाया। ⁵²~सो तेरी आँखें तेरे बन्दा की मुनाजात और तेरी क़ौम इस्राईल की मुनाजात की तरफ़ खुली रहें, ताकि जब कभी वह तुझ से फ़रियाद करें, तू उनकी सुने; ⁵³क्योंकि तू ने ज़मीन की सब क़ौमों में से उनको ~अलग किया कि वह तेरी मीरास हों, जैसा ऐ मालिक खुदावन्द, तू ने अपने बन्दे मूसा की ज़रिए' फ़रमाया, जिस वक़्त तू हमारे बाप-दादा को मिस्र से निकाल लाया।"

⁵⁴और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान खुदावन्द से यह सब मुनाजात कर चुका, तो वह खुदावन्द के मज़बह के सामने से, जहाँ वह अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैलाए हुए घुटने टेके था, उठा। ⁵⁵~और खड़े होकर इस्राईल की सारी जमा'अत को ऊँची आवाज़ से बरकत दी और कहा, ⁵⁶~"खुदावन्द, जिसने अपने सब वा'दों के मुताबिक़ अपनी क़ौम इस्राईल को आराम बख़्शा मुबारक हो; क्योंकि जो सारा अच्छा वा'दा उसने अपने बन्दे मूसा की ज़रिए' किया, उसमें से एक बात भी ख़ाली न गई।

⁵⁷~खुदावन्द हमारा खुदा हमारे साथ रहे जैसे वह हमारे बाप-दादा के साथ रहा, और न हम को तर्क करे न छोड़े। ⁵⁸~ताकि वह हमारे दिलों को अपनी तरफ़ माइल करे कि ~हम उसकी सब रास्तों पर चलें, और उसके फ़रमानों और क़ानून और अहक़ाम को, जो उसने हमारे बाप-दादा को दिए मानें।

⁵⁹और यह मेरी बातें जिनको मैंने खुदावन्द के सामने मुनाजात में पेश किया है, दिन और रात खुदावन्द हमारे खुदा के नज़दीक रहें, ताकि ~वह अपने बन्दा की दाद और अपनी क़ौम इस्राईल की दाद हर दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ दे; ⁶⁰~जिससे ज़मीन की सब क़ौमों जान लें कि खुदावन्द ही खुदा है और उसके सिवा और कोई नहीं। ⁶¹~इसलिए तुम्हारा दिल आज की तरह खुदावन्द हमारे खुदा के साथ उसके क़ानून पर चलने, और उसके हुक्मों को मानने के लिए कामिल रहे।"

⁶²और बादशाह ने और उसके साथ सारे इस्राईल ने खुदावन्द के सामने कुर्बानी पेश की। ⁶³~सुलेमान ने जो सलामती के ज़बीहों की कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश की उसमें उसने बाईस हज़ार बैल और एक लाख बीस हज़ार भेड़ें पेश कीं। ऐसे बादशाह ने और सब बनी-इस्राईल ने खुदावन्द का घर मख्सूस किया।

⁶⁴उसी दिन बादशाह ने सहन के दर्मियानी हिस्से को जो खुदावन्द के घर के सामने था मुक़द्दस ~किया, क्योंकि उसने वहीं ~सोख़्तनी कुर्बानी और नज़र ~की कुर्बानी और सलामती के ज़बीहों की चर्बी पेश की, इसलिए कि पीतल का मज़बह जो खुदावन्द के सामने था, इतना छोटा था कि उस पर सोख़्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और सलामती के ज़बीहों की चर्बी के लिए गुन्जाइश न थी।

⁶⁵~इसलिए सुलेमान ने और उसके साथ सारे इस्राईल, या'नी एक बड़ी जमा'अत, ने जो हमात के मदख़ल से लेकर मिस्र की नहर तक की हूदूद से आई थी, खुदावन्द हमारे खुदा के सामने सात दिन और फिर सात दिन और, या'नी चौदह दिन, 'ईद मनाई। ⁶⁶~और आठवें दिन उसने उन लोगों को रुख़सत कर दिया। तब उन्होंने बादशाह को मुबारकबाद दी, और उस सारी नेकी के ज़रिए' जो खुदावन्द ने अपने बन्दा दाऊद और अपनी क़ौम इस्राईल से की थी, अपने डेरों को दिल में खुश और खुश होकर लौट गए।

Chapter 9

¹~और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान खुदावन्द का घर और शाही महल बना चुका, और जो कुछ सुलेमान करना चाहता था वह सब खत्म हो गया,²~तो खुदावन्द सुलेमान को दूसरी बार दिखाई दिया, जैसे वह जिब'ऊन में दिखाई दिया था।

³~और खुदावन्द ने उससे कहा, "मैंने तेरी दु'आ और मुनाजात जो तूने मेरे सामने की है सुन ली, और इस घर में, जिसे तू ने बनाया है, अपना नाम हमेशा तक रखने के लिए मैंने उसे मुकद्दस किया; और मेरी आँखें और मेरा दिल सदा वहाँ लगे रहेंगे।

⁴~अब रहा तू इसलिए अगर तू जैसे तेरा बाप दाऊद चला, वैसे ही मेरे सामने खुलूस-ए-दिल और सच्चाई से चल कर उस सब के मुताबिक जो मैंने तुझे फ़रमाया 'अमल करे, और मेरे क़ानून और अहक़ाम को माने;⁵~तो मैं तेरी हुकूमत का तख़्त इस्राईल के ऊपर हमेशा क़ायम रखूँगा, जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से वा'दा किया और कहा कि ~'तेरी नस्ल में इस्राईल के तख़्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी न होगी।'

⁶~लेकिन तुम हो या तुम्हारी औलाद, अगर तुम मेरी पैरवी से बरग़श्ता हो जाओ और मेरे अहक़ाम और क़ानून को, जो मैंने तुम्हारे आगे रखे हैं, न मानो बल्कि जाकर और मा'बूदों की 'इबादत करने और उनको सिज्दा करने लगे,⁷~तो मैं इस्राईल को उस मुल्क से जो मैंने उनको दिया है काट डालूँगा; और उस घर को जिसे मैंने अपने नाम के लिए मुकद्दस किया है, अपनी नज़र से दूर कर दूँगा; और इस्राईल सब क़ौमों में उसकी मिसाल होगी और उस पर उँगली उठेगी।

⁸~और अगरचे यह घर ऐसा मुस्ताज़ है तोभी हर एक जो इसके पास से गुज़रेगा, हैरान होगा और सुसकारेगा, और वह कहेंगे, 'खुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा क्यूँ किया?'⁹~तब वह जवाब देंगे, 'इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा को, जो उनके बाप-दादा को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, छोड़ दिया और ग़ैर मा'बूदों को थाम कर उनको सिज्दा करने और उनकी 'इबादत करने लगे; इसी लिए खुदावन्द ने उन पर यह सारी मुसीबत नाज़िल की। "

¹⁰~और बीस साल के बा'द जिनमें सुलेमान ने वह दोनों घर, या'नी खुदावन्द का घर और शाही महल बनाए, ऐसा हुआ कि¹¹~चूँकि सूर के बादशाह हीराम ने सुलेमान के लिए देवदार की और सनोबर की लकड़ी और सोना उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ इन्तिज़ाम किया था, इसलिए सुलेमान बादशाह ने गलील के मुल्क में बीस शहर हीराम को दिए।

¹²और हीराम उन शहरों को जो सुलेमान ने उसे दिए थे, देखने के लिए सूर से निकला पर वह उसे पसन्द न आए।¹³~तब उसने कहा, "ऐ मेरे भाई, यह क्या शहर हैं जो तू ने मुझे दिए?" और उसने उनका नाम कुबूल" का मुल्क रखा, जो आज तक चला आता है।¹⁴~और हीराम ने बादशाह के पास एक सौ बीस क़िन्तार सोना भेजा।

¹⁵~और सुलेमान बादशाह ने जो बेगारी लगाए, तो इसी लिए कि वह खुदावन्द के घर और अपने महल को और मिल्लो और यरूशलीम की शहरपनाह और हसूर और मजिदो और जज़र को बनाए।¹⁶~मिस्र के बादशाह फ़िर'औन ने ~हमला करके और जज़र को घेर करके उसे आग से फूँक दिया था, और उन कना'आनियों को जो उस शहर में बसे हुए थे क़त्ल करके उसे अपनी बेटी को, जो सुलेमान की बीवी थी, जहेज़ में दे दिया था,

¹⁷~तब सुलेमान ने जज़र और बैतहोरून असफल को,¹⁸~और बालात और बियाबान के तमर को बनाया, जो मुल्क के अन्दर हैं।¹⁹~और ज़ख़ीरों के सब शहरों को जो सुलेमान के पास थे, और अपने रथों के लिए शहरों को, और अपने सवारों के लिए शहरों को, और जो कुछ सुलेमान ने अपनी मर्ज़ी से यरूशलीम में और लुबनान में और अपनी मुल्क की सारी ज़मीन में बनाना चाहा बनाया।

²⁰~और वह सब लोग जो अमोरियों और हित्तियों और फरज़ियों और हवय्यों यबूसियों में से बाक़ी रह गए थे और बनी-इस्राईल में से न थे,²¹~इसलिए उनकी औलाद को जो उनके बा'द मुल्क में बाक़ी रही, जिनको बनी-इस्राईल पूरे तौर पर मिटा न सके, सुलेमान ने गुलाम बनाकर बेगार में लगाया जैसा आज तक है।

²²~लेकिन सुलेमान ने बनी-इस्राईल में से किसी को गुलाम न बनाया, बल्कि वह उसके जंगी मर्द और मुलाज़िम और हाकिम और फ़ौजी सरदार और उसके रथों और सवारों के हाकिम थे।

²³~और वह ख़ास मन्सबदार जो सुलेमान के काम पर मुक़र्रर थे, पाँच सौ पचास थे; यह उन लोगों पर जो काम बना रहे थे सरदार थे।

²⁴~और फ़िर'औन की बेटी दाऊद के शहर से अपने उस महल में, जो सुलेमान ने उसके लिए बनाया था, आई तब सुलेमान ने मिल्लो की ता'मीर किया।

²⁵~और सुलेमान साल में तीन बार उस मज़बह पर जो उसने खुदावन्द के लिए बनाया था, सोख़्तनी कुर्बानियाँ और सलामती के ज़बीहे पेश करता था, और उनके साथ उस मज़बह पर जो खुदावन्द के आगे था खुशबू जलाता था। इस तरह उसने उस घर को पूरा किया।

²⁶~फिर सुलेमान बादशाह ने 'असयोन जाबर में, जो अदोम के मुल्क में बहर-ए-कुलजुम के किनारे ऐलोत के पास है, जहाज़ों का बेड़ा बनाया।²⁷~और हीराम ने अपने मुलाज़िम सुलेमान के मुलाज़िमों के साथ उस बेड़े में भेजे, वह मल्लाह थे जो समुन्दर से वाकिफ़ थे।²⁸~और वह ओफ़ीर को गए और वहाँ से चार सौ बीस क़िन्तार सोना लेकर उसे सुलेमान बादशाह के पास लाए।

Chapter 10

¹और जब सबा की मलिका ने खुदावन्द के नाम के ज़रिए' सुलेमान की शोहरत सुनी, तो वह आई ताकि मुशकिल सवालों से उसे आज़माए।²~ और वह बहुत बड़ी जिलौ के साथ यरूशलीम में आई; और उसके साथ ऊँट थे, जिन पर मशालें और बहुत सा सोना और क्रीमती जवाहर लदे थे, और जब वह सुलेमान के पास पहुँची तो उसने उन सब बातों के बारे में जो उसके दिल में थीं उससे बात की।

³~सुलेमान ने उसके सब सवालों का जवाब दिया, बादशाह से कोई बात ऐसी छुपी न थी जो उसे न बताई।⁴~और जब सबा की मलिका ने सुलेमान की सारी हिकमत और उस महल को जो उसने बनाया था,⁵~ और उसके दस्तरख्वान की ने'मतों, और उसके मुलाज़िमों के बैठने के तरीक़े, और उसके खादिमों की हुज़ूरी और उनकी पोशाक, और उसके साक्रियों, और उस सीढ़ी को जिससे वह खुदावन्द के घर को जाता' था देखा, तो उसके होश उड़ गए।

⁶~उसने बादशाह से कहा कि "वह सच्ची खबर थी जो मैंने तेरे कामों और तेरी हिकमत के बारे में अपने मुल्क में सुनी थी।⁷~तोभी मैंने वह बातों पर यक़ीन न की, जब तक खुद आकर अपनी आँखों से यह देख न लिया, और मुझे तो आधा भी नहीं बताया गया था: क्योंकि तेरी हिकमत और तेरी कामयाबी उस शोहरत से जो मैंने सुनी बहुत ज़्यादा है।

⁸~ खुशनसीब हैं तेरे लोग! और खुशनसीब हैं तेरे यह मुलाज़िम, जो बराबर तेरे सामने खड़े रहते और तेरी हिकमत सुनते हैं।⁹~ खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो, जो तुझ से ऐसा खुश हुआ कि तुझे इस्राईल के तख़्त पर बिठाया है; चूँकि खुदावन्द ने इस्राईल से हमेशा मुहब्बत रखी है, इसलिए उसने तुझे 'अदल और इन्साफ़ करने को बादशाह बनाया।"

¹⁰~और उसने बादशाह को एक सौ बीस क़िन्तार सोना और मसाले का बहुत बड़ा ढेर और क्रीमती जवाहर दिए; और जैसे मसाले सबा की मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए, वैसे फिर कभी ऐसी बहुतायत के साथ न आए।

¹¹~और हीराम का बेड़ा भी जो ओफ़ीर से सोना लाता था, बड़ी कसरत से चन्दन के दरख़्त और क्रीमती जवाहर ओफ़ीर से लाया।¹²~तब बादशाह ने खुदावन्द के घर और शाही महल के लिए चन्दन की लकड़ी के सुतून, और बरबत और गाने वालों के लिए सितार बनाए; चन्दन के ऐसे दरख़्त न कभी आए थे, और न कभी आज के दिन तक दिखाई दिए।

¹³~और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को सब कुछ, जिसकी वह मुश्ताक़ हुई और जो कुछ उसने माँगा दिया; 'अलावा इसके सुलेमान ने उसको अपनी शाहाना सखावत से भी इनायत किया। फिर वह अपने मुलाज़िमों के साथ अपनी मुल्क को लौट गई।

¹⁴~जितना सोना एक साल में सुलेमान के पास आता था, उसका वज़न सोने का छः सौ छियासठ क़िन्तार था।¹⁵~'अलावा इसके ब्योपारियों और सौदागरों की तिजारत और मिली जुली क़ौमों के सब सलातीन, और मुल्क के सूबेदारों की तरफ़ से भी सोना आता था।

¹⁶~और सुलेमान बादशाह ने सोना घड़कर दो सौ ढालें बनाई, छः सौ मिस्क़ाल सोना एक एक ढाल में लगा।¹⁷~और उसने घड़े हुए सोने की तीन सौ ढालें बनाई; एक एक ढाल में डेढ़ सेर सोना लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन के घर में रखवा।

¹⁸~ इनके 'अलावा बादशाह ने हाथी दाँत का एक बड़ा तख़्त बनाया, और उस पर सबसे चोखा सोना मंडा।¹⁹~उस तख़्त में छः सीढ़ियाँ थीं, और तख़्त के ऊपर का हिस्सा पीछे से गोल था, और बैठने की जगह की दोनों तरफ़ टेकें थीं, और टेकों के पास दो शेर खड़े थे:²⁰~और उन छः सीढ़ियों के इधर और उधर बारह शेर खड़े थे। किसी हुकूमत में ऐसा कभी नहीं बना।

²¹~ और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बरतन सोने के थे, और लुबनानी बन के घर के भी सब बरतन खालिस सोने के थे, चाँदी का एक भी न था, क्योंकि सुलेमान के दिनों में उसकी कुछ क़द्र न थी।²²~ क्योंकि बादशाह के पास समुन्दर में हीराम के बेड़े के साथ एक तरसीसी बेड़ा भी था। यह तरसीसी बेड़ा तीन साल में एक बार आता था, और सोना और चाँदी और हाथी दाँत, और बन्दर, और मोर लाता था।

²³~इसलिए सुलेमान बादशाह दौलत और हिकमत में ज़मीन के सब बादशाहों पर सबक़त ले गया।²⁴~और सारा ज़हान सुलेमान के दीदार का तालिब था, ताकि उसकी हिकमत को जो खुदा ने उसके दिल में डाली थी सुनें,²⁵~और उनमें से हर एक आदमी चाँदी के बर्तन, और सोने के बरतन कपड़े और हथियार और मसाले और घोड़े, और खच्चर हदिये के तौर पर अपने हिस्से के मुवाफ़िक़ लाता था।

²⁶~और सुलेमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिए; उसके पास एक हज़ार चार सौ रथ और बारह हज़ार सवार थे, जिनको उसने रथों के शहरों में और बादशाह के साथ यरूशलीम में रखा।²⁷~और बादशाह ने यरूशलीम में इफ़रात की वजह से चाँदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर, और देवदारों को ऐसा जैसे नशेब के मुल्क के गूलर के दरख़्त होते हैं।

²⁸~ और जो घोड़े सुलेमान के पास थे वह मिस्र से मगाए गए थे, और बादशाह के सौदागर एक एक झुण्ड की क्रीमत लगाकर उनके झुण्ड के झुण्ड लिया करते थे।²⁹~और एक रथ चाँदी की छः सौ मिस्क़ाल में आता और मिस्र से रवाना होता, और घोड़ा डेढ़ सौ मिस्क़ाल में आता था, और ऐसे ही हितियों के सब बादशाहों और अरामी बादशाहों के लिए, वह इनको उन्हीं के ज़रिए' से मंगाते थे।

Chapter 11

¹और सुलेमान बादशाह फिर'औन की बेटी के 'अलावा बहुत सी अजनबी 'औरतों से, या'नी मोआबी, 'अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और हिती 'औरतों से मुहब्बत करने लगा;²~यह उन क़ौमों की थीं जिनके बारे में ख़ुदावन्द ने बनी-इसाईल से कहा था कि "तुम उनके बीच न जाना, और न वह तुम्हारे बीच आएँ, क्योंकि वह ज़रूर तुम्हारे दिलों को अपने मा'बूदों की तरफ़ माइल कर लेंगी" सुलेमान इन्हीं के 'इश्क़ का दम भरने लगा।

³और उसके पास सात सौ शाहज़ादियाँ उसकी बीवियाँ और तीन सौ बाँदी थीं, और उसकी बीवियों ने उसके दिल को फेर दिया।⁴~क्योंकि जब सुलेमान बुढ़ा हो गया, तो उसकी बीवियों ने उसके दिल को ग़ैर मा'बूदों की तरफ़ माइल कर लिया; और उसका दिल ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के साथ कामिल न रहा, जैसा उसके बाप दाऊद का दिल था।

⁵~ क्योंकि सुलेमान सैदानियों की देवी इस्तारात, और 'अम्मोनियों के नफ़रती मिलकोम की पैरवी करने लगा।⁶~ और सुलेमान ने ख़ुदावन्द के आगे बदी की, और उसने ख़ुदावन्द की पूरी पैरवी न की जैसी उसके बाप दाऊद ने की थी।

⁷~फिर सुलेमान ने मोआबियों के नफ़रती क़मोस के लिए उस पहाड़ पर जो यरूशलीम के सामने है, और बनी 'अम्मोन के नफ़रती मोलक के लिए ऊँचा मक़ाम बना दिया।⁸~ उसने ऐसा ही अपनी सब अजनबी बीवियों की खातिर किया, जो अपने मा'बूदों के सामने ख़ुशबू जलाती और कुर्बानी पेश करती थीं।

⁹~और ख़ुदावन्द सुलेमान से नाराज़ हुआ, क्योंकि उसका दिल ख़ुदावन्द इसाईल के ख़ुदा से फिर गया था जिसने उसे दो बार दिखाई देकर¹⁰~उसको इस बात का हुक्म किया था कि वह ग़ैर मा'बूदों की पैरवी न करे; लेकिन उसने वह बात न मानी जिसका हुक्म ख़ुदावन्द ने दिया था।

¹¹~इस वजह से ख़ुदावन्द ने सुलेमान को कहा, "चूँकि तुझ से यह काम हुआ, और तू ने मेरे 'अहद और मेरे क़ानून को जिनका मैंने तुझे हुक्म दिया नहीं माना, इसलिए मैं हुक्मत को ज़रूर तुझ से छीनकर तेरे खादिम को दूँगा।"¹²~तोभी तेरे बाप दाऊद की खातिर मैं तेरे दिनों में यह नहीं करूँगा; बल्कि उसे तेरे बेटे के हाथ से छीनूँगा।¹³~फिर भी मैं सारी हुक्मत को नहीं छीनूँगा, बल्कि अपने बन्दे दाऊद की खातिर और यरूशलीम की खातिर, जिसे मैंने चुन लिया है, एक क़बीला तेरे बेटे को दूँगा।

¹⁴~तब ख़ुदावन्द ने अदोमी हदद को सुलेमान का मुख़ालिफ़ बना कर खड़ा किया, यह अदोम की शाही नसल से था।¹⁵~क्योंकि जब दाऊद अदोम में था और लश्कर का सरदार योआब अदोम में हर एक आदमी को क़त्ल करके उन मक्नतूलों को दफ़्न करने गया,¹⁶~(क्योंकि योआब और सब इसाईल छः महीने तक वहीं रहे, जब तक कि उसने अदोम में हर एक आदमी को क़त्ल न कर डाला।)¹⁷~तो हदद कई एक अदोमियों के साथ, जो उसके बाप के मुलाज़िम थे, मिस्र को जाने को भाग निकला, उस वक़्त हदद छोटा लड़का ही था।

¹⁸~और वह मिदियान से निकलकर फ़ारान में आए, और फ़ारान से लोग साथ लेकर शाह-ए-मिस्र फिर'औन के पास मिस्र में गए। उसने उसको एक घर दिया और उसके लिए ख़ुराक मुक़र्रर की और उसे जागीर दी।¹⁹~ और हदद की फिर'औन के सामने इतना रसूख हासिल हुआ कि उसने अपनी साली, या'नी मलिका तहफ़नीस की बहन उसी को ब्याह दी।

²⁰~और तहफ़नीस की बहन के उससे उसका बेटा ज़नूबत पैदा हुआ जिसका दूध तहफ़नीस ने फिर'औन के महल में छुड़ाया; और ज़नूबत फिर'औन के बेटों के साथ फिर'औन के महल में रहा।²¹~ इसलिए जब हदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद अपने बाप-दादा के साथ सो गया और लश्कर का सरदार योआब भी मर गया है, तो हदद ने फिर'औन से कहा, "मुझे रुख़्सत कर दे, ताकि मैं अपने मुल्क को चला जाऊँ।"²²~तब फिर'औन ने उससे कहा, "भला तुझे मेरे पास किस चीज़ की कमी हुई कि तू अपने मुल्क को जाने के लिए तैयार है?" उसने कहा, "कुछ नहीं, फिर भी तू मुझे जिस तरह हो रुख़्सत ही कर दे।"

²³~और ख़ुदा ने उसके लिए एक और मुख़ालिफ़ इलयदा' के बेटे रज़ोन को खड़ा किया, जो अपने आक्रा ज़ोबाह के बादशाह हदद'अज़र के पास से भाग गया था;²⁴~ और उसने अपने पास लोग जमा' कर लिए, और जब दाऊद ने ज़ोबाह वालों को क़त्ल किया, तो वह एक फ़ौज का सरदार हो गया; और वह दमिश्क़ को जाकर वहीं रहने और दमिश्क़ में हुक्मत करने लगे।²⁵~ इसलिए हदद की शरारत के 'अलावा यह भी सुलेमान की सारी 'उम्र इसाईल का दुश्मन रहा; और उसने इसाईल से नफ़रत रखी और अराम पर हुक्मत करता रहा।

²⁶~और सरीदा के इफ़्राईमी नबात का बेटा युरब'आम, जो सुलेमान का मुलाज़िम था और जिसकी माँ का नाम, जो बेवा थी, सरू'आ था; उसने भी बादशाह के खिलाफ़ अपना हाथ उठाया।²⁷~और बादशाह के खिलाफ़ उसके हाथ उठाने की यह वजह हुई कि बादशाह मिल्लो को बनाता था, और अपने बाप दाऊद ~के शहर के रखने की मरम्मत करता था।

²⁸~ और वह शरू'आम एक ताक़तवर सूर्मा था, और सुलेमान ने उस जवान को देखा कि मेहनती है, इसलिए उसने उसे बनी यूसुफ़ के सारे काम पर मुख़्तार बना दिया।²⁹~उस वक़्त जब युरब'आम यरूशलीम से निकल कर जा रहा था, तो सैलानी अख़ियाह नबी उसे रास्ते में मिला, और अख़ियाह एक नई चादर ओढ़े हुए था; यह दोनों मैदान में अकेले थे।³⁰~इसलिए अख़ियाह ने उस नई चादर को जो उस पर थी लेकर उसके बारह टुकड़े फाड़े।

³¹~और उसने युरब'आम से कहा कि "तू अपने लिए दस टुकड़े ले ले; क्योंकि ख़ुदावन्द इसाईल का ख़ुदा ऐसा कहता है कि देख, मैं सुलेमान के हाथ से हुक्मत छीन लूँगा, और दस क़बीले तुझे दूँगा।"³²~ (लेकिन मेरे बन्दे दाऊद की खातिर और यरूशलीम या'नी उस शहर की खातिर, जिसे मैंने बनी-इसाईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, एक क़बीला उसके पास रहेगा।)³³~क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और सैदानियों की देवी इस्तारात और मोआबियों के मा'बूद क़मोस और बनी 'अमोन के मा'बूद मिलकोम की 'इबादत की है, और मेरे रास्तों पर न चले कि वह काम करते जो मेरी नज़र में भला था, और मेरे क़ानून और अहक़ाम को मानते जैसा उसके बाप दाऊद ने किया।

³⁴~फिर भी मैं सारी मुल्क उसके हाथ से नहीं ले लूँगा, बल्कि अपने बन्दा दाऊद की खातिर, जिसे मैंने इसलिए चुन लिया कि उसने मेरे अहक़ाम और क़ानून माने, मैं इसकी 'उम्र भर इसे पेशवा बनाए रखूँगा।³⁵~लेकिन उसके बेटे के हाथ से हुक्मत या'नी दस क़बीलों को लेकर तुझे दूँगा;³⁶~ और उसके बेटे को एक क़बीला दूँगा, ताकि मेरे बन्दे दाऊद का चरागा यरूशलीम, या'नी उस शहर में जिसे मैंने अपना नाम रखने के लिए चुन लिया है, हमेशा मेरे आगे रहे।

³⁷ ~ और मैं तुझे लूँगा, और तू अपने दिल की पूरी ख्वाहिश के मुवाफ़िक़ हुक्मत करेगा और इस्राईल का बादशाह होगा।³⁸ ~ और ऐसा होगा कि अगर तू उन सब बातों को जिनका मैं तुझे हुक्म दूँ सुने, और मेरी रास्तों पर चले, और जो काम मेरी नज़र में भला है उसको करे, और मेरे क़ानून और अहक़ाम को माने, जैसा मेरे बन्दा दाऊद ने किया, तो मैं तेरे साथ रहूँगा, और तेरे लिए एक मज़बूत घर बनाऊँगा, जैसा मैंने दाऊद के लिए बनाया, और इस्राईल को तुझे दे दूँगा।³⁹ ~ और मैं इसी वजह से दाऊद की नसल को दुख दूँगा, लेकिन हमेशा तक नहीं।"

⁴⁰ ~ इसलिए सुलेमान युरब'आम के क़त्ल के पीछे पड़ गया, लेकिन युरब'आम उठकर मिस्र को शाह-ए-मिस्र सीसाक के पास भाग गया और सुलेमान की वफ़ात तक मिस्र में रहा।

⁴¹ ~ सुलेमान का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया और उसकी हिक़मत: इसलिए क्या वह सुलेमान के अहवाल की किताब में दर्ज नहीं?⁴² ~ और वह मुद्दत जिसमें सुलेमान ने यरूशलीम में सब इस्राईल पर हुक्मत की चालीस साल की थी।⁴³ ~ और सुलेमान अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़न हुआ, और उसका बेटा रहब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 12

¹और रहुब'आम ~सिकम को गया, क्योंकि सारा इस्राईल उसे बादशाह बनाने की सिकम को गया था।²~और जब नबात के बेटे युरब'आम ने, जो अभी मिस्र में था, यह सुना; (क्योंकि युरब'आम सुलेमान बादशाह के सामने से भाग गया था, और वह मिस्र में रहता था:

³~इसलिए उन्होंने लोग भेजकर उसे बुलवाया) तो यरुब'आम और इस्राईल की सारी जमा'अत आकर रहुब'आम से ऐसे कहने लगी कि।⁴~"तेरे बाप ने हमारा बोझ सख्त कर दिया था; तब तू अब अपने बाप की उस सख्त खिदमत को और उस भारी बोझ को, जो उसने हम पर रखा, हल्का कर दे, और हम तेरी खिदमत करेंगे।"⁵~तब उसने उनसे कहा, "अभी तुम तीन दिन के लिए चले जाओ, तब फिर मेरे पास आना।" तब वह लोग चले गए।

⁶~और रहुब'आम बादशाह ने उन 'उम्र दराज़ लोगों से जो उसके बाप सुलेमान के जीते जी उसके सामने खड़े रहते थे, सलाह ली और कहा कि ~"इन लोगों को जवाब देने के लिए तुम मुझे क्या सलाह देते हो?"⁷~ उन्होंने उससे यह कहा कि "अगर तू आज के दिन इस क्रौम का खादिम बन जाए, और उनकी खिदमत करे और उनको जवाब दे और उनसे मीठी बातें करे, तो वह हमेशा तेरे खादिम बने रहेंगे।"

⁸~ लेकिन उसने उन 'उम्र दराज़ लोगों की सलाह जो उन्होंने उसे दी, छोड़कर उन जवानों से जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसके सामने खड़े थे, सलाह ली;⁹~ और उससे पूछा कि ~"तुम क्या सलाह देते हो, ताकि हम इन लोगों को जवाब दे सकें जिन्होंने मुझ से ऐसा कहा है कि उस बोझ को जो तेरे बाप ने हम पर रखवा हल्का कर दे?"

¹⁰~इन जवानों ने जो उसके साथ बड़े हुए थे उससे कहा, "तू उन लोगों को ऐसा जवाब देना जिन्होंने तुझ से कहा है कि तेरे बाप ने हमारे बोझ को भारी किया, तू उसको हमारे लिए हल्का कर दे" तब तू उनसे ऐसा कहना कि मेरी छिंजुली मेरे बाप की कमर से भी मोटी है।¹¹~और अब अगर मेरे बाप ने भारी बोझ तुम पर रखवा है, तो भी मैं तुम्हारे बोझ को और ज़्यादा भारी करूंगा, मेरे बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया, मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊंगा।"

¹²~तब युरब'आम और सब लोग तीसरे दिन रहुब'आम के पास हाज़िर हुए, जैसा बादशाह ने उनको हुक्म दिया था कि "तीसरे दिन मेरे पास फिर आना।"¹³~और बादशाह ने उन लोगों को सख्त जवाब दिया और 'उम्र दराज़ लोगों की उस सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़ दिया,¹⁴~और जवानों की सलाह के मुवाफ़िक़ उनसे यह कहा कि "मेरे बाप ने तो तुम पर भारी बोझ रखा, लेकिन मैं तुम्हारे बोझ को ज़्यादा भारी करूंगा; मेरे बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया, लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊंगा।"

¹⁵~इसलिए बादशाह ने लोगों की न सुनी क्योंकि यह मु'आमिला खुदावन्द की तरफ़ से था, ताकि खुदावन्द अपनी बात को जो उसने सैलानी अखियाह की ज़रिए नबात के बेटे युरब'आम से कही थी पूरा करे।

¹⁶और ~जब सारे इस्राईल ने देखा कि बादशाह ने उनकी न सुनी तो उन्होंने बादशाह को ऐसा जवाब दिया कि "दाऊद में हमारा क्या हिस्सा है? यस्सी के बेटे में हमारी मीरास नहीं। ऐ इस्राईल, अपने डेरो को चले जाओ; और अब ऐ दाऊद तू अपने घर को संभाल! तब इस्राईली अपने डेरों को चल दिए।"¹⁷~लेकिन जितने इस्राइली यहूदाह के शहरों में रहते थे उन पर रहुब'आम हुक्मत करता रहा।

¹⁸~फिर रहुब'आम बादशाह ने अदूराम को भेजा जो बेगारियों के ऊपर था, और सारे इस्राईल ने उस पर पथराव किया और वह मर गया। तब रहुब'आम बादशाह ने अपने रथ पर सवार होने में जल्दी की ताकि यरूशलीम को भाग जाए।¹⁹~ऐसे इस्राईल दाऊद के घराने से बागी हुआ और आज तक है।

²⁰~ जब सारे इस्राईल ने सुना कि युरब'आम लौट आया है, तो उन्होंने लोग भेज कर उसे जमा'अत में बुलवाया और उसे सारे इस्राईल का बादशाह बनाया, और यहूदाह के कबीले के 'अलावा किसी ने दाऊद के घराने की पैरवी न की।

²¹~जब रहुब'आम यरूशलीम में पहुँचा तो उसने यहूदाह के सारे घराने और बिनयमीन के कबीले को, जो सब एक लाख अस्सी हज़ार चुने हुए जंगी मर्द थे, इकट्ठा किया ताकि वह इस्राईल के घराने से लड़कर हुक्मत को फिर सुलेमान के बेटे रहुब'आम के कब्ज़े में करा दें।

²²~ लेकिन समयाह को जो मर्द-ए-खुदा था, खुदा का यह पैगाम आया²³कि "यहूदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहुब'आम और यहूदाह और बिनयमीन के सारे घराने और क्रौम के बाकी लोगों से कह कि²⁴~खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि: तुम चढ़ाई न करो और न अपने भाइयों बनी-इस्राईल से लड़ो, बल्कि हर शख्स अपने घर को लौटे, क्योंकि यह बात मेरी तरफ़ से है।" इसलिए उन्होंने खुदावन्द की बात मानी और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ लौटे और अपना रास्ता लिया।

²⁵~तब युरब'आम ने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम को ता'मीर किया और उसमें रहने लगा, और वहाँ से निकल कर उसने फ़नूएल को ता'मीर किया।²⁶~और युरब'आम ने अपने दिल में कहा कि "अब हुक्मत दाऊद के घराने में फिर चली जाएगी।"²⁷~ अगर यह लोग यरूशलीम में खुदावन्द के घर में कुर्बानी अदा करने को जाया करें, तो इनके दिल अपने मालिक, या'नी यहूदाह के बादशाह रहुब'आम, की तरफ़ माइल होंगे और वह मुझ को क्रल करके शाह-ए-यहूदाह रहुब'आम की तरफ़ फिर जाएँगे।"

²⁸~ इसलिए उस बादशाह ने सलाह लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, "यरूशलीम को जाना तुम्हारी ताक़त से बाहर है; ऐ इस्राईल, अपने मा'बूदों को देख, जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से निकाल आए।"²⁹~ और उसने एक को बैतएल में क़ायम किया, दूसरे को दान में रखा।³⁰~और यह गुनाह का ज़रिए ठहरा, क्योंकि लोग उस एक की 'इबादत करने के लिए दान तक जाने लगे।

³¹~ और उसने ऊँची जगहों के घर बनाए, और लोगों में से जोबनी लावी न थे काहिन बनाए।³²~और युरब'आम ने आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख के लिए, उस ईद की तरह जो यहूदाह में होती है एक ईद ठहराई और उस मज़बह के पास गया, ऐसा ही उसने बैतएल में किया; और उन बछड़ों के लिए जो उसने बनाए थे कुर्बानी पेशकी, और उसने बैतएल में अपने बनाए हुए ऊँचे मक़ामों के लिए काहिनों को रखवा।

³³~और आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख की, या'नी उस महीने में जिसे उसने अपने ही दिल से ठहराया था, वह उस मज़बह के पास जो उसने बैतएल में बनाया था गया, और बनी-इस्राईल के लिए ईद ठहराई और खुशबू जलाने को मज़बह के पास गया।

Chapter 13

¹~और देखो, खुदावन्द के हुक्म से एक नबी यहूदाह से बैतएल में आया, और युरब'आम खुशबू जलाने को मज़बह के पास खड़ा था।²~और वह खुदावन्द के हुक्म से मज़बह के खिलाफ़ चिल्लाकर कहने लगा, "ऐ मज़बह, ऐ मज़बह! खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि "देख, दाऊद के घराने से एक लड़का बनाम यूसियाह पैदा होगा। तब वह ऊँचे मक़ामों के काहिनों की, जो तुझ पर खुशबू जलाते हैं, तुझ पर कुर्बानी करेगा और वह आदमियों की हड्डियाँ तुझ पर जलाएँगे।"³~और उसने उसी दिन एक निशान दिया और कहा, "वह निशान जो खुदावन्द ने बताया है, यह है कि देखो, मज़बह फट जाएगा और वह राख जो उस पर है गिर जाएगी।"

⁴~और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने उस नबी का कलाम, जो उसने बैतएल में मज़बह के खिलाफ़ चिल्ला कर कहा था, सुना तो युरब'आम ने मज़बह पर से पकड़ लो!" और उसका वह हाथ जो उसने उसकी तरफ़ बढ़ाया था खुश्क हो गया, ऐसा कि वह उसे फिर अपनी तरफ़ खींच न सका।⁵~और उस निशान के मुताबिक़ जो उस नबी ने खुदावन्द के हुक्म से दिया था, वह मज़बह भी फट गया और राख मज़बह पर से गिर गई।

⁶~तब बादशाह ने उस नबी से कहा कि "अब खुदावन्द अपने खुदा से इल्तिजा कर और मेरे लिए दु'आ कर, ताकि मेरा हाथ मेरे लिए फिर बहाल हो जाए।" तब उस नबी ने खुदावन्द से इल्तिजा की और बादशाह का हाथ उसके लिए बहाल हुआ, और जैसा पहले था वैसा ही हो गया।⁷~और बादशाह ने उस नबी से कहा कि "मेरे साथ घर चल और ताज़ा दम हो, और मैं तुझे इनाम दूँगा।"

⁸~उस नबी ने बादशाह को जवाब दिया कि "अगर तू अपना आधा घर भी मुझे दे, तोभी मैं तेरे साथ नहीं जाने का और न मैं इस जगह रोटी खाऊँ और न पानी पिऊँ।"⁹~क्योंकि खुदावन्द का हुक्म मुझे ताकीद के साथ यह हुआ है कि तू न रोटी खाना न पानी पीना, न उस रास्ते से लौटना जिससे तू जाए।"¹⁰~ तब वह दूसरे रास्ते से गया और जिस रास्ते से बैतएल में आया था उससे न लौटा।

¹¹~और बैतएल में एक बुढ़ा नबी रहता था, तब उसके बेटों में से एक ने आकर वह सब काम जो उस नबी ने उस दिन बैतएल में किए उसे बताए, और जो बातें उसने बादशाह से कहीं थीं उनको भी अपने बाप से बयान किया।¹²~और उनके बाप ने उनसे कहा, "वह किस रास्ते से गया?" उसके बेटों ने देख लिया था कि वह नबी जो यहूदाह से आया था, किस रास्ते से गया है।¹³~ तब उसने अपने बेटों से कहा, "मेरे लिए गधे पर ज़ीन कस दो।" तब उन्होंने उसके लिए गधे पर ज़ीन कस दिया और वह उस पर सवार हुआ,

¹⁴~और उस नबी के पीछे चला और उसे बलूत के एक दरख्त के नीचे बैठे पाया। तब उसने उससे कहा, "क्या तू वही नबी है जो यहूदाह से आया था?" उसने कहा, "हाँ।"¹⁵~तब उसने उससे कहा, "मेरे साथ घर चल और रोटी खा।"¹⁶~उसने कहा, "मैं तेरे साथ लौट नहीं सकता और न तेरे घर जा सकता हूँ, और मैं तेरे साथ इस जगह न रोटी खाऊँ न पानी पिऊँ।"¹⁷~क्योंकि खुदावन्द का मुझ को यूँ हुक्म हुआ है कि "तू वहाँ न रोटी खाना न पानी पीना, और न उस रास्ते से होकर लौटना जिससे तू जाए।"

¹⁸~तब उसने उससे कहा, "मैं भी तेरी तरह नबी हूँ, और खुदावन्द के हुक्म से एक फ़रिश्ते ने मुझ से यह कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में लौटा कर ले आ, ताकि वह रोटी खाए और पानी पीए।" लेकिन उसने उससे झूठ कहा।¹⁹~इसलिए वह उसके साथ लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पिया।

²⁰~जब वह दस्तरख्वान पर बैठे थे तो खुदावन्द का कलाम उस नबी पर, जो उसे लौटा लाया था, नाज़िल हुआ।²¹~और उसने उस नबी से, जो यहूदाह से आया था, चिल्ला कर कहा, "खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है, 'इसलिए कि तू ने खुदावन्द के कलाम से नाफ़रमानी की, और उस हुक्म को नहीं माना जो खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे दिया था।"²²~बल्कि तू लौट आया और तू ने उसी जगह जिसके ज़रिए' खुदावन्द ने तुझे फ़रमाया था कि न रोटी खाना, न पानी पीना, रोटी भी खाई और पानी भी पिया; इसलिए तेरी लाश तेरे बाप दादा की क़ब्र तक नहीं पहुँचेगी।"

²³~ जब वह रोटी खा चुका और पानी पी चुका, तो उसने उसके लिए या'नी उस नबी के लिए जिसे वह लौटा लाया था, गधे पर ज़ीन कस दिया।²⁴~ जब वह रवाना हुआ तो रास्ते में उसे एक शेर मिला जिसने उसे मार डाला, इसलिए उसकी लाश रास्ते में पड़ी रही और गधा उसके पास खड़ा रहा, शेर भी उस लाश के पास खड़ा रहा।²⁵~और लोग उधर से गुज़रे और देखा कि लाश रास्ते में पड़ी है और शेर लाश के पास खड़ा है, फिर उन्होंने उस शहर में जहाँ वह बुढ़ा नबी रहता था यह बताया।

²⁶~और जब उस नबी ने, जो उसे रास्ते से लौटा लाया था, यह सुना तो कहा, "यह वही नबी है जिसने खुदावन्द के कलाम की नाफ़रमानी की, इसी लिए खुदावन्द ने उसको शेर के हवाले कर दिया; और उसने खुदावन्द के उस सुखन के मुताबिक़ जो उसने उससे कहा था, उसे फाड़ा और मार डाला।"²⁷~फिर उसने अपने बेटों से कहा कि "मेरे लिए गधे पर ज़ीन कस दो।" इसलिए उन्होंने ज़ीन कस दिया।²⁸~ तब वह गया और उसने उसकी लाश रास्ते में पड़ी हुई, और गधे और शेर को लाश के पास खड़े पाया; क्योंकि शेर ने न लाश को खाया और न गधे को फाड़ा था।

²⁹~तब उस नबी ने उस नबी की लाश उठाकर उसे गधे पर रखा और ले आया, और वह बुढ़ा नबी उस पर मातम करने और उसे दफ़न करने को अपने शहर में आया।³⁰~और उसने उसकी लाश को अपनी क़ब्र में रखा, और उन्होंने उस पर मातम किया और कहा, 'हाय, मेरे भाई!'

³¹~और जब वह उसे दफ़न कर चुका, तो उसने अपने बेटों से कहा कि ~"जब मैं मर जाऊँ, तो मुझ को उसी क़ब्र में दफ़न करना जिसमें यह नबी दफ़न हुआ है। मेरी हड्डियाँ उसकी हड्डियों के बराबर रखना।"³²~ इसलिए कि वह बात जो उसने खुदावन्द के हुक्म से बैतएल के मज़बह के खिलाफ़ और उन सब ऊँचे मक़ामों के घरों के खिलाफ़, जो सामरिया के कस्बों में हैं, कही है ज़रूर पूरी होगी।"

³³~इस माजरे के बा'द भी युरब'आम अपनी बुरे रास्ते से बाज़ न आया, बल्कि उसने 'अवाम में से ऊँचे मक़ामों के काहिन ठहराए; जिस किसी ने चाहा उसे उसने मख्सूस किया, ताकि ऊँचे मक़ामों के लिए काहिन हों।³⁴~और यह काम युरब'आम के घराने के लिए, उसे काट डालने और उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटाओर बरबाद ~करने के लिए गुनाह ठहरा।

Chapter 14

¹~उस वक़्त युरब'आम का बेटा अबियाह बीमार पड़ा।²~और युरब'आम ने अपनी बीवी से कहा, "ज़रा उठ कर अपना भेस बदल डाल, ताकि पहचान न हो सके कि तू युरब'आम की बीवी है, और सैला को चली जा। देख, अखियाह नबी वहाँ है जिसने मेरे बारे में कहा था कि मैं इस क्रौम का बादशाह हूँगा।³ और दस रोटियाँ और पपड़ियाँ और शहद का एक मर्तबान अपने साथ ले, और उसके पास जा; वह तुझे बता देगा कि लड़के का क्या हाल होगा।"

⁴~तब युरब'आम की बीवी ने ऐसा ही किया, और उठकर सैला को गई और अखियाह के घर पहुँची; लेकिन अखियाह को कुछ नज़र नहीं आता था, क्योंकि बुढ़ापे की वजह से उसकी आँखें रह गई थीं।⁵ और खुदावन्द ने अखियाह से कहा, "देख, युरब'आम की बीवी तुझ से अपने बेटे के बारे में पूछने आ रही है, क्योंकि वह बीमार है। तब तू उससे ऐसा ऐसा कहना, क्योंकि जब वह अन्दर आएगी तो अपने आपको दूसरी 'औरत बनाएगी।"

⁶और जैसे ही वह दरवाज़े से अन्दर आई, और अखियाह ने उसके पाँव की आहट सुनी तो उसने उससे कहा, "ऐ युरब'आम की बीवी, अन्दर आ! तू क्यों अपने को दूसरी बनाती है? क्योंकि मैं तो तेरे ही पास सख्त पैग़ाम के साथ भेजा गया हूँ।⁷~इसलिए जाकर युरब'आम से कह, 'खुदावन्द इस्राईल का खुदा ऐसा फ़रमाता है, हालाँकि मैंने तुझे लोगों में से लेकर सरफ़राज़ किया, और अपनी कौम इस्राईल पर तुझे बादशाह बनाया।⁸~और दाऊद के घराने से हुकूमत छीन ली और तुझे दी; तोभी तू मेरे बन्दे दाऊद की तरह न हुआ, जिसने मेरे हुक्म माने और अपने सारे दिल से मेरी पैरवी की ताकि सिर्फ़ वही करे जो मेरी नज़र में ठीक था,

⁹लेकिन तू ने उन सभों से जो तुझ से पहले हुए ज़्यादा बदी की, और जाकर अपने लिए और और मा'बूद और ढाले हुए बुत बनाए ताकि मुझे गुस्सा दिलाए; बल्कि तू ने मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंका।¹⁰~इसलिए देख, मैं युरब'आम के घराने पर बला नाज़िल करूँगा, और युरब'आम की नसल के हर एक लड़के को, यानी हर एक को जो इस्राईल में बन्द है और उसको जो आज़ाद छूटा हुआ है, काट डालूँगा, और युरब'आम के घराने की सफ़ाई कर दूँगा, जैसे कोई गोबर की सफ़ाई करता हो, जब तक वह सब दूर न हो जाए।

¹¹~युरब'आम का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे और जो मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे, क्योंकि खुदावन्द ने यह फ़रमाया है।¹²~इसलिए तू उठ और अपने घर जा, और जैसे ही तेरा क़दम शहर में पड़ेगा वह लड़का मर जाएगा।¹³~और सारा इस्राईल उसके लिए रोएगा और उसे दफ़न करेगा क्योंकि युरब'आम की औलाद में से सिर्फ़ उसी को क़ब्र नसीब होगी, इसलिए कि युरब'आम के घराने में से इसी में कुछ पाया गया जो खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नज़दीक भला है।

¹⁴~'अलावा इसके खुदावन्द अपनी तरफ़ से इस्राईल के लिए एक ऐसा बादशाह पैदा करेगा जो उसी दिन युरब'आम के घराने को काट डालेगा, लेकिन कब? यह अभी होगा।¹⁵~क्योंकि खुदावन्द इस्राईल को ऐसा मारेगा जैसे सरकण्डा पानी में हिलाया जाता है, और वह इस्राईल को इस अच्छे मुल्क से जो उसने उनके बाप दादा को दिया था उखाड़ फेंकेगा, और उनको दरिया-ए-फ़ुरात के पार बिखेर देगा; क्योंकि उन्होंने अपने लिए यसीरतें बनाई और खुदावन्द को गुस्सा दिलाया है।

¹⁶~और वह इस्राईल को युरब'आम के उन गुनाहों की वजह से छोड़ देगा जो उसने खुद किए, और जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया।"

¹⁷~और युरब'आम की बीवी उठकर रवाना हुई और तिरज़ा में आई, और जैसे ही वह घर की चौखट पर पहुँची वह लड़का मर गया;¹⁸~और सारे इस्राईल ने जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दे अखियाह नबी की ज़रिए' फ़रमाया था, उसे दफ़न करके उस पर नौहा किया।

¹⁹~युरब'आम का बाक़ी हाल कि वह किस किस तरह लड़ा और उसने क्यूँकर हुकूमत की, वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा है।

²⁰~और जितनी मुद्दत तक युरब'आम ने हुकूमत की वह बाईस साल की थी, और वह अपने बाप दादा के साथ सो गया और उसका बेटा नदब उसकी जगह बादशाह हुआ।

²¹~सुलेमान का बेटा रहुब'आम यहूदाह में बादशाह था। रहुब'आम इकतालीस साल का था, जब वह बादशाही करने लगा और उसने यरूशलीम यानी उस शहर में, जिसे खुदावन्द ने बनी-इस्राईल के सब क़बीलों में से चुना था ताकि अपना नाम वहाँ रखवे, सतरह साल हुकूमत की; और उसकी माँ का नाम ना'मा था जो 'अमोनी' औरत थी।²²और यहूदाह ने खुदावन्द के सामने बदी की और जो गुनाह उनके बाप-दादा ने किए थे उनसे भी ज़्यादा उन्होंने अपने गुनाहों से, जो उनसे सरज़द हुए, उसकी ग़ैरत को भड़काया।

²³~क्योंकि उन्होंने अपने लिए हर एक ऊँचे टीले पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे, ऊँचे मक़ाम और सुतून और यसीरतें बनाई,²⁴~और उस मुल्क में लूती भी थे। वह उन क्रौमों के सब मकरूह काम करते थे, जिनको खुदावन्द ने बनी इस्राईल के सामने से निकाल दिया था।

²⁵रहुब'आम बादशाह के पाँचवें साल में शाह-ए-मिस्र सीसक ने यरूशलीम पर पेश की।²⁶और उसने खुदावन्द के घर के खज़ानों और शाही महल के खज़ानों को ले लिया, बल्कि उसने सब कुछ ले लिया, और सोने की वह सब ढालें भी ले गया जो सुलेमान ने बनाई थीं।

²⁷और रहुब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें बनाई और उनको मुहाफ़िज़ सिपाहियों के सरदारों के हवाले किया जो शाही महल के दरवाज़े पर पहरा देते थे।²⁸और जब बादशाह खुदावन्द के घर में जाता तो वह सिपाही उनको लेकर चलते, और फिर उनको वापस लाकर सिपाहियों की कोठरी में रख देते थे।

²⁹और रहुब'आम का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं है?³⁰~और रहुब'आम और युरब'आम में बराबर जंग रही।³¹~और रहुब'आम अपने बाप-दादा के साथ सो गया और दाऊद के शहर में अपने बाप-दादा के साथ दफ़न हुआ, उसकी माँ का नाम ना'मा था जो 'अमोनी' औरत थी; और उसका बेटा अबियाम उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 15

¹और नबात के बेटे यरुब'आम की हुकूमत के अठारवें साल से अबियाम यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।²~उसने यरूशलीम में तीन साल बादशाही की। उसकी माँ का नाम मा'का था, जो अबीसलोम की बेटी थी।³~उसने अपने बाप के सब गुनाहों में, जो उसने उससे पहले किए थे, उसके चाल चलन ~इख्तियार किए और उसका दिल खुदावन्द अपने खुदा के साथ कामिल न था, जैसा उसके बाप दाऊद का दिल था।

⁴~बावजूद इसके खुदावन्द उसके खुदा ने दाऊद की खातिर यरूशलीम में उसे एक चरागा दिया, या'नी उसके बेटे को उसके बा'द ठहराया और यरूशलीम को बरकरार रखवा।⁵~इसलिए कि दाऊद ने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था और अपनी सारी 'उम्र खुदावन्द के किसी हुक्म से बाहर न हुआ, 'अलावा हिंत्ती औरयाह के मु'आमिले के।⁶~और यहूब'आम और युरब'आम के बीच उसकी सारी 'उम्र जंग रही;

⁷~और अबियाम का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं है? और अबियाम और युरब'आम में जंग होती रही।⁸~और अबियाम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आसा उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁹~शाह-ए-इसाईल युरब'आम के बीसवें साल से आसा यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।¹⁰~उसने इकतालीस साल यरूशलीम में हुकूमत की; उस की माँ का नाम मा'काथा, जो अबीसलोम की बेटी थी।¹¹~ और आसा ने अपने बाप दाऊद की तरह वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था।

¹²~ उसने लूतियों को मुल्क से निकाल दिया, और उन सब बुतों को जिनको उसके बाप दादा ने बनाया था दूर कर दिया।¹³~और उसने अपनी माँ मा'का को भी मलिका के रुतबे से उतार दिया, क्योंकि उसने एक यसीरत के लिए एक नफ़रत अंगेज़ बुत बनाया था। तब आसा ने उसके बुत को काट डाला और वादी-ए-क्रिद्रोन में उसे जला दिया।

¹⁴~लेकिन ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, तोभी आसा का दिल 'उम्र भर खुदावन्द के साथ कामिल रहा।¹⁵~ और उसने वह चीज़ें जो उसके बाप ने नज़र की थीं, और वह चीज़ें जो उसने आप नज़र की थीं, या'नी चाँदी और सोना और बर्तन, सबको खुदावन्द के घर में दाख़िल किया।

¹⁶~आसा और शाह-ए-इसाईल बाशा में उनकी 'उम्र भर जंग रही।¹⁷~ और शाह-ए-इसाईल बाशा ने यहूदाह पर चढ़ाई की और रामा को बनाया, ताकि शाह-ए-यहूदाह आसा के पास किसी की आना जाना न हो सके।

¹⁸~तब आसा ने सब चाँदी और सोने को, जो खुदावन्द के घर के खज़ानों में बाकी रहा था, और शाही महल के खज़ानों को लेकर उनको अपने खादिमों के हवाले किया, और आसा बादशाह ने उनको शाह-ए-अराम बिनहदद के पास, जो हज़ियून के बेटे तब रिम्मून का बेटा था और दमिश्क में रहता था, रवाना किया और कहला भेजा,¹⁹कि "मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद-ओ-पैमान है। देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोने का हदिया भेजा है; तब तू आकर शाह-ए-इसाईल बा'शा से 'अहद को तोड़दे, ताकि वह मेरे पास से चला जाए।

²⁰~ और बिन हदद ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने लश्कर के सरदारों को इस्राइली शहरों पर चढ़ाई करने को भेजा, और 'अय्यून और दान और अबील बैत मा'का और सारे किनरत और नफ़ताली के सारे मुल्क को मारा।²¹~जब बाशा ने यह सुना तो रामा के बनाने से हाथ खींचा और तिरज़ा में रहने लगा।

²²~तब आसा बादशाह ने सारे यहूदाह में 'एलान कराया और कोई छोड़ा न गया; तब वह रामा के पत्थर को और उसकी लकड़ियों को, जिन से बा'शा उसे ता'मीर कर रहा था, उठा ले गए; और आसा बादशाह ने उनसे बिनयमीन के जिबा' और मिसफ़ाह को बनाया।

²³~ आसा का बाकी सब हाल और उसकी सारी ताक़त, और सब कुछ जो उसने किया, और जो शहर उसने बनाए, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में क़लमबन्द नहीं है? लेकिन उसके बुढ़ापे के वक़्त में उसे पाँवों का रोग लग गया।²⁴~ और आसा अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और अपने बाप-दादा के साथ अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़न हुआ; और उसका बेटा यहूसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ।

²⁵~शाह-ए-यहूदाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल से युरब'आम का बेटा नदब इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उसने इस्राईल पर दो साल हुकूमत की।

²⁶~और उसने खुदावन्द की नज़र में बदी की और अपने बाप की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन ~इख्तियार किए, जिससे उसने इस्राईल से गुनाह कराया था।

²⁷~अखियाह के बेटे बा'शा ने, जो इश्कार के घराने का था, उसके खिलाफ़ साज़िश की और बाशा ने जिब्बतून में, जो फ़िलिस्तियों का था, उसे क़त्ल किया; क्योंकि नदब और सारे इस्राईल ने जिब्बतून का घेरा कर रखा था।²⁸~ शाह-ए-यहूदाह आसा के तीसरे ही साल बाशा ने उसे क़त्ल किया, और उसकी जगह हुकूमत करने लगा।

²⁹~ और जूँही वह बादशाह हुआ उसने युरब'आम के सारे घराने को क़त्ल किया; और जैसा खुदावन्द ने अपने खादिम अखियाह सैलानी की ज़रिए' फ़रमाया था, उसने युरब'आम के लिए किसी साँस लेने वाले को भी, जब तक उसे हलाक न कर डाला, न छोड़ा।³⁰~ युरब'आम के उन गुनाहों की वजह से जो उसने खुद किए, और जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, और उसके उस गुस्सा दिलाने की वजह से, जिससे उसने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के ग़ज़ब को भड़काया।

³¹~और नदब का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में क़लमबन्द नहीं है?³² आसा और शाह-ए-इसाईल बा'शा के दर्मियान उनकी 'उम्र भर जंग रही।

³³~शाह-ए-यहूदा आसा के तीसरे साल से अखियाह का बेटा बा'शा तिरज़ा में सारे इस्राईल पर बादशाही करने लगा, और उसने चौबीस साल हुकूमत की।³⁴~ और उसने खुदावन्द की नज़र में बदी की, और युरब'आम की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इख्तियार किया जिससे उसने इस्राईल से गुनाह कराया।

Chapter 16

¹~और हनानी के बेटे याहू पर खुदावन्द का यह कलाम बा'शा के खिलाफ़ नाज़िल हुआ,²~ "इसलिए के मैंने तुझे खाक पर से उठाया और अपनी क़ौम इस्राईल का पेशवा बनाया, और तू युरब'आम की रास्ते पर चला, और तू ने मेरी क़ौम इस्राईल से गुनाह करा के उनके गुनाहों से मुझे गुस्सा दिलाया।

³~इसलिए देख, मैं बा'शा और उसके घराने की पूरी सफ़ाई कर दूँगा और तेरे घराने को नबात के बेटे युरब'आम के घराने की तरह बना दूँगा।⁴~बा'शा का जो कोई शहर मैं मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और जो मैदान मैं मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।"

⁵~बा'शा का बाक़ी हाल और जो कुछ उसने किया और उसकी ताक़त, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं है?⁶~ और बा'शा अपने बाप दादा के साथ सो गया और तिरज़ा में दफ़न हुआ, और उसका बेटा ऐला उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁷~और हनानी के बेटे याहू के ज़रिए' खुदावन्द का कलाम बा'शा और उसके घराने के खिलाफ़ उस सारी बदी की वजह से भी नाज़िल हुआ, जो उसने खुदावन्द की नज़र में की और अपने हाथों के काम से उसे गुस्सा दिलाया, और युरब'आम के घराने की तरह बना, और इस वजह से भी कि उसने उसे क़त्ल किया।

⁸~शाह-ए-यहूदाह आसा के छब्बीसवें साल से बा'शा का बेटा ऐला तिरज़ा में बनी इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उसने दो साल हुकूमत की।⁹~ और उसके खादिम ज़िमरी ने, जो उसके आधे रथों का दारोगा था, उसके खिलाफ़ साज़िश की। उस वक़्त वह तिरज़ा में था, और अरज़ा के घर में जो तिरज़ा में उसके घर का दीवान था, शराब पी पी कर मतवाला होता जाता था।¹⁰~ तब ज़िमरी ने आसा शाह-ए-यहूदाह के सत्ताइसवें साल अन्दर जाकर उस पर वार किया और उसे क़त्ल कर दिया, और उसकी जगह हुकूमत करने लगा।

¹¹~जब वह बादशाही करने लगा, तो तख़्त पर बैठते ही उसने बा'शा के सारे घराने को क़त्ल किया, और न तो उसके रिश्तेदारों का और न उसके दोस्तों का कोई लड़का बाक़ी छोड़ा।¹²~ऐसे ज़िमरी ने खुदावन्द के उस कहे के मुताबिक़, जो उसने बा'शा के खिलाफ़ याहू नबी के ज़रिए' फ़रमाया था, बा'शा के सारे घराने को मिटा दिया।¹³~बा'शा के सब गुनाहों और उसके बेटे ऐला के गुनाहों की वजह से जो उन्होंने किए, और जिनसे उन्होंने इस्राईल से गुनाह कराया, ताकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा को अपने बातिल कामों से गुस्सा दिलाएँ।

¹⁴~ऐला का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?

¹⁵~शाह-ए-यहूदाह आसा के सत्ताइसवें साल में ज़िमरी ने तिरज़ा में सात दिन बादशाही की; उस वक़्त लोग जिब्बतून के मुक़ाबिल, जो फ़िलिस्तिनियों का था, खेमाज़न थे।¹⁶~और उन लोगों ने, जो ख़ैमाज़न थे, यह चर्चा सुना के ज़िमरी ने साज़िश की और बादशाह को मार भी डाला है, इसलिए सारे इस्राईल ने उमरी को, जो लश्कर का सरदार था, उस दिन लश्करगाह में इस्राईल का बादशाह बनाया।¹⁷~तब 'उमरी और उसके साथ सारा इस्राईल जिब्बतून से रवाना हुआ और उन्होंने तिरज़ा का घेरा कर लिया।

¹⁸~और ऐसा हुआ कि जब ज़िमरी ने देखा कि शहर का घिराव हो गया, तो शाही महल के मज़बूत हिस्से में जाकर शाही महल में आग लगा दी और जल मरा।

¹⁹~अपने उन गुनाहों की वजह से जो उसने किए, कि खुदावन्द की नज़र में बदी की और युरब'आम के रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन ~इख़्तियार किए जो उसने किया, ताकि इस्राईल से गुनाह कराएँ।²⁰~ ज़िमरी का बाक़ी हाल और जो बगावत उसने की, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?

²¹~उस वक़्त इस्राइली दो हिस्से हो गए, आधे आदमी जीनत के बेटे तिबनी के पैरोकार हो गए ताकि उसे बादशाह बनाएँ और आधे 'उमरी के पैरोकार थे।²²~ लेकिन जो 'उमरी के पैरोकार थे उन पर, जो जीनत के बेटे तिबनी के पैरोकार थे, ग़ालिब आए। इसलिए तिबनी मर गया और उमरी बादशाह हुआ।

²³~ शाह-ए-यहूदाह आसा के इकतीसवें साल में उमरी इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, उसने बारह साल हुकूमत की; तिरज़ा में छः साल उसकी हुकूमत रही।²⁴~ और उसने सामरिया का पहाड़ समर से दो क्रिन्तार' चाँदी में खरीदा, और उस पहाड़ पर एक शहर बनाया और उस शहर का नाम, जो उसने बनाया था, पहाड़ के मालिक समर के नाम पर सामरिया रखा।

²⁵~और उमरी ने खुदावन्द की नज़र में बदी की, और उन सब से जो उससे पहले हुए बदतर काम किए।²⁶~क्योंकि उसने नबात के बेटे युरब'आम की सब रास्तों और उसके गुनाहों की चाल चलन ~इख़्तियार की, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया ताकि वह खुदावन्द इस्राईल के खुदा को अपने बातिल कामों से गुस्सा दिलाएँ।

²⁷~और उमरी के बाक़ी काम जो उसने किए और उसका ज़ोर जो उसने दिखाया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?²⁸~तब उमरी अपने बाप-दादा के साथ सो गया और सामरिया में दफ़न हुआ, और उसका बेटा अख़ीअब उसकी जगह बादशाह हुआ।

²⁹~शाह-ए-यहूदाह आसा के अड़तीसवें साल से उमरी का बेटा अख़ीअब इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उमरी के बेटे अख़ीअब ने सामरिया में इस्राईल पर बाईस साल हुकूमत की।³⁰~और उमरी के बेटे अख़ीअब ने जितने उससे पहले हुए थे, उन सभों से ज़्यादा खुदावन्द की नज़र में बदी की।

³¹~और गोया नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों के चाल चलन ~इख़्तियार करना उसके लिए एक हल्की सी बात थी, इसलिए उसने सैदानियों के बादशाह इतबाल की बेटी ईज़बिल से ब्याह किया, और जाकर बाल की 'इबादत करने और उसे सिज्दा करने लगा।³²~और बाल के मन्दिर में, जिसे उसने सामरिया में बनाया था, बाल के लिए एक मज़बूत तैयार किया।³³~ और अख़ीअब ने यसीरत बनाई, और अख़ीअब ने इस्राईल के सब बादशाहों से ज़्यादा, जो उससे पहले हुए थे, खुदावन्द इस्राईल के खुदा को गुस्सा दिलाने के काम किए।

³⁴~ उसके दिनों में बैतएली हीएल ने यरीहू को ता'मीर किया। जब उसने उसकी बुनियाद डाली तो उसका पहलौठा बेटा अबराम मरा, और जब उसके फाटक लगाए तो उसका सबसे छोटा बेटा सज़ूब मर गया, यह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ हुआ जो उसने नून के बेटे यशूअ के ज़रिए' फ़रमाया था।

Chapter 17

¹~एलियाह तिशबी ने जो जिल'आद के परदेसियों में से था, अखीअब से कहा कि "खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हयात की कसम, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, इन बरसों में न ओस पड़ेगी न बारिश होगी, जब तक मैं न कहूँ।"

²~और खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ कि³~ "यहाँ से चल दे और मशरिक की तरफ अपना रुख कर और करीत के नाले के पास, जो यरदन के सामने है, जा छिप।⁴~ और तू उसी नाले में से पीना, और मैंने कौवों को हुक्म किया है कि वह तेरी परवरिश करें।"

⁵~ तब उसने जाकर खुदावन्द के कलाम के मुताबिक किया, क्योंकि वह गया और करीत के नाले के पास जो यरदन के सामने है रहने लगा।⁶~ और कौवे उसके लिए सुबह को रोटी और गोश्त, और शाम को भी रोटी और गोश्त लाते थे, और वह उस नाले में से पिया करता था।⁷और कुछ 'अरसे के बा'द वह नाला सूख गया इसलिए कि उस मुल्क में बारिश नहीं हुई थी।

⁸~तब खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ, कि⁹~ "उठ और सैदा के सारपत को जा और वहीं रह। देख, मैंने एक बेवा को वहाँ हुक्म दिया है कि तेरी परवरिश करे।"¹⁰~ तब वह उठकर सारपत को गया, और जब वह शहर के फाटक पर पहुँचा तो देखा, कि एक बेवा वहाँ लकड़ियाँ चुन रही है; तब उसने उसे पुकार कर कहा, "ज़रा मुझे थोड़ा सा पानी किसी बर्तन में ला दे कि मैं पियूँ।"

¹¹~जब वह लेने चली, तो उसने पुकार कर कहा, "ज़रा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे वास्ते लेती आना।"¹²~उसने कहा, "खुदावन्द तेरे खुदा की हयात की कसम, मेरे यहाँ रोटी नहीं सिर्फ़ मुट्ठी भर आटा एक मटके में, और थोड़ा सा तेल एक कुप्पी में है। और देख, मैं दो एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ, ताकि घर जाकर अपने और अपने बेटे के लिए उसे पकाऊँ, और हम उसे खाएँ, फिर मर जाएँ।"¹³~और एलियाह ने उससे कहा, "मत डर; जा और जैसा कहती है कर, लेकिन पहले मेरे लिए एक टिकिया उसमें से बनाकर मेरे पास ले आ; उसके बा'द अपने और अपने बेटे के लिए बना लेना।

¹⁴~क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा ऐसा फ़रमाता है, "उस दिन तक जब तक खुदावन्द ज़मीन पर मेँह न बरसाए, न तो आटे का मटका खाली होगा और न तेल की कुप्पी में कमी होगी।"¹⁵~ तब उसने जाकर एलियाह के कहने के मुताबिक किया, और यह और वह और उसका कुन्बा बहुत दिनों तक खाते रहे।

¹⁶~और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक जो उसने एलियाह की ज़रिए' फ़रमाया था, न तो आटे का मटका खाली हुआ और न तेल की कुप्पी में कमी हुई।

¹⁷~इन बातों के बा'द उस 'औरत का बेटा, जो उस घर की मालिक थी, बीमार पड़ा और उसकी बीमारी ऐसी सख्त हो गई कि उसमें दम बाक़ी न रहा।¹⁸~तब वह एलियाह से कहने लगी, "ऐ नबी, मुझे तुझ से क्या काम? तू मेरे पास आया है, कि मेरे गुनाह याद दिलाए और मेरे बेटे को मार दे!"

¹⁹~उसने उससे कहा, "अपना बेटा मुझ को दे।" और वह उसे उसकी गोद से लेकर उसकी बालाखाने पर, जहाँ वह रहता था, ले गया और उसे अपने पलंग पर लिटाया।²⁰~ और उसने खुदावन्द से फ़रियाद की और कहा, "ऐ खुदावन्द मेरे खुदा! क्या तू ने इस बेवा पर भी, जिसके यहाँ मैं टिका हुआ हूँ, उसके बेटे को मार डालने से बला नाज़िल की?"²¹~और उसने अपने आपको तीन बार उस लड़के पर पसार कर खुदावन्द से फ़रियाद की और कहा, "ऐ खुदावन्द मेरे खुदा! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि इस लड़के की जान इसमें फिर आ जाए।"

²²~और खुदावन्द ने एलियाह की फ़रियाद सुनी और लड़के की जान उसमें फिर आ गई और वह जी उठा।²³~ तब एलियाह उस लड़के को उठाकर बालाखाने पर से नीचे घर के अन्दर ले गया, और उसे उसकी माँ के ज़िम्मे किया, और एलियाह ने कहा, "देख, तेरा बेटा ज़िन्दा है।"²⁴~ तब उस 'औरत ने एलियाह से कहा, "अब मैं जान गई कि तू नबी है, और खुदावन्द का जो कलाम तेरे मुँह में है वह सच है।"

Chapter 18

¹और बहुत दिनों के बाद ऐसा हुआ कि ख़ुदावन्द का यह कलाम तीसरे साल एलियाह पर नाज़िल हुआ, कि "जाकर अख़ीअब से मिल, और मैं ज़मीन पर मेंह बरसाऊँगा।"²~ इसलिए एलियाह अख़ीअब से मिलने को चला; और सामरिया में सख्त काल था।

³और अख़ीअब ने 'अबदियाह को, जो उसके घर का दीवान था, तलब किया और अबदियाह ख़ुदावन्द से बहुत डरता था,⁴क्योंकि जब ईज़बिल ने ख़ुदावन्द के नबियों को क़त्ल किया तो 'अबदियाह ने सौ नबियों को लेकर, पचास पचास करके उनको एक ग़ार में छिपा दिया, और रोटी और पानी से उनको पालता रहा -⁵इसलिए अख़ीअब ने 'अबदियाह से कहा, "मुल्क में ग़श्त करता हुआ पानी के सब चश्मों और सब नालों पर जा, शायद हम को कहीं घास मिल जाए, जिससे हम घोड़ों और खच्चरों को ज़िन्दा बचा लें ताकि हमारे सब चौपाए जायें" न हों।"⁶~तब उन्होंने उस पूरे मुल्क में ग़श्त करने के लिए, उसे आपस में तक्रसीम कर लिया; अख़ीअब अकेला एक तरफ़ चला और 'अबदियाह अकेला दूसरी तरफ़ गया।

⁷और 'अबदियाह रास्ते ही में था कि एलियाह उसे मिला, वह उसे पहचान कर मुँह के बल गिरा और कहने लगा, "ऐ मेरे मालिक एलियाह, क्या तू है?"⁸~उसने उसे जवाब दिया, "मैं ही हूँ जा अपने मालिक को बता दे कि एलियाह हाज़िर है।

⁹~उसने कहा, "मुझ से क्या गुनाह हुआ है, जो तू अपने खादिम को अख़ीअब के हाथ में हवाले करना चाहता है, ताकि वह मुझे क़त्ल करे।"¹⁰~ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की हयात की क्रसम, कि-ऐसी कोई क्रौम या हुकूमत नहीं जहाँ मेरे मालिक ने तेरी तलाश के लिए न भेजा हो; और जब उन्होंने कहा कि वह यहाँ नहीं, तो उसने उस हुकूमत और क्रौम से क्रसम ली कि तू उनको नहीं मिला है।¹¹और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को ख़बर कर दे कि एलियाह हाज़िर है।"

¹²~और ऐसा होगा कि जब मैं तेरे पास से चला जाऊँगा, तो ख़ुदावन्द की रूह तुझ को न जाने कहाँ ले जाए; और मैं जाकर अख़ीअब को ख़बर दूँ और तू उसको कहीं मिल न सके, तो वह मुझको क़त्ल कर देगा। लेकिन मैं तेरा खादिम लड़कपन से ख़ुदावन्द से डरता रहा हूँ।¹³~क्या मेरे मालिक को जो कुछ मैंने किया है नहीं बताया गया, कि जब ईज़बिल ने ख़ुदावन्द के नबियों को क़त्ल किया, तो मैंने ख़ुदावन्द के नबियों में से सौ आदमियों को लेकर, पचास-पचास करके उनको एक ग़ार में छिपाया और उनको रोटी और पानी से पालता रहा?

¹⁴~और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को ख़बर दे कि एलियाह हाज़िर है; तब वह मुझे मार डालेगा।"¹⁵~तब एलियाह ने कहा, 'रब्ब-उल-अफ़वाज की हयात की क्रसम जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, मैं आज उससे ज़रूर मिलूँगा।"

¹⁶तब 'अबदियाह अख़ीअब से मिलने को गया और उसे ख़बर दी; और अख़ीअब एलियाह की मुलाक़ात को चला।¹⁷~और जब अख़ीअब ने एलियाह को देखा, तो उसने उससे कहा, "ऐ इस्राईल के सताने वाले, क्या तू ही है?"

¹⁸~उसने जवाब दिया, "मैंने इस्राईल को नहीं सताया, बल्कि तू और तेरे बाप के घराने ने, क्योंकि तुमने ख़ुदावन्द के हुक्मों को छोड़ दिया, और तू बा'लीम का पैरोकार हो गया।"¹⁹इसलिए अब तू क़ासिद भेज; और सारे इस्राईल को और बा'ल के साढ़े चार सौ नबियों को, और यसीरत के चार सौ नबियों को जो ईज़बिल के दस्तरख़वान पर खाते हैं कर्मिल की पहाड़ी पर मेरे पास इकट्ठा कर दे।"

²⁰तब अख़ीअब ने सब बनी-इस्राईल को बुला भेजा, और नबियों को कर्मिल की पहाड़ी पर इकट्ठा किया।²¹और एलियाह सब लोगों के नज़दीक आकर कहने लगा, "तुम कब तक दो ख़यालों में डौंवाडोल रहोगे? अगर ख़ुदावन्द ही ख़ुदा है, तो उसकी पैरवी करो; और अगर बा'ल है, तो उसकी पैरवी करो।" लेकिन उन लोगों ने उसे एक हर्फ़ जवाब न दिया।

²²तब एलियाह ने उन लोगों से कहा, "एक मैं ही अकेला ख़ुदावन्द का नबी बच रहा हूँ, लेकिन बा'ल के नबी चार सौ पचास आदमी हैं।"²³इसलिए हम को दो बैल दिए जाएँ, और वह-अपने लिए एक बैल को चुन लें और उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धरें-और नीचे आग न दें; और मैं दूसरा बैल तैयार करके उसे लकड़ियों पर धरूँगा, और नीचे आग नहीं दूँगा।"²⁴~तब तुम अपने मा'बूद से दु'आ करना, और मैं ख़ुदावन्द से दु'आ करूँगा; और वह ख़ुदा जो आग से जवाब दे, वही ख़ुदा ठहरे।" और सब लोग बोल उठे, "ख़ूब कहा!"

²⁵तब एलियाह ने बा'ल के नबियों से कहा कि "तुम अपने लिए एक बैल चुनलो और पहले उसे तैयार करो क्योंकि-तुम बहुत से हो; और अपने मा'बूद से दु'आ करो, लेकिन आग नीचे न देना।"²⁶इसलिए उन्होंने उस बैल को लेकर जो उनको दिया गया उसे तैयार किया; और सुबह से दोपहर तक बा'ल से दु'आ करते और कहते रहे, "ऐ बा'ल, हमारी सुन!" लेकिन न कुछ आवाज़ हुई और न कोई जवाब देने वाला था। और वह उस मज़बह के पास जो बनाया गया था कूदते रहे।

²⁷~और दोपहर को ऐसा हुआ कि एलियाह ने उनको चिढ़ाकर कहा, "बुलन्द आवाज़ से पुकारो; क्योंकि वह तो मा'बूद है, वह किसी सोच में होगा, या वह तनहाई में है, या कहीं सफ़र में होगा, या शायद वह सोता है, इसलिए ज़रूर है कि वह जगाया जाए।"²⁸~तब वह बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे, और अपने दस्तूर के मुताबिक़ अपने आप को छुरियों और नशतरों से घायल कर लिया, यहाँ तक कि लहू लुहान हो गए।²⁹~वह दोपहर ढले पर भी शाम की कुर्बानी चढ़ाकर नबुव्वत करते रहे; लेकिन न कुछ आवाज़ हुई, न कोई जवाब देने वाला, न ध्यान करने वाला था।

³⁰तब एलियाह ने सब लोगों से कहा कि "मेरे नज़दीक आ जाओ।" चुनाँच सब लोग उसके नज़दीक आ गए। तब उसने ख़ुदावन्द के उस मज़बह को, जो ढा दिया गया था, मरम्मत किया।³¹और एलियाह ने या'क़ूब के बेटों के क़बीलों के गिनती के मुताबिक़, जिस पर ख़ुदावन्द का यह कलाम नाज़िल हुआ था कि "तेरा नाम इस्राईल होगा" बारह पत्थर लिए,³²~और उसने उन पत्थरों से ख़ुदावन्द के नाम का एक मज़बह बनाया; और मज़बह के आस पास उसने ऐसी बड़ी खाई खोदी, जिसमें दो पैमाने बीज की समाई थी,

³³~और लकड़ियों को तरतीब से चुना और बैल भी टुकड़े-टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धर दिया, और कहा, "चार मटके पानी से भरकर उस सोख़्तनी कुर्बानी पर और लकड़ियों पर उँडेल दो।"³⁴~फिर उसने कहा, "दोबारा करो।" उन्होंने दोबारा किया; फिर उसने कहा, "तिबारा करो।" तब उन्होंने तिबारा भी किया।³⁵~और पानी मज़बह के चारों तरफ़ बहने लगा, और उसने खाई भी पानी से भरवा दी।

³⁶~और शाम की कुर्बानी पेश करने ~के वक़्त एलियाह नबी नज़दीक आया और उसने कहा ऐ खुदावन्द अब्राहाम और इज़हाक़ और इसाईल के खुदा ! आज मा'लूम हो जाए कि इसाईल में तू ही खुदा है, और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैंने इन सब बातों को तेरे ही हुक्म से किया है।³⁷~ मेरी सुन, ऐ खुदावन्द, मेरी सुन! ताकि यह लोग जान जाएँ कि ~ऐ खुदावन्द, तू ही खुदा है; और तू ने फिर उनके दिलों को फेर दिया है।"

³⁸~ तब खुदावन्द की आग नाज़िल हुई और उसने उस सोखतनी कुर्बानी को लकड़ियों और पत्थरों और मिट्टी समेत भसम कर दिया, और उस पानी को जो खाई में था चाट लिया।³⁹~जब सब लोगों ने यह देखा, तो मुँह के बल गिरे और कहने लगे, "खुदावन्द वही खुदा है, खुदावन्द वही खुदा है।"⁴⁰~एलियाह ने उनसे कहा, "बा'ल के नबियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी जाने न पाए।" इसलिए उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलियाह उनको नीचे कोसोन के नाले पर ले आया और वहाँ उनको क़त्ल कर दिया।

⁴¹~फिर एलियाह ने अखीअब से कहा, "ऊपर चढ़ जा, खा और पी, क्योंकि कसरत की बारिश की आवाज़ है।"⁴²इसलिए अखीअब खाने पीने को ऊपर चला गया। और एलियाह कर्मिल की चोटी पर चढ़ गया, और ज़मीन पर सरनगू होकर अपना मुँह अपने घुटनों के बीच कर लिया,

⁴³और अपने खादिम से कहा, "ज़रा ऊपर जाकर समुन्दर की तरफ़ तो नज़र कर।" इसलिए उसने ऊपर जाकर नज़र की और कहा, "वहाँ कुछ भी नहीं है।" उसने कहा, "फिर सात बार जा।"⁴⁴और सातवें मर्तबा उसने कहा, "देख, एक छोटा सा बादल आदमी के हाथ के बराबर समुन्दर में से उठा है।" तब उसने कहा, "जा और अखीअब से कह कि अपना रथ तैयार कराके नीचे उतर जा, ताकि बारिश तुझे रोक न ले।"

⁴⁵और थोड़ी ही देर में आसमान घटा और आँधी से सियाह हो गया और बड़ी बारिश हुई; और अखीअब सवार होकर यज़र'एल को चला।⁴⁶~ और खुदावन्द का हाथ एलियाह पर था; और उसने अपनी कमर कस ली और अखीअब के आगे-आगे यज़र'एल के मदख़ल तक दौड़ा चला गया।

Chapter 19

¹~और अखीअब ने सब कुछ, जो एलियाह ने किया था और यह भी कि उसने सब नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया, ईज़बिल को बताया।²~इसलिए ईज़बिल ने एलियाह के पास एक क़ासिद रवाना किया और कहला भेजा कि "अगर मैं कल इस वक़्त तक तेरी जान उनकी जान की तरह न बना डालूँ, तो मा'बूद मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे ज़्यादा करें।"³~जब उसने यह देखा तो उठकर अपनी जान बचाने को भागा, और बैरसबा' में, जो यहूदाह का है, आया और अपने खादिम को वहीं छोड़ा।

⁴और खुद एक दिन की मन्ज़िल दशत में निकल गया और झाऊ के एक पेड़ के नीचे आकर बैठा, और अपने लिए मौत माँगी और कहा, "बस है; अब तू ऐ खुदावन्द, मेरी जान को ले ले, क्योंकि मैं अपने बाप-दादा से बेहतर नहीं हूँ।"⁵~और वह झाऊ के एक पेड़ के नीचे लेटा और सो गया; और देखो, एक फ़रिश्ते ने उसे छुआ और उससे कहा, "उठ और खा।"⁶~उसने जो निगाह की तो क्या देखा कि उसके सिरहाने, अंगारों पर पकी हुई एक रोटी और पानी की एक सुराही रखी है; तब वह खा पीकर फिर लेट गया।

⁷~और खुदावन्द का फ़रिश्ता दोबारा फिर आया, और उसे छुआ और कहा, "उठ और खा, कि यह सफ़र तेरे लिए बहुत बड़ा है।"⁸~इसलिए उसने उठकर खाया पिया, और उस खाने की ताक़त से चालीस दिन और चालीस रात चल कर खुदा के पहाड़ होरिब तक गया।

⁹और वहाँ एक ग़ार में जाकर टिक गया, और देखो, खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ कि "ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता है?"¹⁰~उसने कहा, "खुदावन्द लश्करों के खुदा के लिए मुझे बड़ी ग़ैरत आई, क्योंकि बनी-इसाईल ने तेरे 'अहद को छोड़ दिया और तेरे मज़बहों को ढा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल किया, और एक मैं ही अकेला बचा हूँ; तब वह मेरी जान लेने को पीछे पड़े हैं।"

¹¹~उसने कहा, "बाहर निकल, और पहाड़ पर खुदावन्द के सामने खड़ा हो।" और देखो, खुदावन्द गुज़रा; और एक बड़ी सख़्त आँधी ने खुदावन्द के आगे पहाड़ों को चीर डाला और चट्टानों के टुकड़े कर दिए, लेकिन खुदावन्द आँधी में नहीं था; और आँधी के बा'द ज़लज़ला आया, पर खुदावन्द ज़लज़ले में नहीं था।¹²~और ज़लज़ले के बा'द आग आई, लेकिन खुदावन्द आग में भी नहीं था; और आग के बा'द एक दबी हुई हल्की आवाज़ आई।

¹³~उसको सुनकर एलियाह ने अपना मुँह अपनी चादर से लपेट लिया, और बाहर निकल कर उस ग़ार के मुँह पर खड़ा हुआ। और देखो, उसे यह आवाज़ आई कि 'ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता है?'¹⁴~ उसने कहा, "मुझे खुदावन्द लश्करों के खुदा के लिए बड़ी ग़ैरत आई, क्योंकि बनी-इसाईल ने तेरे 'अहद को छोड़ दिया और तेरे मज़बहों को ढा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल किया; एक मैं ही अकेला बचा हूँ, तब वह मेरी जान लेने को पीछे पड़े हैं।"

¹⁵~खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, "तू अपने रास्ते लौट कर दमिश्क के बियाबान को जा, और जब तू वहाँ पहुँचे तो तू हज़ाएल को मसह कर, कि अराम का बादशाह हो,¹⁶~ और निमसी के बेटे याहू को मसह कर, कि इसाईल का बादशाह हो, और अबील महूला के इलीशा'-बिन-साफ़त को मसह कर, कि तेरी जगह नबी हो।

¹⁷~ और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे याहू क़त्ल करेगा, और जो याहू की तलवार से बच रहेगा उसे इलीशा क़त्ल कर डालेगा।

¹⁸~तोभी मैं इसाईल में सात हज़ार अपने लिए रख छोड़ूँगा, या'नी वह सब घुटने जो बा'ल के आगे नहीं झुके और हर एक मुँह जिसने उसे नहीं चूमा।"

¹⁹~तब वह वहाँ से रवाना हुआ, और साफ़त का बेटा इलीशा' उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे लिए हुए जोत रहा था, और वह खुद बारहवें के साथ था; और एलियाह उसके बराबर से गुज़रा, और अपनी चादर उस पर डाल दी।²⁰~तब वह बैलों को छोड़कर एलियाह के पीछे दौड़ा और कहने लगा, "मुझे अपने बाप और अपनी माँ को चूम लेने दे, फिर मैं तेरे पीछे हो लूँगा।" उसने उससे कहा कि "लौट जा; मैंने तुझ से क्या किया है?"

²¹तब वह उसके पीछे से लौट गया, और उसने उस जोड़ी बैल को लेकर ज़बह किया, और उन ही बैलों के सामान से उनका गोश्त उबाला और लोगों को दिया, और उन्होंने खाया; तब वह उठा और एलियाह के पीछे रवाना हुआ, और उसकी खिदमत करने लगा।

Chapter 20

¹और अराम के बादशाह बिन हदद ने अपने सारे लश्कर को इकट्ठा किया, और उसके साथ बत्तीस बादशाह और घोड़े और रथ थे; और उसने सामरिया पर चढ़ाई करके उसका घेरा किया और उससे लड़ा।²और इस्राईल के बादशाह अखीअब के पास शहर में क्रासिद रवाना किए और उसे कहला भेजा कि "बिन हदद ऐसा फ़रमाता है: कि³ ~ 'तेरी चाँदी और तेरा सोना मेरा है; तेरी बीवियों और तेरे लड़कों में जो सबसे ख़ूबसूरत हैं वह मेरे हैं।' "

⁴~इस्राईल के बादशाह ने जवाब दिया, "ऐ मेरे मालिक, बादशाह! तेरे कहने के मुताबिक़, मैं और जो कुछ मेरे पास है सब तेरा ही है।"⁵फिर उन क्रासिदों ने दोबारा आकर कहा कि "बिनहदद ऐसा फ़रमाता है कि 'मैंने तुझे कहला भेजा था कि तू अपनी चाँदी और अपनी बीवियाँ और अपने लड़के मेरे हवाले कर दे⁶~लेकिन अब मैं कल इसी वक़्त अपने ख़ादिमों को तेरे पास भेजूँगा; तब वह तेरे घर और तेरे ख़ादिमों के घरों की तलाशी लेंगे, और जो कुछ तेरी निगाह में क़ीमती होगा वह उसे अपने कब्ज़े में करके ले आएँगे।"

⁷~तब इस्राईल के बादशाह ने मुल्क के सब बुज़ुर्गों को बुला कर कहा, "ज़रा ग़ौर करो और देखो, कि यह शख्स किस तरह बुराई के पीछे पड़ा ~है; क्योंकि उसने मेरी बीवियाँ और मेरे लड़के और मेरी चाँदी और मेरा सोना, मुझ से मंगा भेजा और मैंने उससे इन्कार नहीं किया।"⁸~तब सब बुज़ुर्गों और सब लोगों ने उससे कहा कि "तू मत सुन, और मत मान।"

⁹~इसलिए उसने बिनहदद के कासिदों से कहा, "मेरे मालिक बादशाह से कहना, 'जो कुछ तू ने अपने ख़ादिम से पहले तलब किया, वह तो मैं करूँगा; पर यह बात मुझ से नहीं हो सकती।' तब क्रासिद रवाना हुए और उसे यह जवाब सुना दिया।"¹⁰तब बिन हदद ने उसको कहला भेजा कि "अगर सामरिया की मिट्टी, उन सब लोगों के लिए जो मेरे पैरोकार हैं, मुट्ठियाँ भरने को भी काफ़ी हो; तो मा'बूद मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करें।"

¹¹~शाह-ए-इस्राईल ने जवाब दिया, "तुम उससे कहना, 'जो हथियार बाँधता ~है, वह उसकी तरह फ़ख़्र न करे जो उसे उतारता है।'"¹²~जब बिन हदद ने, जो बादशाहों के साथ सायबानों में मयनोशी कर रहा था, यह पैग़ाम सुना तो अपने मुलाज़िमों को हुक्म किया कि "सफ़्र बान्ध लो।" इसलिए उन्होंने शहर पर चढ़ाई करने के लिए सफ़्रआराई की।

¹³~और देखो, एक नबी ने शाह-ए-इस्राईल अखीअब के पास आकर कहा, 'ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि 'क्या तू ने इस बड़े हुज़ूम को देख लिया? मैं आज ही उसे तेरे हाथ में कर दूँगा, और तू जान लेगा कि ख़ुदावन्द मैं ही हूँ।'"¹⁴~तब अखीअब ने पूछा, "किसके वसीले से?" उसने कहा, "ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि सूबों के सरदारों के जवानों के वसीले से! ~" फिर उसने पूछा कि लड़ाई कौन शुरू करे। उसने जवाब दिया कि ~"तू।"¹⁵~तब उसने सूबों के सरदारों के जवानों को शुमार किया, और वह दो सौ बत्तीस निकले; उनके बा'द उसने सब लोगों, या'नी सब बनी-इस्राईल की हाज़री ली, और वह सात हज़ार थे।

¹⁶~यह सब दोपहर को निकले, और बिन हदद और वह बत्तीस बादशाह, जो उसके मददगार थे, सायबानों में पी पीकर मस्त होते जाते थे।¹⁷~इसलिए सूबों के सरदारों के जवान पहले निकले। और बिन हदद ने आदमी भेजे, और उन्होंने उसे ख़बर दी कि "सामरिया से लोग निकले हैं।"

¹⁸उसने कहा, "अगर वह सुलह के इरादे से निकले हों तो उनको ज़िन्दा पकड़ लो, और अगर वह जंग को निकले हों तोभी उनको ज़िन्दा पकड़ो।"¹⁹~तब सूबों के सरदारों के जवान और वह लश्कर जो उनके पीछे हो लिया था शहर से बाहर निकले;

²⁰~और उनमें से एक एक ने अपने मुख़ालिफ़ को क़त्ल किया; इसलिए अरामी भागे और इस्राईल ने उनका पीछा किया, और शाह-ए-अराम बिन हदद एक घोड़े पर सवार होकर सवारों के साथ भागकर बच गया।²¹~और शाह-ए-इस्राईल ने निकल कर घोड़ों और रथों को मारा, और अरामियों को बड़ी ख़ुरैज़ी के साथ क़त्ल किया।

²²और वह नबी शाह-ए-इस्राईल के पास आया और उससे कहा, "जा अपने को मज़बूत कर, और जो कुछ तू करे उसे ग़ौर से देख लेना; क्योंकि अगले साल शाह-ए-अराम फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा।"²³~और शाह-ए-अराम के ख़ादिमों ने उससे कहा, "उनका ख़ुदा पहाड़ी ख़ुदा है, इसलिए वह हम पर ग़ालिब आए; लेकिन हम को उनके साथ मैदान में लड़ने दे तो ज़रूर हम उन पर ग़ालिब होंगे।

²⁴~और एक काम यह कर, कि बादशाहों को हटा दे, या'नी हर एक को उसके 'उहदे से हटा दे और उनकी जगह सरदारों को मुक़र्रर कर;²⁵~और अपने लिए एक लश्कर अपनी उस फ़ौज की तरह, जो तबाह हो गई, घोड़े की जगह घोड़ा और रथ की जगह रथ गिन गिनकर तैयार कर ले। हम मैदान में उनसे लड़ेंगे और ज़रूर उन पर ग़ालिब होंगे।" इसलिए उसने उनका कहा माना और ऐसा ही किया।

²⁶~और अगले साल बिन हदद ने अरामियों की हाज़री ली, और इस्राईल से लड़ने के लिए अफ़्रीक़ को गया।²⁷और बनी-इस्राईल की हाज़री भी ली गई, और उनकी ख़ूराक का इन्तज़ाम किया गया और यह उनसे लड़ने को गए; और बनी-इस्राईल उनके बराबर खेमाज़न होकर ऐसे मा'लूम होते थे जैसे हलवानों के दो छोटे रेवड़, लेकिन अरामियों से वह मुल्क भर गया था।

²⁸~तब एक नबी इस्राईल के बादशाह के पास आया और उससे कहा, "~ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि चूँकि अरामियों ने ऐसा कहा है कि ख़ुदावन्द पहाड़ी ख़ुदा है, और वादियों का ख़ुदा नहीं; इसलिए मैं इस सारे बड़े हुज़ूम को तेरे ज़िम्मे में कर दूँगा, और तुम जान लोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"

²⁹और वह एक दूसरे के मुक़ाबिल सात दिन तक खेमाज़न रहे; और सातवें दिन जंग छिड़ गई, और बनी-इस्राईल ने एक दिन में अरामियों के एक लाख प्यादे क़त्ल कर दिए;³⁰और बाक़ी अफ़्रोको को शहर के अन्दर भाग गए, और वहाँ एक दीवार सताईस हज़ार पर जो बाकी रहे थे गिरी। और बिन हदद भागकर शहर के अन्दर एक अन्दरूनी कोठरी में घुस गया।

³¹~और उसके ख़ादिमों ने उससे कहा, "देख, हम ने सुना है कि इस्राईल के घराने के बादशाह रहीम होते हैं; इसलिए हम को ज़रा अपनी कमरों पर टाट और अपने सिरों पर रस्सियाँ बाँध कर शाह-ए-इस्राईल के सामने जाने दे; शायद वह तेरी जान बख़शी करे।"³²इसलिए उन्होंने अपनी कमरों पर टाट और सिरों पर रस्सियाँ बाँधी, और शाह-ए-इस्राईल के सामने आकर कहा, 'तेरा ख़ादिम बिनहदद यह दरख्वास्त करता है कि 'महेरबानी करके मुझे जीने दे।' " उसने कहा, "क्या वह अब तक ज़िन्दा है? वह मेरा भाई है।"

³³~वह लोग बड़ी ध्यान से सुन रहे थे; इसलिए उन्होंने उसका दिली इरादा दरियाप्राप्त करने के लिए झट उससे कहा कि "तेरा भाई बिन हदद।" तब उसने फ़रमाया कि 'जाओ, उसे ले आओ।' तब बिन हदद उससे मिलने को निकला, और उसने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया।³⁴~और बिनहदद ने उससे कहा, "जिन शहरों को मेरे बाप ने तेरे बाप से ले लिया था, मैं उनको लौटा दूँगा; और तू अपने लिए दमिशक में सड़कें बनवा लेना, जैसे मेरे बाप ने सामरिया में बनवाई।" अख़ीअब ने कहा, "मैं इसी 'अहद पर तुझे छोड़ दूँगा।" इसलिए उसने उससे 'अहद बाँधा और उसे छोड़ दिया।

³⁵इसलिए अम्बियाज़ादों में से एक ने खुदावन्द के हुक्म से अपने साथी से कहा, "मुझे मार।" लेकिन उसने उसे मारने से इन्कार किया।³⁶~तब उसने उससे कहा, "इसलिए कि तू ने खुदावन्द की बात नहीं मानी, सो देख, जैसे ही तू मेरे पास से रवाना होगा एक शेर तुझे मार डालेगा।" सो जैसे ही वह उसके पास से रवाना हुआ, उसे एक शेर मिला और उसे मार डाला।

³⁷~फिर उसे एक और शख्स मिला, उसने उससे कहा, "मुझे मार।" उसने उसे मारा, और मार कर ज़ख्मी कर दिया।³⁸~तब वह नबी चला गया और बादशाह के इन्तज़ार में रास्ते पर ठहरा रहा, और अपनी आँखों पर अपनी पगड़ी लपेट ली और अपना भेस बदल डाला।

³⁹~जैसे ही बादशाह उधर से गुज़रा, उसने बादशाह की दुहाई दी और कहा कि "तेरा खादिम जंग होते में वहाँ चला गया था; और देख, एक शख्स उधर मुड़कर एक आदमी को मेरे पास ले आया, और कहा कि ~"इस आदमी की हिफ़ाज़त कर; अगर यह किसी तरह ग़ायब हो जाए, तो उसकी जान के बदले तेरी जान जाएगी, और नहीं तो तुझे एक क्रिन्तार' चाँदी देनी पड़ेगी।"⁴⁰~जब तेरा खादिम इधर उधर मसरूफ़ था, वह चलता बना।" शाह-ए-इसाईल ने उससे कहा, "तुझ पर वैसा ही फ़तवा होगा, तू ने खुद इसका फ़ैसला किया।"

⁴¹~तब उसने झट अपनी आँखों पर से पगड़ी हटा दी, और शाह-ए-इसाईल ने उसे पहचाना कि वह नबियों में से है।⁴²~और उसने उससे कहा, "खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है, 'इसलिए कि तू ने अपने हाथ से एक ऐसे शख्स को निकल जाने दिया, जिसे मैंने क्रल के लायक ठहराया था, इसलिए तुझे उसकी जान के बदले अपनी जान और उसके लोगों के बदले अपने लोग देने पड़ेंगे।'"⁴³इसलिए शाह-ए-इसाईल उदास और नाखुश होकर अपने घर को चला और सामरिया में आया।

Chapter 21

¹इन बातों के बा'द ऐसा हुआ कि यज़र एली नबोत के पास यज़र एल में एक ताकिस्तान था, जो सामारिया के बादशाह अखीअब के महल से लगा हुआ था।

²इसलिए अखीअब ने नबोत से कहा कि "अपना ताकिस्तान मुझे को दे ताकि मैं उसे तरकारी का बाग बनाऊँ, क्योंकि वह मेरे घर से लगा हुआ है; और मैं उसके बदले तुझे को उससे बेहतर ताकिस्तान दूँगा; या अगर तुझे मुनासिब मा'लूम हो, तो मैं तुझे को उसकी क्रीमत नक़द दे दूँगा।"

³नबोत ने अखीअब से कहा, "खुदावन्द मुझे से ऐसा न कराए कि मैं तुझे को अपने बाप-दादा की मीरास दे दूँ।"⁴ और अखीअब उस बात की वजह से जो यज़र'एली नबोत ने उससे कही उदास और ना खुश हो कर अपने घर में आया, क्योंकि उसने कहा था मैं तुझे को अपने बाप-दादा की मीरास नहीं दूँगा। इसलिए उसने अपने बिस्तर पर लेट कर अपना मुँह फेर लिया, और खाना छोड़ दिया।

⁵तब उसकी बीवी ईज़बिल उसके पास आकर उससे कहने लगी, "तेरा जी ऐसा क्यों उदास है कि तू रोटी नहीं खाता?"⁶ उसने उससे कहा, "इसलिए कि मैंने यज़र'एली नबोत से बातचीत की, और उससे कहा कि तू अपना ताकिस्तान की क्रीमत लेकर मुझे दे दे; या अगर तू चाहे तो मैं उसके बदले दूसरा ताकिस्तान तुझे दे दूँगा। लेकिन उसने जवाब दिया, 'मैं तुझे को अपना ताकिस्तान नहीं दूँगा'।"⁷ उसकी बीवी ईज़बिल ने उससे कहा, "इसाईल की बादशाही पर यही तेरी हुकुमत है? उठ रोटी खा, और अपना दिल बहला; यज़र एली नबोत का ताकिस्तान मैं तुझे को दूँगी।"

⁸इसलिए उसने अखीअब के नाम से ख़त लिखे, और उन पर उसकी मुहर लगाई, और उनको उन बुजुर्गों और अमीरों के पास जो नबोत के शहर में थे और उसी के पड़ोस में रहते थे भेज दिया।⁹ उसने उन ख़तों में यह लिखा कि "रोज़ा का 'एलान कराके नबोत को लोगों में ऊँची जगह पर बिठाओ।"¹⁰ और दो आदमियों को, जो बुरे हों, उसके सामने कर दो कि वह उसके खिलाफ़ यह गवाही दें कि तू ने खुदा पर और बादशाह पर ला'नत की, फिर उसे बाहर ले जाकर पथराव करो ताकि वह मर जाए।"

¹¹चुनौचे उसके शहर के लोगों या'नी बुजुर्गों और अमीरों ने, जो उसके शहर में रहते थे, जैसा ईज़बिल ने उनको कहला भेजा वैसा ही उन ख़तों के मज़मून के मुताबिक़, जो उसने उनको भेजे थे, किया।¹² उन्होंने रोज़ा का 'एलान कराके नबोत को लोगों के बीच ऊँची जगह पर बिठाया।¹³ और वह दोनों आदमी जो बुरे थे, आकर उसके आगे बैठ गए; और उन बुरों ने लोगों के सामने उसके, या'नी नबोत के खिलाफ़ यह गवाही दी कि "नबोत ने खुदा पर और बादशाह पर ला'नत की है।" तब वह उसे शहर से बाहर निकाल ले गए, और उसको ऐसा पथराव किया कि वह मर गया।¹⁴ फिर उन्होंने ईज़बिल को कहला भेजा कि "नबोत पर पथराव कर दिया गया और मर गया।"

¹⁵जब ईज़बिल ने सुना कि नबोत पर पथराव कर दिया गया और मर गया, तो उसने अखीअब से कहा, "उठ और यज़र'एली नबोत के ताकिस्तान पर क़ब्ज़ा कर, जिसे उसने क्रीमत पर भी तुझे देने से इन्कार किया था; क्योंकि नबोत ज़िन्दा नहीं बल्कि मर गया है।"¹⁶ जब अखीअब ने सुना कि नबोत मर गया है, तो अखीअब उठा ताकि यज़र'एली नबोत के ताकिस्तान को जाकर उस पर क़ब्ज़ा करे।

¹⁷और खुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाज़िल हुआ कि¹⁸ उठ और शाहए-इसाईल अखीअब से, जो सामरिया में रहता है, मिलने को जा। देख, वह नबोत के ताकिस्तान में है, और उस पर क़ब्ज़ा करने को वहाँ गया है।

¹⁹इसलिए तू उससे यह कहना कि खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि क्या तू ने जान भी ली और क़ब्ज़ा भी कर लिया?" तब तू उससे यह कहना कि ~खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि उसी जगह जहाँ कुत्तों ने नबोत का लहू चाटा, कुत्ते तेरे लहू को भी चाटेंगे।"²⁰ और अखीअब ने एलियाह से कहा, "ऐ मेरे दुश्मन, क्या मैं तुझे मिल गया?" उसने जवाब दिया कि "तू मुझे मिल गया; इसलिए कि तू ने खुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला है।

²¹देख, मैं तुझे पर बला नाज़िल करूँगा और तेरी पूरी सफ़ाई कर दूँगा, और अखीअब की नसल के हर एक लड़के को, या'नी हर एक को जो इसाईल में बन्द है, और उसे जो आज़ाद छुटा हुआ है काट डालूँगा।²² और तेरे घर को नबात के बेटे युरब'आम के घर, और अखियाह के बेटे बाशा के घर की तरह बना दूँगा; उस गुस्सा दिलाने की वजह से जिससे तू ने मेरे ग़ज़ब को भड़काया और इसाईल से गुनाह कराया।

²³और खुदावन्द ने ईज़बिल के हक़ में भी यह फ़रमाया कि यज़र'एल की फ़सील के पास कुत्ते ईज़बिल को खाएँगे।"²⁴ अखीअब का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और जो मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।"

²⁵क्योंकि अखीअब की तरह कोई नहीं हुआ था, जिसने खुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला था और जिसे उसकी बीवी ईज़बिल उभारा करती थी।²⁶ और उसने बहुत ही नफ़रत अंगेज़ काम यह किया कि अमोरियों की तरह, जिनको खुदावन्द ने बनी-इसाईल के आगे से निकाल दिया था, बुतों की पैरवी की।

²⁷जब अखीअब ने यह बातें सुनीं, तो अपने कपड़े फाड़े और अपने तन पर टाट डाला और रोज़ा रखवा और टाट ही में लेटने और दबे पाँव चलने लगा।²⁸ तब खुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाज़िल हुआ कि²⁹ ~"तू देखता है कि अखीअब मेरे सामने कैसा खाकसार बन गया है? लेकिन चूँकि वह मेरे सामने खाकसार बन गया है, इसलिए मैं उसके दिनों में यह बला नाज़िल नहीं करूँगा, बल्कि उसके बेटे के दिनों में उसके घराने पर यह बला नाज़िल करूँगा।"

Chapter 22

¹तीन साल वह ऐसे ही रहे और इस्राईल और अराम के बीच लड़ाई न हुई;²—और तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त शाह-ए-इस्राईल के यहाँ आया,

³—और शाह-ए-इस्राईल ने अपने मुलाज़िम्ओं से कहा, "क्या तुम को मा'लूम है कि रामात जिल'आद हमारा है? लेकिन हम खामोश हैं और शाह-ए-अराम के हाथ से उसे छीन नहीं लेते?"⁴—फिर उसने यहूसफ़त से कहा, "क्या तू मेरे साथ रामात जिल'आद से लड़ने चलेगा? यहूसफ़त ने शाह-ए-इस्राईल को जवाब दिया, "मैं ऐसा हूँ जैसा तू मेरे लोग ऐसे हैं जैसे तेरे लोग और मेरे घोड़े ऐसे हैं जैसे तेरे घोड़े।"

⁵और यहूसफ़त ने शाह-ए-इस्राईल से कहा, "ज़रा आज खुदावन्द की मर्ज़ी भी तो मा'लूम कर ले।"⁶—तब शाह-ए-इस्राईल ने नबियों को जो करीब चार सौ आदमी थे इकट्ठा किया और उनसे पूछा, "मैं रामात जिल'आद से लड़ने जाऊँ, या बाज़ रहूँ?" उन्होंने कहा, "जा" क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।"

⁷लेकिन यहूसफ़त ने कहा, "क्या इनको छोड़कर यहाँ खुदावन्द का कोई नबी नहीं है, ताकि हम उससे पूछें?"⁸—शाह-ए-इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "कि एक शख्स, इमला का बेटा मीकायाह है तो सही, जिसके ज़रिए' से हम खुदावन्द से पूछ सकते हैं; लेकिन मुझे उससे नफ़रत है, क्योंकि वह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करता है।" यहूसफ़त ने कहा, "बादशाह ऐसा न कहे।"⁹—तब शाह-ए-इस्राईल ने एक सरदार को बुलाकर कहा, कि "इमला के बेटे मीकायाह को जल्द ले आ।"

¹⁰—उस वक़्त शाह-ए-इस्राईल और शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त सामरिया के फाटक के सामने, एक खुली जगह में, अपने-अपने तख़्त पर शाहाना लिबास पहने हुए बैठे थे, और सब नबी उनके सामने पेशीनगोई कर रहे थे।¹¹—और कन'आना के बेटे सिदक्रियाह ने अपने लिए लोहे के सींग बनाए और कहा, "खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि तू इन से अरामियों को मारेगा, जब तक वह मिट न जाएँ।"¹²और सब नबियों ने यही पेशीनगोई की और कहा कि रामात जिल'आद पर चढ़ाई कर और कामयाब हो, क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।"

¹³—और उस क़ासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था उससे कहा, "देख, सब नबी एक ज़बान होकर बादशाह को खुशख़बरी दे रहे हैं, तो ज़रा तेरी बात भी उनकी बात की तरह हो और तू खुशख़बरी ही देना।"¹⁴—मीकायाह ने कहा, "खुदावन्द की हयात की क़सम, जो कुछ खुदावन्द मुझे फ़रमाए मैं वही कहूँगा।"¹⁵—इसलिए जब वह बादशाह के पास आया, तो बादशाह ने उससे कहा, "मीकायाह, हम रामात जिल'आद से लड़ने जाएँ या रहने दें?" उसने जवाब दिया, "जा और कामयाब हो, क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।"

¹⁶—बादशाह ने उससे कहा, "मैं कितनी मर्तबा तुझे क़सम देकर कहूँ, कि तू खुदावन्द के नाम से हक़ के 'अलावा और कुछ मुझ को न बताए?"¹⁷तब उसने कहा, "मैंने सारे इस्राईल को उन भेड़ों की तरह, जिनका चौपान न हो, पहाड़ों पर बिखरा देखा; और खुदावन्द ने फ़रमाया कि इनका कोई मालिक नहीं; तब वह अपने अपने घर सलामत लौट जाएँ।"

¹⁸तब शाह-ए-इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "क्या मैंने तुझ को बताया नहीं था कि यह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करेगा?"¹⁹—तब उसने कहा, "अच्छा, तू खुदावन्द की बात को सुन ले; मैंने देखा कि खुदावन्द अपने तख़्त पर बैठा है, और सारा आसमानी लश्कर उसके दहने और बाएँ खड़ा है।"

²⁰और खुदावन्द ने फ़रमाया, 'कौन अखीअब को बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल'आद में मारे गए?' तब किसी ने कुछ कहा, और किसी ने कुछ।

²¹लेकिन एक रूह निकल कर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और कहा, 'मैं उसे बहकाऊँगी।'²²—खुदावन्द ने उससे पूछा, "किस तरह?" उसने कहा, 'मैं जाकर उसके सब नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली रूह बन जाऊँगी, उसने कहा तू उसे बहका देगी और ग़ालिब भी होगी, रवाना हो जा और ऐसा ही कर।'²³—इसलिए देख, खुदावन्द ने तेरे इन सब नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली रूह डाली है; और खुदावन्द ने तेरे हक़ में बदी का हुक्म दिया है।"

²⁴—तब कन'आना का बेटा सिदक्रियाह नज़दीक आया, और उसने मीकायाह के गाल पर मार कर कहा, "खुदावन्द की रूह तुझ से बात करने को किस रास्ते से होकर मुझ में से गई?"²⁵—मीकायाह ने कहा, "यह तू उसी दिन देख लेगा, जब तू अन्दर की एक कोठरी में घुसेगा ताकि छिप जाए।"

²⁶—और शाह-ए-इस्राईल ने कहा, "मीकायाह को लेकर उसे शहर के नाज़िम अमून और यूआस शहज़ादे के पास लौटा ले जाओ," और कहना, 'बादशाह यूँ फ़रमाता है कि इस शख्स को कैदख़ाने में डाल दो, और इसे मुसीबत की रोटी खिलाना और मुसीबत का पानी पिलाना, जब तक मैं सलामत न आऊँ।'²⁸तब मीकायाह ने कहा, "अगर तू सलामत वापस आ जाए, तो खुदावन्द ने मेरी ज़रिए' कलाम ही नहीं किया।" फिर उसने कहा, "ऐ लोगो, तुम सब के सब सुन लो।"

²⁹—इसलिए शाह-ए-इस्राईल और शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की।³⁰और शाह-ए-इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "मैं अपना भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा; लेकिन तू अपना लिबास पहने रह।" तब शाह-ए-इस्राईल अपना भेस बदलकर लड़ाई में गया।

³¹—उधर शाह-ए-अराम ने अपने रथों के बत्तीसों सरदारों को हुक्म दिया था, "किसी छोटे या बड़े से न लड़ना, 'अलावा शाह-ए-इस्राईल के।"³²इसलिए जब रथों के सरदारों ने यहूसफ़त को देखा तो कहा, "ज़रूर शाह-ए-इस्राईल यही है।" और वह उससे लड़ने को मुड़े, तब यहूसफ़त चिल्ला उठा।³³—जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह-ए-इस्राईल नहीं, तो वह उसका पीछा करने से लौट गए।

³⁴—और किसी शख्स ने ऐसे ही अपनी कमान खींची और शाह-ए-इस्राईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा, तब उसने अपने सारथी से कहा, "बाग" फेर कर मुझे लश्कर से बाहर निकाल ले चल, क्योंकि मैं ज़ख्मी हो गया हूँ।"

³⁵—और उस दिन बड़े घमसान का रन पड़ा, और उन्होंने बादशाह को उसके रथ ही में अरामियों के मुकाबिल संभाले रखा; और वह शाम को मर गया, और खून उसके ज़ख्म से बह कर रथ के पायदान में भर गया।³⁶—और आफ़ताब गुरूब होते हुए लश्कर में यह पुकार हो गई, "हर एक आदमी अपने शहर, और हर एक आदमी अपने मुल्क को जाए।"

³⁷इसलिए बादशाह मर गया और वह सामरिया में पहुँचाया गया, और उन्होंने बादशाह को सामरिया में दफ़न किया;³⁸—और उस रथ को सामरिया के तालाब में धोया (कस्बियाँ यहीं गुस्ल करती थीं), और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो उसने फ़रमाया था, कुत्तों ने उसका खून चाटा।

³⁹और अखीअब की बाक़ी बातें, और सब कुछ जो उसने किया था, और हाथी दाँत का घर जो उसने बनाया था, और उन सब शहरों का हाल जो उसने ता'मीर किए, तो क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?⁴⁰ और अखीअब अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा अख़ज़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁴¹~और आसा का बेटा यहूसफ़त शाह-ए- इस्राईल अखीअब के चौथे साल से यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।⁴²~जब यहूसफ़त हुकूमत करने लगा तो पैंतीस साल का था, और उसने यरूशलीम में पच्चीस साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अज़ूबा था, जो सिल्ही की बेटी थी।

⁴³~वह अपने बाप आसा के नक्श-ए-क़दम पर चला; उससे वह मुड़ा नहीं और जो खुदावन्द की निगाह में ठीक था उसे करता रहा, तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए लोग उन ऊँचे मक़ामों पर ही कुर्बानी करते और बख़ूर जलाते थे।⁴⁴~और यहूसफ़त ने शाह-ए-इस्राईल से सुलह की।

⁴⁵और यहूसफ़त की बाक़ी बातें और उसकी ताक़त जो उसने दिखाई, और उसके जंग करने की कैफ़ियत, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?⁴⁶~और उसने बाक़ी लूतियों को जो उसके बाप आसा के 'अहद में रह गए थे, मुल्क से निकाल दिया।⁴⁷और अदोम में कोई बादशाह न था, बल्कि एक नाइब हुकूमत करता था।

⁴⁸~और यहूसफ़त ने तरसीस के जहाज़ बनाए ताकि ओफ़ीर को सोने के लिए जाएँ, लेकिन वह गए नहीं, क्योंकि वह "अस्यून जाबर ही में टूट गए।"⁴⁹~तब अखीअब के बेटे अख़ज़ियाह ने यहूसफ़त से कहा, 'अपने खादिमों के साथ मेरे खादिमों को भी जहाज़ों में जाने दे।' लेकिन यहूसफ़त राज़ी न हुआ।⁵⁰और यहूसफ़त अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप-दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा यहूराम उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁵¹~और अखीअब का बेटा अख़ज़ियाह शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त के सत्रहवें साल से सामरिया में इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उसने इस्राईल पर दो साल हुकूमत की।⁵²~और उसने खुदावन्द की नज़र में बदी की, और अपने बाप की रास्ते और अपनी माँ के रास्ते और नबात के बेटे युरब'आम की रास्ते पर चला, जिससे उसने बनी-इस्राईल से गुनाह कराया;⁵³और अपने बाप के सब कामों के मुताबिक़ बा'ल की 'इबादत करता और उसको सिज्दा करता रहा, और खुदावन्द इस्राईल के खुदा को गुस्सा दिलाया। |

२-सलातीन

Chapter 1

¹अखीअब के मरने के बाद मोआब इस्राईल से बागी हो गया।²और अख़ज़ियाह उस झिलमिली दार खिड़की में से, जो सामरिया में उसके बालाखाने में थी, गिर पड़ा और बीमार हो गया। इसलिए उसने क़ासिदों को भेजा और उनसे ये कहा, "जाकर 'अक़ून के मा'बूद बा'लज़बूब' से पूछो, कि ~मुझे इस बीमारी से शिफ़ा हो जाएगी या नहीं।"

³लेकिन खुदावन्द के फ़रिश्ते ने एलियाह तिशबी से कहा, "उठ और सामरिया के बादशाह के क़ासिदों से मिलने को जा और उनसे कह, 'क्या इस्राईल में खुदा नहीं जो तुम 'अक़ून के-मा'बूद-बा'लज़बूब से पूछने चले हो?'⁴~इसलिए अब खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उस पलंग पर से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि तू ज़रूर ~मरेगा।" तब एलियाह रवाना हुआ।

⁵~वह क़ासिद उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे पूछा, "तुम लौट क्यों आए?"⁶~उन्होंने उससे कहा, "एक शख्स हम से मिलने को आया, और हम से कहने लगा, 'उस बादशाह के पास जिसने तुम को भेजा है फिर जाओ, और उससे कहो: खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि क्या इस्राईल में कोई खुदा नहीं जो तू 'अक़ून के-मा'बूद बा'लज़बूब से पूछने को भेजता है? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़रूर ही मरेगा।" "

⁷~उसने उनसे कहा, "उस शख्स की कैसी शक्ल थी, जो तुम से मिलने को आया और तुम से ये बातें कहीं?"⁸~उन्होंने उसे जवाब दिया, "वह बहुत बालों वाला आदमी था, और चमड़े का कमरबन्द अपनी कमर पर कसे हुए था।" तब उसने कहा, "ये तो एलियाह तिशबी है।"

⁹तब बादशाह ने पचास सिपाहियों के एक सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। जब वह उसके पास गया और देखा कि वह एक टीले की चोटी पर बैठा है। उसने उससे कहा, "ऐ नबी, बादशाह ने कहा है, 'तू उतर आ।' "¹⁰एलियाह ने उस पचास के सरदार को जवाब दिया, "अगर मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाज़िल हो और तुझे तेरे पचासों के साथ जला कर भसम कर दे।" तब आग आसमान से नाज़िल हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया।

¹¹~फिर उसने दोबारा पचास सिपाहियों के दूसरे सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। उसने उससे मुखातिब होकर कहा, "ऐ नबी, बादशाह ने यूँ कहा है, 'जल्द उतर आ।' "¹²एलियाह ने उनको भी जवाब दिया, "अगर मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाज़िल हो और तुझे तेरे पचासों के साथ जलाकर ~भसम कर दे।" फिर खुदा की आग आसमान से नाज़िल हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया।

¹³~फिर उसने तीसरे पचास सिपाहियों के सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ भेजा; और पचास सिपाहियों का ये तीसरा सरदार ऊपर चढ़कर एलियाह के आगे घुटनों के बल गिरा, और उसकी मिन्नत करके उससे कहने लगा, "ऐ नबी, मेरी जान और इन पचासों की जानें, जो तेरे खादिम हैं, तेरी निगाह में क़ीमती हों।"¹⁴~देख, आसमान से आग नाज़िल हुई और पचास सिपाहियों के पहले दो सरदारों को उनके पचासों समेत ~जला कर भसम कर दिया; इसलिए अब मेरी जान तेरी नज़र में क़ीमती हो।"

¹⁵तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने एलियाह से कहा, "उसके साथ नीचे जा, उससे न डर।" तब वह उठकर उसके साथ बादशाह के पास नीचे गया,¹⁶और उससे कहा, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'तूने जो 'अक़ून के मा'बूद बा'लज़बूब से पूछने को लोग भेजे हैं, तो क्या इसलिए कि इस्राईल में कोई खुदा नहीं है जिसकी मज़ी को तू दरियाफ़्त कर सके? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़रूर ही मरेगा।"

¹⁷इसलिए वह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो एलियाह ने कहा था, मर गया; और चूँकि उसका कोई बेटा न था, इसलिए शाह-ए-यहूदाह यहूराम-बिन-यहूसफ़त के दूसरे साल से यहूराम उसकी जगह सल्तनत करने लगा।¹⁸और अखज़ियाह के और काम जो उसने किए, क्या वह ~इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?

Chapter 2

¹और जब खुदावन्द एलियाह को शोले में आसमान पर उठा लेने को था, तो ऐसा हुआ कि एलियाह इलीशा' को साथ लेकर जिलजाल से चला,²और एलियाह ने इलीशा' से कहा, "तू ज़रा यहीं ठहर जा, इसलिए कि खुदावन्द ने मुझे बैतएल को भेजा है।" इलीशा' ने कहा, "खुदावन्द की हयात की क्रसम और तेरी जान की क्रसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वह बैतएल को चले गए।

³~और अम्बियाज़ादे जो बैतएल में थे, इलीशा' के पास आकर उससे कहने लगे कि क्या तुझे मा'लूम है कि खुदावन्द आज तेरे सिर से तेरे आक्रा को उठा लेगा?" उसने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ, तुम चुप रहो।"⁴एलियाह ने उससे कहा, "इलीशा', तू ज़रा यहीं ठहर जा, क्योंकि खुदावन्द ने मुझे यरीहू को भेजा है।" उसने कहा, "खुदावन्द की हयात की क्रसम और तेरी जान की क्रसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वह यरीहू में आए।

⁵और अम्बियाज़ादे जो यरीहू में थे, इलीशा' के पास आकर उससे कहने लगे, "क्या तुझे मा'लूम है कि खुदावन्द आज तेरे आक्रा को तेरे सिर से उठा लेगा?" उसने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ, तुम चुप रहो।"⁶और एलियाह ने उससे कहा, "तू ज़रा यहीं ठहर जा, क्योंकि खुदावन्द ने मुझ को यरदन ~भेजा है।" उसने कहा, "खुदावन्द की हयात की क्रसम और तेरी जान की क्रसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वह दोनों आगे चले।

⁷और अम्बियाज़ादों में से पचास आदमी जाकर उनके सामने दूर खड़े हो गए; और वह दोनों यरदन के किनारे खड़े हुए।⁸और एलियाह ने अपनी चादर को लिया, और उसे लपेटकर पानी पर मारा और पानी दो हिस्से होकर इधर-उधर हो गया; और वह दोनों खुशक ज़मीन पर होकर पार गए।

⁹~और जब वह पार गए तो एलियाह ने इलीशा' से कहा, "इससे पहले कि मैं तुझ से ले लिया जाऊँ, बता कि मैं तेरे लिए क्या करूँ।" इलीशा' ने कहा, "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तेरी रूह का दूना हिस्सा मुझ पर हो।"¹⁰~उसने कहा, "तू ने मुश्किल सवाल किया; तोभी अगर तू मुझे अपने से जुदा होते देखे, तो तेरे लिए ऐसा ही होगा; और अगर नहीं, तो ऐसा न होगा।"

¹¹और वह आगे चलते और बातें करते जाते थे, कि देखो, एक आग का रथ और आग के घोड़ों ने उन दोनों को जुदा कर दिया, और एलियाह शोले में आसमान पर चला गया।¹²इलीशा' ये देखकर चिल्लाया, "ऐ मेरे बाप, मेरे बाप! इस्राईल के रथ, और उसके सवार!" और उसने उसे फिर न देखा, तब उसने अपने कपड़ों को पकड़कर फाड़ डाला और दो हिस्से कर दिए।

¹³~और उसने एलियाह की चादर को भी, जो उस पर से गिर पड़ी थी उठा लिया, और उल्टा फिरा और यरदन के किनारे खड़ा हुआ।¹⁴~और उसने एलियाह की चादर को, जो उस पर से गिर पड़ी थी, लेकर पानी पर मारा और कहा, "खुदावन्द एलियाह का खुदा कहाँ है?" और जब उसने भी पानी पर मारा, तो वह इधर-उधर दो हिस्से हो गया और इलीशा' पार हुआ।

¹⁵जब उन अम्बियाज़ादों ने जो यरीहू में उसके सामने थे, उसे देखा तो वह कहने लगे, "एलियाह की रूह इलीशा' पर ठहरी हुई है।" और वह उसके इस्तक्रबाल को आए और उसके आगे ज़मीन तक झुककर उसे सिज्दा किया।¹⁶और उन्होंने उससे कहा, 'अब देख, तेरे खादिमों के साथ पचास ताक़तवर जवान हैं, ज़रा उनको जाने दे कि वह तेरे आक्रा को ढूँढ़े, कहीं ऐसा न हो कि खुदावन्द की रूह ने उसे उठाकर किसी पहाड़ पर या किसी जंगल में डाल दिया हो।" उसने कहा, "मत भेजो।"

¹⁷~जब उन्होंने उससे बहुत ज़िद की, यहाँ तक कि वह शर्मा भी गया, तो उसने कहा, 'भेज दो।" इसलिए उन्होंने पचास आदमियों को भेजा, और उन्होंने तीन दिन तक ढूँढ़ा पर उसे न पाया।¹⁸और वह अभी यरीहू में ठहरा हुआ था; जब वह उसके पास लौटे, तब उसने उनसे कहा, "क्या मैंने तुमसे न कहा था कि न जाओ?"

¹⁹~फिर उस शहर के लोगों ने इलीशा' से कहा, "ज़रा देख, ये शहर क्या अच्छे मौक़े' पर है, जैसा हमारा खुदावन्द खुद देखता है; लेकिन पानी खराब और ज़मीन बंजर हैं।"²⁰उसने कहा, "मुझे एक नया प्याला ला दो, और उसमें नमक डाल दो।" वह उसे उसके पास ले आए।

²¹~और वह निकल कर पानी के चश्मे पर गया, और वह नमक उसमें डाल कर कहने लगा, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैंने इस पानी को ठीक कर दिया है, अब आगे को इससे मौत या बंजरपन न होगा।"²²~देखो इलीशा' के कलाम के मुताबिक़ जो उसने फ़रमाया, वह पानी आज तक ठीक है

²³वहाँ से वह बैतएल को चला, और जब वह रास्ते में जा रहा था तो उस शहर के छोटे लड़के निकले, और उसे चिढ़ाकर कहने लगे, 'चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले: चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले।"²⁴और उसने अपने पीछे नज़र की, और उनको देखा और खुदावन्द का नाम लेकर उन पर ला'नत की; इसलिए जंगल में से दो रीछनियाँ निकली, और उन्होंने उनमें से बयालीस बच्चे फाड़ डाले।²⁵वहाँ से वह कर्मिल पहाड़ को गया, फिर वहाँ से सामरिया को लौट आया।

Chapter 3

¹और शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त के अठारवें बरस से अखी'अब का बेटा यहूराम सामरिया में इस्राईल पर बादशाहत करने लगा, और उसने बारह साल बादशाहत की।²और उसने खुदावन्द के खिलाफ़ गुनाह किया; लेकिन अपने बाप और अपनी माँ की तरह नहीं, क्योंकि उसने बा'ल के उस सुतून को जो उसके बाप ने बनाया था दूर कर दिया।³तोभी वह नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया था लिपटा रहा, और उनसे अपने आपको अलग न किया।

⁴मोआब का बादशाह मीसा बहुत भेड़ बकरियाँ रखता था, और इस्राईल के बादशाह को एक लाख बरौ और एक लाख मेंढों की ऊन देता था।⁵~लेकिन जब अखीअब मर गया, तो मोआब का बादशाह इस्राईल के बादशाह से बागी हो गया।⁶~उस वक़्त यहूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर सारे इस्राईल का जाएज़ा लिया।

⁷और उसने जाकर यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त से पुछवा भेजा, 'मोआब का बादशाह मुझ से बागी हो गया है; इसलिए क्या तू मोआब से लड़ने के लिए मेरे साथ चलेगा?' उसने जवाब दिया, 'मैं चलूँगा; क्योंकि जैसा मैं हूँ। वैसा ही तू है, और जैसे मेरे लोग वैसे ही तेरे लोग, और जैसे मेरे घोड़े वैसे ही तेरे घोड़े हैं।' ⁸~तब उसने पूछा, 'हम किस रास्ते से जाएँ?' उसने जवाब दिया, 'अदोम के रास्ते से।'

⁹चुनाँचे इस्राईल के बादशाह और यहूदाह के बादशाह और अदोम के बादशाह निकले; और उन्होंने सात दिन की मन्ज़िल का चक्कर काटा, और उनके लश्कर और चौपायों के लिए, जो पीछे पीछे आते थे, कहीं पानी न था।¹⁰और इस्राईल के बादशाह ने कहा, 'अफ़सोस कि खुदावन्द ने इन तीन बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के बादशाह के हवाले कर दे।'

¹¹~लेकिन यहूसफ़त ने कहा, 'क्या खुदावन्द के नबियों में से कोई यहाँ नहीं है, ताकि उसके वसीले से हम खुदावन्द की मज़ी मा'लूम करें?' और इस्राईल के बादशाह के ख़ादिमों में से एक ने जवाब दिया, 'इलीशा'-बिन-साफ़त यहाँ है, जो एलियाह के हाथ पर पानी डालता था।'¹²यहूसफ़त ने कहा, 'खुदावन्द का कलाम उसके साथ है।' तब इस्राईल के बादशाह और यहूसफ़त और अदोम के बादशाह उसके पास गए।

¹³तब इलीशा ने इस्राईल के बादशाह से कहा, 'मुझ को तुझ से क्या काम? तू अपने बाप के नबियों और अपनी माँ के नबियों के पास जा।' पर इस्राईल के बादशाह ने उससे कहा, 'नहीं, नहीं, क्योंकि खुदावन्द ने इन तीनों बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के हवाले कर दे।'¹⁴इलीशा ने कहा, 'रब्ब-उल-अफ़वाज की हयात की कसम, जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, अगर मुझे यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त की हुजूरी के नज़दीक न होता, तो मैं तेरी तरफ़ नज़र भी न करता और न तुझे देखता।

¹⁵लेकिन खैर, किसी बजाने वाले को मेरे पास लाओ।' और ऐसा हुआ कि जब उस बजाने वाले ने बजाया, तो खुदावन्द का हाथ उस पर ठहरा।¹⁶~तब उसने कहा, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'इस जंगल में खन्दक ही खन्दक खोद डालो।'¹⁷~क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'तुम न हवा आती देखोगे और न पानी आते देखोगे, तोभी ये वादी पानी से भर जाएगी, और तुम भी पियोगे और तुम्हारे मवेशी और तुम्हारे जानवर भी।'

¹⁸और ये खुदावन्द के लिए एक हल्की सी बात है; वह मोआबियों को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा।¹⁹और तुम हर फ़सीलदार शहर और उम्दा शहर ~क्रब्ज़ा लोगे, और हर अच्छे दरख़्त को काट डालोगे, और पानी के सब चश्मों को भर दोगे, और हर अच्छे खेत को पत्थरों से ख़राब कर दोगे।'

²⁰~इसलिए सुबह को कुर्बानी पेश करने के वक़्त ऐसा हुआ, कि अदोम की राह से पानी बहता आया और वह मुल्क पानी से भर गया।

²¹जब सब मोआबियों ने ये सुना कि बादशाहों ने उनसे लड़ने के लिए चढ़ाई की है, तो वह सब जो हथियार बाँधने के क़ाबिल थे, और 'उम्र दराज़ भी, इकट्ठे होकर सरहद पर खड़े हो गए;²²और वह सुबह सवेरे उठे और सूरज पानी पर चमक रहा था, और मोआबियों को वह पानी जो उनके सामने था, खून की तरह सुर्ख़ दिखाई दिया।²³तब वह कहने लगे, 'ये तो खून है; वह बादशाह यक़ीनन हलाक हो गए हैं, और उन्होंने आपस में एक दूसरे को मार दिया है। इसलिए अब ऐ मोआब, लूट को चल।'

²⁴~जब वह इस्राईल की लश्करगाह में आए, तो इस्राईलियों ने उठकर मोआबियों को ऐसा मारा कि वह उनके आगे से भागे; पर वह आगे बढ़ कर मोआबियों को मारते मारते उनके मुल्क में घुस गए।²⁵~और उन्होंने शहरों को गिरा दिया, और ज़मीन के हर अच्छे खित्ते पर सभी ने एक एक पत्थर डालकर उसे भर दिया, और उन्होंने पानी के सब चश्में बन्द कर दिए, और सब अच्छे दरख़्त काट डाले, सिर्फ़ हरासत के पहाड़ ही के पत्थरों को बाक़ी छोड़ा, पर गोफ़न चलाने वालों ने उसको भी जा घेराऔर उसे मारा।

²⁶~जब मोआब के बादशाह ने देखा कि जंग उसके लिए निहायत सख़्त हो गई, तो उसने सात सौ तलवार वाले मर्द अपने साथ लिए, ताकि सफ़ चीर कर अदोम के बादशाह तक जा पहुँचें; पर वह ऐसा न कर सके।²⁷तब उसने अपने पहलूँठे बेटे को लिया, जो उसकी जगह बादशाह होता, और उसे दीवार पर सोखतनी कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूँ इस्राईल पर बड़ा ग़ज़ब हुआ; तब वह उसके पास से हट गए और अपने मुल्क को लौट आए।

Chapter 4

¹और अम्बियाज़ादों की बीवियों में से एक 'औरत ने इलीशा' से फ़रियाद की और कहने लगी, "तेरा ख़ादिम मेरा शौहर मर गया है, और तू जानता है कि तेरा ख़ादिम ख़ुदावन्द से डरता था; इसलिए अब क़र्ज़ देने वाला आया है कि मेरे दोनों बेटों को ले जाए ताकि वह गुलाम बनें।"²~इलीशा' ने उससे कहा, "मैं तेरे लिए क्या करूँ? मुझे बता, तेरे पास घर में क्या है?" उसने कहा, "तेरी ख़ादिमा के पास घर में एक प्याला तेल के 'अलावा कुछ भी नहीं।"

³~तब उसने कहा, "तू जा, और बाहर से अपने सब पड़ोसियों से बर्तन उजरत पर ले, वह बर्तन ख़ाली हों, और थोड़े बर्तन न लेना।"⁴~फिर तू अपने बेटों को साथ लेकर अन्दर जाना और पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लेना, और उन सब बर्तनों में तेल उँडेलना, और जो भर जाए उसे उठा कर अलग रखना।"

⁵~तब वह उसके पास से गई, और उसने अपने बेटों को अन्दर साथ लेकर दरवाज़ा बन्द कर लिया; और वह उसके पास लाते जाते थे और वह उँडेलती जाती थी।⁶~जब वह बर्तन भर गए तो उसने अपने बेटे से कहा, "मेरे पास एक और बर्तन ला।" उसने उससे कहा, "और तो कोई बर्तन रहा नहीं।" तब तेल बन्द हो गया।

⁷~तब उसने आकर मर्द-ए-ख़ुदा को बताया। उसने कहा, 'जा, तेल बेच, और क़र्ज़ अदा कर, और जो बाक़ी रहे उससे तू और तेरे बेटे गुज़ारा ~करें।"

⁸एक रोज़ ऐसा हुआ कि इलीशा' शूनीम को गया, वहाँ एक दौलतमन्द 'औरत थी; और उसने उसे रोटी खाने पर मजबूर किया। फिर तो जब कभी वह उधर से गुज़रता, रोटी खाने के लिए वहीं चला जाता था।⁹इसलिए उसने अपने शौहर से कहा, "देख, मुझे मा'लूम होता है कि ये मर्द-ए-ख़ुदा, जो अकसर हमारी तरफ़ आता है, मुक़द्दस है।

¹⁰हम उसके लिए एक छोटी सी कोठरी दीवार पर बना दें, और उसके लिए एक पलंग और मेज़ और चौकी और चराग़दान लगा दें, फिर जब कभी वह हमारे पास आए तो वहीं ठहरेगा।"¹¹~फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वह उधर गया और उस कोठरी में जाकर वहीं सोया।

¹²~फिर उसने अपने ख़ादिम जेहाज़ी से कहा, "इस शूनीमी 'औरत को बुला ले।" उसने उसे बुला लिया और वह उसके सामने खड़ी हुई।¹³~फिर उसने अपने ख़ादिम से कहा, "तू उससे पूछ कि तूने जो हमारे लिए इस क़दर फ़िक्रें कीं, तो तेरे लिए क्या किया जाए? क्या तू चाहती है कि बादशाह से, या फ़ौज के सरदार से तेरी सिफ़ारिश की जाए?" उसने जवाब दिया, "मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूँ।"

¹⁴~फिर उसने कहा, "उसके लिए क्या किया जाए?" तब जेहाज़ी ने जवाब दिया, "सच उसके कोई बेटा नहीं, और उसका शौहर बुढ़ा है।"¹⁵~तब उसने कहा, "उसे बुला ले।" और जब उसने उसे बुलाया, तो वह दरवाज़े पर खड़ी हुई।¹⁶तब उसने कहा, "मौसम-ए-बहार में, वक़्त पूरा होने पर तेरी गोद में बेटा होगा।" उसने कहा, "नहीं, ऐ मेरे मालिक! ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, अपनी ख़ादिमा से झूठ न कह।"

¹⁷~फिर वह 'औरत हामिला हुई और जैसा इलीशा' ने उससे कहा था, मौसम-ए-बहार में वक़्त पूरा होने पर उसके बेटा हुआ।¹⁸जब वह लड़का बढ़ा, तो एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने बाप के पास खेत काटनेवालों में चला गया।¹⁹और उसने अपने बाप से कहा, "हाय मेरा सिर, हाय मेरा सिर!" उसने अपने ख़ादिम से कहा, 'उसे उसकी माँ के पास ले जा।"²⁰जब उसने उसे लेकर उसकी माँ के पास पहुँचा दिया, तो वह उसके घुटनों पर दोपहर तक बैठा रहा, इसके बा'द मर गया।

²¹तब उसकी माँ ने ऊपर जाकर उसे मर्द-ए-ख़ुदा के पलंग पर लिटा दिया, और दरवाज़ा बन्द करके बाहर गई।²²~और उसने अपने शौहर से पुकार कर कहा, "जल्द जवानों में से एक को, और गर्थों में से एक को मेरे लिए भेज दे, ताकि मैं मर्द-ए-ख़ुदा के पास दौड़ जाऊँ और फिर लौट आऊँ।"

²³उसने कहा, "आज तू उसके पास क्यों जाना चाहती है? आज न तो नया चाँद है न सब्त्।" उसने जवाब दिया, "अच्छा ही होगा।"²⁴और उसने गधे पर ज़ीन कसकर अपने ख़ादिम से कहा, "चल, आगे बढ़; और सवारी चलाने में सुस्ती न कर, जब तक मैं तुझ से न कहूँ।"

²⁵तब वह चली और वह कर्मिल पहाड़ को मर्द-ए-ख़ुदा के पास गई। उस मर्द-ए-ख़ुदा ने दूर से उसे देखकर अपने ख़ादिम जेहाज़ी से कहा, "देख, उधर वह शूनीमी 'औरत है।"²⁶अब ज़रा उसके इस्तक्रबाल को दौड़ जा, और उससे पूछ, 'क्या तू ख़ैरियत से है? तेरा शौहर ख़ैरियत से, बच्चा ख़ैरियत से है?' " उसने जवाब दिया, "ठीक नहीं है।"

²⁷~और जब वह उस पहाड़ पर मर्द-ए-ख़ुदा के पास आई, तो उसके पैर पकड़ लिए, और जेहाज़ी उसे हटाने के लिए नज़दीक आया, पर मर्द-ए-ख़ुदा ने कहा, "उसे छोड़ दे, क्योंकि उसका दिल परेशान है, और ख़ुदावन्द ने ये बात मुझ से छिपाई और मुझे न बताई।"

²⁸और वह कहने लगी, "क्या मैंने अपने मालिक से बेटे का सवाल किया था? क्या मैंने न कहा था, 'मुझे धोका न दे'?"²⁹तब उसने जेहाज़ी से कहा, "कमर बाँध, और मेरी लाठी हाथ में लेकर अपना रास्ता ले; अगर कोई तुझे रास्ते में मिले तो उसे सलाम न करना, और अगर कोई तुझे सलाम करे तो जवाब न देना; और मेरी लाठी उस लड़के के मुँह पर रख देना।"

³⁰~उस लड़के की माँ ने कहा, "ख़ुदावन्द की हयात की क्रसम और तेरी जान की क्रसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी।" तब वह उठ कर उसके पीछे-पीछे चला।³¹~और जेहाज़ी ने उनसे पहले आकर लाठी को उस लड़के के मुँह पर रखा; पर न तो कुछ आवाज़ हुई, न सुना। इसलिए वह उससे मिलने को लौटा, और उसे बताया, "लड़का नहीं जागा।"

³²~जब इलीशा' उस घर में आया, तो देखो, वह लड़का मरा हुआ उसके पलंग पर पड़ा था।³³~तब वह अकेला अन्दर गया, और दरवाज़ा बन्द करके ख़ुदावन्द से दु'आ की।³⁴और ऊपर चढ़कर उस बच्चे पर लेट गया; और उसके मुँह पर अपना मुँह, और उसकी आँखों पर अपनी आँखें, और उसके हाथों पर अपने हाथ रख लिए, और उसके ऊपर लेट गया; तब उस बच्चे का जिस्म गर्म होने लगा।

³⁵~फिर वह उठकर उस घर में एक बार टहला, और ऊपर चढ़कर उस बच्चे के ऊपर लेट गया; और वह बच्चा सात बार छींका और बच्चे ने आँखें खोल दीं।³⁶तब उसने जेहाज़ी को बुला कर कहा, "उस शूनीमी 'औरत को बुला ले।" तब उसने उसे बुलाया, और जब वह उसके पास आई, तो उसने उससे कहा, "अपने बेटे को उठा ले।"³⁷~तब वह अन्दर जाकर उसके क़दमों पर गिरी और ज़मीन पर सिज्दे में हो गई; फिर अपने बेटे को उठा कर बाहर चली गई।

³⁸और इलीशा' फिर जिलजाल में आया, और मुल्क में काल था, और अम्बियाज़ादे उसके सामने बैठे हुए थे। और उसने अपने खादिम से कहा, "बड़ी देग चढ़ा दे, और इन अम्बियाज़ादों के लिए लप्सी पका।"³⁹और उनमें से एक खेत में गया कि कुछ सब्ज़ी चुन लाए। तब उसे कोई जंगली लता मिल गई। उसने उसमें से इन्द्रायन तोड़कर दामन भर लिया और लौटा, और उनको काटकर लप्सी की देग में डाल दिया, क्योंकि वह उनको पहचानते न थे।

⁴⁰चुनाँचे उन्होंने उन मर्दों के खाने के लिए उसमें से ऊँडेला। और ऐसा हुआ कि जब वह उस लप्सी में से खाने लगे, तो चिल्ला उठे और कहा, "ऐ मर्द-ए-खुदा, देग में मौत है!" और वह उसमें से खा न सके।⁴¹लेकिन उसने कहा, "आटा लाओ।" और उसने उस देग में डाल दिया और कहा, "उन लोगों के लिए उँडेलो, ताकि वह खाएँ।" फिर देग में कोई मुज़िर चीज़ बाक़ी न रही।

⁴²बाल सलीसा से एक शख्स आया, और पहले फ़सल की रोटियाँ, या'नी जौ के बीस गिर्दे और अनाज की हरी-हरी बाले मर्द ए-खुदा के पास लाया, उसने कहा, "इन लोगों को दे दे, ताकि वह खाएँ।"⁴³उसके खादिम ने कहा, "क्या मैं इतने ही को सौ आदमियों के सामने रख दूँ?" फिर उसने फिर कहा, "लोगों को दे दे, ताकि वह खाएँ; क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'वह खाएँगे और उसमें से कुछ छोड़ भी देंगे।' "⁴⁴तब उसने उसे उनके आगे रखखा और उन्होंने खाया; और जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया था, उसमें से कुछ छोड़ भी दिया।

Chapter 5

¹अराम के बादशाह के लश्कर का सरदार ना'मान, अपने आक्रा के नज़दीक मु'अज़्ज़िज़-इज़्ज़तदार शख्स था; क्योंकि खुदावन्द ने उसके वसीले से अराम को फ़तह बख़्शी थी। वह ज़बरदस्त सूमा भी था, लेकिन कोढ़ी था।² और अरामी दल बाँधकर निकले थे, और इस्राईल के मुल्क में से एक छोटी लड़की को कैद करके ले आए थे; वह ना'मान की बीवी की खादमा थी।

³उसने अपनी बीबी से कहा, "काश मेरा आक्रा उस नबी के यहाँ होता, जो सामरिया में है! तो वह उसे उसके कोढ़ से शिफ़ा दे देता।"⁴ तो किसी ने अन्दर जाकर अपने मालिक से कहा, "वह लड़की जो इस्राईल के मुल्क की है, ऐसा-ऐसा कहती है।"

⁵तब अराम के बादशाह ने कहा, "तू जा, और मैं इस्राईल के बादशाह को ख़त भेजूँगा।" तब वह रवाना हुआ, और दस किन्तार चाँदी और छः हज़ार मिस्काल सोना और दस जोड़े कपड़े अपने साथ ले लिए।⁶ और वह उस ख़त को इस्राईल के बादशाह के पास लाया जिसका मज़मून ये था, "ये ख़त जब तुझको मिले, तो जान लेना कि मैंने अपने खादिम ना'मान को तेरे पास भेजा है, ताकि तू उसके कोढ़ से उसे शिफ़ा दे।"

⁷जब इस्राईल के बादशाह ने उस ख़त को पढ़ा, तो अपने कपड़े फाड़कर कहा, "क्या मैं खुदा हूँ कि मारूँ और जिलाऊँ, जो ये शख्स एक आदमी को मेरे पास भेजता है कि उसको कोढ़ से शिफ़ा दूँ? इसलिए अब ज़रा ग़ौर करो, देखो, कि वह किस तरह मुझ से झगड़ने का बहाना ढूँढता है।"

⁸जब मर्द-ए-ख़ुदा इलीशा ने सुना कि इस्राईल के बादशाह ने अपने कपड़े फाड़े, तो बादशाह को कहला भेजा, "तूने अपने कपड़े क्यों फाड़े? अब उसे मेरे पास आने दे, और वह जान लेगा कि इस्राईल में एक नबी है।"⁹ तब ना'मान अपने घोड़ों और रथों के साथ आया, और इलीशा के घर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ,¹⁰ और इलीशा ने एक क्रासिद के ज़रिए कहला भेजा, 'जा और यरदन में सात बार गोता मार, तो तेरा जिस्म फिर बहाल हो जाएगा और तू पाक साफ़ होगा।' 1

¹¹पर ना'मान नाराज़ होकर चला गया और कहने लगा, "मुझे यक़ीन था कि वह निकल कर ज़रूर मेरे पास आएगा, और खड़ा होकर खुदावन्द अपने खुदा से दु'आ करेगा, और उस जगह के ऊपर अपना हाथ इधर-उधर हिला कर कोढ़ी को शिफ़ा देगा।"¹² क्या दमिश्क के दरिया, अबाना और फ़रफ़र, इस्राईल की सब नदियों से बढ़ कर नहीं हैं? क्या मैं उनमें नहाकर पाक साफ़ नहीं हो सकता?" इसलिए वह लौटा और बड़े गुस्से में चला गया।

¹³तब उसके मुलाज़िम पास आकर उससे यूँ कहने लगे, "ऐ हमारे बाप, अगर वह नबी कोई बड़ा काम करने का हुक्म तुझे देता, तो क्या तू उसे न करता? इसलिए जब वह तुझ से कहता है कि नहा ले और पाक साफ़ हो जा, तो कितना ज़्यादा इसे मानना चाहिए?"¹⁴ तब उसने उतरकर नबी के कहने के मुताबिक़ यरदन में सात गोते लगाए, और उसका जिस्म छोटे बच्चे के जिस्म की तरह हो गया और वह पाक साफ़ हुआ।

¹⁵फिर वह अपनी जिली के सब लोगों के साथ नबी के पास लौटा, और उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, "देख, अब मैंने जान लिया कि इस्राईल को छोड़ और कहीं इस ज़मीन पर कोई खुदा नहीं। इसलिए अब करम फ़रमाकर अपने खादिम का तोहफ़ा कुबूल कर।"¹⁶ लेकिन उसने जवाब दिया, "खुदावन्द की हयात की क़सम जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।" और उसने उससे बहुत मजबूर किया कि ले, पर उसने इन्कार किया।

¹⁷तब ना'मान ने कहा, "अच्छा, तो मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तेरे खादिम को दो खच्चरों का बोझ मिट्टी दी जाए" क्योंकि तेरा खादिम अब से आगे खुदावन्द के सिवा किसी ग़ैर-मा'बूद के सामने न तो सोख़तनी कुर्बानी न ज़बीहा पेश करेगा।¹⁸ तब इतनी बात में खुदावन्द तेरे खादिम को मु'आफ़ करे, कि जब मेरा आक्रा 'इबादत करने को रिम्मोन के बुतख़ाने में जाए और वह मेरे हाथ का सहारा ले, और मैं रिम्मोन के बुतख़ाने में सिज्दे में जाऊँ; तो जब मैं रिम्मोन के बुतख़ाने में सिज्दे में हो जाऊँ, तो खुदावन्द इस बात में तेरे खादिम को मु'आफ़ करे।"¹⁹ उसने उससे कहा, 'सलामती जा।' तब वह उससे रुख़सत होकर थोड़ी दूर निकल गया।

²⁰लेकिन उस नबी इलीशा के खादिम जेहाज़ी ने सोचा, "मेरे आक्रा ने अरामी ना'मान को यूँ ही जाने दिया कि जो कुछ वह लाया था उससे न लिया; इसलिए खुदावन्द की हयात की क़सम, मैं उसके पीछे दौड़ जाऊँगा और उससे कुछ न कुछ लूँगा।"²¹ तब जेहाज़ी ना'मान के पीछे चला। जब ना'मान ने देखा, कि कोई उसके पीछे दौड़ा आ रहा है, तो वह उससे मिलने को रथ पर से उतरा और कहा, "खैर तो है?"²² उसने कहा, "सब खैर है! मेरे मालिक ने मुझे ये कहने को भेजा है कि देख, अम्बियाज़ादों में से अभी दो जवान इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क से मेरे पास आ गए हैं; इसलिए ज़रा एक किन्तार चाँदी, और दो जोड़े कपड़े उनके लिए दे दे।"

²³ना'मान ने कहा, "खुशी से दो किन्तार ले।" और वह उससे बज़िद हुआ, और उसने दो किन्तार चाँदी दो थैलियों में बाँधी और दो जोड़े कपड़ों के साथ उनको अपने दो नौकरों पर लादा, और वह उनको लेकर उसके आगे-आगे चले।²⁴ और उसने टीले पर पहुँचकर उनके हाथ से उनको ले लिया और घर में रख दिया, और उन मदों को रुख़सत किया, तब वह चले गए।²⁵ लेकिन खुद अन्दर जाकर अपने आक्रा के सामने खड़ा हो गया। इलीशा ने उससे कहा, "जेहाज़ी, तू कहाँ से आ रहा है?" उसने कहा, "तेरा खादिम तो कहीं नहीं गया था।"

²⁶उसने उससे कहा, "क्या मेरा दिल उस वक़्त तेरे साथ न था, जब वह शख्स तुझ से मिलने को अपने रथ पर से लौटा? क्या रुपये लेने, और पोशाक, और जैतून के बाग़ों और ताकिस्तानों और भेड़ों और गुलामों, और लौंडियों के लेने का ये वक़्त है?"²⁷ इसलिए ना'मान का कोढ़ तुझे और तेरी नस्ल को हमेशा लगा रहेगा। इसलिए~~वह बर्फ़ की तरह~सफ़ेद कोढ़ी होकर उसके सामने से चला गया।

Chapter 6

¹और अम्बियाज़ादों ने इलीशा' से कहा, "देख, ये जगह जहाँ हम तेरे सामने रहते हैं, हमारे लिए छोटी है;²~इसलिए हम को ज़रा यरदन को जाने दे कि हम वहाँ से एक एक कड़ी लेकर आएँ और अपने रहने के लिए एक घर बना सकें।" उसने जवाब दिया, "जाओ।"³तब एक ने कहा, "मेहरबानी से अपने खादिमों के साथ चल।" उसने कहा, "मैं चलींगा।"

⁴चुनाँचे वह उनके साथ गया, और जब वह यरदन पर पहुँचे तो लकड़ी काटने लगे।⁵~लेकिन एक की कुल्हाड़ी का लोहा, जब वह कड़ी काट रहा था, पानी में गिर गया। तब वह चिल्ला उठा, और कहने लगा, 'हाय, मेरे मालिक! यह तो माँगा हुआ था।"

⁶~नबी ने कहा, "वह किस जगह गिरा?" उसने उसे वह जगह दिखाई। तब उसने एक छड़ी काट कर उस जगह डाल दी, और लोहा तैरने लगा।⁷~फिर उसने कहा, "अपने लिए उठा ले।" तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया।

⁸अराम का बादशाह, इस्राईल के बादशाह से लड़ रहा था; और उसने अपने खादिमों से मशवरा किया कि मैं इन इन जगह पर डेरा डालूँगा।"⁹~इसलिए मर्द-ए-खुदा ने इस्राईल के बादशाह से कहला भेजा कि खबरदार तू उन जगहों से मत गुज़रना, क्योंकि वहाँ अरामी आने को हैं।"

¹⁰और इस्राईल के बादशाह ने उस जगह, जिसकी खबर मर्द-ए-खुदा ने दी थी और उसको आगाह कर दिया था, आदमी भेजे और वहाँ से अपने को बचाया, और यह सिर्फ़ एक या दो बार ही नहीं।¹¹इस बात की वजह से अराम के बादशाह का दिल निहायत बेचैन हुआ; और उसने अपने खादिमों को बुलाकर उनसे कहा, "क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि हम में से कौन इस्राईल के बादशाह की तरफ़ है?"

¹²~तब उसके खादिमों में से एक ने कहा, "नहीं, ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! बल्कि इलीशा', जो इस्राईल में नबी है, तेरी उन बातों को जो तू अपनी आरामगाह में कहता है, इस्राईल के बादशाह को बता देता है।"¹³~उसने कहा, "जाकर देखो वह कहाँ है, ताकि मैं उसे पकड़वाऊँ।" और उसे यह बताया गया, "वह दूतन में है।"

¹⁴तब उसने वहाँ घोड़ों और रथों, और एक बड़े लश्कर को रवाना किया; तब उन्होंने रातों रात आकर उस शहर को घेर लिया।¹⁵जब उस मर्द-ए-खुदा का खादिम सुबह को उठ कर बाहर निकला तो देखा, कि एक लश्कर घोड़ों के साथ और रथों के शहर के चारों तरफ़ है। तब उस खादिम ने जाकर उससे कहा, 'हाय! ऐ मेरे मालिक, हम क्या करें?'¹⁶~उसने जवाब दिया, "खौफ़ न कर, क्योंकि हमारे साथ वाले उनके साथ वालों से ज़्यादा हैं।"

¹⁷और इलीशा' ने दु'आ की और कहा, "ऐ खुदावन्द, उसकी आँखें खोल दे ताकि वह देख सके।" तब खुदावन्द ने उस जवान की आँखें खोल दीं, और उसने जो निगाह की तो देखा कि इलीशा' के चारों तरफ़ का पहाड़ आग के घोड़ों और रथों से भरा है।¹⁸और जब वह उसकी तरफ़ आने लगे, तो इलीशा' ने खुदावन्द से दु'आ की और कहा, "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, इन लोगों को अन्धा कर दे।" इसलिए उसने जैसा इलीशा' ने कहा था, उनको अन्धा कर दिया।¹⁹~फिर इलीशा' ने उनसे कहा, "यह वह रास्ता नहीं और न ये वह शहर है, तुम मेरे पीछे चले आओ, और मैं तुम को उस शख्स के पास पहुँचा दूँगा जिसकी तुम तलाश करते हो।" और वह उनको सामरिया को ले गया।

²⁰जब वह सामरिया में पहुँचे तो इलीशा' ने कहा, "ऐ खुदावन्द, इन लोगों की आँखें खोल दे, ताकि वह देख सके।" तब खुदावन्द ने उनकी आँखें खोल दीं, उन्होंने जो निगाह की, तो क्या देखा कि सामरिया के अन्दर हैं।²¹और इस्राईल के बादशाह ने उनको देखकर इलीशा' से कहा, "ऐ मेरे बाप, क्या मैं उनको मार लूँ? मैं उनको मार लूँ?"

²²~उसने जवाब दिया, "तू उनको न मार। क्या तू उनको मार दिया करता है, जिनको तू अपनी तलवार और कमान से क्रैद कर लेता है? तू उनके आगे रोटी और पानी रख, ताकि वह खाएँ-पिएँ और अपने मालिक के पास जाएँ।"²³~तब उसने उनके लिए बहुत सा खाना तैयार किया; और जब वह खा पी चुके तो उसने उनको रुख्सत किया, और वह अपने मालिक के पास चले गए। और अराम के गिरोह इस्राईल के मुल्क में फिर न आए।

²⁴~इसके बाद ऐसा हुआ कि बिनहदद, अराम, का बादशाह अपनी सब फ़ौज इकट्ठी करके चढ़ आया और सामरिया का घेरा कर लिया।²⁵और सामरिया में बड़ा काल था, और वह उसे घेरे रहे, यहाँ तक कि गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में और कबूतर की बीट का एक चौथाई पैमाना' चाँदी के पाँच सिक्कों में बिकने लगा।²⁶जब इस्राईल का बादशाह दीवार पर जा रहा था, तो एक 'औरत ने उसकी दुहाई दी और कहा, "ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह, मदद कर।"

²⁷उसने कहा, "अगर खुदावन्द ही तेरी मदद न करे, तो मैं कहाँ से तेरी मदद करूँ? क्या खलिहान से, या अंगूर के कोल्हू से?"²⁸~फिर बादशाह ने उससे कहा, "तुझे क्या हुआ?" उसने जवाब दिया, "इस 'औरत ने मुझसे कहा, 'अपना बेटा दे दे, ताकि हम आज के दिन उसे खाएँ; और मेरा बेटा जो है, फिर उसे हम कल खाएँगे।"²⁹तब मेरे बेटे को हम ने पकाया और उसे खा लिया, और दूसरे दिन मैंने उससे कहा, 'अपना बेटा ला, ताकि हम उसे खाएँ;" लेकिन उसने अपना बेटा छिपा दिया है।"

³⁰बादशाह ने उस 'औरत की बातें सुनकर अपने कपड़े फाड़े; उस वक़्त वह दीवार पर चला जाता था, और लोगों ने देखा कि अन्दर उसके तन पर टाट है।³¹~और उसने कहा, "अगर आज साफ़त के बेटे इलीशा' का सिर उसके तन पर रह जाए, तो खुदावन्द मुझसे ऐसा बल्कि इससे ज़्यादा करे।"

³²~लेकिन इलीशा' अपने घर में बैठा रहा, और बुजुर्ग लोग उसके साथ बैठे थे, और बादशाह ने अपने सामने से एक शख्स को भेजा, पर इससे पहले कि वह क़ासिद उसके पास आए, उसने बुजुर्गों से कहा, "तुम देखते हो कि उस क़ातिल के बेटे ने मेरा सिर उड़ा देने को एक आदमी भेजा है? इसलिए देखो, जब वह क़ासिद आए, तो दरवाज़ा बन्द कर लेना~और मज़बूती से दरवाज़े को उसके सामने पकड़े रहना। क्या उसके पीछे-पीछे उसके मालिक के पैरों की आहट नहीं?"³³~और वह उनसे अभी बातें कर ही रहा था कि देखो, कि वह क़ासिद उसके पास आ पहुँचा, और उसने कहा, "देखो, ये बला खुदावन्द की तरफ़ से है, अब आगे मैं खुदावन्द का रास्ता क्यों देखूँ?"

Chapter 7

¹तब इलीशा ने कहा, "तुम खुदावन्द की बात सुनो, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि 'कल इसी वक़्त के करीब सामरिया के फाटक पर एक मिस्काल में एक पैमाना' मैदा, और एक ही मिस्काल में दो पैमाना जौ बिकेगा।"²~तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर बादशाह भरोसा करता था, मर्द-ए-खुदा को जवाब दिया, "देख, अगर खुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ये बात हो सकती है उसने कहा, सुन, तू इसे अपनी आँखों से देखेगा, लेकिन तू उसमें से खाने न पाएगा।"

³और उस जगह जहाँ से फाटक में दाखिल होते थे, चार कोढ़ी थे: उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हम यहाँ बैठे-बैठे क्यों मरें? अगर हम कहें, 'शहर के अन्दर जाएँगे, तो शहर में क्रहत ~है और हम वहाँ मर जाएँगे; और अगर यहीं बैठे रहें, तोभी मरेंगे। इसलिए आओ, हम अरामी लश्कर में जाएँ, अगर वह हमको जीता छोड़ें तो हम जीते रहेंगे; और अगर वह हम को मार डालें, तो हम को मरना ही तो है।"

⁵~फिर वह शाम के वक़्त उठ कर अरामियों के लश्करगाह को गए, और जब वह अरामियों के लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे तो देखा, कि वहाँ कोई आदमी नहीं है।⁶क्योंकि खुदावन्द ने रथों की आवाज़ और घोड़ों की आवाज़ बल्कि एक बड़ी फ़ौज की आवाज़ अरामियों के लश्कर को सुनवाई, इसलिए वह आपस में कहने लगे, "देखो, इस्राईल के बादशाह ने हितियों के बादशाहों और मिस्रियों के बादशाहों को हमारे खिलाफ़ मज़दूरी पर बुलाया है, ताकि वह हम पर चढ़ आएँ।"

⁷इसलिए वह उठे, और शाम को भाग निकले; और अपने खेमे, और अपने घोड़े, और अपने गधे, बल्कि सारी लश्करगाह जैसी की तैसी छोड़ दी और अपनी जान लेकर भागे।⁸~चुनाँचे जब ये कोढ़ी लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे, तो एक खेमे में जाकर उन्होंने खाया पिया, और चाँदी और सोना और लिबास वहाँ से ले जाकर छिपा दिया, और लौट कर आए और दूसरे खेमे में दाखिल होकर वहाँ से भी ले गए और जाकर छिपा दिया।

⁹फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, "हम अच्छा नहीं करते; आज का दिन खुशख़बरी का दिन है, और हम ख़ामोश हैं; अगर हम सुबह की रोशनी तक ठहरे रहे तो सज़ा पाएँगे। अब आओ, हम जाकर बादशाह के घराने को ख़बर दें।"¹⁰~फिर उन्होंने आकर शहर के दरबान को बुलाया और उनको बताया, "हम अरामियों की लश्करगाह में गए, और देखो, वहाँ न आदमी है न आदमी की आवाज़, सिर्फ़ घोड़े बन्धे हुए, और गधे बन्धे हुए, और खेमे जैसे थे वैसे ही हैं।"¹¹और दरबानों ने पुकार कर बादशाह के महल में ख़बर दी।

¹²तब बादशाह रात ही को उठा, और अपने खादिमों से कहा कि "मैं तुम को बताता हूँ, अरामियों ने हम से क्या किया है? वह खूब जानते हैं कि हम भूके हैं; इसलिए वह मैदान में छिपने के लिए लश्करगाह से निकल गए हैं, और सोचा है कि जब हम शहर से निकलें तो वह हम को ज़िन्दा पकड़ लें, और शहर में दाखिल हो जाएँ।"¹³~और उसके खादिमों में से एक ने जवाब दिया, "ज़रा कोई उन बचे हुए घोड़ों में से जो शहर में बाक़ी हैं पाँच घोड़े ले (वह तो इस्राईल की सारी जमा'अत की तरह हैं जो बाक़ी रह गई है, बल्कि वह उस सारी इस्राईली जमा'अत की तरह हैं जो फ़ना हो गई), और हम उनको भेज कर देखें।"

¹⁴तब उन्होंने दो रथ घोड़ों के साथ लिए, और बादशाह ने उनको अरामियों के लश्कर के पीछे भेजा कि जाकर देखें।¹⁵और वह उनके पीछे यरदन तक चले गए; और देखो, सारा रास्ता कपड़ों और बर्तनों से भरा पड़ा था जिनको अरामियों ने जल्दी में फेंक दिया था। तब क़ासिदों ने लौट कर बादशाह को ख़बर दी।

¹⁶तब लोगों ने निकल कर अरामियों की लश्करगाह को लूटा। फिर एक मिस्काल में एक पैमाना मैदा, और एक ही मिस्काल में दो पैमाने जौ, खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बिका।¹⁷और बादशाह ने उसी सरदार को जिसके हाथ पर भरोसा करता था, फाटक पर मुक़र्रर किया; और वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दब कर मर गया, जैसा नबी ने फ़रमाया था, जिसने ये उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके पास आया था।

¹⁸और नबी ने जैसा बादशाह से कहा था, "कल इसी वक़्त के करीब एक मिस्काल में दो पैमाने जौ, और एक ही मिस्काल में एक पैमाना मैदा सामरिया के फाटक पर मिलेगा," वैसा ही हुआ;¹⁹और उस सरदार ने नबी को जवाब दिया था, "देख, अगर खुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ऐसी बात हो सकती है?" और इसने कहा था, "तू अपनी आँखों से देखेगा, पर उसमें से खाने न पाएगा।"²⁰~इसलिए उसके साथ ठीक ऐसा ही हुआ, क्योंकि वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दबकर मर गया।

Chapter 8

¹और इलीशा' ने उस 'औरत से जिसके बेटे को उसने ज़िन्दा किया था, ये कहा था, "उठ और अपने खानदान के साथ जा, और जहाँ कहीं तू रह सके वहीं रह; क्योंकि खुदावन्द ने काल का हुक्म दिया है"; और वह मुल्क में सात बरस तक रहेगा भी।"²तब उस 'औरत ने उठ कर नबी के कहने के मुताबिक़ किया, और अपने खानदान के साथ जाकर फ़िलिस्तियों के मुल्क में सात बरस तक रही।

³सातवें साल के आखिर में ऐसा हुआ कि ये 'औरत फ़िलिस्तियों के मुल्क से लौटी, और बादशाह के पास अपने घर और अपनी ज़मीन के लिए फ़रियाद करने लगी।⁴उस वक़्त बादशाह नबी के खादिम जेहाज़ी से बातें कर रहा और ये कह रहा था, "ज़रा वह सब बड़े बड़े काम जो इलीशा' ने किए मुझे बता।"

⁵और ऐसा हुआ कि जब वह बादशाह को बता ही रहा था, कि उसने एक मुर्दे को ज़िन्दा किया, तो वही 'औरत जिसके बेटे को उसने ज़िन्दा किया था, आकर बादशाह के ~अपने घर और अपनी ज़मीन के लिए फ़रियाद करने लगी। तब जेहाज़ी बोल उठा, "ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! यही वह 'औरत है, यही उसका बेटा है जिसे इलीशा' ने ज़िन्दा किया था।"⁶जब बादशाह ने उस 'औरत से पूछा, तो उसने उसे सब कुछ बताया। तब बादशाह ने एक ख़्वाजासरा को उसके लिए मुक़र्रर कर दिया और फ़रमाया, "सब कुछ जो इसका था, और जब से इसने इस मुल्क को छोड़ा, उस वक़्त से अब तक की खेत की सारी पैदावार इसको दे दो।"⁷और इलीशा' दमिश्क़ में आया, और अराम का बादशाह बिनहदद बीमार था; और उसकी ख़बर हुई, "वह नबी इधर आया है,"⁸और बादशाह ने हज़ाएल से कहा, "अपने हाथ में तोहफ़ा लेकर नबी के इस्तक्रबाल को जा, और उसके ज़रिए खुदावन्द से दरियाफ़्त कर, 'मैं इस बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?' "⁹तब हज़ाएल उससे मिलने को चला और उसने दमिश्क़ की हर उम्दा चीज़ में से ~चालीस ऊँटों पर तोहफ़े लदवाकर अपने साथ लिया, और आकर उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, "तेरे बेटे बिनहदद अराम के बादशाह ने मुझ को तेरे पास ये पूछने को भेजा है, 'मैं इस बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?' "

¹⁰इलीशा' ने उससे कहा, "जा उससे कह तू ज़रूर शिफ़ा पाएगा तोभी खुदावन्द ने मुझ को यह बताया है कि वह यक़ीनन मर जाएगा।"¹¹~और वह उसकी तरफ़ नज़र लगा कर देखता रहा, यहाँ तक कि वह शर्मा गया; फिर नबी रोने लगा।¹²और हज़ाएल ने कहा, "मेरे मालिक रोता क्यों है?" उसने जवाब दिया, "इसलिए कि मैं उस गुनाह से जो तू बनी-इस्राईल से करेगा, आगाह हूँ; तू उनके क़िलों में आग लगाएगा, और उनके जवानों को हलाक करेगा, और उनके बच्चों को पटख-पटख कर टुकड़े-टुकड़े करेगा, और उनकी हामिला 'औरतों को चीर डालेगा।

¹³हज़ाएल ने कहा, "तेरे खादिम की जो कुत्ते के बराबर है, हक़ीक़त ही क्या है, जो वह ऐसी बड़ी बात करे?" इलीशा' ने जवाब दिया, "खुदावन्द ने मुझे बताया है कि तू अराम का बादशाह होगा।"¹⁴फिर वह इलीशा' से रुख़्सत हुआ, और अपने मालिक के पास आया, उसने पूछा, "इलीशा' ने तुझ से क्या कहा?" उसने जवाब दिया, "उसने मुझे बताया कि तू ज़रूर शिफ़ा पाएगा।"¹⁵और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उसने बाला पोश को लिया, और उसे पानी में भिगोकर उसके मुँह पर तान दिया, ऐसा कि वह मर गया। और हज़ाएल उसकी जगह सल्तनत करने लगा।

¹⁶और इस्राईल का बादशाह अख़ीअब के बेटे यूराम के पाँचवें साल, जब यहूसफ़त यहूदाह का बादशाह था, तो यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त का बेटा यहूराम सल्तनत करने लगा।¹⁷~जब वह सल्तनत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और उसने यरुशलीम में आठ साल बादशाही की।

¹⁸~उसने भी अख़ीअब के घराने की तरह इस्राईल के बादशाहों के रास्ते की पैरवी की; क्योंकि अख़ीअब की बेटी उसकी बीवी थी और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।¹⁹तोभी खुदावन्द ने अपने बन्दे दाऊद की खातिर न चाहा कि यहूदाह को हलाक करे। क्योंकि उसने उससे वा'दा किया था कि वह उसे उसकी नस्ल के वास्ते हमेशा के लिए एक चरण देगा।

²⁰उसी के दिनों में अदोम यहूदाह की इता'अत से फिर गया, और उन्होंने अपने लिए एक बादशाह बना लिया।²¹~तब यूराम' सईर को गया और उसके सब रथ उसके साथ थे, और उसने रात को उठ कर अदोमियों को जो उसे घेरे हुए थे, और रथों के सरदारों को मारा, और लोग अपने डेरों को भाग गए।

²²~ऐसे अदोम यहूदाह की इता'अत से आज तक फिरा है। और उसी वक़्त लिबनाह भी फिर ~गया।²³यूराम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?²⁴~और यूराम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप-दादा के साथ दफ़न हुआ, और उसका बेटा अख़ज़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

²⁵और इस्राईल के बादशाह अख़ीअब के बेटे यूराम के बारहवें साल से यहूदाह का बादशाह यहूराम का बेटा अख़ज़ियाह सल्तनत करने लगा।²⁶अख़ज़ियाह बाईस साल का था, जब वह सल्तनत करने लगा; और उसने यरुशलीम में एक साल सल्तनत की। उसकी माँ का नाम 'अतलियाह था, जो इरुलाईल के बादशाह उमरी की बेटी थी।²⁷और वह भी अख़ीअब के घराने के रास्ते पर चला, और उसने अख़ीअब के घराने की तरह खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, क्योंकि वह अख़ीअब के घराने का दामाद था।

²⁸~और वह अख़ीअब के बेटे यूराम के साथ रामात जिल'आद में अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने को गया, और अरामियों ने यूराम को ज़ख्मी किया।

²⁹इसलिए यूराम बादशाह लौट गया ताकि वह यज़र'एल में उन ज़ख्मों का इलाज कराए, जो अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ते वक़्त रामा में अरामियों के हाथ से लगे थे। और यहूदाह का बादशाह यहूराम का बेटा अख़ज़ियाह अख़ीअब के बेटे यूराम को देखने के लिए यज़र'एल में आया क्योंकि वह बीमार था।

Chapter 9

¹~और इलीशा' नबी ने अम्बियाज़ादों में से एक को बुलाकर उससे कहा, "अपनी कमर बाँध, और तेल की ये कुप्पी अपने हाथ में ले, और रामात जिल'आद को जा।²और जब तू वहाँ पहुँचे तो याहू-बिन-यहूस्फ़त बिन-निमसी को पूछ, और अन्दर जाकर उसे उसके भाइयों में से उठा और अन्दर की कोठरी में ले जा।³फिर तेल की यह ~कुप्पी लेकर उसके सिर पर डाल और कह, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया है,' फिर तू दरवाज़ा खोल कर भागना और ठहरना मत।"

⁴तब वह जवान, या'नी वह जवान जो नबी था, रामात जिल'आद को गया।⁵जब वह पहुँचा तो लश्कर के सरदार बैठे हुए थे उसने कहा, "ऐ सरदार, मेरे पास तेरे लिए एक पैग़ाम है।" याहू ने कहा, "हम सभी में से किसके लिए?" उसने कहा, "ऐ सरदार, तेरे लिए।"⁶तब वह उठ कर उस घर में गया, तब उसने उसके सिर पर वह तेल डाला, और उससे कहा, "खुदावन्द, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके खुदावन्द की क़ौम या'नी इस्राईल का बादशाह बनाया है।"

⁷इसलिए तू अपने मालिक अखीअब के घराने को मार डालना, ताकि मैं अपने बन्दों, नबियों के खून का और खुदावन्द के सब बन्दों के खून का इत्तिक़ाम ईज़बिल के हाथ से लूँ।⁸क्योंकि अखीअब का सारा घराना हलाक होगा, और मैं अखीअब की नस्ल के हर एक लड़के को, और उसको जो इस्राईल में बन्द है और उसको जो आज़ाद छूटा हुआ है, काट डालूँगा।

⁹और मैं अखीअब के घर को नबात के बेटे युरब'आम के घर और अखियाह के बेटे बाशा के घर की तरह कर दूँगा।¹⁰और ईज़बिल को यज़र'एल के इलाके में कुत्ते खाएँगे, वहाँ कोई न होगा जो उसे दफ़न करे।" फिर वह दरवाज़ा खोल कर भागा।

¹¹तब याहू अपने मालिक के खादिमों के पास बाहर आया; और एक ने उससे पूछा, "सब खैर तो है? यह दीवाना तेरे पास क्यों आया था?" उसने उनसे कहा, "तुम उस शख्स से और उसके पैग़ाम से वाकिफ़ हो।"¹²उन्होंने कहा, "यह झूठ है; अब हम को हाल बता।" उसने कहा, "उसने मुझे से इस इस तरह की बात की और कहा, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया है।' "¹³~तब उन्होंने जल्दी की और हर एक ने अपनी पोशाक लेकर उसके नीचे सीढ़ियों की चोटी पर बिछाई, और तुरही फूँककर कहने लगे, "याहू बादशाह है।"

¹⁴तब याहू-बिन-यहूस्फ़त-बिन-निमसी ने यूराम के खिलाफ़ साज़िश की। (और यूराम सारे इस्राईल के साथ अराम के बादशाह हज़ाएल की वजह से रामात जिल'आद की हिमायत कर रहा था;¹⁵~लेकिन यूराम बादशाह लौट गया था, ताकि यज़र'एल में उन ज़ख्मों का इलाज कराए जो अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ते वक़्त अरामियों के हाथ से लगे थे।) तब याहू ने कहा, "अगर तुम्हारी मर्ज़ी यही है, तो कोई यज़र'एल जाकर खबर करने के लिए इस शहर से भागने और निकलने न पाए।"¹⁶और याहू रथ पर सवार होकर यज़र'एल को गया, क्योंकि यूराम वहीं पड़ा हुआ था। और यहूदाह का बादशाह अखज़ियाह यूराम की मुलाक़ात को आया हुआ था।

¹⁷यज़र'एल में निगहबान बुर्ज पर खड़ा था, और उसने जो याहू के लश्कर को आते हुए देखा, तो कहा, "मुझे एक लश्कर दिखाई देता है।" यूराम ने कहा, "एक सवार को लेकर उनसे मिलने को भेज, वह ये पूछे, 'खैर है?' "¹⁸चुनौचे एक शख्स घोड़े पर उससे मिलने को गया और कहा, "बादशाह पूछता है, 'खैर है?' " याहू ने कहा, "तुझे को खैर से क्या काम? मेरे पीछे हो ले।" फिर निगहबान ने कहा, "कासिद उनके पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता।"

¹⁹~तब उसने दूसरे को घोड़े पर रवाना किया, जिसने उनके पास जाकर उनसे कहा, "बादशाह यूँ कहता है, 'खैर है?' " याहू ने जवाब दिया, "तुझे खैर से क्या काम? मेरे पीछे हो ले।"²⁰फिर निगहबान ने कहा, "वह भी उनके पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता। और रथ का हाँकना ऐसा है जैसे निमसी के बेटे याहू का हाँकना होता है, क्योंकि वही सुस्ती से हाँकता है।"

²¹तब यूराम ने फ़रमाया, "जोत ले।" तब~उन्होंने उसके रथ को जोत लिया। तब इस्राईल का बादशाह यूराम और यहूदाह का बादशाह अखज़ियाह अपने-अपने रथ पर निकले और याहू से मिलने को गए, और यज़र'एली नबोत की मिलिकियत में उससे दो चार हुए।²²~यूराम ने याहू को देखकर कहा, 'ऐ याहू, खैर है?' उसने जवाब दिया, 'जब तक तेरी माँ ईज़बिल की ज़िनाकारियाँ और उसकी जादूगरियाँ इस क़दर हैं, तब तक कैसी खैर?'

²³~तब यूराम ने बाग़ा' मोड़ी और भागा, और अखज़ियाह से कहा, "ऐ अखज़ियाह यह धोका है।"²⁴तब याहू ने अपने सारे ज़ोर से कमान खेंची, और यूराम के दोनों शानों के बीच ऐसा मारा के तीर उसके दिल से पार हो गया और वह अपने रथ में गिरा।

²⁵तब याहू ने अपने लश्कर के सरदार बिदक्र से कहा, "उसे लेकर यज़र'एली नबोत की मिलिकियत के खेत में डाल दे; क्योंकि याद कर कि जब मैं और तू उसके बाप अखीअब के पीछे पीछे सवार होकर चल रहे थे, तो खुदावन्द ने ये फ़तवा उस पर दिया था,²⁶यक़ीनन मैंने कल नबोत के खून और उसके बेटों के खून को देखा है, खुदावन्द फ़रमाता है; और मैं इसी खेत में तुझे बदला दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।" इसलिए जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया है, उसे लेकर उसी जगह डाल दे।"

²⁷लेकिन जब यहूदाह के बादशाह अखज़ियाह ने ये देखा, तो वह बाग़ा की बारह दरी के रास्ते से निकल भागा। और याहू ने उसका पीछा किया और कहा, "उसे भी रथ ही में मार दो।" चुनौचे उन्होंने उसे ज़ूर की चढ़ाई पर, जो इबलि'आम के करीब है मारा; और वो मजिही को भागा, और वहीं मर गया।²⁸~और उसके खादिम उसको एक रथ में यरुशलीम को ले गए, और उसे उसकी क़ब्र में दाऊद के शहर में उसके बाप-दादा के साथ दफ़न किया।

²⁹और अखीअब के बेटे यूराम के ग्यारहवें साल अखज़ियाह यहूदाह का बादशाह हुआ।

³⁰जब याहू यज़र'एल में आया, तो ईज़बिल ने सुना और अपनी आँखों में सुरमा लगा, और अपना सिर संवार खिड़की से झाँकने लगी।³¹~और जैसे ही याहू फाटक में दाखिल हुआ, वह कहने लगी, "ऐ ज़िमरी। अपने आक्रा के क्रातिल, खैर तो है?"³²पर उसने खिड़की की तरफ़ मुँह उठा कर कहा, "मेरी तरफ़ कौन है, कौन?" तब दो तीन ख्वाजासराओं ने इसकी तरफ़ देखा।

³³~इसने कहा, 'उसे नीचे गिरा दो।' तब उन्होंने उसे नीचे गिरा दिया, और उसके खून के छींटें दीवार पर और घोड़ों पर पड़ीं, और इसने उसे पैरों तले रौदा।³⁴जब ये अन्दर आया, तो इसने खाया पिया; फिर कहने लगा, 'जाओ, उस ला'नती 'औरत को देखो, और उसे दफ़न करो क्योंकि वह शहज़ादी है।"

³⁵~और वह उसे दफ़्न करने गए, पर सिर और उसके पैर और हथेलियों के सिवा उसका और कुछ उनको न मिला।³⁶इसलिए वह लौट आए और उसे ये बताया, इसने कहा, "ये खुदावन्द का वही सुखन है, जो उसने अपने बन्दे एलियाह तिशबी के मा'रिफ़त फ़रमाया था, 'यज़र'एल के इलाके में कुत्ते ईज़बिल का गोश्त खाएँगे;³⁷और ईज़बिल की लाश यज़र'एल के इलाके में खेत में खाद की तरह पड़ी रहेगी, यहाँ तक कि कोई न कहेगा कि यह ईज़बिल है।' "

Chapter 10

¹सामरिया में अखीअब के सत्तर बेटे थे। इसलिए याहू ने सामरिया में यज़र'एल के अमीरों, या'नी बुजुर्गों के पास और उनके पास जो अखीअब के बेटों के पालने वाले थे, खत लिख भेजे, कि "जिस हाल में तुम्हारे मालिक के बेटे तुम्हारे साथ हैं, और तुम्हारे पास रथ और घोड़े और फ़सीलदार शहर भी और हथियार भी हैं;~इसलिए~इस खत के पहुँचते ही,³~तुम अपने मालिक के बेटों में सबसे अच्छे और लायक़ को चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठाओ, और अपने मालिक के घराने के लिए जंग करो।

⁴लेकिन वह निहायत परेशान हुए और कहने लगे देखो दो बादशाह तो उसका मुक़ाबिला न कर सके; तो हम क्यूँकर कर सकेंगे?"⁵इसलिए महल के दीवान ने और शहर के हाकिम ने और बुजुर्गों ने भी, और लड़कों के पालने वालों ने याहू को कहला भेजा, "हम सब तेरे खादिम हैं, और जो कुछ तू फ़रमाएगा वह सब हम करेंगे; हम किसी को बादशाह नहीं बनाएँगे, जो कुछ तेरी नज़र में अच्छा है वही कर।"

⁶तब उसने दूसरी बार एक खत उनको लिख भेजा, कि "अगर तुम मेरी तरफ़ हो और मेरी बात मानना चाहते हो, तो अपने मालिक के बेटों के सिर उतार कर कल यज़र'एल में इसी वक़्त मेरे पास आ जाओ।" उस वक़्त शाहज़ादे जो सत्तर आदमी थे, शहर के उन बड़े आदमियों के साथ थे जो उनके पालनेवाले थे।

⁷इसलिए~जब यह खत उनके पास आया, तो उन्होंने शाहज़ादों को लेकर उनको, या'नी उन सत्तर आदमियों को क़त्ल किया और उनके सिर टोक़रों में रख कर उनको उसके पास यज़र'एल में भेज दिया।

⁸तब एक क़ासिद ने आकर उसे खबर दी, "वह शाहज़ादों के सिर लाए हैं।" उसने कहा, "तुम शहर के फाटक के मदख़ल पर उनकी दो ढेरियाँ लगा कर कल सुबह तक रहने दो।"⁹और सुबह को ऐसा हुआ कि वह निकल कर खड़ा हुआ और सब लोगों से कहने लगा, "तुम तो रास्त हो। देखो, मैंने तो अपने मालिक के खिलाफ़ बन्दिश बाँधी और उसे मारा; पर इन सभों को किसने मारा?

¹⁰इसलिए अब जान लो कि खुदावन्द के उस बात में से, जिसे खुदावन्द ने अखीअब के घराने के हक़ में फ़रमाया, कोई बात खाक में नहीं मिलेगी; क्यूँकि खुदावन्द ने जो कुछ अपने बन्दे एलियाह के ज़रिए फ़रमाया था उसे पूरा किया।"¹¹इसलिए याहू ने उन सबको जो अखीअब के घराने से यज़र'एल में बच रहे थे, और उसके सब बड़े ~आदमियों और करीबी दोस्तों और काहिनों को क़त्ल किया, यहाँ तक कि उसने उसके किसी आदमी को बाक़ी न छोड़ा।

¹²~फिर वह उठ कर रवाना हुआ और सामरिया को चला। और रास्ते में ग़ड़ियों के बाल कतरने के घर तक पहुँचा ही था कि¹³याहू को यहूदाह के बादशाह अखज़ियाह के भाई मिल गए; इसने पूछा, "तुम कौन हो?" उन्होंने कहा, "हम अखज़ियाह के भाई हैं; और हम जाते हैं कि बादशाह के बेटों और मलिका के बेटों को सलाम करें।"¹⁴तब उसने कहा, कि "उनको ज़िन्दा पकड़ लो।"~इसलिए उन्होंने उनको ज़िन्दा पकड़ लिया और उनको जो बयालीस आदमी थे बाल कतरने के घर के हौज़ पर क़त्ल किया; उसने उनमें से एक को भी न छोड़ा।

¹⁵~फिर जब वह वहाँ से रुख़सत हुआ, तो यहूनादाब-बिन-रैकाब जो उसके इस्तक्रबाल को आ रहा था उसे मिला। तब उसने उसे सलाम किया और उससे कहा क्या तेरा दिल ठीक है, जैसा मेरा दिल तेरे दिल के साथ है?" यहूनादाब ने जवाब दिया कि है। इसलिए उसने कहा, 'अगर ऐसा है, तो अपना हाथ मुझे दे।" तब उसने उसे अपना हाथ दिया; और उसने उसे रथ में अपने साथ बिठा लिया,¹⁶और कहा, "मेरे साथ चल, और मेरी ग़ैरत को जो खुदावन्द के लिए है, देख।" ~तब ~उन्होंने उसे उसके साथ रथ पर सवार कराया,¹⁷~और जब वह सामरिया में पहुँचा, तो अखीअब के सब बाक़ी लोगों को, जो सामरिया में थे क़त्ल किया, यहाँ तक कि उसने, जैसा खुदावन्द ने एलियाह से कहा था, उसको नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया।

¹⁸~फिर याहू ने सब लोगों को जमा किया, और उनसे कहा, कि "अखीअब ने बा'ल की थोड़ी 'इबादत की, याहू उसकी बहुत 'इबादत करेगा।"¹⁹इसलिए अब तुम बा'ल के सब नबियों और उसके सब पूजने वालों और पुजारियों को मेरे पास बुला लाओ; उनमें से कोई ग़ैर हाज़िर न रहे, क्यूँकि मुझे बा'ल के लिए बड़ी कुर्बानी करना है। इसलिए जो कोई ग़ैर हाज़िर रहे, वह ज़िन्दा न बचेगा।" पर याहू ने इस ग़रज़ से कि बा'ल के पूजनेवालों को हलाक कर दे, ये बहाना निकाला था।²⁰और याहू ने कहा, कि "बा'ल के लिए एक खास 'ईद का 'एलान करो।" तब उन्होंने उसका 'एलान कर दिया।

²¹~और याहू ने सारे इस्राईल में लोग भेजे, और बा'ल के सब पूजनेवाले आए, यहाँ तक कि एक शख्स भी ऐसा न था जो न आया हो। और वह बा'ल के बुतखाने में दाख़िल हुए, और बा'ल का बुतखाना इस सिरे से उस सिरे तक भर गया।²²फिर उसने उसको जो ~तोशाखाने पर मुक़र्रर था हुक्म किया, ~कि बा'ल के सब पूजनेवालों के लिए लिबास निकाल ला।" तब वह उनके लिए लिबास निकाल लाया।

²³~तब याहू और यहूनादाब-बिन-रैकाब बा'ल के बुतखाने के अन्दर गए, और उसने बा'ल के पूजनेवालों से कहा, "बयान करो, और देख लो कि यहाँ तुम्हारे साथ खुदावन्द के खादिमों में से कोई न हो, सिर्फ़ बा'ल ही के पूजनेवाले हों।"²⁴~और वह ज़बीहे और सोख़तनी कुर्बानियाँ पेश करने को अन्दर गए। और याहू ने बाहर अस्सी जवान मुक़र्रर कर दिए और कहा, कि "अगर कोई उन लोगों में से जिनको मैं तुम्हारे हाथ में कर दूँ निकल भागे, तो छोड़ने वाले की जान उसकी जान के बदले जाएगी।"

²⁵जब वह सोख़तनी कुर्बानी अदा कर चुका, तो याहू ने पहरेवालों और सरदारों से कहा, कि "घुस जाओ और उनको क़त्ल करो, एक भी निकलने न पाए।" चुनाँचे उन्होंने उनको हलाक किया, और पहरेवालों और सरदारों ने उनको बाहर फेंक दिया और बा'ल के बुतखाने के शहर को गए।²⁶~और उन्होंने बा'ल के बुतखाने की कड़ियों को बाहर निकाल कर उनको आग में जलाया।²⁷और बा'ल के सुतूनों को चकनाचूर किया, और बा'ल का बुतखाना को गिरा कर उसे बैतुल-ख़ला बना दिया, जैसा आज तक है।²⁸~इस तरह याहू ने बा'ल को इस्राईल के बीच से हलाक कर दिया।

²⁹तोभी नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, याहू बाज़ न आया; या'नी उसने सोने के बछड़ों को मानने से जो बैतएल और दान में थे, दूरी इख़्तियार न की।³⁰और खुदावन्द ने याहू से कहा, "चूँकि तू ने ये नेकी की है कि जो कुछ मेरी नज़र में भला था उसे अंजाम दिया है, और अखीअब के घराने से मेरी मज़ी के मुताबिक़ बर्ताव किया है; इसलिए तेरे बेटे चौथी नस्ल तक इस्राईल के तख़्त पर बैठेंगे।"³¹~लेकिन याहू ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की शरी'अत पर अपने सारे दिल से चलने की फ़िक्र न की; वह युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, अलग न हुआ।

³²~उन दिनों खुदावन्द इस्राईल को घटाने लगा, और हज़ाएल ने उनको इस्राईल की सब सरहदों में मारा,³³या'नी यरदन से लेकर पूरब की तरफ़ जिल'आद के सारे मुल्क में, और जहियों और रूबीनियों और मनस्सियों को, 'अरो'ईर से जो वादी-ए-अरनून में है, या'नी जिल'आद और बसन को भी।

³⁴याहू के बाक़ी काम और सब जो उसने किया, और उसकी सारी ताक़त का बयान; इसलिए क्या वह सब इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?³⁵और याहू अपने बाप-दादा के साथ मर गया, और उन्होंने उसे सामरिया में दफ़न किया, और उसका बेटा यहूआखज़ उसकी जगह बादशाह हुआ।

³⁶~और वह उसी 'अरसे में ~जिसमें याहू ने सामरिया में बनी-इस्राईल पर सल्तनत की अठाईस साल का था।

Chapter 11

¹~जब अखज़ियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा मर गया, तब उसने उठकर बादशाह की सारी नस्ल को हलाक किया।²लेकिन यूराम बादशाह की बेटी यहूसबा' ने जो अखज़ियाह की बहन थी, अखज़ियाह के बेटे यूआस को लिया, और उसे उन शाहज़ादों से जो क्रल्ल हुए चुपके से जुदा किया; और उसे उसकी दवा और बिस्तरों ~के साथ बिस्तरों की कोठरी में कर दिया। और उन्होंने उसे 'अतलियाह से छिपाए रखखा, वह मारा न गया।³~वह उसके साथ खुदावन्द के घर में छः साल तक छिपा रहा, और 'अतलियाह मुल्क में सल्लनत करती रही।

⁴सातवें साल में यहोयदा' ने काम करने और पहरेवालों के सौ-सौ के सरदारों को बुला भेजा, और उनको खुदावन्द के घर में अपने पास लाकर उनसे 'अहद-ओ-पैमान किया और खुदावन्द के घर में उनको क्रसम खिलाई और बादशाह के बेटे को उनको दिखाया।⁵और उसने उनको ये हुक्म दिया, कि "तुम ये काम करना : तुम जो सबत को यहाँ आते हो; इसलिए ~तुम में से एक तिहाई आदमी बादशाह के महल के पहरे पर रहें,⁶और एक तिहाई सूर नाम फाटक पर रहें, और एक तिहाई उस फाटक पर हों जो पहरेवालों के पीछे हैं, यूँ तुम महल की निगहबानी करना और लोगों को रोके रहना।

⁷~और तुम्हारे दो लश्कर, या'नी ~जो सबत के दिन बाहर निकलते हैं, वह बादशाह के आसपास होकर खुदावन्द के घर की निगहबानी करें।⁸और तुम अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए बादशाह को चारों तरफ़ से घेरे रहना, और जो कोई सफ़ों के अन्दर चला आए वह क्रल्ल कर दिया जाए, और तुम बादशाह के बाहर जाते और अंदर आते वक़्त उसके साथ साथ रहना।"

⁹चुनाँचे सौ सौ के सरदारों ने, जैसा यहोयदा' काहिन ने उनको हुक्म दिया था वैसे ही सब कुछ किया; और उनमें से हर एक ने अपने आदमियों को जिनकी सबत के दिन अन्दर आने की बारी थी, ~उन लोगों के साथ जिनकी सबत के दिन बाहर निकलने की बारी थी लिया, और यहोयदा' काहिन के पास आए।¹⁰और काहिन ने दाऊद बादशाह की बछियाँ और सिप्परें, जो खुदावन्द के घर में थीं सौ-सौ के सरदारों को दीं।

¹¹और पहरेवाले अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए, हैकल के दाहिने तरफ़ से लेकर बाएँ तरफ़ मज़बह और हैकल के बराबर-बराबर बादशाह के चारों तरफ़ खड़े हो गए।¹²फिर उसने शाहज़ादे को बाहर लाकर उस पर ताज रखखा, और शहादत नामा उसे दिया; और उन्होंने उसे बादशाह बनाया और उसे मसह किया, और उन्होंने तालियाँ बजाई और कहा बादशाह सलामत रहे !"

¹³जब 'अतलियाह ने पहरेवालों और लोगों का शोर सुना, तो वह उन लोगों के पास खुदावन्द की हैकल में गई;¹⁴और देखा कि बादशाह दस्तूर के मुताबिक़ सुतून के करीब खड़ा है और उसके पास ही सरदार और नरसिंगे हैं, और सल्लनत के सब लोग खुश हैं और नरसिंगे फूंक रहे हैं। तब 'अतलियाह ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाई, "ग़दर है! ग़दर !"

¹⁵~तब यहोयदा" काहिन ने सौ-सौ के सरदारों को जो लश्कर के ऊपर थे ये हुक्म दिया, कि "उसको सफ़ों के बीच करके बाहर निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले उसको तलवार से क्रल्ल कर दो।" क्योंकि काहिन ने कहा, "वह खुदावन्द के घर के अन्दर क्रल्ल न की जाए।"¹⁶~तब उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह उस रास्ते से गई जिससे घोड़े बादशाह के महल में दाखिल होते थे, और वहीं क्रल्ल हुई।

¹⁷और यहोयदा' ने खुदावन्द के, और बादशाह और लोगों के बीच एक 'अहद बाँधा, ताकि वह खुदावन्द के लोग हों, और बादशाह और लोगों के बीच भी 'अहद बाँधा।¹⁸और ममलुकत के सब लोग बा'ल के बुतखाने में गए और उसे ढाया, और उन्होंने उसके मज़बहों और बुतों को बिल्कुल चकनाचूर किया, और बा'ल के पुजारी मत्तान को मज़बहों के सामने क्रल्ल किया। और काहिन ने खुदावन्द के घर के लिए सरदारों को मुक्ररर किया;

¹⁹और उसने सौ-सौ के सरदारों और काम करने वालों और पहरेवालों और सल्लनत के लोगों को लिया, और वह बादशाह को खुदावन्द के घर से उतार लाए और पहरेवालों के फाटक के रास्ते से बादशाह के महल में आए; और उसने बादशाहों के तख़्त पर जुलूस फ़रमाया।²⁰और सल्लनत के सब लोग खुश हुए, और शहर में अमन हो गया। उन्होंने 'अतलियाह को बादशाह के महल के पास तलवार से क्रल्ल किया।

²¹~और जब यूआस सल्लनत करने लगा तो सात साल का था।

Chapter 12

¹और ~याहू के सातवें साल यहूआस ' बादशाह हुआ और उसने यरुशलीम में चालीस साल सल्तनत की। उसकी माँ का नाम ज़िबियाह था जो बैरसबा' की थी।

²और यहूआस ने इस तमाम 'अर्से ~में जब तक यहोयदा' काहिन उसकी ता'लीम-व-तरबियत करता रहा, वही काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था।

³~तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, और लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे।

⁴और यहूआस' ने काहिनों से कहा, कि "मुक़द्दस की हुई चीज़ों की सब नक़दी जो मौजूदा सिक्के में खुदावन्द के घर में पहुँचाई जाती है, या'नी उन लोगों की नक़दी जिनके लिए हर शख्स की हैसियत के मुताबिक़ अन्दाज़ा लगाया जाता है, और वह सब नक़दी जो हर एक अपनी खुशी से खुदावन्द के घर में लाता है,

⁵~इन सबको काहिन अपने अपने जान पहचान से लेकर अपने पास रख लें; और हैकल की दरारों की जहाँ कहीं कोई दरार मिले मरम्मत ~करें।"

⁶लेकिन यहूआस के तेईसवें साल तक काहिनों ने हैकल की दरारों की मरम्मत न की।⁷~तब यहूआस ~बादशाह ने यहोयदा' काहिन को और, और काहिनों को बुलाकर उनसे कहा, "तुम हैकल की दरारों की मरम्मत क्यों नहीं करते? इसलिए अब अपने अपने जान-पहचान से नक़दी न लेना, बल्कि इसको हैकल की दरारों के लिए हवाले करो।"⁸इसलिए काहिनों ने मंज़ूर कर लिया कि न तो लोगों से नक़दी लें और न हैकल की दरारों की मरम्मत करें।

⁹~तब यहोयदा' काहिन ने एक सन्दूक लेकर उसके ऊपर में एक सूराख किया, और उसे मज़बूत के पास रखवा, ऐसा कि खुदावन्द की हैकल में दाखिल होते वक़्त वह दहनी तरफ़ पड़ता था; और जो काहिन दरवाज़े के निगहबान थे, वह सब नक़दी जो खुदावन्द के घर में लाई जाती थी उसी में डाल देते थे।¹⁰~जब वह देखते थे कि सन्दूक में बहुत नक़दी हो गई है, तो बादशाह का मुन्शी और सरदार काहिन ऊपर आकर उसे थैलियों में बाँधते थे, और उस नक़दी को जो खुदावन्द के घर में मिलती थी गिन लेते थे।

¹¹और वह उस नक़दी को जो तोल ली जाती थी, उनके हाथों में सौंप देते थे जो काम करनेवाले, या'नी खुदावन्द की हैकल की देख भाल करते थे; और वह उसे बढ़ाईयों और मे'मारों पर जो खुदावन्द के घर का काम बनाते थे।¹²और राज्यों और संग तराशों पर और खुदावन्द की हैकल की दरारों की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थर खरीदने में, और उन सब चीज़ों पर जो हैकल की मरम्मत के लिए इस्ते'माल में आती थी खर्च करते थे।

¹³लेकिन जो नक़दी खुदावन्द की हैकल में लाई जाती थी, उससे खुदावन्द की हैकल के लिए चाँदी के प्याले, या गुलगीर, या देगचे, या नरसिंगे, या'नी सोने के बर्तन या चाँदी के बर्तन न बनाए गए,¹⁴~क्योंकि ये नक़दी कारीगरों को दी जाती थी, और इसी से उन्होंने खुदावन्द की हैकल की मरम्मत की।

¹⁵~ इसके अलावा जिन लोगों के हाथ वह इस नक़दी को सुपुर्द करते थे, ताकि वह उसे कारीगरों को दें, उनसे वह ~उसका कुछ हिसाब नहीं लेते थे इसलिए कि वह ईमानदारी से काम करते थे।¹⁶~और जुर्म की कुर्बानी की नक़दी और खता की कुर्बानी की नक़दी, खुदावन्द की हैकल में नहीं लाई जाती थी, वह ~काहिनों की थी।

¹⁷तब शाह-ए-अराम हज़ाएल ने चढ़ाई की, और जात से लड़कर उसे ले लिया। फिर हज़ाएल ने यरुशलीम का रुख किया ताकि उस पर चढ़ाई करे।¹⁸~तब शाह-ए-यहूदाह यहूआस ' ने सब मुक़द्दस चीज़ें जिनको उसके बाप-दादा, यहूसफ़त और यहूराम और अखज़ियाह, यहूदाह के बादशाहों ने नज़र किया था, और अपनी सब मुक़द्दस चीज़ों को और सब सोना जो खुदावन्द की हैकल के खज़ानों और बादशाह के महल में मिला, लेकर शाह-ए-अराम हज़ाएल को भेज दिया; तब वह यरुशलीम से हटा।

¹⁹यूआस के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?²⁰उसके खादिमों ने उठकर साज़िश की और यूआस को मिल्लो के महल में जो सिल्ला की उतराई पर है, क़त्ल किया,²¹~या'नी उसके खादिमों यूसकार-बिन-समा'अत, और यहूज़बद-बिन-शूमिर ने उसे मारा और वह मर गया, और उन्होंने उसे उसके बाप-दादा के साथ दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 13

¹और शाह-ए-यहूदाह अखज़ियाह के बेटे यूआस के तेईसवें बरस से याहू का बेटा यहूआखज़ सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत करने लगा और उसने सत्रह बरस सल्तनत की।²और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों की पैरवी की, जिनसे उसने बनी-इस्राईल से गुनाह कराया, उसने उनसे किनारा न किया।

³और खुदावन्द का गुस्सा बनी इस्राईल पर भड़का, और उसने उनको बार बार शाह-ए-अराम हज़ाएल, और हज़ाएल के बेटे बिनहदद के क्राबू में कर दिया।

⁴~और यहूआखज़ खुदावन्द के सामने गिड़गिड़ाया और खुदावन्द ने उसकी सुनी, क्योंकि उसने इस्राईल की मज़लूमी को देखा कि अराम का बादशाह उन पर कैसा जुल्म करता है।⁵~(और खुदावन्द ने बनी इस्राईल ~को एक नजात देनेवाला इनायत किया, इसलिए वह अरामियों के हाथ से निकल गए, और बनी-इस्राईल पहले की तरह अपने खेमों में रहने लगे।

⁶~तोभी उन्होंने युरब'आम के घराने के गुनाहों से, जिनसे उसने बनी-इस्राईल से गुनाह कराया, किनारा न किया बल्कि उन्हीं पर चलते रहे; और यसीरत भी सामरिया में रही।⁷और उसने यहूआखज़ के लिए लोगों में से सिर्फ पचास सवार और दस रथ और दस हज़ार प्यादे छोड़े; इसलिए कि अराम के बादशाह ने उनको तबाह कर डाला, और रौंद-रौंद कर खाक की तरह कर दिया।

⁸और यहूआखज़ के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं?⁹और यहूआखज़ अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे सामरिया में दफ़न किया; और उसका बेटा यूआस उसकी जगह बादशाह हुआ।

¹⁰और शाह-ए-यहूदाह यूआस के सैतीसवें बरस यहूआखज़ का बेटा यहूआस सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने सोलह बरस सल्तनत की।

¹¹~और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया बल्कि उन ही पर चलता रहा।

¹²और यहूआस के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत जिससे वह शाह-ए-यहूदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं?¹³और यूआस अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और युरब'आम उसके तख़्त पर बैठा; और यूआस। सामरिया में इस्राईल के बादशाहों के साथ दफ़न हुआ।

¹⁴~इलीशा' को वह मर्ज़ लगा जिससे वह मर गया। और शाह-ए-इस्राईल यूआस' उसके पास गया और उसके ऊपर रो कर कहने लगा, "ऐ मेरे बाप, ऐ मेरे बाप, इस्राईल के रथ और उसके सवार!"¹⁵और इलीशा' ने उससे कहा, "तीर-ओ-कमान ले ले।" इसलिए उसने अपने लिए तीर-ओ-कमान ले लिया।¹⁶~फिर उसने शाह-ए-इस्राईल से कहा, "कमान पर अपना हाथ रख।" इसलिए उसने अपना हाथ उस पर रखा; और इलीशा' ने बादशाह के हाथों पर अपने हाथ रखे,

¹⁷और कहा, "पूरब की तरफ़ की खिड़की खोल।" इसलिए उसने उसे खोला, तब इलीशा' ने कहा, "तीर चला।" तब उसने चलाया। तब वह कहने लगा, "ये फ़तह का तीर खुदावन्द का, या'नी अराम पर फ़तह पाने का तीर है; क्योंकि तू अफ़्रीक़ में अरामियों को मारेगा, यहाँ तक कि उनको हलाक कर देगा।"¹⁸फिर उसने कहा, "तीरों को ले।" तब उसने उनको लिया। फिर उसने शाह-ए-इस्राईल से कहा, "ज़मीन पर मार।" इसलिए उसने तीन बार मारा और ठहर गया।¹⁹तब मर्द-ए-ख़ुदा उस पर गुस्सा हुआ और कहने लगा, "तुझे पाँच या छः बार मारना चाहिए था, तब तू अरामियों को इतना मारता कि उनको हलाक कर देता; लेकिन अब तू अरामियों को सिर्फ़ तीन बार मारेगा।"

²⁰और इलीशा' ने वफ़ात पाई, और उन्होंने उसे दफ़न किया। और नये साल के शुरू' में मोआब के लश्कर मुल्क में घुस आए।²¹और ऐसा हुआ कि जब वह एक आदमी को दफ़न कर रहे थे तो उनको एक लश्कर नज़र आया, तब उन्होंने उस शख्स को इलीशा' की क़ब्र में डाल दिया, और वह ~शख्स इलीशा' की हड्डियों से टकराते ही ज़िन्दा हो गया और अपने पाँव पर खड़ा हो गया।

²²और शाह-ए-अराम हज़ाएल, यहूआखज़ के 'अहद में बराबर इस्राईल को सताता रहा।²³और खुदावन्द उन पर मेहरबान हुआ और उसने उन पर तरस खाया, और उस 'अहद की वजह से जो उसने इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब से बाँधा था, उनकी तरफ़ इलितफ़ात की; और न चाहा कि उनको हलाक करे, और अब भी उनको अपने सामने से दूर न किया।²⁴और शाह-ए-अराम हज़ाएल मर गया, और उसका बेटा बिन हदद उसकी जगह बादशाह हुआ।²⁵~और यहूआखज़ के बेटे यहूआस ने हज़ाएल के बेटे बिन हदद के हाथ से वह शहर छीन लिए जो उसने उसके बाप यहूआखज़ के हाथ से जंग करके ले लिए थे। तीन बार यूआस ने उसे शिकस्त दी और इस्राईल के शहरों को वापस ले लिया।

Chapter 14

¹~और शाह-ए-इसाईल यहूआखज़ के बेटे यूआस के दूसरे साल से शाह-ए-यहूदाह यूआस का बेटा अमसियाह सल्तनत करने लगा।²वह पच्चीस बरस का था जब सल्तनत करने लगा, और उसने यरुशलीम में उन्तीस बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यहू'अद्वान था जो यरुशलीम की~थी³उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में नेक ~था, तोभी अपने बाप दाऊद की तरह नहीं; बल्कि उसने सब कुछ अपने बाप यूआस की तरह किया।

⁴क्योंकि ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे।⁵~जब सल्तनत उसके हाथ में मज़बूत हो गई, तो उसने अपने उन मुलाज़िमों को जिन्होंने उसके बाप बादशाह को क़त्ल किया था जान से मारा।

⁶~लेकिन ~उसने उन क्रातिलों के बच्चों को जान से न मारा; क्योंकि मूसा की शरी'अत की किताब में, जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया, लिखा है : "बेटों के बदले बाप न मारे जाएँ, और न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर शख्स अपने ही गुनाह की ~वजह से मरे।"⁷उसने वादी-ए- शोर में दस हज़ार अदूमी मारे और सिला' को जंग करके ले लिया, और उसका नाम युक्तील रखवा जो आज तक है।

⁸~तब अमसियाह ने शाह-ए-इसाईल यहूआस-बिन-यहूआखज़-बिन-याहू के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा ज़रा आ तो, हम एक दूसरे का मुकाबला करें।"⁹और शाह-ए-इसाईल यहूआस ने शाह-ए- यहूदाह अमसियाह को कहला भेजा, "लुबनान के ऊँट-कटारे ने लुबनान के देवदार को पैगाम भेजा, 'अपनी बेटी की मेरे बेटे से शादी कर दे; ~इतने में एक जंगली जानवर जो लुबनान में था गुज़रा, और ऊँट-कटारे को रौंद डाला।"¹⁰तू ने बेशक अदूम को मारा, और तेरे दिल में गुरूर बस गया है"; इसलिए उसी की डींग मार और घर ही में रह, तू क्यूँ नुक़सान उठाने को छेड़-छाड़ करता है; जिससे तू भी दुख उठाए और तेरे साथ यहूदाह भी?" |

¹¹लेकिन अमसियाह ने न माना। तब शाह-ए-इसाईल यहूआस ने चढ़ाई की, और वह और शाह-ए-यहूदाह अमसियाह बैतशम्स में जो यहूदाह में है, एक दूसरे के सामने हुए।¹²~और यहूदाह ने इसाईल के आगे शिकस्त खाई, और उनमें से हर एक अपने खेमे को भागा।

¹³लेकिन शाह-ए-इसाईल यहूआस ने शाह-ए-यहूदाह अमसियाह-बिन-यहूआस-बिन-अखज़ियाह को बैत-शम्स में पकड़ लिया और यरुशलीम में आया, और यरुशलीम की दीवार इफ़्राईम के फाटक से कोने वाले फाटक तक, चार सौ हाथ के बराबर ढा दी।¹⁴और उसने सब सोने और चाँदी की, और सब बर्तनों को जो खुदावन्द की हैकल और शाही महल के खज़ानों में मिले, और कफ़ीलों को भी साथ लिया और सामरिया को लौटा।

¹⁵यहूआस के बाक़ी काम जो उसने किए और उसकी कुव्वत, और जैसे शाह-ए- यहूदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?¹⁶और यहूआस अपने बाप दादा के साथ सो गया और इसाईल के बादशाहों के साथ सामरिया में दफ़न हुआ, और उसका बेटा युरब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ।

¹⁷और शाह-ए-यहूदाह यूआस का बेटा अमसियाह शाह-ए-इसाईल यहूआखज़ के बेटे यहूआस के मरने के बा'द पन्द्रह बरस जीता रहा।¹⁸~अमसियाह के बाक़ी काम, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?¹⁹और उन्होंने यरुशलीम में उसके खिलाफ़ साज़िश की, इसलिए वह ~लकीस को भागा; लेकिन उन्होंने लकीस तक उसका पीछा करके वहीं उसे क़त्ल किया।

²⁰और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और वह यरुशलीम में अपने बाप-दादा के साथ दाऊद के शहर में दफ़न हुआ।²¹और यहूदाह के सब लोगों ने अज़रियाह' को जो सोलह बरस का था, उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह बनाया।²²और बादशाह के अपने बाप-दादा के साथ सो जाने के बा'द उसने ऐलात को बनाया, और उसे फिर यहूदाह की मुल्क में दाख़िल कर लिया।

²³शाह-ए-यहूदाह यूआस के बेटे अमसियाह के पन्द्रहवें बरस से शाह-ए-इसाईल यूआस का बेटा युरब'आम सामरिया में बादशाही करने लगा; उसने इकतालिस बरस बादशाही की।²⁴उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नबात के बेटे युरब'आम के उन सब गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया।²⁵और उसने खुदावन्द इसाईल के खुदा के उस बात के मुताबिक़, जो उसने अपने बन्दे और नबी यूनाह-बिन-अमिस्ते के ज़रिए' जो जात हिफ़्र का था फ़रमाया था, इसाईल की हद को हमात के मदख़ल से मैदान के दरिया तक फिर पहुँचा दिया।

²⁶~इसलिए कि खुदावन्द ने इसाईल के दुख को देखा कि वह बहुत सख़्त है', क्योंकि न तो कोई बन्द किया हुआ, न आज़ाद छूटा हुआ रहा और न कोई इसाईल का मददगार था।²⁷और खुदावन्द ने यह तो नहीं फ़रमाया था कि मैं इस ज़मीन पर से इसाईल का नाम मिटा दूँगा; इसलिए उसने उनको यूआस के बेटे युरब'आम के वसीले से रिहाई दी।

²⁸युरब'आम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत, या'नी क्यूँकर उसने लड़ कर दमिश्क़ और हमात को जो यहूदाह के थे, इसाईल के लिए वापस ले लिया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?²⁹~और युरब'आम अपने बाप-दादा, या'नी इसाईल के बादशाहों के साथ सो गया; और उसका बेटा ज़करियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 15

¹~शाह-ए-इसाईल युरब'आम के सत्ताइसवें बरस से शाह-ए-यहूदाह अमसियाह का बेटा अज़रियाह सल्तनत करने लगा।²जब वह सल्तनत करने लगा तो सोलह बरस का था, और उसने यरुशलीम में बावन बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यकूलियाह था, जो यरुशलीम की थी।³और उसने जैसा उसके बाप अमसियाह ने किया था, ठीक उसी तरह वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में नेक था;

⁴~तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, और लोग अब तक ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे।⁵और बादशाह पर खुदावन्द की ऐसी मार पड़ी कि वह अपने मरने के दिन तक कोढ़ी रहा और अलग एक घर में रहता था। और बादशाह का बेटा यूताम महल का मालिक था, और मुल्क के लोगों की 'अदालत किया करता था।

⁶और 'अज़रियाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?' और 'अज़रियाह अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में उसके बाप-दादा के साथ दफ़न किया; और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁸~और शाह-ए-यहूदाह 'अज़रियाह के अड़तीसवें साल युरब'आम के बेटे ज़करियाह ने इसाईल पर सामरिया में छः महीने बादशाही की।⁹और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, जिस तरह उसके बाप-दादा ने की थी; और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया बाज़ न आया।

¹⁰और यबीस के बेटे सलूम ने उसके खिलाफ़ साज़िश की और लोगों के सामने उसे मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया।¹¹~ज़करियाह के बाक़ी काम इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं।¹²~और खुदावन्द का वह वा'दा जो उसने याहू से किया यही था कि: "चौथी नस्ल तक तेरे फ़र्ज़न्द इसाईल के तख़्त पर बैठेगे।" इसलिए ~वैसा ही हुआ।

¹³शाह-ए-यहूदाह उज़्रियाह के उन्तालीसवें बरस यबीस का बेटा सलूम बादशाही करने लगा, और उसने सामरिया में महीना भर सल्तनत की।¹⁴और जादी का बेटा मनाहिम तिरज़ा से चला और सामरिया में आया, और यबीस के बेटे सलूम को सामरिया में मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया।

¹⁵और सलूम के बाक़ी काम और जो साज़िश उसने की, इसलिए देखो, वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं।¹⁶~फिर मनाहिम ने तिरज़ा से जाकर तिफ़सह को, और उन सभों को जो वहाँ थे और उसकी हुदूद को मारा; और मारने की वजह यह थी कि उन्होंने उसके लिए फाटक नहीं खोले थे; और उसने वहाँ की सब हामिला 'औरतों को चीर डाला।

¹⁷और शाह-ए-यहूदाह 'अज़रियाह के उन्तालीसवें बरस से जादी का बेटा मनाहिम इसाईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने सामरिया में दस बरस सल्तनत की।¹⁸उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया, अपनी सारी 'उम्र बाज़ न आया।

¹⁹~और शाह-ए-असूर पूल उसके मुल्क पर चढ़ आया। इसलिए मनाहिम ने हज़ार किन्तार' चाँदी पूल को नज़ की, ताकि वह ~उसकी दस्तगीरी करे और सल्तनत को उसके हाथ में मज़बूत कर दे।²⁰और मनाहिम ने ये नक़दी शाह-ए-असूर को देने के लिए इसाईल से या'नी सब बड़े-बड़े दौलतमन्दों से पचास-पचास मिस्काल हर शख्स के हिसाब से जबरन ली। इसलिए असूर का बादशाह लौट गया और उस मुल्क में न ठहरा।

²¹मनाहिम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?²²~और मनाहिम अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा फ़क़ीहयाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

²³~शाह-ए-यहूदाह 'अज़रियाह के पचासवीं साल मनाहिम का बेटा फ़क़ीयाह सामरिया में इसाईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने दो बरस सल्तनत की।

²⁴उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया।

²⁵~और फ़िक़ह-बिन-रमलियाह ने जो उसका एक सरदार था, उसके खिलाफ़ साज़िश की और उसको सामरिया में बादशाह के महल के मुहकम हिस्से में अरज़ूब और अरिया के साथ मारा, और जिल'आदियों में से पचास मर्द उसके साथ थे, इसलिए वह उसे क़त्ल करके उसकी जगह बादशाह हो गया।²⁶फ़क़ीयाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा है।

²⁷शाह-ए-यहूदाह 'अज़रियाह के बावनवें बरस से फ़िक़ह-बिन-रमलियाह सामरिया में इसाईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने बीस बरस सल्तनत की।

²⁸उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया।

²⁹शाह-ए-इसाईल फ़िक़ह के अय्याम में शाह-ए-असूर तिगलत पिलासर ने आकर अय्यून्, और अबील बैतमा'का, और यनूहा, और क़ादिस ~और हसूर और जिल'आद और गलील, और नफ़्रताली के सारे मुल्क को ले लिया, और लोगों को गुलाम करके गुलामी ~में ले गया।³⁰और हूसी'-बिन ऐला ने फ़िक़ह-बिन-रमलियाह के खिलाफ़ साज़िश की और उसे मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह, उज़्रियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस, बादशाह हो गया;³¹और फ़िक़ह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसाईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं।

³²शाह-ए-इसाईल रमलियाह के बेटे फ़िक़ह के दूसरे साल से शाह-ए-यहूदाह उज़्रियाह का बेटा यूताम सल्तनत करने लगा।³³जब वह सल्तनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, उसने सोलह बरस यरुशलीम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यरूसा था, जो सदूकी की बेटी थी।

³⁴उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में भला है; उसने सब कुछ ठीक वैसे ही किया जैसे उसके बाप 'उज़्रियाह ने किया था।³⁵तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। खुदावन्द के घर का बालाई दरवाज़ा इसी ने बनाया।³⁶यूताम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?³⁷~उन ही दिनों में खुदावन्द शाह-ए-अराम रज़ीन को और फ़िक़ह-बिन-रमलियाह को, यहूदाह पर चढ़ाई करने के लिए भेजने लगा।³⁸~यूताम अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप-दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा आखज़ उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 16

¹और रमलियाह के बेटे फ़िक्रह के सत्तरहवें ~बरस से शाह-ए-यहूदाह यूताम का बेटा आख़ज़ सल्तनत करने लगा।²~जब वह सल्तनत करने लगा तो बीस बरस का था, और उसने सोलह बरस यरुशलीम में बादशाही की। और उसने वह काम न किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में सही है, जैसा उसके बाप दाऊद ने किया था।

³~बल्कि वह इस्राईल के बादशाहों के रास्ते पर चला और उसने उन क्रौमों के नफ़रती दस्तूर के मुताबिक़, जिनको खुदावन्द ने बनी-इस्राईल के सामने से खारिज कर दिया था, अपने बेटे को भी आग में चलवाया।⁴~और ऊँचे मक़ामों और टीलों पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे उसने कुर्बानी की और खुशबू जलाया।

⁵तब शाह-ए-अराम रज़ीन और शाह-ए-इस्राईल रमलियाह के बेटे फ़िक्रह ने लड़ने को यरुशलीम पर चढ़ाई की, और उन्होंने आख़ज़ को घेर लिया लेकिन उस पर ग़ालिब न आ सके।⁶उस वक़्त शाह-ए-अराम रज़ीन ने ऐलात को फ़तह करके फिर अराम में शामिल कर लिया, और यहूदियों को ऐलात से निकाल दिया; और अरामी ऐलात में आकर वहाँ बस गए जैसा आज तक है।

⁷इसलिए आख़ज़ ने शाह-ए-असूर तिगलत पिलासर के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा, "मैं तेरा ख़ादिम और बेटा हूँ, इसलिए तू आ और मुझ को शाह-ए-अराम के हाथ से और शाह-ए-इस्राईल के हाथ से जो मुझ पर चढ़ आए हैं, रिहाई दे।"⁸~और आख़ज़ ने उस चाँदी और सोने को जो खुदावन्द के घर में और शाही महल के खज़ानों में मिला, लेकर शाह-ए-असूर के लिए नज़राना भेजा।⁹और शाह-ए-असूर ने उसकी बात मानी, चुनाँचे शाह-ए-असूर ने दमिश्क़ पर लश्करकशी की और उसे ले लिया, और वहाँ के लोगों को क़ैद करके क़ीर में ले गया और रज़ीन को क़त्ल किया।

¹⁰और आख़ज़ बादशाह, शाह-ए-असूर तिगलत पिलासर की मुलाक़ात के लिए दमिश्क़ को गया, और उस मज़बह को देखा जो दमिश्क़ में था; और आख़ज़ बादशाह ने उस मज़बह का नक़्शा और उसकी सारी सन'अत का नमूना ऊरियाह काहिन के पास भेजा।¹¹~और ऊरियाह काहिन ने ठीक उसी नमूने के मुताबिक़ जिसे आख़ज़ ने दमिश्क़ से भेजा था, एक मज़बह बनाया। और आख़ज़ बादशाह के दमिश्क़ से लौटने तक ऊरियाह काहिन ने उसे तैयार कर दिया।¹²जब बादशाह दमिश्क़ से लौट आया तो बादशाह ने मज़बह को देखा, और बादशाह मज़बह के पास गया और उस पर कुर्बानी पेश की।

¹³उसने उस मज़बह पर अपनी सोख़्तनी कुर्बानी और अपनी नज़्र की कुर्बानी जलाई, और अपना तपावन तपाया और अपनी सलामती के ज़बीहों का ख़ून उसी मज़बह पर छिड़का।¹⁴और उसने पीतल का वह मज़बह जो खुदावन्द के आगे था, हैकल के सामने से या'नी अपने मज़बह और खुदावन्द की हैकल के बीच में से, उठवाकर उसे अपने मज़बह के उत्तर की तरफ़ रखवा दिया।

¹⁵और आख़ज़ बादशाह ने ऊरियाह काहिन को हुक्म दिया, "बड़े मज़बह पर सुबह की सोख़्तनी कुर्बानी, और शाम की नज़्र की कुर्बानी, और बादशाह की सोख़्तनी कुर्बानी, और उसकी नज़्र की कुर्बानी, और ममलुकत के सब लोगों की सोख़्तनी कुर्बानी, और उनकी नज़्र की कुर्बानी, और उनका तपावन चढ़ाया कर, और सोख़्तनी कुर्बानी का सारा ख़ून, और ज़बीहे का सारा ख़ून उस पर छिड़क कर; और पीतल का वह मज़बह मेरे सवाल करने के लिए रहेगा।"¹⁶~इसलिए जो कुछ आख़ज़ बादशाह ने फ़रमाया, ऊरियाह काहिन ने वह सब किया।

¹⁷और आख़ज़ बादशाह ने कुर्सियों के किनारों को काट डाला, और उनके ऊपर के हौज़ को उनसे जुदा कर दिया; और उस बड़े हौज़ को पीतल के बैलों पर से जो उसके नीचे थे उतार कर पत्थरों के फ़र्श पर रख दिया।¹⁸और उसने उस रास्ते को जिस पर छत थी, और जिसे उन्होंने सबत के दिन के लिए हैकल के अन्दर बनाया था, और बादशाह के आने के रास्ते को जो बाहर था, शाह-ए-असूर की वज़ह से खुदावन्द के घर में शामिल कर दिया।

¹⁹और आख़ज़ के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?²⁰और आख़ज़ अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप-दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा हिज़क्रियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 17

¹~शाह-ए-यहूदाह आख़ज के बारहवें बरस से ऐला का बेटा हूसी'अ इस्राईल पर सामरिया में सलतनत करने लगा, और उसने नौ बरस सलतनत की।²उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, तोभी इस्राईल के उन बादशाहों की तरह नहीं जो उससे पहले हुए।³~शाह-ए-असूर सलमनसर ने इस पर चढ़ाई की, और हूसी'अ उसका खादिम हो गया और उसके लिए हदिया लाया।

⁴और शाह-ए-असूर ने हूसी'अ की साज़िश मा'लूम कर ली, क्योंकि उसने शाह-ए-मिस्र के पास इसलिए क़ासिद भेजे, और शाह-ए-असूर को हदिया न दिया जैसा वह साल-ब-साल देता था, इसलिए ~शाह-ए-असूर ने उसे बन्द कर दिया और कैदखाने में उसके बेड़ियाँ डाल दीं।⁵~शाह-ए-असूर ने सारी ममलुकत पर चढ़ाई की, और सामरिया को जाकर तीन बरस उसे घेरे रहा।⁶~और हूसी'अ के नौवें बरस शाह-ए-असूर ने सामरिया को ले लिया और इस्राईल को गुलाम करके असूर में ले गया, और उनको खलह में, और जौज़ान की नदी खाबूर पर, और मादियों के शहरों में बसाया।

⁷और ये इसलिए हुआ कि बनी-इस्राईल ने खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़, जिसने उनको मुल्क-ए-मिस्र से निकालकर शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन के हाथ से रिहाई दी थी, गुनाह किया और ग़ैर-मा'बूदों का ख़ौफ़ माना।⁸और उन क़ौमों के तौर पर जिनको खुदावन्द ने बनी-इस्राईल के आगे से ख़ारिज किया, और इस्राईल के बादशाहों के तौर पर जो उन्होंने खुद ~बनाए थे चलते रहे।

⁹और बनी इस्राईल ने खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़ छिपकर वह काम किए जो भले न थे, और उन्होंने अपने सब शहरों में, निगहबानों के बुर्ज से फ़सीलदार शहर तक, अपने लिए ऊँचे मक़ाम बनाए¹⁰और हर एक ऊँचे पहाड़ पर, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे उन्होंने अपने लिए सुतूनों और यसीरतों को खड़ा किया।

¹¹~और वहीं उन सब ऊँचे मक़ामों पर, उन क़ौमों की तरह जिनको खुदावन्द ने उनके सामने से दफ़ा' किया, खुशबू जलाया और खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए शरारतें कीं;¹²और बुतों की 'इबादत की, जिसके बारे में खुदावन्द ने उनसे कहा था, "तुम ये काम न करना।"

¹³तोभी खुदावन्द सब नबियों और ग़ैबबीयों के ज़रिए' इस्राईल और यहूदाह को आगाह करता रहा, "तुम अपनी बुरी राहों से बाज़ आओ, और उस सारी शरी'अत के मुताबिक़, जिसका हुक्म मैंने तुम्हारे बाप-दादा को दिया और जिसे मैंने अपने बन्दों नबियों के ज़रिए' तुम्हारे पास भेजा है, मेरे अहक़ाम और क़ानून को मानो।"

¹⁴~बावजूद इसके उन्होंने न सुना, बल्कि अपने बाप-दादा की तरह जो खुदावन्द अपने खुदा पर ईमान नहीं लाए थे, गर्दनकशी की,¹⁵और उसके क़ानून को और उसके 'अहद को, जो उसने उनके बाप-दादा से बाँधा था, और उसकी शहादतों को जो उसने उनको दी थीं रद्द किया; और बेकार बातों के पैरी होकर निकम्मे हो गए, और अपने आस-पास की क़ौमों की पैरवी की, जिनके बारे में खुदावन्द ने उनको ताकीद की थी कि वह उनके से काम न करें।

¹⁶और उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा के सब अहक़ाम छोड़ कर अपने लिए ढाली हुई मूरतें या'नी दो बछड़े बना लिए, और यसीरत तैयार की, और आसमानी फ़ौज की 'इबादत की, और बा'ल की 'इबादत की।¹⁷और उन्होंने अपने बेटे और बेटियों को आग में चलवाया, और फ़ालगीरी और जादूगरी से काम लिया और अपने को बेच डाला, ताकि खुदावन्द की नज़र में गुनाह करके उसे गुस्सा दिलाएँ।¹⁸इसलिए खुदावन्द इस्राईल से बहुत नाराज़ हुआ, और अपनी नज़र से उनको ~दूर कर दिया; इसलिए यहूदाह के क़बीले के अलावा और कोई न छूटा।

¹⁹यहूदाह ने भी खुदावन्द अपने खुदा के अहक़ाम न माने, बल्कि उन तौर तरीक़ों पर चले जिनको ~इस्राईल ने बनाया था।²⁰~तब खुदावन्द ने इस्राईल की सारी नस्ल को रद्द किया, और उनको दुख दिया और उनको लुटेरों के हाथ में करके आख़िरकार उनको अपनी नज़र से दूर कर दिया।

²¹~क्योंकि उसने इस्राईल को दाऊद के घराने से जुदा किया, और उन्होंने नबात के बेटे युरब'आम को बादशाह बनाया, और युरब'आम ने इस्राईल को खुदावन्द की पैरवी से दूर किया और उनसे बड़ा गुनाह कराया।²²और बनी इस्राईल उन सब गुनाहों की जो युरब'आम ने किए, पैरवी करते रहे; वह उनसे बाज़ न आए।

²³यहाँ तक कि खुदावन्द ने इस्राईल को अपनी नज़र से दूर कर दिया, जैसा उसने अपने सब बन्दों के ज़रिए', जो नबी थे फ़रमाया था। इसलिए इस्राईल अपने मुल्क से असूर को पहुँचाया गया, जहाँ वह आज तक है।

²⁴~और शाह-ए-असूर ने बाबुल और कूताह और 'अव्वा और हमात और सिफ़वाइम के लोगों को लाकर बनी-इस्राईल की जगह सामरिया के शहरों में बसाया। इसलिए वह ~सामरिया के मालिक हुए, और उसके शहरों में बस गए।²⁵और अपने बस जाने के शुरू' में उन्होंने खुदावन्द का ख़ौफ़ न माना; इसलिए खुदावन्द ने उनके बीच शेरों को भेजा, जिन्होंने उनमें से कुछ को मार डाला।²⁶तब उन्होंने शाह-ए-असूर से ये कहा, "जिन क़ौमों को तूने ले जाकर सामरिया के शहरों में बसाया है, वह उस मुल्क के खुदा के तरीक़े से वाकिफ़ नहीं हैं; चुनौचे उसने उनमें शेर भेज दिए हैं और देख, वह उनको फाड़ते हैं, इसलिए कि वह उस मुल्क के खुदा के तरीक़े से वाकिफ़ नहीं हैं।"

²⁷~तब असूर के बादशाह ने ये हुक्म दिया, "जिन काहिनों को तुम वहाँ से ले आए हो, उनमें से एक को वहाँ ले जाओ, और वह ~जाकर वहीं रहे और ये काहिन उनको उस मुल्क के खुदा का तरीक़ा सिखाए।"²⁸इसलिए उन काहिनों में से, जिनको वह सामरिया ले गए थे, एक काहिन आकर बैतएल में रहने लगा, और उनको सिखाया कि उनको खुदावन्द का ख़ौफ़ क्यूँकर मानना चाहिए।

²⁹~इस पर भी हर क़ौम ने अपने मा'बूद बनाए, और उनको सामरियों के बनाए हुए ऊँचे मक़ामों के बुतखानों में रखवा; हर क़ौम ने अपने शहर में जहाँ उसकी सुकूनत थी ऐसा ही किया।³⁰इसलिए बाबुलियों ने सुक्कात बनात को, और कूतियों ने नैरगुल को, और हमतियों ने असीमा को,³¹और 'अवाइयों ने निबहाज़ और तरताक़ को बनाया; और सिफ़वियों ने अपने बेटों को अदरम्मलिक और 'अनम्मलिक के लिए, जो सिफ़वाइम के मा'बूद थे, आग में जलाया।

³²इस तरह वह खुदावन्द से भी डरते थे और अपने लिए ऊँचे मक़ामों के काहिन भी अपने ही में से बना लिए, जो ऊँचे मक़ामों के बुतखानों में उनके लिए कुर्बानी पेश करते थे।³³इसलिए वह खुदावन्द से भी डरते थे और अपनी क़ौमों के दस्तूर के मुताबिक़, जिनमें से वह निकाल लिए गए थे, अपने-अपने मा'बूद की 'इबादत भी करते थे।

³⁴आज के दिन तक वह पहले दस्तूर पर चलते हैं, वह ~खुदावन्द से डरते नहीं, और न तो अपने आईन-ओ-क्रवानीन पर और न उस शरा' और फ़रमान पर चलते हैं, जिसका हुक्म खुदावन्द ने या'कूब की नसल को दिया था, जिसका नाम उसने इस्राईल रखा था।³⁵उन ही से खुदावन्द ने 'अहद करके उनको ये ताकीद की थी, "तुम ग़ैर-मा'बूदों से न डरना, और न उनको सिज्दा करना, न 'इबादत करना, और न उनके लिए कुर्बानी करना;

³⁶बल्कि खुदावन्द जो बड़ी कुव्वत और बलन्द बाजू से तुम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, तुम उसी से डरना और उसी को सिज्दा करना और उसी के लिए कुर्बानी पेश करना।³⁷और जो-जो क़ानून, और रवायत, और जो शरी'अत, और हुक्म उसने तुम्हारे लिए लिखे, उनको हमेशा मानने के लिए एहतियात रखना; और तुम ग़ैर-मा'बूदों से न डरना,³⁸और उस 'अहद को जो मैंने तुम से किया है तुम भूल न जाना; और न तुम ग़ैर-मा'बूदों का ख़ौफ़ मानना;

³⁹~बल्कि तुम खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना, और वह ~तुम को तुम्हारे सब दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा।"⁴⁰लेकिन उन्होंने न माना, बल्कि अपने पहले दस्तूर के मुताबिक़ करते रहे।⁴¹~इसलिए ये क़ौमें खुदावन्द से भी डरती रहीं, और अपनी खोदी हुई मूरतों को भी पूजती रहीं; इसी तरह उनकी औलाद और उनकी औलाद की नसल भी, जैसा उनके बाप-दादा करते थे, वैसा वह भी आज के दिन तक करती हैं।

Chapter 18

¹और शाह-ए-इसाईल होशे' बिन ऐला के तीसरे साल ऐसा हुआ कि शाह-ए-यहूदाह आखड़ा का बेटा हिज़क्रियाह सलतनत करने लगा।²~जब वह सलतनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, और उसने उन्तीस बरस यरुशलीम में सलतनत की। उसकी माँ का नाम अबी था, जो ज़करियाह की बेटी थी।³~और जो-जो उसके बाप दाऊद ने किया था, उसने ठीक उसी के मुताबिक़ वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में अच्छा था।

⁴उसने ऊँचे मक़ामों को दूर कर दिया, और सुतूनों को तोड़ा और यसीरत को काट डाला; और उसने पीतल के साँप को जो मूसा ने बनाया था चकनाचूर कर दिया, क्योंकि बनी-इसाईल उन दिनों तक उसके आगे ख़ुशबू जलाते थे; और उसने उसका नाम नहुशतान' रखा।⁵~वह ख़ुदावन्द इसाईल के ख़ुदा पर भरोसा करता था, ऐसा कि उसके बा'द यहूदाह के सब बादशाहों में उसकी तरह एक न हुआ, और न उससे पहले कोई हुआ था।

⁶क्योंकि वह ख़ुदावन्द से लिपटा रहा और उसकी पैरवी करने से बाज़ न आया; बल्कि उसके हुक्मों को माना जिनको ख़ुदावन्द ने मूसा को दिया था।⁷और ख़ुदावन्द उसके साथ रहा और जहाँ कहीं वह गया कामयाब हुआ; और वह शाह-ए-असूर से फिर गया और उसकी पैरवी न की।⁸उसने फ़िलिस्तिनियों को ग़ज़ज़ा और उसकी सरहदों तक, निगहबानों के बुर्ज से फ़सीलदार शहर तक मारा।

⁹हिज़क्रियाह बादशाह के चौथे बरस जो शाह-ए-इसाईल हूसे'अ-बिन-ऐला का सातवाँ बरस था, ऐसा हुआ कि शाह-ए-असूर सलमनसर ने सामरिया पर चढ़ाई की, और उसको घेर लिया।¹⁰और तीन साल के आखिर में उन्होंने उसको ले लिया; या'नी हिज़क्रियाह के छठे साल जो शाह-ए-इसाईल हूसे'अ का नौवाँ बरस था, सामरिया ले लिया गया।

¹¹और शाह-ए-असूर इसाईल को गुलाम करके असूर को ले गया, और उनको खलह में और जौज़ान की नदी खाबूर पर, और मादियों के शहरों में रखवा,

¹²इसलिए कि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात न मानी, बल्कि उसके 'अहद को या'नी उन सब बातों को जिनका हुक्म ख़ुदा के बन्दे मूसा ने दिया था मुखालिफ़त की, और न उनको सुना न उन पर 'अमल किया।

¹³~हिज़क्रियाह बादशाह के चौदहवें बरस शाह-ए-असूर सनहेरिब ने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया।¹⁴~और शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह ने शाह-ए-असूर को लकीस में कहला भेजा, "मुझ से खता हुई, मेरे पास से लौट जा; जो कुछ तू मेरे सिर करे मैं उसे उठाऊँगा।" इसलिए शाह-ए-असूर ने तीन सौ किन्तार चाँदी और तीस किन्तार सोना शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह के ज़िम्मे लगाया।¹⁵~और हिज़क्रियाह ने सारी चाँदी जो ख़ुदावन्द के घर और शाही महल के खज़ानों में मिली उसे दे दी।

¹⁶उस वक़्त हिज़क्रियाह ने ख़ुदावन्द की हैकल के दरवाज़ों का और उन सुतूनों पर का सोना, जिनको शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह ने ख़ुद मंढ़वाया था, उतरवा कर शाह-ए-असूर को दे दिया।¹⁷~फिर भी शाह-ए-असूर ने तरतान और रब सारिस और रबशाक़ी को लकीस से बड़े लश्कर के साथ हिज़क्रियाह बादशाह के पास यरुशलीम को भेजा। इसलिए वह चले और यरुशलीम को आए, और जब वहाँ पहुँचे तो जाकर ऊपर के तालाब की नाली के पास, जो धोबियों के मैदान के रास्ते पर है, खड़े हो गए।¹⁸~और जब उन्होंने बादशाह को पुकारा, तो इलियाक़ीम-बिन-खिलक्रियाह जो ~घर का दीवान था और शबनाह मुन्शी और आसफ़ मुहर्रिर का बेटा यूआख़ उनके पास निकल कर आए।

¹⁹और रबशाक़ी ने उनसे कहा, "तुम हिज़क्रियाह से कहो, कि मलिक-ए-मुअज़्ज़म शाह-ए-असूर यूँ फ़रमाता है, 'तू क्या भरोसा किए बैठा है?'²⁰तू कहता तो है, लेकिन ये सिर्फ़ बातें ही बातें हैं कि जंग की मसलहत भी है और हौसला भी। आखिर किसके भरोसे पर तू ने मुझ से सरकशी की है?"²¹~देख, तुझे इस मसले हुए सरकण्डे के 'असा या'नी मिस्र पर भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में गड़ जाएगा और उसे छेद देगा।" शाह-ए-मिस्र फिर'औन उन सब के लिए जो उस पर भरोसा करते हैं, ऐसा ही है।

²²और अगर तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है, जिसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को हिज़क्रियाह ने दूर करके ~यहूदाह और यरुशलीम से कहा है, कि तुम यरुशलीम में इस मज़बह के आगे सिज्दा किया करो?"²³इसलिए अब ज़रा मेरे आक्रा शाह-ए-असूर के साथ शर्त बाँध और मैं तुझे दो हज़ार घोड़े दूँगा, बशर्ते कि तू अपनी तरफ़ से उन पर सवार चढ़ा सके।

²⁴भला फिर तू क्योंकि मेरे आक्रा के अदना मुलाज़िमों में से एक सरदार का भी मुँह फेर सकता है, और रथों और सवारों के लिए मिस्र पर भरोसा रखता है?

²⁵~और क्या अब मैंने ख़ुदावन्द के बिना कहे ही इस मक़ाम को ग़ारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? ख़ुदावन्द ही ने मुझ से कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे बर्बाद कर दे।"

²⁶~तब इलियाक़ीम-बिन-खिलक्रियाह, और शबनाह, और यूआख़ ने रबशाक़ी से अर्ज़ की कि अपने खादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्योंकि हम उसे समझते हैं; और उन लोगों के सुनते हुए जो दीवार पर हैं, यहूदियों की ज़बान में बातें न कर।"²⁷~लेकिन रबशाक़ी ने उनसे कहा, "क्या मेरे आक्रा ने मुझे ये बातें कहने को तेरे आक्रा के पास, या तेरे पास भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी ही नजासत खाने और अपना ही क़ारूर पीने को दीवार पर बैठे हैं?"

²⁸फिर रबशाक़ी खड़ा हो गया और यहूदियों की ज़बान में बलन्द आवाज़ से ये कहने लगा, "मलिक-ए-मुअज़्ज़म शाह-ए-असूर का कलाम सुनो,²⁹ बादशाह यूँ फ़रमाता है, 'हिज़क्रियाह तुम को धोका न दे, क्योंकि वह तुम को उसके हाथ से छुड़ा न सकेगा।"³⁰और न हिज़क्रियाह ये कहकर तुम से ख़ुदावन्द पर भरोसा कराए, कि ख़ुदावन्द ज़रूर हमको छुड़ाएगा और ये शहर शाह-ए-असूर के हवाले न होगा।

³¹हिज़क्रियाह की न सुनो। क्योंकि शाह-ए-असूर यूँ फ़रमाता है कि तुम मुझसे सुलह कर लो और निकलकर मेरे पास आओ, और तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त का फल खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे।"³²जब तक मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ, जो तुम्हारे मुल्क की तरह ग़ल्ला और मय का मुल्क, रोटी और ताकिस्तानों का मुल्क, ज़ैतूनी तेल और शहद का मुल्क है; ताकि तुम जीते रहो, और मर न जाओ; इसलिए हिज़क्रियाह की न सुनना, जब वह तुमको ये ता'लीम दे कि ख़ुदावन्द हमको छुड़ाएगा।

³³~क्या क्रौमों के मा'बूदों में से किसी ने अपने मुल्क को शाह-ए-असूर के हाथ से छुड़ाया है?³⁴हमात और अरफ़ाद के मा'बूद कहाँ हैं? और सिफ़्वाइम और हेना' और इवाह के~मा'बूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा लिया?³⁵और मुल्कों के तमाम~मा'बूदों में से किस-किस ने अपना मुल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो यहोवाह यरुशलीम को मेरे हाथ से छुड़ा लेगा?"

³⁶लेकिन लोग ख़ामोश रहे और उसके जवाब में एक बात भी न कही, क्योंकि बादशाह का हुक्म यह था कि उसे जवाब न देना।³⁷~तब इलियाक्रीम-बिन-खिलक्रियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुन्शी, और यूआख बिन-आसफ़ मुहर्रिर अपने कपड़े चाक किए हुए हिज़क्रियाह के पास आए और रबशाक्री की बातें उसे सुनाई।

Chapter 19

¹जब हिज़क्रियाह बादशाह ने यह सुना, तो अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर खुदावन्द के घर में गया।²और उसने घर के दीवान और इलियाक्रीम और शबनाह मुन्शी और काहिनों के बुजुर्गों को टाट उढ़ाकर आमूस के बेटे यसा'याह नबी के पास भेजा।

³और उन्होंने उससे कहा, "हिज़क्रियाह यूँ कहता है, कि आज का दिन दुख, और मलामत, और तौहीन का दिन है; क्योंकि बच्चे पैदा होने पर हैं, लेकिन विलादत की ताक़त नहीं।⁴शायद खुदावन्द तेरा खुदा रबशाक्री की सब बातें सुने जिसको उसके आक्रा शाह-ए-असूर ने भेजा है, कि ज़िन्दा खुदा की तौहीन करे और जो बातें खुदावन्द तेरे खुदा ने सुनी हैं उन पर वह मलामत करेगा। इसलिए ~तू उस बक्रिया के लिए जो मौजूद है दु'आ कर।"

⁵इसलिए हिज़क्रियाह बादशाह के मुलाज़िम यसा'याह के पास आए।⁶यसा'याह ने उनसे कहा, "तुम अपने मालिक से यूँ कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे शाह-ए-असूर के मुलाज़िमों ने मेरी बुराई की है, न डर।⁷देख, मैं उसमें एक रूह डाल दूँगा, और वह एक अफ़वाह सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, और मैं उसे उसी के मुल्क में तलवार से मरवा डालूँगा।"

⁸इसलिए रबशाक्री लौट गया और उसने शाह-ए-असूर को लिबनाह से लड़ते पाया, क्योंकि उसने सुना था कि वह लकीस से चला गया है;⁹और जब उसने कूश के बादशाह तिरहाक्रा के ज़रिए' ये कहते सुना कि "देख, वह तुझे से लड़ने को निकला है, "तो उसने फिर हिज़क्रियाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहा,

¹⁰कि "शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह से इस तरह कहना, 'तेरा खुदा, जिस पर तेरा भरोसा है, तुझे यह कहकर धोखा न दे कि यरुशलीम शाह-ए-असूर के क़ब्ज़े में नहीं किया जाएगा।¹¹देख, तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुमालिक को बिल्कुल ग़ारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए क्या तू बचा रहेगा?

¹²~क्या उन क्रौमों के~मा'बूदों ने उनको, या'नी जौज़ान और हारान और रसफ़ और बनी-'अदन जो तिल्लसार में थे, जिनको हमारे बाप-दादा ने बर्बाद किया, छुड़ाया?¹³हमात का बादशाह और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर सिफ़वाइम और हेना' और इवाह का बादशाह कहाँ है?"

¹⁴हिज़क्रियाह ने क़ासिदों के हाथ से ख़त लिया और उसे पढ़ा, और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द के घर में जाकर उसे खुदावन्द के सामने ~फैला दिया।¹⁵और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द के सामने इस तरह दु'आ की, "ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा, करूबियों के ऊपर बैठने वाले! तू ही अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का खुदा है। तू ने ही आसमान और ज़मीन को पैदा किया।

¹⁶~ऐ खुदावन्द, कान लगा और सुन! ऐ खुदावन्द, अपनी आँखें खोल और देख; और सनहेरिब की बातों को, जिनसे ज़िन्दा खुदा की तौहीन करने के लिए उसने इस आदमी को भेजा है, सुन ले।¹⁷~ऐ खुदावन्द, असूर के बादशाहों ने दर हक़ीक़त क्रौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह किया:¹⁸और उनके~मा'बूदों~को आग में डाला क्योंकि वह खुदा न थे, बल्कि आदमियों की दस्तकारी, या'नी लकड़ी और पत्थर थे; इसलिए उन्होंने उनको बर्बाद किया है।

¹⁹इसलिए अब ऐ खुदावन्द हमारे खुदा में तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तू हमको उसके हाथ से बचा ले, ताकि ज़मीन की सब सल्तनतें जान लें कि तू ही अकेला खुदावन्द खुदा है।"

²⁰तब यसा'याह-बिन-आमूस ने हिज़क्रियाह को कहला भेजा कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है : चूँकि तू ने शाह-ए-असूर सनहेरिब के खिलाफ़ मुझसे दू'आ की है, मैंने तेरी सुन ली।²¹~इसलिए खुदावन्द ने उसके हक़ में यूँ फ़रमाया कि कुँवारी दुख्तरें सिंघून ने तुझे हक़ीर जाना और तेरा मज़ाक़ उड़ाया |

²²यरुशलीम की बेटि ने तुझ पर सर हिलाया है, "तूने किसकी तौहीन-ओ-बुराई की है? तूने किसके खिलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की, और अपनी आँखें ऊपर उठाई? इस्राईल के कुहूस के खिलाफ़ !

²³~तूने अपने क़ासिदों के ज़रिए' से खुदावन्द की तौहीन की, और कहा, कि मैं बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर, बल्कि लुबनान के वस्ती हिस्सों तक चढ़ाया हूँ; और मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदारों और अच्छे ~से अच्छे सनोबर के दरख्तों को काट डालूँगा; और मैं उसके दूर से दूर मक़ाम में, जहाँ उसकी बेशक़ीमती ज़मीन का जंगल है घुसा चला जाऊँगा।²⁴~मैंने जगह-जगह का पानी खोद-खोद कर पिया है और मैं अपने पाँव के तलवे से मिस्स की सब नदियाँ सुखा डालूँगा।

²⁵~"क्या तू ने नहीं सुना कि मुझे यह किए हुए मुदत हुई और मैंने इसे गुज़रे दिनों में ठहरा दिया था? अब मैंने उसको पूरा किया है कि तू फ़सीलदार शहरों को उजाड़ कर खंडर बना देने के लिए खड़ा हो।²⁶इसी वजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और वह घबरा गए, और शर्मिन्दा हुए वह मैदान की घास और हरी पौद और छतों पर की घास, और उस अनाज की तरह हो गए, जो बढ़ने से पहले ~सूख जाए।

²⁷~"लेकिन मैं तेरी मजलिस और आमद-ओ-रफ़्त और तेरा मुझ पर झुंझलाना मैं जानता हूँ।²⁸~तेरे मुझ पर झुंझलाने की वजह से, और इसलिए कि तेरा घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में, और अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा; और तू जिस रास्ते से आया है, मैं तुझे उसी रास्ते से वापस लौटा दूँगा।

²⁹और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीज़ें जो ~खुद से~उगती हैं, और दूसरे साल वह~चीज़ें~जो उनसे पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना, और बाग़ लगाकर उनका फल खाना।³⁰और वह ~जो यहूदाह के घराने से बचा रहा है फिर नीचे की तरफ़ जड़ पकड़ेंगे और ऊपर कि तरफ़ फल लाएंगे।³¹क्योंकि एक बक्रिया यरुशलीम से, और वह जो बच रहे हैं कोह-ए-सिंघून से निकलेंगे। खुदावन्द की ग़य्यूरी ये कर दिखाएगी।

³²इसलिए खुदावन्द शाह-ए-असूर के हक़ में यूँ फ़रमाता है कि वह इस शहर में आने, या यहाँ तीर चलाने न पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने, और न उसके मुकाबिल दमदमा बाँधने पाएगा।³³~बल्कि खुदावन्द फ़रमाता है कि जिस रास्ते से वह आया, उसी रास्ते से लौट जाएगा; और इस शहर में आने न पाएगा।³⁴क्योंकि मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर इस शहर की हिमायत करूँगा ताकि इसे बचा लें।"

³⁵~इसलिए उसी रात को खुदावन्द के फ़रिश्ते ने निकल कर असूर की लश्करगाह में एक लाख पचासी हज़ार आदमी मार डाले, और सुबह को जब लोग सवेरे उठे तो देखा, कि वह सब मरे पड़े हैं।³⁶तब शाह-ए-असूर सनहेरिब वहाँ से चला गया और लौटकर नीनवा में रहने लगा।³⁷और जब वह अपने मा'बूद निसरूक के

बुतखाने में 'इबादत कर रहा था, तो अदरम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल किया, और अरारात की सरज़मीन को भाग गए। और उसका बेटा असर हदून ~उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 20

¹उन ही दिनों में हिज़क्रियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया तब यशायाह नबी आमूस के बेटे ने उसके पास आकर उस से कहा खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि तू अपने घर का इन्तज़ाम कर दे; क्योंकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं।"²तब उसने अपना चेहरा दीवार की तरफ़ करके खुदावन्द से यह दु'आ की,³"ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मित्रता करता हूँ, याद फ़रमा कि मैं तेरे सामने ~सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र में भला है वही किया है।" और हिज़क्रियाह बहुत रोया।

⁴और ऐसा हुआ कि यसा'याह निकल कर शहर के बीच के हिस्से तक पहुँचा भी न था कि खुदावन्द का कलाम उस पर नाज़िल हुआ :⁵"लौट, और मेरी क़ौम के पेशवा हिज़क्रियाह से कह, कि खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा यूँ फ़रमाता है: मैंने तेरी दु'आ सुनी, और मैंने तेरे आँसू देखे। देख, मैं तुझे शिफ़ा दूँगा, और तीसरे दिन तू खुदावन्द के घर में जाएगा।

⁶और मैं तेरी 'उम्र पन्द्रह साल और बढ़ा दूँगा, और मैं तुझ को और इस शहर को शाह-ए-असूर के हाथ से बचा लूँगा, और मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर, इस शहर की हिमायत करूँगा।"⁷और यसा'याह ने कहा, "अंजीरों की टिकिया लो।" इसलिए वह ~उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बाँधा, तब वह ~अच्छा हो गया।

⁸हिज़क्रियाह ने यसा'याह से पूछा, "इसका क्या निशान होगा कि खुदावन्द मुझे सेहत बख़्शेगा, और मैं तीसरे दिन खुदावन्द के घर में जाऊँगा?"⁹यसा'याह ने जवाब दिया, "इस बात का, कि खुदावन्द ने जिस काम को कहा है उसे वह करेगा, खुदावन्द की तरफ़ से तेरे लिए निशान ये होगा कि साया या दस दर्जे आगे की जाए, या दस दर्जे पीछे की लौटे।"

¹⁰और हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, "ये तो छोटी बात है कि साया दस दर्जे आगे की जाए, इसलिए यूँ नहीं बल्कि साया दस दर्जे पीछे की लौटे।"¹¹~तब यसा'याह नबी ने खुदावन्द से दु'आ की; इसलिए उसने साये को आख़ज़ की धूप घड़ी में दस दर्जे, या'नी जितना वह ढल चुका था उतना ही पीछे की लौटा दिया।

¹²उस वक़्त शाह-ए-बाबुल बरूदक बलादान-बिन-बलादान ने हिज़क्रियाह के पास नामा और तहाइफ़ भेजे; क्योंकि उसने सुना था कि हिज़क्रियाह बीमार हो गया था।¹³इसलिए हिज़क्रियाह ने उनकी बातें सुनी, और उसने अपनी बेशबहा चीज़ों का सारा घर, और चाँदी और सोना ~अपना सिलाहखाना और जो कुछ उसके खज़ानों में मौजूद था उनको दिखाया; उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी कोई चीज़ न थी जो हिज़क्रियाह ने उनको न दिखाई।

¹⁴~तब यसा'याह नबी ने हिज़क्रियाह बादशाह के पास आकर उसे कहा, "ये लोग क्या कहते थे? और ये तेरे पास कहाँ से आए?" हिज़क्रियाह ने कहा, "ये दूर मुल्क से, या'नी बाबुल से आए हैं।"¹⁵~फिर उसने पूछा, "उन्होंने तेरे घर में क्या देखा?" ~हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, "उन्होंने सब कुछ जो मेरे घर में है देखा; मेरे खज़ानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई न हो।"

¹⁶~तब यसा'याह ने हिज़क्रियाह से कहा, "खुदावन्द का कलाम सुन ले :¹⁷देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो कुछ तेरे बाप-दादा ने आज के दिन तक जमा करके रखा है, बाबुल को ले जाएँगे; खुदावन्द फ़रमाता है, कुछ भी बाक़ी न रहेगा।¹⁸और वह तेरे बेटों में से जो तुझसे पैदा होंगे, और जिनका बाप तू ही होगा ले जाएँगे, और वह बाबुल के बादशाह के महल में ख़वाजासरा होंगे।"

¹⁹~हिज़क्रियाह ने यसा'याह से कहा, "खुदावन्द का कलाम जो तू ने कहा है, भला है।" और उसने ये भी कहा, 'भला ही होगा, अगर मेरे दिन ~में अमन ~और अमान रहे।²⁰हिज़क्रियाह के बाक़ी काम और उसकी सारी कुव्वत, और क्यूँकर उसने तालाब और नाली बनाकर शहर में पानी पहुँचाया; इसलिए क्या वह शाहान-ए-यहूदाह की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?²¹और हिज़क्रियाह अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 21

¹जब मनस्सी सल्तनत करने लगा तो बारह बरस का था, उसने पचपन बरस यरुशलीम में सल्तनत की, और उसकी माँ का नाम हिफ़सीबाह था।²उसने उन क्रौमों के नफ़रती कामों की तरह जिनको खुदावन्द ने बनी इस्राईल के आगे से दफ़ा किया, खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।³~क्यूँकि उसने उन ऊँचे मक़ामों को जिनको उसके बाप हिज़क्रियाह ने ढाया था फिर बनाया; और बा'ल के लिए-मज़बह बनाए। और यसीरत बनाई जैसे शाह-ए-इस्राईल अखीअब ने किया था; और आसमान की सारी फ़ौज को सिज्दा करता और उनकी 'इबादत ~करता था।

⁴और उसने खुदावन्द की हैकल में, जिसके ज़रिए' खुदावन्द ने फ़रमाया था, "मैं यरुशलीम में अपना नाम रखवूँगा।"~मज़बह बनाए।⁵और उसने आसमान की सारी फ़ौज के लिए खुदावन्द की हैकल के दोनों सहनों में मज़बह बनाए।⁶~और उसने अपने बेटे को आग में चलाया, और वह ~शगून निकालता और अफ़सूंगरी करता, और जिन्नात के प्यारों और जादूगरों से त'अल्लुक़ रखता था। उसने खुदावन्द के आगे उसको गुस्सा दिलाने के लिए बड़ी शरारत की।

⁷और उसने यसीरत की खोदी हुई मूरत को, जिसे उसने बनाया था, उस घर में खड़ा किया जिसके ज़रिए' खुदावन्द ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि "इसी घर में और यरुशलीम में जिसे मैंने बनी-इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, मैं अपना नाम हमेशा ~तक रखवूँगा" और मैं ऐसा न करूँगा कि बनी-इस्राईल के पाँव उस मुल्क से बाहर आवारा फ़िरें, जिसे मैंने उनके बाप-दादा को दिया, बशर्ते कि वह ~उन सब हुक्म के मुताबिक़ और उस शरी'अत के मुताबिक़, जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा ने उनको दिया, 'अमल करने की एहतियात रखवें।"⁹लेकिन ~उन्होंने न माना, और मनस्सी ने उनको बहकाया कि वह उन क्रौमों के बारे में, जिनको खुदावन्द ने बनी-इस्राईल के आगे से बर्बाद ~किया, ज़्यादा बदी करें।

¹⁰इसलिए खुदावन्द ने अपने बन्दों, नबियों के ज़रिए' फ़रमाया,¹¹~"चूँकि बादशाह यहूदाह मनस्सी ने नफ़रती काम किए, और अमोरियों की निस्बत जो उससे पहले ~हुए ज़्यादा बुराई की, और यहूदाह से भी अपने बुतों के ज़रीए' से गुनाह कराया;¹²इसलिए खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है : देखो, मैं यरुशलीम और यहूदाह पर ऐसी बला लाने को ~हूँ कि जो कोई उसका हाल सुने, उसके कान झन्ना उठेंगे।

¹³और मैं यरुशलीम पर सामरिया की रस्सी, और अखीअब के घराने का साहुल डालूँगा; और मैं यरुशलीम को ऐसा साफ़ करूँगा जैसे आदमी थाली को साफ़ करता है और उसे साफ़कर के उल्टी रख देता है।¹⁴और मैं अपनी मीरास के बाकी लोगों को तर्क करके, उनको उनके दुश्मनों के हवाले करूँगा; और वह अपने सब दुश्मनों के लिए शिकार और लूट ठहरेंगे।¹⁵~क्यूँकि जब से उनके बाप-दादा मिस्र ~से निकले, उस दिन से आज तक वह मेरे आगे बुराई ~करते और मुझे गुस्सा दिलाते रहे।"

¹⁶~'अलावा इसके मनस्सी ने उस गुनाह के 'अलावा ~कि उसने यहूदाह को गुमराह करके खुदावन्द की नज़र में गुनाह कराया, बेगुनाहों का खून भी इस क़दर किया कि यरुशलीम इस सिरे से उस सिरे तक भर गया।¹⁷~और मनस्सी के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, और वह गुनाह जो उससे सरज़द हुआ; इसलिए क्या वह बनी यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?¹⁸~और मनस्सी अपने बाप दादा के साथ सो गया, और अपने घर के बाग़ में जो 'उज़ज़ा का बाग़ है दफ़न हुआ; और उसका बेटा अमून उसकी जगह बादशाह हुआ।

¹⁹और अमून जब सल्तनत करने लगा तो बाईस बरस का था। उसने यरुशलीम में दो बरस सल्तनत की; उसकी माँ का नाम मुसल्लिमत था, जो हरूस युतबही की बेटी थी।²⁰~और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया जैसे उसके बाप मनस्सी ने की थी।

²¹~और वह अपने बाप के सब रास्तों पर चला, और उन बुतों की 'इबादत ~की जिनकी 'इबादत ~उसके बाप ने की थी, और उनको सिज्दा किया।²²और उसने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा को छोड़ दिया ~, और खुदावन्द की राह पर न चला।²³और अमून के खादिमों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की, और बादशाह को उसी के महल में जान से मार दिया।

²⁴लेकिन उस मुल्क के लोगों ने उन सबको, जिन्होंने अमून बादशाह के खिलाफ़ साज़िश की थी क़त्ल किया। और मुल्क के लोगों ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया।²⁵~अमून के बाकी काम जो उसने किए, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?²⁶~और वह अपनी क़ब्र में 'उज़ज़ा के बाग़ में दफ़न हुआ, और उसका बेटा यूसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 22

¹जब यूसियाह सल्लनत करने लगा, तो आठ बरस का था, उसने इकतीस साल ~यरुशलीम में सल्लनत की। उसकी माँ का नाम जदीदाह था, जो बसकती 'अदायाह की बेटी थी।' उसने वह काम किए जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था, और अपने बाप दाऊद की सब राहों पर चला और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ा।

³और यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ऐसा हुआ कि बादशाह ने साफ़न-बिन असलियाह-बिन-मसुल्लाम मुन्शी को खुदावन्द के घर भेजा और कहा, ⁴"तू खिलक्रियाह सरदार काहिन के पास जा, ताकि वह उस नक़दी को जो खुदावन्द के घर में लाई जाती है, और जिसे दरबानों ने लोगों से लेकर जमा किया है गिने, ⁵और वह उसे उन कारगुज़ारों को सौंप दे जो खुदावन्द के घर की निगरानी रखते हैं; और ये लोग उसे उन कारीगरों को दें जो खुदावन्द के घर में काम करते हैं, ताकि हैकल की दरारों की मरम्मत हो;

⁶या'नी बढइयों और बादशाहों और मिस्त्रियों को दें, और हैकल की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के खरीदने पर खर्च करें।' लेकिन उनसे उस नक़दी का जो उनके हाथ में दी जाती थी, कोई हिसाब नहीं लिया जाता था, इसलिए कि वह अमानत दारी से काम करते थे।

⁸और सरदार काहिन खिलक्रियाह ने साफ़न मुन्शी से कहा, "मुझे खुदावन्द के घर में तौरेत की किताब मिली है।" और खिलक्रियाह ने किताब साफ़न को दी और उसने उसको ~पढ़ा। ⁹और साफ़न मुन्शी बादशाह के पास आया और बादशाह को खबर दी कि तेरे खादिमों ने वह नक़दी जो हैकल में मिली, लेकर उन कारगुज़ारों के हाथ में सुपुर्द की जो खुदावन्द के घर की निगरानी रखते हैं।" ¹⁰और साफ़न मुन्शी ने बादशाह को ये भी बताया, "खिलक्रियाह काहिन ने एक किताब मेरे हवाले की है।" और साफ़न ने उसे बादशाह के सामने पढ़ा।

¹¹~जब बादशाह ने तौरेत की किताब की बातें सुनीं, तो अपने कपड़े फाड़े; ¹²और बादशाह ने खिलक्रियाह काहिन, और साफ़न के बेटे अखीक्राम, और मीकायाह के 'अकबूर और साफ़न मुन्शी असायाह को जो बादशाह का मुलाज़िम था ये हुक्म दिया, ¹³~कि "ये किताब जो मिली है, इसकी बातों के बारे में तुम जाकर मेरी और ~सब लोगों और सारे यहूदाह की तरफ़ से खुदावन्द से दरियाफ़्त करो; क्योंकि खुदावन्द का बड़ा ग़ज़ब हम पर इसी वजह से भड़का है कि हमारे बाप-दादा ने इस किताब की बातों को न सुना, कि जो कुछ उसमें हमारे बारे में लिखा है उसके मुताबिक़ 'अमल करते।"

¹⁴तब खिलक्रियाह, काहिन और 'अखीक्राम और साफ़न ~असायाह खुल्दा नबिया के पास गए, जो तोशाखाने के दरोगा सलूम बिन तिक़वा बिन खरखस की बीवी थी, (ये यरुशलीम में मिशना नामी महल्ले में रहती थी) इसलिए उन्होंने उससे गुफ़्तगू की। ¹⁵~उसने उनसे कहा, "खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, 'तुम उस शख्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहना, ¹⁶कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं इस किताब की उन सब बातों के मुताबिक़, जिनको शाह-ए-यहूदाह ने पढ़ा है, इस मक़ाम पर और इसके सब बाशिन्दों पर बला नाज़िल करूँगा।

¹⁷~क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर-मा'बूदों के आगे खुशबू जलाया, ताकि अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाएँ, इसलिए मेरा क्रहर इस मक़ाम पर भड़केगा और ठण्डा न होगा। ¹⁸~लेकिन शाह-ए-यहूदाह से जिसने तुम को खुदावन्द से दरियाफ़्त करने को भेजा है, यूँ कहना कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि जो बातें तू ने सुनीं हैं उनके बारे में यह हैं कि; ¹⁹चूँकि तेरा दिल नर्म है, और जब तू ने वह बात सुनी जो मैंने इस मक़ाम और इसके बशिन्दों के हक़ में कही कि वह तबाह हो जाएँगे और ला'नती भी ठहरेंगे, तो तू ने खुदावन्द के आगे 'आजिज़ी की और अपने कपड़े फाड़े और मेरे आगे रोया; इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली, खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁰इसलिए देख मैं तुझे तेरे बाप-दादा के साथ मिला दूँगा, और तू अपनी क़ब्र में सलामती से उतार दिया जाएगा, और उन सब आफ़तों को जो मैं इस मक़ाम पर नाज़िल करूँगा, तेरी आँखें नहीं देखेंगी।" " इसलिए वह ~यह खबर बादशाह के पास लाए।

Chapter 23

¹~और बादशाह ने लोग भेजे, और उन्होंने यहूदाह और यरुशलीम के सब बुजुर्गों को उसके पास जमा किया।²और बादशाह खुदावन्द के घर को गया, और उसके साथ यहूदाह के सब लोग, और यरुशलीम के सब बाशिन्दे, और काहिन, और नबी, और सब छोटे बड़े आदमी थे, और उसने जो 'अहद की किताब खुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सुनाई।

³~और बादशाह सुतून के बराबर खड़ा हुआ, और उसने खुदावन्द की पैरवी करने और उसके हुक्मों और शहादतों और तौर तरीक़े को अपने सारे दिल और सारी जान से मानने, और इस 'अहद की बातों पर जो उस किताब में लिखी हैं 'अमल करने के लिए खुदावन्द के सामने 'अहद बाँधा, और सब लोग उस 'अहद पर क़ायम हुए।

⁴फिर बादशाह ने सरदार काहिन खिलक्रियाह को, और उन काहिनों को जो दूसरे दर्जे के थे, और दरबानों को हुक्म किया कि उन सब बर्तनों को जो बा'ल और यसीरत और आसमान की सारी फ़ौज के लिए बनाए गए थे, खुदावन्द की हैकल से बाहर निकालें, और उसने यरुशलीम के बाहर क्रिद्रोन ~के खेतों में उनको जला दिया और उनकी राख बैतएल पहुँचाई।⁵और उसने उन बुत परस्त काहिनों को, जिनको शाहान-ए-यहूदाह ने यहूदाह के शहरों के ऊँचे मक़ामों और यरुशलीम के आस-पास के मक़ामों में खुशबू जलाने को मुक़र्रर किया था, और उनको भी जो बा'ल और चाँद और सूरज और सय्यारे और ~आसमान के सारे लश्कर के लिए खुशबू जलाते थे, मौक़ूफ़ किया।

⁶और वह यसीरत को खुदावन्द के घर से यरुशलीम के बाहर क्रिद्रोन के नाले पर ले गया, और उसे क्रिद्रोन के नाले पर जला दिया और उसे कूट कूटकर खाक बना दिया और उसे 'आम लोगों की क़ब्रों पर फेंक दिया।⁷उसने लूतियों के मक़ानों को जो खुदावन्द के घर में थे, जिनमें 'औरतें यसीरत के लिए पर्दे बुना करती थीं, ढा दिया।

⁸और उसने यहूदाह के शहरों से सब काहिनों को लाकर, जिबा' से बैरसबा' तक उन सब ऊँचे मक़ामों में जहाँ काहिनों ने खुशबू जलाया था, नज़ासत डलवाई; और उसने फाटकों के उन ऊँचे मक़ामों को जो शहर के नाज़िम यशू'आ के फाटक के मदख़ल, या'नी शहर के फाटक के बाएँ हाथ को थे, गिरा दिया।⁹तोभी ऊँचे मक़ामों के काहिन यरुशलीम में खुदावन्द के मज़बह के पास न आए, लेकिन वह अपने भाइयों के साथ बेखमीरी रोटी खा लेते थे।

¹⁰और उसने तूफ़त में जो बनी-हिन्चूम की वादी में है, नज़ासत फ़िक़वाई ताकि कोई शख्स मोलक के लिए अपने बेटे या बेटि को आग में न जला सके।¹¹~और उसने उन घोड़ों को दूर कर दिया जिनको यहूदाह के बादशाहों ने सूरज के लिए मख्सूस करके खुदावन्द के घर के आसताने पर, नातन मलिक ख़्वाजासरा की कोठरी के बराबर रखवा था जो हैकल की हद के अन्दर थी, और सूरज के रथों को आग से जला दिया।

¹²और उन मज़बहों को जो आख़ज़ के बालाख़ाने की छत पर थे, जिनको शाहान-ए-यहूदाह ने बनाया था और उन मज़बहों को जिनको मनस्सी ने खुदावन्द के घर के दोनों सहनों में बनाया था, बादशाह ने ढा दिया और वहाँ से उनको चूर-चूर करके उनकी खाक को क्रिद्रोन के नाले में फ़िक़वा दिया।¹³और बादशाह ने उन ऊँचे मक़ामों पर नज़ासत डलवाई जो यरूशलनीम के मुकाबिल कोह-ए-आलायश की दहनी तरफ़ थे, जिनको इस्राईल के बादशाह सुलेमान ने सैदानियों की ~नफ़रती 'अस्तारात और मोआबियों, के नफ़रती कमूस ~और बनी 'अम्मोन के नफ़रती ~मिल्कोम के लिए बनाया था।¹⁴और उसने सुतूनों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और यसीरतों को काट डाला, और उनकी जगह में मुदों की हड्डियाँ भर दीं।

¹⁵~फिर बैतएल का वह मज़बह और वह ऊँचा मक़ाम जिसे नबात के बेटे युरब'आम ने बनाया था, जिसने इस्राईल से गुनाह कराया, इसलिए इस मज़बह और ऊँचे मक़ाम दोनों को उसने ढा दिया, और ऊँचे मक़ाम को जला दिया और उसे कूट-कूटकर खाक कर दिया, और यसीरत को जला दिया।¹⁶और जब यूसियाह मुड़ा तो उसने उन क़ब्रों को देखा जो वहाँ उस पहाड़ पर थीं, इसलिए उसने लोग भेज कर उन क़ब्रों में से हड्डियाँ निकलवाई, और उनको उस मज़बह पर जलाकर उसे नापाक किया। ये खुदावन्द के सुखन के मुताबिक़ हुआ, जिसे उस मर्द-ए-ख़ुदा ने जिसने इन बातों की ख़बर दी थी सुनाया था।

¹⁷फिर उसने पूछा, 'ये कैसी यादगार है जिसे मैं देखता हूँ?' शहर के लोगों ने उसे बताया, "ये उस मर्द-ए-ख़ुदा की क़ब्र है, जिसने यहूदाह से आकर इन कामों की जो तू ने बैतएल के मज़बह से किए, ख़बर दी।"¹⁸~तब उसने कहा, "उसे रहने दो, कोई उसकी हड्डियों को न सरकाए।" इसलिए उन्होंने उसकी हड्डियाँ उस नबी की हड्डियों के साथ जो सामरिया से आया था रहने दीं।

¹⁹और यूसियाह ने उन ऊँचे मक़ामों के सब घरों को भी जो सामरिया के शहरों में थे, जिनको इस्राईल के बादशाहों ने खुदावन्द को गुस्सा दिलाने को बनाया था ढाया, और जैसा उसने बैतएल में किया था वैसा ही उनसे भी किया।²⁰और उसने ऊँचे मक़ामों के सब काहिनों को जो वहाँ थे, उन मज़बहों पर क़त्ल किया और आदमियों की हड्डियाँ उन पर जलाई; फिर वह यरुशलीम को लौट आया।

²¹और बादशाह ने सब लोगों को ये हुक्म दिया, कि "ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए फ़सह मनाओ, जैसा 'अहद की इस किताब में लिखा है।"²²और यक़ीनन क़ाजियों के ज़माने से जो इस्राईल की 'अदालत करते थे, और इस्राईल के बादशाहों और यहूदाह के बादशाहों के कुल दिनों में ऐसी 'ईद-ए-फ़सह कभी नहीं हुई थी।²³यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ये फ़सह यरुशलीम में खुदावन्द के लिए मनाई गई।

²⁴~इसके सिवा ~यूसियाह ने जिन्नत के यारों और जादूगरों और मूरतों और बुतों, और सब नफ़रती चीज़ों को जो मुल्क-ए- यहूदाह और यरुशलीम में नज़र आई दूर कर दिया, ताकि वह ~शरी'अत की उन बातों को पूरा करे जो उस किताब में लिखी थी, जो खिलक्रियाह काहिन को खुदावन्द के घर में मिली थी।²⁵~उससे पहले कोई बादशाह उसकी तरह नहीं हुआ था, जो अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपने सारे ज़ोर से मूसा की सारी शरी'अत के मुताबिक़ खुदावन्द की तरफ़ रुजू' लाया हो; और न उसके बा'द कोई उसकी तरह खड़ा हुआ।

²⁶बावज़ूद इसके मनस्सी की सब बदकारियों की वजह से, जिनसे उसने खुदावन्द को गुस्सा दिलाया था, खुदावन्द अपने सख़्त-ओ-शदीद क़हर से, जिससे उसका ग़ज़ब यहूदाह पर भड़का था, बाज़ न आया।²⁷और खुदावन्द ने फ़रमाया, कि "मैं यहूदाह को भी अपनी आँखों के सामने से दूर करूँगा, जैसे मैंने इस्राईल को दूर किया; और मैं इस शहर को जिसे मैंने चुना था 'नी यरुशलीम को, और इस घर को जिसके ज़रिए' मैंने कहा था की मेरा नाम वहाँ होगा रद्द कर दूँगा

²⁸और यूसियाह के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे नहीं?²⁹उसी के अय्याम में शाह-ए-मिस्र फिर'औन निकोह शाह-ए-असूर पर चढ़ाई करने के लिए दरिया-ए-फुरात को गया था; और यूसियाह बादशाह उसका सामना करने को निकला, इसलिए उसने उसे देखते ही मजिदो में क़त्ल कर दिया।³⁰~और उसके मुलाज़िम उसको एक रथ में मजिदो से मरा हुआ ले गए, और उसे यरुशलीम में लाकर उसी की क़ब्र में दफ़न किया। और उस मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआखज़ को लेकर उसे मसह किया, और उसके बाप की जगह उसे बादशाह बनाया।

³¹और यहूआखज़ जब सल्तनत करने लगा तो तेईस साल का था, उसने यरुशलीम में तीन महीने सल्तनत की। उसकी माँ का नाम हमूतल था, जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी।³²~और जो-जो उसके बाप-दादा ने किया था उसके मुताबिक़ इसने भी खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।³³इसलिए फिर'औन निकोह ने उसे रिबला में, जो मुल्क-ए-हमात में है, कैद कर दिया ताकि वह यरुशलीम में सल्तनत न करने पाए; और उस मुल्क पर सौ क्रिन्तार चाँदी और एक-क्रिन्तार-सोना खिराज मुकर्रर किया।

³⁴और फिर'औन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलियाक़ीम को उसके बाप यूसियाह की जगह बादशाह बनाया, और उसका नाम बदलकर यहूयक़ीम रखा, लेकिन यहूआखज़ को ले गया, इसलिए वह मिस्र में आकर वहाँ मर गया।³⁵यहूयक़ीम ने वह चाँदी और सोना फिर'औन को पहुँचाया, पर इस नक़दी को फिर'औन के हुक्म के मुताबिक़ देने के लिए उसने ममलुक़त पर खिराज मुकर्रर किया; या'नी उसने उस मुल्क के लोगों से हर शख्स के लगान के मुताबिक़ चाँदी और सोना लिया ताकि फिर'औन निकोह को दे।

³⁶यहूयक़ीम जब सल्तनत करने लगा, तो पच्चीस बरस का था, उसने यरुशलीम में ग्यारह बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम ज़बूदा था, जो रूमाह के फ़िदायाह की बेटी थी।³⁷~और जो-जो उसके बाप-दादा ने किया था, उसी के मुताबिक़ उसने भी खुदावन्द की नज़र में बुराई की।

Chapter 24

¹उसी के दिनों में शाह-ए-बाबुल नबूकद नज़र ने चढ़ाई की और यहूयक्रीम तीन बरस तक उसका खादिम रहा तब वह फिर कर उससे मुड़ गया।²और खुदावन्द ने कसदियों के दल, और अराम के दल, और मौआब के दल, और बनी 'अम्मोन के दल उस पर भेजे, और यहूदाह पर भी भेजे ताकि उसे जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दों नबियों के ज़रिए' फ़रमाया था हलाक कर दे।

³यक्रीनन खुदावन्द ही के हुक्म से यहूदाह पर यह सब कुछ हुआ, ताकि मनस्सी के सब गुनाहों के ज़रिए' जो उसने किए, उनको अपनी नज़र से दूर करे⁴और उन सब बेगुनाहों के खून के ज़रिए' भी जिसे मनस्सी ने बहाया; क्योंकि उसने यरुशलीम को बेगुनाहों के खून से भर दिया था और खुदावन्द ने मु'आफ़ करना न चाहा।

⁵यहूयक्रीम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं?⁶और यहूयक्रीम अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा-यहूयाकीन-उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁷और शाह-ए-मिस्र फिर कभी अपने मुल्क से बाहर न गया; क्योंकि शाह-ए-बाबुल ने मिस्र के नाले से दरिया-ए-फुरात तक सब कुछ जो शाह-ए- मिस्र का था ले लिया था।

⁸यहूयाकीन-जब सल्तनत करने लगा तो अठारह बरस का था, और यरुशलीम में उसने तीन महीने सल्तनत की। उसकी माँ का नाम नहुशता था, जो यरुशलीमी इलनातन की बेटी थी।⁹और जो-जो उसके बाप ने किया था उसके मुताबिक़ उसने भी खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।

¹⁰उस वक़्त शाह-ए- बाबुल नबूकदनज़र के खादिमों ने यरुशलीम पर चढ़ाई की और शहर को घेर -लिया।¹¹-और शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र भी, जब उसके खादिमों ने उस शहर को घेर रखवा था, वहाँ आया।¹²तब शाह-ए-यहूदाह यहूयाकीन अपनी माँ और अपने मुलाज़िमों और सरदारों और 'उहदादारों' साथ निकल कर शाह-ए-बाबुल के पास गया, और शाह-ए-बाबुल ने अपनी सल्तनत के आठवें बरस उसे गिरफ़्तार किया।

¹³और वह खुदावन्द के घर के सब खज़ानों और शाही महल के सब खज़ानों को वहाँ से ले गया, और सोने के सब बर्तनों को जिनको शाह-ए-इसाईल सुलेमान ने खुदावन्द की हैकल में बनाया था, उसने काट कर खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।¹⁴और वह सारे यरुशलीम को और सब सरदारों और सब सूर्माओं को, जो दस हज़ार आदमी थे, और सब कारीगरों और लुहारों को गुलाम करके ले गया; इसलिए वहाँ मुल्क के लोगों में से सिवा कंगालों के और कोई बाक़ी न रहा।

¹⁵और-यहूयाकीन-को वह बाबुल ले गया, और बादशाह की माँ और बादशाह की बीवियों और उसके 'उहदे दारों और मुल्क के रईसों को वह गुलाम -करके यरुशलीम से बाबुल को ले गया।¹⁶और सब ताक़तवर आदमियों को जो सात हज़ार थे, और कारीगरों और लुहारों को जो एक हज़ार थे, और सब के सब मज़बूत और जंग के लायक़ थे; शाह-ए-बाबुल गुलाम करके बाबुल में ले आया¹⁷और शाह-ए-बाबुल ने उसके बाप के भाई मत्तनियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया और उसका नाम बदलकर सिदक्रियाह रखा।

¹⁸-जब सिदक्रियाह सल्तनत करने लगा तो इक्कीस बरस का था, और उसने ग्यारह बरस यरुशलीम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम हमूतल था, जो लिबनाही यर्मियाह की बेटी थी।¹⁹और जो-जो यहू यक्रीम ने किया था उसी के मुताबिक़ उसने भी खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।²⁰क्योंकि खुदावन्द के ग़ज़ब की वजह से यरुशलीम और यहूदाह की ये नौबत आई, कि आखिर उसने उनको अपने सामने -से दूर ही कर दिया; और सिदक्रियाह-शाह-ए-बाबुल से -फिर -गया।

Chapter 25

¹और उसकी सल्तनत के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन, यूँ हुआ कि शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र ने अपनी सारी फ़ौज के साथ यरुशलीम पर चढ़ाई की, और उसके सामने ख़ैमाज़न हुआ, और उन्होंने उसके सामने चारों तरफ़ घेराबन्दी की।²और सिदक्रियाह बादशाह की सल्तनत के ग्यारहवें बरस तक शहर का मुहासिरा रहा।³चौथे महीने के नौवें दिन से शहर में काल ऐसा सख़्त हो गया, कि मुल्क के लोगों के लिए कुछ खाने को न रहा।

⁴तब शहर पनाह में सुराख हो गया, और दोनों दीवारों के बीच ~जो फाटक शाही बाग़ के बराबर था, उससे सब जंगी मर्द रात ही रात भाग गए, (उस वक़्त कसदी शहर को घेरे हुए थे) और बादशाह ने वीराने का रास्ता लिया।⁵~लेकिन कसदियों की फ़ौज ने बादशाह का पीछा किया और उसे यरीहू के मैदान में जा लिया, और उसका सारा लश्कर उसके पास से तितर बितर हो गया था।

⁶इसलिए वह बादशाह को पकड़ कर रिबला में शाह-ए-बाबुल के पास ले गए, और उन्होंने उस पर फ़तवा दिया।⁷और उन्होंने सिदक्रियाह के बेटों को उसकी आँखों के सामने ज़बह किया और~सिदक्रियाह की आँखें निकाल डालीं और~उसे ज़ँजीरों से जकड़कर बाबुल को ले गए।

⁸और शाह-ए-बाबुल नबूकद नज़र के 'अहद के उन्नीसवें साल के पाँचवें महीने के सातवें दिन, शाह-ए-बाबुल का एक खादिम नबुज़रादान जो जिलौदारों का सरदार था यरुशलीम में आया।⁹और उसने ख़ुदावन्द का घर और बादशाह का महल यरुशलीम के सब घर, या'नी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया।¹⁰और कसदियों के सारे लश्कर ने जो जिलौदारों के सरदार के साथ थे, यरुशलीम की फ़सील को चारों तरफ़ से गिरा दिया।

¹¹~और बाक़ी लोगों को जो शहर में रह गए थे, और उनको ~जिन्होंने अपनों को छोड़ कर शाह-ए-बाबुल की पनाह ली थी, और 'अवाम में से जितने बाक़ी रह गए थे, उन सबको नबुज़रादान जिलौदारों का सरदार क़ैद करके ले गया।¹²पर जिलौदारों के सरदार ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया, ताकि खेती और बाग़ों ~की बाग़बानी करें।

¹³और पीतल के उन सुतूनों को जो ख़ुदावन्द के घर में थे, और कुर्सियों को और पीतल के ~बड़े हौज़ को, जो ख़ुदावन्द के घर में था, कसदियों ने तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े किया और उनका पीतल बाबुल को ले गए।¹⁴~और तमाम देगों और बेलचे और गुलगीर और चम्चे, और पीतल के तमाम बर्तन जो वहाँ काम आते थे ले गए।¹⁵और अंगीठियाँ और कटोरे, ग़रज़ जो कुछ सोने का था उसके सोने को, और जो कुछ चाँदी का था उसकी चाँदी को, जिलौदारों का सरदार ले गया।

¹⁶~और दोनों सुतून और वह बड़ा हौज़ और वह कुर्सियाँ, जिनको सुलेमान ने ख़ुदावन्द के घर के लिए बनाया था, इन सब चीज़ों के पीतल का वज़न बेहिसाब था।¹⁷~एक सुतून अठारह हाथ ऊँचा था, और उसके ऊपर पीतल का एक ताज था और वह ताज तीन हाथ बलन्द था; उस ताज पर चारों तरफ़ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी हुई थीं; और दूसरे सुतून के लवाज़िम भी जाली समेत इन्हीं की तरह थे।

¹⁸जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को और काहिन-ए-सानी सफ़नियाह को और तीनों दरबानों को पकड़ लिया;¹⁹और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी मर्दों पर मुक़र्रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाज़िर रहते थे उनमें से पाँच आदमियों को जो शहर में मिले, और लश्कर के बड़े मुहर्रिर को जो अहल-ए-मुल्क की मौजूदात लेता था, और मुल्क के लोगों में से साठ आदमियों को जो शहर में मिले।

²⁰इनको जिलौदारों का सरदार नबुज़रादान पकड़ कर शाह-ए-बाबुल के सामने रिबला में ले गया।²¹~और शाह-ए-बाबुल ने हमात के 'इलाक़े के रिबला में इनको मारा और क़त्ल किया। इसलिए यहूदाह भी अपने मुल्क से गुलाम होकर चला गया।

²²जो लोग यहूदाह की सर ज़मीन में रह गए, जिनको नबूकदनज़र शाह-ए-बाबुल ने छोड़ दिया, उन पर उसने जिदलियाह-बिनअखीक़ाम-बिन साफ़न को हाकिम मुक़र्रर किया।²³जब लश्करों के सब सरदारों और उनकी सिपाह ने, या'नी इस्माईल-बिन-नतनियाह और यूहनान बिन क़रीह और सराया बिन ताख़ूमत नातूफ़ाती और याजनियाह बिन मा'काती ने सुना कि शाह-ए-बाबुल ने जिदलियाह को हाकिम बनाया है, तो वह अपने लोगों समेत मिस्रफ़ाह में जिदलियाह के पास आए।

²⁴~जिदलियाह ने उनसे और उनकी सिपाह से क्रसम खाकर कहा, "कसदियों के मुलाज़िमों से मत डरो; मुल्क में बसे रहो और शाह-ए-बाबुल की खिदमत करो और ~तुम्हारी भलाई होगी।"

²⁵~मगर सातवें महीने ऐसा हुआ कि इस्माईल-बिन-नतनियाह-बिन-एलीशामा' जो बादशाह की नस्ल से था, अपने साथ दस मर्द लेकर आया और जिदलियाह को ऐसा मारा कि वह मर गया; और उन यहूदियों और कसदियों को भी जो उसके साथ मिस्रफ़ाह ~में थे क़त्ल किया।²⁶~तब सब लोग, क्या छोटे क्या बड़े और लोगों के सरदार उठ कर मिस्र को चले गए क्योंकि वह कसदियों से डरते थे।

²⁷और~यहूयाकीन~शाह-ए-यहूदाह की गुलामी के सैंतीसवें साल के बारहवें महीने के सत्ताइसवें दिन ऐसा हुआ, कि शाह-ए-बाबुल अवील मरदूक़ ने अपनी सल्तनत के पहले ही साल~यहूयाकीन~शाह-ए-यहूदाह को क़ैदखाने से निकाल कर सरफ़राज़ किया;

²⁸और उसके साथ मेहरबानी से बातें कीं, और उसकी कुर्सी उन सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे बलन्द की।²⁹~इसलिए वह अपने क़ैदखाने के कपड़े बदलकर 'उम्र भर बराबर उसके सामने खाना खाता रहा';³⁰~और उसको 'उम्र भर बादशाह की तरफ़ से वज़ीफ़े के तौर पर हर रोज़ खर्चा मिलता रहा।

१-तवारीख़

Chapter 1

¹आदम, सेत, उनूस,²किनान, महलीएल, यारिद,³हनूक, मतूसिलह, लमक,⁴नूह, सिम, हाम, और याफ़त।

⁵बनी याफ़त: जुमर और माजूज और मादी और यावान और तूबल और मसक और तीरास हैं।⁶और बनी जुमर अशकनाज और रीफ़त और तजुर्मा है।⁷और बनी यावान, इलीसा और तरसीस, किक्ती और दूदानी हैं।

⁸हाम: कूश और मिस्र, फ़ूत और कना'न हैं।⁹बनी कूश: सबा और हवीला और सबता और रा'माह सब्तका हैं और बनी रामाह सबाह और दादान हैं।¹⁰कूश से नमरूद पैदा हुआ; ज़मीन पर पहले वही बहादुरी करने लगा।

¹¹और मिस्र से लूदी और अनामी और लिहाबी और नफ़तूही,¹²और फ़तरूसी और कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले), कप्तूरी पैदा हुए।

¹³और कना'न से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित्त,¹⁴और यबूसी और अमोरी और जिरजाशी,¹⁵और हव्वी और 'अक्की और सीनी,¹⁶और अरवादी और सिमारी और हिमाती पैदा हुए।

¹⁷बनी सिम: 'ऐलाम और असूर और अरफ़कसद और लूद और अराम और 'ऊज़ और हूल और जतर और मसक हैं।¹⁸और अरफ़कसद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से 'इब्र पैदा हुआ।¹⁹और इब्र से दो बेटे पहले का नाम फ़लज था क्योंकि उसके अय्याम में ज़मीन बटी, और उसके भाई का नाम नाम युक्रतान था।

²⁰और युक्रतान से अलमूदाद और सलफ़ और हसर मावत और इराख़,²¹और हदूराम और ऊज़ाल और दिक्ला,²²और 'ऐबाल और अबीमाएल और सबा,²³और ओफ़ीर और हवीला और युबाब पैदा हुए; यह सब बनी यूक्रतान हैं।

²⁴सिम, अरफ़कसद, सिलह,²⁵'इब्र, फ़लज, र'ऊ,²⁶सरुज, नहूर, तारह,²⁷अब्राम या'नी इब्राहीम।

²⁸इब्राहीम के बेटे: इस्हाक़ और इस्मा'ईल थे।²⁹उनकी औलाद यह हैं: इस्मा'ईल का पहलौठा नबायोत उसके बा'द कीदार और अदबिएल और मिबसाम,

³⁰'मिशमा'अ और दूमा और मसा, हदद और तेमा,³¹यतूर, नाफ़ीस, क्रिदमा; यह बनीइस्मा'ईल हैं।

³²और इब्राहीम की हरम कतूरा के बेटे यह हैं: उसके बत्न से ज़िमरान युक्रसान और मिदान और मिदियान और इस्बाक़ और सूख़ पैदा हुए और बनी युक्रसान: सिबा और ददान हैं।³³और बनी मिदियान: 'एफ़ा और 'इफ़ और हनूक और अबीदा'अ अल्द'आ हैं; यह सब बनी कतूरा हैं।

³⁴और इब्राहीम से इस्हाक़ पैदा हुआ। बनी इस्हाक़: 'ऐसौ और इसाईल थे।³⁵बनी 'ऐसौ: अलीफ़ज़ और र'ऊएल और य'ऊस और या'लाम और क्रोरह हैं।³⁶बनी अलीफ़ज़: तेमान और ओमर और सफ़ी और जा'ताम, क़नज़, और तिम्ना' और 'अमालीक़ हैं।³⁷बनी र'ऊएल: नहत, जारह, सम्मा और मिज़्ज़ा हैं।

³⁸और बनी श'ईर: लोतान और सोबल और सबा'ऊन और 'अना और दीसोन और एसर और दीसान हैं।³⁹और हूरी और होमाम लूतान के बेटे थे, और तिम्ना' लोतान की बहन थी।⁴⁰बनी सोबल: 'अल्यान और मानहत 'एबाल सफ़ी और औनाम हैं। अय्या और 'अना सबा'ऊन के बेटे थे।

⁴¹और 'अना का बेटा दीसोन था; और हमरान और इश्बान और यित्रान और किरान दीसोन के बेटे थे।⁴²और एसर के बेटे: बिलहान और ज़ा'वान और या'क़ान थे और ऊज़ और अरान दीसान के बेटे थे।

⁴³और जिन बादशाहों ने मुल्क-ए-अदोम पर उस वक़्त हुक्मत की जब बनी-इसाईल पर कोई बादशाह हुक्मरान न था वह यह हैं: बाला' बिन ब'ओर; उसके शहर का नाम दिन्हाबा था।⁴⁴और बाला' मर गया और यूबाब बिन ज़ारह जो बसुराही था उसकी जगह बादशाह हुआ।⁴⁵और यूबाब मर गया और हशाम जो तेमान के 'इलाक़े का था उसकी जगह बादशाह हो हुआ।

⁴⁶और हशाम मर गया और हदद बिन बिदद, जिसने मिदियानियों को मोआब के मैदान में मारा उसकी जगह बादशाह हुआ और उसके शहर का नाम 'अवीत था।⁴⁷और हदद मर गया और शमला जो मसरिका का था, उसकी जगह बादशाह हुआ।⁴⁸और शमला मर गया और साउल जो दरिया-ए-फ़रात के पास के रहोबोत का बाशिंदा था उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁴⁹और साउल मर गया और बा'ल-हनान बिन 'अकबोर उसकी जगह बादशाह हुआ।⁵⁰और बा'ल-हनान मर गया और हदद उसकी जगह बादशाह हुआ; उसके शहर का नाम फ़ा'ई और उसकी बीवी का नाम महेतबेल था, जो मतरिद बिन मेज़ाहाब की बेटी थी।

⁵¹और हदद मर गया। फिर यह अदोम के रईस हुए: रईस तिम्ना', रईस अलियाह, रईस यतीत,⁵²रईस उहलीबामा, रईस ऐला, रईस फ़ीनोन,⁵³रईस क़नज़, रईस तेमान, रईस मिब्सार,⁵⁴रईस मज्दिएल, रईस 'इराम; अदोम के रईस यही हैं।

Chapter 2

¹यह बनी इस्राईल हैं: रूबिन, शमा'ऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून,²दान, यूसुफ, और बिनयमीन, नफ़ताली, जद् और आशर।

³'एर और ओनान और सेला, यह यहूदाह के बेटे हैं; यह तीनों उससे एक कन्या'नी 'औरत बतसू'अ के बल्न से पैदा हुए। और यहूदाह का पहलौठा 'एर खुदावंद की नज़र में एक शरीर था, इसलिए उसने उसको मार डाला;⁴और उसकी बहू तमर के उससे फ़ारस और ज़ारह हुए। यहूदाह के कुल पांच बेटे थे।

⁵और फ़ारस के बेटे हसरोन और हमूल थे।⁶और ज़ारह के बेटे: ज़िमरी और ऐतान, हैमान और कलकूल और दारा', या'नी कुल पाँच थे।⁷और इस्राईल का दुख देने वाला 'अकर जिसने मख्सूस की हुई चीज़ों में ख़यानत की, करमी का बेटा था;⁸और ऐतान का बेटा 'अज़रियाह था।

⁹और हसरोन के बेटे जो उससे पैदा हुए यह हैं: यरहमिएल और राम और कुलूबी।¹⁰और राम से 'अम्मीनदाब पैदा हुआ और 'अम्मीनदाब से नह्सोन पैदा हुआ, जो बनी यहूदाह का सरदार था।¹¹और नह्सोन से सलमा पैदा हुआ और सलमा से बो'अज़ पैदा हुआ।¹²और बो'अज़ से 'ओबेद पैदा हुआ और 'ओबेद से यस्सी पैदा हुआ।

¹³यस्सी से उसका पहलौठा 'अलियाब पैदा हुआ, और इबीनदाब दूसरा, और सिमा' तीसरा,¹⁴नतनिएल चौथा, रद्दी पाँचवाँ,¹⁵'ओज़म छठा, दाऊद सातवाँ,

¹⁶और उनकी बहनें ज़रुयाह और अबीजेल थीं। अबीशै और युआब और 'असाहेल, यह तीनों ज़रुयाह के बेटे हैं।¹⁷और अबीजेल से 'अमासा पैदा हुआ, और 'अमासा का बाप इस्माईली यतर था।

¹⁸और हसरोन के बेटे कालिब से, उसकी बीवी 'अज़ूबा और यरी'ओत के औलाद पैदा हुई। 'अज़ूबा के बेटे यह हैं: यशर और सूबाब और अरदून।¹⁹और 'अज़ूबा मर गई, और कालिब ने इफ़रात को ब्याह लिया जिसके बल्न से हूर पैदा हुआ।²⁰और हूर से ऊरी पैदा हुआ और ऊरी से बज़लिल पैदा हुआ।

²¹उसके बा'द हसरोन जिल'आद के बाप मकीर की बेटी के पास गया; जिससे उसने साठ बरस की 'उम्र में ब्याह किया था और उसके बल्न से शजूब पैदा हुआ।

²²और शजूब से यार्द पैदा हुआ। जो मुल्क-ए-जिल'आद में तेईस शहरों का मालिक था।

²³और जसूर और अराम ने यार्द के शहरों को और क़नात को म'ए उसके क़स्बों के या'नी साठ शहरों को उन से ले लिया। यह सब जिल'आद के बाप मकीर के बेटे थे।²⁴और हसरोन के कालिब इफ़राता में मर जाने के बा'द हसरोन की बीवी अबियाह के उससे अशूर पैदा हुआ जो तकू'अ का बाप था।

²⁵और हसरोन के पहलौठे, यरहमिएल के बेटे यह हैं: राम जो उसका पहलौठा था और बूना और ओरन और ओज़म और अखियाह।²⁶और यरहमिएल की एक और बीवी थी जिसका नाम 'अतारा था। वह ओनाम की माँ थी।²⁷और यरहमिएल के पहलौठे राम के बेटे मा'ज़ और यमीन 'एकर थे।²⁸और ओनाम के बेटे: सम्मी और यदा'; और सम्मी के बेटे: नदब और अबीसूर थे।

²⁹और अबीसूर की बीवी का नाम अबीख़ैल था। उसके बल्न से अख़बान और मोलिट पैदा हुए।³⁰और नदब के बेटे: सिलिट अपफ़ाईम थे लेकिन सिलिट बे औलाद मर गया।³¹और अपफ़ाईम का बेटा यस'ई; और यस'ई का बेटा सीसान; और सीसान का बेटा अख़ली था।³²और सम्मी के भाई यदा' के बेटे: यतर और यूनतन थे; और यतर बे औलाद मर गया।³³और यूनतन के बेटे: फ़लत और ज़ाज़ा; यह यरहमिएल के बेटे थे।

³⁴और सीसान के बेटे नहीं सिर्फ़ बेटियाँ थीं और सीसान का एक मिस्री नौकर यरखा' नामी था।³⁵इसलिए सीसान ने अपनी बेटी को अपने नौकर यरखा' से ब्याह दिया, और उसके उससे 'अत्ती पैदा हुआ।

³⁶और अत्ती से नातन पैदा हुआ, और नातन से ज़ाबा'द पैदा हुआ,³⁷और ज़ाबा'द से इफ़लाल पैदा हुआ और इफ़लाल से 'ओबेद पैदा हुआ।³⁸और 'ओबेद से याहू पैदा हुआ और याहू से 'अज़रयाह पैदा हुआ

³⁹और अज़रयाह से ख़लस पैदा हुआ, और ख़लस से इलि, आसा पैदा हुआ,⁴⁰और इलि'आसा से सिसमी पैदा हुआ, और सिसमी से सलूम पैदा हुआ।⁴¹और सलूम से यक्रमियाह पैदा हुआ और यक्रमियाह से इलीसमा' पैदा हुआ।

⁴²यरहमिएल के भाई कालिब के बेटे यह हैं: मीसा उसका पहलौठा जो ज़ीफ़ का बाप है, और हबरून के बाप मरीसा के बेटे।⁴³और बनी हबरून: क्रोरह और तफ़फ़ूह और रक्रम और समा' थे।⁴⁴और समा' से युरक'आम का बाप रख़म पैदा हुआ, और रख़म से सम्मी पैदा हुआ।

⁴⁵और सम्मी का बेटा: म'ऊन था और म'ऊन बैतसूर का बाप था।⁴⁶और कालिब की हरम ऐफ़ा से हरान और मौज़ा और जाज़िज़ पैदा हुए और हरान से जाज़िज़ पैदा हुआ।⁴⁷और बनी यहदी: रजम और यूताम और जसाम और फ़लत और 'ऐफ़ा और शा'फ़ थे।

⁴⁸और कालिब की हरम मा'का से शिब्बर और तिरहनाह पैदा हुए।⁴⁹उसी के बल्न से मदमन्नाह का बाप शा'फ़ और मकबीना का बाप सिवा और रहज और रिजबा' का बाप भी पैदा हुए; और कालिब की बेटी 'अकसा थी।⁵⁰कालिब के बेटे यह थे। इफ़राता के पहलौठे हूर का बेटा क्ररयत-या'रीम का बाप सोबल,

⁵¹बैतलहम का बाप सलमा, और बैतजादिर का बाप ख़ारीफ़।

⁵²और क्ररयत-यारीम के बाप सोबल के बेटे ही बेटे थे; हराई और मनोख़ोत के आधे लोग।⁵³और क्ररयत या'रीम के घराने यह थे: इतरी और फ़ूती और सुमाती और मिस्रा'ई इन्हीं से सुर'अती और इश्तावली निकले हैं।

⁵⁴बनी सलमा यह थे: बैतलहम और नतूफ़ाती और 'अतरात-बैतयुआब और मन्ख़तियों के आधे लोग और सुर'ई,⁵⁵और या'बीज़ के रहने वाले मुन्शियों के घराने, तिर'आती और सम'आती और सौकाती; यह वह क़ीनी हैं जो रैकाब के घराने के बाप हमात की नसल से थे।

Chapter 3

¹यह दाऊद के बेटे हैं जो हबरून में उससे पैदा हुए: पहलौठा अमनोन, यज़र'एली अखीनू'अम के बत्न से; दूसरा दानिएल, कर्मिली अबीजेल के बत्न से;²तीसरा अबीसलोम, जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी मा'का का बेटा था; चौथा अदूनियाह, जो हज्जियत का बेटा था।³पाँचवाँ सफ़तियाह, अबीताल ले बत्न से; छठा इतर'आम, उसकी बीवी 'इजला से।

⁴यह छः हबरून में उससे पैदा हुए। उसने वहाँ सात बरस छः महीने हुकूमत की, और यरुशालीम में उसने तैंतीस बरस हुकूमत की।⁵और यह यरुशालीम में उससे पैदा हुए: सिम'आ और सूबाब और नातन और सुलेमान, यह चारों 'अम्मीएल की बेटी बतसू'अ के बत्न से थे।

⁶और इब्हार और इलीसमा' और अलीफलत,⁷और नुजा और नफ़ज और यफ़ी'आ,⁸और अलीसमा' और इलीदा' और अलीफलत; यह नौ⁹यह सब हरमों के बेटों के 'अलावा दाऊद के बेटे थे; और तमर इनकी बहन थी

¹⁰और सुलेमान का बेटा रहुब'आम था उसका बेटा अबियाह, उसका बेटा आसा, उसका बेटा यहूसफ़त;¹¹उसका बेटा यूराम, उसका बेटा अखज़ियाह, उसका बेटा यूआस;¹²उसका बेटा अमसियाह, उसका बेटा 'अज़रयाह, उसका बेटा यूताम;

¹³उसका बेटा आखज़, उसका बेटा हिज़कियाह, उसका बेटा मनस्सी।¹⁴उसका बेटा अमून, उसका बेटा यूसियाह;

¹⁵और यूसियाह के बेटे यह थे: पहलौठा यूहनान, दूसरा यहूयक्रीम, तीसरा सिदक्रियाह, चौथा सलूम।¹⁶और बनी यहूयक्रीम: उसका बेटा यकूनियाह, उसका बेटा सिदक्रियाह।

¹⁷और यकूनियाह जो गुलाम था, उसके बेटे यह हैं: सियालतिएल,¹⁸और मल्कराम और फ़िदायाह और शीनाज़र, यक्रमियाह, होसमा' और नदबियाह;

¹⁹और फ़िदायाह के बेटे यह हैं: ज़रब्बाबुल और सिम'ई और ज़रब्बाबुल के बेटे यह हैं: मुसल्लाम और हनानियाह, और सल्लूमियत उनकी बहन थी,²⁰और हसूबा और अहल और बरकियाह और हसदियाह, यूसजसद यह पाँच।²¹और हनानियाह के बेटे यह हैं: फ़लतियाह और यसा'याह। बनी रिफ़ायाह, बनी अरनान, बनी 'ईदयाह, बनी सकनियाह,

²²और सकनियाह का बेटा: समा'याह और बनी समा'याह: हतूश और इजाल और बरीह और ना'रियाह और साफ़त' यह छः।²³और ना'रियाह के बेटे यह थे: इल्यू'ऐनी, और हिज़क्रियाह और 'अज़रीक्राम, यह तीन।²⁴और बनी इल्यू'ऐनी यह थे: हूदैवाहू और 'अलियासब और फ़िलायाह और 'अक्कूब और युहनान और दिलायाह 'अनानी, यह सात।

Chapter 4

¹बनी यहूदाह यह हैं: फ़ारस, हसरोन और कर्मी और हूर और सोबल। ²और रियायाह बिन सोबल से यहत पैदा हुआ और यहत से अखूमी और लाहद पैदा हुए, यह सुर'अतियों के खानदान हैं।

³और यह 'ऐताम के बाप से हैं: यज़र'एल और इसमा' और इदबास और उनकी बहन का नाम हज़िल-इलफ़ूनी था; ⁴और फ़नूएल ज़दूर का बाप और 'अज़र हूसा का बाप था। यह इफ़राता के पहलौठे हूर के बेटे हैं। जो बैतलहम का बाप था।

⁵और तक्'अ के बाप अशूर की दो बीवियां थीं हीलाह और ना'रा। ⁶और ना'रा के उससे अखूसाम और हिफ़्र और तेमनी और हखसतरी पैसा हुए। यह ना'रा के बेटे थे। ⁷और हीलाह के बेटे: ज़रत और यज़ूआर और इतनान थे। ⁸कूज़ से 'अनूब और ज़ोबीबा और हरूम के बेटे आखरखैल के घराने पैदा हुए।

⁹और या'बीज़ अपने भाइयों से मु'अज़िज़ था और उसकी माँ ने उसका नाम या'बीज़ रक्खा क्योंकि कहती थी, की मैंने ग़म के साथ उसे जनम दिया है। ¹⁰और याबीज़ ने इस्राईल के खुदा से यह दु'आ की, आह, तू मुझे वाक़'ई बरकत दे, और मेरी हुदूद को बढ़ाए, और तेरा हाथ मुझ पर हो और तू मुझे बदी से बचाए ताकि वह मेरे ग़म का ज़रि'अ न हो!" और जो उसने माँगा खुदा ने उसको बख़्शा।

¹¹और सूखा के भाई कलूब से महीर पैदा हुआ जो इस्तून का बाप था। ¹²और इस्तून से बैतरिफ़ा और फ़ासह और 'ईरनहस जा बाप तखिन्ना पैदा हुए। यही रैका के लोग हैं।

¹³और क्रनज़ के बेटे: गुतनिएल और शिरायाह थे, और गुतनिएल का बेटा हतत था। ¹⁴और म'ऊनाती से 'उफ़रा पैदा हुआ, और शिरायाह से युआब पैदा हुआ जो जिखराशीम का बाप है; क्योंकि वह कारीगर थे। ¹⁵और यफ़ुन्ना के बेटे कालिब के बेटे यह हैं: 'ईरु और ऐला और ना'म; और बनी ऐला: क्रनज़। ¹⁶और यहलिलएल के बेटे यह हैं: ज़ीफ़्र और ज़ीफ़्रा, तैरयाह और असरिएल।

¹⁷और 'अज़रा के बेटे यह हैं: यतर और मरद और 'इफ़्र और यलून और उसके बत्न से मरियम और सम्मी और इस्तमू'अ का बाप इस्बाह पैदा हुए, ¹⁸और उसकी यहूदी बीवी के उस से ज़दूर का बाप यरद और शोको का बाप हिब्र और ज़नूह का बाप यकूतिएल पैदा हुए; और फ़िरऔन की बेटी बित्याह के बेटे जिसे मरद ने ब्याह लिया था यह हैं।

¹⁹और यहूदियाह की बीवी नहम की बहन के बेटे क्र'ईलाजर्मी का बाप और इस्मत्'अ मा'काती थे। ²⁰और सीमोन के बेटे यह हैं: अमनून और रिन्ना, बिनहन्नान और तीलोन, और यस'ई के बेटे: ज़ोहित और बिनज़ोहित थे।

²¹और सैला बिन यहूदाह के बेटे यह हैं: 'एर, लका का बाप; और ला'दा, मरीसा का बाप और बीत-अशबि'अ के घराने, जो बारीक कटान का काम करते थे।

²²और योकीम और कोज़ीबा के लोग, और यूआस और शराफ़ जो मोआब के बीच ~हुम्मरान थे, और यसूबी लहम। यह पुरानी तवारीख़ है। ²³यह कुम्हार थे और नताईम और गदेरा के बाशिंदे थे। वह वहाँ बादशाह के साथ उसके काम के लिए रहते थे।

²⁴बनी शमा'ऊन यह हैं: नमुएल, और यमीन, यरीब, ज़ारह, साऊल। ²⁵और सूल का बेटा सलूम और सलूम का बेटा मिब्सांम, और मिब्सांम का बेटा मिशमा'अ।

²⁶और मिशमा'अ के बेटे यह हैं: हमुएल हमुएल का बेटा ज़कूर, ज़कूर का बेटा सिम'ई।

²⁷और सिम'ई के सोलह बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के बहुत औलाद न हुई और उनके सब घराने बनी यहूदाह की तरह न बढ़े। ²⁸और वह बैरसबा' और मोलादा और हसरसो'आल,

²⁹और बिलहा और 'अज़म और तोलाद, ³⁰और बतुएल और हुरमा और सिक्रलाज, ³¹और मरकबोत और हसर सूसीम और बैतबराई और शा'रीम में रहते थे। दाऊद की हुकूमत तक यही उनके शहर थे।

³²और उनके गाँव: 'ऐताम और 'ऐन और रिमोन और तोकन और 'असन, यह पाँच शहर थे। ³³और उनके रहने देहात भी, जो बा'ल तक उन शहरों के आस पास थे यह उनके रहने के मुक़ाम थे और उनके नसबनामे हैं।

³⁴और मिसोबाब, यमलीक और योशा बिन अमसियाह, ³⁵और यूएल और याहू बिन यूसीबियाह बिन शिरायाह बिन 'असिएल, ³⁶और इल्यू'ऐनी और या'कूबा और यसुखाया और 'असायाह और 'अदिएल और यिसीमिएल और बिनायाह, ³⁷और ज़ीज़ा बिन शिफ़'ई बिन अल्लूनबिन यदायाह बिन सिमरी बिन समा'याह: ³⁸यह जिनके नाम मज़कूर हुए, अपने अपने घराने के सरदार थे और इनके आबाई खानदान बहुत बढ़े।

³⁹और वह ज़दूर के मदखल तक या'नी उस वादी के पूरब तक अपने गल्लों के लिए चरागाह ढूँडने गए, ⁴⁰वहाँ उन्होंने अच्छी और सुथरी चरागाह पायी और मुल्क वसी' और चैन और सुख की जगह था; क्योंकि हाम के लोग क़दीम से उस में रहते थे। ⁴¹और वह जिनके नाम लिखे गए हैं, शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह के दिनों में आये और उन्होंने उनके पड़ाव पर हमला किया और म'ऊनीम को जो वहाँ मिले क़त्ल किया, ऐसा की वह आज के दिन तक मिटे हैं, और उनकी जगह रहने लगे क्योंकि उनके गल्लों के लिए वहाँ चरागाह थी।

⁴²और उनमें से या'नी शमा'ऊन के बेटों में से पाँच सौ शख्स कोह-ए-श'ईर को गए और यस'ई के बेटे फ़लतियाह और ना'रियाह और रिफ़ायाह और 'उज़्ज़ीएल उनके सरदार थे; ⁴³और उन्होंने उन बाक़ी 'अमालीक्रियों को जो बच रहे थे क़त्ल किया और आज के दिन तक वहीं बसे हुए हैं।

Chapter 5

¹और इस्राईल के पहलौठे रूबिन के बेटे (क्योंकि वह उसका पहलौठा था, लेकिन इसलिए की उसने अपने बाप के बिछौने को नापाक किया था उसके पहलौठे होने का हक़ इस्राईल के यूसुफ़ की औलाद को दिया गया, ताकि नसबनामा पहलौठे पन के मुताबिक़ न हो।²क्योंकि यहूदाह अपने भाइयों से ताक़तवर ~हो गया और सरदार उसी में से निकला लेकिन पहलौठे का यूसुफ़ का हुआ³ इसलिए इस्राईल के पहलौठे रूबिन के बेटे यह हैं: हनूक और फ़ल्लू और हसरोन और कर्मी।

⁴यूएल के बेटे यह हैं: उसका बेटा समा'याह, सम'याह का बेटा जूज, जूज का बेटा सिम'ई।⁵सिम'ई का बेटा मीकाह, मीकाह का बेटा रियायाह, रियायाह का बेटा बा'ल।⁶बा'ल का बेटा बर्झा जिसको असूर का बादशाह तिलगातपिलनासर गुलाम कर के ले गया। वह रूबीनियों का सरदार था।

⁷और उसके भाई अपने अपने घराने के मुताबिक़ जब उनकी औलाद का नसब नामा लिखवा गया था, सरदार य'ईएल और ज़करियाह,⁸और बाला' बिन 'अज़ज़ बिन समा' योएल, वह 'अरो'ईर में नबू और बा'ल म'ऊन तक,⁹और पूरब की तरफ़ दरिया-ए-फ़रात से वीरान में दाख़िल होने की जगह तक बसा हुआ था क्योंकि मुल्क-ए-जिल'आद में उनके चौपाये बहुत बढ़ गए थे।

¹⁰और साऊल के दिनों में उन्होंने हाजिरियों से लड़ाई की जो उनके हाथ से क़त्ल हुए, और वह जिल'आद के पूरब के सारे 'इलाक़े में उनके डेरों में बस गए।

¹¹और बनी जद उनके सामने मुल्क-ए-बसन में सिलका तक बसे हुए थे।¹²पहला यूएल था, और साफ़म दूसरा, और या'नी और साफ़त बसन में थे।¹³और उनके आबाई खानदान के भाई यह हैं: मीकाएल और मुसल्लाम और सबा' और यूरी और या'कान और ज़ी'अ और 'इब्र, यह सातों।

¹⁴यह बनी अबिखेल बिन हूरी बिन यारूआह बिन जिल'आद बिन मीकाएल बिन यमीसी बिन यहदू बिन बूज़ थे।¹⁵अख़ी बिन 'अबदिएल बिन जूनी इनके आबाई खानदानों का सरदार था।

¹⁶और वह बसन में जिल'आद और उसके क़स्बों और शारून की सारे 'इलाक़ा में, जहाँ तक उनकी हद्द थी, बसे हुए थे।¹⁷यहूदाह के बादशाह यूताम के दिनों में, और इस्राईल के बादशाह युरब'आम के दिनों ~में उन उन सभों के नाम उनके नसबनामों के मुताबिक़ लिखे गए।

¹⁸और बनी रूबिन और जदियों और मनस्सी के आधे क़बीले में सूर्मा, या'नी ऐसे लोग जो सिपर और तेग़ उठाने के क़ाबिल और तीरअन्दाज़ और जंग आज़मूदा थे, चौवालीस हज़ार सात सौ साठ थे जो जंग पर जाने के लायक़ थे।¹⁹यह हाजिरियों और यतूर और नफ़ीस और नोदब से लड़े।

²⁰और उनसे मुक़ाबिला करने के लिए मदद पायी, और हाजिरी और सब जो उनके साथ थे उनके हवाले किए गए क्योंकि उन्होंने लड़ाई में खुदा से दु'आ की और उनकी दु'आ कुबूल हुई, इसलिए की उन्होंने उस पर भरोसा रखवा।²¹और वह उनकी मवेसी ले गए; उनके ऊँटों में से पचास हज़ार और भेड़ बकरियों में से ढाई लाख और ग़धों में से दो हज़ार और आदमियों में से एक लाख।²²क्योंकि बहुत से लोग क़त्ल हुए इसलिए की जंग खुदा की थी और वह गुलामी के वक़्त तक उनकी जगह बसे रहे।

²³और मनस्सी के आधे क़बीले के लोग मुल्क में बसे। वह बसन से बा'लहरमून और सनीर और हरमून के पहाड़ तक फैल गए।²⁴उनके आबाई खानदानों के सरदार यह थे: 'इफ़्र और यिस'ई और इलीएल, 'अज़रिएल, यरमियाह और हुदावियाह और यहदएल, जो ताक़तवर सूर्मा और नामवर और अपने आबाई खानदानों के सरदार थे।

²⁵और उन्होंने अपने बाप दादा के खुदा की हुक्म 'उदूली की, और जिस मुल्क के बाशिंदों को खुदा ने उनके सामने से हलाक़ किया था, उन ही के मा'बूदों की पैरवी में उन्होंने ज़िनाकारी की।²⁶तब इस्राईल के खुदा ने असूर के बादशाह पूल के दिल को और असूर के बादशाह तिलगातपिलनासर के दिल को उभारा, और वह उनकी या'नी रूबिनियों और जदियों और मनस्सी के आधे क़बीले को गुलाम कर के ले गए और उनको ख़लह और ख़ाबूर और हारा और जौज़ान की नदी तक ले आये; यह आज के दिन तक वहीं हैं।

Chapter 6

¹बनी लावी: जैरसोन, किहात, और मिरारी हैं।²और बनी किहात: 'अमराम और इज़हार और हबरून और 'उज़्ज़िएल।³और 'अमराम की औलाद: हारून और मूसा और मरियम। और बनी हारून: नदब और अबीहू इली' अज़र और इतमर।

⁴इली' अज़र से फ़ीनहास पैदा हुआ और फ़ीनहास से अबिसू' पैदा हुआ,⁵और अबीसू'अ से बुक्की पैदा हुआ, और बुक्की 'उज़्ज़ी पैदा हुआ।⁶और उज़्ज़ी ज़राखियाह पैदा हुआ हुआ, और ज़राखियाह से मिरायोत पैदा हुआ।

⁷मिरायोत से अमरियाह पैदा हुआ, और अमरियाह अखितोब पैदा हुआ।⁸और अखितोब सदूक पैदा हुआ, और सदूक से अखीमा'ज़ पैदा हुआ।⁹और अखीमा'ज़ से 'अज़रियाह पैदा हुआ, और 'अज़रियाह से यूहनान पैदा हुआ,

¹⁰और यूहनान से अज़रियाह पैदा हुआ (यह वह है जो उस हैकल में जिसे सुलेमान ने यरुशलीम में बनाया था, काहिन था)।¹¹और 'अज़रियाह से अमरियाह पैदा हुआ और अमरियाह से अखितोब पैदा हुआ।¹²और अखितोब से सदूक पैदा हुआ और सदूक से सलूम पैदा हुआ।

¹³और सलूम से खिलक्रियाह पैदा हुआ और खिलक्रियाह से 'अज़रियाह पैदा हुआ।¹⁴और 'अज़रियाह से सिरायाह पैदा हुआ और सिरायाह से यहूसदक पैदा हुआ।¹⁵और जब खुदावन्द ने नबूकदनज़र के हाथ यहूदाह और यरुशलीम को जिला वतन कराया, तो यहूसदक भी गुलाम हो गया।

¹⁶बनी लावी: जैरसोन किहात, और मिरारी हैं।¹⁷और जैरसोन के बेटों के नाम यह हैं: लिबनी और सिम'ई।¹⁸और बनी किहात: 'अमराम और इज़हार और हबरून और 'उज़्ज़ीएल थे।

¹⁹मिरारी के बेटे यह हैं: महली और मूशी और लावियों के घराने उनके आबाई खानदानों के मुताबिक यह हैं।²⁰जैरसोन से उसका बेटा लिबनी। लिबनी का बेटा यहत, यहत का बेटा ज़िम्मा।²¹ज़िम्मा का बेटा यूआख, यूआख का बेटा 'ईदू, 'ईदू का बेटा ज़ारह, ज़ारह का बेटा यतरी।

²²बनी किहात: किहात का बेटा अम्मीनदाब, का बेटा अम्मीनदाब का बेटा क्रोरह, क्रोरह का बेटा अस्सीर,²³अस्सीर का बेटा इल्काना। इल्काना का बेटा अबी आसफ़। अबी आसफ़ का बेटा अस्सीर।²⁴अस्सीर का बेटा तहत, तहत का बेटा ऊरिएल। ऊरिएल का बेटा उज़्ज़ियाह, 'उज़्ज़ियाह का बेटा साऊल।

²⁵और इल्काना के बेटे यह हैं: 'अमासी और अखीमोत।²⁶रहा इल्काना तो, इल्काना के बेटे यह हैं: या'नी उसका बेटा सूफी, सूफी का बेटा नहत।²⁷नहत का बेटा इलियाब, इलियाब का बेटा यरुहाम, यरुहाम का बेटा इल्काना।

²⁸समुएल के बेटों में पहलौठा यूएल, दूसरा अबियाह।²⁹बनी मिरारी यह हैं: महली, महली का बेटा लिबनी, लिबनी का बेटा सम'ई, सम'ई का बेटा 'उज़्ज़ा, ³⁰'उज़्ज़ा का बेटा सिम'आ, सिम'आ का बेटा हिज्जियाह हिज्जियाह, का बेटा 'असायाह।

³¹वह जिनको दाऊद ने सन्दूक के ठिकाना पाने के बा'द खुदावन्द के घर में हम्द के काम पर मुकर्रर किया यह हैं:³²और वह जब तक सुलेमान यरुशलीम में खुदावन्द का घर बनवा न चुका हम्द गा गा कर खेमा-ए-इज्तिमा'अ के मसकन के सामने खिदमत करते रहे और अपनी अपनी बारी के मुवाफ़िक़ अपने काम पर हाज़िर रहते थे।

³³और जो हाज़िर रहते थे वह और उनके बेटे यह हैं: किहातियों की औलाद में से हैमान गवय्या बिन यूएल बिन समुएल।³⁴बिन इल्काना बिन यरुहाम, बिन इलीएल, बिन तूह।³⁵बिन सूफ़ बिन इल्काना बिन महत बिन 'अमासी।

³⁶बिन इल्काना बिन यूएल बिन 'अज़रियाह बिन सफ़नियाह।³⁷बिन तहत बिन अस्सीर बिन अबी आसफ़बिन क्रोरह।³⁸बिन इज़हार बिन किहात बिन लावी बिन इसाईल।

³⁹और उसका भाई आसफ़ जो उसके दहने खड़ा होता था, या'नी आसफ़ बिन बरकियाह बिन सिम'आ।⁴⁰बिन मीकाएल बिन बा'सियाह बिन मलकियाह।⁴¹बिन अतनी बिन जारह बिन 'अदायाह।⁴²बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिम'ई।⁴³बिन यहत बिन जैरसोन बिन लावी।

⁴⁴और बनी मिरारी उनके भाई बाएं हाथ खड़े होते थे या'नी ऐतान बिन क्रीसी बिन 'अबदी बिन मुलोक।⁴⁵बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन खिलक्रियाह।

⁴⁶बिन अमसी बिन बानी बिन सामर।⁴⁷बिन महली बिन मूशी नीं मिरारी बिन लावी।

⁴⁸और उनके भाई लावी बैत उल्लाह के घर की सारी खिदमत पर मुकर्रर थे।

⁴⁹लेकिन हारून और उसके बेटे सोख्तनी कुर्बानी के मज़बह और खुशबू जलाने की कुर्बानगाह दोनों पर पाकतरीन मकान की सारी खिदमत को अंजाम देने और इसाईल के लिए कफ़फ़ारा देने के लिए जैसा खुदा बन्दे मूसा ने हुक्म किया था कुर्बानी पेश करते थे।

⁵⁰बनी हारून यह हैं: हारून का बेटा इलीअज़र, इलीअज़र का बेटा फ़ीनहास, फ़ीनहास का बेटा अबीसू'अ।⁵¹अबीसू'अ का बेटा बुक्की, बुक्की का बेटा 'उज़्ज़ी, 'उज़्ज़ी का बेटा ज़राखियाह।⁵²ज़राखियाह का बेटा मिरायोत, मिरायोत का बेटा अमरियाह, अमरियाह का बेटा अखीतोब।⁵³अखीतोब का बेटा सदूक, सदूक का बेटा अखीमा'ज़।

⁵⁴और उनकी हुदूद में उनकी छावनियों के मुताबिक़ उनकी सुकूनतगाहें यह हैं: बनी हारून में से किहातियों के खानदानों को, जिनकी पर्ची पहली निकली।

⁵⁵उन्होंने यहूदाह की ज़मीन में हबरून और उसका 'इलाक़ा की दिया।⁵⁶लेकिन उस शहर के खेत और उसके देहात युफ़न्ना के बेटे कालिब को दिए।

⁵⁷और बनी हारून को उन्होंने पनाह के शहर दिए और हबरून और लिबनाह भी और उसका 'इलाक़ा और यतीर और इस्तमू'अ और उसका 'इलाक़ा।⁵⁸और हैलान और उसका 'इलाक़ा, और दबीर और उसका 'इलाक़ा,

⁵⁹और 'असन और उसका 'इलाक़ा, और बैत समा' और उसका 'इलाक़ा।⁶⁰और बिनयमीन के क़बीले में से जिबा' और उसका 'इलाक़ा, और 'अलमत और-उसका 'इलाक़ा, और 'अन्तोत और-उसका इलाक़ा, उनके घरानों के सब शहर तेरह थे।

⁶¹और बाक़ी बनी किहात को आधे क़बीले, या'नी मनस्सी के आधे क़बीले में से दस शहर पर्ची डालकर दिए गए।⁶²और जैरसोन के बेटों को उनके घरानों के मुताबिक़ इश्कार के क़बीले और और आशर के क़बीले और नफ़्ताली के क़बीले और मनस्सी के क़बीले से जो बसन में था तेरह शहर मिले।

⁶³मिरारी के बेटों को उनके घरानों के मुताबिक रुबिन के कबीले, और जद के कबीले और ज़बूलून के कबीले में से बारह शहर पर्ची डालकर दिए गए।⁶⁴ फिर बनी इस्राईल ने लावियों को वह शहर उनका 'इलाका समेत दिए।⁶⁵ और उनोंने बनी यहूदाह के कबीले, और बनी शमा'ऊन के कबीले, और बनी बिनयमीन के कबीले, में से यह शहर जिनके नाम मज़कूर हुए पर्ची डालकर दिए।

⁶⁶और बनी क्रिहात के कुछ खानदानों के पास उनकी सरहदों के शहर इफ्राईम के कबीले में से थे।⁶⁷ और उन्होंने उनको पनाह के शहर दिए या'नी इफ्राईम के पहाड़ी मुल्क में सिक्म और उसका 'इलाका और जज़र भी और उसका 'इलाका।⁶⁸ और युक्रम'आम और उसका 'इलाका और बैतहौरून और उसका 'इलाका।

⁶⁹और अय्यलोन और उसका 'इलाका, नाफ़ताली और जातरिम्मोन और उसका 'इलाका।

⁷⁰और मनस्सी के आधे कबीले में से आजर और उसका 'इलाका, और बिल'आम और उसका 'इलाका बनी क्रिहात के बाक़ी खानदान को मिली।

⁷¹बनी जैरसोम को मनस्सी के आधे कबीले के खानदान जोलान और उसका इलाका, बसन में और असारात और उसका 'इलाका।⁷² और इश्कार के कबीले में से क़ादिस और उसका 'इलाका। दाबरात और उसका 'इलाका।⁷³ और रामात और उसका 'इलाका, और 'आनीम और उसका 'इलाका।

⁷⁴और आसर के कबीले में से मसल और उसका 'इलाका, और 'अबदोन और उसका 'इलाका।⁷⁵ और हकूक और उसका 'इलाका, और रहोब और उसका

'इलाका।⁷⁶ और नफ़ताली के कबीले में से क़ादिस और उसका 'इलाका ग़ालील में, और हम्मून और उसकी नवाही, करयताइम और उसका 'इलाका, मिला।

⁷⁷बाक़ी लावियों, या'नी बनी मिरारी को ज़बूलून के कबीले में से रिम्मोन और उसकी नवाही, और तबूर और उसका 'इलाका,⁷⁸ यरीहू के नज़दीक यरदन के पार या'नी यरदन की पूरब की तरफ़, रुबिन के कबीले में से वीरान में बसर और उसका 'इलाका, और यहसा और उसका 'इलाका,⁷⁹ और क़दीमात और उसका 'इलाका, और मिफ़'अत और उसका 'इलाका;

⁸⁰और जद के कबीले में से रामात और उसका 'इलाका, जिल'आद में, और महनायम और उसका 'इलाका,⁸¹ और हस्बोन और उसका 'इलाका, और याज़ेर और उसका 'इलाका मिली

Chapter 7

¹और बनी इश्कार यह हैं: तोला' और फुव्वा और यसूब और सिमरोन, यह चारों।²और बनी तोला': 'उज़्ज़ी और रिफ़ायाह और यरीएल और यहमी और इबसाम और समुएल, जो तोला' या'नी अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। वह अपने ज़माने में ताक़तवर सूर्मा थे और दाऊद के दिनों में उनका शुमार बाइस हज़ार छः सौ था।³और 'उज़्ज़ी का बेटा इज़राख़ियाह और इज़राख़ियाह के बेटे यह हैं: मीकाएल और 'अबदियाह और यूएल और यसय्याह यह पाँचों यह सब के सब सरदार थे।

⁴और उनके साथ अपनी अपनी पुश्त और अपने अपने आबाई खानदान के मुताबिक़ जंगी लश्कर के दल थे जिन में छत्तीस हज़ार जवान थे क्योंकि उनके यहाँ बहुत सी बीवियाँ और बेटे थे।⁵और उनके भाई इश्कार के सब घरानों में ताक़तवर सूर्मा थे और नसब नामे के हिसाब के मुताबिक़ कुल सत्तासी हज़ार थे।

⁶और बनी बिनयमीन यह हैं: बाला' और बक्र और यदय'एल, यह तीनों⁷और बनी बाला': इसबून और 'उज़्ज़ी और 'उज़्ज़ीएल और यरीमोत और 'ईरी, यह पाँचों। यह अपने आबाई खानदानों के सरदार और ताक़तवर सूर्मा थे और नसब नामे के हिसाब के मुताबिक़ बाइस हज़ार चौत्तीस थे।

⁸और बनी बक्र यह हैं: ज़मीरा और यूआस और इली'अज़र और इल्यू'ऐनी और 'उमरी और यरीमोत और अबियाह और 'अन्तोत और 'अलामत यह सब बक्र के बेटे थे।⁹इनकी नसल के लोग नसबनामे के मुताबिक़ बीस हज़ार दो सौ ताक़तवर सूर्मा और अपने आबाई खानदानों के सरदार थे।¹⁰और यदा'एल का बेटा: बिलहान था। और बनी बिलहान यह हैं: य'ओस और बिनयमीन और अहूद और कना'ना और ज़ैतान और तरसीस और अख़ीसहर।

¹¹यह सब यदा'एल के बेटे जो अपने आबाई खानदानों के सरदार और ताक़तवर सूर्मा थे, सत्तरह हज़ार दो सौ थे जो लश्कर के साथ जंग पर जाने के लायक़ थे।

¹²और सुप्फ़ीम और हुप्फ़ीम 'ईर के बेटे, और हाशीम इहीर का बेटा।

¹³बनी नफ़्ताली यह हैं: यहसीएल और जूनी और यसर और सलूम बनी बिल्हा।

¹⁴बनी मनस्सी यह हैं: असरीएल और उसकी बीवी के बत्न से था (उसकी अरामी हरम से ज़िल'आद का बाप मकीर पैदा हुआ।¹⁵और मकीर ने हप्फ़ीम और सुप्फ़ीम की बहन जिसका नाम मा'का था ब्याह लिया) और दूसरे का नाम सिलाफ़हाद था, और सिलाफ़हाद के पास बेटियाँ थीं।¹⁶और मकीर की बीवी मा'का के एक बेटा पैदा हुआ उसने उसका नाम फ़रस रखवा और उसके भाई का नाम शरस था, और उसके बेटे औलाम रक़म थे।

¹⁷और औलाम का बेटा बिदान था, यह ज़िल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे थे।¹⁸और उसकी बहन हम्मोलिकत से इशहूद और अबी'अज़र और महला पैदा हुआ।¹⁹बनी सिमीदा यह हैं: अख़ियान और सिक्म और लिक्कही और अनि'आम।

²⁰और बनी इफ़्राईम यह हैं: सूतलाह, सूतलाह का बेटा बरद, बरद का बेटा तहत, तहत का बेटा इली'अदा, इली'अदा का बेटा तहत,²¹तहत का बेटा ज़बद, ज़बद का बेटा सूतलाह था और 'अज़र और इली'अदा भी, जिनको जात के लोगों ने, जो उस मुल्क में पैदा हुए थे, मार डाला क्योंकि वह उनकी मवेशी ले जाने को उतर आये थे।²²और उनका बाप इफ़्राईम बहुत दिनों तक मातम करता रहा, और उसके भाई तसल्ली देने को आये।

²³और वह अपनी बीवी के पास गया और वह हामला हुई और उसके एक बेटा पैदा हुआ और इफ़्राईम ने उसका नाम बरि'आ रखवा क्योंकि उसके घर पर आफ़त आई थी।²⁴(और उसकी बेटि सराह थी, जिसने नशेब और फ़राज़ के बैतहोरून और 'उज़्ज़न सराह को बनाया)।

²⁵और उसका बेटा रफ़ाह और रसफ़ भी और उसका बेटा तलाह, और तलाह का बेटा तहन,²⁶तहन का बेटा ला'दान, ला'दान का बेटा 'अम्मीहूद, 'अम्मीहूद का बेटा इलीसमा'अ,²⁷इलीसमा'अ का बेटा नून, नून का बेटा यहसू'अ।

²⁸और उनकी मिल्कियत और बस्तियाँ यह हैं: बैतएल और उसके देहात, और मशरिक् की तरफ़ ना'रान, और मगरिब की तरफ़ जज़र और उसके देहात, और सिक्म भी और उसके देहात, 'उज़्ज़ा और उसके देहात तक,²⁹और बनी मनस्सी की हुदूद के पास बैतशान और उसके देहात, ता'नाक और उसके देहात, मजिदो और उसके देहात, दोर और उसके देहात थे। इनमें यूसुफ़ बिन इस्राईल के बेटे रहते थे।

³⁰बनी आशर यह हैं: यिमना और इस्वाह और इस्वी और बरि'आ, और उनकी बहन सिरह।³¹और बरि'आ के बेटे: हिबर बिरज़ावीत का बाप मलकिएल थे।³²और हिबर से यफ़लीत और सोमिर और खूताम, और उनकी बहन सू'अ पैदा हुए।

³³और बनी यफ़लीत: फ़ासाक और और बिमहाल और 'असवात; यह बनी यफ़लीत हैं।³⁴और बनी सामिर: अख़ी और रूहज़ा और यहुब्बा और आराम थे।³⁵और उसके भाई हीलम के बेटे: सूफ़ह और इमना' और सलस और 'अमल थे।

³⁶और बनी सूफ़ह: सूह और हरनफ़र और सू'अल और बैरी और इमराह,³⁷बसर और हुद और सम्मा और सिलसा और इतरान और बैरा थे।³⁸और बनी यतर: युफ़न्ना और फ़िसफ़ाह और अरा थे।

³⁹और बनी 'उल्ला: अरख और हनीएल और रिज़ियाह थे।⁴⁰यह सब बनी आशर, अपने आबाई खानदानों के, चुने हुए रईस और ताक़तवर सूर्मा और अमीरों के सरदार थे। उन में से जो अपने नसबनामे के मुताबिक़ जंग करने के लायक़ थे वह शुमार में छब्बीस हज़ार जवान थे।

Chapter 8

¹और बिनयमीन से उसका पहलौठा बाला' पैदा हुआ, दूसरा और अशबेल, तीसरा अखिरख, ²चौथा नूहा और पाँचवाँ रफ़ा। ³और बाला' के बेटे अदार और जीरा और अबिहूद, ⁴और अबिसू' और ना'मान और अखूह, ⁵और जीरा और सफ़ूफ़ान और हूराम थे।

⁶और अहूत के बेटे यह हैं (यह जिबा' के बाशिंदों के बीच आबाई खानदानों के सरदार थे, और इन्हीं को गुलाम करके मुनाहत को ले गए थे।): ⁷या'नी नामान और अखियाह और और जीरा, यह इनको गुलाम करके ले गया था, और उससे 'उज़्ज़ा और अखीहूद पैदा हुए।

⁸और सहरीम से, मोआब के मुल्क में अपनी दोनों बीवियों हुसीम और बा'राह को छोड़ देने के बा'द लड़के पैदा हुए, ⁹और उसकी बीवी हूदस के बत्न से यूबाब और ज़िबिया और मैसा और मलकाम, ¹⁰और य'ऊज़ और सिक्वाह और मिरमा पैदा हुए। यह उसके बेटे थे जो आबाई खानदानों के सरदार थे। ¹¹और हुसीम से अबीतूब और इलफ़ा'ल पैदा हुए।

¹²और बनी इलफ़ा'ल: 'इब्र और मिश'आम और सामिर थे। इसी ने ओनू और लुद और उसके देहात को आबा'द किया। ¹³और बरि'आ और समा' भी जो अय्यलून के बाशिंदों के दरमियान आबाई खानदानों के सरदार थे और जिन्होंने जात के बाशिंदों को भगा दिया।

¹⁴और अखियू, शाशक्र और यरीमोत, ¹⁵और ज़बदियाह और 'अराद और 'अदर, ¹⁶और मीकाएल और इस्फ़ाह और यूखा, जो बनी बरि'आ हैं। ¹⁷और ज़बदयाह और मुसल्लाम और हिज़क्री और हिबर, ¹⁸और यसमरी और यज़लियाह और यूबाब जो बनी इलफ़ा'ल हैं।

¹⁹और यक्रीम और ज़िकरी और ज़बदी, ²⁰और इली'ऐनी और ज़लती और इलिएल, ²¹और 'अदायाह और बरायाह और सिमरात, जो बनी सम'ई हैं।

²²और इसफ़ान और 'इब्र और इलिएल, ²³और 'अबदोन और ज़िकरी और हनान, ²⁴और हनानियाह और ऐलाम और अंतूतियाह, ²⁵और यफ़दियाह और फ़नूएल, जो बनी शाशक्र हैं।

²⁶और समसरी और शहारियाह और 'अतालियाह, ²⁷और या'रसियाह और इलियाह और ज़िकरी जो बनी यरोहाम हैं। ²⁸यह अपनी नसलों में आबाई खानदानों के सरदार और रईस थे और यरुशलीम में रहते थे।

²⁹और जिबा'ऊन में जिबा'ऊन का बाप रहता था, जिसकी बीवी का नाम मा'का था। ³⁰और उसका पहलौठा बेटा 'अबदोन, और सूर और क्रीस, और बा'ल और नदब, ³¹और जदूर और अखियू और ज़कर,

³²और मिक्लोट से सिमाह पैदा हुआ, और वह भी अपने भाइयों के साथ यरुशलीम में अपने भाइयों के सामने रहते थे। ³³और नयिर से क्रीस पैदा हुआ, क्रीस से साऊल पैदा हुआ, और साऊल से यहूनतन और मलकीशू और अबीनदाब और इशबा'ल पैदा हुए; ³⁴और यहूनतन का बेटा मरीबबा'ल था, मरीबबा'ल से मीकाह पैदा हुआ।

³⁵और बनी मीकाह: फ़ीतू और मलिक और तारी' और आखज़ थे। ³⁶और आखज़ से यहू'अदा पैदा हुआ, और यहू'अदा से 'अलमत और 'अज़मावत और ज़िमरी पैदा हुए; और ज़िमरी से मौज़ा पैदा हुआ। ³⁷और मौज़ा से बिन'आ पैदा हुआ; बिन'आ का बेटा राफ़ा', राफ़ा' का बेटा इली'असा, और इली'असा का बेटा असील,

³⁸और असील के छ: बेटे थे जिनके नाम यह हैं: 'अज़रीकाम, बोकिरू, और इस्मा'ईल और सगरियाह और 'अबदियाह और हनान; यह सब असील के बेटे थे।

³⁹और उसके भाई 'ईशक्र के बेटे यह हैं: उसका पहलौठा औलाम, दूसरा य'ओस, तीसरा इलीफ़लत। ⁴⁰और औलाम के बेटे ताक़तवर सूर्मा और तीरंदाज़ थे, और उसके बहुत से बेटे और पोते थे जो डेढ़ सौ थे। यह सब बनी बिन यमीन में से थे।

Chapter 9

¹फिर सारा इस्राईल नसबनामों के मुताबिक जो इस्राईल के बादशाहों की किताब में दर्ज हैं गिना गया और यहूदाह अपने गुनाहों की वजह से गुलाम हो के बाबुल गया।² और वह जो पहले अपनी मिल्कियत और अपने शहरों में बसे वह इस्राईल और काहिन और लावी और नतनीम थे।³ और यरुशलीम में बनी यहूदाह से और बनी बिनयमीन में से और बनी इफ्राईम और मनस्सी में से यह लोग रहने लगे या'नी।

⁴ऊती बिन 'अम्मीहूद बिन 'उमरी बिन इमरी बिन बानी जो फ़ारस बिन यहूदाह की औलाद में से था।⁵ और सैलानियों में से 'असायाह, जो पहलौठा था, और उसके बेटे।⁶ और बनी ज़ारह में से, य'ऊएल और उनके छः सौ नव्वे भाई।

⁷और बनी बिन यमीन में से सल्लू बिन मुसल्लाम बिन हुदावियाह बिन हसीनुवाह,⁸ और इब नियाह बिन यरुहाम और ऐला बिन 'उज़्ज़ी बिन बिन मिकरी और मुसल्लाम बिन सफ़तियाह बिन र'ऊएल बिन इबनियाह,⁹ और उनके भाई जो अपने नसबनामों के मुताबिक नौ सौ छप्पन थे। यह सब आदमी अपने अपने आबाई खानदान के आबाई खानदानों के सरदार थे।

¹⁰और काहिनों में से यद'अइयाह और यहूयरीब और यकीन,¹¹ और अज़रियाह बिन खिलक्रियाह बिन मुसल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अखीतोब, जो खुदा के घर का नाज़िम था।

¹²और 'अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़शहूर बिन मलकियाह, और मासी बिन 'अदीइएल बिन याहज़ीराह बिन मुसल्लाम बिन मुसलमीत बिन इम्मेर,¹³ और उनके भाई अपने आबाई खानदानों के रईस एक हज़ार सात सौ आठ थे जो खुदा के घर की खिदमत के काम के लिए बड़े क़ाबिल आदमी थे।

¹⁴और लावियों में से यह थे: समा'याह बिन हसूब बिन 'अज़रीक़ाम बिन हसबियाह बनी मिरारी में से,¹⁵ और बक्रबक्रर, हरस और जलाल और मतनियाह बिन मीकाह बिन ज़िकरी बिन आसफ़,¹⁶ और 'अबदियाह बिन समा'याह बिन जलाल बिन यदूतून, और बरकियाह बिन आसा बिन इल्काना, जो नतूफ़ातियों के देहात में बस गए थे।

¹⁷और दरबानों में से सलोम और 'अक्कूब और तलमून अखीमान और उनके भाई; सलूम सरदार था।¹⁸ वह अब तक शाही फाटक पर मशरिफ़ की तरफ़ रहे। बनी लावी की छावनी के दरबान यही थे।¹⁹ और सलोम बिन क्रोरे बिन अबीआसफ़ बिन क्रोरह और उसके आबाई खानदान के भाई या'नी क्रोरही, खिदमत की कारगुज़ारी पर त'इनात थे, और खेमे के फाटकों के निगहबान थे। उनके बाप दादा खुदावन्द की लश्कर गाह पर तैनात और मदखल के निगहबान थे।

²⁰और फ़ीनहास बिन इली'अज़र इस से पहले उनका सरदार था, और खुदावन्द उसके साथ था।²¹ ज़करियाह बिन मुसलमियाह खेमा इज्तिमा'अ के दरवाज़े का निगहबान था।

²²यह सब जो फाटकों के दरबान होने को चुने गए दो सौ बारह थे। यह जिनको दाऊद और समुएल ग़ैब बीन ने इनको ओहदे पर मुक़र्रर किया था अपने नसबनामों के मुताबिक अपने अपने गाँव में गिने गए थे।²³ फिर वह और उनके बेटे खुदावन्द के घर या'नी मसकन के घर के फाटकों की निगरानी बारी बारी से करते थे।²⁴ और दरबान चारों तरफ़ थे या'नी पूरब, पश्चिम, उत्तर, और दखखिन की तरफ़।

²⁵और उनके भाई जो अपने अपने गाँव में थे उनको सात सात दिन के बा'द बारी-बारी उनके साथ रहने को आना पड़ता था।²⁶ क्योंकि चारों सरदार दरबान जो लावी थे खास ओहदों पर मुक़र्रर थे और खुदा के घर की कोठरियों और खज़ानों पर मुक़र्रर थे।²⁷ और वह खुदा के घर के आस-पास रहा करते थे क्योंकि उसकी निगहबानी उनके ज़िम्मे थी और हर सुबह को उसे खोलना उनके ज़िम्मे था।

²⁸और उनमें से कुछ की तहवील में 'इबा'दत के बर्तन थे क्योंकि वह उनको गिन कर अन्दर लाते और गिन कर निकालते थे।²⁹ और कुछ उनमें से सामान और मन्दिरे के सब बर्तनों और और मैदा और मय और तेल और लुबान और खुशबूदार मसाल्ले पर मुक़र्रर थे।

³⁰और काहिनों के बेटों में से कुछ खुशबूदार मसाल्ले का तेल तैयार करते थे।³¹ और लावियों में से एक शख्स मत्तितियाह जो कुरही सलूम का पहलौठा था, उन चीज़ों पर खास तौर पर मुक़र्रर था जो तवे पर पकाई जाती थीं।³² और उनके कुछ भाई जो क़िहातियों की औलाद में से थे, नज़ की रोटियों पर तैनात थे कि हर सब्त को उसे तैयार करें।

³³और यह वह हम्द करने वाले हैं जो लावियों के आबाई खानदानों के सरदार थे और कोठरियों में रहते और और खिदमत से मा'ज़ूर थे, क्योंकि वह दिन रात अपने काम में मशगूल रहते थे।³⁴ यह अपनी अपनी नसलों में लावियों के आबाई खानदानों के सरदार और रईस थे; और यरुशलीम में रहते थे।

³⁵और जिबा'ऊन में जिबा'ऊन का बाप य'ईएल रहता था, जिसकी बीवी का नाम मा'का था,³⁶ और उसका पहलौठा बेटा 'अबदोन, और सूर और क़ीस और बा'ल और नयिर और नदब,³⁷ और जदूर और अखियू और ज़करियाह और मिक्लोट;

³⁸मिक्लोट से सिम'आम पैदा हुआ, और वह भी अपने भाइयों के साथ यरुशलीम में अपने भाइयों के सामने रहते थे।³⁹ और नयिर से क़ीस पैदा हुआ और क़ीस से साऊल पैदा हुआ और साऊल से यूनतन और मलकीशू'अ और अबीनदाब और इशबा'ल पैदा हुए।⁴⁰ और यूनतन का बेटा मरीबबा'ल था और मरीबबा'ल से मीकाह पैदा हुआ।

⁴¹और मीकाह के बेटे फ़ीतून और मलिक और तहरी' और आखज़ थे;⁴² और आखज़ से या'रा पैदा हुआ, और या'रा से 'अलमत और अज़मावत और ज़िमरी पैदा हुए, और ज़िमरी से मौज़ा पैदा हुआ।⁴³ और मौज़ा से बिन'आ पैदा हुआ, बिन'आ का बेटा रिफ़ायाह, रिफ़ायाह का बेटा इली'असा, इली'असा का बेटा असील,⁴⁴ और असील के छः बेटे थे और यह उनके नाम हैं: 'अज़रक़ाम, बोकिरू, और इस्मा'ईल और सगरियाह और 'अबदियाह और हनान, यह बनी असील थे।

Chapter 10

¹और फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़े और इस्राईल के लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भागे और पहाड़ी जिल्बू'आ में क़त्ल हो कर गिरे।²और फ़िलिस्तियों ने साऊल का और उसके बेटों का ख़ूब पीछा किया और फ़िलिस्तियों ने यूनतन और अबीनदाब और मलकीशू'अ को जो साऊल के बेटे थे क़त्ल किया।³और साऊल पर जंग दोबर हो गयी और तीरंदाज़ों ने उसे पा -लिया और वह तीरंदाज़ों की वजह से परेशान था।

⁴तब साऊल ने अपने सिलाहबरदार से कहा, अपनी तलवार खींच और उससे मुझे छेद दे ऐसा न हो कि यह नामख़तून आकर मेरी बे 'इज़्ज़ती करें। "लेकिन उसके सिलाहबरदार ने न माना, क्योंकि वह बहुत डर गया। तब साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा।

⁵जब उसके सिलाहबरदार ने देखा कि साऊल मर गया तो वह भी तलवार पर गिरा और मर गया।⁶तब साऊल मर गया और उसके तीनों बेटे भी और उसका सारा ख़ानदान एक साथ मर मिटा।

⁷जब सब इस्राईली लोगों ने जो वादी में थे देखा कि लोग भाग निकले और साऊल और उसके बेटे मर गए हैं, तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग गए और फ़िलिस्ती आकर उनमें बसे।⁸और दूसरे दिन सुबह को जब फ़िलिस्ती मक्कूलों को नंगा करने आये, तो उन्होंने साऊल और उसके बेटों को कोहे जिल्बू'आ पर पड़े पाया।

⁹तब उन्होंने उसको नंगा किया और उसका सिर और उसके हथियार ले लिए, और फ़िलिस्तियों के मुल्क में चारों तरफ़ लोग खाना कर दिए ताकि उनके बुतों और लोगों के पास उस ख़ुशख़बरी को पहुँचायें।¹⁰और उन्होंने उसके हथियारों को अपने मा'बूदों के मंदिर में रखवा और उसके सिर को दज़ून के मंदिर में लटका दिया।

¹¹जब यबीस जिल'आद के सब लोगों ने, जो कुछ फ़िलिस्तियों ने साऊल से किया था सुना।¹²तो उनमें के सब बहादुर उठे और साऊल की लाश और उसके बेटों की लाशें लेकर उनको यबीस में लाये, और उनकी हड्डियों को यबीस के बलूत के नीचे दफ़न किया और सात दिन तक रोज़ा रखवा।

¹³फिर साऊल अपने गुनाह की वजह से, जो उसने ख़ुदावन्द के सामने किया था मरा; इसलिए कि उसने ख़ुदावन्द की बात न मानी, और इसलिए भी कि उससे मशविरा किया जिसका यार जिन्न था, ताकि उसके ज़रि'ए से दरियाफ़्त करे।¹⁴और उसने ख़ुदावन्द से दरियाफ़्त न किया। इसलिए उसने उसको मार डाला और हुक्मत यस्सी के बेटे दाऊद की तरफ़ बदल दी।

Chapter 11

¹तब सब इसाईली हबरून में दाऊद के पास जमा' होकर कहने लगे, देख हम तेरी ही हड्डी और तेरा ही गोश्त हैं।²और गुज़रे ज़माने में उस वक़्त भी जब साऊल बादशाह था, तू ही ले जाने और ले आने में इसाईलियों का रहबर था; और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे फ़रमाया, 'तू मेरी क्रौम इसाईल की गल्लेबानी करेगा, और तू ही मेरी क्रौम इसाईल का सरदार होगा।'³गरज़ इसाईल के सब बुजुर्ग हबरून में बादशाह के पास आये, और दाऊद ने हबरून में उनके साथ खुदावन्द के सामने ~'अहद किया; और उन्होंने खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो समूल की ज़रिए' फ़रमाया था, दाऊद को मम्सूह किया ताकि इसाईलियों का बादशाह हो।

⁴और दाऊद और तमाम इसाईली यरुशलीम को गए (यबूस यही है), और उस मुल्क के बाशिंदे यबूसी वहाँ थे।⁵और यबूस के बाशिंदों ने दाऊद से कहा कि तू यहाँ आने न पाएगा तोभी दाऊद ने सिष्यून का क़िला' ले लिया, यही दाऊद का शहर है।⁶और दाऊद ने कहा, जो कोई पहले यबूसियों को मारे वह सरदार और सिपहसालार होगा।" और योआब बिन ज़रुयाह पहले चढ़ गया और सरदार बना।

⁷और दाऊद क़िले' में रहने लगा, इसलिए उन्होंने उसका नाम दाऊद का शहर रखवा।⁸और उसने शहर को चारों तरफ़ या'नी मिल्लो से लेकर चारों तरफ़ बनाया और योआब ने बाक़ी शहर की मरम्मत की।⁹और दाऊद तरक्की पर तरक्की करता गया, क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़ उसके साथ था।

¹⁰और दाऊद के सूर्माओं के सरदार यह हैं, जिन्होंने उसकी हुकूमत में सारे इसाईल के साथ उसे मज़बूती दी ताकि जैसा खुदावन्द ने इसाईल के हक़ में कहा था उसे बादशाह बनाएँ।¹¹दाऊद के सूर्माओं का शुमार यह है: यसुबि'आम बिन हकमूनी जो तीसों का सरदार था। उने तीन सौ पर अपना भाला चलाया और ~उनको एक ही वक़्त में क़त्ल किया।

¹²उसके बा'द अखूहीदोदो का बेटा इली'अज़र था जो उन तीनों सूर्माओं में से एक था।¹³वह दाऊद के साथ फ़सदम्मीम में था जहाँ फ़िलिस्ती जंग करने को जमा' हुए थे। वहाँ ज़मीन का टुकड़ा जो से भरा हुआ था, और लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भागे।¹⁴तब उन्होंने उस ज़मीन क्व टुकड़े के बीच में खड़े हो कर उसे बचाया और फ़िलिस्तियों को क़त्ल किया और खुदावन्द ने बड़ी फ़तह देकर उनको रिहा बख़्शी।

¹⁵और उन तीनों सरदारों में से तीन, दाऊद के साथ थे उस चट्टान पर या'नी अदुल्लाम के मुगारे में उतर गए, और फ़िलिस्तियों की फ़ौज रिफ़ाईम की वादी में खेमाज़न थी।¹⁶और दाऊद उस वक़्त गढ़ी में था और फ़िलिस्तियों की चौकी उस वक़्त बैतलहम में थी।¹⁷और दाऊद ने तरस कर कहा, ऐ काश कोई बैतलहम के उस कुँए का पानी जो फाटक के करीब है, मुझे पीने को देता!"

¹⁸तब वह तीनों फ़िलिस्तियों की सफ़ तोड़ कर निकल गए और बैतलहम के उस कुँए में से जो फाटक के करीब है पानी भर लिया और उसे दाऊद के पास लाये लेकिन दाऊद ने न चाहा कि उसे पिए बल्कि उसे खुदावन्द के लिए तपाया।¹⁹और कहने लगा कि खुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ। क्या मैं इन लोगों का खून पियूँ जो अपनी जानों पर खेले ~हैं? क्योंकि वह जानबाज़ी कर के उसको लाये हैं। तब ~उसने न पिया। वह तीनों सूर्मा ऐसे ऐसे काम करते थे।

²⁰और योआब का भाई अबीशै तीनों का सरदार था। उसने तीन सौ पर भाला चलाया और उनको मार डाला। वह इन तीनों में मशहूर था।²¹यह तीनों में ~उन दोनों से ज़्यादा ख़ास था और उनका सरदार बना, लेकिन उन पहले तीनों के दर्जे को न पहुँचा।

²²और बिनायाह बिन यहूयदा' एक क़बज़िएली सूर्मा था जिसने बड़ी बहादुरी के काम किये थे; उसने मोआब के अरिएल के दोनों बेटों को क़त्ल किया, और जाकर बर्फ़ के मौसम में एक गढ़े के बीच एक शेर को मारा।²³और उसने पाँच हाथ के एक क़दआवर मिस्री को क़त्ल किया हालाँकि उस मिस्री के हाथ में जुलाहे के शहतीर के बराबर एक भाला था, लेकिन वह एक लाठी लिए हुए उसके पास गया और भाले को उस मिस्री के हाथ से छीन कर उसी के भाले से उसको क़त्ल किया।

²⁴यहूयदा के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किये और वह उन तीनों सूर्माओं में नामी था।²⁵वह उन तीनों से मु'अज़िज़ था, लेकिन पहले तीनों के दर्जे को न पहुँचा। और दाऊद ने उसे मुहाफ़िज़ सिपाहियों का सरदार बनाया।

²⁶और लश्करों में सूर्मा यह थे: योआब का भाई 'असाहेल और बैतलहमी दोदो का बेटा इलहनान,²⁷ और सम्मोत हरूरी, खलिसफ़लूनी,²⁸ तक्'अ, 'इक्कीस, का बेटा 'ईरा, अबी'अज़र 'अन्तोती,²⁹ सिब्वकी हुसाती, 'एली अखूही,

³⁰महरी नतूफ़ाती, हलिद बिन बा'ना नतूफ़ाती,³¹ बनी बिनयमीन के जिब'आ के रीबी का बेटा इत्ती, बिनायाह फ़िर'आतोनी,³² जा'स की नदियों का बाशिंदा हूरी, अबिएल 'अरबाती,³³ अज़मावत बहरूमी, इल्याहबा सा'लबूनी,

³⁴बनी हशीम जिज़ूनी, हरारी शजी का बेटा यूनतन,³⁵ और हरारी सक्कार का बेटा अखीआम, इलिफ़ाल बिन ऊर,³⁶ हिफ़्र मकीराती, अखियाह फ़लूनी,³⁷ हसरू कर्मिली, नागरी बिन अज़बी,

³⁸नातन कला भाई यूएल, मिबख़ार बिन हाजिरी,³⁹ सिलक़ 'अम्मूनी, नहरी बैरोती जो योहाब बिन ज़रूयाह का सिलाहबरदार था,⁴⁰ ईरा ईत्री, जरीब ईत्री,

⁴¹ऊरियाह हित्ती, ज़बद बिन अखली,

⁴²सीज़ा रुबीनी का बेटा 'अदीना रूबीनियों का एक सरदार जिसके साथ तीस जवान थे,⁴³ हनान बिन मा'का, यूसफ़त मितनी,⁴⁴ उज़ियाह 'इस्ताराती, खूताम 'अरो'ईरी के बेटे समा'अ और य'ईएल,

⁴⁵यदी'एलबिन सिमरी और उसका भाई यूखा तीसी,⁴⁶ इलीएल महावी, और इलाना'म के बेटे यरीबी और यूसावियाह, और यितमा मोआबी,⁴⁷ इली'एल, और 'ओबेद, और या'सीएल मज़ूबाई।

Chapter 12

¹यह वह हैं जो सिक्रलाज में दाऊद के पास आये जब कि वह हनूज़ क्रीस के बेटे साऊल की वजह से छिपा रहता था, और उन सूर्माओं में थे जो लड़ाई में उसके मददगार थे।²उनके पास कमाने थीं, और वह गुफान से पत्थर मारते और कमान से तीर चलाते वक्रत दहने और बाएं दोनों हाथों को काम में ला सकते थे और साऊल के बिनयमीनी भाइयों में से थे।

³अखी'अज़र सरदार था। फिर यूआस बनी समा'आ जिब'आती और यज़ीएल और फ़लत जो अज़मावत के बेटे थे और बराक और याहू 'अन्तोती,⁴ और इसमा'ईया जिबा'ऊनी जो तीसों में सूर्मा और तीसों का सरदार था; और यरमियाह और यहज़ीएल और युहनान और यूज़बा'द जदीराती,⁵ इल'ओज़ी और यरीमोत और बा'लियाह और समरियाह और सफ़तियाह खरूफ़ी,⁶ इलक्राना और यसियाह और 'अज़रिएल और यू'अज़र और यसूबि'आम जो कुरही थे।⁷ और यू'ईला और ज़बदियाह जो यरोहाम जदूरी के बेटे थे।

⁸और जदियों में से बहुत से अलग होकर बियाबान के क़िले में दाऊद के पास आ गए; वह ताक़तवर सूर्मा और जंग में माहिर ~लोग थे, जो ढाल और बर्छों का इस्ते'माल जानते थे। उनकी सूरतें ऐसी थीं जैसी शेरों की सूरतें और वह पहाड़ों पर हिरनियों की तरह तेज़ दौड़ते थे:

⁹अव्वल 'अज़र था, 'अबदियाह दूसरा, इलीयाब तीसरा,¹⁰ मिसमन्ना चौथा, यरमियाह पाँचवाँ,¹¹ अत्ती छठा, इलीएल सातवाँ,¹² यूहनान आठवाँ, इलज़बा'द नवाँ,¹³ यरमियाह दसवाँ, मकबानी ग्यारहवाँ।

¹⁴यह बनी जद में सरलशकर थे। इनमें सबसे छोटा सौ के बराबर और सबसे बड़ा हज़ार के बराबर था।¹⁵ यह वह हैं जो पहले महीने में यरदन के पार गए जब उसके सब किनारे डूबे हुए थे और उन्होंने वादियों के सब लोगों को पूरब और पश्चिम की तरफ़ भगा दिया।

¹⁶बनी बिनयमीन और याहूदाह में से कुछ लोग क़िले' में दाऊद के पास आये।¹⁷ तब दाऊद उनके इस्तक्रबाल को निकला और उनसे कहने लगा, अगर तुम नेक नियती से मेरी मदद के लिए मेरे पास आये हो तो मेरा दिल तुमसे मिला रहेगा लेकिन अगर मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ में पकड़वाने आये हो हालाँकि मेरा हाथ जुल्म से پاک है तो हमारे बाप दादा का खुदा यह देखे और मलामत करे।"

¹⁸तब रूह 'अमासी पर नाज़िल हुई और जो उन तीसों का सरदार था और वह कहने लगा, हम तेरे हैं, ऐ दाऊद! और हम तेरी तरफ़ हैं, ऐ यस्सी के बेटे! सलामती तेरी सलामती, और तेरे मददगारों की सलामती हो, क्योंकि तेरा खुदा तेरी मदद करता है।" तब दाऊद ने उनको कुबूल किया और उनको फ़ौज का सरदार बनाया।

¹⁹और मनस्सी में से कुछ लोग दाऊद से मिल गए जब वह साऊल के मुकाबिल जंग के लिए फ़िलिस्तिनों के साथ निकला, लेकिन उन्होंने उनकी मदद न की क्योंकि फ़िलिस्तिनों के हाकिमों ने सलाह कर के उसे लौटा दिया और कहने लगे कि वह हमारे सिर काटकर अपने आक्रा साऊल से जा मिलेगा।²⁰ जब वह सिक्रलाज को जा रहा था मनस्सी में से 'अदना और यूज़बा'द और यदी'एल और मीकाएल और यूज़बा'द और इलीहू और ज़िलती जो बनी मनस्सी में हज़ारों के सरदार थे उससे मिल गए।

²¹उन्होंने गारतगारों के जत्थे के मुकाबिले में दाऊद की मदद की क्योंकि वह सब ताक़तवर सूर्मा और लश्कर के सरदार थे।²² बल्कि रोज़-ब-रोज़ लोग दाऊद के पास उसकी मदद को आते गए, यहाँ तक कि खुदा की फ़ौज की तरह एक बड़ी फ़ौज तैयार हो गयी।

²³और जो लोग जंग के लिए हथियार बाँध कर हबरून में दाऊद के पास आये ताकि खुदावन्द की बात के मुताबिक़ साऊल की ममलुकत को उसकी तरफ़ बदल दें, उनका शुमार यह है।²⁴ बनी यहूदाह छः हज़ार आठ सौ, जो ढाल और नेज़ा लिए हुए जंग के लिए तैयार थे।²⁵ बनी शमा'ऊन में से जंग के ले लिए सात हज़ार एक सौ ताक़तवर सूर्मा'

²⁶बनी लावी में से चार हज़ार छः सौ।²⁷ और यहूयदा' हारूनियों का सरदार था और उसके साथ तीन हज़ार सात सौ थे।²⁸ और सदोक़, एल जवान सूर्मा और उसके आबाई घराने के बाइस सरदार।

²⁹और साऊल के भाई बनी बिनयमीन में से तीन हज़ार लेकिन उस वक्रत तक उनका बहुत बड़ा हिस्सा साऊल के घराने का तरफ़दार था।³⁰ और बनी इफ़्राईम में से बीस हज़ार आठ सौ ताक़तवर सूर्मा जो अपने आबाई खानदानों में नामी आदमी थे।³¹ और मनस्सी के आधे क़बीले से अठारह हज़ार, जिनके नाम बताये गए थे कि अगर दाऊद को बादशाह बनायें।

³²और बनी इश्कार में से ऐसे लोग जो ज़माने को समझते और जानते थे कि इस्राईल को क्या करना मुनासिब है उनके सरदार दो सौ थे और उनके सब भाई उनके हुक्म में थे।³³ और जबलून में से ऐसे लोग मैदान में जाने और हर क्रिस्म की जंगी हथियार के साथ मैदान ए जंग ~के क़ाबिल थे, पचास हज़ार। यह सफ़आराई करना जानते थे और दो दिले न थे।

³⁴और नफ़ताली में से एक हज़ार सरदार और उनके साथ सैंतीस हज़ार ढालें और भाले लिए हुए।³⁵ और दानियों में से अट्ठाईस हज़ार छः सौ मैदान ए जंग ~करने वाले।

³⁶और आशर में से चालीस हज़ार जो मैदान में जाने और मा'रका आराई के क़ाबिल थे।³⁷ और यरदन के पार के रुबीनियों और जदियों और मनस्सी के आधे क़बीले में से एक लाख बीस हज़ार जिनके साथ लड़ाई के लिए हर क्रिस्म के जंगी हथियार थे।

³⁸यह सब जंगी मर्द जो मैदान ए जंग ~कर सकते थे खुलूस-ए-दिल से हबरून को आये ताकि दाऊद को सारे इस्राईल का बादशाह बनायें और बाक़ी सब इस्राईली भी दाऊद को बादशाह बनाने पर रज़ामंद थे।³⁹ और वह वहाँ दाऊद के साथ तीन दिन तक ठहरे और खाते पीते रहे, क्योंकि उनके भाइयों ने उनके लिए तैयारी की थी।⁴⁰ इसके अलावा इनके जो उनके क़रीब के थे बल्कि इश्कार और जबलून और नफ़ताली तक के लोग गधों और ऊँटों और खच्चरों और बैलों पर रोटियाँ और मैदे की बनी हुई खाने की चीज़ें और अंजीर की टिकियाँ। और किशमिश के गुच्छे और शराब और तेल लादे हुए और बैल और भेड़ बकरियाँ इफ़रात से लाये इसलिए कि इस्राईल में खुशी थी।

Chapter 13

¹और दाऊद उन सरदारों से जो हज़ार हज़ार और सौ सौ पर थे या'नी हर एक लश्कर के शख्स से सलाह ली।²और दाऊद ने इस्राईल की सारी जमा'अत से कहा कि मर्जी हो तो आओ हम हर जगह इस्राईल के सारे मुल्क में अपने बाक़ी भाइयों को जिनके साथ काहिन और लावी भी अपने नवाहीदार शहरों में रहते हैं, कहला भेजें ताकि वह हमारे पास जमा' हों,³और हम अपने खुदा के सन्दूक फिर अपने पास ले आयें क्योंकि हम साऊल के दिनों में उसके तालिब न हुए।⁴तब सारी जमा'अत बोल उठे कि हम ऐसा ही करेंगे क्योंकि यह बात सब लोगों की निगाह में ठीक थी।

⁵तब दाऊद ने मिस्र की नदी सीहूर से हम्रात के मदखल तक के सारे इस्राईल को जमा' किया, ताकि खुदा का सन्दूक को क्रयत या'रीम से ले आयें।⁶और दाऊद और सारा इस्राईल बा'ला को या'नी क्रयतया'रीम को जो यहूदाह में है गए, ताकि खुदा के सन्दूक को वहाँ ले आयें, जो क्रूबियों पर बैठने वाला खुदावन्द है और इस नाम से पुकारा जाता है।

⁷और वह खुदा के सन्दूक को एक नयी पर गाड़ी रख कर अबीनदाब के घर से बाहर निकाल लाये, और 'उज़्ज़ा और अखियू गाड़ी को हाँक रहे थे।⁸और दाऊद और सारा इस्राईल, खुदा के आगे बड़े ज़ोर सेहम्द करते और बरबत और सितार और दफ़ और झांझ और तुरही बजाते चले आते थे।

⁹और जब वह कीदून के खलिहान पर पहुँचे, तो 'उज़्ज़ा ने सन्दूक के थामने को अपना बढ़ाया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खायी थी।¹⁰तब खुदावन्द का क्रहर 'उज़्ज़ा पर भड़का और उसने उसको मार डाला इसलिए कि उसने अपना हाथ सन्दूक पर बढ़ाया था और वह वहीं खुदा के सामने मर गया।¹¹तब दाऊद उदास हुआ, इसलिए कि खुदा 'उज़्ज़ा पर टूट पड़ा और उसने उस मुक़ाम का नाम परज़ 'उज़्ज़ा रखवा जो आज तक है।

¹²और दाऊद उस दिन खुदा से डर गया और कहने लगा कि मैं खुदा के सन्दूक को अपने यहाँ क्यों कर लाऊँ ?¹³इसलिए दाऊद सन्दूक को अपने यहाँ दाऊद के शहर में न लाया बल्कि उसे बाहर ही जाती 'ओबेदअदोम के घर में ले गया।¹⁴तब खुदा का सन्दूक 'ओबेदअदोम के घराने के साथ उसके घर में तीन महीने तक रहा, और खुदावन्द ने 'ओबेदअदोम और उसकी सब चीज़ों को बरकत दी।

Chapter 14

¹और सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के क्रासिद और उसके लिए महल बनाने के लिए देवदार के लट्टे और राजगीर और बढ़ई भेजे।²और दाऊद जान गया कि खुदावन्द ने उसे बनी-इसाईल का बादशाह बना कर क्रायम कर दिया है, क्योंकि उसकी हुकूमत उसके इसाईली लोगों की खातिर मुस्ताज़ की गई थी।

³और दाऊद ने यरुशलीम में और 'औरतें ब्याह लीं, और उससे और बेटे बेटियाँ पैदा हुए।⁴और उसके उन बच्चों के नाम जो यरुशलीम में पैदा हुए यह हैं: सम्मू'अ और सोबाब और नातन और सुलेमान,⁵और इब्हार और इलिसू'अ और इलफ़ालत,⁶और नौजा और नफ़ज और यफ़ी'आ,⁷और इलिसमा' और और बा'लयद'अ और इलीफ़ालत।

⁸और जब फ़िलिस्तिनों ने सुना कि दाऊद मम्सूह होकर सारे इसाईल का बादशाह बना है तो सब फ़िलिस्ती दाऊद की तलाश में चढ़ आये और दाऊद यह सुनकर उनके मुकाबिले को निकला।⁹और फ़िलिस्तिनों ने आकर रिफ़ाईम की वादी में धावा मारा।

¹⁰तब दाऊद ने खुदा से सवाल किया, क्या मैं फ़िलिस्तिनों पर चढ़ जाऊँ? क्या तू उनको मेरे हाथ में कर देगा?" खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, चढ़ जा क्योंकि मैं उनको तेरे हाथ में कर दूँगा।¹¹तब वह बा'ल पराज़ीम में आये और दाऊद ने वहीं उनको मारा और दाऊद ने कहा, खुदा ने मेरे हाथ से दुश्मनों को ऐसा चीरा, जैसे पानी चाक चाक हो जाता है। " इस वजह से उन्होंने उस मक्राम का नाम बा'ल पराज़ीम रखखा।¹²और वह अपने बुतों को वहाँ छोड़ गए, और वह दाऊद के हुक्म से आग में जला दिए गए।

¹³और फ़िलिस्तिनों ने फिर उस वादी में धावा मारा।¹⁴और दाऊद ने फिर खुदा से सवाल किया, और खुदा ने उससे कहा, तू उनका पीछा न कर, बल्कि उनके पास से कतरा कर निकल जा, और तूत के पेड़ों के सामने से उन पर हमला कर।

¹⁵और जब तू तूत के दरख्तों की फुन्गियों पर चलने की जैसी आवाज़ सुने, तब लड़ाई को निकलना क्योंकि खुदा तेरे आगे आगे फ़िलिस्तिनों के लश्कर को मारने के लिए निकला है।"¹⁶और दाऊद ने जैसा खुदा ने उसे फ़रमाया था किया और उन्होंने फ़िलिस्तिनों की फ़ौज को जिबा'ऊन से जज़र तक क़त्ल किया।¹⁷और दाऊद की शौहरत सब मुल्कों में फैल गई, और खुदावन्द ने सब क्रौमों पर उसका ख़ौफ़ बिठा दिया।

Chapter 15

¹और दाऊद ने दाऊद के शहर में अपने लिए महल बनाए, और खुदा के सन्दूक के लिए एक जगह तैयार करके उसके लिए एक खैमा खड़ा किया।²तब दाऊद ने कहा कि लावियों के 'अलावा और किसी को खुदा के सन्दूक को उठाना नहीं चाहिए, क्योंकि खुदावन्द ने उन्हीं को चुना है कि खुदा सन्दूक को उठाएँ और हमेशा उसकी खिदमत करें।³और दाऊद ने सारे इस्राईल को यरूशलीम में जमा' किया, ताकि खुदावन्द के सन्दूक को उस जगह जो उसने उसके लिए तैयार की थी ले आएँ।

⁴और दाऊद ने बनी हारून को और लावियों को इकट्ठा किया:⁵'या'नी बनी क्रिहात में से, ऊरीएल सरदार और उसके एक सौ बीस भाइयों को;⁶बनी मिरारी में से, 'असायाह सरदार और उसके दो सौ बीस भाइयों को;

⁷बनी जैरसोम में से, यूएल सरदार और उसके एक सौ तीस भाइयों को;⁸बनी इलीसफ़न में से, समायाह सरदार और उसके दो सौ भाइयों को;⁹बनी हबरून में से, इलीएल सरदार और उसके अस्सी भाइयों को;¹⁰बनी उज़्ज़ीएल में से, 'अम्मीनदाब सरदार और उसके एक सौ बारह भाइयों को।

¹¹और दाऊद ने सदोक्क और अबियातर काहिनों की, और ऊरिएल और 'असायाह और यूएल और समायाह और इलीएल और 'अम्मीनदाब लावियों को बुलाया,

¹²और उनसे कहा कि तुम लावियों के आबाई खान्दानों के सरदार हो; तुम अपने आपको पाक करो, तुम भी और तुम्हारे भाई भी, ताकि तुम खुदावन्द इस्राईल के खुदा के सन्दूक को उस जगह जो मैंने उसके लिए तैयार की है ला सको।

¹³क्योंकि जब तुम ने पहली बार उसे न उठाया, तो खुदावन्द हमारा खुदा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि हम क़ानून के मुताबिक़ उसके तालिब नहीं हुए थे।¹⁴तब काहिनों और लावियों ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के सन्दूक को लाने के लिए अपने आपको पाक किया।¹⁵और बनी लावी ने खुदा के सन्दूक को, जैसा मूसा ने खुदावन्द के कलाम के मुवाफ़िक़ हुक्म किया था, कड़ियों से अपने कन्धों पर उठा लिया।

¹⁶और दाऊद ने लावियों के सरदारों को फ़रमाया कि अपने भाइयों में से हम्द करने वालों को मुक़र्रर करें कि मूसीक़ी के साज़, या'नी सितार और बरबत और झाँझ बजाएँ और आवाज़ बुलन्द करके खुशी से गाएँ।¹⁷तब लावियों ने हैमान बिन यूएल को मुक़र्रर किया, और उसके भाइयों में से आसफ़ बिन बरकियाह को, और उनके भाइयों बनी मिरारी में से ऐतान बिन कौसियाह को;¹⁸और उनके साथ उनके दूसरे दर्जे के भाइयों या'नी ज़करियाह, बीन और या'ज़िएल और सिमीरामोत और यहिएल और उन्नी और इलियाब और बिनायाह और मासियाह और मतितियाह और इलीफ़लहू और मिक्किनियाह और 'ओबेदअदोम और य'ईएल को जो दरबान थे।

¹⁹~ फिर हम्द करने वाले हैमान, आसफ़ और ऐतान मुक़र्रर हुए कि पीतल की झाँझों को ज़ोर से बजाएँ;²⁰और ज़करियाह और 'अज़ीएल और सिमीरामीत और यहिएल और उन्नी और इलियाब और मा'सियाह और बिनायाह सितार को 'अलामीत राग पर छेड़े;²¹और मतितियाह और इलीफ़लहू और मिक्किनियाह और 'ओबेदअदोम और य'ईएल और 'अज़ज़ियाह शमीनीत राग पर सितार बजाएँ।

²²और कनानियाह, लावियों का सरदार, हम्द गाने पर मुक़र्रर था; वहहम्द सिखाता था, क्योंकि वह बड़ा ही माहिर था।²³और बरकियाह और इल्क़ाना सन्दूक के दरबान थे,²⁴और शबनियाह और यहूसफ़त और नतनिएल और 'अमासी और ज़करियाह और बिनायाह और इली'अज़र काहिन खुदा के सन्दूक के आगे आगे नरसिंगे फूँकते जाते थे, और 'ओबेदअदोम और यहियाह सन्दूक के दरबान थे।

²⁵~तब दाऊद और इस्राईल के बुजुर्ग और हज़ारों के सरदार रवाना हुए कि खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को 'ओबेदअदोम के घर से खुशी मनाते हुए लाएँ।

²⁶और ऐसा हुआ कि जब खुदा ने उन लावियों की, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उठाए हुए थे मदद की, तो उन्होंने सात बैल और सात मेंढे कुर्बान किए।

²⁷और दाऊद और सब लावी जो सन्दूक को उठाये हुए थे, और हम्द करने वाले और हम्द करने वालों के साथ कनानियाह जो हम्द करने ~में उस्ताद था कतानी लिबासों से मुलब्सस थे, और दाऊद कतान का अफ़ूद भी पहने था।²⁸यू सब इस्राईली नारा मारते और नरसिंगों और तुरहियों और झाँझों की आवाज़ के साथ सिरतार और बरबत को ज़ोर से बजाते हुए, खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को लाए।

²⁹और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द का 'अहद का सन्दूक दाऊद के शहर में पहुँचा, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँक कर दाऊद बादशाह को ख़ूब नाचते-कूदते देखा, और उसने अपने दिल में उसको हक़ीर जाना।

Chapter 16

¹-तब वह ख़ुदा के सन्दूक को ले आए और उसे उस खेमा के बीच में जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था रखा, और सोखतनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ ख़ुदा के सामने पेश कीं।²जब दाऊद सोखतनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कर चुका तो उसने ख़ुदावन्द के नाम से लोगों को बरकत दी।

³और उसने सब इस्राइली लोगों को, क्या आदमी क्या 'औरत, एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोश्त और किशमिश की एक एक टिकिया दी।

⁴और उसने लावियों में से कुछ को मुकर्रर किया कि ख़ुदावन्द के सन्दूक के आगे खिदमत करें, और ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा का ज़िक्र और शुक्र और उसकी हम्द करें।⁵अव्वल आसफ़ और उसके बा'द ज़करियाह और य'ईएल और सिमीरामोत और यहीएल और मतितियाह और इलियाब और बिनायाह और 'ओबेदअदोम और य'ईएल, सितार और बरबत के साथ, और आसफ़ झाँझों को ज़ोर से बजाता हुआ,⁶और बिनायाह और यहज़िएल काहिन हमेशा तुरहियों के साथ ख़ुदा के 'अहद के सन्दूक के आगे रहा करें।

⁷पहले उसी दिन दाऊद ने यह ठहराया कि ख़ुदावन्द का शुक्र आसफ़ और उसके भाई बजा लाया करें।⁸ख़ुदावन्द की शुक्रगुज़ारी करो। उससे दु'आ करो; क्रौमों के बीच उसके कामों का इश्तिहार दो।⁹उसके सामने हम्द करो, उसकी बड़ाई करो, उसके सब 'अजीब कामों का ज़िक्र करो।

¹⁰उसके पाक नाम पर फ़ख़्र करो; जो ख़ुदावन्द के तालिब हैं, उनका दिल खुश रहे।¹¹तुम ख़ुदावन्द और उसकी ताक़त के तालिब हो; तुम हमेशा उसके दीदार के तालिब रहो।

¹²तुम उसके 'अजीब कामों को जो उसने किए, और उसके मो'जिज़ों और मुँह के क़ानून को याद रखो।¹³ऐ उसके बन्दे इस्राईल की नसल, ऐ बनी या'क़ूब, जो उसके चुने हुए हो।¹⁴वह ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा है, तमाम रू-ए-ज़मीन पर उसके क़ानून हैं।

¹⁵~हमेशा उसके 'अहद को याद रखो, और हज़ार नसलों तक उसके कलाम को जो उसने फ़रमाया।¹⁶उसी 'अहद को जो उसने इब्राहीम से बाँधा, और उस क़सम को जो उसने इस्राक़ से खाई,¹⁷जिसे उसने या'क़ूब के लिए क़ानून के तौर पर और इस्राईल के लिए हमेशा 'अहद के तौर पर क़ायम किया,¹⁸यह कहकर, मैं कन'आन का मुल्क तुझको दूँगा, वह तुम्हारा मौरूसी हिस्सा होगा।"

¹⁹उस वक़्त तुम शुमार में थोड़े थे बल्कि बहुत ही थोड़े और मुल्क में परदेसी थे।²⁰वह एक क्रौम से दूसरी दूसरी क्रौम में और एक मुल्क से दूसरी मुल्क में फिरते रहे।²¹उसने किसी शरख़ को उनपर ज़ुल्म करने न दिया; बल्कि उनकी खातिर बादशाहों को तम्बीह की,²²कि तुम मेरे मम्सूहों को न छुओ और मेरे नबियों को न सताओ।

²³ऐ सब अहल-ए-ज़मीन, ख़ुदावन्द के सामने हम्द करो। रोज़-ब-रोज़ उसकी नजात की बशारत दो।²⁴क्रौमों में उसके जलाल का, सब लोगों में उसके 'अजाइब का बयान करो।

²⁵क्योंकि ख़ुदावन्द बूजुर्ग और बहुत ही ता'रीफ़ ~के लायक़ है, वह सब मा'बूदों से ज़्यादा बड़ा है।²⁶इसलिए कि और क्रौमों के सब मा'बूद महज़ बुत हैं; लेकिन ख़ुदावन्द ने आसमानों को बनाया।²⁷अज़मत और जलाल उसके सामने में हैं, और उसके यहाँ कुदरत और शादमानी हैं।

²⁸ऐ क्रौमों के क़बीलो! ख़ुदावन्द की, ख़ुदावन्द ही की तम्जीद-ओ-ताज़ीम करो।²⁹ख़ुदावन्द की ऐसी बड़ाई करो जो उसके नाम के शायों है। हदिया लाओ, और उसके सामने आओ, पाक आराइश के साथ ख़ुदावन्द को सिज्दा करो।

³⁰ऐ सब अहल-ए-ज़मीन! उसके सामने काँपते रहो। ज़हान क़ायम है, और उसे हिलता नहीं।³¹आसमान खुशी मनाए और ज़मीन खुश हो, वह क्रौमों में ऐलान करें कि ख़ुदावन्द हुकूमत करता है।

³²समन्दर और उसकी मामूरी शोर मचाए, मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।³³तब जंगल के दरख़्त खुशी से ख़ुदावन्द के सामने हम्द करने लगेंगे, क्योंकि वह ज़मीन का इंसफ़ करने को आ रहा है।

³⁴ख़ुदावन्द का शुक्र करो, इसलिए कि वह नेक है; क्योंकि उसकी शफ़क़त हमेशा है।³⁵तुम कहो, ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हम को बचा ले, और क्रौमों में से हम को जमा' कर और उनसे हम को रिहाई दे, ताकि हम तेरे कुहूस नाम का शुक्र करें, और ललकारते हुए तेरी ता'रीफ़ करें।

³⁶ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा, अज़ल से 'हमेशा तक मुबारक हो!" और सब लोग बोल उठे आमीन! उन्होंने ख़ुदावन्द की ता'रीफ़ की।

³⁷उसने वहाँ ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे आसफ़ और उसके भाइयों को, हर रोज़ के ज़रूरी काम के मुताबिक़ हमेशा सन्दूक के आगे खिदमत करने को छोड़ा;³⁸और 'ओबेदअदोम और उसके अड़सठ भाइयों को, और 'ओबेदअदोम बिन यदूतून और हूसाह को ताकि दरबान हों।³⁹और सदूक काहिन और उसके काहिन भाइयों को ख़ुदावन्द के घर के आगे, जिबा'ऊन के ऊँचे मक़ाम पर, इसलिए

⁴⁰कि वह ख़ुदावन्द की शरी'अत की सब लिखी हुई बातों के मुताबिक़ जो उसने इस्राईल को फ़रमाई, हर सुबह और शाम सोखतनी कुर्बानी के मज़बह पर ख़ुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानियाँ पेश कीं।⁴¹उनके साथ हैमान और यदूतून और बाक़ी चुने हुए आदमियों को जो नाम-ब-नाम मज़कूर हुए थे, ताकि ख़ुदावन्द का शुक्र करें क्योंकि उसकी शफ़क़त हमेशा है।

⁴²उन ही के साथ हैमान और यदूतून थे, जो बजाने वालों के लिए तुरहियाँ और झाँझें और ख़ुदा के हम्द ~के लिए बाजे लिए हुए थे, और बनी यदूतून दरबान थे।

⁴³तब सब लोग अपने अपने घर गए, और दाऊद लौटा कि अपने घराने को बरकत दे।

Chapter 17

¹जब दाऊद अपने महल में रहने लगा, तो उसने नातन नबी से कहा, मैं तो देवदार के महल में रहता हूँ, लेकिन खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक खेमे में है।' नातन ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरे दिल में है वह कर, क्योंकि खुदा तेरे साथ है।

³और उसी रात ऐसा हुआ कि खुदा का कलाम नातन पर नाज़िल हुआ कि, 'जाकर मेरे बन्दे दाऊद से कह कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू मेरे रहने के लिए घर न बनाना।' ⁵क्योंकि जब से मैं बनी-इसाईल को निकाल लाया, आज के दिन तक मैंने किसी घर में सुकूनत नहीं की; बल्कि खेमा-ब-खेमा और मस्कन-ब-मस्कन फिरता रहा हूँ उन जगहों में जहाँ जहाँ मैं सारे इसाईल के साथ फिरता रहा, क्या मैंने इसाईली क़ाज़ियों में से जिनको मैंने हुक्म किया था कि मेरे लोगों की गल्लेबानी करें, किसी से एक हर्फ़ भी कहा कि तुम ने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?

⁷तब तू मेरे बन्दे दाऊद से यूँ कहना कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि मैंने तुझे भेड़साले में से जब तू भेड़-बकरियों के पीछे पीछे चलता था लिया, ताकि तू मेरी क़ौम इसाईल का रहनुमा हो; ⁸और जहाँ कहीं तू गया मैं तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं रू-ए-ज़मीन के बड़े बड़े आदमियों के नाम की तरह तेरा नाम कर दूँगा।

⁹और मैं अपनी क़ौम इसाईल के लिए एक जगह ठहराऊँगा, और उनको क़ायम कर दूँगा ताकि अपनी जगह बसे रहें और फिर हटाए न जाएँ, और न शरारत के फ़र्ज़न्द फिर उनको दुख देने पाएँगे जैसा शुरु' में हुआ। ¹⁰और उस वक़्त भी जब मैंने हुक्म दिया कि मेरी क़ौम इसाईल पर क़ाज़ी मुकर्रर हों, और मैं तेरे सब दुश्मनों को मग़लूब करूँगा। इसके 'अलावा मैं तुझे बताता हूँ कि खुदावन्द तेरे लिए एक घर बनाएगा।

¹¹जब तेरे दिन पूरे हो जाएँगे ताकि तू अपने बाप-दादा के साथ मिल जाने को चला जाए, तो मैं तेरे बा'द तेरी नसल को तेरे बेटों में से खड़ा करूँगा, और उसकी हुक्मत को क़ायम करूँगा। ¹²वह मेरे लिए घर बनाएगा, और मैं उसका तख़्त हमेशा के लिए क़ायम करूँगा।

¹³मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा; और मैं अपनी शफ़क़त उस पर से नहीं हटाऊँगा, जैसे मैंने उस पर से जो तुझ से पहले था हटा ली, ¹⁴बल्कि मैं उसको अपने घर में और अपनी ममलुकत में हमेशा तक क़ायम रखूँगा, और उसका तख़्त हमेशा तक साबित रहेगा। ¹⁵इसलिए नातन ने इन सब बातों और इस सारे ख़्वाब के मुताबिक़ ऐसा ही दाऊद से कहा।

¹⁶तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर खुदावन्द के सामने बैठा, और कहने लगा, 'ऐ खुदावन्द खुदा! मैं कौन हूँ, और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझ को यहाँ तक पहुँचाया?' ¹⁷और ये, ऐ खुदा, तेरी नज़र में छोटी बात थी, बल्कि तू ने तो अपने बन्दे के घर के हक़ में आइंदा बहुत दिनों का ज़िक़्र किया है, और तू ने ऐ खुदावन्द खुदा, मुझे ऐसा माना कि गोया मैं बड़ा मन्ज़िलत वाला आदमी' हूँ। ¹⁸भला दाऊद तुझ से उस इकराम की निस्बत, जो तेरे खादिम का हुआ और क्या कहे? क्योंकि तू अपने बन्दे को जानता है।

¹⁹ऐ खुदावन्द, तू ने अपने बन्दे की खातिर अपनी ही मज़ी से इन बड़े बड़े कामों को ज़ाहिर करने के लिए इतनी बड़ी बात की। ²⁰ऐ खुदावन्द, कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावा जिसे हम ने अपने कानों से सुना है और कोई खुदा नहीं।' ²¹और रू-ए-ज़मीन पर तेरी क़ौम इसाईल की तरह और कौन सी क़ौम है, जिसे खुदा ने जाकर अपनी उम्मत बनाने को खुद छुड़ाया? ताकि तू अपनी उम्मत के सामने से जिसे तू ने मिस्र से ख़लासी बख़्शी, क़ौमों को दूर करके बड़े और मुहीब कामों से अपना नाम करे।

²²क्योंकि तू ने अपनी क़ौम इसाईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम ठहराया है, और तू खुद ऐ खुदावन्द, उनका खुदा हुआ है। ²³और अब ऐ खुदावन्द, वह बात जो तू ने अपने बन्दे के हक़ में और उसके घराने के हक़ में फ़रमाई, हमेशा तक साबित रहे और जैसा तू ने कहा है वैसा ही कर। ²⁴और तेरा नाम हमेशा तक क़ायम और बुजुर्ग हो ताकि कहा जाए कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ इसाईल का खुदा है, बल्कि वह इसाईल ही के लिए खुदा है और तेरे बन्दे दाऊद का घराना तेरे सामने क़ायम रहे।

²⁵क्योंकि तू ने ऐ मेरे खुदा, अपने बन्दा पर ज़ाहिर किया है कि तू उसके लिए एक घर बनाएगा; इसलिए तेरे बन्दे को तेरे सामने दु'आ करने का हौसला हुआ।

²⁶और ऐ खुदावन्द तू ही खुदा है, और तू ने अपने बन्दे से इस भलाई का वा'दा किया, ²⁷और तुझे पसंद आया कि तू अपने बन्दे के घराने को बरकत बख़्शे, ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने क़ायम रहे; क्योंकि तू ऐ खुदावन्द बरकत दे चुका है, इसलिए वह हमेशा तक मुबारक है।

Chapter 18

¹इसके बाद यँ हुआ कि दाऊद ने फ़िलिस्तिनियों को मारा और उनको मग़लूब किया, और जात को उसके क़स्बों समेत फ़िलिस्तिनियों के हाथ से ले लिया।²उसने मोआब को मारा, और मोआबी दाऊद के फ़रमाँबरदार हो गए और हदिए लाए।

³दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हदर'अज़र को भी, जब वह अपनी हुकूमत दरिया-ए-फ़ुरात तक क़ायम करने गया, हमात में मार लिया।⁴और दाऊद ने उससे एक हज़ार रथ और सात हज़ार सवार और बीस हज़ार प्यादे ले लिए, और उसने रथों के सब घोड़ों की नालें कटवा दीं, लेकिन उनमें से एक सौ रथों के लिए घोड़े बचा लिए।

⁵जब दमिश्क के अरामी ज़ोबाह के बादशाह हदर'अज़र की मदद करने को आए, तो दाऊद ने अरामियों में से बाइस हज़ार आदमी क़त्ल किए।⁶तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई, और अरामी दाऊद के फ़रमाँबरदार हो गए और हदिए लाए। और जहाँ कहीं दाऊद जाता खुदावन्द उसे फ़तह बख़्शता था।

⁷और दाऊद हदर'अज़र के नौकरों की सोने की ढालें लेकर उनको यरूशलीम में लाया;⁸और हदर'अज़र के शहरों, तिबखत और कून से दाऊद बहुत सा पीतल लाया, जिससे सुलेमान ने पीतल का बड़ा हौज़ और खम्भा और पीतल के बर्तन बनाए।

⁹जब हमात के बादशाह तू'ऊ ने सुना के दाऊद ने जूबाह के बादशाह हदर'अज़र का सारा लश्कर मार लिया,¹⁰तो उसने अपने बेटे हदूराम को दाऊद बादशाह के पास भेजा ताकि उसे सलाम करे और मुबारक बाद दे, इसलिए के उसने जंग करके हदर'अज़र को मारा (क्योंकि हदर'अज़र तू'ऊ से लड़ा करता था), और हर तरह के सोने और चाँदी और पीतल के बर्तन उसके साथ थे।¹¹इनकी भी दाऊद बादशाह ने उस चाँदी और सोने के साथ, जो उसने और सब क़ौमों या'नी अदूम और मोआब और बनी 'अम्मून और फ़िलिस्तिनियों और 'अमालीक से लिया था, खुदावन्द को नज़्र किया।

¹²और अबीशै। बिन ज़रूयाह ने वादी-ए-शोर में अठारह हज़ार अदूमियों को मारा।¹³और उसने अदूम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई, और सब अदूम दाऊद के फ़रमाँबरदार हो गए। और जहाँ कहीं दाऊद जाता खुदावन्द उसे फ़तह बख़्शता था।

¹⁴तब दाऊद सारे इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और अपनी सारी र'इयत के साथ अदल-ओ-इन्साफ़ करता था।¹⁵और योआब बिन ज़रूयाह लश्कर का सरदार था, और यहूसफ़त बिन अखीलूद मुवरिख़ था;¹⁶और सदूक़ बिन अखीतोब और अबीमलिक बिन अबियातर काहिन थे, और शौशा मुन्शी था;¹⁷और बिनायाह बिन यहूयदा' करेतियों और फ़लेतियों पर था; और दाऊद के बेटे बादशाह के ख़ास मुसाहिब थे।

Chapter 19

¹इसके बा'द ऐसा हुआ कि बनी 'अम्मून का बादशाह नाहस मर गया, और उसका बेटा उसकी जगह हुकूमत करने लगा।²तब दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून के साथ नेकी करूँगा क्योंकि उसके बाप ने मेरे साथ नेकी की, तब दाऊद ने क्रासिद भेजे ताकि उसके बाप के बारे में उसे तसल्ली दें। इसलिए दाऊद के खादिम बनी अम्मून के मुल्क में हनून के पास आये कि उसे तसल्ली दें।³~लेकिन बनी 'अम्मून के अमीरों ने हनून से कहा, क्या तेरा ख्याल है कि दाऊद तेरे बाप की 'इज़्ज़त करता है, तो उसने तेरे पास तसल्ली देनेवाले भेजे हैं ? क्या उसके खादिम तेरे मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने, और उसे तबाह करने, और राज़ लेने नहीं आए हैं?"

⁴तब हनून ने दाऊद के खादिमों को पकड़ा और उनकी दाढ़ी मूँछें मुंडवाकर, उनकी आधी लिबास उनके सुरीनों तक कटवा डाली, और उनको रवाना कर दिया।

⁵तब कुछ ने जाकर दाऊद को बताया कि उन आदिमियों से कैसा सुलूक किया गया। तब उसने उनके इस्तक्रबाल को लोग भेजे इसलिए कि वह निहायत शरमाते थे, और बादशाह ने कहा कि जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ न बढ़ जाएँ यरीहू में ठहरे रहो, इसके बा'द लौट आना।

⁶जब बनी 'अम्मून ने देखा कि वह दाऊद के सामने नफ़रतअंगेज़ हो गए हैं, तो हनून और बनी 'अम्मून ने मसोपतामिया और अराम, माका और ज़ोबाह से रथों और सवारों को किराया करने के लिए एक हज़ार किन्तार चाँदी भेजी।⁷~इसलिए उन्होंने बत्तीस हज़ार रथों और मा'का के बादशाह और उसके लोगों को अपने लिए किराया कर लिया, जो आकर मीदबा के सामने ख़ैमाज़न हो गए। और बनी 'अम्मून अपने अपने शहर से जमा' हुए और लड़ने को आए।

⁸जब दाऊद ने यह सुना तो उसने योआब और सूर्माओं के सारे लश्कर को भेजा।⁹तब बनी 'अम्मून ने निकलकर शहर के फाटक पर लड़ाई के लिए सफ़्र बाँधी, और वह बादशाह जो आए थे सो उनसे अलग मैदान में थे।

¹⁰जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे लड़ाई के लिए सफ़्र बाँधी है, तो उसने सब इस्राईल के खास लोगों में से आदमी चुन लिए और अरामियों के मुक्राबिल उनकी सफ़्र आराई की;¹¹और बाक़ी लोगों को अपने भाई अबीशै के सुपुर्द किया, और उन्होंने बनी 'अम्मून के सामने अपनी सफ़्र बाँधी।

¹²और उसने कहा कि अगर अरामी मुझ पर ग़ालिब आएँ, तो तू मेरी मदद करना; और अगर बनी 'अम्मून तुझ पर ग़ालिब आएँ, तो मैं तेरी मदद करूँगा।

¹³इसलिए हिम्मत बाँधो, और आओ हम अपनी क्रौम और अपने खुदा के शहरों की खातिर मर्दानगी करें; और खुदावन्द जो कुछ उसे भला मा'लूम हो करे।

¹⁴तब योआब अपने लोगों समेत अरामियों से लड़ने को आगे बढ़ा, और वह उसके सामने से भागे।¹⁵जब बनी 'अम्मून ने अरामियों को भागते देखा, तो वह भी उसके भाई अबीशै के सामने से भाग कर शहर में घुस गए। तब योआब यरूशलीम को लौट आया।

¹⁶जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने बनी-इस्राईल से शिकस्त खाई, तो उन्होंने क्रासिद भेज कर दरिया-ए-फुरात के पार के अरामियों को बुलवाया; और हदर'अज़र का सिपहसालार सोफ़क उनका सरदार था।¹⁷और इसकी ख़बर दाऊद को मिली तब वह सारे इस्राईल को जमा' करके यरदन के पार गया, और उनके क़रीब पहुँचा और उनके मुक्राबिल सफ़्र बाँधी, फिर ~जब दाऊद ने अरामियों के मुक्राबिले में जंग के लिए सफ़्र बाँधी तो वह उससे लड़े।

¹⁸और अरामी इस्राईल के सामने से भागे, और दाऊद ने अरामियों के सात हज़ार रथों के सवारों और चालीस हज़ार प्यादों को मारा, और लश्कर के सरदार सोफ़क को क़त्ल किया।¹⁹जब हदर'अज़र के मुलाज़िमों ने देखा कि वह इस्राईल से हार गए, तो वह दाऊद से सुलह करके उसके फ़रमाँबरदार हो गए; और अरामी बनी 'अम्मून की मदद पर फिर कभी राज़ी न हुए।

Chapter 20

¹फिर नए साल के शुरू में जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं, योआब ने तत्काल लश्कर ले जाकर बनी 'अम्मून के मुल्क को उजाड़ डाला और आकर रब्बा को घेर लिया; लेकिन दाऊद यरूशलीम में रह गया था, और योआब ने रब्बा को घेर करके उसे ढा दिया।

²और दाऊद ने उनके बादशाह के ताज को उसके सिर पर से उतार लिया, और उसका वज़न एक किन्तार सोना पाया, और उसमें बेशकीमत जवाहिर जड़े थे; इसलिए वह दाऊद के सिर पर रखा गया, और वह उस शहर में से बहुत सा लूट का माल निकाल लाया।³उसने उन लोगों को जो उसमें थे, बाहर निकाल कर आरों और लोहे के हींगों और कुल्हाड़ों से काटा, और दाऊद ने बनी 'अम्मून के सब शहरों से ऐसा ही किया। तब दाऊद और सब लोग यरूशलीम को लौट आए।

⁴इसके बाद जज़र में फ़िलिस्तिनियों से जंग हुई; तब हूसाती सिब्बकी ने सप्रफ़ी को जो पहलवान के बेटों में से एक था क़त्ल किया, और फ़िलिस्ती मगलूब हुए।

⁵और फ़िलिस्तिनियों से फिर जंग हुई; तब य'ऊर के बेटे इलहिनान ने जाती जूलियत के भाई लहमी को, जिसके भाले की छड़ जुलाहे के शहतीर के बराबर थी, मार डाला।

⁶फिर जात में एक और जंग हुई जहाँ एक बड़ा क्रदआवर आदमी था जिसके चौबीस उंगलियाँ, या 'नी हाथों में छः छः और पाँव में छः छः थीं, और वह भी उसी पहलवान का बेटा था।⁷जब उसने इस्राईल की फ़ज़ीहत की तो दाऊद के भाई सिम'आ के बेटे योनतन ने उसको मार डाला।⁸यह जात में उस पहलवान से पैदा हुए थे, और दाऊद और उसके ख़ादिमों के हाथ से क़त्ल हुए।

Chapter 21

¹और शैतान ने इस्राईल के खिलाफ़ उठकर दाऊद को उभारा कि इस्राईल का शुमार करें तब दाऊद ने यूआब से और लोगों के सरदारों से कहा कि जाओ बैरसबा से दान तक इस्राईल का शुमार करो, और मुझे खबर दो ताकि मुझे उनकी ता'दाद मा'लूम हो।²योआब ने कहा, खुदावन्द अपने लोगों को जितने हैं, उससे सौ गुना ज़्यादा करे; लेकिन ऐ मेरे मालिक बादशाह, क्या वह सब के सब मेरे मालिक के खादिम नहीं हैं? फिर मेरा खुदावन्द यह बात क्यों चाहता है? वह इस्राईल के लिए खता का ज़रिए' क्यों बने?"

⁴तो भी बादशाह का फ़रमान यूआब पर ग़ालिब रहा चुनौचे यूआब रुख़्सत हुआ और तमाम इस्राईल में फिरा और यरूशलीम की लौटा;⁵और यूआब ने लोगों के शुमार की मीज़ान दाऊद को बतायी और सब इस्राइली ग्यारह लाख शमशीर ज़न मर्द, और यहूदाह चार लाख सत्तर हज़ार शमशीर ज़न शख्स थे।

⁶लेकिन उसने लावी और बिनयमीन का शुमार उनके साथ नहीं किया था, क्योंकि बादशाह का हुक्म यूआब के नज़दीक़ नफ़रतअंगेज़ था।⁷लेकिन खुदा इस बात से नाराज़ हुआ, इसलिए उसने इस्राईल को मारा।⁸तब दाऊद ने खुदा से कहा कि मुझसे बड़ा गुनाह हुआ कि मैंने यह काम किया। अब मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने बन्दा कुसूर मु'आफ़ कर, क्योंकि मैंने बेहूदा काम किया है।

⁹और खुदावन्द ने दाऊद के ग़ैबबीन जाद से कहा;¹⁰कि जाकर दाऊद से कह कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं तेरे सामने तीन चीज़ें पेश करता हूँ, उनमें से एक चुन ले, ताकि मैं उसे तुझ पर भेजूँ।

¹¹तब जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू जिसे चाहे उसे चुन ले।¹²या तो क्रहत के तीन साल; या अपने दुश्मनों के आगे तीन महीने तक हलाक़ होते रहना, ऐसे हाल में कि तेरे दुश्मनों की तलवार तुझ पर वार करती रहे; या तीन दिन खुदावन्द की तलवार या'नी मुल्क में वबा रहे, और खुदावन्द का फ़रिश्ता इस्राईल की सब सरहदों में मारता रहे। अब सोच ले कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या जवाब दूँ।

¹³दाऊद ने जाद से कहा, मैं बड़े शिकंजे में हूँ मैं खुदावन्द के हाथ में पड़ूँ क्योंकि उसकी रहमते बहुत ज़्यादा हैं लेकिन इन्सान के हाथ में न पड़ूँ।¹⁴तब खुदावन्द ने इस्राईल में वबा भेजी, और इस्राईल में से सत्तर हज़ार आदमी मर गए।¹⁵और खुदा ने एक फ़रिश्ता यरूशलीम को भेजा कि उसे हलाक़ करे; और जब वह हलाक़ करने ही को था, तो खुदावन्द देख कर उस बला से मलूल हुआ और उस हलाक़ करनेवाले फ़रिश्ते से कहा, बस, अब अपना हाथ खींच। और खुदावन्द का फ़रिश्ता यबूसी उरनान के खलिहान के पास खड़ा था।

¹⁶और दाऊद ने अपनी आँखें उठा कर आसमान-ओ-ज़मीन के बीच खुदावन्द के फ़रिश्ते को खड़े देखा, और उसके हाथ में नंगी तलवार थी जो यरूशलीम पर बढ़ाई हुई थी; तब दाऊद और बुजुर्ग टाट ओढ़े हुए मुँह के गिरे सिज्दा किया।¹⁷और दाऊद ने खुदा से कहा, क्या मैं ही ने हुक्म नहीं किया था कि लोगों का शुमार किया जाए? गुनाह तो मैंने किया, और बड़ी शरारत मुझ से हुई, लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के खिलाफ़ हो न कि अपने लोगों के खिलाफ़ के वह वबा में मुब्तिला हों।

¹⁸तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने जाद को हुक्म किया कि दाऊद से कहे कि दाऊद जाकर यबूसी उरनान के खलिहान में खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाए।

¹⁹और दाऊद जाद के कलाम के मुताबिक़, जो उसने खुदावन्द के नाम से कहा था गया,²⁰और उरनान ने मुड़ कर उस फ़रिश्ते को देखा, और उसके चारों बेटे जो उसके साथ थे छिप गए। उस वक़्त उरनान गेहूँ दाउता था।

²¹जब दाऊद उरनान के पास आया, तब उरनान ने निगाह की और दाऊद को देखा, और खलिहान से बाहर निकल कर दाऊद के आगे झुका और ज़मीन पर सिज्दा किया।²²तब दाऊद ने उरनान से कहा कि इस खलिहान की यह जगह मुझे दे दे, ताकि मैं इसमें खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाऊँ; तू इसका पूरा दाम लेकर मुझे दे, ताकि वबा लोगों से दूर कर दी जाए।

²³उरनान ने दाऊद से कहा, तू इसे ले ले और मेरा मालिक बादशाह जो कुछ उसे भला मा'लूम हो करे। देख, मैं इन बैलों को सोख़तनी कुर्बानियों के लिए और दाउने के सामान ईंधन के लिए, और यह गेहूँ नज़ की कुर्बानी के लिए देता हूँ; मैं यह सब कुछ दिए देता हूँ।²⁴दाऊद बादशाह ने उरनान से कहा, नहीं नहीं, बल्कि मैं ज़रूर पूरा दाम देकर तुझ से खरीद लूँगा, क्योंकि मैं उसे जो तेरा माल है खुदावन्द के लिए नहीं लेने का, और बग़ैर खर्च किये सोख़तनी कुर्बानियाँ पेश करूँगा।"

²⁵तब दाऊद ने उरनान को उस जगह के लिए छः सौ मिस्क़ाल सोना तौल कर दिया।²⁶और दाऊद ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बह बनाया और सोख़तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं और खुदावन्द से दु'आ की; और उसने आसमान पर से सोख़तनी कुर्बानी के मज़बह पर आग भेज कर उसको जवाब दिया।²⁷और खुदावन्द ने उस फ़रिश्ते को हुक्म दिया, तब उसने अपनी तलवार फिर मियान में कर ली।

²⁸उस वक़्त जब दाऊद ने देखा के खुदावन्द ने यबूसी उरनान के खलिहान में उसको जवाब दिया था, तो उसने वहीं कुर्बानी चढ़ाई।²⁹क्योंकि उस वक़्त खुदावन्द का घर जिसे मूसा ने वीरान में बनाया था, और सोख़तनी कुर्बानी का मज़बह जिबा ऊन की ऊँची जगह में थे।³⁰लेकिन दाऊद खुदा से पूछने के लिए उसके आगे न जा सका, क्योंकि वह खुदावन्द के फ़रिश्ता की तलवार की वजह से डर गया।

Chapter 22

¹और दाऊद ने कहा, "यही खुदावन्द खुदा का घर और यही इस्राईल की सोखतनी कुर्बानी का मज़बह है।"²दाऊद ने हुक्म दिया कि उन परदेसियों को जो इस्राईल के मुल्क में थे जमा' करें, और उसने पत्थरों को तराशने वाले ~मुक्रर किए कि खुदा के घर के बनाने के लिए पत्थर काट कर घड़ें।

³और दाऊद ने दरवाज़ों के किवाड़ों की कीलों और क़ब्ज़ों के लिए बहुत सा लोहा, और इतना पीतल कि तौल से बाहर था,⁴और देवदार के बेशुमार लट्टे तैयार किए, क्योंकि सैदानी और सूरी देवदार के लट्टे कसरत से दाऊद के पास लाते थे।⁵और दाऊद ने कहा कि मेरा बेटा सुलेमान लड़का और ना तज़ुरबेकार है, और ज़रूर है कि वह घर जो खुदावन्द के लिए बनाया जाए निहायत 'अज़ीम-उश-शान हो, और सब मुल्कों में उसका नाम और शोहरत हो। इसलिए मैं उसके लिए तैयारी करूँगा। चुनाँचे दाऊद ने अपने मरने से पहले बहुत तैयारी की।

⁶तब उसने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और उसे ताकीद की कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए एक घर बनाए।⁷दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा, यह तो खुद मेरे दिल में था कि खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाऊँ।⁸लेकिन खुदावन्द का कलाम मुझे पहुँचा, कि तू ने बहुत खूँरिजी की है और बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ लड़ा है; इसलिए तू मेरे नाम के लिए घर न बनाना, क्योंकि तू ने ज़मीन पर मेरे सामने बहुत खून बहाया है।

⁹देख, तुझ से एक बेटा पैदा होगा, वह मर्द-ए-सुलह होगा; और मैं उसे चारों तरफ़ के सब दुश्मनों से अमन बख़्शूँगा, क्योंकि सुलेमान उसका नाम होगा और मैं उसके दिनों में इस्राईल को अमन-ओ-अमान बख़्शूँगा।¹⁰वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा, और मैं इस्राईल पर उसकी हुकूमत का तख़्त हमेशा तक-क्रायम रखूँगा।

¹¹अब ऐ मेरे बेटे खुदावन्द तेरे साथ रहे और तू कामयाब हो और खुदावन्द अपने खुदा का घर बना, जैसा उसने तेरे हक़ में फ़रमाया है।¹²अब खुदावन्द तुझे अक्ल-ओ-दानाई बख़्शे और इस्राईल के बारे में तेरी हिदायत करे, ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा की शरी'अत को मानता रहे।¹³तब तू कामयाब होगा, बशर्ते कि तू उन क़ानून और अहक़ाम पर जो खुदावन्द ने मूसा को इस्राईल के लिए दिए एहतियात करके 'अमल करे। इसलिए हिम्मत बाँध और हौसला रख, ख़ौफ़ न कर, परेशान न हो।

¹⁴देख, मैंने मशक्क़त से खुदावन्द के घर के लिए एक लाख किन्तार सोना और दस लाख किन्तार चाँदी, और बेअंदाज़ा पीतल और लोहा तैयार किया है क्योंकि वह कसरत से है, और लकड़ी और पत्थर भी मैंने तैयार किए हैं, और तू उनको और बढ़ा सकता है।

¹⁵बहुत से कारीगर पत्थर और लकड़ी के काटने और तराशने वाले, और सब तरह के हुनरमन्द जो क्रिस्म क्रिस्म के काम में माहिर हैं तेरे पास हैं।¹⁶सोने और चाँदी और पीतल और लोहे का कुछ हिसाब नहीं है। इसलिए उठ और काम में लग जा, और खुदावन्द तेरे साथ रहे।

¹⁷इसके 'अलावा दाऊद ने इस्राईल के सब सरदारों को अपने बेटे सुलेमान की मदद का हुक्म दिया और कहा,¹⁸क्या खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारे साथ नहीं है? और क्या उसने तुम को चारों तरफ़ चैन नहीं दिया है? क्योंकि उसने इस मुल्क के बाशिंदों को मेरे हाथ में कर दिया है, और मुल्क खुदावन्द और उसके लोगों के आगे मग़लूब हुआ है।¹⁹इसलिए अब तुम अपने दिल को और अपनी जान को खुदावन्द अपने खुदा की तलाश में लगाओ, और उठो और खुदावन्द खुदा का मक़दिस बनाओ, ताकि तुम खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को और खुदा के पाक बर्तनों को उस घर में, जो खुदावन्द के नाम का बनेगा ले आओ।

Chapter 23

¹अब दाऊद बुढ़ा और 'उम्र-दराज़ हो गया था, तब उसने अपने बेटे सुलेमान को इस्राईल का बादशाह बनाया।²उसने इस्राईल के सब सरदारों को, काहिनों और लावियों समेत इकट्ठा किया।³तीस बरस के और उससे ज़्यादा 'उम्र के लावी गिने गए, और उनकी गिनती एक एक आदमी को शुमार करके अड़तीस हज़ार थी।

⁴इनमें से चौबीस हज़ार खुदावन्द के घर के काम की निगरानी पर मुकर्रर हुए, और छः हज़ार सरदार और मुन्सिफ़ थे,⁵और चार हज़ार दरबान थे, और चार हज़ार उन साजों से खुदावन्द की ता'रीफ़ करते थे जिनको मैंने या'नी दाऊद ने ता'रीफ़ और बड़ाई ~के लिए बनाया था⁶और दाऊद ने उनको जैरसोन, क्रिहात और मिरारी नाम बनी लावी के फ़रीक्रों में तबस्सीम किया।

⁷जैरसोनियों में से यह थे: ला'दान और सिम'ई।⁸ला'दान के बेटे: सरदार यहीएल और जैताम और यूएल, यह तीन थे।⁹सिम'ई के बेटे: सलूमियत और हज़ीएल और हारान, यह तीन थे। यह ला'दान के आबाई खान्दानों के सरदार थे।

¹⁰और सिम'ई के बेटे यहत, ज़ीना और य'ऊस और बरी'आ, यह चारों सिम'ई के बेटे थे।¹¹पहला ~यहत था, और ज़ीज़ा दूसरा, और य'ऊस और बरी'आ के बेटे बहुत न थे, इस वजह से वह एक ही आबाई खान्दान में गिने गए।

¹²क्रिहात के बेटे: 'अमराम, इज़हार, हबरून और 'उज़्ज़ीएल, यह चार थे।¹³अमराम के बेटे: हारून और मूसा थे। हारून अलग किया गया, ताकि वह और उसके बेटे हमेशा पाकतरीन चीज़ों की पाक किया करें, और हमेशा खुदावन्द के आगे खुशबू जलाएँ और उसकी खिदमत करें, और उसका नाम लेकर बरकत दें।¹⁴रहा मर्द-ए-खुदा मूसा, इसलिए उसके बेटे लावी के कबीले में गिने गए।

¹⁵मूसा के बेटे: जैरसोन और इली'अज़र थे।¹⁶और जैरसोन का बेटा सबुएल सरदार था,¹⁷और इली'अज़र का बेटा रहबियाह सरदार था; और इली'अज़र के और बेटे न थे, लेकिन रहबियाह के बहुत से बेटे थे।¹⁸इज़हार का बेटा सलूमीत सरदार था।

¹⁹हबरून के बेटों में पहला यरयाह, अमरियाह दूसरा, यहज़ीएल तीसरा, और यकीमि'आम चौथा था।²⁰उज़्ज़ीएल के बेटों में अव्वल मीकाह सरदार और यसयाह दूसरा था।

²¹मिरारी के बेटे: महली और मूशी। महली के बेटे: इली'अज़र और क्रीस थे।²²और इली'अज़र मर गया और उसके कोई बेटा न था सिर्फ़ बेटियाँ थीं, और उनके भाई क्रीस के बेटों ने उनसे ब्याह किया।²³मूशी के बेटे: महली और 'ऐदर और यरीमोत, येतीन थे।

²⁴लावी के बेटे यही थे, जो अपने अपने आबाई खान्दान के मुताबिक़ थे। उनके आबाई खान्दानों के सरदार जैसा वह नाम-ब- नाम एक एक करके गिने गए यही हैं। वह बीस बरस और उससे ऊपर की 'उम्र से खुदावन्द के घर की खिदमत का काम करते थे।²⁵क्योंकि दाऊद ने कहा कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने अपने लोगों को आराम दिया है, और वह हमेशा तक यरूशलीम में सुकूनत करेगा।²⁶और लावियों को भी घर और उसकी खिदमत के सब बर्तनों को फिर कभी उठाना न पड़ेगा।

²⁷क्योंकि दाऊद की पिछली बातों के मुताबिक़ बनी लावी जो बीस बरस और उससे ज़्यादा 'उम्र के थे, गिने गए।²⁸क्योंकि उनका काम यह था कि खुदावन्द के घर की खिदमत के वक्रत, सहनों और कोठरियों में और सब मुकद्दस चीज़ों के पाक करने में, या'नी खुदा के घर की खिदमत के काम में, बनी हारून की मदद करें;

²⁹और नज़ की रोटी का, और मैदे की नज़ की कुर्बानी का ख्वाह वह बेखमीरी रोटियों या तवे पर की पकी हुई चीज़ों या तली हुई चीज़ों की हो, और हर तरह के तौल और नाप का काम करें।

³⁰और हर सुबह और शाम को खड़े होकर खुदावन्द की शुक्रगुज़ारी और बड़ाई करें,³¹और सब्तों और नये चाँदों और मुकर्ररा 'ईदों में, हमेशा खुदावन्द के सामने पूरी ता'दाद में सब सोख्तनी कुर्बानियाँ उस क्राइदे के मुताबिक़ जो उनके बारे में है पेश करें।

³²और खुदावन्द के घर की खिदमत को अन्जाम देने के लिए खेमा-ए-इज्तिमा'अ की हिफ़ाज़त और मक़दिस की निगरानी और अपने भाई बनी हारून की इता'अत करें।

Chapter 24

¹और बनी हारून के फ़रीक़ यह थे हारून के बेटे नदब, अबीहू और इली'अज़र और इतमर थे।²नदब और अबीहू अपने बाप से पहले मर गए और उनके औलाद न थी, इसलिए इली'अज़र और इतमर ने कहानत का काम किया।³दाऊद ने इली'अज़र के बेटों में से सदोक़, और इतमर के बेटों में से अख़ीमलिक को उनकी ख़िदमत की तरतीब के मुताबिक़ तक्सीम किया।

⁴इतमर के बेटों से ज़्यादा इली'अज़र के बेटों में रईस मिले, और इस तरह से वह तक्सीम किए गए के इली'अज़र के बेटों में आबाई ख़ान्दानों के सोलह सरदार थे; और इतमर के बेटों में से आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ आठ।⁵इस तरह पर्ची डाल कर और एक साथ खल्ल मल्ल होकर वह तक्सीम हुए, क्योंकि मक़दिस के सरदार और खुदा के सरदार बनी इली'अज़र और बनी इतमर दोनों में से थे।

⁶और नतनीएल मुन्शी के बेटे समायाह ने जो लावियों में से था, उनके नामों को बादशाह और अमीरों और सदोक़ काहिन और अख़ीमलिक बिन अबियातर और काहिनों और लावियों के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों के सामने लिखा। जब इली'अज़र का एक आबाई ख़ान्दान लिया गया, तो इतमर का भी एक आबाई ख़ान्दान लिया गया।

⁷और पहली चिट्ठी यहूयरीब की निकली, दूसरी यद'अयाह की,⁸तीसरी हारिम की, चौथी श'ऊरीम,⁹पाँचवीं मलकियाह की, छठी मियामीन की¹⁰सातवीं हक्कूज़ की, आठवीं अबियाह की,

¹¹नवीं यशू'आ की, दसवीं सिकानियाह की,¹²ग्यारहवीं इलयासिब की, बारहवीं यक्कीम की,¹³तेरहवीं खुप्फ़ाह की, चौदहवीं यसबाब की,¹⁴पन्द्रहवीं बिल्जाह की, सोलहवीं इम्मेर की,

¹⁵सत्रहवीं हज़ीर की, अठारहवीं फ़ज़ीज़ की,¹⁶उन्नीसवीं फ़तहियाह की, बीसवीं यहज़िकेल की,¹⁷इक्कीसवीं यकिन की, बाइसवीं जम्मूल की,¹⁸तेइसवीं दिलायाह की, चौबीसवीं माज़ियाह की।

¹⁹यह उनकी ख़िदमत की तरतीब थी, ताकि वह खुदावन्द के घर में उस क़ानून के मुताबिक़ आएँ जो उनको उनके बाप हारून की ज़रिए' वैसा ही मिला, जैसा खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने उसे हुक्म किया था।

²⁰बाक़ी बनी लावी में से: 'अमराम के बेटों में से सूबाएल, सूबाएल के बेटों में से यहदियाह;²¹रहा रहबियाह, सो रहबियाह के बेटों में से पहला यस्सियाह।

²²इज़हारियों में से सलूमोत, बनी सलूमोत में से यहत।

²³बनी हबरून में से: यरियाह पहला, अमरियाह दूसरा, यह ज़िएल तीसरा, यकमि'आम चौथा।²⁴बनी उज़्ज़ीएल में से: मीकाह; बनी मीकाह में से: समीर।²⁵मीकाह का भाई यस्सियाह, बनी यस्सियाह में से ज़करियाह।

²⁶मिरारी के बेटे: महली और मूशी। बनी याज़ियाह में से बिनू²⁷रहे बनी मिरारी, सो याज़ियाह से बिनू और सूहम और ज़क्कूर और 'इब्री।²⁸महली से: इली'अज़र, जिसके कोई बेटा न था।

²⁹क़ीस से, क़ीस का बेटा: यरहमिएल।³⁰और मूशी के बेटे: महली और 'ऐदर और यरीमीत। लावियों की औलाद अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ यही थी।

³¹इन्होंने भी अपने भाई बनी हारून की तरह, दाऊद बादशाह और सदूक़ और अख़ीमलिक और काहिनों और लावियों के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों के सामने अपना अपनी पर्ची डाला, या'नी सरदार के आबाई ख़ान्दानों का जो हक़ था वही उसके छोटे भाई के ख़ान्दानों का था।

Chapter 25

¹फिर दाऊद और लश्कर के सरदारों ने आसफ़ और हैमान और यदूतून के बेटों में से कुछ को खिदमत के लिए अलग किया, ताकि वह बरबत और सितार और झाँझ से नबुव्वत करें; और जो उस काम को करते थे उनका शुमार उनकी खिदमत के मुताबिक़ यह था: ²आसफ़ के बेटों में से ज़क्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असरीलाह; आसफ़ के यह बेटे आसफ़ के मातहत थे, जो बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत करता था। ³यदूतून से बनी यदूतून, सो जिदलियाह, ज़री और यसा'याह, हसबियाह और मतितियाह, यह छः अपने बाप यदूतून के मातहत थे जो बरबत लिए रहता और खुदावन्द की शुक्रगुज़ारी और हम्द करता हुआ नबुव्वत करता था।

⁴रहा हैमान, वह हैमान के बेटे: बुक्कयाह, मत्तनियाह, 'उज़्ज़ीएल, सबूएल यरीमोट, हनानियाह, हनानी, इलियाता, जिद्दाल्ती, रूमम्ती' अज़र, यसबिकाशा, मल्लूती, हौतीर, और महाज़ियोत; ⁵यह सब हैमान के बेटे थे, जो खुदा की बातों में सींग बुलन्द करने के लिए बादशाह का ग़ैबबीन था; और खुदा ने हैमान को चौदह बेटे और तीन बेटियाँ दी थीं।

⁶यह सब खुदावन्द के घर में हम्द करने के लिए अपने बाप के मातहत थे, और झाँझ और सितार और बरबत से खुदा के घर की खिदमत करते थे। आसफ़ और यदूतून और हैमान बादशाह के हुक्म के ताबे' थे ⁷उनके भाइयों समेत जो खुदावन्द की ता'रीफ़ और बड़ाई ~की ता'लीम पा चुके थे, या'नी वह सब जो माहिर थे, उनका शुमार दो सौ अठासी था। ⁸और उन्होंने क्या छोटे क्या बड़े क्या उस्ताद क्या शागिर्द, एक ही तरीक़े से अपनी अपनी खिदमत के लिए पर्ची डाला।

⁹पहली चिट्ठी आसफ़ की यूसुफ़ को मिली, दूसरी जिदलियाह को, और उसके भाई और बेटे उस समेत बारह थे। ¹⁰तीसरी ज़क्कूर को, और उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹¹चौथी यिज़री को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹²पाँचवीं नतनियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

¹³छठी बुक्कयाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹⁴सातवीं यसरीलाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹⁵आठवीं यसा'याह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹⁶नवीं मत्तनियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

¹⁷दसवीं सिमई को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹⁸ग्यारहवीं 'अज़रएल को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ¹⁹बारहवीं हसबियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²⁰तेरहवीं सबूएल को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

²¹चौदहवीं मतितियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²²पंद्रहवीं यरीमोट को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²³सोलहवीं हनानियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²⁴सत्रहवीं यसबिकाशा को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

²⁵अठारहवीं हनानी को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²⁶उन्नीसवीं मल्लूती को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²⁷बीसवीं इलयाता को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ²⁸इक्कीसवीं हौतीर को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

²⁹बाइसवीं जिद्दाल्ती को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ³⁰तेइसवीं महाज़ियोत को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। ³¹चौबीसवीं रूमम्ती 'अज़र को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

Chapter 26

¹दरबानों के फ़रीक़ यह थे: कुरहियों में मसलमियाह बिन कूरे, जो बनी आसफ़ में से था;²और मसलमियाह के यहाँ बेटे थे: ज़करियाह पहलौठा, यदी'एल दूसरा, जबदियाह तीसरा, यतनीएल चौथा,³ऐलाम पाँचवाँ, यहूहानान छटा, इलीहू'ऐनी सातवाँ था।

⁴और 'ओबेदअदोम के यहाँ बेटे थे: समा'याह पहलौठा, यहूज़बा'द दूसरा, यूआख तीसरा, और सकार चौथा, और नतनीएल पाँचवाँ,⁵अम्मीएल छटा, इश्कार सातवाँ, फ़'उलती आठवाँ; क्योंकि खुदा ने उसे बरकत बख़्शी थी।⁶उसके बेटे समायाह के यहाँ भी बेटे पैदा हुए, जो अपने आबाई खानदान पर सरदारी करते थे क्योंकि वह ताक़तवर सूर्मा थे।

⁷समायाह के बेटे: उतनी और रफ़ाएल और 'ओबेद और इलज़बा'द, जिनके भाई इलीहू और समाकियाह सूर्मा थे।⁸यह सब 'ओबेदअदोम की औलाद में से थे। वह और उनके बेटे और उनके भाई ख़िदमत के लिए ताक़त के 'ऐतबार से क़ाबिल आदमी थे, यूँ 'ओबेदअदोमी बासठ थे।⁹मसलमियाह के बेटे और भाई अठारह सूर्मा थे।

¹⁰और बनी मिरारी में से हूसा के हाँ बेटे थे: सिमरी सरदार था (वह पहलौठा तो न था, लेकिन उसके बाप ने उसे सरदार बना दिया था),¹¹दूसरा खिलक्रियाह, तीसरा तबलयाह, चौथा ज़करियाह; हूसा के सब बेटे और भाई तेरह थे।

¹²इन्ही में से या'नी सरदारों में से दरबानों के फ़रीक़ थे, जिनका ज़िम्मा अपने भाइयों की तरह खुदावन्द के घर में ख़िदमत करने का था।¹³और उन्होंने क्या छोटे क्या बड़े, अपने अपने आबाई खानदान के मुताबिक़ हर एक फाटक के लिए पर्ची डाला।¹⁴~पूरब की तरफ़ का पर्ची सलमियाह के नाम निकला। फिर उसके बेटे ज़करियाह के लिए भी, जो 'अक्लमन्द सलाहकार था, पर्चा डाला गया और उसका पर्चा शिमाल की तरफ़ का निकला।

¹⁵'ओबेदअदोम के लिए जुनूब की तरफ़ का था, और उसके बेटों के लिए ग़ल्लाखाना का।¹⁶सुफ़्फ़ीम और हूसा के लिए पश्चिम की तरफ़ सलकत के फाटक के नज़दीक का, जहाँ से ऊँची सड़क ऊपर जाती है ऐसा कि आमने सामने होकर पहरा दें।

¹⁷~पूरब की तरफ़ छ: लावी थे, उत्तर की तरफ़ हर रोज़ चार, दक्खिन की तरफ़ हर रोज़ चार, और तोशाखाने के पास दो दो।¹⁸~पश्चिम की तरफ़ परबार के लिए चार तो ऊँची सड़क पर और दो परबार के लिए।¹⁹बनी कोरही और बनी मिरारी में से दरबानों के फ़रीक़ यही थे।

²⁰लावियों में से अखियाह खुदा के घर के खज़ानों और नज़ की चीज़ों के खज़ानों पर मुक़रर था।²¹बनी ला'दान: इसलिए ला'दान के खानदान के जैरसोनियों के बेटे, जो उन आबाई खानदानों के सरदार थे, जो जैरसोनी ला'दान से त'अल्लुक रखते थे यह थे: यहीएली।²²और यहीएली के बेटे: जैताम और उसका भाई यूएल, खुदावन्द के घर के खज़ानों पर थे।

²³अमरामियों, इज़हारियों, हबरूनियों और उज़्ज़ीएलियों में से:²⁴सबूएल बिन जैरसोम बिन मूसा, बैत-उल-माल पर मुख्तार था।²⁵और उसके भाई इली'अज़र की तरफ़ से: उसका बेटा रहबियाह, रहबिया का बेटा यसा'याह, यसा'याह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िकरी, ज़िकरी का बेटा सल्लूमीत।

²⁶यह सल्लूमीत और उसके भाई नज़ की हुई चीज़ों के सब खज़ानों पर मुक़रर थे, जिनको दाऊद बादशाह और आबाई खानदानों के सरदारों और हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों और लश्कर के सरदारों ने नज़ किया था।²⁷लड़ाइयों की लूट में से उन्होंने खुदावन्द के घर की मरम्मत के लिए कुछ नज़ किया था।²⁸समुएल ग़ैबबीन और साऊल बिन क्रीस और अबनेर बिन नेर और योआब बिन ज़रूयाह की सारी नज़, गरज़ जो कुछ किसी ने नज़ किया था वह सब सल्लूमीत और उसके भाइयों के हाथ में सुपुर्द था।

²⁹इज़हारियों में से कनानियाह और उसके बेटे, इस्राईलियों पर बाहर के काम के लिए हाकिम और क़ाज़ी थे।³⁰हबरूनियों में से हसबियाह और उसके भाई, एक हज़ार सात सौ सूर्मा, मगरिब की तरफ़ यरदन पार के इस्राईलियों की निगरानी की खातिर खुदावन्द के सब काम और बादशाह की ख़िदमत के लिए तैनात थे।

³¹हबरूनियों में यरयाह, हबरूनियों का उनके आबाई खानदानों के नस्बों के मुताबिक़ सरदार था। दाऊद की हुकूमत के चालीसवें बरस में वह ढूँड निकाले गए, और ज़िल'आद के या'ज़ीर में उनके बीच ताक़तवर सूर्मा मिले।³²उसके भाई, दो हज़ार सात सौ सूर्मा और आबाई खानदानों के सरदार थे, जिनकी दाऊद बादशाह ने रूबीनियों और जहियों और मनस्सी के आधे क़बीले पर खुदा के हर एक काम और शाही मु'आमिलात के लिए सरदार बनाया।

Chapter 27

¹और बनी इराईल अपने शुमार के मुवाफ़िक़ या 'नी आबाई खान्दानों के रईस और हज़ारों और सैकड़ों के सरदार और उनके मन्सबदार जो उन फ़रीकों के हर हाल में बादशाह की खिदमत करते थे, जो साल के सब महीनों में माह-ब-माह आते और रुख़सत होते थे, हर फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।²पहले महीने के पहले फ़रीक़ पर यसूबि'आम बिन ज़बदिएल था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।³वह बनी फ़ारस में से था और पहले महीने के लश्कर के सब सरदारों का रईस था।

⁴दूसरे महीने के फ़रीक़ पर दूदे अख़्ही था, और उसके फ़रीक़ में मिकलोत भी सरदार था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।⁵तीसरे महीने के लश्कर का खास तीसरा सरदार यहूयदा' काहिन का बेटा बिनायाह था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।⁶यह वह बिनायाह है जो तीसों में ज़बरदस्त और उन तीसों के ऊपर था; उसी के फ़रीक़ में उसका बेटा 'अम्मीज़बा'द भी शामिल था।

⁷चौथे महीने के लिए यूआब का भाई 'असाहील था, और उसके पीछे उसका बेटा ज़बदियाह था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।⁸पाँचवें महीने के लिए पाँचवाँ सरदार समहूत इज़राखी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।⁹छठे महीने के लिए छठा सरदार तकू'ई 'इक्कीस का बेटा ईरा था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।

¹⁰सातवें महीने के लिए सातवाँ सरदार बनी इफ़्राईम में से फ़लूनीख़लस था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।¹¹आठवें महीने के लिए आठवाँ सरदार ज़ारहियों में से हूसाती सिब्वकी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।¹²नवें महीने के लिए नवाँ सरदार बिनयमीनियों में से 'अन्तूती अबी'अज़र था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।

¹³दसवें महीने के लिए दसवाँ सरदार ज़ारहियों में से नतूफ़ाती महरी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।¹⁴ग्यारहवें महीने के लिए ग्यारहवाँ सरदार बनी इफ़्राईम में से फ़र'आतीनी बिनायाह था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।¹⁵बारहवें महीने के लिए बारहवाँ सरदार गुतनीएलियों में से नतूफ़ाती ख़ल्दी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे।

¹⁶इसाईल के क़बीलों पर रूबीनियों का सरदार इली'अज़र बिन ज़िकरी था, शमा'ऊनियों का सफ़तियाह बिन मा'का;¹⁷लावियों का हसबियाह बिन क्रमूएल, हारूनियों का सदोक;¹⁸यहूदाह का इलीहू, जो दाऊद के भाइयों में से था; इश्कार का 'उमरी बिन मीकाएल;

¹⁹ज़बूलून का इसमाइयाह बिन 'अबदियाह, नफ़्ताली का यरीमोत बिन 'अज़रिएल;²⁰बनी इफ़्राईम का हूसी'अ बिन 'अज़ाज़ियाह, मनस्सी के आधे क़बीले का यूएल बिन फ़िदायाह;²¹जिल'आद में मनस्सी के आधे क़बीले का 'ईदू बिन ज़करियाह, बिनयमीन का या'सीएल बिन अबनेर;²²दान का 'अज़रिएल बिन यरोहाम। यह इसाईल के क़बीलों के सरदार थे।

²³लेकिन दाऊद ने उनका शुमार नहीं किया था जो बीस बरस या कम उम्र के थे, क्योंकि खुदावन्द ने कहा था कि मैं इसाईल को आसमान के तारों की तरह बढ़ाऊँगा।²⁴ज़रूयाह के बेटे यूआब ने गिनना तो शुरू 'किया, लेकिन ख़त्म नहीं किया था कि इतने में इसाईल पर क़हर नाज़िल हुआ, और न वह ता'दाद दाऊद बादशाह की तवारीख़ी ता'दादों में दर्ज हुई।

²⁵शाही खज़ानों पर 'अज़मावत बिन 'अदिएल मुकर्रर था, और खेतों और शहरों और गाँव और क़िलों के खज़ानों पर यहूनतन बिन उज़्ज़ियाह था;²⁶और काश्तकारी के लिए खेतों में काम करनेवालों पर 'अज़री बिन कलूब था;²⁷और अंगूरिस्तानों पर सिम'ई रामाती था, और मय के ज़ख़ीरों के लिए अंगूरिस्तानों की पैदावार पर ज़बदी शिफ़मी था;

²⁸और जैतून के बाग़ों और गूलर के दरख़्तों पर जो नशेब के मैदानों में थे, बा'ल हनान जदरी था; और यूआस तेल के गोदामों पर;²⁹और गाय-बैल के गल्लों पर जो शारून में चरते थे, सितरी शारूनी था; और साफ़त बिन 'अदली गाय-बैल के उन गल्लों पर था जो वादियों में थे;

³⁰और ऊँटों पर इस्माईली ओबिल था, और गधों पर यहदियाह मरूनोती था;³¹और भेड़-बकरी के रेवड़ों पर याज़ीज़ हाज़िर था। यह सब दाऊद बादशाह के माल पर मुकर्रर थे।

³²दाऊद का चचा योनतन सलाह कार और अक्लमंद और मुन्शी था, और यहीएल बिन हकमूनी शहज़ादों के साथ रहता था।³³अखीतुफ़ल बदशाह का सलाह कार था, और हूसीअरकी बादशाह का दोस्त था।³⁴और अखीतुफ़ल से नीचे यहूयदा' बिन बिनायाह और अबियातर थे, और शाही फ़ौज का सिपहसालार यूआब था।

Chapter 28

¹दाऊद ने इस्राईल के सब हाकिमों को जो क़बीलों के सरदार थे, और उन फ़रीकों के सरदारों को जो बारी बारी बादशाह की खिदमत करते थे, और हज़ारों के सरदारों और सैकड़ों के सरदारों, और बादशाह के और उसके बेटों के सब माल और मवेशी के सरदारों, और ख़्वाजा सराओं और बहादुरों बल्कि सब ताक़तवर सूर्माओं को यरूशलीम में इकट्ठा किया।

²तब दाऊद बादशाह अपने पाँव पर उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा, ऐ मेरे भाइयों और मेरे लोगों, मेरी सुनो! मेरे दिल में तो था कि ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के लिए आरामगाह, और अपने ख़ुदा के लिए पाँव की कुर्सी बनाऊँ, और मैंने उसके बनाने की तैयारी भी की;³ लेकिन ख़ुदा ने मुझ से कहा कि तू मेरे नाम के लिए घर नहीं बनाने पाएगा, क्योंकि तू जंगी मर्द है और तू ने खूनबहाया है।

⁴तो भी ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा ने मुझे मेरे बाप के सारे घराने में से चुन लिया कि मैं हमेशा इस्राईल का बादशाह रहूँ, क्योंकि उसने यहूदाह को रहनुमा होने के लिए मुन्तख़ब किया; और यहूदाह के घराने में से मेरे बाप के घराने को चुना है, और मेरे बाप के बेटों में से मुझे पसंद किया ताकि मुझे सारे इस्राईल का बादशाह बनाए।⁵ और मेरे सब बेटों में से (क्योंकि ख़ुदावन्द ने मुझे बहुत से बेटे दिए हैं) उसने मेरे बेटे सुलेमान को पसंद किया, ताकि वह इस्राईल पर ख़ुदावन्द की हुकूमत के तख़्त पर बैठे।

⁶उसने मुझ से कहा, 'तेरा बेटा सुलेमान मेरे घर और मेरी बारगाहों को बनाएगा, क्योंकि मैंने उसे चुन लिया है कि वह मेरा बेटा हो और मैं उसका बाप हूँगा।'⁷ और अगर वह मेरे हुक्मों और फ़रमानों पर 'अमल करने में साबित क़दम रहे जैसा आज के दिन है, तो मैं उसकी बादशाही हमेशा तक कायम रखूँगा।'

⁸फिर अब सारे इस्राईल या'नी ख़ुदावन्द की जमा'अत के सामने और हमारे ख़ुदा के सामने, तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सब हुक्मों को मानो और उनके तालिब हो, ताकि तुम इस अच्छे मुल्क के वारिस हो; और उसे अपने बा'द अपनी औलाद के लिए हमेशा के लिए मीरास छोड़ जाओ।

⁹और तू ऐ मेरे बेटे सुलेमान, अपने बाप के ख़ुदा को पहचान और पूरे दिल और रूह की मुस्त'इदी से उसकी 'इबा'दत कर; क्योंकि ख़ुदावन्द सब दिलों को जाँचता है, और जो कुछ ख़्याल में आता है उसे पहचानता है। अगर तू उसे ढूँढ़े तो वह तुझ को मिल जाएगा, और अगर तू उसे छोड़े तो वह हमेशा के लिए तुझे रद्द कर देगा।¹⁰ इसलिए होशियार हो, क्योंकि ख़ुदावन्द ने तुझ को मक़दिस के लिए एक घर बनाने को चुना है, इसलिए हिम्मत बाँध कर काम कर।

¹¹तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को हैकल के उसारे और उसके मकानों और खज़ानों और बालाखानों और अन्दर की कोठरियों और कफ़ारागाह की जगह का नमूना,¹² और उन सब चीज़ों, या'नी ख़ुदावन्द के घर के सहनों और आस पास की कोठरियों और ख़ुदा के घर के खज़ानों और नज़ की हुई चीज़ों के खज़ानों का नमूना भी दिया जो, उसको रूह' से मिला था;

¹³और काहिनों और लावियों के फ़रीकों और ख़ुदावन्द के घर की 'इबादत के सब काम और ख़ुदावन्द के घर की 'इबादत के सब बर्तन के लिए,¹⁴ या'नी सोने के बर्तनों के वास्ते सोना तोल कर हर तरह की खिदमत के सब बर्तनों के लिए, और चाँदी के सब बर्तनों के वास्ते चाँदी तौल कर हर तरह की खिदमत के सब बर्तनों के लिए,¹⁵ और सोने के शमा'दानों और उसके चिराग़ों के लिए एक एक शमा'दान, और उसके चराग़ों का सोना तोल कर; और चाँदी के शमा'दानों के लिए एक एक शमा'दान, और उसके चराग़ों के लिए हर शमा'दान के इस्ते'माल के मुताबिक़ चाँदी तौल कर;

¹⁶और नज़ की रोटी की मेज़ों के वास्ते एक एक मेज़ के लिए सोना तोल कर, और चाँदी की मेज़ों के लिए चाँदी;¹⁷ और काँटों और कटोरों और प्यालों के लिए ख़ालिस सोना दिया, और सुनहले प्यालों के लिए एक एक प्याले के लिए तौल कर, और चाँदी के प्यालों के वास्ते एक एक प्याले के लिए तौल कर;

¹⁸और ख़ुशबू की कुर्बानगाह के लिए चोखा सोना तौल कर, और रथ के नमूने या'नी उन कर्बुबियों के लिए जो पर फैलाए ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को ढाँके हुए थे, सोना दिया।¹⁹ यह सब या'नी इस नमूने के सब काम ख़ुदावन्द के हाथ की तहरीर से मुझे समझाए गए।

²⁰दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा, हिम्मत बाँध और हौसले से काम कर, ख़ौफ़ न कर, परेशान न हो, क्योंकि ख़ुदावन्द ख़ुदा जो मेरा ख़ुदा है तेरे साथ है। वह तुझ को न छोड़ेगा और न छोड़ा करेगा, जब तक ख़ुदावन्द के घर की खिदमत का सारा काम तमाम न हो जाए।²¹ और देख, काहिनों और लावियों के फ़रीक़ ख़ुदा के घर की सारी खिदमत के लिए हाज़िर हैं, और हर किस्म की खिदमत के लिए सब तरह के काम में हर शख्स जो माहिर है बख़ुशी तेरे साथ हो जाएगा; और लश्कर के सरदार और सब लोग भी तेरे हुक्म में होंगे।

Chapter 29

¹और दाऊद बादशाह ने सारी जमा'अत से कहा कि खुदा ने सिर्फ मेरे बेटे सुलेमान को चुना है, और वह अभी लड़का और नातजुरबेकार है; और काम बड़ा है, क्योंकि वह महल इन्सान के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द खुदा के लिए है।²और मैंने तो अपने मक़दूर भर अपने खुदा की हैकल के लिए सोने की चीज़ों के लिए सोना, और चाँदी की चीज़ों के लिए चाँदी, और पीतल की चीज़ों के लिए पीतल, लोहे की चीज़ों के लिए लोहा, और लकड़ी की चीज़ों के लिए लकड़ी, और 'अक्रीक और जड़ाऊ पत्थर और पच्ची के काम के लिए रंग बिरंग के पत्थर, और हर क्रिस्म के बेशक्रीमत जवाहिर और बहुत सा संग-ए-मरमर तैयार किया है।

³और चूँकि मुझे अपने खुदा के घर की लौ लगी है और मेरे पास सोने और चाँदी का मेरा अपना खज़ाना है, इसलिए मैं उसकी भी उन सब चीज़ों के 'अलावा जो मैंने उस मुकद्दस हैकल के लिए तैयार की हैं, अपने खुदा के घर के लिए देता हूँ।⁴या'नी तीन हज़ार किन्तार सोना जो ओफ़ीर का सोना है, और सात हज़ार किन्तार खालिस चाँदी 'इमारतों की दीवारों पर मढ़ने के लिए;⁵और कारीगरों के हाथ के हर क्रिस्म के काम के लिए सोने की चीज़ों के लिए सोना, और चाँदी की चीज़ों के लिए चाँदी है। तो कौन तैयार है कि अपनी खुशी से अपने आपको आज खुदावन्द के लिए मख़सूस' करे?

⁶तब आबाई खान्दानों के सरदारों और इस्राईल के क़बीलों के सरदारों और हज़ारों और सैंकड़ों के सरदारों और शाही काम के नाज़िमों ने अपनी खुशी से तैयार होकर,⁷खुदा के घर के काम के लिए, सोना पाँच हज़ार किन्तार और दस हज़ार दिरहम, और चाँदी दस हज़ार किन्तार, और पीतल अठारह हज़ार किन्तार, और लोहा एक लाख किन्तार दिया।

⁸और जिनके पास जवाहिर थे, उन्होंने उनकी जैरसोनी यहीएल के हाथ में खुदावन्द के घर के खज़ाने के लिए दे डाला।⁹तब लोग शादमान हुए, इसलिए कि उन्होंने अपनी खुशी से दिया क्योंकि उन्होंने पूरे दिल से रज़ामन्दी से खुदावन्द के लिए दिया था; और दाऊद बादशाह भी निहायत शादमान हुआ।

¹⁰~फिरदाऊद ने सारी जमा'अत के आगे खुदावन्द का शुक्र किया, और दाऊद कहने लगा, ऐ खुदावन्द, हमारे बाप इस्राईल के खुदा! तू हमेशा से हमेशा तक मुबारक हो।¹¹ऐ खुदावन्द, 'अज़मत और कुदरत और जलाल और ग़लबा और हशमत तेरे ही लिए हैं, क्योंकि सब कुछ जो आसमान और ज़मीन में है तेरा है। ऐ खुदावन्द, बादशाही तेरी है, और तू ही बहैसियत-ए-सरदार सभों से मुस्ताज़ है।

¹²और दौलत और 'इज़ज़त तेरी तरफ से आती है, और तू सभों पर हुकूमत करता है, और तेरे हाथ में कुदरत और तवानाई हैं, और सरफ़राज़ करना और सभों को ज़ोर बख़्शना तेरे हाथ में है।¹³और अब ऐ हमारे खुदा, हम तेरा शुक्र और तेरे जलाली नाम की ता'रीफ़ करते हैं।

¹⁴~लेकिन मैं कौन और मेरे लोगों की हक़ीक़त क्या कि हम इस तरह से खुशी खुशी नज़राना देने के क़ाबिल हों? क्योंकि सब चीज़ें तेरी तरफ से मिलती हैं, और तेरी ही चीज़ों में से हम ने तुझे दिया है।¹⁵क्योंकि हम तेरे आगे परदेसी और मुसाफ़िर हैं जैसे हमारे सब बाप-दादा थे। हमारे दिन रू-ए-ज़मीन पर साये की तरह हैं, और क़याम नसीब नहीं।

¹⁶ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, यह सारा ज़ख़ीरा जो हम ने तैयार किया है कि तेरे पाक नाम के लिए एक घर बनाएँ, तेरे ही हाथ से मिला है और सब तेरा ही है।¹⁷ऐ मेरे खुदा, मैं यह भी जानता हूँ कि तू दिल को जाँचता है, और रास्ती में तेरी खुशनुदी है। मैंने तो अपने दिल की रास्ती से यह सब कुछ रज़ामन्दी से दिया, और मुझे तेरे लोगों को जो यहाँ हाज़िर हैं, तेरे सामने खुशी खुशी देते देख कर खुशी हासिल हुई।

¹⁸ऐ खुदावन्द, हमारे बाप-दादा अब्रहाम, इज़हाक और इस्राईल के खुदा, अपने लोगों के दिल के ख़याल और तसव्वुर में यह बात सदा जमाए रख, और उनके दिल को अपनी जानिब मुसत'ईद कर।¹⁹और मेरे बेटे सुलेमान को ऐसा कामिल दिल 'अता कर कि वह तेरे हुक्मों और शहादतों और क़ानून को माने और इन सब बातों पर 'अमल करे, और उस हैकल को बनाए जिसके लिए मैंने तैयारी की है।

²⁰फिर दाऊद ने सारी जमा'अत से कहा, अब अपने खुदावन्द खुदा को मुबारक कहो। तब सारी जमा'अत ने खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा को मुबारक कहा, और सिर झुकाकर उन्होंने खुदावन्द और बादशाह के आगे सिज्दा किया।²¹दूसरे दिन खुदावन्द के लिए ज़बीहों को ज़बह किया और खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं, या'नी एक हज़ार बैल और एक हज़ार मँडे और एक हज़ार बर्र'ए उनके तपावनों के चढ़ाए, और बकसरत कुर्बानियाँ की जो सारे इस्राईल के लिए थीं।

²²और उन्होंने उस दिन निहायत खुशी के साथ खुदावन्द के आगे खाया-पिया और उन्होंने दूसरी बार दाऊद के बेटे सुलेमान को बादशाह बनाकर, उसको खुदावन्द की तरफ से पेशवा होने और सदोक्त को काहिन होने के लिए मसह किया।²³तब सुलेमान खुदावन्द के तख़्त पर अपने बाप दाऊद की जगह बादशाह होकर बैठा और कामयाब हुआ, और सारा इस्राईल उसका फ़रमाँबरदार हुआ।

²⁴और सब हाकिम और बहादुर और दाऊद बादशाह के सब बेटे भी सुलेमान बादशाह के फ़रमाँबरदार हुए।²⁵और खुदावन्द ने सारे इस्राईल की नज़र में सुलेमान को निहायत सरफ़राज़ किया, और उसे ऐसा शाहाना दबदबा 'इनायत किया जो उससे पहले इस्राईल में किसी बादशाह को नसीब न हुआ था।

²⁶दाऊद बिन यस्सी ने सारे इस्राईल पर हुकूमत की;²⁷और वह 'अर्सा जिसमें उसने इस्राईल पर हुकूमत की चालीस बरस का था। उसने हबरून में सात बरस और यरूशलीम में तैंतीस बरस हुकूमत की।²⁸और उसने निहायत बुढ़ापे में ख़ूब 'उम्र रसीदा और दौलत-ओ-इज़ज़त से आसूदा होकर वफ़ात पाई, और उसका बेटा सुलेमान उसकी जगह बादशाह हुआ।

²⁹दाऊद बादशाह के काम शुरू' सर तक, आखिर सब के सब समुएल नबी की तवारीख़ में और नातन नबी की तवारीख़ में और जाद नबी की तवारीख़ में,

³⁰या'नी उसकी सारी हुकूमत और ज़ोर और जो ज़माने उस पर और इस्राईल पर और ज़मीन की सब ममलुकतों पर गुज़रे, सब उनमें लिखे हैं।

2- तवारीख़

Chapter 1

¹और सुलेमान बिन दाऊद अपनी ममलुकत में ठहरा ~हुआ और खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ रहा और उसे बहुत बुलन्द ~किया। ~

²और सुलेमान ने सारे इस्राईल या'नी हज़ारों और सैंकड़ों के सरदारों और क्राज़िओं, और सब इस्राईलियों के रईसों से जो आबाई खानदानो के सरदार थे बातें कीं। ³और सुलेमान सारी ज़मा'अत साथ जिबा'उन के ऊँचे मक़ाम को गया क्योंकि खुदा का खेमा-ए-इज्तिमा'अ जैसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने विराने ~में बनाया था वहीं था। ⁴लेकिन खुदा के सन्दूक को दाऊद करीयत-या'रीम से उस मक़ाम में उठा लाया था जो उस ने उसके लिए तैयार किया था क्योंकि उसने उस के लिए यरुशलीम में एक~खेमा खड़ा किया था। ⁵लेकिन पीतल का वह मज़बह जिसे बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर ने बनाया था वहीं खुदावन्द के मस्कन के आगे था। फिर सुलेमान उस जमा'अत के साथ वहीं गया।

⁶और सुलेमान वहाँ पीतल के मज़बह के पास जो खुदावन्द के आगे खेमा-ए-इज्तिमा'अ में था गया और उस पर एक हज़ार सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं। ⁷उसी रात खुदा सुलेमान को दिखाई दिया और उस से कहा, “माँग मैं तुझे क्या दूँ?

⁸सुलेमान ने खुदा से कहा, “ तूने मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी की और मुझे उसकी जगह बादशाह बनाया। ⁹अब ऐ खुदावन्द खुदा, जो वा'दा तूने मेरे बाप दाऊद से किया वह बरकरार रहे। क्योंकि तूने मुझे एक ऐसी क्रौम का बादशाह बनाया है जो कसरत में ज़मीन की खाक के ज़रों की तरह है। ¹⁰इसलिए मुझे हिकमत-ओ-मा'रिफत इनायत कर ताकि मैं इन लोगों के आगे अन्दर बाहर आया जाया करूँ क्योंकि ~तेरी इस बड़ी क्रौम का इन्साफ़ कौन कर सकता है? ¹¹तब खुदा ने सुलेमान से कहा चूँकि तेरे दिल में यह बात थी और तूने न तो दौलत न माल न इज़्ज़त न अपने दुश्मनो की मौत माँगी और न लम्बी 'उम्र की तलब की बल्कि अपने लिए हिकमत-ओ-मा'रिफ़त की दरख्वास्त की ताकि मेरे लोगों का जिन पर मैंने तुझे बादशाह बनाया है इन्साफ़ करें।

¹²इसलिए ~हिकमत-ओ-मा'रिफ़त तुझे 'अता हुई है और मैं तुझे इस क्रदर दौलत और माल और 'इज़्ज़त बख्शूँगा कि न तू उन बादशाहों में से जो तुझ से पहले हुए किसी को नसीब हुई और न किसी को तेरे बा'द नसीब होगी। ¹³चुनाँचे सुलेमान जिबा'ऊन के ऊँचे मक़ाम से या'नी~खेमा-ए- इज्तिमा'अ~के आगे से~यरुशलीम को लौट आया और बनी इस्राईल पर बादशाहत ~करने लगा।

¹⁴और सुलेमान ने रथ और सवार ज़मा कर लिए और उसके पास एक हज़ार चार सौ रथ और बारह हज़ार सवार थे, जिनको उसने रथों के शहरों में और यरुशलीम में बादशाह के पास रखा। ¹⁵और बादशाह ने यरुशलीम में चाँदी और सोने को कसरत की वजह से पत्थरों की तरह ~और देवदारों को नशेब की ज़मीन के गूलर के दरख़्तों की तरह ~बना दिया। ¹⁶और सुलेमान के घोड़े मिस्र से आते थे और बादशाह के सौदागर उनके झुंड के झुंड या'नी हर झुंड ~का मोल करके उनको लेते थे। ¹⁷और वह एक रथ छःसौ मिस्रकाल चाँदी और एक घोड़ा डेढ़ सौ मिस्रकाल में लेते और मिस्र से ले आते थे और इसी तरह हितियों के सब बादशाहों और आराम के बादशाहों के लिए उन ही के वसीला से उन को लाते थे।

Chapter 2

¹और सुलेमान ने 'इरादा किया कि एक घर खुदावन्द के नाम के लिए और एक घर अपनी हुकूमत के लिए बनाए।²और सुलेमान ने सत्तर हज़ार भोज उठाने वाले ~और पहाड़ में अस्सी हज़ार पत्थर काटने वाले और तीन हज़ार छःसौ आदमी उनकी निगरानी के लिए गिनकर ठहरा दिए।³और सुलेमान ने सूर के बादशाह हूराम के पास कहला भेजा कि जैसा तूने मेरे बाप दाऊद के साथ किया और उसके पास देवदार की लकड़ी भेजी कि वह अपने रहने के लिए एक घर बनाए वैसा ही मेरे साथ भी कर

⁴मैं खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाने को हूँ कि उसके लिए पाक करूँ और उसके आगे खुशबूदार मसालहे का खुशबू जलाऊ, और वह सबतों और नए चाँदों और खुदावन्द हमारे खुदा की मुकर्ररा 'ईदों पर हमेशा ~नज़ की रोटी और सुबह और शाम की सोखतनी कुर्बानियों के लिए हो क्योंकि यह हमेशा तक इस्राईल पर फ़र्ज़ है।⁵और वह घर जो मैं बनाने को हूँ 'अज़ीम उश शान होगा क्योंकि हमारा खुदा सब मा'बूदों से 'अज़ीम है।

⁶लेकिन उसके लिए कौन घर बनाने के लिए काबिल है जिस हाल के आसमान में बल्कि आसमानों के आसमान में भी वह समां नहीं सकता तो भला मैं कौन हूँ जो उसके सामने खुशबू जलाने के 'अलावा किसी और ख्याल से उसके लिए घर बनाऊँ?।⁷इसलिए ~अब तू मेरे पास एक ऐसे शख्स को भेज दे जो सोने और चाँदी और पीतल और लोहे के काम में और अर्गवानी और क़िर्मिज़ी और नीले कपड़े के काम में माहिर हो और नक्क़ाशी भी जानता हो ताकि वह उन कारीगरों के साथ रहे जो मेरे बाप दाऊद के ठहराए हुए यहूदाह और यरुशलीम में मेरे पास हैं।

⁸और देवदार और सनोबर और सन्दल के लठ्ठे लुबनान से मेरे पास भेजना क्योंकि मैं जनता हु तेरे नौकर लुबनान की लकड़ी कटाने में होशियार है और मेरे नौकर तेरे नौकरों के साथ रहकर, मेरे लिए बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे क्योंकि ~वह घर जो मैं बनाने को हूँ बहुत आ'लिशान होगा¹⁰और मैं तेरे नौकरों या'नी लकड़ी कटाने वालों को बीस हज़ार कुर साफ़ किया हुआ गेहूँ और बीस हज़ार कुर जौ, और बीस हज़ार बत मय और बीस हज़ार बत तेल दूँगा।

¹¹तब सूर के बादशाह हूराम ने जवाब लिखकर उसे सुलेमान के पास भेजा कि चूँकि खुदावन्द को अपने लोगों से मुहब्बत है इसलिए उस ने तुझको उन का बादशाह बनाया है।¹²और हूराम ने यह भी कहा खुदावन्द इस्राएल का खुदा जिस ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया मुबारक हो कि उस ने दाऊद बादशाह को एक दाना बेटा फ़हम-व-मा'रिफ़त से मा'मूर बख़्शा ताकि वह खुदावन्द के लिए एक घर और अपनी हुकूमत के लिए एक घर बनाए।

¹³तब मैंने अपने बाप हूराम के एक होशियार शख्स को जो अक्ल से मा'मूर है भेज दिया है।¹⁴वह दान की बेटियों में से एक 'औरत का बेटा है और उसका बाप सूर का बाशिन्दा था। वह सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और पत्थर और लकड़ी के काम में और अर्गवानी और नीले और क़िर्मिज़ी और कतानी कपड़े के काम में माहिर और हर तरह की नक्क़ाशी और हर क़िस्म की सन'अत में ताक़ है ताकि तेरे हुनरमन्दों और मेरे मख़दूम तेरे बाप दाऊद के हुनरमंदों के साथ उसके लिए जगह मुकर्रर हो जाए।

¹⁵और अब मैं हूँ और जौ और तेल और शराब जिनका मेरे मालिक ने ज़िक्र किया है वह उनको अपने खादिमों के लिए भेजे।¹⁶और जितनी लकड़ी तुझको ज़रूरत है हम लुबनान से काटेंगे और उनके बेड़े बनवाकर समुन्दर ही समुन्दर तेरे पास याफ़ा में पहुँचाएँ, फिर तू उनको यरुशलीम को ले जाना।¹⁷और सुलेमान ने इस्राईल के मुल्क में के सब परदेसियों को शुमार किया जैसे उसके बाप दाऊद ने उनको शुमार किया था और वह ~एक लाख तिरपन हज़ार छःसौ निकले।¹⁸और उसने उन में से सत्तर हज़ार को भोज उठाने वालो ~पर और अस्सी हज़ार को पहाड़ पर पत्थर काटने के लिए और तीन हज़ार छःसौ को लोगों से काम लेने के लिए नज़ीर ठहराया।

Chapter 3

¹और सुलेमान यरुशलीम में कोह-ए-मोरियाह पर जहाँ उसके बाप दाऊद ने ख़्वाब ~देखा उसी जगह जैसे दाऊद ने तैयारी कर के मुकर्रर किया या'नी उरनान यबूसी के खलीहान में ख़ुदावन्द का घर बनाने लगा।²और उसने अपनी हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने की दूसरी तारीख़ को बनाना शुरू किया।³और जो बुनियाद सुलेमान ने ख़ुदा के घर की ता'मीर के लिए डाली वह यह है उसका तूल हाथों के हिसाब से पहले नाप के मवाफ़िक़ साठ हाथ और 'अरज बीस हाथ था।

⁴और घर के सामने के उसारा की लम्बाई घर की चौड़ाई के मुताबिक़ बीस हाथ और ऊँचाई एक सौ बीस हाथ थी और उस ने उसे अन्दर से ख़ालिस सोने से मेंढा।⁵और उसने बड़े घर की छत सनोबर के तख़्तों से पटवाई, जिन पर चोखा सोना मेंढा था और उसके ऊपर खजूर के दरख़्त और ज़न्जीरे बनाई।

⁶और जो ख़ूबसूरती के लिए उस ने उस घर को बेशक़ीमत जवाहिर से दुरुस्त किया और सोना परवाइम का सोना था।⁷और उसने घर को यानी उसके शहतीरों ,चौखटों ,दिवारो और किवाड़ो को सोने से मेंढा और दीवारों पर करुबियों की सूरत कंदा की।

⁸और उसने पाक तरीन मकान बनाया जिसकी लम्बाई घर के चौड़ाई के मुताबिक़ बीस हाथ और उसकी चौड़ाई बीस हाथ थी और उसने उसे छःसौ क़िन्तार चोखे सोने से मेंढा।⁹और कीलों का वज़न पचास मिस्क़ाल सोने का था और उसमें ऊपर की कोठरियाँ भी सोने से मेंढा।

¹⁰और उसने पाकतरिन मकान में दो करुबियों को तराशकर बनाया और उन्होंने उनको सोने से मेंढा।¹¹और करुबियों के बाजू बीस हाथ लम्बे थे,एक करुबी का एक बाजू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाजू भी पाँच हाथ का दूसरे करुबी के बाजू तक पहुँचा हुआ था।¹²और दूसरे करुबी का एक बाजू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाजू भी पाँच हाथ का दूसरे करुबी के बाजू से मिला हुआ था।

¹³इन करुबियों के पर बीस हाथ तक फैले हुए थे और वह अपने पाँव पर खड़े थे और उनके मुँह उस घर की तरफ़ थे।¹⁴और उसने पर्दः आसमानी और अर्ग़वानी और क़िरमिज़ी कपड़े और महीन कतान से बनाया उस पर करुबियों को कढ़वाया।¹⁵और उसने घर के सामने पैंतीस पैंतीस हाथ ऊँचे दो सुतून बनाए,और हर एक के सिरे पर पाँच हाथ का ताज़ था।¹⁶और उसने इल्हामगाह में ज़ंजीरे बनाकर सुतूनों के सिरों पर लगाए और एक सौ अनार बनाकर ज़ंजीरों में लगा दिए।

¹⁷और उसने हैकल के आगे उन सुतूनों ~को एक दाहिनी और दूसरे को बाई तरफ़ खड़ा किया और जो दहिने था उसका नाम यक़ीन और जो बाएँ था उसका नाम बो'अज़ रखा।

Chapter 4

¹और उसने पीतल का एक मजबूत बनाया, उसकी लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई दस हाथ थी। ²और उसने एक ढाला हुआ बड़ा हौज बनाया जो एक किनारा से दूसरे किनारे तक दस हाथ था, वह गोल था और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ थी और उसका घर तीस हाथ के नाप का था। ³और उसके नीचे बैलों की सूरते उसके आस पास ~दस-दस हाथ तक थी और उस बड़े हौज को चारों तरफ से घेरे हुए थी, यह बैल दो क्रतारों में थे और उसी के साथ ढाले गए थे।

⁴और वह बारह बैलों पर धरा हुआ था, तीन का चेहरा उत्तर की तरफ और तीन का चेहरा पश्चिम की तरफ और तीन का चेहरा दक्खिन की तरफ और तीन का चेहरा पूरब की तरफ था और वह बड़ा हौज उनके ऊपर था, और उन सब के पिछले 'आज़ा अन्दर के चेहरा थे। ⁵उसकी मोटाई चार उंगल की थी और उसका किनारा प्याला के किनारह की तरह और सोसने के फूल से मुशाबह था, उसमें तीन हज़ार बत की समाई थी। ⁶और उसने दस हौज भी बनाने और पाँच दहनी और पाँच बाई तरफ रखें ताकि उन में सोखतनी कुर्बानी की चीज़ें धोई जाएँ, उनमें वह उन्हीं चीज़ों को धोते थे लेकिन वह बड़ा हौज काहिनों के नहाने के लिए था। ⁷और उसने सोने के दस शमा'दान उस हुक्म के मुताबिक ~बनाए जो उनके बारे में मिला था उसने उनको हैकल में पाँच दहनी और पाँच बाई तरफ रखा। ⁸और उसने दस मेज़े भी बनाई और उनको हैकल में पाँच दहनी पाँच बाई तरफ रखा और उसने सोने के सौ कटोरे बनाए।

⁹और उस ने काहिनों का सहन और बड़ा सहन और उस सहन के दरवाज़ों को बनाया और उनके किवाड़ों को पीतल से मेंढ़ा। ¹⁰और उसने उस बड़े हौज को पूरब की तरफ दहिने हाथ दक्खिन चेहरा पर रखा।

¹¹और हूराम ने बर्तन और बेल्ले और कटोरे बनाए, इसलिए हूराम ने उस काम को जिसे वह सुलेमान बादशाह के लिए खुदा के घर में कर रहा था तमाम किया।

¹²या'नी दोनों सुतूनों और कुरे और दोनों ताज जो उन दोनों सुतूनों पर थे और सुतूनों ~की चोटी पर के ताजों के दोनों कुरों को ढाकने की दोनों जालियाँ, ¹³और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार या'नी हर जाली के लिए अनारों की दो दो क्रतारें ताकि सुतूनों ~पर के ताजों के दोनों कुरों ढक जाए।

¹⁴और उसने कुर्सियाँ भी बनाई और उन कुर्सियों पर हौज लगाये। ¹⁵और एक बड़ा हौज और उसके नीचे बारह बैल; ¹⁶और देगें, बेल्ले और काँटे और उसके सब बर्तन ~उसके बाप हूराम ने सुलेमान बादशाह के लिए खुदावन्द के घर के लिए झलकते हुए पीतल के बनाए।

¹⁷और बादशाह ने उन सब को यरदन के मैदान में सुक्कात और सरीदा के बीच की चिकनी मिटी में ढाला। ¹⁸और सुलेमान ने यह सब बर्तन इस कशरत से बनाए कि उस पीतल का वज़न मा'लूम न हो सका।

¹⁹और सुलेमान ने उन सब बर्तन को जो खुदा के घर में थे बनाया, या'नी सोने की कुर्बानगाह और वह ~मेज़ें भी जिन पर नज़ की रोटियाँ रखी जाती थीं। ²⁰और खालिस सोने के शमा'दान चिरागों के साथ ताकि वह दस्तूर के मुताबिक ~इल्हमगाह के आगे रोशन रहें। ²¹और सोने बल्कि कुन्दन के फूल और~चिरागों~और चमटे; ²²और गुलगीर और कटोरे और चमचे और खुशबू दान खालिस सोने के और घर का मदखल या'नी उसके अन्दरुनी दरवाज़े पाकतरीन मकान के लिए और घर या'नी हैकल के दरवाज़े सोने के थे।

Chapter 5

¹इस तरह सब काम जो सुलेमान ने खुदावन्द के घर के लिए बनवाया खत्म हुआ और सुलेमान अपने बाप दाऊद की पाक की हुई चीज़ों या'नी सोने और चाँदी और सब बर्तन को अन्दर ले आया और उनको खुदा के घर के खज़ाना में रख दिया।

²तब सुलेमान ने इस्राईल के बुजुर्गों और क़बीलों के सब रईसों या'नी बनी-इस्राईल के आबाई खानदानों के सरदार को यरुशलीम में इकट्ठा किया ताकि वह दाऊद के शहर से जो सिय्यून है खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक ले आएँ।³ और इस्राईल के सब लोग सातवे महीने की 'ईद में बादशाह के पास जमा' हुए।

⁴इस्राईल के सब बुजुर्ग आए और लावी ने सन्दूक उठाया।⁵ और वह सन्दूक को खेमा-ए-इज्तिमा'अ को और सब पाक बर्तन ~को जो उस खेमा में थे ले आए। इनको लावी कहिन लाए थे।⁶ और सुलेमान बादशाह और इस्राईल की सारी जमा'अत ने जो उसके पास इकट्ठी हुई थी सन्दूक के आगे खड़ा होकर भेड़ बकरियाँ और बैल ज़बह किए ऐसा कि कसरत की वजह से उनका शुमार-ओ-हिसाब नहीं हो सकता था।

⁷और काहिनों ने खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उसकी जगह घरकी इल्हामगाह में जो पाकतरीन मकान है या'नी करुबियों के बाजुओं के नीचे लाकर रखा⁸ और करूबी अपने कुछ सन्दूक की जगह के ऊपर फैलाए हुए थे और यूँ करूबी सन्दूक और उसकी चोबों को ऊपर से ढाँके हुए थे।

⁹और चोबें ऐसी लम्बी थीं कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए इल्हामगाह के आगे दिखाई देते थे लेकिन बाहर से नज़र नहीं आते थे और वह आज के दिन तक वहीं हैं।¹⁰ और उस सन्दूक में कुछ न था 'अलावा पत्थर की उन दो लौहों के जिनको मूसा ने होरेब पर उस में रखा ~था जब खुदावन्द ने बनी इस्राईल से जिस वक़्त वह मिस्र से निकले थे 'अहद बांधा।

¹¹और ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से निकले (क्यूँकि सब काहिन जो हाज़िर थे अपने को पाक़ कर के आए थे और बारी बारी से खिदमत नहीं करते थे)।¹² और लावी जो गाते थे वह सब के सब जैसे आसफ़ और हैमान और यदूतून और उनके बेटे और उनके भाई कतानी कपड़े से मुलव्वस होकर और झाँझ और सितार और बरबत लिए हुए मजबह के पूरबी किनारे पर खड़े थे और उनके साथ एक सौ बीस काहिन थे जो नरसिंगे फूँक रहे थे।¹³ तो ऐसा हुआ कि जब नरसिंगे फूँकने वाले और गाने वाले मिल गए ताकि खुदावन्द की हम्द और शुक्रगुज़ारी में उन सब की एक आवाज़ सुनाई दे और जब नरसिंगो ~और झाँझों और मूसीक्री के सब साजों के साथ उन्होंने अपनी आवाज़ बलन्द कर के खुदावन्द की ता'रीफ़ ~की कि वह अच्छा है क्यूँकि उसकी रहमत हमेशा हैं तो वह घर जो खुदावन्द का घर है अब्र से भर गया।¹⁴ यहाँ तक कि काहिन अब्र की वजह ~से खिदमत के लिए खड़े न रह सके इसलिए कि खुदा का घर खुदावन्द के जलाल से भर गया था।

Chapter 6

¹तब सुलेमान ने कहा, "खुदावन्द ने फ़रमाया है कि वह गहरी तारीकी में रहेगा।" ²लेकिन मैंने एक घर तेरे रहने के लिए बल्कि तेरी हमेशा ~सुकूनत के वास्ते एक जगह बनाई है। ³और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इस्राईल की जमा'अत को बरकत दी और इस्राईल की सारी जमा'अत खड़ी रही।

⁴तब उसने कहा, "खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो जिस ने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया" और उसे अपने हाथों से यह कहकर पूरा किया। ⁵"कि जिस दिन मैं अपनी क्रौम को मुल्के मिस्र से निकाल लाया तब से मैं ने इस्राईल के सब क़बीलों में से न तो किसी शहर को चुना ताकि उसमें घर बनाया जाए और वहाँ मेरा नाम हो और न किसी आदमी को चुना ताकि वह मेरी क्रौम इस्राईल का पेशवा हो।" ⁶लेकिन मैंने यरूशलीम को चुना कि वहाँ मेरा नाम हों और दाऊद को चुना ताकि वह मेरी क्रौम इस्राईल पर हाकिम हों।

⁷और मेरे बाप दाऊद के दिल में था की खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए एक घर बनाए। ⁸लेकिन खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, "चूँकि मेरे नाम के लिए एक घर बनाने का ख्याल तेरे दिल में था इसलिए तूने अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना।" ⁹"तू भी तो इस घर को न बनाना बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब से निकलेगा वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।"

¹⁰और खुदावन्द ने अपनी वह बात जो उसने कही थी पूरी की क्योंकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ और जैसा खुदावन्द ने वा'दा किया था मैं इस्राईल के तख्त पर बैठा हूँ और मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया है। ¹¹और वही मैंने वह सन्दूक रखा है जिस में खुदावन्द का वह 'अहद है जो उसने बनी इस्राईल से किया।

¹²और सुलेमान ने इस्राईल की सारी जमा'अत के आम्ने सामने ~खुदावन्द के मज़बह के आगे खड़े होकर अपने हाथ फैलाए। ¹³(क्योंकि सुलेमान ने पाँच हाथ लम्बा और पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा पीतल का एक मिम्बर बना कर सहन के नीचे में उसे रखा था ,उसी पर वह खड़ा था,तब उसने इस्राईल की सारी जमा'अत के आम्ने सामने ~घुटने टेके और आसमान की तरफ़ अपने हाथ फैलाए)

¹⁴और कहने लगा ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा तेरी तरह न तो आसमान में न ज़मीन पर कोई खुदा है। तू अपने उन बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते हैं 'अहद और रहमत को निगाह रखता है। ¹⁵तूने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद के हक़ में वह बात क़ायम रखी जिसका तूने उससे वा'दा किया था ,तूने अपने मुँह से फ़रमाया उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा आज के दिन है।

¹⁶अब ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के साथ उस क़ौल को भी पूरा कर जो तूने उस से किया था कि तेरे हाथ मेरे सामने इस्राईल के तख्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी न होगी बशर्ते कि तेरी औलाद जैसे तू मेरे सामने चलता रहा वैसे ही मेरी शरी'अत पर अमल करने के लिए अपनी रास्ते की एहतियात रखें। ¹⁷और अब ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा जो क़ौल तूने अपने बन्दा दाऊद से किया था वह सच्चा साबित किया जाए।

¹⁸लेकिन क्या खुदा फ़िलहकीक़त आदमियों के साथ ज़मीन पर सुकूनत करेगा? देख आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी तू रुक नहीं सकता तू यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया !। ¹⁹तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा अपने बन्दे की दु'आ और मुनाजात का लिहाज़ कर कि उस फ़रियाद दु'आ को सून ले जो तेरा बन्दा तेरे सामने करता है। ²⁰ताकि तेरी आँखें इस घर की ~तरफ़ या'नी उसी जगह की तरफ़ जिसकी बारे में ~तूने फ़रमाया कि मैं अपना नाम वहाँ रखूँगा दिन और रात खुली रहे ताकि तू उस दु'आ को सुने जो तेरा बन्दा इस मक़ाम की तरफ़ चेहरा कर के तुझ से करेगा।

²¹और तू अपने बन्दा और अपनी क्रौम इस्राईल की मुनाजात को जब वह इस जगह की तरफ़ चेहरा कर के करें तो सून लेना बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सून लेना और सुनकर मु'आफ़ कर देना।

²²अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी का गुनाह करे और उसे क़सम खिलाने के लिए उसको हल्फ़ दिया जाए और वह आकर इस घर में तेरे मज़बह के आगे क़सम खाए। ²³तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों का इन्साफ़ कर के बदकार को सज़ा देना ताकि उसके 'आमाल को उसी कि सर डाले और सादिक़ को सच्चा ठहराना ताकि उसकी सदाक़त के मुताबिक़ उसे बदला दे।

²⁴और अगर तेरी क्रौम इस्राईल तेरा गुनाह करने के ज़रिए'अपने दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ़ रुजू' लाए और तेरे नाम का इकरार कर के इस घर में तेरे सामने दु'आ और मुनाजात करे। ²⁵तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी क्रौम इस्राईल के गुनाह को बख़्श देना और उनको इस मुल्क में जो तूने उनको और उनके बाप दादा को दिया है फिर ले आना।

²⁶और जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हों आसमान बंद हो जाए और बारिश न हो और वह इस मक़ाम की तरफ़ चेहरा कर के दु'आ करें और तेरे नाम का इकरार करे और अपने गुनाह से बाज़ आए जब तू उनको दुःख दे। ²⁷तो तू आसमान पर से सुनकर अपने बन्दों और अपनी क्रौम इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ कर देना क्योंकि तूने उनको उस अच्छी रास्ते की ता'लिम दी जिस पर उनको चलना फ़र्ज़ है और अपने मुल्क पर जैसे तूने अपनी क्रौम के मीरास के लिए दिया है पानी न बरसाना।

²⁸अगर मुल्क में काल हो ,अगर वबा हो ,अगर बा'द-ए-समूम या गेरुई टिड्डी या कमला हो ,अगर उनके दुश्मन उनके शहरों के मुल्क में उनको घेर ले गरज़ कैसी ही बला या कैसा ही रोग हो। ²⁹तू जो दु'आ और मुनाजात किसी एक शख्स या तेरी सारी क्रौम इस्राईल की तरफ़ से हों जिन में से हर शख्स अपने दुःख और रन्ज को जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ़ फैलाए। ³⁰तू तो आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सुनकर मु'आफ़ कर देना और हर शख्स को जिसके दिल को तू जनता है उसकी सब चालचलन ~के मुताबिक़ बदला देना (क्योंकि सिर्फ़ तू ही बनी आदम के दिलों को जनता है) ³¹ताकि जब तक वह उस मुल्क में जिसे तूने हमारे बाप दादा को दिया जीते रहे तेरा ख़ौफ़ मानकर तेरे रास्तों में चलें।

³²और वह परदेसी भी जो तेरी क्रौम इस्राईल में से नहीं है जब वह तेरे बुजुर्ग नाम और क्रौमी हाथ और तेरे बुलन्द बाज़ू की वजह ~से दूर मुल्क से आए और आकर इस घर की तरफ़ चेहरा कर के दु'आ करें। ³³तो तू आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सून लेना और जिस जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फ़रियाद करे उसके मुताबिक़ करना ताकि ज़मीन की सब क्रौम तेरे नाम को पहचाने और तेरी क्रौम इस्राईल की तरह तेरा ख़ौफ़ माने और जान ले कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है।

³⁴अगर तेरे लोग चाहे ~किसी रास्ते से तू उनको भेजे अपने दुश्मन से लड़ने को निकले और इस शहर की तरफ़ जिसे तूने चुना है और इस घर की तरफ़ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा करके तुझ से दु'आ करें।³⁵तो तू आसमान पर से उनकी दु'आ और मुनाजात को सुनकर उनकी हिमा'अत करना।

³⁶अगर वह तेरा गुनाह करें क्योंकि कोई इन्सान नहीं जो गुनाह न करता हो और तू उन से नाराज़ होकर उनको दुश्मन के हवाले कर दे ऐसा कि वह दुश्मन उनको कैद करके दूर या नज़दीक मुल्क में ले जाए।³⁷तो भी अगर वह उस मुल्क में जहाँ कैद होकर पहुँचाए गए, होश में आए और रुजू' लाए और अपनी गुलामी के मुल्क में तुझ से मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया है हम टेढ़ी चाल चले और हम ने शरारत की।³⁸इसलिए अगर वह अपनी गुलामी के मुल्क में जहाँ उनको गुलाम कर के ले गए हों अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ़ फ़िरें और अपने मुल्क की तरफ़ जो तूने उनको बाप दादा को दिया और इस शहर की तरफ़ जिसे तूने चुना है और इस घर की तरफ़ जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा कर के दु'आ कर।³⁹तो तू आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है उनकी दु'आ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना और अपनी क्रौम को जिस ने तेरा गुनाह किया हो मु'माफ़ कर देना।⁴⁰इसलिए ऐ मेरे खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि उस दु'आ की तरफ़ जो इस मक़ाम में की ~जाए तेरी आँखें खुली और तेरे कान लगें रहें।⁴¹इसलिए अब ऐ खुदावन्द खुदा तू अपनी ताक़त ~के सन्दूक के साथ उठकर अपनी आरामगाह में दाख़िल हो, ऐ खुदावन्द खुदा तेरे काहिन नजात से मुलव्वस हों और तेरे मुक़द्दस नेकी में मगन रहें।⁴²ऐ खुदावन्द खुदा तू अपने मम्सूह की दु'आ नामंजूर न कर, तू अपने बन्दा दाऊद पर की रहमतेँ याद फ़रमा।

Chapter 7

¹और जब सुलेमान दु'आ कर चुका तो आसमान पर से आग उतरी और सोखतनी कुर्बानी और ज़बीही को भस्म कर दिया और मस्कन खुदावन्द के जलाल से मा'मूर हो गया।²और काहिन ~खुदावन्द के घर में दाखिल न हों सके इसलिए कि खुदावन्द का घर खुदावन्द के जलाल से मा'मूर था।³और जब आग नाज़िल हुई और खुदावन्द का जलाल उस घर पर छा गया तो सब बनी इस्राईल देख रहे थे, तब उन्होंने वही फ़र्श पर मुँह के बल ज़मीन तक झुक कर सिज्दा किया और खुदावन्द का शुक्र अदा किया कि वह भला है क्योंकि उसकी रहमत हमेशा है।

⁴तब बादशाह और सब लोगो ने खुदावन्द के आगे ज़बीहे ज़बह किए।⁵और सुलेमान बादशाह ने ज़रिए' हज़ार बैलों और एक लाख बीस हज़ार भेड़ बकरियों की कुर्बानी पेश कीं, यूँ बादशाह और सब लोगो ने खुदा के घर को मख्सूस किया।⁶और काहिन अपने अपने मन्सब के मुताबिक़ खड़े थे और लावी भी खुदावन्द के लिए मुसीक़ी के साज़ लिए हुए थे जिनको दाऊद बादशाह ने खुदावन्द का शुक्र बजा लेने को बनाया था जब उसने उनके ज़रिए' से उसकी ता'रीफ़ की थी क्योंकि उसकी रहमत हमेशा है और काहिन उनके आगे नरसिंगे फूँकते रहे और सब इसईली खड़े रहे हैं।

⁷और सुलेमान ने उस सहन के बीच के हिस्से को जो ~खुदावन्द के घर के सामने था पाक किया क्योंकि उसने वहाँ सोखतनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों की चर्बी पेश कीं क्योंकि पीतल के उस मज़बह पर जैसे सुलेमान ने बनाया था सोखतनी कुर्बानी और नज़्र की कुर्बानी और चर्बी के लिए गुंजाइश न थीं।

⁸और सुलेमान और उसके साथ हमात के मदख़ल से मिस्र तक के सब इसालियों की बहुत बड़ी जमा'अत ने उस मौक़ा पर सात दिन तक 'ईद मनाई'।⁹और आठवे दिन उनका पाक मजमा' जमा' ~हुआ क्योंकि वह सात दिन मज़बह के मख्सूस करने में और सात दिन ईद मानाने में लगे रहे।¹⁰और सातवे महीने की तेइसवी तारीख को उसने लोगो को रुख़शत किया, ताकि वह उस नेकी की वजह से जो खुदावन्द ने दाऊद और सुलेमान और अपनी क़ौम इस्राईल से की थी खुश और शादमान होकर अपने खेमों को जाएँ।

¹¹यूँ सुलेमान ने खुदावन्द का घर और बादशाह का घर तमाक किया और जो कुछ सुलेमान ने खुदावन्द के घर में और अपने घर में बनाना चाहा उस ने उसे बख़ूबी अंजाम तक पहुँचाया।¹²और खुदावन्द रात को सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और उससे कहा, "कि मैंने तेरी दु'आ सुनी और इस जगह को अपने वास्ते चुन लिया कि यह कुर्बानी का घर हो।

¹³अगर मैं आसमान को बंद कर दूँ कि बारिश न हो या टिड्डियों को हुक्म दूँ कि मुल्क को उजाड़ डालें या अपने लोगो के बीच वबा भेजूँ।¹⁴तब अगर मेरे लोग जो मेरे नाम से कहलाते हैं खाकसार बनकर दु'आ करें और मेरे दीदार के तालिब हों और अपनी बुरी रास्तों से फिरें तो मैं आसमान पर से सुनकर उनका गुनाह मु'आफ़ करूँगा और उनके मुल्क को बहाल कर दूँगा।¹⁵अब जो दु'आ इस जगह की जाएगी उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे।

¹⁶क्योंकि मैंने इस घर को चुना और पाक किया कि मेरा नाम यहाँ हमेशा रहे और मेरी आँखें और मेरा दिल बराबर यहीं लगे रहेंगे।¹⁷और तू अगर मेरे सामने वैसे ही चले जैसे तेरा बाप दाऊद चलता रहा और जो कुछ मैंने तुझे हुक्म किया उसके मुताबिक़ अम्ल करे और मेरे क़ानून और हुक्मों को माने।¹⁸तो मैं ~तेरे तख़्त-ए-हुक्मत को क़ायम रखूँगा जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से 'अहद कर के कहा था कि इस्राईल का सरदार होने के लिए तेरे हाथ मर्द की कभी कमी न होगी।

¹⁹लेकिन अगर तुम बरग़शता हो जाओ और मेरे क़ानून -व-हुक्मों को जिनको मैंने तुम्हारे आगे रखखा है छोड़ कर दो, और जाकर ग़ैर मा'बूदों की 'इबादत करो और उनको सिज्दा करो,²⁰तो ~मैं उनको अपने मुल्क से जो मैंने उनको दिया है जड़ से उखाड़ डालूँगा और इस घर को मैंने अपने नाम के लिए पाक किया है अपने सामने से दूर कर दूँगा और इसको सब क़ौमों में ज़र्ब-उल-मसल और बदनाम कर दूँगा।²¹और यह घर जो ऐसा आलीशान है, इसलिए हर एक जो इसके पास से गुज़रेगा हैरान होकर कहेगा कि खुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर के साथ ऐसा क्यों किया?²²तब वह जवाब देंगे इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा को जो उनको मुल्के मिस्र से निकाल लाया था छोड़ दिया और ग़ैर मा'बूदों को इख़्तियार कर के उनको सिज्दा किया और उनकी 'इबादत की इसीलिए खुदावन्द ने उन पर यह सारी मुसीबत नाज़िल की।

Chapter 8

¹और बीस साल के आखिर में जिन सुलेमान ने खुदावन्द का घर और अपना घर बनाया था यूँ हुआ कि | ²सुलेमान ने उन शहर को जो हुराम ने सुलेमान को दिए थे फिर ता'मीर किया और बनी इस्राईल को वहाँ बसाया |

³और सुलेमान हमात ज़ूबाह को जाकर उस पर ग़ालिब हुआ | ⁴और उसने वीरान ~में तदमूर को बनाया और खज़ाना के सब शहरों को भी जो उस ने हमात में बनाए थे |

⁵और उसने ऊपर के बैत हौरून और नीचे के बैत हौरून को बनाया जो दीवारों और फाटकों और अड़बंगों से मज़बूत किए हुए शहर थे | ⁶और बा'लत और खज़ाना के सब शहर जो सुलेमान के थे और रथों के सब शहर और सवारों के शहर जो कुछ सुलेमान चाहता था कि यरुशलीम और लुबनान और अपनी ममलुकत की सारी ~सर ज़मी बनाए वह सब बनाया |

⁷और वह सब लोग जो हितियों और अमोरियों और फरिज़ियों और हव्वियों और यबुसियों में से बाक़ी रह गए थे और इस्राईली न थे | ⁸उन ही की औलाद जो उनके बा'द मुल्क में बाक़ी रह गई थी जिसे बनी इस्राईल ने नाबूद नहीं किया ,उसी में से सुलेमान ने बेगारी मुकर्रर किए जैसा आज के दिन है |

⁹लेकिन सुलेमान ने अपने काम के लिए बनी इस्राईल में से किसी को गुलाम न बनाया बल्कि वह जंगी मर्द और उसके लस्करों के सदार और उसके रथों और सवारों पर हुक्मरान थें | ¹⁰और सुलेमान बादशाह के खास मनसबदार जो लोगों पर हुक्मत करते थे दो सौ पचास थें |

¹¹और सुलेमान फ़िर'औन की बेटी को दाऊद के शहर से उस घर में जो उसके लिए बनाया था ले आया क्योंकि उसने कहाँ, कि "मेरी बीवी इस्राईल के बादशाह दाऊद के घर में नहीं रहेंगी क्योंकि वह मक़ाम मुक़द्दस है जिन में खुदावन्द का सन्दूक आ गया है |

¹²तब सुलेमान खुदावन्द के लिए खुदावन्द उस मज़बह पर जिसको उसने उसारें के सामने बनाया था सोख़तनी कुर्बानीयाँ अदा करने लगा | ¹³वह हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक़ जैसा मूसा ने हुक्म दिया था सब्तों और नए चाँदों और साल में तीन बार मुकर्ररा 'ईद या'नी फ़तीरी रोटी की 'ईद और हफ़्तों की 'ईद और खेमों की 'ईद पर कुर्बानी करता था |

¹⁴और उस ने बाप दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ काहिनों के फ़रीक़ो को हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक़ उनके काम पर और लावीयों को उनकी खिदमत पर मुकर्रर किया ताकि वह काहिनों के आमने सामने हम्द और खिदमत करें और दरबानों को भी उनके फ़रीक़ो ~के मुताबिक़ हर फाटक पर मुकर्रर किया क्योंकि मर्दे खुदा दाऊद ने ऐसा ही हुक्म दिया था | ¹⁵और वह बादशाह के हुक्म से जो उसने काहिनों और लावियों को किसी बात की निस्बत या खज़ानों के हक़ में दिया था बाहर न हुए |

¹⁶और सुलेमान का सारा काम खुदावन्द के घर की बुनियाद डालने के दिन से उसके तैयार होने तक तमाम हुआ और खुदावन्द का घर पूरा बन गया | ¹⁷तब सुलेमान अस्पून जाबर और ऐलोत को गया जो मुल्क-ए-अदोम में समुन्दर के किनारे है | ¹⁸और हुराम ने अपने नौकरों के हाथ से जहाज़ों और मलाहों को जो समुन्दर से वाकिफ़ थे उसके पास भेजा और वह सुलेमान के मुलाज़िमों के साथ ओफ़िर में आए और वहाँ से साढ़े चार सौ किन्तार ~सोना लेकर बादशाह के पास लाए |

Chapter 9

¹जब सबा की मलिका ने सुलेमान की शोहरत सुनी तो वह मुश्किल सवालों से सुलेमान को आजमाने के लिए बहुत बड़ी जिलौ और ऊटों के साथ जिन पर मसालहे और बाइफ़रात सोना और जवाहर थे यरुशलम में आई और सुलेमान के पास आकर जो कुछ उसके दिल में था उस सब की बारे में उससे बातें ~की।
²सुलेमान ने उसके सब सवालों का जवाब उसे दिया और सुलेमान से कोई बात छिपी हुई न थी कि वह उसको बता न सका।

³जब सबा की मलिका ने सुलेमान की 'अक्लमन्दी को और उस घर को जो उसने बनाया था।⁴ और उसके दस्तरख्वान की ने'मत और उसके खादिमो ~की निश्चत और उसके मुलाज़िमो की हाज़िर बाशी और उनके लिबास और उसके साक्रियों और उनके लिबास को और उस ज़ीने को जिस से वह खुदावन्द को घर को जाता था देखा तो उस के होश उड़ गए।

⁵और उसने बादशाह से कहाँ, "कि वह सच्ची ~खबर थी जो मैंने तेरे कामों और तेरी हिकमत की ~बारे में ~अपने मुल्क में सुनी थी।⁶तोभी जब तक मैंने आकर अपनी आँखों से न देख लिया उनकी बातों का यक़ीन न किया और देख जितनी बड़ी तेरी हिकमत है उसका आधा बयान ~भी मेरे आगे नहीं हुआ तो उस शहर से बढ़कर है जो मैंने सुनी थी।

⁷खुश नसीब है तेरे लोग और खुश नसीब है तेरे यह मलाज़िम जो हमेशा तेरे सामने खड़े रहते और और तेरी हिकमत सुनते हैं।⁸खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो जो तुझ से ऐसा राज़ी हुआ कि तुझको अपने तख़्त पर बिठाया ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ से बादशाहों चूँकि तेरे खुदा को इसाईल से मुहब्बत थी कि उनको हमेशा के लिए क़ायम करे इसलिए उस ने तुझे उनका बादशाह बनाया ताकि तू 'अदल-ओ-इन्साफ़ करे।

⁹और उस ने एक सौ बीस किन्तार सोना और मसालहे का बहुत बड़ा ढेर और जवाहिर सुलेमान को दिए और जो मसालहे सबा की मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए वैसे फ़िर कभी मयस्सर न आए।

¹⁰और हुराम के नौकर भी और सुलेमान के नौकर जो ओफ़ीर से सोना लाते थे, वह चन्दन के दरख़्त और जवाहिर भी लाते थे।¹¹और बादशाह ने चन्दन की लकड़ी से खुदावन्द के घर के लिए और शाही महल के लिए चबूतरे और गाने वालों के लिए बरबत और सितार तैयार कराए; और ऐसी चीज़ें यहदाह के मुल्क में पहले कभी देखने में नहीं आई थी।¹²और ~सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को जो कुछ उसने चाहा और माँगा उस से ज़्यादा जो वह बादशाह के लिए लाई थी दिया और वह लौटकर अपने मुलाज़िमों समेत अपनी ममलुकत को चली गई।

¹³और जितना सोना सुलेमान के पास एक साल में आता था उसका वज़न छे; सौ छियासठ किन्तार सोने का था।¹⁴यह उसके 'अलावा था जो ब्यापारी और सौदागर लाते थे और अरब के सब बादशाह और मुल्क के हाकिम सुलेमान के पास सोना और चाँदी लाते थे।

¹⁵और सुलेमान बादशाह ने पिटे हुए सोने की दो सौ बड़ी ढालें बनवाई, छ;सौ मिस्काल पिटा ~हुआ सोना एक एक ढाल में लगा।¹⁶और उसने पिटे हुए सोने की तीन सौ ढालें और बनवाई, एक एक ढाल में ~तीन सौ मिस्काल सोना लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन के घर में रखा।

¹⁷उसके 'अलावा बादशाह ने हाथी दाँत का एक बड़ा तख़्त बनवाया और उस पर ख़ालिस सोना मढ़वाया।¹⁸और उस तख़्त ~के लिए छ;सीढ़ियाँ और सोने का एक पायदान था, यह सब तख़्त से जुड़े हुए थे और बैठने की जगह की दोनों तरफ़ एक एक टेक थी और उन टेकों के बराबर दो शेर-ए-बबर खड़े थे।

¹⁹और उन छओं ~सीढ़ियों पर इधर और उधर बारह शेर-ए-बबर खड़े थे किसी हुकूमत में कभी नहीं बना था।²⁰और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बर्तन सोने के थे और लुबनानी बन के घर सब बर्तन ख़ालिस सोने के थे सुलेमान के अय्याम में चाँदी की कुछ क़द्र न थी।²¹क्योंकि बादशाह के पास जहाज़ थे जो हुराम के नौकारों के साथ तरसीस को जाते थे, तरसीस के यह जहाज़ तीन साल में एक बार सोना और चाँदी और हाथी के दाँत और बंदर और मोर लेकर आते थे।

²²सुलेमान बादशाह दौलत और हिकमत में रु-ए-ज़मीन के सब बादशाहों से बढ़ गया।²³और रु-ए-ज़मीन के सब बादशाह सुलेमान के दीदार के मुशताक़ थे ताकि वह उसकी हिकमत जो खुदा ने उसके दिल में डाली थी सुनें।²⁴और वह साल-ब-साल अपना अपना हदिया, या'नी चाँदी के बर्तन और सोने के बर्तन और लिबास और हथियार और मसालहे और घोड़े और खच्चर जितने मुक़रर थे लाते थे।

²⁵और सुलेमान के पास घोड़े और रथों के लिए चार हज़ार थान और बारह हज़ार सवार थे जिनको उस ने रथों के शहरों और यरुशलीम, में बादशाह के पास रखा।²⁶और वह दरिया-ए-फ़रात से फ़लिस्तियों के मुल्क बल्कि मिस्र की हद तक सब बादशाहों पर हुक्मरान था।

²⁷और बादशाह ने यरुशलीम में इफ़रात की वजह से चाँदी को पत्थरों की तरह और देवदार के दरख़्तों को गूलर के उन दरख़्तों के बराबर कर दिया जो नशीब की सर ज़मीन में है।²⁸और वह मिस्र से और और सब मुल्को से सुलेमान के लिए घोड़े लाया करते थे।²⁹और सुलेमान के बाक़ी काम शुरू से आख़िर तक किया वह नातन नबी की किताब में और सैलानी अख़ियाह की पेशीनगोई में और 'ईदू ग़ैबबीन की रोयतों की किताब में जो उसने युर्याया'म बिन नाबत के ज़रिए देखी थी, मुन्दर्ज़ नहीं है ?।³⁰और सुलेमान ने यरुशलीम में सारे इसाईल पर चालीस साल हुकूमत की।³¹और सुलेमान अपने बाप दादा के साथ सो गया और अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़न हुआ और उसका बेटा रुहब 'आम उसकी जगह हुकूमत करने लगा।

Chapter 10

¹और रहुब 'आम सिकम को गया ,इसलिए कि सब इस्राईली उसे बादशाह बनाने को सिकम में इकठ्ठे हुए थे जब नबात के बेटे युरब'आम ने यह सुना (क्योंकि वह मिस्र में था जहाँ वह सुलेमान बादशाह के आगे से भाग गया था)तो युरब'आम मिस्र से लौटा।

³और लोगों ने उसे बुलवा भेजा। तब युरब'आम और सब इस्राईली आए और रहुब'आम से कहने लगे।⁴कि तेरे बाप ने हमारा बोझ सख्त कर रखा था। इसलिए अब तू अपने बाप की उस सख्त खिदमत को और उस भारी बोझ को जो उस ने हम पर डाल रखा था; कुछ हल्का कर दे और हम तेरी खिदमत करेंगे।⁵और उसने उन से कहा, "तीन दिन के बा'द फिर मेरे पास आना" चुनाँचे वह लोग चले गए

⁶तब रहुब'आम बादशाह ने उन बुजुर्गों से जो उसके बाप सुलेमान के सामने उसके जीते जी खड़े रहते थे,सलाह ~की और कहा तुम्हारी क्या सलाह है? मैं इन लोगो को क्या जवाब दूँ?⁷उन्होंने उससे कहा कि अगर तू इन लोगों पर मेहरबान हो और उनको राजी करें और इन से अच्छी अच्छी बातें कहे,तो वह हमेशा तेरी खिदमत करेंगे।

⁸लेकिन उस ने उन बुजुर्गों की सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़कर कर उन जवानों से जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी और उसके आगे हाज़िर रहते थे सलाह ~की।⁹और उन से कहा तुम मुझे क्या सलाह देते हो कि हम इन लोगों को क्या जवाब दे जिन्होंने मुझ से यह दरखवास्त की है कि उस बोझ को जो तेरे बाप ने हम पर रखा ~कुछ हल्का कर?

¹⁰उन जवानों ने जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी उस से कहा, "तू उन लोगों को जिन्होंने तुझ से कहा तेरे बाप ने हमारे बोझ को भारी ~किया लेकिन तू उसको हमारे लिए कुछ हल्का कर दे यूँ जवाब देना और उन से कहना कि मेरी छिंगुली मेरे बाप के कमर से भी मोटी है।"¹¹और मेरे बाप ने तो भारी बोझ तुम पर रखा ही था लेकिन मैं उस बोझ को और भी भारी करूँगा।मेरे बाप ने तुम्हे कोड़ों से ठीक किया लेकिन मैं ~तुम को~बिच्छुर्यों~से ठीक ~करूँगा। "

¹²और जैसा बादशाह ने हुक्म दिया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना तीसरे दिन युरब'आम और सब लोग रहुब'आम के पास हाज़िर हुए।¹³तब बादशाह उनको सख्त जवाब दिया और रहुब'आम बादशाह ने बुजुर्गों की सलाह को छोड़कर।¹⁴जवानों की सलाह के मुताबिक उनसे कहा कि मेरे बाप ने तुम्हारा बोझ भारी किया लेकिन मैं उसको और भी भारी करूँगा।मेरे बाप ने तुमको कोड़ों से ठीक किया लेकिन मैं ~तुम को बिच्छुर्यों से ठीक करूँगा।

¹⁵तब बादशाह ने लोगों की न मानी क्योंकि यह खुदा ही की तरफ से था ताकि खुदावंद उस बात को जो उसने सैलानी अखियाह की ज़रिए नबात के बेटे युरब'आम को फ़रमाई थी पूरा करे।

¹⁶जब सब इस्राइलियों ने यह देखा कि बादशाह ने उनकी न मानी तो लोगों ने बादशाह को जवाब दिया और यूँ कहा कि दाऊद के साथ हमारा क्या हिस्सा है ? यस्सी के बेटे के साथ हमारी कुछ मीरास नहीं।ऐ इस्राइलियों !अपने अपने डेरे को चले जाओ। अब ऐ दाऊद अपने ही घराने को संभाल।इसलिए सब इस्राइली अपने खेमों को चल दिए।¹⁷लेकिन उन बनी इस्राइल पर जो यहूदाह के शहरों में रहते थे रहुब'आम हुकूमत करता रहा।¹⁸तब रहुब'आम बादशाह ने हदुराम को जो बेगारियों का दरोगा था भेजा लेकिन बनी इस्राइल ने उसको पथराव किया और वह मर गया।तब रहुब'आम यरुशलीम को भाग जाने के लिए झट अपने रथ पर सवार हो गया।¹⁹तब ~इस्राइली आज के दिन तक दाऊद के घराने से बा'मी है

Chapter 11

¹और जब रहुब'आम यरूशलीम में आ गया तो उसने इस्राईल से लड़ने के लिए यहूदाह और बिनयमीन के घराने में से एक लाख अस्सी हज़ार चुने हुए जवान, जो जंगी जवान थे इकट्ठा किए, ताकि वह फिर ममलुकत को रहुब'आम के कब्ज़े में करा दें।

²लेकिन खुदा वन्द का कलाम नबी समा'याह को पहुँचा कि;³~यहूदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहुब'आम से और सारे इस्राईल से जो यहूदाह और बिनयमीन में हैं, कह,⁴'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम चढ़ाई न करना और न अपने भाइयों से लड़ना। तुम अपने अपने घर को लौट जाओ, क्योंकि यह मु'आमिला मेरी तरफ़ से है। तब उन्होंने खुदावन्द की बातें मान लीं, और युरब'आम पर हमला किए बग़ैर लौट गए।

⁵रहुब'आम यरूशलीम में रहने लगा, और उसने यहूदाह में हिफ़ाज़त के लिए शहर बनाए।⁶~चुनाँचे उसने बैतलहम और ऐताम और तकू'अ,⁷और बैत सूर और शोको और 'अदुल्लाम,⁸और जात और मरीसा और ज़ीफ़,⁹और अदूरैम और लकीस और 'अज़ीक्रा,¹⁰और सुर'आ और अय्यालोन और हबरून को जो यहूदाह और बिनयमीन में हैं, बना कर क़िला' बन्द कर दिया।

¹¹और उसने क़िलों' को बहुत मज़बूत किया और उनमें सरदारों को मुकर्रर किया, और खुराक और तेल और शराब के ज़ख़ीरे को रखा।¹²और एक एक शहर में ढालें और भाले रखवाकर उनको बहुत ही मज़बूत कर दिया; और यहूदाह और बिनयमीन उसी के रहे।

¹³और काहिन और लावी जो सारे इस्राईल में थे, अपनी अपनी सरहद से निकल कर उसके पास आ गए।¹⁴क्योंकि लावी अपनी पास के 'इलाक़ों और जायदादों को छोड़ कर यहूदाह और यरूशलीम में आए, इसलिए के युरब'आम और उसके बेटों ने उन्हें निकाल दिया था ताकि वह खुदावन्द के सामने कहानत की ख़िदमत को अंजाम न देने पाएँ,¹⁵~और उसने अपनी तरफ़ से ऊँचे मक़ामों और बक़रों और अपने बनाए हुए बछड़ों के लिए काहिन मुकर्रर किए।

¹⁶~और लावियों के पीछे इस्राईल के सब क़बीलों में से ऐसे लोग जिन्होंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तलाश में अपना दिल लगाया था, यरूशलीम में आए कि खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा के सामने ~कुर्बानी पेश करें।¹⁷इसलिए उन्होंने यहूदाह की हुकूमत को ताक़तवर बना दिया, और तीन साल तक सुलेमान के बेटे रहुब'आम को ताक़तवर बना रखा, क्योंकि वह तीन साल तक दाऊद और सुलेमान की रास्ते पर चलते रहे।

¹⁸~रहुब'आम ने महालात को जो यरीमोत बिन दाऊद और इलियाब बिन यस्सी की बेटी अबीख़ील की बेटी थी, ब्याह लिया।¹⁹उसके उससे बेटे पैदा हुए, या'नी य'ऊस और समरियाह और ज़हम।

²⁰उसके बा'द उसने अबीसलोम की बेटी मा'का को ब्याह लिया, जिसके उससे अबियाह और 'अत्ती और ज़ीज़ा और सलूमियत पैदा हुए।²¹रहुब'आम अबीसलोम की बेटी मा'का को अपनी सब बीवियों और बाँदियों से ज़्यादा प्यार करता था (क्योंकि उसकी अठारह बीवियाँ और साठ बाँदी थीं; और उससे अठाईस बेटे और साठ बेटियाँ पैदा हुई)।

²²और रहुब'आम ने अबियाह बिन मा'का को रहनुमा मुकर्रर किया ताकि अपने भाइयों में सरदार हो, क्योंकि उसका इरादा था कि उसे बादशाह बनाए।²³और उसने होशियारी की, और अपने बेटों को यहूदाह और बिनयमीन की सारी ममलुकत के बीच हर फ़सीलदार शहर में अलग अलग कर दिया; और उनको बहुत खुराक दी, और उनके लिए बहुत सी बीवियाँ तलाश कीं।

Chapter 12

¹और ऐसा हुआ कि जब रहब'आम की हुकूमत मज़बूत हो गई और वह ताक़तवर बन गया, तो उसने और उसके साथ सारे इस्राईल ने खुदावन्द की शरी'अत को छोड़ दिया।

²रहुब'आम बादशाह के पाँचवें साल में ऐसा हुआ कि मिस्र का बादशाह सीसक यरूशलीम पर चढ़ आया, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द की हुक्म 'उदूली की थी, ³और उसके साथ बारह सौ रथ और साठ हज़ार सवार थे, और लूबी और सूकी और कूशी लोग जो उसके साथ मिस्र से आए थे बेशुमार थे।⁴और उसने यहूदाह के फ़सीलदार शहर ले लिए, और यरूशलीम तक आया।

⁵तब समायाह नबी रहुब'आम के और यहूदाह के हाकिमों के पास जो सीसक के डर के मारे यरूशलीम में जमा हो गए थे, आया और उनसे कहा, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया, इसी लिए मैंने भी तुम को सीसक के हाथ में छोड़ दिया है।"⁶तब इस्राईल के हाकिमों ने और बादशाह ने अपने को खाकसार बनाया और कहा, "खुदावन्द सच्चा है।"

⁷जब खुदावन्द ने देखा के उन्होंने अपने को खाकसार बनाया, तो खुदा वन्द का कलाम समायाह पर नाज़िल हुआ : "उन्होंने अपने को खाकसार बनाया है, इसलिए मैं उनको हलाक नहीं करूँगा बल्कि उनको कुछ रिहाई दूँगा; और मेरा क्रहर सीसक के हाथ से यरूशलीम पर नाज़िल न होगा।"⁸तोभी वह उसके खादिम होंगे, ताकि वह मेरी खिदमत को और मुल्क मुल्क की सल्लतनों की खिदमत को जान लें।"

⁹इसलिए ~मिस्र का बादशाह सीसक यरूशलीम पर चढ़ आया, और खुदावन्द के घर के खज़ाने और बादशाह के घर के खज़ाने ले गया। बल्कि वह सब कुछ ले गया, और सोने की वह ढालें भी जो सुलेमान ने बनवाई थीं ले गया।¹⁰और रहुब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाई और उनको मुहाफ़िज़ सिपाहियों ~के सरदारों को जो शाही महल की निगहबानी करते थे सौंपा।

¹¹और जब बादशाह खुदावन्द के घर में जाता था, तो वह मुहाफ़िज़ सिपाही आते और उनको उठाकर चलते थे, और फिर उनको वापस लाकर सिलाहखाने में रख देते थे।¹²और जब उसने अपने को खाकसार बनाया, तो खुदा वन्द का क्रहर उस पर से टल गया और उसने उसको पूरे तौर से तबाह न किया; और भी यहूदाह में खूबियाँ भी थीं।

¹³इसलिए रहुब'आम बादशाह ने ताक़तवर होकर यरूशलीम में हुकूमत की। रहुब'आम जब हुकूमत करने लगा तो इकतालीस साल का था और उसने यरूशलीम में, या'नी उस शहर में जो खुदावन्द ने इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया था कि अपना नाम वहाँ रखे, सत्रह साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम नामा 'अम्मूनिया था।¹⁴और उसने बुराई की, क्योंकि उसने खुदावन्द की तलाश में अपना दिल न लगाया।¹⁵और रहुब'आम के काम अव्वल से आख़िर तक, क्या वह समायाह नबी और 'ईद ग़ैबबीन की तवारीखों में नसबनामों के मुताबिक़ लिखा नहीं? रहुब'आम और युरब'आम के बीच हमेशा जंग रही।¹⁶और रहुब'आम अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में दफ़न हुआ; और उसका बेटा अबियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 13

¹~युरब'आम बादशाह के अठारहवें साल से अबियाह यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।²~उसने यरूशलीम में तीन साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम मीकायाह था जो ऊरीएल जिबई की बेटी थी। और अबियाह और युरब'आम के बीच जंग हुई।³अबियाह जंगी सूरमाओं का लश्कर, या'नी चार लाख चुने हुए जंगी सूरमाओं का लश्कर लेकर लड़ाई में गया। और युरब'आम ने उसके मुकाबिले में आठ लाख चुने हुए आदमी ~लेकर, जो ताक़तवर सूरमा थे सफ़आराई की।

⁴और अबियाह समरेम के पहाड़ पर जो इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में है, खड़ा हुआ और कहने लगा, "ऐ युरब'आम और सब इस्राईलियो, मेरी सुनो !⁵क्या तुम को मा'लूम नहीं कि खुदा वन्द इस्राईल के खुदा ने इस्राईल की हुकूमत दाऊद ही को और उसके बेटों को, नमक के 'अहद से हमेशा के लिए दी है?

⁶तोभी नबात का बेटा युरब'आम, जो सुलेमान बिन दाऊद का खादिम था, उठकर अपने आका से बाग़ी हुआ।⁷उसके पास निकम्मे और खबीस आदमी जमा' हो गए, जिन्होंने सुलेमान के बेटे रहब'आम के मुकाबिले में ज़ोर पकड़ा, जब रहब'आम अभी जवान और नर्म दिल था और उनका मुकाबिला नहीं कर सकता था।

⁸और अब तुम्हारा ख्याल है कि तुम खुदावन्द की बादशाही का, जो दाऊद की औलाद के हाथ में है, मुकाबिला करो; और तुम भारी गिरोह हो और तुम्हारे साथ वह सुनहले बछड़े हैं जिनको युरब'आम ने बनाया कि तुम्हारे मा'बूद हों।⁹~ क्या तुम ने हारून के बेटों और लावियों को जो खुदावन्द के काहिन थे, खारिज नहीं किया, और मुल्कों की क़ौमों के तरीक़े पर अपने लिए काहिन मुक़र्रर नहीं किए? ऐसा कि जो कोई एक बछड़ा और सात मेंढे लेकर अपनी तबदीस करने आए, वह उनका जो हक़ीक़त में खुदा नहीं हैं काहिन हो सके।

¹⁰लेकिन हमारा यह हाल है कि खुदा वन्द हमारा खुदा है और हम ने उसे छोड़ नहीं दिया ~है, और हमारे यहाँ हारून के बेटे काहिन हैं जो खुदावन्द की खिदमत करते हैं, और लावी अपने अपने काम में लगे रहते हैं।¹¹और वह हर सुबह और हर शाम को खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानियाँ और खुशबूदार खुशबू जलाते हैं, और पाक मेज़ पर नज़ की रोटियाँ क़ाइदे के मुताबिक़ रखते और सुनहले शमा'दान और उसके चिराग़ों को हर शाम को रौशन करते हैं, क्योंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म को मानते हैं; लेकिन तुम ने उसको छोड़ ~दिया है।

¹²~देखो, खुदा हमारे साथ हमारा रहनुमा है, और उसके काहिन तुम्हारे खिलाफ़ साँस बांधकर ज़ोर से फूँकने को नरसिंगे लिए हुए हैं। ऐ बनी-इस्राईल, खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा से मत लड़ो, क्योंकि तुम कामयाब न होगे।"

¹³लेकिन युरब'आम ने उनके पीछे कमीन लगवा दी।इसलिए वह बनी यहूदाह के आगे रहे और कमीन पीछे थी।¹⁴जब बनी यहूदाह ने पीछे नज़र की, तो क्या देखा कि लड़ाई उनके आगे और पीछे दोनों तरफ़ से है; और उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की, और काहिनों ने नरसिंगे फूँके।¹⁵~तब यहूदाह के लोगों ने ललकारा, और जब उन्होंने ललकारा तो ऐसा हुआ कि खुदा ने अबियाह और यहूदाह के आगे युरब'आम को और सारे इस्राईल को मारा।

¹⁶और बनी इस्राईल यहूदाह के आगे से भागे, और खुदा ने उनको उनके हाथ में कर दिया।¹⁷और अबियाह और उसके लोगों ने उनको बड़ी ख़ूनरेज़ी के साथ क़त्ल किया, तब इस्राईल के पाँच लाख चुने हुए मर्द मारे गए।¹⁸ऐसे बनी-इस्राईल उस वक़्त मग़लूब हुए और बनी यहूदाह ग़ालिब आए, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा पर यक़ीन किया।¹⁹और अबियाह ने युरब'आम का पीछा किया और इन शहरों को उससे ले लिया, या'नी बैतएल और उसके देहात। यसाना और उसके देहात इफ़्रोनऔर उसके देहात।²⁰~अबियाह के दिनों में युरब'आम ने फिर ज़ोर न पकड़ा, और खुदावन्द ने उसे मारा और वह मर गया।

²¹लेकिन अबियाह ताक़तवर हो गया और उसने चौदह बीवियाँ ब्याही,और उस के ज़रिए' बेटे और सोलह बेटियाँ ~पैदा हुई।²²अबियाह के बाक़ी काम और उसके हालात और उसकी कहावतें 'ईदू नबी की तफ़्सीर में लिखी हैं।

Chapter 14

¹और अबियाह अपने बाप -दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आसा उसकी जगह बादशाह हुआ। उसके दिनों में दस साल तक मुल्क में अमन रहा।²और आसा ने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा के सामने अच्छा और ठीक था।³क्योंकि उसने अजनबी मज़बहों और ऊँचे मक़ामों को दूर किया, और लाटों को गिरा दिया, और यसीरतों को काट डाला,⁴~और यहूदाह को हुक्म किया कि खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के तालिब हों, और शरी'अत और फ़रमान पर 'अमल करें।

⁵उसने यहूदाह के सब शहरों में से ऊँचे मक़ामों और सूरज की मूरतों को दूर कर दिया, और उसके सामने हुक्मत में अमन रहा।⁶~उसने यहूदाह में फ़सीलदार शहर बनाए, क्योंकि मुल्क में अमन था। उन बरसों में उसे जंग न करना पड़ा, क्योंकि खुदावन्द ने उसे अमान बख़शी थी।

⁷इसलिए उसने यहूदाह से कहा, कि ~"हम यह शहर ता'मीर करें और उनके पास दीवार और बुर्ज बनायें और फाटक और अड़बंगे लगाएँ। यह मुल्क अभी हमारे क़ाबू में है, क्योंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के तालिब हुए हैं। हम उसके तालिब हुए और उसने हम को चारों तरफ़ अमान बख़शी है।" इसलिए उन्होंने उनको ता'मीर किया और कामयाब हुए।⁸और आसा के पास बनी यहूदाह के तीन लाख आदमियों का लश्कर था जो ढाल और भाला उठाते थे, और बिनयमीन के दो लाख अस्सी हज़ार थे जो ढाल उठाते और तीर चलाते थे। यह सब ज़बरदस्त सूर्मा थे।

⁹और इनके मुक़ाबिले में ज़ारह कूशी दस लाख की फ़ौज और तीन सौ रथों को लेकर निकला, और मरीसा में आया।¹⁰और आसा उसके मुक़ाबिले को गया, और उन्होंने मरीसा के बीच सफ़ाता की वादी में जंग के लिए सफ़्र बाँधी।¹¹और आसा ने खुदावन्द अपने खुदा से फ़रियाद की और कहा, "ऐ खुदावन्द, ताक़तवर और कमज़ोर के मुक़ाबिले में मदद करने को तेरे 'अलावा और कोई नहीं। ऐ खुदावन्द हमारे खुदा तू हमारी मदद कर क्योंकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरे नाम से इस ग़िरोह का सामना करने आए हैं। तू ऐ खुदा हमारा खुदा है इन्सान तेरे मुक़ाबिले में ग़ालिब होने न पाए।"

¹²~फिर खुदावन्द ने आसा और यहूदाह के आगे कूशियों को मारा और कूशी भागे,¹³और आसा और उसके लोगों ने उनको ज़िरार तक दौड़ाया, और कूशियों में से इतने क़त्ल हुए कि वह फिर संभल न सके, क्योंकि वह खुदावन्द और उसके लश्कर के आगे हलाक हुए; और वह बहुत सी लूट ले आए।¹⁴उन्होंने ज़िरार के आसपास के सब शहरों को मारा, क्योंकि खुदावन्द का ख़ौफ़ उन पर छा गया था। और उन्होंने सब शहरों को लूट लिया, क्योंकि उनमें बड़ी लूट थी।¹⁵और उन्होंने मवेशी के डेरों पर भी हमला किया, और कसरत से भेड़ें और ऊँट लेकर यरूशलीम को लौटे ।

Chapter 15

¹और खुदा की रूह अज़रियाह बिन ओदद पर नाज़िल हुई,²~और वह आसा से मिलने को गया और उससे कहा, "ऐ आसा और सारे यहूदाह और बिनयमीन, मेरी सुनो। खुदा वन्द तुम्हारे साथ है जब तक तुम उसके साथ हो, और अगर तुम उसके तालिब हो तो वह तुम को मिलेगा; लेकिन अगर तुम उसे छोड़ दो तो वह तुम को छोड़ देगा।

³अब बड़ी मुद्दत से बनी-इसाईल बग़ैर सच्चे खुदा और बग़ैर सिखाने वाले काहिन और बग़ैर शरी'अत के रहे हैं,⁴~लेकिन जब वह अपने दुख में खुदावन्द इसाईल के खुदा की तरफ़ फिर कर उसके तालिब हुए तो वह उनको मिल गया।⁵और उन दिनों में उसे जो बाहर जाता था और उसे जो अन्दर आता था बिल्कुल चैन न था, बल्कि मुल्कों के सब बाशिंदों पर बड़ी तकलीफ़ें थीं।

⁶~क्रौम क्रौम के मुकाबिले में, और शहर शहर के मुकाबिले में पिस गए, क्योंकि खुदा ने उनको हर तरह मुसीबत से तंग किया।⁷~लेकिन तुम मज़बूत बनो और तुम्हारे हाथ ढीले न होने पाएँ, क्योंकि तुम्हारे काम का अज़्र मिलेगा।"

⁸जब आसा ने इन बातों और 'ओदद नबी की नबुव्वत को सुना, तो उसने हिम्मत बाँधकर यहूदाह और बिनयमीन के सारे मुल्क से, और उन शहरों से जो उसने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में से ले लिए थे, मकरूह चीज़ों को दूर कर दिया, और खुदावन्द के मज़बूह को जो खुदावन्द के उसारे के सामने था फिर बनाया।⁹और उसने सारे यहूदाह और बिनयमीन को, और उन लोगों को जो इफ़्राईम और मनस्सी और शमा'ऊन में से उनके बीच रहा करते थे, इकट्ठा किया, क्योंकि जब उन्होंने देखा कि खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ है, तो वह इसाईल में से बकसरत उसके पास चले आए।

¹⁰वह आसा की हुक्मत के पन्द्रहवें साल के तीसरे महीने में, यरूशलीम में जमा' हुए,¹¹और उन्होंने उसी वक़्त उस लूट में से जो वह लाए थे, खुदावन्द के सामने सात सौ बैल और सात हज़ार भेड़ें कुर्बान कीं।

¹²और वह उस 'अहद में शामिल हो गए, ताकि अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के तालिब हों,¹³और जो कोई, क्या छोटा क्या बड़ा क्या मर्द क्या 'औरत, खुदावन्द इसाईल के खुदा का तालिब न हो वह क़त्ल किया जाए।

¹⁴उन्होंने बड़ी आवाज़ से ललकार कर तुरहियों और नरसिंगों के साथ खुदावन्द के सामने क़सम खाई,¹⁵~और सारा यहूदाह उस क़सम से बहुत खुश हो गए, क्योंकि उन्होंने अपने सारे दिल से क़सम खाई थी, और क़माल आरज़ू से खुदावन्द के तालिब हुए थे और वह उनको मिला, और खुदावन्द ने उनको चारों तरफ़ अमान बख़्शी।

¹⁶और आसा बादशाह की माँ मा'का को भी उसने मलिका के 'ओहदे से उतार दिया, क्योंकि उसने यसीरत के लिए एक मकरूह बुत बनाया था। इसलिए आसा ने उसके बुत को काटकर उसे चूर चूर किया, और वादी-ए-क्लिद्रोन में उसको जला दिया।¹⁷लेकिन ऊँचे मक़ाम इसाईल में से दूर न किए गए, तो भी आसा का दिल 'उग्र भर कामिल रहा।¹⁸और उसने खुदा के घर में वह चीज़ें जो उसके बाप ने पाक की थीं, और जो कुछ उसने खुद पाक किया था दाख़िल कर दिया, या'नी चाँदी और सोना और बर्तन।¹⁹और आसा की हुक्मत के पैंतीसवें साल तक कोई जंग न हुई।

Chapter 16

¹और इस्राईल का बादशाह बाशा यहूदाह पर चढ़ आया, और रामा को ता'मीर किया ताकि यहूदाह के बादशाह आसा के यहाँ किसी को आने-जाने न दे।

²~तब आसा ने खुदावन्द के घर और शाही महल के खज़ानों में से चाँदी और सोना निकालकर, अराम के बादशाह बिन-हदद के पास जो दमिश्क में रहता था रवाना किया और कहला भेजा कि,³~"मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद-ओ-पैमान है; देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोना भेजा है, इसलिए तू जाकर इस्राइल के रहने वाले ~बाशा से वा'दा खिलाफी कर ताकि वह मेरे पास से चला जाए।"

⁴और बिन-हदद ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने लश्करों के सरदारों को इस्राईली शहरों पर हमला ~करने को भेजा, तब ~उन्होंने 'अयून और दान और अबीलमाइम और नप्रताली के जखीरे के सब शहरों को ~तबाह किया।⁵~जब बाशा ने यह सुना तो रामा का बनाना छोड़ा, और अपना काम बंद कर दिया।

⁶तब आसा बादशाह ने सारे यहूदाह को साथ लिया, और वह रामा के पत्थरों और लकड़ियों को जिनसे बाशा ता'मीर कर रहा था उठा ले गए, और उसने उनसे जिब'आ और मिस्फाह को ता'मीर किया।

⁷उस वक्त हनानी गैबबीन यहूदाह के बादशाह आसा के पास आकर कहने लगा, "चूँकि तू ने अराम के बादशाह पर भरोसा किया और खुदावन्द अपने खुदा पर भरोसा नहीं रखा, इसी वजह से अराम के बादशाह का लश्कर तेरे हाथ से बच निकला है।⁸क्या कूशी और लूबी बहुत बड़ा गिरोह न थे, जिनके साथ गाड़ियाँ और सवार बड़ी कसरत से न थे? तो भी चूँकि तू ने खुदावन्द पर भरोसा रखा, उसने उनको तेरे कब्ज़ा में कर-दिया;

⁹~क्योंकि खुदावन्द की आँखें सारी ज़मीन पर फिरती हैं, ताकि वह उनकी इमदाद में जिनका दिल उसकी तरफ़ कामिल है, अपनी ताक़त दिखाए। इस बात में तू ने बेवकूफी की, क्योंकि अब से तेरे लिए जंग ही जंग है।"¹⁰तब आसा ने उस गैबबीन से खफ़ा होकर उसे कैदखाने में डाल दिया, क्योंकि वह उस कलाम की वजह से बहुत ही गुस्सा हुआ; और आसा ने उस वक्त लोगों में से कुछ औरों पर भी जुल्म किया।

¹¹और देखो, आसा के काम शुरू' से आखिर तक यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा है।¹²और आसा की हुकूमत के उनतालीसवें साल उसके पाँव में एक रोग लगा और वह रोग बहुत बढ़ गया, तो भी अपनी बीमारी में वह खुदावन्द का तालिब नहीं बल्कि हकीमों का तालिब हुआ।

¹³और आसा अपने बाप-दादा के साथ सो गया; उसने अपनी हुकूमत के इकतालीसवें साल में वफ़ात पाई।¹⁴उन्होंने उसे उन कब्रों में, जो उसने अपने लिए दाऊद के शहर में खुदवाई थीं दफ़न किया। उसे उस ताबूत में लिटा दिया जो इत्रों और किस्म किस्म के मसाले से भरा था, जिनको 'अतारों की हिकमत के मुताबिक़ तैयार किया था, और उन्होंने उसके लिए उनको खूब जलाया।

Chapter 17

¹~और उसका बेटा यहूसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ, और उसने इस्राईल के मुकाबिल अपने आपको मज़बूत किया।²~उसने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में फ़ौजें रखी, और यहूदाह के मुल्क में और इफ़्राईम के उन शहरों में जिनको उसके बाप आसा ने ले लिया था, चौकियाँ बिठाई।

³और खुदावन्द यहूसफ़त के साथ था, क्योंकि उसका ~चाल चलन उसके बाप दाऊद के पहले तरीक़ों पर थी, और वह बा'लीम का तालिब न हुआ,⁴~बल्कि अपने बाप-दादा के खुदा का तालिब हुआ और उसके हुक्मों पर चलता रहा, और इस्राईल के से काम न किए।

⁵इसलिए खुदावन्द ने उसके हाथ में हुक्मत को मज़बूत किया; और सारा यहूदाह यहूसफ़त के पास हदिए लाया, और उसकी दौलत और 'इज़ज़त बहुत ~फ़रावान हुई।⁶~उसका दिल खुदावन्द के रास्तों में बहुत ~खुश था, और उसने ऊँचे मक़ामों और यसीरतों को यहूदाह में से दूर कर दिया।

⁷और अपनी हुक्मत के तीसरे साल उसने बिनखैल और अबदियाह और ज़करियाह और नतनीएल और मीकायाह को, जो उसके हाकिम थे, यहूदाह के शहरों में ता'लीम देने को भेजा:⁸~और उनके साथ यह लावी थे या'नी समा'याह और नतनियाह और ज़बदियाह और 'असाहेल और समीरामोत और यहूनतन और अदूनियाह और तूबियाह और तूब अदूनियाह लावियों में से, और इनके साथ इलीसमा' और यहूराम काहिनों में से थे।⁹इसलिए उन्होंने खुदावन्द की शरी'अत की किताब साथ रख कर यहूदाह को ता'लीम दी, और वह यहूदाह के सब शहरों में गए और लोगों को ता'लीम दी।

¹⁰~और खुदावन्द का ख़ौफ़ यहूदाह के पास पास की मुल्कों की सब हुक्मतों पर छा गया, यहाँ तक कि उन्होंने यहूसफ़त से कभी जंग न की।¹¹~बा'ज़ कुछ फ़िलिस्ती यहूसफ़त के पास हदिए और खिराज में चौंदी लाए, और 'अरब के लोग भी उसके पास रेवड़ लाए, या'नी सात हज़ार सात सौ मेंढे और सात हज़ार सात सौ बकरे।

¹²और यहूसफ़त बहुत ही बढ़ा और उसने यहूदाह में क़िले' और ज़खीरे के शहर बनाए,¹³और यहूदाह के शहरों में उसके बहुत से कारोबार और यरूशलीम में उसके जंगी जवान या'नी ताक़तवर सूर्मा थे,

¹⁴और उनका शुमार अपने अपने आबाई ख़ान्दान के मुवाफ़िक़ यह था: यहूदाह में से हज़ारों के सरदार यह थे, सरदार 'अदना और उसके साथ तीन लाख ताक़तवर सूर्मा,¹⁵और उससे दूसरे दर्जे पर सरदार यूहनान और उसके साथ दो लाख अस्सी हज़ार,¹⁶और उससे नीचे 'अमसियाह बिन ज़िकरी था, जिसने अपने को बख़ुशी खुदावन्द के लिए पेश किया था, और उस के साथ दो लाख ताक़तवर सूर्मा थे;¹⁷और बिनयमीन में से, इलीदा' एक ताक़तवर सूर्मा था और उसके साथ कमान और सिपर से मुसल्लह दो लाख थे;¹⁸~और उससे नीचे यहूज़बद था, और उसके साथ एक लाख अस्सी हज़ार थे जो जंग के लिए तैयार रहते थे।

¹⁹यह बादशाह के ख़िदमत गुज़ार थे, और उनसे अलग थे जिनको बादशाह ने तमाम यहूदाह के फ़सीलदार शहरों में रखवा था।

Chapter 18

¹और यहूसफ़त की दौलत और 'इज़ज़त फरावान थी और उसने~अखीअब के साथ रिस्ता जोड़ा।²और कुछ सालों के बाद वह अखीअब के पास सामरिया को गया, और~अखीअब ने उसके और उसके साथियों के~लिए भेड़-बकरियाँ और बैल कसरत से ज़बह किए, और उसे अपने साथ रामात जिल'आद पर चढ़ायी करने की सलाह दी।³और इस्राईल के बादशाह~अखीअब ने यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त से कहा, "क्या तू मेरे साथ रामात जिल'आद को चलेगा? उसने जवाब दिया, "मैं वैसा ही हूँ जैसा तू है, और मेरे लोग ऐसे हैं जैसे तेरे लोग। इसलिए हम लड़ाई में तेरे साथ होंगे।"

⁴~और यहूसफ़त ने इस्राईल के बादशाह से कहा, "आज ज़रा खुदावन्द की बात पूँछ लें।"⁵तब इस्राईल के बादशाह ने नबियों को जो चार सौ जवान थे, इकट्ठा किया और उनसे पूछा, "हम रामात जिल'आद को जंग के लिए जाएँ या मैं बाज़ा ~रहूँ?" उन्होंने कहा, हमला कर क्योंकि खुदा उसे बादशाह के क्रब्ज़े में कर देगा।"

⁶लेकिन यहूसफ़त ने कहा, "क्या यहाँ इनके 'अलावा खुदावन्द का कोई नबी नहीं ताकि हम उससे पूछें?"⁷~शाह-ए-इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "एक शख्स है तो सही, है; जिसके ज़रिए" से हम खुदावन्द से पूछ सकते~लेकिन मुझे उससे नफ़रत है, क्योंकि वह मेरे हक़ में कभी नेकी की नहीं बल्कि हमेशा बुराई की पेशीनगोई करता है। वह शख्स मीकायाह बिन इमला है।" यहूसफ़त ने कहा, "बादशाह ऐसा न कहे।"⁸~तब शाह-ए-इस्राईल ने एक 'उहदेदार को बुला कर हुक्म किया, "मीकायाह बिन इमला को जल्द ले आ।"

⁹और शाह-ए-इस्राईल और शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त अपने अपने तख़्त पर अपना अपना लिबास पहने बैठे थे। वह सामरिया के फाटक के सहन पर खुली जगह में बैठे थे, और सब अम्बिया उनके सामने नबुव्वत कर रहे थे।¹⁰और सिदक्रियाह बिन कना'ना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाए और कहा, "खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि तू इनसे अरामियों को ढक लेगा, जब तक कि वह ख़त्म न हो जाएँ।"¹¹और सब नबियों ने ऐसी ही नबुव्वत की और कहते रहे कि रामात जिल'आद को जा और कामयाब हो, क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क्रब्ज़े में कर देगा।

¹²और उस क़ासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था, उससे यह कहा, "देख, सब अम्बिया एक ज़बान होकर बादशाह को खुश ख़बरी दे रहे हैं, इसलिए तेरी बात भी ज़रा उनकी बात की तरह हो; और तू खुशख़बरी ही देना।"¹³~मीकायाह ने कहा, "खुदावन्द की हयात की क़सम, जो कुछ मेरा खुदा फ़रमाएगा मैं वही कहूँगा।"¹⁴जब वह बादशाह के पास पहुँचा, तो बादशाह ने उससे कहा, "मीकायाह, हम रामात जिल'आद को जंग के लिए जाएँ या मैं बाज़ा रहूँ?" उसने कहा, "तुम चढ़ाई ~करो और कामयाब हो, और वह तुम्हारे हाथ में कर दिए जाएँगे।"

¹⁵बादशाह ने उससे कहा, "मैं तुझे कितनी बार क़सम देकर कहूँ कि तू मुझे खुदावन्द के नाम से हक़ के 'अलावा और कुछ न बताए?"¹⁶उसने कहा, "मैंने सब बनी-इस्राईल को पहाड़ों पर उन भेड़ों की तरह बिखरा देखा जिनका कोई चरवाहा न हो, और खुदावन्द ने कहा इनका कोई मालिक नहीं, इसलिए इनमें से हर शख्स अपने घर को सलामत लौट जाए।"

¹⁷तब शाह-ए-इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "क्या मैंने तुझ से कहा न था कि वह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करेगा?"¹⁸तब वह बोल उठा, "अच्छा, तुम खुदावन्द के बात को सुनो: मैंने देखा कि खुदावन्द अपने तख़्त पर बैठा है और सारा आसमानी लश्कर उसके दहने और बाएँ हाथ खड़ा है।

¹⁹~और खुदावन्द ने फ़रमाया, 'शाह-ए-इस्राईल अखी'अब को कौन बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल'आद में मक़ूल हो? और किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा।

²⁰तब एक रूह निकलकर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और कहने लगी, मैं उसे बहकाऊँगी। खुदावन्द ने उससे पूछा, "किस तरह?"²¹उसने कहा, 'मैं जाऊँगी, और उसके सब नबियों के मुँह में झूट बोलने वाली रूह बन जाऊँगी।' खुदावन्द ने कहा, 'तू उसे बहकाएगी, और ग़ालिब भी होगी; जा और ऐसा ही कर।

²²इसलिए देख, खुदावन्द ने तेरे इन सब नबियों के मुँह में झूट बोलने वाली रूह डाली है, और खुदावन्द ने तेरे हक़ में बुराई का हुक्म दिया है।"

²³तब सिदक्रियाह बिन कना'ना ने पास आकर मीकायाह के गाल पर मारा और कहने लगा, "खुदावन्द की रूह तुझ से कलाम करने को किस रास्ते मेरे पास से निकल कर गई?"²⁴~मीकायाह ने कहा, "तू उस दिन देख लेगा, जब तू अन्दर की कोठरी में छिपने को घुसेगा।"

²⁵और शाह-ए-इस्राईल ने कहा, "मीकायाह को पकड़ कर उसे शहर के नाज़िम अमून और यूआस शहज़ादे के पास लौटा ले जाओ,²⁶और कहना, 'बादशाह यूँ फ़रमाता है कि जब तक मैं सलामत वापस न आ जाऊँ, इस आदमी को कैदखाने में रखो, और उसे मुसीबत की रोटी खिलाना और मुसीबत का पानी पिलाना।"²⁷मीकायाह ने कहा, "अगर तू कभी सलामत वापस आए, तो खुदावन्द ने मेरे ज़रिए" कलाम ही नहीं किया।" और उसने कहा, "ऐ लोगों, तुम सब के सब सुन लो।"

²⁸इसलिए शाह-ए-इस्राईल और शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की।²⁹और शाह-ए-इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "मैं अपना भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा, लेकिन तू अपना लिबास पहने रह।" इसलिए शाह-ए-इस्राईल ने भेस बदल लिया, और वह लड़ाई में गए।³⁰~इधर शाह-ए-अराम ने अपने रथों के सरदारों को हुक्म दिया था, "शाह-ए-इस्राईल के सिवा, किसी छोटे या बड़े से जंग न करना।"

³¹और ऐसा हुआ कि जब रथों के सरदारों ने यहूसफ़त को देखा तो कहने लगे, "शाह-ए-इस्राईल यही है।" इसलिए वह उससे लड़ने को मुड़े। लेकिन यहूसफ़त चिल्ला उठा, और खुदावन्द ने उसकी मदद की; और खुदा ने उनको उसके पास से लौटा दिया।³²जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह-ए-इस्राईल नहीं है, तो उसका पीछा छोड़कर लौट गए।

³³और किसी शख्स ने यूँ ही~कमान खींची और शाह-ए-इस्राईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा। तब उसने अपने सारथी से कहा, "बाग मोड़ और मुझे लश्कर से निकाल ले चल, क्योंकि मैं बहुत ज़ख्मी हो गया हूँ।"³⁴और उस दिन जंग ख़ूब ही हुई, तो भी शाम तक शाह-ए-इस्राईल अरामियों के मुक़ाबिल अपने को अपने रथ पर संभाले रहा, और सूरज डूबने के वक़्त के करीब मर गया।

Chapter 19

¹और शाह-ए-यहूदाह यहूसफ़त यरूशलीम को अपने महल में सलामत लौटा।²तब हनानी गैबबीन का बेटा याहू उसके इस्तक्रबाल को निकला, और यहूसफ़त बादशाह से कहने लगा, क्या मुनासिब है कि तू शरीरों की मदद करे, और खुदावन्द के दुश्मनों से मुहब्बत रखे? इस बात की वजह-से खुदावन्द की तरफ़ से तुझ पर ग़ज़ब है।³तो भी तुझ में ख़ूबियाँ हैं; क्योंकि तू ने यसीरतों को मुल्क में से दफ़ा किया, और खुदा की तलाश में अपना दिल लगाया है।

⁴यहूसफ़त यरूशलीम में रहता था, और उसने फिर बैरसबा से इफ़्राईम के पहाड़ी तक लोगों के बीच दौरा करके, उनको खुदावन्द उनके बाप-दादा के खुदा की तरफ़ फिर मोड़ दिया।⁵उसने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में शहर-ब-शहर क़ाज़ी मुक़र्रर किए,

⁶और क़ाज़ियों से कहा, जो कुछ करो सोच समझकर करो, क्योंकि तुम आदमियों की तरफ़ से नहीं, बल्कि खुदावन्द की तरफ़ से 'अदालत करते हो; और वह फ़ैसले में तुम्हारे साथ है।' फिर खुदावन्द का ख़ौफ़ तुम में रहे; इसलिए ख़बरदारी से काम करना, क्योंकि खुदावन्द हमारे खुदा में बेइन्साफ़ी नहीं है, और न किसी की रूदारी न रिश्त ख़ोरी ~|

⁸~और यरूशलीम में भी यहूसफ़त ने लावियों और काहिनों और इस्राईल के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों में से लोगों को, खुदावन्द की 'अदालत और मुक़द्दमों के लिए मुक़र्रर किया; और वह यरूशलीम को लौटे।⁹और उसने उनको ताकीद की और कहा कि तुम खुदावन्द के ख़ौफ़ से दियानतदारी और कामिल दिल से ऐसा करना।

¹⁰जब कभी तुम्हारे भाइयों की तरफ़ से जो अपने शहरों में रहते हैं, कोई मुक़द्दमा तुम्हारे सामने आए, जो आपस के ख़ून से या शरी'अत और फ़रमान या क़ानून और 'अदालत से ता'अल्लुक़ रखता हो, तो तुम उनको आगाह कर देना कि वह खुदावन्द का गुनाह न करें, जिससे तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर ग़ज़ब नाज़िल हो। यह करो तो तुम से ख़ता न होगी।

¹¹और देखो, खुदावन्द के सब मु'आमिलों में अमरियाह काहिन तुम्हारा सरदार है, और बादशाह के सब मु'आमिलों में ज़बदियाह बिन इस्माईल है, जो यहूदाह के ख़ान्दान का रहनुमा है; और लावी भी तुम्हारे आगे सरदार होंगे। हौसले के साथ काम करना और खुदावन्द नेकों के साथ हो।

Chapter 20

¹उसके बा'द ऐसा हुआ कि बनी मोआब और बनी 'अम्मून और उनके साथ कुछ 'अम्मूनियों ने यहूसफ़त से लड़ने को चढ़ाई की।²तब चन्द लोगों ने आकर यहूसफ़त को खबर दी, "दरिया के पार अराम की तरफ़ से एक बड़ा गिरोह तेरे मुक़ाबिले को आ रहा है; और देख, वह हसासून-तमर में हैं, जो ऐनजदी है।"

³~और यहूसफ़त डर कर दिल से खुदावन्द का तालिब हुआ, और सारे यहूदाह में रोज़ा का 'ऐलान कराया।⁴और बनी यहूदाह खुदावन्द से मदद माँगने को इकट्ठे हुए, बल्कि यहूदाह के सब शहरों में से खुदावन्द से मदद माँगने को आए।

⁵और यहूसफ़त यहूदाह और यरूशलीम की जमा'अत के बीच, खुदावन्द के घर में नए सहन के आगे खड़ा हुआ⁶और कहा, "ऐ खुदावन्द, हमारे बाप-दादा के खुदा! क्या तू ही आसमान में खुदा नहीं? और क्या क़ौमों की सब मुल्कों पर हुकूमत करने वाला तू ही नहीं? ज़ोर और कुदरत तेरे हाथ में है, ऐसा कि कोई तेरा सामना नहीं कर सकता।⁷~ऐ हमारे खुदा, क्या तू ही ने इस सरज़मीन के बाशिंदों को अपनी क़ौम इस्राईल के आगे से निकाल कर इसे अपने दोस्त इब्राहीम की नसल को हमेशा के लिए नहीं दिया?

⁸चुनाँचे वह उसमें बस गए, और उन्होंने तेरे नाम के लिए उसमें एक मक़दिस बनाया है और कहते हैं कि;⁹~अगर कोई बला हम पर आ पड़े, जैसे तलवार या आफ़त या वबा या काल, तो हम इस घर के आगे और तेरे सामने खड़े होंगे (क्यूँकि तेरा नाम इस घर में है), और हम अपनी मुसीबत में तुझ से फ़रियाद करेंगे और तू सुनेगा और बचा लेगा।'

¹⁰इसलिए अब देख, 'अम्मून और मोआब और कोह-ए-श'ईर के लोग जिन पर तू ने बनी-इस्राईल को, जब वह मुल्क-ए-मिस से निकलकर आ रहे थे, हमला करने न दिया बल्कि वह उनकी तरफ़ से मुड़ गए और उनको हलाक न किया।¹¹~देख, वह हम को कैसा बदला देते हैं कि हम को तेरी मीरास से, जिसका तू ने हम को मालिक बनाया है, निकालने को आ रहे हैं।

¹²~ऐ हमारे खुदा क्या तू उनकी 'अदालत नहीं करेगा? क्यूँकि इस बड़े गिरोह के मुक़ाबिल जो हम पर चढ़ा आता है, हम कुछ ताक़त नहीं रखते और न हम यह जानते हैं कि क्या करें? बल्कि हमारी आँखें तुझ पर लगी हैं।"¹³और सारा यहूदाह अपने बच्चों और बीवियों और लड़कों समेत खुदावन्द के सामने खड़ा रहा।

¹⁴~तब जमा'अत के बीच यहज़ीएल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह बिन यईएल बिन मत्तनियाह, एक लावी पर जो बनी आसफ़ में से था, खुदावन्द की रूह नाज़िल हुई¹⁵और वह कहने लगा, "ऐ तमाम यहूदाह और यरूशलीम के बाशिन्दों, और ऐ बादशाह यहूसफ़त, तुम सब सुनो! खुदावन्द तुम को यूँ फ़रमाता है कि तुम इस बड़े गिरोह की वजह से न तो डरो और न घबराओ, क्यूँकि यह जंग तुम्हारी नहीं बल्कि खुदा की है।

¹⁶तुम कल उनका सामना करने को जाना। देखो, वह सीस की चढ़ाई से आ रहे हैं, और यरूएल के जंगल के सामने वादी के किनारे पर तुम को मिलेंगे।¹⁷~तुम को इस जगह में लड़ना नहीं पड़ेगा। ऐ यहूदाह और यरूशलीम, तुम क्रतार बाँधकर चुपचाप खड़े रहना और खुदावन्द की नज़ात जो तुम्हारे साथ है देखना। ख़ौफ़ न करो और न घबराओ; कल उनके मुक़ाबिला को निकलना, क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारे साथ है।

¹⁸और यहूसफ़त सिज्दे होकर ज़मीन तक झुका, और तमाम यहूदाह और यरूशलीम के रहने वालों ने खुदावन्द के आगे गिरकर उसको सिज्दा किया।¹⁹और बनी क्रिहात और बनी क्रोरह के लावी बुलन्द आवाज़ से खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हम्द करने को खड़े हो गए।

²⁰और वह सुबह सवेरे उठ कर तक़'अ के जंगल में निकल गए, और उनके चलते वक्रत यहूसफ़त ने खड़े होकर कहा, "ऐ यहूदाह और यरूशलीम के बाशिन्दों, मेरी सुनो। खुदावन्द अपने खुदा पर ईमान रखों, तो तुम क़ाइम किए जाओगे; उसके नबियों का यक़ीन करो, तो तुम कामयाब होगे।"²¹जब उसने क़ौम से सलाह कर लिया, तो उन लोगों को मुकर्रर किया जो लश्कर के आगे आगे चलते हुए खुदावन्द के लिए गाएँ, और पाकीज़गी की ख़ूबसूरती के साथ उसकी हम्द करें और कहें, कि खुदावन्द की शुक्रगुज़ारी करो क्यूँकि उसकी रहमत हमेशा तक है।

²²जब वह गाने और हम्द करने लगे, तो खुदावन्द ने बनी 'अम्मून और मोआब और कोह-ए-श'ईर के बाशिन्दों पर जो यहूदाह पर चढ़े आ रहे थे, कमीन वालों को बैठा दिया इसलिए वह मारे गए।²³क्यूँकि बनी 'अम्मून और मोआब कोह-ए-श'ईर के बाशिन्दों के मुक़ाबिले में खड़े हो गए कि उनको बिल्कुल तह-ए-तेग और हलाक करें, और जब वह श'ईर के बाशिन्दों का खातिमा कर चुके, तो आपस में एक दूसरे को हलाक करने लगे।

²⁴~और जब यहूदाह ने पहरेदारों ~के बुर्ज पर जो बियाबान में था, पहुँच कर उस गिरोह पर नज़र की तो क्या देखा कि उनकी लाशें ज़मीन पर पड़ी हैं, और कोई न बचा।

²⁵जब यहूसफ़त और उसके लोग उनका माल लूटने आए, तो उनको इस कसरत से दौलत और लाशे और क़ीमती जवाहिर जिनकी उन्होंने अपने लिए उतार लिया, मिले कि वह इनको ले जा भी न सके, और माल-ए-गनीमत इतना था कि वह तीन दिन तक उसके बटोर ने में लगे रहे।²⁶चौथे दिन वह बराकाह की वादी में इकट्ठे हुए क्यूँकि उन्होंने वहाँ खुदावन्द को मुबारक कहा; इसलिए कि उस मक़ाम का नाम आज तक बराकाह की वादी है।

²⁷तब वह लौटे, या'नी यहूदाह और यरूशलीम का हर शख्स उनके आगे आगे यहूसफ़त ताकि वह खुशी खुशी यरूशलीम को वापस जाएँ, क्यूँकि खुदावन्द ने उनको उनके दुश्मनों पर खुश किया था।²⁸इसलिए वह सितार और बरबत और नरसिंगे लिए यरूशलीम में खुदावन्द के घर में आए।

²⁹और खुदा का ख़ौफ़ उन मुल्कों की सब सल्तनतों पर छा गया, जब उन्होंने सुना कि इस्राईल कि दुश्मनों से खुदावन्द ने लड़ाई की है।³⁰इसलिए यहूसफ़त की हुकूमत में अम्म रहा, क्यूँकि उसके खुदा ने उसे चारों तरफ़ अमान बख़्शी।

³¹यहूसफ़त यहूदाह पर हुकूमत करता रहा। जब वह हुकूमत करने लगा तो पैतीस साल का था, और उसने यरूशलीम में पच्चीस साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अज़ूबाह था, जो सिलही की बेटी थी।³²वह अपने बाप आसा के रास्ते पर चला और उससे न मुड़ा, या'नी वही किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है।

³³~तो भी ऊँचे मक़ाम दूर न किए गए थे, और अब तक लोगों ने अपने बाप-दादा के खुदा से दिल नहीं लगाया था।

³⁴और यहूसफ़त के बाक़ी काम शुरू' से आखिर तक याहू बिन हनानी की तारीख में दर्ज हैं, जो इस्राईल के सलातीन की किताब में शामिल है

³⁵इसके बा'द यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने इस्राईल के बादशाह अखज़ियाह से, जो बड़ा बदकार था, सुलह किया;³⁶और इसलिए उससे सुलह किया कि तरसोस जाने को जहाज़ बनाए, और उन्होंने 'अस्यूनजाबर में जहाज़ बनाए।³⁷तब इली'अज़र बिन दूदावाहू ने, जो मरीसा का था, यहूसफ़त के बरखिलाफ़

नबुव्वत की और कहा, "इसलिए कि तू ने अखज़ियाह से सुलह कर लिया है, खुदावन्द ने तेरे बनाए को तोड़ दिया है।" फिर वह जहाज़ ऐसे टूटे कि तरसीस~को न जा सके।

Chapter 21

¹~और यहूसफ़त अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप-दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा यहूराम उसकी जगह हुकूमत करने लगा।²~उसके भाई जो यहूसफ़त के बेटे यह थे: या'नी 'अज़रियाह और यहीएल और ज़करियाह और 'अज़रियाह और मीकाईल और सफ़तियाह, यह सब शाह-ए-इसाईल यहूसफ़त के बेटे थे।³और उनके बाप ने उनको चाँदी और सोने और बेशक्रीमत चीज़ों के बड़े इनाम और फ़सीलदार शहर यहूदाह में 'अता किए, लेकिन हुकूमत यहूराम को दी क्योंकि वह पहलौठा था।

⁴जब यहूराम अपने बाप की हुकूमत पर क़ायम हो गया और अपने को ताक़तवर कर लिया, तो उसने अपने सब भाइयों को और इसाईल के कुछ सरदारों को भी तलवार से क़त्ल किया⁵~यहूराम जब हुकूमत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और उसने आठ साल यरूशलीम में हुकूमत की।

⁶और वह अख़ीअब के घराने की तरह इसाईल के बादशाहों के रास्ते पर चला, क्योंकि अख़ीअब की बेटी उसकी बीवी थी; और उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है।⁷तो भी खुदावन्द ने दाऊद के ख़ान्दान को हलाक करना न चाहा, उस 'अहद की वजह से जो उसने दाऊद से बाँधा था, और जैसा उसने उसे और उसकी नसल को हमेशा के लिए एक चिराग़ देने का वा'दा किया था।

⁸~उसी के दिनों में अदोम यहूदाह की हुकूमत से अलग हो गया और अपने ऊपर एक बादशाह बना लिया।⁹~तब यहूराम अपने अमीरों और अपने सब रथों को साथ लेकर उबर कर गया और रात को उठकर अदोमियों को, जो उसे और रथों के सरदारों को घेरे हुए थे मारा।¹⁰~इसलिए अदोमी यहूदाह से आज तक अलग हैं, और उसी वक़्त लिबनाह भी उसके हाथ से निकल गया, क्योंकि उसने खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा को छोड़ दिया था।

¹¹और इसके 'अलावा उसने यहूदाह के पहाड़ों पर ऊँचे मक़ाम बनाए और यरूशलीम के बाशिन्दों को ज़िनाकार बनाया, और यहूदाह को गुमराह किया।

¹²और एलियाह नबी से उसे इस मज़मून का ख़त मिला, "खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा ऐसा फ़रमाता है, इसलिए कि तू न अपने बाप यहूसफ़त के रास्तों पर और न यहूदाह के बादशाह आसा के रास्तों पर चला,¹³बल्कि इसाईल के बादशाहों के रास्ते पर चला है, और यहूदाह और यरूशलीम के बाशिन्दों को ज़िनाकार बनाया जैसा अख़ी'अब के ख़ान्दान ने किया था; और अपने बाप के घराने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे क़त्ल भी किया।¹⁴इसलिए देख, खुदावन्द तेरे लोगों को और तेरे बेटों और तेरी बीवियों को और तेरे सारे माल को बड़ी आफ़तों से मारेगा।¹⁵और तू अन्तड़ियों के मर्ज़ की वजह से सख़्त बीमार हो जाएगा, यहाँ तक कि तेरी अन्तड़ियाँ उस मर्ज़ की वजह से हर दिन निकलती जाएँगी।"

¹⁶और खुदावन्द ने यहूराम के खिलाफ़ फ़िलिस्तिनियों और उन 'अरबों का, जो कूशियों की सिम्त में रहते हैं दिल उभारा।¹⁷इसलिए वह यहूदाह पर चढ़ाई करके उसमें घुस आए, और सारे माल को जो बादशाह के घर में मिला और उसके बेटों और उसकी बीवियों को भी ले गए, ऐसा कि यहूआखज़ के 'अलावा जो उसके बेटों में सबसे छोटा था उसका कोई बेटा बाक़ी न रहा।

¹⁸~और इस सबके बा'द खुदावन्द ने एक लाइलाज मर्ज़ उसकी अन्तड़ियों में लगा दिया।¹⁹कुछ मुद्दत के बा'द, दो साल के आख़िर में ऐसा हुआ कि उसके रोग के मारे उसकी अन्तड़ियाँ निकल पड़ी और वह बुरी बीमारियों से मर गया। उसके लोगों ने उसके लिए आग न जलाई, जैसा उसके बाप-दादा के लिए जलाते थे।²⁰वह बत्तीस साल का था जब हुकूमत करने लगा और उसने आठ साल यरूशलीम में हुकूमत की; और वह बग़ैर मातम के रुख़सत हुआ और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया, लेकिन शाही क़ब्रों में नहीं।

Chapter 22

¹और यरूशलीम के बाशिंदों ने उसके सबसे छोटे बेटे अखज़ियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया; क्योंकि लोगों के उस जत्थे ने जो 'अरबों के साथ छावनी में आया था, सब बड़े बेटों को क्रल कर दिया था। इसलिए शाह-ए-यहूदाह यहूराम का बेटा अखज़ियाह बादशाह हुआ।²अखज़ियाह बयालीस' साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने यरूशलीम में एक साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अतलियाह था, जो 'उमरी की बेटी थी।³~वह भी अखीअब के खान्दान के रास्ते पर चला, क्योंकि उसकी माँ उसको बुराई की सलाह देती थी।

⁴उसने खुदावन्द की नज़र में बुराई की जैसा अखीअब के खान्दान ने किया था, क्योंकि उसके बाप के मरने के बाद वही उसके सलाहकार थे, जिससे उसकी बर्बादी हुई।⁵और उसने उनके सलाह पर 'अमल भी किया, और शाह-ए-इसाईल अखीअब के बेटे यहूराम के साथ शाह-ए-अराम हज़ाएल से रामात जिल'आद में लड़ने को गया, और अरामियों ने यहूराम को ज़ख्मी किया;

⁶और वह यज़र'एल को उन ज़ख्मों के 'इलाज के लिए लौटा जो उसे रामा में शाह-ए-अराम हज़ाएल के साथ लड़ते वक़्त उन लोगों के हाथ से लगे थे, और शाह-ए-यहूदाह यहूराम का बेटा 'अज़रियाह, यहूराम बिन अखीअब को यज़र'एल में देखने गया क्योंकि वह बीमार था।

⁷अखज़ियाह की हलाकत खुदा की तरफ़ से ऐसी हुई कि वह यहूराम के पास गया, क्योंकि जब वह पहुँचा तो यहूराम के साथ याहू बिन निमसी से लड़ने को गया, जिसे खुदावन्द ने अखीअब के खान्दान को काट डालने के लिए मसह किया था।⁸और जब याहू अखीअब के खानदान को सज़ा दे रहा था तो उसने यहूदाह के सरदारों और अखज़ियाह के भाइयों ~के बेटों को अखज़ियाह की खिदमत करते पाया और उनको क्रल किया।

⁹और उसने अखज़ियाह को ढूँढ़ा यह ~सामरिया में छिपा था इसलिए ~वह उसे पकड़ कर याहू के पास लाये और उसे क्रल किया और उन्होंने उसे दफ़न किया क्योंकि वह कहने लगे, "वह यहूसफ़त का बेटा है, जो अपने सारे दिल से खुदावन्द का तालिब रहा।" और अखज़ियाह के घराने में हुकूमत संभालने की ताक़त किसी में न रही।

¹⁰जब अखज़ियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा मर गया, तो उसने उठ कर यहूदाह के घराने की सारी शाही नसल को मिटा ~दिया।¹¹लेकिन बादशाह की बेटी यहूसब'अत अखज़ियाह के बेटे यूआस को बादशाह के बेटों के बीच से जो क्रल किए गए, चुरा ले गई और उसे और उसकी दाया को बिस्तरों की कोठरी में रखा। इसलिए यहूराम बादशाह की बेटी यहूयदा' काहिन की बीवी यहूसब'अत ने (चूँकि वह अखज़ियाह की बहन थी) उसे अतलियाह से ऐसा छिपाया कि वह उसे क्रल करने न पायी।¹²और वह उनके पास खुदा की हैकल में छः साल तक छिपा रहा, और 'अतलियाह मुल्क पर हुकूमत करती रही।

Chapter 23

¹सातवे साल यहूयदा' ने ज़ोर पकड़ा और सैकड़ों के सरदारों या'नी 'अज़रियाह बिन यहूराम और इस्मा'ईल बिनयहूहनान और अज़रियाह बिन 'ओबेद और मासियाह बिन 'अदायाह और इलीसाफ़त बिन ज़िकरी से 'अहद बाँधा।²वह यहूदाह में फिरे, और यहूदाह के सब शहरों में से लावियों को, और इस्राईल के आबाई खान्दानों के सरदारों को इकट्ठा किया, और वह यरूशलीम में आए।³और सारी जमा'अत ने खुदा के घर में बादशाह के साथ 'अहद बाँधा, और यहूयदा' ने उनसे कहा, "देखो! यह शाहज़ादा जैसा खुदावन्द ने बनी दाऊद के हक़ में फ़रमाया है, हुकूमत करेगा।

⁴जो काम तुम को करना है वह यह है कि तुम काहिनों और लावियों में से जो सब्त को आते हो, एक तिहाई दरबान हो,⁵और एक तिहाई शाही महल पर, और एक तिहाई बुनियाद के फाटक पर; और सब लोग खुदावन्द के घर के सहनों में हो।

⁶पर खुदावन्द के घर में सिवा काहिनों के और उनके जो लावियों में से खिदमत करते हैं, और कोई न आने पाए वही अन्दर आए क्योंकि वह मुकद्दस है लेकिन सब लोग खुदावन्द का पहरा देते रहें।⁷~और लावी अपने अपने हाथ में अपने हथियार लिए हुए बादशाह को चारों तरफ़ से घेरे रहे, और जो कोई हैकल में आए क़त्ल किया जाए और बादशाह जब अन्दर आए और बाहर निकले तो तुम उसके साथ रहना।"

⁸इसलिए लावियों और सारे यहूदाह ने यहूयदा' काहिन के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ किया, और उनमें से हर शख्स ने अपने लोगों को लिया, या'नी उनको जो सब्त को अन्दर आते थे और उनको जो सब्त को बाहर चले जाते थे; क्योंकि यहूयदा' काहिन ने बारी वालों को ~रुखसत नहीं किया था।⁹और यहूयदा' काहिन ने दाऊद बादशाह की बर्छियाँ और ढालें और फरियाँ, जो खुदा के घर में थीं, सैकड़ों सरदारों को दीं।

¹⁰और उसने सब लोगों को जो अपना अपना हथियार हाथ में लिए हुए थे, हैकल की दहनी तरफ़ से उसकी बाई तरफ़ तक, मज़बह और हैकल के पास बादशाह के चारो तरफ़ खड़ा कर दिया।¹¹फिर वह शाहज़ादे को बाहर लाए, और उसके सिर पर ताज रखकर गवाही नामा दिया और उसे बादशाह बनाया; और यहूयदा' और उसके बेटों ने उसे मसह किया, और वह बोल उठे, "बादशाह सलामत रहे।"

¹²जब 'अतलियाह ने लोगों का शोर सुना, जो दौड़ दौड़ कर बादशाह की तारीफ़ कर रहे थे, तो वह खुदावन्द के घर में लोगों के पास आई।¹³और उसने निगाह की और क्या देखा कि बादशाह फाटक में अपने सुतून के पास खड़ा है, और बादशाह के नज़दीक हाकिम और नरसिंगे हैं और सारी ममलकत के लोग खुश हैं और नरसिंगे फूंक रहे हैं, और गानेवाले बाजों को लिए हुए मदहसराई करने में पेशवाई कर रहे हैं। तब 'अतलियाह ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, "गद़ है! गद़!"

¹⁴तब यहूयदा' काहिन सैकड़ों के सरदारों को जो लश्कर पर मुक़र्रर थे, बाहर ले आया और उनसे कहा कि उसको सफ़्रों के बीच करके निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले वह तलवार से मारा जाए। क्योंकि काहिन कहने लगा कि खुदावन्द के घर में उसे क़त्ल न करो।¹⁵इसलिए उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह शाही महल के घोड़ा फाटक के सहन को गई, और वहाँ उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया

¹⁶फिर यहूयदा' ने अपने और सब लोगों और बादशाह के बीच 'अहद बाँधा कि वह खुदावन्द के लोग हों।¹⁷तब सब लोग बा'ल के मन्दिर को गए और उसे ढाया; और उन्होंने उसके मज़बहों और उसकी मूरतों को चकनाचूर किया, और बा'ल के पुजारी मतान को मज़बहों के सामने क़त्ल किया।

¹⁸और यहूयदा' ने खुदावन्द की हैकल की खिदमत लावी काहिनों के हाथ में सौंपी, जिनको दाऊद' ने खुदावन्द की हैकल में अलग अलग ठहराया था कि खुदावन्द की सोख्तनी कुर्बानियाँ जैसा मूसा की तौरेत में लिखा है, खुशी मनाते हुए और गाते हुए दाऊद के दस्तूर के मुताबिक़ अदा करेंगे।¹⁹~और उसने खुदावन्द की हैकल के फाटकों पर दरबानों को बिठाया, ताकि जो कोई किसी तरह से नापाक हो, अन्दर आने न पाए।

²⁰और उसने सैकड़ों के सरदारों और हाकिम और क़ौम के हाकिमों और मुल्क के सब लोगों को साथ लिया, और बादशाह को खुदावन्द की हैकल से ले आया, और वह ऊपर के फाटक से शाही महल में आए और बादशाह की तख़्त-ए-हुकूमत पर बिठाया।²¹तब मुल्क के सब लोगों ने खुशी मनाई और शहर में अमन हुआ। उन्होंने 'अतलियाह को तलवार से क़त्ल कर दिया।

Chapter 24

¹~यूआस सात साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने चालीस साल यरूशलीम में हुक्मत की। उसकी माँ का नाम ज़िबियाह था, जो बैरसबा' की थी।² और यूआस यहूयदा' काहिन के जीते जी वही, जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, करता रहा।³ ~यहूयदा' ने उसे दो बीवियाँ ब्याह दीं, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।

⁴ इसके बा'द यूँ हुआ कि यूआस ने खुदावन्द के घर की मरम्मत का 'इरादा किया।⁵ इसलिए उसने काहिनों और लावियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि यहूदाह के शहरों में जा जा कर, सारे इस्राईल से साल-ब-साल अपने खुदा के घर की मरम्मत के लिए रुपये जमा' किया करो, और इस काम में तुम जल्दी करना। तो भी लावियों ने कुछ जल्दी न की।

⁶ ~तब बादशाह ने यहूयदा सरदार को बुलाकर उससे कहा कि तू ने लावियों से क्यूँ तकाज़ा नहीं किया कि वह शहादत के खेमे के लिए, यहूदाह और यरूशलीम से खुदावन्द के बन्दे और इस्राईल की जमा' अत के खादिम मूसा का महसूल लाया करें? क्यूँकि उस शरीर 'औरत' अतलियाह के बेटों ने खुदा के घर में छेद कर दिए थे, और खुदावन्द के घर की सब पाक की हुई चीजें भी उन्होंने बा'लीम को दे दी थीं।

⁸ तब बादशाह ने हुक्म दिया, और उन्होंने एक सन्दूक बना कर उसे खुदावन्द के घर के दरवाज़े के बाहर रखा;⁹ और यहूदाह और यरूशलीम में 'ऐलान किया कि लोग वह महसूल जिसे बन्दा-ए-खुदा मूसा ने वीरान में इस्राईल पर लगाया था, खुदावन्द के लिए लाएँ।¹⁰ और सब सरदार और सब लोग खुश हुए, और लाकर उस सन्दूक में डालते रहे जब तक पूरा न कर दिया।

¹¹ जब सन्दूक लावियों के हाथ से बादशाह के मुख्तारों के पास पहुँचा, और उन्होंने देखा कि उसमें बहुत नक़दी है, तो बादशाह के मुन्शी और सरदार काहिन के नाइब ने आकर सन्दूक को खाली किया और उसे लेकर फिर उसकी जगह पहुँचा दिया; और हर दिन ऐसा ही कर के उन्होंने बहुत सी नक़दी जमा' कर ली।¹² ~फिर बादशाह और यहूयदा' ने उसे उनको दे दिया जो खुदावन्द के घर की 'इबादत के काम पर मुक़र्रर थे, और उन्होंने पत्थर तराशों और बढ़इयों को खुदावन्द के घर को बहाल करने के लिए और लोहारों और ठठेरों को भी खुदावन्द के घर की मरम्मत के लिए मज़दूरी पर रखा।

¹³ इसलिए ~कारीगर लग गए और काम उनके हाथ से पूरा होता गया, और उन्होंने खुदा के घर को उसकी पहली हालत पर करके उसे मज़बूत कर दिया।¹⁴ और जब उसे पूरा कर चुके तो बाक़ी रुपया बादशाह और यहूयदा' के पास ले आए, जिससे खुदावन्द के घर के लिए बर्तन या'नी खिदमत के और कुर्बानी पेश करने के बर्तन और चमचे और सोने और चाँदी के बर्तन बने। और वह यहूयदा' के जीते जी खुदावन्द के घर में हमेशा~सोख्तनी कुर्बानियाँ अदा करते रहे।

¹⁵ लेकिन यहूयदा' ने बुढ़ा और 'उम्र दराज़ होकर वफ़ात पाई; और जब वह मरा तो एक सौ तीस साल का था।¹⁶ और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में बादशाहों के साथ दफ़न किया, क्यूँकि उसने इस्राईल में, और खुदा और उसके घर की खातिर नेकी की थी।

¹⁷ यहूयदा' के मरने के बा'द यहूदाह के सरदार आकर बादशाह के सामने कोर्निश बजा लाए; तब बादशाह ने उनकी सुनी,¹⁸ और वह खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के घर को छोड़ कर यसीरतों और बुतों की 'इबादत करने लगे। और उनकी इस ख़ता की वजह से यहूदाह और यरूशलीम पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ।¹⁹ ~तो भी खुदावन्द ने नबियों को उनके पास भेजा ताकि उनको उसकी तरफ़ फेर लाएँ, और वह उनको इल्ज़ाम देते रहे, पर उन्होंने कान न लगाया।

²⁰ तब खुदा की रूह यहूयदा' काहिन के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल हुई, इसलिए वह लोगों से बुलन्द जगह पर खड़ा होकर कहने लगा, "खुदा ऐसा फ़रमाता है कि~तुम क्यूँ खुदावन्द के हुक्मों से बाहर जाते हो कि ऐसे खुशहाल नहीं रह सकते? चूँकि तुम ने खुदावन्द को छोड़ा है, उसने भी तुम को छोड़ दिया।"²¹ तब उन्होंने उसके खिलाफ़ साज़िश की, और बादशाह के हुक्म से खुदावन्द के घर के सहन में उसे पत्थराव कर दिया।²² ऐसे यूआस बादशाह ने उसके बाप यहूयदा' के एहसान को जो उसने उस पर किया था, याद न रखा बल्कि उसके बेटे को क्रल किया। और मरते वक़्त उसने कहा, "खुदावन्द इसको देखे, और इन्तक़ाम ले।"

²³ ~उसी साल के आखिर में ऐसा हुआ कि अरामियों की फ़ौज ने उस पर चढ़ाई की, और यहूदाह और यरूशलीम में आकर लोगों में से क़ौम के सब सरदारों को हलाक किया और उनका सारा माल लूटकर दमिश्क के बादशाह के पास भेज दिया।²⁴ अगरचे अरामियों के लश्कर से आदमियों का छोटा ही जत्था आया, तोभी खुदावन्द ने एक बहुत बड़ा लश्कर उनके हाथ में कर दिया, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा को छोड़ दिया था। इसलिए उन्होंने यूआस को उसके किए का बदला दिया।

²⁵ ~और जब वह उसके पास से लौट गए (उन्होंने उसे बड़ी बीमारियों में मुब्तला छोड़ा), तो उसी के मुलाज़िमें ने यहूयदा' काहिन के बेटों के खून की वजह से उसके खिलाफ़ साज़िश की और उसे उसके बिस्तर पर क्रल किया, और वह मर गया; और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में तो दफ़न किया, लेकिन उसे बादशाहों की कब्रों में दफ़न न किया।²⁶ उसके खिलाफ़ साज़िश करने वाले यह हैं: 'अम्मूनिया समा' अत का बेटा ज़बद, और मो'आबिया सिमरियत का बेटा यहूजबद।

²⁷ अब रहे उसके बेटे और वह बड़े बौझ जो उस पर रखे गए, और खुदा के घर का दोबारा बनाना; इसलिए देखो, यह सब कुछ बादशाहों की किताब की तफ़सीर में लिखा है। और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 25

¹अमसियाह पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने उनतीस साल यरूशलीम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम यहूअदान था, जो यरूशलीम की थी।²~उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, लेकिन कामिल दिल से नहीं।

³जब वह हुकूमत पर जम गया तो उसने अपने उन मुलाज़िम्ओं को, जिन्होंने उसके बाप बादशाह को मार डाला था क़त्ल किया,⁴~लेकिन उनकी औलाद को जान से नहीं मारा बल्कि उसी के मुताबिक़ किया जो मूसा की किताब तौरत में लिखा है, जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया कि बेटों के बदले बाप-दादा न मारे जाएँ, और न बाप-दादा के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर आदमी अपने ही गुनाह के लिए मारा जाए।

⁵इसके अलावा अमसियाह ने यहूदाह को इकट्ठा किया, और उनको उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक़ तमाम मुल्क-ए-यहूदाह और बिनयमीन में हज़ार हज़ार के सरदारों और सौ सौ के सरदारों के नीचे ठहराया; और उनमें से जिनकी 'उम्र बीस साल या उससे ऊपर थी उनको शुमार किया, और उनको तीन लाख चुने हुए जवान पाया जो जंग में जाने के क़ाबिल और बर्छी और ढाल से काम ले सकते थे।⁶और उसने सौ क़िन्तार चाँदी देकर इस्राईल में से एक लाख ज़बरदस्त सूर्मा नौकर रखे।

⁷~लेकिन एक नबी ने उसके पास आकर कहा, "ऐ बादशाह, इस्राईल की फ़ौज तेरे साथ जाने न पाए, क्योंकि खुदावन्द इस्राईल या'नी सब बनी इफ़्राईम के साथ नहीं है।⁸लेकिन अगर तू जाना ही चाहता है तो जा और लड़ाई के लिए मज़बूत हो, खुदा तुझे दुश्मनों के आगे गिराएगा क्योंकि खुदा में संभालने और गिराने की ताक़त है।"

⁹अमसियाह ने उस नबी से कहा, "लेकिन सौ क़िन्तारों के लिए जो मैंने इस्राईल के लश्कर को दिए, हम क्या करें?" उस नबी ने जवाब दिया, "खुदावन्द तुझे इससे बहुत ज़्यादा दे सकता है।"¹⁰~तब अमसियाह ने उस लश्कर को जो इफ़्राईम में से उसके पास आया था जुदा किया, ताकि वह फिर अपने घर जाएँ। इस वजह से उनका गुस्सा यहूदाह पर बहुत भड़का, और वह बहुत गुस्से में घर को लौटे।

¹¹~और अमसियाह ने हौसला बाँधा और अपने लोगों को लेकर वादी-ए-शोर को गया, और बनी श'ईर में से दस हज़ार को मार दिया;¹²और दस हज़ार को बनी यहूदाह ज़िन्दा पकड़ कर ले गए, और उनको एक चट्टान की चोटी पर पहुँचाया और उस चट्टान की चोटी पर से उनको नीचे गिरा दिया, ऐसा कि सब के सब टुकड़े टुकड़े हो गए।

¹³लेकिन उस लश्कर के लोग जिनको अमसियाह ने लौटा दिया था कि उसके साथ जंग में न जाएँ, सामरिया से बैतहौरून तक यहूदाह के शहरों पर टूट पड़े और उनमें से तीन हज़ार जवानों को मार डाला और बहुत सी लूट ले गए।

¹⁴जब अमसियाह अदूमियों के क़िताल से लौटा, तो बनी श'ईर के मा'बूदों को लेता आया और उनको नस्ब किया ताकि वह उसके मा'बूद हों, और उनके आगे सिज्दा किया और उनके आगे खुशबू जलाया।¹⁵~इसलिए खुदावन्द का ग़ज़ब अमसियाह पर भड़का और उसने एक नबी को उसके पास भेजा, जिसने उससे कहा, "तू उन लोगों के मा'बूदों का तालिब क्यों हुआ, जिन्होंने अपने ही लोगों को तेरे हाथ से न छुड़ाया?"

¹⁶वह उससे बातें कर ही रहा था कि उसने उससे कहा कि क्या हम ने तुझे बादशाह का सलाहकार बनाया है? चुप रह, तू क्यों मार खाए? तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया कि मैं जानता हूँ कि खुदा का इरादा यह है कि तुझे हलाक करे, इसलिए कि तू ने यह किया है और मेरी सलाह नहीं मानी।

¹⁷तब यहूदाह के बादशाह अमसियाह ने सलाह करके इस्राईल के बादशाह यूआस बिन यहूआखज़ बिन याहू के पास कहला भेजा कि ज़रा आ तो, हम एक दूसरे का मुक़ाबिला करें।

¹⁸इसलिए इस्राईल के बादशाह यूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह को कहला भेजा, कि लुबनान के ऊँट-कटारे ने लुबनान के देवदार को पैग़ाम भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे; इतने में एक जंगली दरिंदा जो लुबनान में रहता था, गुज़रा और उसने ऊँटकटारे को रौंद डाला।¹⁹तू कहता है, "देख मैंने अदोमियों को मारा, इसलिए तेरे दिल में घमण्ड समाया है कि फ़िख़्र करे; घर ही में बैठा रह तू क्यों अपने नुक़सान के लिए दस्तअन्दाज़ी करता है कि तू भी गिरे और तेरे साथ यहूदाह भी?"

²⁰~लेकिन अमसियाह ने न माना; क्योंकि यह खुदा की तरफ़ से था कि वह उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दे, इसलिए कि वह अदूमियों के मा'बूदों के तालिब हुए थे।²¹~इसलिए इस्राईल का बादशाह यूआस चढ़ आया, और वह और शाह-ए-यहूदाह अमसियाह यहूदाह के बैतशम्स में एक दूसरे के मुक़ाबिल हुए।²²और यहूदाह ने इस्राईल के मुक़ाबिले में शिकस्त खाई, और उनमें से हर एक अपने डेरे को भागा।

²³और शाह-ए-इस्राईल यूआस ने शाह-ए-यहूदाह अमसियाह बिन यूआस बिन यहूआखज़ को बैतशम्स में पकड़ लिया और उसे यरूशलीम में लाया, और यरूशलीम की दीवार इफ़्राईम के फाटक से कोने के फाटक तक चार सौ हाथ ढा दी।²⁴और सारे सोने और चाँदी और सब बर्तनों को जो 'ओबेद अदोम के पास खुदा के घर में मिले, और शाही महल के खज़ानों और कफ़ीलों को भी लेकर सामरिया को लौटा।

²⁵~और शाह-ए-यहूदाह अमसियाह बिन यूआस, शाह-ए-इस्राईल यूआस बिन यहूआखज़ के मरने के बाद पंद्रह साल ज़िन्दा रहा।²⁶अमसियाह के बाक़ी काम शुरू से आख़िर तक, क्या वह यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में क़लमबन्द नहीं हैं?

²⁷~जब से अमसियाह खुदावन्द की पैरवी से फिरा, तब ही से यरूशलीम के लोगों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की, इसलिए वह लकीस को भाग गया। लेकिन उन्होंने लकीस में उसके पीछे लोग भेजकर उसे वहाँ क़त्ल किया।²⁸और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और यहूदाह के शहर में उसके बाप-दादा के साथ उसे दफ़न किया।

Chapter 26

¹~तब यहूदाह के सब लोगों ने 'उज़्ज़ियाह को जो सोलह साल का था, लेकर उसे उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह बनाया।² उसने बादशाह के अपने बाप-दादा के साथ सो जाने के बा'द ऐलूत को ता'मीर किया और उसे फिर यहूदाह में शामिल कर दिया।³~'उज़्ज़ियाह सोलह साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने यरूशलीम में बावन साल हुक्मत की। उसकी माँ का नाम यकूलियाह था, जो यरूशलीम की थी।

⁴ उसने वही जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक उसी के मुताबिक़ किया जो उसके बाप अमसियाह ने किया था।⁵ और वह ज़करियाह के दिनों में जो खुदा के ख़्वाबो ~में माहिर था, खुदा का तालिब रहा और जब तक वह खुदावन्द का तालिब रहा खुदा ने उसे कामयाब रखा।

⁶ और ~वह निकला और फ़िलिस्तिनियों से लड़ा, और जात की दीवार को और यबना की दीवार को और अशदूद की दीवार को ढा दिया, और अशदूद के मुल्क में और फ़िलिस्तिनियों के बीच शहर ता'मीर किए।⁷ और खुदा ने फिलिस्तिनियों और जूरबाल के रहने वाले 'अरबों और मऊनियों के मुकाबिले में उसकी मदद की।

⁸~और 'अम्मूनी 'उज़्ज़ियाह को नज़राने देने लगे और उसका नाम मिस्र की सरहद तक फैल गया, क्योंकि वह बहुत ताक़तवर हो गया था।

⁹ और उज़्ज़ियाह ने यरूशलीम में कोने के फाटक और वादी के फाटक और दीवार के मोड़ पर बुर्ज बनवाए और उनको मज़बूत किया।¹⁰ और उसने वीरान में बुर्ज बनवाए और बहुत से हौज़ खुदवाए, क्योंकि नशेब की ज़मीन में भी और मैदान में उसके बहुत चौपाए थे। और पहाड़ों और ज़रखेज़ खेतों में उसके किसान और ताकिस्तानों के माली थे, क्योंकि काश्तकारी उसे बहुत पसंद थी।

¹¹~इसके 'अलावा उज़्ज़ियाह के पास जंगी जवानों का लश्कर था जो य'ईएल मुन्शी और मासियाह नाज़िम के शुमार के मुताबिक़, गोल गोल होकर बादशाह के एक सरदार हनानियाह के मातहत लड़ाई पर जाता था।¹² और आबाई ख़ान्दानों के सरदारों या'नी ज़बरदस्त सूर्माओं का कुल शुमार दो हज़ार छः सौ था।¹³ और उनके मातहत तीन लाख साढ़े सात हज़ार का ज़बरदस्त लश्कर था, जो दुश्मन के मुकाबिले में बादशाह की मदद करने को बड़े ज़ोर से लड़ता था।

¹⁴ और उज़्ज़ियाह ने उनके लिए या'नी सारे लश्कर के लिए ढालें और बछें और खूद और बकतर और कमानें और फ़लाखन के लिए पत्थर तैयार किए।¹⁵ और उसने यरूशलीम में हुनरमंद लोगों की ईजाद की हुई कीलें बनवायीं ताकि वह तीर चलाने और बड़े बड़े पत्थर फेंकने के लिए बुर्जों और फ़सीलों पर हों। इसलिए उसका नाम दूर तक फैल गया क्योंकि उसकी मदद ऐसी 'अजीब तरह से हुई कि वह ताक़तवर हो गया

¹⁶~लेकिन जब वह ताक़तवर हो गया, तो उसका दिल इस क्रदर फूल गया कि वह खराब हो गया और खुदावन्द अपने खुदा की नाफ़रमानी करने लगा; चुनाँचे वह खुदावन्द की हैकल में गया ताकि खुशबू की कुर्बानगाह पर खुशबू जलाए।¹⁷~तब 'अज़रियाह काहिन उसके पीछे पीछे गया और उसके साथ खुदावन्द के अस्सी काहिन और थे जो बहादुर आदमी थे,¹⁸ और उन्होंने 'उज़्ज़ियाह बादशाह का सामना किया और उससे कहने लगे, "ऐ 'उज़्ज़ियाह, खुदावन्द के लिए खुशबू जलाना तेरा काम नहीं, बल्कि काहिनों या'नी हारून के बेटों का काम है, जो खुशबू जलाने के लिए पाक किए गए हैं। इसलिए मक़दिस से बाहर जा, क्योंकि तू ने खता की है, और खुदावन्द~खुदा की तरफ़ से यह तेरी 'इज़ज़त का ज़रिया' न होगा।"

¹⁹ तब 'उज़्ज़ियाह गुस्सा हुआ, और खुशबू जलाने को बख़्ख़रदान अपने हाथ में लिए हुए था; और जब वह काहिनों पर झुंझला रहा था, तो काहिनों के सामने ही खुदावन्द के घर के अन्दर खुशबू की कुर्बानगाह के पास उसकी पेशानी पर कोढ़ फूट निकला।²⁰ और सरदार काहिन 'अज़रियाह और सब काहिनों ने उस पर नज़र की और क्या देखा कि उसकी पेशानी पर कोढ़ निकला है। इसलिए उन्होंने उसे जल्द वहाँ से निकाला, बल्कि उसने खुद भी बाहर जाने में जल्दी की क्योंकि खुदावन्द की मार उस पर पड़ी थी।

²¹~चुनाँचे 'उज़्ज़ियाह बादशाह अपने मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और कोढ़ी होने की वजह से एक अलग घर में रहता था; क्योंकि वह खुदावन्द के घर से काट डाला गया था। और उसका बेटा यूताम बादशाह के घर का मुख्तार था और मुल्क के लोगों का इन्साफ़ करता था।

²² और 'उज़्ज़ियाह के बाक़ी काम शुरू' से आख़िर तक आमूस के बेटे यसायाह नबी ने लिखे।²³ इसलिए 'उज़्ज़ियाह अपने बाप-दादा के साथ सो गया; और उन्होंने क़ब्रिस्तान के मैदान में जो बादशाहों का था, उसके बाप-दादा के साथ उसे दफ़न किया क्योंकि वह कहने लगे, "वह कोढ़ी है।" और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 27

¹यूताम पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने सोलह साल यरूशलीम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम यरूसा था जो सदोक् की बेटी थी।²और उसने वही जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक ऐसा ही किया जैसा उसके बाप उज़्जियाह ने किया था, मगर वह खुदावन्द की हैकल में न घुसा, लेकिन लोग गुनाह करते ही रहे।

³और उसने खुदावन्द के घर का बालाई दरवाज़ा बनाया, और ओफल की दीवार पर उसने बहुत कुछ ता'मीर किया।⁴और यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में उसने शहर ता'मीर किए, और जंगलों में क़िले' और बुर्ज बनवाए।

⁵~वह बनी 'अम्मून के बादशाह से भी लड़ा और उन पर ग़ालिब हुआ। और उसी साल बनी 'अम्मून ने एक सौ क़िन्तार चाँदी और दस हज़ार कुर गेहूँ और दस हज़ार कुर जौ उसे दिए, और उतना ही बनी 'अम्मून ने दूसरे और तीसरे साल भी उसे दिया ।

⁶इसलिए यूताम ज़बरदस्त हो गया, क्योंकि उसने खुदावन्द अपने खुदा के आगे अपने रास्ते दुरुस्त किए थे।⁷और यूताम के बाक़ी काम और उसकी सब लड़ाईयां और उसके तौर तरीक़े इस्राईल और ~यहूदाह के बादशाहों की किताब में लिखा हैं।

⁸वह पच्चीस साल का था जब हुकूमत करने लगा और उसने सोलह साल यरूशलीम में हुकूमत की।⁹और यूताम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आखज़ उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 28

¹आखज़ बीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने सोलह साल यरूशलीम में हुकूमत की। और उसने वह न किया जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है जैसा उसके बाप-दादा ने किया था² बल्कि इस्राईल के बादशाहों के रास्तों पर चला, और बा'लीम की ढाली हुई मूरतों भी बनवाई।

³इसके 'अलावा उसने हिनूम के बेटे की वादी में खुशबू जलाया, और उन क्रौमों के नफ़रती दस्तूरों के मुताबिक़ जिनको खुदावन्द ने बनी-इसाईल के सामने से ख़ारिज किया था, अपने ही बेटों को आग में झोंका।⁴ उसने ऊँचे मक़ामों और पहाड़ों पर, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे कुर्बानियाँ कीं और खुशबू जलायी।

⁵इसलिए खुदावन्द उसके खुदा ने उसको शाह-ए-अराम के हाथ में कर दिया, इसलिए उन्होंने उसे मारा और उसके लोगों में से गुलामों की भीड़ की भीड़ ले गए, और उनको दमिशक़ में लाए; और वह शाह-ए-इसाईल के हाथ में भी कर दिया गया, जिसने उसे मारा और बड़ी खूनरेज़ी की।⁶ और फ़िक़ह बिन रमलिया ने एक ही दिन में यहूदाह में से एक लाख बीस हज़ार को, जो सब के सब सूर्म थे क़त्ल किया, क्योंकि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा को छोड़ दिया था।

⁷और ज़िकरी ने जो इफ़्राईम का एक पहलवान था, मासियाह शाहज़ादे को और महल के नाज़िम 'अज़रीक़ाम को और बादशाह के वज़ीर इल्क़ाना को मार डाला।⁸ और बनी-इसाईल अपने भाइयों में से दो लाख 'औरतों और बेटे-बेटियों को गुलाम करके ले गए, और उनका बहुत सा माल लूट लिया और लूट को सामरिया में लाए।

⁹लेकिन वहाँ खुदावन्द का एक नबी था जिसका नाम 'ओदद था, वह उस लश्कर के इस्तक्रबाल को गया जो सामरिया को आ रहा था और उनसे कहने लगा, "देखो, इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा का खुदा यहूदाह से नाराज़ था, उसने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया और तुम ने उनको ऐसे तैश में क़त्ल किया है जो आसमान तक पहुँचा।"¹⁰ और अब तुम्हारा 'इरादा है कि बनी यहूदाह और यरूशलीम को अपने गुलाम और लौंडियाँ बना कर उनको दबाए रखो। लेकिन क्या तुम्हारे ही गुनाह जो तुमने खुदा वन्द अपने खुदा के खिलाफ़ किए हैं, तुम्हारे सिर नहीं हैं?" इसलिए तुम अब मेरी सुनो और उन गुलामों को, जिनको तुम ने अपने भाइयों में से गुलाम कर लिया है, आज़ाद करके लौटा दो क्योंकि खुदावन्द का क्रहर-ए-शदीद तुम पर है।"

¹²तब बनी इफ़्राईम के सरदारों में से 'अज़रियाह बिन यूहनान और बरकियाह बिन मसल्लीमोत और यहज़क्रियाह बिन सलूम और 'अमासा बिन खदली, उनके सामने जो जंग से आ रहे थे खड़े हो गए।¹³ और उनसे कहा कि तुम गुलामों को यहाँ नहीं लाने पाओगे, क्योंकि जो तुम ने ठाना है उससे हम खुदावन्द के गुनाहगार बनेंगे और हमारे गुनाह और खताएं बढ़ जायेंगी क्योंकि हमारी खता बड़ी है और इस्राईल पर क्रहर-ए-शदीद है।

¹⁴इसलिए उन हथियारबन्द लोगों ने गुलामों और माल-ए-ग़नीमत को, अमीरों और सारी जमा'अत के आगे छोड़ दिया।¹⁵ और वह आदमी जिनके नाम मज़कूर हुए, उठे और गुलामों को लिया और लूट के माल में से उन सभों को जो उनमें नंगे थे, लिबास से आरास्ता किया और उनको जूते पहनाए और उनको खाने-पीने को दिया और उन पर तेल मला, और जितने उनमें कमज़ोर थे उनको गधों पर चढ़ा कर खज़ूर के दरख़्तों के शहर यरीहू में उनके भाइयों के पास पहुँचा दिया। तब सामरिया को लौट गए।

¹⁶उस वक़्त आखज़ बादशाह ने असूर के बादशाहों के पास कहला भेजा के उसकी मदद करें।¹⁷ इसलिए कि अदूमियों ने फिर चढ़ाई करके यहूदाह को मार लिया और गुलामों को ले गए थे।¹⁸ और फ़िलिस्तियों ने भी नशेब की ज़मीन के और यहूदाह के जुनूब के शहरों पर हमला करके बैतशम्स और अय्यालोन और जदीरोत को, और शोको और उसके देहात को, और तिमना और उसके देहात को, और जिमसू और उसके देहात को भी ले लिया था और उनमें बस गए थे।

¹⁹~क्योंकि खुदावन्द ने शाह-ए-इसाईल आखज़ की वजह से यहूदाह को पस्त किया, इसलिए कि उसने यहूदाह में बेहयाई की चाल चलकर खुदावन्द का बड़ा गुनाह किया था;²⁰ ~और शाह-ए- असूर तिगलतपिलनासर उसके पास आया, लेकिन उसने उसको तंग किया और उसकी मदद न की।²¹ क्योंकि आखज़ ने खुदावन्द के घर और बादशाह और सरदारों के महलों से माल लेकर शाह-ए-असूर को दिया, तो भी उसकी कुछ मदद न हुई।

²²अपनी तंगी के वक़्त में भी उसने, या'नी इसी आखज़ बादशाह ने खुदावन्द का और भी ज़्यादा गुनाह किया;²³ क्योंकि उसने दमिशक़ के मा'बूदों के लिए जिन्होंने उसे मारा था, कुर्बानियाँ कीं और कहा, "चूँकि अराम के बादशाहों के मा'बूदों ने उनकी मदद की है, इसलिए मैं उनके लिए कुर्बानी करूँगा ताकि वह मेरी मदद करें।" लेकिन वह उसकी और सारे इस्राईल की तबाही की वजह हुए।

²⁴~और आखज़ ने खुदा के घर के बर्तनों को जमा' किया और खुदा के घर के बर्तनों को टुकड़े टुकड़े किया और खुदावन्द के घर के दरवाज़ों को बन्द किया और अपने लिए यरूशलीम के हर कोने में मज़बहे बनाए।²⁵ और यहूदाह के एक एक शहर में ग़ैर-मा'बूदों के आगे खुशबू जलाने के लिए ऊँचे मक़ाम बनाए, और खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा को गुस्सा दिलाया।

²⁶और उसके बाक़ी काम और उसके सब तौर तरीक़े शुरू' से आख़िर तक यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा है।²⁷ और आखज़ अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे शहर में या'नी यरूशलीम में दफ़न किया क्योंकि वह उसे इस्राईल के बादशाहों की क्रब्रों में न लाए और उसका बेटा हिज़क़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 29

¹हिज़क्रियाह पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने उन्तीस साल यरूशलीम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम अबियाह था, जो ज़करियाह की बेटी थी।² उसने वही काम जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक उसी के मुताबिक़ जो उसके बाप-दादा ने किया था, किया।

³ उसने अपनी हुकूमत के पहले साल के पहले महीने में, खुदावन्द के घर के दरवाज़ों को खोला और उनकी मरम्मत की।⁴ और वह काहिनों और लावियों को ले आया और उनको मशरिक़ की तरफ़ मैदान में इकट्ठा किया,⁵ और उनसे कहा, "ऐ लावियो, मेरी सुनो! तुम अब अपने को पाक करो और खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के घर को पाक करो, और इस पाक मक़ाम में से सारी नापाकी को निकाल डालो;

⁶ क्योंकि हमारे बाप-दादा ने गुनाह किया और जो खुदावन्द हमारे खुदा की नज़र में बुरा है वही किया, और खुदा को छोड़ दिया और खुदावन्द के घर से मुँह फेर लिया और अपनी पीठ उसकी तरफ़ कर दी⁷ और उसारे के दरवाज़ों को भी बन्द कर दिया, और चिराग़ बुझा दिए, और इस्राईल के खुदा के मक़दिस में न तो खुशबू जलायी और न सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं

⁸ इस वजह से खुदावन्द का क्रहर यहूदाह और यरूशलीम पर नाज़िल हुआ, और उसने उनको ऐसा हवाले किया कि मारे मारे फिरें और हैरत और सुसकार का ज़रिए' हों, जैसा तुम अपनी आँखों से देखते हो।⁹ देखो, इसी वजह से हमारे बाप-दादा तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे बेटियाँ और हमारी बीवियाँ गुलामी में हैं।

¹⁰ अब मेरे दिल में है कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा के साथ 'अहद बाँधूँ, ताकि उसका क्रहर-ए-शदीद हम पर से टल जाए।¹¹ ~ऐ मेरे फ़ज़न्दो, तुम अब गा़फ़िल न रहो; क्योंकि खुदावन्द ने तुम को चुन लिया है कि उसके सामने खड़े रहो और उसकी खिदमत करो और उसके खादिम बनो और खुशबू जलाओ।

¹² ~तब यह लावी उठे : या'नी बनी क्रिहात में से महत बिन 'अमासी और यूएल बिन 'अज़रियाह, और बनी मिरारी में से क्रीस बिन 'अबदी और अज़रियाह बिन यहलीएल और जैरसोनियों में से यूआख़ बिन जिम्मा और 'अदन बिन यूआख़,¹³ और बनी इलीसफ़न में से सिमरी और य'ऊएल, और बनी आसफ़ में से ज़करियाह और मत्तनियाह,¹⁴ और बनी हैमान में से यहीएल और सिमई, और बनी यदून में से समा'याह और 'उज़िएल।

¹⁵ और उन्होंने अपने भाइयों को इकट्ठा करके अपने को पाक किया, और बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ जो खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ था, खुदावन्द के घर को पाक करने के लिए अन्दर गए।¹⁶ और काहिन खुदावन्द के घर के अन्दरूनी हिस्से में उसे पाक-साफ़ करने को दाखिल हुए, और सारी नापाकी को जो खुदावन्द की हैकल में उनको मिली निकाल कर बाहर खुदावन्द के घर के सहन में ले आए, और लावियों ने उसे उठा लिया ताकि उसे बाहर किद्रून के नाले में पहुँचा दें।¹⁷ ~पहले महीने की पहली तारीख़ को उन्होंने तब्रदीस का काम शुरू किया, और उस महीने की आठवीं तारीख़ को खुदावन्द के उसारे तक पहुँचे, और उन्होंने आठ दिन में खुदावन्द के घर को पाक किया; इसलिए पहले महीने की सोलहवीं तारीख़ को उसे पूरा किया।

¹⁸ तब उन्होंने महल के अन्दर हिज़क्रियाह बादशाह के पास जाकर कहा कि हमने खुदावन्द के सारे घर को, और सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह को और उसके सब बर्तन को, और नज़ की रोटियों की मेज़ को और उसके सब बर्तन को पाक-साफ़ कर दिया।¹⁹ इसके 'अलावा हम ने उन सब बर्तन को जिनकी आख़ज़ बादशाह ने अपने दौर-ए-हुकूमत में ख़ता करके रद्द कर दिया था, फिर तैयार करके उनको पाक किया है, और देख, वह खुदावन्द के मज़बह के सामने हैं।"

²⁰ ~तब हिज़क्रियाह बादशाह सवरे उठकर और शहर के रईसों को इकट्ठा करके खुदावन्द के घर को गया।²¹ और वह सात बैल और सात मेंढे और सात बरें और सात बकरे मुल्क के लिए और मक़दिस के लिए और यहूदाह के लिए ख़ता की कुर्बानी के लिए ले आए, और उसने काहिनों या'नी बनी हारून को हुक्म किया के उनको खुदावन्द के मज़बह पर चढ़ाएँ।

²² इसलिए उन्होंने बैलों को ज़बह किया और काहिनों ने खून को लेकर उसे मज़बह पर छिड़का, फिर उन्होंने मेंढों को ज़बह किया और खून को मज़बह पर छिड़का, और बरों को भी ज़बह किया और खून मज़बह पर छिड़का।²³ और वह ख़ता की कुर्बानी के बकरों को बादशाह और जमा'अत के आगे नज़दीक ले आए और उन्होंने अपने हाथ उन पर रखे।²⁴ ~फिर काहिनों ने उनको ज़बह किया और उनके खून को मज़बह पर छिड़क कर ख़ता की कुर्बानी की, ताकि सारे इस्राईल के लिए कफ़़ारा हो; क्योंकि बादशाह ने फ़रमाया था कि सोख़्तनी कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी सारे इस्राईल के लिए पेश की जाएँ।

²⁵ और उसने दाऊद और बादशाह के ग़ैबबीन जाद और नातन नबी के हुक्म के मुताबिक़ खुदावन्द के घर में लावियों को झाँझ और सितार और बरबत के साथ मुक़र्र किया, क्योंकि यह नबियों के ज़रिए' खुदावन्द का हुक्म था।²⁶ और लावी दाऊद ने बाजों को और काहिन नरसिंगों को लेकर खड़े हुए,

²⁷ और हिज़क्रियाह ने मज़बह पर सोख़्तनी कुर्बानी अदा करने ~का हुक्म दिया, और जब सोख़्तनी कुर्बानी शुरू हुई तो खुदावन्द का हम्द भी नरसिंगों और शाह-ए-इस्राईल दाऊद ने बाजों ~के साथ शुरू हुआ,²⁸ और सारी जमा'अत ने सिज्दा किया, और गानेवाले गाने और नरसिंगे वाले नरसिंगे फूंकने लगे। जब तक सोख़्तनी कुर्बानी जल न चुकी, यह सब होता रहा;

²⁹ और जब वह कुर्बानी अदा कर ~चुके, तो बादशाह और उसके साथ सब हाज़रीन ने झुक कर सिज्दा किया।³⁰ ~फिर हिज़क्रियाह बादशाह और रईसों ने लावियों को हुक्म किया कि दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के हम्द गाकर खुदावन्द की हम्द करें; और उन्होंने खुशी से बड़ाई की और सिर झुकाए और सिज्दा किया।

³¹ और हिज़क्रियाह कहने लगा, "अब तुम ने अपने आपको खुदावन्द के लिए पाक कर लिया है। इसलिए नज़दीक आओ, और खुदावन्द के घर में ज़बीहे और शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ लाओ।" तब जमा'अत ज़बीहे और शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ लाई, और जितने दिल से राज़ी थे सोख़्तनी कुर्बानियाँ लाए।

³² ~और सोख़्तनी कुर्बानियों का शुमार जो जमा'अत लाई यह था: सत्तर बैल और सौ मेंढे और दो सौ बरें, यह सब खुदावन्द की सोख़्तनी कुर्बानी के लिए थे।

³³ और पाक किए हुए जानवर यह थे : छः सौ बैल और तीन हज़ार भेड़-बकरियाँ।

³⁴ मगर काहिन ऐसे थोड़े थे कि वह सारी सोख़्तनी कुर्बानी के जानवरों की खालें उतार न सके, इसलिए उनके भाई लावियों ने उनकी मदद की जब तक काम पूरा न हो गया; और काहिनों ने अपने को पाक न कर लिया, क्योंकि लावी अपने आपको पाक करने में काहिनों से ज़्यादा सच्चे दिल थे।

³⁵और सोख्तनी कुर्बानियाँ भी कसरत से थीं, और उनके साथ सलामती की ~कुर्बानियों की चर्बी और सोख्तनी कुर्बानियों के तपावन थे। यूँ खुदावन्द के घर की खिदमत की तरतीब दुरुस्त हुई। ³⁶और हिज़क्रियाह और सब लोग उस काम की वजह से, जो खुदा ने लोगों के लिए तैयार किया था, बाग़ बाग़ हुए क्योंकि वह काम यकबारगी किया गया था ।

Chapter 30

¹और हिज़क्रियाह ने सारे इस्राईल और यहूदाह को कहला भेजा, और इफ़्राईम और मनस्सी के पास भी ख़त लिख भेजे कि वह ख़ुदावन्द के घर में यरूशलीम को, ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के लिए 'ईद-ए-फ़सह करने को आएँ; ²~क्योंकि बादशाह और सरदारों और यरूशलीम की सारी जमा'अत ने दूसरे महीने में 'ईद-ए-फ़सह मनाने की सलाह कर लिया था। ³क्योंकि वह उस वक़्त उसे इसलिए नहीं मना सके कि काहिनों ने काफ़ी ता'दाद में अपने आपको पाक नहीं किया था, और लोग भी यरूशलीम में इकट्ठे नहीं हुए थे।

⁴~यह बात बादशाह और सारी जमा'अत की नज़र में अच्छी थी। ⁵इसलिए उन्होंने हुक्म जारी किया कि बैरसबा' से दान तक सारे इस्राईल में 'ऐलान किया जाए कि लोग यरूशलीम में आकर ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के लिए 'ईद-ए-फ़सह करें, क्योंकि उन्होंने ऐसी बड़ी तादाद में उसको नहीं मनाया था जैसे लिखा है। ⁶इसलिए बादशाह के क़ासिद और उसके सरदारों से ख़त लेकर बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ सारे इस्राईल और यहूदाह में फिरे, और कहते गए, "ऐ बनी-इस्राईल! इब्राहीम और इस्हाक़ और इस्राईल के ख़ुदावन्द ख़ुदा की तरफ़ दोबारा फिर जाओ, ताकि वह तुम्हारे बाक़ी लोगों की तरफ़ जो असूर के बादशाहों के हाथ से बच रहे हैं, फिर मुतवज्जिह हों।

⁷और तुम अपने बाप-दादा और अपने भाइयों की तरह मत हो, जिन्होंने ख़ुदावन्द अपने बाप-दादा के ख़ुदा की नाफ़रमानी की, यहाँ तक कि उसने उनको छोड़ दिया कि बर्बाद हो जाएँ, जैसा तुम देखते हो। ⁸~तब तुम अपने बाप-दादा की तरह मगरूर न बनो, बल्कि ख़ुदावन्द के ताबे' हो जाओ और उसके मक़दिस में आओ, जिसे उसने हमेशा के लिए पाक किया है, और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की 'इबादत करो ताकि उसका क़हर-ए-शदीद तुम पर से टल जाए। ⁹~क्योंकि अगर तुम ख़ुदावन्द की तरफ़ दोबारा मुड़ो, तो तुम्हारे भाई और तुम्हारे बेटे अपने गुलाम करने वालों की नज़र में क़ाबिल-ए-रहम ठहरेंगे और इस मुल्क में फिर आएँगे, क्योंकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा ग़फ़ूर-ओ-रहीम है, और अगर तुम उसकी तरफ़ फिरो तो वह तुम से अपना मुँह फेर न लेगा।"

¹⁰इसलिए क़ासिद इफ़्राईम और मनस्सी के मुल्क में शहर-ब-शहर होते हुए ज़बूलून तक गए, पर उन्होंने उनका मज़ाक़ किया और उनको ठठ्ठों में उड़ाया। ¹¹~फिर भी आशर और मनस्सी और ज़बूलून में से कुछ लोगों ने फ़िरोतनी की और यरूशलीम को आए। ¹²और यहूदाह पर भी ख़ुदावन्द का हाथ था कि उनको यकदिल बना दे, ताकि वह ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बादशाह और सरदारों के हुक्म पर 'अमल करें।

¹³इसलिए बहुत से लोग यरूशलीम में जमा' हुए कि दूसरे महीने में फ़तीरी रोटी की 'ईद करें; यूँ बहुत बड़ी जमा'अत हो गई। ¹⁴वह उठे और उन मज़बहों को जो यरूशलीम में थे और खुशबू की सब कुर्बानियाँ को दूर किया, और उनकी क़िद्रून न के नाले में डाल दिया। ¹⁵फिर दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख़ को उन्होंने फ़सह को ज़बह किया, और काहिनों और लावियों ने शर्मिन्दा होकर अपने आपको पाक किया और ख़ुदावन्द के घर में सोख़तनी कुर्बानियाँ लाए।

¹⁶वह अपने दस्तूर पर मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की शरी'अत के मुताबिक़ अपनी अपनी जगह खड़े हुए, और काहिनों ने लावियों के हाथ से खून लेकर छिड़का। ¹⁷क्योंकि जमा'अत में बहुत से लोग ~ऐसे थे जिन्होंने अपने आपको पाक नहीं किया था, इसलिए यह काम लावियों के सुपुर्द हुआ कि वह सब नापाक शख्सों के लिए फ़सह के बरों को ज़बह करें, ताकि वह ख़ुदावन्द के लिए पाक हों।

¹⁸~क्योंकि इफ़्राईम और मनस्सी और इश्कार और ज़बूलून में से बहुत से लोगों ने अपने आपको पाक नहीं किया था, तो भी उन्होंने फ़सह को जिस तरह लिखा है उस तरह से न खाया, क्योंकि हिज़क्रियाह ने उनके लिए यह दु'आ की थी, कि ख़ुदावन्द जो नेक है, हर एक को ¹⁹जिसने ख़ुदावन्द ख़ुदा अपने बाप-दादा के ख़ुदा की तलब में दिल लगाया है मु'आफ़ करे, अगर वह मक़दिस की तहारत के मुताबिक़ पाक न हुआ हो। ²⁰और ख़ुदावन्द ने हिज़क्रियाह की सुनी और लोगों को शिफ़ा दी।

²¹और जो बनी-इस्राईल यरूशलीम में हाज़िर थे, उन्होंने बड़ी खुशी से सात दिन तक 'ईद-ए-फ़तीर मनाई, और लावी और काहिन बलन्द आवाज़ के बाजों के साथ ख़ुदावन्द के सामने गा गाकर हर दिन ख़ुदावन्द की हम्द करते रहे। ²²और हिज़क्रियाह ने सब लावियों से जो ख़ुदावन्द की खिदमत में माहिर थे, तसल्लीबख़्श बातें कीं। इसलिए वह 'ईद के सातों दिन तक खाते और सलामती के ज़बीहों की कुर्बानियाँ पेश करते और ख़ुदावन्द अपने बाप दादा के ख़ुदा के सामने इक़रार करते रहे।

²³फिर सारी जमा'अत ने और सात दिन मानने की सलाह की, और खुशी से और सात दिन माने। ²⁴क्योंकि शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह ने जमा'अत को कुर्बानियों के लिए~एक हज़ार बछड़े और सात हज़ार भेड़ें 'इनायत~कीं, और सरदारों ने जमा'अत को एक हज़ार बछड़े और दस हज़ार भेड़ें दीं, और बहुत से काहिनों ने अपने आपको पाक किया।

²⁵और यहूदाह की सारी जमा'अत ने काहिनों और लावियों समेत और उस सारी जमा'अत ने जो इस्राईल में से आई थी, और उन परदेसियों ने जो इस्राईल के मुल्क से आए थे, और जो यहूदाह में रहते थे खुशी मनाई। ²⁶इसलिए यरूशलीम में बड़ी खुशी हुई, क्योंकि शाह-ए-इस्राईल सुलेमान बिन दाऊद के ज़माने से यरूशलीम में ऐसा नहीं हुआ था। ²⁷~तब लावी काहिनों ने उठ कर लोगों को बरकत दी, और उनकी सुनी गई, और उनकी दु'आ उसके पाक मकान, आसमान तक पहुँची।

Chapter 31

¹जब यह हो चुका तो सब इस्राईली जो हाज़िर थे, यहूदाह के शहरों में गए और सारे यहूदाह और बिनयमीन के बल्कि इफ़्राईम और मनस्सी के भी सुतूनों को टुकड़े-टुकड़े किया, और यसीरतों को काट डाला, और ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को ढा दिया; यहाँ तक कि उन सभी को मिटा दिया। तब सब बनी-इस्राईल अपने अपने शहर में अपनी अपनी मिल्कियत को लौट गए।

²~और हिज़क्रियाह ने काहिनों के फ़रीक्रों को और लावियों को उनके फ़रीक्रों के मुताबिक़, या'नी काहिनों और लावियों दोनों के हर शख्स को उसकी ख़िदमत के मुताबिक़ ख़ुदावन्द की ख़ेमागाह के फाटकों के अन्दर सोख़तनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों के लिए, और 'इबादत और शुक्रगुज़ारी और ता'रीफ़ ~करने के लिए मुक़र्र किया।³उसने अपने माल में से बादशाही हिस्सा सोख़तनी कुर्बानियों के लिए, या'नी सुबह-ओ-शाम की सोख़तनी कुर्बानियों के लिए, और सब्तों और नए चाँदों और मुक़र्र 'ईदों की सोख़तनी कुर्बानियों के लिए ठहराया, जैसा ख़ुदावन्द की शरी'अत में लिखा है।

⁴~और उसने उन लोगों को जो यरूशलीम में रहते थे, हुक्म किया कि काहिनों और लावियों का हिस्सा दें ताकि वह ख़ुदावन्द की शरी'अत में लगे रहें।⁵इस फ़रमान के जारी होते ही बनी-इस्राईल अनाज और मय और तेल और शहद और खेत की सब पैदावार के पहले फल बहुतायत से देने, और सब चीज़ों का दसवाँ हिस्सा कसरत से लाने लगे।

⁶और बनी-इस्राईल और यहूदाह जो यहूदाह के शहरों में रहते थे, वह भी बैलों और भेड़ बकरियों का दसवाँ हिस्सा, और उन पाक चीज़ों का दसवाँ हिस्सा जो ख़ुदावन्द उनके ख़ुदा के लिए पाक की गई थीं, लाए और उनको ढेर ढेर करके लगा दिया।⁷उन्होंने तीसरे महीने में ढेर लगाना शुरू किया और सातवें महीने में पूरा किया।⁸~जब हिज़क्रियाह और सरदारों ने आकर ढेरों को देखा, तो ख़ुदावन्द को और उसकी क़ौम इस्राईल को मुबारक कहा।

⁹और हिज़क्रियाह ने काहिनों और लावियों से उन ढेरों के बारे में पूछा।¹⁰तब सरदार काहिन 'अज़रियाह ने जो सद्क़ के ख़ान्दान का था, उसे जवाब दिया, "जब से लोगों ने ख़ुदावन्द के घर में हदिये लाना शुरू किया, तब से हम खाते रहे और हम को काफ़ी मिला और बहुत बच रहा है; क्योंकि ख़ुदावन्द ने अपने लोगों को बरकत बख़्शी है, और वही बचा हुआ यह बड़ा ढेर है।"¹¹तब हिज़क्रियाह ने हुक्म किया कि ख़ुदावन्द के घर में कोठरियाँ तैयार करें, इसलिए उन्होंने उनको तैयार किया।¹²और वह हदिये और वह दहेकियाँ और पाक की हुई चीज़ें ईमानदारी से लाते रहे, और उन पर कनानियाह लावी मुख़्तार था और उसका भाई सिम'ई नाइब था,¹³और यहीएल और अज़ज़ियाह और नहात और 'असाहील और यरीमोट और यूज़बद और इलीएल और इस्माकियाह और महत और बिनायाह हिज़क्रियाह बादशाह और ख़ुदा के घर के सरदार 'अज़रियाह के हुक्म से कनानियाह और उसके भाई सिम'ई के मातहत पेशकार थे।

¹⁴और मशरिक़ी फाटक का दरबान यिमना लावी का बेटा कोरे ख़ुदा की खुशी की कुर्बानियों पर मुक़र्र था, ताकि ख़ुदावन्द के हदियों और पाक तरीन चीज़ों को बाँट दिया करे।¹⁵और उसके मातहत 'अदन और बिनयमीन और यशू'अ और समा'याह और अमरियाह और सकनियाह, काहिनों के शहरों में इस 'उहदे पर मुक़र्र थे कि~अपने भाइयों को, क्या बड़े क्या छोटे उनके फ़रीक्रों के मुताबिक़ हिस्सा दिया करें,

¹⁶और इनके 'अलावा उनको भी दें जो तीन साल की 'उम्र से और उससे ऊपर ऊपर मर्दों ~के नसबनामे में शुमार किए गए, या'नी उनको जो अपने अपने फ़रीक्र की बारियों पर अपने अपने ज़िम्मे की ख़िदमत को हर दिन के फ़ज़्र के मुताबिक़ अन्जाम देने को ख़ुदावन्द के घर में जाते थे।

¹⁷~और उनको भी जो अपने अपने आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़ काहिनों के नसबनामे में शुमार किए गए, और उन लावियों को जो बीस साल के और उससे ऊपर थे, और अपने अपने फ़रीक्र की बारी पर ख़िदमत करते थे।¹⁸और उनको जो सारी जमा'अत में से अपने अपने बाल-बच्चों और बीवियों और बेटों और बेटियों के नसबनामे के मुताबिक़ शुमार किए गए, क्योंकि अपने अपने मुक़र्र काम पर वह अपने आप को तक्रहुस के लिए पाक करते थे।¹⁹और बनी हास्न के काहिनों के लिए भी, जो शहर-ब-शहर अपने शहरों के चारोंतरफ़ के खेतों में थे, कई आदमी जिनके नाम बता दिए गए थे, मुक़र्र हुए कि काहिनों के सब आदमियों को और उन सभी को जो लावियों के बीच नसबनामे के मुताबिक़ शुमार किए गए थे, हिस्सा दें।

²⁰इसलिए हिज़क्रियाह ने सारे यहूदाह में ऐसा ही किया, और जो कुछ ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा की नज़र में भला और सच्चा और हक़ था वही किया।²¹~और ख़ुदा के घर की ख़िदमत और शरी'अत और अहक़ाम के ऐतबार से जिस जिस काम को उसने अपने ख़ुदा का तालिब होने के लिए किया, उसे अपने सारे दिल से किया और कामयाब हुआ।

Chapter 32

¹इन बातों और इस ईमानदारी के बा'द शाह-ए-असूर सनहेरिब चढ़ आया और यहूदाह में दाखिल हुआ, और फ़सीलदार शहरों के मुकाबिल खेमाज़न हुआ और उनको अपने क़ब्ज़े में लाना चाह।

²जब हिज़क्रियाह ने देखा कि सनहेरिब आया है और उसका 'इरादा है कि यरूशलीम से लड़े' तो उसने अपने सरदारों और बहादुरों के साथ सलाह ~की कि उन चश्मों के पानी को जो शहर से बाहर थे बन्द कर दे, और उन्होंने उसकी मदद की।⁴'बहुत लोग जमा' हुए और सब चश्मों को और उस नदी को जो उस सरज़मीन के बीच बहती थी, यह कह कर बन्द कर दिया, "असूर के बादशाह आकर बहुत सा पानी क्यूँ पाएँ?"

⁵और उसने हिम्मत बाँधी और सारी दीवार को जो टूटी थी बनाया, और उसे बुजों के बराबर ऊँचा किया और बाहर से एक दूसरी दीवार उठाई, और दाऊद के शहर में मिल्लो को मज़बूत किया और बहुत से हथियार और ढालें बनाई।

⁶~और उसने लोगों पर सर लश्कर ठहराए और शहर के फाटक के पास के मैदान में उनको अपने पास इकट्ठा किया, और उनसे हिम्मत अफ़ज़ाई की बातें कहीं और कहा,⁷"हिम्मत बाँधो और हौसला रखो, और असूर के बादशाह और उसके साथ के सारे गिरोह की वजह से न डरो न हिरासा न हो; क्यूँकि वह जो हमारे साथ है, उससे बड़ा है जो उसके साथ है।"⁸~उसके साथ बशर का हाथ है लेकिन हमारे साथ खुदावन्द हमारा खुदा है कि हमारी मदद करे और हमारी लड़ाईयाँ लड़े।" तब लोगों ने शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह की बातों पर भरोसा किया।

⁹उसके बा'द शाह-ए-असूर सनहेरिब ने जो अपने सारे लश्कर' के साथ लकीस के मुकाबिल पड़ा था, अपने नौकर यरूशलीम को शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह के पास और पूरे ~यहूदाह के पास जो यरूशलीम में थे, यह कहने को भेजे कि;¹⁰शाह-ए-असूर सनहेरिब यू फ़रमाता है कि तुम्हारा किस पर भरोसा है कि तुम यरूशलीम में घेरे को झेल रहे हो?

¹¹क्या हिज़क्रियाह तुम को कहत और प्यास की मौत के हवाले करने को तुम को नहीं बहका रहा है कि "खुदा वन्द हमारा खुदा हम को शाह-ए-असूर के हाथ से बचा लेगा"?¹²~क्या इसी हिज़क्रियाह ने उसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को दूर करके, यहूदाह और यरूशलीम को हुक्म नहीं दिया कि तुम एक ही मज़बह के आगे सिज्दा करना और उसी पर खुशबू जलाना?

¹³क्या तुम नहीं जानते कि मैंने और मेरे बाप-दादा ने और मुल्कों के सब लोगों से क्या क्या किया है? क्या उन मुल्कों की क़ौमों के मा'बूद अपने मुल्क को किसी तरह से मेरे हाथ से बचा सके?¹⁴जिन क़ौमों को मेरे बाप-दादा ने बिल्कुल हलाक कर डाला, उनके मा'बूदों में कौन ऐसा निकला जो अपने लोगों को मेरे हाथ से बचा सका कि तुम्हारा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा?¹⁵फिर हिज़क्रियाह तुम को फ़रेब न देने पाए और न इस तौर पर बहकाए और न तुम उसका यक़ीन करो; क्यूँकि किसी क़ौम या मुल्क का मा'बूद अपने लोगों को मेरे हाथ से और मेरे बाप-दादा के हाथ से बचा नहीं सका, तो कितना कम तुम्हारा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा।

¹⁶~उसके नौकरों ने खुदावन्द खुदा के खिलाफ़ और उसके बन्दे हिज़क्रियाह के खिलाफ़ बहुत सी और बातें कहीं।¹⁷और उसने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की बे'इज़्ज़ती करने और उसके हक़ में कुफ़्र बकने के लिए, इस मज़मून के ख़त भी लिखे : "जैसे और मुल्कों की क़ौमों के मा'बूदों ने अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचाया है, वैसे ही हिज़क्रियाह का मा'बूद भी अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।"

¹⁸और उन्होंने बड़ी आवाज़ से पुकार कर यहूदियों की ज़बान में यरूशलीम के लोगों को जो दीवार पर थे यह बातें कह सुनाये ताकि उनको डराएँ और परेशान करें और शहर को ले लें।¹⁹उन्होंने यरूशलीम के खुदा का ज़िक्र ज़मीन की क़ौमों के मा'बूदों की तरह किया, जो आदमी के हाथ की कारीगरी हैं।

²⁰इसी वजह से हिज़क्रियाह बादशाह और आमूस के बेटे यसायाह नबी ने दु'आ की, और आसमान की तरफ़ चिल्लाए।²¹और खुदावन्द ने एक फ़रिश्ते को भेजा, जिसने शाह-ए-असूर के लश्कर में सब ज़बरदस्त सूर्मों और रहनुमाओं और सरदारों को हलाक कर डाला। फिर वह शर्मिन्दा होकर अपने मुल्क को लौटा; और जब वह अपने मा'बूद के 'इबादत खाना ~में गया तो उन ही ने जो उसके सुल्ब से निकले थे, उसे वहीं तलवार से क़त्ल किया।

²²यू खुदावन्द ने हिज़क्रियाह को और यरूशलीम के बाशिन्दों को शाह-ए-असूर सनहेरिब के हाथ से और सभों के हाथ से बचाया और हर तरफ़ उनकी रहनुमाई की।²³और बहुत लोग यरूशलीम में खुदावन्द के लिए हृदिये और शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह के लिए क़ीमती चीज़ें लाए, यहाँ तक कि वह उस वक़्त से सब क़ौमों की नज़र में मुस्ताज़ हो गया।

²⁴~उन दिनों में हिज़क्रियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के क़रीब हो गया, और उसने खुदावन्द से दु'आ की तब उसने उससे बातें कहीं और उसे एक निशान दिया।

²⁵लेकिन हिज़क्रियाह ने उस एहसान के लायक़ जो उस पर किया गया 'अमल न किया, क्यूँकि उसके दिल में घमण्ड समा गया; इसलिए उस पर, और यहूदाह और यरूशलीम पर क्रहर भड़का।²⁶तब हिज़क्रियाह और यरूशलीम के बाशिन्दों ने अपने दिल के गुरूर के बदले खाकसारी इख़्तियार की, इसलिए हिज़क्रियाह के दिनों में खुदावन्द का क्रहर उन पर नाज़िल न हुआ।

²⁷और हिज़क्रियाह की दौलत और 'इज़्ज़त बहुत फ़रावान थी और उसने चाँदी और सोने और जवाहर और मसाले और ढालों और सब तरह की क़ीमती चीज़ों के लिए ख़ज़ाने²⁸और अनाज और शराब और तेल के लिए अम्बारखाने, और सब क्रिस्म के जानवरों के लिए थान, और भेड़-बकरियों के लिए बाड़े बनाए।²⁹इसके 'अलावा उसने अपने लिए शहर बसाए और भेड़ बकरियों और गाय-बैलों को कसरत से मुहय्या किया, क्यूँकि खुदा ने उसे बहुत माल बख़्शा था।

³⁰इसी हिज़क्रियाह ने जैहून के पानी के ऊपर के सोते को बंद कर दिया, और उसे दाऊद के शहर के मगरिब की तरफ़ सीधा पहुँचाया, और हिज़क्रियाह अपने सारे काम में कामयाब हुआ।³¹तो भी बाबुल के हाकिमों के मु'आमिले में, जिन्होंने अपने क़ासिद उसके पास भेजे ताकि उस मौजिज़ा का हाल जो उस मुल्क में किया गया था दरियाफ़्त करें; खुदा ने उसे आज़माने के लिए छोड़ दिया, ताकि मा'लूम करे के उसके दिल में क्या है।

³²और हिज़क्रियाह के बाक़ी काम और उसके नेक आ'माल आमूस के बेटे यासायाह नबी की ख़्वाब में और यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा है।³³और हिज़क्रियाह अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे बनी दाऊद की क़ब्रों की चढ़ाई पर दफ़न किया, और सारे यहूदाह और यरूशलीम के सब बाशिन्दों ने उसकी मौत पर उसकी ताज़ीम की; और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

Chapter 33

¹—मनस्सी बारह साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने यरूशलीम में पचपन साल हुकूमत की।²उसने उन क्रौमों के नफ़रतअंगेज़ कामों के मुताबिक़ जिनको खुदावन्द ने बनी-इसाईल के आगे से हटा दिया था, वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा था।³क्योंकि उसने उन ऊँचे मक़ामों को, जिनको उसके बाप हिज़क्रियाह ने ढाया था, फिर बनाया और बा'लीम के लिए मज़बहे बनाए और यसीरतें तैयार कीं और सारे आसमानी लश्कर को सिज्दा किया और उनकी 'इबादत की।

⁴और उसने खुदा-वन्द के घर में जिसके बारे में खुदावन्द ने फ़रमाया था कि मेरा नाम यरूशलीम में हमेशा रहेगा, मज़बहे बनाए;⁵ और उसने खुदावन्द के घर के दोनों सहनों में, सारे आसमानी लश्कर के लिए मज़बहे बनाए।⁶और उसने बिन हलूम की वादी में अपने फ़र्ज़न्दों को भी आग में चलवाया, और वह शगून मानता और जादू और अफ़सून करता और बदरूहों के आशनाओं और जादूगरों से ता'अल्लुक रखता था। उसने खुदावन्द की नज़र में बहुत बदकारी की, जिससे उसे गुस्सा दिलाया;

⁷और जो तराशी हुई मूरत उसने बनवाई थी उसको खुदा के घर में नस्ब किया, जिसके बारे में खुदा ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि मैं इस घर में और यरूशलीम में जिसे मैंने बनी-इसाईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, अपना नाम हमेशा तक रखूँगा;⁸ और मैं बनी-इसाईल के पाँव को उस सरज़मीन से जो मैंने उनके बाप-दादा को 'इनायत की है, फिर कभी नहीं हटाऊँगा बशर्ते कि वह उन सब बातों को जो मैंने उनकी फ़रमाई, या'नी उस सारी शरी'अत और क़ानून और हुक्मों को जो मूसा के जरिए ~मिले, मानने की एहतियात रखें।⁹और मनस्सी ने यहूदाह और यरूशलीम के बाशिन्दों को यहाँ तक गुमराह किया कि उन्होंने उन क्रौमों से भी ज़्यादा बुराई की, जिनको खुदावन्द ने बनी-इसाईल के सामने से हलाक किया था।

¹⁰और खुदा वन्द ने मनस्सी और उसके लोगों से बातें की लेकिन उन्होंने कुछ ध्यान न दिया।¹¹इसलिए खुदावन्द उन पर शाह-ए-असूर के सिपह सालारों को चढ़ा लाया, जो मनस्सी को ज़ंजीरों से जकड़ कर और बेड़ियाँ डाल कर बाबुल को ले गए।

¹²जब वह मुसीबत में पड़ा तो उसने खुदावन्द अपने खुदा से मिन्नत की और अपने बाप-दादा के खुदा के सामने बहुत खाकसार बना,¹³ और उसने उससे दु'आ की; तब उसने उसकी दु'आ उसे क़बूल करके ~उसकी फ़रयाद सुनी ममलुकत में यरूशलीम को वापस लाया। तब मनस्सी ने जान लिया कि खुदा वन्द ही खुदा है।

¹⁴इसके बा'द उसने दाऊद के शहर के लिए जैहून के मगरिब की तरफ़ वादी में मछली फाटक के मदखल तक एक बाहर की दीवार उठाई, और 'ओफ़ल को घेरा और उसे बहुत ऊँचा किया; और यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में बहादुर जंगी सरदार रखे।¹⁵ और उसने अजनबी मा'बूदों को, और खुदावन्द के घर से उस मूरत को, और सब मज़बहों को जो उसने खुदावन्द के घर के पहाड़ पर और यरूशलीम में बनवाए थे दूर किया और उनको शहर के बाहर फेंक दिया।

¹⁶और उसने खुदावन्द के मज़बह की मरम्मत की और उस पर सलामती के ज़बीहों की और शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ अदा कीं और यहूदाह को खुदावन्द अपने खुदा की 'इबादत का हुक्म दिया।¹⁷ ~तो भी लोग ऊँचे मक़ामों में कुर्बानी करते रहे, लेकिन सिर्फ़ खुदावन्द अपने खुदा के लिए।

¹⁸और मनस्सी के बाक़ी काम और अपने खुदा से उसकी दु'आ, और उन ग़ैबबीनों की बातें जिन्होंने खुदावन्द इसाईल के खुदा के नाम से उसके साथ कलाम किया, वह सब इसाईल के बादशाहों के आ'माल के साथ लिखा हैं।¹⁹ उसकी दु'आ और उसका क़बूल होना, और उसकी खाकसारी से पहले की सब ख़ताएँ और उसकी बेईमानी और वह जगह जहाँ उसने ऊँचे मक़ाम बनवाये और ~यसीरतें और तराशी हुई मूरतें खड़ी कीं, यह सब बातें हूज़ी की तारीख़ में क़लमबन्द हैं।

²⁰और मनस्सी अपने बाप-दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे उसी के घर में दफ़न किया; और उसका बेटा अमून उसकी जगह बादशाह हुआ।

²¹अमून बाइस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने दो साल यरूशलीम में हुकूमत की।²² और जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है वही उसने किया, जैसा उसके बाप मनस्सी ने किया था। और अमून ने उन सब तराशी हुई मूरतों के आगे जो उसके बाप मनस्सी ने बनवाई थीं, कुर्बानियाँ कीं और उनकी 'इबादत की।²³ और वह खुदा वन्द के सामने खाकसार न बना, जैसा उसका बाप मनस्सी खाकसार बना था; बल्कि अमून ने गुनाह पर गुनाह किया।

²⁴तब उसके खादिमों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की और उसी के घर में उसे मार डाला।²⁵ लेकिन अहल-ए-मुल्क ने उन सबको क़त्ल किया जिन्होंने अमून बादशाह के खिलाफ़ साज़िश की थी, और अहल-ए-मुल्क ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया।

Chapter 34

¹यूसियाह आठ साल का था, जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने इकतीस साल यरूशलीम में हुक्मत की।²~उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था, और अपने बाप दाऊद के रास्तों पर चला और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ा।³क्योंकि अपनी हुक्मत के आठवें साल जब वह लड़का ही था, वह अपने बाप दाऊद के खुदा का तालिब हुआ, और बारहवें साल में यहूदाह और यरूशलीम को ऊँचे मक़ामों और यसीरतों और तराशे हुए बुतों और ढाली हुई मूरतों से पाक करने लगा।

⁴और लोगों ने उसके सामने बा'लीम के मज़बहों को ढा दिया, और सूरज की मूरतों को जो उनके ऊपर ऊँचे पर थीं उसने काट डाला, और यासीरतों और तराशी हुई और ढाली हुई मूरतों को उसने टुकड़े टुकड़े करके उनको धूल बना दिया, और उसको उनकी क़ब्रों पर बिथराया जिन्होंने उनके लिए कुर्बानियाँ अदा की थीं।

⁵उसने उन काहिनों की हड्डियाँ उन्हीं के मज़बहों पर जलाई, और यहूदाह और यरूशलीम को पाक किया।

⁶और मनस्सी और इफ़्राईम और शमा'ऊन के शहरों में, बल्कि नफ़्ताली तक उनके आस-पास ~खण्डरों में उसने ऐसा ही किया,⁷और मज़बहों को ढा दिया, और यसीरतों और तराशी हुई मूरतों को तोड़ कर धूल कर दिया, और इस्राईल के पूरे मुल्क में सूरज की सब मूरतों को काट डाला, तब यरूशलीम को लोटा।

⁸अपनी हुक्मत के अठारहवें बरस, जब वह मुल्क और हैकल को पाक कर चुका, तो उसने असलियाह के बेटे साफ़न को और शहर के हाकिम मासियाह और यूआखज़ के बेटे यूआख़ मुवरिख़ को भेजा कि खुदावन्द अपने खुदा के घर की मरम्मत करें।⁹वह ख़िलक्रियाह सरदार काहिन के पास आए, और वह नक़दी जो खुदा के घर में लाई गई थी जिसे दरबान लावियों ने मनस्सी और इफ़्राईम और इस्राईल के सब बाक़ी लोगों से और पूरे यहूदाह और बिनयमीन और यरूशलीम के बाशिंदों से लेकर जमा' किया था, उसके सुपुर्द की।

¹⁰और उन्होंने उसे उन कारिंदों के हाथ में सौंपा जो खुदावन्द के घर की निगरानी करते थे, और उन कारिंदों ने जो खुदावन्द के घर में काम करते थे उसे उस घर की मरम्मत और दुरुस्त करने में लगाया,¹¹या'नी उसे बढ़इयों और राजगीर को दिया की गढ़े हुए पत्थर और जोड़ों के लिए लकड़ी ख़रीदें, और उन घरों के लिए जिनको यहूदाह के बादशाहों ने उजाड़ दिया था शहतीर बनाई।

¹²वह आदमी दियानत से काम करते थे, और यहत और 'अबदियाह लावी जो बनी मिरारी में से थे उनकी निगरानी करते थे, और बनी क़िहात में से ज़करियाह और मुसल्लाम काम कराते थे, और लावियों में से वह लोग थे जो बाजों में माहिर थे।¹³और वह बारबरदारों के भी दारोगा थे और सब क्रिस्म क्रिस्म के काम करने वालों से काम कराते थे, और मुन्शी और मुहतमिम और दरबान लावियों में से थे।

¹⁴~जब वह उस नक़दी को जो खुदावन्द के घर में लाई गई थी निकाल रहे थे, तो ख़िलक्रियाह काहिन को खुदावन्द की तौरत की किताब, जो मूसा की ज़रिए' दी गई थी मिली।¹⁵तब ख़िलक्रियाह ने साफ़न मुन्शी से कहा, "मैंने खुदा वन्द के घर में तौरत की किताब पाई है।" और ख़िलक्रियाह ने वह किताब साफ़न को दी।

¹⁶और साफ़न वह किताब बादशाह के पास ले गया; फिर उसने बादशाह को यह बताया कि सब कुछ जो तू ने अपने नौकरों के सुपुर्द किया था, उसे वह कर रहे हैं।

¹⁷और वह नक़दी जो खुदावन्द के घर में मौजूद थी, उन्होंने लेकर नाज़िरों और कारिंदों के हाथ में सौंपी है।¹⁸फिर साफ़न मुन्शी ने बादशाह से कहा कि ख़िलक्रियाह काहिन ने मुझे यह किताब दी है। और साफ़न ने उसमें से बादशाह के सामने ~पढ़ा।¹⁹और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने तौरत की बातें सुनीं तो अपने कपड़े फाड़े।

²⁰फिर बादशाह ने ख़िलक्रियाह और अख़ीक़ाम बिन साफ़न और अबदून बिन ~मीकाह और साफ़न मुन्शी और बादशाह के नौकर असायाह को यह हुक्म दिया,

²¹कि जाओ, और मेरी तरफ़ से और उन लोगों की तरफ़ से जो इस्राईल और यहूदाह में बाक़ी रह गए हैं, इस किताब की बातों के हक़ में जो मिली है खुदावन्द से पूछो; क्योंकि खुदावन्द का क़हर जो हम पर नाज़िल हुआ है बड़ा है, इसलिए कि हमारे बाप-दादा ने खुदावन्द के कलाम को नहीं माना है कि सब कुछ जो इस किताब में लिखा है उसके मुताबिक़ करते।

²²तब ख़िलक्रियाह और वह जिनकी बादशाह ने हुक्म किया था, खुल्दा नबिया के पास जो तोशाख़ाने के दारोगा सलूम बिन तोकहत बिन ख़सरा की बीवी थी गए। वह यरूशलीम में मिशना नामी महल्ले में रहती थी, इसलिए उन्होंने उससे वह बातें कहीं।

²³उसने उनसे कहा, "खुदा वन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि तुम उस शख्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहो कि;²⁴~'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है देख, मैं इस जगह पर और इसके बाशिंदों पर आफ़त लाऊँगा, या'नी सब लानते जो इस किताब में लिखी हैं जो उन्होंने शाह-ए-यहूदाह के आगे पढ़ी है।²⁵~क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर-मा'बूदों के आगे खुशबू जलाई और अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाया, तब मेरा क़हर इस मक़ाम पर नाज़िल हुआ है और धीमा न होगा।

²⁶रहा शाह-ए- यहूदाह जिसने तुम को खुदावन्द से दरियाफ़्त करने को भेजा है, तब तुम उससे ऐसा कहना कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा ऐसा फ़रमाता है कि उन बातों के बारे में जो तूने सुनी हैं,²⁷चूँकि तेरा दिल मोम हो गया, और तू ने खुदा के सामने आजिज़ी की जब तू ने उसकी वह बातें सुनीं जो उसने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के खिलाफ़ कही हैं, और अपने को मेरे सामने खाकसार बनाया और अपने कपड़े फाड़ कर मेरे आगे रोया, इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली है। खुदावन्द फ़रमाता है,²⁸देख, मैं तुझे तेरे बाप-दादा के साथ मिलाऊँगा और तू अपनी क़ब्र ~में सलामती से पहुँचाया जाएगा, और सारी आफ़त को जो मैं इस मक़ाम और इसके बाशिंदों पर लाऊँगा तेरी आँखें नहीं देखेंगी।" इसलिए उन्होंने यह जवाब बादशाह को पहुँचा दिया।

²⁹तब बादशाह ने यहूदाह और यरूशलीम के सब बुजुर्गों को बुलवा कर इकट्ठा किया।³⁰और बादशाह और सब अहल-ए-यहूदाह और यरूशलीम के बाशिंदे, काहिन और लावी और सब लोग क्या छोटे क्या बड़े, खुदावन्द के घर को गए, और उसने जो 'अहद की किताब खुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सुनाई।

³¹और बादशाह अपनी जगह खड़ा हुआ, और खुदावन्द के आगे 'अहद किया के वह खुदावन्द की पैरवी करेगा और उसके हुक्मों और उसकी शहादतों और क़ानून को अपने सारे दिल और सारी जान से मानेगा, ताकि उस 'अहद की उन बातों को जो उस किताब में लिखी थीं पूरा करे।³²~और उसने उन सबको जो

यरूशलीम और बिनयमीन में मौजूद थे, उस 'अहद में शरीक किया; और यरूशलीम के बाशिंदों ने खुदा अपने बाप-दादा के खुदा के 'अहद के मुताबिक 'अमल किया।

³³और यूसियाह ने बनी-इस्राईल के सब 'इलाकों में से सब मकरूहात को दफ़ा' किया और जितने इस्राईल में मिले उन सभी से 'इबादत, या'नी खुदा वन्द उनके खुदा की 'इबादत, कराई और वह उसके जीते जी खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा की पैरवी से न हटे।

Chapter 35

¹और यूसियाह ने यरूशलीम में खुदावन्द के लिए ईद-ए-फ़सह की, और उन्होंने फ़सह को पहले महीने की चौदहवीं तारीख को ज़बह किया।²उसने काहिनो को उनकी खिदमत पर मुक़रर किया, और उनको खुदावन्द के घर की खिदमत की तरगीब दी;

³और उन लावियों से जो खुदावन्द के लिए पाक ~होकर तमाम इस्राईल को ता'लीम देते थे कहा कि पाक सन्दूक को उस घर में, जिसे शाह-ए- इस्राईल सुलेमान बिन दाऊद ने बनाया था रखो; आगे को तुम्हारे कंधों पर कोई बोझ न होगा। इसलिए अब तुम खुदावन्द अपने खुदा की और उसकी क़ौम इस्राईल की खिदमत करो।⁴और अपने आबाई खान्दानों और फ़रीक़ों के मुताबिक़ जैसा शाह-ए-इस्राईल दाऊद ने लिखा और जैसा उसके बेटे सुलेमान ने लिखा है, अपने आपको तैयार कर लो।

⁵~और तुम मक़दिस में अपने भाइयों या'नी क़ौम के फ़र्ज़न्दों के आबाई खान्दानों की तक्रसीम के मुताबिक़ खड़े हो, ताकि उनमें से हर एक के लिए लावियों के किसी न किसी आबाई खान्दान की कोई शाख़ हो।⁶और फ़सह को ज़बह करो, और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो मूसा के ज़रिए' मिला, 'अमल करने के लिए अपने आपको पाक करके अपने भाइयों के लिए तैयार हो।

⁷और यूसियाह ने लोगों के लिए जितने वहाँ मौजूद थे, रेवड़ों में से बर्रे और हलवान सब के सब फ़सह की कुर्बानियों के लिए दिए, जो गिनती में तीस हज़ार थे और तीन हज़ार बछड़े थे; यह सब बादशाही माल में से दिए गए।⁸और उसके सरदारों ने खुशी की कुर्बानी के तौर पर लोगों को और काहिनो को और लावियों को दिया। खिलक़ियाह और ज़करियाह और यहीएल ने जो खुदा के घर के नाज़िम थे, काहिनो को फ़सह की कुर्बानी के लिए दो हज़ार छः सौ बकरी और तीन सौ बैल दिए।⁹और कनानियाह ने भी और उसके भाइयों समा'याह और नतनीएल ने, और हसबियाह और यईएल और यूज़बद ने जो लावियों के सरदार थे, लावियों को फ़सह की कुर्बानी के लिए पाँच हज़ार भेड़ बकरी और पाँच सौ बैल दिए।

¹⁰~ऐसी 'इबादत की तैयारी हुई, और बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ काहिन अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने अपने फ़रीक़ के मुताबिक़ खड़े हुए।

¹¹~उन्होंने फ़सह को ज़बह किया, और काहिनो ने उनके हाथ से खून लेकर छिड़का और लावी खाल खींचते गए।¹²फिर उन्होंने सोख़तनी कुर्बानियाँ अलग कीं ताकि वह लोगों के आबाई खान्दानों की तक्रसीम के मुताबिक़ खुदावन्द के सामने पेश करने को उनको दें, जैसा मूसा की किताब में लिखा है; और बैलों से भी उन्होंने ऐसा ही किया।

¹³~और उन्होंने दस्तूर के मुताबिक़ फ़सह को आग पर भूना और पाक हड्डियों ~को देगों और हण्डों और कढ़ाइयों में पकाया और उनको जल्द लोगों को पहुँचा दिया।¹⁴इसके बा'द उन्होंने अपने लिए और काहिनो के लिए तैयार किया, क्योंकि काहिन या'नी बनी हारून सोख़तनी कुर्बानियों और चर्बी के चढ़ाने में रात तक मशगूल रहे। इसलिए लावियों ने अपने लिए और काहिनो के लिए जो बनी हारून थे तैयार किया।

¹⁵और गानेवाले जो बनी आसफ़ थे, दाऊद और आसफ़ और हैमान और बादशाह के ग़ैबबीन यदूतोन के हुक्म के मुताबिक़ अपनी अपनी जगह में थे, और हर दरवाज़े पर दरबान थे। उनको अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा, क्योंकि उनके भाई लावियों ने उनके लिए तैयार किया।

¹⁶~इसलिए उसी दिन यूसियाह बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ फ़सह मानने और खुदावन्द के मज़बह पर सोख़तनी कुर्बानियाँ पेश करने के लिए खुदावन्द की पूरी 'इबादत की तैयारी की गई।¹⁷और बनी-इस्राईल ने जो हाज़िर थे, फ़सह को उस वक़्त और फ़तीरी रोटी की 'ईद की सात दिन तक मनाया।

¹⁸~इसकी तरह कोई फ़सह समुएल नबी के दिनों से इस्राईल में नहीं मनाया गया था, और न शाहान-ए-इस्राईल में से किसी ने ऐसी ईद फ़सह की जैसी यूसियाह और काहिनो और लावियों और सारे यहूदाह और इस्राईल ने जो हाज़िर थे, और यरूशलीम के बाशिंदों ने की।¹⁹~ये फ़सह यूसियाह की हुक्मत के अठारहवें साल में मनाया गया।

²⁰इस सबके बा'द जब यूसियाह हैकल को तैयार कर चुका, तो शाह-ए-मिस्र निकोह ने करकमीस से जो फुरात के किनारे है, लड़ने के लिए चढ़ाई की और यूसियाह उसके मुकाबिला को निकला।²¹लेकिन उसने उसके पास क़ासिदों से कहला भेजा कि ऐ यहूदाह के बादशाह, तुझ से मेरा क्या काम? मैं आज के दिन तुझ पर नहीं बल्कि उस खान्दान पर चढ़ाई कर रहा हूँ जिससे मेरी जंग है, और खुदा ने मुझ को जल्दी करने का हुक्म दिया है; इसलिए तू खुदा से जो मेरे साथ है मुज़ाहिम न हो, ऐसा न हो कि वह तुझे हलाक कर दे।

²²लेकिन यूसियाह ने उससे मुँह न मोड़ा, बल्कि उससे लड़ने के लिए अपना भेस बदला, और निकोह की बात जो खुदा के मुँह से निकली थी न मानी और मजिद्दो की वादी में लड़ने को गया।

²³~और तीरअंदाज़ों ने यूसियाह बादशाह को तीर मारा, और बादशाह ने अपने नौकरों से कहा, "मुझे ले चलो, क्योंकि मैं बहुत ज़ख्मी हो गया हूँ।"²⁴इसलिए उसके नौकरों ने उसे उस रथ पर से उतार कर उसके दूसरे रथ पर चढ़ाया, और उसे यरूशलीम को ले गए; और वह मर गया और अपने बाप-दादा की क़ब्रों में दफ़न हुआ, और सारे यहूदाह और यरूशलीम ने यूसियाह के लिए मातम किया।

²⁵और यरमियाह ने यूसियाह पर नौहा किया, और गानेवाले और गानेवालिआँ सब अपने मर्सियों में आज के दिन तक यूसियाह का ज़िक़र करते हैं। यह उन्होंने इस्राईल में एक दस्तूर बना दिया, और देखो वह बातें नौहों में लिखी हैं।²⁶~यूसियाह के बाक़ी काम, और जैसा खुदावन्द की शरी'अत में लिखा है उसके मुताबिक़ उसके नेक आ'माल,²⁷~और उसके काम, शुरू' से आखिर तक इस्राईल और यहूदाह के बादशाहों की किताब में लिखा है।

Chapter 36

¹और मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआखज़ को उसके बाप की जगह यरूशलीम में बादशाह बनाया।²~यहूआखज़ तेईस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा; उसने तीन महीने यरूशलीम में हुकूमत की।

³और शाह-ए-मिस्र ने उसे यरूशलीम में तख़्त से उतार दिया, और मुल्क पर सौ किन्तार' चाँदी और एक किन्तार सोना जुर्माना किया।⁴और शाह-ए-मिस्र ने उसके भाई इल्याक्रीम को यहूदाह और यरूशलीम का बादशाह बनाया, और उसका नाम बदलकर यहूयक्रीम रखा; और निकोह उसके भाई यहूआखज़ को पकड़कर मिस्र को ले गया।

⁵यहूयक्रीम पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने ग्यारह साल यरूशलीम में हुकूमत की। उसने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में बुरा था।⁶उस पर शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र ने चढ़ाई की और उसे बाबुल ले जाने के लिए उसके बेड़ियाँ डालीं⁷ और नबूकदनज़र खुदावन्द के घर के कुछ बर्तन भी बाबुल को ले गया और उनको बाबुल में अपने मन्दिर में रखवा,

⁸यहूयक्रीम के बाक़ी काम और उसके नफ़रतअंगेज़ 'आमाल, और जो कुछ उसमें पाया गया, वह इसाईल और यहूदाह के बादशाहों की किताब में लिखा है; और उसका बेटा यहूयाकीन उसकी जगह बादशाह हुआ।

⁹यहूयाकीन आठ साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने तीन महीने दस दिन यरूशलीम में हुकूमत की। उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा था।¹⁰और नए साल के शुरू' होते ही नबूकदनज़र बादशाह ने उसे खुदावन्द के घर के नफ़ीस बर्तनों के साथ बाबुल को बुलवा लिया, और उसके भाई सिदक़ियाह को यहूदाह और यरूशलीम का बादशाह बनाया।

¹¹सिदक़ियाह इक्कीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने ग्यारह साल यरूशलीम में हुकूमत की।¹²उसने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में बुरा था। और उसने यरमियाह नबी के सामने जिसने खुदावन्द के मुँह की बातें उससे कहीं, 'आजिज़ी न की।

¹³~उसने नबूकदनज़र बादशाह से भी जिसने उसे खुदा की क़सम खिलाई थी, बगावत की बल्कि वह गर्दनकश हो गया, और उसने अपना दिल ऐसा सख़्त कर लिया कि खुदावन्द इसाईल के खुदा की तरफ़ न मुड़ा।¹⁴इसके 'अलावा काहिनों के सब सरदारों और लोगों ने और क्रौमों के सब नफ़रती कामों के मुताबिक़ बड़ी बदकारियाँ कीं, और उन्होंने खुदावन्द के घर को जिसे उसने यरूशलीम में पाक ठहराया था नापाक किया।

¹⁵खुदावन्द उनके बाप-दादा के खुदा ने अपने पैग़म्बरों को उनके पास बर वक़्त भेज ~भेज कर पैग़ाम भेजा क्योंकि उसे अपने लोगों और अपने घर पर तरस आता था;¹⁶~लेकिन उन्होंने खुदा के पैग़म्बरों को टूटों में उड़ाया, और उसकी बातों को नाचीज़ जाना और उसके नबियों की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि खुदावन्द का ग़ज़ब अपने लोगों पर ऐसा भड़का कि कोई चारा न रहा।

¹⁷चुनौचे वह कसदियों के बादशाह को उन पर चढ़ा लाया, जिसने उनके मक़दिस के घर में उनके जवानों को तलवार से क़त्ल किया; और उसने क्या जवान मर्द क्या कुंवारी, क्या बुढ़ा या 'उम्र दराज़, किसी पर तरस न खाया।उसने सबको उसके हाथ में दे दिया।

¹⁸~और खुदा के घर के सब बर्तन, क्या बड़े क्या छोटे, और खुदावन्द के घर के खज़ाने और बादशाह और उसके सरदारों के खज़ाने;यह सब वह बाबुल को ले गया।¹⁹और उन्होंने खुदा के घर को जला दिया, और यरूशलीम की फ़सील ढा दी, और उसके सारे महल आग से जला दिए और उसके सब क़ीमती बर्तन को बर्बाद किया।

²⁰~जो तलवार से बचे वह उनको बाबुल ले गया, और वहाँ वह उसके और उसके बेटों के गुलाम रहे, जब तक फ़ारस की हुकूमत शुरू' न हुई²¹ताकि खुदावन्द का वह कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया था पूरा हो कि मुल्क अपने सब्तों का आराम पा ले; क्योंकि जब तक वह सुनसान पड़ा रहा तब तक, या'नी सत्तर साल तक उसे सब्त का आराम मिला।

²²और शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल, इसलिए के खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया था पूरा हो, खुदावन्द ने शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस का दिल उभारा; तो उसने अपनी सारी ममलुकत में 'ऐलान करवाया और इस मज़मून का फ़रमान भी लिखा कि।²³शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस ऐसा फ़रमाता है, 'खुदावन्द आसमान के खुदा ने ज़मीन की सब हुकूमतें मुझे बख़्शी हैं, और उसने मुझ को ताकीद की है कि मैं यरूशलीम में, जो यहूदाह में है उसके लिए एक घर बनाऊँ; इसलिए तुम्हारे बीच जो कोई उसकी सारी क़ौम में से हो, खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ हो और वह रवाना हो जाए।

अज़्रा

Chapter 1

¹~और शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस की सल्तनत के पहले साल में ~इसलिए कि खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया था पूरा हुआ, खुदावन्द ने शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस का दिल उभारा, इसलिए उस ने अपने पूरे मुल्क में 'ऐलान कराया और इस मज़मून का फ़रमान लिखा कि।²शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस यूँ फ़रमाता है कि खुदावन्द आसमान के खुदा ने ज़मीन की सब मुल्के मुझे बख़्शी हैं, और मुझे ताकीद की है कि मैं यरूशलीम में जो यहूदाह में है उसके लिए एक घर बनाऊँ |

³तब तुम्हारे बीच जो कोई उसकी सारी क़ौम में से हो~उसका खुदा उसके साथ~हो और वह यरूशलीम~को जो यहूदाह में है जाए,और खुदावन्द इसाईल~के खुदा का घर जो यरूशलीम में है, बनाए~(खुदा वही है);⁴और जो कोई किसी जगह जहाँ उसने क़याम किया बाक़ी रहा हो तो उसी जगह के लोग चाँदी और सोने और ~माल मवेशी से उसकी मदद करें, और 'अलावा इसके वह खुदा के घर के लिए जो यरूशलीम में है खुशी के हदिये दें।

⁵~तब यहूदाह और बिनयमीन के आबाई खानदानों के सरदार और काहिन और लावी ~और वह सब जिनके दिल को खुदा ने उभारा, उठे कि जाकर खुदावन्द का घर जो यरूशलीम में है बनाएँ,⁶ और उन सभी ने जो उनके पड़ोस में थे, 'अलावा उन सब चीज़ों के जो खुशी से दी गई, चाँदी के बर्तनों और सोने और सामान और मवाशी और क्रीमती चीज़ों से उनकी मदद की।

⁷~और~खोरस~बादशाह ने भी खुदावन्द के घर के उन बर्तनों को निकलवाया जिनको नबूकदनज़र यरूशलीम से ले आया था और अपने मा'बूदों के 'इबादत खाने ~में रखा था।⁸इन ही को शाह-ए- फ़ारस खोरस ने खज़ान्ची मित्रदात के हाथ से निकलवाया, और उनको गिनकर यहूदाह के अमीर शेषबज़्ज़र को दिया।

⁹और उनकी गिनती ये है : सोने की तीस थालियाँ, और चाँदी की हजार थालियाँ और उनतीस छुरियाँ | ¹⁰~और सोने के तीस प्याले, और चाँदी के दूसरी क्रिस्म के चार सौ दस प्याले और, और क्रिस्म के बर्तन एक हजार।¹¹सोने और चाँदी के कुल बर्तन पाँच हजार चार सौ थे। शेषबज़्ज़र इन सभी को, जब गुलामी के लोग बाबुल से यरूशलीम को पहुँचाए गए, ले आया।

Chapter 2

¹मुल्क के जिन लोगों को शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र बाबुल को ले गया था, उन गुलामों की गुलामी में से वह जो निकल आए और यरूशलीम और यहूदाह में अपने अपने शहर को वापस आए ये हैं: ²~वह ज़रुब्बाबुल, यशू'अ, नहमियाह, सिराया, रा'लायाह, मर्दकी, बिलशान, मिसफ़ार, बिगवई, रहूम और बा'ना के साथ आए। इस्राईली क्रौम के आदमियों का ये शुमार हैं।

³~बनी पर'ऊस, दो हज़ार एक सौ बहत्तर; ⁴~बनी सफ़तियाह, तीन सौ बहत्तर; ⁵बनी अरख, सात सौ पिच्छत्तर; ⁶बनी पखतमोआब, जो यशू'अ और यूआब की औलाद में से थे, दो हज़ार आठ सौ बारह;

⁷बनी 'ऐलाम, एक हज़ार दो सौ चव्वन; ⁸बनी ज़त्तू, नौ सौ पैतालीस; ⁹~बनी ज़क्की, सात सौ साठ ¹⁰बनी बानी, छः सौ बयालीस;

¹¹बनी बर्बई, छः सौ तेईस; ¹²बनी 'अज़ादा, एक हज़ार दो सौ बाईस ¹³बनी अदूनिक्काम, छः सौ छियासठ; ¹⁴बनी बिगवई, दो हज़ार छप्पन;

¹⁵बनी 'अदीन, चार सौ चव्वन; ¹⁶~बनी अतीर, हिज़क्रियाह के घराने के अठानवे ¹⁷~बनी बज़ई, तीन सौ तेईस; ¹⁸बनी यूरह, एक सौ बारह;

¹⁹~बनी हाशूम, दो सौ तेईस; ²⁰बनी जिब्बार, पच्चानवे, ²¹बनी बैतलहम, एक सौ तेईस, ²²~अहल-ए-नतूफ़ा, छप्पन:

²³अहल-ए-'अन्तोत, एक सौ अट्ठाईस; ²⁴बनी 'अज़मावत, बयालीस; ²⁵क्रयत-'अरीम और कफ़रा और बैरोत के लोग, सात सौ तैतालीस, ²⁶रामा और जिबा' के लोग, छः सौ इक्कीस,

²⁷~अहल-ए-मिक्मास, एक सौ बाईस; ²⁸बैतएल और 'ऐ के लोग, दो सौ तेईस; ²⁹बनी नबू, बावन, ³⁰~बनी मजबीस, एक सौ छप्पन;

³¹दूसरे 'ऐलाम की औलाद, एक हज़ार दो सौ चव्वन; ³²बनी हारिम, तीन सौ बीस; ³³लूद ~और हादीद और ओनू की औलाद सात सौ पच्चीस :

³⁴~यरीहू के लोग, तीन सौ पैतालीस; ³⁵सनाआह के लोग, तीन हज़ार छः सौ तीस।

³⁶फिर काहिनों या'नी यशू'अ के खानदान में से : यद'अयाह की औलाद, नौ सौ तिहत्तर; ³⁷~बनी इम्मेर, एक हज़ार बावन, ³⁸बनी फ़शहूर, एक हज़ार दो सौ सैतालीस; ³⁹बनी हारिम, एक हज़ार सत्रह।

⁴⁰लावियों या'नी हूदावियाह की नस्ल में से यशू'अ और कदमीएल की औलाद, चौहत्तर, ⁴¹गानेवालों में से बनी आसफ़, एक सौ अट्ठाईस; ⁴²दरबानों की नस्ल में से बनी सलूम, बनी अतीर, बनी तलमून, बनी 'अक्कोब, बनी खतीता, बनी सोबै सब मिल ~कर, एक सौ उन्तालीस।

⁴³और नतीनीम' में से बनी जिहा, बनी हसूफ़ा, बनी तब'ऊत, ⁴⁴~बनी क्रूरुस, बनी सीहा, बनी फ़दून, ⁴⁵~बनी लिबाना, बनी हजाबा, बनी 'अक्बकूब, ⁴⁶~बनी हजाब, बनी शमलै, बनी हनान,

⁴⁷बनी जिदेल, बनी हजर, बनी रआयाह, ⁴⁸बनी रसीन, बनी नक्कूदा बनी जज़्ज़ाम, ⁴⁹~बनी 'उज़्ज़ा, बनी फ़ासेख, बनी बसैई, ⁵⁰बनी असनाह, बनी म'ओनीम, बनी नफ़ीसीम,

⁵¹बनी बक्रबोक, बनी हकूफ़ा, बनी हरहूर, ⁵²बनी बज़लूत, बनी महीदा, बनी हरशा, ⁵³बनी बरकूस, बनी सीसरा, बनी तामह, ⁵⁴बनी नज़याह, बनी खतीफ़ा।

⁵⁵~सुलेमान के खादिमों की औलाद बनी सूती बनी हसूफ़िरत बनी फ़रूदा : ⁵⁶बनी या'ला, बनी दरकून, बनी जिदेल, ⁵⁷बनी सफ़तियाह, बनी खितेल, बनी फ़ूकरत ज़बाइम, बनी अमी। ⁵⁸सब नतीनीम और सुलेमान के खादिमों की औलाद तीन सौ बानवे।

⁵⁹~और जो लोग तल-मिलह और तल-हरसा और करुब और अद्दान और अमीर से गए थे, वह ये हैं; लेकिन ये लोग अपने अपने आबाई खानदान और नस्ल का पता नहीं दे सके कि ~इस्राईल के हैं या नहीं : ⁶⁰या'नी बनी दिलायाह, बनी तूबियाह, बनी नकूदा छः सौ बावन।

⁶¹और काहिनों की औलाद में से बनी हबायाह, बनी हकूस, बनी बरज़िल्ली जिसने जिल'आदी बरज़िल्ली की बेटियों में से एक को ब्याह लिया और उनके नाम से कहलाया ⁶²~उन्होंने अपनी सनद उनके बीच जो नसबनामों के मुताबिक़ गिने गए थे ढूँडी लेकिन न पाई, इसलिए वह नापाक समझे गए और कहानत से खारिज हुए; ⁶³~और हाकिम ने उनसे कहा कि जब तक कोई काहिन ऊरीम-ओ-तम्मीम लिए हुए न उठे, तब तक वह पाक तरीन चीज़ों में से न खाएँ।

⁶⁴~सारी जमा'अत मिल कर बयालीस हज़ार तीन सौ साठ की थी। ⁶⁵इनके 'अलावा उनके गुलामों और लौंडियों का शुमार सात हज़ार तीन सौ सैतीस था, और उनके साथ दो सौ गानेवाले और गानेवालियाँ थीं।

⁶⁶उनके घोड़े, सात सौ छत्तीस; उनके खच्चर, दो सौ पैतालीस; ⁶⁷उनके ऊँट, चार सौ पैतीस और उनके गधे, छः हज़ार सात सौ बीस थे।

⁶⁸और आबाई खानदानों के कुछ सरदारों ने जब वह खुदावन्द के घर में जो यरूशलीम में है आए, तो खुशी से खुदा के मस्कन के लिए हदिये दिए, ताकि ~वह फिर अपनी जगह पर ता'मीर किया जाए। ⁶⁹उन्होंने अपने ताक़त के मुताबिक़ काम के खज़ाना में सोने के इकसठ हज़ार दिरहम और चाँदी के पाँच हज़ार मनहाँ और काहिनों के एक सौ लिबास दिए।

⁷⁰इसलिए काहिन, और लावी, और कुछ लोग, और गानेवाले और दरबान, और नतीनीम अपने अपने शहर में और सब इस्राइली अपने अपने शहर में बस गए।

Chapter 3

¹जब सातवाँ महीना आया, और बनी इस्राईल अपने अपने शहर में बस गए तो लोग एकतन होकर यरूशलीम में इकट्ठे हुए।²तब यशू'अ बिन यूसदक़ और उसके भाई जो काहिन थे, और ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और उसके भाई उठ खड़े हुए और उन्होंने इस्राईल के खुदा का मज़बह बनाया ताकि उस पर सोख्तनी कुर्बानियाँ चढ़ाएँ, जैसा मर्द-ए-खुदा मूसा की शरी'अत में लिखा है।

³और ~उन्होंने मज़बह को उसकी जगह पर रखा, क्योंकि ~उन अतराफ़ की क़ौमों की वजह से उनको ख़ौफ़ रहा; और वह उस पर ~खुदावन्द के लिए सोख्तनी ~कुर्बानियाँ या'नी सुबह ~और शाम की~सोख्तनी~कुर्बानियाँ~ पेश करने लगे।⁴और उन्होंने लिखे हुए के मुताबिक़ ख़ैमों की 'ईद मनाई, और रोज़ की सोख्तनी कुर्बानियाँ गिन गिन कर जैसा ~जिस दिन का फ़र्ज़ था, दस्तूर के मुताबिक़ पेश कीं:~⁵उसके बा'द दाइमी सोख्तनी कुर्बानी, और नये चाँद की, और खुदावन्द की उन सब मुकर्ररा 'ईदों की जो मुक़द्दस ठहराई गई थीं, और हर शख्स की तरफ़ से ऐसी कुर्बानियाँ पेश कीं जो रज़ा की कुर्बानी ख़ुशी से खुदावन्द के लिए अदा करता था।

⁶सातवें महीने की पहली तारीख़ से वह खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश करने लगे। लेकिन खुदावन्द की हैकल की बुनियाद अभी तक डाली न गई थी।⁷और उन्होंने मिस्त्रियों और बढ़इयों को नक़दी दी, और सैदानियों और सूरियों को खाना-पीना और तेल दिया, ताकि वह देवदार के लट्टे लुबनान से याफ़ा को समन्दर की राह से लाएँ, जैसा उनको शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस से परवाना मिला था।

⁸फिर उनके खुदा के घर में जो यरूशलीम में है आ पहुँचने के बा'द, दूसरे बरस के दूसरे महीने में, ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और यशू'अ बिन यूसदक़ ने, और उनके बाक़ी भाई काहिनों और लावियों और सभों ने जो गुलामी से लौट कर यरूशलीम को आए थे काम शुरू किया और लावियों को जो बीस बरस के और उससे ऊपर थे मुकर्रर किया कि खुदावन्द के घर के काम की निगरानी करें।⁹तब यशू'अ और उसके बेटे और भाई, और क़दमीएल और उसके बेटे जो यहूदाह की नसल से थे, मिल कर उठे कि ~खुदा के घर में कारीगरों की निगरानी करें; और बनी हनदाद भी और उनके बेटे और भाई जो लावी थे उनके साथ थे।

¹⁰इसलिए जब मिस्त्री खुदावन्द की हैकल की बुनियाद डालने लगे, तो उन्होंने काहिनों को अपने अपने लिबास पहने और नरसिंगे लिए हुए और आसफ़ की नसल के लावियों को झाँझ लिए हुए खड़ा किया, कि शाह-ए-इस्राईल दाऊद की तरतीब के मुताबिक़ खुदावन्द की हम्द करें।¹¹इसलिए वह एक हो कर बारी-बारी से ~खुदावन्द की ता'रीफ़ और शुक्रगुज़ारी में गा-गा कर कहने लगे कि वह भला है, क्योंकि उसकी रहमत हमेशा इस्राईल पर है। जब वह खुदावन्द की ता'रीफ़ कर रहे थे, तो सब लोगों ने बलन्द आवाज़ से नारा मारा, इसलिए कि खुदावन्द के घर की बुनियाद पड़ी थी।

¹²लेकिन काहिनों और लावियों और आबाई ख़ान्दानों के सरदारों में से बहुत से 'उम्र दराज़ लोग, जिन्होंने पहले घर को देखा था, उस वक़्त जब इस घर की बुनियाद उनकी आँखों के सामने डाली गई, तो बड़ी आवाज़ से ज़ोर से रोने लगे; और बहुत से ख़ुशी के मारे ज़ोर ज़ोर से ललकारे।¹³इसलिए लोग ख़ुशी की आवाज़ के शोर और लोगों के रोने की आवाज़ में फ़र्क़ न कर सके, क्योंकि ~लोग बुलन्द आवाज़ से नारे मार रहे थे, और आवाज़ दूर तक सुनाई देती थी।

Chapter 4

¹जब यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों ने सुना कि वह जो गुलाम हुए थे, खुदावन्द इसाईल के खुदा के लिए हैकल को बना रहे हैं;²तो वह ज़रुब्बाबुल और आबाई क़बीलों के सरदारों के पास आकर उनसे कहने लगे कि हम को भी अपने साथ बनाने दो; क्योंकि हम भी तुम्हारे खुदा के तालिब हैं जैसे तुम हो, और हम शाह-ए-असुर असर-हदून के दिनों से जो हम को यहाँ लाया, उसके लिए कुर्बानी पेश करते हैं।

³लेकिन ज़रुब्बाबुल और यशू'अ और इसाईल के आबाई खानदानों के बाक़ी सरदारों ने उनसे कहा कि तुम्हारा काम नहीं, कि हमारे साथ हमारे खुदा के लिए घर बनाओ, बल्कि हम खुद ही मिल कर खुदावन्द इसाईल के खुदा के लिए उसे बनाएँगे, जैसा शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस ने हम को हुक्म किया है।

⁴तब मुल्क के लोग यहूदाह के लोगों की मुख़ालिफ़त करने और बनाते वक़्त उनको तकलीफ़ देने लगे।⁵और शाह-ए-फ़ारस ख़ोरस के जीते जी, बल्कि शाह-ए-फ़ारस दारा की सल्तनत तक उनके मक़सदों को रद करने के लिए उनके खिलाफ़ सलाहकारों को उजरत देते रहे।⁶और अख़सूयरस के हुक्मत के ज़माने, या'नी उसकी सल्तनत के शुरू में उन्होंने यहूदाह और यरूशलीम के बाशिन्दों की शिकायत लिख भेजी।

⁷फिर अरतख़शशता के दिनों में बिशलाम और मित्रदात और ताबिएल और उसके बाक़ी साथियों ने शाह-ए-फ़ारस अरतख़शशता को लिखा। उनका ख़त अरामी हुरूफ़ और अरामी ज़बान में लिखा था।⁸रहूम दीवान और शम्सी मुन्शी ने अरतख़शशता बादशाह को यरूशलीम के खिलाफ़ यूँ ख़त लिखा।

⁹इसलिए रहूम दीवान और शम्सी मुन्शी और उनके बाक़ी साथियों ने जो दीना और अफ़ार-सतका और तरफ़ीला और फ़ारस और अरक और बाबुल और सोसन और दिह और 'ऐलाम के थे,¹⁰और बाक़ी उन कौमों ने जिनको उस बुजुर्ग-ओ-शरीफ़ असनफ़र ने पार लाकर शहर-ए-सामरिया और दरिया के इस पार के बाक़ी 'इलाक़े में बसाया था, वग़ैरा वग़ैरा इसको लिखा।

¹¹उस ख़त की नक़ल जो उन्होंने अरतख़शशता बादशाह के पास भेजा। ये है: "आपके गुलाम, या'नी वह लोग जो दरिया पार रहते हैं, वग़ैरा।¹²बादशाह को मा'लूम हो कि यहूदी लोग जो हुज़ूर के पास से हमारे बीच यरूशलीम में आए हैं, वह उस बागी और फ़सादी शहर को बना रहे हैं; चुनाँचे दीवारों को ख़त्म और बुनियादों की मरम्मत कर चुके हैं।

¹³इसलिए बादशाह को मा'लूम हो जाए कि अगर ये शहर बन जाए और फ़सील तैयार हो जाए, तो वह ख़िराज चुंगी, या महसूल नहीं देंगे और आखिर बादशाहों को नुक़सान होगा।

¹⁴इसलिए चूँकि हम हुज़ूर के दौलतख़ाने का नमक खाते हैं और मुनासिब नहीं कि हमारे सामने बादशाह की तहक़ीर हो, इसलिए हम ने लिखकर बादशाह को ख़बर दी है।¹⁵ताकि हुज़ूर के बाप-दादा के दफ़्तर की किताब से मा'लूम की जाए, तो उस दफ़्तर की किताब से हुज़ूर को मा'लूम होगा और यक़ीन हो जाएगा कि ये शहर फ़ितना अंगेज है जो बादशाहों और सूबों को नुक़सान पहुँचाता रहा है; और पुराने ज़माने से उसमें फ़साद खड़ा करते रहे हैं। इसी वजह से ये शहर उजाड़ दिया गया था।¹⁶और हम बादशाह को यक़ीन दिलाते हैं कि अगर ये शहर तामीर हो और इसकी फ़सील बन जाए, तो इस सूरत में हुज़ूर का हिस्सा दरिया पार कुछ न रहेगा।"

¹⁷तब बादशाह ने रहूम दीवान और शम्सी मुन्शी और उनके बाक़ी साथियों को, जो सामरिया और दरिया पार के बाक़ी मुल्क में रहते हैं यह जवाब भेजा कि "सलाम वग़ैरा।¹⁸जो ख़त तुम ने हमारे पास भेजा, वह मेरे सामने साफ़ साफ़ पढ़ा गया।¹⁹और मैंने हुक्म दिया और मा'लूमात की गयी, और मा'लूम हुआ कि इस शहर ने पुराने ज़माने से बादशाहों से बगावत की है, और फ़ितना और फ़साद उसमें होता रहा है।

²⁰और यरूशलीम में ताक़तवर बादशाह भी हुए हैं जिन्होंने दरिया पार के सारे मुल्क पर हुक्मत की है, और ख़िराज, चुंगी और महसूल उनको दिया जाता था।

²¹इसलिए तुम हुक्म जारी करो कि ये लोग काम बन्द करें और ये शहर न बने, जब तक मेरी तरफ़ से फ़रमान जारी न हों।²²ख़बरदार, इसमें सुस्ती न करना; बादशाहों के नुक़सान के लिए ख़राबी क्यूँ बढ़ने जाए?"

²³इसलिए जब अरतख़शशता बादशाह के ख़त की नक़ल रहूम और शम्सी मुन्शी और उनके साथियों के सामने पढ़ी गई, तो वह जल्द यहूदियों के पास यरूशलीम को गए, और अपनी ताक़त से उनको रोक दिया।²⁴तब खुदा के घर का जो यरूशलीम में है काम बन्द हुआ, और शाह-ए-फ़ारस दारा की सल्तनत के दूसरे बरस तक बन्द रहा।

Chapter 5

¹फिर नबी या'नी हज्जे नबी और ज़करियाह बिन 'इहूउन यहूदियों के सामने जो यहूदाह और यरूशलीम में थे, नबुव्वत करने लगे; उन्होंने इस्राईल के ख़ुदा के नाम से उनके सामने नबुव्वत की।²तब ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और यशू'अ बिन यूसदक़ उठे, और ख़ुदा के घर को जो यरूशलीम में है बनाने लगे; और ख़ुदा के वह नबी उनके साथ होकर उनकी मदद करते थे।

³उन्हीं दिनों दरिया पार का हाकिम, तत्तनै और शतर-बोज़नै और उनके साथी उनके पास आकर उनसे कहने लगे कि किसके फ़रमान से तुम इस घर को बनाते, और इस फ़सील को पूरा करते हो?⁴~तब हम ने उनसे इस तरह कहा कि उन लोगों के क्या नाम हैं, जो इस 'इमारत को बना रहे हैं?'⁵लेकिन यहूदियों के बुजुर्गों पर उनके ख़ुदा की नज़र थी; इसलिए उन्होंने उनको न रोका जब तक कि वह मुआ'मिला दारा तक न पहुँचा, और फिर इसके बारे में ख़त के ज़रिए' से जवाब न आया |

⁶~उस ख़त की नक़ल जो दरिया पार के हाकिम तत्तनै और शतर-बोज़नै और उसके अफ़ारसकी साथियों ने जो दरिया पार थे, दारा बादशाह को भेजा,⁷~उन्होंने उसके पास एक ख़त भेजा जिसमें यूँ लिखा था: "दारा बादशाह की हर तरह सलामती हो!

⁸बादशाह को मा'लूम हो कि हम यहूदाह के सूबा में ख़ुदा-ए- ताला के घर को गए; वह बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है और दीवारों पर कड़ियाँ धरी जा रही हैं, और काम ख़ूब मेहनत से हो रहा है और उनके हाथों तरक्की पा रहा है।⁹तब हम ने उन बुजुर्गों से सवाल किया और उनसे यूँ कहा, 'कि तुम किस के फ़रमान से इस घर को बनाते, और इस दीवार को पूरा करते हो?'¹⁰और हम ने उनके नाम भी पूछे, ताकि हम उन लोगों के नाम लिख कर हुज़ूर को ख़बर दें कि उनके सरदार कौन हैं।

¹¹और उन्होंने हम को यूँ जवाब दिया कि हम ज़मीन-ओ-आसमान के ख़ुदा के बन्दे हैं, और वही घर बना रहे हैं जिसे बने बहुत बरस हुए, और जिसे इस्राईल के एक बड़े बादशाह ने बना कर तैयार किया था।

¹²लेकिन जब हमारे बाप-दादा ने आसमान के ख़ुदा को गुस्सा दिलाया, तो उसने उनको शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र कसदी के हाथ में कर दिया; जिसने इस घर को उजाड़ दिया, और लोगों को बाबुल को ले गया।¹³लेकिन शाह-ए-बाबुल ख़ोरस के पहले साल ख़ोरस बादशाह ने हुक्म दिया कि ख़ुदा का ये घर बनाया जाए।

¹⁴और ख़ुदा के घर के सोने और चाँदी के बर्तनों को भी, जिनको नबूकदनज़र यरूशलीम की हैकल से निकाल कर बाबुल के 'इबादत गाह में ले आया था, उनको ख़ोरस बादशाह ने बाबुल के इबादत गाह से निकाला और उनको शेषबज़र नामी एक शख्स को जिसे उसने हाकिम बनाया था सौंप दिया,¹⁵और उससे कहा कि इन बर्तनों को ले और जा, और इनको यरूशलीम की हैकल में रख, और ख़ुदा का मस्कन अपनी जगह पर बनाया जाए।

¹⁶तब उसी शेषबज़र ने आकर ख़ुदा के घर की जो यरूशलीम में है बुनियाद डाली; और उस वक़्त से अब तक ये बन रहा है, लेकिन अभी तैयार नहीं हुआ।

¹⁷इसलिए अब अगर बादशाह मुनासिब जाने, तो बादशाह के दौलतख़ाने में जो बाबुल में है, मा'लूमात की जाए कि ख़ोरस बादशाह ने ख़ुदा के इस घर को यरूशलीम में बनाने का हुक्म दिया था या नहीं। और इस मुआ'मिले में बादशाह अपनी मज़ी हम पर ज़ाहिर करे।"

Chapter 6

¹तब दारा बादशाह के हुक्म से बाबुल के उस तवारीखी कुतुबखाने में जिसमें खज़ाने धरे थे, मा'लुमात की गई।²चुनाँचें ~अखमता के महल में जो मादै के सूबे में वाक्रे' है, एक तूमर मिला जिसमें ये हुक्म लिखा हुआ था:

³"खोरस बादशाह के पहले साल खोरस बादशाह ने खुदा के घर के बारे में जो यरूशलीम में है हुक्म किया, कि वह घर या'नी वह मक़ाम जहाँ कुर्बानियां करते हैं बनाया जाए और उसकी बुनियादे मज़बूती से डाली जाएँ। उसकी ऊँचाई साठ हाथ और चौड़ाई साठ हाथ हो,⁴तीन रद्दे भारी पत्थरों के और एक रद्दा नई लकड़ी का हो; और खर्च शाही महल से दिया जाए।⁵और खुदा के घर के सोने और चाँदी के बर्तन भी, जिनको नबूकदनज़र उस हैकल से जो यरूशलीम में है निकालकर बाबुल को लाया, वापस दिए जाएँ और यरूशलीम की हैकल में अपनी अपनी जगह पहुँचाए जाएँ, और तू उनको खुदा के घर में रख देना।"

⁶इसलिए तू ऐ दरिया पार के हाकिम, तत्तनै और शतर-बोज़नै और तुम्हारे अफ़ारसकी साथी जो दरिया पार हैं तुम वहाँ से दूर रहो।⁷खुदा के इस घर के काम में दखलअन्दाज़ी न करो। यहूदियों का हाकिम और यहूदियों के ~बुजुर्ग खुदा के घर को उसकी जगह पर ता'मीर करें।

⁸"अलावा इसके खुदा के इस घर के बनाने में यहूदियों के बुजुर्गों के साथ तुम को क्या करना है, इसलिए उसके बारे में मेरा ये हुक्म है कि शाही माल में से, या'नी दरिया पार के खिराज में से उन लोगों को बिना देरी किये खर्च दिया जाए, ताकि उनको रुकना न पड़े।⁹और आसमान के खुदा की सोख्तनी कुर्बानियों के लिए जिस जिस चीज़ की उनको ज़रूरत हो - या'नी बछड़े और मेंढे और हलवान और जितना गेंहूँ और नमक और मय और तेल, वह काहिन जो यरूशलीम में हैं बताएँ, वह सब बिना-नागा रोज़-ब-रोज़ उनको दिया जाए;¹⁰ताकि वह आसमान के खुदा के हुज़ूर राहत अंगेज कुर्बानियाँ पेश करें और बादशाह और शहज़ादों की 'उम्रदराज़ी के लिए दु'आ करें।

¹¹~मैंने ये हुक्म भी दिया है, कि जो शख्स इस फ़रमान को बदल दे, उसके घर में से कड़ी निकाली जाए और उसे उसी पर चढ़ाकर सूली दी जाए, और इस बात की वजह से उसका घर कूड़ाखाना बना दिया जाए।¹²और वह खुदा जिसने अपना नाम वहाँ रखा है, सब बादशाहों और लोगों को जो खुदा के उस घर को जो यरूशलीम में है, ढाने की ग़रज़ से इस हुक्म को बदलने के लिए अपना हाथ बढ़ाएँ, ग़ारत करें। मुझ दारा ने हुक्म दे दिया, इस पर बड़ी कोशिश से 'अमल हो।

¹³तब दरिया पार के हाकिम, तत्तनै और शतर-बोज़नै, और उनके साथियों ने दारा बादशाह के फ़रमान भेजने की वजह से बिना देर किये हुए उसके मुताबिक़ 'अमल किया।¹⁴~तब यहूदियों के बुजुर्ग, हज्जै नबी और ज़करियाह बिन इदू की नबुव्वत की वजह से, ता'मीर करते और कामयाब होते रहे। उन्होंने इस्राईल के खुदा के हुक्म, और खोरस और दारा, और शाह-ए-फ़ारस अरतख़शता के हुक्म के मुताबिक़ उसे बनाया और पूरा किया।¹⁵इसलिए ये घर अदार के महीने की तीसरी तारीख में, दारा बादशाह की सल्तनत के छठे बरस पूरा हुआ।

¹⁶और बनी-इसाईल, और काहिनों और लावियों और गुलामी के बाक़ी लोगों ने खुशी के साथ खुदा के इस घर की हम्द की।¹⁷~और उन्होंने खुदा के इस घर की तक्वदीस के मौक़े' पर सौ बैल और दो सौ मेंढे और चार सौ बरें, और सारे इस्राईल की ख़ता की कुर्बानी के लिए इस्राईल के क़बीलों के शुमार के मुताबिक़ बारह बकरे पेश किये।¹⁸और जैसा मूसा की किताब में लिखा है, उन्होंने काहिनों को उनकी तक्वसीम, और लावियों को उनके फ़रीक़ों के मुताबिक़, खुदा की 'इबादत के लिए जो यरूशलीम में होती है मुक़र्रर किया।

¹⁹~और पहले महीने की चौदहवीं तारीख को उन लोगों ने जो गुलामी से आए थे 'ईद-ए-फ़सह मनाई:²⁰क्योंकि काहिनों और लावियों ने यकतन होकर अपने आपको पाक किया था, वह सबके सब पाक थे, और उन्होंने उन सब लोगों के लिए जो गुलामी से आए थे, और अपने भाई काहिनों के लिए और अपने वास्ते फ़सह को ज़बह किया।

²¹और बनी-इसाईल ने जो गुलामी से लौटे थे, और उन सभों ने जो खुदावन्द इस्राईल के खुदा के तालिब होने के लिए उस सरज़मीन की अजनबी क़ौमों की नापाकियों से अलग हो गए थे, फ़सह खाया,²²और खुशी के साथ सात दिन तक फ़तीरी रोटी की 'ईद मनाई, क्योंकि ~खुदावन्द ने उनको खुश किया था, और शाह-ए-असूर के दिल को उनकी तरफ़ मोड़ा था ताकि वह खुदा या'नी इस्राईल के खुदा के घर के बनाने में उनकी मदद करें।

Chapter 7

¹~इन बातों के बाद शाह-ए-फ़ारस अरतख़शता के दौर-ए-हुकूमत में 'अज़्रा बिन शिरायाह बिन अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह'²~बिन सलूम बिन सदूक़ बिन अख़ीतोब,³बिन अमरियाह बिन 'अज़रियाह बिन मिरायोत'⁴~बिन ज़राख़ियाह बिन 'उज़ज़ी बिन बुक्क्री'⁵बिन अबीसू'⁶अ बिन फ़ीन्हास बिन इली' अज़र बिन हारून सरदार काहिन।

⁶यही 'अज़्रा बाबुल से गया और वह मूसा की शरी'अत में, जिसे ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा ने दिया था, माहिर 'आलिम था; और चूँकि ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा का हाथ उस पर था, बादशाह ने उसकी सब दरख़वास्तें मन्ज़ूर कीं।⁷और बनी-इस्राईल और काहिनों और लावियों और गाने वालों और दरबानों नतीनीम में से कुछ लोग, अरतख़शता बादशाह के सातवें साल यरूशलीम में आए।

⁸और वह बादशाह की हुकूमत के सातवें बरस के पाँचवें महीने यरूशलीम में पहुंचा।⁹क्योंकि पहले महीने की पहली तारीख़ को तो बाबुल से चला और पांचवें महीने की पहली तारीख़ को यरूशलीम में आ पहुँचा। क्योंकि उसके ख़ुदा की शफ़क़त का हाथ उसपर था |¹⁰इसलिए कि 'अज़्रा आमादा हो गया था कि ख़ुदावन्द की शरी'अत का तालिब हो, और उस पर 'अमल करे और इस्राईल में आईन और अहकाम की तालीम दे।

¹¹और 'अज़्रा~काहिन और 'आलिम, या'नी ख़ुदावन्द के इस्राईल को दिए हुए अहकाम और आईन की बातों के 'आलिम को जो ख़त अरतख़शता बादशाह ने 'इनायत किया, उसकी नक़ल ये है:¹²~"अरतख़शता शहंशाह की तरफ़ से 'अज़्रा~काहिन, या'नी आसमान के ख़ुदा की शरी'अत के 'आलिम-ए-कामिल वग़ैरा वग़ैरा को।¹³~मैं ये फ़रमान जारी करता हूँ कि इस्राईल के जो लोग और उनके काहिन और लावी मेरे मुल्क में हैं, उनमें से जितने अपनी खुशी से यरूशलीम को जाना चाहते हैं तेरे साथ जाएँ।

¹⁴~चूँकि तू बादशाह और उसके सातों सलाहकारों की तरफ़ से भेजा जाता है, ताकि अपने ख़ुदा की शरी'अत के मुताबिक़ जो तेरे हाथ में है, यहूदाह और यरूशलीम का हाल दरियाफ़्त करे;¹⁵और जो चाँदी और सोना बादशाह और उसके सलाहकारों ने इस्राईल के ख़ुदा को, जिसका घर यरूशलीम में है, अपनी खुशी से नज़्र किया है ले जाए;¹⁶और जिस क़दर चाँदी सोना बाबुल के सारे सूबे से तुझे मिलेगा, और जो खुशी के हृदिये लोग और काहिन अपने ख़ुदा के घर के लिए जो यरूशलीम में है अपनी खुशी से दें उनको ले जाए।

¹⁷इसलिए उस रुपये से बैल और मेंढे और हलवान और उनकी नज़्र की कुर्बानियाँ, और उनके तपावन की चीज़ें तू बड़ी कोशिश से ख़रीदना, और उनको अपने ख़ुदा के घर के मज़बूह पर जो यरूशलीम में है पेश करना।¹⁸और तुझे और तेरे भाइयों को बाक़ी चाँदी सोने के साथ जो कुछ करना मुनासिब मा'लूम हो, वही अपने ख़ुदा की मज़ी के मुताबिक़ करना।

¹⁹~और जो बर्तन तुझे तेरे ख़ुदा के घर की 'इबादत के लिए सौंपे जाते हैं, उनको यरूशलीम के ख़ुदा के सामने दे देना।²⁰और जो कुछ और तेरे ख़ुदा के घर के लिए ज़रूरी हो जो तुझे देना पड़े, उसे शाही खज़ाने से देना।

²¹~और मैं अरतख़शता बादशाह, ख़ुद दरिया पार के सब खज़ान्चियों को हुक्म करता हूँ, कि जो कुछ 'अज़्रा काहिन, आसमान के ख़ुदा की शरी'अत का 'आलिम, तुम से चाहे वह बिना देर किये किया जाए;²²~या'नी सौ क़िन्तार चाँदी, और सौ कुर गेहूँ, और सौ बत मय, और सौ बत तेल तक, और नमक बेअन्दाज़।²³जो कुछ आसमान के ख़ुदा ने हुक्म किया है, इसलिए ठीक वैसा ही आसमान के ख़ुदा के घर के लिए किया जाए; क्योंकि बादशाह और शाहजादों की ममलुकत पर ग़ज़ब क्यों भड़के?

²⁴~और तुम को हम आगाह करते हैं कि काहिनों और लावियों और गानेवालों और दरबानों और नतीनीम और ख़ुदा के इस घर के खादिमों में से किसी पर ख़िराज, चुंगी या महसूल लगाना जायज़ न होगा।

²⁵~और ऐ~'अज़्रा, तू अपने ख़ुदा की उस समझ के मुताबिक़ जो तुझ को 'इनायत हुई हाकिमों और क़ाज़ियों को मुक़र्रर कर, ताकि दरिया पार के सब लोगों का जो तेरे ख़ुदा की शरी'अत को जानते हैं इन्साफ़ करें; और तुम उसको जो न जानता हो सिखाओ।²⁶और जो कोई तेरे ख़ुदा की शरी'अत पर और बादशाह के फ़रमान पर 'अमल न करे, उसको बिना देर किये क़ानूनी सज़ा दी जाए, चाहे मौत या ज़िलावतनी या माल की ज़ब्ती या कैद की।"

²⁷ख़ुदावन्द हमारे बाप-दादा का ख़ुदा मुबारक हो, जिसने ये बात बादशाह के दिल में डाली कि ख़ुदावन्द के घर को जो यरूशलीम में है आरास्ता करे;²⁸और बादशाह और उसके सलाहकारों के सामने, और बादशाह के सब 'आली क़द्र सरदारों के आगे अपनी रहमत मुझ पर की; और मैंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हाथ से जो मुझ पर था, ताक़त पाई और मैंने इस्राईल में से ख़ास लोगों को इकट्ठा किया कि वह मेरे हमराह चलें।

Chapter 8

¹अरतखशता बादशाह के दौर-ए-सलतनत में जो लोग मेरे साथ बाबुल से निकले, उनके अबाई खान्दानों के सरदार ये हैं और उनका नसबनामा ये है :²-बनी फ़ीन्हास में से, जैरसोन; बनी इतमर में से, दानीएल; बनी दाऊद में से हत्तूश;³बनी सिकनियाह की नस्ल के बनी पर'ऊस में से, ज़करियाह, और उसके साथ डेढ़ सौ आदमी नसबनामे के तौर से गिने हुए थे;

⁴बनी पखत-मोआब में से, इलीहू'ऐनी बिन ज़राखियाह, और उसके साथ दो सौ आदमी;⁵और बनी सिकनियाह में से, यहज़ीएल का बेटा, और उसके साथ तीन सौ-आदमी;⁶और बनी 'अदीन में से, 'अबद-बिन यूनतन, और उसके साथ पचास-आदमी,⁷और बनी 'ऐलाम में से, यसायाह बिन 'अतलियाह, और उसके साथ सत्तर-आदमी;

⁸और बनी सफ़तियाह में से, जबदियाह बिन मीकाएल, और उसके साथ अस्सी-आदमी,⁹और बनी योआब में से 'अबदियाह बिन यहीएल, और उसके साथ दो सौ अट्ठारह-आदमी,¹⁰-और बनी सलूमीत में से, यूसिफ़ियाह का बेटा, और उसके साथ एक सौ साठ-आदमी;¹¹और बनी बबई में से ज़करियाह बिन बबई, और उसके साथ अट्ठाईस-आदमी;

¹²और बनी 'अज़जाद में से यूहनान बिन हक्कातान, और उसके साथ एक सौ दस-आदमी,¹³और बनी अदुनिक्राम में से जो सबसे पीछे गए, उनके नाम ये हैं : इलीफ़लत, और य'ईएल, और समा'याह, और उनके साथ साठ-आदमी;¹⁴-और बनी बिगवई में से, ऊती और ज़ब्बूद, और उनके साथ सत्तर-आदमी।

¹⁵फिर मैंने उनको उस दरिया के पास जो अहावा की सिम्ट को बहता है इकट्ठा किया, और वहाँ हम तीन दिन खैमों में रहे; और मैंने लोगों और काहिनों का मुलाहज़ा किया पर बनी लावी में से किसी को न पाया।¹⁶तब मैंने इली'अज़र और अरीएल और समा'याह और इलनातन और यरीब और इलनातन और नातन और ज़करियाह और मसुल्लाम को जो रईस थे, और यूयरीब और इलनातन को जो मु'अल्लिम थे बुलवाया।

¹⁷-और मैंने उनको क़सीफ़िया नाम एक मक़ाम में इद्दो सरदार के पास भेजा; और जो कुछ उनको इद्दो और उसके भाइयों नतीनीम से क़सीफ़िया में कहना था बताया, कि वह हमारे खुदा के घर के लिए खिदमत करने वाले हमारे पास ले आएँ।

¹⁸और चूँकि हमारे खुदा की शफ़क़त का हाथ हम पर था, इसलिए वह महली बिन लावी बिन इस्राईल की औलाद में से एक 'अक्लमन्द शख्स को, और सरीबियाह को और उसके बेटों और भाइयों, या'नी अट्ठारह आदमियों को¹⁹और हसबियाह की, और उसके साथ बनी मिरारी में से यसा'याह को, और उसके भाइयों और उनके बेटों को, या'नी बीस आदमियों को;²⁰और नतीनीम में से, जिनको दाऊद और अमीरों ने लावियों की खिदमत के लिए मुक़र्रर किया था, दो सौ बीस नतीनीम को ले आए। इन सभी के नाम बता दिए गए थे।

²¹तब मैंने अहावा के दरिया पर रोज़े का ऐलान कराया, ताकि हम अपने खुदा के सामने उस से अपने और अपने बाल बच्चों और अपने माल के लिए सीधी राह तलब करने को फ़रोतन बने।²²क्यूँकि मैंने शर्म की वजह से बादशाह से सिपाहियों के जत्थे और सवारों के लिए दरख्वास्त न की थी, ताकि वह राह में दुश्मन के मुक़ाबिले में हमारी मदद करें; क्यूँकि हम ने बादशाह से कहा था, "कि हमारे खुदा का हाथ भलाई के लिए उन सब के साथ है जो उसके तालिब हैं, और उसका ज़ोर और क्रहर उन सबके खिलाफ़ है जो उसे छोड़ देते हैं।"²³-इसलिए हम ने रोज़ा रखकर इस बात के लिए अपने खुदा से मिन्नत की, और उसने हमारी सुनी।

²⁴तब मैंने सरदार काहिनों में से बारह को, या'नी सरीबियाह और हसबियाह और उनके साथ उनके भाइयों में से दस को अलग किया,²⁵और उनको वह चाँदी सोना और बर्तन, या'नी वह हदिया जो हमारे खुदा के घर के लिए बादशाह और उसके वज़ीरों और अमीरों और तमाम इस्राईल ने जो वहाँ हाज़िर थे, नज़्र किया था तोल दिया।

²⁶मैं ही ने उनके हाथ में साढ़े छः सौ क़िन्तार चाँदी, और सौ क़िन्तार चाँदी के बर्तन, और सौ क़िन्तार सोना,²⁷और सोने के बीस प्याले जो हज़ार दिरहम के थे, और चोखे चमकते हुए पीतल के दो बर्तन जो सोने की तरह क़ीमती थे तौल कर दिए।

²⁸और मैंने उनसे कहा, "कि तुम खुदावन्द के लिए मुक़द्दस हो, और ये बर्तन भी मुक़द्दस हैं, और ये चाँदी और सोना खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा के खुदा के लिए खुशी की कुर्बानी है।"²⁹-इसलिए होशियार रहना, जब तक यरूशलीम में खुदावन्द के घर की कोठरियों में सरदार काहिनों और लावियों और इस्राईल के आबाई खान्दानों के अमीरों के सामने उनको तौल न दो, उनकी हिफ़ाज़त करना।"³⁰तब काहिनों और लावियों ने सोने और चाँदी और बर्तनों को तौलकर लिया, ताकि उनको यरूशलीम में हमारे खुदा के घर में पहुँचाएँ।

³¹फिर हम पहले महीने की बारहवीं तारीख को अहावा के दरिया से रवाना हुए कि यरूशलीम को जाएँ, और हमारे खुदा का हाथ हमारे साथ था, और उसने हम को दुश्मनों और रास्ते में घात लगानेवालों के हाथ से बचाया।³²और हम यरूशलीम पहुँचकर तीन दिन तक ठहरे रहे।

³³-और चौथे दिन वह चाँदी और सोना और बर्तन हमारे खुदा के घर में तौल कर काहिन मरीमोत बिन ऊरियाह के हाथ में दिए गए, और उसके साथ इली'अज़र बिन फ़ीन्हास था, और उनके साथ ये लावी थे, या'नी यूज़बाद बिन यशू'अ और नौ इंदियाह बिन बिनवी।³⁴-सब चीज़ों को गिन कर और तौल कर पूरा वज़न उसी वक़्त लिख लिया गया।

³⁵और गुलामों में से उन लोगों ने जो जिलावतनी से लौट आए थे, इस्राईल के खुदा के लिए सोख़तनी कुर्बानियाँ पेश कीं; या'नी सारे इस्राईल के लिए बारह बछड़े और छियानवे मेंढ़े और सतत्तर बरें, और खता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे; ये सब खुदावन्द के लिए सोख़तनी कुर्बानी थी।³⁶और-उन्होंने बादशाह के फ़रमानों को बादशाह के नाइबों, और दरिया पार के हाकिमों के हवाले किया; और उन्होंने लोगों की और खुदा के घर की हिमायत की।

Chapter 9

¹जब ये सब काम हो चुके तो सरदारों ने मेरे पास आकर कहा कि इस्राईल के लोग और काहिन और लावी इन अतराफ़ की क़ौमों ~से अलग नहीं रहे, क्योंकि कना'नियों और हितियों और फ़रिज़ियों और यबूसियों ~'अम्मोनियों और मोआबियों और मिसियों और अमोरियों के से नफ़रती काम करते हैं।²~चुनोंचें उन्होंने अपने और अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ ली हैं; इसलिए मुक़द्दस नसल इन अतराफ़ की क़ौमों के साथ खल्ल-मल्ल हो गई, और सरदारों और हाकिमों का हाथ इस बदकारी में सब से बढ़ा हुआ है।

³~जब मैंने ये बात सुनी तो अपने लिबास और अपनी चादर को फाड़ दिया, और सिर और दाढ़ी के बाल नोचे और हैरान हो बैठा।⁴तब वह सब जो इस्राईल के खुदा की बातों से काँपते थे, गुलामों की इस बदकारी के ज़रिए' मेरे पास जमा' हुए; और मैं शाम की कुर्बानी तक हैरान बैठा रहा।

⁵~और शाम की कुर्बानी के वक़्त मैं अपना फटा लिबास पहने, और अपनी फटी चादर ओढ़े हुए अपनी शर्मिन्दगी की हालत से उठा, और अपने घुटनों पर गिर कर खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ अपने हाथ फैलाए,⁶और कहा, "ऐ मेरे खुदा, मैं शर्मिन्दा हूँ, और तेरी तरफ़, ऐ मेरे खुदा, अपना मुँह उठाते मुझे शर्म आती है; क्योंकि हमारे गुनाह बढ़ते बढ़ते हमारे सिर से बुलन्द हो गए, और हमारी ख़ताकारी आसमान तक पहुँच गई है।

⁷~अपने बाप-दादा के वक़्त से आज तक हम बड़े ख़ताकार रहे; और अपनी बदकारी के ज़रिए' हम और हमारे बादशाह और हमारे काहिन, और मुल्कों के बादशाहों और तलवार और गुलामी और ग़ारत और शर्मिन्दगी के हवाले हुए हैं, जैसा आज के दिन है।

⁸अब थोड़े दिनों से खुदावन्द हमारे खुदा की तरफ़ से हम पर फ़ज़ल हुआ है, ताकि हमारा कुछ बक्रिया बच निकलने को छूटे, और उसके मकान-ए-मुक़द्दस में हम को एक खूँटी मिले, और हमारा खुदा हमारी आँखें रोशन करे और हमारी गुलामी में हम को कुछ ताज़गी बख़्शे।⁹~क्योंकि हम तो गुलाम हैं लेकिन हमारे खुदा ने हमारी गुलामी में हम को छोड़ा नहीं, बल्कि हम को ताज़गी बख़्शने और अपने खुदा के घर को बनाने और उसके खण्डरों की मरम्मत करने, और यहूदाह और यरूशलीम में हम को शहर-ए-पनाह देने को फ़ारस के बादशाहों के सामने हम पर रहमत की।

¹⁰और अब ऐ हमारे खुदा, हम इसके बा'द क्या कहें? क्योंकि हम ने तेरे उन हुक्मों को छोड़ दिया है,¹¹जो तू ने अपने ख़ादिमों या'नी नबियों के ज़रिए' फ़रमाए कि वह मुल्क जिसे तुम मीरास में लेने को जाते हो और मुल्कों की क़ौमों की नापाकी और नफ़रती कामों की वजह से नापाक मुल्क है, क्योंकि उन्होंने अपनी नापाकी से उसको इस सिरे से उस सिरे तक भर दिया है।¹²इसलिए तुम अपनी बेटियाँ उनके बेटों को न देना और उनकी बेटियाँ अपने बेटों के लिए न लेना, और न कभी उनकी सलामती या भलाई चाहना, ताकि तुम मज़बूत बनो और उस मुल्क की अच्छी-अच्छी चीज़ें खाओ, और अपनी औलाद के वास्ते हमेशा की मीरास के लिए उसे छोड़ जाओ।

¹³और हमारे बुरे कामों और बड़े गुनाह की वजह से जो कुछ हम पर गुज़रा, उसके बा'द ऐ हमारे खुदा, हकीक़त ये है कि तू ने हमारे गुनाहों के अन्दाज़े से हम को कम सज़ा दी और हम में से ऐसा बक्रिया छोड़ा;¹⁴~क्या हम फिर तेरे हुक्मों को तोड़ें, और उन क़ौमों से नाता जोड़ें जो इन नफ़रती कामों को करती हैं? क्या तू हम से ऐसा गुस्सा न होगा कि हम को बर्बाद कर दे, यहाँ तक कि न कोई बक्रिया रहे और न कोई बचे?

¹⁵~ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा! तू सादिक़ है, क्योंकि हम एक बक्रिया हैं जो बच निकला है, जैसा आज के दिन है। देख, हम अपनी ख़ताकारी में तेरे सामने हाज़िर हैं, क्योंकि इसी वजह से कोई तेरे सामने खड़ा रह नहीं सकता।

Chapter 10

¹जब- 'अज़ा खुदा के घर के आगे रो रो कर-और सिज्दा में गिरकर दु'आ और इक़रार कर रहा था, तो इस्राईल में से मर्दों और 'औरतों और बच्चों की एक बहुत बड़ी जमा'अत उसके पास इकठ्ठा हो गई; और लोग फूट फूटकर रो रहे थे।²तब सिकनियाह बिन यहीएल जो बनी 'ऐलाम में से था, 'अज़ा से कहने लगा, "हम अपने खुदा के गुनाहगार तो हुए हैं, और इस सरज़मीन की क़ौमों में से अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं, तो भी इस मु'आमिले में अब भी इस्राईल के लिए उम्मीद है।

³इसलिए अब हम अपने मख़दूम की और उनकी सलाह के मुताबिक़, जो हमारे खुदा के हुक्म से काँपते हैं, सब बीवियों और उनकी औलाद को दूर करने के लिए अपने खुदा से 'अहद बाँधे, और ये शरी'अत के मुताबिक़ किया जाए।⁴~अब उठ, क्योंकि ये तेरा ही काम है, और हम तेरे साथ हैं, हिम्मत बाँध कर काम में लग जा।"

⁵~तब 'अज़ा ने उठकर सरदार काहिनों और लावियों और सारे इस्राईल से क़सम ली कि वह इस इक़रार के मुताबिक़ 'अमल करेंगे; और उन्होंने क़सम खाई।

⁶तब 'अज़ा खुदा के घर के सामने से उठा और यहूहानान बिन इलियासिब की कोठरी में गया, और वहाँ जाकर न रोटी खाई न पानी पिया; क्योंकि वह गुलामी के लोगों की ख़ता की वजह से मातम करता रहा।

⁷फिर उन्होंने यहूदाह और यरुशलीम में गुलामी के सब लोगों के बीच 'ऐलान किया, कि वह यरूशलीम में इकठ्ठा हो जाएँ;⁸और जो कोई सरदारों और बुजुर्गों की सलाह के मुताबिक़ तीन दिन के अन्दर न आए, उसका सारा माल ज़ब्त हो और वह खुद गुलामों की जमा'अत से अलग किया जाए।

⁹तब यहूदाह और बिनयमीन के सब आदमी उन तीन दिनों के अन्दर यरुशलीम में इकठ्ठा हुए; महीना नवाँ था, और उसकी बीसवीं तारीख़ थी; और सब लोग इस मु'आमिले और बड़ी बारिश की वजह से खुदा के घर के सामने के मैदान में बैठे काँप रहे थे।¹⁰~तब- 'अज़ा काहिन खड़ा होकर उनसे कहने लगा कि तुम ने ख़ता की है और इस्राईल का गुनाह बढ़ाने को अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं।

¹¹~फिर खुदावन्द अपने बाप-दादा के खुदा के आगे इक़रार करो, और उसकी मज़ी पर 'अमल करो, और इस सरज़मीन के लोगों और अजनबी 'औरतों से अलग हो जाओ।

¹²तब सारी जमा'अत ने जवाब दिया, और बुलन्द आवाज़ से कहा कि जैसा तू ने कहा, वैसा ही हम को करना लाज़िम है।¹³लेकिन लोग बहुत हैं, और इस वक़्त ज़ोर की बारिश हो रही है और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और न ये एक दो दिन का काम है; क्योंकि हम ने इस मु'आमिले में बड़ा गुनाह किया है।

¹⁴अब सारी जमा'अत के लिए हमारे सरदार मुक़र्रर हों, और हमारे शहरों में जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं, वह सब मुक़र्ररा वक़्तों पर आएँ और उनके साथ हर शहर के बुजुर्ग और क़ाज़ी हों, जब तक कि हमारे खुदा का क़हर-ए-शदीद हम पर से टल न जाए और इस मु'आमिले का फ़ैसला न हो जाए।¹⁵~सिफ़्र यूनतन बिन 'असाहेल और यहाज़ियाह बिन तिकवह इस बात के खिलाफ़ खड़े हुए, और मसुल्लाम और सब्बती लावी ने उनकी मदद की।

¹⁶~लेकिन गुलामी के लोगों ने वैसा ही किया। और 'अज़ा काहिन और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ अपने अपने आबाई खान्दानों की तरफ़ से सब नाम-ब-नाम अलग किए गए, और वह दसवें महीने की पहली तारीख़ को इस बात की तहक़ीक़ात के लिए बैठे;¹⁷और पहले महीने के पहले दिन तक, उन सब आदमियों के मु'आमिले का फ़ैसला किया जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली थीं।

¹⁸और काहिनों की औलाद में ये लोग मिले जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली थीं : या'नी, बनी यशू'अ में से, यूसदक़ का बेटा, और उसके भाई मासियाह और इली'अज़र और यारिब और जिदलियाह।¹⁹उन्होंने अपनी बीवियों को दूर करने का वा'दा किया, और गुनाहगार होने की वजह से उन्होंने अपने गुनाह के लिए अपने अपने रेवड़ में से एक एक मेंढा कुर्बान किया।

²⁰~और बनी इम्मेर में से, हनानी और ज़बदियाह;²¹और बनी हारिम में से, मासियाह और इलियाह, और समा'याह और यहीएल और 'उज़्ज़ियाह;²²और बनी फ़शहूर में से, इल्यू'ऐनी और मासियाह और इस्मा'ईल और नतनीएल और यूज़बाद और 'इलिसा।

²³और लावियों में से, यूज़बाद और सिमई और क़िलायाह (जो क़लीता भी कहलाता है), फ़तहयाह और यहूदाह और इली'अज़र;²⁴और गानेवालों में से, इलियासिब; और दरबानों में से, सलूम और तलम और ऊरी।²⁵और इस्राईल में से: बनी पर'ऊस में से, रमियाह और यज़ियाह और मलकियाह और मियामीन और इली'अज़र और मलकियाह और बिनायाह

²⁶और बनी 'ऐलाम में से, मतनियाह और ज़करियाह और यहीएल और 'अबदी और यरीमोट और इलियाह;²⁷और बनी ज़त्तू में से, इल्यू'ऐनी और इलियासिब और मतनियाह और यरीमोट और ज़ाबाद और 'अज़ीज़ा;²⁸और बनी बबई में से, यहूहानान और हननियाह और ज़ब्बी और 'अतलै;²⁹और बनी बानी में से, मसुल्लाम और मलूक और 'अदायाह और यासूब और सियाल और यरामोट।

³⁰~और बनी पख़त-मोआब में से, 'अदना और क़िलाल और बिनायाह और मासियाह और मतनियाह और बज़लीएल और बिनवी और मनस्सी;³¹~और बनी हारिम में से, इली'अज़र और यशियाह और मलकियाह और समा'याह और शमा'ऊन;³²बिनयमीन और मलूक और समरियाह;

³³और बनी हाशूम में से, मतनै और मतताह और ज़ाबाद और इली'फलत और यरीमै और मनस्सी और सिमई;³⁴और बनी बानी में से, मा'दै और 'अमराम और ऊएल;³⁵बिनायाह और बदियाह और कलूह;³⁶और वनियाह और मरीमोट और इलियासिब,

³⁷और मतनियाह और मतनै और या'सौ;³⁸और बानी और बिनवी और सिम'ई;³⁹और सलमियाह और नातन और 'अदायाह;⁴⁰~मकनदबै, सासै, सारै

⁴¹~'अज़रिएल और सलमियाह, समरियाह;⁴²सलूम, अमरियाह, यूसुफ़।⁴³~बनी नबू में से, य'ईएल, मतित्तियाह, ज़ाबाद, ज़बीना, यदो और यूएल, बिनायाह।⁴⁴ये सब अजनबी 'औरतों को ब्याह लाए थे, और कुछ की बीवियाँ ऐसी थीं जिनसे उनके औलाद थी।

नहमियाह

Chapter 1

¹नहमियाह बिन हकलियाह का कलाम। बीसवें बरस किसलेव के महीने में, जब मैं क्रस-ए-सोसन में था तो ऐसा हुआ,² कि हनानी जो मेरे भाइयों में से एक है और चन्द आदमी यहूदाह से आए; और मैंने उनसे उन यहूदियों के बारे में जो बच निकले थे और गुलामों में से बाक़ी रहे थे, और यरुशलीम के बारे में पूछा।

³उन्होंने मुझ से कहा कि वह बाक़ी लोग जो गुलामी से छूट कर उस सूबे में रहते हैं, बहुत मुसीबत और ज़िल्लत में पड़े हैं; और यरुशलीम की फ़सील टूटी हुई, और उसके फ़ाटक आग से जले हुए हैं।

⁴जब मैंने ये बातें सुनीं तो बैठ कर रोने लगा और कई दिनों तक मातम करता रहा, और रोज़ा रखखा और आसमान के खुदा के सामने दु'आ की,⁵ और कहा, "ऐ खुदावन्द, आसमान के खुदा-खुदा-ए-'अज़ीम-ओ-मुहीब जो उनके साथ जो तुझसे मुहब्बत रखते और तेरे हुक्मों को मानते हैं 'अहद-ओ-फ़ज़ल को क़ायम रखता है, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ,

⁶कि तू कान लगा और अपनी आँखें खुली रख ताकि तू अपने बन्दे की उस दु'आ को सुने जो मैं अब रत दिन तेरे सामने तेरे बन्दों बनी इस्राईल के लिए करता हूँ और बनी इस्राईल की ख़ताओं को जो हमने तेरे बर खिलाफ़ कीं मान लेता हूँ, और मैं और मेरे आबाई खान्दान दोनों ने गुनाह किया है।"⁷ हमने तेरे खिलाफ़ बड़ी बुराई की है और उन हुक्मों और क़ानून और फ़रमानों को जो तूने अपने बन्दे मूसा को दिए नहीं माना

⁸मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने उस क़ौल को याद कर जो तूने अपने बन्दे मूसा को फ़रमाया अगर तुम नाफ़रमानी करो, मैं तुम को क़ौमों में तितर-बितर करूँगा⁹ लेकिन अगर तुम मेरी तरफ़ फिरकर मेरे हुक्मों को मानों और उन पर 'अमल करो तो गो तुम्हारे आवागर्द आसमान के किनारों पर भी हो मैं उनको वहाँ से इकट्ठा करके उस मक़ाम में पहुँचाऊँगा जिसे मैंने चुन लिया ताकि अपना नाम वहाँ रखूँ

¹⁰वह तो तेरे बन्दे और तेरे लोग है जिनको तूने अपनी बड़ी कुदरत और क़वी हाथ से छुड़ाया है"¹¹ ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने बन्दे की दु'आ पर, और अपने बन्दों की दु'आ पर जो तेरे नाम से डरना पसन्द करते हैं कान लगा-और आज ~मैं तेरे मिन्नत करता हूँ अपने ~बन्दे को कामयाब कर और इस शख्स के सामने उसपर फ़ज़ल कर | "{मैं तो बादशाह का साक़ी था |}

Chapter 2

¹अरतखशशता बादशाह के बीसवें बरस नैसान के महीने में, जब मय उसके आगे थी तों मैंने मय उठा कर बादशाह को दी। इससे पहले मैं कभी उसके सामने मायूस नहीं हुआ था।²इसलिए बादशाह ने मुझसे कहा, "तेरा चेहरा क्यूँ मायूस है, बावजूद ये कि तू बीमार नहीं है? तब ये दिल के गम के अलावा और कुछ न होगा।" तब मैं बहुत डर गया।

³मैंने बादशाह से कहा कि "बादशाह हमेशा ज़िन्दा रहे! मेरा चेहरा मायूस क्यूँ न हो, जबकि वह शहर जहाँ मेरे बाप-दादा की क़ब्रें हैं उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं?"

⁴बादशाह ने मुझसे फ़रमाया, "किस बात के लिए तेरी दरख्वास्त है?" तब मैंने आसमान के खुदा से दु'आ की,⁵फिर मैंने बादशाह से कहा, "अगर बादशाह की मर्ज़ी हो, और अगर तेरे खादिम पर तेरे करम की नज़र है, तो तू मुझे यहूदाह में मेरे बाप-दादा की क़ब्रों के शहर को भेज दे ताकि मैं उसे ता'मीर करूँ।" "तब बादशाह ने {मलिका भी उस के पास बैठी थी }मुझ से कहा, "तेरा सफ़र कितनी मुद्दत का होगा और तू कब लौटेगा?" गरज़ बादशाह की मर्ज़ी हुई कि मुझे भेजे: और मैंने वक़्त मुक़र्रर करके उसे बताया।

⁷और मैंने बादशाह से ये भी कहा, "अगर बादशाह की मर्ज़ी हो, तो दरिया पार हाकिमों के लिए मुझे परवाने 'इनायत हों कि वह मुझे यहूदाह तक पहुँचने ~के लिए गुज़र जाने दें।" ⁸और आसफ़ के लिए जो शाही जंगल का निगहबान है, एक शाही ख़त मिले कि वह हैकल के क़िले' के फाटकों के लिए, और शहरपनाह और उस घर के लिए जिस में रहूँगा, कड़ियाँ बनाने को मुझे लकड़ी दे और चूँकि मेरे खुदा की शफ़क़त का हाथ मुझ पर था, बादशाह ने 'अर्ज़ कुबूल की।

⁹~तब मैंने दरिया पार के हाकिमों के पास पहुँचकर बादशाह के परवाने उनको दिए और बादशाह ने फ़ौजी सरदारों और सवारों को मेरे साथ कर दिया था।

¹⁰~जब सनबल्लत हूरूनी और 'अम्मोनी गुलाम तूबियाह ने ये सुना, कि एक शख्स बनी-इसाईल की बहबूदी का तलबगार आया है, तो वह बहुत रंजीदा हुए।

¹¹~और यरुशलीम पहुँच कर तीन दिन रहा।¹²~फिर मैं रात को उठा, मैं भी और मेरे साथ चन्द आदमी; लेकिन जो कुछ यरुशलीम के लिए करने को मेरे खुदा ने मेरे दिल में डाला था, वह मैंने किसी को न बताया; और जिस जानवर पर मैं सवार था, उसके अलावा और कोई जानवर मेरे साथ न था।

¹³~मैं रात को वादी के फाटक से निकल कर अज़दहा के कुएँ और कूड़े के फाटक को गया; और यरुशलीम की फ़सील को, जो तोड़ दी गई थी और उसके फाटकों को, जो आग से जले हुए थे देखा।¹⁴~फिर मैं चश्मे के फाटक और बादशाह के तालाब को गया, लेकिन वहाँ उस जानवर के लिए जिस पर मैं सवार था, गुज़रने की जगह न थी।

¹⁵फिर मैं रात ही को नाले की तरफ़ से फ़सील को देखकर लौटा, और वादी के फाटक से दाख़िल हुआ और यूँ वापस आ गया।¹⁶~और हाकिमों को मा'लूम न हुआ कि मैं कहाँ-कहाँ गया, या मैंने क्या-क्या किया; और मैंने उस वक़्त तक न यहूदियों, न काहिनों, न अमीरों, न हाकिमों, न बाक़ियों को जो कारगुज़ार थे कुछ बताया था।

¹⁷~तब मैंने उनसे कहा, "तुम देखते हो कि हम कैसी मुसीबत में हैं, कि यरुशलीम उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं। आओ, हम यरुशलीम की फ़सील बनाएँ, ताकि आगे को हम ज़िल्लत का निशान न रहें।"¹⁸और मैंने उनको बताया कि खुदा की शफ़क़त का हाथ मुझ पर कैसे रहा, और ये कि बादशाह ने मुझ से क्या क्या बातें कहीं थीं। उन्होंने कहा, "हम उठकर बनाने लगें।" इसलिए इस अच्छे काम के लिए उन्होंने अपने हाथों को मज़बूत किया।

¹⁹लेकिन जब सनबल्लत हूरूनी और अम्मूनी गुलाम तूबियाह और अरबी ज़शम ने सुना, तो वह हम को ठट्ठों में उड़ाने और हमारी हिक़ारत करके कहने लगे, "तुम ये क्या काम करते हो? क्या तुम बादशाह से बग़ावत करोगे?"²⁰तब मैंने जवाब देकर उनसे कहा, "आसमान का खुदा, वही हम को कामयाब करेगा; इसी वजह से हम जो उसके बन्दे हैं, उठकर ता'मीर करेंगे; लेकिन यरुशलीम में तुम्हारा न तो कोई हिस्सा, न हक़, न यादगार है।"

Chapter 3

¹~तब इलियासिब सरदार काहिन अपने भाइयों या 'नी काहिनों के साथ उठा, और उन्होंने भेड़ फाटक को बनाया; और उसे पाक किया, और उसके किवाड़ों को लगाया। उन्होंने हमियाह के बुर्ज बल्कि हननएल के बुर्ज तक उसे पाक किया।²~उससे आगे यरीहू के लोगों ने बनाया, और उनसे आगे ज़क्कूर बिन इमरी ने बनाया।

³मछली फाटक को बनी हसन्नाह ने बनाया उन्होंने उसकी कड़ियाँ रखीं और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए।⁴~और उनसे आगे मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक्कूस ने मरम्मत की। और उनसे आगे मुसल्लाम बिन बरकियाह बिन मशीज़बेल ने मरम्मत की। और उनसे आगे सदोक्र बिन बा'ना ने मरम्मत की।⁵~और उनसे आगे तकू'इयों ने मरम्मत की, लेकिन उनके अमीरों ने अपने मालिक के काम के लिए गर्दन न झुकाई।

⁶~और पुराने फाटक की यहूयदा बिन फ़ासख और मुसल्लाम बिन बसूदियाह ने मरम्मत की ~उन्होंने उसकी कड़ियाँ रखीं और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए।⁷और उनसे आगे मलतियाह जिबा'ऊनी और यदून मरूनोती, और जिबा'ऊन और मिसफ़ाह ~के लोगों ने जो दरिया पार के हाकिम की 'अमलदारी में से थे मरम्मत की।

⁸और उनसे आगे सुनारों की तरफ़ से उज़्ज़ीएल बिन हररहियाह ने, और उससे आगे 'अत्तारों में से हननियाह ने मरम्मत की, और उन्होंने यरुशलीम को चौड़ी दीवार तक मज़बूत किया।⁹और उनसे आगे रिफ़ायाह ने, जो हूर का बेटा और यरुशलीम के आधे हल्के का सरदार था मरम्मत की।¹⁰~और उससे आगे यदायाह बिन हरुमफ़ ने अपने ही घर के सामने तक की मरम्मत की। और उससे आगे हतूश बिन हसबनियाह ने मरम्मत की।

¹¹मलकियाह बिन हारिम और हसूब बिन पख़त-मोआब ने दूसरे हिस्से की और तनूरों के बुर्ज की मरम्मत की।¹²और उससे आगे सलूम बिन हलूहेश ने जो यरुशलीम के आधे हल्के का सरदार था, और उसकी बेटियों ने मरम्मत की।

¹³~वादी के फाटक की मरम्मत हनून और ज़नुवाह के बाशिन्दों ने की; उन्होंने उसे बनाया और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए, और कूड़े के फाटक तक एक हज़ार हाथ दीवार तैयार की।

¹⁴और कूड़े के फाटक की मरम्मत मलकियाह बिन रैकाब ने की जो बैत-हक्करम के हल्के का सरदार था; उसने उसे बनाया और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए।¹⁵और चश्मा फाटक की सलूम बिन कलहूज़ा ने जो मिसफ़ाह के हल्के का सरदार था, मरम्मत की; उसने उसे बनाया और उसको पाटा और उसके किवाड़े चटकनियाँ और उसके अड़बंगे लगाये और बादशाही बाग के पास शीलोख के हौज़ की दीवार को उस सीढ़ी तक, जो दाऊद के शहर से नीचे आती है बनाया।

¹⁶~फिर नहमियाह बिन 'अज़बूक ने जो बैतसूर के आधे हल्के का सरदार था, दाऊद की क़ब्रों के सामने की जगह और उस हौज़ तक जो बनाया गया था, और सूरमाओं के घर तक मरम्मत की।¹⁷~फिर लावियों में से रूहम बिन बानी ने मरम्मत की। उससे आगे हसबियाह ने जो क'ईलाह के आधे हल्के का सरदार था, अपने हल्के की तरफ़ से मरम्मत की।

¹⁸फिर उनके भाइयों में से बवी बिन हनदाद ने जो क'ईलाह के आधे हल्के का सरदार था, मरम्मत की।¹⁹~और उससे आगे ईज़र बिन यशू'अ मिसफ़ाह के सरदार ने दूसरे टुकड़े की जो मोड़ के पास सिलाहखाने की चढ़ाई के सामने है, मरम्मत की।

²⁰~फिर बारूक बिन ज़ब्बी ने सरगर्मी से उस मोड़ से सरदार काहिन इलियासिब के घर के दरवाज़े तक, एक और टुकड़े की मरम्मत की।²¹~फिर मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक्कूस ने एक और टुकड़े की इलियासिब के घर के दरवाज़े से इलियासिब के घर के आखिर तक मरम्मत की।

²²~फिर नशेब के रहनेवाले काहिनों ने मरम्मत की।²³फिर बिनयमीन और हसूब ने अपने घर के सामने तक मरम्मत की। फिर 'अज़रियाह बिन मा'सियाह बिन 'अननियाह ने अपने घर के बराबर तक मरम्मत की।²⁴~फिर बिनवी बिन हनदाद ने 'अज़रियाह के घर से दीवार के मोड़ और कोने तक, एक और टुकड़े की मरम्मत की।

²⁵~फ़ालाल बिन ऊज़ी ने मोड़ के सामने के हिस्से की, और उस बुर्ज की जो कैदखाने के सहन के पास के शाही महल से बाहर निकला हुआ है मरम्मत की। फिर फ़िदायाह बिन पर'ऊस ने मरम्मत की।²⁶~(और नतीनीम" पूरब की तरफ़ ओफ़ल में पानी फाटक के सामने और उस बुर्ज तक बसे हुए थे, जो बाहर निकला हुआ है)²⁷~फिर तकू'इयों ने उस बड़े बुर्ज के सामने जो बाहर निकला हुआ है, और ओफ़ल की दीवार तक एक और टुकड़े की मरम्मत की।

²⁸~घोड़ा फाटक के ऊपर काहिनों ने अपने अपने घर के सामने मरम्मत की।²⁹~उनके पीछे सदोक्र बिन इम्मीर ने अपने घर के सामने मरम्मत की। और फिर पूरबी फाटक के दरबान समा'याह बिन सिकनियाह ने मरम्मत की।³⁰~फिर हननियाह बिन सलमियाह और हनून ने जो सलफ़ का छठा बेटा था, एक और टुकड़े की मरम्मत की। फिर मुसल्लाम बिन बरकियाह ने अपनी कोठरी के सामने मरम्मत की।

³¹~फिर सुनारों में से एक शख्स मलकियाह ने नतीनीम" और सौदागरों के घर तक हिम्मीफ़क्राद के फाटक के सामने और कोने की चढ़ाई तक मरम्मत की।

³²~और उस कोने की चढ़ाई और भेड़ फाटक के बीच सुनारों और सौदागरों ने मरम्मत की।

Chapter 4

¹लेकिन ऐसा हुआ जब सनबल्लत ने सुना के हम शहरपनाह बना रहे हैं, तो वह जल गया और बहुत गुस्सा हुआ और यहूदियों को ठड्डों में उड़ाने लगा।²~और वह अपने भाइयों और सामरिया के लश्कर के आगे यूँ कहने लगा, "ये कमज़ोर यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या ये अपने गिर्द मोर्चाबन्दी करेंगे? क्या वह कुर्बानी चढ़ाएँगे? क्या वह एक ही दिन में सब कुछ कर चुकेंगे? क्या वह जले हुए पत्थरों को कूड़े के ढेरों में से निकाल कर फिर नये कर देंगे?"³और तूबियाह 'अम्मोनी उसके पास खड़ा था, तब वह कहने लगा, "जो कुछ वह बना रहे हैं, अगर उसपर लोमड़ी चढ़ जाए तो वह उनके पत्थर की शहरपनाह को गिरा देगी।"

⁴~सुन ले, ऐ हमारे खुदा क्योंकि हमारी हिकारत होती है और उनकी मलामत उन ही के सिर पर डाल: और गुलामी के मुल्क में उनको ग़ारतग़रों के हवाले कर दे।

⁵और उनकी बुराई को न ढाँक, और उनकी ख़ता तेरे सामने से मिटाई न जाए; क्योंकि उन्होंने मे'मारों के सामने तुझे गुस्सा दिलाया है।⁶~गरज़ हम दीवार बनाते रहे, और सारी दीवार आधी बलन्दी तक जोड़ी गई; क्योंकि लोग दिल लगा कर काम करते थे।

⁷लेकिन जब सनबल्लत और तूबियाह और अरबों ~और 'अम्मोनियों और अशदूदियों ने सुना कि यरुशलीम की फ़सील मरम्मत होती जाती है, और दराड़े बन्द होने लगीं, तो वह जल गए।⁸और सभी ने मिल कर बन्दिश बाँधी कि आकर यरुशलीम से लड़ें, और वहाँ परेशानी पैदा कर दें।⁹~लेकिन हम ने अपने खुदा से दु'आ की, और उनकी वजह से दिन और रात उनके मुक़ाबले में पहरा बिठाए रखा

¹⁰~और यहूदाह कहने लगा कि बोझ उठाने वालों की ताक़त घट गयी और मलबा बहुत है, इसलिए हम दीवार नहीं बना सकते हैं।¹¹~और हमारे दुश्मन कहने लगे, "जब तक हम उनके बीच पहुँच कर उनको क़त्ल न कर डालें और काम ख़त्म न कर दें, तब तक उनको न मा'लूम होगा न वह देखेंगे।"

¹²~और जब वह यहूदी जो उनके आस-पास रहते थे आए, तो उन्होंने सब जगहों से दस बार आकर हम से कहा कि तुम को हमारे पास लौट आना ज़रूर है।

¹³इसलिए मैंने शहरपनाह के पीछे की जगह के सबसे नीचे हिस्सों में जहाँ जहाँ खुला था, लोगों को अपनी अपनी तलवार और बर्छी और कमान लिए हुए उनके घरानों के मुताबिक़ बिठा दिया।¹⁴~तब मैं देख कर उठा, और अमीरों और हाकिमों और बाक़ी लोगों से कहा कि तुम उनसे मत डरो; खुदावन्द को जो बुजुर्ग और बड़ा है याद करो, और अपने भाइयों और बेटे बेटियों और अपनी बीवियों और घरों के लिए लड़ो।

¹⁵~और जब हमारे दुश्मनों ने सुना कि ये बात हम को मा'लूम हो गई और खुदा ने उनका मन्सूबा बेकार कर दिया, तो हम सबके सब शहरपनाह को अपने अपने काम पर लौटे।¹⁶और ऐसा हुआ कि उस दिन से मेरे आधे नौकर काम में लग जाते, और आधे बर्छियाँ और और ढालें और कमाने लिए और बख़्तर पहने ~रहते थे; और वह जो हाकिम थे यहूदाह के सारे ख़ान्दान के पीछे मौजूद रहते थे।

¹⁷इसलिए जो लोग दीवार बनाते थे और जो बोझ उठाते और ढोते थे, हर एक अपने एक हाथ से काम करता था और दूसरे में अपना हथियार लिए रहता था।

¹⁸और मे'मारों में से हर एक आदमी अपनी तलवार अपनी कमर से बाँधे हुए काम करता था, और वह जो नरसिंगा फूँकता था मेरे पास रहता था।

¹⁹~और मैंने अमीरों और हाकिमों और बाक़ी लोगों से कहा कि काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम दीवार पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं।

²⁰इसलिए जिधर से नरसिंगा तुम को सुनाई दे, उधर ही तुम हमारे पास चले आना। हमारा खुदा हमारे लिए लड़ेगा।

²¹~यूँ हम काम करते रहे, और उनमें से आधे लोग पौ फटने के वक़्त से तारों के दिखाई देने तक बर्छियाँ लिए रहते थे।²²~और मैंने उसी मौक़े' पर लोगों से ये भी कह दिया था कि हर शख्स अपने नौकर को लेकर यरुशलीम में रात काटा करे, ताकि रात को वह हमारे लिए पहरा दिया करें और दिन को काम करें।²³~इसलिए न तो मैं न मेरे भाई न मेरे नौकर और न पहर के लोग जो मेरे पैरी थे, कभी अपने कपड़े उतारते थे; बल्कि हर शख्स अपना हथियार लिए हुए पानी के पास जाता था।

Chapter 5

¹फिर लोगों और उनकी बीवियों की तरफ से उनके यहूदी भाइयों पर बड़ी शिकायत हुई।²~क्योंकि कई ऐसे थे जो कहते थे कि हम और हमारे बेटे-बेटियाँ बहुत हैं; इसलिए हम अनाज ले लें, ताकि खाकर ज़िन्दा रहें।³और कुछ ऐसे भी थे जो कहते थे कि हम अपने खेतों और अंगूरिस्तानों और मकानों को गिरवी रखते हैं, ताकि हम काल में अनाज ले लें।

⁴और कितने कहते थे कि हम ने अपने खेतों और अंगूरिस्तानों पर बादशाह के खिराज के लिए रुपया कर्ज़ लिया है।⁵~लेकिन हमारे जिस्म तो हमारे भाइयों के जिस्म की तरह हैं, और हमारे बाल बच्चे ऐसे जैसे उनके बाल बच्चे और देखो, हम अपने बेटे-बेटियों को नौकर होने के लिए गुलामी के सुपुर्द करते हैं, और हमारी बेटियों में से कुछ लौंडियाँ बन चुकी हैं; और हमारा कुछ बस नहीं चलता, क्योंकि हमारे खेत और अंगूरिस्तान औरों के कब्जे में हैं।

⁶~जब मैंने उनकी फ़रियाद और ये बातें सुनीं, तो मैं बहुत गुस्सा हुआ।⁷और मैंने अपने दिल में सोचा, और अमीरों और हाकिमों को मलामत करके उनसे कहा, "तुम में से हर एक अपने भाई से सूद लेता है।" और मैंने एक बड़ी जमा'अत को उनके खिलाफ़ जमा' किया;⁸और मैंने उनसे कहा कि हम ने अपने मक़दूर के मुवाफ़िक़ अपने यहूदी भाइयों को जो और क़ौमों के हाथ बेच दिए गए थे, दाम देकर छुड़ाया; इसलिए क्या तुम अपने ही भाइयों को बेचोगे? और क्या वह हमारे ही हाथ में बेचे जाएँगे? तब वह चुप रहे और उनको कुछ जवाब न सूझा।

⁹~और मैंने ये भी कहा कि ये काम जो तुम करते हो ठीक नहीं; क्या और क़ौमों की मलामत की वजह से जो हमारी दुश्मन हैं, तुम को खुदा के ख़ौफ़ में चलना लाज़िम नहीं?¹⁰~मैं भी और मेरे भाई और मेरे नौकर भी उनको ~रुपया और ग़ल्ला सूद पर देते हैं, लेकिन मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि हम सब सूद लेना छोड़ दें।¹¹~मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि आज ही के दिन उनके खेतों और अंगूरिस्तानों और ज़ैतून के बाग़ों और घरों को, और उस रुपये और अनाज और मय और तेल के सौवें हिस्से को, जो तुम उनसे जबरन लेते हो उनको वापस कर दो।

¹²~तब उन्होंने कहा कि हम इनको वापस कर देंगे और उनसे कुछ न माँगेंगे, जैसा तू कहता है हम वैसा ही करेंगे। फिर मैंने काहिनों को बुलाया और उनसे क़सम ली कि वह इसी वा'दे के मुताबिक़ करेंगे।¹³~फिर मैंने अपना दामन झाड़ा और कहा कि इसी तरह से खुदा हर शख्स को जो अपने इस वा'दे पर 'अमल न करे, उसके घर से और उसके कारोबार से झाड़ डाले; वह इसी तरह झाड़ दिया और निकाल फेंका जाए। तब सारी जमा'अत ने कहा, "आमीन!" और खुदावन्द की हम्द की। और लोगों ने इस वा'दे के मुताबिक़ काम किया।

¹⁴अलावा इसके जिस वक़्त से मैं यहूदाह के मुल्क में हाकिम मुकर्रर हुआ, या'नी अरतख़शशता बादशाह के बीसवें बरस से बत्तीसवें बरस तक, गरज़ बारह बरस मैंने और मेरे भाइयों ने हाकिम होने की रोटी न खाई।¹⁵~लेकिन अगले हाकिम जो मुझ से पहले थे र'इयत पर एक बार थे, और 'अलावा चालीस मिस्क़ाल चाँदी के रोटी और मय उनसे लेते थे, बल्कि उनके नौकर भी लोगों पर हुकूमत जताते थे; लेकिन मैंने खुदा के ख़ौफ़ की वजह से ऐसा न किया।

¹⁶~बल्कि मैं इस शहरपनाह के काम में बराबर मशगूल रहा, और हम ने कुछ ज़मीन भी नहीं खरीदी, और मेरे सब नौकर वहाँ काम के लिए इकट्ठे रहते थे।

¹⁷~इसके अलावा उन लोगों के 'अलावा जो हमारे आस पास की क़ौमों में से हमारे पास आते थे, यहूदियों और सरदारों में से डेढ़ सौ आदमी मेरे दस्तरख़्वान पर होते थे।

¹⁸~और एक बैल और छः मोटी मोटी भेड़ें एक दिन के लिए तैयार होती थी, मुर्रियाँ भी मेरे लिए तैयार की जाती थीं, और दस दस दिन के बा'द हर किसम की मय का ज़ख़ीरा तैयार होता था, बावजूद इस सबके मैंने हाकिम होने की रोटी तलब न की क्योंकि इन लोगों पर गुलामी गिराँ थी।¹⁹~ऐ मेरे खुदा, जो कुछ मैंने इन लोगों के लिए किया है, उसे तू मेरे हक़ में भलाई के लिए याद रख।

Chapter 6

¹जब सनबल्लत और तूबियाह और जशम 'अरबी और हमारे बाकी दुश्मनों ने सुना कि मैं शहरपनाह को बना चुका, और उसमें कोई रखना बाकी नहीं रहा (अगरचे उस वक़्त तक मैंने फाटकों में किवाड़े नहीं लगाए थे)।² तो सनबल्लत और जशम ने मुझे ये कहला भेजा कि आ, हम ओनू के मैदान के किसी गाँव में आपस में मुलाक़ात करें। लेकिन वह मुझ से बुराई करने की फ़िक्र में थे।

³इसलिए मैंने उनके पास कासिदों से कहला भेजा कि मैं बड़े काम में लगा हूँ और आ नहीं सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास आने से ये काम क्यों बन्द रहे?

⁴~उन्होंने चार बार मेरे पास ऐसा ही पैग़ाम भेजा और मैंने उनको इसी तरह का जवाब दिया।

⁵~फिर सनबल्लत ने पाँचवीं बार उसी तरह से अपने नौकर को मेरे पास हाथ में खुली चिट्ठी लिए हुए भेजा:⁶~जिसमें लिखा था कि और क्रौमों में ये अफ़वाह है और जशम यही कहता है, कि तेरा और यहूदियों का इरादा बगावत करने का है, इसी वजह से तू शहरपनाह बनाता है; और तू इन बातों के मुताबिक़ उनका बादशाह बनना चाहता है।

⁷और तूने नबियों को भी मुकर्रर किया कि यरुशलीम में तेरे हक़ में 'ऐलान करें और कहें, 'यहूदाह में एक बादशाह है।' तब इन बातों के मुताबिक़ बादशाह को इत्तला' की जाएगी। इसलिए अब आ हम आपस में मशवरा करें।

⁸~तब मैंने उसके पास कहला भेजा, "जो तू कहता है, इस तरह की कोई बात नहीं हुई, बल्कि तू ये बातें अपने ही दिल से बनाता है।"⁹~वह सब तो हम को डराना चाहते थे, और कहते थे कि इस काम में उनके हाथ ऐसे ढीले पड़ जाएँगे कि वह होने ही का नहीं। लेकिन अब ऐ खुदा, तू मेरे हाथों को ताक़त बख़्श।

¹⁰फिर मैं समा'याह बिन दिलायाह बिन मुहेतबेल के घर गया, वह घर में बन्द था; उसने कहा, "हम खुदा के घर में, हैकल के अन्दर मिलें, और हैकल के दरवाज़ों को बन्द कर लें। क्योंकि वह तुझे क़त्ल करने को आएँगे, वह ज़रूर रात को तुझे क़त्ल करने को आएँगे।"¹¹~मैंने कहा, "क्या मुझसा आदमी भागे? और कौन है जो मुझ सा हो और अपनी जान बचाने को हैकल में घुसे'? मैं अन्दर नहीं जाने का।"

¹²और मैंने मा'लूम कर लिया कि खुदा ने उसे नहीं भेजा था, लेकिन उसने मेरे खिलाफ़ पेशीनगोई की बल्कि सनबल्लत और तूबियाह ने उसे मज़दूरी पर रखखा था।¹³और उसको इसलिए मज़दूरी दी गई ताकि मैं डर जाऊँ और ऐसा काम करके खताकार ठहरूँ, और उनको बुरी ख़बर फैलाने का मज़मून मिल जाए, ताकि मुझे मलामत करें।¹⁴~ऐ मेरे खुदा! तूबियाह और सनबल्लत को उनके इन कामों के लिहाज़ से, और नौ'ईदियाह नबिया को भी और बाक़ी नबियों को जो मुझे डराना चाहते थे याद रख।

¹⁵~गरज़ बावन दिन में, अलूल महीने की पच्चीसवीं तारीख को शहरपनाह बन चुकी।¹⁶~जब हमारे सब दुश्मनों ने ये सुना, तो हमारे आस-पास की सब क्रौमें डरने लगीं और अपनी ही नज़र में खुद ज़लील हो गईं; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि ये काम हमारे खुदा की तरफ़ से हुआ।

¹⁷इसके अलावा उन दिनों में यहूदाह के अमीर बहुत से ख़त तूबियाह को भेजते थे, और तूबियाह के ख़त उनके पास आते थे।¹⁸~क्योंकि यहूदाह में बहुत लोगों ने उससे क्रौल-ओ-क्रार किया था, इसलिए कि वह सिकनियाह बिन अरख का दामाद था; और उसके बेटे यहूहानान ने मुसल्लाम बिन बरकियाह की बेटी को ब्याह लिया था।¹⁹और वह मेरे आगे उसकी नेकियों का बयान भी करते थे और मेरी बातें उसे सुनाते थे, और तूबियाह मुझे डराने को चिट्ठियाँ भेजा करता था।

Chapter 7

¹जब शहरपनाह बन चुकी और मैंने दरवाज़े लगा लिए, और दरबान और गानेवाले और लावी मुकर्रर हो गए,²तो मैंने यरुशलीम को अपने भाई हनानी और क़िले के हाकिम हनानियाह के सुपुर्द किया, क्योंकि वह अमानतदार और बहुतों से ज़्यादा खुदा तरस था।

³और मैंने उनसे कहा कि जब तक धूप तेज़ न हो यरुशलीम के फाटक न खुलें, और जब वह पहर पर खड़े हों तो किवाड़े बन्द किए जाएँ, और तुम उनमें अड़बंगे लगाओ और यरुशलीम के बाशिन्दों में से पहरवाले मुकर्रर करो कि हर एक अपने घर के सामने अपने पहर पर रहे।⁴और शहर तो वसी' और बड़ा था, लेकिन उसमें लोग कम थे और घर बने न थे।

⁵और मेरे खुदा ने मेरे दिल में डाला कि अमीरों और सरदारों और लोगों को इकट्ठा करूँ ताकि नसबनामे के मुताबिक़ उनका शुमार किया जाए और मुझे उन लोगों का नसबनामा मिला जो पहले आए थे, और उसमें ये लिखा हुआ पाया :

⁶मुल्क के जिन लोगों को शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र बाबुल को ले गया था, उन गुलामों की गुलामी में से वह जो निकल आए, और यरुशलीम और यहूदाह में अपने अपने शहर को गए ये हैं,⁷~जो ज़रुब्बाबुल, यशू'अ, नहमियाह, 'अज़रियाह, रा'मियाह, नहमानी, मर्दकी बिलशान मिसफ़रत, बिगवई, नहूम और बा'ना के साथ आए थे।बनी-इस्राईल के लोगों का शुमार ये था :

⁸बनी पर'ऊस, दो हज़ार एक सौ बहतर;⁹बनी सफ़तियाह, तीन सौ बहतर;¹⁰~बनी अरख, छः सौ बावन;

¹¹~बनी पखत-मोआब जो यशू'अ और योआब की नसल में से थे, दो हज़ार आठ सौ अठारह;¹²~बनी 'ऐलाम, एक हज़ार दो सौ चव्वन,¹³बनी ज़त्तू, आठ सौ पैन्तालीस;¹⁴~बनी ज़क्की, सात सौ साठ;

¹⁵~बनी बिनबी, छः सौ अड़तालीस;¹⁶~बनी बबई, छः सौ अठाईस;¹⁷~बनी 'अज़जाद, दो हज़ार तीन सौ बाईस;¹⁸~बनी अदूनिकाम, छः सौ सड़सठ;

¹⁹~बनी बिगवई, दो हज़ार सड़सठ;²⁰~बनी 'अदीन, छः सौ पचपन,²¹हिज़कियाह के ख़ान्दान में से बनी अतीर, अट्टानवे;²²~बनी हशूम, तीन सौ अठाईस;

²³~बनी बज़ै, तीन सौ चौबीस;²⁴~बनी ख़ारिफ़, एक सौ बारह,²⁵~बनी जिबा'ऊन, पचानवे;²⁶~बैतलहम और नतूफ़ाह के लोग, एक सौ अठासी,

²⁷~'अन्तोत के लोग, एक सौ अठठाईस;²⁸~बैत 'अज़मावत के लोग, बयालीस,²⁹करयतया'रीम, कफ़ीरा और बैरोत के लोग, सात सौ तैन्तालीस;³⁰~रामा और जिबा' के लोग, छः सौ इक्कीस;

³¹~मिकमास के लोग, एक सौ बाईस;³²~बैतएल और 'ए के लोग, एक सौ तेईस;³³दूसरे नबू के लोग, बावन,³⁴~दूसरे 'ऐलाम की औलाद, एक हज़ार दो सौ चव्वन;

³⁵~बनी हारिम, तीन सौ बीस;³⁶~यरीहू के लोग, तीन सौ पैन्तालीस;³⁷~लूद और हादीद और ओनू के लोग, सात सौ इक्कीस;³⁸बनी सनाआह, तीन हज़ार नौ सौ तीस।

³⁹~फिर काहिन या'नी यशू'अ के घराने में से बनी यदा'याह, नौ सौ तिहत्तर;⁴⁰~बनी इम्मेर, एक हज़ार बावन;⁴¹~बनी फ़शहूर, एक हज़ार दो सौ सैन्तालीस;

⁴²~बनी हारिम, एक हज़ार सत्रह।

⁴³~फिर लावी या'नी बनी होदावा में से यशू'अ और क़दमीएल की औलाद, चौहत्तर;⁴⁴~और गानेवाले या'नी बनी आसफ़, एक सौ अड़तालीस;⁴⁵~और दरबान जो सलूम और अतीर और तलमून और 'अक्कूब और खतीता और सोबै की औलाद थे, एक सौ अड़तीस।

⁴⁶और नतीनीम, या'नी बनी ज़ीहा, बनी हसूफ़ा, बनी तब'ओत,⁴⁷~बनी करूस, बनी सीगा, बनी फ़दून,⁴⁸~बनी लिबाना, बनी हजाबा, बनी शलमी,⁴⁹~बनी हनान, बनी जिद्देल, बनी जहार,

⁵⁰~बनी रियायाह, बनी रसीन, बनी नकूदा,⁵¹~बनी जज़्ज़ाम, बनी उज़्ज़ा, बनी फ़ासख़,⁵²बनी बसै, बनी म'ऊनीम, बनी नफूशसीम

⁵³बनी बक्रबूक, बनी हकूफ़ा, बनी हरहूर,⁵⁴~बनी बज़लीत, बनी महीदा, बनी हरशा⁵⁵~बनी बरकूस, बनी सीसरा, बनी तामह,⁵⁶~बनी नज़ियाह, बनी खतीफ़ा।

⁵⁷सुलेमान के ख़ादिमों की औलाद : बनी सूती, बनी सूफ़िरत, बनी फ़रीदा,⁵⁸बनी या'ला, बनी दरकून, बनी जिद्देल,⁵⁹बनी सफ़तियाह, बनी खतील, बनी फूकरत ज़बाइम और बनी अमून।⁶⁰सबनतीनीम और सुलेमान के ख़ादिमों की औलाद, तीन सौ बानवे।

⁶¹और जो लोग तल-मलह और तलहरसा और करोब और उदून और इम्मेर से गए थे, लेकिन अपने आबाई ख़ान्दानों और नसल का पता न दे सके कि इस्राईल में से थे या नहीं, सो ये हैं:⁶²~बनी दिलायाह, बनी तूबियाह, बनी नकूदा, छः सौ बयालिस।⁶³और काहिनों में से बनी हबायाह, बनी हक्कूस और बरज़िल्ली की औलाद जिसने ~जिल'आदी बरज़िल्ली की बेटियों में से एक लड़की को ब्याह लिया और उनके नाम से कहलाया।

⁶⁴~उन्होंने अपनी सनद उनके बीच जो नसबनामों के मुताबिक़ गिने गए थे ढूँडी, लेकिन वह न मिली। इसलिए वह नापाक माने गए और कहानत से ख़ारिज हुए;

⁶⁵और हाकिम ने उनसे कहा कि वह पाकतरीन चीज़ों में से न खाएँ, जब तक कोई काहिन ऊरीम-ओ-तुम्मीम लिए हुए खड़ा न हो।

⁶⁶~सारी जमा'अत के लोग मिलकर बयालीस हज़ार तीन सौ साठ थे,⁶⁷अलावा उनके गुलामों और लौंडियों का शुमार सात हज़ार तीन सौ सैन्तीस था, और उनके साथ दो सौ पैन्तालिस गानेवाले और गानेवालियाँ थीं।

⁶⁸उनके घोड़े, सात सौ छत्तीस; उनके खच्चर, दो सौ पैन्तालीस;⁶⁹~उनके ऊँट, चार सौ पैन्तीस; उनके गधे, छः हज़ार सात सौ बीस थे।

⁷⁰और आबाई ख़ान्दानों के सरदारों में से कुछ ने उस काम के लिए दिया। हाकिम ने एक हज़ार सोने के दिरहम, और पचास प्याले, और काहिनों के पाँच सौ तीस लिबास ख़ज़ाने में दाखिल किए।⁷¹और आबाई ख़ान्दानों के सरदारों में से कुछ ने उस काम के खज़ाने में बीस हज़ार सोने के दिरहम, और दो हज़ार दो सौ मना चाँदी दी।⁷²और बाक़ी लोगों ने जो दिया वह बीस हज़ार सोने के दिरहम, और दो हज़ार मना चाँदी, और काहिनों के सड़सठ पैराहन थे।

⁷³~इसलिए काहिन और लावी और दरबान और गाने वाले और कुछ लोग, और नतीनीम, और तमाम इस्राईल अपने-अपने शहर में बस गए।

Chapter 8

¹और जब सातवाँ महीना आया, तो बनी-इसाईल अपने-अपने शहर में थे। और सब लोग यकतन होकर पानी फाटक के सामने के मैदान में इकट्ठा हुए, और उन्होंने 'अज़ा फ़कीह से 'अर्ज़ की कि मूसा की शरी' अत की किताब को, जिसका खुदावन्द ने इसाईल को हुक्म दिया था लाए।² और सातवें महीने की पहली तारीख को 'अज़ा काहिन तौरत को जमा' अत के, या'नी मर्दों और 'औरतों और उन सबके सामने ले आया जो सुनकर समझ सकते थे।³ और वह उसमें से पानी फाटक के सामने के मैदान में, सुबह से दोपहर तक मर्दों और 'औरतों और सभी के आगे जो समझ सकते थे पढ़ता रहा; और सब लोग शरी' अत की किताब पर कान लगाए रहे।

⁴और 'अज़ा-फ़कीह एक चोबी मिम्बर पर, जो उन्होंने इसी काम के लिए बनाया था खड़ा हुआ; और उसके पास मत्तितियाह, और समा', और 'अनायाह, और ~ऊरियाह, और खिलक्रियाह, और मासियाह उसके दहने खड़े थे; और उसके बाएँ फ़िदायाह, और मिसाएल, और मलकियाह, और हाशूम, और हसबदाना, और ज़करियाह और मुसल्लाम थे।⁵ और 'अज़ा-ने सब लोगों के सामने किताब खोली (क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर था), और जब उसने उसे खोला तो सब लोग उठ खड़े हुए;

⁶और 'अज़ा-ने खुदावन्द खुदा-ए-'अज़ीम को मुबारक कहा; और सब लोगों ने अपने हाथ उठाकर जवाब दिया, "आमीन-आमीन" और उन्होंने औंधे मुँह ज़मीन तक ~झुककर खुदावन्द को सिज्दा किया।⁷ ~यशू'अ, और बानी, और सरीबियाह, और यामिन और 'अक्कूब, और सब्बती, और हूदियाह, और मासियाह, और क़लीता, और 'अज़रियाह, और यूज़बद, और हनान, और फ़िलायाह और लावी लोगों को शरी' अत समझाते गए; और लोग अपनी-अपनी जगह पर खड़े रहे।

⁸और उन्होंने उस किताब या'नी खुदा की शरी' अत में से साफ़ आवाज़ से पढ़ा, फिर उसके मानी बताए और उनको 'इबारत समझा दी।

⁹और नहमियाह ने जो हाकिम था, और 'अज़ा-काहिन और फ़कीह ने, और उन लावियों ने जो लोगों को सिखा रहे थे सब लोगों से कहा, "आज का दिन खुदावन्द तुम्हारे खुदा के लिए पाक है, न ग़म करो न रो।" क्योंकि सब लोग शरी' अत की बातें सुनकर रोने लगे थे।¹⁰ फिर उसने उनसे कहा, "अब जाओ, और जो मोटा है खाओ, और जो मीठा है पियो और जिनके लिए कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भी भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे खुदावन्द के लिए पाक है; और तुम मायूस मत हो, क्योंकि खुदावन्द की खुशी तुम्हारी पनाहगाह है।"

¹¹और लावियों ने सब लोगों को चुप कराया और कहा, "खामोश हो जाओ, क्योंकि आज का दिन पाक है; और ग़म न करो।"¹² तब सब लोग खाने पीने और हिस्सा भेजने और बड़ी खुशी करने को चले गए; क्योंकि वह उन बातों को जो उनके आगे पढ़ी गई, समझे थे।

¹³और ~दूसरे दिन सब लोगों के आबाई खान्दानों के सरदार और काहिन और लावी, 'अज़ा-फ़कीह के पास इकट्ठे हुए कि तौरत की बातों पर ध्यान लगाएँ।

¹⁴और उनको शरी' अत में ये लिखा मिला, कि खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' फ़रमाया है कि बनी-इसाईल सातवें महीने की 'ईद में झोपड़ियों में रहा करें,¹⁵ और अपने सब शहरों में और यरुशलैम में ये 'ऐलान और मनादी कराएँ कि पहाड़ पर जाकर ज़ैतून की डालियाँ और जंगली ज़ैतून की डालियाँ और मेहंदी की डालियाँ और खजूर की शाखें, और घने दरख्तों की डालियाँ झोपड़ियों के बनाने को लाओ, जैसा लिखा है।

¹⁶तब लोग जा-जा कर उनको लाए, और हर एक ने अपने घर की छत पर, और अपने अहाते में, और खुदा के घर के सहनों में, और पानी फाटक के मैदान में, और इफ़्राइमी फाटक के मैदान में अपने लिए झोपड़ियाँ बनाई।¹⁷ और उन लोगों की सारी जमा' अत ने जो गुलामी से फिर आए थे, झोपड़ियाँ बनाई और उन्हीं झोपड़ियों में रहे; क्योंकि यशू'अ बिन नून के दिनों से उस दिन तक बनी-इसाईल ने ऐसा नहीं किया था। चुनाँचे बहुत बड़ी खुशी हुई।

¹⁸और पहले दिन से आखिरी दिन तक रोज़-ब-रोज़ उसने खुदा की शरी' अत की किताब पढ़ी। और उन्होंने सात दिन 'ईद मनाई, और आठवें दिन दस्तूर के मुवाफ़िक़ पाक मजमा' इकट्ठा हुआ।

Chapter 9

¹~फिर इसी महीने की चौबीसवीं तारीख को बनी-इसाईल रोज़ा रखकर और टाट ओढ़कर और मिट्टी अपने सिर पर डालकर इकट्ठे हुए।² और इसाईल की नसल के लोग सब परदेसियों से अलग हो गए, और ~खड़े होकर अपने गुनाहों और अपने बाप-दादा की खताओं का इक्रार किया।

³~और उन्होंने अपनी अपनी जगह पर खड़े होकर एक पहर तक खुदावन्द अपने खुदा की ~किताब पढ़ी; और दूसरे पहर में, इक्रार करके खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा करते रहे।⁴~तब क्रदमीएल, यशू'आ, और बानी, और सबनियाह, बुन्नी और सरबियाह, और ~ बानी, और कना'नी ने लावियों की सीढ़ियों पर खड़े होकर बलन्द आवाज़ से खुदावन्द अपने खुदा से फ़रियाद की।

⁵~फिर यशू'अ, और क्रदमीएल और बानी और हसबनियाह और सरबियाह और हूदियाह, और सबनियाह, और फ़तहियाह लावियों ने कहा, "खड़े हो जाओ, और कहो, खुदावन्द हमारा खुदा इब्दिदा से हमेशा तक मुबारक है; तेरा जलाली नाम मुबारक हो, जो सब हम्द-ओ-ता'रीफ़ से बाला है।⁶ तू ही अकेला खुदावन्द है; तूने आसमान और आसमानों के आसमान को और उनके सारे लश्कर को, और ज़मीन को और जो कुछ उसपर है, और समन्दरों को और जो कुछ उनमें है बनाया और तू उन सभी का परवरदिगार है; और आसमान का लश्कर तुझे सिज्दा करता है।

⁷~तू वह खुदावन्द खुदा है जिसने अब्राम को चुन लिया, और उसे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, और उसका नाम इब्राहीम रखवा;⁸~तूने उसका दिल अपने सामने वफ़ादार पाया, और कना'नियों हितियों और अमोरियों फ़रिज़ियों और यबूसियों और जिरजासियों का मुल्क देने का 'अहद उससे बाँधा ताकि उसे उसकी नसल को दे; और तूने अपने सुखन पूरे किए क्योंकि तू सादिक है।

⁹~"और तूने मिस्र में हमारे बाप-दादा की मुसीबत पर नज़र की, और बहर-ए-कुलजुम के किनारे उनकी फ़रियाद सुनी।¹⁰ और फिर'औन और उसके सब नौकरों, और उसके मुल्क की सब र'इयत पर निशान और 'अजाइब कर दिखाए; क्योंकि तू जानता था कि वह गुरूर के साथ उनसे पेश आए। इसलिए तेरा बड़ा नाम हुआ, जैसा आज है।

¹¹~और तूने उनके आगे समन्दर को दो हिस्से किया, ऐसा कि वह समन्दर के बीच सूखी ज़मीन पर होकर चले; और तूने उनका पीछा करनेवालों को गहराओ में डाला, जैसा पत्थर समन्दर में फेंका जाता है।

¹²और तूने दिन को बादल के सुतून में होकर उनकी रहनुमाई की और रात को आग के सुतून में, ताकि जिस रास्ते उनको चलना था उसमें उनको रोशनी मिले।

¹³~और तू कोह-ए-सीना पर उतर आया, और तूने आसमान पर से उनके साथ बातें की, और रास्त अहकाम और सच्चे क़ानून और अच्छे आईन-ओ-फ़रमान उनको दिए,

¹⁴और उनको अपने पाक सबत से वाकिफ़ किया, और अपने बन्दे मूसा के ज़रिए' उनको अहकाम और आईन और शरी'अत दी।¹⁵~और तूने उनकी भूक मिटाने को आसमान पर से रोटी दी, और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिए पानी निकाला, और उनको फ़रमाया कि वह जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिसको उनको देने की तूने क़सम खाई थी।

¹⁶"लेकिन उन्होंने और हमारे बाप-दादा ने गुरूर किया, और बागी बने और तेरे हुक्मों को न माना;¹⁷और फ़रमाँबरदारी से इन्कार किया, और तेरे 'अजाइब को जो तूने उनके बीच किए याद न रखवा; बल्कि बागी बने और अपनी बगावत में अपने लिए एक सरदार मुकर्रर किया, ताकि अपनी गुलामी की तरफ़ लौट जाएँ। लेकिन तू वह खुदा है जो रहीम-ओ-करीम मु'आफ़ करने को तैयार, और क्रहर करने में धीमा, और शफ़क़त में ग़नी है, इसलिए तूने उनको छोड़ न दिया।

¹⁸~लेकिन जब उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर कहा, 'ये तेरा खुदा है, जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, " और यूँ गुस्सा दिलाने के बड़े बड़े काम किए;¹⁹~तो भी तूने अपनी गूँगाँ रहमतों से उनको वीराने में छोड़ न दिया; दिन को बादल का सुतून उनके ऊपर से दूर न हुआ, ताकि रास्ते में उनकी रहनुमाई करे, और न रात को आग का सुतून दूर हुआ, ताकि वह उनको रोशनी और वह रास्ता दिखाए जिससे उनको चलना था।

²⁰और तूने अपनी नेक रूह भी उनकी तरबियत के लिए बरख़्शी, और मन को उनके मुँह से न रोका, और उनको प्यास को बुझाने को पानी दिया।²¹~चालीस बरस तक तू वीराने में उनकी परवरिश करता रहा; वह किसी चीज़ के मुहताज न हुए, न तो उनके कपड़े पुराने हुए और न उनके पाँव सूजे।

²²इसके सिवा तूने उनको ममलुकतें और उम्मतें बरख़्शी, जिनको तूने उनके हिस्सों के मुताबिक़ उनको बाँट दिया; चुनौचे वह सीहून के मुल्क, और शाह-ए-हस्बोन के मुल्क, और बसन के बादशाह 'ओज के मुल्क पर क़ाबिज़ हुए।

²³~तूने उनकी औलाद को बढ़ाकर आसमान के सितारों की तरह कर दिया, और उनको उस मुल्क में लाया जिसके बारे में तूने उनके बाप-दादा से कहा था कि वह जाकर उसपर क़ब्ज़ा करें।²⁴तब उनकी औलाद ने आकर इस मुल्क पर क़ब्ज़ा किया, और तूने उनके आगे इस मुल्क के बाशिन्दों या'नी कना'नियों को मग़लूब किया, और उनको उनके बादशाहों और इस मुल्क के लोगों के साथ उनके हाथ में कर दिया कि जैसा चाहें वैसा उनसे करें।

²⁵~तब उन्होंने फ़सीलदार शहरों और ज़रखेज़ मुल्क को ले लिया, और वह सब तरह के अच्छे माल से भरे हुए घरों और खोदे हुए कुँवों, और बहुत से अंगूरिस्तानों और ज़ैतून के बाग़ों और फलदार दरख़्तों के मालिक हुए; फिर वह खा कर सेर हुए और मोटे ताज़े हो गए, और तेरे बड़े एहसान से बहुत हज़ उठाया।

²⁶~"तो भी वह ना-फ़रमान होकर तुझ से बागी हुए, और उन्होंने तेरी शरी'अत को पीठ पीछे फेंका, और तेरे नबियों को जो उनके खिलाफ़ गवाही देते थे ताकि उनको तेरी तरफ़ फिरा लायें क़त्ल किया और उन्होंने गुस्सा दिलाने के बड़े-बड़े काम किए।²⁷ इसलिए तूने उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दिया, जिन्होंने उनको सताया; और अपने दुख के वक़्त में जब उन्होंने तुझ से फ़रियाद की, तो तूने आसमान पर से सुन लिया और अपनी गूँगाँ रहमतों के मुताबिक़ उनको छुड़ाने वाले दिए जिन्होंने उनको उनके दुश्मनों के ~हाथ से छुड़ाया।

²⁸~लेकिन जब उनको आराम मिला तो उन्होंने फिर तेरे आगे बदकारी की, इसलिए तूने उनको उनके दुश्मनों के क़ब्ज़े में छोड़ दिया इसलिए वह उन पर मुसल्लत रहे; तो भी जब वह रज़ू' लाए और तुझ से फ़रियाद की, तो तूने आसमान पर से सुन लिया और अपनी रहमतों के मुताबिक़ उनको बार-बार छुड़ाया;²⁹ और तूने

उनके खिलाफ़ गवाही दी, ताकि अपनी शरी'अत की तरफ़ उनको फेर लाए। लेकिन उन्होंने गुरूर किया और तेरे फ़रमान न माने, बल्कि तेरे अहकाम के बरखिलाफ़ गुनाह किया (जिनको अगर कोई माने, तो उनकी वजह से जीता रहेगा), और अपने कन्धे को हटाकर बागी बन गए और न सुना।

³⁰तो भी तू बहुत बरसों तक उनकी बर्दाश्त करता रहा, और अपनी रूह से अपने नबियों के ज़रिए' उनके खिलाफ़ गवाही देता रहा; तो भी उन्होंने कान न लगाया, इसलिए तूने उनको और मुल्को के लोगों के हाथ में कर दिया।³¹~बावजूद इसके तूने अपनी गूँगागूँ रहमतों के ज़रिए' उनको नाबूद न कर दिया और न उनको छोड़ा, क्योंकि तू रहीम-ओ-करीम खुदा है।

³²"इसलिए अब, ऐ हमारे खुदा, बुजुर्ग, और क़ादिर-ओ-मुहीब खुदा जो 'अहद-ओ-रहमत को कायम रखता है। वह दुख जो हम पर और हमारे बादशाहों पर, और हमारे सरदारों और हमारे काहिनों पर, और हमारे नबियों और हमारे बाप-दादा पर, और तेरे सब लोगों पर असूर के बादशाहों के ज़माने से आज तक पड़ा है, इसलिए तेरे सामने हल्का न मा'लूम हो; ³³~तो भी जो कुछ हम पर आया है उस सब में तू 'आदिल है क्योंकि तू सच्चाई से पेश आया, लेकिन हम ने शरारत की।³⁴ और हमारे बादशाहों और सरदारों और हमारे काहिनों और बाप-दादा ने न तो तेरी शरी'अत पर 'अमल किया और न तेरे अहकाम और शहादतों को माना, जिनसे तू उनके खिलाफ़ गवाही देता रहा।

³⁵~क्योंकि उन्होंने अपनी ममलुकत में, और तेरे बड़े एहसान के वक़्त जो तूने उन पर किया, और इस वसी' और ज़रखेज़ मुल्क में जो तूने उनके हवाले कर दिया, तेरी 'इबादत न की और न वह अपनी बदकारियों से बाज़ आए।

³⁶~देख, आज हम गुलाम हैं, बल्कि उसी मुल्क में जो तूने हमारे बाप-दादा को दिया कि उसका फल और पैदावार खाएँ; इसलिए देख, हम उसी में गुलाम हैं।

³⁷~वह अपनी कसीर पैदावार उन बादशाहों को देता है, जिनको तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुसल्लत किया है; वह हमारे जिस्मों और हमारी मवाशी पर भी जैसा चाहते हैं इख्तियार रखते हैं, और हम सख़्त मुसीबत में हैं।

³⁸~"इन सब बातों की वजह से हम सच्चा 'अहद करते और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, और हमारे लावी, और हमारे काहिन उसपर मुहर करते हैं।"

Chapter 10

¹और वह जिन्होंने मुहर लगाई ये हैं: नहमियाह बिन हकलियाह हाकिम, और सिदक्रियाह²~सिरायाह, 'अज़रियाह, यरमियाह,³फ़शहूर, अमरियाह, मलकियाह,

⁴~हत्तुश, सबनियाह, मल्लूक,⁵~हारिम, मरीमोत, 'अबदियाह,⁶~दानीएल, जिन्नतून, बारूक,⁷~मुसल्लाम, अबियाह, मियामीन,⁸~माज़ियाह, बिलजी, समा'याह; ये काहिन थे।

⁹~और लावी ये थे: यशू'अ बिन अज़नियाह, बिनवी बनी हनदाद में से क्रदमीएल¹⁰और उनके भाई सबनियाह, हूदियाह, कलीताह, फ़िलायाह, हनान,¹¹मीका, रहोब, हसाबियाह,¹²~ज़क्कूर, सरिबियाह, सबनियाह,¹³~हूदियाह, बानी, बनीनू।¹⁴लोगों के रईस ये थे : पर'ऊस, पख़त-मोआब, 'ऐलाम, ज़न्नू, बानी,¹⁵~बुनी, 'अज़जाद, बबई,¹⁶अदूनियाह, बिगवई, 'अदीन,¹⁷~अतीर, हिज़क्रियाह, 'अज़ज़ूर,¹⁸हूदियाह, हाशम, बज़ी,¹⁹ख़ारीफ़, 'अन्तोत, नूबै,²⁰~मगफ़ी'आस, मुसल्लाम, हज़ीर,²¹~मशेज़बेल, सदोक्र, यदू'

²²~फ़िलतियाह, हनान, 'अनायाह,²³~होसे', हननियाह, हसूब,²⁴~हलूहेस, फ़िलहा, सोबेक,²⁵~रहूम, हसबनाह, मासियाह,²⁶~अखियाह, हनान, 'अनान,

²⁷~मल्लूक, हारिम, बानाह।

²⁸~बाक़ी लोग, और काहिन, और लावी, और दरबान और गाने वाले और नतनीम और ~सब जो खुदा की शरी'अत की खातिर और मुल्कों की क़ौमों से अलग हो गए थे, और उनकी बीवियाँ और उनके बेटे और बेटियाँ गरज़ जिनमें समझ और 'अक़ल थी'²⁹~वह सबके सब अपने भाई अमीरों के साथ मिलकर ला'नत ओ क़सम में शामिल हुए, ताकि खुदा की शरी'अत पर जो बन्दा-ए-ख़ुदा मूसा के ज़रिए' मिली, चलें और यहोवाह हमारे खुदावन्द के सब हुक्मों और फ़रमानों और आईन को मानें और उन पर 'अमल करें।

³⁰और हम अपनी बेटियाँ मुल्क के बाशिन्दों को न दें, और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लें;³¹~और अगर मुल्क के लोग सबत के दिन कुछ माल या खाने की चीज़ बेचने को लाएँ, तो हम सबत को या किसी पाक दिन को उनसे मोल न लें। और सातवाँ साल और हर क़र्ज़ का मुतालबा छोड़ दें।

³²और हम ने अपने लिए क़ानून ठहराए कि अपने ख़ुदा के घर की ख़िदमत के लिए साल-ब-साल मिस्क़ाल का तीसरा हिस्सा' दिया करें;³³या'नी सबतों और नये चाँदों की नज़ की रोटी, और हमेशा की नज़~की कुर्बानी, और हमेशा की सोख़तनी कुर्बानी के लिए~और मुकर्ररा 'ईदों और पाक चीज़ों और ख़ता की कुर्बानियों के लिए कि इस्राईल के वास्ते कफ़फ़ारा हो, और अपने ख़ुदा के घर के सब कामों के लिए।

³⁴और हम ने या'नी काहिनों, और लावियों, और लोगों ने, लकड़ी के हदिए के बारे में पर्ची डाली, ताकि उसे अपने ख़ुदा के घर में बाप-दादा के घरानों के मुताबिक़ मुकर्ररा वक्त्रों पर साल-ब-साल ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के मज़बह पर जलाने को लाया करें, जैसा शरी'अत में लिखा है।³⁵~और साल-ब-साल अपनी-अपनी ज़मीन के पहले फल, और सब दरख़्तों के सब मेवों में से पहले फल ख़ुदावन्द के घर में लाएँ;³⁶और जैसा शरी'अत में लिखा है, अपने पहलौठे बेटों को और अपनी मवाशी या'नी गाय, बैल और भेड़-बकरी के पहलौठे बच्चों को अपने ख़ुदा के घर में काहिनों के पास जो हमारे ख़ुदा के घर में ख़िदमत करते हैं लाएँ।

³⁷और अपने गूँधे हुए आटे और अपनी उठाई हुई कुर्बानियों और सब दरख़्तों के मेवों, और मय और तेल में से पहले फल को अपने ख़ुदा के घर की कोठरियों में काहिनों के पास, और अपने खेत की दहेकी लावियों के पास लाया करें; क्योंकि लावी सब शहरों में जहाँ हम काशतकारी करते हैं, दसवाँ हिस्सा लेते हैं।³⁸और जब लावी दहेकी लें तो कोई काहिन जो हारून की औलाद से हो, लावियों के साथ हो, और लावी दहेकियों का दसवाँ हिस्सा हमारे ख़ुदा के बैत-उल-माल की कोठरियों में लाएँ।

³⁹~क्योंकि बनी-इस्राईल और बनी लावी अनाज और मय और तेल की उठाई हुई कुर्बानियाँ उन कोठरियों में लाया करेंगे जहाँ हैकल के बर्तन और ख़िदमत गुज़ार काहिन और दरबान और गानेवाले हैं; और हम अपने ख़ुदा के घर को नहीं छोड़ेंगे।

Chapter 11

¹और लोगों के सरदार यरुशलीम में रहते थे; और बाक़ी लोगों ने पर्ची डाली कि हर दस शख्सों में से एक को शहर-ए-पाक, यरुशलीम, में बसने के लिए लाएँ; और नौ बाक़ी शहरों में रहें।²और लोगों ने उन सब आदमियों को, जिन्होंने खुशी से अपने आपको यरुशलीम में बसने के लिए पेश किया दु'आ दी।

³उस सूबे के सरदार, जो यरुशलीम में आ बसे थे हैं; (लेकिन यहूदाह के शहरों में हर एक अपने शहर में अपनी ही मिल्कियत में रहता था, या'नी~अहल-ए-इसाईल और काहिन और लावी और~नतीनीम, और सुलेमान के मुलाज़िम् की औलाद।)⁴और यरुशलीम में कुछ बनी यहूदाह और कुछ बनी बिनयमीन रहते थे। बनी यहूदाह में से, 'अतायाह बिन 'उज़्ज़ियाह बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन महललएल बनी फ़ारस में से;

⁵और मा'सियाह बिन बारूक बिन कुलहोज़ा, बिन हजायाह, बिन 'अदायाह, बिन यूयरीब बिन ज़करियाह बिन शिलोनी।⁶~सब बनी फ़ारस जो यरुशलीम में बसे चार सौ अड़सठ सूर्मा थे।

⁷~और ये बनी बिनयमीन हैं, सल्लू बिन मुसल्लाम बिन यूऐद बिन फ़िदायाह बिन कूलायाह बिन मासियाह बिन एतीएल बिन यसा'याह।⁸~फिर जब्बै सल्लै और नौ सौ अट्ठाईस आदमी।⁹और यूएल बिन ज़िकरी उनका नाज़िम था, और यहूदाह बिन हस्सनुह शहर के हाकिम का नाइब था।

¹⁰काहिनों में से यदा'याह बिन यूयरीब और याकीन,¹¹~शिरायाह बिन खिलक्रियाह बिन मुसल्लाम बिन सदोक्क बिन मिरायोत बिन अखीतोब, खुदा के घर का नाज़िम,¹²~और उनके भाई जो हैकल में काम करते थे, आठ सौ बाईस; और 'अदाया बिन यरोहाम, बिन फ़िल्लियाह बिन अम्ज़ी बिन ज़करियाह, बिन फ़शहूर बिन मलकियाह,

¹³और उसके भाई आबाई ख़ान्दानों के रईस, दो सौ बयालीस; और अमसी बिन 'अज़्राएल बिन अखसी बिन ~मसल्लीमोत बिन इम्मेर,¹⁴~और उनके भाई ज़बरदस्त सूर्मा, एक सौ अट्ठाईस; और उनका सरदार ज़बदीएल बिन हजदूलीम था।

¹⁵और लावियों में से, समा'याह बिन हुसूक बिन 'अजरिक्काम बिन हसबियाह ~बिन बूनी;¹⁶और सब्बतै और यूज़बाद लावियों के रईसों में से, खुदा के घर के बाहर के काम पर मुक़र्रर थे;

¹⁷~और मत्तनियाह बिन मीका बिन ज़ब्दी बिन आसफ़ सरदार था, जो दु'आ के वक़्त शुक्रगुज़ारी शुरू करने में पेशवा था; और बकबूक्रियाह उसके भाइयों में से दूसरे दर्जे पर था, और 'अबदा बिन सम्मू' बिन जलाल बिन यदूतून।¹⁸~पाक शहर में कुल दो सौ चौरासी लावी थे।

¹⁹और दरबान 'अक्कब, तलमून और उनके भाई जो फाटकों की निगहबानी करते थे, एक सौ बहतर थे।²⁰~और इसाईलियों और काहिनों और लावियों के बाक़ी लोग यहूदाह के सब शहरों में अपनी-अपनी मिल्कियत में रहते थे।²¹~लेकिन नतीनीम 'ओफल में बसे हुए थे; और ज़ीहा और जिसफ़ा नतीनीम पर मुक़र्रर थे।

²²और उज़्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह बिन मीका जो आसफ़ की औलाद या'नी गानेवालों में से था, यरुशलीम में उन लावियों का नाज़िम था, जो खुदा के घर के काम पर मुक़र्रर थे।²³~क्यूँकि उनके बारे में बादशाह की तरफ़ से हुक्म हो चुका था, और गानेवालों के लिए हर रोज़ की ज़रूरत के मुताबिक़ मुक़र्ररा रसद थी।²⁴~और फ़तहयाह बिन मशेज़बेल जो ज़ारह बिन यहूदाह की औलाद में से था, र'इयत के सब मुआ'मिलात के लिए बादशाह के सामने रहता था।

²⁵~रहे गाँव और उनके खेत, इसलिए बनीयहूदाह में से कुछ लोग करयत-अरबा' और उसके क़स्बों में, और दीबोन और उसके क़स्बों में, और यक़बज़ीएल और उसके गाँवों में रहते थे;²⁶~और यशू'अ और मोलादा और बैत फ़लत में,²⁷और हसर-सू'आल और बैरसबा' और उसके क़स्बों में,

²⁸~और सिक़लाज ~और मक्कुनाह ~और उस के क़स्बों में²⁹और 'ऐन-रिम्मोन और सार'आह में, और यारमोत में,³⁰~ज़ानवाह, 'अदुल्लाम, और उनके गाँवों में; लकीस और उसके खेतों में, 'अज़ीक्का और उसके क़स्बों में, यूँ वह बैरसबा' से हिनूम की वादी तक डेरों में रहते थे।³¹~बनी बिनयमीन भी जिबा' से लेकर आगे मिकमास और 'अय्याह और बैतएल और उसके क़स्बों में,³²~और 'अन्तोत और नूब और 'अननियाह,³³और हासूर और रामा और जितेम,³⁴और हादीद और ज़िबोईम और नबल्लात,³⁵~और लूद और औनू, या'नी कारीगरों की वादी में रहते थे।³⁶~और लावियों में से कुछ फ़रीक्क जो यहूदाह में थे, वह बिनयमीन से मिल गए।

Chapter 12

¹~वह काहिन और लावी जो ज़रुब्बाबुल बिन सियालतीएल और यशू'अ के साथ गए, सो ये हैं: सिरायाह, यरमियाह, 'अज़्रा,²~अमरियाह, मल्लूक, हत्तूश,
³~सिकनियाह, रहूम, मरीमोत,

⁴इह, जिन्नतू, अबियाह,⁵~मियामीन, मा'दियाह, बिल्जा,⁶समा'याह और यूयरीब, यदा'याह⁷सल्लू, 'अमुक खिलक्रियाह, यदा'याह, ये यशू'अ के ~दिनों में
 ~काहिनों और उनके भाईयों के सरदार थे

⁸~और लावी ये थे: यशू'अ, बिनवी, क्रदमिएल सेरबियाह यहूदाह और मत्तनियाह जो अपने भाइयों के साथ शुक्रगुजारी पर मुकर्रर था;⁹~और उनके भाई
 बक्रबूक्रियाह और 'उन्नी उनके सामने अपने-अपने पहरे पर मुकर्रर थे।

¹⁰और यशू'अ से यूयक्रीम पैदा हुआ, और यूयक्रीम से इलियासिब पैदा हुआ, और इलियासिब से यूयदा' पैदा हुआ,¹¹~और यूयदा' से यूनतन पैदा हुआ, और
 यूनतन से यहू' पैदा हुआ,

¹²~और यूयक्रीम के दिनों में ये काहिन आबाई खान्दानों के सरदार थे: सिरायाह से मिरायाह; यरमियाह से हननियाह;¹³~'अज़्रा से मुसल्लाम; अमरियाह से
 यहूहानान;¹⁴मलकू से योनतन, सबनियाह से यूसुफ़;

¹⁵~हारिम से 'अदना; मिरायोत से खलकै;¹⁶~इहू से ज़करियाह; जिन्नतून से मुसल्लाम:¹⁷अबियाह से ज़िकरी; मिनयमीन से' मौ'अदियाह से फ़िल्ली;¹⁸~बिलजाह
 से सम्मू'आ; समा'याह से यहूनतन;¹⁹~यूयरीब से मत्तनै; यद'अयाह से 'उज़्ज़ी;²⁰~सल्लै से कल्लै; 'अमोक से इब्र;²¹~खिलक्रियाह से हसबियाह; यदा'याह से
 नतनीएल।

²²इलियासिब और यूयदा' और यहूहानान और यहू' के दिनों में, लावियों के आबाई खान्दानों के सरदार लिखे जाते थे; और काहिनों के, दारा फ़ारसी की सल्लतनत
 में।²³~बनी लावी के आबाई खान्दानों के सरदार यहूहानान बिन इलियासिब के दिनों तक, तवारीख की किताब में लिखे जाते थे।

²⁴और लावियों के रईस: हसबियाह, सेरबियाह और यशू'अ बिन क्रदमीएल, अपने भाइयों के साथ आमने सामने बारी-बारी से मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद के हुक्म के
 मुताबिक हम्द और शुक्रगुजारी के लिए मुकर्रर थे।²⁵~मत्तनियाह और बक्रबूक्रियाह और अब्दियाह और मुसल्लाम और तलमून और अक्कूब दरबान थे, जो
 फाटक के मखज़नों के पास पहरा देते थे।²⁶~ये यूयक्रीम बिन यशू'अ बिन यूसदक के दिनों में, और नहमियाह हाकिम और 'अज़्रा~काहिन और फ़कीह के दिनों
 में थे।

²⁷और यरूशलीम की शहरपनाह की तक्दीस के वक्त्र, उन्होंने लावियों को उनकी सब जगहों से ढूँड निकाला कि उनको यरूशलीम में लाएँ, ताकि वह खुशी-
 खुशी झाँझ और सितार और बरबत के साथ शुक्रगुजारी करके और गाकर तक्दीस करें।²⁸इसलिए गानेवालों की नसल के लोग यरूशलीम को आस-पास के
 मैदान से और नतूफ़ातियों के देहात से,

²⁹~और बैत-उल-जिलजाल से भी, और जिबा' और 'अज़मावत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गानेवालों ने यरूशलीम के चारों तरफ़ अपने लिए देहात बना लिए
 थे।³⁰~और काहिनों और लावियों ने अपने आपको पाक किया, और उन्होंने लोगों को और फाटकों को और शहरपनाह को पाक किया।

³¹~तब मैं यहूदाह के अमीरों को दीवार पर लाया, और मैंने दो बड़े गोल मुकर्रर किए जो हम्द करते हुए जुलूस में निकले। एक उनमें से दहने हाथ की तरफ़ दीवार
 के ऊपर-ऊपर से कूड़े के फाटक की तरफ़ गया,

³²~और ये उनके पीछे-पीछे गए, या'नी हुसा'याह और यहूदाह के आधे सरदार।³³~'अज़रियाह, 'अज़्रा और मुसल्लाम,³⁴~यहूदाह और बिनयमीन और समा'याह
 और यरमियाह,³⁵और कुछ काहिनज़ादे नरसिंगे लिए हुए, या'नी ज़करियाह बिन यूनतन, बिन समा'याह, बिन मत्तनियाह, बिन मीकायाह, बिन जक्कूर बिन
 आसफ़;

³⁶और उसके भाई समा'याह और 'अज़रएल, मिल्ले, जिल्लै, मा'ऐ, नतनीएल और यहूदाह और हनानी, मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद के बाजों को लिए हुए जाते थे और
 'अज़्रा-फ़कीह उनके आगे-आगे था।³⁷और वह चश्मा फाटक से होकर सीधे आगे गए, और दाऊद के शहर की सीढ़ियों पर चढ़कर शहरपनाह की ऊँचाई पर
 पहुँचे, और दाऊद के महल के ऊपर होकर पानी फाटक तक पूरब की तरफ़ गए।

³⁸~और शुक्रगुजारी करनेवालों का दूसरा गोल और उनके पीछे-पीछे मैं और आधे लोग उनसे मिलने को दीवार पर तनूरों के बुर्ज के ऊपर चौड़ी दीवार
 तक³⁹~और इफ़्राईमी फाटक के ऊपर पुराने फाटक और मछली फाटक, और हननएल के बुर्ज और हमियाह के बुर्ज पर से होते हुए भेड़ फाटक तक गए; और
 पहरेवालों के फाटक पर खड़े हो गए।

⁴⁰तब शुक्रगुजारी करनेवालों के दोनों गोल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम ख़ुदा के घर में खड़े हो गए।⁴¹~और काहिन इलियाक्रीम, मासियाह, बिनयमीन,
 मीकायाह, इल्युऐनी, ज़करियाह, हननियाह नरसिंगे लिए हुए थे;⁴²~और मासियाह और समा'याह और इली'अज़र और 'उज़्ज़ी और यहूहानान और मल्कियाह
 और 'ऐलाम और 'अज़्रा अपने सरदार गानेवाले, इज़रखियाह के साथ बलन्द आवाज़ से गाने थे।

⁴³और उस दिन उन्होंने बहुत सी कुर्बानियाँ चढ़ाई और उसी दिन खुशी की क्योंकि ख़ुदा ने ऐसी खुशी उनको बख़्शी कि वह बहुत खुश हुए; और 'औरतों और
 बच्चों ने भी खुशी मनाई। इसलिए यरूशलीम की खुशी की आवाज़ दूर तक सुनाई देती थी।

⁴⁴~उसी ~दिन लोग खज़ाने की, और उठाई हुई कुर्बानियों और पहले फलों और दहेकियों की कोठरियों पर मुकर्रर हुए, ताकि उनमें शहर शहर के खेतों के
 मुताबिक, जो हिस्से काहिनों और लावियों के लिए शरा' के मुताबिक मुकर्रर हुए उनको जमा' करें क्योंकि बनी यहूदाह काहिनों और लावियों की वजह से जो
 हाज़िर रहते थे खुश थे।⁴⁵इसलिए वह अपने ख़ुदा के इन्तज़ाम और तहारत के इन्तज़ाम की निगरानी करते रहे; और गानेवालों और दरबानों ने भी दाऊद और
 उसके बेटे सुलेमान के हुक्म के मुताबिक ऐसा ही किया।

⁴⁶क्यूँकि पुराने ज़माने से दाऊद और आसफ़ के दिनों में एक सरदार मुग़नी होता था, और ख़ुदा की हम्द और शुक्र के गीत गाए जाते थे।⁴⁷~और तमाम इसाईल ज़रुब्बाबुल के और नहमियाह के दिनों में हर रोज़ की ज़रूरत के मुताबिक़ गानेवालों और दरबानों के हिस्से देते थे; यूँ वह लावियों के लिए चीज़ें मख्सूस करते, और लावी बनी हारून के लिए मख्सूस करते थे।

Chapter 13

¹उस दिन उन्होंने लोगों को मूसा की किताब में से पढ़कर सुनाया, और उसमें ये लिखा मिला कि 'अम्मोनी और मोआबी खुदा की जमा' अत में कभी न आने पाएँ;
²~इसलिए कि वह रोटी और पानी लेकर बनी-इसाईल के इस्तक्रबाल को न निकले, बल्कि बल'आम को उनके खिलाफ़ मज़दूरी पर बुलाया ताकि उन पर ला'नत करे - लेकिन हमारे खुदा ने उस ला'नत को बरकत से बदल दिया।³ और ऐसा हुआ कि शरी'अत को सुनकर उन्होंने सारी मिली जुली भीड़ को इसाईल से जुदा कर दिया।

⁴~इससे पहले इलियासिब काहिन ने जो हमारे खुदा के घर की कोठरियों का मुख्तार था, तूबियाह का रिश्तेदार होने की वजह से,⁵ उसके लिए एक बड़ी कोठरी तैयार की थी जहाँ पहले नज़्र की कुर्बानियाँ और लुबान और बर्तन, और अनाज की और मय की और तेल की दहेकियाँ, जो हुक्म के मुताबिक़ लावियों और गानेवालों और दरबानों को दी जाती थीं, और काहिनों के लिए उठाई हुई कुर्बानियाँ भी रखी जाती थीं।

⁶~लेकिन इन दिनों में मैं यरुशलीम में न था, क्योंकि शाह-ए-बाबुल अरतख़शशता के बत्तीसवें बरस में बादशाह के पास गया था। और कुछ दिनों के बा'द मैंने बादशाह से रुख़सत की दरख़वास्त की,⁷ और मैं यरुशलीम में आया, और मा'लूम किया कि खुदा के घर के सहनों में तूबियाह के वास्ते एक कोठरी तैयार करने से इलियासिब ने कैसी ख़राबी की है।

⁸~इससे मैं बहुत रंजीदा हुआ इसलिए मैंने तूबियाह के सब ख़ानगी सामान को उस कोठरी से बाहर फेंक दिया।⁹~फिर मैंने हुक्म दिया और उन्होंने उन कोठरियों को साफ़ किया, और मैं खुदा के घर के बर्तनों और नज़्र की कुर्बानियों और लुबान को फिर वहीं ले आया।

¹⁰~फिर मुझे मा'लूम हुआ कि लावियों के हिस्से उनको नहीं दिए गए, इसलिए ख़िदमतगुज़ार लावी और गानेवाले अपने अपने खेत को भाग गए हैं।¹¹~तब मैंने हाकिमों से झगड़कर कहा कि खुदा का घर क्यों छोड़ दिया गया है? और मैंने उनको इकट्ठा करके उनको उनकी जगह पर मुक़र्रर किया।

¹²~तब सब अहल-ए-यहूदाह ने अनाज और मय और तेल का दसवाँ हिस्सा ख़ज़ानों में दाख़िल किया।¹³~और मैंने सलमियाह काहिन और सदोक्क़ फ़क़ीह, और लावियों में से फ़िदायाह को ख़ज़ानों के ख़ज़ांची मुक़र्रर किया; और हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह उनके साथ था; क्योंकि वह दियानतदार माने जाते थे, और अपने भाइयों में बाँट देना उनका काम था।¹⁴~ऐ मेरे खुदा इसके लिए याद कर और मेरे नेक कामों को जो मैंने अपने खुदा के घर और उसके रसूम के लिए किये मिटा न डाल।

¹⁵~उन ही दिनों में मैंने यहूदाह में कुछ को देखा, जो सबत के दिन हौज़ों में पाँव से अंगूर कुचल रहे थे, और पूले लाकर उनको गधों पर लादते थे। इसी तरह मय और अंगूर और अन्जीर, और हर क्रिस्म के बोझ सबत को यरुशलीम में लाते थे; और जिस दिन वह खाने की चीज़ें बेचने लगे मैंने उनको टोका।

¹⁶~वहाँ सूर के लोग भी रहते थे, जो मछली और हर तरह का सामान लाकर सबत के दिन यरुशलीम में यहूदाह के लोगों के हाथ बेचते थे।¹⁷~तब मैंने यहूदाह के हाकिम से झगड़कर कहा, "ये क्या बुरा काम है जो तुम करते, और सबत के दिन की बेहुरमती करते हो?"¹⁸~क्या तुम्हारे बाप-दादा ने ऐसा ही नहीं किया? और क्या हमारा खुदा हम पर और इस शहर पर ये सब आफ़तें नहीं लाया? तो भी तुम सबत की बेहुरमती करके इसाईल पर ज़यादा ग़ज़ब लाते हो।"

¹⁹~इसलिए जब सबत से पहले यरुशलीम के फाटकों के पास अन्धेरा होने लगा, तो मैंने हुक्म दिया कि फाटक बन्द कर दिए जाएँ, और हुक्म दे दिया कि जब तक सबत गुज़र न जाए, वह न खुलें, और मैंने अपने कुछ नौकरों को फाटकों पर रखवा कि सबत के दिन कोई बोझ अन्दर आने न पाए।²⁰~इसलिए ताजिर और तरह-तरह के माल के बेचनेवाले एक या दो बार यरुशलीम के बाहर टिके।

²¹~तब मैंने उनको टोका, और उनसे कहा कि तुम दीवार के नज़दीक क्यों टिक जाते हो? अगर फिर ऐसा किया तो मैं तुम को गिरफ़्तार कर लूँगा। उस वक़्त से वह सबत को फिर न आए।²² और मैंने लावियों को हुक्म किया कि अपने आपको पाक करें, और सबत के दिन की तक्दीस की ग़रज़ से आकर फाटकों की रखवाली करें। ऐ मेरे खुदा, इसे भी मेरे हक़ में याद कर, और अपनी बड़ी रहमत के मुताबिक़ मुझ पर तरस खा।

²³~उन्ही दिनों में मैंने उन यहूदियों को भी देखा, जिन्होंने अशदूदी और 'अम्मोनी और मोआबी 'औरतें ब्याह ली थीं।²⁴~और उनके बच्चों की ज़बान आधी अशदूदी थी और वह यहूदी ज़बान में बात नहीं कर सकते थे, बल्कि हर क्रौम की बोली के मुताबिक़ बोलते थे।

²⁵~इसलिए मैंने उनसे झगड़कर उनको ला'नत की, और उनमें से कुछ को मारा, और उनके बाल नोच डाले, और उनको खुदा की क्रसम खिलाई, "कि तुम अपनी बेटियाँ उनके बेटों को न देना, और न अपने बेटों के लिए और न अपने लिए उनकी बेटियाँ लेना।"²⁶~क्या शाह-ए-इसाईल सुलेमान ने इन बातों से गुनाह नहीं किया? अगरचे अकसर क्रौमों में उसकी तरह कोई बादशाह न था, और वह अपने खुदा का प्यारा था, और खुदा ने उसे सारे इसाईल का बादशाह बनाया, तो भी अजनबी 'औरतों ने उसे भी गुनाह में फँसाया।²⁷~इसलिए क्या हम तुम्हारी सुनकर ऐसी बड़ी बुराई करें कि अजनबी 'औरतों को ब्याह कर अपने खुदा का गुनाह करें?"

²⁸और इलियासिब सरदार काहिन के बेटे यूयदा' के बेटों में से एक बेटा, हूरोनी सनबल्लत का दामाद था, इसलिए मैंने उसको अपने पास से भगा दिया।²⁹~ऐ मेरे खुदा, उनको याद कर, इसलिए कि उन्होंने कहानत को और कहानत और लावियों के 'अहद को नापाक किया है।

³⁰~यूँ ही मैंने उनको कुल अजनबियों से पाक किया, और काहिनों और लावियों के लिए उनकी ख़िदमत के मुताबिक़,³¹~और मुक़र्ररा वक़्तों पर लकड़ी के हदिए और पहले फलों के लिए हल्क़े मुक़र्रर कर दिए। ऐ मेरे खुदा, भलाई के लिए मुझे याद कर।

आस्तर

Chapter 1

¹~अख्सूरस के दिनों में ऐसा हुआ (यह वही अख्सूरस है जो हिन्दोस्तान से कूश तक एक सौ सताईस सूबों पर हुकूमत करता था)²~कि उन दिनों में जब अख्सूरस बादशाह अपने तख्त-ए-हुकूमत पर, जो क्रस-सोसन में था बैठा।

³~तो उसने अपनी हुकूमत के तीसरे साल अपने सब हाकिमों और खादिमों की मेहमान नवाज़ी की। और फ़ारस और मादै की ताक़त और सूबों के हाकिम और सरदार उसके सामने हाज़िर थे।⁴~तब वह बहुत दिन या'नी एक सौ अस्सी दिन तक अपनी जलीलुल क़द्र हुकूमत की दौलत अपनी 'आला' अज़मत की शान उनको दिखाता रहा।

⁵जब यह दिन गुज़र गए तो बादशाह ने सब लोगों की, क्या बड़े क्या छोटे जो क्रस-ए-सोसन में मौजूद थे, शाही महल के बाग़ के सहन में सात दिन तक मेहमान नवाज़ी की।⁶~वहाँ सफ़ेद और सबज़ और आसमानी रंग के पर्दे थे, जो कतानी और अर्गवानी डोरियों से चाँदी के हल्कों और संग-ए-मरमर के सुतनों से बन्धे थे; और सुर्ख और सफ़ेद और ज़र्द और सियाह संग-ए-मरमर के फ़र्श पर सोने और चाँदी के तख़्त थे।

⁷~उन्होंने उनको सोने के प्यालों में, जो अलग अलग शक्लों के थे, पीने को दिया और शाही मय बादशाह के करम के मुताबिक़ कसरत से पिलाई।⁸~और मय नौशी इस क़ाइदे से थी कि कोई मजबूर नहीं कर सकता था; क्योंकि बादशाह ने अपने महल के सब 'उहदे दारों को नसीहत फ़रमाई थी, कि वह हर शख्स की मर्ज़ी के मुताबिक़ करें।

⁹वशती मलिका ने भी अख्सूरस बादशाह के शाही महल में 'औरतों की मेहमान नवाज़ी की।¹⁰~सात दिन जब बादशाह का दिल मय से मसरूर था, तो उसने सातों ख़वाजा सराओं या'नी महुमान और बिज़ता और ख़रबूनाह और बिगता और अबग़ता और ज़ितार और करकस को, जो अख्सूरस बादशाह के सामने ख़िदमत करते थे हुक्म दिया,¹¹~कि वशती मलिका को शाही ताज पहनाकर बादशाह के सामने लाएँ, ताकि उसकी ख़ूबसूरती लोगों और हाकिमों को दिखाए क्योंकि वह देखने में ख़ूबसूरत थी।

¹²~लेकिन वशती मलिका ने शाही हुक्म पर जो ख़वाजासराओं की ज़रिए' मिला था, आने से इन्कार किया। इसलिए ~बादशाह बहुत झल्लाया और दिल ही दिल में उसका गुस्सा भड़का।

¹³~तब बादशाह ने उन 'अक्लमन्दों से जिनको वक्तों के जानने का 'इल्म था पूछा, (क्योंकि बादशाह का दस्तूर सब क़ानून दानों और 'अदलशनासों के साथ ऐसा ही था,¹⁴और फ़ारस और मादै के सातों अमीर या'नी कारशीना और सितार और अदमाता और तरसीस और मरस और मरसिना और ममूकान उसके नज़दीकी थे, जो बादशाह का दीदार हासिल करते और ममलुकत में 'उहदे पर थे)¹⁵~क़ानून के मुताबिक़ वशती मलिका से क्या करना चाहिए; क्योंकि उसने अख्सूरस बादशाह का हुक्म जो ख़वाजासराओं के ज़रिए' मिला नहीं माना है?"

¹⁶और ममूकान ने बादशाह और अमीरों के सामने जवाब दिया, "वशती मलिका ने सिर्फ़ ~बादशाह ही का नहीं, बल्कि सब उमरा और सब लोगों का भी जो अख्सूरस बादशाह के~कुल सूबों में हैं कुसूर किया है।¹⁷~क्योंकि मलिका ~की यह बात बाहर सब 'औरतों तक पहुँचेगी जिससे उनके शौहर उनकी नज़र में ज़लील हो जाएँगे, जब यह ख़बर फैलेगी, 'अख्सूरस बादशाह ने हुक्म दिया कि वशती मलिका उसके सामने लाई जाए, लेकिन वह न आई।¹⁸और आज के दिन फ़ारस और मादै की सब बेग़में जो मलिका की बात सुन चुकी हैं, बादशाह के सब उमरा से ऐसा ही कहने लगेंगी। यूँ बहुत नफ़रत और गुस्सा पैदा होगा।

¹⁹~अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो तो उसकी तरफ़ से शाही फ़रमान निकले, और वो फ़ारसियों और मादियों के क़ानून में दर्ज हो, ताकि बदला न जाए कि वशती अख्सूरस बादशाह के सामने फिर कभी न आए, और बादशाह उसका शाहाना रुतबा किसी और को जो उससे बेहतर है 'इनायत करे।²⁰~और जब बादशाह का फ़रमान जिसे वह लागू करेगा, उसकी सारी हुकूमत में (जो बड़ी है) शोहरत पाएगा तो सब बीवियाँ अपने अपने शौहर की क्या बड़ा क्या छोटा 'इज़ज़त करेंगी।

²¹~यह बात बादशाह और हाकिमों को पसन्द आई, और बादशाह ने ममूकान के कहने के मुताबिक़ किया;²²क्योंकि उसने सब शाही सूबों में सूबे-सूबे के हुरूफ़, और क़ौम-क़ौम की बोली के मुताबिक़ ख़त भेज दिए, कि हर आदमी अपने घर में हुकूमत करे, और अपनी क़ौम की ज़बान में इसका चर्चा करे।

Chapter 2

¹इन बातों के बा'द जब अख्सूयरस बादशाह ~का गुस्सा ~ठंडा हुआ, तो उसने वशती को और जो कुछ उसने किया था, और जो कुछ उसके खिलाफ़ हुक्म हुआ था याद किया।²~तब बादशाह के मुलाज़िम जो उसकी खिदमत करते थे कहने लगे, बादशाह के लिए जवान खूबसूरत कुंवारीयाँ ढूँढी जाएँ।

³और बादशाह अपनी बादशाहत के सब सूबों में मन्सबदारों को मुकर्रर करे, ताकि वह सब जवान खूबसूरत कुंवारीयों को क्रस-ए-सोसन के बीच हरमसरा में इकट्ठा करके बादशाह के ख्वाजासरा हैजा के ज़िम्मा ~करें, जो 'औरतों का मुहाफ़िज़ है; और पाकी के लिए उनका सामान उनको दिया जाए।⁴और जो कुंवारी बादशाह को पसन्द हो, वह वशती की जगह मलिका हो।" यह बात बादशाह को पसन्द आई, और उसने ऐसा ही किया।

⁵क्रस-ए-सोसन में एक यहूदी था जिसका नाम मर्दकै था, जो या'इर बिन सिम'ई बिन क़ीस का बेटा था, जो बिनयमीनी था;⁶और यरूशलीम से उन गुलामों के साथ गया था जो शाह-ए-यहूदाह यकूनियाह के साथ गुलामी में गए थे, जिनको शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र गुलाम करके ले गया था।

⁷~उसने अपने चचा की बेटी हदस्साह या'नी आस्तर को पाला था; क्योंकि उसके माँ-बाप न थे, और वह लड़की हसीन और खूबसूरत थी; और जब उसके माँ-बाप मर गए तो मर्दकै ने उसे अपनी बेटी करके पाला।

⁸तब ऐसा हुआ कि जब बादशाह का हुक्म और फ़रमान सुनने में आया, और बहुत सी कुंवारीयाँ क्रस-ए-सोसन में इकट्ठी होकर हैजा के ज़िम्मा हुईं, तो आस्तर भी बादशाह के महल में पहुँचाई गई, और 'औरतों के मुहाफ़िज़ हैजा के ज़िम्मा हुई।⁹और वह लड़की उसे पसन्द आई और उसने उस पर महेरबानी की, और फ़ौरन उसे शाही महल में से पाकी के लिए उसके सामान और खाने के हिस्से, और ऐसी सात सहेलियों जो उसके लायक़ थीं उसे दीं, और उसे और उसकी सहेलियों को हरमसरा की सबसे अच्छी जगह में ले जाकर रखवा।

¹⁰आस्तर ने न अपनी क़ौम न अपना खानदान ज़ाहिर किया था; क्योंकि मर्दकै ने उसे नसीहत कर दी थी कि न बताए;¹¹और मर्दकै हर रोज़ हरमसरा के सहन के आगे फिरता था, ताकि मा'लूम करे कि आस्तर कैसी है और उसका क्या हाल होगा।

¹²जब एक एक कुंवारी की बारी आई कि 'औरतों के दस्तूर के मुताबिक़ बारह महीने की सफ़ाई के बा'द अख्सूयरस बादशाह के पास जाए (क्योंकि इतने ही दिन उनकी पाकिज़गी में लग जाते थे, या'नी छः महीने मुर्र का तेल लगाने में और छः महीने इत्र और 'औरतों की सफ़ाई की चीज़ों के लगाने में)¹³तब इस तरह से वह कुंवारी बादशाह के पास जाती थी कि जो कुछ वो चाहती कि हरमसरा से बादशाह के महल में ले जाए, वह उसको दिया जाता था।

¹⁴~शाम को वह जाती थी और सुबह को लौटकर दूसरे बाँदीसरा में बादशाह के ख्वाजासरा शासजज़ के ज़िम्मा हो जाती थी, जो बाँदियों का मुहाफ़िज़ था; वह बादशाह के पास फिर नहीं जाती थी, मगर जब बादशाह उसे चाहता तब वह नाम लेकर बुलाई जाती थी।

¹⁵~जब मर्दकै के चचा अबीखल की बेटी आस्तर की, जिसे मर्दकै ने अपनी बेटी करके रखवा था, बादशाह के पास जाने की बारी आई तो जो कुछ बादशाह के ख्वाजासरा और 'औरतों के मुहाफ़िज़ हैजा ने ठहराया था, उसके अलावा उसने और कुछ न माँगा। और आस्तर उन सबकी जिनकी निगाह उस पर पड़ी, मन्ज़ूर-ए-नज़र हुई।¹⁶~इसलिए आस्तर अख्सूयरस बादशाह के पास उसके शाही महल में उसकी हुक्मत के सातवें साल के दसवें महीने में, जो तैबत महीना है पहुँचाई गई।

¹⁷~और बादशाह ने आस्तर को सब 'औरतों से ज़्यादा प्यार किया, और वह उसकी नज़र में उन सब कुंवारीयों से ज़्यादा प्यारी और पसंदीदा ठहरी; तब उसने शाही ताज़ उसके सिर पर रख दिया, और वशती की जगह उसे मलिका बनाया।¹⁸और बादशाह ने अपने सब हाकिमों और मुलाज़िमों के लिए एक बड़ी मेहमान नवाज़ी, या'नी आस्तर की मेहमान नवाज़ी की; और सूबों में मु'आफ़ी की, और शाही करम के मुताबिक़ इन'आम बाँटे।

¹⁹जब कुंवारीयाँ दूसरी बार इकट्ठी की गईं, तो मर्दकै बादशाह के फाटक पर बैठा था।²⁰आस्तर ने न तो अपने खानदान और न अपनी क़ौम का पता दिया था, जैसा मर्दकै ने उसे नसीहत कर दी थी; इसलिए कि आस्तर मर्दकै का हुक्म ऐसा ही मानती थी जैसा उस वक़्त जब वह उसके यहाँ परवरिश पा रही थी।²¹~उन ही दिनों में, जब मर्दकै बादशाह के फाटक पर बैठा करता था, बादशाह के ख्वाजासराओं में से जो दरवाज़े पर पहरा देते थे, दो शख्सों या'नी बिगतान और तरश ने बिगड़कर चाहा कि अख्सूयरस बादशाह पर हाथ चलाएँ।

²²~यह-बात मर्दकै को मा'लूम हुई और उसने आस्तर मलिका को बताई, और आस्तर ने मर्दकै का नाम लेकर बादशाह को ख़बर दी।²³~जब उस मु'आमिले की तहक़ीक़ात की गई और वह बात साबित हुई, तो वह दोनों एक दरख़्त पर लटका दिए गए; और यह बादशाह के सामने तवारीख़ की किताब में लिख लिया गया।

Chapter 3

¹इन बातों के बा'द अख्सूयरस बादशाह ने अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान को मुस्ताज़ और सरफ़राज़ किया और उसकी कुर्सी को सब हाकिम से जो उसके साथ थे ऊँचा किया।²~और बादशाह के सब मुलाज़िम जो बादशाह के फाटक पर थे, हामान के आगे झुककर उसकी ता'ज़ीम करते थे; क्योंकि बादशाह ने उसके बारे में ऐसा ही हुक्म किया था। लेकिन~मर्दकै न झुकता, न उसकी ता'ज़ीम करता था।

³~तब बादशाह के मुलाज़िमों ने जो बादशाह के फाटक पर थे मर्दकै से कहा, "तू क्यूँ बादशाह के हुक्म को तोड़ता है?"⁴~जब वो उससे रोज़ कहते रहे, और उसने उनकी न मानी, तो उन्होंने हामान को बता दिया, ताकि देखें कि मर्दकै की बात चलेगी या नहीं, क्यूँकि उसने उनसे कह दिया था कि मैं यहूदी हूँ।

⁵~जब हामान ने देखा कि मर्दकै न झुकता, न मेरी ता'ज़ीम करता है, तो हामान गुस्से से भर गया।⁶लेकिन सिर्फ़ मर्दकै ही पर हाथ चलाना अपनी शान से नीचे समझा; क्यूँकि उन्होंने उसे मर्दकै की क्रौम बता दी थी, इसलिए हामान ने चाहा कि मर्दकै की क्रौम, या'नी सब यहूदियों को जो अख्सूयरस की पूरी बादशाहत ~ में रहते थे। हलाक करे।

⁷अख्सूयरस बादशाह की बादशाहत के बारहवें बरस के पहले महीने से, जो नैसान महीना है, वह रोज़-ब-रोज़ और माह-ब-माह बारहवें महीने या'नी अदार के महीने तक हामान के सामने पर या'नी पर्ची डालते रहे।

⁸और हामान ने अख्सूयरस बादशाह से दरख्वास्त की ~कि "हुज़ूर की बादशाहत के सब सूबों में एक क्रौम सब क्रौमों के दर्मियान इधर उधर फैली हुई है, उसके काम हर क्रौम से निराले हैं, और वह बादशाह के क्रवानीन नहीं मानते हैं, इसलिए उनको रहने देना बादशाह के लिए फ़ाइदे मन्द नहीं।⁹अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो, तो उनको हलाक करने का हुक्म लिखा जाए; और मैं तहसीलदारों के हाथ में शाही खज़ानों में दाखिल करने के लिए चाँदी के दस हज़ार तोड़े दूँगा।"

¹⁰~और बादशाह ने अपने हाथ से अंगूठी उतार कर यहूदियों के दुश्मन अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान को दी।¹¹~और बादशाह ने हामान से कहा, "वह चाँदी तुझे बख़्शी गई और वह लोग भी, ताकि जो तुझे अच्छा मा'लूम हो उनसे करे।"

¹²~तब बादशाह के मुंशी पहले महीने की तेरहवीं तारीख को बुलाए गए, और जो कुछ हामान ने बादशाह के नवाबों, और हर सूबे के हाकिमों, और हर क्रौम के सरदारों को हुक्म किया उसके मुताबिक़ लिखा गया; सूबे सूबे के हुरूफ़ और क्रौम क्रौम की ज़बान में अख्सूयरस के नाम से यह लिखा गया, और उस पर बादशाह की अँगूठी की मुहर की गई।¹³~और क्रासिदों के हाथ बादशाह के सब सूबों में खत भेजे गए कि बारहवें महीने, या'नी अदार महीने की तेरहवीं तारीख को सब यहूदियों को, क्या जवान क्या बुढ़े क्या बच्चे क्या 'औरतें, एक ही दिन में हलाक और क़त्ल करें और मिटा दें और उनका माल लूट लें।

¹⁴~इस लिखाई की एक एक नक़ल सब क्रौमों के लिए जारी की गई, कि इस फ़रमान का ऐलान हर सूबे में किया जाए, ताकि उस दिन के लिए तैयार हो जाएँ।

¹⁵~बादशाह के हुक्म से क्रासिद फ़ौरन रवाना हुए और वह हुक्म क्रस-ए-सोसन में दिया गया। बादशाह और हामान मय नौशी करने को बैठ गए, पर सोसन शहर परेशान था।

Chapter 4

¹जब मर्दकै को वह सब जो किया गया था मा'लूम हुआ, तो मर्दकै ने अपने कपड़े फाड़े और टाट पहने और सिर पर राख डालकर शहर के बीच में चला गया, और ऊँची ~और पुरदर्द आवाज़ से चिल्लाने लगा;² और वह बादशाह के फाटक के सामने भी आया, क्योंकि टाट पहने कोई बादशाह के फाटक के अन्दर जाने न पाता था।³ और हर सूबे में जहाँ कहीं बादशाह का हुक्म और फ़रमान पहुँचा, यहूदियों के दर्मियान बड़ा मातम और रोज़ा और गिरयाज़ारी और नौहा शुरू हो गया, और बहुत से टाट पहने राख में बैठ गए।

⁴और आस्तर की सहेलियों और उसके ख्वाजासराओं ने आकर उसे खबर दी तब मलिका बहुत ग़मगीन हुई, और उसने कपड़े भेजे कि मर्दकै को पहनाएँ और टाट उस पर से उतार लें, लेकिन उसने उनको न लिया।⁵ तब आस्तर ने बादशाह के ख्वाजासराओं में से हताक को, जिसे उसने आस्तर के पास हाज़िर रहने को मुक़र्रर किया था बुलवाया, और उसे ताकीद की कि मर्दकै के पास जाकर दरियाफ़त करे कि यह क्या बात है और किस वजह से है।

⁶इसलिए हताक निकल कर शहर के चौक में, जो बादशाह के फाटक के सामने था मर्दकै के पास गया।⁷ तब मर्दकै ने अपनी पूरी आप बीती, और रुपये की वह ठीक रक़म उसे बताई जिसे हामान ने यहूदियों को हलाक करने के लिए बादशाह के खज़ानों में दाख़िल करने का वा'दा किया था।⁸ ~और उस फ़रमान की लिखी हुई तहरीर की एक नक़ल भी, जो उनको हलाक करने के लिए सोसन में दी गई थी उसे दी, ताकि उसे आस्तर को दिखाए और बताए और उसे ताकीद करे कि बादशाह के सामने जाकर उससे मिन्नत करे, और उसके सामने अपनी क़ौम के लिए दरख़्वास्त करे।

⁹~चुनौचे हताक ने आकर आस्तर को मर्दकै की बातें कह सुनाई।¹⁰ ~तब आस्तर हताक से बातें करने लगी, और उसे मर्दकै के लिए यह पैग़ाम दिया कि¹¹ ~"बादशाह के सब मुलाज़िम और बादशाही सूबों के सब लोग जानते हैं कि जो कोई, मर्द हो या 'औरत बिन बुलाए बादशाह की बारगाह-ए-अन्दरूनी में जाए, उसके लिए बस एक ही क़ानून है कि वह मारा जाए, अलावा उसके जिसके लिए बादशाह सोने की लाठी उठाए ताकि वह जीता रहे, लेकिन तीस दिन हुए कि मैं बादशाह के सामने नहीं बुलाई गई।"¹² उन्होंने मर्दकै से आस्तर की बातें कहीं।

¹³तब मर्दकै ने उनसे कहा कि "आस्तर के पास यह जवाब ले जायें कि तू अपने दिल में यह न समझ कि सब यहूदियों मेंसे तू बादशाह के महल में बची रहेगी |

¹⁴क्योंकि अगर तू इस वक़्त खामोशी अख़्तियार करे तो छुटकारा और नजात यहूदियों के लिए किसी और जगह से आएगी, लेकिन तू अपने बाप के ख़ान्दान के साथ हलाक हो जाएगी। और क्या जाने कि तू ऐसे ही वक़्त ~के लिए बादशाहत को पहुँची है?"

¹⁵तब आस्तर ने उनको मर्दकै के पास यह जवाब ले जाने का हुक्म दिया,¹⁶ कि "जा, और सोसन में जितने यहूदी मौजूद हैं उनको इकट्ठा कर, और तुम मेरे लिए रोज़ा रखखो, और तीन रोज़ तक दिन और रात न कुछ खाओ न पियो। मैं भी और मेरी सहेलियाँ इसी तरह से रोज़ा रखखेंगी; और ऐसे ही मैं बादशाह के सामने जाऊँगी जो क़ानून के खिलाफ़ है; और अगर मैं हलाक हुई तो हलाक हुई।"¹⁷ ~चुनौचे मर्दकै ख़ाना हुआ और आस्तर के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ किया।

Chapter 5

¹~और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि आस्तर शाहाना लिबास पहन कर शाही महल की बारगाह-ए-अन्दरूनी में शाही महल के सामने खड़ी हो गई। और बादशाह अपने शाही महल में अपने तख्त-ए-हुकूमत पर महल के सामने के दरवाज़े पर बैठा था।²और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने आस्तर मलिका को बारगाह में खड़ी देखा, तो वह उसकी नज़र में मक़बूल ठहरी और बादशाह ने वह सुनहली लाठी जो उसके हाथ में थी आस्तर की तरफ़ बढ़ाया। तब आस्तर ने नज़दीक जाकर लाठी की नोक को छुआ।

³~तब बादशाह ने उससे कहा, "आस्तर मलिका तू क्या चाहती है और किस चीज़ की दरख्वास्त करती है? आधी बादशाहत तक वह तुझे बख़्शी जाएगी।"⁴~आस्तर ने दरख्वास्त की "अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो, तो बादशाह उस ज़श्र में जो मैंने उसके लिए तैयार किया है, हामान को साथ लेकर आज तशरीफ़ लाए।"

⁵~बादशाह ने फ़रमाया कि "हामान को जल्द लाओ, ताकि आस्तर के कहे के मुताबिक़ किया जाए।" तब बादशाह और हामान उस ज़श्र में आए, जिसकी तैयारी आस्तर ने की थी⁶और बादशाह ने ज़श्र में मयनौशी के वक़्त आस्तर से पूछा, "तेरा क्या सवाल है? वह मन्ज़ूर होगा। तेरी क्या दरख्वास्त है? आधी बादशाहत तक वह पूरी की जाएगी।"

⁷आस्तर ने जवाब दिया, "मेरा सवाल और मेरी दरख्वास्त यह है,⁸अगर मैं बादशाह की नज़र में मक़बूल हूँ, और बादशाह को मन्ज़ूर हो कि मेरा सवाल कुबूल और मेरी दरख्वास्त पूरी करे, तो बादशाह और हामान मेरे ज़श्र में जो मैं उनके लिए तैयार करूँगी आयेँ और कल जैसा बादशाह ने इरशाद किया है मैं करूँगी।"

⁹उस दिन हामान शादमान और खुश होकर निकला। लेकिन जब हामान ने बादशाह के फाटक पर मर्दकै को देखा कि उसके लिए न खड़ा हुआ न हटा, तो हामान मर्दकै के खिलाफ़ गुस्से से भर गया।¹⁰~तोभी हामान अपने आपको बरदाश्त करके घर गया, और लोग भेजकर अपने दोस्तों को और अपनी बीवी ज़रिश को बुलवाया।¹¹और हामान उनके आगे अपनी शान-ओ-शौकत, और बेटों की कसरत का किस्सा कहने लगा, और किस किस तरह बादशाह ने उसकी तरक्की की, और उसको हाकिम और बादशाही मुलाज़िम्ओं से ज़्यादा सरफ़राज़ किया।

¹²हामान ने यह भी कहा, "देखो, आस्तर मलिका ने अलावा मेरे किसी को बादशाह के साथ अपने ज़श्र में, जो उसने तैयार किया था आने न दिया; और कल के लिए भी उसने बादशाह के साथ मुझे दा'वत दी है।"¹³~तोभी जब तक मर्दकै यहूदी मुझे बादशाह के फाटक पर बैठा दिखाई देता है, इन बातों से मुझे कुछ हासिल नहीं।"

¹⁴~तब उसकी बीवी ज़रिश और उसके सब दोस्तों ने उससे कहा, "पचास हाथ ऊँची सूली बनाई जाए, और कल बादशाह से 'दरख्वास्त करके मर्दकै उस पर चढ़ाया जाए; तब खुशी खुशी बादशाह के साथ ज़श्र में जाना।" यह बात हामान को पसन्द आई, और उसने एक सूली बनवाई

Chapter 6

¹उस रात बादशाह को नींद न आई, तब उसने तवारीख की किताबों के लाने का हुक्म दिया और वह बादशाह के सामने पढ़ी गई।² और यह लिखा मिला कि मर्दकै ने दरबानों में से बादशाह के दो ख्वाजासराओं, बिगताना और तरश की मुखबरी की थी, जो अख्सूयरस बादशाह पर हाथ चलाना चाहते थे।³ बादशाह ने कहा, "इसके लिए मर्दकै की क्या इज़्ज़त-ओ-हुरमत की गई है?" बादशाह के मुलाज़िमों ने जो उसकी ख़िदमत करते थे कहा, "उसके लिए कुछ नहीं किया गया।"

⁴ और बादशाह ने पूछा, "बारगाह में कौन हाज़िर है?" उधर हामान शाही महल की बाहरी बारगाह में आया हुआ था कि मर्दकै को उस सूली पर चढ़ाने के लिए, जो उसने उसके लिए तैयार की थी। बादशाह से दरख्वास्त करे।⁵ इसलिए बादशाह के मुलाज़िमों ने उससे कहा, "हुज़ूर बारगाह में हामान खड़ा है।" बादशाह ने फ़रमाया, "उसे अन्दर आने दो।"⁶ तब हामान अन्दर आया, और बादशाह ने उससे कहा, "जिसकी ता'ज़ीम बादशाह करना चाहता है, उस शख्स से क्या किया जाए?" हामान ने अपने दिल में कहा, "मुझ से ज़्यादा बादशाह किसकी ता'ज़ीम करना चाहता होगा?"

⁷ इसलिए हामान ने बादशाह से कहा कि "उस शख्स के लिए, जिसकी ता'ज़ीम बादशाह को मन्ज़ूर हो, शाहाना लिबास जिसे बादशाह पहनता है, और वह घोड़ा जो बादशाह की सवारी का है, और शाही ताज जो उसके सिर पर रखवा जाता है लाया जाए।"⁸ और वह लिबास और वह घोड़ा बादशाह के सबसे ऊँचे 'ओहदा के उमरा में से एक के हाथ में ज़िम्मा हों, ताकि उस लिबास से उस शख्स को पहनायी जाए जिसकी ता'ज़ीम बादशाह को मन्ज़ूर है; और उसे उस घोड़े पर सवार करके शहर के 'आम रास्तों में फिराएँ और उसके आगे आगे 'एलान करें, "जिस शख्स की ता'ज़ीम बादशाह करना चाहता है, उससे ऐसा ही किया जाएगा।"

¹⁰ तब बादशाह ने हामान से कहा, "जल्दी कर, और अपने कहे के मुताबिक वह लिबास और घोड़ा ले, और मर्दकै यहूदी से जो बादशाह के फाटक पर बैठा है ऐसा ही कर। जो कुछ तूने कहा है उसमें कुछ भी कमी न होने पाए।"¹¹ तब हामान ने वह लिबास और घोड़ा लिया और मर्दकै को पहना करके घोड़े पर सवार शहर के 'आम रास्तों में फिराया, और उसके आगे आगे एलान करता गया कि "जिस शख्स की ता'ज़ीम बादशाह करना चाहता है, उससे ऐसा ही किया जाएगा।"

¹² और मर्दकै तो फिर बादशाह के फाटक पर लौट आया, लेकिन हामान ग़मगीन और सिर ढाँके हुए जल्दी जल्दी अपने घर गया।¹³ और हामान ने अपनी बीवी ज़रिश और अपने सब दोस्तों को एक एक बात जो उस पर गुज़री थी बताई। तब उसके दानिशमन्दों और उसकी बीवी ज़रिश ने उससे कहा, "अगर मर्दकै, जिसके आगे तू पस्त होने लगा है, यहूदी नसल में से है तो तू उस पर ग़ालिब न होगा, बल्कि उसके आगे ज़रूर पस्त होता जाएगा।"¹⁴ वह उससे अभी बातें कर ही रहे थे कि बादशाह के ख्वाजासरा आ गए, और हामान को उस ज़ंश में ले जाने की जल्दी की जिसे आस्तर ने तैयार किया था।

Chapter 7

¹तब बादशाह और हामान आए कि आस्तर मलिका के साथ खाएँ-पिएँ।²और बादशाह ने दूसरे दिन मेहमान नवाज़ी पर मयनौशी के वक्त्र आस्तर से फिर पूछा, "आस्तर मलिका, तेरा क्या सवाल है? वह मन्ज़ूर होगा। और तेरी क्या दरख्वास्त है? आधी बादशाहत तक वह पूरी की जाएगी।"

³आस्तर मलिका ने जवाब दिया, "ऐ बादशाह, अगर मैं तेरी नज़र में मक्बूल हूँ और बादशाह को मंज़ूर हो, तो मेरे सवाल पर मेरी जान बख़्शी हो और मेरी दरख्वास्त पर मेरी क़ौम मुझे मिले।"⁴~क्यूँकि मैं और मेरे लोग हलाक और क़त्ल किए जाने, और नेस्त-ओ-नाबूद होने को बेच दिए गए हैं। अगर हम लोग गुलाम और लौंडियाँ बनने के लिए बेच डाले जाते तो मैं चुप रहती, अगरचे उस दुश्मन को बादशाह के नुक़सान का मु'आवज़ा देने की ताक़त न होती।"⁵~तब अख़्सूयरस बादशाह ने आस्तर मलिका से कहा वह कौन है और कहाँ ~है जिसने अपने दिल में ऐसा ख़याल करने की हिम्मत की?"

⁶आस्तर ने कहा, "वह मुख़ालिफ़ और वह दुश्मन, यही ख़बीस हामान है!" तब हामान बादशाह और मलिका के सामने परेशान ~हुआ।⁷~और बादशाह गुस्सा होकर मयनौशी से उठा, और महल के बाग़ में चला गया; और हामान आस्तर मलिका से अपनी जान बख़्शी की दरख्वास्त करने को उठ खड़ा हुआ, क्यूँकि उसने देखा कि बादशाह ने मेरे ख़िलाफ़ बदी की ठान ली है।

⁸~और बादशाह महल के बाग़ से लौटकर मयनौशी की जगह आया, और हामान उस तख़्त के ऊपर जिस पर आस्तर बैठी थी पड़ा था। तब बादशाह ने कहा, "क्या यह घर ही में मेरे सामने मलिका पर ज़ब्र करना चाहता है?" इस बात का बादशाह के मुँह से निकलना था कि उन्होंने हामान का मुँह ढाँक दिया।

⁹फिर उन ख़वाजासराओं में से जो ख़िदमत करते थे, एक ख़वाजासरा ख़रबूनाह ने दरख्वास्त की, "हुज़ूर! इसके अलावा हामान के घर में वह पचास हाथ ऊँची सूली खड़ी है, जिसको हामान ने मर्दकै के लिए तैयार किया जिसने बादशाह के फ़ाइदे की बात बताई।" बादशाह ने फ़रमाया, "उसे उस पर टाँग दो।"¹⁰~तब उन्होंने हामान को उसी सूली पर, जो उसने मर्दकै के लिए तैयार की थी टाँग दिया। तब बादशाह का गुस्सा ठंडा हुआ।

Chapter 8

¹उसी दिन अख्सूरस बादशाह ने यहूदियों के दुश्मन हामान का घर आस्तर मलिका को बख्शा। और मर्दकै बादशाह के सामने आया, क्योंकि आस्तर ने बता दिया था कि उसका उससे क्या रिश्ता था।²~और बादशाह ने अपनी अँगूठी जो उसने हामान से ले ली थी, उतार कर मर्दकै को दी। और आस्तर ने मर्दकै को हामान के घर पर मुख्तार बना दिया।

³और आस्तर ने फिर बादशाह के सामने ~दरखवास्त ~की और उसके क्रदमों पर गिरी और आँसू बहा बहाकर उसकी मिन्नत की कि हामान अजाजी की बदख्वाही और साज़िश को, जो उसने यहूदियों के बरखिलाफ़ की थी बातिल कर दे।⁴~तब बादशाह ने आस्तर की तरफ़ सुनहली लाठी ~बढ़ाई, फिर आस्तर बादशाह के सामने ~उठ खड़ी हुई

⁵और कहने लगी, "अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो और मैं उसकी नज़र में मक़बूल ~हूँ, और यह बात बादशाह को मुनासिब मा'लूम हो और मैं उसकी निगाह में प्यारी हूँ, तो उन फ़रमानों को रद करने को लिखा जाए जिनकी अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान ने, उन सब यहूदियों को हलाक करने के लिए जो बादशाह के सब सूबों में बसते हैं, पसन्द किया था।⁶~क्योंकि मैं उस बला को जो मेरी क़ौम पर नाज़िल होगी, क्यूँकर देख सकती हूँ? या कैसे मैं अपने रिश्तेदारों की हलाकत देख सकती हूँ?"

⁷तब अख्सूरस बादशाह ने आस्तर मलिका और मर्दकै यहूदी से कहा कि "देखो, मैंने हामान का घर आस्तर को बख्शा है, और उसे उन्होंने सूली पर टाँग दिया, इसलिए कि उसने यहूदियों पर हाथ चलाया।⁸~तुम भी बादशाह के नाम से यहूदियों को जैसा चाहते हो लिखो, और उस पर बादशाह की अँगूठी से मुहर करो, क्योंकि जो लिखाई ~बादशाह के नाम से लिखी जाती है, उस पर बादशाह की अँगूठी से मुहर की जाती है, उसे कोई रद नहीं कर सकता।"

⁹~तब उसी वक़्त तीसरे महीने, या'नी सैवान महीने की तेइसवीं तारीख को, बादशाह के मुन्शी तलब किए गए और जो कुछ मर्दकै ने हिन्दोस्तान से कूश तक एक सौ सताईस सूबों के यहूदियों और नवाबों और हाकिमों और सूबों के अमीरों को हुक्म दिया, वह सब हर सूबे को उसी के हुरूफ़ और हर क़ौम को उसी की ज़बान, और यहूदियों को उनके हुरूफ़ और उनकी ज़बान के मुताबिक़ लिखा गया।

¹⁰~और उसने अख्सूरस बादशाह के नाम से ख़त लिखे, और बादशाह की अँगूठी से उन पर मुहर की, और उनको सवार कासिदों के हाथ रवाना किया, जो अच्छी नसल के तेज़ रफ़्तार शाही घोड़ों पर सवार थे।¹¹~इनमें बादशाह ने यहूदियों को जो हर शहर में थे, इजाज़त दी कि इकट्ठे होकर अपनी जान बचाने के लिए मुक़ाबिले पर अड़ जाएँ, और उस क़ौम और उस सूबे की सारी फ़ौज को जो उन पर और उनके छोटे बच्चों और बीवियों पर हमलावर हो हलाक और क़त्ल करें और बरबाद कर दें, और उनका माल लूट लें।¹²यह अख्सूरस बादशाह के सब सूबों में बारहवें महीने, या'नी अदार महीने की तेरहवीं तारीख की एक ही दिन में हो।

¹³~इस तहरीर की एक एक नक़ल सब क़ौमों के लिए जारी की गई कि इस फ़रमान का ऐलान हर सूबे में किया जाए, ताकि यहूदी इस दिन अपने दुश्मनों से अपना इन्तक़ाम लेने को तैयार रहें।¹⁴~इसलिए वह क़ासिद ~जो तेज़ रफ़्तार शाही घोड़ों पर सवार थे रवाना हुए, और बादशाह के हुक्म की वजह से तेज़ निकले चले गए, और वह फ़रमान सोसन के महल में दिया गया।

¹⁵और मर्दकै बादशाह के सामने से आसमानी और सफ़ेद रंग का शाहाना लिबास और सोने का एक बड़ा ताज, और कतानी और अर्ग़वानी चोगा पहने निकला और सोसन शहर ने ना'रा मारा और खुशी मनाई।¹⁶~यहूदियों को रौनक और खुशी और शादमानी और इज़ज़त हासिल हुई।¹⁷~और हर सूबे और हर शहर में जहाँ कहीं बादशाह का हुक्म और उसका फ़रमान पहुँचा, यहूदियों को ख़ुरमी और शादमानी और ईद और खुशी का दिन नसीब हुआ; और उस मुल्क के लोगों में से बहुतेरे यहूदी हो गए, क्यूँकि यहूदियों का ख़ौफ़ उन पर छा गया था।

Chapter 9

¹अब बारहवें महीने या'नी अदार महीने की तेरहवीं तारीख को, जब बादशाह के हुक्म और फ़रमान पर 'अमल करने का वक़्त नज़दीक आया, और उस दिन यहूदियों के दुश्मनों को उन पर ग़ालिब होने की उम्मीद थी, हालाँकि इसके अलावा यह हुआ कि यहूदियों ने अपने नफ़रत करनेवालों पर ग़लबा पाया;² तो अख़्सूरस बादशाह के सब सूबों के यहूदी अपने अपने शहर में इकट्ठे हुए कि उन पर जो उनका नुक़सान चाहते थे, हाथ चलाएँ और कोई आदमी उनका सामना न कर सका, क्योंकि उनका ख़ौफ़ सब क्रौमों पर छा गया था।

³और सूबों के सब अमीरों और नवाबों और हाकिमों और बादशाह के कार गुज़ारों ने यहूदियों की मदद की, इसलिए कि मर्दकै का रौब उन पर छा गया था।

⁴~क्योंकि मर्दकै शाही महल में खास 'ओहदे पर ~था, और सब सूबों में उसकी शोहरत फैल गई थी, इसलिए कि यह आदमी या'नी मर्दकै बढ़ता ही चला गया।

⁵~और यहूदियों ने अपने सब दुश्मनों को तलवार की धार से काट डाला और क़त्ल और हलाक किया, और अपने नफ़रत करने वालों से जो चाहा किया।

⁶और सोसन के महल में यहूदियों ने पाँच सौ आदमियों को क़त्ल और हलाक किया,⁷ और परशन्दाता और दलफ़ून और असपाता,⁸ ~और पोरता और अदलियाह और अरीदता,⁹ ~और परमश्ता और अरीसै और अरीदे और वैज़ाता,¹⁰ ~या'नी यहूदियों के दुश्मन हामान-बिन-हम्मदाता के दसों बेटों को उन्होंने क़त्ल किया, पर लूट पर उन्होंने हाथ न बढ़ाया।

¹¹~उसी दिन उन लोगों का शुमार जो सोसन के महल में क़त्ल हुए बादशाह के सामने पहुँचाया गया।¹²~और बादशाह ने आस्तर मलिका से कहा, "यहूदियों ने सोसन के महल ही में पाँच सौ आदमियों और हामान के दसों बेटों को क़त्ल और हलाक किया है, तो बादशाह के बाक़ी सूबों में उन्होंने क्या कुछ न किया होगा! अब तेरा क्या सवाल है? वह मंज़ूर होगा, और तेरी और क्या दरख़वास्त है? वह पूरी की जाएगी।"

¹³आस्तर ने कहा, "अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो उन यहूदियों को जो सोसन में हैं इजाज़त मिले कि आज के फ़रमान के मुताबिक़ कल भी करें, और हामान के दसों बेटे सूली पर चढ़ाए जाएँ।"¹⁴इसलिए ~बादशाह ने हुक्म दिया, "ऐसा ही किया जाए।" और सोसन में उस फ़रमान का ऐलान किया गया; और हामान के दसों बेटों को उन्होंने टोंग दिया।

¹⁵और वह यहूदी जो सोसन में रहते थे, अदार महीने की चौदहवीं तारीख को इकट्ठे हुए और उन्होंने सोसन में तीन सौ आदमियों को क़त्ल किया, लेकिन लूट के माल को हाथ न लगाया।¹⁶~बाक़ी यहूदी जो बादशाह के सूबों में रहते थे, इकट्ठे होकर अपनी अपनी जान बचाने के लिए मुक़ाबिले को अड़ गए, और अपने दुश्मनों से आराम पाया और अपने नफ़रत करनेवालों में से पच्छत्तर हज़ार को क़त्ल किया, लेकिन लूट पर उन्होंने हाथ न बढ़ाया।

¹⁷यह अदार महीने की तेरहवीं तारीख थी, और उसी की चौदहवीं तारीख को उन्होंने आराम किया, और उसे मेहमान नवाज़ी और खुशी का दिन ठहराया।

¹⁸लेकिन वह यहूदी जो सोसन में थे, उसकी तेरहवीं और चौदहवीं तारीख को इकट्ठे हुए, और उसकी पन्द्रहवीं तारीख को आराम किया और उसे मेहमान नवाज़ी और खुशी का दिन ठहराया।¹⁹~इसलिए देहाती यहूदी जो बिना दीवार ~बस्तियों में रहते हैं, अदार महीने की चौदहवीं तारीख की शादमानी और मेहमान नवाज़ी का और खुशी का और एक दूसरे को तोहफ़े भेजने का दिन मानते हैं।

²⁰मर्दकै ने यह सब अहवाल लिखकर, उन यहूदियों को जो अख़्सूरस बादशाह के सब सूबों में क्या नज़दीक क्या दूर रहते थे ख़त भेजे,²¹ ताकि उनको ताकीद करे कि वह अदार महीने की चौदहवीं तारीख को, और उसी की पन्द्रहवीं को हर साल,²² ~ऐसे दिनों की तरह मानें जिनमें यहूदियों को अपने दुश्मनों से चैन मिला; और वह महीने उनके लिए ग़म से शादमानी में और मातम से खुशी के दिन में बदल ~गए; इसलिए वह उनको मेहमान नवाज़ी ~और खुशी और आपस में तोहफ़े भेजने और गरीबों को ख़ैरात देने के दिन ठहराएँ।

²³यहूदियों ने जैसा शुरू किया था और जैसा मर्दकै ने उनको लिखा था, वैसा ही करने का ज़िम्मा लिया।²⁴क्योंकि अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान, सब यहूदियों के दुश्मन, ने यहूदियों के खिलाफ़ उनको हलाक करने की तदबीर की थी, और उसने पूर ~या'नी पर्ची ~डाला था कि उनको मिटाये ~और हलाक करे।²⁵~तब जब वह मु'आमिला बादशाह के सामने पेश हुआ, तो उसने खतों के ज़रिए से हुक्म किया कि वह बुरी तजवीज़, जो उसने यहूदियों के बरखिलाफ़ की थी उल्टी उस ही के सिर पर पड़े, और वह और उसके बेटे सूली पर चढ़ाए जाएँ।

²⁶~इसलिए उन्होंने उन दिनों को पूर के नाम की वजह से पूरीम कहा। इसलिए ~इस खत की सब बातों की वजह ~से, और जो कुछ उन्होंने इस मु'आमिले में खुद देखा था और जो उनपर गुज़रा था ~उसकी वजह ~से भी²⁷ यहूदियों ने ठहरा दिया, और अपने ऊपर और अपनी नस्ल के लिए और उन सभों के लिए जो उनके साथ मिल गए थे, यह ज़िम्मा लिया ताकि बात अटल हो जाए कि वह उस खत की तहरीर के मुताबिक़ हर साल उन दोनों दिनों को मुक़र्ररा वक़्त पर मानेंगे।²⁸~और यह दिन नसल-दर-नसल हर खानदान और सूबे और शहर में याद रखें और माने जाएँगे, और पूरीम के दिन यहूदियों में कभी मौकूफ़ न होंगे, न उनकी यादगार उनकी नसल से जाती रहेगी।

²⁹और अबीखेल की बेटी आस्तर मलिका, और यहूदी मर्दकै ने पूरीम के बाब के खत पर ज़ोर देने के लिए पूरे इस्तियार से लिखा।

³⁰और उसने सलामती और सच्चाई की बातें लिख कर अख़्सूरस की बादशाहत ~के एक सौ सताईस सूबों में सब यहूदियों के पास खत भेजे³¹ ताकि पूरीम के इन दिनों को उनके मुक़र्ररा वक़्त के लिए बरकरार करे जैसा यहूदी मर्दकै और आस्तर मलिका ने उनको हुक्म किया था; और जैसा उन्होंने अपने और अपनी नसल के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के बारे में ठहराया था।³²और आस्तर के हुक्म से पूरीम की इन रस्मों की तसदीक हुई और यह किताब में लिख लिया गया।

Chapter 10

¹और अख्सूरस बादशाह ने ज़मीन पर और समुन्दर के जज़ीरों पर मेहसूल मुकर्रर किया।²और उसकी ताक़त ~और हुकूमत के सब काम, और मर्दकै की 'अज़मत का तफ़सीली हाल जहाँ तक बादशाह ने ~उसे तरक्की दी थी, क्या वह मादे और फ़ारस के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?

³क्योंकि यहूदी मर्दकै अख्सूरस बादशाह से दूसरे दर्जे पर था, और सब यहूदियों में ख़ास 'ओहदे और अपने भाइयों की सारी जमा'अत में मक्बूल था, और अपनी क्रोम का ख़ैर ख़्वाह रहा, और अपनी सारी औलाद से सलामती की बातें करता था।

अय्यूब

Chapter 1

¹ऊज़ की सर ज़मीन में अय्यूब नाम का एक शख्स था। वह शख्स कामिल और रास्तबाज़ था और खुदा से डरता और गुनाह से दूर रहता था।²उसके यहाँ सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुई।³उसके पास सात हज़ार भेंड़े और तीन हज़ार ऊँट और पाँच सौ जोड़ी बैल और पाँच सौ गधियाँ और बहुत से नौकर चाकर थे, ऐसा कि अहल-ए-मशरिक़ में वह सबसे बड़ा आदमी था।

⁴उसके बेटे एक दूसरे के घर जाया करते थे और हर एक अपने दिन पर मेहमान नवाज़ी करते थे, और अपने साथ खाने-पीने को अपनी तीनों बहनों को बुलवा भेजते थे।⁵और जब उनकी मेहमान नवाज़ी के दिन पूरे हो जाते, तो अय्यूब उन्हें बुलवाकर पाक करता और सुबह को सवेरे उठकर उन सभी की ता'दाद के मुताबिक़ सोख़्तनी कुर्बानियाँ अदा करता था, क्योंकि अय्यूब कहता था, कि "शायद मेरे बेटों ने कुछ ख़ता की हो और अपने दिल में खुदा की बुराई की हो। " अय्यूब हमेशा ऐसा ही किया करता था।

⁶और एक दिन खुदा के बेटे आए कि खुदावन्द के सामने हाज़िर हों, और उनके बीच ~शैतान" भी आया।⁷और खुदावन्द ने शैतान से पूछा, कि "तू कहाँ से आता है?" शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि "ज़मीन पर इधर-उधर घूमता फिरता और उसमें सैर करता हुआ आया हूँ। "⁸खुदावन्द ने शैतान से कहा, "क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब के हाल पर भी कुछ ग़ौर किया? क्योंकि ज़मीन पर उसकी तरह कामिल और रास्तबाज़ आदमी, जो खुदा से डरता, और गुनाह से दूर रहता हो, कोई नहीं। "

⁹शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, "क्या अय्यूब यूँ ही खुदा से डरता है?"¹⁰~क्या तू ने उसके और उसके घर के चारों तरफ़, और जो कुछ उसका है उस सबके ~चारों तरफ़ बाड़ नहीं बनाई है? तू ने उसके हाथ के काम में बरकत बख़शी है, और उसके गल्ले मुल्क में बढ़ गए हैं।¹¹लेकिन तू ज़रा अपना हाथ बढ़ा कर जो कुछ उसका है उसे छू ही दे; तो क्या वह तेरे मुँह पर तेरी बुराई न करेगा?"¹²खुदावन्द ने शैतान से कहा, "देख, उसका सब कुछ तेरे इख़्तियार में है, सिर्फ़ उसको हाथ न लगाना। " तब शैतान खुदावन्द के सामने से चला गया।

¹³और एक दिन जब उसके बेटे और बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मयनोशी कर रहे थे।¹⁴तो एक क़ासिद ने अय्यूब के पास आकर कहा, कि "बैल हल में जुते थे और गधे उनके पास चर रहे थे,¹⁵कि सबा के लोग उन पर टूट पड़े और उन्हें ले गए, और नौकरों को हलाक़ किया और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे ख़बर दूँ। "

¹⁶वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, कि "खुदा की आग़ आसमान से नाज़िल हुई और भेड़ों और नौकरों को जलाकर भस्म कर दिया, और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे ख़बर दूँ। "¹⁷वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, 'कसदी तीन गोल होकर ऊँटों पर आ गिरे और उन्हें ले गए, और नौकरों को हलाक़ किया और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे ख़बर दूँ। "

¹⁸वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, कि "तेरे बेटे बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मयनोशी कर रहे थे,¹⁹और देख, वीरान से एक बड़ी आँधी चली और उस घर के चारों कोनों पर ऐसे ज़ोर से टकराई कि वह उन जवानों पर गिर पड़ा, और वह मर गए और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे ख़बर दूँ। "

²⁰तब अय्यूब ने उठकर अपना लिबास चाक़ किया और सिर मुंडाया और ज़मीन पर गिरकर सिज्दा किया²¹और कहा, "नंगा मैं अपनी माँ के पेट से निकला, और नंगा ही वापस जाऊँगा। खुदावन्द ने दिया और खुदावन्द ने ले लिया। खुदावन्द का नाम मुबारक हो। "²²इन सब बातों में अय्यूब ने न तो गुनाह किया और न खुदा पर ग़लत काम का 'ऐब लगाया।

Chapter 2

¹~फिर एक दिन खुदा के बेटे आए कि खुदावन्द के सामने हाज़िर हों, और शैतान भी उनके बीच आया कि खुदावन्द के आगे हाज़िर हो।²और खुदावन्द ने शैतान से पूछा, कि "तू कहाँ से आता है?" शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि "ज़मीन पर इधर-उधर घूमता फिरता और उसमें सैर करता हुआ आया हूँ।"

³खुदावन्द ने शैतान से कहा, "क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब के हाल पर भी कुछ गौर किया; क्योंकि ज़मीन पर उसकी तरह कामिल और रास्तबाज़ आदमी जो खुदा से डरता और गुनाह ~से दूर रहता हो, कोई नहीं और गो तू ने मुझको उभारा कि बे वजह उसे हलाक करूँ, तोभी वह अपनी रास्तबाज़ी पर क़ायम है?"

⁴शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि 'खाल के बदले खाल, बल्कि ~इन्सान अपना सारा माल अपनी जान के लिए दे डालेगा।⁵अब सिर्फ़ अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डी और उसके गोश्त को छू दे, तो वह तेरे मुँह पर तेरी बुराई करेगा।"⁶खुदावन्द ने शैतान से कहा, कि "देख, वह तेरे इख्तियार में है, सिर्फ़ उसकी जान महफूज़ रहे।"

⁷तब शैतान खुदावन्द के सामने से चला गया और अय्यूब को तलवे से चाँद तक दर्दनाक फोड़ों से दुख दिया।⁸और वहअपने को खुजलाने के लिए एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया।

⁹तब उसकी बीवी उससे कहने लगी, कि "क्या तू अब भी अपनी रास्ती पर क़ायम रहेगा? खुदा की बुराई कर और मर जा।"¹⁰~लेकिन उसने उससे कहा, कि "तू नादान 'औरतों की जैसी बातें करती है; क्या हम खुदा के हाथ से सुख पाएँ और दुख न पाएँ?" इन सब बातों में अय्यूब ने अपने लबों से ख़ता न की।

¹¹जब अय्यूब के तीन दोस्तों, तेमानी अलीफ़ज़ और सूखी बिलदद और नामाती जूफ़र, ने उस सारी आफ़त का हाल जो उस पर आई थी सुना, तो वह अपनी-अपनी जगह से चले और उन्होंने आपस में 'अहद किया कि जाकर उसके साथ रोएँ और उसे तसल्ली दें।

¹²और जब उन्होंने दूर से निगाह की और उसे न पहचाना, तो वह चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगे और हर एक ने अपना लिबास चाक किया और अपने सिर के ऊपर आसमान की तरफ़ धूल उड़ाई।¹³और वह सात दिन और सात रात उसके साथ ज़मीन पर बैठे रहे और किसी ने उससे एक बात न कही क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका ग़म बहुत बढ़ा |

Chapter 3

¹इसके बा'द अय्यूब ने अपना मुँह खोल कर अपने पैदाइश के दिन पर ला'नत की।²और अय्यूब कहने लगा :³~ "मिट जाए वह दिन जिसमें मैं पैदा हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'कि देखो, बेटा हुआ।'"

⁴वह दिन अँधेरा हो जाए। खुदा ऊपर से उसका लिहाज़ न करे, और न उस पर रोशनी पड़े।⁵अँधेरा और मौत का साया उस पर क़ाबिज़ हो"। बदली उस पर छाई रहे और दिन को तारीक कर देनेवाली चीज़ें उसे दहशत ज़दा करें।

⁶गहरी तारीकी उस रात को दबोच ले। वह साल के दिनों के बीच खुशी न करने पाए, और न महीनों की ता'दाद में आए।⁷वह रात बाँझ हो जाए; उसमें खुशी की कोई आवाज़ न आए।

⁸~दिन पर ला'नत करने वाले उस पर ला'नत करें और वह भी जो अज़दहा" को छेड़ने को तैयार हैं।⁹उसकी शाम के तारे तारीक हो जाएँ, वह रोशनी की राह देखे, जबकि वह है नहीं, और न वह सुबह की पलकों को देखे।¹⁰क्यूँकि उसने मेरी माँ के रहम के दरवाज़ों को बंद न किया और दुख को मेरी आँखों से छिपा न रखखा।

¹¹मैं रहम ही में क्यूँ न मर गया? मैंने पेट से निकलते ही जान क्यूँ न दे दी?¹²~मुझे कुबूल करने को घुटने क्यूँ थे, और छातियाँ कि मैं उनसे पियूँ ~?

¹³नहीं तो इस वक़्त मैं पड़ा होता, और बेख़बर रहता, मैं सो जाता। तब मुझे आराम मिलता।¹⁴ज़मीन के बादशाहों और सलाहकारों के साथ, जिन्होंने अपने लिए मक़बरे बनाए।

¹⁵या उन शाहज़ादों के साथ होता, जिनके पास सोना था। जिन्होंने अपने घर चाँदी से भर लिए थे;¹⁶या पोशीदा गिरते हमल की तरह, मैं वजूद में न आता या उन बच्चों की तरह जिन्होंने रोशनी ही न देखी।

¹⁷वहाँ शरीर फ़साद से बाज़ आते हैं, और थके मांदे राहत पाते हैं।¹⁸वहाँ कैदी मिलकर आराम करते हैं, और दरोगा की आवाज़ सुनने में नहीं आती।¹⁹छोटे और बड़े दोनों वहीं हैं, और नौकर अपने मालिक से आज़ाद है। "

²⁰दुखियारे को रोशनी, और तल्लख़जान को ज़िन्दगी क्यूँ मिलती है?²¹जो मौत की राह देखते हैं लेकिन वह आती नहीं, और छिपे ख़ज़ाने से ज़्यादा उसकी ~तलाश करते ~हैं।²²जो निहायत शादमान और खुश होते हैं, जब क़ब्र को पा लेते हैं।

²³ऐसे आदमी को रोशनी क्यूँ मिलती है, जिसकी राह छिपी है, और जिसे खुदा ने हर तरफ़ से बंद कर दिया है?²⁴क्यूँकि मेरे खाने की जगह मेरी आहें हैं, और मेरा कराहना पानी की तरह जारी है।

²⁵क्यूँकि जिस बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आती है, और जिस बात का मुझे खौफ़ होता है, वही मुझ पर गुज़रती है।²⁶क्यूँकि मुझे न चैन है, न आराम है, न मुझे कल पड़ती है; बल्कि मुसीबत ही आती है। "

Chapter 4

¹~तब तेमानी अलीफ़ज़ कहने लगा,²अगर कोई तुझ से बात चीत करने की कोशिश करे तो क्या तू अफ़सोस करेगा?, लेकिन बोले बग़ैर कौन रह सकता है?

³देख, तू ने बहुतों को सिखाया, और कमज़ोर हाथों को मज़बूत किया।

⁴तेरी बातों ने गिरते हुए को संभाला, और तू ने लड़खड़ाते" घुटनों को मज़बूत किया।⁵लेकिन अब तो तुझी पर आ पड़ी और तू कमज़ोर हुआ जाता है। उसने तुझे छुआ और तू घबरा उठा।⁶क्या तेरे ख़ुदा का डर ही तेरा भरोसा नहीं? क्या तेरी राहों की रास्ती तेरी उम्मीद नहीं?

⁷क्या तुझे याद है कि कभी कोई मा'सूम भी हलाक हुआ है? या कहीं रास्तबाज़ भी काट डाले गए?⁸मेरे देखने में तो जो गुनाह को जोतते और दुख बोते हैं, वही उसको काटते हैं।⁹वह ख़ुदा के दम से हलाक होते, और उसके गुस्से के झोंके से भस्म होते हैं।

¹⁰बबर की गरज़ और ख़ूँख़वार बबर की दहाड़, और बबर के बच्चों के दाँत, यह सब तोड़े जाते हैं।¹¹शिकार न पाने से बूढ़ा बबर हलाक होता, और शेरनी के बच्चे तितर-बितर हो जाते हैं।

¹²एक बात चुपके से मेरे पास पहुँचाई गई, उसकी भनक मेरे कान में पड़ी।¹³रात के ख़्वाबों ~के ख़्यालों के बीच, जब लोगों को गहरी नींद आती है।

¹⁴मुझे ख़ौफ़ और कपकपी ने ऐसा पकड़ा, कि मेरी सब हड्डियों को हिला डाला।¹⁵तब एक रूह मेरे सामने से गुज़री, और मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

¹⁶वह चुपचाप खड़ी हो गई लेकिन मैं उसकी शक्ल पहचान न सका; एक सूरत मेरी आँखों के सामने थी और सन्नाटा था। फिर मैंने एक आवाज़ सुनी:¹⁷कि क्या फ़ानी इन्सान ख़ुदा से ज़्यादा होगा? क्या आदमी अपने ख़ालिक़ से ज़्यादा पाक ठहरेगा?

¹⁸देख, उसे अपने खादिमों का 'ऐतबार नहीं, और वह अपने फ़रिश्तों पर हिमाक़त को 'आइद करता है।¹⁹फिर भला उनकी क्या हक़ीक़त है, जो मिट्टी के मकानों में रहते हैं। जिनकी बुनियाद खाक में है, और जो पतंगे से भी जल्दी पिस जाते हैं।

²⁰वह सुबह से शाम तक हलाक होते हैं, वह हमेशा के लिए फ़ना हो जाते हैं, और कोई उनका ख़याल भी नहीं करता।²¹क्या उनके खेमे की डोरी उनके अन्दर ही अन्दर तोड़ी नहीं जाती? वह मरते हैं और यह भी बग़ैर दानाई के। '

Chapter 5

¹~ज़रा पुकार ~क्या कोई है जो तुझे जवाब देगा? और मुकद्दसों में से तू किसकी तरफ़ फिरेगा?²क्यूँकि कुढ़ना बेवकूफ़ को मार डालता है, और जलन~बेवकूफ़~की जान ले लेती है।³मैंने बेवकूफ़ को जड़ पकड़ते देखा है, लेकिन बराबर उसके घर पर ला'नत की।

⁴उसके बाल-बच्चे सलामती से दूर हैं; वह फाटक ही पर कुचले जाते हैं, और कोई नहीं जो उन्हें छुड़ाए।⁵भूका उसकी फ़सल को खाता है, बल्कि उसे काँटों में से भी निकाल लेता है। और प्यासा उसके माल को निगल जाता है।

⁶क्यूँकि मुसीबत मिट्टी में से नहीं उगती। न दुख ज़मीन में से निकलता है।⁷बस जैसे चिंगारियाँ ऊपर ही को उड़ती हैं, वैसे ही इन्सान दुख के लिए पैदा हुआ है।

⁸लेकिन मैं तो खुदा ही का तालिब रहूँगा, और अपना मु'आमिला खुदा ही पर छोड़ूँगा।⁹जो ऐसे बड़े बड़े काम जो बयान नहीं हो सकते, और बेशुमार 'अजीब काम करता है।¹⁰वही ज़मीन पर पानी बरसाता, और खेतों में पानी भेजता है।

¹¹~इसी तरह वह हलीमों को ऊँची जगह पर बिठाता है, और मातम करनेवाले सलामती की सरफ़राज़ी पाते हैं।¹²वह 'अय्यारों की तदबीरों को बातिल कर देता है। यहाँ तक कि उनके हाथ उनके मक़सद को पूरा नहीं कर सकते।¹³वह होशियारों की उन ही की चालाकियों में फसाता है, और टेढ़े लोगों की मशवरेत जल्द जाती रहती है।

¹⁴उन्हें दिन दहाड़े अँधेरे से पाला पड़ता है, और वह दोपहर के वक़्त ऐसे टटोलते फिरते हैं जैसे रात को।¹⁵लेकिन मुफ़लिस को उनके मुँह की तलवार, और ज़बरदस्त के हाथ से वह बचालेता है।¹⁶~जो ग़रीब को उम्मीद रहती है, और बदकारी अपना मुँह बंद कर लेती है।

¹⁷देख, वह आदमी जिसे खुदा तम्बीह देता है खुश किस्मत है। इसलिए कादिर-ए-मुतलक़ की तादीब को बेकार न जान।¹⁸क्यूँकि वही मजरूह करता और पट्टी बाँधता है। वही ज़ख्मी करता है और उसी के हाथ शिफ़ा देते हैं।¹⁹~वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा, बल्कि सात में भी कोई आफ़त तुझे छूने न पाएगी।

²⁰काल में वह तुझ को मौत से बचाएगा, और लड़ाई में तलवार की धार से।²¹तू ज़बान के कोड़े से महफूज़" रखा जाएगा, और जब हलाकत आएगी तो तुझे डर नहीं लगेगा।²²तू हलाकत और खुशक साली पर हँसेगा, और ज़मीन के दरिन्दों से तुझे कुछ ख़ौफ़ न होगा।

²³मैदान के पत्थरों के साथ तेरा एका होगा, और जंगली जानवर तुझ से मेल रखेंगे।²⁴और तू जानेगा कि तेरा खेमा महफूज़ है, और तू अपने घर में जाएगा और कोई चीज़ गाएब न जाएगा।²⁵तुझे यह भी मा'लूम होगा कि तेरी नसल बड़ी, और तेरी औलाद ज़मीन की घास की तरह बढ़ेगी।

²⁶~तू पूरी 'उम्र में अपनी क़ब्र में जाएगा, जैसे अनाज के पूले अपने वक़्त पर जमा' किए जाते हैं।²⁷देख, हम ने इसकी तहकीक़ की और यह बात यूँ ही है। इसे सुन ले और अपने फ़ायदे के लिए इसे याद रख। "

Chapter 6

¹तब अय्यूब ने जवाब दिया 'काश कि मेरा कुढ़ना तोला जाता, और मेरी सारी मुसीबत तराजू में रखी जाती!' ³तो वह समन्दर की रेत से भी भारी होती; इसी लिए मेरी बातें घबराहट की हैं।

⁴क्योंकि क्रादिर-ए-मुतलक के तीर मेरे अन्दर लगे हुए हैं; मेरी रूह उन ही के ज़हर को पी रही है। खुदा की डरावनी बातें मेरे खिलाफ़ सफ़ बाँधे हुए हैं। ⁵क्या जंगली गधा उस वक्रत भी चिल्लाता है जब उसे घास मिल जाती है? या क्या बैल चारा पाकर डकारता है? ⁶क्या फीकी चीज़ बे नमक खायी जा सकता है? या क्या अंडे की सफ़ेदी में कोई मज़ा है?

⁷मेरी रूह को उनके छूने से भी इंकार है, वह मेरे लिए मकरूह गिज़ा हैं। ⁸काश कि मेरी दरखास्त मंज़ूर होती, और खुदा मुझे वह चीज़ बख़्शता जिसकी मुझे आरजू है। ⁹या 'नी खुदा को यही मंज़ूर होता कि मुझे ~कुचल डाले, और अपना हाथ चलाकर मुझे काट डाले।

¹⁰तो मुझे तसल्ली होती, बल्कि ~मैं उस अटल दर्द में भी शादमान रहता; क्योंकि मैंने उस पाक बातों का इन्कार नहीं किया। ¹¹मेरी ताक़त ही क्या है जो मैं ठहरा रहूँ? और मेरा अन्जाम ही क्या है जो मैं सब्र करूँ ?

¹²क्या मेरी ताक़त पत्थरों की ताक़त है? या मेरा जिस्म पीतल का है? ¹³~क्या बात यही नहीं कि मैं लाचार हूँ, और काम करने की ताक़त मुझ से जाती रही है?

¹⁴उस पर जो कमज़ोर होने को है उसके दोस्त की तरफ़ से मेहरबानी होनी चाहिए, बल्कि उस पर भी जो क्रादिर-ए-मुतलक का ख़ौफ़ छोड़ देता है। ¹⁵मेरे भाइयों ने नाले की तरह दगा की, उन वादियों के नालों की तरह जो सूख जाते हैं। ¹⁶जो जड़ की वजह से काले हैं, और जिनमें बर्फ़ छिपी है। ¹⁷जिस वक्रत वह गर्म होते हैं तो गायब हो जाते हैं, और जब गर्मी पड़ती है तो अपनी जगह से उड़ जाते हैं।

¹⁸क्राफ़िले अपने रास्ते से मुड़ जाते हैं, और वीराने में जाकर हलाक हो जाते हैं। ¹⁹तैमा के क्राफ़िले देखते रहे, सबा के कारवाँ उनके इन्तिज़ार में रहे। ²⁰वह शर्मिन्दा हुए क्योंकि उन्होंने उम्मीद की थी, वह वहाँ आए और पशेमान हुए।

²¹इसलिए तुम्हारी भी कोई हकीक़त नहीं; तुम डरावनी चीज़ देख कर डर जाते हो। ²²~क्या मैंने कहा, 'कुछ मुझे दो?' या 'अपने माल में से मेरे लिए रिश्त दो?' ²³या 'मुख़ालिफ़ के हाथ से मुझे बचाओ?' या 'ज़ालिमों के हाथ से मुझे छुड़ाओ?'

²⁴मुझे समझाओ और मैं खामोश रहूँगा, और मुझे समझाओ कि मैं किस बात में चूका। ²⁵रास्ती की बातों में कितना असर होता है, बल्कि तुम्हारी बहस से क्या फ़ायदा होता है।

²⁶क्या तुम इस ख़्याल में हो कि लफ़्ज़ों की तक्रार' करो? इसलिए कि मायूस की बातें हवा की तरह होती हैं। ²⁷हाँ, तुम तो यतीमों पर कुर'आ डालने वाले, और अपने दोस्त को तिजारत का माल बनाने वाले हो।

²⁸इसलिए ज़रा मेरी तरफ़ निगाह करो, क्योंकि ~तुम्हारे मुँह पर मैं हरगिज़ झूट न बोलूँगा। ²⁹मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ बाज़ आओ बे इन्साफ़ी न करो। ~मैं हक़ पर हूँ। ³⁰क्या मेरी ज़बान पर बे इन्साफ़ी है ? क्या फ़ितना अंग्रेज़ी की बातों के पहचानने का मुझे सलीका नहीं ?

Chapter 7

¹"क्या इन्सान के लिए ज़मीन पर जंग-ओ-जदल नहीं?~और क्या उसके दिन मज़दूर के जैसे नहीं होते?²जैसे नौकर साये की बड़ी आरज़ू करता है, और मज़दूर अपनी उजरत का मुंताज़िर रहता है;³वैसे ही मैं बुतलान के महीनों का मालिक बनाया गया हूँ, और मुसीबत की रातें मेरे लिए ठहराई गई हैं।

⁴जब मैं लेटता हूँ तो कहता हूँ, 'कब उठूँगा?' लेकिन रात लम्बी होती है; और दिन निकलने तक इधर-उधर करवटें बदलता रहता हूँ।⁵मेरा जिस्म कीड़ों और मिट्टी के ढेलों से ढका है। मेरी खाल सिमटती और फिर नासूर हो जाती है।

⁶मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से भी तेज़ और बग़ैर उम्मीद के गुज़र जाते हैं।⁷आह, याद कर कि मेरी ज़िन्दगी हवा है, और मेरी आँख खुशी को फिर न देखेगी।

⁸~जो मुझे अब देखता है उसकी आँख मुझे फिर न देखेगी। तेरी आँखें तो मुझ पर होंगी लेकिन मैं न हूँगा।⁹जैसे बादल फटकर गायब हो जाता है, वैसे ही वह जो क़ब्र में उतरता है फिर कभी ऊपर नहीं आता;¹⁰वह अपने घर को फिर न लौटेगा, न उसकी जगह उसे फिर पहचानेगी।

¹¹इसलिए मैं अपना मुँह बंद नहीं रखूँगा; मैं अपनी रूह की तलखी में बोलता जाऊँगा। मैं अपनी जान के 'अज़ाब में शिकवा करूँगा।¹²क्या मैं समन्दर हूँ या मगरमच्छ', जो तू मुझ पर पहरा बिठाता है?

¹³जब मैं कहता हूँ। मेरा बिस्तर मुझे आराम पहुँचाएगा, मेरा बिछौना मेरे दुख को हल्का करेगा।¹⁴तो तू ख्वाबों से मुझे डराता, और दीदार से मुझे तसल्ली देता है;

¹⁵यहाँ तक कि मेरी जान फाँसी, और मौत को मेरी इन हड्डियों पर तरजीह देती है।

¹⁶मुझे अपनी जान से नफ़रत है; मैं हमेशा तक ज़िन्दा रहना नहीं चाहता। मुझे छोड़ दे क्योंकि मेरे दिन खराब हैं।¹⁷इन्सान की औकात~ही क्या है जो तू उसे सरफ़राज़ करे, और अपना दिल उस पर लगाए;¹⁸और हर सुबह उसकी खबर ले, और हर लम्हा उसे आज़माए?

¹⁹तू कब तक अपनी निगाह मेरी तरफ़ से नहीं हटाएगा, और मुझे इतनी भी मोहलत नहीं देगा कि अपना थूक निगल लें?²⁰~ऐ बनी आदम के नाज़िर, अगर मैंने गुनाह किया है तो तेरा क्या बिगाड़ता हूँ? तूने क्यूँ मुझे अपना निशाना बना लिया है, यहाँ तक कि मैं अपने आप पर बोझ हूँ?

²¹तू मेरा गुनाह क्यूँ नहीं मु'आफ़ करता, और मेरी बदकारी क्यूँ नहीं दूर कर देता? अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊँगा, और तू मुझे खूब ढूँढ़ेगा लेकिन मैं न हूँगा। "

Chapter 8

¹तब बिलदद सूखी कहने लगा, ²तू कब तक ऐसे ही बकता रहेगा, और तेरे मुँह की बातें कब तक आँधी की तरह होंगी? ³क्या खुदा बेइन्साफ़ी करता है? क्या क़ादिर-ए-मुतलक़ इन्साफ़ का खून करता है?

⁴अगर तेरे फ़र्ज़न्दों ने उसका गुनाह किया है, और उसने उन्हें उन ही की ~ख़ता के हवाले कर दिया। ⁵~तोभी अगर तू खुदा को खूब ढूँडता, और क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने मिन्नत करता,

⁶तो अगर तू पाक दिल और रास्तबाज़ होता, तो वह ज़रूर अब तेरे लिए बेदार हो जाता, और तेरी रास्तबाज़ी के घर को बढ़ाता। ⁷और अगरचे तेरा आगाज़ छोटा सा था, तोभी तेरा अंजाम बहुत बड़ा होता

⁸ज़रा पिछले ज़माने के लोगों से पूँछ और जो कुछ उनके बाप दादा ने तहक़ीक़ की है उस पर ध्यान कर। ⁹क्योंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते और हमारे दिन ज़मीन पर साये की तरह हैं। ¹⁰क्या वह तुझे न सिखाएँगे और न बताएँगे और अपने दिल की बातें नहीं करेंगे?

¹¹क्या नागरमोँथा बग़ैर कीचड़ के उग सकता है क्या ~सरकंडा बिना पानी ~के बढ़ सकता है ? ¹²जब वह हरा ही है और काटा भी नहीं गया तोभी और पौदों से पहले सूख जाता है।

¹³ऐसी ही उन सब की राहें हैं, जो खुदा को भूल जाते हैं बे खुदा आदमी की उम्मीद टूट जाएगी। ¹⁴उसका ऐतमा'द जाता रहेगा और उसका भरोसा मकड़ी का जाला है। ¹⁵वह अपने घर पर टेक लगाएगा लेकिन वह खड़ा न रहेगा, वह उसे मज़बूती से थामेगा लेकिन वह क़ायम न रहेगा।

¹⁶वह धूप पाकर हरा भरा हो जाता है और उसकी डालियाँ उसी के बाग़ में फैलती हैं। ¹⁷उसकी जड़ें ढेर में लिपटी हुई रहती हैं, ~वह पत्थर की जगह को देख लेता है। ¹⁸अगर वह अपनी जगह से हलाक़ किया जाए तो वह उसका इन्कार करके कहने लगेंगी, कि मैंने तुझे देखा ही नहीं।

¹⁹देख उसके रस्ते की खुशी इतनी ही है, और मिट्टी में से दूसरे उग आएँगे। ²⁰देख खुदा कामिल आदमी को छोड़ न देगा, न वह बदकिरदारों को सम्भालेगा।

²¹वह अब भी तेरे मुँह को हँसी से भर देगा और तेरे लबों की ललकार की आवाज़ से। ²²तेरे नफ़रत करने वाले शर्म का जामा' पहनेंगे और शरीरों का खेमा क़ायम न रहेगा

Chapter 9

¹फिर अय्यूब ने जवाब दिया²दर हकीकत में मैं जानता हूँ कि बात यूँ ही है, लेकिन इन्सान खुदा के सामने कैसे रास्तबाज़ ठहरे।³अगर वह उससे बहस करने को राज़ी भी हो, यह तो हजार बातों में से उसे एक का भी जवाब न दे सकेगा।

⁴वह दिल का 'अक्लमन्द और ताक़त में ज़ोरआवर है, किसी ने हिम्मत करके उसका सामना किया है और बढ़ा हो।⁵वह पहाड़ों को हटा देता है और उन्हें पता भी नहीं लगता वह अपने क्रहर में उलट देता है।⁶वह ज़मीन को उसकी जगह से हिला देता है, और उसके सुतून काँपने लगते हैं।

⁷वह सूरज को हुक्म करता है और वह तुलू नहीं होता है, और सितारों पर मुहर लगा देता है⁸वह आसमानों को अकेला तान देता है, और समन्दर की लहरों पर चलता है⁹उसने बनात-उन-नाश और जब्बार और सुरैया और जुनूब के बुजों' को बनाया।

¹⁰वह बड़े बड़े काम जो बयान नहीं हो सकते, और बेशुमार अजीब काम करता है।¹¹देखो, वह मेरे पास से गुज़रता है लेकिन मुझे दिखाई नहीं देता; वह आगे भी बढ़ जाता है लेकिन मैं उसे नहीं देखता।¹²देखो, वह शिकार पकड़ता है; कौन उसे रोक सकता है? कौन उससे कहेगा कि तू क्या करता है?

¹³~"खुदा अपने गुस्से को नहीं हटाएगा। रहब' के मददगार उसके नीचे झुकजाते हैं।¹⁴फिर मेरी क्या हकीकत है कि मैं उसे जवाब दूँ और उससे बहस करने को अपने लफ़्ज़ छोट छोट कर निकालूँ?¹⁵उसे तो मैं अगर सादिक भी होता तो जवाब न देता। मैं अपने मुखालिफ़ की मिन्नत करता।

¹⁶अगर वह मेरे पुकारने पर मुझे जवाब भी देता, तोभी मैं यकीन न करता कि उसने मेरी आवाज़ सुनी।¹⁷वह तूफ़ान से मुझे तोड़ता है, और बे वजह मेरे ज़ख्मों को ज़्यादा करता है।¹⁸वह मुझे दम नहीं लेने देता, बल्कि मुझे तलखी से भरपूर करता है।

¹⁹अगर ज़ोरआवर की ताक़त का ज़िक्र हो, तो देखो वह है। और अगर इन्साफ़ का, तो मेरे लिए वक़्त कौन ठहराएगा?²⁰अगर मैं सच्चा भी हूँ, तोभी मेरा ही मुँह मुझे मुल्जिम ठहराएगा। और अगर मैं कामिल भी हूँ तोभी यह मुझे आलसी साबित करेगा।

²¹मैं कामिल तो हूँ, लेकिन अपने को कुछ नहीं समझता; मैं अपनी ज़िन्दगी को बेकार जानता हूँ।²²यह सब एक ही बात है, इसलिए मैं कहता हूँ कि वह कामिल और शरीर दोनों को ~हलाक कर देता है।²³अगर वबा अचानक हलाक करने लगे, तो वह बेगुनाह की आजमाइश का मज़ाक़ उड़ाता है।²⁴ज़मीन शरीरों को हवाले कर दी गई है। वह उसके हाकिमों के मुँह ढाँक देता है। अगर वही नहीं तो और कौन है?

²⁵मेरे दिन हरकारों से भी तेज़रू हैं। वह उड़े चले जाते हैं और खुशी नहीं देखने पाते।²⁶~वह तेज़ जहाज़ों की तरह निकल गए, और उस उक्ताब की तरह जो शिकार पर झपटता हो।

²⁷अगर मैं कहूँ, कि 'मैं अपना ग़म भुला दूँगा, और उदासी' छोड़कर दिलशाद हूँगा,²⁸तो मैं अपने दुखों से डरता हूँ, मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह न ठहराएगा।

²⁹मैं तो मुल्जिम ठहरूँगा; फिर मैं 'तो मैं ज़हमत क्यों उठाऊँ?

³⁰अगर मैं अपने को बर्फ़ के पानी से धोऊँ, और अपने हाथ कितने ही साफ़ करूँ |³¹तोभी तू मुझे खाई में गोता देगा, और मेरे ही कपड़े मुझ से घिन खाएँगे।

³²क्योंकि वह मेरी तरह आदमी नहीं कि मैं उसे जवाब दूँ, और हम 'अदालत में एक साथ हाज़िर हों।³³हमारे बीच कोई बिचवानी नहीं, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे।

³⁴वह अपनी लाठी मुझ से हटा ले, और उसकी डरावनी बात मुझे ~परेशान न करे।³⁵तब मैं कुछ कहूँगा और उससे डरने का नहीं, क्योंकि अपने आप में तो मैं ऐसा नहीं हूँ।

Chapter 10

¹‘मेरी रूह मेरी ज़िन्दगी से परेशान है; मैं अपना शिकवा खूब दिल खोल कर करूँगा। मैं अपने दिल की तल्खी में बोलूँगा’।²मैं खुदा से कहूँगा, मुझे मुल्जिम न ठहरा; मुझे बता कि तू मुझ से क्यों झगड़ता है।³क्या तुझे अच्छा लगता है, कि अँधेर करे, और अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ को बेकार जाने, और शरीरों की बातों की रोशनी करे?

⁴क्या तेरी आँखें गोश्त की हैं? या तू ऐसे देखता है जैसे आदमी देखता है?⁵क्या तेरे दिन आदमी के दिन की तरह, और तेरे साल इन्सान के दिनों की तरह हैं, कि तू मेरी बदकारी को पूछता, और मेरा गुनाह ढूँडता है?⁷क्या तुझे मा'लूम है कि मैं शरीर नहीं हूँ, और कोई नहीं जो तेरे हाथ से छुड़ा सके?

⁸तेरे ही हाथों ने मुझे बनाया और सरासर जोड़ कर कामिल किया। फिर भी तू मुझे हलाक करता है।⁹याद कर कि तूने गुंधी हुई मिट्टी की तरह मुझे बनाया, और क्या तू मुझे फिर खाक में मिलाएगा?

¹⁰क्या तूने मुझे दूध की तरह नहीं उंडेला, और पनीर की तरह नहीं जमाया?¹¹फिर तूने मुझ पर चमड़ा और गोश्त चढ़ाया, और हड्डियों और नसों से मुझे जोड़ दिया।

¹²तूने मुझे जान बख्शी और मुझ पर करम किया, और तेरी निगहबानी ने मेरी रूह सलामत रखी।¹³तोभी तूने यह बातें तूने अपने दिल में छिपा रखी थीं। मैं जानता हूँ कि तेरा यही इरादा है कि¹⁴अगर मैं गुनाह करूँ, तो तू मुझ पर निगरान होगा; और तू मुझे मेरी बदकारी से बरी नहीं करेगा।

¹⁵अगर मैं गुनाह करूँ तो मुझ पर अफ़सोस! अगर मैं सच्चा बनूँ तोभी अपना सिर नहीं उठाने का, क्योंकि मैं ज़िल्लत से भरा हूँ, और अपनी मुसीबत को देखता रहता हूँ।¹⁶और अगर सिर उठाऊँ, तो तू शेर की तरह मुझे शिकार करता है और फिर 'अजीब सूरत में मुझ पर ज़ाहिर होता है।

¹⁷तू मेरे खिलाफ़ नए नए गवाह लाता है, और अपना क्रहर मुझ पर बढ़ाता है; नई नई फ़ौजें मुझ पर चढ़ आती हैं।

¹⁸इसलिए तूने मुझे रहम से निकाला ही क्यों? मैं जान दे देता और कोई आँख मुझे देखने न पाती।¹⁹मैं ऐसा होता कि गोया मैं था ही नहीं मैं रहम ही से क्रब्र में पहुँचा दिया जाता।

²⁰क्या मेरे दिन थोड़े से नहीं? बाज़ आ, और मुझे छोड़ दे ताकि मैं कुछ राहत पाऊँ।²¹इससे पहले कि मैं वहाँ जाऊँ, जहाँ से फिर न लौटूँगा या'नी तारीकी और मौत और साये की सर ज़मीन को :²²गहरी तारीकी की सर ज़मीन जो खुद तारीकी ही है; मौत के साये की सर ज़मीन जो बे तरतीब है, और जहाँ रोशनी भी ऐसी है जैसी तारीकी। ”

Chapter 11

¹तब जूफ़र नामाती ने जवाब दिया, ²क्या इन बहुत सी बातों का जवाब न दिया जाए? और क्या बकवासी आदमी रास्त ठहराया जाए? ³क्या तेरे बड़े बोल लोगों को खामोश करदे? और जब तू ठठा करे तो क्या कोई तुझे शर्मिन्दा न करे?

⁴क्योंकि तू कहता है, 'मेरी ता'लीम पाक है, और मैं तेरी निगाह में बेगुनाह हूँ।' ⁵काश खुदा खुद बोले, और तेरे खिलाफ़ अपने लबों को खोले। ⁶और हिकमत के आसार तुझे दिखाए कि वह तासीर में बहुत बड़ा है। इसलिए जान ले कि तेरी बदकारी जिस लायक़ है उससे कम ही खुदा तुझ से मुतालबा करता है।

⁷क्या तू तलाश से खुदा को पा सकता है? क्या तू क़ादिर-ए-मुतलक़ का राज़ पूरे तौर से बयान कर सकता है? ⁸वह आसमान की तरह ऊँचा है, तू क्या कर सकता है? वह पाताल सा ~गहरा है, तू क्या जान सकता है? ⁹उसकी नाप ज़मीन से लम्बी और समन्दर से चौड़ी है

¹⁰अगर वह बीच से गुज़र कर बंद कर दे, और 'अदालत में बुलाए तो कौन उसे रोक सकता है?' ¹¹क्योंकि वह बेहूदा आदमियों को पहचानता है, और बदकारी को भी देखता है, चाहे उसका ख़याल न करे? ¹²लेकिन बेहूदा आदमी समझ से ख़ाली होता है, बल्कि ~इन्सान गधे के बच्चे की तरह पैदा होता है।

¹³अगर तू अपने दिल को ठीक करे, और अपने हाथ उसकी तरफ़ फैलाए, ¹⁴अगर तेरे हाथ में बदकारी हो तो उसे दूर करे, और नारास्ती को अपने खेमों में रहने न दे,

¹⁵तब यकीनन तू अपना मुँह बे दाग़ उठाएगा, बल्कि तू साबित क़दम हो जाएगा और डरने का नहीं। ¹⁶क्योंकि तू अपनी खस्ताहाली को भूल जाएगा, तू उसे उस पानी की तरह याद करेगा जो बह गया हो। ¹⁷और तेरी ज़िन्दगी दोपहर से ज़्यादा रोशन होगी, और अगर तारीकी हुई तो वह सुबह की तरह होगी।

¹⁸और तू मुतम'इन रहेगा, क्योंकि उम्मीद होगी और अपने चारों तरफ़ देख देख कर सलामती से आराम करेगा। ¹⁹और तू लेट जाएगा, और कोई तुझे डराएगा नहीं बल्कि ~बहुत से लोग तुझ से फ़रियाद करेंगे।

²⁰लेकिन शरीरों की आँखें रह जाएँगी, उनके लिए भागने को भी रास्ता न होगा, और जान दे देना ही उनकी उम्मीद होगी। "

Chapter 12

¹तब अय्यूब ने जवाब दिया, ²बेशक आदमी तो तुम ही हो" और हिकमत तुम्हारे ही साथ मरेगी। ³लेकिन मुझ में भी समझ है, जैसे तुम में है, मैं तुम से कम नहीं। भला ऐसी बातें जैसी यह हैं, कौन नहीं जानता?

⁴मैं उस आदमी की तरह हूँ जो अपने पड़ोसी के लिए हँसी का निशाना बना है। मैं वह आदमी था जो खुदा से दु'आ करता और वह उसकी सुन लेता था। रास्तबाज़ और कामिल आदमी हँसी का निशाना होता ही है। ⁵जो चैन से है उसके खयाल में दुख के लिए हिकारत होती है; यह उनके लिए तैयार रहती है जिनका पाँव फिसलता है। ⁶डाकुओं के खेमे सलामत रहते हैं, और जो खुदा को गुस्सा दिलाते हैं, वह महफूज़ रहते हैं; उन ही के हाथ को खुदा खूब भरता है। ⁷हैवानों से पूछ और वह तुझे सिखाएँगे, और हवा के परिन्दों से दरियाप्राप्त कर और वह तुझे बताएँगे। ⁸या ज़मीन से बात कर, वह तुझे सिखाएगी; और समन्दर की मछलियाँ तुझ से बयान करेंगी।

⁹कौन नहीं जानता कि इन सब बातों में खुदावन्द ही का हाथ है जिसने यह सब बनाया? ¹⁰उसी के हाथ में हर जानदार की जान, और कुल बनी आदम की जान ~ताक़त ~है।

¹¹क्या कान बातों को नहीं परख लेता, जैसे ज़बान खाने को चख लेती है? ¹²बुद्धों में समझ होती है, और 'उम्र की दराज़ी में समझदारी।

¹³खुदा में समझ और कुव्वत है, उसके पास मसलहत और समझ है। ¹⁴देखो, वह ढा देता है तो फिर बनता नहीं। वह आदमी को बंद कर देता है, तो फिर खुलता नहीं। ¹⁵देखो, वह मेंह को रोक लेता है, तो पानी सूख जाता है। फिर जब वह उसे भेजता है, तो वह ज़मीन को उलट देता है।

¹⁶उसमें ताक़त और ता'सीर की कुव्वत है। धोका खाने वाला और धोका देने वाला दोनों उसी के हैं। ¹⁷वह सलाहकारों को लुटवा कर गुलामी में ले जाता है, और 'अदालत करने वालों को बेवकूफ़ बना देता है। ¹⁸वह शाही बन्धनों को खोल डालता है, और बादशाहों की कमर पर पटका बाँधता है।

¹⁹वह काहिनों को लुटवाकर गुलामी में ले जाता, और ज़बरदस्तों को पछाड़ देता है। ²⁰वह 'ऐतमाद वाले की कुव्वत-ए-गोयाई दूर करता और बुजुर्गों की समझदारी को' छीन लेता है। ²¹वह हाकिमों पर हिकारत बरसाता, और ताक़तवरों की कमरबंद को खोल डालता' है।

²²वह अँधेरे में से गहरी बातों को ज़ाहिर करता, और मौत के साये को भी रोशनी में ले आता है। ²³वह क्रौमों को बढ़ाकर उन्हें हलाक कर डालता है; वह क्रौमों को फैलाता और फिर उन्हें समेट लेता है।

²⁴वह ज़मीन की क्रौमों के सरदारों की 'अक़ल उड़ा देता ~और उन्हें ऐसे वीरान में भटका देता है जहाँ रास्ता नहीं। ²⁵वह रोशनी के बग़ैर तारीकी में टटोलते फिरते हैं, और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि मतवाले की तरह लड़खड़ाते हुए चलते हैं।

Chapter 13

¹"मेरी आँख ने तो यह सब कुछ देखा है, मेरे कान ने यह सुना और समझ भी लिया है।²जो कुछ तुम जानते हो उसे मैं भी जानता हूँ, मैं तुम से कम नहीं।

³मैं तो क्रादिर-ए-मुतलक से गुप्तगू करना चाहता हूँ, मेरी आरजू है कि खुदा के साथ बहस करूँ⁴लेकिन तुम लोग तो झूठी बातों के गढ़ने वाले हो; तुम सब के सब निकम्मे हकीम हो।⁵काश तुम बिल्कुल खामोश हो जाते, यही तुम्हारी 'अक्लमन्दी' होती।

⁶अब मेरी दलील सुनो, और मेरे मुँह के दा'वे पर कान लगाओ।⁷क्या तुम खुदा के हक़ में नारास्ती से बातें करोगे, और उसके हक़ में धोके से बोलोगे?⁸क्या तुम उसकी तरफ़दारी करोगे? क्या तुम खुदा की तरफ़ से झगड़ोगे?

⁹क्या यह अच्छा होगा कि वह तुम्हारा जाएज़ा करें? क्या तुम उसे धोका दोगे जैसे आदमी को?¹⁰~वह ज़रूर तुम्हें मलामत करेगा जो तुम खुफ़िया तरफ़दारी करो , ~|

¹¹क्या उसका जलाल तुम्हें डरा न देगा, और उसका रौ'ब तुम पर छा न जाएगा?¹²तुम्हारी छुपी बातें राख की कहावतें हैं, तुम्हारी दीवारें मिट्टी की दीवारें हैं।

¹³तुम चुप रहो, मुझे छोड़ो ताकि मैं बोल सकूँ, और फिर मुझ पर जो बीते सो बीते।¹⁴मैं अपना ही गोश्त अपने दाँतों से क्यूँ चबाऊँ; और अपनी जान अपनी हथेली पर क्यूँ रखूँ?¹⁵देखो, वह मुझे क़त्ल करेगा, मैं इन्तिज़ार नहीं करूँगा। बहर हाल मैं अपनी राहों की ता'ईद उसके सामने करूँगा।

¹⁶यह भी मेरी नज़ात के ज़रिए' होगा, क्यूँकि ~कोई बेखुदा उसके बराबर आ नहीं सकता।¹⁷मेरी तक़रीर को ग़ौर से सुनो, और मेरा बयान तुम्हारे कानों में पड़े।

¹⁸देखो, मैंने अपना दा'वा दुरुस्त कर लिया है; मैं जानता हूँ कि मैं सच्चा हूँ।¹⁹कौन है जो मेरे साथ झगड़ेगा? क्यूँकि फिर तो मैं चुप हो कर अपनी जान दे दूँगा।

²⁰सिर्फ़ दो ही काम मुझ से न कर, तब मैं तुझ से नहीं छिपूँगा :²¹अपना हाथ मुझ से दूर हटाले, और तेरी हैबत मुझे ख़ौफ़ ज़दा न करे।²²तब तेरे बुलाने पर मैं जवाब दूँगा; या मैं बोलूँ और तू मुझे जवाब दे।

²³मेरी बदकारियाँ और गुनाह कितने हैं? ऐसा कर कि मैं अपनी ख़ता और गुनाह को जान लूँ।²⁴तू अपना मुँह क्यूँ छिपाता है, और मुझे अपना दुश्मन क्यूँ जानता है?²⁵~क्या तू उड़ते पत्ते को परेशान करेगा? क्या तू सूखे डंठल के पीछे पड़ेगा?

²⁶क्यूँकि तू मेरे खिलाफ़ तल्ख़ बातें लिखता है, और मेरी जवानी की बदकारियाँ मुझ पर वापस लाता है"।²⁷तू मेरे पाँव काठ में ठोकता, और मेरी सब राहों की निगरानी करता है; और मेरे पाँव के चारों तरफ़ बाँध खींचता ~है।²⁸अगरचे मैं सड़ी हुई चीज़ की तरह हूँ, जो फ़ना हो जाती है। या उस कपड़े की तरह ~हूँ जिसे कीड़े ने खा लिया हो।

Chapter 14

¹इन्सान जो 'औरत से पैदा होता है थोड़े दिनों का है, और दुख से भरा है।' वह फूल की तरह निकलता, और काट डाला जाता है। वह साए की तरह उड़ जाता है और ठहरता नहीं।³इसलिए क्या तू ऐसे पर अपनी आँखें खोलता है; और मुझे अपने साथ 'अदालत में घसीटता है?

⁴नापाक चीज़ में से पाक चीज़ कौन निकाल सकता है? कोई नहीं।⁵उसके दिन तो ठहरे हुए हैं, और उसके महीनों की ता'दाद तेरे पास है; और तू ने उसकी हदों को मुकर्रर कर दिया है, जिन्हें वह पार नहीं कर सकता।⁶इसलिए उसकी तरफ़ से नज़र हटा ले ताकि वह आराम करे, जब तक वह मज़दूर की तरह अपना दिन पूरा न कर ले।

⁷"क्योंकि दरख्त की तो उम्मीद रहती है कि अगर वह काटा जाए तो फिर फूट निकलेगा, और उसकी नर्म नर्म डालियाँ खत्म न होंगी।⁸अगरचे उसकी जड़ ज़मीन में पुरानी हो जाए, और उसका तना मिट्टी में गल जाए,⁹तोभी पानी की बू पाते ही वह नए अखुवे लाएगा, और पौदे की तरह शाखें निकालेगा।

¹⁰लेकिन इन्सान मर कर पड़ा रहता है, बल्कि ~इन्सान जान छोड़ देता है, और फिर वह कहाँ रहा?¹¹जैसे झील" का पानी खत्म हो जाता, और दरिया उतरता और सूख जाता है,¹²वैसे आदमी लेट जाता है और उठता नहीं; जब तक आसमान टल न जाए, वह बेदार न होंगे; और न अपनी नींद से जगाए जाएँगे।

¹³काश कि तू मुझे पाताल में छिपा दे, और जब तक तेरा क्रहर टल न जाए, मुझे पोशीदा रखे; और कोई मुकर्ररा वक्त मेरे लिए ठहराए और मुझे याद करे।

¹⁴अगर आदमी मर जाए तो क्या वह फिर जिएगा? मैं अपनी जंग के सारे दिनों में मुन्तज़िर रहता जब तक मेरा छुटकारा" न होता।

¹⁵तू मुझे पुकारता और मैं तुझे जवाब देता; तुझे अपने हाथों की सन'अत की तरफ़ ख्वाहिश होती।¹⁶लेकिन अब तो तू मेरे क्रदम गिनता है; क्या तू मेरे गुनाह की ताक में लगा नहीं रहता?¹⁷मेरी खता थैली में सरब-मुहर है, तू ने मेरे गुनाह को सी रखखा है।

¹⁸यक़ीनन पहाड़ गिरते गिरते खत्म हो जाता है, और चट्टान अपनी जगह से हटा दी जाती है।¹⁹पानी पत्थरों को घिसा डालता है, उसकी बाढ़ ज़मीन की खाक को बहाले जाती है; इसी तरह तू इन्सान की उम्मीद को मिटा देता है।

²⁰तू हमेशा उस पर ग़ालिब होता है, इसलिए वह गुज़र जाता है। तू उसका चेहरा बदल डालता और उसे खारिज कर देता है।²¹उसके बेटों की 'इज़ज़त होती है, लेकिन उसे खबर नहीं। वह ज़लील होते हैं लेकिन वह उनका हाल' नहीं जानता।²²बल्कि उसका गोश्त जो उसके ऊपर है, दुखी रहता; और उसकी जान उसके अन्दर ही अन्दर ग़म खाती रहती है। "

Chapter 15

¹तब अलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,²क्या 'अक्लमन्द को चाहिए कि फ़ुज़ूल बातें जोड़ कर जवाब दे, और पूरबी हवा से अपना पेट भरे ?³क्या वह बेफ़ाइदा बक्रवास से बहस करे या ऐसी तक़रीरों से जो बे फ़ाइदा हैं ?

⁴बल्कि तू ख़ौफ़ को नज़र अन्दाज़ करके, ख़ुदा के सामने 'इबादत को ज़ायल करता है।⁵क्योंकि तेरा गुनाह तेरे मुँह को सिखाता है, और तू रियाकारों की ज़बान इख़्तियार करता है।⁶तेरा ही मुँह तुझे मुल्ज़िम ठहराता है न कि मैं, बल्कि तेरे ही होंट तेरे खिलाफ़ गवाही देते हैं।

⁷क्या पहला इन्सान तू ही पैदा हुआ? या पहाड़ों से पहले तेरी पैदाइश हुई?⁸क्या तू ने ख़ुदा की पोशीदा मसलहत सुन ली है, और अपने लिए 'अक्लमन्दी का ठेका ले रखखा है?⁹तू ऐसा क्या जानता है, जो हम नहीं जानते? तुझ में ऐसी क्या समझ है जो हम में नहीं?

¹⁰हम लोगों में सिर सफ़ेद बाल वाले और बड़े बूढ़े भी हैं, जो तेरे बाप से भी बहुत ज़्यादा 'उम्र के हैं।¹¹~क्या ख़ुदा की तसल्ली तेरे नज़दीक कुछ कम है, और वह कलाम जो तुझ से नरमी के साथ किया जाता है?

¹²तेरा दिल तुझे क्यूँ खींच ले जाता है, और तेरी आँखें क्यूँ इशारा करती हैं?¹³क्या तू अपनी रूह को ख़ुदा की मुखालिफ़त पर आमादा करता है, और अपने मुँह से ऐसी बातें निकलने देता है?¹⁴इन्सान है क्या कि वह पाक हो? और वह जो 'औरत से पैदा हुआ क्या है, कि सच्चा हो।

¹⁵देख, वह अपने फ़रिश्तों का 'एतिबार नहीं करता बल्कि आसमान भी उसकी नज़र में पाक नहीं।¹⁶फ़िर भला उसका क्या ज़िक्र जो घिनौना और ख़राब है या'नी वह आदमी जो बुराई को पानी की तरह पीता है।

¹⁷"मैं तुझे बताता हूँ, तू मेरी सुन;और जो मैंने देखा है उसका बयान करूँगा।¹⁸(जिसे 'अक्लमन्दों ने अपने बाप-दादा से सुनकर बताया है, और उसे छिपाया नहीं;

¹⁹सिर्फ़ उन ही को मुल्क दिया गया था, और कोई परदेसी उनके बीच नहीं आया)²⁰~शरीर आदमी अपनी सारी 'उम्र दर्द से कराहता है, या'नी सब बरस जो ज़ालिम के लिए रखे गए हैं।²¹डरावनी आवाज़ें उसके कान में गूँजती रहती हैं, इक़बालमंदी के वक़्त ग़ारतगर उस पर आ पड़ेगा।

²²उसे यक़ीन नहीं कि वह अँधेरे से बाहर निकलेगा, और तलवार उसकी मुन्तज़िर है।²³वह रोटी के लिए मारा मारा फिरता है कि कहाँ मिलेगी। वह जानता है, कि अँधेरे के दिन मेरे पास ही है।²⁴मुसीबत और सख़्त तकलीफ़ उसे डराती है; ऐसे बादशाह की तरह जो लड़ाई के लिए तैयार हो, वह उस पर ग़ालिब होते हैं।

²⁵इसलिए कि उसने ख़ुदा के खिलाफ़ अपना हाथ बढ़ाया और क़ादिर-ए-मुतलक के खिलाफ़ फ़ख़्र करता है;²⁶~वह अपनी ~ढालों की मोटी-मोटी गुलमैखों के साथ बागी होकर उसपर हमला करता है ~:

²⁷इसलिए कि उसके मुँह पर मोटापा छा गया है, और उसके पहलुओं पर चर्बी ~की तहें जम गई हैं।²⁸और वह वीरान शहरों में बस गया है, ऐसे मकानों में जिनमें कोई आदमी न बसा और जो वीरान होने को थे।

²⁹वह दौलतमन्द न होगा, उसका माल बना न रहेगा और ऐसों की पैदावार ज़मीन की तरफ़ न झुकेगी।³⁰वह अँधेरे से कभी न निकलेगा, और शोले उसकी शाखों को ख़ुश्क कर देंगे, और वह ख़ुदा के मुँह से ताक़त से जाता रहेगा।

³¹वह अपने आप को धोका देकर बतालत का भरोसा न करे, क्यूँकि बतालत ही उसका मज़दूरी ठहरेगी।³²यह उसके वक़्त से पहले पूरा हो जाएगा, और उसकी शाख हरी न रहेगी।³³ताक की तरह उसके अंगूर कच्चे ही और ज़ैतून की तरह उसके फूल गिर जाएँगे।

³⁴क्यूँकि बे ख़ुदा लोगों की जमा'अत बेफल रहेगी, और रिशवत के खेमों को आग भस्म कर देगी।³⁵वह शरारत से ताक़तवर होते हैं और गुनाह पैदा होता है, और उनका पेट धोका को तैयार करता है। "

Chapter 16

¹तब अय्यूब ने जवाब जवाब दिया, ²"ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ, तुम सब के सब निकम्मे तसल्ली देने वाले हो। ³क्या बेकार बातें कभी खत्म होंगी? तू कौन सी बात से झिड़क कर जवाब देता है?

⁴मैं भी तुम्हारी तरह बात बना सकता हूँ: अगर तुम्हारी जान मेरी जान की जगह होती तो मैं तुम्हारे खिलाफ़ बातें बना सकता, और तुम पर अपना सिर हिला सकता। ⁵बल्कि मैं अपनी ज़बान से तुम्हें ताक़त देता, और मेरे लबों की तकलीफ़ तुम को तसल्ली देती।

⁶अगर्चे मैं बोलता हूँ लेकिन मुझ को तसल्ली नहीं होती, और मैं चुप भी हो जाता हूँ, लेकिन मुझे क्या राहत होती है। ⁷लेकिन उसने तो मुझे दुखी कर डाला है, तूने मेरे सारे गिरोह को तबाह कर दिया है। ⁸तूने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया है, यही मुझ पर गवाह है। मेरी लाचारी मेरे खिलाफ़ खड़ी होकर मेरे मुँह पर गवाही देती है।

⁹उसने अपने गुस्से से मुझे फाड़ा और मेरा पीछा किया है; उसने मुझ पर दाँत पीसे, मेरा मुखालिफ़ मुझे आँखें दिखाता है। ¹⁰उन्होंने मुझ पर मुँह पसारा हैं, उन्होंने तनज़न मुझे गाल पर मारा है; वह मेरे खिलाफ़ इकट्ठे होते हैं।

¹¹खुदा मुझे बेदीनों के हवाले करता है, और शरीरों के हाथों में मुझे हवाले करता है। ¹²मैं आराम से था, और उसने मुझे चूर चूरकर डाला; उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और मुझे पटक कर टुकड़े टुकड़े कर दिया: और उसने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है।

¹³उसके तीर अंदाज़ मुझे चारों तरफ़ से घेर लेते हैं, वह मेरे गुदों को चीरता है, और रहम नहीं करता, और मेरे पित को ज़मीन पर बहा देता है। ¹⁴वह मुझे ज़ख़म पर ज़ख़म लगा कर खस्ता करता है वह पहलवान की तरह मुझ पर हमला करता है:

¹⁵मैंने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है, और अपना सींग खाक में रख दिया है। ¹⁶मेरा मुँह रोते रोते सूज गया है, और मेरी पलकों पर मौत का साया है। ¹⁷अगर्चे मेरे हाथों-जुल्म नहीं, और मेरी दु'आ बुराई से पाक है।

¹⁸ऐ ज़मीन, मेरे खून को न ढाँकना, और मेरी फ़रियाद को आराम की जगह न मिले। ¹⁹अब भी देख, मेरा गवाह आसमान पर है, और मेरा ज़ामिन 'आलम-ए-बाला पर है।

²⁰मेरे दोस्त मेरी हिकारत करते हैं, लेकिन मेरी आँख खुदा के सामने ~आँसू बहाती है; ²¹ताकि वह आदमी के हक़ को अपने साथ और आदम ज़ाद के हक़ को उसके पड़ोसी के साथ क़ायम रखे ²²क्योंकि जब चंद साल निकल जाएँगे, तो मैं उस रास्ते से चला जाऊँगा जिससे फिर लौटने का नहीं।

Chapter 17

¹~मेरी जान तबाह हो गई मेरे दिन हो चुके क़ब्र मेरे लिए तैय्यार है | ²यक़ीनन हँसी उड़ाने वाले मेरे साथ साथ हैं, और मेरी आँख उनकी छेड़छाड़ पर लगी रहती है।³"ज़मानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही ज़ामिन हो। कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे?

⁴क्योंकि तूने इनके दिल को समझ से रोका है, इसलिए तू इनको सरफ़राज़ न करेगा।⁵जो लूट की खातिर अपने दोस्तों को मुल्ज़िम ठहराता है, उसके बच्चों की आँखें भी जाती रहेंगी।

⁶"उसने मुझे लोगों के लिए ज़रबुल मिसाल बना दिया है: और मैं ऐसा हो गया कि लोग मेरे मुँह पर थूकें।⁷मेरी आँखें ~ग़म के मारे धुंदला गई, और मेरे सब 'आज़ा परछाई की तरह है।⁸रास्तबाज़ आदमी इस बात से हैरान होंगे और मा'सूम आदमी ~बे खुदा लोगों के खिलाफ़ जोश में आएगा

⁹तोभी सच्चा अपनी राह में साबित क़दम रहेगा और जिसके हाथ साफ़ हैं, वह ताक़तवर ही होता जाएगा¹⁰लेकिन तुम सब के सब आते हो तो आओ, मुझे तुम्हारे बीच एक भी आदमी 'अक्लमन्द न मिलेगा |

¹¹मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरे मक़सद मिट गए और जो मेरे दिल में था, वह बर्बाद हुआ है | ¹²वह रात को दिन से बदलते हैं, वह कहते हैं रोशनी तारीकी के नज़दीक है।

¹³अगर मैं उम्मीद करूँ कि पाताल मेरा घर है, अगर मैंने अँधेरे में अपना बिछौना बिछा लिया है।¹⁴अगर मैंने सड़ाहट से कहा है कि तू मेरा बाप है, और कीड़े से कि तू मेरी माँ और बहन है¹⁵तोमेरी उम्मीद कहाँ रही, और जो मेरी उम्मीद है, उसे कौन देखेगा¹⁶वह पाताल के फाटकों तक नीचे उतर जाएगी जब हम मिलकर खाक में आराम पाएँगे

Chapter 18

¹तब ~बिलदद शूखी ने जवाब दिया, ²तुम कब तक लफ़्ज़ों की जुस्तुजू में रहोगे ग़ौर कर लो फिर हम बोलेंगे

³हम क्यूँ जानवरों की तरह समझे जाते हैं, और तुम्हारी नज़र में नापाक ठहरे हैं। ⁴तू जो अपने क़हर में अपने को फाड़ता है तो क्या ज़मीन तेरी वजह से उजड़ जाएगी या चट्टान अपनी जगह से हटा दी जाएगी

⁵बल्कि शरीर का चराग़ गुल कर दिया जाएगा और उसकी आग का शो'ला बे नूर हो जाएगा ⁶रोशनी उसके खेमे में तरीकी हो जाएगी और जो चराग़ ऊसके उपर है, बुझा दिया जाएगा

⁷उसकी कुव्वत के क़दम छोटे किए जाएँगे और उसी की मसलहत उसे नेचे गिराएगी। ⁸क्यूँकि वह अपने ही पाँव से जाल में फँसता है और फँदों पर चलता है

⁹~ दाम उसकी एड़ी को पकड़ेगा, और जाल उसको फँसा लेगा। ¹⁰कमन्द उसके लिए ज़मीन में छिपा दी गई है, और ~फंदा उसके लिए ~रास्ते में रखवा गया है।

¹¹दहशत नाक चीज़ें हर तरफ़ से उसे डराएँगी, और उसके दर पे होकर उसे भगाएँगी।

¹²उसका ज़ोर भूक का मारा होगा और आफ़त उसके शामिल-ए-हाल रहेगी। ¹³वह उसके जिस्म के आ'ज़ा को खा जाएगी बल्कि मौत का पहलौठा उसके आ'ज़ा को चट कर जाएगी।

¹⁴वह अपने खेमे से जिस पर उसको भरोसा है उखाड़ दिया जाएगा, ~और दहशत के बादशाह के पास पहुंचाया जाएगा। ¹⁵~और वह जो उसका नहीं, उसके खेमे में बसेगा; उसके मकान पर गंधक छितराई जाएगी।

¹⁶~नीचे उसकी जड़ें सुखाई जाएँगी, और ऊपर उसकी डाली काटी जाएगी। ¹⁷उसकी यादगार ज़मीन पर से मिट जाएगी, और कूचों' में उसका नाम न होगा।

¹⁸वह रोशनी से अंधेरे में हँका दिया जाएगा, और दुनिया से खदेड़ दिया जाएगा। ¹⁹उसके लोगों में उसका न कोई बेटा होगा न पोता, और जहाँ वह टिका हुआ था, वहाँ कोई उसका बाक़ी न रहेगा। ²⁰वह जो पीछे आनेवाले हैं, उसके दिन पर हैरान होंगे, जैसे वह जो पहले हुए डर गए थे।

²¹नारास्तों के घर यक़ीनन ऐसे ही हैं, और जो खुदा को नहीं पहचानता उसकी जगह ऐसी ही है।

Chapter 19

¹तब अय्यूब ने जवाब दिया²तुम कब तक मेरी जान खाते रहोगे, और बातों से मुझे चूर-चूर करोगे?

³अब दस बार तुम ने मुझे मलामत ही की ; तुम्हें शर्म नहीं आती की तुम मेरे साथ सख्ती से पेश आते हो।⁴और माना कि मुझ से ख़ता हुई; मेरी ख़ता मेरी ही है।

⁵अगर तुम मेरे सामने में अपनी बड़ाई करते हो, और मेरे नंग को मेरे खिलाफ़ पेश करते हो;⁶तो जान लो कि ख़ुदा ने मुझे पस्त किया, और अपने जाल से मुझे घेर लिया है।

⁷देखो, मैं जुल्म जुल्म पुकारता हूँ, लेकिन मेरी सुनी नहीं जाती। मैं मदद के लिए दुहाई देता हूँ, लेकिन कोई इन्साफ़ नहीं होता।⁸उसने मेरा रास्ता ऐसा शख़्त कर दिया है, कि मैं गुज़र नहीं सकता। उसने मेरी राहों पर तारीकी को बिठा दिया है।⁹उसने मेरी हशमत मुझ से छीन ली, और मेरे सिर पर से ताज उतार लिया।

¹⁰उसने मुझे हर तरफ़ से तोड़कर नीचे गिरा दिया, बस मैं तो हो लिया, और मेरी उम्मीद को उसने पेड़ की तरह उखाड़ डाला है।¹¹उसने अपने ग़ज़ब को भी मेरे खिलाफ़ भड़काया है, और वह मुझे अपने मुखालिफ़ों में शुमार करता है।¹²उसकी फ़ौजें इकट्ठी होकर आती और मेरे खिलाफ़ अपनी राह तैयार करती और मेरे खेमे के चारों तरफ़ खेमा ज़न होती हैं।

¹³"उसने मेरे भाइयों को मुझ से दूर कर दिया है, और मेरे जान पहचान मुझ से बेगाना हो गए हैं।¹⁴मेरे रिश्तेदार काम न आए, और मेरे दिली दोस्त मुझे भूल गए हैं।

¹⁵मैं अपने घर के रहनेवालों और अपनी लौंडियों की नज़र में अजनबी हूँ। मैं उनकी निगाह में परदेसी हो गया हूँ।¹⁶मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ और वह मुझे जवाब नहीं देता, अगरचे मैं अपने मुँह से उसकी मिन्नत करता हूँ।

¹⁷मेरी साँस मेरी बीवी के लिए मकरूह है, और मेरी मित्रत मेरी माँ की औलाद" के लिए।¹⁸~छोटे बच्चे भी मुझे हक़ीर जानते हैं; जब मैं खड़ा होता हूँ तो वह मुझ पर आवाज़ कसते हैं।¹⁹मेरे सब हमराज़ दोस्त मुझ से नफ़रत करते हैं और जिनसे मैं मुहब्बत करता था वह मेरे खिलाफ़ हो गए हैं।

²⁰मेरी खाल और मेरा गोश्त मेरी हड्डियों से चिमट गए हैं, और मैं बाल बाल बच निकला हूँ।²¹ऐ मेरे दोस्तो! मुझ पर तरस खाओ, तरस खाओ, क्योंकि ख़ुदा का हाथ मुझ पर भारी है!²²तुम क्यों ख़ुदा की तरह मुझे सताते हो? और मेरे गोश्त पर कना'अत नहीं करते?

²³काश कि मेरी बातें अब लिख ली जातीं, काश कि वह किसी किताब में लिखी होतीं;²⁴काश कि वह लोहे के क़लम और सीसे से, हमेशा के लिए चट्टान पर खोद दी जातीं।

²⁵लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला ज़िन्दा है। और आखिर कार ज़मीन पर खड़ा होगा।²⁶और अपनी खाल के इस तरह बर्बाद हो जाने के बा'द भी, मैं अपने इस जिस्म में से ख़ुदा को देखूँगा।²⁷जिसे मैं खुद देखूँगा, और मेरी ही आँखें देखेंगी न कि ग़ैर की; मेरे गुर्दे मेरे अंदर ही फ़ना हो गए हैं।

²⁸अगर तुम कहो हम उसे कैसा-कैसा सताएँगे; हालाँकि असली बात मुझ में पाई गई है।²⁹तो तुम तलवार से डरो, क्योंकि क़हर तलवार की सज़ाओं को लाता है ताकि तुम जान लो कि इन्साफ़ होगा। "

Chapter 20

¹तब जूफ़र नामाती ने जवाब दिया। ²"इसीलिए मेरे खयाल मुझे जवाब सिखाते हैं, उस जल्दबाज़ी की वजह से जो मुझ में है। ³मैंने वह झिड़की सुन ली जो मुझे शर्मिन्दा करती है, और मेरी 'अक़ल की रूह ~मुझे जवाब देती है।

⁴क्या तू पुराने ज़माने की यह बात नहीं जानता, जब से इन्सान ज़मीन पर बसाया गया, ⁵कि शरीरों की फ़तह चंद रोज़ा है, और बेदीनों की खुशी दम भर की है? ⁶चाहे उसका जाह-ओ-जलाल आसमान तक बुलन्द हो जाए, और उसका सिर बादलों तक पहुँचे। ⁷तोभी वह अपने ही फुज़ले की तरह हमेशा के लिए बर्बाद हो जाएगा; जिन्होंने उसे देखा है कहेंगे, वह कहाँ है?

⁸वह ख़्वाब की तरह उड़ जाएगा और फिर न मिलेगा, जो वह रात को रोये की तरह दूर कर दिया जाएगा। ⁹जिस आँख ने उसे देखा, वह उसे फिर न देखेगी; न उसका मकान उसे फिर कभी देखेगा।

¹⁰उसकी औलाद ग़रीबों की खुशामद करेगी, और उसी के हाथ उसकी दौलत को वापस देंगे। ¹¹~ उसकी हड्डियाँ उसकी जवानी से पुर हैं, लेकिन वह उसके साथ खाक में मिल जाएँगी।

¹²~"चाहे शरारत उसको मीठी लगे, चाहे वह उसे अपनी ज़बान के नीचे छिपाए। ¹³चाहे वह उसे बचा रखे और न छोड़े, बल्कि उसे अपने मुँह के अंदर दबा रखे, ¹⁴तोभी उसका खाना उसकी अंतड़ियों में बदल गया है; वह उसके अंदर-अज़दहा का ज़हर है।

¹⁵वह दौलत को निगल गया है, लेकिन वह उसे फिर उगलेगा; ख़ुदा उसे उसके पेट से बाहर निकाल देगा। ¹⁶वह अज़दहा का ज़हर चूसेगा; अज़दहा-की ज़बान उसे मार डालेगी।

¹⁷~वह दरियाओं को देखने न पाएगा, या 'नी शहद और मख़्खन की बहती नदियों को। ¹⁸जिस चीज़ के लिए उसने मशक्कत खींची, उसे वह वापस करेगा और निगलेगा नहीं; जो माल उसने जमा' किया उसके मुताबिक़ वह खुशी न करेगा। ¹⁹~क्योंकि उसने ग़रीबों पर जुल्म किया और उन्हें छोड़ दिया, उसने ज़बरदस्ती घर छीना लेकिन वह उसे बताने न पाएगा।

²⁰इस वजह से कि वह अपने बातिन में आसूदगी से वाकिफ़ न हुआ, ~वह अपनी दिलपसंद चीज़ों में से कुछ नहीं बचाएगा। ²¹कोई चीज़ ऐसी बाक़ी ~न रही जिसको उसने निगला न हो। इसलिए उसकी इक़बालमन्दी क़ायम न रहेगी। ²²अपनी अमीरी में भी वह तंगी ~में होगा; हर दुखियारे का हाथ उस पर पड़ेगा।

²³जब वह अपना पेट भरने पर होगा तो ख़ुदा अपना क्रहर-ए-शदीद उस पर नाज़िल करेगा, और जब वह खाता होगा तब यह उसपर बरसेगा। ²⁴वह लोहे के हथियार से भागेगा, लेकिन पीतल की कमान उसे छेद डालेगी। ²⁵वह तीर निकालेगा और वह उसके जिस्म से बाहर आएगा, उसकी चमकती नोक उसके पित्ते से निकलेगी; दहशत उस पर छाई हुई है।

²⁶सारी तारीकी उसके खज़ानों के लिए रखी हुई है। वह आग जो किसी इन्सान की सुलगाई हुई नहीं, उसे खा जाएगी। वह उसे जो उसके खेमे में बचा हुआ होगा, भस्म कर देगी। ²⁷आसमान उसके गुनाह को ज़ाहिर कर देगा, और ज़मीन उसके खिलाफ़ खड़ी ~हो जाएगी।

²⁸उसके घर की बढ़ती जाती रहेगी, ख़ुदा के ग़ज़ब के दिन उसका माल जाता रहेगा। ²⁹ख़ुदा की तरफ़ से शरीर आदमी का हिस्सा, और उसके लिए ख़ुदा की मुकर्रर की हुई मीरास यही है। "

Chapter 21

¹तब अय्यूब ने जवाब दिया, ²"ग़ौर से मेरी बात सुनो, और यही तुम्हारा तसल्ली देना हो | ³मुझे इजाज़त दो तो मैं भी कुछ कहूँगा, और जब मैं कह चुकूँ तो ठग़ा मारलेना।

⁴लेकिन मैं, क्या मेरी फ़रियाद इन्सान से है? फिर मैं बेसब्री क्यों न करूँ ? ⁵मुझ पर ग़ौर करो और मुत'अज्जिब हो, और अपना हाथ अपने मुँह पर रखो। ⁶जब मैं याद करता हूँ तो घबरा जाता हूँ, और मेरा जिस्म थर्रा उठता है।

⁷शरीर क्यों जीते रहते, 'उम्र रसीदा होते, बल्कि ~कुव्वत में ज़बरदस्त होते हैं? ⁸उनकी औलाद उनके साथ उनके देखते देखते, और उनकी नसल उनकी आँखों के सामने क़ायम हो जाती है। ⁹उनके घर डर से महफूज़ हैं, और खुदा की छड़ी उन पर नहीं है।

¹⁰उनका सौंड बरदार कर देता है और चूकता नहीं, उनकी गाय ब्याती है और अपना बच्चा नहीं गिराती। ¹¹वह अपने छोटे छोटे बच्चों को रेवड़ की तरह बाहर भेजते हैं, और उनकी औलाद नाचती है। ¹²वह ख़जरी और सितार के ताल पर गाते, और बॉसली की आवाज़ से खुश होते हैं।

¹³~वह खुशहाली में अपने दिन काटते, और दम के दम में पाताल में उतर जाते हैं। ¹⁴हालाँकि उन्होंने खुदा से कहा था, कि 'हमारे पास से चला जा; क्योंकि हम तेरी राहों के 'इल्म के ~ख़्वाहिशमन्द नहीं। ¹⁵क्रादिर-ए-मुतलक है क्या कि हम उसकी 'इबादत करें? और अगर हम उससे दु'आ करें तो हमें क्या फ़ायदा होगा?

¹⁶देखो, उनकी इक्रबालमन्दी ~उनके हाथ में नहीं है। ~शरीरों की मशवरत ~मुझ से दूर है। ¹⁷"कितनी बार शरीरों का चरागा बुझ जाता है? और उनकी आफ़त उन पर आ पड़ती है? और खुदा अपने ग़ज़ब में उन्हें ग़म पर ग़म देता है? ¹⁸और वह ऐसे हैं जैसे हवा के आगे डंठल, और जैसे भूसा जिसे आँधी उड़ा ले जाती है?

¹⁹~'खुदा उसका गुनाह उसके बच्चों के लिए रख छोड़ता है, " वह उसका बदला उसी को दे ताकि वह ~जान ले। ²⁰उसकी हलाकत को उसी की आँखें देखें, और वह क़ादिर-ए-मुतलक के ग़ज़ब में से पिए। ²¹क्योंकि ~अपने बा'द उसको अपने घराने से क्या खुशी है, जब उसके महीनों का सिलसिला ही काट डाला गया?

²²क्या कोई खुदा को 'इल्म सिखाएगा? जिस हाल की वह सरफ़राज़ों की 'अदालत ~करता है। ²³कोई तो अपनी पूरी ताक़त में, चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है। ²⁴उसकी दोहिनियों दूध से भरी हैं, और उसकी हड्डियों का गूदा तर है;

²⁵और कोई अपने जी में कुछ कुढ़ कर मरता है, और कभी सुख नहीं पाता। ²⁶वह दोनों मिट्टी में यकसाँ पड़ जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढाँक लेते हैं।

²⁷"देखो, मैं तुम्हारे खयालों को जानता हूँ, और उन मंसूबों को भी जो तुम बे इन्साफ़ी से मेरे खिलाफ़ बाँधते हो। ²⁸क्योंकि ~तुम कहते हो, 'अमीर का घर कहाँ रहा ? और वह खेमा कहाँ है जिसमें शरीर बसते थे?

²⁹क्या तुम ने रास्ता चलने वालों से कभी नहीं पूछा? और उनके आसार नहीं पहचानते? ³⁰कि शरीर आफ़त के दिन के लिए रखबा जाता है, और ग़ज़ब के दिन तक पहुँचाया जाता है?

³¹कौन उसकी राह को उसके मुँह पर बयान करेगा? और उसके किए का बदला कौन उसे देगा? ³²तोभी वह क़ब्र में पहुँचाया जाएगा, और उसकी क़ब्र पर पहरा दिया जाएगा। ³³वादी के ढेले उसे पसंद हैं; और सब लोग उसके पीछे चले जाएँगे, जैसे उससे पहले बेशुमार लोग गए।

³⁴~इसलिए तुम क्यों मुझे झूठी तसल्ली देते हो, जिस हाल कि तुम्हारी बातों में झूठ ही झूठ है |

Chapter 22

¹तब अलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,²"क्या कोई इन्सान खुदा के काम आ सकता है? यक़ीनन 'अक्लमन्द अपने ही काम का है।' क्या तेरे सादिक होने से क़ादिर-ए-मुतलक को कोई खुशी है? या इस बात से कि तू अपनी राहों को कामिल करता है उसे कुछ फ़ायदा है?

⁴क्या इसलिए कि तुझे उसका ख़ौफ़ है, वह तुझे झिड़कता और तुझे 'अदालत में लाता है?' क्या तेरी शरारत बड़ी नहीं? क्या तेरी बदकारियों की कोई हद है?

⁶क्योंकि तू ने अपने भाई की चीज़ें बे वजह गिरवी रखी, नंगों का लिबास उतार लिया।⁷तूने थके माँदों को पानी न पिलाया, और भूखों से रोटी को रोक रखा।

⁸लेकिन ज़बरदस्त आदमी ज़मीन का मालिक बना, और 'इज़ज़तदार आदमी उसमें बसा।

⁹तू ने बेवाओं को ख़ाली चलता किया, और यतीमों के बाजू-तोड़े गए।¹⁰इसलिए फंदे तेरी चारों तरफ़ हैं, और नागहानी ख़ौफ़ तुझे सताता है।¹¹या ऐसी तारीकी कि तू देख नहीं सकता, और पानी की बाढ़ तुझे छिपाए लेती है।

¹²क्या आसमान की बुलन्दी में खुदा नहीं? और तारों की बुलन्दी को देख वह कैसे ऊँचे हैं।¹³~फिर तू कहता है, कि 'खुदा क्या जानता है? क्या वह गहरी तारीकी में से 'अदालत करेगा?'¹⁴पानी से भरे हुए बादल उसके लिए पर्दा हैं कि वह देख नहीं सकता; वह आसमान के दाइरे में सैर करता फिरता है। '

¹⁵क्या तू उसी पुरानी राह पर चलता रहेगा, जिस पर शरीर लोग चले हैं?¹⁶जो अपने वक़्त से पहले उठा लिए गए, और सैलाब उनकी बुनियाद को बहा ले गया।

¹⁷जो खुदा से कहते थे, 'हमारे पास से चला जा, 'और यह कि, 'क़ादिर-ए-मुतलक हमारे लिए कर क्या सकता है?'

¹⁸तोभी उसने उनके घरों को अच्छी अच्छी चीज़ों से भर दिया - लेकिन शरीरों की मशवरेत मुझ से दूर है।¹⁹सादिक यह देख कर खुश होते हैं, और बे गुनाह उनकी हँसी उड़ाते हैं।²⁰और कहते हैं, कि "यक़ीनन वह जो हमारे खिलाफ़ उठे थे कट गए, और जो उनमें से बाक़ी रह गए थे, उनको आग ने भस्म कर दिया है।'

²¹~"उससे मिला रह, तो सलामत रहेगा; और इससे तेरा भला होगा।²²मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि शरी'अत को उसी की ज़बानी कुबूल कर और उसकी बातों को अपने दिल में रख ले।

²³अगर तू क़ादिर-ए-मुतलक की तरफ़ फिरे तो बहाल किया जाएगा। बशर्ते कि तू नारास्ती को अपने खेमों ~से दूर कर दे।²⁴तू अपने खज़ाने' को मिट्टी में, और ओफ़ीर के सोने को नदियों के पथरों में डाल दे,²⁵तब क़ादिर-ए-मुतलक तेरा खज़ाना, और तेरे लिए बेश कीमत चाँदी होगा।

²⁶क्योंकि तब ही तू क़ादिर-ए-मुतलक में मसरूर रहेगा, और खुदा की तरफ़ अपना मुँह उठाएगा।²⁷तू उससे दु'आ करेगा, वह तेरी सुनेगा; और तू अपनी मिन्नतें पूरी करेगा।²⁸जिस बात को तू कहेगा, वह तेरे लिए हो जाएगी और नूर तेरी राहों को रोशन करेगा।

²⁹जब वह पस्त करेंगे, तू कहेगा, 'बुलन्दी होगी। ' और वह हलीम आदमी को बचाएगा।³⁰वह उसको भी छुड़ा लेगा, जो बेगुनाह नहीं है;हाँ वह तेरे हाथों की पाकीज़गी की वजह से छुड़ाया जाएगा।"

Chapter 23

¹तब अय्यूब ने जवाब दिया, ²"मेरी शिकायत आज भी तलख है; मेरी मार मेरे कराहने से भी भारी है।

³काश कि मुझे मा'लूम होता कि वह मुझे कहाँ मिल सकता है ताकि ~मैं ऐन उसकी मसनद तक पहुँच जाता।⁴मैं अपना मु'आमिला उसके सामने ~पेश करता, और अपना मुँह दलीलों से भर लेता।⁵मैं उन लफ़्ज़ों को जान लेता जिनमें वह ~मुझे जवाब देता और जो कुछ वह मुझ से कहता मैं समझ लेता।

⁶क्या वह अपनी कुदरत की 'अज़मत में मुझ से लड़ता? नहीं, बल्कि वह मेरी तरफ़ तवज्जुह करता।⁷रास्तबाज़ वहाँ उसके साथ बहस कर सकते, यूँ मैं अपने मुन्सिफ़ के हाथ से हमेशा के लिए रिहाई पाता।

⁸"देखो, मैं आगे जाता हूँ लेकिन वह वहाँ नहीं, और पीछे हटता हूँ लेकिन मैं उसे देख नहीं सकता।⁹बाएँ हाथ फिरता हूँ जब वह काम करता है, लेकिन वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह दहने हाथ की तरफ़ छिप जाता है, ऐसा कि मैं उसे देख नहीं सकता।

¹⁰लेकिन वह उस रास्ते को जिस पर मैं चलता हूँ जानता है; जब वह मुझे पालेगा तो मैं सोने के तरह निकल आऊँगा।¹¹मेरा पाँव उसके क़दमों से लगा रहा है। मैं उसके रास्ते पर चलता रहा हूँ और नाफ़रमान नहीं हुआ।¹²~मैं उसके लबों के हुक्म से हटा नहीं; मैंने उसके मुँह की बातों को अपनी ज़रूरी ख़ुराक से भी ज़्यादा ज़ख़ीरा किया।

¹³लेकिन वह एक खयाल में रहता है, और कौन उसको फिरा सकता है? और जो कुछ उसका जी चाहता है ~करता है।¹⁴क्यूँकि जो कुछ मेरे लिए मुकर्रर है, वह पूरा करता है; और बहुत सी ऐसी बातें उसके हाथ में हैं।

¹⁵इसलिए मैं उसके सामने घबरा जाता हूँ, मैं जब सोचता हूँ तो उससे डर जाता हूँ।¹⁶क्यूँकि ख़ुदा ने मेरे दिल को बूदा कर डाला है, और कादिर-ए-मुतलक़ ने मुझ को घबरा दिया है।¹⁷इसलिए कि मैं इस जुल्मत से पहले काट डाला न गया और उसने बड़ी तारीकी को मेरे सामने से न छिपाया।

Chapter 24

¹"क्रादिर-ए-मुतलक़ ने वक़्त क्यूँ नहीं ठहराए, और जो उसे जानते हैं वह उसके दिनों को क्यूँ नहीं देखते?

²ऐसे लोग भी हैं जो ज़मीन की हदों को सरका देते हैं, वह रेवड़ों को ज़बरदस्ती ले जाते और उन्हें चराते हैं।³वह यतीम के गधे को हाँक ले जाते हैं; वह बेवा के बैल को गिरा ~लेते हैं।⁴वह मोहताज को रास्ते से हटा देते हैं, ज़मीन के गरीब इकट्ठे छिपते हैं।

⁵देखो, वह वीरान के गधों की तरह अपने काम को जाते और मशक्कत उठाकर' खुराक ढूँडते हैं। वीरान उनके बच्चों के लिए खुराक बहम पहुँचाता है।⁶वह खेत में अपना चारा काटते हैं, और शरीरों के अंगूर की खूशा चीनी करते हैं।⁷वह सारी रात बे कपड़े नंगे पड़े रहते हैं, और जाड़ों में उनके पास कोई ओढ़ना नहीं होता।

⁸~वह पहाड़ों की बारिश से भीगे रहते हैं, और किसी आड़ के न होने से चट्टान से लिपट जाते हैं।⁹ऐसे लोग भी हैं जो यतीम को छाती पर से हटा लेते हैं और गरीबों से गिरवी लेते हैं।¹⁰इसलिए वह ~बेकपड़े नंगे फिरते, और भूक के मारे पौले ढोते हैं।

¹¹वह इन लोगों के अहातों में तेल निकालते हैं। वह उनके कुण्डों में अंगूर रौदते और प्यासे रहते हैं।¹²आबाद शहर में से निकल कर लोग कराहते हैं, और ज़ख्मियों की जान फ़रियाद करती है। तोभी खुदा इस हिमाक़त' का ख्याल नहीं करता।

¹³"यह उनमें से हैं जो नूर से बगावत करते हैं; वह उसकी राहों को नहीं जानते, न उसके रास्तों पर क़ायम रहते हैं।¹⁴खूनी रोशनी होते ही उठता है। वह गरीबों और मोहताजों को मारडालता है, और रात को वह चोर की तरह है।

¹⁵ज़ानी की आँख भी शाम की मुन्तज़िर रहती है। वह कहता है किसी की नज़र मुझ पर न पड़ेगी, और वह अपना मुँह ढाँक लेता है।¹⁶~अंधेरे में वह घरों में सेंध मारते हैं, वह दिन के वक़्त छिपे रहते हैं; वह नूर को नहीं जानते।¹⁷क्यूँकि सुबह उन लोगों के लिए ऐसी है जैसे मौत का साया इसलिए कि उन्हें मौत के साये की दहशत मा'लूम है।

¹⁸वह पानी की सतह पर तेज़ रफ़्तार हैं, ज़मीन पर उनके ज़मीन पर उनका ~हिस्सा मलऊन हैं वह ताकिस्तानों की राह पर नहीं चलते |¹⁹खुशकी और गर्मी बरफ़ानी पानी के नालों को सुखा देती हैं, ऐसा ही क्रब्र गुनहगारों के साथ करती है।

²⁰रहम उसे भूल जाएगा, कीड़ा उसे मज़े ~सिखाएगा, उसकी याद फिर न होगी; नारास्ती दरख़्त की तरह तोड़ दी जाएगी।²¹वह ~बाँझ को जो जनती नहीं, निगल जाता है, और बेवा के साथ भलाई नहीं करता।

²²खुदा अपनी कुव्वत से ज़बरदस्तों को भी खींच लेता है; वह उठता है, और किसी को ज़िन्दगी का यक़ीन नहीं रहता।²³खुदा उन्हें अमन बरख़शा है और वह उसी में क़ायम रहते हैं, और उसकी आँखें उनकी राहों पर लगी रहती हैं।

²⁴वह सरफ़राज़ तो होते हैं, लेकिन थोड़ी ही देर में जाते रहते हैं; बल्कि वह पस्त किए जाते हैं और सब दूसरों की तरह रास्ते से उठा लिए जाते, और अनाज की बालों की तरह काट डाले जाते हैं।²⁵~और अगर यह यूँ ही नहीं है, तो कौन मुझे झूटा साबित करेगा और मेरी तकरीर को नाचीज़ ठहराएगा?"

Chapter 25

¹तब बिलदद सूखी ने जवाब दिया²"हुकूमत और दबदबा उसके साथ है वह अपने बुलन्द मक़ामों में अमन रखता है।³क्या उसकी फ़ौजों की कोई ता'दाद है? और कौन है जिस पर उसकी रोशनी नहीं पड़ती?

⁴फिर इन्सान क्यूँकर खुदा के सामने रास्त ठहर सकता है? या वह जो 'औरत से पैदा हुआ है क्यूँकर पाक हो सकता है?'⁵देख, चाँद में भी रोशनी नहीं, और तारे उसकी नज़र में पाक नहीं।⁶फिर भला इन्सान का जो महज़ कीड़ा है, और आदमज़ाद जो सिर्फ़ किरम है क्या ज़िक्र।"

Chapter 26

¹तब अय्यूब ने जवाब दिया, ²जो बे ताक़त उसकी तूने कैसी मदद की; जिस बाजू में कुव्वत न थी, उसको तू ने कैसा संभाला। ³नादान को तूने कैसी सलाह दी, और हक़ीक़ी पहचान ख़ूब ही बताई। ⁴तू ने जो बातें कहीं? इसलिए किस से और किसकी रूह तुझ में से हो कर निकली?"

⁵मुर्दों की रूहें पानी और उसके रहने वालों के नीचे काँपती हैं। ⁶पाताल उसके सामने खुला है, और जहन्नम बेपर्दा है।

⁷वह शिमाल को फ़ज़ा में फैलाता है, और ज़मीन को ख़ला में लटकाता है। ⁸वह अपने पानी से भरे हुए बादलों पानी को बाँध देता और बादल उसके बोझ से फटता नहीं।

⁹वह अपने तख़्त को ढांक लेता है और उसके ऊपर अपने बादल को तान देता है। ¹⁰उसने रोशनी और अंधेरे के मिलने की जगह तक, पानी की सतह पर हद बाँध दी है।

¹¹आसमान के सुतून काँपते, और और झिड़की से हैरान होते हैं। ¹²वह अपनी कुदरत से समन्दर को तूफ़ानी करता, और अपने फ़हम से रहब को छेद देता है।

¹³उसके दम से आसमान आरास्ता होता है, उसके हाथ ने तेज़रू साँप को छेदा है। ¹⁴देखो, यह तो उसकी राहों के सिर्फ़ किनारे हैं, और उसकी कैसी धीमी आवाज़ हम सुनते हैं। लेकिन कौन उसकी कुदरत की गरज़ को समझ सकता है?"

Chapter 27

¹और अय्यूब ने फिर अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, ²"ज़िन्दा खुदा की क़सम, जिसने मेरा हक़ छीन लिया; और क़ादिर-ए-मुतलक़ की क़सम, जिसने मेरी जान को दुख दिया है।" ³(क्योंकि मेरी जान मुझ में अब तक सालिम है और खुदा का रूह मेरे नथनों में है)।

⁴यक़ीनन मेरे लब नारास्ती की बातें न कहेंगे, न मेरी ज़बान से फ़रेब की बात निकलेगी। ⁵खुदा न करे कि मैं तुम्हें रास्त ठहराऊँ, मैं मरते दम तक अपनी रास्ती ~को छोड़ूँगा।

⁶मैं अपनी सदाक़त पर क़ायम हूँ और उसे न छोड़ूँगा, जब तक मेरी ज़िन्दगी है, मेरा दिल मुझे मुजरिम न ठहराएगा। ⁷"मेरा दुश्मन शरीरों की तरह हो, और मेरे खिलाफ़ उठने वाला नारास्तों की तरह।

⁸क्योंकि गो बे दीन दौलत हासिल कर ले तोभी उसकी क्या उम्मीद है, ? जब खुदा उसकी जान ले ले, ⁹क्या खुदा उसकी फ़रियाद सुनेगा, जब मुसीबत उस पर आए? ¹⁰क्या वह क़ादिर-ए-मुतलक़ में खुश रहेगा, और हर वक़्त खुदा से दु'आ करेगा?

¹¹मैं तुम्हें खुदा के बर्ताव की तालीम दूँगा, और क़ादिर-ए-मुतलक़ की बात न छिपाऊँगा। ¹²देखो, तुम सबों ने खुद यह देख चुके हो, फिर तुम खुद बीन कैसे हो गए | "

¹³~"खुदा की तरफ़ से शरीर आदमी का हिस्सा, और ज़ालिमों की मीरास जो वह क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से पाते हैं, यही है। ¹⁴अगर उसके बच्चे बहुत हो जाएँ तो वह तलवार के लिए हैं, और उसकी औलाद रोटी से सेर न होगी।

¹⁵उसके बाकी लोग मर कर दफ़न होंगे, और उसकी बेवाएँ नौहा न करेंगी। ¹⁶चाहे वह खाक की तरह चाँदी जमा कर ले, और कसरत से लिबास तैयार कर रखें ¹⁷वह तैयार कर ले, लेकिन जो रास्त हैं वह उनको पहनेंगे और जो बेगुनाह हैं वह उस चाँदी को बाँट लेंगे।

¹⁸उसने मकड़ी की तरह अपना घर बनाया, और उस झोंपड़ी की तरह जिसे रखवाला बनाता है। ¹⁹वह लेटता है दौलतमन्द, लेकिन वह दफ़न न किया जाएगा। वह अपनी आँख खोलता है और वह है ही नहीं।

²⁰दहशत उसे पानी की तरह आ लेती है; रात को तूफ़ान उसे उड़ा ले जाता है। ²¹पूरबी हवा उसे उड़ा ले जाती है, और वह जाता रहता है। वह उसे उसकी जगह से उखाड़ फेंकती है।

²²क्योंकि खुदा उस पर बरसाएगा और छोड़ने का नहीं वह उसके हाथ से निकल भागना चाहेगा। ²³लोग उस पर तालियाँ बजाएँगे, और सुस्कार कर उसे उसकी जगह से निकाल देंगे।

Chapter 28

¹यक्रीनन चाँदी की कान होती है, और सोने के लिए जगह होती है, जहाँ ताया जाता है | ²लोहा ज़मीन से निकाला जाता है, और पीतल पत्थर में से गलाया जाता है |

³इन्सान तारीकी की तह तक पहुँचता है, और जुल्मात और मौत के साए की इन्तिहा तक पत्थरों की तलाश करता है | ⁴आबादी से दूर वह सुरंग लगाता है, आने जाने वालों के पाँव से बे खबर और लोगों से दूर वह लटकते और झूलते हैं |

⁵और ज़मीन उस से खूराक पैदा होती है, और उसके अन्दर गोया आग से इन्कलाब होता रहता है | ⁶उसके पत्थरों में नीलम है, और उसमें सोने के ज़र्रे हैं

⁷उस राह को कोई शिकारी परिन्दा नहीं जानता न कुछ की आँख ने उसे देखा है | ⁸न मुतक़ब्बिर जानवर उस पर चले हैं, न खूनखवार बबर उधर से गुज़रा है |

⁹वह चकमक की चट्टान पर हाथ लगाता है, वह पहाड़ों को जड़ ही से उखाड़ देता है | ¹⁰वह चट्टानों में से नालियाँ काटता है, उसकी आँख हर एक बेशक्रीमत चीज़ को देख लेती है | ¹¹वह नदियों को मसदूद करता है, कि वह टपकती भी नहीं और छिपी चीज़ को वह रोशनी में निकाल लाता है |

¹²लेकिन हिकमत कहाँ मिलेगी? और 'अक्लमन्दी की जगह कहाँ है' ¹³न इन्सान उसकी क़द्र जानता है, न वह ज़िन्दों की सर ज़मीन में मिलती है | ¹⁴गहराव कहता है, वह मुझ में नहीं है, और समन्दर भी कहता है वह मेरे पास नहीं है |

¹⁵न वह सोने के बदले मिल सकती है, न चाँदी उसकी क्रीमत के लिए तुलेगी | ¹⁶न ओफ़ीर का सोना उसका मोल हो सकता है और न क्रीमती सुलैमानी पत्थर या नीलम | ¹⁷न सोना और काँच उसकी बराबरी कर सकते हैं, न चोखे सोने के ज़ेवर उसका बदल ठहरेंगे |

¹⁸मोंगे और बिल्लौर का नाम भी नहीं लिया जाएगा, बल्कि हिकमत की क्रीमत मरजान से बढ़कर है | ¹⁹न कूश का पुखराज उसके बराबर ठहरेगा न चोखा सोना उसका मोल होगा |

²⁰फिर हिकमत कहाँ ~से आती है, और 'अक्लमन्दी~की जगह कहाँ है' ²¹जिस हाल कि वह सब ज़िन्दों की आँखों से छिपी है, और हवा के परिंदों से पोशीदा रखी गई है ²²हलाकत और मौत कहती है, 'हम ने अपने कानों से उसकी अफ़वाह तो सुनी है। "

²³"खुदा उसकी राह को जानता है, और उसकी जगह से वाक़िफ़ है। ²⁴क्यूँकि वह ज़मीन की इन्तिहा तक नज़र करता है, और सारे आसमान के नीचे देखता है;

²⁵ताकि वह हवा का वज़न ठहराए, बल्कि वह पानी को पैमाने से नापता है।

²⁶जब उसने बारिश के लिए क़ानून, और रा'द की बर्क़ के लिए रास्ता ठहराया, ²⁷तब ही उसने उसे देखा और उसका बयान किया, उसने उसे ~क्रायम और ढूँड निकाला। ²⁸और उसने इन्सान से कहा, देख, खुदावन्द का ख़ौफ़ ही हिकमत है; और बदी से दूर रहना यही 'अक्लमन्दी~है। ' "

Chapter 29

¹और अय्यूब फिर अपनी मिसाल लाकर कहने लगा,²"काश कि मैं ऐसा होता जैसे गुज़रे महीनों में, या'नी जैसा उन दिनों में जब ख़ुदा मेरी हिफ़ाज़त करता था।

³जब उसका चरागा मेरे सिर पर रोशन रहता था, और मैं अँधेरे में उसके नूर के ज़रिए' से चलता था |

⁴जैसा मैं अपनी बरोमन्दी के दिनों में था, जब ख़ुदा की खुशनूदी ~मेरे खेमे पर थी |⁵जब क़ादिर-ए-मुतलक भी मेरे साथ था, और मेरे बच्चे मेरे साथ थे।⁶जब मेरे क़दम मख़खन से धुलते थे, और चट्टान मेरे लिए तेल की नदियाँ बहाती थी।

⁷जब मैं शहर के फाटक पर जाता और अपने लिए चौक में बैठक ~तैयार करता था;⁸तो जवान मुझे देखते और छिप जाते, और ~'उम्र रसीदा उठ खड़े होते थे।

⁹~हाकिम बोलना बंद कर देते, और अपने हाथ अपने मुँह पर रख लेते थे।¹⁰रईसों की आवाज़ थम जाती, और उनकी ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

¹¹क्योंकि ~कान जब मेरी सुन लेता तो मुझे मुबारक कहता था, और आँख जब मुझे देख लेती तो मेरी गावाही देती थी;¹²क्योंकि मैं ग़रीब को जब वह फ़रियाद करता-छुड़ाता था और यतीमों को भी जिसका कोई मददगार न था।¹³हलाक होनेवाला मुझे दु'आ देता था, और मैं बेवा के दिल को ऐसा खुश करता था कि वह गाने लगती थी।

¹⁴मैंने सदाक़त को पहना और उससे मुलब्स हुआ: ~मेरा इन्साफ़ गोया जुब्बा और 'अमामा था।¹⁵~मैं अंधों के लिए आँखें था, और लंगड़ों के लिए पाँव।¹⁶मैं मोहताज का बाप था, और मैं अजनबी के मु'आमिले की भी तहक़ीक़ करता था।

¹⁷मैं नारास्त के जबड़ों को तोड़ डालता, और उसके दाँतों से शिकार छुड़ा लेता था।¹⁸तब मैं कहता था, ~कि मैं अपने आशियाने में हूँगा और मैं अपने दिनों को रेत की तरह बे शुमार करूँगा,¹⁹मेरी जड़ें पानी तक फैल गई हैं, और रात भर ओस मेरी शाखों पर रहती है;

²⁰मेरी शौकत मुझ में ताज़ा है, और मेरी कमान मेरे हाथ में नई की जाती है।²¹'लोग मेरी तरफ़ कान लगाते और मुन्तज़िर रहते, और मेरी मशवरत के लिए ख़ामोश हो जाते थे।²²मेरी बातों के बा'द, वह फिर न बोलते थे; और मेरी तक्ऱीर उन पर टपकती थी

²³वह मेरा ऐसा इन्तिज़ार करते थे जैसा बारिश का; और अपना मुँह ऐसा फैलाते थे जैसे पिछले मेंह के लिए।²⁴जब वह मायूस होते थे तो मैं उन पर मुस्कराता था, और मेरे चेहरे की रोनक की उन्होंने कभी न बिगाड़ा।

²⁵मैं उनकी राह को चुनता, और सरदार की तरह बैठता, और ऐसे रहता था जैसे फ़ौज में बादशाह, और जैसे वह जो ग़मज़दों को तसल्ली देता है।

Chapter 30

¹"लेकिन अब तो वह जो मुझ से कम 'उग्र' हैं मेरा मज़ाक़ करते हैं, जिनके बाप-दादा को अपने गल्ले के कुत्तों के साथ रखना भी मुझे नागवार था।²बल्कि उनके हाथों की ताक़त मुझे किस बात का फ़ायदा पहुँचाएगी? वह ऐसे आदमी हैं जिनकी जवानी का ज़ोर ज़ाइल हो गया।³वह गुरबत और क़हत के मारे दुबले हो गए हैं, वह वीरानी और सुनसानी की तारीकी में ख़ाक चाटते हैं।

⁴वह झाड़ियों के पास लोनिये का साग तोड़ते हैं, और झाऊ की जड़ें उनकी ख़ूराक है।⁵वह लोगों के बीच दौड़ाये गए हैं, लोग उनके पीछे ऐसे चिल्लाते हैं जैसे चोर के पीछे।⁶उनको वादियों के दरख़्तों में, और ग़ारों और ज़मीन के भट्टों में रहना पड़ता है।

⁷वह झाड़ियों के बीच ~रैंकते, और झंकाड़ों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं।⁸वह बेवकूफ़ों बल्कि कमीनों की औलाद हैं, वह मुल्क से मार-मार कर निकाले गए थे।

⁹और अब मैं उनका गीत बना हूँ, बल्कि उनके लिए एक मिसाल की तरह हूँ।¹⁰वह मुझ से नफ़रत करते; वह मुझ से दूर खड़े होते, और मेरे मुँह पर थूकने से बाज़ नहीं रहते हैं।¹¹क्योंकि खुदा ने मेरा चिल्ला ढीला कर दिया और मुझ पर आफ़त भेजी, इसलिए वह मेरे सामने बेलगाम हो गए हैं।

¹²मेरे दहने हाथ पर लोगों का मजमा' उठता है; वह मेरे पाँव को एक तरफ़ सरका देते हैं, और मेरे खिलाफ़ अपनी मुहलिक राहें निकालते हैं।¹³~ऐसे लोग भी जिनका कोई मददगार नहीं, मेरे रास्ते को बिगाड़ते, और मेरी मुसीबत को बढ़ाते हैं'।

¹⁴वह गोया बड़े सुराख में से होकर आते हैं, और तबाही में मुझ पर टूट पड़ते हैं।¹⁵~दहशत मुझ पर तारी हो गई'। वह हवा की तरह मेरी आबरू को उड़ाती है। मेरी 'आफ़्रियत बादल की तरह जाती रही।

¹⁶"अब तो मेरी जान मेरे अंदर गुदाज़ हो गई, दुख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है।¹⁷~रात के वक़्त मेरी हड्डियाँ मेरे अंदर छिद जाती हैं और वह दर्द जो मुझे खाए जाते हैं, दम नहीं लेते।

¹⁸मेरे मरज़ की शिद्दत से मेरी पोशाक बदनुमा हो गयी; वह मेरे पैराहन के गिरेबान की तरह मुझ से लिपटी हुई है।¹⁹उसने मुझे कीचड़ में धकेल दिया है, मैं ख़ाक और राख की तरह हो गया हूँ।

²⁰मैं तुझ से फ़रियाद करता हूँ, और तू मुझे जवाब नहीं देता; मैं खड़ा होता हूँ, और तू मुझे घूरने लगता है।²¹तू बदल कर मुझ पर बे रहम हो गया है; अपने बाजू की ताक़त से तू मुझे सताता है।

²²तू मुझे ऊपर उठाकर हवा पर सवार करता है, और मुझे आँधी में घुला देता है।²³क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत और उस घर तक जो सब ज़िन्दों के लिए मुक़र्रर है।

²⁴तोभी क्या तबाही के वक़्त कोई अपना हाथ न बढ़ाएगा, और मुसीबत में फ़रियाद न करेगा?²⁵क्या मैं दर्दमन्द के लिए रोता न था? क्या मेरी जान मोहताज के लिए ग़मगीन न होती थी?²⁶जब मैं भलाई का मुन्तज़िर था, तो बुराई पेश आई जब मैं रोशनी के लिए ठहरा था, तो तारीकी आई।

²⁷मेरी अंतड़ियाँ उबल रही हैं और आराम नहीं पाती; मुझ पर मुसीबत के दिन आ पड़े हैं।²⁸मैं बग़ैर धूप के काला हो गया हूँ। मैं मजमे' में खड़ा होकर मदद के लिए फ़रियाद करता हूँ।²⁹मैं गीदड़ों का भाई, और शूतर मुर्गों का साथी हूँ।

³⁰मेरी खाल काली होकर मुझ पर से गिरती जाती है और मेरी हड्डियाँ हारत से जल गईं।³¹इसी लिए मेरे सितार से मातम, और मेरी बाँसली से रोने की आवाज़ निकलती है।

Chapter 31

¹"मैंने अपनी आँखों से 'अहद किया है। फिर मैं किसी कुँवारी पर क्योंकर नज़र करूँ। ²क्योंकि ऊपर से खुदा की तरफ़ से क्या हिस्सा है और 'आलम-ए-बाला से क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से क्या मीरास ~है?

³क्या वह नारास्तों के लिए आफ़त और बदकिरदारों के लिए तबाही नहीं है। ⁴क्या वह मेरी राहों को नहीं देखता, और मेरे सब क़दमों को नहीं गिनता?

⁵अगर मैं बतालत से चला हूँ, और मेरे पाँव ने दगा के लिए जल्दी की है। ⁶(तो मैं ठीक तराजू में तोला जाऊँ, ताकि खुदा मेरी रास्ती को जान ले)।

⁷अगर मेरा क़दम रास्ते से फिरा हुआ है, और मेरे दिल ने मेरी आँखों की पैरवी की है, और अगर मेरे हाथों पर दाग़ लगा है; ⁸तो मैं बोऊँ और दूसरा खाए, और मेरे खेत की पैदावार उखाड़ दी जाए।

⁹"अगर मेरा दिल किसी 'औरत पर फ़रेफ़ता हुआ, और मैं अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर घात में बैठा; ¹⁰~तो मेरी बीवी दूसरे के लिए पीसे, और ग़ैर मर्द उस पर झुकेँ।

¹¹क्योंकि यह बहुत बड़ा ज़ुर्म होता, बल्कि ऐसी बुराई होती जिसकी सज़ा क़ाज़ी देते हैं। ¹²~क्योंकि वह ऐसी आग़ है जो जलाकर भस्म कर देती है, और मेरे सारे हासिल को जड़ से बर्बाद कर डालती है।

¹³"अगर मैंने अपने खादिम या अपनी खादिमा का हक़ मारा हो, जब उन्होंने मुझ से झगड़ा किया; ¹⁴तो जब खुदा उठेगा, तब मैं क्या करूँगा? और जब वह आएगा, तो मैं उसे क्या जवाब दूँगा? ¹⁵क्या वही उसका बनाने वाला नहीं, जिसने मुझे पेट में बनाया? और क्या एक ही ने हमारी सूरत रहम में नहीं बनाई?

¹⁶अगर मैंने मोहताज़ से उसकी मुराद रोक रखी, या ऐसा किया कि बेवा की आँखें रह गईं ¹⁷या अपना निवाला अकेले ही खाया हो, और यतीम उसमें से खाने न पाया ¹⁸(नहीं, बल्कि मेरे लड़कपन से वह मेरे साथ ऐसे पला जैसे बाप के साथ, और मैं अपनी माँ के बतन ही से बेवा का रहनुमा रहा हूँ)।

¹⁹~अगर मैंने देखा कि कोई बेकपड़े मरता है, या किसी मोहताज़ के पास ओढ़ने को नहीं; ²⁰अगर उसकी कमर ने मुझ को दु'आ न दी हो, और अगर वह मेरी भेड़ों की ऊन से गर्म न हुआ हो। ²¹अगर मैंने किसी यतीम पर हाथ उठाया हो, क्योंकि फाटक पर मुझे अपनी मदद दिखाई दी;

²²तो मेरा कंधा मेरे शाने से उतर जाए, और मेरे बाजू की हड्डी टूट जाए। ²³क्योंकि ~मुझे खुदा की तरफ़ से आफ़त का ख़ौफ़ था, और उसकी बुजुर्गी की वजह से मैं कुछ न कर सका।

²⁴"अगर मैंने सोने पर भरोसा किया हो, और ख़ालिस सोने से कहा, मेरा ऐ'तिमाद तुझ पर है। ²⁵अगर मैं इसलिए कि मेरी दौलत फ़िरावान थी, और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल कर लिया था, नाज़ाँ हुआ।

²⁶अगर मैंने सूरज पर जब वह चमकता है, नज़र की हो या चाँद पर जब वह आब-ओ-ताब में चलता है, ²⁷और मेरा दिल चुपके से 'आशिक़ हो गया हो, और मेरे मुँह ने मेरे हाथ को चूम लिया हो; ²⁸तो यह भी ऐसा गुनाह है जिसकी सज़ा क़ाज़ी देते हैं क्योंकि ~यूँ मैंने खुदा का जो 'आलम-ए-बाला पर है, इंकार किया होता।

²⁹~'अगर मैं अपने नफ़रत करने वाले की हलाकत से खुश हुआ, या जब उस पर आफ़त आई तो खुश हुआ; ³⁰(हाँ, मैंने तो अपने मुँह को इतना भी गुनाह न करने दिया के ला'नत दे कर उसकी मौत के लिए दु'आ करता);

³¹अगर मेरे खेमे के लोगों ने यह न कहा हो, 'ऐसा कौन है जो उसके यहाँ गोशत से सेर न हुआ? ³²(परदेसी को गली कूचों में टिकना न पड़ा, बल्कि ~मैं मुसाफ़िर के लिए अपने दरवाज़े खोल देता था)।

³³अगर आदम की तरह अपने गुनाह अपने सीने में छिपाकर, मैंने अपनी ग़लतियों पर पर्दा डाला हो; ³⁴इस वजह से कि मुझे 'अवाम के लोगों का ख़ौफ़ था, और मैं ख़ान्दानों की हिक़ारत से डर गया, यहाँ तक कि मैं ख़ामोश हो गया और दरवाज़े से बाहर न निकला

³⁵काश कि कोई मेरी सुनने वाला होता! (यह लो मेरा दस्तख़त। क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझे जवाब दे)। काश कि मेरे मुख़ालिफ़ के दा'वे का सुबूत होता। ³⁶यक़ीनन मैं उसे अपने कंधे पर लिए फिरता; और उसे अपने लिए 'अमामे की तरह बाँध लेता। ³⁷मैं उसे अपने क़दमों की ता'दाद बताता; अमीर की तरह मैं उसके पास जाता।

³⁸"अगर मेरी ज़मीन मेरे खिलाफ़ फ़रियाद करती हों, और उसकी रेघारियाँ मिलकर रोती हों, ³⁹अगर मैंने बेदाम उसके फल खाए हों, या ऐसा किया कि उसके मालिकों की जान गई; ⁴⁰~तो गेहूँ के बदले ऊँट कटारे, और जौ के बदले कड़वे दाने उगें। "अय्यूब की बातें तमाम हुई।

Chapter 32

¹तब उन तीनों आदमी ने अय्यूब को जवाब देना छोड़ दिया, इसलिए कि वह अपनी नज़र में सच्चा था।²तब इलीहू बिन-बराकील बूज़ी का, जुलाम के खान्दान से था, क्रहर से भड़का। उसका क्रहर अय्यूब पर भड़का, इसलिए कि उसने खुदा को नहीं बल्कि अपने आप को रास्त ठहराया।

³और उसके तीनों दोस्तों पर भी उसका क्रहर भड़का, इसलिए कि उन्हें जवाब तो सूझा नहीं, तोभी उन्होंने अय्यूब को मुजरिम ठहराया।⁴और इलीहू अय्यूब से बात करने से इसलिए रुका रहा कि वह उससे बड़े थे।⁵जब इलीहू ने देखा कि उन तीनों के मुँह में जवाब न रहा, तो उसका क्रहर भड़क उठा।

⁶और बराकील बूज़ी का बेटा इलीहू कहने लगा, "मैं जवान हूँ और तुम बहुत बुजुर्ग हो, इसलिए मैं रुका रहा और अपनी राय देने की हिम्मत न की।⁷मैं कहा साल खुरदह लोग बोलें और 'उम्र रसीदा हिकमत से खायें

⁸लेकिन इन्सान में रूह है, और क़ादिर-ए-मुतलक़ का दम-अक्ल-बख़्शता है।⁹बड़े आदमी ही 'अक्लमन्द नहीं होते, और बुजुर्ग ही इन्साफ़ को नहीं समझते।

¹⁰इसलिए मैं कहता हूँ, 'मेरी सुनो, मैं भी अपनी राय दूँगा। '

¹¹~"देखो, मैं तुम्हारी बातों के लिए रुका रहा, जब तुम अलफ़ाज़ की तलाश में थे; मैं तुम्हारी दलीलों का मुन्तज़िर रहा।¹²बल्कि मैं तुम्हारी तरफ़ तवज्जुह करता रहा, और देखो, तुम में कोई न था जो अय्यूब को क़ायल करता, या उसकी बातों का जवाब देता।

¹³ख़बरदार, यह न कहना कि हम ने हिकमत को पा लिया है, खुदा ही उसे लाजवाब कर सकता है न कि इन्सान।¹⁴क्योंकि न उसने मुझे अपनी बातों का निशाना बनाया, न मैं तुम्हारी तरह तक्ररीरों से उसे जवाब दूँगा।

¹⁵वह हैरान हैं, वह अब जवाब नहीं देते; उनके पास कहने को कोई बात न रही।¹⁶और क्या मैं रुका रहूँ, इसलिए कि वह बोलते नहीं? इसलिए कि वह चुपचाप खड़े हैं और अब जवाब नहीं देते?

¹⁷मैं भी अपनी बात कहूँगा, मैं भी अपनी राय दूँगा।¹⁸क्योंकि मैं बातों से भरा हूँ, और जो रूह मेरे अंदर है वह ~मुझे मज़बूर करती है।¹⁹देखो, मेरा पेट बेनिकास शराब की तरह ~है, वह नई मशकों की तरह फटने ही को है।

²⁰~मैं बोलूँगा ताकि तुझे तसल्ली हो: मैं अपने लबों को खोलूँगा और जवाब दूँगा।²¹न मैं किसी आदमी की तरफ़दारी करूँगा, न मैं किसी शख्स को खुशामद के खिताब दूँगा।²²क्योंकि मुझे खुश करने का खिताब देना नहीं आता, वर्ना मेरा बनाने वाला मुझे जल्द उठा लेता।

Chapter 33

¹"तोभी ऐ अय्यूब ~ज़रा मेरी तक़रीर सुन ले, और मेरी सब बातों पर कान लगा।²देख, मैंने अपना मुँह खोला है; मेरी ज़बान ने मेरे मुँह में सुखन आराई की है।

³मेरी बातें मेरे दिल की रास्तबाज़ी को ज़ाहिर करेंगी। और मेरे लब जो कुछ जानते हैं, उसी को सच्चाई से कहेंगे।

⁴ख़ुदा की रूह ने मुझे बनाया है, और क़ादिर-ए-मुतलक़ का दम मुझे ज़िन्दगी बख़्शता है।⁵अगर तू मुझे जवाब दे सकता है तो दे, और अपनी बातों को मेरे सामने तरतीब देकर खड़ा हो जा।

⁶~देख, ख़ुदा के सामने मैं तेरे बराबर हूँ। मैं भी मिट्टी से बना हूँ।⁷देख, मेरा रौ'ब तुझे परेशान न करेगा, मेरा दबाव तुझ पर भारी न होगा।

⁸"यक़ीनन तू मेरे सुनते ही कहा है, और मैंने तेरी बातें सुनी हैं,⁹कि 'मैं साफ़ और मैं बे तकसीर हूँ, मैं बे गुनाह हूँ, और मुझ में गुनाह नहीं।

¹⁰वह मेरे खिलाफ़ मौक़ा' ढूँडता है, वह मुझे अपना दुश्मन समझता है;¹¹वह मेरे दोनों पाँव को काठ में ठोक देता है, वह मेरी सब राहों की निगरानी करता है।

¹²~"देख, मैं तुझे जवाब देता हूँ, इस बात में तू हक़ पर नहीं। क्योंकि ख़ुदा इन्सान से बड़ा है।

¹³तू क्यूँ उससे झगड़ता है? क्यूँकि वह अपनी बातों में से किसी का हिसाब नहीं देता।¹⁴क्यूँकि ख़ुदा एक बार बोलता है, बल्कि दो बार, चाहे इन्सान इसका खयाल न करे।¹⁵ख़्वाब में, रात के ख़्वाब में, जब लोगों को गहरी नींद आती है, और बिस्तर पर सोते वक़्त ;

¹⁶तब वह लोगों के कान खोलता है, और उनकी ता'लीम पर मुहर लगाता है,¹⁷ताकि इन्सान को उसके मक़सद से रोके, और गुरूर को इन्सान में से दूर करे।¹⁸वह उसकी जान को गढ़े से बचाता है, और उसकी ज़िन्दगी तलवार की मार से।

¹⁹~"वह अपने बिस्तर पर दर्द से तम्बीह पाता है, और उसकी हड्डियों में दाइमी जंग है।²⁰यहाँ तक कि उसका जी रोटी से, और उसकी जान लज़ीज़ खाने से नफ़रत करने लगती है।

²¹उसका गोश्त ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता; और उसकी हड्डियाँ जो दिखाई नहीं देती थीं, निकल आती हैं।²²बल्कि उसकी जान गढ़े के क़रीब पहुँचती है, और उसकी ज़िन्दगी हलाक करने वालों के नज़दीक।

²³वहाँ अगर उसके साथ कोई फ़रिश्ता हो, या हज़ार में एक ता'बीर करने वाला, जो इन्सान को बताए कि उसके लिए क्या ठीक है;²⁴तो वह उस पर रहम करता और कहता है, कि 'उसे गढ़े में जाने से बचा ले; मुझे फ़िदिया मिल गया है।

²⁵तब उसका जिस्म बच्चे के जिस्म से भी ताज़ा होगा; और उसकी जवानी के दिन लौट आते हैं।²⁶वह ख़ुदा से दु'आ करता है। और वह उस पर महेरबान होता है, ऐसा कि वह खुशी से उसका मुँह देखता है; और वह इन्सान की सच्चाई को बहाल कर देता है।

²⁷वह लोगों के सामने गाने और कहने लगता है, कि 'मैंने गुनाह किया और हक़ को उलट दिया, और इससे मुझे फ़ायदा न हुआ।²⁸~उसने मेरी जान को गढ़े में जाने से बचाया, और मेरी ज़िन्दगी रोशनी को देखेगी। '

²⁹"देखो, ख़ुदा आदमी के साथ यह सब काम, दो बार बल्कि तीन बार करता है;³⁰ताकि उसकी जान को गढ़े से लौटा लाए, और वह ज़िन्दों के नूर से मुनव्वर हो।

³¹ऐ अय्यूब! ग़ौर से मेरी सुन; ख़ामोश रह और मैं बोलूँगा।³²~अगर तुझे कुछ कहना है तो मुझे जवाब दे; बोल, क्यूँकि मैं तुझे रास्त ठहराना चाहता हूँ।³³अगर नहीं, तो मेरी सुन; ख़ामोश रह और मैं तुझे समझ सिखाऊँगा।

Chapter 34

¹इसके 'अलावा इलीहू ने यह भी कहा,²"ऐ तुम 'अक्लमन्द लोगों, मेरी बातें सुनो, और ऐ तुम जो अहल-ए-'इल्म हो, मेरी तरफ़ कान लगाओ;³क्योंकि कान बातों को परखता है, जैसे ज़बान' खाने को चखती है।

⁴जो कुछ ठीक है, हम अपने लिए चुन लें, जो भला है, हम आपस में जान लें।⁵क्योंकि अय्यूब ने कहा, 'मैं सादिक हूँ, और खुदा ने मेरी हक़ तल्फ़ी की है।⁶अगरचे मैं हक़ पर हूँ, तोभी झूटा ठहरता हूँ जबकि मैं बेकुसूर हूँ, मेरा ज़ख़्म ला 'इलाज है। '

⁷अय्यूब जैसा बहादुर कौन है, जो मज़ाक़ को पानी की तरह पी जाता है?⁸जो बदकिरदारों की रफ़ाफ़त में चलता है, और शरीर लोगों के साथ फिरता है।⁹क्योंकि ~उसने कहा है, कि 'आदमी को कुछ फ़ायदा नहीं कि वह खुदा में खुश है। "

¹⁰"इसलिए ऐ अहल-ए-अक्ल-मेरी सुनो, यह हरगिज़ हो नहीं सकता कि खुदा शरारत का काम करे, और क़ादिर-ए-मुतलक़ गुनाह करे।¹¹वह इन्सान को उसके आ'माल के मुताबिक़ बदला देगा, वह ऐसा करेगा कि हर किसी को अपनी ही राहों के मुताबिक़ बदला मिलेगा।¹²यक़ीनन खुदा बुराई नहीं करेगा;क़ादिर-ए-मुतलक़ से बेइन्साफ़ी न होगी।

¹³किसने उसको ज़मीन पर इख़्तियार दिया? या किसने सारी दुनिया का इन्तिज़ाम किया है?¹⁴अगर वह इन्सान से अपना दिल लगाए, अगर वह अपनी रूह और अपने दम को वापस ले ले;¹⁵तो तमाम बशर इकट्ठे फ़ना हो जाएँगे, और इन्सान फिर मिट्टी में मिल जाएगा।

¹⁶"इसलिए अगर तुझ में समझ है तो इसे सुन ले, और मेरी बातों पर तवज्जुह करा।¹⁷~क्या वह जो हक़ से 'अदावत रखता है, हुकूमत करेगा? और क्या तू उसे जो 'आदिल और क़ादिर है, मुल्ज़िम ठहराएगा?

¹⁸वह तो बादशाह से कहता है, 'तू रज़ील है';और शरीफ़ों से, कि 'तुम शरीर हो'।¹⁹वह उमर की तरफ़दारी नहीं करता, और अमीर को ग़रीब से ज़्यादा नहीं मानता, क्योंकि वह सब उसी के हाथ की कारीगरी हैं।²⁰~वह दम भर में आधी रात को मर जाते हैं, लोग हिलाए जाते हैं और गुज़र जाते हैं और ज़बरदस्त लोग बग़ैर हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं।

²¹"क्योंकि उसकी आँखें आदमी की राहों पर लगी हैं, और वह उसकी आदतों को देखता है;²²न कोई ऐसी तारीकी न मौत का साया है, जहाँ बद किरदार छिप सकें।²³क्योंकि उसे ज़रूरी नहीं कि आदमी का ज़्यादा खयाल करे ताकि वह खुदा के सामने 'अदालत में जाए।

²⁴वह बिना तफ़्तीश ज़बरदस्तों को टुकड़े-टुकड़े करता, और उनकी जगह औरों को खड़ा करता है।²⁵इसलिए वह उनके कामों का खयाल रखता है, और वह उन्हें रात को उलट देता है ऐसा कि वह हलाक हो जाते हैं।

²⁶वह औरों को देखते हुए, उनको ऐसा मारता है जैसा शरीरों को;²⁷इसलिए कि वह उसकी पैरवी से फिर गए, और उसकी किसी राह का खयाल न किया।²⁸यहाँ तक कि उनकी वजह से ग़रीबों की फ़रियाद उसके सामने पहुँची और उसने मुसीबत ज़दों की फ़रियाद सुनी।

²⁹जब वह राहत बख़्शे तो कौन मुल्ज़िम ठहरा सकता है? जब वह मुँह छिपा ले तो कौन उसे देख सकता है? चाहे कोई क़ौम हो या आदमी, दोनों के साथ यक़सॉं सुलूक है।³⁰ताकि बेदीन आदमी सलतनत न करे, और लोगों को फंदे में फंसाने के लिए कोई न हो।

³¹"क्योंकि क्या किसी ने खुदा से कहा है, मैंने सज़ा उठा ली है, मैं अब बुराई न करूँगा;³²जो मुझे दिखाई नहीं देता, वह तू मुझे सिखा; अगर मैंने गुनाह किया है तो अब ऐसा नहीं करूँगा'?"³³क्या उसका बदला तेरी मर्ज़ी पर हो कि तू उसे ना मंज़ूर करता है? क्योंकि तुझे फ़ैसला करना है न कि मुझे; इसलिए जो कुछ तू जानता है, कह दे।

³⁴अहल-ए-अक्लमुझ से कहेंगे, बल्कि हर 'अक्लमन्द जो मेरी सुनता है कहेगा,³⁵~'अय्यूब नादानी से बोलता है, और उसकी बातें हिकमत से खाली हैं। '

³⁶काश कि अय्यूब आखिर तक आजमाया जाता, क्योंकि वह शरीरों की तरह जवाब देता है।³⁷इसलिए कि वह अपने गुनाहों पर बग़ावत को बढ़ाता है; वह हमारे बीच तालियाँ बजाता है, और खुदा के खिलाफ़ बहुत बातें बनाता है। "

Chapter 35

¹इसके 'अलावा एलीहू ने यह भी कहा, ²~"क्या तू इसे अपना हक समझता है, या यह दा'वा करता है कि तेरी सदाक़त खुदा की सदाक़त से ज़्यादा है?"³जो तू कहता है कि मुझे इससे क्या फ़ायदा मिलेगा? और मुझे इसमें गुनहगार न होने की निस्बत कौन सा ज़्यादा फ़ायदा होगा?

⁴मैं तुझे और तेरे साथ तेरे दोस्तों को जवाब दूँगा।⁵आसमान की तरफ़ नज़र कर और देख; और आसमानों पर जो तुझ से बलन्द हैं, निगाह कर।

⁶अगर तू गुनाह करता है तो उसका क्या बिगाड़ता है? और अगर तेरी ख़ताएँ बढ़ जाएँ तो तू उसका क्या करता है?⁷अगर तू सादिक़ है तो उसको क्या दे देता है? या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है?⁸तेरी शरारत तुझ जैसे आदमी के लिए है, और तेरी सदाक़त आदमज़ाद के लिए।

⁹"जुल्म की कसरत की वजह से वह चिल्लाते हैं; ज़बरदस्त के बाज़ू की वजह से वह मदद के लिए दुहाई देते हैं।¹⁰लेकिन कोई नहीं कहता, कि 'खुदा मेरा खालिक़ कहाँ है, जो रात के वक़्त नगम 'इनायत करता है?'¹¹जो हम को ज़मीन के जानवरों से ज़्यादा ता'लीम देता है, और हमें हवा के परिन्दों से ज़्यादा 'अक्लमन्द बनाता है?'

¹²वह दुहाई देते हैं लेकिन कोई जवाब नहीं देता, यह बुरे आदमियों के गुरूर की वजह से है।¹³यक़ीनन खुदा बतालत को नहीं सुनेगा, और क़ादिर-ए-मुतलक़ उसका लिहाज़ न करेगा।¹⁴खासकर जब तू कहता है, कि तू उसे देखता नहीं। मुक़द्दमा उसके सामने है और तू उसके लिए ठहरा हुआ है।

¹⁵~लेकिन अब चूँकि उसने अपने ग़ज़ब में सज़ा न दी, और वह ~गुरूर का ज़्यादा खयाल नहीं करता,¹⁶इसलिए अय्यूब खुदबीनी की वजह से अपना मुँह खोलता है और नादानी से बातें बनाता है। "

Chapter 36

¹फिर इलीहू ने यह भी कहा, ²मुझे ज़रा इजाज़त दे और मैं तुझे बताऊँगा, क्योंकि खुदा की तरफ़ से मुझे कुछ और भी कहना है³ मैं अपने 'इल्म को दूर से लाऊँगा और रास्ती अपने खालिक से मनसूब करूँगा

⁴क्योंकि हकीकत में मेरी बातें झूठी नहीं हैं, और जो तेरे साथ है 'इल्म में कामिल हैं' ⁵देख खुदा क़ादिर है, और किसी को बेकार नहीं जानता वह समझ की कुव्वत में ग़ालिब है।

⁶वह शरीरों की जिंदगी को बरकरार नहीं रखता, बल्कि मुसीबत ज़दों को उनका हक़ अदा करता है। ⁷वह सादिकों से अपनी आँखें नहीं फेरता, बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ हमेशा के लिए तख़्त पर बिठाता है।

⁸और वह सरफ़राज़ होते हैं और अगर वह बेड़ियों से जकड़े जाएं और मुसीबत की रस्सियों से बंधें, ⁹तो वह उन्हें उनका 'अमल और उनकी तक्सीरें दिखाता है, कि उन्होंने घमण्ड किया है।

¹⁰वह उनके कान को ता'लीम के लिए खोलता है, और हुक्म देता है कि वह गुनाह से बाज़ आयें। ¹¹अगर वह सुन लें और उसकी 'इबादत करें तो अपने दिन इक़बालमंदी में और अपने बरस खुशहाली में बसर करेंगे¹² लेकिन अगर न सुनें तो वह तलवार से हलाक होंगे, और जिहालत में मरेंगे।

¹³लेकिन वह जो दिल में बे दीन ~हैं, ग़ज़ब को रख छोड़ते जब वह उन्हें बांधता है तो वह मदद के लिए दुहाई नहीं देते, ¹⁴वह जवानी में मरते हैं और उनकी जिन्दगी छोटों के बीच में बर्बाद होता है।

¹⁵वह मुसीबत ज़दह को मुसीबत से छुड़ाता है, और जुल्म में उनके कान खोलता है। ¹⁶बल्कि वह तुझे ~भी दुख से छुटकारा दे कर ऐसी वसी' जगह में जहाँ तंगी नहीं है पहुँचा देता और जो कुछ तेरे दस्तरख़्वान पर चुना जाता है वह चिकनाई से पुर होता है।

¹⁷लेकिन तू तो शरीरों के मुकद्दमा की ता'ईद करता है, इसलिए 'अदल और इन्साफ़ तुझ पर क़ाबिज़ हैं'। ¹⁸ख़बरदार तेरा क़हर तुझ से तक्फ़ीर न कराए और फ़िदया ~की फ़रादानी तुझे गुमराह न करे।

¹⁹क्या तेरा रोना या तेरा ज़ोर व तवानाई ~इस बात के लिए काफ़ी है कि तू मुसीबत में न पड़े। ²⁰उस रात की ख़्वाहिश न कर, जिसमें क़ौमों अपने घरों से उठा ली जाती हैं। ²¹होशियार रह, गुनाह की तरफ़ राग़िब न हो, क्योंकि तू ने मुसीबत को नहीं बल्कि इसी को चुना है।

²²देख, खुदा अपनी कुदरत से बड़े-बड़े काम करता है। कौन सा उस्ताद उसकी तरह है? ²³किसने उसे उसका रास्ता बताया? या कौन कह सकता है कि तू ने नारास्ती की है? ²⁴उसके काम की बड़ाई करना याद रख, जिसकी ता'रीफ़ लोग करते रहे हैं।

²⁵सब लोगों ने इसको देखा है, इन्सान उसे दूर से देखता है। ²⁶देख, खुदा बुजुर्ग है और हम उसे नहीं जानते, उसके बरसों का शुमार दरियाप्रत से बाहर है।

²⁷क्योंकि वह पानी के क़तरों को ऊपर खींचता है, जो उसी के अबख़िरात से मेंह की सूरत में टपकते हैं; ²⁸जिनकी अफ़लाक उंडेलते, और इन्सान पर कसरत से बरसाते हैं। ²⁹बल्कि क्या कोई बादलों के फैलाव, और उसके शामियाने की गरजों को समझ सकता है?

³⁰देख, वह अपने नूर को अपने चारों तरफ़ फैलाता है, और समन्दर की तह को ढाँकता है। ³¹क्योंकि इन्हीं से वह क़ौमों का इन्साफ़ करता है, और ख़ूराक इफ़रात से 'अता फ़रमाता है।

³²वह बिजली को अपने हाथों में लेकर, उसे हुक्म देता है कि दुश्मन पर गिरे। ³³इसकी कड़क उसी की खबर देती है, चौपाये भी तूफ़ान की आमद बताते हैं।

Chapter 37

¹इस बात से भी मेरा दिल काँपता है और अपनी जगह से उछल पड़ता है।²ज़रा उसके बोलने की आवाज़ को सुनो, और उस ज़मज़मा को जो उसके मुँह से निकलता है।³वह उसे सारे आसमान के नीचे, और अपनी बिजली को ज़मीन की इन्तिहा तक भेजता है।

⁴इसके बा'द कड़क की आवाज़ आती है; वह अपने जलाल की आवाज़ से गरजता है, और जब उसकी आवाज़ सुनाई देती है तो वह उसे रोकता है।⁵खुदा 'अजीब तौर पर अपनी आवाज़ से गरजता है। वह बड़े बड़े काम करता है जिनको हम समझ नहीं सकते।⁶क्योंकि वह बर्फ़ को फ़रमाता है कि तू ज़मीन पर गिर, इसी तरह वह बारिश से और मूसलाधार मेह से कहता है।

⁷वह हर आदमी के हाथ पर मुहर कर देता है, ताकि सब लोग जिनको उसने बनाया है, इस बात को जान लें।⁸तब दरिन्दे गारों में घुस जाते, और अपनी अपनी माँद में पड़े रहते हैं।⁹आँधी दख्खिन की कोठरी से, और सर्दी उत्तर" से आती है।

¹⁰खुदा के दम से बर्फ़ जम जाती है, और पानी का फैलाव तंग हो जाता है।¹¹बल्कि वह घटा पर नमी को लादता है, और अपने बिजली वाले बादलों को दूर तक फैलाता है।

¹²उसी की हिदायत से वह इधर उधर फिराए जाते हैं, ताकि जो कुछ वह उन्हें फ़रमाए, उसी को वह दुनिया के आबाद हिस्से पर अंजाम दें।¹³चाहे तम्बीह के लिए या अपने मुल्क के लिए, या रहमत के लिए वह उसे भेजे।

¹⁴"ऐ अय्यूब, इसको सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और खुदा के हैरतअंगेज़ कामों पर गौर कर।¹⁵क्या तुझे मा'लूम है कि खुदा क्यूँकर उन्हें ताकीद करता है और अपने बादल की बिजली को चमकाता है?

¹⁶क्या तू बादलों के मुवाज़ने से वाकिफ़ है? यह उसी के हैरतअंगेज़ काम हैं जो 'इल्म में कामिल है।¹⁷जब ज़मीन पर दख्खिनी हवा की वजह से सन्नाटा होता है तो तेरे कपड़े क्यूँ गर्म हो जाते हैं?

¹⁸~क्या तू उसके साथ फ़लक को फैला सकता है जो ढले हुए आइने की तरह मज़बूत है?¹⁹हम को सिखा कि हम उस से क्या कहें, क्यूँकि अंधेरे की वजह से हम अपनी तक़रीर को दुरुस्त नहीं कर सकते?²⁰क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ? या क्या कोई आदमी यह ख़्वाहिश करे कि वह निगल लिया जाए?

²¹"अभी तो आदमी उस नूर को नहीं देखते जो असमानों पर रोशन है, लेकिन हवा चलती है और उन्हें साफ़ कर देती है।²²दख्खिनी से सुनहरी रोशनी आती है, खुदा मुहीब शौकत से मुलब्बस है।

²³हम क़ादिर-ए-मुतलक़ को पा नहीं सकते, वह कुदरत और 'अद्ल में शानदार है, और इन्साफ़ की फ़िरावानी में ज़ुल्म न करेगा।²⁴इसीलिए लोग उससे डरते हैं; वह~अक्लमन्ददिलों की परवाह नहीं करता |

Chapter 38

¹~तब खुदावन्द ने अय्यूब को बगोले में से यूँ जवाब दिया,²~"यह कौन है जो नादानी की बातों से, मसलहत पर पर्दा डालता है"?³मर्द की तरह अब अपनी कमर कस ले, क्योंकि मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तू मुझे बता।

⁴~"तू कहाँ था, जब मैंने ज़मीन की बुनियाद डाली? तू~'अक्लमन्द~है तो बता।⁵क्या तुझे मा'लूम है किसने उसकी नाप ठहराई? या किसने उस पर सूत खींचा?⁶किस चीज़ पर उसकी बुनियाद डाली गई', या किसने उसके कोने का पत्थर बिठाया,⁷जब सुबह के सितारे मिलकर गाते थे, और खुदा के सब बेटे खुशी से ललकारते ~थे?

⁸"या किसने समन्दर को दरवाज़ों से बंद किया, जब वह ऐसा फूट निकला जैसे रहम से,⁹जब मैंने बादल को उसका लिबास बनाया, और गहरी तारीकी को उसका लपेटने का कपड़ा,

¹⁰और उसके लिए हृद ठहराई", और बेन्दू और किवाड़ लगाए,¹¹और कहा, 'यहाँ तक तू आना, लेकिन आगे नहीं, और यहाँ तक तेरी बिछड़ती हुई मौजें रुक जाएँगी'?

¹²"क्या तू ने अपनी 'उम्र में कभी सुबह पर हुकमरानी की, दिया ~और क्या तूने फ़ज्र को उसकी जगह बताई,¹³ताकि वह ज़मीन के किनारों पर क़ब्ज़ा करे, और शरीर लोग उसमें से झाड़ दिए जाएँ?

¹⁴वह ऐसे बदलती है जैसे मुहर के नीचे चिकनी मिटटी¹⁵और तमाम चीज़ें कपड़े की तरह नुमाया हो जाती हैं, और और शरीरों से उसकी बन्दगी रुक जाती है और बुलन्द बाज़ू तोड़ा जाता है।

¹⁶"क्या तू समन्दर के सोतों में दाखिल हुआ है? या गहराव की थाह में चला है?¹⁷~क्या मौत के फाटक तुझ पर ज़ाहिर कर दिए गए हैं? या तू ने मौत के साये के फाटकों को देख लिया है?¹⁸क्या तू ने ज़मीन की चौड़ाई को समझ लिया है?अगर तू यह सब जानता है तो बता।

¹⁹"नूर के घर का रास्ता कहाँ है? रही तारीकी, इसलिए उसका मकान कहाँ है?²⁰ताकि तू उसे उसकी हृद तक पहुँचा दे, और उसके मकान की राहों को पहचाने?

²¹बेशक तू जानता होगा; क्योंकि तू उस वक़्त पैदा हुआ था, और तेरे दिनों का शुमार बड़ा है।

²²क्या तू बर्फ़ के मख़ज़नों में दाखिल हुआ है, या ओलों के मख़ज़नों को तूने देखा है,²³जिनको मैंने तकलीफ़ के वक़्त के लिए, और लड़ाई और जंग के दिन की खातिर रख छोड़ा है?²⁴रोशनी किस तरीक़े से तक्रसीम होती है, या पूरबी हवा ज़मीन पर फैलाई जाती है?

²⁵सैलाब के लिए किसने नाली काटी, या कड़क की बिजली के लिए रास्ता,²⁶ताकि उसे ग़ैर आबाद ज़मीन पर बरसाए और वीरान पर जिसमें इन्सान नहीं बसता,

²⁷ताकि उजड़ी और सूनी ज़मीन को सेराब करे, और नर्म-नर्म घास उगाए?

²⁸क्या बारिश का कोई बाप है, या शबनम के क़तरे किससे तवल्लुद हुए?²⁹~यख़ किस के बतन निकला से निकला है, और आसमान के सफ़ेद पाले को किसने पैदा किया?³⁰पानी पत्थर सा हो जाता है, और गहराव की सतह जम जाती है।

³¹~"क्या तू 'अक्ल-ए-सुरैया को बाँध सकता, या जब्बार के बंधन को खोल सकता है,³²क्या तू मिनतक़तू-उल-बुरूज को उनके वक़्तों पर निकाल सकता है? या बिनात-उन-ना'श की उनकी सहेलियों के साथ रहबरी कर सकता है?³³क्या तू आसमान के क़वानीन को जानता है, और ज़मीन पर उनका इख़्तियार क़ायम कर सकता है?

³⁴क्या तू बादलों तक अपनी आवाज़ बुलन्द कर सकता है, ताकि पानी की फ़िरावानी तुझे छिपा ले?³⁵क्या तू बिजली को रवाना कर सकता है कि वह जाए, और तुझ से कहे मैं हाज़िर हूँ?

³⁶बातिन में हिकमत किसने रखी, और दिल को~अक्ल किसने बख़्शी?³⁷बादलों को हिकमत से कौन गिन सकता है? या कौन आसमान की मशकों को उँडेल सकता है,³⁸जब गर्द मिलकर तूदा बन जाती है, और ढेले एक साथ मिल जाते हैं?

³⁹"क्या तू शेरनी के लिए शिकार मार देगा, या बबर के बच्चों को सेर करेगा,⁴⁰जब वह अपनी माँदों में बैठे हों, और घात लगाए आड़ में दुबक कर बैठे हों?

⁴¹पहाड़ी कौवे के लिए कौन ख़ूराक मुहैया करता है, जब उसके बच्चे खुदा से फ़रियाद करते, और ख़ूराक न मिलने से उड़ते फिरते हैं?

Chapter 39

¹क्या तू जनता है कि पहाड़ पर की जंगली बकरियाँ कब बच्चे देती हैं? या जब हिरनियाँ बियाती हैं, तो क्या तू देख सकता है?²क्या तू उन महीनों को जिन्हें वह पूरा करती हैं, गिन सकता है? या तुझे वह वक्रत मा'लूम है जब वह बच्चे देती हैं?

³वह झुक जाती हैं; वह अपने बच्चे देती हैं, और अपने दर्द से रिहाई पाती हैं।⁴उनके बच्चे मोटे ताज़े होते हैं; वह खुले मैदान में बढ़ते हैं। वह निकल जाते हैं और फिर नहीं लौटते।

⁵गधे को किसने आज्ञा दिया? जंगली गधे के बंद किसने खोले? ⁶वीरान को मैंने उसका मकान बनाया, और ज़मीन-ए-शोर को उसका घर।

⁷वह शहर के शोर-ओ-गुल को हेच समझता है, और हाँकने वाले की डॉट को नहीं सुनता।⁸पहाड़ों का सिलसिला उसकी चरागाह है, और वह हरियाली की तलाश में रहता है।

⁹"क्या जंगली साँड़ तेरी खिदमत पर राज़ी होगा? क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा?"¹⁰क्या तू जंगली साँड़ को रस्से से बाँधकर रेघारी में चला सकता है? या वह तेरे पीछे-पीछे वादियों में हेंगा फेरेगा?

¹¹क्या तू उसकी बड़ी ताक़त की वजह से उस पर भरोसा करेगा? या क्या तू अपना काम उस पर छोड़ देगा?¹²क्या तू उस पर भरोसा करेगा कि वह तेरा गल्ला घर ले आए, और तेरे खलीहान का अनाज इकट्ठा करे?

¹³"शुतरमुर्ग के बाजू आसूदा हैं, लेकिन क्या उसके पर-ओ-बाल से शफ़क़त ज़ाहिर होती है?"¹⁴क्योंकि वह तो अपने अंडे ज़मीन पर छोड़ देती है, और रेत से उनको गर्मी पहुँचाती है;¹⁵ और भूल जाती है कि वह पाँव से कुचले जाएँगे, या कोई जंगली जानवर उनको रौंद डालेगा।

¹⁶वह अपने बच्चों से ऐसी सख़्तदिली करती है कि जैसे वह उसके नहीं। चाहे उसकी मेहनत रायगाँ जाए उसे कुछ ख़ौफ़ नहीं।¹⁷क्योंकि खुदा ने उसे 'अक्ल से महरूम रखा, और उसे समझ नहीं दी।¹⁸जब वह तनकर सीधी खड़ी हो जाती है, तो घोड़े और उसके सवार दोनों को नाचीज़ समझती हैं।

¹⁹~"क्या घोड़े को उसका ताक़त तू ने दी है? क्या उसकी गर्दन की लहराती अयाल से तूने मुलब्स किया?"²⁰क्या उसे टिट्टी की तरह तूने कुदाया है? उसके फ़राने की शान मुहीब है।

²¹वह वादी में टाप मारता है और अपने ज़ोर में खुश है। वह हथियारबंद आदमियों का सामना करने को निकलता है।²²वह ख़ौफ़ को नाचीज़ जानता है और घबराता नहीं, और वह तलवार से मुँह नहीं मोड़ता।²³तर्कश उस पर खड़खड़ाता है, चमकता हुआ भाला और साँग भी;

²⁴वह तुन्दी और क़हर में ज़मीन पैमाई करता है, और उसे यक़ीन नहीं होता कि यह तुर ही की आवाज़ है।²⁵जब जब तुरही बजती है, वह हिन हिन करता है, और लड़ाई को दूर से सूँघ लेता है; सरदारों की गरज़ और ललकार को भी।

²⁶"क्या बा'ज़ तेरी हिकमत से उड़ता है, और दख्खिन की तरफ़ अपने बाजू फैलाता है?

²⁷क्या 'उक्राब तेरे हुक़म से ऊपर चढ़ता है, और बुलन्दी पर अपना घोंसला बनाता है?"²⁸वह चट्टान पर रहता और वहीं बसेरा करता है; या'नी चट्टान की चोटी पर और पनाह की जगह में।

²⁹वहीं से वह शिकार ताड़ लेता है, उसकी आँखें उसे दूर से देख लेती हैं।³⁰उसके बच्चे भी खून चूसते हैं, और जहाँ मक्तूल हैं वहाँ वह भी है। "

Chapter 40

¹खुदावन्द ने अय्यूब से यह भी कहा, ²"क्या जो फुजूल हुज्जत करता है वह क़ादिर-ए-मुतलक़ से झगड़ा करे? जो खुदा से बहस करता है, वह इसका जवाब दे।

³" अय्यूब का जवाब तब अय्यूब ने खुदावन्द को जवाब दिया, ⁴"देख, मैं नाचीज़ ~हूँ! मैं तुझे क्या जवाब दूँ? मैं अपना हाथ अपने मुँह पर रखता हूँ।⁵ अब जवाब न दूँगा; एक बार मैं बोल चुका, बल्कि दो बार लेकिन अब आगे न बढूँगा। "

⁶तब खुदावन्द ने अय्यूब को बगोले में से जवाब दिया, ⁷"मर्द की तरह अब अपनी कमर कस ले, मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तू मुझे बता।

⁸क्या तू मेरे इन्साफ़ को भी बातिल ठहराएगा?⁹क्या तू मुझे मुजरिम ठहराएगा ताकि खुद रास्त ठहरे ? या क्या तेरा बाज़ू खुदा के जैसा है? और क्या तू उसकी तरह आवाज़ से गरज़ सकता है?

¹⁰अब अपने को शान-ओ-शौकत से आरास्ता कर, और 'इज़्जत-ओ-जलाल से मुलब्स हो जा।¹¹ अपने क़हर के सैलाबों को बहा दे, और हर मगरूर को देख और ज़लील कर।

¹²हर मगरूर को देख और उसे नीचा कर, और शरीरों को जहाँ खड़े हों पामाल कर दे।¹³ उनको इकट्ठा मिट्टी में छिपा दे, और उस पोशीदा मक़ाम में उनके मुँह बाँध दे।¹⁴ तब मैं भी तेरे बारे में मान लूँगा, कि तेरा ही दहना हाथ तुझे बचा सकता है।

¹⁵अब हिप्पो पोटीमस' को देख, जिसे मैंने तेरे साथ बनाया; वह बैल की तरह घास खाता है।¹⁶ देख, उसकी ताक़त उसकी कमर में है, और उसका ज़ोर उसके पेट के पट्टों में।

¹⁷वह अपनी दुम को देवदार की तरह हिलाता है, उसकी रानों की नसे एक साथ पैवस्ता हैं।¹⁸ उसकी हड्डियाँ पीतल के नलों की तरह हैं, उसके आ'ज़ा लोहे के बेन्डों की तरह हैं।

¹⁹~वह खुदा की ख़ास सन'अत' है; उसके ख़ालिक ही ने उसे तलवार बख़शी है।²⁰ यक़ीनन टीले उसके लिए ख़ूराक एक साथ पहुँचाते हैं जहाँ मैदान के सब जानवर खेलते कूदते हैं।²¹ वह कंवल के दरख़्त के नीचे लेटता है, सरकंडों की आड़ और दलदल में।

²²कंवल के दरख़्त उसे अपने साये के नीचे ~छिपा लेते हैं। नाले के बीदे उसे घेर लेती हैं | ²³देख, अगर दरिया में बाढ़ हो तो वह नहीं काँपता चाहे यर्दन उसके मुँह तक चढ़ आये वह बे खौफ़ है।²⁴ जब वह होशियार हो, तो क्या कोई उसे पकड़ लेगा; या फंदा लगाकर उसकी नाक को छेदेगा?

Chapter 41

¹क्या तू मगर कोशिश से बाहर निकाल सकता है या रस्सी से उसकी ज़बान को दबा सकता है? ²क्या तू उसकी नाक में रस्सी डाल सकता है? या उसका जबड़ा मेख से छेद सकता है? ³क्या वह तेरी बहुत मिन्नत समाजत करेगा? या तुझ से मीठी मीठी बातें कहेगा?

⁴क्या वह तेरे साथ 'अहद बांधेगा, कि तू उसे हमेशा के लिए नौकर बना ले? ⁵क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे परिन्दे से? या क्या तू उसे अपनी लड़कियों के लिए बाँध देगा? ⁶क्या लोग उसकी तिजारत करेंगे? क्या वह उसे सौदागरों में तक़सीम करेंगे?

⁷क्या तू उसकी खाल को भालों से, या उसके सिर को माहीगीर के तरसूलों से भर सकता है? ⁸तू अपना हाथ उस पर धरे, तो लड़ाई को याद रखेगा और फिर ऐसा न करेगा। ⁹देख, उसके बारे में उम्मीद बेफ़ायदा है। क्या कोई उसे देखते ही गिर न पड़ेगा?

¹⁰कोई ऐसा तुन्दखू नहीं जो उसे छेड़ने की हिम्मत न करे। फिर वह कौन है जो मेरे सामने खड़ा होसके? ¹¹किस ने मुझे पहले कुछ दिया है कि मैं उसे अदा करूँ? जो कुछ सारे आसमान के नीचे है वह मेरा है। ¹²न मैं उसके 'आज़ा के बारे में खामोश रहूँगा न उसकी ताक़त और खूबसूरत डील डोल के बारे में।

¹³उसके ऊपर का लिबास कौन उतार सकता है? उसके जबड़ों के बीच कौन आएगा? ¹⁴उसके मुँह के किवाड़ों को कौन खोल सकता है? उसके दाँतों का दायरा दहशत नाक है। ¹⁵उसकी ढालें उसका फ़ख़ हैं; जो जैसा सख़्त मुहर से पैवस्ता की गई हैं।

¹⁶वह एक दूसरी से ऐसी जुड़ी हुई हैं, कि उनके बीच हवा भी नहीं आ सकती। ¹⁷वह एक दूसरी से एक साथ पैवस्ता हैं; वह आपस में ऐसी जुड़ी हैं कि जुदा नहीं हो सकतीं। ¹⁸उसकी छींके नूर अफ़शानी करती हैं उसकी आँखें सुबह के पपोटों की तरह हैं।

¹⁹उसके मुँह से जलती मश'अलें निकलती हैं, और आग की चिंगारियाँ उड़ती हैं। ²⁰उसके नथनों से धुवाँ निकलता है, जैसे खौलती देग और सुलगते सरकंडे से।

²¹उसका साँस से ~कोयलों को दहका देता है, और उसके मुँह से शो'ले निकलते हैं।

²²ताक़त उसकी गर्दन में बसती है, और दहशत उसके आगे आगे चलती है। ²³उसके गोश्त की तहें आपस में जुड़ी हुई हैं; वह उस पर खूब जुड़ी हैं और हट नहीं सकतीं। ²⁴उसका दिल पत्थर की तरह मज़बूत है, बल्कि चक्की के निचले पाट की तरह।

²⁵जब वह उठ खड़ा होता है, तो ज़बरदस्त लोग डर जाते हैं, और घबराकर खौफ़ज़दा हो जाते हैं। ²⁶अगर कोई उस पर तलवार चलाए, तो उससे कुछ नहीं बनता: न भाले, न तीर, न बरछी से। ²⁷वह लोहे को भूसा समझता है, और पीतल को गली हुई लकड़ी।

²⁸तीर उसे भगा नहीं सकता, फ़लाखन के पत्थर उस पर तिनके से हैं। ²⁹लाठियाँ जैसे तिनके हैं, वह बर्छी के चलने पर हँसता है। ³⁰उसके नीचे के हिस्से तेज़ ठीकरों की तरह हैं; वह कीचड़ पर जैसे हेंगा फेरता है।

³¹वह गहराव को देग की तरह खौलाता, और समुन्दर को मरहम की तरह बना देता है। ³²वह अपने पीछे चमकीला निशान छोड़ जाता है; गहराव गोया सफ़ेद नज़र आने लगता है।

³³ज़मीन पर उसका नज़ीर नहीं, जो ऐसा बेखौफ़ पैदा हुआ हो। ³⁴वह हर ऊँची चीज़ को देखता है, और सब मगरूरों का बादशाह है। "

Chapter 42

¹तब अय्यूब ने खुदावन्द यूँ जवाब दिया²~"मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरा कोई इरादा रुक नहीं सकता।³यह कौन है जो नादानी से मसलहत पर पर्दा डालता है" ? लेकिन मैंने जो न समझा वही कहा, या'नी ऐसी बातें जो मेरे लिए बहुत 'अजीब थीं जिनको ~मैं जानता न था।

⁴~"मैं तेरी मिन्नत करता हूँ सुन, मैं कुछ कहूँगा। मैं तुझ से सवाल करूँगा, तू मुझे बता। ⁵मैंने तेरी खबर कान से सुनी थी, लेकिन अब मेरी आँख तुझे देखती है; ⁶इसलिए मुझे अपने आप से नफ़रत है, और मैं खाक और राख में तौबा करता हूँ। "

⁷और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द यह बातें अय्यूब से कह चुका, तो उसने अलीफ़ज़ तेमानी से कहा कि "मेरा गज़ब तुझ पर और तेरे दोनों दोस्तों पर भड़का है, क्योंकि तुम ने मेरे बारे में वह बात न कही जो हक़ है, जैसे मेरे बन्दे अय्यूब ने कही।"⁸इसलिए अब अपने लिए सात बैल और सात मेंढे लेकर, मेरे बन्दे अय्यूब के पास जाओ और अपने लिए सोखतनी कुर्बानी पेश करो, और मेरा बन्दा अय्यूब तुम्हारे लिए दु'आ करेगा; क्योंकि उसे तो मैं कुबूल करूँगा ताकि तुम्हारी जिहालत के मुताबिक़ तुम्हारे साथ सुलूक न करूँ, क्योंकि तुम ने मेरे बारे में वह बात न कही जो हक़ है, जैसे मेरे बन्दे अय्यूब ने कही। "⁹इसलिए अलीफ़ज़ तेमानी , और ~बिलदद सूखी और जूफ़र ना'माती ~ने जाकर जैसा खुदावन्द ने उनको फ़रमाया था किया, और खुदावन्द ने अय्यूब को कुबूल किया।

¹⁰~और खुदावन्द ने अय्यूब की गुलामी को जब उसने अपने दोस्तों के लिए दु'आ की बदल दिया और खुदावन्द ने अय्यूब को जितने उसके पास पहले था उसका दो गुना दे दिया |¹¹तब उसके सब भाई और सब बहनें और उसके सब अगले जान-पहचान उसके पास आए, और उसके घर में उसके साथ खाना खाया; और उस पर नौहा किया और उन सब बलाओं ~के बारे में, जो खुदावन्द ने उस पर नाज़िल की थीं, उसे तसल्ली दी। हर शख्स ने उसे एक सिक्का भी दिया और हर एक ने सोने की एक बाली।

¹²यूँ खुदावन्द ने अय्यूब के आखिरी दिनों में शुरू'आत की निस्बत ज़्यादा बरकत बख़्शी; और उसके पास चौदह हज़ार भेड़ बकरियाँ, और छः हज़ार ऊँट, और हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गधियाँ, हो गईं।¹³उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी हुईं।¹⁴और उसने पहली का नाम यमीमा और दूसरी का नाम क़स्याह और तीसरी का नाम करन-हप्पूक रखवा।

¹⁵और उस सारी सर ज़मीन में ऐसी 'औरतें कहीं न थीं, जो अय्यूब की बेटियों की तरह ख़ूबसूरत हों, और उनके बाप ने उनको उनके भाइयों के बीच मीरास दी।

¹⁶और इसके बा'द अय्यूब एक सौ चालीस बरस ज़िन्दा रहा, और अपने बेटे और पोते चौथी पुश्त तक देखे।¹⁷और अय्यूब ने बुढ़ा और बुजुर्ग होकर वफ़ात पाई।

ज़बूर

Chapter 1

¹~मुबारक है वह आदमी जो शरीरों की सलाह पर नहीं चलता, और ख़ताकारों की राह में खड़ा नहीं होता; और ठट्ठा बाज़ों की महफ़िल में नहीं बैठता।²बल्कि खुदावन्द की शरी'अत में ~ही उसकी ख़ुशी है; और उसी की शरी'अत पर दिन रात उसका ध्यान रहता है।

³~वह उस दरख़्त की तरह होगा, जो पानी की नदियों के पास लगाया गया है। जो अपने वक़्त पर फलता है, और जिसका पत्ता भी नहीं मुरझाता। इसलिए जो कुछ वह करे फलदार होगा।

⁴~शरीर ऐसे नहीं, बल्कि वह भूसे की तरह हैं, जिसे हवा उड़ा ले जाती है।⁵~इसलिए शरीर 'अदालत में क़ायम न रहेंगे, न ख़ताकार सादिक़ों की ज़मा'अत में।

⁶~क्योंकि खुदावन्द सादिक़ों की राह ~जानता है लेकिन शरीरों की राह बर्बाद हो जाएगी।

Chapter 2

¹~क्रौमें किस लिए गुस्से में है और लोग क्यों बेकार खयाल बाँधते हैं²~खुदावन्द और उसके मसीह के खिलाफ़ ज़मीन के बादशाह एक हो कर, और हाकिम आपस में मशवरा करके कहते हैं,³~'आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियाँ अपने ऊपर से उतार फेंके।"

⁴वह जो आसमान पर तख़्त नशीन है हँसेगा, खुदावन्द उनका मज़ाक़ उड़ाएगा।⁵~तब वह अपने ग़ज़ब में उनसे कलाम करेगा, और अपने ग़ज़बनाक गुस्से में उनको परेशान कर देगा,

⁶~"मैं तो अपने बादशाह को, अपने पाक पहाड़ सिय्यून पर बिठा चुका हूँ।"⁷~मैं उस फ़रमान को बयान करूँगा: खुदावन्द ने मुझ से कहा, "तू मेरा बेटा है। आज तू मुझ से पैदा हुआ।

⁸~मुझ से माँग, और मैं क्रौमों को तेरी मीरास के लिए, और ज़मीन के आखिरी हिस्से तेरी मिल्कियत के लिए तुझे बख़्शूँगा।⁹~तू उनको लोहे के 'असा से तोड़ेगा, कुम्हार के बर्तन की तरह तू उनको चकनाचूर कर डालेगा।"

¹⁰~इसलिए अब ऐ बादशाहो, अक्रलमंद बनो; ऐ ज़मीन की 'अदालत करने वालो, तरबियत पाओ।¹¹~डरते हुए खुदावन्द की 'इबादत करो, काँपते हुए खुशी मनाओ।

¹²~बेटे को चूमो, ऐसा न हो कि वह क्रहर में आए, और तुम रास्ते में हलाक हो जाओ, क्योंकि उसका ग़ज़ब जल्द भड़कने को है | मुबारक हैं वह सब जिनका भरोसा उस पर है।

Chapter 3

¹ऐ खुदावन्द मेरे सताने वाले कितने बढ़ गए, वह जो मेरे खिलाफ़ उठते हैं बहुत हैं।²बहुत से मेरी जान के बारे में कहते हैं, कि खुदा की तरफ़ से उसकी मदद न होगी। (सिलाह)

³लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हर तरफ़ मेरी सिपर है। मेरा फ़ख़ और सरफ़राज़ करने वाला।⁴मैं बुलन्द आवाज़ से खुदावन्द के सामने फ़रियाद करता हूँ और वह अपने पाक पहाड़ पर से मुझे जवाब देता है। (सिलाह)

⁵मैं लेट कर सो गया; मैं जाग उठा, क्योंकि खुदावन्द मुझे संभालता है।⁶मैं उन दस हज़ार आदमियों से नहीं डरने का, जो चारों तरफ़ मेरे खिलाफ़ इकट्ठा हैं।

⁷उठ ऐ खुदावन्द, ऐ मेरे खुदा, मुझे बचा ले! क्योंकि तूने मेरे सब दुश्मनों को जबड़े पर मारा है। तूने शरीरों के दाँत तोड़ डाले हैं।⁸नजात खुदावन्द की तरफ़ से है। तेरे लोगों पर तेरी बरकत हो!

Chapter 4

¹जब मैं पुकारूँ तो मुझे जबाब दे ऐ मेरी सदाक़त के खुदा! तंगी में तूने मुझे कुशादगी बख़्शी, मुझ पर रहम कर और मेरी दु'आ सुन ले।

²~ऐ बनी आदम! कब तक मेरी 'इज़ज़त के बदले रुस्वाई होगी? तुम कब तक बकवास से मुहब्बत रखोगे और झूट के दर पे रहोगे?³जान लो कि खुदावन्द ने दीनदार को अपने लिए अलग कर रखा है; जब मैं खुदावन्द को पुकारूँगा तो वह सुन लेगा।

⁴~थरथराओ और गुनाह न करो; अपने अपने बिस्तर पर दिल में सोचो और खामोश रहो।⁵सदाक़त की कुर्बानियाँ पेश करो, और खुदावन्द पर भरोसा करो।

⁶~बहुत से कहते हैं कौन हम को कुछ भलाई दिखाएगा? ऐ खुदावन्द तू अपने चेहरे का नूर हम पर जलवह गर फ़रमा।⁷~तूने मेरे दिल को उससे ज़्यादा खुशी बख़्शी है, जो उनको ग़ल्ले और मय की बहुतायत से होती थी।⁸मैं सलामती से लेट जाऊँगा और सो रहूँगा: क्योंकि ऐ खुदावन्द! सिर्फ़ तू ही मुझे मुत्मईन रखता है!

Chapter 5

¹ऐ खुदावन्द मेरी बातों पर कान लगा! मेरी आहों पर तवज्जुह कर!²~ऐ मेरे बादशाह! ऐ मेरे खुदा! मेरी फ़रियाद की आवाज़ की तरफ़ मुतवज्जिह हो, क्योंकि मैं तुझ ही से दु'आ करता हूँ।³~ऐ खुदावन्द तू सुबह को मेरी आवाज़ सुनेगा। मैं सवेरे ही तुझ से दु'आ करके इन्तिज़ार करूँगा।

⁴~क्योंकि तू ऐसा खुदा नहीं जो शरारत से खुश हो। गुनाह तेरे साथ नहीं रह सकता।⁵~घमंडी तेरे सामने खड़े न होंगे। तुझे सब बदकिरदारों से नफ़रत है।⁶~तू उनको जो झूट बोलते हैं हलाक करेगा। खुदावन्द को खूँखवार और दगाबाज़ आदमी से नफ़रत है।

⁷लेकिन मैं तेरी शफ़क़त की कसरत से तेरे घर में आऊँगा। मैं तेरा रौ'ब मानकर तेरी पाक हैकल की तरफ़ रुख करके सिज्दा करूँगा।⁸~ऐ खुदावन्द! मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे अपनी सदाक़त में चला; मेरे आगे आगे अपनी राह को साफ़ कर दे।

⁹~क्योंकि उनके मुँह में ज़रा सच्चाई नहीं, उनका बातिन ~सिर्फ़ बुराई है। उनका गला खुली क़ब्र है, वह अपनी ज़बान से खुशामद करते हैं।¹⁰ऐ खुदा तू उनको मुजरिम ठहरा; वह अपने ही मश्वरों से तबाह हों। उनको उनके गुनाहों की ज़्यादती की वजह से खारिज कर दे; क्योंकि उन्होंने तुझ से बगावत की है।

¹¹लेकिन वह सब जो तुझ पर भरोसा रखते हैं, शादमान हों, वह सदा खुशी से ललकारें, क्योंकि तू उनकी हिमायत करता है। और जो तेरे नाम से मुहब्बत रखते हैं, तुझ में खुश रहें।¹²क्योंकि तू सादिक़ को बरकत बख़्शेगा। ऐ खुदावन्द! तू उसे करम से ढाल की तरह ढाँक लेगा।

Chapter 6

¹ऐ खुदा तू मुझे अपने कहर में न झिड़क, और अपने ग़ज़बनाक गुस्से में मुझे तम्बीह न दे।²ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं अधमरा हो गया हूँ। ऐ खुदावन्द, मुझे शिफ़ा दे, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेकरारी है।

³मेरी जान भी बहुत ही बेकरार है; और तू ऐ खुदावन्द, कब तक?⁴~लौट ऐ खुदावन्द, मेरी जान को छुड़ा। अपनी शफ़क़त की खातिर मुझे बचा ले।⁵~क्योंकि मौत के बा'द तेरी याद नहीं होती, क़ब्र में कौन तेरी शुक़रगुज़ारी करेगा?

⁶मैं कराहते कराहते थक गया, मैं अपना पलंग आँसुओं से भिगोता हूँ हर रात मेरा बिस्तर तैरता है।⁷मेरी आँख ग़म के मारे बैठी जाती हैं, और मेरे सब मुखालिफ़ों की वजह से धुंधलाने लगीं।

⁸~ऐ सब बदकिरदारो, मेरे पास से दूर हो; क्योंकि खुदावन्द ने मेरे रोने की आवाज़ सुन ली है।⁹खुदावन्द ने मेरी मिन्नत सुन ली; खुदावन्द मेरी दु'आ कुबूल करेगा।

¹⁰~मेरे सब दुश्मन शर्मिन्दा और बहुत ही बेकरार होंगे; वह लौट जाएँगे, वह अचानक शर्मिन्दा होंगे।

Chapter 7

¹~ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरा भरोसा तुझ पर है; सब पीछा करने वालों से मुझे बचा और छुड़ा,²~ऐसा न हो कि वह शेर-ए-बबर की तरह मेरी जान को फाड़े; वह उसे टुकड़े टुकड़े कर दे और कोई छुड़ाने वाला न हो।

³~ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, अगर मैंने यह किया हो, अगर मेरे हाथों से बुराई हुई हो;⁴अगर मैंने अपने मेल रखने वाले से भलाई के बदले बुराई की हो, (बल्कि मैंने तो उसे जो नाहक मेरा मुखालिफ़ था, बचाया है);

⁵तो दुश्मन मेरी जान का पीछा करके उसे आ पकड़े, बल्कि वह मेरी ज़िन्दगी को बर्बाद करके मिट्टी में, और मेरी 'इज़ज़त को खाक में मिला दे।(सिलाह)

⁶~ऐ खुदावन्द, अपने क्रहर में उठ; मेरे मुखालिफ़ों के ग़ज़ब के मुक़ाबिले में तू खड़ा हो जा; और मेरे लिए जाग! तूने इंसान का हुक्म तो दे दिया है।⁷तेरे चारों तरफ़ क्रौमों का इजितमा'अ हो; और तू उनके ऊपर 'आलम-ए-बाला को लौट जा

⁸खुदावन्द, क्रौमों का इंसान करता है; ऐ खुदावन्द, उस सदाक़त-ओ-रास्ती के मुताबिक़ जो मुझ में है मेरी'अदालत कर |⁹~काश कि शरीरों की बदी का खात्मा हो जाए, लेकिन सादिक़ को तू क़याम बख़्श; क्योंकि खुदा-ए-सादिक़ दिलों और गुदों को जाँचता है।

¹⁰~मेरी ढाल खुदा के हाथ में है, जो रास्त दिलों को बचाता है।¹¹~खुदा सादिक़ मुन्सिफ़ है, बल्कि ऐसा खुदा जो हर रोज़ क्रहर करता है।

¹²अगर आदमी बाज़ न आए तो वह अपनी तलवार तेज़ करेगा; उसने अपनी कमान पर चिल्ला चढ़ाकर उसे तैयार कर लिया है।¹³~उसने उसके लिए मौत के हथियार भी तैयार किए हैं; वह अपने तीरों को आतिशी बनाता है।

¹⁴देखो, उसे बुराई की पैदाइश का दर्द ~लगा है! बल्कि वह शरारत से फलदार ~हुआ और उससे झूट पैदा हुआ।¹⁵~उसने गढ़ा खोद कर उसे गहरा किया, और उस खन्दक में जो उसने बनाई थी खुद गिरा।¹⁶~उसकी शरारत उल्टी उसी के सिर पर आएगी; उसका जुल्म उसी की खोपड़ी पर नाज़िल होगा।

¹⁷~खुदावन्द की सदाक़त के मुताबिक़ मैं उसका शुक्र करूँगा, और खुदावन्द ताला के नाम की तारीफ़ गाऊँगा।

Chapter 8

¹ऐ खुदावन्द हमारे रब तेरा नाम तमाम ज़मीन पर कैसा बुजुर्ग है! तूने अपना जलाल आसमान पर क्रायम किया है।²तूने अपने मुखालिफों की वजह से बच्चों और शीरखवारों के मुँह से कुदरत को क्रायम किया, ताकि तू दुश्मन और इन्तक़ाम लेने वाले को खामोश कर दे।

³~जब मैं तेरे आसमान पर जो तेरी दस्तकारी है, और चाँद और सितारों पर जिनको तूने मुकर्रर किया, गौर करता हूँ।⁴तो फिर इंसान क्या है कि तू उसे याद रखे, और बनी आदम क्या है कि तू उसकी खबर ले?⁵क्योंकि तूने उसे खुदा से कुछ ही कमतर बनाया है, और जलाल और शौकत से उसे ताजदार करता है।

⁶तूने उसे अपनी दस्तकारी पर इख्तियार बख़्शा है; तूने सब कुछ उसके क़दमों के नीचे कर दिया है।⁷सब भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल बल्कि सब जंगली जानवर⁸हवा के परिन्दे और समन्दर की और जो कुछ समन्दरों के रास्ते में चलता फिरता है।

⁹~ऐ खुदावन्द, हमारे रब्ब! तेरा नाम पूरी ज़मीन पर कैसा बुजुर्ग है!

Chapter 9

¹~मैं अपने पूरे दिल से खुदावन्द ~की शुक्रगुजारी करूँगा; मैं तेरे सब 'अजीब कामों का बयान करूँगा।²~मैं तुझ में खुशी मनाऊँगा और मसरूर हूँगा; ऐ हक़त' ला, मैं तेरी सिताइश करूँगा ।

³~जब मेरे दुश्मन पीछे हटते हैं, तो तेरी हुजूरी की वजह से लगज़िश खाते और हलाक हो जाते हैं।⁴~क्योंकि तूने मेरे हक़ की और मेरे मु'आमिले की तार्इद की है। तूने तख़्त पर बैठकर सदाक़त से इंसाफ़ किया।

⁵~तूने क़ौमों को झिड़का, तूने शरीरों को हलाक किया है; तूने उनका नाम हमेशा से हमेशा के लिए मिटा डाला है।⁶~दुश्मन ख़त्म हुए, वह हमेशा के लिए बर्बाद हो गए; और जिन शहरों को तूने ढा दिया, उनकी यादगार तक मिट गई।

⁷लेकिन खुदावन्द हमेशा तक तख़्त नशीन है, उसने इंसाफ़ के लिए अपना तख़्त तैयार किया है;⁸~और वही सदाक़त से ज़हान की 'अदालत करेगा, और रास्ती से कौमों का इंसाफ़ करेगा।

⁹~खुदावन्द मज़लूमों के लिए ऊँचा बुर्ज होगा, मुसीबत के दिनों में ऊँचा बुर्ज।¹⁰और वह जो तेरा नाम जानते हैं तुझ पर भरोसा करेंगे, क्योंकि ऐ खुदावन्द, तूने अपने चाहने वालों को नहीं छोड़ा।

¹¹~खुदावन्द की सिताइश करो, जो सिय्यूनमें रहता है! लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो¹²~क्योंकि खून का पूछताछ करने वाला उनको याद रखता है; वह ग़रीबों की फ़रियाद को नहीं भूलता।

¹³~ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर। तू जो मौत के फाटकों से मुझे उठाता है, मेरे उस दुख को देख जो मेरे नफ़रत करने वालों की तरफ़ से है।¹⁴~ताकि मैं तेरी कामिल सिताइश का इज़हार करूँ। सिय्यून की बेटी के फाटकों पर, मैं तेरी नज़ात से खुश हूँगा

¹⁵~क़ौमें खुद उस गढ़ में गिरी हैं जिसे उन्होंने खोदा था; जो जाल उन्होंने लगाया था उसमें उन ही का पाँव फंसा।¹⁶~खुदावन्द की शोहरत फैल गई, उसने इंसाफ़ किया है; शरीर अपने ही हाथ के कामों में फंस गया है। (हरगायून, सिलाह)

¹⁷शरीर पाताल में जाएँगे, या'नी वह सब क़ौमें जो खुदा को भूल जाती हैं¹⁸~क्योंकि ग़रीब सदा भूले बिसरे न रहेंगे, न ग़रीबों की उम्मीद हमेशा के लिए टूटेगी।

¹⁹~उठ, ऐ खुदावन्द! इंसान ग़ालिब न होने पाए। क़ौमों की 'अदालत तेरे सामने हो।²⁰~ऐ खुदावन्द! उनको खौफ़ दिला। क़ौमें अपने आपको इंसान ही जानें।

Chapter 10

¹ऐ खुदावन्द तू क्यूँ दूर खड़ा रहता है? मुसीबत के वक़्त तू क्यूँ छिप जाता है?²~शरीर के गुर्रर की वजह से ग़रीब का तेज़ी से पीछा किया जाता है; जो मन्सूबे उन्होंने बाँधे हैं, वह उन ही में गिरफ़्तार हो जाएँ।³क्यूँकि शरीर अपनी जिस्मानी ख़्वाहिश पर फ़ख़्र करता है, और लालची खुदावन्द को छोड़ देता बल्कि उसकी नाक्रद्री करता है।

⁴शरीर अपने तकब्बुर में कहता है कि वह पूछताछ नहीं करेगा; उसका खयाल सरासर यही है कि कोई खुदा नहीं।⁵उसकी राहें हमेशा बराबर हैं, तेरे अहकाम उसकी नज़र से दूर-ओ-बुलन्द हैं; वह अपने सब मुख़ालिफ़ों पर फ़ूँकारता है।

⁶~वह अपने दिल में कहता है, "मैं जुम्बिश नहीं खाने का; नसल दर नसल मुझ पर कभी मुसीबत न आएगी।"⁷~उसका मुँह लानत-ओ-दगा और जुल्म से भरा है; शरारत और बदी उसकी ज़बान पर हैं।

⁸~वह देहात की घातों में बैठता है, वह पोशीदा मक़ामों में बेगुनाह को क़त्ल करता है; उसकी आँखें बेकस की घात में लगी रहती हैं।⁹~वह पोशीदा मक़ाम में शेर-ए-बबर की तरह दुबक कर बैठता है; वह ग़रीब को पकड़ने की घात लगाए रहता है; वह ग़रीब को अपने जाल में फंसा कर पकड़ लेता है।¹⁰वह दुबकता है, वह झुक जाता है; और बेकस उसके पहलवानों के हाथ से मारे जाते हैं।

¹¹~वह अपने दिल में कहता है, "खुदा भूल गया है, वह अपना मुँह छिपाता है; वह हरगिज़ नहीं देखेगा।"¹²उठ ऐ खुदावन्द! ऐ खुदा अपना हाथ बुलंद कर! ग़रीबों को न भूल |

¹³शरीर किस लिए खुदा की नाक्रद्री करता है और अपने दिल में कहता है कि तू पूछताछ ना करेगा ?¹⁴तूने देख लिया है क्यूँकि तू शरारत और बुग़ज़ देखता है ताकि अपने हाथ से बदला दे | बेकस अपने आप को तेरे सिपुर्द करता है तू ही यतीम का मददगार रहा है |

¹⁵शरीर का बाज़ू तोड़ दे | और बदकार की शरारत को जब तक बर्बाद न हो ढूँढ़-ढूँढ़ कर निकाल |¹⁶खुदावन्द हमेशा से हमेशा बादशाह है | क़ौमों उसके मुल्क में से हलाक हो गयीं |

¹⁷ऐ खुदावन्द तूने हलीमों का मुद्दा सुन लिया है तू उनके दिल को तैयार करेगा-तू कान लगा कर सुनेगा¹⁸कि यतीम और मज़लूम का इन्साफ़ करे ताकि इन्सान जो खाक से है फिर ना डराए |

Chapter 11

¹मेरा भरोसा खुदावन्द पर है तुम क्यूँकर मेरी जान से कहते हो कि चिड़िया की तरह अपने पहाड़ पर उड़ जा ?²क्यूँकि देखो! शरीर कमान खींचते हैं वह तीर को चिल्ले पर रखते हैं ताकि अँधेरे में रास्त दिलों पर चलायें |

³अगर बुनयाद ही उखाड़ दी जाये तो सादिक क्या कर सकता है |⁴खुदावन्द अपनी पाक हैकल में है खुदावन्द का तख्त आसमान पर है | उसकी आँखें बनी आदम को देखती ~और उसकी पलकें उनको जाँचती हैं |

⁵खुदावन्द सादिक को परखता है लेकिन शरीर और जुल्म को पसन्द करने वाले से उसकी रूह को नफ़रत है⁶वह शरीरों पर फंदे बरसायेगा आग और गंधक और लू उनके प्याले का हिस्सा होगा |⁷क्यूँकि खुदावन्द सादिक है वह सच्चाई को पसंद करता है रास्त बाज़ उसका दीदार हासिल करेंगे |

Chapter 12

¹ऐ खुदावन्द! बचा ले क्योंकि कोई दीनदार नहीं रहा और अमानत दार लोग बनी आदम में से मिट गये |

²वह अपने अपने पड़ोसी से झूठ बोलते हैं वह खुशामदी लबों से दो रंगी बातें करते हैं³खुदावन्द सब खुशामदी लबों को और बड़े बोल बोलने वाली ज़बान को काट डालेगा |⁴वह कहते हैं, "हम अपनी ज़बान से जीतेंगे, हमारे होंट हमारे ही हैं; हमारा मालिक कौन है?"

⁵~ग़रीबों की तबाही और ग़रीबों की आह की वजह से, खुदावन्द फ़रमाता है, कि अब मैं उठूँगा और जिस पर वह फुंकारते हैं उसे अमन-ओ-अमान में रखूँगा।

⁶खुदावन्द का कलाम पाक है, उस चाँदी की तरह जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार साफ़ की गई हो।⁷तू ही ऐ खुदावन्द उनकी हिफ़ाज़त करेगा, तू ही उनको इस नसल से हमेशा तक बचाए रखेगा।⁸जब बनी आदम में पाजीपन की क़द्र होती है, तो शरीर हर तरफ़ चलते फिरते हैं।

Chapter 13

¹ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या तू हमेशा मुझे भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझ से छिपाए रखेगा?²~कब तक मैं जी ही जी में मन्सूबा बाँधता रहूँ, और सारे दिन अपने दिल में ग़म किया करूँ? कब तक मेरा दुश्मन मुझ पर सर बुलन्द रहेगा?

³ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरी तरफ़ तवज्जुह कर और मुझे जवाब दे। मेरी आँखें रोशन कर, ऐसा न हो कि मुझे मौत की नींद आ जाए⁴~ऐसा न हो कि मेरा दुश्मन कहे, कि मैं इस पर ग़ालिब आ गया। ऐसा न हो कि जब मैं जुम्बिश खाऊँ तो मेरे मुखालिफ़ खुश हों।

⁵लेकिन मैंने तो तेरी रहमत पर भरोसा किया है; मेरा दिल तेरी नजात से खुश होगा।⁶~मैं खुदावन्द का हम्द गाऊँगा क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है,

Chapter 14

¹बेवकूफ ने अपने दिल में कहा है, कि कोई खुदा नहीं। वह बिगड़ गए, उन्होंने नफ़रतअंगेज़ काम किए हैं; कोई नेकोकार नहीं।

²~खुदावन्द ने आसमान पर से बनी आदम पर निगाह की ताकि देखे कि कोई अक्लमन्द, कोई खुदा का तालिब है या नहीं।³वह सब के सब गुमराह हुए, वह एक साथ नापाक हो गए, कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं।

⁴क्या उन सब बदकिरदारों को कुछ 'इल्म नहीं, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी, और खुदावन्द का नाम नहीं लेते?

⁵वहाँ उन पर बड़ा खौफ़ छा गया, क्योंकि खुदा सादिक़ नसल के साथ है।⁶तुम ग़रीब की मश्वरत की हँसी उड़ाते हो; इसलिए के खुदावन्द उसकी पनाह है।

⁷~काश कि इस्राईल की नजात सिय्यून में से होती! जब खुदावन्द अपने लोगों को गुलामी से लौटा जाएगा, तो या'क़ूब खुश और इस्राईल शादमान होगा।

Chapter 15

¹ऐ खुदावन्द तेरे खेमे में कौन रहेगा? तेरे पाक पहाड़ पर कौन सुकूनत करेगा?²~वह जो रास्ती से चलता और सदाक़त का काम करता, और दिल से सच बोलता है।

³वह जो अपनी ज़बान से बुहतान नहीं बांधता, और अपने दोस्त से बदी नहीं करता, और अपने पड़ोसी की बदनामी नहीं सुनता।

⁴वह जिसकी नज़र में रज़ील आदमी हज़ीर है, लेकिन जो खुदावन्द से डरते हैं उनकी 'इज़ज़त करता है; वह जो क्रसम खाकर बदलता नहीं चाहे नुक्सान ही उठाए।⁵वह जो अपना रुपया सूद पर नहीं देता, और बेगुनाह के खिलाफ़ रिश्तत नहीं लेता। ऐसे काम करने वाला कभी जुम्बिश न खाएगा।

Chapter 16

¹~ऐ खुदा मेरी हिफ़ाज़त कर, क्योंकि मैं तुझ ही में पनाह लेता हूँ।²मैंने खुदावन्द से कहा तू ही रब है तेरे अलावा मेरी भलाई नहीं।"³ज़मीन के पाक लोग वह बरगुज़ीदा हैं, जिनमें मेरी पूरी खुशनूदी है।

⁴~ग़ैर मा'बूदों के पीछे दौड़ने वालों का ग़म बढ़ जाएगा; मैं उनके से खून वाले तपावन नहीं तपाऊँगा और अपने होटों से उनके नाम नहीं लूँगा।

⁵खुदावन्द ही मेरी मीरास और मेरे प्याले का हिस्सा है; तू मेरे बख़रे का मुहाफ़िज़~~है।⁶~जरीब मेरे लिए दिलपसंद जगहों में पड़ी, बल्कि मेरी मीरास ख़ूब है।

⁷मैं खुदावन्द की हम्द करूँगा, जिसने, मुझे नसीहत दी है; बल्कि मेरा दिल रात को मेरी तरबियत करता है⁸मैंने खुदावन्द को हमेशा अपने सामने रखखा है; चूँकि वह मेरे दहने हाथ है, इसलिए मुझे जुम्बिश न होगी।

⁹~इसी वजह से मेरा दिल खुश और मेरी रूह शादमान है; मेरा जिस्म भी अम्न-ओ-अमान में रहेगा।¹⁰क्योंकि तू न मेरी जान को पाताल में रहने देगा, न अपने मुक़द्दस को सड़ने देगा।

¹¹तू मुझे ज़िन्दगी की राह दिखाएगा; तेरे हुज़ूरमें कामिल शादमानी है। तेरे दहने हाथ में हमेशा की खुशी है।

Chapter 17

¹~ऐ खुदावन्द, हक़ को सुन, मेरी फ़रियाद पर तवज्जुह कर। मेरी दु'आ पर, जो दिखावे के होंटों से निकलती है कान लगा।²~मेरा फ़ैसला तेरे सामने से ज़ाहिर हो! तेरी आँखें रास्ती को देखें!

³तूने मेरे दिल को आज़मा लिया है, तूने रात को मेरी निगरानी की; तूने मुझे परखा और कुछ खोट न पाया, मैंने ठान लिया है कि मेरा मुँह खता न करे।

⁴इंसानी कामों में तेरे लबों के कलाम की मदद से मैं ज़ालिमों की राहों से बाज़ रहा हूँ।⁵~मेरे कदम तेरे रास्तों पर क़ायम रहे हैं, मेरे पाँव फिसले नहीं।

⁶ऐ खुदा, मैंने तुझ से दु'आ की है क्योंकि तू मुझे जवाब देगा। मेरी तरफ़ कान झुका और मेरी 'अर्ज़ सुन ले।⁷तू जो अपने दहने हाथ से अपने भरोसा करने वालों को उनके मुखालिफ़ों से बचाता है, अपनी'अजीब शफ़क़त दिखा।

⁸मुझे आँख की पुतली की तरह महफूज़ रख; मुझे अपने परों के साये में छिपा ले,⁹उन शरीरों से जो मुझ पर जुल्म करते हैं, मेरे जानी दुश्मनों से जो मुझे घेरे हुए हैं।¹⁰उन्होंने अपने दिलों को सख़्त किया है; वह अपने मुँह से बड़ा बोल बोलते हैं।

¹¹उन्होंने कदम कदम पर हम को घेरा है; वह ताक लगाए हैं कि हम को ज़मीन पर पटक दें।¹²वह उस बबर की तरह है जो फाड़ने पर लालची हो, वह जैसे जवान बबर है जो पोशीदा जगहों में दुबका हुआ है।

¹³~उठ, ऐ खुदावन्द! उसका सामना कर, उसे पटक दे! अपनी तलवार से मेरी जान को शरीर से बचा ले।¹⁴अपने हाथ से ऐ खुदावन्द! मुझे लोगों से बचा। या'नी दुनिया के लोगों से, जिनका बख़रा इसी ज़िन्दगी में है, और जिनका पेट तू अपने ज़ख़ीरे से भरता है। उनकी औलाद भी हस्ब-ए-मुराद है; वह अपना बाक़ी माल अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं

¹⁵~लेकिन मैं तो सदाक़त में तेरा दीदार हासिल करूँगा; मैं जब जागूँगा तो तेरी शबाहत से सेर हूँगा।

Chapter 18

¹~ऐ खुदावन्द, ऐ मेरी ताक़त! मैं तुझसे मुहब्बत रखता हूँ।

²~खुदावन्द मेरी चट्टान, और मेरा क़िला' और मेरा छुड़ाने वाला है; मेरा खुदा, मेरी चट्टान जिस पर मैं भरोसा रखूँगा, मेरी ढाल और मेरी नजात का सींग, मेरा ऊँचा बुर्ज।³ मैं खुदावन्द को, जो सिताइश के लायक़ है पुकारूँगा। यूँ मैं अपने दुश्मनों से बचाया जाऊँगा।

⁴मौत की रस्सियों ने मुझे घेर लिया, और बेदीनी के सैलाबों ने मुझे डराया;⁵ पाताल की रस्सियाँ मेरे चारों तरफ़ थीं, मौत के फंदे मुझ पर आ पड़े थे।

⁶अपनी मुसीबत में मैंने खुदावन्द को पुकारा: और अपने खुदा से फ़रियाद की; उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज़ सुनी, और मेरी फ़रियाद जो उसके सामने थी, उसके कान में पहुँची।

⁷तब ज़मीन हिल गई और कॉप उठी, पहाड़ों की बुनियादों ने जुम्बिश खाई और हिल गई, इसलिए कि वह ग़ज़बनाक हुआ।⁸~उसके नथनों से धुवाँ उठा, और उसके मुँह से आग निकलकर भसम करने लगी; कोयले उससे दहक उठे।

⁹उसने आसमानों को भी झुका दिया और नीचे उतर आया; और उसके पाँव तले गहरी तारीकी थी।¹⁰ वह करूबी पर सवार होकर उड़ा, बल्कि वह तेज़ी से हवा के बाजूओं पर उड़ा।

¹¹उसने जुल्मत या'नी बादल की तारीकी और आसमान के दलदार बादलों को अपने चारों तरफ़ अपने छिपने की जगह और अपना शामियाना बनाया।¹² उसकी हुजूरी की झलक से उसके दलदार बादल फट गए, ओले और अंगारे।

¹³और खुदावन्द आसमान में गरजा, हक़ ता'ला ने अपनी आवाज़ सुनाई, ओले और अंगारे।¹⁴ उसने अपने तीर चलाकर उनको तितर बितर किया, बल्कि ताबड़ तोड़ बिजली से उनको शिकस्त दी।

¹⁵तब तेरी डाँट से ऐ खुदावन्द! तेरे नथनों के दम के झोंके से, पानी की थाह दिखाई देने लगी और ज़हान की बुनियादें~नमूदार हुई।

¹⁶उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे बहुत पानी में से खींचकर बाहर निकाला।¹⁷ उसने मेरे ताक़तवर दुश्मन और मेरे'अदावत रखने वालों से मुझे छुड़ा लिया, क्योंकि वह मेरे लिए बहुत ही ज़बरदस्त थे।

¹⁸~वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े; लेकिन खुदावन्द मेरा सहारा था।¹⁹~वह मुझे कुशादा जगह में निकाल भी लाया। उसने मुझे छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझ से खुश था।

²⁰~खुदावन्द ने मेरी रास्ती के मुवाफ़िक़ मुझे बदला दिया : और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ मुझे बदला दिया।²¹ क्योंकि मैं खुदावन्द की राहों पर चलता रहा, और शरारत से अपने खुदा से अलग न हुआ।

²²क्योंकि उसके सब फ़ैसले मेरे सामने रहे, और मैं उसके आईन से नाफ़रमान न हुआ।²³ मैं उसके सामने कामिल भी रहा, और अपने को अपनी बदकारी से रोके रखे।²⁴~खुदावन्द ने मुझे मेरी रास्ती के मुवाफ़िक़ और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ जो उसके सामने थी बदला दिया।

²⁵रहम दिल के साथ तू रहीम होगा, और कामिल आदमी के साथ कामिल।²⁶ नेकोकार के साथ नेक होगा, और कज्रों के साथ टेढ़ा।

²⁷क्योंकि तू मुसीबत ज़दा लोगों को बचाएगा; लेकिन मगरूरों की आँखों को नीचा करेगा।²⁸ इसलिए के तू मेरे चराग़ को रौशन करेगा: खुदावन्द मेरा खुदा मेरे अंधेरे को उजाला कर देगा।²⁹~क्योंकि तेरी बदौलत मैं फ़ौज़ पर धावा करता हूँ। और अपने खुदा की बदौलत दीवार फाँद जाता हूँ।

³⁰लेकिन खुदा की राह कामिल है; खुदावन्द का कलाम ताया हुआ है; वह उन सबकी ढाल है जो उस पर भरोसा रखते हैं।³¹ क्योंकि खुदावन्द के अलावा और कौन खुदा है? और हमारे खुदा को छोड़कर और कौन चट्टान है?³² खुदा ही मुझे ताक़त से कमर बस्ता करता है, और मेरी राह को कामिल करता है।

³³~वही मेरे पाँव हरनियों के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में क़ायम करता है।³⁴ वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है, यहाँ तक कि मेरे बाजू पीतल की कमान को झुका देते हैं।

³⁵~तूने मुझ को अपनी नजात की ढाल बख़्शी, और तेरे दहने हाथ ने मुझे संभाला, और तेरी नमी ने मुझे बुजूर्ग बनाया है।³⁶ तूने मेरे नीचे, मेरे क़दम कुशादा कर दिए; और मेरे पाँव नहीं फिसले।

³⁷~मैं अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको जा लूँगा; और जब तक वह फ़ना न हो जाएँ, वापस नहीं आऊँगा।³⁸~मैं उनको ऐसा छेदूँगा कि वह उठ न सकेंगे; वह मेरे पाँव के नीचे गिर पड़ेंगे।³⁹~क्योंकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताक़त से कमरबस्ता किया; और मेरे मुखालिफ़ों को मेरे सामने नीचा दिखाया।

⁴⁰तूने मेरे दुश्मनों की नसल मेरी तरफ़ फेर दी, ताकि मैं अपने 'अदावत रखने वालों को काट डालूँ।⁴¹~उन्होंने दुहाई दी लेकिन कोई न था जो बचाए, खुदावन्द को भी पुकारा लेकिन उसने उनको जवाब न दिया।⁴²~तब मैंने उनको कूट कूट कर हवा में उड़ती हुई गर्द की तरह कर दिया; मैंने उनको गली कूचों की कीचड़ की तरह निकाल फेंका।

⁴³~तूने मुझे क़ौम के झगड़ों से भी छुड़ाया; तूने मुझे क़ौमों का सरदार बनाया है; जिस क़ौम से मैं वाकिफ़ भी नहीं वह मेरी फ़र्माबरदार होगी।⁴⁴ मेरा नाम सुनते ही वह मेरी फ़रमाबरदारी करेंगे; परदेसी मेरे ताबे' हो जाएँगे।⁴⁵ परदेसी मुझा जाएँगे, और अपने क़िले' से थरथराते हुए निकलेंगे।

⁴⁶खुदावन्द ज़िन्दा है! मेरी चट्टान मुबारक हो, और मेरा नजात देने वाला खुदा मुस्ताज़ हो।⁴⁷ वही खुदा जो मेरा इन्तक़ाम लेता है; और उम्मतों को मेरे सामने नीचा करता है।

⁴⁸वह मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ाता है; बल्कि तू मुझे मेरे मुखालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता है। तू मुझे टेढ़े आदमी से रिहाई देता है।⁴⁹~इसलिए ऐ खुदावन्द! मैं क़ौमों के बीच तेरी शुक्रगुज़ारी, और तेरे नाम की मदहसराई करूँगा।

⁵⁰वह अपने बादशाह को बड़ी नजात 'इनायत करता है, और अपने मम्सूह दाऊद और उसकी नसल पर हमेशा शफ़क़त करता है।

Chapter 19

¹~आसमान खुदा का जलाल ज़ाहिर करता है; और फ़ज़ा उसकी दस्तकारी दिखाती है।²~दिन से दिन बात करता है, और रात को रात हिकमत सिखाती है।³~न बोलना है न कलाम, न उनकी आवाज़ सुनाई देती है।

⁴उनका सुर सारी ज़मीन पर, और उनका कलाम दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचा है। उसने आफ़ताब के लिए उनमें खेमा लगाया है।⁵जो दुल्हे की तरह अपने ख़िलवतख़ाने से निकलता है। और पहलवान की तरह अपनी दौड़ में दौड़ने को खुश है।⁶वह आसमान की इन्तिहा से निकलता है, और उसकी ग़श्त उसके किनारों तक होती है; और उसकी हरारत से कोई चीज़ बे बहरा नहीं।

⁷~खुदावन्द की शरी'अत कामिल है, वह जान को बहाल करती है; खुदावन्द कि शहादत बरहक़ है नादान को दानिश बख़्शती है।⁸~खुदावन्द के क़वानीन रास्त हैं, वह दिल को फ़रहत पहुँचाते हैं; खुदावन्द का हुक्म बे'ऐब है, वह आँखों की रौशन करता है।

⁹खुदावन्द का ख़ौफ़ पाक है, वह अबद तक क़ायम रहता है; खुदावन्द के अहक़ाम बरहक़ और बिल्कुल रास्त हैं।¹⁰वह सोने से बल्कि बहुत कुन्दन से ज़्यादा पसंदीदा हैं; वह शहद से बल्कि छत्ते के टपकों से भी शीरीन हैं।

¹¹नीज़ उन से तेरे बन्दे को आगाही मिलती है; उनको मानने का अज़्र बढ़ा है।¹²~कौन अपनी भूलचूक को जान सकता है? तू मुझे पोशीदा 'ऐबों से पाक कर।

¹³तू अपने बंदे को बे-बाकी के गुनाहों से भी बाज़ रख; वह मुझ पर ग़ालिब न आएँ तो मैं कामिल हूँगा, और बड़े गुनाह से बचा रहूँगा।¹⁴मेरे मुँह का कलाम और मेरे दिल का ख़याल तेरे सामने मक्बूल ठहरे; ऐ खुदावन्द! ऐ मेरी चट्टान और मेरे फ़िदिया देने वाले!

Chapter 20

¹मुसीबत के दिन खुदावन्द तेरी सुने। या'कूब के खुदा का नाम तुझे बुलन्दी पर कायम करे!²वह मक़दिस से तेरे लिए मदद भेजे, और सिय्यून से तुझे कुव्वत बरख़्शे!

³वह तेरे सब हदियों को याद रखे, और तेरी सोख़्तनी कुर्बानी को कुबूल करे! (सिलाह)⁴वह तेरे दिल की आरज़ू पूरी करे, और तेरी सब मश्वरत पूरी करे!

⁵हम तेरी नज़ात पर खुशी मनाएंगे, और अपने खुदा के नाम पर झंडे खड़े करेंगे। खुदावन्द तेरी तमाम दरख़्वास्तें पूरी करे!⁶अब मैं जान गया कि खुदावन्द अपने मम्सूह को बचा लेता है; वह अपने दहने हाथ की नज़ात बरख़्श ताक़त से अपने पाक आसमान पर से उसे जवाब देगा।

⁷किसी को रथों का और किसी को घोड़ों का भरोसा है, लेकिन हम तो खुदावन्द अपने खुदा ही का नाम लेंगे।⁸वह तो झुके और गिर पड़े; लेकिन हम उठे और सीधे खड़े हैं।

⁹ऐ खुदावन्द! बचा ले; जिस दिन हम पुकारें, तो बादशाह हमें जवाब दे।

Chapter 21

¹ऐ खुदावन्द! तेरी ताक़त से बादशाह खुश होगा; और तेरी नजात से उसे बहुत खुशी होगी।²तूने उसके दिल की आरजू पूरी की है, और उसके मुँह की दरखास्त को नामंजूर नहीं किया।(सिलाह;)

³~क्यूँकि तू उसे 'उम्दा बरकतें बरख़शने में पेश कदमी करता, और ख़ालिस सोने का ताज उसके सिर पर रखता है।⁴उसने तुझ से ज़िन्दगी चाही और तूने बरख़शी; बल्कि 'उम्र की दराज़ी हमेशा के लिए।

⁵~तेरी नजात की वजह से उसकी शौकत 'अज़ीम है; तू उसे हश्मत-ओ-जलाल से आरास्ता करता है।⁶क्यूँकि तू हमेशा के लिए उसे बरकतों से मालामाल करता है; और अपने सामने उसे खुश-ओ- ख़ुर्रम रखता है।

⁷क्यूँकि बादशाह का भरोसा खुदावन्द पर है; और हक़ता'ला की शफ़क़त की बदौलत उसे हरगिज़ जुम्बिश न होगी।⁸तेरा हाथ तेरे सब दुश्मनों को ढूँड निकालेगा, तेरा दहना हाथ तुझ से कीना रखने वालों का पता लगा लेगा।

⁹तू अपने क्रहर के वक़्त उनको जलते तनूर की तरह कर देगा। खुदावन्द अपने ग़ज़ब में उनको निगल जाएगा, और आग उनको खा जाएगी।¹⁰तू उनके फल को ज़मीन पर से बर्बाद कर देगा, और उनकी नसल को बनी आदम में से।

¹¹क्यूँकि उन्होंने तुझ से बदी करना चाहा, उन्होंने ऐसा मन्सूबा बाँधा जिसे वह पूरा नहीं कर सकते।¹²क्यूँकि तू उनका मुँह फेर देगा, तू उनके मुकाबले में अपने चिल्ले चढ़ाएगा।

¹³~ऐ खुदावन्द, तू अपनी ही ताक़त में सरबुलन्द हो! और हम गाकर तेरी कुदरत की सिताइश करेंगे

Chapter 22

¹ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी मदद और मेरे नाला-ओ-फ़रियाद से क्यों दूर रहता है?²ऐ मेरे खुदा! मैं दिन को पुकारता हूँ लेकिन तू जवाब नहीं देता और रात को भी और खामोश नहीं होता ।

³लेकिन तू पाक है तू जो इस्राईल के हम्दो-ओ-सना पर तख़्तनशीन है।⁴हमारे बाप दादा ने तुझ पर भरोसा किया; उन्होंने भरोसा किया और तूने उसको छुड़ाया ।

⁵उन्होंने तुझ से फ़रियाद की और रिहाई पाई; उन्होंने तुझ पर भरोसा किया और शर्मिदा न हुए।

⁶लेकिन मैं तो कीड़ा हूँ, इंसान नहीं; आदमियों में अन्गुशतनुमा हूँ और लोगों में हक़ीर।⁷वह सब जो मुझे देखते हैं, मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं; वह मुँह चिड़ाते, वह सर हिलाकर कहते हैं,⁸"अपने को खुदावन्द के सुपुर्द कर दे वही उसे छुड़ाए, जब कि वह उससे खुश है तो वही उसे छुड़ाए।"

⁹लेकिन तू ही मुझे पेट से बहार लाया; जब मैं छोटा बच्चा ही था, तूने मुझे भरोसा करना सिखाया ।¹⁰मैं पैदाइश ही से तुझ पर छोड़ा गया, मेरी माँ के पेट ही से तू मेरा खुदा है।

¹¹मुझ से दूर न रह क्योंकि मुसीबत करीब है, इसलिए कि कोई मददगार नहीं ।¹²बहुत से साँडों ने मुझे घेर लिया है, बसन के ताक़तवर साँड मुझे घेरे हुए हैं ।¹³वह फाड़ने और गरजने वाले बबर की तरह मुझ पर अपना मुँह पसारे हुए हैं।

¹⁴मैं पानी की तरह बह गया मेरी सब हड्डियाँ उखड़ गईं। मेरा दिल मोम की तरह हो गया, वह मेरे सीने में पिघल गया ।¹⁵मेरी ताक़त ठीकरे की तरह खुश्क हो गई, और मेरी ज़बान मेरे तालू से चिपक गई; और तूने मुझे मौत की खाक में मिला दिया ।

¹⁶क्योंकि कुत्ते ने मुझे घेर लिया है; बदकारो की गिरोह मुझे घेरे हुए है; वह हाथ और मेरे पाँव छेदते हैं।¹⁷मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ; वह मुझे ताकते और घूरते हैं।

¹⁸~वह मेरे कपड़े आपस में बाँटते हैं, और मेरी पोशाक पर पर्ची डालते हैं।¹⁹लेकिन तू ऐ खुदावन्द, दूर न रह! ऐ मेरे चारासाज़, मेरी मदद के लिए जल्दी कर!

²⁰मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी जान को कुत्ते के क़ाबू से।²¹~मुझे बबर के मुँह से बचा, बल्कि तूने साँडों के सींगों में से मुझे छुड़ाया है।

²²मैं अपने भाइयों से तेरे नाम का इज़हार करूँगा; जमा'अत में तेरी सिताइश करूँगा।²³ऐ खुदावन्द से डरने वालों, उसकी सिताइश करो! ऐ या'क़ूब की औलाद, सब उसकी तम्जीद करो! और ऐ इस्राईल की नसल, सब उसका डर मानो!

²⁴क्योंकि उसने न तो मुसीबत ज़दा की मुसीबत को हक़ीर जाना न उससे नफ़रत की, न उससे अपना मुँह छिपाया; बल्कि जब उसने खुदा से फ़रियाद की तो उसने सुन ली।²⁵बड़े मजमे' में मेरी सना ख़वानी का जरिया' तू ही है; मैं उस से डरने वालों के सामने अपनी नज़्मे अदा करूँगा ।

²⁶हलीम खाएँगे और सेर होंगे; खुदावन्द के तालिब उसकी सिताइश करेंगे। तुम्हारा दिल हमेशा तक ज़िन्दा रहे।²⁷सारी दुनिया खुदावन्द को याद करेगी और उसकी तरफ़ रूजू' लाएगी; और क़ौमों के सब घराने तेरे सामने सिज्दा करेंगे।

²⁸~क्योंकि सल्तनत खुदावन्द की है, वही क़ौमों पर हाकिम है।²⁹~दुनिया के सब आसूदा हाल लोग खाएँगे और सिज्दा करेंगे; वह सब जो खाक में मिल जाते हैं उसके सामने झुकेंगे, बल्कि वह भी जो अपनी जान को ज़िन्दा नहीं रख सकता।

³⁰एक नसल उसकी बन्दगी करेगी; दूसरी नसल को खुदावन्द की ख़बर दी जाएगी।³¹~वह आएँगे और उसकी सदाक़त को एक क़ौम पर जो पैदा होगी यह कहकर ज़ाहिर करेंगे कि उसने यह काम किया है।

Chapter 23

¹खुदावन्द मेरा चौपान है, मुझे कमी न होगी।²~वह मुझे हरी हरी चरागाहों में बिठाता है; वह मुझे राहत के चश्मों के पास ले जाता है;

³वह मेरी जान को बहाल करता है। वह मुझे अपने नाम की खातिर सदाकत की राहों पर ले चलता है।

⁴~बल्कि चाहे मौत के साये की वादी में से मेरा गुज़र हो, मैं किसी बला से नहीं डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ है; तेरे 'असा और तेरी लाठी से मुझे तसल्ली है।

⁵तू मेरे दुश्मनों के सामने मेरे आगे दस्तरख्वान बिछाता है; तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा प्याला लबरेज़ होता है।

⁶यक़ीनन भलाई और रहमत 'उम्र भर मेरे साथ साथ रहेंगी: और मैं हमेशा खुदावन्द के घर में सकूनत करूँगा ।

Chapter 24

¹जमीन और उसकी मा'मुरी खुदावन्द ही की है, जहान और उसके बाशिन्दे भी।²~क्योंकि उसने समन्दरों पर उसकी बुनियाद रखी और सैलाबों पर उसे क़ायम किया।

³खुदावन्द के पहाड़ पर कौन चढ़ेगा? और उसके पाक मक़ाम पर कौन खड़ा होगा?⁴वही जिसके हाथ साफ़ हैं और जिसका दिल पाक है, जिसने बकवास पर दिल नहीं लगाया, और मक़्र से क़सम नहीं खाई।

⁵~वह खुदावन्द की तरफ़ से बरकत पाएगा, हाँ अपने नजात देने वाले खुदा की तरफ़ से सदाक़त।⁶यही उसके तालिबों की नसल है, यही तेरे दीदार के तलबगार हैं या'नी या'कूब। (सिलाह)

⁷~ऐ फाटको, अपने सिर बुलन्द करो। ऐ अबदी दरवाज़ो, ऊँचे हो जाओ! और जलाल का बादशाह दाखिल होगा।⁸~यह जलाल का बादशाह कौन है? खुदावन्द जो क़वी और क़ादिर है, खुदावन्द जो जंग में ताक़तवर है!

⁹ऐ फाटको, अपने सिर बुलन्द करो! ऐ अबदी दरवाज़ो, उनको बुलन्द करो! और जलाल का बादशाह दाखिल होगा।¹⁰~यह जलाल का बादशाह कौन है? लश्क़रों का खुदावन्द, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

Chapter 25

¹~ऐ खुदावन्द! मैं अपनी जान तेरी तरफ उठाता हूँ।²~ऐ मेरे खुदा, मैंने तुझ पर भरोसा किया है, मुझे शर्मिन्दा न होने दे: मेरे दुश्मन मुझ पर खुशी न मनाएँ।

³बल्कि जो तेरे मुन्तज़िर हैं उनमें से कोई शर्मिन्दा न होगा; लेकिन जो नाहक़ बेवफ़ाई करते हैं वही शर्मिन्दा होंगे।

⁴ऐ खुदावन्द, अपनी राहें मुझे दिखा; अपने रास्ते मुझे बता दे।⁵मुझे अपनी सच्चाई पर चला और ता'लीम दे, क्योंकि तू मेरा नजात देने वाला खुदा है; मैं दिन भर तेरा ही मुन्तज़िर रहता हूँ।

⁶ऐ खुदावन्द, अपनी रहमतों और शफ़क़तों को याद फ़रमा; क्योंकि वह शुरू से हैं।⁷मेरी ज़वानी की ख़ताओं और मेरे गुनाहों को याद न कर; ऐ खुदावन्द, अपनी नेकी की खातिर अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझे याद फ़रमा।

⁸ख़ुदावन्द नेक और रास्त है; इसलिए वह गुनहगारों को राह-ए-हक़ की ता'लीम देगा।⁹वह हलीमों को इंसान की हिदायत करेगा, हाँ, वह हलीमों को अपनी राह बताएगा।

¹⁰जो खुदावन्द के 'अहद और उसकी शहादतों को मानते हैं, उनके लिए उसकी सब राहें शफ़क़त और सच्चाई हैं।¹¹~ऐ खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मेरी बदकारी मु'आफ़ कर दे क्योंकि वह बड़ी है।

¹²वह कौन है जो खुदावन्द से डरता है? खुदावन्द उसको उसी राह की ता'लीम देगा जो उसे पसंद है।¹³उसकी जान राहत में रहेगी, और उसकी नसल ज़मीन की वारिस होगी।

¹⁴~खुदावन्द के राज़ को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपना 'अहद उनको बताएगा।¹⁵मेरी आँखें हमेशा खुदावन्द की तरफ़ लगी रहती हैं, क्योंकि वही मेरा पाँव दाम से छुड़ाएगा।¹⁶~मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो और मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं बेकस और मुसीबत ज़दा हूँ।

¹⁷मेरे दिल के दुख बढ़ गए, तू मुझे मेरी तकलीफ़ों से रिहाई दे।¹⁸तू मेरी मुसीबत और ज़ॉफ़िशानी को देख, और मेरे सब गुनाह मु'आफ़ फ़रमा।¹⁹मेरे दुश्मनों को देख क्योंकि वह बहुत हैं और उनको मुझ से सख़्त 'अदावत है।

²⁰~मेरी जान की हिफ़ाज़त कर, और मुझे छुड़ा; मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्योंकि मेरा भरोसा तुझ ही पर है।²¹दियानतदारी और रास्तबाज़ी मुझे सलामत रखें, क्योंकि मुझे तेरी ही आस है।

²²~ऐ खुदा, इस्राईल को उसके सब दुखों से छुड़ा ले।

Chapter 26

¹ऐ खुदावन्द, मेरा इसाफ़ कर, क्योंकि मैं रास्ती से चलता रहा हूँ, और मैंने खुदावन्द पर बे लगाज़िश भरोसा किया है।²ऐ खुदावन्द, मुझे जाँच और आजमा; मेरे दिल-ओ-दिमाग़ को परख।³क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने है, और मैं तेरी सच्चाई की राह पर चलता रहा हूँ।

⁴मैं बेहूदा लोगों के साथ नहीं बैठा, मैं रियाकारों के साथ कहीं नहीं जाऊँगा।⁵बदकिरदारों की जमा'अत से मुझे नफ़रत है, मैं शरीरों के साथ नहीं बैठूँगा।

⁶मैं बेगुनाही में अपने हाथ धोऊँगा, और ऐ खुदावन्द, मैं तेरे मज़बह का तवाफ़ करूँगा;⁷ताकि शुक्रगुज़ारी की आवाज़ बुलन्द करूँ, और तेरे सब 'अजीब कामों को बयान करूँ।⁸ऐ खुदावन्द, मैं तेरी सकूनतगाह, और तेरे जलाल के खेमे को 'अज़ीज़ रखता हूँ।

⁹मेरी जान को गुनहगारों के साथ, और मेरी ज़िन्दगी को खूनी आदमियों के साथ न मिला।¹⁰~जिनके हाथों में शराब है, और जिनका दहना हाथ रिश्वतों से भरा है।

¹¹~लेकिन मैं तो रास्ती से चलता रहूँगा। मुझे छुड़ा ले और मुझ पर रहम कर।¹²मेरा पौव हमवार जगह पर क़ायम है। मैं जमा'अतों में खुदावन्द को मुबारक कहूँगा।

Chapter 27

¹खुदावन्द मेरी रोशनी और मेरी नजात मुझे किसकी दहशत? खुदावन्द मेरी ज़िन्दगी की ताक़त है, मुझे किसका डर?

²~जब शरीर या'नी मेरे मुखालिफ़ और मेरे दुश्मन, मेरा गोश्त खाने को मुझ पर चढ़ आए तो वह ठोकर खाकर गिर पड़े।³चाहे मेरे खिलाफ़ लश्कर खेमाज़न हो, मेरा दिल नहीं डरेगा। चाहे मेरे मुकाबले में जंग खड़ी हो, तोभी मैं मुतम'इन रहूँगा।

⁴~मैंने खुदावन्द से एक दरख्वास्त की है, मैं इसी का तालिब रहूँगा; कि मैं 'उम्र भर खुदावन्द के घर में रहूँ, ताकि खुदावन्द के जमाल को देखूँ और उसकी हैकल में इस्तिफ़्सार किया करूँ ~।

⁵क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपने शामियाने में पोशीदा रखेगा; वह मुझे अपने खेमे के पर्दे में छिपा लेगा, वह मुझे चट्टान पर चढ़ा देगा⁶अब मैं अपने चारों तरफ़ के दुश्मनों पर सरफराज़ किया जाऊँगा; मैं उसके खेमे में खुशी की कुर्बानियाँ पेश करूँगा; मैं गाऊँगा, मैं खुदावन्द की मदहसराई करूँगा ।

⁷~ऐ खुदावन्द, मेरी आवाज़ सुन! मैं पुकारता हूँ। मुझ पर रहम कर और मुझे जवाब दे।⁸जब तूने फ़रमाया, कि मेरे दीदार के तालिब हो; तो मेरे दिल ने तुझ से कहा, "ऐ खुदावन्द, मैं तेरे दीदार का तालिब रहूँगा।"

⁹मुझ से चेहरा न छिपा। अपने बन्दे को क्रहर से न निकाल। तू मेरा मददगार रहा है; न मुझे तर्क कर, न मुझे छोड़, ऐ मेरे नजात देने वाले खुदा! ।¹⁰जब मेरा बाप और मेरी माँ मुझे छोड़ दें, तो खुदावन्द मुझे संभाल लेगा।

¹¹ऐ खुदावन्द, मुझे अपनी राह बता, और मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे हमवार रास्ते पर चला।¹²मुझे मेरे मुखालिफ़ों की मर्ज़ी पर न छोड़, क्योंकि झूटे गवाह और बेरहमी से पुंकारने वाले मेरे खिलाफ़ उठे हैं।

¹³~अगर मुझे यक़ीन न होता कि ज़िन्दों की ज़मीन में खुदावन्द के एहसान को देखूँगा, तो मुझे ग़श आ जाता।¹⁴~खुदावन्द की उम्मीद रख; मज़बूत हो और तेरा दिल कवी हो; हाँ, खुदावन्द ही की उम्मीद रख।~

Chapter 28

¹~ऐ खुदावन्द, मैं तुझ ही को पुकारूँगा; ऐ मेरी चट्टान, तू मेरी तरफ़ से कान बन्द न कर; ऐसा न हो कि अगर तू मेरी तरफ़ से खामोश रहे तो मैं उनकी तरह बन जाऊँ, जो पाताल में जाते हैं।²जब मैं तुझ से फ़रियाद करूँ, और अपने हाथ तेरी मुक़द्दस हैकल की तरफ़ उठाऊँ, तो मेरी मिन्नत की आवाज़ को सुन ले।

³मुझे उन शरीरों और बदकिरदारों के साथ घसीट न ले जा; जो अपने पड़ोसियों से सुलह की बातें करते हैं, मगर उनके दिलों में बदी है।⁴उनके अफ़'आल-ओ-आ'माल की बुराई के मुवाफ़िक़ उनको बदला दे, उनके हाथों के कामों के मुताबिक़ उनसे सुलूक कर; उनके किए का बदला उनको दे।⁵~वह खुदावन्द के कामों और उसकी दस्तकारी पर ध्यान नहीं करते, इसलिए वह उनको गिरा देगा और फिर नहीं उठाएगा।

⁶खुदावन्द मुबारक हो, इसलिए के उसने मेरी मिन्नत की आवाज़ सुन ली।⁷~खुदावन्द मेरी ताक़त और मेरी ढाल है; मेरे दिल ने उस पर भरोसा किया है, और मुझे मदद मिली है। इसलिए मेरा दिल बहुत खुश है; और मैं गीत गाकर उसकी सिताइश करूँगा।⁸खुदावन्द उनकी ताक़त है, वह अपने मम्सूह के लिए नज़ात का क़िला' है।

⁹अपनी उम्मत को बचा, और अपनी मीरास को बरकत दे; उनकी पासबानी कर, और उनको हमेशा तक संभाले रह।

Chapter 29

¹~ऐ फ़रिश्तों की जमा'त खुदावन्द की, खुदावन्द ही की तम्जीद-ओ-ता'ज़ीम करो।²~खुदावन्द की ऐसी तम्जीद करो, जो उसके नाम के शायँ हैं। पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो।

³खुदावन्द की आवाज़ बादलों पर है; खुदा-ए-जुलजलाल गरजता है, खुदावन्द पानी से भरे बादलों पर है।⁴खुदावन्द की आवाज़ में कुदरत है; खुदावन्द की आवाज़ में जलाल है।⁵~खुदावन्द की आवाज़ देवदारों को तोड़ डालती है; बल्कि खुदावन्द लुबनान के देवदारों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।

⁶वह उनको बछड़े की तरह, लुबनान और सिरयून को जंगली बछड़े की तरह कुदाता है।⁷खुदावन्द की आवाज़ आग के शौ'लों को चीरती है।⁸खुदावन्द की आवाज़ वीरान को हिला देती है; खुदावन्द क़ादिस के वीरान को हिला डालता है।

⁹खुदावन्द की आवाज़ से हिरनियों के हमल गिर जाते हैं; और वह जंगलों को बेबर्ग कर देती है; उसकी हैकल में हर एक जलाल ही जलाल पुकारता है।

¹⁰खुदावन्द तूफ़ान के वक्त्र तख़्तनशीन था; बल्कि खुदावन्द हमेशा तक तख़्तनशीन है।

¹¹खुदावन्द अपनी उम्मत को ज़ोर बख़्शेगा; खुदावन्द अपनी उम्मत को सलामती की बरकत देगा।

Chapter 30

¹ऐ खुदावन्द, मैं तेरी तम्जीद करूँगा ; क्योंकि तूने मुझे सरफ़राज़ किया है; और मेरे दुश्मनों को मुझ पर खुश होने न दिया।²ऐ खुदावन्द मेरे खुदा! , मैंने तुझ से फ़रियाद की और तूने मुझे शिफ़ा बख़्शी।³ऐ खुदावन्द, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया है; तूने मुझे ज़िन्दा रख्खा है कि क़ब्र में न जाऊँ।

⁴ऐ खुदावन्द की सिताइश करो, ऐ उसके पाक लोगों! और उसके पाकीज़गी को याद करके शुक्रगुज़ारी करो।⁵क्योंकि उसका क़हर दम भर का है, उसका करम 'उम्र भर का। रात को शायद रोना पड़े पर सुबह को खुशी की नौबत आती है।

⁶मैंने अपनी इक़बालमंदी के वक़्त यह कहा था, कि मुझे कभी जुम्बिश न होगी।⁷ऐ खुदावन्द, तूने अपने करम से मेरे पहाड़ को क़ायम रख्खा था; जब तूने अपना चेहरा छिपाया तो मैं घबरा उठा।⁸ऐ खुदावन्द, मैंने तुझ से फ़रियाद की; मैंने खुदावन्द से मिन्नत की,

⁹जब मैं क़ब्र में जाऊँ तो मेरी मौत से क्या फ़ायदा? क्या ख़ाक तेरी सिताइश करेगी? क्या वह तेरी सच्चाई को बयान करेगी?¹⁰सुन ले ऐ खुदावन्द, और मुझ पर रहम कर; ऐ खुदावन्द, तू मेरा मददगार हो।

¹¹तूने मेरे मातम को नाच से बदल दिया; तूने मेरा टाट उतार डाला और मुझे खुशी से कमरबस्ता किया,¹²ताकि मेरी रूह तेरी मदहसराई करे और चुप न रहे। ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मैं हमेशा तेरा शुक्र करता रहूँगा।

Chapter 31

¹ऐ खुदावन्द! मेरा भरोसा तुझ पर, मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे; अपनी सदाक़त की खातिर मुझे रिहाई दे।² अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द मुझे छुड़ा! तू मेरे लिए मज़बूत चट्टान, मेरे बचाने को पनाहगाह हो!

³क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और मेरा क़िला' है; इसलिए अपने नाम की खातिर मेरी राहबरी और रहनुमाई कर।⁴ मुझे उस जाल से निकाल ले जो उन्होंने छिपकर मेरे लिए बिछाया है, क्योंकि तू ही मेरा मज़बूत क़िला' है।

⁵मैं अपनी रूह तेरे हाथ में सौंपता हूँ: ऐ खुदावन्द! सच्चाई के खुदा; तूने मेरा फ़िदिया दिया है।⁶ मुझे उनसे नफ़रत है जो झूटे मा'बूदों को मानते हैं: मेरा भरोसा तो खुदावन्द ही पर है।⁷ मैं तेरी रहमत से खुश-ओ-ख़ुर्रम रहूँगा, क्योंकि तूने मेरा दुख: देख लिया है; तू मेरी जान की मुसीबतों से वाकिफ़ है।

⁸तूने मुझे दुश्मन के हाथ में कैद नहीं छोड़ा; तूने मेरे पाँव कुशादा जगह में रखे हैं।⁹ ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। मेरी आँख बल्कि मेरी जान और मेरा जिस्म सब रंज के मारे घुले जाते हैं।

¹⁰क्योंकि मेरी जान ग़म में और मेरी 'उम्र कराहने में फ़ना हुई; मेरा ज़ोर मेरी बदकारी के वजह से जाता रहा, और मेरी हड्डियाँ घुल गई।¹¹ मैं अपने सब मुखालिफ़ों की वजह से अपने पड़ोसियों के लिए, अज़ बस अन्गुशतनुमा और अपने जान पहचानों के लिए ख़ौफ़ का ज़रिया' हूँ जिन्होंने मुझको बाहर देखा, मुझ से दूर भागे।

¹²मैं मुर्दे की तरह भुला दिया गया हूँ; मैं टूटे बर्तन की तरह हूँ।¹³ क्योंकि मैंने बहुतों से अपनी बदनामी सुनी है, हर तरफ़ ख़ौफ़ ही ख़ौफ़ है। जब उन्होंने मिलकर मेरे खिलाफ़ मश्वरा किया, तो मेरी जान लेने का मन्सूबा बाँधा।

¹⁴लेकिन ऐ खुदावन्द, मेरा भरोसा तुझ पर है। मैंने कहा, "तू मेरा खुदा है।"¹⁵ मेरे दिन तेरे हाथ में हैं; मुझे मेरे दुश्मनों और सताने वालों के हाथ से छुड़ा।¹⁶ अपने चेहरे को अपने बन्दे पर जलवागर फ़रमा; अपनी शफ़क़त से मुझे बचा ले।

¹⁷ऐ खुदावन्द, मुझे शर्मिन्दा न होने दे क्योंकि मैंने तुझ से दु'आ की है; शरीर शर्मिन्दा हो जाएँ और पाताल में ख़ामोश हों।¹⁸ झूटे होंट बन्द हो जाएँ, जो सादिकों के खिलाफ़ ग़ुरूर और हिंकारत से तकब्बुर की बातें बोलते हैं।

¹⁹आह! तूने अपने डरने वालों के लिए कैसी बड़ी ने'मत रख छोड़ी है: जिसे तूने बनी आदम के सामने अपने, भरोसा करने वालों के लिए तैयार किया।²⁰ तू उनको इंसान की बन्दिशों से अपनी हुजूरी के पर्दे में छिपाएगा; तू उनको ज़बान के झगड़ों से शामियाने में पोशीदा रखेगा।

²¹खुदावन्द मुबारक हो! क्योंकि उसने मुझ को मज़बूत शहर में अपनी 'अजीब शफ़क़त दिखाई।²² मैंने तो जल्दबाज़ी से कहा था, कि मैं तेरे सामने से काट डाला गया। तोभी जब मैंने तुझ से फ़रियाद की तो तूने मेरी मिन्नत की आवाज़ सुन ली।

²³खुदावन्द से मुहब्बत रखो, ऐ उसके सब पाक लोगों! खुदावन्द ईमानदारों को सलामत रखता है; और मगरूरों को ख़ूब ही बदला देता है।²⁴ ऐ खुदावन्द पर उम्मीद रखने वालो! सब मज़बूत हो और तुम्हारा दिल क़वी रहे।

Chapter 32

¹~मुबारक है वह जिसकी खता बख्शी गई, और जिसका गुनाह ढाँका गया।²~मुबारक है वह आदमी जिसकी बदकारी को खुदावन्द हिसाब में नहीं लाता, और जिसके दिल में दिखावा नहीं।

³~जब मैं खामोश रहा तो दिन भर के कराहने से मेरी हड्डियाँ धुल गई।⁴~क्योंकि तेरा हाथ रात दिन मुझ पर भारी था; मेरी तरावट गर्मियों की खुशकी से बदल गई। (सिलाह)

⁵मैंने तेरे सामने अपने गुनाह को मान लिया और अपनी बदकारी को न छिपाया, मैंने कहा, "मैं खुदावन्द के सामने अपनी खताओं का इकरार करूँगा और तूने मेरे गुनाह की बुराई को मु'आफ़ किया। (सिलाह)⁶~इसीलिए हर दीनदार तुझ से ऐसे वक़्त में दु'आ करे जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब सैलाब आए तो उस तक नहीं पहुँचेगा।

⁷तू मेरे छिपने की जगह है; तू मुझे दुख से बचाये रखेगा; तू मुझे रिहाई के नाग़ामों से घेर लेगा।(सिलाह)⁸~मैं तुझे ता'लीम दूँगा, और जिस राह पर तुझे चलना होगा तुझे बताऊँगा; मैं तुझे सलाह दूँगा, मेरी नज़र तुझ पर होगी।

⁹तुम घोड़े या खच्चर की तरह न बनो जिनमें समझ नहीं, जिनको क़ाबू में रखने का साज़ दहाना और लगाम है, वरना वह तेरे पास आने के भी नहीं।¹⁰~शरीर पर बहुत सी मुसीबतें आएँगी; पर जिसका भरोसा खुदावन्द पर है, रहमत उसे घेरे रहेगी।

¹¹~ऐ सादिक़ो, खुदावन्द में खुश-ओ-बुर्म रहो; और ऐ रास्तदिलो, खुशी से ललकारो!

Chapter 33

¹~ऐ सादिको, खुदावन्द में खुश रहो। हम्द करना रास्तबाजों की ज़ेबा है।²~सितार के साथ खुदावन्द का शुक्र करो, दस तार की बरबत के साथ उसकी सिताइश करो।³उसके लिए नया गीत गाओ, बुलन्द आवाज़ के साथ अच्छी तरह बजाओ।

⁴क्यूँकि खुदावन्द का कलाम रास्त है; और उसके सब काम बावफ़ा हैं।⁵वह सदाक़त और इंसाफ़ को पसंद करता है; ज़मीन खुदावन्द की शफ़क़त से मा'मूर है।

⁶आसमान खुदावन्द के कलाम से, और उसका सारा लश्कर उसके मुँह के दम से बना।

⁷वह समन्दर का पानी तूदे की तरह जमा' करता है; वह गहरे समन्दरों को मख़ज़नों में रखता है।⁸सारी ज़मीन खुदावन्द से डरे, ज़हान के सब बाशिन्दे उसका ख़ौफ़ रखें।⁹क्यूँकि उसने फ़रमाया और हो गया; उसने हुक्म दिया और वाके' हुआ।

¹⁰खुदावन्द क़ौमों की मश्वरत को बेकार कर देता है; वह उम्मतों के मन्सूबों को नाचीज़ बना देता है।¹¹~खुदावन्द की मसलहत हमेशा तक क़ायम रहेगी, और उसके दिल के खयाल नसल दर नसल।¹²~मुबारक है वह क़ौम जिसका खुदा खुदावन्द है, और वह उम्मत जिसको उसने अपनी ही मीरास के लिए बरगुज़ीदा किया।

¹³~खुदावन्द आसमान पर से देखता है, सब बनी आदम पर उसकी निगाह है।¹⁴अपनी सुकूनत गाह से वह ~ज़मीन के सब बाशिन्दों को देखता है।¹⁵वही है जो उन सबके दिलों को बनाता, और उनके सब कामों का खयाल रखता है।

¹⁶~किसी बादशाह को फ़ौज की कसरत न बचाएगी; और किसी ज़बरदस्त आदमी को उसकी बड़ी ताक़त रिहाई न देगी।¹⁷~बच निकलने के लिए घोड़ा बेकार है, वह अपनी शहज़ोरी से किसी को नबचाएगा।

¹⁸देखो खुदावन्द की निगाह उन पर है जो उससे डरते हैं; जो उसकी शफ़क़त के उम्मीदवार हैं,¹⁹~ताकि उनकी जान मौत से बचाए, और सूखे में उनको ज़िन्दा रखे।

²⁰हमारी जान को खुदावन्द की उम्मीद है; वही हमारी मदद और हमारी ढाल है।²¹हमारा दिल उसमें खुश रहेगा, क्यूँकि हम ने उसके पाक नाम पर भरोसा किया है।

²²ऐ खुदावन्द, जैसी तुझ पर हमारी उम्मीद है, वैसी ही तेरी रहमत हम पर हो।

Chapter 34

¹मैं हर वक़्त खुदावन्द को मुबारक कहूँगा, उसकी सिताइश हमेशा मेरी ज़बान पर रहेगी।

²~मेरी रूह खुदावन्द पर फ़ख़ करेगी; हलीम यह सुनकर खुश होंगे।³मेरे साथ खुदावन्द की बड़ाई करो, हम मिलकर उसके नाम की तम्जीद करें।

⁴मैं खुदावन्द का तालिब हुआ, उसने मुझे जवाब दिया, और मेरी सारी दहशत से मुझे रिहाई बख़्शी।⁵~उन्होंने उसकी तरफ़ नज़र की और मुनव्वर हो गए; और उनके मुँह पर कभी शर्मिन्दगी न आएगी।⁶इस ग़रीब ने दुहाई दी, खुदावन्द ने इसकी सुनी, और इसे इसके सब दुखों से बचा लिया।

⁷खुदावन्द से डरने वालों के चारों तरफ़ उसका फ़रिश्ता खेमाज़न होता है और उनको बचाता~है।⁸आज़माकर देखो, कि खुदावन्द कैसा मेहरबान है! वह आदमी जो उस पर भरोसा करता है।⁹खुदावन्द से डरो, ऐ उसके पाक लोगों! क्योंकि जो उससे डरते हैं उनको कुछ कमी नहीं।

¹⁰बबर के बच्चे तो हाजतमंद और भूके होते हैं, लेकिन खुदावन्द के तालिब किसी ने मत के मोहताज न होंगे।¹¹ऐ बच्चो, आओ मेरी सुनो, मैं तुम्हें खुदा से डरना सिखाऊँगा।

¹²~वह कौन आदमी है जो ज़िन्दगी का मुश्ताक़ है, और बड़ी 'उम्र चाहता है ताकि भलाई देखें?'¹³अपनी ज़बान को बदी से बाज़ रख, और अपने होंटों को दगा की बात से।¹⁴बुराई को छोड़ और नेकी कर; सुलह का तालिब हो और उसी की पैरवी कर।

¹⁵खुदावन्द की निगाह सादिकों पर है, और उसके कान उनकी फ़रियाद पर लगे रहते हैं।¹⁶खुदावन्द का चेहरा बदकारों के खिलाफ़ है, ताकि उनकी याद ज़मीन पर से मिटा दे।¹⁷सादिक़ चिल्लाए, और खुदावन्द ने सुना; और उनको उनके सब दुखों से छुड़ाया।

¹⁸खुदावन्द शिकस्ता दिलों के नज़दीक़ है, और खस्ता ज़ानों को बचाता है।¹⁹सादिक़ की मुसीबतें बहुत हैं, लेकिन खुदावन्द उसको उन सबसे रिहाई बख़्शता है।

²⁰वह उसकी सब हड्डियों को महफूज़ रखता है; उनमें से एक भी तोड़ी नहीं जाती।

²¹बुराई शरीर को हलाक़ कर देगी; और सादिक़ से 'अदावत रखने वाले मुजरिम ठहरेंगे।'²²खुदावन्द अपने बन्दों की जान का फ़िदिया देता है; और जो उस पर भरोसा करते हैं उनमें से कोई मुजरिम न ठहरेगा।

Chapter 35

¹ऐ खुदावन्द, जो मुझ से झगड़ते हैं तू उनसे झगड़; जो मुझ से लड़ते हैं तू उनसे लड़।²ढाल और सिपर लेकर मेरी मदद के लिए खड़ा हो।³भाला भी निकाल और मेरा पीछा करने वालों का रास्ता बंद कर दे; मेरी जान से कह, मैं तेरी नजात हूँ।

⁴~जो मेरी जान के तलबगार हैं, वह शर्मिन्दा और रुस्वा हों। जो मेरे नुकसान का मन्सूबा बाँधते हैं, वह पसपा और परेशान हों।⁵वह ऐसे हो जाएँ जैसे हवा के आगे भूसा, और खुदावन्द का फ़रिश्ता उनको हाँकता रहे।⁶उनकी राह अंधेरी और फिसलनी हो जाए, और खुदावन्द का फ़रिश्ता उनको दौड़ाता जाए।

⁷क्योंकि उन्होंने बे वजह मेरे लिए गढ़े में जाल बिछाया, और नाहक मेरी जान के लिए गढ़ा खोदा है।⁸उस पर अचानक तबाही आ पड़े! और जिस जाल को उसने बिछाया है उसमें आप ही फसे; और उसी हलाकत में गिरफ़्तार हो।

⁹~लेकिन मेरी जान खुदावन्द में खुश रहेगी, और उसकी नजात से शादमान होगी।¹⁰~मेरी सब हड्डियाँ कहेंगी, "ऐ खुदावन्द तुझ सा कौन है, जो गरीब को उसके हाथ से जो उससे ताक़तवर है, और गरीब-ओ-मोहताज को ग़ारतगर से छुड़ाता है?"

¹¹झूटे गवाह उठते हैं; और जो बातें मैं नहीं जानता, वह मुझ से पूछते हैं।¹²~वह मुझ से नेकी के बदले बदी करते हैं, यहाँ तक कि मेरी जान बेकस हो जाती है।

¹³लेकिन मैंने तो उनकी बीमारी में जब वह बीमार थे, टाट ओढ़ा और रोज़े रख रख कर अपनी जान को दुख दिया; और मेरी दु'आ मेरे ही सीने में वापस आई।

¹⁴~मैंने तो ऐसा किया जैसे वह मेरा दोस्त या मेरा भाई था; मैंने सिर झुका कर ग़म किया जैसे कोई अपनी माँ के लिए मातम करता हो।

¹⁵लेकिन जब मैं लंगड़ाने लगा तो वह खुश होकर इकट्ठे हो गए, कमीने मेरे खिलाफ़ इकट्ठा हुए और मुझे मा'लूम न था; उन्होंने मुझे फाड़ा और बाज़ न आए।

¹⁶ज़ियाफ़तों के बदतमीज़ मसखरों की तरह, उन्होंने मुझ पर दाँत पीसे।

¹⁷~ऐ खुदावन्द, तू कब तक देखता रहेगा? मेरी जान को उनकी ग़ारतगरी से, मेरी जान को शेरों से छुड़ा।¹⁸~मैं बड़े मजमे' में तेरी शुक्रगुज़ारी करूँगा मैं बहुत से लोगों में तेरी सिताइश करूँगा।

¹⁹जो नाहक मेरे दुश्मन हैं, मुझ पर खुशी न मनाएँ; और जो मुझ से बे वजह 'अदावत रखते हैं, चश्मक ज़नी न करें।²⁰~क्योंकि वह सलामती की बातें नहीं करते, बल्कि मुल्क के अमन पसंद लोगों के खिलाफ़, मक़ के मन्सूबे बाँधते हैं।

²¹यहाँ तक कि उन्होंने खूब मुँह फाड़ा और कहा, "अहा हा हा हम ने अपनी आँख से देख लिया है!"²²ऐ खुदावन्द, तूने खुद यह देखा है; ख़ामोश न रह! ऐ खुदावन्द, मुझ से दूर न रह!²³~उठ, मेरे इंसानों के लिए जाग, और मेरे मु'आमिले के लिए, ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदावन्द!

²⁴अपनी सदाक़त के मुताबिक़ मेरी'अदालत कर, ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! और उनको मुझ पर खुशी न मनाने दे।²⁵~वह अपने दिल में यह न कहने पाएँ, 'अहा! हम तो यही चाहते थे!' वह यह न कहें, कि हम उसे निगल गए।²⁶जो मेरे नुक़सान से खुश होते हैं, वह आपस में शर्मिन्दा और परेशान हों! जो मेरे मुकाबले में तक़बुर करते हैं वह शर्मिन्दगी और रुस्वाई से मुलब्बस हों।

²⁷जो मेरे सच्चे मु'आमिले की तारीफ़ करते हैं, वह खुशी से ललकारें और खुशहों; वह हमेशा यह कहें, "खुदावन्द की तम्ज़ीद हो, जिसकी खुशनूदी अपने बन्दे की इक़बालमन्दी में है!"²⁸तब मेरी ज़बान से तेरी सदाक़त का ज़िक़्र होगा, और दिन भर तेरी ता'रीफ़ होगी।

Chapter 36

¹~शरीर की बदी से मेरे दिल में खयाल आता है, कि खुदा का खौफ़ उसके सामने नहीं।²~क्योंकि वह अपने आपको अपनी नज़र में इस खयाल से तसल्ली देता है, कि उसकी बदी न तो फ़ाश होगी, न मकरूह समझी जाएगी।

³उसके मुँह में बदी और फ़रेब की बातें हैं; वह 'अक्ल और नेकी से दस्तबरदार हो गया है।'⁴~वह अपने बिस्तर पर बदी के मन्सूबे बाँधता है; वह ऐसी राह इख्तियार करता है जो अच्छी नहीं; वह बुराई से नफ़रत नहीं करता।

⁵~ऐ खुदावन्द, आसमान में तेरी शफ़क़त है, तेरी वफ़ादारी अफ़लाक तक बुलन्द है।⁶तेरी सदाक़त खुदा के पहाड़ों की तरह है, तेरे अहक़ाम बहुत गहरे हैं; ऐ खुदावन्द, तू इंसान और हैवान दोनों को महफूज़ रखता है।

⁷ऐ खुदा, तेरी शफ़क़त क्या ही बेशक़ीमत है! बनी आदम तेरे बाज़ुओं के साये में पनाह लेते हैं।⁸~वह तेरे घर की ने'मतों से ख़ूब आसूदा होंगे, तू उनको अपनी खुशनुदी के दरिया में से पिलाएगा।⁹~क्योंकि ज़िन्दगी का चश्मा तेरे पास है; तेरे नूर की बदौलत हम रोशनी देखेंगे।

¹⁰तेरे पहचानने वालों पर तेरी शफ़क़त हमेशा की हो, और रास्त दिलों पर तेरी सदाक़त!¹¹~मगरूर आदमी मुझ पर लात न उठाने पाए, और शरीर का हाथ मुझे हाँक न दे।¹²बदकिरदार वहाँ गिरे पड़े हैं; वह गिरा दिए गए हैं और फिर उठ न सकेंगे।

Chapter 37

¹~तू बदकिरदारों की वजह से बेज़ार न हो, और बदी करने वालों पर रश्क न कर!²~क्यूँकि वह घास की तरह जल्द काट डाले जाएँगे, और ~हरियाली की तरह मुरझा जाएँगे।

³~खुदावन्द पर भरोसा कर, और नेकी कर; मुल्क में आबाद रह, और उसकी वफ़ादारी से परवरिश पा।⁴खुदावन्द में मसरूर रह, और वह तेरे दिल की मुरादें पूरी करेगा।

⁵अपनी राह खुदावन्द पर छोड़ दे: और उस पर भरोसा कर, वही सब कुछ करेगा।⁶~वह तेरी रास्तबाज़ी को नूर की तरह, और तेरे हक़ को दोपहर की तरह रोशन करेगा।

⁷खुदावन्द में मुतम'इन रह, और सब्र से उसकी आस रख; उस आदमी की वजह से जो अपनी राह में कामयाब होता और बुरे मन्सूबों को अंजाम देता है, बेज़ार न हो।

⁸क्रहर से बाज़ आ और ग़ज़ब को छोड़ दे! बेज़ार न हो, इससे बुराई ही निकलती है।⁹~क्यूँकि बदकार काट डाले जाएँगे; लेकिन जिनको खुदावन्द की आस है, मुल्क के वारिस होंगे।¹⁰~क्यूँकि थोड़ी देर में शरीर नाबूद हो जाएगा; तू उसकी जगह को गौर से देखेगा पर वह ~न होगा।

¹¹~लेकिन हलीम मुल्क के वारिस होंगे, और सलामती की फ़िरावानी से खुश रहेंगे।¹²~शरीर रास्तबाज़ के खिलाफ़ बन्दिशें बाँधता है, और उस पर दाँत पीसता है;

¹³~खुदावन्द उस पर हंसेगा, क्यूँकि वह देखता है कि उसका दिन आता है।

¹⁴शरीरों ने तलवार निकाली और कमान खींची है, ताकि ग़रीब और मुहताज़ को गिरा दें, और रास्तरों ~को क़त्ल करें।¹⁵~उनकी तलवार उन ही के दिल को छेदेगी, और उनकी कमानें तोड़ी जाएँगी।

¹⁶~सादिक़ का थोड़ा सा माल, बहुत से शरीरों की दौलत से बेहतर है।¹⁷क्यूँकि शरीरों के बाज़ू तोड़े जाएँगे, लेकिन खुदावन्द सादिक़ों को संभालता है।

¹⁸~कामिल लोगों के दिनों को खुदावन्द जानता है, उनकी मीरास हमेशा के लिए होगी।¹⁹~वह आफ़त के वक़्त शर्मिन्दा न होंगे, और काल के दिनों में आसूदा रहेंगे।

²⁰~लेकिन शरीर हलाक होंगे, खुदावन्द के दुश्मन चरागाहों की सरसब्ज़ी की तरह होंगे; वह फ़ना हो जाएँगे, वह धुएँ की तरह जाते रहेंगे।²¹~शरीर क़र्ज़ लेता है और अदा नहीं करता, लेकिन सादिक़ रहम करता है और देता है।

²²क्यूँकि जिनको वह बरकत देता है, वह ज़मीन के वारिस होंगे; और जिन पर वह ला'नत करता है, वह काट डाले जाएँगे।²³~इंसान की चाल चलन खुदावन्द की तरफ़ से क़ायम हैं, और वह उसकी राह से खुश है;²⁴ अगर वह गिर भी जाए तो पड़ा न रहेगा, क्यूँकि खुदावन्द उसे अपने हाथ से संभालता है।

²⁵~मैं जवान था और अब बूढ़ा हूँ तोभी मैंने सादिक़ को बेकस, और उसकी औलाद को टुकड़े माँगते नहीं देखा।²⁶वह दिन भर रहम करता है और क़र्ज़ देता है, और उसकी औलाद को बरकत मिलती है।²⁷~बदी को छोड़ दे और नेकी कर; और हमेशा तक आबाद रह।

²⁸~क्यूँकि खुदावन्द इंसान को पसंद करता है: और अपने पाक लोगों को नहीं छोड़ता। वह हमेशा के लिए महफ़ूज़ हैं, लेकिन शरीरों की नसल काट डाली जाएगी।²⁹~सादिक़ ज़मीन के वारिस होंगे, और उसमें हमेशा बसे रहेंगे।³⁰सादिक़ के मुँह से दानाई निकलती है, और उसकी ज़बान से इंसान की बातें।

³¹~उसके खुदा की शरी'अत उसके दिल में है, वह अपनी चाल चलन में फिसलेगा नहीं।³²~शरीर सादिक़ की ताक में रहता है; और उसे क़त्ल करना चाहता है।

³³~खुदावन्द उसे उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा, और जब उसकी 'अदालत हो तो उसे मुजरिम न ठहराएगा।

³⁴खुदावन्द की उम्मीद रख, और उसी की राह पर चलता रह, और वह तुझे सरफ़राज़ करके ज़मीन का वारिस बनाएगा; जब शरीर काट डाले जाएँगे, तो तू देखेगा।

³⁵~मैंने शरीर को बड़े इत्तिदार में और ऐसा फैलता देखा, जैसे कोई हरा दरख़्त अपनी असली ज़मीन में फैलता है।³⁶~लेकिन जब कोई उधर से गुज़रा और देखा तो वह था ही नहीं; बल्कि मैंने उसे ~टूट्टा लेकिन वह न मिला।

³⁷~कामिल आदमी पर निगाह कर और रास्तबाज़ को देख, क्यूँकि सुलह दोस्त आदमी के लिए अज़ है।³⁸~लेकिन ख़ताकार इकट्ठे मर मिटेंगे; शरीरों का अंजाम हलाकत है।

³⁹~लेकिन सादिक़ों की नजात खुदावन्द की तरफ़ से है; मुसीबत के वक़्त वह उनका मज़बूत क़िला है।⁴⁰~और खुदावन्द उनकी मदद करता और उनको बचाता है; वह उनको शरीरों से छुड़ाता और बचा लेता है, इसलिए कि उन्होंने उसमें पनाह ली है।

Chapter 38

¹~ऐ खुदावन्द, अपने क़हर में मुझे झिड़क न दे, और अपने ग़ज़ब में मुझे तम्बीह न करा!²~क्यूँकि तेरे दुख मुझ में लगे हैं, और तेरा हाथ मुझ पर भारी है।

³~तेरे क़हर की वजह से मेरे जिस्म में सिहत नहीं; और मेरे गुनाह की वजह से मेरी हड्डियों को आराम नहीं।⁴~क्यूँकि मेरी बदी मेरे सिर से गुज़र गई, और वह बड़े बोझ की तरह मेरे लिए बहुत भारी है।

⁵मेरी हिमाक़त की वजह से, मेरे ज़ख्मों से बदबू आती है, वह सड़ गए हैं।⁶~मैं पुरदर्द और बहुत झुका हुआ हूँ; मैं दिन भर मातम करता फिरता हूँ।

⁷क्यूँकि मेरी कमर में दर्द ही दर्द है, और मेरे जिस्म में कुछ सिहत नहीं।⁸~मैं कमज़ोर और बहुत कुचला हुआ हूँ और दिल की बेचैनी की वजह से कराहता रहा।

⁹ऐ खुदावन्द, मेरी सारी तमन्ना तेरे सामने है, और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं।¹⁰~मेरा दिल धड़कता है, मेरी ताक़त घटी जाती है; मेरी आँखों की रोशनी भी मुझ से जाती रही।

¹¹~मेरे 'अज़ीज़ और दोस्त मेरी बला में अलग हो गए, और मेरे रिश्तेदार दूर जा खड़े हुए।¹²मेरी जान के तलबगार मेरे लिए जाल बिछाते हैं, और मेरे नुक़सान के तालिब शरारत की बातें बोलते, और दिन भर मक्र-ओ-फ़रेब के मन्सूबे बाँधते हैं।

¹³~लेकिन मैं बहरे की तरह सुनता ही नहीं, मैं गूँगे की तरह मुँह नहीं खोलता।¹⁴~बल्कि मैं उस आदमी की तरह हूँ जिसे सुनाई नहीं देता, और जिसके मुँह में मलामत की बातें नहीं।

¹⁵क्यूँकि ऐ खुदावन्द, मुझे तुझ से उम्मीद है, ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! तू जवाब देगा।¹⁶क्यूँकि मैंने कहा, कि कहीं वह मुझ पर खुशी न मनाएँ, जब मेरा पाँव फिसलता है, तो वह मेरे खिलाफ़ तकब्बुर करते हैं।

¹⁷क्यूँकि मैं गिरने ही को हूँ, और मेरा ग़म बराबर मेरे सामने है।¹⁸~इसलिए कि मैं अपनी बदी को ज़ाहिर करूँगा, और अपने गुनाह की वजह से ग़मगीन रहूँगा।

¹⁹लेकिन मेरे दुश्मन चुस्त और ज़बरदस्त हैं, और मुझ से नाहक 'अदावत रखने वाले बहुत हो गए हैं।²⁰जो नेकी के बदले बदी करते हैं, वह भी मेरे मुखालिफ़ हैं; क्यूँकि मैं नेकी की पैरवी करता हूँ।

²¹~ऐ खुदावन्द, मुझे छोड़ न दे! ऐ मेरे खुदा, मुझ से दूर न हो!²²~ऐ खुदावन्द! ऐ मेरी नजात! मेरी मदद के लिए जल्दी कर!

Chapter 39

¹मैंने कहा मैं अपनी राह की निगरानी करूँगा, ताकि मेरी ज़बान से खता न हो; जब तक शरीर मेरे सामने है, मैं अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।"

²~मैं गूंगा बनकर खामोश रहा, और नेकी की तरफ़ से भी खामोशी इस्तिथार की; और मेरा गम बढ़ गया।³~मेरा दिल अन्दर ही अन्दर जल रहा था। सोचते सोचते आग भड़क उठी, तब मैं अपनी ज़बान से कहने लगा,

⁴~"ऐ खुदावन्द! ऐसा कर कि मैं अपने अंजाम से वाकिफ़ हो जाऊँ, और इससे भी कि मेरी 'उम्र की मी' आद क्या है; मैं जान लूँ कि कैसा फ़ानी हूँ!⁵~देख, तूने मेरी 'उम्र बालिशत भर की रखबी है, और मेरी ज़िन्दगी तेरे सामने बे हकीकत है। यक़ीनन हर इंसान बेहतरीन हालत में भी बिल्कुल बेसबात है (सिलाह)

⁶दर हकीकत इंसान साये की तरह चलता फिरता है; यक़ीनन वह फ़जूल घबराते हैं; वह ज़ख़ीरा करता है और यह नहीं जानता के उसे कौन लेगा!⁷~"ऐ खुदावन्द! अब मैं किस बात के लिए ठहरा हूँ? मेरी उम्मीद तुझ ही से है।

⁸~मुझ को मेरी सब खताओं से रिहाई दे। बेवकूफ़ों को मुझ पर अंगुली न उठाने दे।⁹मैं गूंगा बना, मैंने मुँह न खोला क्योंकि तू ही ने यह किया है।

¹⁰~मुझ से अपनी बला दूर कर दे; मैं तो तेरे हाथ की मार से फ़ना हुआ जाता हूँ।¹¹~जब तू इंसान को बदी पर मलामत करके तम्बीह करता है; तो उसके हुस्न को पतंगे की तरह फ़ना कर देता है; यक़ीनन हर इंसान बेसबात है। (सिलाह)

¹²~"ऐ खुदावन्द! मेरी दु'आ सुन और मेरी फ़रियाद पर कान लगा; मेरे आँसुओं को देखकर खामोश न रह! क्योंकि मैं तेरे सामने परदेसी और मुसाफ़िर हूँ, जैसे मेरे सब बाप-दादा थे।¹³~आह! मुझ से नज़र हटा ले ताकि ताज़ा दम हो जाऊँ, इससे पहले के मर जाऊँ और हलाक हो जाऊँ।"

Chapter 40

¹मैंने सब्र से खुदावन्द पर उम्मीद रखी उसने मेरी तरफ़ माइल होकर मेरी फ़रियाद सुनी।²~उसने मुझे हौलनाक गढ़े और दलदल की कीचड़ में से निकाला, और उसने मेरे पाँव चट्टान पर रखे और मेरी चाल चलन कायम की

³~उसने हमारे खुदा की सिताइश का नया हम्द मेरे मुँह में डाला। बहुत से देखेंगे और डरेंगे, और खुदावन्द पर भरोसा करेंगे।⁴~मुबारक है वह आदमी, जो खुदावन्द पर भरोसा करता है, और मगरूर और झूठे दोस्तों की तरफ़ माइल नहीं होता।

⁵~ऐ खुदावन्द मेरे खुदा! जो 'अजीब काम तूने किए, और तेरे खयाल जो हमारी तरफ़ हैं, वह बहुत से हैं। मैं उनको तेरे सामने तरतीब नहीं दे सकता; अगर मैं उनका ज़िक्र और बयान करना चाहूँ तो वह शुमार से बाहर हैं।'⁶~कुर्बानी और नज़्र को तू पसंद नहीं करता, तूने मेरे कान खोल दिए हैं। सोखतनी कुर्बानी तूने तलब नहीं की।

⁷तब मैंने कहा, "देख! मैं आया हूँ। किताब के तूमार में मेरे बारे लिखा है।"⁸~ऐ मेरे खुदा, मेरी खुशी तेरी मज़ी पूरी करने में है; बल्कि तेरी शरी'अत मेरे दिल में है।"⁹मैंने बड़े मजमे' में सदाक़त की बशारत दी है; देख! मैं अपना मुँह बंद नहीं करूँगा, ऐ खुदावन्द! तू जानता है।

¹⁰~मैंने तेरी सदाक़त अपने दिल में छिपा नहीं रखी; मैंने तेरी वफ़ादारी और नज़ात का इज़हार किया है; मैंने तेरी शफ़क़त और सच्चाई बड़े मजमा' से नहीं छिपाई।¹¹~ऐ खुदावन्द! तू मुझ पर रहम करने में दरेग़ा न कर; तेरी शफ़क़त और सच्चाई बराबर मेरी हिफ़ाज़त करें!

¹²~क्योंकि बेशुमार बुराइयों ने मुझे घेर लिया है; मेरी बंदी ने मुझे आ पकड़ा है, ऐसा कि मैं आँख नहीं उठा सकता; वह मेरे सिर के बालों से भी ज़्यादा हैं: इसलिए मेरा जी छूट गया।¹³ऐ खुदावन्द! मेहरबानी करके मुझे छुड़ा। ऐ खुदावन्द! मेरी मदद के लिए जल्दी कर।

¹⁴~जो मेरी जान को हलाक करने के दर पै हैं, वह सब शर्मिन्दा और खजिल हों; जो मेरे नुक्सान से खुश हैं, वह पसपा और रुस्वा हो।¹⁵जो मुझ पर अहा हा हा करते हैं, वह अपनी रुस्वाई की वजह से तबाह हो जाएँ।

¹⁶~तेरे सब तालिब तुझ में खुश-ओ-खुरम हों; तेरी नज़ात के 'आशिक हमेशा कहा करें खुदावन्द की तम्जीद हो! ",¹⁷लेकिन मैं ग़रीब और मोहताज हूँ, खुदावन्द मेरी फ़िक्र करता है। मेरा मददगार और छुड़ाने वाला तू ही है; ऐ मेरे खुदा! देर न कर।

Chapter 41

¹मुबारक, है वह जो गरीब का खयाल रखता है खुदावन्द मुसीबत के दिन उसे छुड़ाएगा।²~खुदावन्द उसे महफूज़ और ज़िन्दा रखेगा, और वह ज़मीन पर मुबारक होगा। तू उसे उसके दुश्मनों की मर्ज़ी पर न छोड़।³खुदावन्द उसे बीमारी के बिस्तर पर संभालेगा; तू उसकी बीमारी में उसके पूरे बिस्तर को ठीक करता है।

⁴~मैंने कहा, "ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर! मेरी जान को शिफ़ा दे, क्योंकि मैं तेरा गुनहगार हूँ।"⁵~मेरे दुश्मन यह कहकर मेरी बुराई करते हैं, कि वह कब मरेगा और उसका नाम कब मिटेगा ?⁶जब वह मुझ से मिलने को आता है, तो झूठी बातें बकता है; उसका दिल अपने अन्दर बदी समेटता है; वह बाहर जाकर उसी का ज़िक्र करता है।

⁷मुझ से 'अदावत रखने वाले सब मिलकर मेरी गीबत करते हैं; वह मेरे खिलाफ़ मेरे नुकसान के मन्सूबे बाँधते हैं।"⁸~वह कहते हैं, "इसे तो बुरा रोग लग गया है; अब जो वह पड़ा है तो फिर उठने का नहीं।"⁹बल्कि मेरे दिली दोस्त ने जिस पर मुझे भरोसा था, और जो मेरी रोटी खाता था, मुझ पर लात उठाई है।

¹⁰~लेकिन तू ऐ खुदावन्द! मुझ पर रहम करके मुझे उठा खड़ा कर, ताकि मैं उनको बदला दूँ।¹¹~इससे मैं जान गया कि तू मुझ से खुश है, कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह नहीं पाता।¹²~मुझे तो तू ही मेरी रास्ती में क़ायम बख़्शता है और मुझे हमेशा अपने सामने क़ायम रखता है।,

¹³खुदावन्द इस्राईल का खुदा, इब्तिदा से हमेशा तक मुबारक हो! आमीन, सुम्म आमीन।

Chapter 42

¹~जैसे हिरनी पानी के नालों को तरसती है, वैसे ही ऐ खुदा! मेरी रूह तेरे लिए तरसती है।²मेरी रूह, खुदा की, ज़िन्दा खुदा की प्यासी है। मैं कब जाकर खुदा के सामने हाज़िर हूँगा?

³~मेरे आँसू दिन रात मेरी खूराक हैं; जिस हाल कि वह मुझ से बराबर कहते हैं, तेरा खुदा कहाँ है?⁴~इन बातों को याद करके मेरा दिल भरआता है, कि मैं किस तरह भीड़ या'नी 'ईद मनाने वाली जमा'अत के साथ, खुशी और हम्द करता हुआ उनको खुदा के घर में ले जाता था।

⁵ऐ मेरी जान, तू क्यों गिरी जाती है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों बेचैन है? खुदा से उम्मीद रख, क्योंकि उसके नजात बख्श दीदार की खातिर मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।⁶~ऐ मेरे खुदा! मेरी जान मेरे अंदर गिरी जाती है, इसलिए मैं तुझे यरदन की सरज़मीन से और हरमून और कोह-ए-मिस्फ़ार पर से याद करता हूँ।

⁷~तेरे आबशारों की आवाज़ से गहराव गहराव को पुकारता है। तेरी सब मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई।⁸~तोभी दिन को खुदावन्द अपनी शफ़क़त दिखाएगा; और रात को मैं उसका हम्द गाऊँगा, बल्कि अपनी ज़िन्दगी के खुदा से दु'आ करूँगा।

⁹~मैं खुदा से जो मेरी चट्टान है कहूँगा, "तू मुझे क्यों ~भूल गया? मैं दुश्मन के जुल्म की वजह से, क्यों मातम करता फिरता हूँ?"¹⁰~मेरे मुखालिफ़ों की मलामत, जैसे मेरी हड्डियों में तलवार है, क्योंकि वह मुझ से बराबर कहते हैं, "तेरा खुदा कहाँ है?"

¹¹~ऐ मेरी जान! तू क्यों गिरी जाती है? तू अंदर ही अंदर क्यों बेचैन है? खुदा से उम्मीद रख, क्योंकि वह मेरे चेहरे की रौनक और मेरा खुदा है; मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।

Chapter 43

¹~ऐ खुदा, मेरा इंसान कर और बेदीन क़ौम के मुकाबले में मेरी वकालत कर, और दगाबाज़ और बेइसाफ़ आदमी से मुझे छुड़ा।²~क्योंकि तू ही मेरी ताक़त का खुदा है, तूने क्यों मुझे छोड़ दिया? मैं दुश्मन के जुल्म की वजह से क्यों मातम करता फिरता हूँ?

³अपने नूर, अपनी सच्चाई को भेज, वही मेरी रहबरी करें, वही मुझ को तेरे पाक पहाड़ और तेरे घर तक पहुँचाए।⁴तब मैं खुदा के मज़बह के पास जाऊँगा, खुदा के सामने जो मेरी कमाल खुशी है; ऐ खुदा! मेरे खुदा! मैं सितार बजा कर तेरी सिताइश करूँगा।

⁵~ऐ मेरी जान! तू क्यों गिरी जाती है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों बेचैन है? खुदा से उम्मीद रख, क्योंकि वह मेरे चेहरे की रौनक और मेरा खुदा है; मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।

Chapter 44

¹~ऐ खुदा, हम ने अपने कानों से सुना; हमारे बाप-दादा ने हम से बयान किया, कि तूने उनके दिनों में क्या क्या काम किए।²तूने क़ौमों को अपने हाथ से निकाल दिया, और उनको बसाया: तूने उम्मतों को तबाह किया, और इनको चारों तरफ़ फैलाया;

³क्योंकि न तो यह अपनी तलवार से इस मुल्क पर क़ाबिज़ हुए, और न इनकी ताक़त ने इनको बचाया; बल्कि तेरे दहने हाथ और तेरी ताक़त और तेरे चेहरे के नूर ने इनको फ़तह बख़्शी क्योंकि तू इनसे ख़ुश था।⁴~ऐ खुदा! तू मेरा बादशाह है; या 'कूब के हक़ में नजात का हुक्म सादिर फ़रमा।

⁵~तेरी बदौलत हम अपने मुख़ालिफ़ों को गिरा देंगे; तेरे नाम से हम अपने ख़िलाफ़ उठने वालों को पस्त करेंगे।⁶~क्योंकि न तो मैं अपनी कमान पर भरोसा करूँगा, और न मेरी तलवार मुझे बचाएगी।

⁷~लेकिन तूने हम को हमारे मुख़ालिफ़ों से बचाया है, और हम से 'अदावत रखने वालों को शर्मिन्दा किया।⁸~हम दिन भर खुदा पर फ़ख़्र करते रहे हैं, और हमेशा हम तेरे ही नाम का शुक्रिया अदा करते रहेंगे। (

⁹लेकिन तूने तो अब हम को छोड़ दिया और हम को रुस्वा किया, और हमारे लश्क़रों के साथ नहीं जाता।¹⁰~तू हम को मुख़ालिफ़ के आगे पसपा करता है, और हम से 'अदावत रखने वाले लूट मार करते हैं'¹¹~तूने हम को ज़बह होने वाली भेड़ों की तरह कर दिया, और क़ौमों के बीच हम को तितर बितर किया।

¹²तू अपने लोगों को मुफ़्त बेच डालता है, और उनकी क़ीमत से तेरी दौलत नहीं बढ़ती।¹³~तू हम को हमारे पड़ोसियों की मलामत का निशाना, और हमारे आसपास के लोगों के तमसख़ुर और मज़ाक़ का ज़रिया' बनाता है।¹⁴तू हम को क़ौमों के बीच एक मिसाल, और उम्मतों में सिर हिलाने की वजह ठहराता है।

¹⁵मेरी रुस्वाई दिन भर मेरे सामने रहती है, और मेरे मुँह पर शर्मिन्दी छा गई।¹⁶मलामत करने वाले और कुफ़्र बकने वाले की बातों की वजह से, और मुख़ालिफ़ और इन्तक़ाम लेने वाले की वजह।¹⁷~यह सब कुछ हम पर बीता तोभी हम तुझ को नहीं भूले, न तेरे 'अहद से बेवफ़ाई की;

¹⁸~न हमारे दिल नाफ़रमान हुए, न हमारे क़दम तेरी राह से मुड़े;¹⁹~जो तूने हम को गीदड़ों की जगह में खूब कुचला, और मौत के साये में हम को छिपाया।

²⁰~अगर हम अपने खुदा के नाम को भूले, या हम ने किसी अजनबी मा'बूद के आगे अपने हाथ फैलाए हों:²¹~तो क्या खुदा इसे दरियाफ़्त न कर लेगा? क्योंकि वह दिलों के राज़ जानता है।²²~बल्कि हम तो दिन भर तेरी ही खातिर जान से मारे जाते हैं, और जैसे ज़बह होने वाली भेड़ें समझे जाते हैं।

²³~ऐ खुदावन्द, जाग! तू क्यों सोता है? उठ! हमेशा के लिए हम को न छोड़~।²⁴~तू अपना मुँह क्यों छिपाता है, और हमारी मुसीबत और मज़लूमी को भूलता है?

²⁵~क्योंकि हमारी जान खाक में मिल गई, हमारा जिस्म मिट्टी हो गया।²⁶~हमारी मदद के लिए उठ और अपनी शफ़क़त की खातिर, हमारा फ़िदिया दे।

Chapter 45

¹~मेरे दिल में एक नफ़ीस मज़मून जोश मार रहा है, मैं वही मज़ामीन सुनाऊँगा जो मैंने बादशाह के हक़ में लिखे हैं, मेरी ज़बान माहिर लिखने वाले का क़लम है।

²~तू बनी आदम में सबसे हसीन है; तेरे होंटों में लताफ़त भरी है; इसलिए खुदा ने तुझे हमेशा के लिए मुबारक किया।

³ऐ ज़बरदस्त! तू अपनी तलवार को जो तेरी हशमत-ओ-शौकत है, अपनी कमर से लटका ले।⁴और सच्चाई और हिल्म और सदाक़त की खातिर, अपनी शान-ओ-शौकत में इक़बालमंदी से सवार हो; और तेरा दहना हाथ तुझे अजीब काम दिखाएगा।

⁵~तेरे तीर तेज़ हैं, वह बादशाह के दुश्मनों के दिल में लगे हैं, उम्मतें तेरे सामने पस्त होती हैं।⁶~ऐ खुदा, तेरा तख़्त हमेशा से हमेशा तक है; तेरी सल्तनत का 'असा रास्ती का 'असा है।⁷~तूने सदाक़त से मुहब्बत रखी और बदकारी से नफ़रत, इसीलिए खुदा, तेरे खुदा ने खुशी के तेल से, तुझ को तेरे हमसरों से ज़्यादा मसह किया है।

⁸~तेरे हर लिबास से मुर और 'ऊद और तंज की खुशबू आती है, हाथी दाँत के महलों में से तारदार साज़ों ने तुझे खुश किया है।⁹तेरी खास ख्वातीन में शाहज़ादियाँ हैं; मलिका तेरे दहने हाथ, ओफ़ीर के सोने से सजी खड़ी है।

¹⁰~ऐ बेटी, सुन! गौर कर और कान लगा; अपनी क़ौम और अपने बाप के घर को भूल जा;¹¹और बादशाह तेरे हुस्न का मुश्ताक़ होगा। क्योंकि वह तेरा खुदावन्द है, तू उसे सिज्दा कर!

¹²~और सूर की बेटी हदिया लेकर हाज़िर होगी, क़ौम के दौलतमंद तेरी खुशी की तलाश करेंगे।¹³~बादशाह की बेटी महल में सरापा हुस्न अफ़रोज़ है, उसका लिबास ज़रबज़र का है;

¹⁴~वह बेल बूटे दार लिबास में बादशाह के सामने पहुँचाई जाएगी। उसकी कुंवारी सहेलियाँ जो उसके पीछे-पीछे चलती हैं, तेरे सामने हाज़िर की जाएँगी।¹⁵~वह उनको खुशी और ख़ुरमी से ले आएँगे, वह बादशाह के महल में दाख़िल होंगी।

¹⁶तेरे बेटे तेरे बाप दादा के जाँ नशीन होंगे; जिनको तू पूरी ज़मीन पर सरदार मुक़र्रर करेगा।¹⁷~मैं तेरे नाम की याद को नसल दर नसल क़ायम रखूँगा इसलिए उम्मतें हमेशा से हमेशा तक तेरी ; शुक्रगुज़ारी करेंगी।

Chapter 46

¹खुदावन्द हमारी पनाह और ताक़त है; मुसीबत में मुस्त'इद मददगार।²इसलिए हम को कुछ खौफ़ नहीं चाहे ज़मीन उलट जाए, और पहाड़ समुन्दर की तह में डाल दिए जाएँ³~चाहे उसका पानी शोर मचाए और तूफानी हो, और पहाड़ उसकी लहरों से हिल जाएँ।(सिलाह)

⁴~एक ऐसा दरिया है जिसकी शाखो से खुदा के शहर को या'नी हक़ ता'ला के पाक घर को फ़रहत होती है।⁵~खुदा उसमें है, उसे कभी जुम्बिश न होगी; खुदा सुबह सवेरे उसकी मदद करेगा।

⁶~क्रौमे झुंझलाई, सल्तनतों ने जुम्बिश खाई; वह बोल उठा, ज़मीन पिघल गई।⁷~लश्क़रों का खुदावन्द हमारे साथ है; या'क़ूब का खुदा हमारी पनाह है (सिलाह)।

⁸आओ, खुदावन्द के कामों को देखो, कि उसने ज़मीन पर क्या क्या वीरानियाँ की हैं।⁹वह ज़मीन की इन्तिहा तक जंग बंद कराता है; वह कमान को तोड़ता, और नेज़े के टुकड़े कर डालता है। वह रथों को आग से जला देता है।

¹⁰~'ख़ामोश हो जाओ, और जान लो कि मैं खुदा हूँ। मैं क्रौमों के बीच सरबुलंद हूँगा।मैं सारी ज़मीन पर सरबुलंद हूँगा।"¹¹~लश्क़रों का खुदावन्द हमारे साथ है; या'क़ूब का खुदा हमारी पनाह है।(सिलाह)

Chapter 47

¹ऐ सब उम्मतों, तालियाँ बजाओ! खुदा के लिए खुशी की आवाज़ से ललकारो!²~क्योंकि खुदावन्द ता'ला बड़ा है, वह पूरी ज़मीन का शहंशाह है।

³~वह उम्मतों को हमारे सामने पस्त करेगा, और क्रौमों हमारे क्रदमों तले हो जायेंगी।⁴~वह हमारे लिए हमारी मीरास को चुनेगा, जो उसके महबूब या 'कूब की हश्मत है।(सिलाह)⁵~खुदा ने बुलन्द आवाज़ के साथ, खुदावन्द ने नरसिंगे की आवाज़ के साथ सु'ऊद फ़रमाया।

⁶मदहसराई करो, खुदा की मदहसराई करो! मदहसराई करो, हमारे बादशाह की मदहसराई करो!⁷क्योंकि खुदा सारी ज़मीन का बादशाह है; 'अक्ल से मदहसराई करो।

⁸~खुदा क्रौमों पर सल्तनत करता है; खुदा अपने पाक तख़्त पर बैठा है।⁹~उम्मतों के सरदार इकट्ठे हुए हैं, ताकि इब्राहीम के खुदा की उम्मत बन जाएँ; क्योंकि ज़मीन की ढालें खुदा की हैं, वह बहुत बुलन्द है।

Chapter 48

¹हमारे खुदा के शहर में, अपने पाक पहाड़ पर खुदावन्द बुजुर्ग और बेहद सिताइश के लायक है!²उत्तर की जानिब कोह-ए-सिय्यून, जो बड़े बादशाह का शहर है, वह बुलन्दी में खुशनुमा और तमाम ज़मीन का फ़ख़्र है।³~उसके महलों में खुदा पनाह माना जाता है।

⁴क्योंकि देखो, बादशाह इकट्ठे हुए, | वह मिलकर गुज़रे।⁵वह देखकर दंग हो गए, वह घबराकर भागे।⁶वहाँ कपकपी ने उनको आ दबाया, और ऐसे दर्द ने जैसा पैदाइश का दर्द।

⁷तू पूरबी हवा से तरसीस के जहाज़ों को तोड़ डालता है।⁸लश्क़रों के खुदावन्द के शहर में, या'नी अपने खुदा के शहर में, जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने देखा: खुदा उसे हमेशा बरकरार रखेगा।

⁹~ऐ खुदा, तेरी हैकल के अन्दर हम ने तेरी शफ़क़त पर ग़ौर किया है¹⁰~ऐ खुदा, जैसा तेरा नाम है वैसी ही तेरी सिताइश ज़मीन की इन्तिहा तक है। तेरा दहना हाथ सदाक़त से मा'मूर है।

¹¹~तेरे अहकाम की वजह से: कोह-ए-सिय्यून शादमान हो यहूदाह की बेटियाँ खुशी मनाए ~,

¹²सिय्यून के गिर्द फ़िरो और उसका तवाफ़ करो उसके बुजुर्गों को गिनो,¹³~उसकी शहर पनाह को खूब देख लो, उसके महलों पर ग़ौर करो; ताकि तुम आने वाली नसल को उसकी ख़बर दे सको।

¹⁴~क्योंकि यही खुदा हमेशा से हमेशा तक हमारा खुदा है; यही मौत तक हमारा रहनुमा रहेगा।

Chapter 49

¹~ऐ सब उम्मतो, यह सुनो। ऐ जहान के सब बाशिन्दो, कान लगाओ!²क्या अदना क्या आ'ला, क्या अमीर क्या फ़कीर।

³मेरे मुँह से हिकमत की बातें निकलेंगी, और मेरे दिल का खयाल पुर खिरद होगा।⁴मैं तम्सील की तरफ़ कान लगाऊँगा, मैं अपना राज़ सितार पर बयान करूँगा।

⁵~मैं मुसीबत के दिनों में क्यों डरूँ, जब मेरा पीछा करने ~करने वाली बदी मुझे घेरे हो?

⁶जो अपनी दौलत पर भरोसा रखते, और अपने माल की कसरत पर फ़ख़ करते हैं;⁷~उनमें से कोई किसी तरह अपने भाई का फ़िदिया नहीं दे सकता, न खुदा को उसका मु'आवज़ा दे सकता है।⁸~(क्योंकि उनकी जान का फ़िदिया बेश क़ीमत है; वह हमेशा तक अदा न होगा।)

⁹~ताकि वह हमेशा तक ज़िन्दा रहे और क़ब्र को न देखे।¹⁰~क्योंकि वह देखता है, कि दानिशमंद मर जाते हैं, बेवकूफ़ व हैवान खसलत एक साथ हलाक होते हैं, और अपनी दौलत औरों के लिए छोड़ जाते हैं।

¹¹~उनका दिली खयाल यह है कि उनके घर हमेशा तक, और उनके घर नसल दर नसल बने रहेंगे; वह अपनी ज़मीन अपने ही नाम नामज़द करते हैं।

¹²~पर इंसान इज़ज़त की हालत में क़ायम नहीं रहता वह जानवरों की तरह है, जो फ़ना हो, जाते हैं।¹³उनकी यह चाल उनकी बेवकूफी है, तोभी उनके बा'द लोग उनकी बातों को पसंद करते हैं। (सिलाह)

¹⁴~वह जैसे पाताल का रेवड़ ठहराए गए हैं; मौत उनकी पासबान होगी; दियानतदार सुबह को उन पर मुसल्लत होगा, और उनका हुस्न पाताल का लुक़्मा होकर बेठिकाना होगा।¹⁵~लेकिन खुदा मेरी जान को पाताल के इख्तियार से छुड़ा लेगा, क्योंकि वही मुझे कुबूल करेगा। (सिलाह)

¹⁶जब कोई मालदार हो जाए जब उसके घर की हश्मत बढ़े, तो तू खौफ़ न कर।¹⁷क्योंकि वह मरकर कुछ साथ न ले जाएगा; उसकी हश्मत उसके साथ न जाएगी।

¹⁸~चाहे जीते जी वह अपनी जान को मुबारक कहता रहा हो (और जब तू अपना भला करता है तो लोग तेरी तारीफ़ करते हैं)¹⁹तोभी वह अपने बाप दादा की ग़िरोह से जा मिलेगा, वह रोशनी को हरगिज़ न देखेंगे।²⁰आदमी जो 'इज़ज़त की हालत में रहता है, लेकिन 'अक्ल नहीं रखता जानवरों की तरह है, जो फ़ना हो जाते हैं।

Chapter 50

¹~रब खुदावन्द खुदा ने कलाम किया, और पूरब से पश्चिम तक दुनिया को बुलाया।²~सिय्यून से जो हुस्न का कमाल है, खुदा जलवागर हुआ है।

³हमारा खुदा आएका और खामोश नहीं रहेगा; आग उसके आगे आगे भसम करती जाएगी,⁴अपनी उम्मत की 'अदालत करने के लिए वह आसमान-ओ-ज़मीन को तलब करेगा,⁵~कि मेरे पाक लोगों को मेरे सामने जमा' करो, जिन्होंने कुर्बानी के ज़रिये' से मेरे साथ 'अहद बाँधा है।

⁶~और आसमान उसकी सदाक़त बयान करेंगे, क्योंकि खुदा आप ही इसाफ़ करने वाला है।

⁷"ऐ मेरी उम्मत, सुन, मैं कलाम करूँगा, और ऐ इस्राईल, मैं तुझ पर गवाही दूँगा। खुदा, तेरा खुदा मैं ही हूँ।⁸~मैं तुझे तेरी कुर्बानियों की वजह से मलामत नहीं करूँगा, और तेरी सोखतनी कुर्बानियाँ बराबर मेरे सामने रहती हैं;

⁹~न मैं तेरे घर से बैल लूँगा न तेरे बाड़े से बकरे।¹⁰~क्योंकि जंगल का एक एक जानवर, और हज़ारों पहाड़ों के चौपाये मेरे ही हैं।¹¹~मैं पहाड़ों के सब परिन्दों को जानता हूँ, और मैदान के दरिन्दे मेरे ही हैं।

¹²"अगर मैं भूका होता तो तुझ से न कहता, क्योंकि दुनिया और उसकी मा'मूरी मेरी ही है।¹³~क्या मैं साँडों का गोश्त खाऊँगा, या बकरों का खून पिऊँगा?

¹⁴खुदा के लिए शुक्रगुज़ारी की कुर्बानी पेश करें, और हक़ता'ला के लिए अपनी मन्त्रतें पूरी कर; |¹⁵और मुसीबत के दिन मुझ से फ़रियाद कर मैं तुझे छुड़ाऊँगा और तू मेरी तम्ज़ीद करेगा।"

¹⁶~लेकिन खुदा शरीर से कहता है, "तुझे मेरे क़ानून बयान करने से क्या वास्ता? और तू मेरे 'अहद को अपनी ज़बान पर क्यों लाता है?¹⁷~जबकि तुझे तर्बियत से 'अदावत है, और मेरी बातों को पीठ पीछे फेंक देता है।

¹⁸तू चोर को देखकर उससे मिल गया, और ज़ानियों का शरीक रहा है।¹⁹~"तेरे मुँह से बदी निकलती है, और तेरी ज़बान फ़रेब गढ़ती है।²⁰~तू बैठा बैठा अपने भाई की गीबत करता है; और अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

²¹~तूने यह काम किए और मैं खामोश रहा; तूने गुमान किया, कि मैं बिल्कुल तुझ ही सा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करके इनको तेरी आँखों के सामने तरतीब दूँगा।²²~"अब ऐ खुदा को भूलने वालो, इसे सोच लो, ऐसा न हो कि मैं तुम को फाड़ डालूँ, और कोई छुड़ाने वाला न हो।

²³जो शुक्रगुज़ारी की कुर्बानी पेश करता है वह मेरी तम्ज़ीद करता है; और जो अपना चालचलन दुरुस्त रखता है, उसको मैं खुदा की नजात दिखाऊँगा।"

Chapter 51

¹~ऐ खुदा! अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर रहम कर; अपनी रहमत की कसरत के मुताबिक़ मेरी ख़ताएँ मिटा दे।²~मेरी बदी को मुझ से धो डाल, और मेरे गुनाह से मुझे पाक कर!

³~क्यूँकि मैं अपनी ख़ताओं को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने है।⁴मैंने सिर्फ़ तेरा ही गुनाह किया है, और वह काम किया है जो तेरी नज़र में बुरा है; ताकि तू अपनी बातों में रास्त ठहरे, और अपनी 'अदालत में बे'ऐब रहे।

⁵देख, मैंने बदी में सूरत पकड़ी, और मैं गुनाह की हालत में माँ के पेट में पड़ा।⁶~देख, तू बातिन की सच्चाई पसंद करता है, और बातिन ही में मुझे दानाई सिखाएगा।

⁷जूफ़े से मुझे साफ़ कर, तो मैं पाक हूँगा; मुझे धो, और मैं बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हूँगा।⁸~मुझे खुशी और ख़ुरमी की ख़बर सुना, ताकि वह हड्डियाँ जो तूने तोड़ डाली, हैं, खुश हों।⁹~मेरे गुनाहों की तरफ़ से अपना मुँह फेर ले, और मेरी सब बदकारी मिटा डाल।

¹⁰~ऐ खुदा! मेरे अन्दर पाक दिल पैदा कर, और मेरे बातिन में शुरू' से सच्ची रूह डाल।¹¹मुझे अपने सामने से ख़ारिज न कर, और अपनी पाक रूह को मुझ से जुदा न कर।

¹²~अपनी नजात की शादमानी मुझे फिर'इनायत कर, और मुस्त'इद रूह से मुझे संभाल।¹³~तब मैं ख़ताकारों को तेरी राहें सिखाऊँगा, और गुनहगार तेरी तरफ़ रुजू' करेंगे।

¹⁴ऐ खुदा! ऐ मेरे नजात बख़्श खुदा, मुझे खून के जुर्म से छुड़ा, तो मेरी ज़बान तेरी सदाक़त का हम्द गाएगी।¹⁵~ऐ खुदावन्द! मेरे होंटों को खोल दे, तो मेरे मुँह से तेरी सिताइश निकलेगी।¹⁶~क्यूँकि कुर्बानी में तेरी खुशी नहीं, वरना मैं देता; सोख़तनी कुर्बानी से तुझे कुछ खुशी नहीं।

¹⁷~शिकस्ता रूह खुदा की कुर्बानी है; ऐ खुदा! तू शिकस्ता और ख़स्तादिल को हकीर न जानेगा।¹⁸अपने करम से सिय्यून के साथ भलाई कर, यरूशलीम की फ़सील को तामीर कर,¹⁹~तब तू सदाक़त की कुर्बानियों और सोख़तनी कुर्बानी और पूरी सोख़तनी कुर्बानी से खुश होगा; और वह तेरे मज़बह पर बछड़े चढ़ाएँगे।

Chapter 52

¹~ऐ ज़बरदस्त, तू शरारत पर क्यों फ़ख़्र करता है? खुदा की शफ़क़त हमेशा की है।²~तेरी ज़बान महज़ शरारत ईजाद करती है; ऐ दगाबाज़, वह तेज़ उस्तरे की तरह है।

³~तू बदी को नेकी से ज़्यादा पसंद करता है, और झूट को सदाक़त की बात से।

⁴ऐ दगाबाज़ ज़बान! तू मुहलिक बातों को पसंद करती है।⁵~ख़ुदा भी तुझे हमेशा के लिए हलाक कर डालेगा; वह तुझे पकड़ कर तेरे खेमे से निकाल फेंकेगा, और ज़िन्दों की ज़मीन से तुझे उखाड़ डालेगा। (सिलाह)

⁶~सादिक़ भी इस बात को देख कर डर जाएँगे, और उस पर हँसेंगे,⁷~कि देखो, यह वही आदमी है जिसने खुदा को अपनी पनाहगाह न बनाया, बल्कि अपने माल की ज़यादती पर भरोसा किया, और शरारत में पक्का हो गया।

⁸~लेकिन मैं तो खुदा के घर में जैतून के हरे दरख़्त की तरह हूँ। मेरा भरोसा हमेशा से हमेशा तक खुदा की शफ़क़त पर है।⁹~मैं हमेशा तेरी शुक्रगुज़ारी करता रहूँगा, क्योंकि तू ही ने यह किया है; और मुझे तेरे ही नाम की आस होगी, क्योंकि वह तेरे पाक लोगों के नज़दीक़ ख़ूब है।

Chapter 53

¹बेवकूफ ने अपने दिल में कहा है, कि कोई खुदा नहीं। वह बिगड़ गये उन्होंने नफरत अंगेज़ बदी की है। कोई नेकोकार नहीं।²खुदा ने आसमान पर से बनी आदम पर निगाह की ताकि देखे कि कोई दानिशमंद, कोई खुदा का तालिब है या नहीं।³~वह सब के सब फिर गए हैं, वह एक साथ नापाक हो गए; कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं।

⁴~क्या उन सब बदकिरदारों को कुछ 'इल्म नहीं, जो मेरे लोगों को ऐसे खाते हैं जैसे रोटी, और खुदा का नाम नहीं लेते?'⁵~वहाँ उन पर बड़ा खौफ़ छा गया जबकि खौफ़ की कोई बात न थी। क्योंकि खुदा ने उनकी हड्डियाँ जो तेरे खिलाफ़ खैमाज़न थे, बिखेर दीं। तूने उनको शर्मिन्दा कर दिया, इसलिए कि खुदा ने उनको रद्द कर ~दिया है।

⁶काश कि इस्राईल की नजात सिय्यून में से होती! जब खुदा अपने लोगों को गुलामी से लौटा जाएगा; तो या'कूब खुश और इस्राईल शादमान होगा।

Chapter 54

¹~ऐ खुदा! अपने नाम के वसीले से मुझे बचा, और अपनी कुदरत से मेरा इंसान कर।²~ऐ खुदा मेरी दु'आ सुन ले; मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।³~क्योंकि बेगाने मेरे खिलाफ़ उठे हैं, और टेढ़े लोग मेरी जान के तलबगार हुए हैं; उन्होंने खुदा को अपने सामने नहीं रखखा।

⁴~देखो, खुदा मेरा मददगार है! खुदावन्द मेरी जान को संभालने वालों में है।⁵वह बुराई को मेरे दुश्मनों ही पर लौटा देगा; तू अपनी सच्चाई की रूह से उनको फ़ना कर!

⁶~मैं तेरे सामने रज़ा की कुर्बानी चढ़ाऊँगा; ऐ खुदावन्द! मैं तेरे नाम की शुक्रगुजारी करूँगा क्योंकि वह खूब है।⁷~क्योंकि उसने मुझे सब मुसीबतों से छुड़ाया है, और मेरी आँख ने मेरे दुश्मनों को देख लिया है।

Chapter 55

¹ऐ खुदा! मेरी दु'आ पर कान लगा; और मेरी मिन्नत से मुँह न फेर।²मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो और मुझे जवाब दे; मैं ग़म से बेकरार होकर कराहता हूँ।³~दुश्मन की आवाज़ से, और शरीर के जुल्म की वजह; क्योंकि वह मुझ पर बदी लादते, और क्रहर में मुझे सताते हैं।

⁴~मेरा दिल मुझ में बेताब है; और मौत का हौल मुझ पर छा गया है।⁵~ख़ौफ़ और कपकपी मुझ पर तारी है, डर ने मुझे दबा लिया है;

⁶~और मैंने कहा, "काश कि कबूतर की तरह मेरे पर होते तो मैं उड़ जाता और आराम पाता!"⁷~फिर तो मैं दूर निकल जाता, और वीरान में बसेरा करता।

(सिलाह)

⁸~मैं आँधी के झोंके और तूफ़ान से, किसी पनाह की जगह में भाग जाता।⁹~ऐ खुदावन्द! उनको हलाक कर, और उनकी ज़बान में तफ़रिक्का डाल; क्योंकि मैंने शहर में जुल्म और झगड़ा देखा है।

¹⁰~दिन रात वह उसकी फ़सील पर ग़शत लगाते हैं; बदी और फ़साद उसके अंदर हैं।¹¹~शरारत उसके बीच में बसी हुई है; सितम और फ़रेब उसके कूचों से दूर नहीं होते।

¹²~जिसने मुझे मलामत की वह दुश्मन न था, वरना मैं उसको बर्दाश्त कर लेता; और जिसने मेरे खिलाफ़ तकब्बुर किया वह मुझ से 'अदावत रखने वाला न था, नहीं तो मैं उससे छिप जाता।¹³~बल्कि वह तो तू ही था जो मेरा हमसर, मेरा रफ़ीक और दिली दोस्त था।¹⁴~हमारी आपसी गुफ़्तगू शीरीन थी; और हुजूम के साथ खुदा के घर में फिरते थे।

¹⁵~उनकी मौत अचानक आ दबाए; वह जीते जी पाताल में उतर जाएँ: क्योंकि शरारत उनके घरों में और उनके अन्दर है।

¹⁶~लेकिन मैं तो खुदा को पुकारूँगा; और खुदावन्द मुझे बचा लेगा।¹⁷सुबह -ओ-शाम और दोपहर को मैं फ़रियाद करूँगा और कराहता रहूँगा, और वह मेरी आवाज़ सुन लेगा।¹⁸उसने उस लड़ाई से जो मेरे खिलाफ़ थी, मेरी जान को सलामत छुड़ा लिया।क्योंकि मुझसे झगड़ा करने वाले बहुत थे |

¹⁹~खुदा जो क्रदीम से है, सुन लेगा और उनको जवाब देगा। यह वह हैं जिनके लिए इन्क़लाब नहीं, और जो खुदा से नहीं डरते।

²⁰~उस शख्स ने ऐसों पर हाथ बढ़ाया है, जो उससे सुल्ह रखते थे।उसने अपने 'अहद को तोड़ दिया है।²¹~उसका मुँह मख्खन की तरह चिकना था, लेकिन उसके दिल में जंग थी।उसकी बातें तेल से ज़्यादा मुलायम, लेकिन गंगी तलवारें थीं।

²²~अपना बोझ खुदावन्द पर डाल दे, वह तुझे संभालेगा। वह सादिक को कभी जुम्बिश न खाने देगा।²³~लेकिन ऐ खुदा! तू उनको हलाकत के गढ़े में उतारेगा। खूनी और दगाबाज़ अपनी आधी 'उम्र तक भी ज़िन्दा न रहेंगे।लेकिन मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।

Chapter 56

¹~ऐ खुदा! मुझ पर रहम फ़रमा, क्योंकि इंसान मुझे निगलना चाहता है; वह दिन भर लड़कर मुझे सताता है।²मेरे दुश्मन दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं, क्योंकि जो गुरूर करके मुझ से लड़ते हैं, वह बहुत हैं।

³~जिस वक़्त मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।⁴~मेरा फ़ख़र खुदा पर और उसके कलाम पर है। मेरा भरोसा खुदा पर है, मैं डरने का नहीं: बशर मेरा क्या कर सकता है?

⁵वह दिन भर मेरी बातों को मरोड़ते रहते हैं; उनके खयाल सरासर यही हैं, कि मुझ से बदी करें।⁶~वह इकट्ठे होकर छिप जाते हैं; वह मेरे नक्श-ए-क़दम को देखते भालते हैं, क्योंकि वह मेरी जान की घात में हैं।

⁷~क्या वह बदकारी करके बच जाएँगे? ऐ खुदा, क़हर में उम्मतों को गिरा दे!⁸तू मेरी आवाज़ का हिसाब रखता है; मेरे आँसुओं को अपने मश्कीज़े में रख ले। क्या वह तेरी किताब में लिखे नहीं हैं?

⁹तब तो जिस दिन मैं फ़रियाद करूँगा, मेरे दुश्मन पस्पा होंगे। मुझे यह मा'लूम है कि खुदा मेरी तरफ़ है।¹⁰मेरा फ़ख़र खुदा पर और उसके कलाम पर है; मेरा-फ़ख़र-खुदावन्द पर और उसके कलाम पर है।¹¹~मेरा भरोसा खुदा पर है, मैं डरने का नहीं। इंसान मेरा क्या कर सकता है?

¹²~ऐ खुदा! तेरी मन्नतें मुझ पर हैं; मैं तेरे हुज़ूर शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ पेश करूँगा।¹³~क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से छुड़ाया; क्या तूने मेरे पाँव को फिसलने से नहीं बचाया, ताकि मैं खुदा के सामने ज़िन्दों के नूर में चलूँ ?

Chapter 57

¹~मुझ पर रहम कर, ऐ खुदा! मुझ पर रहम कर, क्योंकि मेरी जान तेरी पनाह लेती है। मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा, जब तक यह आफ़तें गुज़र न जाएँ।

²~मैं खुदा ता'ला से फ़रियाद करूँगा; खुदा से, जो मेरे लिए सब कुछ करता है।³~वह मेरी नजात के लिए आसमान से भेजेगा; जब वह जो मुझे निगलना चाहता है, मलामत करता हो। (सिलाह) खुदा अपनी शफ़क़त और सच्चाई को भेजेगा।

⁴मेरी जान बबरों के बीच है, मैं आतिश मिज़ाज लोगों में पड़ा हूँ या 'नी ऐसे लोगों में जिनके दाँत बर्छियाँ और तीर हैं, जिनकी ज़बान तेज़ तलवार है।⁵~ऐ खुदा! तू आसमान पर सरफ़राज़ हो, तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो!

⁶उन्होंने मेरे पाँव के लिए जाल लगाया है; मेरी जान 'आजिज़ आ गई। उन्होंने मेरे आगे गढ़ा खोदा, वह खुद उसमें गिर पड़े। (सिलाह)

⁷~मेरा दिल क़ायम है, ऐ खुदा! मेरा दिल क़ायम है; मैं गाऊँगा बल्कि मैं मदह सराई करूँगा।⁸~ऐ मेरी शौकत, बेदार हो! ऐ बर्बत और सितार जागो! मैं खुद सुबह सवेरे जाग उठूँगा।

⁹~ऐ खुदावन्द! मैं लोगों में तेरा शुक्र करूँगा। मैं उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा।¹⁰~क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान के, और तेरी सच्चाई अफ़लाक के बराबर बुलन्द है।¹¹~ऐ खुदा! तू आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो!

Chapter 58

¹~ऐ बुजुर्गों! क्या तुम दर हकीकत रास्तगोई करते हो? ऐ बनी आदम! क्या तुम ठीक 'अदालत करते हो?'²~बल्कि तुम तो दिल ही दिल में शरारत करते हो; और ज़मीन पर अपने हाथों से जुल्म पैमाई करते हैं।

³~शरीर पैदाइश ही से कजरवी इख्तियार करते हैं; वह पैदा होते ही झूट बोलकर गुमराह हो जाते हैं।⁴~उनका ज़हर साँप का सा ज़हर है; वह बहरे अज़दहे की तरह हैं जो कान बंद कर लेता है;⁵जो मन्तर पढ़ने वालों की आवाज़ ही नहीं सुनता, जो चाहे वह कितनी ही होशियारी से मन्तर पढ़ें।

⁶~ऐ खुदा! तू उनके दाँत उनके मुँह में तोड़ दे, ऐ खुदावन्द! बबर के बच्चों की दाढ़ें तोड़ डाल।⁷~वह घुलकर बहते पानी की तरह हो जाएँ जब वह अपने तीर चलाए, तो वह जैसे कुन्द पैकान हों।⁸~वह ऐसे हो जाएँ जैसे घोंघा, जो गल कर फ़ना हो जाता है; और जैसे 'औरत का इस्कात जिसने सूरज को देखा ही नहीं।

⁹~इससे पहले कि तुम्हारी हड्डियों को काँटों की आंच लगे ~वह हरे और जलते दोनों को एकसाँ बगोले से उड़ा ले जाएगा।¹⁰~सादिक़ इन्तक़ाम को देखकर खुश होगा; वह शरीर के खून से अपने पाँव तर करेगा।¹¹~तब लोग कहेंगे, यक़ीनन सादिक़ के लिए अज़्र है; बेशक़ खुदा है, जो ज़मीन पर 'अदालत करता है।

Chapter 59

¹~ऐ मेरे खुदा मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा मेरे खिलाफ़ उठने वालों पर सरफ़राज़ कर ~ ।²मुझे बदकिरदारों से छुड़ा, और खूंखार आदमियों से मुझे बचा।

³~क्योंकि देख, वह मेरी जान की घात में हैं। ऐ खुदावन्द! मेरी खता या मेरे गुनाह के बग़ैर ज़बरदस्त लोग मेरे खिलाफ़ इकठ्ठे होते हैं।⁴वह मुझ बेक्रसूर पर दौड़ दौड़कर तैयार होते हैं; मेरी मदद के लिए जाग और देख!

⁵~ऐ खुदावन्द, लश्करों के खुदा! इस्राईल के खुदा! सब कौमों के मुहासिबे के लिए उठ; किसी दगाबाज़ खताकार पर रहम न कर। (सिलाह)

⁶वह शाम को लौटते और कुत्ते की तरह भौंकते हैं और शहर के गिर्द फिरते हैं।⁷~देख! वह अपने मुँह से डकारते हैं, उनके लबों के अन्दर तलवारें हैं; क्योंकि वह कहते हैं, "कौन सुनता है?"

⁸~लेकिन ऐ खुदावन्द! तू उन पर हँसेगा; तू तमाम क़ौमों को ठट्ठों में उड़ाएगा।⁹~ऐ मेरी कुव्वत, मुझे तेरी ही आस होगी, क्योंकि खुदा मेरा ऊँचा बुर्ज है।

¹⁰~मेरा खुदा अपनी शफ़क़त से मेरा अगुवा होगा, खुदा मुझे मेरे दुश्मनों की पस्ती दिखाएगा।¹¹उनको क़त्ल न कर, ऐसा न हो मेरे लोग भूल जाएँ ऐ खुदावन्द, ऐ हमारी ढाल! , अपनी कुदरत से उनको तितर बितर करके पस्त कर दे।

¹²वह अपने मुँह के गुनाह, और अपने होंठों की बातों और अपनी लान तान और ~झूट बोलने के वजह से, अपने गुरूर में पकड़े जाएँ।¹³~क्रहर में उनको फ़ना कर दे, फ़ना कर दे ताकि वह बर्बाद हो जाएँ, और वह ज़मीन की इन्तिहा तक जान लें, कि खुदा या'क़ूब पर हुक्मरान है।

¹⁴फिर शाम को वह लौटें और कुत्ते की तरह भौंकें और शहर के गिर्द फिरें।¹⁵~वह खाने की तलाश में मारे मारे फिरें, और अगर आसूदा न हों तो सारी रात ठहरे रहे।

¹⁶लेकिन मैं तेरी कुदरत का हम्द गाऊँगा, बल्कि सुबह को बुलन्द आवाज़ से तेरी शफ़क़त का हम्द गाऊँगा। क्योंकि तू मेरा ऊँचा बुर्ज है, और मेरी मुसीबत के दिन मेरी पनाहगाह।¹⁷ऐ मेरी ताक़त, मैं तेरी मददसराई करूँगा ; क्योंकि खुदा मेरा शफ़ीक़ खुदा मेरा ऊँचाबुर्ज है।

Chapter 60

¹ऐ खुदा, तूने हमें रद्द किया; तूने हमें शिकस्ता हाल कर दिया। तू नाराज़ रहा है। हमें फिर बहाल कर।

²~तूने ज़मीन को लरज़ा दिया; तूने उसे फाड़ डाला है। उसके रखने बन्द कर दे क्योंकि वह लरज़ा है।³तूने अपने लोगों को सख्तियाँ दिखाई, तूने हमको लड़खड़ा देने वाली मय पिलाई।

⁴जो तुझ से डरते हैं, तूने उनको एक झंडा दिया है; ताकि वह हक़ की खातिर बुलन्द किया जाएं। (सिलाह)⁵~अपने दहने हाथ से बचा और हमें जवाब दे, ताकि तेरे महबूब बचाए जाएँ।

⁶खुदा ने अपनी पाकीज़गी में फ़रमाया है, "मैं खुशी करूँगा ; मैं सिक्म को तक्रसीम करूँगा, और सुकात की वादी को बाटूँगा।"⁷~जिल'आद मेरा है, मनस्सी भी मेरा है; इफ़्राईम मेरे सिर का खूद है, यहूदाह मेरा 'असा है।

⁸~मोआब मेरी चिलमची है, अदोम पर मैं जूता फेफूँगा; ऐ फ़िलिस्तीन, मेरी वजह से ललकार।"⁹मुझे उस मुहकम शहर में कौन पहुँचाएगा? कौन मुझे अदोम तक ले गया है?

¹⁰~ऐ खुदा, क्या तूने हमें रद्द नहीं कर दिया? ऐ खुदा, तू हमारे लश्करी के साथ नहीं जाता।¹¹~मुखालिफ़ के मुकाबले में हमारी मदद कर, क्योंकि इंसानी मदद बेकार है।¹²~खुदा की मदद से हम बहादुरी करेंगे, क्योंकि वही हमारे मुखालिफ़ों को पस्त करेगा।

Chapter 61

¹~ऐ खुदा, मेरी फ़रियाद सुन! मेरी दु'आ पर तवज्जुह कर।²~मैं अपनी अफ़सुर्दा दिली में ज़मीन की इन्तिहा से तुझे पुकारूँगा; तू मुझे उस चट्टान पर ले चल जो मुझसे ऊँची है;³~क्योंकि तू मेरी पनाह रहा है, और दुश्मन से बचने के लिए ऊँचा बुर्ज।

⁴मैं हमेशा तेरे खेमे में रहूँगा। मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा।⁵क्योंकि ऐ खुदा तूने मेरी मिन्नतें कुबूल की हैं तूने मुझे उन लोगों की सी मीरास बख़शी है जो तेरे नाम से डरते हैं।

⁶~तू बादशाह की 'उम्र दराज़ करेगा; उसकी 'उम्र बहुत सी नसलों के बराबर होगी।⁷~वह खुदा के सामने हमेशा क़ायम रहेगा; तू शफ़क़त और सच्चाई को उसकी हिफ़ाज़त के लिए मुहय्या कर।

⁸~यूँ मैं हमेशा तेरी मदहसराई करूँगा, ताकि रोज़ाना अपनी मिन्नतें पूरी करूँ ।

Chapter 62

¹मेरी जान को खुदा ही की उम्मीद है, मेरी नजात उसी से है। ²वही अकेला मेरी चट्टान और मेरी नजात है, वही मेरा ऊँचा बुर्ज है, मुझे ज़्यादा जुम्बिश न होगी।

³~तुम कब तक ऐसे शख्स पर हमला करते रहोगे, जो झुकी हुई दीवार और हिलती बाड़ की तरह है; ताकि सब मिलकर उसे क्रल्ल करो? ⁴~वह उसको उसके मर्तबे से गिरा देने ही का मश्वरा करते रहते हैं; वह झूट से खुश होते हैं। वह अपने मुँह से तो बरकत देते हैं लेकिन दिल में ला'नत करते हैं।

⁵~ऐ मेरी जान, खुदा ही की आस रख, क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद है। ⁶~वही अकेला मेरी चट्टान और मेरी नजात है; वही मेरा ऊँचा बुर्ज है, मुझे जुम्बिश न होगी।

⁷~मेरी नजात और मेरी शौकत खुदा की तरफ़ से है; खुदा ही मेरी ताक़त की चट्टान और मेरी पनाह है। ⁸~ऐ लोगो। हर वक़्त उस पर भरोसा करो; अपने दिल का हाल उसके सामने खोल दो। खुदा हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)

⁹~यक़ीनन अदना लोग बेसबात हैं और आला आदमी झूटे; वह तराजू में हल्के निकलेंगे; वह सब के सब बेसबाती से भी कमज़ोर हैं। ¹⁰~जुल्म पर तकिया न करो, लूटमार करने पर न फूलो; ~अगर माल बढ़ जाए तो उस पर दिल न लगाओ।

¹¹~खुदा ने एक बार फ़रमाया; मैंने यह दो बार सुना, कि कुदरत खुदा ही की है। ¹²~शफ़क़त भी ऐ खुदावन्द तेरी ही है; क्योंकि तू हर शख्स को उसके 'अमल के मुताबिक़ बदला देता है।

Chapter 63

¹ऐ खुदा, तू मेरा खुदा है, मैं दिल से तेरा तालिब हूँगा; ~खुशक और प्यासी ज़मीन में जहाँ पानी नहीं, मेरी जान तेरी प्यासी और मेरा जिस्म तेरा मुशताक है²~इस तरह मैंने मक़दिस में तुझ पर निगाह की ताकि तेरी कुदरत और हश्मत को देखूँ।

³~क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िन्दगी से बेहतर है मेरे होंट तेरी ता'रीफ़ करेंगे।⁴~इसी तरह मैं 'उम्र भर तुझे मुबारक कहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाया करूँगा;

⁵~मेरी जान जैसे गूदे और चर्बी से सेर होगी, और मेरा मुँह मसरूर लबों से तेरी ता'रीफ़ करेगा |⁶जब मैं बिस्तर पर तुझे याद करूँगा, और रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा ;

⁷~इसलिए कि तू मेरा मददगार रहा है, ~और मैं तेरे परो के साये में खुशी ~मनाऊँगा।⁸~मेरी जान को तेरी ही धुन है; तेरा दहना हाथ मुझे संभालता है।

⁹लेकिन जो मेरी जान की हलाकत के दर पै हैं, वह ज़मीन के तह में चले जाएँगे।¹⁰वह तलवार के हवाले होंगे, वह गीदड़ों का लुकमा बनेंगे।

¹¹लेकिन बादशाह खुदा में खुश होगा; जो उसकी क़सम खाता है वह फ़ख़्र करेगा; क्योंकि झूट बोलने वालों का मुँह बन्द कर दिया जाएगा

Chapter 64

¹~ऐ खुदा मेरी फ़रियाद की आवाज़ सुन ले मेरी जान को दुश्मन के खौफ़ से बचाए रख | ²~शरीरों के खुफ़िया मश्वरे से, और बदकिरदारों के हँगामे से मुझे~छिपा ले

³जिन्होंने अपनी ज़बान तलवार की~तरह तेज़ की, और तल्ख़ बातों के तीरों का निशाना~लिया है; ⁴ताकि उनको खुफ़िया मक़ामों में कामिल आदमी पर चलाएँ; वह उनको अचानक उस पर चलाते हैं और डरते नहीं।

⁵~वह बुरे काम का मज़बूत इरादा करते हैं; वह फंदे लगाने की सलाह करते हैं, वह कहते हैं, "हम को कौन देखेगा?" ⁶~वह शरारतों को खोज खोज कर निकालते हैं; वह कहते हैं, "हमने खूब खोज लगाया।" उनमें से हर एक का बातिल और दिल 'अमीक है।

⁷लेकिन खुदा उन पर तीर चलाएगा; वह अचानक तीर से ज़ख्मी हो जाएँगे। ⁸~और उन ही की ज़बान उनको तबाह करेगी; जितने उनको देखेंगे सब सिर हिलाएँगे। ⁹और सब लोग डर जाएँगे, और खुदा के काम का बयान करेंगे; और उसके तरीक़-ए-'अमल को बखूबी समझ लेंगे।

¹⁰~सादिक़ खुदावन्द में खुश होगा, और उस पर भरोसा करेगा, और जितने रास्तदिल हैं सब फ़ख़्र करेंगे।

Chapter 65

¹ऐ खुदा, सिय्यून में ता'रीफ तेरी मुन्तज़िर है; और तेरे लिए मिन्नत पूरी की जाएगी।²~ऐ दु'आ के सुनने वाले! सब बशर तेरे पास आएँगे।³~बद आ'माल मुझ पर ग़ालिब आ जाते हैं; लेकिन हमारी ख़ताओं का कफ़ारा तू ही देगा।

⁴मुबारक है वह आदमी जिसे तू बरगुज़ीदा करता और अपने पास आने देता है, ताकि वह तेरी बारगाहों में रहे। हम तेरे घर की खूबी से, या'नी तेरी पाक हैकल से आसूदा होंगे।

⁵~ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा! तू जो ज़मीन के सब किनारों का और समन्दर पर दूर दूर रहने वालों का तकिया है; ख़ौफ़नाक बातों के ज़रिए' से तू हमें सदाक़त से जवाब देगा।

⁶~तू कुदरत से कमरबस्ता होकर, अपनी ताक़त से पहाड़ों को मज़बूती बख़्शता है।⁷~तू समन्दर के और उसकी मौजों के शोर को, और उम्मतों के हँगामे को ख़त्म कर देता है।

⁸~ज़मीन की इन्तिहा के रहने वाले, तेरे मु'अजिज़ों से डरते हैं; तू मतला'-ए-सुबह को और शाम को खुशी बख़्शता है।⁹~तू ज़मीन पर तवज्जुह करके उसे सेराब करता है, तू उसे खूब मालामाल कर देता है; खुदा का दरिया पानी से भरा है; जब तू ज़मीन को यूँ तैयार कर लेता है तो उनके लिए अनाज मुहय्या करता है।

¹⁰उसकी रेघारियों को खूब सेराब उसकी मेण्डों को बिठा देता उसे बारिश से नर्म करता है, उसकी पैदावार में बरकत देता¹¹तू साल को अपने लुत्फ़ का ताज पहनाता है; और तेरी राहों से रौग़न टपकता है।¹²वह बियाबान की चरागाहों पर टपकता है, और पहाड़ियाँ खुशी से कमरबस्ता हैं।

¹³चरागाहों में झुंड के झुंड फैले हुए हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं, वह खुशी के मारे ललकारती और गाती हैं।

Chapter 66

¹ऐ सारी ज़मीन खुदा के सामने खुशी का ना'रा मार | ²उसके नाम के जलाल का हम्द गाओ; सिताइश करते हुए उसकी तम्जीद करो।

³खुदा से कहो, "तेरे काम क्या ही बड़े हैं! तेरी बड़ी कुदरत के ज़रिए' तेरे दुश्मन आजिज़ी करेंगे।" ⁴सारी ज़मीन तुझे सिज्दा करेगी, और तेरे सामने गाएगी; वह तेरे नाम के हम्द गाएँगे।"

⁵आओ और खुदा के कामों को देखो; बनी आदम के साथ वह अपने सुलूक में बड़ा है। ⁶उसने समन्दर को खुशक ज़मीन बना दिया: वह दरिया में से पैदल गुज़र गए। वहाँ हम ने उसमें खुशी मनाई। ⁷वह अपनी कुदरत से हमेशा तक सल्तनत करेगा, उसकी आँखें क्रौमों को देखती रहती हैं। सरकश लोग तकब्बुर न करें।

⁸ऐ लोगो, हमारे खुदा को मुबारक कहो, और उसकी तारीफ़ में आवाज़ बुलंद करो। ~ ⁹वही हमारी जान को ज़िन्दा रखता है; और हमारे पाँव को फिसलने नहीं देता

¹⁰क्योंकि ऐ खुदा, तूने हमें आजमा लिया है; तूने हमें ऐसा ताया जैसे चाँदी ताई जाती है। ¹¹तूने हमें जाल में फँसाया, और हमारी कमर पर भारी बोझ रखवा। ¹²तूने सवारों को हमारे सिरों पर से गुज़ारा हम आग में से और पानी में से होकर गुज़रे; लेकिन तू हम को अफ़रात की जगह में निकाल लाया।

¹³मैं सोख्तनी कुर्बानियाँ लेकर तेरे घर में दाखिल हूँगा; और अपनी मिन्नतें तेरे सामने अदा करूँगा | ¹⁴जो मुसीबत के वक़्त मेरे लबों से निकलीं, और मैंने अपने मुँह से मारें | ¹⁵मैं मोटे मोटे जानवरों की सोख्तनी कुर्बानियाँ मेंढों की खुशबू के साथ अदा करूँगा। मैं बैल और बकरे पेश करूँगा |

¹⁶ऐ खुदा से डरने वालो, सब आओ, सुनो; और मैं बताऊँगा कि उसने मेरी जान के लिए क्या क्या किया है। ¹⁷मैंने अपने मुँह से उसको पुकारा, उसकी तम्जीद मेरी ज़बान से हुई। ¹⁸अगर मैं बदी को अपने दिल में रखता, तो खुदावन्द मेरी न सुनता।

¹⁹लेकिन खुदा ने यक़ीनन सुन लिया है; उसने मेरी दु'आ की आवाज़ पर कान लगाया है। ²⁰खुदा मुबारक हो, जिसने न तो मेरी दु'आ को रद्द किया, ~और न अपनी शफ़क़त को मुझ से बाज़ रखवा~!

Chapter 67

¹खुदा हम पर रहम करे और हम को बरकत बरख्शे; और अपने चेहरे को हम पर जलवागर फ़रमाए, (सिलाह)²ताकि तेरी राह ज़मीन पर ज़ाहिर हो जाए, और तेरी नजात सब क़ौमों पर।

³ऐ खुदा! लोग तेरी ता'रीफ़ करें; सब लोग तेरी ता'रीफ़ करें | ⁴उम्मेते खुश हों और खुशी से ललकारें, क्योंकि तू रास्ती से लोगों की 'अदालत करेगा, और ज़मीन की उम्मतों पर हुक्मत करेगा (सिलाह)

⁵ऐ खुदा! लोग तेरी ता'रीफ़ करें; सब लोग तेरी ता'रीफ़ करें | ⁶ज़मीन ने अपनी पैदावार दे दी, खुदा या'नी हमारा खुदा हम को बरकत देगा |

⁷~खुदा हम को बरकत देगा; और ज़मीन की इन्तिहा तक सब लोग उसका डर मानेंगे |

Chapter 68

¹खुदा उठे, उसके दुश्मन तितर बितर हों, उससे 'अदावत ~रखने वाले उसके सामने से भाग जाएँ।²जैसे धुवाँ उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे; जैसे मोम आग के सामने पिघला जाता, वैसे ही शरीर खुदा के सामने फ़ना हो जाएँ।³लेकिन सादिक़ खुशी मनाएँ, वह खुदा के सामने खुश हों, ~बल्कि वह खुशी से फूलने न समाएँ।

⁴खुदा के लिए गाओ, उसके नाम की मदहसराई करो; सहरा के सवार के लिए शाहराह तैयार करो; उसका नाम याह है, ~और तुम उसके सामने खुश हो।⁵खुदा अपने मुक़द्दस मकान में, यतीमों का बाप और बेवाओं का दादरस है।⁶खुदा तन्हा को ख़ान्दान बख़्शता है; वह कैदियों को आज़ाद करके इक़बालमंद करता है; लेकिन सरकश खुश्क ज़मीन में रहते हैं।

⁷ऐ खुदा, जब तू अपने लोगों के आगे-आगे चला, जब तू वीरान में से गुज़रा, (सिलाह)⁸तो ज़मीन काँप उठी; खुदा के सामने आसमान गिर पड़े, ~बल्कि पाक पहाड़ भी खुदा के सामने, इस्राईल के खुदा के सामने काँप उठा।

⁹ऐ खुदा, तूने ख़ूब मेंह बरसाया: तूने अपनी खुश्क मीरास को ताज़गी बख़्शी।¹⁰तेरे लोग उसमें बसने लगे; ऐ खुदा, तूने अपने फ़ैज़ से ग़रीबों के लिए उसे तैयार किया।

¹¹खुदावन्द हुक्म देता है; खुशख़बरी देने वालियाँ फ़ौज की ~फ़ौज हैं।¹²लश्करों के बादशाह भागते हैं, वह भाग जाते हैं; ~और~'औरत घर में बैठी बैठी लूट का माल बाँटती है।¹³जब तुम भेड़ सालों में पड़े रहते हो, तो उस कबूतर की तरह होगे जिसके बाजू जैसे चाँदी से, और पर ख़ालिस सोने से मंढ़े हुए हों।

¹⁴जब क़ादिर-ए-मुतलक ने बादशाहों को उसमें परागंदा किया, तो ऐसा हाल हो गया, जैसे सलमोन पर बर्फ़ पड़ रही थी।¹⁵बसन का पहाड़ खुदा का पहाड़ है; बसन का पहाड़ ऊँचा पहाड़ है।¹⁶ऐ ऊँचे पहाड़ो, तुम उस पहाड़ को क्यूँ ताकते हो, जिसे खुदा ने अपनी सुकूनत के लिए पसन्द किया है, बल्कि खुदावन्द उसमें हमेशा तक रहेगा?

¹⁷~खुदा के रथ बीस हज़ार, बल्कि हज़ारहा हज़ार हैं; ~खुदावन्द जैसा पाक पहाड़ में वैसा ही उनके बीच हैकल में है।¹⁸तूने~'आलम-ए-बाला को सु'ऊद फ़रमाया, तू कैदियों को साथ ले गया; तुझे लोगों से बल्कि सरकशों से भी हदिए मिले, ~ताकि खुदावन्द खुदा उनके साथ रहे।

¹⁹खुदावन्द मुबारक हो, जो हर रोज़ हमारा बोझ उठाता है; ~वही हमारा नजात देने वाला खुदा है।²⁰खुदा हमारे लिए छुड़ाने वाला खुदा है और मौत से बचने की राहें भी खुदावन्द खुदा की हैं।²¹~लेकिन खुदावन्द अपने दुश्मनों के सिर को, और लगातार गुनाह करने वाले की बालदार खोपड़ी को चीर डालेगा।

²²खुदावन्द ने फ़रमाया, "मैं उनको बसन से निकाल लाऊँगा; ~मैं उनको समन्दर की तह से निकाल लाऊँगा |²³ताकि तू अपना पाँव ख़ून से तर करे, और तेरे दुश्मन तेरे कुत्तों के मुँह का निवाला बनें।"

²⁴ऐ खुदा! लोगों ने तेरी आमद देखी, मक़दिस में मेरे खुदा, ~मेरे बादशाह की 'आमद²⁵~गाने वाले आगे आगे और बजाने वाले पीछे पीछे चले, दफ़्र बजाने वाली जवान लड़कियाँ बीच में।

²⁶तुम जो इस्राईल के चश्मे से हो, खुदावन्द को मुबारक कहो, ~हाँ, मजमे'~में खुदा को मुबारक कहो।²⁷वहाँ छोटा बिनयमीन उनका हाकिम है, यहूदाह के उमरा और उनके मुशीर, ज़बूलून के उमरा और नफ़्ताली के उमरा हैं।

²⁸तेरे खुदा ने तेरी पायदारी का हुक्म दिया है, ऐ खुदा, जो कुछ तूने हमारे लिए किया है, उसे पायदारी बख़्श।²⁹तेरी हैकल की वजह से जो यरूशलीम में है, बादशाह तेरे पास हदिये लाएँगे।

³⁰तू नैसतान के जंगली जानवरों को धमका दे, सांडों के ग़ोल को, और क़ौमों के बछड़ों को। जो चाँदी के सिक्कों को पामाल करते हैं:~उसने जंगजू क़ौमों को परागंदा कर दिया है।³¹उमरा मिस्र से आएँगे; कूश खुदा की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाने में जल्दी करेगा।

³²ऐ ज़मीन की ममलुकतो, खुदा के लिए गाओ; खुदावन्द की मदहसराई करो।³³(सिलाह)~उसी की जो क़दीम आसमान नहीं बल्कि आसमानों पर सवार है; देखो वह अपनी आवाज़ बुलंद करता है, उसकी आवाज़ में कुदरत है।

³⁴खुदा ही की ताज़ीम करो, उसकी हश्मत इस्राईल में है, ~और उसकी कुदरत आसमानों पर।³⁵ऐ खुदा, तू अपने मक़दिसों में मुहीब है, इस्राईल का खुदा ही अपने लोगों को ज़ोर और तवानाई बख़्शता है। खुदा मुबारक हो।

Chapter 69

¹ऐ खुदा मुझ को बचा ले, क्योंकि पानी मेरी जान तक आ पहुँचा है। ²मैं गहरी दलदल में धंसा जाता हूँ, जहाँ खड़ा नहीं रहा जाता; ~मैं गहरे पानी में आ पड़ा हूँ, जहाँ सैलाब मेरे सिर पर से गुज़रता है।

³मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया, मेरा गला सूख गया; मेरी आँखें अपने खुदा के इन्तिज़ार में पथरा गई। ⁴मुझ से बे वजह~'अदावत रखने वाले, मेरे सिर के बालों से ज़्यादा हैं; मेरी हलाकत के चाहने वाले और नाहक दुश्मन ज़बरदस्त हैं, तब जो मैंने छीना नहीं मुझे देना पड़ा।

⁵ऐ खुदा, तू मेरी हिमाक़त से वाकिफ़ है, और मेरे गुनाह तुझ से पोशीदा नहीं हैं। ⁶ऐ खुदावन्द, लश्क़रों के खुदा, तेरी उम्मीद रखने वाले मेरी वजह से शर्मिन्दा न हों, ऐ इस्राईल के खुदा, तेरे तालिब मेरी वजह से रुस्वा न हों।

⁷क्योंकि तेरे नाम की खातिर मैंने मलामत उठाई है, शर्मिन्दगी मेरे मुँह पर छा गई है। ⁸मैं अपने भाइयों के नज़दीक बेगाना बना हूँ, और अपनी माँ के फ़रज़न्दों के नज़दीक अजनबी। ⁹क्योंकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई, और तुझ को मलामत करने वालों की मलामतें मुझ पर आ पड़ी हैं।

¹⁰मेरे रोज़ा रखने से मेरी जान ने ज़ारी की, और यह भी मेरी मलामत का ज़रिए' हुआ। ¹¹जब मैं ने टाट ओढ़ा, तो उनके लिए ज़र्ब-उल-मसल ठहरा। ¹²फाटक पर बैठने वालों में मेरा ही ज़िक्र रहता है, और मैं नशे बाज़ों का हम्द हूँ।

¹³लेकिन ऐ खुदावन्द, तेरी खुशनूदी के वक़्त मेरी दु'आ तुझ ही से है; ऐ खुदा, अपनी शफ़क़त की फ़िरावानी से, अपनी नजात की सच्चाई में जवाब दे। ¹⁴मुझे दलदल में से निकाल ले और धसने न दे: ~मुझ से~'अदावत रखने वालों, और गहरे पानी से मुझे बचा ले। ¹⁵मैं सैलाब में डूब न जाऊँ, और गहराव मुझे निगल न जाए, ~और पाताल मुझ पर अपना मुँह बन्द न कर ले

¹⁶ऐ खुदावन्द, मुझे जवाब दे, क्योंकि मेरी शफ़क़त ख़ूब है अपनी रहमतों की कसरत के मुताबिक़ मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो। ¹⁷अपने बन्दे से रूपोशी न कर; क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ, ~जल्द मुझे जवाब दे।

¹⁸मेरी जान के पास आकर उसे छुड़ा ले मेरे दुश्मनों के सामने मेरा फ़िदिया दे। ¹⁹तू मेरी मलामत और शर्मिन्दगी और रुस्वाई से वाकिफ़ है; ~मेरे दुश्मन सब के सब तेरे सामने हैं।

²⁰मलामत ने मेरा दिल तोड़ दिया, मैं बहुत उदास हूँ और मैं इसी इन्तिज़ार में रहा कि कोई तरस खाए लेकिन कोई न था; ~और तसल्ली देने वालों का मुन्तज़िर रहा लेकिन कोई न मिला। ²¹~उन्होंने मुझे खाने को इन्द्रायन भी दिया, और मेरी प्यास बुझाने को उन्होंने मुझे सिरका पिलाया।

²²उनका दस्तरख़वान उनके लिए फंदा हो जाए। और जब वह अमन से हों तो जाल बन जाए। ²³उनकी आँखें तारीक़ हो जाएँ, ताकि वह देख न सके, और उनकी कमरें हमेशा काँपती रहें।

²⁴अपना ग़ज़ब उन पर उड़ेल दे, और तेरा शदीद क्रहर उन पर आ पड़े। ²⁵उनका घर उजड़ जाए, उनके खेमों में कोई न बसे।

²⁶क्योंकि वह उसको जिसे तूने मारा है और जिनको तूने जख़मी किया है, उनके दुख का ज़िक्र करते हैं। ²⁷उनके गुनाह पर गुनाह बढ़ा; और वह तेरी सदाक़त में दाखिल न हों।

²⁸उनके नाम किताब-ए-हयात से मिटा और सादिकों के साथ मुन्दर्ज न हों। ²⁹लेकिन मैं तो ग़रीब और ग़मगीन हूँ। ऐ खुदा तेरी नजात मुझे सर बुलन्द करे।

³⁰मैं हम्द गाकर खुदा के नाम की ता'रीफ़ करूँगा, और शुक्रगुज़ारी के साथ उसकी तम्जीद करूँगा। ³¹यह खुदावन्द को बैल से ज़्यादा पसन्द होगा, बल्कि सींग और खुर वाले बछड़े से ज़्यादा।

³²हलीम इसे देख कर खुश हुए हैं; ऐ खुदा के तालिबो, ~तुम्हारे दिल ज़िन्दा रहें। ³³~क्योंकि खुदावन्द मोहताजों की सुनता है, और अपने क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

³⁴आसमान और ज़मीन उसकी ता'रीफ़ करें, और समन्दर और जो कुछ उनमें चलता फिरता है। ³⁵क्योंकि खुदा सिय्यून को बचाएगा, और यहूदाह के शहरों को बनाएगा; और वह वहाँ बसेंगे और उसके वारिस होंगे। ³⁶उसके बन्दों की नसल भी उसकी मालिक होगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखने वाले उसमें बसेंगे।

Chapter 70

¹ऐ खुदा! मुझे छुड़ाने के लिए, ऐ खुदावन्द, मेरी मदद के लिए कर जल्दी कर!²जो मेरी जान को हलाक करने के दर पै हैं, वह सब शर्मिन्दा और रुस्वा हों। जो मेरे नुक्रसान से खुश हैं, वह पस्पा और रुस्वा हों।³अहा! हा! हा! करने वाले अपनी रुस्वाई के वजह से पस्पा हों।

⁴तेरे सब तालिब तुझ में खुश-ओ-खुर्रम हों; तेरी नजात के 'आशिक हमेशा कहा करें, "खुदा की तम्जीद हो! "⁵लेकिन मैं गरीब और मोहताज हूँ; ऐ खुदा, मेरे पास जल्द आ! मेरा मददगार और छुड़ाने वाला तू ही है; ऐ खुदावन्द, देर न कर!

Chapter 71

¹ऐ खुदावन्द तू ही मेरी पनाह है; मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे!²अपनी सदाक़त में मुझे रिहाई दे और छुड़ा; मेरी तरफ़ कान लगा, और मुझे बचा ले।³तू मेरे लिए ठहरने की चट्टान हो, जहाँ मैं बराबर जा सकूँ; ~तूने मेरे बचाने का हुक्म दे दिया है, क्योंकि मेरी चट्टान और मेरा क़िला' तू ही है।

⁴ऐ मेरे खुदा, मुझे शरीर के हाथ से, नारास्त और बेदर्द आदमी के हाथ से छुड़ा।⁵क्योंकि ऐ खुदावन्द खुदा, तू ही मेरी उम्मीद है; लड़कपन से मेरा भरोसा तुझ ही पर है।

⁶तू पैदाइश ही से मुझे संभालता आया है तू मेरी माँ के बतन ही से मेरा शफ़ीक़ रहा है; इसलिए मैं हमेशा तेरी सिताइश करता रहूँगा।⁷मैं बहुतों के लिए हैरत की वजह हूँ। लेकिन तू मेरी मज़बूत पनाहगाह है।

⁸मेरा मुँह तेरी सिताइश से, और तेरी ता'ज़ीम से दिन भर पुर रहेगा।⁹~बुढ़ापे के वक़्त मुझे न छोड़; मेरी ज़ईफ़ी में मुझे छोड़ न दे।

¹⁰क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें करते हैं, और जो मेरी जान की घात में हैं वह आपस में मशवरा करते हैं,¹¹ और कहते हैं, कि खुदा ने उसे छोड़ दिया है; उसका पीछा करो और पकड़ लो, क्योंकि छुड़ाने वाला कोई नहीं।

¹²ऐ खुदा, मुझ से दूर न रह! ऐ मेरे खुदा, मेरी मदद के लिए जल्दी कर!¹³मेरी जान के मुखालिफ़ शर्मिन्दा और फ़ना हो जाएँ; मेरा नुक्सान चाहने वाले मलामत और रुस्वाई से मुलब्बस हो।

¹⁴लेकिन मैं हमेशा उम्मीद रखूँगा, और तेरी ता'रीफ़ और भी ज़्यादा किया करूँगा।¹⁵मेरा मुँह तेरी सदाक़त का, और तेरी नजात का बयान दिन भर करेगा; क्योंकि मुझे उनका शुमार मा'लूम नहीं।¹⁶मैं खुदावन्द खुदा की कुदरत के कामों का इज़हार करूँगा; मैं सिर्फ़ तेरी ही सदाक़त का ज़िक़्र करूँगा।

¹⁷ऐ खुदा, तू मुझे बचपन से सिखाता आया है, और मैं अब तक तेरे~'अजाइब का बयान करता रहा हूँ।¹⁸ऐ खुदा, जब मैं बुढ़ा और सिर सफ़ेद हो जाऊँ तो मुझे ~न छोड़ना; ~जब तक कि मैं तेरी कुदरत आइंदा नसल पर, ~और तेरा ज़ोर हर आने वाले पर ज़ाहिर न कर दूँ।

¹⁹ऐ खुदा, तेरी सदाक़त भी बहुत बलन्द है। ऐ खुदा, तेरी तरह ~कौन है जिसने बड़े बड़े काम किए हैं?²⁰तू जिसने हम को बहुत और सख़्त तकलीफ़ें दिखाई हैं फिर हम को ज़िन्दा करेगा; और ज़मीन की तह से हमें फिर ऊपर ले आएगा।

²¹तू मेरी~'अज़मत को बढ़ा, और फिर कर मुझे तसल्ली दे।²²ऐ मेरे खुदा, मैं बरबत पर तेरी, हाँ तेरी सच्चाई की हम्द करूँगा ; ऐ इस्राईल के पाक! मैं सितार के साथ तेरी मदहसराई करूँगा ।

²³~जब मैं तेरी मदहसराई करूँगा, तो मेरे होंट बहुत खुश होंगे; और मेरी जान भी जिसका तूने फ़िदिया दिया है।²⁴और मेरी ज़बान दिन भर तेरी सदाक़त का ज़िक़्र करेगी; ~क्योंकि मेरा नुक्सान चाहने वाले शर्मिन्दा और पशेमान हुए हैं।

Chapter 72

¹ऐ खुदा! बादशाह को अपने अहकाम और शहज़ादे को अपनी सदाक़त 'अता फ़रमा।²वह सदाक़त से तेरे लोगों की, और इन्साफ़ से तेरे ग़रीबों की 'अदालत करेगा।³इन लोगों के लिए पहाड़ों से सलामती के, और पहाड़ियों से सदाक़त के फल पैदा होंगे।

⁴वह इन लोगों के ग़रीबों की~'अदालत करेगा; वह मोहताजों की औलाद को बचाएगा, और ज़ालिम को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा।⁵जब तक सूरज और चाँद क़ायम हैं, लोग नसल-दर-नसल तुझ से डरते रहेंगे।

⁶वह कटी हुई घास पर मेंह की तरह, और ज़मीन को सेराब करने वाली बारिश की तरह नाज़िल होगा।⁷उसके दिनों में सादिक बढ़ेंगे, और जब तक चाँद क़ायम है ख़ूब अमन रहेगा।

⁸उसकी सल्तनत समन्दर से समन्दर तक और दरिया-ए-फ़रात से ज़मीन की इन्तिहा तक होगी।⁹वीरान के रहने वाले उसके आगे झुकेंगे, और उसके दुश्मन खाक चारेंगे।¹⁰तरसीस के और जज़ीरों के बादशाह नज़रें पेश करेंगे, सबा और सेबा के बादशाह हदिये लाएँगे।

¹¹बल्कि सब बादशाह उसके सामने सर्नगूँ होंगे कुल क़ौमों उसकी फरमाबरदार होंगी।¹²क्योंकि वह मोहताज को जब वह फ़रियाद करे, और ग़रीब की जिसका कोई मददगार नहीं छुड़ाएगा।

¹³वह ग़रीब और मुहताज पर तरस खाएगा, और मोहताजों की जान को बचाएगा।¹⁴वह फ़िदिया देकर उनकी जान को जुल्म और ज़ब्र से छुड़ाएगा और उनका ख़ून उसकी नज़र में बेशक़ीमत होगा |

¹⁵वह ज़िन्दा रहेंगे और सबा का सोना उसको दिया जाएगा। लोग बराबर उसके हक़ में दु'आ करेंगे: वह दिनभर उसे दु'आ देंगे।¹⁶ज़मीन में पहाड़ों की चोटियों पर अनाज को अफ़रात होगी; ~उनका फल लुबनान के दरख़्तों की तरह झूमेगा; और शहर वाले ज़मीन की घास की तरह हरे भरे होंगे।

¹⁷उसका नाम हमेशा क़ायम रहेगा, जब तक सूरज है उसका नाम रहेगा; और लोग उसके वसीले से बरकत पाएँगे, सब क़ौमों उसे खुशनसीब कहेंगी।

¹⁸ख़ुदावन्द खुदा इस्राईल का खुदा, मुबारक हो! ~वही~'अजीब-ओ-ग़रीब काम करता है।¹⁹उसका जलील नाम हमेशा के लिए सारी ज़मीन उसके जलाल से मा'मूर हो | आमीन सुम्मा आमीन!²⁰दाऊद बिन यस्सी की दु'आएँ तमाम हुई।

Chapter 73

¹बेशक खुदा इसाईल पर, या 'नी पाक दिलों पर मेहरबान है।²लेकिन मेरे पाँव तो फिसलने को थे, मेरे क़दम क़रीबन लगाज़िश खा चुके थे।³क्यूँकि जब मैं शरीरों की इक़बालमंदी देखता, तो मगरूरों पर हसद करता था।

⁴इसलिए के उनकी मौत में दर्द नहीं, बल्कि उनकी ताक़त बनी रहती है।⁵वह और आदमियों की तरह मुसीबत में नहीं पड़ते; न और लोगों की तरह उन पर आफ़त आती है।

⁶इसलिए गुरूर उनके गले का हार है, जैसे वह जुल्म से मुलब्स हैं।⁷उनकी आँखें चर्बी से उभरी हुई हैं, उनके दिल के खयालात हद से बढ़ गए हैं।

⁸वह ठट्ठा मारते, और शरारत से जुल्म की बातें करते हैं; वह बड़ा बोल बोलते हैं।⁹उनके मुँह आसमान पर हैं, और उनकी ज़बाने ज़मीन की सैर करती हैं।

¹⁰इसलिए उसके लोग इस तरफ़ रुजू होते हैं, और जी भर कर पीते हैं।¹¹वह कहते हैं, "खुदा को कैसे मा'लूम है?~क्या हक़ ता'ला को कुछ 'इल्म है?"¹²इन शरीरों को देखो, यह हमेशा चैन से रहते हुए दौलत बढ़ाते हैं।

¹³यक़ीनन मैंने बेकार अपने दिल को साफ़, और अपने हाथों को पाक किया;¹⁴क्यूँकि मुझ पर दिन भर आफ़त रहती है, और मैं हर सुबह तम्बीह पाता हूँ।¹⁵अगर मैं कहता, कि यूँ कहूँगा; तो तेरे फ़र्ज़न्दों की नसल से बेवफ़ाई करता।

¹⁶जब मैं सोचने लगा कि इसे कैसे समझूँ, तो यह मेरी नज़र में दुश्वार था,¹⁷जब तक कि मैंने खुदा के मक़दिस में जाकर, उनके अंजाम को न सोचा।

¹⁸यक़ीनन तू उनको फिसलनी जगहों में रखता है, और हलाकत की तरफ़ ढकेल देता है।¹⁹वह दम भर में कैसे उजड़ गए! वह हादिसों से बिल्कुल फ़ना हो गए।

²⁰जैसे जाग उठने वाला ख़्वाब को, वैसे ही तू ऐ खुदावन्द, ~जाग कर उनकी सूरत को नाचीज़ जानेगा।

²¹क्यूँकि मेरा दिल रंजीदा हुआ, और मेरा जिगर छिद गया था;²²मैं बे'अक्ल और जाहिल था, मैं तेरे सामने जानवर की तरह था।

²³तोभी मैं बराबर तेरे साथ हूँ। तूने मेरा दाहिना हाथ पकड़ रखा है।²⁴तू अपनी मसलहत से मेरी रहनुमाई करेगा, और आख़िरकार मुझे जलाल में कुबूल फ़रमाएगा।

²⁵आसमान पर तेरे अलावा मेरा कौन है? और ज़मीन पर मैं तेरे अलावा किसी का मुश्ताक़ नहीं।²⁶जैसे मेरा जिस्म और मेरा दिल ज़ाइल हो जाएँ, तोभी खुदा हमेशा मेरे दिल की ताक़त और मेरा हिस्सा है।

²⁷क्यूँकि देख, वह जो तुझ से दूर हैं फ़ना हो जाएँगे; तूने उन सबको जिन्होंने तुझ से बेवफ़ाई की, हलाक कर दिया है।²⁸लेकिन मेरे लिए यही भला है कि खुदा की नज़दीकी हासिल करूँ; मैंने खुदावन्द खुदा को अपनी पनाहगाह बना लिया है ताकि तेरे सब कामों का बयान करूँ।

Chapter 74

¹ऐ खुदा! तूने हम को हमेशा के लिए क्यों छोड़ दिया?~तेरी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क्रहर क्यों भड़क रहा है?²अपनी जमा'अत को जिसे तूने पहले से खरीदा है, जिसका तूने फ़िदिया दिया ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो, और कोह-ए-सियून् को जिस पर तूने सुकूनत की है, याद कर।

³अपने क़दम दाइमी खण्डरों की तरफ़ बढ़ा; या'नी उन सब ख़राबियों की तरफ़ जो दुश्मन ने मक़दिस में की हैं।⁴तेरे मजमे'~में तेरे मुखालिफ़ गरजते रहे हैं; निशान के लिए उन्होंने अपने ही झंडे खड़े किए हैं।⁵वह उन आदमियों की तरह थे, जो गुनजान दरख़्तों पर कुल्हाड़े चलाते हैं;|⁶और अब वह उसकी सारी नक्रशकारी को, कुल्हाड़ी और हथौड़ों से बिल्कुल तोड़े डालते हैं।

⁷उन्होंने तेरे हैकल में आग लगा दी है, और तेरे नाम के घर को ज़मीन तक मिस्मार करके नापाक किया है।⁸उन्होंने अपने दिल में कहा है, "हम उनको बिल्कुल वीरान कर डालें; "उन्होंने इस मुल्क में खुदा के सब 'इबादतख़ानों को जला दिया है।

⁹हमारे निशान नज़र नहीं आते; और कोई नबी नहीं रहा, और हम में कोई नहीं जानता कि यह हाल कब तक रहेगा।¹⁰ऐ खुदा, मुखालिफ़ कब तक ता'नाज़नी करता रहेगा?~क्या दुश्मन हमेशा तेरे नाम पर कुफ़्र बकता रहेगा?¹¹तू अपना हाथ क्यों रोकता है? अपना दहना हाथ बाल से निकाल और फ़ना कर।

¹²खुदा क़दीम से मेरा बादशाह है, जो ज़मीन पर नजात बख़्शता है।¹³तूने अपनी कुदरत से समन्दर के दो हिस्से कर दिए तू पानी में अज़दहाओं के सिर कुचलता है।

¹⁴तूने लिवियातान के सिर के टुकड़े किए, और उसे वीरान के रहने वालों की ख़ूराक बनाया।¹⁵तूने चश्मे और सैलाब जारी किए; तूने बड़े बड़े दरियाओं को ख़ुश्क कर डाला।

¹⁶दिन तेरा है, रात भी तेरी ही है; नूर और आफ़ताब को तू ही ने तैयार किया।¹⁷ज़मीन की तमाम हदें तू ही ने ठहराई हैं; गर्मी और सर्दी के मौसम तू ही ने बनाए।

¹⁸ऐ खुदावन्द, इसे याद रख के दुश्मन ने ता'नाज़नी की है, ~और बेवकूफ़ क़ौम ने तेरे नाम की तक्फ़ीर की है।¹⁹अपनी फ़ाख़्ता की जान की जंगली जानवर के हवाले न कर; अपने ग़रीबों की जान को हमेशा के लिए भूल न जा।

²⁰अपने~'अहद का खयाल फ़रमा, क्योंकि ज़मीन के तारीक़ मक़ाम जुल्म के घरों से भरे हैं।²¹मज़लूम शर्मिन्दा होकर न लौटे; ग़रीब और मोहताज तेरे नाम की ता'रीफ़ करें।

²²उठ ऐ खुदा, आप ही अपनी वक़ालत कर; याद कर कि अहमक़ दिन भर तुझ पर कैसी ता'नाज़नी करता है।²³अपने दुश्मनों की आवाज़ को भूल न मुखालिफ़ों का हंगामा खड़ा ~होता रहता।

Chapter 75

¹ऐ खुदा, हम तेरा शुक्र करते हैं, हम तेरा शुक्र करते हैं; क्योंकि तेरा नाम नज़दीक है, लोग तेरे~'अजीब कामों का ज़िक्र करते हैं।²जब मेरा मु'अय्यन वक़्त आएगा, तो मैं रास्ती से~'अदालत करूँगा।³ज़मीन और उसके सब बाशिन्दे गुदाज़ हो गए हैं, मैंने उसके सुतूनों को क़ायम कर दिया।

⁴मैंने मगरूरों से कहा, "गुरूर न करो, "और शरीरों से, कि सींग ऊँचा न करो।⁵अपना सींग ऊँचा न करो, बगावत से बात न करो।⁶क्योंकि सरफ़राज़ी न तो पूरब से न पश्चिम से, और न दख्खिन से आती है;

⁷बल्कि खुदा ही~'अदालत करने वाला है; वह किसी को पस्त करता है और किसी को सरफ़राज़ी बख़्शता है।⁸क्योंकि खुदावन्द के हाथ में प्याला है, और मय झाग वाली है; ~वह मिली हुई शराब से भरा है, और खुदावन्द उसी में से उंडेलता है; बेशक उसकी तलछट ज़मीन के सब शरीर निचोड़ निचोड़ कर पिँगें।

⁹लेकिन मैं तो हमेशा ज़िक्र करता रहूँगा, मैं या'क़ूब के खुदा की मदहसराई करूँगा।¹⁰और मैं शरीरों के सब सींग काट डालूँगा लेकिन ~सादिकों के सींग ऊँचे किए जाएंगे।

Chapter 76

¹खुदा यहूदाह में मशहूर है, उसका नाम इस्राईल में बुजुर्ग है।²सालिम में उसका खेमा है, और सिय्यून में उसका घर।³वहाँ उसने बर्क-ए-कमान की और ढाल और तलवार, और सामान-ए-जंग को तोड़ डाला।

⁴तू जलाली है, और शिकार के पहाड़ों से शानदार है।⁵मज़बूत दिल लुट गए, वह गहरी नींद में पड़े हैं, और ज़बरदस्त लोगों में से किसी का हाथ काम न आया।

⁶ऐ या'कूब के खुदा, तेरी झिड़की से, रथ और घोड़े दोनों पर मौत की नींद तारी है।⁷~सिर्फ़ तुझ ही से डरना चाहिए; और तेरे क्रहर के वक्रत कौन तेरे सामने खड़ा रह सकता है?

⁸तूने आसमान पर से फ़ैसला सुनाया; ज़मीन डर कर चुप हो गई।⁹जब खुदा~'अदालत करने को उठा, ताकि ज़मीन के सब हलीमों को बचा ले।~(सिलाह)

¹⁰बेशक इन्सान का ग़ज़ब तेरी सिताइश का ज़रिए' होगा, ~और तू ग़ज़ब के बक्रिये से कमरबस्ता होगा।

¹¹खुदावन्द अपने खुदा के लिए मन्नत मानो, और पूरी करो, ~और सब जो उसके गिर्द हैं वह उसी के लिए जिससे डरना वाजिब है, हदिए लाएँ।¹²~वह हाकिम की रूह को क़ब्ज़ करेगा; वह ज़मीन के बादशाहों के लिए बड़ा है।

Chapter 77

¹मैं बुलन्द आवाज़ से खुदा के सामने फ़रियाद करूँगा खुदा ही के सामने बुलन्द आवाज़ से, और वह मेरी तरफ़ कान लगाएगा।

²अपनी मुसीबत के दिन मैंने खुदावन्द को ढूँढा, मेरे हाथ रात को फैले रहे और ढीले न हुए; मेरी जान को तस्कीन न हुई।³मैं खुदा को याद करता हूँ और बेचैन हूँ मैं वावैला करता हूँ और मेरी जान निढाल है।

⁴तू मेरी आँखें खुली रखता है; मैं ऐसा बेताब हूँ कि बोल नहीं सकता।⁵मैं गुजरे दिनों पर, या'नी क़दीम ज़माने के बरसों पर सोचता रहा।

⁶मुझे रात को अपना हम्द याद आता है; मैं अपने दिल ही में सोचता हूँ। मेरी रूह बड़ी तफ़्तीश में लगी है:⁷~"क्या खुदावन्द हमेशा के लिए छोड़ देगा?~क्या वह फिर कभी मेंहरबान न होगा?

⁸~क्या उसकी शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही?~क्या उसका वा'दा हमेशा तक बातिल हो गया?⁹क्या खुदा करम करना भूल गया?क्या उसने क्रहर से अपनी रहमत रोक ली?"(सिलाह)

¹⁰फिर मैंने कहा, 'यह मेरी ही कमज़ोरी है; मैं तो हक़ ता'ला की कुदरत के ज़माने को याद करूँगा।"

¹¹मैं खुदावन्द के कामों का ज़िक्र करूँगा ; क्योंकि मुझे तेरे क़दीम~'अज़ाइब यादआएँगे।¹²मैं तेरी सारी सन'अत पर ध्यान करूँगा, और तेरे कामों को सोचूँगा।

¹³ऐ खुदा, तेरी राह मक़दिस में है। कौन सा देवता खुदा की तरह बड़ा है।¹⁴तू वह खुदा है जो~'अजीब काम करता है, तूने क्रौमों के बीच अपनी कुदरत ज़ाहिर की।¹⁵तूने अपने ही बाजू से अपनी क्रौम, बनी या'कूब और बनी यूसुफ़ को फ़िदिया देकर छुड़ाया है।

¹⁶ऐ खुदा, समन्दरों ने तुझे देखा, समन्दर तुझे देख कर डर गए, गहराओ भी काँप उठे।¹⁷बदलियों ने पानी बरसाया, आसमानों से आवाज़ आई, तेरे तीर भी चारों तरफ़ चले।

¹⁸बगोले में तेरे गरज़ की आवाज़ थी, बर्क़ ने ज़हान को रोशन कर दिया, ज़मीन लरज़ी और काँपी।¹⁹तेरी राह समन्दर में है, तेरे रास्ते बड़े समुन्दरों में हैं; और तेरे नक्रश-ए-क़दम ना मा'लूम हैं।²⁰तूने मूसा और हारून के वसीले से, क्रि'ला की तरह अपने लोगों की रहनुमाई की।

Chapter 78

¹ऐ मेरे लोगों मेरी शरी'अत को सुनो मेरे मुँह की बातों पर कान लगाओ।²मैं तम्सील में कलाम~करूँगा, और पुराने पोशीदा राज़ कहूँगा,

³जिनको हम ने सुना और जान लिया, और हमारे बाप-दादा ने हम को बताया।⁴और जिनको हम उनकी औलाद से पोशीदा नहीं रखेंगे; ~बल्कि आइंदा नसल को भी खुदावन्द की ता'रीफ़, और उसकी कुदरत और~'अज़ाइब जो उसने किए बताएँगे।

⁵क्योंकि उसने या'कूब में एक शहादत क़ायम की, और इस्राईल में शरी'अत मुक़र्रर की, जिनके बारे में उसने हमारे बाप दादा को हुक्म दिया, कि वह अपनी औलाद को उनकी ता'लीम दें, ताकि आइंदा नसल, या'नी वह फ़र्ज़न्द जो पैदा होंगे, उनको जान लें: और वह बड़े होकर अपनी औलाद को सिखाएँ,

⁷कि वह खुदा पर उम्मीद रखें, और उसके कामों को भूल न जाएँ, बल्कि उसके हुक्मों पर~'अमल करें;⁸और अपने बाप-दादा की तरह, सरकश और बागी नसल न बनें:~ऐसी नसल जिसने अपना दिल दुरुस्त न किया और जिसकी रूह खुदा के सामने वफ़ादार न रही।

⁹बनी इफ़राईम हथियार बन्द होकर और कमाने रखते हुए लड़ाई के दिन फिर गए।¹⁰उन्होंने खुदा के~'अहद को क़ायम न रखखा, और उसकी शरी'अत पर चलने से इन्कार किया।¹¹और उसके कामों को और उसके'अज़ाइब को, जो उसने उनको दिखाए थे भूल गए।

¹²उसने मुल्क-ए-मिस्र में जुअन के इलाके में, उनके बाप-दादा के सामने~'अजीब-ओ-ग़रीब काम किए।¹³उसने समुन्दर के दो हिस्से करके उनको पार उतारा, और पानी को तूदे की तरह खड़ा कर दिया।¹⁴उसने दिन को बादल से उनकी रहबरी की, और रात भर आग की रोशनी से।

¹⁵उसने वीरान में चट्टानों को चीरा, और उनको जैसे बहर से खूब पिलाया।¹⁶उसने चट्टान ~में से नदियाँ जारी कीं, और दरियाओं की तरह पानी बहाया।

¹⁷तोभी वह उसके खिलाफ़ गुनाह करते ही गए, और वीरान में हक़ता'ला से सरकशी करते रहे।¹⁸और उन्होंने अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ खाना मांग कर अपने दिल में खुदा को आज़माया।

¹⁹बल्कि वह खुदा के खिलाफ़ बकने लगे, और कहा, "क्या खुदा वीरान में दस्तरख़वान बिछा सकता है?²⁰देखो, उसने चट्टान को मारा तो पानी फूट निकला, और नदियाँ बहने लगीं क्या वह रोटी भी दे सकता है?~क्या वह अपने लोगों के लिए गोश्त मुहय्या कर देगा?"

²¹तब खुदावन्द सुन कर ग़ज़बनाक हुआ, और या'कूब के खिलाफ़ आग भड़क उठी, और इस्राईल पर क्रहर टूट पड़ा,²²इसलिए कि वह खुदा पर ईमान न लाए, और उसकी नज़ात पर भरोसा न किया।

²³तोभी उसने आसमानों को हुक्म दिया, और आसमान के दरवाज़े खोले:²⁴और खाने के लिए उन पर मन्न बरसाया, और उनको आसमानी ख़ूराक बख़्शी।

²⁵~इन्सान ने फ़रिशतों की गिज़ा खाई: उसने खाना भेजकर उनको आसूदा किया।

²⁶उसने आसमान में पूर्वा चलाई, और अपनी कुदरत से दखना बहाई।²⁷उसने उन पर गोश्त को खाक की तरह बरसाया, और परिन्दों को समन्दर की रेत की तरह;²⁸जिनको उसने उनकी खेमागाह में, उनके घरों के आसपास गिराया।

²⁹तब वह खाकर खूब सेर हुए, और उसने उनकी ख़्वाहिश पूरी की।³⁰वह अपनी ख़्वाहिश से बाज़ न आए, और उनका खाना उनके मुँह ही में था।

³¹कि खुदा का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा, और उनके सबसे मोटे ताज़े आदमी क़त्ल किए, और इस्राइली जवानों को मार गिराया।³²बावजूद इन सब बातों कि वह गुनाह करते ही रहे; और उसके~'अजीब-ओ-ग़रीब कामों पर ईमान न लाए।

³³इसलिए उसने उनके दिनों को बतालत से, और उनके बरसों को दहशत से तमाम कर दिया।³⁴जब वह उनको क़त्ल करने लगा, तो~वह उसके तालिब हुए; और रुजू होकर दिल-ओ-जान से खुदा को ढूँढने लगे।

³⁵और उनको याद आया कि खुदा उनकी चट्टान, और हक़ता'ला उनका फ़िदिया देने वाला है।³⁶लेकिन उन्होंने अपने मुँह से उसकी खुशामद की, और अपनी ज़बान से उससे झूट बोला।³⁷क्योंकि उनका दिल उसके सामने दुरुस्त~और वह उसके~'अहद में वफ़ादार न~निकले।

³⁸लेकिन वह रहीम होकर बदकारी मु'आफ़ करता है, और हलाक नहीं करता; बल्कि बारहा अपने क्रहर को रोक लेता है, और अपने पूरे ग़ज़ब को भड़कने नहीं~देता।

³⁹~और उसे याद रहता है कि यह महज़ बशर है। या'नी हवा जो चली जाती है और फिर नहीं आती।⁴⁰कितनी बार उन्होंने वीरान में उससे सरकशी की और सेहरा में उसे दुख किया।⁴¹और वह फिर खुदा को आज़माने लगे और उन्होंने इस्राईल के खुदा को नाराज़ किया।

⁴²उन्होंने उसके हाथ को याद न रखा, न उस दिन की जब उसने फ़िदिया देकर उनको मुखालिफ़ से रिहाई~बख़्शी।⁴³~उसने मिस्र में अपने निशान दिखाए, और जु'अन के 'इलाके में अपने अज़ाइब।

⁴⁴और उनके दरियाओं को खून बना दिया~और वह अपनी नदियों से पी न सके।⁴⁵उसने उन पर मच्छरों के ग़ोल भेजे~जो उनको खा गए और मेंढ़क जिन्होंने उनको तबाह कर~दिया।~⁴⁶उसने उनकी पैदावार कीड़ों कोऔर उनकी मेहनत का फल~टिड्डियों को दे दिया।~

⁴⁷उसने उनकी ताकों को ओलों से, और उनके गूलर के दरख़्तों को~पाले से मारा।⁴⁸उसने उनके चौपायों को ओलों के~हवाले किया, और उनकी भेड़ बकरियों को बिजली के।⁴⁹उसने~'अज़ाब के फ़रिशतों की फ़ौज़ भेज कर अपनी क्रहर की शिद्दत ग़ैज़-ओ-ग़ाजब और बला को उन पर नाज़िल किया।

⁵⁰उसने अपने क्रहर के लिए रास्ता बनाया, और उनकी जान मौत से न बचाई, बल्कि उनकी ज़िन्दगी वबा के हवाले की।⁵¹उसने मिस्र के सब पहलौठों को, या'नी हाम के घरों में उनकी ताक़त के पहले फल को मारा:-

⁵²लेकिन वह अपने लोगों को भेड़ों की तरह ले चला, और वीरान में ग़ल्ले की तरह उनकी रहनुमाई की।⁵³और वह उनको सलामत ले गया और वह न डरे, लेकिन उनके दुश्मनों को समन्दर ने छिपा लिया।

⁵⁴और वह उनको अपने मक़दिस की सरहद तक लाया, ~या'नी उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ ने हासिल किया था।⁵⁵उसने और क़ौमों को उनके सामने से निकाल दिया; जिनकी मीरास ज़रीब डाल कर उनको बाँट दी; और जिनके खेमों में इस्राईल के क़बीलों को बसाया।

⁵⁶तोभी उन्होंने खुदाता'ला को आजमायाऔर उससे सरकशी की, और उसकी शहादतों को न माना;⁵⁷~बल्कि नाफ़रमान होकर अपने बाप दादा की तरह बेवफ़ाई की और थोका देने वाली कमान की तरह एक तरफ़ को झुक गए।

⁵⁸क्योंकि उन्होंने अपने ऊँचे मक़ामों के वजह से उसका क्रहर भड़काया, और अपनी खोदी हुई मूरतों से उसे ग़ैरत दिलाई।⁵⁹~खुदा यह सुनकर ग़ज़बनाक हुआ, और इस्राईल से सख़्त नफ़रत की।

⁶⁰~फिर उसने सैला के घर को छोड़ दिया, या'नी उस ख़ेमे को जो बनी आदम के बीच खड़ा किया था।⁶¹और उसने अपनी ताक़त को गुलामी में, और अपनी हशमत को मुखालिफ़ के हाथ में दे दिया।

⁶²~उसने अपने लोगों को तलवार के हवाले कर दिया, और वह अपनी मीरास से ग़ज़बनाक हो गया।⁶³आग उनके जवानों को खा गई,, और उनकी कुँवारियों के सुहाग न गए गए।

⁶⁴उनके काहिन तलवार से मारे गए, और उनकी बेवाओं ने नौहा न किया।⁶⁵तब खुदावन्द जैसे नींद से जाग उठा, उस ज़बरदस्त आदमी की तरह जो मय की वजह से ललकारता हो।⁶⁶और उसने अपने मुखालिफ़ों को मार कर पस्पा कर दिया; ~उसने उनको हमेशा के लिए रुस्वा किया।

⁶⁷और उसने यूसुफ़ के ख़मे को छोड़ दिया; और इफ़्राईम के क़बीले को न चुना;⁶⁸बल्कि यहूदाह के क़बीले को चुना! उसी कोह-ए-सिय्यून को जिससे उसको मुहब्बत थी।⁶⁹और अपने मक़दिस को पहाड़ों की तरह तामीर किया, और ज़मीन की तरह जिसे उसने हमेशा के लिए क़ायम किया है।

⁷⁰उसने अपने बन्दे दाऊद को भी चुना, और भेड़सालों में से उसे ले लिया;⁷¹वह उसे बच्चे वाली भेड़ों की चौपानी से हटा लाया, ताकि उसकी क़ौम या'क़ूब और उसकी मीरास इस्राईल की गल्लेबानी करे।⁷²फिर उसने खुलूस-ए-दिल से उनकी पासबानी की और अपने माहिर हाथों से उनकी रहनुमाई करता रहा |

Chapter 79

¹ऐ खुदा, क्रौमों तेरी मीरास में घुस आई हैं; उन्होंने तेरी पाक हैकल को नापाक किया है; उन्होंने यरूशलीम को खण्डर बना दिया² उन्होंने तेरे बन्दों की लाशों को आसमान के परिन्दों की, और तेरे पाक लोगों के गोश्त को ज़मीन के दरिंदों की खूराक बना दिया है।³ उन्होंने उनका खून यरूशलीम के गिर्द पानी की तरह बहाया, और कोई उनको दफ़न करने वाला न था।

⁴हम अपने पड़ोसियों की मलामत का निशाना हैं; और अपने आसपास के लोगों के तमसखुर और मज़ाक की वजह।⁵ ऐ खुदावन्द, कब तक? ~क्या तू हमेशा के लिए नाराज़ रहेगा? ~क्या तेरी ग़ैरत आग की तरह भड़कती रहेगी?

⁶अपना क्रहर उन क्रौमों पर जो तुझे नहीं पहचानतीं, और उन ममलुकतों पर जो तेरा नाम नहीं लेतीं, उँडेल दे।⁷ क्योंकि उन्होंने या 'कूब को खा लिया, और उसके घर को उजाड़ दिया है।

⁸हमारे बाप-दादा के गुनाहों को हमारे खिलाफ़ याद न कर; ~तेरी रहमत जल्द हम तक पहुँचे, क्योंकि हम बहुत पस्त हो गए हैं।⁹ ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा, अपने नाम के जलाल की खातिर हमारी मदद कर; अपने नाम की खातिर हम को छुड़ा और हमारे गुनाहों का कफ़ारा दे।

¹⁰क्रौमों क्यों कहें कि उनका खुदा कहाँ है? तेरे बन्दों के बहाए हुए खून का बदला, हमारी आँखों के सामने क्रौमों पर ज़ाहिर हो जाए।¹¹ कैदी की आह तेरे सामने तक पहुँचे: अपनी बड़ी कुदरत से मरने वालों को बचा ले।

¹²ऐ खुदावन्द, हमारे पड़ोसियों की ता'नाज़नी, जो वह तुझ पर करते रहे हैं, उल्टी सात गुना उन्ही के दामन में डाल दे।¹³ तब हम जो तेरे लोग और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं, हमेशा तेरी शुक्रगुज़ारी करेंगे; हम नसल दर नसल तेरी सिताइश करेंगे |

Chapter 80

¹ऐ इस्राईल के चौपान! तू जो गल्ले की तरह यूसुफ़ को ले चलता है, कान लगा! तू जो करूबियों पर बैठा है, जलवागर हो!²इफ़्राईम-ओ-बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी कुव्वत को बेदार कर, और हमें बचाने को आ!³ऐ खुदा, हम को बहाल कर; और अपना चेहरा चमका, तो हम बच जाएँगे।

⁴ऐ खुदावन्द लश्करोँ के खुदा, तू कब तक अपने लोगों की दु'आ से नाराज़ रहेगा?⁵तूने उनको आँसुओं की रोटी खिलाई, और पीने को कसरत से आँसू ही दिए।

⁶तू हम को हमारे पड़ोसियों के लिए झगड़े का ज़रिए' बनाता है, और हमारे दुश्मन आपस में हँसते हैं।

⁷ऐ लश्करोँ के खुदा, हम को बहाल कर; और अपना चेहरा चमका, तो हम बच जाएँगे।⁸तू मिस्र से एक ताक लाया; तूने क्रौमों को खारिज करके उसे लगाया।

⁹तूने उसके लिए जगह तैयार की; उसने गहरी जड़ पकड़ी और ज़मीन को भर दिया।¹⁰पहाड़ उसके साये में छिप गए, और उसकी डालियाँ खुदा के देवदारों की तरह थीं।¹¹~उसने अपनी शाख समन्दर तक फैलाई, और अपनी टहनियाँ दरिया-ए-फरात तक।

¹²फिर तूने उसकी बाड़ों को वरूँ तोड़ डाला, कि सब आने जाने वाले उसका फल तोड़ते हैं?¹³जंगली सूअर उसे बरबाद करता है, और जंगली जानवर उसे खा जाते हैं।

¹⁴ऐ लश्करोँ के खुदा, हम तेरी मिन्नत करते हैं, फिर मुतक्ज्जिह हो! आसमान पर से निगाह कर और देख, और इस ताक की निगहबानी फ़रमा।¹⁵और उस पौदे की भी जिसे तेरे दहने हाथ ने लगाया है, ~और उस शाख की जिसे तूने अपने लिए मज़बूत किया है।¹⁶यह आग से जली हुई है, यह कटी पड़ी है; वह तेरे मुँह की झिड़की से हलाक हो जाते हैं।

¹⁷तेरा हाथ तेरी दहनी तरफ़ के इन्सान पर हो, उस इब्न-ए-आदम पर जिसे तूने अपने लिए मज़बूत किया है।¹⁸फिर हम तुझ से नाफ़रमान न होंगे: तू हम को फिर ज़िन्दा कर और हम तेरा नाम लिया करेंगे।

¹⁹ऐ खुदा वन्द लश्करोँ के खुदा! हम को बहाल कर; अपना ~चेहरा चमका तो हम बच जाएँगे!

Chapter 81

¹खुदा के सामने जो हमारी ताकत है, बुलन्द आवाज़ से गाओ; ~या'कूब के खुदा के सामने खुशी का नारा मारो~!²नगमा छोड़ो, और दफ़ लाओ और दिलनवाज़ सितार और बरबत।³नए चाँद और पूरे चाँद के वक़्त, हमारी 'ईद के दिन नरसिंगा फूँको।

⁴क्यूँकि यह इस्राईल के लिए क़ानून, और या'कूब के खुदा का हुक्म है।⁵~इसको उसने यूसुफ़ में शहादत ठहराया, जब वह मुल्क-ए-मिस्र के खिलाफ़ निकला। मैंने उसका कलाम सुना, जिसको मैं जानता न था

⁶~'मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतार दिया; उसके हाथ टोकरी दोने से छूट गए।⁷तूने मुसीबत में पुकारा और मैंने तुझे छुड़ाया; मैंने राद के पर्दे में से तुझे जवाब दिया; मैंने तुझे मरीबा के चश्मे पर आजमाया।~(सिलाह)

⁸ऐ मेरे लोगो,~सुनो, मैं तुम को होशियार करता हूँ! ऐ इस्राईल, ~काश के तू मेरी सुनता!⁹तेरे बीच कोई ग़ैर मा'बूद न हो; और तू किसी ग़ैर मा'बूद को सिज्दा न करना।¹⁰खुदावन्द तेरा खुदा मैं हूँ, जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया। तू अपना मुँह खूब खोल और मैं उसे भर दूँगा।

¹¹"लेकिन मेरे लोगों ने मेरी बात न सुनी, और इस्राईल मुझ से रज़ामंद न हुआ।¹²तब मैंने उनको उनके दिल की हट पर छोड़ दिया, ताकि वह अपने ही मश्वरों पर चलें।

¹³काश कि मेरे लोग मेरी सुनते, और इस्राईल मेरी राहों पर चलता~!¹⁴मैं जल्द उनके दुश्मनों को मग़लूब कर देता, और उनके मुखालिफ़ों पर अपना हाथ चलाता।

¹⁵~खुदावन्द से~'अदावत रखने वाले उसके ताबे"~हो जाते, ~और इनका ज़माना हमेशा तक बना रहता।¹⁶~वह इनको अच्छे से अच्छा गेहूँ खिलाता और मैं तुझे चट्टान में के शहद से शेर करता।

Chapter 82

¹खुदा की जमा'अत में खुदा मौजूद है। वह इलाहों के बीच~'अदालत करता है~:'²तुम कब तक बेइन्साफ़ी से~'अदालत करोगे, और शरीरों की तरफ़दारी करोगे? (सिलाह)

³गरीब और यतीम का इन्साफ़ करो, ग़मज़दा और मुफ़लिस के साथ इन्साफ़ से पेश आओ।⁴गरीब और मोहताज को बचाओ; शरीरों के हाथ से उनको छुड़ाओ।"

⁵वह न तो कुछ जानते हैं न समझते हैं, वह अंधेरे में इधर उधर चलते हैं; ज़मीन की सब बुनियादें हिल गई हैं।

⁶मैंने कहा था, "तुम इलाह हो, और तुम सब हक़ता'ला के फ़र्ज़न्द हो;"⁷तोभी तुम आदमियों की तरह मरोगे, और 'उमरा में से किसी की तरह गिर जाओगे।"

⁸~ऐ खुदा! उठ ज़मीन की 'अदालत कर क्योंकि तू ही सब क़ौमों का मालिक होगा।

Chapter 83

¹ऐ खुदा! ~खामोश न रह; ऐ खुदा! चुपचाप न हो और खामोशी इख्तियार न कर।²~क्यूँकि देख तेरे दुश्मन ऊधम मचाते हैं और तुझ से~'अदावत रखने वालों ने सिर उठाया है।

³क्यूँकि वह तेरे लोगों के खिलाफ़ मक्कारी से मन्सूबा बाँधते हैं, और उनके खिलाफ़ जो तेरी पनाह में हैं मशवरा करते हैं।⁴उन्होंने कहा, "आओ, हम इनको काट डालें कि उनकी क्रौम ही न रहे; और इस्राईल के नाम का फिर ज़िक्र न हो।"⁵क्यूँकि उन्होंने एक हो कर के आपस में मश्वरा किया है, वह तेरे खिलाफ़~'अहद बाँधते हैं।

⁶या'नी अदूम के अहल-ए-खैमा और इस्माइली मोआब और हाजरी,⁷जबल और'अम्मून और~'अमालीक़, फ़िलिस्तीन और सूर के बाशन्दे,

⁸असूर भी इनसे मिला हुआ है; उन्होंने बनी लूत की मदद की है।

⁹तू उनसे ऐसा कर जैसा मिदियान से, और जैसा वादी-ए-कैसून में सीसरा और याबीन से किया था।¹⁰जो~'ऐन दोर में हलाक़ हुए, वह जैसे ज़मीन की खाद हो गए

¹¹उनके सरदारों को~'ओरेब और ज़ईब की तरह, बल्कि उनके शाहज़ादों को ज़िबह और ज़िलमना'~की तरह बना दे;¹²जिन्होंने कहा है, "आओ, हम खुदा की बस्तियों पर कब्ज़ा कर लें।"

¹³~ऐ मेरे खुदा, उनको बगोले की गर्द की तरह बना दे, और जैसे हवा के आगे डंठल।¹⁴उस आग की तरह जो जंगल को जला देती है, उस शो'ले की तरह जो पहाड़ों में आग लगा देता है;¹⁵तू इसी तरह अपनी आँधी से उनका पीछा कर, और अपने तूफ़ान से उनको परेशान कर दे।

¹⁶ऐ खुदावन्द! उनके चेहरों पर रुस्वाई तारी कर, ताकि वह तेरे नाम के तालिब हों।¹⁷वह हमेशा शर्मिन्दा और परेशान रहें, बल्कि वह रुस्वा होकर हलाक़ हो जाएँ

¹⁸ताकि वह जान लें कि तू ही जिसका यहोवा है, ज़मीन पर बुलन्द-ओ-बाला है।

Chapter 84

¹ऐ लश्करो के खुदावन्द! तेरे घर क्या ही दिलकश हैं!²मेरी जान खुदावन्द की बारगाहों की मुश्ताक़ है, बल्कि गुदाज़ हो चली, मेरा दिल और मेरा जिस्म ज़िन्दा खुदा के लिए खुशी से ललकारते हैं।

³ऐ लश्करो के खुदावन्द! ऐ मेरे बादशाह और मेरे खुदा! तेरे मज़बहों के पास गौरया ने अपना आशियाना, और अबामील ने अपने लिए घोंसला बना लिया, जहाँ वह अपने बच्चों को रखे।⁴मुबारक हैं वह जो तेरे घर में रहते हैं, वह हमेशा तेरी ता'रीफ़ करेंगे। (मिलाह)

⁵मुबारक है वह आदमी, जिसकी ताक़त तुझ से है, जिसके दिल में सिय्यून की शाह राहें हैं।⁶वह वादी-ए-बुका से गुज़र कर उसे चश्मों की जगह बना लेते हैं, बल्कि पहली बारिश उसे बरकतों से मा'मूर कर देती है।

⁷वह ताक़त पर ताक़त पाते हैं; उनमें से हर एक सिय्यून में खुदा के सामने हाज़िर होता है।⁸ऐ खुदावन्द, लश्करो के खुदा, मेरी दु'आ सुन ऐ या'क़ूब के खुदा! कान लगा! (सिलाह)⁹ऐ खुदा! ऐ हमारी सिपर! ~देख; और अपने मम्सूह के चेहरे पर नज़र कर।¹⁰क्यूँकि तेरी बारगाहों में एक दिन हज़ार से बेहतर है। मैं अपने खुदा के घर का दरबान होना, शरारत के खेमों में बसने से ज़्यादा पसंद करूँगा।

¹¹क्यूँकि खुदावन्द खुदा, आफ़ताब और ढाल है; खुदावन्द फ़ज़ल और जलाल बख़्शेगा वह ~रास्तरू से कोई ने'मत बाज़ न रखेगा।¹²ऐ लश्करो के खुदावन्द! मुबारक है वह आदमी जिसका भरोसा तुझ पर है।

Chapter 85

¹~ऐ खुदावन्द तू अपने मुल्क पर मेहरबान रहा है। तू या'कूब को गुलामी से वापस लाया है।²तूने अपने लोगों की बदकारी मु'आफ़ कर दी है; तूने उनके सब गुनाह ढाँक दिए हैं।

³तूने अपना ग़ज़ब बिल्कुल उठा लिया; तू अपने क्रहर-ए-शदीद से बाज़ आया है।⁴ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा! हम को बहाल कर, अपना ग़ज़ब हम से दूर कर।⁵क्या तू हमेशा हम से नाराज़ रहेगा? क्या तू अपने क्रहर को नसल दर नसल जारी रखेगा?

⁶~क्या तू हम को फिर ज़िन्दा न करेगा, ताकि तेरे लोग तुझ में खुश हों?⁷ऐ खुदावन्द! तू अपनी शफ़क़त हमको दिखा, और अपनी नजात हम को बख़्श।

⁸मैं सुनूँगा कि खुदावन्द खुदा क्या फ़रमाता है। क्योंकि वह अपने लोगों और अपने पाक लोगों से सलामती की बातें करेगा; लेकिन वह फिर हिमाक़त की तरफ़ रुजू न करें।⁹~यक़ीनन उसकी नजात उससे डरने वालों के क़रीब है, ~ताकि ज़लाल हमारे मुल्क में बसे।

¹⁰शफ़क़त और रास्ती एक साथ मिल गई हैं, सदाक़त और सलामती ने एक दूसरे का बोसा लिया है।¹¹रास्ती ज़मीन से निकलती है, और सदाक़त आसमान पर से झाँकती हैं।

¹²जो कुछ अच्छा है वही खुदावन्द अता फ़रमाएगा और हमारी ज़मीन अपनी पैदावार देगी।¹³सदाक़त उसके आगे-आगे चलेगी, उसके नक़्श-ए-क़दम को हमारी राह बनाएगी।

Chapter 86

¹ऐ खुदावन्द! अपना कान झुका और मुझे जवाब दे, क्योंकि मैं गरीब और मोहताज हूँ।²मेरी जान की हिफाज़त कर, क्योंकि मैं दीनदार हूँ, ऐ मेरे खुदा! अपने बन्दे को, जिसका भरोसा तुझ पर है, बचा ले।

³या रब्ब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं दिन भर तुझ से फ़रियाद करता हूँ।⁴या रब्ब, अपने बन्दे की जान को खुश कर दे, क्योंकि मैं अपनी जान तेरी तरफ़ उठाता हूँ।

⁵इसलिए कि तू या रब्ब, नेक और मु'आफ़ करने को तैयार है, और अपने सब दु'आ करने वालों पर शफ़क़त में ग़नी है।⁶ऐ खुदावन्द, मेरी दु'आ पर कान लगा, और मेरी मिन्नत की आवाज़ पर तवज्जुह फ़रमा।⁷मैं अपनी मुसीबत के दिन तुझ से दु'आ करूँगा, क्योंकि तू मुझे जवाब देगा।

⁸या रब्ब, मा'मूदों में तुझ सा कोई नहीं, और तेरी कारीगरी बेमिसाल हैं।⁹या रब्ब, सब क़ौमों जिनको तूने बनाया, आकर तेरे सामने सिज्दा करेंगी और तेरे नाम की तम्ज़ीद करेंगी।

¹⁰क्योंकि तू बुजुर्ग है और 'अजीब-ओ-ग़रीब काम करता है, ~तू ही अकेला खुदा है।¹¹ऐ खुदावन्द, मुझ को अपनी राह की ता'लीम दे, मैं तेरी रास्ती में चलूँगा; मेरे दिल को यकसूई बख़्श, ताकि तेरे नाम का ख़ौफ़ मानूँ।¹²या रब्ब! मेरे खुदा, मैं पूरे दिल से तेरी ता'रीफ़ करूँगा; मैं हमेशा तक तेरे नाम की तम्ज़ीद करूँगा।

¹³क्योंकि मुझ पर तेरी बड़ी शफ़क़त है; और तूने मेरी जान को पाताल की तह से निकाला है।¹⁴ऐ खुदा, मगरूर मेरे खिलाफ़ उठे हैं, और टेढ़े लोगों जमा'अत मेरी जान के पीछे पड़ी है, और उन्होंने तुझे अपने सामने नहीं रखखा।

¹⁵लेकिन तू या रब्ब, रहीम-ओ-करीम खुदा है, क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त-ओ-रास्ती में ग़नी।¹⁶मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो और मुझ पर रहम कर; अपने बन्दे को अपनी ताक़त बख़्श, और अपनी लौंडी के बेटे को बचा ले।¹⁷मुझे भलाई का कोई निशान दिखा, ताकि मुझ से 'अदावत रखने वाले इसे देख कर शर्मिन्दा हों क्योंकि तूने ऐ खुदावन्द, मेरी मदद की, और मुझे तसल्ली दी है।

Chapter 87

¹उसकी बुनियाद पाक पहाड़ों में है। ²खुदावन्द सिय्यून के फाटकों को या'कूब के सब घरों से ज़्यादा 'अज़ीज़ रखता है। ³ऐ खुदा के शहर! तेरी बड़ी बड़ी खूबियाँ बयान की जाती हैं।~(सिलाह)

⁴मैं रहब और बाबुल का यूँ ज़िक्र करूँगा, कि वह मेरे जानने वालों में हैं; फ़िलिस्तीन और सूर और कूश को देखो, यह वहाँ पैदा हुआ था।

⁵बल्कि सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, कि फ़लाँ फ़लाँ आदमी उसमें पैदा हुए। "और हक़ता'ला खुद उसको क़याम बख़्शेगा। ⁶~खुदावन्द क्रौमों के शुमार के वक़्त दर्ज करेगा, कि यह शख्स वहाँ पैदा हुआ था।

⁷गाने वाले और नाचने वाले यही कहेंगे कि मेरे सब चश्में तुझ ही में हैं।"

Chapter 88

¹ऐ खुदावन्द, मेरी नजात देने वाले खुदा, मैंने रात दिन तेरे सामने फ़रियाद की है।²मेरी दु'आ तेरे सामने पहुँचे, मेरी फ़रियाद पर कान लगा!

³क्योंकि मेरा दिल दुखों से भरा है, और मेरी जान पाताल के नज़दीक पहुँच गई है।⁴मैं क़ब्र में उतरने वालों के साथ गिना जाता हूँ। मैं उस शख्स की तरह हूँ, जो बिल्कुल बेकस हो।

⁵~जैसे मक्कतूलो की तरह जो क़ब्र में पड़े हैं, मुर्दों के बीच डाल दिया गया हूँ, जिनको तू फिर कभी याद नहीं करता और वह तेरे हाथ से काट डाले गए।⁶तूने मुझे गहराओ में, अंधेरी जगह में, पाताल की तह में रखखा है।

⁷मुझ पर तेरा क्रहर भारी है, तूने अपनी सब मौजों से मुझे दुख दिया है।(सिलाह)

⁸तूने मेरे जान पहचानों को मुझ से दूर कर दिया; तूने मुझे उनके नज़दीक घिनौना बना दिया। मैं बन्द हूँ और निकल नहीं सकता।

⁹~मेरी आँख दुख से धुंधला चली। ऐ खुदावन्द, मैंने हर रोज़ तुझ से दु'आ की है; मैंने अपने हाथ तेरी तरफ़ फैलाए हैं।¹⁰क्या तू मुर्दों को~'अजाइब दिखाएगा? क्या वह जो मर गए हैं उठ कर तेरी ता'रीफ़ करेंगे?(सिलाह)

¹¹क्या तेरी शफ़क़त का ज़िक्र क़ब्र में होगा, या तेरी वफ़ादारी का जहन्नुम में?¹²क्या तेरे~'अजाइब को अंधेरे में पहचानेंगे, और तेरी सदाक़त को फ़रामोशी की सरज़मीन में?

¹³लेकिन ऐ खुदावन्द, मैंने तो तेरी दुहाई दी है; और सुबह को मेरी दु'आ तेरे सामने पहुँचेगी।¹⁴ऐ खुदावन्द, तू क्यों मेरी जान को छोड़ देता है?~तू अपना चेहरा मुझ से क्यों छिपाता है?

¹⁵मैं लड़कपन ही से मुसीबतज़दा और मौत के क़रीब हूँ मैं तेरे डर के मारे बद हवास हो गया।¹⁶तेरा क्रहर-ए-शदीद मुझ पर आ पड़ा: तेरी दहशत ने मेरा काम तमाम कर दिया।

¹⁷उसने दिनभर सैलाब की तरह मेरा घेराव किया; उसने मुझे बिल्कुल घेर लिया।¹⁸तूने दोस्त व अहबाब को मुझ से दूर किया और मेरे जान पहचानों को अंधेरे में डाल ~दिया है।

Chapter 89

¹~मैं हमेशा खुदावन्द की शफ़क़त के हम्द गाऊँगा। मैं नसल दर नसल अपने मुँह से तेरी वफ़ादारी का~'ऐलान करूँगा।²क्योंकि मैंने कहा कि शफ़क़त हमेशा तक बनी रहेगी, तू अपनी वफ़ादारी को आसमान में क़ायम रखेगा।"

³~"मैंने अपने बरगुज़ीदा के साथ~'अहद बाँधा है मैंने अपने बन्दे दाऊद से क़सम खाई है; मैं तेरी नसल को हमेशा के लिए क़ायम करूँगा, और तेरे तख़्त को नसल दर नसल बनाए रखूँगा।" (सिलाह)

⁵ऐ खुदावन्द, आसमान तेरे~'अजाइब की ता'रीफ़ करेगा; ~पाक लोगों के मजमे'~में तेरी वफ़ादारी की ता'रीफ़ होगी।⁶~क्योंकि आसमान पर खुदावन्द का नज़ीर कौन है?~फ़रिश्तों की जमा'त में कौन खुदावन्द की तरह है?

⁷~ऐसा मा'बूद जो पाक लोगो की महफ़िल में बहुत ता'ज़ीम के लायक है, और अपने सब चारों तरफ़ वालों से ज़्यादा बड़ा है।⁸ऐ खुदावन्द, लश्क़रों के खुदा, ऐ याह! तुझ सा ज़बरदस्त कौन है?~तेरी वफ़ादारी तेरे चारों तरफ़ है।

⁹समन्दर के जोश-ओ-ख़रोश पर तू हुक्मरानी करता है; तू उसकी उठती लहरों को थमा देता है।¹⁰तूने रहब को मक्कतूल की तरह टुकड़े टुकड़े किया; तूने अपने क़वी बाज़ू से अपने दुश्मनों को तितर बितर कर दिया।

¹¹आसमान तेरा है, ज़मीन भी तेरी है; ज़हान और उसकी मा'मूरी को तू ही ने क़ायम किया है।¹²उत्तर और दाख़िब का पैदा करने वाला तू ही है; तबूर और हरमून तेरे नाम से ख़ुशी मनाते हैं।

¹³तेरा बाज़ू कुदरत वाला है; तेरा हाथ क़वी और तेरा दहना हाथ बुलंद है।¹⁴सदाक़त और~'अदल तेरे तख़्त की बुनियाद हैं; शफ़क़त और वफ़ादारी तेरे आगे आगे चलती हैं।

¹⁵मुबारक है वह क़ौम, जो ख़ुशी की ललकार को पहचानती है, ~वह ऐ खुदावन्द, जो तेरे चेहरे के नूर में चलते हैं; ¹⁶वह दिनभर तेरे नाम से ख़ुशी मनाते हैं, और तेरी सदाक़त से सरफ़राज़ होते हैं।

¹⁷क्योंकि उनकी ताक़त की शान तू ही है और तेरे करम से हमारा सींग बुलन्द होगा।¹⁸क्योंकि हमारी ढाल खुदावन्द की तरफ़ से है, और हमारा बादशाह इसाईल के कुदूस की तरफ़ से।

¹⁹उस वक़्त तूने ख़्वाब में अपने पाक लोगों से क़लाम किया, और फ़रमाया, "मैंने एक ज़बरदस्त को मददगार बनाया है, ~और क़ौम में से एक को चुन कर सरफ़राज़ किया है।"²⁰मेरा बन्दा दाऊद मुझे मिल गया, अपने पाक तेल से मैंने उसे मसह किया है।²¹मेरा हाथ उसके साथ रहेगा, मेरा बाज़ू उसे तक्क़वियत देगा।

²²दुश्मन उस पर ज़ब्र न करने पाएगा, और शरारत का फ़र्ज़न्द उसे न सताएगा।²³मैं उसके मुख़ालिफ़ों को उसके सामने मग़लूब करूँगा और उससे~'अदावत रखने वालों को मारूँगा।

²⁴लेकिन मेरी वफ़ादारी और शफ़क़त उसके साथ रहेंगी, ~और मेरे नाम से उसका सींग बुलन्द होगा।²⁵मैं उसका हाथ समन्दर तक बढ़ाऊँगा, और उसके दहने हाथ को दरियाओं तक।²⁶वह मुझे पुकार कर कहेगा, 'तू मेराबाप, मेरा खुदा, और मेरी नजात की चट्टान है।'

²⁷और मैं उसको अपना पहलौठा बनाऊँगा और दुनिया का शहंशाह।²⁸मैं अपनी शफ़क़त को उसके लिए हमेशा तक क़ायम रखूँगा और मेरा~'अहद उसके साथ लातब्दील रहेगा।²⁹मैं उसकी नसल को हमेशा तक क़ायम रखूँगा, और उसके तख़्त को जब तक आसमान है।

³⁰अगर उसके फ़र्ज़न्द मेरी शरी'अत को छोड़ दें, और मेरे अहक़ाम पर न चलें, ³¹अगर वह मेरे क़ानून को तोड़ें, और मेरे फ़रमान को न मानें, ³²तो मैं उनको छड़ी से ख़ता की, और कोड़ों से बदकारी की सज़ा दूँगा।

³³लेकिन मैं अपनी शफ़क़त उस पर से हटा न लूँगा, और अपनी वफ़ादारी को बेकार न होने न दूँगा।³⁴मैं अपने~'अहद को न तोड़ूँगा, और अपने मुँह की बात को न बदलूँगा।

³⁵मैं एक बार अपनी पाकी की क़सम खा चुका हूँ मैं दाऊद से झूट न बोलूँगा।³⁶उसकी नसल हमेशा क़ायम रहेगी, और उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने क़ायम रहेगा।³⁷वह हमेशा चाँद की तरह, और आसमान के सच्चे गवाह की तरह क़ायम रहेगा।" (मिलाह)

³⁸लेकिन तूने तो तर्क कर दिया और छोड़ दिया, तू अपने मम्सूह से नाराज़ हुआ है।³⁹तूने अपने खादिम के~'अहद को रद्द कर दिया, तूने उसके ताज को ख़ाक में मिला दिया।⁴⁰तूने उसकी सब बाइों को तोड़ डाला, तूने उसके क़िलों'~को खण्डर बना दिया।

⁴¹सब आने जाने वाले उसे लूटते हैं, वह अपने पड़ोसियों की मलामत का निशाना बन गया।⁴²तूने उसके मुख़ालिफ़ों के दहने हाथ को बुलन्द किया; तूने उसके सब दुश्मनों को ख़ुश किया।⁴³~बल्कि तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है, और लड़ाई में उसके पाँव को जमने नहीं दिया।

⁴⁴तूने उसकी रौनक उड़ा दी, और उसका तख़्त ख़ाक में मिला दिया।⁴⁵तूने उसकी जवानी के दिन घटा दिए, तूने उसे शर्मिन्दा कर दिया है। (सिलाह)

⁴⁶ऐ खुदावन्द, कब तक?~क्या तू हमेशा तक पोशीदा रहेगा?~तेरे क़हर की आग कब तक भड़कती रहेगी?⁴⁷याद रख मेरा क़याम ही क्या है, तूने कैसी बतालत के लिए कुल बनी आदम को पैदा किया।⁴⁸वह कौन सा आदमी है जो ज़िन्दा ही रहेगा और मौत को न देखेगा, और अपनी जान को पाताल के हाथ से बचा लेगा? (सिलाह)

⁴⁹या रब्ब, तेरी वह पहली शफ़क़त क्या हुई, जिसके बारे में तूने दाऊद से अपनी वफ़ादारी की क़सम खाई थी?⁵⁰या रब्ब, अपने बन्दों की रुस्वाई को याद कर; मैं तो सब ज़बरदस्त क़ौमों की ता'नाज़नी, अपने सीने में लिए फिरता हूँ।⁵¹~ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मनों ने कैसे ता'ने मारे, तेरे मम्सूह के क़दम क़दम पर कैसी ता'नाज़नी की है।

⁵²खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक ~मुबारक हो! आमीन सुम्मा आमीन |

Chapter 90

¹या रब्ब, नसल दर नसल, तू ही हमारी पनाहगाह रहा है।²इससे पहले के पहाड़ पैदा हुए, या ज़मीन और दुनिया को तूने बनाया, इब्तिदा से हमेशा तक तू ही खुदा है।

³तू इन्सान को फिर खाक में मिला देता है, और फ़रमाता है, "ऐ बनी आदम, लौट आओ!"⁴क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार बरस ऐसे हैं, जैसे कल का दिन जो गुज़र गया, और जैसे रात का एक पहर।

⁵तू उनको जैसे सैलाब से बहा ले जाता है; वह नींद की एक झपकी की तरह हैं, वह सुबह को उगने वाली घास की तरह हैं।⁶वह सुबह को लहलहाती और बढ़ती है, वह शाम को कटती और सूख जाती है।

⁷क्योंकि हम तेरे क्रहर से फ़ना हो गए; और तेरे ग़ज़ब से परेशान हुए।⁸तूने हमारी बदकिरदारी को अपने सामने रखखा, और हमारे छुपे हुए गुनाहों को अपने चेहरे की रोशनी में।

⁹~क्योंकि हमारे तमाम दिन तेरे क्रहर में गुज़रे, हमारी 'उम्र खयाल की तरह जाती रहती है।'¹⁰हमारी 'उम्र की मी'आद सत्तर बरस है, या कुव्वत हो तो अस्सी बरस; तो भी उनकी रौनक महज़ मशक्कत और ग़म है, ~क्योंकि वह जल्द जाती रहती है और हम उड़ जाते हैं।

¹¹तेरे क्रहर की शिद्दत को कौन जानता है, और तेरे ख़ौफ़ के मुताबिक़ तेरे ग़ज़ब को?¹²हम को अपने दिन गिनना सिखा, ऐसा कि हम अक्लदिल हासिल करें।¹³ऐ खुदावन्द, बाज़ आ! कब तक? और अपने बन्दों पर रहम फ़रमा~!

¹⁴सुबह को अपनी शफ़क़त से हम को आसूदा कर, ताकि हम 'उम्र भर खुश-ओ-ख़ुरम रहें।'¹⁵जितने दिन तूने हम को दुख दिया, और जितने बरस हम मुसीबत में रहे, ~उतनी ही खुशी हम को 'इनायत कर।'¹⁶~तेरा काम तेरे बन्दों पर, और तेरा जलाल उनकी औलाद पर ज़ाहिर हो।

¹⁷और रब्ब हमारे खुदा का करम हम पर साया करे। हमारे हाथों के काम को हमारे लिए क़याम बख़्श हाँ हमारे हाथों के काम को क़याम~बख़्श दे |

Chapter 91

¹जो हक़ता'ला के पर्दे में रहता है, वह क़ादिर-ए-मुतलक़ के साये में सुकूनत करेगा।²~मैं खुदावन्द के बारे में कहूँगा, "वही मेरी पनाह और मेरा गढ़ है; वह मेरा खुदा है, जिस पर मेरा भरोसा है।"

³क्योंकि वह तुझे सय्याद के फंदे से, और मुहलिक वबा से छुड़ाएगा।⁴वह तुझे अपने परो से छिपा लेगा, और तुझे उसके बाजूओं के नीचे पनाह मिलेगी, ~उसकी सच्चाई ढाल और सिपर है।

⁵तू न रात के खौफ़ से डरेगा, न दिन को उड़ने वाले तीर से।⁶न उस वबा से जो अंधेरे में चलती है, न उस हलाकत से जो दोपहर को वीरान करती है।⁷तेरे आसपास एक हज़ार गिर जाएँगे, और तेरे दहने हाथ की तरफ़ दस हज़ार; लेकिन वह तेरे नज़दीक न आएगी।

⁸लेकिन तू अपनी आँखों से निगाह करेगा, और शरीरों के अंजाम को देखेगा।⁹लेकिन तू ऐ खुदावन्द, मेरी पनाह है।तूने हक़ता'ला को अपना घर बना लिया है।

¹⁰तुझ पर कोई आफ़त नहीं आएगी, और कोई वबा तेरे खेमे के नज़दीक न पहुँचेगी।¹¹क्योंकि वह तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, कि तेरी सब राहों में तेरी हिफ़ाज़त करें।

¹²वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे, ताकि ऐसा न हो कि तेरे पाँव को पत्थर से ठेस लगे।¹³तू शेर-ए-बबर और अज़दहा को रौंदेगा, तू जवान शेर और अज़दहा को पामाल करेगा।

¹⁴क्योंकि उसने मुझ से दिल लगाया है, इसलिए मैं उसे छुड़ाऊँगा; ~मैं उसे सरफ़राज़ करूँगा, क्योंकि उसने मेरा नाम पहचाना है।¹⁵~वह मुझे पुकारेगा और मैं उसे जवाब दूँगा, मैं मुसीबत में उसके साथ रहूँगा, मैं उसे छुड़ाऊँगा और 'इज़ज़त बख़्शूँगा।¹⁶मैं उसे 'उम्र की दराज़ी से आसूदा कर दूँगा और अपनी नजात उसे दिखाऊँगा।

Chapter 92

¹क्या ही भला है, खुदावन्द का शुक्र करना, और तेरे नाम की मदहसराई करना; ऐ हक्र ता'ला!²सुबह को तेरी शफ़क़त का इज़हार करना, और रात को तेरी वफ़ादारी का,³दस तार वाले साज़ और बर्बत पर, और सितार पर गूँजती आवाज़ के साथ।

⁴~क्योंकि, ऐ खुदावन्द, तूने मुझे अपने काम से खुश किया; मैं तेरी कारीगरी की वजह से खुशी मनाऊँगा।⁵ऐ खुदावन्द, तेरी कारीगरी कैसी बड़ी है। तेरे खयाल बहुत~'अमीक़ हैं।

⁶हैवान खसलत नहीं जानता और बेवकूफ़ इसको नहीं समझता,⁷जब शरीर घास की तरह उगते हैं, और सब बदकिरदार फूलते फलते हैं, तो यह इसी लिए है कि वह हमेशा के लिए फ़ना हों।

⁸लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हमेशा से हमेशा तक बुलन्द है।⁹क्योंकि देख, ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मन; देख, तेरे दुश्मन हलाक हो जाएँगे; सब बदकिरदार तितर बितर कर दिए जाएँगे।

¹⁰लेकिन तूने मेरे सींग को जंगली साँड के सींग की तरह बलन्द किया है; मुझ पर ताज़ा तेल मला गया है।¹¹मेरी आँख ने मेरे दुश्मनों को देख लिया, मेरे कानों ने मेरे मुखालिफ़ बदकारों का हाल सुन लिया है।

¹²सादिक़ खज़ूर के दरख़्त ~की तरह सरसब्ज़ होगा। वह लुबनान के देवदार की तरह बढ़ेगा।¹³जो खुदावन्द के घर में लगाए गए हैं, वह हमारे खुदा की बारगाहों में सरसब्ज़ होंगे।

¹⁴वह बुढ़ापे में भी कामयाब होंगे, वह तर-ओ-ताज़ा और सरसब्ज़ रहेंगे;¹⁵ताकि वाज़ह करें कि खुदावन्द रास्त है वही मेरी चट्टान है और उसमें न रास्ती नहीं ।

Chapter 93

¹खुदावन्द सलतनत करता है वह शौकत से मुलब्बस है खुदावन्द कुदरत से मुलब्बस है, वह उससे कमर बस्ता है इस लिए जहान क्रायम है और उसे जुम्बिश नहीं।²तेरा तख्त पहले से क्रायम है, तू इब्तिदा से है।

³सैलाबों ने, ऐ खुदावन्द! सैलाबों ने शोर मचा रखखा है, ~सैलाब मौजज़न हैं।⁴बहरों की आवाज़ से, समन्दर की ज़बरदस्त मौजों से भी, ~खुदावन्द बलन्द-ओ-क्रादिर है।

⁵तेरी शहादतें बिल्कुल सच्ची हैं; ऐ खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक के लिए ~पाकीज़गी तेरे घर को ज़ेबा है ।

Chapter 94

¹ऐ खुदावन्द! ऐ इन्तक़ाम लेने वाले खुदा ऐ इन्तक़ाम लेने वाले खुदा! जलवागर हो!²~ऐ जहान का इन्साफ़ करने वाले! उठ; मगरूरों को बदला दे!

³ऐ खुदावन्द, शरीर कब तक; शरीर कब तक खुशी मनाया करेंगे?⁴वह बकवास करते और बड़ा बोल बोलत हैं, सब बदकिरदार लाफ़ज़नी करते हैं।

⁵ऐ खुदावन्द! वह तेरे लोगों को पीसे डालते हैं, और तेरी मीरास को दुख देते हैं।⁶वह बेवा और परदेसी को क़ल्ल करते, और यतीम को मार डालते हैं;⁷और कहते हैं खुदावन्द नहीं देखेगा और या'कूब का खुदा खयाल नहीं करेगा।"

⁸ऐ क्रौम के हैवानो! ~ज़रा खयाल करो; ऐ बेवकूफ़ों! तुम्हें कब ~'अक़ल आएगी?⁹जिसने कान दिया, क्या वह खुद नहीं सुनता? जिसने आँख बनाई, क्या वह देख नहीं सकता?

¹⁰क्या वह जो क्रौमों को तम्बीह करता है, और इन्सान को समझ सिखाता है, सज़ा न देगा?¹¹खुदावन्द इन्सान के खयालों को जानता है, कि वह बेकार हैं।

¹²~ऐ खुदावन्द, मुबारक है वह आदमी जिसे तू तम्बीह करता, ~और अपनी शरी'अत की ता'लीम देता है।¹³~ताकि उसको मुसीबत के दिनों में आराम बख़्शे, जब तक शरीर के लिए गढ़ा न खोदा जाए।

¹⁴क्यूँकि खुदावन्द अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, और वह अपनी मीरास को नहीं छोड़ेगा;¹⁵क्यूँकि~'अदल सदाक़त की तरफ़ रुजू' करेगा, और सब रास्त दिल~उसकी पैरवी करेंगे।¹⁶शरीरों के मुक़ाबले में कौन मेरे लिए ~उठेगा? बदकिरदारों के खिलाफ़ कौन मेरे लिए खड़ा होगा?

¹⁷अगर खुदावन्द मेरा मददगार न होता, तो मेरी जान कब की~'आलम-ए-ख़ामोशी में जा बसी होती।¹⁸जब मैंने कहा, 'मेरा पाँव फिसल चला, "तो ऐ खुदावन्द! ~तेरी शफ़क़त ने मुझे संभाल लिया।¹⁹जब मेरे दिल में फ़िक्रों की कसरत होती है, तो तेरी तसल्ली मेरी जान को खुश करती है।

²⁰क्या शरारत के तख़्त से तुझे कुछ वास्ता होगा, जो क़ानून की आड़ में बदी गढ़ता है?²¹वह सादिक़ की जान लेने को इकट्ठे होते हैं, और बेगुनाह पर क़ल्ल का फ़तवा देते हैं।

²²लेकिन खुदावन्द मेरा ऊँचा बुर्ज, और मेरा खुदा मेरी पनाह की चट्टान ~रहा है।²³वह उनकी बदकारी उन ही पर लाएगा, और उन ही की शरारत में उनको काट डालेगा। खुदावन्द हमारा उनको काट डालेगा।

Chapter 95

¹आओ हम खुदावन्द के सामने नगमासराई करे! अपनी नजात की चट्टान के सामने खुशी से ललकारें।²शुक्रगुजारी करते हुए उसके सामने में हाज़िर हों, मज़मूर गाते हुए उसके आगे खुशी से ललकारें।³क्यूँकि खुदावन्द खुदा-ए-अज़ीम है, और सब इलाहों पर शाह-ए-अज़ीम है।

⁴ज़मीन के गहराव उसके क़ब्ज़े में हैं; पहाड़ों की चोटियाँ भी उसी की हैं।⁵समन्दर उसका है, उसी ने उसको बनाया, और उसी के हाथों ने खुशकी को भी तैयार किया।

⁶आओ हम झुकें और सिज्दा करें, और अपने खालिक़ खुदावन्द के सामने घुटने टेकें!⁷क्यूँकि वह हमारा खुदा है, और हम उसकी चरागाह के लोग, और उसके हाथ की भेड़ें हैं। काश कि आज के दिन तुम उसकी आवाज़ सुनते!

⁸तुम अपने दिल को सख़्त न करो जैसा मरीबा में, जैसा मस्साह के दिन वीरान में किया था,⁹उस वक़्त तुम्हारे बाप-दादा ने मुझे आज़माया, और मेरा इम्तिहान किया और मेरे काम को भी देखा।

¹⁰चालीस बरस तक मैं उस नसल से बेज़ार रहा, और मैंने कहा, कि 'ये वह लोग हैं जिनके दिल आवारा हैं, और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना।'¹¹चुनाँचे ~मैंने अपने ग़ज़ब में क़सम खाई कि यह लोग मेरे आराम में दाख़िल न होंगे |

Chapter 96

¹खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ! ऐ सब अहल-ए-ज़मीन! ~खुदावन्द के सामने गाओ।²खुदावन्द के~सामने~गाओ, उसके नाम को मुबारक कहो; ~रोज़ ब रोज़ उसकी नजात की बशारत दो।

³क्रौमों में उसके जलाल का, सब लोगों में उसके~'अजाइब का बयान करो।⁴क्योंकि खुदावन्द बुजुर्ग और बहुत। सिताइश के लायक है; ~वह सब मा'बूदों से ज़्यादा ता'ज़ीम के लायक है।

⁵इसलिए कि और क्रौमों के सब मा'बूद सिर्फ़ बुत हैं; लेकिन खुदावन्द ने आसमानों को बनाया।⁶अज़मत और जलाल उसके सामने में हैं, कुदरत और जमाल उसके मक़दिस में।

⁷ऐ क्रौमों के क़बीलो! खुदावन्द की, खुदावन्द ही की तम्ज़ीद-ओ-ताज़ीम करो~!⁸खुदावन्द की ऐसी तम्ज़ीद करो जो उसके नाम की शायान है; हदिया लाओ और उसकी बारगाहों में आओ!

⁹पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो; ऐ सब अहल-ए-ज़मीन! उसके सामने काँपते रहो!¹⁰क्रौमों में~'ऐलान करो, "खुदावन्द सल्तनत करता है! ज़हान क़ायम है, और उसे जुम्बिश नहीं; वह रास्ती से कौमों की~'अदालत करेगा।"

¹¹आसमान खुशी मनाए, और ज़मीन खुश हो; समन्दर और उसकी मा'मूरी शोर मचाएँ;¹²मैदान और जो कुछ उसमें है, बाग़-बाग़~हों; तब जंगल के सब दरख़्त खुशी से गाने लगेंगे।¹³खुदावन्द के सामने, क्योंकि वह आ रहा है; वह ज़मीन की 'अदालत करने को रहा है। वह सदाक़त से ज़हान की, और अपनी सच्चाई से क्रौमों की 'अदालत करेगा।

Chapter 97

¹खुदावन्द सल्तनत करता है, ज़मीन खुश हो; बेशुमार जज़ीरे खुशी मनाएँ।²बादल और तारीकी उसके चारों तरफ़ हैं; सदाक़त और अदल उसके तख़्त की बुनियाद हैं।

³आग उसके आगे आगे चलती है, और चारों तरफ़ उसके मुखालिफ़ो को भसम कर देती है।⁴~उसकी बिजलियों ने ज़हान को रोशन कर दिया ज़मीन ने देखा और काँप गई।⁵खुदावन्द के सामने पहाड़ मोम की तरह पिघल गए, या'नी सारी ज़मीन के खुदावन्द के सामने।

⁶~आसमान उसकी सदाक़त ज़ाहिर करता सब क़ौमों ने उसका जलाल देखा है।⁷खुदी हुई मूरतों के सब पूजने वाले, जो बुतों पर फ़ख़्र करते हैं, ~शर्मिन्दा हों, ऐ मा'बूद! सब उसको सिज्दा करो।⁸~ऐ खुदावन्द! सिय्यून ने सुना और खुश हुई और यहूदाह की बेटियाँ तेरे अहक़ाम से खुश हुई।

⁹क्यूँकि ऐ खुदावन्द! तू तमाम ज़मीन पर बुलंद-ओ-बाला है; ~तू सब मा'बूदों से बहुत आला है।¹⁰ऐ खुदावन्द से मुहब्बत रखने वालों, बदी से नफ़रत करो, ~वह अपने पाक लोगों की जानों को महफ़ूज़ रखता है, वह उनको शरीरों के हाथ से छुड़ाता है।¹¹सादिक़ों के लिए नूर बोया गया है, और रास्त दिलों के लिए खुशी।

¹²ऐ~सादिक़ों! खुदावन्द में खुश रहो; उसके पाक नाम का शुक्र करो।

Chapter 98

¹खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ क्योंकि उसने~'अजीब काम किए हैं। उसके दहने हाथ और उसके पाक बाजू ने उसके लिए फ़तह हासिल की है।' खुदावन्द ने अपनी नजात ज़ाहिर की है, "उसने अपनी सदाक़त क़ौमों के सामने ज़ाहिर की है।

³उसने इस्राईल के घराने के हक़ में अपनी शफ़क़त-ओ-वफ़ादारी याद की है, इन्तिहाई ज़मीन के लोगों ने हमारे खुदा की नजात देखी है।⁴ऐ तमाम अहल-ए-ज़मीन! खुदावन्द के सामने खुशी का नारा मारो; ललकारो और खुशी से गाओ और मदहसराई करो |

⁵खुदावन्द की सिताइश सितार पर करो, सितार और सुरीली आवाज़ से।⁶नरसिंगे और करना की आवाज़ से, बादशाह या'नी खुदावन्द के सामने खुशी का नारा मारो।

⁷समन्दर और उसकी मा'मूरी शोर मचाएँ और ज़हान और उसके बाशिंदे।⁸सैलाब तालियाँ बजाएँ; पहाड़ियाँ मिलकर खुशी से गाएँ।⁹~खुदावन्द के सामने, क्योंकि वह ज़मीन की 'अदालत करने आ रहा है। वह सदाक़त से ज़हान की, रास्ती से क़ौमों की 'अदालत करेगा।

Chapter 99

¹खुदावन्द सलतनत करता है, क्रौमें काँपी। वह करूबियों पर बैठा है, ज़मीन लरज़े। ²खुदावन्द सिप्पून में बुजुर्ग है; और वह सब क्रौमों पर बुलंद-ओ-बाला है।
³वह तेरे बुजुर्ग और बड़े नाम की ता'रीफ़ करें वह पाक हैं।

⁴बादशाह की ताक़त इन्साफ़ पसन्द है तू रास्ती को क़ायम करता है~तू ही ने~'अद्ल और सदाक़त को या'कूब, में रायज किया। ⁵तुम खुदावन्द हमारे खुदा की तम्जीद करो, और उसके पाँव की चौकी पर सिज्दा वह पाक है।

⁶उसके काहिनों में से मूसा और हारून ने, और उसका नाम लेनेवालों में से समुएल ने~~खुदावन्द से दु'आ की और उसने उनको जवाब दिया। ⁷उसने बादल के सुतून में से उनसे कलाम किया; उन्होंने उसकी शहादतों को और उस क़ानून को जो उनको दिया था, माना।

⁸ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, तू उनको जवाब देता था; तू वह खुदा है जो उनको मु'आफ़ करता रहा, अगरचे तूने उनके आ'माल का बदला भी दिया। ⁹तुम खुदावन्द हमारे खुदा की तम्जीद करो, और उसके पाक पहाड़ पर सिज्दा करो; क्योंकि खुदावन्द हमारा खुदा कुददूस है।

Chapter 100

¹ऐ अहले ज़मीन, सब खुदावन्द के सामने खुशी का ना'रा मारो!²खुशी से खुदावन्द की 'इबादत करो! गाते हुए उसके सामने हाज़िर हों!

³जान रखों खुदावन्द ही खुदा है! उसी ने हम को बनाया और हम उसी के है; हम उसके लोग और उसकी चरागाह की भेड़े हैं |

⁴शुक्रगुज़ारी करते हुए उसके फाटकों में और हम्द करते हुए उसकी बारागाहों में दाखिल हो; उसका शुक्र करो और उसके नाम को मुबारक कहो!⁵क्योंकि खुदावन्द भला है, उसकी शफ़क़त हमेशा की है, और उसकी वफ़ादारी नसल दर नसल रहती है।

Chapter 101

¹~मैं शफ़क़त और 'अदल का हम्द गाऊँगा; ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मदद सराई करूँगा।

²मैं 'अक्लमंदी से कामिल राह पर चलूँगा, तू मेरे पास कब आएगा?~घर में मेरा चाल चलन सच्चे दिल से होगा।³~मैं किसी ख़बासत को मद-ए-नज़र नहीं रखूँगा; मुझे कज रफ़तारों के काम से नफ़रत है; उसको मुझ से कुछ मतलब न होगा।

⁴~कजदिली मुझ से दूर हो जाएगी; मैं किसी बुराई से आशना न हूँगा।⁵~जो दर पर्दा अपने पड़ोसी की बुराई करे, मैं उसे हलाक कर डालूँगा; मैं बुलन्द नज़र और मगरूर दिल की बर्दाश्त न करूँगा।⁶~मुल्क के ईमानदारों पर मेरी निगाह होगी~ताकि वह मेरे साथ रहें; जो कामिल राह पर चलता है वही मेरी ख़िदमत करेगा।

⁷दगाबाज़ मेरे घर में रहने न पाएगा; दरोगा गो को मेरे सामने क्रयाम न होगा।⁸~मैं हर सुबह मुल्क के सब शरीरों को हलाक किया करूँगा, ताकि खुदावन्द के शहर से बदकारों को काट डालूँ।

Chapter 102

¹ऐ खुदावन्द! मेरी दु'आ सुन और मेरी फ़रियाद तेरे सामने पहुँचे। ²मेरी मुसीबत के दिन मुझ से चेहरा न छिपा, अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जिस दिन मैं फ़रियाद करूँ मुझे जल्द जवाब दे।

³क्योंकि मेरे दिन धुएँ की तरह उड़ जाते हैं, और मेरी हड्डियाँ ईधन की तरह जल गईं। ⁴मेरा दिल घास की तरह झुलस कर सूख गया; क्योंकि मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ।

⁵कराहते कराहते मेरी हड्डियाँ मेरे गोشت से जा लगीं। ⁶मैं जंगली हवासिल की तरह हूँ, मैं वीराने का उल्लू बन गया।

⁷मैं बेख़्वाब और उस गौरे की तरह हो गया हूँ, जो छत पर अकेला हो। ⁸मेरे दुश्मन मुझे दिन भर मलामत करते हैं; मेरे मुखालिफ़ दीवाना होकर मुझ पर ला'नत करते हैं।

⁹क्योंकि मैंने रोटी की तरह राख खाई, और आँसू मिलाकर पानी पिया। ¹⁰यह तेरे ग़ज़ब और क्रहर की वजह से है, क्योंकि तूने मुझे उठाया और फिर पटक दिया।

¹¹मेरे दिन ढलने वाले साये की तरह हैं, और मैं घास की तरह मुरझा गया। ¹²लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हमेशा तक रहेगा; और तेरी यादगार नसल-दर-नसल रहेगी।

¹³तू उठेगा और सिय्यून पर रहम करेगा: क्योंकि उस पर तरस खाने का वक़्त है, हाँ उसका मु'अय्यन वक़्त आ गया है। ¹⁴इसलिए कि तेरे बन्दे उसके पत्थरों को चाहते, और उसकी खाक पर तरस खाते हैं। ¹⁵और क़ौमों को खुदावन्द के नाम का, और ज़मीन के सब बादशाहों को तेरे जलाल का ख़ौफ़ होगा। ¹⁶क्योंकि खुदावन्द ने सिय्यून को बनाया है; वह अपने जलाल में ज़ाहिर हुआ है।

¹⁷उसने बेकसों की दु'आ पर तवज्जुह की, और उनकी दु'आ को हक़ीर न जाना। ¹⁸यह आने वाली नसल के लिए लिखा जाएगा, और एक क़ौम पैदा होगी जो खुदावन्द की सिताइश करेगी।

¹⁹क्योंकि उसने अपने हैकल की बुलन्दी पर से निगाह की, खुदावन्द ने आसमान पर से ज़मीन पर-नज़र की; ²⁰ताकि गुलाम का कराहना सुने, और मरने वालों को छुड़ा ले;

²¹ताकि लोग सिय्यून में खुदावन्द के नाम का इज़हार, और यरूशलीम में उसकी ता'रीफ़ करें, ²²जब खुदावन्द की 'इबादत के लिए, हों।

²³उसने राह में मेरा ज़ोर घटा दिया, उसने मेरी 'उम्र कोताह कर दी। ²⁴मैंने कहा, "ऐ मेरे खुदा, मुझे आधी 'उम्र में न उठा, तेरे बरस नसल दर नसल हैं।

²⁵तूने इब्तिदा से ज़मीन की बुनियाद डाली; आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है। ²⁶वह हलाक हो जाएँगे, लेकिन तू बाक़ी रहेगा; बल्कि वह सब पोशाक की तरह पुराने हो जाएँगे। तू उनको लिबास की तरह बदलेगा, और वह बदल जाएँगे; ²⁷लेकिन तू बदलने वाला नहीं है, और तेरे बरस बेइन्तिहा होंगे।

²⁸तेरे बन्दों के फ़र्ज़न्द बरकरार रहेंगे; और उनकी नसल तेरे सामने क़ायम रहेगी।

Chapter 103

¹ऐ मेरी जान! खुदावन्द को मुबारक कह; और जो कुछ मुझमें है उसके पाक नाम को मुबारक कहें² ऐ मेरी जान! खुदावन्द को मुबारक कह और उसकी किसी ने'मत को फ़रामोश न कर |

³वह तेरी सारी बदकारी को बख़्शता है वह तुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा देता है⁴ वह तेरी जान हलाकत से बचाता है, वह तेरे सर पर शफ़क़त व रहमत का ताज रखता है |⁵ वह तुझे 'उम्र भर अच्छी अच्छी चीज़ों से आसूदा करता है, तू 'उक्राब की तरह नए सिरे नौजवान होता है।

⁶खुदावन्द सब मज़लूमों के लिए सदाक़त और अदल के काम करता है |⁷ उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने काम बनी इस्राईल पर ज़ाहीर किए |⁸ खुदावन्द रहीम व करीम है, क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त में गनी |

⁹वह सदा झिड़कता न रहेगा वह हमेशा ग़ज़बनाक न रहेगा |¹⁰ उस ने हमारे गुनाहों के मुवाफ़िक़ हम से सुलूक नहीं किया और हमारी बदकारियों के मुताबिक़ हमको बदला नहीं दिया |

¹¹क्यूँकि जिस क्रद्र आसमान ज़मीन से बुलन्द, उसी क्रद्र उसकी शफ़क़त उन पर है, जो उससे डरते हैं।¹² जैसे पूरब पच्छिम से दूर है, वैसे ही उसने हमारी ख़ताएँ हम सेदूर कर दीं।¹³ ~जैसे बाप अपने बेटों पर तरस खाता है, वैसे ही खुदावन्द उन पर जो उससे डरते हैं, तरस खाता है।

¹⁴क्यूँकि वह हमारी सरिशत से वाकिफ़ है, उसे याद है कि हम खाक हैं।¹⁵ ~इन्सान की उम्र तो घास की तरह है, वह जंगली फूल की तरह खिलता है,¹⁶ कि हवा उस पर चली और वह नहीं, और उसकी जगह उसे फिर न देखेगी

¹⁷लेकिन खुदावन्द की शफ़क़त उससे डरने वालों पर अज़ल से हमेशा तक, और उसकी सदाक़त नसल-दर-नसल है¹⁸ ~या'नी उन पर जो उसके 'अहद पर क़ायम रहते हैं, और उसके क़वानीन पर 'अमल करनायाद रखते हैं।¹⁹ ~खुदावन्द ने अपना तख़्त आसमान पर क़ायम किया है, और उसकी सल्तनत सब पर मुसल्लत है।

²⁰ऐ खुदावन्द के फ़िरिश्तो, उसको मुबारक कहो, तुम जो ज़ोर में बढ़ कर हो और उसके कलाम की आवाज़ सुन कर उस पर 'अमल करते हो।²¹ ~ऐ खुदावन्द के लश्करो, सब उसको मुबारक कहो! तुम जो उसके खादिम हो और उसकी मज़ी बजा लाते हो।²² ~ऐ खुदावन्द की मखलूक़ात, सब उसको मुबारक कहो! तुम जो उसके तसल्लुत के सब मकामों में ही। ऐ मेरी जान, तू खुदावन्द को मुबारक कह!

Chapter 104

¹~ऐ मेरी जान, तू खुदावन्द को मुबारक कह, ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तू बहुत बुजुर्ग है, तू हश्मत और जलाल से मुलब्स है!²~तू नूर को पोशाक की तरह पहनता है, और आसमान को सायबान की तरह तानता है।³~तू अपने बालाखानों के शहतीर पानी पर टिकाता है; तू बादलों को अपना रथ बनाता है; तू हवा के बाजुओं पर सैर करता है;

⁴~तू अपने फ़रिश्तों को हवाएँ और अपने खादिमों की आग के शो'ले बनाता है।⁵~तूने ज़मीन को उसकी बुनियाद पर क़ायम किया, ताकि वह कभी जुम्बिश न खाए।

⁶~तूने उसको समन्दर से छिपाया जैसे लिबास से; पानी पहाड़ों से भी बुलन्द था।⁷वह तेरी झिड़की से भागा वह तेरी गरज की आवाज़ से जल्दी-जल्दी चला।

⁸उस जगह पहुँच गया जो तूने उसके लिए तैयार की थी; पहाड़ उभर आए, वादियाँ बैठ गईं।⁹तूने हद बाँध दी ताकि वह आगे न बढ़ सके, और फिर लौटकर ज़मीन को न छिपाए।

¹⁰~वह वादियों में चश्मे जारी करता है, जो पहाड़ों में बहते हैं।¹¹सब जंगली जानवर उनसे पीते हैं; गोरखर अपनी प्यास बुझाते हैं।¹²उनके आसपास हवा के परिन्दे बसेरा करते, और डालियों में चहचहाते हैं।

¹³वह अपने बालाखानों से पहाड़ों को सेराब करता है। तेरी कारीगरी के फल से ज़मीन आसूदा है।¹⁴~वह चौपायों के लिए घास उगाता है, और इन्सान के काम के लिए सब्ज़ा, ताकि ज़मीन से खुराक पैदा करे।¹⁵और मय जो इन्सान के दिल को और रोगन जो उसके चेहरे को चमकाता है, और रोटी जो आदमी के दिल को तवानाई बख़्शाती है।

¹⁶~खुदावन्द के दरख्त शादाब रहते हैं, या'नी लुबनान के देवदार जो उसने लगाए।¹⁷~जहाँ परिन्दे अपने घोंसले बनाते हैं; सनोबर के दरख्तों में लकलक का बसेरा है।¹⁸ऊँचे पहाड़ जंगली बकरों के लिए हैं; चट्टानें साफ़ानों की पनाह की जगह हैं।

¹⁹उसने चाँद को ज़मानों के फ़र्क़ के लिए मुकर्रर किया; आफ़ताब अपने गुरुब की जगह जानता है।²⁰तू अँधेरा कर देता है तो रात हो जाती है, जिसमें सब जंगली जानवर निकल आते हैं।

²¹~जवान शेर अपने शिकार की तलाश में गरजते हैं, और खुदा से अपनी ख़ूराक माँगते हैं।²²आफ़ताब निकलते ही वह चल देते हैं, और जाकर अपनी माँदों में पड़े रहते हैं।

²³इन्सान अपने काम के लिए, और शाम तक अपनी मेहनत करने के लिए निकलता है।²⁴~ऐ खुदावन्द, तेरी कारीगरी ~कैसी बेशुमार हैं। तूने यह सब कुछ हिकमत से बनाया; ज़मीन तेरी मखलूक़ात से मा'मूर है।

²⁵देखो, यह बड़ा और चौड़ा समन्दर, जिसमें बेशुमार रेंगने वाले जानदार हैं; या'नी छोटे और बड़े जानवर।²⁶~जहाज़ इसी में चलते हैं; इसी में लिवियातान है, जिसे तूने इसमें खेलने को पैदा किया।

²⁷इन सबको तेरी ही उम्मीद है, ताकि तू उनको वक़्त पर ख़ूराक दे।²⁸जो कुछ तू देता है, यह ले लेते हैं; तू अपनी मुट्ठी खोलता है और यह अच्छी चीज़ों से सेर होते हैं

²⁹~तू अपना चेहरा छिपा लेता है, और यह परेशान हो जाते हैं; तू इनका दम रोक लेता है, और यह मर जाते हैं, और फिर मिट्टी में मिल जाते हैं।³⁰तू अपनी रूह भेजता है, और यह पैदा होते हैं; और तू ~इस ज़मीन को नया बना देता है।

³¹~खुदावन्द का जलाल हमेशा तक रहे, खुदावन्द अपनी कारीगरी से खुश हो।³²वह ज़मीन पर निगाह करता है, और वह काँप जाती है; वह पहाड़ों को छूता है, और उनसे से धुआँ निकलने लगता है।

³³~मैं 'उम्र भर खुदावन्द की ता'रीफ़ गाऊँगा; जब तक मेरा वुजूद है मैं अपने खुदा की मदहसराई करूँगा।³⁴~मेरा ध्यान उसे पसन्द आए, मैं खुदावन्द में खुश रहूँगा।

³⁵गुनहगार ज़मीन पर से फ़ना हो जाएँ, और शरीर बाक़ी न रहें! ऐ मेरी जान, खुदावन्द को मुबारक कह! खुदावन्द की हम्द करो!

Chapter 105

¹~खुदावन्द का शुक्र करो, उसके नाम से दु'आ करो; क़ौमों में उसके कामों का बयान करो!²~उसकी ता'रीफ़ में गाओ, उसकी मदहसराई करो; उसके तमाम 'अजाइब का चर्चा करो!'~उसके पाक नाम पर फ़ख़्र करो, खुदावन्द के तालिबों के दिल खुश हों!

⁴~खुदावन्द और उसकी ताक़त के तालिब हो, हमेशा उसके दीदार के तालिब रहो!⁵~उन 'अजीब कामों को जो उसने किए, उसके 'अजाइब और मुँह के अहकाम को याद रखो!⁶~ऐ उसके बन्दे इब्राहीम की नसल! ऐ बनी या'कूब उसके बरगुज़ीदो!

⁷~वही खुदावन्द हमारा खुदा है; उसके अहकाम तमाम ज़मीन पर हैं।⁸~उसने अपने 'अहद को हमेशा याद रखखा, या'नी उस कलाम को जो उसने हज़ार नसलों के लिए फ़रमाया;

⁹उसी 'अहद को जो उसने इब्राहीम से बाँधा, और उस क़सम को जो उसने इस्हाक़ से खाई,¹⁰ और उसी को उसने या'कूब के लिए क़ानून, या'नी इस्राईल के लिए हमेशा का 'अहद ठहराया,¹¹ और कहा, "मैं कना'न का मुल्क तुझे दूँगा, कि तुम्हारा मौरूसी हिस्सा हो।"

¹²~उस वक़्त वह शुमार में थोड़े थे, बल्कि बहुत थोड़े और उस मुल्क में मुसाफ़िर थे।¹³ और वह एक क़ौम से दूसरी क़ौम में, और एक सल्तनत से दूसरी सल्तनत में फिरते रहे।

¹⁴~उसने किसी आदमी को उन पर जुल्म न करने दिया, बल्कि उनकी खातिर उसने बादशाहों को धमकाया,¹⁵ और कहा, "मेरे मम्सूहों को हाथ न लगाओ, और मेरे नबियों को कोई नुक़सान न पहुँचाओ! "

¹⁶फिर उसने फ़रमाया, कि उस मुल्क पर क़हत नाज़िल हो और उसने रोटी का सहारा बिल्कुल तोड़ दिया।¹⁷ उसने उनसे पहले एक आदमी को भेजा, यूसुफ़ गुलामी में बेचा गया।

¹⁸उन्होंने उसके पाँव को बेड़ियों से दुख दिया; वह लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ा रहा;¹⁹~जब तक के उसका बात पूरा न हुआ, खुदावन्द का कलाम उसे आजमाता रहा ।

²⁰~बादशाह ने हुक्म भेज कर उसे छुड़ाया, हाँ क़ौमों के फ़रमान रवा ने उसे आज़ाद किया।²¹ उसने उसको अपने घर का मुख्तार और अपनी सारी मिलिकयत पर हाकिम बनाया,²²~ताकि उसके हाकिमों को जब चाहे कैद करे, और उसके बुजुर्गों को अक्ल सिखाए।²³~इस्राईल भी मिस्र में आया, और या'कूब हाम की सरज़मीन में मुसाफ़िर रहा।

²⁴और खुदा ने अपने लोगों को खूब बढ़ाया, और उनको उनके मुखालिफ़ों से ज़्यादा मज़बूत किया।²⁵ उसने उनके दिल को नाफ़रमान किया, ताकि उसकी क़ौम से 'अदावत रखें, और उसके बन्दों से दगाबाजी करें।²⁶~उसने अपने बन्दे मूसा को, और अपने बरगुज़ीदा हारून को भेजा।²⁷~उसने उनके बीच मु'अजिज़ात, और हाम की सरज़मीन में 'अजाइब दिखाए।

²⁸उसने तारीकी भेजकर अंधेरा कर दिया; और उन्होंने उसकी बातों से सरकशी न की।²⁹ उसने उनकी नदियों को लहू बना दिया, और उनकी मछलियाँ मार डालीं।

³⁰~उनके मुल्क और बादशाहों के बालाख़ानों में, मेंढक ही मेंढक भर गए।

³¹उसने हुक्म दिया, और मच्छरों के ग़ोल आए, और उनकी सब हदों में जूएँ आ गईं।³² उसने उन पर मेंह की जगह ओले बरसाए, और उनके मुल्क पर दहकती आग नाज़िल की।³³~उसने उनके अँगूर और अंजीर के दरख़तों को भी बर्बाद कर डाला, और उनकी हद के पेड़ तोड़ डाले।

³⁴उसने हुक्म दिया तो बेशुमार टिट्टियाँ और कीड़े आ गए,³⁵ और उनके मुल्क की तमाम चीज़ें चट कर गए, और उनकी ज़मीन की पैदावार खा गए।³⁶~उसने उनके मुल्क के सब पहलौठों को भी मार डाला, जो उनकी पूरी ताक़त के पहले फल थे।

³⁷और इस्राईल को चाँदी और सोने के साथ निकाल लाया, और उसके क़बीलों में एक भी कमज़ोर आदमी न था।³⁸~उनके चले जाने से मिस्र खुश हो गया, क्योंकि उनका ख़ौफ़ मिस्रियों पर छा गया था।³⁹ उसने बादल को सायबान होने के लिए फैला दिया, और रात को रोशनी के लिए आग दी।

⁴⁰~उनके माँगने पर उसने बटेरें भेजीं, और उनको आसमानी रोटी से सेर किया।⁴¹ उसने चट्टान को चीरा, और पानी फूट निकला: और खुशक ज़मीन पर नदी की तरह बहने लगा।⁴²~क्योंकि उसने अपने पाक क़ौल को, और अपने बन्दे इब्राहीम को याद किया।

⁴³और वह अपनी क़ौम को खुशी के साथ, और अपने बरगुज़ीदों को हम्द गाते हुए निकाल लाया।⁴⁴~और उसने उनको क़ौमों के मुल्क दिए, और उन्होंने उम्मतों की मेहनत के फल पर कब्ज़ा किया।⁴⁵~ताकि वह उसके क़ानून पर चलें, और उसकी शरी'अत को मानें। खुदावन्द की हम्द करो!

Chapter 106

¹खुदावन्द की हम्द करो, खुदावन्द का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!²कौन खुदावन्द की कुदरत के कामों का बयान कर सकता है, या उसकी पूरी सिताइश सुना सकता है?

³~मुबारक हैं वह जो 'अदल करते हैं, और वह जो हर वक़्त सदाक़त के~काम करता है।⁴ऐ खुदावन्द, उस करम से जो तू अपने लोगों पर करता है मुझे याद कर, अपनी नजात मुझे इनायत फ़रमा,⁵ ताकि मैं तेरे बरगुज़ीदों की इक़बालमंदी देखें और तेरी क़ौम की खुशी में खुश रहूँ। और तेरी मीरास के लोगों के साथ फ़ख़्र करूँ ।

⁶हम ने और हमारे बाप दादा ने गुनाह किया; हम ने बदकारी की, हम ने शरारत के काम किए!⁷हमारे बाप-दादा मिस्र में तेरे 'अजाइब न समझे; उन्होंने तेरी शफ़क़त की कसरत को याद न किया; बल्कि समन्दर पर या'नी बहर-ए-कुलजुम पर बागी हुए।

⁸तोभी उसने उनको अपने नाम की खातिर बचाया, ताकि अपनी कुदरत ज़ाहिर करे⁹उसने बहर-ए-कुलजुम को डौटा और वह सूख गया। वह उनकी गहराव में से ऐसे निकाल ले गया जैसे वीरान में से।

¹⁰~और उसने उनको 'अदावत रखने वाले के हाथ से बचाया, और दुश्मन के हाथ से छुड़ाया।¹¹समन्दर ने उनके मुखालिफ़ों को छिपा लिया: उनमें से एक भी न बचा।¹²~तब उन्होंने उसके क़ौल का यक़ीन किया; और उसकी मददसराई करने लगे।

¹³~फिर वह जल्द उसके कामों को भूल गए, और उसकी मश्वरत का इन्तिज़ार न किया।¹⁴~बल्कि वीरान में बड़ी हिर्स की, और सेहरा में खुदा को आजमाया।

¹⁵~फिर उसने उनकी मुराद तो पूरी कर दी, लेकिन उनकी जान को सुखा दिया।

¹⁶~उन्होंने खेमागाह में मूसा पर, और खुदावन्द के पाक मर्द हारून पर हसद किया।¹⁷~फिर ज़मीन फटी और दातन को निगल गई, और अबिराम की जमा'अत को खा गई,¹⁸ और उनके जत्थे में आग भड़क उठी, और शो'लों ने शरीरों को भसम कर दिया।

¹⁹उन्होंने होरिब में एक बछड़ा बनाया, और ढाली हुई मूरत को सिज्दा किया।²⁰यूँ उन्होंने खुदा के जलाल को, घास खाने वाले बैल की शक्ल से बदल दिया।²¹वह अपने मुनज्जी खुदा को भूल गए, जिसने मिस्र में बड़े बड़े काम किए,

²²और हाम की सरज़मीन में 'अजाइब, और बहर-ए-कुलजुम पर दहशत अंगेज़ काम किए।²³इसलिए उसने फ़रमाया, मैं उनको हलाक कर डालता, अगर मेरा बरगुज़ीदा मूसा मेरे सामने बीच में न आता कि मेरे क़हर को टाल दे, ऐसा न हो कि मैं उनको हलाक करूँ।

²⁴और उन्होंने उस सुहाने मुल्क को हक़ीर जाना, और उसके क़ौल का यक़ीन न किया।²⁵~बल्कि वह अपने डेरों में बड़बड़ाए, और खुदावन्द की बात न मानी।

²⁶~तब उसने उनके खिलाफ़ क़सम खाई कि मैं उनको वीरान में पस्त करूँगा,²⁷ और उनकी नसल की क़ौमों के बीच और उनको मुल्क मुल्क में तितर बितर करूँगा।

²⁸वह बा'ल फ़गूर को पूजने लगे, और बुतों की कुर्बानियाँ खाने लगे।²⁹यूँ उन्होंने अपने आ'माल से उसको ना खुश किया, और वबा उनमें फूट निकली।

³⁰तब फ़ीन्हास उठा और बीच में आया, और वबा रुक गई।³¹और यह काम उसके हक़ में नसल दर नसल, हमेशा के लिए रास्तबाज़ी गिना गया।

³²~उन्होंने उसकी मरीबा के चश्मे पर भी नाख़ुश किया, और उनकी खातिर मूसा को नुक़सान पहुँचा;³³~इसलिए कि उन्होंने उसकी रूह से सरकशी की, और मूसा बे सोचे बोल उठा।³⁴उन्होंने उन क़ौमों को हलाक न किया, जैसा खुदावन्द ने उनको हुक्म दिया था,³⁵~बल्कि उन क़ौमों के साथ मिल गए, और उनके से काम सीख गए,³⁶ और उनके बुतों की परस्तिश करने लगे, जो उनके लिए फ़ंदा बन गए।

³⁷बल्कि उन्होंने अपने बेटे बेटियों को, शयातीन के लिए कुर्बान किया:³⁸~और मासूमों का या'नी अपने बेटे बेटियों का खून बहाया, . जिनको उन्होंने कना'न के बुतों के लिए कुर्बान कर दिया: और मुल्क खून से नापाक हो गया।³⁹~यूँ वह अपने ही कामों से आलूदा हो गए, और अपने फ़े'लों से बेवफ़ा बने।

⁴⁰~इसलिए खुदावन्द का क़हर अपने लोगों पर भड़का, और उसे अपनी मीरास से नफ़रत हो गई;⁴¹~और उसने उनकी क़ौमों के क़ब्ज़े में कर दिया, और उनसे 'अदावत रखने वाले उन पर हुक्मरान हो गए।

⁴²उनके दुश्मनों ने उन पर जुल्म किया, और वह उनके महकूम हो गए।⁴³~उसने तो बारहा उनको छुड़ाया, लेकिन उनका मश्वरा बगावत वाला ही रहा और वह अपनी बदकारी के वजह से पस्त हो गए।

⁴⁴तोभी जब उसने उनकी फ़रियाद सुनी, तो उनके दुख पर नज़र की।⁴⁵~और उसने उनके हक़ में अपने 'अहद को याद किया, और अपनी शफ़क़त की कसरत के मुताबिक़ तरस खाया।⁴⁶~उसने उनकी गुलाम करने वालों के दिलमें उनके लिए रहम डाला।

⁴⁷~ऐ खुदावन्द, हमारे खुदा! हम को बचा ले, और हम को क़ौमों में से इक़ट्ठा कर ले, ताकि हम तेरे पाक नाम का शुक्र करें, और ललकारते हुए तेरी सिताइश करें।⁴⁸खुदावन्द इस्राईल का खुदा, इब्तिदा से हमेशा तक मुबारक हो! खुदावन्द की हम्द करो*।

Chapter 107

¹खुदा का शुक्र ~करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी शफ़क़त हमेशा की है।²खुदावन्द के छुड़ाए हुए यही कहें, जिनको फ़िदिया देकर मुख़ालिफ़ के हाथ से छुड़ा लिया,³ और उनको मुल्क-मुल्क से जमा' किया; पूरब से और पच्छिम से, उत्तर से और दक्खिन से।

⁴~वह वीरान में सेहरा के रास्ते पर भटकते फिरे; उनको बसने के लिए कोई शहर न मिला।⁵~वह भूके और प्यासे थे, और उनका दिल बैठा जाता था।⁶तब अपनी मुसीबत में उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की, और उसने उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शी।⁷वह उनको सीधी राह से ले गया, ताकि बसने के लिए किसी शहर में जा पहुँचें।

⁸~काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजाइब की खातिर उसकी सिताइश करते।⁹क्योंकि वह तरसती जान को सेर करता है, और भूकी जान को ने 'मतों से मालामाल करता है।¹⁰~जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे, मुसीबत और लोहे से जकड़े हुए थे;

¹¹चूँकि उन्होंने खुदा के कलाम से सरकशी की और हक़ ता'ला की मश्वरत को हक़ीर जाना।¹²इसलिए उसने उनका दिल मशक्क़त से'आजिज़ कर दिया; वह गिर पड़े और कोई मददगार न था।¹³तब अपनी मुसीबत में उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की, और उसने उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शी।

¹⁴वह उनको अंधेरे और मौत के साये से निकाल लाया, और उनके बंधन तोड़ डाले।¹⁵काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजाइब की खातिर उसकी सिताइश करते।¹⁶~क्योंकि उसने पीतल के फाटक तोड़ दिए, और लोहे के बेण्डों को काट डाला।

¹⁷बेवकूफ़ अपनी ख़ताओं की वजह से, और अपनी बदकारी के ज़रिए' मुसीबत में पड़ते हैं।¹⁸उनके जी को हर तरह के खाने से नफ़रत हो जाती है, और वह मौत के फाटकों के नज़दीक पहुँच जाते हैं।¹⁹तब वह अपनी मुसीबत में खुदावन्द से फ़रियाद करते हैं और वह उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शता है।

²⁰~वह अपना कलाम नाज़िल फ़रमा कर उनको शिफ़ा देता है, और उनकी उनकी हलाक़त से रिहाई बख़्शता है।²¹काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजाइब की खातिर उसकी सिताइश करते।²²~वह शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ पेश करें, और गाते हुए उसके कामों को बयान करें।

²³~जो लोग जहाज़ों में बहर पर जाते हैं, और समन्दर पर कारोबार में लगे रहते हैं;²⁴~वह समन्दर में खुदावन्द के कामों को, और उसके 'अजाइब को देखते हैं।

²⁵~क्योंकि वह हुक्म देकर तुफ़ानी हवा चलाता जो उसमें लहरें उठाती है।²⁶~वह आसमान तक चढ़ते और गहराओ ~में उतरते हैं; परेशानी से उनका दिल पानी पानी हो जाता है;²⁷~वह झूमते और मतवाले की तरह लड़खड़ाते, और बदहवास हो जाते हैं।

²⁸~तब वह अपनी मुसीबत में खुदावन्द से फ़रियाद करते हैं और वह उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शता है।²⁹वह आँधी को थमा देता है, और लहरें ख़त्म हो जाती हैं।³⁰~तब वह उसके थम जाने से खुश होते हैं, यूँ वह उनको बन्दरगाह-ए-मक्रसूद तक पहुँचा देता है।

³¹काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजाइब की खातिर उसकी सिताइश करते।³²वह लोगों के मजमे' में उसकी बड़ाई करें, और बुजुर्गों की मजलिस में उसकी हम्द।

³³~वह दरियाओं को वीरान बना देता है, और पानी के चश्मों को खुश्क ज़मीन।³⁴वह ज़रखेज़ ज़मीन की सैहरा-ए-शोर कर देता है, इसलिए कि उसके बाशिंदे शरीर हैं।³⁵वह वीरान की झील बना देता है, और खुश्क ज़मीन को पानी के चश्मे।

³⁶वहाँ वह भूकों को बसाता है, ताकि बसने के लिए शहर तैयार करें;³⁷~और खेत बोएँ, और ताकिस्तान लगाएँ, और पैदावार हासिल करें।³⁸वह उनको बरकत देता है, और वह बहुत बढ़ते हैं, और वह उनके चौपायों को कम नहीं होने देता।

³⁹फिर जुल्म-ओ-तकलीफ़ और ग़म के मारे, वह घट जाते और पस्त हो जाते हैं,⁴⁰वह उमरा पर ज़िल्लत उंडेल देता है, और उनको बेराह वीराने में भटकाता है।

⁴¹तोभी वह मोहताज को मुसीबत से निकालकर सरफ़राज़ करता है, और उसके खानदान को रेवड़ की तरह बढ़ाता है।⁴²रास्तबाज़ यह देखकर खुश होंगे; और सब बदकारों का मुँह बन्द हो जाएगा।⁴³अक्लमंद इन बातों पर तवज्जुह करेगा, और वह खुदावन्द की शफ़क़त पर गौर करेंगे।

Chapter 108

¹ऐ खुदा, मेरा दिल कायम है; मैं गाऊँगा और दिल से मदहसराई करूँगा।²~ऐ बरबत और सितार जागो! मैं खुद भी सुबह सवेरे जाग उठूँगा।

³~ऐ खुदावन्द, मैं लोगों में तेरा शुक्र करूँगा, मैं उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा।⁴क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से बुलन्द है, और तेरी सच्चाई आसमानों के बराबर है।

⁵~ऐ खुदा, तू आसमानों पर सरफ़राज़ हो! और तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो⁶~~अपने दहने हाथ से बचा और हमें जवाब दे, ताकि तेरे महबूब बचाए जाएँ।

⁷~खुदा ने अपनी पाकिज़गी में यह फ़रमाया है" मैं खुशी करूँगा, मैं सिक्म को तब्रसीम करूँगा और सुक्कात की वादी को बाहुँगा।⁸~जिल'आद मेरा है, मनस्सी मेरा है; इफ़ाईम मेरे सिर का खूद है; यहूदाह मेरा 'असा है।

⁹~मोआब मेरी चिलपची है, अदोम पर मैं जूता फेकूँगा, मैं फ़िलिस्तीन पर ललकाऊँगा।"¹⁰~मुझे उस फ़सीलदार शहर में कौन पहुँचाएगा? कौन मुझे अदोम तक ले गया है?

¹¹~ऐ खुदा, क्या तूने हमें रद्द नहीं कर दिया? ऐ खुदा, तू हमारे लश्क़रों के साथ नहीं जाता।¹²~मुख़ालिफ़ के मुकाबिले में हमारी मदद कर, क्योंकि इन्सानी मदद 'बेकार है।¹³खुदा की बदौलत हम दिलावरी करेगी; क्योंकि वही हमारे मुख़ालिफ़ों को पामाल करेगा।

Chapter 109

¹ऐ खुदा मेरे महमूद खामोश न-रह!²क्योंकि शरीरों और दगाबाजों ने मेरे खिलाफ़ मुँह खोला है, उन्होंने झूठी ज़बान से मुझ से बातें की हैं।³उन्होंने 'अदावत की बातों से मुझे घेर-लिया, और बे वजह मुझ से लड़े हैं।

⁴वह मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे मुखालिफ़-हैं, लेकिन मैं तो बस दु'आ करता हूँ।⁵उन्होंने नेकी के बदले मुझ से बदी की है, और मेरी मुहब्बत के बदले 'अदावत।

⁶तू किसी शरीर आदमी को उस पर मुकर्रर कर दे और कोई मुखालिफ़ उनके दहने हाथ खड़ा रहे⁷~जब उसकी 'अदालत हो तो वह मुजरिम ठहरे, और उसकी दु'आ भी गुनाह गिनी जाए!

⁸~उसकी 'उम्र कोताह हो जाए, और उसका मन्सब कोई दूसरा ले ले!⁹~उसके बच्चे यतीम हो जाएँ, और उसकी बीवी बेवा हो जाए!¹⁰~उसके बच्चे आवारा होकर भीक माँगे; उनको अपने वीरान मकामों से दूर जाकर टुकड़े माँगना पड़ें!

¹¹~क़र्ज़ के तलबगार उसका सब कुछ छीन ले, और परदेसी उसकी कमाई लूट लें।¹²कोई न हो जो उस पर शफ़क़त करे, न कोई उसके यतीम बच्चों पर तरस खाए!¹³~उसकी नसल कट जाए, और दूसरी नसल में उनका नाम मिटा दिया जाए!

¹⁴उसके बाप-दादा की बदी खुदावन्द के सामने याद रहे, और उसकी माँ का गुनाह मिटाया न जाए!¹⁵~वह बराबर खुदावन्द के सामने रहें, ताकि वह ज़मीन पर से उनका ज़िक्र मिटा दे!¹⁶इसलिए कि उसने रहम करना याद न रखखा, लेकिन ग़रीब और मुहताज और शिकस्तादिल को सताया, ताकि उनको मार डाले।

¹⁷बल्कि लानत करना उसे पसंद था, इसलिए वही उस पर आ पड़ी; और दु'आ देना उसे पसन्द न था, इसलिए वह उससे दूर रही¹⁸~उसने लानत को अपनी पोशाक की तरह पहना, और वह पानी की तरह उसके बातिन में, और तेल की तरह उसकी हड़्डियों में समा गई।

¹⁹~वह उसके लिए उस पोशाक की तरह हो जिसे वह पहनता है, और उस पटके की जगह, जिससे वह अपनी कमर कसे रहता है।²⁰~खुदावन्द की तरफ़ से मेरे मुखालिफ़ों का, और मेरी जान को बुरा कहने वालों का यही बदला है!

²¹लेकिन ऐ मालिक खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मुझ पर एहसान कर; मुझे छोड़ा क्योंकि तेरी शफ़क़त खूब है!²²~इसलिए कि मैं ग़रीब और मुहताज हूँ, और मेरा दिल मेरे पहलू में ज़ख्मी है।²³~मैं ढलते साये की तरह जाता रहा; मैंटिड्डी की तरह उड़ा दिया गया।

²⁴फ़ाक्रा करते करते मेरे घुटने कमज़ोर हो गए, और चिकनाई की कमी से मेरा जिस्म सूख गया।²⁵~मैं उनकी मलामत का निशाना बन गया हूँ जब वह मुझे देखते हैं तो सिर हिलाते हैं।

²⁶ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझे बचा ले।²⁷ताकि वह जान लें कि इसमें तेरा हाथ है, और तू ही ने ऐ खुदावन्द, यह किया है!

²⁸~वह ला'नत करते रहें, लेकिन तू बरकत दे! वह जब उठेंगे तो शर्मिन्दा होंगे, लेकिन तेरा बन्दा खुश होगा!²⁹~मेरे मुखालिफ़ ज़िल्लत से मुलब्बस हो जाएँऔर अपनी ही शर्मिन्दगी की चादर की तरह ओढ़ लें।

³⁰मैं अपने मुँह से खुदावन्द का बड़ा शुक्र करूँगा, बल्कि बड़ी भीड़ में उसकी हम्द करूँगा।³¹~क्योंकि वह मोहताज के दहने हाथ खड़ा होगा, ताकि उसकी जान पर फ़तवा देने वालों से उसे रिहाई दे।

Chapter 110

¹यहोवा ने मेरे खुदावन्द से कहा, जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव की चौकी न कर दूँ।"

²खुदावन्द तेरे ज़ोर का 'असा सिय्यून से भेजेगा। तू अपने दुश्मनों में हुक्मरानी कर।'³~लश्करकशी के दिन तेरे लोग खुशी से अपने आप को पेश करते हैं; तेरे जवान पाक आराइश में हैं, और सुबह के बत्न से शबनम की तरह।

⁴~खुदावन्द ने क्रसम खाई है और फिरेगा नहीं, "तू मलिक-ए-सिद्क के तौर पर हमेशा तक काहिन है।"

⁵खुदावन्द तेरे दहने हाथ पर अपने कहर के दिन बादशाहों को छेद डालेगा।⁶वह क्रौमों में 'अदालत करेगा, वह लाशों के ढेर लगा देगा; और बहुत से मुल्कों में सिरों को कुचलेगा।

⁷वह राह में नदी का पानी पीएगा; इसलिए वह सिर को बुलन्द करेगा

Chapter 111

¹खुदावन्द की हम्द करो! मैं रास्तबाज़ों की मजलिस में और जमा'अत में, अपने सारे दिल से खुदावन्द का शुक्र करूँगा।²~खुदावन्द के काम 'अज़ीम हैं, जो उनमें मसरूर हैं उनकी तलाश। मैं रहते हूँ।³~उसके काम जलाली और पुर हश्मत हैं, और उसकी सदाकत हमेशा तक क़ायम है।

⁴~उसने अपने 'अजाइब की यादगार क़ायम की है; खुदावन्द रहीम-ओ-करीम है।⁵~वह उनको जो उससे डरते हैं खूराक देता है; वह अपने 'अहद को हमेशा याद रखेगा।⁶उसने कौमों की मीरास अपने लोगों को देकर, अपने कामों का ज़ोर उनकी दिखाया।

⁷उसके हाथों के काम बरहक़ और इन्साफ़ भरे हैं; उसके तमाम क़वानीन रास्त है, वह हमेशा से हमेशा तक क़ायम रहेंगे, वह सच्चाई और रास्ती से बनाए गए हैं।

⁹~उसने अपने लोगों के लिए फ़िदिया दिया; उसने अपना 'अहद हमेशा के लिए ठहराया है। उसका नाम पाक और बड़ा है।

¹⁰~खुदावन्द का ख़ौफ़ समझ ~का शुरू है; उसके मुताबिक 'अमल करने वाले अक्लमंद हैं। उसकी सिताइश हमेशा तक क़ायम है।

Chapter 112

¹खुदावन्द की हम्द करो! मुबारक है वह आदमी जो खुदावन्द से डरता है, और उसके हुक्मों में खूब मसरूर रहता है!²उसकी नसल ज़मीन पर ताक़तवर होगी; रास्तबाज़ों की औलाद मुबारक होगी।

³माल-ओ-दौलत उसके घर में है; और उसकी सदाकत हमेशा तक क़ायम है।⁴रास्तबाज़ों के लिए तारीकी में नूर चमकता है; वह रहीम-ओ-करीम और सादिक है।

⁵~~रहम दिल और क़र्ज़ देने वाला आदमी फ़रमाँबरदार है; वह अपना कारोबार रास्ती से करेगा।

⁶~उसे कभी जुम्बिश न होगी:सादिक की यादगार हमेशा रहेगी।⁷वह बुरी ख़बर से न डरेगा; खुदावन्द पर भरोसा करने से उसका दिल क़ायम है।

⁸~उसका दिल बरकरार है, वह डरने का नहीं, यहाँ तक कि वह अपने मुखालिफ़ों को देख लेगा।⁹उसने बाँटा और मोहताजों को दिया, उसकी सदाकत हमेशा क़ायम रहेगी; उसका सींग इज़ज़त के साथ बलन्द किया जाएगा।

¹⁰~शरीर यह देखेगा और कुढ़ेगा; वह दाँत पीसेगा और घुलेगा; शरीरों की मुराद बर्बाद होगी।

Chapter 113

¹खुदावन्द की हम्द करो! ऐ खुदावन्द के बन्दों, हम्द करो! खुदावन्द के नाम की हम्द करो!²अब से हमेशा तक, खुदावन्द का नाम मुबारक हो!

³आफ़ताब के निकलने' से डूबने तक, खुदावन्द के नाम की हम्द हो!⁴~खुदावन्द सब क्रौमों पर बुलन्द-ओ-बाला है; उसका जलाल आसमान से बरतर है।

⁵खुदावन्द हमारे खुदा की तरह कौन है? जो 'आलम-ए-बाला पर तख़्तनशीन है,⁶जो फ़रोतनी से, आसमान-ओ-ज़मीन पर नज़र करता है।

⁷~वह ग़रीब को खाक से, और मोहताज को मज़बले पर से उठा लेता है,⁸~ताकि उसे उमरा के साथ, या'नी अपनी कौम के उमरा के साथ बिठाए।

⁹वह बाँझ का घर बसाता है, और उसे बच्चों वाली बनाकर दिलखुश करता है। खुदावन्द की हम्द करो!

Chapter 114

¹जब इस्राईल मिस्र से निकलआया, या'नी या'कूब का घराना अजनबी ज़बान वाली क़ौम में से;²तो यहूदाह उसका हैकल, और इस्राईल उसकी ममलुकत ठहरा ।

³~यह देखते ही समन्दर भागा; यरदन पीछे हट गया।⁴~पहाड़ मेंढों की तरह उछले, पहाड़ियाँ भेड़ के बच्चों की तरह कूदे।

⁵~ऐ समन्दर, तुझे क्या हुआ के तू भागता है? ऐ यरदन, तुझे क्या हुआ कि तू पीछे हटता है?⁶ऐ पहाड़ो, तुम को क्या हुआ के तुम मेंढों की तरह उछलते हो? ऐ पहाड़ियो, तुम को क्या हुआ के तुम भेड़ के बच्चों की तरह कूदती हो ?⁷~ऐ ज़मीन, तू रब्ब के सामने, या'कूब के ख़ुदा के सामने थरथरा;

⁸~जो चट्टान को झील, और चक्रमाक़ की पानी का चश्मा बना देता है।

Chapter 115

¹हमको नहीं, ऐ खुदावन्द बल्कि तू अपने ही नाम को अपनी शफ़क़त और सच्चाई की खातिर जलाल बख़्श।²कौमें क्यूँ कहें, "अब ~उनका खुदा कहाँ है?"

³~हमारा खुदा तो आसमान पर है; उसने जो कुछ चाहा वही किया।⁴~उनके बुत चाँदी और सोना हैं, या'नी आदमी की दस्तकारी।

⁵~उनके मुँह हैं लेकिन वह बोलते नहीं; आँखें हैं लेकिन वह देखते नहीं।⁶उनके कान हैं लेकिन वह सुनते नहीं; नाक हैं लेकिन वह सूघते नहीं।

⁷पाँव हैं लेकिन वह चलते नहीं, और उनके गले से आवाज़ नहीं निकलती।⁸~उनके बनाने वाले उन ही की तरह हो जाएँगे; बल्कि वह सब जो उन पर भरोसा रखते हैं।

⁹~ऐ इस्राईल, खुदावन्द पर भरोसा कर! वही उनकी मदद और उनकी ढाल है।¹⁰ऐ हारून के घराने, खुदावन्द पर भरोसा करो। वही उनकी मदद और उनकी ढाल है।¹¹~ऐ खुदावन्द से डरने वालो, खुदावन्द पर भरोसा करो! वही उनकी मदद और उनकी ढाल ~है।

¹²~खुदावन्द ने हम को याद रखा, वह बरकत देगा: वह इस्राईल के घराने को बरकत देगा; वह हारून के घराने को बरकत देगा।¹³~जो खुदावन्द से डरते हैं, क्या छोटे क्या बड़े, वह उन सबको बरकत देगा।¹⁴खुदावन्द तुम को बढ़ाए, तुम को और तुम्हारी औलाद को!

¹⁵तुम खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हो, जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया।¹⁶आसमान तो खुदावन्द का आसमान है, लेकिन ज़मीन उसने बनी आदम को दी है।

¹⁷मुर्दे खुदावन्द की सिताइश नहीं करते, न वह जो ख़ामोशी के 'आलम में उतर जाते हैं।¹⁸~लेकिन हम अब से हमेशा तक, खुदावन्द को मुबारक कहेंगे। खुदावन्द की हम्द करो!|

Chapter 116

¹मैं खुदावन्द से मुहब्बत रखता हूँ क्योंकि उसने मेरी फ़रियाद और मिन्नत सुनी है²चूँकि उसने मेरी तरफ़ कान लगाया, इसलिए मैं 'उम्र भर उससे दू'आ करूँगा

³मौत की रस्सियों ने मुझे जकड़ लिया, और पाताल के दर्द मुझ पर आ पड़े; मैं दुख और ग़म में गिरपड़ता हुआ।⁴~तब मैंने खुदावन्द से दु'आ की, "ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ मेरी जान की रिहाई बख़्श! "

⁵~खुदावन्द सादिक़ और करीम है; हमारा खुदा रहीम है।⁶~खुदावन्द सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है; मैं पस्त हो गया था, उसी ने मुझे बचा लिया।

⁷ऐ मेरी जान, फिर मुत्मइन हो; क्योंकि खुदावन्द ने तुझ पर एहसान किया है।⁸इसलिए के तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसू बहाने से, और मेरे पाँव को फिसलने से बचाया है।

⁹~मैं ज़िन्दों की ज़मीन में, खुदावन्द के सामने चलता रहूँगा।¹⁰मैं ईमान रखता हूँ इसलिए यह कहूँगा, "मैं बड़ी मुसीबत में था।"¹¹~मैंने जल्दबाज़ी से कह दिया, कि "सब आदमी झूठे हैं।"

¹²~खुदावन्द की सब ने'मतें जो मुझे मिलीं, मैं उनके बदले में उसे क्या दूँ?¹³~मैं नजात का प्याला उठाकर, खुदावन्द से दु'आ करूँगा।¹⁴मैं खुदावन्द के सामने अपनी मन्नतें, उसकी सारी क़ौम के सामने पूरी करूँगा।¹⁵खुदावन्द की निगाह में, उसके पाक लोगों की मौत गिरा क़द्र है।

¹⁶आह! ऐ खुदावन्द, मैं तेरा बन्दा हूँ। मैं तेरा बन्दा, तेरी लौंडी का बेटा हूँ। तूने मेरे बन्धन खोले हैं।¹⁷मैं तेरे सामने शुक्रगुज़ारी की कुर्बानी पेश करूँगा और खुदावन्द से दु'आ करूँगा।

¹⁸~मैं खुदावन्द के सामने अपनी मन्नतें, उसकी सारी क़ौम के सामने पूरी करूँगा।¹⁹~खुदावन्द के घर की बारगाहों में, तेरे अन्दर ऐ यरूशलीम! खुदावन्द की हम्द करो।

Chapter 117

¹ऐ क़ौमो सब खुदावन्द की हम्द करो! करो! ऐ उम्मतो! सब उसकी सिताइश करो!²~क्यूँकि हम पर उसकी बड़ी शफ़क़त है; और खुदावन्द की सच्चाई हमेशा है खुदावन्द की हम्द करो!|

Chapter 118

¹~खुदावन्द का शुक्र ~करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!²इसाईल अब कहे, उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

³~हारून का घराना अब कहे, उसकी शफ़क़त हमेशा की है।⁴~खुदावन्द से डरने वाले अब कहें, उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

⁵~मैंने मुसीबत में खुदावन्द से दु'आ की, खुदावन्द ने मुझे जवाब दिया और कुशादगी बरख़्शी।⁶खुदावन्द मेरी तरफ़ है, मैं नहीं डरने का; इन्सान मेरा क्या कर सकता है?⁷~खुदावन्द मेरी तरफ़ मेरे मददगारों में है, इसलिए मैं अपने 'अदावत रखने वालों को देख लूँगा।

⁸~खुदावन्द पर भरोसा करना, इन्सान पर भरोसा रखने से बेहतर है।⁹~खुदावन्द पर भरोसा करना, उमरा पर भरोसा रखने से बेहतर है।

¹⁰~सब क्रौमों ने मुझे घेर लिया; मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा!¹¹उन्होंने मुझे घेर लिया, बेशक घेर लिया; मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा!

¹²उन्होंने शहद की मक्खियों की तरह मुझे घेर लिया, वह काँटों की आग की तरह बुझ गए; मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा।

¹³तूने मुझे ज़ोर से धकेल दिया कि गिर पड़ लेकिन खुदावन्द ने मेरी मदद की।¹⁴~खुदावन्द मेरी ताक़त और मेरी हम्द है; वही मेरी नजात हुआ।

¹⁵सादिकों के खेमों में खुशी और नजात की रागनी है, खुदावन्द का दहना हाथ दिलावरी करता है।¹⁶~खुदावन्द का दहना हाथ बुलन्द हुआ है, खुदावन्द का दहना हाथ दिलावरी करता है।

¹⁷मैं मरूँगा नहीं बल्कि जिन्दा रहूँगा, और खुदावन्द के कामों का बयान करूँगा।¹⁸~खुदावन्द ने मुझे सख़्त तम्बीह तो की, लेकिन मौत के हवाले नहीं किया।

¹⁹सदाक़त के फाटकों को मेरे लिए खोल दो, मैं उनसे दाखिल होकर खुदावन्द का शुक्र करूँगा।²⁰~खुदावन्द का फाटक यही है, सादिक इससे दाखिल होंगे।²¹मैं तेरा शुक्र करूँगा क्योंकि तूने मुझे जवाब दिया, और खुद मेरी नजात बना है।

²²~जिस पत्थर की मे'मारों ने रद्द किया, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया।²³~यह खुदावन्द की तरफ़ से हुआ, और हमारी नज़र में 'अजीब है।

²⁴~यह वही दिन है जिसे खुदावन्द ने मुकर्रर किया, हम इसमें खुश होंगे और खुशी मनाएँगे।²⁵आह! ऐ खुदावन्द बचा ले! आह! ऐ खुदावन्द खुशहाली बरख़्श!

²⁶मुबारक है वह जो खुदावन्द के नाम से आता है! हम ने तुम को खुदावन्द के घर से दु'आ दी है।²⁷~यहोवा ही खुदा है, और उसी ने हम को नूर बरख़्शा है। कुर्बानी को मज़बह के सींगों से रस्सियों से बाँधो!²⁸~तू मेरा खुदा है, मैं तेरा शुक्र करूँगा; तू मेरा खुदा है, मैं तेरी तम्जीद करूँगा।

²⁹खुदावन्द का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!

Chapter 119

¹मुबारक हैं वह जो कामिल रफ्तार है, जो खुदा की शरी'अत पर 'अमल करते हैं!²मुबारक हैं वह जो उसकी शहादतों को मानते हैं, और पूरे दिल से उसके तालिब हैं!

³उन से नारास्ती नहीं होती, वह उसकी राहों पर चलते हैं।⁴तूने अपने क़वानीन दिए हैं, ताकि हम दिल लगा कर उनकी मानें।

⁵काश कि तेरे क़ानून मानने के लिए, मेरी चाल चलन दुरुस्त हो जाएँ!⁶~जब मैं तेरे सब अहकाम का लिहाज़ रखूँगा, तो शर्मिन्दा न हूँगा।

⁷जब मैं तेरी सदाक़त के अहकाम सीख लूँगा, तो सच्चे दिल से तेरा शुक्र अदा करूँगा।⁸~मैं तेरे क़ानून मानूँगा; मुझे बिल्कुल छोड़ न दे!

⁹~जवान अपने चाल चलन किस तरह पाक रखे? तेरे कलाम के मुताबिक़ उस पर निगाह रखने से।¹⁰मैं पूरे दिल से तेरा तालिब हुआ हूँ; मुझे अपने फ़रमान से भटकने न दे।

¹¹~मैंने तेरे कलाम को अपने दिल में रख लिया है ताकि मैं तेरे खिलाफ़ गुनाह न करूँ।¹²ऐ खुदावन्द! तू मुबारक है; मुझे अपने क़ानून सिखा!

¹³मैंने अपने लबों से, तेरे फ़रमूदा अहकाम को बयान किया।¹⁴मुझे तेरी शहादतों की राह से ऐसी खुशी हुई, जैसी हर तरह की दौलत से होती है।

¹⁵~मैं तेरे क़वानीन पर गौर करूँगा, और तेरी राहों का लिहाज़ रखूँगा।¹⁶~मैं तेरे क़ानून में मसरूर रहूँगा; मैं तेरे कलाम को न भूलूँगा।

¹⁷~अपने बन्दे पर एहसान कर ताकि मैं जिन्दा रहूँ और तेरे कलाम को मानता रहूँ।¹⁸~मेरी आँखें खोल दे, ताकि मैं तेरी शरी'अत के 'अजाइब देखूँ।

¹⁹~मैं ज़मीन पर मुसाफ़िर हूँ, अपने फ़रमान मुझ से छिपे न रख।²⁰~मेरा दिल तेरे अहकाम के इश्तेयाक में, हर वक़्त तड़पता रहता है।

²¹~तूने उन मला'ऊन मगरूरों को झिड़क दिया, जो तेरे फ़रमान से भटकते रहते हैं।²²~मलामत और हिक़ारत को मुझ से दूर कर दे, क्योंकि मैंने तेरी शहादतें मानी हैं।

²³~उमरा भी बैठकर मेरे खिलाफ़ बातें करते रहे, लेकिन तेरा बंदा तेरे क़ानून पर ध्यान लगाए रहा।²⁴~तेरी शहादतें मुझे पसन्द, और मेरी मुशीर हैं।

²⁵~मेरी जान खाक में मिल गई: तू अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।²⁶~मैंने अपने चाल चलन का इज़हार किया और तूने मुझे जवाब दिया; मुझे अपने क़ानून की ता'लीम दे।

²⁷अपने क़वानीन की राह मुझे समझा दे, और मैं तेरे 'अजाइब पर ध्यान करूँगा।²⁸~ग़म के मारे मेरी जान घुली जाती है; अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे ताक़त दे।

²⁹~झूट की राह से मुझे दूर रख, और मुझे अपनी शरी'अत इनायत फ़रमा।³⁰~मैंने वफ़ादारी की राह इख़्तियार की है, मैंने तेरे अहकाम अपने सामने रखे हैं।

³¹~मैं तेरी शहादतों से लिपटा हुआ हूँ, ऐ खुदावन्द! मुझे शर्मिन्दा न होने दे!³²जब तू मेरा हौसला बढ़ाएगा, तो मैं तेरे फ़रमान की राह में दौड़ूँगा।

³³~ऐ खुदावन्द, मुझे अपने क़ानून की राह बता, और मैं आखिर तक उस पर चलूँगा।³⁴~मुझे समझ 'अता कर और मैं तेरी शरी'अत पर चलूँगा, बल्कि मैं पूरे दिल से उसको मानूँगा।

³⁵~मुझे अपने फ़रमान की राह पर चला, क्योंकि इसी में मेरी खुशी है।³⁶मेरे दिल की अपनी शहादतों की तरफ़ रुजू' दिला; न कि लालच की तरफ़।

³⁷मेरी आँखों को बेकारी पर नज़र करने से बाज़ रख, और मुझे अपनी राहों में ज़िन्दा कर।³⁸~अपने बन्दे के लिए अपना वह क़ौल पूरा कर, जिस से तेरा खौफ़ पैदा होता है।

³⁹~मेरी मलामत को जिस से मैं डरता हूँ दूर कर दे; क्योंकि तेरे अहकाम भले हैं।⁴⁰~देख, मैं तेरे क़वानीन का मुश्ताक़ रहा हूँ; मुझे अपनी सदाक़त से ज़िन्दा कर।

⁴¹~ऐ खुदावन्द, तेरे क़ौल के मुताबिक़, तेरी शफ़क़त और तेरी नज़ात मुझे नसीब हों,⁴²~तब मैं अपने मलामत करने वाले को जवाब दे सकूँगा, क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।

⁴³~और हक़ बात को मेरे मुँह से हरगिज़ ~जुदा न होने दे, क्योंकि मेरा भरोसा तेरे अहकाम पर है।⁴⁴फिर मैं हमेशा से हमेशा तक, तेरी शरी'अत को मानता रहूँगा

⁴⁵~और मैं आज़ादी से चलूँगा, क्योंकि मैं तेरे क़वानीन का तालिब रहा हूँ।⁴⁶~मैं बादशाहों के सामने तेरी शहादतों का बयान करूँगा, और शर्मिन्दा न हूँगा।

⁴⁷~तेरे फ़रमान मुझे 'अज़ीज़ हैं, मैं उनमें मसरूर रहूँगा।⁴⁸~मैं अपने हाथ तेरे फ़रमान की तरफ़ जो मुझे 'अज़ीज़ है उठाऊँगा, और तेरे क़ानून पर ध्यान करूँगा।

⁴⁹~जो कलाम तूने अपने बन्दे से किया उसे याद कर, क्योंकि तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।⁵⁰~मेरी मुसीबत में यही मेरी तसल्ली है, कि तेरे कलाम ने मुझे ज़िन्दा किया

⁵¹~मगरूरों ने मुझे बहुत ठड़ों में उड़ाया, तोभी मैंने तेरी शरी'अत से किनारा नहीं किया।⁵²~ऐ खुदावन्द! मैं तेरे क़दीम अहकाम को याद करता, और इत्मीनान पाता रहा हूँ।

⁵³~उन शरीरों की वजह से जो तेरी शरी'अत को छोड़ देते ~हैं, मैं सख़्त गुस्से में आ गया हूँ।⁵⁴~मेरे मुसाफ़िर खाने में, तेरे क़ानून मेरी हम्द रहे हैं।

⁵⁵~ऐ खुदावन्द, रात को मैंने तेरा नाम याद किया है, और तेरी शरी'अत पर 'अमल किया है।⁵⁶~यह मेरे लिए इसलिए हुआ, कि मैंने तेरे क़वानीन को माना।

⁵⁷~खुदावन्द मेरा बख़रा है; मैंने कहा है मैं तेरी बातें मानूँगा।⁵⁸~मैं पूरे दिल से तेरे करम का तलब गार हुआ; अपने कलाम के मुताबिक़ मुझ पर रहम कर!

⁵⁹~मैंने अपनी राहों पर गौर किया, और तेरी शहादतों की तरफ़ अपने कदम मोड़े।⁶⁰~मैंने तेरे फ़रमान मानने में, जल्दी की और देर न लगाई।

⁶¹~शरीरों की रस्सियों ने मुझे जकड़ लिया, लेकिन मैं तेरी शरी'अत को न भूला।⁶²~तेरी सदाक़त के अहकाम के लिए, मैं आधी रात को तेरा शुक्र करने को उठूँगा।

⁶³~मैं उन सबका साथी हूँ जो तुझ से डरते हैं, और उनका जो तेरे क़वानीन को मानते हैं।⁶⁴~ऐ खुदावन्द, ज़मीन तेरी शफ़क़त से मा'मूर है; मुझे अपने क़ानून सिखा!

⁶⁵~ऐ खुदावन्द! तूने अपने कलाम के मुताबिक़, अपने बन्दे के साथ भलाई की है।⁶⁶~मुझे सही फ़र्क़ और 'अक़ल सिखा, क्योंकि मैं तेरे फ़रमान पर ईमान लाया~हूँ।

- ⁶⁷~मैं मुसीबत उठाने से पहले गुमराह था; लेकिन अब तेरे कलाम को मानता हूँ।⁶⁸~तू भला है और भलाई करता है; मुझे अपने कानून सिखा।
- ⁶⁹~मगरूरों ने मुझ पर बहुतान बाँधा है; मैं पूरे दिल से तेरे क़वानीन को मानूँगा।⁷⁰~उनके दिल चिकनाई से फ़र्बा हो गए, लेकिन मैं तेरी शरी'अत में मसरूर हूँ।
- ⁷¹अच्छा हुआ कि मैंने मुसीबत उठाई, ताकि तेरे क़ानून सीख लूँ।⁷²तेरे मुँह की शरी'अत मेरे लिए, सोने चाँदी के हज़ारों सिक्कों से बेहतर है।
- ⁷³~तेरे हाथों ने मुझे बनाया और तरतीब दी; मुझे समझ 'अता कर ताकि तेरे फ़रमान सीख लें।⁷⁴~तुझ से डरने वाले मुझे देख कर इसलिए कि~मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।
- ⁷⁵~ऐ खुदावन्द, मैं तेरे अहकाम की सदाक़त को जानता हूँ, और यह कि वफ़ादारी ही से तूने मुझे दुख; में डाला।⁷⁶~उस कलाम के मुताबिक़ जो तूने अपने बन्दे से किया, तेरी शफ़क़त मेरी तसल्ली का ज़रिया' हो।
- ⁷⁷~तेरी रहमत मुझे नसीब हो ताकि मैं ज़िन्दा रहूँ। क्योंकि तेरी शरी'अत मेरी खुशनुदी है।⁷⁸~मगरूर शर्मिन्दा हों, क्योंकि उन्होंने नाहक़ मुझे गिराया, लेकिन मैं तेरे क़वानीन पर ध्यान करूँगा।
- ⁷⁹~तुझ से डरने वाले मेरी तरफ़ रुजू हों, तो वह तेरी शहादतों को जान लेंगे।⁸⁰~मेरा दिल तेरे क़ानून मानने में कामिल रहे, ताकि मैं शर्मिन्दीगी न उठाऊँ।
- ⁸¹~मेरी जान तेरी नजात के लिए बेताब है, लेकिन मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।⁸²तेरे कलाम के इन्तिज़ार में मेरी आँखें रह गई, मैं यही कहता रहा कि तू मुझे कब तसल्ली देगा?
- ⁸³~मैं उस मशक़ीज़े की तरह हो गया जो धुएँ में हो, तोभी मैं तेरे क़ानून को नहीं भूलता।⁸⁴~तेरे बन्दे के दिन ही कितने हैं? तू मेरे सताने वालों पर कब फ़तवा देगा?
- ⁸⁵~मगरूरों ने जो तेरी शरी'अत के पैरों नहीं, मेरे लिए गढ़े खोदे हैं।⁸⁶~तेरे सब फ़रमान बरहक़ हैं: वह नाहक़ मुझे सताते हैं; तू मेरी मदद कर!
- ⁸⁷~उन्होंने मुझे ज़मीन पर से फ़नाकर ही डाला था, लेकिन मैंने तेरे क़वानीन को न छोड़ा।⁸⁸~तू मुझे अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ ज़िन्दा कर, तो मैं तेरे मुँह की शहादत को मानूँगा।
- ⁸⁹~ऐ खुदावन्द! तेरा कलाम, आसमान पर हमेशा तक क़ायम है।⁹⁰तेरी वफ़ादारी नसल दर नसल है; तूने ज़मीन को क़ायम बख़्शा और वह क़ायम है।
- ⁹¹~वह आज तेरे अहक़ाम के मुताबिक़ क़ायम हैं क्योंकि सब चीज़ें तेरी ख़िदमत गुज़ार हैं।⁹²अगर तेरी शरी'अत मेरी खुशनुदी न होती, तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक़ हो जाता।
- ⁹³~मैं तेरे क़वानीन को कभी न भूलूँगा, क्योंकि तूने उन्हीं के वसीले से मुझे ज़िन्दा किया है।⁹⁴~मैं तेरा ही हूँ मुझे बचा ले, क्योंकि मैं तेरे क़वानीन का तालिब रहा हूँ।
- ⁹⁵~शरीर मुझे हलाक़ करने को घात में लगे रहे, लेकिन मैं तेरी शहादतों पर ग़ौर करूँगा।⁹⁶~मैंने देखा कि हर कमाल की इन्तिहा है, लेकिन तेरा हुक्म बहुत वसी'अ है।
- ⁹⁷~आह! मैं तेरी शरी'अत से कैसी मुहब्बत रखता हूँ, मुझे दिन भर उसी का ध्यान रहता है।⁹⁸~तेरे फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा 'अक्लमंद ~बनाते हैं, क्योंकि वह हमेशा मेरे साथ हैं।
- ⁹⁹~मैं अपने सब उस्तादों से 'अक्लमंद हूँ, क्योंकि तेरी शहादतों पर मेरा ध्यान रहता है।¹⁰⁰~मैं 'उम्र रसीदा लोगों से ज़्यादा समझ रखता हूँ क्योंकि मैंने तेरे क़वानीन को माना है।
- ¹⁰¹~मैंने हर बुरी राह से अपने क़दम रोक रखे हैं, ताकि तेरी शरी'अत पर 'अमल करूँ।¹⁰²मैंने तेरे अहक़ाम से किनारा नहीं किया, क्योंकि तूने मुझे ता'लीम दी है।
- ¹⁰³~तेरी बातें मेरे लिए कैसी शीरीन हैं, वह मेरे मुँह को शहद से भी मीठी मा'लूम होती हैं।¹⁰⁴~तेरे क़वानीन से मुझे समझ हासिल होता है, इसलिए मुझे हर झूठी राह से नफ़रत है।
- ¹⁰⁵~तेरा कलाम मेरे क़दमों के लिए चरागा, और मेरी राह के लिए रोशनी है।¹⁰⁶~मैंने क़सम खाई है और उस पर क़ायम हूँ, कि तेरी सदाक़त के अहक़ाम पर 'अमल करूँगा।
- ¹⁰⁷~मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। ऐ खुदावन्द! अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।¹⁰⁸~ऐ खुदावन्द, मेरे मुँह से रज़ा की कुर्बानियाँ कुबूल फ़रमा और मुझे अपने अहक़ाम की ता'लीम दे।
- ¹⁰⁹मेरी जान हमेशा हथेली पर है, तोभी मैं तेरी शरी'अत को नहीं भूलता।¹¹⁰~शरीरों ने मेरे लिए फंदा लगाया है, तोभी मैं तेरे क़वानीन से नहीं भटका।
- ¹¹¹~मैंने तेरी शहादतों को अपनी हमेशा की मीरास बनाया है, क्योंकि उनसे मेरे दिल को खुशी होती है।¹¹²~मैंने हमेशा के लिए आखिर तक, तेरे क़ानून मानने पर दिल लगाया है।
- ¹¹³~मुझे दो दिलों से नफ़रत है, लेकिन तेरी शरी'अत से मुहब्बत रखता हूँ।¹¹⁴~तू मेरे छिपने की जगह और मेरी ढाल है; मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।
- ¹¹⁵~ऐ बदकिरदारो! मुझ से दूर हो जाओ, ताकि मैं अपने खुदा के फ़रमान पर 'अमल करूँ।¹¹⁶~तू अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे संभाल ताकि ज़िन्दा रहूँ, और मुझे अपने भरोसा से शर्मिन्दीगी न उठाने दे।
- ¹¹⁷~मुझे संभाल और मैं सलामत रहूँगा, और हमेशा तेरे क़ानून का लिहाज़ रखूँगा।¹¹⁸~तूने उन सबको हक़ीर जाना है, जो तेरे क़ानून से भटक जाते हैं; क्योंकि उनकी दगाबाज़ी 'बेकार है।
- ¹¹⁹~तू ज़मीन के सब शरीरों को मैल की तरह छाँट देता है; इसलिए मैं तेरी शहादतों को 'अज़ीज़ रखता हूँ।¹²⁰मेरा जिस्म तेरे ख़ौफ़ से काँपता है, और मैं तेरे अहक़ाम से डरता हूँ।
- ¹²¹~मैंने 'अद्ल और इन्साफ़ किया है; मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर जुल्म करते हैं।¹²²~भलाई के लिए अपने बन्दे का ज़ामिन हो, मगरूर मुझ पर जुल्म न करें।
- ¹²³~तेरी नजात और तेरी सदाक़त के कलाम के इन्तिज़ार में मेरी आँखें रह गई।¹²⁴अपने बन्दे से अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ सुलूक कर, और मुझे अपने क़ानून सिखा।
- ¹²⁵~मैं तेरा बन्दा हूँ! मुझ को समझ 'अताकर, ताकि तेरी शहादतों को समझ लूँ।¹²⁶अब वक़्त आ गया, कि खुदावन्द काम करे, क्योंकि उन्होंने तेरी शरी'अत को बेकार कर दिया है।

¹²⁷~इसलिए मैं तेरे फ़रमान को सोने से बल्कि कुन्दन से भी ज़्यादा 'अज़ीज़ रखता हूँ।¹²⁸~इसलिए मैं तेरे सब कवानीन को बरहक़ जानता हूँ, और हर झूठी राह से मुझे नफ़रत है।

¹²⁹~तेरी शहादतें 'अजीब हैं, इसलिए मेरा दिल उनको मानता है।¹³⁰~तेरी बातों की तथरीह नूर बख़्शती है, वह सादा दिलों को 'अक्लमन्द बनाती है।

¹³¹~मैं खूब मुँह खोलकर हाँपता रहा, क्योंकि मैं तेरे फ़रमान का मुश्ताक़ था।¹³²~मेरी तरफ़ तवज्जुह कर और मुझ पर रहम फ़रमा, जैसा तेरे नाम से मुहब्बत रखने वालों का हक़ है।

¹³³~अपने कलाम में मेरी रहनुमाई कर, कोई बदकारी मुझ पर तसल्लुत न पाए।¹³⁴~इन्सान के जुल्म से मुझे छुड़ा ले, तो तेरे क़वानीन पर 'अमल करूँगा।

¹³⁵~अपना चेहरा अपने बन्दे पर जलवागर फ़रमा, और मुझे अपने क़ानून सिखा।¹³⁶~मेरी आँखों से पानी के चश्मे जारी हैं, इसलिए कि लोग तेरी शरी'अत को नहीं मानते।

¹³⁷~ऐ खुदावन्द तू सादिक़ है, और तेरे अहक़ाम बरहक़ हैं।¹³⁸~तूने सदाक़त और कमाल वफ़ादारी से, अपनी शहादतों को ज़ाहिर फ़रमाया है।

¹³⁹~मेरी ग़ैरत मुझे खा गई, क्योंकि मेरे मुखालिफ़ तेरी बातें भूल गए।¹⁴⁰~तेरा कलाम बिल्कुल ख़ालिस है, इसलिए तेरे बन्दे को उससे मुहब्बत है।

¹⁴¹~मैं अदना और हकीर हूँ, तौ भी मैं तेरे क़वानीन को नहीं भूलता।¹⁴²~तेरी सदाक़त हमेशा की सदाक़त है, और तेरी शरी'अत बरहक़ है।

¹⁴³~मैं तकलीफ़ और अज़ाब में मुब्तिला, हूँ तोभी तेरे फ़रमान मेरी खुशनुदी हैं।¹⁴⁴~तेरी शहादतें हमेशा रास्त हैं, मुझे समझ 'अता कर तो मैं ज़िन्दा रहूँगा।

¹⁴⁵~मैं पूरे दिल से दु'आ करता हूँ, ऐ खुदावन्द, मुझे जवाब दे। मैं तेरे क़ानून पर 'अमल करूँगा।¹⁴⁶~मैंने तुझ से दु'आ की है, मुझे बचा ले, और मैं तेरी शहादतों को मानूँगा।

¹⁴⁷~मैंने पौ फटने से पहले फ़रियाद की; मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।¹⁴⁸~मेरी आँखें रात के हर पहर से पहले खुल गई, ताकि तेरे कलाम पर ध्यान करूँ।

¹⁴⁹~अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी फ़रियाद सुन: ऐ खुदावन्द! अपने अहक़ाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।¹⁵⁰~जो शरारत के दर पै रहते हैं, वह नज़दीक़ आ गए; वह तेरी शरी'अत से दूर हैं।

¹⁵¹~ऐ खुदावन्द, तू नज़दीक़ है, और तेरे सब फ़रमान बरहक़ हैं।¹⁵²~तेरी शहादतों से मुझे क़दीम से मा'लूम हुआ, कि तूने उनको हमेशा के लिए क़ायम किया है।

¹⁵³~मेरी मुसीबत का ख़याल करऔर मुझे छुड़ा, क्योंकि मैं तेरी शरी'अत को नहीं भूलता।¹⁵⁴~मेरी वक़ालत कर और मेरा फ़िदिया दे: अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।

¹⁵⁵~नजात शरीरों से दूर है, क्योंकि वह तेरे क़ानून के तालिब नहीं हैं।¹⁵⁶~ऐ खुदावन्द! तेरी रहमत बड़ी है; अपने अहक़ाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।

¹⁵⁷~मेरे सताने वाले और मुखालिफ़ बहुत हैं, तोभी मैंने तेरी शहादतों से किनारा न किया।¹⁵⁸~मैं दगाबाज़ों को देख कर मलूल हुआ, क्योंकि वह तेरे कलाम को नहीं मानते।

¹⁵⁹~ख़याल फ़रमा कि मुझे तेरे क़वानीन से कैसी मुहब्बत है! ऐ खुदावन्द! अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।¹⁶⁰~तेरे कलाम का ख़ुलासा सच्चाई है, तेरी सदाक़त के कुल अहक़ाम हमेशा के हैं।

¹⁶¹~उमरा ने मुझे बे वज़ह सताया है, लेकिन मेरे दिल में तेरी बातों का ख़ौफ़ है।¹⁶²~मैं बड़ी लूट पाने वाले की तरह, तेरे कलाम से खुश हूँ।

¹⁶³~मुझे झूट से नफ़रत और कराहियत है, लेकिन तेरी शरी'अत से मुहब्बत है।¹⁶⁴~मैं तेरी सदाक़त के अहक़ाम की वज़ह से, दिन में सात बार तेरी सिताइश करता हूँ।

¹⁶⁵~तेरी शरी'अत से मुहब्बत रखने वाले मुत्मइन हैं; उनके लिए ठोकर खाने का कोई मौक़ा नहीं।¹⁶⁶~ऐ खुदावन्द! मैं तेरी नजात का उम्मीदवार रहा हूँ और तेरे फ़रमान बजा लाया हूँ।

¹⁶⁷~मेरी जान ने तेरी शहादतें मानी हैं, और वह मुझे बहुत 'अज़ीज़ हैं।¹⁶⁸~मैंने तेरे क़वानीन और शहादतों को माना है, क्योंकि मेरे सब चाल चलन तेरे सामने हैं।

¹⁶⁹~ऐ खुदावन्द! मेरी फ़रियाद तेरे सामने पहुँचे; अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे समझ 'अता कर।¹⁷⁰~मेरी इल्तिजा तेरे सामने पहुँचे, अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे छुड़ा।

¹⁷¹~मेरे लबों से तेरी सिताइश हो।क्योंकि तू मुझे अपने क़ानून सिखाता है।¹⁷²~मेरी ज़बान तेरे कलाम का हम्द गाए, क्योंकि तेरे सब फ़रमान बरहक़ हैं।

¹⁷³~तेरा हाथ मेरी मदद को तैयार है क्योंकि मैंने तेरे क़वानीन इख़्तियार, किए हैं।¹⁷⁴~ऐ खुदावन्द! मैं तेरी नजात का मुश्ताक़ रहा हूँ, और तेरी शरी'अत मेरी खुशनुदी है।

¹⁷⁵~मेरी जान ज़िन्दा रहे तो वह तेरी सिताइश करेगी, और तेरे अहक़ाम मेरी मदद करें।¹⁷⁶~मैं खोई हुई भेड़ की तरह भटक गया हूँ अपने बन्दे की तलाश कर, क्योंकि मैं तेरे फ़रमान को नहीं भूलता।

Chapter 120

¹~मैंने मुसीबत में खुदावन्द से फ़रियाद की, और उसने मुझे जवाब दिया।²~झूटे होंटों और दगाबाज़ ज़बान से, ऐ खुदावन्द, मेरी जान को छुड़ा।

³~ऐ दगाबाज़ ज़बान, तुझे क्या दिया जाए? और तुझ से और क्या किया जाए?⁴~ज़बरदस्त के तेज़ तीर, झाऊ के अंगारों के साथ।

⁵~मुझ पर अफ़सोस कि मैं मसक में बसता, और क़ीदार के ख़ैमों में रहता हूँ।⁶सुलह के दुश्मन के साथ रहते हुए, मुझे बड़ी मुद्दत हो गई।⁷मैं तो सुलह दोस्त हूँ।
लेकिन जब बोलता हूँ तो वह जंग पर आमादा हो जाते हैं।

Chapter 121

¹मैं अपनी आँखें पहाड़ों की तरफ उठाऊंगा; मेरी मदद कहाँ से आएगी?²मेरी मदद खुदावन्द से है, जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया।

³~वह तेरे पाँव को फिसलने न देगा; तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।⁴~देख! इस्राईल का मुहाफ़िज़, न ऊँघेगा, न सोएगा।

⁵~खुदावन्द तेरा मुहाफ़िज़ है; खुदावन्द तेरे दहने हाथ पर तेरा सायबान है।⁶~न आफ़ताब दिन को तुझे नुक़सान पहुँचाएगा, न माहताब रात को।

⁷~खुदावन्द हर बला से तुझे महफूज़ रखेगा, वह तेरी जान को महफूज़ रखेगा।⁸~खुदावन्द तेरी आमद-ओ-रफ़्त में, अब से हमेशा तक तेरी हिफ़ाज़त करेगा।

Chapter 122

¹~मैं खुश हुआ जब वह मुझ ~से कहने लगे~"आओ खुदावन्द के घर चलें।"²ऐ यरूशलीम! हमारे क़दम, तेरे फाटकों के अन्दर हैं।³ऐ यरूशलीम तू ऐसे शहर के तरह है जो गुनज़ान बना हो।

⁴~जहाँ क़बीले या'नी खुदावन्द के क़बीले, इस्राईल की शहादत के लिए, खुदावन्द के नाम का शुक्र करने को जातें हैं।⁵क्यूँकि वहाँ 'अदालत के तख़्त, या'नी दाऊद के ख़ान्दान के तख़्त क़ायम हैं।

⁶~यरूशलीम की सलामती की दु'आ करो, वह जो तुझ से मुहब्बत रखते हैं इकबालमंद होंगे।⁷~तेरी फ़सील के अन्दर सलामती, और तेरे महलों में इकबालमंदी हो।

⁸~मैं अपने भाइयों और दोस्तों की खातिर, अब कहूँगा तुझ में सलामती रहे!⁹~खुदावन्द अपने खुदा के घर की खातिर, मैं तेरी भलाई का तालिब रहूँगा।

Chapter 123

¹~तू जो आसमान पर तख़्तनशीन है, मैं अपनी आँखें तेरी तरफ़ उठाता हूँ!"देख, जिस तरह गुलामों की आँखें अपने आका के हाथ की तरफ़, और लौंडी की आँखें अपनी बीबी के हाथ की तरफ़ लगी रहती है उसी तरह हमारी आँखें खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ लगी है जब तक वह हम पर रहम न करे।

³हम पर रहम कर! ऐ खुदावन्द, हम पर रहम कर, क्योंकि हम ज़िल्लत उठाते उठाते तंग आ गए।⁴आसूदा हालों के तमसख़ुर, और मागरूरों की हिक्कारत से, हमारी जान सेर हो गई।

Chapter 124

¹अब इस्राईल यूँ कहे, अगर खुदावन्द हमारी तरफ़ न होता,²~अगर खुदावन्द उस वक़्त हमारी तरफ़ न होता, जब लोग हमारे खिलाफ़ उठे,³~तो जब उनका क्रहर हम पर भड़का था, वह हम को ज़िन्दा ही निगल जाते।

⁴उस वक़्त पानी हम को डुबो देता, और सैलाब हमारी जान पर से गुज़र जाता।⁵उस वक़्त मौजज़न, पानी हमारी जान पर से गुज़र जाता।

⁶खुदावन्द मुबारक हो, जिसने हमें उनके दाँतों का शिकार न होने दिया।⁷हमारी जान चिड़िया की तरह चिड़ीमारों के जाल से बच निकली, जाल तो टूट गया और हम बच निकले।

⁸हमारी मदद खुदावन्द के नाम से है, जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया।

Chapter 125

¹जो खुदावन्द पर भरोसा करते~वह कोह-ए-सिय्यून की तरह हैं, जो अटल बल्कि हमेशा क़ायम है।²~जैसे यरूशलीम पहाड़ों से घिरा है, वैसे ही अब से हमेशा तक खुदावन्द अपने लोगों को धेरे रहेगा।³~क्यूँकि शरारत का 'असा सादिकों की मीरास पर क़ायम न होगा, ताकि सादिक बदकारी की तरफ़ अपने हाथ न बढ़ाएँ।

⁴~ऐ खुदावन्द! भलों के साथ भलाई कर, और उनके साथ भी जो रास्त दिल हैं।⁵~लेकिन जो अपनी टेढ़ी राहों की तरफ़ मुड़ते हैं, उनको खुदावन्द बदकिरदारों के साथ निकाल ले जाएगा। इस्राईल की सलामती हो!

Chapter 126

¹जब खुदावन्द सिय्युन के गुलामों को वापस लाया, तो हम ख्वाब देखने वालों की तरह थे।

²उस वक़्त हमारे मुँह में हँसी, और हमारी ज़बान पर रागनी थी; तब क्रौमों में यह चर्चा होने लगा, "खुदावन्द ने इनके लिए बड़े बड़े काम किए हैं।"³खुदावन्द ने हमारे लिए बड़े बड़े काम किए हैं, और हम खुश हैं!

⁴ऐ खुदावन्द! दखिन की नदियों की तरह, हमारे गुलामों को वापस ला।⁵~जो आँसुओं के साथ बोते हैं, वह खुशी के साथ काटेंगे।⁶~जो रोता हुआ बीज बोने जाता है, वह अपने पूले लिए हुए खुश लौटेगा।

Chapter 127

¹अगर खुदावन्द ही घर न बनाए, तो बनाने वालों की मेहनत 'बेकार' है। अगर खुदावन्द ही शहर की हिफाज़त न करे, तो निगहबान का जागना 'बेकार' है।²तुम्हारे लिए सवेरे उठना और देर में आराम करना, और मशक्कत की रोटी खाना 'बेकार' है; क्योंकि वह अपने महबूब को तो नींद ही में दे देता है।

³देखो, औलाद खुदावन्द की तरफ़ से मीरास है, और पेट का फल उसी की तरफ़ से अज़्र है,⁴जवानी के फ़र्ज़न्द ऐसे हैं, जैसे ज़बरदस्त के हाथ में तीर।⁵~खुश नसीब है वह आदमी जिसका तरक़श उनसे भरा है। जब वह अपने दुश्मनों से फाटक पर बातें करेंगे तो शर्मिन्दा न होंगे।

Chapter 128

¹मुबारक है हर एक जो खुदावन्द~से डरता, और उसकी राहों पर चलता है।²तू अपने हाथों की कमाई खाएगा; तू मुबारक और फ़र्माबरदार होगा।

³~तेरी बीवी तेरे घर के अन्दर मेवादार ताक की तरह होगी, और तेरी औलाद तेरे दस्तरख्वान पर ज़ैतून के पौदों की तरह।⁴देखो! ऐसी बरकत उसी आदमी को मिलेगी, जो खुदावन्द से डरता है।⁵खुदावन्द सिंघून में से तुझ को बरकत दे, और तू 'उम्र भर यरूशलीम की भलाई देखे।⁶बल्कि तू अपने बच्चों के बच्चे देखे। इस्राईल की सलामती हो!

Chapter 129

¹इस्राईल अब यूँ कहे, 'उन्होंने मेरी जवानी से अब तक मुझे बार बार सताया,²हाँ, उन्होंने मेरी जवानी से अब तक मुझे बार बार सताया, तोभी वह मुझ पर गालिब न आए।³हलवाहों ने मेरी पीठ पर हल चलाया, और लम्बी लम्बी रेघारियाँ बनाई।"

⁴खुदावन्द सादिक्र है; उसने शरीरों की रसियाँ काट डालीं।⁵सिंघून से नफ़रत रखने वाले, सब शर्मिन्दा और पस्पा हों।

⁶~वह छत पर की घास की तरह हों, जो बढ़ने से पहले ही सूख जाती है;⁷~जिससे फ़सल काटने वाला अपनी मुट्ठी को, और पूले बाँधने वाला अपने दामन को नहीं भरता,⁸न आने जाने वाले यह कहते हैं, "तुम पर खुदावन्द की बरकत हो! हम खुदावन्द के नाम से तुम को दु'आ देते हैं! "

Chapter 130

¹ऐ खुदावन्द! मैंने गहराओ में से तेरे सामने फ़रियाद की है!²~ऐ खुदावन्द! मेरी आवाज़ सुन ले! मेरी इल्तिजा की आवाज़ पर, तेरे कान लगे रहें।

³~ऐ खुदावन्द! अगर तू बदकारी को हिसाब में लाए, तो ऐ खुदावन्द कौन क़ायम रह सकेगा?⁴लेकिन मग़फ़िरत तेरे हाथ में है, ताकि लोग तुझ से डरें।

⁵~मैं खुदावन्द का इन्तिज़ार करता हूँ। मेरी जान मुन्तज़िर है, और मुझे उसके कलाम पर भरोसा है।⁶सुबह का इन्तिज़ार करने वालों से ज़्यादा, हाँ, सुबह का इन्तिज़ार करने वालों से कहीं ज़्यादा, मेरी जान खुदावन्द की मुन्तज़िर है।

⁷ऐ इस्राईल! खुदावन्द पर भरोसा कर; क्योंकि खुदावन्द के हाथ में शफ़क़त है, उसी के हाथ में फ़िदिए की कसरत है।⁸और वही इस्राईल का फ़िदिया देकर, उसको सारी बदकारी से छुड़ाएगा।

Chapter 131

¹ऐ खुदावन्द! मेरा दिल मगरूर नहीं और मैं बुलंद नज़र नहीं हूँ न मुझे बड़े बड़े मु'आमिलो से कोई सरोकार है, न उन बातों से जो मेरी समझ से बाहर हैं,

²यक़ीनन मैंने अपने दिल को तिस्कीन देकर मुत्मइन कर दिया है, मेरा दिल मुझ में दूध छुड़ाए हुए बच्चे की तरह है; हाँ, जैसे दूध छुड़ाया हुआ बच्चा माँ की गोद में | ³ऐ इस्राईल! अब से हमेशा तक, खुदावन्द पर भरोसा कर!

Chapter 132

¹~ऐ खुदावन्द! दाऊद कि खातिर उसकी सब मुसीबतों को याद कर;²कि उसने किस तरह खुदावन्द से क्रसम खाई, और या'कूब के क्रादिर के सामने मन्नत मानी,

³~"यकीनन मैं न अपने घर में दाखिल हूँगा, न अपने पलंग पर जाऊँगा;⁴और न अपनी आँखों में नींद, न अपनी पलकों में झपकी आने दूँगा;⁵जब तक खुदावन्द के लिए कोई जगह, और या'कूब के क्रादिर के लिए घर न हो।"

⁶~देखो, हम ने उसकी खबर इफ़ाता में सुनी; हमें यह जंगल के मैदान में मिली।⁷~हम उसके घरों में दाखिल होंगे, हम उसके पाँव की चौकी के सामने सिजदा करेंगे!⁸उठ, ऐ खुदावन्द! अपनी आरामगाह में दाखिल हो! तू और तेरी कुदरत का संदूक।

⁹तेरे काहिन सदाक़त से मुलब्स हों, और तेरे पाक खुशी के नारे मारें।¹⁰अपने बन्दे दाऊद की खातिर, अपने मम्सूह की दु'आ ना-मन्ज़ूर न कर।

¹¹~खुदावन्द ने सच्चाई के साथ दाऊद से क्रसम खाई है; वह उससे फिरने का नहीं: कि मैं तेरी औलाद में से किसी को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।¹²~अगर तेरे फ़र्ज़न्द मेरे 'अहद और मेरी शहादत पर, जो मैं उनको सिखाऊँगा 'अमल करें; तो उनके फ़र्ज़न्द भी हमेशा तेरे तख़्त पर बैठेंगे।"

¹³क्योंकि खुदावन्द ने सिय्यून को चुना है, उसने उसे अपने घर के लिए पसन्द किया है:¹⁴~"यह हमेशा के लिए मेरी आरामगाह है; मैं यहीं रहूँगा क्योंकि मैंने इसे पसंद किया है।

¹⁵मैं इसके रिज़क़ में ख़ूब बरकत दूँगा; मैं इसके ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।¹⁶~इसके काहिनों को भी मैं नजात से मुलव्वस करूँगा और उसके पाक बुलन्द आवाज़ से खुशी के नारे मारेंगे।

¹⁷वहीं मैं दाऊद के लिए एक सींग निकालूँगा मैंने अपने मम्सूह के लिए चरागा तैयार किया है।¹⁸मैं उसके दुश्मनों को शर्मिन्दगी का लिबास पहनाऊँगा, लेकिन उस पर उसी का ताज रोनक अफ़रोज़ होगा।

Chapter 133

¹~देखो! कैसी अच्छी और खुशी की बात है, कि भाई एक साथ मिलकर रहें!

²~यह उस बेशकीमत तेल की तरह है, जो सिर पर लगाया गया, और बहता हुआ दाढ़ी पर, या'नी हारून की दाढ़ी पर आ गया; बल्कि उसके लिबास के दामन तक जा पहुँचा।³~या हरमून की ओस की तरह है, जो सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है! क्योंकि वहीं खुदावन्द ने बरकत का, या'नी हमेशा की ज़िन्दगी का हुक्म फ़रमाया।

Chapter 134

¹ऐ खुदावन्द के बन्दो! आओ सब खुदावन्द को मुबारक कहो! तुम जो रात को खुदावन्द के घर में खड़े रहते हो!²हैकल की तरफ अपने हाथ उठाओ, और खुदावन्द को मुबारक कहो!

³~खुदावन्द, जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया, सिंघून में से तुझे बरकत बरख़शे।

Chapter 135

¹~ खुदावन्द की हम्द करो! खुदावन्द के नाम की हम्द करो! ऐ खुदावन्द के बन्दो! उसकी हम्द करो!²तुम जो खुदावन्द के घर में, हमारे खुदा के घर की बारागाहों में खड़े रहते हो!

³~खुदावन्द की हम्द करो, क्योंकि खुदावन्द भला है; उसके नाम की मदहसराई करो कि यह दिल पसंद है!⁴क्योंकि खुदावन्द ने या'कूब को अपने लिए, और इस्राईल को अपनी खास मिल्कियत के लिए चुन लिया है।

⁵~इसलिए कि मैं जानता हूँ कि खुदावन्द बुजुर्ग है ~और हमारा रब्ब सब मा'बूदों से बालातर है।⁶आसमान और ज़मीन में, समन्दर और गहराओ में; खुदावन्द ने जो कुछ चाहा वही किया।

⁷~वह ज़मीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है, वह बारिश के लिए बिजलियाँ बनाता है, और अपने मखज़नों से आँधी निकालता है।

⁸उसी ने मिस्र के पहलौठों को मारा, क्या इन्सान के क्या हैवान के।⁹ऐ मिस्र, उसी ने तुझ में फ़िर'औन और उसके सब खादिमो पर, निशान और 'अजाइब ज़ाहिर किए।

¹⁰उसने बहुत सी क्रौमों को मारा, और ज़बरदस्त बादशाहों को क़त्ल किया।¹¹अमोरियों के बादशाह सीहोन को, और बसन के बादशाह 'ओज को, और कना'न की सब मम्लुकतों को;

¹²और उनकी ज़मीन मीरास कर दी, या'नी अपनी क्रौम इस्राईल की मीरास।¹³ऐ खुदावन्द! तेरा नाम हमेशा का है, और तेरी यादगार, ऐ खुदावन्द, नसल दर नसल क़ायम है।

¹⁴क्योंकि खुदावन्द अपनी क्रौम की 'अदालत करेगा, और अपने बन्दों पर तरस खाएगा।¹⁵~क्रौमों के बुत चाँदी और सोना हैं, या'नी आदमी की दस्तकारी।¹⁶उनके मुँह हैं, लेकिन वह बोलते नहीं; आँखें हैं लेकिन वह देखते नहीं।¹⁷उनके कान हैं, लेकिन वह सुनते नहीं; और उनके मुँह में साँस नहीं।¹⁸उनके बनाने वाले उन ही की तरह हो जाएँगे; बल्कि वह सब जो उन पर भरोसा रखते हैं।

¹⁹~ऐ इस्राईल के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो! ऐ हारून के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो।²⁰~ऐ लावी के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो! ऐ खुदावन्द से डरने वालो! खुदावन्द को मुबारक कहो!²¹सिय्यून में खुदावन्द मुबारक हो! वह यरूशलीम में सुकूनत करता है खुदावन्द की हम्द करो।

Chapter 136

¹खुदावन्द का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।²इलाहों के खुदा का शुक्र करो, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।³मालिकों के मालिक का शुक्र करो, कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

⁴~उसी का जो अकेला बड़े बड़े 'अजीब काम करता है, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।⁵उसी का जिसने 'अक्लमन्दी से आसमान बनाया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।

⁶उसी का जिसने ज़मीन को पानी पर फैलाया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।⁷उसी का जिसने बड़े-बड़े सितारे बनाए, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।

⁸दिन को हुकूमत करने के लिए आफ़ताब, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।⁹रात को हुकूमत करने के लिए माहताब और सितारे, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।

¹⁰उसी का जिसने मिस्र के पहलौठों को मारा, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।¹¹और इस्राईल को उनमें से निकाल लाया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।

¹²~क़वी हाथ और बलन्द बाज़ू से, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।

¹³उसी का जिसने बहर-ए-कुलजुम को दो हिस्से कर दिया, कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।¹⁴और इस्राईल को उसमें से पार किया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।¹⁵लेकिन फिर 'औन और उसके लश्कर को बहर-ए-कुलजुम में डाल दिया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।

¹⁶उसी का जो वीरान में अपने लोगों का राहनुमा हुआ, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।¹⁷~उसी का जिसने बड़े-बड़े बादशाहों को मारा, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है;

¹⁸और नामवर बादशाहों को क़त्ल किया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।¹⁹अमोरियों के बादशाह सीहोन को, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।²⁰और बसन के बादशाह 'ओज की, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है;

²¹और उनकी ज़मीन मीरास कर दी, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है;²²या 'नी अपने बन्दे इस्राईल की मीरास, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।²³~जिसने हमारी पस्ती में हम को याद किया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है;

²⁴और हमारे मुखालिफ़ों से हम को छुड़ाया, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।²⁵जो सब बशर को रोज़ी देता है, कि उसकी शफ़क़त~हमेशा की है।²⁶~आसमान के खुदा का शुक्र करो, कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

Chapter 137

¹~हम बाबुल की नदियों पर बैठे, और सिथ्यून को याद करके रोए।²~वहाँ बेद के दरख्तों पर उनके वस्त में, हम ने अपने सितारों को टाँग दिया।

³~क्योंकि वहाँ हम को गुलाम करने वालों ने हम्द गाने का हुक्म दिया, और तबाह करने वालों ने खुशी करने का, और कहा, "सिथ्यून के हम्दों में से हमको कोई हम्द सुनाओ!"⁴~हम परदेस में, खुदावन्द का हम्द कैसे गाएँ?

⁵~ऐ यरूशलीम! अगर मैं तुझे भूलूँ तो मेरा दहना हाथ अपना हुनर भूल जाए।⁶~अगर मैं तुझे याद न रखूँ, अगर मैं यरूशलीम को, अपनी बड़ी से बड़ी खुशी पर तरजीह न दूँ मेरी ज़बान मेरे तालू से चिपक जाए!

⁷~ऐ खुदावन्द! यरूशलीम के दिन को, बनी अदोम के खिलाफ़ याद कर, जो कहते थे, "इसे ढा दो, इसे बुनियाद तक ढा दो! "

⁸~ऐ बाबुल की बेटी! जो हलाक होने वाली है, वह मुबारक होगा, जो तुझे उस सुलूक का, जो तूने हम से किया बदला दे।⁹~वह मुबारक होगा, जो तेरे बच्चों को लेकर, चट्टान पर पटक दे!

Chapter 138

¹~मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा; मा'बूदों के सामने तेरी मदहसराई करूँगा।²~मैं तेरी पाक हैकल की तरफ़ रुख कर के सिज्दा करूँगा, और तेरी शफ़क़त औए सच्चाई की खातिर तेरे नाम का शुक्र करूँगा। क्योंकि तूने अपने कलाम को अपने हरनाम से ज़्यादा 'अज़मत दी है।

³~जिस दिन मैंने तुझ से दु'आ की, तूने मुझे जवाब दिया, और मेरी जान की ताक़त देकर मेरा हौसला बढ़ाया।⁴~ऐ खुदावन्द! ज़मीन के सब बादशाह तेरा शुक्र करेंगे, क्योंकि उन्होंने तेरे मुँह का कलाम सुना है;

⁵~बल्कि वह खुदावन्द की राहों का हम्द गाएंगे क्योंकि खुदावन्द का जलाल बड़ा है।⁶~क्योंकि खुदावन्द अगरचे बुलन्द-ओ-बाला है, तोभी खाकसार का खयाल रखता है; लेकिन मगरूर को दूर ही से पहचान लेता है।

⁷~चाहे मैं दुख में से गुज़रूँ तू मुझे ताज़ादम करेगा, तू मेरे दुश्मनों के क्रहर के खिलाफ़ हाथ बढ़ाएगा, और तेरा दहना हाथ मुझे बचा लेगा।⁸~~खुदावन्द मेरे लिए सब कुछ करेगा; ऐ खुदावन्द! तेरी शफ़क़त हमेशा की है। अपनी दस्तकारी को न छोड़ |

Chapter 139

¹~ऐ खुदावन्द! तूने मुझे जाँच लिया और पहचान लिया।²~तू मेरा उठना बैठना जानता है; तू मेरे खयाल को दूर से समझ लेता है।

³~तू मेरे रास्ते की और मेरी ख्वाबगाह की छान बीन करता है, और मेरे सब चाल चलन से वाकिफ़ है।⁴~~देख! मेरी ज़बान पर कोई ऐसी बात नहीं, जिसे तू ऐ खुदावन्द पूरे तौर पर न जानता हो।⁵~तूने मुझे आगे पीछे से घेर रखा है, और तेरा हाथ मुझ पर है।⁶~यह इरफ़ान मेरे लिए बहुत 'अजीब है; यह बुलन्द है, मैं इस तक पहुँच नहीं सकता।

⁷~मैं तेरी रूह से बचकर कहाँ जाऊँ? या तेरे सामने से किधर भागूँ?⁸~अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ, तो तू वहाँ है। अगर मैं पाताल में बिस्तर बिछाऊँ, तो देख तू वहाँ भी है!

⁹~अगर मैं सुबह के पर लगाकर, समन्दर की इन्तिहा में जा बसूँ¹⁰~तो वहाँ भी तेरा हाथ मेरी राहनुमाई करेगा, और तेरा दहना हाथ मुझे संभालेगा।

¹¹~अगर मैं कहूँ कि यक़ीनन तारीकी मुझे छिपा लेगी, और मेरी चारों तरफ़ का उजाला रात बन जाएगा।¹²~~तो अंधेरा भी तुझ से छिपा नहीं सकता, बल्कि रात भी दिन की तरह रोशन है; अंधेरा और उजाला दोनों एक जैसे हैं।

¹³~क्योंकि मेरे दिल को तू ही ने बनाया; मेरी माँ के पेट में तू ही ने मुझे सूरत बख़्शी।¹⁴~~मैं तेरा शुक्र करूँगा, क्योंकि मैं 'अजीबओ-ग़रीब तौर से बना हूँ। तेरे काम हैरत अंगेज़ हैं मेरा दिल इसे खूब जानता है।

¹⁵~जब मैं पोशीदगी में बन रहा था, और ज़मीन के तह में 'अजीब तौर से मुरतब हो रहा था, तो मेरा क़ालिब तुझ से छिपा न था।¹⁶~~तेरी आँखों ने मेरे बेतरतीब मादे को देखा, और जो दिन मेरे लिए मुकर्रर थे, वह सब तेरी किताब में लिखे थे; जब कि एक भी वुजूद में न आया था।

¹⁷~ऐ खुदा! तेरे खयाल मेरे लिए कैसे बेशबहा हैं। उनका मजमूआ कैसा बड़ा है!¹⁸~~अगर मैं उनको गिनी तो वह शुमार में रेत से भी ज़्यादा हैं। जाग उठते ही तुझे अपने साथ पाता हूँ।

¹⁹~~ऐ खुदा! काश के तू शरीर को क़त्ल करे। इसलिए ऐ खूनख़वारो! मेरे पास से दूर हो जाओ।²⁰~~क्योंकि वह शरारत से तेरे खिलाफ़ बातें करते हैं: और तेरे दुश्मन तेरा नाम बेफ़ायदा लेते हैं।

²¹~~ऐ खुदावन्द! क्या मैं तुझ से 'अदावत रखने वालों से 'अदावत नहीं रखता, और क्या मैं तेरे मुखालिफ़ों से बेज़ार नहीं हूँ?²²~मुझे उनसे पूरी 'अदावत है, मैं उनको अपने दुश्मन समझता हूँ।

²³~ऐ खुदा, तू मुझे जाँच और मेरे दिल को पहचान। मुझे आज़मा और मेरे खयालों को जान ले!²⁴~~और देख कि मुझ में कोई बुरा चाल चलन तो नहीं, और मुझ को हमेशा की राह में ले चल!

Chapter 140

¹~ऐ खुदावन्द! मुझे बुरे आदमी से रिहाई बख्श; मुझे टेढ़े आदमी से महफूज़ रख।²~जो दिल में शरारत के मन्सूबे बाँधते हैं; वह हमेशा मिलकर जंग के लिए जमा' हो जाते हैं।³~उन्होंने अपनी ज़बान साँप की तरह तेज़ कर रखी है। उनके होठों के नीचे अज़दहा का ज़हर है।

⁴~ऐ खुदावन्द! मुझे शरीर के हाथ से बचा मुझे टेढ़े आदमी से महफूज़ रख, जिनका इरादा है कि मेरे पाँव उखाड़ दें।⁵~मगरूरों ने मेरे लिए फंदे और रस्सियों को छिपाया है, उन्होंने राह के किनारे जाल लगाया है; उन्होंने मेरे लिए दाम बिछा रखे हैं। (सिलाह)

⁶~मैंने खुदावन्द से कहा, मेरा खुदा तू ही है। ऐ खुदावन्द, मेरी इत्तिजा की आवाज़ पर कान लगा।⁷~ऐ खुदावन्द मेरे मालिक, ऐ मेरी नजात की ताक़त, तूने जंग के दिन मेरे सिर पर साया किया है।⁸~ऐ खुदावन्द, शरीर की मुराद पूरी न कर, उसके बुरे मन्सूबे को अंजाम न दे ताकि वह डींग न मारे। (सिलाह)

⁹~मुझे घेरने वालों की मुँह के शरारत, उन्हीं के सिर पर पड़े।¹⁰~उन पर अंगारे गिरें! वह आग में डाले जाएँ! और ऐसे गढ़ों में कि फिर न उठे।¹¹~बदज़बान आदमी की ज़मीन पर क्रयाम न होगा। आफ़त टेढ़े आदमी को दौड़ा कर हलाक करेगी।

¹²~मैं जानता हूँ कि खुदावन्द मुसीब तज़दा के मु'आमिले की, और मोहताज के हक़ की ताईद करेगा।¹³~यक़ीनन सादिक़ तेरे नाम का शुक्र करेंगे, और रास्तबाज़ तेरे सामने में रहेंगे।

Chapter 141

¹~ ऐ खुदावन्द! मैंने तेरी दुहाई दी मेरी तरफ़ जल्द आ! जब मैं तुझ से दु'आ करूँ, तो मेरी आवाज़ पर कान लगा!²~मेरी दु'आ तेरे सामने खुशबू की तरह हो, और मेरा हाथ उठाना शाम की कुर्बानी की तरह!

³~ऐ खुदावन्द! मेरे मुँह पर पहरा बिठा; मेरे लबों के दरवाज़े की निगहबानी कर | ⁴~मेरे दिल को किसी बुरी बात की तरफ़ माइल न होने दे; कि बदकारों के साथ मिलकर, शरारत के कामों में मसरूफ़ हो जाए, और मुझे उनके नफ़ीस खाने से दूर रख।

⁵~सादिक़ मुझे मारे तो मेहरबानी होगी, वह मुझे तम्बीह करे तो जैसे सिर पर रौग़न होगा। मेरा सिर इससे इंकार न करे, क्योंकि उनकी शरारत में भी मैं दु'आ करता रहूँगा।⁶~उनके हाकिम चट्टान के किनारों पर से गिरा दिए गए हैं, और वह मेरी बातें सुनेंगे, क्योंकि यह शीरीन हैं।⁷~जैसे कोई हल चलाकर ज़मीन को तोड़ता है, वैसे ही हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह पर बिखरी पड़ी हैं।

⁸~क्योंकि ऐ मालिक़ खुदावन्द! मेरी आँखें तेरी तरफ़ हैं; मेरा भरोसा तुझ पर है, मेरी जान को बेकस न छोड़!⁹~मुझे उस फंदे से जो उन्होंने मेरे लिए लगाया है, और बदकिरदारों के दाम से बचा।¹⁰~शरीर आप अपने जाल में फँसें, और मैं सलामत बच निकलूँ।

Chapter 142

¹~मैं अपनी ही आवाज़ बुलंद करके खुदावन्द से फ़रियाद करता हूँ मैं अपनी ही आवाज़ से खुदावन्द से मिन्नत करता हूँ।²~मैं उसके सामने फ़रियाद करता हूँ, मैं अपना दुख उसके सामने बयान करता हूँ।

³~जब मुझ में मेरी जान निढाल थी, तू मेरी राह से वाकिफ़ था! जिस राह पर मैं चलता हूँ उसमे उन्होंने मेरे लिए फंदा लगाया है।⁴~दहनी तरफ़ निगाह कर और देख, मुझे कोई नहीं पहचानता। मेरे लिए कहीं पनाह न रही, किसी को मेरी जान की फ़िक्र नहीं।⁵~ऐ खुदावन्द, मैंने तुझ से फ़रियाद की; मैंने कहा, तू मेरी पनाह है, और ज़िन्दों की ज़मीन में मेरा बख़रा।

⁶~मेरी फ़रियाद पर तवज्जुह कर, क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ! मेरे सताने वालों से मुझे रिहाई बख़्श, क्योंकि वह मुझ से ताक़तवर हैं।⁷~मेरी जान को कैद से निकाल, ताकि तेरे नाम का शुक्र करूँ सादिक़ मेरे गिर्द जमा होंगे ~क्योंकि तू मुझ पर एहसान करेगा।

Chapter 143

¹~ऐ खुदावन्द, मेरी दू'आ सुन, मेरी इल्तिजा पर कान लगा। अपनी वफ़ादारी और सदाक़त में मुझे जवाब दे,²~और अपने बन्दे को 'अदालत में न ला, क्योंकि तेरी नज़र में कोई आदमी रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।

³~इसलिए कि दुश्मन ने मेरी जान को सताया है; उसने मेरी ज़िन्दगी को खाक में मिला दिया, और मुझे अंधेरी जगहों में उनकी तरह बसाया है जिनको मरे मुद्दत हो गई हो।⁴~इसी वजह से मुझ में मेरी जान निढाल है; और मेरा दिल मुझ में बेकल है।

⁵~मैं पिछले ज़मानों को याद करता हूँ, मैं तेरे सब कामों पर ग़ौर करता हूँ, और तेरी दस्तकारी पर ध्यान करता हूँ।⁶~मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ फैलाता हूँ मेरी जान खुशक ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है।

⁷~ऐ खुदावन्द, जल्द मुझे जवाब दे: मेरी रूह गुदाज़ हो चली! अपना चेहरा मुझ से न छिपा, ऐसा न हो कि मैं क़ब्र में उतरने वालों की तरह हो जाऊँ।⁸~सुबह को मुझे अपनी शफ़क़त की खबर दे, क्योंकि मेरा भरोसा तुझ पर है। मुझे वह राह बता जिस पर मैं चलूँ, क्योंकि मैं अपना दिल तेरी ही तरफ़ लगाता हूँ।

⁹~ऐ खुदावन्द, मुझे मेरे दुश्मनों से रिहाई बख़्श; क्योंकि मैं पनाह के लिए तेरे पास भाग आया हूँ।¹⁰~मुझे सिखा के तेरी मज़ी पर चलूँ, इसलिए कि तू मेरा खुदा है! तेरी नेक रूह मुझे रास्ती के मुल्क में ले चले!

¹¹~ऐ खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मुझे ज़िन्दा कर! अपनी सदाक़त में मेरी जान को मुसीबत से निकाल!¹²~अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को काट डाल, और मेरी जान के सब दुख देने वालों को हलाक कर दे, क्योंकि मैं तेरा बन्दा हूँ |

Chapter 144

¹~खुदावन्द मेरी चट्टान मुबारक हो, जो मेरे हाथों को जंग करना, और मेरी उँगलियों को लड़ना सिखाता है।²~~वह मुझ पर शफ़क़त करने वाला, और मेरा क़िला' है; मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरा छुड़ाने वाला, वह मेरी ढाल और मेरी पनाहगाह है; जो मेरे लोगों को मेरे ताबे' करता है।

³~ऐ खुदावन्द, इन्सान क्या है कि तू उसे याद रखे? और आदमज़ाद क्या है कि तू उसका खयाल करे?⁴~इन्सान बुतलान की तरह है; उसके दिन ढलते साये की तरह हैं।

⁵~ऐ खुदावन्द, आसमानों को झुका कर उतर आ! पहाड़ों को छू, तो उनसे धुआँ उठेगा!⁶~बिजली गिराकर उनको तितर बितर कर दे, अपने तीर चलाकर उनको शिकस्त दे!

⁷~ऊपर से हाथ बढ़ा, मुझे रिहाई दे और बड़े सैलाब, या'नी परदेसियों के हाथ से छुड़ा।⁸~जिनके मुँह से बेकारी निकलती रहती है, और जिनका दहना हाथ झूट का दहना हाथ है।

⁹~ऐ खुदा! मैं तेरे लिए नया हम्द गाऊँगा; दस तार वाली बरबत पर मैं तेरी मदहसराई करूँगा।¹⁰~वही बादशाहों को नजात बख़्शता है; और अपने बन्दे दाऊद को हलाक़त की तलवार से बचाता है।¹¹~~मुझे बचा और परदेसियों के हाथ से छुड़ा, जिनके मुँह से बेकारी निकलती रहती है, और जिनका दहना हाथ झूट का दहना हाथ है।

¹²~जब हमारे बेटे जवानी में क्रदआवर पौदों की तरह हों और हमारी बेटियाँ महल के कोने के लिए तराशे हुए पत्थरों की तरह हों,¹³~जब हमारे खत्ते भरे हों, जिनसे हर किस्म की जिन्स मिल सके, और हमारी भेड़ बकरियाँ हमारे कूचों में हज़ारों और लाखों बच्चे दें:

¹⁴~जब हमारे बैल खूब लदे हों, जब न रखना हो न खुर्रुज, और न हमारे कूचों में वावैला हो।¹⁵~~मुबारक है वह क़ौम जिसका यह हाल है। मुबारक है वह क़ौम जिसका खुदा खुदावन्द है।

Chapter 145

¹~ऐ मेरे खुदा, मेरे बादशाह! मैं तेरी तम्जीद करूँगा | और हमेशा से हमेशा तक तेरे नाम को मुबारक कहूँगा।²~मैं हर दिन तुझे मुबारक कहूँगा, और हमेशा से हमेशा तक तेरे नाम की सिताइश करूँगा।³~खुदावन्द बुजुर्ग और बेहद सिताइश के लायक है; उसकी बुजुर्गी बयान से बाहर है।

⁴~एक नसल दूसरी नसल से तेरे कामों की ता'रीफ़, और तेरी कुदरत के कामों का बयान करेगी।⁵~मैं तेरी 'अज़मत की जलाली शान पर, और तेरे 'अजाइब पर ग़ौर करूँगा।

⁶~और लोग तेरी कुदरत के हौलनाक कामों का ज़िक्र करेंगे, और मैं तेरी बुजुर्गी बयान करूँगा।⁷~वह तेरे बड़े एहसान की यादगार का बयान करेंगे, और तेरी सदाक़त का हम्द गाएँगे।

⁸~खुदावन्द रहीम-ओ-करीम है; वह कहर करने में धीमा और शफ़क़त में ग़नी है।⁹~खुदावन्द सब पर मेहरबान है, और उसकी रहमत उसकी सारी मख़लूक पर है।

¹⁰~ऐ खुदावन्द, तेरी सारी मख़लूक तेरा शुक्र करेगी, और तेरे पाक लोग तुझे मुबारक कहेंगे!¹¹~वह तेरी सल्तनत के जलाल का बयान, और तेरी कुदरत का ज़िक्र करेंगे;¹²~ताकि बनी आदम पर उसके कुदरत के कामों को, और उसकी सल्तनत के जलाल की शान को ज़ाहिर करें।

¹³~तेरी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है, और तेरी हुकूमत नसल-दर-नसल।

¹⁴~खुदावन्द गिरते हुए को संभालता, और झुके हुए को उठा खड़ा करता है।¹⁵~सब की आँखें तुझ पर लगी हैं, तू उनको वक़्त पर उनकी ख़ुराक देता है।¹⁶~तू अपनी मुट्ठी खोलता है, और हर जानदार की ख़्वाहिश पूरी करता है।

¹⁷~खुदावन्द अपनी सब राहों में सादिक़, और अपने सब कामों में रहीम है।¹⁸~खुदावन्द उन सबके करीब है जो उससे दु'आ करते हैं, या 'नी उन सबके जो सच्चाई से दु'आ करते हैं।¹⁹~जो उससे डरते हैं वह उनकी मुराद पूरी करेगा, वह उनकी फ़रियाद सुनेगा और उनको बचा लेगा।

²⁰~खुदावन्द अपने सब मुहब्बत रखने वालों की हिफ़ाज़त करेगा; लेकिन सब शरीरों को हलाक कर डालेगा।²¹~मेरे मुँह से खुदावन्द की सिताइश होगी, और हर बशर उसके पाक नाम को हमेशा से हमेशा तक मुबारक कहे।

Chapter 146

¹~खुदावन्द की हम्द करो ऐ मेरी जान, खुदावन्द की हम्द कर!²~~मैं 'उम्र भर खुदावन्द की हम्द करूँगा, जब तक मेरा वुजूद है मैं अपने खुदा की मददसराई करूँगा।

³~न उमरा पर भरोसा करो न आदमज़ाद पर, वह बचा नहीं सकता।⁴~उसका दम निकल जाता है तो वह मिट्टी में मिल जाता है; उसी दिन उसके मन्सूबे फ़ना हो जाते हैं।

⁵~खुश नसीब है वह, जिसका मददगार या 'कूब का खुदा है, और जिसकी उम्मीद खुदावन्द उसके खुदा से है।⁶~~जिसने आसमान और ज़मीन और समन्दर को, और जो कुछ उनमें है बनाया; जो सच्चाई को हमेशा क़ायम रखता है।

⁷~जो मज़लूमों का इन्साफ़ करता है; जो भूकों को खाना देता है। खुदावन्द कैदियों को आज़ाद करता है;⁸~खुदावन्द अन्धों की आँखें खोलता है; खुदावन्द झुके हुए को उठा खड़ा करता है; खुदावन्द सादिकों से मुहब्बत रखता है।

⁹~खुदावन्द परदेसियों की हिफ़ाज़त करता है; वह यतीम और बेवा को संभालता है; लेकिन शरीरों की राह टेढ़ी कर देता है।¹⁰~~खुदावन्द, हमेशा तक सल्लनत करेगा, ऐ सिय्यून! तेरा खुदा नसल दर नसल। खुदावन्द की हम्द करो*!

Chapter 147

¹~खुदावन्द की हम्द करो*! क्योंकि खुदा की मदहसराई करना भला है; इसलिए कि यह दिलपसंद और सिताइश ज़ेबा है।

²खुदावन्द यरूशलीम को ता'मीर करता है; वह इस्राईल के जिला वतनों को जमा' करता है।³~वह शिकस्ता दिलों को शिफ़ा देता है, और उनके ज़ख्म बाँधता है।

⁴~वह सितारों को शुमार करता है, और उन सबके नाम रखता है।⁵~हमारा खुदावन्द बुजुर्ग और कुदरत में 'अज़ीम है; उसके समझ की इन्तिहा नहीं।

⁶~~खुदावन्द हलीमों को संभालता है, वह शरीरों को खाक में मिला देता है।⁷~खुदावन्द के सामने शुक्रगुज़ारी का हम्द गाओ, सितार पर हमारे खुदा की मदहसराई करो।

⁸~जो आसमान को बादलों से मुलब्स करता है; जो ज़मीन के लिए मेंह तैयार करता है; जो पहाड़ों पर घास उगाता है।⁹~जो हैवानात को खुराक देता है, और कव्वे के बच्चे को जो काएँ काएँ करते हैं।

¹⁰~घोड़े के ज़ोर में उसकी खुशनूदी नहीं न आदमी की टाँगों से उसे कोई खुशी है;¹¹~खुदावन्द उनसे खुश है जो उससे डरते हैं, और उनसे ~जो उसकी शफ़क़त के उम्मीदवार हैं।

¹²~~ऐ यरूशलीम! खुदावन्द की सिताइश कर! , ऐ सिय्यून! अपने खुदा की सिताइश कर।¹³~~क्योंकि उसने तेरे फाटकों के बेंडों को मज़बूत किया है, ~उसने तेरे अन्दर तेरी औलाद को बरकत दी है।¹⁴~वह तेरी हद में अम्न रखता है! वह तुझे अच्छे से अच्छे गेहूँ से आसूदा करता है।

¹⁵~वह अपना हुक्म ज़मीन पर भेजता है, ~उसका कलाम बहुत तेज़ रौ है।¹⁶~वह बर्फ़ को ऊन की तरह गिराता है, और पाले को राख की तरह बिखेरता है।

¹⁷~वह यख को लुकमों की तरह फेंकता उसकी ठंड कौन सह सकता है?¹⁸~वह अपना कलाम नाज़िल करके उनको पिघला देता है; वह हवा चलाता है और पानी बहने लगता है।

¹⁹~वह अपना कलाम या'कूब पर ज़ाहिर ~करता है, और अपने आईन-ओ-अहकाम इस्राईल पर।²⁰~उसने किसी और क्रौम से ऐसा सुलूक नहीं किया; और उनके अहकाम को उन्होंने नहीं जाना। खुदावन्द की हम्द करो*!

Chapter 148

¹~खुदावन्द की हम्द करो*! आसमान पर से खुदावन्द की हम्द करो, बुलंदियों पर उसकी हम्द करो!²~ऐ उसके फ़िरिश्तो! सब उसकी हम्द करो। ऐ उसके लश्करो! सब उसकी हम्द करो!

³~ऐ सूरज! ऐ चाँद! उसकी हम्द करो। ऐ नूरानी सितारों! सब उसकी हम्द करो⁴~ऐ फ़लक-उल-अफ़लाक! उसकी हम्द करो! और तू भी ~ऐ फ़ज़ा पर के पानी!

⁵~यह सब खुदावन्द के नाम की हम्द करें, क्योंकि उसने हुक्म दिया और यह पैदा हो गए।⁶~उसने इनको हमेशा से हमेशा तक के लिए क़ायम किया है; उसने अटल क़ानून मुक़र्रर कर दिया है।

⁷~ज़मीन पर से खुदावन्द की हम्द करो ऐ अज़दहाओ और सब गहरे समन्दरो!⁸~ऐ आग और ओलो! ऐ बर्फ़ और कुहर ऐ तूफ़ानी हवा! जो उसके कलाम की ता'लीम करती है ।

⁹~ऐ पहाड़ो और सब टीलो! ऐ मेवादार दरख़्तो और सब देवदारो!¹⁰~ऐ जानवरो और सब चौपायो! ऐ रेंगने वालो और परिन्दो!

¹¹~ऐ ज़मीन के बादशाहो और सब उम्मतों! ऐ उमरा और ज़मीन के सब हाकिमों!¹²~ऐ नौजवानो और कुंवारीयो! ऐ बूढ़ों और बच्चो!

¹³~यह सब खुदावन्द के नाम की हम्द करें, क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम मुस्ताज़ है। उसका जलाल ज़मीन और आसमान से बुलन्द है।¹⁴और उसने अपने सब पाक लोगों या'नी अपनी मुक़र्रब क़ौम बनी इस्राईल के फ़ख़्र के लिए, अपनी क़ौम का सींग बुलन्द किया। खुदावन्द की हम्द करो*!

Chapter 149

¹~खुदावन्द की हम्द करो!! खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ, और पाक लोगों के मजमे' में उसकी मदहसराई करो!

²~इस्राईल अपने खालिक में खुश रहे, फ़र्ज़न्दान-ए-सिय्यून अपने बादशाह की वजह से खुश हों!³~वह नाचते हुए उसके नाम की सिताइश करें, वह दफ़ और सितार पर उसकी मदहसराई करें!

⁴क्योंकि खुदावन्द अपने लोगों से खूशनूद रहता है; वह हलीमों को नजात से ज़ीनत बख़्शेगा।⁵पाक लोग जलाल पर फ़ख़्र करें, वह अपने बिस्तरों पर खुशी से नग़मा सराई करें।

⁶उनके मुँह में खुदा की तम्ज़ीद, और हाथ में दोधारी तलवार हो,⁷~ताकि क़ौमों से इन्तक़ाम लें, और उम्मतों को सज़ा दें:

⁸~उनके बादशाहों को ज़ंजीरों से जकड़ें, और उनके सरदारों को लोहे की बेड़ियाँ पहनाएं।⁹~ताकि उनको वह सज़ा दें जो लिखी है! उसके सब पाक लोगों को यह मक़ाम हासिल है। खुदावन्द की हम्द करो*!

Chapter 150

¹~खुदावन्द की हम्द करो*! तुम खुदा के हैकल में उसकी हम्द करो; उसकी कुदरत के फ़लक पर उसकी हम्द करो!²~उसकी कुदरत के कामों की वजह से उसकी हम्द करो; उसकी बड़ी 'अज़मत के मुताबिक़ उसकी हम्द करो!

³~नरसिंगे की आवाज़ के साथ उसकी हम्द करो; बरबत और सितार पर उसकी हम्द करो!⁴~दफ़ बजाते और नाचते हुए उसकी हम्द करो; तारदार साज़ों और बांसली के साथ~उसकी हम्द करो!⁵~बुलन्द आवाज़ झाँझ के साथ उसकी हम्द करो! ~ज़ोर से इझनाती झाँझ के साथ उसकी हम्द करो!

⁶~हर शख्स खुदावन्द की हम्द करे! ~खुदावन्द की हम्द करो!

अम्साल

Chapter 1

¹~इसाईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अम्साल:²हिकमत और तरबियत हासिल करने, और समझ की बातों का फ़र्क़ करने के लिए,³~'अक्लमंदी और सदाक़त और 'अद्ल, और रास्ती में तरबियत हासिल करने के लिए;

⁴सादा दिलों को होशियारी, जवान को 'इल्म और तमीज़ बख़्शने के लिए,⁵ताकि 'अक्लमंद आदमी सुनकर 'इल्म में तरक्की करे और समझदार आदमी दुरुस्त मश्वरत तक पहुँचे,⁶~जिस से मसल और तम्सील को, 'अक्लमंदों की बातों और उनके पोशीदा राज़ो को समझ सके।

⁷~खुदावन्द का ख़ौफ़ 'इल्म की शुरूआत है; लेकिन बेवकूफ़ हिकमत और तरबियत की हिक़ारत करते हैं।⁸~ऐ मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत पर कान लगा, और अपनी माँ की ता'लीम को न ~छोड़;⁹क्यूँकि वह तेरे सिर के लिए ज़ीनत का सेहरा, और तेरे गले के लिए तौक़ होंगी।

¹⁰ऐ मेरे बेटे, अगर गुनहगार तुझे फुसलाएँ, तू रज़ामंद न होना।¹¹~अगर वह कहें, "हमारे साथ चल, हम खून करने के लिए ताक में बैठे, और छिपकर बेगुनाह के लिए नाहक़ घात लगाएँ,

¹²~हम उनको इस तरह ज़िन्दा और पूरा निगल जाएँ जिस तरह पाताल मुर्दों को निगल जाता है।¹³~हम को हर क्रिस्म का 'उम्दा माल मिलेगा, हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे,¹⁴~तू हमारे साथ मिल जा, हम सबकी एक ही थैली होगी, "

¹⁵~तो ऐ मेरे बेटे, तू उनके साथ न जाना, उनकी राह से अपना पाँव रोकना।¹⁶क्यूँकि उनके पाँव बदी की तरफ़ दौड़ते हैं, और खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।

¹⁷क्यूँकि परिंदे की आँखों के सामने, जाल बिछाना बेकार है।

¹⁸~और यह लोग तो अपना ही खून करने के लिए ताक में बैठते हैं, और छिपकर अपनी ही जान की घात लगाते हैं।¹⁹~नफ़े' के लालची की राहें ऐसी ही हैं, ऐसा नफ़ा' उसकी जान लेकर ही छोड़ता है।

²⁰~हिकमत कूचे में ज़ोर से पुकारती है, वह रास्तों में अपनी आवाज़ बलन्द करती है;²¹~वह बाज़ार की भीड़ में चिल्लाती है; वह फाटक़ों के दहलीज़ पर और शहर में यह कहती है:²²"ऐ नादानो, तुम कब तक नादानी को दोस्त रखखोगे? और ठठ्ठाबाज़ी कब तक ठठ्ठाबाज़ी से और बेवकूफ़ कब तक 'इल्म से 'अदावत रखखेंगे?

²³तुम मेरी मलामत को सुनकर बाज़ आओ, देखो, मैं अपनी रूह तुम पर उँडेलूँगी, मैं तुम को अपनी बातें बताऊँगी।²⁴चूँकि मैंने बुलाया और तुम ने इंकार किया मैंने हाथ फैलाया और किसी ने खयाल न किया,²⁵बल्कि तुम ने मेरी तमाम मश्वरत को नाचीज़ जाना, और मेरी मलामत की बेक़द्री की;

²⁶~इसलिए मैं भी तुम्हारी मुसीबत के दिन हसूँगी; और जब तुम पर दहशत छा जाएगी तो ठठ्ठा मारूँगी।²⁷~या'नी जब दहशत तूफ़ान की तरह आ पड़ेगी, और आफ़त बगोले की तरह तुम को आ लेगी, जब मुसीबत और जाँकनी तुम पर टूट पड़ेगी।

²⁸~तब वह मुझे पुकारेंगे, लेकिन मैं जवाब न दूँगी; और दिल ओ जान से मुझे दूँडेंगे, लेकिन न पाएँगे।²⁹~इसलिए कि उन्होंने 'इल्म से 'अदावत रखखी, और खुदावन्द के ख़ौफ़ को इख़्तियार न किया।³⁰~उन्होंने मेरी तमाम मश्वरत की बेक़द्री की, और मेरी मलामत को बेकार जाना।

³¹~तब वह अपनी ही चाल चलन का फल खाएँगे, और अपने ही मन्सूबों से पेट भरेंगे।³²क्यूँकि नादानों की नाफ़रमानी, उनको क़त्ल करेगी, और बेवकूफ़ों की बेवकूफी उनकी हलाकत का ज़रिया' होगी।³³~लेकिन जो मेरी सुनता है, वह महफूज़ होगा, और आफ़त से निडर होकर इत्मिनान से रहेगा।"

Chapter 2

¹ऐ मेरे बेटे, अगर तू मेरी बातों को कुबूल करे, और मेरे फ़रमान को निगाह में रखे,²~ऐसा कि तू हिकमत की तरफ़ कान ~लगाए, और समझ से दिल लगाए,

³बल्कि अगर तू 'अक़ल को पुकारे, और समझ के लिए आवाज़ बलन्द करे'⁴~और उसको ऐसा ढूँढे जैसे चाँदी को, और उसकी ऐसी तलाश करे जैसी पोशीदा खज़ानों की;⁵~तो तू खुदावन्द के ख़ौफ़ को समझेगा, और खुदा के ज़रिए' को हासिल करेगा।

⁶क्योंकि खुदावन्द हिकमत बख़्शता है; 'इल्म-ओ-समझ उसी के मुँह से निकलते हैं।'⁷~वह रास्तबाज़ों के लिए मदद तैयार रखता है, और रास्तारों के लिए सिपर है।

⁸ताकि वह 'अदल की राहों की निगहबानी करे, और अपने मुक़द्दसों की राह को महफ़ूज़ रखे।

⁹~तब तू सदाक़त और 'अदल और रास्ती को, बल्कि हर एक अच्छी राह को समझेगा।'¹⁰क्योंकि हिकमत तेरे दिल में दाख़िल होगी, और 'इल्म तेरी जान को पसंद होगा,

¹¹~तमीज़ तेरी निगहबान होगी, समझ तेरी हिफ़ाज़त करेगा;¹²ताकि तुझे शरीर की राह से, और कजगो से बचाएँ।'¹³~जो रास्तबाज़ी की राह को छोड़ते हैं, ताकि तारीकी की राहों में चलें,

¹⁴~जो बदकारी से खुश होते हैं, और शरारत की कजरवी में खुश रहते हैं,¹⁵~जिनका चाल चलन ना हमवार, और जिनकी राहें टेढ़ी हैं।

¹⁶ताकि तुझे बेगाना 'औरत से बचाएँ, या'नी चिकनी चुपड़ी बातें करने वाली पराई 'औरत से,¹⁷~जो अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती है, और अपने खुदा के 'अहद को भूल जाती है।

¹⁸क्योंकि उसका घर मौत की उतराई पर है, और उसकी राहें पाताल को जाती हैं।'¹⁹~जो कोई उसके पास जाता है, वापस नहीं आता; और ज़िन्दगी की राहों तक नहीं पहुँचता।

²⁰ताकि तू नेकों की राह पर चले, और सादिकों की राहों पर क़ायम रहे।'²¹क्योंकि रास्तबाज़ मुल्क में बसेंगे, और कामिल उसमें आबाद रहेंगे।'²²~लेकिन शरीर ज़मीन पर से काट डाले जाएँगे, और दगाबाज़ उससे उखाड़ फेंके जाएँगे।

Chapter 3

¹ऐ मेरे बेटे, मेरी ता'लीम को फ़रामोश न कर, बल्कि तेरा दिल मेरे हुक्मों ~को माने,²क्योंकि तू इनसे 'उम्र की दराज़ी और बुढ़ापा, और सलामती हासिल करेगा।

³~शफ़क़त और सच्चाई तुझ से जुदा न हों, तू उनको अपने गले का तौक़ बनाना, और अपने दिल की तख़्ती पर लिख लेना।⁴~यूँ तू खुदा और इन्सान की नज़र में, मक्बूलियत और 'अक्लमन्दी ~हासिल करेगा।

⁵सारे दिल से खुदावन्द पर भरोसा कर, और अपनी समझ पर इत्मिनान न कर।⁶अपनी सब राहों में उसको पहचान, और वह तेरी रहनुमाई करेगा।

⁷~तू अपनी ही निगाह में 'अक्लमन्द न बन, खुदावन्द से डर और बदी से किनारा कर।⁸~ये तेरी नाफ़ की सिहत, और तेरी हड़िडियों की ताज़गी होगी।

⁹~अपने माल से और अपनी सारी पैदावार के पहले फलों से, खुदावन्द की ता'ज़ीम कर।¹⁰~यूँ तेरे खत्ते भरे रहेंगे, और तेरे हौज़ नई मय से लबरेज़ होंगे।

¹¹~ऐ मेरे बेटे, खुदावन्द की तम्बीह को हक़ीर न जान, और उसकी मलामत से बेज़ार न हो;¹²क्योंकि खुदावन्द उसी को मलामत करता है जिससे उसे मुहब्बत है, जैसे बाप उस बेटे को जिससे वह खुश है।

¹³~मुबारक है वह आदमी जो हिकमत को पाता है, ~और वह जो समझ हासिल करता है,¹⁴क्योंकि इसका हासिल चाँदी के हासिल से, और इसका नफ़ा' कुन्दन से बेहतर है।

¹⁵~वह मरजान से ज़्यादा बेशबहा है, और तेरी पसंदीदा चीज़ों में बेमिसाल।¹⁶उसके दहने हाथ में 'उम्र की दराज़ी है, और उसके बाएँ हाथ में दौलत ओ-'इज़ज़त।

¹⁷~उसकी राहें खुश गवार राहें हैं, और उसके सब रास्ते सलामती के हैं।¹⁸~जो उसे पकड़े रहते हैं, वह उनके लिए ज़िन्दगी का दरख़्त है, और हर एक जो उसे लिए रहता है, मुबारक है।

¹⁹खुदावन्द ने हिकमत से ज़मीन की बुनियाद डाली; और समझ से आसमान को क़ायम किया।²⁰~उसी के 'इल्म से गहराओ के सोते फूट निकले, और अफ़लाक शबनम टपकाते हैं।

²¹~ऐ मेरे बेटे, 'अक्लमन्दी और तमीज़ की हिफ़ाज़त कर, उनको अपनी आँखों से ओझल न होने दे;²²~यूँ वह तेरी जान की हयात, और तेरे गले की ज़ीनत होंगी।

²³तब तू बेखटके अपने रास्ते पर चलेगा, और तेरे पाँव को ठेस न लगेगी।²⁴~जब तू लेटेगा तो खौफ़ न खाएगा, बल्कि तू लेट जाएगा और तेरी नींद मीठी होगी।

²⁵~अचानक दहशत से खौफ़ न खाना, और न शरीरों की हलाकत से, जब वह आए;²⁶क्योंकि खुदावन्द तेरा सहारा होगा, और तेरे पाँव को फँस जाने से महफूज़ रखेगा।

²⁷~भलाई के हक़दार से उसे किनारा न करना जब तेरे मुक़द्दर में हो।²⁸जब तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से यह न कहना, अब जा, फिर आना मैं तुझे कल दूँगा।

²⁹~अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ बुराई का मन्सूबा न बाँधना, जिस हाल कि वह तेरे पड़ोस में बेखटके रहता है।³⁰अगर किसी ने तुझे नुक़सान न पहुँचाया हो, तू उससे बे वजह झगड़ा न करना।

³¹~तुन्दखू आदमी पर जलन न करना, और उसके किसी चाल चलन को इख़्तियार न करना;³²क्योंकि कजरौ से खुदावन्द को नफ़रत लेकिन रास्तबाज़ उसके महरम-ए-राज़ हैं।

³³~शरीरों के घर पर खुदावन्द की ला'नत है, लेकिन सादिकों के मस्कन पर उसकी बरकत है।³⁴यक़ीनन वह ठठ्ठाबाज़ों पर ठठ्ठे मारता है, लेकिन फ़रोतनों पर फ़ज़ल करता है।

³⁵~'अक्लमन्द जलाल के वारिस होंगे, लेकिन बेवकूफ़ों की तरक्की शर्मिन्दगी होगी।

Chapter 4

¹~ऐ मेरे बेटो, बाप की तरबियत पर कान लगाओ, और समझ हासिल करने के लिए तवज्जुह करो।²क्योंकि मैं तुम को अच्छी तल्कीन करता तुम मेरी ता'लीम को न छोड़ना।

³क्योंकि मैं भी अपने बाप का बेटा था, और अपनी माँ की निगाह में नाज़ुक और अकेला लाडला।⁴~बाप ने मुझे सिखाया और मुझ से कहा, "मेरी बातें तेरे दिल में रहें, मेरे फ़रमान बजा ला और ज़िन्दा रह।

⁵हिकमत हासिल कर, समझ हासिल कर, भूलना मत और मेरे मुँह की बातों से नाफ़रमान न होना।⁶~हिकमत को न छोड़ना, वह तेरी हिफ़ाज़त करेगी; उससे मुहब्बत रखना, वह तेरी निगहबान होगी।~।

⁷~हिकमत अफ़ज़ल असल है, फिर हिकमत हासिल कर; बल्कि अपने तमाम हासिलात से समझ हासिल कर;⁸~उसकी ता'ज़ीम कर, वह तुझे सरफ़राज़ करेगी; जब तू उसे गले लगाएगा, वह तुझे 'इज़ज़त बख़्शेगी।⁹~वह तेरे सिर पर ज़ीनत का सेहरा बाँधेगी; और तुझ को खूबसूरती का ताज 'अता करेगी।"

¹⁰~ऐ मेरे बेटे, सुन और मेरी बातों को कुबूल कर, और तेरी ज़िन्दगी के दिन बहुत से होंगे।¹¹मैंने तुझे हिकमत की राह बताई है; और राह-ए-रास्त पर तेरी राहनुमाई की है।¹²~जब तू चलेगा तेरे क़दम कोताह न होंगे; और अगर तू दौड़े तो ठोकर न खाएगा।~।

¹³तरबियत को मज़बूती से पकड़े रह, उसे जाने न दे; उसकी हिफ़ाज़त कर क्योंकि वह तेरी ज़िन्दगी है।¹⁴~शरीरों के रास्ते में न जाना, और बुरे आदमियों की राह में न चलना।¹⁵~उससे बचना, उसके पास से न गुज़रना, उससे मुड़कर आगे बढ़ जाना;

¹⁶क्योंकि वह जब तक बुराई न कर लें सोते नहीं; और जब तक किसी को गिरा न दें उनकी नींद जाती रहती है।¹⁷क्योंकि वह शरारत की रोटी खाते, और जुल्म की मय पीते हैं।

¹⁸~लेकिन सादिकों की राह सुबह की रोशनी की तरह है, जिसकी रोशनी दो पहर तक बढ़ती ही जाती है।¹⁹शरीरों की राह तारीकी की तरह है; वह नहीं जानते कि किन चीज़ों से उनको ठोकर लगती है।

²⁰ऐ मेरे बेटे, मेरी बातों पर तवज्जुह कर, मेरे कलाम पर कान लगा।²¹~उसको अपनी आँख से ओझल न होने दे, उसको अपने दिल में रख।

²²क्योंकि जो इसको पा लेते हैं, यह उनकी ज़िन्दगी, और उनके सारे जिस्म की सिहत है।²³~अपने दिल की खूब हिफ़ाज़त कर; क्योंकि ज़िन्दगी का सर चश्मा वही है।

²⁴~कजगो मुँह तुझ से अलग रहे, दरोगगो लब तुझ से दूर हों।²⁵तेरी आँखें सामने ही नज़र करें, और तेरी पलके सीधी रहें।

²⁶अपने पाँव के रास्ते को हमवार बना, और तेरी सब राहें क़ायम रहें।²⁷~न दहने मुड़ न बाएँ; और पाँव को बदी से हटा ले।

Chapter 5

¹ऐ मेरे बेटे! मेरी हिंमत पर तवज्जुह कर, मेरे समझ पर कान लगा;²ताकि तू तमीज़ को महफूज़ रखवें, और तेरे लब 'इल्म के निगहबान हों:

³क्यूँकि बेगाना 'औरत के होटों से शहद टपकता है, और उसका मुँह तेल से ज़्यादा चिकना है';⁴~लेकिन उसका अन्जाम अज़दहे की तरह तल्ख, और दो धारी तलवार की तरह तेज़ है।

⁵~उसके पाँव मौत की तरफ़ जाते हैं, उसके क़दम पाताल तक पहुँचते हैं।⁶~इसलिए उसे ज़िन्दगी का हमवार रास्ता नहीं मिलता; उसकी राहें बेठिकाना हैं, पर वह बेख़बर है।

⁷~इसलिए ऐ मेरे बेटो, मेरी सुनो, और मेरे मुँह की बातों से नाफ़रमान न हो।⁸उस 'औरत से अपनी राह दूर रख, और उसके घर के दरवाज़े के पास भी न जा;

⁹~ऐसा न हो कि तू अपनी आबरू किसी ग़ैर के, और अपनी 'उम्र बेरहम के हवाले करे।¹⁰~ऐसा न हो कि बेगाने तेरी कुव्वत से सेर हों, और तेरी कमाई किसी ग़ैर के घर जाए;

¹¹और जब तेरा गोश्त और तेरा जिस्म घुल जाये तो तू अपने अन्जाम पर नोहा करे;¹²~और कहे, 'मैंने तरबियत से कैसी 'अदावत रखी, ~और मेरे दिल ने मलामत को हक़ीर जाना |

¹³~न मैंने अपने उस्तादों का कहा माना, न अपने तरबियत करने वालों की सुनी।¹⁴~मैं जमा'अत और मजलिस के बीच, क़रीबन सब बुराइयों में मुब्तिला हुआ।"

¹⁵~तू पानी अपने ही हौज़ से और बहता पानी अपने ही चश्मे से पीना¹⁶~क्या तेरे चश्मे बाहर बह जाएँ, और पानी की नदियाँ कूचों में?¹⁷~वह सिर्फ़ तेरे ही लिए हों, न तेरे साथ ग़ैरों के लिए भी |

¹⁸तेरा सोता मुबारक हो और तू अपनी जवानी की बीवी के साथ खुश रह |¹⁹प्यारी हिरनी और दिल फ़रेब गजाला की तरह उसकी छातियाँ तुझे हर वक़्त आसूदह करें और उसकी मुहब्बत तुझे हमेशा फ़रेपता रखे |

²⁰ऐ मेरे बेटे, तुझे ~बेगाना 'औरत क्यों फ़रेपता करे और तू ग़ैर 'औरत से क्यों हम आग़ोश हो ?²¹क्यूँकि इन्सान की राहें खुदावन्द की आँखों के सामने हैं और वही सब रास्तों को हमवार बनाता है |

²²~शरीर को उसी की बदकारी पकड़ेगी, ~और वह अपने ही गुनाह की रस्सियों से जकड़ा जाएगा।²³~वह तरबियत न पाने की वजह से मर जायेगा~~और अपनी सख़्त बेवकूफ़ी की वजह से~गुमराह हो जायेगा|

Chapter 6

¹ऐ मेरे बेटे, अगर तू अपने पड़ोसी ~का ज़ामिन हुआ है, अगर तू हाथ पर हाथ मारकर किसी बेगाने का ज़िम्मेदार हुआ है,²~तो तू अपने ही मुँह की बातों में फंसा, ~तू अपने ही मुँह की बातों से~पकड़ा गया।

³~इसलिए ऐ मेरे बेटे, क्योंकि तू अपने पड़ोसी ~के हाथ में फँस गया है, अब यह कर और अपने आपको बचा ले, ~जा, खाकसार बनकर अपने पड़ोसी ~से इसरार कर।

⁴~तू न अपनी आँखों में नींद आने दे, और न अपनी पलकों में झपकी।⁵~अपने आपको हरनी की तरह और सय्याद के हाथ से, और चिड़िया की तरह चिड़ीमार के हाथ से छुड़ा।

⁶ऐ काहिल, चींटी के पास जा, ~चाल चलन पर गौर कर और 'अक्लमंद बन।'⁷जो बावजूद यह कि उसका न कोई सरदार, न नाज़िर न हाकिम है,⁸गर्मी के मौसिम में अपनी खुराक मुहय्या करती है, और फ़सल कटने के वक़्त अपनी खुराक जमा' करती है।

⁹ऐ काहिल, तू कब तक पड़ा रहेगा? तू नींद से कब उठेगा?¹⁰थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, ज़रा पड़े रहने को हाथ पर हाथ:¹¹इसी तरह तेरी ग़रीबी राहज़न की तरह, और तेरी तंगदस्ती हथियारबन्द आदमी की तरह आ पड़ेगी।

¹²खबीस-ओ-बदकार आदमी, टेढ़ी तिरछी ज़बान लिए फिरता है।¹³~वह आँख मारता है, वह पाँव से बातें, और ऊँगलियों से इशारा करता है।

¹⁴उसके दिल में कजी है, वह बुराई के मन्सूबे बाँधता रहता है, वह फ़ितना अंगेज़ है।¹⁵इसलिए आफ़त उस पर अचानक आ पड़ेगी, वह एकदम तोड़ दिया जाएगा और कोई चारा न होगा।

¹⁶छ: चीज़ें हैं जिनसे खुदावन्द को नफ़रत है, बल्कि सात हैं जिनसे उसे नफ़रत है:

¹⁷ऊँची आँखें, झूटी ज़बान, बेगुनाह का खून बहाने वाले हाथ,¹⁸~बुरे मन्सूबे बाँधने वाला दिल, शरारत के लिए तेज़ ~रफ़्तार पाँव,¹⁹झूटा गवाह जो दरोहगोई करता है, और जो भाइयों में निफ़ाक़ डालता है।

²⁰~ऐ मेरे बेटे, अपने बाप के फ़रमान को बजा ला, और अपनी माँ की ता'लीम को न छोड़।²¹इनको अपने दिल पर बाँधे रख, और अपने गले का तौक़ बना ले।

²²यह चलते वक़्त तेरी रहबरी, और सोते वक़्त तेरी निगहबानी, और जागते वक़्त तुझ से बातें करेगी।²³क्योंकि फ़रमान चिराग़ है और ता'लीम नूर, और तरबियत की मलामत ज़िन्दगी की राह है,

²⁴ताकि तुझ को बुरी 'औरत से बचाए, या'नी बेगाना 'औरत की ज़बान की चापलूसी से।²⁵तू अपने दिल में उसके हुस्न पर 'आशिक़ न हो, और वह तुझ को अपनी पलकों से शिकार न करे।

²⁶क्योंकि धोके की वजह से आदमी टुकड़े का मुहताज हो जाता है, और ज़ानिया क़ीमती जान का शिकार करती है।²⁷क्या मुम्किन है कि आदमी अपने सीने में आग रखे, और उसके कपड़े न जले ?

²⁸या कोई अंगारों पर चले, और उसके पाँव न झुलसें?²⁹वह भी ऐसा है जो अपने पड़ोसी की बीवी के पास जाता है; जो कोई उसे छुए बे सज़ा न रहेगा।

³⁰~चोर अगर भूक के मारे अपना पेट भरने को चोरी करे, तो लोग उसे हक़ीर नहीं जानते;³¹~लेकिन अगर वह पकड़ा जाए तो सात गुना भरेगा, उसे अपने घर का सारा माल देना पड़ेगा।

³²जो किसी 'औरत से ज़िना करता है वह बे'अक्ल है; वही ऐसा करता है जो अपनी जान को हलाक करना चाहता है।³³~वह ज़ख़्म और ज़िल्लत उठाएगा, और उसकी रुस्वाई कभी न मिटेगी।

³⁴क्योंकि ग़ैरत से आदमी ग़ज़बनाक होता है, और वह इन्तिक़ाम के दिन नहीं छोड़ेगा।³⁵~वह कोई फ़िदिया मंज़ूर नहीं करेगा, और चाहे तू बहुत से इन'आम भी दे तोभी वह राज़ी न होगा।

Chapter 7

¹ऐ मेरे बेटे, मेरी बातों को मान, और मेरे फ़रमान को निगाह में रखा।²~मेरे फ़रमान को बजा ला और ज़िन्दा रह, और मेरी ता'लीम को अपनी आँख की पुतली जानः³~उनको अपनी उँगलियों पर बाँध ले, उनको अपने दिल की तख्ती पर लिख ले।

⁴~हिकमत से कह, "तू मेरी बहन है, " और समझ को अपना रिश्तेदार करार दे;⁵ताकि वह तुझ को पराई 'औरत से बचाएँ, या'नी बेगाना 'औरत से जो चापलूसी की बातें करती है।

⁶क्यूँकि मैंने अपने घर की खिड़की से, या'नी झरोके में से बाहर निगाह की,⁷~और मैंने एक बे'अक़ल जवान को नादानों के बीच देखा, या'नी नौजवानों के बीच वह मुझे नज़रआया,

⁸~कि उस 'औरत के घर के पास गली के मोड़ से जा रहा है, और उसने उसके घर का रास्ता लिया;⁹~दिन छिपे शाम के वक़्त, रात के अंधेरे और तारीकी में।

¹⁰~और देखो, वहाँ उससे एक 'औरत आ मिली, जो दिल की चालाक और कस्बी का लिबास पहने थी।¹¹~वह गौगाई और खुदसर है, उसके पाँव अपने घर में नहीं टिकते;¹²अभी वह गली में है, अभी बाज़ारों में, और हर मोड़ पर घात में बैठती है।

¹³~इसलिए उसने उसको पकड़ कर चूमा, और बेहया मुँह से उससे कहने लगी,¹⁴~"सलामती की कुर्बानी के ज़बीहे मुझ पर फ़र्ज़ थे, आज मैंने अपनी नज़्मे अदा की हैं।¹⁵~इसीलिए मैं तेरी मुलाक़ात को निकली, कि किसी तरह तेरा दीदार हासिल करूँ, इसलिए ~तू मुझे मिल गया।

¹⁶~मैंने अपने पलंग पर कामदार गालीचे, और मिस्र के सूत के धारीदार कपड़े बिछाए हैं।¹⁷~मैंने अपने बिस्तर को मुर और ऊद, और दारचीनी से मु'अत्तर किया है।¹⁸~आ हम सुबह तक दिल भर कर इश्क़ बाज़ी करें और मुहब्बत की बातों से दिल बहलाएँ

¹⁹क्यूँकि मेरा शौहर घर में नहीं, उसने दूर का सफ़र किया है।²⁰~वह अपने साथ रुपये की थैली ले गया;और पूरे चाँद के वक़्त घर आएगा।"²¹~उसने मीठी मीठी बातों से उसको फुसला लिया, और अपने लबों की चापलूसी से उसको बहका लिया।

²²~वह फ़ौरन उसके पीछे हो लिया, जैसे बैल ज़बह होने को जाता है; या बेड़ियों में बेवकूफ़ सज़ा पाने को।²³~जैसे परिन्दा जाल की तरफ़ तेज़ जाता है, और नहीं जानता कि वह उसकी जान के लिए है, हत्ता कि तीर उसके जिगर के पार हो जाएगा।

²⁴~इसलिए अब ऐ बेटो, मेरी सुनो, और मेरे मुँह की बातों पर तवज्जुह ~करो।²⁵~तेरा दिल उसकी राहों की तरफ़ मायल न हो, तू उसके रास्तों में गुमराह न होना;

²⁶क्यूँकि उसने बहुतों को ज़ख्मी करके गिरा दिया है, बल्कि उसके मक्तूल बेशुमार हैं।²⁷~उसका घर पाताल का रास्ता है, और मौत की कोठरियों को जाता है।

Chapter 8

¹क्या हिकमत पुकार नहीं रही, और समझ आवाज़ बलंद नहीं कर रहा ?²~वह राह के किनारे की ऊँची जगहों की चोटियों पर, जहाँ सड़कें मिलती हैं, खड़ी होती है।³फाटकों के पास शहर के दहलीज़ पर, या 'नी दरवाज़ों के मदखल पर वह ज़ोर से पुकारती है,

⁴~"ऐ आदमियो, मैं तुम को पुकारती हूँ, और बनी आदम को आवाज़ देती"⁵~ऐ सादा दिली होशियारी सीखो; और ऐ बेवकूफ़ों, 'अक्ल दिल बनो ।

⁶सुनो, क्योंकि मैं लतीफ़ बातें कहूँगी, और मेरे लबों से रास्ती की बातें निकलेगी;⁷~इसलिए कि मेरा मुँह सच्चाई को बयान करेगा; और मेरे होंठों को शरारत से नफ़रत है।

⁸~मेरे मुँह की सब बातें सदाक़त की हैं, उनमें कुछ टेढ़ा तिरछा नहीं है।⁹समझने वाले के लिए वह सब साफ़ हैं, और 'इल्म हासिल करने वालों के लिए रास्त हैं।

¹⁰~चाँदी को नहीं, बल्कि मेरी तरबियत को कुबूल करो, और कुंदन से बढ़कर 'इल्म को;¹¹क्योंकि हिकमत मरजान से अफ़ज़ल है, और सब पसन्दीदा चीज़ों में बेमिसाल।

¹²~मुझ हिकमत ने होशियारी को अपना मस्कन बनाया है, और 'इल्म और तमीज़ को पा लेती हूँ।¹³~खुदावन्द का ख़ौफ़ बदी से 'अदावत है। गुरूर और घमण्ड और बुरी राह, और टेढ़ी बात से मुझे नफ़रत है।

¹⁴मशवरत और हिमायत मेरी है, समझ मैं ही हूँ मुझ में कुदरत है।¹⁵~मेरी बदौलत बादशाह सल्तनत करते, और उमरा इन्साफ़ का फ़तवा देते हैं।¹⁶~मेरी ही बदौलत हाकिम हुकूमत करते हैं, और सरदार या 'नी दुनिया के सब काज़ी भी।

¹⁷~जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं मैं उनसे मुहब्बत रखती हूँ, और जो मुझे दिल से ढूँडते हैं, वह मुझे पा लेंगे।¹⁸दौलत-ओ-'इज़ज़त मेरे साथ हैं, बल्कि हमेशा दौलत और सदाक़त भी।

¹⁹~मेरा फल सोने से बल्कि कुन्दन से भी बेहतर है, और मेरा हासिल ख़ालिस चाँदी से।²⁰~मैं सदाक़त की राह पर, इन्साफ़ के रास्तों में चलती हूँ।²¹ताकि मैं उनको जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं, माल के वारिस बनाऊँ, और उनके खज़ानों को भर दूँ।

²²~"ख़ुदावन्द ने इन्तिज़ाम-ए-'आलम के शुरू' में, अपनी क़दीमी सन'अतों से पहले मुझे पैदा किया।²³मैं अज़ल से या 'नी इब्तिदा ही से मुक़र्रर हुई, इससे पहले के ज़मीन थी।

²⁴~मैं उस वक़्त पैदा हुई जब गहराओ न थे; जब पानी से भरे हुए चश्मे भी न थे।²⁵~मैं पहाड़ों के क़ायम किए जाने से पहले, और टीलों से पहले पैदा हुई।

²⁶जब कि उसने अभी न ज़मीन को बनाया था न मैदानों को, और न ज़मीन की ख़ाक की शुरु'आत थी।²⁷~जब उसने आसमान को क़ायम किया मैं वहीं थी; जब उसने समुन्दर की सतह पर दायरा खींचा;

²⁸~जब उसने ऊपर अफ़लाक को बराबर किया, और गहराओ के सोते मज़बूत हो गए;²⁹~जब उसने समुन्दर की हद ठहराई, ताकि पानी उसके हुक्म को न तोड़े; जब उसने ज़मीन की बुनियाद के निशान लगाए।

³⁰~उस वक़्त माहिर कारीगर की तरह मैं उसके पास थी, और मैं हर रोज़ उसकी खुशनूदी थी, और हमेशा उसके सामने शादमान रहती थी।³¹~आबादी के लायक़ ज़मीन से शादमान थी, और मेरी खुशनूदी बनी आदम की सुहबत में थी।

³²~"इसलिए ऐ बेटो, मेरी सुनो, क्योंकि मुबारक हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।³³तरबियत की बात सुनो, और 'अक्लमंद बनो, और इसको रद्द न करो।

³⁴~मुबारक है वह आदमी जो मेरी सुनता है, और हर रोज़ मेरे फाटकों पर इन्तिज़ार करता है, और मेरे दरवाज़ों की चौखटों पर ठहरा रहता है।

³⁵क्योंकि जो मुझ को पाता है, ज़िन्दगी पाता है, और वह ख़ुदावन्द का मक़बूल होगा।³⁶लेकिन जो मुझ से भटक जाता है, अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाता है; मुझ से 'अदावत रखने वाले, सब मौत से मुहब्बत रखते हैं।"

Chapter 9

¹~हिकमत ने अपना घर बना लिया, उसने अपने सातों सुतून तराश लिए हैं।²~उसने अपने जानवरों को ज़बह कर लिया, और अपनी मय मिला कर तैयार कर ली; उसने अपना दस्तरख्वान भी चुन लिया।

³~उसने अपनी सहेलियों को रवाना किया है; वह खुद शहर की ऊँची जगहों पर पुकारती है,⁴~"जो सादा दिल है, इधर आ जाए!" और बे'अक्ल से वह यह कहती है,

⁵~'आओ, मेरी रोटी में से खाओ, और मेरी मिलाई हुई मय में से पियो।⁶~ऐ सादा दिलो, बाज़ आओ और ज़िन्दा रहो, और समझ की राह पर चलो।"

⁷ठूठा बाज़ को तम्बीह करने वाला ला'नतान उठाएगा, और शरीर को मलामत करने वाले पर धब्बा लगेगा।⁸ठूठाबाज़ को मलामत न कर, ऐसा न हो कि वह तुझ से 'अदावत रखने लगे; 'अक्लमंद को मलामत कर, और वह तुझ से मुहब्बत रखेगा।⁹~'अक्लमंद की तरबियत कर, और वह और भी 'अक्लमंद बन जाएगा; सादिक को सिखा और वह 'इल्म में तरक्की करेगा।

¹⁰खुदावन्द का खौफ़ हिकमत का शुरू है, और उस कुदुस की पहचान समझ है।¹¹क्योंकि मेरी बदौलत तेरे दिन बढ़ जाएँगे, और तेरी ज़िन्दगी के साल ज़्यादा होंगे।¹²~अगर तू 'अक्लमंद है तो अपने लिए, और अगर तू ठूठाबाज़ है तो खुद ही भुगतेगा।

¹³~बेवकूफ़ 'औरत गौगाई है; वह नादान है और कुछ नहीं जानती।¹⁴~वह अपने घर के दरवाज़े पर, शहर की ऊँची जगहों में बैठ जाती है;¹⁵ताकिआने जाने वालों को बुलाए, जो अपने अपने रास्ते पर सीधे जा रहें हैं,

¹⁶~"सादा दिल इधर आ जाएँ, और बे'अक्ल से वह यह कहती है,¹⁷"चोरी का पानी मीठा है, और पोशीदगी की रोटी लज़ीज़।"¹⁸~लेकिन वह नहीं जानता कि वहाँ मुर्दे पड़े हैं, और उस 'औरत के मेहमान पाताल की तह में हैं।

Chapter 10

¹~सुलेमान की अम्साल। 'अक्लमंद बेटा बाप को खुश रखता है, लेकिन बेवकूफ बेटा अपनी माँ का गम है।'²~शरारत के खज़ाने बेकार हैं, लेकिन सदाक़त मौत से छुड़ाती है।³~खुदावन्द सादिक़ की जान को फ़ाक़ा न करने देगा, लेकिन शरीरों की हवस को दूर-ओ-दफ़ा' करेगा।

⁴~जो ढीले हाथ से काम करता है, कंगाल हो जाता है; लेकिन मेहनती का हाथ दौलतमंद बना देता है।⁵~वह जो गर्मी में जमा' करता है, 'अक्लमंद बेटा है; लेकिन वह बेटा जो दिरी के वक्रत सोता रहता है, शर्म का ज़रिया' है।

⁶~सादिक़ के सिर पर बरकतें होती हैं, लेकिन शरीरों के मुँह को जुल्म ढाँकता है।⁷~रास्त आदमी की यादगार मुबारक है, लेकिन शरीरों का नाम सड़ जाएगा।

⁸~'अक्लमंद दिल फ़रमान बजा जाएगा, लेकिन बकवासी बेवकूफ़ पछाड़ खाएगा।'⁹~रास्त रौ बेखट के चलता है, लेकिन जो कजरवी करता है ज़ाहिर हो जाएगा।

¹⁰आँख मारने वाला रंज पहुँचाता है, और बकवासी~बेवकूफ़~पछाड़ खाएगा।*¹¹~सादिक़ का मुँह ज़िन्दगी का चश्मा है, लेकिन शरीरों के मुँह को जुल्म ढाँकता है।

¹²~अदावत झगड़े पैदा करती है, लेकिन मुहब्बत सब खताओं को ढाँक देती है।¹³~'अक्लमंद के लबों पर हिकमत है, लेकिन बे'अक्ल की पीठ के लिए लठ है।

¹⁴~'अक्लमंद आदमी 'इल्म जमा' करते हैं, लेकिन~बेवकूफ़ का मुँह क़रीबी हलाकत है।¹⁵~दौलतमंद की दौलत उसका मज़बूत शहर है, कंगाल की हलाकत उसी की तंगदस्ती है।

¹⁶~सादिक़ की मेहनत ज़िन्दगानी का ज़रिया' है, शरीर की इक़बालमंदी गुनाह कराती है।¹⁷~तरबियत पज़ीर ज़िन्दगी की राह पर ~है, लेकिन मलामत को छोड़ने ~वाला गुमराह हो जाता है।

¹⁸~'अदावत को छिपाने वाला दरोहगो है, और तोहमत लगाने वाला~बेवकूफ़ है।'¹⁹~कलाम की कसरत खता से खाली नहीं, , लेकिन होंटों को क़ाबू में रखने वाला 'अक्लमंद है।

²⁰~सादिक़ की ज़बान खालिस चाँदी है; शरीरों के दिल बेक़द्र हैं²¹~सादिक़ के होंट बहुतों को गिज़ा पहुँचाते हैं लेकिन~बेवकूफ़~बे'अक्ली से मरते हैं।

²²~खुदावन्द ही की बरकत दौलत बख़्शती है, और वह उसके साथ दुख नहीं मिलाता।²³~बेवकूफ़~के लिए शरारत खेल है, लेकिन हिकमत 'अक्लमंद के लिए है।

²⁴~शरीर का ख़ौफ़ उस पर आ पड़ेगा, और सादिक़ों की मुराद पूरी होगी।²⁵~जब बगोला गुज़रता है तो शरीर हलाक हो जाता है, लेकिन~~सादिक़ हमेशा की ~बुनियाद है।

²⁶जैसा दाँतों के लिए सिरका, और आँखों के लिए धुआँ~वैसा ही काहिल अपने भेजने वालों के लिए है।²⁷~खुदावन्द का ख़ौफ़' उम्र की दराज़ी बख़्शता है लेकिन शरीरों की ज़िन्दगी कोताह कर दी जायेगी।

²⁸सादिक़ों की उम्मीद खुशी लाएगी लेकिन शरीरों की उम्मीद ख़ाक में मिल जाएगी।²⁹खुदावन्द की राह रास्तबाज़ों के लिए पनाहगाह लेकिन बदकिरादारों के लिए हलाक़त ~है,³⁰सादिक़ों को कभी जुम्बिश न होगी लेकिन शरीर ज़मीन पर क़ायम नहीं रहेंगे।

³¹सादिक़ के मुँह से हिकमत निकलती है लेकिन झूठी ज़बान काट डाली जायेगी।³²~सादिक़ के होंट पसन्दीदा बात से आशाना है लेकिन शरीरों के मुँह झूट से।

Chapter 11

¹~दगा के तराजू से खुदावन्द को नफ़रत~है, ~लेकिन पूरा बाट उसकी खुशी है।²~तकब्बुर के साथ बुराई आती है, ~लेकिन खाकसारों के साथ हिकमत है।

³~रास्तबाज़ों की रास्ती उनकी राहनुमा होगी, लेकिन दगाबाज़ों की टेढ़ी राह उनको बर्बाद करेगी।⁴~क्रहर के दिन माल काम नहीं आता, लेकिन सदाक़त मौत से रिहाई देती~है।

⁵~कामिल की सदाक़त उसकी राहनुमाई करेगी~लेकिन शरीर अपनी ही शरारत से~गिर पड़ेगा।⁶~रास्तबाज़ों की सदाक़त उनको रिहाई देगी, ~लेकिन दगाबाज़ अपनी ही बद नियती में फँस जाएँगे।

⁷~मरने पर शरीर का उम्मीद खाक~में मिल जाता है, और ज़ालिमों की उम्मीद बर्बाद हो जाती है।⁸~सादिक़ मुसीबत से रिहाई पाता है, और शरीर उसमें पड़ जाता है।

⁹~बेदीन अपनी बातों से अपने पड़ोसी को हलाक करता है लेकिन सादिक़ 'इल्म के ज़रिए' से रिहाई पाएगा।¹⁰~सादिक़ों की खुशहाली से शहर खुश होता है। और शरीरों की हलाकत पर खुशी की ललकार होती है।¹¹~रास्तबाज़ों की दु'आ से शहर सरफ़राज़ी पाता है, लेकिन शरीरों की बातों से बर्बाद ~होता है।

¹²अपने पड़ोसी की बे'इज़ज़ती करने वाला बे'अक्ल है, लेकिन समझदार खामोश रहता है।¹³जो कोई लुतरापन करता फिरता है राज़ ~खोलता है, लेकिन जिसमें वफ़ा की रूह है वह राज़दार है।

¹⁴नेक सलाह के बग़ैर लोग तबाह होते हैं, लेकिन सलाहकारों की कसरत में सलामती है।

¹⁵~जो बेगाने का ज़ामिन होता है सख़्त नुक़सान उठाएगा, लेकिन जिसको ज़मानत से नफ़रत है वह बेख़तर है।¹⁶~नेक सीरत 'औरत' इज़ज़त पाती है, और तुन्दखू आदमी माल हासिल करते हैं।

¹⁷~रहम दिल अपनी जान के साथ नेकी करता है, लेकिन बे रहम अपने जिस्म को दुख देता है।¹⁸~शरीर की कमाई बेकार है, लेकिन सदाक़त बोलने वाला हक़ीक़ी अज़्र पता है।

¹⁹~सदाक़त पर क़ायम रहने वाला ज़िन्दगी हासिल करता है, और बदी का हिमायती अपनी मौत को पहुँचता ~है।²⁰~कज दिलों से खुदावन्द को नफ़रत है, लेकिन कामिल रफ़्तार उसकी खुशनुदी हैं।

²¹~यक़ीनन शरीर बे सज़ा न छूटेगा, लेकिन सादिक़ों की नसल रिहाई पाएगी।²²~बेतमीज़ 'औरत' में खूबसूरती, जैसे सूअर की नाक में सोने की नथ है।

²³~सादिक़ों की तमन्ना सिर्फ़ नेकी है; लेकिन शरीरों की उम्मीद ग़ज़ब है।²⁴~कोई तो बिथराता है, लेकिन तो भी तरक्की करता है; और कोई सही खर्च से परहेज़ करता है, लेकिन तोभी कंगाल है।

²⁵~सखी दिल मोटा हो जाएगा, और सेराब करने वाला खुद भी सेराब होगा।²⁶जो ग़ल्ला रोक रखता है, लोग उस पर ला'नत करेंगे; लेकिन जो उसे बेचता है उसके सिर पर बरकत होगी।

²⁷~जो दिल से नेकी की तलाश में है मक्बूलियत का तालिब है, लेकिन जो बदी की तलाश में है वह उसी के आगे आएगी।²⁸~जो अपने माल पर भरोसा करता है गिर पड़ेगा, लेकिन सादिक़ हरे पत्तों की तरह सरसब्ज़ होंगे।

²⁹जो अपने घराने को दुख देता है, हवा का वारिस होगा, और बेवकूफ़ 'अक्ल दिल का खादिम बनेगा।

³⁰~सादिक़ का फल ज़िन्दगी का दरख़्त है, और जो 'अक्लमंद' है दिलों को मोह लेता है।³¹~देख, सादिक़ को ज़मीन पर बदला दिया जाएगा, तो कितना ज़्यादा शरीर और गुनहगार को।

Chapter 12

¹~जो तरबियत को दोस्त रखता है, वह 'इल्म को दोस्त रखता है; लेकिन जो तम्बीह से नफ़रत रखता है, वह हैवान है।²~नेक आदमी खुदावन्द का मक़बूल होगा, लेकिन बुरे मन्सूबे बाँधने वाले को वह मुजरिम ठहराएगा।

³आदमी शरारत से पायेदार नहीं होगा लेकिन सादिकों की जड़ को कभी जुम्बिश न होगी | ⁴नेक ~'औरत अपने शौहर के लिए ताज है लेकिन नदामत लाने वाली उसकी हड्डियों में बोसीदगी की तरह है |

⁵सादिकों के खयालात दुरुस्त हैं, लेकिन शरीरों की मश्वरत धोखा है।⁶~शरीरों की बातें यही हैं कि खून करने के लिए ताक में बैठे, लेकिन सादिकों की बातें उनको रिहाई देंगी।

⁷शरीर पछाड़ खाते और हलाक ~होते हैं, लेकिन सादिकों का घर क़ायम रहेगा।⁸~आदमी की ता'रीफ़ उसकी 'अक्लमंदी के मुताबिक़ की जाती है, लेकिन बे'अक्ल ज़लील होगा।

⁹~जो छोटा समझा जाता है लेकिन उसके पास एक नौकर है, उससे बेहतर है जो अपने आप को बड़ा जानता और रोटी का मोहताज है।¹⁰~सादिक अपने चौपाए की जान का खयाल रखता है, लेकिन शरीरों की रहमत भी 'ऐन जुल्म है।

¹¹~जो अपनी ज़मीन में काश्तकारी करता है, रोटी से सेर होगा; लेकिन बेकारी का हिमायती बे'अक्ल है।¹²~शरीर बदकिरदारों के दाम का मुश्ताक़ है, लेकिन सादिकों की जड़ फलती है।

¹³लबों की खताकारी में शरीर के लिए फंदा है, लेकिन सादिक मुसीबत से बच निकलेगा।¹⁴~आदमी के कलाम का फल उसको नेकी से आसूदा करेगा, और उसके हाथों के किए का बदला उसको मिलेगा।

¹⁵~बेवकूफ़ का चाल चलन उसकी नज़र में दुरस्त है, लेकिन 'अक्लमंद नसीहत को सुनता है।¹⁶~बेवकूफ़~का ग़ज़ब फ़ौरन ज़ाहिर हो जाता है, लेकिन होशियार शर्मिन्दगी को छिपाता है।

¹⁷रास्तगो सदाक़त ज़ाहिर करता है, लेकिन झूटा गवाह दगाबाज़ी।¹⁸~बिना समझे बोलने वाले की बातें तलवार की तरह छेदती हैं, लेकिन 'अक्लमंद~की ज़बान सेहत बख़्श है।

¹⁹~सच्चे होंट हमेशा तक क़ायम रहेंगे.लेकिन झूटी ज़बान सिर्फ़ दम भर की है।²⁰बदी के मन्सूबे बाँधने वालों के दिल में दगा है, लेकिन सुलह की मश्वरत देने वालों के लिए खुशी है।

²¹सादिक पर कोई आफ़त नहीं आएगी, लेकिन शरीर बला में मुब्तिला होंगे।²²~झूटे लबों से खुदावन्द को नफ़रत है, लेकिन रास्तकार उसकी खुशनूदी, हैं।

²³~होशियार आदमी 'इल्म को छिपाता है, लेकिन~बेवकूफ़ का दिल~बेवकूफ़ी~का 'ऐलान करता है।²⁴~मेहनती आदमी का हाथ हुक्मराँ होगा, लेकिन सुस्त आदमी बाज़ गुज़ार बनेगा।

²⁵आदमी का दिल फ़िक्रमंदी से दब जाता है, लेकिन अच्छी बात से खुश होता है।²⁶~सादिक अपने पड़ोसी की रहनुमाई करता है, लेकिन शरीरों का चाल चलन उनको गुमराह कर देता है।

²⁷सुस्त आदमी शिकार पकड़ कर कबाब नहीं करता, लेकिन इन्सान की गिरानबहा दौलत मेहनती पाता है।²⁸~सदाक़त की राह में ज़िन्दगी है, और उसके रास्ते में हरगिज़ मौत नहीं।

Chapter 13

¹~'अक्लमंद बेटा अपने बाप की ता'लीम को सुनता है, लेकिन ठूठा बाज़ सरज़निश पर कान नहीं लगाता।'²~आदमी अपने कलाम के फल से अच्छा खाएगा, लेकिन दगाबाज़ों की जान के लिए सितम है।

³अपने मुँह की निगहबानी करने वाला अपनी जान की हिफाज़त करता है लेकिन जो अपने होंट पसारता है, हलाक होगा।⁴सुस्त आदमी आरजू करता है लेकिन कुछ नहीं पाता, लेकिन मेहनती की जान सेर होगी।

⁵~सादिक को झूट से नफ़रत है, लेकिन शरीर नफरत अंगेज़-ओ-रुस्वा होता है।⁶सदाक़त रास्तारौ की हिफाज़त करती ~है, लेकिन शरारत शरीर को गिरा देती है।

⁷~कोई अपने आप को दौलतमंद जताता है लेकिन ग़रीब है, और कोई अपने आप को कंगाल बताता है लेकिन बड़ा मालदार है।⁸आदमी की जान का कफ़फ़ारा उसका माल है, लेकिन कंगाल धमकी को नहीं सुनता।

⁹~सादिकों का चिराग़ रोशन रहेगा, लेकिन शरीरों का दिया बुझाया जाएगा।¹⁰~तक़बुर से सिर्फ़ झगड़ा पैदा होता है, लेकिन मश्वरत पसंद के साथ हिकमत है।

¹¹~जो दौलत बेकारी से हासिल की जाए कम हो जाएगी, लेकिन मेहनत से जमा' करने वाले की दौलत बढ़ती रहेगी।¹²~उम्मीद के पूरा होने में ताखीर दिल को बीमार करती है, लेकिन आरजू का पूरा होना ज़िन्दगी का दरख़्त है।

¹³~जो कलाम की तहक़ीर करता है, अपने आप पर हलाकत लाता है; लेकिन जो फ़रमान से डरता है, अज़्र पाएगा।¹⁴~अक्लमंद की ता'लीम ज़िन्दगी का चश्मा है, जो मौत के फंदो से छुटकारे का ज़रिया' हो।

¹⁵~समझ की दुरुस्ती मक्बूलियत बख़्शती है, लेकिन दगाबाज़ों की राह कठिन है।¹⁶~हर एक होशियार आदमी 'अक्लमंदी से काम करता है, पर~बेवकूफ़~अपनी~बेवकूफ़ी~को फैला देता है।

¹⁷~शरीर क़ासिद बला में गिरफ़्तार होता है, लेकिन ईमानदार एल्ची सिहत बख़्श है।¹⁸~तरबियत को रद्द करने वाला कंगाल और रुस्वा होगा, लेकिन वह जो तम्बीह का लिहाज़ रखता है, 'इज़ज़त पाएगा।

¹⁹जब मुराद पूरी होती है तब जी बहुत खुश होता है, लेकिन बदी को ~छोड़ने से~बेवकूफ़~को नफ़रत है।²⁰~वह जो 'अक्लमंदों~के साथ चलता है 'अक्लमंद~होगा, पर~बेवकूफ़ों~का साथी हलाक किया जाएगा।

²¹~बदी गुनहगारों का पीछा करती है, लेकिन सादिकों को नेक बदला मिलेगा।²²~नेक आदमी अपने पोतों के लिए मीरास छोड़ता है, लेकिन गुनहगार की दौलत सादिकों के लिए फ़राहम की जाती है

²³~कंगालों की खेती में बहुत खुराक होती है, लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो बे इन्साफ़ी से बर्बाद हो जाते हैं।²⁴~वह जो अपनी छड़ी को बाज़ रखता है, अपने बेटे से नफ़रत रखता है, लेकिन वह जो उससे मुहब्बत रखता है, बरवक़्त उसको तम्बीह करता है।

²⁵~सादिक खाकर सेर हो जाता है, लेकिन शरीर का पेट नहीं भरता।

Chapter 14

¹~'अक्लमंद~~' औरत अपना घर बनाती है, लेकिन बेवकूफ~उसे अपने ही~हाथों से बर्बाद करती है।²~रास्तरौ खुदावन्द से डरता है, लेकिन कजरौ उसकी हिंकारत करता है।

³~बेवकूफ~में से गुरूर फूट निकलता है, लेकिन 'अक्लमंदों~के लब उनकी निगहबानी करते हैं।⁴जहाँ बैल नहीं, वहाँ चरनी साफ़ है, लेकिन गल्ला की अफ़ज़ा इस ~बैल के ज़ोर से है।

⁵ईमानदार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूठा गवाह झूटी बातें बयान करता है।⁶~ठठा बाज़ हिकमत की तलाश करता और नहीं पाता, लेकिन समझदार को 'इल्म आसानी से हासिल होता है।

⁷~बेवकूफ~से किनारा कर, क्योंकि तू उस में 'इल्म की बातें नहीं पाएगा।⁸होशियार की हिकमत यह है कि अपनी राह पहचाने, लेकिन~बेवकूफ~की~बेवकूफी~धोका है।

⁹~बेवकूफ~गुनाह करके हँसते हैं, । लेकिन रास्तकारों में रज़ामंदी है।¹⁰~अपनी तलखी को दिल ही खूब जानता है, और बेगाना उसकी खुशी में दखल नहीं रखता।

¹¹~शरीर का घर बर्बाद हो जाएगा, लेकिन रास्त आदमी का खेमा आबाद रहेगा।¹²~ऐसी राह भी है जो इंसान को सीधी मा'लूम होती है, लेकिन उसकी इन्तिहा में मौत की राहें हैं।

¹³हँसने में भी दिल गमगीन है, और शादमानी का अंजाम ग़म है।¹⁴~नाफ़रमान दिल अपने चाल चलन ~का बदला पाता है, और नेक आदमी अपने काम का।

¹⁵~नादान हर बात का यकीन कर लेता है, लेकिन होशियार आदमी अपने चाल चलन को देखता भालता है।¹⁶~'अक्लमंद ~डरता है और बदी से अलग रहता है, लेकिन बेवकूफ~झुंझलाता है और बेखौफ़ रहता है।

¹⁷~जूद रंज बेवकूफी करता है, और बुरे मन्सुबे बाँधने वाला घिनौना है।¹⁸~नादान हिमाक़त की मीरास पाते हैं, लेकिन होशियारों के सिर लेकिन 'इल्म का ताज है।

¹⁹शरीर नेकों के सामने झुकते हैं, और खबीस सादिकों के दरवाज़ों पर।²⁰~कंगाल से उसका पड़ोसी भी बेज़ार है, लेकिन मालदार के दोस्त बहुत हैं।

²¹~अपने पड़ोसी को हक़ीर जानने वाला गुनाह करता है, लेकिन कंगाल पर रहम करने वाला मुबारक है।²²क्या बदी के मूजिद गुमराह नहीं होते? लेकिन शफ़क़त और सच्चाई नेकी के मूजिद के लिए हैं।

²³हर तरह की मेहनत में नफ़ा है, लेकिन मुँह की बातों में महज़ मुहताजी है।²⁴~'अक्लमंदों~~का ताज उनकी दौलत है, लेकिन~बेवकूफ~की~बेवकूफी~ही~बेवकूफी~है।

²⁵~सच्चा गवाह जान बचाने वाला है, ~लेकिन झूठा गवाह दगाबाज़ी करता है।

²⁶खुदावन्द के खौफ़ में क़वी उम्मीद है, और उसके फ़र्ज़न्दों को पनाह की जगह मिलती है।²⁷~खुदावन्द का खौफ़ ज़िन्दगी का चश्मा है, जो मौत के फंदों से छुटकारे का ज़रिया है।

²⁸रि'आया की कसरत में बादशाह की शान है, लेकिन लोगों की कमी में हाकिम की तबाही है।²⁹जो क्रहर करने में धीमा है, बड़ा 'अक्लमन्द है लेकिन वह जो झक्की है हिमाक़त को बढ़ाता है।

³⁰~मुत्मइन दिल, जिस्म की जान है, लेकिन जलन हड्डियों की बूसीदिगी है।³¹~गरीब पर जुल्म करने वाला उसके खालिक की इहानत करता है, लेकिन उसकी ता'ज़ीम करने वाला मुहताजों पर रहम करता है।

³²~शरीर अपनी शरारत में पस्त किया जाता है, लेकिन सादिक मरने पर भी उम्मीदवार है।³³~हिकमत 'अक्लमंद के दिल में क़ायम रहती है, लेकिन बेवकूफों~का~दिली राज़ खुल जाता है।

³⁴~सदाक़त कौम को सरफ़राज़ी बख़्शती है, लेकिन~गुनाह से उम्मतों की रुस्वाई है।³⁵~अक्लमंद खादिम पर बादशाह की नज़र-ए-इनायत है, लेकिन उसका क्रहर उस पर है जो रुस्वाई का ज़रिया है।

Chapter 15

¹~नर्म जवाब क्रहर को दूर कर देता है, लेकिन कड़वी ~बातें ग़ज़ब अंगेज़ हैं।²~'अक्लमंदों~~की ज़बान 'इल्म का दुरुस्त बयान करती है, लेकिन बेवकूफ़ों~का मुँह हिमाकृत उगलता है।

³खुदावन्द की आँखें हर जगह हैं और नेकों और बदों की निगरान हैं।⁴सिहत बख़्श ज़बान ज़िन्दगी का दरख़्त है, लेकिन उसकी कजगोई रूह की शिकस्तगी का ज़रिया है।

⁵~बेवकूफ़~अपने बाप की तरबियत को हक़ीर जानता है, लेकिन तम्बीह का लिहाज़ रखने वाला होशियार हो जाता है।⁶सादिक़ के घर में बड़ा खज़ाना है, लेकिन शरीर की आमदनी में परेशानी है।

⁷~'अक्लमंदों के लब 'इल्म फैलाते हैं, लेकिन बेवकूफ़ों~के दिल ऐसे नहीं।⁸~शरीरों के ज़बीहे से खुदावन्द को नफ़रत है, लेकिन रास्तकार की दु'आ उसकी खुशनुदी है।

⁹~शरीरों का चाल चलन से खुदावन्द को नफ़रत है, लेकिन वह सदाकत के पैरों से मुहब्बत रखता है।¹⁰राह से भटकने वाले के लिए सख़्त तादीब है, और तम्बीह से नफ़रत करने वाला मरेगा।

¹¹~जब पाताल और जहन्नम खुदावन्द के सामने खुले हैं, तो बनी आदम के दिल का क्या ज़िक्र ?¹²~ठूठाबाज़ तम्बीह को दोस्त नहीं रखता, और 'अक्लमंदों की मजलिस में हरगिज़ नहीं जाता।

¹³~खुश दिली चेहरे की रौनक पैदा करती है, लेकिन दिल की ग़मगीनी से इन्सान शिकस्ता खातिर होता है।¹⁴~समझदार का दिल 'इल्म का तालिब है, लेकिन बेवकूफ़ों~की ख़ुराक~बेवकूफी~है।

¹⁵मुसीबत ज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन खुश दिल हमेशा ज़श्र करता है।¹⁶~थोड़ा जो खुदावन्द के ख़ौफ़ के साथ हो, उस बड़े खज़ाने से जो परेशानी के साथ हो, बेहतर है।

¹⁷~मुहब्बत वाले घर में ज़रा सा सागपात, 'अदावत वाले घर में पले हुए बैल से बेहतर है।¹⁸~ग़ज़बनाक आदमी फ़ितना खड़ा करता है, लेकिन जो क्रहर में धीमा है झगड़ा मिटाता है।

¹⁹काहिल की राह काँटों की आड़ सी है, लेकिन रास्तकारों का चाल चलन शाहराह की तरह है।²⁰~'अक्लमंद बेटा बाप को खुश रखता है, लेकिन बेवकूफ़~अपनी माँ की~तहक़ीर करता है।

²¹~बे'अक्ल के लिए~बेवकूफी~शादमानी का ज़रिया' है, लेकिन समझदार ~अपने चाल चलन को दुरुस्त करता है²²~सलाह के बग़ैर ~इरादे पूरे नहीं होते, लेकिन सलाहकारों की कसरत से क़याम पाते हैं।

²³आदमी अपने मुँह के जवाब से खुश होता है, और बामौक्रा' बात क्या खूब है।²⁴~अक्लमंद के लिए ज़िन्दगी की राह ऊपर को जाती है, ताकि वह पाताल में उतरने से बच जाए।

²⁵खुदावन्द मगरूरों का घर ढा देता है, लेकिन वह बेवा के सिवाने को क़ायम करता है।²⁶बुरे मन्सूबों से खुदावन्द को नफ़रत है लेकिन पाक लोगों का कलाम पसंदीदा है।

²⁷~नफ़े' का लालची अपने घराने को परेशान करता है, लेकिन वह जिसकी रिश्तत से नफ़रत है ज़िन्दा रहेगा।²⁸~सादिक़ का दिल सोचकर जवाब देता ~है, लेकिन शरीरों का मुँह बुरी बातें उगलता है।

²⁹खुदावन्द शरीरों से दूर है, लेकिन वह सादिक़ों की दु'आ सुनता है।³⁰आँखों का नूर दिल को खुश करता है, और खुश ख़बरी हड्डियों में फ़रबही पैदा करती है।

³¹~जो ज़िन्दगी बख़्श तम्बीह पर कान लगाता है, 'अक्लमंदों के बीच सुकूनत करेगा।³²तरबियत को रद्द करने वाला अपनी ही जान का दुश्मन है, लेकिन तम्बीह पर कान लगाने वाला समझ हासिल करता है।

³³खुदावन्द का ख़ौफ़ हिकमत की तरबियत है, और सरफ़राज़ी से पहले फ़रोतनी है।

Chapter 16

¹दिल की तदबीरें इन्सान से हैं, लेकिन ज़बान का जवाब खुदावन्द की तरफ़ से है।²~इन्सान की नज़र में उसके सब चाल चलन पाक हैं, लेकिन खुदावन्द रूहों को जाँचता है।

³~अपने सब काम खुदावन्द पर छोड़ दे, तो तेरे इरादे कायम रहेंगे।⁴~खुदावन्द ने हर एक चीज़ खास मक़सद के लिए बनाई, हाँ शरीरों को भी उसने बुरे दिन के लिए बनाया।

⁵हर एक से जिसके दिल में गुरूर है, खुदावन्द को नफ़रत है; यक़ीनन वह बे सज़ा न छूटेगा।⁶शफ़क़त और सच्चाई से बदी का और लोग खुदावन्द के ख़ौफ़ की वजह से बदी से बाज़ आते हैं।

⁷~जब इन्सान का चाल चलन खुदावन्द को पसंद आता है तो वह उसके दुश्मनों को भी उसके दोस्त बनाता है।⁸सदाक़त के साथ थोड़ा सा माल, बे इन्साफ़ी की बड़ी आमदनी से बेहतर है।

⁹~आदमी का दिल आपनी राह ठहराता है लेकिन खुदावन्द उसके क़दमों की रहनुमाई करता है।¹⁰~कलाम-ए-रब्बानी बादशाह के लबों से निकलता है, और उसका मुँह 'अदालत करने में ख़ता नहीं करता।

¹¹~ठीक तराजू और पलड़े खुदावन्द के हैं, थैली के सब बाट उसका काम हैं।¹²~शरारत करने से बादशाहों को नफ़रत है, क्योंकि तख़्त का क़याम सदाक़त से है।

¹³~सादिक़ लब बादशाहों की खुशनुदी हैं, और वह सच बोलने वालों को दोस्त रखते हैं।¹⁴~बादशाह का क्रहर मौत का क़ासिद है, लेकिन 'अक्लमंद आदमी उसे ठंडा करता है।

¹⁵बादशाह के चेहरे के नूर में ज़िन्दगी है, और उसकी नज़र-ए-'इनायत आख़री बरसात के बादल की तरह है।¹⁶~हिकमत का हुसूल सोने से बहुत ~बेहतर है, और समझ का हुसूल चाँदी से बहुत पसन्दीदा है।

¹⁷~रास्तकार आदमी की शाहराह यह है कि बदी से भागे, और अपनी राह का निग़हबान अपनी जान की हिफ़ाजत करता है।¹⁸हलाक़त से पहले तक़बुर, और ज़वाल से पहले खुदबीनी है।

¹⁹~ग़रीबों के साथ फ़रोतन बनना, मुतकब्बिरों के साथ लूट का माल तक्रसीम करने से बेहतर है।²⁰~जो कलाम पर तवज्जुह करता है, भलाई देखेगा: और जिसका भरोसा खुदावन्द पर है, मुबारक है।

²¹~'अक्लमंद दिल होशियार कहलाएगा, और शीरीन ज़बानी से 'इल्म की फ़िरावानी होती है।²²~अक्लमंद के लिए 'अक्ल हयात का चश्मा है, लेकिन~बेवकूफ़ों~की~तरबियत~बेवकूफ़ी~है।

²³~'अक्लमंद का दिल उसके मुँह की तरबियत करता है, और उसके लबों को 'इल्म बख़्शता है।²⁴दिलपसंद बातें शहद का छत्ता हैं, वह जी को मीठी लगती हैं और हड्डियों के लिए शिफ़ा हैं।

²⁵~ऐसी राह भी है, जो इन्सान को सीधी मा'लूम होती है; लेकिन उसकी इन्तिहा में मौत की राहें हैं।²⁶मेहनत करने वाले की ख़्वाहिश उससे काम कराती है, क्योंकि उसका पेट उसको उभारता है।

²⁷ख़बीस आदमी शरारत को ~ख़ुद कर निकालता है, और उसके लबों में जैसे जलाने वाली आग है।²⁸टढ़ा आदमी फ़ितना अँगोड़ है, और ग़ीबत करने वाला दोस्तों में जुदाई डालता है।

²⁹~तुन्दखू आदमी अपने पड़ोसियों को वरग़ालाता है, और उसको बुरी राह पर ले जाता है।³⁰~आँख मारने वाला कज़ी ईजाद करता है, और लब चबाने वाला फ़साद खड़ा करता है।

³¹~सफ़ेद सिर शौकत का ताज़ है; वह सदाक़त की राह पर पाया जाएगा।³²~जो क्रहर करने में धीमा है पहलवान से बेहतर है, और वह जो अपनी रूह पर ज़ाबित है उस से जो शहर को ले लेता है।

³³~पर्ची गोद में डाली जाती है, लेकिन उसका सारा इन्तिज़ाम खुदावन्द की तरफ़ से है।

Chapter 17

¹~सलामती के साथ खुशक निवाला इस से बेहतर है, कि घर ने 'मत से भरा हो और उसके साथ झगड़ा हो।'²~'अक्लमन्द नौकर उस बेटे पर जी रुस्वा करता है हुक्मरान होगा, और भाइयों में शामिल होकर मीरास का हिस्सा लेगा।

³~चाँदी के लिए कुठाली है और सोने के लिए भट्टी, लेकिन दिलों को खुदावन्द जांचता है।⁴~बदकिरदार झूठे लबों की सुनता है, और झूठा मुफसिद ज़बान का शनवा होता है।

⁵~गरीब पर हँसने वाला, उसके खालिक की बेक्रद्री करता है; और जो औरों की मुसीबत से खुश होता है, बे सज़ा न छूटेगा।⁶~बेटों के बेटे बूढ़ों के लिए ताज हैं; और बेटों के फ़ख़्र का ज़रिया' उनके बाप-दादा हैं।

⁷~खुश कोई~बेवकूफ़~को नहीं सजती, तो किस क़दर कमदरोग़गोई~शरीफ़ को सजेगी।⁸~रिश्वत जिसके हाथ में है उसकी नज़रमें गिरान बहा जौहर है, और वह जिधर तवज्जुह करता है कामयाब होता है।

⁹~जो ख़ता पोशी करता है दोस्ती का तालिब है, लेकिन जो ऐसी बात को बार बार छेड़ता है, दोस्तों में जुदाई डालता है।¹⁰~समझदार ~पर एक झिड़की, बेवकूफ़ों~पर सौ कोड़ों से ज़्यादा असर करती है।

¹¹~शरीर महज़ सरकशी का तालिब है, उसके मुकाबले में संगदिल क़ासिद भेजा जाएगा।¹²~जिस रीछनी के बच्चे पकड़े गए हों आदमी का उस से दो चार होना, इससे बेहतर है के~बेवकूफ़~की~बेवकूफ़ी~में उसके~सामने~आए।

¹³~जो नेकी के बदले में बदी करता है, उसके घर से बदी हरगिज़ जुदा न होगी।¹⁴~झगड़े का शुरू' पानी के फूट निकलने की तरह है, इसलिए लड़ाई से पहले झगड़े को छोड़ दे।

¹⁵~जो शरीर को सादिक और जो सादिक को शरीर ठहराता है, खुदावन्द को उन दोनों से नफ़रत है।¹⁶~हिकमत ख़रीदने को~बेवकूफ़~के हाथ में क़ीमत से क्या फ़ाइदा है, ~हालाँकि उसका दिल उसकी तरफ़ नहीं?

¹⁷~दोस्त हर वक़्त मुहब्बत दिखाता है, और भाई मुसीबत के दिन के लिए पैदा हुआ है।¹⁸~बे'अक्ल आदमी हाथ पर हाथ मारता है, और अपने पड़ोसी के सामने ज़ामिन होता है।

¹⁹~फ़साद पसंद ख़ता पसंद है, और अपने दरवाज़े को बलन्द करने वाला हलाकत का तालिब।²⁰~कजदिला भलाई को न देखेगा, और जिसकी ज़बान कजगो है मुसीबत में पड़ेगा।

²¹~बेवकूफ़ के वालिद के लिए ग़म है, क्योंकि~बेवकूफ़~के बाप को खुशी~नहीं।²²~शादमान दिल शिफ़ा बख़्शता है, लेकिन अफ़सुर्दा दिली हड्डियों को खुशक कर देती है।

²³~शरीर बगल में रिश्वत रख लेता है, ताकि 'अदालत की राहें बिगाड़े।'²⁴~हिकमत समझदार ~के आमने सामने है, लेकिन~बेवकूफ़~की आँख~ज़मीन के किनारों पर लगी हैं।

²⁵~बेवकूफ़~बेटा अपने बाप के लिए ग़म, और अपनी माँ के लिए तल्ख़ी है।²⁶~सादिक को सज़ा देना, और शरीफ़ों को उनकी रास्ती की वजह से मारना, ख़ूब नहीं।

²⁷~साहिब-ए-इल्म कमगो है, और समझदार ~मतीन है।²⁸~बेवकूफ़~भी जब तक ख़ामोश है, 'अक्लमन्द गिना जाता है; जो अपने लब बलंद रखता है, होशियार है।

Chapter 18

¹जो अपने आप को सब से अलग रखता है, अपनी ख्वाहिश का तालिब है, और हर मा'कूल बात से बरहम होता है।² बेवकूफ़-समझ से खुश नहीं होता, लेकिन सिर्फ़ इस से कि अपने दिल का हाल ज़ाहिर करे।

³~शरीर के साथ हिंकारत आती है, और रुस्वाई के साथ ना क़द्री।⁴~इन्सान के मुँह की बातें गहरे पानी की तरह हैं और हिंकारत का चश्मा बहता नाला है।

⁵~शरीर की तरफ़दारी करना, या 'अदालत में सादिक़ से बेइन्साफ़ी करना, अच्छा नहीं।⁶~बेवकूफ़-के होंट फ़ितना अंगेज़ी करते हैं, और उसका मुँह तमाँचों के लिए पुकारता है।

⁷बेवकूफ़-का मुँह उसकी हलाकत है, और उसके होंट उसकी जान के लिए फन्दा हैं।⁸ग़ैबतगो की बातें लज़ीज़ निवाले हैं और वह खूब हज़म हो जाती हैं।

⁹~काम में सुस्ती करने वाला, फुज़ूल खर्च का भाई है।¹⁰~खुदावन्द का नाम मज़बूत बुर्ज है, सादिक़ उस में भाग जाता है और अम्न में रहता है

¹¹~दौलतमन्द आदमी का माल उसका मज़बूत शहर, और उसके तसव्वुर में ऊँची दीवार की तरह है।¹²~आदमी के दिल में तकब्बुर हलाकत का पेशरौ है, और फ़रोतनी 'इज़ज़त की पेशवा।

¹³~जो बात सुनने से पहले उसका जवाब दे, यह उसकी~बेवकूफ़ी~और शर्मिन्दगी है।¹⁴~इन्सान की रूह उसकी नातवानी में उसे संभालेगी, लेकिन अफ़सुर्दा दिली को कौन बर्दाश्त कर सकता है?

¹⁵~होशियार का दिल 'इल्म हासिल करता है, और 'अक्लमन्द के कान 'इल्म के तालिब हैं।¹⁶~आदमी का नज़राना उसके लिए जगह कर लेता है, और बड़े आदमियों के सामने उसकी रसाई कर देता है।

¹⁷~जो पहले अपना दा'वा बयान करता है रास्त मा'लूम होता है, लेकिन दूसरा आकर उसकी हक़ीक़त ज़ाहिर करता है।¹⁸~पर्ची झगड़ों को ख़त्म करती है, और ज़बरदस्तों के बीच फ़ैसला कर देती है।

¹⁹~नाराज़ भाई को राज़ी करना मज़बूत शहर ले लेने से ज़्यादा मुश्किल है, और झगड़े क़िले' के बेंडों की तरह हैं।²⁰~आदमी की पेट उसके मुँह के फल से भरता है, और वह अपने लबों की पैदावार से सेर होता है।

²¹~मौत और ज़िन्दगी ज़बान के क़ाबू में हैं, और जो उसे दोस्त रखते हैं उसका फल खाते हैं।²²~जिसको बीवी मिली उसने तोहफ़ा पाया, और उस पर खुदावन्द का फ़ज़ल हुआ।

²³~मुहताज मिन्नत समाजत करता है, लेकिन दौलतमन्द सख़्त जवाब देता है।²⁴~जो बहुतों से दोस्ती करता है अपनी बर्बादी के लिए करता है, लेकिन ऐसा दोस्त भी है जो भाई से ज़्यादा मुहब्बत रखता है।

Chapter 19

¹~रास्तारौ गरीब, कजगो और~बेवकूफ~से बेहतर है।²~ये भी अच्छा नहीं कि रूह 'इल्म से खाली रहे? जो चलने में जल्द बाज़ी करता है, भटक जाता है।

³~आदमी की~बेवकूफी~उसे गुमराह करती है, और उसका दिल~खुदावन्द से बेज़ार होता है।⁴~दौलत बहुत से दोस्त पैदा करती है, लेकिन गरीब अपने ही दोस्त से बेगाना है।

⁵~झूटा गवाह बे सज़ा न छूटेगा, और झूट बोलने वाला रिहाई न पाएगा।⁶~बहुत से लोग सखी की खुशामद करते हैं, और हर एक आदमी इना'म देने वाले का दोस्त है।

⁷जब मिसकीन के सब भाई ही उससे नफ़रत करते हैं, तो उसके दोस्त कितने ज़्यादा उससे दूर भागेंगे। वह बातों से उनका पीछा करता है, लेकिन उनको नहीं पाता।⁸जो हिकमत हासिल करता है अपनी जान को 'अज़ीज़ रखता है; जो समझ की मुहाफ़िज़त करता है फ़ाइदा उठाएगा।

⁹झूटा गवाह बे सज़ा न छूटेगा, और जो झूठ बोलता है फ़ना होगा।¹⁰~जब~बेवकूफ~के लिए नाज़-ओ-ने'मत ज़ेबा नहीं तो खादिम का~शहज़ादों पर हुक्मरान होनाऔर भी ~मुनासिब नहीं।

¹¹~आदमी की तमीज़ उसको क्रहर करने में धीमा बनाती है, और ख़ता से दरगुज़र करने में उसकी शान है।¹²~बादशाह का ग़ज़ब शेर की गरज की तरह है, और उसकी नज़र-ए-'इनायत घास पर शबनम की तरह।

¹³~बेवकूफ~बेटा अपने बाप के लिए बला है, और बीवी का झगड़ा रगड़ा सदा का टपका।¹⁴~घर और माल तो बाप दादा से मीरास में मिलते हैं, लेकिन ~अक्लमंद बीवी खुदावन्द से मिलती है।

¹⁵~काहिली नींद में ग़र्ज़ कर देती है, और काहिल आदमी भूका रहेगा।¹⁶जो फ़रमान बजा लाता है अपनी जान की मुहाफ़िज़त पर जो अपनी राहों से ग़ाफ़िल है, मरेगा।

¹⁷जो ग़रीबों पर रहम करता है, खुदावन्द को क़र्ज़ देता है, और वह अपनी नेकी का बदला पाएगा।¹⁸~जब तक उम्मीद है अपने बेटे की तादीब किए जा और उसकी बर्बादी पर दिल न लगा।

¹⁹~गुस्सावर आदमी सज़ा पाएगा; क्योंकि अगर तू उसे रिहाई दे तो तुझे बार बार ऐसा ही करना होगा।²⁰~मश्वरत को सुन और तरबियत पज़ीर हो, ताकि तू आखिर कार 'अक्लमन्द हो जाए।

²¹~आदमी के दिल में बहुत से मन्सूबे हैं, लेकिन सिर्फ़ खुदावन्द का इरादा ही क़ायम रहेगा।²²~आदमी की मक्कबूलियत उसके एहसान से है, और कंगाल झूठे आदमी से बेहतर है।

²³खुदावन्द का खौफ़ ज़िन्दगी बख़्श है, और खुदा तरस सेर होगा, और बदी से महफूज़ रहेगा।²⁴~सुस्त आदमी अपना हाथ थाली में डालता है, और इतना भी नहीं करता की फिर उसे अपने मुँह तक लाए।

²⁵ठट्ठा करने वाले को मार, इससे सादा दिल होशियार हो जाएगा, और समझदार को तम्बीह कर, वह 'इल्म हासिल करेगा।

²⁶~जो अपने बाप से बदसलूकी करता और माँ को निकाल देता है, शर्मिन्दगी का ज़रिया'और रुस्वाई लाने वाला बेटा है।²⁷~ऐ मेरे बेटे, अगर तू 'इल्म से बरग़श्ता होता है, तो ता'लीम सुनने से क्या फ़ायदा?

²⁸~खबीस गवाह 'अद्ल पर हँसता है, और शरीर का मुँह बदी निगलता रहता है।²⁹ठट्ठा करने वालों के लिए सज़ाएँ ठहराई जाती हैं, और~बेवकूफों~की~पीठ के लिए कोड़े हैं।

Chapter 20

¹~मय मसखरा और शराब हंगामा करने वाली है, और जो कोई इनसे फ़रेब खाता है, 'अक्लमन्द नहीं।' बादशाह का रो'ब शेर की गरज की तरह है: जो कोई उसे गुस्सा दिलाता है, अपनी जान से बदी करता है।

³~झगड़े से अलग रहने में आदमी की 'इज्जत है, लेकिन हर एक~बेवकूफ़ झगड़ता रहता है, | ⁴~काहिल आदमी जाड़े की वजह हल नहीं चलाता; इसलिए फ़सल काटने के वक़्त वह भीक माँगेगा, और कुछ न पाएगा।

⁵आदमी के दिल की बात गहरे पानी की तरह है, लेकिन समझदार आदमी उसे खींच निकालेगा। ⁶~अक्सर लोग अपना अपना एहसान जताते हैं, लेकिन वफ़ादार आदमी किसको मिलेगा?

⁷~रास्तरों सादिक के बा'द, उसके बेटे मुबारक होते हैं। ⁸~बादशाह जो तख़्त-ए-'अदालत पर बैठा है, खुद देखकर हर तरह की बदी को फटकता है।

⁹~कौन कह सकता है कि मैंने अपने दिल को साफ़ कर लिया है; और मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ? ¹⁰~दो तरह के बाट और दो तरह के पैमाने, इन दोनों से खुदा को नफ़रत है।

¹¹बच्चा भी अपनी हरकतों से पहचाना जाता है, कि उसके काम नेक-ओ-रास्त हैं कि नहीं। ¹²~सुनने वाले कान और देखने वाली आँख दोनों को खुदावन्द ने बनाया है।

¹³~ख़वाब दोस्त न हो, कहीं ऐसा तू कंगाल हो जाए; अपनी आँखें खोल कि तू रोटी से सेर होगा। ¹⁴~खरीदार कहता है, "रदी है, रदी, "लेकिन जब चल पड़ता है तो फ़ख़र करता है।

¹⁵~ज़र-ओ-मरजान की तो कसरत है, लेकिन बेशबहा सरमाया 'इल्म वाले होंट हैं। ¹⁶~जो बेगाने का ज़ामिन हो, उसके कपड़े छीन ले, और जो अजनबी का ज़ामिन हो, उससे कुछ गिरवी रख ले।

¹⁷दगा की रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन आख़िर को उसका मुँह कंकरों से भरा जाता है। ¹⁸~हर एक काम मश्वरत से ठीक होता है, और तू नेक सलाह लेकर जंग कर।

¹⁹~जो कोई लुतरापन करता फिरता है, राज़ खोलता है; इसलिए तू मुँहफट से कुछ वास्ता न रख ²⁰~जो अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करता है, उसका चिराग़ गहरी तारीकी में बुझाया जाएगा।

²¹~अगरचे 'इब्तिदा में मीरास यकलख़्त हासिल हो, तो भी उसका अन्जाम मुबारक न होगा। ²²~तू यह न कहना, कि मैं बदी का बदला लूँगा। खुदावन्द की आस रख और वह तुझे बचाएगा।

²³~दो तरह के बाट से खुदावन्द को नफ़रत है, और दगा के तराजू ठीक नहीं। ²⁴आदमी की रफ़्तार खुदावन्द की तरफ़ से है, लेकिन इन्सान अपनी राह को क्यूँकर जान सकता है?

²⁵~जल्द बाज़ी से किसी चीज़ को मुकद्दस ठहराना, और मिन्नत मानने के बा'द दरियापूत करना, आदमी के लिए फंदा है। ²⁶~अक्लमन्द बादशाह शरीरों को फटकता है, और उन पर दावने का पहिया फिरवाता है।

²⁷आदमी का ज़मीर खुदावन्द का चिराग़ है: जो उसके तमाम अन्दरूनी हाल को दरियापूत करता है। ²⁸~शफ़क़त और सच्चाई बादशाह की निगहबान हैं, बल्कि ~शफ़क़त ही से उसका तख़्त क़ायम रहता है।

²⁹जवानों का ज़ोर उनकी शौकत है, और बूढ़ों के सफ़ेद बाल उनकी ज़ीनत हैं। ³⁰~कोड़ों के ज़ख़्म से बदी दूर होती है, और मार खाने से दिल साफ़ होता

Chapter 21

¹~बादशाह का दिल खुदावन्द के हाथ में है वह उसको पानी के नालों की तरह जिधर चाहता है फेरता है।²~इन्सान का हर एक चाल चलन उसकी नज़र में रास्त है, लेकिन खुदावन्द दिलों को जाँचता है।

³~सदाक़त और 'अदल, खुदावन्द के नज़दीक़ कुर्बानी से ज़्यादा पसन्दीदा हैं।⁴~बलन्द नज़री और दिल का तकब्बुर, है। और शरीरों की इक़बालमंदी गुनाह है।

⁵~मेहनती की तदबीरें यक़ीनन फ़िरावानी की वजह हैं, लेकिन हर एक जल्दबाज़ का अंजाम मोहताजी है।⁶~दरोगागोई से ख़ज़ाने हासिल करना, बेठिकाना बुख़ारात और उनके तालिब मौत के तालिब हैं।

⁷~शरीरों का जुल्म उनको उड़ा ले जाएगा, क्योंकि उन्होंने इन्साफ़ करने से इंकार किया है।⁸~गुनाह आलूदा आदमी की राह बहुत टेढ़ी है, लेकिन जो पाक है उसका काम ठीक है।

⁹~घर की छत पर एक कोने में रहना, झगड़ालू बीवी के साथ बड़े घर में रहने से बेहतर है।¹⁰शरीर की जान बुराई की मुश्ताक़ है, उसका पड़ोसी उसकी निगाह में मक्बूल नहीं होता।

¹¹~जब ठठ्ठा करने वाले को सज़ा दी जाती है, तो सादा दिल हिकमत हासिल करता है, और जब 'अक्लमंद तरबियत पाता है, तो 'इल्म हासिल करता है।

¹²~सादिक़ शरीर के घर पर ग़ौर करता है; शरीर कैसे गिर कर बर्बाद हो गए हैं।

¹³जो ग़रीब की आह सुन कर अपने कान बंद कर लेता है, वह आप भी आह करेगा और कोई न सुनेगा।¹⁴पोशीदगी में हदिया देना क्रहर को ठंडा करता है, और इना'म बग़ल में दे देना ग़ज़ब-ए-शदीद को।

¹⁵~इन्साफ़ करने में सादिक़ की शादमानी है, लेकिन बदकिरदारों की हलाकत।¹⁶जो समझ की राह से भटकता है, मुद्दों के गोल में पड़ा रहेगा।

¹⁷~'अव्याश-कंगाल रहेगा; जो मय और तेल का मुश्ताक़ है मालदार न होगा।¹⁸~शरीर सादिक़ का फ़िदिया होगा, और दगाबाज़ रास्तबाज़ों के बदले में दिया जाएगा।

¹⁹~वीराने में रहना, झगड़ालू और चिड़चिड़ी बीवी के साथ रहने से बेहतर है।²⁰~क़ीमती ख़ज़ाना और तेल 'अक्लमन्दों के घर में हैं, लेकिन-बेवकूफ़-उनको उड़ा देता है।

²¹~जो सदाक़त और शफ़क़त की पैरवी करता है, ज़िन्दगी और सदाक़त-ओ-'इज़ज़त पाता है।²²~'अक्लमन्द आदमी ज़बरदस्तों के शहर पर चढ़ जाता है, और जिस कुव्वत पर उनका भरोसा है, उसे गिरा देता है।

²³~जो अपने मुँह और अपनी ज़बान की निगहबानी करता है, अपनी जान को मुसीबतों से महफूज़ रखता है।²⁴मुतकब्बिर-ओ-मगरूर शख्स जो बहुत तकब्बुर से काम करता है।

²⁵~काहिल की तमन्ना उसे मार डालती है, क्योंकि उसके हाथ मेहनत से इंकार करते हैं।²⁶~वह दिन भर तमन्ना में रहता है, लेकिन सादिक़ देता है और दरेग नहीं करता।

²⁷~शरीर की कुर्बानी क़ाबिले नफ़रत है, खासकर जब वह बुरी नियत से लाता है।²⁸~झूटा गवाह हलाक होगा, लेकिन जिस शख्स ने बात सुनी है, वह-खामोश न रहेगा।

²⁹~शरीर अपने चहरे को सख़्त करता है, लेकिन सादिक़ अपनी राह पर ग़ौर करता है।

³⁰~कोई हिकमत, कोई समझ और कोई मश्वरत नहीं, जो खुदावन्द के सामने ठहर सके।³¹~जंग के दिन के लिए घोड़ा तो तैयार किया जाता है, लेकिन फ़तहयाबी खुदावन्द की तरफ़ से है।

Chapter 22

¹~नेक नाम बेक़यास खज़ाने से और एहसान सोने चाँदी से बेहतर है।²~अमीर-ओ-ग़रीब एक दूसरे से मिलते हैं; उन सबका ख़ालिफ़ ख़ुदावन्द ही है।

³~होशियार बला को देख कर छिप जाता है; लेकिन नादान बढ़े चले जाते और नुक़सान उठाते हैं।⁴~दौलत और 'इज़ज़त-ओ-हयात, ख़ुदावन्द के ख़ौफ़ और फ़रोतनी का अज़ हैं।

⁵~टेढ़े आदमी की राह में काँटे और फन्दे हैं; जो अपनी जान की निगहबानी करता है, उनसे दूर रहेगा।⁶~लड़के की उस राह में तरबियत कर जिस पर उसे जाना है; वह बूढ़ा होकर भी उससे नहीं मुड़ेगा।

⁷~मालदार ग़रीब पर हुक्मरान होता है, और क़र्ज़ लेने वाला क़र्ज़ देने वाले का नौकर है।⁸~जो बदी बोता है मुसीबत काटेगा, और उसके क़हर की लाठी टूट जाएगी।

⁹~जो नेक नज़र है बरकत पाएगा, क्योंकि वह अपनी रोटी में से ग़रीबों को देता है।¹⁰~ठूठा करने वाले को निकाल दे तो फ़साद जाता रहेगा; हाँ झगड़ा रगड़ा और रुस्वाई दूर हो जाएँगे।

¹¹~जो पाक दिली को चाहता है उसके होंटों में लुत्फ़ है, और बादशाह उसका दोस्तदार होगा।¹²~ख़ुदावन्द की आँखें 'इल्म की हिफ़ाज़त करती हैं; वह दगाबाज़ों के कलाम को उलट देता है।

¹³~सुस्त आदमी कहता है बाहर शेर खड़ा है! मैं गलियों में फाड़ा जाऊँगा।¹⁴~बेगाना 'औरत का मुँह गहरा गढ़ा है; उसमें वह गिरता है जिससे ख़ुदावन्द को नफ़रत है।

¹⁵~हिमाक़त लड़के के दिल से वाबस्ता है, लेकिन तरबियत की छड़ी उसको उससे दूर कर देगी।¹⁶~जो अपने फ़ायदे के लिए ग़रीब पर जुल्म करता है, और जो मालदार को देता है, यक़ीनन मोहताज हो जाएगा।

¹⁷~अपना कान झुका और 'अक्लमंदों की बातें सुन, और मेरी ता'लीम पर दिल लगा;¹⁸~क्योंकि यह पसंदीदा है कि तू उनको अपने दिल में रखे, और वह तेरे लबों पर क़ायम रहे;¹⁹~ताकि तेरा भरोसा ख़ुदावन्द पर हो, मैंने आज के दिन तुझ को हाँ तुझ ही को जता दिया है।

²⁰~क्या मैंने तेरे लिए मश्वरत और 'इल्म की लतीफ़ बातें इसलिए नहीं लिखी हैं, कि²¹~सच्चाई की बातों की हक़ीक़त तुझ पर ज़ाहिर कर दूँ, ताकि तू सच्ची बातें हासिल करके अपने भेजने वालों के पास वापस जाए?

²²~ग़रीब को इसलिए न लूट की वह ग़रीब है, और मुसीबत ज़दा पर 'अदालत गाह में जुल्म न कर;²³~क्योंकि ख़ुदावन्द उनकी वक़ालत करेगा, और उनके ग़ारतग़रों की जान को ग़ारत करेगा।

²⁴~गुस्से वर आदमी से दोस्ती न कर, और ग़ज़बनाक शख्स के साथ न जा;²⁵~ऐसा ना हो ~तू उसका चाल चलन सीखे, और अपनी जान को फंदे में फंसाए।-

²⁶~तू उनमें शामिल न हो जो हाथ पर हाथ मारते हैं, और न उनमें जो क़र्ज़ के ज़ामिन होते हैं।²⁷~क्योंकि अगर तेरे पास अदा करने को कुछ न हो, तो वह तेरा बिस्तर तेरे नीचे से क्यूँ खींच ले जाए?

²⁸~उन पुरानी हदों को न सरका, जो तेरे बाप-दादा ने बाँधी हैं।²⁹~तू किसी को उसके काम में मेहनती देखता है, वह बादशाहों के सामने खड़ा होगा; वह कम क़द्र लोगों की खिदमत न करेगा।

Chapter 23

¹~जब तू हाकिम के साथ खाने बैठे, तो खूब गौर कर, कि तेरे सामने कौन है?²~अगर तू खाऊ है, तो अपने गले पर छुरी रख दे।³उसके मज़ेदार खानों की तमन्ना न कर, क्योंकि वह दगा बाज़ी का खाना है।

⁴मालदार होने के लिए परेशान न हो; अपनी इस 'अक्लमन्दी से बाज़ आ।⁵क्या तू उस चीज़ पर आँख लगाएगा जो है ही नहीं? लेकिन लगा कर आसमान की तरफ़ उड़ जाती है?

⁶तू तंग चश्म की रोटी न खा, और उसके मज़ेदार खानों की तमन्ना न कर;⁷क्योंकि जैसे उसके दिल के खयाल हैं वह वैसा ही है। वह तुझ से कहता है खा और पी, लेकिन उसका दिल तेरी तरफ़ नहीं⁸~जो निवाला तूने खाया है तू उसे उगल देगा, और तेरी मीठी बातें बे मतलब होंगी

⁹अपनी बातें~बेवकूफ़~को न सुना, क्योंकि वह तेरे 'अक्लमन्दी ~के कलाम की ना क़द्री करेगा।¹⁰~पुरानी हदों को न सरका, और यतीमों के खेतों में दखल न कर,

¹¹क्योंकि उनका रिहाई बख़्शने वाला ज़बरदस्त है; वह खुद ही तेरे खिलाफ़ उनकी वक़ालत करेगा।

¹²~तरबियत पर दिल लगा, और 'इल्म की बातें सुन।

¹³लड़के से तादीब को देगा न कर; अगर तू उसे छड़ी से मारेगा तो वह मर न जाएगा।¹⁴~तू उसे छड़ी से मारेगा, और उसकी जान को पाताल से बचाएगा।

¹⁵ऐ मेरे बेटे, अगर तू 'अक्लमन्द दिल है, तो मेरा दिल, हाँ मेरा दिल खुश होगा।¹⁶और जब तेरे लबों से सच्ची बातें निकलेंगी, तो मेरा दिल शादमान होगा।

¹⁷तेरा दिल गुनहगारों पर रश्क न करे, बल्कि तू दिन भर खुदावन्द से डरता रह।¹⁸क्योंकि बदला यक़ीनी है, और तेरी आस नहीं टूटेगी।

¹⁹~ऐ मेरे बेटे, तू सुन और 'अक्लमन्द बन, और अपने दिल की रहबरी कर।²⁰~तू शराबियों में शामिल न हो, और न हरीस कबाबियों में,²¹क्योंकि शराबी और खाऊ कंगाल हो जाएँगे और नींद उनको चीथड़े पहनाएगी।

²²अपने बाप का जिससे तू पैदा हुआ सुनने वाला हो, और अपनी माँ को उसके बुढ़ापे में हक़ीर न जान।²³~सच्चाई की मोल ले और उसे बेच न डाल; हिकमत और तरबियत और समझ को भी।

²⁴सादिक़ का बाप निहायत खुश होगा; और अक्लमन्द का बाप उससे शादमानी करेगा।²⁵~अपने माँ बाप को खुश कर, अपनी वालिदा को शादमान रख।

²⁶~ऐ मेरे बेटे, अपना दिल मुझ को दे, और मेरी राहों से तेरी आँखें खुश हों।²⁷क्योंकि फ़ाहिशा गहरी खन्दक है, और बेगाना 'औरत तंग गढ़ा है।²⁸~वह राहज़न की तरह घात में लगी है, और बनी आदम में बदकारों का शुमार बढ़ाती है।

²⁹~कौन अफ़सोस करता है? कौन ग़मज़दा है? कौन झगड़ातू है? कौन शाकी है? कौन बे वजह घायल है? और किसकी आँखों में सुख़ी है?³⁰~वही जो देर तक मयनोशी करते हैं; वही जो मिलाई हुई मय की तलाश में रहते हैं।

³¹~जब मय लाल लाल हो, जब उसका 'अक्स ज़ाम पर पड़े, और जब वह रवानी के साथ नीचे उतरे, तो उस पर नज़र न कर।³²क्योंकि अन्जाम कार वह साँप की तरह काटती, और अजदहे की तरह डस जाती है।³³तेरी आँखें 'अजीब चीज़ें देखेंगी, और तेरे मुँह से उलटी सीधी बातें निकलेगी।

³⁴बल्कि तू उसकी तरह होगा जो समन्दर के बीच में लेट जाए, या उसकी तरह जो मस्तूल के सिरे पर सो रहे।³⁵~तू कहेगा उन्होंने तो मुझे मारा है, लेकिन मुझ को चोट नहीं लगी; उन्होंने मुझे पीटा है लेकिन मुझे मा'लूम भी नहीं हुआ। मैं कब बेदार हूँगा? मैं फिर उसका तालिब हूँगा।

Chapter 24

¹~तू शरीरों पर रश्क न करना, और उनकी सुहबत की ख्वाहिश न रखना;²क्योंकि उनके दिल जुल्म की फ़िक्र करते हैं, और उनके लब शरारत का ज़िक्र।

³~हिकमत से घर ता'मीर किया जाता है, और समझ से उसको क्रयाम होता है।⁴~और 'इल्म के वसीले से कोठरियाँ, नफ़ीस-ओ-लतीफ़ माल से मा'मूर की जाती हैं।

⁵~'अक्लमंद आदमी ताक़तवर है, बल्कि साहिब-ए-'इल्म का ताक़त बढ़ती रहती है।⁶~क्योंकि तू नेक सलाह लेकर जंग कर सकता है, और सलाहकारों की कसरत में सलामती है।

⁷हिकमत~बेवकूफ़~के लिए बहुत बलन्द है; वह फाटक पर मुँह नहीं~खोल सकता।

⁸जो बदी के मन्सूबे बाँधता है, फ़ितनाअंगेज़ कहलाएगा।⁹बेवकूफी~का मन्सूबा भी गुनाह है, और ठग़ा करने वाले से लोगों को नफ़रत है।

¹⁰अगर तू मुसीबत के दिन बेदिल हो जाए, तो तेरी ताक़त बहुत कम है।

¹¹~जो क़त्ल के लिए घसीटे जाते हैं, उनको छुड़ा; जो मारे जाने को हैं उनको हवाले न कर।¹²~अगर तू कहे, देखो, हम को यह मा'लूम न था, तो क्या दिलों को जाँचने वाला यह नहीं समझता? और क्या तेरी जान का निगहबान यह नहीं जानता? और क्या वह हर शख्स को उसके काम के मुताबिक़ बदला न देगा?

¹³ऐ मेरे बेटे, तू शहद खा, क्योंकि वह अच्छा है, और शहद का छत्ता भी क्योंकि वह तुझे मीठा लगता है।¹⁴हिकमत भी तेरी जान के लिए ऐसी ही होगी; अगर वह तुझे मिल जाए तो तेरे लिए बदला होगा, और तेरी उम्मीद नहीं टूटेगी।

¹⁵~ऐ शरीर, तू सादिक़ के घर की घात में न बैठना, उसकी आरामगाह को ग़ारत न करना;¹⁶क्योंकि सादिक़ सात बार गिरता है और फिर उठ खड़ा होता है; लेकिन शरीर बला में गिर कर पड़ा ही रहता है।

¹⁷~जब तेरा दुश्मन गिर पड़े तो खुशी न करना, और जब वह पछाड़ खाए तो दिलशान न होना।¹⁸~ऐसा न हो खुदावन्द इसे देखकर नाराज़ हो, और अपना क्रहर उस पर से उठा ले।

¹⁹~तू बदकिरदारों की वजह से बेज़ार न हो, और शरीरों पे रश्क न कर;²⁰क्योंकि बदकिरदार के लिए कुछ बदला नहीं। शरीरों का चिराग़ बुझा दिया जाएगा।

²¹~ऐ मेरे बेटे, खुदावन्द से और बादशाह से डर; और मुफ़सिदों के साथ सुहबत न रख;²²क्योंकि उन पर अचानक आफ़त आएगी, और उन दोनों की तरफ़ से आने वाली हलाकत को कौन जानता है?

²³~ये भी 'अक्लमंदों की~बातें हैं : 'अदालत में तरफ़दारी करना अच्छा नहीं।

²⁴~जो शरीर से कहता है तू सादिक़ है, लोग उस पर ला'नत करेंगे और उम्मतें उस से नफ़रत रखेंगी;²⁵~लेकिन जो उसको डाँटते हैं खुश होंगे, और उनकी बड़ी बरकत मिलेगी।

²⁶~जो हक़ बात कहता है, लबों पर बोसा देता है।²⁷~अपना काम बाहर तैयार कर, उसे अपने लिए खेत में दुरूस्त कर ले; और उसके बा'द अपना घर बना।

²⁸~बेवजह अपने पड़ोसी के खिलाफ़ गावाही न देना, और अपने लबों से धोखा न देना।²⁹~यूँ न कह, "मैं उससे वैसा ही करूँगा जैसा उसने मुझसे किया; मैं उस आदमी से उसके काम के मुताबिक़ सुलूक करूँगा।"

³⁰~मैं काहिल के खेत के और बे'अक्ल के ताकिस्तान के पास से गुज़रा,³¹~और देखो, वह सब का सब काँटों से भरा था, और बिच्छू बूटी से ढका था; और उसकी संगीन दीवार गिराई गई थी।

³²~तब मैंने देखा और उस पर ख़ूब ग़ौर किया; हाँ, मैंने उस पर निगह की और 'इब्रत पाई।³³~थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, ज़रा पड़े रहने को हाथ पर हाथ,

³⁴~इसी तरह तेरी मुफ़लिसी राहज़न की तरह, और तेरी तंगदस्ती हथियारबंद आदमी की तरह, आ पड़ेगी।

Chapter 25

¹~ये भी सुलेमान की अम्साल हैं; जिनकी शाह-ए-यहूदाह हिज़कियाह के लोगों ने नक़ल की थी:²खुदा का जलाल राज़दारी में है, लेकिन बादशाहों का जलाल मुआ'मिलात की तफ़्तीश में।³~आसमान की ऊँचाई और ज़मीन की गहराई, और बादशाहों के दिल की इन्तिहा नहीं मिलती।

⁴~चाँदी की मैल दूर करने से, सुनार के लिए बर्तन बन जाता है।⁵~शरीरों को बादशाह के सामने से दूर करने से, उसका तख़्त सदाक़त पर क़ायम हो जाएगा।

⁶~बादशाह के सामने अपनी बड़ाई न करना, और बड़े आदमियों की जगह खड़ा न होना;

⁷क्यूँकिये बेहतर है कि हाकिम के आमने-सामने जिसको तेरी आँखों ने देखा है, तुझ से कहा जाए, "आगे बढ़ कर बैठ। न कि तू पीछे हटा दिया जाए।"⁸~झगड़ा करने में जल्दी न कर, आखिरकार जब तेरा पड़ोसी तुझको ज़लील करे, तब तू क्या करेगा?

⁹~तू-पड़ोसी-के साथ अपने दा'वे का ज़िक्र कर, लेकिन किसी दूसरे का-राज़ ~न खोल;¹⁰~ऐसा न हो जो कोई उसे सुने तुझे रुखा करे, और तेरी बदनामी होती रहे।

¹¹~'बामौक़ा' बातें, रूपहली टोक़रियों में सोने के सेब हैं।¹²~'अक्लमंद मलामत करने वाले की बात, सुनने वाले के कान में सोने की बाली और कुन्दन का ज़ेवर है।

¹³~वफ़ादार क़ासिद अपने भेजने वालों के लिए, ऐसा है जैसे फ़सल काटने के दिनों में बर्फ़ की ठंडक, क्यूँकि वह अपने मालिकों की जान को ताज़ा दम करता है।¹⁴~जो किसी झूठी लियाक़त पर फ़ख़्र करता है, वह बेबारिश बादल और हवा की तरह है।

¹⁵~तहम्मूल करने से हाकिम राज़ी हो जाता है, और नर्म ज़बान हड्डी को भी तोड़ डालती है।

¹⁶क्या तूने शहद पाया? तू इतना खा जितना तेरे लिए काफ़ी है। ऐसा न हो तू ज़्यादा खा जाए और उगल डाल्ले।¹⁷अपने-पड़ोसी-के घर बार बार जाने से अपने पाँवों को रोक, ऐसा न हो कि वह दिक्क़ होकर तुझ से नफ़रत करे।

¹⁸~जो अपने-पड़ोसी-के खिलाफ़ झूठी गवाही देता है वह गुर्ज़ और-तलवार और तेज़ तीर है।¹⁹~मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा आदमी पर 'ऐतमाद, टूटा दाँत और उखड़ा पाँव है।

²⁰जो किसी ग़मगीन के सामने गीत गाता है, वह गोया जाड़े में किसी के कपड़े उतारता और सज्जी पर सिरका डालता है।

²¹~अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे रोटी खिला, और अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी पिला;²²क्यूँकि तू उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाएगा, और खुदावन्द तुझ को बदला देगा।

²³उत्तरी हवा मेह को लाती है, और ग़ैबत गो ज़बान तुर्शरूई को।²⁴~घर की छत पर एक कोने में रहना, झगड़ालू बीवी के साथ कुशादा मकान में रहने से बेहतर है।

²⁵~वह खुशख़बरी जो दूर के मुल्क से आए, ऐसी है जैसे थके माँदे की जान के लिए ठंडा पानी।²⁶~सादिक़ का शरीर के आगे गिरना, गोया गन्दा नाला और नापाक सोता है।

²⁷बहुत शहद खाना अच्छा नहीं, और अपनी बुजुर्गी का तालिब होना ज़ेबा नहीं है।²⁸जो अपने नफ़्स पर ज़ाबित नहीं, वह बेफ़सील और मिस्मारशुदा शहर की तरह है।

Chapter 26

¹जिस तरह गर्मी के दिनों में बर्फ और दिरौ के वक्त बारिश, उसी तरह बेवकूफ को 'इज़्ज़त ज़ेब नहीं देती।'²~जिस तरह गौरय्या आवारा फिरती और अबाबील उड़ती रहती है, उसी तरह बे वजह ला'नत बेमतलब है।

³~घोड़े के लिए चाबुक और गधे के लिए लगाम, लेकिन बेवकूफ की पीठ के लिए छड़ी है।⁴~बेवकूफ~को उसकी हिमाक़त के मुताबिक़ जवाब न दे, मबादा तू भी उसकी तरह हो जाए।

⁵~बेवकूफ~को उसकी हिमाक़त के मुताबिक जवाब दे, ऐसा न हो कि वह अपनी नज़र में 'अक्लमंद ठहरे।'⁶~जो~बेवकूफ~के हाथ पैग़ाम भेजता है, अपने पाँव पर कुल्हाड़ा मारता~और नुक़सान का प्याला पीता है।

⁷~जिस तरह लंगड़े की टाँग लड़खड़ाती है, उसी तरह~बेवकूफ~के मुँह~में तमसील है।⁸~बेवकूफ~की ता'ज़ीम करने वाला, गोया जवाहिर को पत्थरों के ढेर में रखता है।

⁹~बेवकूफ~के मुँह में तमसील, शराबी के हाथ में चुभने वाले काँटे की तरह है।¹⁰~जो~बेवकूफों~और राहगुज़रों को मज़दूरी पर लगाता है, उस तीरंदाज़~की तरह है जो सबको ज़ख़मी करता है।

¹¹~जिस तरह कुत्ता अपने उगले हुए को फिर खाता है, उसी तरह~बेवकूफ~अपनी~बेवकूफी~को दोहराता है।¹²~क्या तू उसको जो अपनी नज़र में 'अक्लमंद है देखता है? उसके मुक़ाबिले में~बेवकूफ~से ज़्यादा उम्मीद है।

¹³~सुस्त आदमी कहता है, "राह में शेर है, शेर-ए-बबर गलियों में है!"¹⁴~जिस तरह दरवाज़ा अपनी चूलों पर फिरता है, उसी तरह सुस्त आदमी अपने बिस्तर पर करवट बदलता रहता है।

¹⁵सुस्त आदमी अपना हाथ थाली में डालता है, और उसे फिर मुँह तक लाना उसको थका देता है।¹⁶~काहिल अपनी नज़र में 'अक्लमंद है, बल्कि दलील लाने वाले सात शख्सों से बढ़ कर।

¹⁷~जो रास्ता चलते हुए पराए झगड़े में दख़ल देता है, उसकी तरह है जो कुत्ते को कान से पकड़ता है।

¹⁸~जैसा वह दीवाना जो जलती लकड़ियाँ और मौत के तीर फेंकता है,¹⁹~वैसा ही वह शख्स है जो अपने पड़ोसी को दगा देता है, और कहता है, "मैं तो दिल्ली कर रहा था।"

²⁰~लकड़ी न होने से आग बुझ जाती है, इसलिए जहाँ चुगलखोर नहीं वहाँ झगड़ा मौकूफ़ हो जाता है।²¹~जैसे अंगारों पर कोयले और आग पर ईंधन है, वैसे ही झगड़ालू झगड़ा खड़ा करने के लिए है।

²²~चुगलखोरकी बातें लज़ीज़ निवाले हैं, और वह खूब हज़म हो जाती हैं।²³उलफ़ती, लब बदख्वाह दिल के साथ, उस ठीकरे की तरह है जिस पर खोटी चाँदी मेंढी हो।

²⁴~कीनावर दिल में दगा रखता है, लेकिन अपनी बातों से छिपाता है;²⁵~जब वह मीठी मीठी बातें करे तो उसका यक़ीन न कर, क्योंकि उसके दिल में कमाल नफ़रत है।²⁶अगरचे उसकी बदख्वाही मक्र में छिपी है, तो भी उसकी बदी जमा'अत के आमने सामने खोल दी जाएगी।

²⁷~जो गढ़ा खोदता है, आप ही उसमें गिरेगा; और जो पत्थर ढलकाता है, वह पलटकर उसी पर पड़ेगा।²⁸झूटी ज़बान उनका कीना रखती है जिनको उस ने घायल किया है, और चापलूस मुँह तबाही करता है।

Chapter 27

¹~कल की बारे में घमण्ड न कर, क्योंकि तू नहीं जानता कि एक ही दिन में क्या होगा।²~गैर तेरी सिताइश करे न कि तेरा ही मुँह, बेगाना करे न कि तेरे ही लब।

³~पत्थर भारी है और रेत वजनदार है, लेकिन बेवकूफ़ का झुंझलाना इन दोनों से गिरांतर है।⁴~गुस्सा ~सख्त बेरहमी और क्रहर सैलाब है, लेकिन जलन के सामने कौन खड़ा रह सकता है?

⁵~छिपी मुहब्बत से, खुली मलामत बेहतर है।⁶जो ज़ख्म दोस्त के हाथ से लगें वफ़ा से भरे हैं, लेकिन दुश्मन के बोसे बाइफ़्रात हैं।

⁷आसूदा जान को शहद के छत्ते से भी नफ़रत है, लेकिन भूके के लिए हर एक कड़वी चीज़ मीठी है।⁸अपने मकान से आवारा इन्सान, उस चिड़िया की तरह है जो अपने आशियाने से भटक जाए।

⁹जैसे तेल और इत्र से दिल को फ़रहत होती है, वैसे ही दोस्त की दिली मश्वरत की शीरीनी से।¹⁰अपने दोस्त और अपने बाप के दोस्त को छोड़ न दे, और अपनी मुसीबत के दिन अपने भाई के घर न जा; क्योंकि पड़ोसी जो नज़दीक हो उस भाई से जो दूर हो बेहतर है।

¹¹~ऐ मेरे बेटे, 'अक्लमंद बन और मेरे दिल को शाद कर, ताकि मैं अपने मलामत करने वाले को जवाब दे सकूँ।'¹²होशियार बला को देखकर छिप जाता है; लेकिन नादान बढ़े चले जाते और नुक़सान उठाते हैं।

¹³जो बेगाने का ज़ामिन हो उसके कपड़े छीन ले, और जो अजनबी का ज़ामिन हो उससे कुछ गिरवी रख ले।¹⁴~जो सुबह सवेरे उठकर अपने दोस्त के लिए बलन्द आवाज़ से दु'आ-ए-ख़ैर करता है, उसके लिए यह ला'नत महसूब होगी।

¹⁵~झड़ी के दिन का लगातार टपका, और झगड़ालू बीवी यकसाँ हैं; ¹⁶~जो उसको रोकता है, हवा को रोकता है; और उसका दहना हाथ तेल को पकड़ता है।

¹⁷~जिस तरह लोहा लोहे को तेज़ करता है, उसी तरह आदमी के दोस्त के चहरे की आब उसी से है।¹⁸~जो अंजीर के दरख़्त की निगहबानी करता है उसका मेवा खाएगा, और जो अपने आक्रा की खिदमत करता है 'इज़ज़त पाएगा।

¹⁹~जिस तरह पानी में चेहरा चेहरे से मुशाबह है, उसी तरह आदमी का दिल आदमी से।²⁰~जिस तरह पाताल और हलाकत को आसूदगी नहीं, उसी तरह इन्सान की आँखे सेर नहीं होतीं।

²¹~जैसे चाँदी के लिए कुठाली और सोने के लिए भट्टी है, वैसे ही आदमी के लिए उसकी ता'रीफ़ है।²²~अगरचे तू बेवकूफ़ को अनाज के साथ उखली में डाल कर मूसल से कूटे, तोभी उसकी हिमाक़त उससे कभी जुदा ~न होगी।

²³~अपने रेवड़ों का हाल दरियाफ़्त करने में दिल लगा, और अपने ग़ल्लों को अच्छी तरह से देख; ²⁴क्योंकि दौलत हमेशा नहीं रहती; और क्या ताजवरी नसल-दर-नसल क़ायम रहती है? ²⁵~सूखी घास जमा' की जाती है, फिर सब्ज़ा नुमायाँ होता है; और पहाड़ों पर से चारा काट कर जमा' किया जाता है।

²⁶बरें तेरी परवरिश के लिए हैं, और बकरियाँ तेरे मैदानों की क्रीमत हैं, ²⁷और बकरियों का दूध तेरी और तेरे खानदान की ख़ूराक और तेरी लौंडियों की गुज़ारा के लिए काफ़ी है।

Chapter 28

¹~अगरचे कोई शरीर का पीछा न करे तोभी वह भागता है, लेकिन सादिक शेर-ए-बबर की तरह दिलेर है।²~मुल्क की खताकारी की वजह से हाकिम बहुत से हैं, लेकिन साहिब-ए- 'इल्म-ओ-समझ से इन्तिज़ाम बहाल रहेगा।

³~गरीब पर जुल्म करने वाला कंगाल, मूसलाधार मेंह है जो एक 'अक्लमंद भी नहीं छोड़ता।⁴शरी'अत को छोड़ने वाले, शरीरों की तारीफ़ करते हैं लेकिन शरी'अत पर 'अमल करनेवाले, उनका मुक़ाबला करते हैं

⁵शरीर 'अदल से आगाह नहीं, लेकिन खुदावन्द के तालिब सब कुछ समझते हैं।⁶~रास्तरौ गरीब, टेढ़ा आदमी दौलतमंद से बेहतर है।

⁷~ता'लीम पर 'अमल करने वाला 'अक्लमंद बेटा है, लेकिन फुज़ूलखर्चों का दोस्त अपने बाप को रुस्वा करता है।⁸~जो नाजाइज़ सूद और नफ़े' से अपनी दौलत बढ़ाता है, वह गरीबों पर रहम करने वाले के लिए जमा' करता है।

⁹~जो कान फेर लेता है कि शरी'अत को न सुने, उसकी दु'आ भी नफ़रतअंगेज़ है।¹⁰~जो कोई सादिक को गुमराह करता है, ताकि वह बुरी राह पर चले, वह अपने गढ़े में आप ही गिरेगा; लेकिन कामिल लोग अच्छी चीज़ों के वारिस होंगे।

¹¹~मालदार अपनी नज़र में 'अक्लमंद है, लेकिन 'अक्लमंद गरीब उसे परख लेता है।¹²~जब सादिक फ़तहयाब होते हैं, तो बड़ी धूमधाम होती है; लेकिन जब शरीर खड़े होते हैं, तो आदमी ढूँडे नहीं मिलते।

¹³~जो अपने गुनाहों को छिपाता है, कामयाब न होगा; लेकिन जो उनका इकरार करके, उनको छोड़ देता है; उस पर रहमत होगी।¹⁴~मुबारक है वह आदमी जो सदा डरता रहता है, लेकिन जो अपने दिल को सख़्त करता है, मुसीबत में पड़ेगा।

¹⁵गरीबों पर शरीर हाकिम, गरजते हुए शेर और शिकार के तालिब रीछ की तरह है।¹⁶~अक्ल हाकिम भी बड़ा ज़ालिम है, लेकिन जो लालच से नफ़रत रखता है, उसकी 'उम्र दराज़ होगी।

¹⁷जिसके सिर पर किसी का खून है, वह गढ़े की तरफ़ भागेगा, उसे कोई न रोके।¹⁸~जो रास्तरौ है रिहाई पाएगा, लेकिन टेढ़ा आदमी नागहान गिर पड़ेगा।

¹⁹~जो अपनी ज़मीन में काश्तकारी करता है, रोटी से सेर होगा, लेकिन बेमतलब के पीछे चलने वाला बहुत कंगाल हो जाएगा।²⁰~दियानतदार आदमी बरकतों से मा'मूर होगा, लेकिन जो दौलतमंद होने के लिए जल्दी करता है, बे सज़ा न छूटेगा।

²¹~तरफ़दारी करना अच्छा नहीं; और न यह कि आदमी रोटी के टुकड़े के लिए गुनाह करे।²²~तंग चश्म दौलत जमा' करने में जल्दी करता है, और यह नहीं जानता कि मुफ़लिसी उसे आ दबाएगा।

²³आदमी को सरज़निश करनेवाला आखिरकार, ज़बानी खुशामद करनेवाले से ज़्यादा मक्बूल ठहरेगा।²⁴~जो कोई अपने वालिदैन् को लूटता हैऔर कहता है, कि यह गुनाह नहीं, वह गारतगर का साथी है।

²⁵जिसके दिल में लालच है वह झगड़ा खड़ा करता है, लेकिन जिसका भरोसा खुदावन्द पर है वह तारो-ताज़ा किया जाएगा।²⁶~जो अपने ही दिल पर भरोसा रखता है, बेवकूफ़ है; लेकिन जो 'अक्लमंदी से चलता है, रिहाई पाएगा।

²⁷जो गरीबों को देता है, मुहताज न होगा; लेकिन जो आँख चुराता है, बहुत मला'ऊन होगा।²⁸जब शरीर खड़े होते हैं, तो आदमी ढूँडे नहीं मिलते, लेकिन जब वह फ़ना होते हैं, तो सादिक तरक्की करते हैं।

Chapter 29

¹~जो बार बार तम्बीह पाकर भी गर्दनकशी करता है, अचानक बर्बाद किया जाएगा, और उसका कोई चारा न होगा।²जब सादिक इकबालमंद होते हैं, तो लोग खुश होते हैं ~लेकिन जब शरीर इख्तियार पाते हैं तो लोग आहें भरते हैं।

³~जो कोई हिकमत से उलफ़त रखता है, अपने बाप को खुश करता है, लेकिन जो कस्बियों से सुहबत रखता है, अपना माल उड़ाता है।⁴~बादशाह 'अद्ल से अपनी ममलुकत को क़याम बख़्शता है लेकिन रिश्तत सितान उसको वीरान करता है।

⁵~जो अपने पड़ोसी की खुशामद करता है, उसके पाँव के लिए जाल बिछाता है।⁶बदकिरदार के गुनाह में फंदा है, लेकिन सादिक गाता और खुशी करता है।

⁷सादिक गरीबों के मु'आमिले का खयाल रखता है, लेकिन शरीर में उसको जानने की लियाकत नहीं।⁸ठूटेबाज़ शहर में आग लगाते हैं, लेकिन 'अक्लमंद क्रहर को दूर कर देते हैं |

⁹~अगर 'अक्लमंद बेवकूफ़ से बहस करे, तो ख्वाह वह क्रहर करे ख्वाह हँसे, कुछ इत्मिनान होगा।¹⁰~खूँरेज़ लोग कामिल आदमी से कीना रखते हैं, लेकिन रास्तकार उसकी जान बचाने का इरादा करते हैं।

¹¹~बेवकूफ़ अपना क्रहर उगल देता है, लेकिन 'अक्लमंद उसको रोकता और पी जाता है।¹²~अगर कोई हाकिम झूट पर कान लगाता है, तो उसके सब ख़ादिम शरीर ही जाते हैं।

¹³~गरीब और ज़बरदस्त एक दूसरे से मिलते हैं, और खुदावन्द दोनों की आँखे रोशन करता है।¹⁴~जो बादशाह ईमानदारी से गरीबों की 'अदालत करता है, उसका तख़्त हमेशा क़ायम रहता है।

¹⁵~छड़ी और तम्बीह हिकमत बख़्शती हैं, लेकिन जो लड़का बेतरबियत छोड़ दिया जाता है, अपनी माँ को रुस्वा करेगा।¹⁶~जब शरीर कामयाब होते हैं, तो बदी ज़्यादा होती है; लेकिन सादिक उनकी तबाही देखेंगे।

¹⁷~अपने बेटे की तरबियत कर; और वह तुझे आराम देगा, और तेरी जान को शादमान करेगा।¹⁸~जहाँ रोया नहीं वहाँ लोग बेक़ैद हो जाते हैं, लेकिन शरी'अत पर 'अमल करने वाला मुबारक है।

¹⁹~नौकर बातों ही से नहीं सुधरता, क्योंकि अगरचे वह समझता है तो भी परवा नहीं करता।²⁰~क्या तू बेताम्मुल बोलने वाले को देखता है? उसके मुकाबले में बेवकूफ़ से ज़्यादा उम्मीद है।

²¹~जो अपने घर के लड़के को लड़कपन से नाज़ में पालता है, वह आखिरकार उसका बेटा बन बैठेगा।²²~क्रहर आलूदा आदमी फ़ितना खड़ा करता है, और ग़ज़बनाक गुनाह में ज़ियादती करता है।

²³~आदमी का गुरूर उसको पस्त करेगा, लेकिन जो दिल से फ़रोतन है 'इज़ज़त ~हासिल करेगा।²⁴~जो कोई चोर का शरीक होता है, अपनी जान से दुश्मनी रखता है; वह हल्फ़ उठाता है और हाल बयान नहीं करता।

²⁵~इन्सान का डर फंदा है, लेकिन जो कोई खुदावन्द पर भरोसा करता है महफूज़ रहेगा।²⁶हाकिम की मेहरबानी के तालिब बहुत हैं, लेकिन इन्सान का फैसला खुदावन्द की तरफ़ से है।

²⁷~सादिक को बेइन्साफ़ से नफ़रत है, और शरीर को रास्तरी से।

Chapter 30

¹~याक्रा के बेटे अज़ूर के पैग़ाम की बातें: उस आदमी ने इतीएल, हाँ इतीएल और उकाल से कहा: ²यक़ीनन मैं हर एक इन्सान से ज़्यादा और इन्सान का सा समझ मुझ में नहीं मैंने हिकमत नहीं सीखी और न मुझे उस कुहूस का 'इरफ़ान हासिल है।

⁴~कौन आसमान पर चढ़ा और फिर नीचे उतरा? किसने हवा को अपनी मुट्ठी में जमा'कर लिया? किसने पानी की चादर में बाँधा? किसने ज़मीन की हड्डें ठहराई? अगर तू जानता है, तो बता उसका क्या नाम है, और उसके बेटे का क्या नाम है?

⁵~खुदा का हर एक बात पाक है, वह उनकी सिपर है जिनका भरोसा उस पर है।⁶~तू उसके कलाम में कुछ न बढ़ाना, ऐसा न हो वह तुझ को तम्बीह करे और तू झूटा ठहरे।

⁷~मैंने तुझ से दो बातों की दरखास्त की है, मेरे मरने से पहले उनको मुझ से दरेग न कर।⁸~बतालत और दरोगगोई को मुझ से दूर कर दे; और मुझ को न कंगाल कर न दौलतमंद, मेरी ज़रूरत के मुताबिक़ मुझे रोज़ी दे।⁹~ऐसा न हो कि मैं सेर होकर इन्कार करूँ और कहूँ, खुदावन्द कौन है? या ऐसा न हो मुहताज़ होकर चोरी करूँ, और अपने खुदा के नाम की तक़्फ़ीर करूँ।

¹⁰~खादिम पर उसके आक्रा के सामने तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर ला'नत करे, और तू मुजरिम ठहरे।

¹¹~एक नसल ऐसी है, जो अपने बाप पर ला'नत करती है और अपनी माँ को मुबारक नहीं कहती।¹²~एक नसल ऐसी है, जो अपनी निगाह में पाक है, लेकिन उसकी गंदगी उससे धोई नहीं गई।

¹³~एक नसल ऐसी है, कि वाह वाह क्या ही बलन्द नज़र है, और उनकी पलकें ऊपर को उठी रहती हैं।¹⁴~एक नसल ऐसी है, जिसके दाँत तलवारें हैं, और डाढ़े छुरियाँ ताकि ज़मीन के ग़रीबों और बनी आदम के कंगालों को खा जाएँ।

¹⁵~जोंक की दो बेटियाँ हैं, जो "दे दे" चिल्लाती हैं; तीन हैं जो कभी सेर नहीं होतीं, बल्कि चार हैं जो कभी "बस" नहीं कहतीं।¹⁶पाताल और बाँझ का रिहम, और ज़मीन जो सेराब नहीं हुई, और आग जो कभी "बस" नहीं कहती।¹⁷~वह आँख जो अपने बाप की हँसी करती है, और अपनी माँ की फ़रमाँबरदारी को हक़ीर जानती है, वादी के कौवे उसको उचक ले जाएँगे, और गिद्ध के बच्चे उसे खाएँगे।

¹⁸~तीन चीज़ें मेरे नज़दीक़ बहुत ही 'अजीब हैं, बल्कि चार हैं, जिनको मैं नहीं जानता:¹⁹~'उकाब की राह हवा में, और साँप की राह चटान पर, और जहाज़ की राह समन्दर में, और मर्द का चाल चलन जवान 'औरत के साथ।

²⁰~ज़ानिया की राह ऐसी ही है; वह खाती है और अपना मुँह पोंछती है, और कहती है, मैंने कुछ बुराई नहीं की।

²¹~तीन चीज़ों से ज़मीन लरज़ाँ है; बल्कि चार हैं, जिनकी वह बर्दाश्त नहीं कर सकती:²²ग़ुलाम से जो बादशाही करने लगे, और बेवकूफ़ से जब उसका पेट भरे,

²³~और नामक़बूल 'औरत से जब वह ब्याही जाए, और लौंडी से जो अपनी बीबी की वारिस हो।

²⁴~चार हैं, जो ज़मीन पर ना चीज़ हैं, लेकिन बहुत 'अक्लमंद हैं:²⁵चीटियाँ कमज़ोर मखलूक हैं, तौ भी गर्मी में अपने लिए खुराक जमा' कर रखती हैं;²⁶~और साफ़ान अगरचे नातवान मखलूक हैं, तौ भी चटानों के बीच अपने घर बनाते हैं;

²⁷और टिड्डियाँ जिनका कोई बादशाह नहीं, तौभी वह परे बाँध कर निकलती हैं;²⁸और छिपकली जो अपने हाथों से पकड़ती है, और तौभी शाही महलों में है।

²⁹~तीन खुश रफ़्तार हैं, बल्कि चार जिनका चलना खुश नुमा है:³⁰~एक तो शेर-ए-बबर जो सब हैवानात में बहादुर है, और किसी को पीठ नहीं दिखाता:

³¹~जंगली घोड़ा और बकरा, और बादशाह, जिसका सामना कोई न करे।

³²अगर तूने बेवकूफ़ी से अपने आपको बड़ा ठहराया है, या तूने कोई बुरा मन्सूबा बाँधा है, तौ हाथ अपने मुँह पर रख।³³क्यूँकि यक़ीनन दूध बिलोने से मक्खन निकलता है, और नाक मरोड़ने से लहू, इसी तरह क्रहर भड़काने से फ़साद खड़ा होता है।

Chapter 31

¹लमविएल बादशाह के पैगाम की बातें जो उसकी माँ ने उसको सिखाई:²~ऐ मेरे बेटे, ऐ मेरे रिहम के बेटे, तुझे, जिसे मैंने नज़े-माँग कर पाया क्या कहूँ?³अपनी कुव्वत 'औरतों को न दे, और अपनी राहें बादशाहों को बिगाड़ने वालियों की तरफ़ न निकाल।

⁴~बादशाहों को ऐ लमविएल, बादशाहों को मयख्वारी ज़ेबा नहीं, और शराब की तलाश हाकिमों को शायान नहीं।⁵~ऐसा न हो ~वह पीकर क़वानीन को भूल जाए, और किसी मज़लूम की हक़ तलफ़ी करें।

⁶शराब उसको पिलाओ जो मरने पर है, और मय उसको जो तलख़-जान है ताकि वह पिए और अपनी तंगदस्ती फ़रामोश करे, और अपनी तबाह हाली को फिर याद न करे

⁸अपना मुँह गूँगे के लिए खोल उन सबकी वकालत को जो बेकस हैं।⁹~अपना मुँह खोल, रास्ती से फ़ैसलाकर, और ग़रीबों और मुहताजों का इन्साफ़ कर।

¹⁰नेकोकार बीवी किसको मिलती है? क्योंकि उसकी क्रुद्र मरजान से भी बहुत ज़्यादा है।¹¹~उसके शौहर के दिल को उस पर भरोसा है, और उसे मुनाफ़े की कमी न होगी।¹²~वह अपनी 'उम्र के तमाम दिनों में, उससे नेकी ही करेगी, बदी न करेगी।

¹³वह ऊन और कतान ढूँडती है, और खुशी के साथ अपने हाथों से काम करती है।¹⁴वह सौदागरों के जहाज़ों की तरह है, वह अपनी खुराक दूर से ले आती है।

¹⁵~वह रात ही को उठ बैठती है, और अपने घराने को खिलाती है, और अपनी लौंडियों को काम देती है।

¹⁶वह किसी खेत की बारे में सोचती है और उसे खरीद लेती है; और अपने हाथों के नफ़े से ताकिस्तान लगाती है।¹⁷~वह मज़बूती से अपनी कमर बाँधती है, और अपने बाजुओं को मज़बूत करती है।

¹⁸~वह अपनी सौदागरी को सूदमंद पाती है। रात को उसका चिराग़ नहीं बुझता।¹⁹~वह तकले पर अपने हाथ चलाती है, और उसके हाथ अटेरन पकड़ते हैं।

²⁰~वह ग़रीबों की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाती है, हाँ, वह अपने हाथ मोहताजों की तरफ़ बढ़ाती है।²¹~वह अपने घराने के लिए बर्फ़ से नहीं डरती, क्योंकि उसके खानदान में हर एक सुख पोश है।

²²~वह अपने लिए निगारीन बाला पोश बनाती है; उसकी पोशाक महीन कतानी और अर्गवानी है।²³~उसका शौहर फाटक में मशहूर है, जब वह मुल्क के बुजुर्गों के साथ बैठता है।

²⁴~वह महीन कतानी कपड़े बनाकर बेचती है; और पटके सौदागरों के हवाले करती है।²⁵~इज़ज़त और हुर्मत उसकी पोशाक हैं, और वह आइंदा दिनों पर हँसती है।

²⁶~उसके मुँह से हिकमत की बातें निकलती हैं, उसकी ज़बान पर शफ़क़त की ता'लीम है।²⁷~वह अपने घराने पर बख़ूबी निगाह रखती है, और काहिली की रोटी नहीं खाती।

²⁸उसके बेटे उठते हैं और उसे मुबारक कहते हैं; उसका शौहर भी उसकी ता'रीफ़ करता है:²⁹~"कि बहुतेरी बेटियों ने फ़ज़ीलत दिखाई है, लेकिन तू सब से आगे बढ़ गई।"

³⁰~हुस्न, धोका और जमाल बेसबात है, लेकिन वह 'औरत जो खुदावन्द से डरती है, सतुदा होगी।'³¹~उसकी मेहनत का बदला उसे दो, और उसके कामों से मजलिस में उसकी ता'रीफ़ हो।

वाइज़

Chapter 1

¹शाह-ए-यरुशलीम दाऊद के बेटे वा'इज़ की बातें।²~"बेकार ही बेकार," वा'इज़ कहता है, "बेकार ही बेकार! सब कुछ बेकार है।"³~इन्सान को उस सारी मेहनत से जो वह दुनिया में करता है, क्या हासिल है?

⁴~एक नसल जाती है और दूसरी नसल आती है, लेकिन-ज़मीन हमेशा क़ायम रहती है।⁵~सूरज निकलता है और सूरज ढलता भी है, और अपने तुलू की जगह को जल्द चला जाता है।⁶~हवा दख़िबन की तरफ़ चली जाती है और चक्कर खाकर उत्तर की तरफ़ फिरती है; ये हमेशा चक्कर मारती है, और अपनी ग़श्त के मुताबिक़ दौरा करती है।

⁷~सब नदियाँ समन्दर में गिरती हैं, लेकिन समन्दर भर नहीं जाता; नदियाँ जहाँ से निकलती हैं उधर ही को फिर जाती हैं।⁸~सब चीज़ें मान्दगी से भरी हैं, आदमी इसका बयान नहीं कर सकता। आँख देखने से आसूदा नहीं होती, और कान सुनने से नहीं भरता।

⁹~जो हुआ वही फिर होगा, और जो चीज़ बन चुकी है वही है जो बनाई जाएगी, और दुनिया में कोई चीज़ नई नहीं।¹⁰~क्या कोई चीज़ ऐसी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि देखो ये तो नई है? वह तो साबिक़ में हम से पहले के ज़मानों में मौजूद थी।¹¹अगलों की कोई यादगार नहीं, और आनेवालों की अपने बा'द के लोगों के बीच कोई याद न होगी।

¹²~मैं वा'इज़ यरुशलीम में बनी-इसाईल का बा'दशाह था।¹³~और मैंने अपना दिल लगाया कि जो कुछ आसमान के नीचे किया जाता है, उस सब की तफ़्तीश-ओ-तहक़ीक़ करूँ। खुदा ने बनी आदम को ये सख़्त दुख दिया है कि वह दुख दर्द में मुब्तिला रहें।¹⁴~मैंने सब कामों पर जो दुनिया में किए जाते हैं नज़र की; और देखो, ये सब कुछ बेकार और हवा की चरान है।¹⁵वह जो टेढ़ा है सीधा नहीं हो सकता, और नाक़िस का शुमार नहीं हो सकता।

¹⁶~मैंने ये बात अपने दिल में कही, "देख, मैंने बड़ी तरक्की की बल्कि उन सभों से जो मुझ से पहले यरुशलीम में थे, ज़्यादा हिकमत हासिल की; हाँ, मेरा दिल हिकमत और दानिश में बड़ा कारदान हुआ।"¹⁷~लेकिन जब मैंने हिकमत के जानने और हिमाक़त-ओ-जहालत के समझने पर दिल लगाया, तो मा'लूम किया कि ये भी हवा की चरान है।¹⁸~क्यूँकि बहुत हिकमत में बहुत ग़म है,और 'इल्म में~तरक्की~दुख की ज़्यादाती है।

Chapter 2

¹मैंने अपने दिल से कहा, "आ, मैं तुझ को खुशी में आजमाऊँगा, इसलिए 'इश्रत कर ले," लो ये भी बेकार है।²मैंने हँसी को "दीवाना" कहा और खुशी के बारे में कहा, "इससे क्या हासिल?"

³~मैंने दिल में सोचा कि जिस्म को मयनोशी से क्यूँकर ताज़ा करूँ और अपने दिल को हिकमत की तरफ़ मायल रखूँ और क्यूँकर हिमाक़त को पकड़े रहूँ, जब तक मा'लूम करूँ कि बनी आदम की बहबूदी किस बात में है कि वह आसमान के नीचे 'उम्र भर यही किया करे।

⁴~मैंने बड़े-बड़े काम किए मैंने अपने लिए 'इमारतें बनाई और मैंने अपने लिए ताकिस्तान लगाए।⁵~मैंने अपने लिए बागीचे और बाग़ तैयार किए और उनमें हर किस्म के मेवादार दरख़्त लगाए।⁶मैंने अपने लिए तालाब बनाए कि उनमें से बाग़ के दरख़्तों का ज़खीरा सींचूँ।

⁷~मैंने गुलामों और लौंडियों को खरीदा और नौकर-चाकर मेरे घर में पैदा हुए, और जितने मुझ से पहले यरुशलीम में थे मैं उनसे कहीं ज़्यादा गाय-बैल और भेड़-बकरियों का मालिक था।⁸~मैंने सोना और चाँदी और बा'दशाहों और सूबों का खास खज़ाना अपने लिए जमा' किया; मैंने गानेवालों और गाने वालियों को रखवा और बनी आदम के अस्बाब-ए-'ऐश या'नी लौंडियों को अपने लिए कसरत से इकठ्ठा किया।

⁹इसलिए मैं बुजुर्ग हुआ और उन सभों से जो मुझ से पहले यरुशलीम में थे ज़्यादा बढ़ गया। मेरी हिकमत भी मुझ में क़ायम रही।¹⁰~और सब कुछ जो मेरी आँखें चाहती थीं मैंने उनसे बाज़ न रखवा। मैंने अपने दिल को किसी तरह की खुशी से न रोका, क्यूँकि मेरा दिल मेरी सारी मेहनत से खुश हुआ और मेरी सारी मेहनत से मेरा हिस्सा यही था।

¹¹फिर मैंने उन सब कामों पर जो मेरे हाथों ने किए थे, और उस मशक्क़त पर जो मैंने काम करने में खींची थी, नज़र की और देखा कि सब बेकार और हवा की चरान है, और दुनिया में कुछ फ़ायदा नहीं।¹²और मैं हिकमत और दीवानगी और हिमाक़त के देखने पर मुतवज्जिह हुआ, क्यूँकि वह शख्स जो बा'दशाह के बा'द आएगा क्या करेगा? वही जो होता चला आया है।

¹³और मैंने देखा कि जैसी रोशनी को तारीकी पर फ़ज़ीलत है, वैसी ही हिकमत हिमाक़त से अफ़ज़ल है।¹⁴अक्लमन्द अपनी आँखें अपने सिर में रखता है, लेकिन बेवकूफ़ अंधेरे में चलता है; तोभी मैं जान गया कि एक ही हादसा उन सब पर गुज़रता है।

¹⁵~तब मैंने दिल में कहा, 'जैसा बेवकूफ़ पर हादसा होता है, वैसा ही मुझ पर भी होगा; फिर मैं क्यूँ ज़्यादा 'अक्लमन्द हुआ?' इसलिए मैंने दिल में कहा कि ये भी बेकार है।¹⁶क्यूँकि न 'अक्लमन्द और न बेवकूफ़ की यादगार हमेशा तक रहेगी, इसलिए कि आने वाले दिनों में सब कुछ फ़रामोश हो चुकेगा और 'अक्लमन्द क्यूँकर बेवकूफ़ की तरह मरता है!

¹⁷~फिर मैं ज़िन्दगी से बेज़ार हुआ, क्यूँकि जो काम दुनिया में किया जाता है मुझे बहुत बुरा मा'लूम हुआ; क्यूँकि सब बेकार और हवा की चरान है।¹⁸~बल्कि मैं अपनी सारी मेहनत से जो दुनिया में की थी बेज़ार हुआ, क्यूँकि ज़रूर है कि मैं उसे उस आदमी के लिए जो मेरे बा'द आएगा छोड़ जाऊँ;

¹⁹और कौन जानता है कि वह 'अक्लमन्द होगा या बेवकूफ़? बहरहाल वह मेरी सारी मेहनत के काम पर, जो मैंने किया और जिसमें मैंने दुनिया में अपनी हिकमत ज़ाहिर की, ज़ाबित होगा। ये भी~बेकार~है।²⁰~तब मैं फिरा कि अपने दिल को उस सारे काम से जो मैंने दुनिया' में किया था ना उम्मीद करूँ,

²¹~क्यूँकि ऐसा शख्स भी है, जिसके काम हिकमत और दानाई और कामयाबी के साथ हैं, लेकिन वह उनको दूसरे आदमी के लिए जिसने उनमें कुछ मेहनत नहीं की उसकी मीरास के लिए छोड़ जाएगा। ये भी~बेकार~और बला-ए-'अज़ीम है।²²~क्यूँकि आदमी को उसकी सारी मशक्क़त और जानफ़िशानी से, जो उसने दुनिया' में की क्या हासिल है?²³क्यूँकि उसके लिए 'उम्र भर ग़म है, और उसकी मेहनत मातम हैं; बल्कि उसका दिल रात को भी आराम नहीं पाता। ये भी~बेकार~है।

²⁴फिर इन्सान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कि वह खाए और पिए और अपनी सारी मेहनत के बीच खुश होकर अपना जी बहलाए। मैंने देखा ये भी खुदा के हाथ से है;²⁵~इसलिए कि मुझ से ज़्यादा कौन खा सकता और कौन मज़ा उड़ा सकता है?

²⁶~क्यूँकि वह उस आदमी को जो उसके सामने अच्छा है, हिकमत और दानाई और खुशी बख़्शता है; लेकिन गुनहगार को ज़हमत देता है कि वह जमा' करे और अम्बार लगाए, ताकि उसे दे जो खुदा का पसंदीदा है। ये भी~बेकार~और हवा की चरान है।

Chapter 3

¹हर चीज़ का एक मौक़ा' और हर काम का ~जो आसमान के नीचे होता है एक वक़्त है।²पैदा होने का एक वक़्त है, और मर जाने का एक वक़्त है; दरख़्त लगाने का एक वक़्त है, और लगाए हुए को उखाड़ने का एक वक़्त है; ³मार डालने का एक वक़्त है, और शिफ़ा देने का एक वक़्त है; ढाने का एक वक़्त है, और ता'मीर करने का एक वक़्त है;

⁴~रोने का एक वक़्त है, और हँसने का एक वक़्त है; ग़म खाने का एक वक़्त है, और नाचने का एक वक़्त है; ⁵~पत्थर फेंकने का एक वक़्त है, और पत्थर बटोरने का एक वक़्त है; एक साथ होने का एक वक़्त है, और एक साथ होने से बाज़ रहने का एक वक़्त है;

⁶हासिल करने का एक वक़्त है, और खो देने का एक वक़्त है; रख छोड़ने का एक वक़्त है, और फेंक देने का एक वक़्त है; ⁷~फाड़ने का एक वक़्त है, और सोने का एक वक़्त है; चुप रहने का एक वक़्त है, और बोलने का एक वक़्त है;

⁸~मुहब्बत का एक वक़्त है, और 'अदावत का एक वक़्त है; जंग का एक वक़्त है, और सुलह का एक वक़्त है।⁹काम करनेवाले को उससे जिसमें वह मेहनत करता है, क्या हासिल होता है? ¹⁰~मैंने उस सख़्त दुख को देखा, जो ख़ुदा ने बनी आदम को दिया है कि वह मशक्क़त में मुब्तिला रहें।

¹¹~उसने हर एक चीज़ को उसके वक़्त में ख़ूब बनाया और उसने अबदियत को भी उनके दिल में जागुज़ीन किया है; इसलिए कि इन्सान उस काम को जो ख़ुदा शुरू' से आख़िर तक करता हैं दरियाफ़्त नहीं कर सकता।

¹²~मैं यक़ीनन जानता हूँ कि इन्सान के लिए यही बेहतर है कि ख़ुश वक़्त हो, और जब तक ज़िन्दा रहे नेकी करे; ¹³और ये भी कि हर एक इन्सान खाए और पिए और अपनी सारी मेहनत से फ़ायदा उठाए: ये भी ख़ुदा की बख़्शिश है।

¹⁴और मुझ को यक़ीन है कि सब कुछ जो ख़ुदा करता है हमेशा के लिए है; उसमें कुछ कमी बेशी ~नहीं हो सकती और ख़ुदा ने ये इसलिए किया है कि लोग उसके सामने डरते रहें।¹⁵~जो कुछ है वह पहले हो चुका; और जो कुछ होने को है, वह भी हो चुका; और ख़ुदा गुज़िश्ता को फिर तलब करता है।

¹⁶~फिर मैंने दुनिया में देखा कि 'अदालतगाह में जुल्म है, और सदाक़त के मकान में शरारत है।¹⁷~तब मैंने दिल में कहा कि ~ख़ुदा रास्तबाज़ों और शरीरों की 'अदालत करेगा क्योंकि हर एक अम्र और ~हर काम का एक वक़्त है।

¹⁸~मैंने दिल में कहा कि "ये बनी आदम के लिए है कि ख़ुदा उनको जाँचे और वह समझ लें कि हम ख़ुद हैवान हैं।"

¹⁹क्योंकि जो कुछ बनी आदम पर गुज़रता है, वही हैवान पर गुज़रता है; एक ही हादसा दोनों पर गुज़रता है, जिस तरह ये मरता है उसी तरह वह मरता है। हाँ, सब में एक ही साँस है, और इन्सान को ~हैवान पर कुछ मर्तबा नहीं; क्योंकि सब~बेकार~है।²⁰~सब के सब एक ही जगह जाते हैं; सब के सब खाक से हैं, और सब के सब फिर खाक से जा मिलते हैं।

²¹~कौन जानता है कि इन्सान की रूह ऊपर चढ़ती और हैवान की रूह ज़मीन की तरफ़ नीचे को जाती है? ²²~फिर मैंने देखा कि इन्सान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कि वह अपने कारोबार में ख़ुश रहे, इसलिए कि उसका हिस्सा यही है; क्योंकि कौन उसे वापस लाएगा कि जो कुछ उसके बा'द होगा देख ले?

Chapter 4

¹तब मैंने फिर कर उस तमाम जुल्म पर, जो दुनिया में होता है नज़र की। और मज़लूमों के आँसूओं को देखा, और उनको तसल्ली देनेवाला कोई न था; और उन पर जुल्म करनेवाले ज़बरदस्त थे, लेकिन उनको तसल्ली देनेवाला कोई न था।

²~तब मैंने मुर्दों को जो आगे मर चुके, उन ज़िन्दों से जो अब जीते हैं ज़्यादा मुबारक जाना; ³बल्कि दोनों से नेक बख्त वह है जो अब तक हुआ ही नहीं, जिसने वह बुराई जो दुनिया' में होती है नहीं देखी।

⁴~फिर मैंने सारी मेहनत के काम और हर एक अच्छी दस्तकारी को देखा कि इसकी वजह से आदमी अपने पड़ोसी से हसद करता है। ये भी~बेकार~और हवा की चरान~है।

⁵~बे-दानिश अपने हाथ समेटता' है और आप ही अपना गोश्त खाता है। ⁶एक मुट्ठी भर जो चैन के साथ हो, उन दो मुट्ठियों से बेहतर है जिनके साथ मेहनत और हवा की चरान हो |

⁷और मैंने फिर कर दुनिया' के~बेकारी~को देखा : ⁸~कोई अकेला है और उसके साथ कोई दूसरा नहीं; उसके न बेटा है न भाई, तोभी उसकी सारी मेहनत की इन्तिहा नहीं; और उसकी आँख दौलत से सेर नहीं होती; वह कहता है मैं किसके लिए मेहनत करता और अपनी जान को 'ऐश से महरूम रखता हूँ? ये भी~बेकार~है; हाँ,~ये सख्त दुख है।

⁹~एक से दो बेहतर हैं, क्योंकि उनकी मेहनत से उनको बड़ा फ़ायदा होता है। ¹⁰क्योंकि अगर वह गिरें तो एक अपने साथी को उठाएगा; लेकिन उस पर अफ़सोस जो अकेला है जब वह गिरता है, क्योंकि कोई दूसरा नहीं जो उसे उठा खड़ा करे। ¹¹फिर अगर दो इकट्ठे लें तो गर्म होते हैं, लेकिन अकेला क्यूँकर गर्म हो सकता है?

¹²~और अगर कोई एक पर ग़ालिब हो तो दो उसका सामना कर सकते हैं और तिहरी डोरी जल्द नहीं टूटती।

¹³~ग़रीब और 'अक़्लमन्द लड़का उस बूढ़े बेवकूफ़ बा'दशाह से, जिसने नसीहत सुनना छोड़ दिया बेहतर है; ¹⁴~क्योंकि वह कैद खाने से निकल कर बा'दशाही करने आया बावजूद ये कि वह जो सल्तनत ही में पैदा हुआ ग़रीब हो चला।

¹⁵~मैंने सब ज़िन्दों को जो दुनिया' में चलते फिरते हैं देखा कि वह उस दूसरे जवान के साथ थे जो उसका जानशीन होने के लिए खड़ा हुआ। ¹⁶~उन सब लोगों का या'नी उन सब का जिन पर वह हुक्मरान था कुछ शुमार न था, तोभी वह जो उसके बा'द उठेंगे उससे ख़ुश न होंगे। यक़ीनन ये भी~बेकार~और~हवा की चरान है।

Chapter 5

¹जब तू खुदा के घर को जाता है तो संजीदगी से कदम रख, क्योंकि सुनने के लिए जाना बेवकूफों के जैसे ज़बीहे पेश करने से बेहतर है, इसलिए कि वह नहीं समझते कि बुराई करते हैं।

²~बोलने में जल्दबाज़ी न कर और तेरा दिल जल्दबाज़ी से खुदा के सामने कुछ न कहे; क्योंकि खुदा आसमान पर है और तू ज़मीन पर, इसलिए तेरी बातें मुख्तसर हों।³~क्योंकि काम की कसरत की वजह से ख़्वाब देखा जाता है और बेवकूफ़ की आवाज़ बातों की कसरत होती है।

⁴~जब तू खुदा के लिए मन्नत माने, तो उसके अदा करने में देर न कर; क्योंकि वह बेवकूफ़ों से खुश नहीं है। तू अपनी मन्नत को पूरा कर।⁵~तेरा मन्नत न मानना इससे बेहतर है कि तू मन्नत माने और अदा न करे।

⁶~तेरा मुँह तेरे जिस्म को गुनहगार न बनाए, और फिरिश्ते के सामने मत कह कि भूल-चूक थी; खुदा तेरी आवाज़ से क्यूँ बेज़ार हो और तेरे हाथों का काम बर्बाद करे?⁷~क्योंकि ख़्वाबों की ज़ियादती और बतालत और बातों की कसरत से ऐसा होता है; लेकिन तू खुदा से डर।

⁸~अगर तू मुल्क में ग़रीबों को मज़लूम और अदल-ओ-इन्साफ़ को मतरुक देखे, तो इससे हैरान न हो; क्योंकि एक बड़ों से बड़ा है जो निगाह करता है, और कोई इन सब से भी बड़ा है।⁹ज़मीन का हासिल सब के लिए है, बल्कि काश्तकारी से बा'दशाह का भी काम निकलता है।

¹⁰~ज़रदोस्त रुपये से आसूदा न होगा, और दौलत का चाहनेवाला उसके बढ़ने से सेर न होगा : ये भी~बेकार~है।¹¹जब माल की ज़्यादती होती है, तो उसके खानेवाले भी बहुत हो जाते हैं; और उसके मालिक को अलावा इसके कि उसे अपनी आँखों से देखे और क्या फ़ायदा है?

¹²~मेहनती की नींद मीठी है, चाहे वह थोड़ा खाए चाहे बहुत; लेकिन दौलत की फ़िरावानी दौलतमन्द को सोने नहीं देती।

¹³~एक बला-ए-'अज़ीम है जिसे मैंने दुनिया में देखा, या'नी दौलत जिसे उसका मालिक अपने नुक़सान के लिए रख छोड़ता है,¹⁴ और वह माल किसी बुरे हादसे से बर्बाद होता है, और अगर उसके घर में बेटा पैदा होता है तो उस वक़्त ~उसके हाथ में कुछ नहीं होता।

¹⁵~जिस तरह से वह अपनी माँ के पेट से निकला उसी तरह नंगा जैसा कि आया था फिर जाएगा, और अपनी मेहनत की मज़दूरी में कुछ न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जाए।¹⁶~और ये भी बला-ए-'अज़ीम है कि ठीक जैसा वह आया था वैसा ही जाएगा, और उसे इस फ़ुज़ूल मेहनत से क्या हासिल है?¹⁷~वह 'उम्र भर बेचैनी में खाता है, और उसकी दिक्कदारी और बेज़ारी और ख़फ़मी की इन्तिहा नहीं।

¹⁸लो! मैंने देखा कि ये ख़ूब है, बल्कि ख़ुशनुमा है कि आदमी खाए और पिये और अपनी सारी मेहनत से जो वह दुनिया में करता है, अपनी तमाम 'उम्र जो खुदा ने उसे बख़्शी है राहत उठाए; क्योंकि उसका हिस्सा यही है।

¹⁹~नीज़ हर एक आदमी जिसे खुदा ने माल-ओ-अस्बाब बख़्शा, और उसे तौफ़ीक़ दी कि उसमें से खाए और अपना हिस्सा ले और अपनी मेहनत से खुश रहे; ये तो खुदा की बख़्शिश है।²⁰फिर वह अपनी ज़िन्दगी के दिनों को बहुत याद न करेगा, इसलिए कि खुदा उसकी ख़ुशदिली के मुताबिक़ उससे सुलूक करता है।

Chapter 6

¹एक जुबूनी है जो मैंने दुनिया में देखी, और वह लोगों पर गिरा है: ²कोई ऐसा है कि खुदा ने उसे धन दौलत और 'इज़्ज़त बख़्शी है, यहाँ तक कि उसकी किसी चीज़ की जिसे उसका जी चाहता है कमी नहीं; तोभी खुदा ने उसे तौफ़ीक़ नहीं दी कि उससे खाए, बल्कि कोई अजनबी उसे खाता है। ये~बेकार~और सख़्त बीमारी है।

³~अगर आदमी के सौ फ़र्ज़न्द हों, और वह बहुत बरसों तक जीता रहे यहाँ तक कि उसकी 'उम्र के दिन बेशुमार हों, लेकिन उसका जी खुशी से सेर न हो और उसका दफ़न न हो, तो मैं कहता हूँ कि वह हमल जो गिर जाए उससे बेहतर है। ⁴~क्योंकि वह बतालत के साथ आया और तारीकी में जाता है, और उसका नाम अंधेरे में छिपा रहता है।

⁵~उसने सूरज को भी न देखा, न किसी चीज़ को जाना, फिर वह उस दूसरे से ज़्यादा आराम में है। ⁶~हाँ, अगरचे वह दो हज़ार बरस तक ज़िन्दा रहे और उसे कुछ राहत न हो। क्या सब के सब एक ही जगह नहीं जाते?

⁷आदमी की सारी मेहनत उसके मुँह के लिए है, तोभी उसका जी नहीं भरता; ⁸क्योंकि 'अक़्लमन्द को बेवकूफ़ पर क्या फ़ज़ीलत है? और ग़रीब को जी ज़िन्दों के सामने चलना जानता है, क्या हासिल है?

⁹आँखों से देख लेना आरज़ू की आवारगी से बेहतर है: ये भी~बेकार~और हवा की चरान है। ¹⁰जो कुछ हुआ है उसका नाम ज़माना-ए-क़दीम में रखवा गया, और ये भी मा'लूम है कि वह इन्सान है, और वह उसके साथ जो उससे ताक़तवर है झगड़ नहीं सकता। ¹¹~चूँकि बहुत सी चीज़ें हैं जिनसे~बेकार~बहुतायत होती है,~फिर इन्सान को क्या फ़ायदा है? ¹²~क्योंकि कौन जानता है कि इन्सान के लिए उसकी ज़िन्दगी में, या'नी उसकी बेकार ज़िन्दगी के तमाम दिनों में जिनको वह परछाई की तरह बसर करता है, कौन सी चीज़ फ़ाइदेमन्द है? क्योंकि इन्सान को कौन बता सकता है कि उसके बा'द दुनिया में क्या वाक़े' होगा ?

Chapter 7

¹नेक नामी बेशबहा 'इत्र से बेहतर है, और मरने का दिन पैदा होने के दिन से।²मातम के घर में जाना दावत के घर में दाखिल होने से बेहतर है क्योंकि सब लोगों का अन्जाम यही है, और जो ज़िन्दा है अपने दिल में इस पर सोचेगा।

³~गमगीनी हँसी से बेहतर है, क्योंकि चेहरे की उदासी से दिल सुधर जाता है।⁴दाना का दिल मातम के घर में है लेकिन बेवकूफ़ का जी 'इश्रतखाने से लगा है।

⁵~इन्सान के लिए 'अक्लमन्द की सरज़निश सुनना बेवकूफ़ों का राग सुनने से बेहतर है।⁶~जैसा हॉडी के नीचे कॉटों का चटकना वैसा ही बेवकूफ़ का हँसना है; ये भी~बेकार~है।

⁷यक्रीनन जुल्म 'अक्लमन्द आदमी को दीवाना बना देता है और रिश्तत 'अक्ल ~को तबाह करती है।

⁸~किसी बात का अन्जाम उसके आगाज़ से बेहतर है और बुर्दबार मुतकब्बिर मिज़ाज से अच्छा है।⁹~तू अपने जी में खफ़ा होने में जल्दी न कर, क्योंकि खफ़गी बेवकूफ़ों के सीनों में रहती है।

¹⁰~तू ये न कह कि, "अगले दिन इनसे क्यूँकर बेहतर थे?" क्यूँकि तू 'अक्लमन्दी से इस अम्र की तहक़ीक़ नहीं करता।

¹¹~हिकमत खूबी में मीरास के बराबर है, और उनके लिए जो सूरज को देखते हैं ज़्यादा सूदमन्द है।¹²~क्यूँकि हिकमत वैसी ही पनाहगाह है जैसे रुपया, लेकिन 'इल्म की खास खूबी ये है कि हिकमत साहिब-ए-हिकमत की जान की मुहाफ़िज़ है।

¹³खुदा के काम पर ग़ौर कर, क्यूँकि कौन उस चीज़ को सीधा कर सकता है जिसको उसने टेढ़ा किया है?

¹⁴~इक़बालमन्दी के दिन खुशी में मशगूल हो, लेकिन मुसीबत के दिन में सोच; बल्कि खुदा ने इसको उसके मुक़ाबिल बना रखवा है, ताकि इन्सान अपने बा'द की किसी बात को दरियाफ़्त न कर सके।

¹⁵~मैंने अपनी बेकारी के दिनों में ये सब कुछ देखा; कोई~रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी में मरता है, और कोई बदकिरदार अपनी बदकिरदारी में 'उम्रदराज़ी पाता है।¹⁶हद से ज़्यादा नेकोकार न हो, और हिकमत में 'एतदाल से बाहर न जा; इसकी क्या ज़रूरत है कि तू अपने आप को बर्बाद करे?

¹⁷~हद से ज़्यादा बदकिरदार न हो, और बेवकूफ़ न बन; तू अपने वक़्त से पहले काहे को मरेगा?¹⁸अच्छा है कि तू इसको भी पकड़े रहे, और उस पर से भी हाथ न उठाए; क्यूँकि जो खुदा तरस है इन सब से बच निकलेगा।

¹⁹~हिकमत साहिब-ए-हिकमत को शहर के दस हाकिमों से ज़्यादा ताक़तवर बना देती है।²⁰~क्यूँकि ज़मीन पर ऐसा कोई रास्तबाज़ इन्सान नहीं कि नेकी ही करे और ख़ता न करे।

²¹नीज़ उन सब बातों के सुनने पर जो कही जाएँ कान न लगा, ऐसा न हो कि तू सुन ले कि तेरा नौकर तुझ पर ला'नत करता है;²²क्यूँकि तू तो अपने दिल से जानता है कि तूने आप इसी तरह से औरों पर ला'नत की है

²³~मैंने हिकमत से ये सब कुछ आज़माया है। मैंने कहा, "मैं 'अक्लमन्द बनूँगा," लेकिन वह मुझ से कहीं दूर थी।²⁴~जो कुछ है सो दूर और बहुत गहरा है, उसे कौन पा सकता²⁵~मैंने अपने दिल को मुतवज्जिह किया कि जानूँ और तप़तीश करूँ और हिकमत और ख़िरद को दरियाफ़्त करूँ और समझूँ कि बुराई हिमाक़त है और हिमाक़त दीवानगी |

²⁶~तब मैंने मौत से तल्ख़तर उस 'औरत को पाया, जिसका दिल फ़ंदा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ियाँ हैं। जिससे खुदा खुश है वह उस से बच जाएगा, लेकिन गुनहगार उसका शिकार होगा।

²⁷~देख, वा'इज़ कहता है, मैंने एक दूसरे से मुक़ाबला करके ये दरियाफ़्त किया है |²⁸~जिसकी मेरे दिल को अब तक तलाश है पर मिला नहीं। मैंने हज़ार में एक मर्द पाया, लेकिन उन सभों में 'औरत एक भी न मिली।

²⁹~लो मैंने सिर्फ़ इतना पाया कि खुदा ने इन्सान को रास्त बनाया, लेकिन उन्होंने बहुत सी बन्दिशें तज्वीज़ कीं।

Chapter 8

¹¹ 'अक्लमन्द के बराबर कौन है? और किसी बात की तपस्वीर करना कौन जानता है? इन्सान की हिकमत उसके चेहरे को रोशन करती है, और उसके चेहरे की सख्ती उससे बदल जाती है।

² मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू बा'दशाह के हुक्म को खुदा की क़सम की वजह से मानता रह।³ तू जल्दबाज़ी करके उसके सामने से ग़ायब न हो और किसी बुरी बात पर इसरार न कर, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है करता है।⁴ इसलिए कि बा'दशाह का हुक्म बाइख़्तियार है, और उससे कौन कहेगा कि तू ये क्या करता है?

⁵ 'जो कोई हुक्म मानता है, बुराई को न देखेगा और दानिशमंद का दिल मौक़े' और इन्साफ़ को समझता है।⁶ इसलिए कि हर अम्र का मौक़ा' और क़ायदा है, लेकिन इन्सान की मुसीबत उस पर भारी है।⁷ क्योंकि जो कुछ होगा उसको मा'लूम नहीं, और कौन उसे बता सकता है कि क्यूँकर होगा?

⁸ 'किसी आदमी को रूह पर इख़्तियार नहीं कि उसे रोक सके, और मरने का दिन भी उसके इख़्तियार से बाहर है; और उस लड़ाई से छुट्टी नहीं मिलती और न शरारत उसको~जो उसमें~ग़र्ज़ हैं छुड़ाएंगी'⁹~ये सब मैंने देखा और अपना दिल सारे काम पर जो दुनिया' में किया जाता है लगाया। ऐसा वक़््त है जिसमें एक शख्स दूसरे पर हुक्मत करके अपने ऊपर बला लाता है।

¹⁰ इसके 'अलावा मैंने देखा कि शरीर गाड़े गए, और लोग भी आए और रास्तबाज़ पाक मक्क़ाम से निकले और अपने शहर में फ़रामोश हो गए; ये भी~बेकार है।

¹¹ 'क्यूँकि बुरे काम पर सज़ा का हुक्म फ़ौरन नहीं दिया जाता, इसलिए बनी आदम का दिल उनमें बुराई पर बाशिदत मायल है।

¹² अगरचे गुनहगार सौ बार बुराई करें और उसकी 'उम्रदराज़ हो, तोभी मैं यक़ीनन जानता हूँ कि उन ही का भला होगा जो खुदा तरस हैं और उसके सामने काँपते हैं;¹³ लेकिन गुनहगार का भला कभी न होगा, और न वह अपने दिनों को साये की तरह बढ़ाएगा, इसलिए कि वह खुदा के सामने काँपता नहीं।

¹⁴ 'एक~बेकार~है जो ज़मीन पर वकू' में आती है, कि~नेकोकार लोग हैं जिनको वह कुछ पेश आता है जो चाहिए था कि बदकिरदारों को पेश आता; और शरीर लोग हैं जिनको वह कुछ मिलता है, जो चाहिये था कि नेकोकारों को मिलता। मैंने कहा कि ये भी~बेकार~है।¹⁵ तब मैंने ख़ुरमी की ता'रीफ़ की, क्यूँकि दुनिया' में इन्सान के लिए कोई चीज़ इससे बेहतर नहीं कि खाए और पिए और खुश रहे, क्यूँकि ये उसकी मेहनत के दौरान में उसकी ज़िन्दगी के तमाम दिनों में जो खुदा ने दुनिया में उसे बख़्शी उसके साथ रहेगी।

¹⁶ 'जब मैंने अपना दिल लगाया कि हिकमत सीखूँ और उस कामकाज को जो ज़मीन पर किया जाता है देखूँ (क्यूँकि कोई ऐसा भी है जिसकी आँखों में न रात को नींद आती है न दिन को)।¹⁷ तब मैंने खुदा के सारे काम पर निगाह की और जाना कि इन्सान उस काम को, जो दुनिया में किया जाता है, दरियाफ़्त नहीं कर सकता। अगरचे इन्सान कितनी ही मेहनत से उसकी तलाश करे, लेकिन कुछ दरियाफ़्त न करेगा; बल्कि हर तरह 'अक्लमन्द को गुमान हो कि उसको मा'लूम कर लेगा, लेकिन वह कभी उसको दरियाफ़्त नहीं कर सकेगा।

Chapter 9

¹इन सब बातों पर मैंने दिल से गौर किया और सब हाल की तपस्तीश की, और मा'लूम हुआ कि सादिक और 'अक्लमन्द और उनके काम खुदा के हाथ में हैं; सब कुछ इन्सान के सामने है, लेकिन वह न मुहब्बत जानता है न 'अदावत।

²~सब कुछ सब पर एक जैसा गुजरता है, सादिक और शरीर पर, नेकोकार, और पाक और नापाक पर, उस पर जो कुर्बानी पेश करता है और उस पर जो कुर्बानी नहीं पेश करता एक ही हादसा वाक़े' होता है। जैसा नेकोकार है, वैसा ही गुनहगार है; जैसा वह जो क्रसम खाता है, वैसा ही वह जो क्रसम से डरता है।

³~सब चीज़ों में जो दुनिया में होती हैं एक जुबूनी ये है कि एक ही हादसा सब पर गुजरता है; हाँ, बनी आदम का दिल भी शरारत से भरा है, और जब तक वह जीते हैं हिमाक़त उनके दिल में रहती है, और इसके बा'द मुर्दा में शामिल होते हैं।

⁴चूँकि जो ज़िन्दों के साथ है उसके लिए उम्मीद है, इसलिए ज़िन्दा कुत्ता मुर्दा शेर से बेहतर है।⁵~क्योंकि ज़िन्दा जानते हैं कि वह मरेंगे, लेकिन मुर्दे कुछ भी नहीं जानते और उनके लिए और कुछ अज़ नहीं क्योंकि उनकी याद जाती रही है।

⁶~अब उनकी मुहब्बत और 'अदावत-ओ-हसद सब हलाक हो गए, और ता हमेशा उन सब कामों में जो दुनिया में किए जाते हैं, उनका कोई हिस्सा ~नहीं।

⁷अपनी राह चला जा, खुशी से अपनी रोटी खा और खुशदिली से अपनी मय पी; ~क्योंकि खुदा तेरे 'आमाल को कुबूल कर चुका है।⁸~तेरा लिबास हमेशा सफ़ेद हो, और तेरा सिर चिकनाहट से खाली न रहे।

⁹अपनी~बेकार~की ज़िन्दगी के सब दिन जो उसने दुनिया में~तुझे बख़्शी है, हाँ, अपनी~बेकारी~के सब दिन, उस~बीवी के साथ जो तेरी प्यारी है 'ऐश कर ले कि इस ज़िन्दगी में और तेरी उस मेहनत के दौरान में जो तू ने दुनिया में की तेरा यही हिस्सा है।¹⁰~जो काम तेरा हाथ करने को पाए उसे मक़दूर भर कर क्योंकि पाताल में जहाँ तू जाता है न काम है न मन्सूबा, न 'इल्म न हिकमत।

¹¹~फिर मैंने तवज्जुह की और देखा कि दुनिया' में न तो दौड़ में तेज़ रफ़्तार को सबक़त है न जंग में ज़ोरआवर को फ़तह, और न रोटी 'अक्लमन्द को मिलती है न दौलत 'अक्लमन्दों को, और न 'इज़ज़त 'अक्ल वालों को; बल्कि उन सब के लिए वक़्त और हादिसा है।¹²~क्योंकि इन्सान अपना वक़्त भी नहीं पहचानता; जिस तरह मछलियाँ जो मुसीबत के जाल में गिरफ़्तार होती हैं, और जिस तरह चिड़ियाँ फंदे में फसाई जाती है उसी तरह बनी आदम भी बदबख़्ती में, जब अचानक उन पर आ पड़ती है, फँस जाते हैं।

¹³~मैंने ये भी देखा कि दुनिया में हिकमत है और ये मुझे बड़ी चीज़ मा'लूम हुई।¹⁴~एक छोटा शहर था और उसमें थोड़े से लोग थे, उस पर एक बड़ा बा'दशाह चढ़ आया और उसका घिराव किया और उसके मुक़ाबिल बड़े-बड़े दमदमे बाँधे।¹⁵~मगर उस शहर में एक कंगाल 'अक्लमन्द मर्द पाया गया और उसने अपनी हिकमत से उस शहर को बचा लिया, तोभी किसी शख्स ने इस ग़रीब मर्द को याद न किया।

¹⁶तब मैंने कहा कि हिकमत ज़ोर से बेहतर है; तोभी ग़रीब की हिकमत की तहकीर होती है, और उसकी बातें सुनी नहीं जाती।

¹⁷~'अक्लमन्दों की बातें जो आहिस्तगी से कही जाती हैं, बेवकूफ़ों के सरदार के शोर से ज़्यादा सुनी जाती है।¹⁸हिकमत लड़ाई के ~हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक गुनहगार बहुत सी नेकी को बर्बा'द कर देता है।

Chapter 10

¹मुर्दा मक्खियाँ 'अत्तार के 'इत्र को बदबूदार कर देती हैं, और थोड़ी सी हिमाकृत हिकमत-ओ-'इज्जत को मात कर देती है।²~'अक्लमन्द का दिल उसके दहने हाथ है, लेकिन बेवकूफ़ का दिल उसकी बाईं तरफ़।³~हाँ, बेवकूफ़ जब राह चलता है तो उसकी अक्ल उड़ जाती है और वह सब से कहता है कि मैं बेवकूफ़ हूँ।

⁴~अगर हाकिम तुझ पर क़हर करे तो अपनी जगह न छोड़, क्योंकि बर्दाश्त बड़े बड़े गुनाहों को दबा देती है।

⁵~एक जुबूनी है जो मैंने दुनिया में देखी, जैसे वह एक ख़ता है जो हाकिम से सरज़द होती है।⁶~हिमाकृत बालानशीन होती है, लेकिन दौलतमंद नीचे बैठते हैं।

⁷~मैंने देखा कि नौकर घोड़ों पर सवार होकर फिरते हैं, और सरदार नौकरों की तरह ज़मीन पर पैदल चलते हैं।

⁸गढ़ा खोदने वाला उसी में गिरेगा और दीवार में रखना करने वाले को साँप डसेगा।⁹~जो कोई पत्थरों को काटता है उनसे चोट खाएगा और जो लकड़ी चीरता है उससे ख़तरे में है।

¹⁰अगर कुल्हाड़ा कुन्द हैं और आदमी धार तेज़ न करे तो बहुत ज़ोर लगाना पड़ता है, लेकिन हिकमत हिदायत के लिए मुफ़ीद है।¹¹~अगर साँप ने अफ़सून से पहले डसा है तो अफ़सूँनगर को कुछ फ़ायदा न होगा।

¹²अक्लमन्द के मुँह की बातें लतीफ़ हैं लेकिन बेवकूफ़ के होंट उसी को निगल जाते हैं।

¹³~उसके मुँह की बातों की इब्तिदा हिमाकृत है और उसकी बातों की इन्तिहा फ़ितनाअंगेज़ अबलही।¹⁴बेवकूफ़ भी बहुत सी बातें बनाता है लेकिन आदमी नहीं बता सकता है कि क्या होगा और जो कुछ उसके बा'द होगा उसे कौन समझा सकता है?

¹⁵बेवकूफ़ों की मेहनत उसे थकाती है, क्योंकि वह शहर को जाना भी नहीं जानता।

¹⁶~ऐ ममलुकत तुझ पर अफ़सोस, जब नाबालिग़ तेरा बा'दशाह हो और तेरे सरदार सुबह को खाएँ।¹⁷~नेकबख़्त है तू ऐ सरज़मीन जब तेरा बा'दशाह शरीफ़ज़ादा हो और तेरे सरदार मुनासिब वक़्त पर तवानाई के लिए खाएँ और न इसलिए कि बदमस्त हों।

¹⁸~काहिली की वजह से कड़ियाँ झुक जाती हैं, और हाथों के ढीले होने से छत टपकती है।¹⁹~हँसने के लिए लोग दावत करते हैं, और मय जान को खुश करती है, और रुपये से सब मक़सद पूरे होते हैं।

²⁰~तू अपने दिल में भी बा'दशाह पर ला'नत न कर और अपनी ख़्वाबगाह में भी मालदार पर ला'नत न कर क्योंकि हवाई चिड़िया बात को ले उड़ेगी और परदार उसको खोल देगा।

Chapter 11

¹अपनी रोटी पानी में डाल दे क्योंकि तू बहुत दिनों के बा'द उसे पाएगा।²~सात को बल्कि आठ को हिस्सा दे क्योंकि तू नहीं जानता कि ज़मीन पर क्या बला आएगी।³~जब बादल पानी से भरे होते हैं तो ज़मीन पर बरस कर खाली हो जाते हैं और अगर दरख्त दख्खिन की तरफ़ या उत्तर की तरफ़ गिरे तो जहाँ दरख्त गिरता है वहीं पड़ा रहता है।

⁴जो हवा का रुख देखता रहता है वह बोता नहीं और जो बा'दलों को देखता है वह काटता नहीं।⁵~जैसा तू नहीं जानता है कि हवा की क्या राह है और हामिला के रिहम में हड्डियाँ क्योंकर बढ़ती हैं, वैसा ही तू खुदा के कामों को जो सब कुछ करता है नहीं जानेगा।

⁶~सुबह को अपना बीज बो और शाम को भी अपना हाथ ढीला न होने दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि उनमें से कौन सा कामयाब होगा, ये या वह या दोनों के दोनों बराबर कामयाब होंगे।⁷नूर शीरीन है और आफ़ताब को देखना आँखों को अच्छा लगता है।⁸~हाँ, अगर आदमी बरसों ज़िन्दा रहे, तो उनमें खुशी करे; लेकिन तारीकी के दिनों को याद रखे, क्योंकि वह बहुत होंगे। सब कुछ जो आता है~बेकार~है।

⁹~ऐ जवान, तू अपनी जवानी में खुश हो, और उसके दिनों में अपना जी बहला। और अपने दिल की राहों में, और अपनी आँखों की मन्ज़ूरी में चल। लेकिन याद रख~कि इन सब बातों के लिए खुदा तुझ को 'अदालत में लाएगा।¹⁰फिर ग़म को अपने दिल से दूर कर, और बुराई अपने जिस्म से निकाल डाल; क्योंकि लड़कपन और जवानी दोनों बेकार हैं।

Chapter 12

¹और अपनी जवानी के दिनों में अपने खालिक को याद कर, जब कि बुरे दिन हुनूज़ नहीं आए और वह बरस नज़दीक नहीं हुए, जिनमें तू कहेगा कि इनसे मुझे कुछ खुशी नहीं।²~जब कि हुनूज़ सूरज और रोशनी चाँद सितारे तारीक नहीं हुए, और बा'दल बारिश के बा'द फिर जमा' नहीं हुए;

³~जिस रोज़ घर के निगाहबान थरथराने लगे और ताक़तवर लोग कुबड़े हो जाएँ और पीसने वालियाँ रुक जाएँ इसलिए कि वह थोड़ी सी हैं, और वह जो खिड़कियों से झाँकती हैं धुंदला जाए,

⁴~और गली के किवाड़े बन्द हो जाएँ, जब चक्की की आवाज़ धीमी हो जाए और इन्सान चिड़िया की आवाज़ से चौंक उठे, और नग़मे की सब बेटियाँ ज़ईफ़ हो जाएँ।

⁵~हाँ, जब वह चढ़ाई से भी डर जाए और दहशत राह में हो, और बा'दाम के फूल निकलें और टिड्डी एक बोझ मा'लूम हो, और ख्वाहिश मिट जाए क्योंकि इन्सान अपने हमेशा के मकान में चला जायेगा और मातम करने वाले गली गली फिरेंगे |

⁶~पहले इससे कि चाँदी की डोरी खोली जाए,और सोने की कटोरी तोड़ी जाए और घड़ा चश्मे पर फोड़ा जाए, और हौज़ का चर्ख़ टूट जाए,⁷~और खाक-खाक से जा मिले जिस तरह आगे मिली हुई थी, और रूह खुदा के पास जिसने उसे दिया था वापस जाए।

⁸बेकार ही बेकार वा'इज़ कहता है, सब कुछ बेकार है।⁹गरज़ अज़बस की वा'इज़ 'अक्लमन्द था, उसने लोगों को तालीम दी; हाँ, उसने बख़ूबी ग़ौर किया और ख़ूब तजवीज़ की और बहुत सी मसलें क़रीने से बयान कीं।

¹⁰~वा'इज़ दिल आवेज़ बातों की तलाश में रहा, उन सच्ची बातों की जो रास्ती से लिखी गई।¹¹~'अक्लमन्द की बातें पैनों की तरह हैं, और उन खूँटियों की तरह जो साहिबान-ए-मजलिस ने लगाई हैं, और जो एक ही चरवाहे की तरफ़ से मिली हैं।

¹²~इसलिए अब ऐ मेरे बेटे, इनसे नसीहत पज़ीर हो, बहुत किताबे बनाने की इन्तिहा नहीं है और बहुत पढ़ना जिस्म को थकाता है।

¹³~अब सब कुछ सुनाया गया; हासिल-ए-कलाम ये है: खुदा से डर और उसके हुक्मों को मान कि इन्सान का फ़र्ज़-ए-कुल्ली यही है।¹⁴~क्योंकि खुदा हर एक फ़े'ल को हर एक पोशीदा चीज़ के साथ, चाहे भली हो चाहे बुरी, 'अदालत में लाएगा।

ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात

Chapter 1

¹~सुलेमान की ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात।²~वह अपने मुँह के लबों से मुझे चूमे, क्योंकि तेरा इश्क़ मय से बेहतर है।³~तेरे 'इत्र की खुशबू खुशगवार है तेरा नाम 'इत्र रेख़ता है; इसीलिए कुँवारियाँ तुझ पर 'आशिक़ हैं।⁴~मुझे खींच ले, हम तेरे पीछे दौड़ेंगी।~बादशाह मुझे अपने महल में ले आया।~हम तुझ में शादमान और मसरूर होंगी, हम तेरे 'इश्क़ का बयान मय से ज़्यादा करेंगी। वह सच्चे दिल से तुझ पर 'आशिक़ है।

⁵~ऐ यरूशलीम की बेटियो, मैं सियाहफ़ाम लेकिन खूबसूरत हूँ क़ीदार के खेमों और सुलेमान के पदों की तरह।⁶~मुझे मत देखो कि मैं सियाहफ़ाम हूँ, क्योंकि मैं धूप की जली हूँ।" मेरी माँ के बेटे मुझ से नाख़ुश थे, उन्होंने मुझ से खज़ूर के बाग़ों की निगाहबानी कराई; लेकिन मैंने अपने खज़ूर के बाग़ की निगाहबानी नहीं की

⁷~ऐ मेरी जान के प्यारे! मुझे बता, तू अपने ग़ल्ले को कहाँ चराता है, और दोपहर के वक़्त कहाँ बिठाता है? क्योंकि मैं तेरे दोस्तों के ग़ल्लों के पास क्यूँ मारी-मारी फिरूँ?

⁸~ऐ 'औरतों में सब से खूबसूरत, अगर तू नहीं जानती तो ग़ल्ले के नक्श-ए-क्रदम पर चली जा, और अपने बुज़ग़ालों को चरवाहों के खेमों के पास पास चरा।

⁹~ऐ मेरी प्यारी, मैंने तुझे फिर'औन के रथ की घोड़ियों में से एक के साथ मिसाल दी है।¹⁰~तेरे गाल लगातार जुल्फ़ों में खुशनुमाँ हैं, और तेरी गर्दन मोतियों के हारों में।¹¹हम तेरे लिए सोने के तौक़ बनाएँगे, और उनमें चाँदी के फूल जड़ेंगे।

¹²~जब तक बादशाह तनावुल फ़रमाता रहा, मेरे सुम्बुल की महक उड़ती रही।¹³~मेरा महबूब मेरे लिए दस्ता-ए-मुर है, जो रात भर मेरी सीने के बीच पड़ा रहता है।¹⁴~मेरा महबूब मेरे लिए ऐनजदी के अंगूरिस्तान से मेहन्दी के फूलों का गुच्छा है।

¹⁵~देख, तू खूबसूरत है ऐ मेरी प्यारी, देख तू खूबसूरत है। तेरी आँखें दो कबूतर हैं।

¹⁶~देख, तू ही खूबसूरत है ऐ मेरे महबूब, बल्कि दिल पसन्द है;हमारा पलंग भी सबज़ है।¹⁷~हमारे घर के शहतीर देवदार के और हमारी कड़ियाँ सनोबर की हैं।

Chapter 2

¹मैं शारून की नर्गिस, और वादियों की सोसन हूँ।²~जैसी सोसन झाड़ियों में, वैसी ही मेरी महबूबा कुँवारियों में है।

³जैसा सेब का दरख्त जंगल के दरख्तों में, वैसा ही मेरा महबूब नौजवानों में है। मैं निहायत शादमानी से उसके साये में बैठी, और उसका फल मेरे मुँह में मीठा लगा।⁴~वह मुझे मयखाने के अंदर लाया, और उसकी मुहब्बत का झंडा मेरे ऊपर था।

⁵~किशमिश से मुझे क्ररार दो, सेबों से मुझे ताज़ादम करो, क्योंकि मैं 'इश्क की बीमार हूँ।'⁶~उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे है, और उसका दहना हाथ मुझे गले से लगाता है।

⁷~ऐ यरूशलीम की बेटियो, मैं तुम को गज़ालों और मैदान की हिरनियों की क्रसम देती हूँ ~तुम मेरे प्यारे को न जगाओ न उठाओ, जब तक कि वह उठना न चाहे।

⁸~मेरे महबूब की आवाज़! देख, वह आ रहा है। पहाड़ों पर से कूदता और टीलों पर से फाँदता हुआ चला आता है।⁹~मेरा महबूब आहू या जवान हिरन की तरह है। देख, वह हमारी दीवार के पीछे खड़ा है, वह खिड़कियों से झाँकता है, वह झाड़ियों से ताकता है।

¹⁰~मेरे महबूब ने मुझ से बातें कीं और कहा, "उठ मेरी प्यारी, मेरी नाज़नीन चली आ!"¹¹~क्योंकि देख जाड़ा गुज़र गया, मेंह बरस चुका और निकल गया।

¹²~ज़मीन पर फूलों की बहार है, परिन्दों के चहचहाने का वक्रत आ पहुँचा, और हमारी सरज़मीन में कुमरियों की आवाज़ सुनाई देने लगी।¹³~अंजीर के दरख्तों में हरे अंजीर पकने लगे, और ताकें फूलने लगीं; उनकी महक फैल रही है। इसलिए उठ मेरी प्यारी, मेरी जमीला, चली आ।

¹⁴~ऐ मेरी कबूतरी, जो चट्टानों की दरारों में और कड़ाड़ों की आड़ में छिपी है; मुझे अपना चेहरा दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुना, क्योंकि तू माहजबीन और तेरी आवाज़ मीठी है।

¹⁵~हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ो, उन लोमड़ी बच्चों को जो खजूर के बाग को खराब करते हैं; क्योंकि हमारी ताकों में फूल लगे हैं।"

¹⁶~मेरा महबूब मेरा है और मैं उसकी हूँ, वह सोसनों के बीच ~चराता है।¹⁷जब तक दिन ढले और साया बढ़े, तू फिर आ ऐ मेरे महबूब। तू गज़ाल या जवान हिरन की तरह होकर आ, जो बातर के पहाड़ों पर है।

Chapter 3

¹~मैंने रात को अपने ~पलंग पर उसे ढूँढा जो मेरी जान का प्यारा है; मैंने उसे ढूँढा पर न पाया।²~अब मैं उठूँगी और शहर में फिरूँगी, गलियों में और बाज़ारों में, उसको ढूँढूँगी जो मेरी जान का प्यारा है। मैंने उसे ढूँढा पर न पाया।

³~पहरेवाले जो शहर में फिरते हैं मुझे मिले। मैंने पूछा, "क्या तुम ने उसे देखा है, जो मेरी जान का प्यारा है?"⁴~अभी मैं उनसे थोड़ा ही आगे बढ़ी थी, कि मेरी जान का प्यारा मुझे मिल गया। मैंने उसे पकड़ रखखा और उसे न छोड़ा; जब तक कि मैं उसे अपनी माँ के घर में और अपनी वालिदा के आरामगाह में न ले गई।

⁵~ऐ यरूशलीम की बेटियो, मैं तुम को ग़ज़ालों और मैदान की हिरनियों की क्रसम देती हूँ कि तुम मेरे प्यारे को न जगाओ न उठाओ, जब तक कि वह उठना न चाहे।

⁶~यह~कौन है जो मुर और लुबान से और सौदागरों के तमाम 'इत्रों से मु' अत्तर होकर, बियाबान से धुँवे के खम्बे की तरह चला आता है।' देखो, यह सुलेमान की पालकी है! जिसके साथ इस्राईली बहादुरों में से साठ पहलवान हैं।

⁸~वह सब के सब शमशीरज़न और जंग में माहिर हैं। रात के खतरे की वजह से हर एक की तलवार उसकी रान पर लटक रही है।⁹~सुलेमान बादशाह ने लुबनान की लकड़ियों से. अपने लिए एक पालकी बनवाई।

¹⁰~उसके डंडे चाँदी के बनवाए, उसके बैठने की जगह सोने की और गद्दी अर्गवानी बनवाई; और उसके अंदर का फ़र्श, यरूशलीम की बेटियों ने 'इश्क़ से आरास्ता किया।'¹¹~ऐ सिय्यून की बेटियो, बाहर निकलो और सुलेमान बादशाह को देखो; उस ताज के साथ जो उसकी माँ ने उसके शादी के दिन और उसके दिल की शадमानी के दिन उसके सिर पर रखखा।

Chapter 4

¹देख, तू खूबसूरत है ऐ मेरी प्यारी! देख, तू खूबसूरत है; तेरी आँखें तेरे नक्राब के नीचे दो कबूतर हैं, तेरे बाल बकरियों के गल्ले की तरह हैं, जो कोह-ए-जिल्'आद पर बैठी हों।

²~तेरे दाँत भेड़ों के गल्ले की तरह हैं, जिनके बाल कतरे गए हों और जिनको गुस्ल दिया गया हो, जिनमें से हर एक ने दो बच्चे दिए हों, और उनमें एक भी बाँझ न हो।

³~तेरे होंठ किमिज़ी डोरे हैं, तेरा मुँह दिल फ़रेब है, तेरी कनपटियाँ तेरे नक्राब के नीचे अनार के टुकड़ों की तरह हैं।

⁴तेरी गर्दन दाऊद का बुर्ज है जो सिलाहखाने के लिए बना जिस पर हज़ार ढाल लटकाई गई हैं, वह सब की सब पहलवानों की ढालें हैं।⁵~तेरी दोनों छातियाँ दो तोअम आहू बच्चे हैं, जो सोसनों में चरते हैं।

⁶~जब तक दिन ढले और साया बढ़े, मैं मुर के पहाड़ और लुबान के टीले पर जा रहूँगा।⁷~ऐ मेरी प्यारी, तू सरापा जमाल है; तुझ में कोई 'ऐब नहीं।

⁸~लुबनान से मेरे साथ, ऐ दुल्हन! तू लुबनान से मेरे साथ चली आ। अमाना की चोटी पर से, सनीर और हरमून की चोटी पर से, शेरों की मांदों से, और चीतों के पहाड़ों पर से नज़र दौड़ा।

⁹~ऐ मेरी प्यारी, मेरी ज़ौजा, तू ने मेरा दिल लूट लिया। अपनी एक नज़र से, अपनी गर्दन के एक तौक़ से तू ने मेरा दिल ग़ारत कर लिया।

¹⁰~ऐ मेरी प्यारी, मेरी ज़ौजा, तेरा 'इश्क क्या खूब है। तेरी मुहब्बत मय से ज़्यादा लज़ीज़ है, और तेरे इत्रों की महक हर तरह की खुशबू से बढ़कर है।¹¹~ऐ मेरी ज़ौजा, तेरे होठों से शहद टपकता है; शहद-ओ-शीर तेरे ज़बान तले है तेरी पोशाक की खुशबू लुबनान की जैसी है।

¹²~मेरी प्यारी, मेरी ज़ौजा एक महफूज़ बागीचा है; वह महफूज़ सोता और सर बमुहर चश्मा है।¹³~तेरे बाग़ के पौधे लज़ीज़ मेवादार अनार हैं, मेहन्दी और सुम्बुल भी हैं।¹⁴~जटामासी और ज़ा'फ़रान, बेदमुश्क और दारचीनी और लोबान के तमाम दरख़्त, मुर और ऊद और हर तरह की खास खुशबू।

¹⁵~तू बाग़ों में एक मम्बा', आब-ए-हयात का चश्मा, और लुबनान का झरना है।¹⁶~ऐ शिमाली हवा बेदार हो, ऐ दख्खिनी हवा चली आ! मेरे बाग़ पर से गुज़र, ताकि उसकी खुशबू फैले। मेरा महबूब अपने बाग़ में आए, और अपने लज़ीज़ मेवे खाए।

Chapter 5

¹मैं अपने बाग में आया हूँ ऐ मेरी प्यारी ऐ मेरी जौजा; मैंने अपना मुर अपने बलसान समेत जमा' कर लिया; मैंने अपना शहद छत्ते समेत खा लिया, मैंने अपनी मय दूध समेत पी ली है। ऐ दोस्तो, खाओ, पियो। पियो! हाँ, ऐ 'अज़ीज़ो, खूब जी भर के पियो!

²~मैं सोती हूँ, लेकिन मेरा दिल जागता है। मेरे महबूब की आवाज़ है जो खटखटाता है, और कहता है, मेरे लिए दरवाज़ा खोल, मेरी महबूबा, मेरी प्यारी! मेरी कबूतरी, मेरी पाकीज़ा, क्योंकि मेरा सिर शबनम से तर है, और मेरी जुल्फें रात की बूँदों से भरी हैं।"

³मैं तो कपड़े उतार चुकी, अब फिर कैसे पहनूँ? मैं तो अपने पाँव धो चुकी, अब उनको क्यों मैला करूँ?⁴~मेरे महबूब ने अपना हाथ सूराख से अन्दर किया, और मेरे दिल-ओ-जिगर में उसके लिए हरकत हुई।

⁵~मैं अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोलने को उठी, और मेरे हाथों से मुर टपका, और मेरी उँगलियों से रक्रीक मुर टपका, और कुपल के दस्तों पर पड़ा।

⁶~मैंने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोला, लेकिन मेरा महबूब मुड़ कर चला गया था। जब वह बोला, तो मैं बदहवास हो गई। मैंने उसे ढूँडा पर न पाया; मैंने उसे पुकारा पर उसने मुझे कुछ जवाब न दिया।

⁷~पहरेवाले जो शहर में फिरते हैं, मुझे मिले; उन्होंने मुझे मारा और घायल किया; शहरपनाह के मुहाफ़िज़ों ने मेरी चादर मुझ से छीन ली।

⁸~ऐ यरूशलीम की बेटियो! मैं तुम को क्रसम देती हूँ कि अगर मेरा महबूब तुम को मिल जाए, तो उससे कह देना कि मैं इश्क की बीमार हूँ।

⁹~तेरे महबूब को किसी दूसरे महबूब पर क्या फ़ज़ीलत है, ऐ 'औरतों में सब से जमीला? तेरे महबूब को किसी दूसरे महबूब पर क्या फ़ौकियत है? जो तू हम को इस तरह क्रसम देती है।

¹⁰~मेरा महबूब सुख-ओ-सफ़ेद है, वह दस हज़ार में मुस्ताज़ है।¹¹उसका सिर खालिस सोना है, उसकी जुल्फें पेच-दर-पेच और कौवे सी काली हैं।

¹²~उसकी आँखें उन कबूतरों की तरह हैं, जो दूध में नहाकर लब-ए-दरिया तमकनत से बैठे हों।

¹³~उसके गाल फूलों के चमन और बलसान की उभरी हुई क्यारियाँ हैं। उसके होंट सोसन हैं, जिनसे रक्रीक मुर टपकता है।

¹⁴~उसके हाथ ज़बरजद से आरास्ता सोने के हल्के हैं। उसका पेट हाथी दाँत का काम है, जिस पर नीलम के फूल बने हो।

¹⁵~उसकी टांगे ~कुन्दन के पायों पर संग-ए-मरमर के खम्बे हैं। वह देखने में लुबनान और खूबी में रश्क-ए-सरो है।

¹⁶~उसका मुँह अज़बस शीरीन है; हाँ, वह सरापा 'इश्क अंगेज़ है। ऐ यरूशलीम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, यह है मेरा प्यारा।

Chapter 6

¹तेरा महबूब कहाँ गया ऐ 'औरतों में सब से जमीला? तेरा महबूब किस तरफ़ को निकला कि हम तेरे साथ उसकी तलाश में जाएँ?

²~मेरा महबूब अपने बोस्तान में बलसान की क्यारियों की तरफ़ गया है, ताकि बागों में चराये और सोसन जमा' करे।³~मैं अपने महबूब की हूँ और मेरा महबूब मेरा है। वह सोसनों में चराता है।

⁴~ऐ मेरी प्यारी, तू तिर्ज़ा की तरह खूबसूरत है। यरूशलीम की तरह खुशमंज़र और 'अलमदार लश्कर की तरह दिल पसन्द है।

⁵~अपनी आँखें मेरी तरफ़ से फेर ले, क्योंकि वह मुझे घबरा देती हैं; तेरे बाल बकरियों के गल्ले की तरह हैं, जो कोह-ए-जिल्आद पर बैठी हों।

⁶~तेरे दाँत भेड़ों के गल्ले की तरह हैं, जिनको गुस्ल दिया गया हो; जिनमें से हर एक ने दो बच्चे दिए हों, और उनमें एक भी बाँझ न हो।⁷तेरी कनपटियाँ तेरे नक़्ाब के नीचे, अनार के टुकड़ों की तरह हैं।

⁸~साठ रानियाँ और अस्सी हरमों, और बेशुमार कुंवारियाँ भी हैं;⁹लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी पाकीज़ा बेमिसाल है; वह अपनी माँ की इकलौती, वह अपनी वालिदा की लाडली है। बेटियों ने उसे देखा और उसे मुबारक कहा। रानियों और हरमों ने देखकर उसकी बड़ाई की।

¹⁰~यह कौन है जिसका ज़हूर सुबह की तरह है, जो हुस्न में माहताब, और नूर में आफ़ताब, 'अलमदार लश्कर की तरह दिल पसन्द है?

¹¹~मैं चिलगोज़ों के बाग में गया, कि वादी की नबातात पर नज़र करूँ, और देखें कि ताक में गुंचे, और अनारों में फूल निकलें हैं कि नहीं।¹²~मुझे अभी खबर भी न थी कि मेरे दिल ने मुझे मेरे उमरा के रथों पर चढ़ा दिया।

¹³~लौट आ, लौट आ, ऐ शूलिमीत!"लौट आ, लौट आ कि हम तुझ पर नज़र करें। तुम शूलिमीत पर क्यों नज़र करोगे, जैसे वह दो लश्करों का नाच है।

Chapter 7

¹~ऐ अमीरज़ादी तेरे पाँव जूतियों में कैसे खूबसूरत हैं! तेरी रानों की गोलाई उन ज़ेवरों की तरह है, जिनको किसी उस्ताद कारीगर ने बनाया हो।

²~तेरी नाफ़ गोल प्याला है, जिसमें मिलाई हुई मय की कमी नहीं। तेरा पेट गेहूँ का अम्बार है, जिसके आस-पास सोसन हों।

³~तेरी दोनों छातियाँ दो आहू बच्चे हैं जो तो अम पैदा हुए हों।⁴~तेरी गर्दन हाथी दाँत का बुर्ज है। तेरी आँखें बैत-रबीम के फाटक के पास हस्बून के चश्मे हैं।~तेरी नाक लुबनान के बुर्ज की मिसाल है~जो दमिश्क के रुख बना है।

⁵~तेरा सिर तुझ पर कर्मिल की तरह है, और तेरे सिर के बाल अर्गवानी हैं; बादशाह तेरी जुल्फों में कैदी है।⁶~ऐ महबूबा" ऐश-ओ-इश्रत के लिए तू कैसी जमीला और जाँफ़ज़ा है।

⁷~यह तेरी क़ामत खज़ूर की तरह है, और तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छे हैं।⁸~मैंने कहा, "मैं इस खज़ूर पर चढ़ूँगा, और इसकी शाखों को पकड़ूँगा।~तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छे हों और तेरे साँस की खुशबू सेब के जैसी हो,

⁹और तेरा मुँह' बेहतरीन शराब की तरह हो~जो मेरे महबूब की तरफ़ सीधी चली जाती है, और सोने वालों के होंटों पर से आहिस्ता~आहिस्ता बह जाती है।~

¹⁰~मैं अपने महबूब की हूँ और वह मेरा मुश्ताक़ है।¹¹ऐ मेरे महबूब, चल हम खेतों में सैर करें और गाँव में रात काटें ।,

¹²~फिर तड़के अंगूरिस्तानों में चलें, और देखें कि आया ताक शिगुफ़्ता है, और उसमे फूल निकले हैं, और अनार की कलियाँ खिली हैं या नहीं। वहाँ मैं तुझे अपनी मुहब्बत दिखाऊंगी ।

¹³मर्दुमग्याह की खुशबू फैल रही है, और हमारे दरवाज़ों पर हर क्रिस्म के तर-ओ-खुशक मेवे हैं जो मैंने तेरे लिए जमा' कर रखे हैं, ऐ मेरे महबूब ।

Chapter 8

- ¹~काश कि तू मेरे भाई की तरह होता, जिसने मेरी माँ की छातियों से दूध पिया।~मैं जब तुझे बाहर पाती, तो तेरी मच्छियाँ लेती, और कोई मुझे हकीर न जानता।
- ²~मैं तुझ को अपनी माँ के घर में ले जाती, वह मुझे सिखाती।~मैं अपने अनारों के रस से तुझे मम्जूज मय पिलाती।³~उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और दहना मुझे गले से लगाता!
- ⁴~ऐ यरूशलीम की बेटियो, मैं तुम को क्रसम देती हूँ कि तुम मेरे प्यारे को न जगाओ न उठाओ, जब तक कि वह उठना न चाहे।
- ⁵~यह कौन है जो वीराने से, अपने महबूब पर तकिया किए~चली आती है?~मैंने तुझे सेब के दरख्त के नीचे जगाया।~जहाँ तेरी पैदाइश हुई, जहाँ तेरी माँ ने तुझे पैदा किया।
- ⁶~नगीन की तरह मुझे अपने दिल में लगा रख और~तावीज़ की तरह अपने बाजू पर, क्योंकि 'इश्क मौत की तरह ज़बरदस्त है, और ग़ैरत पाताल सी बेमुरव्वत है~उसके शो'ले आग के शोले हैं, और खुदावन्द के शोले की तरह।
- ⁷~सैलाब 'इश्क को बुझा नहीं सकता, बाढ़ उसको डुबा नहीं सकती, अगर आदमी मुहब्बत के बदले अपना सब कुछ दे डाले~तो वह सरासर हिकारत के लायक ठहरेगा।
- ⁸~हमारी एक छोटी बहन है, अभी उसकी छातियाँ नहीं उठीं।~जिस रोज़ उसकी बात चले, हम अपनी बहन के लिए क्या करें?
- ⁹अगर वह दीवार हो, तो हम उस पर चाँदी का बुर्ज बनाएँगे और अगर वह दरवाज़ा हो;~हम उस पर देवदार के तख्ते लगाएँगे।
- ¹⁰मैं दीवार हूँ और मेरी छातियाँ बुर्ज हैं~और मैं उसकी नज़र में सलामती याफ़ता, की तरह थी।
- ¹¹~बाल हामून में सुलेमान का खजूर का बाग़ था~उसने उस खजूर के बाग़ को बाग़बानों के सुपुर्द किया कि उनमें से हर एक उसके फल के बदले~हज़ार मिस्काल चाँदी अदा करे।¹²~मेरा खजूर का बाग़ जो मेरा ही है मेरे सामने है ऐ सुलेमान तू तो हज़ार ले, और उसके फल के निगहबान दो सौ पाएँ।
- ¹³~ऐ बूस्तान में रहनेवाली, दोस्त तेरी आवाज़ सुनते हैं;~मुझ को भी सुना।
- ¹⁴~ऐ मेरे महबूब जल्दी कर~और उस ग़ज़ाल या आहू बच्चे की~तरह हो जा, जो बलसानी पहाड़ियों पर है।

यसायाह

Chapter 1

'यसा'याह बिन आमूस का ख़्वाब जो उसने यहूदाह और यरूशलीम के ज़रिए' यहूदाह के बादशाहों उज़ियाह और यूताम और आखज़ और हिज़कियाह के दिनों में देखा।

²सुन ऐ आसमान,~और कान लगा ऐ ज़मीन,~कि~खुदावन्द तूँ फ़रमाता है: "कि मैंने लड़कों को पाला और पोसा,~लेकिन उन्होंने मुझ से सरकशी की।³बैल अपने मालिक को पहचानता है और गधा अपने मालिक की चरनी को,~लेकिन बनी-इसाईल नहीं जानते; मेरे लोग कुछ नहीं सोचते।"

⁴आह,~ख़ताकार गिरोह,~बदकिरदारी से लदी हुई क़ौम बदकिरदारों की नसल मक्कार औलाद,~जिन्होंने खुदावन्द को छोड़ दिया,~इसाईल के कुदूस को हकीर जाना,~और गुमराह-ओ-बरग़शा हो गए~!

⁵~तुम क्यों ज़्यादा बगावत करके और मार खाओगे? तमाम सिर बीमार है और दिल बिल्कुल सुस्त है।⁶~ तलवे से लेकर चाँदी तक उसमें कहीं सेहत नहीं सिर्फ़ ज़ख़म और चोट और सड़े हुए घाव ही हैं; जो न दबाए गए, न बाँधे गए, न तेल से नर्म किए गए हैं।

⁷~ तुम्हारा मुल्क उजाड़ है, तुम्हारी बस्तियाँ जल गई; लेकिन परदेसी तुम्हारी ज़मीन को तुम्हारे सामने निगलते हैं, वह वीरान है, जैसे उसे अजनबी लोगों ने उजाड़ा है।⁸और सिय्यून की बेटी छोड़ दी गई है, जैसे झोपड़ी बाग़ में और छप्पर ककड़ी के खेत में या उस शहर की तरह जो महसूर हो गया हो।

⁹~अगर रब्ब-उल-अफ़वाज़ हमारा थोड़ा सा बक़िया बाक़ी न छोड़ता, तो हम सद्म की तरह और 'अमूरा की तरह हो जाते।

¹⁰सद्म के हाकिमो, का कलाम सुनो! के लोगों, खुदा की शरी'अत पर कान लगाओ !¹¹खुदावन्द फ़रमाता है, "तुम्हारे ज़बीहों की कसरत से मुझे क्या काम? मैं मेण्डों की सोखतनी कुर्बानियों से और फ़र्बा बछड़ों की चर्बी से बेज़ार हूँ; और बैलों और भेड़ों और बकरों के खून में मेरी खुशनुदी नहीं।

¹²"जब तुम मेरे सामने आकर मेरे दीदार के तालिब होते हो, तो कौन तुम से ये चाहता है कि मेरी बारगाहों को रौंदो ?¹³आइन्दा को बातिल हदिये न लाना, खुशबू से मुझे नफ़रत है, नये चाँद और सबत और 'ईदी जमा'अत से भी; क्योंकि मुझ में बदकिरदारी के साथ 'ईद की बर्दाश्त नहीं।

¹⁴~मेरे दिल को तुम्हारे नये चाँदों और तुम्हारी मुक़ररा 'ईदों से नफ़रत है; वह मुझ पर बार है; मैं उनकी बर्दाश्त नहीं कर सकता।¹⁵~जब तुम अपने हाथ फैलाओगे, तो मैं तुम से आँख फेर लूँगा; हाँ, जब तुम दु'आ पर दु'आ करोगे, तो मैं न सुनूँगा; तुम्हारे हाथ तो खून आलूदा हैं।

¹⁶अपने आपको धो, अपने आपको पाक करो; अपने बुरे कामों को मेरी आँखों के सामने से दूर करो, बदफ़ैली से बाज़ आओ,¹⁷~नेकोकारी सीखो; इन्साफ़ के तालिब हो मज़लूमों की मदद करो यतीमों की फ़रियादरसी करो, बेवाओं के हामी हो।"

¹⁸अब खुदावन्द फ़रमाता है, "आओ, हम मिलकर हुज्जत करें; अगरचे तुम्हारे गुनाह किर्मिज़ी हों, वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो जाएँगे; और हर चन्द वह अर्ग़वानी हों, तोभी ऊन की तरह उजले होंगे।

¹⁹अगर तुम राज़ी और फ़रमाबरदार हो, तो ज़मीन के अच्छे~अच्छे फल खाओगे;²⁰~ लेकिन अगर तुम इन्कार करो और बाग़ी हो तो तलवार का लुक्मा हो जाओगे क्योंकि खुदावन्द ने अपने मुँह से ये फ़रमाया है।"

²¹~वफ़ादार बस्ती कैसी बदकार हो गई ! वह तो इन्साफ़ से मा'मूर थी और रास्तबाज़ी उसमें बसती थी, लेकिन अब खूनी रहते हैं।²²तेरी चाँदी मैल हो गई, तेरी मय में पानी मिल गया।

²³तेरे सरदार गर्दनकश और चोरों के साथी हैं। उनमें से हर एक रिश्तत दोस्त और इन'आम का तालिब है। वह यतीमों का इन्साफ़ नहीं करते और बेवाओं की फ़रियाद उन तक नहीं पहुँचती।

²⁴~इसलिए खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का क़ादिर, यूँ फ़रमाता है : कि "आह मैं ज़रूर अपने मुखालिफ़ों से आराम पाऊँगा, और अपने दुश्मनों से इन्तक़ाम लूँगा।"²⁵और मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा, और तेरी गन्दगी बिल्कुल दूर कर दूँगा, और उस रॉगे को जो तुझ में मिला है जुदा करूँगा;

²⁶और मैं तेरे क़ाज़ियों को पहले की तरह और तेरे सलाहकारों को पहले के मुताबिक़ बहाल करूँगा। इसके बा'द तू रास्तबाज़ बस्ती और वफ़ादार आबादी कहलाएगी।"

²⁷सिध्दून 'अदालत की वजह से और वह जो उसमें गुनाह से बाज़ आए हैं, रास्तबाज़ी के ज़रिए' नजात पाएँगे;²⁸लेकिन गुनाहगार और बदकिरदार सब इकट्ठे हलाक होंगे, और जो खुदावन्द से बागी हुए फ़ना किए जाएँगे।

²⁹क्यूँकि वह उन बलूतों से, जिनको तुम ने चाहा शर्मिन्दा होंगे; और तुम उन बाग़ों से, ~जिनको तुम ने पसन्द किया है ख़जिल होंगे।³⁰और तुम उस बलूत की तरह हो जाओगे जिसके पत्ते झड़ जाएँ, और उस बाग़ की तरह जो बेआबी से सूख जाए।

³¹वहाँ का पहलवान ऐसा हो जाएगा जैसा सन, और उसका काम चिंगारी हो जाएगा; वह दोनों एक साथ जल जाएँगे, और कोई उनकी आग न बुझाएगा।

Chapter 2

¹वह बात जो यसा'याह बिन आमूस ने यहूदाह और यरुशलीम के हक में ख्वाब में देखा।²आखिरी दिनों में यूँ होगा कि खुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटी पर क्रायम किया जाएगा, और टीलों से बुलन्द होगा, और ~सब क्रौमें वहाँ पहुँचेंगी;

³बल्कि बहुत सी उम्मतें आयेंगी और कहेंगी आओ-खुदावन्द-के पहाड़ पर चढ़ें, या'नी या'कूब के खुदा के घर में दाखिल हों और वह अपनी राहें हम को बताएगा, और हम उसके रास्तों पर चलेंगे।" क्योंकि शरी'अत सिग्यून से, और खुदावन्द का कलाम यरुशलीम से सादिर होगा।

⁴~और वह क्रौमों के बीच 'अदालत करेगा और बहुत सी उम्मतों को डांटेगा और वह अपनी तलवारों को तोड़ कर फालें, और अपने भालों को हँसुए बना डालेंगे और क्रौम क्रौम पर तलवार न चलाएगी और वह फिर कभी जंग करना न सीखेंगे |

⁵~ऐ या'कूब के घराने, आओ हम खुदावन्द की रोशनी में चलें।⁶तूने तो अपने लोगों या'नी या'कूब के घराने को छोड़ दिया, इसलिए कि वह अहल-ए-मशरिक की रसूम से पुर हैं और फ़िलिस्तियों की तरह शगुन लेते हैं और बेगानों की औलाद के साथ हाथ पर हाथ मारते हैं।

⁷और उनका मुल्क सोने-चाँदी से मालामाल है, और उनके खज़ाने बे शुमार हैं और उनका मुल्क घोड़ों से भरा है, उनके रथों का कुछ शुमार नहीं।⁸उनकी सरज़मीन बुतों से भी पुर है वह अपने ही हाथों की सन'अत, या'नी अपनी ही उगलियों की कारीगरी को सिज्दा करते हैं।

⁹~इस वजह से छोटा आदमी पस्त किया जाता है, और बड़ा आदमी ज़लील होता है; और ~तू उनको हरगिज़ मुआफ़ न करेगा।¹⁰खुदावन्द के ख़ौफ़ से और उसके जलाल की शौकत से, चट्टान में घुस जा और खाक में छिप जा | ¹¹~इन्सान की ऊँची निगाह नीची की जाएगी और बनी आदम का तकब्बुर पस्त हो जाएगा; और उस रोज़ खुदावन्द ही सरबलन्द होगा।

¹²क्योंकि रब्ब-उल-अप्रवाज ~का दिन तमाम मगरूरों बुलन्द नज़रों और मुतकब्बिरों पर आएगा और वह पस्त किए जाएँगे;¹³और ~लुबनान के सब देवदारों पर जो बुलन्द और ऊँचे हैं और बसन के सब बुलूतों पर |

¹⁴और सब ऊँचे पहाड़ों और सब बुलन्द टीलों पर,¹⁵और हर एक ऊँचे बुर्ज पर, और हर एक फ़सीली दीवार पर,¹⁶~और तरसीस के सब जहाज़ों पर, गरज़ हर एक खुशनुमा मन्ज़र पर;

¹⁷~और आदमी का तकब्बुर ज़ेर किया जाएगा और लोगों की बुलंद बीनी पस्त की जायेगी और उस रोज़ खुदावन्द ही सरबलन्द होगा।¹⁸तमाम बुत बिल्कुल फ़ना हो जायेंगे¹⁹~और जब खुदावन्द उठेगा कि ज़मीन को शिद्दत से हिलाए, तो लोग उसके डर से और उसके जलाल की शौकत से पहाड़ों के ग़ारों और ज़मीन के शिगाफ़ों में घुसेंगे |

²⁰उस रोज़ लोग अपनी सोने-चाँदी की मूरतों को जो उन्होंने 'इबादत के लिए बनाई, छुन्दारों और चमगादड़ों के आगे फेंक देंगे | ²¹~ताकि जब खुदावन्द ज़मीन को शिद्दत से हिलाने के लिए उठे, तो उसके ख़ौफ़ से और उसके जलाल की शौकत से चट्टानों के ग़ारों और नाहमवार पत्थरों के शिगाफ़ों में घुस जाएँ।²²~तब तुम इन्सान से जिसका दम उसके नथनों में है बाज़ रहो, क्योंकि उसकी क्या क़द्र है?

Chapter 3

¹~क्योंकि देखो खुदावन्द रब्ब-उल-अप्रवाज यरुशलीम और यहूदाह से सहारा और भरोसा", रोटी का तमाम सहारा और पानी का तमाम भरोसा दूर कर देगा;
²~या'नी बहादुर और साहिब-ए-जंग को क्राज़ी और नबी को, फ़ालगीरों और बुजुर्ग को | ³पचास ~पचास के सरदारों और 'इज्जतदारों और सलाहकारों और होशियार कारीगरों और माहिर जादूगरों को |

⁴और मैं लड़कों को उनके सरदार बनाऊँगा और नन्हें बच्चे उन पर हुक्मरानी करेंगे | ⁵लोगों ~में से हर एक दूसरे पर और हर एक अपने पड़ोसी पर सितम करेगा | और बच्चे बूढ़ों की और रज़ील शरीफ़ों की गुस्ताखी करेंगे |

⁶~जब कोई आदमी अपने बाप के घर में अपने भाई का दामन पकड़कर कहे, कि तू पोशाकवाला है; आ तू हमारा हाकिम हो, और इस उजड़े देस पर क़ाबिज़ हो जा | ⁷उस रोज़ वह बुलन्द आवाज़ से कहेगा, कि मुझसे इन्तिज़ाम नहीं होगा; क्योंकि मेरे घर में न रोटी है न कपड़ा, मुझे लोगों का हाकिम न बनाओ।"

⁸क्योंकि यरुशलीम की बर्बादी हो गई और यहूदाह गिर गया, इसलिए कि उनकी बोल-चाल और चाल-चलन खुदावन्द के खिलाफ़ हैं कि उसकी जलाली आँखों को ग़ज़बनाक करें | ⁹~उनके मुँह की सूरत उन पर गवाही देती है वह अपने गुनाहों को सद्रूम की तरह ज़ाहिर करते हैं और छिपाते नहीं उनकी जानों पर वावैला है! क्योंकि वह आप अपने ऊपर बला लाते हैं।

¹⁰रास्तबाज़ों के ज़रिए' कही कि भला होगा, क्योंकि वह अपने कामों का फल खाएँगे। ¹¹शरीरों पर वावैला है कि उनको बदी पेश आयेगी क्योंकि वह अपने हाथों का किया पाएँगे। ¹²मेरे लोगों की ये हालत है कि लड़के उन पर जुल्म करते हैं, और 'औरतें उन पर हुक्मरान हैं। ऐ मेरे लोगों तुम्हारे रहनुमा तुम को गुमराह करते हैं, और तुम्हारे चलने की राहों को बिगाड़ते हैं।

¹³~खुदावन्द खड़ा है कि मुकद्दमा लड़े, और लोगों की 'अदालत करे | ¹⁴~खुदावन्द अपने लोगों के बुजुर्गों और उनके सरदारों की 'अदालत करने को~आएगा, तुम ही हो जो बाग़ चट कर गए हो और गरीबों की लूट तुम्हारे घरों में है।" ¹⁵~खुदावन्द रब्ब-उल-अप्रवाज फ़रमाता है कि इसके क्या क्या मा'ना हैं कि तुम मेरे लोगों को दबाते और गरीबों के सिर कुचलते हो |

¹⁶और खुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि सिय्यून की बेटियाँ मुतकब्बिर हैं और गर्दनकशी और शोख चश्मी से ख़िरामाँ होती हैं और अपने पाँव से नाज़रफ़्तारी करती और घुंघरू बजाती जाती हैं | ¹⁷इसलिए खुदावन्द सिय्यून की बेटियों के सिर गंजे, और यहोवाह उनके बदन बेपर्दा कर देगा |

¹⁸उस दिन खुदावन्द उनके खलखाल की ज़ेबाइश, जालियाँ और चाँद ले लेगा, ¹⁹~और आवेज़े और पहुँचियाँ, और नक्राब | ²⁰और ताज और पाज़ेब और पटके और 'इत्रदान और ता'वीज़ |

²¹और अंगूठियाँ और नथ | ²²~और नफ़ीस पोशाकें, और ओढ़नियाँ, और दोपट्टे और कीसे, ²³~और आर्सियाँ और बारीक़ कतानी लिबास और दस्तारे और बुर्के भी।

²⁴और ~यूँ होगा कि खुशबू के बदले सड़ाहट होगी, और पटके के बदले रस्सी, और गुंधे हुए बालों की जगह चंदलापन और नफ़ीस लिबास के बदले टाट और हुस्न के बदले दाग़। ²⁵तेरे बहादुर हलाक होंगे और तेरे पहलवान जंग में क़त्ल होंगे। ²⁶~उसके फाटक मातम और नौहा करेंगे, और वह उजाड़ होकर खाक पर बैठेगी।

Chapter 4

¹उस वक़्त सात 'औरतें एक मर्द को पकड़ कर कहेंगी, कि हम अपनी रोटी खाएँगी और अपने कपड़े पहनेंगी; तू हम सबसे सिर्फ़ इतना कर कि तेरे नाम से कहलायें ताकि हमारी शर्मिंदगी मिटे।²तब खुदावन्द की तरफ़ से रोएदगी ख़ूबसूरत-ओ-शानदार होगी,~और ज़मीन का फल उनके लिए जो बनी-इस्राईल में से बच निकले,~लज़ीज़ और खुशनुमा होगा।

³और यूँ होगा कि जो कोई सिय्यून में छूट जाएगा,~और जो कोई यरुशलीम में बाक़ी रहेगा,~बल्कि हर एक जिसका नाम यरुशलीम के ज़िन्दों में लिखा होगा,~मुक़द्दस कहलाएगा।⁴~जब खुदावन्द सिय्यून की बेटियों की गन्दगी को दूर करेगा और यरुशलीम का ख़ून रूह-ए-'अद्ल और रूह-ए-सोज़ान के ज़रिए' से धो डालेगा।

⁵~तब खुदावन्द फिर सिय्यून पहाड़ के हर एक मकान पर और उसकी मजलिसगाहों पर, दिन को बादल और धुवाँ और रात को रोशन शोला पैदा करेगा; तमाम जलाल पर एक सायबान होगा।⁶~और एक खेमा होगा जो दिन को गर्मी में सायादार मकान, और आँधी और झड़ी के वक़्त आरामगाह और पनाह की जगह हो।

Chapter 5

¹अब ~मैं अपने महबूब के लिए अपने महबूब का एक गीत, उसके बाग के ज़रिए' गाऊँगा : मेरे महबूब का बाग एक ज़रखेज़ पहाड़ पर था।²~और उसने उसे खोदा और उससे पत्थर निकाल फेंके और अच्छी से अच्छी ताकि उसमें लगाई, और उसमें बुर्ज बनाया और एक कोल्हू भी उसमें तराशा; और इन्तिज़ार किया कि उसमें अच्छे अंगूर लगें लेकिन उसमें जंगली अंगूर लगे।

³अब ऐ यरुशलीम के बाशिन्दो और यहूदाह के लोगों, मेरे ~और मेरे बाग में तुम ही इन्साफ़ करो,⁴~कि मैं अपने बाग के लिए और क्या कर सकता था जो मैंने न किया? और अब जो मैंने अच्छे अंगूरों की उम्मीद की, तो इसमें जंगली अंगूर क्यों लगे?

⁵~मैं तुम को बताता हूँ कि ~अब मैं अपने बाग से क्या करूँगा; मैं उसकी बाड़ गिरा दूँगा, और वह चरागाह होगा; उसका अहाता तोड़ डालूँगा, और वह पामाल किया जाएगा,⁶और ~मैं उसे बिल्कुल वीरान कर दूँगा वह न छाँटा जाएगा न निराया जाएगा, उसमें ऊँट कटारे और कोंटे उगेंगे; और मैं बादलों को हुक्म करूँगा कि उस पर मेह न बरसाएँ।

⁷~इसलिए रब्ब-उल-अप्रवाज का बाग बनी-इसाईल का घराना है, और बनी यहूदाह उसका खुशनुमा पौधा है उसने इन्साफ़ का इन्तिज़ार किया, लेकिन खूँरेज़ी देखी; वह दाद का मुन्तज़िर रहा, लेकिन फ़रियाद सुनी।

⁸~उनपर अफ़सोस, जो घर से घर और खेत से खेत मिला देते हैं, यहाँ तक कि कुछ जगह बाक़ी न बचे, और मुल्क में वही अकेले बसें।⁹~रब्ब-उल-अप्रवाज ने मेरे कान में कहा, यक़ीनन बहुत से घर उजड़ जाएँगे और बड़े बड़े आलीशान और खूबसूरत मकान भी बे चराग़ होंगे।¹⁰~क्योंकि पन्द्रह बीघे बाग से सिर्फ़ एक बत मय हासिल होगी, और एक खोमर' बीज से एक ऐफ़ा ग़ल्ला।

¹¹~उनपर अफ़सोस, जो सुबह सवेरे उठते हैं ताकि नशेबाज़ी के दरपे हों और जो रात को जागते हैं जब तक शराब उनको भड़का न दे।¹²~और उनके ज़श्र की महफ़िलों में बरबत और सितार और दफ़ और बीन और शराब हैं; लेकिन वह खुदावन्द के काम को नहीं सोचते और उसके हाथों की कारीगरी पर ग़ौर नहीं करते।

¹³~इसलिए मेरे लोग जहालत की वजह से गुलामी में जाते हैं; उनके बुजुर्ग भूके मरते, और 'अवाम प्यास से जलते हैं।¹⁴फिर पाताल अपनी हवस बढ़ाता है और अपना मुँह बे इन्तहा फाड़ता है और उनके शरीफ़ और 'आम लोग और ग़ौगाई और जो कोई उनमें घमण्ड करता है, उसमें उतर जाएँगे।

¹⁵~और छोटा आदमी झुकाया जाएगा, और बड़ा आदमी पस्त होगा और मगरूरों की आँखें नीची हो जाएँगी।¹⁶~लेकिन रब्ब-उल-अप्रवाज 'अदालत~में सरबलन्द होगा, और खुदा-ए-कुहूस की तक्रदीस सदाक़त से की जाएगी।¹⁷~तब बरें जैसे अपनी चरागाहों में चरेंगे और दौलतमन्दों के वीरान खेत परदेसियों के गल्ले खाएँगे।

¹⁸~उनपर अफ़सोस, जो बतालत की तनाबों से बदकिरदारी को और जैसे गाड़ी के रस्सों से गुनाह को खींच लाते हैं,¹⁹~और जो कहते हैं, कि जल्दी करें और फुर्ती से अपना काम करें कि हम देखें; और इसाईल के कुहूस की मशवरत नज़दीक हो और आ पहुँचे ताकि हम उसे जानें।"

²⁰उन पर अफ़सोस, जो बदी को नेकी और नेकी को बदी कहते हैं, और नूर की जगह तारीकी को और तारीकी की जगह नूर को देते हैं; और शीरीनी के बदले तल्खी और तल्खी के बदले शीरीनी रखते हैं।²¹~उनपर अफ़सोस, जो ~अपनी नज़र में अक्लमन्द और अपनी निगाह में साहिब-ए-इम्तियाज़ हैं।

²²~उनपर अफ़सोस, जो मय पीने में ताक़तवर और शराब मिलाने में पहलवान हैं;²³जो रिश्तत लेकर शरीरों की सादिक़ और सादिक़ों को नारास्त ठहराते हैं!

²⁴~फिर जिस तरह आग भूसे को खा जाती है और जलता हुआ फूस बैठ जाता है, उसी तरह उनकी जड़ बोसीदा होगी और उनकी कली गर्द की तरह उड़ जाएगी; क्योंकि उन्होंने रब्ब-उल-अप्रवाज की शरी'अत को छोड़ दिया, और इसाईल के कुददूस के कलाम को हक़ीर जाना।

²⁵~इसलिए खुदावन्द का क्रहर उसके लोगों पर भड़का, और उसने उनके खिलाफ़ अपना हाथ बढ़ाया और उनको मारा; चुनाँचे पहाड़ कॉप गए और उनकी लाशें बाज़ारों में ग़लाज़त की तरह पड़ी हैं। बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

²⁶और वह क्रौमों के लिए दूर से झण्डा खड़ा करेगा, और उनको ज़मीन की इन्तिहा से सुसकार कर बुलाएगा; और देख वह ~दौड़े चले आएँगे।

²⁷~न कोई उनमें थकेगा न फिसलेगा, न कोई ऊँघेगा न सोएगा, न उनका कमरबन्द खुलेगा और न उनकी जूतियों का तस्मा टूटेगा।²⁸उनके तीर तेज़ हैं और उनकी सब कमानें कशीदा होंगी, उनके घोड़ों के सुम चक्रमाक्र और उनकी गाड़ियाँ गिर्दबाद की तरह होंगी।

²⁹~वह शेरनी की तरह गरजेंगे, हाँ वह जवान शेरों की तरह दहाड़ेंगे; वह गुर्रा कर शिकार पकड़ेंगे और उसे बे रोकटोक ले जाएँगे, कोई बचानेवाला न होगा।³⁰और उस रोज़ वह उन पर ऐसा शोर मचाएँगे जैसा समन्दर का शोर होता है; ~और अगर कोई इस मुल्क पर नज़र करे, ~तो बस, ~अन्धेरा और तंगहाली है, ~और रोशनी उसके बादलों से तारीक हो जाती है।

Chapter 6

¹जिस साल में उज़्जियाह बादशाह ने वफ़ात पाई मैंने खुदावन्द को एक बड़ी बुलन्दी पर ऊँचे तख़्त पर बैठे देखा, और उसके लिबास के दामन से हैकल मा'मूर हो गई।²~उसके आस-पास सराफ़ीम खड़े थे, जिनमें से हर एक के छः बाज़ू थे; और हर एक दो से अपना मुँह ढाँपे था और दो से पाँव और दो से उड़ता था।

³और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा, कुदूस, कुदूस, कुदूस रब्ब-उल-अफ़वाज है; सारी ज़मीन उसके जलाल से मा'मूर है।"

⁴~और पुकारने वाले की आवाज़ के ज़ोर से आस्तानों की बुनियादें हिल गईं, और मकान धुँवें से भर गया।⁵तब मैं बोल उठा, कि मुझ पर अफ़सोस! मैं तो बर्बाद हुआ! क्योंकि मेरे होंट नापाक हैं और नजिस लब ~लोगों में बसता हूँ, क्योंकि मेरी आँखों ने बादशाह रब्ब-उल-अफ़वाज को देखा!"

⁶~उस वक़्त सराफ़ीम में से एक सुलगा हुआ कोयला जो उसने दस्तपनाह से मज़बह पर से उठा लिया, अपने हाथ में लेकर उड़ता हुआ मेरे पास आया,⁷और उससे मेरे मुँह को छुआ और कहा, "देख, इसने तेरे लबों को छुआ; इसलिए तेरी बदकिरदारी दूर हुई, और तेरे गुनाह का कफ़ारा हो गया।"

⁸उस वक़्त मैंने खुदावन्द की आवाज़ सुनी जिसने फ़रमाया मैं किसको भेजूँ और हमारी तरफ़ से कौन जाएगा?" तब मैंने 'अज़ की, "मैं हाज़िर हूँ! मुझे भेज।"⁹और उसने फ़रमाया, "जा, और इन लोगों से कह, कि 'तुम सुना करो लेकिन समझो नहीं, तुम देखा करो लेकिन बूझो नहीं।'

¹⁰~तू इन लोगों के दिलों को चर्बा दे, और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आँखें बन्द कर दे; ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें और अपने कानों से सुनें और अपने दिलों से समझ लें, और बाज़ आएँ और शिफ़ा पाएँ।"

¹¹~तब मैंने कहा, ऐ खुदावन्द ये कब तक? "उसने जवाब दिया, जब तक बस्तियाँ वीरान न हों और कोई बसनेवाला न रहे, और घर बे-चराग़ न हों, और~ज़मीन सरासर उजाड़ न हो जाए;¹²और खुदावन्द आदमियों को दूर कर दे, और इस सरज़मीन में मतरूक मक़ाम बकसरत हों।

¹³~और अगर उसमें दसवाँ हिस्सा बाक़ी भी बच जाए, तो वह फिर भसम किया जाएगा; लेकिन वह बुत्त और बलूत की तरह होगा कि बावजूद यह कि वह काटे जाएँ तोभी उनका टुन्ड बच रहता है, इसलिए उसका टुन्ड एक मुकद्दस तुख़्म होगा।"

Chapter 7

¹~और शाह-ए-यहूदाह आखज़ बिन यूताम बिन उज़्ज़ियाह के दिनों में यूँ हुआ कि रज़ीन, शाह-ए-इराम फ़िक्रह बिन रमलियाह, शाह-ए-इसाईल ने यरुशलीम पर चढ़ाई की; लेकिन उस पर ग़ालिब न आ सके।²~उस वक़्त दाऊद के घराने को यह ख़बर दी गई कि अराम इफ़्राईम के साथ मुत्तहिद है इसलिए उसके दिल ने और उसके लोगों के दिलों ने यूँ जुम्बिश खाई, जैसे जंगल के दरख़्त आँधी से जुम्बिश खाते हैं।

³तब ख़ुदावन्द ने यसा'याह को हुक्म किया, कि "तू अपने बेटे शियार याशूब को लेकर ऊपर के चश्मे की नहर के सिरे पर, जो धोबियों के मैदान के रास्ते में है, आखज़ से मुलाक़ात कर, ⁴और उसे कह, 'ख़बरदार हो, और बेक्रार न हो; इन लुक्कियों के दो धुवें वाले टुकड़ों से, या'नी अरामी रज़ीन और रमलियाह के बेटे की क्रहरअंगेज़ी से न डर, और तेरा दिल न घबराए।

⁵~चूँकि अराम और इफ़्राईम और रमलियाह का बेटा तेरे खिलाफ़ मश्वरत करके कहते हैं, 'कि आओ, हम यहूदाह पर चढ़ाई करें और उसे तंग करें, और अपने लिए उसमें रखना पैदा करें और ताबील के बेटे को उसके बीच तख़्तनशीन करें।

⁷इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है कि इसको पायदारी नहीं, बल्कि ऐसा हो भी नहीं सकता।⁸~क्यूँकि अराम का दारुस-सल्लनत दमिशक़ ही होगा, और दमिशक़ का सरदार रज़ीन; और पैसठ बरस के अन्दर इफ़्राईम ऐसा कट जाएगा कि क़ौम न रहेगी।⁹इफ़्राईम का भी दारुस-सल्लनत सामरिया ही होगा, और सामरिया का सरदार रमलियाह का बेटा। अगर तुम ईमान न लाओगे तो यक़ीनन तुम भी क़ायम न रहोगे।'

¹⁰फिर ~ख़ुदावन्द ने आखज़ से फ़रमाया, ¹¹~ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से कोई निशान तलब कर चाहे नीचे पाताल में चाहे ऊपर बुलन्दी पर।"¹²~लेकिन आखज़ ने कहा, कि मैं तलब नहीं करूँगा और ख़ुदावन्द को नहीं, आज़माऊँगा।"

¹³तब उसने कहा, ऐ दाऊद के खान्दान, अब सुनो क्या तुम्हारा इन्सान को बेज़ार करना कोई हल्की बात है कि मेरे ख़ुदा को भी बेज़ार करोगे?¹⁴लेकिन ख़ुदावन्द आप तुम को एक निशान बख़्शेगा। देखो, एक कुँवारी हामिला होगी, और बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम ' इम्मानुएल रखेगी।¹⁵~ वह दही और शहद खाएगा, जब तक कि वह नेकी और बदी के रद्द-ओ-कुबूल के क़ाबिल न हो।

¹⁶लेकिन इससे पहले कि ये लड़का नेकी और बदी के रद्द-ओ-कुबूल के क़ाबिल हो, ये मुल्क जिसके दोनों बादशाहों से तुझ को नफ़रत है, वीरान हो जाएगा।

¹⁷~ख़ुदावन्द तुझ पर और तेरे लोगों और तेरे बाप के घराने पर ऐसे दिन लाएगा जैसे उस दिन से जब इफ़्राईम यहूदाह से जुदा हुआ, आज तक कभी न लाया या'नी शाह-ए-असूर के दिन।

¹⁸और उस वक़्त यूँ होगा कि ख़ुदावन्द मिस्र की नहरों के उस सिरे पर से मक्खियों को, और असूर के मुल्क से ज़म्बूरों को सुसकार कर बुलाएगा।¹⁹इसलिए वह सब आएँगे और वीरान वादियों में, और चट्टानों की दराइयों में, और सब ख़ारिस्तानों में, और सब चरागाहों में छा जाएँगे।

²⁰~उसी रोज़ ख़ुदावन्द उस उस्तरे से जो दरिया-ए-फ़रात के पार से किराये पर लिया या'नी असूर के बादशाह से, सिर और पाँव के बाल मूण्डेगा और इससे दाढ़ी भी ख़ुर्ची जाएगी।²¹~और उस वक़्त यूँ होगा कि आदमी सिर्फ़ एक गाय और दो भेड़ें पालेगा,²²~और उनके दूध की फ़िरावानी से लोग मक्खन खाएँगे; क्यूँकि हर एक जो इस मुल्क में बच रहेगा मक्खन और शहद ही खाया करेगा।

²³~और उस वक़्त यह हालत हो जाएगी कि हर जगह हज़ारों रुपये के बाग़ों की जगह ख़ारदार झाड़ियाँ होंगी।²⁴~लोग तीर और कमाने लेकर वहाँ आयेंगे क्यूँकि तमाम मुल्क काँटों और झाड़ियों से पुर होगा।²⁵~मगर उन सब पहाड़ियों पर जो कुदाली से खोदी जाती थीं, झाड़ियों और काँटों के खौफ़ से तू फिर न चढ़ेगा लेकिन वह गाय बैल और भेड़ बकरियों की चरागाह होंगी।

Chapter 8

¹फिर खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि एक बड़ी तख्ती ले और उस पर साफ़ साफ़ लिख महीर शालाल हाशबज़ के लिए,² और दो दियानतदार गवाहों को या'नी ऊरियाह काहिन को और ज़करियाह बिन यबरकियाह को गवाह बना।"

³और मैं नबीय्या के पास गया; तब वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि उसका नाम महीर-शालाल हाशबज़ रख,⁴ क्योंकि इससे पहले कि ये लड़का अब्बा और अम्मा कहना सीखे दमिश्क़ का माल और सामरिया की लूट को उठवाकर शाह-ए-असूर के सामने ले जाएँगे।"

⁵~फिर खुदावन्द ने मुझ से फ़रमाया,⁶"चूँकि इन लोगों ने चश्मा-ए-शीलोख़ के आहिस्ता रो पानी को रद्द किया, और रज़ीन और रमलियाह के बेटे पर माइल हुए;⁷ इसलिए अब देख, खुदावन्द दरिया-ए-फ़रात के सख़्त शदीद सैलाब को या 'नी शाह-ए-असूर और उसकी सारी शौकत को, इन पर चढ़ा जाएगा; और वह अपने सब नालों पर और अपने सब किनारों से बह निकलेगा;

⁸और वह यहूदाह में बढ़ता चला जाएगा, और उसकी तुग़ियानी बढ़ती जाएगी, वह गर्दन तक पहुँचेगा; और उसके परो के फैलाव से तेरे मुल्क की सारी वुस'अत ऐ इम्मानुएल, छिप जायेगी |

⁹ऐ लोगों, धूम मचाओ, लेकिन तुम टुकड़े-टुकड़े किए जाओगे; और ऐ दूर-दूर के मुल्कों के बाशिन्दो, सुनो: कमर बाँधो, लेकिन तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े किए जाएँगे; कमर बाँधो, लेकिन तुम्हारे पुर्जे-पुर्जे होंगे।¹⁰ तुम मन्सूबा बाँधो, लेकिन वह बातिल होगा; तुम कुछ कहो, और उसे क़याम न होगा; क्योंकि खुदा हमारे साथ है।

¹¹~क्योंकि खुदावन्द ने जब उसका हाथ मुझ पर ग़ालिब हुआ, और इन लोगों के रास्ते में चलने से मुझे मना' किया तो मुझ से यूँ फ़रमाया कि,¹²"तुम उस सबको जिसे यह लोग साज़िश कहते हैं, साज़िश न कहो, और जिससे वह डरते हैं, तुम न डरो और न घबराओ।¹³ तुम रब्ब-उल-अफ़वाज ही को पाक जानो, और उसी से डरो और उसी से खाइफ़ रहो।

¹⁴~और वह एक मक़दिस होगा, लेकिन इस्राईल के दोनों घरानों के लिए सदमा और ठोकर का पत्थर, और यरुशलीम के बाशिन्दों के लिए फ़न्दा और दाम होगा।

¹⁵उनमें से बहुत से उससे ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और पाश पाश होंगे, और दाम में फँसेंगे और पकड़े जाएँगे।

¹⁶~शहादत नामा बन्द कर दो, और मेरे शागिदों के लिए शरी'अत पर मुहर करो।¹⁷ मैं भी खुदावन्द की राह देखूँगा, जो अब या'कूब के घराने से अपना मुँह छिपाता है; मैं उसका इन्तिज़ार करूँगा।¹⁸~देख, मैं उन लड़कों के साथ जो खुदावन्द ने मुझे बरख़्शे, रब्ब-उल-अफ़वाज की तरफ़ से जो सिय्यून पहाड़ में रहता है, बनी-इस्राईल के बीच निशानों और 'अजाइब-ओ-गराइब के लिए हूँ।

¹⁹और जब वह तुमसे कहें, "तुम जिन्नात के यारों और अफ़सूंगरों की जो फुसफुसाते और बड़बड़ाते हैं तलाश करो," तो तुम कहो, "क्या लोगों को मुनासिब नहीं कि अपने खुदा के तालिब हों? क्या जिन्दों के बारे में मुद्दों से सवाल करें?"²⁰ शरी'अत और शहादत पर नज़र करो! अगर वह इस कलाम के मुताबिक़ न बोलें तो उनके लिए सुबह न होगी।

²¹तब वह मुल्क में भूके और खस्ताहाल फिरेंगे और यूँ होगा कि जब वह भूके हों तो जान से बेज़ार होंगे, और अपने बादशाह और अपने खुदा पर ला'नत करेंगे और अपने मुँह आसमान की तरफ़ उठाएँगे,²²~फिर ज़मीन की तरफ़ देखेंगे और नागहान तंगी और तारीकी, या'नी ज़ुल्मत-ए-अन्दोह और तीरगी में खदेड़े जाएँगे।

Chapter 9

¹~लेकिन अन्दोहगीन की तीरगी जाती रहेगी। उसने पिछले ज़माने में ज़बूलून और नफ़्ताली के 'इलाकों को ज़लील किया, लेकिन आखिरी ज़माने में क्रौमों के ग़लील में दरिया की तरफ़ यरदन के पार बुजुर्गी देगा।²जो लोग तारीकी में चलते थे उन्होंने बड़ी रोशनी देखी, जो मौत के साये के मुल्क में रहते थे, उन पर नूर चमका।

³तूने क्रौम को बढ़ाया, तूने उनकी शादमानी को ज़्यादा किया; वह तेरे सामने ऐसे खुश हैं, जैसे फ़सल काटते वक़्त और ग़नीमत की तक्रसीम के वक़्त लोग खुश होते हैं।

⁴क्योंकि तूने उनके बोझ के जूए, उनके कन्धे के लठ, और उन पर ज़ुल्म करनेवाले की लाठी को ऐसा तोड़ा है जैसा मिदियान के दिन में किया था।⁵क्योंकि जंग में मुसल्लह मर्दों के तमाम सिलाह और खून आलूदा कपड़े जलाने के लिए आग का ईन्धन होंगे।

⁶इसलिए हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हम को एक बेटा बख़्शा गया, और सलतनत उसके कंधे पर होगी, उसका नाम 'अजीब सलाहकार खुदा-ए-क्रादिर अब्दियत ~का बाप, सलामती का शहज़ादा होगा।⁷~उसकी सलतनत के इक्रबाल और सलामती की कुछ इन्तिहा न होगी, वह दाऊद के तख़्त और उसकी ममलुकत पर आज से हमेशा तक हुक्मरान रहेगा और 'अदालत और सदाक़त से उसे क़याम बख़्शेगा रब्ब-उल-अफ़वाज़ की ग़य्यूरी ये करेगी।

⁸~ख़ुदावन्द ने या'क़ूब के पास पैग़ाम भेजा, और वह इस्राईल पर नाज़िल हुआ;⁹~और सब लोग मा'लूम करेंगे, या'नी बनी इफ़्राईम और अहल-ए-सामरिया जो तकब्बुर और सख़्त दिली से कहते हैं,¹⁰कि ईंटें गिर गईं लेकिन हम तराशे हुए पत्थरों की 'इमारत बनायेंगे गूलर के दरख़्त काटे गए, लेकिन हम देवदार लगाएँगे।"

¹¹इसलिए ख़ुदावन्द रज़ीन की मुखालिफ़ गिरोहों को उन पर चढ़ा लाएगा, और उनके दुश्मनों को ख़ुद मुसल्लह करेगा।¹²~आगे अरामी होंगे और पीछे फ़िलिस्ती, और वह मुँह फैलाकर इस्राईल को निगल जाएँगे; बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया, बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

¹³तोभी लोग अपने मारनेवाले की तरफ़ न फिरे और रब्ब-उल-अफ़वाज़ के तालिब न हुए।¹⁴इसलिए ख़ुदावन्द इस्राईल के सिर और दुम और ख़ास-ओ-'आम को एक ही दिन में काट डालेगा।¹⁵~बुजुर्ग और 'इज़ज़तदार आदमी सिर है और जो नबी झूठी बातें सिखाता है वही दुम है;

¹⁶क्योंकि जो इन लोगों के पेशवा हैं इनसे ख़ताकारी कराते हैं और उनके पैरों निगले जाएँगे।¹⁷ख़ुदावन्द उनके जवानों से ख़ुशनूद न होगा और वह उनके यतीमों और उनकी बेवाओं पर कभी रहम न करेगा क्योंकि उनमें हर एक बेदीन और बदकिरदार है और हर एक मुँह हिमाक़त उगलता है बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

¹⁸क्योंकि शरारत आग की तरह जलाती है, वह ख़स-ओ-ख़ार को खा जाती है; बल्कि वह जंगल की गुन्जान झाड़ियों में शोलाज़न होती है, और वह धुंवेँ के बादल में ऊपर को उड़ जाती है।¹⁹रब्ब-उल-अफ़वाज़~के क्रहर से ये मुल्क जलाया गया, और लोग ईन्धन की तरह हैं; कोई अपने भाई पर रहम नहीं करता।

²⁰~और कोई दहनी तरफ़ से छीनेगा लेकिन भूका रहेगा, और वह बाएँ तरफ़ से खाएगा लेकिन सेर न होगा; उनमें से हर एक आदमी अपने बाजू का गोश्त खाएगा;²¹मनस्सी इफ़्राईम का और इफ़्राईम मनस्सी का और वह ~मिलकर यहूदाह के मुखालिफ़ होंगे। बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

Chapter 10

¹उन पर अफ़सोस जो बे इन्साफ़ी से फ़ैसले करते हैं और उन पर जो जुल्म की रूबकारें लिखते हैं;²ताकि ग़रीबों को 'अदालत से महरूम करें, और जो मेरे लोगों में मोहताज हैं उनका हक़ छीन लें, और बेवाओं को लूटें, और यतीम उनका शिकार हों!

³इसलिए तुम मुताल्बे के दिन और उस ख़राबी के दिन, जो दूर से आएगी क्या करोगे? तुम मदद के लिए किसके पास दौड़ोगे? और तुम अपनी शौकत कहाँ रख छोड़ोगे? वह क़ैदियों में घुसेंगे और मक़तूलों के नीचे छिपेंगे।~बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

⁵असूर या 'नी मेरे क्रहर की लाठी पर अफ़सोस! जो लठ उसके हाथ में है, वह मेरे क्रहर का हथियार है।⁶मैं उसे एक रियाकार क़ौम पर भेजूंगा, और उन लोगों की मुख़ालिफ़त में जिन पर मेरा क्रहर है; मैं उसे हुक्म-ए-क़तई दूँगा कि माल लूटे और ग़नीमत ले ले, और उनको बाज़ारों की कीचड़ की तरह लताड़े।

⁷~लेकिन उसका ये ख़याल नहीं है, और उसके दिल में ये ख़्वाहिश नहीं कि ऐसा करे; बल्कि उसका दिल ये चाहता है कि क़त्ल करे और बहुत सी क़ौमों को काट डाले।⁸क्योंकि वह कहता है, "क्या मेरे हाकिम सब के सब बादशाह नहीं?"⁹~क्या कलनो करकिमीस की तरह नहीं और हमात अरफ़ाद की तरह नहीं और सामरिया दमिशक़ की तरह नहीं है?

¹⁰जिस तरह मेरे हाथ ने बुतों की ममलुकतें हासिल कीं, जिनकी खोदी हुई मूरतें यरुशलीम और सामरिया की मूरतों से कहीं बेहतर थीं;¹¹क्या जैसा मैंने सामरिया से और उसके बुतों से किया, वैसा ही यरुशलीम और उसके बुतों से न करूँगा?"

¹²~लेकिन मैं हूँ कि जब ख़ुदावन्द सिप्थून पहाड़ पर और यरुशलीम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब वह फ़रमाता है)मैं शाह-ए-असूर को उसके गुस्ताख़ दिल के समरह की और उसकी बुलन्द नज़री और घमण्ड की सज़ा दूँगा।¹³क्योंकि वह कहता है, "मैंने अपने बाजू की ताक़त से और अपनी 'अक्ल से ये किया है, क्योंकि मैं 'अक्लमन्द हूँ, हाँ, मैंने क़ौमों की हदों को सरका दिया और उनके ख़ज़ाने लूट लिए, और मैंने जंगी मर्द की तरह तख़्त नशीनों को उतार दिया।

¹⁴मेरे हाथ ने लोगों की दौलत को घोंसले की तरह पाया, और जैसे कोई उन अण्डों को जो मतरूक पड़े हों समेट ले, वैसे ही मैं सारी ज़मीन पर क़ाबिज़ हुआ और किसी को ये हिम्मत न हुई कि पर हिलाए या चोंच खोले या चहचहाये~।

¹⁵क्या कुल्हाड़ा उसके रू-ब-रू जो उससे काटता है लाफ़ज़नी करेगा अरक़श के सामने शेख़ी मारेगा जैसे 'असा अपने उठानेवाले को हरकत देता है और छड़ी आदमी को उठाती है।¹⁶~इस वजह से ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ उसके फ़र्बा जवानों पर लाग़री भेजेगा और उसकी शौकत के नीचे एक सोज़िश आग़ की सोज़िश की तरह भड़काएगा।

¹⁷बल्कि इस्राईल का नूर ही आग़ बन जाएगा और उसका कुहूस एक शो'ला होगा, और वह उसके ख़स-ओ-ख़ार को एक दिन में जलाकर भसम कर देगा।¹⁸और उसके बन और बाग़ की ख़ुशनुमाई को बिल्कुल बर्बाद-ओ-हलाक़ कर देगा" और वह ऐसा हो जाएगा जैसा कोई मरीज़ जो ग़श खाए।¹⁹और उसके बाग़ के दरख़्त ऐसे थोड़े बाक़ी बचेंगे कि एक लड़का भी उनको गिन कर लिख ले।

²⁰और उस वक़्त मैं हूँ कि वह जो बनी इस्राईल में से बाक़ी रह जाएँगे और या'क़ूब के घराने में से बच रहेंगे, उस पर जिसने उनको मारा फिर भरोसा न करेंगे; बल्कि ख़ुदावन्द इस्राईल के कुहूस पर सच्चे दिल से भरोसा करेंगे।²¹एक बक्रिया या'नी या'क़ूब का बक्रिया ख़ुदा-ए-क़ादिर की तरफ़ फिरेगा।

²²क्योंकि ऐ इस्राईल, तेरे लोग समन्दर की रेत की तरह हों, तोभी उनमें का सिर्फ़ एक बक्रिया वापस आएगा; बर्बादी पूरे 'अद्ल से मुक़र्रर हो चुकी है।²³क्योंकि ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ मुक़र्ररा बर्बादी तमाम इस ज़मीन पर ज़ाहिर करेगा।

²⁴~लेकिन-ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़-फ़रमाता है ऐ-मेरे लोगो, जो सिप्थून में बसते हो असूर से न डरो, अगरचे कि वह तुमको लठ से मारे और मिस्र की तरह तुम पर अपना 'असा उठाए।²⁵लेकिन थोड़ी ही देर है कि जोश-ओ-ख़रोश ख़त्म होगा और उनकी हलाक़त से मेरे क्रहर की तस्क़ीन होगी।

²⁶क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़ मिदियान की ख़ूरेज़ी के मुताबिक़ जो 'ओरेब की चट्टान पर हुई, उस पर एक कोड़ा उठाएगा; उसका 'असा समन्दर पर होगा, हाँ वह उसे मिस्र की तरह उठाएगा।²⁷~और उस वक़्त मैं हूँ कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से और उसका बोझ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा और वह बोझ मसह की वजह से तोड़ा जाएगा।"

²⁸~वह अय्यात में आया है, मज़ून में से होकर गुज़र गया; उसने अपना अस्बाब मिकमास में रखबा²⁹वह घाटी से पार गए उन्होंने जिब'आ में रात काटी, रामा परेशान है; जिब'आ-ए-साऊल भाग निकला है।

³⁰ऐ जल्लीम की बेटी, चीख़ मार! ऐ ग़रीब 'अन्तोत, अपनी आवाज़ लईस को सुना!³¹मदमीना चल निकला, जेबीम के रहने वाले निकल भागे।³²~ वह आज के दिन नोब में खेमाज़न होगा तब वह दुख़तर-ए-सिप्थून के पहाड़ या'नी कोह-ए-यरुशलीम पर हाथ उठा कर धमकाएगा।

³³देखो, ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ हैबतनाक़ तौर से मार कर शाख़ों को छोट डालेगा; क़द्दावर काट डाले जाएँगे और बलन्द पस्त किए जाएँगे।³⁴~और वह जंगल की गुन्जान झाड़ियों को लोहे से काट डालेगा, और लुबनान एक ज़बरदस्त के हाथ से गिर जाएगा।

Chapter 11

¹~और यस्सी के तने से एक कोंपल निकलेगी और उसकी जड़ों से एक बारआवर शाख पैदा होगी।²और खुदावन्द की रूह उस पर ठहरेगी हिकमत और खिरद की रूह, मसलहत और कुदरत की रूह, मा'रिफत और खुदावन्द के खौफ की रूह।

³और उसकी शादमानी खुदावन्द के खौफ में होगी। और वह न अपनी आँखों के देखने के मुताबिक इन्साफ़ करेगा, और न अपने कानों के सुनने के मुताबिक़ फ़ैसला करेगा; बल्कि वह रास्ती से ग़रीबों का इन्साफ़ करेगा, और 'अद्ल से ज़मीन के खाकसारों का फ़ैसला करेगा; और वह अपनी ज़बान के 'असा से ज़मीन को मारेगा, और अपने लबों के दम से शरीरों को फ़ना कर डालेगा।⁵~उसकी कमर का पटका रास्तबाज़ी होगी और उसके पहलू पर वफ़ादारी का पटका होगा।

⁶तब भेड़िया बरें के साथ रहेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठेगा, और बछड़ा और शेर बच्चा और पला हुआ बैल पेशरवी करेगा।⁷गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे और शेर-ए-बबर बैल की तरह भूसा खाएगा।

⁸और दूध पीता बच्चा साँप के बिल के पास खेलेगा, और वह लड़का जिसका दूध छुड़ाया गया हो अफ़ई के बिल में हाथ डालेगा।⁹वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न नुक्सान पहुँचाएँगे न हलाक करेंगे क्योंकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है उसी तरह ज़मीन खुदावन्द के इरफ़ान से मा'मूर होगी।

¹⁰और उस वक़्त यूँ होगा कि लोग यस्सी की उस जड़ के तालिब होंगे, जो लोगों के लिए एक निशान है; और उसकी आरामगाह जलाली होगी।¹¹उस वक़्त यूँ होगा कि खुदावन्द दूसरी मर्तबा अपना हाथ बढ़ाएगा कि अपने लोगों का बक्रिया या जो बच रहा हो, असूर और मिस्र और फ़त्रूस और कूश और इलाम और सिन'आर और हमात और समन्दर की अतराफ़ से वापस लाए।

¹²और वह क्रौमों के लिए एक झंडा खड़ा करेगा और उन इस्राईलियों को जो खारिज किए गए हों जमा' करेगा; और सब बनी यहूदाह को जो तितर बितर होंगे, ज़मीन के चारों तरफ़ से इकट्ठा करेगा।¹³तब बनी इफ़्राईम में हसद न रहेगा और बनी यहूदाह के दुश्मन काट डाले जाएँगे, बनी इफ़्राईम बनी यहूदाह पर हसद न करेंगे और बनी यहूदाह बनी इफ़्राईम से कीना न रखेंगे।

¹⁴और वह पश्चिम की तरफ़ फ़िलिस्तिनियों के कंधों पर झपटेंगे, और वह मिलकर पूरब के बसनेवालों को लूटेंगे, और अदोम और मोआब पर हाथ डालेंगे; और बनी 'अम्मोन उनके फ़रमाबरदार होंगे।¹⁵तब खुदावन्द बहर-ए-मिस्र की खलीज को बिल्कुल हलाक कर देगा, और अपनी बाद-ए-समूम से दरिया-ए-फ़रात पर हाथ चलाएगा और उसको सात नाले कर देगा, ऐसा करेगा कि लोग जूते पहने हुए पार चले जाएँगे।

¹⁶और उसके बाक़ी लोगों के लिए जो असूर में से बच रहेंगे, एक ऐसी शाहराह होगी जैसी बनी-इस्राईल के लिए थी, जब वह मुल्क-ए-मिस्र से निकले।

Chapter 12

¹और उस वक़्त तू कहेगा, ऐ ख़ुदावन्द मैं तेरी तम्जीद करूँगा; कि अगरचे तू मुझ से नाख़ुश था, तोभी तेरा क्रहर टल गया और तूने मुझे तसल्ली दी।²"देखो, ख़ुदा मेरी नजात है; मैं उस पर भरोसा करूँगा और न डरूँगा, क्योंकि याह-यहोवाह मेरा ज़ोर और मेरा सरोद है और वह मेरी नजात हुआ है।"

³फिर तुम ख़ुश होकर नजात के चश्मों से पानी भरोगे।⁴और उस वक़्त तुम कहोगे, ख़ुदावन्द की तम्जीद करो, उससे दू'आ करो लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो, और कहो कि उसका नाम बुलन्द है।

⁵~ख़ुदावन्द की मदद सराई करो; क्योंकि उसने जलाली काम किये जिनको तमाम दुनिया जानती है | ⁶ऐ सिय्यून की बसनेवाली, तू चिल्ला और ललकार; क्योंकि तुझमें इस्राईल का कुदूस बुजुर्ग है।"

Chapter 13

¹~बाबुल के बारे में नबुव्वत जो यसा'याह-बिन-आमूस ने ख्वाब में पाया।²तुम नंगे पहाड़ पर एक झण्डा खड़ा करो, उनको बुलन्द आवाज़ से पुकारो और हाथ से इशारा करो कि वह सरदारों के दरवाज़ों के अन्दर जाएँ।³मैंने अपने मख्सूस लोगों को हुक्म किया; मैंने अपने बहादुरों को जो मेरी खुदावन्दी से मसरूर हैं, बुलाया है कि वह मेरे क्रहर को अन्जाम दें।

⁴~पहाड़ों में एक हुजूम का शोर है, जैसे बड़े लश्कर का ! ममलुकत की क्रौमों के इजितमा'अ का गोगा है। रब्ब-उल-अफ़वाज जंग के लिए लश्कर जमा' करता है।⁵वह दूर मुल्क से आसमान की इन्तिहा से आते हैं, हाँ खुदावन्द और उसके क्रहर के हथियार, ताकि तमाम मुल्क को बर्बाद करें।

⁶~अब तुम वावैला करो, क्योंकि खुदावन्द का दिन नज़दीक है; वह क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से बड़ी हलाकत की तरह आएगा।⁷इसलिए सब हाथ ढीले होंगे, और हर एक का दिल पिघल जाएगा",⁸और वह परेशान होंगे जाँकनी और गमगीनी उनको आ लेगी वह ऐसे दर्द में मुब्तिला होंगे जैसे 'औरत ज़िह की हालत में। वह सरासीमा होकर एक दूसरे का मुँह देखेंगे, और उनके चहरे शो'लानुमा होंगे।

⁹~देखो खुदावन्द का वह दिन आता है जो ग़ज़ब में और क्रहर-ए-शदीद में सख़्त दुरुस्त हैं, ताकि मुल्क को वीरान करे और गुनाहगारों को उस पर से बर्बाद-ओ-हलाक कर दे।¹⁰क्योंकि आसमान के सितारे और कवाकिब बेनूर हो जायेंगे, और सूरज तुलू' होते होते तारीक हो जाएगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा।

¹¹और मैं ज़हान को उसकी बुराई की वजह से, और शरीरों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा; और मैं मगरूरों का गुरूर हलाक और हैबतनाक लोगों का घमण्ड पस्त कर दूँगा।¹²मैं आदमी को ख़ालिस सोने से, बल्कि इन्सान को ओफ़ीर के कुन्दन से भी कमयाब बनाऊँगा।

¹³इसलिए मैं आसमानों को लरज़ाऊँगा, और रब्ब-उल-अफ़वाज के ग़ज़ब से और उसके क्रहर-ए-शदीद के रोज़ ज़मीन अपनी जगह से झटकी जाएगी।¹⁴और यूँ होगा कि वह खदेड़े हुए आहू, और लावारिस भेड़ों की तरह होंगे; उनमें से हर एक अपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जिह होगा, और हर एक अपने वतन को भागेगा।

¹⁵हर एक जो मिल जाए आर-पार छेदा जाएगा, और हर एक जो पकड़ा जाए तलवार से क़त्ल किया जाएगा।¹⁶और उनके बाल बच्चे उनकी आँखों के सामने पार-पारा होंगे; उनके घर लूटे जाएँगे, और उनकी 'औरतों की बेहुरमती होगी।

¹⁷देखो मैं मादियों को उनके खिलाफ़ बरअंगेखता ~करूँगा, जो चाँदी को खातिर में नहीं लाते और सोने से खुश नहीं होते।¹⁸उनकी कमानें जवानों को टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगी और वह शीरख़वारों पर तरस न खाएँगे, और छोटे बच्चों पर रहम की नज़र न करेंगे।

¹⁹और बाबुल जो ममलुकतों की हशमत और कस्दियों की बुजुर्गी की रोनक़ है सदूम और 'अमूरा की तरह हो जाएगा जिनको खुदा ने उलट दिया।²⁰वह हमेशा तक आबाद न होगा और नसल-दर-नसल उसमें कोई न बसेगा; हरगिज़ 'अरब खेमें न लगाएँगे, वहाँ गड़रिये गल्लों को न भटकायेंगे

²¹लेकिन जंगल के जंगली दरिन्दे वहाँ बैठेंगे और उनके घरों में उल्लू भरे होंगे; वहाँ शुतरमुर्ग़ बसेंगे, और छगमानस वहाँ नाचेंगे।²²और गीदड़ उनके 'आलीशान मकानों में और भेड़िये उनके रंगमहलों में चिल्लाएँगे; उसका वक़्त नज़दीक आ पहुँचा है, और उसके दिनों को अब तूल नहीं होगा।

Chapter 14

¹~क्योंकि खुदावन्द या'कूब पर रहम फ़रमाएगा, बल्कि वह इस्राईल को भी बरगुजीदा करेगा और उनको उनके मुल्क में फिर क़ायम करेगा और परदेसी उनके साथ मेल करेंगे और या'कूब के घराने से मिल जाएँगे।²~और लोग उनको लाकर उनके मुल्क में पहुंचाएंगे और ~इस्राईल का घराना खुदावन्द की सरज़मीन में उनका मालिक होकर उनको गुलाम और लौंडियाँ बनाएगा क्योंकि वह अपने गुलाम करने वालों को गुलाम करेंगे, और अपने जुल्म करने वालों पर हुक्मत करेंगे।

³और यूँ होगा कि जब खुदावन्द तुझे तेरी मेहनत-ओ-मशक्कत से, और सख़्त खिदमत से जो उन्होंने तुझ से कराई, राहत बख़्शेगा,⁴तब तू शाह-ए-बाबुल के खिलाफ़ यह मसल लाएगा और कहेगा, कि 'ज़ालिम कैसा हलाक हो गया, और ग़ासिब कैसा हलाक हुआ।

⁵खुदावन्द ने शरीरों का लठ, या'नी ~बेइन्साफ़ हाकिमों का 'असा तोड़ डाला;'⁶वही जो लोगों को क्रहर से मारता रहा और क़ौमों पर ग़ज़ब के साथ हुक्मरानी करता रहा, और कोई रोक न सका।

⁷सारी ज़मीन पर आराम-ओ-आसाइश है, वह अचानक गीत गाने लगते हैं।⁸हाँ, सनोबर के दरख़्त और लुबनान के देवदार तुझ पर यह कहते हुए खुशी करते हैं, कि 'जब से तू गिराया गया, तब से कोई काटनेवाला हमारी तरफ़ नहीं आया।'⁹पाताल नीचे से तेरी वजह से जुम्बिश खाता है कि तेरे आते वक़्त तेरा इस्तक्रबाल करे; वह तेरे लिए मुर्दों को या'नी ज़मीन के सब सरदारों को जगाता है; वह क़ौमों के सब बादशाहों को उनके तख़्तों पर से उठा खड़ा करता है।

¹⁰वह सब तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी तरह 'आजिज़ हो गया; तू ऐसा हो गया जैसे हम हैं?'¹¹तेरी शान-ओ-शौकत और तेरे साज़ों की खुश आवाज़ी पाताल में उतारी गई; ~तेरे नीचे कीड़ों का फ़र्श हुआ, और कीड़े ही तेरा बालापोश बने।

¹²~ऐ सुबह ~के सितारे, तू क्यूँकर आसमान से गिर पड़ा। ऐ क़ौमों को पस्त करनेवाले, तू क्यूँकर ज़मीन पर पटका गया!¹³तू तो अपने दिल में कहता था, मैं आसमान पर चढ़ जाऊँगा; मैं अपने तख़्त को खुदा के सितारों से भी ऊँचा करूँगा, और मैं उत्तरी अतराफ़ में जमा'अत के पहाड़ पर बैठूँगा;¹⁴मैं बादलों से भी ऊपर चढ़ जाऊँगा, मैं खुदा त'आला की तरह हूँगा।'

¹⁵लेकिन तू पाताल में गढ़े की तह में उतारा जाएगा।¹⁶और जिनकी नज़र तुझ पर पड़ेगी, तुझे ग़ौर से देखकर कहेंगे, 'क्या यह वही शख्स है जिसने ज़मीन को लरज़ाया और ममलुकतों को हिला दिया;'¹⁷जिसने ज़हान को वीरान किया और उसकी बस्तियाँ उजाड़ दीं, जिसने अपने गुलामों को आज़ाद न किया कि घर की तरफ़ जाएँ?"

¹⁸क़ौमों के तमाम बादशाह सब के सब अपने अपने घर में शौकत के साथ आराम करते हैं,¹⁹लेकिन तू अपनी क़ब्र से बाहर, निकम्मी शाख़ की तरह निकाल फेंका गया; तू उन मक़तूलों के नीचे दबा है जो तलवार से छेदे गए और गढ़े के पत्थरों पर गिरे हैं, उस लाश की तरह जो पाँवों से लताड़ी गई हो।²⁰तू उनके साथ कभी क़ब्र में दफ़न न किया जाएगा, क्योंकि तूने अपनी ममलुकत को वीरान किया और अपनी र'अय्यत को क़त्ल किया, "बदकिरदारों की नस्ल का नाम बाक़ी न रहेगा।

²¹~उसके फ़र्ज़न्दों के लिए उनके बाप दादा के गुनाहों की वजह से क़त्ल का सामान तैयार करो, ताकि वह फिर उठ कर मुल्क के मालिक न हो जाएँ और इस ज़मीन को शहरों से मा'मूर न करें।"²²क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज~फ़रमाता है, मैं उनकी मुख़ालिफ़त को उठूँगा, और मैं बाबुल का नाम मिटाऊँगा और उनको जो बाक़ी हैं, बेटों और पोतों के साथ काट डालूँगा; यह ~खुदावन्द का फ़रमान है।²³~रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है मैं उसे ख़ार पुशत की मीरास और तालाब बना दूँगा और उसे फ़ना के झाड़ू से साफ़ कर दूँगा।"

²⁴~रब्ब-उल-अफ़वाज~क़सम खाकर फ़रमाता है, कि यक़ीनन जैसा मैंने चाहा वैसा ही हो जाएगा; और जैसा मैंने इरादा किया है, वही वजूद में आयेगा।²⁵मैं अपने ही मुल्क में असूरी को शिकस्त दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे पाँव तले लताडूँगा; तब उसका जूआ उन पर से उतरेगा, और उसका बोझ उनके कंधों पर से टलेगा।"

²⁶सारी दुनिया के ज़रिए' यही है, और सब क़ौमों पर यही हाथ बढ़ाया गया है।²⁷क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज~ने इरादा किया है, कौन उसे बातिल करेगा? और उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोकेगा?

²⁸जिस साल आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई उसी साल यह बार-ए-नबुव्वत आया :²⁹"ऐ कुल फ़िलिस्तीन, तू इस पर खुश न हो कि तुझे मारने वाला लठ टूट गया; क्योंकि साँप की अस्ल से एक नाग निकलेगा, और उसका फल एक उड़नेवाला आग का साँप होगा।³⁰तब ग़रीबों के पहलौठे खाएँगे, और मोहताज़ आराम से सोएँगे; लेकिन मैं तेरी जड़ काल से बर्बाद कर दूँगा, और तेरे बाक़ी लोग क़त्ल किए जाएँगे।

³¹ऐ फाटक, तू वावैला कर; ऐ शहर, तू चिल्ला; ऐ फ़िलिस्तीन, तू बिल्कुल गुदाज़ हो गई! क्योंकि उत्तर से एक धुंवा उठेगा और उसके लश्क़रों में से कोई पीछे न रह जाएगा।"³²उस वक़्त क़ौम के क़ासिदों को कोई क्या जवाब देगा? कि 'खुदावन्द ने सिय्यून को ता'मीर किया है, और उसमें उसके ग़रीब बन्दे पनाह लेंगे।"

Chapter 15

¹मुआब के बारे में नबुव्वत: एक ही रात में 'आर-ए-मोआब खराब और हलाक हो गया; एक ही रात में कीर-ए-मोआब खराब और हलाक हो गया।²बैत और दीबोन ऊँचे मक़ामों पर रोने के लिए चढ़ गए हैं; नबू और मीदबा पर अहल-ए-मोआब वावैला करते हैं; उन सब के सिर मुण्डाए गए और हर एक की दाढ़ी काटी गई।

³~वह अपनी राहों में टाट का कमरबन्द बाँधते हैं, और अपने घरों की छतों पर और बाज़ारों में नौहा करते हुए सब के सब ज़ार ज़ार रोते हैं।⁴हस्बोन और इल्या'ला वावैला करते हैं उनकी आवाज़ यहज़ तक सुनाई देती है; इस पर मोआब के मुसल्लह सिपाही चिल्ला चिल्ला कर रोते हैं~उसकी जान उसमें थरथराती है।

⁵मेरा दिल मोआब के लिए फ़रियाद करता उसके भागने वाले ज़ुगर तक 'अजलत शलेशियाह तक पहुँचे हों वह ~लूहीत की चढ़ाई पर रोते हुए चढ़ जाते, और होरोनायम की राह में हलाकत पर वावैला करते हैं।⁶क्योंकि निमरियम की नहरें खराब हो गईं क्योंकि घास कुम्ला गई और सब्ज़ा मुरझा गया और रोयदगी का नाम न रहा।⁷इसलिए वह फ़िरावान माल जो उन्होंने हासिल किया था, और ज़ख़ीरा जो उन्होंने रख छोड़ा था, बेद की नदी के पार ले जाएँगे।

⁸क्योंकि फ़रियाद मोआब की सरहदों तक और उनका नौहा इजलाइम तक और उनका मातम बैर एलीम तक पहुँच गया है।⁹क्योंकि ~दीमोन की नदियाँ खून से भरी हैं मैं दीमोन पर ज़्यादा मुसीबत लाऊँगा क्योंकि उस पर जो मोआब में से बचकर भागेगा और उस मुल्क के बाक़ी लोगों पर एक शेर-ए-बबर भेजूँगा |

Chapter 16

¹'सिला' से वीराने ~की राह दुखतर-ए-सिय्यून के पहाड़ पर मुल्क के हाकिम के पास बरें भेजो।²क्यूँकि अरनून के घाटों पर मोआब की बेटियाँ, आवारा परिन्दों और उनके तितर बितर बच्चों की तरह होंगी।

³सलाह दो, इन्साफ़ करो, अपना साया, दोपहर को रात की तरह बनाओ; जिलावतनों को पनाह दो; फ़रारियों को हवाले न करो।⁴मेरे जिलावतन तेरे साथ रहें, तू मोआब को ग़ारतग़रों से छिपा ले; क्यूँकि सितमगर ख़त्म होंगे और ग़ारतग़री तमाम हो जाएगी और सब ज़ालिम मुल्क से फ़ना होंगे।

⁵यूँ तख़्त रहमत से क़ायम न होगा, और एक शख़्स रास्ती से दाऊद के खेमे में उस पर जुलूस फ़रमा कर 'अद्ल की पैरवी करेगा, और रास्तबाज़ी पर मुस्त'इद रहेगा।

⁶हम ने मोआब के घमण्ड के ज़रिए' सुना है कि वह बड़ा घमण्डी है; उसका तकब्बुर और घमण्ड और क़हर भी सुना है, उसकी शेखी हेच है।⁷इसलिए मोआब वावैला करेगा, मोआब के लिए हर एक वावैला करेगा; क़ीर हिरासत की किशमिश की टिक्कियों पर तुम सख़्त तबाह हाली में मातम करोगे।

⁸क्यूँकि हस्बोन के खेत सुख गए, क़ौमों के सरदारों ने सिबमाह की ताक की बहतरीन शाख़ों को तोड़ डाला; वह या'ज़ेर तक बढ़ीं, वह जंगल में भी फैलीं; उसकी शाख़ें दूर तक फैल गईं, वह दरिया पार गुज़री।

⁹~फिर मैं या'ज़ेर के आह-ओ-नाले से सिबमाह की ताक के लिए ज़ारी करूँगा ऐ हस्बून ऐ इलीया'लाह मैं तुझे अपने आँसुओं से तर कर दूँगा, क्यूँकि तेरे दिनों गर्मी ~के मेवों और ग़ल्ले की फ़सल को ग़ोगा-ए-जंग ने आ लिया;¹⁰और शादमानी छीन ली गई और हरे भरे खेतों की ख़ुशी जाती रही; और ताकिस्तानों में गाना और ललकारना बन्द हो जाएगा; पामाल करनेवाले अंगूरों को फिर हौज़ों में पामाल न करेंगे; मैंने अंगूर की फ़सल के ग़ल्ले को ख़त्म कर दिया।

¹¹इसलिए मेरा अन्दरून मोआब पर और मेरा दिल कीर हारस पर बरबत की तरह फ़ुगा खेज़ है।¹²~और यूँ होगा कि जब मोआब हाज़िर हो और ऊँचे मक़ाम पर अपने आपको थकाए बल्कि अपने मा'बद में जाकर दु'आ करे, उसे कुछ फ़ायदा न होगा।

¹³यह वह कलाम है जो ख़ुदावन्द ने मोआब के हक़ में पिछले ज़माने में फ़रमाया था¹⁴लेकिन अब ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तीन बरस के अन्दर जो मज़दूरों के बरसों की तरह हों, मोआब की शौकत उसके तमाम लश्करों के साथ हक़ीर हो जाएगी; और बहुत थोड़े बाक़ी बचेंगे, और वह किसी हिसाब में न होंगे।

Chapter 17

¹दमिश्क के बारे में बार-ए-नबुव्वत, देखो दमिश्क अब तो शहर न रहेगा, बल्कि खण्डर का ढेर होगा।²अरो'ईर की बस्तियाँ वीरान हैं और गल्लों की चरागाहें होंगी; वह वहाँ बैठेगे, और कोई उनके डराने को भी वहाँ न होगा।³और इफ्राईम में कोई क़िला' न रहेगा, दमिश्क और अराम के बक़िए से सलतनत जाती रहेगी; रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, जो हाल बनी-इसाईल की शौकत का हुआ वही उनका होगा।

⁴और उस वक़्त यूँ होगा कि या'कूब की हश्मत घट जाएगी, और उसका चर्बीदार बदन दुबला हो जाएगा।⁵यह ऐसा होगा जैसा कोई खड़े खेत काटकर गल्ला जमा' करे और अपने हाथ से बालें तोड़े; बल्कि ऐसा होगा जैसा कोई रफ़ाईम की वादी में ख़ोशाचीनी करे।

⁶ख़ुदावन्द इसाईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि तब उसका बक़िया बहुत ही थोड़ा होगा, जैसे ज़ैतून के दरख़्त का जब वह हिलाया जाए, या'नी दो तीन दाने चोटी की शाख़ पर, चार पाँच फलवाले दरख़्त की बैरूनी शाख़ों पर।⁷उस रोज़ इन्सान अपने ख़ालिक़ की तरफ़ नज़र करेगा और उसकी आँखें इसाईल के कुहूस ~की तरफ़ देखेंगी;

⁸और वह मज़बहों या'नी अपने हाथ के काम पर नज़र न करेगा, और अपनी दस्तकारी या'नी यसीरतों और बुतों की परवा न करेगा।⁹उस वक़्त उसके फ़सीलदार शहर उजड़े जंगल और पहाड़ की चोटी पर के मक्रामात की तरह होंगे; जो बनी-इसाईल के सामने उजड़ गए, और वहाँ वीरानी होगी।

¹⁰चूँकि तूने अपने नजात देनेवाले ख़ुदा को फ़रामोश किया, और अपनी तवानाई की चट्टान को याद न किया; इसलिए तू ख़ूबसूरत पौधे लगाता और 'अजीब कलमें उसमें जमाता है।¹¹लगाते वक़्त उसके चारों तरफ़ अहाता बनाता है, और सुबह को उसमें फूल खिलते हैं; लेकिन उसका हासिल दुख और सख़्त मुसीबत के वक़्त बेकार है।

¹²आह! बहुत~से लोगों का हंगामा है! जो समन्दर के शोर की तरह शोर मचाते हैं, और उम्मतों का धावा बड़े सैलाब के रेले की तरह है।¹³उम्मतें सैलाब-ए-'अज़ीम की तरह आ पड़ेंगी; लेकिन वह उनको डौँटेगा, और वह दूर भाग जाएँगी, और उस भूसे की तरह जो टीलों के ऊपर आँधी से उड़ता फिरे और उस गर्द की तरह जो बगोले में चक्कर खाए रगेदी जाएँगी।¹⁴शाम के वक़्त तो हैबत है! सुबह होने से पहले वह हलाक हैं! ये हमारे ग़ारतग़रों का हिस्सा और हम को लूटनेवालों का हिस्सा है।

Chapter 18

¹आह! परो के फड़फड़ाने की सर ज़मीन जो कूश की नदियों के पार है | ²जो दरिया की राह से बुर्दी की क़श्तियों में सतह-ए-आब पर क़ासिद भेजती है! ऐ तेज़ रफ़्तार क़ासिदों, उस क़ौम ~के पास जाओ जो ताक़तवर और ख़ूबसूरत है; उस क़ौम के पास जो शुरू' से अब तक मुहीब है, ऐसी क़ौम जो ज़बरदस्त और फ़तहयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से मुन्क़सम है।

³ऐ ज़हान के तमाम बाशिन्दो, और ऐ ज़मीन के रहनेवालो, जब पहाड़ों पर झण्डा खड़ा किया जाए तो देखो और जब नरसिंगा फूँका जाए तो सुनो।

⁴क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझ से यूँ फ़रमाया है: कि अपने घर में ताबिश-ए-आफ़ताब की तरह और मौसिम-ए-दिरौ~की गर्मी में शबनम के बादल की तरह सुकून के साथ नज़र करूँगा।"⁵क्यूँकि फ़सल से पहले जब कली खिल चुके और फूल की जगह अँगूर पकने पर हों, तो वह टहनियों को हसुवे से काट डालेगा और फैली हुई शाखों को छाँट देगा।

⁶और वह पहाड़ के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों के लिए पड़ी रहेंगी; और शिकारी परिन्दे गर्मी के मौसम में उन पर बैठेंगे, ज़मीन के सब दरिन्दे जाड़े के मौसम में उन पर लेंटेंगे।⁷~उस वक़्त रब्ब-उल-अफ़वाज के सामने उस क़ौम की तरफ़ से जो ताक़तवर और ख़ूबसूरत है, ग़िरोह की तरफ़ से जो शुरू' से आज तक मुहीब है, उस क़ौम से जो ज़बरदस्त और ज़फ़रयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से बँटी है एक हदिया रब्ब-उल-अफ़वाज के नाम के मकान पर जो सिय्यून पहाड़ में है पहुँचाया जाएगा।

Chapter 19

¹मिस् के बारे में नबुव्वत देखो खुदावन्द एक तेज़ रू ~बादल पर सवार होकर मिस् में आता है, और मिस् के बुत उसके सामने लरज़ाँ होंगे और मिस् का दिल पिघल जाएगा।²और मैं मिस्त्रियों को आपस में मुखालिफ़ कर दूँगा; उनमें हर एक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, शहर-शहर से और सूबे-सूबे से;

³और मिस् की रूह अफ़सुर्दा हो जाएगी, और मैं उसके मन्सूबे को फ़ना करूँगा; और वह बुतों और अफ़सूँगरों और जिन्नात के यारों और जादूगरों की तलाश करेंगे।⁴लेकिन मैं मिस्त्रियों को एक सितमगर हाकिम के क़ाबू में कर दूँगा, और ज़बरदस्त बादशाह उन पर सल्तनत करेगा; यह खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज का फ़रमान है।

⁵और दरिया का पानी सूख जाएगा, और नदी खुश्क और ख़ाली हो जाएगी।⁶और नाले बदबू हो जाएँगे, और मिस् की नहरें ख़ाली होंगी और सूख जाएँगी, और बेद और नै मुरझा जाएँगे।

⁷दरिया-ए-नील के किनारे की चरागाहें और वह सब चीज़ें जो उसके आस-पास बोई जाती हैं मुरझा जायेंगी और बिल्कुल बर्बाद-ओ-हलाक हो जाएँगी।⁸तब माहीगीर मातम करेंगे, और वह सब जो दरिया में शस्त डालते हैं ग़मगीन होंगे; और पानी में जाल डालने वाले बहुत बेताब हो जाएँगे।

⁹और सन झाड़ने और कतान बुननेवाले घबरा जाएँगे।¹⁰~हाँ उसके अरकान शिकस्ता और तमाम मज़दूर रंजीदा ख़ातिर होंगे

¹¹'सुन'आन के शहज़ादे बिल्कुल बेवकूफ़ हैं फिर'औन के ~सबसे 'अक्लमन्द सलाहकारों की मश्वरत वहशियाना ठहरी।फिर तुम क्यूँकर फिर'औन से कहते हो, कि मैं 'अक्लमन्दों का फ़र्ज़न्द और शाहान-ए-क़दीम की नसल हूँ'?¹²अब तेरे 'अक्लमन्द कहाँ है? वह तुझे ख़बर दें, अगर वह जानते होते कि रब्ब-उल-अफ़वाज ने मिस् के हक़ में क्या इरादा किया है।

¹³जु'अन के शहज़ादे बेवकूफ़ बन गए हैं, नूफ़ के शहज़ादों ने धोखा खाया और जिन पर मिस्ती क़बाइल का भरोसा था उन्हीं ने उनको गुमराह किया।¹⁴~खुदावन्द ने कजरवी की रूह उनमें डाल दी है और उन्होंने मिस्त्रियों को उनके सब कामों में उस मतवाले की तरह भटकाया जो उलटी करते हुए डगमगाता है।¹⁵और मिस्त्रियों का कोई काम न होगा, जो सिर या दुम या खास-ओ-'आम कर सके।

¹⁶~उस वक़्त रब्ब-उल-अफ़वाज के हाथ चलाने से जो वह मिस् पर चलाएगा, मिस्ती 'औरतों की तरह हो जायेंगे, और हैबतज़दह और परेशान होंगे।¹⁷तब यहूदाह का मुल्क मिस् के लिए दहशत नाक होगा, हर एक जिससे उसका ज़िक्र हो ख़ौफ़ खाएगा; उस इरादे की वजह से जो रब्ब-उल-अफ़वाज ने उनके खिलाफ़ कर रखखा है।

¹⁸उस रोज़ मुल्क-ए-मिस् में पाँच शहर होंगे जो कना'नी ज़बान बोलेंगे, और रब्ब-उल-अफ़वाज की क़सम खाएँगे; उनमें से एक का नाम शहर-ए-आफ़ताब होगा।

¹⁹~उस वक़्त मुल्क-ए-मिस् के वस्त में खुदावन्द का एक मज़बह और उसकी सरहद पर खुदावन्द का एक सुतून होगा।²⁰और वह मुल्क-ए-मिस् में रब्ब-उल-अफ़वाज के लिए निशान और गवाह होगा; इसलिए कि वह सितमगरों के जुल्म से खुदावन्द से फ़रियाद करेंगे, और वह उनके लिए रिहाई देने वाला और हामी भेजेगा, और वह उनको रिहाई देगा।

²¹और खुदावन्द अपने आपको मिस्त्रियों पर ज़ाहिर करेगा और उस वक़्त मिस्ती खुदावन्द को पहचानेंगे, और ज़बीहे और हदिये पेश करेंगे; हाँ, वह खुदावन्द के लिए मिन्नत माँनेंगे और अदा करेंगे।²²और खुदावन्द मिस्त्रियों को मारेगा, मारेगा और शिफ़ा बख़्शेगा; और वह खुदावन्द की तरफ़ रूजू' लाएँगे और वह उनकी दु'आ सुनेगा, और उनको सेहत बख़्शेगा।

²³उस वक़्त मिस् से असूर तक एक शाह-ए-राह होगी और असूरी मिस् में आएँगे और मिस्ती असूर को जाएँगे, मिस्ती असूरियों के साथ मिलकर 'इबादत करेंगे।

²⁴तब इस्राईल मिस् और असूर के साथ तीसरा होगा, और इस ज़मीन पर बरकत का ज़रिए' आ ठहरेगा।²⁵क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़वाज उनको बरकत बख़्शेगा और फ़रमाएगा मुबारक हो मिस्ती मेरी उम्मत असूर मेरे हाथ की सन'अत और इस्राईल मेरी मीरास।

Chapter 20

¹~जिस साल सरजून शाह-ए-असूर ने तरतान को अशदूद की तरफ़ भेजा, और उसने आकर अशदूद से लड़ाई की और उसे फ़तह कर लिया;²~उस वक़्त खुदावन्द ने यसा'याह बिन आमूस के ज़रिए' यूँ फ़रमाया, "कि जा और टाट का लिबास अपनी कमर से खोल डाल और अपने पाँवों से जूते उतार," तब उसने ऐसा ही किया, वह बरहना और नंगे पाँव फिरा करता था ।

³~तब खुदावन्द ने फ़रमाया, जिस तरह मेरा बन्दा यसा'याह तीन बरस तक बरहना और नंगे पाँव फिरा किया, ताकि मिस्रियों और कूशियों के बारे में निशान और ता'अज्जुब हो ।⁴उसी तरह शाह-ए-असूर मिस्री गुलामों और कूशी जिलावतनों को क्या बूढ़े क्या जवान बरहना और नंगे पाँव और बेपर्दा सुरनियों के साथ मिस्रियों की रुस्वाई के लिए ले जाएगा।

⁵तब वह परेशान होंगे और कूश से जो उनकी उम्मीदगाह थी, और मिस्र से जो उनका घमण्ड था, शर्मिन्दा होंगे।⁶और उस वक़्त इस साहिल के बाशिन्दे कहेंगे देखो हमारी उम्मीदगाह का यह हाल हुआ जिसमें हम मदद के लिए भागे ताकि असूर के बादशाह से बच जाएँ फिर हम किस तरह रिहाई पायें ।

Chapter 21

¹दशत-ए-दरिया के बारे में नबुवत: जिस तरह दक्खिनी हवा ज़ोर से चली आती है, उसी तरह वह दशत से और मुहीब सरज़मीन से नज़दीक आ रहा है।²एक हौलनाक ख्वाब मुझे नज़र आया; दगाबाज़ दगाबाज़ी करता है; और ग़ारतगर ग़ारत करता है ऐ ऐलाम, चढ़ाई कर; ऐ मादै, मुहासिरा कर; मैं वह सब कराहना जो उसकी वजह से हुआ, ख़त्म करता हूँ।

³~इसलिए मेरी कमर में सख़्त दर्द है, मैं जैसे दर्द-ए-ज़िह में तड़पता हूँ, मैं ऐसा परेशान हूँ कि सुन नहीं सकता; मैं ऐसा परेशान हूँ कि देख नहीं सकता।~⁴मेरा दिल धड़कता है, और ख़ौफ़ अचानक मुझ पर ग़ालिब आ गया; शफ़क़-ए-शाम जिसका मैं आरज़ूमन्द था, मेरे लिए ख़ौफ़नाक हो गई।

⁵दस्तरख़्वान बिछाया गया, निगहबान खड़ा किया गया, वह खाते हैं और पीते हैं; उठो ऐ सरदारो सिपर पर तेल मलो !

⁶क्योंकि ख़ुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया, कि "जा निगहबान बिठा; वह जो कुछ देखे वही बताए।"⁷उसने सवार देखे, जो दो-दो आते थे, और गधों और ऊँटों पर सवार और उसने बड़े ग़ौर से सुना।"

⁸तब उसने शेर की तरह आवाज़ से पुकारा, "ऐ ख़ुदावन्द, मैं अपनी दीदगाह पर तमाम दिन खड़ा रहा, और मैंने हर रात पहर की जगह पर काटी।"⁹और देख, सिपाहियों के गोल और उनके सवार दो-दो करके आते हैं!" फिर उसने यूँ कहा, "कि बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा; और उसके मा'बूदों की सब तराशी हुई मूरतें बिल्कुल टूटी पड़ी हैं।"

¹⁰~ऐ मेरे गाहे हुए और मेरे खलीहान के ग़ल्ले, जो कुछ मैंने रब्ब-उल-अफ़वाज़ इस्राईल के ख़ुदा से सुना, तुमसे कह दिया।

¹¹~दूमा के बारे में नबुवत किसी ने मुझ को श'ईर से पुकारा कि ऐ निगहबान, रात की क्या ख़बर है?¹²~निगाहबान ने कहा, सुबह होती है और रात भी अगर तुम पूछना चाहते हो तो पूछो तुम फिर आना?

¹³अरब के बारे में नबुवत ऐ ददानियों के क़ाफ़िलों, तुम 'अरब के जंगल में रात काटोगे।¹⁴वह प्यासे के पास पानी लाए, तीमा की सरज़मीन के बाशिन्दे, रोटी लेकर भागने वाले से मिलने को निकले।¹⁵क्योंकि वह तलवारों के सामने से नंगी तलवार से, और खेंची हुई कमान से, और जंग की शिद्दत से भागे हैं।

¹⁶क्योंकि ख़ुदावन्द ने मुझ से यूँ कहा कि मज़दूर के बरसों के मुताबिक़, एक बरस के अन्दर अन्दर क़ीदार की सारी हशमत जाती रहेगी |¹⁷और तीर अन्दाज़ों की ता'दाद का बक्रिया या'नी बनी क़ीदार के बहादुर थोड़े से होंगे; क्योंकि इस्राईल के ख़ुदा ने यूँ फ़रमाया है।

Chapter 22

¹~ख़्वाब की वादी के बारे में नबुव्वत अब तुम को क्या हुआ कि तुम सब के सब कोठों पर चढ़ गए?²ऐ पुर शोर और गौगाई शहर ऐ शादमान बस्ती तेरे मक़तूल न तलवार से क़त्ल हुए और न लड़ाई में मारे गए।

³~तेरे सब सरदार इकट्ठे भाग निकले, उनको तीर अन्दाज़ों ने गुलाम कर लिया; जितने तुझ में पाए गए सब के सब, बल्कि वह भी जो दूर से भाग गए थे गुलाम किए गए हैं।⁴~इसीलिए मैंने कहा, मेरी तरफ़ मत देखो, क्योंकि मैं ज़ार-ज़ार रोऊँगा मेरी तसल्ली की फ़िक्र मत करो, क्योंकि मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम बर्बाद हो गई।"

⁵~क्योंकि ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ की तरफ़ से ख़्वाब की वादी में, यह दुख और पामाली ओ-बेकरारी और दीवारों को गिराने और पहाड़ों तक फ़रियाद पहुँचाने का दिन है।⁶~क्योंकि ऐलाम ने जंगी रथों और सवारों के साथ तरक़श उठा लिया और क़ीर ने सिपर का ग़िलाफ़ उतार दिया।⁷और यूँ हुआ कि तेरी बेहतरीन वादियाँ जंगली रथों से मा'मूर हो गई और सवारों ने फाटक पर सफ़आराई की;

⁸और यहूदाह का नक्काब उतारा गया। और तू अब दशत-ए-महल के सिलाहखाने पर निगाह करता है,⁹~और तुम ने दाऊद के शहर के रखने देखे कि बेशुमार हैं; और तुम ने नीचे के हौज़ में पानी जमा' किया।

¹⁰और तुम ने यरुशलीम के घरों को गिना और उनको गिराया ताकि शहर पनाह को मज़बूत करो,¹¹और तुम ने पुराने हौज़ के पानी के लिए दोनों दीवारों के बीच एक और हौज़ बनाया; लेकिन तुम ने उसके पानी पर निगाह न की और उसकी तरफ़ जिसने पहले से उसकी तदबीर की मुतवज्जह न हुए।

¹²और उस वक़्त ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ ने रोने और मातम करने, और सिर मुन्धाने और टाट से कमर बाँधने का हुक्म दिया था;¹³~लेकिन देखो, खुशी और शादमानी, गाय बैल को ज़बह करना और भेड़-बकरी को हलाल करना और गोश्त ख़वारी-ओ-मयनोशी कि आओ खाएँ और पियें क्योंकि कल तो हम मरेंगे।¹⁴और रब्ब-उल-अफ़वाज़ ने मेरे कान में कहा, कि तुम्हारी इस बदकिरदारी का कफ़ारा तुम्हारे मरने तक भी न हो सकेगा यह ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

¹⁵ख़ुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ यह फ़रमाता है कि उस ख़ज़ान्ची शबनाह के पास जो महल पर मु'अय्यन है, जा और कह:¹⁶~तू यहाँ क्या करता है? और तेरा यहाँ कौन है कि तू यहाँ अपने लिए क़ब्र तराश्ता है? बुलन्दी पर अपनी क़ब्र तराश्ता है और चट्टान में अपने लिए घर खुदवाता है।

¹⁷~देख, ऐ ज़बरदस्त, ख़ुदावन्द तुझ को ज़ोर से दूर फेंक देगा; वह यक़ीनन तुझे पकड़ रखेगा।¹⁸वह बेशक तुझ को गेंद की तरह घुमा-घुमाकर बड़े मुल्क में उछालेगा; वहाँ तू मरेगा और तेरी हश्मत के रथ वहीं रहेंगे, ऐ अपने आक्रा के घर की रुस्वाई।¹⁹~और मैं तुझे तेरे मन्सब से बरतरफ़ करूँगा, हाँ वह तुझे तेरी जगह से खींच उतारेगा।

²⁰~और उस रोज़ यूँ होगा कि मैं अपने बन्दे इलियाक़ीम-बिन-ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा,²¹~और मैं तेरा ख़िल'अत उसे पहनाऊँगा और तेरा पटका उस पर कसूँगा, और तेरी हुक्मत उसके हाथ में हवाले कर दूँगा; और वह अहल-ए-यरुशलीम का और बनी यहूदाह का बाप होगा।²²और मैं दाऊद के घर की कुंजी उसके कन्धे पर रखवूँगा, तब वह खोलेगा और कोई बन्द न करेगा; और वह बन्द करेगा और कोई न खोलेगा।

²³और मैं उसको खूँटी की तरह मज़बूत जगह में मुहकम करूँगा, और वह अपने बाप के घराने के लिए जलाली तख़्त होगा।²⁴~और उसके बाप के खानदान की सारी हश्मत या'नी आल-ओ-औलाद और सब छोटे-बड़े बर्तन प्यालों से लेकर क़राबों तक सबको उसी से मन्सूब करेंगे।

²⁵रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, उस वक़्त वह खूँटी जो मज़बूत जगह में लगाई गई थी हिलाई जाएगी, और वह काटी जाएगी और गिर जाएगी, और उस पर का बोझ गिर पड़ेगा; क्योंकि ख़ुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है।

Chapter 23

¹सूर के बारे में नबुव्वत ऐ तरसीस के जहाज़ों, वावैला करो क्योंकि वह उजड़ गया, वहाँ कोई घर और कोई दाखिल होने की जगह नहीं! किस्तीम की ज़मीन से उनको ये खबर पहुँची है।²~ऐ साहिल के बाशिन्दों, जिनको सैदानी सौदागरों ने जो समन्दर के पार आते जाते हैं मालामाल कर दिया है, खामोश रहो।³समन्दर के पार से सीहोर' का गल्ला और वादी-ए-नील की फ़सल उसकी आमदनी थी, तब वह क्रौमों की तिजारत-गाह बना।

⁴ऐ सैदा, तू शरमा, क्योंकि समन्दर ने कहा है, समन्दर की गद्दी ने कहा, "मुझे दर्द-ए-ज़िह नहीं लगा, और मैंने बच्चे नहीं जने; मैं जवानों को नहीं पालती, और कुँवारियों की परवरिश नहीं करती हूँ।"⁵~जब अहल-ए-मिस्र को यह खबर पहुँचेगी, तो वह सूर की खबर से बहुत ग़मगीन होंगे।

⁶ऐ साहिल के बाशिन्दो, तुम ज़ार-ज़ार रोते हुए तरसीस को चले जाओ।⁷क्या यह तुम्हारी शादमान बस्ती है, जिसकी हस्ती पहले से है? उसी के पाँव उसे दूर-दूर ले जाते हैं कि परदेस में रहे।

⁸~किसी ने यह-मंसूबा सूर के खिलाफ़ बाँधा जो ताज बख़्श है जिसके सौदागर 'उमरा और जिसके ताजिर दुनिया भर के 'इज़ज़तदार हैं।⁹रब्ब-उल-अफ़वाज ने ये इरादा किया है कि सारी हशमत के घमण्ड को हलाक करे और दुनिया भर के इज़ज़तदारों को ज़लील करे।

¹⁰ऐ दुख्तर-ए-तरसीस दरया-ए-नील ~की तरह अपनी सरज़मीन पर फैल जा अब कोई बन्द बाक़ी नहीं रहा।¹¹~ उसने समन्दर पर अपना हाथ बढ़ाया, उसने ममलुकतों को हिला दिया; खुदावन्द ने कना'न के हक़ में हुक्म किया है कि उसके क़िले' मिस्रार किए जाएँ।¹²और उसने कहा, "ऐ मज़लूम कुँवारी, दुख्तर-ए-सैदा, तू फिर कभी घमण्ड न करेगी; उठ किस्तीम में चली जा, तुझे वहाँ भी चैन न मिलेगा।"

¹³कसदियों के मुन्क को देख! यह क्रौम मौजूद न थी; असूर ने उसे वीरान के रहनेवालों का हिस्सा ठहराया। उन्होंने अपने बुर्ज बनाए उन्होंने उसके महल ग़ारत किये और उसे वीरान किया।¹⁴ऐ तरसीस के जहाज़ों वावैला करो क्योंकि तुम्हारा क़िला' उजाड़ा गया।

¹⁵और उस वक़्त यूँ होगा कि सूर किसी बादशाह के दिनों के मुताबिक़, सत्तर बरस तक फ़रामोश हो जाएगा; और ~सत्तर बरस के बा'द सूर की हालत फ़ाहिशा के गीत के मुताबिक़ होगी।¹⁶ऐ फ़ाहिशा तू जो फ़रामोश हो गई है, बर्बत उठा ले और शहर में फिरा कर राग को छेड़ और बहुत-सी ग़ज़लें गा कि लोग तुझे याद करें।

¹⁷और सत्तर बरस के बा'द यूँ होगा कि खुदावन्द सूर की खबर लेगा, और वह उजरत पर जाएगी और इस ज़मीन पर की तमाम ममलुकतों से बदकारी करेगी।

¹⁸~ लेकिन उसकी तिजारत और उसकी उजरत खुदावन्द के लिए मुकद्दस होगी और उसका माल न ज़ख़ीरा किया जाएगा और न जमा' रहेगा बल्कि उसकी तिजारत का हासिल उनके लिए होगा, जो खुदावन्द के सामने रहते हैं कि खाकर सेर हों और नफ़ीस पोशाक पहने।

Chapter 24

¹~देखो खुदावन्द ज़मीन को खाली और सरनगूँ करके वीरान करता है और उसके बाशिन्दों को तितर-बितर कर देता है।²और यूँ होगा कि जैसा र'इयत का हाल, वैसा ही काहिन का; जैसा नौकर का, वैसा ही उसके साहिब का; जैसा लौंडी का, वैसा ही उसकी बीबी का; जैसा खरीदार का, वैसा ही बेचनेवाले का; जैसा क़र्ज़ देनेवाले का, वैसा ही क़र्ज़ लेनेवाले का; जैसा सूद देनेवाले का, वैसा ही सूद लेनेवाले का।

³ज़मीन बिल्कुल खाली की जाएगी, और बशिद्दत ग़ारत होगी; क्योंकि यह कलाम खुदावन्द का है।⁴ज़मीन ग़मगीन होती और मुरझाती है, जहाँ बेताब और पज़मुर्दा होता है, ज़मीन के 'आली क़द्र लोग नातवान होते हैं'।⁵ज़मीन अपने बाशिन्दों से नापाक हुई, क्योंकि उन्होंने शरी'अत को 'उदूल किया, क़ानून से मुन्हरिफ़्र हुए, हमेशा के 'अहद को तोड़ा।

⁶इस वजह से ला'नत ने ज़मीन को निगल लिया और उसके बाशिन्दे मुजरिम ठहरे, और इसीलिए ज़मीन के लोग भसम हुए और थोड़े से आदमी बच गए।⁷मय ग़मज़दा, ताक पज़मुर्दा है; और सब जो दिलशाद थे आह भरते हैं।

⁸ढोलकों की खुशी बन्द हो गई, खुशी मनानेवालों का गुल-ओ-शोर तमाम हुआ, बरबत की शादमानी जाती रही।⁹वह फिर गीत के साथ मय नहीं पीते, पीनेवालों को शराब तल्ख़ मा'लूम होगी।

¹⁰~सुनसान शहर वीरान हो गया, हर एक घर बन्द हो गया कि कोई अन्दर न जा सके।¹¹~मय के लिए बाज़ारों में वावैला हो रहा है; सारी खुशी पर तारीकी छा गई, मुल्क की 'इश्रत जाती रही।

¹²~शहर में वीरानी ही वीरानी है, और फाटक तोड़ फोड़ दिए गए।¹³क्योंकि ज़मीन में लोगों के बीच यूँ होगा जैसा जैतून का दरख्त झाड़ा जाए, जैसे अंगूर तोड़ने के बा'द खोशा-चीनी।

¹⁴वह अपनी आवाज़ बलन्द करेंगे, वह गीत गाएँगे; खुदावन्द के जलाल की वजह से समन्दर से ललकारेंगे।¹⁵तुम पूरब में खुदावन्द की और समन्दर के जज़ीरों में खुदावन्द के नाम की, जो इस्राईल का खुदा है, तम्ज़ीद करो।

¹⁶~इन्तिहा-ए-ज़मीन से नग़मों की आवाज़ हम को सुनाई देती है, जलाल-ओ-'अज़मत सादिक के लिए। लेकिन मैंने कहा, "मैं गुदाज़ हो गया, मैं हलाक हुआ; मुझ पर अफ़सोस! दगाबाज़ों ने दगा की; हाँ, दगाबाज़ों ने बड़ी दगा की।"

¹⁷ऐ ज़मीन के बाशिन्दे, ख़ौफ़ और गढ़ा और दाम तुझ पर मुसल्लित हैं।¹⁸~और यूँ होगा कि जो ख़ौफ़नाक आवाज़ सुन कर भागे, गढ़े में गिरेगा; और जो गढ़े से निकल आए, दाम में फँसेगा; क्योंकि आसमान की खिड़कियाँ खुल गई, और ज़मीन की बुनियादेँ हिल रही हैं।

¹⁹ज़मीन बिल्कुल उजड़ गई, ज़मीन यकसर शिकस्ता हुई, और शिद्दत से हिलाई गई।²⁰~वह मतवाले की तरह डगमगाएगी और झोपड़ी की तरह आगे पीछे सरकाई जाएगी; क्योंकि उसके गुनाह का बोझ उस पर भारी हुआ, वह गिरेगी और फिर न उठेगी।

²¹और उस वक़्त यूँ होगा कि खुदावन्द आसमानी लश्कर को आसमान पर और ज़मीन के बादशाहों को ज़मीन पर सज़ा देगा।²²और वह उन कैदियों की तरह जो गढ़े में डाले जाएँ, जमा' किए जाएँगे और वह कैदख़ाने में कैद किए जाएँगे, और बहुत दिनों के बा'द उनकी ख़बर ली जाएगी।²³और जब रब्ब-उल-अफ़वाज़ सिय्यून पहाड़ पर और यरुशलीम में अपने बुजुर्ग बन्दों के सामने हश्मत के साथ सल्लनत करेगा, तो चाँद मुज़्तरिब' सूरज शर्मिन्दा होगा।

Chapter 25

¹ऐ खुदावन्द तू मेरा खुदा है; मैं तेरी तम्जीद करूँगा; तेरे नाम की 'इबादत करूँगा क्योंकि तूने 'अजीब काम किए हैं, तेरी मसलहत क़दीम से वफ़ादारी और सच्चाई हैं।' क्योंकि तूने शहर को खाक का ढेर किया; हाँ, फ़सीलदार शहर को खण्डर बना दिया और परदेसियों के महल को भी, यहाँ तक कि शहर न रहा; वह फिर ता'मीर न किया जाएगा।³~इसलिए ज़बरदस्त लोग तेरी 'इबादत करेंगे और हैबतनाक क़ौमों का शहर तुझ से डरेगा।

⁴क्योंकि तू ग़रीब के लिए क़िला' और मोहताज के लिए परेशानी के वक्रत मल्जा और आँधी से पनाहगाह और गर्मी ~से बचाने को साया हुआ, जिस वक्रत ज़ालिमों की साँस दिवारकन तूफ़ान की तरह हो।⁵तू परदेसियों के शोर को खुशक मकान की गर्मी की तरह दूर करेगा और जिस तरह अब्र के साये से गरमी हलाक होती है उसी तरह ज़ालिमों का शादियाना बजाना ख़त्म होगा।

⁶और~~रब्ब-उल-अफ़वाज इस पहाड़ पर सब क़ौमों के लिए फ़रबा चीज़ों से एक ज़ियाफ़त तैयार करेगा बल्कि एक ज़ियाफ़त तलछट पर से निथरी हुई मय से; हाँ फ़रबा चीज़ों से जो पुरमज़ हों और मय से जो तलछट पर से ख़ूब निथरी हुई हो।⁷और वह इस पहाड़ पर उस पर्दे को, जो तमाम लोगों पर पड़ा है और उस नक्राब को, जो सब क़ौमों पर लटक रहा है, दूर कर देगा।⁸वह मौत को हमेशा के लिए हलाक करेगा और~खुदावन्द खुदा सब के~चहरों से आँसू पोंछ डालेगा, और अपने लोगों की रुस्वाई तमाम सरज़मीन पर से मिटा देगा; क्योंकि खुदावन्द ने यह फ़रमाया है।

⁹और उस वक्रत यूँ कहा जाएगा, "लो, यह हमारा खुदा है; हम उसकी राह तकते थे और वही हम को बचाएगा। यह खुदावन्द है, हम उसके इन्तिज़ार में थे। हम उसकी नजात से खुश-ओ-ख़ुरम होंगे।"¹⁰क्योंकि इस पहाड़ पर खुदावन्द का हाथ बरकरार रहेगा और मोआब अपनी ही जगह में ऐसा कुचला जाएगा जैसे मज़बले के पानी में घास कुचली जाती है।

¹¹~और वह उसमें उसकी तरह जो तैरते हुए हाथ फैलाता है, अपने हाथ फैलाएगा; लेकिन वह उसके गुरुर को उसके हाथों के फ़न-धोखे के साथ पस्त करेगा।

¹²और वह तेरी फ़सील के ऊँचे बुजों को तोड़कर पस्त करेगा, और ज़मीन के बल्कि खाक के बराबर कर देगा।

Chapter 26

¹~उस वक्रत यहूदाह के मुल्क में ये गीत गाया जाएगा: हमारा एक मुहकम शहर है, जिसकी फ़सील और नसलों ~की जगह वह नजात ही को मुकर्रर करेगा।

²~तुम दरवाज़े खोलो ताकि सादिक़ क्रौम जो वफ़ादार रही दाख़िल हो।

³~जिसका दिल क़ायम है तू उसे सलामत रखेगा क्योंकि उसका भरोसा तुझ पर है।⁴~हमेशा तक खुदावन्द पर ऐ'तमाद रखो क्योंकि खुदावन्द यहूदाह हमेशा की चट्टान है।

⁵~क्योंकि उसने बुलन्दी पर बसनेवालों को नीचे उतारा, बुलन्द शहर को ज़ेर किया, उसने उसे ज़ेर करके खाक में मिलाया।⁶वह पाँव तले रौदा जाएगा; हाँ, ग़रीबों के पाँव और मोहताजों के क्रदमों से।"

⁷~सादिक़ की राह रास्ती है; तू जो हक़ है, सादिक़ की रहबरी करता है।⁸~हाँ तेरी 'अदालत की राह में, ऐ खुदावन्द, हम तेरे मुन्तज़िर रहे; हमारी जान का इश्तियाक़ तेरे नाम और तेरी याद की तरफ़ है।⁹रात को मेरी जान तेरी मुश्ताक़ है; हाँ, मेरी रूह तेरी जुस्तजू में कोशाँ रहेगी; क्योंकि जब तेरी 'अदालत ज़मीन पर जारी है, तो दुनिया के बाशिन्दे सदाक़त सीखते हैं।

¹⁰~हर चन्द शरीर पर मेहरबानी की जाए, लेकिन वह सदाक़त न सीखेगा; रास्ती के मुल्क में नारास्ती करेगा, और खुदावन्द की 'अज़मत को न देखेगा।

¹¹~ ऐ खुदावन्द, तेरा हाथ बुलन्द है लेकिन वह नहीं देखते, लेकिन वह लोगों के लिए तेरी ग़ैरत को देखेंगे और शर्मसार होंगे, बल्कि आग तेरे दुश्मनों को खा जाएगी।¹²~ऐ खुदावन्द, तू ही हम को सलामती बख़्शेगा; क्योंकि तू ही ने हमारे सब कामों को हमारे लिए अन्जाम दिया है।

¹³~ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, तेरे अलावा दूसरे हाकिमों ने हम पर हुकूमत की है; लेकिन तेरी मदद से हम सिर्फ़ तेरा ही नाम लिया करेंगे।¹⁴वह मर गए, फिर ज़िन्दा न होंगे; वह रहलत कर गए, फिर न उठेंगे; क्योंकि तूने उन पर नज़र की और उनको हलाक किया, और उनकी याद को भी मिटा दिया है।

¹⁵ऐ खुदावन्द तूने इस क्रौम को कसरत बख़्शी है; तूने इस क्रौम को बढ़ाया है, तूही जुल-जलाल है तूही ने मुल्क की हदों को बढ़ा दिया है।

¹⁶~ऐ खुदावन्द, वह मुसीबत में तेरे तालिब हुए जब तूने उनको तादीब की तो उन्होंने गिरया-ओ-ज़ारी की।¹⁷~ऐ खुदावन्द तेरे-सामने हम उस हामिला की तरह हैं, जिसकी ~विलादत का वक्रत नज़दीक हो, जो दुख में है और अपने दर्द से चिल्लाती है।

¹⁸~हम हामिला हुए, हम को दर्द-ए-ज़िह लगा, लेकिन पैदा क्या हुआ? हवा! हम ने ज़मीन पर आज़ादी को क़ायम नहीं किया, और न दुनिया में बसनेवाले ही पैदा हुए।

¹⁹~तेरे मुर्दे जी उठेंगे, मेरी ~लाशें उठ खड़ी होंगी। तुम जो खाक में जा बसे हो, जागो और गाओ! क्योंकि तेरी ओस उस ओस की तरह है जो नबातात पर पड़ती है, और ज़मीन मुर्दों को उगल देगी।

²⁰ऐ ~मेरे लोगो! अपने खिलवत ख़ानों में दाख़िल हो, और अपने पीछे दरवाज़े बन्द कर लो और अपने आपको थोड़ी देर तक छिपा रखो जब तक कि ग़ज़ब टल न जाए।²¹~क्योंकि देखो, खुदावन्द अपने मक़ाम से चला आता है, ताकि ज़मीन के बाशिन्दों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दे; और ज़मीन उस खून को ज़ाहिर करेगी जो उसमें है और अपने मक़तूलों को हरगिज़ न छिपाएगी।

Chapter 27

¹~उस वक्रत खुदावन्द अपनी सख्त और बड़ी और मज़बूत तलवार से अज़दहा या'नी तेज़रू साँप को और अज़दहा या'नी पेचीदा साँप को सज़ा देगा; और दरियाई अज़दहे को क़त्ल करेगा।²~उस वक्रत तुम खुशनुमा ताकिस्तान का गीत गाना।³~मैं खुदावन्द उसकी हिफ़ाज़त करता हूँ, मैं उसे हर दम सींचता रहूँगा। मैं दिन रात उसकी निगहबानी करूँगा कि उसे नुक़सान न पहुँचे।

⁴~मुझ में क्रहर नहीं; तोभी काश के जंगगाह में झाड़ियाँ और काँटे मेरे खिलाफ़ होते, मैं उन पर खुर्रूज करता और उनको बिल्कुल जला देता।⁵लेकिन अगर कोई मेरी ताक़त का दामन पकड़े तो मुझ से सुलह करे; हाँ वह मुझ से सुलह करे।

⁶अब आइन्दा दिनों में या'क़ूब जड़ पकड़ेगा, और इस्राईल पनपेगा और फूलेगा और इस ज़मीन को मेवों से मालामाल करेगा।

⁷~क्या उसने उसे मारा, जिस तरह उसने उसके मारनेवालों को मारा है? या क्या वह क़त्ल हुआ, जिस तरह उसके क़ातिल क़त्ल हुए?⁸~तूने इन्साफ़ के साथ उसको निकालते वक्रत उससे हुज्जत की; उसने पूरबी हवा के दिन अपने सख्त तूफ़ान से उसको निकाल दिया ।

⁹इसलिए इससे या'क़ूब के गुनाह का क़फ़ारा होगा और उसका गुनाह दूर करने का कुल नतीजा यही है; जिस ~वक्रत वह मज़बह के सब पत्थरों को टूटे कंकरों की तरह टुकड़े-टुकड़े करे कि यसीरतें और सूरज के बुत फिर क़ायम न हों।

¹⁰क्यूँकि फ़सीलदार शहर वीरान है, और वह बस्ती उजाड़ और वीरान की तरह ख़ाली है; वहाँ बछड़ा चरेगा और वहीं लेट रहेगा और उसकी डालियाँ बिलकुल काट खायेगा।¹¹जब उसकी शाखे मुरझा जायेंगी तो तोड़ी जायेंगी 'औरतें आयेंगी और उनको जलाएँगी; क्यूँकि लोग अक़ल से ख़ाली हैं, इसलिए उनका ख़ालिक़ उन पर रहम नहीं करेगा और उनका बनाने वाला उन पर तरस नहीं खाएगा।

¹²~और उस वक्रत यूँ होगा कि खुदावन्द दरया-ए-फ़रात की गुज़रगाह से रूद-ए-मिस्र तक झाड़ डालेगा; और तुम ऐ बनी इस्राईल एक एक करके जमा' किए जाओगे।¹³और उस वक्रत यूँ होगा कि बड़ा नरसिंगा फूँका जाएगा, और वह जो असूर के मुल्क में क़रीब-उल-मौत थे, और वह जो मुल्क-ए-मिस्र में जिला वतन थे आएँगे और यरुशलीम के मुक़द्दस पहाड़ पर खुदावन्द की 'इबादत करेंगे।

Chapter 28

¹अफ़सोस इफ़्राईम के मतवालों के घमण्ड के ताज पर और उसकी शानदार शौकत के मुरझाये हुए फूल पर जो उन लोगों की शादाब वादी के सिरे पर है जो मय के मालूब हैं।² देखो खुदावन्द के पास एक ज़बरदस्त और ताक़तवर शख्स है, जो उस आँधी की तरह जिसके साथ ओले हों और बाद समूम की तरह और सैलाब-ए-शदीद की तरह ज़मीन पर हाथ से पटक देगा।

³इफ़्राईम के मतवालों के घमण्ड का ताज पामाल किया जाएगा;⁴ और उस शानदार शौकत का मुरझाया हुआ फूल जो उस शादाब वादी के सिरे पर है, पहले पक्के अंजीर की तरह होगा जो गर्मी के दिनों से पहले ~लगे; जिस पर किसी की निगाह पड़े और वह उसे देखते ही और हाथ में लेते ही निगल जाए।

⁵उस ~वक्रत रब्ब-उल-अफ़वाज अपने लोगों के बक्रिये के लिए शौकत का अफ़सर और हुस्न का ताज होगा।⁶ और 'अदालत की कुर्सी पर बैठने वाले के लिए इन्साफ़ की रूह, और फाटकों से लड़ाई को दूर करने वालों के लिए ताक़त होगा।

⁷~लेकिन यह भी मयख़वारी से डगमगाते और नशे में लड़खड़ाते हैं; काहिन और नबी भी नशे में चूर और मय में ग़र्क़ हैं, वह नशे में झूमते हैं; वह रोया में ख़ता करते और 'अदालत में लगज़िश खाते हैं।⁸ ~क्यूँकि सब दस्तरख़वान क़य और गन्दगी से भरे हैं कोई जगह बाक़ी नहीं।

⁹वह ~किसको अव़ल सिखाएगा? किसको तक्ऱरीर करके समझाएगा? क्या उनको ~जिनका दूध छुड़ाया गया, जो छातियों से जुदा किए गए?¹⁰ ~क्यूँकि हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म; क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून है; थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ।

¹¹लेकिन वह बेग़ाना लबों और अजनबी ज़बान से इन लोगों से कलाम करेगा।¹² जिनको उसने फ़रमाया, यह आराम है, तुम थके मान्दों को आराम दो, और ~यह ताज़गी है;" लेकिन वह सुनने वाले न हुए।

¹³~तब खुदावन्द का कलाम उनके लिए हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म, क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ होगा; ताकि वह चले जाएँ और पीछे गिरेँ और सिक़श्त खाएँ और दाम में फ़सेँ और गिरफ़्तार हों।

¹⁴इसलिए ऐ ठट्ठा करने वालो, जो यरुशलीम के इन बाशिनदों पर हुक्मरानी करते हो; खुदावन्द का कलाम सुनो:¹⁵ चूँकि तुम कहा करते हो, कि "हम ने मौत से 'अहद बाँधा, और पाताल से पैमान कर लिया है; जब सज़ा का सैलाब आएगा तो हम तक नहीं पहुँचेंगे, क्यूँकि हम ने झूठ को अपनी पनाहगाह बनाया है और दरोगागोई की आड़ में छिप गए हैं;"

¹⁶इसलिए~खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है देखो मैं सिय्यून-में बुनियाद के लिए एक पत्थर रखूँगा, आज़मूदा पत्थर मुहक़म बुनियाद के लिए कोने के सिरे का क़ीमती पत्थर: जो कोई ईमान लाता है क़ायम रहेगा।

¹⁷और मैं 'अदालत को सूत, सदाक़त को साहूल बनाऊँगा; और ओले झूठ की पनाहगाह को साफ़ कर दूँगे, और पानी छिपने के मकान पर फैल जायेगा।

¹⁸और तुम्हारा 'अहद जो मौत से हुआ मन्सूख़ हो जाएगा और तुम्हारा पैमान जो पाताल से हुआ क़ायम न रहेगा; जब सज़ा का सैलाब आएगा, तो तुम को पामाल करेगा।¹⁹ और ~गुज़रते वक्रत तुम को बहा ले जाएगा सुबह और शब-ओ-रोज़ आएगा ~बल्कि उसका ज़िक़्र सुनना भी ख़ौफ़नाक होगा।

²⁰~क्यूँकि पलंग ऐसा छोटा है कि आदमी उस पर दराज़ नहीं हो सकता; और लिहाज़ ऐसा तंग है कि वह अपने आपको उसमें लपेट नहीं सकता।²¹ क्यूँकि खुदावन्द उठेगा जैसा कोह-ए-पराज़ीम में, और वह ग़ज़बनाक होगा जैसा जिबा'ऊन की वादी में; ताकि अपना काम बल्कि अपना 'अजीब काम करे और अपना काम, हाँ अपना अनोखा, काम पूरा करे।

²²~इसलिए अब तुम ठट्ठा न करो, ऐसा न हो कि तुम्हारे बंद सख़्त हो जाएँ क्यूँकि मैंने खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज से सुना है कि उसने कामिल और मुसम्मम इरादा किया है कि सारी सर ज़मीन को तबाह करे।

²³कान लगा कर मेरी आवाज़ सुनो, सुनने वाले होकर मेरी बात पर दिल लगाओ।²⁴ ~क्या किसान बोने के लिए हर रोज़ हल चलाया करता है? क्या वह हर वक्रत अपनी ज़मीन को खोदता और उसके ढेले फोड़ा करता है?

²⁵~जब उसको हमवार कर चुका, तो क्या वह अजवायन को नहीं छांटता, और ज़ीरे को डाल नहीं देता, और गेहूँ को कतारों में नहीं बोता, और जौ को उसके मु'अय्यन मकान में, और कठिया गेहूँ को उसकी ख़ास क्यारी में नहीं बोता?²⁶ ~क्यूँकि उसका खुदा उसको तरबियत करके उसे सिखाता है।

²⁷कि अजवाइन को दावने के हेंगे से नहीं दावते, और ज़ीरे के ऊपर गाड़ी के पहिये नहीं घुमाते; बल्कि अजवाइन को लाठी से झाड़ते हैं और ज़ीरे को छड़ी से।

²⁸~रोटी के गल्ले पर दौं चलाता है, लेकिन वह हमेशा उसे कूटता नहीं रहता; और अपनी गाड़ी के पहियों और घोड़ों को उस पर हमेशा फिराता नहीं उसे सरासर नहीं कुचलेगा।

²⁹~यह भी रब्ब-उल-अफ़वाज से मुकर्रर हुआ है, जिसकी मसलहत 'अजीब और दानाई 'अज़ीम है।

Chapter 29

¹~अरीएल पर अफ़सोस अरीएल उस शहर पर जहाँ दाऊद खेमाज़न हुआ साल पर साल ज़्यादा करो, 'ईद पर 'ईद मनाई जाए।' तोभी मैं अरीएल को दुख दूँगा,~और वहाँ नौहा और मातम होगा लेकिन मेरे लिए वह अरीएल ही ठहरेगा।

³~मैं तेरे खिलाफ़ चारों तरफ़ खेमाज़न हूँगा और मोर्चा बंदी करके तेरा मुहासरा करूँगा और तेरे खिलाफ़ दमदमा बाँधूँगा | ⁴~और तू पस्त होगा, और ज़मीन पर से बोलेगा, और खाक पर से तेरी आवाज़ धीमी आयेगी तेरी सदा भूत की सी होगी जो ज़मीन के अन्दर से निकलेगी, और तेरी बोली खाक पर से चुरुगने की आवाज़ मा'लूम होगी।

⁵~लेकिन तेरे दुश्मनों का गोल बारीक गर्द की तरह होगा, और उन ज़ालिमों के गिरोह उड़नेवाले भूसे की तरह होगी; और यह अचानक एक दम में वाके' होगा रब्ब-उल-अफ़वाज़ खुद गरजने और ज़लज़ले के साथ, और बड़ी आवाज़ और बड़ी आँधी और तूफ़ान और आग के मुहलिक़ शो'ले के साथ तुझे सज़ा देने को आएगा।

⁷~और उन सब क़ौमों का गिरोह जो अरीएल से लड़ेगा, या'नी वह सब जो उससे और उसके क़िले' से जंग करेंगे और उसे दुख देंगे, ख़्वाब या रात के ख़्वाब की तरह हो जायेंगे | ⁸~जैसे भूका आदमी ख़्वाब में देखे कि खा रहा है, जाग उठे और उसका जी न भरा हो; प्यासा आदमी ख़्वाब में देखे कि पानी पी रहा है, जाग उठे और प्यास से बेताब हो' उसकी जान आसूदा न हो; ऐसा ही उन सब क़ौमों के गिरोह का हाल होगा जो सिष्यून पहाड़ से जंग करती हैं।

⁹ठहर जाओ और त'अज्जुब करो, ऐश-ओ-'इशरत करो और अन्धे हो जाओ, वह मस्त हैं लेकिन मय से नहीं, वह लड़खड़ाते हैं लेकिन नशे में नहीं | ¹⁰~क्योंकि ख़ुदावन्द ने तुम पर गहरी नींद की रूह भेजी है, और तुम्हारी आँखों या'नी नबियों को नाबीना कर दिया; और तुम्हारे सिरों या'नी ग़ैबबीनों पर हिजाब डाल दिया:

¹¹और सारी रोया तुम्हारे नज़दीक सरबमुहर किताब के मज़मून की तरह होगी, जिसे लोग किसी पढ़े लिखे को दें और कहें कि इसको पढ़ और वह कहे, पढ़ नहीं सकता, क्योंकि यह सर-ब-मुहर है | ¹²और ~फिर वह किताब किसी नाख़्वान्द को दें और कहें, इसको पढ़ और वह कहे, मैं तो पढ़ना नहीं जानता।"

¹³फिर ख़ुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि यह लोग ज़बान से मेरी नज़दीकी चाहते हैं और होठों से मेरी ता'ज़ीम करते हैं लेकिन इनके दिल मुझसे दूर हैं मेरा ख़ौफ़ जो इनको हुआ सिर्फ़ आदियों की ता'लीम सुनने से हुआ | ¹⁴~इसलिए मैं इन लोगों के साथ 'अजीब सुलूक करूँगा, जो हैरत अंगेज़ और ता'अज्जुब खेज़ होगा और इनके 'आक़िलों की 'अक्ल ज़ायल हो जाएगी और इनके समझदारों की समझ जाती रहेगी।"

¹⁵उन पर अफ़सोस जो अपनी मश्वरत ख़ुदावन्द से छिपाते हैं', जिनका कारोबार अन्धेरे में होता है और कहते हैं, कौन हम को देखता है? कौन हम को पहचानता है?"

¹⁶~आह तुम कैसे टेढ़े हो! क्या कुम्हार मिट्टी के बराबर गिना जाएगा या मसनू'अ अपने सानि'अ से कहेगा, कि मैं तेरी सन'अत नहीं क्या मखलूक अपने खालिक़ से कहेगा, कि तू कुछ नहीं जानता?"

¹⁷~क्या थोड़ा ही 'अरसा बाक़ी नहीं कि लुबनान शादाब मैदान हो जाएगा, शादाब मैदान जंगल गिना जाएगा? ¹⁸~और उस वक़्त बहरे किताब की बातें सुनेंगे और अंधों की आँखें तारीकी और अन्धेरे में से देखेंगी। ¹⁹तब ग़रीब ख़ुदावन्द में ज़्यादा खुश होंगे~और ग़रीब मोहताज़ इस्राईल के कुदूस में शादमान होंगे |

²⁰क्योंकि ज़ालिम फ़ना हो जाएगा, और ठठा करनेवाला हलाक़ होगा; और सब जो बदकिरदारी के लिए बेदार रहते हैं, काट डाले जाएँगे; ²¹या'नी जो आदमी को उसके मुक़द्दमे में मुजरिम ठहराते, और उसके लिए जिसने 'अदालत से फाटक पर मुक़द्दमा फैसल किया फंदा लगाते और रास्तबाज़ को बेवजह बरग़श्ता करते हैं।

²²इसलिए ख़ुदावन्द जो इब्राहीम का नजात देनेवाला है, या'क़ूब के ख़ान्दान के हक़ में यूँ फ़रमाता है, कि या'क़ूब अब शर्मिन्दा न होगा, वह हरगिज़ ज़र्द रू न होगा। ²³बल्कि ~उसके फ़र्ज़न्द अपने बीच मेरी दस्तकारी देख कर मेरे नाम की तक्रदीस करेंगे; हाँ या'क़ूब के कुदूस ~की तक्रदीस करेंगे और इस्राईल के ख़ुदा से डरेंगे। ²⁴~और वह भी जो रूह में गुमराह हैं, फ़हम हासिल करेंगे और बुड़बुड़ाने वाले ता'लीम पज़ीर होंगे।"

Chapter 30

¹खुदावन्द फ़रमाता है, उन बागी लड़कों पर अफ़सोस जो ऐसी तदबीर करते हैं जो मेरी तरफ़ से नहीं, और 'अहद-ओ-पेमान ~करते हैं जो मेरी रूह की हिदायत से नहीं; ताकि गुनाह पर गुनाह करें।²वह मुझ से पूछे बग़ैर मिस्र को जाते हैं ताकि फ़िर'औन के पास पनाह लें और मिस्र के साये में अम्न से रहें।

³लेकिन फ़िरऔन की हिमायत तुम्हारे लिए ख़जालत होगी और मिस्र के साये में पनाह लेना तुम्हारे वास्ते रुस्वाई होगा।⁴~क्यूँकि उसके सरदार जु'अन में हैं और उसके कासिद हनीस में जा पहुँचे।⁵~वह उस क्रौम से जो उनको कुछ फ़ाइदा न पहुँचा सके, और मदद ओयारी नहीं बल्कि ख़जालत और मलामत का ज़रि'आ हो शर्मिन्दा होंगे।"

⁶दक्खिन के जानवरों के बारे में दुख और मुसीबत की सरज़मीन में, जहाँ से नर-ओ-मादा शेर-ए-बबर और अफ़'ई और उड़नेवाले आग के साँप आते हैं वह अपनी दौलत गधों की पीठ पर, और अपने ख़ज़ाने ऊँटों के कोहान पर लाद कर उस क्रौम के पास ले जाते हैं जिससे उनको कुछ फ़ायदा न पहुँचेगा।⁷~क्यूँकि मिस्रियों की मदद बातिल और बेफ़ायदा होगी, इसी वजह से मैंने उसे, राहब कहा जो सुस्त बैठी है।"

⁸~अब जाकर उनके सामने इसे तख़्ती पर लिख और किताब में लिख ताकि आइन्दा हमेशा से हमेशा ~तक क़ायम रहे।⁹क्यूँकि यह बागी लोग और झूठे फ़र्ज़न्द हैं, जो खुदावन्द की शरी'अत को सुनने से इन्कार करते हैं;

¹⁰जो ग़ैबबीनों से कहते हैं, "ग़ैबबीनी न करो," और नबियों से, कि "हम पर सच्ची नबुव्वतें ज़ाहिर न करो, हम को ~ खुशगवार बातें सुनाओ, और हम से झूठी नबुव्वत करो,"¹¹रास्ते से बाहर जाओ, रास्ते से बरग़श्ता हो, और इस्राईल के कुदूस ~को हमारे बीच से ख़त्म करो।"

¹²~फिर इस्राईल का कुदूस यूँ फ़रमाता है, "क्यूँकि ~तुम इस कलाम को हकीर जानते, और जुल्म और कज़रवी पर भरोसा रखते, और उसी पर क़ायम हो;

¹³इसलिए यह बदकिरदारी तुम्हारे लिए ऐसी होगी जैसे फटी हुई दीवार जो गिरना चाहती है ऊँची उभरी हुई दीवार जिसका गिरना अचानक एक दम में हो।

¹⁴~वह इसे कुम्हार के बर्तन की तरह तोड़ डालेगा, इसे बे दरेग़ा चकनाचूर करेगा; चुनाँचे ~इसके टुकड़ों में एक ठीकरा भी न मिलेगा जिसमें चूल्हे पर से आग उठाई जाए, या होज़ से पानी लिया जाए।"

¹⁵~क्यूँकि खुदावन्द यहोवाह, इस्राईल का कुदूस यूँ फ़रमाता है, कि वापस आने और ख़ामोश बैठने में तुम्हारी सलामती है; ख़ामोशी और भरोसे में तुम्हारी ताक़त है।" लेकिन तुम ने यह न चाहा।¹⁶~तुम ने कहा, "नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़ के भागेंगे;" इसलिए तुम भागोगे; और कहा, "हम तेज़ रफ़्तार जानवरों पर सवार होंगे;" फिर तुम्हारा पीछा करनेवाले तेज़ रफ़्तार होंगे।

¹⁷एक की झिड़की से एक हज़ार भागेंगे पाँच की झिड़की से तुम ऐसा भागोगे कि तुम उस 'अलामत की तरह जो पहाड़ की चोटी पर और उस निशान की तरह जो कोह पर नसब किया गया हो रह जाओगे।

¹⁸~तोभी खुदावन्द तुम पर मेहरबानी करने के लिए इन्तिज़ार करेगा, और तुम पर रहम करने के लिए बुलन्द होगा। क्यूँकि खुदावन्द ~इन्साफ़ करने वाला खुदा है, मुबारक हैं वह सब जो उसका इन्तिज़ार करते हैं।¹⁹क्यूँकि ऐ सिव्यूनी क्रौम, जो यरुशलीम में बसेगी, तो ~फिर न रोएगी; वह तेरी फ़रियाद की आवाज़ सुन कर यक़ीनन तुझ पर रहम फ़रमाएगा; वह सुनते ही तुझे जवाब देगा।

²⁰और अगरचे खुदावन्द तुझ को तंगी की रोटी और मुसीबत का पानी देता है, तोभी तेरा मु'अल्लिम फिर तुझ से रूपोश न होगा; बल्कि तेरी आँखें उसको देखेंगी।²¹और जब तू दहनी या बाँई तरफ़ मुड़े, तो तेरे कान तेरे पीछे से यह आवाज़ सुनेंगे, कि "राह यही है, इस पर चला।"

²²उस ~वक़्त तू अपनी खोदी हुई मूरतों पर मढ़ी हुई चाँदी, और ढाले हुए बुतों पर चढ़े हुए सोने को नापाक करेगा। तू उसे हैज़ के लते की तरह फेंक देगा तू उसे कहेगा, निकल दूर हो।

²³~तब वह तेरे बीज के लिए जो तू ज़मीन में बोए, बारिश भेजेगा; और ज़मीन की अफ़ज़ाइश की रोटी का ग़ल्ला, 'उम्दा और कसरत से होगा। उस वक़्त तेरे जानवर वसी' चरागाहों में चरेंगे।²⁴और ~बैल और जवान गधे जिनसे ज़मीन जोती जाती है, लज़ीज़ चारा खाएँगे जो बेल्वे और छाज से फटका गया हो।

²⁵~और जब बुर्ज गिर जाएँगे और बड़ी ख़ूँरेज़ी होगी, तो हर एक ऊँचे पहाड़ और बुलन्द टीले पर चश्मे और पानी की नदियाँ होंगी।²⁶~और जिस वक़्त खुदावन्द अपने लोगों की शिकस्तगी को दुरुस्त करेगा और उनके ज़ख्मों को अच्छा करेगा; तो चाँद की चाँदनी ऐसी होगी जैसी सूरज की रोशनी, और सूरज की रोशनी सात गुनी बल्कि सात दिन की रोशनी के बराबर होगी।

²⁷देखो खुदावन्द दूर से चला आता है, उसका ग़ज़ब भड़का और धुँवें का बादल उठा उसके लब क़हर आलूदा और उसकी ज़बान भसम करने वाली आग की तरह है।²⁸~उसका दम नदी के सैलाब की तरह है, जो गर्दन तक पहुँच जाए; वह क्रौमों को हलाकत के छाज में फटकेगा और लोगों के जबड़ों में लगाम डालेगा, ताकि उनको गुमराह करे।

²⁹~तब तुम गीत गाओगे, जैसे उस रात गाते हो जब मुक़द्दस 'ईद मनाते हो; और दिल की ऐसी खुशी होगी जैसी उस शख्स की जो बाँसुरी लिए हुए खिरामान हो कि खुदावन्द के पहाड़ में इस्राईल की चट्टान के पास जाए।

³⁰क्यूँकि खुदावन्द अपनी जलाली आवाज़ सुनाएगा, ~और अपने क़हर की शिद्दत और आतिश-ए-सोज़ान के शो'ले, ~और सैलाब और आँधी और ओलों के साथ अपना बाज़ू नीचे लाएगा।

³¹हाँ खुदावन्द की आवाज़ ही से असूर तबाह हो जाएगा वह उसे लठ से मारेगा।³²और उस क़ज़ा के लठ की हर एक ज़र्ब जो खुदावन्द उस पर लगाएगा, ~दफ़ और बरबत के साथ होगी और वह उससे सख़्त लड़ाई लड़ेगा।

³³क्यूँकि तूफ़त मुद्दत से तैयार किया गया है; ~हाँ, वह बादशाह के लिए गहरा और वसी'~बनाया गया है; ~उसका ढेर आग और बहुत सा ईधन है, ~और खुदावन्द की साँस गन्धक के सैलाब की तरह उसको सुलगाती है।

Chapter 31

¹~उसपर अफ़सोस, जो मदद के लिए मिस्र को जाते और घोड़ों पर एतमाद करते हैं और रथों पर भरोसा रखते हैं इसलिए कि वह बहुत हैं, और सवारों पर इसलिए कि वह बहुत ताकतवर हैं; लेकिन इस्राईल के कुददूस पर निगाह नहीं करते और खुदावन्द के तालिब नहीं होते।²~लेकिन वह भी तो 'अक्लमन्द है और बला नाज़िल करेगा, और अपने कलाम को बातिल न होने देगा वह शरीरों के घराने पर और उन पर जो बदकिरदारों की हिमायत करते हैं चढ़ाई करेगा।

³~क्योंकि मिस्री तो इन्सान हैं खुदा नहीं। और उनके घोड़े गोश्त हैं रूह नहीं सो जब खुदावन्द अपना हाथ बढ़ाएगा तो हिमायती गिर जाएगा, और वह जिसकी हिमायत की गई पस्त हो जाएगा, और वह सब के सब इकट्ठे हलाक हो जायेंगे।

⁴क्योंकि ~खुदावन्द ने मुझ से यूँ फ़रमाया है कि जिस तरह शेर बबर हों जवान शेर बबर अपने शिकार पर से गुर्राता है और अगर बहुत से गड़रिये उसके मुकाबिले को बुलाए जाएँ तो उनकी ललकार से नहीं डरता, और ~उनके हुजूम से दब नहीं जाता; उसी तरह रब्ब-उल-अफ़वाज सिय्यून पहाड़ और उसके टीले पर लड़ने को उतरेगा।

⁵~मंडलाते हुए परिन्दे की तरह रब्ब-उल-अफ़वाज यरुशलीम की हिमायत करेगा; वह ~हिमायत करेगा और रिहाई बख़्शेगा, रहम करेगा और बचा लेगा।⁶~ऐ बनी इस्राईल तुम उसकी तरफ़ फ़िरो जिससे तुम ने सख़्त बगावत की है।⁷~क्योंकि उस वक़्त उनमें से हर एक अपने चाँदी के बुत और अपनी सोने की मूर्तें, जिनको तुम्हारे हाथों ने ख़ताकारी के लिए बनाया, निकाल फेंकेगा⁸~तब असूर उसी तलवार से गिर जाएगा जो इन्सान की नहीं, और वही तलवार जो आदमी की नहीं उसे हलाक करेगी; वह तलवार के सामने से भागेगा और उसके जवान मर्द ख़िराज गुज़ार बनेंगे।⁹~और वह ख़ौफ़ की वजह से अपने हसीन मकान से गुज़र जाएगा, और उसके सरदार झण्डे से ख़ौफ़ज़दह हो जाएँगे," ये खुदावन्द फ़रमाता है, जिसकी आग सिय्यून में और भट्टी यरुशलीम में है।

Chapter 32

¹~देख एक बादशाह सदाक़त से सल्तनत करेगा और शहज़ादे 'अदालत से हुक्मरानी करेंगे।' और ~एक शख्स आँधी से पनाहगाह की तरह होगा, और तूफ़ान से छिपने की जगह; और खुशक ज़मीन में पानी की नदियों की तरह और मान्दिगी की ज़मीन में ~बड़ी चट्टान के साये की तरह होगा³~उस वक़्त देखनेवालों की आँखें धुन्धली न होंगी, और सुननेवालों के कान सुनने वाले होंगे ।

⁴जल्दबाज़ ~का दिल इरफ़ान हासिल करेगा, और लुकनती की ज़बान साफ़ बोलने में मुस्त'इद होगी।⁵~तब बेवकूफ़ बा-मुरव्वत न कहलाएगा और बखील को कोई सखी न कहेगा।⁶~क्यूँकि बेवकूफ़ हिमाक़त की बातें करेगा और उसका दिल बदी का मंसूबा बाँधेगा कि बेदीनी करे और खुदावन्द के खिलाफ़ दरोहगोई करे और भूके के पेट को खाली करे और प्यासे को पानी से महरूम रखे

⁷~और बखील के हथियार ज़बून हैं; वह बुरे मंसूबे बाँधा करता है ताकि झूठी बातों से ग़रीब को और मोहताज को, जब कि ~ वह हक़ बयान करता हो, हलाक करे ।⁸~लेकिन साहब-ए-मुरव्वत सखावत की बातें सोचता है, और वह सखावत के कामों में साबित क़दम रहेगा।

⁹~ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो, उठो मेरी आवाज़ सुनो; ऐ बे परवा बेटियों, मेरी बातों पर कान लगाओ।'¹⁰~ऐ बे परवाह 'औरतो, साल से कुछ ज़्यादा 'अर्से में तुम बेआराम हो जाओगी; क्यूँकि अंगूर की फ़रस जाती रहेगी फल जमा' करने की नौबत न आयेगी ।

¹¹ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो थरथराओ , ऐ बेपर्वाओ मुज़तरिब हो कपड़े उतार कर बरहना हो जाओ, कमर पर टाट बाँधो।'¹²वह ~दिल पज़ीर खेतों और मेवादार ताकों के लिए छाती पीटेंगी।¹³~मेरे लोगों की सर ज़मीन में काँटे और झाड़ियाँ होंगी बल्कि खुशवक़्त शहर के तमाम खुश घरों में भी।

¹⁴~क्यूँकि क्रस ~खाली हो जाएगा, और आबाद शहर तर्क ~किया जाएगा; 'ओफल और दीद बानी का बुर्ज हमेशा तक मांद बनकर गोखरों की आरामगाहें और गल्लों की चरागाहें होंगे ।¹⁵~ता वक़्त ये कि आलम-ए-बाला~से हम पर रूह नाज़िल न हो और वीरान शादाब मैदान न बने, और शादाब मैदान जंगल न गिना जाए।

¹⁶तब ~वीरान में 'अद्ल बसेगा और सदाक़त शादाब मैदान में रहा करेगी।'¹⁷~और सदाक़त का अंजाम सुलह होगा, और सदाक़त का फल हमेशा आराम-ओ-इत्मीनान होगा¹⁸~और मेरे लोग सलामती के मकानों में और बेखतर घरों में, और आसूदगी और आसाइश के काशानों में रहेंगे ।

¹⁹~लेकिन जंगल की बर्बादी के वक़्त ओले पड़ेंगे औए शहर बिलकुल पस्त हो जायेगा ।²⁰~तुम खुशनसीब हो, जो सब नहरों के आसपास बोते हो और बैलों और गधों को उधर ले जाते हो ।

Chapter 33

¹~तुझ पर अफ़सोस कि तू ग़ारत करता है, और ~ग़ारत न किया गया था! तू दगाबाज़ी करता है और किसी ने तुझ से दगाबाज़ी न की थी? जब तू ग़ारत~कर चुकेगा तो तू~ग़ारत~ किया जाएगा; और जब तू दगाबाज़ी कर चुकेगा, तो और लोग तुझ से दगाबाज़ी करेंगे।

²ऐ खुदावन्द हम ~पर रहम कर; क्योंकि ~हम तेरे मुन्तज़िर हैं। तू हर सुबह उनका बाज़ू हो और मुसीबत के वक़्त हमारी नजात।

³हंगामे ~की आवाज़ सुनते ही लोग भाग गए, तेरे उठते ही क्रोमें तितर-बितर हो गई।⁴और ~तुम्हारी लूट का माल इसी तरह बटोरा जायेगा जिस तरह कीड़े बटोर लेते हैं, लोग उस पर टिड्डी की तरह टूट पड़ेंगे।

⁵खुदावन्द ~सरफ़राज़ है, क्योंकि वह बलन्दी पर रहता है; उसने 'अदालत और सदाक़त से सिय्यून को मा'मूर कर दिया है।⁶और तेरे ज़माने में अमन होगा नजात व हिकमत और 'अक्ल ~की फ़िरावानी होगी;~खुदावन्द का ख़ौफ़ उसका खज़ाना है।

⁷~देख उनके बहादुर बाहर फ़रियाद करते हैं और सुलह के क़ासिद फूट-फूटकर रोते हैं।⁸~शाहराहें सुनसान हैं, कोई ~चलनेवाला न रहा; उसने 'अहद शिकनी की शहरों को हक़ीर जाना, और ~इन्सान को हिसाब में नहीं लाता।

⁹~ज़मीन कुढ़ती और मुरझाती है। लुबनान रुस्वा हुआ और मुरझा गया, शादून वीराने की तरह है; बसन और कर्मिल बे-बर्ग हो गए।

¹⁰खुदावन्द~फ़रमाता है, अब मैं उठूँगा; अब मैं सरफ़राज़ हूँगा; अब मैं सर बलन्द हूँगा।¹¹~तुम भूसे से बारदार होगे, फूस तुम से पैदा होगा; तुम्हारा दम आग की तरह तुम को भसम करेगा।¹²और ~लोग जले चूने की तरह होंगे; वह उन काँटों की तरह होंगे, जो ~काटकर आग में जलाए जाएँ।"

¹³तुम जो दूर हो, सुनो कि मैंने क्या किया; और तुम जो नज़दीक हो, मेरी कुदरत का इक्रार करो।¹⁴~ वह गुनाहगार जो सिय्यून में हैं डर गए; कपकपी ने बेदीनों को आ दबाया है : 'कौन हम में से उस मुहलिक़ आग में रह सकता है? और कौन हम में से हमेशा के शो'लों के बीच बस सकता है?"

¹⁵जो रास्तरफ़्तार और दुरुस्तगुफ़्तार हैं जो ~ज़ुल्म के नफ़े' हक़ीर जानता है, जो रिश्तवत से दस्तबरदार है, जो अपने कान बन्द करता है ताकि ख़ूँरेज़ी के मज़मून न सुने, और आँखें मून्दा है ताकि बुराई न देखे।¹⁶वह बलन्दी पर रहेगा, उसकी पनाहगाह पहाड़ का क़िला' होगी, उसको रोटी दी जाएगी, उसका पानी मुक़रर होगा।

¹⁷~तेरी आँखें बादशाह का जमाल देखेंगी: वह बहुत दूर तक वसी' मुल्क पर नज़र करेंगी।¹⁸~तेरा दिल उस दहशत पर सोचेगा कहाँ है वह गिनने वाला कहाँ हैं वह ~तोलनेवाला? कहाँ है वह जो बुजों को गिनता था?¹⁹तू ~फिर उन तुन्दखूँ लोगों को न देखेगा जिनकी बोली तू समझ नहीं सकता उनकी ज़बान बेगाना है जो तेरी समझ में नहीं आती।

²⁰~हमारी ईदगाह सिय्यून पर नज़र कर; तेरी आँखें यरुशलीम को देखेंगी जो सलामती का मक़ाम है, बल्कि ऐसा खेमा जो हिलाया न जाएगा, जिसकी मेखों में से एक भी उखाड़ी न जाएगी, और उसकी डोरियों में से एक भी तोड़ी न जाएगी।²¹~बल्कि वहाँ जुलजलाल खुदावन्द, बड़ी नदियों और नहरों के बदले हमारी गुन्जाइश के लिए आप मौजूद होगा कि वहाँ डॉड की कोई नाव न जाएगी, और न शानदार जहाज़ों का गुज़र उसमें होगा।

²²~क्योंकि खुदावन्द हमारा हाकिम है, खुदावन्द हमारा शरी'अत देने वाला है~खुदावन्द हमारा बादशाह है~~वही हम को बचाएगा।

²³~तेरी रस्सियाँ ढीली हैं; लोग मस्तूल की चूल को मज़बूत न कर सके, वह बादबान न फैला सके; सो लूट का वाफ़िर माल तक्रसीम किया गया, लंगड़े भी ग़नीमत पर क़ाबिज़ हो गए।²⁴वहाँ के बाशिन्दों में भी कोई न कहेगा, कि 'मैं बीमार हूँ;''~और उनके गुनाह बख़्शे जाएँगे।

Chapter 34

¹~ऐ कौमों नज़दीक आकर सुनो, ऐ उम्मतों कान लगाओ ! ज़मीन और उसकी मा'मूरी, दुनिया और सब चीजें जो उसमें हैं सुने, ²क्योंकि ~खुदावन्द का क्रहर तमाम कौमों पर और उसका ग़ज़ब उनकी सब फ़ौजों पर है; उसने ~उनको हलाक कर दिया, उसने उनको ज़बह होने के लिए हवाले किया।

³~और उनके मक़तूल फेंक दिए जायेंगे बल्कि उनकी लाशों से बदबू उठेगी और पहाड़ उनके खून से बह जाएँगे।⁴और ~तमाम अजराम-ए-फ़लक गुदाज़ हो जायेंगे और आसमान तूमार की ~तरह लपेटे जाएँगे; और उनकी तमाम अप्रवाज ~ताक और अंजीर के मुरझाये हुए पत्तों की तरह गिर जाएँगी।

⁵~क्योंकि मेरी तलवार आसमान में मस्त हो गई है; देखो, वह अदोम पर और उन लोगों पर जिनको मैंने मल'ऊन किया है सज़ा देने को नाज़िल होगी।⁶खुदावन्द की तलवार खून आलूदा है; वह चर्बी ~और बरों और बकरों के खून से, और मेढ़ों के गुदों ~की चर्बी से चिकना गई। क्योंकि खुदावन्द के लिए बुराह में एक कुर्बानी और अदोम के मुल्क में बड़ी ख़ूरेज़ी है।

⁷~और उनके साथ जंगली साँड और बछड़े और बैल ज़बह होंगे और उनका मुल्क खून से सेराब हो जाएगा और उनकी गर्द चर्बी ~से चिकना जाएगी।

⁸~क्योंकि ये खुदावन्द का इन्तक़ाम लेने का दिन और बदला लेने का साल है, जिसमें वह सिय्यून का इन्साफ़ करेगा।⁹~और उसकी नदियाँ राल होजाएंगी और उसकी खाक गंधक और उसकी ज़मीन जलती हुई राल होगी।¹⁰~जो शब-ओ-रोज़ कभी न बुझेगी; उससे हमेशा तक धुँवा उठता रहेगा। नस्ल-दर-नस्ल वह उजाड़ रहेगी, हमेशा से हमेशा तक कोई उधर से न गुज़रेगा।

¹¹~लेकिन हवासिल और खारपुश्त उसके मालिक होंगे उल्लू और कौवे उसमें बसेंगे; और उस पर वीरानी का सूत' पड़ेगा, और सुनसानी का साहूल डाला जाएगा।¹²उसके ~अशराफ़ में से कोई न होगा जिसे वह बुलाएँ कि हुक्मरानी करे और उसके सब सरदार नाचीज़ होंगे।

¹³~और उसके क़स्सों ~में कौटे और उसके क़िलों' में बिच्छू बूटी और ऊँट कटारे उगेंगे और वह गीदड़ों की माँदें और शतरमुर्ग के रहने का मक़ाम होगा।¹⁴~और दशती दरिन्दे भेड़ियों से मुलाक़ात करेंगे और छगमास अपने साथी को पुकारेगा;हाँ इफ़रात-ए-शब ~वहाँ आराम करेगा और अपने टिकने की जगह पायेगा।

¹⁵~वहाँ उड़नेवाले साँप का आशियाना होगा और अंडे देना और सैना और अपने साएँ में जमा' करना होगा वहाँ गिद्ध जमा' होंगे और हर एक के साथ उसकी मादा होगी।

¹⁶तुम खुदावन्द की किताब में ढूँडो और पढ़ो ~: इनमें से एक भी कम न होगा, और कोई बेजुफ़्त न होगा; क्योंकि मेरे मुँह ने यही हुक्म किया है और उसकी रूह ने इनको जमा' किया है।¹⁷~और उसने इनके लिए पर्ची डाली और उसके हाथ ने इनके लिए उसको ~जरीब से तक्रसीम किया। इसलिए वह हमेशा तक उसके मालिक होंगे और नसल दर नसल उसमें बसेंगे।

Chapter 35

¹~जंगल और वीराना शादमान होंगे दशत ~खुशी करेगा और नरगिस की तरह शगुफ़ता होगा।²उसमें कसरत से कलियाँ निकलेंगी, वह शादमानी से गा कर खुशी करेगा। लुबनान की शौकत और कर्मिल और शारून की ज़ीनत उसे दी जाएगी; वह खुदावन्द का जलाल और हमारे खुदा की हशमत देखेंगे।

³~कमज़ोर हाथों को ताक़त और नातवान घुटनों को तवानाई दो।⁴उनको ~जो घबराने वाले हैं कहो, हिम्मत बांधो मत डरो देखो तुम्हारा खुदा सज़ा और जज़ा लिए आता है। हाँ, खुदा ही आएगा और तुम को बचाएगा।"

⁵~उस वक्रत अन्धों की आँखें खोली जायेगी और बहरों के कान खोले जाएँगे।⁶तब ~लंगड़े हरन की तरह चौकड़ियाँ भरेंगे और गूँगे की ज़बान गाएगी क्योंकि वीरान में पानी और दशत में नदियाँ फूट निकलेंगी।⁷बल्कि ~सराब तालाब हो जाएगा और प्यासी ज़मीन चश्मा बन जाएगी; गीदड़ों की मान्दों में जहाँ वह पड़े थे ने और नल का ठिकाना होगा।

⁸और ~वहाँ एक शाहराह और गुज़रगाह होगी जो पाक राह कहलाएगी; जिससे कोई नापाक गुज़र न करेगा लेकिन ये मुसाफ़िरों के लिए होगी, बेवकूफ़ भी उसमें गुमराह न होंगे।⁹~वहाँ शेर बबर न होगा और न कोई दरिन्दा उस पर चढ़ेगा न वहाँ पाया जाएगा; लेकिन जिनका फ़िदया दिया गया वहाँ सैर करेंगे |

¹⁰और ~जिनको खुदावन्द ने मखलसी बख़्शी लौटेंगे और सिय्यून में गाते हुए आएँगे, और हमेशा सुख उनके सिरों पर होगा वह खुशी और शादमानी हासिल करेंगे, और ग़म व अंदोह काफ़ूर हो जाएँगे।

Chapter 36

¹और ~हिज़क्रियाह बादशाह की सल्तनत के चौदहवें बरस यूँ हुआ कि शाह-ए-असूर ~सनहेरिब ने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया।²और~शाह-ए-असूर~~ने रबशाक्री को एक बड़े लश्कर के साथ लकीस से हिज़क्रियाह के पास यरुशलीम को भेजा, और उसने ऊपर के तालाब की नाली पर धोबियों के मैदान की राह में मक़ाम किया।³~तब इलयाक्रीम बिन ख़िलक्रियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुंशी और मुहर्रिर यूआख़ बिन आसिफ़ निकल कर उसके पास आए।

⁴~और रबशाक्री ने उनसे कहा,तुम ~हिज़क्रियाह से कहो : कि मलिक-ए-मु'अज़ज़म शाह-ए-असूर यूँ ~फ़रमाता है कि तू क्या एतमाद किए बैठा है?⁵~क्या मशवरत और जंग की ताक़त मुँह की बातें ही हैं आखिर किस के भरोसे पर तूने मुझ से सरकशी की है?

⁶~देख, तुझे उस मसले हुए सरकंडे के 'असा या'नी मिस्र पर भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में गड़ जाएगा और उसे छेद देगा। शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन उन सब के लिए, जो उस पर भरोसा करते हैं ऐसा ही है।'फ़िर अगर तू मुझ से यूँ कहे कि हमारा तवक्कुल खुदावन्द हमारे खुदा पर है,तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को ढाकर हिज़क्रियाह ने यहूदाह और यरुशलीम से कहा है कि तुम इस मज़बह के आगे सिज्दा किया करो।

⁸~इसलिए अब ज़रा मेरे आक्रा शाह-ए-असूर के साथ शर्त बाँध और मैं तुझे दो हज़ार घोड़े दूँगा, बशर्ते कि तू अपनी तरफ़ से उन पर सवार चढ़ा सके।

⁹~भला तू क्यूँकर मेरे आक्रा के कमतरीन मुलाज़िमें में से एक सरदार का भी मुँह फेर सकता है? और तू रथों और सवारों के लिए मिस्र पर भरोसा करता है?

¹⁰~और क्या अब मैंने खुदावन्द के बे कहे ही इस मक़ाम को ग़ारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? खुदावन्द ही ने तो मुझ से कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे ग़ारत करदे

¹¹~तब इलियाक्रीम और शबनाह और यूआख़ ने रबशाक्री से 'अर्ज़ की कि अपने खादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्यूँकि हम उसे समझते हैं, और दीवार पर के लोगों के सुनते हुए यहूदियों की ज़बान में हम से बात न कर।"¹²लेकिन रबशाक्री ने कहा, "क्या मेरे आक्रा ने मुझे ये बातें कहने को तेरे आक्रा के पास या तेरे पास भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी ही नजासत खाने और अपना ही क़ारूर पीने को दीवार पर बैठे हैं?

¹³~फिर रबशाक्री खड़ा हो गया और यहूदियों की ज़बान में बलन्द आवाज़ से यूँ कहने लगा, कि मुल्क-ए-मु'अज़ज़म शाह-ए-असूर का कलाम सुनो!¹⁴~ बादशाह यूँ फ़रमाता है : कि हिज़क्रियाह तुम को धोखा न दे, क्यूँकि वह तुम को छुड़ा नहीं सकेगा।¹⁵~और न वह ये कह कर तुम से खुदावन्द पर भरोसा कराए कि खुदावन्द ज़रूर हम को छुड़ाएगा, और ये शहर शाह-ए-असूर के हवाले न किया जाएगा।

¹⁶हिज़क्रियाह~की न सुनो; क्यूँकि~ शाह-ए-असूर यूँ फ़रमाता है कि तुम मुझ से सुलह कर लो,और ~निकलकर मेरे पास आओ; तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अँजीर के दरख़्त का मेवा खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे।¹⁷जब तक कि मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ, जो तुम्हारे मुल्क की तरह ग़ल्ला ~और मय का मुल्क, रोटी और ताकिस्तानों का मुल्क है।

¹⁸~खबरदार ऐसा न हो कि हिज़क्रियाह तुम को ये कह कर तरगीब दे, कि खुदावन्द हम को छुड़ाएगा। क्या क़ौमों के मा'बूदों में से किसी ने भी अपने मुल्क को~ शाह-ए-असूर के हाथ से छुड़ाया है?¹⁹~हमात और अरफ़ाद के मा'बूद कहाँ हैं? सिफ़वाईम के मा'बूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा लिया?

²⁰~इन मुल्कों के तमाम मा'बूदों में से किस किस ने अपना मुल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो खुदावन्द भी यरुशलीम को मेरे हाथ से छुड़ा लेगा?" "

²¹~लेकिन वह ख़ामोश रहे और उसके जवाब में उन्होंने एक बात भी न कही; क्यूँकि बादशाह का हुक्म ये था कि उसे जवाब न देना।²²~और इलियाक्रीम-बिन-ख़िलक्रियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुंशी और यूआख़-बिन-आसिफ़ मुहर्रिर अपने कपड़े चाक किए हुए हिज़क्रियाह के पास आए और रबशाक्री की बातें उसे सुनाई।

Chapter 37

¹जब हिज़क्रियाह बादशाह ने ये सुना तो अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर ~खुदावन्द के घर में गया।²और उसने घर के दीवान इलियाक्रीम और शबनाह मुंशी और काहिनों के बुजुर्गों को टाट उड़ा कर आमूस के बेटे यसा'याह नबी के पास भेजा।

³~और उनहोंने उससे कहा कि~हिज़क्रियाह यूँ कहता है कि आज का~दिन दुख और मलामत और तौहीन का दिन है क्योंकि बच्चे पैदा होने पर हैं और विलादत की ताक़त नहीं।⁴~शायद खुदावन्द तेरा खुदा रबशाक्री की बातें सुनेगा जिसे उसके आक्रा~शाह-ए-असूर ने भेजा है कि ज़िन्दा खुदा की तौहीन करे; और जो बातें खुदावन्द तेरे खुदा ने सुनीं, उनपर वह मलामत करेगा। फिर तू उस बक़िये के लिए जो मौजूद है दू'आ कर । "

⁵~तब ~हिज़क्रियाह बादशाह के मुलाज़िम यसा'याह के पास आए।⁶और यसा'याह ने उनसे कहा, "तुम अपने आक्रा से यूँ कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं,~जिनसे शाह-ए-असूर के मुलाज़िमों ने मेरी तक़फ़ीर की है,~परेशान न हो।'⁷~देख मैं उसमें एक रूह डाल दूँगा,और वह एक अफ़वाह सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, मैं उसे उसी के मुल्क में तलवार से मरवा डालूँगा।"

⁸इसलिए रबशाक्री लौट गया और उसने~शाह-ए-असूर को लिबनाह से लड़ते पाया, क्योंकि उसने सुना था कि वह लकीस से चला गया है।⁹और उसने कूश के बादशाह तिरहाक्रा के ज़रिए' सुना कि वह तुझ से लड़ने को निकला है; और जब उसने ये सुना, तो हिज़क्रियाह के पास क़ासिद भेजे और कहा,¹⁰~"शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह से यूँ कहना, कि तेरा खुदा जिस पर तेरा यक़ीन है, तुझे ये कह कर धोखा न दे कि यरुशलीम शाह-ए-असूर के क़ब्ज़े में न किया जाएगा।

¹¹देख तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुल्कों को बिलकुल ग़ारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए क्या तू बचा रहेगा?¹²क्या ~उन क़ौमों के मा'बूदों ने उनको, या'नी जुज़ान और हारान और रसफ़ और बनी 'अदन को जो तिलसार में थे, जिनको हमारे बाप-दादा ने हलाक किया, छुड़ाया।¹³~हमात का बादशाह, और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर सिफ़वाईम और हेना' और 'इवाह का बादशाह कहाँ है।

¹⁴हिज़क्रियाह~ने क़ासिदों के हाथ से ख़त लिया और उसे पढ़ा और~हिज़क्रियाह ने ~खुदावन्द के घर जाकर उसे खुदावन्द के सामने फैला दिया।¹⁵~और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द से यूँ दु'आ की,¹⁶~"ऐ रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल के खुदा करूबियों के ऊपर बैठनेवाले; तू ही अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का खुदा है, तू ही ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया।

¹⁷~ऐ खुदावन्द कान लगा और सुन; ऐ खुदावन्द अपनी आँखें खोल और देख;और ~सनहेरिब की इन सब बातों को जो उसने ज़िन्दा खुदा की तौहीन करने के लिए कहला भेजी हैं,सुनले।¹⁸~ऐ खुदावन्द, दर-हक़ीक़त असूर के बादशाहों ने सब क़ौमों को उनके मुल्कों" के साथ तबाह किया,

¹⁹और उनके मा'बूदों को आग में डाला, क्योंकि वह खुदा न थे बल्कि आदमियों की दस्तकारी थे, लकड़ी और पत्थर; इसलिए उन्होंने उनको हलाक किया है।

²⁰इसलिए अब ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, हम को उसके हाथ से बचा ले, ताकि ज़मीन की सब सल्तनतें जान लें कि तू ही अकेला खुदावन्द है।

²¹~तब यसा'याह बिन आमूस ने हिज़क्रियाह को कहला भेजा,कि खुदावन्द ~इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है ~चूँकि तूने शाह-ए-असूर सनहेरिब के खिलाफ़ मुझ से दु'आ की है,²²~इसलिए खुदावन्द ने उसके हक़ में यूँ फ़रमाया है, कि 'कुंवारी दुख़्तर-ए-सियून ने तेरी तहक़ीर की और तेरा मज़ाक़ उड़ाया है। यरुशलीम की बेटी ने तुझ पर सिर हिलाया है।'²³~तूने किस की तौहीन-ओ-तक़फ़ीर की है? तूने किसके खिलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की और अपनी आँखें ऊपर उठाई? इस्राईल के कुददूस के खिलाफ़।

²⁴~तूने अपने खादिमों के ज़रीए से खुदावन्द की तौहीन की और कहा कि मैं अपने बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर बल्कि लुबनान के बीच ~हिस्सों तक चढ़ आया हूँ, और मैं उसके ऊँचे ऊँचे देवदारों और अच्छे से अच्छे सनोबर के दरख़्तों को काट डालूँगा, और मैं उसके चोटी पर के ज़रख़ेज़ जंगल में जा घुसूँगा।²⁵~मैंने खोद खोद कर पानी पिया है और मैं अपने पाँव के तल्वे से मिस्र की सब नदियाँ सुखा डालूँगा।

²⁶~क्या तूने नहीं सुना कि मुझे ये किए हुए मुद्दत हुई;~और मैंने पिछले दिनों से ठहरा दिया था?~अब मैंने उसी को पूरा किया है कि तू फ़सीलदार शहरों को उजाड़ कर खण्डर बना देने के लिए खड़ा हो।²⁷इसी वजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और घबरा गए, और शर्मिन्दा हुए; और मैदान की घास और पौध, छतों पर की घास, खेत के अनाज की तरह हो गए जो अभी बढ़ा न हो।

²⁸मैं तेरी निशस्त और आमद-ओ-रफ़्त और तेरा मुझ पर झुंझलाना जानता हूँ।²⁹~तेरे मुझ पर झुंझलाने की वजह से और इसलिए कि तेरा घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में और अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा, और तू जिस राह से आया है मैं तुझे उसी राह से वापस लौटा दूँगा।"

³⁰और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीज़ें जो अज़-ख़ुद उगती हैं,और दूसरे साल वह चीज़ें जो उनसे पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना और बाग़ लगा कर उनका फल खाना।

³¹और वह बक़िया जो यहूदाह के घराने से बच रहा है, फिर नीचे की तरफ़ जड़ पकड़ेगा और ऊपर की तरफ़ फल लाएगा;³²~क्योंकि एक बक़िया यरुशलीम में से और वह जो बच रहे हैं। सियून पहाड़ से निकलेंगे; रब्ब-उल-अफ़वाज़ की ग़य्यूरी ये कर दिखाएगी।

³³~"इसलिए खुदावन्द शाह-ए-असूर के हक़ में यूँ फ़रमाता है कि वह इस शहर में आने या यहाँ तीर चलाने न पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने और न उसके सामने दमदमा बाँधने पाएगा।³⁴~बल्कि खुदावन्द फ़रमाता है कि जिस रास्ते से वह आया उसी रास्ते से लौट जाएगा, और इस शहर में आने न पाएगा।

³⁵~क्योंकि मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर, इस शहर की हिमायत करके इसे बचाऊँगा।"

³⁶~फिर खुदावन्द के फ़रिश्ते ने असूरियों की लश्करगाह में जाकर एक लाख पिच्चासी हज़ार आदमी जान से मार डाले; और सुबह ~को जब लोग सवेरे उठे, तो देखा कि वह सब पड़े हैं।³⁷~तब शाह-ए-असूर सनहेरिब रवानगी करके वहाँ से चला गया और लौटकर नीनवाह में रहने लगा ।

³⁸और ~जब वह अपने ~मा'बूद निसरूक के मंदिर में 'इबादत कर रहा था तो अदरम्मलिक और शराज़र, उसके बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल किया और अरारात की सर ज़मीन को भाग गए। और उसका बेटाअसरहद्न उसकी जगह बादशाह हुआ

Chapter 38

¹उन ही दिनों में-हिज़क्रियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया और यसा'याह नबी आमूस के बेटे ने उसके पास आकर उससे कहा कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू अपने घर का इन्तिज़ाम करदे क्योंकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं।²तब-हिज़क्रियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ़ किया और खुदावन्द से दु'आ की।³और कहा ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ याद फ़रमा कि मैं तेरे सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र में अच्छा है वही किया है और हिज़क्रियाह ज़ार-ज़ार रोया।

⁴तब खुदावन्द का ये कलाम यसायाह पर नाज़िल हुआ⁵ कि जा और हिज़क्रियाह से कह कि खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने तेरी-दू'आ सुनी, मैंने तेरे आँसू देखे इसलिए देख मैं तेरी 'उम्र पन्द्रह बरस और बढ़ा दूँगा।⁶और मैं तुझ को और इस शहर को-शाह-ए-असूर के हाथ से बचा लूँगा; और मैं इस शहर की हिमायत करूँगा।

⁷और खुदावन्द की तरफ़ से तेरे लिए ये निशान होगा कि खुदावन्द इस बात को जो उसने फ़रमाई पूरा करेगा।⁸देख मैं आफ़ताब के ढले हुए साए के दर्जों में से आखज़ की धूप घड़ी के मुताबिक़ दस दर्जे पीछे को लौटा दूँगा चुनौचे आफ़ताब जिन दर्जों से ढल गया था उनमें के दस दर्जे फिर लौट गया।

⁹शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह की तहरीर, जब वह बीमार था और अपनी बीमारी से शिफ़ायाब हुआ।¹⁰मैंने कहा मैं अपनी आधी 'उम्र में पाताल के फाटकों में दाखिल हूँगा, मेरी ज़िन्दगी के बाकी बरस मुझसे छीन लिए गए।¹¹मैंने कहा मैं खुदावन्द को हों खुदावन्द को ज़िन्दों की ज़मीन में फिर न देखूँगा, इन्सान और दुनिया के बाशिन्दे मुझे फिर दिखाई न देंगे।

¹²मेरा घर उजड़ गया है और गडरिए के खेमा की तरह मुझसे दूर किया गया मैंने जुलाहे की तरह अपनी ज़िन्दगानी को लपेट लिया है वह मुझको तांत से काट डालेगा सुबह से शाम तक तू मुझको तमाम कर डालता है।¹³मैंने सुबह तक तहम्मूल किया; तब वह शेर बबर की तरह मेरी सब हड्डियाँ चूर कर डालता है सुबह से शाम तक तू मुझे तमाम कर डालता है।

¹⁴मैं अबामील और सारस की तरह चीं-चीं करता रहा; मैं कबूतर की तरह कुढ़ता रहा; मेरी आँखें ऊपर देखते-देखते पथरा गई ऐ खुदावन्द, मैं बे-कस हूँ, तू मेरा कफ़ील हो।¹⁵मैं क्या कहूँ? उसने तो मुझ से वा'दा किया, और उसी ने उसे पूरा किया; मैं अपनी बाकी उम्र अपनी जान की तल्खी की वजह से आहिस्ता आहिस्ता बसर करूँगा।

¹⁶ऐ खुदावन्द, इन्हीं चीज़ों से इन्सान की ज़िन्दगी है, और इन्हीं में मेरी रूह की हयात है; इसलिए तू ही शिफ़ा बख़्श और मुझे ज़िन्दा रख।¹⁷देख, मेरा सख़्त रन्ज राहत से तब्दील हुआ; और मेरी जान पर मेहरबान होकर तूने उसे हलाकी के गढे से रिहाई दी; क्योंकि तूने मेरे सब गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया।

¹⁸इसलिए कि पाताल तेरी 'इबादत नहीं कर सकता; और मौत से तेरी हम्द नहीं हो सकती। वह जो क़ब्र में उतरने वाले हैं तेरी सच्चाई के उम्मीदवार नहीं हो सकते।¹⁹ज़िन्दा, 'हाँ, ज़िन्दा ही तेरी तम्जीद करेगा-जैसा आज के दिन मैं करता हूँ, बाप अपनी औलाद को तेरी सच्चाई की खबर देगा।

²⁰खुदावन्द मुझे बचाने को तैयार है; इसलिए हम अपने तारदार साज़ों के साथ 'उम्र भर खुदावन्द के घर में सरोदख़्वानी करते रहेंगे।

²¹यसा'याह ने कहा था, कि 'अंजीर की टिकिया लेकर फोड़े पर बाँधे, और वह शिफ़ा पाएगा।"²²और हिज़क्रियाह ने कहा था, इसका क्या निशान है कि मैं खुदावन्द के घर में जाऊँगा।

Chapter 39

¹उस वक़्त मरूदक बल्दान-बिन-बल्दान, शाह-ए-बाबुल ने हिज़क्रियाह के लिए नामे और तहाइफ़ भेजे; क्योंकि उसने सुना था कि वह बीमार था और शिफ़ायाब हुआ।²और हिज़क्रियाह उनसे बहुत खुश हुआ और अपने खज़ाने, या'नी चाँदी और सोना और मसालेह और बेश क़ीमत 'इत्र और तमाम सिलाह ख़ाना, और जो कुछ उसके खज़ानों में मौजूद था उनको दिखाया। उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी कोई चीज़ न थी, जो हिज़क्रियाह ने उनको न दिखाई।

³तब यसा'याह नबी ने हिज़क्रियाह बादशाह के पास आकर उससे कहा, कि "ये लोग क्या कहते थे, और ये कहाँ से तेरे पास आए?" हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, कि "ये एक दूर के मुल्क, या'नी बाबुल से मेरे पास आए हैं।"⁴तब उसने पूछा, कि "उन्होंने तेरे घर में क्या-क्या देखा?" हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, "सब कुछ जो मेरे घर में है, उन्होंने देखा : मेरे खज़ानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई न हो।"

⁵तब यसा'याह ने हिज़क्रियाह से कहा, 'रब्ब-उल-अफ़वाज का कलाम सुन ले :⁶देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो कुछ तेरे बाप दादा ने आज के दिन तक जमा' कर रखा है बाबुल को ले जायेंगे ;खुदावन्द फ़रमाता है, कुछ भी बाक़ी न रहेगा।

⁷और वह तेरे बेटों में से जो तुझ से पैदा होंगे और जिनका बाप तू ही होगा, कितनों को ले जाएँगे; और वह शाह-ए-बाबुल के महल में ख्वाजासरा होंगे ।⁸तब हिज़क्रियाह ने यसा'याह से कहा, 'खुदावन्द का कलाम जो तूने सुनाया भला है।" और उसने ये भी कहा, "मेरे दिनों में तो सलामती और अमन होगा।

Chapter 40

¹तसल्ली दो तुम मेरे लोगों को तसल्ली दो; तुम्हारा खुदा फ़रमाता है।²यरुशलीम को दिलासा दो; और उसे पुकार कर कहो कि उसकी मुसीबत के दिन जो जंग-ओ-जदल के थे गुज़र गए, उसके गुनाह का कफ़ारा हुआ; और उसने खुदावन्द के हाथ से अपने सब गुनाहों का बदला दो चन्द पाया।

³पुकारनेवाले की आवाज़ : "वीरान में खुदावन्द की राह दुरुस्त करो, सहारा में हमारे खुदा के लिए शाहराह हमवार करो।⁴हर एक नशेब ऊँचा किया जाए, और हर एक पहाड़ और टीला पस्त किया जाए; और हर एक टेढ़ी चीज़ सीधी और हर एक नाहमवार जगह हमवार की जाए।⁵और खुदावन्द का जलाल आशकारा होगा और तमाम बशर उसको देखेगा क्योंकि खुदावन्द ने अपने मुँह से फ़रमाया है।

⁶एक आवाज़ आई कि 'ऐलान कर, और मैंने कहा मैं क्या 'ऐलान करूँ, हर बशर घास की तरह है और उसकी सारी रौनक मैदान के फूल की तरह।' घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; क्योंकि खुदावन्द की हवा उस पर चलती है; यक़ीनन लोग घास हैं।⁷हाँ, घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; लेकिन हमारे खुदा का कलाम हमेशा तक क़ायम है।

⁸ऐ सिय्यून को खुशख़बरी सुनाने वाली, ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जा; और ऐ यरुशलीम को बशारत देनेवाली, ज़ोर से अपनी आवाज़ बलन्द कर, ख़ूब पुकार, और मत डर; यहूदाह की बस्तियों से कह, 'देखो, अपना खुदा!' ⁹"देखो, खुदावन्द खुदा बड़ी कुदरत के साथ आएगा, और उसका बाजू उसके लिए सलतनत करेगा; देखो, उसका सिला उसके साथ है, और उसका अज़्र उसके सामने।

¹⁰वह चौपान की तरह अपना गल्ला चराएगा, वह बरों को अपने बाजूओं में जमा करेगा और अपनी बग़ल में लेकर चलेगा, और उनको जो दूध पिलाती हैं आहिस्ता आहिस्ता ले जाएगा।

¹¹किसने समन्दर को चुल्लू से नापा और आसमान की पैमाइश बालिशत से की, और ज़मीन की गर्द को पैमाने में भरा, और पहाड़ों को पलड़ों में वज़न किया और टीलों को तराजू में तोला।

¹²किसने खुदावन्द की रूह की हिदायत की, या उसका सलाहकार होकर उसे सिखाया? ¹³उसने किससे मश्वरत ली है जो उसे ता'लीम दे, और उसे 'अदालत की राह सुझाए और उसे मा'रिफ़त की बात बताए, और उसे हिकमत की राह से आगाह करे?

¹⁴देख, क्रौमें डोल की एक बूँद की तरह हैं, और तराजू की बारीक गर्द की तरह गिनी जाती हैं; देख, वह जज़ीरों को एक ज़र्रे की तरह उठा लेता है।¹⁵लुबनान ईधन के लिए काफ़ी नहीं और उसके जानवर सोखनी कुर्बानी के लिए बस नहीं।¹⁶इसलिए सब क्रौमें उसकी नज़र में हेच हैं, बल्कि वह उसके नज़दीक बतालत और नाचीज़ से भी कमतर गिनी जाती हैं।

¹⁷तुम खुदा को किससे तशबीह दोगे और कौन सी चीज़ उससे मुशाबह ठहराओगे? ¹⁸तराशी हुई मूरत! कारीगर ने उसे ढाला, और सुनार उस पर सोना मढ़ता है और उसके लिए चाँदी की जज़ीरें बनाता है।¹⁹और जो ऐसा तहीदस्त है कि उसके पास नजर गुज़राने को कुछ नहीं, वह ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो सड़ने वाली न हो; वह होशियार कारीगर की तलाश करता है, ताकि ऐसी मूरत बनाए जो क़ायम रह सके।

²⁰क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या ये बात इब्तिदा ही से तुम को बताई नहीं गई? क्या तुम बिना-ए-'आलम से नहीं समझे? ²¹वह मुहीत-ए-ज़मीन पर बैठा है, और उसके बाशिन्दे टिड्डों की तरह हैं; वह आसमान को पर्दे की तरह तानता है, और उसको सुकूनत के लिए खेमे की तरह फैलाता है।

²²जो शहज़ादों को नाचीज़ कर डालता, और दुनिया के हाकिमों को हेच ठहराता है।²³वह अभी लगाए न गए, वह अभी बोए न गए; उनका तना अभी ज़मीन में जड़ न पकड़ चुका कि वह सिर्फ़ उन पर फूँक मारता है और वह खुशक हो जाते हैं और हवा का झोंका ~उनको भूसे की तरह उड़ा ले जाता है।

²⁴वह कुदूस फ़रमाता है तुम मुझे किससे तशबीह दोगे और मैं किस चीज़ से मशाबह हूँगा।²⁵अपनी आँखें ऊपर उठाओ और देखो कि इन सबका खालिक कौन है? वही जो इनके लश्कर को शुमार करके निकालता है, और उन सबको नाम-ब-नाम बुलाता है। उसकी कुदरत की 'अज़मत और उसके बाजू की ~तवानाई की वजह से एक भी ग़ैर हाज़िर नहीं रहता।

²⁶तब ऐ या'क़ूब ! तू क्यूँ यूँ कहता है; और ऐ इस्राईल! तू किस लिए ऐसी बात करता है, कि "मेरी राह खुदावन्द से पोशीदा है और मेरी 'अदालत मेरे खुदा से गुज़र गई"? ²⁷क्या तू नहीं जानता, क्या तूने नहीं सुना ? कि खुदावन्द हमेशा का खुदा~व तमाम ज़मीन का खालिक थकता नहीं और मांदा नहीं होता उसकी हिकमत इदराक से बाहर है।

²⁸वह थके हुए को ज़ोर बख़्शता है और नातवान की तवानाई को ज़्यादा करता है।²⁹नौजवान भी थक जाएँगे, और ~मान्दा होंगे और सूर्मा बिल्कुल गिर पड़ेंगे;

³⁰लेकिन खुदावन्द का इन्तिज़ार करने वाले, अज़-सर-ए-नौ ज़ोर हासिल करेंगे; वह उक्राबों की तरह बाल-ओ-पर से उड़ेंगे", वह दौड़ेंगे और न थकेंगे, वह चलेंगे और मान्दा न होंगे।

Chapter 41

¹ऐ जज़ीरो, मेरे सामने खामोश रहो; और उम्मतें अज़-सर-ए-नौ-ज़ोर ~हासिल करें; वह नज़दीक आकर 'अर्ज़ करें; आओ, हम मिलकर 'अदालत के लिए नज़दीक हों।' किसने पूरब से उसको खड़ा किया, जिसको वह सदाक़त से अपने क़दमों में बुलाता है? वह क़ौमों को उसके हवाले करता और उसे बादशाहों पर मुसल्लित करता है; और उनको खाक की तरह उसकी तलवार की तरफ़ उड़ती हुई भूसी की तरह उसकी कमान के हवाले करता है, |

³वह उनका पीछा करता और उस राह से जिस पर पहले क़दम न रखबा था, सलामत गुज़रता है।⁴ये किसने किया और इब्तिदाई नस्लों को तलब करके अन्जाम दिया? मैं खुदावन्द ने, जो अक्वल-ओ-आख़िर हूँ, वह मैं ही हूँ।

⁵ज़मीन के किनारे थर्रा गए वह नज़दीक आते गए |⁶उनमें से हर एक ने अपने पड़ोसी की मदद की और अपने भाई से कहा, "हौसला रख!"⁷बढ़ई ने सुनार की और उसने जो हथौड़ी से साफ़ करता है उसकी जो निहाई पर पीटता है, हिम्मत बढ़ाई और कहा जोड़ तो अच्छा है, इसलिए उन्होंने उसको मैंखों से मज़बूत किया ताकि क़ायम रहे।

⁸~लेकिन तू ऐ इस्राईल, मेरे बन्दे! ऐ या'क़ूब, जिसको मैंने पसन्द किया, जो मेरे दोस्त इब्राहीम की नस्ल से है।~⁹तू जिसको मैंने ज़मीन की इन्तिहा से बुलाया और उसके अतराफ़ से तलब किया और तुझको कहा कि तू मेरा बंदा है मैंने तुझको पसन्द किया और तुझको रद्द न किया |

¹⁰तू मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; परेशान न हो, क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ, मैं तुझे ज़ोर बख़्शूंगा, मैं यक़ीनन तेरी मदद करूंगा, और मैं अपनी सदाक़त के दहने हाथ से तुझे संभालूंगा।

¹¹देख, वह सब जो तुझ पर ग़ज़बनाक हैं, पशेमान और रूस्वा होंगे; वह जो तुझ से झगड़ते हैं, नाचीज़ हो जाएँगे और हलाक होंगे।

¹²तू अपने मुखालिफ़ों को ढूँडेंगे और न पाएगा, तुझ से लड़नेवाले नाचीज़-ओ-हलाक हो जाएँगे।¹³क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा तेरा दहना हाथ पकड़ कर कहूँगा "मत डर, मैं तेरी मदद करूँगा।

¹⁴परेशान न हो, ऐ कीड़े या'क़ूब ! ऐ ~इस्राईल की क़लील जमा'अत मैं तेरी मदद करूँगा, ~खुदावन्द फ़रमाता है; हों मैं जो इस्राईल-का कुददूस तेरा फ़िदिया देनेवाला हूँ।~¹⁵देख, मैं तुझे ग़हाई का नया और तेज़ दन्दानादार आला बनाऊँगा; तू पहाड़ों को कूटेगा और उनको रेज़ा-रेज़ा करेगा, और टीलों को भूसे की तरह बनाएगा।

¹⁶तू उनको उसाएगा और हवा उनको उड़ा ले जाएगी, धूल उनको तितर-बितर करेगी; लेकिन तू खुदावन्द से खुश होगा और इस्राईल के कुददूस पर फ़ख़्र करेगा।

¹⁷मुहताज़ और ग़रीब पानी ढूँडते फिरते हैं लेकिन मिलता नहीं, उनकी ज़बान प्यास से खुश्क है; मैं खुदावन्द उनकी सुनूँगा, मैं इस्राईल का खुदा उनको तर्क न करूँगा।¹⁸मैं नंगे टीलों पर नहरें और वादियों में चश्मे खोलूँगा, सहारा को तालाब और खुश्क ज़मीन को पानी का चश्मा बना दूँगा।

¹⁹वीराने में देवदार और बबूल और आस और जैतून के दरख़्त लगाऊँगा" सेहरा में चीड़ और सरो व सनोबर इकठ्ठा लगाऊँगा।²⁰ताकि वह सब देखें और जानें और गौर करें, और समझे के खुदावन्द ही के हाथ ने ये बनाया और इस्राईल के कुददूस ने ये पैदा किया।

²¹खुदावन्द फ़रमाता है, "अपना दा'वा पेश करो," या'क़ूब का बादशाह फ़रमाता है, "अपनी मज़बूत दलीलें लाओ।"²²वह उनको हाज़िर करें ताकि वह हम को होने वाली चीज़ों की खबर दें: हम से अगली बातें बयान करो कि क्या थीं, ताकि हम उन पर सोचें और उनके अंजाम को समझें या आइंदा की होने वाली बातों से हम को आगाह करो।

²³बताओ कि आगे को क्या होगा, ताकि हम जानें कि तुम इलाह हो; हों, भला या बुरा कुछ तो करो ताकि हम मुताज्जिब हों और एक साथ उसे देखें।²⁴देखो, तुम हेच और बेकार हो, तुम को पसन्द करनेवाला मकरूह है।

²⁵मैंने उत्तर से एक को खड़ा किया है, वह आ पहुँचा; वह आफ़ताब के मतलब से होकर मेरा नाम लेगा, और शाहज़ादों को गारे की तरह लताड़ेगा जैसे कुम्हार मिट्टी गूँधता है।²⁶किसने ये इब्तिदा से बयान किया कि हम जानें? और किसने आगे से खबर दी कि हम कहें कि सच है? कोई उसका बयान करने वाला नहीं, कोई उसकी खबर देने वाला नहीं कोई नहीं जो तुम्हारी बातें सुने।

²⁷मैं ही ने पहले सिय्यून से कहा, कि "देख, उनको देख!" और मैं ही यरुशलीम को एक बशारत देनेवाला बख़्शूँगा।²⁸क्योंकि मैं देखता हूँ कि उनमें कोई सलाहकार नहीं जिससे पूछूँ, और वह मुझे जवाब दे।²⁹देखो, वह सब के सब बतालत हैं; उनके काम हेच हैं; उनकी ढाली हुई मूरतें बिल्कुल नाचीज़ हैं।

Chapter 42

¹देखो मेरा खादिम, जिसको मैं संभालता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा, जिससे मेरा दिल खुश है; मैंने अपनी रूह उस पर डाली, वह क्रौमों में 'अदालत जारी करेगा।' वह न चिल्लाएगा और न शोर करेगा और न बाज़ारों में उसकी आवाज़ सुनाई देगी।

³वह मसले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा और टमटमाती बत्ती को न बुझाएगा, वह रास्ती से 'अदालत करेगा।' वह थका न होगा और हिम्मत न हारेगा, जब तक कि 'अदालत को ज़मीन पर क़ायम न करे; जज़ीरे उसकी शरी'अत का इन्तिज़ार करेंगे।

⁵जिसने आसमान को पैदा किया और तान दिया, जिसने ज़मीन को और उनको जो उसमें से निकलते हैं फैलाया, जो उसके बाशिन्दों को साँस और उस पर चलनेवालों को रूह 'इनायत करता है, या'नी खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है⁶ "मैं खुदावन्द ने तुझे सदाक़त से बुलाया, मैं ही तेरा हाथ पकड़ूंगा और तेरी हिफ़ाज़त करूँगा, और लोगों के 'अहद और क्रौमों के नूर के लिए तुझे दूँगा;

⁷कि तू अन्धों की आँखें खोले, और गुलामों को क़ैद से निकाले, और उनको जो अन्धे में बैठे हैं क़ैदखाने से छुड़ाए।

⁸यहोवाह मैं हूँ, यही मेरा नाम है; मैं अपना जलाल किसी दूसरे के लिए, और अपनी हम्द खोदी हुई मूरतों के लिए रवा न रखखूँगा।⁹ देखो, पुरानी बातें पूरी हो गईं और मैं नई बातें बताता हूँ, इससे पहले कि वाक़े' हों, मैं तुम से बयान करता हूँ।"

¹⁰ऐ समन्दर पर गुज़रने वालो और उसमें बसनेवालों, ऐ जज़ीरो और उनके बाशिन्दों, खुदावन्द के लिए नया गीत गाओ, ज़मीन पर सिर-ता-सिर उसी की 'इबादत करो।¹¹ वीराना और उसकी बस्तियाँ, क़ीदार के आबाद गाँव, अपनी आवाज़ बलन्द करें; सिला' के बसनेवाले गीत गाएँ, पहाड़ों की चोटियों~पर से ललकारें।

¹²वह खुदावन्द का जलाल ज़ाहिर करें और जज़ीरों में उसकी सनाख्तानी करें।¹³ खुदावन्द बहादुर की तरह निकलेगा, वह जंगी मर्द की तरह अपनी ग़ैरत दिखाएगा; वह ना'रा मारेगा, हाँ, वह ललकारेगा; वह अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा।

¹⁴मैं बहुत मुद्दत से चुप रहा, मैं ख़ामोश हो रहा और ज़ब्त करता रहा; लेकिन अब मैं दर्द-ए-ज़िह वाली की तरह चिल्लाऊँगा; मैं हॉपूँगा और ज़ोर-ज़ोर से साँस लूँगा।¹⁵ मैं पहाड़ों और टीलों को वीरान कर डालूँगा और उनके सबज़ाज़ारों को खुश करूँगा; और उनकी नदियों को जज़ीरे बनाऊँगा और तालाबों को सुखा दूँगा।

¹⁶और अन्धों को उस राह से जिसे वह नहीं जानते ले जाऊँगा, मैं उनको उन रास्तों पर जिनसे वह आगाह नहीं ले चलूँगा; मैं उनके आगे तारीकी को रोशनी और ऊँची नीची जगहों को हमवार कर दूँगा, मैं उनसे ये सुलूक करूँगा और उनको तर्क न करूँगा।

¹⁷जो खोदी हुई मूरतों पर भरोसा करते और ढाले हुए बुतों से कहते हैं तुम हमारे मा'बूद हो वह पीछे हटेंगे और बहुत शर्मिन्दा होंगे।

¹⁸ऐ बहरो सुनो ऐ अन्धो नज़र करो ताकि तुम देखो।¹⁹ मेरे खादिम के सिवा अँधा कौन है और कौन ऐसा बहरा है जैसा मेरा रसूल जिसे मैं भेजता हूँ मेरे दोस्त की और खुदावन्द के खादिम की तरह नाबीना कौन है।

²⁰तू बहुत सी चीज़ों पर नज़र करता है पर देखता नहीं कान तो खुले हैं पर सुनता नहीं।²¹ खुदावन्द को पसन्द आया कि अपनी सदाक़त की खातिर शरी'अत को बुज़ुर्गी दे, और उसे क़ाबिल-ए-ता'ज़ीम बनाए।

²²लेकिन ये वह लोग हैं जो लुट गए और ग़ारत हुए, वह सब के सब ज़िन्दानों में गिरफ़्तार और क़ैदखानों में छिपे हैं; वह शिकार हुए और कोई नहीं छुड़ाता; वह लुट गए और कोई नहीं कहता, 'फेर दो!'

²³तुम में कौन है जो इस पर कान लगाए? जो आइन्दा के बारे में तवज्जुह से सुने?²⁴ किसने या'कूब को हवाले किया के ग़ारत हो, और इस्राईल को कि लुटेरों के हाथ में पड़े? क्या खुदावन्द ने नहीं, जिसके खिलाफ़ हम ने गुनाह किया? क्योंकि उन्होंने न चाहा कि उसकी राहों पर चलें, और वह उसकी शरी'अत के ताबे' न हुए।

²⁵इसलिए उसने अपने क्रहर की शिद्दत, और जंग की सख्ती को उस पर डाला ~; और उसे हर तरफ़ से आग लग गई पर वह उसे दरियाप्राप्त नहीं करता, वह उससे जल जाता है पर खातिर में नहीं लाता।

Chapter 43

¹और अब, ऐ या'कूब, खुदावन्द जिसने तुझ को पैदा किया, और जिसने, ऐ इस्राईल, तुझ को बनाया यूँ फ़रमाता है कि ख़ौफ़ न कर क्योंकि तेरा फ़िदया दिया है~~मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तू मेरा है।

²जब तू सैलाब में से गुज़रेगा, तो मैं तेरे साथ हूँगा; और जब तू नदियों को उबूर करेगा, तो वह तुझे न डुबाएँगी; जब तू आग पर चलेगा, तो तुझे आँच न लगेगी और शोला तुझे न जलाएगा।³क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा, इस्राईल का कुददूस, तेरा नजात देनेवाला हूँ। मैंने तेरे फ़िदिये में मिस्र को और तेरे बदले कूश और सबा को दिया।

⁴चूँकि तू मेरी निगाह में बेशक्रीमत और मुक़र्रम ठहरा और मैंने तुझ से मुहब्बत रख रखी, इसलिए मैं तेरे बदले लोग और तेरी जान के बदले में उम्मतें दे दूँगा।⁵तू ख़ौफ़ न कर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; मैं तेरी नस्ल को पूरब से ले आऊँगा, और मगरिब से तुझे फ़राहम करूँगा।

⁶मैं उत्तर से कहूँगा कि दे डाल, और जुनूब से कि रख न छोड़; मेरे बेटों को दूर से और मेरी बेटियों को ज़मीन की इन्तिहा से लाओ हर एक को जो मेरे नाम से कहलाता है और जिसको मैंने अपने जलाल के लिए पैदा किया, जिसे मैंने पैदा किया; हाँ, जिसे मैंने ही बनाया।"

⁸उन अन्धे लोगों को जो आँखें रखते हैं और उन बहरों को जिनके कान हैं बाहर लाओ।⁹तमाम क़ौमों फ़राहम की जाएँ और सब उम्मतें जमा' हों। उनके बीच कौन है जो उसे बयान करे या हम को पिछली बातें बताए? वह अपने गवाहों को लाएँ ताकि वह सच्चे साबित हों, और लोग सुनें और कहें कि ये सच है।

¹⁰खुदावन्द फ़रमाता है, "तुम मेरे गवाह हो और मेरे खादिम भी, जिन्हें मैंने बरगुज़ीदा किया, ताकि तुम जानो और मुझ पर ईमान लाओ और समझो कि मैं वही हूँ। मुझ से पहले कोई खुदा न हुआ और मेरे बाद भी कोई न होगा।"¹¹मैं ही यहीवाह हूँ और मेरे सिवा कोई बचानेवाला नहीं।

¹²मैंने 'ऐलान किया और मैंने नजात बख़्शी और मैं ही ने ज़ाहिर किया, जब तुम में कोई अजनबी मा'बूद न था; इसलिए तुम मेरे गवाह हो," खुदावन्द फ़रमाता है, कि "मैं ही खुदा हूँ।"¹³आज से मैं ही हूँ; और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ा सके; मैं काम करूँगा, कौन है जो उसे रद्द कर सके?"

¹⁴खुदावन्द तुम्हारा नजात देनेवाला इस्राईल का कुददूस यूँ फ़रमाता है, कि "तुम्हारी खातिर मैंने बाबुल पर ख़ुरूज कराया, और मैं उन सबको फ़रारियों की हालत में और कसदियों को भी जो अपने जहाज़ों में ललकारते थे, ले आऊँगा।"¹⁵मैं खुदावन्द तुम्हारा कुददूस, इस्राईल का ख़ालिक, तुम्हारा बादशाह हूँ।

¹⁶जिसने समन्दर में राह और सैलाब में गुज़रगाह बनाई,¹⁷जो जंगी रथों और घोड़ों और लश्कर और बहादुरों को निकाल लाता है, (वह सब के सब लेट गए, वह फिर न उठेगे, वह बुझ गए, हाँ, वह बत्ती की तरह बुझ गए।)

¹⁸या'नी खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि पिछली बातों को याद न करो और पुरानी बातों पर सोचते न रहो।¹⁹देखो, मैं एक नया काम करूँगा; अब वह ज़हूर में आएगा, क्या तुम उससे ना-वाक़िफ़ रहोगे? हाँ, मैं वीराने में एक राह और सहारा में नदियाँ जारी करूँगा।

²⁰जंगली जानवर, गीदड़ और शूतरमुर्ग, मेरी ताज़ीम करेंगे; क्योंकि मैं वीराने में पानी और सहारा में नदियाँ जारी करूँगा ताकि मेरे लोगों के लिए, या'नी मेरे बरगुज़ीदों के पीने के लिए हों,²¹मैंने इन लोगों को अपने लिए बनाया ताकि वह मेरी हम्द करें।

²²"तोभी, ऐ या'कूब, तूने मुझे न पुकारा; बल्कि ऐ इस्राईल, तू मुझ से तंग आ गया।"²³तू बरों को अपनी सोखतनी कुर्बानी के लिए मेरे सामने नहीं लाया, और तूने अपने ज़बीहों से मेरी ताज़ीम नहीं की। मैंने तुझे हदिया लाने पर मजबूर नहीं किया, और लुबान जलाने की तक्लीफ़ नहीं दी।

²⁴तूने रुपये से मेरे लिए अगर को नहीं खरीदा, और तूने मुझे अपने ज़बीहों की चर्बी से सेर नहीं किया; लेकिन तूने अपने गुनाहों से मुझे ज़ेरबार किया और अपनी ख़ताओं से मुझे बेज़ार कर दिया।

²⁵"मैं ही वह हूँ जो अपने नाम की खातिर तेरे गुनाहों को मिटाता हूँ, और मैं तेरी ख़ताओं को याद नहीं रखूँगा।"²⁶मुझे याद दिला, हम आपस में बहस करें; अपना हाल बयान कर ताकि तू सादिक् ठहरे।

²⁷तेरे बड़े बाप ने गुनाह किया, और तेरे तपस्वीर करनेवालों ने मेरी मुखालिफ़त की है।²⁸इसलिए मैंने मक़दिस के अमीरों को नापाक ठहराया, और या'कूब को ला'नत और इस्राईल को तानाज़नी के हवाले किया।

Chapter 44

¹"लेकिन अब ऐ या'कूब, मेरे खादिम और इस्राईल, मेरे बरगुज़ीदा, सुन!²खुदावन्द तेरा खालिक जिसने रहम ही से तुझे बनाया और तेरी मदद करेगा, यूँ फ़रमाता है :कि ऐ या'कूब, मेरे खादिम और यसूरून मेरे बरगुज़ीदा, खौफ़ न कर!

³क्योंकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी उँडेलूँगा, और खुश्क ज़मीन में नदियाँ जारी करूँगा ; मैं अपनी रूह तेरी नस्ल पर और अपनी बरकत तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा⁴और वह घास के बीच उगेंगे, जैसे बहते पानी के किनारे पर बेद हो।

⁵एक तो कहेगा, 'मैं खुदावन्द का हूँ,' और दूसरा अपने आपको या'कूब के नाम का ठहराएगा, और तीसरा अपने हाथ पर लिखेगा, 'मैं खुदावन्द का हूँ,' और अपने आपको इस्राईल के नाम से मुलक्क़ब करेगा।"

⁶खुदावन्द, इस्राईल का बादशाह और उसका फ़िदया देने वाला रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है, कि "मैं ही अव्वल और मैं ही आख़िर हूँ; और मेरे सिवा कोई खुदा नहीं।

⁷और जब से मैंने पुराने लोगों की बिना डाली, कौन मेरी तरह बुलाएगा और उसको बयान करके मेरे लिए तरतीब देगा? हाँ, जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होने वाला है, उसका बयान करे।

⁸तुम न डरो, और परेशान न हो; क्या मैंने पहले ही से तुझे ये नहीं बताया और ज़ाहिर नहीं किया? तुम मेरे गवाह हो। क्या मेरे 'अलावाह कोई और खुदा है? नहीं, कोई चट्टान नहीं; मैं तो कोई नहीं जानता।"

⁹खोदी हुई मूरतों के बनानेवाले, सबके सब बेकार हैं और उनकी पसंदीदा चीज़ें बे नफ़ा"; उन ही के गवाह देखते नहीं और समझते नहीं, ताकि पशेमाँ हों।

¹⁰किसने कोई बुत बनाया या कोई मूरत ढाली जिससे कुछ फ़ाइदा हो?

¹¹देख, उसके सब साथी शर्मिन्दा होंगे क्योंकि बनानेवाले तो इन्सान हैं; वह सब के सब जमा' होकर खड़े हों, वह डर जाएँगे, वह सब के सब शर्मिन्दा होंगे।

¹²तुहार कुल्हाड़ा बनाता है और अपना काम अंगारों से करता है, और उसे हथौड़ों से दुरुस्त करता और अपने बाजू की कुव्वत से गढ़ता है; हाँ वह भूका हो जाता है और उसका ज़ोर घट जाता है वह पानी नहीं पीता और थक जाता है |

¹³बढ़ई सूत फैलाता है और नुकेले हथियार से उसकी सूत खींचता है, वह उसको रंदे से साफ़ करता है और परकार से उस पर नक्श बनाता है; वह उसे इन्सान की शक्ल बल्कि आदमी की खूबसूरत शबीह बनाता है, ताकि उसे घर में खड़ा करें।

¹⁴वह देवदारों को अपने लिए काटता है और क्रिस्म-क्रिस्म के बलूत को लेता है, और जंगल के दरख्तों से जिसको पसन्द करता है; वह सनोबर का दरख्त लगाता है और मेंह उसे सींचता है।

¹⁵तब वह आदमी के लिए ईधन होता है; वह उसमें से कुछ सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी पकाता है, बल्कि उससे बुत बना कर उसको सिज्दा करता- वह खोदी हुई मूरत बनाता है और उसके आगे मुँह के बल गिरता है।¹⁶उसका एक टुकड़ा लेकर आग में जलाता है, और उसी के एक टुकड़े पर गोश्त कबाब करके खाता और सेर होता है; फिर वह तापता और कहता है, अहा, मैं गर्म हो गया, मैंने आग देखी!"

¹⁷फिर उसकी बाकी लकड़ी से देवता या'नी खोदी हुई मूरत बनाता है, और उसके आगे मुँह के बल गिर जाता है और उसे सिज्दा करता है और उससे इल्तिजा करके कहता है "मुझे नज़ात दे, क्योंकि तू मेरा खुदा है!"

¹⁸वह नहीं जानते और नहीं समझते; क्योंकि उनकी आँखें बन्द हैं तब वह देखते नहीं, और उनके दिल सख्त हैं लेकिन वह समझते नहीं।

¹⁹बल्कि कोई अपने दिल में नहीं सोचता और न किसी को मा'रिफ़त और तमीज़ है कि "मैंने तो इसका एक टुकड़ा आग में जलाया, और मैंने इसके अंगारों पर रोटी भी पकाई, और मैंने गोश्त भूना और खाया; अब क्या मैं इसके बक्रिये" से एक मकरूह चीज़ बनाऊँ? क्या मैं दरख्त के कुन्दे को सिज्दा करूँ?"

²⁰वह राख खाता है; फ़रेबखुर्दा ने उसको ऐसा गुमराह कर दिया है कि वह अपनी जान बचा नहीं सकता और नहीं कहता ~क्या मेरे दहने हाथ में बतालत नहीं?"

²¹ऐ या'कूब, ऐ इस्राईल, इन बातों को याद रख; क्योंकि तू मेरा बन्दा है, मैंने तुझे बनाया है, तू मेरा खादिम है; ऐ इस्राईल, मैं तुझ को फ़रामोश न करूँगा।²²मैंने तेरी ख़ताओं को घटा की तरह और तेरे गुनाहों को बादल की तरह मिटा डाला; मेरे पास वापस आ जा, क्योंकि मैंने तेरा फ़िदिया दिया है।

²³ऐ आसमानो, गाओ कि खुदावन्द ने ये किया, ऐ असफल-ए-ज़मीन, ललकार; ऐ पहाड़ो, ऐ जंगल और उसके सब दरख्तो, नगमापरदाज़ी करो! क्योंकि खुदावन्द ने या'कूब का फ़िदिया दिया, और इस्राईल में अपना जलाल ज़ाहिर करेगा।

²⁴खुदावन्द तेरा फ़िदिया देनेवाला, जिसने रहम ही से तुझे बनाया यूँ फ़रमाता है, कि "मैं खुदावन्द सबका खालिक हूँ, मैं ही अकेला आसमान को तानने और ज़मीन को बिछाने वाला हूँ, कौन मेरा शरीक है?²⁵मैं झूटों के निशानों को बातिल करता, और फ़ालगीरों को दीवाना बनाता हूँ और हिकमत वालों को रद्द करता और उनकी हिकमत को हिमाक़त ठहराता हूँ

²⁶अपने खादिम के कलाम को साबित करता, और अपने रसूलों की मसलहत को पूरा करता हूँ जो यरुशलीम के ज़रिए' कहता हूँ, कि ' वह आबाद हो जाएगा,' और यहूदाह के शहरों के ज़रिए' , कि ' वह ता'मीर किए जाएँगे, और मैं उसके खण्डरों को ता'मीर करूँगा।²⁷जो समन्दर को कहता हूँ, 'सूख जा और मैं तेरी नदियाँ सुखा डालूँगा ;"

²⁸जो खोरस के हक्र में कहता हूँ, कि ~वह मेरा चरवाहा है और मेरी मज़ी ~बिल्कुल पूरी करेगा; और यरुशलीम के ज़रिए' कहता हूँ, ' वह ता'मीर किया जाएगा,"और हैकल के ज़रिए' कि उसकी बुनियाद डाली जायेगी |

Chapter 45

¹खुदावन्द अपने मम्सूह खोरस के हक में यूँ फ़रमाता है कि मैंने उसका दहना हाथ पकड़ा कि उम्मतों को उसके सामने ज़ेर करूँ और बादशाहों की कमरें खुलवा डालूँ और दरवाज़ों को उसके लिए खोल दूँ और फाटक बन्द न किए जाएँ,

²"मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ना-हमवार जगहों को हमवार बना दूँगा, मैं पीतल के दरवाज़ों को टुकड़े-टुकड़े करूँगा और लोहे के बेन्डों को काट डालूँगा ;³-और मैं जुलमात के खज़ाने और छिपे मकानों के दफ़ीने तुझे दूँगा, ताकि तू जाने कि मैं खुदावन्द इस्राईल का खुदा हूँ जिसने तुझे नाम लेकर बुलाया है।

⁴मैंने अपने खादिम या'कूब और अपने बरगुज़ीदा इस्राईल की खातिर तुझे नाम लेकर बुलाया; मैंने तुझे एक लक़ब बख़्शा अगरचे तू मुझ को नहीं जानता।⁵मैं ही खुदावन्द हूँ और कोई नहीं, मेरे अलावा कोई खुदा नहीं मैंने तेरी कमर बाँधी अगरचे तूने मुझे न पहचाना; ताकि पूरब से पश्चिम तक लोग जान ले कि मेरे अलावा कोई नहीं; मैं ही खुदावन्द हूँ, मेरे अलावा कोई दूसरा नहीं।

⁷मैं ही रोशनी का मूजिद और तारीकी का खालिक हूँ, मैं सलामती का बानी और बला को पैदा करने वाला हूँ, मैं ही खुदावन्द ये सब कुछ करनेवाला हूँ।⁸"ऐ आसमान, ऊपर से टपक पड़; हाँ बादल रास्तबाज़ी बरसाएँ," ज़मीन खुल जाए, और नजात और सदाक़त का फल लाए; वह उनको इकट्ठे उगाए; मैं खुदावन्द उसका पैदा करनेवाला हूँ।

⁹"अफ़सोस उस पर जो अपने खालिक से झगड़ता है! ठीकरा तो ज़मीन के ठीकरों में से है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहे, 'तू क्या बनाता है?' क्या तेरी दस्तकारी कहे, 'उसके तो हाथ नहीं?'"

¹⁰उस पर अफ़सोस जो बाप से कहे, 'तू किस चीज़ का वालिद है?' और माँ से कहे, 'तू किस चीज़ की वालिदा है?' "

¹¹खुदावन्द इस्राईल का कुददूस और खालिक यूँ फ़रमाता है, कि "क्या तुम आनेवाली चीज़ों के ज़रिए' मुझ से पूछोगे? क्या तुम मेरे बेटों या मेरी दस्तकारी के ज़रिए' मुझे हुक़म दोगे?

¹²मैंने ज़मीन बनाई, और उस पर इन्सान को पैदा किया; और मैं ही ने, हाँ, मेरे हाथों ने आसमान को ताना, और उसके सब लश्करों पर मैंने हुक़म किया।"

¹³रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है मैंने उसको सदाक़त में खड़ा किया है और मैं उसकी तमाम राहों को हमवार करूँगा ; वह मेरा शहर बनाएगा, और मेरे गुलामों को बग़ैर क़ीमत और इवज़ लिए आज़ाद कर देगा।"

¹⁴खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "मिस्र की दौलत, और कूश की तिजारत, और सब के कद्दावर लोग तेरे पास आएँगे और तेरे होंगे; वह तेरी पैरवी करेंगे, वह बेड़ियाँ पहने हुए अपना मुल्क छोड़कर आयेंगे और तेरे सामने सिज्दा करेंगे; वह तेरी मिन्नत करेंगे और कहेंगे, यक़ीनन खुदा तुझमें है और कोई दूसरा नहीं और उसके सिवा कोई खुदा नहीं।" ¹⁵"ऐ इस्राईल के खुदा, ऐ नजात देनेवाले, यक़ीनन तू पोशीदा खुदा है।

¹⁶बुत बनानेवाले सब के सब पशेमाँ और सरासीमा होंगे, वह सब के सब शर्मिन्दा होंगे।¹⁷लेकिन खुदावन्द इस्राईल को बचा कर हमेशा की नजात बख़्शेगा; तुम हमेशा से हमेशा तक कभी पशेमाँ और सरासीमा न होगे।

¹⁸क्योंकि खुदावन्द जिसने आसमान पैदा किए, वही खुदा है; उसी ने ज़मीन बनाई और तैयार की, उसी ने उसे क़ायम किया; उसने उसे सुन्सान पैदा नहीं किया बल्कि उसको आबादी के लिए आरास्ता किया। वह यूँ फ़रमाता है, कि "मैं खुदावन्द हूँ, और मेरे 'अलावा कोई और कोई नहीं।

¹⁹मैंने ज़मीन की किसी तारीक जगह में, पोशीदगी में तो कलाम नहीं किया; मैंने या'कूब की नस्ल को नहीं फ़रमाया कि 'अबस मेरे तालिब हो। मैं खुदावन्द सच कहता हूँ, और रास्ती की बातें बयान फ़रमाता हूँ।

²⁰"तुम जो क़ौमों में से बच निकले हो! जमा' होकर आओ मिलकर नज़दीक हो वह जो अपनी लकड़ी की खोदी हुई मूरत लिए फिरते हैं, और ऐसे मा'बूद से जो बचा नहीं सकता दु'आ करते हैं, अक्ल से खाली हैं।

²¹तुम 'ऐलान करो और उनको नज़दीक लाओ; हाँ, वह एक साथ मशवरत करें, किसने पहले ही से ये ज़ाहिर किया? किसने पिछले दिनों में इसकी ख़बर पहले ही से दी है? क्या मैं खुदावन्द ही ने ये नहीं किया? इसलिए मेरे 'अलावा कोई खुदा नहीं है; सादिक़-उल-क़ौल और नजात देनेवाला खुदा मेरे 'अलावा कोई नहीं।

²²ऐ इन्तिहा-ए-ज़मीन के सब रहनेवालो, तुम मेरी तरफ़ मुत्वज्जिह हो और नजात पाओ, क्योंकि मैं खुदा हूँ और मेरे 'अलावा कोई नहीं।²³मैंने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, कलाम-ए-सिद्क़ मेरे मुँह से निकला है और वह टलेगा नहीं', कि 'हर एक घुटना मेरे सामने झुकेगा और हर एक ज़बान मेरी क़सम खाएगी।'

²⁴"मेरे हक़ में हर एक कहेगा कि यक़ीनन खुदावन्द ही में रास्तबाज़ी और तवानाई है, उसी के पास वह आएगा और सब जो उससे बेज़ार थे पशेमाँ होंगे।

²⁵इस्राईल की कुल नस्ल खुदावन्द में सादिक़ ठहरेगी और उस पर फ़ख़्र करेगी।

Chapter 46

¹बेल झुकता है नबूखम होता उनके बुत जानवरों और चौपायों पर लदे हैं; जो चीजें तुम उठाए फिरते थे, थके हुए चौपायों पर लदी हैं।²वह झुकते और एक साथ खम होते हैं; वह उस बोझ को बचा न सके, और वह आप ही गुलामी में चले गए हैं।

³"ऐ या'कूब के घराने, और ऐ इस्राईल-के घर के सब बाक़ी थके लोगो, जिनको बत्न ही से मैंने उठाया और जिनको रहम ही से मैंने गोद में लिया, मेरी सुनो! मैं तुम्हारे बुढ़ापे तक वही हूँ और सिर सफ़ेद होने तक तुम को उठाए फिर्कूँगा। मैंने तुम्हें बनाया और मैं ही उठाता रहूँगा, मैं ही लिए चलूँगा और रिहाई दूँगा।

⁵"तुम मुझे किससे तशबीह दोगे, और मुझे किसके बराबर ठहराओगे, और मुझे किसकी तरह कहोगे ताकि हम मुशाबह हों?"⁶जो थैली से बाइफ़रात सोना निकालते और चाँदी को तराजू में तोलते हैं, वह सुनार को उजरत पर लगाते हैं और वह उससे एक बुत बनाता है; फिर वह उसके सामने झुकते, बल्कि सिज्दा करते हैं।

⁷वह उसे कंधे पर उठाते हैं, वह उसे ले जाकर उसकी जगह पर खड़ा करते हैं और वह खड़ा रहता है, वह अपनी जगह से सरकता नहीं; बल्कि अगर कोई उसे पुकारे, तो वह न जवाब दे सकता है और न उसे मुसीबत से छुड़ा सकता है।

⁸"ऐ गुनाहगारो, इसको याद रखो और मर्द बनो, इस पर फिर सोचो।⁹पहली बातों को जो क्रदीम से हैं, याद करो कि मैं खुदा हूँ और कोई दूसरा नहीं ~मैं खुदा हूँ और मुझ सा कोई नहीं।

¹⁰जो इब्तिदा ही से अंजाम की खबर देता हूँ, और पहले ~दिनों से वह बातें जो अब तक वजूद में नहीं आई, बताता हूँ; और कहता हूँ, कि 'मेरी मसलहत क़ायम रहेगी और मैं अपनी मज़ी ~बिल्कुल पूरी करूँगा।'¹¹जो पूरब से उक्ताब को या'नी उस शख्स को जो मेरे इरादे को पूरा करेगा, दूर के मुल्क से बुलाता हूँ, मैंने ही ~कहा और मैं ही इसको वजूद में लाऊँगा; मैंने इसका इरादा किया और मैं ही इसे पूरा करूँगा।

¹²"ऐ सख्त दिलो, जो सदाक़त से दूर हो मेरी सुनो,¹³मैं अपनी सदाक़त को नज़दीक लाता हूँ, वह दूर नहीं होगी और मेरी नज़ात ताख़ीर न करेगी; और मैं सिय्यून को नज़ात और इस्राईल को अपना जलाल बख़्शूँगा।"

Chapter 47

¹ऐ कुँवारी दूखतर-ए-बाबुल उतर आ और खाक पर बैठ ऐ कसदियों की दुखतर, तू बे-तख्त ज़मीन पर बैठ; क्योंकि अब तू नर्म अन्दाम और नाज़नीन न कहलाएगी।²चक्की ले और आटा पीस, अपना निक्काब उतार और दामन समेट ले, टॉंगे नंगी करके नदियों को पार कर।

³तेरा बदन बे-पर्दा किया जाएगा, बल्कि तेरा सत्र भी देखा जाएगा। मैं बदला लूँगा और किसी पर शफ़क़त न करूँगा।⁴हमारा फ़िदिया देनेवाले का नाम रब्ब-उल-अफ़वाज या'नी इस्राईल का कुददूस है।⁵ऐ कसदियों की बेटी, चुप होकर बैठ और अन्धेरे में दाख़िल हो; क्योंकि अब तू मम्लुकतों की खातून न कहलाएगी।⁶मैं अपने लोगों पर ग़ज़बनाक हुआ, मैंने अपनी मीरास को नापाक किया और उनको तेरे हाथ में सौंप दिया; तूने उन पर रहम न किया, तूने बूढ़ों पर भी अपना भारी ज़ूआ रखखा।⁷और तूने कहा भी, कि "मैं हमेशा तक खातून बनी रहूँगी," इसलिए तूने अपने दिल में इन बातों का खयाल न किया और इनके अन्जाम को न सोचा।

⁸इसलिए अब ये बात सुन, ऐ तू जो 'इश्रत में गर्क है, जो बेपर्वा रहती है, जो अपने दिल में कहती है, कि "मैं हूँ, और मेरे 'अलावाह कोई नहीं; मैं बेवा की तरह न बैठूँगी, और न बेऔलाद होने की हालत से वाकिफ़ हूँगी;"⁹इसलिए अचानक एक ही दिन में ये दो मुसीबतें तुझ पर आ पड़ेंगी, या'नी तू बेऔलाद और बेवा हो जाएगी। तेरे जादू की इफ़रात और तेरे सहर की कसरत के बावजूद ये मुसीबतें पूरे तौर से तुझ पर आ पड़ेंगी।

¹⁰क्योंकि तूने अपनी शरारत पर भरोसा किया, तूने कहा, "मुझे कोई नहीं देखता; तेरी हिकमत और तेरी अक्ल ने तुझे बहकाया, और तूने अपने दिल में कहा, "मैं ही हूँ। मेरे 'अलावाह और कोई नहीं।"¹¹इसलिए तुझ पर मुसीबत आ पड़ेगी जिसका मंतर तू नहीं जानती, और ऐसी बला तुझ पर नाज़िल होगी जिसको तू दूर न कर सकेगी; यकायक तबाही तुझ पर आएगी जिसकी तुझ को कुछ खबर नहीं।

¹²अब अपना जादू और अपना सारा सेहर, जिसकी तूने बचपन ही से मशक कर "रख्खी है इस्ते'माल कर; शायद तू उनसे नफ़ा' पाए, शायद तू ग़ालिब आए।¹³तू अपनी मश्वरतों की कसरत से थक गई, अब अफ़लाक-पैमा और मुनज्जिम और वह जो माह-ब-माह आइन्दा हालात दरियाफ़्त करते हैं, उन्हें और जो कुछ तुझ पर आनेवाला है उससे तुझ को बचाएँ।

¹⁴देख, वह भूसे की तरह होंगे; आग उनको जलाएगी। वह अपने आपको शो'ले की शिद्दत से बचा न सकेंगे, ये आग न तापने के अंगारे होगी, न उसके पास बैठ सकेंगे।¹⁵जिनके लिए तूने मेहनत की, तेरे लिए ऐसे ही होंगे; जिनके साथ तूने अपनी जवानी ही से तिजारत की, उनमें से हर एक अपनी राह लेगा; तुझ को बचानेवाला कोई न रहेगा।

Chapter 48

¹'ये बात सुनो ऐ या'कूब के घराने जो इस्राईल के नाम से कहलाते हो और यहूदाह के चश्मे से निकले हो, जो खुदावन्द का नाम लेकर क्रसम खाते हो, और इस्राईल के खुदा का इक्रार करते हो, बल्कि अमानत और सदाक़त से नहीं।²क्यूँकि वह शहर-ए-कुददूस के लोग कहलाते हैं और इस्राईल के खुदा पर तवक्कुल करते हैं जिसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज है।

³'मैंने पहले से होने वाली बातों की खबर दी है हाँ वह मेरे मुंह से निकली मैंने उनको ज़ाहिर किया मैं नागहा उनको 'अमल में लाया और वह ज़हूर में आई।⁴'चूँकि मैं जानता था कि तू ज़िद्दी है और तेरी गर्दन का पट्टा लोहे का है और तेरी पेशानी पीतल की है।⁵इसलिए मैंने पहले ही से ये बातें तुझे कह सुनाई, और उनके बयान" होने से पहले तुझ पर ज़ाहिर कर दिया; ता न हो कि तू कहे, 'मेरे बुत ने ये काम किया, और मेरे खोदे हुए सनम ने और मेरी ढाली हुई मूरत ने ये बातें फ़रमाई।"

⁶"तूने ये सुना है, इसलिए इस सब पर तवज्जुह कर; क्या तुम इसका इक्रार न करोगे? अब मैं तुझे नई चीज़ें और छिपी बातें, जिनसे तू वाकिफ़ न था दिखाता हूँ।⁷वह अभी खल्क की गई हैं, पहले से नहीं; बल्कि आज से पहले तूने उनको सुना भी न था; ता न हो कि तू कहे, 'देख, मैं जानता था।

⁸हाँ, तूने न सुना न जाना; हाँ, पहले ही से तेरे कान खुले न थे। क्यूँकि मैं जानता था कि तू भी बिल्कुल बेवफ़ा है, और रहम ही से खताकार कहलाता है।

⁹'मैं अपने नाम की खातिर अपने ग़ज़ब में ताख़ीर करूँगा, और अपने जलाल की खातिर तुझ से बाज़ रहूँगा, कि तुझे काट न डालूँ।¹⁰देख, मैंने तुझे साफ़ किया, लेकिन चाँदी की तरह नहीं; मैंने मुसीबत की कुठाली से तुझे साफ़ किया।¹¹मैंने अपनी खातिर, हाँ, अपनी ही खातिर ये किया है; क्यूँकि मेरे नाम की तक्फ़ीर क्यूँ हो? मैं तो अपनी शौकत दूसरे को नहीं देने का।

¹²'ऐ या'कूब, आ मेरी सुन, और ऐ इस्राईल जो मेरा बुलाया हुआ है; मैं वही हूँ, मैं ही अक्वल और मैं ही आख़िर हूँ।¹³यक़ीनन मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुनियाद डाली, और मेरे दहने हाथ ने आसमान को फैलाया; मैं उनको पुकारता हूँ और वह हाज़िर हो जाते हैं।

¹⁴"तुम सब जमा" होकर सुनो। उनमें-किसने इन बातों की खबर दी है? वह जिसे खुदावन्द ने पसन्द किया है; उसकी खुशी को बाबुल के मुताल्लिक 'अमल में लाएगा, और उसी का हाथ कसदियों की मुख़ालिफ़त में होगा।¹⁵मैंने, हाँ मैं ही ने कहा; मैंने ही उसे बुलाया, मैं उसे लाया हूँ; और वह अपनी चाल चलन में बरोमन्द होगा।

¹⁶'मेरे नज़दीक आओ और ये सुनो, मैंने शुरू' ही से पोशीदगी में कलाम नहीं किया, जिस वक़्त से कि वह था मैं वहीं था।" और अब खुदावन्द खुदा ने और उसकी रूह ने मुझ को भेजा है।

¹⁷खुदावन्द तेरा फ़िदिया देनेवाला, इस्राईल का कुददूस, यूँ फ़रमाता है, कि "मैं ही खुदावन्द तेरा खुदा हूँ। जो तुझे मुफ़ीद ता'लीम देता हूँ और तुझे उस राह में जिसमें तुझे जाना है, ले चलता हूँ।¹⁸काश कि तू मेरे हुक्मों का सुनने वाला होता, और तेरी सलामती नहर की तरह और तेरी सदाक़त समन्दर की मौजों की तरह होती;

¹⁹तेरी नस्ल रेत की तरह होती और तेरे सुल्बी फ़र्ज़न्द उसके ज़रों की तरह बा-कसरत होते; और उसका नाम मेरे सामने से काटा और मिटाया न जाता।",

²⁰तुम बाबुल से निकलो, कसदियों के बीच से भागो; नग़मे की आवाज़ से बयान करो इसे मशहूर करो हाँ इसकी खबर ज़मीन के ~किनारों तक पहुँचाओ; कहते जाओ, कि "खुदावन्द ने अपने खादिम या'कूब का फ़िदिया दिया।"

²¹और जब वह उनको वीराने में से ले गया, तो वह प्यासे न हुए; उसने उनके लिए चट्टान में से पानी निकाला, उसने चट्टान को चीरा और पानी फूट निकला।

²²खुदावन्द फ़रमाता है, कि "शरीरों के लिए सलामती नहीं।"

Chapter 49

¹ए जज़ीरों मेरी सुनों ऐ उम्मतों जो दो हो कान लगाओ खुदावन्द ने मुझे रहम ही से बुलाया, बत्न-ए-मादर ही से उसने मेरे नाम का ज़िक्र किया।² और उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार की तरह बनाया, और मुझ को अपने हाथ के साये तले छिपाया; उसने मुझे तीर-ए-आबदार किया और अपने तरकश में मुझे छिपा रखवा;

³और उसने मुझ से कहा, "तू मेरा खादिम है, तुझ में ऐ इसाईल, मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।"⁴तब मैंने कहा, "मैंने बेफ़ाइदा मशक्कत उठाई मैंने अपनी कुव्वत बेफ़ाइदा बतालत में सफ़र की; तोभी यक्रीनन मेरा हक़ खुदावन्द के साथ और मेरा 'अज़्र मेरे खुदा के पास है।"

⁵चूँकि मैं खुदावन्द की नज़र में जलील-उल-क़द्र हूँ और वह मेरी तवानाई है, इसलिए वह जिसने मुझे रहम ही से बनाया, ताकि उसका खादिम होकर या 'क़ूब को उसके पास वापस लाऊँ और इसाईल को उसके पास जमा' करूँ, यूँ फ़रमाता है।⁶हाँ, खुदावन्द फ़रमाता है, कि "ये तो हल्की सी बात है कि तू या 'क़ूब के क़बाइल को खड़ा करने और महफ़ूज़ इसाईलियों को वापस लाने के लिए मेरा खादिम हो, बल्कि मैं तुझ को क़ौमों के लिए नूर बनाऊँगा कि तुझ से मेरी नजात ज़मीन के किनारों तक पहुँचे।"

⁷खुदावन्द इसाईल का फ़िदिया देने वाला और उसका कुददूस उसको जिसे इन्सान हक़ीर जानता है और जिससे क़ौम को नफ़रत है और जो हाकिमों का चाकर है, यूँ फ़रमाता है, कि 'बादशाह देखेंगे और उठ खड़े होंगे, और उमरा सिज्दा करेंगे; खुदावन्द के लिए जो सादिक-उल-क़ौल और इसाईल का कुददूस है, जिसने तुझे बरगुज़ीदा किया है।"

⁸खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "मैंने कुबूलियत के वक़्त तेरी सुनी, और नजात के दिन तेरी मदद की; और मैं तेरी हिफ़ाज़त करूँगा और लोगों के लिए तुझे एक 'अहद ठहराऊँगा, ताकि मुल्क को बहाल करे और वीरान मीरास वारिसों को दे;

⁹ताकि तू कैदियों को कहे, कि 'निकल चलो,' और उनको जो अन्धेरे में हैं, कि 'अपने आपको दिखलाओ।" वह रास्तों में चरेंगे और सब नंगे टीले उनकी चरागाहें होंगे।

¹⁰वह न भूके होंगे न प्यासे, और न गर्मी और धूप से उनको ज़रूर पहुँचेगा; क्योंकि वह जिसकी रहमत उन पर है उनका रहनुमा होगा, और पानी के सोतों की तरफ़ उनकी रहबरी करेगा।¹¹और मैं अपने सारे पहाड़ों को एक रास्ता बना दूँगा, और मेरी शाहराहें ऊँची की जाएँगी।

¹²देख, ये दूर से और ये उत्तर और मगरिब से, और ये सिनीम के मुल्क से आएँगे।"¹³ऐ आसमानो, गाओ; ऐ ज़मीन, खुश हो; ऐ पहाड़ो, नगामा परदाज़ी करो! क्योंकि खुदावन्द ने अपने लोगों को तसल्ली बख़्शी है और अपने रंज़ूरों पर रहम फ़रमाएगा।

¹⁴लेकिन सियून कहती है, "यहोवाह ने मुझे छोड़ दिया है, और खुदावन्द मुझे भूल गया है।"¹⁵~'क्या ये मुम्किन है कि कोई माँ अपने शीरख़वार बच्चे को भूल जाए, और अपने रहम के फ़र्ज़न्द पर तरस न खाए? हाँ, वह शायद भूल जाए, पर मैं तुझे न भूलूँगा।

¹⁶~देख, मैंने तेरी सूरत अपनी हथेलियों पर खोद रखी है; और तेरी शहरपनाह हमेशा मेरे सामने है।¹⁷~तेरे फ़र्ज़न्द जल्दी करते हैं, और वह जो तुझे बर्बाद करने और उजाड़ने वाले थे, तुझ से निकल जाएँगे।¹⁸अपनी आँखें उठा कर चारों तरफ़ नज़र कर, ये सब के सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं। खुदावन्द फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि तू यक्रीनन इन सबको ज़ेवर की तरह पहन लेगी, और इनसे दुल्हन की तरह आरास्ता होगी।

¹⁹~"क्योंकि तेरी वीरान और उजड़ी जगहों में, और तेरे बर्बाद मुल्क में अब यक्रीनन बसनेवाले गुंजाइश से ज़्यादा होंगे, और तुझ को ग़ारत करनेवाले दूर हो जाएँगे।²⁰बल्कि तेरे वह बेटे जो तुझ से ले लिए गए थे, तेरे कानों में फिर कहेंगे, कि बसने की जगह बहुत तंग है, हम को बसने की जगह दे।"

²¹तब तू अपने दिल में कहेगी, 'कौन मेरे लिए इनका बाप हुआ? कि मैं तो बेऔलाद हो गई और अकेली थी, मैं तो जिलावतनी और आवारगी में रही, सो किसने इनको पाला? देख, मैं तो अकेली रह गई थी; फिर ये कहाँ थे?' "

²²~खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि "देख, मैं क़ौमों पर हाथ उठाऊँगा, और उम्मतों पर अपना झण्डा खड़ा करूँगा; और वह तेरे बेटों को अपनी गोद में लिए आएँगे, और तेरी बेटियों को अपने कंधों पर बिठाकर पहुँचाएँगे।

²³और बादशाह तेरे मुर्बबी होंगे और उनकी बीवियाँ तेरी दाया होंगी। वह तेरे सामने मुँह के बल ज़मीन पर गिरेंगे, और तेरे पाँव की खाक चाटेंगे; और तू जानेगी कि मैं ही खुदावन्द हूँ, जिसके मुन्तज़िर शर्मिन्दा न होंगे।"

²⁴~क्या ज़बरदस्त से शिकार छीन लिया जाएगा? और क्या रास्तबाज़ के कैदी छुड़ा लिए जाएँगे?²⁵~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि 'ताक़तवर के गुलाम भी ले लिए जाएँगे, और मुहीब का शिकार छुड़ा लिया जाएगा; क्योंकि मैं उससे जो तेरे साथ झगड़ता है, झगड़ा करूँगा और तेरे बच्चों को बचा लूँगा।

²⁶~और मैं तुम पर जुल्म करनेवालों को उन ही का गोश्त खिलाऊँगा, और वह मीठी शराब की तरह अपना ही खून पीकर बदमस्त हो जाएँगे; और हर फ़र्द-ए-बशर जानेगा कि मैं खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला, और या'क़ूब का क़ादिर तेरा फ़िदिया देनेवाला हूँ।

Chapter 50

¹~खुदावन्दयूँ फ़रमाता है कि तेरी माँ का तलाक़ नामा जिसे लिख कर मैंने उसे~छोड़ दिया कहाँ है? या अपने क़र्ज़ ख़्वाहों में से किसके हाथ मैंने तुम को बेचा? देखो, तुम अपनी शरारतों की वजह से बिक गए, और तुम्हारी ख़ताओं के ज़रिए' तुम्हारी माँ को तलाक़ दी गई।

²~फ़िर किस लिए, जब मैं आया तो कोई आदमी न था? और जब मैंने पुकारा, तो कोई जवाब देनेवाला न हुआ? क्या मेरा हाथ ऐसा कोताह हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? और क्या मुझ में नजात देने की कुदरत नहीं? देखो, मैं अपनी एक धमकी से समन्दर को सुखा देता हूँ, और नहरों को सहारा कर डालता हूँ, उनमें की मछलियाँ पानी के न होने से बदबू हो जाती हैं और प्यास से मर जाती हैं।³मैं आसमान को सियाह पोश करता हूँ और उसको टाट उढ़ाता हूँ

⁴ख़ुदावन्द खुदा ने मुझ को शागिर्द की ज़बान बख़्शी, ताकि मैं जानूँ कि कलाम के वसीले से किस तरह थके माँदे की मदद करूँ। वह मुझे हर सुबह जगाता है, और मेरा कान लगाता है ताकि शागिर्दों की तरह सुनूँ।

⁵~ख़ुदावन्द खुदा ने मेरे कान खोल दिए, और मैं बागी ~ओ-बरगश्ता न हुआ।⁶मैंने अपनी पीठ पीटने वालों के और अपनी दाढ़ी नोचने वालों के हवाले की, मैंने अपना मुँह रुस्वाई और थूक से नहीं छिपाया।

⁷लेकिन ख़ुदावन्द खुदा मेरी हिमायत करेगा, और इसलिए मैं शर्मिन्दा न हूँगा; और इसीलिए मैंने अपना मुँह संग-ए-ख़ारा की तरह बनाया और मुझे यक़ीन है कि मैं शर्मसार न हूँगा।

⁸मुझे रास्तबाज़ ठहरानेवाला नज़दीक है। कौन मुझ से झगड़ा करेगा? आओ, हम आमने-सामने खड़े हों, मेरा मुखालिफ़ कौन है? वह मेरे पास आए।⁹~देखो, ख़ुदावन्द खुदा मेरी हिमायत करेगा; कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा? देख, वह सब कपड़े की तरह पुराने हो जाएँगे, उनको कीड़े खा जाएँगे।

¹⁰~तुम्हारे बीच कौन है जो ख़ुदावन्द से डरता और उसके खादिम की बातें सुनता है? जो अन्धेरे में चलता और रोशनी नहीं पाता, वह ख़ुदावन्द ~के नाम पर तवक्कुल करे और अपने ख़ुदा पर भरोसा रखे।

¹¹~देखो, तुम सब जो आग सुलगाते हो और अपने आपको अँगारों से घेर लेते हो, अपनी ही आग के शोलों में और अपने सुलगाए हुए अँगारों में चलो। तुम मेरे हाथ से यही पाओगे, तुम 'अज़ाब में लेट रहोगे।

Chapter 51

¹"ऐ लोगो, जो सदाक़त की पैरवी करते हो और खुदावन्द के जोयान हो, मेरी सुनो। उस चटटान पर जिसमें से तुम काटे गए हो और उस गढ़े के सूराख पर जहाँ से तुम खोदे गए हो, नज़र करो।

²अपने बाप इब्राहीम पर और सारा पर जिससे तुम पैदा हुए निगाह करो कि जब मैंने उसे बुलाया वह अकेला था, पर मैंने उसको बरकत दी और उसको कसरत बख़शी।

³यक़ीनन खुदावन्द सिय्यून को तसल्ली देगा, वह उसके तमाम वीरानों की दिलदारी करेगा, वह उसका वीराना 'अदन की तरह और उसका सहारा खुदावन्द के बाग़ की तरह बनाएगा; खुशी और शादमानी उसमें पाई जाएगी, शुक्रगुज़ारी और गाने की आवाज़ उसमें होगी।

⁴"मेरी तरफ़ मुत्वज्जिह हो, ऐ मेरे लोगो; मेरी तरफ़ कान लगा, ऐ मेरी उम्मत: क्योंकि शरी'अत मुझ से सादिर होगी और मैं अपने 'अद्ल को लोगों की रोशनी के लिए कायम करूँगा।⁵ मेरी सदाक़त नज़दीक है, मेरी नजात ज़ाहिर है, और मेरे बाज़ू लोगों पर हुक्मरानी करेंगे, जज़ीरे मेरा इन्तिज़ार करेंगे और मेरे बाज़ू पर उनका तवक्कुल होगा।

⁶अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाओ और नीचे ज़मीन पर निगाह करो; क्योंकि आसमान धुँवें ~की तरह गायब हो जायेंगे और ज़मीन कपड़े की तरह पुरानी हो जाएगी, और उसके बाशिन्दे मच्छरों की तरह मर जाएँगे; लेकिन मेरी नजात हमेशा तक रहेगी, और मेरी सदाक़त खत्म न होगी।

⁷"ऐ सच्चाई के जाननेवालों, मेरी सुनो, ऐ लोगो, जिनके दिल में मेरी शरी'अत है; इन्सान की मलामत से न डरो और उनकी ता'नाज़नी से परेशान न हो।⁸ क्योंकि कीड़ा उनको कपड़े की तरह खाएगा और किर्म उनको पश्मीने की तरह खा जाएगा, लेकिन मेरी सदाक़त हमेशा तक रहेगी और मेरी नजात नस्ल-दर-नस्ल।"

⁹जाग, जाग, ऐ खुदावन्द के बाज़ू तवानाई से मुलब्स हो; जाग जैसा पुराने ज़माने में और गुज़िश्ता नस्लों में क्या तू वही नहीं जिसने रहब' को टुकड़े-टुकड़े किया और अज़दहे को छेदा?¹⁰ क्या तू वही नहीं जिसने समन्दर या'नी बहर-ए-'अमीक के पानी को सुखा डाला; जिसने बहर की तह को रास्ता बना डाला, ताकि जिनका फ़िदिया दिया गया उसे उबूर करें?

¹¹फ़िर वह जिनको खुदावन्द ने मखलसी बख़शी लौटेंगे और गाते हुए सिय्यून में आएँगे, और हमेशा सुरूर उनके सिरों पर होगा; वह खुशी और शादमानी हासिल करेंगे और ग़म-ओ-अन्दोह काफ़ूर हो जाएँगे।

¹²"तुम को तसल्ली देनेवाला मैं ही हूँ, तू कौन है जो फ़ानी इन्सान से, और आदमज़ाद से जो घास की तरह हो जाएगा डरता है,

¹³और खुदावन्द अपने खालिक को भूल गया है, जिसने आसमान को ताना और ज़मीन की बुनियाद डाली; और तू हर वक़्त ज़ालिम के जोश-ओ-खरोश से कि जैसे वह हलाक करने को तैयार है, डरता है? पर ज़ालिम का जोश-ओ-खरोश कहाँ है?

¹⁴ज़िलावतन गुलाम जल्दी से आज़ाद किया जाएगा, वह ग़ार में न मरेगा और उसकी रोटी कम न होगी।¹⁵ क्योंकि मैं ही खुदावन्द तेरा खुदा हूँ, जो मौजज़न समन्दर को थमा देता हूँ; मेरा नाम रब्ब-उल-अफ़वाज़ है।

¹⁶और मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाला, और तुझे अपने हाथ के साथे तले छिपा रखखा ताकि अफ़लाक को खड़ा करूँ" और ज़मीन की बुनियाद डालूँ, और अहल-ए-सिय्यून से कहूँ, 'तुम मेरे लोग हो।'

¹⁷जाग, जाग, उठ ऐ यरुशलीम; तूने खुदावन्द के हाथ से उसके ग़ज़ब का प्याला पिया, तूने डगमगाने का जाम तलछट के साथ पी लिया।¹⁸ उन सब बेटों में जो उससे पैदा हुए, कोई नहीं जो उसका रहनुमा हो; और उन सब बेटों में जिनको उसने पाला, एक भी नहीं जो उसका हाथ पकड़े।

¹⁹ये दो हादिसे तुझ पर आ पड़े, कौन तेरा ग़मख़वार होगा? वीरानी और हलाकत, काल और तलवार; मैं क्योंकिर तुझे तसल्ली दूँ?²⁰ तेरे बेटे हर कूचे के मदखल में ऐसे बेहोश पड़े हैं, जैसे हरन दाम में, वह खुदावन्द के ग़ज़ब और तेरे खुदा की धमकी से बेखुद हैं'।

²¹इसलिए अब तू जो बदहाल और मस्त है पर मय से नहीं, ये बात सुन;²² तेरा "खुदावन्द यहोवाह हूँ तेरा खुदा जो ~अपने लोगों की वकालत करता है यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं डगमगाने का प्याला और अपने क्रहर का जाम तेरे हाथ से ले लूँगा; तू उसे फिर कभी न पिएगी।

²³और मैं उसे उनके हाथ में दूँगा जो तुझे दुख देते, और जो तुझ से कहते थे, 'झुक जा ताकि हम तेरे ऊपर से गुज़रें', और तूने अपनी पीठ को जैसे ज़मीन, बल्कि गुज़रने वालों के लिए सड़क बना दिया।"

Chapter 52

¹जाग जाग ऐ सिय्यून, अपनी शौकत से मुलब्स हो; ऐ यरुशलीम पाक शहर, अपना खुशनुमा लिबास पहन ले; क्योंकि आगे को कोई नामखतून या नापाक तुझ में कभी दाखिल न होगा।

²अपने ऊपर से गर्द झाड़ दे, उठकर बैठ; ऐ यरुशलीम, ऐ गुलाम दुख्तर -ए-सिय्यून, अपनी गर्दन के बंधनों को खोल डाल।³क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "तुम मुफ़्त बेचे गए, और तुम बेज़र ही आज़ाद किए जाओगे।"

⁴खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि "मेरे लोग इब्तिदा में मिस्र को गए कि वहाँ मुसाफ़िर होकर रहें, असूरियों ने भी बे वजह उन पर जुल्म किया।"

⁵खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "अब मेरा यहाँ क्या काम, हालाँकि मेरे लोग मुफ़्त गुलामी में गए हैं? वह जो उन पर मुसल्लत हैं लत्कारतें हैं खुदावन्द फ़रमाता हैं और हर रोज़ मुतवातिर मेरे नाम की तकफ़ीर की जाती है।⁶यक़ीनन मेरे लोग मेरा नाम जानेंगे, और उस रोज़ समझेंगे कि कहनेवाला मैं ही हूँ, देखो, मैं हाज़िर हूँ।"

⁷उसके पाँव पहाड़ों पर क्या ही खुशनुमा हैं जो खुशख़बरी लाता है और सलामती का 'ऐलान करता है और ख़ैरियत की ख़बर और नजात का इश्तिहार देता है जो सिय्यून से कहता है तेरा खुदा सलत्नत करता है।⁸अपने निगहबानों की आवाज़ सुन, वह अपनी आवाज़ बलन्द करते हैं, वह आवाज़ मिलाकर गाते हैं; क्योंकि जब खुदावन्द सिय्यून को वापस आएगा तो वह उसे रू-ब-रू देखेंगे।

⁹ऐ यरुशलीम के वीरानो, खुशी से ललकारो, मिलकर नग़मा सराई करो, क्योंकि खुदावन्द ने अपनी क़ौम को दिलासा दिया उसने यरुशलीम का फ़िदिया दिया।

¹⁰खुदावन्द ने अपना पाक बाज़ू तमाम क़ौमों की आँखों के सामने नंगा किया है और ज़मीन सरासर हमारे खुदा की नजात को देखेगी।

¹¹ऐ खुदावन्द के जुरूफ़ उठाने वालो, रवाना हो, रवाना हो; वहाँ से चले जाओ, नापाक चीज़ों को हाथ न लगाओ, उसके बीच से निकल जाओ और पाक हो।

¹²क्योंकि तुम न तो जल्द निकल जाओगे, और न भागनेवाले की तरह चलोगे; क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा हरावल, और इस्राईल का खुदा तुम्हारा चन्डावल होगा।

¹³देखो, मेरा ख़ादिम इक्रबालमन्द होगा, वह आला-ओ-बरतर और निहायत बलन्द होगा।¹⁴जिस तरह बहुतेरे तुझ को देखकर दंग हो गए (उसका चहरा हर एक बशर से ज़ाइद, और उसका जिस्म बनी आदम से ज़्यादा बिगड़ गया था),

¹⁵उसी तरह वह बहुत सी क़ौमों को पाक करेगा और बादशाह उसके सामने ख़ामोश होंगे; क्योंकि जो कुछ उनसे कहा न गया था, वह देखेंगे; और जो कुछ उन्होंने सुना न था, वह समझेंगे।

Chapter 53

¹हमारे पैग़ाम पर कौन ईमान लाया? और खुदावन्द का बाज़ू किस पर ज़ाहिर हुआ?²लेकिन वह उसके आगे कोंपल की तरह, और खुशक ज़मीन से जड़ की तरह फूट निकला है; न उसकी कोई शक्ल और सूरत है, न खूबसूरती; और जब हम उस पर निगाह करें, तो कुछ हुस्न-ओ-जमाल नहीं कि हम उसके मुश्ताक हों।

³वह आदमियों में हक़ीर-ओ-मर्दूद; मर्द-ए-ग़मनाक, और रंज का आशना था; लोग उससे जैसे रूपोश थे। उसकी तहक़ीर की गई, और हम ने उसकी कुछ क़द्र न जानी।

⁴तोभी उसने हमारी मशक्कतें उठा लीं, और हमारे हमारे ग़मों को बर्दाश्त किया; लेकिन हमने उसे खुदा का मारा-कूटा और सताया हुआ समझा।

⁵हालाँकी वह हमारी ख़ताओं की वजह से घायल किया गया, और हमारी बदकिरदारी के ज़रिए' कुचला गया। हमारी ही सलामती के लिए उस पर सियासत हुई, ताकि उसके मार खाने से हम शिफ़ा पाएँ।

⁶हम सब भेड़ों की तरह भटक गए, हम में से हर एक अपनी राह को फिरा; लेकिन खुदावन्द ने हम सबकी बदकिरदारी उस पर लादी।

⁷वह सताया गया, तोभी उसने बर्दाश्त की और मुँह न खोला; जिस तरह बर्बाद जिसे ज़बह करने को ले जाते हैं, और जिस तरह भेड़ अपने बाल कतरनेवालों के सामने बेज़बान है, उसी तरह वह ख़ामोश रहा।

⁸वह जुल्म करके और फ़तवा लगाकर उसे ले गए; फिर उसके ज़माने के लोगों में से किसने ख़याल किया कि वह ज़िन्दों की ज़मीन से काट डाला गया? मेरे लोगों की ख़ताओं की वजह से उस पर मार पड़ी।⁹उसकी क़ब्र भी शरीरों के बीच ठहराई गई, और वह अपनी मौत में दौलतमन्दों के साथ हुआ; हालाँकि उसने किसी तरह का जुल्म न किया, और उसके मुँह में हरगिज़ छल न था।

¹⁰लेकिन खुदावन्द को पसन्द आया कि उसे कुचले, उसने उसे ग़मगीन किया; जब उसकी जान गुनाह की कुर्बानी के लिए पेश की जाएगी, तो वह अपनी नस्ल को देखेगा; उसकी 'उम्र दराज़ होगी और खुदावन्द की मर्ज़ी उसके हाथ के वसीले से पूरी होगी।¹¹अपनी जान ही का दुख उठाकर वह उसे देखेगा और सेर होगा; अपने ही इरफ़ान से मेरा सादिक़ खादिम बहुतों को रास्तबाज़ ठहराएगा, क्योंकि वह उनकी बदकिरदारी खुद उठा लेगा।

¹²इसलिए मैं उसे बुजुर्गों के साथ हिस्सा दूँगा, और वह लूट का माल ताक़तवरों के साथ बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपनी जान मौत के लिए उडेल दी, और वह ख़ताकारों के साथ शुमार किया गया, तोभी उसने बहुतों के गुनाह उठा लिए और ख़ताकारों की शफ़ा'अत की।

Chapter 54

¹ 'ऐ बाँझ, तू जो बे-औलाद थी नगमा सराई ~कर, तू जिसने विलादत का दर्द बर्दाश्त नहीं किया, खुशी से गा और ज़ोर से चिल्ला, " क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है कि बे कस छोड़ी हुई औलाद शौहर वाली की औलाद से ज़्यादा है।

² 'अपनी खेमागाह को वसी' कर दे, हाँ, अपने घरों के पर्दे फैला; दरवा न कर, अपनी डोरियाँ लम्बी और अपनी मेंखें मज़बूत करा।³ इसलिए कि तू दहनी और बाँई तरफ़ बढ़ेगी और तेरी नस्ल क़ौमों की वारिस होगी और वीरान शहरों को बसाएगी।

⁴ 'खौफ़ न कर, क्योंकि तू फिर पशेमाँ न होगी; तू न घबरा, क्योंकि तू फिर रूस्वा न होगी; और अपनी जवानी का नंग भूल जाएगी, और अपनी बेवगी की 'आर को फिर याद न करेगी।

⁵ 'क्योंकि तेरा ख़ालिफ़ तेरा शौहर है, उसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज है; और तेरा फ़िदिया देनेवाला इस्राईल का कुददूस है, वह तमाम इस ज़मीन का खुदा कहलाएगा।⁶ 'क्योंकि तेरा खुदा फ़रमाता है कि खुदावन्द ने तुझ को मतरूका और दिल आजुर्दा बीवी की तरह; हाँ, जवानी की मतलूका बीवी की तरह फिर बुलाया है।

⁷ 'मैंने एक दम के लिए तुझे छोड़ दिया, लेकिन रहमत की फ़िरावानी से तुझे ले लूँगा।"⁸ 'खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला फ़रमाता है, कि क्रहर की शिद्दत में मैंने एक दम के लिए तुझ से मुँह छिपाया, लेकिन अब मैं हमेशा शफ़क़त से तुझ पर रहम करूँगा।

⁹ 'क्योंकि मेरे लिए ये तूफ़ान-ए-नूह का सा मु'आमिला है, कि जिस तरह मैंने क़सम खाई थी कि फिर ज़मीन पर नूह जैसा तूफ़ान कभी न आएगा, उसी तरह अब मैंने क़सम खाई है कि मैं तुझ से फिर कभी आजुर्दा न हूँगा और तुझ को न घुड़कूँगा।"¹⁰ 'खुदावन्द तुझ पर रहम करने वाला यूँ फ़रमाता है कि पहाड़ तो जाते रहें और टीले टल जाएँ लेकिन मेरी शफ़क़त कभी तुझ पर से जाती न रहेगी, और मेरा सुलह का 'अहद न टलेगा।

¹¹ "ऐ मुसीबतज़दा और तूफ़ान की मारी और तसल्ली से महरूम! देख, मैं तेरे पत्थरों को स्याह रेख़ता में लगाऊँगा और तेरी बुनियाद नीलम से डालूँगा।¹² मैं तेरे कुंगुरों को लालों, और तेरे फाटकों को शब चिराग़, और तेरी सारी फ़सील बेशक़ीमत पत्थरों से बनाऊँगा।

¹³ और तेरे सब फ़र्ज़न्द खुदावन्द से तालीम पाएँगे और तेरे फ़र्ज़न्दों की सलामती कामिल होगी।¹⁴ तू रास्तबाज़ी से पायदार हो जाएगी, तू जुल्म से दूर रहेगी क्योंकि तू बेखौफ़ होगी, और दहशत से दूर रहेगी क्योंकि वह तेरे क़रीब न आएगी।

¹⁵ 'मुम्किन है कि वह कभी इकट्ठे हों, लेकिन मेरे हुक्म से नहीं, जो तेरे खिलाफ़ जमा' होंगे, वह तेरे ही वजह से गिरेंगे।¹⁶ देख, मैंने लुहार को पैदा किया जो कोयलों की आग धौकता और अपने काम के लिए हथियार निकालता है; और शारतगरों को मैंने ही पैदा किया कि लूट मार करें।

¹⁷ ~ कोई हथियार जो तेरे खिलाफ़ बनाया जाए काम न आएगा, और जो ज़बान 'अदालत में तुझ पर चलेगी तू उसे मुजरिम ठहराएगी। खुदावन्द फ़रमाता है, ये मेरे बन्दों की मीरास है और उनकी रास्तबाज़ी मुझ से है।"

Chapter 55

¹ऐ सब प्यासो, पानी के पास आओ, और वह भी जिसके पास पैसा न हो, आओ, मोल लो, और खाओ, हाँ आओ! शराब और दूध बेज़र और बेक्रीमत खरीदो।

²तुम किस लिए अपना रुपया उस चीज़ के लिए जो रोटी नहीं, और अपनी मेहनत उस चीज़ के वास्ते जो आसूदा नहीं करती, खर्च करते हो? तुम ग़ौर से मेरी सुनो, और वह चीज़ जो अच्छी है खाओ; और तुम्हारी जान फ़रबही से लज़ज़त उठाए।

³कान लगाओ और मेरे पास आओ, सुनो और तुम्हारी जान ज़िन्दा रहेगी; और मैं तुम को अबदी 'अहद या'नी दाऊद की सच्ची नेमतें बख़्शूँगा।⁴देखो, मैंने उसे उम्मतों के लिए गवाह मुक़र्रर किया, बल्कि उम्मतों का पेशवा और फ़रमौरवा।

⁵देख, तू एक ऐसी क़ौम को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा, और एक ऐसी क़ौम जो तुझे नहीं जानती थी, खुदावन्द तेरे खुदा और इस्राईल के कुददूस की खातिर तेरे पास दौड़ी आएगी; क्योंकि उसने तुझे जलाल बख़्शा है।

⁶"जब तक खुदावन्द मिल सकता है उसके तालिब हो, जब तक वह नज़दीक है उसे पुकारो।⁷शरीर अपनी राह को तर्क करे और बदकिरदार अपने खयालों को, और वह खुदावन्द की तरफ़ फिरे और वह उस पर रहम करेगा; और हमारे खुदा की तरफ़ क्योंकि वह कसरत से मु'आफ़ करेगा।

⁸खुदावन्द फ़रमाता है कि मेरे खयाल तुम्हारे खयाल नहीं, और न तुम्हारी राहें मेरी राहें हैं।⁹क्योंकि जिस क़दर आसमान ज़मीन से बलन्द है, उसी क़दर मेरी राहें तुम्हारी राहों से और मेरे खयाल तुम्हारे खयालों से बलन्द हैं।

¹⁰"क्योंकि जिस तरह आसमान से बारिश होती और बर्फ़ पड़ती है, और फिर वह वहाँ वापस नहीं जाती बल्कि ज़मीन को सेराब करती है, और उसकी शादाबी और रोईदगी ~का ज़रि'आ होती है ताकि बोनेवाले को बीज और खाने वाले को रोटी दे;¹¹उसी तरह मेरा कलाम जो मेरे मुँह से निकलता है होगा, वह बेअन्जाम मेरे पास वापस न आएगा, बल्कि जो कुछ मेरी ख़्वाहिश होगी वह उसे पूरा करेगा और उस काम में जिसके लिए मैंने उसे भेजा मो'अस्सिर होगा।

¹²क्योंकि तुम खुशी से निकलोगे और सलामती के साथ खाना किए जाओगे; पहाड़ और टीले तुम्हारे सामने नगामापर्दाज़ होंगे, और मैदान के सब दरख़्त ताल देंगे¹³काँटों की जगह सनौबर निकलेगा, और झाड़ी के बदले उसका दरख़्त होगा; और ये खुदावन्द के लिए नाम और हमेशा निशान होगा जो कभी' न मिटेगा।"

Chapter 56

¹खुदावन्द फ़रमाता है कि 'अदल को क़ायम रखो, और सदाक़त को 'अमल में लाओ, क्योंकि मेरी नज़ात नज़दीक है और मेरी सदाक़त ज़ाहिर होने वाली है।

²मुबारक है वह इन्सान, जो इस पर 'अमल करता है और वह आदमज़ाद जो इस पर क़ायम रहता है, जो सबत को मानता और उसे नापाक नहीं करता, और अपना हाथ हर तरह की बुराई से बाज़ रखता है।"

³और बेगाने का फ़र्ज़न्द जो खुदावन्द से मिल गया हरगिज़ न कहे, "खुदावन्द मुझ को अपने लोगों से जुदा कर देगा;" और खोजा न कहे, कि "देखो, मैं तो सूखा दरख़्त हूँ।"

⁴क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि " वह खोजे जो मेरे सबतों को मानते हैं और उन कामों को जो मुझे पसन्द हैं ~इख्तियार करते हैं~ मैं उनको अपने घर में और अपनी चार दीवारी के अन्दर, ऐसा नाम-ओ-निशान बख़्शूँगा जो बेटों और बेटियों से भी बढ़ कर होगा; मैं हर एक को एक अबदी नाम दूँगा जो मिटाया न जाएगा।

⁶और बेगाने की औलाद भी जिन्होंने अपने आपको खुदावन्द से पैवस्ता किया है कि उसकी ख़िदमत करें, और खुदावन्द के नाम को 'अज़ीज़ रखें और उसके बन्दे हों, वह सब जो सबत को हिफ़ज़ करके उसे नापाक न करें और मेरे 'अहद पर क़ायम रहें; मैं उनको भी अपने पाक पहाड़ पर लाऊँगा और अपनी 'इबादतगाह में उनको शादमान करूँगा और उनकी सोख़तनी कुर्बानियाँ और उनके ज़बीहे मेरे मज़बह पर मक़बूल होंगे; क्योंकि मेरा घर सब लोगों की 'इबादतगाह कहलाएगा।"

⁸खुदावन्द खुदा, जो इस्राईल के तितर-बितर लोगों को जमा' करनेवाला है, यूँ फ़रमाता है, कि "मैं उनके सिवा जो उसी के होकर जमा' हुए हैं, औरों को भी उसके पास जमा' करूँगा।"

⁹ऐ दशती हैवानो, तुम सब के सब खाने को आओ ! हाँ, ऐ जंगल के सब दरिन्दो!¹⁰उसके निगहबान अन्धे हैं, वह सब जाहिल हैं, वह सब गूँगे कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते, वह ख़्वाब देखनेवाले हैं जो पड़े रहते हैं और ऊँघते रहना पसन्द करते हैं।

¹¹और वह लालची कुत्ते हैं जो कभी सेर नहीं होते। वह नादान चरवाहे हैं, वह सब अपनी अपनी राह को फिर गए; हर एक हर तरफ़ से अपना ही नफ़ा' ढूँडता है।

¹²हर एक कहता है, "तुम आओ, मैं शराब लाऊँगा, और हम ख़ूब नशे में चूर होंगे; और कल भी आज ही की तरह होगा बल्कि इससे बहुत बेहतर।"

Chapter 57

¹सादिक हलाक होता है, और कोई इस बात को खातिर में नहीं लाता; और नेक लोग उठा लिए जाते हैं और कोई नहीं सोचता कि सादिक उठा लिया गया ताकि आनेवाली आफ़त से बचे; वह सलामती में दाखिल होता है। हर एक रास्त रू अपने बिस्तर पर आराम पाएगा।

³लेकिन तुम, ऐ जादूगरनी के बेटो, ऐ ज़ानी और फ़ाहिशा के बच्चों, इधर आगे आओ।⁴तुम किस पर ठट्ठा मारते हो? तुम किस पर मुँह फाड़ते और ज़बान निकालते हो? क्या तुम बागी औलाद और दगाबाज़ नस्ल नहीं हो,

⁵जो बुतों के साथ हर एक हरे दरख़्त के नीचे अपने आपको बरअंगेख़ता करते और वादियों में चट्टानों के शिगाफ़ों के नीचे बच्चों को ज़बह करते हो?

⁶वादी के चिकने पत्थर तेरा हिस्सा हैं, वही तेरा हिस्सा हैं"; हाँ, तूने उनके लिए तपावन दिया और हदिया पेश किया है; क्या मुझे इन कामों से तिस्कीन होगी?

⁷एक ऊँचे और बलन्द पहाड़ पर तूने अपना बिस्तर बिछाया है, और उसी पर ज़बीहा ज़बह करने को चढ़ गई।⁸और तूने दरवाज़ों और चौखटों के पीछे अपनी यादगार की 'अलामतें नस्ब कीं, और तू मेरे सिवा दूसरे के आगे बेपर्दा हुई; हाँ, तू चढ़ गई और तूने अपना बिछौना भी बड़ा बनाया और उनके साथ 'अहद कर लिया है; तूने उनके बिस्तर को जहाँ देखा पसन्द किया।

⁹तू खुशबू लगाकर बादशाह के सामने चली गई और अपने आपको खूब मु'अत्तर किया, और अपने क़ासिद दूर दूर भेजे बल्कि तूने अपने आपको पाताल तक पस्त किया।¹⁰तू अपने सफ़र की दराज़ी से थक गई, तोभी तूने न कहा, कि "इससे कुछ फ़ाइदा नहीं", तूने अपनी कुक्कत की ताज़गी पाई इसलिए तू अफ़सुर्दा न हुई।

¹¹तब तू किससे डरी और किसके खौफ़ से तूने झूट बोला, और मुझे याद न किया और खातिर में न लाई? क्या मैं एक मुदत से खामोश नहीं रहा? तोभी तू मुझ से न डरी।¹²मैं तेरी सदाक़त की तरफ़ तेरे कामों को फ़ाश करूँगा और उनसे तुझे कुछ नफ़ा न होगा।

¹³जब तू फ़रियाद करे, तो जिनको तूने जमा' किया है वह तुझे छुड़ाएँ; ये हवा उन-सबको उड़ा ले जाएगी, एक झोंका उनको ले जाएगा; लेकिन मुझ पर तवक्कुल करनेवाला ज़मीन का मालिक होगा और मेरे पाक पहाड़ का वारिस होगा।

¹⁴तब यूँ कहा जाएगा, "राह ऊँची करो, ऊँची करो, हमवार करो, मेरे लोगों के रास्ते से ठोकर का ज़रि'आ दूर करो।"¹⁵क्योंकि वह जो 'आली और बलन्द है और हमेशा से हमेशा -तक क़ायम है, जिसका नाम कुददूस है, यूँ फ़रमाता है, "मैं बलन्द और मुक़द्दस मक़ाम में रहता हूँ, और उसके साथ भी जो शिकस्ता दिल और फ़रोतन है; ताकि फ़रोतनों की रूह को ज़िन्दा करूँ और शिकस्ता दिलों को हयात बख़्शूँ।

¹⁶क्योंकि मैं हमेशा न झगड़ूँगा और हमेशा ग़ज़बनाक न रहूँगा, इसलिए कि मेरे सामने रूह और जानें जो मैंने पैदा की हैं बेताब हो जाती हैं।¹⁷कि मैं उसके लालच के गुनाह से ग़ज़बनाक हुआ, इसलिए मैंने उसे मारा, मैंने अपने आपको छिपाया और ग़ज़बनाक हुआ; इसलिए कि वह उस राह पर जो उसके दिल ने निकाली, भटक गया था।

¹⁸मैंने उसकी राहें देखीं, और मैं ही उसे शिफ़ा बख़्शूँगा; मैं उसकी रहबरी करूँगा, और उसको और उसके ग़मख़वारों को फिर दिलासा दूँगा।¹⁹ख़ुदावन्द फ़रमाता है, "मैं लबों का फल पैदा करता हूँ, सलामती! सलामती उसको जो दूर है, और उसको जो नज़दीक है, और मैं ही उसे सिहत बख़्शूँगा।

²⁰लेकिन शरीर तो समन्दर की तरह है जो हमेशा-मौजज़न और बेक्रार है, जिसका पानी कीचड़ और गन्दगी उछालता है।²¹मेरा ख़ुदा फ़रमाता है, कि "शरीरों के लिए सलामती नहीं।"

Chapter 58

¹गला फाड़ कर चिल्ला दरेगा न कर नरसिंगे की तरह अपनी आवाज़ बलन्द कर, और मेरे लोगों पर उनकी खता और या'कूब के घराने पर उनके गुनाहों को ज़ाहिर करा² वह रोज़-ब-रोज़ मेरे तालिब हैं और उस क़ौम की तरह जिसने सदाक़त के काम किए और अपने खुदा के अहक़ाम को तर्क न किया, मेरी राहों को दरियाफ़्त करना चाहते हैं; वह मुझ से सदाक़त के अहक़ाम तलब करते हैं, वह खुदा की नज़दीकी चाहते हैं।

³वह कहते हैं, 'हम ने किस लिए रोज़े रखे, जब कि तू नज़र नहीं करता; और हम ने क्यों अपनी जान को दुख दिया, जब कि तू खयाल में नहीं लाता?' देखो, तुम अपने रोज़े के दिन में अपनी खुशी के तालिब रहते हो, और सब तरह की सख़्त मेहनत लोगों से कराते हो।

⁴देखो, तुम इस मक़सद से रोज़ा रखते हो कि झगड़ा-रगड़ा करो, और शरारत के मुक्के मारो; फिर अब तुम इस तरह का रोज़ा नहीं रखते हो कि तुम्हारी आवाज़ 'आलम-ए-बाला पर सुनी जाए'⁵ क्या ये वह रोज़ा है जो मुझ को पसन्द है? ऐसा दिन कि उसमें आदमी अपनी जान को दुख दे और अपने सिर को झाऊ की तरह झुकाए, और अपने नीचे टाट और राख बिछाए; क्या तू इसको रोज़ा और ऐसा दिन कहेगा जो खुदावन्द का मक़बूल हो ?

⁶"क्या वह रोज़ा जो मैं चाहता हूँ ये नहीं कि जुल्म की जंजीरें तोड़ें और जूए के बन्धन खोलें, और मज़लूमों को आज़ाद करें बल्कि हर एक जूए को तोड़ डालें?

⁷क्या ये नहीं कि तू अपनी रोटी भूकों को खिलाए, और ग़रीबों को जो आवारा हैं अपने घर में लाए; और जब किसी को गंगा देखे तो उसे पहिनाए, और तू अपने हमजिन्स से रूपोशी न करे?

⁸तब तेरी रोशनी सुबह की तरह फूट निकलेगी और तेरी सेहत की तरक्की जल्द जाहिर होगी; तेरी सदाक़त तेरी हरावल होगी और खुदावन्द का जलाल तेरा चन्दावल होगा।

⁹तब तू पुकारेगा और खुदावन्द जवाब देगा, तू चिल्लाएगा और वह फ़रमाएगा, 'मैं यहाँ हूँ'। अगर तू उस जूए को और उंगलियों से इशारा करने की, और हरज़ागोई को अपने बीच से दूर करेगा,¹⁰ और अगर तू अपने दिल को भूके की तरफ़ माइल करे और आजुर्दा दिल को आसूदा करे, तो तेरा नूर तारीकी में चमकेगा और तेरी तीरगी दोपहर की तरह हो जाएगी।

¹¹और खुदावन्द हमेशा तेरी रहनुमाई करेगा, और खुश्क साली में तुझे सेर करेगा और तेरी हड्डियों को कुव्वत बख़्शेगा; तब तू सेराब बाग़ की तरह होगा और उस चश्मे की तरह जिसका पानी कम न हो |

¹²और तेरे लोग पुराने वीरान मकानों को ता'मीर करेंगे, और तू पुश्त-दर-पुश्त की बुनियादों को खड़ा करेगा, और तू रखने का~बन्द करनेवाला और आबादी के लिए राह का दुरुस्त करने वाला कहलाएगा।

¹³"अगर तू सबत के रोज़ अपना पाँव रोक रखे, और मेरे मुक़द्दस दिन में अपनी खुशी का तालिब न हो, और सबत को राहत और खुदावन्द का मुक़द्दस और मु'अज़्ज़म कहे और उसकी ता'ज़ीम करे, अपना कारोबार न करे, और अपनी खुशी और बेफ़ाइदा बातों से दस्तबरदार रहे;

¹⁴तब तू खुदावन्द में मसरूर होगा और मैं तुझे दुनिया की बलन्दियों पर ले चलूँगा, और मैं तुझे तेरे बाप या'कूब की मीरास से खिलाऊँगा; क्योंकि खुदावन्द ही के मुँह से ये इरशाद हुआ है।"

Chapter 59

¹देखो खुदावन्द का हाथ छोटा नहीं हो गया कि बचा न सके, और उसका कान भारी नहीं कि सुन न सके;²—बल्कि तुम्हारी बदकिरदारी ने तुम्हारे और तुम्हारे खुदा के बीच जुदाई कर दी है, और तुम्हारे गुनाहों ने उसे तुम से छिपा लिया, ऐसा कि वह नहीं सुनता।

³क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से और तुम्हारी उंगलियाँ बदकिरदारी से आलूदा हैं तुम्हारे लब झूट बोलते और तुम्हारी ज़बान शरारत की बातें बकती है।⁴कोई इन्साफ़ की बातें पेश नहीं करता और कोई सच्चाई से हुज्जत नहीं करता, वह झूट पर भरोसा करते हैं और झूट बोलते हैं वह ज़ियानकारी से बारदार होकर बदकिरदारी को जन्म देते हैं।

⁵वह अज़दहे ~के अण्डे सेते और मकड़ी का जाला तनते हैं; जो उनके अण्डों में से कुछ खाए मर जाएगा, और जो उनमें से तोड़ा जाए उससे अज़दहा निकलेगा।

⁶उनके जाले से पोशाक नहीं बनेगी, वह अपनी दस्तकारी से मुलब्स न होंगे। उनके आ'माल बदकिरदारी के हैं, और जुल्म का काम उनके हाथों में है।

⁷उनके पाँव बुराई की तरफ़ दौड़ते हैं, और वह बेगुनाह का खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं; उनके खयालात बदकिरदारी के हैं, तबाही और हलाकत उनकी राहों में है।⁸वह सलामती का रास्ता नहीं जानते, और उनके चाल चलन ~में इन्साफ़ नहीं; वह अपने लिए टेढ़ी राह बनाते हैं जो कोई उसमें जाएगा सलामती को न देखेगा।

⁹इसलिए इन्साफ़ हम से दूर है, और सदाक़त हमारे नज़दीक नहीं आती; हम नूर का ~इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन देखो तारीकी है; और रोशनी का, लेकिन अन्धे में चलते हैं।¹⁰हम दीवार को अन्धे की तरह टटोलते हैं, हाँ, यूँ टटोलते हैं कि जैसे हमारी आँखें नहीं; हम दोपहर को यूँ ठोकर खाते हैं जैसे रात हो गई, हम तन्दरुस्तों के बीच जैसे मुर्दा हैं।

¹¹हम सब के सब रीछों की तरह गुराते हैं और कबूतरों की तरह कुढ़ते हैं, हम इन्साफ़ की राह तकते हैं, लेकिन वह कहीं नहीं; और नजात के मुन्तज़िर हैं, लेकिन वह हम से दूर है।

¹²क्योंकि हमारी खताएँ तेरे सामने बहुत हैं और हमारे गुनाह हम पर गवाही देते हैं, क्योंकि हमारी खताएँ हमारे साथ हैं और हम अपनी बदकिरदारी को जानते हैं;

¹³कि हम ने खता की, खुदावन्द का इन्कार किया, और अपने खुदा की पैरवी से बरगश्ता हो गए; हम ने जुल्म और सरकशी की बातें कीं, और दिल में झूठ तसव्वुर करके दरोहोई की।

¹⁴अदालत हटाई गई और इन्साफ़ दूर खड़ा हो रहा; सदाक़त बाज़ार में गिर पड़ी, और रास्ती दाखिल नहीं हो सकती।¹⁵~हाँ, रास्ती गुम हो गई, और वह जो बुराई से भागता है शिकार हो जाता है।खुदावन्द ने ये देखा और उसकी नज़र में बुरा मा'लूम हुआ कि 'अदालत जाती रही।

¹⁶और उसने देखा कि कोई आदमी नहीं, और ता'अज्जुब किया कि कोई शफ़ा'अत करने वाला नहीं; इसलिए उसी के बाजू ने उसके लिए नजात हासिल की और उसी की रास्तबाज़ी ने उसे सम्भाला।

¹⁷हाँ, उसने रास्तबाज़ी का बक्तर पहना और नजात का खूद अपने सिर पर रखवा, और उसने लिबास की जगह इन्तक़ाम की पोशाक पहनी और ग़ैरत के जुब्बे से मुलब्स हुआ।¹⁸वह उनको उनके 'आमाल के मुताबिक़ बदला देगा, अपने मुखालिफ़ों पर क्रहर करेगा और अपने दुश्मनों को सज़ा देगा, और जज़ीरों को बदला देगा।

¹⁹तब पश्चिम के बाशिन्दे खुदावन्द के नाम से डरेंगे, और पूरब के बाशिन्दे उसके जलाल से; क्योंकि वह दरिया के सैलाब की तरह आएगा जो खुदावन्द के दम से रवाँ हो।²⁰और खुदावन्द फ़रमाता है, कि "सिप्पून में और उनके पास जो या'कूब में खताकारी से बाज़ आते हैं, एक फ़िदिया देनेवाला आएगा।

²¹क्योंकि उनके साथ मेरा 'अहद ये है," खुदावन्द फ़रमाता है, कि "मेरी रूह जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैंने तेरे मुँह में डाली हैं, तेरे मुँह से और तेरी नस्ल के मुँह से, और तेरी नस्ल की नस्ल के मुँह से अब से लेकर हमेशा तक जाती न रहेंगी;" खुदावन्द का यही इरशाद है।

Chapter 60

¹उठ मुनव्वर हो क्योंकि तेरा नूर आगया और खुदावन्द का जलाल तुझ पर ज़ाहिर हुआ।

²क्योंकि देख, तारीकी ज़मीन पर छा जाएगी और तीरगी उम्मतों पर; लेकिन खुदावन्द तुझ पर ताले' होगा और उसका जलाल तुझ पर नुमायाँ होगा।³ और क्रौमें तेरी रोशनी की तरफ आयेंगी और सलातीन तेरे तुलू की तजल्ली में चलेंगी।

⁴अपनी आँखें उठाकर चारों तरफ देख, वह सब के सब इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं; तेरे बेटे दूर से आएँगे और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर लाएँगे।⁵ तब तू देखेगी और मुनव्वर होगी; हाँ, तेरा दिल उछलेगा और कुशादा होगा क्योंकि समन्दर की फ़िरावानी तेरी तरफ फिरेगी और क्रौमों की दौलत तेरे पास फ़राहम होगी।

⁶ऊँटों की कतारें और मिदयान और 'ऐफ़ा की सांडनियों आकर तेरे गिर्द बेशुमार होंगी; वह सब सबा से आएँगे, और सोना और लुबान लायेंगे और खुदावन्द की हम्द का 'ऐलान करेंगे। 'क्रीदार की सब भेड़ें तेरे पास जमा' होंगी, नबायोत के मेंढे तेरी ख़िदमत में हाज़िर होंगे; वह मेरे मज़बह पर मक़बूल होंगे और मैं अपनी शौकत के घर को जलाल बख़्शूँगा।

⁸ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़े चले आते हैं, और जैसे कबूतर अपनी काबुक की तरफ़? 'यकीनन जज़ीरे मेरी राह देखेंगे, और तरसीस के जहाज़ पहले आएँगे कि तेरे बेटों को उनकी चाँदी और उनके सोने के साथ दूर से खुदावन्द तेरे खुदा और इस्राईल के कुददूस के नाम के लिए लाएँ; क्योंकि उसने तुझे बुजुर्गी बख़्शी है।

¹⁰और बेगानों के बेटे तेरी दीवारें बनाएँगे और उनके बादशाह तेरी ख़िदमत गुज़ारी करेंगे अगरचे मैंने अपने क़हर से तुझे मारा पर अपनी महरबानी से मैं तुझ पर रहम करूँगा।¹¹ और तेरे फाटक हमेशा खुले रहेंगे, वह दिन रात कभी बन्द न होंगे; ताकि क्रौमों की दौलत और उनके बादशाहों को तेरे पास लाएँ।

¹²क्योंकि वह क्रौम और वह ममलुकत जो तेरी ख़िदमत गुज़ारी न करेगी, बर्बाद हो जाएगी; हाँ, वह क्रौम बिल्कुल हलाक की जाएँगी।¹³ लुबनान का जलाल तेरे पास आएगा, सरौ और सनौबर और देवदार सब आएँगे ताकि मेरे घर को आरास्ता करें; और मैं अपने पाँव की कुर्सी को रौनक बख़्शूँगा।

¹⁴और तेरे ग़ारत ग़रों के बेटे तेरे सामने झुकते हुए आयेंगे और तेरी तहक़ीर करने वाले सब तेरे कदमों पर गिरेंगे; और वह तेरा नाम खुदावन्द का शहर, इस्राईल के कुददूस का सिय्यून रखेंगे।

¹⁵इसलिए कि तू तर्क की गई और तुझसे नफ़रत हुई ऐसा कि~किसी आदमी ने~तेरी तरफ़ गुज़र भी न किया मैं तुझे हमेशा की ~फ़ज़ीलत और नसल दर नसल की खुशी का ज़रिया' बनाऊँगा।¹⁶ तू क्रौमों का दूध भी पी लेगी; हाँ बादशाहों की छाती चूसेगी और तू जानेगी कि मैं खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला और या'क़ूब का क़ादिर तेरा फ़िदिया देने वाला हूँ।

¹⁷मैं पीतल के बदले सोना लाऊँगा, और लोहे के बदले चाँदी और लकड़ी के बदले पीतल और पत्थरों के बदले लोहा; और मैं तेरे हाकिमों को सलामती, और तेरे 'आमिलों को सदाक़त बनाऊँगा।¹⁸ फिर कभी तेरे मुल्क में जुल्म का ज़िक्र न होगा, और न तेरी हदों के अन्दर ख़राबी या बर्बादी का; बल्कि तू अपनी दीवारों का नाम नजात और अपने फाटकों का हम्द रखेगी।

¹⁹फिर तेरी रोशनी न दिन को सूरज से होगी न चाँद के चमकने से, बल्कि खुदावन्द तेरा हमेशा का ~नूर और तेरा खुदा तेरा जलाल होगा।²⁰ तेरा सूरज फिर कभी न ढलेगा और तेरे चाँद को ज़वाल न होगा", क्योंकि खुदावन्द तेरा हमेशा का नूर होगा और तेरे मातम के दिन ख़त्म हो जाएँगे।

²¹और तेरे लोग सब के सब रास्तबाज़ होंगे; वह हमेशा तक मुल्क के वारिस होंगे, या'नी मेरी लगाई हुई शाख़ और मेरी दस्तकारी ठहरेंगे ताकि मेरा जलाल ज़ाहिर हो।²² ~सबसे छोटा एक हज़ार हो जाएगा और सबसे हक़ीर एक ज़बरदस्त क्रौम। मैं खुदावन्द ठीक वक़्त पर ये सब कुछ जल्द करूँगा।

Chapter 61

¹खुदावन्द खुदा की रूह मुझ पर है क्योंकि उसने मुझे मसह किया ताकि हलीमों को खुशखबरी सुनाऊँ; उसने मुझे भेजा है कि शिकस्ता दिलों को तसल्ली दूँ, कैदियों के लिए रिहाई और गुलामों के लिए आज़ादी का 'ऐलान करूँ,

²ताकि खुदावन्द के साल-ए-मक़बूल का और अपने खुदा के इन्तक़ाम के दिन का इश्तिहार दूँ और सब ग़मगीनों को दिलासा दूँ।

³सिंघून के ग़मज़दों के लिए ये मुक़रर कर दूँ कि उनको राख के बदले सेहरा और मातम की जगह खुशी का रौग़न, और उदासी के बदले 'इबादत का खिल' अत बख़्शूँ, ताकि वह सदाक़त के दरख़्त और खुदावन्द के लगाए हुए कहलाएँ कि उसका जलाल ज़ाहिर हो।

⁴तब वह पुराने उजाड़ मकानों को ता'मीर करेंगे और पुरानी वीरानियों को फिर बिना करेंगे, और उन उजड़े शहरों की मरम्मत करेंगे जो नसल -दर-नसल उजाड़ पड़े थे।⁵परदेसी आ खड़े होंगे और तुम्हारे गल्लों को चराएँगे, और बेगानों के बेटे तुम्हारे हल चलानेवाले और ताकिस्तानों में काम करनेवाले होंगे।

⁶लेकिन तुम खुदावन्द के काहिन कहलाओगे, वह तुम को हमारे खुदा के खादिम कहेंगे; तुम क़ौमों का माल खाओगे और तुम उनकी शौकत पर फ़ख़्र करोगे।

⁷तुम्हारी शर्मिन्दगी का बदले दो चन्द मिलेगा, वह अपनी रुस्वाई के बदले अपने हिस्से से खुश होंगे; तब वह अपने मुल्क में दो चन्द के मालिक होंगे और उनको हमेशा की ~खुशी होगी।

⁸क्योंकि मैं खुदावन्द इन्साफ़ को 'अज़ीज़ रखता हूँ और ग़ारतगरी और जुल्म से नफ़रत करता हूँ; सो मैं सच्चाई से उनके कामों का अज़्र दूँगा और उनके साथ हमेशा का 'अहद बाँधूँगा।⁹उनकी नस्ल क़ौमों के बीच नामवर होगी, और उनकी औलाद लोगों के बीच ; वह सब जो उनको देखेंगे, इक़रार करेंगे कि ये वह नस्ल है जिसे खुदावन्द ने बरकत बख़्शी है।

¹⁰मैं खुदावन्द से बहुत खुश हूँगा, मेरी जान मेरे खुदा में मसरूर होगी, क्योंकि उसने मुझे नजात के कपड़े पहनाए, उसने रास्तबाज़ी के खिल' अत से मुझे मुलब्स किया जैसे दूल्हा सेहरे से अपने आपको आरास्ता करता है और दुल्हन अपने ज़ेवरों से अपना सिंगार करती है।¹¹~क्योंकि जिस तरह ज़मीन अपने नबातात को पैदा करती है, और जिस तरह बाग़ उन चीज़ों को जो उसमें बोई गई हैं उगाता है; उसी तरह खुदावन्द खुदा सदाक़त और 'इबादत को तमाम क़ौमों के सामने ज़हूर में लाएगा।

Chapter 62

¹सिप्पून की खातिर मैं चुप न रहूँगा और यरुशलीम की खातिर मैं दम न लूँगा, जब तक कि उसकी सदाक़त नूर की तरह न चमके और उसकी नजात रोशन चरागा की तरह जलवागर न हो।²तब क्रौमों पर तेरी सदाक़त और सब बादशाहों पर तेरी शौकत ज़ाहिर होगी, और तू एक नये नाम से कहलाएगी जो खुदावन्द के मुँह से निकलेगा।

³और तू खुदावन्द के हाथ में जलाली ताज और अपने खुदा की हथेली में शाहाना अफ़सर होगी।⁴तू आगे को मतरूका न कहलाएगी, और तेरे मुल्क का नाम फिर कभी खराब न होगा: बल्कि तू प्यारी' और तेरी सरज़मीन सुहागन कहलाएगी; क्योंकि खुदावन्द तुझ से खुश है, और तेरी ज़मीन खाविन्द वाली होगी।

⁵क्योंकि जिस तरह जवान मर्द कुँवारी 'औरत को ब्याह लाता है, उसी तरह तेरे बेटे तुझे ब्याह लेंगे; और जिस तरह दुल्हा दुल्हन में राहत पाता है, उसी तरह तेरा खुदा तुझ में मसरूर होगा।

⁶ऐ यरुशलीम, मैंने तेरी दीवारों पर निगहबान मुकर्रर किए हैं; वह दिन रात कभी ~खामोश न होंगे। ऐ खुदावन्द का ज़िक्र करनेवालो, खामोश न हो।⁷और जब तक वह यरुशलीम को क़ायम करके इस ज़मीन पर महमूद न बनाए, उसे आराम न लेने दो।

⁸खुदावन्द ने अपने दहने हाथ और अपने क़वी बाजू की क़सम खाई है, कि "यक़ीनन मैं आगे को तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों के खाने को न दूँगा; और बेगानों के बेटे तेरी मय, जिसके लिए तूने मेहनत की, नहीं पीएँगे; बल्कि वही जिन्होंने फ़स्ल जमा' की है, उसमें से खाएँगे और खुदावन्द की हम्द करेंगे, और वह जो ज़ख़ीरे में लाए हैं उसे मेरे मक़दिस की बारगाहों में पीएँगे।

¹⁰गुज़र जाओ, फाटकों में से गुज़र जाओ, लोगों के लिए राह दुरुस्त करो, और शाहराह ऊँची और बलन्द करो, पत्थर चुनकर साफ़ कर दो, लोगों के लिए झण्डा खड़ा करो।

¹¹देख, खुदावन्द ने इन्तिहा-ए-ज़मीन तक ऐलान कर दिया है, दुख्तर-ए-सिप्पून से कहो, "देख, तेरा नजात देनेवाला आता है; देख, उसका बदला उसके साथ और उसका काम उसके सामने है।"¹²~और वह पाक लोग और खुदावन्द के खरीदे हुए कहलाएँगे, और तू मत्लूबा या'नी ग़ैर -मतरूक शहर कहलाएगी।

Chapter 63

¹ये कौन है जो अदोम से और सुख लिबास पहने बसराह से आता है? ये जिसका लिबास दरखशां है और अपनी तवानाई की बुजुर्गी से खरामान है ये मैं हूँ, जो सादिक-उल-क्रौल और नजात देने पर क़ादिर हूँ।²तेरी लिबास क्यूँ सुख है? तेरा लिबास क्यूँ उस शख्स की तरह है जो अँगूर हौज़ में रौंदता है?

³मैंने तन-ए-तन्हा अँगूर हौज़ में रौंदें और लोगों में से मेरे साथ कोई न था; हाँ, मैंने उनको अपने क़हर में लताड़ा, और अपने जोश में उनको रौंदा; और उनका खून मेरे लिबास पर छिड़का गया, और मैंने अपने सब कपड़ों को आलूदा किया।⁴क्यूँकि इन्तक़ाम का दिन मेरे दिल में है, और मेरे खरीदे हुए लोगों का साल आ पहुँचा है।

⁵मैंने निगाह की और कोई मददगार न था, और मैंने ता'अज्जुब किया कि कोई संभालने वाला न था; पस मेरे ही बाजू से नजात आई, और मेरे ही क़हर ने मुझे संभाला।⁶हाँ, मैंने अपने क़हर से लोगों को लताड़ा, और अपने ग़ज़ब से उनको मदहोश किया और उनका खून ज़मीन पर बहा दिया।⁷

⁷मैं खुदावन्द की शफ़क़त का ज़िक्र करूँगा, खुदावन्द ही की 'इबादत का, उस सबके मुताबिक़ जो खुदावन्द ने हम को इनायत किया है; और उस बड़ी मेहरबानी का जो उसने इस्राईल के घराने पर अपनी खास रहमत और फ़िरावान शफ़क़त के मुताबिक़ ज़ाहिर की है।⁸क्यूँकि उसने फ़रमाया, यक़ीनन वह मेरे ही लोग हैं, ऐसी औलाद जो बेवफ़ाई न करेगी; चुनाँचे वह उनका बचानेवाला हुआ।

⁹उनकी तमाम मुसीबतों में वह मुसीबतज़दा हुआ और उसके सामने के फ़रिश्ते ने उनको बचाया, उसने अपनी उलफ़त और रहमत से उनका फ़िदिया दिया; उसने उनको उठाया और पहले से हमेशा उनको लिए फिरा।

¹⁰लेकिन वह बागी हुए, और उन्होंने उसकी रूह-ए-कुदूस को ग़मगीन किया; इसलिए वह उनका दुश्मन हो गया और उनसे लड़ा।

¹¹फिर उसने अगले दिनों को और मूसा को और अपने लोगों को याद किया, और फ़रमाया, वह कहाँ है, जो उनको अपने गल्ले के चौपानों के साथ समन्दर में से निकाल लाया? वह कहाँ है, जिसने अपनी रूह-ए-कुदूस उनके अन्दर डाली?

¹²जिसने मूसा के दहने हाथ पर अपने जलाली बाजू को साथ कर दिया", और उनके आगे पानी को चीरा ताकि अपने लिए हमेशा का नाम पैदा करे,¹³जो गहराओ में से उनको इस तरह ले गया जिस तरह वीराने में से घोड़ा, ऐसा कि उन्होंने ठोकर न खाई?

¹⁴जिस तरह मवेशी वादी में चले जाते हैं, उसी तरह खुदावन्द की रूह उनको आरामगाह में लाई; और उसी तरह तूने अपनी क़ौम को हिदायत की, ताकि तू अपने लिए जलील नाम पैदा करे।

¹⁵आसमान पर से निगाह कर, और अपने पाक और जलील घर से देख। तेरी ग़ैरत और तेरी कुदरत के काम कहाँ हैं? तेरी दिली रहमत और तेरी शफ़क़त जो मुझ पर थी ख़त्म हो गई।¹⁶यक़ीनन तू हमारा बाप है, अगरचे इब्राहीम हम से नावाक़िफ़ हो और इस्राईल हम को न पहचाने; तू, ऐ खुदावन्द, हमारा बाप और फ़िदया देने वाला है तेरा नाम अज़ल से यही है।

¹⁷ऐ खुदावन्द, तूने हम को अपनी राहों से क्यूँ गुमराह किया, और हमारे दिलों को सख़्त किया कि तुझ से न डरें? अपने बन्दों की खातिर अपनी मीरास के क़बाइल की खातिर बाज़ आ।

¹⁸तेरे पाक लोग थोड़ी देर तक क़ाबिज़ रहे; अब हमारे दुश्मनों ने तेरे मक़दिस को पामाल कर डाला है।¹⁹हम तो उनकी तरह हुए जिन पर तूने कभी हुकूमत न की, और जो तेरे नाम से नहीं कहलाते।

Chapter 64

¹काश कि तू आसमान को फाड़े और उतर आए कि तेरे सामने पहाड़ लरज़िश खाएँ।²जिस तरह आग सूखी डालियों को जलाती है और पानी आग से जोश मारता है ताकि तेरा नाम तेरे मुखालिफों में मशहूर हो और क्रौमें तेरे सामने में लरज़ाँ हों।

³जिस वक्रत तूने बड़े काम किए जिनके हम मुन्तज़िर न थे, तू उतर आया और पहाड़ तेरे सामने काँप गए।⁴क्यूँकि शुरू ही से न किसी ने सुना, न किसी के कान तक पहुँचा और न आँखों ने तेरे सिवा ऐसे ख़ुदा को देखा, जो अपने इन्तिज़ार करनेवाले के लिए कुछ कर दिखाए।

⁵तू उससे मिलता है जो ख़ुशी से सदाक़त के काम करता है, और उनसे जो तेरी राहों में तुझे याद रखते हैं; देख, तू ग़ज़बनाक हुआ क्यूँकि हम ने गुनाह किया, और मुद्दत तक उसी में रहे; क्या हम नजात पाएँगे?

⁶और हम तो सब के सब ऐसे हैं जैसे नापाक चीज़ और हमारी तमाम रस्तबाज़ी नापाक लिबास की तरह है। और हम सब पत्ते की तरह कुमला जाते हैं, और हमारी बदकिरदारी आँधी की तरह हम को उड़ा ले जाती है।⁷और कोई नहीं जो तेरा नाम ले, जो अपने आपको आमादा करे कि तुझ से लिपटा ~रहे; क्यूँकि हमारी बदकिरदारी की वजह से तू हम से ~छिपा रहा और हम को पिघला डाला।

⁸तोभी ऐ ख़ुदावन्द, तू हमारा बाप है; हम मिट्टी है और तू हमारा कुम्हार है, और हम सब के सब तेरी दस्तकारी हैं।⁹ऐ ख़ुदावन्द, ग़ज़बनाक न हो और बदकिरदारी को हमेशा तक याद न रख; देख, हम तेरी मिन्नत करते हैं, हम सब तेरे लोग हैं।

¹⁰तेरे पाक शहर वीराने बन गए, सिय्यून सुनसान और यरुशलीम वीरान है।¹¹हमारा ख़ुशनुमा मक़दिस जिसमें हमारे बाप दादा तेरी 'इबादत करते थे, आग से जलाया गया और हमारी उम्दा चीज़ें बर्बाद हो गई।¹²~ऐ ख़ुदावन्द, क्या तू इस पर भी अपने आप को रोकेगा? क्या तू ख़ामोश रहेगा और हम को यूँ बदहाल करेगा?

Chapter 65

¹जो मेरे तालिब न थे, मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जिह हुआ; जिन्होंने मुझे ढूँढा न था, मुझे पा लिया; मैंने एक क्रौम से जो मेरे नाम से नहीं कहलाती थी, फ़रमाया, "देख, मैं हाज़िर हूँ।" ²मैंने नाफ़रमान लोगों की तरफ़ जो अपनी फ़िक्रों की पैरवी में बुरी राह पर चलते हैं, हमेशा हाथ फैलाए;

³ऐसे लोग जो हमेशा मेरे सामने, बाग़ों में कुर्बानियाँ करने और ईदों पर खुशबू जलाने से मुझे गुस्सा दिलाते ~हैं; ⁴जो क़ब्रों में बैठते, और पोशीदा जगहों में रात काटते, और सूअर का गोشت खाते हैं; और जिनके बर्तनों में नफ़रती चीज़ों का शोर्बा मौजूद है;

⁵जो कहते तू अलग ही खड़ा रह मेरे नज़दीक न आ ~क्योंकि मैं तुझ से ज़्यादा पाक हूँ।" ये मेरी नाक में धुवें की तरह और दिन भर जलने वाली आग की तरह हैं। ⁶देखो, मेरे सामने ही लिखा हुआ है तब मैं ख़ामोश न रहूँगा~बल्कि बदला दूँगा खुदावन्द फ़रमाता है; हाँ, उनकी गोद में डाल दूँगा ⁷तुम्हारी और तुम्हारे बाप ~दादा की बदकिरदारी का बदला इकट्ठा दूँगा, जो पहाड़ों पर खुशबू जलाते और टीलों पर मेरा इन्कार करते थे; इसलिए मैं पहले उनके कामों को उनकी गोद में नाप कर दूँगा।"

⁸ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "जिस तरह शीरा ख़ोशा-ए-अँगूर में मौजूद है, और कोई कहे, उसे ख़राब न कर क्योंकि उसमें बरकत है, उसी तरह मैं अपने बन्दों की खातिर करूँगा ताकि उन सबको हलाक न करूँ।

⁹और मैं या'कूब में से एक नस्ल और यहूदाह में से अपने कोहिस्तान का वारिस खड़ा करूँगा ~और मेरे बर्गुज़ीदा लोग उसके वारिस होंगे और मेरे बन्दे वहाँ बसेंगे। ¹⁰और शारून गल्लों का घर होगा, और 'अकूर की वादी बैलों के बैठने का मक़ाम, मेरे उन लोगों के लिए जो मेरे तालिब हुए।

¹¹लेकिन तुम जो ख़ुदावन्द को छोड़ देते और उसके पाक पहाड़ को फ़रामोश करते, और मुश्तरी के लिए दस्तरख़वान चुनते और जुहरा के लिए शराब-ए-मम्ज़ूज का ज़ाम पुर करते हो;

¹²मैं तुम को गिन गिनकर तलवार के हवाले करूँगा, और तुम सब ज़बह होने के लिए ~झुकोगे; क्योंकि जब मैंने बुलाया तो तुम ने जवाब न दिया, जब मैंने कलाम किया तो तुम ने न सुना; बल्कि तुम ने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं खुश न था।"

¹³इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि "देखो, मेरे बन्दे खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे; मेरे बन्दे पिएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे; मेरे बन्दे खुश होंगे लेकिन तुम शर्मिदा होंगे। ¹⁴और मेरे बन्दे दिल की खुशी से गाएँगे, लेकिन तुम दिलगीरी की वजह से नालाँ होंगे और जान का ही मातम करोगे।

¹⁵और तुम अपना नाम मेरे बर्गुज़ीदों की ला'नत के लिए छोड़ जाओगे, ख़ुदावन्द ख़ुदा तुम को क़त्ल करेगा; और अपने बन्दों को एक दूसरे नाम से बुलाएगा। ¹⁶यहाँ तक कि जो कोई इस ज़मीन पर अपने लिए दु'आ-ए-ख़ैर करे, ख़ुदा-ए-बरहक़ के नाम से करेगा और जो कोई ज़मीन में क़सम खाए, ख़ुदा-ए-बरहक़ के नाम से खाएगा; क्योंकि गुज़री हुई मुसीबतें फ़रामोश हो गई और वह मेरी आँखों से पोशीदा हैं।

¹⁷क्योंकि देखो, मैं नये आसमान और नई ज़मीन को पैदा करता हूँ; और पहली चीज़ों का फिर ज़िक्र न होगा और वह ख़याल में न आएँगी। ¹⁸बल्कि तुम मेरी इस नई पैदाइश से हमेशा की खुशी और शादमानी करो, क्योंकि देखो, मैं यरुशलीम को खुशी और उसके लोगों को ख़ुरमी बनाऊँगा। ¹⁹और मैं यरुशलीम से खुश और अपने लोगों से मसरूर हूँगा, और उसमें रोने की पुकार और नाला की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी।

²⁰फिर कभी वहाँ कोई ऐसा लड़का न होगा जो कम 'उम्र रहे, और न कोई ऐसा बूढ़ा जो अपनी 'उम्र पूरी न करे; क्योंकि लड़का सौ बरस का होकर मरेगा, और जो गुनाहगार सौ बरस का हो जाए, मला'ऊन होगा। ²¹वह घर बनाएँगे और उनमें बसेंगे, वह ताकिस्तान लगाएँगे और उनके मेवे खाएँगे;

²²न कि वह बनाएँ और दूसरा बसे, वह लगाएँ और दूसरा खाए; क्योंकि मेरे बन्दों के दिन दरख़्त के दिनों की तरह होंगे, और मेरे बर्गुज़ीदा अपने हाथों के काम से मुद्दतों तक फ़ायदा उठाएँगे ²³उनकी मेहनत बेकार न होगी, और उनकी औलाद अचानक हलाक न होगी; क्योंकि वह अपनी औलाद के साथ ख़ुदावन्द के मुबारक लोगों की नसल हैं।

²⁴और यूँ होगा कि मैं उनके पुकारने से पहले जवाब दूँगा, और वह अभी कह न चुकेंगे कि मैं सुन लूँगा। ²⁵~भेड़िया और बर्ग़ इकट्ठे चरेंगे, और शेर-ए-बबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और साँप की ख़ुराक खाक होगी। वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न ज़रर पहुँचाएँगे न हलाक करेंगे," ख़ुदावन्द फ़रमाता है।

Chapter 66

¹खुदावन्द यूँ फरमाता है कि आसमान मेरा तख्त है और ज़मीन मेरे पाँव की चौकी ; तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे, और कौन सी जगह मेरी आरामगाह होगी?

²क्योंकि ये सब चीजें तो मेरे हाथ ने बनाई और यूँ मौजूद हुई, खुदावन्द फरमाता है। लेकिन मैं उस शख्स पर निगाह करूँगा, उसी पर जो ~गरीब और शिकशता दिल है और मेरे कलाम से कॉप जाता है।

³"जो बैल ज़ब्रह करता है, उसकी तरह है जो किसी आदमी को मार डालता है; और जो बर्रे की कुर्बानी करता है, उसके बराबर है जो कुत्ते की गर्दन काटता है; जो हदिया लाता है, जैसे सूअर का खून पेश करता है; जो लुबान जलाता है, उसकी तरह है जो बुत को मुबारक कहता है। हाँ, उन्होंने अपनी अपनी राहें चुन लीं और उनके दिल उनकी नफ़रती चीज़ों से मसरूर हैं।

⁴मैं भी उनके लिए आफ़तों को चुन लूँगा और जिन बातों से वह डरते हैं उन पर लाऊँगा क्योंकि जब मैंने कलाम किया तो उन्होंने न सुना; बल्कि उन्होंने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं खुश न था।"

⁵खुदावन्द की बात सुनो, ऐ तुम जो उसके कलाम से काँपते हो; "तुम्हारे भाई जो तुम से कीना रखते हैं, और मेरे नाम की खातिर तुम को खारिज कर देते हैं, कहते हैं, 'खुदावन्द की तम्जीद करो, ताकि हम तुम्हारी खुशी को देखें'; लेकिन वही शर्मिन्दा होंगे।

⁶"शहर से भीड़ का शोर ! हैकल की तरफ़ से एक आवाज़! खुदावन्द की आवाज़ है, जो अपने दुश्मनों को बदला देता है!

⁷पहले इससे कि उसे दर्द लगे, उसने जन्म दिया; और इससे पहले कि उसको दर्द हो, उससे बेटा पैदा हुआ।⁸ऐसी बात किसने सुनी ? ऐसी चीज़ें किसने देखीं? क्या एक दिन मैं कोई मुल्क पैदा हो सकता हूँ? क्या एक ही साथ एक क्रौम पैदा हो जाएगी? क्योंकि सियून को दर्द लगे ही थे कि उसकी औलाद पैदा हो गई।"

⁹खुदावन्द फरमाता है, "क्या मैं उसे विलादत के वक़्त तक लाऊँ और फिर उससे विलादत न कराऊँ?" तेरा खुदा फरमाता है, "क्या मैं जो विलादत तक लाता हूँ, विलादत से बा'ज़ रखूँ?"

¹⁰"तुम यरुशलीम के साथ खुशी मनाओ और उसकी वजह से खुश हो, उसके सब दोस्तों ; जो उसके लिए मातम करते थे, उसके साथ बहुत खुश हो;¹¹ताकि तुम दूध पियो और उसकी तसल्ली के पिस्तानों से सेर हो; ताकि तुम निचोड़ो और उसकी शौकत की इफ़रात से फ़ायदा उठाओ।"

¹²क्योंकि खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि "देख, मैं सलामती नहर की तरह, और क्रौमों की दौलत सैलाब की तरह उसके पास रवाँ करूँगा ; तब तुम दूध पियोगे, और बग़ल में उठाए जाओगे और घुटनों पर कुदाए जाओगे।¹³~जिस तरह माँ अपने बेटे को दिलासा देती है, उसी तरह मैं तुम को दिलासा दूँगा; यरुशलीम ही मैं तुम तसल्ली पाओगे।

¹⁴और तुम देखोगे और तुम्हारा दिल खुश होगा, और तुम्हारी हड्डियाँ सब्ज़ा की तरह नशोंनुमा पाएँगी, और खुदावन्द का हाथ अपने बन्दों पर ज़ाहिर होगा, लेकिन उसका क्रहर उसके दुश्मनों पर भड़केगा।

¹⁵"क्योंकि देखो, खुदावन्द आग के साथ आएगा, और उसके रथ उड़ती धूल की तरह होंगे, ताकि अपने क्रहर को जोश के साथ और अपनी तम्बीह को आग के शो'ले में ज़ाहिर करे।¹⁶क्योंकि आग से और अपनी तलवार से खुदावन्द तमाम बनी आदम का मुक़ाबिला करेगा; और खुदावन्द के मक़तूल बहुत से होंगे।

¹⁷वह जो बाग़ों की वस्त में किसी के पीछे खड़े होने के लिए अपने आपको पाक-ओ-साफ़ करते हैं, जो सूअर का गोश्त और मकरूह चीज़ें और चूहे खाते हैं; खुदावन्द फरमाता है, वह एक साथ फ़ना हो जाएँगे।

¹⁸और मैं उनके काम और उनके मन्सूबे जानता हूँ। वह वक़्त आता है कि मैं तमाम क्रौमों और अहल-ए-लुगत को जमा' करूँगा और वह आयेंगे और मेरा जलाल देखेंगे,¹⁹तब मैं उनके बीच एक निशान खड़ा करूँगा ; और मैं उनको जो उनमें से बच निकलें, क्रौमों की तरफ़ भेजूँगा, या'नी तरसीस और पूल और लूद को जो तीरअन्दाज़ हैं, और तूबल और यावान को, और दूर के जज़ीरों को जिन्होंने मेरी शोहरत नहीं सुनी और मेरा जलाल नहीं देखा; और वह क्रौमों के बीच मेरा जलाल बयान करेंगे।

²⁰और खुदावन्द फरमाता है कि वह तुम्हारे सब भाइयों को तमाम क्रौमों में से घोड़ों और रथों पर, और पालकियों में और खच्चरों पर, और साँडनियों पर बिठा कर खुदावन्द के हदिये के लिए यरुशलीम में मेरे पाक पहाड़ को लाएँगे, जिस तरह से बनी-इस्राईल खुदावन्द के घर में पाक बर्तनों में हदिया लाते हैं।²¹और खुदावन्द फरमाता है कि मैं उनमें से भी काहिन और लावी होने के लिए लूँगा।

²²"खुदावन्द फरमाता है, जिस तरह नया आसमान और नई ज़मीन जो मैं बनाऊँगा, मेरे सामने क़ायम रहेंगे उसी तरह तुम्हारी नसल और तुम्हारा नाम बाक़ी रहेगा।²³और यूँ होगा, खुदावन्द फरमाता है कि एक नये चाँद से दूसरे तक, और एक सबत से दूसरे तक हर फ़र्द-ए-बशर 'इबादत के लिए मेरे सामने आएगा।

²⁴~"और वह निकल निकल कर उन लोगों की लाशों पर जो मुझ से बागी हुए नज़र करेंगे; क्योंकि उनका कीड़ा न मरेगा और उनकी आग न बुझेगी, और वह तमाम बनी आदम के लिए नफ़रती होंगे।"

यरमियाह

Chapter 1

¹यरमियाह-बिन-खिलकियाह की बातें जो- बिनयमीन की ममलुकत में 'अन्तोती काहिनों में से था;²जिस पर खुदावन्द का कलाम शाह-ए-यहूदाह यूसियाह-बिन-अमून के दिनों में उसकी सल्लतनत के तेरहवें साल में नाज़िल हुआ।³~शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम बिन-यूसियाह के दिनों में भी, शाह-ए-यहूदाह सिदकियाह-बिन-यूसियाह के ग्यारहवें साल के पूरे होने तक अहल-ए-यरुशलीम के गुलामी में जाने तक जो पाँचवें महीने में था, नाज़िल होता रहा।

- ⁴~तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया,⁵~"इससे पहले कि मैंने तुझे बत्न में खल्क किया, मैं तुझे जानता था और तेरी पैदाइश से पहले मैंने तुझे खास किया, और क़ौमों के लिए तुझे नबी ठहराया।"⁶~तब मैंने कहा, "हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मैं बोल नहीं सकता, क्योंकि मैं तो बच्चा हूँ।"
- ⁷~लेकिन खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "तू न कह कि मैं बच्चा हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँगा तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे फ़रमाऊँगा तू कहेगा।"
- ⁸~तू उनके चेहरों को देखकर न डर क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं तुझे ~छुड़ाने को तेरे साथ हूँ।"
- ⁹~तब खुदावन्द ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया देख मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाल दिया।¹⁰~देख, आज के दिन मैंने तुझे क़ौमों पर, और सल्तनतों पर मुक़र्रर किया कि उखाड़े और ढाए, और हलाक करे और गिराए, और ता'मीर करे और लगाए।"
- ¹¹~फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, "ऐ यरमियाह, तू क्या देखता है?" मैंने 'अर्ज़ की कि "बादाम के दरख़्त की एक शाख़ देखता हूँ।"¹²और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "तू ने ख़ूब देखा, क्योंकि मैं अपने कलाम को पूरा करने के लिए बेदार' रहता हूँ।"
- ¹³~दूसरी बार खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया तू क्या देखता है मैंने अर्ज़ की कि उबलती ~हुई देग़ देखता हूँ, जिसका मुँह उत्तर की तरफ़ से है।"¹⁴~तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "उत्तर की तरफ़ से इस मुल्क के तमाम बाशिन्दों पर आफ़त आएगी।"
- ¹⁵~क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, देख, मैं उत्तर की सल्तनतों के तमाम ख़ान्दानों को बुलाऊँगा, और वह आएँगे और हर एक अपना तख़्त यरुशलीम के फाटकों के मदख़ल पर, और उसकी सब दीवारों के चारों तरफ़, और यहूदाह के तमाम शहरों के सामने क़ायम करेगा।¹⁶~और मैं उनकी सारी शरारत की वजह से उन पर फ़तवा दूँगा; क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर-मा'बूदों के सामने लुबान जलाया और अपनी ही दस्तकारी को सिज्दा किया।
- ¹⁷~इसलिए तू अपनी कमर कसकर उठ खड़ा हो, और जो कुछ मैं तुझे फ़रमाऊँ उनसे कह। उनके चेहरों को देखकर न डर, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके सामने शर्मिदा करूँ।¹⁸~क्योंकि देख, मैं आज के दिन तुझ को इस तमाम मुल्क, और यहूदाह के बादशाहों और उसके अमीरों और उसके काहिनों और मुल्क के लोगों के सामने, एक फ़सीलदार शहर और लोहे का सुतून और पीतल की दीवार बनाता हूँ।¹⁹और वह तुझ से लड़ेंगे, लेकिन तुझ पर ग़ालिब न आएँगे; क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ।"

Chapter 2

¹~फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल-हुआ और उसने फ़रमाया कि²~"तू जा और यरुशलीम के कान में पुकार कर कह कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि 'मैं तेरी जवानी की उल्फ़त, और तेरी शादी की मुहब्बत को याद करता हूँ कि तू वीरान या'नी बंजर ज़मीन में मेरे पीछे पीछे चली।'³~इसाईल खुदावन्द का पाक, और उसकी अफ़ज़ाइश का पहला फल था; खुदावन्द फ़रमाता है, उसे निगलने वाले सब मुजरिम ठहरेंगे, उन पर आफ़त आएगी।"

⁴~ऐ अहल-ए-या'कूब और अहल-ए-इसाईल के सब खानदानों खुदावन्द का कलाम सुनो:⁵~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "तुम्हारे बाप-दादा ने मुझ में कौन सी बे-इन्साफ़ी पाई, जिसकी वजह से वह मुझसे दूर हो गए और झूठ की पैरवी करके बेकार हुए?⁶~और उन्होंने यह न कहा कि ~'खुदावन्द कहाँ है जो हमको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, और वीरान और बंजर और गढ़ों की ज़मीन में से, खुशकी और मौत के साये की सरज़मीन में से, जहाँ से न कोई गुज़रता और न कोई क़याम करता था, हमको ले आया?"

⁷~और मैं तुम को बाग़ों वाली ज़मीन में लाया कि तुम उसके मेवे और उसके अच्छे फल खाओ; लेकिन जब तुम दाखिल हुए, तो तुम ने मेरी ज़मीन को नापाक कर दिया और मेरी मीरास को मकरूह बनाया।⁸~काहिनों ने न कहा, कि 'खुदावन्द कहाँ है?' और अहल-ए-शरी'अत ने मुझे न जाना; और चरवाहों ने मुझसे सरकशी की, और नबियों ने बा'ल के नाम से नबुव्वत की और उन चीज़ों की पैरवी की जिनसे कुछ फ़ायदा नहीं।

⁹~इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, मैं फिर तुम से झगड़ूँगा और तुम्हारे बेटों के बेटों से झगड़ा करूँगा।¹⁰क्यूँकि पार गुज़रकर किस्तीम के जज़ीरों में देखो, और क्रीदार में क़ासिद भेजकर दरियाफ़्त करो, और देखो कि ऐसी बात कहीं हुई है?¹¹क्या किसी क्रौम ने अपने मा'बूदों को, हालाँकि वह खुदा नहीं, बदल डाला? लेकिन मेरी क्रौम ने अपने जलाल को बेफ़ायदा चीज़ से बदला।

¹²~खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ आसमानो, इससे हैरान हो; शिद्दत से थरथराओ और बिल्कुल वीरान हो जाओ।¹³~क्यूँकि मेरे लोगों ने दो बुराइयाँ कीं: उन्होंने मुझ आब-ए-हयात के चश्मे को छोड़ दिया और अपने लिए हौज़ खोदे हैं शिकस्ता हौज़ जिनमें पानी नहीं ठहर सकता।

¹⁴~क्या इसाईल गुलाम है? क्या वह खानाज़ाद है? वह किस लिए लूटा गया?¹⁵जवान शेर-ए-बबर उस पर गुर्राए और गरजे, और उन्होंने उसका मुल्क उजाड़ दिया। उसके शहर जल गए, वहाँ कोई बसने वाला न रहा।¹⁶बनी नूफ़ और बनी तहफ़नीस ने भी तेरी खोपड़ी फोड़ी।¹⁷क्या तू खुद ही यह अपने ऊपर नहीं लाई कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को छोड़ दिया, जब कि वह तेरी रहबरी करता था?

¹⁸और अब सीहोर" का पानी पीने को मिस्र की राह में तुझे क्या काम? और दरिया-ए-फ़रात का पानी पीने को असूर की राह में तेरा क्या मतलब?¹⁹तेरी ही शरारत तेरी तादीब करेगी, और तेरी नाफ़रमानी तुझ को सज़ा देगी। खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़, फ़रमाता है, देख और जान ले कि यह बुरा और बहुत ही ज़्यादा बेजा काम है कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को छोड़ दिया, और तुझ को मेरा खौफ़ नहीं।

²⁰क्यूँकि मुद्दत हुई कि तूने अपने जुए को तोड़ डाला और अपने बन्धनों के टुकड़े कर डाले, और कहा, 'मैं ताबे' न रहूँगी।" हॉ, हर एक ऊँचे पहाड़ पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे तू बदकारी के लिए लेट गई।²¹मैंने तो तुझे कामिल ताक लगाया और उम्दा बीज बोया था, फिर तू क्यूँकर मेरे लिए बेहक्रीक़त जंगली अंगूर का दरख़्त हो गई?²²हर तरह तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन इस्ते'माल करे, तो भी खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, तेरी शरारत का दाग़ मेरे सामने ज़ाहिर है।

²³तू क्यूँकर कहती है, 'मैं नापाक नहीं हूँ, मैंने बा'लीम की पैरवी नहीं की'? वादी में अपने चाल-चलन देख, और जो कुछ तूने किया है मा'लूम कर। तू तेज़री ऊँटनी की तरह है जो इधर-उधर दौड़ती है;²⁴मादा गोरखर की तरह जो वीरानों की 'आदी है, जो शहवत के जोश में हवा को सूँघती है; उसकी मस्ती की हालत में कौन उसे रोक सकता है? उसके तालिब मान्दा न होंगे, उसकी मस्ती के दिनों में" वह उसे पा लेंगे।²⁵तू अपने पाँव को नंगे पन से और अपने हलक़ को प्यास से बचा। लेकिन तूने कहा, 'कुछ उम्मीद नहीं, हरगिज़ नहीं; क्यूँकि मैं बेगानों पर आशिक़्र हूँ और उन्हीं के पीछे जाऊँगी।"

²⁶जिस तरह चोर पकड़ा जाने पर रुस्वा होता है, उसी तरह इसाईल का घराना रुस्वा हुआ; वह और उसके बादशाह, और हाकिम और काहिन, और नबी;²⁷जो लकड़ी से कहते हैं, 'तू मेरा बाप है,' और पत्थर से, 'तू ने मुझे पैदा किया।" क्यूँकि उन्होंने मेरी तरफ़ मुँह न किया बल्कि पीठ की; लेकिन अपनी मुसीबत के वक़्त वह कहेंगे, 'उठकर हमको बचा!"²⁸लेकिन तेरे बुत कहाँ हैं, जिनको तूने अपने लिए बनाया? अगर वह तेरी मुसीबत के वक़्त तुझे बचा सकते हैं तो उठें; क्यूँकि ऐ यहूदाह, जितने तेरे शहर हैं उतने ही तेरे मा'बूद हैं।

²⁹~तुम मुझसे क्यूँ हुज्जत करोगे? तुम सब ने मुझसे बगावत की है, खुदावन्द फ़रमाता है।³⁰मैंने बेफ़ायदा तुम्हारे बेटों को पीटा, वह तरबियत पज़ीर न हुए; तुम्हारी ही तलवार फाड़ने वाले शेर-ए-बबर की तरह तुम्हारे" नबियों को खा गई।³¹ऐ इस नसल के लोगों, खुदावन्द के कलाम का लिहाज़ करो। क्या मैं इसाईल के लिए वीरान या तारीकी की ज़मीन हुआ? मेरे लोग क्यूँ कहते हैं, 'हम आज़ाद हो गए, फिर तेरे पास न आएँगे?'

³²क्या कुँवारी अपने ज़ेवर, या दुल्हन अपनी आराइश भूल सकती है? लेकिन मेरे लोग तो मुद्दत-ए-मदीद से मुझ को भूल गए।³³"तू तलब-ए-इश्क़ में अपनी राह को कैसी आरास्ता करती है। यकीनन तूने फ़ाहिशा 'औरतों को भी अपनी राहें सिखाई हैं।³⁴तेरे ही दामन पर बेगुनाह ग़रीबों का खून भी पाया गया; तूने उनको नक़ब लगाते नहीं पकड़ा; बल्कि इन्हीं सब बातों की वजह से,

³⁵तो भी तू कहती है, 'मैं बेकुसूर हूँ, उसका ग़ज़ब यकीनन मुझ पर से टल जाएगा;" देख, मैं तुझ पर फ़तवा ढूँगा क्यूँकि तू कहती है, 'मैंने गुनाह नहीं किया।"³⁶~तू अपनी राह बदलने को ऐसी बेक्रार क्यूँ फिरती है? तू मिस्र से भी शर्मिन्दा होगी, जैसे असूर से हुई।³⁷वहाँ से भी तू अपने सिर पर हाथ रख कर निकलेगी; क्यूँकि खुदावन्द ने उनको जिन पर तूने भरोसा किया हक़ीर जाना, और तू उनसे कामयाब न होगी।

Chapter 3

¹कहते हैं कि 'अगर कोई मर्द अपनी बीवी को तलाक दे दे, और वह उसके यहाँ से जाकर किसी दूसरे मर्द की हो जाए, तो क्या वह पहला फिर उसके पास जाएगा?' क्या वह ज़मीन बहुत नापाक न होगी? लेकिन तूने तो बहुत से यारों के साथ बदकारी की है; क्या अब भी तू मेरी तरफ़ फिरेगी? खुदावन्द फ़रमाता है।
²पहाड़ों की तरफ़ अपनी आँखें उठा और देख! कौन सी जगह है जहाँ तूने बदकारी नहीं की? तू राह में उनके लिए इस तरह बैठी, जिस तरह वीराने में 'अरब। तूने अपनी बदकारी और शरारत से ज़मीन को नापाक किया।

³इसलिए बारिश नहीं होती और आखिरी बरसात नहीं हुई तेरी पेशानी ~फ़ाहिशा की है और तुझ को शर्म नहीं आती।⁴क्या तू अब से मुझे पुकार कर न कहेगी, "ऐ मेरे बाप, तू मेरी जवानी का रहबर था?" क्या उसका क्रहर हमेशा रहेगा? क्या वह उसे हमेशा तक रख छोड़ेगा?" देख, तू ऐसी बातें तो कह चुकी, लेकिन जहाँ तक तुझ से हो सका तूने बुरे काम किए।"

⁶और यूसियाह बादशाह के दिनों में खुदावन्द ने मुझसे फ़रमाया, "क्या तूने देखा, नाफ़रमान इस्राईल ने क्या किया है? वह हर एक ऊँचे पहाड़ पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे गई, और वहाँ बदकारी की।⁷और जब वह ये सब कुछ कर चुकी तो मैंने कहा, वह मेरी तरफ़ वापस आएगी; लेकिन वह न आई, और उसकी बेवफ़ा बहन यहूदाह ने ये हाल देखा।

⁸~फिर मैंने देखा कि जब फिरे हुए इस्राईल की ज़िनाकारी की वजह से मैंने उसको तलाक़ दे दिया, और उसे तलाक़नामा लिख दिया तो भी उसकी बेवफ़ा बहन यहूदाह न डरी; बल्कि उसने भी जाकर बदकारी की।⁹और ऐसा हुआ कि उसने अपनी बदकारी की बुराई से ज़मीन को नापाक किया, और पत्थर और लकड़ी के साथ ज़िनाकारी की।¹⁰और खुदावन्द फ़रमाता है कि बावजूद इस सब के उसकी बेवफ़ा बहन यहूदाह सच्चे दिल से मेरी तरफ़ न फिरी, बल्कि रियाकारी से।"

¹¹और खुदावन्द ने मुझसे फ़रमाया, "नाफ़रमान इस्राईल ने बेवफ़ा यहूदाह से ज़्यादा अपने आपको सच्चा साबित किया है।¹²जा और उत्तर की तरफ़ यह बात पुकारकर कह दे कि 'खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ ~नाफ़रमान इस्राईल, वापस आ; मैं तुझ पर क्रहर की नज़र नहीं करूँगा क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं रहीम हूँ मेरा क्रहर हमेशा का नहीं।

¹³सिर्फ़ अपनी बदकारी का इक़रार कर कि तू खुदावन्द अपने खुदा से 'आसी हो गई, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे ग़ैरों के साथ इधर-उधर आवारा फिरी; खुदावन्द फ़रमाता है, तुम मेरी आवाज़ के सुनने वाले न हुए।¹⁴"खुदावन्द फ़रमाता है, 'ऐ नाफ़रमान बच्चों, वापस आओ; क्योंकि मैं खुद तुम्हारा मालिक हूँ, और मैं तुम को हर एक शहर में से एक, और हर एक घराने में से दो लेकर सिय्यून में लाऊँगा।¹⁵और मैं तुम को अपने खातिर ख़्वाह चरवाहे दूँगा, और वह तुम को समझदारी और 'अक्लमन्दी से चराएँगे।

¹⁶और यूँ होगा कि ~खुदावन्द फ़रमाता है कि जब उन दिनों में तुम मुल्क में बढ़ोगे और बहुत होगे, तब वह फिर न कहेंगे कि 'खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक'; उसका ख़याल भी कभी उनके दिल में न आएगा, वह हरगिज़ उसे याद न करेंगे और उसकी ज़ियारत को न जाएँगे, और उसकी मरम्मत न होगी।

¹⁷उस वक़्त यरुशलीम खुदावन्द का तख़्त कहलाएगा, और उसमें या'नी यरुशलीम में, सब क़ौमों खुदावन्द के नाम से जमा' होंगी; और वह फिर अपने बुरे दिल की सख़्ती की पैरवी न करेंगे।¹⁸उन दिनों में यहूदाह का घराना इस्राईल के घराने के साथ चलेगा, वह मिलकर उत्तर के मुल्क में से उस मुल्क में जिसे मैंने तुम्हारे बाप-दादा को मीरास में दिया, आएँगे।

¹⁹'आह, मैंने तो कहा था, मैं तुझ को फ़र्ज़न्दों में शामिल करके खुशनुमा मुल्क या'नी क़ौमों की नफ़ीस मीरास तुझे दूँगा; और तू मुझे बाप कह कर पुकारेगी, और तू फिर मुझसे न फिरेगी।²⁰लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ इस्राईल के घराने, जिस तरह बीवी बेवफ़ाई से अपने शौहर को छोड़ देती है, उसी तरह तूने मुझसे बेवफ़ाई की है।'

²¹पहाड़ों पर बनी-इस्राईल की गिरया-ओ-ज़ारी और मिन्नत की आवाज़ सुनाई देती है क्योंकि उन्होंने अपनी राह टेढ़ी की और खुदावन्द अपने खुदा को भूल गए।

²²'ऐ नाफ़रमान फ़र्ज़न्द वापस आओ मैं तुम्हारी नाफ़रमानी का चारा करूँगा। देख, हम तेरे पास आते हैं; क्योंकि तू ही, ऐ खुदावन्द, हमारा खुदा है।

²³हक़ीक़त में टीलों और पहाड़ों पर के हुज़ूम से कुछ उम्मीद रखना बेफ़ायदा है। यक़ीनन खुदावन्द हमारे खुदा ही हैं इस्राईल की नजात हैं।²⁴लेकिन इस रुस्वाई की वजह ने हमारी जवानी के वक़्त से हमारे बाप-दादा के माल को, और उनकी भेड़ों और उनके बैलों और उनके बेटे और बेटियों को निगल लिया है।²⁵~हम अपनी शर्म में लेटें और रुस्वाई हमको छिपा ले, क्योंकि हम और हमारे बाप-दादा अपनी जवानी के वक़्त से आज तक खुदावन्द अपने खुदा के ख़ताकार हैं। और हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ के सुनने वाले नहीं हुए।"

Chapter 4

¹"ऐ इसाईल, अगर तू वापस आए, खुदावन्द फ़रमाता है अगर तू मेरी तरफ़ वापस आए; और अपनी मकरूहात को मेरी नज़र से दूर करे तो तू आवारा न होगा;
²और अगर तू सच्चाई और 'अदालत और सदाक़त से ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम खाए, तो क़ौमों उसकी वजह से अपने आपको मुबारक कहेंगी और उस पर फ़ख़्र करेंगी।"³क्योंकि खुदावन्द यहूदाह और यरुशलीम के लोगों को यूँ फ़रमाता है: "अपनी उम्दा ज़मीन पर हल चलाओ, और काँटों में बीज न बोया करो।

⁴"ऐ यहूदाह के लोगों, और यरुशलीम के बाशिन्दो, खुदावन्द के लिए अपना ख़तना कराओ; हाँ, अपने दिल का ख़तना करो; ऐसा न हो कि तुम्हारी बद'आमाली की वजह से मेरा क्रहर आग की तरह शो'लाज़न हो, और ऐसा भड़के के कोई बुझा न सके।"⁵यहूदाह में इश्तिहार दो, और यरुशलीम में इसका 'ऐलान करो और कहो, "तुम मुल्क में नरसिंगा फूँको, बलन्द आवाज़ से पुकारो और कहो कि "जमा' हो", कि हसीन शहरों में चलें।"⁶तुम सिय्यून ही में झण्डा खड़ा करो, पनाह लेने को भागो और देर न करो, क्योंकि मैं बला और हलाकत-ए-शदीद को उत्तर की तरफ़ से लाता हूँ।

⁷शेर-ए-बबर झाड़ियों से निकला है, और क़ौमों के हलाक करने वाले ने रवानगी की है; वह अपनी जगह से निकला है कि तेरी ज़मीन को वीरान करे, ताकि तेरे शहर वीरान हों और कोई बसने वाला न रहे।⁸इसलिए टाट ओढ़कर छाती पीटो और वावैला करो, क्योंकि खुदावन्द का क्रहर-ए-शदीद हम पर से टल नहीं गया।"

⁹और खुदावन्द फ़रमाता है, "उस वक़्त यूँ होगा कि बादशाह और सरदार बे-दिल हो जायेंगे और काहिन हैरतज़दा और नबी शर्मिदा होंगे।"¹⁰तब मैंने कहा, "अफ़सोस, ऐ खुदावन्द खुदा, यकीनन तूने इन लोगों और यरुशलीम को ये कह कर दगा दी कि तुम सलामत रहोगे; हालाँकि तलवार जान तक पहुँच गई है।"

¹¹उस वक़्त इन लोगों और यरुशलीम से ये कहा जाएगा कि 'वीराने के पहाड़ों पर से एक ख़ुशक हवा मेरी दुख़्तर-ए-क़ौम की तरफ़ चलेगी, उसाने और साफ़ करने के लिए नहीं,¹²बल्कि वहाँ से एक बहुत तुन्द हवा मेरे लिए चलेगी; अब मैं भी उन पर फ़तवा ढूँगा।"

¹³देखो, वह घटा की तरह चढ़ आएगा, उसके रथ गिर्दबाद की तरह और उसके घोड़े 'उक्राबों के जैसे तेज़तर हैं। हम पर अफ़सोस के हाथ, हम बर्बाद हो गए!

¹⁴~ऐ यरुशलीम, तू अपने दिल को शरारत से पाक कर ताकि तू रिहाई पाए। बुरे खयालात कब तक तेरे दिल में रहेंगे?¹⁵क्योंकि दान से एक आवाज़ आती है, और इफ़्राईम के पहाड़ से मुसीबत की ख़बर देती है;

¹⁶क़ौमों को ख़बर दो, देखो, यरुशलीम के बारे में 'ऐलान करो कि ~"घिराव करने वाले दूर के मुल्क से आते हैं, और यहूदाह के शहरों के सामने ललकारेंगे।"¹⁷खेत के रखवालों की तरह वह उसे चारों तरफ़ से घेरेंगे, क्योंकि उसने मुझसे बगावत की, खुदावन्द फ़रमाता है।¹⁸तेरी चाल और तेरे कामों से यह मुसीबत तुझ पर आयी है। यह तेरी शरारत है, यह बहुत तल्ख़ है, क्योंकि यह तेरे दिल तक पहुँच गई है।"

¹⁹हाय, मेरा दिल! मेरे पर्दा-ए-दिल में दर्द है! मेरा दिल बताब है, मैं चुप नहीं रह सकता; क्योंकि ऐ मेरी जान, तूने नरसिंगे की आवाज़ और लड़ाई की ललकार सुन ली है।²⁰शिकस्त पर शिकस्त की ख़बर आती है, यकीनन तमाम मुल्क बर्बाद हो गया; मेरे खेमे अचानक और मेरे पर्दे एक दम में बर्बाद किए गए।

²¹मैं कब तक ये झण्डा देखूँ और नरसिंगे की आवाज़ सुनूँ?²²"हकीकत में मेरे लोग बेवकूफ़ हैं, उन्होंने मुझे नहीं पहचाना; वह बेश'ऊर बच्चे हैं और फ़र्क़ नहीं रखते बुरे काम करने में होशियार हैं, लेकिन नेक काम की समझ नहीं रखते।"

²³मैंने ज़मीन पर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि वीरान और सुनसान है; आसमानों को भी बेनूर पाया।²⁴मैंने पहाड़ों पर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि वह काँप गए, और सब टीले लज़िश खा गए।²⁵मैंने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि कोई आदमी नहीं, और सब हवाई परिन्दे उड़ गए।²⁶फिर मैंने नज़र की और क्या देखता हूँ कि ज़रखेत ज़मीन वीरान हो गई, और उसके सब शहर खुदावन्द की हुज़ूरी और उसके क्रहर की शिद्दत से बर्बाद हो गए।

²⁷क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है कि तमाम मुल्क वीरान होगा तोभी मैं उसे बिल्कुल बर्बाद न करूँगा।²⁸इसीलिए ज़मीन मातम करेगी और ऊपर से आसमान तारीक हो जाएगा; क्योंकि मैं कह चुका, मैंने इरादा किया है, मैं उससे पशेमान न हूँगा और उससे बाज़ न आऊँगा।"²⁹सवारों और तीरअंदाज़ों के शोर से तमाम शहरी भाग जाएँगे; वह घने जंगलों में जा घुसेंगे, और चट्टानों पर चढ़ जाएँगे, सब शहर छोड़ दिए जायेंगे और कोई आदमी उनमें न रहेगा।

³⁰तब ऐ गारतशुदा, तू क्या करेगी? अगरचे तू लाल जोड़ा पहने, अगरचे तू ज़रीन ज़ेवरों से आरास्ता हो, अगरचे तू अपनी आँखों में सुरमा लगाए, तू 'अबस अपने आपको ख़ूबसूरत बनाएगी; तेरे 'आशिक़ तुझ को हक़ीर जानेंगे, वह तेरी जान के तालिब होंगे।³¹क्योंकि मैंने उस 'औरत की जैसी आवाज़ सुनी है जिसे दर्द लगे हों, और उसकी जैसी दर्दनाक आवाज़ जिसके पहला बच्चा पैदा हो, या'नी दुख़्तर-ए-सिय्यून की आवाज़, जो हॉपती और अपने हाथ फैलाकर कहती है, 'हाय! क़ातिलों के सामने मेरी जान बताब है।"

Chapter 5

¹अब यरुशलीम की गलियों में इधर-उधर गश्त करो; और देखो और दरियाप्राप्त करो, और उसके चौकों में ढूँडो, अगर कोई आदमी वहाँ मिले जो इन्साफ़ करनेवाला और सच्चाई का तालिब हो, तो मैं उसे मु'आफ़ करूँगा।²और अगरचे वह कहते हैं, "ज़िन्दा खुदावन्द की क्रसम," तो भी यक्रीनन वह झूठी क्रसम खाते हैं।³ऐ खुदावन्द, क्या तेरी आँखें सच्चाई पर नहीं हैं? तूने उनको मारा है, लेकिन उन्होंने अफ़सोस नहीं किया; तूने उनको बर्बाद किया, लेकिन वह तरबियत-पज़ीर न हुए; उन्होंने अपने चेहरों को चट्टान से भी ज़्यादा सख्त बनाया, उन्होंने वापस आने से इन्कार किया है।

⁴तब मैंने कहा कि "यक्रीनन ये बेचारे जाहिल हैं, क्योंकि ये खुदावन्द की राह और अपने खुदा के हुक्मों को नहीं जानते।⁵मैं बुजुर्गों के पास जाऊँगा, और उनसे कलाम करूँगा; क्योंकि वह खुदावन्द की राह और अपने खुदा के हुक्मों को जानते हैं।" लेकिन इन्होंने जूआ बिल्कुल तोड़ डाला, और बन्धनों के टुकड़े कर डाले।⁶इसलिए जंगल का शेर-ए-बबर उनको फाड़ेगा वीराने का भेड़िया हलाक करेगा, चीता उनके शहरों की घात में बैठा रहेगा; जो कोई उनमें से निकले फाड़ा जाएगा, क्योंकि उनकी सरकशी बहुत हुई और उनकी नाफ़रमानी बढ़ गई।

⁷"मैं तुझे क्योंकि मु'आफ़ करूँ? तेरे फ़र्ज़न्दों ने' मुझ को छोड़ा, और उनकी क्रसम खाई जो खुदा नहीं हैं। जब मैंने उनको सेर किया, तो उन्होंने बदकारी की और परे बाँधकर क्रहबाख़ानों में इकट्ठे हुए।⁸वह पेट भरे घोड़ों की तरह हो गए, हर एक सुबह के वक़्त अपने पड़ोसी की बीवी पर हिनहिनाते लगा।⁹खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए सज़ा न दूँगा, और क्या मेरी रूह ऐसी क्रौमों से इन्तक़ाम न लेगी?

¹⁰"उसकी दीवारों पर चढ़ जाओ और तोड़ डालो, लेकिन बिल्कुल बर्बाद न करो, उसकी शाखें काट दो, क्योंकि वह खुदावन्द की नहीं हैं।¹¹इसलिए कि खुदावन्द फ़रमाता है, इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने ने मुझसे बहुत बेवफ़ाई की।¹²"उन्होंने खुदावन्द का इन्कार किया और कहा कि 'वह नहीं है, हम पर हरगिज़ आफ़त न आएगी, और तलवार और काल को हम न देखेंगे;'¹³और नबी महज़ हवा हो जाएँगे, और कलाम उनमें नहीं है; उनके साथ ऐसा ही होगा।"

¹⁴~फिर इसलिए कि तुम यूँ कहते हो, "खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि, देख, मैं अपने कलाम को तेरे मुँह में आग और इन लोगों को लकड़ी बनाऊँगा और वह इनको भसम कर देगी।¹⁵ऐ इस्राईल के घराने, देख, मैं एक क्रौम को दूर से तुझ पर चढ़ा लाऊँगा खुदावन्द फ़रमाता है वह ज़बरदस्त क्रौम है, वह क़दीम क्रौम है, वह ऐसी क्रौम है जिसकी ज़बान तू नहीं जानता और उनकी बात को तू नहीं समझता।

¹⁶उनके तरकश खुली क्रब्रे हैं, वह सब बहादुर मर्द हैं।¹⁷और वह तेरी फ़सल का अनाज और तेरी रोटी, जो तेरे बेटों और बेटियों के खाने की थी, खा जाएँगे; तेरे गाय-बैल और तेरी भेड़ बकरियों को चट कर जाएँगे, तेरे अंगूर और अंजीर निगल जाएँगे, तेरे हसीन शहरों को जिन पर तेरा भरोसा है, तलवार से वीरान कर देंगे।"

¹⁸~"लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, उन दिनों में भी मैं तुम को बिल्कुल बर्बाद न करूँगा।¹⁹और यूँ होगा कि जब वह कहेंगे, 'खुदावन्द हमारे खुदा ने यह सब कुछ हम से क्यों किया?' तो तू उनसे कहेगा, "जिस तरह तुम ने मुझे छोड़ दिया और अपने मुल्क में ग़ैर मा'बूदों की 'इबादत की, उसी तरह तुम उस मुल्क में जो तुम्हारा नहीं है, अजनबियों की खिदमत करोगे।"

²⁰~या'क़ूब के घराने में इस बात का इश्तेहार दो, और यहूदाह में इसका 'ऐलान करो और कहो,²¹"अब ज़रा सुनो, ऐ नादान और बे'अक्ल लोगों, जो आँखें रखते हो लेकिन देखते नहीं, जो कान रखते हो लेकिन सुनते नहीं।²²खुदावन्द फ़रमाता है, क्या तुम मुझसे नहीं डरते? क्या तुम मेरे सामने धरथराओगे नहीं, जिसने रेत को समन्दर की हद पर हमेशा के हुक्म से क़ायम किया कि वह उससे आगे नहीं बढ़ सकता और हरचन्द उसकी लहरें उछलती हैं, तोभी ग़ालिब नहीं आती; और हरचन्द शोर करती हैं, तो भी उससे आगे नहीं बढ़ सकती।

²³~लेकिन इन लोगों के दिल बाग़ी और सरकश हैं; इन्होंने सरकशी की और दूर हो गए।²⁴इन्होंने अपने दिल में न कहा कि हम खुदावन्द अपने खुदा से डरें, जो पहली और पिछली बरसात वक़्त पर भेजता है, और फ़सल के मुक़र्रर हफ़्तों को हमारे लिए मौजूद कर रखता है।²⁵तुम्हारी बदकिरदारी ने इन चीज़ों को तुम से दूर कर दिया, और तुम्हारे गुनाहों ने अच्छी चीज़ों को तुम से बाज़ रखा।

²⁶क्योंकि मेरे लोगों में शरीर पाए जाते हैं; वह फ़न्दा लगाने वालों की तरह घात में बैठते हैं, वह जाल फैलाते और आदमियों को पकड़ते हैं।²⁷जैसे पिंजरा चिड़ियों से भरा हो, वैसे ही उनके घर फ़रेब से भरे हैं, तब वह बड़े और मालदार हो गए।²⁸वह मोटे हो गए, वह चिकने हैं। वह बुरे कामों में सबक़त ले जाते हैं, वह फ़रियाद या'नी यतीमों की फ़रियाद, नहीं सुनते ताकि उनका भला हो और मोहताजों का इन्साफ़ नहीं करते।²⁹खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए सज़ा न दूँगा? और क्या मेरी रूह ऐसी क्रौम से इन्तक़ाम न लेगी?"

³⁰मुल्क में एक हैरतअफ़ज़ा और हौलनाक बात हुई,³¹नबी झूठी नबुव्वत करते हैं, और काहिन उनके वसीले से हुक्मरानी करते हैं, और मेरे लोग ऐसी हालत को पसन्द करते हैं, अब तुम इसके आखिर में क्या करोगे?

Chapter 6

¹ 'ऐ बनी बिनयमीन, यरुशलीम में से पनाह के लिए भाग निकलो, और तक्रू'अ में नरसिंगा फूँको और बैत हक्करम में आतिशीन 'अलम बलन्द करो; क्योंकि उत्तर की तरफ से बला और बड़ी तबाही आनेवाली है।' मैं दुखतर-ए-सिय्यून को जो शकील और नाज़नीन है, हलाक करूँगा।² चरवाहे अपने गल्लों को लेकर उसके पास आएँगे और चारों तरफ़ उसके सामने खेमे खड़े करेंगे हर एक अपनी जगह में चराएगा।

⁴ "उससे जंग के लिए अपने आपको ख़ास करो; उठो, दोपहर ही को चढ़ चलें! हम पर अफ़सोस, क्योंकि दिन ढलता जाता है, और शाम का साया बढ़ता जाता है।⁵ उठो, रात ही को चढ़ चलें और उसके क्रस्सों को ढा दें!"

⁶ 'क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: 'दरख़्त काट डालो, और यरुशलीम के सामने दमदमा बाँधो; यह शहर सज़ा का सज़ावार है, इसमें जुल्म ही जुल्म है।' ~जिस तरह पानी चश्मे से फूट निकलता है, उसी तरह शरारत इससे जारी है; जुल्म और सितम की हमेशा इसमें सुनी जाती है, हर दम मेरे सामने दुख दर्द और ज़ख़्म हैं।⁷ 'ऐ यरुशलीम, तरबियत-पज़ीर हो; ऐसा न हो कि मेरा दिल तुझ से हट जाए, न हो कि मैं तुझे वीरान और ग़ैरआबाद ज़मीन बना दूँ।"

⁹ रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: "वह इस्राईल के बक़िये को अंगूर की तरह ढूँडकर तोड़ लेंगे। तू अंगूर तोड़ने वाले की तरह फिर अपना हाथ शाख़ों में डाल।"¹⁰ मैं किससे कहूँ और किसको जताऊँ, ताकि वह सुनें? देख, उनके कान नामख़तून हैं और वह सुन नहीं सकते; देख, खुदावन्द का कलाम उनके लिए हिक़ारत का ज़रिया है, वह उससे खुश नहीं होते।

¹¹ इसलिए मैं खुदावन्द के क्रहर से लबरेज़ हूँ, मैं उसे ज़ब्त करते करते तंग आ गया। बाज़ारों में बच्चों पर और जवानों की जमा'अत पर उसे उँडेल दे, क्योंकि शौहर अपनी बीवी के साथ और बुढ़ा कुहनसाल के साथ गिरफ़्तार होगा।¹² और उनके घर खेतों और बीवियों के साथ औरों के हो जायेंगे क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, "मैं अपना हाथ इस मुल्क के बाशिन्दों पर बढ़ाऊँगा।

¹³ इसलिए कि छोटों से बड़ों तक सब के सब लालची हैं, और नबी से काहिन तक हर एक दगाबाज़ है।¹⁴ 'क्योंकि वह मेरे लोगों के ज़ख़्म को यूँही 'सलामती सलामती' कह कर अच्छा करते हैं, हालाँकि सलामती नहीं है।¹⁵ क्या वह अपने मकरूह कामों की वजह से शर्मिन्दा हुए? वह हरगिज़ शर्मिन्दा न हुए, बल्कि वह लजाए तक नहीं; इस वास्ते वह गिरने वाले के साथ गिरेंगे खुदावन्द फ़रमाता है, "जब मैं उनको सज़ा दूँगा, तो पस्त हो जाएँगे।"

¹⁶ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: 'रास्तों पर खड़े हो और देखो, और पुराने रास्तों के बारे में पूछो कि अच्छी राह कहाँ है, उसी पर चलो और तुम्हारी जान राहत पाएगी। लेकिन उन्होंने कहा, 'हम उस पर न चलेंगे।'¹⁷ और मैंने तुम पर निगहबान भी मुक्ररर किए और कहा, 'नरसिंगे की आवाज़ सुनो!' लेकिन उन्होंने कहा, 'हम न सुनेंगे।'¹⁸ ~इसलिए ऐ क्रौमों, सुनो, और ऐ अहल-ए-मजमा', मा'लूम करो कि उनकी क्या हालत है।¹⁹ ऐ ज़मीन सुन; देख, मैं इन लोगों पर आफ़त लाऊँगा जो इनके अन्देशों का फल है, क्योंकि इन्होंने मेरे कलाम को नहीं माना और मेरी शरी'अत को रद्द कर दिया है।

²⁰ इससे क्या फ़ायदा के सबा से लुबान और दूर के मुल्क से अगर मेरे सामने लाते हैं? तुम्हारी सोख़्तनी कुर्बानियाँ मुझे पसन्द नहीं, और तुम्हारी कुर्बानियों से मुझे खुशी नहीं।²¹ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि 'देख, मैं ठोकर खिलाने वाली चीज़ें इन लोगों की राह में रख दूँगा; और बाप और बेटे बाहम उनसे ठोकर खायेंगे पड़ोसी और उनके दोस्त हलाक होंगे।' "²² खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'देख, उत्तरी मुल्क से एक गिरोह आती है, और इन्तिहाए-ज़मीन से एक बड़ी क्रौम बरअंगेख़ता की जाएगी।

²³ वह तीरअन्दाज़ और नेज़ाबाज़ हैं, वह संगदिल और बेरहम हैं, उनके ना'रों की हमेशा समन्दर की जैसी है और वह घोड़ों पर सवार हैं; ऐ दुखतर-ए-सिय्यून, वह जंगी मदों की तरह तेरे सामने सफ़आराई करते हैं।"²⁴ हमने इसकी शोहरत सुनी है, हमारे हाथ ढीले हो गए, हम ज़चा की तरह मुसीबत और दर्द में गिरफ़्तार हैं।

²⁵ मैदान में न निकलना और सड़क पर न जाना, क्योंकि हर तरफ़ दुश्मन की तलवार का ख़ौफ़ है।²⁶ ऐ मेरी बिनत-ए-क्रौम, टाट औढ़ और राख में लेट, अपने इकलौतों पर मातम और दिलख़राश नोहा कर; क्योंकि ग़ारतगर हम पर अचानक आएगा।

²⁷ 'मैंने तुझे अपने लोगों में आजमाने वाला और बुर्ज़ मुक्ररर किया ताकि तू उनके चाल चलनो~को मा'लूम करे और परखे।'²⁸ वह सब के सब बहुत सरकश हैं, वह ग़ीबत करते हैं, वह तो ताँबा और लोहा हैं, वह सब के सब मु'आमिले के खोटे हैं।²⁹ धौकनी जल गई, सीसा आग से भसम हो गया; साफ़ करनेवाले ने बेफ़ायदा साफ़ किया, क्योंकि शरीर अलग नहीं हुए।³⁰ वह मरदूद चाँदी कहलाएँगे, क्योंकि खुदावन्द ने उनको रद्द कर दिया है।"

Chapter 7

¹यह वह कलाम है जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया,²"तू खुदावन्द के घर के फाटक पर खड़ा हो, और वहाँ इस कलाम का इश्तिहार दे, और कह, ऐ यहूदाह के सब लोगों, जो खुदावन्द की 'इबादत के लिए इन फाटकों से दाखिल होते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो।

³रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: अपने चाल चलन और अपने आ'माल दुरुस्त करो, तो मैं तुम को इस मकान में बसाऊँगा।⁴झूटी बातों पर भरोसा न करो और यूँ न कहते जाओ, 'यह है खुदावन्द की हैकल, खुदावन्द की हैकल, खुदावन्द की हैकल।'

⁵"क्योंकि अगर तुम अपने चाल चलन और अपने आ'माल सरासर दुरुस्त करो, अगर हर आदमी और उसके पड़ोसी में पूरा इन्साफ़ करो,⁶~अगर परदेसी और यतीम और बेवा पर जुल्म न करो, और इस मकान में बेगुनाह का खून न बहाओ, और ग़ैर-मा'बूदों की पैरवी जिसमें तुम्हारा नुक़सान है, न करो,⁷~तो मैं तुम को इस मकान में और इस मुल्क में बसाऊँगा, जो मैंने तुम्हारे बाप-दादा को पहले से हमेशा के लिए दिया।

⁸"देखो, तुम झूटी बातों पर जो बेफ़ायदा हैं, भरोसा करते हो।⁹क्या तुम चोरी करोगे, खून करोगे, ज़िनाकारी करोगे, झूटी क़सम खाओगे, और बा'ल के लिए ख़ुशबू जलाओगे और ग़ैर मा'बूदों की जिनको तुम नहीं जानते थे, पैरवी करोगे।¹⁰और मेरे सामने इस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, आकर खड़े होंगे और कहोगे कि "हम ने छुटकारा पाया," ताकि यह सब नफ़रती काम करो?"¹¹क्या यह घर जो मेरे नाम से कहलाता है, तुम्हारी नज़र में डाकुओं का ग़ार बन गया? देख, खुदावन्द फ़रमाता है, मैंने खुद यह देखा है।

¹²इसलिए, अब मेरे उस मकान को जाओ जो सैला में था, जिस पर पहले मैंने अपने नाम को क़ायम किया था; और देखो कि मैंने अपने लोगों या'नी बनी-इस्राईल की शरारत की वजह से उससे क्या किया?¹³और खुदावन्द फ़रमाता है, अब चूँकि तुम ने यह सब काम किए, मैंने बर वक़्त' तुम को कहा और ताकीद की, लेकिन तुम ने न सुना; और मैंने तुम को बुलाया लेकिन तुम ने जवाब न दिया,¹⁴इसलिए मैं इस घर से जो मेरे नाम से कहलाता है, जिस पर तुम्हारा ~भरोसा है, और इस मकान से जिसे मैंने तुम को और तुम्हारे बाप-दादा को दिया, वही करूँगा जो मैंने सैला से किया है।¹⁵और मैं तुम को अपने सामने से निकाल दूँगा, जिस तरह तुम्हारी सारी बिरादरी इफ़्राईम की कुल नसल को निकाल दिया है।

¹⁶"इसलिए तू इन लोगों के लिए दु'आ न कर, और इनके वास्ते आवाज़ बुलन्द न कर, और मुझसे मिन्नत और शफ़ा'अत न कर क्योंकि मैं तेरी न सुनूँगा।¹⁷क्या तू नहीं देखता कि वह यहूदाह के शहरों में और यरुशलीम के कूचों में क्या करते हैं?¹⁸बच्चे लकड़ी जमा' करते हैं और बाप आग सुलगाते हैं, और औरतें आटा गूँधती हैं ताकि आसमान की मलिका के लिए रोटी पकाएँ, और ग़ैर मा'बूदों के लिए तपावन तपाकर मुझे ग़ज़बनाक करें।

¹⁹खुदावन्द फ़रमाता है, क्या वह मुझ ही को ग़ज़बनाक करते हैं? क्या वह अपनी ही रूसियाही के लिए नहीं करते?²⁰इसी वास्ते खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: देख, मेरा क्रहर-ओ-ग़ज़ब इस मकान पर, और इन्सान और हैवान और मैदान के दरख़्तों पर, और ज़मीन की पैदावार पर उँडेल दिया जाएगा; और वह भड़केगा और बुझेगा नहीं।"

²¹रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: "अपने ज़बीहों पर अपनी सोख़तनी कुर्बानियाँ भी बढ़ाओ और गोश्त खाओ।²²क्योंकि जिस वक़्त मैं तुम्हारे बाप दादा को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, उनको सोख़तनी कुर्बानी और ज़बीहे के बारे में कुछ नहीं कहा और हुक्म नहीं दिया,²³बल्कि मैंने उनको ये हुक्म दिया, और फ़रमाया कि मेरी आवाज़ के शिनवा हो, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा और तुम मेरे लोग होगे; और जिस राह की मैं तुम को हिदायत करूँ, उस पर चलो ताकि तुम्हारा भला हो।

²⁴लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया, बल्कि अपनी मसलहतों और अपने बुरे दिल की सख़्ती पर चले और फिर गए और आगे न बढ़े।²⁵जब से तुम्हारे बाप-दादा मुल्क-ए-मिस्र से निकल आए, अब तक मैंने तुम्हारे पास अपने सब खादिमों या'नी नबियों को भेजा, मैंने उनको हमेशा सही वक़्त पर भेजा।²⁶लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी और कान न लगाया, बल्कि अपनी गर्दन सख़्त की; उन्होंने अपने बाप-दादा से बढ़कर बुराई की।

²⁷"तू ये सब बातें उनसे कहेगा, लेकिन वह तेरी न सुनेंगे; तू उनको बुलाएगा, लेकिन वह तुझे जवाब न देंगे।²⁸तब तू उनसे कह दे, 'यह वह क़ौम है जो खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ की शिनवा, और तरबियत पज़ीर न हुई; सच्चाई बर्बाद हो गई, और उनके मुँह से जाती रही।

²⁹अपने बाल काटकर फेंक दे, और पहाड़ों पर जाकर नौहा कर; क्योंकि खुदावन्द ने उन लोगों को जिन पर उसका क्रहर है, रद्द और छोड़ दिया है।"³⁰इसलिए कि बनी यहूदाह ने मेरी नज़र में बुराई की, खुदावन्द फ़रमाता है, उन्होंने उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है अपनी मकरूहात रखी, ताकि उसे नापाक करें।

³¹~और उन्होंने तूफ़त के ऊँचे मक़ाम बिन हिन्नोम की वादी में बनाए, ताकि अपने बेटे और बेटियों को आग में जलाएँ, जिसका मैंने हुक्म नहीं दिया और मेरे दिल में इसका ख़याल भी न आया था।³²~इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, देख, वह दिन आते हैं कि यह न तूफ़त कहलाएगी न बिन हिन्नोम की वादी, बल्कि वादी-ए-क्रल; और जगह न होने की वजह से तूफ़त में दफ़न करेंगे।

³³और इस क़ौम की लाशें हवाई परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होंगी, और उनको कोई न हँकाएगा।³⁴तब मैं यहूदाह के शहरों में और यरुशलीम के बाज़ारों में ख़ुशी और ख़ुशी की आवाज़, दुल्हे और दुल्हन की आवाज़ ख़त्म करूँगा; क्योंकि यह-मुल्क वीरान हो जाएगा।

Chapter 8

¹"खुदावन्द फ़रमाता है कि उस वक़्त वह यहूदाह के बादशाहों और उसके सरदारों और काहिनों और नबियों और यरुशलीम के बाशिन्दों की हड्डियाँ, उनकी क़ब्रों से निकाल लाएँगे;²~और उनको सूरज और चाँद और तमाम अजराम-ए-फ़लक के सामने, जिनको वह दोस्त रखते और जिनकी ख़िदमत-ओ-पैरवी करते थे जिनसे वह ~सलाह लेते थे और ~जिनको सिज्दा करते थे, बिछाएँगे; वह न जमा' की जाएँगी न दफ़न होंगी, बल्कि इस ज़मीन पर खाद बनेंगी।³और वह सब लोग जो इस बुरे घराने में से बाक़ी बच रहेंगे, उन सब मकानों में जहाँ जहाँ मैं उनको हाँक दूँ, मौत को ज़िन्दगी से ज़्यादा चाहेंगे, रब्ब-उल-अफ़वाज~फ़रमाता है।

⁴और तू उनसे कह दे कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, क्या लोग गिरकर फिर नहीं उठते? क्या कोई फिर कर वापस नहीं आता?⁵फिर यरुशलीम के यह लोग क्यों हमेशा की नाफ़रमानी पर अड़े हैं? वह फ़रेब से लिपटे रहते हैं और वापस आने से इन्कार करते हैं।

⁶मैंने कान लगाया और सुना, उनकी बातें ठीक नहीं; किसी ने अपनी बुराई से तौबा करके नहीं कहा कि 'मैंने क्या किया?' हर एक अपनी राह को फिरता है, जिस तरह घोड़ा लड़ाई में सरपट दौड़ता है।⁷हाँ हवाई लक़लक़ अपने मुक़र्ररा वक़्तों को जानता है, और कुमरी और अबाबील और कुलंग अपने आने का वक़्त पहचान लेते हैं; लेकिन मेरे लोग खुदावन्द के हुक्मों को नहीं पहचानते।

⁸~"तुम क्यूँकर कहते हो कि हमतो 'अक्लमन्द हैं और खुदावन्द की शरी'अत ~हमारे पास है? लेकिन देख, लिखने वालों के बेकार क़लम ने बतालत पैदा की है।

⁹अक्लमन्द शर्मिन्दा हुए, वह हैरान हुए और पकड़े गए; देख, उन्होंने खुदावन्द के कलाम को रद्द किया; उनमें कैसी समझदारी है?¹⁰तब मैं उनकी बीवियाँ औरों को, और उनके खेत उनको दूँगा जो उन पर क़ाबिज़ होंगे; क्यूँकि वह सब छोटे से बड़े तक लालची हैं, और नबी से काहिन तक हर एक दगाबाज़ है।

¹¹और वह मेरी बिन्त-ए-क्रौम के ज़ख़्म को यूँ ही 'सलामती सलामती' कह कर अच्छा करते हैं, हालाँकि सलामती नहीं है।¹²क्या वह अपने मकरूह कामों की वजह से शर्मिन्दा हुए? वह हरगिज़ शर्मिन्दा न हुए, बल्कि वह लजाए तक नहीं। इस लिए वह गिरने वालों के साथ गिरेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है, जब उनको सज़ा मिलेगी तो वह पस्त हो जाएँगे।¹³खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उनको बिल्कुल फ़ना करूँगा। न ताक मैं अंगूर लगेंगे और न अंजीर के दरख़्त में अंजीर, बल्कि पत्ते भी सूख जाएँगे; और जो कुछ मैंने उनको दिया, जाता रहेगा।"

¹⁴हम क्यूँ चुपचाप बैठे हैं? आओ, इकट्ठे होकर मज़बूत शहरों में भाग चलें और वहाँ चुप हो रहें क्यूँकि खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको चुप कराया और हमको इन्द्रायन का पानी पीने को दिया है; इसलिए कि हम खुदावन्द के गुनाहगार हैं।¹⁵सलामती का इन्तिज़ार था पर कुछ फ़ायदा न हुआ; और शिफ़ा के वक़्त का, लेकिन देखो दहशत!

¹⁶"उसके घोड़ों के फ़ररने की आवाज़ दान से सुनाई देती है, उसके जंगी घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ से तमाम ज़मीन काँप गई; क्यूँकि वह आ पहुँचे हैं और ज़मीन को और सब कुछ जो उसमें है, और शहर को भी उसके बाशिन्दों के साथ खा जाएँगे।"¹⁷~क्यूँकि खुदावन्द फ़रमाता है, "देखो, मैं तुम्हारे बीच साँप और अज़दहे भेजूँगा जिन पर मन्तर कारगर न होगा और वह तुम को काटेंगे।"

¹⁸काश कि मैं फ़रियाद से तसल्ली पाता; मेरा दिल मुझ में सुस्त हो गया।¹⁹देख, मेरी बिन्त-ए-क्रौम की ग़म की आवाज़ दूर के मुल्क से आती है, 'क्या खुदावन्द सिय्यून में नहीं? क्या उसका बादशाह उसमें नहीं? "उन्होंने क्यूँ अपनी तराशी हुई मूरतों से, और बेगाने मा'बूदों से मुझ को ग़ज़बनाक किया?"

²⁰"फ़सल काटने का वक़्त गुज़रा, गर्मी के दिन ख़त्म हुए, और हम ने रिहाई नहीं पाई।"²¹अपनी बिन्त-क्रौम की शिकस्तगी की वजह से मैं शिकस्ताहाल हुआ; मैं कुढ़ता रहता हूँ, हैरत ने मुझे दबा लिया।²²क्या ज़िल'आद में रौग़न-ए-बलसान नहीं है? क्या वहाँ कोई हकीम नहीं? मेरी बिन्त-ए-क्रौम क्यूँ शिफ़ा नहीं पाती?

Chapter 9

¹काश कि मेरा सिर पानी होता, और मेरी आँखें आँसुओं का चश्मा, ताकि मैं अपनी बिन्त-ए-क्रौम के मक्कतूलों पर रात दिन मातम करता!²काश कि मेरे लिए वीराने में मुसाफिर खाना होता, ताकि मैं अपनी क्रौम को छोड़ देता और उनमें से निकल जाता! क्योंकि वह सब बदकार और दगाबाज़ जमा'अत हैं।³वह अपनी ज़बान को नारास्ती की कमान बनाते हैं, वह मुल्क में ताक़तवर हो गए हैं लेकिन रास्ती के लिए नहीं; क्योंकि वह बुराई से बुराई तक बढ़ते जाते हैं और मुझ को नहीं जानते, खुदावन्द फ़रमाता है।

⁴हर एक अपने पड़ोसी से होशियार रहे, और तुम किसी भाई पर भरोसा न करो, क्योंकि हर एक भाई दगाबाज़ी से दूसरे की जगह ले लेगा, और हर एक पड़ोसी ग़ीबत करता फिरेगा।⁵और हर एक अपने पड़ोसी को फ़रेब देगा और सच न बोलेगा, उन्होंने अपनी ज़बान को झूट बोलना सिखाया है; और बदकारी में जॉफ़िशानी करते हैं।⁶तेरा घर फ़रेब के बीच है; खुदावन्द फ़रमाता है, फ़रेब ही से वह मुझ को जानने से इन्कार करते हैं।

⁷इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि "देख, मैं उनको पिघला डालूँगा और उनको आजमाऊँगा; क्योंकि अपनी बिन्त-ए-क्रौम से और क्या करूँ?" उनकी ज़बान हलाक करने वाला तीर है, उससे दगा की बातें निकलती हैं, अपने पड़ोसी को मुँह से तो सलाम कहते हैं पर बातिन में उसकी घात में बैठते हैं।⁸खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए उनको सज़ा न दूँगा? क्या मेरी रूह ऐसी क्रौम से इन्तक़ाम न लेगी?

¹⁰"मैं पहाड़ों के लिए गिरया-ओ-ज़ारी, और वीराने की चरागाहों के लिए नौहा करूँगा, क्योंकि वह यहाँ तक जल गई कि कोई उनमें क़दम नहीं रखता चौपायों की आवाज़ सुनाई नहीं देती; हवा के परिन्दे और मवेशी भाग गए, वह चले गए।"¹¹मैं यरुशलीम को खण्डर और गीदड़ों का घर बना दूँगा, और यहूदाह के शहरों को ऐसा वीरान करूँगा कि कोई बाशिन्दा न रहेगा।"¹²साहिब-ए-हिक्मत आदमी कौन है कि इसे समझे? और वह जिससे खुदावन्द के मुँह ने फ़रमाया कि इस बात का 'ऐलान करे। ये सरज़मीन किस लिए वीरान हुई, और वीराने की तरह जल गई कि कोई इसमें क़दम नहीं रखता?

¹³और खुदावन्द फ़रमाता है, "इसलिए कि उन्होंने मेरी शरी'अत को जो मैंने उनके आगे रखी थी, छोड़ दिया और मेरी आवाज़ को न सुना और उसके मुताबिक़ न चले,¹⁴बल्कि उन्होंने अपने हट्टी दिलों की और बा'लीम की पैरवी की, जिसकी उनके बाप-दादा ने उनको ता'लीम दी थी।

¹⁵इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं इनको, हाँ, इन लोगों को नागदौना खिलाऊँगा, और इन्द्रायन का पानी पिलाऊँगा।

¹⁶और इनको उन क्रौमों में, जिनको न यह न इनके बाप-दादा जानते थे, तितर-बितर करूँगा और तलवार इनके पीछे भेजकर इनको हलाक कर डालूँगा।"

¹⁷रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: "सोचो और मातम करने वाली 'औरतों को बुलाओ कि आएँ, और माहिर 'औरतों को बुलवा भेजो कि वह भी आएँ;

¹⁸और जल्दी करें और हमारे लिए नौहा उठाये ताकि हमारी ~आँखों से आँसू जारी हों और हमारी पलकों से आसुवों का सैलाब बह निकले।

¹⁹~यक़ीनन सियून् से नोहे की आवाज़ सुनाई देती है, 'हम कैसे बर्बाद हुए! हम सख़्त रुस्वा हुए, क्योंकि हम वतन से आवारा हुए और हमारे घर गिरा दिए गए।'

²⁰ऐ 'औरतो, खुदावन्द का कलाम सुनो और तुम्हारे कान उसके मुँह की बात कुबूल करें; और तुम अपनी बेटियों को नोहागरी और अपनी पड़ोसनों को मर्सिया-ख़वानी सिखाओ।

²¹क्योंकि मौत हमारी खिड़कियों में चढ़ आई है और हमारे क्रसों में घुस बैठी है, ताकि बाहर बच्चों को और बाज़ारों में जवानों को काट डाले।²²कह दे, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: 'आदमियों की लार्शें मैदान में खाद की तरह गिरेगी, और उस मुट्ठी भर की तरह होंगी जो फ़सल काटनेवाले के पीछे रह जाये जिसे कोई जमा नहीं करता।

²³खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "न साहिब-ए-हिक्मत अपनी हिक्मत पर, और न क़वी अपनी कुव्वत पर, और न मालदार अपने माल पर फ़ख़्र करे;²⁴लेकिन जो फ़ख़्र करता है, इस पर फ़ख़्र करे कि वह समझता और मुझे जानता है कि मैं ही खुदावन्द हूँ, जो दुनिया में शफ़क़त-ओ-'अद्ल और रास्तबाज़ी को 'अमल में लाता हूँ; क्योंकि मेरी खुशी इन्हीं बातों में है, खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁵"देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं सब मख़तूनो को नामख़तूनो के तौर पर सज़ा दूँगा;²⁶मिस्र और यहूदाह और अदोम और बनी 'अम्मोन और मोआब को, और उन सब को जो गाओदुम दाढ़ी रखते हैं, "जो वीरान के बाशिन्दे हैं; क्योंकि यह सब क्रौम नामख़तून हैं, और इस्राईल का सारा घराना दिल का नामख़तून है।"

Chapter 10

¹ए इस्राईल के घराने, वह कलाम जो खुदावन्द तुम से करता है सुनो।²खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "तुम दीगर क़ौमों के चाल चलन न सीखो, और आसमानी 'अलामात से हिरासान न हो; अगरचे दीगर क़ौमों उनसे हिरासान होती हैं।

³~क्यूँकि उनके क़ानून बेकार हैं। चुनाँचे कोई जंगल में कुल्हाड़ी से दरख़्त काटता है, जो बढ़ई ~के हाथ का काम है।⁴~वह उसे चाँदी और सोने से आरास्ता करते हैं, और उसमें हथोड़ों से मेखें लगाकर उसे मज़बूत करते हैं ताकि क़ायम रहे।⁵वह खज़ूर की तरह मख़रूती सुतून हैं पर बोलते नहीं, उनको उठा कर ले जाना पड़ता है क्यूँकि वह चल नहीं सकते; उनसे न डरो क्यूँकि वह नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, और उनसे फ़ायदा भी नहीं पहुँच सकता।"

⁶ए खुदावन्द, तेरा कोई नज़ीर नहीं, तू 'अज़ीम है और कुदरत की वजह से तेरा नाम बुजुर्ग है।⁷ए क़ौमों के बादशाह, कौन है जो तुझ से न डरे? यक़ीनन यह तुझ ही को ज़ेबा है; क्यूँकि क़ौमों के सब हकीमों में, और उनकी तमाम ममलुकतों में तेरा जैसा कोई नहीं।

⁸~मगर वह सब हैवान खसलत और बेवकूफ़ हैं; बुतों की ता'लीम क्या, वह तो लकड़ी हैं।⁹तरसीस से चाँदी का पीटा हुआ पत्तर, और ऊफ़ाज़ से सोना आता है जो कारीगर की कारीगरी और सुनार की दस्तकारी है; उनका लिबास नीला और अर्ग़वानी है, और ये सब कुछ माहिर उस्तादों की दस्तकारी है।¹⁰~लेकिन खुदावन्द सच्चा खुदा है, वह ज़िन्दा खुदा और हमेशा का बादशाह है; उसके क्रहर से ~ज़मीन ~थरथराती है और क़ौमों में उसके क्रहर की ताब नहीं।

¹¹~तुम उनसे यूँ कहना कि "यह मा'बूद जिन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं बनाया, ज़मीन पर से और आसमान के नीचे से हलाक हो जाएँगे।"¹²उसी ने अपनी कुदरत से ज़मीन को बनाया, उसी ने अपनी हिकमत से ज़हान को क़ायम किया और अपनी 'अक्ल से आसमान को तान दिया है।¹³उसकी आवाज़ से आसमान में पानी की बहुतायत होती है, और वह ज़मीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है। वह बारिश के लिए बिजली चमकाता है और अपने खज़ानों से हवा चलाता है।

¹⁴हर आदमी हैवान खसलत और बे-'इल्म हो गया है; हर एक सुनार अपनी खोदी हुई मूरत से रुखा है क्यूँकि उसकी ढाली हुई मूरत बेकार है, उनमें दम नहीं।

¹⁵वह बेकार, फ़े'ल-ए-फ़रेब हैं, सज़ा के वक़्त बर्बाद हो जाएँगी।¹⁶~या'कूब का हिस्सा उनकी तरह नहीं, क्यूँकि वह सब चीज़ों का खालिक है और इस्राईल उसकी मीरास का 'असा है; रब्बउल-अफ़वाज उसका नाम है।

¹⁷ए घिराव में रहने वाली, ज़मीन पर से अपनी गठरी उठा ले! ¹⁸क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "देख, मैं इस मुल्क के बाशिन्दों को अब की बार जैसे फ़लाखन में रख कर फेंक दूँगा, और उनको ऐसा तंग करूँगा कि जान लें।"

¹⁹हाय मेरी खस्तगी! मेरा ज़ख़्म दर्दनाक है और मैंने समझ लिया, "यक़ीनन मुझे यह दुख बरदाश्त करना है।"²⁰मेरा खेमा बर्बाद किया गया, और मेरी सब तनाबें तोड़ दी गईं, मेरे बच्चे मेरे पास से चले गए, और वह हैं नहीं, अब कोई न रहा जो मेरा खेमा खड़ा करे और मेरे पर्दे लगाए।

²¹क्यूँकि चरवाहे हैवान बन गए और खुदावन्द के तालिब न हुए, इसलिए वह कामयाब न हुए और उनके सब गल्ले तितर-बितर हो गए।²²देख, उत्तर के मुल्क से बड़े ग़ौगा और हंगामे की आवाज़ आती है ताकि यहूदा के शहरों को उजाड़ कर गीदड़ों का घर बनाए।

²³ए खुदावन्द, मैं जानता हूँ कि इन्सान की राह उसके इख्तियार में नहीं; इन्सान अपने चाल चलन में अपने क़दमों की रहनुमाई नहीं कर सकता।²⁴ए खुदावन्द, मुझे हिदायत कर लेकिन अन्दाज़े से; अपने क्रहर से नहीं, न हो कि तू मुझे हलाक कर दे।²⁵ए खुदावन्द, उन क़ौमों पर जो तुझे नहीं जानतीं, और उन घरानों पर जो तेरा नाम नहीं लेते, अपना क्रहर उँडेल दे; क्यूँकि वह या'कूब को खा गए, वह उसे निगल गए और चट कर गए, और उसके घर को उजाड़ दिया।

Chapter 11

¹यह वह कलाम है जो खुदावन्द की तरफ़ से ~यरमियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया,²कि "तुम इस 'अहद की बातें सुनो, और बनी यहूदाह और यरुशलीम के बाशिन्दों से बयान करो;

³और तू उनसे कह, खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि ला'नत उस इन्सान पर जो इस 'अहद की बातें नहीं सुनता।⁴जो मैंने तुम्हारे बाप-दादा से उस वक़्त फ़रमाई, जब मैं उनको मुल्क-ए-मिस्र से लोहे के तनूर से, यह कह कर निकाल लाया कि तुम मेरी आवाज़ की फ़रमाँबरदारी करो, और जो कुछ मैंने तुम को हुक्म दिया है उस पर 'अमल करो, तो तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा; ताकि मैं उस क्रसम को जो मैंने तुम्हारे बाप-दादा से खाई कि मैं उनको ऐसा मुल्क दूँगा जिसमें दूध और शहद बहता हो, जैसा कि आज के दिन है, पूरा करूँ।" तब मैंने जवाब में कहा, "ऐ खुदावन्द, आमीन।"

⁶फिर खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "यहूदाह के शहरों और यरुशलीम के कूचों में इन सब बातों का 'ऐलान कर और कह: इस 'अहद की बातें सुनो और उन पर 'अमल करो।' क्योंकि मैं तुम्हारे बाप-दादा को जिस दिन से मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, आज तक ताकीद करता और वक़्त पर जताता और कहता रहा कि मेरी सुनो।⁸लेकिन उन्होंने कान न लगाया और शिनवा न हुए, बल्कि हर एक ने अपने बुरे दिल की सख्ती की पैरवी की; इसलिए मैंने इस 'अहद की सब बातें, जिन पर 'अमल करने का उनको हुक्म दिया था और उन्होंने न किया, उन पर पूरी की।"

⁹तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "यहूदाह के लोगों और यरुशलीम के बाशिन्दों में साज़िश पाई जाती है।¹⁰वह अपने बाप-दादा की तरफ़ जिन्होंने मेरी बातें सुनने से इन्कार किया, फिर गए और ग़ैर मा'बूदों के पैरौ होकर उनकी 'इबादत की, इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने ने उस 'अहद को जो मैंने उनके बाप-दादा से किया था तोड़ दिया।

¹¹इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं उन पर ऐसी बला लाऊँगा जिससे वह भाग न सकेंगे, और वह मुझे पुकारेंगे पर मैं उनकी न सुनूँगा।¹²तब यहूदाह के शहर और यरुशलीम के बाशिन्दे जाएँगे और उन मा'बूदों को जिनके आगे वह खुशबू जलाते हैं पुकारेंगे, लेकिन वह मुसीबत के वक़्त उनको हरगिज़ न बचाएँगे।

¹³क्योंकि ऐ यहूदाह, जितने तेरे शहर हैं उतने ही तेरे मा'बूद हैं, और जितने यरुशलीम के कूचे हैं उतने ही तुम ने उस रुस्वाई की वजह के लिए मज़बूत बनाए, या'नी बा'ल के लिए~खुशबू~~जलाने की कुर्बानिगाहें।

¹⁴इसलिए तू इन लोगों के लिए दु'आ न कर और न इनके लिए अपनी आवाज़ बलन्द कर और न मिन्नत कर, क्योंकि जब वह अपनी मुसीबत में मुझे पुकारेंगे मैं इनकी न सुनूँगा।¹⁵मेरे घर में मेरी महबूबा को क्या काम जब कि वह बहुत ज़्यादा शरारत कर चुकी? क्या मन्नत और पाक गोश्त तेरी शरारत को दूर करेंगे? क्या तू इनके ज़रिए' से रिहाई पाएगी? तू शरारत करके खुश होती है।¹⁶खुदावन्द ने खुशमेवा हरा ज़ैतून, तेरा नाम रखा; उसने बड़े हंगामे की आवाज़ होते होते ही उसे आग लगा दी और उसकी डालियाँ तोड़ दी गईं।

¹⁷क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज ने जिसने तुझे लगाया, तुझ पर बला का हुक्म किया", उस बदी की वजह से जो इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने ने अपने हक़ में की कि बा'ल के लिए~खुशबू~~जला कर मुझे ग़ज़बनाक किया।"

¹⁸खुदावन्द ने मुझ पर ज़ाहिर किया और मैं जान गया, तब तूने मुझे उनके काम दिखाए।¹⁹लेकिन मैं उस पालतू बर्रे ~की तरह था, जिसे ज़बह करने को ले जाते हैं; और मुझे मा'लूम न था कि उन्होंने मेरे खिलाफ़ मंसूबे बाँधे हैं कि आओ, दरख़्त को उसके फल के साथ हलाक करें और उसे ज़िन्दों की ज़मीन से काट डालें, ताकि उसके नाम का ज़िक्र तक बाक़ी न रहे।²⁰ऐ रब्बउल-अफ़वाज, जो सदाक़त से 'अदालत करता है, जो दिल-ओ-दिमाग़ को जाँचता है, उनसे इन्तक़ाम लेकर मुझे दिखा क्योंकि मैंने अपना दावा तुझ ही पर ज़ाहिर किया।

²¹इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, "अन्तोत के लोगों के बारे में, जो यह कहकर तेरी जान के तलबगार हैं कि खुदावन्द का नाम लेकर नबुव्वत न कर, ताकि तू हमारे हाथ से न मारा जाए।"²²रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि "देख, मैं उनको सज़ा दूँगा, जवान तलवार से मारे जाएँगे, उनके बेटे-बेटियाँ काल से मरेंगे;

²³और उनमें से कोई बाक़ी न रहेगा। क्योंकि मैं 'अन्तोत के लोगों पर उनकी सज़ा के साल में आफ़त लाऊँगा।"

Chapter 12

¹ऐ खुदावन्द अगर मैं तेरे साथ बहस करूँ तो तू ही सच्चा ठहरेगा; तो भी मैं तुझ से इस अम्र पर बहस करना चाहता हूँ कि शरीर अपने चाल चलन में क्यूँ कामयाब होते हैं? सब दगाबाज़ क्यूँ आराम से रहते हैं?²~तूने उनको लगाया और उन्होंने जड़ पकड़ ली, वह बढ़ गए बल्कि कामयाब हुए; तू उनके मुँह से नज़दीक पर उनके दिलों से दूर है।

³लेकिन ऐ खुदावन्द, तू मुझे जानता है; तूने मुझे देखा और मेरे दिल को, जो तेरी तरफ़ है आजमाया है; तू उनको भेड़ों की तरह ज़बह होने के लिए खींच कर निकाल और क़त्ल के दिन के लिए उनको मख्सूस कर।⁴अहल-ए-ज़मीन की शरारत से ज़मीन कब तक मातम करे, और तमाम मुल्क की रोएदगी पज़मुर्दा हो? चरिन्दे और परिन्दे हलाक हो गए, क्यूँकि उन्होंने कहा, "वह हमारा अंजाम न देखेगा।"

⁵अगर तू प्यादों के साथ दौड़ा और उन्होंने तुझे थका दिया, तो फिर तुझ में यह ताब कहाँ कि सवारों की बराबरी करे? तू सलामती की सरज़मीन में तो बे-खौफ़ है, लेकिन यरदन के जंगल में क्या करेगा?⁶क्यूँकि तेरे भाइयों और तेरे बाप के घराने ने भी तेरे साथ बेवफ़ाई की है; हाँ, उन्होंने बड़ी आवाज़ से तेरे पीछे ललकारा, उन पर भरोसा न कर, अगरचे वह तुझ से मीठी मीठी बातें करें।"

⁷मैंने अपने लोगों को छोड़ दिया, मैंने अपनी मीरास को रद्द कर दिया, मैंने अपने दिल की महबूबा को उसके दुश्मनों के हवाले किया।⁸मेरी मीरास मेरे लिए जंगली शेर बन गई, उसने मेरे खिलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की; इसलिए मुझे उससे नफ़रत है।⁹क्या मेरी मीरास मेरे लिए अबलक़ शिकारी परिन्दा है? क्या शिकारी परिन्दे उसको चारों तरफ़ घेरे हैं? आओ, सब जंगली जानवरों को जमा' करो; उनको लाओ कि वह खा जाएँ।

¹⁰बहुत से चरवाहों ने मेरे ताकिस्तान को ख़राब किया, उन्होंने मेरे हिस्से को पामाल किया, मेरे दिल पसन्द हिस्से को उजाड़ कर वीरान बना दिया।¹¹उन्होंने उसे वीरान किया, वह वीरान होकर मुझसे फ़रयादी है। सारी ज़मीन वीरान हो गई तो भी कोई इसे खातिर में नहीं लाता,

¹²वीराने के सब पहाड़ों पर ग़ारतगर आ गए हैं; क्यूँकि खुदावन्द की तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक निगल जाती है और किसी बशर को सलामती नहीं।¹³उन्होंने गेहूँ बोया, लेकिन काँटे जमा' किये उन्होंने मशक्क़त खींची लेकिन फ़ायदा न उठाया; खुदावन्द के बहुत गुस्से की वजह से अपने अंजाम से शर्मिन्दा हो।"

¹⁴मेरे सब शरीर पड़ोसियों के खिलाफ़ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "देख, जिन्होंने उस मीरास को छुआ जिसका मैंने अपनी क्रौम इस्राईल को वारिस किया, मैं उनको उनकी सरज़मीन से उखाड़ डालूँगा और यहूदाह के घराने को उनके बीच से निकाल फेंकूँगा।¹⁵और इसके बा'द कि मैं उनको उखाड़ डालूँगा, यूँ होगा कि मैं फिर उन पर रहम करूँगा और हर एक को उसकी मीरास में और हर एक को उसकी ज़मीन में फिर लाऊँगा;

¹⁶और यूँ होगा कि अगर वह दिल लगा कर मेरे लोगों के तरीके सीखेंगे, कि मेरे नाम की क्रसम खाएँ कि खुदावन्द ज़िन्दा है। जैसा कि उन्होंने मेरे लोगों को सिखाया कि बा'ल की क्रसम खाएँ, तो वह मेरे लोगों में शामिल होकर क़ायम हो जाएँगे।"¹⁷~लेकिन अगर वह शर्मिन्दा न होंगे, तो मैं उस क्रौम को बिल्कुल उखाड़ डालूँगा और हलाक-ओ-बर्बाद कर दूँगा खुदावन्द फ़रमाता है | "

Chapter 13

¹खुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया कि "तू जाकर अपने लिए एक कतानी कमरबन्द खरीद ले और अपनी कमर पर बाँध, लेकिन उसे पानी में मत भिगो।"²तब मैंने खुदावन्द के कलाम के मुवाफ़िक़ एक कमरबन्द खरीद लिया और अपनी कमर पर बाँधा।³और खुदावन्द का कलाम दोबारा मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, "कि "इस कमरबन्द को जो तूने खरीदा और जो तेरी कमर पर है, लेकर उठ और फ़रात को जा और वहाँ चट्टान के एक शिगाफ़ में उसे छिपा दे।"

⁵चुनाँचे मैं गया और उसे फ़रात के किनारे छिपा दिया, जैसा खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया था।⁶और बहुत दिनों के बाद यूँ हुआ कि खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि "उठ, फ़रात की तरफ़ जा और उस कमरबन्द को जिसे तूने मेरे हुक्म से वहाँ छिपा रखखा है, निकाल ले।"⁷तब मैं फ़रात को गया और खोदा और कमरबन्द को उस जगह से जहाँ मैंने उसे गाड़ दिया था, निकाला और देख, वह कमरबन्द ऐसा खराब हो गया था कि किसी काम का न रहा।

⁸तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: "कि "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि इसी तरह मैं यहूदाह के गुरुर और यरुशलीम के बड़े गुरुर को तोड़ दूँगा।¹⁰यह शरीर लोग जो मेरा कलाम सुनने से इन्कार करते हैं और अपने ही दिल की सख्ती के पैरौ होते, और ग़ैर मा'बूदों के तालिब होकर उनकी 'इबादत करते और उनको पूजते हैं, वह इस कमरबन्द की तरह होंगे जो किसी काम का नहीं।"¹¹क्यूँकि जैसा कमरबन्द इन्सान की कमर से लिपटा रहता है वैसा ही, खुदावन्द फ़रमाता है, मैंने इस्राईल के तमाम घराने और यहूदाह के तमाम घराने को लिया कि मुझसे लिपटे रहें; ताकि वह मेरे लोग हों और उनकी वजह से मेरा नाम हो, और मेरी सिताइश की जाए और मेरा जलाल हो; लेकिन उन्होंने न सुना।

¹²तब तू उनसे ये बात भी कह दे कि खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि 'हर एक मटके में मय भरी जाएगी।' और वह तुझ से कहेंगे, 'क्या हम नहीं जानते कि हर एक मटके में मय भरी जाएगी?'¹³तब तू उनसे कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देखो, मैं इस मुल्क के सब बाशिन्दों को, हाँ, उन बादशाहों को जो दाऊद के तख़्त पर बैठते हैं, और कहिनों और नबियों और यरुशलीम के सब बाशिन्दों को मस्ती से भर दूँगा।'¹⁴और मैं उनको एक दूसरे पर, यहाँ तक कि बाप को बेटों पर दे मारूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं न शफ़क़त करूँगा, न रि'आयत और न रहम करूँगा कि उनको हलाक न करूँ।' "

¹⁵सुनो और कान लगाओ, गुरुर न करो, क्यूँकि खुदावन्द ने फ़रमाया है।¹⁶खुदावन्द अपने खुदा की तम्जीद करो, इससे पहले के वह तारीकी लाए और तुम्हारे पाँव गहरे अन्धेरे में ठोकर खाएँ; और जब तुम रोशनी का इन्तिज़ार करो, तो वह उसे मौत के साये से बदल डाले और उसे सख़्त तारीकी बना दे।¹⁷लेकिन अगर तुम न सुनोगे, तो मेरी जान तुम्हारे गुरुर की वजह से ख़िल्वतख़ानों में ग़म खाया करेगी; हाँ, मेरी आँखें फूट फूटकर रोएँगी और आँसू बहाएँगी, क्यूँकि खुदावन्द का गल्ला गुलामी में चला गया।

¹⁸बादशाह और उसकी वालिदा से कह, "आजिज़ी करो और नीचे बैठो, क्यूँकि तुम्हारी बुज़ुर्गी का ताज तुम्हारे सिर पर से उतार लिया गया है।"¹⁹दख़िबन के शहर बन्द हो गए और कोई नहीं खोलता, सब बनी यहूदाह गुलाम हो गए; सबको गुलाम करके ले गए।

²⁰अपनी आँखें उठा और उनको जो उत्तर से आते हैं, देख। वह गल्ला जो तुझे दिया गया था, तेरा खुशनुमा गल्ला कहाँ है?²¹जब वह तुझ पर उनको मुक़र्र करेगा जिनको तूने अपनी हिमायत की ता'लीम दी है, तो तू क्या कहेगी? क्या तू उस 'औरत की तरह जिसे पैदाइश का दर्द हो, दर्द में मुब्तिला न होगी?

²²और अगर तू अपने दिल में कहे कि यह हादसे मुझ पर क्यूँ गुज़रे? तेरी बदकिरदारी की शिद्दत से तेरा दामन उठाया गया और तेरी एड़ियाँ जबरन बरहना की गईं।²³हब्शी अपने चमड़े को या चीता अपने दागों को बदल सके, तो तुम भी जो बदी के 'आदी हो नेकी कर सकोगे।'²⁴इसलिए मैं उनको उस भूसे की तरह जो वीराने की हवा से उड़ता फिरता है, तितर-बितर करूँगा।

²⁵खुदावन्द फ़रमाता है कि मेरी तरफ़ से यही तेरा हिस्सा, तेरा नपा हुआ हिस्सा है; क्यूँकि तूने मुझे फ़रामोश करके बेकारी पर भरोसा किया है।²⁶फिर मैं भी तेरा दामन तेरे सामने से उठा दूँगा, ताकि तू बेपर्दा हो।²⁷मैंने तेरी बदकारी, तेरा हिनहिनाना, तेरी हरामकारी और तेरे नफ़रतअंगेज़ काम जो तूने पहाड़ों पर और मैदानों में किए, देखे हैं। ऐ यरुशलीम, तुझ पर अफ़सोस! तू अपने आपको कब तक पाक-ओ-साफ़ न करेगी?"

Chapter 14

¹खुदावन्द का कलाम जो-खुशकसाली के बारे में यरमियाह पर नाज़िल हुआ² "यहूदाह मातम करता है और उसके फाटकों पर उदासी छाई है, वह मातमी लिबास में खाक पर बैठे हैं; और यरुशलीम का नाला बलन्द हुआ है।³ उनके हाकिम अपने अदना लोगों को पानी के लिए भेजते हैं; वह चश्मों तक जाते हैं पर पानी नहीं पाते, और खाली घड़े लिए लौट आते हैं, वह शर्मिन्दा-ओ-पशेमान होकर अपने सिर ढाँपते हैं।

⁴चूँकि मुल्क में बारिश न हुई, इसलिए ज़मीन फट गई और किसान सरासीमा हुए, वह अपने सिर छिपाते हैं।⁵ चुनाँचे हिरनी मैदान में बच्चा देकर उसे छोड़ देती है क्योंकि घास नहीं मिलती।⁶ और गोरखर ऊँची जगहों पर खड़े होकर गीदड़ों की तरह हाँफते हैं उनकी आँखें रह जाती हैं, क्योंकि घास नहीं है।

⁷अगरचे हमारी बदकिरदारी हम पर गवाही देती है, तो भी ऐ खुदावन्द अपने नाम की खातिर कुछ कर; क्योंकि हमारी नाफ़रमानी बहुत है, हम तेरे खताकार हैं।

⁸ऐ इस्राईल की उम्मीद, मुसीबत के वक़्त उसके बचानेवाले, तू क्यों मुल्क में परदेसी की तरह बना, और उस मुसाफ़िर की तरह जो रात काटने के लिए डेरा डाले?

⁹तू क्यों इन्सान की तरह हक्का-बक्का है, और उस बहादुर की तरह जो रिहाई नहीं दे सकता? बहर-हाल, ऐ खुदावन्द, तू तो हमारे बीच है और हम तेरे नाम से कहलाते हैं; तू हमको मत छोड़।"

¹⁰खुदावन्द इन लोगों से यूँ फ़रमाता है कि "इन्होंने गुमराही को यूँ दोस्त रखखा है और अपने पाँव को नहीं रोका, इसलिए खुदावन्द इनको कुबूल नहीं करता; अब वह इनकी बदकिरदारी याद करेगा और इनके गुनाह की सज़ा देगा।"¹¹ और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "इन लोगों के लिए दु'आ-ए-ख़ैर न कर।¹² क्योंकि जब यह रोज़ा रखें तो मैं इनकी फ़रियाद न सुनूँगा और जब सोखतनी कुर्बानी और हदिया पेश करें तो कुबूल न करूँगा, बल्कि मैं तलवार और काल और वबा से इनको हलाक करूँगा।"

¹³तब मैंने कहा, 'आह, ऐ खुदावन्द खुदा, देख, अम्बिया उनसे कहते हैं, "तुम तलवार न देखोगे, और तुम में काल न पड़ेगा; बल्कि मैं इस मक्राम में तुम को हक़ीक़ी सलामती बख्शूँगा।"¹⁴ तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि अम्बिया मेरा नाम लेकर झूठी नबुव्वत करते हैं; मैंने न उनको भेजा और न हुक्म दिया और न उनसे कलाम किया, वह झूठा ख़्वाब और झूठा 'इल्म-ए-ग़ैब और बतालत और अपने दिलों की मक्कारी, नबुव्वत की सूत्र में तुम पर ज़ाहिर करते हैं।

¹⁵इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि वह नबी जिनको मैंने नहीं भेजा, जो मेरा नाम लेकर नबुव्वत करते और कहते हैं कि तलवार और काल इस मुल्क में न आएँगे, वह तलवार और काल ही से हलाक होंगे।¹⁶ और जिन लोगों से वह नबुव्वत करते हैं, तो काल और तलवार की वजह से यरुशलीम के गलियों में फेंक दिए जाएँगे; उनको और उनकी बीवियों और उनके बेटों और उनकी बेटियों को दफ़न करने वाला कोई न होगा। मैं उनकी बुराई उन पर उँडेल दूँगा।

¹⁷"और तू उनसे यूँ कहना: 'मेरी आँखें रात दिन आँसू बहाएँ और हरगिज़ न थमें, क्योंकि मेरी कुँवारी दुख़तर-ए-क्रौम ख़शतगी और ज़र्ब-ए-शदीद से शिकस्ता है।

¹⁸अगर मैं बाहर मैदान में जाऊँ, तो वहाँ तलवार के मक्तूल हैं; और अगर मैं शहर में दाख़िल होऊँ, तो वहाँ काल के मारे हैं! हाँ, नबी और काहिन दोनों एक ऐसे मुल्क को जाएँगे, जिसे वह नहीं जानते।' "

¹⁹क्या तूने यहूदाह को बिल्कुल रद्द कर दिया? क्या तेरी जान को सिय्यून से नफ़रत है? तूने हमको क्यों मारा और हमारे लिए शिफ़ा नहीं? सलामती का इन्तिज़ार था, लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ; और शिफ़ा के वक़्त का, लेकिन देखो, दहशत!²⁰ ऐ खुदावन्द, हम अपनी शरारत और अपने बाप-दादा की बदकिरदारी का इक़रार करते हैं; क्योंकि हम ने तेरा गुनाह किया है।

²¹अपने नाम की खातिर रद्द न कर, और अपने जलाल के तख़्त की तहक़ीर न कर; याद फ़रमा और हम से रिश्ता-ए-'अहद को न तोड़।²² क्रौमों के बुतों में कोई है जो मेंह बरसा सके? या आसमान बरिश पर क़ादिर है? ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, क्या वह तू ही नहीं है? इसलिए हम तुझ ही पर उम्मीद रखेंगे, क्योंकि तू ही ने यह सब काम किए हैं।

Chapter 15

¹तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि "अगरचे -मूसा और समुएल मेरे सामने खड़े होते तो मेरा दिल इन लोगों की तरफ़ मुतवज्जिह न होता। इनको मेरे सामने से निकाल दे कि चले जाएँ!" और जब वह तुझसे कहें कि 'हम किधर जाएँ?' तू उनसे कहना कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि जो मौत के लिए हैं वह मौत की तरफ़ जाएँ, और जो तलवार के लिए हैं वह तलवार की तरफ़, और जो काल के लिए हैं वह काल को, और जो गुलामी के लिए हैं वह गुलामी में।'

³और मैं चार चीज़ों को उन पर मुसल्लत करूँगा, "खुदावन्द फ़रमाता है: तलवार को कि क़त्ल करे, और कुत्तों को कि फाड़ डालें, और आसमानी परिन्दों को, और ज़मीन के दरिन्दों को कि निगल जाएँ और हलाक करें।" और मैं उनको शाह-ए-यहूदाह मनस्सी-बिन-हिज़क्रियाह की वजह से, उस काम के ज़रिये जो उसने यरुशलीम में किया, छोड़ दूँगा कि ज़मीन की सब ममलुकतों में धक्के खाते फिरें।

⁵"अब ऐ यरुशलीम, कौन तुझ पर रहम करेगा? कौन तेरा हमदर्द होगा? या कौन तेरी तरफ़ आएगा कि तेरी ख़ैर-ओ- 'आफ़ियत पूछे?' खुदावन्द फ़रमाता है, तूने मुझे छोड़ दिया और नाफ़रमान हो गई, इसलिए मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा और तुझे बर्बाद करूँगा, मैं तो तरस खाते खाते तंग आ गया।" और मैंने उनको मुल्क के फाटकों पर छाज से फटका, मैंने उनके बच्चे छीन लिए, मैंने अपने लोगों को हलाक किया, क्योंकि वह अपनी राहों से न फिरे।

⁸उनकी बेवाएँ मेरे आगे समन्दर की रेत से ज़्यादा हो गई; मैंने दोपहर के वक़्त जवानों की माँ पर ग़ारतगर को मुसल्लत किया; मैंने उस पर अचानक 'अज़ाब-ओ-दहशत को डाल दिया।"सात बच्चों की वालिदा निढाल हो गई, उसने जान दे दी; दिन ही को उसका सूरज डूब गया, वह पशेमान और शर्मिदा हो गई है; खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उनके बाक़ी लोगों को उनके दुश्मनों के आगे तलवार के हवाले करूँगा।"

¹⁰ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़सोस कि मैं तुझ से तमाम दुनिया कि लिए लड़ाका आदमी और झगड़ालू शख्स पैदा हुआ! मैंने तो न सूद पर क़र्ज़ दिया और न क़र्ज़ लिया, तो भी उनमें से हर एक मुझ पर ला'नत करता है।" खुदावन्द ने फ़रमाया, "यक़ीनन मैं तुझे ताक़त बख़्शूँगा कि तेरी ख़ैर हो; यक़ीनन मैं मुसीबत और तंगी के वक़्त दुश्मनों से तेरे सामने इल्तिजा कराऊँगा।" क्या कोई लोहे को या 'नी उत्तरी फ़ौलाद और पीतल को तोड़ सकता है?

¹³तेरे माल और तेरे खज़ानों को मुफ़्त लुटवा दूँगा, और यह-तेरे सब गुनाहों की वजह से तेरी तमाम सरहदों में होगा।" और मैं तुझ को तेरे दुश्मनों के साथ ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तू नहीं जानता, क्योंकि मेरे ग़ज़ब की आग़ भड़केगी और तुम को जलाएगी।"

¹⁵ऐ खुदावन्द, तू जानता है; मुझे याद फ़रमा और मुझ पर शफ़क़त कर, और मेरे सतानेवालों से मेरा इन्तक़ाम ले। तू बर्दाश्त करते-करते मुझे न उठा ले, जान रख कि मैंने तेरी खातिर मलामत उठाई है।" तेरा कलाम मिला और मैंने उसे नोश किया, और तेरी बातें मेरे दिल की खुशी और ख़ुरमी थीं; क्योंकि ऐ खुदावन्द, रब्ब-उल-अफ़वाज मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ।

¹⁷न मैं खुशी मनानेवालों की महफ़िल में बैठा और न खुश हुआ, तेरे हाथ की वजह से मैं तन्हा बैठा, क्योंकि तूने मुझे क़हर-से-लबरेज़ कर दिया है।" मेरा दर्द क्यों हमेशा का और मेरा ज़ख़म क्यों ला-'इलाज है कि सिहत पज़ीर नहीं होता? क्या तू मेरे लिए सरासर धोके की नदी के जैसा-हो गया है, उस पानी की तरह जिसको क़याम नहीं?

¹⁹इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि अगर तू बाज़ आये तों मैं तुझे फेर लाऊँगा और तू मेरे सामने खड़ा होगा। और अगर तू लतीफ़ को कसीफ़ से जुदा करे, तो तू मेरे मुँह की तरह होगा। वह तेरी तरफ़ फिरें, लेकिन तू उनकी तरफ़ न फिरना।" और मैं तुझे इन लोगों के सामने पीतल की मज़बूत दीवार ठहराऊँगा; और यह तुझ से लड़ेंगे लेकिन तुझ पर ग़ालिब न आएँगे, क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं तेरे साथ हूँ कि तेरी हिफ़ाज़त करूँ और तुझे रिहाई दूँ।" हाँ, मैं तुझे शरीरों के हाथ से रिहाई दूँगा और ज़ालिमों के पंजे से तुझे छुड़ाऊँगा।"

Chapter 16

¹खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया, ²"तू बीवी न करना, इस जगह तेरे यहाँ बेटे-बेटियाँ न हों।³~क्योंकि खुदावन्द उन बेटों और बेटियों के बारे में जो इस जगह पैदा हुए हैं, और उनकी माँओं के बारे में जिन्होंने उनको पैदा किया, और उनके बापों के बारे में जिनसे वह पैदा हुए, यूँ फ़रमाता है: 'कि वह बुरी मौत मरेंगे, न उन पर कोई मातम करेगा और न वह दफ़न किए जाएँगे, वह सतह-ए-ज़मीन पर खाद की तरह होंगे; वह तलवार और काल से हलाक होंगे और उनकी लाशें हवा के परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की ख़ुराक होंगी।

⁵इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू मातम वाले घर में दाख़िल न हो, और न उन पर रोने के लिए जा, न उन पर मातम कर; क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है कि मैंने अपनी सलामती और शफ़क़त-ओ-रहमत को इन लोगों पर से उठा लिया है।⁶और इस मुल्क के छोटे बड़े सब मर जाएँगे; न वह दफ़न किए जाएँगे, न लोग उन पर मातम करेंगे, और न कोई उनके लिए ज़ख़मी होगा, न सिर मुण्डाएगा;

⁷न लोग मातम करनेवालों को खाना खिलाएँगे, ताकि उनको मुर्दों के बारे में तसल्ली दें; और न उनकी दिलदारी का प्याला देंगे कि वह अपने माँ-बाप के ग़म में पिँपें।⁸और तू ज़ियाफ़त वाले घर में दाख़िल न होना कि उनके साथ बैठकर खाएँ।⁹क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं इस जगह से तुम्हारे देखते हुए और तुम्हारे ही दिनों में ख़ुशी और शादमानी की आवाज़ दुल्हे और दुल्हन की आवाज़ ख़त्म कराऊँगा।

¹⁰"और जब तू यह सब बातें इन लोगों पर ज़ाहिर करे और वह तुझ से पूछे कि 'खुदावन्द ने क्यों यह-सब बुरी बातें हमारे खिलाफ़ कहीं? हमने खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़ कौन सी बुराई और कौन सा गुनाह किया है?'¹¹तब तू उनसे कहना, 'खुदावन्द फ़रमाता है: इसलिए कि तुम्हारे बाप-दादा ने मुझे छोड़ दिया, और ग़ैरमा'बूदों के तालिब हुए और उनकी 'इबादत और परस्तिश की, और मुझे छोड़ दिया और मेरी शरी'अत पर 'अमल नहीं किया;

¹²और तुमने अपने बाप-दादा से बढ़कर बुराई की; क्योंकि देखो, तुम में से हर एक अपने बुरे दिन की सख़्ती की पैरवी करता है कि मेरी न सुने,¹³~इसलिए मैं तुमको इस मुल्क से ख़ारिज करके ऐसे मुल्क में आवारा करूँगा, जिसे न तुम और न तुम्हारे बाप-दादा जानते थे; और वहाँ तुम रात दिन ग़ैर मा'बूदों की 'इबादत करोगे, क्योंकि मैं तुम पर रहम न करूँगा।"

¹⁴"लेकिन देख," खुदावन्द फ़रमाता है, "वह दिन आते हैं कि लोग कभी न कहेंगे कि "ज़िन्दा खुदावन्द की क्रसम जो बनी-इस्राईल को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया";¹⁵बल्कि ज़िन्दा खुदावन्द की क्रसम जो बनी-इस्राईल को उत्तर की सरज़मीन से और उन सब ममलुकतों से, जहाँ-जहाँ उसने उनको हॉक दिया था, निकाल लाया; और मैं उनको फिर उस मुल्क में लाऊँगा जो मैंने उनके बाप-दादा को दिया था।

¹⁶आनेवाली सज़ा~'खुदावन्द फ़रमाता है: देख बहुत से माहीगीरों को बुलवाऊँगा और वह उनको शिकार करेंगे, और फिर मैं बहुत से शिकारियों को बुलवाऊँगा और वह हर पहाड़ से और हर टीले से और चट्टानों के शिगाफ़ों से उनको पकड़ निकालेंगे।¹⁷क्योंकि मेरी आँखें उनके सब चाल चलन पर लगी हैं, वह मुझसे छिपी नहीं हैं और उनकी बदकिरदारी मेरी आँखों से छिपी नहीं।¹⁸और मैं पहले उनकी बदकिरदारी और ख़ताकारी की दूनी सज़ा दूँगा क्योंकि उन्होंने मेरी सरज़मीन को अपनी मकरूह चीज़ों की लाशों से नापाक किया और मेरी मीरास को अपनी मकरूहात से भर दिया है।"

¹⁹यरमियाह की दु'आ~ऐ खुदावन्द, मेरी कुव्वत और मेरे गढ़ और मुसीबत के दिन में मेरी पनाहगाह, दुनिया कि किनारों से क़ाँमें तेरे पास आकर कहेंगी कि "हकीक़त में हमारे बाप-दादा ने महज़ झूट की मीरास हासिल की, या'नी बेकार और बेसूद चीज़ें।"²⁰~क्या इन्सान अपने लिए मा'बूद बनाए जो खुदा नहीं हैं!"²¹~"इसलिए देख, मैं इस मर्तबा उनको आगाह करूँगा; मैं अपने हाथ और अपना ज़ोर उनको दिखाऊँगा, और वह जानेंगे कि मेरा नाम यहोवाह है।"

Chapter 17

¹"यहूदाह का गुनाह लोहे के कलम-और हीरे की नोक से लिखा गया है; उनके दिल की तख्ती पर, और उनके मज़बहों के सींगों पर खुदवाया गया है;²क्योंकि उनके बेटे अपने मज़बहों और यसीरतों को याद करते हैं, जो हरे दरख्तों के पास ऊँचे पहाड़ों पर हैं।

³ऐ मेरे पहाड़, जो मैदान में हैं; मैं तेरा माल और तेरे सब खज़ाने और तेरे ऊँचे मक़ाम जिनको तूने अपनी तमाम सरहदों पर गुनाह के लिए बनाया, लुटाऊँगा।⁴और तू अज़ख़ुद उस मीरास से जो मैंने तुझे दी, अपने कुसूर की वजह से हाथ उठाएगा; और मैं उस मुल्क में जिसे तू नहीं जानता, तुझ से तेरे दुश्मनों की ख़िदमत कराऊँगा; क्योंकि तुमने मेरे क्रहर की आग भड़का दी है जो हमेशा तक जलती रहेगी।"

⁵~ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "मला'ऊन है वह आदमी जो इन्सान" पर भरोसा करता है, और बशर को अपना बाज़ू जानता है, और जिसका दिल ख़ुदावन्द से फिर जाता है।⁶~क्योंकि वह रतमा की तरह, होगा जो वीराने में है और कभी भलाई न देखेगा; बल्कि वीराने की बे पानी जगहों में और ग़ैर-आबाद ज़मीन-ए-शोर में रहेगा।

⁷~"मुबारक है वह आदमी जो ख़ुदावन्द पर भरोसा करता है, और जिसकी उम्मीदगाह ख़ुदावन्द है।⁸~क्योंकि वह उस दरख़्त की तरह होगा जो पानी के पास लगाया जाए, और अपनी जड़ दरिया की तरफ़ फैलाए, और जब गर्मी आए तो उसे कुछ ख़तरा न हो बल्कि उसके पत्ते हरे रहें, और खुशक़साली का उसे कुछ ख़ौफ़ न हो, और फल लाने से बाज़ न रहे।"

⁹~दिल सब चीज़ों से ज़्यादा हीलाबाज़ और ला'इलाज है, उसको कौन दरियाफ़्त कर सकता है?¹⁰"मैं ख़ुदावन्द दिल-ओ-दिमाग़ को जाँचता और आज़माता हूँ, ताकि हर एक आदमी को उसकी चाल के मुवाफ़िक़ और उसके कामों के फल के मुताबिक़ बदला दूँ।"¹¹बेइन्साफ़ी से दौलत हासिल करनेवाला, उस तीतर की तरह है जो किसी दूसरे के अण्डों पर बैठे; वह आधी 'उम्र में उसे खो बैठेगा और आखिर को बेवकूफ़ ठहरेगा।

¹²हमारे हैकल का मकान इब्तिदा ही से मुक़र्रर किया हुआ जलाली तख़्त है।¹³ऐ ख़ुदावन्द, इस्राईल की उम्मीदगाह, तुझको छोड़ने वाले सब शर्मिन्दा होंगे; मुझको छोड़ने वाले ख़ाक में मिल जाएँगे, क्योंकि उन्होंने ख़ुदावन्द को, जो आब-ए-हयात का चश्मा है छोड़ दिया।¹⁴ऐ ख़ुदावन्द, तू मुझे शिफ़ा बख़्शे तो मैं शिफ़ा पाऊँगा; तू ही बचाए तो बचूँगा, क्योंकि तू मेरा फ़ख़्र है।

¹⁵देख, वह मुझे कहते हैं, "ख़ुदावन्द का कलाम कहाँ है? अब नाज़िल हो।"¹⁶मैंने तो तेरी पैरवी में ग़ड़रिया बनने से इन्कार नहीं किया, और मुसीबत के दिन की आरज़ू नहीं की; तू ख़ुद जानता है कि जो कुछ मेरे लबों से निकला, तेरे सामने था।

¹⁷तू मेरे लिए दहशत की वजह न हो, मुसीबत के दिन तू ही मेरी पनाह है।¹⁸मुझ पर सितम करने वाले शर्मिन्दा हों, लेकिन मुझे शर्मिन्दा न होने दे; वह हिरासान हों, लेकिन मुझे हिरासान न होने दे; मुसीबत का दिन उन पर ला और उनको शिकस्त पर शिकस्त दे!

¹⁹ख़ुदावन्द ने मुझसे यूँ फ़रमाया है कि: 'जा और उस फाटक पर जिससे 'आम लोग और शाहान-ए-यहूदाह आते जाते हैं, बल्कि यरुशलीम के सब फाटकों पर खड़ा हो'²⁰और उनसे कह दे, 'ऐ शाहान-ए-यहूदाह, और ऐ सब बनी यहूदाह, और यरुशलीम के सब बाशिन्दों, जो इन फाटकों में से आते जाते हो, ख़ुदावन्द का कलाम सुनो।

²¹ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम ख़बरदार रहो, और सबत के दिन बोझ न उठाओ और यरुशलीम के फाटकों की राह से अन्दर न लाओ;²²और तुम सबत के दिन बोझ अपने घरों से उठा कर बाहर न ले जाओ, और किसी तरह का काम न करो; बल्कि सबत के दिन को पाक जानो, जैसा मैंने तुम्हारे बाप-दादा को हुक्म दिया था।²³लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया, बल्कि अपनी गर्दन को सख़्त किया कि सुनने न हों और तरबियत न पाएँ।

²⁴"और यूँ होगा कि अगर तुम दिल लगाकर मेरी सुनोगे, ख़ुदावन्द फ़रमाता है, और सबत के दिन तुम इस शहर के फाटकों के अन्दर बोझ न लाओगे बल्कि सबत के दिन को पाक जानोगे, यहाँ तक कि उसमें कुछ काम न करो;²⁵तो इस शहर के फाटकों से दाऊद के जानशीन बादशाह और हाकिम दाख़िल होंगे; वह और उनके हाकिम यहूदाह के लोग और यरुशलीम के बाशिन्दे, रथों और घोड़ों पर सवार होंगे और यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा।

²⁶और यहूदाह के शहरों और यरुशलीम के 'इलाक़े और बिनयमीन की सरज़मीन, और मैदान और पहाड़ और दख़्खिन से सोख़तनी कुर्बानियाँ और ज़बीहे और हदिये और लुबान लेकर आएँगे, और ख़ुदावन्द के घर में शुक्रगुज़ारी के हदिये जाएँगे।²⁷~लेकिन अगर तुम मेरी न सुनोगे कि सबत के दिन को पाक जानो, और बोझ उठा कर-सबत के दिन यरुशलीम के फाटकों में दाख़िल होने से-बाज़ न रहो; तो मैं उसके फाटकों में आग सुलगाऊँगा, जो उसके क्रसों को भसम कर देगी और हरगिज़ न बुझेगी।"

Chapter 18

¹खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:²कि "उठ और कुम्हार-के घर जा, और मैं वहाँ अपनी बातें तुझे सुनाऊँगा।"³तब मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखता हूँ कि वह चाक पर कुछ बना रहा है।⁴उस वक्रत वह मिट्टी का बर्तन जो वह बना रहा था, उसके हाथ में बिगड़ गया; तब उसने उससे जैसा मुनासिब समझा एक दूसरा बर्तन बना लिया।

⁵तब खुदावन्द का यह कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:⁶"ऐ इस्राईल के घराने, क्या मैं इस कुम्हार की तरह तुम से सुलूक नहीं कर सकता हूँ? खुदावन्द फ़रमाता है। देखो, जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ में है उसी तरह, ऐ इस्राईल के घराने, तुम मेरे हाथ में हो।⁷अगर किसी वक्रत मैं किसी क्रौम और किसी सल्तनत के हक़ में कहूँ कि उसे उखाड़ूँ और तोड़ डालूँ और वीरान करूँ,⁸और अगर वह क्रौम, जिसके हक़ में मैंने ये कहा, अपनी बुराई से बाज़ आए, तो मैं भी उस बुराई से जो मैंने उस पर लाने का इरादा किया था बाज़ आऊँगा।

⁹और फिर, अगर मैं किसी क्रौम और किसी सल्तनत के बारे में कहूँ कि उसे बनाऊँ और लगाऊँ,¹⁰और वह मेरी नज़र में बुराई करे और मेरी आवाज़ को न सुने, तो मैं भी उस नेकी से बाज़ रहूँगा जो उसके साथ करने को कहा था।

¹¹और अब तू जाकर यहूदाह के लोगों और यरुशलीम के बाशिन्दों से कह दे, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देखो, मैं तुम्हारे लिए मुसीबत तजवीज़ करता हूँ और तुम्हारी मुखालिफ़त में ~मनसूबा बाँधता हूँ। इसलिए अब तुम में से हर एक अपने बुरे चाल चलन से बाज़ आए, और अपनी राह और अपने 'आमाल को दुरुस्त करे।'¹²लेकिन वह कहेंगे, 'यह तो फुज़ूल है, क्योंकि हम अपने मन्सूबों पर चलेंगे, और हर एक अपने बुरे दिल की सख्ती के मुताबिक़ 'अमल करेगा।'

¹³"इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: दरियाफ़्त करो कि क्रौमों में से किसी ने कभी ऐसी बातें सुनी हैं? इस्राईल की कुँवारी ने बहुत हौलनाक काम किया।¹⁴क्या लुबनान की बर्फ़ जो चट्टान से मैदान में बहती है, कभी बन्द होगी? क्या वह ठंडा बहता पानी जो दूर से आता है, सूख जाएगा?

¹⁵लेकिन मेरे लोग मुझ को भूल गए, और उन्होंने बेकार के लिए~ख़ुशबू~जलाया; और उसने उनकी राहों में या'नी~क्रदीम राहों में उनको गुमराह किया, ताकि वह पगडंडियों में जाएँ और ऐसी राह में जो बनाई न गई।¹⁶कि वह अपनी सरज़मीन की वीरानी और हमेशा की हैरानी और सुस्कार का ज़रिया' बनाएँ; हर एक जो उधर से गुज़रे दंग होगा और सिर हिलाएगा।¹⁷मैं उनको दुश्मन के सामने जैसे पूरबी हवा से तितर-बितर कर दूँगा; उनकी मुसीबत के वक्रत उनको मुँह नहीं, बल्कि पीठ दिखाऊँगा।"

¹⁸तब उन्होंने कहा, "आओ, हम यरमियाह की मुखालिफ़त में मंसूबे बाँधे, क्योंकि शरी'अत काहिन से जाती न रहेगी, और न मश्वरत मुशीर से और न कलाम नबी से। आओ, हम उसे ज़बान से मारें, और उसकी किसी बात पर तवज्जुह न करें।"¹⁹ऐ खुदावन्द, तू मुझ पर तवज्जुह कर और मुझसे झगड़ने वालों की आवाज़ सुन।²⁰क्या नेकी के बदले बदी की जाएगी? क्योंकि उन्होंने मेरी जान के लिए गढ़ा खोदा। याद कर कि मैं तेरे सामने खड़ा हुआ कि उनकी शफ़ा'अत करूँ और तेरा क्रहर उन पर से टला दूँ।

²¹इसलिए उनके बच्चों को काल के हवाले कर, और उनको तलवार की धार के सुपुर्द कर, उनकी बीवियाँ बेऔलाद और बेवा हों, और उनके मर्द मारे जाएँ, उनके जवान मैदान-ए-जंग में तलवार से क़त्ल हों।²²जब तू अचानक उन पर फ़ौज़ चढ़ा लाएगा, उनके घरों से मातम की सदा निकले! क्योंकि उन्होंने मुझे फ़ँसाने को गढ़ा खोदा और मेरे पाँव के लिए फन्दे लगाए।²³लेकिन ऐ खुदावन्द, तू उनकी सब साज़िशों को जो उन्होंने मेरे क़त्ल पर की जानता है। उनकी बदकिरदारी को मु'आफ़ न कर, और उनके गुनाह को अपनी नज़र से दूर न कर; बल्कि वह तेरे सामने पस्त हों, अपने क्रहर के वक्रत तू उनसे यूँ ही कर।

Chapter 19

¹खुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है कि: "तू जाकर-कुम्हार से मिट्टी की सुराही मोल ले, और क्रौम के बुजुर्गों और काहिनो के सरदारों को साथ ले,² और बिन-हिनूम की वादी में कुम्हारों के फाटक के मदखल पर निकल जा, और जो बातें मैं तुझ से कहूँ वहाँ उनका 'ऐलान कर,³ और कह, 'ऐ यहूदाह के बादशाहों और यरुशलीम के बाशिन्दो, खुदा का कलाम सुनो। रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं इस जगह पर ऐसी बला नाज़िल करूँगा कि जो कोई उसके बारे में सुने उसके कान भन्ना जाएँगे।

⁴क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया, और इस जगह को ग़ैरों के लिए ठहराया और इसमें ग़ैरमा'बूदों के लिए-खुशबू-जलायी-जिनको न वह, न उनके बाप-दादा, न यहूदाह के बादशाह जानते थे; और इस जगह को बेगुनाहों के खून से भर दिया,⁵ और बा'ल के लिए ऊँचे मक़ाम बनाए, ताकि अपने बेटों को बा'ल की सोखतनी कुर्बानियों के लिए आग में जलाएँ जो न मैंने फ़रमाया न उसका ज़िक्र किया, और न कभी यह मेरे खयाल में आया।

⁶इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि यह जगह न तूफ़त कहलाएगी और न बिनहिनूम की वादी, बल्कि वादी-ए-क़त्ल।⁷ और इसी जगह में यहूदाह और यरुशलीम का मन्सूबा बर्बाद करूँगा और मैं ऐसा करूँगा कि वह अपने दुश्मनों के आगे और उनके हाथों से जो उनकी जान के तलबगार हैं, तलवार से क़त्ल होंगे; और मैं उनकी लाशें हवा के परिन्दों को और ज़मीन के दरिन्दों को खाने को दूँगा,⁸ और मैं इस शहर को हैरानी और सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँगा; हर एक जो इधर से गुज़रे दंग होगा, और उसकी सब आफ़तों की वजह से सुस्कारेगा।⁹ और मैं उनको उनके बेटों और उनकी बेटियों का गोश्त खिलाऊँगा, बल्कि हर एक दूसरे का गोश्त खाएगा, घिराव के वक़्त उस तंगी में जिससे उनके दुश्मन और उनकी जान के तलबगार उनको तंग करेंगे।'

¹⁰"तब तू उस सुराही को उन लोगों के सामने जो तेरे साथ जाएँगे, तोड़ डालना"¹¹ और उनसे कहना के 'रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मैं इन लोगों और इस शहर को ऐसा तोड़ूँगा, जिस तरह कोई कुम्हार के बर्तन को तोड़ डाले जो फिर दुरुस्त नहीं हो सकता; और लोग तूफ़त में दफ़्न करेंगे, यहाँ तक कि दफ़्न करने की जगह न रहेगी।

¹²मैं इस जगह और इसके बाशिन्दों से ऐसा ही करूँगा खुदावन्द फ़रमाता है चुनाँचे मैं इस शहर को तूफ़त की तरह कर दूँगा,¹³ और यरुशलीम के घर और यहूदाह के बादशाहों के घर तूफ़त के मक़ाम की तरह नापाक हो जाएँगे; हाँ, वह सब घर जिनकी छतों पर उन्होंने तमाम अजराम-ए-फ़लक के लिए-खुशबू जलायी और ग़ैरमा'बूदों के लिए तपावन-तपाए।' "

¹⁴तब यरमियाह तूफ़त से, जहाँ खुदावन्द ने उसे नबुव्वत करने को भेजा था वापस आया; और खुदावन्द के घर के सहन में खड़ा होकर तमाम लोगों से कहने लगा,¹⁵ रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं इस शहर पर और इसकी सब बस्तियों पर वह तमाम बला, जो मैं ने उस पर भेजने को कहा था लाऊँगा: इसलिए कि उन्होंने बहुत बगावत की ताकि मेरी बातों को न सुनें । "

Chapter 20

¹फ़शहूर-बिन-इम्मेर काहिन ने, जो ख़ुदावन्द के घर में सरदार नाज़िम था, यरमियाह को यह बातें नबुव्वत से कहते सुना।²तब फ़शहूर ने यरमियाह नबी को मारा और उसे उस काठ में डाला, जो बिनयमीन के बालाई फाटक में ख़ुदावन्द के घर में था।

³और दूसरे दिन यूँ हुआ कि फ़शहूर ने यरमियाह को काठ से निकाला। तब यरमियाह ने उसे कहा, "ख़ुदावन्द ने तेरा नाम फ़शहूर नहीं, बल्कि मज़ूरमिस्साबीब रखा है।⁴क्योंकि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं तुझ को तेरे लिए और तेरे सब दोस्तों के लिए दहशत का ज़रिया बनाऊँगा; और वह अपने दुश्मनों की तलवार से क़त्ल होंगे और तेरी आँखें देखेंगी और मैं तमाम यहूदाह को शाह-ए-बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह उनको गुलाम करके बाबुल में ले जाएगा और उनको तलवार से क़त्ल करेगा।

⁵और मैं इस शहर की सारी दौलत और इसके तमाम महासिल और इसकी सब नफ़ीस चीज़ों को, और यहूदाह के बादशाहों के सब खज़ानों को दे डालूँगा; हाँ, मैं उनको उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, जो उनको लूटेंगे और बाबुल को ले जाएँगे।⁶और ऐ फ़शहूर, तू और तेरा सारा घराना गुलामी में जाओगे, और तू बाबुल में पहुँचेगा और वहाँ मरेगा और वहीं दफ़न किया जाएगा ~तू और तेरे सब दोस्त जिनसे तूने झूटी-नबुव्वत की।"

⁷ऐ ख़ुदावन्द, तूने मुझे तरागीब दी है और मैंने मान लिया; तू मुझसे तवाना था, और तू ग़ालिब आया। मैं दिन भर हँसी का ज़रिया बनाता हूँ, हर एक मेरी हँसी उड़ाता है।⁸क्योंकि जब-जब मैं कलाम करता हूँ, ज़ोर से पुकारता हूँ, मैंने ग़ज़ब और हलाकत का ऐलान किया, क्योंकि ख़ुदावन्द का कलाम दिन भर मेरी मलामत और हँसी का ज़रिया होता है।⁹और अगर मैं कहूँ कि 'मैं उसका ज़िक्र न करूँगा, न फिर कभी उसके नाम से कलाम करूँगा,' तो उसका कलाम मेरे दिल में जलती आग की तरह है जो मेरी हड्डियों में छिपा है, और मैं ज़ब्त करते करते थक गया और मुझसे रहा नहीं जाता।

¹⁰क्योंकि मैंने बहुतों की तोहमत सुनी। चारों तरफ़ दहशत है! "उसकी शिकायत करो! वह कहते हैं, हम उसकी शिकायत करेंगे," मेरे सब दोस्त मेरे ठोकर खाने के मुन्तज़िर हैं और कहते हैं, "शायद वह ठोकर खाए", तब हम उस पर ग़ालिब आएँगे और उससे बदला लेंगे।"¹¹लेकिन ख़ुदावन्द बड़े बहादुर की तरह मेरी तरफ़ है, इसलिए मुझे सताने वालों ने ठोकर खाई और ग़ालिब न आए, वह बहुत शर्मिन्दा हुए इसलिए कि उन्होंने अपना मक़सद न पाया; उनकी शर्मिन्दगी हमेशा तक रहेगी, कभी फ़रामोश न होगी।

¹²~इसलिए, ऐ रब्बउल-अफ़वाज, तू जो सादिकों को आजमाता और दिल-ओ-दिमाग़ को देखता है, उनसे बदला लेकर मुझे दिखा; इसलिए कि मैंने अपना दा'वा तुझ पर ज़ाहिर किया है।¹³ख़ुदावन्द की मदहसराई करो; ख़ुदावन्द की सिताइश करो! क्योंकि उसने ग़रीब की जान को बदकिरदारों के हाथ से छुड़ाया है।

¹⁴'ला'नत उस दिन पर जिसमें मैं पैदा हुआ! वह दिन जिस में मेरी माँ ने मुझ को पैदा किया, हरगिज़ मुबारक न हो!¹⁵'ला'नत उस आदमी पर जिसने मेरे बाप को ये कहकर ख़बर दी, "तेरे यहाँ बेटा पैदा हुआ," और उसे बहुत खुश किया।

¹⁶हाँ, वह आदमी उन शहरों की तरह हो, जिनको ख़ुदावन्द ने शिकस्त दी और अफ़सोस न किया; और वह सुबह को खौफ़नाक शोर सुने और दोपहर के वक़्त बड़ी ललकार,¹⁷इसलिए कि उसने मुझे रिहम ही में क़त्ल न किया, कि मेरी माँ मेरी क़ब्र होती, और उसका रिहम हमेशा तक भरा रहता।¹⁸मैं पैदा ही क्यूँ हुआ कि मशक्क़त और रंज देखूँ, और मेरे दिन रुस्वाई में कटें?

Chapter 21

¹~वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ, जब सिदक्रियाह बादशाह ने फ़शहूर-बिन-मलकियाह और सफ़नियाह-बिन-मासियाह काहिन को उसके पास ये कहने को भेजा, ²कि "हमारी खातिर खुदावन्द से दरियाफ़्त कर क्योंकि शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र हमारे साथ लड़ाई करता है; शायद खुदावन्द हम से अपने तमाम 'अजीब कामों के मुवाफ़िक़ ऐसा सुलूक करे कि वह हमारे पास से चला जाए।"

³~तब यरमियाह ने उनसे कहा, "तुम सिदक्रियाह से यूँ कहना, ⁴कि ~'खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं लड़ाई के हथियारों को जो तुम्हारे हाथ में हैं, जिनसे तुम शाह-ए-बाबुल और कसदियों के खिलाफ़ जो फ़सील के बाहर तुम्हारा घिराव किए हुए हैं लड़ते हो फेर दूँगा और मैं उनको इस शहर के बीच में इकट्ठे करूँगा;⁵ और मैं आप अपने बढ़ाए हुए हाथ से और कुव्वत-ए-बाजू से तुम्हारे खिलाफ़ लड़ूँगा, हाँ, क्रहर-ओ-ग़ज़ब से बल्कि ग़ज़बनाक गुस्से से। ⁶और मैं इस शहर के बाशिन्दों को, इन्सान और हैवान दोनों को मारूँगा, वह बड़ी वबा से फ़ना हो जाएँगे।⁷ और खुदावन्द फ़रमाता है, फिर मैं शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह को और उसके मुलाज़िम्ओं और 'आम लोगों को, जो इस शहर में वबा और तलवार और काल से बच जाएँगे, शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र और उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा। और वह उनको हलाक करेगा; न उनको छोड़ेगा, न उन पर तरस खाएगा और न रहम करेगा।"

⁸~'और तू इन लोगों से कहना खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं तुम को हयात की राह और मौत की राह दिखाता हूँ।⁹ ~जो कोई इस शहर में रहेगा, वह तलवार और काल और वबा से मरेगा, लेकिन जो निकलकर कसदियों में जो तुम को घेरे हुए हैं, चला जाएगा, वह जिएगा और उसकी जान उसके लिए ग़नीमत होगी।¹⁰ ~क्योंकि मैंने इस शहर का रुख़ किया है कि इससे बुराई करूँ, और भलाई न करूँ, खुदावन्द फ़रमाता है; वह शाह-ए-बाबुल के हवाले किया जाएगा और वह उसे आग से जलाएगा।

¹¹~'और शाह-ए-यहूदाह के ख़ान्दान के बारे में खुदावन्द का कलाम सुनो,¹² ~'ऐ दाऊद के घराने! खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तुम सवेरे उठ कर इन्साफ़ करो और मज़लूम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ, ऐसा तुम्हारे कामों की बुराई की वजह से मेरा क्रहर आग की तरह भड़के, और ऐसा तेज़ हो कि कोई उसे ठंडा न कर सके।'

¹³~ऐ वादी की बसनेवाली, ऐ मैदान की चट्टान पर रहने वाली, जो कहती है कि कौन हम पर हमला करेगा? या हमारे घरों में कौन आ घुसेगा?' खुदावन्द फ़रमाता है: मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ,¹⁴ ~और तुम्हारे कामों के फल के मुवाफ़िक़ मैं तुम को सज़ा दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं उसके बन में आग लगाऊँगा, जो उसके सारे 'इलाक़े को भसम करेगी।"

Chapter 22

¹~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "शाह-ए-यहूदाह के घर को जा, और वहाँ ये कलाम सुना" और कह, 'ऐ शाह-ए-यहूदाह जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, खुदावन्द का कलाम सुन, तू और तेरे मुलाज़िम और तेरे लोग जो इन दरवाज़ों से दाखिल होते हैं।'³~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: 'अदालत और सदाक़त के काम करो, और मज़लूम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ; और किसी से बदसलूकी न करो, और मुसाफ़िर-ओ- यतीम और बेवा पर जुल्म न करो, इस जगह बेगुनाह का खून न बहाओ।

⁴~क्यूँकि अगर तुम इस पर 'अमल करोगे, तो दाऊद के जानशीन बादशाह रथों पर और घोड़ों पर सवार होकर इस घर के फाटकों से दाखिल होंगे, बादशाह और उसके मुलाज़िम और उसके लोग।'⁵~लेकिन अगर तुम इन बातों को न सुनोगे, तो खुदावन्द फ़रमाता है, मुझे अपनी ज़ात की क़सम यह~घर वीरान हो जाएगा

⁶~क्यूँकि शाह-ए-यहूदाह के घराने के बारे में खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अगरचे तू मेरे लिए ज़िल'आद है और लुबनान की चोटी, तो भी मैं यक़ीनन तुझे उजाड़ दूँगा और ग़ैर-आबाद शहर बनाऊँगा।'⁷~और मैं तेरे खिलाफ़ ग़ारतग़रों को मुक़र्रर करूँगा, हर एक को उसके हथियारों के साथ, और वह तेरे नफ़ीस देवदारों को काटेंगे और उनको आग में डालेंगे।

⁸~और बहुत सी क़ौमें इस शहर की तरफ़ से गुज़रेंगी और उनमें से एक दूसरे से कहेगा कि 'खुदावन्द ने इस बड़े शहर से ऐसा क्यूँ किया है?'⁹~तब वह जवाब देंगे, "इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद को छोड़ दिया और ग़ैरमा'बूदों की 'इबादत और परस्तिश की।' "

¹⁰~मुर्दे पर न रो, न नौहा करो, मगर उस पर जो चला जाता है ज़ार-ज़ार नाला करो, क्यूँकि वह फिर न आएगा, न अपने वतन को देखेगा।

¹¹~क्यूँकि शाह-ए-यहूदाह सलूम-बिन-यूसियाह के बारे में जो अपने बाप यूसियाह का जानशीन हुआ और इस जगह से चला गया, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "वह फिर इस तरफ़ न आएगा;¹²~बल्कि वह उसी जगह मरेगा, जहाँ उसे गुलाम करके ले गए हैं और इस मुल्क को फिर न देखेगा।"

¹³~"उस पर अफ़सोस, जो अपने घर को बे-इन्साफ़ी से और अपने बालाखानों को जुल्म से बनाता है; जो अपने पड़ोसी से बेगार लेता है, और उसकी मज़दूरी उसे नहीं देता;¹⁴~जो कहता है, 'मैं अपने लिए बड़ा मकान और हवादार बालाखाना बनाऊँगा,' और वह अपने लिए झंझरियाँ बनाता है और देवदार की लकड़ी की छत लगाता है और उसे शंगर्फी करता है।

¹⁵~क्या तू इसीलिए सलतनत करेगा कि तुझे देवदार के काम का शौक़ है? क्या तेरे बाप ने नहीं खाया-पिया और 'अदालत-ओ-सदाक़त नहीं की जिससे उसका भला हुआ?'¹⁶~उसने ग़रीब और मुहताज का इन्साफ़ किया, इसी से उसका भला हुआ। क्या यही मेरा इरफ़ान न था? खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁷~लेकिन तेरी आँखें और तेरा दिल, सिर्फ़ लालच और बेगुनाह का खून बहाने और जुल्म-ओ-सितम पर लगे हैं।"¹⁸~इसीलिए खुदावन्द यहूयक़ीम शाह-ए-यहूदाह-बिन-यूसियाह के बारे में यूँ फ़रमाता है कि "उस पर 'हाय मेरे भाई! या हाय बहन!' कह कर मातम नहीं करेंगे, उसके लिए 'हाय आक्रा! या हाय मालिक!' कह कर नौहा नहीं करेंगे।"¹⁹~उसका दफ़्न ग़धे के जैसा होगा, उसको घसीटकर यरुशलीम के फाटकों के बाहर फेंक देंगे।"

²⁰~"तू लुबनान पर चढ़ जा और चिल्ला, और बसन में अपनी आवाज़ बुलन्द कर; और 'अबारीम पर से फ़रियाद कर, क्यूँकि तेरे सब चाहने वाले मारे गए।

²¹~मैंने तेरी इक़बालमन्दी के दिनों में तुझ से कलाम किया, लेकिन तूने कहा, 'मैं न सुनूँगी।' तेरी जवानी से तेरी यही चाल है कि तू मेरी आवाज़ को नहीं सुनती।

²²~एक आँधी तेरे चरवाहों को उड़ा ले जाएगी, और तेरे 'आशिक़ गुलामी में जाएँगे; तब तू अपनी सारी शरारत के लिए शर्मसार और पशेमान होगी।"²³~ऐ लुबनान की बसनेवाली, जो अपना आशियाना देवदारों पर बनाती है, तू कैसी 'आजिज़ होगी, जब तू ज़च्चा की तरह पैदाइश के दर्द में मुब्तिला होगी।"

²⁴~'खुदावन्द फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क़सम, अगरचे तू ऐ शाह-ए-यहूदाह कूनियाह-बिन-यहूयक़ीम मेरे दहने हाथ की अँगूठी होता, तो भी मैं तुझे निकाल फेंकता;²⁵~और मैं तुझ को तेरे जानी दुश्मनों के जिनसे तू डरता है, या 'नी शाह-ए-बाबुल नबुकदरज़र और कसदियों के हवाले करूँगा।"²⁶~हाँ, मैं तुझे और तेरी माँ को जिससे तू पैदा हुआ, ग़ैर मुल्क में जो तुम्हारी ज़ादबूम नहीं है, हाँक दूँगा और तुम वहीं मरोगे।

²⁷~जिस मुल्क में वह वापस आना चाहते हैं, हरगिज़ लौटकर न आएँगे।"²⁸~क्या यह शख्स कूनियाह, नाचीज़ टूटा बर्तन है या ऐसा बर्तन जिसे कोई नहीं पूछता? वह और उसकी औलाद क्यूँ निकाल दिए गए और ऐसे मुल्क में ज़िलावतन किए गए जिसे वह नहीं जानते?

²⁹~ऐ ज़मीन, ज़मीन, ज़मीन! खुदावन्द का कलाम सुन!³⁰~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "इस आदमी को बे-औलाद लिखो, जो अपने दिनों में इक़बालमन्दी का मुँह न देखेगा; क्यूँकि उसकी औलाद में से कभी कोई ऐसा इक़बालमन्द न होगा कि दाऊद के तख़्त पर बैठे और यहूदाह पर सलतनत करे।"

Chapter 23

¹~खुदावन्द फ़रमाता है: "उन चरवाहों पर अफ़सोस, जो मेरी चरागाह की भेड़ों को हलाक और तितर-बितर करते हैं!"²~इसलिए खुदावन्द, इस्राईल का खुदा उन चरवाहों की मुखालिफ़त में जो मेरे लोगों की चरवाही करते हैं, यूँ फ़रमाता है कि "तुमने मेरे गल्ले को तितर-बितर किया, और उनको हाँक कर निकाल दिया और निगहबानी नहीं की; देखो, मैं तुम्हारे कामों की बुराई तुम पर लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

³~लेकिन मैं उनको जो मेरे गल्ले से बच रहे हैं, तमाम मुमालिक से जहाँ-जहाँ मैंने-उनको हाँक दिया था जमा' कर लूँगा, और उनको फिर उनके गल्ला खानों में-लाऊँगा,~और वह फैलेंगे और बढ़ेंगे।⁴और मैं उन पर ऐसे चौपान मुक़र्रर करूँगा जो उनको चराएँगे; और वह फिर न डरेंगे, न घबराएँगे, न गुम होंगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

⁵~"देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि: मैं दाऊद के लिए एक सादिक शाख पैदा करूँगा और उसकी बादशाही मुल्क में इक़बालमन्दी और 'अदालत और सदाक़त के साथ होगी।'⁶~उसके दिनों में यहूदाह नजात पाएगा, और इस्राईल सलामती से सुकूनत करेगा; और उसका नाम यह रखवा जाएगा, 'खुदावन्द हमारी सदाक़त'।

⁷~"इसी लिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि वह फिर न कहेंगे, "ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम, जो बनी-इस्राईल को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया,"⁸~बल्कि, "ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम, जो इस्राईल के घराने की औलाद को उत्तर की सरज़मीन से, और उन सब ममलुकतों से जहाँ-जहाँ मैंने उनको हाँक दिया था निकाल लाया," और वह अपने मुल्क में बसेंगे।"

⁹~नबियों के बारे में: मेरा दिल मेरे अन्दर टूट गया, मेरी सब हड्डियाँ थरथराती हैं; खुदावन्द और उसके पाक कलाम की वजह से मैं मतवाला सा हूँ, और उस शख्स की तरह जो मय से मग़लूब हो।¹⁰~यक़ीनन ज़मीन बदकारों से भरी है; ला'नत की वजह से ज़मीन मातम करती है मैदान की चारागाहें सूख गयीं क्योंकि उनके चाल चलन बुरे और उनका ज़ोर नाहक़ है।

¹¹~कि "नबी और काहिन, दोनों नापाक हैं, हाँ, मैंने अपने घर के अन्दर उनकी शरारत देखी, खुदावन्द फ़रमाता है।¹²~इसलिए उनकी राह उनके हक़ में ऐसी होगी, जैसे तारीकी में फिसलनी जगह, वह उसमे दौड़ाये जायेंगे और वहाँ गिरेंगे खुदावन्द फ़रमाता है: मैं उन पर बला लाऊँगा, या'नी उनकी सज़ा का साल।

¹³और मैंने सामरिया के नबियों में हिमाक़त देखी है: उन्होंने बा'ल के नाम से नबुव्वत की और मेरी क़ौम इस्राईल को गुमराह किया।¹⁴~मैंने यरुशलीम के नबियों में भी एक हौलनाक बात देखी: वह ज़िनाकार, झूठ के पैरी और बदकारों के हामी हैं, यहाँ तक कि कोई अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता; वह सब मेरे नज़दीक़ सदूम की तरह और उसके बाशिन्दे 'अमूरा की तरह हैं।"¹⁵~इसीलिए रब्ब-उल-अफ़वाज, नबियों के बारे में यूँ फ़रमाता है कि: "देख, मैं उनको नागदौना खिलाऊँगा और इन्द्रायन का पानी पिलाऊँगा; क्योंकि यरुशलीम के नबियों ही से तमाम मुल्क में बेदीनी फैली है।"

¹⁶~रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: "उन नबियों की बातें न सुनो, जो तुम से नबुव्वत करते हैं, वह तुम को बेकार की ता'लीम देते हैं, वह अपने दिलों के इल्हाम बयान करते हैं, न कि खुदावन्द के मुँह की बातें।"¹⁷~वह मुझे हकीर जाननेवालों से कहते रहते हैं, 'खुदावन्द ने फ़रमाया है कि: तुम्हारी सलामती होगी;" और हर एक से जो अपने दिल की सख़्ती पर चलता है, कहते हैं कि 'तुझ पर कोई बला न आएगी।' "¹⁸लेकिन उनमें से कौन खुदावन्द की मजलिस में शामिल हुआ कि उसका कलाम सुने और समझे? किसने उसके कलाम की तरफ़ तवज्जुह की और उस पर कान लगाया?

¹⁹~देख, खुदावन्द के ग़ज़बनाक गुस्से का तूफ़ान जारी हुआ है, बल्कि तूफ़ान का बगोला शरीरों के सिर पर टूट पड़ेगा।²⁰~खुदावन्द का ग़ज़ब फिर ख़त्म न होगा, जब तक उसे अंजाम तक न पहुँचाए और उसके दिल के इरादे को पूरा न करे। तुम आने वाले दिनों में उसे बख़ूबी मा'लूम करोगे।

²¹~मैंने इन नबियों को नहीं भेजा, लेकिन ये दौड़ते फिरे; मैंने इनसे कलाम नहीं किया, लेकिन इन्होंने नबुव्वत की।²²लेकिन अगर वह मेरी मजलिस में शामिल होते, तो मेरी बातें मेरे लोगों को सुनाते; और उनको उनकी बुरी राह से और उनके कामों की बुराई से बाज़ रखते।

²³~"खुदावन्द फ़रमाता है: क्या मैं नज़दीक़ ही का खुदा हूँ और दूर का खुदा नहीं?"²⁴क्या कोई आदमी पोशीदा जगहों में छिप सकता है कि मैं उसे न देखूँ? खुदावन्द फ़रमाता है। क्या ज़मीन-ओ-आसमान मुझसे मा'मूर नहीं हैं? खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁵~मैंने सुना जो नबियों ने कहा, जो मेरा नाम लेकर झूठी नबुव्वत करते और कहते हैं कि 'मैंने ख़्वाब देखा, मैंने ख़्वाब देखा!' "²⁶~कब तक ये नबियों के दिल में रहेगा कि झूठी नबुव्वत करें? हाँ, वह अपने दिल की फ़रेबकारी के नबी हैं।"²⁷जो गुमान रखते हैं कि अपने ख़्वाबों से, जो उनमें से हर एक अपने पड़ोसी से बयान करता है, मेरे लोगों को मेरा नाम भुला दें, जिस तरह उनके बाप-दादा बा'ल की वजह से मेरा नाम भूल गए थे।

²⁸~जिस नबी के पास ख़्वाब है, वह ख़्वाब बयान करे; और जिसके पास मेरा कलाम है, वह मेरे कलाम को दियानतदारी से सुनाए। गेहूँ को भूसे से क्या निखत? खुदावन्द फ़रमाता है।²⁹~क्या मेरा कलाम आग की तरह नहीं है? खुदावन्द फ़रमाता है, और हथौड़े की तरह जो चट्टान को चकनाचूर कर डालता है?³⁰इसलिए देख, मैं उन नबियों का मुखालिफ़ हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, जो एक दूसरे से मेरी बातें चुराते हैं।

³¹~देख, मैं उन नबियों का मुखालिफ़ हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, जो अपनी ज़बान को इस्ते'माल करते हैं और कहते हैं कि खुदावन्द फ़रमाता है।³²~खुदावन्द फ़रमाता है, देख, मैं उनका मुखालिफ़ हूँ जो झूठे ख़्वाबों को नबुव्वत कहते और बयान करते हैं और अपनी झूठी बातों से और बकवास से मेरे लोगों को गुमराह करते हैं; लेकिन मैंने न उनको भेजा न हुक्म दिया; इसलिए इन लोगों को उनसे हरगिज़ फ़ायदा न होगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

³³~"और जब यह लोग या नबी या काहिन तुझ से पूछे कि 'खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुव्वत क्या है?' तब तू उनसे कहना, 'कौन सा बार-ए-नबुव्वत! खुदावन्द फ़रमाता है, मैं तुम को फेंक दूँगा।'"³⁴और नबी और काहिन और लोगों में से जो कोई कहे, 'खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुव्वत, "मैं उस शख्स को और उसके घराने को सज़ा दूँगा।

³⁵~चाहिए कि हर एक अपने पड़ोसी और अपने भाई से यूँ कहे कि 'खुदावन्द ने क्या जवाब दिया?' और 'खुदावन्द ने क्या फ़रमाया है?' "³⁶~लेकिन खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुव्वत का ज़िक़्र तुम कभी न करना; इसलिए कि हर एक आदमी की अपनी ही बातें उस पर बार होंगी, क्योंकि तुम ने ज़िन्दा खुदा रब्ब-उल-अफ़वाज, हमारे खुदा के कलाम को बिगाड़ डाला है।

³⁷~तू नबी से यूँ कहना कि 'खुदावन्द ने तुझे क्या जवाब दिया?' और 'खुदावन्द ने क्या फ़रमाया?'³⁸लेकिन चूँकि तुम कहते हो, 'खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुवत;' इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: चूँकि तुम कहते हो, खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुवत, और मैंने तुम को कहला भेजा, 'खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुवत न कहो;'³⁹इसलिए देखो, मैं तुम को बिल्कुल फ़रामोश कर दूँगा और तुमको और इस शहर को, जो मैंने तुम को और तुम्हारे बाप दादा को दिया, अपनी नज़र से दूर कर दूँगा।⁴⁰~और मैं तुमको हमेशा की मलामत का निशाना बनाऊँगा, और हमेशा की शर्मिंदगी तुम पर लाऊँगा जो कभी फ़रामोश न होगी।"

Chapter 24

¹~जब शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र शाह-ए- यहूदाह यकूनियाह-बिन-यहूयक़ीम को और यहूदाह के हाकिम को, कारीगरों और लुहारों के साथ यरुशलीम से गुलाम करके बाबुल को ले गया, तो खुदावन्द ने मुझ पर नुमायाँ किया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द की हैकल के सामने अंजीर की दो टोकरियाँ धरी थीं।²~एक टोकरी में अच्छे से अच्छे अंजीर थे, उनकी तरह जो पहले पकते हैं; और दूसरी टोकरी में बहुत खराब अंजीर थे, ऐसे खराब कि खाने के क़ाबिल न थे।³और खुदावन्द ने मुझसे फ़रमाया, "ऐ यरमियाह! तू क्या देखता है?" और मैंने 'अर्ज़ की, अंजीर अच्छे अंजीर बहुत अच्छे और खराब अंजीर बहुत खराब, ऐसे खराब कि खाने के क़ाबिल नहीं।"

⁴~फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ कि:⁵"खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: इन अच्छे अंजीरों की तरह मैं यहूदाह के उन गुलामों पर जिनको मैंने इस मक़ाम से कसदियों के मुल्क में भेजा है, करम की नज़र रखूँगा।⁶~क्योंकि उन पर मेरी नज़र-ए-'इनायत होगी, और मैं उनको इस मुल्क में वापस लाऊँगा, और मैं उनको बर्बाद नहीं बल्कि आबाद करूँगा; मैं उनको लगाऊँगा और उखाड़ूँगा नहीं।'⁷~और मैं उनको ऐसा दिल दूँगा कि मुझे पहचानें कि मैं खुदावन्द हूँ! और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा, इसलिए कि वह पूरे दिल से मेरी तरफ़ फ़िरेंगे।

⁸"लेकिन उन खराब अंजीरों के बारे में, जो ऐसे खराब हैं कि खाने के क़ाबिल नहीं; खुदावन्द यक़ीनन यूँ फ़रमाता है कि इसी तरह मैं शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह को, और उसके हाकिम को, और यरुशलीम के बाक़ी लोगों को, जो इस मुल्क में बच रहे हैं और जो मुल्क-ए-मिस्र में बसते हैं, छोड़ दूँगा।⁹~हाँ, मैं उनको छोड़ दूँगा कि दुनिया की सब ममलुकतों में धक्के खाते फ़िरें, ताकि वह हर एक जगह में जहाँ-जहाँ मैं उनको हॉक दूँगा, मलामत और मसल और तान और ला'नत का ज़रिया' हों।¹⁰और मैं उनमें तलवार और काल और वबा भेजूँगा यहाँ तक कि वह उस मुल्क से जो मैंने उनको और उनके बाप-दादा को दिया, हलाक हो जाएँगे।"

Chapter 25

¹~वह कलाम जो शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम-बिन-यूसियाह के चौथे बरस में, जो शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र का पहला बरस था, यहूदाह के सब लोगों के बारे में यरमियाह पर नाज़िल हुआ;²जो यरमियाह नबी ने यहूदाह के सब लोगों और यरुशलीम के सब बाशिन्दों को सुनाया, और कहा,

³कि "शाह-ए-यहूदाह यूसियाह-बिन-अमून के तेरहवें बरस से आज तक यह तेईस बरस खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल होता रहा, और मैं तुम को सुनाता और सही वक्रत पर" जताता रहा पर तुम ने न सुना।⁴~और खुदावन्द ने अपने सब खिदमतगुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, उसने उनको~सही वक्रत पर~भेजा, लेकिन तुम ने न सुना और न~कान लगाया;

⁵उन्होंने कहा, 'तुम सब अपनी-अपनी बुरी राह से, और अपने बुरे कामों से बाज़ आओ, और उस मुल्क में जो खुदावन्द ने तुम को और तुम्हारे बाप-दादा को पहले से हमेशा के लिए दिया है, बसो,'⁶~और ग़ैर मा'बूदों की पैरवी न करो कि उनकी 'इबादत-ओ-परस्तिश करो, और अपने हाथों के कामों से मुझे ग़ज़बनाक न करो; और मैं तुम को कुछ नुकसान न पहुँचाऊँगा।'

⁷~लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, तुम ने मेरी न सुनी; ताकि अपने हाथों के कामों से अपने ज़ियान के लिए मुझे ग़ज़बनाक करो।⁸~'इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: चूँकि तुम ने मेरी बात न सुनी,⁹~देखो, मैं तमाम उत्तरी क़बीलों को और अपने खिदमत गुज़ार शाह-ए-बाबुल नाबूकदरज़र को बुला भेजूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं उनको इस मुल्क और इसके बाशिन्दों पर, और उन सब क़ौमों पर जो आस-पास हैं चढ़ा लाऊँगा; और इनको बिल्कुल हलाक-ओ-बर्बाद कर दूँगा और इनको हैरानी और सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँगा और हमेशा के लिए वीरान करूँगा।

¹⁰~बल्कि मैं इनमें से खुशी-ओ-शादमानी की आवाज़ दूँ लूँ और दूँ लूँ की आवाज़, चक्की की आवाज़ और चरागा की रोशनी ख़त्म कर दूँगा।¹¹और यह सारी सरज़मीन वीरान और हैरानी का ज़रिया' हो जाएगी, और यह क़ौम सत्तर बरस तक शाह-ए-बाबुल की गुलामी करेंगी।

¹²~खुदावन्द फ़रमाता है, जब सत्तर बरस पूरे होंगे, तो मैं शाह-ए-बाबुल को और उस क़ौम को और कसदियों के मुल्क को, उनकी बदकिरदारी की वजह से सज़ा दूँगा; और मैं उसे ऐसा उजाड़ूँगा कि हमेशा तक वीरान रहे।¹³~और मैं उस मुल्क पर अपनी सब बातें जो मैंने उसके बारे में कहीं, या'नी वह सब जो इस किताब में लिखी हैं, जो यरमियाह ने नबुव्वत करके सब क़ौमों को कह सुनाई, पूरी करूँगा।¹⁴~कि उनसे, हाँ, उन्हीं से बहुत सी क़ौमों और बड़े-बड़े बादशाह गुलाम के जैसी खिदमत लेंगे; तब मैं उनके आ'माल के मुताबिक़ और उनके हाथों के कामों के मुताबिक़ उनको बदला दूँगा।"

¹⁵चूँकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने मुझे फ़रमाया, "ग़ज़ब की मय का यह प्याला मेरे हाथ से ले और उन सब क़ौमों को जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, पिला,

¹⁶~कि वह पिएँ और लड़खड़ाएँ, और उस तलवार की वजह से जो मैं उनके बीच चलाऊँगा बेहवास हों।'

¹⁷~इसलिए मैंने खुदावन्द के हाथ से वह प्याला लिया, और उन सब क़ौमों को जिनके पास खुदावन्द ने मुझे भेजा था पिलाया;¹⁸~या'नी यरुशलीम और यहूदाह के शहरों को और उसके बादशाहों और हाकिम को, ताकि वह बर्बाद हों और हैरानी और सुस्कार और ला'नत का ज़रिया' ठहरें, जैसे अब हैं;

¹⁹~शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन को, और उसके मुलाज़िम् और उसके हाकिम और उसके सब लोगों को;²⁰और सब मिले-जुले लोगों, और 'ऊज़ की ज़मीन के सब बादशाहों और फ़िलिस्तिनियों की सरज़मीन के सब बादशाहों, और अश्कलोन और ग़ज़ज़ा और अक़ून और अशदूद के बाक़ी लोगों को;²¹~अदोम और मोआब और बनी 'अम्मोन को;

²²और सूर के सब बादशाहों, और सैदा के सब बादशाहों, और समन्दर पार के बहरी मुल्कों के बादशाहों को;²³~ददान और तैमा और बूज़, और उन सब को जो गाओदुम दाढ़ी रखते हैं;

²⁴~और 'अरब के सब बादशाहों, और उन मिले-जुले लोगों के सब बादशाहों को जो वीराने में बसते हैं;²⁵~और ज़िमरी के सब बादशाहों और 'ऐलाम के सब बादशाहों और मादै के सब बादशाहों को;²⁶~और उत्तर के सब बादशाहों को जो नज़दीक और जो दूर हैं, एक दूसरे के साथ, और दुनिया की सब सल्तनतों को जो इस ज़मीन पर हैं; और उनके बा'द शेशक" का बादशाह पिएगा।

²⁷~"और तू उनसे कहेगा कि 'इस्राईल का खुदा, रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि तुम पियो और मस्त हो और तय करो, और गिर पड़ो और फिर न उठो, उस तलवार की वजह से जो मैं तुम्हारे बीच भेजूँगा।²⁸~"और यूँ होगा कि अगर वह पीने को तेरे हाथ से प्याला लेने से इन्कार करें, तो उनसे कहना कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: यक़ीनन तुम को पीना होगा।²⁹~क्योंकि~देख, मैं इस शहर पर जो मेरे नाम से कहलाता है आफ़त लाना शुरू' करता हूँ और क्या तुम साफ़ बेसज़ा छूट जाओगे? तुम बेसज़ा न छूटोगे, क्योंकि मैं ज़मीन के सब बाशिन्दों पर तलवार को तलब करता हूँ, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।"

³⁰~इसलिए तू यह सब बातें उनके खिलाफ़ नबुव्वत से बयान कर, और उनसे कह दे कि: 'खुदावन्द बुलन्दी पर से गरजेगा और अपने पाक मकान से ललकारेगा, वह बड़े ज़ोर-ओ-शोर से अपनी चरागाह पर गरजेगा; अंगूर लताड़ने वालों की तरह वह ज़मीन के सब बाशिन्दों को ललकारेगा।³¹~एक ग़ौगा ज़मीन की शरहदों तक पहुँचा है क्योंकि खुदावन्द क़ौमों से झगड़ेगा, वह तमाम बशर को 'अदालत में लाएगा, वह शरीरों को तलवार के हवाले करेगा, खुदावन्द फ़रमाता है।"

³²~'रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: देख, क़ौम से क़ौम तक बला नाज़िल होगी, और ज़मीन की सरहदों से एक सख़्त तूफ़ान खड़ा होगा।³³~और खुदावन्द के मक्कतूल उस रोज़ ज़मीन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़े होंगे; उन पर कोई नौहा न करेगा, न वह जमा' किए जाएँगे, न दफ़न होंगे; वह खाद की~तरह इस ज़मीन पर पड़े रहेंगे।

³⁴~ऐ चरवाहो, वावैला करो और चिल्लाओ; और ऐ गल्ले के सरदारों, तुम खुद राख में लेट जाओ, क्योंकि तुम्हारे क़त्ल के दिन आ पहुँचे हैं। मैं तुम को चकनाचूर करूँगा, तुम नफ़ीस बर्तन की तरह गिर जाओगे।³⁵~और न चरवाहों को भागने की कोई राह मिलेगी, न गल्ले के सरदारों को बच निकलने की।³⁶~चरवाहों की फ़रियाद की आवाज़ और गल्ले के सरदारों का नौहा है; क्योंकि खुदावन्द ने उनकी चरागाह को बर्बाद किया है,

³⁷~और सलामती के भेड़ खाने खुदावन्द के ग़ज़बनाक गुस्से से बर्बाद हो गए।³⁸~वह जवान शेर की तरह अपनी कमीनगाह से निकला है; यक़ीनन सितमगर के जुल्म से और उसके क्रहर की शिदत से उनका मुल्क वीरान हो गया।"

Chapter 26

¹~ शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम-बिन-यूसियाह की बादशाही के शुरू' में यह कलाम खुदावन्द की तरफ से नाज़िल हुआ,²कि "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तू खुदावन्द के घर के सहन में खड़ा हो, और यहूदाह के सब शहरों के लोगों से जो खुदावन्द के घर में सिज्दा करने को आते हैं, वह सब बातें जिनका मैंने तुझे हुक्म दिया है कि उनसे कहे, कह दे; एक लफ़्ज़ भी कम न करा।³~शायद वह सुने और हर एक अपने बुरे चाल चलन से बाज़ आए, और मैं भी उस 'अज़ाब को जो उनकी बद'आमाली की वजह से उन पर लाना चाहता हूँ, बाज़ रखूँ।

⁴और तू उनसे कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: अगर तुम मेरी न सुनोगे कि मेरी शरी'अत पर, जो मैंने तुम्हारे सामने रखी 'अमल करो,⁵~और मेरे खिदमतगुज़ार नबियों की बातें सुनो जिनको मैंने तुम्हारे पास भेजा मैंने उनको सही वक़्त पर" भेजा, लेकिन तुम ने न सुना;⁶तो मैं-इस घर को सैला कि तरह कर डालूँगा, और इस शहर को ज़मीन की सब क़ौमों के नज़दीक ला'नत का ज़रिया' ठहराऊँगा।' "

⁷~चुनाँचे काहिनो और नबियों और सब लोगों ने यरमियाह को खुदावन्द के घर में यह बातें कहते सुना।⁸और यूँ हुआ कि जब यरमियाह वह सब बातें कह चुका जो खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था कि सब लोगों से कहे, तो काहिनो और नबियों और सब लोगों ने उसे पकड़ा और कहा कि तू यकीनन क़त्ल किया जाएगा!

⁹~तू ने क्यूँ खुदावन्द का नाम लेकर नबुव्वत की और कहा, 'यह घर सैला की तरह होगा, और यह शहर वीरान और ग़ैरआबाद होगा'?" और सब लोग खुदावन्द के घर में यरमियाह के पास जमा' हुए।

¹⁰~और यहूदाह के हाकिम यह बातें सुनकर बादशाह के घर से खुदावन्द के घर में आए, और खुदावन्द के घर के नये फाटक के मदखल पर बैठे।¹¹~और काहिनो और नबियों ने हाकिम से और सब लोगों से मुखातिब होकर कहा कि यह शख्स वाजिब-उल-क़त्ल है क्यूँकि इसने इस शहर के खिलाफ़ नबुव्वत की है, जैसा कि तुम ने अपने कानों से सुना।"¹²~तब यरमियाह ने सब हाकिम और तमाम लोगों से मुखातिब होकर कहा कि "खुदावन्द ने मुझे भेजा कि इस घर और इस शहर के खिलाफ़ वह सब बातें जो तुम ने सुनी हैं, नबुव्वत से कहूँ।

¹³~इसलिए अब तुम अपने चाल चलन और अपने आ'माल को दुरुस्त करो, और खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ को सुनो, ताकि खुदावन्द उस 'अज़ाब से जिसका तुम्हारे खिलाफ़ 'ऐलान किया है बाज़ रहे।¹⁴~और देखो, मैं तो तुम्हारे क़ाबू में हूँ जो कुछ तुम्हारी~नज़र में ख़ुब-ओ-रास्त हो मुझसे करो।¹⁵~लेकिन यकीन जानो कि अगर तुम मुझे क़त्ल करोगे, तो बेगुनाह का खून अपने आप पर और इस शहर पर और इसके बाशिन्दों पर लाओगे; क्यूँकि हक़ीक़त में खुदावन्द ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे कानों में ये सब बातें कहूँ।"

¹⁶~तब हाकिम और सब लोगों ने काहिनो और नबियों से कहा, "यह शख्स वाजिब-उल-क़त्ल नहीं क्यूँकि उसने खुदावन्द हमारे खुदा के नाम से हम से कलाम किया।"¹⁷~तब मुल्क के चंद बुजुर्ग उठे और कुल जमा'अत से मुखातिब होकर कहने लगे,

¹⁸कि "मीकाह मोरश्ती ने शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह के दिनों में नबुव्वत की, और यहूदाह के सब लोगों से मुखातिब होकर यूँ कहा, 'रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: सियून् खेत की तरह जोता जाएगा और यरुशलीम खण्डर हो जाएगा, और इस घर का पहाड़ जंगल की ऊँची जगहों की तरह होगा।"¹⁹~क्या शाह-ए-यहूदाह हिज़क्रियाह और तमाम यहूदाह ने उसको क़त्ल किया? क्या वह खुदावन्द से न डरा, और खुदावन्द से मुनाजात न की? और खुदावन्द ने उस 'अज़ाब को जिसका उनके खिलाफ़ 'ऐलान किया था, बाज़ न रख्खा? तब यूँ हम अपनी जानों पर बड़ी आफ़त लाएँगे।"

²⁰~फिर एक और शख्स ने खुदावन्द के नाम से नबुव्वत की, या'नी ऊरियाह-बिनसमा'याह ने जो करयत या'रीम का था; उसने इस शहर और मुल्क के खिलाफ़ यरमियाह की सब बातों के मुताबिक़ नबुव्वत की,²¹और जब यहूयक्रीम बादशाह और उसके सब जंगी मर्दों और हाकिम ने उसकी बातें सुनीं,~तो बादशाह ने उसे क़त्ल करना चाहा; लेकिन ऊरियाह यह सुनकर डरा और मिस्र को भाग गया।

²²और यहूयक्रीम बादशाह ने चंद आदमियों या'नी इलनातन-बिन-'अक्बूर और उसके साथ कुछ और आदमियों को मिस्र में भेजा;²³और वह ऊरियाह को मिस्र से निकाल लाए, और उसे यहूयक्रीम बादशाह के पास पहुँचाया; और उसने उसको तलवार से क़त्ल किया और उसकी लाश को 'अवाम के क़ब्रिस्तान में फिकवा दिया।²⁴लेकिन अख़ीक़ाम-बिन-साफ़न यरमियाह का दस्तगीर था, ताकि वह क़त्ल होने के लिए लोगों के हवाले न किया जाए।

Chapter 27

¹शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह-बिन-यूसियाह-की सल्तनत के शुरू' में खुदावन्द की तरफ से यह कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,²~कि खुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया कि: "बन्धन और जुए बनाकर अपनी गर्दन पर डाल,³~और उनको शाह-ए-अदोम, शाह-ए-मोआब, शाह-ए-बनी 'अम्मोन, शाह-ए-सूर और शाह-ए-सैदा के पास उन क्रासिदों के हाथ भेज, जो यरुशलीम में शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह के पास आए हैं;⁴और तू उनको उनके आक्राओं के वास्ते ताकीद कर, 'रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम अपने आक्राओं से यूँ कहना

⁵~कि मैंने ज़मीन को और इन्सान-ओ-हैवान को जो इस ज़मीन पर हैं, अपनी बड़ी कुदरत और बलन्द बाज़ू से पैदा किया; और उनको जिसे मैंने मुनासिब जाना बख़्शा⁶~और अब मैंने यह सब ममलुकतें अपने खिदमत गुज़ार शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र के क़ब्ज़े में कर दी हैं, और मैदान के जानवर भी उसे दिए, कि उसके काम आएँ!⁷~और सब क़ौमों उसकी और उसके बेटे और उसके पोते की खिदमत करेंगी, जब तक कि उसकी ममलुकत का वक़्त न आए; तब बहुत सी क़ौमों और बड़े-बड़े बादशाह उससे खिदमत करवाएँगे।

⁸~खुदावन्द फ़रमाता है: जो क़ौम और जो सल्तनत उसकी, या'नी शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र की खिदमत न करेगी और अपनी गर्दन शाह-ए-बाबुल के जूए तले न झूकाएगी, उस क़ौम को मैं तलवार और काल और वबा से सज़ा दूँगा, यहाँ तक कि मैं उसके हाथ से उनको हलाक कर डालूँगा।

⁹~इसलिए तुम अपने नबियों और ग़ैबदानो और ख़्वाबबीनों और शगूनीयों और जादूगरों की न सुनो, जो तुम से कहते हैं कि तुम शाह-ए-बाबुल की खिदमतगुज़ारी न करोगे।¹⁰क्यूँकि वह तुम से झूटी नबुव्वत करते हैं, ताकि तुम को तुम्हारे मुल्क से आवारा करें, और मैं तुम को निकाल दूँ और तुम हलाक हो जाओ।¹¹~लेकिन जो क़ौम अपनी गर्दन शाह-ए-बाबुल के जूए तले रख देगी और उसकी खिदमत करेगी, उसको मैं उसकी ममलुकत में रहने दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और वह उसमें खेती करेगी और उसमें बसेगी।" "

¹²~इन सब बातों के मुताबिक़ मैंने शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह से कलाम किया और कहा कि "अपनी गर्दन शाह-ए-बाबुल के जूए तले रख कर उसकी और उसकी क़ौम की खिदमत करो और ज़िन्दा रहो।¹³~तू और तेरे लोग तलवार और काल और वबा से क्यूँ मरोगे, जैसा कि खुदावन्द ने उस क़ौम के बारे में फ़रमाया है, जो शाह-ए-बाबुल की खिदमत न करेगी?

¹⁴~और उन नबियों की बातें न सुनो, जो तुम से कहते हैं कि तुम शाह-ए-बाबुल की खिदमत न करोगे; क्यूँकि वह तुम से झूटी नबुव्वत करते हैं।¹⁵~क्यूँकि खुदावन्द फ़रमाता है मैंने उनको नहीं भेजा, लेकिन वह मेरा नाम लेकर झूटी नबुव्वत करते हैं; ताकि मैं तुम को निकाल दूँ और तुम उन नबियों के साथ जो तुम से नबुव्वत करते हैं हलाक हो जाओ।"

¹⁶मैंने काहिनों से और उन सब लोगों से भी मुख़ातिब होकर कहा, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: अपने नबियों की बातें न सुनो, जो तुम से नबुव्वत करते और कहते हैं कि 'देखो, खुदावन्द के घर के बर्तन अब थोड़ी ही देर में बाबुल से वापस आ जाएँगे," क्यूँकि वह तुम से झूटी नबुव्वत करते हैं।¹⁷~उनकी न सुनो, शाह-ए-बाबुल की खिदमतगुज़ारी करो और ज़िन्दा रहो; यह शहर क्यूँ वीरान हो?¹⁸~लेकिन अगर वह नबी हैं, और खुदावन्द का कलाम उनकी अमानत में है, तो वह रब्ब-उल-अफ़वाज से शफ़ा'अत करें, ताकि वह बर्तन जो खुदावन्द के घर में और शाह-ए-यहूदाह के घर में और यरुशलीम में बाक़ी हैं, बाबुल को न जाएँ।

¹⁹क्यूँकि सुतूनों के बारे में और बड़े हौज़ और कुर्सियों और बर्तनों के बारे में जो इस शहर में बाक़ी हैं, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है,²⁰~या'नी जिनको शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र नहीं ले गया, जब वह यहूदाह के बादशाह यकूनियाह-बिन-यहूयक़ीम को यरुशलीम से, और यहूदाह और यरुशलीम के सब शुरफ़ा को गुलाम करके बाबुल को ले गया;

²¹~हाँ, रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, उन बर्तनों के बारे में जो खुदावन्द के घर में और शाह-ए-यहूदाह के महल में और यरुशलीम में बाक़ी हैं, यूँ फ़रमाता है²²कि वह बाबुल में पहुँचाए जाएँगे; और उस दिन तक कि मैं उनको याद फ़रमाऊँ वहाँ रहेंगे, खुदावन्द ~फ़रमाता है उस वक़्त मैं उनको उठा लाऊँगा और फिर इस मकान में रख दूँगा।"

Chapter 28

¹और उसी साल शाह-ए-यहूदाह सिद्कियाह ~की सल्तनत के शुरू' में, चौथे बरस के पाँचवें महीने में, यूँ हुआ कि जिबा'ऊनी 'अज़ूर के बेटे हननियाह नबी ने खुदावन्द के घर में काहिनों और सब लोगों के सामने मुझसे मुखातिब होकर कहा,²~'रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: मैंने शाह-ए-बाबुल का जुआ तोड़ डाला है,

³~दो ही बरस के अन्दर मैं खुदावन्द के घर के सब बर्तन, जो शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र इस मकान से बाबुल को ले गया, इसी मकान में वापस लाऊँगा।⁴शाह-ए-यहूदाह यकूनियाह-बिन-यहूयक्रीम को और यहूदाह के सब गुलामों को जो बाबुल को गए थे, फिर इसी जगह लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; क्योंकि मैं शाह-ए-बाबुल के जूए को तोड़ डालूँगा।"

⁵~तब यरमियाह नबी ने काहिनों और सब लोगों के सामने, जो खुदावन्द के घर में खड़े थे, हननियाह नबी से कहा,⁶~"हाँ," यरमियाह नबी ने कहा, "आमीन! खुदावन्द ऐसा ही करे, खुदावन्द तेरी बातों को जो तू ने नबुव्वत से कहीं, पूरा करे कि खुदावन्द के घर के बर्तनों को और सब गुलामों को बाबुल से इस मकान में वापस लाए।"⁷~तो भी अब यह बात जो मैं तेरे और सब लोगों के कानों में कहता हूँ सुन;

⁸~उन नबियों ने जो मुझसे और तुझ से पहले गुज़रे ज़माने में थे, बहुत से मुल्कों और बड़ी-बड़ी सल्तनतों के हक़ में, जंग और बला और वबा की नबुव्वत की है।

⁹~वह नबी जो सलामती की खबर देता है, जब उस नबी का कलाम पूरा हो जाए तो मा'लूम होगा कि हक़ीक़त में खुदावन्द ने उसे भेजा है।"

¹⁰~तब हननियाह नबी ने यरमियाह नबी की गर्दन पर से जुआ उतारा और उसे तोड़ डाला;¹¹~और हननियाह ने सब लोगों के सामने इस तरह कलाम किया, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: मैं इसी तरह शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र का जुआ सब क्रौमों की गर्दन पर से, दो ही बरस के अन्दर तोड़ डालूँगा।" तब यरमियाह नबी ने अपनी राह ली।

¹²जब हननियाह नबी यरमियाह नबी की गर्दन पर से जुआ तोड़ चुका था, तो खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:¹³~कि "जा, और हननियाह से कह कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तूने लकड़ी के जुओं को तो तोड़ा, लेकिन उनके बदले में लोहे के जूए बना दिए।"¹⁴~क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने इन सब क्रौमों की गर्दन पर लोहे का जुआ डाल दिया है, ताकि वह शाह-ए-बाबुल नबूकदनज़र की खिदमत करें; तब वह उसकी खिदमतगुज़ारी करेगी, और मैंने मैदान के जानवर भी उसे दे दिए हैं।" "

¹⁵~तब यरमियाह नबी ने हननियाह नबी से कहा, "ऐ हननियाह, अब सुन; खुदावन्द ने तुझे नहीं भेजा, लेकिन तू इन लोगों को झूठी उम्मीद दिलाता है।"¹⁶इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "देख, मैं तुझे इस ज़मीन पर से निकाल दूँगा; तू इसी साल मर जाएगा क्योंकि तूने खुदावन्द के खिलाफ़ फ़ितनाअंगेज़ बातें कही हैं।"

¹⁷~चुनाँचे उसी साल के सातवें महीने हननियाह नबी मर-गया।

Chapter 29

¹अब यह उस खत की बातें हैं जो यरमियाह नबी ने यरुशलीम से, बाकी बुजुर्गों को जो गुलाम हो गए थे, और काहिनों और नबियों और उन सब लोगों को जिनको नबूकदनेज़र यरुशलीम से गुलाम करके बाबुल ले गया था²(उसके बाद यकूनियाह बादशाह और उसकी वालिदा और ख्वाजासरा और यहूदाह और यरुशलीम के हाकिम और कारीगर और लुहार यरुशलीम से चले गए थे)³~अल'आसा-बिन-साफ़न और जमरियाह-बिन-खिलक्रियाह के हाथ (जिनको शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह ने बाबुल में शाह-ए-बाबुल नबूकदनेज़र के पास भेजा) इरसाल किया और उसने कहा,

⁴'रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, उन सब गुलामों से जिनको मैंने यरुशलीम से गुलाम करवा कर बाबुल भेजा है, यूँ फ़रमाता है:⁵~तुम घर बनाओ और~उन में बसो, और बाग़ लगाओ और उनके~फल खाओ,

⁶~बीवियाँ करो ताकि तुम से बेटे-बेटियाँ पैदा हों, और अपने बेटों के लिए बीवियाँ लो और अपनी बेटियाँ शौहरों को दो ताकि उनसे बेटे-बेटियाँ पैदा हों, और तुम वहाँ फलो-फूलो और कम न हो।⁷ और उस शहर की ख़ैर मनाओ, जिसमें मैंने तुम को गुलाम करवा कर भेजा है, और उसके लिए खुदावन्द से दु'आ करो; क्योंकि उसकी सलामती में तुम्हारी सलामती होगी।

⁸क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: वह नबी जो तुम्हारे बीच हैं और तुम्हारे ग़ैबदान तुम को गुमराह न करें, और अपने ख़्वाबबीनों को, जो तुम्हारे ही कहने से ख़्वाब देखते हैं न मानो;⁹क्योंकि वह मेरा नाम लेकर तुम से झूठी नबुव्वत करते हैं, मैंने उनको नहीं भेजा, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁰"क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: जब बाबुल में सत्तर बरस गुज़र चुकेंगे, तो मैं तुम को याद फ़रमाऊँगा और तुम को इस मकान में वापस लाने से अपने नेक क़ौल को पूरा करूँगा।¹¹क्योंकि मैं तुम्हारे हक़ में अपने ख़यालात को जानता हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, या'नी सलामती के ख़यालात, बुराई के नहीं; ताकि मैं तुम को नेक अन्जाम की उम्मीद बख़्शूँ।

¹²~तब तुम मेरा नाम लोगे, और मुझसे दु'आ करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा।¹³~और तुम मुझे ढूँडोगे और पाओगे, जब पूरे दिल से मेरे तालिब होगे।¹⁴~और मैं तुम को मिल जाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं तुम्हारी गुलामी को ख़त्म कराऊँगा और तुम को उन सब क़ौमों से और सब जगहों से, जिनमें मैंने तुम को हाँक दिया है, जमा' कराऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; और मैं तुम को उस जगह में जहाँ से मैंने तुम को गुलाम करवाकर भेजा, वापस लाऊँगा।

¹⁵~"क्योंकि तुम ने कहा कि 'खुदावन्द ने बाबुल में हमारे लिए नबी खड़े किए।'¹⁶~इसलिए खुदावन्द उस बादशाह के बारे में जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, और उन सब लोगों के बारे में जो इस शहर में बसते हैं, या'नी तुम्हारे भाइयों के बारे में जो तुम्हारे साथ गुलाम होकर नहीं गए, यूँ फ़रमाता है:¹⁷~'रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि देखो, मैं उन पर तलवार और काल और वबा भेजूँगा और उनको ख़राब अंजीरों की तरह बनाऊँगा जो ऐसे ख़राब हैं कि खाने के क़ाबिल नहीं।

¹⁸~और मैं तलवार और काल और वबा से उनका पीछा करूँगा, और मैं उनको ज़मीन की सब सल्तनतों के हवाले करूँगा कि धक्के खाते फिरें और सताए जाएँ, और सब क़ौमों के बीच जिनमें मैंने उनको हाँक दिया है, ला'नत और हैरत और सुस्कार और मलामत का ज़रिया' हों;¹⁹~इसलिए कि उन्होंने मेरी बातें नहीं सुनी खुदावन्द फ़रमाता है जब मैंने अपने खिदमतगुज़ार नबियों को उनके पास भेजा, हों, मैंने उनको सही वक़्त पर भेजा, लेकिन तुम ने न सुना, खुदावन्द फ़रमाता है।"

²⁰~'इसलिए तुम, ऐ गुलामी के सब लोगों, जिनको मैंने यरुशलीम से बाबुल को भेजा, खुदावन्द का कलाम सुनो:²¹'रब्ब-उल-अफ़वाज इस्राईल का खुदा अख़ीअब-बिन-कुलायाह के बारे में और सिदक्रियाह-बिन-मासियाह के बारे में, जो मेरा नाम लेकर तुम से झूठी नबुव्वत करते हैं, यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं उनको शाह-ए-बाबुल नबूकदनेज़र के हवाले करूँगा, और वह उनको तुम्हारी आँखों के सामने क़त्ल करेगा;

²²~और यहूदाह के सब गुलाम जो बाबुल में हैं, उनकी ला'नती मसल बनाकर कहा करेंगे, कि खुदावन्द तुझे सिदक्रियाह और अख़ीअब की तरह करे, जिनको शाह-ए-बाबुल ने आग पर कबाब किया,²³~क्योंकि उन्होंने इस्राईल में बेवकूफी की और अपने पड़ोसियों की बीवियों से ज़िनाकारी की, और मेरा नाम लेकर झूठी बातें कहीं जिनका मैंने उनको हुक्म नहीं दिया था, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं जानता हूँ और गवाह हूँ।

²⁴और नख़लामी समा'याह से कहना,²⁵कि "रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: इसलिए कि तूने यरुशलीम के सब लोगों को, और सफ़नियाह-बिन-मासियाह काहिन और सब काहिनों को अपने नाम से यूँ खत लिख भेजे,²⁶~कि 'खुदावन्द ने यहूदाह' काहिन की जगह तुझको काहिन मुक़र्रर किया कि तू खुदावन्द के घर के नाज़िमों में हो, और हर एक मजनून और नबुव्वत के मुद्द'ई को क़ैद करे और काठ में डाले।

²⁷तब तूने 'अन्तोती यरमियाह की जो कहता है कि मैं तुम्हारा नबी हूँ, गोशमाली क्यों नहीं की?'²⁸क्योंकि उसने बाबुल में यह कहला भेजा है कि ये मुद्दत दराज़ है; तुम घर बनाओ और बसो, और बाग़ लगाओ और उनका फल खाओ।'²⁹ और सफ़नियाह काहिन ने यह खत पढ़ कर यरमियाह नबी को सुनाया।

³⁰~तब खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ कि:³¹~"गुलामी के सबलोगों को कहला भेज, 'खुदावन्द नख़लामी समायाह के बारे में यूँ फ़रमाता है: इसलिए कि समा'याह ने तुम से नबुव्वत की, हालाँकि मैंने उसे नहीं भेजा, और उसने तुम को झूठी उम्मीद दिलाई;³²~इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं नख़लामी समा'याह को और उसकी नसल को सज़ा दूँगा; उसका कोई आदमी न होगा जो इन लोगों के बीच बसे, और वह उस नेकी को जो मैं अपने लोगों से करूँगा हरगिज़ न देखेगा, खुदावन्द फ़रमाता है, क्योंकि उसने खुदावन्द के ख़िलाफ़ फ़ितनाअंगेज़ बातें कही हैं |

Chapter 30

¹~वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ²~"खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि: यह सब बातें जो मैंने तुझ से कहीं किताब में लिखी³~क्योंकि देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं अपनी क़ौम इस्राईल और यहूदाह की गुलामी को खत्म कराऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; और मैं उनको उस मुल्क में वापस लाऊँगा, जो मैंने उनके बाप-दादा को दिया, और वह उसके मालिक होंगे।"

⁴~और वह बातें जो खुदावन्द ने इस्राईल और यहूदाह के बारे में फ़रमाई यह हैं:⁵कि "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: हम ने हड़बड़ी की आवाज़ सुनी, ख़ौफ़ है और सलामती नहीं।

⁶अब पूछो और देखो, क्या कभी किसी मर्द को पैदाइश का दर्द लगा? क्या वजह है कि मैं हर एक मर्द को ज़च्चा की तरह अपने हाथ कमर पर रखे देखता हूँ और सबके चेहरे ज़र्द हो गए हैं?⁷~अफ़सोस! वह दिन बड़ा है, उसकी मिसाल नहीं; वह या'क़ूब की मुसीबत का वक़््त है, लेकिन वह उससे रिहाई पाएगा।

⁸और उस रोज़ यूँ होगा, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, कि मैं उसका जूआ तेरी गर्दन पर से तोड़ूँगा और तेरे बन्धनों को खोल डालूँगा; और बेगाने तुझ से फिर ख़िदमत न कराएँगे।⁹~लेकिन वह खुदावन्द अपने खुदा की और अपने बादशाह दाऊद की, जिसे मैं उनके लिए खड़ा करूँगा, ख़िदमत करेंगे।

¹⁰~"इसलिए ऐ मेरे खादिम या'क़ूब, हिरासान न हो, खुदावन्द फ़रमाता है; और ऐ इस्राईल, घबरा न जा; क्योंकि देख, मैं तुझे दूर-से और तेरी औलाद को गुलामी की सरज़मीन से छुड़ाऊँगा; और या'क़ूब वापस आएगा और आराम-ओ-राहत से रहेगा और कोई उसे न डराएगा।¹¹~क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, ताकि तुझे बचाऊँ: अगरचे मैं सब क़ौमों को जिनमें मैंने तुझे तितर-बितर किया तमाम कर डालूँगा तोभी तुझे तमाम न करूँगा; बल्कि तुझे मुनासिब तम्बीह करूँगा और हरगिज़ बे सज़ा न छोड़ूँगा।

¹²~"क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तेरी ख़स्तगी ला-इलाज़ और तेरा ज़ख़्म सख़्त दर्दनाक है।¹³तेरा हिमायती कोई नहीं जो तेरी मरहम पट्टी करे तेरे पास कोई शिफ़ा बख़्श दवा नहीं।

¹⁴~तेरे सब चाहने वाले तुझे भूल गए, वह तेरे तालिब नहीं हैं, हक़ीक़त में मैंने तुझे दुश्मन की तरह घायल किया और संग दिल की तरह तादीब की; इसलिए कि तेरी बदकिरदारी बढ़ गई और तेरे गुनाह ज़्यादा हो गए।¹⁵~तू अपनी ख़स्तगी की वजह से क्यूँ चिल्लाती है, तेरा दर्द ला-इलाज़ है; इसलिए कि तेरी बदकिरदारी बहुत बढ़-गई और तेरे गुनाह ज़्यादा हो गए, मैंने तुझसे ऐसा किया।

¹⁶~तो भी वह सब जो तुझे निगलते हैं, निगले जाएँगे, और तेरे सब दुश्मन गुलामी में जाएँगे, और जो तुझे ग़ारत करते हैं, खुद ग़ारत होंगे; और मैं उन सबको जो तुझे लूटते हैं लुटा दूँगा।¹⁷क्योंकि मैं फिर तुझे तंदुरुस्ती और तेरे ज़ख़्मों से शिफ़ा बख़्शूँगा खुदावन्द फ़रमाता है क्योंकि उन्होंने तेरा मरदूदा रख़ा कि यह सिय्यून है, जिसे कोई नहीं पृछता

¹⁸"खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं या'क़ूब के खेमों की गुलामी को खत्म-कराऊँगा, और उसके घरों पर रहमत करूँगा; और शहर अपने ही पहाड़ पर बनाया जाएगा और क़स्र अपने ही मक़ाम पर आबाद हो जाएगा।¹⁹~और उनमें से शुक्रगुज़ारी और खुशी करने वालों की आवाज़ आएगी; और मैं उनको अफ़ज़ाइश बख़्शूँगा, और वह थोड़े न होंगे; मैं उनको शौक़त बख़्शूँगा और वह हक़ीर न होंगे।

²⁰और उनकी औलाद ऐसी होगी जैसी पहले थी, और उनकी जमा'अत मेरे हुज़ूर में क़ायम होगी, और मैं उन सबको जो उन पर जुल्म करें सज़ा दूँगा।²¹~और उनका हाकिम उन्हीं में से होगा, और उनका फ़रमॉरवाँ उन्हीं के बीच से पैदा होगा और मैं उसे कुर्बत बख़्शूँगा, और वह मेरे नज़दीक आएगा; क्योंकि कौन है जिसने ये ज़ुर'अत की हो कि मेरे पास आए? खुदावन्द फ़रमाता है।²²~और तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा।"

²³~देख, खुदावन्द के ग़ज़बनाक गुस्से की आँधी चलती है! यह तेज़ तूफ़ान शरीरों के सिर पर टूट पड़ेगा।²⁴जब तक यह सब कुछ न हो ले, और खुदावन्द अपने दिल के मक़सद पूरे न कर ले, उसका ग़ज़बनाक गुस्सा खत्म न होगा; तुम आखिरी दिनों में इसे समझोगे।

Chapter 31

¹खुदावन्द फ़रमाता है, "मैं उस वक़्त इस्राईल के सब घरानों का खुदा हूँगा और वह मेरे लोग होंगे।"²~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "इस्राईल में से जो लोग तलवार से बचे, जब वह राहत की तलाश में गए तो वीराने में मक़बूल ठहरे।"³~"खुदावन्द फहले से मुझ पर ज़ाहिर हुआ और कहा कि मैंने तुझ से हमेशा की मुहब्बत रखी; इसीलिए मैंने अपनी शफ़क़त तुझ पर बढ़ाई।

⁴~ऐ इस्राईल की कुंवारी! मैं तुझे फिर आबाद करूँगा और तू आबाद हो जाएगी; तू फिर दफ़ उठाकर आरास्ता होगी, और खुशी करने वालों के नाच में शामिल होने को निकलेगी।⁵~तू फिर सामरिया के पहाड़ों पर ताकिस्तान लगाएगी, बाग़ लगाने वाले लगायेंगे और उसका फल खाएँगे।⁶~क्योंकि एक दिन आएगा कि इफ़्राईम की पहाड़ियों पर निगहबान पुकारेंगे कि 'उठो, हम सिय्यून पर खुदावन्द अपने खुदा के सामने चलें।' "

⁷~क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "या'कूब के लिए खुशी से गाओ और क़ौमों के सरताज के लिए ललकारो; 'ऐलान करो, हम्द करो और कहो, 'ऐ खुदावन्द, अपने लोगों को, या'नी इस्राईल के बक्रिये को बचा।'

⁸~देखो, मैं उत्तरी मुल्क से उनको लाऊँगा, और ज़मीन की सरहदों से उनको जमा' करूँगा, और उनमें अंधे, और लंगड़े, और हामिला और ज़च्चा सब होंगे; उनकी बड़ी जमा' अत यहाँ वापस आएगी।⁹~वह रोते और मुनाजात करते हुए आएँगे, मैं उनकी रहबरी करूँगा; मैं उनको पानी की नदियों की तरफ़ राह-ए-रास्त पर चलाऊँगा, जिसमें वह ठोकर न खाएँगे; क्योंकि मैं इस्राईल का बाप हूँ और इफ़्राईम मेरा पहलौठा है।

¹⁰~"ऐ क़ौमों, खुदावन्द का कलाम सुनो, और दूर के जज़ीरों में 'ऐलान करो; और कहो, 'जिसने इस्राईल को तितर-बितर किया, वही उसे जमा' करेगा और उसकी ऐसी निगहबानी करेगा, जैसी ग़ड़रिया अपने गल्ले की,"¹¹~क्योंकि खुदावन्द ने या'कूब का फ़िदिया दिया है, और उसे उसके हाथ से जो उससे ताक़तवर था रिहाई बख़्शी है।

¹²~तब वह आएँगे और सिय्यून की चोटी पर गाएँगे, और खुदावन्द की ने'मतों या'नी अनाज और मय और तेल, और गाय-बैल के और भेड़-बकरी के बच्चों की तरफ़ इकट्ठे रवों होंगे; और उनकी जान सैराब बाग़ की तरह होगी, और वह फिर कभी ग़मज़दा न होंगे।

¹³~उस वक़्त कुवॉरियाँ और पीर-ओ-जवान खुशी से रक्स करेंगे, क्योंकि मैं उनके ग़म को खुशी से बदल दूँगा और उनको तसल्ली देकर ग़म के बा'द खुश करूँगा।¹⁴~मैं काहिनों की जान को चिकनाई से सेर करूँगा, और मेरे लोग मेरी ने'मतों से आसूदा होंगे, खुदावन्द फ़रमाता है।"

¹⁵~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "रामा में एक आवाज़ सुनाई दी, नौहा और ज़ार-ज़ार रोना; राखिल अपने बच्चों को रो रही है, वह अपने बच्चों के बारे में तसल्ली पज़ीर नहीं होती, क्योंकि वह नहीं हैं।"

¹⁶~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "अपनी रोने की आवाज़ को रोक, और अपनी आँखों को आँसुओं से बाज़ रख; क्योंकि तेरी मेहनत के लिए बदला है, खुदावन्द फ़रमाता है; और वह दुश्मन के मुल्क से वापस आएँगे।"¹⁷~और खुदावन्द फ़रमाता है, तेरी 'आक़बत के बारे में उम्मीद है क्योंकि तेरे बच्चे फिर अपनी हदों में दाखिल होंगे।

¹⁸~हक़ीक़त में मैंने इफ़्राईम को अपने आप पर यूँ मातम करते सुना, 'तू ने मुझे तम्बीह की, और मैंने उस बछड़े की तरह जो सधाया नहीं गया तम्बीह पाई। तू मुझे फेर तो मैं फिरूँगा, क्योंकि तू ही मेरा खुदावन्द खुदा है।"¹⁹~क्योंकि फिरने के बा'द मैंने तौबा की, और तरबियत पाने के बा'द मैंने अपनी रान पर हाथ मारा; मैं शर्मिन्दा बल्कि परेशान खातिर हुआ, इसलिए कि मैंने अपनी जवानी की मलामत उठाई थी।"²⁰~क्या इफ़्राईम मेरा प्यारा बेटा है? क्या वह पसन्दीदा फ़ज़न्द है? क्योंकि जब-जब मैं उसके खिलाफ़ कुछ कहता हूँ, तो उसे जी जान से याद करता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए बेताब है; मैं यक़ीनन उस पर रहमत करूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

²¹~"अपने लिए सुतून खड़े कर, अपने लिए खम्बे बना; उस शाहराह पर दिल लगा, हाँ, उसी राह से जिससे तू गई थी वापस आ। ऐ इस्राईल की ~कुंवारी, अपने इन शहरों में वापस आ।"²²~ऐ नाफ़रमान बेटी, तू कब तक आवारा फिरेगी? क्योंकि खुदावन्द ने ज़मीन पर एक नई चीज़ पैदा की है, कि 'औरत मर्द की हिमायत करेगी।"

²³~रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है: "जब मैं उनके गुलामों को वापस लाऊँगा, तो वह यहूदाह के मुल्क और उसके शहरों में फिर यूँ कहेंगे, "ऐ सदाक़त के घर, ऐ कोह-ए-मुक़द्दस, खुदावन्द तुझे बरकत बख़्शे।"²⁴~और यहूदाह और उसके सब शहर उसमें इकट्ठे आराम करेंगे, किसान और वह जो गल्ले लिए फिरते हैं।"²⁵~क्योंकि मैंने थकी जान को आसूदा, और हर ग़मगीन रूह को सेर किया है।"²⁶~अब मैंने बेदार होकर निगाह की, और मेरी नींद मेरे लिए मीठी थी।

²⁷~"देखो, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं इस्राईल के घर में और यहूदाह के घर में इन्सान का बीज और हैवान का बीज बोऊँगा।"²⁸~और खुदावन्द फ़रमाता है, जिस तरह मैंने उनकी घात में बैठ कर उनको उखाड़ा और ढाया और गिराया और बर्बाद किया और दुख दिया; उसी तरह मैं निगहबानी करके उनको बनाऊँगा और लगाऊँगा।

²⁹~उन दिनों में फिर यूँ न कहेंगे, 'बाप-दादा ने कच्चे अंगूर खाए और औलाद के दाँत खट्टे हो गए।"³⁰~क्योंकि हर एक अपनी ही बदकिरदारी की वजह से मरेगा; हर एक जो कच्चे अंगूर खाता है, उसी के दाँत खट्टे होंगे।

³¹~"देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने के साथ नया 'अहद बाँधूँगा;"³²~उस 'अहद के मुताबिक़ नहीं, जो मैंने उनके बाप-दादा से किया जब मैंने उनकी दस्तगीरी की, ताकि उनको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाऊँ; और उन्होंने मेरे उस 'अहद को तोड़ा अगरचे मैं उनका मालिक था, खुदावन्द फ़रमाता है।

³³~बल्कि यह वह 'अहद है जो मैं उन दिनों के बा'द इस्राईल के घराने से बाँधूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है: मैं अपनी शरी'अत उनके बातिन में रखूँगा, और उनके दिल पर उसे लिखूँगा; और मैं उनका खुदा हूँगा, और वह मेरे लोग होंगे,³⁴~और वह फिर अपने-अपने पड़ोसी और अपने-अपने भाई को यह कह कर ता'लीम नहीं देंगे कि खुदावन्द को पहचानो, क्योंकि छोटे से बड़े तक वह सब मुझे जानेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है; इसलिए कि मैं उनकी बदकिरदारी को बख़्श दूँगा और उनके गुनाह को याद न करूँगा।"

³⁵~खुदावन्द जिसने दिन की रोशनी के लिए सूरज को मुकर्रर किया, और जिसने रात की रोशनी के लिए चाँद और सितारों का निज़ाम क़ायम किया, जो समन्दर को मौजज़न करता है जिससे उसकी लहरें शोर करतीं हैं यूँ फ़रमाता है; उसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज है।³⁶~खुदावन्द फ़रमाता है: "अगर यह निज़ाम मेरे सामने से ख़त्म हो जाए, तो इस्राईल की नसल भी मेरे सामने से जाती रहेगी कि हमेशा तक फिर क़ौम न हो।"

³⁷~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "अगर कोई ऊपर आसमान को नाप सके और नीचे ज़मीन की बुनियाद का पता लगा ले, तो मैं भी बनी-इस्राईल को उनके सब 'आमाल की वजह से रद्द कर दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।"

³⁸~"देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि "यह शहर हननेल के बुर्ज से कोने के फाटक तक खुदावन्द के लिए ता'मीर किया जाएगा।"³⁹~और फिर ज़रीब सीधी कोह-ए-जारेब पर से होती हुई जोआता को घेर लेगी।⁴⁰~और लाशों और राख की तमाम वादी और सब खेत क्रिद्रोन के नाले तक, और घोड़े फाटक के कोने तक पूरब की तरफ़ खुदावन्द के लिए पाक होंगे; फिर वह हमेशा तक न कभी उखाड़ा, न गिराया जाएगा।"

Chapter 32

¹वह कलाम जो शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह के दसवें बरस में जो नबूकदरज़र का अट्टारहवाँ बरस था, खुदावन्द की तरफ़ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ।²उस वक्रत शाह-ए-बाबुल की फ़ौज यरुशलीम का घिराव किए पड़ी थी, और यरमियाह नबी शाह-ए-यहूदाह के घर में कैदखाने के सहन में बन्द था।

³क्योंकि शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह ने उसे यह कह कर कैद किया, "तू क्यूँ नबुव्वत करता और कहता है, कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं इस शहर को शाह-ए-बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह उसे ले लेगा,' और शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह कसदियों के हाथ से न बचेगा, बल्कि ज़रूर शाह-ए-बाबुल के हवाले किया जाएगा, और उससे आमने-सामने बातें करेगा और दोनों की आँखें सामने होंगी।"⁴और वह सिदक्रियाह को बाबुल में ले जाएगा, और जब तक मैं उसको याद न फ़रमाऊँ वह वहीं रहेगा, खुदावन्द फ़रमाता है। हरचन्द तुम कसदियों के साथ जंग करोगे, लेकिन कामयाब न होगे?"

⁵तब यरमियाह ने कहा कि "खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया 'देख, तेरे चचा सलूम का बेटा हनमएल तेरे पास आकर कहेगा कि 'मेरा खेत जो 'अन्तोत में है, अपने लिए खरीद ले; क्यूँकि उसको छुड़ाना तेरा हक़ है।'

⁶तब मेरे चचा का बेटा हनमएल कैदखाने के सहन में मेरे पास आया, और जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया था, मुझसे कहा कि, "मेरा खेत जो 'अन्तोत में बिनयमीन के 'इलाक़े में है, खरीद ले; क्यूँकि यह तेरा मौरूसी हक़ है और उसको छुड़ाना तेरा काम है, उसे अपने लिए खरीद ले।" तब मैंने जाना कि ये खुदावन्द का कलाम है।⁷ और मैंने उस खेत को जो 'अन्तोत में था, अपने चचा के बेटे हनमएल से खरीद लिया और नक़द सत्तर मिस्काल चांदी तोल कर उसे दी।

¹⁰और मैंने एक कबाला लिखा और उस पर मुहर की और गवाह ठहराए, और चाँदी तराजू में तोलकर उसे दी।¹¹ तब मैंने उस क़बाले को लिया, या'नी वह जो क़ानून और दस्तूर के मुताबिक़ सर-ब-मुहर था, और वह जो खुला था;¹² और मैंने उस क़बाले को अपने चचा के बेटे हनमएल के सामने और उन गवाहों के सामने जिन्होंने अपने नाम क़बाले पर लिखे थे, उन सब यहूदियों के सामने जो कैदखाने के सहन में बैठे थे, बारूक-बिन-नैयिरियाह-बिन-महसियाह को सौंपा।

¹³और मैंने उनके सामने बारूक की ताकीद की।¹⁴ कि 'रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: यह कागज़ात ले, या'नी यह क़बाला जो सर-ब-मुहर है, और यह जो खुला है, और उनको मिट्टी के बर्तन में रख ताकि बहुत दिनों तक महफूज़ रहें।¹⁵ क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: इस मुल्क में फिर घरों और ताकिस्तानों की खरीद-ओ-फ़रोख़ होगी।'

¹⁶बारूक-बिन-नैयिरियाह को क़बाला देने के बा'द, मैंने खुदावन्द से यूँ दु'आ की:¹⁷ 'आह, ऐ खुदावन्द खुदा! देख, तूने अपनी 'अज़ीम कुदरत और अपने बुलन्द बाज़ू से आसमान और ज़मीन को पैदा किया, और तेरे लिए कोई काम मुश्किल नहीं है;¹⁸ तू हज़ारों पर शफ़क़त करता है, और बाप-दादा की बदकिरदारी का बदला उनके बा'द उनकी औलाद के दामन में डाल देता है; जिसका नाम खुदा-ए- 'अज़ीम-ओ-क्रादिर रब्ब-उल-अफ़वाज है;

¹⁹मश्वरत में बुज़ुर्ग, और काम में कुदरत वाला है; बनी-आदम की सब राहें तेरे ज़ेरे-ए-नज़र हैं; ताकि हर एक को उसके चाल चलन के मुवाफ़िक़ और उसके 'आमाल के फल के मुताबिक़ बदला दे।²⁰ जिसने मुल्क-ए-मिस्र में आज तक, और इस्राईल और दूसरे लोगों में निशान और 'अजाइब दिखाए और अपने लिए नाम पैदा किया, जैसा कि इस ज़माने में है।²¹ क्यूँकि तू अपनी क़ौम इस्राईल को मुल्क-ए-मिस्र से निशानों और 'अजाइब और क़वी हाथ और बलन्द बाज़ू से, और बड़ी हैबत के साथ निकाल लाया;

²² और यह मुल्क उनको दिया जिसे देने की तूने उनके बाप-दादा से क़सम खायी थी ऐसा मुल्क जिसमे दूध और शहद बहता है।²³ और वह आकर उसके मालिक हो गए, लेकिन वह न तेरी आवाज़ को सुना और न तेरी शरी'अत पर चले, और जो कुछ तूने करने को कहा उन्होंने नहीं किया। इसलिए तू यह सब मुसीबत उन पर लाया।

²⁴ दमदमों को देख, वह शहर तक आ पहुँचे हैं कि उसे फ़तह कर लें, और शहर तलवार और काल और वबा की वजह से कसदियों के हवाले कर दिया गया है, जो उस पर चढ़ आए और जो कुछ तूने फ़रमाया पूरा हुआ, और तू आप देखता है।²⁵ तो भी, ऐ खुदावन्द खुदा, तूने मुझसे फ़रमाया कि वह खेत रुपया देकर अपने लिए खरीद ले और गवाह ठहरा ले, हालाँकि यह शहर कसदियों के हवाले कर दिया गया।' "

²⁶ तब खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:²⁷ ~"देख, मैं खुदावन्द, तमाम बशर का खुदा हूँ, क्या मेरे लिए कोई काम दुश्वार है?²⁸ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं इस शहर को कसदियों के और शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के हवाले कर दूँगा, और वह इसे ले लेगा;

²⁹ और कसदी जो इस शहर पर चढ़ाई करते हैं, आकर इसको आग लगाएँगे और इसे उन घरों के साथ जलाएँगे, जिनकी छतों पर लोगों ने बा'ल के लिए खुशबू जलायी और गैरमा'बूदों के लिए तपावन तपाए कि मुझे ग़ज़बनाक करें।³⁰ क्यूँकि बनी-इस्राईल और बनी यहूदाह अपनी जवानी से अब तक सिर्फ़ वही करते आए हैं जो मेरी नज़र में बुरा है; क्यूँकि बनी-इस्राईल ने अपने 'आमाल से मुझे ग़ज़बनाक ही किया, खुदावन्द फ़रमाता है।

³¹ क्यूँकि यह शहर जिस दिन से उन्होंने इसे ता'मीर किया, आज के दिन तक मेरे क्रहर और ग़ज़ब का ज़रिया' हो रहा है; ताकि मैं इसे अपने सामने से दूर करूँ।³² बनी-इस्राईल और बनी यहूदाह की तमाम बुराई के ज़रिए' जो उन्होंने और उनके बादशाहों ने, और हाकिम और काहिनों और नबियों ने, और यहूदाह के लोगों और यरुशलीम के बशिन्दों ने की, ताकि मुझे ग़ज़बनाक करें।

³³ ~क्यूँकि उन्होंने मेरी तरफ़ पीठ की और मुँह न किया, हर चन्द मैंने उनको सिखाया और वक्रत पर ता'लीम दी, तो भी उन्होंने कान न लगाया कि तरबियत पज़ीर हों,³⁴ बल्कि उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, अपनी मकरूहात रखी ताकि उसे नापाक करें।³⁵ और उन्होंने बा'ल के ऊँचे मक़ाम जो बिन हिनूम की वादी में हैं बनाए, ताकि अपने बेटों और बेटियों को मोलक के लिए आग में से गुज़ारें, जिसका मैंने उनको हुक्म नहीं दिया और न मेरे खयाल में आया कि वह ऐसा मकरूह काम करके यहूदाह को गुनाहगार बनाएँ।

³⁶ "और अब इस शहर के बारे में, जिसके हक़ में तुम कहते हो, 'तलवार और काल और वबा के वसीले से वह शाह-ए- बाबुल के हवाले किया जाएगा,' खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है:³⁷ देख, मैं उनको उन सब मुल्कों से जहाँ मैंने उनको ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब और बड़े गुस्से से हॉक दिया है, जमा' करूँगा और इस मक़ाम में वापस लाऊँगा और उनको अमन से आबाद करूँगा।

³⁸और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा।³⁹मैं उनको यकदिल और यकरविश बना दूँगा, और वह अपनी और अपने बा'द अपनी औलाद की भलाई कि लिए हमेशा मुझसे डरते रहेंगे।⁴⁰मैं उनसे हमेशा का 'अहद करूँगा कि उनके साथ भलाई करने से बाज़ न आऊँगा, और मैं अपना खौफ़ उनके दिल में डालूँगा ताकि वह मुझसे फिर न जाएँ।

⁴¹हाँ, मैं उनसे खुश होकर उनसे नेकी करूँगा, और यक्रीनन दिल-ओ-जान से उनको इस मुल्क में लगाऊँगा।⁴²"क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: जिस तरह मैं इन लोगों पर यह तमाम बला-ए-'अज़ीम लाया हूँ, उसी तरह वह तमाम नेकी जिसका मैंने उनसे वा'दा किया है, उनसे करूँगा।

⁴³और इस मुल्क में जिसके बारे में तुम कहते हो कि 'वह वीरान है, वहाँ न इन्सान है न हैवान, वह कसदियों के हवाले किया गया,' फिर खेत खरीदे जाएँगे।

⁴⁴बिनयमीन के 'इलाक़े में और यरुशलीम के 'इलाक़े में और यहूदाह के शहरों में और पहाड़ी के, और वादी के, और दख्खिन के शहरों में लोग रुपया देकर खेत खरीदेंगे; और क़बाले लिखाकर उन पर मुहर लगाएँगे और गवाह ठहराएँगे, क्यूँकि मैं उनकी गुलामी को ख़त्म कर दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।"

Chapter 33

¹हुनुज यरमियाह कैदखाने के सहन में-बन्द था कि खुदावन्द का कलाम दोबारा उस पर नाज़िल हुआ कि:²"खुदावन्द जो पूरा करता और बनाता और कायम करता है, जिसका नाम यहोवाह है, यूँ फ़रमाता है:³कि मुझे पुकार और मैं तुझे जवाब दूँगा, और बड़ी-बड़ी और गहरी बातें जिनको तू नहीं जानता, तुझ पर ज़ाहिर करूँगा।

⁴क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा, इस शहर के घरों के बारे में, और शाहान-ए-यहूदाह के घरों के बारे में जो दमदमों और तलवार के ज़रिए गिरा दिए गए हैं, यूँ फ़रमाता है:⁵कि वह कसदियों से लड़ने आए हैं, और उनको आदमियों की लाशों से भरेंगे, जिनको मैंने अपने क्रहर-ओ-ग़ज़ब से क़त्ल किया है, और जिनकी तमाम शरारत की वजह से मैंने इस शहर से अपना मुँह छिपाया है।

⁶देख, मैं उसे सिहत और तंदुरुस्ती बख़्शूँगा मैं उनको ~शिफ़ा दूँगा और अमन-ओ-सलामती की कसरत उन पर ज़ाहिर करूँगा।⁷और मैं यहूदाह और इस्राईल को गुलामी से वापस लाऊँगा और उनको पहले की तरह बनाऊँगा।⁸और मैं उनको उनकी सारी बदकिरदारी से जो उन्होंने मेरे खिलाफ़ की है, पाक करूँगा और मैं उनकी सारी बदकिरदारी जिससे वह मेरे गुनाहगार हुए और जिससे उन्होंने मेरे खिलाफ़ बगावत की है, मु'आफ़ करूँगा।⁹और यह मेरे लिए इस ज़मीन की सब क्रौमों के सामने खुशी बख़्श नाम और शिताइश-ओ-जलाल का ज़रिया होगा; वह उस सब भलाई का जो मैं उनसे करता हूँ, ज़िक्र सुनेंगी और उस भलाई और सलामती की वजह से जो मैं इनके लिए मुहय्या करता हूँ, डरेंगी और काँपेंगी।

¹⁰"खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: इस मक़ाम में जिसके बारे में तुम कहते हो, 'वह वीरान है, वहाँ न इन्सान है न हैवान,' या 'नी यहूदाह के शहरों में और यरुशलीम के बाज़ारों में जो वीरान हैं, जहाँ न इन्सान हैं न बाशिन्दे न हैवान,'¹¹खुशी और शादमानी की आवाज़, दुल्हे और दुल्हन की आवाज़, और उनकी आवाज़ सुनी जाएगी जो कहते हैं, 'रब्ब-उल-अफ़वाज़ की सिताइश करो क्योंकि खुदावन्द भला है और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!' हाँ, उनकी आवाज़ जो खुदावन्द के घर में शुक्रगुजारी की कुर्बानी लायेंगे क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, मैं इस मुल्क के गुलामों को वापस लाकर बहाल करूँगा।

¹²रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: इस वीरान जगह और इसके सब शहरों में जहाँ न इन्सान है न हैवान, फिर चरवाहों के रहने के मकान होंगे जो अपने ग़ल्लों को बिठाएँगे।¹³कोहिस्तान के शहरों में और वादी के और दख्खिन के शहरों में, और बिनयमीन के 'इलाक़ों में और यरुशलीम के 'इलाक़े में, और यहूदाह के शहरों में फिर ग़ल्ले गिनने वाले के हाथ के नीचे से गुज़रेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁴"देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि 'वह नेक बात जो मैंने इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने के हक़ में फ़रमाई है, पूरी करूँगा।'¹⁵उन्हीं दिनों में और उसी वक़्त मैं दाऊद के लिए सदाक़त की शाख़ पैदा करूँगा, और वह मुल्क में 'अदालत-ओ-सदाक़त से 'अमल करेगा।¹⁶उन दिनों में यहूदाह नजात पाएगा और यरुशलीम सलामती से सुकूनत करेगा; और 'खुदावन्द हमारी सदाक़त' उसका नाम होगा।

¹⁷"क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: इस्राईल के घराने के तख़्त पर बैठने के लिए दाऊद को कभी आदमी की कमी न होगी,¹⁸और न लावी काहिनों को आदमियों की कमी होगी, जो मेरे सामने सोख़तनी कुर्बानियाँ पेश करे और हदिये चढ़ाएँ और हमेशा कुर्बानी करें।"

¹⁹फिर खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:²⁰"खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अगर तुम मेरा वह 'अहद, जो मैंने दिन से और रात से किया, तोड़ सको कि दिन और रात अपने अपने वक़्त पर न हों,²¹तो मेरा वह 'अहद भी जो मैंने अपने खादिम दाऊद से किया, टूट सकता है कि उसके तख़्त पर बादशाही करने को बेटा न हो और वह 'अहद भी जो अपने खिदमतगुज़ार लावी काहिनों से किया।²²जैसे अजराम-ए-फ़लक़ बेशुमार हैं और समन्दर की रेत बे अन्दाज़ा है, वैसे ही मैं अपने बन्दे दाऊद की नसल की और लावियों को जो मेरी खिदमत करते हैं, फ़िरावानी बख़्शूँगा"

²³~फिर खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:²⁴कि "क्या तू नहीं देखता कि ये लोग क्या कहते हैं कि ~'जिन दो घरानों को खुदावन्द ने चुना, उनको उसने रद्द कर दिया'? यूँ वह मेरे लोगों को हक़ीर जानते हैं कि जैसे उनके नज़दीक वह क्रौम ही नहीं रहे।

²⁵खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अगर दिन और रात के साथ मेरा 'अहद न हो, और अगर मैंने आसमान और ज़मीन का निज़ाम मुक़र्रर न किया हो;²⁶तो मैं या'क़ूब की नसल को और अपने खादिम दाऊद की नसल को रद्द कर दूँगा, ताकि मैं इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब की नसल पर हुकूमत करने के लिए उसके फ़र्ज़न्दों में से किसी को न लूँ बल्कि मैं तो उनको गुलामी से वापस लाऊँगा और उन पर रहम करूँगा।"

Chapter 34

¹जब शाह-ए-बाबुल नबूक़दनज़र और उसकी तमाम फ़ौज और इस ज़मीन की तमाम सल्तनतें जो उसकी फरमाँरवाई में थीं, और सब क्रौमें यरुशलीम और उसकी सब बस्तियों के खिलाफ़ जंग कर रही थीं, तब ख़ुदावन्द का यह कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ कि "ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा, यूँ फ़रमाता है कि: जा और शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह से कह दे, 'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं इस शहर को शाह-ए-बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह इसे आग से जलाएगा;³ और तू उसके हाथ से न बचेगा, बल्कि ज़रूर पकड़ा जाएगा और उसके हवाले किया जाएगा; और तेरी आँखें शाह-ए-बाबुल की आँखों को देखेंगी और वह सामने तुझ से बातें करेगा, और तू बाबुल को जाएगा।'

⁴तो भी, ऐ शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह, ख़ुदावन्द का कलाम सुन; तेरे बारे में ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तू तलवार से क़त्ल न किया जाएगा।⁵ तू अमन की हालत में मरेगा और जिस तरह तेरे बाप-दादा या'नी तुझ से पहले बादशाहों के लिए ख़ुशबू जलाते थे, उसी तरह तेरे लिए भी जलाएँगे, और तुझ पर नौहा करेंगे और कहेंगे, "हाय, आक्रा!" क्योंकि मैंने यह बात कही है, ख़ुदावन्द फ़रमाता है।' "

⁶तब यरमियाह नबी ने यह सब बातें शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह से यरुशलीम में कहीं,⁷ जब कि शाह-ए-बाबुल की फ़ौज यरुशलीम और यहूदाह के शहरों से जो बच रहे थे, या'नी लकीस और 'अज़ीक्राह से लड़ रही थी; क्योंकि यहूदाह के शहरों में से यही हसीन शहर बाक़ी थे।

⁸वह कलाम जो ख़ुदावन्द की तरफ़ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ, जब सिदक्रियाह बादशाह ने यरुशलीम के सब लोगों से 'अहद-ओ-पैमान किया कि आज़ादी का 'ऐलान किया जाए।⁹ कि हर एक अपने गुलाम को और अपनी लौंडी को, जो 'इब्रानी मर्द या 'औरत हो, आज़ाद कर दे कि कोई अपने यहूदी भाई से गुलामी न कराए।

¹⁰और जब सब हाकिम और सब लोगों ने जो इस 'अहद में शामिल थे, सुना कि हर एक को लाज़िम है कि अपने गुलाम और अपनी लौंडी को आज़ाद करे और फिर उनसे गुलामी न कराए, तो उन्होंने इता'अत की और उनको आज़ाद कर दिया।¹¹ लेकिन उसके बा'द वह फिर गए और उन गुलामों और लौंडियों को जिनको उन्होंने आज़ाद कर दिया था, फिर वापस ले आए और उनको ताबे' करके गुलाम और लौंडियाँ बना लिया।

¹²इसलिए ख़ुदावन्द की तरफ़ से यह कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:¹³ कि ~"ख़ुदावन्द, इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि: मैंने तुम्हारे बाप-दादा से, जिस दिन मैं उनको मुल्क-ए-मिस्र से और गुलामी के घर से निकाल लाया, यह 'अहद बाँधा,¹⁴ कि 'तुम में से हर एक अपने 'इब्रानी भाई को जो उसके हाथ बेचा गया हो, सात बरस के आखिर में या'नी जब वह छः बरस तक ख़िदमत कर चुके, तो आज़ाद कर दे; लेकिन तुम्हारे बाप-दादा ने मेरी न सुनी और कान न लगाया।

¹⁵और आज ही के दिन तुम रूजू' लाए, और वही किया जो मेरी नज़र में भला है कि हर एक ने अपने पड़ोसी को आज़ादी का मुज़दा दिया; और तुम ने उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, मेरे सामने 'अहद बाँधा;¹⁶ लेकिन तुम ने नाफ़रमान हो कर मेरे नाम को नापाक किया, और हर एक ने अपने गुलाम को और अपनी लौंडी को, जिनको तुमने आज़ाद करके उनकी मर्ज़ी पर छोड़ दिया था, फिर पकड़कर ताबे' किया कि तुम्हारे लिए गुलाम और लौंडियाँ हों।

¹⁷"इसलिए ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तुम ने मेरी न सुनी कि हर एक अपने भाई और अपने पड़ोसी को आज़ादी का मुज़दा सुनाए, देखो, ख़ुदावन्द फ़रमाता है, मैं तुम को तलवार और वबा और काल के लिए आज़ादी का मुज़दा देता हूँ और मैं ऐसा करूँगा कि तुम इस ज़मीन की सब ममलुकतों में धक्के खाते फ़िरोगे।

¹⁸~और मैं उन आदमियों को जिन्होंने मुझसे 'अहदशिकनी की और उस 'अहद की बातें, जो उन्होंने मेरे सामने बाँधा है पूरी नहीं कीं, जब बछड़े को दो टुकड़े किया और उन दो टुकड़ों के बीच से होकर गुज़रे;¹⁹ या'नी यहूदाह के और यरुशलीम के हाकिम और ख़्वाजासरा और काहिन और मुल्क के सब लोग जो बछड़े के टुकड़ों के बीच से होकर गुज़रे;

²⁰हाँ, मैं उनको उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा, और उनकी लाशें हवाई परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की ख़ुराक होंगी।²¹ और मैं शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह को और उसके हाकिम को, उनके ~मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों और शाह-ए-बाबुल की फ़ौज के, जो तुम को छोड़कर चली गई, हवाले कर दूँगा।²² ~देखो, मैं हुक्म करूँगा ख़ुदावन्द फ़रमाता है और उनको फिर इस शहर की तरफ़ वापस लाऊँगा, और वह इससे लड़ेंगे और फ़तह करके आग से जलाएँगे; और मैं यहूदाह के शहरों को वीरान कर दूँगा कि ग़ैरआबाद हों।"

Chapter 35

¹वह कलाम जो शाह-ए-यहूदाह "यहूयक्रीम-बिन-यूसियाह के दिनों में खुदावन्द की तरफ़ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ:"²कि "तू रैकाबियों के घर जा और उनसे कलाम कर, और उनको खुदावन्द के घर की एक कोठरी में लाकर मय पिला।"

³तब मैंने याज़नियाह-बिन-यर्मियाह-बिन हबसिनयाह और उसके भाइयों और उसके सब बेटों और रैकाबियों के तमाम घराने को साथ लिया।⁴और मैं उनको खुदावन्द के घर में बनी हनान-बिन-यजदलियाह मर्द-ए-खुदा की कोठरी में लाया, जो हाकिम की कोठरी के नज़दीक मासियाह-बिन-सलूम दरबान की कोठरी के ऊपर थी।

⁵और मैंने मय से लबरेज़ प्याले और जाम रैकाबियों के घराने के बेटों के आगे रखे और उनसे कहा, 'मय पियो।' "लेकिन उन्होंने कहा, "हम मय न पियेंगे, क्योंकि हमारे बाप यूनादाब-बिन-रैकाब ने हमको यूँ हुक्म दिया, 'तुम हरगिज़ मय न पीना; न तुम न तुम्हारे बेटे,' और न घर बनाना, न बीज बोना, न ताकिस्तान लगाना, न उनके मालिक होना; बल्कि 'उम्र भर खेमों में रहना ताकि जिस सरज़मीन में तुम मुसाफ़िर हो, तुम्हारी 'उम्र दराज़ हो।'

⁸~ चुनाँचे हम ने अपने बाप यूनादाब-बिन-रैकाब की बात मानी; उसके हुक्म के मुताबिक़ हम और हमारी बीवियाँ और हमारे बेटे बेटियाँ कभी मय नहीं पीते।

⁹और हम न रहने के लिए घर बनाते और न ताकिस्तान और खेत और बीज रखते हैं।¹⁰लेकिन हम खेमों में बसे हैं, और हमने फ़रमाँबरदारी की और जो कुछ हमारे बाप यूनादाब ने हमको हुक्म दिया हम ने उस पर 'अमल किया है।'¹¹लेकिन यूँ हुआ कि जब शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र इस मुल्क पर चढ़ आया, तो हम ने कहा कि 'आओ, हम कसदियों और अरामियों की फ़ौज के डर से यरुशलीम को चले जाएँ,' यूँ हम यरुशलीम में बसते हैं।"

¹²तब खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:¹³कि 'रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: जा, और यहूदाह के आदमियों और यरुशलीम के बाशिन्दों से यूँ कह कि क्या तुम तरबियत पज़ीर न होगे कि मेरी बातें सुनो, खुदावन्द फ़रमाता है?'¹⁴जो बातें यूनादाब-बिन-रैकाब ने अपने बेटों को फ़रमाई कि मय न पियो, वह बजा लाए और आज तक मय नहीं पीते, बल्कि उन्होंने अपने बाप के हुक्म को माना; लेकिन मैंने तुम से कलाम किया और वक़्त पर तुम को फ़रमाया, और तुम ने मेरी न सुनी।

¹⁵मैंने अपने तमाम खिदमतगुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, और उनको वक़्त पर ये कहते हुए भेजा कि तुम हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आओ, और अपने 'आमाल को दुरुस्त करो और ग़ैर मा'बूदों की पैरवी और ~'इबादत न करो, और जो मुल्क मैंने तुमको और तुम्हारे बाप-दादा को दिया है, तुम उसमें बसोगे; लेकिन तुम ने न कान लगाया न मेरी सुनी।'¹⁶इस वजह से कि यूनादाब बिन रैकाब के बेटे अपने बाप के हुक्म को जो उसने उनको दिया था बजा लाये लेकिन इन लोगों ने मेरी न सुनी।

¹⁷इसलिए खुदावन्द, रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं यहूदाह पर और यरुशलीम के तमाम बाशिन्दों पर वह सब मुसीबत, जिसका मैंने उनके खिलाफ़ 'ऐलान किया है, लाऊँगा; क्योंकि मैंने उनसे कलाम किया लेकिन उन्होंने न सुना, और मैंने उनको बुलाया पर उन्होंने जवाब न दिया।"

¹⁸और यरमियाह ने रैकाबियों के घराने से कहा, 'रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: चूँकि तुमने अपने बाप यूनादाब के हुक्म को माना, और उसकी सब वसीयतों पर 'अमल किया है, और जो कुछ उसने तुम को फ़रमाया तुम बजा लाए;'¹⁹इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: यूनादाब-बिन-रैकाब के लिए मेरे सामने में खड़े होने को कभी आदमी की कमी न होगी।"

Chapter 36

¹शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम-बिन-यूसियाह-के चौथे बरस में यह कलाम खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ:²कि "किताब का एक तूमार ले और वह सब कलाम जो मैंने इस्राईल और यहूदाह और तमाम क़ौमों के खिलाफ़ तुझ से किया, उस दिन से लेकर जब से मैं तुझ से कलाम करने लगा, या'नी यूसियाह के दिन से आज के दिन तक उसमें लिख।³शायद यहूदाह का घराना उस तमाम मुसीबत का हाल जो मैं उन पर लाने का इरादा रखता हूँ सुने, ताकि वह सब अपनी बुरे चाल चलन से बाज़ आएँ; और मैं उनकी बदकिरदारी और गुनाह को मु'आफ़ करूँ।"

⁴तब यरमियाह ने बारूक-बिन-नैयिरियाह को बुलाया, और बारूक ने खुदावन्द का वह सब कलाम जो उसने यरमियाह से किया था, उसकी ज़बानी किताब के उस तूमार में लिखा।⁵और यरमियाह ने बारूक को हुक्म दिया और कहा, "मैं तो मजबूर हूँ, मैं खुदावन्द के घर में नहीं जा सकता;⁶लेकिन तू जा और खुदावन्द का वह कलाम जो तूने मेरे मुँह से इस तूमार में लिखा है, खुदावन्द के घर में रोज़े के दिन लोगों को पढ़ कर सुना; और तमाम यहूदाह के लोगों को भी जो अपने शहरों से आए हों, तू वही कलाम पढ़ कर सुना।

⁷शायद वह खुदा के सामने मिन्नत करें और सब के सब अपनी बुरे चाल चलन से बाज़ आएँ, क्योंकि खुदावन्द का क्रहर-ओ-ग़ज़ब जिसका उसने इन लोगों के खिलाफ़ 'ऐलान किया है, शदीद है।"⁸और बारूक-बिन-नैयिरियाह ने सब कुछ जैसा यरमियाह नबी ने उसको फ़रमाया था वैसा ही किया, और खुदावन्द के घर में खुदावन्द का कलाम उस किताब से पढ़ कर सुनाया।

⁹और ~शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम-बिन-यूसियाह के पाँचवें बरस के नौवें महीने में यूँ हुआ कि यरुशलीम के सब लोगों ने और उन सब ने जो यहूदाह के शहरों से यरुशलीम में आए थे, खुदावन्द के सामने रोज़े का 'ऐलान किया।¹⁰~तब बारूक ने किताब से यरमियाह की बातें, खुदावन्द के घर में जमरियाह-बिन-साफ़न मुन्शी की कोठरी में ऊपर के सहन के बीच, खुदावन्द के घर के नये फाटक के मदखल पर सब लोगों के सामने पढ़ सुनाई।

¹¹जब मीकायाह-बिन-जमरियाह-बिनसाफ़न ने खुदावन्द का वह सब कलाम जो उस किताब में था सुना,¹²तो वह उतर कर बादशाह के घर मुन्शी की कोठरी में गया, और सब हाकिम या'नी इलीसमा' मुन्शी, और दिलायाह बिन समयाह और इलनातन बिन अक्रबूर और जमरियाह बिन साफ़न और सिदक्रियाह-बिन-हननियाह, और सब हाकिम वहाँ बैठे थे।

¹³तब मीकायाह ने वह सब बातें जो उसने सुनी थीं, जब बारूक किताब से पढ़ कर लोगों को सुनाता था, उनसे बयान कीं।¹⁴और सब हाकिम ने यहूदी-बिन-नतनियाह-बिन-सलमियाह-बिन-कूशी को बारूक के पास यह कहकर भेजा, कि "वह तूमार जो तूने लोगों को पढ़कर सुनाया है, अपने हाथ में ले और चला आ।" तब बारूक-बिन-नैयिरियाह वह तूमार लेकर उनके पास आया।¹⁵और उन्होंने उसे कहा, कि "अब बैठ जा और हमको यह पढ़ कर सुना।" और बारूक ने उनको पढ़कर सुनाया।

¹⁶जब उन्होंने वह सब बातें सुनीं, तो डरकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे और बारूक से कहा कि "हम यक्रीनन यह सब बातें बादशाह से बयान करेंगे।"¹⁷और उन्होंने यह कह कर बारूक से पूछा, "हम से कह कि तूने यह सब बातें उसकी ज़बानी क्यूँकर लिखीं?"¹⁸तब बारूक ने उनसे कहा, "वह यह सब बातें मुझे अपने मुँह से कहता गया और मैं स्याही से किताब में लिखता गया।"¹⁹तब हाकिम ने बारूक से कहा, "जा, अपने आपको और यरमियाह को छिपा, और कोई न जाने कि तुम कहाँ हो।"

²⁰और वह बादशाह के पास सहन में गए, लेकिन उस तूमार को इलीसमा' मुन्शी की कोठरी में रख गए, और वह बातें बादशाह को कह सुनाई।²¹तब बादशाह ने यहूदी को भेजा कि तूमार लाए, और वह उसे इलीसमा' मुन्शी की कोठरी में से ले आया। और यहूदी ने बादशाह और सब हाकिम को जो बादशाह के सामने खड़े थे, उसे पढ़कर सुनाया।²²और बादशाह ज़मिस्तानी महल में बैठा था, क्यूँकि नवाँ महीना था और उसके सामने अंगेठी जल रही थी।

²³जब यहूदी ने तीन चार वर्क पढ़े, तो उसने उसे मुन्शी के क़लम तराश से काटा और अंगेठी की आग में डाल दिया, यहाँ तक कि तमाम तूमार अंगेठी की आग में भसम हो गया।²⁴लेकिन वह न डरे, न उन्होंने अपने कपड़े फाड़े, न बादशाह ने न उसके मुलाज़िमों में से किसी ने जिन्होंने यह सब बातें सुनी थीं।

²⁵लेकिन इलनातन, और दिलायाह, और जमरियाह ने बादशाह से 'अर्ज़ की कि तूमार को न जलाए, लेकिन उसने उनकी एक न सुनी।²⁶और बादशाह ने शाहज़ादे यरहमिएल को और शिरायाह-बिन अजरिएल और सलमियाह बिन अबदिएल ~को हुक्म दिया कि बारूक मुन्शी और यरमियाह नबी को गिरफ़्तार करें, लेकिन खुदावन्द ने उनको छिपाया।

²⁷और जब बादशाह तूमार और उन बातों को जो बारूक ने यरमियाह की ज़बानी लिखी थीं, जला चुका तो खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ:

²⁸कि "तू दूसरा तूमार ले, और उसमें वह सब बातें लिख जो पहले तूमार में थीं, जिसे शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम ने जला दिया।"²⁹और शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम से कह कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: तूने तूमार को जला दिया और कहा है, "तू ने उसमें यूँ क्यूँ लिखा कि शाह-ए-बाबुल यक्रीनन आएगा और इस मुल्क को हलाक करेगा, और न इसमें इन्सान बाक़ी छोड़ेगा न हैवान?"

³⁰इसलिए शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम के बारे में खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: उसकी नसल में से कोई न रहेगा जो दाऊद के तख़्त पर बैठे, और उसकी लाश फेंकी जाएगी, ताकि दिन की गर्मी में और रात को पाले में पड़ी रहे;³¹और मैं उसको और उसकी नसल को और उसके मुलाज़िमों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा। मैं उन पर और यरुशलीम के बाशिन्दों पर और यहूदाह के लोगों पर वह सब मुसीबत लाऊँगा, जिसका मैंने उनके खिलाफ़ 'ऐलान किया लेकिन उन्होंने न सुना।"

"

³²तब यरमियाह ने दूसरा तूमार लिया और बारूक-बिन-नैयिरियाह मुन्शी को दिया, और उसने उस किताब की सब बातें जिसे शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम ने आग में जलाया था, यरमियाह की ज़बानी उसमें लिखीं और उनके अलावा वैसी ही और बहुत सी बातें उनमें बढ़ा दी गई।

Chapter 37

¹और सिदक्रियाह बिन यूसियाह जिसको शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने मुल्क-ए-यहूदाह पर बादशाह मुकर्रर किया था, कूनियाह बिन यहूयक्रीम की जगह बादशाही-करने लगा।²लेकिन न उसने, न उसके मुलाज़िम्ओं ने, न मुल्क के लोगों ने खुदावन्द की वह बातें सुनीं, जो उसने यरमियाह नबी के-ज़रिए' फ़रमाई थीं।

³और सिदक्रियाह बादशाह ने यहूकल-बिन सलमियाह और सफ़नियाह-बिन-मासियाह काहिन के ज़रिए' यरमियाह नबी को कहला भेजा कि अब हमारे लिए खुदावन्द हमारे खुदा से दु'आ कर।"⁴हुनूज़ यरमियाह लोगों के बीच आया जाया करता था, क्योंकि उन्होंने अभी उसे कैदखाने में नहीं डाला था।⁵इस वक़्त फ़िर'औन की फ़ौज़ ने मिस्र से चढ़ाई की; और जब कसदियों ने जो यरुशलीम का घिराव किए थे इसकी शोहरत सुनी, तो वहाँ से चले गए।

⁶तब खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ:⁷कि "खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम शाह-ए-यहूदाह से जिसने तुम को मेरी तरफ़ भेजा कि मुझसे दरियाप्राप्त करो, यूँ कहना कि "देख, फ़िर'औन की फ़ौज़ जो तुम्हारी मदद को निकली है, अपने मुल्क-ए-मिस्र को लौट जाएगी।⁸और कसदी वापस आकर इस शहर से लड़ेंगे, और इसे फ़तह करके आग से जलाएँगे।

⁹खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तुम यह कह कर अपने आपको फ़रेब न दो, "कसदी ज़रूर हमारे पास से चले जाएँगे," क्योंकि वह न जाएँगे।¹⁰और अगरचे तुम कसदियों की तमाम फ़ौज़ को जो तुम से लड़ती है, ऐसी शिकस्त देते कि उनमें से सिर्फ़ ज़ख्मी बाक़ी रहते, तो भी वह सब अपने-अपने ख़ेमे से उठते और इस शहर को जला देते।" "

¹¹और जब कसदियों की फ़ौज़ फ़िर'औन की फ़ौज़ के डर से यरुशलीम के सामने से रवाना हो गई,¹²तो यरमियाह यरुशलीम से निकला कि बिनयमीन के 'इलाक़े में जाकर वहाँ लोगों के बीच अपना हिस्सा ले।¹³और जब वह बिनयमीन के फाटक पर पहुँचा, तो वहाँ पहरवालों का दारोगा था, जिसका नाम इर्रियाह-बिन-सलमियाह-बिन-हननियाह था, और उसने यरमियाह नबी को पकड़ा और कहा तू कसदियों की तरफ़ भागा जाता है।"

¹⁴तब यरमियाह ने कहा, "यह झूट है; मैं कसदियों की तरफ़ भागा नहीं जाता हूँ, लेकिन उसने उसकी एक न सुनी; तब इर्रियाह यरमियाह को पकड़ कर हाकिम के पास लाया।¹⁵और हाकिम यरमियाह पर ग़ज़बनाक हुए और उसे मारा, और यूनतन मुन्शी के घर में उसे कैद किया; क्योंकि उन्होंने उस घर को कैदखाना बना रखखा था।

¹⁶जब यरमियाह कैदखाने में और उसके तहखानों में दाखिल होकर बहुत दिनों तक वहाँ रह चुका;¹⁷तो सिदक्रियाह बादशाह ने आदमी भेजकर उसे निकलवाया, और अपने महल में उससे ख़ुफ़िया तौर से दरियाप्राप्त किया कि "क्या खुदावन्द की तरफ़ से कोई कलाम है?" और यरमियाह ने कहा है कि "क्योंकि उसने फ़रमाया है कि तू शाह-ए-बाबुल के हवाले किया जाएगा।"

¹⁸और यरमियाह ने सिदक्रियाह बादशाह से कहा, "मैंने तेरा, और तेरे मुलाज़िम्ओं का, और इन लोगों का क्या गुनाह किया है कि तुमने मुझे कैदखाने में डाला है?

¹⁹अब तुम्हारे नबी कहाँ हैं, जो तुम से नबुव्वत करते और कहते थे, 'शाह-ए-बाबुल तुम पर और इस मुल्क पर चढ़ाई नहीं करेगा'?²⁰अब ऐ बादशाह, मेरे आक्रा मेरी सुन; मेरी दरख्वास्त कुबूल फ़रमा और मुझे यूनतन मुन्शी के घर में वापस न भेज, ऐसा न हो कि मैं वहाँ मर जाऊँ।"

²¹तब सिदक्रियाह बादशाह ने हुक्म दिया, और उन्होंने यरमियाह को कैदखाने के सहन में रखखा; और हर रोज़ उसे नानबाइयों के महल्ले से एक रोटी ले कर देते रहे, जब तक कि शहर में रोटी मिल सकती थी। इसलिए यरमियाह कैदखाने के सहन में रहा।

Chapter 38

¹फिर सफ़तियाह बिन मत्तान और जिदलियाह बिन फ़शहूर और यूकुल बिन सलमियाह और फ़शहूर बिन मलकियाह ने वह बातें जो यरमियाह सब लोगों से कहता था, सुनीं, वह कहता था, ²"खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: जो कोई इस शहर में रहेगा, वह तलवार और काल और वबा से मरेगा; और जो कसदियों में जा मिलेगा, वह ज़िन्दा रहेगा और उसकी जान उसके लिए ग़नीमत होगी और वह ज़िन्दा रहेगा।" ³खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "यह शहर यक़ीनन शाह-ए-बाबुल की फ़ौज के हवाले कर दिया जाएगा और वह इसे ले लेगा।"

⁴इसलिए हाकिम ने बादशाह से कहा, "हम तुझ से 'अज़्र' करते हैं कि इस आदमी को क़त्ल करवा, क्योंकि यह जंगी मदों के हाथों को, जो इस शहर में बाक़ी हैं और सब लोगों के हाथों को, उनसे ऐसी बातें कह कर सुस्त करता है। क्योंकि यह शख्स इन लोगों का ख़ैरख़्वाह नहीं, बल्कि बदचाहे है।" ⁵तब सिदक्रियाह बादशाह ने कहा, "वह तुम्हारे क़ाबू में है; क्योंकि बादशाह तुम्हारे खिलाफ़ कुछ नहीं कर सकता।"

⁶तब उन्होंने यरमियाह को पकड़ कर मलकियाह शाहज़ादे के हौज़ में, जो क़ैदख़ाने के सहन में था डाल दिया; और उन्होंने यरमियाह को रस्से से बाँध कर लटकाया। और हौज़ में कुछ पानी न था बल्कि कीच थी; और यरमियाह कीच में धंस गया।

⁷जब 'अब्द मलिक कूशी ने जो शाही महल के ख़्वाजासराओं में से था, सुना कि उन्होंने यरमियाह को हौज़ में डाल दिया है - जब कि बादशाह बिनयमीन के फाटक में बैठा था। ⁸तो 'अब्द मलिक बादशाह के महल से निकला और बादशाह से यूँ 'अज़्र की, कि "ऐ बादशाह, मेरे आक़ा, इन लोगों ने यरमियाह नबी से जो कुछ किया बुरा किया, क्योंकि उन्होंने उसे हौज़ में डाल दिया है, और वह वहाँ भूक से मर जाएगा क्योंकि शहर में रोटी नहीं है।"

¹⁰तब बादशाह ने 'अब्द मलिक कूशी को यूँ हुक्म दिया, कि "तू यहाँ से तीस आदमी अपने साथ ले, और यरमियाह नबी को इससे पहले कि वह मर जाए हौज़ में से निकाल।" ¹¹और 'अब्द मलिक उन आदमियों को जो उसके पास थे, अपने साथ लेकर बादशाह के महल में खज़ाने के नीचे गया, और पुराने चीथड़े और पुराने सड़े हुए लते वहाँ से लिए और उनको रस्सियों के वसीले से हौज़ में यरमियाह के पास लटकाया।

¹²और 'अब्द मलिक कूशी ने यरमियाह से कहा कि इन पुराने चीथड़ों और सड़े हुए लत्तों को रस्सी के नीचे अपनी बगल तले रख।" और यरमियाह ने वैसा ही किया। ¹³और उन्होंने रस्सियों से यरमियाह को खींचा और हौज़ से बाहर निकाला; और यरमियाह क़ैदख़ाने के सहन में रहा।

¹⁴तब सिदक्रियाह बादशाह ने यरमियाह नबी को खुदावन्द के घर के तीसरे मदखल में अपने पास बुलाया; और बादशाह ने यरमियाह से कहा, "मैं तुझ से एक बात पूछता हूँ, तू मुझसे कुछ न छिपा।" ¹⁵और यरमियाह ने सिदक्रियाह से कहा, "अगर मैं तुझ से खोलकर बयान करूँ, तो क्या तू मुझे यक़ीनन क़त्ल न करेगा? और अगर मैं तुझे सलाह दूँ, तो तू न मानेगा।" ¹⁶तब सिदक्रियाह बादशाह ने यरमियाह के सामने तन्हाई में कहा, "ज़िन्दा खुदा की क़सम, जो हमारी जानों का ख़ालिक है, कि न मैं तुझे क़त्ल करूँगा, और न उनके हवाले करूँगा जो तेरी जान के तलबगार हैं।"

¹⁷तब यरमियाह ने सिदक्रियाह से कहा कि "खुदावन्द, लश्क़रों का खुदा, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि: यक़ीनन अगर तू निकल कर शाह-ए-बाबुल के हाकिम के पास चला जाएगा, तो तेरी जान बच जाएगी और यह शहर आग से जलाया न जाएगा, और तू और तेरा घराना ज़िन्दा रहेगा।" ¹⁸लेकिन अगर तू शाह-ए-बाबुल के हाकिम के पास न जाएगा, तो यह शहर कसदियों के हवाले कर दिया जाएगा, और वह इसे जला देंगे और तू उनके हाथ से रिहाई न पाएगा।"

¹⁹सिदक्रियाह बादशाह ने यरमियाह से कहा कि "मैं उन यहूदियों से डरता हूँ जो कसदियों से जा मिले हैं, ऐसा न हो कि वह मुझे उनके हवाले करें, और वह मुझ पर ता'ना मारें।"

²⁰और यरमियाह ने कहा, "वह तुझे हवाले न करेंगे; मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, तू खुदावन्द की बात, जो मैं तुझ से कहता हूँ मान ले। इससे तेरा भला होगा और तेरी जान बच जाएगी।" ²¹लेकिन अगर तू जाने से इन्कार करे, तो यही कलाम है जो खुदावन्द ने मुझ पर ज़ाहिर किया:

²²कि देख, वह सब 'औरतें जो शाह-ए-यहूदाह के महल में बाक़ी हैं शाह-ए-बाबुल के हाकिम के पास पहुँचाई जाएँगी और कहेंगी कि तेरे दोस्तों ने तुझे फ़रेब दिया और तुझ पर ग़ालिब आए; जब तेरे पाँव कीच में धँस गए, तो वह उल्टे फिर गए।" ²³और वह तेरी सब बीवियों को, और तेरे बेटों को कसदियों के पास निकाल ले जाएँगे; और तू भी उनके हाथ से रिहाई न पाएगा, बल्कि शाह-ए-बाबुल के हाथ में गिरफ़्तार होगा और तू इस शहर के आग से जलाए जाने का ज़रिया होगा।"

²⁴तब सिदक्रियाह ने यरमियाह से कहा कि ~ "इन बातों को कोई न जाने, तो तू मारा न जाएगा।" ²⁵लेकिन अगर हाकिम सुन लें कि मैंने तुझ से बातचीत की, और वह तेरे पास आकर कहें, कि "जो कुछ तूने बादशाह से कहा, और जो कुछ बादशाह ने तुझ से कहा अब हम पर ज़ाहिर कर, यह हम से न छिपा और हम तुझे क़त्ल न करेंगे;" ²⁶तब तू उनसे कहना कि 'मैंने बादशाह से 'अज़्र की थी कि मुझे फिर यूँनतन के घर में वापस न भेज कि वहाँ मरूँ।' "

²⁷तब सब हाकिम यरमियाह के पास आए और उससे पूछा, और उसने इन सब बातों के मुताबिक़, जो बादशाह ने फ़रमाई थीं, उनको जवाब दिया। और वह उसके पास से चुप होकर चले गए; क्योंकि असल मुआ'मिला उनको मा'लूम न हुआ। ²⁸और जिस दिन तक यरुशलीम फ़तह न हुआ, यरमियाह क़ैदख़ाने के सहन में रहा, और जब यरुशलीम फ़तह हुआ तो वह वहीं था।

Chapter 39

¹शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह के नवें बरस के दसवें महीने में, शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र अपनी तमाम फ़ौज लेकर यरूशलीम पर चढ़ आया और उसका घिराव किया।²सिदक्रियाह के ग्यारहवें बरस के चौथे महीने की नवीं तारीख को शहर-की-फ़सील में रखना हो गया;³और शाह-ए-बाबुल के सब सरदार या'नी नैयिरीगल सराज़र, समगर नबू, सरसकीम, ख्वाजासराओ का सरदार नैयिरीगल सराज़र मजूसियों का सरदार और शाह-ए-बाबुल के बाक्री सरदार दाखिल हुए और बीच के फाटक पर बैठे।

⁴और शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह और सब जंगी मर्द उनको देख कर भागे, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शाही बाग़ के बराबर था, उससे वह रात ही रात भाग निकले और वीराने की राह ली।⁵लेकिन कसदियों की फ़ौज ने उनका पीछा किया और यरीहू के मैदान में सिदक्रियाह को जा लिया, और उसको पकड़-कर रिब्ला में शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के पास हमात के 'इलाक़े में ले गए; और उसने उस पर फ़तवा दिया।

⁶और शाह-ए-बाबुल ने सिदक्रियाह के बेटों को रिब्ला में उसकी आँखों के सामने ज़बह किया, और यहूदाह के सब शुरफ़ा को भी क़त्ल किया।⁷और उसने सिदक्रियाह की आँखें निकाल डालीं और बाबुल को ले जाने के लिए उसे ज़ंजीरों से जकड़ा।

⁸और कसदियों ने शाही महल को और लोगों के घरों को आग से जला दिया, और यरूशलीम की फ़सील को गिरा दिया।⁹इसके बाद जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान बाक्री लोगों को, जो शहर में रह गए थे और उनको जो उसकी तरफ़ होकर उसके पास भाग आए थे, या'नी क्रौम के सब बाक्री लोगों को गुलाम करके बाबुल को ले गया।¹⁰लेकिन क्रौम के ग़रीबों को जिनके पास कुछ न था, जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने यहूदाह के मुल्क में रहने दिया और उसी वक़्त उनको ताकिस्तान और खेत बख़्शे।

¹¹और शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने यरमियाह के बारे में जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान को ताकीद करके यूँ कहा,¹²कि "उसे लेकर उस पर खूब निगाह रख, और उसे कुछ दुख न दे, बल्कि तू उससे वही कर जो वह तुझे कहे।"¹³तब जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान, नाबूशज़बान ख्वाजासराओं के-सरदार, और नैयिरीगल सराज़र, मजूसियों के सरदार, और बाबुल के सब सरदारों ने आदमी भेजकर¹⁴यरमियाह को क़ैदख़ाने के सहन से-निकलवा लिया, और ज़िदलियाह-बिन-अखीक़ाम-बिन-साफ़न के सुपुर्द किया कि उसे घर ले जाए। इसलिए वह लोगों के साथ रहने लगा।

¹⁵और जब यरमियाह क़ैदख़ाने के सहन में बन्द था, खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ:¹⁶कि "जा, 'अब्द मलिक कूशी से कह, 'रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं अपनी बातें इस शहर की भलाई के लिए नहीं, बल्कि ख़राबी के लिए पूरी करूँगा; और वह उस रोज़ तेरे सामने पूरी होगी।

¹⁷लेकिन उस दिन मैं तुझे रिहाई दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और तू उन लोगों के हवाले न किया जाएगा जिनसे तू डरता है।¹⁸~क्योंकि मैं तुझे ज़रूर बचाऊँगा और तू तलवार से मारा न जाएगा, बल्कि तेरी जान तेरे लिए ग़नीमत होगी; इसलिए कि तूने मुझ पर भरोसा किया, खुदावन्द फ़रमाता है।" "

Chapter 40

¹वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से-यरमियाह पर नाज़िल हुआ, इसके बाद के जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने उसको रामा से खाना कर दिया, जब उसने उसे हथकड़ियों से जकड़ा हुआ उन सब गुलामों के बीच पाया जो यरुशलीम और यहूदाह के थे, जिनको गुलाम करके बाबुल को ले जा रहे थे² और जिलौदारों के सरदार ने यरमियाह को लेकर उससे कहा, कि "खुदावन्द तेरे खुदा ने इस बला की, जो इस जगह पर आई खबर दी थी।

³इसलिए खुदावन्द ने उसे नाज़िल किया, और उसने अपने क्रौल के मुताबिक किया; क्योंकि तुम लोगों ने खुदावन्द का गुनाह किया और उसकी नहीं सुनी, इसलिए तुम्हारा ये हाल हुआ।⁴ और देख, आज मैं तुझे इन हथकड़ियों से जो तेरे हाथों में हैं रिहाई देता हूँ। अगर मेरे साथ बाबुल चलना तेरी नज़र में बेहतर हो, तो चल, और मैं तुझ पर खूब निगाह रखूँगा; और अगर मेरे साथ बाबुल चलना तेरी नज़र में बुरा लगे, तो यहीं रह; तमाम मुल्क तेरे सामने है जहाँ तेरा जी चाहे और तू मुनासिब जाने वहीं चला जा।"

⁵वह वहीं था कि उसने फिर कहा, "तू जिदलियाह बिन अखीक़ाम बिन साफ़न के पास जिसे शाह-ए-बाबुल ने यहूदाह के शहरों का हाकिम किया है, चला जा और लोगों के बीच उसके साथ रह; वरना जहाँ तेरी नज़र में बेहतर हो वहीं चला जा।" और जिलौदारों के सरदार ने उसे खुराक और इन'आम देकर रुख़सत किया।⁶ तब यरमियाह जिदलियाह-बिन-अखीक़ाम के पास मिस्फ़ाह में गया, और उसके साथ उन लोगों के बीच, जो उस मुल्क में बाक़ी रह गए थे रहने लगा।

⁷जब लश्क़रों के सब सरदारों ने और उनके आदमियों ने जो मैदान में रह गए थे, सुना के शाह-ए-बाबुल ने जिदलियाह-बिन-अखीक़ाम को मुल्क का हाकिम मुक़र्रर किया है; और मर्दों और 'औरतों और बच्चों को, और ममलुकत के गरीबों को जो गुलाम होकर बाबुल को न गए थे, उसके सुपुर्द किया है;⁸ तो इस्माईल-बिन-नतनियाह और यूहनान और यूनतन बनी क्ररिह और सिरायाह-बिन-तनहुमत और बनी 'ईफ़ी नतुफ़ाती और-यज़नियाह-बिन-मा'काती अपने आदमियों के साथ जिदलियाह के पास मिस्फ़ाह में आए।

⁹और जिदलियाह-बिन-अखीक़ाम-बिन-साफ़न ने उन से और उन के आदमियों से क़सम खाकर कहा, "तुम कसदियों की खिदमत गुज़ारी से न डरो। अपने मुल्क में बसो, और शाह-ए-बाबुल की खिदमत करो तो तुम्हारा भला होगा।"¹⁰ देखो, मैं तो इसलिए मिस्फ़ाह में रहता हूँ कि जो कसदी हमारे पास आएँ, उनकी खिदमत में हाज़िर रहूँ पर तुम मय और ताबिस्तानी मेवे, और तेल जमा' करके अपने बर्तनों में रखखो, और अपने शहरों में जिन पर तुम ने क़ब्ज़ा किया है बसो।"

¹¹और इसी तरह जब उन सब यहूदियों ने जो मोआब और बनी 'अम्मोन और अदोम' और तमाम मुमालिक में थे, सुना कि शाह-ए-बाबुल ने यहूदाह के चन्द लोगों को रहने दिया है, और जिदलियाह-बिन-अखीक़ाम-बिन-साफ़न को उन पर हाकिम मुक़र्रर किया है;¹² तो सब यहूदी हर जगह से, जहाँ वह तितर-बितर किए गए थे, लौटे और यहूदाह के मुल्क में मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए, और मय और ताबिस्तानी मेवे कसरत से जमा' किए।

¹³और यूहनान-बिन-क्ररीह और लश्क़रों के सब सरदार जो मैदानों में थे, मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए¹⁴ और उससे कहने लगे, "क्या तू जानता है कि बनी 'अम्मोन के बादशाह बा'लीस ने इस्माईल-बिन-नतनियाह को इसलिए भेजा है कि तुझे क़त्ल करे?" लेकिन जिदलियाह-बिन-अखीक़ाम ने उनका यक़ीन न किया।

¹⁵और यूहनान-बिन-क्ररीह ने मिस्फ़ाह में जिदलियाह से तन्हाई में कहा, "इजाज़त हो तो मैं इस्माईल-बिन-नतनियाह को क़त्ल करूँ, और इसको कोई न जानेगा; वह क्यूँ तुझे क़त्ल करे, और सब यहूदी जो तेरे पास जमा' हुए हैं, तितर-बितर किए जाएँ, और यहूदाह के बाक़ी मान्दा लोग हलाक हों?"¹⁶ लेकिन-जिदलियाह-बिन-अखीक़ाम ने यूहनान-बिन-क्ररीह से कहा, "तू ऐसा काम हरगिज़ न करना, क्यूँकि तू इस्माईल के बारे में झूट कहता है।"

Chapter 41

¹और सातवें महीने में यूँ हुआ कि इस्माईल बिन-नतनियाह-बिन-इलीसमा' जो शाही नसल से और बादशाह के सरदारों में से था, दस आदमी साथ लेकर जिदलियाह-बिन-अखीक्राम के पास मिस्फ़ाह में आया; और उन्होंने वहाँ मिस्फ़ाह में मिल कर खाना खाया।²तब इस्मा'ईल-बिन-नतनियाह उन दस आदमियों के साथ जो उसके साथ थे उठा और जिदलियाह-बिन-अखीक्राम बिन साफ़न को जिसे शाह-ए-बाबुल ने मुल्क का हाकिम मुकर्रर किया था, तलवार से मारा और उसे क्रल्ल किया।³और इस्माईल ने उन सब यूहूदियों को जो जिदलियाह के साथ मिस्फ़ाह में थे, और कसदी सिपाहियों को जो वहाँ हाज़िर थे क्रल्ल किया।

⁴जब वह जिदलियाह को मार चुका, और किसी को ख़बर न हुई, तो उसके दूसरे दिन यूँ हुआ कि सिक्म और सैला और सामरिया से कुछ लोग जो सब के सब अस्सी आदमी थे, दाढ़ी मुंडाए और कपड़े फाड़े और अपने आपको घायल किए और हृदिये और लुबान हाथों में लिए हुए वहाँ आए, ताकि खुदावन्द के घर में पेश करें।

⁶और इस्मा'ईल-बिन-नतनियाह मिस्फ़ाह से उनके इस्तक्रबाल को निकला, और रोता हुआ चला; और यूँ हुआ कि जब वह उनसे मिला तो उनसे कहने लगा कि जिदलियाह बिन अखीक्राम के पास चलो।⁷और फिर जब वह शहर के वस्त में पहुँचे, तो इस्माईल-बिन-नतनियाह और उसके साथियों ने उनको क्रल्ल करके हौज़ में फेंक दिया।

⁸लेकिन उनमें से दस आदमी थे जिन्होंने इस्मा'ईल से कहा, "हम को क्रल्ल न कर, क्योंकि हमारे गेहूँ और जौ और तेल और शहद के ज़खीरे खेतों में पोशीदा हैं।" इसलिए वह बाज़ रहा और उनको उनके भाइयों के साथ क्रल्ल न किया।⁹वह हौज़ जिसमें इस्माईल ने उन लोगों की लाशों को फेंका था, जिनको उसने जिदलियाह के साथ क्रल्ल किया (वही है जिसे आसा बदशाह ने शाह-ए-इस्माईल बाशा के डर से बनाया था) और इस्मा'ईल-बिन-नतनियाह ने उसको मक्तूलों की लाशों से भर दिया।

¹⁰तब इस्माईल बाक़ी सब लोगों को, या'नी शहज़ादियों और उन सब लोगों को जो मिस्फ़ाह में रहते थे जिनको जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह-बिन-अखीक्राम के सुपुर्द किया था, गुलाम करके ले गया; इस्मा'ईल-बिन-नतनियाह उनको गुलाम करके रवाना हुआ कि पार होकर बनी 'अम्मोन में जा पहुँचे।

¹¹लेकिन जब यूहनान-बिन-करीह ने और लश्कर कि सब सरदारों ने जो उसके साथ थे, इस्माईल-बिन-नतनियाह की तमाम शरारत के बारे में जो उसने की थी सुना,¹²तो वह सब लोगों को लेकर उससे लड़ने को गए और जिबा'ऊन के बड़े तालाब पर उसे जा लिया।

¹³और यूँ हुआ कि जब उन सब लोगों ने जो इस्माईल के साथ थे यूहनान-बिन-करीह को और उसके साथ सब फ़ौजी सरदारों को देखा, तो वह खुश हुए।¹⁴तब वह सब लोग जिनको इस्मा'ईल मिस्फ़ाह से पकड़ ले गया था, पलटे और यूहनान-बिन-करीह के पास वापस आए।

¹⁵लेकिन इस्मा'ईल-बिन-नतनियाह आठ आदमियों के साथ यूहनान के सामने से भाग निकला और बनी 'अमोन की तरफ़ चला गया।¹⁶तब यूहनान-बिन-करीह और वह फ़ौजी सरदार जो उसके हमराह थे, सब बाक़ी मान्दा लोगों को वापस लाए, जिनको इस्माइल बिन नतनियाह जिदलियाह बिन-अखीक्राम को क्रल्ल करने के बाद मिस्फ़ाह से ले गया था या'नी जंगी मर्दों और औरतों और लड़कों और ख्वाजासराओं को, जिनको वह जिबा'ऊन से वापस लाया था।

¹⁷और वह रवाना हुए और सराय-ए-किमहाम में जो बैतलहम के नज़दीक है, आ रहे ताकि मिस्र को जाएँ।¹⁸क्योंकि वह कसदियों से डरे; इसलिए कि इस्मा'ईल-बिन-नतनियाह ने जिदलियाह-बिन-अखीक्राम को, जिसे शाह-ए-बाबुल ने उस मुल्क पर हाकिम मुकर्रर किया था, क्रल्ल कर डाला।

Chapter 42

¹तब सब फ़ौजी सरदार और यूहनान बिन करीह और यजनियाह बिन हूसाइयाह और अदना-ओ-आला, सब लोग आएँ² और यरमियाह नबी से कहा, "तू देखता है कि हम बहुतों में से चन्द ही रह गए हैं; हमारी दरख्वास्त कुबूल कर और अपने खुदावन्द खुदा से हमारे लिए, हाँ, इस तमाम बक्रिये के लिए दु'आ कर,
³~ताकि खुदावन्द तेरा खुदा, हमको, वह राह जिसमें हम चलें और वह काम जो हम करें बतला दे।"

⁴~तब यरमियाह नबी ने उनसे कहा, "मैंने सुन लिया, देखो, अब मैं खुदावन्द तुम्हारे खुदा से तुम्हारे कहने के मुताबिक़ दु'आ करूँगा; और जो जवाब खुदावन्द तुम को देगा, मैं तुम को सुनाऊँगा। मैं तुम से कुछ न छिपाऊँगा।"⁵~और उन्होंने यरमियाह से कहा कि "जो कुछ खुदावन्द तेरा खुदा, तेरे ज़रिए हम से फ़रमाए, अगर हम उस पर 'अमल न करें तो खुदावन्द हमारे खिलाफ़ सच्चा और वफ़ादार गवाह हो।⁶चाहे भला मा'लूम हो चाहे बुरा, हम खुदावन्द अपने खुदा का हुक्म, जिसके सामने हम तुझे भेजते हैं मानेंगे; ताकि जब हम खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाँबरदारी करें तो हमारा भला हो।"

⁷~अब दस दिन के बाद यँ हुआ कि खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।⁸~और उसने यूहनान-बिन-करीह और सब फ़ौजी सरदारों को जो उसके साथ थे, और अदना-ओ-आला सबको बुलाया,⁹~और उनसे कहा, "खुदावन्द इस्राईल का खुदा, जिसके पास तुम ने मुझे भेजा कि मैं उसके सामने तुम्हारी दरख्वास्त पेश करूँ, यँ फ़रमाता है:¹⁰ अगर तुम इस मुल्क में ठहरे रहोगे, तो मैं तुम को बर्बाद नहीं बल्कि आबाद करूँगा और उखाड़ूँ नहीं लगाऊँगा, क्योंकि मैं उस बुराई से जो मैंने तुम से की है बाज़ आया।

¹¹शाह-ए-बाबुल से, जिससे तुम डरते हो, न डरो खुदावन्द फ़रमाता है; उससे न डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ कि तुम को बचाऊँ और उसके हाथ से छुड़ाऊँ।¹²मैं तुम पर रहम करूँगा, ताकि वह तुम पर रहम करे और तुम को तुम्हारे मुल्क में वापस जाने की इजाज़त दे।

¹³~लेकिन अगर तुम कहो कि 'हम फिर इस मुल्क में न रहेंगे,' और खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानेंगे;¹⁴~और कहो कि 'नहीं, हम तो मुल्क-ए-मिस्र में जाएँगे, जहाँ न लड़ाई देखेंगे न तुरही की आवाज़ सुनें, न भूक से रोटी को तरसेंगे और हम तो वहीं बसेंगे,"

¹⁵~तो ऐ यहूदाह के बाक़ी लोगों, खुदावन्द का कलाम सुनो। रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यँ फ़रमाता है कि: अगर तुम वाक़'ई मिस्र में जाकर बसने पर आमादा हो,¹⁶तो यँ होगा कि वह तलवार जिससे तुम डरते हो, मुल्क-ए-मिस्र में तुम को जा लेगी, और वह काल जिससे तुम हिरासान हो, मिस्र तक तुम्हारा पीछा करेगा और तुम वहीं मरोगे।¹⁷बल्कि यँ होगा कि वह सब लोग जो मिस्र का रुख करते हैं कि वहाँ जाकर रहें, तलवार और काल और वबा से मरेंगे: उनमें से कोई बाक़ी न रहेगा और न कोई उस बला से जो मैं उन पर नाज़िल करूँगा बचेगा।

¹⁸~"क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यँ फ़रमाता है कि: जिस तरह मेरा क्रहर-ओ-ग़ज़ब यरुशलीम के बाशिन्दों पर नाज़िल हुआ, उसी तरह मेरा क्रहर तुम पर भी, जब तुम मिस्र में दाख़िल होगे, नाज़िल होगा और तुम ला'नत-ओ-हैरत और तान-ओ-तशनी' का ज़रिया' होगे; और इस मुल्क को तुम फिर न देखोगे।¹⁹ऐ यहूदाह के बाक़ी मान्दा लोगों, खुदावन्द ने तुम्हारे बारे में फ़रमाया है, कि 'मिस्र में न जाओ," यक़ीन जानो कि मैंने आज तुम को जता दिया है।

²⁰~हक़ीक़त में तुमने अपनी जानों को फ़रेब दिया है, क्योंकि तुम ने मुझ को खुदावन्द अपने खुदा के सामने यँ कहकर भेजा, कि 'तू खुदावन्द हमारे खुदा से हमारे लिए दु'आ कर और जो कुछ खुदावन्द हमारा खुदा कहे, हम पर ज़ाहिर कर और हम उस पर 'अमल करेंगे।'²¹और मैंने आज तुम पर यह ज़ाहिर कर दिया है; तो भी तुमने खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ को, या किसी बात को जिसके लिए उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, नहीं माना।²²~अब तुम यक़ीन जानो कि तुम उस मुल्क में जहाँ जाना और रहना चाहते हो, तलवार और काल और वबा से मरोगे।"

Chapter 43

¹~और यूँ हुआ कि जब यरमियाह सब लोगों से वह सब बातें, जो खुदावन्द उनके खुदा ने उसके ज़रिए' फ़रमाई थीं, या'नी यह सब बातें कह चुका,²~तो अज़रियाह बिन होसियाह और यूहनान बिन क़रीह और सब मज़रूर लोगों ने यरमियाह से यूँ कहा कि, "तू झूट बोलता है; खुदावन्द हमारे खुदा ने तुझे यह कहने को नहीं भेजा, 'मिस्र में बसने को न जाओ,³~बल्कि बारूक-बिन-नैयिरियाह तुझे उभारता है कि तू हमारे मुखालिफ़ हो, ताकि हम कसदियों के हाथ में गिरफ़्तार हों और वह हमको क़त्ल करें और गुलाम करके बाबुल को ले जाएँ।"

⁴तब यूहनान-बिन-क़रीह और सब फ़ौजी सरदारों और सब लोगों ने खुदावन्द का यह हुक्म कि वह यहूदाह के मुल्क में रहें, न माना।⁵~लेकिन यूहनान-बिन-क़रीह और सब फ़ौजी सरदारों ने यहूदाह के सब बाक़ी लोगों को, जो तमाम क़ौमों में से जहाँ-जहाँ वह तितर-बितर किए गए थे और यहूदाह के मुल्क में बसने को वापस आए थे, साथ लिया;⁶~या'नी मर्दों और 'औरतों और बच्चों और शाहज़ादियों और जिस किसी को जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने ज़िदलियाह-बिन-अख़ीक़ाम-बिन-साफ़न के साथ छोड़ा था, और यरमियाह नबी और बारूक-बिन-नैयिरियाह को साथ लिया;⁷~और वह मुल्क-ए-मिस्र में आए, क्योंकि उन्होंने खुदावन्द का हुक्म न माना, इसलिए वह तहफ़नहीस में पहुँचे।

⁸~तब खुदावन्द का कलाम तहफ़नहीस में यरमियाह पर नाज़िल हुआ:⁹~कि "बड़े पत्थर अपने हाथ में ले, और उनको फ़िर'औन के महल के मदख़ल पर जो तहफ़नहीस में है, बनी यहूदाह की आँखों के सामने चूने से फ़र्श में लगा;¹⁰और उनसे कह कि ~'रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं अपने खिदमत गुज़ार शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र को बुलाऊँगा, और इन पत्थरों पर जिनको मैंने लगाया है, उसका तख़्त रखवूँगा, और वह इन पर अपना क़ालीन बिछाएगा।

¹¹~और वह आकर मुल्क-ए- मिस्र को शिकस्त देगा; और जो मौत के लिए हैं मौत के, और जो गुलामी के लिए हैं गुलामी के, और जो तलवार के लिए हैं तलवार के हवाले करेगा।¹²और मैं मिस्र के बुतख़ानों में आग भड़काऊँगा, और वह उनको जलाएगा और गुलाम करके ले जाएगा; और जैसे चरवाहा अपना कपड़ा लपेटता है, वैसे ही वह ज़मीन-ए-मिस्र को लपेटेगा; और वहाँ से सलामत चला जाएगा।¹³~और वह बैतशम्स के सुतूनों को, जो मुल्क-ए-मिस्र में हैं तोड़ेगा और मिस्रियों के बुतख़ानों को आग से जला देगा।~

Chapter 44

¹~ वह कलाम जो उन सब यहूदियों के बारे में जो मुल्क-ए-मिस्र में मिजदाल के 'इलाके और तहफ़नीस और नूफ़ और फ़तरूस में बसते थे, यरमियाह पर नाज़िल हुआ:²~कि 'रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम ने वह तमाम मुसीबत जो मैं यरुशलीम पर और यहूदाह के सब शहरों पर लाया हूँ, देखी; और देखो, अब वह वीरान और ग़ैर आबाद हैं।³ उस शरारत की वजह से जो उन्होंने मुझे ग़ज़बनाक करने की, क्योंकि वह ग़ैर-मा'बूदों के आगे खुशबू ~जलाने को गए, और उनकी 'इबादत की जिनको न वह जानते थे, न तुम न तुम्हारे बाप-दादा।

⁴और मैंने अपने तमाम ख़िदमत-गुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, उनको वक़्त पर यूँ कह कर भेजा कि तुम यह नफ़रती काम, जिससे मैं नफ़रत रखता हूँ, न करो।⁵~लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया कि अपनी बुराई से बाज़ आएँ, और ग़ैर-मा'बूदों के आगे खुशबू न जलाएँ।⁶~इसलिए मेरा क्रहर-ओ-ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और यहूदाह के शहरों और यरुशलीम के बाज़ारों पर भड़का; और वह ख़राब और वीरान हुए जैसे अब हैं।

⁷और अब खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम क्यों अपनी जानों से ऐसी बड़ी बुराई करते हो, कि यहूदाह में से मर्द-ओ-ज़न और तिफ़ल-ओ-शीर ख़वार काट डालें जाएँ और तुम्हारा कोई बाक़ी न रहे;⁸~कि तुम मुल्क-ए-मिस्र में, जहाँ तुम बसने को गए हो, अपने 'आमाल से और ग़ैर-मा'बूदों के आगे खुशबू जलाकर मुझको ग़ज़बनाक करते हो, कि हलाक किए जाओ और इस ज़मीन की सब क़ौमों के बीच ला'नत-ओ-मलामत का ज़रिया' बनो।

⁹~क्या तुम अपने बाप-दादा की शरारत और यहूदाह के बादशाहों और उनकी बीवियों की और खुद अपनी और अपनी बीवियों की शरारत, जो तुम ने यहूदाह के मुल्क में और यरुशलीम के बाज़ारों में की, भूल गए हो?¹⁰~वह आज के दिन तक न फ़रोतन हुए, न डरे और मेरी शरी'अत-ओ-आईन पर, जिनको मैंने तुम्हारे और तुम्हारे बाप-दादा के सामने रखवा, न चले।

¹¹~"इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ़ ज़ियानकारी पर आमदा हूँ ताकि तमाम यहूदाह को हलाक करूँ।

¹²और मैं यहूदाह के बाक़ी लोगों को, जिन्होंने मुल्क-ए-मिस्र का रुख़ किया है कि वहाँ जाकर बसें, पकड़ूँगा; और वह मुल्क-ए-मिस्र ही में हलाक होंगे, वह तलवार और काल से हलाक होंगे; उनके अदना-ओ- 'आला हलाक होंगे और वह तलवार और काल से फ़ना हो जाएँगे; और ला'नत-ओ-हैरत और ता'न-ओ-तशनी' का ज़रिया' होंगे।

¹³~और मैं उनको जो मुल्क-ए- मिस्र में बसने को जाते हैं, उसी तरह सज़ा दूँगा जिस तरह मैंने यरुशलीम को तलवार और काल और वबा से सज़ा दी है;¹⁴तब यहूदाह के बाक़ी लोगों में से, जो मुल्क-ए- मिस्र में बसने को जाते हैं, न कोई बचेगा, न बाक़ी रहेगा कि वह यहूदाह की सरज़मीन में वापस आएँ, जिसमें आकर बसने के वह मुश्ताक़ हैं; क्योंकि भाग कर बच निकलने वालों के अलावा कोई वापस न आएगा।"

¹⁵तब सब मर्दों ने, जो जानते थे कि उनकी बीवियों ने ग़ैर-मा'बूदों के लिए खुशबू ~जलायी है, और सब 'औरतों ने जो पास खड़ी थीं, एक बड़ी जमा'अत या'नी सब लोगों ने जो मुल्क-ए-मिस्र में फ़तरूस में जा बसे थे, यरमियाह को यूँ जवाब दिया:¹⁶कि "यह बात जो तूने खुदावन्द का नाम लेकर हम से कही, हम कभी न मानेंगे।¹⁷बल्कि हम तो उसी बात पर 'अमल करेंगे, जो हम खुद कहते हैं कि हम आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाएँगे और तपावन तपाएँगे, जिस तरह हम और हमारे बाप-दादा, हमारे बादशाह और हमारे सरदार, यहूदाह के शहरों और यरुशलीम के बाज़ारों में किया करते थे; क्योंकि उस वक़्त हम ख़ूब खाते-पीते और खुशहाल और मुसीबतों से महफूज़ थे।

¹⁸लेकिन जबसे हम ने आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाना और तपावन तपाना छोड़ दिया, तब से हम हर चीज़ के मोहताज़ हैं, और तलवार और काल से फ़ना हो रहे हैं।¹⁹और जब हम आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाती और तपावन तपाती थीं, तो क्या हम ने अपने शौहरों के बग़ैर, उसकी 'इबादत के लिए कुल्चे पकाए और तपावन तपाए थे?"

²⁰~तब यरमियाह ने उन सब मर्दों और 'औरतों या'नी उन सब लोगों से, जिन्होंने उसे~जवाब दिया था, कहा,²¹~"क्या वह खुशबू, जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बादशाहों और हाकिम ने र'इयत के साथ यहूदाह के शहरों और यरुशलीम के बाज़ारों में जलाया, खुदावन्द को याद नहीं? क्या वह उसके ख़याल में नहीं आया?

²²इसलिए तुम्हारे बद'आमाल और नफ़रती कामों की वजह से खुदावन्द बर्दाश्त न कर सका; इसलिए तुम्हारा मुल्क वीरान हुआ और हैरत-ओ-ला'नत का ज़रिया' बना, जिसमें कोई बसने वाला न रहा, जैसा कि आज के दिन है।²³~चूँकि तुम ने खुशबू जलाया और खुदावन्द के गुनाहगार ठहरे, और उसकी आवाज़ को न सुना और न उसकी शरी'अत, न उसके क़ानून, न उसकी शहादतों पर चले; इसलिए यह मुसीबत जैसी कि अब है, तुम पर आ पड़ी।"

²⁴~और यरमियाह ने सब लोगों और~सब 'औरतों से यूँ कहा कि "ऐ तमाम बनी यहूदाह, जो मुल्क-ए-मिस्र में हो, खुदावन्द का कलाम सुनो।²⁵रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम ने और तुम्हारी बीवियों ने अपनी ज़बान से कहा कि 'आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाने और तपावन तपाने की जो नज़्रें हम ने मानी हैं, ज़रूर अदा करेंगे," और तुमने अपने हाथों से ऐसा ही किया; इसलिए अब तुम अपनी~नज़्रों~को क़ायम रखो और अदा करो

²⁶~इसलिए ऐ तमाम बनी यहूदाह, जो मुल्क-ए-मिस्र में बसते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो; देखो, खुदावन्द फ़रमाता है: मैंने अपने बुजुर्ग़ नाम की क़सम खाई है कि अब मेरा नाम यहूदाह के लोगों में तमाम मुल्क-ए-मिस्र में किसी के मुँह से न निकलेगा, कि वह कहीं ज़िन्दा खुदावन्द खुदा की क़सम।²⁷~देखो, मैं नेकी के लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए उन पर निगरान हूँगा; और यहूदाह के सब लोग, जो मुल्क-ए-मिस्र में हैं, तलवार और काल से हलाक होंगे यहाँ तक कि बिल्कुल नेस्त हो जाएँगे।²⁸और वह जो तलवार से बचकर मुल्क-ए-मिस्र से यहूदाह के मुल्क में वापस आएँगे, थोड़े से होंगे और यहूदाह के तमाम बाक़ी लोग, जो मुल्क-ए-मिस्र में बसने को गए, जानेंगे कि किसकी बात क़ायम रही, मेरी या उनकी।

²⁹~और तुम्हारे लिए यह निशान है, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं इसी जगह तुम को सज़ा दूँगा, ताकि तुम जानो कि तुम्हारे खिलाफ़ मेरी बातें मुसीबत के बारे में यकीनन क़ायम रहेंगी.³⁰~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि देखो, मैं शाह-ए-मिस्र फिर'औन हुफ़रा' को उसके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा; जिस तरह मैंने शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह को शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के हवाले कर दिया, जो उसका मुखालिफ़ और जानी दुश्मन था।"

Chapter 45

¹शाह-ए-यहूदाह यहूयकीम बिन यूसियाह के चौथे बरस में, जब बारूक-बिन-नैयिरियाह यरमियाह की ज़बानी कलाम की किताब में लिख रहा था, जो यरमियाह ने उससे कहा:²"ऐ बारूक, खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, तेरे बारे में यूँ फ़रमाता है:³~कि तूने कहा, 'मुझ पर अफ़सोस! कि खुदावन्द ने मेरे दुख-दर्द पर ग़म भी बढ़ा दिया; मैं कराहते-कराहते थक गया और मुझे आराम न मिला।'

⁴~तू उससे यूँ कहना, कि खुदावन्द फ़रमाता है: देख, इस तमाम मुल्क में, जो कुछ मैंने बनाया गिरा दूँगा, और जो कुछ मैंने लगाया उखाड़ फेकूँगा।⁵~और क्या तू अपने लिए उमूर-ए-'अज़ीम की तलाश में है? उनकी तलाश छोड़ दे; क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है: देख, मैं तमाम बशर पर बला नाज़िल करूँगा ; लेकिन जहाँ कहीं तू जाए तेरी जान तेरे लिए ~ग़नीमत ठहराऊँगा।"

Chapter 46

¹खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह नबी पर क्रौमों के बारे में नाज़िल हुआ।²मिस्र के बारे में शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन निकोह की फ़ौज के बारे में जो दरिया-ए-फ़रात के किनारे पर करकिमीस में थी, जिसको शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम-बिन-यूसियाह के चौथे बरस में शिकस्त दी:³सिपर और ढाल को तैयार करो, और लड़ाई पर चले आओ।⁴घोड़ों पर साज़ लगाओ; ऐ सवारो, तुम सवार हो और खोद पहनकर निकलो, नेज़ों को सैकल करो, बत्तर पहिनी!

⁵मैं उनको घबराए हुए क्यों देखता हूँ? वह पलट गए; उनके बहादुरों ने शिकस्त खाई, वह भाग निकले और पीछे फिरकर नहीं देखते क्योंकि चारों तरफ़ खौफ़ है खुदावन्द फ़रमाता है।⁶न सुबुकपा भागने पाएगा, न बहादुर बच निकलेगा; उत्तर में दरिया-ए-फ़रात के किनारे उन्होंने ठोकर खाई और गिर पड़े।

⁷'यह-कौन है जो दरिया-ए-नील की तरह बढ़ा चला आता है, जिसका पानी सैलाब की तरह मौजज़न है?' मिस्र नील की तरह उठता है, और उसका पानी सैलाब की तरह मौजज़न है; और वह कहता है, 'मैं चढ़ूँगा और ज़मीन को छिपा लूँगा मैं शहरों को और उनके बशिन्दों को हलाक कर दूँगा।'⁸घोड़े बरअन्गोखता हों, रथ हवा हो जाएँ, और कूश-ओ-फ़ूत के बहादुर जो सिपरबरदार हैं, और लूदी जो कमानकशी और तीरअन्दाज़ी में माहिर हैं, निकलें।

⁹क्योंकि यह खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज का दिन, या'नी इन्तक्राम का रोज़ है, ताकि वह अपने दुश्मनों से इन्तक्राम ले। इसलिए तलवार खा जाएगी और सेर होगी, और उनके खून से मस्त होगी; क्योंकि खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज के लिए उत्तरी सरज़मीन में दरिया-ए-फ़रात के किनारे एक ज़बीहा है।

¹¹ऐ कुँवारी दुख्तर-ए-मिस्र, ज़िल'आद को चढ़ जा और बलसान ले, तू बे-फ़ायदा तरह तरह की दवाएँ इस्ते'माल करती है तू शिफ़ा न पाएगी।¹²क्रौमों ने तेरी रुस्वाई का हाल सुना, और ज़मीन तेरी फ़रियाद से मा'मूर हो गई, क्योंकि बहादुर एक दूसरे से टकराकर एक साथ गिर गए।"

¹³वह कलाम जो खुदावन्द ने यरमियाह नबी को शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के आने और मुल्क-ए-मिस्र को शिकस्त देने के बारे में फ़रमाया:¹⁴"मिस्र में आशकारा करो, मिजदाल में इस्तिहार दो; हाँ, नूफ़ और तहफ़नहीस में 'ऐलान करो; कहो कि 'अपने आपको तैयार कर; क्योंकि तलवार तेरी चारों तरफ़ खाये जाती है।'

¹⁵तेरे बहादुर क्यों भाग गए? वह खड़े न रह सके, क्योंकि खुदावन्द ने उनको गिरा दिया।¹⁶उसने बहुतों को गुमराह किया, हाँ, वह एक दूसरे पर गिर पड़े; और उन्होंने कहा, 'उठो, हम मुहलिक तलवार के जुल्म से अपने लोगों में और अपने वतन को फिर जाएँ।'¹⁷वह वहाँ चिल्लाए कि 'शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन बर्बाद हुआ; उसने मुकर्ररा वक्त्र को गुज़र जाने दिया।'

¹⁸वह बादशाह, जिसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज है, यूँ फ़रमाता है कि मुझे अपनी हयात की क्रसम, जैसा तबूर पहाड़ों में और जैसा कर्मिल समन्दर के किनारे है, वैसा ही वह आएगा।¹⁹ऐ बेटी, जो मिस्र में रहती है गुलामी में जाने का सामान कर; क्योंकि नूफ़ वीरान और भसम होगा, उसमें कोई बसने वाला न रहेगा।

²⁰"मिस्र बहुत खूबसूरत बछिया है; लेकिन उत्तर से तबाही आती है, बल्कि आ पहुँची।²¹उसके मज़दूर सिपाही भी उसके बीच मोटे बछड़ों की तरह हैं; लेकिन वह भी शुमार हुए, वह इकट्ठे भागे, वह खड़े न रह सके; क्योंकि उनकी हलाकत का दिन उन पर आ गया, उनकी सज़ा का वक्त्र आ पहुँचा।²²वह साँप की तरह चिलचिलाएगी; क्योंकि वह फ़ौज लेकर चढ़ाई करेंगे, और कुल्हाड़े लेकर लकड़हारों की तरह उस पर चढ़ आएँगे।

²³वह उसका जंगल काट डालेंगे, अगरचे वह ऐसा घना है कि कोई उसमें से गुज़र नहीं सकता खुदावन्द फ़रमाता है क्योंकि वह टिड्डियों से ज़्यादा बल्कि बेशुमार हैं।²⁴दुख्तर-ए-मिस्र रुस्वा होगी, वह उत्तरी लोगों के हवाले की जाएगी।"

²⁵रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, फ़रमाता है: "देख, मैं आमून-ए-नो को, और फ़िर'औन और मिस्र और उसके मा'बूदों, और उसके बादशाहों को; या'नी फ़िर'औन और उनको जो उस पर भरोसा रखते हैं, सज़ा दूँगा;²⁶और मैं उनको उनके जानी दुश्मनों, और शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र और उसके मुलाज़िम्ओं के हवाले कर दूँगा; लेकिन इसके बाद वह फिर ऐसी आबाद होगी, जैसी अगले दिनों में थी, खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁷"लेकिन मेरे खादिम या'क़ूब, हिरासाँ न हो; और ऐ इस्राईल, घबरा न जा; क्योंकि देख, मैं तुझे दूर से, और तेरी औलाद को उनकी गुलामी की ज़मीन से रिहाई दूँगा; और या'क़ूब वापस आएगा और आराम-ओ-राहत से रहेगा, और कोई उसे न डराएगा।²⁸ऐ मेरे खादिम या'क़ूब, हिरासाँ न हो, खुदावन्द फ़रमाता है; क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। अगरचे मैं उन सब क्रौमों को जिनमें मैंने तुझे हाँक दिया, हलाक-ओ-बर्बाद करूँ तो भी मैं तुझे-हलाक-ओ-बर्बाद-न करूँगा; बल्कि मुनासिब तम्बीह करूँगा और हरगिज़ बे-सज़ा-न छोड़ूँगा

Chapter 47

¹खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह नबी पर फ़िलिस्तिनियों के बारे में नाज़िल हुआ, इससे पहले कि फ़िर'औन ने ग़ज़ज़ा को फ़तह किया | ²"खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, उत्तर से पानी चढ़ेंगे और सैलाब की तरह होंगे, और मुल्क पर और सब पर जो उसमें है, शहर पर और उसके बाशिन्दों पर, बह निकलेंगे। उस वक़्त लोग चिल्लाएँगे, और मुल्क के सब बाशिन्दे फ़रियाद करेंगे।

³उसके ताकतवर घोड़ों के खुरों की टाप की आवाज़ से, उसके रथों के रेले और उसके पहियों की गड़गड़ाहट से बाप कमज़ोरी की वजह से अपने बच्चों की तरफ़ लौट कर न देखेंगे। ⁴~यह उस दिन की वजह से होगा, जो आता है कि सब फ़िलिस्तिनियों को ग़ारत करे, और सूर और सैदा से हर मददगार को जो बाक़ी रह गया है हलाक करे; क्योंकि खुदावन्द फ़िलिस्तिनियों को या'नी कफ़तूर के जज़ीरे के बाक़ी लोगों को ग़ारत करेगा।

⁵~ग़ज़ज़ा पर चन्दलापन आया है, अस्क़लोन अपनी वादी के बक़िये के साथ हलाक किया गया, तू कब तक अपने आप को काटता जाएगा⁶~"ऐ खुदावन्द की तलवार, तू कब तक न ठहरेगी? तू चल, अपने ग़िलाफ़ में आराम ले, और साकिन हो!⁷~वह कैसे ठहर सकती है, जब कि खुदावन्द ने अस्क़लोन और समन्दर के साहिल के ख़िलाफ़ उसे हुक्म दिया है? उसने उसे वहाँ मुक़रर किया है।"

Chapter 48

¹मोआब के बारे में। रब्ब-उल-अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: "नबू पर अफ़सोस, कि वह वीरान हो गया! करयताइम रुस्वा हुआ, और ले लिया गया; मिसजाब खजिल और पस्त हो गया।² अब मोआब की ता'रीफ़ न होगी। हस्बोन में उन्होंने यह कह कर उसके खिलाफ़ मंसूबे बाँधे हैं कि: 'आओ, हम उसे बर्बाद करें कि वह क्रौम न कहलाए,' ऐ मदमेन तू भी काट डाला जाएगा; तलवार तेरा पीछा करेगी।

³'होरोनायिम में चीख पुकार, 'वीरानी और बड़ी तबाही होगी।'⁴~मोआब बर्बाद हुआ; उसके बच्चों के नौहे की आवाज़ सुनाई देती है।⁵~क्यूँकि लूहीत की चढ़ाई पर आह-ओ-नाला करते हुए चढ़ेंगे यक्रीनन होरोनायिम की उतराई पर मुखालिफ़ हलाकत के जैसी आवाज़ सुनते हैं।

⁶भागो! अपनी जान बचाओ! वीराने में रतमा के दरख्त की तरह हो जाओ!⁷ और चूँकि तूने अपने कामों और खज़ानों पर भरोसा किया इसलिए तू भी गिरफ़्तार होगा; और कमोस अपने काहिनों और हाकिम के साथ गुलाम होकर जाएगा।

⁸और ग़ारतगर हर एक शहर पर आएगा, और कोई शहर न बचेगा; वादी भी वीरान होगी, और मैदान उजाड़ हो जाएगा; जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया है।⁹"मोआब को पर लगा दो, ताकि उड़ जाए क्यूँकि उसके शहर उजाड़ होंगे और उनमें कोई बसनेवाला न होगा।¹⁰"जो खुदावन्द का काम बेपरवाई से करता है, और जो अपनी तलवार को खूँरेज़ी से बाज़ रखता है, मला'ऊन हो।

¹¹मोआब बचपन ही से आराम से रहा है, और उसकी तलछट तहनशीन रही, न वह एक बर्तन से दूसरे में उँडेला गया और न गुलामी में गया; इसलिए उसका मज़ा उसमें क़ायम है और उसकी बू नहीं बदली।¹² इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं उण्डेलने वालों को उसके पास भेजूँगा कि वह उसे उलटाएँ; और उसके बर्तनों को खाली और मटकों को चकनाचूर करें।

¹³तब मोआब कमोस से शर्मिन्दा होगा, जिस तरह इस्राईल का घराना बैतएल से जो उसका भरोसा था, खजिल हुआ।¹⁴"तुम क्यूँकर कहते हो, कि 'हम पहलवान हैं और जंग के लिए ज़बरदस्त सूर्मा हैं'?

¹⁵मोआब ग़ारत हुआ; उसके शहरों का धुवौं उठ रहा है, और उसके चीदा जवान क़त्ल होने को उतर गए; वह बादशाह फ़रमाता है जिसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज़ है।¹⁶नज़दीक है कि मोआब पर आफ़त आए, और उनका वबाल दौड़ा आता है।¹⁷ऐ उसके आस-पास वालों, सब उस पर अफ़सोस करो; और तुम सब जो उसके नाम से वाक़िफ़ हो कहो कि यह मोटा 'असा और खूबसूरत डंडा क्यूँकर टूट गया।'

¹⁸"ऐ बेटी, जो दीबोन में बसती है! अपनी शौकत से नीचे उतर और प्यासी बैठ; क्यूँकि मोआब का ग़ारतगर तुझ पर चढ़ आया है और उसने तेरे क़िलों' को तोड़ डाला।¹⁹ऐ अरो'ईर की रहने वाली' तू राह पर खड़ी हो, और निगाह कर! भागने वाले से और उससे जो बच निकली हो; पूछ कि ~'क्या माजरा है?'²⁰मोआब रुस्वा हुआ, क्यूँकि वह पस्त कर दिया गया, तुम वावैला मचाओ और चिल्लाओ! अरनोन में इश्तिहार दो, कि मोआब ग़ारत हो गया।

²¹और कि "सहरा की अतराफ़ पर, होलून पर, और यहसाह पर, और मिफ़'अत पर,²² और दीबोन पर, और नबू पर, और बैत-दिब्बलताइम पर,²³ और करयताइम पर, और बैत-जमूल पर, और बैत-म'ऊन पर,²⁴ और करयोत पर, और बसराह, और मुल्क-ए-मोआब के दूर-ओ-नज़दीक के सब शहरों पर 'अज़ाब नाज़िल हुआ है।²⁵मोआब का सींग काटा गया, और उसका बाजू तोड़ा गया, खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁶"तुम उसको मदहोश करो, क्यूँकि उसने अपने आपको खुदावन्द के सामने बुलन्द किया; मोआब अपनी क़य में लोटेगा और मस्खरा बनेगा।²⁷क्या इस्राईल तेरे आगे मस्खरा न था? क्या वह चोरों के बीच पाया गया कि जब कभी तू उसका नाम लेता था, तू सिर हिलाता था?

²⁸"ऐ मोआब के बाशिन्दों, शहरों को छोड़ दो और चट्टान पर जा बसो; और कबूतर की तरह बनो जो गहरे ग़ार के मुँह के किनारे पर आशियाना बनाता है।²⁹हम ने मोआब का तकब्बुर सुना है, वह बहुत मगरूर है, उसकी गुस्ताखी भी, और उसकी शेखी और उसका गुरूर और उसके दिल का तकब्बुर

³⁰मैं उसका क्रहर जानता हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है; वह कुछ नहीं और उसकी शेखी से कुछ बन न पड़ा।³¹इसलिए मैं मोआब के लिए वावैला करूँगा; हाँ, सारे मोआब के लिए मैं ज़ार-ज़ार रोऊँगा; कोर हरस के लोगों के लिए मातम किया जाएगा।³²ऐ सिबमाह की ताक, मैं या'ज़ेर के रोने से ज़्यादा तेरे लिए रोऊँगा; तेरी शाखें समन्दर तक फैल गईं, वह या'ज़ेर के समन्दर तक पहुँच गईं, ग़ारतगर तेरे ताबिस्तानी मेवों पर और तेरे अंगूरों पर आ पड़ा है

³³खुशी और शादमानी हरे भरे खेतों से और मोआब के मुल्क से उठा ली गई; और मैंने अंगूर के हौज़ में मय बाक़ी नहीं छोड़ी, अब कोई ललकार कर न लताड़ेगा; उनका ललकारना, ललकारना न होगा।

³⁴'हस्बोन के रोने से वह अपनी आवाज़ को इली'आला और यहज़ तक और जुगार से होरोनायिम तक 'इजलत शलीशियाह तक बुलन्द करते हैं; क्यूँकि नमरियम के चश्मे भी ख़राब हो गए हैं।³⁵और खुदावन्द फ़रमाता है, कि जो कोई ऊँचे मक़ाम पर कुर्बानी चढ़ाता है, और जो कोई अपने मा'बूदों के आगे खुशबू जलाता है, मोआब में से हलाक कर दूँगा।

³⁶इसलिए मेरा दिल मोआब के लिए बाँसरी की तरह आहें भरता, और क़ीर हरस के लोगों के लिए शहनाओं की तरह फुगान करता है, क्यूँकि उसका फ़िरावान ज़ख़ीरा तलफ़ हो गया।³⁷हकीक़त में हर एक सिर मुंडा है, और हर एक दाढ़ी कतरी गई; हर एक के हाथ पर ज़ख़म है और हर एक की कमर पर टाट।

³⁸मोआब के सब घरों की छतों पर और उसके सब बाज़ारों में बड़ा मातम होगा, क्यूँकि मैंने मोआब को उस बर्तन की तरह जो पसन्द न आए तोड़ा है, खुदावन्द फ़रमाता है।³⁹वह वावैला करेंगे और कहेंगे, कि उसने कैसी शिकस्त खाई है! मोआब ने शर्म के मारे क्यूँकर अपनी पीठ फेरी! तब मोआब सब आस-पास वालों के लिए हँसी और ख़ौफ़ का ज़रिया' होगा।"

⁴⁰क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "देख, वह 'उक्राब की तरह उड़ेगा और मोआब के खिलाफ़ बाजू फैलाएगा।⁴¹वहाँ के शहर और क़िले' ले लिए जायेंगे और उस दिन मोआब के बहादुरों के दिल ज़च्चा के दिल की तरह होंगे।

⁴²~और मोआब हलाक किया जाएगा और क्रौम न कहलाएगा, इसलिए कि उसने खुदावन्द के सामने अपने आपको बुलन्द किया।⁴³ख़ौफ़ और गढ़ा और दाम तुझ पर मुसल्लत होंगे, ऐ साकिन-ए-मोआब, खुदावन्द फ़रमाता है।⁴⁴जो कोई दहशत से भागे, गढ़े में गिरेगा, और जो गढ़े से निकले, दाम में फँसेगा; क्यूँकि मैं उन पर, हाँ, मोआब पर उनकी सियासत का बरस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

⁴⁵"जो भागे, इसलिए हस्बोन के साये तले बेताब खड़े हैं; लेकिन हस्बोन से आग और सीहून के वस्त से एक शो'ला निकलेगा और मोआब की दाढ़ी के कोने को और हर एक फ़सादी की चाँद को खा जाएगा।

⁴⁶हाय, तुझ पर ऐ मोआब! कमोस के लोग हलाक हुए, क्योंकि तेरे बेटों को गुलाम करके ले गए और तेरी बेटियाँ भी गुलाम हुईं।⁴⁷बावजूद इसके मैं आखरी दिनों में मोआब के गुलामों को वापस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।" मोआब की 'अदालत यहाँ तक हुई।

Chapter 49

¹बनी 'अम्मोन के बारे में खुदावन्द का इन्साफ़ फ़रमाता है कि: "क्या इसाईल के बेटे नहीं हैं? क्या उसका कोई वारिस नहीं? फिर मिलकूम ने क्यूँ जद्द पर कब्ज़ा कर लिया, और उसके लोग उसके शहरों में क्यूँ बसते हैं?" इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं बनी 'अम्मोन के रब्बह में लड़ाई का हुल्लड़ बर्पा करूँगा; और वह खंडर हो जाएगा और उसकी बेटियाँ आग से जलाई जाएँगी; तब इसाईल उनका जो उसके वारिस बन बैठे थे, वारिस होगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

³"ऐ हस्बोन, वावैला कर, कि 'ऐ बर्बाद की गई। ऐ रब्बाह की बेटियो, चिल्लाओ, और टाट ओढ़कर मातम करो और इहातों में इधर उधर दौड़ो, क्यूँकि मिलकूम गुलामी में जाएगा और उसके काहिन और हाकिम भी साथ जाएँगे।⁴तू क्यूँ वादियों पर फ़ख़्र करती है? तेरी वादी सेराब है, ऐ बरगश्ता बेटी, तू अपने खज़ानों पर भरोसा करती है, कि ~'कौन मुझ तक आ सकता है?'

⁵देख, खुदावन्द, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है: मैं तेरे सब इर्दगिर्द वालों का ख़ौफ़ तुझ पर ग़ालिब करूँगा; और तुम में से हर एक आगे हाँका जाएगा, और कोई न होगा जो आवारा फिरने वालों को जमा' करे।⁶मगर उसके बा'द मैं बनी 'अम्मोन को गुलामी से वापस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।"

⁷अदोम के बारे में। रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: "क्या तेमान में ख़िरद मुतलक़ न रही? क्या तदबीरों की मसलहत जाती रही? क्या उनकी 'अक़ल उड़ गई?"⁸ऐ ददान के बाशिन्दों, भागो, लौटो, और नशेबों में जा बसो! क्यूँकि मैं इन्तक़ाम के वक़्त उस पर ऐसी की जैसी मुसीबत लाऊँगा।

⁹अगर अँगूर तोड़ने वाले तेरे पास आएँ, तो क्या कुछ दाने बाक़ी न छोड़ेंगे? या अगर रात को चोर आएँ, तो क्या वह हस्ब-ए-ख़्वाहिश ही न तोड़ेंगे?¹⁰लेकिन मैं ऐसी को बिल्कुल नंगा करूँगा, उसके पोशीदा मकानों को बे-पर्दा कर दूँगा कि वह छिप न सके; उसकी नसल और उसके भाई और उसके पड़ोसी सब बर्बाद किए जाएँगे, और वह न रहेगा।¹¹तू अपने यतीम फ़र्ज़न्दों को छोड़, मैं उनको ज़िन्दा रखूँगा; और तेरी बेवाएँ मुझ पर भरोसा करें।"

¹²~क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि "देख, जो सज़ावार न थे कि प्याला पीएँ, उन्होंने ख़ूब पिया; क्या तू बे-सज़ा छूट जाएगा? तू बेसज़ा न छूटेगा, बल्कि यक़ीनन उसमें से पिएगा।¹³क्यूँकि मैंने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, खुदावन्द फ़रमाता है, कि बसराह जा-ए-हैरत और मलामत और वीरानी और ला'नत होगा; और उसके सब शहर अबद-उल-आबाद वीरान रहेंगे।"

¹⁴मैंने खुदावन्द से एक खबर सुनी है, बल्कि एक क़ासिद यह कहने को क़ौमों के बीच भेजा गया है: जमा' हो और उस पर जा पड़ो, और लड़ाई के लिए उठो।

¹⁵क्यूँकि देख, मैंने तुझे क़ौमों के बीच हक़ीर, और आदमियों के बीच ज़लील किया।

¹⁶तेरी हैबत और तेरे दिल के गुरूर ने तुझे फ़रेब दिया है। ऐ तू जो चट्टानों के शिगाफ़ों में रहती है, और पहाड़ों की चोटियों पर क़ाबिज़ है; अगरचे तू 'उक्काब की तरह अपना आशियाना बुलन्दी पर बनाए, तो भी मैं वहाँ से तुझे नीचे उतारूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁷"अदोम भी जा-ए-हैरत होगा, हर एक जो उधर से गुज़रेगा हैरान होगा, और उसकी सब आफ़तों की वजह से सुस्कारेगा।¹⁸जिस तरह सदूम और 'अमूरा और उनके आस पास के शहर ग़ारत हो गए, उसी तरह उसमें भी न कोई आदमी बसेगा, न आदमज़ाद वहाँ सुकूनत करेगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁹देख, वह शेर-ए-बबर की तरह यरदन के जंगल से निकलकर मज़बूत बस्ती पर चढ़ जाएगा; लेकिन मैं अचानक उसको वहाँ से भगा दूँगा, और अपने बरगुज़ीदा को उस पर मुक़र्र करूँगा; क्यूँकि मुझ सा कौन है? कौन है जो मेरे लिए वक़्त मुक़र्र करे? और वह चरवाहा कौन है जो मेरे सामने खड़ा हो सके?

²⁰तब खुदावन्द की मसलहत को, जो उसने अदोम के खिलाफ़ ठहराई है और उसके इरादे को जो उसने तेमान के बाशिन्दों के खिलाफ़ किया है, सुनो, उनके गल्ले के सबसे छोटों को भी घसीट ले जाएँगे, यक़ीनन उनका घर भी उनके साथ बर्बाद होगा।

²¹उनके गिरने की आवाज़ से ज़मीन काँप जाएगी, उनके चिल्लाने का शोर बहर-ए-कुलज़ूम तक सुनाई देगा।²²देख, वह चढ़ जाएगा और 'उक्काब की तरह उड़ेगा, और बसराह के खिलाफ़ बाजू फैलाएगा; और उस दिन अदोम के बहादुरों का दिल ज़च्चा के दिल की तरह होगा।"

²³दमिशक़ के बारे में: "हमात और अरफ़ाद शर्मिन्दा हैं क्यूँकि उन्होंने बुरी खबर सुनी, वह पिघल गए समन्दर ने जुम्बिश खाई, वह ठहर नहीं सकता।²⁴दमिशक़ का ज़ोर टूट गया, उसने भागने के लिए मुँह फेरा, और थरथराहट ने उसे आ लिया; ज़च्चा के से रंज-ओ-दर्द ने उसे आ पकड़ा।²⁵यह क्यूँकर हुआ कि वह नामवर शहर, मेरा शादमान शहर, नहीं बचा?

²⁶~इसलिए उसके जवान उसके बाज़ारों में गिर जाएँगे, और सब जंगी मर्द उस दिन काट डाले जाएँगे, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।²⁷और मैं दमिशक़ की शहरपनाह में आग भड़काऊँगा, जो बिन-हदद के महलों को भसम कर देगी।"

²⁸क़ीदार के बारे में और हसूर की सल्लतनों के बारे में जिनको शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने शिकस्त दी। खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "उठो, क़ीदार पर चढ़ाई करो, और अहल-ए-मशरिक़ को हलाक करो।²⁹~वह उनके खेमों और गल्लों को ले लेंगे; उनके पदों और बर्तनों और ऊँटों को छीन ले जाएँगे; और वह चिल्ला कर उनसे कहेंगे कि चारों तरफ़ खौफ़ है!"

³⁰भागो, दूर निकल जाओ, नशेब में बसो, ऐ हसूर के बाशिन्दो, खुदावन्द फ़रमाता है; क्यूँकि शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने तुम्हारी मुखालिफ़त में मश्वरत की और तुम्हारे खिलाफ़ इरादा किया है।³¹खुदावन्द फ़रमाता है, उठो, उस आसूदा क़ौम पर, जो बे-फ़िक़्र रहती है, जिसके न ~किवाड़े हैं न अड्बंगे और अकेली है चढ़ाई करो

³²उनके ऊँट ग़नीमत के लिए होंगे, और उनके चौपायों की कसरत लूट के लिए; और मैं उन लोगों को जो गाओदुम दाढ़ी रखते हैं, हर तरफ़ हवा में तितर-बितर करूँगा; और मैं उन पर हर तरफ़ से आफ़त लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।³³हसूर गीदड़ों का मक़ाम, हमेशा का वीराना होगा; न कोई आदमी वहाँ बसेगा, और न कोई आदमज़ाद उसमें सुकूनत करेगा।"

³⁴~खुदावन्द का कलाम जो शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह की सल्लतनत के शुरू' में 'ऐलाम के बारे में यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ।³⁵~कि रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: देख मैं ऐलाम की कमान उनकी बड़ी तवानाई को तोड़ डालूँगा।³⁶और चारों हवाओं को आसमान के चारों कोनों से ऐलाम पर लाऊँगा, और उन चारों हवाओं की तरफ़ उनको तितर-बितर करूँगा; और कोई ऐसी क़ौम न होगी, जिस तक ऐलाम के जिलावतन न पहुँचेंगे।

³⁷क्यूँकि मैं ऐलाम को उनके मुखालिफों और जानी दुश्मनों के आगे हिरासाँ करूँगा; और उन पर एक बला या'नी क्रहर-ए-शदीद को नाज़िल करूँगा। खुदावन्द फ़रमाता है, और तलवार को उनके पीछे लगा दूँगा, यहाँ तक कि उनको नाबूद कर डालूँगा;³⁸~और मैं अपना तख़्त 'ऐलाम में रखूँगा, और वहाँ से बादशाह और हाकिम को नाबूद करूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।³⁹"लेकिन आखिरी दिनों में यूँ होगा, कि मैं ऐलाम को गुलामी से वापस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।"

Chapter 50

¹वह कलाम जो खुदावन्द ने बाबुल और कसदियों के मुल्क के बारे में यरमियाह नबी की ज़रिए' फ़रमाया:²"क्रौमों में 'ऐलान करो, और इश्तिहार दो, और झण्डा खड़ा करो, 'ऐलान करो, पोशीदा न रखो; कह दो कि बाबुल ले लिया गया, बेल रुस्वा हुआ, मरोदक सरासीमा हो गया; उसके बुत खजिल हुए, उसकी मूर्तें तोड़ी गई।

³क्यूँकि उत्तर से एक क्रौम उस पर चढ़ी चली आती है, जो उसकी सरज़मीन को उजाड़ देगी, यहाँ तक कि उसमें कोई न रहेगा, वह भाग निकले, वह चल दिए, क्या इन्सान क्या हैवान।⁴'खुदावन्द फ़रमाता है, उन दिनों में बल्कि उसी वक़्त बनी-इसाईल आएँगे; वह और बनी यहूदाह इकट्ठे रोते हुए चलेंगे और खुदावन्द अपने खुदा के तालिब होंगे।⁵वह सिय्यून की तरफ़ मुतवज्जिह होकर उसकी राह पूछेंगे, 'आओ, हम खुदावन्द से मिल कर उससे अबदी 'अहद करें, जो कभी फ़रामोश न हो।'

⁶"मेरे लोग भटकी हुई भेड़ों की तरह हैं; उनके चरवाहों ने उनको गुमराह कर दिया, उन्होंने उनको पहाड़ों पर ले जाकर छोड़ दिया; वह पहाड़ों से टीलों पर गए और अपने आराम का मकान भूल गए हैं।⁷सब जिन्होंने उनको पाया उनको निगल गए, और उनके दुश्मनों ने कहा, " हम कुसूरवार नहीं हैं क्यूँकि उन्होंने खुदावन्द का गुनाह किया है; वह खुदावन्द जो सदाक़त का मस्कन और उनके बाप-दादा की उम्मीदगाह है।

⁸"बाबुल में से भागो, और कसदियों की सरज़मीन से निकलो, और उन बकरों की तरह हो जो गल्लों के आगे आगे चलते हैं।⁹क्यूँकि देख, मैं उत्तर की सरज़मीन से बड़ी क्रौमों के अम्बोह को बर्पा करूँगा और बाबुल पर चढ़ा लाऊँगा, और वह उसके सामने सफ़-आरा होंगे; वहाँ से उस पर क़ब्ज़ा कर लेंगे उनके तीरकार आज़मूदा बहादुर के से होंगे जो ख़ाली हाथ नहीं लौटता।¹⁰कसदिस्तान लूटा जाएगा, उसे लूटने वाले सब आसूदा होंगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹¹"ऐ मेरी मीरास को लूटनेवालों, चूँकि तुम शादमान और खुश हो और दावने वाली बछिया की तरह कूदते फ़ाँदते और ताक़तवर घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो;

¹²इसलिए तुम्हारी माँ बहुत शर्मिन्दा होगी, तुम्हारी वालिदा ख़जालत उठाएगी। देखो, वह क्रौमों में सबसे आखिरी ठहरेगी और वीरान-ओ-ख़ुश ज़मीन और रेगिस्तान होगी।¹³खुदावन्द के क्रहर की वजह से वह आबाद न होगी, बल्कि बिल्कुल वीरान हो जाएगी; जो कोई बाबुल से गुज़रेगा हैरान होगा, और उसकी सब आफ़तों के बाइस सुस्कारेगा।

¹⁴ऐ सब तीरअन्दाज़ो, बाबुल को घेर कर उसके खिलाफ़ सफ़आराई करो, उस पर तीर चलाओ, तीरों को दरेग न करो, क्यूँकि उसने खुदावन्द का गुनाह किया है।

¹⁵उसे घेर कर तुम उस पर ललकारो, उसने इता'अत मन्ज़ूर कर ली; उसकी बुनियादें धंस गई, उसकी दीवारें गिर गई। क्यूँकि यह खुदावन्द का इन्तक़ाम है, उससे इन्तक़ाम लो; जैसा उसने किया, वैसा ही तुम उससे करो।

¹⁶बाबुल में हर एक बोनेवाले को और उसे जो दिरौ के वक़्त दरौती पकड़े, काट डालो; ज़ालिम की तलवार की हैबत से हर एक अपने लोगों में जा मिलेगा, और हर एक अपने वतन को भाग जाएगा।

¹⁷"इसाईल तितर-बितर भेड़ों की तरह है, शेरों ने उसे रगेदा है। पहले शाह-ए-असूर ने उसे खा लिया और फिर यह शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र उसकी हड्डियाँ तक चबा गया।¹⁸इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज, इसाईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं शाह-ए-बाबुल और उसके मुल्क को सज़ा दूँगा, जिस तरह मैंने शाह-ए-असूर को सज़ा दी है।

¹⁹लेकिन मैं इसाईल को फिर उसके घर में लाऊँगा, और वह कर्मिल और बसन में चरेगा, और उसकी जान कोह-ए-इफ़्राईम और जिल'आद पर आसूदा होगी।

²⁰खुदावन्द फ़रमाता है, उन दिनों में और उसी वक़्त इसाईल की बदकिरदारी ढूँडे न मिलेगी; और यहूदाह के गुनाहों का पता न मिलेगा जिनको मैं बाक़ी रखूँगा उनको मु'आफ़ करूँगा।

²¹"मरातायम" की सरज़मीन पर और फ़िक़्रोद के बाशिन्दों पर चढ़ाई कर। उसे वीरान कर और उनको बिल्कुल नाबूद कर, खुदावन्द फ़रमाता है; और जो कुछ मैंने तुझे फ़रमाया है, उस सब के मुताबिक़ 'अमल कर।²²मुल्क में लड़ाई और बड़ी हलाक़त की आवाज़ है।

²³तमाम दुनिया का हथौड़ा, क्यूँकर काटा और तोड़ा गया! बाबुल क्रौमों के बीच कैसा जा-ए-हैरत हुआ!²⁴मैंने तेरे लिए फ़न्दा लगाया, और ऐ बाबुल, तू पकड़ा गया, और तुझे ख़बर न थी। तेरा पता मिला और तू गिरफ़्तार हो गया, क्यूँकि तूने खुदावन्द से लड़ाई की है।

²⁵खुदावन्द ने अपना सिलाहख़ाना खोला और अपने क्रहर के हथियारों को निकाला है; क्यूँकि कसदियों की सरज़मीन में खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज को कुछ करना है।²⁶सिरे से शुरू' करके उस पर चढ़ो, और उसके अम्बारख़ानों को खोलो, उसको खण्डर कर डालो और उसको बर्बाद करो, उसकी कोई चीज़ बाक़ी न छोड़ो।

²⁷उसके सब बैलों को ज़बह करो, उनको मसलख में जाने दो; उन पर अफ़सोस! कि उनका दिन आ गया, उनकी सज़ा का वक़्त आ पहुँचा।²⁸~"सरज़मीन-ए-बाबुल से फ़रारियों की आवाज़! वह भागते और सिय्यून में खुदावन्द हमारे खुदा के इन्तक़ाम, या'नी उसकी हैकल के इन्तक़ाम का ऐलान करते हैं।

²⁹"तीरअन्दाज़ों को बुलाकर इकट्ठा करो कि बाबुल पर जाएँ, सब कमानदारों को हर तरफ़ से उसके सामने खेमाज़न करो। वहाँ से कोई बच न निकले, उसके काम के मुवाफ़िक़ उसको बदला दो। सब कुछ जो उसने किया उसे करें क्यूँकि उसने खुदावन्द ~इसाईल के कुहूस के सामने बहुत तकब्बुर किया।³⁰इसलिए उसके जवान बाज़ारों में गिर जाएँगे, और सब जंगी मर्द उस दिन काट डाले जाएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

³¹"ऐ मगरूर, देख, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है क्यूँकि तेरा वक़्त आ पहुँचा, हाँ, वह वक़्त जब मैं तुझे सज़ा दूँ।³²और वह मगरूर ठोकर खाएगा, वह गिरेगा और कोई उसे न उठाएगा; और मैं उसके शहरों में आग भड़काऊँगा, और वह उसके तमाम 'इलाक़े को भसम कर देगी।

³³"रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि बनी-इसाईल और बनी यहूदाह दोनों मज़लूम हैं; और उनको गुलाम करने वाले उनको क्रैद में रखते हैं, और छोड़ने से इन्कार करते हैं।³⁴उनका छुड़ानेवाला ज़ोरआवर है; रब्ब-उल-अफ़वाज उसका नाम है; वह उनकी पूरी हिमायत करेगा ताकि ज़मीन को राहत बख़्शे, और बाबुल के बाशिन्दों को परेशान करे।

³⁵"खुदावन्द फ़रमाता है, कि तलवार कसदियों पर और बाबुल के बाशिन्दों पर, और उसके हाकिम और हुक्मा पर है।³⁶लाफ़ज़नों पर तलवार है, वह बेवकूफ़ हो जाएँगे; उसके बहादुरों पर तलवार है, वह डर जाएँगे।³⁷उसके घोड़ों और रथों और सब मिले-जुले लोगों पर जो उसमें हैं, तलवार है, वह 'औरतों की तरह होंगे; उसके खज़ानों पर तलवार है, वह लूटे जाएँगे।

³⁸उसकी नहरों पर खुश्कसाली है, वह सूख जाएँगी; क्योंकि वह तराशी हुई मूरतों की ममलुकत है और वह बुतों पर शेफ़्ता हैं।³⁹"इसलिए दशती दरिन्दे गीदड़ों के साथ वहाँ बसेंगे और शुतुरमुर्ग उसमें बसेरा करेंगे, और वह फिर अबद तक आबाद न होगी, नसल-दर-नसल कोई उसमें सुकूनत न करेगा।⁴⁰जिस तरह खुदा ने सदूम और 'अमूरा और उनके आसपास के शहरों को उलट दिया खुदावन्द फ़रमाता है उसी तरह कोई आदमी वहाँ न बसेगा, न आदमज़ाद उसमें रहेगा।

⁴¹"देख, उत्तरी मुल्क से एक गिरोह आती है; और इन्तिहा-ए-ज़मीन से एक बड़ी क्रौम और बहुत से बादशाह बरअन्गोख़ता किए जाएँगे।⁴²वह तीरअन्दाज़-ओ-नेज़ा बाज़ हैं, वह संगदिल-ओ-बेरहम हैं, उनके ना'रों की आवाज़ हमेशा समन्दर की जैसी है, वह घोड़ों पर सवार हैं; ऐ दुख़तर-ए-बाबुल, वह जंगी मदों की तरह तेरे सामने सफ़-आराई करते हैं।⁴³शाह-ए-बाबुल ने उनकी शोहरत सुनी है, उसके हाथ ढीले हो गए, वह ज़च्चा की तरह मुसीबत और दर्द में गिरफ़्तार है।

⁴⁴"देख, वह शेर-ए-बबर की तरह यरदन के जंगल से निकलकर मज़बूत बस्ती पर चढ़ आएगा; लेकिन मैं अचानक उसको वहाँ से भगा दूँगा, और अपने बरगुज़ीदा को उस पर मुक़र्रर करूँगा; क्योंकि मुझ सा कौन है? कौन है जो मेरे लिए वक़्त मुक़र्रर करे? और वह चरवाहा कौन है जो मेरे सामने खड़ा हो सके ?

⁴⁵इसलिए खुदावन्द की मसलहत को जो उसने बाबुल के खिलाफ़ ठहराई है, और उसके इरादे को जो उसने कसदियों की सरज़मीन के खिलाफ़ किया है, सुनो, यक़ीनन उनके गल्ले के सब से छोटों को भी घसीट ले जाएँगे; यक़ीनन उनका घर भी उनके साथ बर्बाद होगा।⁴⁶~बाबुल की शिकस्त के शोर से ज़मीन काँपती है, और फ़रियाद को क्रौमों ने सुना है।"

Chapter 51

¹खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "देख, मैं बाबुल पर और उस मुखालिफ़ दार-उस-सलतनत के रहनेवालों पर एक मुहलिक हवा चलाऊँगा।² और मैं उसाने वालों को बाबुल में भेजूँगा कि उसे उसाएँ, और उसकी सरज़मीन को खाली करें; यक्रीनन उसकी मुसीबत के दिन वह उसके दुश्मन बनकर उसे चारों तरफ़ से घेर लेंगे।

³उसके कमानदारों और ज़िरहपोशों पर तीरअन्दाज़ी करो; तुम उसके जवानों पर रहम न करो, उसके तमाम लश्कर को बिल्कुल हलाक करो।⁴ ~मक्कतूल कसदियों की सरज़मीन में गिरेँगे, और छिदे हुए उसके बाज़ारों में पड़े रहेंगे।

⁵क्यूँकि इस्राईल और यहूदाह को उनके खुदा रब्ब-उल-अफ़वाज ने तर्क नहीं किया; अगरचे इनका मुल्क इस्राईल के कुदूस की नाफ़रमानी से पुर है।⁶ "बाबुल से निकल भागो, और हर एक अपनी जान बचाए, उसकी बदकिरदारी की सज़ा में शरीक होकर हलाक न हो, क्यूँकि यह खुदावन्द के इन्तक़ाम का वक़्त है; वह उसे बदला देता है।

⁷बाबुल खुदावन्द के हाथ में सोने का प्याला था, जिसने सारी दुनिया को मतवाला किया; क़ौमों ने उसकी मय पी, इसलिए वह दीवाने हैं।⁸ ~बाबुल अचानक गिर गया और ग़ारत हुआ, उस पर वावैला करो; उसके ज़ख़्म के लिए बलसान लो, शायद वह शिफ़ा पाए।

⁹हम तो बाबुल की शिफ़ायाबी चाहते थे लेकिन वह शिफ़ायाब न हुआ, तुम उसको छोड़ो, आओ, हम सब अपने अपने वतन को चले जाएँ, क्यूँकि उसकी आवाज़ आसमान तक पहुँची और अफ़लाक तक बुलन्द हुई।¹⁰ खुदावन्द ने हमारी रास्तबाज़ी को आशकारा किया; आओ, हम सिय्यून में खुदावन्द अपने खुदा के काम का बयान करें।

¹¹"तीरों को सैक़ल करो, सिपरों को तैयार रखो; खुदावन्द ने मादियों के बादशाहों की रूह को उभारा है, क्यूँकि उसका इरादा बाबुल को बर्बाद करने का है; क्यूँकि यह खुदावन्द का, या 'नी उसकी हैकल का इन्तक़ाम है।¹² बाबुल की दीवारों के सामने झंडा खड़ा करो पहर की चौकियाँ मज़बूत करो, पहरदारों को बिठाओ, कमीनगाहें तैयार करो; क्यूँकि खुदावन्द ने अहल-ए-बाबुल के हक़ में जो कुछ ठहराया और फ़रमाया था, इसलिए पूरा किया।

¹³ऐ नहरों पर सुकूनत करने वाली, जिसके खज़ाने फ़िरावान हैं; तेरी तमामी का वक़्त आ पहुँचा और तेरी ग़ारतगरी का पैमाना पुर हो गया।¹⁴ ~रब्ब-उल-अफ़वाज ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, कि यक्रीनन मैं तुझ में लोगों को टिड्डियों की तरह भर दूँगा, और वह तुझ पर जंग का नारा मारेंगे।

¹⁵~"उसी ने अपनी कुदरत से ज़मीन को बनाया, उसी ने अपनी हिकमत से जहाँ को क़ायम किया, और अपनी 'अक्ल से आसमान को तान दिया है;¹⁶ उसकी आवाज़ से आसमान में पानी की फ़िरावानी होती है, और वह ज़मीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है; वह बारिश के लिए बिजली चमकाता है और अपने खज़ानों से हवा चलाता है।

¹⁷हर आदमी हैवान खसलत और बे-'इल्म हो गया है, सुनार अपनी खोदी हुई मूरत से रुस्वा है; क्यूँकि उसकी ढाली हुई मूरत बातिल है, उनमें दम नहीं।¹⁸ वह बातिल-फ़े'ल-ए-फ़रेब हैं, सज़ा के वक़्त बर्बाद हो जाएँगी।¹⁹ या'कूब का हिस्सा उनकी तरह नहीं, क्यूँकि वह सब चीज़ों का खालिक है और इस्राईल उसकी मीरास का 'असा है; रब्बउल-अफ़वाज उसका नाम है।

²⁰"तू मेरा गुर्ज़ और जंगी हथियार है, और तुझी से मैं क़ौमों को तोड़ता और तुझी से सलतनतों को बर्बाद करता हूँ।²¹ तुझी से मैं घोड़े और सवार को कुचलता, और तुझी से रथ और उसके सवार को चूर करता हूँ;

²²तुझी से मर्द-ओ-ज़न और पीर-ओ-जवान को कुचलता, और तुझ ही से नौखेंज़ लड़कों और लड़कियों को पीस डालता हूँ;²³ और तुझी से चरवाहे और उसके गल्ले को कुचलता, और तुझी से किसान और उसके जोड़ी बैल को, और तुझी से सरदारों और हाकिमों को चूर-चूर कर देता हूँ।

²⁴और मैं बाबुल को और कसदिस्तान के सब बाशिन्दों को उस तमाम नुक्सान का, जो उन्होंने सिय्यून को तुम्हारी आँखों के सामने पहुँचाया है इवज़ देता हूँ खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁵"देख खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ हलाक करने वाले पहाड़, जो तमाम इस ज़मीन को हलाक करता है, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और मैं अपना हाथ तुझ पर बढ़ाऊँगा, और चट्टानों पर से तुझे लुढ़काऊँगा, और तुझे जला हुआ पहाड़ बना दूँगा।²⁶ न तुझ से कोने का पत्थर, और न बुनियाद के लिए पत्थर लेंगे; बल्कि तू हमेशा तक वीरान रहेगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

²⁷~'मुल्क में झण्डा खड़ा करो, क़ौमों में नरसिंगा फूँको उनको उसके खिलाफ़ मखसूस करो अरारात और मिन्नी और अशकनाज़ की ममलुकतों को उस पर चढ़ा लाओ; उसके खिलाफ़ सिपहसालार मुक़र्रर करो और सवारों को मुहलिक टिड्डियों की तरह चढ़ा लाओ।²⁸ ~क़ौमों को मादियों के बादशाहों को और सरदारों और हाकिमों और उनकी सलतनत के तमाम मुमालिक को मखसूस करो कि उस पर चढ़ाई करें।

²⁹~और ज़मीन काँपती और दर्द में मुब्तिला है, क्यूँकि खुदावन्द के इरादे बाबुल की मुखालिफ़त में क़ायम रहेंगे, कि बाबुल की सरज़मीन को वीरान और ग़ैरआबाद कर दे।

³⁰~बाबुल के बहादुर लड़ाई से दस्तबरदार और क़िलों में बैठे हैं, उनका ज़ोर घट गया, वह 'औरतों की तरह हो गए; उसके घर जलाए गए, उसके अड़बंगें तोड़े गए।³¹ ~हरकारा हरकारे से मिलने को और क़ासिद क़ासिद से मिलने को दौड़ेगा कि बाबुल के बादशाह को इत्तला दे, कि उसका शहर हर तरफ़ से ले लिया गया;

³²~और गुज़राहें ले ली गई, और नैस्तान आग से जलाए गए और फ़ौज़ हड़बड़ा गई।

³³~क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: दुख्तर-ए-बाबुल खलीहान की तरह है, जब उसे रौंदने का वक़्त आए, थोड़ी देर है कि उसकी कटाई का वक़्त आ पहुँचेगा।

³⁴~"शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने मुझे खा लिया, उसने मुझे शिकस्त दी है, उसने मुझे खाली बर्तन की तरह कर दिया अज़दहा की तरह ~वह मुझे निगल गया, उसने अपने पेट को मेरी ने'मतों से भर लिया; उसने मुझे निकाल दिया;³⁵ सिय्यून के रहनेवाले कहेंगे, "जो सितम हम पर और हमारे लोगों पर हुआ, बाबुल पर हो।" और यरुशलीम कहेगा, "मेरा खून अहल-ए-कसदिस्तान पर हो।"

³⁶~इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: "देख, मैं तेरी हिमायत करूँगा और तेरा इन्तक़ाम लूँगा, और उसके बहर को सुखाऊँगा और उसके सोते को खुश कर दूँगा;³⁷ और बाबुल खण्डर हो जाएगा, और गीदड़ों का मक़ाम और हैरत और सुस्कार का ज़रिया' होगी और उसमें कोई न बसेगा।

³⁸~"वह जवान बबरों की तरह इकट्ठे गरजेंगे, वह शेर बच्चों की तरह गुर्राएँगे।³⁹~उनकी हालत-ए-तैश में मैं उनकी ज़ियाफ़त करके उनको मस्त करूँगा, कि वह जह्द में आएँ और दाइमी ख़्वाब में पड़े रहें और बेदार न हों, खुदावन्द फ़रमाता है।⁴⁰~मैं उनको बरों और मेंढों की तरह बकरों के साथ मसलख पर उतार लाऊँगा।

⁴¹शेशक क्यूँकर ले लिया गया! हाँ, तमाम रु-ए-ज़मीन का खम्बा यकबारागी ले लिया गया। बाबुल क्रौमों के बीच कैसा वीरान हुआ!⁴²समन्दर बाबुल पर चढ़ गया है, वह उसकी लहरों की कसरत से छिप गया।

⁴³उसकी बस्तियाँ उजड़ गई, वह खुशक ज़मीन और सहारा हो गया ऐसी सरज़मीन जिसमें ~न कोई बसता हो और न वहाँ आदमज़ाद का गुज़र हो।⁴⁴~क्यूँकि मैं बाबुल में बेल को सज़ा दूँगा, और जो कुछ वह निगल गया है उसके मुँह से निकालूँगा, और फिर क्रौमों उसकी तरफ़ रवाँ न होंगी; हाँ, बाबुल की फ़सील गिर जाएगी।

⁴⁵~"ऐ मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ, और तुम में से हर एक खुदावन्द के क्रहर-ए-शदीद से अपनी जान बचाए।⁴⁶~न हो कि तुम्हारा दिल सुस्त हो, और तुम उस अफ़वाह से डरो जो ज़मीन में सुनी जाएगी; एक अफ़वाह एक साल आएगी और फिर दूसरी अफ़वाह दूसरे साल में, और मुल्क में जुल्म होगा और हाकिम हाकिम से लड़ेगा।

⁴⁷इसलिए देख, वह दिन आते हैं कि मैं बाबुल की तराशी हुई मूरतों से इन्तक़ाम लूँगा और उसकी तमाम सरज़मीं रुखा होगी और उसके सब मक्कतूल उसी में पड़े रहेंगे।⁴⁸~तब आसमान और ज़मीन और सब कुछ जो उनमें है, बाबुल पर शादियाना बजाएँगे; क्यूँकि ग़ारतगर उत्तर से उस पर चढ़ आएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

⁴⁹~जिस तरह बाबुल में बनी-इसाईल क्रल्ल हुए, उसी तरह बाबुल में तमाम मुल्क के लोग क्रल्ल होंगे।

⁵⁰~"तुम जो तलवार से बच गए हो, खड़े न हो, चले जाओ! दूर ही से खुदावन्द को याद करो, और यरुशलीम का खयाल तुम्हारे दिल में आए |⁵¹~'हम परेशान हैं, क्यूँकि हम ने मलामत सुनी; हम शर्मआलूदा हुए, क्यूँकि खुदावन्द के घर के हैकलों में अजनबी घुस आए।'।

⁵²~"इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं उसकी तराशी हुई मूरतों को सज़ा दूँगा; और उसकी तमाम सल्लनत में घायल कराहूँगे।

⁵³~हरचन्द बाबुल आसमान पर चढ़ जाए और अपने ज़ोर की इन्तिहा तक मुस्तहक़म हो बैठे तो भी ग़ारतगर मेरी तरफ़ से उस पर चढ़ आएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

⁵⁴बाबुल से रौने की और कसदियों की सरज़मीन से बड़ी हलाकत की आवाज़ आती है।⁵⁵क्यूँकि खुदावन्द बाबुल को ग़ारत करता है, और उसके बड़े शोर-ओ-गुल को बर्बाद करेगा; उनकी लहरें समन्दर की तरह शोर मचाती हैं उनके शोर की आवाज़ बुलंद है;⁵⁶इसलिए कि ग़ारतगर उस पर, हाँ, बाबुल पर चढ़ आया है, और उसके ताक़तवर लोग पकड़े जायेंगे उनकी कमाने तोड़ी जायेंगी क्यूँकि खुदावन्द इन्तक़ाम लेनेवाला खुदा है, वह ज़रूर बदला लेगा।

⁵⁷मैं हाकिम-ओ-हुक्मा को और उसके सरदारों और हाकिमों को मस्त करूँगा, और वह दाइमी ख़्वाब में पड़े रहेंगे और बेदार न होंगे, वह बादशाह फ़रमाता है, जिसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज़ है।⁵⁸~"रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: बाबुल की चौड़ी फ़सील बिल्कुल गिरा दी जाएगी, और उसके बुलन्द फाटक आग से जला दिए जाएँगे। यूँ लोगों की मेहनत बे फ़ायदा ठहरेगी, और क्रौमों का काम आग के लिए होगा और वह मान्दा होंगे।"

⁵⁹यह वह बात है, जो यरमियाह नबी ने सिरायाह-बिन-नैयिरियाह-बिन-महसियाह से कही, जब वह शाह-ए-यहूदाह सिदक्रियाह के साथ उसकी सल्लनत के चौथे बरस बाबुल में गया, और यह सिरायाह ख़्वाजासराओं का सरदार था।⁶⁰और यरमियाह ने उन सब आफ़तों को जो बाबुल पर आने वाली थीं, एक किताब में क्रल्लमबन्द किया; या'नी इन सब बातों को जो बाबुल के बारे में लिखी गई हैं।

⁶¹और यरमियाह ने सिरायाह से कहा, कि "जब तू बाबुल में पहुँचे, तो' इन सब बातों को पढ़ना,⁶²और कहना, 'ऐ खुदावन्द, तूने इस जगह की बर्बादी के बारे में फ़रमाया है कि मैं इसको बर्बाद करूँगा, ऐसा कि कोई इसमें न बसे, न इन्सान न हैवान, लेकिन हमेशा वीरान रहे।'।

⁶³और जब तू इस किताब को पढ़ चुके, तो एक पत्थर इससे बाँधना और फ़रात में फेंक देना;⁶⁴~और कहना, 'बाबुल इसी तरह डूब जाएगा, और उस मुसीबत की वजह से जो मैं उस पर डाल दूँगा, फिर न उठेगा और वह मान्दा होंगे।'। "यरमियाह की बातें यहाँ तक हैं।

Chapter 52

¹जब सिदक्रियाह सल्तनत करने लगा, तो इक्कीस बरस का था; और उसने ग्यारह बरस यरुशलीम में सल्तनत की, और उसकी माँ का नाम हमूतल था जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी।² और जो कुछ यहूयक्रीम ने किया था, उसी के मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नज़र में बदी की।³ क्योंकि खुदावन्द के गज़ब की वजह से यरुशलीम और यहूदाह की यह नौबत आई कि आखिर उसने उनको अपने सामने से दूर ही कर दिया। और सिदक्रियाह शाह-ए-बाबुल से मुन्हरिफ़ हो गया।

⁴और उसकी सल्तनत के नवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन पहुँचा कि शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने अपनी सारी फ़ौज के साथ यरुशलीम पर चढ़ाई की, और उसके सामने खैमाज़न हुआ और उन्होंने उसके सामने हिसार बनाए।⁵ और सिदक्रियाह बादशाह की सल्तनत के ग्यारहवें बरस तक शहर का घिराव रहा।

⁶चौथे महीने के नवें दिन से शहर में काल ऐसा सख़्त हो गया कि मुल्क के लोगों के लिए खुराक न रही।⁷ तब शहरपनाह में रखना हो गया, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शाही बाग़ के बराबर था, उससे सब जंगी मर्द रात ही रात भाग गए (इस वक़्त कसदी शहर को घेरे हुए थे) और वीराने की राह ली।⁸ लेकिन कसदियों की फ़ौज ने बादशाह का पीछा किया, और उसे यरीहू के मैदान में जा लिया, और उसका सारा लश्कर उसके पास से तितर-बितर हो गया था।

⁹तब वह बादशाह को पकड़ कर रिब्ला में शाह-ए-बाबुल के पास हमात के 'इलाक़े' में ले गए, और उसने सिदक्रियाह पर फ़तवा दिया।¹⁰ और शाह-ए-बाबुल ने सिदक्रियाह के बेटों को उसकी आँखों के सामने ज़बह किया, और यहूदाह के सब हाकिम को भी रिब्ला में क़त्ल किया।¹¹ और उसने सिदक्रियाह की आँखें निकाल डालीं, और शाह-ए-बाबुल उसको ज़ंजीरों से जकड़ कर बाबुल को ले गया, और उसके मरने के दिन तक उसे कैदख़ाने में रखवा।

¹²और शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के 'अहद के उन्नीसवें बरस के पाँचवें महीने के दसवें दिन जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान, जो शाह-ए-बाबुल के सामने में खड़ा रहता था, यरुशलीम में आया।¹³ उसने खुदावन्द का घर और बादशाह का महल और यरुशलीम के सब घर, या 'नी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया।

¹⁴और कसदियों के सारे लश्कर ने जो जिलौदारों के सरदार के हमराह था, यरुशलीम की फ़सील को चारों तरफ़ से गिरा दिया।

¹⁵और बाक़ी लोगों और मोहताजों को जो शहर में रह गए थे, और उनको जिन्होंने अपनों को छोड़कर शाह-ए-बाबुल की पनाह ली थी, और 'अवाम में से जितने बाक़ी रह गए थे, उन सबको नबूज़रादान जिलौदारों का सरदार गुलाम करके ले गया।¹⁶ लेकिन जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया, ताकि खेती और ताकिस्तानों की बाग़बानी करें।

¹⁷और पीतल के उन सुतूनों को जो खुदावन्द के घर में थे, और कुर्सियों को और पीतल के बड़े हौज़ को, जो खुदावन्द के घर में था, कसदियों ने तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया और उनका सब पीतल बाबुल को ले गए।¹⁸ और देगें और बेलचे और गुलगीर और लगन और चमचे और पीतल के तमाम बर्तन, जो वहाँ काम आते थे, ले गए।¹⁹ और बासन और अंगेठियाँ और लगन और देगें और शमा'दान और चमचे और प्याले गर्ज़ जो सोने के थे उनके सोने को, और जो चाँदी के थे उनकी चाँदी को जिलौदारों का सरदार ले गया।

²⁰वह दो सुतून और वह बड़ा हौज़ और वह पीतल के बारह बैल जो कुर्सियों के नीचे थे, जिनको सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के घर के लिए बनाया था; इन सब चीज़ों के पीतल का वज़न बेहिसाब था।²¹ हर सुतून अट्ठारह हाथ ऊँचा था, और बारह हाथ का सूत उसके चारों तरफ़ आता था, और वह चार ऊंगल मोटा था; यह खोखला था।

²²और उसके ऊपर पीतल का एक ताज था, और वह ताज पाँच हाथ बुलन्द था, उस ताज पर चारों तरफ़ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी हुई थीं, और दूसरे सुतून के लवाज़िम भी जाली के साथ इन्हीं की तरह थे।²³ और चारों हवाओं के रुख़ अनार की कलियाँ छियानवे थीं, और चारों तरफ़ जालियों पर एक सौ थीं।

²⁴और जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को, और काहिन-ए-सानी सफ़नियाह को, और तीनों दरबानों को पकड़ लिया;²⁵ और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी मर्दों पर मुक़रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाज़िर रहते थे, उनमें से सात आदमियों को जो शहर में मिले; और लश्कर के सरदार के मुहर्रिर को जो अहल-ए-मुल्क की मौजूदात लेता था; और मुल्क के आदमियों में से साठ आदमियों को जो शहर में मिले।

²⁶इनको जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान पकड़कर शाह-ए-बाबुल के सामने रिब्ला में ले गया।²⁷ और शाह-ए-बाबुल ने हमात के 'इलाक़े' के रिब्ला में इनको क़त्ल किया। इसलिए यहूदाह अपने मुल्क से गुलाम होकर चला गया।

²⁸यह वह लोग हैं जिनको नबूकदरज़र गुलाम करके ले गया: सातवें बरस में तीन हज़ार तेईस यहूदी,²⁹ नबूकदरज़र के अट्ठारहवें बरस में वह यरुशलीम के बाशिनदों में से आठ सौ बत्तीस आदमी गुलाम करके ले गया,³⁰ नबूकदरज़र के तेईसवें बरस में जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान सात सौ पैतालीस आदमी यहूदियों में से पकड़कर ले गया; यह सब आदमी चार हज़ार छः सौ~थे।

³¹और यहूयाकीन शाह-ए-यहूदाह की गुलामी के सैतीसवें बरस के बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन पहुँचा, कि शाह-ए-बाबुल अवील मरूदक ने अपनी सल्तनत के पहले साल यहूयाकीन शाह-ए-यहूदाह को कैदख़ाने से निकालकर सरफ़राज़ किया;

³²और उसके साथ मेहरबानी से बातें कीं, और उसकी कुर्सी उन सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे, बुलन्द की।³³ वह अपने कैदख़ाने के कपड़े बदलकर 'उम्र भर बराबर उसके सामने खाना खाता रहा।³⁴ और उसकी 'उम्र भर, या 'नी मरने तक शाह-ए-बाबुल की तरफ़ से वज़ीफ़े के तौर पर हर रोज़ रसद मिलती रही।

नोहा

Chapter 1

¹वह बस्ती जो लोगों से भरी थी, कैसी खाली पड़ी है! वह क्रौमों की 'खातून बेवा की तरह ~हो गई! वह कुछ गुज़ारे के लिए मुल्क की ~मलिका बन गई!²वह रात को ज़ार-ज़ार रोती है, उसके आँसू चेहरे पर बहते हैं; उसके चाहने वालों में कोई नहीं जो उसे तसल्ली दे; उसके सब दोस्तों ने उसे धोका दिया, वह उसके दुश्मन हो गए।

³यहूदाह जुल्म और सख्त मेहनत की वजह ~से जिलावतन हुआ, वह क्रौमों के बीच रहते और बे-आराम है, उसके सब सताने वालों ने उसे घाटियों में जा लिए।

⁴सिय्यून के रास्ते मातम करते हैं, क्योंकि खुशी के लिए कोई नहीं आता; उसके सब दरवाज़े सुनसान हैं, उसके काहिन आहें भरते हैं; उसकी कुँवारियाँ मुसीबत ज़दा हैं और वह खुद ग़मगीन है।⁵~उसके मुखालिफ़ ग़ालिब आए और दुश्मन खुशहाल हुए; क्योंकि खुदावन्द ने उसके गुनाहों की ज़्यादती ~के ज़रिए' उसे ग़म में डाला; उसकी औलाद को दुश्मन गुलामी में पकड़ ले गए।

⁶~सिय्यून की बेटियों की सब शान-ओ-शौकत जाती रही; उसके हाकिम उन हरनों की तरह हो गए हैं, जिनको चरागाह नहीं मिलती, और शिकारियों के सामने बे बस हो जाते हैं।

⁷यरुशलीम को अपने ग़म-ओ-मुसीबत के दिनों में, जब उसके रहने वाले दुश्मन का शिकार हुए, और किसी ने मदद न की, अपने गुज़रे ~ज़माने की सब ने'मते याद आई, दुश्मनों ने उसे देखकर उसकी बर्बादी पर हँसी उड़ाई।

⁸~यरुशलीम सख्त गुनाह करके नापाक हो गया; जो उसकी 'इज़ज़त करते थे, सब उसे हक़ीर जानते हैं, हाँ, वह खुद आहें भरता, और मुँह फेर लेता है।⁹उसकी नापाकी उसके दामन में है, उसने अपने अंजाम का ख्याल न किया; इसलिए वह बहुत बेहाल हुआ; और उसे तसल्ली देने वाला कोई न रहा; ऐ खुदावन्द, मेरी मुसीबत पर नज़र कर; क्योंकि दुश्मन ने गुरुर किया है।

¹⁰दुश्मन ने उसकी तमाम 'उम्दा चीज़ों पर हाथ बढ़ाया है; उसने अपने मक़्दिस में क्रौमों को दाखिल होते देखा है। जिनके बारे में तू ने फ़रमाया था, कि वह तेरी जमा'अत में~दाखिल न हों।

¹¹उसके सब रहने वाले ~कराहते और रोटी ढूँडते हैं, उन्होंने अपनी 'उम्दा चीज़ें दे डालीं, ताकि रोटी से ताज़ा दम हों; ऐ खुदावन्द, मुझ पर नज़र कर; क्योंकि मैं ज़लील हो गया।¹²ऐ सब आने जाने वालों, क्या तुम्हारे नज़दीक ये कुछ नहीं? नज़र करो और देखो; क्या कोई ग़म मेरे ग़म की तरह है, जो मुझ पर आया है जिसे खुदावन्द ने अपने बड़े ग़ज़ब के वक़्त नाज़िल किया।

¹³उसने 'आलम-ए-बाला से मेरी हड्डियों में आग भेजी, और वह उन पर ग़ालिब आई; उसने मेरे पैरों के लिए जाल बिछाया, उस ने मुझे पीछे लौटाया: उसने मुझे दिन भर वीरान-ओ-बेताब किया।¹⁴मेरी ख़ताओं का बोझ उसी के हाथ से बाँधा गया है; वह बाहम पेचीदा मेरी गर्दन पर हैं उसने मुझे कमज़ोर कर दिया है; खुदावन्द ने मुझे उनके हवाले किया है, जिनके मुक़ाबिले की मुझ में हिम्मत नहीं।

¹⁵~खुदावन्द ने मेरे अन्दर ही मेरे बहादुरों को नाचीज़ ठहराया; उसने मेरे खिलाफ़ एक ख़ास जमा'अत को बुलाया, कि मेरे बहादुरों को कुचले; खुदावन्द ने यहूदाह की कुँवारी बेटी को गोया कोल्हू में कुचल डाला।

¹⁶~इसीलिए मैं रोती हूँ, मेरी आँखें आँसू से भरी हैं, जो मेरी रूह को ताज़ा करे, मुझ से दूर है; मेरे बाल-बच्चे बे सहारा हैं, क्योंकि दुश्मन ग़ालिब आ गया।

¹⁷~सिय्यून ने हाथ फैलाए; उसे तसल्ली देने वाला कोई नहीं; या'क़ूब के बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है, कि उसके इर्दगिर्द वाले उसके दुश्मन हों, यरुशलीम उनके बीच नजासत की तरह है।

¹⁸~खुदावन्द सच्चा है, क्योंकि मैंने उसके हुक्म से नाफ़रमानी की है; ऐ सब लोगों, मैं मिन्नत करता हूँ, सुनो, और मेरे दुख पर नज़र करो, मेरी कुँवारियाँ और जवान गुलाम होकर चले गए।¹⁹मैंने अपने दोस्तों को पुकारा, उन्होंने मुझे धोका दिया; मेरे काहिन और बुजुर्ग अपनी रूह को ताज़ा करने के लिए, शहर में खाना ढूँडते-ढूँडते हलाक हो गए।

²⁰ऐ खुदावन्द देख: मैं तबाह हाल हूँ, मेरे अन्दर पेच-ओ-ताब है; मेरा दिल मेरे अन्दर मुज़तरिब है; क्योंकि मैंने सख्त बगावत की है; बाहर तलवार बे-औलाद करती है और घर में मौत का सामना है।

²¹उन्होंने मेरी आहें सुनी हैं; मुझे तसल्ली देनेवाला कोई नहीं; मेरे सब दुश्मनों ने मेरी मुसीबत सुनी; वह खुश हैं कि तू ने ऐसा किया; तू वह दिन लाएगा, जिसका तू ने 'ऐलान किया है, और वह मेरी तरह हो जाएँगे।²²उनकी तमाम शरारत तेरे सामने आयें; उनसे वही कर जो तू ने मेरी तमाम ख़ताओं के ज़रिए' मुझसे किया है; क्योंकि मेरी आहें बेशुमार हैं और मेरा दिल बेबस है।

Chapter 2

¹खुदावन्द ने अपने क्रहर में ~सियून की बेटी को कैसे बादल से छिपा दिया! उसने इस्राईल की खूबसूरती को आसमान से ज़मीन पर गिरा दिया, और अपने ग़ज़ब के दिन भी अपने पैरों की चौकी को याद न किया।²खुदावन्द ने या'कूब के तमाम घर हलाक किए, और रहम न किया; उसने अपने क्रहर में ~यहूदाह की बेटी के तमाम क़िले' गिराकर खाक में मिला दिए उसने मुल्कों और उसके हाकिमों को नापाक ठहराया।

³उसने बड़े ग़ज़ब में इस्राईल का सींग बिल्कुल काट डाला; उसने दुश्मन के सामने से दहना हाथ खींच लिया; और उसने जलाने वाली आग की तरह, जो चारों तरफ़ खाक करती है, या'कूब को जला दिया।⁴उसने दुश्मन की तरह कमान खींची, मुखालिफ़ की तरह दहना हाथ बढ़ाया, और सियून की बेटी के खेमें में सब हसीनों को क़त्ल किया! उसने अपने क्रहर की आग को उँडेल दिया।

⁵खुदावन्द दुश्मन की तरह हो गया, वह इस्राईल को निगल गया, वह उसके तमाम महलों को निगल गया, उसने उसके क़िले' मिस्मार कर दिए, और उसने दुख्तर-ए-यहूदाह में मातम-ओ नौहा बहुतायत से कर दिया।⁶और उसने अपने घर को एक बार में ही बर्बाद कर दिया, गोया खैमा-ए-बाग़ था; और अपने मजमे' के मकान को बर्बाद कर दिया; खुदावन्द ने मुक़द्दस 'ईदों और सबतों को सियून से फ़रामोश करा दिया, और अपने क्रहर के जोश में बादशाह और काहिन को ज़लील किया।

⁷खुदावन्द ने अपने मज़बह को रद्द किया, उसने अपने मक़दिस से नफ़रत की, उसके महलों की दीवारों को दुश्मन के हवाले कर दिया; उन्होंने खुदावन्द के घर में ऐसा शोर मचाया, जैसा 'ईद के दिन।

⁸~खुदावन्द ने दुख्तर-ए-सियून की दीवार गिराने का इरादा किया है; उसने डोरी डाली है, और बर्बाद करने से दस्तबरदार नहीं हुआ; उसने फ़सील और दीवार को मग़मूम किया; वह एक साथ ~मातम करती हैं।⁹~उसके दरवाज़े ज़मीन में गर्क हो गए; उसने उसके बेन्धों को तोड़कर बर्बाद कर दिया; उसके बादशाह और उमरा बे-शरी' अत क़ौमों में हैं; उसके नबी भी खुदावन्द की तरफ़ से कोई ख़्वाब नहीं देखते।

¹⁰दुख्तर-ए-सियून के बुजुर्ग़ खाक नशीन और ख़ामोश हैं; वह अपने सिरों पर खाक डालते और टाट ओढ़ते हैं; यरुशलीम की कुँवारियाँ ज़मीन पर सिर झुकाए हैं।

¹¹मेरी आँखें रोते-रोते धुंदला गई, मेरे अन्दर पेच-ओ-ताब है, मेरी दुख्तर-ए-क़ौम की बर्बादी के ज़रिए' मेरा कलेजा निकल आया; क्योंकि छोटे बच्चे और दूध पीने वाले शहर की गलियों में बेहोश हैं।¹²~जब वह शहर की गलियों में के ज़ख्मियों की तरह ग़श खाते, और जब अपनी माँओं की गोद में जाँ बलब होते हैं; तो उनसे कहते हैं, कि ग़ल्ला और मय कहाँ है?

¹³ऐ दुख्तर-ए-यरुशलीम, मैं तुझे क्या नसीहत करूँ, और किससे मिसाल दूँ? ऐ कुँवारी दुख्तर-ए-सियून, तुझे किस की तरह जान कर तसल्ली दूँ? क्योंकि तेरा ज़ख्म समुन्दर सा बड़ा है; तुझे कौन शिफ़ा देगा?¹⁴तेरे नबियों ने तेरे लिए, बातिल और बेहूदा ख़्वाब देखे: और तेरी बदकिरदारी ज़ाहिर न की, ताकि तुझे गुलामी ~से वापस लाते: बल्कि तेरे लिए झूठे पैग़ाम और ज़िलावतनी के सामान देखे।

¹⁵सब आने जानेवाले तुझ पर तालियाँ बजाते हैं; वह दुख्तर-ए-यरुशलीम पर सुसकारते और सिर हिलाते हैं, के क्या, ये वही शहर है, जिसे लोग कमाल-ए-हुस्न और फ़रहत-ए-जहाँ कहते थे?¹⁶तेरे सब दुश्मनों ने तुझ पर मुँह पसारा है; वह सुसकारते और दाँत पीसते हैं; वो कहते हैं, हम उसे निगल गए; बेशक हम इसी दिन के मुन्तज़िर थे; इसलिए आ पहुँचा, और हम ने देख लिया

¹⁷खुदावन्द ने जो तय किया वही किया; उसने अपने कलाम को, जो पुराने दिनों में फ़रमाया था, पूरा किया; उसने गिरा दिया, और रहम न किया; और उसने दुश्मन को तुझ पर शादमान किया, उसने तेरे मुखालिफ़ों का सींग बलन्द किया।

¹⁸उनके दिलों ने खुदावन्द से फ़रियाद की, ऐ दुख्तर-ए-सियून की फ़सील, शब-ओ-रोज़ ऑसू नहर की तरह जारी रहें; तू बिल्कुल आराम न ले; तेरी आँख की पुतली आराम न करे।¹⁹उठ रात को पहरों के शुरू' में फ़रियाद कर; खुदावन्द के हुज़ूर अपना दिल पानी की तरह उँडेल दे; अपने बच्चों की ज़िन्दगी के लिए, जो सब गलियों में भूक से बेहोश पड़े हैं, उसके सामने में दस्त-ए-दु'आ बलन्द कर।

²⁰~ऐ खुदावन्द, नज़र कर, और देख, कि तू ने किससे ये किया ! क्या 'औरतें अपने फल या'नी अपने लाडले बच्चों को खाएँ? क्या काहिन और नबी खुदावन्द के मक़दिस में क़त्ल किए जाएँ?

²¹बुजुर्ग़-ओ-जवान गलियों में खाक पर पड़े हैं; मेरी कुँवारियाँ और मेरे जवान तलवार से क़त्ल हुए; तू ने अपने क्रहर के दिन उनको क़त्ल किया; तूने उनको काट डाला, और रहम न किया।²²तूने मेरी दहशत को हर तरफ़ से गोया 'ईद के दिन बुला लिया, और खुदावन्द के क्रहर के दिन न कोई बचा, न बाक़ी रहा; जिनको मैंने गोद में खिलाया और पला पोसा, मेरे दुश्मनों ने फ़ना कर दिया।

Chapter 3

¹~मैं ही वह शख्स हूँ जिसने उसके गज़ब की लाठी से दुख पाया।²वह मेरा रहबर हुआ, और मुझे रौशनी में नहीं, बल्कि तारीकी में चलाया;³यकीनन उसका हाथ दिन भर मेरी मुखालिफ़त करता रहा।⁴~उसने मेरा गोश्त और चमड़ा खुश्क कर दिया, और मेरी हड्डियाँ तोड़ डालीं,

⁵उसने मेरे चारों तरफ़ दीवार खेंची और मुझे कड़वाहट और-मशक्कत से घेर लिया;⁶~उसने मुझे लम्बे वक़्त से मुर्दों की तरह तारीक़ मकानों में रखखा।⁷~उसने मेरे गिर्द अहाता बना दिया, कि मैं बाहर नहीं निकल सकता; उसने मेरी ज़ंजीर भारी कर दी।⁸बल्कि जब मैं पुकारता और दुहाई देता हूँ, तो वह मेरी फ़रियाद नहीं सुनता।

⁹~उसने तराशे हुए पत्थरों से मेरे रास्तेबन्द कर दिए, उसने मेरी राहें टेढ़ी कर दीं।¹⁰वह मेरे लिए घात में बैठा हुआ रीछ और कमीनगाह का शेर-ए-बब्बर है।¹¹उसने मेरी राहें तंग कर दीं और मुझे रेज़ा-रेज़ा करके बर्बाद कर दिया।

¹²उसने अपनी कमान खींची और मुझे अपने तीरों का निशाना बनाया।¹³उसने अपने तर्कश के तीरों से मेरे गुर्दों को छेद डाला।¹⁴मैं अपने सब लोगों के लिए मज़ाक़, और दिन भर उनका चर्चा हूँ।¹⁵उसने मुझे तलखी से भर दिया और नाग़दोने ~से मदहोश किया।

¹⁶उसने संगरेज़ों से मेरे दाँत तोड़े और मुझे ज़मीन की तह में लिटाया।¹⁷~तू ने मेरी जान को सलामती से दूरकर दिया, मैं खुशहाली को भूल गया;¹⁸और मैंने कहा, "मैं नातवाँ हुआ, और खुदावन्द से मेरी उम्मीद जाती रही।"

¹⁹~मेरे दुख का ख़याल कर; मेरी मुसीबत, या 'नी तलखी और नाग़दोने को याद कर।²⁰इन बातों की याद से मेरी जान मुझ में बेताब है।²¹~मैं इस पर सौचता रहता हूँ, इसीलिए मैं उम्मीदवार हूँ।

²²ये खुदावन्द की शफ़क़त है, कि हम फ़ना नहीं हुए, क्योंकि उसकी रहमत ला ज़वाल है।²³वह हर सुबह ताज़ा है; तेरी वफ़ादारी 'अज़ीम है'²⁴~मेरी जान ने कहा, "मेरा हिस्सा खुदावन्द है, इसलिए मेरी उम्मीद उसी से है।"

²⁵खुदावन्द उन पर महरबान है, जो उसके मुन्तज़िर हैं; उस जान पर जो उसकी तालिब है।²⁶~ये ख़ूब है कि आदमी उम्मीदवार रहे और ख़ामोशी से खुदावन्द की नजात का इन्तिज़ार करे।²⁷आदमी के लिए बेहतर है कि अपनी जवानी के दिनों में फ़रमोंबरदारी करे।²⁸~वह तन्हा बैठे और ख़ामोश रहे, क्योंकि ये खुदा ही ने उस पर रखखा है।²⁹वह अपना मुँह ख़ाक़ पर रखे, कि शायद कुछ उम्मीद की सूरत निकले।

³⁰~वह अपना गाल उसकी तरफ़ फेर दे, जो उसे तमाँचा मारता है और मलामत से खूब सेर हो।³¹क्योंकि खुदावन्द हमेशा के लिए रद्द न करेगा,³²क्योंकि अगरचे वह दुख दे, तोभी अपनी शफ़क़त की दरयादिली से रहम करेगा।³³~क्योंकि वह बनी आदम पर खुशी से दुख मुसीबत नहीं भेजता।

³⁴रू-ए-ज़मीन के सब कैदियों को पामाल करना³⁵हक़ ताला के सामने किसी इन्सान की हक़ तल्फ़ी करना,³⁶और किसी आदमी का मुक़द्दमा बिगाड़ना,खुदावन्द देख नहीं सकता।

³⁷~वह कौन है जिसके कहने के मुताबिक़ होता है, हालाँकि खुदावन्द नहीं फ़रमाता?³⁸~क्या भलाई और बुराई हक़ ताला ही के हुक्म से नहीं हैं ?³⁹~इसलिए आदमी जीते जी क्यूँ शिकायत करे, जब कि उसे गुनाहों की सज़ा मिलती हो?

⁴⁰हम अपनी राहों को ढूँडें और जाँचें, और खुदावन्द की तरफ़ फिरे।⁴¹हम अपने हाथों के साथ दिलों को भी खुदा के सामने आसमान की तरफ़ उठाएँ।⁴²हम ने ख़ता और सरकशी की, तूने मु'आफ़ नहीं किया।⁴³तू ने हम को क़हर से ढाँपा और रगेदा; तूने क़त्ल किया, और रहम न किया।

⁴⁴तू बादलों में मस्तूर हुआ, ताकि हमारी दु'आ तुझ तक न पहुँचे।⁴⁵~तूने हम को क़ौमों के बीच कूड़े करकट और नजासत सा बना दिया।⁴⁶हमारे सब दुश्मन हम पर मुँह पसारते हैं;⁴⁷ख़ौफ़-और-दहशत और वीरानी-और-हलाकत ने हम को आ दबाया।

⁴⁸~मेरी दुख़तर-ए-क़ौम की तबाही के ज़रिए' मेरी आँखों से आँसुओं की नहरें जारी हैं।⁴⁹मेरी आँखें अशक़बार हैं और थमती नहीं, उनको आराम नहीं,⁵⁰जब तक खुदावन्द आसमान पर से नज़र करके न देखे;

⁵¹मेरी आँखें मेरे शहर की सब बेटियों के लिए मेरी जान को आजुर्दा करती हैं।⁵²~मेरे दुश्मनों ने बे वजह मुझे परिन्दे की तरह दौड़ाया;⁵³उन्होंने चाह-ए-ज़िन्दान में मेरी जान लेने को मुझ पर पत्थर रखखा;⁵⁴पानी मेरे सिर से गुज़र गया, मैंने कहा, 'मैं मर मिटा।'

⁵⁵ऐ खुदावन्द, मैंने तह दिल से तेरे नाम की दुहाई दी;⁵⁶तू ने मेरी आवाज़ सुनी है, मेरी आह-ओ-फ़रियाद से अपना कान बन्द न कर"।⁵⁷जिस रोज़ मैंने तुझे पुकारा, तू नज़दीक़ आया; और तू ने फ़रमाया, "परेशान न हो!"

⁵⁸ऐ खुदावन्द, तूने मेरी जान की हिमायत की और उसे छुड़ाया।⁵⁹~ऐ खुदावन्द, तू ने मेरी मज़लूमी देखी; मेरा इन्साफ़ कर।⁶⁰~तूने मेरे खिलाफ़ उनके तमाम इन्तक़ामऔर सब मन्सूबों को देखा है।⁶¹ऐ खुदावन्द, तूने मेरे खिलाफ़ उनकी मलामत और उनके सब मन्सूबों को सुना है;

⁶²जो मेरी मुखालिफ़त को उठे उनकी बातें और दिन भर मेरी मुखालिफ़त में उनके मन्सूबे।⁶³उनकी महफ़िल-ओ-बरखास्त को देख कि मेरा ही ज़िज़्र है।

⁶⁴ऐ खुदावन्द, उनके 'आमाल के मुताबिक़ उनको बदला दे।⁶⁵~उनको कोर दिल बना कि तेरी ला'नत उन पर हो।⁶⁶क़हर से उनको भगा और रू-ए-ज़मीन से नेस्त-ओ-नाबूद कर दे।"

Chapter 4

¹~सोना कैसा बेआब हो गया! कुन्दन कैसा बदल गया! मन्दिरे के पत्थर तमाम गली कूचों में पड़े हैं!²सिय्यून के 'अज़ीज़ फ़र्ज़न्द, जो ख़ालिस सोने की तरह थे, कैसे कुम्हार के बनाए हुए बर्तनों के बराबर ठहरे!

³गीदड़ भी अपनी छातियों से अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं; लेकिन मेरी दुख्तर-ए-क्रौम वीरानी शुतरमुर्ग की तरह बे-रहम है।

⁴दूध पीते बच्चों की ज़बान प्यास के मारे तालू से जा लगी; बच्चे रोटी मांगते हैं लेकिन उनको कोई नहीं देता।⁵जो नाज़ पर्वरदा थे, गलियों में तबाह हाल हैं; जो बचपन से अर्गवानपोश थे, मज़बलों पर पड़े हैं।

⁶~क्यूँकि मेरी दुख्तर-ए-क्रौम की बदकिरदारी सद्म के गुनाह से बढ़कर है, जो एक लम्हे में बर्बाद हुआ, और किसी के हाथ उस पर दराज़ न हुए।

⁷उसके शुर्फा बर्फ़ से ज़्यादा साफ़ और दूध से सफ़ेद थे, उनके बदन मूंगे से ज़्यादा सुर्ख़ थे, उन की झलक नीलम की सी थी;⁸अब उनके चेहरे सियाही से भी काले हैं; वह बाज़ार में पहचाने नहीं जाते; उनका चमड़ा हड्डियों से सटा है; वह सूख कर लकड़ी सा हो गया।

⁹~तलवार से क़त्ल होने वाले, भूकों मरने वालों से बहतर हैं; क्यूँकि ये खेत का हासिल न मिलने से कुढ़कर हलाक होते हैं।¹⁰~रहमदिल 'औरतों के हाथों ने अपने बच्चों को पकाया; मेरी दुख्तर-ए-क्रौम की तबाही में वही उनकी खूराक हुए।

¹¹~ख़ुदावन्द ने अपने ग़ज़ब को अन्जाम दिया; उसने अपने क़हर-ए-शदीद को नाज़िल किया। और उसने सिय्यून में आग भड़काई जो उसकी बुनियाद को चट कर गई।

¹²~रू-ए-ज़मीन के बादशाह और दुनिया के बाशिन्दे बावर नहीं करते थे, कि मुख़ालिफ़ और दुश्मन यरुशलीम के फाटकों से घुस आएँगे।¹³ये उसके नबियों के गुनाहों और काहिनों की बदकिरदारी की वजह से हुआ, जिन्होंने उसमें सच्चों का खून बहाया।

¹⁴वह अन्धों की तरह गलियों में भटकते, और खून से आलूदा होते हैं, ऐसा कि कोई उनके लिबास को भी छू नहीं सकता।¹⁵~वह उनको पुकार कर कहते थे, "दूर रहो! नापाक, दूर रहो! दूर रहो, छूना मत!" जब वह भाग जाते और आवारा फिरते, तो लोग कहते थे, 'अब ये यहाँ न रहेंगे।'

¹⁶~ख़ुदावन्द के क़हर ने उनको पस्त किया, अब वह उन पर नज़र नहीं करेगा; उन्होंने काहिनों की 'इज़ज़त न की, और बुजुर्गों का लिहाज़ न किया।

¹⁷~हमारी आँखें बातिल मदद के इन्तिज़ार में थक गईं, हम उस क्रौम का इन्तिज़ार करते रहे जो बचा नहीं सकती थी।¹⁸उन्होंने हमारे पाँव ऐसे बाँध रखे हैं, कि हम बाहर नहीं निकल सकते; हमारा अन्जाम नज़दीक है, हमारे दिन पूरे हो गए; हमारा वक़्त आ पहुँचा।

¹⁹हम को दौड़ाने वाले आसमान के उक्काबों से भी तेज़ हैं; उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा किया; वह वीराने में हमारी घात में बैठे।²⁰~हमारी ज़िन्दगी का दम ख़ुदावन्द का मम्सूह, उनके गढ़ों में गिरफ़्तार हो गया; जिसकी वजह हम कहते थे, कि उसके साये तले हम क्रौमों के बीच ज़िन्दगी बसर करेंगे।

²¹~ऐ दुख्तर-ए-अदोम, जो 'ऊज़ की सरज़मीन में बसती है, खुश-और-ख़ुरम हो; ये प्याला तुझ तक भी पहुँचेगा; तू मस्त और बरहना हो जाएगी।²²ऐ दुख्तर-ए-सिय्यून, तेरी बदकिरदारी की सज़ा तमाम हुई; वह मुझे फिर गुलाम करके नहीं ले जाएगा; ऐ-दुख्तर-ए-अदोम, वह तेरी बदकिरदारी की सज़ा देगा; वह तेरे गुनाह वाश करेगा।

Chapter 5

¹~ऐ खुदावन्द, जो कुछ हम पर गुज़रा~उसे याद कर; नज़र कर और हमारी रुस्वाई को देख।²~हमारी मीरास अजनबियों के हवाले की गई, हमारे घर बेगानों ने ले लिए।³हम यतीम हैं, हमारे बाप नहीं,~हमारी माँए बेवाओं की तरह हैं।⁴~हम ने अपना पानी मोल लेकर पिया;~अपनी लकड़ी भी हम ने दाम देकर ली।

⁵~हम को रोगदने वाले हमारे सिर पर हैं;~हम थके हारे और बेआराम हैं।⁶हम ने मिस्रियों और असूरियों की इता'अत कुबूल की ताकि रोटी से सेर और आसूदा हों।

⁷~हमारे बाप दादा गुनाह करके चल बसे, और हम उनकी बदकिरदारी की सज़ा पा रहे हैं।

⁸गुलाम हम पर हुक्मरानी करते हैं;~उनके हाथ से छुड़ाने वाला कोई नहीं।⁹सहरा नशीनों की तलवार के ज़रिए',~हम जान पर खेलकर रोटी हासिल करते हैं।

¹⁰क्रहत की झुलसाने वाली आग के ज़रिए',हमारा चमड़ा तनूर की तरह ~सियाह हो गया है।

¹¹~उन्होंने सिंघून में 'औरतों को बेहुरमत किया और यहूदाह के शहरों में कुँवारी~लड़कियों को।¹²हाकिम को उनके हाथों से लटका दिया;~बुजुर्गों की रू-दारी न की गई।

¹³जवानों ने चक्की पीसी,~और बच्चों ने गिरते पड़ते लकड़ियाँ ढोई।¹⁴बुजुर्ग फाटकों पर दिखाई नहीं देते,~जवानों की नगमा परदाज़ी सुनाई नहीं देती।

¹⁵हमारे दिलों से खुशी जाती रही;~हमारा रक्खस मातम से बदल गया।¹⁶ताज़ हमारे सिर पर से गिर पड़ा;~हम पर अफ़सोस! कि हम ने गुनाह किया।

¹⁷~इसीलिए हमारे दिल बेताब हैं;~इन्हीं बातों के ज़रिए' हमारी आँखें धुंदला गई,~¹⁸कोह-ए-सिंघून की वीरानी के ज़रिए', उस पर गीदड़ फिरते हैं।

¹⁹लेकिन तू, ऐ खुदावन्द, हमेशा तक कायम है;~और तेरा तख़्त नसल-दर-नसल।²⁰फिर तू क्यों हम को हमेशा के लिए भूल जाता है, और हम को लम्बे वक़्त तक तर्क करता है?²¹~ऐ खुदावन्द, हम को अपनी तरफ़ फिरा,~तो हम फिरेंगे; हमारे दिन बदल दे, जैसे पहले से थे।²²क्या तू ने हमको बिल्कुल रद्द कर दिया है? क्या तू हमसे शख़्त नाराज़ है?

हिज़क़ीएल

Chapter 1

¹तेइसवीं बरस के चौथे महीने की पाँचवीं तारीख़ को यूँ हुआ कि जब मैं नहर-ए-किबार के किनारे पर गुलामों के बीच था तो आसमान खुल गया और मैंने खुदा की रोयतें देखीं।²उस महीने की पाँचवीं को यहूयाकीम बादशाह की गुलामी के पाँचवीं बरस।³खुदावन्द का कलाम बूज़ी के बेटे हिज़क़ीएल काहिन पर जो कसदियों के मुल्क में नहर-ए-किबार के किनारे पर था नाज़िल हुआ, और वहाँ खुदावन्द का हाथ उस पर था।

⁴और मैंने नज़र की तो क्या देखता हूँ कि उत्तर से आँधी उठी एक बड़ी घटा और लिपटती हुई आग और उसके चारों तरफ़ रोशनी चमकती थी और उसके बीच से या'नी उस आग में से सैक़ल किये हुए पीतल की तरह सूरत जलवागर हुई।⁵और उसमें से चार जानदारों की एक शबीह नज़र आई और उनकी शक्ल यूँ थी कि वह इंसान से मुशाबह थे।⁶और हर एक चार चेहरे और चार पर थे।

⁷और उनकी टाँगें सीधी थीं और उनके पाँव के तलवे बछड़े की पाँव के तलवे की तरह थे और वह मंजे हुए पीतल की तरह झलकते थे।⁸और उनके चारों तरफ़ परो के नीचे इन्सान के हाथ थे और चारों के चेहरे और पर यूँ थे।⁹कि उनके पर एक दूसरे के साथ जुड़े थे और वह चलते हुए मुड़ते न थे बल्कि सब सीधे आगे बढ़े चले जाते थे।

¹⁰उनके चेहरों की मुशाबहत यूँ थी कि उन चारों का एक एक चेहरा इन्सान का एक शेर बबर का उनकी दहिनी तरफ़ और उन चारों का एक एक चेहरा सांड का बाई तरफ़ और उन चारों का एक एक चेहरा 'उक्काब का था।¹¹उनके चेहरे यूँ थे और उनके पर ऊपर से अलग-अलग थे हर एक के ऊपर दूसरे के दो परो से मिले हुए थे और दो दो से उनका बदन छिपा हुआ था।¹²उनमें से हर एक सीधा आगे को चला जाता था जिधर को जाने की ख्वाहिश होती थी वह जाते थे, वह चलते हुए मुड़ते न थे।

¹³रही उन जानदारों की सूरत तो उनकी शक्ल आग के सुलगे हुए कोयलों और मशा'लों की तरह थी, वह उन जानदारों के बीच इधर उधर आती जाती थी और वह आग नूरानी थी और उसमे से बिजली निकलती थी।¹⁴और वह जानदार ऐसे हटते बढ़ते थे जैसे बिजली कौंध जाती है।

¹⁵जब मैंने उन जानदारों की तरफ़ नज़र की तो क्या देखता हूँ कि उन चार चार चेहरों वाले जानदारों के हर चेहरे के पास ज़मीन पर एक पहिया है।¹⁶उन पहियों की सूरत और और बनावट ज़बरजद के जैसी थी और वह चारों एक ही वज़ा' के थे और उनकी शक्ल और उनकी बनावट ऐसी थी जैसे पहिया पहटे के बीच में है।

¹⁷वह चलते वक़्त अपने चारों पहलुओं पर चलते थे और पीछे नहीं मुड़ते थे।¹⁸और उनके हलक़े बहुत ऊँचे और डरावने थे और उन चारों के हलक़ों के चारों तरफ़ आँखें ही आँखें थीं।

¹⁹जब वह जानदार चलते थे तो पहिये भी उनके साथ चलते थे और जब वह जानदार ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उठाये जाते थे।²⁰जहाँ कहीं जाने की ख्वाहिश होती थी जाते थे, उनकी ख्वाहिश उनको उधर ही ले जाती थी और पहिये उनके साथ उठाये जाते थे, क्योंकि जानदार की रूह पहियों में थी।²¹जब वह चलते थे, यह चलते थे; और जब वह ठहरते थे, यह ठहरते थे; और जब वह ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उनके साथ उठाये जाते थे, क्योंकि पहियों में जानदार की रूह थी।

²²जानदारों के सरो के ऊपर की फ़ज़ा बिल्लोर की तरह चमक थी और उनके सरो के ऊपर फ़ैली थी।²³और उस फ़ज़ा के नीचे उनके पर एक दूसरे की सीध में थे हर एक दो परो से उनके बदनो का एक पहलू और दो परो से दूसरा हिस्सा छिपा था

²⁴और जब वह चले तो मैंने उनके परो की आवाज़ सुनी जैसे बड़े सैलाब की आवाज़ या'नी क़ादिर-ए-मुतलक़ की आवाज़ और ऐसी शोर की आवाज़ हुई जैसी लश्कर की आवाज़ होती है जब वह ठहरते थे तो अपने परो को लटका देते थे।²⁵और उस फ़ज़ा के ऊपर से जो उनके सरो के ऊपर थी, एक आवाज़ आती थी और वह जब ठहरते थे तो अपने बाज़ुओं को लटका देते थे।

²⁶और उस फ़ज़ा से ऊपर जो उनके सरो के ऊपर थी तख़्त की सूरत थी और उसकी सूरत नीलम के पत्थर की तरह थी और उस तख़्त नुमा सूरत पर किसी इन्सान की तरह शबीह उसके ऊपर नज़र आयी।

²⁷और मैंने उसकी कमर से लेकर ऊपर तक सैक़ल किये हुए पीतल के जैसा रंग और शो'ला सा जलवा उसके बीच और चारों तरफ़ देखा और उसकी कमर से लेकर नीचे तक मैंने शो'ला की तरह तजल्ली देखी, और उसकी चारों तरफ़ जगमगाहट थी।²⁸जैसी उस कमान की सूरत है जो बारिश के दिन बादलों में दिखाई देती है वैसी ही आस-पास की उस जगमगाहट ज़ाहिर थी यह खुदावन्द के जलाल का इज़हार था, और देखते ही मैं सिज्दे में गिरा और मैंने एक आवाज़ सुनी जैसे कोई बातें करता है।

Chapter 2

¹और उसने मुझे कहा, ऐ आदमज़ाद अपने पाँव पर खड़ा हो कि मैं तुझसे बातें करूँ।"²जब उसने मुझे यूँ कहा, तो रूह मुझ में दाखिल हुई और मुझे पाँव पर खड़ा किया; तब मैंने उसकी सुनी जो मुझ से बातें करता था।³चुनाँचे उसने मुझ से कहा, कि "ऐआदमज़ाद , मैं तुझे बनी-इस्राईल के पास, या'नी उस सरकश क्रौम के पास जिसने मुझ से सरकशी की है भेजता हूँ वह और उनके बाप दादा आज के दिन तक मेरे गुनाहगार होते आए हैं।

⁴क्यूँकि जिनके पास मैं तुझ को भेजता हूँ, वह सख्त दिल और बेहया फ़र्ज़न्द हैं; तू उनसे कहना, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है।"⁵तो चाहे वह सुनें या न सुने (क्यूँकि वह तो सरकश ख़ान्दान हैं) तोभी इतना तो होगा कि वह जानेंगे कि उनमें से एक नबी खड़ा हुआ।

⁶तू ऐ आदमज़ाद उनसे परेशान न हो और उनकी बातों से न डर, हर वक़्त तू ऊँट कटारों और काँटों से घिरा है और बिच्छुओं के बीच रहता है। उनकी बातों से तरसान न हो और उनके चेहरों से न घबरा, अगरचे वह बागी ख़ान्दान हैं।

⁷तब तू मेरी बातें उनसे कहना, चाहे वह सुनें चाहे न सुनें, क्यूँकि वह बहुत बागी हैं।⁸"लेकिन ऐ आदमज़ाद , तू मेरा कलाम सुन। तू उस सरकश ख़ान्दान की तरह सरकशी न कर, अपना मुँह खोल और जो कुछ मैं तुझे देता हूँ खा ले।"

⁹और मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ाया हुआ है, और उसमें किताब का तूमार है।¹⁰~और उसने उसे खोल कर मेरे सामने रख दिया। उसमें अन्दर बाहर लिखा हुआ था,और उसमें नोहा और मातम और आह और नाला मरकूम था।

Chapter 3

¹फिर उसने मुझे कहा, कि "ऐ आदमज़ाद, जो कुछ तूने पाया सो खा। इस तूमार को निगल जा, और जा कर इस्राईल के खान्दान से कलाम कर।"²तब मैंने मुँह खोला और उसने वह तूमार मुझे खिलाया।³फिर उसने मुझे कहा, कि "ऐ आदमज़ाद, इस तूमार को जो मैं तुझे देता हूँ खा जा, और उससे अपना पेट भर ले।" तब मैंने खाया और वह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था।

⁴फिर उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, तू बनी-इस्राईल के पास जा और मेरी यह बातें उनसे कह।⁵क्योंकि तू ऐसे लोगों की तरफ़ नहीं भेजा जाता जिनकी ज़बान बेगाना और जिनकी बोली सख़्त है; बल्कि इस्राईल के खान्दान की तरफ़;⁶न बहुत सी उम्मतों की तरफ़ जिनकी ज़बान बेगाना और जिनकी बोली सख़्त है; जिनकी बात तू समझ नहीं सकता। यक़ीनन अगर मैं तुझे उनके पास भेजता, तो वह तेरी सुनतीं।⁷लेकिन बनी इस्राईल तेरी बात न सुनेंगे, क्योंकि वह मेरी सुनना नहीं चाहते, क्योंकि सब बनी-इस्राईल सख़्त पेशानी और पत्थर दिल हैं।

⁸देख, मैंने उनके चेहरों के सामने तेरा चेहरा दुरुश्त किया है, और तेरी पेशानी उनकी पेशानियों के सामने सख़्त कर दी है।⁹मैंने तेरी पेशानी को हीरे की तरह चकमाक से भी ज़्यादा सख़्त कर दिया है; उनसे न डर और उनके चेहरों से परेशान न हो, अगरचे वह सरकश खान्दान हैं।"

¹⁰फिर उसने मुझ से कहा, कि "ऐ आदमज़ाद, मेरी सब बातों को जो मैं तुझ से कहूँगा, अपने दिल से कुबूल कर और अपने कानों से सुन।"¹¹अब उठ, गुलामों या'नी अपनी क़ौम के लोगों के पास जा, और उनसे कह, 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है,' चाहे वह सुनें चाहे न सुनें।"

¹²और रूह ने मुझे उठा लिया, और मैंने अपने पीछे एक बड़ी कड़क की आवाज़ सुनी जो कहती थी: कि 'ख़ुदावन्द का जलाल उसके घर से मुबारक हो।'¹³और जानदारों के परों के एक दूसरे से लगने की आवाज़ और उनके सामने पहियों की आवाज़ और एक बड़े धड़ाके की आवाज़ सुनाई दी।

¹⁴और रूह मुझे उठा कर ले गई, इसलिए मैं तलख़ दिल और ग़ज़बनाक होकर रवाना हुआ, और ख़ुदावन्द का हाथ मुझ पर ग़ालिब था;¹⁵और मैं तल अबीब में गुलामों के पास, जो नहर-ए-किबार के किनारे बसते थे पहुँचा; और जहाँ वह रहते थे, मैं सात दिन तक उनके बीच परेशान बैठा रहा।

¹⁶और सात दिन के बाद ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁷कि "ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे बनी-इस्राईल का निगहबान मुकर्रर किया। इसलिए तू मेरे मुँह का कलाम सुन, और मेरी तरफ़ से उनको आगाह कर दे।¹⁸जब मैं शरीर से कहूँ, कि 'तू यक़ीनन मरेगा,' और तू उसे आगाह न करे और शरीर से न कहे कि वह अपनी बुरी चाल चलन से ख़बरदार हो, ताकि वह उससे बाज़ आकर अपनी जान बचाए, तो वह शरीर अपनी शरारत में मरेगा, लेकिन मैं उसके खून का सवाल-ओ-जवाब तुझ से करूँगा।¹⁹लेकिन अगर तूने शरीर को आगाह कर दिया और वह अपनी शरारत और अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ न आया तो वह अपनी बदकिरदारी में मरेगा पर तूने अपनी जान को बचा लिया।

²⁰और अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी छोड़ दे और गुनाह करे, और मैं उसके आगे ठोकर खिलाने वाला पत्थर रखूँ तो वह मर जाएगा; इसलिए कि तूने उसे आगाह नहीं किया, तो वह अपने गुनाह में मरेगा और उसकी सदाक़त के कामों का लिहाज़ न किया जाएगा, लेकिन मैं उसके खून का सवाल-ओ-जवाब तुझ से करूँगा।²¹लेकिन अगर तू उस रास्तबाज़ को आगाह कर दे, ताकि गुनाह न करे और वह गुनाह से बाज़ रहे तो वह यक़ीनन जिएगा; इसलिए के नसीहत पज़ीर हुआ और तूने अपनी जान बचा ली।"

²²और वहाँ ख़ुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे फ़रमाया, "उठ, मैदान में निकल जा और वहाँ मैं तुझ से बातें करूँगा।"²³तब मैं उठ कर मैदान में गया, और क्या देखता हूँ कि ख़ुदावन्द का जलाल उस शौकत-की तरह, जो मैंने नहर-ए-किबार के किनारे देखी थी खड़ा है; और मैं मुँह के बल गिरा।

²⁴तब रूह मुझ में दाख़िल हुई और उसने मुझे मेरे पाँव पर खड़ा किया, और मुझ से हमकलाम होकर फ़रमाया, कि "अपने घर जा, और दरवाज़ा बन्द करके अन्दर बैठ रह।"²⁵और ऐ आदमज़ाद देख, वह तुझ पर बंधन डालेंगे और उनसे तुझे बाँधेंगे और तू उनके बीच बाहर न जाएगा।

²⁶और मैं तेरी ज़बान तेरे तालू से चिपका दूँगा कि तू गूँगा~~हो जाए; और उनके लिए नसीहत गो न हो, क्योंकि वह बागी खान्दान हैं।"²⁷~~लेकिन जब मैं तुझ से हमकलाम हूँगा, तो तेरा मुँह खोलूँगा, तब तू उनसे कहेगा, कि 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है,' जो सुनता है सुने और जो नहीं सुनता न सुने, क्योंकि वह बागी खान्दान हैं।

Chapter 4

¹और ऐ आदमज़ाद , तू एक खपरा ले और अपने सामने रख कर उस पर एक शहर, हौं, यरुशलीम ही की तस्वीर खींच।²और उसका घेराव कर, और उसके सामने बुर्ज बना, और उसके सामने दमदमा बाँध और उसके चारों तरफ़ खेमें खड़े कर और उसके चारों तरफ़ मन्जनीक लगा।³फिर तू लोहे का एक तवा ले, और अपने और शहर के बीच उसे नख़ब कर कि वह लोहे की दीवार ठहरे और तू अपना मुँह उसके सामने कर और वह घेराव की हालत में हो, और तू उसको घेरने वाला होगा; यह बनी इस्राईल के लिए निशान है।

⁴"फिर तू अपनी ई करवट पर लेट रह और बनी-इस्राईल की बदकिरदारी इस पर रख दे; जितने दिनों तक तू लेटा रहेगा, तू उनकी बदकिरदारी बर्दाश्त करेगा।

⁵और मैंने उनकी बदकिरदारी के बरसों को उन दिनों के शुमार के मुताबिक़ जो तीन-सौ- नब्बे दिन हैं तुझ पर रख्खा है, इसलिए तू बनी-इस्राईल की बदकिरदारी बर्दाश्त करेगा।

⁶और जब तू इनको पूरा कर चुके तो फिर अपनी दहनी करवट पर लेट रह, और चालीस दिन तक बनी यहूदाह की बदकिरदारी को बर्दाश्त कर; मैंने तेरे लिए एक एक साल के बदले एक एक दिन मुकर्रर किया है।⁷फिर तू यरुशलीम के घेराव की तरफ़ मुँह कर और अपना बाजू नंगा कर और उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर।

⁸और देख, मैं तुझ पर बन्धन डालूँगा कि तू करवट न ले सके, जब तक अपने घेराव के दिनों को पूरा न कर ले।

⁹"और तू अपने लिए गेहूँ और जौ और बाक़ला और मसूर और चना और बाजरा ले, और उनको एक ही बर्तन में रख, और उनकी इतनी रोटियाँ पका जितने दिनों तक तू पहली करवट पर लेटा रहेगा; तू तीन सौ नब्बे दिन तक उनको खाना।¹⁰और तेरा खाना वज़न करके बीस मिस्काल" रोज़ाना होगा जो तू खाएगा, तू थोड़ा-थोड़ा खाना।¹¹तू पानी भी नाप कर एक हीन का छटा हिस्सा पिएगा, तू थोड़ा-थोड़ा पीना।

¹²और तू जौ के फुल्के खाना, और तू उनकी आँखों के सामने इन्सान की नजासत से उनको पकाना।"¹³और खुदावन्द ने फ़रमाया, कि "इसी तरह से बनी-इस्राईल अपनी नापाक रोटियों को उन क़ौमों के बीच जिनमें मैं उनको आवारा करूँगा, खाया करेंगे।"

¹⁴तब मैंने कहा, कि "हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मेरी जान कभी नापाक नहीं हुई; और अपनी जवानी से अब तक कोई मुरदार चीज़ जो आप ही मर जाए या किसी जानवर से फाड़ी जाए, मैंने हरगिज़ नहीं खाई, और हराम गोشت मेरे मुँह में कभी नहीं गया।"¹⁵तब उसने मुझे फ़रमाया, "देख, मैं इन्सान की नजासत के बदले तुझे गोबर देता हूँ, इसलिए तू अपनी रोटी उससे पकाना।"

¹⁶~उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद , देख, मैं यरुशलीम में रोटी का 'असा तोड़ डालूँगा; और वह रोटी तौल कर फ़िक्रमन्दी से खाएँगे, और पानी नाप कर हैरत से पिएँगे।"¹⁷ताकि~वह रोटी पानी के मोहताज हों, और एक साथ शर्मिन्दा हों और अपनी बदकिरदारी में हलाक हों।

Chapter 5

¹ऐ-आदमज़ाद , तू एक तेज़ तलवार ले और हज्जाम के उस्तरे की तरह उस से अपना सिर और अपनी दाढ़ी मुड़ा और तराजू ले और बालों को तौल कर उनके हिस्से बना।²फिर जब घेराव के दिन पूरे हो जाएँ, तो शहर के बीच में उनका एक हिस्सा लेकर आग में जला। और दूसरा हिस्सा लेकर तलवार से इधर उधर बिखेर दे। और तीसरा हिस्सा हवा में उड़ा दे, और मैं तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।

³और उनमें से थोड़े से बाल गिन कर ले और उनको अपने दामन में बाँध।⁴फिर उनमें से कुछ निकाल कर आग में डाल और जला दे; इसमें से एक आग निकलेगी जो इस्राईल के तमाम घराने में फैल जाएगी।

⁵~"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि यरुशलीम यही है। मैंने उसे क्रौमों और मम्लुकतों के बीच, जो उसके आस-पास हैं रखखा है।⁶लेकिन उसने दीगर क्रौमों से ज़्यादा शरारत कर के मेरे हुक्मों की मुखालिफ़त की और मेरे क़ानून को आसपास की मम्लुकतों से ज़्यादा रद्द किया, क्योंकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद्द किया और मेरे क़ानून की पैरवी न की।

⁷इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम अपने आस-पास की क्रौम से बढ़ कर फ़ितना अंगेज़ हो और मेरे क़ानून की पैरवी नहीं की और मेरे हुक्मों पर 'अमल नहीं किया, और अपने आस-पास की क्रौम के क़ानून और हुक्मों पर भी 'अमल नहीं किया;⁸इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं, हाँ मैं ही तेरा मुखालिफ़ हूँ और तेरे बीच सब क्रौमों की आँखों के सामने तुझे सज़ा दूँगा।

⁹और मैं तेरे सब नफ़रती कामों की वजह से तुझमें वही करूँगा, जो मैंने अब तक नहीं किया और कभी न करूँगा।¹⁰अगर तुझमें बाप बेटे को और बेटा बाप को खा जाएगा, और मैं तुझे सज़ा दूँगा और तेरे बक़िये को हर तरफ़ तितर-बितर करूँगा।

¹¹इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि ~मुझे अपनी हयात की क्रसम, चूँकि तूने अपनी तमाम मकरूहात से और अपने नफ़रती कामों से मेरे मज़्दिस को नापाक किया है, इसलिए मैं भी तुझे घटाऊँगा, मेरी आँखें रि'आयत न करेंगी, मैं हरगिज़ रहम न करूँगा।¹²तेरा एक हिस्सा वबा से मर जाएगा और काल से तेरे अन्दर हलाक हो जाएगा और दूसरा हिस्सा तेरी चारों तरफ़ तलवार से मारा जाएगा, और तीसरे हिस्से को मैं हर तरफ़ तितर बितर करूँगा और तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।

¹³"मेरा क्रहर यूँ पूरा होगा, तब मेरा ग़ज़ब उन पर धीमा हो जाएगा और मेरी तस्कीन होगी; और जब मैं उन पर अपना क्रहर पूरा करूँगा, तब वह जानेंगे कि मुझ खुदावन्द ने अपनी ग़ैरत से यह सब कुछ फ़रमाया था।¹⁴इसके 'अलावा मैं तुझको उन क्रौमों के बीच जो तेरे आस-पास हैं, और उन सब की निगाहों में जो उधर से गुज़र करेंगे वीरान और मलामत की वजह बनाऊँगा।

¹⁵इसलिए जब मैं क्रहर-ओ-ग़ज़ब और सख़्त मलामत से तेरे बीच 'अदालत करूँगा, तो तू अपने आसपास की क्रौम के लिए जा-ए-मलामत-ओ-इहानत और मक़ाम-ए-'इबरत-ओ-हैरत होगी; मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है।¹⁶या'नी जब मैं सख़्त सूखे के तीर जो उनकी हलाकत के लिए हैं, उनकी तरफ़ रवाना करूँगा जिनको मैं तुम्हारे हलाक करने के लिए चलाऊँगा, और मैं तुम में सूखे को ज़्यादा करूँगा और तुम्हारी रोटी की लाठी को तोड़ डालूँगा।¹⁷और मैं तुम में सूखा और बुरे दरिन्दे भेजूँगा, और वह तुझे बेऔलाद करेंगे; और मेरी और ख़ूँरेज़ी तेरे बीच आएगी मैं तलवार तुझ पर लाऊँगा; मैं खुदावन्द ही ने फ़रमाया है।"

Chapter 6

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²~कि "ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के पहाड़ों की तरफ़ मुँह करके उनके खिलाफ़~नबुव्वत कर³और यूँ कह, कि ऐ इस्राईल के पहाड़ों, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो! खुदावन्द खुदा पहाड़ों और टीलों को और नहरों और वादियों को यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैं, हों मैं ही तुम पर तलवार चलाऊँगा, और तुम्हारे ऊँचे मक़ामों को ग़ारत करूँगा।

⁴~और तुम्हारी कुर्बानगाहें उजड़ जाएँगी और तुम्हारी सूरज की मूरतें तोड़ डाली जाएँगी और मैं तुम्हारे मक़तूलों को तुम्हारे बुतों के आगे डाल दूँगा।⁵और बनी-इस्राईल की लार्शें उनके बुतों के आगे फेंक दूँगा, और मैं तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी कुर्बानगाहों के चारों तरफ़ तितर-बितर करूँगा।

⁶~तुम्हारे क़याम के तमाम इलाक़ों के शहर वीरान होंगे और ऊँचे मक़ाम उजाड़े जायेंगे ताकि तुम्हारी कुर्बानगाहें ख़राब और वीरान हों और तुम्हारे बुत तोड़े जाएँ और बाक़ी न रहें और तुम्हारी सूरज की मूरतें काट डाली जाएँ और तुम्हारी दस्तकारियाँ हलाक़ हों।⁷और मक़तूल तुम्हारे बीच गिरेँगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

⁸"लेकिन मैं एक बक़िया छोड़ दूँगा, या'नी वह चन्द लोग जो क़ौमों के बीच तलवार से बच निकलेंगे जब तुम ग़ैर मुल्कों में तितर बितर हो जाओगे।⁹और जो तुम में से बच रहेंगे उन क़ौमों के बीच जहाँ जहाँ वह गुलाम होकर जाएँगे मुझको याद करेंगे, जब मैं उनके बेवफ़ा दिलों को जो मुझ से दूर हुए और उनकी आँखों को जो बुतों की पैरवी में नाफ़रमान हुई, शिकस्त करूँगा और वह खुद अपनी तमाम बद'आमाली की वजह से जो उन्होंने अपने तमाम धिनौने कामों में की, अपनी ही नज़र में नफ़रती ठहरेंगे।¹⁰तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ, और मैंने यूँ ही नहीं फ़रमाया था कि मैं उन पर यह बला लाऊँगा।"

¹¹~खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "हाथ पर हाथ मार और पाँव ज़मीन पर पटक कर कह, कि बनी-इस्राईल के तमाम धिनौने कामों पर अफ़सोस! क्योंकि वह तलवार और काल और वबा से हलाक़ होंगे।¹²जो दूर हैं वह वबा से मरेगा और जो नज़दीक है तलवार से क़त्ल किया जाएगा, और जो बाक़ी रहे और महसूर हो वह काल से मरेगा, और मैं उन पर अपने क़हर को यूँ पूरा करूँगा।

¹³~और जब उनके मक़तूल हर ऊँचे टीले पर और पहाड़ों की सब चोटियों पर, और हर एक हरे दरख़्त और घने बलूत के नीचे, हर जगह जहाँ वह अपने सब बुतों के लिए खुशबू जलाते थे; उनके बुतों के पास उनकी कुर्बानगाहों के चारों तरफ़ पड़े हुए होंगे, तब वह पहचानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।¹⁴और मैं उन पर हाथ चलाऊँगा, और वीराने से दिबला तक उनके मुल्क की सब बस्तियाँ वीरान और सुनसान करूँगा। तब वह पहचानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

Chapter 7

¹~और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ²~कि "ऐ आदमज़ाद, खुदावन्द खुदा इसाईल के मुल्क से यूँ फ़रमाता है: कि तमाम हुआ! मुल्क के चारों कोनों पर खातिमा आन पहुँचा है।

³अब तेरी मौत आई और मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, और तेरी चाल चलन के मुताबिक़ तेरी 'अदालत करूँगा और तेरे सब धिनौने कामों की सज़ा तुझ पर लाऊँगा। 'मेरी आँख तेरी रि'आयत न करेगी और मैं तुझे पर रहम न करूँगा, बल्कि मैं तेरी चाल चलन के मुताबिक़ तुझे सज़ा दूँगा और तेरे धिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द हूँ।

⁵"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि एक बला या 'नी बला-ए-'अज़ीम! देख, वह आती है।⁶खातमा आया, खातमा आ गया! वह तुझ पर आ पहुँचा, देख वह आ पहुँचा।⁷ऐ ज़मीन पर बसने वाले, तेरी शामत आ गई, वक़्त आ पहुँचा, हँगामे का दिन क़रीब हुआ; यह पहाड़ों पर खुशी की ललकार का दिन नहीं।

⁸अब मैं अपना क्रहर तुझ पर उँडेलने को हूँ और अपना ग़ज़ब तुझ पर पूरा करूँगा और तेरे चाल चलन के मुताबिक़ तेरी 'अदालत करूँगा और तेरे सब धिनौने कामों की सज़ा तुझ पर लाऊँगा।⁹मेरी आँख रिआयत न करेगी और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा, मैं तुझे तेरी चाल चलन के मुताबिक़ सज़ा दूँगा और तेरे धिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द सज़ा देने वाला हूँ।

¹⁰~"देख, वह दिन, देख वह आ पहुँचा है तेरी शामत आ गई, 'असा में कलियाँ निकलीं, गुरूर में गुन्चे निकले।¹¹सितमगरी निकली कि शरारत के लिए छड़ी हो, कोई उनमें से न बचेगा, न उनके गिरोह में से कोई और न उनके माल में से कुछ, और उन पर मातम न होगा।

¹²वक़्त आ गया, दिन क़रीब है, न ख़रीदने वाला खुश हो न बेचने वाला उदास, क्योंकि उनके तमाम गिरोह पर ग़ज़ब नाज़िल होने को है।¹³क्योंकि बेचने वाला बिकी हुई चीज़ तक फिर न पहुँचेगा, अगरचे अभी वह ज़िन्दों के बीच हों, क्योंकि यह ख़्वाब उनके तमाम गिरोह के लिए है, एक भी न लौटेगा और न कोई बदकिरदारी से अपनी जान को क़ायम रखेगा।

¹⁴नरसिंगा फूँका गया और सब कुछ तैयार है, लेकिन कोई जंग को नहीं निकलता, क्योंकि मेरा ग़ज़ब उनके तमाम गिरोह पर है।¹⁵~बाहर तलवार है और अन्दर वबा और क्रहत हैं, जो खेत में है तलवार से क़त्ल होगा, और जो शहर में है सूखा और वबा उसे निगल जाएँगे।¹⁶लेकिन जो उनमें से भाग जाएँगे वह बच निकलेंगे, और वादियों के~कबूतरों की तरह पहाड़ों पर रहेंगे और सब के सब फ़रियाद करेंगे, हर एक अपनी बदकिरदारी की वजह से।

¹⁷सब हाथ ढीले होंगे और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर हो जाएँगे।¹⁸वह टाट से कमर कसेंगे और ख़ौफ़ उन पर छा जाएगा, और सब के मुँह पर शर्म होगी और उन सब के सिरों पर चन्दलापन होगा।¹⁹~और वह अपनी चाँदी सड़कों पर फेंक देंगे और उनका सोना नापाक चीज़ की तरह ~होगा~खुदावन्द के ग़ज़ब के दिन में उनका सोना चाँदी उनको न बचा सकेगा। उनकी जानें आसूदा न होंगी और उनके पेट न भरेंगे, क्योंकि उन्होंने उसी से ठोकर खाकर बदकिरदारी की थी।

²⁰और उनके खूबसूरत ज़ेवर शौकत के लिए थे लेकिन उन्होंने उनसे अपनी नफ़रती मूरतें और मकरूह चीज़ें बनाई, इसलिए मैंने उनके लिए उनको नापाक चीज़ की तरह कर दिया।²¹~और मैं उनको ग़नीमत के लिए परदेसियों के हाथ में और लूट के लिए ज़मीन के शरीरों के हाथ में सौंप दूँगा, और वह उनको नापाक करेंगे।²²और मैं उनसे मुँह फेर लूँगा और वह मेरे ख़िल्वतखाने को नापाक करेंगे। उसमें ग़ारतगर आएँगे और उसे नापाक करेंगे।

²³ज़न्जीर बना क्योंकि मुल्क खूँरेज़ी के गुनाहों से पुर है और शहर जुल्म से भरा है।²⁴इसलिए मैं ग़ैर क़ौमों में से बुराई को लाऊँगा और वह उनके घरों के मालिक होंगे, और मैं ज़बरदस्तों का घमण्ड मिटाऊँगा और उनके पाक मक़ाम नापाक किए जाएँगे।²⁵हलाकत आती है, और वह सलामती को ढूँढ़ेंगे लेकिन न पाएँगे।

²⁶बला पर बला आएगी और अफ़वाह पर अफ़वाह होगी, तब वह नबी से ख़्वाब की तलाश करेंगे, लेकिन शरी'अत काहिन से और मसलहत बुजुर्गों से जाती रहेगी।²⁷बादशाह मातम करेगा और हाकिम पर हैरत छा जाएगी, और र'अय्यत के हाथ काँपेंगे। मैं उनके चाल चलन के मुताबिक़ उनसे सुलूक करूँगा और उनके 'आमाल के मुताबिक़ उन पर फ़तवा दूँगा, ताकि वह जानें कि खुदावन्द मैं हूँ।"

Chapter 8

¹और ~छठे बरस के छठे महीने की पाँचवी तारीख को यूँ हुआ कि मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदाह के बुजुर्ग मेरे सामने बैठे थे कि वहाँ खुदावन्द खुदा का हाथ मुझ पर ठहरा।²तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शबीह आग की तरह नज़र आती है; उसकी कमर से नीचे तक आग और उसकी कमर से ऊपर तक जल्वा-ए-नूर ज़ाहिर हुआ जिसका रंग शैकल किए हुए पीतल की तरह था।

³और उसने एक हाथ को शबीह की तरह बढ़ा कर मेरे सिर के बालों से मुझे पकड़ा, और रूह ने मुझे आसमान और ज़मीन के बीच बुलन्द किया और मुझे इलाही ख़्वाब में यरुशलीम में उत्तर की तरफ़ अन्दरूनी फाटक पर, जहाँ ग़ैरत की मूरत का घर था जो ग़ैरत भड़काती है ले आई।⁴और क्या देखता हूँ कि वहाँ इस्राईल के खुदा का जलाल, उस ख़्वाब के मुताबिक़ जो मैंने उस वादी में देखा था मौजूद है।

⁵तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद अपनी आँखें उत्तर की तरफ उठा और मैंने उस तरफ़ आँखें उठाई और क्या देखता हूँ कि उत्तर की तरफ़ मज़बह के दरवाज़े पर ग़ैरत की वही मूरत दहलीज़ में हैं।⁶और उसने मुझे फिर फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, तू उनके काम देखता है? या'नी वह मकरूहात-ए-'अज़ीम जो बनी-इस्राईल यहाँ करते हैं, ताकि मैं अपने हैकल को छोड़ कर उससे दूर हो जाऊँ; लेकिन तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात देखेगा।"

⁷तब वह मुझे सहन के फाटक पर लाया, और मैंने नज़र की और क्या देखता हूँ कि दीवार में एक छेद है।⁸तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, दीवार खोद।" और जब मैंने दीवार को खोदा, तो एक दरवाज़ा देखा।⁹फिर उसने मुझे फ़रमाया, "अन्दर जा, और जो नफ़रती काम वह यहाँ करते हैं देख।"

¹⁰तब मैंने अन्दर जा कर देखा। और क्या देखता हूँ कि हरनू' के सब रहने वाले कीड़ों और मकरूह जानवरों की सब सूरतें और बनी-इस्राईल के बुत चारों तरफ़ दीवार पर मुनक्क़श हैं।¹¹और बनी-इस्राईल के बुजुर्गों में से सत्तर शख्स उनके आगे खड़े हैं और याज़नियाह-बिन-साफ़न उनके बीच में खड़ा है, और हर एक के हाथ में एक खुशबू दान है और खुशबू का बादल उठ रहा है।

¹²तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तूने देखा कि बनी-इस्राईल के सब बुजुर्ग तारीकी में या'नी अपने मुनक्क़श काशानों में क्या करते हैं? क्योंकि वह कहते हैं कि खुदावन्द हम को नहीं देखता; खुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया है।"¹³और उसने मुझे यह भी फ़रमाया, कि "तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात, जो वह करते हैं देखेगा।"

¹⁴तब वह मुझे खुदावन्द के घर के उत्तरी फाटक पर लाया, और क्या देखता हूँ कि वहाँ 'औरतें बैठी तम्मूज़ पर नोहा कर रही हैं।¹⁵तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तूने यह देखा है? तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात देखेगा।"

¹⁶~फिर वह मुझे खुदावन्द के घर के अन्दरूनी सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द की हैकल के दरवाज़े पर आस्ताने और मज़बह के बीच, क़रीबन पच्चीस लोग हैं जिनकी पीठ खुदावन्द की हैकल की तरफ़ है और उनके मुँह पूरब की तरफ़ हैं; और पूरब का रुख करके आफ़ताब को सिज्दा कर रहे हैं।

¹⁷~तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तूने यह देखा है? क्या बनी यहूदाह के नज़दीक यह छोटी सी बात है कि वह यह मकरूह काम करें जो यहाँ करते हैं क्योंकि उन्होंने तो मुल्क को जुल्म से भर दिया और फिर मुझे ग़ज़बनाक किया, और देख, वह अपनी नाक से डाली लगाते हैं।¹⁸फिर मैं भी क्रहर से पेश आऊँगा। मेरी आँख रि'आयत न करेगी और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा, और अगरचे वह चिल्ला चिल्ला कर मेरे कानों में आह-व-नाला करें तोभी मैं उनकी न सुनूँगा।"

Chapter 9

¹फिर उसने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर मेरे कानों में कहा कि, "उनको जो शहर के मुन्तज़िम हैं मैं नज़दीक बुला हर एक शख्स अपना मुहलिक हथियार हाथ में लिए हो।" ²और देखो छः मर्द ऊपर के फाटक के रास्ते से जो उत्तर की तरफ़ है चले आए और हर एक मर्द के हाथ में उसका खूँरेज़ हथियार था और उनके बीच एक आदमी कतानी लिबास पहने था और उसकी कमर पर लिखने की दवात थी तब वह अन्दर गए और पीतल के मज़बह के पास खड़े हुए।

³और इस्राईल के खुदावन्द का जलाल करूबी पर से जिस पर वह था उठ कर घर के आस्ताना पर गया और उसने उस मर्द को जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात थी पुकारा। ⁴और खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, कि "शहर के बीच से, हाँ, यरुशलीम के बीच से गुज़र और उन लोगों की पेशानी पर जो उन सब नफ़रती कामों की वजह से जो उसके बीच किए जाते हैं, आहें मारते और रोते हैं, निशान कर दे।"

⁵और उसने मेरे सुनते हुए दूसरों से फ़रमाया, "उसके पीछे पीछे शहर में से गुज़र करो और मारो। तुम्हारी आँखें रि'आयत न करें, और तुम रहम न करो।" ⁶तुम बूढ़ों और जवानों और लड़कियों और नन्हें बच्चों और 'औरतों को बिल्कुल मार डालो, लेकिन जिनपर निशान है उनमें से किसी के पास न जाओ; और मेरे हैकल से शुरू करो।" तब उन्होंने उन बुजुर्गों से जो हैकल के सामने थे शुरू किया।

⁷और उसने उनको फ़रमाया, "हैकल को नापाक करो, और मक्कतूलों से सहनों को भर दो। चलो, बाहर निकलो।" इसलिए वह निकल गए और शहर में क्रल्ल करने लगे। ⁸और जब वह उनको क्रल्ल कर रहे थे और मैं बच रहा था, तो यूँ हुआ कि मैं मुँह के बल गिरा और चिल्ला कर कहा, "आह! ऐ खुदावन्द खुदा, क्या तू अपना क़हर-ए-शदीद यरुशलीम पर नाज़िल कर के इस्राईल के सब बाक़ी लोगों को हलाक करेगा?"

⁹तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "इस्राईल और यहूदाह के ख़ान्दान की बदकिरदारी बहुत 'अज़ीम है, मुल्क खूँरेज़ी से पुर है और शहर बे इन्साफ़ी से भरा है; क्योंकि वह कहते हैं, कि 'खुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया है और वह नहीं देखता।" ¹⁰फिर मेरी आँख रि'आयत न करेगी, और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा; मैं उनकी चाल चलन का बदला उनके सिर पर लाऊँगा।" ¹¹और देखो, उस आदमी ने जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात थी, यूँ कैफ़ियत बयान की, "जैसा तूने मुझे हुक्म दिया, मैंने किया।"

Chapter 10

¹तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ, कि उस फ़ज़ा पर जो करूबियों के सिर के ऊपर थी, एक चीज़ नीलम की तरह दिखाई दी और उसकी सूरत तख़्त की जैसी थी।²और उसने उस आदमी को जो कतानी लिबास पहने था फ़रमाया, "उन पहियों के अन्दर जा जो करूबी के नीचे हैं, और आग के अंगारे जो करूबियों के बीच हैं मुड़ी भर कर उठा और शहर के ऊपर बिखेर दे।" और वह गया और मैं देखता था।

³जब वह शख्स अन्दर गया, तब करूबी हैकल की दहनी तरफ़ खड़े थे, और अन्दरूनी सहन बादल से भर गया।⁴तब खुदावन्द का जलाल करूबी पर से बुलन्द होकर हैकल के आस्ताने पर आया, और हैकल बादल से भर गई; और सहन खुदावन्द के जलाल के नूर से मा'मूर हो गया।⁵और करूबियों के परों की आवाज़ बाहर के सहन तक सुनाई देती थी, जैसे क़ादिर-ए-मुतलक़ खुदा की आवाज़ जब वह कलाम करता है।

⁶और यूँ हुआ कि जब उसने उस शख्स को, जो कतानी लिबास पहने था, हुक्म किया कि वह पहिए के अन्दर से और करूबियों के बीच से आग ले; तब वह अन्दर गया और पहिए के पास खड़ा हुआ।⁷और करूबियों में से एक करूबी ने अपना हाथ उस आग की तरफ़, जो करूबियों के बीच थी, बढ़ाया और आग लेकर उस शख्स के हाथों पर, जो कतानी लिबास पहने था रखी; वह लेकर बाहर चला गया।⁸और करूबियों के बीच उनके परों के नीचे इन्सान के हाथ की तरह सूरत नज़र आई

⁹और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि चार पहिए करूबियों के आस पास हैं, एक करूबी के पास एक पहिया और दूसरे करूबी के पास दूसरा पहिया था; और उन पहियों का जलवा देखने में ज़बरजद की तरह था।¹⁰और उनकी शक्ल एक ही तरह की थी, जैसे पहिया पहिये के अन्दर हो।¹¹जब वह चलते थे तो अपनी चारों तरफ़ पर चलते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे, जिस तरफ़ को सिर का रुख होता था उसी तरफ़ उसके पीछे पीछे जाते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे।

¹²और उनके तमाम बदन और पीठ और हाथों और परों और उन पहियों में चारों तरफ़ आँखें ही आँखें थीं, या 'नी उन चारों के पहियों में'।¹³इन पहियों को मेरे सुनते हुए चर्ख़ कहा गया।¹⁴और हर एक के चार चेहरे थे: पहला चेहरा करूबी का, दूसरा इन्सान का, तीसरा शेर-ए-बबर का, और चौथा 'उक्ताब का।

¹⁵और करूबी बुलन्द हुए। यह वह जानदार था, जो मैंने नहर-ए-किबार के पास देखा था।¹⁶और जब करूबी चलते थे, तो पहिए भी उनके साथ-साथ चलते थे; और जब करूबियों ने अपने बाजू फैलाए ताकि ज़मीन से ऊपर बुलन्द हों, तो वह पहिए उनके पास से जुदा न हुए।¹⁷जब वह ठहरते थे, तो यह भी ठहरते थे; और जब वह बुलन्द होते थे, तो यह भी उनके साथ बुलन्द हो जाते थे; क्योंकि जानदार की रूह उनमें थी।

¹⁸और खुदावन्द का जलाल घर के आस्ताने पर से रवाना हो कर करूबियों के ऊपर ठहर गया।¹⁹तब करूबियों ने अपने बाजू फैलाए, और मेरी आँखों के सामने ज़मीन से बुलन्द हुए और चले गए; और पहिए उनके साथ साथ थे, और वह खुदावन्द के घर के पूरबी फाटक के आसताने पर ठहरे और इस्राईल के खुदा का जलाल उनके ऊपर जलवागर था।

²⁰यह वह जानदार है जो मैंने इस्राईल के खुदा के नीचे नहर-ए-किबार के किनारे पर देखा था और मुझे मा'लूम था कि करूबी हैं।²¹हर एक के चार चेहरे थे और चार बाजू और उनके बाजूओं के नीचे इन्सान के जैसा हाथ था।²²रही उनके चेहरों की सूरत, यह वही चेहरे थे जो मैंने नहर-ए-किबार के किनारे पर देखे थे, या 'नी उनकी सूरत और वह खुद, वह सब के सब सीधे आगे ही को चले जाते थे।

Chapter 11

¹~और रूह मुझ को उठा कर खुदावन्द के घर के पूरबी फाटक पर जिसका रुख पूरब की तरफ है ले गई, और क्या देखता हूँ कि उस फाटक के आस्ताने पर पच्चीस शख्स हैं। और मैंने उनके बीच याज़नियाह बिन अज़ूर और फ़िल्लियाह बिन बिनायाह, लोगों के हाकिमों को देखा।

²और उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, यह वह लोग हैं जो इस शहर में बदकिरदारी की तदबीर और बुरी मश्वरत करते हैं।³जो कहते हैं, कि 'घर बनाना नज़दीक नहीं है, यह शहर तो देग है और हम गोश्त हैं।' इसलिए तू उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर; ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर।"

⁵और खुदावन्द की रूह मुझ पर नाज़िल हुई और उसने मुझे कहा कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि ऐ बनी-इसाईल तुम ने यूँ कहा है, मैं तुम्हारे दिल के ख्यालात को जानता हूँ।⁶तुम ने इस शहर में बहुतों को क़त्ल किया, बल्कि उसकी सड़कों को मक़तूलों से भर दिया है।⁷~इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तुम्हारे मक़तूल जिनकी लाशें तुम ने शहर में रख छोड़ी हैं, यह वही गोश्त है और यह शहर वही देग है; लेकिन तुम इस से बाहर निकाले जाओगे।

⁸तुम तलवार से डरे हो, और खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, कि मैं तलवार तुम पर लाऊँगा।⁹और मैं तुम को उस से बाहर निकालूँगा और तुम को परदेसियों के हवाले कर दूँगा, और तुम को सज़ा दूँगा।¹⁰तुम तलवार से क़त्ल होगे, इसाईल की हदों के अन्दर मैं तुम्हारी 'अदालत करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

¹¹यह शहर तुम्हारे लिए देग न होगा, न तुम इसमें का गोश्त होगे; बल्कि मैं बनी-इसाईल की हदों के अन्दर तुम्हारा फ़ैसला करूँगा।¹²और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ, जिसके क़ानून पर तुम नहीं चले और जिसके हुक्मों पर तुम ने 'अमल नहीं किया; बल्कि तुम उन क़ौमों के हुक्मों पर जो तुम्हारे आस पास हैं ~'अमल किया।"

¹³और जब मैं नबुव्वत कर रहा था, तो यूँ हुआ कि~फ़लतियाह-बिन-बिनायाह मर गया। तब मैं मुँह के बल गिरा और बुलन्द आवाज़ से चिल्ला कर कहा, कि "ऐ खुदावन्द खुदा ! क्या तू बनी-इसाईल के बक्रिये को बिल्कुल मिटा डालेगा?"

¹⁴तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁵कि "ऐ आदमज़ाद, तेरे भाइयों, हाँ, तेरे भाइयों या'नी तेरे क़राबतियों बल्कि सब बनी-इसाईल से, हाँ, उन सब से यरुशलीम के बाशिन्दों ने कहा है, 'खुदावन्द से दूर रहो। यह मुल्क हम को मीरास में दिया गया है।'

¹⁶इसलिए तू कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि हर चन्द मैंने उनको क़ौमों के बीच हाँक दिया है और ग़ैर-मुल्कों में तितर बितर किया लेकिन मैं उनके लिए थोड़ी देर तक उन मुल्कों में जहाँ जहाँ वह गए एक हैकल हूँगा।¹⁷~इसलिए तू कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: मैं तुम को उम्मतों में से जमा' कर लूँगा, और उन मुल्कों में से जिनमें तुम~तितर बितर हुए तुम को जमा' करूँगा और इसाईल का मुल्क तुम को दूँगा।¹⁸और वह वहाँ आयेंगे और उसकी तमाम नफ़रती और मकरूह चीज़ें उस से दूर कर देंगे।

¹⁹~और मैं उनको नया दिल दूँगा और नई रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और संगीन दिल उनके जिस्म से निकाल कर दूँगा और उनको गोश्त का दिल 'इनायत करूँगा;²⁰ताकि वह मेरे तौर तरीक़े पर चलें और मेरे हुक्मों पर 'अमल करें और उन पर 'अमल करें, और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा।²¹लेकिन जिनका दिल अपनी नफ़रती और मकरूह चीज़ों का तालिब होकर उनकी पैरवी में है, उनके बारे में खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि मैं उनके चाल चलन को उन ही के सिर पर लाऊँगा।"

²²~तब करूबियों ने अपने अपने बाजू बुलन्द किए, और पहिए उनके साथ साथ चले, और इसाईल के खुदा का जलाल उनके ऊपर जलवागर था।²³और खुदावन्द का जलाल शहर में से उठा, और शहर की पूरबी तरफ़ के पहाड़ पर जा ठहरा।

²⁴तब रूह ने मुझे उठाया और खुदा के रूह ने ख़्वाब में मुझे फिर कसदियों के मुल्क में गुलामों के पास पहुँचा दिया। और वह ख़्वाब जो मैंने देखा था मुझ से ग़ायब हो गया।²⁵और मैंने गुलामों से खुदावन्द की वह सब बातें बयान कीं, जो उसने मुझ पर ज़ाहिर की थीं।

Chapter 12

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।² कि "ऐ आदमज़ाद, तू एक बागी घराने के बीच रहता है, जिनकी आँखें हैं कि देखें पर वह नहीं देखते, और उनके कान हैं कि सुनें पर वह नहीं सुनते; क्योंकि वह बागी खान्दान हैं।

³इसलिए ऐ आदमज़ाद, सफ़र का सामान तैयार कर और दिन को उनके देखते हुए अपने मकान से खाना हो, तू उनके सामने अपने मकान से दूसरे मकान को जा; मुम्किन है कि वह सोचें, अगरचे वह बागी खान्दान हैं।

⁴और तू दिन को उनकी आँखों के सामने अपना सामान बाहर निकाल, जिस तरह नक़ल-ए-मकान के लिए सामान निकालते हैं और शाम को उनके सामने उनकी तरह जो गुलाम होकर निकल जाते हैं निकल जा।⁵ उनकी आँखों के सामने दीवार में सूरख कर और उस रास्ते से सामान निकाल।⁶ उनकी आँखों के सामने तू उसे अपने कान्धे पर उठा, और अन्धेरे में उसे निकाल ले जा, तू अपना चेहरा छिपा ताकि ज़मीन को न देख सके; क्योंकि मैंने तुझे बनी-इसाईल के लिए एक निशान मुकर्रर किया है।

⁷चुनौचे जैसा मुझे हुक्म हुआ था वैसा ही मैंने किया। मैंने दिन को अपना सामान निकाला, जैसे नक़ल-ए-मकान के लिए निकालते हैं; और शाम को मैंने अपने हाथ से दीवार में सूरख किया, मैंने अन्धेरे में उसे निकाला और उनके देखते हुए काँधे पर उठा लिया।

⁸और ~सुबह को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: "कि "ऐ आदमज़ाद, क्या बनी इसाईल ने जो बागी खान्दान हैं, तुझ से नहीं-पूछा, 'तू क्या करता है?' "¹⁰उनको जवाब दे, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ~यरुशलीम के हाकिम और तमाम बनी-इसाईल के लिए जो उसमें हैं, यह बार-ए-नबुव्वत है।'

¹¹उनसे कह दे, कि 'मैं तुम्हारे लिए निशान हूँ: जैसा मैंने किया, वैसा ही उनसे सुलूक किया जाएगा। वह जिलावतन होंगे और गुलामी में जाएँगे।'¹² और जो उनमें हाकिम हैं, वह शाम को अन्धेरे में उठ कर अपने काँधे पर सामान उठाए हुए निकल जाएगा। वह दीवार में सूरख करेंगे कि उस रास्ते से निकाल ले जाएँ। वह अपना चेहरा छिपाएगा, क्योंकि अपनी आँखों से ज़मीन को न देखेगा।¹³ और मैं अपना जाल उस पर बिछाऊँगा और वह मेरे फन्दे में फंस जाएगा। और मैं उसे कसदियों के मुल्क में-बाबुल में पहुँचाऊँगा, लेकिन वह उसे न देखेगा, अगरचे वहीं मरेगा।

¹⁴और मैं उसके आस पास के सब हिमायत करने वालों और उसके सब ग़ोलों की तमाम अतराफ़ में तितर बितर करूँगा, और मैं तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।¹⁵ और जब मैं उनकी क्रौम में तितर बितर और मुल्कों में तितर-बितर करूँगा, तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।¹⁶ लेकिन मैं उनमें से कुछ को तलवार और काल से और वबा से बचा रखूँगा, ताकि वह क्रौमों के बीच जहाँ कहीं जाएँ अपने तमाम नफ़रती कामों को बयान करें, और वह मा'लूम करेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

¹⁷और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: "कि "ऐ आदमज़ाद! तू थरथराते हुए रोटी खा, और काँपते हुए फ़िक्रमन्दी से पानी पी।

¹⁹और इस मुल्क के लोगों से कह कि खुदावन्द खुदा यरुशलीम और मुल्क-ए-इसाईल के बाशिन्दों के हक़ में यूँ फ़रमाता है: कि वह फ़िक्रमन्दी से रोटी खाएँगे और परेशानी से पानी पीएँगे, ताकि उसके बाशिन्दों की सितमगरी की वजह से मुल्क अपनी मा'मूरी से खाली हो जाए।²⁰ और वह बस्तियाँ जो आबाद हैं उजाड़ हो जायेंगी और मुल्क वीरान होगा और तुम जानोगे कि खुदावन्द मैं हूँ।"

²¹~फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: "कि "ऐ आदमज़ाद! मुल्क-ए-इसाईल में यह क्या मिसाल जारी है, कि 'वक्रत गुज़रता जाता है, और किसी ख़्वाब का कुछ अन्जाम नहीं होता'?"²³ इसलिए उनसे कह दे, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं इस मिसाल को ख़त्म करूँगा और फिर इसे इसाईल में इस्ते'माल न करेंगे।' बल्कि तू उनसे कह, वक्रत आ गया है और हर ख़्वाब का अन्जाम करीब है।

²⁴क्योंकि आगे को बनी इसाईल के बीच बेमतलब के ख़्वाब और खुशामद की ग़ैबदानी न होगी।²⁵ क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ मैं कलाम करूँगा और मेरा कलाम ज़रूर पूरा होगा उसके पूरा होने में देर न होगी बल्कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ बागी खान्दान मैं तुम्हारे दिनों में कलाम करके उसे पूरा करूँगा।

²⁶और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²⁷ कि "ऐ आदमज़ाद देख बनी इसाईल कहते हैं कि जो ख़्वाब उसने देखा है बहुत ज़मानों में ज़ाहिर होगा और वह उन दिनों की ख़बर देता है जो बहुत दूर हैं।²⁸ इसलिए उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि आगे की मेरी किसी बात को पूरा होने में देर न होगी, बल्कि खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, कि जो बात मैं कहूँगा पूरी हो जाएगी।"

Chapter 13

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²कि "ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के नबी जो नबुव्वत करते हैं, उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर और जो अपने दिल से बात बनाकर नबुव्वत करते हैं उनसे कह, 'खुदावन्द का कलाम सुनो!' "³खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि ~बेवकूफ़ नबियों पर अफ़सोस जो अपनी ही रूह की पैरवी करते हैं और उन्होंने कुछ नहीं देखा।⁴ऐ इस्राईल, तेरे नबी उन लोमड़ियों की तरह हैं, जो वीरानों में रहती हैं।

⁵तुम रुखनों पर नहीं गए और न बनी-इस्राईल के लिए फ़सील बनाई, ताकि वह खुदावन्द के दिन जंगगाह में खड़े हों।⁶उन्होंने बातिल और झूठा शगुन देखा है, जो कहते हैं, कि 'खुदावन्द फ़रमाता है, "अगरचे खुदावन्द ने उनको नहीं भेजा, और लोगों को उम्मीद दिलाते हैं कि उनकी बात पूरी हो जाएगी।' क्या तुम ने बातिल ख़्वाब नहीं देखा? क्या तुम ने झूठी ग़ैबदानी नहीं की? क्योंकि तुम कहते हो कि खुदावन्द ने फ़रमाया है, अगरचे मैंने नहीं फ़रमाया।"

⁸इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: "चूँकि ~तुम ने झूट कहा है और बुतलान देखा, इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि मैं तुम्हारा मुखालिफ़ हूँ।⁹और मेरा हाथ उन नबियों पर, जो बुतलान देखते हैं और झूठी ग़ैबदानी करते हैं, चलेगा; न वह मेरे लोगों के मजमे' में शामिल होंगे और न इस्राईल के खान्दान के दफ़्तर में लिखे जाएँगे और न वह इस्राईल के मुल्क में दाख़िल होंगे, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द खुदा हूँ।

¹⁰इस वजह से कि उन्होंने मेरे लोगों को यह कह कर वरग़ालाया है कि सलामती है हालाँकि सलामती नहीं; जब कोई दीवार बनाता है, तो वह उस पर कच्चा गारा लगाते हैं।¹¹तू उनसे जो उस पर गारा लगाते हैं कह, वह गिर जाएगी क्योंकि मूसलाधार बारिश होगी और बड़े बड़े ओले पड़ेंगे और आँधी उसे गिरा देगी।¹²और जब वह दीवार गिरेगी तो क्या लोग तुम से न पूछेंगे, कि 'वह गारा कहाँ है, जो तुम ने उस पर की थी?"

¹³इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं अपने ग़ज़ब के तूफ़ान से उसे तोड़ दूँगा, और मेरे क्रहर से झमाझम में बरसेगा और मेरे क्रहर के ओले पड़ेंगे ताकि उसे हलाक करे।¹⁴इसलिए मैं उस दीवार को जिस पर तुम ने कच्चा गारा किया है तोड़ डालूँगा और ज़मीन पर गिराऊँगा, यहाँ तक कि उसकी बुनियाद ज़ाहिर हो जाएगी। हाँ, वह गिरेगी और तुम उसी में हलाक होगे, और जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

¹⁵मैं अपना क्रहर उस दीवार पर और उन पर जिन्होंने उस पर कच्चा गारा किया है पूरा करूँगा, और तब मैं तुम से कहूँगा, कि न दीवार रही और न वह रहे जिन्होंने उस पर गारा किया,¹⁶या'नी इस्राईल के नबी जो यरुशलीम के बारे में नबुव्वत करते हैं, और उसकी सलामती के ख़्वाब देखते हैं हालाँकि सलामती नहीं है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁷~"और ऐ आदमज़ाद, तू अपनी क़ौम की बेटियों की तरफ़, जो अपने दिल बात बना कर नबुव्वत करती हैं मुतवज्जह हो कर उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर,¹⁸और कह खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि अफ़सोस तुम पर जो सब कोहनियों के नीचे की गद्दी सीते हो, और हर एक क्रद के मुवाफ़िक़ सिर के लिए बुर्का' बनाती हो कि जानों को शिकार करो! क्या तुम मेरे लोगों की जानों का शिकार करोगी और अपनी जान बचाओगी?

¹⁹और तुम ने मुट्ठी भर जौ के लिए और रोटी के टुकड़ों के लिए मुझे मेरे लोगों में नापाक ठहराया, ताकि तुम उन जानों को मार डालो जो मरने के लायक़ नहीं, और उनको ज़िन्दा रखो जो ज़िन्दा रहने के लायक़ नहीं हैं; क्योंकि तुम मेरे लोगों से जो झूट सुनते हैं झूट बोलती हो।

²⁰फिर खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैं तुम्हारी गद्दियों का दुश्मन हूँ जिनसे तुम जानों को परिन्दों की तरह शिकार करती हो, और मैं उनको तुम्हारी कोहनियों के नीचे से फाड़ डालूँगा, और उन जानों को जिनको तुम परिन्दों की तरह शिकार करती हो आज़ाद कर दूँगा।²¹मैं तुम्हारे बुरकों को भी फाड़ूँगा और अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, और फिर कभी तुम्हारा बस न चलेगा कि उनको शिकार करो, और तुम जानोगी कि मैं खुदावन्द हूँ।

²²इसलिए कि तुम ने झूट बोलकर सादिक़ के दिल को उदास किया, जिसको मैंने ग़मगीन नहीं किया; और शरीर की मदद की है, ताकि वह अपनी जान बचाने के लिए अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ न आए।²³इसलिए तुम आगे को न बतात देखोगी और न ग़ैबगोई करोगी, क्योंकि मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, तब तुम जानोगी कि खुदावन्द मैं हूँ।"

Chapter 14

¹फिर इस्राईल के बुजुर्गों में से चन्द आदमी मेरे पास आए और मेरे सामने बैठ गए।²तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ कि "ऐ आदमज़ाद, इन मदों ने अपने बुतों को अपने दिल में नसब किया है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखखा है; क्या ऐसे लोग मुझ से कुछ दरियाफ़्त कर सकते हैं?"

⁴इसलिए तू उनसे बातें कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: बनी इस्राईल में से हर एक जो अपने बुतों को अपने दिल में नसब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखता है और नबी के पास आता है, मैं खुदावन्द उसके बुतों की कसरत के मुताबिक़ उसको जवाब दूँगा;

⁵ताकि मैं बनी-इस्राईल को उन्हीं के ख्यालात में पकड़ें, क्योंकि वह सब के सब अपने बुतों की वजह से मुझ से दूर हो गए हैं।

⁶इसलिए तू बनी-इस्राईल से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: तोबा करो और अपने बुतों से बाज़ आओ, और अपनी तमाम मकरूहात से मुँह मोड़ो।

⁷क्योंकि हर एक जो बनी-इस्राईल में से या उन बेगानों में से जो इस्राईल में रहते हैं, मुझ से जुदा हो जाता है और अपने दिल में अपने बुत को नसब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखता है, और नबी के पास आता है कि उसके ज़रिए मुझ से दरियाफ़्त करे, उसको मैं खुदावन्द खुद ही जवाब दूँगा।⁸और मेरा चेहरा उसके खिलाफ़ होगा और मैं उसको हैरत की वजह और अन्गुशतनुमा और जरब-उल-मिसाल बनाऊँगा और अपने लोगों में से काट डालूँगा; और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

⁹और अगर नबी धोका खाकर कुछ कहे, तो मैं खुदावन्द ने उस नबी को धोका दिया, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँगा और उसे अपने इस्राइली लोगों में से हलाक कर दूँगा।¹⁰और वह अपनी बदकिरदारी की सज़ा को बर्दाश्त करेंगे, ~नबी की बदकिरदारी की सज़ा वैसी ही होगी, जैसी सवाल करने वाले की बदकिरदारी की -¹¹ताकि बनी-इस्राईल फिर मुझ से भटक न जाएँ, और अपनी सब ख़ताओं से फिर अपने आप को नापाक न करें; बल्कि: खुदा वन्द खुदा फ़रमाता है, कि वह मेरे लोग हों और मैं उनका खुदा हूँ।

¹²~और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹³कि "ऐ आदमज़ाद, जब कोई मुल्क सख़्त ख़ता करके मेरा गुनाहगार हो, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँ और उसकी रोटी का 'असा तोड़ डालें, और उसमें सूखा भेजें और उसके इन्सान और हैवान को हलाक करूँ',¹⁴तो अगरचे यह तीन शख्स, नूह और दानीएल और अय्यूब, उसमें मौजूद हों तोभी खुदावन्द फ़रमाता है, वह अपनी सदाक़त से सिर्फ़ अपनी ही जान बचाएँगे।

¹⁵अगर मैं किसी मुल्क में मुहलिक दरिन्दे भेजे कि उसमें ग़श्त करके उसे तबाह करें, और वह यहाँ तक वीरान हो जाए कि दरिन्दों की वजह से कोई उसमें से गुज़र न सके,¹⁶तो खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम, अगरचे यह तीन शख्स उसमें हों तोभी वह न बेटों को बचा सकेंगे न बेटियों को; सिर्फ़ वह खुद ही बचेंगे और मुल्क वीरान हो जाएगा।

¹⁷"या अगर मैं उस मुल्क पर तलवार भेजूँ और कहूँ कि ऐ तलवार मुल्क में गुज़र कर और मैं उसके इन्सान और हैवान को काट डालें,¹⁸तो खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम अगरचे यह तीन शख्स उसमें हों, तोभी न बेटों को बचा सकेंगे न बेटियों को, बल्कि सिर्फ़ वह खुद ही बच जाएँगे।

¹⁹"या अगर मैं उस मुल्क में वबा भेजूँ और खूँरज़ी करा कर अपना क़हर उस पर नाज़िल' करूँ कि वहाँ के इन्सान और हैवान को काट डालें,²⁰अगरचे नूह और दानिएल और अय्यूब उसमें हों तो भी खुदावन्द खुदा फ़रमाता है मुझे अपनी हयात की क़सम वह न बेटे को बचा सकेंगे न बेटि को, बल्कि अपनी सदाक़त से सिर्फ़ अपनी ही जान बचाएँगे।

²¹फिर खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जब मैं अपनी चार बड़ी बलाएँ, या'नी तलवार और सूखा और मुहलिक दरिन्दे और वबा यरुशलीम पर भेजूँ कि उसके इन्सान और हैवान को काट डालें, तो क्या हाल होगा?

²²तोभी वहाँ थोड़े से बेटे-बेटियाँ बच रहेंगे जो निकालकर तुम्हारे पास पहुँचाए जाएँगे, और तुम उनके चाल चलन और उनके कामों को देखकर उस आफ़त के बारे में, जो मैंने यरुशलीम पर भेजी और उन सब आफ़तों के बारे में जो मैं उस पर लाया हूँ तसल्ली पाओगे।²³और वह भी जब तुम उनके चाल चलन को और उनके कामों को देखोगे, तुम्हारी तसल्ली का ज़रिया' होंगे और तुम जानोगे कि जो कुछ मैंने उसमें किया है बे वजह नहीं किया, खुदावन्द फ़रमाता है।"

Chapter 15

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐ आदमज़ाद, क्या ताक की लकड़ी और दरख्तों की लकड़ी से, या'नी शाख-ए-अंगूर जंगल के दरख्तों से कुछ बेहतर है?³क्या उसकी लकड़ी कोई लेता है कि उससे कुछ बनाए, या लोग उसकी खूटियाँ बना लेते हैं कि उन पर बर्तन लटकाएँ?⁴देख, वह आग में ईन्धन के लिए डाली जाती है, जब आग उसके दोनों सिरों को खा गई और बीच के हिस्से को भसम कर चुकी, तो क्या वह किसी काम की है?

⁵देख, जब वह सही थी तो किसी काम की न थी, और जब आग से जल गई तो किस काम की है?⁶फिर खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जिस तरह मैंने जंगल के दरख्तों में से अंगूर के दरख्त को आग का ईन्धन बनाया, उसी तरह यरुशलीम के बाशिन्दों को बनाऊँगा।

⁷और मेरा चेहरा उनके खिलाफ़ होगा, वह आग से निकल भागेंगे पर आग उनको भसम करेगी; और जब मेरा चेहरा उनके खिलाफ़ होगा, तो तुम जानोगे कि खुदावन्द मैं हूँ।⁸और मैं मुल्क को उजाड़ डालूँगा, इसलिए कि उन्होंने बड़ी बेवफ़ाई की है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 16

¹-फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐ आदमज़ाद! यरुशलीम को उसके नफ़रती कामों से आगाह कर,³और कह, खुदावन्द खुदा यरुशलीम से यूँ फ़रमाता है: तेरी विलादत और तेरी पैदाइश कना'न की सरज़मीन की है; तेरा बाप अमूरी था और तेरी माँ हिती थी।

⁴और तेरी पैदाइश का हाल यूँ है कि जिस दिन तू पैदा हुई तेरी नाफ़ काटी न गई, और न सफ़ाई के लिए तुझे पानी से गुस्ल मिला, और न तुझ पर नमक मला गया, और तू कपड़ों में लपेटी न गई।⁵किसी की आँख ने तुझ पर रहम न किया कि तेरे लिए यह काम करे और तुझ पर मेहरबानी दिखाए बल्कि तू अपनी विलादत के दिन बाहर मैदान में फेंकी गई, क्योंकि तुझ से नफ़रत रखते थे।

⁶"तब मैंने तुझ पर गुज़र किया और तुझे तेरे ही खून में लोटती देखा, और मैंने तुझे जब तू अपने खून में आगिस्ता थी कहा, 'जीती रह!' हॉ, मैंने तुझ खून आलूदा से कहा, 'जीती रह!' मैंने तुझे चमन के शगूफ़ों की तरह हज़ार चन्द बढ़ाया, इसलिए तू बड़ी, और कमाल और जमाल को पहुँची तेरी छातियाँ उठीं और तेरी जुल्फें बड़ीं लेकिन तू नंगी और बरहना थी।

⁸फिर मैंने तेरी तरफ़ गुज़र किया और तुझ पर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि तू 'इश्क़ अंगेज़' उम्र को पहुँच गई है; फिर मैंने अपना दामन तुझ पर फैलाया और तेरी बरहनगी को छिपाया, और क्रसम खाकर तुझ से 'अहद बाँधा खुदावन्द खुदा फ़रमाता है और तू मेरी हो गई।

⁹फिर मैंने तुझे पानी से गुस्ल दिया, और तेरा खून बिल्कुल धो डाला और तुझ पर 'इत्र मला।¹⁰और मैंने तुझे ज़र-दोज़ लिबास से मुलब्स किया, और तुख़स की खाल की जूती पहनाई, नफ़ीस कतान से तेरा कमरबन्द बनाया और तुझे सरासर रेशम से मुलब्स किया।¹¹मैंने तुझे ज़ेवर से आरास्ता किया, तेरे हाथों में कंगन पहनाए और तेरे गले में तौक़ डाला।¹²और मैंने तेरी नाक में नथ और तेरे कानों में बालियाँ पहनाई, और एक खूबसूरत ताज तेरे सिर पर रखवा।

¹³और तू सोने-चाँदी से आरास्ता हुई, और तेरी पोशाक कतानी और रेशमी और चिकन-दोज़ी की थी; और तू मैदा और शहद और चिकनाई खाती थी, और तू बहुत खूबसूरत और इक्रबालमन्द मलिका हो गई।¹⁴और क़ौम-ए-'आलम में तेरी खूबसूरती की शोहरत फैल गई, क्योंकि, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, कि तू मेरे उस जलाल से जो मैंने तुझे बख़्शा कामिल हो गई थी।

¹⁵"लेकिन तूने अपनी खूबसूरती पर भरोसा किया और अपनी शोहरत के वसीले से बदकारी करने लगी, और हर एक के साथ जिसका तेरी तरफ़ गुज़र हुआ खूब फ़ाहिशा बनी और उसी की हो गई।¹⁶तूने अपनी पोशाक से अपने ऊँचे मक़ाम मुनक्क़श और आरास्ता किए, और उन पर ऐसी बदकारी की, कि न कभी हुई और न होगी।

¹⁷और तूने अपने सोने-चाँदी के नफ़ीस ज़ेवरों से जो मैंने तुझे दिए थे, अपने लिए मदों की मूरतें बनाई और उनसे बदकारी की।¹⁸और अपनी ज़र-दोज़ पोशाकों से उनको मुलब्स किया, और मेरा 'इत्र और खुशबू उनके सामने रखवा।¹⁹और मेरा खाना जो मैंने तुझे दिया, या'नी मैदा और चिकनाई और शहद जो मैं तुझे खिलाता था, तूने उनके सामने खुशबू के लिए रखवा: खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि यूँ ही हुआ।

²⁰और तूने अपने बेटों और अपनी बेटियों को, जिनको तूने मेरे लिए पैदा किया लेकर उनके आगे कुर्बान किया, ताकि वह उनको खा जाएँ, क्या तेरी बदकारी कोई छोटी बात थी,²¹कि तूने मेरे बच्चों को भी ज़बह किया और उनको बुतों के लिए आग के हवाले किया?²²और तूने अपनी तमाम मकरूहात और बदकारी में अपने बचपन के दिनों को, जब कि तू नंगी और बरहना अपने खून में लोटती थी, कभी याद न किया।

²³और खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि अपनी इस सारी बदकारी के 'अलावा अफ़सोस! तुझ पर अफ़सोस!²⁴तूने अपने लिए गुम्बद बनाया और हर एक बाज़ार में ऊँचा मक़ाम तैयार किया।

²⁵~तूने रास्ते के हर कोने पर अपना ऊँचा मक़ाम ता'मीर किया, और अपनी खूबसूरती को नफ़रत अंगेज़ किया, और हर एक राह गुज़र के लिए अपने पाँव पसारे और बदकारी में तरक्की की।²⁶तूने अहल-ए-मिस्र और अपने पड़ोसियों से जो बड़े क्रदआवर हैं बदकारी की और अपनी बदकारी की ज़्यादाती से मुझे ग़ज़बनाक किया।

²⁷फिर देख, मैंने अपना हाथ तुझ पर चलाया और तेरे वज़ीफ़े को कम कर दिया, और तुझे तेरी बदख़्वाह फ़िलिस्तीयों की बेटियों के क़ाबू में कर दिया जो तेरी ख़राब चाल चलन से शर्मिन्दा होती थीं।²⁸फिर तूने अहल-ए-असूर से बदकारी की, क्योंकि तू सेर न हो सकती थी; हॉ, तूने उन से भी बदकारी की लेकिन तोभी तू आसूदा न हुई।²⁹और तूने मुल्क-ए-कन'आन से कसदियों के मुल्क तक अपनी बदकारी को फैलाया, लेकिन इस से भी सेर न हुई।

³⁰"खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, तेरा दिल कैसा बे-इख़्तियार है कि तू यह सब कुछ करती है, जो बेलगाम फ़ाहिशा 'औरत का काम है,³¹इसलिए कि तू हर एक सड़क के सिरे पर अपना गुम्बद बनाती है, और हर एक बाज़ार में अपना ऊँचा मक़ाम तैयार करती है, और तू कस्बी की तरह नहीं क्योंकि तू उजरत लेना बेकार जानती है।

³²बल्कि बदकार बीवी की तरह है, जो अपने शौहर के बदले ग़ैरों को कुबूल करती है।³³लोग सब कस्बियों को हदिए देते हैं; लेकिन तू अपने यारों को हदिए और तोहफ़े देती है, ताकि वह चारों तरफ़ से तेरे पास आएँ और तेरे साथ बदकारी करें।³⁴और तू बदकारी में और 'औरतों की तरह नहीं, क्योंकि बदकारी के लिए तेरे पीछे कोई नहीं आता। तू उजरत नहीं लेती बल्कि खुद उजरत देती है, इसलिए तू अनोखी है।

³⁵"इसलिए ऐ बदकार, तू खुदावन्द का कलाम सुन,³⁶खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तेरी नापाकी बह निकली और तेरी बरहनगी तेरी बदकारी के ज़रिए' जो तूने अपने यारों से की, और तेरे सब नफ़रती बुतों की वजह से और तेरे बच्चों के खून की वजह से जो तूने उनके आगे पेश किया, ज़ाहिर हो गई।³⁷इसलिए देख, मैं तेरे सब यारों को तू लज़ीज़ थी, और उन सब को जिनको तू चाहती थी और उन सबको जिनसे तू कीना रखती है जमा' करूँगा; मैं उनको चारों तरफ़ से तेरी मुखालिफ़त पर जमा' करूँगा और उनके आगे तेरी बरहनगी खोल दूँगा ताकि वह तेरी तमाम बरहनगी देखें।

³⁸और मैं तेरी ऐसी 'अदालत करूँगा जैसी बेवफ़ा और खूनी बीवी की और मैं ग़ज़ब और ग़ैरत की मौत तुझ पर लाऊँगा।³⁹और मैं तुझे उनके हवाले कर दूँगा, और वह तेरे गुम्बद और ऊँचे मक़ामों को मिस्मार करेंगे और तेरे कपड़े उतारेंगे और तेरे खुशनुमा ज़ेवर छीन लेंगे, और तुझे नंगी और बरहना छोड़ जाएँगे।

⁴⁰वह तुझ पर एक हुजूम चढ़ा लाएँगे, और तुझे संगसार करेंगे और अपनी तलवारों से तुझे छेद डालेंगे।⁴¹ और वह तेरे घर आग से जलाएँगे और बहुत सी 'औरतों के सामने तुझे सज़ा देंगे, और मैं तुझे बदकारी से रोक दूँगा और तू फिर उजरत न देगी।'⁴² तब मेरा क्रहर तुझ पर धीमा हो जाएगा, और मेरी ग़ैरत तुझ से जाती रहेगी; और मैं तस्कीन पाऊँगा और फिर ग़ज़बनाक न हूँगा।

⁴³चूँकि ~तूने अपने बचपन के दिनों को याद न किया, और इन सब बातों से मुझ को अफ़रोख़्ता किया, इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, देख, मैं तेरी बदराही का नतीजा तेरे सिर पर लाऊँगा और तू आगे को अपने सब धिनौने कामों के 'अलावा ऐसी बदज़ाती नहीं कर सकेगी।

⁴⁴देख, सब मिसाल कहने वाले तेरे बारे में यह मिसाल कहेंगे, कि 'जैसी माँ, वैसी बेटी।'⁴⁵ ~तू अपनी उस माँ की बेटी है जो अपने शौहर और अपने बच्चों से धिन खाती थी, और तू अपनी उन बहनों की बहन है जो अपने शौहरों और अपने बच्चों से नफ़रत रखती थीं; तेरी माँ हिंत्ती और तेरा बाप अमूरी था।

⁴⁶और तेरी बड़ी बहन सामरिया है जो तेरी बाई तरफ़ रहती है, वह और उसकी बेटियाँ, और तेरी छोटी बहन जो तेरी दहनी तरफ़ रहती हैं, सद्म और उसकी बेटियाँ हैं।

⁴⁷लेकिन तू सिर्फ़ उनकी राह पर नहीं चली और सिर्फ़ उन ही के जैसे धिनौने काम नहीं किए, क्योंकि यह तो अगरचे छोटी बात थी, बल्कि तू अपनी तमाम चाल चलन में उनसे बदतर हो गई।⁴⁸ खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम कि तेरी बहन सद्म ने ऐसा नहीं किया, न उसने न उसकी बेटियों ने जैसा तूने और तेरी बेटियों ने किया है।

⁴⁹देख, तेरी बहन सद्म की तक्सीर यह थी, गुरूर और रोटी की सेरी और राहत की कसरत उसमें और उसकी बेटियों में थी; उसने गरीब और मोहताज की दस्तगीरी न की।⁵⁰ वह मगरूर थी और उन्होंने मेरे सामने धिनौने काम किए, इसलिए जब मैंने देखा तो उनको उखाड़ फेंका।

⁵¹और सामरिया ने तेरे गुनाहों के आधे भी नहीं किए, तूने उनके बदले अपनी मकरूहात को फ़िरावान किया है, और तूने अपनी इन मकरूहात से अपनी बहनों को बेकुसूर ठहराया है।⁵² फिर तू खुद जो अपनी बहनों को मुजरिम ठहराती है, इन गुनाहों की वजह से जो तूने किए जो उनके गुनाहों से ज़्यादा नफ़रतअंगेज़ हैं, मलामत उठा; वह तुझ से ज़्यादा बेकुसूर हैं। इसलिए तू भी रूस्वा हो और शर्म खा, क्योंकि तूने अपनी बहनों को बेकुसूर ठहराया है।

⁵³और मैं उनकी गुलामी को बदल दूँगा, या'नी सद्म और उसकी बेटियों की गुलामी को और सामरिया और उसकी बेटियों की गुलामी की, और उनके बीच तेरे गुलामों की गुलामी को,⁵⁴ ताकि तू अपनी रूस्वाई उठाए और अपने सब कामों से शर्मिदा हो, क्योंकि तू उनके लिए तसल्ली के ज़रिए' है।⁵⁵ तेरी बहनें सद्म और सामरिया, अपनी अपनी बेटियों के साथ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाएँगी, और तू और तेरी बेटियाँ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाओगी।

⁵⁶तू अपने गुरूर के दिनों में, अपनी बहन सद्म का नाम तक ज़बान पर न लाती थी।⁵⁷ उससे पहले कि तेरी शरारत फ़ाश हुई, जब अराम की बेटियों ने और उन सब ने जो उनके आस-पास थीं तुझे मलामत की, और फ़िलिस्तियों की बेटियों ने चारों तरफ़ से तेरी हिकारत की।⁵⁸ खुदावन्द फ़रमाता है, तूने अपनी बदज़ाती और धिनौने कामों की सज़ा पाई।

⁵⁹"क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं तुझ से जैसा तूने किया वैसा ही सुलूक करूँगा, इसलिए कि तूने क्रसम को बेकार जाना और 'अहद शिकनी की।

⁶⁰लेकिन मैं अपने उस 'अहद को जो मैंने तेरी जवानी के दिनों में तेरे साथ बाँधा, याद रखूँगा और हमेशा का 'अहद तेरे साथ क़ायम करूँगा।⁶¹ और जब तू अपनी बड़ी और छोटी बहनों को कुबूल करेगी, तब तू अपनी राहों को याद करके शर्मिदा होगी और मैं उनको तुझे दूँगा कि तेरी बेटियाँ हों, लेकिन यह तेरे 'अहद के मुताबिक़ नहीं।

⁶²और मैं अपना 'अहद तेरे साथ क़ायम करूँगा, और तू जानेगी कि खुदावन्द मैं हूँ।⁶³ ~ताकि तू याद करे और शर्मिदा हो और शर्म के मारे फिर कभी मुँह न खोले, जब कि मैं सब कुछ जो तूने किया मु'आफ़ कर दूँ, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 17

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²~"कि ऐ आदमज़ाद, एक पहेली निकाल और अहल-ए-इसाईल से एक मिसाल बयान कर,³और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: एक बड़ा उक्राब जो बड़े बाजू और लम्बे पर रखता था, अपने रंगा-रंग के बाल-ओ-पर में छिपा हुआ लुबनान में आया, और उसने देवदार की चोटी तोड़ ली।⁴वह सब से ऊँची डाली तोड़ कर सौदागरी के मुल्क में ले गया, और सौदागरों के शहर में उसे लगाया।

⁵और वह उस सर-ज़मीन में से बीज ले गया और उसे ज़रखेज़ ज़मीन में बोया; उसने उसे आब-ए-फ़िरावाँ के किनारे, बेद के दरख़्त की तरह लगाया।⁶और वह उगा और अंगूर का एक पस्त-क्रद शाख़दार दरख़्त हो गया और उसकी शाखें उसकी तरफ़ झुकी थीं, और उसकी जड़ें उसके नीचे थीं, चुनाँचे वह अंगूर का एक दरख़्त हुआ; उसकी शाखें निकलीं और उसकी कोपलें बढ़ीं

⁷और एक और बड़ा 'उक्राब था, जिसके बाजू बड़े बड़े और पर-ओ-बाल बहुत थे, और इस ताक ने अपनी जड़ें उसकी तरफ़ झुकाई और अपनी क्यारियों से अपनी शाखें उसकी तरफ़ बढ़ाई ताकि वह उसे सींचे।⁸यह आब-ए-फ़िरावाँ के किनारे ज़रखेज़ ज़मीन में लगाई गई थी, ताकि उसकी शाखें निकलें और इसमें फल लगें और यह नफ़ीस ताक हो।

⁹तू कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या यह कामयाब होगी? क्या वह इसको उखाड़ न डालेगा और इसका फल न तोड़ डालेगा कि यह ख़ुशक हो जाए, और इसके सब ताज़ा पत्ते मुरझा जाएँ? इसे जड़ से उखाड़ने के लिए बहुत ताक़त और बहुत से आदमियों की ज़रूरत न होगी।¹⁰देख, यह लगाई तो गई, पर क्या यह कामयाब होगी? क्या यह पूरबी हवा लगते ही बिल्कुल सूख न जाएगी? यह अपनी क्यारियों ही में पज़मुर्दा हो जाएगी।"

¹¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।¹²~"इस बागी ख़ान्दान से कह, क्या तुम इन बातों का मतलब नहीं जानते? इनसे कह, देखो, शाह-ए-बाबुल ने यरुशलीम पर चढ़ाई की और उसके बादशाह को और उसके 'हाकिमों को गुलाम करके अपने साथ बाबुल को ले गया।

¹³और उसने शाही नसल में से एक को लिया और उसके साथ 'अहद बाँधा और उससे क्रसम ली और मुल्क के बहादुरों को भी ले गया,¹⁴ताकि वह मम्लकत पस्त हो जाए और फिर सिर न उठा सके, बल्कि उसके 'अहद को क़ायम रखने से क़ायम रहे।

¹⁵लेकिन उसने बहुत से आदमी और घोड़े लेने के लिए मिस्र में क़ासिद भेज कर उससे शरकशी की क्या वह कामयाब होगा क्या ऐसे काम करने वाला बच सकता है क्या वह 'अहद शिकनी करके बच जाएगा।¹⁶"खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम, वह उसी जगह जहाँ उस बादशाह का घर है जिसने उसे बादशाह बनाया और जिसकी क्रसम को उसने बेकार जाना और जिसका 'अहद उसने तोड़ा, या 'नी बाबुल में उसी के पास मरेगा।

¹⁷और फिर 'औन अपने बड़े लश्कर और बहुत से लोगों को लेकर लड़ाई में उसके साथ शरीक न होगा, जब दमदमा बाँधते हों और बुर्ज बनाते हों कि बहुत से लोगों को क़त्ल करें।¹⁸चूँकि उसने क्रसम को बेकार जाना और उस 'अहद को तोड़ा, और हाथ पर हाथ मार कर भी यह सब कुछ किया, इसलिए वह बच न सकेगा।

¹⁹इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ~मुझे अपनी हयात की क्रसम वह मेरी ही क्रसम है, जिसको उसने बेकार जाना और वह मेरा ही 'अहद है जो उसने तोड़ा; मैं ज़रूर यह उसके सिर पर लाऊँगा।²⁰और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊँगा और वह मेरे फन्दे में पकड़ा जाएगा, और मैं उसे बाबुल को ले आऊँगा, और जो मेरा गुनाह उसने किया है उसके बारे में वहाँ उससे हुज्जत करूँगा।²¹और उसके लश्कर के सब फ़रारी तलवार से क़त्ल होंगे, और जो बच रहेंगे वह चारों तरफ़ तितर बितर हो जाएँगे; और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है।

²²~खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: "मैं भी देवदार की बुलन्द चोटी लूँगा और उसे लगाऊँगा, फिर उसकी नर्म शाखों में से एक कोपल काट लूँगा और उसे एक ऊँचे और बुलन्द पहाड़ पर लगाऊँगा।²³मैं उसे इसाईल के ऊँचे पहाड़ पर लगाऊँगा, और वह शाखें निकालेगा और फल लाएगा और 'आलीशान देवदार होगा। और हर क्रिस्म के परिन्दे उसके नीचे बसेंगे, वह उसकी डालियों के साथे में बसेरा करेंगे।

²⁴और मैदान के सब दरख़्त जानेंगे कि मैं खुदावन्द ने बड़े दरख़्त को पस्त किया और छोटे दरख़्त को बुलन्द किया; हरे दरख़्त को सुखा दिया और सूखे दरख़्त को हरा किया; मैं खुदावन्द ने फ़रमाया और कर दिखाया।"

Chapter 18

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²" कि तुम इस्राईल के मुल्क के हक़ में क्यूँ यह मिसाल कहते हो, कि 'बाप-दादा ने कच्चे अँगूर खाए और औलाद के दाँत खट्टे हुए'?

³खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम कि तुम फिर इस्राईल में यह मिसाल न कहोगे। 'देख, सब जाने मेरी हैं, जैसी बाप की जान वैसी ही बेटे की जान भी मेरी है; जो जान गुनाह करती है वही मरेगी।

⁵'लेकिन जो इन्सान सादिक़ है, और उसके काम 'अदालत और इन्साफ़ के मुताबिक़ हैं।' जिसने बुतों की कुर्बानी से नहीं खाया, और बनी-इस्राईल के बुतों की तरफ़ अपनी आँखें नहीं उठाई; और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक नहीं किया, और 'औरत की नापाकी के वक़्त उसके पास नहीं गया,

⁷और किसी पर सितम नहीं किया, और क़र्ज़दार का गिरवी वापस कर दिया और जुल्म से कुछ छीन नहीं लिया; भूकों को अपनी रोटी खिलाई और नंगों को कपड़ा पहनाया;⁸सूद पर लेन-देन नहीं किया, बदकिरदारी से दस्तबरदार हुआ और लोगों में सच्चा इन्साफ़ किया;⁹मेरे क़ानून पर चला और मेरे हुक्मों पर 'अमल किया, ताकि रास्ती से मु'आमिला करे; वह सादिक़ है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।

¹⁰'लेकिन अगर उसके यहाँ बेटा पैदा हो, जो राहज़नी या खूँरेज़ी करे और इन गुनाहों में से कोई गुनाह करे,¹¹और इन फ़राइज़ को बजा न लाए, बल्कि बुतों की कुर्बानी से खाए और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करे;

¹²'ग़रीब और मोहताज़ पर सितम करे, जुल्म करके छीन ले, गिरवी वापस न दे, और बुतों की तरफ़ अपनी आँखें उठाये और धिनौने काम करे;¹³सूद पर लेन देन करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? वह ज़िन्दा न रहेगा, उसने यह सब नफ़रती काम किए हैं; वह यक़ीनन मरेगा, उसका खून उसी पर होगा।

¹⁴'लेकिन अगर उसके यहाँ ऐसा बेटा पैदा हो, जो उन तमाम गुनाहों को जो उसका बाप करता है देखे और ख़ौफ़ खाकर उसके से काम न करे¹⁵और बुतों की कुर्बानी से न खाए, और बनी-इस्राईल के बुतों की तरफ़ अपनी आँखें न उठाए और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक न करे;

¹⁶और किसी पर सितम न करे, गिरवी न ले, और जुल्म करके कुछ छीन न ले, भूके को अपनी रोटी खिलाए और नंगे को कपड़े पहनाए;¹⁷ग़रीब से दस्तबरदार हो, और सूद पर लेन-देन न करे, लेकिन मेरे हुक्मों पर 'अमल करे और मेरे क़ानून पर चले, वह अपने बाप के गुनाहों के लिए न मरेगा; वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।

¹⁸लेकिन उसका बाप, क्यूँकि उसने बेरहमी से सितम किया और अपने भाई को जुल्म से लूटा, और अपने लोगों के बीच बुरे काम किए; इसलिए वह अपनी बदकिरदारी के ज़रिए' मरेगा।

¹⁹"तोभी तुम कहते हो, 'बेटा बाप के गुनाह का बोझ क्यूँ नहीं उठाता?' जब बेटे ने वही जो जाएज़ और रवा है किया, और मेरे सब क़ानून को याद करके उन पर 'अमल किया; तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।'²⁰जो जान गुनाह करती है वही मरेगी, बेटा बाप के गुनाह का बोझ न उठाएगा और न बाप बेटे के गुनाह का बोझ; सादिक़ की सदाक़त उसी के लिए होगी, और शरीर की शरात शरीर के लिए।

²¹'लेकिन अगर शरीर अपने तमाम गुनाहों से जो उसने किए हैं, बाज़ आए और मेरे सब तौर तरीक़े पर चलकर, जो जाएज़ और रवा है करे तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, वह न मरेगा।'²²वह सब गुनाह जो उसने किए हैं, उसके खिलाफ़ महसूब न होंगे। वह अपनी रास्तबाज़ी में जो उसने की ज़िन्दा रहेगा।

²³खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, क्या शरीर की मौत में मेरी खुशी है, और इसमें नहीं कि वह अपनी चाल चलन से बाज़ आए और ज़िन्दा रहे?

²⁴लेकिन अगर सादिक़ अपनी सदाक़त से बाज़ आए, और गुनाह करे और उन सब धिनौने कामों के मुताबिक़ जो शरीर करता है करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? उसकी तमाम सदाक़त जो उसने की फ़रामोश होगी; वह अपने गुनाहों में जो उसने किए हैं और अपनी ख़ताओं में जो उसने की हैं मरेगा।

²⁵~"तोभी तुम कहते हो, 'खुदावन्द की रविश रास्त नहीं।' ऐ बनी-इस्राईल सुनो तो, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या तुम्हारा चाल चलन नारास्त नहीं?²⁶जब सादिक़ अपनी सदाक़त से बाज़ आए और बदकिरदारी करे और उसमें मरे, तो वह अपनी बदकिरदारी की वजह से जो उसने की है मरेगा।

²⁷और अगर शरीर अपनी शरात से, जो वह करता है बा'ज़ आए, और वह काम करे जो जाएज़ और रवा है; तो वह अपनी जान ज़िन्दा रखेगा।'²⁸इसलिए कि उसने सोचा और अपने सब गुनाहों से जो करता था बा'ज़ आया; वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, वह न मरेगा।

²⁹तोभी बनी-इस्राईल कहते हैं, 'खुदावन्द की रविश रास्त नहीं?' ऐ बनी इस्राईल, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या तुम्हारा चाल चलन नारास्त नहीं?

³⁰इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ बनी इस्राईल मैं हर एक के चाल चलन के मुताबिक़ तुम्हारी 'अदालत करूँगा; तोबा करो और अपने तमाम गुनाहों से बाज़ आओ, ताकि बदकिरदारी तुम्हारी हलाक़त का ज़रिया' न हो।

³¹उन तमाम गुनाहों को, जिनसे तुम गुनहगार हुए दूर करो और अपने लिए नया दिल और नई रूह पैदा करो! ऐ बनी-इस्राईल, तुम क्यूँ हलाक़ होगे?³²क्यूँकि खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे मरने वाले की मौत से खुशी नहीं, इसलिए बाज़ आओ और ज़िन्दा रहो।"

Chapter 19

¹अब तू इस्राईल के 'हाकिमों पर नौहा कर,²और कह, तेरी माँ कौन थी? एक शेरनी जो शेरों के बीच लेटी थी और जवान शेरों के बीच उसने अपने बच्चों को पाला।³और उसने अपने बच्चों में से एक को पाला, तो वह जवान शेर हुआ और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा।⁴और क्रौमों के बीच उसका ज़िक्र हुआ तो वह उनके गढ़े में पकड़ा गया, और वह उसे ज़न्जीरों से जकड़ कर ज़मीन-ए-मिस्र में लाए।

⁵और जब शेरनी ने देखा कि उसने बेफ़ाईदा इन्तिज़ार किया और उसकी उम्मीद जाती रही, तो उसने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया और उसे पाल कर जवान शेर किया।⁶और वह शेरों के बीच सैर करता फिरा और जवान शेर हुआ, और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा।⁷और उसने उनके महलों को बर्बाद किया, और उनके शहरों को वीरान किया; उसकी गरज़ से मुल्क उजड़ गया और उसकी आबादी न रही।

⁸तब बहुत सी क्रौमों तमाम मुल्कों से उसकी घात में बैठीं, और उन्होंने उस पर अपना जाल फैलाया; वह उनके गढ़े में पकड़ा गया।⁹और उन्होंने उसे ज़न्जीरों से जकड़ कर पिंजरे में डाला और शाह-ए-बाबुल के पास ले आए। उन्होंने उसे क़िले में बन्द किया, ताकि उसकी आवाज़ इस्राईल के पहाड़ों पर फिर सुनी न जाए।

¹⁰तेरी माँ उस ताक से मुशाबह थी, जो तेरी तरह पानी के किनारे लगाई गई; वह पानी की बहुतायत के ज़रिए फलदार और शाखदार हुई।¹¹और उसकी शाखें ऐसी मज़बूत हो गईं के बादशाहों के 'असा उन से बनाए गए, और घनी शाखों में उसका तना बुलन्द हुआ और वह अपनी घनी शाखों के साथ ऊँची दिखाई देती थी |

¹²लेकिन वह ग़ज़ब से उखाड़ कर ज़मीन पर गिराई गई, और पूरबी हवा ने उसका फल खुश्क कर डाला, और उसकी मज़बूत डालियाँ तोड़ी गईं और सूख गईं और आग से भसम हुई।¹³और अब वह वीरान में सूखी और प्यासी ज़मीन में लगाई गई।

¹⁴और एक छड़ी से जो उसकी डालियों से बनी थी, आग निकलकर उसका फल खा गई और उसकी कोई ऐसी मज़बूत डाली न रही कि सल्तनत का 'असा हो। यह नोहा है और नोहे के लिए रहेगा।

Chapter 20

¹और सातवें बरस के पाँचवें महीने की दसवीं तारीख को यूँ हुआ कि इस्राईल के चन्द बुजुर्ग खुदावन्द से कुछ दरियाफ्त करने को आए और मेरे सामने बैठ गए।

²तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ कि "ऐ आदमज़ाद! इस्राईल के बुजुर्गों से कलाम कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या तुम मुझ से दरियाफ्त करने आए हो? खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि मुझे अपनी हयात की क्रसम, तुम मुझ से कुछ दरियाफ्त न कर सकोगे।

⁴क्या तू उन पर हुज्जत क़ायम करेगा? ऐ आदमज़ाद, क्या तू उन पर हुज्जत क़ायम करेगा? उनके बाप दादा के नफ़रती कामों से उनको आगाह करा।⁵उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जिस दिन मैंने इस्राईल को बरगुज़ीदा किया, और बनी या'क़ूब से क्रसम खाई और मुल्क-ए-मिस्र में अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया; मैंने उनसे क्रसम खा कर कहा, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।⁶जिस दिन मैंने उनसे क्रसम खाई, ताकि उनको मुल्क-ए-मिस्र से उस मुल्क में लाऊँ जो मैंने उनके लिए देख कर ठहराया था, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मुल्कों की शौकत है।

⁷और मैंने उनसे कहा, तुम में से हर एक शख्स उन नफ़रती चीज़ों को जो उसकी मंज़ूर-ए-नज़र हैं, दूर करे और तुम अपने आपको मिस्र के बुतों से नापाक न करो; मैं खुदावन्द, तुम्हारा खुदा हूँ।

⁸लेकिन वह मुझ से बागी हुए और न चाहा कि मेरी सुनें। उनमें से किसी ने उन नफ़रती चीज़ों को, जो उसकी मंज़ूर-ए-नज़र थीं, छोड़ न दिया और मिस्र के बुतों को न छोड़ा।" तब मैंने कहा, कि मैं अपना क्रहर उन पर उण्डेल दूँगा, ताकि अपने ग़ज़ब को मुल्क-ए-मिस्र में उन पर पूरा करूँ।⁹लेकिन मैंने अपने नाम की खातिर ऐसा किया ताकि मेरा नाम उन क्रौमों की नज़र में, जिनके बीच वह रहते थे और जिनकी निगाहों में मैं उन पर ज़ाहिर हुआ जब उनको मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, नापाक न किया जाए।

¹⁰इसलिए मैं उनको मुल्क-ए-मिस्र से निकालकर वीरान में लाया।¹¹और मैंने अपने क़ानून उनको दिए और अपने हुक्मों को ~उनको सिखाए कि इन्सान उन पर 'अमल करने से ज़िन्दा रहे।¹²और मैंने अपने सबत भी उनको दिए, ताकि वह मेरे और उनके बीच निशान हों; ताकि वह जानें कि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।

¹³लेकिन बनी-इस्राईल वीरान में मुझ से बागी हुए, वह मेरे क़ानून पर न चले और मेरे हुक्मों को रद्द किया, जिन पर अगर इन्सान 'अमल करे तो उनकी वजह से ज़िन्दा रहे, और उन्होंने मेरे सबतों को बहुत ही नापाक किया।" तब मैंने कहा, कि मैं वीरान में अपना क्रहर उन पर नाज़िल कर के उनको फ़ना करूँगा।¹⁴~लेकिन मैंने अपने नाम की खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन क्रौमों की नज़र में जिनकी आँखों के सामने मैं उनको निकाल लाया नापाक न किया जाए।

¹⁵और मैंने वीरान में भी उनसे क्रसम खाई कि मैं उनको उस मुल्क में न लाऊँगा जो मैंने उनको दिया, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मुल्कों की शौकत है।¹⁶क्योंकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद्द किया और मेरे क़ानून पर न चले और मेरे सबतों को नापाक किया, इसलिए कि उनके दिल उनके बुतों के मुश्ताक थे।¹⁷तोभी मेरी आँखों ने उनकी रि'आयत की और मैंने उनको हलाक न किया, और मैंने वीरान में उनको बिल्कुल बर्बाद-ओ-हलाक न किया।

¹⁸और मैंने वीरान में उनके फ़र्ज़न्दों से कहा, तुम अपने बाप-दादा के क़ानून-ओ-हुक्मों पर न चलो और उनके बुतों से अपने आपको नापाक न करो।¹⁹मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, मेरे क़ानून पर चलो और मेरे हुक्मों को मानो और उन पर 'अमल करो।²⁰और मेरे सबतों को पाक जानो कि वह मेरे और तुम्हारे बीच निशान हों, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

²¹लेकिन फ़र्ज़न्दों ने भी मुझ से बगावत की; वह मेरे क़ानून पर न चले, न मेरे हुक्मों को मानकर उन पर 'अमल किया जिन पर अगर इन्सान 'अमल करे तो उनकी वजह से ज़िन्दा रहे; उन्होंने मेरे सबतों को नापाक किया।" तब मैंने कहा कि मैं अपना क्रहर उन पर नाज़िल करूँगा और वीरान में अपने ग़ज़ब को उन पर पूरा करूँगा।²²~तोभी मैंने अपना हाथ खींचा और अपने नाम की खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन क्रौमों की नज़र में जिनके देखते हुए मैं उनको निकाल लाया, नापाक न किया जाए।

²³फिर मैंने वीरान में उनसे क्रसम खाई कि मैं उनको क्रौमों में आवारा और मुल्कों में तितर बितर करूँगा।²⁴इसलिए कि वह मेरे हुक्मों पर 'अमल न करते थे, बल्कि मेरे क़ानून को रद्द करते थे और मेरे सबतों को नापाक करते थे, और उनकी आँखें उनके बाप-दादा के बुतों पर थीं।

²⁵इसलिए मैंने उनको बुरे क़ानून और ऐसे अहक़ाम दिए जिनसे वह ज़िन्दा न रहें;²⁶और मैंने उनको उन्हीं के हृदियों से या'नी सब पहलौठों को आग पर से गुज़ार कर, नापाक किया ताकि मैं उनको वीरान करूँ और वह जानें कि खुदावन्द मैं हूँ।

²⁷इसलिए, ऐ आदमज़ाद, तू बनी इस्राईल से कलाम कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि इसके 'अलावा तुम्हारे बाप-दादा ने ऐसे काम करके मेरी बुराई की और मेरा गुनाह करके खताकार हुए;²⁸कि जब मैं उनको उस मुल्क में लाया जिसे उनको देने की मैंने क्रसम खाई थी, तो उन्होंने जिस ऊँचे पहाड़ और जिस घने दरख़्त को देखा वहीं अपने ज़बीहों को ज़बह किया, और वहीं अपनी ग़ज़ब अंगेज़ नज़र को गुज़राना, और वहीं अपनी खुशबू जलाई और अपने तपावन तपाए।²⁹तब मैंने उनसे कहा, यह कैसा ऊँचा मक़ाम है जहाँ तुम जाते हो? और उन्होंने उसका नाम बामाह रखखा जो आज के दिन तक है।

³⁰इसलिए, तू बनी-इस्राईल से कह, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: क्या तुम भी अपने बाप-दादा की तरह नापाक होते हो? और उनके नफ़रत अंगेज़ कामों की तरह तुम भी बदकारी करते हो?³¹~और जब अपने हृदिए चढ़ाते और अपने बेटों को आग पर से गुज़ार कर अपने सब बुतों से अपने आपको आज के दिन तक नापाक करते हो, तो ऐ बनी-इस्राईल क्या तुम मुझ से कुछ दरियाफ्त कर सकते हो? खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क्रसम, मुझ से कुछ दरियाफ्त न कर सकोगे।³²और वह जो तुम्हारे जी में आता है हरगिज़ वजूद में न आएगा, क्योंकि तुम सोचते हो, 'तुम भी दीगर क्रौम-ओ-क्रबाइल-ए- 'आलम की तरह लकड़ी और पत्थर की 'इबादत करोगे।' खुदावन्द सज़ा देता और मु'आफ़ भी करता है

³³"खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क्रसम, मैं ताक़तवर हाथ से और बुलन्द बाज़ू से क्रहर नाज़िल' कर के तुम पर सल्तनत करूँगा।³⁴और मैं ताक़तवर हाथ और बुलन्द बाज़ू से क्रहर नाज़िल' करके तुम को क्रौमों में से निकाल लाऊँगा, और उन मुल्कों में से जिनमें तुम तितर बितर हुए हो जमा' करूँगा।

³⁵और मैं तुम को क्रौमों के वीरान में लाऊँगा और वहाँ आमने सामने तुम से हुज्जत करूँगा।

³⁶जिस तरह मैंने तुम्हारे बाप-दादा के साथ मिस्र के वीरान में हुज्जत की, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, उसी तरह मैं तुम से भी हुज्जत करूँगा।³⁷ और मैं तुम को छड़ी के नीचे से गुज़ारूँगा और 'अहद के बन्द में लाऊँगा।³⁸ और मैं तुम में से उन लोगों को जो सरकश और मुझ से बागी हैं, जुदाकरूँगा; मैं उनको उस मुल्क से जिसमें उन्होंने क़याम किया, निकाल लाऊँगा पर वह इस्राईल के मुल्क में दाखिल न होंगे और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

³⁹~और "तुम से ऐ बनी-इस्राईल, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि जाओ और अपने अपने बुत की 'इबादत करो, और आगे को भी, अगर तुम मेरी न सुनोगे; लेकिन अपनी कुर्बानियों और अपने बुतों से मेरे पाक नाम की बुराई न करोगे।

⁴⁰'क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि मेरे पाक पहाड़ या 'नी इस्राईल के ऊँचे पहाड़ पर तमाम बनी-इस्राईल, सब के सब मुल्क में मेरी 'इबादत करेंगे; वहाँ मैं उनको कुबूल करूँगा, और तुम्हारी कुर्बानियाँ और तुम्हारी नज़रों के पहले फल और तुम्हारी सब मुक़द्दस चीज़ें तलब करूँगा।⁴¹ जब मैं तुम को क़ौमों में से निकाल लाऊँगा और उन मुल्कों में से जिनमें मैंने तुम को तितर बितर किया जमा' करूँगा, तब मैं तुम को खुशबू के साथ कुबूल करूँगा और क़ौमों के सामने तुम मेरी तबदील करोगे।

⁴²~और जब मैं तुम को इस्राईल के मुल्क में या 'नी उस सरज़मीन में जिसके लिए मैंने क़सम खाई कि तुम्हारे बाप-दादा को दूँ, ले आऊँगा तब तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।⁴³ और वहाँ तुम अपने चाल चलन और अपने सब कामों को, जिनसे तुम नापाक हुए हो, याद करोगे और तुम अपनी तमाम बुराई की वजह से जो तुम ने की है, अपनी ही नज़र में धिनौने होगे।⁴⁴ खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, ऐ बनी-इस्राईल जब मैं तुम्हारे बुरे चाल चलन और बद-आ'माली के मुताबिक़ नहीं बल्कि अपने नाम के खातिर तुम से सुलूक करूँगा, तो तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

⁴⁵और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:⁴⁶ कि "ऐ आदमज़ाद, दक्खिन का रुख कर और दक्खिन ही से मुखातिब हो कर उसके मैदान के जंगल के खिलाफ़ नबुव्वत कर;⁴⁷ और दक्खिन के जंगल से कह, खुदावन्द का कलाम सुन, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: देख, मैं तुझ में आग भड़काऊँगा और वह हर एक हरा दरख़्त और हर एक सूखा दरख़्त जो तुझ में है, खा जाएगी; भड़कता हुआ शो'ला न बुझेगा और दक्खिन से उत्तर तक सबके मुँह उससे झुलस जाएँगे।

⁴⁸और हर इन्सान देखेगा कि मैं खुदावन्द ने उसे भड़काया है, वह न बुझेगी।"⁴⁹ तब मैंने कहा, 'हाय खुदावन्द खुदा! वह तो मेरे बारे में कहते हैं, क्या वह मिसालें नहीं कहता?"

Chapter 21

¹~फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि~"ऐ आदमज़ाद, यरुशलीम का रुख कर और पाक मकानों से मुखातिब होकर मुल्क-ए-इसाईल के खिलाफ़ नबुव्वत कर³और उस से कह, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि देख मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और अपनी तलवार मियान से निकाल लूँगा, और तेरे सादिकों और तेरे शरीरों को तेरे बीच से काट डालूँगा।

⁴इसलिए चूँकि मैं तेरे बीच से सादिकों और शरीरों को काट डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार अपने मियान से निकल कर दक्खिन से उत्तर तक तमाम बशर पर चलेगी।⁵और सब जानेंगे कि मैं खुदावन्द ने अपनी तलवार मियान से खींची है वह फिर उसमें न जायेगी।

⁶इसलिए "ऐ आदमज़ाद कमर की शिगास्तगी से आँहें ~मार और तल्लख कामी से उनकी आँखों के सामने ठण्डी साँस भर।⁷और जब वह पूछें कि तू क्यूँ हाए हाए करता है तो यूँ जवाब देना कि उसकी आमद की अफ़वाह की वजह से और हर एक दिल पिघल जायेगा और सब हाथ ढीले हो जायेंगे और हर एक जी डूब जाएगा और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर हो जायेंगे खुदावन्द खुदा फ़रमाता है उसकी आमद आमद है यह वजूद में आया।

⁸फिर~खुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।⁹"ऐ आदमज़ाद, ~नबुव्वत कर और कह खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू कह तलवार बल्कि तेज़ और सैकल की हुई तलवार है।

¹⁰वह तेज़ की गई है ताकि उससे बड़ी खूरेज़ी की जाये वह सैकल की गई है ताकि चमके फिर क्या हम खुश हो सकते हैं मेरे बेटे का 'असा हर लकड़ी को बेकार जानता है।¹¹और उसने उसे सैकल करने को दिया है ताकि हाथ में ली जाये वह तेज़ और सैकल की गई ताकि क्रल्ल करने वाले के हाथ में दी जाए।

¹²~"ऐ आदमज़ाद, तू रो और नाला कर क्यूँकि वह मेरे लोगों पर चलेगी वह इसाईल के सब हाकिमों पर होगी वह मेरे लोगों के सात तलवार के हवाले किए गए हैं इसलिए तू अपनी रान पर हाथ मार।¹³यक़ीनन वह आज़माई गई और अगर लाठी उसे बेकार जाने तो क्या वह हलाक होगा खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁴और~"ऐ आदमज़ाद, तू नबुव्वत कर और ताली बजा और तलवार दो गुना बल्कि तीन गुना हो जाए वह तलवार जो मक़तूलों पर कारगर हुई बड़ी खूरेज़ी की तलवार है जो उनको घेरती है।

¹⁵मैंने यह तलवार उनके सब फाटकों के खिलाफ़ क़ायम की है ताकि उनके दिल पिघल जायें और उनके गिरने के सामान ज़्यादा हों हाए बर्क़ तेग यह क्रल्ल करने को खींची गई।¹⁶तैयार हो; दाहनी तरफ़ जा, आमादा हो ,बाई तरफ़ जा ,जिधर तेरा रुख ,।¹⁷और मैं भी ताली बजाऊँगा और अपने क़हर को ठण्डा करूँगा मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है।

¹⁸और खुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।¹⁹कि~"ऐ आदमज़ाद, तू दो रास्ते खींच जिनसे शाह-ए-बाबुल की तलवार आये एक ही मुल्क से वह दोनों रास्ते निकाल और एक हाथ निशान के लिए शहर की रास्ते के सिरे पर लगा।²⁰एक रास्ता निकाल जिससे तलवार बनी'अम्मून की रब्बा पर और फिर एक और जिससे यहूदाह के मासूर शहर यरुशलीम पर आये।

²¹क्यूँकि शाह-ए-बाबुल दोनों रास्तों के नुक्त्त-ए-इतसाल पर फ़ालग़ीरी के लिए खड़ा हुआ और तीरों को हिला कर बुत से सवाल करेगा और ज़िगर पर नज़र करेगा।²²उसके दहने हाथ में यरुशलीम का पर्ची पड़ेगी कि मंजनीक़ लगाये और कुश्त-ओ-खून के लिए मुँह खोले ललकार की आवाज़ बुलन्द करे और फाटकों पर मंजनीक़ लगाए और दमदमा बांधे और बुर्ज़ बनाए।²³~लेकिन उनकी नज़र में यह ऐसा होगा जैसा झूटा शगुन या'नी उनके लिए जिन्होंने क्रसम खाई थी, पर वह बदकिरदारी को याद करेगा ताकि वह गिरफ़्तार हों।

²⁴"इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम ने अपनी बदकिरदारी याद दिलाई और तुम्हारी खताकारी ज़ाहिर हुई यहाँ तक कि तुम्हारे सब कामों में तुम्हारे गुनाह अयाँ हैं; और चूँकि तुम खयाल में आ गए इसलिए गिरफ़्तार हो जाओगे।

²⁵और तू ऐ मजरूह शरीर शाह-ए-इसाईल, जिसका ज़माना बदकिरदारी के अन्जाम को पहुँचने पर आया है।²⁶खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि कुलाह दूर कर और ताज उतार, यह ऐसा न रहेगा, पस्त को बलन्द कर और उसे जो बुलन्द है पस्त कर।²⁷मैं ही उसे उलट उलट उलट दूँगा, पर यूँ भी न रहेगा और वह आया जिसका हक़ है, और मैं उसे दूँगा।

²⁸"और तू ऐ आदमज़ाद नबुव्वत कर और कह खुदावन्द खुदा बनी अम्मून और उनकी ताना ज़नी के बारे में यूँ फ़रमाता है: कि तू कह तलवार बल्कि खींची हुई तलवार खूरेज़ी के लिए सैकल की गई है, ताकि बिजली की तरह भसम करे।²⁹जबकि वह तेरे लिए धोका देखते हैं और झूटे फ़ाल निकालते हैं कि तुझ को उन शरीरों की गर्दन पर डाल दें जो मारे गए, जिनका ज़माना उनकी बदकिरदारी के अंजाम को पहुँचने पर आया है।

³⁰उसको मियान में कर। मैं तेरी पैदाइश के मकान में और तेरी ज़ाद बूम में तेरी 'अदालत करूँगा।³¹और मैं अपना क़हर तुझ पर नाज़िल करूँगा और अपने ग़ज़ब की आग तुझ पर भड़काऊँगा, और तुझ को हैवान खसलत आदमियों के हवाले करूँगा जो बर्बाद करने में माहिर हैं।

³²तू आग के लिए ईधन होगा और तेरा खून मुल्क में बहेगा, और फिर तेरा ज़िक़्र भी न किया जाएगा, क्यूँकि मैं खुदावन्द ने फ़रमाया है।"

Chapter 22

¹फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²~कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तू इल्ज़ाम न लगाएगा? क्या तू इस खूनी शहर को मुल्ज़िम न ठहराएगा? तू इसके सब नफ़रती काम इसको दिखा,³ और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ शहर, तू अपने अन्दर खूँरेज़ी करता है ताकि तेरा वक़्त आजाए और तू अपने वास्ते बुतों को अपने नापाक करने के लिए बनाता है।

⁴तू उस खून की वजह से जो तूने बहाया मुजरिम ठहरा, और तू बुतों के ज़रिए जिनको तूने बनाया है नापाक हुआ; तू अपने वक़्त को नज़दीक लाता है और अपने दिनों के खातिम तक पहुँचा है इसलिए मैंने तुझे क़ौमों की मलामत का निशाना और मुल्कों का ठट्ठा बनाया है।⁵तुझ से दूर-ओ-नज़दीक के सब लोग तेरी हँसी उड़ायेंगे क्योंकि तू झगड़ा लू और बदनाम मशहूर है।

⁶"देख, इस्राईल के हाकिम सब के सब जो तुझ में हैं, मक़दूर भर खूँरेज़ी पर मुसत'इद थे।⁷तेरे अन्दर उन्होंने माँ बाप को बेकार ~जाना है, तेरे अन्दर उन्होंने परदेसियों पर जुल्म किया तेरे अन्दर उन्होंने यतीमों और बेवाओं पर सितम किया है।⁸तूने मेरी पाक चीज़ों को नाचीज़ जाना, और मेरे सबतों को नापाक किया।

⁹तेरे अन्दर वह लोग हैं जो चुगलखोरी करके खून करवाते हैं, और तेरे अन्दर वह हैं जो बुतों की कुर्बानी से खाते हैं; तेरे अन्दर वह हैं जो बुराई करते हैं।

¹⁰~तेरे अन्दर वह भी हैं जिन्होंने अपने बाप की लौंडी शिकनी की, तुझ में उन्होंने उस 'औरत से जो नापाकी की हालत में थी मुबाश्रत की।¹¹किसी ने दूसरे की बीवी से बदकारी की, और किसी ने अपनी बहू से बदज़ाती की, और किसी ने अपनी बहन अपने बाप की बेटी को तेरे अन्दर रुस्वा किया।¹²तेरे अन्दर उन्होंने खूँरेज़ी के लिए रिश्तत ख़वारी की तूने ब्याज और सूद लिया और जुल्म करके अपने पड़ोसी को लूटा और मुझे फ़रामोश किया खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹³"देख, तेरे नारवा नफ़े' की वजह से जो तूने लिया, और तेरी खूँरेज़ी के ज़रिए जो तेरे अन्दर हुई, मैंने ताली बजाई।¹⁴क्या तेरा दिल बर्दाश्त करेगा और तेरे हाथों में ज़ोर होगा, जब मैं तेरा मु'आमिले का फ़ैसला करूँगा? मैं खुदावन्द ने फ़रमाया, और मैं ही कर दिखाऊँगा।¹⁵~हाँ, मैं तुझ को क़ौमों में तितर बितर और मुल्कों में तितर-बितर करूँगा, और तेरी गन्दगी तुझ में से हलाक कर दूँगा।¹⁶~और तू क़ौमों के सामने अपने आप में नापाक ठहरेगा, और मा'लूम करेगा कि मैं खुदावन्द हूँ।"

¹⁷और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁸कि ऐ आदमज़ाद, बनी इस्राईल मेरे लिए मैल हो गए हैं; वह सब के सब पीतल और रॉंगा और लोहा और सीसा हैं जो भट्टी में हैं, वह चाँदी की मैल हैं।¹⁹इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम सब मैल हो गए हो, इसलिए देखो, मैं तुम को यरुशलीम में जमा' करूँगा।

²⁰~जिस तरह लोग चाँदी और पीतल और लोहा और शीशा और रॉंगा भट्टी में जमा' करते हैं और उनपर धौंकते हैं ताकि उनको ~पिघला डालें, उसी तरह मैं अपने क्रहर और अपने ग़ज़ब में तुम को जमा' करूँगा, और तुम को वहाँ रखकर पिघलाऊँगा।²¹हाँ, मैं तुम को इकट्ठा करूँगा और अपने ग़ज़ब की आग तुम पर धौँकूँगा, और तुम को उसमें पिघला डालूँगा।²²~जिस तरह चाँदी भट्टी में पिघलाई जाती है, उसी तरह तुम उसमें पिघलाए जाओगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने अपना क्रहर तुम पर नाज़िल किया है।

²³और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²⁴कि "ऐ आदमज़ाद, उससे कह, तू वह सरज़मीन है जो पाक नहीं की गई और जिस पर ग़ज़ब के दिन में बारिश नहीं हुई।²⁵जिसमें उसके नबियों ने साज़िश की है, शिकार को फाड़ते हुए गरजने वाले शेर-ए-बबर की तरह वह जानों को खा गए हैं; वह माल और क्रीमती चीज़ों को छीन लेते हैं; उन्होंने उसमें बहुत सी 'औरतों को बेवा बना दिया है।

²⁶उसके काहिनों ने मेरी शरी'अत को तोड़ा और मेरी पाक चीज़ों को नापाक किया है। उन्होंने पाक और 'आम में कुछ फ़र्क़ नहीं रखवा और मैं उनमें बे'इज़ज़त हुआ।²⁷उसके हाकिम उसमें शिकार को फाड़ने वाले भेड़ियों की तरह हैं, जो नाजाएज़ नफ़ा' की ख़ातिर खूँरेज़ी करते हैं और जानों को हलाक करते हैं।²⁸और उसके नबी उनके लिए कच्च गारा करते हैं; बातिल ख़्वाब देखते और झूटी फ़ालगीर करते हैं और कहते हैं कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, "हालाँकि खुदावन्द ने नहीं फ़रमाया।

²⁹इस मुल्क के लोगों ने सितमगरी और लूट मार की है, और ग़रीब और मोहताज को सताया है और परदेसियों पर नाहक सख्ती की है।

³⁰मैंने उनके बीच तलाश की, कि कोई ऐसा आदमी मिले जो फ़सील बनाए, और उस सरज़मीन के लिए उसके रखने में मेरे सामने खड़ा हो ताकि मैं उसे वीरान न करूँ, लेकिन कोई न मिला।³¹इसलिए मैंने अपना क्रहर उन पर नाज़िल किया, और अपने ग़ज़ब की आग से उनको फ़ना कर दिया; और मैं उनके चाल चलन को उनके सिरों पर लाया, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 23

¹~और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐ आदमज़ाद, दो 'औरतें एक ही माँ की बेटियाँ थीं।³उन्होंने मिस्र में बदकारी की, वह अपनी जवानी में बदकार बनी वहाँ उनकी छातियाँ मली गईं और वहीं उनकी ~दोशीज़गी के पिस्तान मसले गए।⁴उनमें से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था वह दोनों मेरी हो गईं और उनसे बेटे बेटियाँ पैदा हुए और उनके यह नाम ओहोला और ओहोलीबा सामरिया व यरुशलीम हैं।

⁵और ओहोला जब कि वह मेरी थी, बदकारी करने लगी और अपने यारों पर या'नी असूरियों पर जो पड़ोसी थे, 'आशिक़ हुई।⁶वह सरदार और हाकिम और सबके सब दिल पसन्द जवाँ मर्द और सवार थे, जो घोड़ों पर सवार होते और अर्गवानी पोशाक पहनते थे।⁷और उसने उन सबके साथ जो असूर के बरगुज़ीदा मर्द थे बदकारी की, और उन सबके साथ जिनसे वह 'इश्कबाज़ी करती थी, और उनके सब बुतों के साथ नापाक हुई।

⁸उसने जो बदकारी मिस्र में की थी उसे न छोड़ा, क्योंकि उसकी जवानी में वह उससे हम-अगोश हुए और उन्होंने उसकी दोशीज़गी के पिस्तानों को मसला और अपनी बदकारी उस पर उण्डेल दी।⁹इसलिए मैंने उसे उसके यारों या'नी असूरियों के हवाले कर दिया जिन पर वह मरती थी।¹⁰उन्होंने उसको बरहना किया और उसके बेटों-बेटियों को छीन लिया और उसे तलवार से क़त्ल किया; इसलिए वह 'औरतों में अंगुशत नुमा हुई क्योंकि उन्होंने उसे 'अदालत से सज़ा दी।

¹¹और उसकी बहन ओहोलीबा ने यह सब कुछ देखा, लेकिन वह शहवत परस्ती में उससे बदतर हुई और उसने अपनी बहन से बढ़ कर बदकारी की।¹²वह असूरियों पर 'आशिक़ हुई जो सरदार और हाकिम और उसके पड़ोसी थे, जो भड़कीली पोशाक पहनते और घोड़ों पर सवार होते और सबके सब दिल पसन्द जवान मर्द थे।¹³और मैंने देखा, कि वह भी नापाक हो गई; उन दोनों की एक ही चाल चलन थी।

¹⁴और उसने बदकारी में तरक्की की क्योंकि जब उसने दीवार पर मर्दों की सूरतें देखीं, या'नी कसदियों की तस्वीरें जो शन्गर्फ़ से खिंची हुई थीं,¹⁵जो पटकों से कमरबस्ता और सिरों पर रंगीन पगड़ियाँ पहने थे, और सब के सब देखने में हाकिम अहल-ए-बाबुल की तरह थे जिनका वतन कसदिस्तान है।

¹⁶तो देखते ही वह उन पर मरने लगी, और उनके पास कसदिस्तान में क़ासिद भेजे।¹⁷तब अहल-ए-बाबुल उसके पास आकर 'इश्क के बिस्तर पर चढ़े, और उन्होंने उससे बदकारी करके उसे आलूदा किया और वह उनसे नापाक हुई, तो उसकी जान उनसे बेज़ार हो गई।

¹⁸तब उसकी बदकारी 'ऐलानिया हुई और उसकी बरहनगी बेसत्र हो गई; तब मेरी जान उससे बेज़ार हुई जैसी उसकी बहन से बेज़ार हो चुकी थी।¹⁹तोभी उसने अपनी जवानी के दिनों की याद करके जब वह मिस्र की सरज़मीन में बदकारी करती थी, बदकारी पर बदकारी की।

²⁰~इसलिए वह फिर अपने उन यारों पर मरने लगी, जिनका बदन गधों के जैसा बदन और जिनका इन्ज़ाल घोड़ों के जैसा इन्ज़ाल था।²¹इस तरह तूने अपनी जवानी की शहवत परस्ती को, जबकि मिस्री तेरी जवानी की छातियों की वजह से तेरे पिस्तान मलते थे, फिर याद किया।"

²²इसलिए ऐ ओहोलीबा, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "देख, मैं उन यारों को जिनसे तेरी जान बेज़ार हो गई है उभारूंगा कि तुझ से मुखालिफ़त करें, और उनको बुला लाऊंगा कि तुझे चारों तरफ़ से घेर लें।²³अहल-ए-बाबुल और सब कसदियों को फ़िकूद और शो'अ और को'अ और उनके साथ तमाम असूरियों को, सब के सब दिल पसन्द जवाँ मर्दों को, सरदारों और हाकिमों को, और बड़े बड़े अमीरों और नामी लोगों को जो सबके सब घोड़ों पर सवार होते हैं तुझ पर चढ़ा लाऊंगा।

²⁴और वह असलह-ए-जंग और रथों और छकड़ों और उम्मतों के गिरोह के साथ तुझ पर हमला करेंगे, और ढाल और फरी पकड़ कर और खुद पहनकर चारों तरफ़ से तुझे घेर लेंगे; मैं 'अदालत उनको ~सुपुर्द करूँगा, और वह अपने क़ानून के मुताबिक़ तेरा फ़ैसला करेंगे।²⁵और मैं अपनी ग़ैरत को तेरी मुखालिफ़ बनाऊँगा और वह ग़ज़बनाक होकर तुझ से पेश आयेंगे और तेरी नाक और तेरे कान काट डालेंगे और तेरे बाक़ी लोग तलवार से मारे जाएँगे। वह तेरे बेटे और बेटियों को पकड़ लेंगे. और तेरा बक्रिया आग से भसम होगा।

²⁶वह तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे नफ़ीस ज़ेवर लूट ले जायेंगे²⁷और मैं तेरी शहवत परस्ती और तेरी बदकारी जो तूने मुल्क-ए-मिस्र में सीखी मौकूफ़ करूँगा, यहाँ तक कि तू उनकी तरफ़ फिर आँख न उठाएगी और फिर मिस्र को याद न करेगी।

²⁸क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं तुझे उनके हाथ में जिनसे तुझे नफ़रत है, हूँ, उन्हीं के हाथ में जिनसे तेरी जान बेज़ार है दे दूँगा।²⁹और वह तुझ से नफ़रत के साथ पेश आएँगे, और तेरा सब माल जो तूने मेहनत से पैदा किया है छीन लेंगे और तुझे 'ऊरियान और बरहना छोड़ जायेंगे यहाँ तक कि तेरी शहवत परस्ती-ओ-ख़बासत और तेरी बदकारी फ़ाश हो जाएगी।

³⁰यह सब कुछ तुझ से इसलिए होगा कि तूने बदकारी के लिए दीगर क़ौम का पीछा किया और उनके बुतों से नापाक हुई।³¹तू अपनी बहन के रस्ते पर चली, इसलिए मैं उसका प्याला तेरे हाथ में दूँगा।

³²खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तू अपनी बहन के प्याले से जो गहरा और बड़ा है पियेगी तेरी हँसी होगी और तू ठठों में उड़ाई जाएगी, क्योंकि उसमें बहुत सी समाई है।

³³तू मस्ती और सोग से भर जाएगी; वीरानी और हैरत का प्याला, तेरी बहन सामरिया का प्याला है।³⁴~तू उसे पियेगी और निचोड़ेगी और उसकी ठेकरियाँ भी चबाई जाएगी, और अपनी छातियाँ नोचेगी क्योंकि मैं ही ने यह फ़रमाया है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

³⁵फिर खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि चूँकि तू मुझे भूल गई और मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया इसलिए अपनी बदज़ाती और बदकारी की सज़ा उठा।"

³⁶फिर खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया: कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तू ओहोला और ओहोलीबा पर इल्ज़ाम न लगाएगा? तू उनके घिनौने काम उन पर ज़ाहिर कर।³⁷क्योंकि उन्होंने बदकारी की और उनके हाथ खूनआलूदा हैं हों उन्होंने अपने बुतों से बदकारी की और अपने बेटों को जो मुझ से पैदा हुए आग से गुज़ारा कि बुतों की नज़र होकर हलाक हों।

³⁸इसके 'अलावा उन्होंने मुझ से यह किया कि उसी दिन उन्होंने मेरे हैकल को नापाक किया, और मेरे सबतों की बेहुर्मती की।³⁹क्योंकि जब वह अपनी औलाद को बुतों के लिए ज़बह कर चुकी, तो उसी दिन मेरे हैकल में दाखिल हुई, ताकि उसे नापाक करें और देख, उन्होंने मेरे घर के अन्दर ऐसा काम किया।

⁴⁰~बल्कि तुम ने दूर से मर्द बुलाए जिनके पास क्रासिद भेजा, और देख, वह आए जिनके लिए तूने गुस्ल किया और आँखों में काजल लगाया और बनाओ सिंगार किया,⁴¹ और तू नफीस पलंग पर बैठी और उसके पास दस्तरख्वान तैयार किया, और उस पर तूने मेरी खुशबू और मेरा 'इत्र रखखा।

⁴²और एक 'अय्याशी जमा' अत की आवाज़ उसके साथ थी और आम लोगों के 'अलावा वीरान से शराबियों को लाए और उन्होंने उनके हाथों में कंगन और सिरों पर खुशनुमा ताज पहनाए।

⁴³"तब मैंने उसके ज़रिए' जो बदकारी करते करते बुढ़िया हो गई थीं, कहा, अब यह लोग उससे बदकारी करेंगे और वह उनसे करेगी।⁴⁴ और वह उसके पास गए जिस तरह किसी कस्बी के पास जाते हैं, उसी तरह वह उन बदज़ात 'औरतों, अहोला और अहोलीबा के पास गए।⁴⁵ लेकिन सादिक आदमी उन पर वह फ़तवा देंगे जो बदकार और खूनी 'औरतों पर दिया जाता है, क्योंकि वह बदकार 'औरतें हैं और उनके हाथ खून आलूदा हैं।"

⁴⁶क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "मैं उन पर एक गिरोह चढ़ा लाऊँगा, और उनको छोड़ दूँगा कि ~इधर-उधर धक्के खाती फिरें और ग़ारत हों।⁴⁷ और वह गिरोह से उनको पथराव करेगी और अपनी तलवारों से क़त्ल करेगी, उनके बेटों-बेटियों को हलाक करेगी और उनके घरों को आग से जला देगी।

⁴⁸~यूँ मैं बदकारी को मुल्क से ख़त्म करूँगा ताकि सब 'औरतें 'इबरत पज़ीर हों और तुम्हारी तरह बदकारी न करें।⁴⁹ और वह तुम्हारे बुराई का बदला तुम को देंगे, और तुम अपने बुतों के गुनाहों की सज़ा का बोझ उठाओगे, ताकि तुम जानों कि खुदावन्द खुदा मैं ही हूँ।"

Chapter 24

¹फिर नवें बरस के दसवें महीने की दसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ² कि "ऐ आदमज़ाद, आज के दिन, हाँ, इसी दिन का नाम लिख रख; शाह-ए-बाबुल ने ऐन इसी दिन यरुशलीम पर खरूज किया।

³और इस बागी खान्दान के लिए एक मिसाल बयान कर और इनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि एक देग चढ़ा दे, हाँ, उसे चढ़ा और उसमें पानी भर दे।

⁴टुकड़े उसमें इकट्ठे कर, हर एक अच्छा टुकड़ा या 'नी रान और शाना और अच्छी अच्छी हड्डियाँ उसमें भर दे।⁵ और गल्ले में से चुन-चुन कर ले, और उसके नीचे लकड़ियों का ढेर लगा दे, और खूब जोश दे ताकि उसकी हड्डियाँ उसमें खूब उबल जाएँ।

⁶~"इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि उस खूनी शहर पर अफ़सोस और उस देग पर जिसमें ज़न्ग लगा है, और उसका ज़न्ग उस पर से उतारा नहीं गया! एक एक टुकड़ा करके उसमें से निकाल, और उस पर पर्ची पड़े।

⁷क्योंकि उसका खून उसके बीच है, उसने उसे साफ़ चट्टान पर रखखा, ज़मीन पर नहीं गिराया ताकि खाक में छिप जाए।⁸ इसलिए कि ग़ज़ब नाज़िल हो और इन्तक़ाम लिया जाए, मैंने उसका खून साफ़ चट्टान पर रखखा ताकि वह छिप न जाए।

⁹इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि खूनी शहर पर अफ़सोस ! मैं भी बड़ा ढेर लगाऊँगा।¹⁰ लकड़ियाँ खूब झोंक, आग सुलगा, गोشت को खूब उबाल और शोरबा गाढ़ा कर और हड्डियाँ भी जला दे।

¹¹तब उसे खाली करके अँगारों पर रख, ताकि उसका पीतल गर्म हो और जल जाए और उसमें की नापाकी गल जाए और उसका ज़न्ग दूर हो।¹² वह सख़्त मेहनत से हार गई, लेकिन उसका बड़ा ज़न्ग उससे दूर नहीं हुआ; आग से भी उसका ज़न्ग दूर नहीं होता।

¹³तेरी नापाकी में खबासत है, क्योंकि मैं तुझे पाक करना चाहता हूँ लेकिन तू पाक होना नहीं चाहती, तू अपनी नापाकी से फिर पाक न होगी, जब तक मैं अपना क्रहर तुझ पर पूरा न कर चुकूँ।

¹⁴~मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है, यूँ ही होगा और मैं कर दिखाऊँगा, न दस्तबरदार हूँगा न रहम करूँगा न बाज़ आऊँगा; तेरे चाल चलन और तेरे कामों के मुताबिक़ वह तेरी 'अदालत करेंगे खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁵फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁶ कि "ऐ आदमज़ाद, देख, मैं तेरी मन्ज़ूर-ए-नज़र को एक ही मार में तुझ से जुदा करूँगा, लेकिन तू न मातम करना, न रोना और न आँसू बहाना।¹⁷~चुपके चुपके ओहँ भरना, मुर्दे पर नोहा न करना, सिर पर अपनी पगड़ी बाँधना और पाँव में जूती पहनना और अपने होटों को न छिपाना और लोगों की रोटी न खाना।"

¹⁸इसलिए मैंने सुबह को लोगों से कलाम किया और शाम को मेरी बीवी मर गई, और सुबह को मैंने वही किया जिसका मुझे हुक्म मिला था।

¹⁹तब लोगों ने मुझ से पूछा, "क्या तू हमें न बताएगा कि जो तू करता है उसको हम से क्या रिश्ता है?"²⁰ तब मैंने उनसे कहा, कि "खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²¹~कि 'इसाईल के घराने से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देखो, मैं अपने हैकल को जो तुम्हारे ज़ोर का फ़ख़ और तुम्हारा मंज़ूर-ए-नज़र है जिसके लिए तुम्हारे दिल तरसते हैं नापाक करूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ, जिनको तुम पीछे छोड़ आए हो, तलवार से मारे जाएँगे।

²²और तुम ऐसा ही करोगे जैसा मैंने किया; तुम अपने होटों को न छिपाओगे, और लोगों की रोटियाँ न खाओगे।²³ और तुम्हारी पगड़ियाँ तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूतियाँ तुम्हारे पाँव में होंगी, और तुम नोहा और ज़ारी न करोगे लेकिन अपनी शरारत की वजह से घुलोगे, और एक दूसरे को देख देख कर ठन्डी साँस भरोगे।²⁴ चुनौचे हिज़क्रीएल तुम्हारे लिए निशान है; सब कुछ जो उसने किया तुम भी करोगे, और जब यह वजूद में आएगा तो तुम जानोगे कि खुदावन्द खुदा मैं हूँ।"

²⁵~"और तू ऐ आदमज़ाद, देख, कि जिस दिन मैं उनसे उनका ज़ोर और उनकी शान-ओ-शौकत और उनके मन्ज़ूर-ए-नज़र को, और उनके मरगूब-ए-खातिर उनके बेटे और उनकी बेटियाँ ले लूँगा,²⁶ उस दिन वह जो भाग निकले, तेरे पास आएगा कि तेरे कान में कहे।²⁷ उस दिन तेरा मुँह उसके सामने, जो बच निकला है खुल जाएगा और तू बोलेगा, और फिर गूँगा न रहेगा; इसलिए तू उनके लिए एक निशान होगा और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।"

Chapter 25

¹और खुदावन्द खुदा का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।²कि "ऐ आदमज़ाद-बनी 'अम्मून की तरफ़ मुतवज्जिह हो और उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर।

³और बनी 'अम्मून से कह, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तूने मेरे हैकल पर जब वह नापाक किया गया, और इस्राईल के मुल्क पर जब वह उजाड़ा गया, और बनी यहूदाह पर जब वह गुलाम हो कर गए, अहा हा ! कहा।⁴इसलिए मैं तुझे अहल-ए-पूरब के हवाले कर दूँगा कि तू उनकी मिलिकियत हो, और वह तुझ में अपने खेमे लगाएँगे और तेरे अन्दर अपने मकान बनाएँगे, और तेरे मेवे खाएँगे और तेरा दूध पीएँगे।⁵और मैं रब्बा को ऊँटों का अस्तबल और बनी 'अम्मून की सर-ज़मीन को भेड़साला बना दूँगा, और तू जानेगा कि मैं खुदावन्द हूँ।

⁶क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि चूँकि तूने तालियाँ बजाई और पाँव पटके, और इस्राईल की मम्लकत की बर्बादी पर अपनी कमाल 'अदावत से बड़ी खुशी की;⁷इसलिए देख, मैं अपना हाथ तुझ पर चलाऊँगा और तुझे दीगर क्रौम के हवाले करूँगा, ताकि वह तुझ को लूट लें और मैं तुझे उम्मतों में से काट डालूँगा, और मुल्कों में से तुझे बर्बाद-ओ-हलाक करूँगा; मैं तुझे हलाक करूँगा और तू जानेगा कि खुदावन्द मैं हूँ।

⁸"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि मोआब और श'ईर कहते हैं कि बनी यहूदाह तमाम क्रौमों की तरह हैं,⁹इसलिए देख, मैं मोआब के पहलू को उसके शहरों से, उसकी सरहद के शहरों से जो ज़मीन की शौकत हैं, बैत-यसीमोत और बालम'ऊन और करयताइम से खोल दूँगा।¹⁰~और मैं अहल-ए-पूरब को उसके और बनी 'अम्मून के खिलाफ़ चढ़ा लाऊँगा कि उन पर क़ाबिज़ हों, ताकि क्रौमों के बीच बनी 'अम्मून का ज़िक्र बाक़ी न रहे।¹¹और मैं मोआब को सज़ा दूँगा, और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।

¹²~'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि अदोम ने बनी यहूदाह से कीना कशी की, और उनसे इन्तक़ाम लेकर बड़ा गुनाह किया।¹³इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मैं अदोम पर हाथ चलाऊँगा; उसके इन्सान और हैवान को हलाक करूँगा, और तीमान से लेकर उसे वीरान करूँगा और वह ददान तक तलवार से क़त्ल होंगे।

¹⁴~और मैं अपनी क्रौम बनी-इस्राईल के हाथ से अदोम से इन्तक़ाम लूँगा, और वह मेरे ग़ज़ब-ओ-क्रहर के मुताबिक़ अदोम से सुलूक करेंगे, और वह मेरे इन्तक़ाम को मा'लूम करेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁵'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि फ़िलिस्तिनों ने कीनाकशी की, और दिल की कीना वरी से इन्तक़ाम लिया, ताकि दाइमी 'अदावत से उसे हलाक करें।

¹⁶~इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देख, मैं फ़िलिस्तिनों पर हाथ चलाऊँगा और करेतियों को काट डालूँगा, और समन्दर के साहिल के बाक़ी लोगों को हलाक करूँगा।¹⁷और मैं सख़्त सज़ा देकर उनसे बड़ा इन्तक़ाम लूँगा, और जब मैं उनसे इन्तक़ाम लूँगा तो वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।"

Chapter 26

¹~और ग्यारह बरस में महीने के पहले दिन खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: 'कि "ऐ आदमज़ाद, चूँकि सूर ने यरुशलीम पर कहा है, 'अहा हा! वह क्रौमों का फाटक तोड़ दिया गया है, अब वह मेरी तरफ़ मुतवज्जिह होगी, अब उसकी बर्बादी से मेरी मा'मूरी होगी।'

³इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देख, ऐ सूर मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और बहुत सी क्रौमों को तुझ पर चढ़ा लाऊँगा, जिस तरह समन्दर अपनी मौजों को चढ़ाता है।⁴ और वह सूर की शहर पनाह को तोड़ डालेंगे, और उसके बुरजों को ढा देंगे और मैं उसकी मिट्टी तक ख़ुर्च फेंकूँगा और उसे साफ़ चट्टान बना दूँगा।

⁵वह समन्दर में जाल फैलाने की जगह होगा क्योंकि मैं ही ने फ़रमाया, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, और वह क्रौमों के लिए ग़नीमत होगा।⁶ और उसकी बेटियाँ जो मैदान में हैं, तलवार से क्रल्ल होंगी और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

⁷"क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र को जो शहनशाह है, घोड़ों और रथों और सवारों और फ़ौजों और बहुत से लोगों के गिरोह के साथ उत्तर से सूर पर चढ़ा लाऊँगा;⁸ वह तेरी बेटियों को मैदान में तलवार से क्रल्ल करेगा और तेरे चारों तरफ़ मोर्चाबन्दी करेगा, और तेरे सामने दमदमा बाँधेगा और तेरी मुखालिफ़त में ढाल उठाएगा।

⁹वह अपने मन्जनीक को तेरी शहर पनाह पर चलाएगा, और अपने तबरों से तेरे बुजों को ढा देगा।¹⁰ उसके घोड़ों की कसरत की वजह से इतनी गर्द उड़ेगी कि तुझे छिपा लेगी जब वह तेरे फाटकों में घुस आएगा, जिस तरह रखना करके शहर में घुस जाते हैं, तो सवारों और गाड़ियों और रथों की गड़गड़ाहट की आवाज़ से तेरी शहरपनाह हिल जाएगी।¹¹~वह अपने घोड़ों के सुमों से तेरी सब सड़कों को रौन्द डालेगा, और तेरे लोगों की तलवार से क्रल्ल करेगा और तेरी ताक़त के सुतून ज़मीन पर गिर जाएँगे।

¹²और वह तेरी दौलत लूट लेंगे, और तेरे माल-ए-तिजारत को ग़ारत करेंगे और तेरे शहर पनाह तोड़ डालेंगे तेरे रंगमहलों को ढा देंगे, और तेरे पत्थर और लकड़ी और तेरी मिट्टी समन्दर में डाल देंगे।¹³ और तेरे गाने की आवाज़ बंद कर दूँगा और तेरी सितारों की आवाज़ फिर सुनी न जायेगी।¹⁴~और मैं तुझे साफ़ चट्टान बना दूँगा तू जाल फैलाने की जगह होगा और फिर ता'मीर न किया जाएगा क्योंकि मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁵"खुदावन्द खुदा सूर से यूँ फ़रमाता है: कि जब तुझ में क्रल्ल का काम जारी होगा और ज़ख्मी कराहते होंगे, तो क्या बहरी मुल्क तेरे गिरने के शोर से न थरथराएँगे?¹⁶~तब समन्दर के हाकिम अपने तख़्तों पर से उतरेंगे और अपने जुब्बे उतार डालेंगे और अपने ज़रदोज़ पैराहन उतार फेंकेंगे, वह थरथराहट से मुलब्स होकर खाक पर बैठेंगे, वह हरदम काँपेंगे और तेरी वजह से हैरत ज़दा होंगे।

¹⁷और वह तुझ पर नोहा करेंगे और कहेंगे, 'हाय, तू कैसा हलाक हुआ जो बहरी मुल्कों से आबाद और मशहूर शहर था, जो समन्दर में ताक़तवर था; जिसके बाशिन्दों से सब उसमें आमद-ओ-रफ़त करने वाले ख़ौफ़ खाते थे!¹⁸ अब बहरी मुल्क तेरे गिरने के दिन थरथरायेंगे हाँ, समन्दर के सब बहरी मुल्क तेरे अन्जाम से परेशान होंगे।'

¹⁹~"क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब मैं तुझे उन शहरों की तरह जो बे चरागा हैं, वीरान कर दूँगा; जब मैं तुझ पर समन्दर बहा दूँगा और जब समन्दर तुझे छिपा लेगा,²⁰ तब मैं तुझे उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं, पुराने वक़्त के लोगों के बीच नीचे उतारूँगा, और ज़मीन के तह में और उन उजाड़ मकानों में जो पहले से हैं, उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं; तुझे बसाऊँगा ताकि तू फिर आबाद न हो, लेकिन मैं ज़िन्दों के मुल्क को जलाल बख़सूँगा।²¹ मैं तुझे जा-ए-'इबरत करूँगा और तू हलाक होगा, हर चन्द तेरी तलाश की जाए तो तू कहीं हमेशा तक न मिलेगा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 27

¹फिर खुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।²कि "ऐ आदमज़ाद, तू सूर पर नोहा शुरू कर।"³और सूर से कह तुझे, जिसने समन्दर के मदखल में जगह पाई और बहुत से बहरी मुल्क ~के लोगों के लिए तिजारत गाह है, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "ऐ सूर, तू कहता है, "मेरा हुस्न ~कामिल है।" किया।

⁴तेरी सरहदें समन्दर के बीच हैं, तेरे मिस्तिरियों ने तेरी खुशनुमाई को कामिल किया है।⁵~उन्होंने सनीर के सरोओं से लाकर तेरे~जहाज़ों के तख्ते बनाए, और लुबनान से देवदार काटकर तेरे लिए मस्तूल बनाए।

⁶~बसन के बलूत से टाट बनाए तेरे तख्ते~जज़ाइर-ए-किस्तीम के सनूबर से हाथी दांत जड़कर तैयार किये गए।⁷तेरा ~बादबान मिस्री मुनक्क़श कतान का था ताकि तेरे लिए झन्डे का काम दे, तेरा शामियाना जज़ाइरे इलीशा के कबूदी व अर्गवानी रंग का था।

⁸~सैदा और अर्वद के रहने वाले तेरे मल्लाह थे~और ऐ सूर तेरे 'अक्लमन्द तुझ में तेरे नाखुदा थे।'⁹~जबल के बुजुर्ग और 'अक्लमन्द तुझ में थे कि~रखना बन्दी करें, समन्दर के सब जहाज़ और उनके मल्लाह तुझमें हाज़िर थे कि तेरे लिए तिजारत का काम करें।

¹⁰~"फ़ारस और लूद और फूत के लोग तेरे लिए लश्कर के जंगी बहादुर थे। वह तुझ में सिपर और खुद को लटकाते और तुझे रैनक बख्शाते थे।"¹¹अर्वद के मर्द तेरी ही फ़ौज के साथ चारों तरफ़ तेरी शहरपनाह पर मौजूद थे और बहादुर तेरे बुजुर्ग पर हाज़िर थे, उन्होंने अपनी सिप्परें चारों तरफ़ तेरी दीवारों पर लटकाई और तेरे जमाल को कामिल किया।

¹²तरसीस ने हर तरह के माल की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत की, ~वह चाँदी और लोहा और रोंगा और सीसा लाकर तेरे~बाज़ारों में सौदागरी करते थे।¹³~यावान तूबल और मसक तेरे ताजिर थे, वह तेरे बाज़ारों में और लुबनान ~तेरे बाज़ारों में गुलामों और पीतल के बर्तनों की सौदागरी करते थे।

¹⁴अहल-ए-तजर्मा ने तेरे बाज़ारों में घोड़ों, जंगी घोड़ों और खच्चरों की तिजारत की।¹⁵अहल-ए-ददान तेरे ताजिर थे बहुत से बहरी मुल्क तिजारत के लिए~तेरे इस्तिथार में वह~हाथी दान्त~और आबनूस मुबादला के लिए तेरे पास लाते थे

¹⁶अरामी तेरी दस्तकारी की ~कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत करते थे वह गौहर-ए-शब-चराग़ और अर्गवानी रंग और चिकनदोज़ी और कतान और मूंगा और मल्लाह थे लाल लाकर तुझ से ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त करते थे।¹⁷यहूदाह और इस्राईल का मुल्क तेरे ताजिर थे, वह मिनीत और पन्नग का गेहूँ और शहद और रोगन और बिलसान लाकर तेरे साथ तिजारत करते थे।¹⁸~अहल-ए-दमिशक़ तेरी दस्तकारी की कसरत की वजह से, और किस्म किस्म के माल की ज़्यादाती के ज़रिए' हलबून की मय और सफ़ेद ऊन की तिजारत तेरे यहाँ करते थे।

¹⁹~ददान और यावान ऊज़ाल से तज और आबदार फ़ौलाद और अगर तेरे बाज़ारों में लाते थे।²⁰ददान तेरा ताजिर था, जो सवारी के चार-जामे तेरे हाथ बेचता था।²¹~'अरब और कीदार के सब अमीर तिजारत की राह से तेरे हाथ में थे, वह बरें ~और मेंढे और बकरियाँ लाकर तेरे साथ तिजारत करते थे।

²²सबा और रा'माह के सौदागर तेरे साथ सौदागरी करते थे; वह हर किस्म के नफ़ीस मसाले और हर तरह के कीमती पत्थर और सोना, तेरे बाज़ारों में लाकर ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त करते थे।²³हरान और कन्ना और 'अदन और सबा के सौदागर, और असूर और किलमद के बाशिन्दे तेरे साथ सौदागरी करते थे।

²⁴यही तेरे सौदागर थे, जो लाजूर्दी कपड़े और कम ख़्वाब और नफ़ीस लिबासों से भरे देवदार के सन्दूक, डोरी से कसे हुए तेरी तिजारतगाह में बेचने को लाते थे।

²⁵तरसीस के जहाज़ तेरी तिजारत के कारवान थे, तू मा'मूर और वस्त-ए-बहर में बहुत शान-ओ-शौकत रखता था।

²⁶~"तेरे मल्लाह तुझे गहरे पानी में लाए, पूरबी हवा ने तुझ को वस्त-ए-बहर में तोड़ा है।²⁷तेरा माल-ओ-अस्बाब और तेरी अजनास-ए-तिजारत और तेरे अहल-ए-जहाज़ व ना खुदा तेरे रखना बन्दी करनेवाले और तेरे कारोबार के गुमाश्ते और सब जंगी मर्द जो तुझ में हैं, उस तमाम जमा'अत के साथ जो तुझ में है, तेरी तबाही के दिन समन्दर के बीच में गिरेंगे।

²⁸तेरे नाखुदाओं के चिल्लाने के शोर से तमाम 'इलाक़े थर्हा जायेंगे।²⁹और तमाम मल्लाह और अहल-ए-जहाज़ और समन्दर के सब नाखुदा, अपने जहाज़ों पर से उतर आएँगे; वह खुशकी पर खड़े होंगे।³⁰और अपनी आवाज़ बुलन्द करके तेरी वजह से चिल्लाएँगे, और अपने सिरों पर खाक डालेंगे और राख में लोटेंगे।

³¹~वह तेरी वजह से सिर मुंडाएँगे और टाट ओढ़ेंगे वह तेरे लिए दिल शिकस्ता होकर रोएँगे और जॉगुदाज़ नोहा करेंगे।³²और नोहा करते हुए तुझ पर मरसिया ख़वानी करेंगे और तुझ पर यूँ रोएँगे; 'कौन सूर की तरह है, जो समन्दर के बीच में तबाह हुआ?'³³जब तेरा माल-ए-तिजारत समन्दर पर से जाता था, तब तुझ से बहुत सी क़ौमों मालामाल होती थीं; तू अपनी दौलत और अजनास-ए-तिजारत की कसरत से इस ज़मीन के बादशाहों को दौलतमन्द बनाता था।

³⁴लेकिन अब तू समन्दर की गहराई में पानी के ज़ोर से टूट गया है, तेरी अजनास-ए-तिजारत और तेरे अन्दर की तमाम जमा'अत गिर गई।³⁵बहरी मुल्क के सब रहने वाले तेरे ज़रिए' हैरत ~ज़दह होंगे~और उनके बादशाह बहुत तरसान होंगे और उनका चेहरा ज़र्द हो जाएगा।³⁶क़ौमों के सौदागर तेरा ज़िक्र सुनकर सुसकारेंगे, तू जा-ए-'इबरत होगा और बाक़ी न रहेगा।"

Chapter 28

¹फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²~कि "ऐआदमज़ाद, वाली-ए-सूर से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, इसलिए कि तेरे दिल में गुरूर समाया और तूने कहा, 'मैं खुदा हूँ, और समन्दर के किनारे में इलाही तख़्त पर बैठा हूँ,' और तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया है, अगरचे तू इलाह नहीं बल्कि इन्सान है।³देख, तू दानीएल से ज़्यादा 'अक्लमन्द है, ऐसा कोई राज़ नहीं जो तुझ से छिपा हो।

⁴तूने अपनी हिकमत और ख़िरद से माल हासिल किया, और सोने चाँदी से अपने खज़ाने भर लिए।⁵तूने अपनी बड़ी हिकमत से और अपनी सौदागरी से अपनी दौलत बहुत बढ़ाई, और तेरा दिल तेरी दौलत के ज़रिए फूल गया है।

⁶इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया।⁷इसलिए देख, मैं तुझ पर परदेसियों को जो क्रौमों में हैबतनाक हैं, चढ़ा लाऊँगा; वह तेरी समझदारी की खूबी के खिलाफ़ तलवार खींचेंगे और तेरे जमाल को ख़राब करेंगे।

⁸~वह तुझे पाताल में उतारेंगे और तू उनकी मौत मरेगा जो समन्दर के बीच में क़त्ल होते हैं।⁹क्या तू अपने क़ातिल के सामने यूँ कहेगा, कि 'मैं इलाह हूँ'? हालाँकि तू अपने क़ातिल के हाथ में इलाह नहीं, बल्कि इन्सान है।¹⁰तू अजनबी के हाथ से नामख़तून की मौत मरेगा, क्योंकि मैंने फ़रमाया है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।¹²कि "ऐआदमज़ाद, सूर के बादशाह पर यह नोहा कर और उससे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तू खातिम-उल-कमाल 'अक्ल से मा'मूर और हुस्न में कामिल है।¹³~तू 'अदन में बाग़-ए-ख़ुदा में रहा करता था, हर एक क़ीमती पत्थर तेरी पोशिश के लिए था; मसलन याक़ूत-ए-सुख़ और पुख़राज और इल्मास और फ़िरोज़ा और संग-ए-सुलेमानी और ज़बरजद और नीलम और जुमर्द और गौहर-ए-शबचरागा और सोने से, तुझ में खातिमसाज़ी और नगीनाबन्दी की सन'अत तेरी पैदाइश ही के रोज़ से जारी रही।

¹⁴तू मम्सूह करूबी था जो साया।अफ़गन था, और मैंने तुझे खुदा के कोह-ए-मुक़द्दस पर कायम किया; तू वहाँ आतिशी पत्थरों के बीच चलता फिरता था।¹⁵तू अपनी पैदाइश ही के रोज़ से अपनी राह-ओ-रस्म में कामिल था, जब तक कि तुझ में नारास्ती न पाई गई।

¹⁶तेरी सौदागरी की फ़िरावानी की वजह से उन्होंने तुझ में ज़ुल्म भी भर दिया और तूने गुनाह किया; इसलिए मैंने तुझ को खुदा के पहाड़ पर से गन्दगी की तरह फेंक दिया, और तुझ साया-अफ़गन करूबी को आतिशी पत्थरों के बीच से फ़ना कर दिया।¹⁷तेरा दिल तेरे हुस्न पर गुरूर करता था, तूने अपने जमाल की वजह से अपनी हिकमत खो दी; मैंने तुझे ज़मीन पर पटख दिया और बादशाहों के सामने रख दिया है, ताकि वह तुझे देख लें।

¹⁸तूने अपनी बदकिरदारी की कसरत, और अपनी सौदागरी की नारास्ती से अपने हैकलों को नापाक किया है। इसलिए मैं तेरे अन्दर से आग निकालूँगा जो तुझे भसम करेगी, और मैं तेरे सब देखने वालों की आँखों के सामने तुझे ज़मीन पर राख कर दूँगा।¹⁹क्रौमों के बीच वह सब जो तुझ को जानते हैं, तुझे देख कर हैरान होंगे; तू जा-ए-'इबरत होगा और बाक़ी न रहेगा।"

²⁰~फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²¹कि "ऐआदमज़ाद, सैदा का रुख़ करके उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर।²²और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ, ऐ सैदा; और तेरे अन्दर मेरी तम्ज़ीद होगी, और जब मैं उसको सज़ा दूँगा तो लोग मा'लूम कर लेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ, और उसमें मेरी तक्दीस होगी।

²³मैं उसमें वबा भेजूँगा, और उसकी गलियों में खूँरेज़ी करूँगा, और मक्त्तूल उसके बीच उस तलवार से जो चारों तरफ़ से उस पर चलेगी गिरेंगे, और वह मा'लूम करेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।²⁴"तब बनी-इस्राईल के लिए उनके चारों तरफ़ के सब लोगों में से, जो उनको बेकार जानते थे, कोई चुभने वाला काँटा या दुखाने वाला ख़ार न रहेगा, और वह जानेंगे कि खुदावन्द खुदा मैं हूँ।

²⁵"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जब मैं बनी-इस्राईल को क्रौमों में से, जिनमें वह तितर बितर हो गए जमा' करूँगा, तब मैं क्रौमों की आँखों के सामने उनसे अपनी तक्दीस कराऊँगा; और वह अपनी सरज़मीन में जो मैंने अपने बन्दे या'क़ूब को दी थी बसेंगे।²⁶~और वह उसमें अम्न से सकूनत करेंगे, बल्कि मकान बनाएँगे और अंगूरिस्तान लगाएँगे और अम्न से सकूनत करेंगे; जब मैं उन सब को जो चारों तरफ़ से उनकी हिक्कारत करते थे, सज़ा दूँगा तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ।

Chapter 29

¹~दसवें बरस के दसवें महीने की बारहवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐ आदमज़ाद, तू शाह-ए-मिस्र फिर'औन के खिलाफ़ हो, और उसके और तमाम मुल्क-ए-मिस्र के खिलाफ़ नबुवत कर'कलाम कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "देख, ऐ शाह-ए-मिस्र फिर'औन, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ; उस बड़े घड़ियाल का जो अपने दरियाओं में लेट रहता है और कहता है कि 'मेरा दरिया मेरा ही है,और मैंने उसे अपने लिए बनाया है।'

⁴लेकिन मैं तेरे जबड़ों में काँटि ~अटकाऊँगा,और तेरी~~दरियाओं की मछलियाँ तेरी~खाल पर चिमटाऊँगा,और तुझे~तेरी~तेरे दरियाओं~से बाहर से बाहर खींच निकालूँगा और ~तेरे दरियाओं की सब ~मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटी होंगी।⁵~और मैं तुझ को और तेरे दरियाओं की मछलियों को वीराने में फेंक दूँगा, तू खुले मैदान में पड़ा रहेगा,तू न बटोरा जाएगा न जमा' किया जाएगा; मैंने तुझे मैदान के दरिन्दों और आसमान के परिन्दों की खुराक कर दिया है।

⁶और मिस्र के तमाम बाशिन्दे जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।'इसलिए कि वह बनी-इसाईल के लिए सिर्फ़ सरकंडे का 'असा थे |⁷जब उन्होंने तुझे हाथ में लिया, तो तू टूट गया और उन सबके कन्धे ज़ख्मी कर डाले; फिर जब उन्होंने तुझ पर भरोसा किया, तो तू टुकड़े-टुकड़े हो गया और उन सब की कमरें हिल गई।

⁸इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं एक तलवार तुझ पर लाऊँगा और तुझ में इन्सान और हैवान को काट डालूँगा।⁹और मुल्क-ए-मिस्र उजाड़ और वीरान हो जाएगा, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"क्योंकि उसने कहा है, कि 'दरिया मेरा ही है, और मैंने ही उसे बनाया है।'¹⁰~इसलिए देख, मैं तेरा और तेरे दरियाओं का मुखालिफ़ हूँ, और मुल्क-ए-मिस्र को मिजदाल से असवान बल्कि कूश की सरहद तक महज़ वीरान और उजाड़ कर दूँगा।

¹¹किसी इन्सान का पाँव उधर न पड़ेगा और न उसमें किसी हैवान के पाँव का गुज़र होगा क्योंकि वह चालीस बरस तक आबाद न होगा |¹²और मैं वीरान मुल्कों के साथ मुल्क-ए-मिस्र को वीरान करूँगा, और उजड़े शहरों के साथ उसके शहर चालीस बरस तक उजाड़ रहेंगे। और मैं मिस्रियों को क्रौमों में तितर बितर और मुखतलिफ़ मुल्कों में तितर-बितर करूँगा।

¹³"क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चालीस बरस के आखिर में मैं मिस्रियों की उन क्रौमों के बीच से, जहाँ वह तितर बितर हुए जमा' करूँगा;¹⁴और मैं मिस्र के गुलामों को वापस लाऊँगा, और उनकी फ़तरूस की ज़मीन उनके वतन में वापस पहुँचाऊँगा, और वह वहाँ बेकार मम्लुकत होंगे।

¹⁵यह ममलुकत तमाम मम्लुकतों से ज़्यादा बेकार होगी, और फिर क्रौमों पर अपने आप बुलन्द न करेगी;क्योंकि मैं उनको पस्त करूँगा ताकि फिर क्रौमों पर हुक्मरानी न करें।¹⁶और वह आइंदा को बनी-इसाईल की भरोसे की जगह न होगी, जब वह उनकी तरफ़ देखने लगे तो उनकी बदकिरदारी याद दिलाएँगे और जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

¹⁷सत्ताइसवें बरस के पहले महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁸कि "ऐ आदमज़ाद, शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र ने अपनी फ़ौज से सूर की मुखालिफ़त में बड़ी खिदमत करवाई है; हर एक सिर बेबाल हो गया और हर एक का कन्धा छिल गया, लेकिन न उसने न उसके लश्कर ने सूर से उस खिदमत के वास्ते, जो उसने उसकी मुखालिफ़त में की थी कुछ मजदूरी पाई |

¹⁹इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं मुल्क-ए-मिस्र शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के हाथ में कर दूँगा, वह उसके लोगों को पकड़ ले जाएगा, और उसको लूट लेगा और उसकी ग़नीमत को ले लेगा, और यह उसके लश्कर की मजदूरी होगी।²⁰~मैंने मुल्क-ए-मिस्र उस मेहनत के सिले में जो उसने की उसे दिया क्योंकि उन्होंने मेरे लिए मशक्कत खींची थी; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है

²¹"मैं उस वक़्त इसाईल के खान्दान का सींग उगाऊँगा और उनके बीच तेरा मुँह खोलूँगा; और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

Chapter 30

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।²कि "ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि चिल्ला कर कहो: अफ़सोस उस दिन पर!"³इसलिए कि वह दिन करीब है,हाँ, खुदावन्द का दिन या'नी बादलों का दिन करीब है।वह क्रौमों की सज़ा का वक़्त होगा।

⁴क्यूँकि तलवार मिस्र पर आएगी,और जब लोग मिस्र में क़त्ल होंगे और गुलामी में जाएँगे और उसकी बुनियादें बर्बाद की जायेंगी तो अहल-ए-कूश सख़्त दर्द में मुब्तिला होंगे।⁵कूश और फ़ूत और लूद और तमाम मिले जुले लोग, और कूब और उस सरज़मीन के रहने वाले जिन्होंने मु'आहिदा किया है, उनके साथ तलवार से क़त्ल होंगे।

⁶"खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि मिस्र के मददगार गिर जाएँगे और उसके ताक़त का गुरूर जाता रहेगा", मिजदाल से असवान तक वह उसमें तलवार से क़त्ल होंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।⁷~और वह वीरान मुल्कों के साथ वीरान होंगे,और उसके शहर उजड़े शहरों के साथ उजाड़ रहेंगे।

⁸और जब मैं मिस्र में आग भड़काऊँगा, और उसके सब मददगार हलाक किए जाएँगे तो वह मा'लूम करेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।⁹उस रोज़ बहुत से क़ासिद जहाज़ों पर सवार होकर, मेरी तरफ़ से रवाना होंगे कि गाफ़िल कूशियों को डराएँ, और वह सख़्त दर्द में मुब्तिला होंगे जैसे मिस्र की सज़ा के वक़्त, क्यूँकि देख वह दिन आता है।

¹⁰"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "मैं मिस्र के गिरोह को शाह-ए-बाबुल नबूकदरज़र के हाथ से बर्बाद-ओ-हलाक कर दूँगा।"¹¹~वह और उसके साथ उसके लोग जो क्रौमों में हैबतनाक हैं, मुल्क उजाड़ने को भेजे जाएँगे और वह मिस्र पर तलवार खींचेंगे और मुल्क को मक्तूलों से भर देंगे।

¹²और मैं नदियों को सुखा दूँगा और मुल्क को शरीरों के हाथ बेचूँगा और मैं उस सर ज़मीन को और उसकी तमाम मा'मूरी को अजनबियों के हाथ से वीरान करूँगा, मैं ~खुदावन्द ने फ़रमाया है।

¹³"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "मैं बुतों को भी~बर्बाद-ओ-हलाक-करूँगा और नूफ़ में से मूरतों को मिटा डालूँगा और आइंदा को मुल्क-ए-मिस्र से कोई बादशाह खड़ा न होगा, और मैं मुल्क-ए-मिस्र में दहशत डाल दूँगा।"¹⁴और फ़तरूस को वीरान करूँगाऔर जुअन में आग भड़काऊँगा और नो पर फ़तवा दूँगा।

¹⁵और मैं सीन पर जो मिस्र का किला है, अपना क़हर नाज़िल करूँगा और नो के गिरोह को काट डालूँगा।¹⁶~और मैं मिस्र में आग लगा दूँगा,सीन को सख़्त दर्द होगा, और नो में रखने हो जाएँगे और नूफ़ पर हर दिन मुसीबत होगी।

¹⁷आवन और फ़ीबसत के जवान तलवार से क़त्ल होंगे और यह दोनों बस्तियाँ गुलामी में जाएँगी।¹⁸और तहफ़नहीस में भी दिन अँधेरा होगा, जिस वक़्त मैं वहाँ मिस्र के जूओं को तोड़ूँगा और उसकी कुव्वत की शौकत मिट जाएगी और उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियाँ गुलाम होकर जाएँगी।¹⁹इसी तरह से मिस्र को सज़ा दूँगा और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।"

²⁰ग्यारहवें बरस के पहले महीने की सातवीं तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²¹कि "ऐ आदमज़ाद, मैंने शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन का बाजू तोड़ा, और देख, वह बाँधा न गया, दवा लगा कर उस पर पट्टियाँ न कसी गई कि तलवार पकड़ने के लिए मज़बूत हो।

²²इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं शाह-ए-मिस्र फ़िर'औन का मुखालिफ़ हूँ, और उसके बाजूओं को या'नी मज़बूत और टूटे को तोड़ूँगा, और तलवार उसके हाथ से गिरा दूँगा।²³~और मिस्रियों को क्रौमों में तितर बितर और मुमालिक में तितर बितर करूँगा।²⁴और मैं शाह-ए-बाबुल के बाजूओं को कुव्वत बख़्शूँगा और अपनी तलवार उसके हाथ में दूँगा, लेकिन फ़िर'औन के बाजूओं को तोड़ूँगा और वह उसके आगे, उस घायल की तरह जो मरने पर ही आहें मारेगा।

²⁵हाँ शाह-ए-बाबुल के बाजूओं को सहारा दूँगा और फिर'औन के बाजू गिर जायेंगे और जब मैं अपनी तलवार शाह-ए-बाबुल के हाथ में दूँगा और वह उसको मुल्क-ए-मिस्र पर चलाएगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।²⁶और मैं मिस्रियों को क्रौमों में तितर बितर और ममलिक में तितर-बितर कर दूँगा, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

Chapter 31

¹~फिर ग्यारहवें बरस के तीसरे महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²~कि "ऐ आदमज़ाद शाह-ए-मिस्र फिर'औन और उसके लोगों से कह,"तुम अपनी बुजुर्गी में किसकी तरह हो?

³देख असूर लुबनान का बुलन्द देवदार था, जिसकी डालियाँ खूबसूरत थीं, और पत्तियों की कसरत से वह ~खूब सायादार था और उसका क्रद बुलन्द था, और उसकी चोटी घनी शाखों के बीच थी।⁴पानी ने उसकी परवरिश की, गहराव ने उसे बढ़ाया, उसकी नहरें चारों तरफ़ जारी थीं, और उसने अपनी नालियों को मैदान के सब दरख्तों तक पहुँचाया।

⁵~इसलिए पानी की कसरत से उसका क्रद मैदान के सब दरख्तों से बुलन्द हुआ, और जब वह लहलहाने लगा, तो उसकी शाखें फ़िरावान और उसकी डालियाँ दराज़ हुई।⁶हवा के सब परिन्दे उसकी शाखों पर अपने घोंसले बनाते थे, और उसकी डालियों के नीचे सब दशती हैवान बच्चे देते थे, और सब बड़ी बड़ी क्रौमें उसके साये में बसती थीं।⁷यूँ वह अपनी बुजुर्गी में अपनी डालियों की दराज़ी की वजह से खुशनुमा था, क्योंकि उसकी जड़ों के पास पानी की कसरत थी।

⁸खुदा के बाग़ के देवदार उसे छिपा न सके, सरो उसकी शाखों और चिनार उसकी डालियों के बराबर न थे और खुदा के बाग़ का कोई दरख्त खूबसूरती में उसकी तरह न था।⁹~मैंने उसकी डालियों की फ़िरावानी से उसे हुस्न बख़्शा, यहाँ तक कि 'अदन के सब दरख्तों को जो खुदा के बाग़ में थे उस पर रश्क आता था।

¹⁰"इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि उसने आपको बुलन्द और अपनी चोटी को घनी शाखों के बीच ऊँचा किया, और उसके दिल में उसकी बूलन्दी पर गुरूर समाया।¹¹इसलिए मैं उसको क्रौमों में से एक ज़बरदस्त के हवाले कर दूँगा, यक़ीनन वह उसका फ़ैसला करेगा, मैंने उसे उसकी शरारत की वजह से निकाल दिया।

¹²और अजनबी लोग जो क्रौमों में से हैबतनाक हैं, उसे काट डालेंगे और फेंक देंगे पहाड़ों और सब वादियों पर उसकी शाखें गिर पड़ेगी, और ज़मीन की सब नहरों के आस-पास उसकी डालियाँ तोड़ी जाएँगी, और इस ज़मीन के सब लोग उसके साये से निकल जाएँगे और उसे छोड़ देंगे।

¹³हवा के सब परिन्दे उसके टूटे तने में बसेंगे, और तमाम दशती जानवर उसकी शाखों पर होंगे।¹⁴ताकि लब-ए-आब के सब दरख्तों में से कोई अपनी बूलन्दी पर मग़रूर न हो, और अपनी चोटी घनी शाखों के बीच ऊँची न करे, और उनमें से बड़े बड़े और पानी ज़ब करने वाले सीधे खड़े न हों, क्योंकि वह सबके सब मौत के हवाले किए जाएँगे, या'नी ज़मीन के तह में बनी आदम के बीच जो पाताल में उतरते हैं।

¹⁵~"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जिस रोज़ वह पाताल में उतरे मैं मातम कराऊँगा, मैं उसकी वजह से गहराव को छिपा दूँगा और उसकी नहरों को रोक दूँगा और बड़े सैलाब थम जाएँगे; हाँ, मैं लुबनान को उसके लिए सियाह पोश कराऊँगा, और उसके लिए मैदान के सब दरख्त ग़ाशी में आएँगे।

¹⁶जिस वक़्त मैं उसे उन सब के साथ जो गढ़े में गिरते हैं, पाताल में डालूँगा, तो उसके गिरने के शोर से तमाम क्रौम लरज़ाँ होंगी; और 'अदन के सब दरख्त, लुबनान के चीदा और नफ़ीस, वह सब जो पानी ज़ब करते हैं ज़मीन के तह में तसल्ली पाएँगे।

¹⁷वह भी उसके साथ उन तक, जो तलवार से मारे गए, पाताल में उतर जाएँगे और वह भी जो उसके बाजू थे, और क्रौमों के बीच उसके साये में बसते थे वहीं होंगे।¹⁸~"तू शान-ओ-शौकत में 'अदन के दरख्तों में से किसकी तरह है? लेकिन तू 'अदन के दरख्तों के साथ ज़मीन के तह में डाला जाएगा, तू उनके साथ जो तलवार से क़त्ल हुए, नामख़तूनों के बीच पड़ा रहेगा; ~यही फिर'औन और उसके सब लोग हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 32

¹~बारहवें बरस के~बारहवें~महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐ आदमज़ाद, शाह-ए-मिस्र फिर'औन पर नोहा उठा और उसे कह: "तू क्रौमों के बीच जवान शेर-ए-बबर~की तरह था,और तू दरियाओं के घड़ियाल जैसा है;~तू अपनी नहरों में से नागाह निकल~आता है,~तूने अपने पाँव से पानी को तह-बाला किया और उनकी नहरों को गदला कर दिया |

³~खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि~मैं उम्मतों के गिरोह के साथ तुझ पर~अपना जाल डालूँगा और वह तुझे मेरे ही जाल में बाहर निकालेंगे |⁴~तब मैं तुझे खुशकी में छोड़ दूँगा और खुले मैदान पर तुझे फेकूँगा, और हवा के सब परिन्दों को तुझ पर बिठाऊँगा और तमाम इस ज़मीन के दरिन्दों को तुझ से सेर करूँगा।⁵और तेरा गोशत पहाड़ों पर डालूँगा,और वादियों को तेरी बुलन्दी से भर दूँगा |⁶और मैं उस सरज़मीन को जिसे पानी में तू तैरता था,~पहाड़ों तक तेरे खून से तर करूँगा और नहरें तुझ से लबरेज़ होंगी।

⁷और जब मैं तुझे हलाक करूँगा, तो आसमान को तारीक~और उसके सितारों को बे-नूर करूँगा सूरज को बादल से छिपाऊँगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा |

⁸और मैं तमाम नूरानी अजराम-ए-फलक को तुझपर तारीक करूँगा और मेरी तरफ़ से तेरी ज़मीन पर तारीकी छा जायेगी खुदावन्द खुदा फ़रमाता |

⁹और जब मैं तेरी शिकस्ता हाली की खबर को क्रौमों के बीच उन मुल्कों में जिनसे तू ना वाकिफ़ है पहुँचाऊँगा तो उम्मतों का दिल~आजुर्दा करूँगा¹⁰~बल्कि बहुत सी उम्मतों को तेरे हाल से हैरान करूँगा, और उनके बादशाह तेरी वजह से सख्त परेशान होंगे;~~जब मैं उनके सामने अपनी तलवार~चमकाऊँगा, तो उनमें से हर एक अपनी जान की खातिर तेरे गिरने के दिन हर दम थरथराएगा

¹¹क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि शाह-ए-बाबुल की तलवार तुझ पर चलेगी।¹²~मैं तेरी जमियत को ज़बरदस्तों की तलवार से, जो सब के सब क्रौमों में हैबतनाक हैं हलाक करूँगा,वह मिस्र की शौकत को खत्म और उसकी तमाम जमियत को मिटा दूँगे।

¹³और मैं उसके सब जानवरों को आब-ए-कसीर के पास से हलाक करूँगा, और आगे को न इन्सान के पाँव उसे गदला करेंगे न हैवान के खुर।¹⁴तब मैं उनका पानी साफ़ कर दूँगा,और उनकी नदियाँ रौगन की तरह जारी होंगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁵जब मैं मुल्क-ए-मिस्र को वीरान और सूनसान करूँगा और वह अपनी मा'मूरी से खाली हो जाएगी, जब मैं उसके तमाम बाशिन्दों को हलाक करूँगा तब वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।¹⁶~ये वह नोहा है जिससे उस पर मातम करेंगे क्रौमों की बेटियाँ इससे मातम करेंगी वह मिस्र और उसकी तमाम जमियत पर इसी से मातम करेंगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

¹⁷फिर बारहवें बरस में महीने के पन्द्रहवें दिन, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁸कि "ऐ आदमज़ाद, मिस्र की जमियत पर वावैला कर, और उसको और नामदार क्रौमों की बेटियों को पाताल में उतरने वालों के साथ ज़मीन की तह में गिरा दे

¹⁹"तू हुस्न ~में किस से बढ़कर था? उतर और नामख़तून के साथ पड़ा रह।²⁰वह उनके बीच गिरेंगे जो तलवार से क़त्ल हुए, वह तलवार के हवाले किया गया है, उसे और उसकी तमाम जमियत को घसीट ले जा।²¹वह जो ताक़तवरो में सब से तवाना हैं, पाताल में उस से और उसके मददगारों से मुखातिब होंगे: 'वह पाताल में उतर गए, वह बे हिस पड़े हैं, या'नी वह नामख़तून जो तलवार से क़त्ल हुए।'

²²"असूर और उसकी तमाम जमियत वहाँ हैं उसकी चारों तरफ़ उनकी क़ब्रें हैं सब के सब तलवार से क़त्ल हुए हैं,²³~जिनकी क़ब्रें ~पाताल की तह में हैं और उसकी तमाम जमियत उसकी क़ब्र ~के चारो तरफ़ है; सब के सब तलवार से क़त्ल हुए, जो ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत का ज़रि'अ थे।

²⁴ऐलाम और उसकी तमाम गिरोह, जो उसकी क़ब्र के चारो तरफ़ हैं वहाँ हैं; सब के सब तलवार से क़त्ल हुए हैं, वह ~ज़मीन की तह में नामख़तून उतर गए जो ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत के ज़रिए' थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ खजालत उठाई है।²⁵उन्होंने उसके लिए और उसकी तमाम गिरोह के लिए मक्त्रूलों के बीच बिस्तर लगाया है, उसकी क़ब्रें उसके चारों तरफ़ हैं, सब के सब नामख़तून तलवार से क़त्ल हुए हैं; वह ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत की वजह थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ रुस्वाई उठाई, वह मक्त्रूलों में रखे गए।

²⁶"मस्क और तूबल और उसकी तमाम ज'मियत वहाँ हैं, उसकी क़ब्रें उसके चारों तरफ़ हैं, सब के सब नामख़तून और तलवार के मक्त्रूल हैं; अगरचे ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत के ज़रिए' थे।²⁷क्या वह उन बहादुरों के साथ जो नामख़तून में से क़त्ल हुए, जो अपने जंग के हथियारों के साथ पाताल में उतर गए पड़े न रहेंगे? उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रखी हैं, और उनकी बदकिरदारी उनकी हड्डियों पर है; क्यूँकि वह ~ज़िन्दों की ज़मीन में बहादुरों के लिए हैबत का ज़रि'अ थे।

²⁸और तू नामख़तून के बीच तोड़ा जाएगा, और तलवार के मक्त्रूलों के साथ पड़ा रहेगा।²⁹"वहाँ अदूम भी है, उसके बादशाह और उसके सब 'उमरा जो बावजूद अपनी कुव्वत के तलवार के मक्त्रूलों में रखे गए हैं; वह नामख़तून और पाताल में उतरने वालों के साथ पड़े रहेंगे।

³⁰"उत्तर के तमाम 'उमरा और तमाम सैदानी, जो मक्त्रूलों के साथ पाताल में उतर गए, बावजूद अपने रौब के अपनी ताक़तवरों से शर्मिन्दा हुए; वह तलवार के मक्त्रूलों के साथ नामख़तून~पड़े रहेंगे और पाताल में उतरने वालों के साथ रुस्वाई उठायेंगे

³¹"फ़िर'औन उनको देख कर अपनी तमाम जमियत के ज़रिए' तसल्ली पज़ीर होगा हॉं~~फ़िर'औन और तमाम लश्कर~जो तलवार से क़त्ल हुए, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।³²क्यूँकि मैंने ज़िन्दों की ज़मीन में उसकी हैबत क़ायम की और वह तलवार के मक्त्रूलों के साथ नामख़तून में रखे जाएगा; हॉं, फ़िर'औन और~उसकी जमियत, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 33

¹~फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐआदमज़ाद, तू अपनी क़ौम के फ़र्ज़न्दों से मुखातिब हो और उनसे कह, जिस वक़्त मैं किसी सरज़मीन पर तलवार चलाऊँ, और उसके लोग अपने बहादुरों में से एक को लें और उसे अपना निगहबान ठहराएँ।³और वह तलवार को अपनी सरज़मीन पर आते देख कर नरसिंगा फूँके और लोगों को होशियार करे।⁴तब जो कोई नरसिंगे की आवाज़ सुने और होशियार न हो, और तलवार आए और उसे क़त्ल करे, तो उसका खून उसी की गर्दन पर होगा।

⁵उसने नरसिंगे की आवाज़ सुनी और होशियार न हुआ, उसका खून उसी पर होगा, हालाँकि अगर वह होशियार होता तो अपनी जान बचाता।⁶लेकिन अगर निगहबान तलवार को आते देखे और नरसिंगा न फूँके, और लोग होशियार न किए जाएँ, और तलवार आए और उनके बीच से किसी को ले जाए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में हलाक हुआ लेकिन मैं निगहबान से उसके खून का सवाल-ओ-जवाब करूँगा।

⁷~"फिर तू ऐ आदमज़ाद, इसलिए कि मैंने तुझे बनी-इसाईल का निगहबान मुकर्रर किया, मेरे मुँह का कलाम सुन रख और मेरी तरफ़ से उनको होशियार कर।

⁸जब मैं शरीर से कहूँ, ऐ शरीर, तू यक़ीनन मरेगा, उस वक़्त अगर तू शरीर से न कहे और उसे उसके चाल चलन से आगाह न करे, तो वह शरीर तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन मैं तुझे से उसके खून की सवाल-ओ-जवाब करूँगा।⁹लेकिन अगर तू उस शरीर को जताए कि वह अपनी चाल चलन से बाज़ आए और वह अपनी चाल चलन से बाज़ न आए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन तूने अपनी जान बचा ली।

¹⁰"इसलिए ऐ आदमज़ाद, तू बनी इसाईल से कह तुम यूँ कहते हो कि हक़ीक़त में हमारी ख़ताएँ और हमारे गुनाह हम पर हैं और हम उनमें घुलते रहते हैं पस हम क्यूँकर ज़िन्दा रहेंगे।¹¹तू उनसे कह खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम शरीर के मरने में मुझे कुछ ख़ुशी नहीं बल्कि इसमें है कि शरीर अपनी राह से बाज़ आए और ज़िन्दा रहे ऐ बनी इसाईल ~बाज़ आओ तुम अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ आओ तुम क्यूँ मरोगे।

¹²~"इसलिए ऐ आदमज़ाद, अपनी क़ौम के फ़र्ज़न्दों से यूँ कह, कि सादिक़ की सदाक़त उसकी ख़ताकारी के दिन उसे न बचाएगी, और शरीर की शरारत जब वह उससे बाज़ आए तो उसके गिरने की वजह न होगी; और सादिक़ जब गुनाह करे तो अपनी सदाक़त की वजह से ज़िन्दा न रह सकेगा।¹³जब मैं सादिक़ से कहूँ कि तू यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, अगर वह अपनी सदाक़त पर भरोसा करके बदकिरदारी करे तो उसकी सदाक़त के काम फ़रामोश हो जाएँगे, और वह उस बदकिरदारी की वजह से जो उसने की है मरेगा।

¹⁴और जब शरीर से कहूँ, तू यक़ीनन मरेगा, अगर वह अपने गुनाह से बाज़ आए और वही करे जायज़-ओ-रवा है।¹⁵अगर वह शरीर गिरवी वापस कर दे और जो उसने लूट लिया है वापस दे दे, और ज़िन्दगी के क़ानून पर चले और नारास्ती न करे, तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा वह नहीं मरेगा।¹⁶~जो गुनाह उसने किए हैं उसके खिलाफ़ महसूब न होंगे, उसने वही किया जो जायज़-ओ-रवा है, वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।

¹⁷लेकिन तेरी क़ौम के फ़र्ज़न्द कहते हैं, कि खुदावन्द के चाल चलन रास्त नहीं, "हालाँकि खुद उन ही के चाल चलन नारास्त है।¹⁸~अगर सादिक़ अपनी सदाक़त छोड़कर बदकिरदारी करे, तो वह यक़ीनन उसी की वजह से मरेगा।¹⁹और अगर शरीर अपनी शरारत से बाज़ आए और वही करे जो जायज़-ओ-रवा है, तो उसकी वजह से ज़िन्दा रहेगा।²⁰फिर भी तुम कहते हो कि खुदावन्द के चाल चलन रास्त नहीं है। ऐ बनी-इसाईल मैं तुम में से हर एक की चाल चलन के मुताबिक़ तुम्हारी 'अदालत करूँगा।"

²¹हमारी गुलामी के बारहवें बरस के दसवें महीने की पाँचवीं तारीख़ को, यूँ हुआ कि एक शख्स जो यरुशलीम से भाग निकला था, मेरे पास आया और कहने लगा, कि "शहर मुसखर हो गया।"²²~और शाम के वक़्त उस भगोड़े के पहुँचने से पहले खुदावन्द का हाथ मुझ पर था; और उसने मेरा मुँह खोल दिया। उसने सुबह ~को उसके मेरे पास आने से पहले मेरा मुँह खोल दिया और मैं फिर गूंगा न रहा।

²³तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²⁴~कि "ऐ आदमज़ाद, मुल्क-ए-इसाईल के वीरानों के बाशिन्दे यूँ कहते हैं, कि इब्राहीम एक ही था और वह इस मुल्क का वारिस हुआ, लेकिन हम तो बहुत से हैं; मुल्क हम को मीरास में दिया गया है।"

²⁵इसलिए तू उनसे कह दे, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तुम खून के साथ खाते और अपने बुतों की तरफ़ आँख उठाते हो और खूँरेज़ी करते हो क्या तुम मुल्क के वारिस होगे?²⁶तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते हो, तुम मकरूह काम करते हो और तुम में से हर एक अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करता है; क्या तुम मुल्क के वारिस होगे?

²⁷~तू उनसे यूँ कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात की क़सम वह जो वीरानों में हैं, तलवार से क़त्ल होंगे; और उसे जो खुले मैदान में हैं, दरिन्दों को दूँगा कि निगल जाएँ; और वह जो किलों और गारों में हैं, वबा से मरेंगे।²⁸क्यूँकि मैं इस मुल्क को उजाड़ा और हैरत का ज़रि'अ बनाऊँगा, और इसकी ताक़त का ग़ुरूर जाता रहेगा, और इसाईल के पहाड़ वीरान होंगे यहाँ तक कि कोई उन पर से गुज़र नहीं करेगा।²⁹और जब मैं उनके तमाम मकरूह कामों की वजह से जो उन्होंने किए हैं, मुल्क को वीरान और हैरत का ज़रि'अ बनाऊँगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

³⁰~लेकिन ऐ आदमज़ाद, फ़िलहाल तेरी क़ौम के फ़र्ज़न्द दीवारों के पास और घरों के आस्तानों पर तेरे ज़रिए गुप्तगू करते हैं, और एक दूसरे से कहते हैं, हाँ, हर एक अपने भाई से यूँ कहता है, 'चलो, वह कलाम सुनें जो खुदावन्द की तरफ़ से नाज़िल हुआ है।'³¹वह उम्मत की तरह तेरे पास आते और मेरे लोगों की तरह तेरे आगे बैठते और तेरी बातें सुनते हैं, लेकिन उन लेकिन 'अमल नहीं करते; क्यूँकि वह अपने मुँह से तो बहुत मुहब्बत ज़ाहिर करते हैं, पर उनका दिल लालच पर दौड़ता है।

³²और देख, तू उनके लिए बहुत मरगूब सरोदी की तरह है, जो ख़ुश इल्हान और माहिर साज़ बजाने वाला हो, क्यूँकि वह तेरी बातें सुनते हैं लेकिन उन पर 'अमल नहीं करते।³³और जब यह बातें वजूद में आएँगी (देख, वह जल्द वजूद में आने वाली हैं), तब वह जानेंगे कि उनके बीच एक नबी था।"

Chapter 34

¹और खुदावन्द का कलाम उसपर नाज़िल हुआ | ²~कि "ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के चरवाहों के खिलाफ़ नबुव्वत कर, हॉ नबुव्वत कर और उनसे कह~खुदावन्द खुदा, चरवाहों को यूँ फ़रमाता है: कि इस्राईल के चरवाहों पर अफ़सोस, जो अपना ही पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को मुनासिब नहीं कि भेड़ों को चराएँ? ³तुम चिकनाई खाते और ऊन पहनते हो और जो मोटे हैं उनको ज़बह करते हो, लेकिन गल्ला नहीं चराते।

⁴तुम ने कमज़ोरों को तवानाई और बीमारों की शिफ़ा नहीं दी और टूटे हुए को नहीं बाँधा, और वह जो निकाल दिए गए उनको वापस नहीं लाए और गुमशुदा की तलाश नहीं की, बल्कि ज़बरदस्ती और सख्ती से उन पर हुकूमत की। ⁵और वह तितर-बितर हो गए क्योंकि कोई पासबान न था, और वह तितर बितर होकर मैदान के सब दरिन्दों की खुराक हुए। ⁶मेरी भेड़े तमाम पहाड़ों पर और हर एक ऊँचे टीले पर भटकती फिरती थीं; हॉ, मेरी भेड़े तमाम इस ~ज़मीन पर तितर-बितर हो गई और किसी ने न उनको ढूँढा न उनकी तलाश की।

⁷इसलिए ऐ पासबानो, खुदावन्द का कलाम सुनो: ⁸खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम चूँकि मेरी भेड़े शिकार हो गई; हॉ, मेरी भेड़े हर एक जंगली दरिन्दे की खुराक हुई, क्योंकि कोई पासबान न था और मेरे पासबानों ने मेरी भेड़ों की तलाश न की, बल्कि उन्होंने अपना पेट भरा और मेरी भेड़ों को न चराया।

⁹इसलिए ऐ पासबानो, खुदावन्द का कलाम सुनो ¹⁰खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं चरवाहों का मुखालिफ़ हूँ और अपना गल्ला उनके हाथ से तलब करूँगा और उनको गल्लेबानी से माजूल करूँगा, और चरवाहे आईदा को अपना पेट न भर सकेंगे क्योंकि मैं अपना गल्ला उनके मुँह से छुड़ा लूँगा, ताकि वह उनकी खुराक न हो।

¹¹~"क्योंकि खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: देख, मैं खुद अपनी भेड़ों की तलाश करूँगा और उनको ढूँढ निकालूँगा। ¹²जिस तरह चरवाहा अपने गल्ले की तलाश करता है, जबकि वह अपनी भेड़ों के बीच हो जो तितर बितर हो गई हैं; उसी तरह मैं अपनी भेड़ों को ढूँढूँगा, और उनको हर जगह से जहाँ वह बादल तारीकी के दिन तितर बितर हो गई हैं छुड़ा लाऊँगा। ¹³और मैं उनको सब उम्मतों के बीच से वापस लाऊँगा, और सब मुल्कों में से जमा' करूँगा और उन ही के मुल्क में पहुँचाऊँगा, और इस्राईल के पहाड़ों पर नहरों के किनारे और ज़मीन के तमाम आबाद मकानों में चराऊँगा।

¹⁴और उनको अच्छी चरागाह में चराऊँगा और उनकी आरामगाह इस्राईल के ऊँचे पहाड़ों पर होगी, वहाँ वह 'उम्दा आरामगाह में लेटेंगी और हरी चराहगाह में इस्राईल के पहाड़ों पर चरेंगी। ¹⁵मैं ही अपने गल्ले को चराऊँगा और उनको लिटाऊँगा~खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। ¹⁶मैं गुमशुदा की तलाश करूँगा और खारिज शुदा को वापस लाऊँगा और शिकस्ता को बाँधूँगा और बीमारों को तक्रवियत दूँगा, लेकिन मोटों और ज़बरदस्तों को हलाक करूँगा, मैं उनकी सियासत का खाना खिलाऊँगा।

¹⁷"और तुम्हारे हक़ में खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: ऐ मेरी भेड़ो, देखो, मैं भेड़ बकरियों और मेंढों और बकरों के बीच इम्तियाज़ करके इन्साफ़ करूँगा। ¹⁸क्या तुम को यह हल्की सी बात मा'लूम हुई कि तुम अच्छा सबज़ाज़ार खाजाओ और बाक़ी मान्दा को पाँवों से लताड़ो, और साफ़ पानी में से पिओ और बाक़ी मान्दा को पाँवों से गंदला करो? ¹⁹~और जो तुम ने पाँव से लताड़ा है वह मेरी भेड़ें खाती हैं, और जो तुम ने पाँव से गंदला किया पीती हैं।

²⁰इसलिए खुदावन्द खुदा उनको यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं हॉ मैं, मोटी और दुबली भेड़ों के बीच इन्साफ़ करूँगा। ²¹क्योंकि तुम ने पहलू और कन्धे से धकेला है और तमाम बीमारों को अपने सींगों से रेला है, यहाँ तक कि वह तितर-बितर हुए।

²²इसलिए मैं अपने गल्ले को बचाऊँगा, वह फिर कभी शिकार न होंगे और मैं भेड़ बकरियों के बीच इन्साफ़ करूँगा। ²³और मैं उनके लिए एक चौपान मुक्रर करूँगा और वह उनको चराएगा, या'नी मेरा बन्दा दाऊद, वह उनको चराएगा और वही उनका चौपान होगा। ²⁴और मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँगा और मेरा बन्दा दाऊद उनके बीच फ़रमारवा होगा, मैं खुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है।

²⁵"मैं उनके साथ सुलह का 'अहद बाँधूँगा और सब बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक करूँगा, और वह वीरान में सलामती से रहा करेंगे और जंगलों में सोएँगे।

²⁶और मैं उनको और उन जगहों को जो मेरे पहाड़ के आसपास हैं, बरकत का ज़रि'अ बनाऊँगा; और मैं वक्रत पर मेंह बरसाऊँगा, बरकत की बारिश होगी। ²⁷और मैदान के दरख्त अपना मेवा देंगे और ज़मीन अपनी पैदावार देगी, और वह सलामती के साथ अपने मुल्क में बसेंगे और जब मैं उनके जुए का बन्धन तोड़ूँगा और उनके हाथ से जो उनसे खिदमत करवाते हैं छुड़ाऊँगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

²⁸और वह आगे को क्रौमों का शिकार न होंगे और ज़मीन के दरिन्दे उनको निगल न सकेंगे, बल्कि वह अम्न से बसेंगे और उनको कोई न डराएगा। ²⁹और मैं उनके लिए एक नामवर पौदा खड़ा करूँगा, और वह फिर कभी अपने मुल्क में सूखे से हलाक न होंगे और आगे को क्रौमों का ताना न उठाएँगे।

³⁰और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा उनके साथ हूँ, और वह या'नी बनी-इस्राईल मेरे लोग हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। ³¹और तुम ऐ मेरे भेड़ो मेरी चरागाह की भेड़ो इंसान हो और मैं तुम्हारा खुदा हूँ फ़रमाता है~खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

Chapter 35

¹~और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ कि "ऐ आदमज़ाद, कोह-ए-श'ईर की तरफ़ मुतवज्जिह हो और उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर,² और उससे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, ऐ कोह-ए-श'ईर, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और तुझ पर अपना हाथ चलाऊँगा, और तुझे वीरान और बेचराग़ा करूँगा।

⁴मैं तेरे शहरों को उजाड़ूँगा, और तू वीरान होगा और जानेगा कि खुदावन्द मैं हूँ।⁵चूँकि तू पहले से 'अदावत रखता है, और तूने बनी-इस्राईल को उनकी मुसीबत के दिन उनकी बदकिरदारी के आख़िर में तलवार की धार के हवाले किया है।⁶इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात की क्रसम, मैं तुझे खून के लिए हवाले करूँगा और खून तुझे दौड़ाएगा; चूँकि तूने ख़ुरैज़ी से नफ़रत न रखी, इसलिए खून तेरा पीछा करेगा।

⁷यूँ मैं कोह-ए-श'ईर को वीरान और बेचराग़ा करूँगा, और उसमें से गुज़रने वाले और वापस आने वाले को हलाक करूँगा।⁸और उसके पहाड़ों को उसके मक्कतूलों से भर दूँगा, तलवार के मक्कतूल तेरे टीलों और तेरी वादियों और तेरी तमाम नदियों में गिरेंगे।⁹मैं तुझे हमेशा तक वीरान रखूँगा और तेरी बस्तियाँ फिर आबाद न होंगी, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

¹⁰"चूँकि तूने कहा, कि 'यह दो क़ौमों और यह दो मुल्क मेरे होंगे, और हम उनके मालिक होंगे,' बावजूद यह कि खुदावन्द वहाँ था।¹¹इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम, मैं तेरे क़हर और हसद के मुताबिक़, जो तूने अपनी कीनावरी से उनके खिलाफ़ ज़ाहिर किया, तुझ से सुलूक करूँगा और जब मैं तुझ पर फ़तवा दूँगा तो उनके बीच मशहूर हूँगा।

¹²~"और तू जानेगा कि मैं खुदावन्द ने तेरी तमाम हिक्कारत की बातें, जो तूने इस्राईल के पहाड़ों की मुखालिफ़त में कहीं, कि 'वह वीरान हुए, और हमारे क़ब्ज़े में कर दिए गए कि हम उनको निगल जाएँ,' सुनी हैं।¹³इसी तरह तुम ने मेरे खिलाफ़ अपनी ज़बान से लाफ़ज़नी की और मेरे सामने बकवास की है, जो मैं सुन चुका हूँ।

¹⁴खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब तमाम दुनिया खुशी करेगी, मैं तुझे वीरान करूँगा।¹⁵जिस तरह तूने बनी इस्राईल की मीरास पर, इसलिए कि वह वीरान थी, खुशी की उसी तरह मैं भी तुझ से करूँगा, ऐ कोह-ए-श'ईर, तू और तमाम अदोम बिल्कुल वीरान होंगे, और लोग जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

Chapter 36

¹-कि "ऐ आदमज़ाद! इस्राईल के पहाड़ों से नबुव्वत कर और कह, ऐ इस्राईल के पहाड़ो, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो।²खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि दुश्मन ने तुम पर, 'अहा हा!' कहा और यह कि, 'वह ऊँचे ऊँचे पुराने मक़ाम हमारे ही हो गए।'³इसलिए नबुव्वत कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि इस वजह से, हाँ, इसी वजह से कि उन्होंने तुम को वीरान किया और हर तरफ़ से तुम को निगल गए, ताकि जो क़ौमों में से बाक़ी हैं तुम्हारे मालिक हों और तुम्हारे हक़ में बकवासियों ने ज़बान खोली है, और तुम लोगों में बदनाम हुए हो।

⁴इसलिए ऐ इस्राईल के पहाड़ो, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो, खुदावन्द खुदा पहाड़ों और टीलों नालों और वादियों और उजाड़ वीरानों से और मत्रुक शहरों से जो आसपास की क़ौमों के बाक़ी लोगों के लिए लूट और मज़ाक़ की जगह हुए हैं, यूँ फ़रमाता है।⁵हाँ, इसी लिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि यक़ीनन मैंने क़ौम के बाक़ी लोगों का और तमाम अदोम का मुखालिफ़ होकर जिन्होंने अपने पूरे दिल की खुशी से और क़ल्बी 'अदावत से अपने आपको मेरी सर-ज़मीन के मालिक ठहराया ताकि उनके लिए ग़नीमत हो, अपनी ग़ैरत के जोश में फ़रमाया है।⁶इसलिए तू इस्राईल के मुल्क के बारे में नबुव्वत कर और पहाड़ों और टीलों और नालों और वादियों से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैंने अपनी ग़ैरत और अपने क्रहर में कलाम किया, कि इसलिए कि तुम ने क़ौमों की मलामत उठाई है।

⁷तब खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैंने क़सम खाई है" कि यक़ीनन तुम्हारे आसपास की क़ौम खुद ही मलामत उठाएँगी।

⁸"लेकिन तुम ऐ इस्राईल के पहाड़ों, अपनी शाख़ें निकालोगे और मेरी उम्मत इस्राईल के लिए फल लाओगे, क्योंकि वह जल्द आने वाले हैं।⁹-इसलिए देखो, मैं तुम्हारी तरफ़ हूँ और तुम पर तवज्जुह करूँगा, और तुम जोते और बोए जाओगे;

¹⁰और मैं आदमियों को, हाँ, इस्राईल के तमाम घराने को, तुम पर बहुत बढ़ाऊँगा और शहर आबाद होंगे और खंडर फिर ता'मीर किए जाएँगे।¹¹और मैं तुम पर इन्सान-ओ-हैवान की फ़िरावानी करूँगा और वह बहुत होंगे, और फैलेंगे और मैं तुम को ऐसे आबाद करूँगा जैसे तुम पहले थे, और तुम पर तुम्हारी शुरू के दिनों से ज़्यादा एहसान करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।¹²-हाँ, मैं ऐसा करूँगा कि आदमी या 'नी मेरे इस्राइली लोग तुम पर चलें फिरेंगे, और तुम्हारे मालिक होंगे और तुम उनकी मीरास होंगे और फिर उनको बेऔलाद न करोगे।

¹³खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि वह तुझ से कहते हैं, 'ऐ ज़मीन, तू इन्सान को निगलती है और तूने अपनी क़ौमों को बेऔलाद किया।'¹⁴इसलिए आइन्दा न तू इन्सान को निगलेगी न अपनी क़ौमों को बेऔलाद करेगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।¹⁵और मैं ऐसा करूँगा कि लोग तुझ पर कभी दीगर क़ौम का ता'ना न सुनेंगे, और तू क़ौमों की मलामत न उठाएगी और फिर अपने लोगों की ग़लती का ज़रि'अ न होगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

¹⁶और खुदावन्द का कलाम मुझे पर नाज़िल हुआ:¹⁷-कि "ऐ आदमज़ाद, जब बनी इस्राईल अपने मुल्क में बसते थे उन्होंने अपनी चाल चलन और अपने 'आमाल से उसको नापाक किया उनके चाल चलन मेरे नज़दीक 'औरत की नापाकी की हालत की तरह थी।¹⁸-इसलिए मैंने उस ख़ूँरेज़ी की वजह से जो उन्होंने उस मुल्क में की थी, और उन बुतों की वजह से जिनसे उन्होंने उसे नापाक किया था, अपना क्रहर उन पर नाज़िल किया।

¹⁹और मैंने उनको क़ौमों में तितर बितर किया, और वह मुल्कों में तितर-बितर हो गए, और उनके चाल चलन और उनके 'आमाल के मुताबिक़ मैंने उनकी 'अदालत की।²⁰और जब वह दीगर क़ौमों के बीच जहाँ-जहाँ वह गए थे पहुँचे, तो उन्होंने मेरे मुक़द्दस नाम को नापाक किया, क्योंकि लोग उनकी बारे में कहते थे, 'यह खुदावन्द के लोग हैं, और उसके मुल्क से निकल आए हैं।'²¹लेकिन मुझे अपने पाक नाम पर, जिसको बनी-इस्राईल ने उन क़ौमों के बीच जहाँ वह गए थे नापाक किया, अफ़सोस हुआ।

²²"इसलिए तू बनी-इस्राईल से कह दे, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: ऐ बनी इस्राईल तुम्हारी खातिर नहीं बल्कि अपने पाक नाम की खातिर, जिसको तुम ने उन क़ौमों के बीच जहाँ तुम गए थे नापाक किया, यह करता हूँ।²³मैं अपने बुजुर्ग़ नाम की, जो क़ौमों के बीच नापाक किया गया, जिसको तुम ने उनके बीच नापाक किया था तक्रदीस करूँगा और जब उनकी आँखों के सामने तुम से मेरी तक्रदीस होगी तब वह क़ौम जानेंगी कि मैं खुदावन्द हूँ, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

²⁴क्योंकि मैं तुम को उन क़ौमों में से निकाल लूँगा और तमाम मुल्कों में से जमा'-करूँगा, और तुम को तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा।²⁵-तब तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा और तुम पाक साफ़ होगे, और मैं तुम को तुम्हारी तमाम गन्दगी से और तुम्हारे सब बुतों से पाक करूँगा।

²⁶और मैं तुम को नया दिल बख़्शूँगा और नई रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम्हारे जिस्म में से शख़्त दिल को निकाल डालूँगा और गोश्त का दिल तुम को 'इनायत करूँगा।²⁷और मैं अपनी रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम सेअपने क़ानून की पैरवी कराऊँगा और तुम मेरे हुक्मों पर 'अमल करोगे और उनको बजा लाओगे।²⁸तुम उस मुल्क में जो मैंने तुम्हारे बाप-दादा को दिया सुकूनत करोगे, और तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा।

²⁹और मैं तुम को तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा और अनाज मंगवाऊँगा और इफ़रात बख़्शूँगा और तुम पर सूखा न भेजूँगा।³⁰और मैं दरख़्त के फलों में और खेत के हासिल में अफ़ज़ािश बख़्शूँगा, यहाँ तक कि तुम आइंदा को क़ौमों के बीच क्रहत की वजह से मलामत न उठाओगे।³¹तब तुम अपनी बुरी चाल चलन और बद'आमाली को याद करोगे और अपनी बदकिरदारी व मकरूहात-की वजह से अपनी नज़र में धिनीने ठहरोगे।

³²मैं यह तुम्हारी खातिर नहीं करता हूँ, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, यह तुम को याद रहे। तुम अपनी राहों की वजह से ख़िजालत उठाओ और शर्मिन्दा हो, ऐ बनी इस्राईल।³³"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जिस दिन मैं तुम को तुम्हारी तमाम बदकिरदारी से पाक करूँगा, उसी दिन तुम को तुम्हारे शहरों में बसाऊँगा और तुम्हारे खण्डर ता'मीर हो जाएँगे।³⁴और वह वीरान ज़मीन जो तमाम राह गुज़रों की नज़र में वीरान पड़ी थी जोती जाएगी।

³⁵और वह कहेंगे, कि 'ये सरज़मीन जो ख़राब पड़ी थी, बाग़-ए-'अदन की तरह हो गई, और उजाड़ और वीरान और ख़राब शहर मुहकम और आबाद हो गए।

³⁶तब वह क़ौमों जो तुम्हारे आसपास बाक़ी हैं, जानेंगी कि मैं खुदावन्द ने उजाड़ मकानों को ता'मीर किया है और वीराने को बाग़ बनाया है; मैं खुदावन्द ने फ़रमाया है और मैं ही कर दिखाऊँगा।

³⁷"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि बनी-इस्राईल मुझ से यह दरख्वास्त भी कर सकेंगे, और मैं उनके लिए ऐसा करूँगा कि उनके लोगों को भेड़-बकरियों की तरह फ़िरावान करूँ।³⁸ जैसा पाक गल्ला था और जिस तरह यरुशलीम का गल्ला उसकी मुक़र्ररा 'ईदों में था, उसी तरह उजाड़ शहर आदमियों के गोलों से मा'मूर होंगे, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

Chapter 37

¹~खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे अपनी रूह में उठा लिया और उस वादी में जो हड्डियों से पुर थी, मुझे उतार दिया।²और मुझे उनके आसपास चारों तरफ़ फिराया, और देख, वह वादी के मैदान में ब-कसरत और बहुत सूखी थी।³और उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, क्या यह हड्डियाँ ज़िन्दा हो सकती हैं मैंने जवाब दिया, कि "ऐ खुदावन्द खुदा, तू ही जानता है।"

⁴फिर उसने मुझे फ़रमाया, "तू इन हड्डियों पर नबुव्वत कर और इनसे कह, ऐ सूखी हड्डियों, खुदावन्द का कलाम सुनो।⁵खुदावन्द खुदा इन हड्डियों को यूँ फ़रमाता है: कि मैं तुम्हारे अन्दर रूह डालूँगा और तुम ज़िन्दा हो जाओगी।⁶और तुम पर नसें फैलाऊँगा और गोशत चढ़ाऊँगा, और तुम को चमड़ा पहनाऊँगा और तुम में दम फूँकूँगा, और तुम ज़िन्दा होगी और जानोगी कि मैं खुदावन्द हूँ।"

⁷तब मैंने हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत की, और जब मैं नबुव्वत कर रहा था तो एक शोर हुआ, और देख, ज़लज़ला आया और हड्डियाँ आपस में मिल गई, हर एक हड्डी अपनी हड्डी से।⁸और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि नसें और गोशत उन पर चढ़ आए, और उन पर चमड़े की पोशिश हो गई, लेकिन उनमें दम न था।

⁹तब उसने मुझे फ़रमाया, "नबुव्वत कर, तू हवा से नबुव्वत कर ऐ आदमज़ाद, और हवा से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ दम, तू चारों तरफ़ से आ और इन मक्कतूलों पर फूँक कि ज़िन्दा हो जाएँ।"¹⁰~इसलिए मैंने हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत की और उनमें दम आया, और वह ज़िन्दा होकर अपने पाँव पर खड़ी हुई; एक बहुत बड़ा लश्कर !

¹¹तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ तमाम बनी-इसाईल हैं; देख, यह कहते हैं, 'हमारी हड्डियाँ सूख गई और हमारी उम्मीद जाती रही, हम तो बिल्कुल फ़ना हो गए।'¹²इसलिए तू नबुव्वत कर और इनसे कह खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ मेरे ~लोगो, देखो मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोलूँगा और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा और इसाईल के मुल्क में लाऊँगा ।

¹³और ऐ मेरे लोगों जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोलूँगा~और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा, तब तुम जानोगे कि खुदावन्द मैं हूँ।¹⁴और मैं अपनी रूह तुम में डालूँगा और तुम ज़िन्दा हो जाओगे, और मैं तुम को तुम्हारे मुल्क में बसाऊँगा, तब तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने फ़रमाया और पूरा किया, खुदावन्द फ़रमाता है।"

¹⁵~फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁶कि "ऐ आदमज़ाद, एक छड़ी ले और उस पर लिख, 'यहूदाह और उसके~रफ़ीक़ बनी-इसाईल के लिए; फिर दूसरी छड़ी ले और उस पर यह लिख, 'इफ़्राईम की छड़ी यूसुफ़ और उसके रफ़ीक़ तमाम बनी इसाईल के लिए।'¹⁷और उन दोनों को जोड़ दे कि एक ही छड़ी तेरे लिए हों, और वह तेरे हाथ में एक होंगी।

¹⁸और जब तेरी क़ौम के लोग तुझ से पूछे और कहें, कि "इन कामों से तेरा क्या मतलब है? क्या तू हमें नहीं बताएगा?"¹⁹तो तू उनसे कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं यूसुफ़ की छड़ी को जो इफ़्राईम ~के हाथ में है, और उसके रफ़ीकों को जो इसाईल के क़बीले हैं, लूँगा और यहूदाह की छड़ी के साथ जोड़ दूँगा और उनको एक ही छड़ी बना दूँगा और वह मेरे हाथ में एक होंगी।²⁰और वह छड़ियाँ जिन पर तू लिखता है, उनकी आँखों के सामने तेरे हाथ में होंगी।

²¹और तू उनसे कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं बनी इसाईल को क़ौमों के बीच से जहाँ जहाँ वह गए हैं निकाल लाऊँगा और हर तरफ़ से उनको इकट्ठा करूँगा और उनको उनके मुल्क में लाऊँगा।²²और मैं उनको उस मुल्क में इसाईल के पहाड़ों पर एक ही क़ौम बनाऊँगा, और उन सब पर एक ही बादशाह होगा, और वह आगे को न दो क़ौमों होंगे और न दो मम्लकतों में तक्रसीम किए जाएँगे।²³और वह फिर अपने बुतों से और अपनी नफ़रत अन्गेज़ चीज़ों से और अपनी खताकारी से, अपने आपको नापाक न करेंगे बल्कि मैं उनको उनके तमाम घरों से, जहाँ उन्होंने गुनाह किया है, छुड़ाऊँगा और उनको पाक करूँगा और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा।

²⁴और मेरा बन्दा दाऊद उनका बादशाह होगा और उन सबका एक ही चरवाहा होगा, और वह मेरे हुक्मों पर चलेंगे और मेरे क़ानून को मानकर उन पर 'अमल करेंगे।'²⁵और वह उस मुल्क में जो मैंने अपने बन्दा या'क़ूब को दिया जिसमें तुम्हारे बाप दादा बसते थे, बसेंगे और वह और उनकी औलाद और उनकी औलाद की औलाद हमेशा तक उसमें सुकूनत करेंगे और मेरा बन्दा दाऊद हमेशा के लिए उनका फ़रमारवा होगा ।

²⁶~और मैं उनके साथ सलामती का 'अहद बाँधूँगा जो उनके साथ हमेशा का 'अहद होगा, और मैं उनको बसाऊँगा और फिरावानी बख़्शूँगा और उनके बीच अपने हैकल को हमेशा के लिए क़ायम करूँगा।²⁷मेरा खेमा भी उनके साथ होगा, मैं उनका खुदा हूँगा और वह मेरे लोग होंगे।²⁸और जब मेरा हैकल हमेशा के लिए उनके बीच रहेगा तो क़ौमों जानेंगी कि मैं खुदावन्द इसाईल को पाक करता हूँ ।

Chapter 38

¹और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:²कि "ऐ आदमज़ाद, जूज की तरफ़ जो माज़ूज की सरज़मीन का है, और रोश और मसक और तूबल का फ़रमारवा है, मुतवज्जिह हो और उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर,³और कह, खुदावन्द खुदा यू फ़रमाता है: कि देख, ऐ जूज, रोश और मसक और तूबल के फ़रमारवा, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ।

⁴और मैं तुझे फिरा दूँगा, और तेरे जबड़ों में आँकड़े डालकर तुझे और तेरे तमाम लश्कर और घोड़ों और सवारों को, जो सब के सब मुसल्लह लश्कर हैं, जो फरियाँ और सिपरे लिए हैं और सब के सब तेज़ाज़न हैं खींच निकालूँगा।⁵और उनके साथ फ़ारस और कूश और फूत, जो सब के सब सिपर बरदार और खूदपोश हैं,⁶जुमर और उसका तमाम लश्कर, और उत्तर की दूर अतराफ़ के अहल-ए-तुजर्मा और उनका तमाम लश्कर, या'नी बहुत से लोग जो तेरे साथ हैं।

⁷"तू तैयार हो और अपने लिए तैयारी कर, तू और तेरी तमाम जमा'अत जो तेरे पास जमा' हुई है, और तू उनका रहनुमा ~हो।⁸और बहुत दिनों के बाद तू याद किया जाएगा, और आखिरी बरसों में उस सरज़मीन पर जो तलवार के ग़ल्बे से छुड़ाई गई है और जिसके लोग बहुत सी क्रौमों के बीच से जमा' किए गए हैं, इस्राईल के पहाड़ों पर जो पहले से वीरान थे, चढ़ आएगा; लेकिन वह तमाम क्रौम से आज़ाद है, और वह सब के सब अमन-ओ-अमान से सुकूनत करेंगे।⁹और तू चढ़ाई करेगा और आँधी की तरह आएगा, तू बादल की तरह ज़मीन को छिपाएगा, तू और तेरा तमाम लश्कर और बहुत से लोग तेरे साथ।

¹⁰"खुदावन्द खुदा यू फ़रमाता है: कि उस वक़्त यूँ होगा कि बहुत से ख़याल तेरे दिल में आएँगे और तू एक बुरा मंसूबा बाँधेगा,¹¹और तू कहेगा, कि 'मैं देहात की सरज़मीन पर हमला करूँगा, मैं उन पर हमला करूँगा जो राहत-ओ-आराम से बसते हैं; जिनकी न फ़सील है और न अड़बंगे और न फाटक हैं।'¹²ताकि तू लूटे और माल को छीन ले, और उन वीरानों पर जो अब आबाद हैं, और उन लोगों पर जो तमाम क्रौमों में से जमा' हुए हैं, जो मवेशी और माल के मालिक हैं और ज़मीन की नाफ़ पर बसते हैं, अपना हाथ चलाए।

¹³सबा और ददान और तरसीस के सौदागर और उनके तमाम जवान शेर-ए-बबर तुझ से पूछेंगे, 'क्या तू ग़ारत करने आया है? क्या तूने अपना गोल इसलिये जमा' किया है कि माल छीन ले, और चाँदी सोना लूटे और मवेशी और माल ले जाए और बड़ी ग़नीमत हासिल करे।'

¹⁴इसलिये, ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और जूज से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब मेरी उम्मत इस्राईल, अमन से बसेगी क्या तुझे ख़बर न होगी।

¹⁵और तू अपनी जगह से उत्तर की दूर अतराफ़ से आएगा, तू और बहुत से लोग तेरे साथ, जो सब के सब घोड़ों पर सवार होंगे एक बड़ी फ़ौज और भारी लश्कर।

¹⁶तू मेरी उम्मत इस्राईल के सामने को निकलेगा और ज़मीन को बादल की तरह छिपा लेगा; यह आखिरी दिनों में होगा और मैं तुझे अपनी सरज़मीन पर चढ़ा लाऊँगा, ताकि क्रौमों मुझे जाने जिस वक़्त मैं ऐ जूज उनकी आँखों के सामने तुझसे अपनी तकदीस कराऊँ

¹⁷"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या मैं वही नहीं जिसके बारे में मैंने पहले ज़माने में अपने खिदमत गुज़ार इस्राइली नबियों के ज़रिए', जिन्होंने उन दिनों में सालों साल तक नबुव्वत की फ़रमाया था कि मैं तुझे उन पर चढ़ा लाऊँगा?¹⁸और यूँ होगा कि जब जूज इस्राईल की मम्लुकत पर चढ़ाई करेगा तो मेरा क्रहर मेरे चेहरे से नुमाया होगा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁹क्योंकि मैंने अपनी ग़ैरत और आतिशी क्रहर में फ़रमाया कि यक़ीनन उस रोज़ इस्राईल की सरज़मीन में सख़्त ज़लज़ला आएगा।²⁰~ यहाँ तक कि समन्दर की मछलियाँ और आसमान के परिन्दे और मैदान के चरिन्दे, और सब कीड़े मकौड़े जो ज़मीन पर रेंगते फिरते हैं और तमाम इन्सान जो इस ज़मीन पर हैं, मेरे सामने थरथराएँगे और पहाड़ गिर पड़ेंगे और किनारे बैठ जायेंगे और हर एक दीवार ज़मीन पर गिर पड़ेगी।

²¹और मैं अपने सब पहाड़ों से उस पर तलवार तलब करूँगा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, और हर एक इन्सान की तलवार उसके भाई पर चलेगी।²²और मैं वबा भेजकर और खूँरेज़ी करके उसे सज़ा दूँगा, और उस पर और उसके लश्करों पर और उन बहुत से लोगों पर जो उसके साथ हैं शिद्दत का मेंह और बड़े- बड़े -ओले और आग और गन्धक बरसाऊँगा।²³और अपनी बुजुर्गी और अपनी तकदीस कराऊँगा, और बहुत सी क्रौमों की नज़रों में मशहूर होंगे और वह जानेगे कि~खुदावन्द मैं हूँ।

Chapter 39

¹इसलिए ऐ आदमज़ाद, तू जूज के खिलाफ़ नबुव्वत कर और कह, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: देख, ऐ जूज, रोश और मसक और तूबल के फ़रमारवा, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ।² और मैं तुझे फिरा दूँगा और तुझे लिए फिरूँगा और उत्तर की दूर 'अतराफ़ से चढ़ा लाऊँगा और तुझे इसाईल के पहाड़ों पर पहुँचाऊँगा।³ और तेरी कमान तेरे बाएँ हाथ से छुड़ा दूँगा और तेरे तीर तेरे दहने हाथ से गिरा दूँगा।

⁴तू इसाईल के पहाड़ों पर अपने सब लश्कर और हिमायतियों के साथ गिर जाएगा, और मैं तुझे हर क्रिस्म के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों को दूँगा कि खा जाएँ।⁵ तू खुले मैदान में गिरेगा, क्योंकि मैंने ही कहा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।⁶ और मैं माजूज पर और उन पर जो समन्दरी मुल्कों में अमन से सुकूनत करते हैं, आग भेजूँगा और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

⁷और मैं अपने मुकद्दस नाम को अपनी उम्मत इसाईल में ज़ाहिर करूँगा, और फिर अपने मुकद्दस नाम की बेहुरमती न होने दूँगा; और क्रौमे जानेंगी कि मैं खुदावन्द इसाईल का कुददूस हूँ।⁸ देख, वह पहुँचा और वजूद में आया, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है; यह वही दिन है जिसके ज़रिए मैंने फ़रमाया था।

⁹तब इसाईल के शहरों के बसने वाले निकलेंगे और आग लगाकर हथियारों को जलाएँगे, या'नी सिपरों और फरियों को, कमानों और तीरों को, और भालों और बर्छियों को, और वह सात बरस तक उनको जलाते रहेंगे।¹⁰ यहाँ तक कि न वह मैदानों से लकड़ी लाएँगे और न जंगलों से काटेंगे क्योंकि वह हथियार ही जलाएँगे, और वह अपने लूटने वालों को लूटेंगे और अपने गारत करने वालों को गारत करेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹¹~"और उसी दिन यूँ होगा कि मैं वहाँ इसाईल में जूज को एक क्रब्रिस्तान दूँगा, या'नी रहगुज़रों की वादी जो समन्दर के पूरब में वहाँ जूज को और उसकी तमाम जमियत को दफ़न करेंगे, और जमियत-ए-जूज की वादी उसका नाम रखेंगे।

¹²और सात महीनों तक बनी इसाईल उनको दफ़न करते रहेंगे ताकि मुल्क को साफ़ करें।¹³ हाँ, उस मुल्क के सब लोग उनको दफ़न करेंगे; और यह उनके लिए उनका भी नाम ~होगा जिस रोज़ मेरी बड़ाई होगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

¹⁴और वह चन्द आदमियों को चुन लेंगे जो इस काम में हमेशा मशगूल रहेंगे, और वह ज़मीन पर से गुज़रते हुए रहगुज़रों की मदद से, उनको जो सतह-ए-ज़मीन पर पड़े रह गए हों, दफ़न करेंगे ताकि उसे साफ़ करें, पूरे सात महीनों के बाद तलाश करेंगे।¹⁵ और जब वह मुल्क में से गुज़रें और उनमें से कोई किसी आदमी की हड्डी देखे, तो उसके पास एक निशान खड़ा करेगा, जब तक दफ़न करने वाले जमियत-ए-जूज की वादी में उसे दफ़न न करें।¹⁶ और शहर भी ज'मियत कहलाएगा। यूँ वह ज़मीन को पाक करेंगे।

¹⁷"और ऐ आदमज़ाद, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि हर क्रिस्म के परिन्दे और मैदान के हर एक जानवर से कह, जमा' होकर आओ, मेरे उस ज़बीहे पर जिसे मैं तुम्हारे लिए ज़बह करता हूँ; हाँ, इसाईल के पहाड़ों पर एक बड़े ज़बीहे पर हर तरफ़ से जमा' हो, ताकि तुम गोशत खाओ और खून पियो।¹⁸ ~तुम बहादुरों का गोशत खाओगे और ज़मीन के 'उमरा का खून पिओगे, हाँ, मेंढों, बरों, बकरों और बैलों का वह सब के सब बसन के फ़र्बा हैं।

¹⁹और तुम मेरे ज़बीहे की जिसे मैंने तुम्हारे लिए ज़बह किया यहाँ तक खाओगे कि सेर हो जाओगे, और इतना खून पिओगे कि मस्त हो जाओगे।²⁰ और तुम मेरे दस्तरख़वान पर घोड़ों और सवारों से, और बहादुरों और तमाम जंगीमदों से सेर होगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

²¹और मैं क्रौमों के बीच अपनी बुजुर्गी ज़ाहिर करूँगा और तमाम क्रौमों मेरी सज़ा को जो मैंने दी और मेरे हाथ को जो मैंने उन पर रखवा देखेंगी।²² और बनी-इसाईल जानेंगे कि उस दिन से लेकर आगे को मैं ही खुदावन्द उनका खुदा हूँ।

²³और क्रौमों जानेंगी कि बनी-इसाईल अपनी बदकिरदारी की वजह से गुलामी में गए, चूँकि वह मुझ से बागी हुए, इसलिए मैंने उनसे मुँह छिपाया; और उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दिया, और वह सब के सब तलवार से क़त्ल हुए।²⁴ उनकी नापाकी और खताकारी के मुताबिक़, मैंने उनसे सुलूक किया और उनसे अपना मुँह छिपाया।

²⁵"लेकिन खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि अब मैं या'क़ूब की गुलामी को खत्म करूँगा, और तमाम बनी इसाईल पर रहम करूँगा और अपने पाक नाम के लिए ग़य्यूर हूँगा।²⁶ और वह अपनी रुस्वाई और तमाम खताकारी, जिससे वह मेरे गुनहगार हुए बर्दाश्त करेंगे; जब वह अपनी सरज़मीन में अमन से क़याम करेंगे, तो कोई उनको न डराएगा।²⁷ जब मैं उनकी उम्मतों में से वापस लाऊँगा, और उनके दुश्मनों के मुल्कों से जमा' करूँगा, और बहुत सी क्रौमों की नज़रों में उनके बीच मेरी तक्रदीस होगी।

²⁸तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ, इसलिए कि मैंने उनको क्रौम के बीच गुलामी में भेजा और मैं ही ने उनको उनके मुल्क में जमा' किया और उनमें से एक को भी वहाँ न छोड़ा।²⁹ और मैं फिर कभी उनसे मुँह न छिपाऊँगा, क्योंकि मैंने अपनी रूह बनी-इसाईल पर नाज़िल की है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

Chapter 40

¹~हमारी गुलामी के पच्चीसवें बरस के शुरू' में और महीने की दसवीं तारीख को, जो शहर की तस्खीर का चौदहवाँ साल था, उसी दिन खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और वह मुझे वहाँ ले गया।²वह मुझे खुदा की रोयतों में इस्राईल के मुल्क में ले गया और उसने मुझे एक बहुत बुलन्द पहाड़ पर उतारा, और उसी पर दक्खिन की तरफ़ जैसे एक शहर का सा नक्शा था।

³जब वह मुझे वहाँ ले गया तो क्या देखता हूँ कि एक शख्स है जिसकी झलक पीतल के जैसी है, और वह सन की डोरी और पैमाइश का सरकण्डा हाथ में लिए फाटक पर खड़ा है।⁴और उस शख्स ने मुझे कहा, कि "ऐ आदमज़ाद, अपनी आँखों से देख और कानों से सुन, और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँ उस सब पर खूब गौर कर, क्योंकि तू इसी लिए यहाँ पहुँचाया गया है कि मैं यह सब कुछ तुझे दिखाऊँ; इसलिए जो कुछ तू देखता है, बनी इस्राईल से बयान कर।"

⁵और क्या देखता हूँ कि घर के चारों तरफ़ दीवार है, और उस शख्स के हाथ में पैमाइश का सरकण्डा है, छः हाथ लम्बा और हर एक हाथ पूरे हाथ से चार उँगल बड़ा था; इसलिए उसने उस दीवार की चौड़ाई नापी, वह एक सरकण्डा हुई और ऊँचाई एक सरकण्डा।⁶तब वह पूरब रूया फाटक पर आया, और उसकी सीढ़ी पर चढ़ा और उस फाटक के आस्ताने को नापा, जो एक सरकण्डा चौड़ा था और दूसरे आस्ताने का 'अर्ज़ भी एक सरकण्डा था।⁷~और हर एक कोठरी एक सरकण्डा लम्बी और एक सरकण्डा चौड़ी थी, और कोठरियों के बीच पाँच पाँच हाथ का फ़ासिला था, और फाटक की डयोढ़ी के पास अन्दर की तरफ़ फाटक का आस्ताना एक सरकण्डा था।

⁸और उसने फाटक के आँगन अन्दर से एक सरकण्डा नापी।⁹तब उसने फाटक के~आँगन~आठ हाथ नापी, और उसके सुतून दो हाथ और फाटक~के~आँगन~अन्दर की तरफ़ थी।¹⁰और पूरब रूया फाटक की कोठरियाँ तीन इधर और तीन उधर थीं, यह तीनों पैमाइश में बराबर थीं, और इधर-उधर के सुतूनों का एक ही नाप था।

¹¹और उसने फाटक के दरवाज़े की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई तेरह हाथ नापी।¹²और कोठरियों के आगे का हाशिया हाथ भर इधर और हाथ भर उधर था, और कोठरियाँ छः हाथ इधर और छः हाथ उधर थीं।¹³तब उसने फाटक की एक कोठरी की छत से दूसरी की छत तक पच्चीस हाथ चौड़ा नापा दरवाज़े के सामने का दरवाज़ा।

¹⁴~और उसने सुतून साठ हाथ नापे और सहन के सुतून दरवाज़े के चारों तरफ़ थे।¹⁵और मदखल के फाटक के सामने से~लेकर, अन्दरूनी फाटक~के~आँगन~तक पचास हाथ का फ़ासिला था।¹⁶~और कोठरियों में और उनके सुतूनों में फाटक के अन्दर चारों तरफ़ झरोके थे, वैसे ही~आँगन~के अन्दर भी चारों तरफ़ झरोके थे, और सुतूनों पर खजूर की सूरतें थीं।

¹⁷फिर वह मुझे बाहर के सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ कि कमरे हैं और चारों तरफ़ सहन में फ़र्श लगा था, और उस फ़र्श पर तीस कमरे थे।¹⁸और वह फ़र्श या'नी नीचे का फ़र्श फाटकों के साथ साथ बराबर लगा था।¹⁹~तब उसने उसकी चौड़ाई नीचे के फाटक के सामने से अन्दर के सहन के आगे, पूरब और उत्तर की तरफ़ बाहर बाहर सौ हाथ नापी।

²⁰फिर उसने बाहर के सहन के उत्तर रूया फाटक की लम्बाई और चौड़ाई नापी।²¹और उसकी कोठरियाँ तीन इस तरफ़ और तीन उस तरफ़ और उसके सुतून और मेहराब पहले फाटक के नाप के मुताबिक़ थे; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।

²²और उसके दरीचे और आँगन और खजूर के दरख्त पूरब रूया फाटक के नाप के मुताबिक़ थे, और ऊपर जाने के लिए सात ज़ीने थे; उसके आँगन उनके आगे थी।²³~और अन्दर के सहन का फाटक उत्तर रूया और पूरब रूया फाटकों के सामने था, और उसने फाटक से फाटक तक सौ हाथ नापा।

²⁴और वह मुझे दक्खिन की राह से ले गया, और क्या देखता हूँ कि दक्खिन की तरफ़ एक फाटक है, और उसने उसके सुतूनों को और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ नापा।²⁵और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ उन दरीचों की तरह दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ, चौड़ाई पच्चीस हाथ।

²⁶और उसके ऊपर जाने के लिए सात ज़ीने थे, और उसके आँगन उनके आगे थी और सुतूनों~पर खजूर की सूरतें थीं, एक इस तरफ़ और एक उस तरफ़।²⁷और दक्खिन की तरफ़ अन्दरूनी सहन का फाटक था, और उसने दक्खिन की तरफ़ फाटक से फाटक तक सौ हाथ नापा।

²⁸~और वह दक्खिनी फाटक की रास्ते से मुझे अन्दरूनी सहन में लाया, और इन्हीं नापों के मुताबिक़ उसने दक्खिनी फाटक को नापा।²⁹और उसकी कोठरियों और उसके सुतूनों और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ पाया और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।³⁰और आँगन चारों तरफ़ पच्चीस हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी थी।³¹उसकी आँगन बैरूनी सहन की तरफ़ थी और उसके सुतूनों पर खजूर की सूरतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।

³²और वह मुझे पूरब की तरफ़ अन्दरूनी सहन में लाया और इन्हीं नापों के मुताबिक़ फाटक को पाया।³³और उसकी कोठरियों और सुतूनों और आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ पाया, और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।³⁴और उसका आँगन बैरूनी सहन की तरफ़ था और उसके~सुतूनों पर इधर-उधर खजूर की सूरतें थीं, और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।

³⁵और वह मुझे उत्तरी फाटक की तरफ़ ले गया और इन्हीं नापों के मुताबिक़ उसे पाया।³⁶उसकी कोठरियों और उसके सुतूनों और उसके आँगन को जिनमें चारों तरफ़ दरीचे थे, लम्बाई पचास हाथ चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।³⁷और उसके सुतून बैरूनी सहन की तरफ़ थे, और उसके सुतूनों~पर इधर उधर खजूर की सूरतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।

³⁸~और फाटकों के सुतूनों के पास दरवाज़ेदार हुजरा था, जहाँ सोख्तनी कुर्बानियाँ धोते थे।³⁹और फाटक के आँगन में दो मेज़े इस तरफ़ और दो उस तरफ़ थीं, कि उन पर सोख्तनी कुर्बानी और खता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी ज़बह करें।

⁴⁰और बाहर की तरफ़ उत्तरी फाटक के मदखल के पास दो मेज़ें थीं, और फाटक की डयोढ़ी की दूसरी तरफ़ दो मेज़ें।⁴¹फाटक के पास चार मेज़ें इस तरफ़ और चार उस तरफ़ थीं, या'नी आठ मेज़े जिन पर ज़बह करें।

⁴²सोखतनी कुर्बानी के लिए तराशे हुए पत्थरों की चार मेजें थीं, जो डेढ़ हाथ लम्बी और डेढ़ हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची थीं, जिन पर वह सोखतनी कुर्बानी और ज़बीहे को ज़बह करने के हथियार रखते थे।⁴³ और उसके अन्दर चारों तरफ़ चार उंगल लम्बी अंकड़ियाँ लगी थीं और कुर्बानी का गोश्त मेज़ों पर था।

⁴⁴और अन्दरूनी फाटक से बाहर अन्दरूनी सहन में जो उत्तरी फाटक की जानिब था, गाने वालों के कमरे थे और उनका रुख दक्खिन की तरफ़ था, और एक पूरबी फाटक की जानिब था जिसका रुख उत्तर की तरफ़ था।⁴⁵ और उसने मुझ से कहा, कि "यह कमरा जिसका रुख दक्खिन की तरफ़ है, उन काहिनों के लिए है जो घर की निगहबानी करते हैं;

⁴⁶और वह कमरा जिसका रुख उत्तर की तरफ़ है, उन काहिनों के लिए है जो मज़बह की मुहाफ़िज़त में हाज़िर हैं; यह बनी सदूक़ हैं जो बनी लावी में से खुदावन्द के सामने आते हैं कि उसकी खिदमत करें।"⁴⁷ और उसने सहन को सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा मुरब्बा नापा और मज़बह घर के सामने था।

⁴⁸फिर वह मुझे घर के आँगन में लाया और आँगन को नापा; पाँच हाथ इधर पाँच हाथ उधर और फाटक की चौड़ाई तीन हाथ इस तरफ़ थी और तीन हाथ उस तरफ़।⁴⁹ आँगन की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की और सीढ़ी के ज़ीने जिनसे उस पर चढ़ते थे और सुतूनों ~के पास पील पाए थे, एक इस तरफ़ और एक उस तरफ़।

Chapter 41

¹और वह मुझे हैकल में लाया और सुतूनों को नापा, छः हाथ की चौड़ाई एक तरफ़ और छः हाथ की दूसरी तरफ़, यही खेमे की चौड़ाई थी।²और दरवाज़े की चौड़ाई दस हाथ, और उसका एक पहलू पाँच हाथ का और दूसरा भी पाँच हाथ का था; और उसने उसकी लम्बाई चालीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ नापी।

³तब वह अन्दर गया और दरवाज़े के हर सुतून को दो हाथ नापा, और दरवाज़े को छः हाथ और दरवाज़े की चौड़ाई सात हाथ थी।⁴और उसने हैकल के सामने की लम्बाई को बीस हाथ और चौड़ाई को बीस हाथ नापा, और मुझ से कहा, कि "यही पाक-तरीन मक़ाम है।

⁵और उसने घर की दीवार छः हाथ नापी, और पहलू के हर एक कमरे की चौड़ाई घर के चारों तरफ़ चार हाथ थी।⁶और पहलू के कमरे तीन मंज़िला थे; कमरे के ऊपर कमरा क्रतार में तीस, और वह उस दीवार में जो घर के चारों तरफ़ के कमरों के लिए थी, दाखिल किए गए थे ताकि मज़बूत हों; लेकिन वह घर की दीवार से मिले हुए न थे।⁷और वह पहलू पर के कमरे ऊपर तक चारों तरफ़ ज़्यादा चौड़े होते जाते थे, क्योंकि घर चारों तरफ़ से ऊँचा होता चला जाता था। घर की चौड़ाई ऊपर तक बराबर थी, और ऊपर के कमरों का रास्ता बीच के कमरों के बीच से था।

⁸और मैंने घर के चारों तरफ़ ऊँचा चबूतरा देखा, पहलू के कमरों की बुनियाद छः बड़े हाथ के पूरे सरकण्डे की थी।⁹और पहलू के कमरों की बैरूनी दीवार की चौड़ाई पाँच हाथ थी, और जो जगह बाक़ी बची वह घर के पहलू के कमरों के बीच थी।

¹⁰और कमरों के बीच घर के चारों तरफ़ बीस हाथ का फ़ासला था।¹¹और पहलू के कमरों के दरवाज़े उस ख़ाली जगह की तरफ़ थे, एक दरवाज़ा उत्तर की तरफ़ और एक दक्खिन की तरफ़ और ख़ाली जगह की चौड़ाई चारों तरफ़ पाँच हाथ थी।

¹²और वह 'इमारत जो अलग जगह के सामने पश्चिम की तरफ़ थी उसकी चौड़ाई सत्तर हाथ थी और उस 'इमारत की दीवार चारों तरफ़ पाँच हाथ मोटी और नब्बे हाथ लम्बी थी।¹³इसलिए उसने घर को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग जगह और 'इमारत उसकी दीवारों के साथ सौ हाथ लम्बी थी।¹⁴नेज़, घर के सामने की तरफ़ उस पूरबी जानिब की अलग जगह की चौड़ाई सौ हाथ थी।

¹⁵और अलग जगह के सामने की 'इमारत की लम्बाई को, जो उसके पीछे थी, और उसकी जानिब के बरामदे इस तरफ़ से और उस तरफ़ से, और अन्दर की तरफ़ हैकल को और सहन के आँगनों को उसने सौ हाथ नापा।¹⁶आस्तानों और झरोकों और चारों तरफ़ के बरामदों को जो सहमंज़िला और आस्तानों के सामने थे, और चारों तरफ़ लकड़ी से मढ़े हुए थे, और ज़मीन से खिड़कियों तक और खिड़कियाँ भी मढ़ी हुई थीं।¹⁷दरवाज़े के ऊपर तक और अन्दरूनी घर तक और उसके बाहर भी, चारों तरफ़ की तमाम दीवार तक घर के अन्दर बाहर सब ठीक अन्दाज़े से थे।

¹⁸और करूबी और खजूर बने थे, और एक खजूर दो करूबियों के बीच में था और हर एक करूबी के दो चेहरे थे।¹⁹चुनाँचे एक तरफ़ इन्सान का चेहरा खजूर की तरफ़ था, और दूसरी तरफ़ जवान शेर-ए-बबर का चेहरा भी खजूर की तरफ़ था; घर की चारों तरफ़ इसी तरह का काम था।²⁰ज़मीन से दरवाज़े के ऊपर तक, और हैकल की दीवार पर करूबी और खजूर बने थे।

²¹और हैकल के दरवाज़े के सुतून चहार गोशा थे, और हैकल के सामने की सूरत भी इसी तरह की थी।²²मज़बह लकड़ी का था, उसकी ऊँचाई तीन हाथ और लम्बाई दो हाथ थी, और उसके कोने और उसकी कुर्सी और उसकी दीवारें लकड़ी की थीं, और उसने मुझ से कहा, "यह खुदावन्द के सामने की मेज़ है।"²³और हैकल और हैकल के दो दो दरवाज़े थे।²⁴और दरवाज़ों के दो दो पल्ले थे जो मुड़ सकते थे; दो पल्ले एक दरवाज़े के लिए और दो दूसरे के लिए।

²⁵और उन पर या'नी हैकल के दरवाज़ों पर करूबी और खजूर बने थे, जैसे कि दीवारों पर बने थे और बाहर के आँगन के रुख़ पर तख़्ता बन्दी थी।²⁶और आँगन की अन्दरूनी और बैरूनी जानिब पहलू में झरोके और खजूर के दरख़्त बने थे, और हैकल के पहलू के कमरों और तख़्ता बन्दी की यही सूरत थी।

Chapter 42

¹फिर वह मुझे उत्तरी रास्ते से बैरूनी सहन में ले गया, और उस कोठरी में जो अलग जगह और 'इमारत के सामने उत्तर की तरफ थी ले आया।²सौ हाथ की लम्बाई की जगह के सामने उत्तरी दरवाज़ा था, और उसकी चौड़ाई पचास हाथ थी।³बीस हाथ के सामने जो अन्दरूनी सहन के लिए थे, और बैरूनी सहन के फ़र्श के सामने कोठरियाँ तीन तबकों में एक दूसरे के सामने थीं।

⁴और कोठरियों के सामने अन्दर की तरफ़ दस हाथ चौड़ा रास्ता था, और एक रास्ता एक हाथ का और उनके दरवाज़े उत्तर की तरफ़ थे।⁵ऊपर की कोठरियाँ छोटी थीं, क्योंकि उनके बरामदों ने 'इमारत की निचली और बीच की मंज़िल के सामने इनसे ज़्यादा जगह रोक ली थी।⁶क्योंकि वह तीन दर्जों की थीं, लेकिन उनके सुतून सहन के सुतूनों की तरह न थे; इसलिए वह निचली और बीच मंज़िल से तंग थीं |

⁷और कोठरियों के पास की बैरूनी सहन की तरफ़, कोठरियों के सामने की बैरूनी दीवार पचास हाथ लम्बी थी।⁸क्योंकि बैरूनी सहन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी, और हैकल के सामने सौ हाथ की लम्बाई थी।⁹और उन कोठरियों के नीचे पूरब की तरफ़ वह मदख़ल था, जहाँ से बैरूनी सहन से दाख़िल होते थे।

¹⁰पूरबी सहन की चौड़ी दीवार में और अलग जगह और उस 'इमारत के सामने कोठरियाँ थीं।¹¹और उनके सामने एक ऐसा रास्ता था, जैसा उत्तर की तरफ़ की कोठरियों के सामने था; उनकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी, और उनके तमाम-मख़रज उनकी तरतीब और उनके दरवाज़ों के मुताबिक़ थे।¹²और दक्खिन की तरफ़ की कोठरियों के दरवाज़ों के मुताबिक़ एक दरवाज़ा रास्ते के सिरे पर था, या 'नी सीधी दीवार के रास्ते पर पूरब की तरफ़ जहाँ से उनमें दाख़िल होते थे।

¹³और उसने मुझ से कहा, कि "उत्तरी और दक्खिनी कोठरियाँ जो अलग जगह के मुकाबिल हैं पाक कोठरियाँ हैं जहाँ काहिन जो खुदावन्द के सामने जाते हैं अक्रदस चीज़ें खायेंगे और अक्रदस चीज़ें और नज़र की कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी वहाँ रखेंगे, क्योंकि वह मकान पाक है।¹⁴जब काहिन दाख़िल हों तो वह हैकल से बैरूनी सहन में न जाएँ, बल्कि अपनी खिदमत के लिबास वहीं उतार दें क्योंकि वह पाक हैं, और वह दूसरे कपड़े पहन कर 'आम मकान में जाएँ।"

¹⁵फिर जब वह अन्दरूनी घर को नाप चुका, तो मुझे उस फाटक के रास्ते से लाया जिसका रुख पूरब की तरफ़ है और घर को चारों तरफ़ से नापा।

¹⁶उसने पैमाइश के सरकण्डे से पूरब की तरफ़ चारो तरफ़ पाँच सौ सरकण्डे नापे।¹⁷उसने पैमाइश के सरकण्डे से उत्तर की तरफ़ चारो तरफ़ पाँच सौ सरकण्डे नापे।¹⁸उसने पैमाइश के सरकण्डे से दक्खिन की तरफ़ भी पाँच सौ सरकण्डे नापे।¹⁹उसने पच्छिम की तरफ़ मुड़ कर पैमाइश के सरकण्डे से पाँच सौ सरकण्डे नापे।

²⁰उसने उसको चारों तरफ़ से नापा, उसकी चारों तरफ़ एक दीवार पाँच सौ सरकण्डे लम्बी और पाँच सौ चौड़ी थी, ताकि पाक को 'आम से जुदा करे।

Chapter 43

¹~फिर वह मुझे फाटक पर ले आया, या'नी उस फाटक पर जिसका रुख पूरब की तरफ़ है,²और क्या देखता हूँ कि इस्राईल के खुदा का जलाल पूरब की तरफ़ से आया, और उसकी आवाज़ सैलाब के शोर के जैसी थी, और ज़मीन उसके जलाल से मुनव्वर हो गई।

³और यह उस ख़्वाब की नुमाइश के मुताबिक़ था जो मैंने देखा था, हाँ, उस ख़्वाब के मुताबिक़ जो मैंने उस वक़्त देखा था जब मैं शहर को बर्बाद करने आया था, और यह रोयतें उस ख़्वाब की तरह थीं जो मैंने नहर-ए-किबार के किनारे पर देखा था; तब मैं मुँह के बल गिरा।⁴और खुदावन्द का जलाल उस फाटक की राह से, जिसका रुख पूरब की तरफ़ है हैकल में दाख़िल हुआ।⁵और रूह ने मुझे उठा कर अन्दरूनी सहन में पहुँचा दिया, और क्या देखता हूँ कि हैकल खुदावन्द के जलाल से मा'मूर है।

⁶और मैंने किसी की आवाज़ सुनी, जो हैकल में से मेरे साथ बातें करता था, और एक शख्स मेरे पास खड़ा था।⁷और उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, यह मेरी तख़्तगाह और मेरे पाँव की कुर्सी है जहाँ मैं बनी-इस्राईल के बीच हमेशा तक रहूँगा और बनी इस्राईल और उनके बादशाह फिर कभी मेरे पाक नाम को अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की लाशों से उनके मरने पर नापाक न करेंगे।⁸क्योंकि वह अपने आस्ताने मेरे आस्तानों के पास, और अपनी चौखटें मेरी चौखटों के पास लगाते थे, और मेरे और उनके बीच सिर्फ़ एक दीवार थी; उन्होंने अपने उन घिनौने कामों से जो उन्होंने किए मेरे पाक नाम को नापाक किया, इसलिए मैंने अपने क्रहर में उनको हलाक किया।

⁹अगरचे अब वह अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की लाशें मुझ से दूर कर दें, तो मैं हमेशा तक उनके बीच रहूँगा।

¹⁰~"ऐ आदमज़ाद, तू बनी-इस्राईल को यह घर दिखा, ताकि वह अपनी बदकिरदारी से शर्मिन्दा हो जाएँ और इस नमूने को नापें।¹¹और अगर वह अपने सब कामों से शर्मिन्दा हों, तो उस घर का नक्शा और उसकी तरतीब और उसके मख़ारिज और मदख़ल और उसकी तमाम शक़ल और उसके कुल हुक्मों और उसकी पूरी वज़ह और तमाम क़वानीन उनको दिखा, और उनकी आँखों के सामने उसको लिख, ताकि वह उसका कुल-नक्शा~~और उसके तमाम हुक्मों को मानकर उन पर 'अमल करें।

¹²इस घर का क़ानून यह है कि इसकी तमाम सरहदें पहाड़ की चोटी पर और इसके चारों तरफ़ बहुत पाक होंगी; देख, यही इस घर का क़ानून है।

¹³और हाथ के नाप से मज़बह के यह नाप हैं, और इस हाथ की लम्बाई एक हाथ चार उँगल है। पाया एक हाथ का होगा, और चौड़ाई एक हाथ और उसके चारों तरफ़ बालिशत भर चौड़ा हाशिया, और मज़बह का पाया यही है।¹⁴और ज़मीन पर के इस पाये से लेकर नीचे की कुर्सी तक दो हाथ, और उसकी चौड़ाई एक हाथ और छोटी कुर्सी से बड़ी कुर्सी तक चार हाथ और चौड़ाई एक हाथ।

¹⁵और ऊपर का मज़बह चार हाथ का होगा, और मज़बह के ऊपर चार सींग होंगे।¹⁶और मज़बह बारह हाथ लम्बा होगा और बारह हाथ चौड़ा मुरब्बा"।¹⁷और कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी मुरब्बा' और चारों तरफ़ उसका किनारा आधा हाथ, उसका पाया चारों तरफ़ एक हाथ और उसका ज़ीना पूरब रू होगा।"

¹⁸और उसने मुझ से कहा, ~"ऐ आदमज़ाद, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मज़बह के यह हुक्म उस दिन-जारी होंगे जब वह उसे बनाएँगे, ताकि उस पर सोख़तनी कुर्बानी पेश करें और उस पर खून छिड़कें।¹⁹और तू लावी काहिनों को जो सदूक़ की नसल से हैं, जो मेरी ख़िदमत के लिए मेरे सामने आते हैं, ख़ता की कुर्बानी के लिए बछड़ा देना, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

²⁰और तू उसके खून में से लेना और मज़बह के चारों सींगों पर, उसकी कुर्सी के चारों कोनों पर और उसके चारों तरफ़ के हाशिए पर लगाना; इसी तरह क़फ़ारा देकर उसे पाक-ओ-साफ़ करना।²¹और ख़ता की कुर्बानी के लिए बछड़ा लेना, और वह घर की मुक़रर जगह में हैकल के बाहर जलाया जाएगा।

²²और तू दूसरे दिन एक बे'ऐब बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए पेश करना, और वह मज़बह को क़फ़ारा देकर उसी तरह पाक करेंगे, जिस तरह बछड़े से पाक किया था।²³और जब तू उसे पाक कर चुके तो एक बे'ऐब बछड़ा और ग़ल्ले का एक बे'ऐब मेंढा पेश करना।²⁴और तू उनको खुदावन्द के सामने लाना और काहिन उनपर नमक छिड़कें और उनको सोख़तनी कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करें।

²⁵और तू सात दिन तक हर रोज़ एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए तैयार कर रखना, वह एक बछड़ा और ग़ल्ले का एक मेंढा भी जो बे'ऐब हों तैयार कर रखें।²⁶सात दिन तक वह मज़बह को क़फ़ारा देकर ~पाक-ओ-साफ़ करेंगे और उसको मख़सूस करेंगे।²⁷और जब यह दिन पूरे होंगे, तो यूँ होगा कि आठवें दिन और आइन्दा काहिन तुम्हारी सोख़तनी कुर्बानियों को और तुम्हारी सलामती की कुर्बानियों को मज़बह पर पेश करेंगे, और मैं तुम को कुबूल करूँगा; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

Chapter 44

¹तब वह मुझको हैकल के बैरूनी फाटक के रास्ते से, जिसका रुख पूरब की तरफ़ है वापस लाया, और वह बन्द था।²और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि "यह फाटक बन्द रहेगा और खोला न जाएगा, और कोई इन्सान इससे दाखिल न होगा; चूँकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा इससे दाखिल हुआ है, इसलिए यह बन्द रहेगा।" मगर फ़रमारवाँ-इसलिए कि फ़रमारवाँ है, खुदावन्द के सामने रोटी खाने को इसमें बैठेगा; वह इस फाटक के आस्ताने के रास्ते से अन्दर आएगा, और इसी रास्ते से बाहर जाएगा।"

⁴फिर वह मुझे उत्तरी फाटक के रास्ते से हैकल के सामने लाया, और मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द के जलाल ने खुदावन्द के घर को मा'मूर कर दिया; और मैं मुँह के बल गिरा।⁵और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, ~"ऐ आदमज़ाद, खूब ग़ौर कर और अपनी आँखों से देख, और जो कुछ खुदावन्द के घर के हुक्मों और क़वानीन के ज़रिए' तुझ से कहता हूँ अपने कानों से सुन, और घर के मदखल को और हैकल के सब मखरजों को खयाल में रख।

⁶और तू बनी इस्राईल के बाग़ी लोगों से कहना कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता कि ऐ बनी इस्राईल तुम अपनी मकरूहात को अपने लिए काफ़ी समझो।⁷चुनाँचे जब तुम मेरी रोटी और चर्बी ~और खून अदा करते ~थे, तो दिल के नामख़तून और जिस्म के नामख़तून अजनबीज़ादों को मेरे हैकल में लाए, ताकि वह मेरी हैकल में आकर मेरे घर को नापाक करें, और उन्होंने तुम्हारे तमाम नफ़रतअंगेज़ कामों की वजह से मेरे 'अहद को तोड़ा।

⁸और तुम ने मेरी पाक चीज़ों की हिफ़ाज़त न की, बल्कि तुम ने ग़ैरों को अपनी तरफ़ से मेरी हैकल में निगहबान मुकर्रर किया।⁹खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि उन अजनबीज़ादों में से जो बनी इस्राईल के बीच हैं, कोई दिल का नामख़तून या जिस्म का नामख़तून अजनबीज़ादा मेरी हैकल में दाखिल न होगा।

¹⁰"और बनी लावी जो मुझ से दूर हो गए जब इस्राईल गुमराह हुआ, क्योंकि वह अपने बुतों की पैरवी करके मुझ से गुमराह हुए वह भी अपनी बदकिरदारी की सज़ा पाएँगे।¹¹तोभी वह मेरे हैकल में खादिम होंगे और मेरे घर के फाटकों पर निगहबानी करेंगे और मेरे घर में खिदमत गुज़ारी करेंगे; वह लोगों के लिए सोख़तनी कुर्बानी और ज़बीहा ज़बह करेंगे और उनके सामने उनकी खिदमत के लिए खड़े रहेंगे।¹²चूँकि उन्होंने उनके लिए बुतों की खिदमत की और बनी इस्राईल के लिए बदकिरदारी में ठोकर का ज़रिए' अ हुए, इसलिए मैंने उन पर हाथ चलाया और वह अपनी बदकिरदारी की सज़ा पाएँगे; खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है:

¹³और वह मेरे नज़दीक न आ सकेंगे कि मेरे सामने कहानत करें, न वह मेरी पाक चीज़ों के पास आएँगे या 'नी पाक तरीन चीज़ों के पास; बल्कि वह अपनी रुसवाई उठायेंगे और अपने घिनौने कामों ~की, जो उन्होंने किए हैं सज़ा पाएँगे।¹⁴तोभी मैं उनको हैकल की हिफ़ाज़त के लिए और उसकी तमाम खिदमत के लिए, और उस सब के लिए जो उसमें किया जाएगा, निगहबान मुकर्रर करूँगा।

¹⁵लेकिन लावी काहिन या 'नी बनी सदूक जो मेरी हैकल की हिफ़ाज़त करते थे, जब बनी इस्राईल मुझ से गुमराह हो गए, मेरी खिदमत के लिए मेरे नज़दीक आएँगे और मेरे सामने खड़े रहेंगे ताकि मेरे सामने चर्बी और खून पेश करेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।¹⁶वही मेरे हैकल में दाखिल होंगे और वही खिदमत के लिए मेरी मेज़ के पास आएँगे और मेरे अमानतदार होंगे।

¹⁷और यूँ होगा कि जिस वक़्त वह अन्दरूनी सहन के फाटकों से दाखिल होंगे, तो कतानी लिबास से मुलब्स होंगे, और जब तक अन्दरूनी सहन के फाटकों के बीच और घर में खिदमत करेंगे कोई ऊनी चीज़ न पहनेंगे।¹⁸वह अपने सिरों पर कतानी 'अमामे और कमरों पर कतानी पायजामे पहनेंगे, और जो कुछ पसीने के ज़रिए' हो उसे अपनी कमर पर न बाँधे।

¹⁹और जब बैरूनी सहन में या 'नी 'अवाम के बैरूनी सहन में निकल आएँ, तो अपनी खिदमत की पोशाक उतार कर पाक कमरों में रखेंगे; और दूसरी पोशाक पहनेंगे, ताकि अपने लिबास से 'अवाम की तक्रदीस न करें।

²⁰और वह न सिर मुंडाएँगे और न बाल बढ़ाएँगे, वह सिर्फ़ अपने सिरों के बाल कतराएँगे।²¹और जब अन्दरूनी सहन में दाखिल हों, तो कोई काहिन शराब न पीए।²²और वह बेवा या मुतल्लका से ब्याह न करेंगे, बल्कि बनी-इस्राईल की नसल की कुँवारियों से या उस बेवा से जो किसी काहिन की बेवा हो।

²³और वह मेरे लोगों को पाक और 'आम में फ़र्क बताएँगे, और उनको नजिस और ताहिर में इम्तियाज़ करना सिखाएँगे।²⁴और वह झगड़ों के फ़ैसले के लिए खड़े होंगे, और मेरे हुक्मों के मुताबिक 'अदालत करेंगे, और वह मेरी तमाम मुकर्ररा 'ईदों में मेरी शरी'अत और मेरे क़ानून पर 'अमल करेंगे, और मेरे सबतों को पाक जानेंगे।

²⁵और वह किसी मुर्दे के पास जाने से अपने आपको नापाक न करेंगे; मगर सिर्फ़ बाप या माँ या बेटे या बेटी या भाई या कुँवारी बहन के लिए वह अपने आपको नापाक कर सकते हैं।²⁶और वह उसके पाक होने के बा'द उसके लिए और सात दिन शुमार करेंगे,²⁷और जिस रोज़ वह हैकल के अन्दर अन्दरूनी सहन में खिदमत करने को जाए, तो अपने लिए खता की कुर्बानी पेश करेगा; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

²⁸और उनके लिए एक मीरास होगी मैं ही उनकी मीरास हूँ, और तुम इस्राईल में उनकी कोई मिल्लिकियत न देना - मैं ही उनकी मिल्लिकियत हूँ।²⁹और वह नज़र की कुर्बानी और खता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी खाएँगे, और हर एक चीज़ जो इस्राईल में मख्सूस की जाए उन ही की होगी।

³⁰और सब पहले फलों का पहला और तुम्हारी तमाम चीज़ों की हर एक कुर्बानी काहिन के लिए हों, और तुम अपने पहले गुन्धे आटे से काहिन को देना, ताकि तेरे घर पर बरकत हो।³¹अगर वह जो अपने आप ही मर गया हो या दरिन्दों का फाड़ा हुआ, क्या परिन्द क्या चरिन्द, काहिन उसे न खाएँ।

Chapter 45

¹और जब तुम ज़मीन को पर्ची डाल कर मीरास के लिए तक्रसीम करो तो उसका एक पाक हिस्सा खुदावन्द के सामने हदिया देना उसकी लम्बाई पच्चीस हज़ार और चौड़ाई दस हज़ार होगी वह अपने चारों तरफ़ की तमाम हदों में पाक होगा।²उसमें से एक कित'आ जिसकी लम्बाई पाँच सौ और चौड़ाई पाँच सौ, जो चारों तरफ़ बराबर है हैकल के लिए होगा, और उसके अहाते के लिए चारों तरफ़ पचास पचास हाथ की चौड़ाई होगी।

³और तू इस पैमाइश की पच्चीस हज़ार की लम्बाई और दस हज़ार की चौड़ाई नापेगा और उसमें हैकल होगा जो बहुत पाक है।⁴ज़मीन का यह पाक हिस्सा उन काहिनों के लिए होगा जो हैकल के खादिम हैं, और जो खुदावन्द के सामने खिदमत करने को आते हैं; और यह मक्काम उनके घरों के लिए होगा, और हैकल के लिए पाक जगह होगी।⁵और पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा, बनी लावी हैकल के खादिमों के लिए होगा, ताकि बीस बस्तियों की जगह उनकी मिल्यक़ित हो।

⁶और तुम शहर का हिस्सा पाँच हज़ार चौड़ा और पच्चीस हज़ार लम्बा हैकल के हदिये वाले हिस्से के पास मुक़र्रर करना, यह तमाम बनी इस्राईल के लिए होगा।

⁷और पाक हदिये वाले हिस्से की तरफ़ शहर के हिस्से की दोनों तरफ़, पाक हदिये वाले हिस्से के सामने और शहर के हिस्से के सामने दक्खिनी गोशे ~मगरिब की तरफ़ और पूरबी गोशे पूरब की तरफ़ फ़रमरवाँ के लिए होगा; और लम्बाई में पच्छिमी सरहद से पूरबी सरहद तक उन हिस्सों में से एक के सामने होगा।

⁸इस्राईल के बीच ज़मीन में से उसका यही हिस्सा होगा, और मेरे हाकिम फिर मेरे लोगों पर सितम न करेंगे; और ज़मीन को बनी-इस्राईल में उनके क़बीले के मुताबिक़ तक्रसीम करेंगे।

⁹"खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ इस्राईल के हाकिमों, तुम्हारे लिए यही काफ़ी है; जुल्म और लूट मार को दूर करो, 'अदालत-ओ-सदाक़त को 'अमल में लाओ, और मेरे लोगों पर से अपनी ज़ियादती को ख़त्म करो; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"¹⁰और तुम पूरी तराजू और पूरा एफ़ा और पूरा बत रखखा करो।¹¹एफ़ा और बत एक ही वज़न का हो, ताकि बत में खोमर का दसवाँ हिस्सा हो; और एफ़ा भी खोमर का दसवाँ हिस्सा हो, उसका अन्दाज़ा खोमर के मुताबिक़ हो।

¹²और मिस्क़ाल बीस जीरा हो; और बीस मिस्क़ाल, पच्चीस मिस्क़ाल, पन्द्रह मिस्क़ाल का तुम्हारा माना होगा।

¹³और हदिया जो तुम पेश करोगे फिर यह है: गेहूँ के खोमर से एफ़ा का छटा हिस्सा, और जौ के खोमर से एफ़ा का छटा हिस्सा देना।¹⁴और तेल या'नी तेल के बत के बारे में यह हुक्म है कि तुम कुर में से, जो दस बत का खोमर है, एक बत का दसवाँ हिस्सा देना क्योंकि खोमर में दस बत हैं।¹⁵और गल्ला में से हर दोसो पीछे इस्राईल की सेराब चरागाह का एक बर्र नज़र की कुर्बानी के लिए और सलामती की कुर्बानी के लिए ताकि उनके लिए कफ़फ़ारा हो खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁶मुल्क के सब लोग उस फ़रमारवाँ के लिए जो इस्राईल में है यही हदिया देंगे।¹⁷और फ़रमारवाँ सोख़्तनी कुर्बानियाँ और नज़र की कुर्बानियाँ और तपावन 'अहदों और नए चाँद के वक्त्रों और सबतों और बनी इस्राईल की तमाम मुक़र्रर~'ईदों में देगा वह ख़ता की कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ बनी इस्राईल के~कफ़फ़ाराके लिए तैयार होगा।

¹⁸खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि पहले महीने की पहली तारीख़ को तू एक बे 'ऐब बछड़ा लेना और हैकल को पाक करना'¹⁹और काहिन ख़ता की कुर्बानी के बछड़े का ख़ून लेगा और उसमें से कुछ घर के सुतूनों पर और मज़बह की कुर्सी के चारों कोनों पर और अंदरूनी सहन के दरवाज़े की चौखटों पर लगाएगा।

²⁰और तू महीने की सातवीं तारीख़ को हर एक के लिए जो ख़ता करे और उसके लिए भी जो नादान है ऐसा ही करेगा इसी तरह तुम घर का कफ़फ़ारा ~दिया करोगे।

²¹तुम पहले महीने की चौदवीं तारीख़ को 'ईद फ़सह मनाना जो सात दिन की 'ईद है और उसमें बेख़मीरी रोटी खाई जाएगी।²²और उसी दिन फ़रमारवाँ अपने लिए और तमाम अहल-ए-मम्नुक़त के लिए ख़ता की कुर्बानी के वास्ते एक बछड़ा तैयार कर रखेगा।

²³और 'ईद के सातों दिन में वह हर रोज़ या'नी सात दिन तक सात बे'ऐब बछड़े और सात मेंढे मुहय्या करेगा ताकि खुदावन्द के सामने सोख़्तनी कुर्बानी हों और हर रोज़ ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा।²⁴और हर एक बछड़े के लिए एक एफ़ा भर नज़र की कुर्बानी और हर मेंढे के लिए एक एफ़ा और फ़ी एफ़ा एक हीन तेल तैयार करेगा।

²⁵सातवें महीने की पन्दवीं तारीख़ को भी वह 'ईद के लिए जिस तरह से उसने इन सात दिनों में किया था तैयारी करेगा ख़ता की कुर्बानी और सोख़्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और तेल के मुताबिक़।

Chapter 46

¹~खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि अन्दरूनी सहन का फाटक जिसका रुख पूरब की तरफ़ है, काम काज के छः बन्द रहेगा; लेकिन सबत के दिन खोला जाएगा, और नए चाँद के दिन भी खोला जाएगा।²~और फ़रमारवा बैरूनी फाटक के आस्ताने के रास्ते से दाखिल होगा, फाटक की चौखट के पास खड़ा रहेगा; और काहिन उसकी सोखतनी कुर्बानी और उसकी सलामती की कुर्बानियाँ पेशकरेंगे, वह फाटक के आसताने पर सिज्दा करके बाहर निकलेगा लेकिन फाटक शाम तक बन्द न होगा।

³और मुल्क के लोग उसी फाटक के दरवाज़े पर, सबतों और नए चाँद के वक़्तों में खुदावन्द के सामने सिज्दा किया करेंगे⁴ और सोखतनी कुर्बानी जो फ़रमारवा सबत के दिन खुदावन्द के सामने पेश करेगा, छः बे'ऐब बरें और एक बे'ऐब बर्रा।⁵ और नज़र की कुर्बानी मेंढे के लिए एक एफ़ा और बर्रा के लिए नज़र की कुर्बानी उसकी तौफ़ीक़ के एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल।

⁶~और नए चाँद के रोज़ एक बे'ऐब बछड़ा और छः बरें और एक मेंढा, सब के सब बे'ऐब⁷~और वह नज़र की कुर्बानी तैयार करेगा या'नी बछड़े के लिए एक एफ़ा और मेंढे के लिए एक एफ़ा और बर्रा के लिए उसकी तौफ़ीक़ के मुताबिक़, हर एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल।⁸ जब फ़रमारवा अन्दर आए, फाटक के आस्ताने के रास्ते से दाखिल होगा और उसी रास्ते से निकलेगा।

⁹लेकिन जब मुल्क के लोग मुकर्ररा ईदों के वक़्त खुदावन्द के सामने हाज़िर होंगे, जो उत्तरी फाटक के रास्ते से सिज्दा करने को दाखिल होगा वह दक्खिन फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा, जो दक्खिनी फाटक के रास्ते से अन्दर आता है वह उत्तरी फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा; जिस फाटक के रास्ते से वह अन्दर आया उससे वापस न जाएगा, बल्कि सीधा अपने सामने के फाटक के रास्ते से निकल जाएगा।¹⁰~और जब वह अन्दर जाएँगे तो फ़रमारवा भी उनके बीच होकर जाएगा, और जब वह बाहर निकलेंगे तो सब इकट्ठे जाएँगे।

¹¹और ईदों और मज़हबी तहवारों के वक़्त में नज़र की कुर्बानी बैल के लिए एक एफ़ा, मेंढे के लिए एक एफ़ा होगी, और बर्रा के लिए उसकी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ और हर एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल।¹²~और जब फ़रमारवा रज़ा की कुर्बानी तैयार करे या'नी सोखतनी कुर्बानी या सलामती की कुर्बानी खुदावन्द के सामने रज़ा की कुर्बानी के तौर पर लाए तो वह फाटक जिसका रुख पूरब की तरफ़ उसके लिए खोला जाएगा और सबत के दिन की तरह वह अपनी सोखतनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी पेश करेगा, तब वह बाहर निकल जाएगा और उसके निकलने के बा'द फाटक बन्द किया जाएगा।

¹³तो हर रोज़ खुदावन्द के सामने पहले साल का एक बे'ऐब बर्रा सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करेगा, तू हर सुबह पेश करेगा।¹⁴ और तू उसके साथ हर सुबह नज़र की कुर्बानी पेश करेगा या'नी एफ़ा का छटा हिस्सा, और मैदे के साथ मिलाने को तेल के हीन की एक तिहाई, दाइमी हुक्म के मुताबिक़ हमेशा के लिए खुदावन्द के सामने यह नज़र की कुर्बानी होगी।¹⁵ इसी तरह वह बरें और नज़र की कुर्बानी और तेल हर सुबह हमेशा की~सोखतनी कुर्बानी के लिए अदा करेंगे।

¹⁶~खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि अगर फ़रमारवा अपने बेटों में से किसी को कोई हदिया दे, वह उसकी मीरास उसके बेटों की होगी; वह उनका मौरूसी माल है।¹⁷ लेकिन अगर वह अपने गुलामों में से किसी को अपनी मीरास में से हदिया दे, तो वह आज़ादी के साल तक उसका होगा; उसके बा'द फिर फ़रमारवा का हो जाएगा। मगर उसकी मीरास उसके बेटों के लिए होगी।¹⁸ और फ़रमारवा लोगों की मीरास में से जुल्म करके न लेगा, ताकि उनको उनकी मिलिकयत से बेदख़ल करे; लेकिन वह अपनी ही मिलिकयत में से अपने बेटों को मीरास देगा, ताकि मेरे लोग अपनी अपनी मिलिकयत से जुदा न हो जाएँ।"

¹⁹फिर वह मुझे उस मदख़ल के रास्ते से जो फाटक के पहलू में था, काहिनों के पाक कमरों में जिनका रुख उत्तर की तरफ़ था, लाया और क्या देखता हूँ कि पच्छिम की तरफ़ पीछे कुछ खाली जगह है।²⁰ तब उसने मुझे फ़रमाया, "देख, यह वह जगह है जिसमें काहिन जुर्म की कुर्बानी और खता की कुर्बानी को जोश देंगे और नज़र की कुर्बानी पकायेंगे ताकि उनको ~बैरूनी सहन में ले जाकर लोगों की तक्रदीस करें।"

²¹फिर वह मुझे बैरूनी सहन में लाया और सहन के चारों कोनों की तरफ़ मुझे ले गया, और देखो, सहन के हर कोने में एक और सहन था;²² सहन के चारों कोनों में चालीस चालीस हाथ लम्बे और तीस तीस हाथ चौड़े सहन मुत्तसिल थे, यह चारों कोने वाले एक ही नाप के थे।²³ और उनके चारों तरफ़ या'नी उन चारों के चारों~तरफ़ दीवार थी, और चारों तरफ़ दीवार के नीचे चूल्हे बने थे।²⁴~तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "यह चूल्हे हैं, जहाँ हैकल के खादिम लोगों के ज़बीहे उबालेंगे।"

Chapter 47

¹फिर वह मुझे हैकल के दरवाज़े पर वापस लाया, और क्या देखता हूँ कि हैकल के आस्ताने के नीचे से पानी पूरब की तरफ़ निकल रहा है क्योंकि हैकल का सामना पूरब की तरफ़ था और पानी हैकल के दाहनी तरफ़ के नीचे से मज़बूत के दक्खिनी जानिब से बहता था।²तब वह मुझे उत्तरी फाटक की राह से बाहर लाया, और मुझे उस राह से जिसका रुख पूरब की तरफ़ है, बैरूनी फाटक पर वापस लाया या 'नी पूरब रूया फाटक पर; और क्या देखता हूँ कि दहनी तरफ़ से पानी जारी है।

³और उस मर्द ने जिसके हाथ में पैमाइश की डोरी थी, पूरब की तरफ़ बढ़ कर हज़ार हाथ नापा, और मुझे पानी में से चलाया और पानी टखनों तक था।⁴फिर उसने हज़ार हाथ और नापा और मुझे उसमें से चलाया, और पानी घुटनों तक था; फिर उसने एक हज़ार हाथ और नापा और मुझे उसमें से चलाया, और पानी कमर तक था।⁵फिर उसने एक हज़ार और नापा, और वह ऐसा दरिया था कि मैं उसे पार नहीं कर सकता था, क्योंकि पानी चढ़ कर तैरने के दर्जे को पहुँच गया और ऐसा दरिया बन गया जिसको पार करना मुम्किन न था।

⁶और उसने मुझ से कहा, ~"ऐ आदमज़ाद ! क्या तूने यह देखा?" तब वह मुझे लाया और दरिया के किनारे पर वापस पहुँचाया।⁷और जब मैं वापस आया तो क्या देखता हूँ कि दरिया के किनारे दोनों तरफ़ बहुत से दरख़्त हैं।⁸तब उसने मुझे फ़रमाया कि यह पानी पूरबी 'इलाक़े ~की तरफ़ बहता है, और मैदान में से होकर समन्दर में जा मिलता है, और समन्दर में मिलते ही उसके पानी को शीरीं कर देगा।

⁹और यूँ होगा कि जहाँ कहीं यह दरिया" पहुँचेगा, हर एक चलने फिरने वाला जानदार ज़िन्दा रहेगा और मछलियों की बड़ी कसरत ~होगी क्योंकि यह पानी वहाँ पहुँचा और वह शीरीं हो गया इसलिए जहाँ कहीं यह दरया पहुँचेगा ज़िन्दगी बख़्शेगा।¹⁰और यूँ होगा कि शिकारी उसके किनारे खड़े रहेंगे, 'ऐन जदी से ऐन 'अजलईम तक जाल बिछाने की जगह होगी, उसकी मछलियाँ अपनी अपनी जिन्स के मुताबिक़ बड़े समन्दर की मछलियों की तरह कसरत से होंगी।

¹¹लेकिन उसकी कीच की जगहें और दलदले शीरीं न की जायेंगी वह नमक ज़ार ही रहेंगी।¹²और दरया के करीब उसके दोनों किनारों पर हर किसिम के मेवादार दरख़्त उगेंगे जिनके पत्ते कभी न मुरझायेंगे और जिनके मेवे कभी ख़त्म न होंगे वह हर महीने नए मेवे लायेंगे क्योंकि उनका पानी हैकल में से जारी है और उनके मेवे खाने के लिए और उनके पत्ते दवा के लिए होंगे।

¹³ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि "यह वह सरहद है जिसके मुताबिक़ तुम ज़मीन को तक्रसीम करोगे, ताकि इस्राईल के बारह क़बीलों की मीरास हो; यूसुफ़ के लिए दो हिस्से होंगे।¹⁴और तुम सब एकसाँ उसे मीरास में पाओगे, जिसके ज़रिए मैंने क़सम खाई" कि तुम्हारे बाप-दादा को दूँ और यह ज़मीन तुम्हारी मीरास होगी।

¹⁵और ज़मीन की हदें यह होंगी: उत्तर की तरफ़ बड़े समन्दर से लेकर हतलून से होती हुई सिदाद के मदख़ल तक,¹⁶हमात बैरूत-सिबरैम जो दमिश्क़ की सरहद और हमात की सरहद के बीच है, और हसर हतीकून जो हौरान के किनारे पर है।¹⁷और समन्दर से सरहद यह होगी: या 'नी हसर 'ऐनान दमिश्क़ की सरहद, और उत्तर की उत्तरी अतराफ़, हमात की सरहद उत्तरी जानिब यही है।

¹⁸और पूरबी सरहद हौरान और दमिश्क़, और जिल'आद के बीच से और इस्राईल की सरज़मीन के बीच से यरदन पर होगी; उत्तरी सरहद से पूरबी समन्दर तक नापना पूरबी जानिब यही है।¹⁹और दक्खिन की तरफ़ दक्खिनी सरहद यह है: या 'नी तमर से मरीबूत के क़ादिस के पानी से और नहर-ए-मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक, पच्छिमी जानिब यही है।²⁰और उसी सरहद से हमात के मदख़ल के सामने बड़ा समन्दर दक्खिनी सरहद होगा दक्खिनी जानिब यही है।

²¹इसी तरह तुम क़बाइल-ए-इस्राईल के मुताबिक़ ज़मीन को आपस में तक्रसीम करोगे।²²और यूँ होगा कि तुम अपने और उन बेगानों के बीच, जो तुम्हारे साथ बसते हैं और जिनकी औलाद तुम्हारे बीच पैदा हुई जो तुम्हारे लिए देसी बनी-इस्राईल की तरह होंगे; मीरास तक्रसीम करने के लिए पर्ची डालोगे, वह तुम्हारे साथ क़बाइल-ए-इस्राईल के बीच मीरास पाएँगे।²³और यूँ होगा कि जिस जिस क़बीले में कोई बेगाना बसता होगा, उसी में तुम उसे मीरास दोगे। ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

Chapter 48

¹"और क़बीलों के नाम यह हैं: इन्तिहा-ए- उत्तर पर हतल्लून के रास्ते के साथ साथ हम्रात के मदखल से होते हुए हसर 'ऐनान तक, जो दमिश्क की उत्तरी सरहद पर हम्रात के पास है, पूरब से पच्छिम तक दान के लिए एक हिस्सा।²और दान की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, आशर के लिए एक हिस्सा।³और आशर की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, नफ़्ताली के लिए एक हिस्सा।

⁴और नफ़्ताली की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, मनस्सी के लिए एक हिस्सा।⁵और मनस्सी की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, इफ़्राईम के लिए एक हिस्सा।⁶और इफ़्राईम की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, रूबिन के लिए एक हिस्सा।⁷और रूबिन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, यहूदाह के लिए एक हिस्सा।

⁸"और यहूदाह की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, हदिये का हिस्सा होगा जो तुम वक्फ़ करोगे; उसकी चौड़ाई पच्चीस हज़ार और लम्बाई बाक़ी हिस्सों ~में से एक के बराबर पूरबी सरहद से दक्खिनी सरहद तक और हैकल उसके बीच में होगा।⁹हदिये का हिस्सा जो तुम खुदावन्द के लिए वक्फ़ करोगे, पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा होगा।

¹⁰और यह पाक हदिये का हिस्सा उनके लिए, हाँ, काहिनों के लिए होगा; उत्तर की तरफ़ पच्चीस हज़ार उसकी लम्बाई होगी और दस हज़ार उसकी चौड़ाई पच्छिम की तरफ़ और दस हज़ार उसकी चौड़ाई पूरब की तरफ़ और पच्चीस हज़ार उसकी लम्बाई दक्खिन की तरफ़ और खुदावन्द का हैकल उसके बीच में होगा।¹¹यह उन काहिनों के लिए होगा जो सदूक़ के बेटों में से पाक किए गए हैं; जिन्होंने मेरी अमानतदारी की तरफ़ गुमराह न हुए, जब बनी-इसाईल गुमराह हो गए जैसे बनी लावी गुमराह हुए।¹²और ज़मीन के हदिये में से बनी लावी के हिस्से से मुत्तसिल, यह उनके लिए हदिया होगा जो बहुत पाक ठहरेगा।

¹³और काहिनों की सरहद के सामने बनी लावी के लिए एक हिस्सा होगा, पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा; उसकी कुल लम्बाई पच्चीस हज़ार और चौड़ाई दस हज़ार होगी।¹⁴और वह उसमें से न बेचे और न बदलें और न ज़मीन का पहला फल अपने क़ब्ज़े से निकलने दें, क्योंकि वह खुदावन्द के लिए पाक है।

¹⁵और वह पाँच हज़ार की चौड़ाई का बाक़ी हिस्सा, उस पच्चीस हज़ार के सामने बस्ती और उसकी 'इलाक़े के लिए 'आम जगह होगी; और शहर उसके बीच में होगा।¹⁶और-उसकी पैमाइश यह होगी, उत्तर की तरफ़ चार हज़ार पाँच सौ, और दक्खिन की तरफ़ चार हज़ार पाँच सौ, और पूरब ~की तरफ़ चार हज़ार पाँच सौ, और पच्छिम की तरफ़ चार हज़ार पाँच सौ,

¹⁷और शहर के 'इलाक़े उत्तर की तरफ़ दो सौ पचास, और दक्खिन की तरफ़ दो सौ पचास, और पूरब की तरफ़ दो सौ पचास, और पच्छिम की तरफ़ दो सौ पचास।¹⁸और वह पाक हदिये के सामने बाक़ी लम्बाई पूरब की तरफ़ दस हज़ार और-पच्छिम की तरफ़ दस हज़ार होगी, ~और वह पाक हदिये के सामने-होगी और उसका हासिल उनकी ख़ुराक के लिए होगा जो शहर में काम करते हैं।

¹⁹और शहर में काम करने वाले इस्राईल के सब क़बीलों में से उसमें काश्तकारी करेंगे।²⁰हदिये के तमाम हिस्से की लम्बाई पच्चीस हज़ार और चौड़ाई-पच्चीस हज़ार होगी; तुम पाक हदिये के हिस्से को मुरब्बा' शक़ल में शहर की मिलक़ियत के साथ वक्फ़ करोगे।

²¹"और बाक़ी जो पाक हदिये का हिस्सा और शहर की मिलक़ियत की दोनों तरफ़ जो हदिये के हिस्से के पच्चीस हज़ार के सामने पच्छिम की तरफ़ फ़रमरवा के हिस्सों के सामने है; वह फ़रमरवा के लिए होगा और वह पाक हदिये का हिस्सा होगा, और पाक ~घर उसके बीच में होगा।²²और बनी लावी की मिलक़ियत से और शहर की मिलक़ियत से जो फ़रमरवा की मिलक़ियत के बीच में है, यहूदाह की सरहद और बिनयमीन की सरहद के बीच फ़रमरवा के लिए होगी।

²³और बाक़ी क़बाइल के लिए यूँ होगा: कि पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, बिनयमीन के लिए एक हिस्सा।²⁴और बिनयमीन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, शमा'ऊन के लिए एक हिस्सा।²⁵और शमा'ऊन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, इश्कार के लिए एक हिस्सा।²⁶और इश्कार की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, ज़बूलून के लिए एक हिस्सा।

²⁷और ज़बूलून की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, जद्द के लिए एक हिस्सा।²⁸और जद्द की सरहद से मुत्तसिल दक्खिन की तरफ़ दक्खिनी किनारे की सरहद तमर से लेकर मरीबूत क़ादिस के पानी से नहर-ए- मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक होगी।²⁹यह वह सरज़मीन है जिसको तुम मीरास के लिए पर्ची डालकर क़बाइल-ए-इस्राईल में तक्सीम करोगे और यह उनके हिस्से हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

³⁰और शहर के मख़ारिज यह हैं: उत्तर की तरफ़ की पैमाइश चार हज़ार पाँच सौ।³¹और शहर के फाटक क़बाइल-ए-इस्राईल से नामज़द होंगे: तीन फाटक उत्तर की तरफ़ - एक फाटक रूबिन का, एक यहूदाह का, एक लावी का;³²और-पूरब की तरफ़ की पैमाइश चार हज़ार पाँच सौ, और तीन फाटक एक यूसुफ़ का एक बिनयमीन का और एक दान का।

³³और दक्खिन की तरफ़ की पैमाइश चार हज़ार पाँच सौ, ~और तीन फाटक - एक शमा'ऊन का, एक इश्कार का, और एक ज़बूलून का।³⁴और पच्छिम की तरफ़ की पैमाइश चार हज़ार पाँच सौ और तीन फाटक - एक जद्द का, एक आशर का और एक नफ़्ताली का।³⁵उसका मुहीत अठारह हज़ार और शहर का नाम उसी दिन से यह होगा कि "खुदावन्द वहाँ है"।

दान्याल

Chapter 1

¹~शाह-ए-यहूदाह यहूयक्रीम की सल्तनत के तीसरे साल में शाह-ए-बाबुल नबूकद नज़र ने यरूशलीम पर चढ़ाई करके उसका घिराव किया।²~और खुदावन्द ने शाह ~यहूदाह यहूयक्रीम को और खुदा के घर के बा'ज़ ~बर्तनों को उसके हवाले कर दिया और उनको ~सिन'आर की सरज़मीन में अपने बुतखाने ~में ले गया, चुनाँचे उसने बर्तनों ~को अपने बुत के खज़ाने ~में दाखिल किया।

³~और बादशाह ने अपने ख्वाजासराओं के सरदार असपनज़ को हुक्म किया कि बनी इस्राईल में से और बादशाह की नस्ल में से और शरीफ़ों में से लोगों को हाज़िर करे।⁴वह बे'ऐब जवान बल्कि खूबसूरत और हिकमत में माहिर और हर तरह से 'अक्लमन्द और 'आलिम हों, जिनमें ये लियाक़त हो कि शाही महल ~में खड़े रहें, और वह उनको क़सदियों के 'इल्म और उनकी ज़बान की ता'लीम दें।⁵और बादशाह ने उनके लिए शाही खुराक में से और अपने पीने की मय में से रोज़ाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया कि तीन साल तक उनकी परवरिश हो, ताकि इसके बा'द वह बादशाह के सामने खड़े हो सकें।

⁶और उनमें बनी यहूदाह में से दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह थे।⁷और ख्वाजासराओं के सरदार ने उनके नाम रखे; उसने दानीएल को बेल्टशज़र, हननियाह को सदरक, और मीसाएल को मीसक, और 'अज़रियाह को 'अबदनजू कहा।

⁸लेकिन दानीएल ने अपने दिल में इरादा किया कि अपने आप को शाही खुराक से और उसकी शराब से, जो वह पीता था, नापाक न करे; तब उसने ख्वाजासराओं के सरदार से दरख्वास्त की कि वह अपने आप को नापाक करने से मा'ज़ूर रखा जाए।⁹~और खुदा ने दानीएल को ख्वाजासराओं के सरदार की नज़र में मक्बूल-ओ-महबूब ठहराया।¹⁰चुनाँचे ख्वाजासराओं के सरदार ने दानीएल से कहा, "मैं अपने खुदावन्द बादशाह से, जिसने तुम्हारा खाना पीना मुक़र्रर किया है डरता हूँ; तुम्हारे चेहरे उसकी नज़र में तुम्हारे हम 'उम्रों के चेहरों से क्यूँ ज़बून हों, और यूँ तुम मेरे सिर को बादशाह के सामने खतरे में डालो।"

¹¹तब दानीएल ने दारोगा से जिसको ख्वाजासराओं के सरदार ने दानीएल और ~हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह पर मुक़र्रर किया था कहा,¹²"मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू दस दिन तक अपने खादिमों को आजमा कर देख, और खाने को साग-पात और पीने को पानी हम को दिलवा।"¹³~तब हमारे चेहरे और उन जवानों के चेहरे जो शाही खाना खाते हैं, तेरे सामने देखें जाएँ फिर अपने खादिमों से जो तू मुनासिब समझे वह कर।"

¹⁴~चुनाँचे उसने उनकी ये बात कुबूल की और दस दिनों तक उनको आजमाया।¹⁵~और दस दिन के बा'द उनके चेहरों पर उन सब जवानों के चेहरों की निस्बत जो शाही खाना खाते थे, ज़्यादा रौनक और ताज़गी नज़र आई।¹⁶तब दारोगा ने उनकी खुराक और शराब को जो उनके लिए मुक़र्रर थी रोक दिया, और उनको साग-पात खाने को दिया।

¹⁷~तब खुदा ने उन चारों जवानों को मा'रिफ़त और हर तरह की हिकमत और 'इल्म में महारत बख़्शी, और दानीएल हर तरह की रोया और ख्वाब में साहब-ए-'इल्म था।¹⁸~और जब वह दिन गुज़र गए जिनके बा'द बादशाह के फ़रमान के मुताबिक़ उनको हाज़िर होना था, तो ख्वाजासराओं का सरदार उनको नबूकदनज़र के सामने ले गया।

¹⁹और बादशाह ने उनसे बातें कीं और उनमें से दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह की तरह कोई न था, इसलिए वह बादशाह के सामने खड़े रहने लगे।²⁰और हर तरह की ख़ैरमन्दी और अक्लमन्दी के बारे ~में जो कुछ बादशाह ने उनसे पूछा, उनको तमाम फ़ालगीरों और नज़ूमियों से जो उसके तमाम मुल्क में थे, दस दर्जा बेहतर पाया।²¹और दानीएल खोरस बादशाह के पहले साल तक ज़िन्दा था।

Chapter 2

¹और नबूकदनज़र ने अपनी सल्तनत के दूसरे साल में ऐसे ख़्वाब देखे जिनसे उसका दिल घबरा गया और उसकी नींद जाती रही।² तब बादशाह ने हुक्म दिया कि फ़ालगीरों और नजूमियों और जादूगरों और कसदियों को बुलाएँ कि बादशाह के ख़्वाब उसे बताएँ। चुनाँचे वह आए और बादशाह के सामने खड़े हुए।

³और बादशाह ने उनसे कहा, कि "मैंने एक ख़्वाब देखा है, और उस ख़्वाब को दरियाफ़्त करने के लिए मेरी जान बताब है।"⁴ तब कसदियों ने बादशाह के सामने अरामी ज़बान में 'अर्ज़ किया, "कि ऐ बादशाह, हमेशा ~तक जीता रह! अपने ख़ादिमों से ख़्वाब बयान कर, और हम उसकी ता'बीर करेंगे।"

⁵बादशाह ने कसदियों को जवाब दिया, 'मैं तो ये हुक्म दे चुका हूँ कि अगर तुम ख़्वाब न बताओ और उसकी ता'बीर न करो, तो टुकड़े टुकड़े किए जाओगे और तुम्हारे घर मज़बले हो जाएँगे।⁶ लेकिन अगर ख़्वाब और उसकी ता'बीर बताओ, तो मुझ से इन'आम और बदला और बड़ी 'इज़ज़त हासिल करोगे; इसलिए ख़्वाब और उसकी ता'बीर मुझ से बयान करो।"

⁷उन्होंने फिर 'अर्ज़ किया, कि "बादशाह अपने ख़ादिमों से ख़्वाब बयान करे, तो हम उसकी ता'बीर करेंगे।"⁸ बादशाह ने जवाब दिया, कि "मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम टालना चाहते हो, क्योंकि तुम जानते हो कि मैं हुक्म दे चुका हूँ।⁹ लेकिन अगर तुम मुझ को ख़्वाब न बताओगे, तो तुम्हारे लिए एक ही हुक्म है, क्योंकि तुम ने झूट और बहाने की बातें बनाईं ताकि मेरे सामने बयान करो कि वक्रत टल जाए; इसलिए ख़्वाब बताओ तो मैं जानूँ कि तुम उसकी ता'बीर भी बयान कर सकते हो।"

¹⁰कसदियों ने बादशाह से 'अर्ज़ किया, कि "इस ज़मीन पर ऐसा तो कोई भी नहीं जो बादशाह की बात बता सके, और न कोई बादशाह या अमीर या हाकिम ऐसा हुआ है जिसने कभी ऐसा सवाल किसी फ़ालगीर या नजूमी या कसदी से किया हो।"¹¹ और जो बात बादशाह तलब करता है, निहायत मुश्किल है, और मा'बूदों के सिवा जिनकी सुकूनत इन्सान के साथ नहीं, बादशाह के सामने कोई उसको बयान नहीं कर सकता।"

¹²~इसलिए ~बादशाह ग़ज़बनाक और सख़्त गुस्सा हुआ और उसने हुक्म किया कि बाबुल के तमाम हकीमों को हलाक करें।¹³ ~तब यह हुक्म जगह जगह पहुँचा कि हकीम क़त्ल किए जाएँ, तब दानीएल और उसके साथियों को भी ढूँढ़ने लगे कि उनको क़त्ल करें।

¹⁴तब दानीएल ने बादशाह के ज़िलौदारों के सरदार अरयूक को, जो बाबुल के हकीमों को क़त्ल करने को निकला था, ख़ैरमन्दी और 'अक्ल से जवाब दिया।

¹⁵~उसने बादशाह के ज़िलौदारों के सरदार अरयूक से पूछा, "बादशाह ने ऐसा सख़्त हुक्म क्यों जारी किया?" तब अरयूक ने दानीएल से इसकी हकीकत बताई।

¹⁶और दानीएल ने अन्दर जाकर बादशाह से 'अर्ज़ किया कि मुझे मुहलत मिले, तो मैं बादशाह के सामने ता'बीर बयान करूँगा।

¹⁷तब दानीएल ने अपने घर जाकर हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह अपने साथियों को ख़बर दी,¹⁸ ~ताकि वह इस राज़ के बारे में आसमान के ख़ुदा से रहमत तलब करें कि दानीएल और उसके साथी बाबुल के बाक़ी हकीमों के साथ हलाक न हों।

¹⁹फिर रात को ख़्वाब में दानीएल पर वह राज़ खुल गया, और उसने आसमान के ख़ुदा को मुबारक कहा।²⁰ ~दानीएल ने कहा: "ख़ुदा का नाम हमेशा तक मुबारक हो, क्योंकि हिकमत और कुदरत उसी की है।

²¹~वही वक्रतों और ज़मानों को तब्दील करता है, वही बादशाहों को मा'जूल और क़ायम करता है, वही हकीमों को हिकमत और अक्लमन्दों को 'इल्म इनायत करता है।²² ~वही गहरी और छुपी चीज़ों को ज़ाहिर करता है, और जो कुछ अँधेरे में है उसे जानता है और नूर उसी के साथ है।

²³मैं तेरा शुक्र करता हूँ और तेरी 'इबा'दत करता हूँ ऐ मेरे बाप-दादा के ख़ुदा, जिसने मुझे हिकमत और कुदरत बख़्शी और जो कुछ हम ने तुझ से माँगा तू ने मुझ पर ज़ाहिर किया, क्योंकि तू ने बादशाह का मुआ'मिला हम पर ज़ाहिर किया है।"

²⁴तब दानीएल अरयूक के पास गया, जो बादशाह की तरफ़ से बाबुल के हकीमों के क़त्ल पर मुकर्रर हुआ था, और उस से पूँ कहा, कि "बाबुल के हकीमों को हलाक न कर, मुझे बादशाह के सामने ले चल, मैं बादशाह को ता'बीर बता दूँगा।"

²⁵तब अरयूक दानीएल को जल्दी से बादशाह के सामने ले गया और 'अर्ज़ किया, कि "मुझे यहूदाह के गुलामों ~में एक शख्स मिल गया है, जो बादशाह को ता'बीर बता देगा।"²⁶ बादशाह ने दानीएल से जिसका लक़ब बेल्तशज़र था पूछा, "क्या तू उस ख़्वाब को जो मैंने देखा, और उसकी ता'बीर को मुझ से बयान कर सकता है?"

²⁷दानीएल ने बादशाह के सामने 'अर्ज़ किया, कि "वह राज़ जो बादशाह ने पूछा, हुक्मा और नजूमी और जादूगर और फ़ालगीर बादशाह को बता नहीं सकते।

²⁸~लेकिन आसमान पर एक ख़ुदा है जो राज़ की बातें ज़ाहिर करता है, और उसने नबूकदनज़र बादशाह पर ज़ाहिर किया है कि आखिरी दिनों में क्या होने को आएगा; तेरा ख़्वाब और तेरे दिमागी ख़याल जो तू ने अपने पलंग पर देखे यह हैं:

²⁹~ऐ बादशाह, तू अपने पलंग पर लेटा हुआ ख़याल करने लगा कि आइन्दा को क्या होगा, तब~वह जो राज़ों का खोलने वाला है, तुझ पर ज़ाहिर करता है कि क्या कुछ होगा।³⁰ लेकिन इस राज़ के मुझ पर ज़ाहिर होने की वजह यह नहीं कि मुझ में किसी और ज़ी हयात से ज़्यादा हिकमत है, बल्कि यह कि इसकी ता'बीर बादशाह से बयान की जाए और तू अपने दिल के ख़यालात ~को पहचाने।

³¹~"ऐ बादशाह, तू ने एक बड़ी मूरत देखी; वह बड़ी मूरत जिसकी रौनक बेनिहायत थी, तेरे सामने खड़ी हुई और उसकी सूरत हैबतनाक थी।³² ~उस मूरत का सिर खालिस सोने का था, उसका सीना और उसके बाजू चाँदी के, उसका शिकम और उसकी राने ताम्बे की थीं;³³ ~उसकी टाँगें लोहे की, और उसके पाँव कुछ लोहे के और कुछ मिट्टी के थे।

³⁴तू उसे देखता रहा, यहाँ तक कि एक पत्थर हाथ लगाए बग़ैर ही काटा गया, और उस मूरत के पाँव पर जो लोहे और मिट्टी के थे लगा और उनको टुकड़े-टुकड़े कर दिया।³⁵ ~तब लोहा और मिट्टी और ताम्बा और चाँदी और सोना, टुकड़े टुकड़े किए गए और ताबिस्तानी खलीहान के भूसे की तरह ~हुए, और हवा उनको उड़ा ले गई, यहाँ तक कि उनका पता न मिला; और वह पत्थर जिसने उस मूरत को तोड़ा, एक बड़ा पहाड़ बन गया और सारी ~ज़मीन में फैल गया।

³⁶"वह ख्वाब यह है; और उसकी ता'बीर बादशाह के सामने बयान करता हूँ।³⁷~ऐ बादशाह, तू शहनशाह है, जिसको आसमान के खुदा ने बादशाही और-तवानाई और कुदरत-ओ-शौकत बख्शी है।³⁸और जहाँ कहीं बनी आदम रहा करते हैं, उसने मैदान के जानवर और हवा के परिन्दे तेरे हवाले करके तुझ को उन सब का हाकिम बनाया है; वह सोने का सिर तू ही है।

³⁹~और तेरे बा'द एक और सल्तनत खड़ी होगी, जो तुझ से छोटी होगी और उसके बा'द एक और सल्तनत ताम्बे की जो पूरी ज़मीन पर हुकूमत करेगी।

⁴⁰~और चौथी सल्तनत लोहे की तरह मज़बूत होगी, और जिस तरह लोहा तोड़ डालता है और सब चीज़ों पर ग़ालिब आता है; हाँ, जिस तरह लोहा सब चीज़ों को टुकड़े-टुकड़े करता और कुचलता है उसी तरह वह टुकड़े-टुकड़े करेगी और कुचल डालेगी।

⁴¹और जो तू ने देखा कि उसके पाँव और उँगलियाँ, कुछ तो कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं; इसलिए उस सल्तनत में फूट होगी, मगर जैसा तू ने देखा कि उसमें लोहा मिट्टी से मिला हुआ था, उसमें लोहे की मज़बूती होगी।⁴²और चूँकि पाँव की उँगलियाँ कुछ लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं,~इसलिए सल्तनत कुछ मज़बूत और कुछ कमज़ोर होगी।⁴³~और जैसा तूने देखा कि लोहा मिट्टी से मिला हुआ था, वह बनी आदम से मिले हुए होंगे, लेकिन जैसे लोहा मिट्टी से मेल नहीं खाता वैसे ही वह भी आपस में मेल न खाएँगे।

⁴⁴और उन बादशाहों के दिनों में आसमान का खुदा एक सल्तनत खड़ा करेगा, जो हमेशा बर्बाद न होगी और उसकी हुकूमत किसी दूसरी क़ौम के हवाले न की जाएगी, बल्कि वह इन तमाम हुकूमतों को टुकड़े-टुकड़े और बर्बाद करेगी, और वही हमेशा तक क़ायम रहेगी।⁴⁵~जैसा तू ने देखा कि वह पत्थर हाथ लगाए बग़ैर ही पहाड़ से काटा गया, और उसने लोहे और ताम्बे और मिट्टी और चाँदी और सोने को टुकड़े-टुकड़े किया; खुदा त'आला ने बादशाह को वह कुछ दिखाया जो आगे को होने वाला है, और यह ख्वाब यक़ीनी है और उसकी ता'बीर यक़ीनी।"

⁴⁶~तब नबूकदनेज़र बादशाह ने मुँह के बल गिर कर दानीएल को सिज्दा किया, और हुक्म दिया कि उसे हदिया दें और उसके सामने खुशबू जलाएँ।⁴⁷बादशाह ने दानीएल से कहा, "हक़ीक़त में तेरा खुदा मा'बूदों का मा'बूद और बादशाहों का खुदावन्द और राज़ों का खोलने वाला है, क्योंकि तू इस राज़ को खोल सका।"

⁴⁸~तब बादशाह ने दानीएल को सरफ़राज़ किया, और उसे बहुत से बड़े-बड़े तोहफ़े 'अता किए; और उसको बाबुल के तमाम सूबों पर इख़्तियार दिया, और बाबुल के तमाम हकीमों पर हुक्मरानी 'इनायत की।⁴⁹तब दानीएल ने बादशाह से दरख्वास्त की और उसने सदरक़ मीसक और 'अबदनजू को बाबुल के सूबे की ज़िम्मेदारी पर मुक़र्रर किया, लेकिन दानीएल बादशाह के दरबार में रहा।

Chapter 3

¹नबूकदनज़र बादशाह ने एक सोने की मूरत बनवाई जिसकी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई छः हाथ थी, और उसे दूरा के मैदान सूबा-ए-बाबुल में खड़ा किया।

²तब नबूकदनज़र बादशाह ने लोगों को भेजा कि नाज़िम् और हाकिम और सरदारों और क्राज़ियों और खज़ाँचियों और सलाहकारों और मुफ़्तियों और तमाम सूबों के 'उहदेदारों को जमा' करें, ताकि वह उस मूरत की 'इज़ज़त को हाज़िर हों जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था।

³तब नाज़िम, और हाकिम, और सरदार, और क्राज़ी, और खज़ाँची, और सलाहकार, और मुफ़्ती और सूबों के तमाम 'उहदेदार, उस मूरत की 'इज़ज़त के लिए जिसे नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था जमा' हुए; और वह उस मूरत के सामने जिसको नबूकदनज़र ने खड़ा किया था, खड़े हुए।⁴~तब एक 'ऐलान करने वाले ने बलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा, "ऐ लोगों, ऐ उम्मतों, और ऐ मुख्तलिफ़ ज़बानें बोलने वालों! तुम्हारे लिए यह हुक्म है कि जिस वक़्त करना, और नै, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चगाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनो, तो उस सोने की मूरत के सामने जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया है गिर कर सिज्दा करो।

⁶और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, उसी वक़्त आग की जलती भट्टी में डाला जाएगा।"⁷इसलिए जिस वक़्त सब लोगों ने करना, और नै, और सितार, और रबाब, और बरबत, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनी, तो सब लोगों और उम्मतों और मुख्तलिफ़ ज़बानें बोलने वालों ने उस मूरत के सामने, जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था, गिर कर सिज्दा किया।

⁸~तब उस वक़्त चन्द कसदियों ने आकर यहूदियों पर इल्ज़ाम लगाया।⁹उन्होंने नबूकदनज़र बादशाह से कहा, "ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह!"¹⁰~ऐ बादशाह, तूने यह फ़रमान जारी किया है कि जो कोई करना, और नै, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चगाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुने, गिर कर सोने की मूरत को सिज्दा करे।

¹¹और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, आग की जलती भट्टी में डाला जाएगा।¹²अब चन्द यहूदी हैं, जिनको तू ने बाबुल के सूबे की ज़िम्मेदारी पर मुकर्रर किया है, या'नी सदरक और मीसक और 'अबदनजू, इन आदमियों ने, ऐ बादशाह, तेरी ता'ज़ीम नहीं की। वह तेरे मा'बूदों की 'इबादत नहीं करते, और उस सोने की मूरत को जिसे तू ने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते।"

¹³तब नबूकदनज़र ने क्रहर-ओ-ग़ज़ब से हुक्म किया कि सदरक और मीसक और 'अबदनजू को हाज़िर करें। और उन्होंने उन आदमियों को बादशाह के सामने हाज़िर किया।¹⁴नबूकदनज़र ने उनसे कहा, "ऐ सदरक और मीसक और 'अबदनजू क्या यह सच है कि तुम मेरे मा'बूदों की 'इबादत नहीं करते हो, और उस सोने की मूरत को जिसे मैंने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते?"

¹⁵अब अगर तुम तैयार रहो कि जिस वक़्त करना, और नै, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चगाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनो, तो उस मूरत के सामने जो मैंने बनवाई है गिर कर सिज्दा करो तो बेहतर, लेकिन अगर सिज्दा न करोगे, तो उसी वक़्त आग की जलती भट्टी में डाले जाओगे और कौन सा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से छुड़ाएगा?"

¹⁶~सदरक और मीसक और 'अबदनजू ने बादशाह से 'अर्ज़ किया कि "ऐ नबूकदनज़र, इस हुक्म में हम तुझे जवाब देना ज़रूरी नहीं समझते।"¹⁷~देख, हमारा खुदा जिसकी हम 'इबादत करते हैं, हम को आग की जलती भट्टी से छुड़ाने की कुदरत रखता है, और ऐ बादशाह वही हम को तेरे हाथ से छुड़ाएगा।¹⁸और नहीं, तो ऐ बादशाह तुझे मा'लूम हो कि हम तेरे मा'बूदों की 'इबादत नहीं करेंगे, और उस सोने की मूरत को जो तूने खड़ी की है सिज्दा नहीं करेंगे।

¹⁹तब नबूकदनज़र गुस्से से भर गया, और उसके चेहरे का रंग सदरक और मीसक और 'अबदनजू पर बदल गया, और उसने हुक्म दिया कि भट्टी की आँच मा'मूल से सात गुना ज़्यादा करें।²⁰और उसने अपने लश्कर के चन्द ~ताक़तवर ~पहलवानों को हुक्म दिया कि सदरक और मीसक और 'अबदनजू को बाँध कर आग की जलती भट्टी में डाल दें।

²¹~तब यह मर्द अपने पैजामों-क़मीसों और 'अमामों के साथ बाँधे गए, और आग की जलती भट्टी में फेंक दिए गए।²²इसलिए चूँकि बादशाह का हुक्म ताकीदी था और भट्टी की आँच निहायत तेज़ थी, इसलिए सदरक और मीसक और अबदनजू को उठाने वाले आग के शो'लों से हलाक हो गए;²³और यह तीन आदमी या'नी सदरक और मीसक और अबदनजू, बाँधे हुए आग की जलती भट्टी में जा पड़े।

²⁴तब नबूकदनज़र बादशाह सरासीमा होकर जल्द उठा, और अरकान-ए-दौलत से मुखातिब होकर कहने लगा, "क्या हम ने तीन शख्सों को बाँधवा कर आग में नहीं डलवाया?" उन्होंने जवाब दिया, "बादशाह ने सच फ़रमाया है।"²⁵उसने कहा, "देखो, मैं चार शख्स आग में खुले फिरते देखता हूँ, और उनको कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा; और चौथे की सूरत इलाहज़ादे की तरह है।"

²⁶तब नबूकदनज़र ने आग की जलती भट्टी के दरवाज़े पर आकर कहा, "ऐ सदरक और मीसक और अबदनजू, खुदा-त'आला के बन्दो! बाहर निकलो और इधर आओ!" इसलिए सदरक और मीसक और अबदनजू आग से निकल आए।²⁷~तब नाज़िम् और हाकिम और सरदारों और बादशाह के सलाहकारों ने जमा' होकर उन शख्सों पर नज़र की, और देखा कि आग ने उनके बदनो पर कुछ असर न किया और उनके सिर का एक बाल भी न जलाया, और उनकी पोशाक में कुछ फ़र्क़ न आया और उनसे आग से जलने की बू भी न आती थी।

²⁸तब नबूकदनज़र ने पुकार कर कहा, कि "सदरक और मीसक और 'अबदनजू का खुदा मुबारक हो, जिसने अपना फ़रिश्ता भेज कर अपने बन्दों को रिहाई बख़्शी, जिन्होंने उस पर भरोसा करके बादशाह के हुक्म को टाल दिया, और अपने बदनो को निसार किया कि अपने खुदा के अलावा किसी दूसरे मा'बूद की 'इबादत और बन्दगी न करें।

²⁹~इसलिए मैं यह फ़रमान जारी करता हूँ कि जो क़ौम या उम्मत या अहल-ए-ज़ुबान, सदरक और मीसक और 'अबदनजू के खुदा के हक़ में कोई ना मुनासिब बात कहें उनके टुकड़े-टुकड़े किए जाएँगे और उनके घर मज़बला हो जाएँगे, क्योंकि कोई दूसरा मा'बूद नहीं जो इस तरह रिहाई दे सके।"³⁰फिर बादशाह ने सदरक और मीसक और 'अबदनजू को सूबा-ए-बाबुल में सरफ़राज़ किया।

Chapter 4

¹नबूकदनज़र बादशाह की तरफ़ से तमाम लोगों, उम्मतों और अहल-ए-जुबान के लिए जो तमाम इस ज़मीन पर रहते हैं: तुम्हारी सलामती होती रहे।²~मैंने मुनासिब जाना कि उन निशानों और 'अजाइब को ज़ाहिर करूँ जो खुदा-त'आला ने मुझ पर ज़ाहिर ~किए हैं।³~उसके निशान कैसे 'अज़ीम, और उसके 'अजाइब कैसे पसंदीदा हैं! उसकी ममलुकत ~हमेशा की ममलुकत है, और उसकी सल्तनत नसल-दर-नसल।

⁴~मैं, नबूकदनज़र, अपने घर में मुतम'इन और अपने महल में कामयाब था।⁵~मैंने एक ख़्वाब देखा, जिससे मैं परेशान ~हो गया और उन ख़्यालात से जो मैंने पलंग पर किए और उन ख़्यालों से जो मेरे दिमाग़ में आए, मुझे परेशानी हुई।⁶~इसलिए मैंने फ़रमान जारी किया कि बाबुल के तमाम हकीम मेरे सामने हाज़िर किए जाएँ, ताकि मुझसे उस ख़्वाब की ता'बीर बयान करें।

⁷~चुनौचे जादूगर और नजुमी और कसदी और फ़ालगीर हाज़िर हुए, और मैंने उनसे अपने ख़्वाब का बयान किया, पर उन्होंने उसकी ता'बीर मुझ से बयान न की।⁸आख़िरकार दानीएल मेरे सामने आया, जिसका नाम बेल्तशज़र है, जो मेरे मा'बूद का भी नाम है, उसमें मुक़द्दस इलाहों की रूह है; इसलिए मैंने उसके आमने-सामने ख़्वाब का बयान किया और कहा :⁹~"ऐ बेल्तशज़र, जादूगरों के सरदार, चूँकि मैं जानता हूँ कि मुक़द्दस इलाहों की रूह तुझमें है, और कि कोई राज़ की बात तेरे लिए मुश्किल नहीं;~इसलिए~जो ख़्वाब मैंने देखा उसकी कैफ़ियत और ता'बीर बयान कर।

¹⁰पलंग पर मेरे दिमाग़ की रोया ये थी: मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि ज़मीन के तह में एक निहायत ऊँचा दरख़्त है।¹¹~वह दरख़्त बढ़ा और मज़बूत हुआ और उसकी चोटी आसमान तक पहुँची, और वह ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई देने लगा।¹²उसके पत्ते खुशनुमा थे और मेवा फ़िरावान था, और उसमें सबके लिए ख़ुराक थी; मैदान के जानवर उसके साये में और हवा के परिन्दे उसकी शाखों पर बसेरा करते थे, और तमाम बशर ने उस से परवरिश पाई।

¹³~मैंने अपने पलंग पर अपनी दिमागी रोया पर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक निगहबान, हाँ एक फ़रिश्ता आसमान से उतरा।¹⁴~उसने बलन्द आवाज़ से पुकार कर यूँ कहा कि 'दरख़्त को काटो, उसकी शाखें तराशो, और उसके पत्ते झाड़ो, और उसका फल बिखेर दो; जानवर उसके नीचे से चले जाएँ और परिन्दे उसकी शाखों पर से उड़ जाएँ।

¹⁵~लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा ज़मीन में बाक़ी रहने दो, हाँ, लोहे और ताम्बे के बन्धन से बन्धा हुआ मैदान की हरी घास में रहने दो, और वह आसमान की शबनम से तर हो, और उसका हिस्सा ज़मीन की घास में हैवानों के साथ हो।¹⁶~उसका दिल इन्सान का दिल न रहे, बल्कि उसको हैवान का दिल दिया जाए; और उस पर सात दौर गुज़र जाएँ।

¹⁷यह हुक्म निगहबानों के फ़ैसले से है, और यह हुक्म फ़रिश्तों के कहने के मुताबिक़ है, ताकि सब जानदार पहचान लें कि हक़ त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है और जिसको चाहता है उसे देता है, बल्कि आदमियों में से अदना आदमी को उस पर क़ायम करता है।¹⁸~मैं नबूकदनज़र बादशाह ने यह ख़्वाब देखा है। ऐ बेल्तशज़र, तू इसकी ता'बीर बयान कर, क्योंकि मेरी ममलुकत के तमाम हकीम मुझसे उसकी ता'बीर बयान नहीं कर सकते, लेकिन तू कर सकता है; क्योंकि मुक़द्दस इलाहों की रूह तुझमें मौजूद है।"

¹⁹तब दानीएल जिसका नाम बेल्तशज़र है, एक वक्रत तक ख़ामोश रहा, और अपने ख़्यालात में परेशान हुआ। बादशाह ने उससे कहा, "ऐ बेल्तशज़र, ख़्वाब और उसकी ता'बीर से तू परेशान न हो।" बेल्तशज़र ने जवाब दिया, "ऐ मेरे खुदावन्द, ये ख़्वाब तुझसे कीना रखने वालों के लिए और उसकी ता'बीर तेरे दुश्मनों के लिए हो!

²⁰~वह दरख़्त जो तूने देखा कि बढ़ा और मज़बूत हुआ, जिसकी चोटी आसमान तक पहुँची और ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई देता था,²¹जिसके पत्ते खुशनुमा थे और मेवा फ़िरावान था, जिसमें सबके लिए ख़ुराक थी। जिसके साये में मैदान के जानवर और शाखों पर हवा के परिन्दे बसेरा करते थे।²²ऐ बादशाह, वह तू ही है जो बढ़ा और मज़बूत हुआ, क्योंकि तेरी बुजुर्गी बढ़ी और आसमान तक पहुँची और तेरी सल्तनत ज़मीन की इन्तिहा तक।

²³और जो बादशाह ने देखा कि एक निगहबान, यहाँ, एक फ़रिश्ता आसमान से उतरा और कहने लगा, 'दरख़्त को काट डालो और उसे बर्बाद करो, लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा ज़मीन में बाक़ी रहने दो; बल्कि उसे लोहे और ताम्बे के बन्धन से बन्धा हुआ, मैदान की हरी घास में रहने दो कि वह आसमान की शबनम से तर हो, और जब तक उस पर सात दौर न गुज़र जाएँ उसका हिस्सा ज़मीन के हैवानों के साथ हो।'

²⁴ऐ बादशाह, इसकी ता'बीर और हक़-त'आला का वह हुक्म, जो बादशाह मेरे खुदावन्द के हक़ में हुआ है यही है,²⁵~कि तुझे आदमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान के हैवानों के साथ रहेगा, और तू बैल की तरह घास खाएगा और आसमान की शबनम से तर होगा, और तुझ पर सात दौर गुज़र जाएँगे, तब तुझको मा'लूम होगा कि हक़ त'आला इन्सान की ममलुकत में हुक्मरानी करता है और उसे जिसको चाहता है देता है।

²⁶और यह जो उन्होंने हुक्म किया कि दरख़्त की जड़ों के हिस्से को बाक़ी रहने दो, उसका मतलब ये है कि जब तू मा'लूम कर चुकेगा कि बादशाही का इख़्तियार आसमान की तरफ़ से है, तो तू अपनी सल्तनत पर फिर क़ायम हो जाएगा।²⁷इसलिए~ऐ बादशाह, तेरे सामने मेरी सलाह कुबूल हो और तू अपनी ख़ताओं को सदाक़त से और अपनी बदकिरदारी को मिस्कीनों पर रहम करने से दूर कर, मुम्किन है इससे तेरा इत्मिनान ज़्यादा हो।"

²⁸यह सब कुछ नबूकदनज़र बादशाह पर गुज़रा।²⁹~एक साल बा'द वह बाबुल के शाही महल में टहल रहा था।³⁰~बादशाह ने फ़रमाया, "क्या यह बाबुल-ए-आज़म नहीं, जिसको मैंने अपनी तवानाई ~की कुदरत से ता'मीर किया है कि दार-उस-सल्तनत और मेरे जाह-ओ-जलाल का नमूना हो?"

³¹~बादशाह यह बात कह ही रहा था कि आसमान से आवाज़ आई, "ऐ नबूकदनज़र बादशाह, तेरे हक़ में यह फ़तवा है कि सल्तनत तुझ से जाती रही।³²और तुझे आदमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान के हैवानों के साथ रहेगा और बैल की तरह घास खाएगा, और सात दौर तुझ पर गुज़रेंगे, तब तुझको मा'लूम होगा कि हक़ त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है, और उसे जिसको चाहता है, देता है।"

³³~उसी वक्रत नबूकदनज़र बादशाह पर यह बात पूरी हुई, और वह आदमियों में से निकाला गया और बैलों की तरह घास खाता रहा और उसका बदन आसमान की शबनम से तर हुआ, यहाँ तक कि उसके बाल उक्काब के परो की तरह और उसके नाखून परिन्दों के चँगुल की तरह बढ़ गए।

³⁴और इन दिनों के गुज़रने के बा'द, मैं ~नबूकदनज़र ने आसमान की तरफ़ आँखें उठाई~और मेरी 'अक्ल मुझमें फिर आई और मैंने हक़-त'आला का शुक्र किया, और उस हय्युल-कय्यूम ~की बड़ाई-ओ-सना की, जिसकी सल्तनत हमेशा और जिसकी ममलुकत नसल-दर-नसल है।

³⁵~और ज़मीन के तमाम बाशिन्दे नाचीज़ गिने जाते हैं और वह आसमानी लश्कर और ज़मीन के रहने वालों के साथ जो कुछ चाहता है करता है; और कोई नहीं जो उसका हाथ रोक सके। या उससे कहे कि "तू क्या करता है?"

³⁶उसी वक़्त मेरी 'अक्ल मुझ में फिर आई, और मेरी सल्तनत की शौकत के लिए मेरा रौ'ब और दबदबा फिर मुझमें बहाल हो गया, और मेरे सलाहकारों और अमीरों ने मुझे फिर ढूँडा और मैं अपनी ममलुकत में क़ायम हुआ और मेरी 'अज़मत में अफ़ज़ूनी हुई।³⁷~अब मैं नबूकदनज़र, आसमान के बादशाह की बड़ाई और 'इज़ज़त-ओ-ता'ज़ीम करता हूँ, क्योंकि वह अपने सब कामों में रास्त और अपनी सब राहों में 'इन्साफ़ करता है; और जो मगरूरी में चलते हैं उनको ज़लील कर सकता है।

Chapter 5

¹~बेलशज़र बादशाह ने अपने एक हज़ार हाकिमों की बड़ी धूमधाम से मेहमान नवाज़ी की, और उनके सामने शराबनोशी की।²बेलशज़र ने शराब से मसरूर होकर हुक्म किया कि सोने चाँदी के बर्तन जो नबूकदनज़र उसका बाप यरुशलीम की-हैकल से निकाल लाया था, लाएँ ताकि बादशाह और उसके हाकिमों और उसकी बीवियाँ और बाँदियाँ उनमें मयख्वारी करें।

³~तब सोने के बर्तन को जो हैकल से, या'नी खुदा के घर से जो यरूशलीम में हैं ले गए थे, लाए और बादशाह और उसके हाकिमों और उसकी बीवियों और बाँदियों ने उनमें शराब पी।⁴उन्होंने शराब पी और सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और लकड़ी और पत्थर के बुतों की बड़ाई की।

⁵~उसी वक्रत आदमी के हाथ की उंगलियाँ ज़ाहिर हुई और उन्होंने शमा'दान के मुकाबिल बादशाही महल की दीवार के गच पर लिखा, और बादशाह ने हाथ का वह ~हिस्सा जो लिखता था देखा।⁶~तब बादशाह के चेहरे का रंग उड़ गया और उसके ख्यालात उसको परेशान करने लगे, यहाँ तक कि उसकी कमर के जोड़ ढीले हो गए और उसके घुटने एक दूसरे से टकराने लगे।

⁷~बादशाह ने चिल्ला कर कहा कि नज़ूमियों और कसदियों और फ़ालगीरों को हाज़िर करें। बादशाह ने बाबुल के हकीमों से कहा, "जो कोई इस लिखे हुए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान करे, अर्गवानी खिल'अत पाएगा और उसकी गर्दन में ज़रीन तौक़ पहनाया जाएगा, और वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा।"

⁸~तब बादशाह के तमाम हकीम हाज़िर हुए, लेकिन न उस लिखे हुए को पढ़ सके और न बादशाह से उसका मतलब बयान कर सके।⁹~तब बेलशज़र बादशाह बहुत घबराया और उसके चेहरे का रंग उड़ गया, और उसके हाकिम परेशान हो गए।

¹⁰~अब बादशाह और उसके हाकिमों की बातें सुनकर बादशाह की वालिदा जश्रगाह में आई और कहने लगी, "ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! तेरे ख्यालात तुझको परेशान न करें और तेरा चेहरा उदास न हो।

¹¹~तेरी ममलुकत में एक शख्स है जिसमें पाक इलाहों की रूह है, और तेरे बाप के दिनों में नूर और 'अक्ल और हिकमत, इलाहों की हिकमत की तरह उसमें पाई जाती थी; और उसको नबूकदनज़र बादशाह, तेरे बाप ने जादूगरों और नज़ूमियों और कसदियों और फ़ालगीरों का सरदार बनाया था।¹²~क्योंकि उसमें एक फ़ाज़िल रूह और दानिश और 'अक्ल और ख़्वाबों की ता'बीर और 'उक़दा कुशाई और मुश्किलात के हल की ताक़त थी-उसी दानीएल में जिसका नाम बादशाह ने बेल्तशज़र रखवा था - इसलिए दानीएल को बुलवा, वह मतलब बताएगा।"

¹³~तब दानीएल बादशाह के सामने हाज़िर किया गया। बादशाह ने दानीएल से पूछा, "क्या तू वही दानीएल है जो यहूदाह के गुलामों में से है, जिनको बादशाह मेरा बाप यहूदाह से लाया?"¹⁴मैंने तेरे बारे में सुना है कि इलाहों की रूह तुझमें है, और नूर और- 'अक्ल-और कामिल हिकमत तुझ में है।

¹⁵हकीम और नज़ूमी मेरे सामने हाज़िर किए गए, ताकि इस लिखे हुए को पढ़ें और इसका मतलब मुझ से बयान करें, लेकिन वह इसका मतलब बयान नहीं कर सके।¹⁶~और मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू ता'बीर और मुश्किलात के हल पर क़ादिर है। इसलिए अगर तू इस लिखे हुए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान करे, तो अर्गवानी खिल'अत पाएगा और तेरी गर्दन में ज़रीन तौक़ पहनाया जाएगा और तू ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा।"

¹⁷~तब दानीएल ने बादशाह को जवाब दिया, "तेरा इन'आम तेरे ही पास रहे और अपना सिला किसी दूसरे को दे, तो भी मैं बादशाह के लिए इस लिखे हुए को पढ़ूँगा और इसका मतलब उससे बयान करूँगा।"¹⁸ऐ बादशाह, खुदा त'आला ने नबूकदनज़र, तेरे बाप को सल्तनत और हशमत और शौकत और 'इज़ज़त बख़्शी।¹⁹~और उस हशमत की वजह ~से जो उसने उसे बख़्शी तमाम लोग और उम्मतों और अहल-ए-जुबान उसके सामने काँपने और डरने लगे। उसने जिसको चाहा हलाक किया और जिसको चाहा ज़िन्दा रखवा, जिसको चाहा सरफ़राज़ किया और जिसको चाहा ज़लील किया।

²⁰लेकिन जब उसकी तबी'अत में ग़ुरूर समाया और उसका दिल ग़ुरूर से सख़्त हो गया, तो वह तख़्त-ए-सल्तनत से उतार दिया गया और उसकी हशमत जाती रही।²¹~और वह बनी आदम के बीच से हॉक कर निकाल दिया गया, और उसका दिल हैवानों का सा बना और गोरखरों के साथ रहने लगा और उसे बैलों की तरह घास खिलाते थे और उसका बदन आसमान की शबनम से तर हुआ; जब तक उसने मा'लूम न किया कि खुदा-त'आला इन्सान की ममलुकत में हुक्मरानी करता है, और जिसको चाहता है उस पर क़ायम करता है।

²²लेकिन तू, ऐ बेलशज़र, जो उसका बेटा है; बावजूद यह कि तू इस सब को जानता था तो भी तूने अपने दिल से 'आजिज़ी न की।²³बल्कि आसमान के खुदावन्द के सामने अपने आप को बलन्द किया, और उसकी हैकल के बर्तन तेरे पास लाए और तूने अपने हाकिमों और अपनी बीवियों और बाँदियों के साथ उनमें मय-ख्वारी की, और तूने सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और लकड़ी और पत्थर के बुतों की बड़ाई की, जो न देखते न सुनते और न जानते हैं; और उस खुदा की तम्जीद न की जिसके हाथ में तेरा दम है, और जिसके क़ाबू में तेरी सब राहें हैं।²⁴इसलिए उसकी तरफ से हाथ का वह ~हिस्सा भेजा गया, और यह नविश्ता लिखा गया।

²⁵और यूँ लिखा है: मिने, मिने, तक्कील-ओ-फ़रसीन।²⁶और उसके मानी यह हैं : मिने, या'नी खुदा ने तेरी ममलुकत महसूब किया और उसे तमाम कर डाला।

²⁷~तक्कील, या'नी तू तराजू में तोला गया और कम निकला।²⁸फ़रीस, या'नी तेरी ममलुकत फ़ारसियों को दी गई।"

²⁹~तब बेलशज़र ने हुक्म किया, और दानीएल को अर्गवानी लिबास पहनाया गया और ज़रीन तौक़ उसके गले में डाला गया, और 'ऐलान कराया गया कि वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम हो।³⁰उसी रात को बेलशज़र, कसदियों का बादशाह क़त्ल हुआ।³¹~और दारा मादी ने बासठ बरस की 'उम्र में उसकी सल्तनत हासिल की।

Chapter 6

¹दारा को पसन्द आया कि ममलुकत पर एक सौ बीस नाज़िम मुकर्रर करे, जो सारी ममलुकत पर हुकूमत करें।²और उन पर तीन वज़ीर हों जिनमें से एक दानीएल था, ताकि नाज़िम उनको हिसाब दें और बादशाह नुकसान न उठाए।³और चूँकि दानीएल में फ़ाज़िल रूह थी, इसलिए वह उन वज़ीरों और नाज़िमों पर सबक़त ले गया और बादशाह ने चाहा कि उसे सारे मुल्क पर मुख्तार ठहराए।

⁴तब उन वज़ीरों और नाज़िमों ने चाहा कि हाकिमदारी में दानीएल पर कुसूर साबित करें, लेकिन वह कोई मौक़ा या कुसूर न पा सके, क्योंकि वह ईमानदार था और उसमें कोई ख़ता या बुराई-न थी।⁵तब उन्होंने कहा, कि "हम इस दानीएल को उसके ख़ुदा की शरी'अत के अलावा किसी और बात में कुसूरवार न पाएँगे।"

⁶इसलिए यह वज़ीर और नाज़िम बादशाह के ~सामने जमा' हुए और उससे इस तरह कहने लगे, कि "ऐ दारा बादशाह, हमेशा ~तक जीता रह !"⁷ममलुकत के तमाम वज़ीरों और हाकिमों और नाज़िमों और सलाहकारों और सरदारों ने एक साथ मशवरा किया है कि एक ख़ुसवाना तरीक़ा मुकर्रर करें, और एक इम्तिनाई फ़रमान जारी करें, ताकि ऐ बादशाह, तीस रोज़ तक जो कोई तेरे अलावा किसी मा'बूद या आदमी से कोई दरख़वास्त करे, शेरों की माँद में डाल दिया जाए।

⁸अब ऐ बादशाह, इस फ़रमान को क़ायम कर और लिखे हुए पर दस्तख़त कर, ताकि तब्दील न हो जैसे मादियों और फ़ारसियों के तौर तरीक़े जो तब्दील नहीं होते।"⁹तब दारा बादशाह ने उस लिखे हुए और फ़रमान पर दस्तख़त कर दिए।

¹⁰और जब दानीएल ने मा'लूम किया कि उस लिखे हुए पर दस्तख़त हो गए, तो अपने घर में आया और उसकी कोठरी का दरिचा यरूशलीम की तरफ़ खुला था, वह दिन में तीन मरतबा हमेशा की तरह ~घुटने टेक कर ख़ुदा के ~सामने दु'आ और उसकी शुक्रगुज़ारी करता रहा।¹¹तब यह लोग जमा' हुए और देखा कि दानीएल अपने ख़ुदा के ~सामने दु'आ और इल्तिमास कर रहा है।

¹²~तब उन्होंने बादशाह के पास आकर उसके ~सामने उसके फ़रमान का यूँ ज़िक्र किया, कि "ऐ बादशाह, क्या तूने इस फ़रमान पर दस्तख़त नहीं किए, कि-तीस रोज़ तक जो कोई तेरे अलावा किसी मा'बूद या आदमी से कोई दरख़वास्त करे, शेरों की मान्द में डाल दिया जाएगा?" बादशाह ने जवाब दिया, "मादियों और फ़ारसियों के ना बदलने वाले तौर तरीक़े के मुताबिक़ यह बात सच है।"

¹³~तब उन्होंने बादशाह के सामने 'अर्ज़ किया, कि "ऐ बादशाह, यह दानीएल जो यहूदाह के गुलामों में से है, न तेरी परवा करता है और न उस इम्तिनाई फ़रमान को जिस पर तूने दस्तख़त किए हैं काम में लाता है, बल्कि हर रोज़ तीन बार दु'आ करता है।"¹⁴जब बादशाह ने यह बातें सुनीं, तो निहायत रन्जीदा हुआ और उसने दिल में चाहा कि दानीएल को छोड़ाए, और सूरज डूबने तक उसके छोड़ने में कोशिश करता रहा।

¹⁵~फिर यह लोग बादशाह के ~सामने जमा' ~हुए और बादशाह से कहने लगे, कि "ऐ बादशाह, तू समझ ले कि मादियों और फ़ारसियों के तौर तरीक़े यूँ हैं कि जो फ़रमान और क़ानून बादशाह मुकर्रर करे कभी नहीं बदलता।"

¹⁶~तब बादशाह ने हुक्म दिया, और वह दानीएल को लाए और शेरों की माँद में डाल दिया, पर बादशाह ने दानीएल से कहा, 'तेरा ख़ुदा, जिसकी तू हमेशा 'इबादत करता है तुझे छोड़ागा।"

¹⁷~और एक पत्थर लाकर उस माँद के मुँह पर रख दिया, और बादशाह ने अपनी और अपने अमीरों की मुहर उस पर कर दी, ताकि वह बात जो दानीएल के हक़ में ठहराई गई थी न बदले।¹⁸तब बादशाह अपने महल में गया और उसने सारी रात फ़ाक्रा किया, और मूसीक़ी के साज़ उसके सामने न लाए और उसकी नींद जाती रही।

¹⁹और बादशाह सुबह बहुत सवेरे उठा, और जल्दी से शेरों की माँद की तरफ़ चला।²⁰~और जब माँद पर पहुँचा, तो ग़मनाक आवाज़ से दानीएल को पुकारा। बादशाह ने दानीएल को खिताब करके कहा, "ऐ दानीएल, ज़िन्दा ख़ुदा के बन्दे, क्या तेरा ख़ुदा जिसकी तू हमेशा 'इबादत करता है, क़ादिर हुआ कि तुझे शेरों से छोड़ाए?"

²¹~तब दानीएल ने बादशाह से कहा, "ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह!²²~मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेजा और शेरों के मुँह बन्द कर दिए, और उन्होंने मुझे नुक़सान नहीं पहुँचाया क्योंकि मैं उसके सामने बे-गुनाह साबित हुआ, और तेरे सामने भी ऐ बादशाह, मैंने ख़ता नहीं की।"

²³इसलिए बादशाह निहायत ख़ुश हुआ और हुक्म दिया कि दानीएल को उस माँद से निकालें। तब दानीएल उस माँद से निकाला गया, और मा'लूम हुआ कि उसे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा, क्योंकि उसने अपने ख़ुदा पर भरोसा किया था।

²⁴और बादशाह ने हुक्म दिया और वह उन शख्सों को जिन्होंने दानीएल की शिकायत की थी लाए, और उनके बच्चों और बीवियों के साथ उनको शेरों की मान्द में डाल दिया; और शेर उन पर ग़ालिब आए और इससे पहले कि मान्द की तह तक पहुँचें, शेरों ने उनकी सब हड्डियाँ तोड़ डालीं।²⁵~तब दारा बादशाह ने सब लोगों और क़ौमों और अहल-ए-ज़ुबान को जो इस ज़मीन पर बसते थे, ख़त लिखा: "तुम्हारी सलामती बढ़ती जाये !

²⁶मैं यह फ़रमान जारी करता हूँ कि मेरी ममलुकत के हर एक सूबे के लोग, दानीएल के ख़ुदा के सामने डरते और काँपते हों क्योंकि वही ज़िन्दा ख़ुदा है और हमेशा क़ायम है; और उसकी सल्तनत लाज़वाल है और उसकी ममलुकत हमेशा तक रहेगी।²⁷वही छोड़ाता और बचाता है, और आसमान और ज़मीन में वही निशान और 'अजाइब दिखाता है, उसीने दानीएल को शेरों के पंजों से छोड़ाया है।"

²⁸इसलिए यह दानीएल दारा की सल्तनत और ख़ोरस फ़ारसी की सल्तनत में कामयाब रहा।,

Chapter 7

¹~शाह-ए-बाबुल बेलशज़र के पहले साल में दानीएल ने अपने बिस्तर पर ख़्वाब में अपने सिर के दिमागी ख़यालात की रोया देखी। तब उसने उस ख़्वाब को लिखा, और उन ख़यालात का मुकम्मल बयान किया।²दानीएल ने यूँ कहा, कि "मैंने रात को एक ख़्वाब देखा, और क्या देखता हूँ कि आसमान की चारों हवाएँ समन्दर पर ज़ोर से चलीं।³और समन्दर से चार बड़े हैवान, जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ थे निकले।

⁴पहला शेर-ए-बबर की तरह था, और उक्राब के से बाज़ू रखता था; और मैं देखता रहा, जब तक उसके पर उखाड़े गए और वह ज़मीन से उठाया गया, और आदमी की तरह पाँव पर खड़ा किया गया और इन्सान का दिल उसे दिया गया।⁵और क्या देखता हूँ कि एक दूसरा हैवान रीछ की तरह है, और वह एक तरफ़ सीधा खड़ा हुआ; और उसके मुँह में उसके दाँतों के बीच तीन पसलियाँ थीं, और उन्होंने उससे कहा, 'कि उठ, और कसरत से गोश्त खा।'

⁶फिर मैंने निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक और हैवान तेंदवे की तरह उठा, जिसकी पीठ पर परिन्दे के से चार बाज़ू थे और उस हैवान के चार सिर थे; और सल्तनत उसे दी गई।⁷फिर मैंने रात को ख़्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ कि चौथा हैवान हौलनाक और हैबतनाक और निहायत ज़बरदस्त है, और उसके दाँत लोहे के बड़े-बड़े थे; वह निगल जाता और टुकड़े टुकड़े करता था, और जो कुछ बाक़ी बचता उसको पाँव से लताड़ता था, और यह उन सब पहले हैवानों से मुख़्तलिफ़ था और उसके दस सींग थे।

⁸~मैं ने उन सींगों पर ग़ौर से नज़र की, और क्या देखता हूँ कि उनके बीच ~से एक और छोटा सा सींग निकला, जिसके आगे पहलों में से तीन सींग जड़ से उखाड़े गए, और क्या देखता हूँ कि उस सींग में इन्सान के सी आँखें ~हैं और एक मुँह है जिस से गुरूर की बातें निकलती हैं।

⁹"मेरे देखते हुए तख़्त लगाए गए, और पुराने दिनों में बैठ गया; उसका लिबास बर्फ़ की तरह सफ़ेद था, और उसके सिर के बाल ख़ालिस ऊन की तरह थे; उसका तख़्त आग के शोले की तरह था, और उसके पहिये जलती आग की तरह थे।

¹⁰~उसके सामने से एक आग का दरिया जारी था, हज़ारों हज़ार उसकी ख़िदमत में हाज़िर थे और लाखों लाख उसके सामने खड़े थे, 'अदालत हो रही थी, और किताबें खुली थी।

¹¹"मैं देख ही रहा था कि उस सींग की गुरूर की बातों की आवाज़ की वजह से, मेरे देखते हुए वह हैवान मारा गया और उसका बदन हलाक करके शोलाज़न आग में डाला गया।¹²~और बाक़ी हैवानों की सल्तनत भी उन से ले ली गई, लेकिन वह एक ज़माना और एक दौर ज़िन्दा रहे।

¹³~'मैंने रात को ख़्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ एक शख्स आदमज़ाद की तरह आसमान के बा'दलों के साथ आया और गुज़रे दिनों तक पहुँचा, वह उसे उसके सामने लाए।¹⁴और सल्तनत और हशमत और ममलुकत उसे दी गई, ताकि सब लोग और उम्मतें और अहल-ए-जुबान उसकी ख़िदमत गुज़ारी करें उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है जो जाती न रहेगी और उसकी ममलुकत लाज़वाल होगी।

¹⁵~"मुझ दानीएल की रूह मेरे बदन में मलूल हुई, और मेरे दिमाग के ख़यालात ने मुझे परेशान कर दिया।¹⁶जो मेरे नज़दीक खड़े थे, मैं उनमें से एक के पास गया और उससे इन सब बातों की हकीक़त दरियाफ़्त की, इसलिए उसने मुझे बताया और इन बातों का मतलब समझा दिया,

¹⁷~'यह चार बड़े हैवान चार बादशाह हैं, जो ज़मीन पर बर्पा ~होंगे।¹⁸लेकिन हक़-त'आला के पाक लोग सल्तनत ले लेंगे और हमेशा तक हों हमेशा से हमेशा तक उस सल्तनत के मालिक रहेंगे।

¹⁹" तब मैंने चाहा कि चौथे हैवान की हकीक़त समझूँ, जो उन सब से मुख़्तलिफ़ और निहायत हौलनाक था, जिसके दाँत लोहे के और नाखून पीतल के थे, जो निगलता और टुकड़े-टुकड़े करता और जो कुछ बचता उसको पाँव से लताड़ता था।²⁰और दस सींगों की हकीक़त जो उसके सिर पर थे, और उस सींग की जो निकला और जिसके आगे तीन गिर गए, या'नी जिस सींग की आँखें थीं और एक मुँह था जो बड़े गुरूर की बातें करता था, और जिसकी सूरत उसके साथियों से ज़्यादा रो'ब दार थी।

²¹~मैं ने देखा कि वही सींग मुक़द्दसों से जंग करता और उन पर ग़ालिब आता रहा।²²जब तक कि पुराने दिन न आये, और हक़ त'आला के पाक लोगों का इन्साफ़ न किया गया, और वक़्त आ न पहुँचा कि पाक लोग सल्तनत के मालिक हों।

²³~"उसने कहा, कि चौथा हैवान दुनिया की चौथी सल्तनत जो तमाम सल्तनतों से मुख़्तलिफ़ है, और ज़मीन को निगल जायेगी और उसे लताड़ कर टुकड़े-टुकड़े करेगी।²⁴और वह दस सींग दस बादशाह हैं, जो उस सल्तनत में खड़े होंगे; और उनके बा'द एक और खड़ा होगा, और वह पहलों से मुख़्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को पस्त करेगा।

²⁵और वह हक़-त'आला के खिलाफ़ बातें करेगा, और हक़ त'आला के मुक़द्दसों को तंग करेगा और मुक़र्ररा वक़्त व शरी'अत को बदलने की कोशिश करेगा, और वह एक दौर और दौरों और नीम दौर तक उसके हवाले किए जाएँगे।²⁶~तब 'अदालत क़ायम होगी, और उसकी सल्तनत उससे ले लेंगे कि उसे हमेशा के लिए नेस्त-ओ-नाबूद करें।

²⁷और तमाम आसमान के नीचे सब मुल्कों की सल्तनत और ममलुकत और सल्तनत की हशमत हक़ त'आला के मुक़द्दस लोगों को बख़्शी जाएगी, उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है और तमाम ममलुकत उसकी, ख़िदमत गुज़ार और फ़रमाबरदार होंगी।²⁸"यहाँ पर यह हुक्म पूरा हुआ, मैं दानीएल अपने शकों से निहायत घबराया और मेरा चेहरा मायूस हुआ, लेकिन मैंने यह बात दिल ही में रखी।"

Chapter 8

¹बेलशज़र बादशाह की सल्तनत के तीसरे साल में मुझ को, हाँ, मुझ दानीएल को एक ख़्वाब नज़र आया, या'नी मेरे पहले-ख़्वाब-के बा'द।² और मैंने- 'आलम-ए-रोया-में देखा, और जिस वक़्त मैंने देखा, ऐसा मा'लूम हुआ कि मैं महल-ए-सोसन में था, जो सूबा-ए- 'ऐलाम में है। फिर मैंने 'आलम-ए-रोया ही में देखा कि मैं दरिया-ए-ऊलाई के किनारे पर हूँ।

³~तब मैंने आँख उठा कर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दरिया के पास एक मेंढा खड़ा है जिसके दो सींग हैं, दोनों सींग ऊँचे थे, लेकिन एक दूसरे से बड़ा था और बड़ा दूसरे के बा'द निकला था।⁴ मैंने उस मेंढे को देखा कि पश्चिम-और-उत्तर-और-दक्खिन की तरफ़ सींग मारता है, यहाँ तक कि न कोई जानवर उसके सामने खड़ा हो सका और न कोई उससे छुड़ा सका, पर वह जो कुछ चाहता था करता था, यहाँ तक कि वह बहुत बड़ा हो गया।

⁵~और मैं सोच ही रहा था कि एक बकरा पश्चिम की तरफ़ से आकर तमाम ज़मीन पर ऐसा फिरा कि ज़मीन को भी न छुआ, और उस बकरे की दोनों आँखों के बीच एक 'अजीब सींग था।⁶ और वह उस दो सींग वाले मेंढे के पास, जिसे मैंने दरिया के किनारे खड़ा देखा था आया और अपने ज़ोर के क्रहर से उस पर हमलावर हुआ।

⁷~और मैंने देखा कि वह मेंढे के करीब पहुँचा और उसका ग़ज़ब उस पर भड़का और उसने मेंढे को मारा और उसके दोनों सींग तोड़ डाले और मेंढे में उसके मुकाबले की हिम्मत न थी, तब उसने उसे ज़मीन पर पटक दिया और उसे लताड़ा और कोई न था कि मेंढे को उससे छुड़ा सके।⁸ और वह बकरा निहायत बुजुर्ग हुआ, और जब वह निहायत ताक़तवर हुआ तो उसका बड़ा सींग टूट गया और उसकी जगह चार अजीब सींग आसमान की चारों हवाओं की तरफ़ निकले।

⁹और उनमें से एक से एक छोटा सींग निकला, जो दक्खिन और पूरब और जलाली मुल्क की तरफ़ बे निहायत बढ़ गया।¹⁰ और वह बढ़ कर अजराम-ए-फलक तक पहुँचा, और उसने कुछ अजराम-ए-फलक और सितारों को ज़मीन पर गिरा दिया और उनको लताड़ा।

¹¹~बल्कि उसने अजराम के फ़रमाँरवाँ तक अपने आप को बलन्द किया, और उससे दाइमी कुर्बानी को छीन लिया और उसका मक़दिस गिरा दिया।¹² और अजराम खताकारी की वजह से क़ायम रहने वाली कुर्बानी के साथ उसके हवाले किए गए, और उसने सच्चाई को ज़मीन पर पटक दिया और वह कामयाबी के साथ यूँ ही करता रहा।

¹³~तब मैंने एक फ़रिश्ते को कलाम करते सुना, और दूसरे फ़रिश्ते ने उसी फ़रिश्ते से जो कलाम करता था पूँछा कि दाइमी कुर्बानी और वीरान करने वाली खताकारी की रोया जिसमें मक़दिस और अजराम पायमाल होते हैं, कब तक रहेगी?"¹⁴~और उसने मुझ से कहा, कि"दो हज़ार तीन सौ सुबह-और-शाम तक, उसके बा'द मक़दिस पाक किया जाएगा।"

¹⁵~फिर यूँ हुआ कि जब मैं दानीएल ने यह रोया देखी, और इसकी ता'बीर की फ़िक्र में था, तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने कोई इन्सान सूरत खड़ा है।¹⁶ और मैंने ऊलाई में से आदमी की आवाज़ सुनी, जिसने बलन्द आवाज़ से कहा, कि"ऐ ज़बराईल, इस शख्स को इस रोया के मा'ने-समझा दे।"¹⁷ चुनौचे वह जहाँ मैं खड़ा था नज़दीक आया, और उसके आने से मैं डर गया और मुँह के बल गिरा, पर उसने मुझसे कहा, "ऐ आदमज़ाद! समझ ले कि यह रोया आखिरी ज़माने के ज़रिए है।"

¹⁸~और जब वह मुझसे बातें कर रहा था, मैं गहरी नींद में मुँह के बल ज़मीन पर पड़ा था, लेकिन उसने मुझे पकड़ कर सीधा खड़ा किया,¹⁹ और कहा कि"देख, मैं तुझे समझाऊँगा कि क्रहर के आखिर में क्या होगा, क्योंकि यह हुक्म आखिरी मुकर्ररा वक़्त के बारे है।

²⁰~जो मेंढा तू ने देखा, उसके दोनों सींग मादी और फ़ारस के बादशाह हैं।²¹ और वह जसीम बकरा यूनान का बादशाह है, और उसकी आँखों के बीच का बड़ा सींग पहला बादशाह है।

²²~और उसके टूट जाने के बा'द, उसकी जगह जो चार और निकले वह चार सल्तनतें हैं जो उसकी क़ौम में क़ायम होंगी, लेकिन उनका इख्तियार उसकी तरह न होगा।²³ और उनकी सल्तनत के आखिरी दिनों में जब खताकार लोग हद तक पहुँच जाएँगे, तो एक सख़्त और बेरहम बादशाह खड़ा होगा।

²⁴~यह बड़ा ज़बरदस्त होगा लेकिन अपनी ताक़त से नहीं, और 'अजीब तरह से बर्बाद करेगा और कामयाब होगा और काम करेगा और ताक़तवरों और मुक़द्दस लोगों को हलाक करेगा।²⁵~और अपनी चतुराई से ऐसे काम करेगा कि उसकी फ़ितरत के मन्सूबे उसके हाथ में खूब अन्जाम पाएँगे, और दिल में बड़ा गुरूर करेगा और सुलह के वक़्त में बहुतों को हलाक करेगा; वह बादशाहों के बादशाह से भी मुकाबिला करने के लिए उठ खड़ा होगा, लेकिन बे हाथ हिलाए ही शिकस्त खाएगा।

²⁶~और यह सुबह शाम की रोया जो बयान हुई यक्कीनी है, लेकिन तू इस रोया को बन्द कर रख, क्योंकि इसका 'इलाक़ा बहुत दूर के दिनों से है।"

²⁷और मुझ दानीएल को ग़श आया, और मैं कुछ रोज़ तक बीमार पड़ा रहा; फिर मैं उठा और बादशाह का कारोबार करने लगा, और मैं ~ख़्वाब-से परेशान था लेकिन इसको कोई न समझा।

Chapter 9

¹दारा-बिन-'अख्सूयरस जो मादियों की नसल से था, और कसदियों की ममलुकत पर बादशाह मुकर्रर हुआ, उसके पहले साल में,²या'नी उसकी सल्तनत के पहले साल में, मैं दानीएल, ने किताबों में उन बरसों का हिसाब समझा, जिनके ज़रिए' खुदावन्द का कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ कि यरूशलीम की बर्बादी पर सत्तर बरस पूरे गुज़रेंगे।

³और मैंने खुदावन्द खुदा की तरफ़ रुख किया, और मैं मिन्नत और मुनाजात करके और रोज़ा रखकर और टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर उसका तालिब हुआ।⁴और मैंने खुदावन्द अपने खुदा से दु'आ की और इक्रार किया और कहा, कि"ऐ खुदावन्द अज़ीम और मुहीब खुदा तू अपने फ़रमाबरदार मुहब्बत रखनेवालों के लिए अपने 'अहद-ओ-रहम को कायम रखता है;

⁵~हम ने गुनाह किया, हम बरगश्ता हुए, हम ने शरारत की, हम ने बगावत की बल्कि हम ने तेरे हुक्मों और तौर तरीक़े को तर्क किया है;⁶और हम तेरे ख़िदमतगुज़ार नबियों के फ़रमाबरदार नहीं हुए, जिन्होंने तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों और हाकिमों से और हमारे बाप-दादा और मुल्क के सब लोगों से कलाम किया।

⁷ऐ खुदावन्द, सदाक़त तेरे लिए है और रूस्वाई हमारे लिए, जैसे अब यहूदाह के लोगों और यरूशलीम के बाशिन्दों और दूर-ओ-नज़दीक के तमाम बनी-इसाईल के लिए है, जिनको तूने तमाम मुमालिक में हाँक दिया क्योंकि उन्होंने तेरे खिलाफ़ गुनाह किया।⁸ऐ खुदावन्द, मायूसी हमारे लिए है; हमारे बादशाहों, हमारे उमरा और हमारे बाप-दादा के लिए, क्योंकि हम तेरे गुनहगार हुए।

⁹खुदावन्द हमारा खुदा रहीम-ओ-ग़फ़ूर है, अगरचे हमने उससे बगावत की।¹⁰हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ के सुनने वाले नहीं हुए कि उसकी शरी'अत पर, जो उसने अपने ख़िदमतगुज़ार नबियों की मा'रिफ़त हमारे लिए मुकर्रर की, 'अमल करें।¹¹हाँ, तमाम बनी-इसाईल ने तेरी शरी'अत को तोड़ा और ना फ़रमानी इख़्तियार की ताकि तेरी आवाज़ के फ़रमाबरदार न हों, इसलिए वह ला'नत और क़सम, जो खुदा के खादिम मूसा की तौरेत में लिखी हैं हम पर पूरी हुई, क्योंकि हम उसके गुनहगार हुए।

¹²और उसने जो कुछ हमारे और हमारे क़ाज़ियों के खिलाफ़ जो हमारी 'अदालत करते थे फ़रमाया था, हम पर बलाए-'अज़ीम लाकर साबित कर दिखाया, क्योंकि जो कुछ यरूशलीम से किया गया वह तमाम ज़हान में' और कहीं नहीं हुआ।¹³जैसा मूसा की तौरेत में लिखा है, यह तमाम मुसीबत हम पर आई, तोभी हम ने अपने खुदावन्द अपने खुदा से इल्तिजा न की कि हम अपनी बदकिरदारी से बा'ज़ आते और तेरी सच्चाई को पहचानते।¹⁴~इसलिए खुदावन्द ने बला को निगाह में रखा और उसको हम पर अपने सब कामों में जो वह करता है सच्चा है, लेकिन हम उसकी आवाज़ के फ़रमाबरदार न हुए।

¹⁵और अब, ऐ खुदावन्द हमारे खुदा जो ताक़तवर बाज़ू से अपने लोगों को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, और अपने लिए नाम पैदा किया जैसा आज के दिन है, हमने गुनाह किया, हमने शरारत की।¹⁶ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपनी तमाम सदाक़त के मुताबिक़ अपने क्रहर-ओ-ग़ज़ब को अपने शहर यरूशलीम, या'नी अपने कोह-ए-मुक़द्दस से ख़त्म कर, क्योंकि हमारे गुनाहों और हमारे बाप-दादा की बदकिरदारी की वजह से यरूशलीम और तेरे लोग अपने सब आसपास वालों के नज़दीक जा-ए-मलामत हुए।

¹⁷~इसलिए अब ऐ हमारे खुदा, अपने खादिम की दु'आ और इल्तिमास सुन, और अपने चेहरे को अपनी ही खातिर अपने मक़दिस पर जो वीरान है जलवागर फ़रमा।¹⁸ऐ मेरे खुदा, वीरानों को, और उस शहर को जो तेरे नाम से कहलाता है देख कि हम तेरे सामने अपनी रास्तबाज़ी पर नहीं बल्कि तेरी बेनिहायत रहमत पर भरोसा करके मुनाजात करते हैं।¹⁹ऐ खुदावन्द, सुन, ऐ खुदावन्द, मु'आफ़ फ़रमाए खुदावन्द, सुन ले और कुछ कर; ऐ मेरे खुदा, अपने नाम की खातिर देर न कर, क्योंकि तेरा शहर और तेरे लोग तेरे ही नाम से कहलाते हैं।"

²⁰~और जब मैं यह कहता और दु'आ करता, और अपने और अपनी क़ौम इसाईल के गुनाहों का इक्रार करता था, और खुदावन्द अपने खुदा के सामने अपने खुदा के कोह-ए- मुक़द्दस के लिए मुनाजात कर रहा था;²¹~हाँ, मैं दु'आ में यह कह ही रहा था कि वही शख्स जिबराईल जिसे मैंने शुरू' में रोया में देखा था, हुक्म के मुताबिक़ तेज़ परवाज़ी करता हुआ आया, और शाम की कुर्बानी ~पेश करने के वक़्त के क़रीब मुझे छुआ।

²²और उसने मुझे समझाया, और मुझ से बातें कीं और कहा, "ऐ दानीएल, मैं अब इसलिए आया हूँ कि तुझे अक्ल-ओ-समझ बख़्शूँ²³तेरी मुनाजात के शुरू' ही में हुक्म जारी हुआ, और मैं आया हूँ कि तुझे बताऊँ, क्योंकि तू बहुत 'अज़ीज़ है; इसलिए तू ग़ौर कर और ख़्वाब को समझ ले।

²⁴"तेरे लोगों और तेरे मुक़द्दस शहर के लिए सत्तर हफ़्ते मुकर्रर किए गए कि ख़ताकारी और गुनाह का ख़ातिमा हो जाए, बदकिरदारी का क़फ़ारा दिया जाए, हमेशा रास्तबाज़ी कायम ' हो, रोया-ओ-नबुव्वत पर मुहर हो और पाक तरीन मक़ाम मम्सूह किया जाए।²⁵इसलिए तू मा'लूम कर और समझ ले कि यरूशलीम की बहाली और ता'मीर का हुक्म जारी~होने से मम्सूह फ़रमाँरवाँ तक सात हफ़्ते और बासठ हफ़्ते होंगे; तब फिर बाज़ार ता'मीर किए जाएँगे और फ़सील बनाई जाएगी, मगर मुसीबत के दिनों में।

²⁶और बासठ हफ़्तों के बाद'द वह मम्सूह क़त्ल किया जाएगा, और उसका कुछ न रहेगा, और एक बादशाह आएगा जिसके लोग शहर और मक़दिस को बर्बाद करेंगे, और उसका अन्जाम गोया तूफ़ान के साथ होगा, और आखिर तक लड़ाई रहेगी; बर्बादी मुकर्रर हो चुकी है।

²⁷~और वह एक हफ़्ते के लिए बहुतों से 'अहद कायम करेगा, और निस्फ़ हफ़्ते में ज़बीहे और हदिये मौकूफ़ करेगा, और फ़सीलों पर उजाड़ने वाली मकरूहात रखी जाएँगी; यहाँ तक कि बर्बादी क़माल को पहुँच जाएगी, और वह बला जो मुकर्रर की गई है उस उजाड़ने वाले पर वाक़े' होगी।"

Chapter 10

¹शाह-ए-फ़ारस खोरस के तीसरे साल में दानीएल पर, जिसका नाम बेल्लशज़र रखा गया, एक बात ज़ाहिर की गई और वह बात सच और बड़ी लश्करकशी की थी; और उसने उस बात पर गौर किया, और उस ख़्वाब का राज़ समझा।

²~मैं दानीएल उन दिनों में तीन हफ़्तों तक मातम करता रहा।³न मैंने लज़ीज़ खाना खाया, न गोश्त और मय ने मेरे मुँह में दखल पाया और न मैंने तेल मला, जब तक कि पूरे तीन हफ़ते गुज़र न गए।

⁴और पहले महीने की चौबीसवीं तारीख को जब मैं बड़े दरिया, या'नी दरिया-ए-दजला के किनारे पर था,⁵~मैंने आँख उठा कर नज़र की और क्या देखता हूँ कि एक शख्स कतानी लिबास पहने और ऊफ़्राज़ के खालिस सोने का पटका कमर पर बाँधे खड़ा है।⁶उसका बदन ज़बरजद की तरह, और उसका चेहरा बिजली सा था, और उसकी आँखें आग के चरागों की तरह थीं; उसके बाजू और पाँव रंगत में चमकते हुए पीतल से थे, और उसकी आवाज़ अम्बोह के शोर की तरह थी।

⁷~मैं दानीएल ही ने यह ख़्वाब देखा, क्योंकि मेरे साथियों ने~ख़्वाब न देखा, लेकिन उन पर बड़ी कपकपी तारी हुई और वह अपने आप को छिपाने को भाग गए।

⁸इसलिए मैं अकेला रह गया और यह बड़ा~ख़्वाब देखा, और मुझ में हिम्मत न रही क्योंकि मेरी ताज़गी मायूसी से बदल गई और मेरी ताक़त जाती रही।⁹लेकिन मैंने उसकी आवाज़ और बातें सुनीं, और मैं उसकी आवाज़ और बातें सुनते वक़्त मुँह के बल भारी नींद में पड़ गया और मेरा मुँह ज़मीन की तरफ़ था।

¹⁰और देख एक हाथ ने मुझे छुआ, और मुझे घुटनों और हथेलियों पर बिठाया।¹¹~और उसने मुझ से कहा, "ऐ दानीएल, 'अज़ीज़ मर्द, जो बातें मैं तुझ से कहता हूँ समझ ले; और सीधा खड़ा हो जा, क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ।" और जब उसने मुझ से यह बात कही, तो मैं कौंपता हुआ खड़ा हो गया।

¹²तब उसने मुझ से कहा, ~"ऐ दानीएल, खौफ़ न कर, क्योंकि जिस दिन से तू ने दिल लगाया कि समझे, और अपने खुदा के ~सामने 'आजिज़ी करे; तेरी बातें सुनी गई और तेरी बातों की वजह से मैं आया हूँ।¹³पर फ़ारस की ममलुकत के मुवक्किल ने इक्कीस दिन तक मेरा मुक़ाबला किया। फिर मीकाएल, जो मुकर्रब फ़रिश्तों में से है, मेरी मदद को पहुँचा और मैं शाहान-ए-फ़ारस के पास रुका रहा।

¹⁴~लेकिन अब मैं इसलिए आया हूँ कि जो कुछ तेरे लोगों पर आखिरी दिनों में आने को है, तुझे उसकी ख़बर दूँ क्योंकि अभी ये रोया ज़माना-ए-दराज़ के लिए है।"¹⁵~और जब उसने यह बातें मुझ से कहीं, मैं सिर झुका कर खामोश हो रहा।

¹⁶तब किसी ने जो आदमज़ाद की तरह था मेरे होटों को छुआ, और मैंने मुँह खोला, और जो मेरे सामने खड़ा था उस से कहा, "ऐ खुदावन्द, इस ख़्वाब की वजह से मुझ पर ग़म का हुज़ूम है, और मैं नातवाँ ~हूँ।"¹⁷इसलिए यह खादिम, अपने खुदावन्द से क्यूँकर हम कलाम हो सकता है? इसलिए मैं बिल्कुल बेताब-ओ-बेदम हो गया।"

¹⁸तब एक और ने जिसकी सूरत आदमी की सी थी, आकर मुझे छुआ और मुझको ताक़त दी;¹⁹और उसने कहा, "ऐ 'अज़ीज़ मर्द, खौफ़ न कर, तेरी सलामती हो, मज़बूत-और-तवाना हो।" और जब उसने मुझसे यह कहा, तो मैंने तवानाई पाई और कहा, "ऐ मेरे खुदावन्द, फ़रमा, क्यूँकि तू ही ने मुझे ताक़त बख़्शी है।"

²⁰~तब उसने कहा, "क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास किस लिए आया हूँ? और अब मैं फ़ारस के मुवक्किल से लड़ने को वापस जाता हूँ; और मेरे जाते ही यूनान का मुवक्किल आएगा।"²¹~लेकिन जो कुछ सच्चाई की किताब में लिखा है, तुझे बताता हूँ; और तुम्हारे मुवक्किल मीकाएल के सिवा इसमें मेरा कोई मददगार नहीं है।

Chapter 11

¹~"और दारा मादी की सल्तनत के पहले साल में, मैं ही उसको क़ायम करने और ताक़त देने को खड़ा हुआ।²~"और अब मैं तुझको हकीक़त बताता हूँ। फ़ारस में अभी तीन बादशाह और खड़े होंगे, और चौथा उन सबसे ज़्यादा दौलतमन्द होगा, और जब वो अपनी दौलत से ताक़त पाएगा, तो सब को यूनान की सल्तनत के खिलाफ़ उभारेगा।

³~लेकिन एक ज़बरदस्त बादशाह खड़ा होगा, जो बड़े तसल्लुत से हुक्मरान होगा और जो कुछ चाहेगा करेगा।⁴और उसके खड़े होते ही उसकी सल्तनत को ज़वाल आएगा, और आसमान की चारों हवाओं की अतराफ़ पर तक्रसीम हो जाएगी लेकिन न उसकी नसल को मिलेगी न उसका एक बाल भी बाक़ी रहेगा बल्कि वह सल्तनत जड़ से उखड़ जाएगी और ग़ैरों के लिए होगी।

⁵~"और शाह-ए-जुनूब ज़ोर पकड़ेगा, और उसके हाकिम में से एक उससे ज़्यादा ताक़त-ओ-इख़्तियार हासिल करेगा और उसकी सल्तनत बहुत बड़ी होगी।⁶और चन्द साल के बा'द वह आपस में मेल करेंगे, क्योंकि ~शाह-ए-जुनूब की बेटी शाह-ए-शिमाल के पास आएगी, ताकि इत्तिहाद क़ायम हो; लेकिन उसमें कुव्वत-ए-बाज़ू न रहेगी और न वह बादशाह क़ायम रहेगा न उसकी ताक़त, बल्कि उन दिनों में वह अपने बाप और अपने लाने वालों और ताक़त देने वाले के साथ छोड़ दी जाएगी।

⁷"लेकिन उसकी जड़ों की एक शाख़ से एक शाख़्स उसकी जगह खड़ा ~होगा, वह सिपहसालार होकर शाह-ए-शिमाल के क़िले में दाख़िल होगा, और उन पर हमला करेगा और ग़ालिब आएगा।⁸और उनके बुतों और ढाली हुई मूरतों को, सोने चाँदी के क़ीमती बर्तन के साथ गुलाम करके मिस्र को ले जाएगा; और चन्द साल तक शाह-ए-शिमाल से अलग रहेगा।⁹~फिर वह शाह-ए-जुनूब की ममलुकत में दाख़िल होगा, पर अपने मुल्क को वापस जाएगा।

¹⁰"लेकिन उसके बेटे बरअंगेख़्ता होंगे, जो बड़ा लश्कर जमा' करेंगे और वह चढ़ाई करके फैलेगा, और गुज़र जाएगा और वह लौट कर उसके क़िले तक लड़ेंगे।

¹¹~और शाह-ए-जुनूब ग़ज़बनाक होकर निकलेगा और शाह-ए-शिमाल से जंग करेगा, और वह बड़ा लश्कर लेकर आएगा और वह बड़ा लश्कर उसके हवाले कर दिया जाएगा।¹²और जब वह लश्कर तितर बितर कर दिया जाएगा, तो उसके दिल में ग़ुरूर समाएगा; वह लाखों को गिराएगा लेकिन ग़ालिब न आएगा।

¹³और शाह-ए-शिमाल फिर हमला करेगा और पहले से ज़्यादा लश्कर जमा' करेगा, और कुछ साल के बा'द बहुत से लश्कर-और-माल के साथ फिर हमलावर होगा।

¹⁴और उन दिनों में बहुत से शाह-ए-जुनूब पर चढ़ाई करेंगे, और तेरी क़ौम के क़ज़ज़ाक़ भी उठेंगे कि उस ख़्वाब को पूरा करें; लेकिन वह गिर जाएँगे।

¹⁵~चुनौचे शाह-ए-शिमाल आएगा और दमदमा बाँधेगा और हसीन शहर ले लेगा, और जुनूब की ताक़त क़ायम न रहेगी और उसके चुने हुए मर्दों में मुक़ाबले की हिम्मत न होगी।¹⁶~और हमलावर जो कुछ चाहेगा करेगा, और कोई उसका मुक़ाबला न कर सकेगा; वह उस जलाली मुल्क में क़ायम करेगा, और उसके हाथ में तबाही होगी।

¹⁷और वह यह इरादा करेगा कि अपनी ममलुकत की तमाम शौकत के साथ उसमें दाख़िल हो, और सच्चे उसके साथ होंगे; वह कामयाब होगा और वह उसे जवान कुँवारी देगा कि उसकी बर्बादी का ज़रिया' हो, लेकिन यह तदबीर क़ायम न रहेगी और उसको इससे कुछ फ़ाइदा न होगा।¹⁸~फिर वह समंदरी-मुमालिक का रुख़ करेगा और बहुत से ले लेगा, लेकिन एक सरदार उसकी मलामत को मौक़ूफ़ करेगा, बल्कि उसे उसी के सिर पर डालेगा।¹⁹तब वह अपने मुल्क के क़िलों की तरफ़ मुड़ेगा, लेकिन ठोकर खाकर गिर पड़ेगा और मादूम हो जाएगा।

²⁰~"और उसकी जगह एक और खड़ा होगा, जो उस ख़ूबसूरत ममलुकत में महसूल लेने वाले को भेजेगा; लेकिन वह चन्द रोज़ में बे क़हर-ओ-जंग ही हलाक हो जाएगा।²¹~"फिर उसकी जगह एक पाजी खड़ा ~होगा जो सल्तनत की. 'इज़ज़त का हक़दार न होगा, लेकिन वह अचानक आएगा और चापलूसी करके ममलुकत पर क़ाबिज़ हो जाएगा।²²और वह सैलाब-ए-अफ़वाज को अपने सामने दौड़ाएगा और शिकस्त देगा, और अमीर-ए-'अहद को भी न छोड़ेगा।

²³और जब उसके साथ 'अहद-ओ-पैमान हो जाएगा तो दगाबाज़ी करेगा, क्योंकि वह बढ़ेगा और एक छोटी ~जमा'अत की मदद से ताक़त हासिल करेगा।²⁴और हुक्म के दिनों में मुल्क के वीरान मक़ामात में दाख़िल होगा, और जो कुछ उसके बाप-दादा और उनके आबा-ओ-अजदाद से न हुआ था कर दिखाएगा; वह ग़नीमत और लूट और माल उनमें तक्रसीम करेगा और कुछ 'अरसे तक मज़बूत क़िलों के खिलाफ़ मन्सूबे बाँधेगा।

²⁵~वह अपनी ताक़त और दिल को उभारेगा कि बड़ी फ़ौज के साथ शाह-ए-जुनूब पर हमला करे, और शाह-ए-जुनूब निहायत बड़ा और ज़बरदस्त लश्कर लेकर उसके मुक़ाबिले को निकलेगा लेकिन वह न ठहरेगा, क्योंकि वह उसके खिलाफ़ मन्सूबे बाँधेंगे।²⁶बल्कि जो उसका दिया खाते हैं, वही उसे शिकस्त देंगे और उसकी फ़ौज तितर बितर होगी और बहुत से क़त्ल होंगे।²⁷और इन दोनों बादशाहों के दिल शरारत की तरफ़ माइल होंगे, वह एक ही दस्तरख़्वान पर बैठ कर झूट बोलेंगे लेकिन कामयाबी न होगी, क्योंकि खातिमा मुक़र्ररा वक़्त पर होगा।

²⁸~तब वह बहुत सी ग़नीमत लेकर अपने मुल्क को वापस जाएगा; और उसका दिल 'अहद-ए-मुक़द्दस के खिलाफ़ होगा, और वह अपनी मर्ज़ी ~पूरी करके अपने मुल्क को वापस जाएगा।

²⁹"मुक़र्ररा वक़्त पर वह फिर जुनूब की तरफ़ ख़ुरूज करेगा, लेकिन ये हमला पहले की तरह न होगा।³⁰~क्योंकि अहल-ए-कित्तीम के जहाज़ उसके मुक़ाबिले को निकलेंगे, और वह रंजीदा होकर मुड़ेगा और 'अहद-ए-मुक़द्दस पर उसका ग़ज़ब भड़केगा, और वह उसके मुताबिक़ 'अमल करेगा; बल्कि वह मुड़ कर उन लोगों से जो 'अहद-ए-मुक़द्दस को छोड़ देंगे, इत्फ़ाक़ करेगा।

³¹~और अफ़वाज उसकी मदद करेंगी, और वह मज़बूत मक़दिस को नापाक और दाइमी कुर्बानी को रोकेंगे और उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ को उसमें नसब करेंगे।³²और वह 'अहद-ए-मुक़द्दस के खिलाफ़ शरारत करने वालों को खुशामद करके बरग़श्ता करेगा, लेकिन अपने ख़ुदा को पहचानने वाले ताक़त पाकर कुछ कर दिखाएँगे।

³³~और वह जो लोगों में 'अक्लमन्द हैं बहुतों को ता'लीम देंगे, लेकिन वह कुछ मुद्दत तक तलवार और आग और गुलामी और लूट मार से तबाह हाल रहेंगे।

³⁴और जब तबाही में पड़ेंगे तो उनको थोड़ी सी मदद से तक्रत पहुँचेंगी, लेकिन बहुतेरे खुशामद गोई से उनमें आ मिलेंगे।³⁵ और बा'ज़ अहल-ए-फ़हम तबाह हाल होंगे ताकि पाक और साफ़ और बुराफ़ हो जाएँ जब तक आखिरी वक्रत न आ जाए, क्योंकि ये मुकर्ररा वक्रत तक मना' है।

³⁶"और बादशाह अपनी मर्ज़ी ~के मुताबिक़ चलेगा, और तकब्बुर करेगा और सब मा'बूदों से बड़ा बनेगा, और इलाहों के इलाह के खिलाफ़ बहुत सी हैरत-अंगेज़ बातें कहेगा, और इक़बाल मन्द होगा यहाँ तक कि क़हर की तस्कीन हो जाएगी; क्योंकि जो कुछ मुकर्रर हो चुका है वाक़े' होगा।"³⁷~वह अपने बाप-दादा के मा'बूदों की परवाह न करेगा, और न 'औरतों की पसन्द को और न किसी और मा'बूद को मानेगा; बल्कि अपने आप ही को सबसे बेहतर जानेगा।

³⁸~और अपने मकान पर मा'बूद-ए-हिंसार की ताज़ीम करेगा, और जिस मा'बूद को उसके बाप-दादा न जानते थे, सोना और चाँदी और क़ीमती पत्थर और नफ़ीस तोहफ़े दे कर उसकी तकरीम करेगा।³⁹ वह बेगाना मा'बूद की मदद से मुहकम क़िलों' पर हमला करेगा; जो उसको कुबूल करेंगे उनको बड़ी 'इज़ज़त बख़्शेगा और बहुतों पर हाकिम बनाएगा और रिश्त में मुल्क को तक्रसीम करेगा।

⁴⁰ और ख़ातिमे के वक्रत में शाह-ए-जुनूब उस पर हमला करेगा, और शाह-ए-शिमाल रथ और सवार और बहुत से जहाज़ लेकर हवा के झोंके की तरह उस पर चढ़ आएगा, और ममालिक में दाख़िल होकर सैलाब की तरह गुजरेगा।⁴¹~और जलाली मुल्क में भी दाख़िल होगा और बहुत से मग़लूब हो जाएँगे, लेकिन अदूम और मोआब और बनी- 'अम्मून के ख़ास लोग उसके हाथ से छुड़ा लिए जाएँगे।

⁴²~वह दीगर मुमालिक पर भी हाथ चलाएगा और मुल्क-ए-मिस्र भी बच न सकेगा।⁴³ बल्कि वह सोने चाँदी के ख़ज़ानों और मिस्र की तमाम नफ़ीस चीज़ों पर क़ाबिज़ होगा, और लूबी और कूशी भी उसके हम-रक्बाब होंगे।

⁴⁴लेकिन पश्चिमी और उत्तरी अतराफ़ से अफ़वाहें उसे परेशान करेंगी, और वह बड़े ग़ज़ब से निकलेगा कि बहुतों को नेस्त-ओ-नाबूद करे।⁴⁵ और वह शानदार मुक़द्दस पहाड़ और समुन्दर के बीच शाही खेमे लगाएगा, लेकिन उसका ख़ातिमा हो जाएगा और कोई उसका मददगार न होगा।

Chapter 12

¹और उस वक़्त मीकाईल मुकर्रब फ़रिश्ता जो तेरी क्रौम के फ़रज़न्दों की हिमायत के लिए खड़ा है उठेगा और वह ऐसी तकलीफ़ का वक़्त होगा कि इब्तिदाई क्रौम से उस वक़्त तक कभी न हुआ होगा, और उस वक़्त तेरे लोगों में से हर एक, जिसका नाम किताब में लिखा होगा रिहाई पाएगा।²और जो खाक में सो रहे हैं उनमें से बहुत से जाग उठेंगे, कुछ हमेशा की ज़िन्दगी के लिए और कुछ रुस्वाई और हमेशा की ज़िल्लत के लिए।

³और 'अक्लमन्द नूर-ए-फलक की तरह चमकेंगे, और जिनकी कोशिश से बहुत से रास्तबाज़ हो गए, सितारों की तरह हमेशा से हमेशा तक रोशन होंगे।' लेकिन तू ऐ दानीएल, इन बातों को बन्द कर रख, और किताब पर आखिरी ज़माने तक मुहर लगा दे। बहुत से इसकी तफ़्तीश-ओ-तहक़ीक़ करेंगे और~'अक्ल-बढ़ती रहेगी।"

⁴फिर मैं दानिएल ने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दो शख्स और खड़े थे; एक दरिया के इस किनारे पर और दूसरा दरिया के उस किनारे पर।⁵~और एक ने उस शख्स से जो कतानी लिबास पहने था और दरिया के पानी पर खड़ा था पूछा, कि "इन 'अजाइब के अन्जाम तक कितनी मुद्त है?"

⁷और मैंने सुना कि उस शख्स ने जो कतानी लिबास पहने था, जो दरिया के पानी के ऊपर खड़ा था, दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर "हय्युल कय्यूम की क्रसम खाई और कहा कि एक दौर और दौर और नीम दौर। और जब वह मुकद्दस लोगों की ताक़त को नेस्त कर चुके तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

⁸और मैंने सुना लेकिन समझ न सका तब मैंने कहा ऐ मेरे खुदावन्द इनका अंजाम क्या होगा।⁹उसने कहा ऐ दानिएल तू अपनी राह ले क्योंकि यह बातें आखिरी वक़्त तक बन्द-ओ-सरबमुहर रहेंगी।

¹⁰और बहुत लोग पाक किए जायेंगे और साफ़-ओ-बर्बाक़ होंगे लेकिन शरीर शरारत करते रहेंगे और शरीरों में से कोई न समझेगा लेकिन 'अक्लमन्द-समझेगे।

¹¹और जिस वक़्त से दाइमी कुर्बानी ख़त्म की जायेगी और वह उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ खड़ी की जायेगी एक हज़ार दो सौ नव्वे दिन होंगे।

¹²मुबारक है वह जो एक हज़ार तीन सौ पैतीस रोज़ तक इन्तिज़ार करता है।¹³लेकिन तू अपनी राह ले जब तक कि मुद्त पूरी न हो क्योंकि तू आराम करेगा और दिनों के ख़ातिमे पर अपनी मीरास में उठ खड़ा होगा।

होसेअ

Chapter 1

¹शाहान-ए-यहूदाह 'उज़्ज़ियाह और यूताम और आखज़ और हिज़क्रियाह और शाह ए-इसाईल युरब'आम-बिन-यूआस के दिनों में खुदावन्द का कलाम होसे'अ-बिन-बैरी पर नाज़िल हुआ।²जब खुदावन्द ने शुरू' में होसे'अ के ज़रिए' कलाम किया, तो उसको फ़रमाया, "जा, एक बदकार बीवी और बदकारी की औलाद अपने लिए ले, क्योंकि मुल्क ने खुदावन्द को छोड़कर बड़ी बदकारी की है।"

³~तब उसने जाकर जुमर बिन्त दिबलाईम को लिया; वह हामिला हुई, और बेटा पैदा हुआ।⁴और खुदावन्द ने उसे कहा, "उसका नाम यज़र'एल रख, क्योंकि मैं 'अनक़रीब ही याहू के घराने से यज़र'एल के खून का बदला लूँगा, और इस्राईल के घराने की सल्तनत को ख़त्म करूँगा।"⁵~और उसी वक़्त यज़र'एल की वादी में इस्राईल की कमान तोड़ूँगा।"

⁶वह फिर हामिला हुई, और बेटी पैदा हुई। और खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, कि "उसका नाम लूरहामा रख, क्योंकि मैं इस्राईल के घराने पर फिर रहम न करूँगा कि उनको मु'आफ़ करूँ।⁷लेकिन यहूदाह के घराने पर रहम करूँगा, और मैं खुदावन्द उनका खुदा उनको रिहाई दूँगा और उनको कमान और तलवार और लड़ाई और घोड़ों और सवारों के वसीले से नहीं छुड़ाऊँगा।"

⁸और लूरहामा का दूध छुड़ाने के बा'द, वह फिर हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ।⁹और उसने फ़रमाया, कि उसका नाम लो'अम्मी रख; क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो, और मैं तुम्हारा नहीं हूँगा।

¹⁰तोभी बनी-इसाईल दरिया की रेत की तरह बेशुमार-ओ-बेक्रियास होंगे, और जहाँ उनसे ये कहा जाता था, "तुम मेरे लोग नहीं हो," ज़िन्दा खुदा के फ़र्ज़न्द कहलाएँगे।¹¹और बनी यहूदाह और बनी-इसाईल आपस में एक होंगे, और अपने लिए एक ही सरदार ~मुक़र्रर करेंगे। और इस मुल्क से खुरूज करेंगे, क्योंकि यज़र'एल का दिन 'अज़ीम होगा।

Chapter 2

¹अपने भाइयों से 'अम्मी कहो, और अपनी बहनों से रुहामा।

²"तुम अपनी माँ से हुज्जत करो - क्योंकि न वह मेरी बीवी है, और न मैं उसका शौहर हूँ - वह अपनी बदकारी अपने सामने से, अपनी ज़िनाकारी अपने पिस्तानों से दूर करे; ³ऐसा न हो कि मैं उसे बेपर्दा करूँ, और उस तरह डाल दूँ जिस तरह वह अपनी पैदाइश के दिन थी, और उसको बियाबान और खुशक ज़मीन की तरह बना कर प्यास से मार डालूँ।

⁴मैं उसके बच्चों पर रहम न करूँगा, क्योंकि वह हलालज़ादे नहीं हैं। ⁵उनकी माँ ने धोखा किया; उनकी वालिदा ने रूस्याही की। क्योंकि उसने कहा, 'मैं अपने यारों के पीछे जाऊँगी, जो मुझ को रोटी-पानी और ऊनी, और कतानी कपड़े और रौगन-ओ-शरबत देते हैं।'

⁶इसलिए देखो, मैं उसकी राह काँटों से बन्द करूँगा, और उसके सामने दीवार बना दूँगा, ताकि उसे रास्ता न मिले। ⁷और वह अपने यारों के पीछे जाएगी, पर उनसे जा न मिलेगी; और उनको ढूँढेगी पर न पाएगी। तब वह कहेगी, 'मैं अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँगी, क्योंकि मेरी वह हालत अब से बेहतर थी।'

⁸क्योंकि उसने न जाना कि मैं ने ही उसे गल्ला-ओ-मय और रौगन दिया, और सोने चाँदी की फिरवानी बख़्शी जिसको उन्होंने बा'ल पर खर्च किया। ⁹इसलिए मैं अपना गल्ला फ़सल के वक़्त, और अपनी मय को उसके मौसम में वापस ले लूँगा, और अपने ऊनी और कतानी कपड़े जो उसकी सत्रपोशी करते हैं, छीन लूँगा।

¹⁰अब मैं उसकी फ़ाहिशागरी उसके यारों के सामने फ़ाश करूँगा, और कोई उसको मेरे हाथ से नहीं छुड़ाएगा। ¹¹अलावा इसके मैं उसकी तमाम खुशियों, और ज़शनों और नए चाँद और सबत के दिनों और तमाम मु'अय्यन 'ईदों को खत्म करूँगा।

¹²और मैं उसके अंगूर और अंजीर के दरख़्तों को, जिनके बारे में उसने कहा है, 'ये मेरी उजरत है, जो मेरे यारों ने मुझे दी है,' बर्बाद करूँगा और उनको जंगल बनाऊँगा, और जंगली जानवर उनको खाएँगे। ¹³और खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उसे बा'लीम के दिनों के लिए सज़ा दूँगा जिनमें उसने उनके लिए खुशबू जलाई, जब वह बालियों और ज़ेवरों से आरास्ता होकर अपने यारों के पीछे गई, और मुझे भूल गई।

¹⁴~"तोभी मैं उसे फ़रेफ़ता कर लूँगा, और बियावान में लाकर, उससे तसल्ली की बातें कहूँगा। ¹⁵और वहाँ से उसके ताकिस्तान उसे दूँगा, और 'अकूर की वादी भी, ताकि वह उम्मीद का दरवाज़ा हो, और वह वहाँ गाया करेगी जैसे अपनी जवानी के दिनों में, और मुल्क-ए-मिस्र से निकल आने के दिनों में गाया करती थी

¹⁶"और खुदावन्द फ़रमाता है, तब वह मुझे ईशी कहेगी और फिर बाली न कहेगी। ¹⁷~क्योंकि मैं बा'लीम के नाम उसके मुँह से दूर-करूँगा, और फिर कभी उनका नाम न लिया जाएगा।

¹⁸तब मैं उनके लिए जंगली जानवरों, और हवा के परिन्दों, और ज़मीन-पर रेंगने वालों से 'अहद करूँगा; और कमान और तलवार और लड़ाई को मुल्क से नेस्त-करूँगा, और लोगों को अमन-ओ-अमान से लेटने का मौक़ा दूँगा।

¹⁹और तुझे अपनी अबदी नामज़द करूँगा। हाँ, तुझे सदाक़त और 'अदालत और शफ़क़त-ओ-रहमत से अपनी नामज़द करूँगा। ²⁰मैं तुझे वफ़ादारी से अपनी नामज़द बनाऊँगा और तू खुदावन्द को ~पहचानेगी।

²¹~"और उस वक़्त मैं सुनूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं आसमान की सुनूँगा और आसमान ज़मीन की सुनेगा; ²²और ज़मीन अनाज और मय और तेल की सुनेगी, और वह यज़र'एल की सुनेगी;

²³और मैं उसको ~उस सरज़मीन में अपने लिए बोऊँगा। और लूरहामा पर रहम करूँगा, और लो'अम्मी से कहूँगा, 'तुम मेरे लोग हो; और वह कहेंगे, 'ऐ हमारे खुदा।'"

Chapter 3

¹~खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "जा,उस 'औरत से जो अपने यार की प्यारी और बदकार है, मुहब्बत रख; जिस तरह कि खुदावन्द बनी-इसाईल से जो ग़ैर-मा'बूदों पर निगाह करते हैं और किशमिश के कुल्चे चाहते हैं, मुहब्बत रखता है।"²~इसलिए, मैंने उसे पन्द्रह रुपये और डेढ़ खोमर जौ देकर अपने लिए मोल लिया |

³और उसे कहा, "तू मुद्दत-ए-दराज़ तक मुझ पर क्रना'अत करेगी, और हरामकारी से बाज़ रहेगी और किसी दूसरे की बीवी न बनेगी, और मैं भी तेरे लिए यूँ ही रहूँगा।"

⁴~क्योंकि बनी-इसाईल बहुत दिनों तक बादशाह और हाकिम और कुर्बानी और सुतून और अफूद और तिराफ़ीम के बग़ैर रहेंगे।⁵~इसके बा'द बनी-इसाईल रुजू' लाएँगे, और खुदावन्द अपने खुदा को और अपने बादशाह दाउद को ढूँढ़ेंगे और आखिरी दिनों ~में डरते हुए खुदावन्द और उसकी मेहरबानी के तालिब होंगे।

Chapter 4

¹ऐ बनी इस्राईल खुदावन्द का कलाम सुनों क्योंकि इस मुल्क में रहने वालों से खुदावन्द का झगड़ा है; क्योंकि ये मुल्क रास्ती-ओ-शफ़क़त, और खुदाशनासी से खाली है।²बदज़बानी वा'दा खिलाफ़ी~और खुर्रेज़ी और चोरी और हरामकारी के अलावा और कुछ नहीं होता; वह जुल्म करते हैं, और खून पर खून होता है।”

³~इसलिए मुल्क मातम करेगा, और उसके तमाम रहने वाले जंगली जानवरों, और हवा के परिन्दों के साथ नातवाँ हो जाएँगे; बल्कि समन्दर की मछलियाँ भी ग़ायब हो जाएँगी।

⁴तोभी कोई दूसरे के साथ बहस न करे, और न कोई उसे इल्ज़ाम दे; क्योंकि तेरे लोग उनकी तरह हैं, जो काहिन से बहस करते हैं।⁵इसलिए तू दिन को गिर पड़ेगा, और तेरे साथ नबी भी रात को गिरेगा; और मैं तेरी माँ को तबाह करूँगा।

⁶~मेरे लोग 'अदम-ए-मा'रिफ़त से हलाक हुए; चूँकि तू ने ज़रिए' को रद्द किया, इसलिए मैं भी तुझे रद्द करूँगा ताकि तू मेरे सामने काहिन न हो; और चूँकि तू अपने खुदा की शरी'अत को भूल गया है, इसलिए मैं भी तेरी औलाद को भूल जाऊँगा।⁷जैसे जैसे वह बड़ते गए, मेरे खिलाफ़ ज़्यादा गुनाह करने लगे; फिर मैं उनकी हश्मत को रुस्वाई से बदल डालूँगा।

⁸~वह मेरे लोगों के गुनाह पर गुज़रान करते हैं; और उनकी बदकिरदारी के आरज़ूमंद हैं।⁹फिर जैसा लोगों का हाल, वैसा ही काहिनों का हाल होगा; मैं उनके चालचलन की सज़ा और उनके 'आमाल का बदला उनको दूँगा।

¹⁰चूँकि उनको खुदावन्द का खयाल नहीं, इसलिए वह~खाएँगे, पर आसूदा न होंगे; वह बदकारी करेंगे, लेकिन ज़्यादा न होंगे।

¹¹बदकारी और मय और नई मय से बसीरत जाती रहती है।¹²मेरे लोग अपने काठ के पुतले से सवाल करते हैं उनकी लाठी उनको जवाब देती है। क्योंकि बदकारी की रूह ने उनको गुमराह किया है, और अपने खुदा की पनाह को छोड़ कर बदकारी करते हैं।

¹³पहाड़ों की चोटियों पर वह कुर्बानियाँ और टीलों पर और बलूत-ओ-चिनार-ओ-बतम के नीचे खुशबू जलाते हैं, क्योंकि उनका साया अच्छा है। पस बहू बेटियाँ बदकारी करती हैं।¹⁴जब तुम्हारी बहू बेटियाँ बदकारी करेंगी, तो मैं उनको सज़ा नहीं दूँगा; क्योंकि वह आप ही बदकारों के साथ खिखिलत्व में जाते हैं, और कस्बियों के साथ कुर्बानियाँ गुज़रानते हैं। तब जो लोग 'अक्ल से खाली हैं, बर्बाद किए जाएँगे।

¹⁵~ऐ इस्राईल, अगरचे तू बदकारी करे, तोभी ऐसा न हो कि यहूदाह भी गुनहगार हो। तुम जिल्जाल में न आओ और बैतआवन पर न जाओ, और खुदावन्द की हयात की क्रसम न खाओ।¹⁶क्योंकि इस्राईल ने सरकश बछिया की तरह सरकशी की है; क्या अब खुदावन्द उनको कुशादा जगह में बर्रे की तरह चराएगा?

¹⁷इफ़्राईम बुतों से मिल गया है; उसे छोड़ दो।¹⁸वह मयख्वारी से सेर होकर बदकारी में मशगूल होते हैं; उसके हाकिम रुस्वाई दोस्त हैं।¹⁹~हवा ने उसे अपने दामन में उठा लिया, वह अपनी कुर्बानियों से शर्मिन्दा होंगे।

Chapter 5

¹ऐ काहिनो, ये बात सुनो ! ऐ बनी-इसाईल, कान लगाओ ! ऐ बादशाह के घराने, सुनो ! इसलिए कि फ़तवा तुम पर है; क्योंकि तुम मिसफ़ाह में फंदा और तबूर पर दाम बने हो।²बागी खूँरेज़ी में गर्क हैं, लेकिन मैं उन सब की तादीब करूँगा।

³~मैं इफ़्राईम को जानता हूँ, और इसाईल भी मुझ से छिपा नहीं; क्योंकि ऐ इफ़्राईम, तू ने बदकारी की है; इसाईल नापाक हुआ।⁴उनके 'आमाल उनको खुदा की तरफ़ रुजू' नहीं होने देते क्योंकि बदकारी की रूह उनमें मौजूद है और खुदावन्द को नहीं जानते।

⁵और फ़ख़-ए-इसाईल उनके मुँह पर गवाही देता है, और इसाईल और इफ़्राईम अपनी बदकिरदारी में गिरेंगे, और यहूदाह भी उनके साथ गिरेगा।⁶वह अपने रेवड़ों और गल्लों के वसीले से खुदावन्द के तालिब होंगे, लेकिन उसको न पाएँगे; वह उनसे दूर हो गया है।⁷~उन्होंने खुदावन्द के साथ बेवफ़ाई की, क्योंकि उनसे अजनबी बच्चे पैदा हुए। अब एक महीने का 'अर्सा उनकी जायदाद के साथ उनको खा जाएगा।

⁸'जिब'आ में कर्ना फूँको और रामा में तुरही। बैतआवन में ललकारो, कि ऐ बिनयमीन, खबरदार पीछे देख!'⁹तादीब के दिन-इफ़्राईम-वीरान होगा। जो कुछ यक्रीनन होने वाला है मैंने इसाईली क़बीलों को जता दिया है।

¹⁰यहूदाह के 'उमरा सरहदों को सरकाने वालों की तरह हैं। मैं उन पर अपना क्रहर पानी की तरह उँडेलूँगा।'¹¹~इफ़्राईम मज़लूम और फ़तवे से दबा है क्योंकि उसने पैरवी पर सब्र किया।

¹²तब मैं-इफ़्राईम के लिए कीड़ा हूँगा और यहूदाह के घराने के लिए घुन।¹³जब-इफ़्राईम ने अपनी बीमारी और यहूदाह ने अपने ज़ख़म को देखा तो-इफ़्राईम-असूर को गया और उस मुखालिफ़ बादशाह को दा'वत दी लेकिन वह न तो तुम को शिफ़ा दे सकता है और न तुम्हारे ज़ख़म का 'इलाज कर सकता है।

¹⁴क्योंकि मैं-इफ़्राईम के लिए शेर-ए-बबर और बनी यहूदाह के लिए जवान शेर की तरह हूँगा। मैं हॉ मैं ही फाड़ूँगा और चला जाऊँगा। मैं उठा ले जाऊँगा और कोई छुड़ाने वाला न होगा।¹⁵मैं रवाना हूँगा और अपने घर को चला जाऊँगा जब तक कि वह अपने गुनाहों का इक्रार करके मेरे चहरे के तालिब न हों। वह अपनी मुसीबत में बड़ी सर गर्मी से मेरे तालिब होंगे।

Chapter 6

¹आओ खुदवन्द की तरफ़ रुजू' करें क्योंकि उसी ने फाड़ा है और वही हम को शिफ़ा बख़्शेगा। उसी ने मारा है और वही हमारी मरहम पट्टी करेगा।²वह दो दिन के बा'द हम को हयात-ए-ताज़ा बख़्शेगा और तीसरे दिन उठा खड़ा करेगा और हम उसके सामने ज़िन्दगी बसर करेंगे।³आओ हम दरियाफ़्त करें और खुदावन्द के 'इरफ़ान में तरक्की करें। उसका ज़हूर सुबह की तरह यक़ीनी है और वह हमारे पास बरसात की तरह या'नी आख़िरी बरसात की तरह जो ज़मीन को सेराब करती है, आएगा।

⁴ऐ एफ़्राईम मैं तुझ से क्या करूँ? ऐ यहूदाह मैं तुझ से क्या करूँ? क्योंकि तुम्हारी नेकी सुबह के बादल और शबनम की तरह जल्द जाती रहती है।⁵इसलिए मैंने उनके नबियों के वसीले से काट डाला और अपने कलाम से क़त्ल किया है और मेरा 'अद्ल नूर की तरह चमकता है।

⁶क्योंकि मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ और खुदा शनासी को सोखतनी कुर्बानियों से ज़्यादा चाहता हूँ।⁷लेकिन वह 'अहद शिकन आदमियों की तरह हैं। उन्होंने वहाँ मुझ से बेवफ़ाई की है।

⁸'जिलआ'द बदकिरदारी की बस्ती है। वह खूनआलुदा है।⁹~जिस तरह के रहज़नों के ग़ोल किसी आदमी की धोखे में बैठते हैं उसी तरह काहिनों की गिरोह सिक्म की राह में क़त्ल करती है, हाँ उन्होंने बदकारी की है।

¹⁰मैंने इस्राईल के घराने में एक खतरनाक चीज़ देखी।इफ़्राईम में बदकारी पाई जाती है और इस्राईल नापाक हो गया।¹¹~ऐ यहूदाह तेरे लिए भी कटाई का वक़्त मुक़र्रर है जब मैं अपने लोगों को गुलामी से वापस लाऊँगा

Chapter 7

¹जब मैं इस्राईल को शिफा बख्शने को था तो~इफ्राईम की बदकिरदारी और सामरिया की शरारत ज़ाहिर हुई क्योंकि वह दगा करते हैं। अन्दर चोर घुस आए हैं और बाहर डाकुओं का गोल लूट रहा है।²~वह ये नहीं सोचते के मुझे उनकी सारी शरारत मा'लूम है। अब उनके 'आमाल ने जो मुझ पर ज़ाहिर हैं उनको घेर लिया है।

³वह बादशाह को अपनी शरारत और उमरा को दरोगा गोई से खुश करते हैं।⁴वह सब के सब बदकार हैं। वह उस तनूर की तरह हैं जिसको नानबाई गर्म करता है और आटा गूंधने के वक़्त से खमीर उठने तक आग भड़काने से बाज़ रहता है।⁵~हमारे बादशाह के जश के दिन उमरा तो गर्मी-ए-मय से बीमार हुए और वह ठठाबाज़ों के साथ बेतकल्लुफ़ हुआ।

⁶धोखे में बैठे उनके दिल तनूर की तरह हैं। उनका क्रहर रात भर सुलगता रहता है। वह सुबह के वक़्त आग की तरह भड़कता है।⁷~वह सब के सब तनूर की तरह दहकते हैं और अपने क़ाज़ियों को खा जाते हैं। उनके सब बादशाह मारे गए। उनमें कोई न रहा जो मुझ से दु'आ करे।

⁸~इफ्राईम दूसरे लोगों से मिल जुल गया। इफ्राईम एक चपाती है जो उलटाई न गई।⁹अजनबी उसकी तवानाई को निगल गए और उसकी ख़बर नहीं और बाल सफ़ेद होने लगे पर वह बेख़बर है।

¹⁰और फ़ख़्र-ए-इस्राईल उसके मुँह पर गवाही देता है तोभी वह खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ रुजू' नहीं लाए और बावजूद इस सब के उसके तालिब नहीं हुए।

¹¹इफ्राईम~बेवकूफ़-ओ-नासमझ फ़ाख़्ता है वह मिस्र की दुहाई देते और असूर को जाते हैं।

¹²~जब वह जाएँगे तो मैं उन पर अपना जाल फैला दूँगा। उनकी हवा के परिन्दों की तरह नीचे उतारूँगा और जैसा उनकी जमा'अत सुन चुकी है उनकी तादीब करूँगा।¹³उन पर अफ़सोस क्योंकि वह~मुझ से आवारा हो गए, वह बर्बाद हों क्योंकि वह मुझ से बागी हुए। अगरचे मैं उनका फ़िदिया देना चाहता हूँ वह मेरे खिलाफ़ दरोगा गोई करते हैं।

¹⁴और वह हुज़ूर-ए-क़ल्ब के साथ मुझ से फ़रियाद नहीं करते बल्कि अपने बिस्तरों पर पड़े चिल्लाते हैं। वह अनाज और मय के लिये तो जमा' हो जाते हैं पर मुझ से बागी रहते हैं।¹⁵~अगरचे मैंने उनकी तरबियत की और उनको ताक़तवर बाज़ू किया तोभी वह मेरे हक़ में बुरे खयाल करते हैं।

¹⁶वह रुजू' होते हैं पर हक़ ताला की तरफ़ नहीं। वह दगा देने वाली कमान की तरह हैं। उनके उमरा अपनी ज़बान की गुस्ताखी की वजह से बर्बाद होंगे। इससे मुल्क-ए-मिस्र में उनकी हँसी होगी।

Chapter 8

¹तुरही अपने मुँह से लगा! वह 'उक्काब की तरह खुदावन्द के घर पर टूट पड़ा है, क्योंकि उन्होंने मेरे अहद से तजावुज किया और मेरी शरी'अत के खिलाफ़ चले।

²वह मुझे यूँ पुकारते हैं कि ऐ हमारे खुदा, हम बनी-इसाईल तुझे पहचानते हैं।³इसाईल ने भलाई को छोड़ दिया, दुश्मन उसका पीछा करेंगे।

⁴उन्होंने बादशाह मुकर्रर किए लेकिन मेरी तरफ़ से नहीं। उन्होंने उमरा को ठहराया है और मैंने उनको न जाना। उन्होंने अपने सोने चाँदी से बुत बनाए ताकि बर्बाद हों।⁵ऐ सामरिया, तेरा बछड़ा मरदूद है। मेरा क्रहर उन पर भड़का है। वह कब तक गुनाह से पाक न होंगे।

⁶क्योंकि ये भी इसाईल ही की करतूत है। कारीगर ने उसको बनाया है। वह खुदा नहीं। सामरिया का बछड़ा यक्रीनन टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा।⁷~बेशक उन्होंने हवा बोई। वह गर्दबाद काटेंगे, न उसमें डंठल निकलेगा न उसकी बालों से गल्ला पैदा होगा और अगर पैदा हो भी तो अजनबी उसे चट कर जाएँगे।

⁸~इसाईल निगला गया। अब वह क्रौमों के बीच ना पसंदीदा बर्तन की तरह होंगे।⁹क्योंकि वह तन्हा गोरखर की तरह असूर को चले गए हैं।~इफ़्राईम ने उजरत पर यार बुलाए।¹⁰अगरचे उन्होंने क्रौमों को उजरत दी है तो भी अब मैं उनको जमा' करूँगा और वह बादशाह-ओ-उमरा के बोझ से गमगीन होंगे।

¹¹~चूँकि इफ़्राईम ने गुनहगारी के लिए बहुत सी कुर्बानगाहें बनायीं इसलिए वह कुर्बानगाहें उसकी गुनहगारी का ज़रिया' हुई।¹²अगरचे मैंने अपनी शरी'अत के अहकाम को उनके लिए हज़ारों बार लिखा, लेकिन वह उनको अजनबी ख्याल करते हैं।

¹³वह मेरे तोहफ़ों की कुर्बानियों के लिए गोश्त पेश करते और खाते हैं, लेकिन खुदावन्द उनको कुबूल नहीं करता। अब वह उनकी बदकिरदारी की याद करेगा और उनको उनके गुनाहों की सज़ा देगा। वह मिस्र को वापस जाएँगे।¹⁴~इसाईल ने अपने खालिक्र को फ़रामोश करके बुतखाने बनाए हैं और यहूदाह ने बहुत से हसीन शहर ता'मीर किए हैं, लेकिन मैं उसके शहरों पर आग भेजूँगा और वह उनके कस्बों को भसम कर देगी।

Chapter 9

¹ऐ इस्राईल, दूसरी क्रौमों की तरह खुशी-ओ-शादमानी न कर, क्योंकि तू ने अपने खुदा से बेवफ़ाई की है। तूने हर एक खलीहान में उजरत तलाश की है।

²~खलीहान और मय के हौज़ उनकी परवरिश के लिए काफ़ी न होंगे और नई मय किफ़ायत न करेगी।

³~वह खुदावन्द के मुल्क में न बसेंगे, बल्कि~इफ़्राईम मिस्र को वापस जाएगा और वह असूर में नापाक चीज़ें खाएँगे।⁴~वह मय को खुदावन्द के लिए न तपाएँगे और वह उसके मक़बूल न होंगे, उनकी कुर्बानियाँ उनके लिए नौहागरों की रोटी की तरह होंगी। उनको खाने वाले नापाक होंगे, क्योंकि उनकी रोटियाँ उन ही की भूक के लिए होंगी और खुदावन्द के घर में दाख़िल न होंगी।

⁵मजमा'-ए-मुक़द्दस के दिन और खुदावन्द की 'ईद के दिन क्या करोगे?'⁶~क्योंकि वो तबाही के ख़ौफ़ से चले गए, लेकिन मिस्र उनको समेटेगा। मोफ़ उनको दफ़न करेगा। उनकी चाँदी के अच्छे खज़ानों पर बिच्छू बूटी क़ाबिज़ होगी। उनके खेमों में काँटे उगेंगे।

⁷~सज़ा के दिन आ गए, बदले का वक़्त आ पहुँचा। इस्राईल को मा'लूम हो जाएगा कि उसकी बदकिरदारी की कसरत और 'अदावत की ज़्यादती के ज़रिए' नबी बेवकूफ़ है। रूहानी आदमी दीवाना है।

⁸~इफ़्राईम मेरे खुदा की तरफ़ से निगहबान है। नबी अपनी तमाम राहों में चिड़ीमार का जाल है। वह अपने खुदा के घर में 'अदावत है।' उन्होंने अपने आप को निहायत खराब किया जैसा ज़िब'आ के दिनों में हुआ था। वह उनकी बदकिरदारी को याद करेगा और उनके गुनाहों की सज़ा देगा।

¹⁰मैंने इस्राईल को बियाबानी अंगूरों की तरह पाया। तुम्हारे बाप-दादा को अंजीर के पहले पक्के फल की तरह देखा जो दरख़्त के पहले मौसम में लगा हो, लेकिन वह बा'ल फ़गूर के पास गए और अपने आप को उस ज़रिए' रुस्वाई के लिए मख़सूस किया और अपने उस महबूब की तरह मकरूह हुए।

¹¹~अहल-ए-इफ़्राईम की शौकत परिन्दे की तरह उड़ जाएगी, विलादत-ओ-हामिला का बुजुद उनमें न होगा और क़रार-ए-हमल ख़त्म हो जाएगा।¹²अगरचे वह अपने बच्चों को पालें, तोभी मैं उनको छीन लूँगा, ताकि कोई आदमी बाकी न रहे। क्योंकि जब मैं भी उनसे दूर हो जाऊँ, तो उनकी हालत क़ाबिल-ए-अफ़सोस~होगी।

¹³~इफ़्राईम को मैं देखता हूँ कि वो सूर की तरह उम्दा जगह में लगाया गया, लेकिन इफ़्राईमअपने बच्चों को क़ातिल के सामने ले जाएगा।¹⁴ऐ खुदावन्द, उनको दे; तू उनको क्या देगा? उनको इस्कात-ए-हमल और खुशक पिस्तान दे।

¹⁵~उनकी सारी शरारत जिलज़ाल में है। हाँ, वहाँ मैंने उनसे नफ़रत की। उनकी बदआ'माली की वजह से मैं उनको अपने घर से निकाल दूँगा और फिर उनसे मुहब्बत न रखूँगा। उनके सब उमरा बागी हैं।

¹⁶~बनी~इफ़्राईम तबाह हो गए। उनकी जड़ सूख गई। उनके यहाँ औलाद न होगी और अगर औलाद हो भी तो मैं उनके प्यारे बच्चों को हलाक करूँगा।¹⁷~मेरा खुदा उनको ~छोड़ देगा, क्योंकि वो उसके सुनने वाले नहीं हुए और वह अक्रवाम-ए-'आलम में आवारा फिरेंगे।

Chapter 10

¹इस्राईल लहलहाती ताक है जिसमें फल लगा, जिसने अपने फल की कसरत के मुताबिक बहुत सी कुर्बानगाहें ता'मीर की और अपनी ज़मीन की खूबी के मुताबिक अच्छे अच्छे सुतून बनाए।²उनका दिल दशाबाज़ है। अब वह मुजरिम ठहरेंगे। वह उनके मज़बहों को ढाएगा और उनके सुतूनों को तोड़ेगा।

³~यक़ीनन अब वह कहेंगे,हमारा कोई बादशाह नहीं क्योंकि जब हम खुदावन्द से नहीं डरते तो बादशाह हमारे लिए क्या कर सकता है?"⁴~उनकी बातें बेकार हैं। वह 'अहद-ओ-पैमान में झूठी क्रसम खाते हैं। इसलिए बला ऐसी फूट निकलेगी जैसे खेत की रेघारियों में इन्द्रायन।

⁵बैतआवन की बछियों की वजह से सामरिया के रहने वाले खौफ़ज़दा होंगे, क्योंकि वहाँ के लोग उस पर मातम करेंगे, और वहाँ के काहिन भी जो उसकी पहले की शौकत की वजह से शादमान थे।⁶~इसको भी असूर में ले जाकर, उस मुखालिफ़ बादशाह की नज़र करेंगे।~इफ़्राईम शर्मिन्दगी उठाएगा और इस्राईल अपनी मश्वरत से शर्मिन्दा होगा।

⁷सामरिया का बादशाह कट गया है, वह पानी पर तैरती शाख की तरह है।⁸~और आवन के ऊँचे मक़ाम, जो इस्राईल का गुनाह हैं, बर्बाद किए जाएँगे; और उनके मज़बहों पर काँटे और ऊँट कटारे उगेंगे और वह पहाड़ों से कहेंगे, हम को छिपा लो,और टीलों से कहेंगे, हम पर आ गिरो।

⁹ऐ इस्राईल, तू जिब'आ के दिनों से गुनाह करता आया है। वो वहीं ठहरे रहे, ताकि लड़ाई जिब'आ में बदकिरदारों की नस्ल तक न पहुँचे।

¹⁰मैं जब चाहूँ उनको सज़ा दूँगा और जब मैं उनके दो गुनाहों की सज़ा दूँगा तो लोग उन पर हुजूम करेंगे।¹¹इफ़्राईम सधाई हुई बछिया है, जो दाओना पसन्द करती है, और मैंने उसकी खुशनुमा गर्दन की दरेा किया लेकिन मैं~इफ़्राईम~पर सवार बिठाऊँगा। यहूदाह हल चलाएगा और या'कूब ढेले तोड़ेगा।

¹²~अपने लिए सच्चाई से बीज बोया करो। शफ़क़त से फ़सल काटो और अपनी उफ़तादा ज़मीन में हल चलाओ, क्योंकि अब मौक़ा' है कि तुम खुदावन्द के तालिब हो,ताकि वह आए और रास्ती को तुम पर बरसाए।¹³तुम ने शरारत का हल चलाया। बदकिरदारी की फ़सल काटी और झूट का फल खाया, क्योंकि तू ने अपने चाल चलन में अपने बहादुरों के अम्बोह पर तकिया किया।

¹⁴~इसलिए तेरे लोगों के खिलाफ़ हंगामा खड़ा होगा, और तेरे सब किले' ढा दिए जाएँगे, जिस तरह शल्मन ने लड़ाई के दिन बैत अबेल को ढा दिया था; जब कि माँ अपने बच्चों के साथ टुकड़े-टुकड़े हो गई।¹⁵~तुम्हारी बेनिहायत शरारत की वजह से बैतएल में तुम्हारा यही हाल होगा। शाह-ए-इस्राईल अलस् सबाह बिल्कुल फ़ना हो जाएगा।

Chapter 11

¹जब इस्राईल अभी बच्चा ही था, मैंने उससे मुहब्बत रखी, और अपने बेटे को मिस्र से बुलाया।²~उन्होंने जिस क्रद्र उनको बुलाया, उसी क्रद्र वह दूर होते गए; उन्होंने बा'लीम के लिए कुर्बानियाँ पेश कीं और तराशी हुई मूर्तों के लिए खुशबू जलाया।

³मैंने बनी-इफ्राईम को चलना सिखाया; मैंने उनको गोद में उठाया, लेकिन उन्होंने न जाना कि मैं ही ने उनको सेहत बख्शी।⁴मैंने उनको इंसानी रिश्तों और मुहब्बत की डोरियों से खींचा; मैं उनके हक़ में उनकी गर्दन पर से जूआ उतारने वालों की तरह हुआ, और मैंने उनके आगे खाना रखवा।

⁵~वह फिर मुल्क-ए-मिस्र में न जाएँगे, बल्कि असूर उनका बादशाह होगा; क्योंकि वह वापस आने से इन्कार करते हैं।⁶~तलवार उनके शहरों पर आ पड़ेगी, और उनके अड़बंगों को खा जाएगी और ये उन ही की मश्वरत का नतीजा होगा।⁷~क्योंकि मेरे लोग मुझ से नाफ़रमानी पर आमादा हैं, बावजूद ये कि उन्होंने उनको बुलाया कि हक़ ता'ला की तरफ़ रुजू' लाए; लेकिन किसी ने न चाहा कि उसकी इबादत करें।

⁸~ऐ इफ़्राईम, मैं तुझ से क्योंकर दस्तबरदार हो जाऊँ? ऐ इस्राईल, मैं तुझे क्योंकर तर्क करूँ? मैं क्योंकर तुझे अदमह की तरह बनाऊँ? और ज़िबू'ईम तरह बनाऊँ ~मेरा दिल मुझ में पेच खाता है; मेरी शफ़क़त मौजज़न है।⁹मैं अपने क्रहर की शिद्दत के मुताबिक़ 'अमल नहीं करूँगा, मैं हरगिज़~इफ़्राईम को हलाक न करूँगा; क्योंकि मैं इन्सान नहीं, खुदा हूँ | तेरे बीच सुकूनत करने वाला कुदूस, और मैं क्रहर के साथ नहीं आऊँगा।

¹⁰वह खुदावन्द की पैरवी करेंगे, जो शेर-ए-बबर की तरह गरजेगा, क्योंकि वह गरजेगा, और उसके फ़र्ज़न्द मगरिब की तरफ़ से काँपते हुए आएँगे।¹¹वह मिस्र से परिन्दे की तरह, और असूर के मुल्क से कबूतर की तरह काँपते हुए आएँगे; और मैं उनको उनके घरों में बसाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹²~इफ़्राईम ने दरोगगोई से और इस्राईल के घराने ने मक्कारी से मुझ को घेरा है, लेकिन यहूदा अब तक खुदा के साथ हों उस कुदूस वफ़ादार के साथ हुक्मरान हैं |

Chapter 12

¹~इफ्राईम हवा चरता है; वह पूरबी हवा के पीछे दौड़ता है। वह मुत्वातिर झूट पर झूट बोलता, और जुल्म करता है। वह असूरियों से 'अहद-ओ-पैमान करते, और मिस्र को तेल भेजते हैं।' खुदावन्द का यहूदाह के साथ भी झगड़ा है, और या'कूब को चाल चलन के मुताबिक उसकी सज़ा देगा; और उसके आ'माल के मुवाफ़िक़ उसका बदला देगा।

³~उसने रिहम में अपने भाई की एड़ी पकड़ी, और वह अपनी जवानी के दिनों में खुदा से कुश्ती लड़ा।⁴~हाँ, वह फ़रिश्ते से कुश्ती लड़ा और ग़ालिब आया। उसने रोकर दु'आ की। उसने उसे बैतएल में पाया और वहाँ वह हम से हम कलाम हुआ

⁵'या'नी खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़, यहोवा उसकी यादगार है।⁶"अब तू अपने खुदा की तरफ़ रुजू' ला; नेकी और रास्ती पर क़ायम, और हमेशा अपने खुदा का उम्मीदवार रह।"

⁷~वह सौदागर है, और दगा की तराजू उसके हाथ में है; वह जुल्म दोस्त है।⁸~इफ्राईम तो कहता है, 'मैं दौलतमंद और मैंने बहुत सा माल हासिल किया है। मेरी सारी कमाई में बदकिरदारी का गुनाह न पाएँगे।"

⁹लेकिन मैं मुल्क-ए-मिस्र से खुदावन्द तेरा खुदा हूँ; मैं फिर तुझ को 'ईद-ए-मुक्रद्स के दिनों के दस्तूर पर खेमों में बसाऊँगा।¹⁰मैंने तो नबियों से कलाम किया; और रोया पर रोया दिखाई, और नबियों के वसील से तशबिहात इस्तेमाल की।

¹¹~यक़ीनन जिल्'आदि में बदकिरदारी है, वो बिल्कुल बतागत हैं; वो जिल्जाल में बैल कुर्बान करते हैं, उनकी कुर्बानगाहे खेत की रेखारियों ~पर के तूदों की तरह हैं।¹²और याकूब अराम की ज़मीन को भाग गया; इस्राईल बीवी के खातिर नौकर बना, उसने बीवी की खातिर चरवाही ~की।

¹³~एक नबी के वसीले से खुदावन्द इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और नबी ही के वसीले से वह महफूज़ रहा।¹⁴~इफ्राईम ने बड़े सख्त ग़ज़बअंगेज़ काम किए; इसलिए उसका खून उसी की गर्दन पर होगा और उसका खुदावन्द उसकी मलामत उसी के सिर पर लाएगा।

Chapter 13

¹इफ्राईम-के कलाम में खौफ़ था, वह इस्राईल के बीच सरफ़राज़ किया गया; लेकिन बा'ल की वजह से गुनहगार होकर फ़ना हो गया।²और अब वह गुनाह पर गुनाह करते हैं, उन्होंने अपने लिए चाँदी की ढाली हुई मुरते बनाई और अपनी समझ के मुताबिक़ बुत तैयार किए जो सब के सब कारीगरों का काम हैं। वो उनके बारे कहते हैं, "जो लोग कुर्बानी पेश करते हैं, बछड़ों को चूमें!"

³इसलिए वह सुबह के बादल और शबनम की तरह जल्द जाते रहेंगे, और भूसी की तरह, जिसको बगोला खलीहान पर से उड़ा ले जाता है, और उस धुवें की तरह जो दूदकश से निकलता है।

⁴~लेकिन मैं मुल्क-ए-मिस्र ही से, खुदावन्द तेरा खुदा हूँ और मेरे अलावा तू किसी मा'बूद को नहीं जानता था, क्योंकि मेरे अलावा कोई और नजात देने वाला नहीं है।⁵~मैंने बियाबान में, या'नी खुश्क ज़मीन में तेरी ख़बर गीरी की।⁶वह अपनी चरागाहों में सेर हुए, और सेर होकर उनके दिल में घमंड समाया और मुझे भूल गए।

⁷इसलिए मैं उनके लिए शेर-ए-बबर की तरह हुआ; चीते की तरह राह में उनकी घात में बैठूँगा।⁸मैं उस रीछनी की तरह जिसके बच्चे छिन गए हों, उनसे दो चार हूँगा, और उनके दिल का पर्दा चाक करके शेर-ए-बबर की तरह, उनको वहीं निगल जाऊँगा; जंगली जानवर उनको फाड़ डालेंगे।

⁹ऐ इस्राईल, यही तेरी हलाकत है कि तू मेरा यानी अपने मदद गार का मुखालिफ़ बना।¹⁰अब तेरा बादशाह कहाँ है कि तुझे तेरे सब शहरों में बचाए और तेरे क़ाज़ी कहाँ हैं जिनके बारे तू कहता था कि मुझे बादशाह और उमरा इनायत कर?¹¹~मैंने अपने क्रहर में तुझे बादशाह दिया, और ग़ज़ब से उसे उठा लिया।

¹²~इफ्राईम की बदकिरदारी बाँध रखी गई, और उसके गुनाह ज़खीरे में जमा' किए गए।¹³~वह जैसे दर्द-ए-ज़िह में मुत्तिला होगा, वो बे अक्ल फ़र्ज़न्द है; अब मुनासिब है कि पैदाइश की जगह में देर न करे।

¹⁴~मैं उनको पाताल के क़ाबू से नजात दूँगा; मैं उनकी मौत से छुड़ाऊँगा। ऐ मौत तेरी वबा कहाँ है? ऐ पाताल तेरी हलाकत कहाँ है? मैं हरगिज़ रहम न करूँगा।

¹⁵~अगरचे वह अपने भाइयों में कामियाब हो, तोभी पूरबी हवा आएगी; खुदावन्द का दम बियाबान से आएगा, और उसका सोता सूख जाएगा, और उसका चश्मा खुश्क हो जाएगा। वह सब पसंदीदा बर्तनों का खज़ाना लूट लेगा।

¹⁶सामरिया अपने जुर्म की सज़ा पाएगा, क्योंकि उसने अपने खुदा से बगावत की है; वह तलवार से गिर जाएँगे। उनके बच्चे पारा-पारा होंगे और हामला 'औरतों के पेट चाक किए जाएँगे।

Chapter 14

¹~ऐ इस्राईल, खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ रुजू' ला, क्योंकि तू अपनी बदकिरदारी की वजह से गिर गया है।²कलाम लेकर खुदावन्द की तरफ़ रुजू लाओ, और कहो, "हमारी तमाम बदकिरदारी को दूर कर, और फ़ज़ल से हम को कुबूल फ़रमा; तब हम अपने लबों से कुर्बानियाँ पेश करेंगे।

³~असूर हम को नहीं बचाएगा; हम घोड़ों पर सवार नहीं होंगे; और अपनी दस्तकारी को खुदा न कहेंगे क्योंकि यतीमों पर रहम करने वाला तू ही है।"

⁴~मैं उनकी नाफ़रमानी का चारा करूँगा; मैं कुशादा दिली से उनसे मुहब्बत रखूँगा, क्योंकि मेरा क्रहर उन पर से टल गया है।⁵मैं इस्राईल के लिए ओस की तरह हूँगा; वह सोसन की तरह फूलेगा, और लुबनान की तरह अपनी जड़ें फैलाएगा;⁶~उसकी डालियाँ फैलेंगी, और उसमें ज़ैतून के दरख़्त की खूबसूरती और लुबनान की सी खुशबू होगी।

⁷उसके मातहत में रहने वाले कामियाब हो जाएँगे; वह गेहूँ की तरह तर-ओ-ताज़ा और ताक की तरह शिगुफ़्ता होंगे। उनकी शहरत लुबनान की मय की सी होगी।

⁸~इफ़्राईम कहेगा, "अब मुझे बुतों से क्या काम?" मैं खुदावन्द ने उसकी सुनी है, और उस पर निगाह करूँगा। मैं सर सबज़ सरो की तरह हूँ, तू मुझ ही से कामयाब हुआ।

⁹~अक्लमन्द कौन है कि वह ये बातें समझे और समझदार कौन है जो इनको जाने? क्योंकि खुदावन्द की राहें रास्त हैं और सादिक़ उनमें चलेंगे; लेकिन ख़ताकर उनमें गिर पड़ेंगे।

योएल

Chapter 1

¹~खुदावन्द का कलाम जो यूएल-बिनफ़तूएल पर नाज़िल हुआ :²~ऐ बूढ़ो, सुनो,ऐ ज़मीन के सब रहने वालों, कान लगाओ! क्या तुम्हारे या तुम्हारे बाप-दादा के दिनों में कभी ऐसा हुआ?³~तुम अपनी औलाद से इसका तज़क़िरा करो, और तुम्हारी औलाद अपनी औलाद से, और उनकी औलाद अपनी नसल से बयान करो।

⁴~जो कुछ टिड्डियों के एक गोल से बचा, उसे दूसरा गोल निगल गया; और जो कुछ दूसरे से बचा, उसे तीसरा गोल चट कर गया; और जो कुछ तीसरे से बचा, उसे चौथा गोल खा गया।

⁵~ऐ मतवालो, जागो और मातम करो; ऐ मयनौशी करने वालों,नई मय के लिए चिल्लाओ, क्योंकि वह तुम्हारे मुँह से छिन गई है।⁶~क्योंकि मेरे मुल्क पर एक क्रौम चढ़ आई है,उनके दाँत शेर-ए-बबर के जैसे हैं, और उनकी दाढ़ें शेरनी की जैसी हैं।⁷~उन्होंने मेरे ताकिस्तान को उजाड़ डाला, और मेरे अंजीर के दरख़्तों को तोड़ डाला; उन्होंने उनको बिल्कुल छील छालकर फेंक दिया, उनकी डालियाँ सफ़ेद निकल आईं।

⁸~तुम मातम करो, जिस तरह दुल्हन अपनी जवानी के शौहर के लिए टाट ओढ़ कर मातम करती है।⁹नज़्र की कुर्बानी और तपावन खुदावन्द के घर से मौकूफ़ हो गए।खुदावन्द के ख़िदमत गुज़ार,काहिन मातम करते हैं।¹⁰~खेत उजड़ गए, ज़मीन मातम करती है, क्योंकि ग़ल्ला ख़राब हो गया है; नई मय ख़त्म हो गई, और तेल बर्बाद हो गया।

¹¹~ऐ किसानो, शर्मिन्दगी उठाओ,ऐ ताकिस्तान के बाग़बानों, मातम ~करो, क्योंकि गेहूँ और जौ और मैदान के तैयार खेत बर्बाद ~हो गए।¹²~ताक़ खुश्क़ हो गई;अंजीर का दरख़्त मुरझा गया। अनार और खजूर और सेब के दरख़्त, हाँ मैदान के तमाम दरख़्त मुरझा गए; और बनी आदम से खुशी जाती रही।

¹³~ऐ काहिनो, कमरें कस कर मातम करो, ऐ मज़बह पर ख़िदमत करने वालो, वावैला करो। ऐ मेरे खुदा के खादिमों, आओ रात भर टाट ओढ़ो !क्योंकि नज़्र की कुर्बानी और तपावन तुम्हारे खुदा के घर से मौकूफ़ हो गए।¹⁴~रोज़े के लिए एक दिन मुक़द्दस करो; पाक महफ़िल ~बुलाओ।बुजुर्ग़ों और मुल्क के तमाम बाशिंदों को खुदावन्द अपने खुदा के घर में जमा' करके उससे फ़रियाद करो

¹⁵~उस दिन पर अफ़सोस !क्योंकि खुदावन्द का दिन नज़दीक़ है, वह क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से बड़ी हलाक़त की तरह आएगा।¹⁶~क्या हमारी आँखों के सामने रोज़ी मौकूफ़ नहीं हुई ,और हमारे खुदा के घर से खुशीओ-शादमानी जाती नहीं रही?¹⁷~बीज ढेलों के नीचे सड़ गया; ग़ल्लाखाने ख़ाली पड़े हैं, खेत तोड़ डाले गए; क्योंकि खेती सूख गई।

¹⁸~जानवर कैसे कराहते हैं! गाय-बैल के गल्ले परेशान हैं क्योंकि उनके लिए चरागाह नहीं है; हाँ, भेड़ों के गल्ले भी बर्बाद हो गए हैं।¹⁹~ऐ खुदावन्द, मैं तेरे सामने फ़रियाद करता हूँ। क्योंकि आग ने वीराने की चरागाहों को जला दिया, और शो'ले ने मैदान के सब दरख़्तों को राख़ कर दिया है।²⁰जंगली जानवर भी तेरी तरफ़ निगाह रखते हैं, क्योंकि पानी की नदियाँ सूख गई,और आग वीराने की चरागाहों को खा गई।

Chapter 2

¹~सिखून में नरसिंगा फूँको; मेरे पाक पहाड़ी पर साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको! मुल्क के तमाम रहने वाले थरथराएँ, क्योंकि खुदावन्द का दिन चला आता है; बल्कि आ पहुँचा है।²~अंधेरे और तारीकी का दिन, काले बादल और जुल्मात का दिन है! एक बड़ी और ज़बरदस्त उम्मत जिसकी तरह न कभी हुई और न सालों तक उसके बा'द होगी; पहाड़ों पर सुब्ह-ए-सादिक़ की तरह फैल जाएगी।

³~जैसे उनके आगे आगे आग भसम करती जाती है, और उनके पीछे पीछे शो'ला जलाता जाता है। उनके आगे ज़मीन बाग़-ए-'अदन की तरह है और उनके पीछे वीरान बियाबान है; हाँ, उनसे कुछ नहीं बचता।

⁴~उनके पैरों का निशान घोड़ों के जैसे हैं, और सवारों की तरह दौड़ते हैं।⁵~पहाड़ों की चोटियों पर रथों के खड़खड़ाने और भूसे को खाक करने वाले जलाने वाली आग के शोर की तरह बलन्द होते हैं। वह जंग के लिए तरतीब में ज़बरदस्त क्रौम की तरह हैं।

⁶~उनके आमने सामने लोग थरथराते हैं; सब चेहरों का रंग उड़ जाता है।⁷~वह पहलवानों की तरह दौड़ते, और जंगी मर्दों की तरह दीवारों पर चढ़ जाते हैं। सब अपनी अपनी राह पर चलते हैं, और लाइन नहीं तोड़ते।

⁸~वह एक दूसरे को नहीं ढकेलते, हर एक अपनी राह पर चला जाता है; वो जंगी हथियारों से गुज़र जाते हैं, और बेतरतीब नहीं होते।⁹~वो शहर में कूद पड़ते, और दीवारों और घरों पर चढ़कर चोरों की तरह खिड़कियों से घुस जाते हैं।

¹⁰~उनके सामने ज़मीन-ओ-आसमान काँपते और थरथराते हैं। सूरज और चाँद तारीक, और सितारे बेनूर हो जाते हैं।¹¹~और खुदावन्द अपने लश्कर के सामने ललकारता है, क्योंकि उसका लश्कर बेशुमार है और उसके हुक्म को अंजाम देने वाला ज़बरदस्त है; क्योंकि खुदावन्द का रोज़-ए-'अज़ीम बहुत खौफ़नाक है। कौन उसकी बर्दाश्त कर सकता है?

¹²~लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, "अब भी पूरे दिल से और रोज़ा रख कर और गिर्या-ओ-ज़ारी-ओ-मातम करते हुए मेरी तरफ़ फ़िरो।"¹³~और अपने कपड़ों को नहीं, बल्कि दिलों को चाक करके, "खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ मुतवज्जिह हो; क्योंकि वह रहीम-ओ-मेहरबान, क्रहर करने में धीमा, और शफ़क़त में ग़नी है; और 'अज़ाब नाज़िल करने से बाज़ रहता है।

¹⁴~कौन जानता है कि वह बाज़ रहे, और बरकत बाक़ी छोड़े जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा के लिए नज़ की कुर्बानी और तपावन हो।

¹⁵~सिखून में नरसिंगा फूँको, और रोज़े के लिए एक दिन पाक करो; पाक महफ़िल इकट्ठा करो।¹⁶~तुम लोगों को जमा' करो। जमा' अत को पाक करो, बुजुर्गों को इकट्ठा करो; बच्चों और शीरख़वारों को भी ~बुलाओ। दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हन अपने तन्हाई के घर ~से निकल आए।

¹⁷~काहिन या'नी खुदावन्द के खादिम, डयोढ़ी और कुर्बानगाह के बीच गिर्या-ओ-ज़ारी करें कहें, "ऐ खुदावन्द, अपने लोगों पर रहम कर, और अपनी मीरास की तौहीन न होने दे। ऐसा न हो कि दूसरी क्रौमें उन पर हुक्मत करें। वह उम्मतों के बीच क्यूँ कहें, उनका खुदा कहाँ है?

¹⁸~तब खुदावन्द को अपने मुल्क के लिए ग़ैरत आई और उसने अपने लोगों पर रहम किया।¹⁹~फिर खुदावन्द ने अपने लोगों से फ़रमाया, "मैं तुम को अनाज और नई मय और तेल 'अता फ़रमाऊँगा ~और तुम उनसे सेर होगे और मैं फिर तुम को क्रौमों में रूखा न करूँगा।

²⁰~"और शिमाली लश्कर को तुम से दूर करूँगा और उसे खुशक वीराने में हाँक दूँगा; उसके अगले मशरिक़ी समुंदर में होंगे, और पिछले मगरिबी समुंदर में होंगे; उससे बढू उठेगी~और 'उफ़ूनत फैलेगी, क्योंकि उसने बड़ी गुस्ताख़ी की है।

²¹~'ऐ ज़मीन, न घबरा; खुशी और शादमानी कर, क्योंकि खुदावन्द ने बड़े बड़े काम किए हैं।²²~ऐ दशती जानवरो, न घबरा; क्योंकि वीरान की चारागाह सबज़ होती है, और दरख़्त अपना फल लाते हैं। अंजीर और ताक अपनी पूरी पैदावार देते हैं।²³~"तब ऐ बनी सिखून, खुश हो, और खुदावन्द अपने खुदा में शादमानी करो; क्योंकि वह तुम को पहली बरसात कसरत से बख़्शेगा; वही तुम्हारे लिए बारिश, या'नी पहली और पिछली बरसात वक़्त पर भेजेगा।

²⁴~"यहाँ तक कि खलीहान गेहूँ से भर जाएँगे, और हौज़ नई मय और तेल से लबरेज़ होंगे।²⁵~और उन बरसों का हासिल जो मेरी तुम्हारे खिलाफ़ भेजी हुई फ़ौज़ -ए-मलख़ निगल गई, और खाकर चट कर गई; तुम को वापस दूँगा।

²⁶~और तुम खूब खाओगे और सेर होगे, और खुदावन्द अपने खुदा के नाम की, जिसने तुम से 'अजीब सुलूक किया, 'इबादत करोगे और मेरे लोग हरगिज़ शर्मिन्दा न होंगे।²⁷~तब तुम जानोगे कि मैं इस्राईल के बीच हूँ, और मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, और कोई दूसरा नहीं; और मेरे लोग कभी शर्मिन्दा न होंगे।

²⁸~'और इसके बा'द मैं हर फ़र्द-ए-बशर पर अपना रूह नाज़िल करूँगा, और तुम्हारे बेटे बेटियाँ नबुव्वत करेंगे; तुम्हारे बूढ़े ख़्वाब और जवान रोया देखेंगे।

²⁹~बल्कि मैं उन दिनों में गुलामों और लौंडियों पर अपना रूह नाज़िल करूँगा।

³⁰~और मैं ज़मीन-ओ-आसमान में 'अजाइब ज़ाहिर करूँगा, या'नी खून और आग और धुंवेँ के खम्बे।³¹~इस से पहले कि खुदावन्द का खौफ़नाक रोज़-ए-'अज़ीम आए, सूरज तारीक और चाँद खून हो जाएगा।

³²~और जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा, क्योंकि कोह-ए-सिखून और यरूशलीम में, जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया है बच निकलने वाले होंगे, और बाक़ी लोगों में वह जिनको खुदावन्द बुलाता है।

Chapter 3

¹"उन दिनों में और उसी वक़्त, जब मैं यहूदाह और यरूशलीम के कैदियों को वापस लाऊँगा;²तो सब क्रौमों को जमा' करूँगा और उन्हें यहूदाह की वादी में उतार लाऊँगा, और वहाँ उन पर अपनी क्रौम और मीरास, इस्राईल के लिए, जिनको ~उन्होंने क्रौमों के बीच हलाक किया और मेरे मुल्क को बाँट लिया, दलील साबित करूँगा।³~हाँ, उन्होंने मेरे लोगों पर पर्ची डाली, और एक कस्बी के बदले एक लड़का दिया, और मय के लिए एक लड़की बेची ताकि मयख्वारी करें।

⁴"फिर ऐ सूर-ओ-सैदा और फ़िलिस्तीन के तमाम 'इलाक़ों, मेरे लिए तुम्हारी क्या हक़ीक़त है? क्या तुम मुझ को बदला दोगे? और अगर दोगे, तो मैं वहीं फ़ौरन तुम्हारा बदला तुम्हारे सिर पर फेंक दूँगा।⁵क्योंकि तुम ने मेरा सोना चाँदी ले लिया है, और मेरी लतीफ़-ओ-नफ़ीस चीज़ें अपने हैकलों में ले गए हो।⁶~और तुम ने यहूदाह और यरूशलीम की औलाद को यूनानियों के हाथ बेचा है, ताकि उनको उनकी हदों से दूर करो।

⁷~इसलिए मैं उनको उस जगह से जहाँ तुम ने बेचा है, बरअंगेख़ता करूँगा और तुम्हारा बदला तुम्हारे सिर पर लाऊँगा।⁸और तुम्हारे बेटे बेटियों को बनी यहूदाह के हाथ बेचूँगा, और वह उनको अहल-ए-सबा के हाथ, जो दूर के मुल्क में रहते हैं, बेचेंगे, क्योंकि यह ख़ुदावन्द का फ़रमान है।"

⁹क्रौमों के बीच इस बात का 'ऐलान करो: लड़ाई की तैयारी करो" ~बहादुरों को बरअंगेख़ता करो, जंगी जवान हाज़िर हों, वह ~चढ़ाई करें।¹⁰अपने हल की फालों को पीटकर तलवारें बनाओ और हँसुओं को पीट कर भाले, कमज़ोर कहे, "मैं ताक़तवर हूँ।"

¹¹~ऐ आस पास की सब क्रौमों, जल्द आकर जमा' हो जाओ। ऐ ख़ुदावन्द, अपने बहादुरों को वहाँ भेज दे।

¹²~क्रौमों बरअंगेख़ता हों, और यहूदाह की वादी में आएँ; क्योंकि मैं वहाँ बैठकर आस पास की सब क्रौमों की 'अदालत करूँगा।¹³~हँसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ रौंदो, क्योंकि हौज़ लबालब। और कोल्हू लबरेज़ है क्योंकि उनकी शरारत 'अज़ीम है।

¹⁴~गिरोह पर गिरोह इनफ़िसाल की वादी में है, क्योंकि ख़ुदावन्द का दिन इनफ़िसाल की वादी में आ पहुँचा।¹⁵~सूरज और चाँद तारीक हो जाएँगे, और सितारों का चमकना बंद हो जाएगा। अपने लोगों को ख़ुदावन्द बरकत देगा

¹⁶~क्योंकि ख़ुदावन्द सिय्यून से ना'रा मारेगा, और यरूशलीम से आवाज़ बुलंद करेगा और आसमान और ज़मीन काँपेंगे। लेकिन ख़ुदावन्द अपने लोगों की पनाहगाह और बनी-इस्राईल का क़िला' है।¹⁷"तब तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जो सिय्यून में अपने पाक पहाड़ पर रहता हूँ। तब यरूशलीम भी पाक होगा और फिर उसमें किसी अजनबी का गुज़र न होगा।

¹⁸~और उस दिन पहाड़ों पर से नई मय टपकेगी, और टीलों पर से दूध बहेगा, और यहूदाह की सब नदियों में पानी जारी होगा; और ख़ुदावन्द के घर से एक चश्मा फूट निकलेगा और वादी-ए-शित्तीम को सेराब करेगा।¹⁹मिस्र वीराना होगा और अदूम सुनसान बियाबान, क्योंकि उन्होंने बनी यहूदाह पर जुल्म किया, और उनके मुल्क में बेगुनाहों का खून बहाया।

²⁰~लेकिन यहूदाह हमेशा आबाद और यरूशलीम नसल-दर-नसल क़ायम रहेगा।²¹~क्योंकि मैं उनका खून पाक करार दूँगा, जो मैंने अब तक पाक करार नहीं दिया था; क्योंकि ख़ुदावन्द सिय्यून में सुकूनत करता है।"

आमूस

Chapter 1

¹~तकू'अ के चरवाहों में से 'आमूस का कलाम, जो उस पर शाह-ए-यहूदाह 'उज़्जियाह और शाह-ए-इस्राईल युरब'आम- बिन-यूआस के दिनों में इस्राईल के बारे में भींचाल से दो साल पहले ख़्वाब में नाज़िल हुआ।²~उसने कहा: "ख़ुदावन्द सिय्यून से नारा मारेगा और यरूशलीम से आवाज़ बलन्द करेगा; और चरवाहों की चरागाहें मातम करेंगी, और कर्मिल की चोटी सूख जायेगी।"

³ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "दमिश्क के तीन बल्कि चार गुनाहों-की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उन्होंने ज़िलआद को ख़लीहान में दाउने के आहनी औज़ार से रौंद डाला है।⁴और मैं हज़ाएल के घराने में आग भेजूँगा, जो बिन-हदद के क्रसों को खा जाएगी।

⁵~और मैं दमिश्क का अड़बंगा तोड़ूँगा और वादी-ए-आवन के बाशिंदों और बैत-'अदन के फ़रमाँरवाँ को काट डालूँगा और अराम के लोग गुलाम होकर क़ीर को जाएँगे," ख़ुदावन्द फ़रमाता है।

⁶ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "कि ग़ज़ा के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि वह सब लोगों को गुलाम करके ले गए ताकि उनको अदूम के हवाले करें।⁷~इसलिए मैं ग़ज़ा की शहरपनाह पर आग भेजूँगा, जो उसके क्रसों को खा जाएगी।

⁸~और अशदूद के बाशिंदों और अस्क़लोन के फ़रमाँरवाँ को काट डलूँगा और 'अक्रून पर हाथ चलाऊँगा और फ़िलिस्तियों के बाक़ी लोग बर्बाद हो जायेंगे। ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

⁹~ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "कि सूर के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उन्होंने सब लोगों को अदूम के हवाले किया और बिरादराना 'अहद को याद न किया।¹⁰~इसलिए मैं सूर की शहरपनाह पर आग भेजूँगा, जो उसके क्रसों को खा जाएगी।"

¹¹ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "कि अदोम के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उसने तलवार लेकर अपने भाई को दौड़ाया और रहमदिली को छोड़ दिया और उसका क़हर हमेशा फाड़ता रहा और उसका ग़ज़ब ख़त्म न हुआ।¹²~इसलिए मैं तेमान पर आग भेजूँगा, और वह बसराह के क्रसों को खा जाएगी।

¹³~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है ~कि बनी 'अम्मोन ~के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उन्होंने अपनी हुदूद को बढ़ाने के लिए ज़िलआद की बारदार 'औरतों के पेट चाक किए।

¹⁴~इसलिए मैं रब्बा की शहरपनाह पर आग भड़काऊँगा, जो उसके क्रस्त्रों को लड़ाई के दिन ललकार और आँधी के दिन गिर्दबाद के साथ खा जाएगी;¹⁵ ~और उनका बादशाह बल्कि वह अपने हाकिमों के साथ गुलाम होकर जाएगा," खुदावन्द फ़रमाता है।

Chapter 2

¹~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "मोआब के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उसने शाह-ए-अदूम की हड्डियों को जलाकर चूना बना दिया है।

²~इसलिए मैं मोआब पर आग भेजूँगा, और वह करयूत के क्रसों को खा जाएगी; और मोआब ललकार और नरसिंगे की आवाज़, और शोर-ओ-गौगा के बीच मरेगा।³~और मैं क्राज़ी को उसके बीच से काट डालूँगा और उसके तमाम हाकिमों को उसके साथ क़त्ल करूँगा," खुदावन्द फ़रमाता है।

⁴~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है ~कि "यहूदाह के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न~छोड़ूँगा~क्योंकि उन्होंने खुदावन्द की शरी'अत को रद्द किया, और उसके अहकाम की पैरवी न की और उनके झूटे मा'बूदों ने जिनकी पैरवी उनके बाप-दादा ने की, उनको गुमराह किया है।"⁵~इसलिए मैं यहूदाह पर आग भेजूँगा, जो यरूशलीम के क्रसों को खा जाएगी।"

⁶~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "इस्राईल के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न~छोड़ूँगा, क्योंकि उन्होंने सादिक~को रुपये की खातिर, और ग़रीब को जूतियों के जोड़े की खातिर बेच डाला।

⁷~वह ग़रीबों के सिर पर की गर्द का भी लालच रखते हैं, और हलीमों को उनकी राह से गुमराह करते हैं और बाप बेटा एक ही 'औरत के पास जाने से मेरे पाक नाम की तकफ़ीर करते हैं।"⁸और वह हर मज़बूह के पास गिरवी लिए हुए कपड़ों पर लेटते हैं, और अपने खुदा के घर में जुर्मानी से ख़रीदी हुई मय पीते हैं।

⁹~हालाँकि मैं ही ने उनके सामने से अमोरियों को हलाक किया, जो देवदारों की तरह बलंद और बलूतों की तरह मज़बूत थे; हाँ, मैं ही ने ऊपर से उनका फल बर्बाद किया, और नीचे से उनकी जड़ें काटीं।"¹⁰~और मैं ही तुमको ~मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, और चालीस बरस तक वीराने में तुम्हारी रहबरी की, ताकि तुम अमोरियों के मुल्क पर क़ाबिज़ हो जाओ।

¹¹~और मैंने तुम्हारे बेटों में से नबी, और तुम्हारे जवानों में से नज़ीर खड़े किए, "खुदावन्द फ़रमाता है, "ऐ बनी इस्राईल, क्या ये सच नहीं?"¹²लेकिन तुम ने नज़ीरों को मय पिलाई, और नबियों को हुक्म दिया के नबुव्वत न करें।

¹³~देखो, मैं तुम को ऐसा दबाऊँगा, जैसे पुलों से लदी हुई गाड़ी दबाती है।"¹⁴~तब तेज़ रफ़्तार से भागने की ताक़त जाती रहेगी, और ताक़तवर का ज़ोर बेकार होगा, और बहादुर अपनी जान न बचा सकेगा।

¹⁵और कमान खींचने वाला खड़ा न रहेगा, और तेज़ क़दम और सवार अपनी जान न बचा सकेंगे;¹⁶और पहलवानों में से जो कोई दिलावर है, नंगा निकल भागेगा," खुदावन्द फ़रमाता है।

Chapter 3

¹~ऐ बनी इस्राईल, ऐ सब लोगों जिनको मैं मिल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, ये बात सुनो जो खुदावन्द तुम्हारे बारे में फ़रमाता है :²~"दुनिया के सब घरानों में से मैंने सिर्फ़ तुम को चुना है, इसलिए मैं तुम को तुम्हारी सारी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा।

³~अगर दो शख्स आपस में मुत्तफ़िक़ न हों, तो क्या इकट्ठे चल सकेंगे?⁴~क्या शेर-ए-बबर जंगल में गरजेगा, जबकि उसे शिकार न मिला हो? और अगर जवान शेर ने कुछ न पकड़ा हो, तो क्या वह ग़ार में से अपनी आवाज़ को बलंद करेगा?

⁵~क्या कोई चिड़िया ज़मीन पर दाम में फँस सकती है, जबकि उसके लिए दाम ही न बिछाया गया हो? क्या फंदा जब तक कि कुछ न कुछ उसमें फँसा न हो, ज़मीन पर से उछलेगा?⁶~क्या ये मुम्किन है कि शहर में नरसिंगा फूँका जाए, और लोग न काँपें? या कोई बला शहर पर आए, और खुदावन्द ने उसे न भेजा हो?⁷यक़ीनन खुदावन्द खुदा कुछ नहीं करता, जब तक अपना राज़ अपने खिदमत गुज़ार नबियों पर पहले आशकारा न करे।⁸शेर-ए-बबर गरजा है, कौन न डरेगा? खुदावन्द खुदा ने फ़रमाया है, कौन नबुव्वत न करेगा?"

⁹~अशदूद के क्रस्वों में और मुल्क-ए-मिस्र के क्रस्वों में 'ऐलान करो, और कहो, "सामरिया के पहाड़ों पर जमा' हो जाओ, और देखो उसमें कैसा हंगामा और जुल्म है।"¹⁰~क्यूँकि वह नेकी करना नहीं जानते, खुदावन्द फ़रमाता है जो अपने क्रस्वों में जुल्म और लूट को जमा' करते हैं।"

¹¹~इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि "दुश्मन मुल्क का घिराव करेगा, और तेरी कुव्वत को तुझ से दूर करेगा, और तेरे क्रस्व लूटे जाएँगे।"¹²~खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि ~जिस तरह से चरवाहा दो टाँगें, या कान का एक टुकड़ा, शेर-ए-बबर के मुँह से छुड़ा लेता है~उसी तरह~बनी~इस्राईल~जो सामरिया में पलंग के गोशे में और रेशमीन फ़र्श पर बैठे रहते हैं, छुड़ा लिए जाएँगे।

¹³~खुदावन्द खुदा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, "सुनो और बनी या'क़ूब के खिलाफ़ गवाही दो।"¹⁴क्यूँकि जब मैं इस्राईल के गुनाहों की सज़ा दूँगा, तो बैतएल के मज़बहों को भी देख लूँगा, और मज़बह के सींग कट कर ज़मीन पर गिर जाएँगे।"

¹⁵~और खुदावन्द फ़रमाता है : "मैं ज़मिस्तानी और ताबिस्तानी घरों को बर्बाद करूँगा, और हाथी दाँत के घर मिस्मार किए जायेंगे और बहुत से मकान वीरान होंगे।

Chapter 4

¹ऐ बसन की गायों, जो कोह-ए-सामरिया पर रहती हो, और गरीबों को सताती और गरीबों को कुचलती और अपने मालिकों से कहती हो, 'लाओ, हम पियें,' तुम ये बात सुनो।²~खुदावन्द खुदा ने अपनी पाकीज़गी की क्रसम खाई है कि तुम पर वह दिन आएँगे, जब तुम को आंकड़ियों से और तुम्हारी औलाद को शस्तों से खींच ले जाएँगे।

³~और खुदावन्द फ़रमाता है, तुम में से हर एक उस रखने से जो उसके सामने होगा निकल भागेगी, और तुम क़ैद में डाली जाओगी।

⁴~बैतएल में आओ और गुनाह करो, और जिल्जाल में कसरत से गुनाह करो, और हर सुबह अपनी कुर्बानियाँ और तीसरे रोज़ दहेकी लाओ,⁵~और शुक्रगुज़ारी का हदिया खमीर के साथ आग पर पेश करो, और रज़ा की कुर्बानी का 'ऐलान करो, और उसको मशहूर करो, क्योंकि ऐ बनी इस्राईल, ये सब काम तुम को पसंद हैं,' खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

⁶~खुदावन्द फ़रमाता है, "अगरचे मैंने तुम को तुम्हारे हर शहर में दाँतों की सफ़ाई, और तुम्हारे हर मकान में रोटी की कमी दी है; तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए।⁷और अगरचे मैंने मेंह को, जबकि फ़सल पकने में तीन महीने बाक़ी थे तुम से रोक लिया; और एक शहर पर बरसाया और दूसरे से रोक रखवा, एक-क्रिता' ज़मीन पर बरसा और दूसरा क्रिता' बारिश न होने की वजह से सूख गया;

⁸~और दो तीन बस्तियाँ आवारा हो कर एक बस्ती में आई, ताकि लोग पानी पिएँ पर वह आसूदा न हुए, तो भी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए," खुदावन्द फ़रमाता है।⁹"फिर मैंने तुम पर बाद-ए-समूम और गेरोई की आफ़त भेजी, और तुम्हारे बेशुमार बाग़ और ताकिस्तान और अंजीर और ज़ैतून के दरख़्त, टिड़ियों ने खा लिए; तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए," खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁰~मैंने मिस्र के जैसी वबा तुम पर भेजी और तुम्हारे जवानों को तलवार से क़त्ल किया; तुम्हारे घोड़े छीन लिए और तुम्हारी लश्करगाह की बदबू तुम्हारे नथनों में पहुँची, तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए," खुदावन्द फ़रमाता है।¹¹~"मैंने तुम में से कुछ को उलट दिया, जैसे खुदा ने सदूम और 'अमूरा को उलट दिया था; और तुम उस लुक्टी की तरह हुए जो आग से निकाली जाए, तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए," खुदावन्द फ़रमाता है।

¹²~"इसलिए ऐ इस्राईल, मैं तुझ से यूँ ही करूँगा, और चूँकि मैं तुझ से यूँ करूँगा, इसलिए ऐ इस्राईल, तू अपने खुदा से मुलाक़ात की तैयारी कर!"¹³~क्योंकि देख, उसी ने पहाड़ों को बनाया और हवा को पैदा किया, वह इन्सान पर उसके खयालात को ज़ाहिर करता है और सुबह को तारीक बना देता है और ज़मीन के ऊँचे मक़ामात पर चलता है; उसका नाम खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज है।

Chapter 5

¹~ऐ इसाईल के खान्दान, इस कलाम को जिससे मैं तुम पर नौहा करता हूँ, सुनो:²~"इसाईल की कुँवारी गिर पड़ी, वह फिर न उठेगी; वह अपनी ज़मीन पर पड़ी है, उसको उठाने वाला कोई नहीं।"

³~क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है ~कि "इसाईल के घराने के लिए, जिस शहर से एक हज़ार निकलते थे, उसमें एक सौ रह जाएँगे; और जिससे एक सौ निकलते थे, उसमें दस रह जाएँगे।"

⁴~क्योंकि खुदावन्द इसाईल के घराने से यूँ फ़रमाता है ~कि ~"तुम मेरे तालिब हो और ज़िन्दा रहो;⁵~लेकिन बैतएल के तालिब न हो, और जिल्जाल में दाखिल न हो, और बैरसबा' को न जाओ, क्योंकि जिल्जाल गुलामी में जाएगा और बैतएल नाचीज़ होगा।"

⁶~तुम खुदावन्द के तालिब हो और ज़िन्दा रहो, ऐसा न हो कि वह यूसुफ़ के घराने में आग की तरह भड़के और उसे खा जाए और बैतएल में उसे बुझाने वाला कोई न हो।⁷~ऐ 'अदालत को नागदौना बनाने वालों, और सदाक़त को खाक में मिलाने वालों!

⁸~वही सुरैया और जब्बार सितारों का ख़ालिफ़ है जो मौत के साये को मतला'-ए-नूर, और रोज़-ए-रोशन को शब-ए-दैजूर बना देता है, और समन्दर के पानी को बुलाता और इस ज़मीन पर फैलाता है, जिसका नाम खुदावन्द है;⁹~वह जो ज़बरदस्तों पर नागहानी हलाक़त लाता है, जिससे क़िलों' पर तबाही आती है।

¹⁰~वह फ़ाटक में मलामत करने वालों से कीना रखते हैं, और रास्तगो से नफ़रत करते हैं।¹¹~इसलिए चूँकि तुम ग़रीबों को पायमाल करते हो और जुल्म करके उनसे गेहूँ छीन लेते हो, इसलिए जो तराशे हुए पत्थरों के मकान तुम ने बनाए उनमें न बसोगे, और जो नफ़ीस ताकिस्तान तुम ने लगाए उनकी मय न पियोगे।

¹²~क्योंकि मैं तुम्हारी बेशुमार खताओं और तुम्हारे बड़े-बड़े गुनाहों से आगाह हूँ तुम सादिकों को सताते और रिश्तत लेते हो, और फाटक में ग़रीबों की हक़तलफ़ी करते हो।¹³~इसलिए इन दिनों में पेशबीन खामोश हो रहेंगे क्योंकि ये बुरा वक़्त है।

¹⁴~बुराई के नहीं बल्कि नेकी के तालिब हो, ताकि ज़िन्दा रहो और खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज ~तुम्हारे साथ रहेगा, जैसा कि तुम कहते हो।¹⁵~बुराई से 'अदावत और नेकी से मुहब्बत रखो, और फाटक में 'अदालत को कायम करो; शायद खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज बनी यूसुफ़ के बक्रिये पर रहम करे।

¹⁶~इसलिए खुदावन्द खुदा रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: "सब बाज़ारों में नौहा होगा, और सब गलियों में अफ़सोस अफ़सोस कहेंगे; और किसानों को मातम के लिए, और उनको जो नौहागरी में महारत रखते हैं नौहे के लिए बुलाएँगे;¹⁷और सब ताकिस्तानों में मातम होगा, क्योंकि मैं तुझमें से होकर गुज़रूँगा," खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁸~तुम पर अफ़सोस जो खुदावन्द के दिन की आरजू करते हो! तुम खुदावन्द के दिन की आरजू क्यों करते हो? वह तो तारीकी का दिन है, रोशनी का नहीं;

¹⁹~जैसे कोई शेर-ए-बबर से भागे और रीछ उसे मिले, या घर में जाकर अपना हाथ दीवार पर रखे और उसे साँप काट ले।²⁰~क्या खुदावन्द का दिन तारीकी न होगा? उसमें रोशनी न होगी, बल्कि सख़्त जुल्मत होगी और नूर मुतलक़ न होगा।

²¹~"मैं तुम्हारी 'ईदों को मकरूह जानता, और उनसे नफ़रत रखता हूँ; और मैं तुम्हारी पाक महफ़िलों से भी खुश न हूँगा।²²और अगरचे तुम मेरे सामने सोख़तनी और नज़्र की कुर्बानियाँ पेश करोगे तोभी मैं उनको कुबूल न करूँगा; और तुम्हारे फ़र्बा जानवरों की शुक्राने की कुर्बानियों को खातिर में न लाऊँगा।

²³~तू अपने सरोद का शोर मेरे सामने से दूर कर, क्योंकि मैं तेरे रबाब की आवाज़ न सुनूँगा।²⁴लेकिन 'अदालत को पानी की तरह और सदाक़त को बड़ी नहर की तरह जारी रख।

²⁵~ऐ बनी-इसाईल, क्या तुम चालीस बरस तक वीराने में, मेरे सामने ज़बीहे और नज़्र की कुर्बानियाँ पेश करते रहे?²⁶~तुम तो मिल्कूम का खेमा और कीवान के बुत, जो तुम ने अपने लिए बनाए, उठाए फिरते थे,"

²⁷~इसलिए खुदावन्द जिसका नाम रब्ब-उल-अफ़वाज है फ़रमाता है, "मैं तुम को दमिश्क से भी आगे गुलामी में भेजूँगा।

Chapter 6

¹~उन पर अफ़सोस जो सिय्यून में बा राहत और कोहिस्तान-ए-सामरिया में बेफ़िक्र हैं, या'नी क्रौमों के रईस के शुर्फ़ा जिनके पास बनी-इसाईल आते हैं!²~तुम कलना तक जाकर देखो, और वहाँ से हमात-ए-'आज़म तक सैर करो, और फिर फ़िलिस्तिनियों के जात को जाओ। क्या वह इन ममलुकतों से बेहतर हैं? क्या उनकी हुदूद तुम्हारी हुदूद से ज़्यादा वसी' हैं? "

³~तुम जो बुरे दिन का खयाल मुलतवी करके, जुल्म की कुर्सी नज़दीक करते हो!⁴~'जो हाथी दाँत के पलंग पर लेटते और चारपाइयों पर दराज़ होते, और गल्ले में से बरों को और तवेले में से बछड़ों को लेकर खाते हो।

⁵~और रबाब की आवाज़ के साथ गाते, और अपने लिये दाऊद की तरह मूसीक्री के साज़ ईजाद करते हो;⁶~जो प्यालों में से मय पीते और अपने बदन पर बेहतरीन 'इत्र मलते हो; लेकिन यूसुफ़ की शिकस्ताहाली से ग़मगीन नहीं होते!

⁷~इसलिए वह पहले गुलामों के साथ गुलाम होकर जाएँगे, और उनकी 'ऐश-ओ-निशात का खातिमा हो जाएगा।"⁸~खुदावन्द खुदा ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: "कि मैं या'क़ूब की हश्मत से नफ़रत रखता हूँ और उसके क़स्सों से मुझे 'अदावत है। इसलिए मैं शहर को उसकी सारी मा'मूरी के साथ हवाले कर दूँगा।"

⁹~बल्कि यूँ होगा कि अगर किसी घर में दस आदमी बाकी होंगे, तो वह भी मर जाएँगे।¹⁰~और जब किसी का रिश्तेदार जो उसको जलाता है, उसे उठाएगा ताकि उसकी हड्डियों को घर से निकाले, और उससे जो घर के अन्दर पूछेगा, "क्या कोई और तेरे साथ ~है?" तो वह जवाब देगा, "कोई नहीं," तब वह कहेगा, "चुप रह, ऐसा न हो कि हम खुदावन्द के नाम का ज़िक्र करें।"

¹¹~क्यूँकि देख, खुदावन्द ने हुक्म दे दिया है, और बड़े-बड़े घर रखनों से, और छोटे शिगाफ़ों से बर्बाद होंगे।

¹²~क्या चटानों पर घोड़े दौड़ेंगे, या कोई बैलों से वहाँ हल चलाएगा? तोभी तुम ने 'अदालत को इन्द्रायन और समरा-ए-सदाक़त को नागदौना बना रखखा है;¹³~तुम बेहक्रीक़त चीज़ों पर फ़ख़ करते, और कहते हो, "क्या हम ने अपने लिए, अपनी ताक़त से सींग नहीं निकाले?"

¹⁴~लेकिन खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, "ऐ बनी-इसाईल, देखो, मैं तुम पर एक क्रौम को चढ़ा लाऊँगा, और वह तुम को हमात के मदख़ल से, वादी-ए-अरबा तक परेशान करेगी।"

Chapter 7

¹खुदावन्द खुदा ने मुझे ख्वाब दिखाया और क्या ~देखता हूँ कि उसने ज़रा'अत की आखिरी रोईदगी की शुरू' में टिड़ियाँ पैदा कीं; और देखो, ये शाही कटाई के बा'द~आखिरी~रोईदगी थी।²~और जब वह ज़मीन की घास को बिल्कुल खा चुकी, तो मैंने~'अर्ज़ की, "कि ऐ खुदावन्द खुदा, मेहरबानी से मु'आफ़ फ़रमा! या'कूब की क्या हक़ीक़त है कि वह क़ायम रह सके?क्योंकि वह छोटा है!"³~खुदावन्द इससे बाज़ आया, और उसने फ़रमाया : "यूँ न होगा।"

⁴~फिर खुदावन्द खुदा ने मुझे ख्वाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द खुदा ने आग को बुलाया कि मुक़ाबला करे, और वह बहर-ए-'अमीक़ को निगल गई, और नज़दीक था कि ज़मीन को खा जाए।⁵~तब मैंने 'अर्ज़ की, "कि ऐ खुदावन्द खुदा, मेहरबानी से बाज़ आ, या'कूब की क्या हक़ीक़त है कि वह क़ायम रह सके? क्योंकि वह छोटा है!"⁶~खुदावन्द इससे बाज़ आया, और खुदावन्द खुदा ने फ़रमाया: "यूँ भी न होगा।"

⁷~फिर उसने मुझे ख्वाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द एक दीवार पर, जो साहूल से बनाई गई थी खड़ा है, और साहूल उसके हाथ में है।⁸~और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, "कि ऐ 'आमूस, तू क्या देखता है?" मैंने 'अर्ज़ की, "कि साहूल।" तब खुदावन्द ने फ़रमाया,"देख, मैं अपनी क़ौम इस्राईल में साहूल लटकाऊँगा, और मैं फिर उनसे दरगुज़र न करूँगा;

⁹~और इस्हाक़ के ऊँचे मक़ाम बर्बाद होंगे, और इस्राईल के मक़दिस वीरान हो जाएँगे; और मैं युरब'आम के घराने के खिलाफ़ तलवार लेकर उढ़ूँगा।"

¹⁰~तब बैतएल के काहिन इम्सियाह ने शाह-ए-इस्राईल युरब'आम को कहला भेजा कि 'आमूस ने तेरे खिलाफ़ बनी-इस्राईल में फ़ितना खड़ा किया है, और मुल्क में उसकी बातों की बर्दाश्त नहीं।¹¹~क्योंकि 'आमूस यूँ कहता है, "'कि युरब'आम तलवार से मारा जाएगा, और इस्राईल यक़ीनन अपने वतन से गुलाम होकर जाएगा।"

¹²~और इम्सियाह ने 'आमूस से कहा, "ऐ ग़ैबगो, तू यहूदाह के मुल्क को भाग जा; वहीं खा पी और नबुव्वत कर,¹³~लेकिन बैतएल में फिर कभी नबुव्वत न करना, क्योंकि ये बादशाह का मक़दिस और शाही महल है।"

¹⁴~तब 'आमूस ने इम्सियाह को जवाब दिया, "कि मैं न नबी हूँ, न नबी का बेटा; बल्कि चरवाहा और गूलर का फल बटोरने वाला हूँ।¹⁵और जब मैं गल्ले के पीछे-पीछे जाता था, तो खुदावन्द ने मुझे लिया और फ़रमाया, कि ~'जा, मेरी क़ौम इस्राईल से नबुव्वत कर।"

¹⁶इसलिए अब तू खुदावन्द का कलाम सुन। तू कहता है, ~'कि इस्राईल के खिलाफ़ नबुव्वत और इस्हाक़ के घराने के खिलाफ़ कलाम न कर।¹⁷इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "कि तेरी बीवी शहर में कस्बी बनेगी, और तेरे बेटे और तेरी बेटियाँ तलवार से मारे जाएँगे; और तेरी ज़मीन ज़रीब से बाँटी जाएगी, और तू एक नापाक मुल्क में मरेगा; और इस्राईल यक़ीनन अपने वतन से गुलाम होकर जाएगा।"

Chapter 8

¹~खुदावन्द खुदा ने मुझे ख़्वाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि ताबिस्तानी मेवों की टोकरी है।²~और उसने फ़रमाया, "ऐ 'आमूस, तू क्या देखता है?" मैंने 'अज़ की, "ताबिस्तानी मेवों की टोकरी।" तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि "मेरी क़ौम इस्राईल का वक़्त आ पहुँचा है; अब मैं उससे दरगुज़र न करूँगा।"³और उस वक़्त हैकल के नग़मे नौहे हो जायेंगे," खुदावन्द खुदा फ़रमाता, " बहुत सी लाशें पड़ी होंगी वह चुपके-चुपके उनको हर जगह निकाल फेंकेगे "

⁴~तुम जो चाहते हो कि मुहताजों को निगल जाओ, और ग़रीबों को मुल्क से हलाक करो,⁵~और ऐफ़्रा को छोटा और मिस्काल को बड़ा बनाते, और फ़रेब की तराजू से दगाबाज़ी करते,और कहते हो, "कि नये चाँद का दिन कब गुज़रेगा, ताकि हम ग़ल्ला बेचें, और सबत का दिन कब ख़त्म होगा के गेहूँ के खत्ते खोलें,⁶ताकि ग़रीब को रुपये से और मुहताज को एक जोड़ी जूतियों से ख़रीदें, और गेहूँ की फटकन बेचें," ये बात सुनो,

⁷~खुदावन्द ने या'क़ूब की हश्मत की क़सम खाकर फ़रमाया है: "मैं उनके कामों में से एक को भी हरगिज़ न भूलूँगा।"⁸~क्या इस वजह से ज़मीन न थरथराएगी, और उसका हर एक बाशिंदा मातम न करेगा? हाँ, वह बिल्कुल दरिया-ए-नील की तरह उठेगी और रोद-ए-मिस्र की तरह फैल कर फिर सुकड़ जाएगी।"

⁹और खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, "उस रोज़ आफ़ताब दोपहर ही को ग़ुरूब हो जाएगा और मैं रोज़-ए-रोशन ही में ज़मीन को तारीक कर दूँगा।"¹⁰~तुम्हारी 'ईदों को मातम से और तुम्हारे नामों को नौहों से बदल दूँगा, और हर एक की कमर पर टाट बँधवाऊँगा और हर एक के सिर पर चँदलापन भेजूँगा और ऐसा मातम खड़ा करूँगा जैसा इकलौते बेटे पर होता है और उसका अंजाम रोज़-ए-तल्ख़ सा होगा।"

¹¹~खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, "देखो, वह दिन आते हैं कि मैं इस मुल्क में क़हत डालूँगा न पानी की प्यास और न रोटी का क़हत, बल्कि खुदावन्द का कलाम सुनने का।"¹²तब लोग समन्दर से समन्दर तक और उत्तर से पूरब तक भटकते फिरेंगे,और खुदावन्द के कलाम की तलाश में इधर उधर दौड़ेंगे लेकिन कहीं न पाएँगे।

¹³और उस रोज़ हसीन कुँवारियाँ और जवान मर्द प्यास से बेताब हो जाएँगे।¹⁴जो सामरिया के बुत की क़सम खाते हैं, और कहते हैं, 'ऐ दान, तेरे मा'बूद की क़सम' और 'बैर सबा' के तरीक़े की क़सम,' वह गिर जाएँगे और फिर हरगिज़ न उठेंगे।"

Chapter 9

¹~मैंने खुदावन्द को मज़बूह के पास खड़े देखा, और उसने फ़रमाया : "सुतनों के सिर पर मार, ताकि आस्ताने हिल जाएँ; और उन सबके सिरों पर उनको पारा-पारा कर दे, और उनके बक्रिये को मैं तलवार से क़त्ल करूँगा; उनमें से एक भी भाग न सकेगा, उनमें से एक भी बच न निकलेगा।" अगर वह पाताल में घुस जाएँ, तो मेरा हाथ वहाँ से उनको खींच निकालेगा; और अगर आसमान पर चढ़ जाएँ, तो मैं वहाँ से उनको उतार लाऊँगा।

³~अगर वह कोह-ए-कर्मिल की चोटी पर जा छिपें, तो मैं उनको वहाँ से ढूँढ़ निकालूँगा; और अगर समन्दर की तह में मेरी नज़र से गायब हो जाए तो मैं वहाँ साँप को हुक्म करूँगा और वह उनको काटेगा।⁴ और अगर दुश्मन उनको गुलाम करके ले जाएँ, तो वहाँ तलवार को हुक्म करूँगा, और वह उनको क़त्ल करेगी; और मैं उनकी भलाई के लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए उन पर निगाह रखूँगा।"

⁵~क्योंकि खुदावन्द रब्ब-उल-अफ़वाज़ वह है कि अगर ज़मीन को छू दे तो वह गुदाज़ हो जाए, और उसकी सब मा'मूरी मातम करे; वह बिल्कुल दरिया-ए-नील की तरह उठे और रोद-ए-मिस्र की तरह फिर सुकड़ जाए।⁶~वही आसमान पर अपने बालाखाने ता'मीर करता है, उसी ने ज़मीन पर अपने गुम्बद की बुनियाद रखी है; वह समन्दर के पानी को बुलाकर इस ज़मीन पर फैला देता है; उसी का नाम खुदावन्द है।

⁷~खुदावन्द फ़रमाता है, "ऐ बनी-इस्राईल, क्या तुम मेरे लिए अहल-ए-कूश की औलाद की तरह नहीं हो? क्या मैं इस्राईल को मुल्क-ए-मिस्र से, और फ़िलिस्तिन को कफ़तूर से, और अरामियों को क़ीर से नहीं निकाल लाया हूँ?"⁸~देखो, खुदावन्द खुदा की आँखें इस गुनाहगार मम्लुकत पर लगी हैं, "खुदावन्द फ़रमाता है, "मैं उसे इस ज़मीन से हलाक-ओ-बर्बाद कर दूँगा, मगर या'कूब के घराने को बिल्कुल हलाक न करूँगा।

⁹~क्योंकि देखो, मैं हुक्म करूँगा और बनी-इस्राईल को सब क़ौमों में जैसे छलनी से छानते हैं, छानूँगा और एक दाना भी ज़मीन पर गिरने न पाएगा।¹⁰~मेरी उम्मत के सब गुनहगार लोग जो कहते हैं कि 'हम पर न पीछे से आफ़त आएगी न आगे से,' तलवार से मारे जाएँगे।

¹¹~मैं उस रोज़ दाऊद के गिरे हुए घर को खड़ा करके, उसके रखनों को बंद करूँगा; और उसके खंडर की मरम्मत करके, उसे पहले की तरह ता'मीर करूँगा;

¹²~ताकि वह अदूम के बक्रिये और उन सब क़ौमों पर जो मेरे नाम से कहलाती हैं क़ाबिज़ हो उसको वुकू' में लाने वाला खुदावन्द फ़रमाता है।

¹³~देखो, वह दिन आते हैं, "खुदावन्द फ़रमाता है, "जोतने वाला काटने वाले को, और अंगूर कुचलने वाला बोने वाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नई मय टपकेगी, और सब टीले गुदाज़ होंगे।

¹⁴~और मैं बनी-इस्राईल, अपने लोगों को गुलामी से वापस लाऊँगा; वह उजड़े शहरों को ता'मीर करके उनमें क़ायम करेंगे और बाग़ लगाकर उनकी मय पिऐँगे। वह बाग़ लगाएँगे और उनके फल खाएँगे।¹⁵~क्योंकि मैं उनको उनके मुल्क में क़ायम करूँगा और वह फिर कभी अपने वतन से जो मैंने उनको बख़्शा है, निकाले न जाएँगे, "खुदावन्द तेरा खुदा फ़रमाता है।

अबदियाह

Chapter 1

¹अबदियाह का ख़्वाब; हम ने खुदावन्द से यह ख़बर सुनी, और क़ौमों के बीच क़ासिद यह पैग़ाम ले गया: कि चलो उस पर हमला करें। "खुदावन्द खुदा अदोम के बारे में यूँ फ़रमाता है।²~कि देख मैंने तुझे क़ौमों के बीच हक़ीर कर दिया है, तू बहुत ज़लील है।

³~ऐ चट्टानों के शिगाफ़ों में रहने वाले, तेरे दिल के घमंड ने तुझे धोका दिया है; तेरा मकान ऊँचा है और तू दिल में कहता है, "कौन मुझे नीचे उतारेगा?"⁴~खुदावन्द फ़रमाता है, अगरचे तू 'उकाब की तरह -ऊँची परवाज़ हो और सितारों में अपना आशियाना बनाए, तोभी मैं तुझे वहाँ से नीचे उतारूँगा।

⁵अगर तेरे घर में चोर आएँ, या रात को डाकू आ घुसें, (तेरी कैसी बर्बादी है) तो क्या वह हस्ब-ए-ख़्वाहिश ही न लेंगे? अगर अंगूर तोड़ने वाले तेरे पास आएँ, तो क्या कुछ दाने बाक़ी न छोड़ेंगे?⁶~ऐसौ का माल कैसा ढूँढ़ निकाला गया, और उसके छुपे हुए खज़ानों की कैसी तलाश हुई!

⁷~तेरे सब हिमायतियों ने तुझे सरहद तक हाँक दिया है, और उन लोगों ने जो तुझ से मेल रखते थे तुझे धोका दिया और मग़लूब किया, और उन्होंने जो तेरी रोटी खाते थे, तेरे नीचे जाल बिछाया; उसमें थोड़े भी होशियार नहीं।⁸~खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं उस दिन अदोम से होशियारों को और 'अक्लमन्दी को पहाड़ी-ए-ऐसौ से हलाक न करूँगा?⁹~ऐ तीमान, तेरे बहादुर घबरा जाएँगे, यहाँ तक के पहाड़ी-ए-ऐसौ के रहने वालों में से हर एक काट डाला जाएगा।

¹⁰~उस क़त्ल की वजह और उस जुल्म की वजह से जो तू ने अपने भाई या'कूब पर किया है, तू शर्मिन्दगी से भरपूर और हमेशा के लिए बर्बाद होगा।¹¹~जिस दिन तू उसके मुखालिफ़ों के साथ खड़ा था, जिस दिन अजनबी उसके लश्कर को गुलाम करके ले गए और बेगानों ने उसके फाटकों से दाखिल होकर यरूशलीम पर पर्ची डाली, तू भी उनके साथ था

¹²~तुझे ज़रूरी न था कि तू उस दिन अपने भाई की जिलावतनी को खड़ा देखता रहता, और बनी यहूदाह की हलाकत के दिन ख़ुश होता और मुसीबत के रोज़ बड़ी जुबान बकता।¹³~तुझे मुनासिब न था कि तू मेरे लोगों की मुसीबत के दिन उनके फाटकों में घुसता, और उनकी मुसीबत के रोज़ उनकी बदहाली को खड़ा देखता रहता, और उनके लश्कर पर हाथ बढ़ाता।¹⁴~तुझे ज़रूरी न था कि घाटी में खड़ा होकर, उसके फ़रारियों को क़त्ल करता, और उस दुख के दिन में उसके बाक़ी थके लोगों को हवाले करता।

¹⁵~क्योंकि सब क़ौमों पर खुदावन्द का दिन आ पहुँचा है। जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से किया जाएगा। तेरा किया तेरे सिर पर आएगा।¹⁶~क्योंकि जिस तरह तुम ने मेरे कोह-ए-मुक़द्दस पर पिया, उसी तरह सब कौमों पिया करेंगी, हाँ पीती और निगलती रहेगी; और वह ऐसी होंगी जैसे कभी थीं ही नहीं।

¹⁷~लेकिन जो बच निकलेंगे सिव्थून पहाड़ी पर रहेंगे, और वह पाक होगा और या'कूब का घराना अपनी मीरास पर क़ाबिज़ होगा।¹⁸~तब या'कूब का घराना आग होगा,और यूसुफ़ का घराना शो'ला, और 'ऐसौ का घराना फूस; और वह उसमें भड़केंगे और उसको खा जाएँगे, और 'ऐसौ के घराने में से कोई न बचेगा; क्योंकि ये ख़ुदावन्द का फ़रमान है।

¹⁹~और दख्खिन के रहने वाले पहाड़ी-ए-'ऐसौ, और मैदान के रहने वाले फ़िलिस्तीन के मालिक होंगे; और वह इफ़्राईम और सामरिया के खेतों पर क़ाबिज़ होंगे, और बिनयमीन ज़िलआद का वारिस होगा।

²⁰~और बनी-इस्राईल के लशकर के सब गुलाम, जो कना'नियों में सारपत तक हैं, और यरूशलीम के गुलाम जो सिफ़ाराद में हैं, दखिन के शहरों पर क़ाबिज़ हो जाएँगे।²¹और रिहाई देने वाले सिव्थून की पहाड़ी पर चढ़ेंगे ताकि पहाड़ी-ए-'ऐसौ की 'अदालत करें, और बादशाही ख़ुदावन्द की होगी।

यूनुस

Chapter 1

¹ख़ुदावन्द का कलाम यूनाह बिन अमितै पर नाज़िल हुआ | ²~कि उठ, उस बड़े शहर निनवे को जा और उसके खिलाफ़ 'ऐलान कर; क्योंकि उनकी बुराई मेरे सामने पहुँची है | ³लेकिन ~यूनाह ख़ुदावन्द के सामने से तरसीस को भागा, और याफ़ा में पहुँचा और वहाँ उसे तरसीस को जाने वाला जहाज़ मिला ;और वह किराया देकर उसमें सवार हुआ ताकि ख़ुदावन्द के सामने से तरसीस को~जहाज़ वालों के साथ जाए |

⁴~लेकिन ख़ुदावन्द ने समन्दर पर बड़ी आँधी भेजी, और समन्दर में सख़्त तूफ़ान बर्पा~हुआ, और अँदेशा था कि जहाज़ तबाह हो जाए | ⁵तब मल्लाह हैरान हुए और हर एक ने अपने मा'बूद को ~पुकारा; और वह सामान जो जहाज़ में था समन्दर में डाल दिया ताकि उसे हल्का करें, लेकिन यूनाह जहाज़ के अन्दर पड़ा सो रहा था |

⁶तब ना ख़ुदा उसके पास जाकर कहने लगा, "तू क्यों पड़ा सो रहा है? उठ अपने मा'बूद को पुकार! शायद हम को याद करे और हम हलाक न हों | " ⁷~और उन्होंने आपस में कहा, "आओ, हम पर्ची डालकर देखें कि यह आफ़त हम पर किस की वजह से आई | " चुनाँचे उन्होंने पर्ची डाला, और यूनाह का नाम निकला |

⁸~तब उन्होंने उस से कहा, "तू हम को बता कि यह आफ़त हम पर किस की वजह से आई है ? तेरा क्या पेशा है, और तू कहाँ से आया है?, तेरा वतन कहाँ है, और तू किस क़ौम का है ?," उसने उनसे कहा , " मैं इब्रानी हूँ और ख़ुदावन्द आसमान के ख़ुदा बहर-ओ-बर के ख़ालिक से डरता हूँ | " ¹⁰तब वह ख़ौफ़ज़दा होकर उस से कहने लगे, "तू ने यह क्या किया?" क्योंकि उनको मा'लूम था कि वह ख़ुदावन्द के सामने से भागा है, इसलिए कि उस ने ख़ुद उन से कहा था |

¹¹तब उन्होंने उस से पूछा, " हम तुझ से क्या करें कि समन्दर हमारे लिए ठहर जाए?" क्योंकि समन्दर ज़्यादा तूफ़ानी होता जाता था ¹²तब उस ने उन से कहा, "मुझे उठा कर समन्दर में फेंक दो, तो तुम्हारे लिए समन्दर ठहर जाएगा ;क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह बड़ा तूफ़ान तुम पर मेरी ही वजह से आया है | " ¹³तो भी मल्लाहों ने डंडा चलाने में बड़ी मेहनत की कि किनारे पर पहुँचें, लेकिन न पहुँच सके, क्योंकि समन्दर उनके खिलाफ़ और भी ज़्यादा तूफ़ानी होता जाता था |

¹⁴तब उन्होंने ख़ुदावन्द के सामने~गिड़गिड़ा ~कर कहा, "ऐ ख़ुदावन्द हम तेरी मिन्नत करते हैं कि हम इस आदमी की जान की वजह से हलाक न हों ,और तू खून-ए-नाहक़ को हमारी गर्दन पर न डाले; क्योंकि ऐ ख़ुदावन्द, तूने जो चाहा वही किया | ¹⁵और उन्होंने यूनाह को उठा कर समन्दर में फेंक दिया और समन्दर के मौजों का ज़ोर रुक गया | ¹⁶~तब वह ख़ुदावन्द से बहुत डर गए ,और उन्होंने उसके सामने कुर्बानी पेश की और नज़्रें मानीं

¹⁷लेकिन ख़ुदावन्द ने एक बड़ी मछली मुक़र्रर कर रखी थी कि यूनाह को निगल जाए; और यूनाह तीन दिन रात मछली के पेट में रहा |

Chapter 2

¹तब यूनाह ने मछली के पेट में खुदावन्द अपने खुदा से यह दु'आ की | ²"मैंने अपनी मुसीबत में खुदावन्द से दु'आ की, और उसने मेरी सुनी; मैंने पताल की गहराई से दुहाई दी, तूने मेरी फ़रियाद सुनी |

³तूने मुझे गहरे समन्दर की गहराई में फेंक दिया, और सैलाब ने मुझे घेर लिया | तेरी सब मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गईं और मैं समझा कि तेरे सामने से दूर हो गया हूँ लेकिन मैं फिर तेरी मुक़द्दस हैकल को देखूँगा |

⁵सैलाब ने मुझे घेर लिया; समन्दर मेरी चारों तरफ़ था; समन्दरी नबात मेरी सर पर लिपट गई | ⁶मैं पहाड़ों की गहराई तक ग़र्क़ हो गया ज़मीन के रास्ते हमेशा के लिए मुझ पर बंद हो गए; तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तूने मेरी जान पाताल से बचाई |

⁷जब मेरा दिल बेताब हुआ, तो मैं ने खुदावन्द को याद ~किया; और मेरी दु'आ तेरी मुक़द्दस हैकल में तेरे सामने पहुँची जो लोग झूटे मा'बूदों को मानते हैं, वह शफ़क़त से महरूम हो जाते हैं |

⁹मैं हम्द करता हुआ तेरे सामने कुर्बानी पेश करूँगा; मैं अपनी नज़ें अदा करूँगा नज़ात खुदावन्द की तरफ़ से है | ¹⁰"और खुदावन्द ने मछली को हुक्म दिया, और उस ने यूनाह को ~खुशकी पर उगल दिया |

Chapter 3

¹और खुदावन्द का कलाम दूसरी बार यूनाह पर नाज़िल हुआ | ²कि उठ उस बड़े शहर निनवा को जा और वहाँ उस बात का 'ऐलान कर जिसका मैं तुझे हुक्म देता हूँ | ³तब यूनाह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक उठ कर निनवा को गया ,और निनवा बहुत बड़ा शहर था |उसकी-दूरी तीन दिन की राह थी

⁴और यूनाह शहर में दाखिल हुआ और एक दिन की राह चला | उस ने 'ऐलान किया और कहा, " चालीस रोज़ के बा'द निनवा बर्बाद किया जायेगा | "⁵~तब निनवा के बाशिंदों ने खुदा पर ईमान लाकर रोज़ा का 'ऐलान किया और छोटे और बड़े सब ने टाट ओढ़ा |

⁶और यह खबर निनवा के बादशाह को पहुँची; और वह अपने तख्त पर से उठा और बादशाही लिबास को उतार डाला और टाट ओढ़ कर राख पर बैठ गया |

⁷और बादशाह और उसके अर्कान-ए-दौलत के फ़रमान से निनवा में यह 'ऐलान किया गया और इस बात का 'ऐलान हुआ कि कोई इन्सान या हैवान गल्ला या शराब कुछ न चखें और न खाए पिए |

⁸लेकिन इन्सान और हैवान टाट से मुलब्स हों और खुदा के सामने रोना पीटना करें बल्कि हर शख्स अपनी बुरे चाल चलन और अपने हाथ के जुल्म से बाज़ आए | ⁹शायद खुदा रहम करे और अपना इरादा बदले, और अपने क्रहर शदीद से बाज़ आए और हम हलाक न हों ~ |

¹⁰जब खुदा ने उनकी ये हालत देखी कि वह अपने अपने बुरे चाल चलन से बाज़ आए, तो वह उस 'अज़ाब से जो उसने उन पर नाज़िल करने को कहा था, बाज़ आया और उसे नाज़िल न किया |

Chapter 4

¹लेकिन यूनाह इस से बहुत नाखुश और नाराज़ हुआ।²और उस ने खुदावन्द से यूँ दु'आ की कि ऐ खुदावन्द, जब मैं अपने वतन ही में था और तरसीस को भागने वाला था, तो क्या मैंने यही न कहा था? मैं जानता था कि तू रहीम-ओ-करीम खुदा है जो क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त में ग़नी है और अज़ाब नाज़िल करने से बाज़ रहता है।³अब ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरी जान ले ले, क्योंकि मेरे इस जीने से मर जाना बेहतर है।

⁴तब खुदावन्द ने फ़रमाया, "क्या तू ऐसा नाराज़ है?"⁵और यूनाह शहर से बाहर मशरिक़ की तरफ़ जा बैठा; और वहाँ अपने लिए एक छप्पर बना कर उसके साये में बैठ रहा, कि देखें शहर का क्या हाल होता है।

⁶तब खुदावन्द खुदा ने कटू की बेल उगाई, और उसे यूनाह के ऊपर फैलाया कि उसके सर पर साया हो और वह तकलीफ़ से बचे और यूनाह उस बेल की वजह से निहायत खुश हुआ।⁷लेकिन दूसरे दिन सुबह के वक़्त खुदा ने एक कीड़ा भेजा, जिस ने उस बेल को काट डाला और वह सूख गई।

⁸और जब आफ़ताब ~बलन्द हुआ, तो खुदा ने पूरब से लू चलाई और आफ़ताब कि गर्मी ने यूनाह के सर में असर किया और वह बेताब हो गया और मौत का आरज़ूमन्द होकर कहने लगा कि मेरे इस जीने से मर जाना बेहतर है।⁹और खुदा ने यूनाह से फ़रमाया, "क्या तू इस बेल की वजह से ऐसा नाराज़ है?" ~उस ने कहा, "मैं यहाँ तक नाराज़ हूँ कि मरना चाहता हूँ।"

¹⁰तब खुदावन्द ने फ़रमाया कि तुझे इस बेल का इतना खयाल है, जिसके लिए तूने न कुछ मेहनत की और न उसे उगाया। जो एक ही रात में उगी और एक ही रात में सूख गई।¹¹और क्या मुझे ज़रूरी न था कि मैं इतने बड़े शहर निनवा का खयाल करूँ, जिस में एक लाख बीस हज़ार से ज़्यादा ऐसे हैं जो अपने दहने और बाई हाथ में फ़र्क़ नहीं कर सकते, और बे शुमार मवेशी है?।

मीकाह

Chapter 1

¹सामरिया और यरुशलीम के बारे में खुदावन्द का कलाम जो शाहान-ए-यहूदाह यूताम, आखज़-ओ-हिज़क्रियाह के दिनों~में मीकाह मोरशती पर ख़्वाब में नाज़िल हुआ।

²~ऐ सब लोगों, सुनो! ऐ ज़मीन और उसकी मा'मूरी कान लगाओ! हाँ खुदावन्द अपने मुक़द्दस घर से तुम पर गवाही दे।³~क्योंकि देख, खुदावन्द अपने घर से बाहर आता है, और नाज़िल होकर ज़मीन के ऊँचे मक़ामों को पायमाल करेगा।⁴और पहाड़ उनके नीचे पिघल जाएँगे, और वादियाँ फट जाएँगी, जैसे मोम आग से पिघल जाता और पानी कराड़े पर से बह जाता है।

⁵~ये सब या'कूब की खता और इस्राईल के घराने के गुनाह का नतीजा है। या'कूब की खता क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहूदाह के ऊँचे मक़ाम क्या हैं? क्या यरुशलीम नहीं?

⁶~इसलिए मैं सामरिया को खेत के तूदे की तरह, और ताकिस्तान लगाने की जगह की तरह बनाऊँगा, और मैं उसके पत्थरों को वादी में ढलकाऊँगा और उसकी बुनियाद उखाड़ दूँगा।⁷~और उसकी सब खोदी हुई मूरतें चूर-चूर की जाएँगी, और जो कुछ उसने मज़दूरी में पाया आग से जलाया जाएगा; और मैं उसके सब बुतों को तोड़ डालूँगा क्योंकि उसने ये सब कुछ कस्बी की मज़दूरी से पैदा किया है; और वह फिर कस्बी की मज़दूरी हो जाएगा।

⁸~इसलिए मैं मातम-ओ-नौहा करूँगा; मैं गंगा और बरहना होकर फिरूँगा; मैं गीदड़ों की तरह चिल्लाऊँगा और शतरमुर्गों की तरह ग़म करूँगा।⁹~क्योंकि उसका ज़ख़्म लाइलाज़ है, वह यहूदाह तक भी आया; वह मेरे लोगों के फाटक तक बल्कि यरुशलीम तक पहुँचा।¹⁰~जात में उसकी खबर न दो, और हरगिज़ नौहा न करो; बैत 'अफ़रा में खाक पर लोटो।

¹¹~ऐ सफ़ीर की रहने वाली, तू बरहना-ओ-रुस्वा होकर चली जा; ज़ानान की रहने वाली निकल नहीं सकती। बैतएज़ल के मातम के ज़रिए' उसकी पनाहगाह तुम से ले ली जाएगी।¹²~मारोत की रहने वाली भलाई के इन्तिज़ार में तड़पती है, क्योंकि खुदावन्द की तरफ़ से बला नाज़िल हुई, जो यरुशलीम के फाटक तक पहुँची।

¹³~ऐ लकीस की रहने वाली बादपा घोड़ों को रथ में जोत; तू बिन्त-ए-सिय्यून के गुनाह का आगाज़~हुई क्योंकि इस्राईल की खताएँ भी तुझ में पाई गई।

¹⁴~इसलिए तू मोरसत जात को तलाक़ देगी; अकज़ीब के घराने इस्राईल के बादशाहों से दगाबाज़ी करेंगे।

¹⁵~ऐ मरेसा की रहने वाली, तुझ पर क़ब्ज़ा करने वाले को तेरे पास लाऊँगा; इस्राईल की शौकत 'अदुल्लाम में आएगी।¹⁶अपने प्यारे बच्चों के लिए सिर मुंडाकर चंदली हो जा; गिद्ध की तरह अपने चंदलेपन को ज़्यादा कर क्योंकि वह तेरे पास से गुलाम होकर चले गए।

Chapter 2

¹~उन पर अफ़सोस, जो बदकिरदारी के मंसूबे बाँधते और बिस्तर पर पड़े-पड़े शरारत की तदबीरें ईजाद करते हैं, और सुबह होते ही उनको 'अमल में लाते हैं; क्योंकि उनको इसका इख्तियार है।²~वह लालच से खेतों को ज़ब्त करते, और घरों को छीन लेते हैं; और यूँ आदमी और उसके घर पर, हाँ, मर्द और उसकी मीरास पर जुल्म करते हैं।

³~इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं इस घराने पर आफ़त लाने की तदबीर करता हूँ जिससे तुम अपनी गर्दन न बचा सकोगे, और गर्दनकशी से न चलोगे; क्योंकि ये बुरा वक़्त होगा।⁴~उस वक़्त कोई तुम पर ये मसल जाएगा और पुरदर्द नौहे से मातम करेगा, और कहेगा, "हम बिल्कुल ग़ारत हुए; उसने मेरे लोगों का हिस्सा बदल डाला; उसने कैसे उसको मुझ से जुदा कर दिया! उसने हमारे खेत बाग़ियों को बाँट दिए।"⁵इसलिए तुम में से कोई न बचेगा, जो खुदावन्द की जमा'अत में पैमाइश की रस्सी डाले।

⁶~बकवासी कहते हैं, "बकवास न करो! इन बातों के बारे में बकवास न करो। ऐसे लोगों से रुस्वाई जुदा न होगी।"⁷~ऐ बनी या'कूब, क्या ये कहा जाएगा कि खुदावन्द की रूह क़ासिर हो गई? क्या उसके यही काम हैं? क्या मेरी बातें रास्तरौ के लिए फ़ायदेमन्द नहीं।⁸~अभी कल की बात है कि मेरे लोग दुश्मन की तरह उठे; तुम सुलह पसंद-ओ-बेफ़िक़्र राहगीरों की चादर उतार लेते हो।

⁹~तुम मेरे लोगों की 'औरतों को उनके मरगूब घरों से निकाल देते हो, और तुमने मेरे जलाल को उनके बच्चों पर से हमेशा के लिए दूर कर दिया।¹⁰~उठो, और चले जाओ, क्योंकि ला'इलाज-ओ-मोहलिक नापाकी की वजह से ये तुम्हारी आरामगाह नहीं है।¹¹अगर कोई झूट और बतालत का पैरो कहे कि मैं शराब-ओ-नशा की बातें करूँगा, तो वही इन लोगों का नबी होगा।

¹²~ऐ या'कूब, मैं यक़ीनन तेरे सब लोगों को इकठ्ठा करूँगा, मैं यक़ीनन इस्राईल के बक्रिये को जमा' करूँगा मैं उनको बसराह की भेड़ों और चरागाह के गल्ले की तरह इकठ्ठा करूँगा और आदमियों का बड़ा शोर होगा।¹³~तोड़ने वाला उनके आगे-आगे गया है; वह तोड़ते हुए फाटक तक चले गए, और उसमें से गुज़र गए; और उनका बादशाह उनके आगे-आगे गया, या'नी खुदावन्द उनका पेशवा।

Chapter 3

¹और मैंने कहा: ऐ या'कूब के सरदारों और बनी-इसाईल के हाकिमों, सुनो। क्या मुनासिब नहीं कि तुम 'अदालत से वाकिफ हो?'²~तुम नेकी से दुश्मनी और बुराई से मुहब्बत रखते हो; और लोगों की खाल उतारते, और उनकी हड्डियों पर से गोشت नोचते हो।³~और मेरे लोगों का गोشت खाते हो, और उनकी खाल उतारते, और उनकी हड्डियों को तोड़ते और उनको टुकड़े-टुकड़े करते हो; जैसे वह हाँडी और देग के लिए गोشت हैं।

⁴तब वह खुदावन्द को पुकारेंगे, लेकिन वह उनकी न सुनेगा; हाँ, वह उस वक़्त उनसे मुँह फेर लेगा क्योंकि उनके 'आमाल बुरे हैं।

⁵~उन नबियों के हक़ में जो मेरे लोगों को गुमराह करते हैं, जो लुक्मा पाकर 'सलामती सलामती पुकारते हैं, लेकिन अगर कोई खाने को न दे तो उससे लड़ने को तैयार होते हैं, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है।⁶"कि अब तुम पर रात हो जाएगी, जिसमें ख़्वाब न देखोगे और तुम पर तारीकी छा जाएगी; और ग़ैबबीनी न कर सकोगे, और नबियों पर आफ़ताब गुरूब होगा, और उनके लिए दिन अंधेरा हो जाएगा।⁷तब ग़ैबबीन पशेमान और फ़ालगीर शर्मिन्दा होंगे, बल्कि सब लोग मुँह पर हाथ रखेंगे, क्योंकि खुदा की तरफ़ से कुछ जवाब न होगा।

⁸लेकिन मैं खुदावन्द की रूह के ज़रिए' कुव्वत-ओ- 'अदालत-ओ-दिलेरी से मा'मूर हूँ, ताकि या'कूब को उसका गुनाह और इसाईल को उसकी ख़ता जताऊँ।

⁹~ऐ बनी या'कूब के सरदारों, और ऐ बनी-इसाईल के हाकिमों, जो 'अदालत से 'अदावत रखते हो, और सारी रास्ती को मरोड़ते हो, इस बात को सुनो।¹⁰~तुम जो सिय्यून को ख़ूँरेज़ी से और यरुशलीम को बेइन्साफ़ी से ता'मीर करते हो।¹¹उसके सरदार रिश्त लेंकर 'अदालत करते हैं, और उसके काहिन मज़दूरी लेकर ता'लीम देते हैं, और उसके नबी रुपया लेकर फ़ालगीरी करते हैं; तोभी वह खुदावन्द पर भरोसा करते हैं और कहते हैं, "क्या खुदावन्द हमारे बीच नहीं? इसलिए हम पर कोई बला न आएगी।"

¹²~इसलिए सिय्यून तुम्हारी ही वजह से खेत की तरह जोता जाएगा; और इस घर का पहाड़ जंगल की ऊँची जगहों की तरह होगा।

Chapter 4

¹~लेकिन आखिरी दिनों में यूँ होगा कि खुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटियों पर क़ायम किया जाएगा, और सब टीलों से बलंद होगा और उम्मतें वहाँ पहुँचेंगी।

²~और बहुत सी क़ौमें आएँगी, और कहेंगी, 'आओ, खुदावन्द के पहाड़ पर चढ़ें, और या'कूब के खुदा के घर में दाखिल हों, और वह अपनी राहें हम को बताएगा और हम उसके रास्तों पर चलेंगे। क्योंकि शरी'अत सिय्यून से, और खुदावन्द का कलाम यरुशलीम से सादिर होगा।'³~और वह बहुत सी उम्मतों के बीच 'अदालत करेगा, और दूर की ताक़तवर क़ौमों को डौंटेगा; और वह अपनी तलवारों को तोड़ कर फालें, और अपने भालों को हँसुवे बना डालेंगे; और क़ौम-क़ौम पर तलवार न चलाएगी, और वह फिर कभी जंग करना न सीखेंगे।

⁴तब हर एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त के नीचे बैठेगा, और उनको कोई न डराएगा, क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज ने अपने मुँह से ये फ़रमाया है।⁵~क्योंकि सब उम्मतें अपने-अपने मा'बूद के नाम से चलेंगी, लेकिन हम हमेशा से हमेशा तक खुदावन्द अपने खुदा के नाम से चलेंगे।

⁶~खुदावन्द फ़रमाता है, "कि मैं उस रोज़ लंगड़ों को जमा' करूँगा और जो हाँक दिए गए और जिनको मैंने दुख दिया, इकट्ठा करूँगा ;'⁷~और लंगड़ों को बक्रिया,और जिलावतनों को ताक़तवर क़ौम बनाऊँगा; और खुदावन्द कोह-ए-सिय्यून पर अब से हमेशा हमेशा तक उन पर सल्तनत करेगा।⁸~ऐ गल्ले की दीदगाह, ऐ बिन्त-ए-सिय्यून की पहाड़ी, ये तेरे ही लिए है; क़दीम सल्तनत, या'नी दुख़्तर-ए- यरुशलीम की बादशाही तुझे मिलेगी।

⁹~अब तू क्यूँ चिल्लाती है,जैसे ~दर्द-ए-ज़िह में मुब्तिला है? क्या तुझ में कोई बादशाह नहीं? क्या तेरा सलाहकार हलाक हो गया?¹⁰ऐ बिन्त-ए-सिय्यून, ज़च्चा की तरह तकलीफ़ उठा और पैदाइश के दर्द में मुब्तिला हो; क्योंकि अब तू शहर से निकल कर ~मैदान में रहेगी और बाबुल तक जाएगी वहाँ तू रिहाई पायेगी। और वहीं खुदावन्द तुझ को तेरे दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा।

¹¹अब बहुत सी क़ौमें तेरे खिलाफ़ जमा' हुई हैं और कहती हैं सिय्यून नापाक हो और हमारी आँखें उसकी रुस्वाई देखें।"¹²~लेकिन वह खुदावन्द की तदबीर से आगाह नहीं, और उसकी मसलहत को नहीं समझती; क्योंकि वह उनको खलीहान के पूलों की तरह जमा' करेगा।

¹³~ऐ बिन्त-ए-सिय्यून, उठ और पायमाल कर, क्योंकि मैं तेरे सींग को लोहा और तेरे खुरों को पीतल बनाऊँगा, और तू बहुत सी उम्मतों को टुकड़े-टुकड़े करेगी; उनके ज़ख़ीरे खुदावन्द को नज़र करेगी और उनका माल रब्ब-उल-'आलमीन के सामने लाएगी।

Chapter 5

¹ऐ बिन्त-ए-अफ़वाज, अब फ़ौजों में जमा' हो; हमारा घिराव किया जाता है। वह इस्राईल के हाकिम के गाल पर छड़ी से मारते हैं।

²~लेकिन ऐ बैतलहम इफ़राताह, अगरचे तू यहूदाह के हज़ारों में शामिल होने के लिए छोटा है, तो भी तुझ में से एक शख्स निकलेगा; और मेरे सामने इस्राईल का हाकिम होगा, और उसका मसदर ज़माना-ए-साबिक, हाँ क़दीम-उल-अय्याम से है।³~इसलिए वह उनको छोड़ देगा, जब तक कि ज़च्चा दर्द-ए-ज़िह से फ़ारिग न हो; तब उसके बाक़ी भाई बनी-इस्राईल में आ मिलेंगे।

⁴~और वह खड़ा होगा और खुदावन्द की क़ुदरत से, और खुदावन्द अपने खुदा के नाम की बुजुर्गी से गल्ले बानी करेगा। और वह क़ायम रहेंगे, क्योंकि वह उस वक़्त इन्तिहा-ए-ज़मीन तक बुजुर्ग होगा।⁵~और वही हमारी सलामती होगा। जब असूर हमारे मुल्क में आएगा और हमारे क़स्बों में क़दम रखेगा, तो हम उसके ख़िलाफ़ सात चरवाहे और आठ सरगिरोह खड़े करेंगे;

⁶~और वह असूर के मुल्क को, और नमरूद की सरज़मीन के मदखलों को तलवार से वीरान करेंगे; और जब असूर हमारे मुल्क में आकर हमारी हदों को पायमाल करेगा, तो वह हम को रिहाई बख़्शेगा।⁷~और या'क़ूब का बक़िया बहुत सी उम्मतों के लिए ऐसा होगा, जैसे खुदावन्द की तरफ़ से ओस और घास पर बारिश, जो न इंसान का इन्तिज़ार करती है, और न बनी आदम के लिए ठहरती है।

⁸~और या'क़ूब का~बक़िया या बहुत सी क़ौमों और उम्मतों में, ऐसा होगा जैसे शेर-ए-बबर जंगल के जानवरों में, और जवान शेर भेड़ों के गल्ले में, जब वह उनके बीच से गुज़रता है, तो पायमाल करता और फाड़ता है, और कोई छुड़ा नहीं सकता।⁹~तेरा हाथ तेरे दुश्मनों पर उठे, और तेरे सब मुखालिफ़ हलाक हो जाएँ।

¹⁰~और खुदावन्द फ़रमाता है, उस रोज़ मैं तेरे घोड़ों को जो तेरे बीच हैं काट डालूँगा, और तेरे रथों को बर्बाद करूँगा;¹¹~और तेरे मुल्क के शहरों को बर्बाद, और तेरे सब क़िलो' को मिस्मार करूँगा।

¹²~और मैं तुझ से जादूगरी दूर करूँगा, और तुझ में फ़ालगीर न रहेंगे;¹³~और तेरी खोदी हुई मूरतें और तेरे सुतून तेरे बीच से बर्बाद कर दूँगा और फिर तू अपनी दस्तकारी की 'इबादत न करेगा;¹⁴~और मैं तेरी यसीरतों को तेरे बीच से उखाड़ डालूँगा और तेरे शहरों को तबाह करूँगा।¹⁵~और उन क़ौमों पर जिसने सुना नहीं, अपना क़हर-ओ-ग़ज़ब नाज़िल करूँगा।

Chapter 6

¹~अब खुदावन्द का फ़रमान सुन: उठ, पहाड़ों के सामने मुबाहसा कर, और सब टीले तेरी आवाज़ सुनें।²~ऐ पहाड़ों, और ऐ ज़मीन की मज़बूत बुनियादों, खुदावन्द का दा'वा सुनो, क्योंकि खुदावन्द अपने लोगों पर दा'वा करता है, और वह इस्राईल पर हुज्जत साबित करेगा।

³ऐ मेरे लोगों मैंने तुम से क्या किया है और तुमको किस बात में आजुर्दा किया है मुझ पर साबित करो।⁴~क्योंकि मैं तुम को मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, और गुलामी के घर से फ़िदिया देकर छुड़ा लाया; और तुम्हारे आगे मूसा और हारून और मरियम को भेजा।⁵~ऐ मेरे लोगों, याद करो कि शाह-ए-मोआब बलक़ ने क्या मश्वरत की, और बल'आम-बिन-ब'ऊर ने उसे क्या जवाब दिया; और शित्तीम से जिलजाल तक क्या-क्या हुआ, ताकि खुदावन्द की सदाक़त से वाकिफ़ हो जाओ।

⁶मैं क्या लेकर खुदावन्द के सामने आऊँ, और खुदा ताला को क्योंकर सिज्दा करूँ? क्या सोख्तनी कुर्बानियों और यकसाला बछड़ों को लेकर उसके सामने आऊँ?

⁷~क्या खुदावन्द हज़ारों मेंढों से या तेल की दस हज़ार नहरों से खुश होगा? क्या मैं अपने पहलौठे को अपने गुनाह के बदले में, और अपनी औलाद को अपनी जान की खता के बदले में दे दूँ?⁸~ऐ इंसान, उसने तुझ पर नेकी ज़ाहिर कर दी है; खुदावन्द तुझ से इसके सिवा क्या चाहता है कि तू इंसाफ़ करे और रहमदिली को 'अज़ीज़ रखे, और अपने खुदा के सामने फ़रोतनी से चले?

⁹~खुदावन्द की आवाज़ शहर को पुकारती है और 'अक्लमंद उसके नाम का लिहाज़ रखता है: 'असा और उसके मुकर्रर करने वाले की सुनो।¹⁰~क्या शरीर के घर में अब तक नाजायज़ नफ़े' के खज़ाने और नाक्रिस-ओ-नफ़रती पैमाने नहीं हैं।

¹¹क्या वह दगा की तराजू और झूटे बाटों का थैला रखता हुआ, बेगुनाह ठहरेगा।¹²~क्योंकि वहाँ के दौलतमंद जुल्म से भरे हैं; और उसके बाशिन्दे झूट बोलते हैं, बल्कि उनके मुँह में दगाबाज़ ज़बान है।

¹³~इसलिए मैं तुझे मुहलिक ज़ख़म लगाऊँगा, और तेरे गुनाहों की वजह से तुझ को वीरान कर डालूँगा।¹⁴~तू खाएगा लेकिन आसूदा न होगा, क्योंकि तेरा पेट खाली रहेगा; तू छिपाएगा लेकिन बचा न सकेगा, और जो कुछ कि तू बचाएगा मैं उसे तलवार के हवाले करूँगा।¹⁵~तू बोएगा, लेकिन फ़सल न काटेगा; ज़ैतून को रौंदेगा, लेकिन तेल मलने न पाएगा; तू अंगूर को कुचलेगा, लेकिन मय न पिएगा।

¹⁶~क्योंकि उमरी के क़वानीन और अखीअब के ख़ान्दान के आ'माल की पैरवी होती है, और तुम उनकी मश्वरत पर चलते हो, ताकि मैं तुम को वीरान करूँ, और उसके रहने वालों को सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँ; इसलिए तुम मेरे लोगों की रुस्वाई उठाओगे।"

Chapter 7

¹~मुझ पर अफ़सोस! मैं ताबिस्तानी मेवा जमा' होने और अंगूर तोड़ने के बा'द की खोशाचीनी की तरह हूँ, न खाने को कोई खोशा, और न पहला पक्का दिलपसंद अंजीर है।²~दीनदार आदमी दुनिया से जाते रहे, लोगों में कोई रास्तबाज़ नहीं; वह सब के सब घात में बैठे हैं कि खून करें हर शख्स जाल बिछा कर अपने ~भाई का शिकार करता है।

³उनके हाथ बुराई में फुर्तीले हैं; हाकिम रिश्तत माँगता है और क़ाज़ी भी यही चाहता है, और बड़े आदमी अपने दिल की हिर्स की बातें करते हैं; और यूँ साज़िश करते हैं।⁴उनमें सबसे अच्छा तो ऊँट कटारे की तरह है, और सबसे रास्तबाज़ खारदार झाड़ी से बदतर है। उनके निगहबानों का दिन, हाँ उनकी सज़ा का दिन आ गया है; अब उनको परेशानी होगी।

⁵~किसी दोस्त पर भरोसा न करो; हमराज़ पर भरोसा न रखो; हाँ, अपने मुँह का दरवाज़ा अपनी बीवी के सामने बंद रखो⁶~क्योंकि बेटा अपने बाप को हकीर जानता है, और बेटी अपनी माँ के और बहू अपनी सास के खिलाफ़ होती है; और आदमी के दुश्मन उसके घर ही के लोग हैं।

⁷~लेकिन मैं ख़ुदावन्द की राह देखूँगा, और अपने नजात देने वाले ख़ुदा का इन्तिज़ार करूँगा, मेरा ख़ुदा मेरी सुनेगा।⁸~ऐ मेरे दुश्मन, मुझ पर खुश न हो, क्योंकि जब मैं गिरूँगा, तो उठ खड़ा हूँगा; जब अंधेरे में बैठूँगा, तो ख़ुदावन्द मेरा नूर होगा।

⁹~मैं ख़ुदावन्द के क़हर को बर्दाश्त करूँगा, क्योंकि मैंने उसका गुनाह किया है जब तक वह मेरा दा'वा साबित करके मेरा इंसान न करे। वह मुझे रोशनी में लाएगा, और मैं उसकी सदाक़त को देखूँगा।

¹⁰तब मेरा दुश्मन जो मुझ से कहता था, ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा कहाँ है ये देखकर रुखा होगा। मेरी आँखें उसे देखेंगी वह गलियों की कीच की तरह पायमाल किया जाएगा।

¹¹~तेरी फ़सील की ता'मीर के रोज़, तेरी हदें बढ़ाई जाएँगी।¹²~उसी रोज़ असूर से और मिस्र के शहरों से, और मिस्र से दरिया-ए-फ़रात तक, और समन्दर से समन्दर तक और कोहिस्तान से कोहिस्तान तक, लोग तेरे पास आएँगे।¹³और ज़मीन अपने बाशिन्दों के 'आमाल की वजह से वीरान होगी।

¹⁴~अपने 'असा से अपने लोगों, या'नी अपनी मीरास की गल्लेबानी कर, जो कर्मिल के जंगल में तन्हा रहते हैं, उनको बसन और जिलआद में पहले की तरह चरने दे।¹⁵जैसे तेरे मुल्क-ए-मिस्र से निकलते वक्त्र दिखाए, वैसे ही अब मैं उसे 'अजाइब दिखाऊँगा।

¹⁶~क़ौम देखकर अपनी तमाम तवानाई से शर्मिन्दा होंगी; वह मुँह पर हाथ रखेंगी, और उनके कान बहरे हो जाएँगे।¹⁷~वह साँप की तरह खाक चाटेंगी, और अपने छिपने की जगहों से ज़मीन के कीड़ों की तरह थरथराती हुई आएँगी; वह ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा के सामने डरती हुई आयेंगी हाँ वह तुझ से परेशान होंगी।

¹⁸~तुझ सा ख़ुदा कौन है, जो बदकिरदारी मु'आफ़ करे और अपनी मीरास के बक्रिये की ख़ताओं से दरगुज़रे? वह अपना क़हर हमेशा तक नहीं रख छोड़ता, क्योंकि वह शफ़क़त करना पसंद करता है।

¹⁹~वह फिर हम पर रहम फ़रमाएगा; वही हमारी बदकिरदारी को पायमाल करेगा और उनके सब गुनाह समन्दर की तह में डाल देगा।²⁰~तू या'कूब से वफ़ादारी करेगा और इब्राहीम को वह शफ़क़त दिखाएगा, जिसके बारे में तू ने पुराने ज़माने में हमारे बाप-दादा से क़सम खाई थी।

नाहूम

Chapter 1

¹नीनवा के बारे में बार-ए-नबुव्वत। इलकूशी नाहूम की रोया की किताब।

²~ख़ुदावन्द ग़य्यूर और इन्तक़ाम लेनेवाला ख़ुदा है; हाँ ख़ुदावन्द इन्तक़ाम लेने वाला और क़ह्हार है; ख़ुदावन्द अपने मुखालिफ़ों से इन्तक़ाम लेता है और अपने दुश्मनों के लिए क़हर को कायम रखता है।³~ख़ुदावन्द क़हर करने में धीमा और कुदरत में बढ़कर है, और मुजरिम को हरगिज़ बरी न करेगा। ख़ुदावन्द की राह गिर्दबाद और आँधी ~में है, और बादल उसके पाँव की गर्द हैं।

⁴~वही समन्दर को डौंटा और सुखा देता है, और सब नदियों को शुष्क कर डालता है; बसन और कर्मिल कुमला जाते हैं, और लुबनान की कॉपलें मुरझा जाती हैं।⁵~उसके ख़ौफ़ से पहाड़ काँपते और टीले पिघल जाते हैं; उसके सामने ज़मीन हाँ, दुनिया और उसकी सब मा'मूरी थरथराती है।

⁶~किसको उसके क़हर की ताब है? उसके ग़ज़बनाक गुस्से की कौन बर्दाश्त कर सकता है? उसका क़हर आग की तरह नाज़िल होता है वह चट्टानों को तोड़ डालता है।

⁷ख़ुदावन्द भला है और मुसीबत के दिन पनाहगाह ~है वह अपने भरोसा करने वालों को जानता है।⁸लेकिन अब वह उसके मकान को बड़े सैलाब से हलाक-ओ-बर्बाद करेगा और तारीकी उसके दुश्मनों को दौड़ायेगी।

⁹~तुम ख़ुदावन्द के खिलाफ़ क्या मंसूबा बाँधते हो वह बिल्कुल हलाक कर डालेगा अज़ाब दोबारा न आएगा।¹⁰अगरचे वह उलझे हुए काँटों की तरह पेचीदा, और अपनी मय से तर हो तो भी वह ~सूखे भूसे की तरह बिल्कुल जला दिए जायेंगे।¹¹तुझसे एक ऐसा शख्स निकला है जो ख़ुदावन्द के खिलाफ़ बुरे मंसूबे बाँधता और शरारत की सलाह देता है।

¹²ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि अगरचे वह ज़बरदस्त और बहुत से हों तों भी वह काटे जायेंगे और वह बर्बाद हो जाएगा अगरचे मैंने तुझे दुख दिया तोभी फिर कभी तुझे दुख न दूँगा।¹³और अब मैं उसका जुआ तुझ पर से तोड़ डालूँगा और तेरे बंधनों को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

¹⁴लेकिन खुदावन्द ने तेरे बारे में ये हुक्म सादिर फ़रमाया है कि तेरी नसल बाक़ी न रहे मैं तेरे बुतख़ाने से खोदी हुई और ढाली हुई मूरतों को बर्बाद करूँगा, मैं तेरे लिए क़ब्र तैयार करूँगा क्योंकि तू निकम्मा है

¹⁵देख जो खुशख़बरी लाता और सलामती का 'ऐलान करता है उसके पाँव पहाड़ों पर हैं , ऐ यहूदाह अपनी 'ईदें मना और अपनी नज़्मे अदा कर क्योंकि फिर खबीस तेरे बीच से नहीं गुज़रेगा वह साफ़ काट डाला गया गया है |

Chapter 2

¹बिखेरने वाला तुझ पर चढ़ आया है, किले' को महफूज़ रख: राह की निगहबानी कर: कमर बस्ता हो और खूब मज़बूत रह।²क्योंकि खुदावन्द या'कूब की रौनक को इस्राईल की रौनक की तरह, फिर बहाल करेगा: अगरचे ग़ारतग़रों ने उनको ग़ारत किया है, और उनकी ताक की शाखें तोड़ डालीं हैं |

³उसके बहादुरों की ढालें सुर्ख हैं; जंगी मर्द किरमिज़ी वर्दी पहने हैं। उसकी तैयारी के वक़्त रथ फ़ौलाद से झलकते हैं, और देवदार के नेज़े बशिद्दत हिलते हैं।⁴रथ सड़कों पर तुन्दी से दौड़ते, और मैदान में बेतहाशा जाते हैं; वह मशा'लों की तरह चमकते, और बिजली की तरह कौंदते हैं।

⁵~वह अपने सरदारों को बुलाता है, वह टक्करें खाते आते हैं; वह जल्दी-जल्दी फ़सील पर चढ़ते हैं, और अड़तला तैयार किया जाता है।

⁶नहरों के फाटक खुल जाते हैं, और क्रस गुदाज़ हो जाता है;⁷~हुस्सब बेपर्दा हुई और गुलामी में चली गई; उसकी लौंडियाँ कुमारियों की तरह कराहती हुई मातम करती और छाती पीटती हैं।

⁸~नीनवा तो पहले ही से हौज़ की तरह है, तोभी वह भागे चले जाते हैं। वह पुकारते हैं, "ठहरो, ठहरो!" लेकिन कोई मुड़कर नहीं देखता।⁹~चाँदी लूटो! सोना लूटो!~क्योंकि माल की कुछ इन्तिहा नहीं सब नफ़ीस चीज़ें कसरत से हैं।¹⁰वह ख़ाली, सुनसान और वीरान है! उनके दिल पिघल गए और घुटने टकराने लगे हर एक की कमर में शिद्दत से दर्द है और इन सबके चेहरे जर्द हो गए |

¹¹~शेरों की माँद, और जवान बबरों की खाने की जगह कहाँ है जिसमें शेर-ए-बबर और शेरनी और उनके बच्चे बेखौफ़ फिरते थे?¹²~शेर-ए-बबर अपने बच्चों की ख़ुराक के लिए फाड़ता था, और अपनी शेरनियों के लिए गला घोटता था; और अपनी माँदों को शिकार से, और ग़ारों को फाड़े हुआँ से भरता था।

¹³~रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, देख, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और उसके रथों को जलाकर धुवाँ बना दूँगा और तलवार तेरे जवान बबरों को खा जाएगी। और मैं तेरा शिकार ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, और तेरे क़ासिदों की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी।।

Chapter 3

¹खूँरेज शहर पर अफ़सोस, वह झूट और लूट से बिल्कुल भरा है; वह लूटमार से बाज़ नहीं आता।²~सुनो, चाबुक की आवाज़, और पहियों की खड़खड़ाहट और घोड़ों का कूदना और रथों के हिचकोले!

³~देखो, सवारों का हमला और तलवारों की चमक और भालों की झलक और मक्तूलों के ढेर, और लाशों के तूदे; लाशों की इन्तिहा नहीं, लाशों से ठोकें खाते हैं।⁴~ये उस खूबसूरत जादूगरनी फ़ाहिशा की बदकारी की कसरत का नतीजा है, क्योंकि वह क्रौमों को अपनी बदकारी से, और घरानों को अपनी जादूगरी से बेचती है।

⁵~रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, देख, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और तेरे सामने से तेरा दामन उठा दूँगा, और क्रौमों को तेरी बरहन्गी और ममलुकतों को तेरा सत्र दिखलाऊँगा।⁶~और नज़ासत तुझ पर डालूँगा, और तुझे रुखा करूँगा, हाँ तुझे अन्गुशतनुमा कर दूँगा।⁷~और जो कोई तुझ पर निगाह करेगा, तुझ से भागेगा और कहेगा, नीनवा वीरान हुआ; इस पर कौन तरस खाएगा? मैं तेरे लिए तसल्ली देने वाले कहाँ से लाऊँ।

⁸~क्या तू नोआमून से बेहतर है, जो नहरों के बीच बसा था और पानी उसकी चारों तरफ़ था; जिसकी शहरपनाह दरिया-ए-नील था, और जिसकी फ़सील पानी था?⁹कूश और मिस्र उसकी बेइन्तिहा तवानाई थे; फ़ूट और लूबीम उसके हिमायती थे।

¹⁰~तोभी वह जिलावतन और गुलाम हुआ; उसके बच्चे सब कूचों में पटक दिए गए, और उनके शुर्फ़ा पर पर्चा डाला गया, और उसके सब बुजुर्ग ज़ंजीरों से जकड़े गए।¹¹~तू भी मस्त होकर अपने आप को छिपाएगा, और दुश्मन के सामने से पनाह ढूँडेगा।

¹²तेरे सब क़िले' अंजीर के दरख्त की तरह हैं, जिस पर पहले पक्के फल लगे हों, जिसको अगर कोई हिलाए तो वह खाने वाले के मुँह में गिर पड़ें।¹³~देख, तेरे अन्दर तेरे मर्द' औरतें बन गए, तेरी मम्लुकत के फाटक तेरे दुश्मनों के सामने खुले हैं; आग तेरे अड़बंगों को खा गई।

¹⁴~तू अपने घिराव के वक्रत के लिए पानी भर ले, और अपने क़िलों' को मज़बूत कर; गढ़ में उतरकर मिट्टी तैयार कर, और ईंट का साँचा हाथ में ले।¹⁵~वहाँ आग तुझे खा जाएगी, तलवार तुझे काट डालेगी। वह टिड्डी की तरह तुझे चट कर जाएगी। अगरचे तू अपने आप को चट कर जाने वाली टिड्डियों की तरह फ़िरावान करे, और फ़ौज़-ए-मलख की तरह बेशुमार हो जाए।

¹⁶~तू ने अपने सौदागरों को आसमान के सितारों से ज़्यादा फ़िरावान किया। चट कर जाने वाली टिड्डी, खराब करके उड़ जाती है।¹⁷~तेरे हाकिम मलख और तेरे सरदार टिड्डियों का हुजूम हैं, जो सर्दी के वक्रत झाड़ियों में रहती हैं; और जब आफ़ताब निकलता है तो उड़ जाती हैं, और उनका मकान कोई नहीं जानता।

¹⁸~ऐ शाह-ए-असूर, तेरे चरवाहे सो गए; तेरे सरदार लेट गए। तेरी रि'आया पहाड़ों पर बिखर गई, और उसको इकट्ठा करने वाला कोई नहीं।¹⁹~तेरी शिकस्तगी ला'इलाज है, तेरा ज़ख़म कारी है; तेरा हाल सुनकर सब ताली बजाएँगे। क्योंकि कौन है जिस पर हमेशा तेरी शरारत का बार न था?

हबक्कूक़

Chapter 1

¹~हबक्कूक़ नबी के ख़्वाब की नबुव्वत के बारे में: 'ऐ खुदावन्द, मैं कब तक फ़रियाद करूँगा, और तू न सुनेगा? मैं तेरे सामने कब तक चिल्लाऊँगा "जुल्म, जुल्म" और तू न बचाएगा ?

³तू क्यों मुझे बद किरदारी और टेढ़ी रविश दिखाता है? क्योंकि~जुल्म और सितम मेरे सामने हैं फ़ितना-ओ-फ़साद खड़े होते रहते हैं। 'इसलिए शरी' अत कमज़ोर हो गई, और इन्साफ़ मुतलक़ जारी नहीं होता। क्योंकि शरीर सादिक़ो को घेर लेते हैं; इसलिए~इन्साफ़~का खून हो रहा है।

⁵क्रौमों पर नज़र करो, और देखो; और हैरान हो; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा काम करने को हूँ कि अगर कोई तुम से उसका बयान करे तो तुम हरगिज़ उम्मीद न करोगे।⁶क्योंकि देखो, मैं कसदियों को चढ़ालाऊँगा: वह गुस्सावर और कम'अक्ल क्रौम हैं, जो चौड़ी ज़मीन से होकर गुज़रते हैं, ताकि उन बस्तियों पर जो उनकी नहीं हैं, क़ब्ज़ा कर लें।⁷~वह डरावने और खौफ़नाक हैं: वह खुद ही अपनी 'अदालत और शान का मसदर हैं।

⁸उनके घोड़े चीतों से भी तेज़ रफ़्तार, और शाम को निकलने वाले भेड़ियों से ज़्यादा खूँख़्बार हैं; और उनके सवार कूदते फ़ाँदते आते हैं। हाँ, वह दूर से चले आते हैं, वह उक्राब की तरह हैं, जो अपने शिकार पर झपटता है।⁹~वह सब गारतगरी को आते हैं, वह सीधे बढ़े चले आते हैं; और उनके गुलाम रेत के ज़रों की तरह बेशुमार होते हैं।

¹⁰वह बादशाहों को ठठों में उड़ाते, और 'उमरा को मसख़रा बनाते हैं। वह क़िलों' को हकीर जानते हैं, क्योंकि वह मिट्टी से दमदमें बाँधकर उनको फ़तह कर लेते हैं।¹¹~तब वह हवा के झोंके की तरह गुज़रते और खता करके गुनहगार होते हैं, क्योंकि उनका ज़ोर ही उनका ख़ुदा है।

¹²~ऐ खुदावन्द मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे कुहूस, क्या तू अज़ल से नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ खुदावन्द, तूने उनको 'अदालत के लिए ठहराया है, और ऐ चटान, तू ने उनको तादीब के लिए मुक़र्र किया है।

¹³तेरी आँखें ऐसी पाक हैं कि तू गुनाह को देख नहीं सकता, और टेढ़ी रविश पर निगाह नहीं कर सकता। फिर तू दगाबाज़ों पर क्यों नज़र करता है, और जब शरीर अपने से ज़्यादा सादिक़ को निगल जाता है, तब तू क्यों ख़ामोश रहता है?¹⁴और बनी आदम को समन्दर की मछलियों, और कीड़े-मकौड़ों की तरह बनाता है जिन पर कोई हुक्मत करने वाला नहीं?

¹⁵वह उन सब को शस्त से उठा लेते हैं, और अपने जाल में फँसाते हैं; और महाजाल में जमा' करते हैं, इसलिए वह शादमान और खुश वक्रत हैं।¹⁶इसीलिए वह अपने जाल के आगे-कुर्बानी अदा करते हैं और अपने बड़े जाल के आगे ~खुशबू जलाते हैं, क्योंकि इनके वसीले से उनका हिस्सा लज़ीज़, और उनकी गिज़ा चिकनी है।¹⁷इसलिए क्या वह अपने जाल को खाली करने और क्रौमों को बराबर क़त्ल करने से बाज़ न आएँगे?

Chapter 2

¹और मैं अपनी दीदाह पर खड़ा रहूँगा और बुर्ज पर चढ़कर इन्तिज़ार करूँगा कि वह मुझ से क्या कहता है, और मैं अपनी फ़रियाद के बारे में क्या जवाब दूँ।

²तब खुदावन्द ने मुझे जवाब दिया और फ़रमाया कि "ख़्वाब को तख़्तियों पर ऐसी सफ़ाई से लिख कि लोग दौड़ते हुए भी पढ़ सकें।³क्योंकि ये ख़्वाब एक मुक़र्ररा वक़्त के लिए है; ये जल्द ज़हूर में आएगा और ख़ता न करेगा। अगरचे इसमें देर हो, तोभी इसके इन्तिज़ार में रह, क्योंकि ये यक़ीनन नाज़िल होगा, देर ~न करेगा।

⁴देख, घमण्डी आदमी का दिल रास्त नहीं है, लेकिन सच्चा अपने ईमान से ज़िन्दा रहेगा।⁵बेशक, घमण्डी आदमी शराब की तरह दगाबाज़ है, वह अपने घर में नहीं रहता। वह पाताल की तरह अपनी ख़्वाहिश बढ़ाता है; वह मौत की तरह है, कभी आसूदा नहीं होता; बल्कि सब क़ौमों को अपने पास जमा' करता है, और सब उम्मतों को अपने नज़दीक इकट्ठा करता है।"

⁶क्या ये सब उस पर मिसाल न लाएँगे, और तनज़न न कहेंगे-कि "उस पर अफ़सोस, जो औरों के माल से मालदार होता है, लेकिन ये कब तक? और उस पर जो कसरत से गिरवी लेता है।"⁷क्या वह मुझे खा जाने को अचानक न उठेंगे, और तुझे परेशान करने को बेदार न होंगे, और उनके लिए लूट न होगा?⁸क्योंकि तूने बहुत सी क़ौमों को लूट लिया, और मुल्क-ओ-शहर-ओ-बाशिन्दों में खूँरेज़ी और सितमगरी की है, इसलिए बाक़ी माँदा लोग तुझे ग़ारत करेंगे।

⁹"उस पर अफ़सोस जो अपने घराने के लिए नाजायज़ नफ़ा' उठाता है, ताकि अपना आशियाना बुलन्दी पर बनाये, और मुसीबत से महफूज़ रहे।¹⁰तूने बहुत सी उम्मतों को बर्बाद करके अपने घराने के लिए रुसवाई हासिल की, और अपनी जान का गुनहगार हुआ।¹¹क्योंकि दीवार से पत्थर चिल्लाएँगे, और छत से शहतीर जवाब देंगे।

¹²उस पर अफ़सोस, जो क़स्बे को खूँरेज़ी से और शहर को बादकिरदारी से ता'मीर करता है!¹³क्या यह रब्ब-उल-अप्रवाज की तरफ़ से नहीं कि लोगों की मेहनत आग के लिए हो, और क़ौमों की मशक्कत बतालत के लिए हो?¹⁴क्योंकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है, उसी तरह ज़मीन खुदावन्द के जलाल के 'इल्म से मा'मूर है।

¹⁵उस पर अफ़सोस जो अपने पड़ोसी को अपने क़हर का जाम पिलाकर मतवाला करता है, ताकि उसको बे पर्दा करे!¹⁶तू 'इज़ज़त के 'इवज़ रुसवाई से भर गया है। तू भी पीकर अपनी नामख़तूनी ज़ाहिर कर! खुदावन्द के दहने हाथ का प्याला अपने दौर में तुझ तक पहुँचेगा, और रुसवाई तेरी शौकत को ढाँप लेगी।

¹⁷चूँकि तूने मुल्क-ओ-शहर-ओ-बाशिन्दों में खूँरेज़ी और सितमगरी की है, इसलिए वह ज़ियादती जो लुबनान पर हुई और वह हलाकत जिसमें जानवर डर गए, तुझ पर आएगी।

¹⁸खोदी हुई मूरत से क्या हासिल कि उसके बनाने वाले ने उसे खोदकर बनाया? ढली हुई मूरत और झूट सिखाने वाले से क्या फ़ायदा कि उसका बनाने वाला उस पर भरोसा रखता और गूँगे बुतों को बनाता है?¹⁹उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है, जाग, और बे ज़बान पत्थर से कि उठ, क्या वह ता'लीम दे सकता है? देख वह तो सोने और चाँदी से मढ़ा है लेकिन उसमें कुछ भी ताक़त नहीं।²⁰~मगर खुदावन्द अपनी मुक़द्दस हैकल में है; सारी ज़मीन उसके सामने ख़ामोश रहे।"

Chapter 3

¹शिगायूनीत के सुर पर ~हबक्कूक नबी की दु'आ:²ऐ खुदावन्द, मैंने तेरी शोहरत सुनी, और डर गया; ऐ खुदावन्द, इसी ज़माने में अपने काम को पूरा कर। इसी ज़माने में उसको ज़ाहिर कर; ग़ज़ब के वक़्त रहम को याद फ़रमा।

³~ख़ुदा तेमान से आया, और कुदूस फ़ारान के पहाड़ से। उसका जलाल आसमान पर छा गया, और ज़मीन उसकी ता'रीफ़ से मा'मूर हो गई।

⁴~उसकी जगमगाहट नूर की तरह थी, उसके हाथ से किरनें निकलती थीं, और इसमें उसकी कुदरत छिपी हुई थी, बीमारी उसके आगे-आगे चलती थी, और आग के तीर उसके क्रदमों से निकलते थे।

⁶वह खड़ा हुआ और ज़मीन थर्रा गई, उसने निगाह की और क्रौमें तितर-बितर हो गई। अज़ली पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो गए; पुराने टीले झुक गए, उसके रास्ते अज़ली हैं।

⁷मैंने कूशन के ख़ेमों को मुसीबत में देखा: मुल्क-ए-मिदियान के पर्दे हिल गए।⁸ऐ खुदावन्द, क्या तू नदियों से बेज़ार था? क्या तेरा ग़ज़ब दरियाओं पर था? क्या तेरा ग़ज़ब समन्दर पर था कि तू अपने घोड़ों और फ़तहयाब रथों पर सवार हुआ?

⁹तेरी कमान ग़िलाफ़ से निकाली गई, तेरा 'अहद क़बाइल के साथ उस्तवार था। सिलाह, तूने ज़मीन को नदियों से चीर डाला।¹⁰पहाड़ तुझे देखकर काँप गए: सैलाब गुज़र गए; समन्दर से शोर उठा, और मौजें बुलन्द हुई।

¹¹तेरे उड़ने वाले तीरों की रोशनी से, तेरे चमकीले भाले की झलक से, चाँद-ओ-सूरज अपने बुजों में ठहर गए।¹²तू ग़ज़बनाक होकर मुल्क में से गुज़रा; तूने ग़ज़ब से क्रौमों को पस्त किया।

¹³~तू अपने लोगों की नजात की खातिर-निकला, हाँ, अपने मम्सूह की नजात की खातिर तूने शरीर के घर की छत गिरा दी, और उसकी बुनियाद बिल्कुल खोद डाली।

¹⁴तूने उसी की लाठी से उसके बहादुरों के सिर फोड़े; वह मुझे बिखेरने को हवा के झोके की तरह आए, वह ग़रीबों को तन्हाई में निगल जाने पर खुश थे।¹⁵~तू अपने घोड़ों पर सवार होकर समन्दर से, हाँ, बड़े सैलाब से पार हो गया।

¹⁶~मैंने सुना और मेरा दिल दहल गया, उस शोर की वजह से मेरे लब हिलने लगे; मेरी हड्डियाँ बोसीदा हो गई, और मैं खड़े-खड़े काँपने लगा। लेकिन मैं सुकून से उनके बुरे दिन का मुन्तज़िर हूँ, जो इकट्ठा होकर हम-पर हमला करते हैं।

¹⁷अगरचे अंजीर का दरख़्त न फूले, और डाल में फल न लगे, और ज़ैतून का फल ज़ाय' हो जाए, और खेतों में कुछ पैदावार न हो, और भेड़खाने से भेड़ें जाती रहें, और तवेलों में जानवर न हों,

¹⁸तोभी मैं खुदावन्द से खुश रहूँगा, और अपनी नजात बख़्श खुदा से खुश वक़्त हूँगा।¹⁹खुदावन्द खुदा, मेरी ताक़त है; वह मेरे पैर हरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में चलाता है।

सफ़नियाह

Chapter 1

¹ख़ुदावन्द का कलाम जो यहूदाह बादशाह यूसाह बिन अमून के दिनों ~में सफ़नियाह बिन कूशी बिन जदलियाह बिन अमरयाह बिन हिज़क्रियाह पर नाज़िल हुआ।²~ख़ुदावन्द फ़रमाता है, "मैं इस ज़मीन से सब कुछ बिल्कुल हलाक करूँगा।³इन्सान और हैवान को हलाक करूँगा; हवा के परिन्दों और समन्दर की मछलियों को और शरीरों और उनके बुतों को हलाक करूँगा, और इन्सान को इस ज़मीन से फ़ना करूँगा।" खुदावन्द फ़रमाता है।

⁴"मैं यहूदाह पर और यरूशलीम के सब रहने वालों पर हाथ चलाऊँगा, और इस मकान में से बा'ल के बक्रिया को और कमारीम के नाम को पुजारियों के साथ हलाक करूँगा;⁵और उनको भी जी कोठों पर चढ़ कर अज़ाम-ए-फ़लक की 'इबादत ~करते हैं, और उनको जो खुदावन्द की 'इबादत का 'अहद करते हैं, लेकिन मिल्कूम की क़सम खाते हैं।⁶~और उनको भी जो खुदावन्द से नाफ़रमान होकर न उसके तालिब हुए और न उन्होंने उससे मश्वरत ~ली।"

⁷तुम खुदावन्द खुदा के सामने खामोश रहो, क्योंकि खुदावन्द का दिन नज़दीक है; और उसने ज़बीहा तैयार किया है, और अपने मेहमानों को मख्सूस किया है।

⁸और खुदावन्द के ज़बीहे के दिन यूँ होगा, "कि मैं उमरा और शहज़ादों को, और उन सब को जो अजनबियों की पोशाक पहनते हैं, सज़ा दूँगा।⁹~मैं उसी रोज़ उन सब को, जो लोगों के घरों में घुस कर अपने मालिक ~के घर को लूट और धोखे से भरते हैं सज़ा दूँगा।"

¹⁰और खुदावन्द फ़रमाता है, "उसी रोज़ मछली फाटक से रोने की आवाज़, और मिशना से मातम की, और टीलों पर से बड़े शोर की आवाज़ उठेगी।¹¹~ऐ मकतीस के रहने वालो, मातम करो! क्योंकि सब सौदागर मारे गए। जो चाँदी से लदे थे, सब हलाक हुए।

¹²फिर मैं चराग़ लेकर यरूशलीम में तलाश करूँगा, और जितने अपनी तलछट पर जम गए हैं, और दिल में कहते हैं, '~कि खुदावन्द सज़ा-और-जज़ा न देगा,' उनको सज़ा दूँगा।¹³~तब उनका माल लुट जाएगा, और उनके घर उजड़ जाएँगे। वह घर तो बनाएँगे, लेकिन उनमें बूद-ओ-बाश न करेंगे; और बाग़ तो लगाएँगे, लेकिन उनकी मय न पिऐँगे।"

¹⁴~ख़ुदावन्द का बड़ा दिन क़रीब है, हाँ, वह नज़दीक आ गया, वह आ पहुँचा; सुनो, खुदावन्द के दिन का शोर; ज़बरदस्त आदमी फूट-फूट कर रोएगा।¹⁵वह दिन क्रहर का दिन है, दुख और ग़म का दिन, वीरानी और ख़राबी का दिन, तारीकी और उदासी का दिन, बादल और तीरगी का दिन;¹⁶~हसीन शहरों और ऊँचे बुजों के ख़िलाफ़, नरसिंगे और जंगी ललकार का दिन।

¹⁷और मैं बनी आदम पर मुसीबत लाऊँगा, यहाँ तक कि वह अंधों की तरह चलेंगे, क्योंकि वह खुदावन्द के गुनहगार हुए; उनका खून धूल की तरह गिराया जाएगा, और उनका गोشت नजासत की तरह।¹⁸खुदावन्द के क्रहर के दिन,उनका सोना चाँदी उनको बचा न सकेगा; बल्कि तमाम मुल्क को उसकी ग़ैरत की आग खा जाएगी, क्योंकि वह एक पल में मुल्क के सब बाशिन्दों को तमाम कर डालेगा।

Chapter 2

¹~ऐ बेहया क्रौम, जमा' हो, जमा' हो;²~इससे पहले के फ़रमान-ए-इलाही ज़ाहिर हो, और वह दिन भुस की तरह जाता रहे, और खुदावन्द का बड़ा क्रहर तुम पर नाज़िल हो, और उसके ग़ज़ब का दिन तुम पर आ पहुँचे।³~ऐ मुल्क के सब हलीम लोगों, जो खुदावन्द के हुक्मों पर चलते हो, उसके तालिब हो, रास्तबाज़ी को ढूँढ़ो, फ़रोतनी की तलाश करो; शायद खुदावन्द के ग़ज़ब के दिन तुम को पनाह मिले।

⁴~क्योंकि ग़ज़ा मतरूक होगा, और अस्क़लोन वीरान किया जाएगा, और अशदूद दोपहर को ख़ारिज कर दिया जाएगा, और 'अक्रून की बेख़कनी की जाएगी।

⁵~समन्दर के साहिल के रहने वालो, या'नी करेतियों की क्रौम पर अफ़सोस! ऐ कना'न, फ़िलिस्तियों की सरज़मीन, खुदावन्द का कलाम तेरे खिलाफ़ है; मैं तुझे हलाक-ओ-बर्बाद करूँगा यहाँ तक कि कोई बसने वाला न रहे।

⁶और समन्दर के साहिल, चरागाहें होंगे, जिनमें चरवाहों की झोपड़ियाँ और भेड़खाने होंगे।⁷और वही साहिल, यहूदाह के घराने के बक़िया के लिए होंगे; वह उनमें चराया करेंगे, वह शाम के वक़्त अस्क़लून के मकानों में लेटा करेंगे, क्योंकि खुदावन्द उनका खुदा, उन पर फिर नज़र करेगा, और उनकी गुलामी को ख़त्म करेगा।

⁸मैंने मोआब की मलामत और बनी 'अम्मोन की लान'तान सुनी है उन्होंने मेरी क्रौम को मलामत की और उनकी हुदूद को दबा लिया है।⁹~इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज़ इस्राईल का खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम यक्कीनन मोआब सदूम की तरह होगा, और बनी 'अम्मोन 'अमूरा की तरह; वह पुरखार और नमकज़ार और हमेशा से हमेशा तक बर्बाद रहेंगे। मेरे लोगों के बाक़ी ~उनको ग़ारत करेंगे, और मेरी क्रौम के बाक़ी लोग उनके वारिस होंगे।

¹⁰ये सब कुछ उनके तकब्बुर की वजह ~से उन पर आएगा, क्योंकि उन्होंने रब्ब-उल-अफ़वाज़ के लोगों को मलामत की और उन पर ज़ियादती की।¹¹~खुदावन्द उनके लिए हैबतनाक होगा, और ज़मीन के तमाम मा'बूदों को लाग़र कर देगा, और बहरी ममालिक के सब बाशिन्दे अपनी अपनी जगह में उसकी 'इबादत करेंगे।

¹²~ऐ कूश के बाशिन्दो, तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे।¹³और वह शिवाल की तरफ़ अपना हाथ बढ़ायेगा और असूर को हलाक करेगा, और नीनवा को वीरान और सेहरा की तरह ख़ुशक कर देगा।¹⁴और जंगली जानवर उसमें लेंटेंगे, और हर क्रिस्म के हैवान, हवासिल और खारपुशत उसके सुतूनों के सिरों पर मक्राम करेंगे; उनकी आवाज़ उसके झरोकों में होगी, उसकी दहलीज़ों में वीरानी होगी, क्योंकि देवदार का काम खुला छोड़ा गया है।

¹⁵~ये वह शादमान शहर है जो बेफ़िक़्र था, जिसने दिल में कहा, "मैं हूँ, और मेरे अलावा कोई दूसरा नहीं।" वह कैसा वीरान हुआ, हैवानों के बैठने की जगह! हर एक जो उधर से गुज़रेगा सुसकारेगा और हाथ हिलाएगा।

Chapter 3

¹उस सरकश और नापाक व ज़ालिम शहर पर अफ़सोस!²उसने कलाम को न सुना, वह तरबियत पज़ीर न हुआ। उसने खुदावन्द पर भरोसा न किया, और अपने खुदा की कुरबत क़ी आरज़ू न की।

³~उसके उमरा उसमें गरजने वाले बबर हैं; उसके क़ाज़ी भेड़िये हैं जो शाम को निकलते हैं, और सुबह तक कुछ नहीं छोड़ते।⁴~उसके नबी लाफ़ज़न और दगाबाज़ हैं, उसके काहिनों ने पाक को नापाक ठहराया, और उन्होंने शरी'अत को मरोड़ा है।

⁵खुदावन्द जो सच्चा है, उसके अंदर है; वह बेइन्साफ़ी न करेगा; वह हर सुबह बिला नागा अपनी 'अदालत ज़ाहिर करता है, मगर बेइन्साफ़ आदमी शर्म को नहीं जानता।

⁶मैंने क़ौमों को काट डाला, उनके बुर्ज बर्बाद किए गए; मैंने उनके कूचों को वीरान किया, यहाँ तक कि उनमें कोई नहीं चलता; उनके शहर उजाड़ हुए और उनमें कोई इन्सान नहीं कोई बाशिन्दा नहीं। मैंने कहा, 'कि सिर्फ़ मुझ से डर, और तरबियत पज़ीर हो; ताकि उसकी बस्ती काटी न जाए। उस सब के मुताबिक़ जो मैंने उसके हक़ में ठहराया था।' लेकिन उन्होंने 'अमदन अपनी चाल को बिगाड़ा।

⁸~"इसलिए," खुदावन्द फ़रमाता है, "मेरे मुन्तज़िर रहो, जब तक कि मैं लूट के लिए न उठूँ, क्योंकि मैंने ठान लिया है कि क़ौमों को जमा' करूँ और ममलुकतों को इकट्ठा करूँ, ताकि अपने ग़ज़ब या'नी तमाम क़हर को उन पर नाज़िल करूँ, क्योंकि मेरी ग़ैरत की आग सारी ज़मीन को खा जाएगी।

⁹और मैं उस वक़्त लोगों के होंट पाक कर दूँगा, ताकि वह सब खुदावन्द से दु'आ करें, और एक दिल होकर उसकी 'इबादत करें।¹⁰~कूश की नहरों के पार से मेरे 'आबिद, या'नी मेरी बिखरी क़ौम मेरे लिए हदिया लाएगी।¹¹~उसी रोज़ तू अपने सब आ'माल की वजह से जिनसे तू मेरी गुनहगार हुई, शर्मिन्दा न होगी: क्योंकि मैं उस वक़्त तेरे बीच से तेरे मग़रूर लोगों को निकाल दूँगा, और फिर तू मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर तकबुर न करेगी।

¹²~और मैं तुझ में एक मज़लूम और मिस्कीन बक्रिया छोड़ दूँगा और वह खुदावन्द के नाम पर भरोसा करेंगे,¹³~इसाईल के बाक़ी लोग न गुनाह करेंगे, न झूट बोलेंगे और न उनके मुँह में दगा की बातें पाई जाएँगी बल्कि वह खाएँगे और लेट रहेंगे, और कोई उनको न डराएगा।"

¹⁴~ऐ बिनत-ए-सिय्यून, नगमा सराई कर; ऐ इसाईल, ललकार! ऐ दुख्तर-ए-यरूशलीम, पूरे दिल से खुशी मना और शादमान हो।¹⁵~खुदावन्द ने तेरी सज़ा को दूर कर दिया, उसने तेरे दुश्मनों को निकाल दिया खुदावन्द इसाईल का बादशाह तेरे अन्दर है तू फिर मुसीबत को न देखेगी।¹⁶उस रोज़ यरूशलीम से कहा जाएगा, "परेशान न हो, ऐ सिय्यून; तेरे हाथ ढीले न हों।

¹⁷खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझ में है, क़ादिर है, वही बचा लेगा; वह तेरी वजह से शादमान होकर खुशी करेगा; वह~अपनी मुहब्बत में मसरूर रहेगा; वह गाते हुए तेरे लिए शादमानी करेगा।¹⁸मैं तेरे उन लोगों को जो 'ईदों से महरूम होने की वजह से ग़मगीन और मलामत से ज़ेरबार हैं, जमा' करूँगा।

¹⁹देख, मैं उस वक़्त तेरे सब सतानेवालों को सज़ा दूँगा, और लंगड़ों को रिहाई दूँगा; और जो हाँक दिए गए उनको इकट्ठा करूँगा और जो तमाम ज़हान में रुस्वा हुए, उनको सितूदा और नामवर करूँगा।²⁰उस वक़्त मैं तुम को जमा' करके मुल्क में लाऊँगा; क्योंकि जब तुम्हारी हीन हयात ही मैं तुम्हारी गुलामी को खत्म करूँगा, तो तुम को ज़मीन की सब क़ौमों के बीच नामवर और सितूदा करूँगा।" खुदावन्द फ़रमाता है।

हज्जी

Chapter 1

¹दारा बादशाह की सल्तनत के दूसरे साल के छठे महीने की पहली तारीख को, यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल-बिन-सियालतिएल और सरदार काहिन यशू'अ-बिन-यहूसदक़ को, हज्जी नबी के ज़रिए' खुदावन्द का कलाम पहुँचा,²कि 'रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि यह लोग कहते हैं, अभी खुदावन्द के घर की ता'मीर का वक़्त नहीं आया।"

³तब खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के ज़रिए' पहुँचा,⁴"क्या तुम्हारे लिए महफूज़ घरों में रहने का वक़्त है, जब कि यह घर वीरान पड़ा है?⁵और अब रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: तुम अपने चाल चलन पर ग़ौर करो।⁶तुम ने बहुत सा बोया, पर थोड़ा काटा। तुम खाते हो, पर आसूदा नहीं होते; तुम पीते हो, लेकिन प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहनते हो, पर गर्म नहीं होते; और मज़दूर अपनी मज़दूरी सूराखदार थैली में जमा' करता है।

⁷"रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ~फ़रमाता है: कि अपने चाल चलन पर ग़ौर करो।⁸~पहाड़ों से लकड़ी लाकर यह घर ता'मीर करो, और मैं उसको देखकर खुश हूँगा और मेरी तम्जीद होगी रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है।⁹तुम ने बहुत की उम्मीद रखी, और देखो, थोड़ा मिला; और जब तुम उसे अपने घर में लाए, तो मैंने उसे उड़ा दिया। रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है; क्यों? इसलिए कि मेरा घर वीरान है, और तुम में से हर एक अपने घर को दौड़ा चला जाता है।

¹⁰~इसलिए न आसमान से शबनम गिरती है, और न ज़मीन अपनी पैदावार देती है।¹¹~और मैंने खुश्क साली को तलब किया कि मुल्क और पहाड़ों पर, और अनाज और नई मय और तेल और ज़मीन की सब पैदावार पर, और इंसान-ओ-हैवान पर, और हाथ की सारी मेहनत पर आए।"

¹²तब~ज़रुब्बाबुल-बिन-सियालतिएल~और सरदार काहिन यशू'अ-बिन-यहूसदक़~और लोगों के बक्रिया खुदावन्द खुदा अपने कलाम और उसके भेजे हुए हज्जी नबी की बातों को सुनने लगे: और लोग खुदावन्द के सामने ख़ौफ़ ज़दा हुए।¹³तब खुदावन्द के पैग़म्बर हज्जी ने खुदावन्द का पैग़ाम उन लोगों को सुनाया, "खुदावन्द फ़रमाता है: मैं तुम्हारे साथ हूँ

¹⁴~फिर खुदावन्द ने यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल-बिन-सियालतिएल के, सरदार काहिन यशूअ'-बिन-यहूसदक की और लोगों के बक्रिया की रूह की हिदायत दी। इसलिए ~वह आकर रब्ब-उल-अफ़वाज, अपने खुदा के घर की ता'मीर में मशगूल हुए,¹⁵और यह वाक़े'आ दारा बादशाह की सल्तनत के दूसरे साल के छठे महीने की चौबीसवीं तारीख़ का है।

Chapter 2

¹सातवें महीने की इक्कीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के ज़रिए' पहुँचा,²कि "यहूदाह के नाज़िम ज़ारुब्बाबुल-बिन-सियालतिएल और सरदार काहिन यशूअ' बिन यहूसदक़ और लोगों के बक्रिया से यूँ कह,

³कि 'तुम में से किसने इस हैकल की पहली रौनक को देखा? और अब कैसी दिखाई देती है? क्या यह तुम्हारी नज़र में सही नहीं है?'⁴लेकिन ऐ ज़रुब्बाबुल, हिम्मत रख, खुदावन्द फ़रमाता है; और ऐ सरदार काहिन, यशूअ'-बिन यहूसदक़ हिम्मत रख, और ऐ मुल्क के सब लोगों हिम्मत रखो, खुदावन्द फ़रमाता है; और काम करो क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।⁵मिस्र से निकलते वक़्त मैंने तुम से जो 'अहद किया था, उसके मुताबिक़ मेरी वह रूह तुम्हारे साथ रहती है; हिम्मत न हारो।

⁶क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि मैं थोड़ी देर में फिर एक बार-ज़मीन-ओ-आसमान-ओर-खुशकी-ओर-तरी को हिला दूँगा।⁷मैं सब क्रौमों को हिला दूँगा, और उनकी पसंदीदा चीज़ें आएँगी; और मैं इस घर को जलाल से मा'मूर करूँगा, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।

⁸चाँदी मेरी है और सोना मेरा है, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।⁹इस पिछले घर की रौनक, पहले घर की रौनक से ज़्यादा होगी; रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, और मैं इस मकान में सलामती बख़्शूँगा, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।"

¹⁰दारा बादशाह की सल्तनत के दूसरे साल के नवें महीने की चौबीसवीं तारीख को, खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के ज़रिए' पहुँचा,¹¹~'रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि शरी'अत के बारे में काहिनों से मा'लूम कर:¹²अगर कोई पाक गोश्त को अपनी लिबास के दामन में लिए जाता हो, और उसका दामन रोटी या दाल या शराब या तेल या किसी तरह के खाने की चीज़ को छू जाए; तो क्या वह चीज़ पाक हो जाएगी?" काहिनों ने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं।"

¹³~फिर हज्जी ने पूछा,कि अगर कोई किसी मुर्दे को छूने से नापाक हो गया हो, और इनमें से किसी चीज़ को छूए; तो क्या वह चीज़ नापाक हो जाएगी? काहिनों ने जवाब दिया, "ज़रूर नापाक हो जाएगी।"¹⁴~फिर हज्जी ने कहा, कि खुदावन्द फ़रमाता है: मेरी नज़र में इन लोगों, और इस क्रौम और इनके आ'माल का यही हाल है,

¹⁵और जो कुछ इस जगह अदा करते हैं नापाक हैं ~इसलिए आइन्दा को उस वक़्त का खयाल रखो, जब कि अभी खुदावन्द की हैकल का पत्थर पर पत्थर न रखवा गया था;¹⁶~उस पूरे ज़माने में जब कोई बीस पैमानों की उम्मीद रखता, तो दस ही मिलते थे; और जब कोई शराब के हौज़ से पचास पैमाने निकालने जाता, तो बीस ही निकलते थे।¹⁷मैंने तुम को तुम्हारे सब कामों में ठण्डी हवा और गेरूई और ओलों से मारा, लेकिन तुम मेरी तरफ़ ध्यान न लाए, खुदावन्द फ़रमाता है।

¹⁸अब और आइन्दा इसका-खयाल रखो, आज खुदावन्द की हैकल की~बुनियाद के डाले जाने या'नी नवें महीने की चौबीसवीं तारीख से इसका-खयाल-रखो:¹⁹~क्या इस वक़्त बीज खते में है? अभी तो अंगूर की बेल और अंजीर और अनार और ज़ैतून में फल नहीं लगे। आज ही से मैं तुम को बरकत दूँगा।"

²⁰~फिर इसी महीने की चौबीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी पर नाज़िल हुआ,²¹कि यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल से कह दे, कि मैं आसमान और ज़मीन को हिलाऊँगा;²²~और सल्तनतों के तख़्त उलट दूँगा; और क्रौमों की सल्तनतों की ताक़तों को ख़त्म कर दूँगा, और रथों को सवारों के साथ उलट दूँगा और घोड़े और उनके सवार गिर जायेंगे और हर शख्स अपने भाई की तलवार से क़त्ल होगा।

²³रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ऐ मेरे खादिम ज़रुब्बाबुल-बिन-सियालतिएल, उसी दिन मैं तुझे लूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं तुझे एक मिसाल ठहराऊँगा: क्योंकि मैंने तुझे मुक़रर किया है, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।

ज़करियाह

Chapter 1

¹~दारा के दूसरे बरस के आठवें महीने में खुदावन्द का कलाम ज़करियाह नबी बिन बरकियाह-बिन-'इददू पर नाज़िल हुआ:²कि खुदावन्द तुम्हारे बाप-दादा से सख़्त नाराज़ रहा।³इसलिए तू उनसे कह, रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि ~तुम मेरी तरफ़ रुजू' हो, रब्ब-उल-अफ़वाज़ का फ़रमान है, तो मैं तुम्हारी तरफ़ से रुजू' हूँगा रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।

⁴तुम अपने बाप-दादा की तरह न बनो, जिनसे अगले नबियों ने बा आवाज़-ए- बुलन्द कहा, रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है,कि तुम अपनी बुरे चाल चलन और बद'आमाली से बाज़ आओ; लेकिन उन्होंने न सुना और मुझे न माना, खुदावन्द फ़रमाता है।⁵तुम्हारे बाप दादा कहाँ हैं? क्या अम्बिया हमेशा ज़िन्दा रहते हैं?

⁶लेकिन मेरा कलाम और मेरे क़ानून, जो मैंने अपने ख़िदमत गुज़ार नबियों को फ़रमाए थे, क्या वह तुम्हारे बाप-दादा पर पूरे नहीं हुए? चुनाँचे उन्होंने रुजू' लाकर कहा,कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ ने अपने इरादे के मुताबिक़ हमारी 'आदात और हमारे 'आमाल का बदला दिया है।"

⁷दारा के दूसरे बरस और ग्यारहवें महीने या'नी माह-ए-सबात की चौबीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम ज़करियाह नबी बिन-बरकियाह-बिन-'इददू पर नाज़िल हुआ⁸कि मैंने रात को रोया में देखा कि एक शख्स सुरंग घोड़े पर सवार, मेंहदी के दरख़्तों के बीच नशेब में खड़ा था, और उसके पीछे सुरंग और कुमैत और नुकरह घोड़े थे।⁹तब मैंने कहा, "ऐ मेरे आक्रा, यह क्या है?" इस पर फ़रिश्ते ने, जो मुझ से गुफ़्तगू करता था कहा, 'मैं तुझे दिखाऊँगा कि यह क्या है।"

¹⁰और जो शख्स मेंहदी के दरख़्तों के बीच खड़ा था, कहने लगा, 'ये वह हैं जिनको खुदावन्द ने भेजा है कि सारी दुनिया में सैर करें।'¹¹और उन्होंने खुदावन्द के फ़रिश्ते से, जो मेंहदी के दरख़्तों के बीच खड़ा था कहा, "हम ने सारी दुनिया की सैर की है, और देखा कि सारी ज़मीन में अमन-ओ-अमान है।"

¹²~फिर खुदावन्द के फ़रिश्ते ने कहा, 'ऐ रब्ब-उल-अफ़वाज तू यरुशलीम और यहूदाह के शहरों पर, जिनसे तू सत्तर बरस से नाराज़ है, कब तक रहम न करेगा?'¹³ और खुदावन्द ने उस फ़रिश्ते को जो मुझ से गुफ़्तगू करता था, मुलायम और तसल्ली बख़्श जवाब दिया।

¹⁴तब उस फ़रिश्ते ने जो मुझे गुफ़्तगू करता था, मुझ से कहा, बुलन्द आवाज़ से कह, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मुझे यरुशलीम और सिय्यून के लिए बड़ी ग़ैरत है।¹⁵ और मैं उन क्रौमों से जो आराम में हैं, निहायत नाराज़ हूँ; क्योंकि जब मैं थोड़ा नाराज़ था, तो उन्होंने उस आफ़त को बहुत ज़्यादा कर दिया।

¹⁶इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैं रहमत के साथ यरुशलीम को वापस आया हूँ; उसमें मेरा घर ता'मीर किया जाएगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, और यरुशलीम पर फिर सूत खींचा जाएगा।¹⁷ फिर बुलन्द आवाज़ से कह, रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: मेरे शहर दोबारा खुशहाली से मा'मूर होंगे, क्योंकि खुदावन्द फिर सिय्यून को तसल्ली बख़्शेगा, और यरुशलीम को कुबूल फ़रमाएगा।

¹⁸~फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि चार सींग हैं।¹⁹ और मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से गुफ़्तगू करता था पूछा, कि "यह क्या हैं?" उसने मुझे जवाब दिया, 'यह वह सींग हैं, जिन्होंने यहूदाह और इस्राईल और यरुशलीम को तितर-बितर ~किया है।"

²⁰फिर खुदावन्द ने मुझे चार कारीगर दिखाए।²¹ ~तब मैंने कहा, "यह क्यों आए हैं?" उसने जवाब दिया, 'यह वह सींग हैं, जिन्होंने यहूदाह को ऐसा~तितर-बितर ~किया कि कोई सिर न उठा सका; लेकिन यह इसलिए आए हैं कि उनको डराएँ, और उन क्रौमों के सींगों को पस्त करें जिन्होंने यहूदाह के मुल्क को~तितर-बितर ~करने के लिए सींग उठाया है।"

Chapter 2

¹फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शख्स जरीब हाथ में लिए खड़ा है।²और मैंने पूछा, "तू कहाँ जाता है?" उसने मुझे जवाब दिया, यरुशलीम की पैमाइश को, ताकि देखें कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई कितनी है।"

³और देखो, वह फ़रिश्ता जो मुझ से गुफ्तगू करता था। रवाना हुआ, और दूसरा फ़रिश्ता उसके पास आया,⁴और उससे कहा, "दौड़ और इस जवान से कह, कि यरुशलीम इंसान और हैवान की कसरत के ज़रिए' बेफ़सील बस्तियों की तरह आबाद होगा।⁵क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं उसके लिए चारों तरफ़ आतिशी दीवार हूँगा और उसके अन्दर उसकी शोकत।

⁶"सुनो "खुदावन्द फ़रमाता है, "शिमाल की सर ज़मीन से, जहाँ तुम आसमान की चारों हवाओं की तरह तितर-बितर ~किए गए, निकल भागो, खुदावन्द फ़रमाता है।⁷ऐ सिय्यून, तू जो दुख्तर-ए-बाबुल के साथ बसती है, निकल भाग!

⁸क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जिसने मुझे अपने जलाल की खातिर उन क्रौमों के पास भेजा है, जिन्होंने तुम को ग़ारत किया, यूँ फ़रमाता है, जो कोई तुम को छूता है, मेरी आँख की पुतली को छूता है।⁹~क्योंकि देख, मैं उन पर अपना हाथ हिलाऊँगा और वह अपने गुलामों के लिए लूट होंगे। तब तुम जानोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे भेजा है।

¹⁰ऐ दुख्तर-ए-सिय्यून, तू गा और खुशी कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे अंदर सुकूनत करूँगा खुदावन्द फ़रमाता है।¹¹और उस वक़्त बहुत सी क्रौमें खुदावन्द से मेल करेंगी और मेरी उम्मत होंगी, और मैं तेरे अंदर सुकूनत करूँगा, तब तू जानेगी कि रब्ब-उल-अफ़वाज ने मुझे तेरे पास भेजा है।

¹²और खुदावन्द यहूदाह को मुल्क-ए-मुक़द्दस में अपनी मीरास का हिस्सा ठहराएगा, और यरुशलीम को कुबूल फ़रमाएगा।"¹³ऐ बनी आदम, खुदावन्द के सामने खामोश रहो, क्योंकि वह अपने मुक़द्दस घर से उठा है।

Chapter 3

¹और उसने मुझे यह दिखाया कि सरदार काहिन यशू' खुदावन्द के फ़रिश्ते के सामने खड़ा है और शैतान उसके दाहिने हाथ इस्तादा है ताकि उसका सामना करे।

²और खुदावन्द ने शैतान से कहा, "ऐ शैतान, खुदावन्द तुझे मलामत करे! हाँ, वह खुदावन्द जिसने यरुशलीम को कुबूल किया है, तुझे मलामत करे ! क्या यह वह लुकटी नहीं जो आग से निकाली गई है?"³और यशू'अ मैले कपड़े पहने फ़रिश्ते के सामने खड़ा था।

⁴फिर उसने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, "इसके मैले कपड़े उतार दो।" और उससे कहा, "देख, मैंने तेरी बदकिरदारी तुझ से दूर की, और मैं तुझे नफ़ीस लिबास पहनाऊँगा।"⁵और उसने कहा, कि "उसके सिर पर साफ़ 'अमामा रखखो।" तब उन्होंने उसके सिर पर साफ़ 'अमामा रखखा और पोशाक पहनाई, और खुदावन्द का फ़रिश्ता उसके पास खड़ा रहा।

⁶और खुदावन्द के फ़रिश्ते ने यशू'अ से ता'कीद करके कहा,⁷'रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: अगर तू मेरी राहों पर चले और मेरे अहकाम पर 'अमल करे, तो मेरे घर पर हुक्मत करेगा और मेरी बारगाहों का निगहबान होगा; और मैं तुझे इनमें खड़े हूँ आने जाने की इजाज़त दूँगा।

⁸अब ऐ यशू'अ सरदार काहिन, सुन, तू और तेरे रफ़ीक़ जो तेरे सामने बैठे हैं, वह इस बात का ईमा हैं कि मैं अपने बन्दे या'नी शाख़ को लाने वाला हूँ।⁹क्योंकि उस पत्थर को जो मैंने यशू'अ के सामने रखखा है, देख, उस पर सात आँखें हैं। देख, मैं इसे तितर-बितर करूँगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, और मैं इस मुल्क की बदकिरदारी को एक ही दिन में दूर करूँगा।

¹⁰रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, उसी दिन तुम में से हर एक अपने हम साथे को ताक और अंजीर के नीचे बुलाएगा।"

Chapter 4

¹और वह फ़रिश्ता जो मुझ से बातें करता था, फिर आया और उसने जैसे मुझे नींद से जगा दिया,²और पूछा, "तू क्या देखता है?" और मैंने कहा, कि "मैं एक सोने का शमा'दान देखता हूँ जिसके सिर पर एक कटोरा है और उसके ऊपर सात चिराग़ हैं, और उन सातों चिराग़ों पर उनकी सात सात नलियाँ।"³और उसके पास ज़ैतून के दो दरख़्त हैं, एक तो कटोरे की दहनी तरफ़ और दूसरा बाई तरफ़।"

⁴और मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पूछा, "ऐ मेरे आक्रा, यह क्या हैं?"⁵तब उस फ़रिश्ते ने जो मुझ से कलाम करता था कहा, "क्या तू नहीं जानता यह क्या है?" मैंने कहा, 'नहीं, ऐ मेरे आक्रा।"

⁶तब उसने मुझे जवाब दिया, कि यह ज़रुब्बाबुल के लिए खुदावन्द का कलाम है: कि न तो ताक़त से, और न तवानाई से, बल्कि मेरी रूह से, रब्बु-ल-अफ़वाज फ़रमाता है।⁷ऐ बड़े पहाड़, तू क्या है? तू ज़रुब्बाबुल के सामने मैदान हो जाएगा, और जब वह चोटी का पत्थर निकाल जाएगा, तो लोग पुकारेंगे, कि उस पर फ़ज़ल हो फ़ज़ल हो ।

⁸फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,⁹कि ज़रुब्बाबुल के हाथों ने इस घर की नींव डाली, और उसी के हाथ इसे तमाम भी करेंगे। तब तू जानेगा कि रब्ब-उल-अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।¹⁰क्योंकि कौन है जिसने छोटी चीज़ों के दिन की तहक़ीर की है? "क्योंकि खुदावन्द की वह सात आँखें, जो सारी ज़मीन की सैर करती हैं, खुशी से उस साहूल को देखती हैं जो ज़रुब्बाबुल के हाथ में है।"¹¹तब मैंने उससे पूछा, कि यह दोनों ज़ैतून के दरख़्त जो शमा'दान के दहने बाएँ हैं, क्या हैं?"

¹²और मैंने दोबारा उससे पूछा, कि ज़ैतून की यह दो शाख़ क्या हैं, जो सोने की दो नलियों के मुत्तसिल हैं, जिनकी राह से सुन्हेला तेल निकला चला जाता है?"¹³उसने मुझे जवाब दिया, "क्या तू नहीं जानता, यह क्या हैं?" मैंने कहा, "नहीं, ऐ मेरे आक्रा।"

¹⁴उसने कहा, 'यह वह दो मम्मूह हैं, जो रब्ब-उल-'आलमीन के सामने खड़े रहते हैं।"

Chapter 5

¹फिर मैंने आँख उठाकर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि एक उड़ता हुआ तूमार है।²उसने मुझ से पूछा, "तू क्या देखता है, मैंने जवाब दिया एक उड़ता हुआ तूमार देखता हूँ, जिसकी लम्बाई बीस और चौड़ाई दस हाथ है।"

³फिर उसने मुझ से कहा, "यह वह ला'नत है जो तमाम मुल्क पर नाज़िल होने को है, और इसके मुताबिक़ हर एक चोर और झूठी क़सम खाने वाला यहाँ से काट डाला जाएगा।"⁴रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, मैं उसे भेजता हूँ, और वह चोर के घर में और उसके घर में, जो मेरे नाम की झूठी क़सम खाता है, घुसेगा और उसके घर में रहेगा; और उसे उसकी लकड़ी और पत्थर के साथ बर्बाद करेगा।"

⁵वह फिर फ़रिश्ता जो मुझ से कलाम करता था निकला, और उसने मुझ से कहा, कि "अब तू आँख उठाकर देख, क्या निकल रहा है?"⁶मैंने पूछा, "यह क्या है?" उसने जवाब दिया, ~"यह एक ऐफ़ा निकल रहा है।" और उसने कहा, कि तमाम मुल्क में यही उनकी शबीह है।"⁷और सीसे का एक गोल सरपोश उठाया गया, और एक 'औरत ऐफ़ा में बैठी नज़र आई!

⁸और उसने कहा, कि यह शरारत है।" और उसने उसको ऐफ़ा में नीचे दबाकर, सीसे के उस सरपोश को ऐफ़ा के मुँह पर रख दिया।⁹फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि दो 'औरतें निकल आई और हवा उनके बाजूओं में भरी थी, क्योंकि उनके लक़लक़ के से बा'ज़ु थे, और वह ऐफ़ा की आसमान और ज़मीन के बीच उठा ले गई।

¹⁰तब मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पूछा, कि "यह ऐफ़ा को कहाँ लिए जाती हैं?"¹¹उसने मुझे जवाब दिया कि "सिन'आर के मुल्क को, ताकि इसके लिए घर बनाएँ, और जब वह तैयार हो तो यह अपनी जगह में रखी जाए।"

Chapter 6

¹तब फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की तो क्या देखता हूँ कि दो पहाड़ों के बीच -से चार रथ निकले, और वह पहाड़ पीतल के थे।²पहले रथ के घोड़े सुरंग, -दूसरे के मुशकी, ³तीसरे के नुकरा और चौथे के अबलक़ थे।⁴तब मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था पूछा, "ऐ मेरे आका, यह क्या है?"

⁵और फ़रिश्ते ने मुझे जवाब दिया, कि 'यह आसमान की चार हवाएँ हैं' जो रब्बुल-'आलमीन के सामने से निकली हैं।⁶और मुशकी घोड़ों वाला रथ उत्तरी मुल्क को निकला चला जाता है, और नुकरा घोड़ों वाला उसके पीछे और अबलक़ घोड़ों वाला दक्खिनी मुल्क को।"

⁷और सुरंग घोड़ों वाला भी निकला, और उन्होंने चाहा कि दुनिया की सैर करें; और उसने उनसे कहा, "जाओ, दुनिया की सैर करो।" और उन्होंने दुनिया की सैर की।⁸तब उसने बुलन्द आवाज़ से मुझ से कहा, "देख, जो उत्तरी मुल्क को गए हैं, उन्होंने वहाँ मेरा जी ठंडा किया है।"

⁹फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ :¹⁰"कि तू आज ही खल्दी और तूबियाह और यद'अयाह के पास जा, जो बाबुल के गुलामों की तरफ़ से आकर यूसियाह-बिन-सफ़निया के घर में उतरे हैं।"¹¹और उनसे सोना-चाँदी लेकर ताज बना, और यशू'अबिन-यहूसदक़ सरदार काहिन को पहना;

¹²और उससे कह, 'कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है, कि देख, वह शख्स जिसका नाम शाख़ है, उसके ज़ेर-ए-साया खुशहाली होगी और वह खुदावन्द की हैकल को ता'मीर करेगा।"¹³हाँ, वही खुदावन्द की हैकल को बनाएगा और वह साहिब-ए-शौकत होगा, और तख़्त नशीन होकर हुक्मत करेगा और उसके साथ काहिन भी तख़्त नशीन होगा; और दोनों में सुलह-ओ-सलामती की मशवरत होगी।"

¹⁴और यह ताज हीलम और तूबियाह और यद'अयाह और हेन-बिन-सफ़नियाह के लिए खुदावन्द की हैकल में यादगार होगा।¹⁵और वह जो दूर हैं आकर खुदावन्द की हैकल को ता'मीर करेंगे, तब तुम जानोगे कि रब्बु -उल-अफ़वाज़ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है; और अगर तुम दिल से खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाबरदारी करोगे तो यह बातें पूरी होंगी।"

Chapter 7

¹दारा बादशाह की सल्तनत के चौथे बरस के नवें महीने, या'नी किसलेव महीने की चौथी तारीख को खुदावन्द का कलाम ज़करियाह पर नाज़िल हुआ।² और बैतएल के बाशिन्दों ने शराज़र और रजममलिक और उसके लोगों को भेजा कि खुदावन्द से दरख्वास्त करें,³ और रब्ब-उल-अफ़वाज के घर के काहिनों और नबियों से पूछे, कि "क्या मैं पाँचवें महीने में गोशानशीन होकर मातम करूँ, जैसा कि मैंने सालहाँ साल से किया है?"

⁴तब रब्ब-उल-अफ़वाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ :⁵कि मम्लुकत के सब लोगों और काहिनों से कह कि जब तुम ने पाँचवें और सातवें महीने में, इन सत्तर बरस तक रोज़ा रखखा और मातम किया, तो क्या था कभी मेरे लिए खास मेरे ही लिए रोज़ा रखखा था?⁶ और जब तुम खाते-पीते थे तो अपने ही लिए न खाते-पीते थे?⁷क्या यह वही कलाम नहीं जो खुदावन्द ने गुज़िश्ता नबियों की मा'रिफ़त फ़रमाया, जब यरुशलीम आबाद और आसूदा हाल था, और उसके 'इलाक़े के शहर और दक्खिन की सर ज़मीन और सैदान आबाद थे?"

⁸फिर खुदावन्द का कलाम ज़करियाह पर नाज़िल हुआ :⁹कि रब्ब-उल-अफ़वाज यूँ फ़रमाया था, कि रास्ती से 'अदालत करो, और हर शख्स अपने भाई पर करम और रहम किया करे,¹⁰ और बेवा और यतीम और मुसाफ़िर और मिस्कीन पर जुल्म न करो, और तुम में से कोई अपने भाई के खिलाफ़ दिल में बुरा मन्सूबा न बाँधे।"

¹¹लेकिन वह सुनने वाले न हुए, बल्कि उन्होंने गर्दनकशी की तरफ़ अपने कानों को बंद किया ताकि न सुनें।¹² और उन्होंने अपने दिलों को अल्मास की तरह सख़्त किया, ताकि शरी'अत और उस कलाम को न सुनें जो रब्बुल-अफ़वाज ने गुज़िश्ता नबियों पर अपने रूह की मा'रिफ़त नाज़िल फ़रमाया था। इसलिए रब्ब-उल-अफ़वाज की तरफ़ से क्रहर-ए-शदीद नाज़िल हुआ।

¹³और रब्ब-उल-अफ़वाज ने फ़रमाया था: "जिस तरह मैंने पुकार कर कहा और वह सुनने वाले न हुए, उसी तरह वह पुकारेंगे और मैं नहीं सुनूँगा।"¹⁴ बल्कि उनको सब क़ौमों में जिनसे वह नावाक़िफ़ हैं तितर-बितर ~करूँगा। यूँ उनके बा'द मुल्क वीरान हुआ, यहाँ तक कि किसी ने उसमें आमद-ओ-रफ़्त न की, क्योंकि उन्होंने उस दिलकुशा मुल्क को वीरान कर दिया।"

Chapter 8

¹फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ :²कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि मुझे सिय्यून के लिए बड़ी ग़ैरत है बल्कि मैं ग़ैरत से सख़्त ग़ज़बनाक हुआ³खुदावन्द यु फ़रमात है कि मैं सिय्यून में वापस आया हुआ और यरुशलीम में सकूनत करूँगा और यरुशलीम शहर-ए-सिदक्र होगा और रब्ब-उल-अफ़वाज़ का पहाड़ कोहे मुक्रद्स कहलाएगा

⁴रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि यरुशलीम के गलियों में 'उम्र रसीदा मर्द-ओ-ज़न बुढ़ापे की वजह से हाथ में 'असा लिए हुए फिर बैठे होंगे।⁵~और शहर की गलियों में खेलने वाले लड़के-लड़कियों से मा'मूर होंगे।

⁶और रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि अगरचे उन दिनों में यह 'अम्र इन लोगों के बक्रिये की नज़र में हैरत अफ़ज़ा हो, तोभी क्या मेरी नज़र में हैरत अफ़ज़ा होगा? रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।⁷रब्ब उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: देख, मैं अपने लोगों को पूरबी और पश्चिमी ममालिक से छुड़ा लूँगा।⁸और मैं उनको वापस लाऊँगा और वह यरुशलीम में सुकूनत करेंगे, और वह मेरे लोग होंगे और मैं रास्ती-और -सदाक़त से उनका खुदा हूँगा।"

⁹रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: "कि ऐ लोगो, अपने हाथों को मज़बूत करो; तुम जो इस वक़्त यह कलाम सुनते हो, जो रब्ब उल-अफ़वाज़ के घर या'नी हैकल की ता'मीर के लिए बुन्नियद डालते वक़्त नबियों के ज़रिए' नाज़िल हुआ।¹⁰क्योंकि उन दिनों से पहले, न इंसान के लिए मज़दूरी थी और न हैवान का किराया था, और दुश्मन की वजह से आने-जाने वाले महफूज़ न थे, क्योंकि मैंने सब लोगों में निफ़ाक डाल दिया।

¹¹लेकिन अब मैं इन लोगों के बक्रिये के साथ पहले की तरह पेश न आऊँगा, रब्बुल-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।¹²बल्कि ज़िरा'अत सलामती से होगी, अपना फल देगी और ज़मीन अपना हासिल और आसमान से ओस पड़ेगी, मैं इन लोगों के बक्रिये को इन सब बरकतों का वारिस बनाऊँगा।

¹³ऐ बनी यहूदाह और ऐ बनी-इसाईल, तरह तुम दूसरी क्रौमों में ला'नत तरह मैं तुम को छुड़ाऊँगा और तुम बरकत होगे। परेशान न हो, तुम्हारे हाथ मज़बूत हों।"¹⁴क्योंकि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि "जिस तरह मैंने क्रस्द किया था कि तुम पर आफ़त लाऊँ, तुम्हारे बाप-दादा ने मुझे ग़ज़बनाक किया और मैं अपने इरादे से बाज़ न रहा, फ़रमाता है;¹⁵उसी तरह मैंने अब इरादा किया है कि यरुशलीम और यहूदाह के घराने से नेकी करूँ; लेकिन तुम परेशान न हो।

¹⁶~फ़िर लाज़िम है कि तुम इन बातों पर 'अमल करो। तुम सब अपने पड़ोसियों से सच बोलो, अपने फाटकों में रास्ती से करो ताकि सलामती हो,¹⁷और तुम में से कोई अपने भाई के खिलाफ़ दिल में बुरा मंसूबा न बाँधे, झूठी क्रसम को 'अज़ीज़ न रखे; मैं इन सब बातों से नफ़रत रखता हूँ खुदावन्द फ़रमाता है ।

¹⁸फिर रब्ब-उल-अफ़वाज़ का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:¹⁹~कि रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि चौथे और पाँचवें और सातवें और दसवें महीने का रोज़ा , यहूदाह के लिए खुशी और ख़ुरमी का दिन और शादमानी की 'ईद होगा; तुम सच्चाई और सलामती को 'अज़ीज़ रखो।

²⁰रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि फिर क्रौम में और बड़े बड़े शहरों के बाशिन्दे ~आएँगे।²¹एक शहर के बाशिन्दे दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, जल्द खुदावन्द से दरख़वास्त करें और रब्ब-उल-अफ़वाज़ के तालिब हों, भी चलता हूँ।²²बहुत सी उम्मातें और ज़बरदस्त क्रौमें रब्ब-उल-अफ़वाज़ की तालिब होंगी, खुदावन्द से दरख़वास्त करने को यरुशलीम में आएँगी।

²³~रब्ब-उल-अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: कि उन दिनों में मुख़्तलिफ़ अहल-ए-लुग़त में से दस आदमी हाथ बढ़ाकर एक यहूदी का दामन पकड़ेंगे और कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ जायेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि खुदा तुम्हारे साथ है।'

Chapter 9

¹बनी आदम और खुसूसन कुल क़बाइल- ए-इसाईल की आँखें खुदावन्द पर लगी हैं। खुदावन्द की तरफ़ से सर ज़मीन-ए- और दमिशक़ के खिलाफ़ बार-ए-नबूव्वत,²हमात के खिलाफ़ जो उनसे सूर और सैदा के खिलाफ़ जो अपनी नज़र में बहुत 'अक्लमन्द' हैं।

³~सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला' मिट्टी की तरह चाँदी के तूदे लगाए और गलियों की कीच की तरह सोने के ढेर।⁴~देखो खुदावन्द उसे खारिज कर देगा, उसके गुरूर को समुन्दर में डाल देगा: और आग उसको खा जाएगी।

⁵~अस्क़लोन देखकर डर जाएगा ग़ज़ज़ा भी सख़्त दर्द में मुब्तिला होगा, 'अकून भी क्योंकि उसकी उम्मीद टूट गई और ग़ज़ज़ा से बादशाही जाती रहेगी,अस्क़लोन~बे चिराग़ हो जाएगा। ~⁶और एक अज़नबी ज़ादा अशदूद में तख़्त नशीन होगा और मैं ~फ़िलिस्तियों का गुरूर मिटाऊँगा।⁷~और मैं उसके खून को उसके मुँह से और उसकी मकरूहात उसके दाँतों से निकाल डालूँगा, और वह भी हमारे खुदा के लिए बक़िया होगा और वह यहूदाह में सरदार होगा और 'अकूनी यबूसियों की तरह होंगे।

⁸~और मैं मुख़ालिफ़ फ़ौज़ के मुक़ाबिल अपने घर की चारों तरफ़ ख़ैमाज़न हूँगा ताकि कोई उसमें से आमद-ओ-रफ़्त न कर सके; फिर कोई ज़ालिम उनके बीच से न गुज़रेगा क्योंकि अब मैंने अपनी आँखों से देख लिया है।

⁹ऐ बिन्त-ए-सिय्यून तू निहायत शादमान हो! ऐ दुख़तर-ए-यरुशलीम, ख़ूब ललकार क्योंकि देख तेरा बादशाह तेरे पास आता है; वह सादिक है, नजात उसके हाथ में है वह हलीम है और ग़धे पर बल्कि जवान ग़धे पर सवार है।¹⁰और मैं इफ़्राईम से रथ, यरुशलीम से घोड़े काट डालूँगा और जंगी कमान तोड़ डाली जाएगी और वह क्रौमों को सुलह का मुज़दा देगा और उसकी सल्लनत समुन्दर से समन्दर तक और दरिया-ए-फ़ुरात से इन्तिहाए-ज़मीन तक होगी।;

¹¹~और तेरे बारे में यूँ है कि तेरे 'अहद के खून की वजह से, तेरे गुलामों को अंधे कुँए से निकाल लाया।¹²मैं आज बताता हूँ कि तुझ को दो बदला दूँगा, ऐ उम्मीदवार, गुलामों क़िले' वापस आओ।"¹³क्योंकि मैंने यहूदाह को कमान की तरह झुकाया और इफ़्राईम को तीर की तरह लगाया, और ऐ सिय्यून, मैं तेरे फ़र्ज़न्दों को यूनान के फ़र्ज़न्दों के खिलाफ़ बरअन्ग़ोख़ता करूँगा, तुझे पहलवान की तलवार की तरह बनाऊँगा।

¹⁴और खुदावन्द उनके ऊपर दिखाई देगा उसके तीर बिजली की तरह निकलेंगे; हाँ खुदावन्द खुदा नरसिंगा फूँकेगा और दक्खिनी बगोलों के साथ खुर्रुज करेगा | ¹⁵और रब्ब-उल-अफ़वाज उनकी हिमायत करेगा और वह दुश्मनों को निगलेंगे,और फ़लाखन के पत्थरों को पायमाल करेंगे और पीकर मतवालों की तरह शोर मचायेंगे और कटोरों और मज़बह के कोनों की तरह मा'मूर होंगे।

¹⁶और खुदावन्द उनका खुदा उस दिन उनको अपनी भेंड़ों की तरह बचा लेगा, क्योंकि वह ताज के जवाहर की तरह होंगे, जो उसके मुल्क में सरफ़राज़¹⁷~क्योंकि उनकी खुशहाली 'अज़ीम और उनका जमाल खूब है, नौजवान ग़ल्ले से बढ़ेंगे और लड़कियाँ नई शराब से नश्व-ओ-नुमा पाएँगी।

Chapter 10

¹पिछली बरसात की बारिश के लिए खुदावन्द से दू'आ करो खुदावन्द से जो बिजली चमकाता है वह बारिश भेजेगा और मैदान में सबके लिए घास उगाएगा ।

²क्यूँकि तराफीम ने बतालत की बातें कहीं हैं और गैबबीनों ने बतालत देखी और झूठे ख्वाब बयान किये हैं उनकी तसल्ली बे हक्रीकत है ~इसलिए वह भेड़ों की तरह भटक गए। उन्होंने दुख पाया क्यूँकि उनका कोई चरवाहा न था।

³~मेरा ग़ज़ब चरवाहों पर भड़का है, मैं पेशवाओं को सज़ा दूँगा; तोभी रब्ब-उल-अफ़वाज ने अपने गल्ले या'नी बनी यहूदाह पर नज़र की है, उनको गोया अपना खूबसूरत जंगी घोड़ा बनाएगा।

⁴उन्ही में से कोने का पत्थर और खूँटी जंगी कमान और सब हाकिम निकलेंगे।⁵और वह पहलवानों की तरह लड़ाई में दुश्मनों को गलियों की कीच की तरह लताड़ेंगे और वह लड़ेंगे, क्यूँकि खुदावन्द उनके साथ हैं और सवार सरासीमा हो जाएँगे।

⁶और मैं यहूदाह के घराने की तकवियत करूँगा और यूसुफ़ के घराने को रिहाई बख्शूँगा और उनको वापस लाऊँगा,क्यूँकि मैं उन पर रहम करता हूँ, वह ऐसे होंगे गोया मैंने कभी उनको तर्क नहीं किया था, मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ और उनकी सुनूँगा।⁷~और बनी इफ़्राईम पहलवानों की तरह होंगे और उनके दिल गोया मय से मसरूर होंगे, बल्कि उनकी औलाद भी देखेगीऔर शादमानी करेगी; उनके दिल खुदावन्द से खुश होंगे।

⁸~मैं सीटी बजाकर उनको इकट्ठा करूँगा, क्यूँकि मैंने उनका फ़िदिया दिया है; वह बहुत हो जाएँगे जैसे पहले⁹~अगरचे मैंने उन्हें क़ौमों में तितर-बितर किया तोभी वह उन दूर के मुल्कों में मुझे याद करेंगे और अपने बाल बच्चों साथ ज़िन्दा रहेंगे और वापस आएँगे।¹⁰~मैं उनको मुल्क-ए-मिस्र से वापस लाऊँगा असूर से जमा' करूँगा और जिल'आद और लुबनान की सरज़मीन में पहुँचाऊँगा,यहाँ तक कि उनके लिए गुंजाइश न होगी।

¹¹~और वह मुसीबत के समुन्दर से गुज़र जाएगा और उसकी लहरों को मारेगा, और दरया-ए-नील तक सूख जाएगा, असूर का तकब्बुर टूट जाएगा और मिस्र का 'असा जाता रहेगा।¹²~और मैं उनको खुदावन्द में तकवियत बख्शूँगा और वह उसका नाम लेकर इधर उधर चलेंगे।"~

Chapter 11

¹ऐ ~लुबनान, तू अपने दरवाज़ों को खोलदे ताकि आग तेरे देवदारों को खा जाए।²ऐ सरो के दरख्त, नौहा कर क्योंकि देवदार गिर गया, शानदार गारत हो गए। ऐ बसनी बलूत के दरख्तो, फुगां करो क्योंकि दुशवार गुज़ार जंगल साफ़ हो चरवाहों के नौहे की आवाज़ आती है, क्योंकि उनकी हशमत गारत हुई! जवान बबरों की गरज़ सुनाई देती है क्योंकि यरदन का जंगल बर्बाद हो गया!

⁴~खुदावन्द मेरा खुदा यूँ फ़रमाता है: "कि जो भेड़ें ज़बह हो रही हैं उनको चरा।"⁵~जिनके मालिक उनको ज़बह करते और अपने आप को बेकुसूर समझते हैं, और जिनके बेचने वाले कहते हैं,खुदावन्द का शुक्र हो कि हम मालदार हुए," और उनके चरवाहे उन पर रहम नहीं करते।⁶~क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, मुल्क के बाशिन्दों पर फिर रहम नहीं करूँगा, बल्कि हर शख्स को उसके हमसाये और उसके बादशाह के हवाले कर दूँगा; वह मुल्क को तबाह करेंगे और मैं उनको उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।

⁷~तब मैंने उन भेड़ों को जो ज़बह हो रही थीं, या'नी गल्ले के मिस्कीनों को चराया और मैंने दो लाठियाँ लीं; एक का नाम फ़ज़ल रखवा और दूसरी का इत्तिहाद,और गल्ले को चराया।⁸और मैंने एक महीने में तीन चरवाहों को हलाक किया, क्योंकि मेरी जान उनसे बेज़ार थी; उनके दिल में मुझे से कराहियत थी।

⁹तब मैंने कहा, "कि अब मैं तुम को न चराऊँगा। मरने वाला मरजाए और हलाक होने वाला हलाक हो, बाक़ी एक दूसरे का गोश्त खाएँ।

¹⁰~तब मैंने फ़ज़ल नामी लाठी को लिया और उसे काट डाला कि अपने 'अहद को जो मैंने सब लोगों से बाँधा था, मन्सूख करूँ।"¹¹और वह उसी दिन मन्सूख हो गया; तब गल्ले के मिस्कीनों ने जो मेरी सुनते थे, मा'लूम किया कि यह खुदावन्द का कलाम है;¹²और मैंने उनसे कहा,कि "अगर तुम्हारी नज़र में ठीक हो, तो मेरी मज़दूरी मुझे दो नहीं तो मत दो।" और उन्होंने मेरी मज़दूरी के लिए तीस रुपये तोल कर दिए।

¹³और खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया, कि "उसे कुम्हार के सामने फेंक दे," या'नी इस बड़ी क़ीमत को जो उन्होंने मेरे लिए ठहराई, और मैंने यह तीस रुपये लेकर खुदावन्द के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए।¹⁴तब मैंने दूसरी लाठी या'नी इत्तिहाद नामी को काट डाला, ताकि उस बिरादरी को जो यहूदाह और इसाईल में है खत्म करूँ

¹⁵और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि "तू फिर नादान चरवाहे का सामान ले।"¹⁶~क्योंकि देख, मैं मुल्क में ऐसा चौपान बर्पा करूँगा, जो हलाक होने वाले की खबर गीरी, और भटके हुए की तलाश और ज़ख्मी का 'इलाज न करेगा, और तन्दुरुस्त को न चराएगा लेकिन मोटों का गोश्त खाएगा,और उनके खुरों को तोड़ डालेगा।

¹⁷उस नाबकार चरवाहे पर अफ़सोस,जो गल्ले को छोड़ जाता है, तलवार उसके बाजू और उसकी दहनी आँख पर आ पड़ेगी। उसका बाजू बिल्कुल सूख जाएगा और उसकी दहनी आँख फूट जाएगी।"

Chapter 12

¹~इसाईल के बारे में खुदावन्द की तरफ़ से बार-ए-नबुव्वत: खुदावन्द जो आसमान को तानता और ज़मीन की नियु डालता और इंसान के अन्दर उसकी रूह पैदा करता है, यूँ फ़रमाता है: 'देखो, मैं यरुशलीम को चारों तरफ़ के सब लोगों के लिए लड़खड़ाहट का प्याला बनाऊँगा, और यरुशलीम के मुहासिरे के वक्रत यहूदाह का भी यही हाल होगा।'³ और मैं उस दिन यरुशलीम को सब क्रौमों के लिए एक भारी पत्थर बना दूँगा, और जो उसे उठाएँगे सब घायल होंगे, और दुनिया की सब क्रौमें उसके सामने जमा' होंगी।

⁴खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उस दिन हर घोड़े को हैरतज़दा और उसके सवार को दीवाना कर दूँगा, लेकिन यहूदाह के घराने पर निगाह रखवूँगा, और क्रौमों के सब घोड़ों को अंधा कर दूँगा।⁵ तब यहूदाह के फ़रमारवाँ दिल में कहेंगे, कि 'यरुशलीम के बाशिन्दे अपने खुदा रब्ब-उल-अफ़वाज की वजह से हमारी ताक़त हैं।'

⁶मैं उस दिन यहूदाह के फ़रमारवाओं को लकड़ियों में जलती अंगेठी और पूलों में मश'अल की तरह बनाऊँगा, और वह दहने बाएँ चारों तरफ़ की सब क्रौमों को खा जाएँगे, और अहल-ए-यरुशलीम फिर अपने मक्राम पर यरुशलीम में ही आबाद होंगे।

⁷और खुदावन्द यहूदाह के खैमों को पहले रिहाई बख़्शेगा, ताकि दाउद का घराना और यरुशलीम के बाशिन्दे यहूदाह के खिलाफ़ गुरुर न करें।⁸ उस दिन खुदावन्द यरुशलीम के बाशिन्दों की हिमायत करेगा, और उनमें का सबसे कमज़ोर उस दिन दाऊद की तरह होगा; और दाऊद का घराना खुदा की तरह, या'नी खुदावन्द के फ़रिश्ते की तरह जो उनके आगे आगे चलता हो।⁹ और मैं उस दिन यरुशलीम की सब मुखालिफ़ क्रौमों की हलाकत का क़सद करूँगा।

¹⁰और मैं दाऊद के घराने और यरुशलीम के बाशिन्दों पर फ़ज़ल और मुनाजात की रूह नाज़िल करूँगा, और वह उस पर जिसको उन्होंने छेदा है नज़र करेंगे और उसके लिए मातम करेंगे जैसा कोई अपने एकलौते के लिए करता है और उसके लिए तल्ख़ काम होंगे जैसे कोई अपने पहलौठे के लिए होता है।¹¹ और उस दिन यरुशलीम में बड़ा मातम होगा, हदद रिम्मोन के मातम की तरह जो मजिहोन की वादी में हुआ।

¹²और तमाम मुल्क मातम करेगा, हर एक घराना अलग; दाऊद का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; नातन का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग;¹³~लावी का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; सिम'ई का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग;¹⁴बाक़ी सब घराने अलग-अलग, और उनकी बीवियाँ अलग अलग !'

Chapter 13

¹उस रोज़ गुनाह और नापाकी धोने को दाऊद के घराने और यरुशलीम के बशिन्दों के लिए एक सोता फूट निकले गा² और रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, मैं उसी दिन मुल्क से बुतों का नाम मिटा दूँगा, और उनको फिर कोई याद न करेगा; और मैं नबियों को और नापाक रूह को मुल्क से खारिज कर दूँगा।

³और जब कोई नबुव्वत करेगा, तो उसके माँ-बाप जिनसे वह पैदा हुआ उससे कहेंगे तू ज़िन्दा न रहेगा क्योंकि तू खुदावन्द का नाम लेकर झूठ बोलता है और जब एह नबुव्वत करेगा तो उसके माँ बाप जिनसे वह पैदा हुआ छेद डालेंगे |

⁴और उस दिन नबियों में से हर एक नबुव्वत करते वक़्त अपनी ख़्वाब से शर्मिन्दा होगा, और कभी धोखा देने के लिए कम्बल के कपड़े न पहनेगे,⁵ बल्कि हर एक कहेगा, कि मैं नबी नहीं किसान हूँ, क्योंकि मैं लड़कपन ही से गुलाम रहा हूँ।⁶ और जब कोई उससे पूछेगा, कि तेरी छाती" पर यह ज़ख़्म कैसे हैं?" तो वह जवाब देगा यह वह ज़ख़्म हैं जो मेरे दोस्तों के घर में लगे |

⁷रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, "ऐ तलवार, तू मेरे चरवाहे, या'नी उस इन्सान पर जो मेरा रफ़ीक़ है बेदार हो। 'चरवाहे को मार कि ग़ल्ला तितर-बितर हो। जाए, और मैं छोटों पर हाथ चलाऊँगा।

⁸और खुदावन्द फ़रमाता है, सारे मुल्क में दो तिहाई क़त्ल किए जाएँगे और मरेंगे, लेकिन एक तिहाई बच रहेंगे।⁹ और मैं इस तिहाई को आग में डालकर चाँदी की तरह साफ़ करूँगा और सोने की ताऊँगा। वह मुझ से दु'आ करेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं कहूँगा, 'यह मेरे लोग हैं,' और वह कहेंगे, 'खुदावन्द ही हमारा खुदा है।"

Chapter 14

¹~देख, खुदावन्द का दिन आता है, जब तेरा माल लूटकर तेरे अन्दर बाँटा जाएगा।²क्योंकि मैं सब क्रौमों को जमा' करूँगा कि यरुशलीम से जंग करें, और शहर ले लिया जाएगा और घर लूटे जाएँगे और 'औरतें बे हुरमत की जायेंगी और आधा शहर गुलामी में जाएगा, लेकिन बाक़ी लोग शहर ही में रहेंगे।

³तब खुदावन्द खुर्रुज करेगा और उन क्रौमों से लड़ेगा, जैसे जंग के दिन लड़ा करता था।⁴और उस दिन वह को-हए-जैतून पर जो यरुशलीम के पूरब में वाक़े' है खड़ा होगा और कोह-ए-जैतून बीच से फट जाएगा; और उसके पूरब से पश्चिम तक एक बड़ी वादी हो जाएगी, क्योंकि आधा पहाड़ उत्तर को सरक जाएगा और आधा दक्खिन को।

⁵और तुम मेरे पहाड़ों की वादी से होकर भागोगे, क्योंकि पहाड़ों की वादी अज़ल तक होगी; जिस तरह तुम शाह-ए-यहूदाह उज़ियाह के दिनों में ज़लज़ले से भागे थे, उसी तरह भागोगे; क्योंकि खुदावन्द मेरा खुदा आया और सब कुदसी उसके साथ

⁶और उस दिन रोशनी न होगी, और अजराम-ए-फ़लक छिप जाएँगे।⁷लेकिन एक दिन ऐसा आया जो खुदावन्द ही को मा'लूम है। वह न दिन होगा न रात, लेकिन शाम के वक़्त रोशनी होगी।⁸और उस दिन यरुशलीम से आब-ए-हयात जारी होगा, जिसका आधा बहर-ए-पूरब की तरफ़ बहेगा और आधा बहर-ए-पच्छिम की तरफ़, गर्मी सदी में जारी रहेगा।

⁹और खुदावन्द सारी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन एक ही खुदावन्द होगा, और उसका नाम वाहिद होगा।¹⁰~और यरुशलीम के दक्खिन में तमाम मुल्क जिबा' से रिम्मोन तक मैदान की तरह हो जाएगा। लेकिन यरुशलीम बुलन्द होगा, और बिनयमीन के फाटक से पहले फाटक के मक़ाम या'नी कोने के फाटक तक, और हननएल के बुर्ज से बादशाह के अंगूरी हौज़ों तक, अपने मक़ाम पर आबाद होगा।¹¹और लोग इसमें सुकूनत करेंगे और फिर ला'नत मुतलक़ न होगी, बल्कि यरुशलीम ~अमन-ओ-अमान से आबाद रहेगा।

¹²और खुदावन्द यरुशलीम से जंग करने वाली सब क्रौमों पर यह 'अज़ाब नाज़िल करेगा, कि खड़े खड़े उनका गोश्त सूख जाएगा, और उनकी आँखें चश्म खानों में गल जायेंगी और उनकी ज़बान उनके मुँह में सड़ जाएगी।¹³और उस दिन खुदावन्द की तरफ़ से उनके बीच बड़ी हलचल होगी और एक दूसरे का हाथ पकड़ेंगे और एक दूसरे के खिलाफ़ हाथ उठाएगा।

¹⁴और यहूदाह भी यरुशलीम के पास लड़ेगा, और चारों तरफ़ की सब क्रौमों का माल या'नी सोना-चाँदी और पोशाक बड़ी कसरत से इकट्ठा किया जाएगा।¹⁵और घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों, गधों और सब हैवानों पर भी जो उन लश्करगाहों में होंगे, वही 'अज़ाब नाज़िल होगा

¹⁶~और यरुशलीम से लड़ने वाली क्रौमों में से जो बच रहेंगे, साल-ब-साल बादशाह रब्ब-उल-अफ़वाज को सिज्दा करने और 'ईद-ए-ख़ियाम मनाने को आएँगे।

¹⁷और दुनिया के उन तमाम क़बाइल पर जो बादशाह रब्ब-उल-अफ़वाज के सामने सिज्दा करने को यरुशलीम में न आएँगे, मेंह न बरसेगा।¹⁸और अगर क़बाइल-ए-मिस्र जिन पर बारिश नहीं होती न आएँ, तो उन पर वही 'अज़ाब नाज़िल होगा जिसको खुदावन्द उन ग़ैर-क्रौमों पर नाज़िल करेगा, जो 'ईद-ए-ख़ियाम मनाने को न आएँगी।

¹⁹अहल-ए-मिस्र और उन सब क्रौमों की, जो ईद-ए-ख़ियाम मनाने की न जाएँ यही सज़ा होगी।

²⁰उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा, "खुदावन्द के लिये पाक।" और खुदावन्द के घर को देंगे, मज़बह के प्यालों की तरह पाक ~होंगे।²¹बल्कि यरुशलीम और यहूदाह में की सब देंगे, रब्ब-उल-अफ़वाज के लिए पाक होंगी, और सब ज़बीहे पेश करने वाले आयेंगे और उनको लेकर उनमें पकायेंगे और उस रोज़ फिर कोई कन'आनी रब्ब-उल-अफ़वाज के घर में न होगा।|

मलाक़ी

Chapter 1

¹~खुदावन्द की तरफ़ से मलाकी के ज़रिए' इस्राईल के लिए बार-ए-नबुव्वत :²~खुदावन्द फ़रमाता है, "मैंने तुम से मुहब्बत रखी, तोभी तुम कहते हो, 'तूने किस बात में हम से मुहब्बत ज़ाहिर की?' खुदावन्द फ़रमाता है, "क्या 'एसौ या'कूब का भाई न था? लेकिन मैंने या'कूब से मुहब्बत रखी,³~और 'एसौ से 'अदावत रखी, और उसके पहाड़ों को वीरान किया और उसकी मीरास वीराने के गीदड़ों को दी।"

⁴~अगर अदोम कहे, "हम बर्बाद तो हुए, लेकिन वीरान जगहों को फिर आकर ता'मीर करेंगे," तो रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, "अगरचे वह ता'मीर करें, लेकिन मैं ढाऊँगा, और लोग उनका ये नाम रखेंगे, 'शरारत का मुल्क', 'वह लोग जिन पर हमेशा खुदावन्द का क्रहर है।"⁵~और तुम्हारी आँखें देखेंगी और तुम कहोगे कि ~"खुदावन्द की तम्ज़ीद, इस्राईल की हदों से आगे तक हो।"

⁶रब्बुल-उल-अफ़वाज तुम को फ़रमाता है: "ऐ मेरे नाम की तहक़ीर करने वाले काहिनों, बेटा अपने बाप की, और नौकर अपने आक्रा की ता'ज़ीम करता है। इसलिए अगर मैं बाप हूँ, तो मेरी 'इज़ज़त कहाँ है? और अगर आक्रा हूँ, तो मेरा ख़ौफ़ कहाँ है? लेकिन तुम कहते हो, 'हमने किस बात में तेरे नाम की तहक़ीर की?'⁷~तुम मेरे मज़बह पर नापाक रोटी पेश करते हो और कहते हो कि 'हमने किस बात में तेरी तौहीन की?' इसी में जो कहते हो, खुदावन्द की मेज़ हक़ीर है।

⁸~जब तुम अंधे की कुर्बानी करते हो, तो कुछ बुराई नहीं? और जब लंगड़े और बीमार को पेश करते हो, तो कुछ नुक़सान नहीं? अब यही अपने हाकिम की नज़र कर, क्या वह तुझ से खुश होगा और तू उसका मंज़ूर-ए-नज़र होगा? रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।⁹~अब ज़रा खुदा को मनाओ, ताकि वह हम पर रहम फ़रमाए। तुम्हारे ही हाथों ने ये पेश किया है; क्या तुम उसके मंज़ूर-ए-नज़र होगे? रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।

¹⁰~काश कि तुम में कोई ऐसा होता जो दरवाज़े बंद करता, और तुम मेरे मज़बूह पर 'अबस आग न जलाते, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, मैं तुम से खुश नहीं हूँ और तुम्हारे हाथ का हदिया हरगिज़ कुबूल न करूँगा।'¹¹~क्योंकि आफ़ताब के तुलू से गुरुब तक क़ौमों में मेरे नाम की तम्ज़ीद होगी, और हर जगह मेरे नाम पर खुशबू जलाएँगे और पाक हदिये पेश करेंगे; क्योंकि क़ौमों में मेरे नाम की तम्ज़ीद होगी, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।¹²~लेकिन तुम इस बात में उसकी तौहीन करते हो, कि तुम कहते हो, 'ख़ुदावन्द की मेज़ पर क्या है, उस पर के हदिये बेहक़ीक़त हैं।'

¹³~और तुम ने कहा, 'ये कैसी ज़हमत है,' और उस पर नाक चढ़ाई रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है। फिर तुम लूट का माल और लंगड़े और बीमार ज़बीहे लाए, और इसी तरह के हदिये पेश करे! क्या मैं इनको तुम्हारे हाथ से कुबूल करूँ? ख़ुदावन्द फ़रमाता है।¹⁴~ला'नत उस दगाबाज़ पर जिसके गल्ले में नर है, लेकिन ख़ुदावन्द के लिए 'ऐबदार जानवर की नज़्र मानकर पेश करता है; क्योंकि मैं शाह-ए-'अज़ीम हूँ और क़ौमों में मेरा नाम मुहीब है, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।

Chapter 2

¹~"और अब ऐ काहिनो, तुम्हारे लिए ये हुक्म है।²~रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, अगर तुम नहीं सुनोगे, और मेरे नाम की तम्जीद को मद्-ए-नज़र न रखोगे, तो मैं तुम को और तुम्हारी ने'मतों को मला'ऊन करूँगा; बल्कि इसलिए कि तुमने उसे मद्-ए-नज़र न रखखा, मैं मला'ऊन कर चुका हूँ।

³~देखो, मैं तुम्हारे बाजू बेकार कर दूँगा, और तुम्हारे मुँह पर नापाकी या'नी तुम्हारी कुर्बानियों की नापाकी फेकूँगा, और तुम उसी के साथ फेंक दिए जाओगे।

⁴~और तुम जान लोगे कि मैंने तुम को ये हुक्म इसलिए दिया है के मेरा 'अहद लावी के साथ क़ायम रहे; रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।

⁵उसके साथ मेरा 'अहद ज़िन्दगी और सलामती का था, और मैंने ज़िन्दगी और सलामती इसलिए बख़्शी कि वह डरता रहे; चुनौते वह मुझ से डरा और मेरे नाम से तरसान रहा।⁶~सच्चाई की शरी'अत उसके मुँह में थी, और उसके लबों पर नारास्ती न पाई गई। वह मेरे सामने सलामती और रास्ती से चलता रहा, और वह बहुतों को बदी की राह से वापस लाया।⁷~क्योंकि लाज़िम है कि काहिन के लब मा'रिफ़त को महफ़ूज़ रखें, और लोग उसके मुँह से शर'ई मसाइल पूछें, क्योंकि वह रब्ब-उल-अफ़वाज का रसूल है।

⁸~लेकिन तुम राह से फिर गए। तुम शरी'अत में बहुतों के लिए ठोकर का ज़रिया' हुए। तुम ने लावी के 'अहद को ख़राब किया, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है,

⁹~इसलिए मैंने तुम को सब लोगों की नज़र में ज़लील और हकीर किया, क्योंकि तुम मेरी राहों पर क़ायम न रहे, बल्कि तुम ने शर'ई मुआ'मिलात में रूदारी की।"

¹⁰~क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? क्या एक ही ख़ुदा ने हम सब को पैदा नहीं किया? फिर क्यों हम अपने भाइयों से बेवफ़ाई करके अपने बाप-दादा के 'अहद की बेहुरमती करते हैं?¹¹~यहूदाह ने बेवफ़ाई की, इस्राईल और यरुशलम में मकरूह काम हुआ है। यहूदाह ने ख़ुदावन्द की पाकीज़गी को, जो उसको 'अज़ीज़ थी बेहुरमत किया, और एक ग़ैर मा'बूद की बेटी ब्याह लाया।¹²~ख़ुदावन्द ऐसा करने वाले को, ज़िन्दा और जवाब दहिन्दा और रब्ब-उल-अफ़वाज के सामने कुर्बानी पेश करने वाले, या'क़ूब के खेमों से मुनक़ता' कर देगा।

¹³~फिर तुम्हारे 'आमाल की वजह से, ख़ुदावन्द के मज़बह पर आह-ओ-नाला और आँसुओं की ऐसी कसरत है कि वह न तुम्हारे हृदिये को देखेगा और न तुम्हारे हाथ की नज़्र को खुशी से कुबूल करेगा।

¹⁴तोभी तुम कहते हो, "वजह क्या है?" वजह ये है कि ख़ुदावन्द तेरे और तेरी जवानी की बीवी के बीच गवाह है, तूने उससे बेवफ़ाई की है, अगरचे वह तेरी दोस्त और मनकूहा बीवी है।¹⁵~और क्या उसने एक ही को पैदा नहीं किया, बावजूद कि उसके पास और भी अरवाह मौजूद थीं? फिर क्यों एक ही को पैदा किया? इसलिए कि ख़ुदातरस नस्ल पैदा हो। इसलिए तुम अपने नफ़्स से ख़बरदार रहो, और कोई अपनी जवानी की बीवी से बेवफ़ाई न करे।¹⁶क्योंकि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, "मैं तलाक़ से बेज़ार हूँ, और उससे भी जो अपनी बीवी पर ज़ुल्म करता है, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, इसलिए तुम अपने नफ़्स से ख़बरदार रहो ताकि बेवफ़ाई न करो।"

¹⁷~तुमने अपनी बातों से ख़ुदावन्द को बेज़ार कर दिया; तोभी तुम कहते हो, "किस बात में हम ने उसे बेज़ार किया?" इसी में जो कहते हो कि ~"हर शख्स जो बुराई करता है, ख़ुदावन्द की नज़र में नेक है, और वह उससे खुश है," और ये के 'अद्ल का ख़ुदा कहाँ है?"

Chapter 3

¹देखो मैं अपने रसूल को भेजूँगा और वह मेरे आगे राह दुरुस्त करेगा, और खुदावन्द, जिसके तुम तालिब हो, वह अचानक अपनी हैकल में आ मौजूद होगा। हाँ, 'अहद का रसूल, जिसके तुम आरज़ूमन्द हो आएगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।'²~लेकिन उसके आने के दिन की किसमें ताब है? और जब उसका ज़हूर होगा, तो कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सुनार की आग और धोबी के साबुन की तरह है।³~और~वह चाँदी को ताने और पाक-साफ़ करने वाले की तरह बैठेगा, और बनी लावी को सोने और चाँदी की तरह पाक-साफ़ करेगा ताकि रास्तबाज़ी से खुदावन्द के सामने हदिये पेश करें।

⁴~तब यहूदाह और यरुशलीम का हदिया खुदावन्द को पसन्द आएगा, जैसा गुज़रे दिनों और गुज़रे ज़माने में।⁵~और मैं 'अदालत के लिए तुम्हारे नज़दीक आऊँगा और जादूगरों और बदकारों और झूठी क्रसम खाने वालों के खिलाफ़, और उनके खिलाफ़ भी जो मज़दूरों को मज़दूरी नहीं देते, और बेवाओं और यतीमों पर सितम करते और मुसाफ़िरों की हक़ तल्फ़ी करते हैं और मुझ से नहीं डरते हैं, मुस्त'इद गवाह हूँगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।

⁶"क्योंकि मैं खुदावन्द ला-तब्दील हूँ, इसीलिए ऐ बनी या'कूब, तुम हलाक नहीं हुए।'⁷~तुम अपने बाप-दादा के दिनों से मेरे तौर तरीक़े से फिरे रहे और उनको नहीं माना। तुम मेरी तरफ़ रुजू' हो, तो मैं तुम्हारी तरफ़ रुजू' हूँगा रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है लेकिन तुम कहते हो कि '~हम किस बात में रुजू' हों?'

⁸~क्या कोई आदमी खुदा को ठगेगा? लेकिन तुम मुझको ठगते हो और कहते हो, 'हम ने किस बात में तुझे ठगा?' दहेकी और हदिये में।⁹~इसलिए तुम सख़्त मला'ऊन हुए, क्योंकि तुमने बल्कि तमाम क्रौम ने मुझे ठगा।

¹⁰~पूरी दहेकी ज़खीरेखाने में लाओ, ताकि मेरे घर में खुराक हो। और इसी से मेरा इम्तिहान करो रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, कि मैं तुम पर आसमान के दरीचों को खोल कर बरकत बरसाता हूँ कि नहीं, यहाँ तक कि तुम्हारे पास उसके लिए जगह न रहे।¹¹और मैं तुम्हारी खातिर टिड्डी को डाटूँगा और वह तुम्हारी ज़मीन की फ़सल को बर्बाद न करेगी, और तुम्हारे ताकिस्तानों का फल कच्चा न झड़ जाएगा, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।¹²और सब क्रौम तुम को मुबारक कहेंगी, क्योंकि तुम दिलकुशा मम्लुकत होगे, रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।

¹³~खुदावन्द फ़रमाता है, "तुम्हारी बातें मेरे खिलाफ़ बहुत सख़्त हैं। तोभी तुम कहते हो, 'हम ने तेरी मुखालिफ़त में क्या कहा?'"¹⁴तुमने तो कहा, 'खुदा की 'इबादत करना 'अबस है। रब्ब-उल-अफ़वाज के हुक्मों पर 'अमल करना, और उसके सामने मातम करना बे-फ़ायदा है।¹⁵~और अब हम मगरूरों को नेकबख़्त कहते हैं। शरीर कामयाब होते हैं और खुदा को आजमाने पर भी रिहाई पाते हैं।

¹⁶~तब खुदातरसों ने आपस में गुप्तगू की, और खुदावन्द ने मुतवज्जिह होकर सुना और उनके लिए जो खुदावन्द से डरते और उसके नाम को याद करते थे, उसके सामने यादगार का दफ़्तर लिखा गया।

¹⁷~रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है उस रोज़ वह मेरे लोग, बल्कि मेरी खास मिल्लियत होंगे; और मैं उन पर ऐसा रहीम हूँगा जैसा बाप अपने खिदमतगुज़ार बेटे पर होता है।¹⁸~तब तुम रुजू' लाओगे, और सादिक और शरीर में और खुदा की 'इबादत करने वाले और न करने वाले में फ़र्क़ करोगे।

Chapter 4

¹क्योंकि देखो वह दिन आता है जो भट्टी ~की तरह सोज़ान होगा। तब सब मगरूर और बदकिरदार भूसे की तरह होंगे और वह दिन उनको ऐसा जलाएगा कि शाख-ओ-बुन कुछ न छोड़ेगा, रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।²"लेकिन तुम पर जो मेरे नाम की ता'ज़ीम करते हो, आफ़ताब-ए-सदाक़त ताली'अ होगा, और उसकी किरनों में शिफ़ा होगी; और तुम गावख़ाने के बछड़ों की तरह कूदो-फाँदोगे।³~और तुम शरीरों को पायमाल करोगे, क्योंकि उस रोज़ वह तुम्हारे पाँव तले की राख होंगे," रब्ब-उल-अफ़वाज़ फ़रमाता है।

⁴~"तुम मेरे बन्दे मूसा की शरी'अत या'नी ' उन फ़राइज़-ओ-अहक़ाम को, जो मैंने होरिब पर तमाम बनी-इस्राईल के लिए फ़रमाए, याद रखखो।⁵देखो, खुदावन्द के बुजुर्ग और ग़ज़बनाक दिन के आने से पहले, मैं एलियाह नबी को तुम्हारे पास भेजूँगा।⁶~और वह बाप का दिल बेटे की तरफ़, और बेटे का बाप की तरफ़ माइल करेगा; मुबादा मैं आऊँ और ज़मीन को मला'ऊन करूँ।"

मुक़द्दस मत्ती की मा'रिफ़त इन्जील

Chapter 1

¹ईसा' मसीह इब्न- ए दाऊद इब्न- ए इब्राहीम का नसबनामा।²इब्राहीम से इज़हाक़ पैदा हुआ, और इज़हाक़ से या'क़ूब पैदा हुआ, और या'क़ूब से यहूदा और उस के भाई पैदा हुए;³और यहूदा से फ़ारस और ज़ारह तमर से पैदा हुए, और फ़ारस से हसरोन पैदा हुआ, और हसरोन से राम पैदा हुआ;

⁴और राम से अम्मीनदाब पैदा हुआ, और अम्मीनदाब से नह्सोन पैदा हुआ, और नह्सोन से सलमोन पैदा हुआ;⁵और सलमोन से बो'अज़ राहब से पैदा हुआ, और बो'अज़ से ओबेद रूत से पैदा हुआ, और ओबेद से यस्सी पैदा हुआ;⁶और यस्सी से दाऊद बादशाह पैदा हुआ। और दाऊद से सुलैमान उस 'औरत से पैदा हुआ जो पहले ऊरिय्याह की बीवी थी;

⁷और सुलैमान से रहुब'आम पैदा हुआ, और रहुब'आम से अबियाह पैदा हुआ, और अबियाह से आसा पैदा हुआ;⁸और आसा से यहूसफ़त पैदा हुआ,और यहूसफ़त से यूराम पैदा हुआ, और यूराम से उज़्ज़ियाह पैदा हुआ;

⁹उज़्ज़ियाह से यूताम पैदा हुआ,और यूताम से आखज़ पैदा हुआ, और आखज़ से हिज़क्रियाह पैदा हुआ;¹⁰और हिज़क्रियाह से मनस्सी पैदा हुआ, और मनस्सी से अमून पैदा हुआ, और अमून से यूसियाह पैदा हुआ;¹¹और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने के ज़माने में यूसियाह से यकुनियाह और उस के भाई पैदा हुए;

¹²और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने के बाद यकुनियाह से सियालतीएल पैदा हुआ, और सियालतीएल से ज़रुब्बाबुल पैदा हुआ।¹³और ज़रुब्बाबुल से अबीहूद पैदा हुआ, और अबीहूद से इलियाक़ीम पैदा हुआ, और इलियाक़ीम से आज़ोर पैदा हुआ;¹⁴और आज़ोर से सदोक़ पैदा हुआ, और सदोक़ से अख़ीम पैदा हुआ, और अख़ीम से इलीहूद पैदा हुआ;

¹⁵और इलीहूद से इलीअज़र पैदा हुआ, और अलीअज़र से मत्तान पैदा हुआ, और मत्तान से याक़ूब पैदा हुआ;¹⁶और याक़ूब से यूसुफ़ पैदा हुआ,ये उस मरियम का शौहर था जिस से ईसा' पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है।¹⁷पस सब पुश्तें इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पुश्तें हुई, और दाऊद से लेकर गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने तक चौदह पुश्तें, और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने से लेकर मसीह तक चौदह पुश्तें हुई।

¹⁸अब ईसा' मसीह की पैदाइश इस तरह हुई कि जब उस की माँ मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हो गई: तो उन के एक साथ होने से पहले वो रूह-उल कुद्स की कुदरत से हामिला पाई गई।¹⁹पस उस के शौहर यूसुफ़ ने जो रास्तबाज़ था, और उसे बदनाम नहीं करना चाहता था। उसे चुपके से छोड़ देने का इरादा किया।

²⁰वो ये बातें सोच ही रहा था, कि खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे ख़्वाब में दिखाई देकर कहा,"ऐ यूसुफ़" इब्न -ए दाऊद अपनी बीवी मरियम को अपने यहाँ ले आने से न डर; क्योंकि जो उस के पेट में है, वो रूह- उल -कुद्स की कुदरत से है।²¹उस के बेटा होगा और तू उस का नाम ईसा' रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उन के गुनाहों से नजात देगा।

²²यह सब कुछ इस लिए हुआ कि जो खुदावन्द ने नबी के ज़रिये कहा था, वो पूरा हो कि |²³"देखो एक कुंवारी हामिला होगी। और बेटा जनैगी और उस का नाम इम्मानुएल रखेंगे," जिसका मतलब है- खुदा हमारे साथ।

²⁴पस यूसुफ़ ने नींद से जाग कर वैसा ही किया जैसा खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे हुक्म दिया था, और अपनी बीवी को अपने यहाँ ले गया।²⁵और उस को न जाना जब तक उस के बेटा न हुआ और उस का नाम ईसा' रखखा।

Chapter 2

¹'जब ईसा' हेरोदेस बादशाह के ज़माने में यहूदिया के बैत-लहम में पैदा हुआ। तो देखो कई मजूसी पूरब से यरूशलीम में ये कहते हुए आए।²" यहूदियों का बादशाह जो पैदा हुआ है, वो कहाँ है ? क्योंकि पूरब में उस का सितारा देखकर हम उसे सज्दा करने आए हैं।"³यह सुन कर हेरोदेस बादशाह और उस के साथ यरूशलीम के सब लोग घबरा गए।

⁴और उस ने क्रौम के सब सरदार काहिनों और आलिमों को जमा' करके उन से पूछा, "मसीह की पैदाइश कहाँ होनी चाहिए?"⁵उन्होंने उस से कहा, "यहूदिया के बैत-लहम में, क्योंकि नबी के ज़रिये यूँ लिखा गया है, कि⁶'ऐ बैत-लहम, यहूदिया के 'इलाक़े तू यहूदाह के हाकिमों में हरगिज़ सब से छोटा नहीं। क्योंकि तुझ में से एक सरदार निकलेगा जो मेरी क्रौम इस्राईल की निगेहबानी करेगा।' "

⁷इस पर हेरोदेस ने मजूसियों को चुपके से बुला कर उन से मालूम किया कि वह सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था।⁸और उन्हें ये कह कर "बैतलहम भेजा कि जा कर उस बच्चे के बारे में ठीक ठीक मालूम करो और जब वो मिले तो मुझे ख़बर दो ताकि मैं भी आ कर उसे सिज्दा करूँ।"

⁹वो बादशाह की बात सुनकर रवाना हुए "और देखो, जो सितारा उन्होंने पूरब में देखा था; वो उनके आगे आगे चला; यहाँ तक कि उस जगह के ऊपर जाकर ठहर गया जहाँ वो बच्चा था।¹⁰वो सितारे को देख कर निहायत खुश हुए।

¹¹और उस घर में पहुँचकर बच्चे को उस की माँ मरियम के पास देखा; और उसके आगे गिर कर सिज्दा किया। और अपने डिब्बे खोल कर सोना, और लुबान और मुर उसको नज़्र किया।¹²और हेरोदेस के पास फिर न जाने की हिदायत ख़्वाब में पाकर दूसरी राह से अपने मुल्क को रवाना हुए।

¹³जब वो रवाना हो गए तो देखो ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने यूसुफ़ को ख़्वाब में दिखाई देकर कहा, "उठ बच्चे और उस की माँ को साथ लेकर मिस्र को भाग जा: और जब तक कि मैं तुझ से न कहूँ वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बच्चे को तलाश करने को है, ताकि इसे हलाक करे।"¹⁴पस वो उठा और रात के वक़्त बच्चे और उस की माँ को साथ ले कर मिस्र के लिए रवाना हो गया।¹⁵और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा ताकि जो ख़ुदावन्द ने नबी के ज़रिये कहा था, वो पूरा हो "कि मिस्र से मैंने अपने बेटे को बुलाया।"

¹⁶जब हेरोदेस ने देखा कि मजूसियों ने मेरे साथ हँसी की तो निहायत गुस्सा हुआ और आदमी भेजकर बैतलहम और उसकी सब सरहदों के अन्दर के उन सब लड़कों को क़त्ल करवा दिया जो दो दो बरस के या इस से छोटे थे, उस वक़्त के हिसाब से जो उसने मजूसियों से तहक़ीक़ की थी।

¹⁷उस वक़्त वो बात पूरी हुई जो यर्मियाह नबी के ज़रिये कही गई थी।¹⁸"रामा में आवाज़ सुनाई दी, रोना और बड़ा मातम। राखिल अपने बच्चे को रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं करती, इसलिए कि वो नहीं हैं।"

¹⁹जब हेरोदेस मर गया, तो देखो ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने मिस्र में यूसुफ़ को ख़्वाब में दिखाई देकर कहा कि।²⁰उठ इस बच्चे और इसकी माँ को लेकर इस्राईल के मुल्क मे चला जा, क्योंकि जो बच्चे की जान लेने वाले थे वो मर गए²¹पस वो उठा और बच्चे और उस की माँ को ले कर मुल्क-ए-इस्राईल में लौट आया।

²²मगर जब सुना कि अख़िलास अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में बादशाही करता है तो वहाँ जाने से डरा, और ख़्वाब में हिदायत पाकर गलील के 'इलाक़े को रवाना हो गया।²³और नासरत नाम एक शहर में जा बसा, ताकि जो नबियों की मारफ़त कहा गया थावो पूरा हो, "वह नासरी कहलाएगा।"

Chapter 3

¹उन दिनों में यहून्ना बपतिस्मा देने वाला आया और यहूदिया के वीराने में ये ऐलान करने लगा कि, ²“तौबा करो, क्योंकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।”³ये वही है जिस का ज़िक्र यसायाह नबी के ज़रिये यूँ हुआ कि वीराने में पुकारने वाले की आवाज़ आती है, कि ख़ुदावन्द की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।

⁴ये यहून्ना ऊँटों के बालों की पोशाक पहने और चमड़े का पटका अपनी कमर से बाँधे रहता था। और इसकी खुराक टिट्टियाँ और जंगली शहद था।⁵उस वक़्त यरूशलीम, और सारे यहूदिया और यरदन और उसके आस पास के सब लोग निकल कर उस के पास गये।⁶और अपने गुनाहों का इक्रार करके। यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया?

⁷मगर जब उसने बहुत से फ़रीसियों और सदूकियों को बपतिस्मे के लिए अपने पास आते देखा तो उनसे कहा कि, “ऐ साँप के बच्चो” तुम को किस ने बता दिया कि आने वाले ग़ज़ब से भागो ?⁸पस तौबा के मुताबिक़ फल लाओ।⁹और अपने दिलों में ये कहने का खयाल न करो कि अब्रहाम हमारा बाप है क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि “ख़ुदा” इन पत्थरों से अब्रहाम के लिए औलाद पैदा कर सकता है।

¹⁰अब दरख़्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रख्खा हुआ है पस, जो दरख़्त अच्छा फ़ल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है।¹¹“मैं तो तुम को तौबा के लिए पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन जो मेरे बाद आता है मुझ से बड़ा है; मैं उसकी जूतियाँ उठाने के लायक़ नहीं। वो तुम को रूह -उल कुददूस और आग से बपतिस्मा देगा।¹²उस का छाज उसके हाथ में है और वो अपने खलियान को ख़ूब साफ़ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में जमा' करेगा, मगर भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने वाली नहीं।”

¹³उस वक़्त “ईसा” गलील से यर्दन के किनारे यहून्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।¹⁴मगर यहून्ना ये कह कर उसे मना करने लगा, “मैं आप तुझ से बपतिस्मा लेने का मोहताज हूँ, और तू मेरे पास आया है?”¹⁵ईसा' ने जवाब में उस से कहा, “अब तू होने ही दे, क्योंकि हमें इसी तरह सारी रास्तबाज़ी पूरी करना मुनासिब है। इस पर उस ने होने दिया।”

¹⁶और “ईसा” बपतिस्मा लेकर फ़ौरन पानी के ऊपर आया। और देखो, उस के लिए आस्मान खुल गया और उस ने “ख़ुदा” की रूह को कबूतर की शक्ल में उतरते और अपने ऊपर आते देखा।¹⁷और देखो आसमान से ये आवाज़ आई: “ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।”

Chapter 4

¹उस वक़्त रूह "ईसा" को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से आजमाया जाए।²और चालीस दिन और चालीस रात फ़ाका कर के आखिर को उसे भूख लगी।

³और आजमाने वाले ने पास आकर उस से कहा "अगर तू 'खुदा' का बेटा है तो फ़रमा कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।"⁴उस ने जवाब में कहा, "लिखा है आदमी सिर्फ़ रोटी ही से ज़िन्दा न रहेगा; बल्कि हर एक बात से जो 'खुदा' के मुँह से निकलती है।"

⁵तब इब्लीस उसे मुक़द्दस शहर में ले गया और हैकल के कंगूरे पर खड़ा करके उस से कहा।⁶"अगर तू 'खुदा' का बेटा है तो अपने आपको नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है कि 'वह तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि ऐसा न हो कि तेरे पैर को पत्थर से ठेस लगे'।"

⁷'ईसा' ने उस से कहा, "ये भी लिखा है; 'तू खुदावन्द अपने खुदा की आजमाइश न कर।'"⁸फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और दुनिया की सब सल्तनतें और उन की शान -ओ शौकत उसे दिखाई।⁹और उससे कहा कि अगर तू झुक कर मुझे सज्दा करे तो ये सब कुछ तुझे दे दूंगा

¹⁰'ईसा' ने उस से कहा, "ऐ शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है, 'तू खुदावन्द अपने खुदा को सज्दा कर और सिर्फ़ उसी की 'इबादत कर।'"¹¹तब इब्लीस उस के पास से चला गया; और देखो फ़रिश्ते आ कर उस की खिदमत करने लगे।

¹²जब उस ने सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया तो गलील को रवाना हुआ;¹³और नासरत को छोड़ कर कफ़रनहूम में जा बसा जो झील के किनारे ज़बलून और नफ़्ताली की सरहद पर है।

¹⁴ताकि जो यसा'याह नबी की मारफ़त कहा गया था, वो पूरा हो।¹⁵"ज़बलून का इलाक़ा, और नफ़्ताली का इलाक़ा, दरिया की राह यर्दन के पार, ग़ैर क्रौमों की गलील :¹⁶'या'नी जो लोग अन्धेरे में बैठे थे, उन्होंने बड़ी रौशनी देखी; और जो मौत के मुल्क और साये में बैठे थे, उन पर रोशनी चमकी।"

¹⁷उस वक़्त से ईसा' ने एलान करना और ये कहना शुरू किया "तौबा करो, क्योंकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।"

¹⁸उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों या'नी शमाऊन को जो पतरस कहलाता है; और उस के भाई अन्द्रियास को। झील में जाल डालते देखा, क्योंकि वह मछली पकड़ने वाले थे।¹⁹और उन से कहा, "मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।"²⁰वो फ़ौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

²¹वहाँ से आगे बढ़ कर उस ने और दो भाइयों या'नी, ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और उस के भाई यूहन्ना को देखा। कि अपने बाप ज़ब्दी के साथ नाव पर अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। और उन को बुलाया।²²वह फ़ौरन नाव और अपने बाप को छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

²³'ईसा' पुरे गलील में फिरता रहा, और उनके इबादतखानों में तालीम देता, और बादशाही की खुशख़बरी का एलान करता और लोगों की हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करता रहा।²⁴और उस की शोहरत पूरे सूब-ए-सूरिया में फैल गई, और लोग सब बिमारों को जो तरह तरह की बीमारियों और तकलीफ़ों में गिरिफ़्तार थे; और उन को जिन में बदरूहें थी, और मिर्गी वालों और मज़लूजों को उस के पास लाए और उसने उन को अच्छा किया।²⁵और गलील, और दिकपुलिस, और यरूशलम, और यहूदिया और यर्दन के पार से बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

Chapter 5

¹वो इस भीड़ को देख कर ऊँची जगह पर चढ़ गया। और जब बैठ गया तो उस के शागिर्द उस के पास आए।²और वो अपनी ज़बान खोल कर उन को यूँ ता'लीम देने लगा।³मुबारक हैं वो जो दिल के गरीब हैं क्योंकि आस्मान की बादशाही उन्हीं की है।⁴मुबारक हैं वो जो ग़मगीन हैं, क्योंकि वो तसल्ली पाँएंगे।

⁵मुबारक हैं वो जो हलीम हैं, क्योंकि वो ज़मीन के वारिस होंगे।⁶मुबारक हैं वो जो रास्तबाज़ी के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वो सेर होंगे।⁷मुबारक हैं वो जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन पर रहम किया जाएगा।⁸मुबारक हैं वो जो पाक दिल हैं, क्योंकि वह "खुदा" को देखेंगे।

⁹मुबारक हैं वो जो सुलह कराते हैं, क्योंकि वह "खुदा" के बेटे कहलाएँगे।¹⁰मुबारक हैं वो जो रास्तबाज़ी की वजह से सताये गए हैं, क्योंकि आस्मान की बादशाही उन्हीं की है।

¹¹जब लोग मेरी वजह से तुम को लान-तान करेंगे, और सताएँगे; और हर तरह की बुरी बातें तुम्हारी निस्बत नाहक कहेंगे; तो तुम मुबारक होगे।¹²खुशी करना और निहायत शादमान होना क्योंकि आस्मान पर तुम्हारा अज़्र बढ़ा है। इसलिए कि लोगों ने उन नबियों को जो तुम से पहले थे, इसी तरह सताया था।

¹³तुम ज़मीन के नमक हो। लेकिन अगर नमक का मज़ा जाता रहे तो वो किस चीज़ से नमकीन किया जाएगा? फिर वो किसी काम का नहीं सिवा इस के कि बाहर फेंका जाए और आदमियों के पैरों के नीचे रौंदा जाए।¹⁴तुम दुनिया के नूर हो। जो शहर पहाड़ पर बसा है वो छिप नहीं सकता।

¹⁵और चिराग जलाकर पैमाने के नीचे नहीं बल्कि चिरागदान पर रखते हैं; तो उस से घर के सब लोगों को रोशनी पहुँचती है।¹⁶इसी तरह तुम्हारी रोशनी आदमियों के सामने चमके, ताकि वो तुम्हारे नेक कामों को देखकर तुम्हारे बाप की जो आसमान पर है बड़ाई करें।

¹⁷"ये न समझो कि मैं तौरेत या नबियों की किताबों को मन्सूख करने आया हूँ, मन्सूख करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ।¹⁸क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक आस्मान और ज़मीन टल न जाएँ, एक नुक्ता या एक शोशा तौरेत से हरगिज़ न टलेगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए।

¹⁹पस जो कोई इन छोटे से छोटे हुक्मों में से किसी भी हुक्म को तोड़ेगा, और यही आदमियों को सिखाएगा। वो आसमान की बादशाही में सब से छोटा कहलाएगा; लेकिन जो उन पर अमल करेगा, और उन की ता'लीम देगा; वो आसमान की बादशाही में बड़ा कहलाएगा।²⁰क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी आलिमों और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा न होगी, तो तुम आसमान की बादशाही में हरगिज़ दाखिल न होगे।

²¹तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था कि खून ना करना जो कोई खून करेगा वो 'अदालत की सज़ा के लायक होगा।' लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि 'जो कोई अपने भाई पर गुस्सा होगा, वो 'अदालत की सज़ा के लायक होगा; कोई अपने भाई को पागल कहेगा, वो सद्दे-ऐ 'अदालत की सज़ा के लायक होगा; और जो उसको बेवकूफ़ कहेगा, वो जहन्नम की आग का सज़ावार होगा।'

²³पस अगर तू कुर्बानगाह पर अपनी कुर्बानी करता है और वहाँ तुझे याद आए कि मेरे भाई को मुझ से कुछ शिकायत है।²⁴तो वहीं कुर्बानगाह के आगे अपनी नज़्र छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप कर तब आकर अपनी कुर्बानी कर।

²⁵जब तक तू अपने मुद्'ई के साथ रास्ते में है, उससे जल्द सुलह कर ले, कहीं ऐसा न हो कि मुद्'ई तुझे मुन्सिफ़ के हवाले कर दे और मुन्सिफ़ तुझे सिपाही के हवाले कर दे; और तू क्रैद खाने में डाला जाए।²⁶मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी अदा न करेगा वहाँ से हरगिज़ न छूटेगा।

²⁷तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'ज़िना न करना।'²⁸लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि जिस किसी ने बुरी ख्वाहिश से किसी 'औरत पर निगाह की वो अपने दिल में उस के साथ ज़िना कर चुका।

²⁹पस अगर तेरी दहनी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे आ'ज़ा में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नम में न डाला जाए।³⁰और अगर तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उस को काट कर अपने पास से फेंक दे। क्योंकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे आ'ज़ा में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नम में न जाए।

³¹ये भी कहा गया था, 'जो कोई अपनी बीवी को छोड़े उसे तलाक़नामा लिख दे।' लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे वो उस से ज़िना करता है; और जो कोई उस छोड़ी हुई से शादी करे वो भी ज़िना करता है।

³³फिर तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था 'झूठी क्रसम न खाना; बल्कि अपनी क्रसम में "खुदावन्द" के लिए पूरी करना।'³⁴लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि बिल्कुल क्रसम न खाना 'न तो आस्मान की 'क्योंकि वो "खुदा" का तख़्त है,³⁵न 'ज़मीन की' क्योंकि वो उस के पैरों की चौकी है।'न यरूशलीम की 'क्योंकि वो बुजुर्ग बादशाह का शहर है।

³⁶न अपने सर की क्रसम खाना क्योंकि तू एक बाल को भी सफ़ेद या काला नहीं कर सकता।³⁷बल्कि तुम्हारा कलाम 'हाँ हाँ' या 'नहीं नहीं' हो क्योंकि जो इस से ज़्यादा है वो बदी से है।

³⁸तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।'³⁹लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि शरीर का मुक्काबला न करना बल्कि जो कोई तेरे दहने गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ़ फेर दे।

⁴⁰और अगर कोई तुझ पर नालिश कर के तेरा कुर्ता लेना चाहे; तो चोगा भी उसे ले लेने दे।⁴¹और जो कोई तुझे एक कोस बेगार में ले जाए; उस के साथ दो कोस चला जा।⁴²जो कोई तुझ से माँगे उसे दे; और जो तुझ से क़र्ज़ चाहे उस से मुँह न मोड़।

⁴³तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से मुहब्बत रख और अपने दुश्मन से दुश्मनी।' ⁴⁴लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और अपने सताने वालों के लिए दुआ करो।⁴⁵ताकि तुम अपने बाप के जो आसमान पर है, बेटे ठहरो; क्योंकि वो अपने सूरज को बदों और नेकों दोनों पर चमकाता है; और रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों पर मेंह बरसाता है।

⁴⁶क्योंकि अगर तुम अपने मुहब्बत रखने वालों ही से मुहब्बत रखो तो तुम्हारे लिए क्या अज़्र है? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते।⁴⁷अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों को सलाम करो; तो क्या ज़्यादा करते हो? क्या ग़ैर क्रौमों के लोग भी ऐसा नहीं करते? ⁴⁸पस चाहिए कि तुम कामिल हो जैसा तुम्हारा आस्मानी बाप कामिल है।

Chapter 6

¹"खबरदार! अपने रास्तबाज़ी के काम आदमियों के सामने दिखावे के लिए न करो, नहीं तो तुम्हारे बाप के पास जो आसमान पर है; तुम्हारे लिए कुछ अज़ नहीं है।"²पस जब तुम खैरात करो तो अपने आगे नरसिंगा न बजाओ, जैसा रियाकार 'इबादतखानों और कूचों में करते हैं; ताकि लोग उनकी बड़ाई करें मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना अज़ पा चुके।

³बल्कि जब तू खैरात करे तो जो तेरा दहना हाथ करता है; उसे तेरा बाँया हाथ न जाने।⁴ताकि तेरी खैरात पोशीदा रहे, इस सूरत में तेरा आसमानी बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा।

⁵जब तुम दु'आ करो तो रियाकारों की तरह न बनो; क्योंकि वो 'इबादतखानों में और बाज़ारों के मोड़ों पर खड़े होकर दु'आ करना पसंद करते हैं; ताकि लोग उन को देखें; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना बदला पा चुके।⁶बल्कि जब तू दु'आ करे तो अपनी कोठरी में जा और दरवाज़ा बंद करके अपने आसमानी बाप से जो पोशीदगी में है; दु'आ कर इस सूरत में तेरा आसमानी बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा।⁷और दु'आ करते वक़्त ग़ैर क़ौमों के लोगों की तरह बक बक न करो क्योंकि वो समझते हैं; कि हमारे बहुत बोलने की वजह से हमारी सुनी जाएगी।

⁸पस उन की तरह न बनो; क्योंकि तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम किन किन चीज़ों के मोहताज हो।⁹पस तुम इस तरह दु'आ किया करो, " ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है तेरा नाम पाक माना जाए।¹⁰तेरी बादशाही आए। तेरी मज़ी जैसी आस्मान पर पूरी होती है ज़मीन पर भी हो।

¹¹हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।¹²और जिस तरह हम ने अपने कुसूरवारों को मु'आफ़ किया है; तू भी हमारे कुसूरों को मु'आफ़ कर।¹³और हमें आजमाइश में न ला, बल्कि बुराई से बचा; क्योंकि बादशाही और कुदरत और जलाल हमेशा तेरे ही हैं; " आमीन।

¹⁴इसलिए कि अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ़ करेगा।¹⁵और अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ़ न करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ़ न करेगा।

¹⁶जब तुम रोज़ा रखो तो रियाकारों की तरह अपनी सूरत उदास न बनाओ; क्योंकि वो अपना मुँह बिगाड़ते हैं; ताकि लोग उन को रोज़ादार जाने। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अज़ पा चुके।¹⁷बल्कि जब तू रोज़ा रखे तो अपने सिर पर तेल डाल और मुँह धो।¹⁸ताकि आदमी नहीं बल्कि तेरा बाप जो पोशीदगी में है तुझे रोज़ादार जाने। इस सूरत में तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा।

¹⁹अपने वास्ते ज़मीन पर माल जमा' न करो, जहाँ पर कीड़ा और ज़ंग ख़राब करता है; और जहाँ चोर नक्रब लगाते और चुराते हैं।²⁰बल्कि अपने लिए आसमान पर माल जमा' करो; जहाँ पर न कीड़ा ख़राब करता है; न ज़ंग और न वहाँ चोर नक्रब लगाते और चुराते हैं।²¹क्योंकि जहाँ तेरा माल है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

²²बदन का चराग़ आँख है। पस अगर तेरी आँख दुरुस्त हो तो तेरा पूरा बदन रोशन होगा।²³अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा सारा बदन तारीक होगा। पस अगर वो रोशनी जो तुझ में है तारीक हो तो तारीकी कैसी बड़ी होगी।²⁴कोई आदमी दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता; क्योंकि या तो एक से दुश्मनी रखे और दूसरे से मुहब्बत या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज़ जानेगा; तुम "खुदा" और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते।

²⁵इसलिए मैं तुम से कहता हूँ; कि अपनी जान की फ़िक्र न करना कि हम क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, और न अपने बदन की कि क्या पहनेंगे; क्या जान ख़ूराक से और बदन पोशाक से बढ़ कर नहीं।²⁶हवा के परिन्दों को देखो कि न बोते हैं न काटते न कोठियों में जमा' करते हैं; तोभी तुम्हारा आसमानी बाप उनको खिलाता है क्या तुम उस से ज़्यादा क्रुद्र नहीं रखते?

²⁷तुम में से ऐसा कौन है जो फ़िक्र करके अपनी उम्र एक घड़ी भी बढ़ा सके?²⁸और पोशाक के लिए क्यों फ़िक्र करते हो; जंगली सोसन के दरख़्तों को ग़ौर से देखो कि वो किस तरह बढ़ते हैं; वो न मेहनत करते हैं न काटते हैं।²⁹तोभी मैं तुम से कहता हूँ; कि सुलेमान भी बावजूद अपनी सारी शानो शौकत के उन में से किसी की तरह कपड़े पहने न था।

³⁰पस जब "खुदा" मैदान की घास को जो आज है और कल तंदूर में झोंकी जाएगी; ऐसी पोशाक पहनाता है, तो "ऐ कम ईमान वालो " तुम को क्यों न पहनाएगा?³¹"इस लिए फ़िक्रमन्द होकर ये न कहो, 'हम क्या खाएँगे ? या क्या पीएँगे ? या क्या पहनेंगे?'"

³²क्योंकि इन सब चीज़ों की तलाश में ग़ैर क़ौमों रहती हैं; और तुम्हारा आसमानी बाप जानता है, कि तुम इन सब चीज़ों के मोहताज हो।³³बल्कि तुम पहले उसकी बादशाही और उसकी रास्बाज़ी की तलाश करो तो ये सब चीज़ें भी तुम को मिल जाएँगी।³⁴पस कल के लिए फ़िक्र न करो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िक्र कर लेगा; आज के लिए आज ही का दुःख काफ़ी है।

Chapter 7

¹बुराई न करो, कि तुम्हारी भी बुराई न की जाए।²क्योंकि जिस तरह तुम बुराई करते हो उसी तरह तुम्हारी भी बुराई की जाएगी और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।

³तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है और अपनी आँख के शहतीर पर गौर नहीं करता?⁴और जब तेरी ही आँख में शहतीर है तो तू अपने भाई से क्यों कर कह सकता है, 'ला, तेरी आँख में से तिनका निकाल दूँ'।⁵ऐ रियाकार, पहले अपनी आँख में से तो शहतीर निकाल, फिर अपने भाई की आँख में से तिनके को अच्छी तरह देख कर निकाल सकता है।

⁶पाक चीज़ कुत्तों को ना दो, और अपने मोती सुअरों के आगे न डालो, ऐसा न हो कि वो उनको पाँवों के तले रौंदें और पलट कर तुम को फाड़ें।

⁷माँगो तो तुम को दिया जाएगा। ढूँडो तो पाओगे; दरवाज़ा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।⁸क्योंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है; और जो ढूँडता है वो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा।⁹तुम में ऐसा कौन सा आदमी है, कि अगर उसका बेटा उससे रोटी माँगे तो वो उसे पत्थर दे?¹⁰या अगर मछली माँगे तो उसे साँप दे!

¹¹पस जबकि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है; अपने माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा।

¹²पस जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम भी उनके साथ करो; क्योंकि तौरेत और नबियों की ता'लीम यही है।

¹³तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि वो दरवाज़ा चौड़ा है, और वो रास्ता चौड़ा है जो हलाकत को पहुँचाता है; और उससे दाखिल होने वाले बहुत हैं।¹⁴क्योंकि वो दरवाज़ा तंग है और वो रास्ता सुकड़ा है जो ज़िन्दगी को पहुँचाता है और उस के पाने वाले थोड़े हैं।

¹⁵झूटे नबियों से खबरदार रहो! जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं; मगर अन्दर से फाड़ने वाले भेड़िये की तरह हैं।¹⁶उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे; क्या झाड़ियों से अंगूर या ऊँट कटारों से अंजीर तोड़ते हैं?¹⁷इसी तरह हर एक अच्छा दरख्त अच्छा फल लाता है और बुरा दरख्त बुरा फल लाता है।

¹⁸अच्छा दरख्त बुरा फल नहीं ला सकता, न बुरा दरख्त अच्छा फल ला सकता है।¹⁹जो दरख्त अच्छा फल नहीं लाता वो काट कर आग में डाला जाता है।²⁰पस उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे।

²¹"जो मुझ से 'ऐ खुदावन्द! ऐ खुदावन्द!' कहते हैं उन में से हर एक आस्मान की बादशाही में दाखिल न होगा। मगर वही जो मेरे आस्मानी बाप की मर्ज़ी पर चलता है।²²उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, 'ऐ खुदावन्द! खुदावन्द! क्या हम ने तेरे नाम से नबुव्वत नहीं की, और तेरे नाम से बदरुहों को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से मोजिज़े नहीं दिखाए?'²³उस दिन मैं उन से साफ़ कह दूँगा, 'मेरी तुम से कभी वाक़फ़ियत न थी, ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'"

²⁴"पस जो कोई मेरी यह बातें सुनता और उन पर अमल करता है वह उस अक्लमन्द आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने चट्टान पर अपना घर बनाया।²⁵और मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चलीं और उस घर पर टक्करे लगीं; लेकिन वो न गिरा क्योंकि उस की बुन्याद चट्टान पर डाली गई थी।

²⁶और जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर अमल नहीं करता वह उस बेवकूफ़ आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने अपना घर रेत पर बनाया।²⁷और मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चलीं, और उस घर को सदमा पहुँचा और वो गिर गया, और बिल्कुल बर्बाद हो गया।"

²⁸जब ईसा' ने यह बातें खत्म कीं तो ऐसा हुआ कि भीड़ उस की तालीम से हैरान हुई।²⁹क्योंकि वह उन के आलिमों की तरह नहीं बल्कि साहिब-ए-इख्तियार की तरह उनको ता'लीम देता था।

Chapter 8

¹जब वो उस पहाड़ से उतरा तो बहुत सी भीड़ उस के पीछे हो ली।²और देखो : एक कोढ़ी ने पास आकर उसे सज्दा किया और कहा, “ऐ खुदावन्द! अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।”³उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू पाक-साफ़ हो जा।” वह फ़ौरन कोढ़ से पाक-साफ़ हो गया।

⁴ईसा' ने उस से कहा, “खबरदार! किसी से न कहना बल्कि जाकर अपने आप को काहिन को दिखा; और जो नज़्र मूसा ने मुकर्रर की है उसे गुज़रान ; ताकि उन के लिए गवाही हो।”

⁵जब वो कफ़र्नहूम में दाखिल हुआ तो एक सूबेदार उसके पास आया; और उसकी मिन्नत करके कहा।⁶“ऐ खुदावन्द, मेरा खादिम फ़ालिज का मारा घर में पड़ा है; और बहुत ही तकलीफ़ में है।”⁷उस ने उस से कहा, “मैं आ कर उसे शिफ़ा दूँगा।”

⁸सूबेदार ने जवाब में कहा “ऐ खुदावन्द, मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए; बल्कि सिर्फ़ ज़बान से कह दे तो मेरा खादिम शिफ़ा पाएगा।⁹क्योंकि मैं भी दूसरे के इख़्तियार में हूँ; और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और दूसरे से ‘आ!’ तो वह आता है। और अपने नौकर से ये कर ‘तो वह करता है।”¹⁰ईसा' ने ये सुनकर त'अज्जुब किया और पीछे आने वालों से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा ईमान नहीं पाया।

¹¹और मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत सारे पूरब और पश्चिम से आ कर अब्राहम, इज़्हाक़ और याकूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे।

¹²मगर बादशाही के बेटे बाहर अंधेरे में डाले जायेंगे; जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”¹³और ईसा' ने सूबेदार से कहा, “जा! जैसा तू ने यक़ीन किया तेरे लिए वैसा ही हो।” और उसी घड़ी खादिम ने शिफ़ा पाई।

¹⁴और ईसा' ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को बुखार में पड़ी देखा।¹⁵उस ने उसका हाथ छुआ और बुखार उस पर से उतर गया ; और वो उठ खड़ी हुई और उसकी ख़िदमत करने लगी।

¹⁶जब शाम हुई तो उसके पास बहुत से लोगों को लाए; जिन में बदरूहें थी उसने बदरूहों को ज़बान ही से कह कर निकाल दिया; और सब बीमारों को अच्छा कर दिया।¹⁷ताकि जो यसायाह नबी के ज़रिये कहा गया था, वो पूरा हो: “उसने आप हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और बीमारियाँ उठा लीं।”

¹⁸जब ईसा' ने अपने चारो तरफ़ बहुत सी भीड़ देखी तो पार चलने का हुक्म दिया।¹⁹और एक आलिम ने पास आकर उस से कहा “ऐ उस्ताद, जहाँ कहीं भी तू जाएगा मैं तेरे पीछे चलूँगा।”²⁰ईसा' ने उस से कहा, “लोमड़ियों के भट होते हैं और हवा के परिन्दों के घोंसले, मगर इबने आदम के लिए सर रखने की भी जगह नहीं।”

²¹एक और शागिर्द ने उस से कहा, “ऐ खुदावन्द, मुझे इजाज़त दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ।”²²ईसा' ने उससे कहा, “तू मेरे पीछे चल और मुद्दों को अपने मुद्दें दफ़न करने दे।”

²³जब वो नाव पर चढ़ा तो उस के शागिर्द उसके साथ हो लिए।²⁴और देखो झील में ऐसा बड़ा तूफ़ान आया कि नाव लहरों से छिप गई, मगर वो सोता रहा ।

²⁵उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा “ऐ खुदावन्द, हमें बचा, हम हलाक हुए जाते हैं”।

²⁶उसने उनसे कहा “ऐ कम ईमान वाले ! डरते क्यों हो?”तब उसने उठकर हवा और पानी को डाँटा और बड़ा अम्म हो गया।²⁷और लोग ता'अज्जुब करके कहने लगे “ये किस तरह का आदमी है कि हवा और पानी सब इसका हुक्म मानते हैं।”

²⁸जब वो उस पार गदरीनियों के मुल्क में पहुँचा तो दो आदमी जिन में बदरूहें थी; क़ब्रों से निकल कर उससे मिले: वो ऐसे तंग मिज़ाज थे कि कोई उस रास्ते से गुज़र नहीं सकता था।²⁹और देखो उन्होंने चिल्लाकर कहा “ऐ “खुदा” के बेटे हमें तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिए यहाँ आया है कि वक़्त से पहले हमें अज़ाब में डाले?”

³⁰उसने कुछ दूर बहुत से सूअरों का गोल चर रहा था।³¹पस बदरूहों ने उसकी मिन्नत करके कहा “अगर तू हम को निकालता है तो हमें सूअरों के गोल में भेज दे।”³²उसने उनसे कहा “जाओ।”वो निकल कर सूअरों के अन्दर चली गई; और देखो; सारा गोल किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और पानी में डूब मरा।

³³और चराने वाले भागे और शहर में जाकर सब माजरा और उनके हालात जिन में बदरूहें थी बयान किया।³⁴और देखो सारा शहर ईसा' से मिलने को निकला और उसे देख कर मिन्नत की, कि हमारी सरहदों से बाहर चला जा।

Chapter 9

¹फिर वो नाव पर चढ़ कर पार गया; और अपने शहर में आया।²और देखो, लोग एक फ़ालिज मारे हुए को जो चारपाई पर पड़ा हुआ था उसके पास लाए; ईसा' ने उसका ईमान देखकर मप्रलूज से कहा "बेटा, इत्मीनान रख। तेरे गुनाह मुआफ़ हुए।"

³और देखो कुछ आलिमों ने अपने दिल में कहा, "ये कुफ़्र बकता है" ईसा' ने उनके खयाल मा'लूम करके कहा, "तुम क्यों अपने दिल में बुरे खयाल लाते हो?"

⁵आसान क्या है? ये कहना तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए; या ये कहना; उठ और चल फिर।⁶लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि इबने आदम को ज़मीन पर गुनाह मु'आफ़ करने का इख्तियार है," उसने फ़ालिज मारे हुए से कहा, "उठ, अपनी चारपाई उठा और अपने घर चला जा।"

⁷वो उठ कर अपने घर चला गया।⁸लोग ये देख कर डर गए; और "खुदा" की बड़ाई करने लगे; जिसने आदमियों को ऐसा इख्तियार बख़्शा।⁹ईसा' ने वहाँ से आगे बढ़कर मत्ती नाम एक शख्स को महसूल की चौकी पर बैठे देखा; और उस से कहा, "मेरे पीछे हो ले।" वो उठ कर उसके पीछे हो लिया।

¹⁰जब वो घर में खाना खाने बैठा; तो ऐसा हुआ कि बहुत से महसूल लेने वाले और गुनहगार आकर "ईसा" और उसके शागिर्दों के साथ खाना खाने बैठे।

¹¹फ़रीसियों ने ये देख कर उसके शागिर्दों से कहा, "तुम्हारा उस्ताद महसूल लेने वालों और गुनहगारों के साथ क्यों खाता है?"

¹²उसने ये सुनकर कहा, "तंदरूस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं बल्कि बीमारों को।"¹³मगर तुम जाकर उसके मा'ने मा'लूम करो: मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ।¹⁴क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

¹⁴उस वक़्त यूहन्ना के शागिर्दों ने उसके पास आकर कहा, "क्या वजह है कि हम और फ़रीसी तो अक्सर रोज़ा रखते हैं, और तेरे शागिर्द रोज़ा नहीं रखते?"¹⁵ईसा' ने उस से कहा, "क्या बाराती जब तक दुल्हा उनके साथ है, मातम कर सकते हैं? मगर वो दिन आएँगे; कि दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा; उस वक़्त वो रोज़ा रखेंगे।

¹⁶कोरे कपड़े का पैवंद पुरानी पोशाक में कोई नहीं लगाता क्योंकि वो पैवंद पोशाक में से कुछ खींच लेता है और वो ज़्यादा फट जाती है।

¹⁷और नई मय पुरानी मशकों में नहीं भरते वरना मशकें फट जाती हैं; और मय बह जाती है, और मशकें बर्बाद हो जाती हैं; बल्कि नई मय नई मशको में भरते हैं; और वो दोनों बची रहती हैं।"

¹⁸वो उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो एक सरदार ने आकर उसे सज्दा किया और कहा, "मेरी बेटी अभी मरी है लेकिन तू चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वो जिन्दा हो जाएगी।"¹⁹ईसा' उठ कर अपने शागिर्दों समेत उस के पीछे हो लिया।

²⁰और देखो; एक 'औरत ने जिसके बारह बरस से खून जारी था; उसके पीछे आकर उस की पोशाक का किनारा छुआ।²¹क्योंकि वो अपने जी में कहती थी; अगर सिर्फ उसकी पोशाक ही छू लूँगी "तो अच्छी हो जाऊँगी।"²²ईसा' ने फिर कर उसे देखा और कहा, "बेटी, इत्मीनान रख! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा कर दिया।" पस वो 'औरत उसी घड़ी अच्छी हो गई।

²³जब ईसा' सरदार के घर में आया और बाँसुरी बजाने वालों को और भीड़ को शोर मचाते देखा।²⁴तो कहा, "हट जाओ! क्योंकि लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।" वो उस पर हँसने लगे।

²⁵मगर जब भीड़ निकाल दी गई तो उस ने अन्दर जाकर उसका हाथ पकड़ा और लड़की उठी।²⁶और इस बात की शोहरत उस तमाम इलाक़े में फैल गई।

²⁷जब ईसा' वहाँ से आगे बढ़ा तो दो अन्धे उसके पीछे ये पुकारते हुए चले "ऐ इब्न-ए-दाऊद, हम पर रहम कर।"²⁸जब वो घर में पहुँचा तो वो अन्धे उसके पास आए और 'ईसा' ने उनसे कहा "क्या तुम को यक़ीन है कि मैं ये कर सकता हूँ?" उन्होंने ने उस से कहा "हां खुदावन्द।"

²⁹फिर उस ने उन की आँखें छू कर कहा, "तुम्हारे यक़ीन के मुताबिक़ तुम्हारे लिए हो।"³⁰और उन की आँखें खुल गई और ईसा' ने उनको ताकीद करके कहा, "खबरदार, कोई इस बात को न जाने!"³¹मगर उन्होंने निकल कर उस तमाम इलाक़े में उसकी शोहरत फैला दी।

³²जब वो बाहर जा रहे थे, तो देखो लोग एक गूँगे को जिस में बदरूह थी उसके पास लाए।³³और जब वो बदरूह निकाल दी गई तो गूँगा बोलने लगा; और लोगों ने ता'अज्जुब करके कहा, "इस्त्राईल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।"³⁴मगर फ़रीसियों ने कहा, "ये तो बदरूहों के सरदार की मदद से बदरूहों को निकालता है।"

³⁵ईसा' सब शहरों और गाँव में फिरता रहा, और उनके इबादतखानों में ता'लीम देता और बादशाही की खुशखबरी का एलान करता और और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी दूर करता रहा।³⁶और जब उसने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया; क्योंकि वो उन भेड़ों की तरह थे जिनका चरवाहा न हो बुरी हालत में पड़े थे।

³⁷उस ने अपने शागिर्दों से कहा, "फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े हैं।"³⁸पस फ़सल के मालिक से मिन्नत करो कि वो अपनी फ़सल काटने के लिए मज़दूर भेज दे।"

Chapter 10

¹फिर उस ने अपने बारह शागिर्दों को पास बुला कर उनको बदरूहों पर इख्तियार बख्शा कि उनको निकालें और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करें।

²और बारह रसूलों के नाम ये हैं; पहला शमा'ऊन, जो पतरस कहलाता है और उस का भाई अन्द्रियास ज़बदी का बेटा या'कूब और उसका भाई यूहन्ना।

³फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, तोमा, और मत्ती महसूल लेने वाला। ⁴हल्फ़ई का बेटा या'कूब और तद्दी शमा'ऊन कनानी और यहूदाह इस्करीयोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।

⁵इन बारह को ईसा' ने भेजा और उनको हुक्म देकर कहा, "गैर क्रौमों की तरफ़ न जाना और सामरियों के किसी शहर में भी दाखिल न होना। ⁶बल्कि इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना। ⁷और चलते चलते ये एलान करना 'आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।'

⁸बीमारों को अच्छा करना; मुर्दों को ज़िलावा कोढ़ियों को पाक साफ़ करना बदरूहों को निकालना; तुम ने मुफ़्त पाया मुफ़्त ही देना। ⁹न सोना अपने कमरबन्द में रखना - न चाँदी और न पैसे। ¹⁰रास्ते के लिए न झोली लेना न दो दो कुर्ते न जूतियाँ न लाठी; क्योंकि मज़दूर अपनी ख़ुराक का हक़दार है।

¹¹जिस शहर या गाँव में दाखिल हो मालूम करना कि उस में कौन लायक़ है और जब तक वहाँ से रवाना न हो उसी के यहाँ रहना। ¹²और घर में दाखिल होते वक़्त उसे दु'आ-ए-ख़ैर देना। ¹³अगर वो घर लायक़ हो तो तुम्हारा सलाम उसे पहुँचे; और अगर लायक़ न हो तो तुम्हारा सलाम तुम पर फिर आए।

¹⁴और अगर कोई तुम को कुबूल न करे, और तुम्हारी बातें न सुने तो उस घर या शहर से बाहर निकलते वक़्त अपने पैरों की धूल झाड़ देना। ¹⁵मैं तुम से सच कहता हूँ, कि 'अदालत के दिन उस शहर की निस्वत सदूम और अमूरा के इलाक़े का हाल ज़्यादा बर्दाश्त के लायक़ होगा।

¹⁶देखो, मैं तुम को भेजता हूँ; गोया भेड़ों को भेड़ियों के बीच पस साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह सीधे बनो। ¹⁷मगर आदमियों से खबरदार रहो, क्योंकि वह तुम को अदालतों के हवाले करेंगे; और अपने इबादतख़ानों में तुम को कोड़े मारेंगे। ¹⁸और तुम मेरी वजह से हाकिमों और बादशाहों के सामने हाज़िर किए जाओगे; ताकि उनके और गैर क्रौमों के लिए गवाही हो।

¹⁹लेकिन जब वो तुम को पकड़वाएँगे; तो फ़िक्र न करना कि हम किस तरह कहें या क्या कहें; क्योंकि जो कुछ कहना होगा उसी वक़्त तुम को बताया जाएगा।

²⁰क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं बल्कि तुम्हारे आसमानी बाप का रूह है; जो तुम में बोलता है।

²¹भाई को भाई क़त्ल के लिए हवाले करेगा और बेटे को बाप और बेटा अपने माँ बाप के बरखिलाफ़ खड़े होकर उनको मरवा डालेंगे। ²²और मेरे नाम के ज़रिए से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे; मगर जो आखिर तक बर्दाश्त करेगा वही नज़ात पाएगा। ²³लेकिन जब तुम को एक शहर सताए तो दूसरे को भाग जाओ; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम इस्राईल के सब शहरों में न फिर चुके होगे कि 'इब्न-ए-आदम आजाएगा।

²⁴शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न नौकर अपने मालिक से। ²⁵शागिर्द के लिए ये काफ़ी है कि अपने उस्ताद की तरह हो; और नौकर के लिए ये कि अपने मालिक की तरह जब उन्होंने घर के मालिक को बा'लज़बूल कहा; तो उसके घराने के लोगों को क्यों न कहेंगे।

²⁶पस उनसे न डरो; क्योंकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी। ²⁷जो कुछ मैं तुम से अन्धेरे में कहता हूँ; उजाले में कहो और जो कुछ तुम कान में सुनते हो छतो पर उसका एलान करो।

²⁸जो बदन को क़त्ल करते हैं और रूह को क़त्ल नहीं कर सकते उन से न डरो बल्कि उसी से डरो जो रूह और बदन दोनों को जहन्नुम में हलाक कर सकता है।

²⁹क्या पैसे की दो चिड़ियाँ नहीं बिकती? और उन में से एक भी तुम्हारे बाप की मज़ी के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। ³⁰बल्कि तुम्हारे सर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ³¹पस डरो नहीं; तुम्हारी क़द्र तो बहुत सी चिड़ियों से ज़्यादा है।

³²पस जो कोई आदमियों के सामने मेरा इक़रार करेगा; मैं भी अपने बाप के सामने जो आसमान पर है उसका इक़रार करूँगा। ³³मगर जो कोई आदमियों के सामने मेरा इन्कार करेगा मैं भी अपने बाप के जो आस्मान पर है उसका इन्कार करूँगा।

³⁴ये न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करवाने आया हूँ; सुलह करवाने नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ। ³⁵क्योंकि मैं इसलिए आया हूँ, कि आदमी को उसके बाप से और बेटी को उस की माँ से और बहू को उसकी सास से जुदा कर दूँ। ³⁶और आदमी के दुश्मन उसके घर के ही लोग होंगे।

³⁷जो कोई बाप या माँ को मुझ से ज़्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक़ नहीं; और जो कोई बेटे या बेटी को मुझ से ज़्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक़ नहीं।

³⁸जो कोई अपनी सलीब न उठाए और मेरे पीछे न चले वो मेरे लायक़ नहीं। ³⁹जो कोई अपनी जान बचाता है उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोता है उसे बचाएगा।

⁴⁰जो तुम को कुबूल करता है वो मुझे कुबूल करता है और जो मुझे कुबूल करता है वो मेरे भेजने वाले को कुबूल करता है। ⁴¹जो नबी के नाम से नबी को कुबूल करता है; वो नबी का अज़्र पाएगा; और जो रास्तबाज़ के नाम से रास्तबाज़ को कुबूल करता है वो रास्तबाज़ का अज़्र पाएगा।

⁴²और जो कोई शागिर्द के नाम से इन छोटों में से किसी को सिर्फ़ एक प्याला ठंडा पानी ही पिलाएगा; मैं तुम से सच कहता हूँ वो अपना अज़्र हरगिज़ न खोएगा।"

Chapter 11

¹'जब ईसा' अपने बारह शागिदों को हुक्म दे चुका, तो ऐसा हुआ कि वहाँ से चला गया ताकि उनके शहरों में ता'लीम दे और एलान करे।²यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कैदखाने में मसीह के कामों का हाल सुनकर अपने शागिदों के ज़रिये उससे पुछवा भेजा।³"आने वाला तू ही है या हम दूसरे की राह देखें?"

⁴'ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो जाकर यूहन्ना से बयान कर दो।"⁵"कि अन्धे देखते और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी पाक साफ़ किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं और मुर्दे ज़िन्दा किए जाते हैं और गरीबों को खुशखबरी सुनाई जाती है।"⁶और मुबारक वो है जो मेरी वजह से ठोकर न खाए।"

⁷जब वो रवाना हो लिए तो ईसा' ने यूहन्ना के बारे में लोगों से कहना शुरू किया कि "तुम वीराने में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को?"⁸तो फिर क्या देखने गए थे क्या महीन कपड़े पहने हुए शाख्स को? देखो जो महीन कपड़े पहनते हैं वो बादशाहों के घरों में होते हैं।

⁹तो फिर क्यों गए थे? क्या एक नबी को देखने? हाँ मैं तुम से कहता हूँ बल्कि नबी से बड़े को।¹⁰ये वही है जिसके बारे में लिखा है कि 'देख मैं अपना पैग़म्बर तेरे आगे भेजता हूँ जो तेरा रास्ता तेरे आगे तैयार करेगा'

¹¹मैं तुम से सच कहता हूँ; जो औरतों से पैदा हुए हैं, उन में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई नहीं हुआ, लेकिन जो आसमान की बादशाही में छोटा है वो उस से बड़ा है।¹²और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक आसमान की बादशाही पर ज़ोर होता रहा है; और ताक़तवर उसे छीन लेते हैं।

¹³क्योंकि सब नबियों और तौरत ने यूहन्ना तक नबुव्वत की।¹⁴और चाहो तो मानो; एलिया जो आनेवाला था; यही है।¹⁵जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले!

¹⁶"पस इस ज़माने के लोगों को मैं किस की मिसाल दूँ? वो उन लड़कों की तरह हैं, जो बाज़ारों में बैठे हुए अपने साथियों को पुकार कर कहते हैं।"¹⁷हम ने तुम्हारे लिए बाँसुली बजाई और तुम न नाचे। हम ने मातम किया और तुम ने छाती न पीटी'

¹⁸क्योंकि यूहन्ना न खाता आया न पीता और वो कहते हैं उस में बदरूह है।¹⁹इब्न-ए-आदम खाता पीता आया। और वो कहते हैं, 'देखो खाऊ और शराबी आदमी महसूल लेने वालों और गुनाहगारों का यार। मगर हिक्मत अपने कामों से रास्त साबित हुई है।'"

²⁰वो उस वक़्त उन शहरों को मलामत करने लगा जिनमें उसके अकसर मो'जिज़े ज़ाहिर हुए थे; क्योंकि उन्होंने तौबा न की थी।²¹"ऐ खुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस ! ऐ बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस ! क्योंकि जो मोजिज़े तुम में हुए अगर सूर और सैदा में होते तो वो टाट ओढ़ कर और खाक में बैठ कर कब के तौबा कर लेते।

²²मैं तुम से सच कहता हूँ; कि 'अदालत के दिन सूर और सैदा का हाल तुम्हारे हाल से ज़्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।

²³और ऐ कफ़रनहूम, क्या तू आस्मान तक बुलन्द किया जाएगा? तू तो आलम -ए अर्वाह में उतरेगा क्योंकि जो मो'जिज़े तुम में ज़ाहिर हुए अगर सदूम में होते तो आज तक क़ायम रहता।"²⁴मगर मैं तुम से कहता हूँ कि 'अदालत के दिन सदूम के इलाक़े का हाल तेरे हाल से ज़्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।"

²⁵उस वक़्त ईसा' ने कहा, "ऐ बाप, आस्मान-ओ-ज़मीन के खुदावन्द मैं तेरी हम्द करता हूँ कि तू ने यह बातें समझदारों और अक़लमन्दों से छिपाई और बच्चों पर ज़ाहिर कीं।"²⁶हाँ ऐ बाप!, क्योंकि ऐसा ही तुझे पसन्द आया।²⁷मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया और कोई बेटे को नहीं जानता सिवा बाप के और कोई बाप को नहीं जानता सिवा बेटे के और उसके जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर करना चाहे।

²⁸ऐ मेहनत उठाने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुम को आराम दूँगा।²⁹मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं हलीम हूँ और दिल का फ़िरोतन तो तुम्हारी जानें आराम पाएँगी,³⁰क्योंकि मेरा जूआ मुलायम है और मेरा बोझ हल्का।"

Chapter 12

¹‘उस वक्रत ईसा’ सबत के दिन खेतों में हो कर गया, और उसके शागिर्दों को भूक लगी और वो बालियां तोड़ तोड़ कर खाने लगे।²फ़रीसियों ने देख कर उससे कहा “देख तेरे शागिर्द वो काम करते हैं जो सबत के दिन करना जायज़ नहीं।”

³उसने उनसे कहा “क्या तुम ने ये नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उस के साथी भूके थे; तो उसने क्या किया?⁴‘वो क्यूँकर “खुदा” के घर में गया और नज़्र की रोटियाँ खाई जिनको खाना उसको जायज़ न था; न उसके साथियों को मगर सिर्फ़ काहिनों को?”

⁵क्या तुम ने तौरत में नहीं पढ़ा कि काहिन सबत के दिन हैकल में सबत की बेहुरमती करते हैं; और बेकुसूर रहते हैं?⁶लेकिन मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वो है जो हैकल से भी बड़ा है।

⁷लेकिन अगर तुम इसका मतलब जानते कि, ‘मैं कुर्बानी नहीं बल्कि, रहम पसन्द करता हूँ।’ तो बेकुसूरों को कुसूरवार न ठहराते।⁸क्यूँकि इब्न-ए-आदम सबत का मालिक है।”

⁹वो वहाँ से चलकर उन के इबादतखाने में गया।¹⁰और देखो; वहाँ एक आदमी था जिस का हाथ सूखा हुआ था उन्होंने उस पर इल्ज़ाम लगाने के 'इरादे से ये पुछा, “क्या सबत के दिन शिफ़ा देना जायज़ है।”

¹¹उसने उनसे कहा, “तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक भेड़ हो और वो सबत के दिन गड्ढे में गिर जाए तो वो उसे पकड़कर न निकाले?”¹²पस आदमी की क्रद तो भेड़ से बहुत ही ज़्यादा है; इसलिए सबत के दिन नेकी करना जायज़ है।”

¹³तब उसने उस आदमी से कहा “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बढ़ाया और वो दूसरे हाथ की तरह दुरुस्त हो गया।¹⁴इस पर फ़रीसियों ने बाहर जाकर उसके बराखिलाफ़ मशवरा किया कि उसे किस तरह हलाक करें।

¹⁵‘ईसा’ ये मा'लूम करके वहाँ से रवाना हुआ; और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए और उसने सब को अच्छा कर दिया,¹⁶और उनको ताकीद की, कि मुझे ज़ाहिर न करना।¹⁷ताकि जो यसायाह नबी की मा'रिफ़त कहा गया था वो पूरा हो।

¹⁸‘देखो, ये मेरा खादिम है जिसे मैं ने चुना मेरा प्यारा जिससे मेरा दिल खुश है। मैं अपना रूह इस पर डालूँगा, और ये ग़ैर क़ौमों को इन्साफ़ की ख़बर देगा।

¹⁹ये न झगड़ा करेगा न शोर, और न बाज़ारों में कोई इसकी आवाज़ सुनेगा।²⁰ये कुचले हुए सरकन्डे को न तोड़ेगा और धुवाँ उठते हुए सन को न बुझाएगा; जब तक कि इन्साफ़ की फ़तह न कराए।²¹और इसके नाम से ग़ैर क़ौमों उम्मीद रखेंगी।”

²²उस वक्रत लोग उसके पास एक अंधे गूंगे को लाए; उसने उसे अच्छा कर दिया चुनाचे वो गूँगा बोलने और देखने लगा।²³“सारी भीड़ हैरान होकर कहने लगी; क्या ये इब्न-ए-आदम है?”

²⁴फ़रीसियों ने सुन कर कहा, “ये बदरूहों के सरदार बा'लज़बूल की मदद के बग़ैर बदरूहों को नहीं निकालता।”²⁵उसने उनके खयालों को जानकर उनसे कहा, “जिस बादशाही में फ़ूट पड़ती है वो वीरान हो जाती है और जिस शहर या घर में फ़ूट पड़ेगी वो क़ायम न रहेगा।

²⁶और अगर शैतान ही शैतान को निकाले तो वो आप ही अपना मुखालिफ़ हो गया; फिर उसकी बादशाही क्यूँकर क़ायम रहेगी?²⁷अगर मैं बा'लज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे किस की मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे।

²⁸लेकिन अगर मैं “खुदा” के रूह की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो “खुदा” की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची।²⁹या क्यूँकर कोई आदमी किसी ताक़तवर के घर में घुस कर उसका माल लूट सकता है; जब तक कि पहले उस ताक़तवर को न बाँध ले? फिर वो उसका घर लूट लेगा।³⁰जो मेरे साथ नहीं वो मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा' नहीं करता वो बिखेरता है।

³¹इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि आदमियों का हर गुनाह और कुफ़्र तो मुआफ़ किया जाएगा; मगर जो कुफ़्र रूह के हक़ में हो वो मु'आफ़ न किया जाएगा।

³²और जो कोई इब्न-ए-आदम के खिलाफ़ कोई बात कहेगा वो तो उसे मु'आफ़ की जाएगी; मगर जो कोई रूह-उल-कुदूस के खिलाफ़ कोई बात कहेगा; वो उसे मु'आफ़ न की जाएगी न इस आलम में न आने वाले में।

³³या तो दरख़्त को भी अच्छा कहो; और उसके फ़ल को भी अच्छा, या दरख़्त को भी बुरा कहो और उसके फ़ल को भी बुरा; क्यूँकि दरख़्त फ़ल से पहचाना जाता है।³⁴ऐ सॉप के बच्चो! तुम बुरे होकर क्यूँकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्यूँकि जो दिल में भरा है वही मुँह पर आता है।³⁵अच्छा आदमी अच्छे खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है; बुरा आदमी बुरे खज़ाने से बुरी चीज़ें निकालता है।

³⁶मैं तुम से कहता हूँ; कि जो निकम्मी बात लोग कहेंगे; 'अदालत के दिन उसका हिसाब देंगे।³⁷क्यूँकि तू अपनी बातों की वजह से रास्तबाज़ ठहराया जाएगा; और अपनी बातों की वजह से कुसूरवार ठहराया जाएगा।”

³⁸इस पर कुछ आलिमों और फ़रीसियों ने जवाब में उससे कहा, “ऐ उस्ताद हम तुझ से एक निशान देखना चाहते हैं।”³⁹उस ने जवाब देकर उनसे कहा, “इस ज़माने के बुरे और बे ईमान लोग निशान तलब करते हैं; मगर यूनाह नबी के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा।⁴⁰क्यूँकि जैसे यूनाह तीन रात तीन दिन मछली के पेट में रहा; वैसे ही इबने आदम तीन रात तीन दिन ज़मीन के अन्दर रहेगा।

⁴¹निनवे शहर के लोग 'अदालत के दिन इस ज़माने के लोगों के साथ खड़े होकर इनको मुजरिम ठहराएँगे; क्यूँकि उन्होंने यूनाह के एलान पर तौबा कर ली; और देखो, यह वो है जो यूनाह से भी बड़ा है।

⁴²दक्खिन की मलिका 'अदालत के दिन इस ज़माने के लोगों के साथ उठकर इनको मुजरिम ठहराएगी; क्यूँकि वो दुनिया के किनारे से सुलेमान की हिकमत सुनने को आई; और देखो यहाँ वो है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

⁴³जब बदरूह आदमी में से निकलती है तो सूखे मक़ामों में आराम ढूँडती फिरती है, और नहीं पाती।⁴⁴तब कहती है, ‘मैं अपने उस घर में फिर जाऊँगी जिससे निकली थी।’ और आकर उसे खाली और झड़ा हुआ और आरास्ता पाती है।⁴⁵फिर जा कर और सात रूहें अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो दाखिल होकर वहाँ बसती है; और उस आदमी का पिछला हाल पहले से बदतर हो जाता है, इस ज़माने के बुरे लोगों का हाल भी ऐसा ही होगा।”

⁴⁶जब वो भीड़ से ये कह रहा था, उसकी माँ और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बात करना चाहते थे।⁴⁷किसी ने उससे कहा, “देख तेरी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।”

⁴⁸उसने खबर देने वाले को जवाब में कहा “कौन है मेरी माँ और कौन हैं मेरे भाई?”⁴⁹फिर अपने शिष्यों की तरफ हाथ बढ़ा कर कहा, “देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं।”⁵⁰क्योंकि जो कोई मेरे आसमानी बाप की मर्ज़ी पर चले वही मेरा भाई, मेरी बहन और माँ है।”

Chapter 13

¹'उसी रोज़ ईसा' घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा।²उस के पास एसी बड़ी भीड़ जमा' हो गई, कि वो नाव पर चढ़ बैठा, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही।

³और उसने उनसे बहुत सी बातें मिसालों में कहीं "देखो एक बोने वाला बीज बोने निकला।⁴और बोते वक़्त कुछ दाने राह के किनारे गिरे और परिन्दों ने आकर उन्हें चुग लिया।⁵और कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ उनको बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने की वजह से जल्द उग आए।⁶और जब सूरज निकला तो जल गए और जड़ न होने की वजह से सूख गए।

⁷और कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़ कर उनको दबा लिया।⁸और कुछ अच्छी ज़मीन पर गिरे और फल लाए; कुछ सौ गुना कुछ साठ गुना कुछ तीस गुना।⁹जो सुनना चाहता है वो सुन ले!"

¹⁰शागिर्दों ने पास आ कर उससे पूछा "तू उनसे मिसालों में क्या बातें करता है?"¹¹उस ने जवाब में उनसे कहा "इसलिए कि तुम को आस्मान की बादशाही के राज़ की समझ दी गई है, मगर उनको नहीं दी गई।¹²क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उसके पास ज़्यादा हो जाएगा; और जिसके पास नहीं है उस से वो भी ले लिया जाएगा; जो उसके पास है।

¹³मैं उनसे मिसालों में इसलिए बातें कहता हूँ, कि वो देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते।¹⁴उनके हक़ में यसायाह की ये नबूव्वत पूरी होती है कि 'तुम कानों से सुनोगे पर हरगिज़ न समझोगे, और आँखों से देखोगे और हरगिज़ मा'लूम न करोगे।

¹⁵क्योंकि इस उम्मत के दिल पर चर्बी छा गई है, और वो कानों से ऊँचा सुनते हैं; और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं; ताकि ऐसा न हो कि आँखों से मा'लूम करें और कानों से सुनें और दिल से समझें और रुजू लाएँ और मैं उनको शिफ़ा बख़्शूँ।'

¹⁶लेकिन मुबारक हैं तुम्हारी आँखें क्योंकि वो देखती हैं और तुम्हारे कान इसलिए कि वो सुनते हैं।¹⁷क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से नबियों और रास्तबाज़ों की आरजू थी कि जो कुछ तुम देखते हो देखें मगर न देखा और जो बातें तुम सुनते हो सुनें मगर न सुनीं।

¹⁸पस बोनेवाले की मिसाल सुनो।¹⁹जब कोई बादशाही का कलाम सुनता है और समझता नहीं तो जो उसके दिल में बोया गया था उसे वो शैतान छीन ले जाता है ये वो है जो राह के किनारे बोया गया था।

²⁰और वो पथरीली ज़मीन में बोया गया; ये वो है जो कलाम को सुनता है, और उसे फ़ौरन खुशी से कुबूल कर लेता है।²¹लेकिन अपने अन्दर जड़ नहीं रखता बल्कि चंद रोज़ा है, और जब कलाम के वजह से मुसीबत या ज़ुल्म बर्पा होता है तो फ़ौरन ठोकर खाता है।

²²और जो झाड़ियों में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता है और दुनिया की फ़िक्र और दौलत का फ़रेब उस कलाम को दबा देता है; और वो बे फल रह जाता है।²³और जो अच्छी ज़मीन में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता और समझता है और फल भी लाता है; कोई सौ गुना फलता है, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।"

²⁴उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, "आसमान की बादशाही उस आदमी की तरह है; जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।²⁵मगर लोगों के सोते में उसका दुश्मन आया और गेहूँ में कड़वे दाने भी बो गया।²⁶पस जब पत्तियाँ निकलीं और बालें आईं तो वो कड़वे दाने भी दिखाई दिए।

²⁷नौकरों ने आकर घर के मालिक से कहा, 'ऐ खुदावन्द क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? उस में कड़वे दाने कहाँ से आ गए?'²⁸उस ने उनसे कहा, 'ये किसी दुश्मन का काम है, नौकरों ने उससे कहा, तो क्या तू चाहता है कि हम जाकर उनको जमा' करें।'

²⁹उस ने कहा, 'नहीं, ऐसा न हो कि कड़वे दाने जमा' करने में तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो।³⁰कटाई तक दोनों को इकट्ठा बढ़ने दो, और कटाई के वक़्त में काटने वालों से कह दूँगा कि पहले कड़वे दाने जमा कर लो और जलाने के लिए उनके ग़ुठे बाँध लो और गेहूँ मेरे खेत में जमा' कर दो।'"

³¹उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, "आसमान की बादशाही उस राई के दाने की तरह है जिसे किसी आदमी ने लेकर अपने खेत में बो दिया।³²वो सब बीजों से छोटा तो है मगर जब बढ़ता है तो सब तरकारियों से बड़ा और ऐसा दरख़्त हो जाता है, कि हवा के परिन्दे आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।"

³³उस ने एक और मिसाल उनको सुनाई। "आस्मान की बादशाही उस ख़मीर की तरह है जिसे किसी 'औरत ने ले कर तीन पैमाने आटे में मिला दिया और वो होते होते सब ख़मीर हो गया।"

³⁴ये सब बातें ईसा' ने भीड़ से मिसालों में कहीं और बग़ैर मिसालों के वो उनसे कुछ न कहता था।³⁵ताकि जो नबी के ज़रिये कहा गया था वो पूरा हो "मैं मिसालों में अपना मुँह खोलूँगा; मैं उन बातों को ज़ाहिर करूँगा जो बिना -ए- आलम से छिपी रही हैं।"

³⁶उस वक़्त वो भीड़ को छोड़ कर घर में गया और उस के शागिर्दों ने उस के पास आकर कहा, "खेत के कड़वे दाने की मिसाल हमें समझा दे।"³⁷उस ने जवाब में उन से कहा, "अच्छे बीज का बोने वाला इबने आदम है।³⁸और खेत दुनिया है और अच्छा बीज बादशाही के फ़र्ज़न्द और कड़वे दाने उस शैतान के फ़र्ज़न्द हैं।

³⁹जिस दुश्मन ने उन को बोया वो इब्लीस है। और कटाई दुनिया का आखिर है और काटने वाले फ़िरिशते हैं।

⁴⁰पस जैसे कड़वे दाने जमा' किए जाते और आग में जलाए जाते हैं।⁴¹इब्न-ए- आदम अपने फ़िरिशतों को भेजेगा; और वो सब ठोकर खिलाने वाली चीज़ें और बदकारों को उस की बादशाही में से जमा' करेंगे।⁴²और उनको आग की भट्टी में डाल देंगे वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।⁴³उस वक़्त रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे; जिसके कान हों वो सुन ले!

⁴⁴आसमान की बादशाही खेत में छिपे ख़ज़ाने की तरह है जिसे किसी आदमी ने पाकर छिपा दिया और खुशी के मारे जाकर जो कुछ उसका था; बेच डाला और उस खेत को खरीद लिया।⁴⁵"फिर आसमान की बादशाही उस सौदागर की तरह है, जो उम्दा मोतियों की तलाश में था।⁴⁶जब उसे एक बेशक्रीमती मोती मिला तो उस ने जाकर जो कुछ उस का था बेच डाला और उसे खरीद लिया।

⁴⁷फिर आसमान की बादशाही उस बड़े जाल की तरह है; जो दरिया में डाला गया और उस ने हर क्रिस्म की मछलियाँ समेट लीं।⁴⁸और जब भर गया तो उसे किनारे पर खींच लाए; और बैठ कर अच्छी अच्छी तो बर्तनों में जमा' कर लीं और जो खराब थी फ़ेंक दीं।

⁴⁹दुनिया के आखिर में ऐसा ही होगा; फ़रिश्ते निकलेंगे और शरीरों को रास्तबाज़ों से जुदा करेंगे; और उनको आग की भट्टी में डाल देंगे।⁵⁰वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”

⁵¹“क्या तुम ये सब बातें समझ गए?” उन्होंने उससे कहा, “हाँ।”⁵²उसने उससे कहा, “इसलिए हर आलिम जो आसमान की बादशाही का शागिर्द बना है उस घर के मालिक की तरह है जो अपने खज़ाने में से नई और पुरानी चीज़ें निकालता है।”⁵³जब ईसा' ये मिसाल खत्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि वहाँ से रवाना हो गया।

⁵⁴और अपने वतन में आकर उनके इबादतख़ाने में उनको ऐसी ता'लीम देने लगा; कि वो हैरान होकर कहने लगे, “इसमें ये हिकमत और मो'जिज़े कहाँ से आए?

⁵⁵क्या ये बढ़ई का बेटा नहीं? और इस की माँ का नाम मरियम और इस के भाई या'कूब और यूसुफ़ और शमा'ऊन और यहूदा नहीं?⁵⁶और क्या इस की सब बहनें हमारे यहाँ नहीं? फिर ये सब कुछ इस में कहाँ से आया?”

⁵⁷और उन्होंने उसकी वजह से ठोकर खाई मगर ईसा' ने उन से कहा “नबी अपने वतन और अपने घर के सिवा कहीं बेइज़्ज़त नहीं होता।”⁵⁸और उसने उनकी बेऐ'तिकादी की वजह से वहाँ बहुत से मो'जिज़े न दिखाए।

Chapter 14

¹उस वक्त्र चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने ईसा' की शोहरत सुनी।²और अपने खादिमों से कहा "ये यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है वो मुर्दों में से जी उठा है; इसलिए उससे ये मो'जिजे ज़ाहिर होते हैं।"

³क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पस की बीवी हेरोदियास की वजह से यूहन्ना को पकड़ कर बाँधा और कैद खाने में डाल दिया था।⁴क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था कि इसका रखना तुझे जायज़ नहीं।⁵और वो हर चंद उसे क्रल्ल करना चाहता था, मगर आम लोगों से डरता था क्योंकि वो उसे नबी मानते थे।

⁶लेकिन जब हेरोदेस की साल गिरह हुई तो हेरोदियास की बेटी ने महफ़िल में नाच कर हेरोदेस को खुश किया।⁷इस पर उसने क्रसम खाकर उससे वा'दा किया "जो कुछ तू माँगेगी तुझे दूँगा।"

⁸उसने अपनी माँ के सिखाने से कहा, "मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं माँगवा दे।"⁹बादशाह गमगीन हुआ; मगर अपनी क्रसमों और मेहमानों की वजह से उसने हुक्म दिया कि "दे दिया जाए।"

¹⁰और आदमी भेज कर कैद खाने में यूहन्ना का सिर कटवा दिया।¹¹और उस का सिर थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया; और वो उसे अपनी माँ के पास ले गई।¹²और उसके शागिर्दों ने आकर लाश उठाई और उसे दफ़न कर दिया, और जा कर ईसा' को खबर दी।

¹³जब ईसा' ने ये सुना तो वहाँ से नाव पर अलग किसी वीरान जगह को रवाना हुआ और लोग ये सुनकर शहर शहर से पैदल उसके पीछे गए।¹⁴उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर तरस आया; और उसने उनके बीमारों को अच्छा कर दिया।

¹⁵जब शाम हुई तो शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे "जगह वीरान है और वक्त्र गुज़र गया है लोगों को रुख्सत कर दे ताकि गाँव में जाकर अपने लिए खाना खरीद लें।"

¹⁶ईसा' ने उनसे कहा, "इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम ही इनको खाने को दो।"¹⁷उन्होंने उससे कहा "यहाँ हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियों के सिवा और कुछ नहीं।"¹⁸उसने कहा "वो यहाँ मेरे पास ले आओ,"

¹⁹और उसने लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। फिर उस ने वो पाँच रोटियों और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देख कर बर्कत दी और रोटियाँ तोड़ कर शागिर्दों को दीं और शागिर्दों ने लोगों को।²⁰और सब खाकर सेर हो गए; और उन्होंने बिना इस्तेमाल बचे हुए खाने से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाई।

²¹और खानेवाले औरतों और बच्चों के सिवा पाँच हज़ार मर्द के क़रीब थे।

²²और उसने फ़ौरन शागिर्दों को मजबूर किया कि नाव में सवार होकर उससे पहले पार चले जाएँ जब तक वो लोगों को रुख्सत करे।²³और लोगों को रुख्सत करके तन्हा हुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया; और जब शाम हुई तो वहाँ अकेला था।²⁴मगर नाव उस वक्त्र झील के बीच में थी और लहरों से डगमगा रही थी; क्योंकि हवा मुखालिफ़ थी।

²⁵और वो रात के चौथे पहर झील पर चलता हुआ उनके पास आया।²⁶शागिर्द उसे झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए और कहने लगे "भूत है," और डर कर चिल्ला उठे।²⁷ईसा' ने फ़ौरन उन से कहा "इत्मिनान रखबो! मैं हूँ। डरो मत।"

²⁸पतरस ने उससे जवाब में कहा "ऐ खुदावन्द, अगर तू है तो मुझे हुक्म दे कि पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ।"²⁹उस ने कहा, "आ।"पतरस नाव से उतर कर ईसा' के पास जाने के लिए पानी पर चलने लगा।³⁰मगर जब हवा देखी तो डर गया और जब डूबने लगा तो चिल्ला कर कहा "ऐ खुदावन्द, मुझे बचा!"

³¹ईसा' ने फ़ौरन हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। और उससे कहा, "ऐ कम ईमान तूने क्यों शक किया?"³²जब वो नाव पर चढ़ आए तो हवा थम गई;³³जो नाव पर थे, उन्होंने सज्दा करके कहा "यक़ीनन तू "खुदा" का बेटा है!"

³⁴वो नदी पार जाकर गनेसरत के इलाक़े में पहुँचे।³⁵और वहाँ के लोगों ने उसे पहचान कर उस सारे इलाक़े में खबर भेजी; और सब बीमारों को उस के पास लाए।

³⁶और वो उसकी मिन्नत करने लगे कि उसकी पोशाक का किनारा ही छू लें और जितनों ने उसे छुआ वो अच्छे हो गए।

Chapter 15

¹‘उस वक्रत फ़रीसियों और आलिमों ने यरूशलीम से ईसा’ के पास आकर कहा।²“तेरे शागिर्द हमारे बुजुर्गों की रिवायत को क्यूँ टाल देते हैं; कि खाना खाते वक्रत हाथ नहीं धोते? ”³‘उस ने जवाब में उनसे कहा “ तुम अपनी रिवायत से “खुदा” का हुक्म क्यूँ टाल देते हो?

⁴‘क्यूँकि “खुदा” ने फ़रमाया है, ‘तू अपने बाप की और अपनी माँ की ‘इज़्ज़त करना,’ और ‘जो बाप या माँ को बुरा कहे वो ज़रूर जान से मारा जाए।’⁵‘मगर तुम कहते हो कि जो कोई बाप या माँ से कहे, ‘जिस चीज़ का तुझे मुझ से फ़ायदा पहुँच सकता था, ‘वो “खुदा” की नज़्ज़ हो चुकी,’⁶तो वो अपने बाप की इज़्ज़त न करे; पस तुम ने अपनी रिवायत से “खुदा” का कलाम बातिल कर दिया।

⁷‘ऐ रियाकारो! यसायाह ने तुम्हारे हक़ में क्या ख़ूब नबूवत की है,⁸‘ये उम्मत ज़बान से तो मेरी ‘इज़्ज़त करती है मगर इन का दिल मुझ से दूर है।’⁹और ये बेफ़ाइदा मेरी इबादत करते हैं क्यूँकि इन्साना अहकाम की ता’लीम देते हैं।”

¹⁰‘फिर उस ने लोगों को पास बुला कर उनसे कहा, “सुनो और समझो।¹¹जो चीज़ मुँह में जाती है, वो आदमी को नापाक नहीं करती मगर जो मुँह से निकलती है वही आदमी को नापाक करती है।”

¹²‘इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर कहा, “क्या तू जानता है कि फ़रीसियों ने ये बात सुन कर ठोकर खाई?”¹³‘उसने जवाब में कहा, “जो पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ा जाएगा।¹⁴‘उन्हें छोड़ दो, वो अन्धे राह बताने वाले हैं; और अगर अन्धे को अन्धा राह बताएगा तो दोनों गड्ढे में गिरेंगे।”

¹⁵‘पतरस ने जवाब में उससे कहा “ये मिसाल हमें समझा दे।”¹⁶‘उस ने कहा, “क्या तुम भी अब तक नासमझ हो?”¹⁷‘क्या नहीं समझते कि जो कुछ मुँह में जाता है; वो पेट में पड़ता है और गंदगी में फेंका जाता है?

¹⁸‘मगर जो बातें मुँह से निकलती हैं वो दिल से निकलती हैं और वही आदमी को नापाक करती हैं।¹⁹‘क्यूँकि बुरे खयाल, खू रेज़ियाँ, ज़िनाकारियाँ, हरामकारियाँ, चोरियाँ, झूटी, गवाहियाँ, बदगोईयाँ, दिल ही से निकलती हैं।”²⁰‘यही बातें हैं जो आदमी को नापाक करती हैं, मगर बग़ैर हाथ धोए खाना खाना आदमी को नापाक नहीं करता।”

²¹‘फिर ईसा’ वहाँ से निकल कर सूर और सैदा के इलाक़े को खाना हुआ।²²और देखो, एक कनानी ‘औरत उन सरहदों से निकली और पुकार कर कहने लगी, “ऐ खुदावन्द! इबने दाऊद मुझ पर रहम कर! एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती है।”²³‘मगर उसने उसे कुछ जवाब न दिया “उसके शागिर्दों ने पास आकर उससे ये अर्ज़ किया कि ; उसे रुख़सत कर दे, क्यूँकि वो हमारे पीछे चिल्लाती है।”

²⁴‘उसने जवाब में कहा , “में इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा और किसी के पास नहीं भेजा गया।”²⁵‘मगर उसने आकर उसे सज्दा किया और कहा “ऐ खुदावन्द, मेरी मदद कर!”²⁶‘उस ने जवाब में कहा “लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देना अच्छा नहीं।”

²⁷‘उसने कहा “हाँ खुदावन्द,। क्यूँकि कुत्ते भी उन टुकड़ों में से खाते हैं जो उनके मालिकों की मेज़ से गिरते हैं।”²⁸‘इस पर ईसा’ ने जवाब में कहा, “ऐ ‘औरत, तेरा ईमान बहुत बड़ा है। जैसा तू चाहती है तेरे लिए वैसा ही हो; और उस की बेटी ने उसी वक्रत शिफ़ा पाई”।

²⁹‘फिर ईसा’ वहाँ से चल कर गलील की झील के नज़्ज़दीक आया और पहाड़ पर चढ़ कर वहीं बैठ गया।³⁰और एक बड़ी भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूँगों, टुन्डों और बहुत से और बीमारों को अपने साथ लेकर उसके पास आई और उनको उसके पाँवों में डाल दिया; उसने उन्हें अच्छा कर दिया।³¹‘चुनौचे जब लोगों ने देखा कि गूँगे बोलते, टुन्डे तन्दुरुस्त होते, लंगड़े चलते फिरते और अन्धे देखते हैं तो ता’ज्ज़ुब किया; और इस्राईल के “खुदा” की बड़ाई की।

³²और ईसा’ ने अपने शागिर्दों को पास बुला कर कहा, “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है। क्यूँकि ये लोग तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं और इनके पास खाने को कुछ नहीं और मैं इनको भूखा रुख़सत करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि रास्ते में थककर रह जाएँ।”³³‘शागिर्दों ने उससे कहा, “वीराने में हम इतनी रोटियाँ कहाँ से लाएँ; कि ऐसी बड़ी भीड़ को सेर करें?”³⁴‘ईसा’ ने उनसे कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ हैं।”³⁵‘उसने लोगों को हुक्म दिया कि ज़मीन पर बैठ जाएँ।

³⁶और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर शुक्र किया और उन्हें तोड़ कर शागिर्दों को देता गया और शागिर्द लोगों को।³⁷और सब खाकर सेर हो गए; और बिना इस्तेमाल बचे हुए खाने से भरे हुए सात टोकरे उठाए।³⁸और खाने वाले सिवा औरतों और बच्चों के चार हज़ार मर्द थे।³⁹‘फिर वो भीड़ को रुख़सत करके नाव पर सवार हुआ और मगदन की सरहदों में आ गया।

Chapter 16

¹फिर फ़रीसियों और सद्दूकियों ने 'ईसा के पास आकर आजमाने के लिए उससे दरख्वास्त की; कि हमें कोई आसमानी निशान दिखा।'²उसने जवाब में उनसे कहा "शाम को तुम कहते हो, 'खुला रहेगा, क्योंकि आसमान लाल है'

³और सुबह को ये कि 'आज आन्धी चलेगी क्योंकि आसमान लाल धुन्धला है 'तुम आसमान की सूरत में तो पहचान करना जानते हो मगर ज़मानों की अलामतों में पहचान नहीं कर सकते।'⁴इस ज़माने के बुरे और बे ईमान लोग निशान तलब करते हैं; मगर यूनाह के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा। और वो उनको छोड़ कर चला गया "।

⁵शागिर्द पार जाते वक़्त रोटी साथ लेना भूल गए थे।⁶'ईसा' ने उन से कहा, "खबरदार, फ़रीसियों और सद्दूकियों के खमीर से होशियार रहना।"⁷वो आपस में चर्चा करने लगे, "हम रोटी नहीं लाए।"⁸'ईसा' ने ये मालूम करके कहा, "ऐ कम-ऐ'तिक्रादों तुम आपस में क्यों चर्चा करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं?

⁹क्या अब तक नहीं समझते और उन पाँच हज़ार आदमियों की पाँच रोटियाँ तुम को याद नहीं? और न ये कि कितनी टोकरियाँ उठाईं?¹⁰और न उन चार हज़ार आदमियों की सात रोटियाँ? और न ये कि कितने टोकरे उठाए।

¹¹क्या वजह है कि तुम ये नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटी के बारे में नहीं कहा "फ़रीसियों और सद्दूकियों के खमीर से होशियार रहो।"¹²जब उनकी समझ में न आया कि उसने रोटी के खमीर से नहीं; बल्कि फ़रीसियों और सद्दूकियों की ता'लीम से खबरदार रहने को कहा था।

¹³'जब ईसा' कैसरिया फ़िलप्पी के इलाक़े में आया तो उसने अपने शागिर्दों से ये पूछा, "लोग इब्न-ए-आदम को क्या कहते हैं?"¹⁴उन्होंने कहा, "कुछ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं। कुछ एलिया और कुछ यरमियाह या नबियों में से कोई।"¹⁵उसने उनसे कहा, "मगर तुम मुझे क्या कहते हो?"¹⁶शमा'ऊन पतरस ने जवाब में कहा, "तू ज़िन्दा खुदा का बेटा मसीह है।"

¹⁷'ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "मुबारक है तू शमा'ऊन बर-यूनाह, क्योंकि ये बात गोश्त और खून ने नहीं, बल्कि मेरे बाप ने जो आसमान पर है; तुझ पर ज़ाहिर की है।¹⁸और मैं भी तुम से कहता हूँ; कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा। और आलम-ए-अरवाह के दरवाज़े उस पर ग़ालिब न आएँगे।

¹⁹मैं आसमान की बादशाही की कुन्जियाँ तुझे दूँगा; और जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधे गा वो आसमान पर बाँधेगा और जो कुछ तू ज़मीन पर खोले गा वो आसमान पर खुलेगा।"²⁰उस वक़्त उसने शागिर्दों को हुक्म दिया कि किसी को न बताना कि मैं मसीह हूँ।

²¹'उस वक़्त से ईसा' अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर करने लगा "कि उसे ज़रूर है कि यरूशलीम को जाए और बुजुर्गों और सरदार काहिनों और आलिमों की तरफ़ से बहुत दुःख उठाए; और क़त्ल किया जाए और तीसरे दिन जी उठे।"²²इस पर पतरस उसको अलग ले जाकर मलामत करने लगा "ऐ खुदावन्द, "खुदा" न करे ये तुझ पर हरगिज़ नहीं आने का।"²³उसने फिर कर पतरस से कहा, "ऐ शैतान, मेरे सामने से दूर हो ! तू मेरे लिए ठोकर का बा'इस है; क्योंकि तू "खुदा" की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का खयाल रखता है।"

²⁴'उस वक़्त ईसा' ने अपने शागिर्दों से कहा, "अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपका इन्कार करे; अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले।"²⁵क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोएगा उसे पाएगा।²⁶अगर आदमी सारी दुनिया हासिल करे और अपनी जान का नुक़सान उठाए तो उसे क्या फ़ाइदा होगा?

²⁷क्योंकि इब्न-ए-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा; उस वक़्त हर एक को उसके कामों के मुताबिक़ बदला देगा।²⁸मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं कि जब तक इब्न-ए-आदम को उसकी बादशाही में आते हुए न देख लेंगे; मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे।"

Chapter 17

¹छः दिन के बाद ईसा' ने पतरस, को और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया और उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया।² और उनके सामने उसकी सूरत बदल गई; और उसका चेहरा सूरज की तरह चमका और उसकी पोशाक नूर की तरह सफ़ेद हो गई।

³और देखो; मूसा और एलियाह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।⁴पतरस ने ईसा' से कहा " ऐ खुदावन्द, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; मर्जी हो तो मैं यहाँ तीन डेरे बनाऊँ। एक तेरे लिए; एक मूसा के लिए; और एक एलियाह के लिए।"

⁵वो ये कह ही रहा था कि देखो; "एक नूरानी बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज़ आई; ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ; उसकी सुनो।"⁶शागिर्द ये सुनकर मुँह के बल गिरे और बहुत डर गए।⁷ईसा' ने पास आ कर उन्हें छुआ और कहा, "उठो डरो मत।"⁸जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो ईसा' के सिवा और किसी को न देखा।

⁹जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो ईसा' ने उन्हें ये हुक्म दिया "जब तक इब्न-ए-आदम मुर्दों में से जी न उठे; जो कुछ तुम ने देखा है किसी से इसका ज़िक्र न करना।"¹⁰शागिर्दों ने उस से पूछा, "फिर आलिम क्यों कहते हैं कि एलियाह का पहले आना ज़रूर है?"

¹¹उस ने जवाब में कहा, "एलियाह अलबत्ता आएगा और सब कुछ बहाल करेगा।¹²लेकिन मैं तुम से कहता हूँ; कि एलियाह तो आ चुका और उन्होंने ने उसे नहीं पहचाना बल्कि जो चाहा उसके साथ किया; इसी तरह इबने आदम भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।"¹³और शागिर्द समझ गए; कि उसने उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में कहा है।

¹⁴और जब वो भीड़ के पास पहुँचे तो एक आदमी उसके पास आया; और उसके आगे घुटने टेक कर कहने लगा।¹⁵"ऐ खुदावन्द, मेरे बेटे पर रहम कर, क्योंकि उसको मिर्गी आती है और वो बहुत दुःख उठाता है; इसलिए कि अक्सर आग और पानी में गिर पड़ता है।¹⁶और मैं उसको तेरे शागिर्दों के पास लाया था; मगर वो उसे अच्छा न कर सके।"

¹⁷ईसा' ने जवाब में कहा, "ऐ बे ऐ'तिक्राद और टेढ़ी नस्ल मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाशत करूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।"¹⁸ईसा' ने उसे झिड़का और बदरूह उससे निकल गई; वो लड़का उसी वक़्त अच्छा हो गया।

¹⁹तब शागिर्दों ने ईसा' के पास आकर तन्हाई में कहा "हम इस को क्यों न निकाल सके?"²⁰उस ने उनसे कहा, "अपने ईमान की कमी की वजह से 'क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि अगर तुम में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा' तो इस पहाड़ से कह सकोगे; यहाँ से सरक कर वहाँ चला जा, और वो चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए नामुमकिन न होगी।"²¹(लेकिन ये क्रिस्म दुआ और रोज़े के सिवा और किसी तरह नहीं निकल सकती)।

²²जब वो गलील में ठहरे हुए थे, ईसा' ने उनसे कहा, "इब्न-ए-आदम आदमियों के हवाले किया जाएगा।"²³और वो उसे क्रल्ल करेंगे और तीसरे दिन ज़िन्दा किया जाएगा।" इस पर वो बहुत ही गमगीन हुए।

²⁴और जब कफ़रनहूम में आए तो नीम मिस्काल लेनेवालों ने पतरस के पास आकर कहा, "क्या तुम्हारा उस्ताद नीम मिस्काल नहीं देता?"²⁵उसने कहा, "हाँ देता है।" और जब वो घर में आया तो ईसा' ने उसके बोलने से पहले ही कहा, "ऐ शमा'ऊन तू क्या समझता है? दुनिया के बादशाह किनसे महसूल या ज़िज़िया लेते हैं; अपने बेटों से या ग़ैरों से?"

²⁶जब उसने कहा, "ग़ैरों से," तो ईसा' ने उनसे कहा, "पस बेटे बरी हुए।"²⁷लेकिन मुबादा हम इनके लिए ठोकर का बा'इस हों तू झील पर जाकर बन्सी डाल और जो मछली पहले निकले उसे ले और जब तू उसका मुँह खोलेगा; तो एक चाँदी का सिक्का पाएगा; वो लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे।"

Chapter 18

¹‘उस वक्त्र शागिर्द ईसा’ के पास आ कर कहने लगे, “पस आस्मान की बादशाही में बड़ा कौन है?”²उसने एक बच्चे को पास बुलाकर उसे उनके बीच में खड़ा किया।³और कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो और बच्चों की तरह न बनो तो आस्मान की बादशाही में हरगिज़ दाखिल न होगे।

⁴पस जो कोई अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा; वही आसमान की बादशाही में बड़ा होगा।⁵और जो कोई ऐसे बच्चे को मेरे नाम पर कुबूल करता है; वो मुझे कुबूल करता है।⁶लेकिन जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर ईमान लाए हैं; किसी को ठोकर खिलाता है उसके लिए ये बेहतर है कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वो गहरे समुन्दर में डुबो दिया जाए।

⁷ठोकरो की वजह से दुनिया पर अप्रसोस है; क्योंकि ठोकरो का होना ज़रूर है; लेकिन उस आदमी पर अप्रसोस है; जिसकी वजह से ठोकर लगे।⁸पस अगर तेरा हाथ या तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट कर अपने पास से फेंक दे; टुन्डा या लंगड़ा होकर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है; कि दो हाथ या दो पाँव रखता हुआ तू हमेशा की आग में डाला जाए।

⁹और अगर तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने से फेंक दे; काना हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो आँखें रखता हुआ तू जहन्नम की आग में डाला जाए।

¹⁰खबरदार! इन छोटों में से किसी को नाचीज़ न जानना। क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ; कि आसमान पर उनके फ़रिश्ते मेरे आसमानी बाप का मुँह हर वक्त्र देखते हैं।¹¹[क्योंकि इब्न-ए-आदम खोए हुआँ को ढूँढने और नज़ात देने आया है।]

¹²तुम क्या समझते हो? अगर किसी आदमी की सौ भेड़ें हों और उन में से एक भटक जाए; तो क्या वो निनानवें को छोड़कर और पहाड़ों पर जाकर उस भटकी हुई को न ढूँढेगा?¹³और अगर ऐसा हो कि उसे पाए; तो मैं तुम से सच कहता हूँ; कि वो उन निनानवें से जो भटकी हुई नहीं इस भेड़ की ज़्यादा खुशी करेगा।

¹⁴इस तरह तुम्हारा आसमानी बाप ये नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक हो।

¹⁵अगर तेरा भाई तेरा गुनाह करे तो जा और अकेले में बात चीत करके उसे समझा; और अगर वो तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।¹⁶और अगर न सुने, तो एक दो आदमियों को अपने साथ ले जा, ताकि हर एक बात दो तीन गवाहों की ज़बान से साबित हो जाए।

¹⁷और अगर वो उनकी भी सुनने से इन्कार करे, तो कलीसिया से कह, और अगर कलीसिया की भी सुनने से इन्कार करे तो तू उसे ग़ैर क्रौम वाले और महसूल लेने वाले के बराबर जान।

¹⁸मैं तुम से सच कहता हूँ; कि जो कुछ तुम ज़मीन पर बाँधोगे वो आसमान पर बँधेगा; और जो कुछ तुम ज़मीन पर खोलोगे; वो आसमान पर खुलेगा।¹⁹फिर मैं तुम से कहता हूँ; कि अगर तुम में से दो शख्स ज़मीन पर किसी बात के लिए जिसे वो चाहते हों इत्तफ़ाक़ करें तो वो मेरे बाप की तरफ़ से जो आसमान पर है, उनके लिए हो जाएगी।²⁰क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे हैं, वहाँ मैं उनके बीच में हूँ।”

²¹उस वक्त्र पतरस ने पास आकर उससे कहा “ऐ खुदावन्द, अगर मेरा भाई मेरा गुनाह करता रहे, तो मैं कितनी मर्तबा उसे मु'आफ़ करूँ? क्या सात बार तक?”²²ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझ से ये नहीं कहता कि सात बार, बल्कि सात दफ़ा के सत्तर बार तक।

²³पस आसमान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिसने अपने नौकरों से हिसाब लेना चाहा।²⁴और जब हिसाब लेने लगा तो उसके सामने एक क़र्ज़दार हाज़िर किया गया; जिस पर उसके दस हज़ार चाँदी के सिक्के आते थे।²⁵मगर चूँकि उसके पास अदा करने को कुछ न था; इसलिए उसके मालिक ने हुक्म दिया कि, ये और इसकी बीवी और बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए और क़र्ज़ वसूल कर लिया जाए।

²⁶पस नौकर ने गिरकर उसे सज्दा किया और कहा, ‘ऐ खुदावन्द मुझे मोहलत दे, मैं तेरा सारा क़र्ज़ अदा करूँगा।’²⁷उस नौकर के मालिक ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका क़र्ज़ बर्ख़्त दिया।

²⁸जब वो नौकर बाहर निकला तो उसके हम खिदमतों में से एक उसको मिला जिस पर उसके सौ चाँदी के सिक्के आते थे। उसने उसको पकड़ कर उसका गला घोंटा और कहा, ‘जो मेरा आता है अदा कर दे!’²⁹पस उसके हमखिदमत ने उसके सामने गिरकर मिन्नत की और कहा, ‘मुझे मोहलत दे; मैं तुझे अदा कर दूँगा।’

³⁰उसने न माना; बल्कि जाकर उसे कैदखाने में डाल दिया; कि जब तक क़र्ज़ अदा न कर दे कैद रहे।³¹पस उसके हमखिदमत ये हाल देखकर बहुत ग़मगीन हुए; और आकर अपने मालिक को सब कुछ जो हुआ था; सुना दिया।

³²इस पर उसके मालिक ने उसको पास बुला कर उससे कहा, ‘ऐ शरीर नौकर; मैं ने वो सारा क़र्ज़ तुझे इसलिए मु'आफ़ कर दिया; कि तूने मेरी मिन्नत की थी।

³³क्या तुझे ज़रूरी न था, कि जैसे मैं ने तुझ पर रहम किया; तू भी अपने हमखिदमत पर रहम करता?’

³⁴उसके मालिक ने ख़फ़ा होकर उसको जल्लादों के हवाले किया; कि जब तक तमाम क़र्ज़ अदा न कर दे कैद रहे।³⁵मेरा आसमानी बाप भी तुम्हारे साथ इसी तरह करेगा; अगर तुम में से हर एक अपने भाई को दिल से मु'आफ़ न करे।”

Chapter 19

¹'जब ईसा' ये बातें खत्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि गलील को रवाना होकर यरदन के पार यहूदिया की सरहदों में आया।² और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली; और उस ने उन्हें वहीं अच्छा किया।

³और फ़रीसी उसे आजमाने को उसके पास आए और कहने लगे "क्या हर एक वजह से अपनी बीवी को छोड़ देना जायज़ है?"⁴ उस ने जवाब में कहा, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया उसने शुरू ही से उन्हें मर्द और 'औरत बना कर कहा?

⁵'कि इस वजह से मर्द बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ रहेगा; और वो दोनों एक जिस्म होंगे।' ⁶'पस वो दो नहीं, बल्कि एक जिस्म हैं; इसलिए जिसे "खुदा" ने जोड़ा है उसे आदमी जुदा न करे।"

⁷उन्होंने उससे कहा, "फिर मूसा ने क्यों हुक्म दिया है; कि तलाक़नामा देकर छोड़ दी जाए?"⁸ उस ने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारी सख़्त दिली की वजह से तुम को अपनी बीवियों को छोड़ देने की इजाज़त दी; मगर शुरू से ऐसा न था।⁹ और मैं तुम से कहता हूँ: कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे; और दूसरी शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो कोई छोड़ी हुई से शादी कर ले, वो भी ज़िना करता है।"

¹⁰शागिर्दों ने उससे कहा, "अगर मर्द का बीवी के साथ ऐसा ही हाल है, तो शादी करना ही अच्छा नहीं।"¹¹ उसने उनसे कहा, "सब इस बात को कुबूल नहीं कर सकते मगर वही जिनको ये कुदरत दी गई है।¹² क्योंकि कुछ खोजे ऐसे हैं 'जो माँ के पेट ही से ऐसे पैदा हुए, और कुछ खोजे ऐसे हैं जिनको आदमियों ने खोजा बनाया; और कुछ खोजे ऐसे हैं, जिन्होंने आसमान की बादशाही के लिए अपने आप को खोजा बनाया, जो कुबूल कर सकता है करे।

¹³उस वक़्त लोग बच्चों को उसके पास लाए, ताकि वो उन पर हाथ रखे और दुआ दे मगर शागिर्दों ने उन्हें झिड़का।¹⁴ लेकिन ईसा' ने उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि आसमान की बादशाही ऐसों ही की है।¹⁵ और वो उन पर हाथ रखकर वहीं से चला गया।

¹⁶और देखो; एक शख्स ने पास आकर उससे कहा "मैं कौन सी नेकी करूँ, ताकि हमेशा की ज़िन्दगी पाऊँ?"¹⁷ उसने उससे कहा, "तू मुझ से नेकी की वजह क्यों पूछता है? नेक तो एक ही है लेकिन अगर तू ज़िन्दगी में दाखिल होना चाहता है तो हुक्मों पर अमल कर।"

¹⁸उसने उससे कहा, "कौन से हुक्म पर?" "ईसा' ने कहा, "ये कि खून न कर ज़िना न कर चोरी न कर, झूटी गवाही न दे।¹⁹ अपने बाप की और माँ की 'इज़ज़त कर और अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।"

²⁰उस जवान ने उससे कहा कि "मैंने उन सब पर अमल किया है अब मुझ में किस बात की कमी है?"²¹ ईसा' ने उससे कहा, "अगर तू कामिल होना चाहे तो जा अपना माल-औ-अस्बाब बेच कर गरीबों को दे, तुझे आसमान पर खज़ाना मिलेगा; और आकर मेरे पीछे होले।"²² मगर वो जवान ये बात सुनकर उदास होकर चला गया, क्योंकि बड़ा मालदार था।

²³ईसा' ने अपने शागिर्दों से कहा "मैं तुम से सच कहता हूँ कि दौलतमन्द का आसमान की बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है।²⁴ और फिर तुम से कहता हूँ, 'कि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इससे आसान है कि दौलतमन्द "खुदा" की बादशाही में दाखिल हो।

²⁵शागिर्द ये सुनकर बहुत ही हैरान हुए और कहने लगे "फिर कौन नजात पा सकता है?"²⁶ ईसा' ने उनकी तरफ देखकर कहा "ये आदमियों से तो नहीं हो सकता; लेकिन "खुदा" से सब कुछ हो सकता है।"²⁷ इस पर पतरस ने जवाब में उससे कहा "देख हम तो सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे हो लिए हैं; पस हम को क्या मिलेगा?"

²⁸ईसा' ने उस से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब इबने आदम नई पैदाइश में अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो बारह तख़्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह कबीलों का इन्साफ़ करोगे।

²⁹और जिस किसी ने घरों, या भाइयों, या बहनों, या बाप, या माँ, या बच्चों, या खेतों को मेरे नाम की खातिर छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा और हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस होगा।³⁰ लेकिन बहुत से पहले आखिर हो जाएँगे और आखिर पहले।

Chapter 20

¹“क्योंकि आस्मान की बादशाही उस घर के मालिक की तरह है, जो सवेरे निकला ताकि अपने बाग़ में मज़दूर लगाए।² उसने मज़दूरों से एक दीनार रोज़ तय करके उन्हें अपने बाग़ में भेज दिया।

³फिर पहर दिन चढ़ने के करीब निकल कर उसने औरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखा,⁴ और उन से कहा, 'तुम भी बाग़ में चले जाओ, जो वाजिब है तुम को दूंगा।' पस वो चले गए।

⁵फिर उसने दोपहर और तीसरे पहर के करीब निकल कर वैसा ही किया।⁶ और कोई एक घंटा दिन रहे फिर निकल कर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा, 'तुम क्यों यहाँ तमाम दिन बेकार खड़े हो?' उन्होंने उससे कहा, 'इस लिए कि किसी ने हम को मज़दूरी पर नहीं लगाया।' उस ने उनसे कहा, 'तुम भी बाग़ में चले जाओ।'

⁸जब शाम हुई तो बाग़ के मालिक ने अपने कारिन्दे से कहा, 'मज़दूरों को बुलाओ और पिछलों से लेकर पहलों तक उनकी मज़दूरी दे दो।' जब वो आए जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उनको एक एक दीनार मिला।¹⁰ जब पहले मज़दूर आए तो उन्होंने ये समझा कि हम को ज़्यादा मिलेगा; और उनको भी एक ही दीनार मिला।

¹¹जब मिला तो घर के मालिक से ये कह कर शिकायत करने लगे,¹² 'इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया है और तूने इनको हमारे बराबर कर दिया जिन्होंने दिन भर बोझ उठाया और सख्त धूप सही?'

¹³उसने जवाब देकर उन में से एक से कहा, 'मियाँ, मैं तेरे साथ बे इन्साफ़ी नहीं करता; क्या तेरा मुझ से एक दीनार नहीं ठहरा था?'¹⁴ जो तेरा है उठा ले और चला जा मेरी मज़ी ये है कि जितना तुझे देता हूँ इस पिछले को भी उतना ही दूँ।

¹⁵क्या मुझे ठीक नहीं कि अपने माल से जो चाहूँ सो करूँ? तू इसलिए कि मैं नेक हूँ बुरी नज़र से देखता है।¹⁶ इसी तरह आखिर पहले हो जाएँगे और पहले आखिर।”

¹⁷और यरूशलीम जाते हुए ईसा' बारह शागिदों को अलग ले गया; और रास्ते में उनसे कहा।¹⁸ “देखो; हम यरूशलीम को जाते हैं; और इबने आदम सरदार काहिनों और फ़क़ीहों के हवाले किया जाएगा; और वो उसके क़ल्ल का हुक़म देंगे।¹⁹ और उसे ग़ैर क़ौमों के हवाले करेंगे ताकि वो उसे ठट्ठों में उड़ाएँ, और कोड़े मारें और मस्लूब करें और वो तीसरे दिन ज़िन्दा किया जाएगा।”

²⁰उस वक़्त ज़ब्दी की बीवी ने अपने बेटों के साथ उसके सामने आकर सिज्दा किया और उससे कुछ अर्ज़ करने लगी।²¹ उसने उससे कहा, “तू क्या चाहती है?” उस ने उससे कहा, “फ़रमा कि ये मेरे दोनों बेटे तेरी बादशाही में तेरी दहनी और बाई तरफ़ बैठें।”

²²ईसा' ने जवाब में कहा, “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो प्याला मैं पीने को हूँ क्या तुम पी सकते हो?” उन्होंने उससे कहा, “पी सकते हैं।”²³ उसने उनसे कहा “मेरा प्याला तो पियोगे, लेकिन अपने दहने बाएँ किसी को बिठाना मेरा काम नहीं; मगर जिनके लिए मेरे बाप की तरफ़ से तैय्यार किया गया उन्ही के लिए है।”²⁴ जब शागिदों ने ये सुना तो उन दोनों भाइयों से खफ़ा हुए।

²⁵मगर ईसा' ने उन्हें पास बुलाकर कहा “तुम जानते हो कि ग़ैर क़ौमों के सरदार उन पर हुक़म चलाते और अमीर उन पर इख़्तियार जताते हैं।²⁶ तुम में ऐसा न होगा; बल्कि जो तुम में बड़ा होना चाहे वो तुम्हारा खादिम बने।²⁷ और जो तुम में अक्ल होना चाहे वो तुम्हारा गुलाम बने।²⁸ चुनौचे; इबने आदम इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले; बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान बहुतों के बदले फ़िदिये में दें।”

²⁹जब वो यरीहू से निकल रहे थे; एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।³⁰ और देखो; दो अँधों ने जो रास्ते के किनारे बैठे थे ये सुनकर कि 'ईसा' जा रहा है चिल्ला कर कहा, “ऐ खुदावन्द इब्ने-ए- दाऊद हम पर रहम कर।”³¹ लोगों ने उन्हें डांटा कि चुप रहें; लेकिन वो और भी चिल्ला कर कहने लगे, “ऐ खुदावन्द इबने दाऊद हम पर रहम कर।”

³²ईसा' ने खड़े होकर उन्हें बुलाया और कहा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”³³ उन्होंने उससे कहा “ऐ खुदावन्द हमारी आँखें खुल जाएँ।”³⁴ ईसा' को तरस आया। और उसने उन की आँखों को छुआ और वो फ़ौरन देखने लगे और उसके पीछे हो लिए।

Chapter 21

¹जब वो यरूशलीम के नज़दीक पहुँचे और ज़ैतून के पहाड़ पर बैतफ़गे के पास आए; तो ईसा ने दो शागिर्दों को ये कह कर भेजा, ²“अपने सामने के गाँव में जाओ। वहाँ पहुँचते ही एक गधी बंधी हुई और उसके साथ बच्चा पाओगे। उन्हें खोल कर मेरे पास ले आओ।³ और अगर कोई तुम से कुछ कहे तो कहना कि ‘खुदावन्द को इन की ज़रूरत है।’ वो फ़ौरन इन्हें भेज देगा।”

⁴ये इसलिए हुआ जो नबी की मा'रिफ़त कहा गया था वो पूरा हो:⁵“सियून की बेटी से कहो, ‘देख, तेरा बादशाह तेरे पास आता है; वो हलीम है और गधे पर सवार है, बल्कि लाटू के बच्चे पर।’”

⁶पस शागिर्दों ने जाकर जैसा ईसा ने उनको हुक्म दिया था; वैसा ही किया।⁷गधी और बच्चे को लाकर अपने कपड़े उन पर डाले और वो उस पर बैठ गया।⁸और भीड़ में से अक्सर लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछाए; औरों ने दरख्तों से डालियाँ काट कर राह में फैलाईं।

⁹और भीड़ जो उसके आगे आगे जाती और पीछे पीछे चली आती थी “पुकार पुकार कर कहती थी “इबने दाऊद को हो शा'ना ! मुबारक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है। आलम -ऐ बाला पर होशाना।”¹⁰ और वो जब यरूशलम में दाखिल हुआ तो सारे शहर में हलचल मच गई और लोग कहने लगे “ये कौन है?”¹¹भीड़ के लोगों ने कहा “ये गलील के नासरत का नबी ईसा है।”

¹²और ईसा ने खुदा की हैकल में दाखिल होकर उन सब को निकाल दिया; जो हैकल में खरीद- ओ फ़रोख़्त कर रहे थे; और सराफ़ों के तख़्त और कबूतर फ़रोशों की चौकियाँ उलट दीं।¹³और उन से कहा, “लिखा है ‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ मगर तुम उसे डाकुओं की खो बनाते हो।”¹⁴और अंधे और लंगड़े हैकल में उसके पास आए, और उसने उन्हें अच्छा किया।

¹⁵लेकिन जब सरदार काहिनों और फ़क़ीहों ने उन अजीब कामों को जो उसने किए; और लड़कों को हैकल में इबने दाऊद को हो शा'ना पुकारते देखा तो ख़फ़ा होकर उससे कहने लगे, ¹⁶“तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?” ईसा ने उन से कहा, “हाँ, क्या तुम ने ये कभी नहीं पढ़ा: ‘बच्चों और शीरख़वारों के मुँह से तुम ने हम्द को कामिल कराया?’”¹⁷और वो उन्हें छोड़ कर शहर से बाहर बैत अन्नियाह में गया; और रात को वहीं रहा।

¹⁸और जब सुबह को फिर शहर को जा रहा था; तो उसे भूक लगी।¹⁹और रास्ते के किनारे अंजीर का एक दरख़्त देख कर उसके पास गया; और पत्तों के सिवा उस में कुछ न पाकर उससे कहा; “आइन्दा कभी तुझ में फल न लगे!” और अंजीर का दरख़्त उसी दम सूख गया।

²⁰शागिर्दों ने ये देख कर ताअ'ज्जुब किया और कहा “ये अन्जीर का दरख़्त क्यूँकर एक दम में सूख गया?”²¹ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “तुम से सच कहता हूँ कि अगर ईमान रखो और शक न करो तो न सिर्फ़ वही करोगे जो अंजीर के दरख़्त के साथ हुआ; बल्कि अगर इस पहाड़ से कहो उखड़ जा और समुन्दर में जा पड़ तो यूँ ही हो जाएगा।”²²और जो कुछ दुआ में ईमान के साथ माँगोगे वो सब तुम को मिलेगा ”

²³जब वो हैकल में आकर ता'लीम दे रहा था; तो सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों ने उसके पास आकर कहा, “तू इन कामों को किस इख़्तियार से करता है? और ये इख़्तियार तुझे किसने दिया है।”²⁴ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; अगर वो मुझे बताओगे तो मैं भी तुम को बताऊँगा कि इन कामों को किस इख़्तियार से करता हूँ।

²⁵यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से था? आसमान की तरफ़ से या इन्सान की तरफ़ से?” वो आपस में कहने लगे, “अगर हम कहें, ‘आसमान की तरफ़ से,’ तो वो हम को कहेगा, ‘फिर तुम ने क्यूँ उसका यक़ीन न किया?’”²⁶और अगर कहें इन्सान की तरफ़ से तो हम अवाम से डरते हैं? क्यूँकि सब यूहन्ना को नबी जानते थे?।”²⁷पस उन्होंने जवाब में ईसा से कहा, “हम नहीं जानते।” उसने भी उनसे कहा, “मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं इन कामों को किस इख़्तियार से करता हूँ।”

²⁸“तुम क्या समझते हो? एक आदमी के दो बेटे थे उसने पहले के पास जाकर कहा, ‘बेटा जा! , और बाग़ में जाकर काम कर।’²⁹उसने जवाब में कहा, ‘मैं नहीं जाऊँगा,’ मगर पीछे पछता कर गया।³⁰फिर दूसरे के पास जाकर उसने उसी तरह कहा, उसने जवाब दिया, ‘अच्छा जनाब ,मगर गया नहीं।

³¹इन दोनों में से कौन अपने बाप की मज़ी बजा लाया?” उन्होंने कहा, “पहला।” ईसा ने उन से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि महसूल लेने वाले और कस्बियाँ तुम से पहले खुदा की बादशाही में दाखिल होती हैं।³²क्यकि यूहन्ना रास्तबाज़ी के तरीक़े पर तुम्हारे पास आया; और तुम ने उसका यक़ीन न किया; मगर महसूल लेने वाले और कस्बियों ने उसका यक़ीन किया; और तुम ये देख कर भी न पछताए; कि उसका यक़ीन कर लेते।

³³एक और मिसाल सुनो: एक घर का मालिक था; जिसने बाग़ लगाया और उसकी चारों तरफ़ अहाता और उस में हौज़ खोदा और बुर्ज बनाया और उसे बाग़बानों को ठेके पर देकर परदेस चला गया।³⁴जब फल का मौसम क़रीब आया तो उसने अपने नौकरों को बाग़बानों के पास अपना फल लेने को भेजा।

³⁵बाग़बानों ने उसके नौकरों को पकड़ कर किसी को पीटा किसी को क़त्ल किया और किसी को पथराव किया।³⁶फिर उसने और नौकरों को भेजा, जो पहलों से ज़्यादा थे; उन्होंने उनके साथ भी वही सुलूक किया।³⁷आखिर उसने अपने बेटे को उनके पास ये कह कर भेजा कि ‘वो मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’

³⁸जब बाग़बानों ने बेटे को देखा, तो आपस में कहा, ‘ये ही वारिस है! आओ इसे क़त्ल करके इसी की जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लें।’³⁹और उसे पकड़ कर बाग़ से बाहर निकाला और क़त्ल कर दिया।

⁴⁰पस जब बाग़ का मालिक आएगा, तो उन बाग़बानों के साथ क्या करेगा?”⁴¹उन्होंने उससे कहा, “उन बदकारों को बुरी तरह हलाक करेगा; और बाग़ का ठेका दूसरे बाग़बानों को देगा, जो मौसम पर उसको फल दें।”

⁴²ईसा ने उन से कहा, “क्या तुम ने किताबे मुकद्दस में कभी नहीं पढ़ा: ‘जिस पत्थर को मे'मारों ने रद्द किया, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया ; ये “खुदावन्द” की तरफ़ से हुआ और हमारी नज़र में ‘अजीब है’?”

⁴³इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि “खुदा” की बादशाही तुम से ले ली जाएगी और उस क्रौम को जो उसके फल लाए, दे दी जाएगी।⁴⁴और जो इस पत्थर पर गिरेगा; “टुकड़े टुकड़े हो जाएगा; लेकिन जिस पर वो गिरेगा उसे पीस डालेगा।

⁴⁵जब सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने उसकी मिसाल सुनी, तो समझ गए, कि हमारे हक़ में कहता है।⁴⁶और वो उसे पकड़ने की कोशिश में थे, लेकिन लोगों से डरते थे; क्यूँकि वो उसे नबी जानते थे।

Chapter 22

¹और ईसा' फिर उनसे मिसालों में कहने लगा,²"आस्मान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिस ने अपने बेटे की शादी की।³और अपने नौकरों को भेजा कि बुलाए हुआओं को शादी में बुला लाएँ, मगर उन्होंने आना न चाहा।

⁴फिर उस ने और नौकरों को ये कह कर भेजा, 'बुलाए हुआओं से कहो: देखो, मैंने ज़ियाफ़त तैयार कर ली है, मेरे बैल और मोटे मोटे जानवर ज़बह हो चुके हैं और सब कुछ तैयार है; शादी में आओ।'

⁵मगर वो बे परवाई करके चल दिए; कोई अपने खेत को, कोई अपनी सौदागरी को।⁶और बाक़ियों ने उसके नौकरों को पकड़ कर बे'इज़ज़त किया और मार डाला।⁷बादशाह ग़ज़बनाक हुआ और उसने अपना लश्कर भेजकर उन खूनीयों को हलाक कर दिया, और उन का शहर जला दिया।

⁸तब उस ने अपने नौकरों से कहा, शादी का खाना तो तैयार है'मगर बुलाए हुए लायक़ न थे।⁹पस रास्तों के नाकों पर जाओ, और जितने तुम्हें मिलें शादी में बुला लाओ।¹⁰और वो नौकर बाहर रास्तों पर जा कर, जो उन्हें मिले क्या बूरे क्या भले सब को जमा' कर लाए और शादी की महफ़िल मेहमानों से भर गई।

¹¹जब बादशाह मेहमानों को देखने को अन्दर आया, तो उसने वहाँ एक आदमी को देखा, जो शादी के लिबास में न था।¹²उसने उससे कहा' मियाँ तू शादी की पोशाक पहने बग़ैर यहाँ क्यों कर आ गया?' लेकिन उस का मुँह बन्द हो गया।

¹³इस पर बादशाह ने ख़ादिमों से कहा 'उस के हाथ पाँव बाँध कर बाहर अँधेरे में डाल दो, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।'¹⁴क्योंकि बुलाए हुए बहुत हैं, मगर चुने हुए थोड़े।"

¹⁵उस वक़्त फ़रीसियों ने जा कर मशवरा किया कि उसे क्यों कर बातों में फँसाएँ।¹⁶पस उन्होंने अपने शागिदों को हेरोदियों के साथ उस के पास भेजा, और उन्होंने कहा "ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और सच्चाई से "ख़ुदा" की राह की तालीम देता है। और किसी की परवाह नहीं करता क्योंकि तू किसी आदमी का तरफ़दार नहीं।¹⁷पस हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को जिज़िया देना जायज़ है या नहीं?"

¹⁸"ईसा" ने उन की शरारत जान कर कहा, "ऐ रियाकारो, मुझे क्यों आज़माना हो?"¹⁹जिज़िये का सिक्का मुझे दिखाओ" वो एक दीनार उस के पास लाए।

²⁰उसने उनसे कहा "ये सूरत और नाम किसका है?"²¹उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।" उस ने उनसे कहा, " पस जो कैसर का है कैसर को और जो ख़ुदा का है ख़ुदा को अदा करो।"²²उन्होंने ये सुनकर ता'अज्जुब किया, और उसे छोड़ कर चले गए।

²³उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि क़यामत नहीं होगी उसके पास आए, और उससे ये सवाल किया।²⁴"ऐ उस्ताद, मूसा ने कहा था, कि अगर कोई बे औलाद मर जाए, तो उसका भाई उसकी बीवी से शादी कर ले, और अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे।

²⁵अब हमारे दर्मियान सात भाई थे, और पहला शादी करके मर गया; और इस वजह से कि उसके औलाद न थी, अपनी बीवी अपने भाई के लिए छोड़ गया।

²⁶इसी तरह दूसरा और तीसरा भी सातवें तक।²⁷सब के बा'द वो 'औरत भी मर गई।²⁸पस वो क़यामत में उन सातों में से किसकी बीवी होगी? क्योंकि सब ने उससे शादी की थी।"

²⁹ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "तुम गुमराह हो; इसलिए कि न किताबे मुक़द्दस को जानते हो न "ख़ुदा" की कुद़्रत को।³⁰क्योंकि क़यामत में शादी बारात न होगी; बल्कि लोग आसमान पर फ़िरिशतों की तरह होंगे।

³¹मगर मुर्दों के जी उठने के बारे में "ख़ुदा" ने तुम्हें फ़रमाया था, क्या तुम ने वो नहीं पढ़ा?³²मैं इब्राहीम का ख़ुदा, और इज़्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ? वो तो मुर्दों का "ख़ुदा" नहीं 'बल्कि जिन्दो का ख़ुदा है।"³³लोग ये सुन कर उसकी ता'लीम से हैरान हुए।

³⁴जब फ़रीसियों ने सुना कि उसने सदूक़ियों का मुँह बन्द कर दिया, तो वो जमा' हो गए।³⁵और उन में से एक आलिम- ऐ शरा ने आज़माने के लिए उससे पूछा;

³⁶"ऐ उस्ताद, तौरत में कौन सा हुक्म बड़ा है?"

³⁷उसने उस से कहा "'ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान और अपनी सारी अक्ल से मुहब्बत रख।'³⁸बड़ा और पहला हुक्म यही है।

³⁹और दूसरा इसकी तरह ये है'कि अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख।'⁴⁰इन्ही दो हुक्मों पर तमाम तौरत और अम्बिया के सहीफ़ों का मदार है।"

⁴¹जब फ़रीसी जमा' हुए तो ईसा' ने उनसे ये पूछा;⁴²"तुम मसीह के हक़ में क्या समझते हो? वो किसका बेटा है "उन्होंने उससे कहा "दाऊद का।"

⁴³उसने उनसे कहा, "पस दाऊद रूह की हिदायत से क्योंकर उसे ख़ुदावन्द कहता है,⁴⁴ख़ुदावन्द ने मेरे ख़ुदावन्द से कहा, 'मेरी दहनी तरफ़ बैठ, जब तक में तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव के नीचे न कर दूँ'।

⁴⁵पस जब दाऊद उसको ख़ुदावन्द कहता है तो वो उसका बेटा क्योंकर ठहरा?"⁴⁶कोई उसके जवाब में एक हफ़ न कह सका, और न उस दिन से फिर किसी ने उससे सवाल करने की जुरअत की।

Chapter 23

¹उस वक़्त ईसा ने भीड़ से और अपने शागिर्दों से ये बातें कहीं,²“फ़क़ीह और फ़रीसी मूसा के शरी’अत की गद्दी पर बैठे हैं।³पस जो कुछ वो तुम्हें बताएँ वो सब करो और मानो, लेकिन उनकी तरह काम न करो; क्योंकि वो कहते हैं, और करते नहीं।

⁴वो ऐसे भारी बोझ जिनको उठाना मुश्किल है, बाँध कर लोगों के कंधों पर रखते हैं, मगर खुद उनको अपनी उंगली से भी हिलाना नहीं चाहते।⁵वो अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं; क्योंकि वो अपने ता’वीज़ बड़े बनाते और अपनी पोशाक के किनारे चौड़े रखते हैं।

⁶ज़ियाफ़तों में सद्द नशीनी और इबादतख़ानों में आ’ला दर्जे की कुर्सियाँ।⁷और बाज़ारों में सलाम’और आदमियों से रब्बी कहलाना पसंद करते हैं।’

⁸मगर तुम रब्बी न कहलाओ, क्योंकि तुम्हारा उसताद एक ही है और तुम सब भाई हो⁹और ज़मीन पर किसी को अपना बाप न कहो, क्योंकि तुम्हारा बाप ‘एक ही है जो आसमानी है।¹⁰और न तुम हादी कहलाओ, क्योंकि तुम्हारा हादी एक ही है, या’नी मसीह।

¹¹लेकिन जो तुम में बड़ा है, वो तुम्हारा खादिम बने।¹²जो कोई अपने आप को बड़ा बनायेगा,वो छोटा किया जायेगा; और जो अपने आप को छोटा बनायेगा,वो बड़ा किया जायेगा।

¹³ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि आसमान की बादशाही लोगों पर बन्द करते हो, क्योंकि न तो आप दाखिल होते हो, और न दाखिल होने वालों को दाखिल होने देते हो।¹⁴ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस, कि तुम बेवाओं के घरों को दबा बैठते हो, और दिखावे के लिए नमाज़ को तूल देते हो; तुम्हें ज़्यादा सज़ा होगी।¹⁵ऐ रियाकार; फ़क़ीहों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस, कि एक मुरीद करने के लिए तरी और खुशकी का दौरा करते हो, और जब वो मुरीद हो चुकता है तो उसे अपने से दूना जहन्नुम का फ़र्ज़न्द बना देते हो।

¹⁶ऐ अंधे राह बताने वाले, तुम पर अफ़सोस! जो कहते हो, ‘अगर कोई मक़दिस की क्रसम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन अगर मक़दिस के सोने की क्रसम खाए तो उसका पाबंद होगा।’¹⁷ऐ अहमकों! और अँधों सोना बड़ा है, या मक़दिस जिसने सोने को मुक़द्दस किया।

¹⁸फिर कहते हो ‘अगर कोई कुर्बानगाह की क्रसम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन जो नज़्र उस पर चढ़ी हो अगर उसकी क्रसम खाए तो उसका पाबन्द होगा।’¹⁹ऐ अंधो! नज़्र बड़ी है या कुर्बानगाह जो नज़्र को मुक़द्दस करती है?

²⁰पस, जो कुर्बानगाह की क्रसम खाता है, वो उसकी और उन सब चीज़ों की जो उस पर हैं क्रसम खाता है।²¹और जो मक़दिस की क्रसम खाता है वो उसकी और उसके रहनेवाले की क्रसम खाता है।²²और जो आस्मान की क्रसम खाता है वह “ख़ुदा” के तख़्त की और उस पर बैठने वाले की क्रसम भी खाता है।

²³ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि पुदीना सौफ़ और ज़ीरे पर तो दसवां हिस्सा देते हो, पर तुम ने शरी’अत की ज़्यादा भारी बातों या’नी इन्साफ़, और रहम, और ईमान को छोड़ दिया है; लाज़िम था ये भी करते और वो भी न छोड़ते।²⁴ऐ अंधे राह बताने वाले; जो मच्छर को तो छानते हो, और ऊँट को निगल जाते हो।

²⁵ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि प्याले और रक़ाबी को ऊपर से साफ़ करते हो, मगर वो अन्दर लूट और ना’परहेज़गारी से भरे हैं।²⁶ऐ अंधे फ़रीसी; पहले प्याले और रक़ाबी को अन्दर से साफ़ कर ताकि ऊपर से भी साफ़ हो जाए।

²⁷ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि तुम सफ़ेदी फिरी हुई क़ब्रों की तरह हो, जो ऊपर से तो ख़ूबसूरत दिखाई देती हैं, मगर अन्दर मुर्दों की हड्डियों और हर तरह की नापाकी से भरी हैं।²⁸इसी तरह तुम भी ज़ाहिर में तो लोगों को रास्तबाज़ दिखाई देते हो, मगर बातिन में रियाकारी और बेदीनी से भरे हो।

²⁹ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस, कि नबियों की क़ब्रें बनाते और रास्तबाज़ों के मक़बरे आरास्ता करते हो।³⁰और कहते हो, ‘अगर हम अपने बाप दादा के ज़माने में होते तो नबियों के खून में उनके शरीक न होते।’³¹इस तरह तुम अपनी निस्बत गवाही देते हो, कि तुम नबियों के क़ातिलों के फ़र्ज़न्द हो।

³²गरज़ अपने बाप दादा का पैमाना भर दो।³³ऐ साँपो, ऐ अफ़’ई के बच्चो; तुम जहन्नुम की सज़ा से क्यूँकर बचोगे?

³⁴इसलिए देखो मैं नबियों, और दानाओं और आलिमों को तुम्हारे पास भेजता हूँ, उन में से तुम कुछ को क़त्ल और मस्लूब करोगे, और कुछ को अपने इबादतख़ानों में कोड़े मारोगे, और शहर ब शहर सताते फिरोगे।³⁵ताकि सब रास्तबाज़ों का खून जो ज़मीन पर बहाया गया तुम पर आए, रास्तबाज़ हाबिल के खून से लेकर बरकियाह के बेटे ज़करियाह के खून तक जिसे तुम ने मक़दिस और कुर्बानगाह के दर्मियान क़त्ल किया।³⁶मैं तुम से सच कहता हूँ कि ये सब कुछ इसी ज़माने के लोगों पर आएगा।

³⁷“ऐ यरूशलीम “ ऐ यरूशलीम तू जो नबियों को क़त्ल करता और जो तेरे पास भेजे गए, उनको संगसार करता है, कितनी बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्गी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है, इसी तरह मैं भी तेरे लड़कों को जमा’ कर लूँ, मगर तुम ने न चाहा।³⁸देखो; तुम्हारा घर तुम्हारे लिए वीरान छोड़ा जाता है।³⁹क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ, कि “अब से मुझे फिर हरगिज़ न देखोगे; जब तक न कहोगे कि मुबारक है वो जो “ख़ुदावन्द” के नाम से आता है।”

Chapter 24

¹और ईसा' हैकल से निकल कर जा रहा था, कि उसके शागिर्द उसके पास आए, ताकि उसे हैकल की इमारतें दिखाएँ।²उसने जवाब में उनसे कहा, "क्या तुम इन सब चीज़ों को नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर बाक़ी न रहेगा; जो गिराया न जाएगा।"

³जब वो ज़ैतून के पहाड़ पर बैठा था, उसके शागिर्दों ने अलग उसके पास आकर कहा, "हम को बता ये बातें कब होंगी? और तेरे आने और दुनिया के आखिर होने का निशान क्या होगा?" "ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "खबरदार! कोई तुम को गुमराह न कर दे, क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ।' और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे।

⁶और तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की अफ़वाह सुनोगे, खबरदार, घबरा न जाना, क्योंकि इन बातों का वाक़े होना ज़रूर है।⁷क्योंकि क्रौम पर क्रौम और सल्तनत पर सल्तनत चढ़ाई करेगी, और जगह जगह काल पड़ेंगे, और भूचाल आएँगे।⁸लेकिन ये सब बातें मुसीबतों का शुरू ही होंगी।

⁹उस वक़्त लोग तुम को तकलीफ़ देने के लिए पकड़वाएँगे, और तुम को क़त्ल करेंगे; और मेरे नाम की खातिर सब क्रौमों तुम से दुश्मनी रखेंगे।¹⁰और उस उक़्त बहुत से ठोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे; और एक दूसरे से दुश्मनी रखेंगे।¹¹और बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे, और बहुतों को गुमराह करेंगे।

¹²और बेदीनी के बढ़ जाने से बहुतेरों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी।¹³लेकिन जो आखिर तक बर्दाशत करेगा वो नजात पाएगा।¹⁴और बादशाही की इस खुशख़बरी का एलान तमाम दुनिया में होगा, ताकि सब क्रौमों के लिए गवाही हो, तब ख़ात्मा होगा।

¹⁵पस जब तुम उस उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ जिसका ज़िक्र दानीएल नबी की ज़रिये हुआ, मुक़द्दस मुकामों में खड़ा हुआ देखो (पढ़ने वाले संमझ लें) |¹⁶तो जो यहूदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ।¹⁷जो छत पर हो वो अपने घर का माल लेने को नीचे न उतरे।¹⁸और जो खेत में हो वो अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे

¹⁹मगर अफ़सोस उन पर जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों।²⁰पस, दुआ करो कि तुम को जाड़ों में या सबत के दिन भागना न पड़े।²¹क्योंकि उस वक़्त ऐसी बड़ी मुसीबत होगी कि दुनिया के शुरू से न अब तक हुई न कभी होगी।²²अगर वो दिन घटाए न जाते तो कोई बशर न बचता मगर चुने हुवों की खातिर वो दिन घटाए जाएँगे।

²³उस वक़्त अगर कोई तुम को कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' तो यक़ीन न करना।²⁴क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे और ऐसे बड़े निशान और अजीब काम दिखाएँगे कि अगर मुम्किन हो तो बरगुज़ीदों को भी गुमराह कर लें।²⁵देखो, मैं ने पहले ही तुम को कह दिया है।

²⁶पस अगर वो तुम से कहें, 'देखो, वो वीरानो में है' तो बाहर न जाना। या देखो, कोठरियों में है तो यक़ीन न करना।²⁷क्योंकि जैसे बिजली पूरब से कौंध कर पच्छिम तक दिखाई देती है वैसे ही इबने आदम का आना होगा।²⁸जहाँ मुर्दार है, वहाँ गिद्ध जमा' हो जाएँगे।

²⁹फ़ौरन इन दिनों की मुसीबत के बा'द सूरज तारीक हो जाएगा। और चाँद अपनी रौशनी न देगा, और सितारे आसमान से गिरेंगे और आस्मान की कुक्कतें हिलाई जाएँगी।

³⁰और उस वक़्त इब्न-ए-आदम का निशान आस्मान पर दिखाई देगा। और उस वक़्त ज़मीन की सब क्रौमों छाती पीटेंगी; और इबने आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ आस्मान के बादलों पर आते देखेंगी।³¹और वो नरसिंगे की बड़ी आवाज़ के साथ अपने फ़रिश्तों को भेजेगा और वो उसके चुने हुवों को चारों तरफ़ से आसमान के इस किनारे से उस किनारे तक जमा' करेंगे।

³²अब अन्जीर के दरख़्त से एक मिसाल सीखो,। जैसे ही उसकी डाली नर्म होती और पत्ते निकलते हैं तुम जान लेते हो कि गर्मी नज़दीक है।³³इसी तरह जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वो नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है।

³⁴मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लें ये नस्ल हरगिज़ तमाम न होगी।³⁵आसमान और ज़मीन टल जाएँगी लेकिन मेरी बातें हरगिज़ न टलेंगी

³⁶लेकिन उस दिन और उस वक़्त के बारे में कोई नहीं जानता, न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा मगर, सिर्फ़ बाप।

³⁷जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही इबन-ए-आदम के आने के वक़्त होगा।³⁸क्योंकि जिस तरह तूफ़ान से पहले के दिनों में लोग खाते पीते और ब्याह शादी करते थे, उस दिन तक कि नूह नाव में दाख़िल हुआ।³⁹और जब तक तूफ़ान आकर उन सब को बहा न ले गया, उन को खबर न हुई, उसी तरह इबने आदम का आना होगा।

⁴⁰उस वक़्त दो आदमी खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा,⁴¹दो औरतें चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।⁴²पस जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा ख़ुदावन्द किस दिन आएगा

⁴³लेकिन ये जान रखो, कि अगर घर के मालिक को मा'लूम होता कि चोर रात के कौन से पहर आएगा, तो जागता रहता और अपने घर में नक़ब न लगाने देता।

⁴⁴इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा इबने आदम आ जाएगा।

⁴⁵पस वो ईमानदार और अक्लमन्द नौकर कौन सा है, जिसे मालिक ने अपने नौकर चाकरों पर मुक़र्रर किया ताकि वक़्त पर उनको खाना दे।⁴⁶मुबारक है वो नौकर जिसे उस का मालिक आकर ऐसा ही करते पाए।⁴⁷मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल का मुख़्तार कर देगा।

⁴⁸लेकिन अगर वो ख़राब नौकर अपने दिल में ये कह कर कि मेरे मालिक के आने में देर है।⁴⁹अपने हमख़िदमतों को मारना शुरू करे, और शराबियों के साथ खाए पिए।⁵⁰तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन कि वो उसकी राह न देखता हो और ऐसी घड़ी कि वो न जानता हो आ मौजूद होगा।⁵¹और ख़ूब कोड़े लगा कर उसको रियाकारों में शामिल करेगा वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।"

Chapter 25

¹“उस वक्रत आसमान की बादशाही उन दस कुँवारियों की तरह होगी जो अपनी मशा'लें लेकर दुल्हा के इस्तक्रबाल को निकलीं।²उन में पाँच बेवकूफ़ और पाँच अक्लमन्द थीं।³जो बेवकूफ़ थीं उन्होंने अपनी मशा'लें तो ले लीं मगर तेल अपने साथ न लिया।⁴मगर अक्लमन्दों ने अपनी मशा'लों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी ले लिया।

⁵और जब दुल्हा ने दर लगाई तो सब ऊँघने लगीं और सो गईं।⁶आधी रात को धूम मची, ‘देखो! दुल्हा आ गया, उसके इस्तक्रबाल को निकलो!’

⁷उस वक्रत वो सब कुँवारियाँ उठकर अपनी अपनी मशा'लों को दुरुस्त करने लगीं।⁸और बेवकूफ़ों ने ‘अक्लमन्दों से कहा, ‘अपने तेल में से कुछ हम को भी दे दो, क्योंकि हमारी मशा'लें बुझी जाती हैं।’⁹अक्लमन्दों ने जवाब दिया, ‘शायद हमारे तुम्हारे दोनों के लिए काफ़ी न ह बेहतर; ये है कि बेचने वालों के पास जाकर, अपने लिए मोल ले लो।’

¹⁰जब वो मोल लेने जा रही थी, तो दुल्हा आ पहुँचा और जो तैयार थीं, वो उस के साथ शादी के जश्र में अन्दर चली गईं, और दरवाज़ा बन्द हो गया।¹¹फिर वो बाक़ी कुँवारियाँ भी आईं और कहने लगीं ‘ऐ खुदावन्द ऐ खुदावन्द! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दे।’¹²उसने जवाब में कहा ‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि मैं तुम को नहीं जानता।’¹³पस जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो न उस वक्रत को।

¹⁴क्योंकि ये उस आदमी जैसा हाल है, जिसने परदेस जाते वक्रत अपने घर के नौकरों को बुला कर अपना माल उनके सुपुर्द किया।¹⁵एक को पाँच चाँदी के सिक्के दिए, दूसरे को दो, और तीसरे को एक या'नी हर एक को उसकी क़ाबिलियत के मुताबिक़ दिया और परदेस चला गया।¹⁶जिसको पाँच सिक्के मिले थे, उसने फ़ौरन जाकर उनसे लेन देन किया, और पाँच तोड़े और पैदा कर लिए।

¹⁷इसी तरह जिसे दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए।¹⁸मगर जिसको एक मिला था, उसने जाकर ज़मीन खोदी और अपने मालिक का रुपया छिपा दिया।

¹⁹बड़ी मुद्दत के बा'द उन नौकरों का मालिक आया और उनसे हिसाब लेने लगा।²⁰जिसको पाँच तोड़े मिले थे, वो पाँच सिक्के और लेकर आया, और कहा, ‘ऐ खुदावन्द! तूने पाँच सिक्के मुझे सुपुर्द किए थे; देख, मैंने पाँच सिक्के और कमाए।’²¹उसके मालिक ने उससे कहा, ‘ऐ अच्छे और ईमानदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीज़ों का मुख़्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की ख़ुशी में शरीक हो।’

²²और जिस को दो सिक्के मिले थे, उस ने भी पास आकर कहा, ‘तूने दो सिक्के मुझे सुपुर्द किए थे, देख मैंने दो सिक्के और कमाए।’²³उसके मालिक ने उससे कहा, ‘ऐ अच्छे और दियानतदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीज़ों का मुख़्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की ख़ुशी में शरीक हो।’

²⁴और जिसको एक तोड़ा मिला था, वो भी पास आकर कहने लगा, ‘ऐ खुदावन्द! मैं तुझे जानता था, कि तू सख़्त आदमी है, और जहाँ नहीं बोया वहाँ से काटता है, और जहाँ नहीं बिखेरा वहाँ से जमा’ करता है।’²⁵पस मैं डरा और जाकर तेरा तोड़ा ज़मीन में छिपा दिया देख, जो तेरा है वो मौजूद है।’

²⁶उसके मालिक ने जवाब में उससे कहा, ‘ऐ शरीर और सुस्त नौकर तू जानता था कि जहाँ मैंने नहीं बोया वहाँ से काटता हूँ, और जहाँ मैंने नहीं बिखेरा वहाँ से जमा’ करता हूँ,²⁷पस तुझे लाज़िम था,कि मेरा रुपया साहूकारों को देता, तो मैं आकर अपना माल सूद समेत ले लेता।

²⁸पस इससे वो सिक्का ले लो और जिस के पास दस सिक्के हैं’ उसे दे दो।²⁹क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उस के पास ज़्यादा हो जाएगा, मगर जिस के पास नहीं है उससे वो भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।³⁰और इस निकम्मे नौकर को बाहर अँधेरे में डाल दो, और वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।’

³¹जब इबने आदम अपने जलाल में आएगा, और सब फ़रिश्ते उसके साथ आएँगे; तब वो अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा।³²और सब क़ौमों उस के सामने जमा’ की जाएँगी। और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा।³³और भेड़ों को अपने दाहिने और बकरियों को बाँए जमा’ करेगा।

³⁴उस वक्रत बादशाह अपनी तरफ़ वालों से कहेगा ‘आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो, जो बादशाही दुनियां बनाने से पहले से तुम्हारे लिए तैयार की गई है उसे मीरास में ले लो।’³⁵क्योंकि मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना खिलाया; मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेसी था तूने मुझे अपने घर में उतारा।³⁶नंगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया, बीमार था तुमने मेरी ख़बर ली, मैं कैद में था, तुम मेरे पास आए।’

³⁷तब रास्तबाज़ जवाब में उससे कहेंगे, ‘ऐ खुदावन्द, हम ने कब तुझे भूका देख कर खाना खिलाया, या प्यासा देख कर पानी पिलाया?’³⁸हम ने कब तुझे मुसाफ़िर देख कर अपने घर में उतारा? या नंगा देख कर कपड़ा पहनाया।³⁹हम कब तुझे बीमार या कैद में देख कर तेरे पास आए।?’⁴⁰बादशाह जवाब में उन से कहेगा, ‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम ने मेरे सब से छोटे भाइयों में से किसी के साथ ये सुलूक किया, तो मेरे ही साथ किया।’

⁴¹फिर वो बाएँ तरफ़ वालों से कहेगा, ‘मला’ऊनो मेरे सामने से उस हमेशा की आग में चले जाओ, जो इब्लीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार की गई है।

⁴²क्योंकि, मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना न खिलाया, प्यासा था, तुमने मुझे पानी न पिलाया।⁴³मुसाफ़िर था, तुम ने मुझे घर में न उतारा नंगा था, तुम ने मुझे कपड़ा न पहनाया, बीमार और कैद में था, तुम ने मेरी ख़बर न ली।’

⁴⁴तब वो भी जवाब में कहेंगे, ‘ऐ खुदावन्द हम ने कब तुझे भूखा,या प्यासा, या मुसाफ़िर,या नंगा, या बीमार या कैद में देखकर तेरी ख़िदमत न की?’⁴⁵उस वक्रत वो उनसे जवाब में कहेगा ‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तुम ने इन सब से छोटों में से किसी के साथ ये सुलूक न किया, तो मेरे साथ न किया।’⁴⁶और ये हमेशा की सज़ा पाएँगे, मगर रास्तबाज़ हमेशा की ज़िन्दगी।”

Chapter 26

¹'जब ईसा' ये सब बातें खत्म कर चुका, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने शागिर्दों से कहा।²"तुम जानते हो कि दो दिन के बाद ईद-ए-फ़सह होगी। और इब्न-ए-आदम मस्तूब होने को पकड़वाया जाएगा।"

³उस वक़्त सरदार काहिन और क्रौम के बुजुर्ग काइफ़ा नाम सरदार काहिन के दिवान खाने में जमा हुए।⁴और मशवरा किया कि ईसा' को धोखे से पकड़ कर क़त्ल करें। मगर कहते थे, " 'ईद में नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए।"

⁶और जब ईसा' बैत अज़ियाह में शमा'ऊन जो पहले कोढ़ी था के घर में था।⁷तो एक 'औरत संग-मरमर के इत्रदान में क्रीमती इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वो खाना खाने बैठा तो उस के सिर पर डाला।⁸शागिर्द ये देख कर खफ़ा हुए और कहने लगे, "ये किस लिए बर्बाद किया गया?" ये तो बड़ी क्रीमती में बिक कर ग़रीबों को दिया जा सकता था।"

¹⁰ईसा' ने ये जान कर उन से कहा, "इस 'औरत को क्यों दुखी करते हो ? इस ने तो मेरे साथ भलाई की है।"¹¹क्योंकि ग़रीब गुरबे तो हमेशा तुम्हारे पास हैं लेकिन मैं तुम्हारे पास हमेशा न रहूँगा।

¹²और इस ने तो मेरे दफ़न की तैयारी के लिए इत्र मेरे बदन पर डाला।¹³मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इस खुशख़बरी का एलान किया जाएगा, ये भी जो इस ने किया; इस की यादगारी में कहा जाएगा।"

¹⁴उस वक़्त उन बारह में से एक ने जिसका नाम यहूदाह इस्करियोती था; सरदार काहिनों के पास जा कर कहा,¹⁵"अगर मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँ तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस रुपये तौल कर दे दिया।"¹⁶और वो उस वक़्त से उसके पकड़वाने का मौक़ा ढूँढने लगा।

¹⁷ईद-ए-फ़ितर के पहले दिन शागिर्दों ने ईसा' के पास आकर कहा, "तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिए फ़सह के खाने की तैयारी करें।"¹⁸उस ने कहा, "शहर में फ़लों शख्स के पास जा कर उससे कहना 'उस्ताद फ़रमाता है 'कि मेरा वक़्त नज़दीक है मैं अपने शागिर्दों के साथ तेरे यहाँ ईद'ए फ़सह करूँगा।"¹⁹और जैसा ईसा' ने शागिर्दों को हुक्म दिया था, उन्होंने वैसा ही किया और फ़सह तैयार किया।

²⁰जब शाम हुई तो वो बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने बैठा था।²¹जब वो खा रहा था, तो उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।"²²वो बहुत ही ग़मगीन हुए और हर एक उससे कहने लगे "ख़ुदावन्द, क्या मैं हूँ?"

²³उस ने जवाब में कहा, "जिस ने मेरे साथ रक्काबी में हाथ डाला है वही मुझे पकड़वाएगा।"²⁴इबने आदम तो जैसा उसके हक़ में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफ़सोस जिसके वसीले से इबने आदम पकड़वाया जाता है अगर वो आदमी पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा होता।"²⁵उसके पकड़वाने वाले यहूदाह ने जवाब में कहा "ऐ रब्बी क्या मैं हूँ?" उसने उससे कहा "तूने ख़ुद कह दिया।"

²⁶जब वो खा रहे थे तो ईसा' ने रोटी ली और और बरकत देकर तोड़ी "और शागिर्दों को देकर कहा, "लो, खाओ, ये मेरा बदन है।"

²⁷फिर प्याला लेकर शुक्र किया और उनको देकर कहा "तुम सब इस में से पियो।"²⁸क्योंकि ये मेरा वो अहद का ख़ून है जो बहुताँ के गुनाहों की मु'आफ़ी के लिए बहाया जाता है।²⁹मैं तुम से कहता हूँ, कि अंगूर का ये शीरा फिर कभी न पियूँगा, उस दिन तक कि तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में नया न पियूँ।"

³⁰फिर वो हम्द करके बाहर ज़ैतून के पहाड़ पर गए।³¹उस वक़्त ईसा' ने उनसे कहा "तुम सब इसी रात मेरी वजह से ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है; मैं चरवाहे को मारूँगा और गल्ले की भेंड़े बिखर जाएँगी।"³²लेकिन मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।"

³³पतरस ने जवाब में उससे कहा, "चाहे सब तेरी वजह से ठोकर खाएँ, लेकिन मैं कभी ठोकर न खाऊँगा।"³⁴ईसा' ने उससे कहा, "मैं तुझसे सच कहता हूँ, इसी रात मुर्ग के बाँग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।"³⁵पतरस ने उससे कहा, "अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े। तोभी तेरा इन्कार हरगिज़ न करूँगा।" और सब शागिर्दों ने भी इसी तरह कहा।

³⁶उस वक़्त ईसा' उनके साथ गतसिमनी नाम एक जगह में आया और अपने शागिर्दों से कहा। "यहीं बैठे रहना जब तक कि मैं वहाँ जाकर दुआ करूँ।"³⁷और पतरस और ज़बदी के दोनों बेटों को साथ लेकर ग़मगीन और बेकरार होने लगा।³⁸उस वक़्त उसने उनसे कहा, "मेरी जान निहायत ग़मगीन है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है, तुम यहाँ ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।"

³⁹फिर ज़रा आगे बढ़ा और मुँह के बल गिर कर यूँ दुआ की, "ऐ मेरे बाप, अगर हो सके तो ये दुःख का प्याला मुझ से टल जाए, तोभी न जैसा मैं चाहता हूँ; बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"⁴⁰फिर शागिर्दों के पास आकर उनको सोते पाया और पतरस से कहा, "क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?"⁴¹जागते और दु'आ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो, रूह तो मुस्त'इद है मगर जिस्म कमज़ोर है।"

⁴²फिर दोबारा उसने जाकर यूँ दुआ की "ऐ मेरे बाप अगर ये मेरे पिये बग़ैर नहीं टल सकता तो तेरी मज़ी पूरी हो।"⁴³और आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं।⁴⁴और उनको छोड़ कर फिर चला गया, और फिर वही बात कह कर तीसरी बार दुआ की।

⁴⁵तब शागिर्दों के पास आकर उसने कहा "अब सोते रहो, और आराम करो, देखो वक़्त आ पहुँचा है, और इबने आदम गुनाहगारों के हवाले किया जाता है।"⁴⁶उठो चलें, देखो, मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।"

⁴⁷वो ये कह ही रहा था, कि यहूदाह जो उन बारह में से एक था, आया, और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारों और लाठियाँ लिए सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों की तरफ़ से आ पहुँची।⁴⁸और उसके पकड़वाने वाले ने उनको ये निशान दिया था, जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ लेना।

⁴⁹और फ़ौरन उसने ईसा' के पास आ कर कहा, "ऐ रब्बी सलाम!" और उसके बोसे लिए।⁵⁰ईसा' ने उससे कहा, "मियाँ! जिस काम को आया है वो कर ले।" इस पर उन्होंने पास आकर ईसा' पर हाथ डाला और उसे पकड़ लिया।

⁵¹और देखो, ईसा' के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींची और सरदार काहिन के नौकर पर चला कर उसका कान उड़ा दिया।⁵²ईसा' ने उससे कहा, "अपनी तलवार को मियान में कर क्योंकि जो तलवार खींचते हैं वो सब तलवार से हलाक किए जाएँगे।"⁵³क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने बाप से मिन्नत कर सकता हूँ, और वो फ़रिश्तों के बारह पलटन से ज़्यादा मेरे पास अभी मौजूद कर देगा?⁵⁴मगर वो लिखे हुए का यूँ ही होना ज़रूर है क्यों कर पूरे होंगे?"

⁵⁵उसी वक़्त ईसा' ने भीड़ से कहा, “क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे डाकू की तरह पकड़ने निकले हो? मैं हर रोज़ हैकल में बैठकर ता'लीम देता था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा।”⁵⁶मगर ये सब कुछ इसलिए हुआ कि नबियों की नबूव्वत पूरी हों।” इस पर सब शागिर्द उसे छोड़ कर भाग गये।

⁵⁷और ईसा' के पकड़ने वाले उसको काइफ़ा नाम सरदार काहिन के पास ले गए, जहाँ आलिम और बुजुर्ग जमा' हुए थे।⁵⁸और पतरस दूर दूर उसके पीछे पीछे सरदार काहिन के दिवानखाने तक गया, और अन्दर जाकर प्यादों के साथ नतीजा देखने को बैठ गया।

⁵⁹सरदार काहिन और सब सद्दे-ए 'अदालत वाले ईसा' को मार डालने के लिए उसके खिलाफ़ झूठी गवाही ढूँडने लगे।⁶⁰मगर न पाई, गरचे बहुत से झूठे गवाह आए, लेकिन आखिरकार दो गवाहों ने आकर कहा,⁶¹“इस ने कहा है, कि मैं खुदा के मक़दिस को ढा सकता और तीन दिन में उसे बना सकता हूँ।”

⁶²और सरदार काहिन ने खड़े होकर उससे कहा, “तू जवाब नहीं देता? ये तेरे खिलाफ़ क्या गवाही देते हैं?”⁶³मगर ईसा' खामोश ही रहा, सरदार काहिन ने उससे कहा, मैं तुझे ज़िन्दा खुदा की क़सम देता हूँ, “कि अगर तू खुदा का बेटा मसीह है तो हम से कह दे?”⁶⁴ईसा' ने उससे कहा, “तू ने खुद कह दिया” बल्कि मैं तुम से कहता हूँ, कि इसके बा'द इबने आदम को क़ादिर-ए मुतलक़ की दहनी तरफ़ बैठे और आसमान के बादलों पर आते देखोगे।”

⁶⁵इस पर सरदार काहिन ने ये कह कर अपने कपड़े फाड़े उसने कुफ़्र बका है अब हम को गवाहों की क्या ज़रूरत रही? देखो, तुम ने अभी ये कुफ़्र सुना है।

⁶⁶तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने जवाब में कहा, “वो क़ल्ल के लायक़ है।”

⁶⁷इस पर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसके मुक्के मारे और कुछ ने तमांचे मार कर कहा।⁶⁸“ऐ मसीह, हमें नुबुव्वत से बता कि तुझे किस ने मारा।”

⁶⁹पतरस बाहर सहन में बैठा था, कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, “तू भी ईसा' गलीली के साथ था।”⁷⁰उसने सबके सामने ये कह कर इन्कार किया “मैं नहीं जानता तू क्या कहती है।”

⁷¹और जब वो ड्योढ़ी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखा, और जो वहाँ थे, उनसे कहा, “ये भी ईसा' नासरी के साथ था।”⁷²उसने क़सम खा कर फिर इन्कार किया “मैं इस आदमी को नहीं जानता।”

⁷³थोड़ी देर के बा'द जो वहाँ खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर कहा, “बेशक तू भी उन में से है, क्योंकि तेरी बोली से भी ज़ाहिर होता है।”⁷⁴इस पर वो ला'नत करने और क़सम खाने लगा “मैं इस आदमी को नहीं जानता।” और फ़ौरन मुर्ग ने बाँग दी।⁷⁵पतरस को ईसा' की वो बात याद आई जो उसने कही थी: “मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” और वो बाहर जाकर ज़ार ज़ार रोया।

Chapter 27

¹जब सुबह हुई तो सब सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों ने ईसा' के खिलाफ़ मशवरा किया कि उसे मार डालें।² और उसे बाँध कर ले गए, और पीलातुस हाकिम के हवाले किया।

³जब उसके पकड़वाने वाले यहूदाह ने ये देखा, कि वो मुजरिम ठहराया गया, तो अप्सोस किया और वो तीस रुपये सरदार काहिन और बुजुर्गों के पास वापस लाकर कहा। 'मैंने गुनाह किया, "कि बेकुसूर को क़त्ल के लिए पकड़वाया।" उन्होंने ने कहा "हमें क्या! तू जान।" ⁵वो रुपयों को मक्रदिस में फेंक कर चला गया। और जाकर अपने आपको फाँसी दी।

⁶सरदार काहिन ने रुपये लेकर कहा "इनको हैकल के खज़ाने में डालना जायज़ नहीं; क्योंकि ये खून की क्रीमत है।" ⁷पस उन्होंने मशवरा करके उन रुपयों से कुम्हार का खेत परदेसियों के दफ़्न करने के लिए खरीदा। ⁸इस वजह से वो खेत आज तक खून का खेत कहलाता है।

⁹उस वक़्त वो पूरा हुआ जो यरमियाह नबी के ज़रिये कहा गया था "कि जिसकी क्रीमत ठहराई गई थी, उन्होंने उसकी क्रीमत के वो तीस रुपये ले लिए, (उसकी क्रीमत कुछ बनी इस्राईल ने ठहराई थी)। ¹⁰और उसको कुम्हार के खेत के लिए दिया, जैसा "खुदावन्द" ने मुझे हुक्म दिया।"

¹¹ईसा' हाकिम के सामने खड़ा था, और हाकिम ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का बादशाह है?" ईसा' ने उस से कहा, "तू खुद कहता है।" ¹²जब सरदार काहिन और बुजुर्ग उस पर इल्ज़ाम लगा रहे थे, उसने कुछ जवाब न दिया। ¹³इस पर पीलातुस ने उस से कहा "क्या तू नहीं सुनता, ये तेरे खिलाफ़ कितनी गवाहियाँ देते हैं?" ¹⁴उसने एक बात का भी उसको जवाब न दिया, यहाँ तक कि हाकिम ने बहुत ता'ज्जुब किया।

¹⁵और हाकिम का दस्तूर था, कि ईद पर लोगों की खातिर एक क़ैदी जिसे वो चाहते थे छोड़ देता था। ¹⁶उस वक़्त बरअब्बा नाम उन का एक मशहूर क़ैदी था।

¹⁷पस जब वो इकट्ठे हुए तो पीलातुस ने उस से कहा, "तुम किसे चाहते हो कि तुम्हारी खातिर छोड़ दूँ? बरअब्बा को या ईसा' को जो मसीह कहलाता है?" ¹⁸क्योंकि उसे मा'लूम था, कि उन्होंने उसको जलन से पकड़वाया है। ¹⁹और जब वो तख़्त-ए आदालत पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे कहला भेजा "तू इस रास्तबाज़ से कुछ काम न रख क्योंकि मैंने आज ख़्वाब में इस की वजह से बहुत दुःख उठाया है।"

²⁰लेकिन सरदार काहिनों और बुजुर्गों ने लोगों को उभारा कि बरअब्बा को माँग लें, और ईसा' को हलाक कराएँ। ²¹हाकिम ने उनसे कहा इन दोनों में से किसको चाहते हो कि तुम्हारी खातिर छोड़ दूँ? उन्होंने कहा "बरअब्बा को।" ²²पीलातुस ने उनसे कहा "फिर ईसा' को जो मसीह कहलाता है क्या करूँ?" सब ने कहा "वो मस्लूब हो।"

²³उसने कहा "क्यों? उस ने क्या बुराई की है?" मगर वो और भी चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे "वो मस्लूब हो!" ²⁴जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता बल्कि उल्टा बलवा होता जाता है तो पानी लेकर लोगों के रूबरू अपने हाथ धोए "और कहा, मैं इस रास्तबाज़ के खून से बरी हूँ; तुम जानो।"

²⁵सब लोगों ने जवाब में कहा "इसका खून हमारी और हमारी औलाद की गर्दन पर।" ²⁶इस पर उस ने बरअब्बा को उनकी खातिर छोड़ दिया, और ईसा' को कोड़े लगवा कर हवाले किया कि मस्लूब हो।

²⁷इस पर हाकिम के सिपाहियों ने ईसा' को क़िले में ले जाकर सारी पलटन उसके आस पास जमा' की। ²⁸और उसके कपड़े उतार कर उसे क्रिमिज़ी चोगा पहनाया। ²⁹और काँटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखवा, और एक सरकन्डा उस के दहने हाथ में दिया और उसके आगे घुटने टेक कर उसे ठठ्ठों में उड़ाने लगे; "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!"

³⁰और उस पर थूका, और वही सरकन्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। ³¹और जब उसका ठट्ठा कर चुके तो चोगे को उस पर से उतार कर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाए; और मस्लूब करने को ले गए।

³²जब बाहर आए तो उन्होंने शमा'ऊन नाम एक कुरेनी आदमी को पाकर उसे बेगार में पकड़ा, कि उसकी सलीब उठाए। ³³और उस जगह जो गुलगुता या'नी खोपड़ी की जगह कहलाती है पहुँचकर। ³⁴पित मिली हुई मय उसे पीने को दी, मगर उसने चख कर पीना न चाहा।

³⁵और उन्होंने उसे मस्लूब किया; और उसके कपड़े पर्चा डाल कर बाँट लिए। ³⁶और वहाँ बैठ कर उसकी निगहबानी करने लगे। ³⁷और उस का इल्ज़ाम लिख कर उसके सिर से ऊपर लगा दिया "कि ये यहूदियों का बादशाह ईसा' है।"

³⁸उस वक़्त उसके साथ दो डाकू मस्लूब हुए, एक दहने और एक बाएँ। ³⁹और राह चलने वाले सिर हिला हिला कर उसको ला'न ता'न करते और कहते थे। ⁴⁰"ऐ मक्रदिस के ढानेवाले और तीन दिन में बनाने वाले अपने आप को बचा; अगर तू "खुदा" का बेटा है तो सलीब पर से उतर आ।"

⁴¹इसी तरह सरदार काहिन भी फ़क़ीहों और बुजुर्गों के साथ मिलकर ठठ्ठे से कहते थे, ⁴²"इसने औरों को बचाया, अपने आप को नहीं बचा सकता, ये तो इस्राईल का बादशाह है; अब सलीब पर से उतर आए, तो हम इस पर ईमान लाएँ।"

⁴³इस ने खुदा पर भरोसा किया है, अगरचे इसे चाहता है तो अब इस को छोड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, 'मैं खुदा का बेटा हूँ।' ⁴⁴इसी तरह डाकू भी जो उसके साथ मस्लूब हुए थे, उस पर ला'न ता'न करते थे।

⁴⁵और दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक तमाम मुल्क में अन्धेरा छाया रहा। ⁴⁶और तीसरे पहर के क़रीब ईसा' ने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहा "एली, एली, लमा शबक़ तनी "ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, "तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" ⁴⁷जो वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने सुन कर कहा "ये एलियाह को पुकारता है।"

⁴⁸और फ़ौरन उनमें से एक शख्स दौड़ा और सोखते को लेकर सिरके में डुबोया और सरकन्डे पर रख कर उसे चुसाया। ⁴⁹मगर बाक़ियों ने कहा, "ठहर जाओ, देखें तो एलियाह उसे बचाने आता है या नहीं?" ⁵⁰ईसा' ने फिर बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर जान दे दी।

⁵¹और मक्रदिस का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया, और ज़मीन लरज़ी और चट्टानें तड़क गईं। ⁵²और क़ब्रें खुल गईं। और बहुत से जिस्म उन मुक्रदसों के जो सो गए थे, जी उठे। ⁵³और उसके जी उठने के बाद क़ब्रों से निकल कर मुक्रदस शहर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए।

⁵⁴पस सुबेदार और जो उस के साथ ईसा' की निगहबानी करते थे, भौंचाल और तमाम माजरा देख कर बहुत ही डर कर कहने लगे "बै-शक ये "खुदा" का बेटा था।" ⁵⁵और वहाँ बहुत सी औरतें जो गलील से ईसा' की खिदमत करती हुई उसके पीछे पीछे आई थी, दूर से देख रही थीं। ⁵⁶उन में मरियम मगदलीनी थी, और या'कूब और योसेस की माँ मरियम और ज़ब्दी के बेटों की माँ।

⁵⁷जब शाम हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक दौलतमन्द आदमी आया जो खुद भी ईसा' का शगिर्द था।⁵⁸उस ने पीलातुस के पास जा कर ईसा' की लाश माँगी, इस पर पीलातुस ने दे देने का हुक्म दे दिया।

⁵⁹यूसुफ ने लाश को लेकर साफ़ महीन चादर में लपेटा।⁶⁰और अपनी नई क़ब्र में जो उस ने चट्टान में खुदवाई थी रखखा, फिर वो एक बड़ा पत्थर क़ब्र के मुँह पर लुढ़का कर चला गया।⁶¹और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहाँ क़ब्र के सामने बैठी थीं।

⁶²दूसरे दिन जो तैयारी के बा'द का दिन था, सरदार काहिन और फ़रीसियों ने पीलातुस के पास जमा' होकर कहा।⁶³खुदावन्द हमें याद है "कि उस धोकेबाज़ ने जीते जी कहा था, मैं तीन दिन के बा'द जी उठूँगा।"⁶⁴पस हुक्म दे कि तीसरे दिन तक क़ब्र की निगहबानी की जाए, कहीं ऐसा न हो कि उसके शगिर्द आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कह दें, वो मुर्दों में से जी उठा, और ये पिछला धोखा पहले से भी बुरा हो।"

⁶⁵पीलातुस ने उनसे कहा "तुम्हारे पास पहरे वाले हैं" जाओ, जहाँ तक तुम से हो सके उसकी निगहबानी करो।"⁶⁶पस वो पहरेवालों को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर करके क़ब्र की निगहबानी की।

Chapter 28

¹सबत के बा'द हफ्ते के पहले दिन धूप निकलते वक्त्र मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम क़न्न को देखने आई।²और देखो, एक बड़ा भूचाल आया क्योंकि "खुदा" का फ़रिश्ता आसमान से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया; और उस पर बैठ गया।

³उसकी सूरत बिजली की तरह थी, और उसकी पोशाक बर्फ़ की तरह सफ़ेद थी।⁴और उसके डर से निगहबान काँप उठे, और मुर्दा से हो गए।

⁵फ़रिश्ते ने औरतों से कहा, "तुम न डरो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम ईसा' को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था।⁶वो यहाँ नहीं है, क्योंकि अपने कहने के मुताबिक़ जी उठा है; आओ ये जगह देखो जहाँ "खुदावन्द" पड़ा था।⁷और जल्दी जा कर उस के शागिर्दों से कहो वो मुर्दा मैं से जी उठा है, और देखो; वो तुम से पहले गलील को जाता है वहाँ तुम उसे देखोगे, देखो मैंने तुम से कह दिया है।"

⁸और वो ख़ौफ़ और बड़ी ख़ुशी के साथ क़न्न से जल्द रवाना होकर उसके शागिर्दों को ख़बर देने दौड़ीं।⁹और देखो ईसा' उन से मिला, और उस ने कहा, "सलाम।" उन्होंने पास आकर उसके क़दम पकड़े और उसे सज्दा किया।¹⁰इस पर ईसा' ने उन से कहा, "डरो नहीं। जाओ, मेरे भाइयों से कहो कि गलील को चले जाएँ, वहाँ मुझे देखेंगे।"

¹¹जब वो जा रही थीं, तो देखो; पहरेवालों में से कुछ ने शहर में आकर तमाम माजरा सरदार काहिनो से बयान किया।¹²और उन्होंने बुजुर्गों के साथ जमा' होकर मशवरा किया और सिपाहियों को बहुत सा रुपया दे कर कहा,¹³"ये कह देना, कि रात को जब हम सो रहे थे "उसके शागिर्द आकर उसे चुरा ले गए।"

¹⁴"अगर ये बात हाकिम के कान तक पहुँची तो हम उसे समझाकर तुम को ख़तरे से बचा लेंगे।"¹⁵पस उन्होंने रुपया लेकर जैसा सिखाया गया था, वैसा ही किया; और ये बात यहूदियों में मशहूर है।

¹⁶और ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ पर गए, जो ईसा' ने उनके लिए मुक़र्रर किया था।¹⁷उन्होंने उसे देख कर सज्दा किया, मगर कुछ ने शक़ किया।

¹⁸ईसा' ने पास आ कर उन से बातों की और कहा "आस्मान और ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है।¹⁹पस तुम जा कर सब क्रौमों को शागिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रूह-उल-कुदूस के नाम से बपतिस्मा दो।

²⁰और उन को ये ता'लीम दो, कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुम को हुक्म दिया; और देखो, मैं दुनिया के आख़िर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।"

मुक़द्दस मरकुस की मा'रिफ़त इन्ज़ील

Chapter 1

¹ईसा' मसीह इब्ने खुदा की खुशख़बरी की शुरुआत।²जैसा यसायाह नबी की किताब में लिखा है: "देखो, मैं अपना पैग़ंबर पहले भेजता हूँ, जो तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करेगा।³वीराने में पूकारने वाले की आवाज़ आती है कि खुदावन्द के लिए राह तैयार करो, और उसके रास्ते सीधे बनाओ।"

⁴यूहन्ना आया और वीरानों में बपतिस्मा देता और गुनाहों की मुआफ़ी। के लिए तौबा के बपतिस्मे का ऐलान करता था⁵और यहूदिया के मुल्क के सब लोग, और यरूशलीम के सब रहनेवाले निकल कर उस के पास गए, और उन्होंने अपने गुनाहों को कुबूल करके दरिया-ए-यर्दन में उससे बपतिस्मा लिया।⁶ये यूहन्ना ऊँटों के बालों से बनी पोशाक पहनता और चमड़े का पट्टा अपनी कमर से बाँधे रहता था। और वो टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था।

⁷और ये ऐलान करता था, "कि मेरे बा'द वो शख्स आनेवाला है जो मुझ से ताक़तवर है मैं इस लायक़ नहीं कि झुक कर उसकी जूतियों का फीता खोलूँ।⁸मैंने तो तुम को पानी से बपतिस्मा दिया मगर वो तुम को रूह-उल-कुदूस से बपतिस्मा देगा।"

⁹उन दिनों में ऐसा हुआ कि ईसा' ने गलील के नासरत नाम कि जगह से आकर यरदन नदी में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।¹⁰और जब वो पानी से निकल कर ऊपर आया तो फ़ौरन उसने आसमान को खुलते और रूह को कबूतर की तरह अपने ऊपर आते देखा।¹¹और आसमान से ये आवाज़ आई, "तू मेरा प्यारा बेटा है, तुझ से मैं खुश हूँ।"

¹²और उसके बाद रूह ने उसे वीराने में भेज दिया।¹³और वो उस सूनसान जगह में चालीस दिन तक शैतान के ज़रिए आजमाया गया, और वह जंगली जानवरों के साथ रहा किया और फ़रिश्ते उसकी खिदमत करते रहे।

¹⁴फिर यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बा'द ईसा' गलील में आया और खुदा की खुशख़बरी का ऐलान करने लगा।¹⁵और उसने कहा "कि वक्त्र पूरा हो गया है और खुदा की बादशाही नज़दीक आ गई है, तौबा करो और खुशख़बरी पर ईमान लाओ।

¹⁶गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, शमा'ऊन और शमा'ऊन के भाई अन्धियास को झील में जाल डालते हुए देखा; क्योंकि वो मछली पकड़ने वाले थे।

¹⁷और ईसा' ने उन से कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।"¹⁸वो फ़ौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

¹⁹और थोड़ी दूर जाकर कर उसने ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और उसके भाई यूहन्ना को नाव पर जालों की मरम्मत करते देखा।²⁰उसने फ़ौरन उनको अपने पास बुलाया, और वो अपने बाप ज़ब्दी को नाव पर मज़दूरों के साथ छोड़ कर उसके पीछे हो लिए।

²¹फिर वो कफ़रनहूम में दाखिल हुए, और वो फ़ौरन सब्त के दिन इबादतखाने में जाकर ता'लीम देने लगा।²²और लोग उसकी ता'लीम से हैरान हुए, क्योंकि वो उनको आलिमों की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार के साथ ता'लीम देता था।

²³और फ़ौरन उनके इबादतखाने में एक आदमी ऐसा मिला जिस के अंदर बदरूह थी वो यूँ कह कर पुकार उठा।²⁴"ऐ ईसा' नासरी हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें तबाह करने आया है मैं तुझको जानता हूँ कि तू कौन है? खुदा का कुदूस है।"²⁵ईसा' ने उसे झिड़क कर कहा, "चुप रह, और इस में से निकल जा।!"²⁶तब वो बदरूह उसे मरोड़ कर बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर उस में से निकल गई।

²⁷ और सब लोग हैरान हुए "और आपस में ये कह कर बहस करने लगे " ये कौन है । ये तो नई ता'लीम है? वो बदरूहों को भी इस्तिथार के साथ हुक्म देता है, और वो उसका हुक्म मानती हैं।"²⁸ और फ़ौरन उसकी शोहरत गलील के आस पास में हर जगह फैल गई।

²⁹ और वो फ़ौरन इबादतख़ाने से निकल कर शमा'ऊन और अन्धियास के घर आए।³⁰ शमाऊन की सास बुखार में पड़ी थी, और उन्होंने फ़ौरन उसकी ख़बर उसे दी।³¹ उसने पास जाकर और उसका हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और बुखार उस पर से उतर गया, और वो उठकर उसकी ख़िदमत करने लगी।

³² शाम को सूरज डूबने के बाद लोग बहुत से बीमारों को उसके पास लाए।³³ और सारे शहर के लोग दरवाज़े पर जमा हो गए।³⁴ और उसने बहुतों को जो तरह तरह की बीमारियों में गिरफ़्तार थे, अच्छा किया और बहुत सी बदरूहों को निकाला और बदरूहों को बोलने न दिया, क्योंकि वो उसे पहचानती थीं।

³⁵ और सुबह होने से बहुत पहले वो उठा , और एक वीरान जगह में गया, और वहाँ दुआ की।³⁶ और शमा'ऊन और उसके साथी उसके पीछे गए।³⁷ और जब वो मिला तो उन्होंने उससे कहा, "सब लोग तुझे ढूँड रहे हैं!"

³⁸ उसने उनसे कहा "आओ हम और कहीं आस पास के शहरों में चलें ताकि मैं वहाँ भी ऐलान करूँ, क्योंकि मैं इसी लिए निकला हूँ।"³⁹ और वो पूरे गलील में उनके इबादतख़ाने में जा जाकर ऐलान करता और बदरूहों को निकालता रहा।

⁴⁰ और एक कोढ़ी ने उस के पास आकर उसकी मिन्नत की और उसके सामने घुटने टेक कर उस से कहा "अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।"⁴¹ उसने उसपर तरस खाकर हाथ बढ़ाया और उसे छूकर उस से कहा। "मैं चाहता हूँ, तू पाक साफ़ हो जा।"⁴² और फ़ौरन उसका कोढ़ जाता रहा और वो पाक साफ़ हो गया।

⁴³ और उसने उसे हिदायत कर के फ़ौरन रुख़सत किया।⁴⁴ और उससे कहा "ख़बरदार! किसी से कुछ न कहना जाकर अपने आप को इमामों को दिखा, और अपने पाक साफ़ हो जाने के बारे में उन चीज़ों को जो मूसा ने मुकरर की हैं नज़्र गुजार ताकि उनके लिए गवाही हो।"

⁴⁵ लेकिन वो बाहर जाकर बहुत चर्चा करने लगा, और इस बात को इस क्रदर मशहूर किया कि ईसा शहर में फिर खुलेआम दाख़िल न हो सका; बल्कि बाहर वीरान मुक़ामों में रहा, और लोग चारों तरफ़ से उसके पास आते थे।

Chapter 2

¹कई दिन बा'द जब 'ईसा कफ़रनहूम में फिर दाखिल हुआ तो सुना गया कि वो घर में है।²फिर इतने आदमी जमा हो गए, कि दरवाज़े के पास भी जगह न रही और वो उनको कलाम सुना रहा था।

³और लोग एक फ़ालिज मारे हुए को चार आदमियों से उठवा कर उस के पास लाए।⁴मगर जब वो भीड़ की वजह से उसके नज़दीक न आ सके तो उन्होंने उस छत को जहाँ वो था, खोल दिया और उसे उधेड़ कर उस चारपाई को जिस पर फ़ालिज का मारा हुआ लेटा था, लटका दिया।

⁵'ईसा' ने उन लोगों का ईमान देख कर फ़ालिज मारे हुए से कहा, "बेटा, तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए।"⁶मगर वहाँ कुछ आलिम जो बैठे थे, वो अपने दिलों में सोचने लगे।

⁷"ये क्यूँ ऐसा कहता है? कुफ़्र बकता है, खुदा के सिवा गुनाह कौन मु'आफ़ कर सकता है।"

⁸और फ़ौरन 'ईसा' ने अपनी रूह में मा'लूम करके कि वो अपने दिलों में यूँ सोचते हैं उनसे कहा, "तुम क्यूँ अपने दिलों में ये बातें सोचते हो?"⁹आसान क्या है 'फ़ालिज मारे हुए से ये कहना कि तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए, 'या ये कहना कि उठ और अपनी चारपाई उठा कर चल फिर।'?

¹⁰लेकिन इस लिए कि तुम जानों कि इब्ने आदम को ज़मीन पर गुनाह मु'आफ़ करने का इख्तियार है (उसने उस फ़ालिज मारे हुए से कहा)।"¹¹"मैं तुम से कहता हूँ उठ अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।"¹²और वो उठा; फ़ौरन अपनी चारपाई उठाकर उन सब के सामने बाहर चला गया, चुनाँचे वो सब हैरान हो गए, और खुदा की तम्ज़ीद करके कहने लगे "हम ने ऐसा कभी नहीं देखा था!"

¹³वो फिर बाहर झील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई और वो उनको ता'लीम देने लगा।¹⁴जब वो जा रहा था, तो उसने हल्फ़ई के बेटे लावी को महसूल की चौकी पर बैठे देखा,,और उस से कहा "मेरे पीछे हो ले।"पस वो उठ कर उस के पीछे हो लिया।

¹⁵और यूँ हुआ कि वो उस के घर में खाना खाने बैठा | बहुत से महसूल लेने वाले और गुनाहगार लोग 'ईसा' और उसके शागिर्दों के साथ खाने बैठे,क्यूँकि वो बहुत थे, और उसके पीछे हो लिए थे।¹⁶फ़रीसियों ने फ़क़ीहों ने उसे गुनाहगारों और महसूल लेने वालों के साथ खाते देखकर उसके शागिर्दों से कहा, "ये तो महसूल लेने वालों और गुनाहगारों के साथ खाता पीता है।"

¹⁷'ईसा' ने ये सुनकर उनसे कहा, तन्दरुस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं "बल्कि बीमारों को; में रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

¹⁸और यूहन्ना के शागिर्द और फ़रीसी रोज़े से थे, उन्होंने आकर उस से कहा, "यूहन्ना के शागिर्द और फ़रीसियों के शागिर्द तो रोज़ा रखते हैं? लेकिन तेरे शागिर्द क्यूँ रोज़ा नहीं रखते।"¹⁹'ईसा' ने उनसे कहा "क्या बाराती जब तक दुल्हा उनके साथ है रोज़ा रख सकते हैं? जिस वक़्त तक दुल्हा उनके साथ है वो रोज़ा नहीं रख सकते।

²⁰मगर वो दिन आएँगे कि दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा, उस वक़्त वो रोज़ा रखेंगे।"²¹कोरे कपड़े का पैवन्द पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता नहीं तो वो पैवन्द उस पोशाक में से कुछ खींच लेगा, या'नी नया पुरानी से और वो ज़ियादा फट जाएगी।

²²और नई मय को पुरानी मशकों में कोई नहीं भरता नहीं तो मशकें मय से फ़ट जाएँगी और मय और मशकें दोनों बरबाद हो जाएँगी बल्कि नई मय को नई मशकों में भरते हैं।"

²³और यूँ हुआ कि वो सब के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके शागिर्द राह में चलते होए बालें तोड़ने लगे।²⁴और फ़रीसियों ने उस से कहा "देख ये सब के दिन वो काम क्यूँ करते हैं जो जाएज़ नहीं।"

²⁵उसने उनसे कहा, "क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उस को और उस के साथियों को ज़रूरत हुई और वो भूखे हुए ?"²⁶वो क्यूँकर अबियातर सरदार काहिन के दिनों में खुदा के घर में गया, और उस ने नज़्र की रोटियाँ खाई जिनको खाना काहिनों के सिवा और किसी को जाएज़ नहीं था और अपने साथियों को भी दीं" | ?

²⁷और उसने उनसे कहा "सबत आदमी के लिए बना है न आदमी सबत के लिए।"²⁸इस लिए इब्न-ए-आदम सबत का भी मालिक है।"

Chapter 3

¹और वो इबादतखाने में फिर दाखिल हुआ और वहाँ एक आदमी था, जिसका हाथ सूखा हुआ था।²और वो उसके इतिज़ार में रहे, कि अगर वो उसे सब्त के दिन अच्छा करे तो उस पर इल्ज़ाम लगाएँ।

³उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा हुआ था कहा “बीच में खड़ा हो।”⁴और उसने कहा “सब्त के दिन नेकी करना जाएज़ है या बदी करना? जान बचाना या क़त्ल करना” वो चुप रह गए।

⁵उसने उनकी सख़्त दिली की वजह से ग़मगीन होकर और चारों तरफ़ उन पर गुस्से से नज़र करके उस आदमी से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बढ़ा दिया, और उसका हाथ दुरुस्त हो गया।⁶फिर फ़रीसी फ़ौरन बाहर जाकर हेरोदियों के साथ उसके खिलाफ़ मशवरा करने लगे कि उसे किस तरह हलाक करें।

⁷और ईसा अपने शागिर्दों के साथ झील की तरफ़ चला गया, और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।⁸और यहूदिया और यरूशलीम इदूमया से और यरदन के पार सूर और सैदा के शहरों के आस पास से एक बड़ी भीड़ ये सुन कर कि वो कैसे बड़े काम करता है उसके पास आई।

⁹पस उसने अपने शागिर्दों से कहा भीड़ की वजह से एक छोटी नाव मेरे लिए तैयार रहे ताकि वो मुझे दबा न दें।¹⁰क्योंकि उसने बहुत लोगों को अच्छा किया था, चुनौचे जितने लोग जो सख़्त बीमारियों में गिरफ़्तार थे, उस पर गिरे पड़ते थे, कि उसे छू लें।

¹¹और बदरूहें जब उसे देखती थीं उसके आगे गिर पड़ती और पुकार कर कहती थीं, “तू खुदा का बेटा है।”¹²और वो उनको बड़ी ताकीद करता था, मुझे ज़ाहिर न करना।

¹³फिर वो पहाड़ पर चढ़ गया, और जिनको वो आप चाहता था उनको पास बुलाया, और वो उसके पास चले गए।¹⁴और उसने बारह को मुकर्रर किया, ताकि उसके साथ रहें और वो उनको भेजे कि मनादी करें।¹⁵और बदरूहों को निकालने का इख्तियार रखे।¹⁶वो ये हैं शमा'ऊन जिसका नाम पतरस रखा।

¹⁷और ज़ब्दी का बेटा याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना जिस का नाम बु'आनर्गिस या'नी गरज के बेटे रखा।¹⁸और अन्द्रियास, फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, और मत्ती, और तोमा, और हलफ़ाई का बेटा और तद्दी और शमा'ऊन कना'नी।¹⁹और यहूदाह इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।

²⁰वो घर में आया और इतने लोग फिर जमा हो गए, कि वो खाना भी न खा सके।²¹जब उसके अज़ीज़ों ने ये सुना तो उसे पकड़ने को निकले, क्योंकि वो कहते थे “वो बेखुद है।”²²और आलिम जो यरूशलीम से आए थे, “ये कहते थे उसके साथ बा'लज़बूल है और ये भी कि वो बदरूहों के सरदार की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

²³वो उनको पास बुलाकर उनसे मिसालों में कहने लगा “कि शैतान को शैतान किस तरह निकाल सकता है?”²⁴और अगर किसी सल्तनत में फ़ूट पड़ जाए तो वो सल्तनत क़ायम नहीं रह सकती।²⁵और अगर किसी घर में फ़ूट पड़ जाए तो वो घर क़ायम न रह सकेगा।

²⁶और अगर शैतान अपना ही मुखालिफ़ होकर अपने में फ़ूट डाले तो वो क़ायम नहीं रह सकता, बल्कि उसका ख़ातमा हो जाएगा।²⁷लेकिन कोई आदमी किसी ताक़तवर के घर में घुसकर उसके माल को लूट नहीं सकता जब तक वो पहले उस ताक़तवर को न बाँध ले तब उसका घर लूट लेगा।

²⁸मैं तुम से सच् कहता हूँ, कि बनी आदम के सब गुनाह और जितना कुफ़्र वो बकते हैं मु'आफ़ किया जाएगा।²⁹लेकिन जो कोई रूह -उल -कुददूस के हक़ में कुफ़्र बके वो हसेशा तक मु'आफ़ी न पाएगा; बल्कि वो हमेशा गुनाह का कुसूरवार है।³⁰क्योंकि वो कहते थे, कि उस में बदरूह है।

³¹फिर उसकी माँ और भाई आए और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा।³²और भीड़ उसके आसपास बैठी थी, उन्होंने उस से कहा “देख तेरी माँ और तेरे भाई बाहर तुझे पूछते हैं”

³³उसने उनको जवाब दिया “मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?”³⁴और उन पर जो उसके पास बैठे थे नज़र करके कहा “देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं।”³⁵क्योंकि जो कोई खुदा की मर्ज़ी पर चले वही मेरा भाई और मेरी बहन और माँ है।”

Chapter 4

¹वो फिर झील के किनारे ता'लीम देने लगा ; और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ जमा हो गई, वो झील में एक नाव में जा बैठा और सारी भीड़ खुशकी पर झील के किनारे रही।²और वो उनको मिसालों में बहुत सी बातें सिखाने लगा,और अपनी ता'लीम में उनसे कहा।

³“सुनो! देखो; एक बोने वाला बीज बोने निकला।⁴और बोते वक़्त यूँ हुआ कि कुछ राह के किनारे गिरा और परिन्दों ने आकर उसे चुग लिया।⁵और कुछ पत्थरीली ज़मीन पर गिरा, जहाँ उसे बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने की वजह से जल्द उग आया।

⁶और जब सुरज निकला तो जल गया और जड़ न होने की वजह से सूख गया।⁷और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने बढ़कर दबा लिया, और वो फल न लाया।

⁸और कुछ अच्छी ज़मीन पर गिरा और वो उगा और बढ़कर फला; और कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना फल लाया।”⁹“फिर उसने कहा! जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले।”

¹⁰जब वो अकेला रह गया तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उसे इन मिसालों के बारे में पूछा।¹¹उसने उनसे कहा “तुम को खुदा की बादशाही का भी राज़ दिया गया है; मगर उनके लिए जो बाहर हैं सब बातें मिसालों में होती हैं¹²ताकि वो देखते हुए देखें और मा'लूम न करें’ और सुनते हुए सुनें और न समझें’ऐसा न हो कि वो फिर जाएँ और मु'आफ़ी पाएँ।”

¹³फिर उसने उनसे कहा “क्या तुम ये मिसाल नहीं समझते? फिर सब मिसालो को क्यूँकर समझोगे।¹⁴बोनेवाला कलाम बोता है।¹⁵जो राह के किनारे हैं जहाँ कलाम बोया जाता है ये वो हैं कि जब उन्होंने सुना तो शैतान फ़ौरन आकर उस कलाम को जो उस में बोया गया था, उठा ले जाता है।

¹⁶और इसी तरह जो पत्थरीली ज़मीन में बोए गए, ये वो हैं जो कलाम को सुन कर फ़ौरन खुशी से क़बूल कर लेते हैं।¹⁷और अपने अन्दर जड़ नहीं रखते, बल्कि चन्द रोज़ा हैं, फिर जब कलाम की वजह से मुसीबत या जुल्म बर्पा होता है तो फ़ौरन ठोकर खाते हैं।

¹⁸और जो झाड़ियो में बोए गए, वो और हैं ये वो हैं जिन्होंने कलाम सुना।¹⁹और दुनिया की फ़िक्र और दौलत का धोका और और चीज़ों का लालच दाखिल होकर कलाम को दबा देते हैं, और वो बेफल रह जाता है।”²⁰और जो अच्छी ज़मीन में बोए गए, ये वो हैं जो कलाम को सुनते और क़बूल करते और फल लाते हैं; कोई तीस गुना कोई साठ गुना और कोई सौ गुना।

²¹और उसने उनसे कहा क्या चराग़ इसलिए जलाते हैं कि पैमाना या पलंग के नीचे रखवा जाए? क्या इसलिए नहीं कि चिराग़दान पर रखवा जाए”।²²क्यूँकि कोई चीज़ छिपी नहीं मगर इसलिए कि ज़ाहिर हो जाए, और पोशीदा नहीं हुई, मगर इसलिए कि सामने में आए।²³अगर किसी के सुनने के कान हों तो सुन लें।”

²⁴फिर उसने उनसे कहा “ख़बरदार रहो; कि क्या सुनते हो जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा, और तुम को ज़्यादा दिया जाएगा।

²⁵क्यूँकि जिसके पास है उसे दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है उस से वो भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।”

²⁶और उसने कहा“खुदा की बादशाही ऐसी है जैसे कोई आदमी ज़मीन में बीज डाले।²⁷और रात को सोए और दिन को जागे और वो बीज इस तरह उगे और बढ़े कि वो न जाने।²⁸ज़मीन आप से आप फल लाती है, पहले पत्ती फिर बालों में तैयार दाने।”²⁹फिर जब अनाज पक चुका तो वो फ़ौरन दरांती लगाता है क्यूँकि काटने का वक़्त आ पहुँचा।

³⁰फिर उसने कहा“हम खुदा की बादशाही को किससे मिसाल दें और किस मिसाल में उसे बयान करें?³¹वो राई के दाने की तरह है कि जब ज़मीन में बोया जाता है तो ज़मीन के सब बीजों से छोटा होता है।³²मगर जब बो दिया गया तो उग कर सब तरकारियों से बड़ा हो जाता है और ऐसी बड़ी डालियाँ निकालता है कि हवा के परिन्दे उसके साये में बसेरा कर सकते हैं।”

³³और वो उनको इस क्रिस्म की बहुत सी मिसालें दे दे कर उनकी समझ के मुताबिक़ कलाम सुनाता था।³⁴और बे मिसाल उनसे कुछ न कहता था, लेकिन तन्हाई में अपने ख़ास शागिर्दों से सब बातों के मा'ने बयान करता था।

³⁵उसी दिन जब शाम हुई तो उसने उनसे कहा“आओ पार चलें।”³⁶और वो भीड़ को छोड़ कर उसे जिस हाल में वो था, नाव पर साथ ले चले,और उसके साथ और नावें भी थीं।³⁷तब बड़ी आँधी चली और लहरें नाव पर यहाँ तक आई कि नाव पानी से भरी जाती थी।

³⁸और वो खुद पीछे की तरफ़ गद्दी पर सो रहा था“पस उन्होंने उसे जगा कर कहा? ऐ उस्ताद क्या तुझे फ़िक्र नहीं कि हम हलाक हुए जाते हैं।”³⁹उसने उठकर हवा को डांटा और पानी से कहा“साकित हो या'नी थम जा!”पस हवा बन्द हो गई, और बड़ा अमन हो गया।

⁴⁰फिर उसने कहा“तुम क्यूँ डरते हो? अब तक ईमान नहीं रखते।”⁴¹और वो निहायत डर गए और आपस में कहने लगे “ये कौन है कि हवा और पानी भी इसका हुक्म मानते हैं।”

Chapter 5

¹और वो झील के पार गिरासीनियों के इलाके में पहुँचे।²जब वो नाव से उतरा तो फ़ौरन एक आदमी जिस में बदरूह थी, क़ब्रों से निकल कर उससे मिला।

³वो क़ब्रों में रहा करता था और अब कोई उसे जंजीरो से भी न बाँध सकता था।⁴क्यूँकि वो बार बार बेड़ियों और जंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन उसने जंजीरों को तोड़ा और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े किया था, और कोई उसे क़ाबू में न ला सकता था।

⁵वो हमेशा रात दिन क़ब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता और अपने आपको पत्थरों से ज़ख्मी करता था।⁶वो ईसा' को दूर से देखकर दौड़ा और उसे सजदा किया।

⁷और बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहा "ऐ ईसा' खुदा ता'ला के फ़र्ज़न्द मुझे तुझ से क्या काम? तुझे खुदा की क़सम देता हूँ, मुझे अज़ाब में न डाल।"⁸क्यूँकि उसने उससे कहा था, "ऐ बदरूह! इस आदमी में से निकल आ।"

⁹फिर उसने उससे पूछा "तेरा नाम क्या है?" उस ने उससे कहा "मेरा नाम लश्कर, है क्यूँकि हम बहुत हैं।"¹⁰फिर उसने उसकी बहुत मिन्नत की, कि हमें इस इलाके से बाहर न भेज।

¹¹और वहाँ पहाड़ पर खिन्जीरों का एक बड़ा गोल चर रहा था।¹²पस उन्होंने उसकी मिन्नत करके कहा, "हम को उन खिन्जीरों में भेज दे, ताकि हम इन में दाखिल हों।"¹³पस उसने उनको इजाज़त दी और बदरूहें निकल कर खिन्जीरों में दाखिल हो गई, और वो गोल जो कोई दो हज़ार का था किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और झील में डूब मरा।

¹⁴और उनके चराने वालों ने भागकर शहर और देहात में ख़बर पहुँचाई।¹⁵पस लोग ये माजरा देखने को निकलकर ईसा' के पास आए, और जिस में बदरूहें या'नी बदरूहों का लश्कर था, उसको बैठे और कपड़े पहने और होश में देख कर डर गए।

¹⁶देखने वालों ने उसका हाल जिस में बदरूहें थीं और खिन्जीरों का माजरा उनसे बयान किया।¹⁷वो उसकी मिन्नत करने लगे कि हमारी सरहद से चला जा।

¹⁸जब वो नाव में दाखिल होने लगा तो जिस में बदरूहें थीं उसने उसकी मिन्नत की "मैं तेरे साथ रहूँ।"¹⁹लेकिन उसने उसे इजाज़त न दी बल्कि उस से कहा "अपने लोगों के पास अपने घर जा और उनको ख़बर दे कि खुदावन्द ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए, और तुझ पर रहम किया।"²⁰वो गया और दिकापुलिस में इस बात की चर्चा करने लगा, कि ईसा' ने उसके लिए कैसे बड़े काम किए, और सब लोग ताअ'ज्जुब करते थे।

²¹जब ईसा' फिर नाव में पार आया तो बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई और वो झील के किनारे था।²²और इबादतख़ाने के सरदारों में से एक शख्स याईर नाम का आया और उसे देख कर उसके क़दमों में गिरा।²³और ये कह कर मिन्नत की, "मेरी छोटी बेटी मरने को है तू आकर अपना हाथ उस पर रख ताकि वो अच्छी हो जाए और ज़िन्दा रहे।"²⁴पस वो उसके साथ चला और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए और उस पर गिरे पड़ते थे।

²⁵फिर एक औरत जिसके बारह बरस से खून जारी था।²⁶और कई हकीमो से बड़ी तकलीफ़ उठा चुकी थी, और अपना सब माल खर्च करके भी उसे कुछ फ़ाइदा न हुआ था, बल्कि ज़्यादा बीमार हो गई थी।²⁷ईसा' का हाल सुन कर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसकी पोशाक को छुआ।

²⁸क्यूँकि वो कहती थी, "अगर मैं सिर्फ़ उसकी पोशाक ही छू लूँगी तो अच्छी होजाऊँगी।"²⁹और फ़ौरन उसका खून बहना बन्द हो गया और उसने अपने बदन में मा'लूम किया कि मैंने इस बीमारी से शिफ़ा पाई।

³⁰ईसा' को फ़ौरन अपने में मा'लूम हुआ कि मुझ में से कुव्वत निकली, उस भीड़ में पीछे मुड़ कर कहा, "किसने मेरी पोशाक छुई?"³¹उसके शागिर्दों ने उससे कहा, "तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है फिर तू कहता है, मुझे किसने छुआ?"³²उसने चारों तरफ़ निगाह की ताकि जिसने ये काम किया; उसे देखे।

³³वो औरत जो कुछ उससे हुआ था, महसूस करके डरती और काँपती हुई आई और उसके आगे गिर पड़ी और सारा हाल सच सच उससे कह दिया।³⁴उसने उससे कहा, "बेटी तेरे ईमान से तुझे शिफ़ा मिली; सलामती से जा और अपनी इस बीमारी से बची रह।"

³⁵वो ये कह ही रहा था कि इबादतख़ाने के सरदार के यहाँ से लोगों ने आकर कहा, "तेरी बेटी मर गई अब उस्ताद को क्यूँ तकलीफ़ देता है?"

³⁶जो बात वो कह रहे थे, उस पर ईसा' ने ग़ौर न करके 'इबादतख़ाने के सरदार से कहा, "ख़ौफ़ न कर, सिर्फ़ ऐ'तिकाद रख।"³⁷फिर उसने पतरस और या'कूब और या'कूब के भाई यूहन्ना के सिवा और किसी को अपने साथ चलने की इजाज़त न दी।³⁸और वो इबादतख़ाने के सरदार के घर में आए, और उसने देखा कि शोर हो रहा है और लोग बहुत रो पीट रहे हैं

³⁹और अन्दर जाकर उसने कहा, "तुम क्यूँ शोर मचाते और रोते हो, लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।"⁴⁰वो उस पर हँसने लगे, लेकिन वो सब को निकाल कर लड़की के माँ बाप को और अपने साथियों को लेकर जहाँ लड़की पड़ी थी अन्दर गया।

⁴¹और लड़की का हाथ पकड़ कर उससे कहा, "तलीता कुमी जिसका तर्जुमा, ऐ लड़की! मैं तुझ से कहता हूँ उठ।"⁴²वो लड़की फ़ौरन उठ कर चलने फिरने लगी, क्यूँकि वो बारह बरस की थी इस पर लोग बहुत ही हैरान हुए।⁴³फिर उसने उनको ताकीद करके हुक्म दिया कि ये कोई न जाने और फ़रमाया; लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।

Chapter 6

¹फिर वहाँ से निकल कर 'ईसा अपने शहर में आया और उसके शागिर्द उसके पीछे हो लिए।²जब सब्त का दिन आया "तो वो इबादतखाने में ता'लीम देने लगा और बहुत लोग सुन कर हैरान हुए और कहने लगे, "ये बातें इस में कहाँ से आ गई? और ये क्या हिकमत है जो इसे बख्शी गई और कैसे मो'जिज़े इसके हाथ से ज़ाहिर होते हैं।³क्या ये वही बड़ई नहीं जो मरियम का बेटा और या'कूब और योसेस और यहूदाह और शमा'ऊन का भाई है और क्या इसकी बहनें यहाँ हमारे हॉ नहीं?" पस उन्होंने उसकी वजह से ठोकर खाई।

⁴ईसा' ने उन से कहा, "नबी अपने वतन और अपने रिशतेदारों और अपने घर के सिवा और कहीं बेइज़्ज़त नहीं होता।⁵और वो कोई मो'जिज़ा वहाँ न दिखा सका, सिर्फ़ थोड़े से बीमारों पर हाथ रख कर उन्हें अच्छा कर दिया।⁶और उस ने उनकी बे'ऐतिक़ादी पर ता'अज्जुब किया और वो चारों तरफ़ के गावों में ता'लीम देता फिरा।

⁷उसने बारह को अपने पास बुलाकर दो दो करके भोजना शुरू किया और उनको बदरूहों पर इख्तियार बख्शा।⁸और हुक्म दिया " रास्ते के लिए लाठी के सिवा कुछ न लो, न रोटी, न झोली, न अपने कमरबन्द में पैसे।⁹मगर जूतियाँ पहनों और दो दो कुर्ते न पहनों।"

¹⁰और उसने उनसे कहा, "जहाँ तुम किसी घर में दाखिल हो तो उसी में रहो, जब तक वहाँ से रवाना न हो।¹¹जिस जगह के लोग तुम्हें क़बूल न करें और तुम्हारी न सुनें, वहाँ से चलते वक़्त अपने तलुओं की मिट्टी झाड़ दो ताकि उन पर गवाही हो।"

¹²और बारह शागिर्दों ने रवाना होकर ऐलान किया, "कि तौबा करो।"¹³और बहुत सी बदरूहों को निकाला और बहुत से बीमारों को तेल मल कर अच्छा कर दिया।

¹⁴और हेरोदेस बादशाह ने उसका ज़िक्र सुना "क्यूँकि उसका नाम मशहूर होगया था और उसने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मुद्दों में से जी उठा है, क्यूँकि उससे मो'जिज़े ज़ाहिर होते हैं।"¹⁵मगर बा'ज़ कहते थे, एलियाह है और बा'ज़ ये नबियों में से किसी की मानिन्द एक नबी है।

¹⁶मगर हेरोदेस ने सुनकर कहा, "यूहन्ना जिस का सिर मैंने कटवाया वही जी उठा है।"¹⁷क्यूँकि हेरोदेस ने अपने आदमी भेजकर यूहन्ना को पकड़वाया और अपने भाई फ़िलिपुस की बीवी हेरोदियास की वजह से उसे कैदखाने में बाँध रखा था, क्यूँकि हेरोदेस ने उससे शादी कर ली थी।

¹⁸और यूहन्ना ने उससे कहा था, "अपने भाई की बीवी को रखना तुझे जाएज नहीं।"¹⁹पस हेरोदियास उस से दुश्मनी रखती और चाहती थी कि उसे क़त्ल कराए, मगर न हो सका।²⁰क्यूँकि हेरोदेस यूहन्ना को रास्तबाज़ और मुक़द्दस आदमी जान कर उससे डरता और उसे बचाए रखता था और उसकी बातें सुन कर बहुत हैरान हो जाता था, मगर सुनता खुशी से था।

²¹और मौक़े के दिन जब हेरोदेस ने अपनी सालगिराह में अमीरों और फ़ौजी सरदारों और गलील के रईसों की दावत की।²²और उसी हेरोदियास की बेटी अन्दर आई और नाच कर हेरोदेस और उसके मेहमानों को खुश किया तो बादशाह ने उस लड़की से कहा, "जो चाहे मुझ से माँग मैं तुझे दूँगा।"

²³और उससे क़सम खाई "जो कुछ तू मुझ से माँगेगी अपनी आधी सल्तन्त तक तुझे दूँगा।"²⁴और उसने बाहर आकर अपनी माँ से कहा, "मै क्या माँगू?" उसने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर।"²⁵वो फ़ौरन बादशाह के पास जल्दी से अन्दर आई और उस से अर्ज़ किया, "मैं चाहती हूँ कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर एक थाल में अभी मुझे मंगवा दे।"

²⁶बादशाह बहुत ग़मगीन हुआ मगर अपनी क़समों और मेहमानों की वजह से उसे इन्कार करना न चाहा।²⁷पस बादशाह ने फ़ौरन एक सिपाही को हुक्म देकर भेजा कि उसका सिर लाए, उसने जाकर कैद खाने में उस का सिर काटा।²⁸और एक थाल में लाकर लड़की को दिया और लड़की ने माँ को दिया।²⁹फिर उसके शागिर्द सुन कर आए, उस की लाश उठा कर क़ब्र में रखवी।

³⁰और रसूल ईसा' के पास जमा हुए और जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया था, सब उससे बयान किया।³¹उसने उनसे कहा, "तुम आप अलग वीरान जगह में चले आओ और ज़रा आराम करो इसलिए कि बहुत लोग आते जाते थे और उनको खाना खाने को भी फ़ुर्सत न मिलती थी।"³²पस वो नाव में बैठ कर अलग एक वीरान जगह में चले आए।

³³लोगों ने उनको जाते देखा और बहुतेरों ने पहचान लिया और सब शहरों से इकट्ठे हो कर पैदल उधर दौड़े और उन से पहले जा पहुँचे।³⁴और उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उनपर तरस आया क्यूँकि वो उन भेड़ों की मानिन्द थे, जिनका चरवाहा न हो; और वो उनको बहुत सी बातों की ता'लीम देने लगा।

³⁵जब दिन बहुत ढल गया तो उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, "ये जगह वीरान है, और दिन बहुत ढल गया है।³⁶इनको रुख़्सत कर ताकि चारों तरफ़ की बस्तियों और गाँव में जाकर, अपने लिए कुछ खाना मोल लें।"

³⁷उसने उनसे जवाब में कहा, "तुम ही इन्हें खाने को दो।" उन्होंने उससे कहा "क्या हम जाकर दो सौ दिन की मज़दूरी से रोटियाँ मोल लाएँ और इनको खिलाएँ?"³⁸उसने उनसे पूछा, " तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" उन्होंने दरियाफ़्त करके कहा, " पाँच और दो मछलियाँ।"

³⁹उसने उन्हें हुक्म दिया कि, " सब हरी घास पर कतार में होकर बैठ जाएँ।"⁴⁰पस वो सौ सौ और पचास पचास की कतारें बाँध कर बैठ गए।⁴¹फिर उसने वो पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देखकर बरकत दी; और रोटियाँ तोड़ कर शागिर्दों को देता गया कि उनके आगे रखबें, और वो दो मछलियाँ भी उन सब में बाँट दीं।

⁴²पस वो सब खाकर सेर हो गए।⁴³और उन्होंने बे इस्तेमाल खाने और मछलियों से बारह टोक़रियाँ भरकर उठाईं।⁴⁴और खानेवाले पाँच हज़ार मर्द थे।

⁴⁵और फ़ौरन उसने अपने शागिर्दों को मजबूर किया कि नाव पर बैठ कर उस से पहले उस पार बैठ सैदा को चले जाएँ जब तक वो लोगों को रुख़्सत करे।

⁴⁶उनको रुख़्सत करके पहाड़ पर दुआ करने चला गया।⁴⁷जब शाम हुई तो नाव झील के बीच में थी और वो अकेला खुशकी पर था।

⁴⁸जब उसने देखा कि वो खेने से बहुत तंग हैं क्यूँकि हवा उनके मुखालिफ़ थी तो रात के पिछले पहर के क़रीब वो झील पर चलता हुआ उनके पास आया और उनसे आगे निकल जाना चाहता था।⁴⁹लेकिन उन्होंने उसे झील पर चलते देखकर खयाल किया कि "भूत है" और चिल्ला उठे।⁵⁰क्यूँकि सब उसे देख कर घबरा गए थे, मगर उसने फ़ौरन उनसे बातें कीं और कहा, "मुतमईन रहो ! मैं हूँ डरो मत।"

⁵¹फिर वो नाव पर उनके पास आया और हवा थम गई। और वो अपने दिल में निहायत हैरान हुए।⁵²इसलिए कि वो रोटियों के बारे में न समझे थे, बल्कि उनके दिल सख्त हो गए थे।

⁵³और वो पार जाकर गनेसरत के इलाक़े में पहुँचे और नाव किनारे पर लगाई।⁵⁴और जब नाव पर से उतरे तो फ़ौरन लोग उसे पहचान कर।⁵⁵उस सारे इलाक़े में चारों तरफ़ दौड़े और बीमारों को चारपाइयों पर डाल कर जहाँ कहीं सुना कि वो है वहाँ लिए फिरे।

⁵⁶और वो गावँ शहरों और बस्तियों में जहाँ कहीं जाता था लोग बीमारों को राहों में रख कर उसकी मिन्नत करते थे कि वो सिर्फ़ उसकी पोशाक का किनारा छू लें और जितने उसे छूते थे शिफ़ा पाते थे।

Chapter 7

¹फिर फ़रीसी और कुछ आलिम उसके पास जमा हुए, वो यरूशलीम से आए थे।

²और उन्होंने देखा कि उसके कुछ शागिर्द नापाक या'नी बिना धोए हाथों से खाना खाते हैं³ क्योंकि फ़रीसी और सब यहूदी बुजुर्गों की रिवायत के मुताबिक़ जब तक अपने हाथ ख़ूब न धो लें नहीं खाते।⁴ और बाज़ार से आकर जब तक गुस्ल न कर लें नहीं खाते, और बहुत सी और बातों के जो उनको पहुँची हैं पाबन्द हैं, जैसे प्यालों और लोटों और ताँबे के बर्तनों को धोना।

⁵पस फ़रीसियों और आलिमों ने उस से पूछा, “क्या वजह है कि तेरे शागिर्द बुजुर्गों की रिवायत पर नहीं चलते बल्कि नापाक हाथों से खाना खाते हैं?”

⁶उसने उनसे कहा, “यसा'याह ने तुम रियाकारों के हक़ में क्या ख़ूब नबुव्वत की; जैसे लिखा है कि: ‘ये लोग होंटों से तो मेरी ता'ज़ीम करते हैं लेकिन इनके दिल मुझ से दूर हैं।’⁷ ये ब्रे फ़ाइदा मेरी इबादत करते हैं, क्योंकि इनसानी अहक़ाम की ता'लीम देते हैं।’

⁸तुम खुदा के हुक्म को छोड़ करके आदमियों की रिवायत को क़ायम रखते हो।⁹ उसने उनसे कहा, “तुम अपनी रिवायत को मानने के लिए खुदा के हुक्म को बिल्कुल रद्द कर देते हो।¹⁰ क्योंकि मूसा ने फ़रमाया है, ‘अपने बाप की अपनी माँ की’ इज़ज़त कर, और जो कोई बाप या माँ को बुरा कहे, वो ज़रूर जान से मारा जाए।’

¹¹लेकिन तुम कहते हो, ‘अगर कोई बाप या माँ से कहे’ कि जिसका तुझे मुझ से फ़ाइदा पहुँच सकता था, ‘वो कुर्बान या'नी खुदा की नज़्र हो चुकी।’¹² तो तुम उसे फिर बाप या माँ की कुछ मदद करने नहीं देते।¹³ यूँ तुम खुदा के कलाम को अपनी रिवायत से, जो तुम ने जारी की है बेकार कर देते हो, और ऐसे बहुतेरे काम करते हो।”

¹⁴और वो लोगों को फिर पास बुला कर उनसे कहने लगा, “तुम सब मेरी सुनो और समझो।¹⁵ कोई चीज़ बाहर से आदमी में दाख़िल होकर उसे नापाक नहीं कर सकती मगर जो चीज़ें आदमी में से निकलती हैं वही उसको नापाक करती हैं।”¹⁶ [अगर किसी के सुनने के कान हों तो सुन लें।]

¹⁷जब वो भीड़ के पास से घर में आया “तो उसके शागिर्दों ने उससे इस मिसाल का मतलब पूछा?”¹⁸ उस ने उनसे कहा, “क्या तुम भी ऐसे ना समझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि कोई चीज़ जो बाहर से आदमी के अन्दर जाती है उसे नापाक नहीं कर सकती?¹⁹ इसलिए कि वो उसके दिल में नहीं बल्कि पेट में जाती है और ग़ंदगी में निकल जाती है” ये कह कर उसने तमाम खाने की चीज़ों को पाक ठहराया।

²⁰फिर उसने कहा, “जो कुछ आदमी में से निकलता है वही उसको नापाक करता है।²¹ क्योंकि अन्दर से, या'नी आदमी के दिल से बुरे ख्याल निकलते हैं हरामकारियाँ²² चोरियाँ, खून रेज़ियाँ, ज़िनाकारियाँ, लालच, बदियाँ, मक्कारी, शहवत परस्ती, बदनज़री, बदगोई, शेखी, बेवकूफ़ी।²³ ये सब बुरी बातें अन्दर से निकल कर आदमी को नापाक करती हैं”

²⁴फिर वहाँ से उठ कर सूर और सैदा की सरहदों में गया और एक घर में दाख़िल हुआ और नहीं चाहता था कि कोई जाने मगर छुपा न रह सका।²⁵ बल्कि फ़ौरन एक औरत जिसकी छोटी बेटी में बदरूह थी, उसकी ख़बर सुनकर आई और उसके क़दमों पर गिरी।²⁶ ये 'औरत यूनानी थी और क्रौम की सूरूफ़ेनेकी। उसने उससे दरख़वास्त की कि बदरूह को उसकी बेटी में से निकाले।

²⁷उसने उससे कहा, “पहले लड़कों को सेर होने दे क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देना अच्छा नहीं।”²⁸ उस ने जवाब में कहा “हाँ खुदावन्द, कुत्ते भी मेज़ के तले लड़कों की रोटी के टुकड़ों में से खाते हैं।”

²⁹उसने उससे कहा “इस कलाम की खातिर जा बदरूह तेरी बेटी से निकल गई है।”³⁰ और उसने अपने घर में जाकर देखा कि लड़की पलंग पर पड़ी है और बदरूह निकल गई है।

³¹और वो फिर सूर शहर की सरहदों से निकल कर सैदा शहर की राह से दिकापुलिस की सरहदों से होता हुआ गलील की झील पर पहुँचा।³² और लोगों ने एक बहरे को जो हकला भी था, उसके पास लाकर उसकी मिन्नत की कि अपना हाथ उस पर रख।

³³वो उसको भीड़ में से अलग ले गया, और अपनी उंगलियाँ उसके कानों में डाली और थूक कर उसकी ज़बान छूई।³⁴ और आसमान की तरफ़ नज़र करके एक आह भरी और उससे कहा “इफ़्रत्तह!” (या'नी “खुल जा!”)³⁵ और उसके कान खुल गए, और उसकी ज़बान की गिरह खुल गई और वो साफ़ बोलने लगा।

³⁶उसने उसको हुक्म दिया कि किसी से न कहना, लेकिन जितना वो उनको हुक्म देता रहा उतना ही ज़्यादा वो चर्चा करते रहे।³⁷ और उन्होंने ने निहायत ही हैरान होकर कहा “जो कुछ उसने किया सब अच्छा किया वो बहरों को सुनने की और गूँगों को बोलने की ताक़त देता है।”

Chapter 8

¹उन दिनों में जब फिर बड़ी भीड़ जमा हुई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो उसने अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनसे कहा।²“मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि ये तीन दिन से बराबर मेरे साथ रही हैं और इनके पास कुछ खाने को नहीं।³अगर मैं इनको भूखा घर को रुखसत करूँ तो रास्ते में थक कर रह जाएँगे और कुछ इन में से दूर के हैं।”⁴उस के शागिर्दों ने उसे जवाब दिया, “इस वीराने में कहाँ से कोई इतनी रोटियाँ लाए कि इनको खिला सके?”

⁵उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।”⁶फिर उसने लोगों को हुक्म दिया कि ज़मीन पर बैठ जाएँ। उसने वो सात रोटियाँ लीं और शुक़र करके तोड़ीं, और अपने शागिर्दों को देता गया कि उनके आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे रख दीं।

⁷उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ भी थीं उसने उन पर बरकत देकर कहा कि ये भी उनके आगे रख दो।⁸पस वो खा कर सेर हुए और बचे हुए बे इस्तेमाल खाने के सात टोकरे उठाए।⁹और वो लोग चार हज़ार के करीब थे, फिर उसने उनको रुखसत किया।¹⁰वो फ़ौरन अपने शागिर्दों के साथ नाव में बैठ कर दलमनूता के सूबा में गया।

¹¹फिर फ़रीसी निकल कर उस से बहस करने लगे, और उसे आजमाने के लिए उससे कोई आसमानी निशान तलब किया।¹²उसने अपनी रूह में आह खीच कर कहा, “इस ज़माने के लोग क्यूँ निशान तलब करते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस ज़माने के लोगों को कोई निशान न दिया जाएगा।”¹³और वो उनको छोड़ कर फिर नाव में बैठा और पार चला गया।

¹⁴वो रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उनके पास एक से ज़्यादा रोटी न थी।¹⁵और उसने उनको ये हुक्म दिया, “ख़बरदार, फ़रीसियों के तालीम और हेरोदेस की तालीम से होशियार रहना।”

¹⁶वो आपस में चर्चा करने और कहने लगे, “हमारे पास रोटियाँ नहीं।”¹⁷मगर ईसा ने ये मा'लूम करके कहा, “तुम क्यूँ ये चर्चा करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते, और नहीं समझते हो? क्या तुम्हारा दिल सख़्त हो गया है?”

¹⁸आखें हैं और तुम देखते नहीं कान हैं और सुनते नहीं और क्या तुम को याद नहीं।¹⁹जिस वक़्त मैने वो पाँच रोटियाँ पाँच हज़ार के लिए तोड़ीं तो तुम ने कितनी टोकरियाँ बे इस्तेमाल खाने से भरी हुई उठाईं?” उन्होंने ने उस से कहा “बारह”।

²⁰“और जिस वक़्त सात रोटियाँ चार हज़ार के लिए तोड़ीं तो तुम ने कितने टोकरे बे इस्तेमाल खाने से भरे हुए उठाए?” उन्होंने ने उस से कहा “सात।”²¹उस ने उनसे कहा “क्या तुम अब तक नहीं समझते?”

²²फिर वो बैत सैदा में आये और लोग एक अँधे को उसके पास लाए और उसकी मिन्नत की, कि उसे छूए।²³वो उस अँधे का हाथ पकड़ कर उसे गांव से बाहर ले गया, और उसकी आखों में थूक कर अपने हाथ उस पर रखे और उस से पूछा, “क्या तू कुछ देखता है?”

²⁴उसने नज़र उठा कर कहा “मैं आदमियों को देखता हूँ क्योंकि वो मुझे चलते हुए ऐसे दिखाई देते हैं जैसे दरख़्त।”²⁵उसने फिर दोबारा उसकी आँखों पर अपने हाथ रखे और उसने ग़ौर से नज़र की और अच्छा हो गया और सब चीज़ें साफ़ साफ़ देखने लगा।²⁶फिर उसने उसको उसके घर की तरफ़ रवाना किया और कहा, “इस गावँ के अन्दर क्रदम न रखना।”

²⁷फिर ईसा और उसके शागिर्द कैसरीया फ़िलिप्पी के गावँ में चले आए और रास्ते में उसने अपने शागिर्दों से पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?”²⁸उन्होंने ने जवाब दिया, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; कुछ एलियाह और कुछ नबियों में से कोई।”

²⁹उसने उनसे पूछा, “लेकिन तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने जवाब में उस से कहा, “तू मसीह है।”³⁰फिर उसने उनको ताकीद की कि मेरे बारे में किसी से ये न कहना।

³¹फिर वो उनको ता'लीम देने लगा, कि ज़रूर है कि इबने आदम बहुत दुःख उठाए और बुजुर्ग और सरदार काहिन और आलिम उसे रद्द करें, और वो क्रल्ल किया जाए, और तीन दिन के बा'द जी उठे।³²उसने ये बात साफ़ साफ़ कही पतरस उसे अलग ले जाकर उसे मलामत करने लगा।

³³मगर उसने मुड़ कर अपने शागिर्दों पर निगाह करके पतरस को मलामत की और कहा, “ऐ शैतान मेरे सामने से दूर हो; क्योंकि तू ख़ुदा की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का ख़याल रखता है।”³⁴फिर उसने भीड़ को अपने शागिर्दों समेत पास बुला कर उनसे कहा, “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करे और अपनी सलीब उठाए, और मेरे पीछे हो ले।

³⁵क्यूँकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे वो उसे खोएगा, और जो कोई मेरी और इन्ज़ील की ख़ातिर अपनी जान खोएगा, वो उसे बचाएगा।³⁶आदमी अगर सारी दुनिया को हासिल करे और अपनी जान का नुक़सान उठाए, तो उसे क्या फ़ाइदा होगा?³⁷और आदमी अपनी जान के बदले क्या दे?

³⁸क्यूँकि जो कोई इस बे ईमान और बुरी क्रौम में मुझ से और मेरी बातों से शरमाए गा, इबने आदम भी अपने बाप के जलाल में पाक फ़रिश्तों के साथ आएगा तो उस से शरमाएगा।”

Chapter 9

¹और उसने उनसे कहा 'मैं तुम से सच कहता हूँ "जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं जब तक खुदा की बादशाही को कुदरत के साथ आया हुआ देख न लें मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे। "छ: दिन के बा'द ईसा' ने पतरस और या'कूब यूहन्ना को अपने साथ लिया और उनको अलग एक ऊँचे पहाड़ पर तन्हाई में ले गया और उनके सामने उसकी सूरत बदल गई।³ उसकी पोशाक ऐसी नूतनी और निहायत सफ़ेद हो गई, कि दुनिया में कोई धोबी वैसी सफ़ेद नहीं कर सकता।

⁴और एलियाह मूसा के साथ उनको दिखाई दिया, और वो ईसा' से बातें करते थे।⁵ पतरस ने ईसा' से कहा "रब्बी हमारा यहाँ रहना अच्छा है पस हम तीन तम्बू बनाएँ एक तेरे लिए एक मूसा के लिए, और एक एलियाह के लिए।"⁶ क्योंकि वो जानता न था कि क्या कहे इसलिए कि वो बहुत डर गए थे।

⁷फिर एक बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज़ आई "ये मेरा प्यारा बेटा है; इसकी सुनो।"⁸ और उन्होंने ने यकायक जो चारों तरफ़ नज़र की तो ईसा' के सिवा और किसी को अपने साथ न देखा।

⁹जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो उसने उनको हुक्म दिया कि "जब तक इबने आदम मुर्दों में से जी न उठे जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।"¹⁰ उन्होंने इस कलाम को याद रखा और वो आपस में बहस करते थे, कि मुर्दों में से जी उठने के क्या मतलब हैं।

¹¹फिर उन्होंने ने उस से ये पूछा, "आलिम क्यूँ कहते हैं कि एलियाह का पहले आना ज़रूर है?"¹² उसने उनसे कहा, "एलियाह अलबत्ता पहले आकर सब कुछ बहाल करेगा मगर क्या वजह है कि इबने आदम के हक़ में लिखा है कि वो बहुत से दुःख उठाएगा और ज़लील किया जाएगा?"¹³ लेकिन मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह तो आ चुका" और जैसा उसके हक़ में लिखा है उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।

¹⁴जब वो शागिर्दों के पास आए तो देखा कि उनके चारों तरफ़ बड़ी भीड़ है, और आलिम लोग उनसे बहस कर रहे हैं।¹⁵ और फ़ौरन सारी भीड़ उसे देख कर निहायत हैरान हुई और उसकी तरफ़ दौड़ कर उसे सलाम करने लगे।¹⁶ उसने उनसे पूछा, "तुम उन से क्या बहस करते हो?"

¹⁷और भीड़ में से एक ने उसे जवाब दिया, "ऐ उस्ताद! मैं अपने बेटे को जिसमे गूंगी रूह है तेरे पास लाया था।¹⁸ वो जहाँ उसे पकड़ती है, पटक देती है; और वो क़फ़ भर लाता और दाँत पीसता और सूखता जाता है। मैंने तेरे शागिर्दों से कहा था, वो उसे निकाल दें मगर वो न निकाल सके।"¹⁹ उसने जवाब में उनसे कहा, "ऐ बेऐ'तिक़ाद क्रौम! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाश्त करूँगा उसे मेरे पास लाओ।"

²⁰पस वो उसे उसके पास लाए, और जब उसने उसे देखा तो फ़ौरन रूह ने उसे मरोड़ा और वो ज़मीन पर गिरा और क़फ़ भर लाकर लोटने लगा।²¹ उसने उसके बाप से पूछा "ये इस को कितनी मुह्त से है?" उसने कहा "बचपन ही से।"²² और उसने उसे अक्सर आग और पानी में डाला ताकि उसे हलाक करे लेकिन अगर तू कुछ कर सकता है तो हम पर तरस खाकर हमारी मदद कर।"

²³ईसा' ने उस से कहा "क्या 'जो तू कर सकता है 'जो ऐ'तिक़ाद रखता है? उस के लिए सब कुछ हो सकता है।"²⁴ उस लड़के के बाप ने फ़ौरन चिल्लाकर कहा, "मैं ऐ'तिक़ाद रखता हूँ, मेरी बे ऐ'तिक़ादी का इलाज कर।"²⁵ जब ईसा' ने देखा कि लोग दौड़ दौड़ कर जमा हो रहे हैं, तो उस बद रूह को झिड़क कर कहा, मैं तुझ से कहता हूँ, इसमे से बाहर आ और इसमें फिर दाखिल न होना।

²⁶वो चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़ कर निकल आई और वो मुर्दा सा हो गया "ऐसा कि अक्सरों ने कहा कि वो मर गया।"²⁷ मगर ईसा' ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वो उठ खड़ा हुआ।

²⁸जब वो घर में आया तो उसके शागिर्दों ने तन्हाई में उस से पूछा "हम उसे क्यूँ न निकाल सके?"²⁹ उसने उनसे कहा, "ये सिर्फ़ दुआ के सिवा और किसी तरह नहीं निकल सकती।"

³⁰फिर वहाँ से रवाना हुए और गलील से हो कर गुज़रे और वो न चाहता था कि कोई जाने।³¹ इसलिए कि वो अपने शागिर्दों को ता'लीम देता और उनसे कहता था, "इबने आदम आदमियों के हवाले किया जाएगा और वो उसे क़त्ल करेंगे और वो क़त्ल होने के तीन दिन बा'द जी उठेगा।"³² लेकिन वो इस बात को समझते न थे, और उस से पूछते हुए डरते थे।

³³फिर वो क़फ़नहूम में आए और जब वो घर में था तो उसने उनसे पूछा, "तुम रास्ते में क्या बहस करते थे?"³⁴ वो चुप रहे क्यूँकि उन्होंने रास्ते में एक दूसरे से ये बहस की थी कि बड़ा कौन है?³⁵ फिर उसने बैठ कर उन बारह को बुलाया और उनसे कहा "अगर कोई अव्वल होना चाहे तो वो सब से पिछला और सब का खादिम बने।"

³⁶और एक बच्चे को लेकर उन के बीच में खड़ा किया फिर उसे गोद में लेकर उनसे कहा।³⁷ "जो कोई मेरे नाम पर ऐसे बच्चों में से एक को क़बूल करता है वो मुझे क़बूल करता है और जो कोई मुझे क़बूल करता है वो मुझे नहीं बल्कि उसे जिस ने मुझे भेजा है क़बूल करता है।"

³⁸यूहन्ना ने उस से कहा "ऐ उस्ताद हम ने एक शख्स को तेरे नाम से बदरूहों को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे "क्यूँकि वो हमारी पैरवी नहीं करता था।"³⁹ लेकिन ईसा' ने कहा "उसे मना न करना क्यूँकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से मो'जिज़े दिखाए और मुझे जल्द बुरा कह सके।

⁴⁰क्यूँकि जो हमारे खिलाफ़ नहीं वो हमारी तरफ़ है।⁴¹ जो कोई एक प्याला पानी तुम को इसलिए पिलाए कि तुम मसीह के हो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अज़्र हरगिज़ न खोएगा।

⁴²और जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर ईमान लाए हैं किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिए ये बेहतर है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वो समुन्दर में फेंक दिया जाए।⁴³ अगर तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल टुंडा हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो हाथ होते जहन्नुम के बीच उस आग में जाए जो कभी बुझने की नहीं।⁴⁴ जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।

⁴⁵और अगर तेरा पावें तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल लंगड़ा हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो पावें होते जहन्नुम में डाला जाए।⁴⁶ जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।

⁴⁷और अगर तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल काना हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो आँखें होते जहन्नुम में डाला जाए।⁴⁸ जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।

⁴⁹क्योंकि हर शख्स आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक कुर्बानी नमक से नमकीन की जाएगी]।⁵⁰नमक अच्छा है लेकिन अगर नमक की नमकीनी जाती रहे तो उसको किस चीज़ से मज़ेदार करोगे? अपने में नमक रखो और एक दूसरे के साथ मेल मिलाप से रहो।”

Chapter 10

¹फिर वो वहाँ से उठ कर यहूदिया की सरहदों में और यरदन के पार आया और भीड़ उसके पास फिर जमा हो गई और वो अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ फिर उनको ता'लीम देने लगा।²और फ़रीसियों ने पास आकर उसे आजमाने के लिए उससे पूछा, “क्या ये जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को छोड़ दे?”³उसने जवाब में कहा, “मूसा ने तुम को क्या हुक्म दिया है?”⁴उन्होंने कहा, “मूसा ने तो इजाज़त दी है कि तलाक़ नामा लिख कर छोड़ दें?”

⁵मगर ईसा ने उनसे कहा, “उस ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए ये हुक्म लिखा था।⁶लेकिन पैदाइश के शुरू से उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया।

⁷इस लिए मर्द अपने-बाप से और माँ से जुदा हो कर अपनी बीवी के साथ रहेगा।⁸और वो और उसकी बीवी दोनों एक जिस्म होंगे 'पस वो दो नहीं बल्कि एक जिस्म हैं।⁹इसलिए जिसे ख़ुदा ने जोड़ा है उसे आदमी जुदा न करे।”

¹⁰और घर में शागिर्दों ने उससे इसके बारे में फिर पूछा।¹¹उसने उनसे कहा “जो कोई अपनी बीवी को छोड़ दे और दूसरी से शादी करे वो उस पहली के बरखिलाफ़ ज़िना करता है।¹²और अगर औरत अपने शौहर को छोड़ दे और दूसरे से शादी करे तो ज़िना करती है।”

¹³फिर लोग बच्चों को उसके पास लाने लगे ताकि वो उनको छुए मगर शागिर्दों ने उनको झिड़का।¹⁴“ईसा” ये देख कर ख़फ़ा हुआ और उन से कहा बच्चों को मेरे पास आने दो उन को मना न करो क्योंकि ख़ुदा की बादशाही ऐसों ही की है

¹⁵मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई ख़ुदा की बादशाही को बच्चे की तरह कुबूल न करे वो उस में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा।¹⁶फिर उसने उन्हें अपनी गोद में लिया और उन पर हाथ रखकर उनको बरकत दी।

¹⁷जब वो बाहर निकल कर रास्ते में जा रहा था तो एक शख्स दौड़ता हुआ उसके पास आया और उसके आगे घुटने टेक कर उससे पूछने लगा “ऐ नेक उस्ताद; मैं क्या करूँ कि हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस बनूँ?”¹⁸ईसा ने उससे कहा “तू मुझे क्यों नेक कहता है? कोई नेक नहीं मगर एक या'नी ख़ुदा।¹⁹तू हुक्मों को तो जानता है खून न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे, धोका देकर नुक़सान न कर, अपने बाप की और माँ की इज़ज़त कर।”

²⁰उसने उससे कहा “ऐ उस्ताद मैंने बचपन से इन सब पर अमल किया है।”²¹ईसा ने उसको देखा और उसे उस पर प्यार आया, और उससे कहा, “एक बात की तुझ में कमी है; जा, जो कुछ तेरा है बेच कर ग़रीबों को दे, तुझे आसमान पर खज़ाना मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले।”²²इस बात से उसके चहरे पर उदासी छा गई, और वो ग़मगीन हो कर चला गया; क्योंकि बड़ा मालदार था।

²³फिर ईसा ने चारों तरफ़ नज़र करके अपने शागिर्दों से कहा, “दौलतमन्द का ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल होना कैसा मुश्किल है।”²⁴शागिर्द उस की बातों से हैरान हुए ईसा ने फिर जवाब में उनसे कहा, “बच्चों जो लोग दौलत पर भरोसा रखते हैं उन के लिए ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल होना क्या ही मुश्किल है।²⁵ऊँट का सूई के नाके में से गुज़र जाना इस से आसान है कि दौलतमन्द ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल हो।”

²⁶वो निहायत ही हैरान हो कर उस से कहने लगे, “फिर कौन नजात पा सकता है?”²⁷ईसा ने उनकी तरफ़ नज़र करके कहा, “ये आदमियों से तो नहीं हो सकता लेकिन ख़ुदा से हो सकता है क्योंकि ख़ुदा से सब कुछ हो सकता है।”²⁸पतरस उस से कहने लगा “देख हम ने तो सब कुछ छोड़ दिया और तेरे पीछे हो लिए हैं।”

²⁹ईसा ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर या भाइयों या बहनों या माँ बाप या बच्चों या खेतों को मेरी खातिर और इन्जील की खातिर छोड़ दिया हो।³⁰और अब इस ज़माने में सौ गुना न पाए घर और भाई और बहनों और माएँ और बच्चे और खेत मगर जुल्म के साथ और आने वाले आलम में हमेशा की ज़िन्दगी।³¹लेकिन बहुत से अव्वल आखिर हो जाएँगे और आखिर अव्वल।

³²और वो यरूशलीम को जाते हुए रास्ते में थे और ईसा उनके आगे जा रहा था वो हैरान होने लगे और जो पीछे पीछे चलते थे डरने लगे पस वो फिर उन बारह को साथ लेकर उनको वो बातें बताने लगा जो उस पर आने वाली थीं,³³“देखो हम यरूशलीम को जाते हैं और इब्ने आदम सरदार काहिनों फ़क़ीहों के हवाले किया जाएगा, और वो उसके क्रल्ल का हुक्म देंगे और उसे ग़ैर क़ौमों के हवाले करेंगे।³⁴और वो उसे ठट्ठों में उड़ाएँगे और उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और क्रल्ल करेंगे और वो तीन दिन के बा'द जी उठेगा।”

³⁵तब ज़ब्दी के बेटों या'कूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर उससे कहा “ऐ उस्ताद हम चाहते हैं कि जिस बात की हम तुझ से दरब्रवास्त करें” तू हमारे लिए करे।³⁶उसने उनसे कहा तुम क्या चाहते हो “कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”³⁷उन्होंने उससे कहा “हमारे लिए ये कर कि तेरे जलाल में हम में से एक तेरी दाहिनी और एक बाई तरफ़ बैठे।”

³⁸ईसा ने उनसे कहा “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो प्याला मैं पीने को हूँ क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा में लेने को हूँ तुम ले सकते हो?”³⁹उन्होंने उससे कहा, “हम से हो सकता है।” ईसा ने उनसे कहा, “जो प्याला मैं पीने को हूँ तुम पियोगे? और जो बपतिस्मा में लेने को हूँ तुम लोगे।⁴⁰लेकिन अपनी दाहिनी या बाई तरफ़ किसी को बिठा देना मेरा काम नहीं मगर जिन के लिए तैयार किया गया उन्ही के लिए है।”

⁴¹जब उन दसों ने ये सुना तो या'कूब और यूहन्ना से ख़फ़ा होने लगे।⁴²ईसा ने उन्हें पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम जानते हो कि जो ग़ैर क़ौमों के सरदार समझे जाते हैं वो उन पर हुक्मत चलाते हैं और उनके अमीर उन पर इख़्तियार जताते हैं।

⁴³मगर तुम में ऐसा कौन है बल्कि जो तुम में बड़ा होना चाहता है वो तुम्हारा खादिम बने।⁴⁴और जो तुम में अव्वल होना चाहता है वो सब का गुलाम बने।⁴⁵क्योंकि इब्ने आदम भी इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतेरों के बदले फ़िदिये में दे।”

⁴⁶और वो यरीहू में आए और जब वो और उसके शागिर्द और एक बड़ी भीड़ यरीहू से निकलती थी तो तिमाई का बेटा बरतिमाई अँधा फ़क़ीर रास्ते के किनारे बैठा हुआ था।⁴⁷और ये सुनकर कि ईसा नासरी है चिल्ला चिल्लाकर कहने लगा, “ऐ इब्ने दाऊद ऐ ईसा मुझ पर रहम कर!”⁴⁸और बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप रह, मगर वो और ज़्यादा चिल्लाया, “ऐ इब्ने दाऊद मुझ पर रहम कर!”

⁴⁹ईसा ने खड़े होकर कहा, “उसे बुलाओ।” पस उन्होंने ने उस अँधे को ये कह कर बुलाया, “कि इत्मिनान रख। उठ, वो तुझे बुलाता है।”⁵⁰वो अपना चोगा फेंक कर उछल पड़ा और ईसा के पास आया।

⁵¹ईसा ने उस से कहा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?” अँधे ने उससे कहा, “ऐ रब्बूनी, ये कि मैं देखने लगूँ।”⁵²ईसा ने उस से कहा जा तेरे ईमान ने तुझे अच्छा कर दिया और वो फ़ौरन देखने लगा और रास्ते में उसके पीछे हो लिया

Chapter 11

¹जब वो यरूशलीम के नज़दीक ज़ैतून के पहाड़ पर बैतफ़िगे और बैत अन्नियाह के पास आए तो उसने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा।²और उनसे कहा, “अपने सामने के गाँव में जाओ और उस में दाखिल होते ही एक गधी का जवान बच्चा बाँधा हुआ तुम्हें मिलेगा, जिस पर कोई आदमी अब तक सवार नहीं हुआ; उसे खोल लाओ।³और अगर कोई तुम से कहे, ‘तुम ये क्यों करते हो?’ तो कहना, ‘खुदावन्द को इस की ज़रूरत है।’ वो फ़ौरन उसे यहाँ भेजेगा।”

⁴पस वो गए, और बच्चे को दरवाज़े के नज़दीक बाहर चौक में बाँधा हुआ पाया और उसे खोलने लगे।⁵मगर जो लोग वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने उन से कहा “ये क्या करते हो? कि गधी का बच्चा खोलते हो?”⁶उन्होंने जैसा ईसा ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया और उन्होंने उनको जाने दिया।

⁷पस वो गधी के बच्चे को ईसा के पास लाए और अपने कपड़े उस पर डाल दिए और वो उस पर सवार हो गया।⁸और बहुत लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिए, औरों ने खेतों में से डालियाँ काट कर फैला दीं।⁹जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे ये पुकार पुकार कर कहते जाते थे “होशा”ना मुबारक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है।¹⁰मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है आलम -ए बाला पर होशा”ना।”

¹¹और वो यरूशलीम में दाखिल होकर हैकल में आया और चारों तरफ़ सब चीज़ों का मुआइना करके उन बारह के साथ बैत अन्नियाह को गया क्योंकि शाम हो गई थी।¹²दूसरे दिन जब वो बैत अन्नियाह से निकले तो उसे भूख लगी।

¹³और वो दूर से अंजीर का एक दरख़्त जिस में पत्ते थे देख कर गया कि शायद उस में कुछ पाए मगर जब उसके पास पहुँचा तो पत्तों के सिवा कुछ न पाया क्योंकि अंजीर का मोसम न था।¹⁴उसने उस से कहा “आइन्दा कोई तुझ से कभी फ़ल न खाए!” और उसके शागिर्दों ने सुना।

¹⁵फिर वो यरूशलीम में आए, और ईसा हैकल में दाखिल होकर उन को जो हैकल में खरीदो फ़रोख़्त कर रहे थे बाहर निकालने लगा और सराफ़ों के तख़्त और कबूतर फ़रोशों की चौकियों को उलट दिया।¹⁶और उसने किसी को हैकल में से होकर कोई बर्तन ले जाने न दिया।

¹⁷और अपनी ता’लीम में उनसे कहा, “क्या ये नहीं लिखा कि मेरा घर सब क्रौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा? मगर तुम ने उसे डाकूओं की खोह बना दिया है।”¹⁸और सरदार काहिन और फ़क़ीह ये सुन कर उसके हलाक करने का मौक़ा ढूँडने लगे क्योंकि उस से डरते थे इसलिए कि सब लोग उस की ता’लीम से हैरान थे।¹⁹और हर रोज़ शाम को वो शहर से बाहर जाया करता था,

²⁰फिर सुबह को जब वो उधर से गुज़रे तो उस अंजीर के दरख़्त को जड़ तक सूखा हुआ देखा।²¹पतरस को वो बात याद आई और उससे कहने लगा “ऐ रब्बी देख ये अंजीर का दरख़्त जिस पर तूने ला’नत की थी सूख गया है।”

²²ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “खुदा पर ईमान रखो।”²³मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे उखड़ जा और समुन्दर में जा पड़ और अपने दिल में शक न करे बल्कि यक़ीन करे कि जो कहता है वो हो जाएगा तो उसके लिए वही होगा।

²⁴इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम दु’आ में माँगते हो यक़ीन करो कि तुम को मिल गया और वो तुम को मिल जाएगा।²⁵और जब कभी तुम खड़े हुए दु’आ करते हो, अगर तुम्हें किसी से कुछ शिकायत हो तो उसे मु’आफ़ करो ताकि तुम्हारा बाप भी जो आसमान पर है तुम्हारे गुनाह मु’आफ़ करे।²⁶[अगर तुम मु’आफ़ न करोगे तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है तुम्हारे गुनाह भी मु’आफ़ न करेगा]”

²⁷वो फिर यरूशलीम में आए और जब वो हैकल में टहल रहा था तो सरदार काहिन और फ़क़ीह और बुजुर्ग उसके पास आए।²⁸और उससे कहने लगे, “तू इन कामों को किस इख़्तियार से करता है? या किसने तुझे इख़्तियार दिया है कि इन कामों को करे?”

²⁹ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक बात पूछता हूँ तुम जवाब दो तो मैं तुमको बताऊँगा कि इन कामों को किस इख़्तियार से करता हूँ।³⁰यूहन्ना का बपतिस्मा आसमान की तरफ़ से था या इन्सान की तरफ़ से? मुझे जवाब दो।”

³¹वो आपस में कहने लगे, “अगर हम कहें ‘आस्मान की तरफ़ से’ तो वो कहेगा ‘फिर तुम ने क्यों उसका यक़ीन न किया?’³²और अगर कहें इन्सान की तरफ़ से? तो लोगों का डर था “इसलिए कि सब लोग वाक़ई यूहन्ना को नबी जानते थे³³पस उन्होंने जवाब में ईसा से कहा, “हम नहीं जानते।ईसा ने उनसे कहा “मैं भी तुम को नहीं बताता कि इन कामों को किस इख़्तियार से करता हूँ।”

Chapter 12

¹फिर वो उनसे मिसालों में बातें करने लगा “एक शख्स ने बाग़ लगाया और उसके चारों तरफ़ अहाता घेरा और हौज़ खोदा और बुर्ज बनाया और उसे बाग़बानों को ठेके पर देकर परदेस चला गया।²फिर फल के मोसम में उसने एक नौकर को बाग़बानों के पास भेजा ताकि बाग़बानों से बाग़ के फलों का हिसाब ले ले।

³लेकिन उन्होंने उसे पकड़ कर पीटा और खाली हाथ लौटा दिया।

⁴उसने फिर एक और नौकर को उनके पास भेजा मगर उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और बे'इज़ज़त किया।⁵फिर उसने एक और को भेजा उन्होंने उसे क्रल किया फिर और बहुतेरों को भेजा उन्होंने उन में से कुछ को पीटा और कुछ को क्रल किया।

⁶अब एक बाकी था जो उसका प्यारा बेटा था ‘उसने आखिर उसे उनके पास ये कह कर भेजा कि वो मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’⁷लेकिन उन बाग़बानों ने आपस में कहा यही वारिस है ‘आओ इसे क्रल कर डालें मीरास हमारी हो जाएगी।’

⁸पस उन्होंने उसे पकड़ कर क्रल किया और बाग़ के बाहर फेंक दिया।⁹अब बाग़ का मालिक क्या करेगा? वो आएगा और उन बाग़बानों को हलाक करके बाग़ औरों को देगा।

¹⁰क्या तुम ने ये लिखे हुए को नहीं पढ़ा ‘जिस पत्थर को मे ‘मारों ने रद्द किया वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया।’¹¹ये खुदावन्द की तरफ़ से हुआ ‘और हमारी नज़र में अजीब है।’¹²इस पर वो उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे मगर लोगों से डरे, क्योंकि वो समझ गए थे कि उसने ये मिसाल उन्हीं पर कही पस वो उसे छोड़ कर चले गए।

¹³फिर उन्होंने कुछ फ़रीसियों और सद्कियों ने हेरोदेस को उसके पास भेजा ताकि बातों में उसको फँसाएँ।¹⁴और उन्होंने आकर उससे कहा, “ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और किसी की परवाह नहीं करता क्योंकि तू किसी आदमी का तरफ़दार नहीं बल्कि सच्चाई से खुदा के रास्ते की ता'लीम देता है?”¹⁵पस कैसर को जिज़या देना जायज़ है या नहीं? हम दें या न दें?” उसने उनकी मक्कारी मा'लूम करके उनसे कहा, “तुम मुझे क्यों आजमाते हो? मेरे पास एक दीनार लाओ कि मैं देखूँ।”

¹⁶वो ले आए उसने उनसे कहा “ये सूरत और नाम किसका है?” उन्होंने उससे कहा “कैसर का।”¹⁷ईसा' ने उनसे कहा “जो कैसर का है कैसर को और जो खुदा का है खुदा को अदा करो” वो उस पर बड़ा ता'अज्जुब करने लगे।

¹⁸फिर सद्कियों ने जो कहते थे कि क़यामत नहीं होगी, उसके पास आकर उससे ये सवाल किया।¹⁹ऐ उस्ताद “हमारे लिए मूसा ने लिखा है कि अगर किसी का भाई बे-औलाद मर जाए और उसकी बीवी रह जाए तो उस का भाई उसकी बीवी को लेले ताकि अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे।

²⁰सात भाई थे पहले ने बीवी की और बे-औलाद मर गया।²¹दूसरे ने उसे लिया और बे-औलाद मर गया इसी तरह तीसरे ने।²²यहाँ तक कि सातों बे-औलाद मर गए, सब के बाद वह औरत भी मर गई।²³क़यामत मे ये उन में से किसकी बीवी होगी? क्योंकि वो सातो की बीवी बनी थी।”

²⁴ईसा' ने उनसे कहा, “क्या तुम इस वजह से गुमराह नहीं हो कि न किताब -ए-मुक़द्दस को जानते हो और न खुदा की कुदरत को।²⁵क्योंकि जब लोगों में से मुर्दे जी उठेंगे तो उन में ब्याह शादी न होगी बल्कि आसमान पर फ़रिश्तों की तरह होंगे।

²⁶मगर इस बारे में कि मुर्दे जी उठते हैं ‘क्या तुम ने मूसा की किताब में झाड़ी के ज़िक्र में नहीं पढ़ा कि खुदा ने उससे कहा मैं अब्राहम का खुदा और इज़हाक का खुदा और या'क़ूब का खुदा हूँ।²⁷वो तो मुर्दों का खुदा नहीं बल्कि ज़िन्दों का खुदा है, पस तुम बहुत ही गुमराह हो।”

²⁸और आलिमों मे से एक ने उनको बहस करते सुनकर जान लिया कि उसने उनको अच्छा जवाब दिया है “वो पास आया और उस से पूछा? सब हुक्मों में पहला कौन सा है।”²⁹ईसा' ने जवाब दिया “पहला ये है ‘ऐ इस्राइल सुन ! खुदावन्द हमारा खुदा एक ही खुदावन्द है।’³⁰और तू खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान सारी अक्ल और अपनी सारी ताक़त से मुहब्बत रख।’³¹दूसरा हुक्म ये है : ‘अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख ‘इस से बड़ा कोई हुक्म नहीं।”

³²आलिम ने उससे कहा ऐ उस्ताद “बहुत खूब; तू ने सच् कह कि वो एक ही है और उसके सिवा कोई नहीं³³और उसे सारे दिल और सारी अक्ल और सारी ताक़त से मुहब्बत रखना और अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रखना सब सोखतनी कुर्बानियों और ज़बीहों से बढ़ कर है।”³⁴जब ईसा' ने देखा कि उसने अक्लमंदी से जवाब दिया तो उससे कहा, “तू खुदा की बादशाही से दूर नहीं।” और फिर किसी ने उससे सवाल करने की जुर'अत न की।

³⁵फिर ईसा' ने हैकल में तालीम देते वक़्त ये कहा, “फ़क्रीह क्यूँकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का बेटा है ?³⁶दाऊद ने खुद रूह -उल -कुहूस की हिदायत से कहा है ‘खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा; मेरी दाहिनी तरफ़ बैठ जब तक में तेरे दुश्मनों को तेरे पावों के नीचे की चौकी न कर दूँ।’³⁷दाऊद तो आप से खुदावन्द कहता है, फिर वो उसका बेटा कहाँ से ठहरा? आम लोग खुशी से उसकी सुनते थे।”

³⁸फिर उसने अपनी ता'लीम में कहा “आलिमों से खबरदार रहो, जो लम्बे लम्बे जामे पहन कर फिरना और बाज़ारों में सलाम।³⁹और इबादतखानों में आ'ला दर्जे की कुर्सियाँ और जि़याफ़तों में सद्रनशीनी चाहते हैं।⁴⁰और वो बेवाओं के घरों को दबा बैठते हैं और दिखावे के लिए लम्बी लम्बी दुआएँ करते हैं।”

⁴¹फिर वो हैकल के खजाने के सामने बैठा देख रहा था कि लोग हैकल के खज़ाने में पैसे किस तरह डालते हैं और बहुतेरे दौलतमन्द बहुत कुछ डाल रहे थे।

⁴²इतने में एक कंगाल बेवा ने आ कर दो दमड़ियाँ या'नी एक धेला डाला।

⁴³उसने अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो हैकल के खज़ाने में डाल रहे हैं इस कंगाल बेवा ने उन सब से ज़्यादा डाला।

⁴⁴क्योंकि सभों ने अपने माल की जि़यादती से डाला; मगर इस ने अपनी ग़रीबी की हालत में जो कुछ इस का था या'नी अपनी सारी रोज़ी डाल दी।”

Chapter 13

¹जब वो हैकल से बाहर जा रहा था तो उसके शागिर्दों में से एक ने उससे कहा "ऐ उस्ताद देख ये कैसे कैसे पत्थर और कैसी कैसी इमारतें हैं!"²ईसा' ने उनसे कहा, "तू इन बड़ी बड़ी इमारतों को देखता है? यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर बाँकी न रहेगा जो गिराया न जाए। "

³जब वो जैतून के पहाड़ पर हैकल के सामने बैठा था तो पतरस और या'कूब और यूहन्ना और अन्धियास ने तन्हाई में उससे पूछा।⁴"हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने को हों उस वक़्त का क्या निशान है।"

⁵ईसा' ने उनसे कहना शुरू किया "खबरदार कोई तुम को गुमराह न कर दे।⁶बहुतेरे मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे 'वो मैं ही हूँ।' और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे।

⁷जब तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की अफ़वाहें सुनो तो घबरा न जाना इनका वाक़े होना ज़रूर है लेकिन उस वक़्त खातिमा न होगा।⁸क्यूँकि क्रौम पर क्रौम और सल्तनत पर सल्तनत चढ़ाई करेगी जगह जगह भूचाल आएँगे और काल पड़ेंगे ये बातें मुसीबतों की शुरुआत ही होंगी।

⁹लेकिन तुम खबरदार रहो क्यूँकि लोग तुम को अदालतों के हवाले करेंगे और तुम इबादतख़ानों में पीटे जाओगे; और हाकिमों और बादशाहों के सामने मेरी खातिर हाज़िर किए जाओगे ताकि उनके लिए गवाही हो।¹⁰और ज़रूर है कि पहले सब क्रौमों में इन्जील की मनादी की जाए।

¹¹लेकिन जब तुम्हें ले जा कर हवाले करें तो पहले से फ़िक्र न करना कि हम क्या कहें बल्कि जो कुछ उस घड़ी तुम्हें बताया जाए वही करना क्यूँकि कहने वाले तुम नहीं हो बल्कि रूह- उल कुदूस है।¹²भाई को भाई और बेटे को बाप क़त्ल के लिए हवाले करेगा और बेटे माँ बाप के बरख़िलाफ़ खड़े हो कर उन्हें मरवा डालेंगे।¹³और मेरे नाम की वजह से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे मगर जो आख़िर तक बर्दाशत करेगा वो नजात पाएगा।

¹⁴पस जब तुम उस उजाड़ने वाली नापसन्द चीज़ को उस जगह खड़ी हुई देखो जहाँ उसका खड़ा होना जायज़ नहीं पढ़ने वाला समझ ले उस वक़्त जो यहूदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ।¹⁵जो छत पर हो वो अपने घर से कुछ लेने को न नीचे उतरे न अन्दर जाए।¹⁶और जो खेत में हो वो अपना कपड़ा लेने को पीछे न लोटे।

¹⁷मगर उन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों।¹⁸और दुआ करो कि ये जाड़ों में न हो।¹⁹क्यूँकि वो दिन एसी मुसीबत के होंगे कि पैदाइश के शुरू से जिसे खुदा ने पैदा किया न अब तक हुई है न कभी होगी।²⁰अगर खुदावन्द उन दिनों को न घटाता तो कोई इन्सान न बचता मगर उन चुने हुवों की खातिर जिनको उसने चुना है उन दिनों को घटाया।

²¹और उस वक़्त अगर कोई तुम से कहे 'देखो, मसीह यहाँ है, 'या 'देखो वहाँ है' तो यक़ीन न करना।²²क्यूँकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे और निशान और अजीब काम दिखाएँगे ताकि अगर मुमकिन हो तो चुने हुवों को भी गुमराह कर दें।²³लेकिन तुम खबरदार रहो; देखो मैंने तुम से सब कुछ पहले ही कह दिया है।

²⁴मगर उन दिनों में उस मुसीबत के बा'द सूरज अँधेरा हो जाएगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा।²⁵और आसमान के सितारे गिरने लगेंगे और जो ताकतें आसमान में हैं वो हिलाई जाएँगी।²⁶और उस वक़्त लोग इब्ने आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादलों में आते देखेंगे।²⁷उस वक़्त वो फ़रिश्तों को भेज कर अपने चुने हुए को ज़मीन की इन्तिहा से आसमान की इन्तहा तक चारो तरफ़ से जमा करेगा।

²⁸अब अन्जीर के दरख़्त से एक तम्सील सीखो; जूँ ही उसकी डाली नर्म होती और पत्ते निकलते हैं तुम जान लेते हो कि गर्मी नज़दीक है।²⁹इसी तरह जब तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो कि वो नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है।

³⁰मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हों लें ये नस्ल हरगिज़ ख़त्म न होगी।³¹आसमान और ज़मीन टल जाएँगे लेकिन मेरी बातें न टलेंगी।³²लेकिन उस दिन या उस वक़्त के बारे कोई नहीं जानता न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा मगर "बाप।

³³खबरदार; जागते और दुआ करते रहो, क्यूँकि तुम नहीं जानते कि वो वक़्त कब आएगा।³⁴ये उस आदमी का सा हाल है जो परदेस गया और उस ने घर से रुख़सत होते वक़्त अपने नौकरों को इख़्तियार दिया या'नी हर एक को उस का काम बता दिया और दरबान को हुक्म दिया कि जागता रहे।

³⁵पस जागते रहो क्यूँकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब आएगा शाम को या आधी रात को या मुर्ग के बाँग देते वक़्त या सुबह को।³⁶ऐसा न हो कि अचानक आकर वो तुम को सोते पाए।³⁷और जो कुछ मैं तुम से कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ जागते रहो!"

Chapter 14

¹दो दिन के बाद फ़सल और 'ईद-ए-फ़ितर होने वाली थी और सरदार काहिन और फ़कीह मौक़ा ढूँड रहे थे कि उसे क्यूँकर धोखे से पकड़ कर क़त्ल करें।²क्यूँकि कहते थे ईद में नहीं "ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए"

³जब वो बैत अन्नियाह में शमा'ऊन जो पहले कोढ़ी था उसके घर में खाना खाने बैठा तो एक औरत जटामासी का बेशक़ीमती इत्र संगे मरमर के इत्र दान में लाई और इत्र दान तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर डाला।⁴मगर कुछ अपने दिल में ख़फ़ा हो कर कहने लगे "ये इत्र किस लिए ज़ाया किया गया।⁵क्यूँकि "ये इत्र तक्ररीबन तीन सौ दिन की मज़दूरी से ज़्यादा की क़ीमत में बिक कर ग़रीबों को दिया जा सकता था; और वो उसे मलामत करने लगे।

⁶'ईसा' ने कहा उसे छोड़ दो उसे क्यूँ दिक़ करते हो "उसने मेरे साथ भलाई की है।⁷क्यूँकि ग़रीब और ग़ुरबा तो हमेशा तुम्हारे पास हैं जब चाहो उनके साथ नेकी कर सकते हो; लेकिन मैं तुम्हारे पास हमेशा न रहूँगा।⁸जो कुछ वो कर सकी उसने किया उसने दफ़न के लिए मेरे बदन पर पहले ही से इत्र मला।⁹मैं तुम से सच कहता हूँ कि "तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इन्ज़ील की मनादी की जाएगी, ये भी जो इस ने किया उस की यादगारी में बयान किया जाएगा।"

¹⁰फिर यहूदाह इस्करियोती जो उन बारह में से था, सरदार काहिन के पास चला गया ताकि उसे उनके हवाले कर दे।¹¹वो ये सुन कर ख़ुश हुए और उसको रुपये देने का इक़्रार किया और वो मौक़ा ढूँडने लगा कि किस तरह क़ाबू पाकर उसे पकड़वा दे।

¹²ईद 'ए फ़ितर के पहले दिन या'नी जिस रोज़ फ़सल को ज़बह किया करते थे "उसके शागिर्दों ने उससे कहा? तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिए फ़सल खाने की तैयारी करें।"¹³उसने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा और उनसे कहा शहर में जाओ एक शख्स पानी का घड़ा लिए हुए तुम्हें मिलेगा "उसके पीछे हो लेना।¹⁴और जहाँ वो दाख़िल हो उस घर के मालिक से कहना 'उस्ताद कहता है? मेरा मेहमानख़ाना जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सल खाऊँ कहाँ है।'

¹⁵वो आप तुम को एक बड़ा मेहमानख़ाना आरास्ता और तैयार दिखाएगा वहीं हमारे लिए तैयारी करना।"¹⁶पस शागिर्द चले गए और शहर में आकर जैसा 'ईसा' ने उन से कहा था वैसा ही पाया और फ़सल को तैयार किया।

¹⁷जब शाम हुई तो वो उन बारह के साथ आया।¹⁸और जब वो बैठे खा रहे थे तो 'ईसा' ने कहा "मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक जो मेरे साथ खाता है मुझे पकड़वाएगा।"¹⁹वो दुखी होकर और एक एक करके उससे कहने लगे, "क्या मैं हूँ?"

²⁰उसने उनसे कहा, "वो बारह में से एक है जो मेरे साथ थाल में हाथ डालता है।"²¹क्यूँकि इब्ने आदम तो जैसा उसके हक़ में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफ़सोस जिसके वसीले से इब्ने आदम पकड़वाया जाता है, अगर वो आदमी पैदा ही न होता तो उसके लिए अच्छा था।"

²²और वो खा ही रहे थे कि उसने रोटी ली "और बरकत देकर तोड़ी और उनको दी और कहा लो ये मेरा बदन है।"²³फिर उसने प्याला लेकर शुक्र किया और उनको दिया और उन सभी ने उस में से पिया।²⁴उसने उनसे कहा "ये मेरा वो अहद का खून है जो बहुतेरों के लिए बहाया जाता है।"²⁵मैं तुम से सच कहता हूँ कि अंगूर का शीरा फिर कभी न पिऊँगा; उस दिन तक कि ख़ुदा की बादशाही में नया न पिऊँ।"

²⁶फिर हम्द गा कर बाहर ज़ैतून के पहाड़ पर गए।²⁷और 'ईसा' ने उनसे कहा "तुम सब ठोकर खाओगे क्यूँकि लिखा है, मैं चरवाहे को मारूँगा और भेड़ें इधर उधर हो जाएँगी।"

²⁸मगर मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।"²⁹पतरस ने उससे कहा, "चाहे सब ठोकर खाएँ लेकिन मैं न खाऊँगा।"

³⁰'ईसा' ने उससे कहा, " मैं तुझ से सच कहता हूँ। कि तू आज इसी रात मुर्ग के दो बार बाँग देने से पहले तीन बार मेरा इन्कार करेगा।"³¹लेकिन उसने बहुत ज़ोर देकर कहा, "अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े तोभी तेरा इन्कार हरगिज़ न करूँगा।" इसी तरह और सब ने भी कहा।

³²"फिर वो एक जगह आए जिसका नाम गतसिमनी था और उसने अपने शागिर्दों से कहा, यहाँ बैठे रहो जब तक मैं दुआ करूँ।"³³और पतरस और या'क़ूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर निहायत हैरान और बेक़रार होने लगा।³⁴और उसने कहा मेरी जान निहायत ग़मगीन है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो।"

³⁵और वो थोड़ा आगे बढ़ा और ज़मीन पर गिर कर दुआ करने लगा, कि अगर हो सके तो ये वक्रत मुझ पर से टल जाए।³⁶और कहा ऐ अब्बा ऐ बाप तुझ से सब कुछ हो सकता है इस प्याले को मेरे पास से हटा ले तोभी जो मैं चाहता हूँ वो नहीं बल्कि जो तू चाहता है वही हो।"

³⁷फिर वो आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा "ऐ शमा'ऊन तू सोता है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका।³⁸जागो और दुआ करो, ताकि आजमाइश में न पड़ो रूह तो मुसतैद है मगर जिस्म कमज़ोर है।"³⁹वो फिर चला गया और वही बात कह कर दुआ की।

⁴⁰और फिर आकर उन्हें सोते पाया क्यूँकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं और वो न जानते थे कि उसे क्या जवाब दें।⁴¹फिर तीसरी बार आकर उनसे कहा "अब सोते रहो और आराम करो बस वक्रत आ पहुँचा है देखो; इब्ने आदम गुनाहगारों के हाथ में हवाले किया जाता है।⁴²उठो चलो देखो मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।"

⁴³वो ये कह ही रहा था कि फ़ौरन यहूदाह जो उन बारह में से था और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियाँ लिए हुए सरदार काहिनों और फ़कीहों की तरफ़ से आ पहुँची।⁴⁴और उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें ये निशान दिया था जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ कर हिफ़ाज़त से ले जाना।⁴⁵वो आकर फ़ौरन उसके पास गया और कहा, "ऐ रब्बी!" और उसके बोसे लिए।⁴⁶उन्होंने उस पर हाथ डाल कर उसे पकड़ लिया।

⁴⁷उन में से जो पास खड़े थे एक ने तलवार खींचकर सरदार काहिन के नौकर पर चलाई और उसका कान उड़ा दिया।⁴⁸'ईसा' ने उनसे कहा क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे "डाकू की तरह पकड़ने निकले हो?"⁴⁹मैं हर रोज़ तुम्हारे पास हैकल में ता'लीम देता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा लेकिन ये इसलिए हुआ कि लिखा हुआ पूरा हों।"⁵⁰इस पर सब शगिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

⁵¹मगर एक जवान अपने नंगे बदन पर महीन चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया, उसे लोगों ने पकड़ा।⁵²मगर वो चादर छोड़ कर नंगा भाग गया।

⁵³फिर वो 'ईसा' को सरदार काहिन के पास ले गए; और अब सरदार काहिन और बुज़ुर्ग और फ़कीह उसके यहाँ जमा हुए।⁵⁴पतरस फ़ासले पर उसके पीछे पीछे सरदार काहिन के दिवानख़ाने के अन्दर तक गया और सिपाहियों के साथ बैठ कर आग तापने लगा।

⁵⁵और सरदार काहिन सब सद्दे-अदालत वाले ईसा' को मार डालने के लिए उसके खिलाफ़ गवाही ढूँडने लगे मगर न पाई।⁵⁶क्योंकि बहुतेरों ने उस पर झूठी गवाहियाँ तो दीं लेकिन उनकी गवाहियाँ सहीह न थीं।

⁵⁷फिर कुछ ने उठकर उस पर ये झूठी गवाही दी।⁵⁸“हम ने उसे ये कहते सुना है मैं इस मक़दिस को जो हाथ से बना है ढाऊँगा और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा जो हाथ से न बना हो।”⁵⁹लेकिन इस पर भी उसकी गवाही सही न निकली।

⁶⁰“फिर सरदार काहिन ने बीच में खड़े हो कर ईसा' से पूछा तू कुछ जवाब नहीं देता? ये तेरे खिलाफ़ क्या गवाही देते हैं।”⁶¹“मगर वो खामोश ही रहा और कुछ जवाब न दिया? सरदार काहिन ने उससे फिर सवाल किया और कहा क्या तू उस यूसुफ़ का बेटा मसीह है।”⁶²ईसा' ने कहा, “हाँ मैं हूँ। और तुम इब्ने आदम को क़ादिर ए मुतलक़ की दहनी तरफ़ बैठे और आसमान के बादलों के साथ आते देखोगे।”

⁶³सरदार काहिन ने अपने कपड़े फ़ाड़ कर कहा “अब हमें गवाहों की क्या ज़रूरत रही।”⁶⁴तुम ने ये कुफ़्र सुना तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने फ़तवा दिया कि वो क़त्ल के लायक़ है।”⁶⁵तब कुछ उस पर थूकने और उसका मुँह ढाँपने और उसके मुक्के मारने और उससे कहने लगे “नबुव्वत की बातें सुना! और सिपाहियों ने उसे तमाँचे मार मार कर अपने क़ब्ज़े में लिया।”

⁶⁶जब पतरस नीचे सहन में था तो सरदार काहिन की लौड़ीयों में से एक वहाँ आई।⁶⁷“और पतरस को आग तापते देख कर उस पर नज़र की” और कहने लगी तू भी उस नासरी ईसा' के साथ था।⁶⁸उसने इन्कार किया और कहा “मैं तो न जानता और न समझता हूँ।” कि तू क्या कहती है फिर वो बाहर सहन में गया [और मुर्ग़ ने बाँग़ दी।]

⁶⁹वो लौंडी उसे देख कर उन से जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी “ये उन में से है।”⁷⁰“मगर उसने फिर इन्कार किया और थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे पतरस से फिर कहा बेशक़ तू उन में से है क्योंकि तू गलीली भी है।”

⁷¹“मगर वो ला'नत करने और क़सम खाने लगा मैं इस आदमी को जिसका तुम ज़िक़र करते हो नहीं जानता।”⁷²और फ़ौरन मुर्ग़ ने दूसरी बार बाँग़ दी पतरस को वो बात जो ईसा' ने उससे कही थी याद आई मुर्ग़ के दो बार बाँग़ देने से पहले “तू तीन बार इन्कार करेगा और उस पर ग़ौर करके रो पड़ा।”

Chapter 15

¹और फ़ौरन सुबह होते ही सरदार काहिनों ने और बुजुर्गों और फ़क़ीहों और सब सद्र 'ए अदालत वालों समेत सलाह करके ईसा' को बन्धवाया और ले जा कर पीलातुस के हवाले किया।²और पीलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का बादशाह है?" उसने जवाब में उस से कहा, "तू खुद कहता है।"³और सरदार काहिन उस पर बहुत सी बातों का इल्ज़ाम लगाते रहे।

⁴पीलातुस ने उस से दोबारा सवाल करके ये कहा "तू कुछ जवाब नहीं देता देख ये तुझ पर कितनी बातों का इल्ज़ाम लगाते है।"⁵ईसा' ने फिर भी कुछ जवाब न दिया यहाँ तक कि पीलातुस ने ताअ'ज्जुब किया।

⁶और वो 'ईद पर एक क़ैदी को जिसके लिए लोग अर्ज़ करते थे छोड़ दिया करता था।⁷और बर'अब्बा नाम एक आदमी उन बागियों के साथ क़ैद में पड़ा था जिन्होंने बगावत में खून किया था।⁸और भीड़ उस पर चढ़कर उस से अर्ज़ करने लगी कि जो तेरा दस्तूर है वो हमारे लिए कर।

⁹पीलातुस ने उन्हें ये जवाब दिया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी खातिर यहूदियों के बादशाह को छोड़ दूँ?"¹⁰क्योंकि उसे मा'लूम था कि सरदार काहिन ने इसको हसद से मेरे हवाले किया है।¹¹मगर सरदार काहिनों ने भीड़ को उभारा ताकि पीलातुस उनकी खातिर बर'अब्बा ही को छोड़ दे।

¹²"पीलातुस ने दोबारा उनसे कहा फिर जिसे तुम यहूदियों का बादशाह कहते हो? उसे मैं क्या करूँ।"¹³वो फिर चिल्लाए "वो मस्लूब हो।"

¹⁴पीलातुस ने उनसे कहा "क्यूँ? उस ने क्या बुराई की है?" वो और भी चिल्लाए "वो मस्लूब हो!"¹⁵पीलातुस ने लोगों को खुश करने के इरादे से उनके लिए बर'अब्बा को छोड़ दिया और ईसा' को कोड़े लगवाकर हवाले किया कि मस्लूब हो।

¹⁶और सिपाही उसको उस सहन में ले गए, जो प्रैतोरियुन कहलाता है और सारी पलटन को बुला लाए।¹⁷और उन्होंने ने उसे इर्गवानी चोगा पहनाया और काँटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखवा।¹⁸और उसे सलाम करने लगे "ऐ यहूदियों के बादशाह! आदाब।"

¹⁹और वो उसके सिर पर सरकंडा मारते और उस पर थूकते और घुटने टेक टेक कर उसे सज्दा करते रहे।²⁰और जब उसे ठठों में उड़ा चुके तो उस पर से इर्गवानी चोगा उतार कर उसी के कपड़े उसे पहनाए फिर उसे मस्लूब करने को बाहर ले गए।²¹और शमा'ऊन नाम एक कुरेनी आदमी सिकन्दर और रुफ़स का बाप देहात से आते हुए उधर से गुजरा उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसकी सलीब उठाए।

²²और वो उसे मुक़ाम'ए गुलगुता पर लाए जिसका तरज़ुमा (खोपड़ी की जगह) है।²³और मुर मिली होई मय उसे देने लगे मगर उसने न ली।²⁴और उन्होंने उसे मस्लूब किया और उसके कपड़ों पर पर्ची डाली कि किसको क्या मिले उन्हें बाँट लिया।

²⁵और पहर दिन चढ़ा था जब उन्होंने उसको मस्लूब किया।²⁶और उसका इल्ज़ाम लिख कर उसके ऊपर लगा दिया गया: "यहूदियों का बादशाह।"²⁷और उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं तरफ़ मस्लूब किया।²⁸ तब इस मज़्मून का वो लिखा हुआ कि वो बदकारों में गिना गया पूरा हुआ।

²⁹"और राह चलनेवाले सिर हिला हिला कर उस पर लानत करते और कहते थे वाह मक़दिस के ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले।"³⁰सलीब पर से उतर कर अपने आप को बचा।"

³¹"इसी तरह सरदार काहिन भी फ़क़ीहों के साथ मिलकर आपस में ठट्ठे से कहते थे इसने औरों को बचाया अपने आप को नहीं बचा सकता।"³²इसाइल का बादशाह मसीह; अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम देख कर ईमान लाएँ और जो उसके साथ मस्लूब हुए थे वो उस पर लानतान करते थे।"

³³जब दो पहर हुई तो पूरे मुल्क में अँधेरा छा गया और तीसरे पहर तक रहा।³⁴तीसरे पहर ईसा' बड़ी आवाज़ से चिल्लाया, " इलोही, इलोही लमा शबक़तनी?" जिसका तरज़ुमा है, "ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"³⁵जो पास खड़े थे उन में से कुछ ने ये सुनकर कहा "देखो ये एलियाह को बुलाता है।"

³⁶और एक ने दौड़ कर सोकते को सिरके में डबोया और सरकंडे पर रख कर उसे चुसाया और कहा, "ठहर जाओ देखें तो एलियाह उसको उतारने आता है या नहीं।"³⁷फिर ईसा' ने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर जान दे दिया।³⁸और हैकल का पर्दा उपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया।

³⁹और जो सिपाही उसके सामने खड़ा था उसने उसे यूँ जान देते हुए देखकर कहा "बेशक़ ये आदमी खुदा का बेटा था।"⁴⁰कई औरतें दूर से देख रही थी उन में मरियम मगदलिनी और छोटे या'कूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी थीं।⁴¹जब वो गलील में था ये उसके पीछे हो लीं और उसकी खिदमत करती थीं और और भी बहुत सी औरतें थीं जो उसके साथ यरूशलीम से आई थीं।

⁴²जब शाम हो गई तो इसलिए कि तैयारी का दिन था जो सब्त से एक दिन पहले होता है।⁴³अरिमतियाह का रहने वाला यूसुफ़ आया जो इज़ज़तदार मुशीर और खुद भी खुदा की बादशाही का मुन्तज़िर था और उसने हिम्मत से पीलातुस के पास जाकर ईसा' की लाश माँगी।⁴⁴और पीलातुस ने ता'अज्जुब किया कि वो ऐसे जल्द मर गया? और सिपाही को बुला कर उस से पूछा उसको मरे देर हो गई?

⁴⁵जब सिपाही से हाल मा'लूम कर लिया तो लाश यूसुफ़ को दिला दी।⁴⁶उसने एक महीन चादर मोल ली और लाश को उतार कर उस चादर में कपनाया और एक क़ब्र के अन्दर जो चट्टान में खोदी गई थी रखवा और क़ब्र के मुँह पर एक पत्थर लुढ़का दिया।⁴⁷और मरियम मगदलिनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थी कि वो कहाँ रखवा गया है।

Chapter 16

¹जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मगदलिनी और या'कूब की माँ मरियम और सलोमी ने खुशबूदार चीज़ें मोल लीं ताकि आकर उस पर मलें।²वो हफ़्ते के पहले दिन बहुत सवरे जब सूरज निकला ही था क़ब्र पर आई।

³और आपस में कहती थी "हमारे लिए पत्थर को क़ब्र के मुँह पर से कौन लुढ़काएगा।?"⁴जब उन्होंने ने निगाह की तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है क्योंकि वो बहुत ही बड़ा था।

⁵क़ब्र के अन्दर जाकर उन्होंने ने एक जवान को सफ़ेद जामा पहने हुए दहनी तरफ़ बैठे देखा और निहायत हैरान हुई।⁶उसने उनसे कहा ऐसी हैरान न हो तुम ईसा' नासरी को "जो मस्लूब हुआ था तलाश रही हो; जी उठा है वो यहाँ नहीं है देखो ये वो जगह है जहाँ उन्होंने उसे रखवा था।⁷लेकिन तुम जाकर उसके शागिर्दों और पतरस से कहो कि वो तुम से पहले गलील को जाएगा तुम वहीं उसको देखोगे जैसा उसने तुम से कहा।"

⁸और वो निकल कर क़ब्र से भागीं क्योंकि कपकपी और हैबत उन पर ग़ालिब आ गई थी और उन्होंने किसी से कुछ न कहा क्योंकि वो डरती थीं।

⁹हफ़्ते के पहले दिन जब वो सवरे जी उठा तो पहले मरियम मगदलिनी को जिस में से उसने सात बदरूहें निकाली थीं दिखाई दिया।¹⁰उसने जाकर उसके शागिर्दों को जो मातम करते और रोते थे ख़बर दी।¹¹उन्होंने ये सुनकर कि वो जी उठा है और उसने उसे देखा है यक़ीन न किया।

¹²इसके बा'द वो दूसरी सूत में उन में से दो को जब वो देहात की तरफ़ जा रहे थे दिखाई दिया।¹³उन्होंने भी जाकर बाक़ी लोगों को ख़बर दी; मगर उन्होंने उन का भी यक़ीन न किया।

¹⁴फिर वो उन ग्यारह शागिर्दों को भी जब खाना खाने बैठे थे दिखाई दिया और उसने उनकी बे'ऐ'तिकादी और सख़्त दिली पर उनको मलामत की क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बा'द उसे देखा था उन्होंने उसका यक़ीन न किया था।¹⁵और उसने उनसे कहा, "तुम सारी दुनियाँ में जाकर सारी मखलूक के सामने इन्जील की मनादी करो।"¹⁶जो ईमान लाए और बपतिसमा ले वो नजात पाएगा और जो ईमान न लाए वो मुजरिम ठहराया जाएगा।

¹⁷और ईमान लाने वालों के दर्मियान ये मोजिज़े होंगे वो मेरे नाम से बदरूहों को निकालेंगे; नई नई ज़बानें बोलेंगे।¹⁸साँपों को उठा लेंगे और अगर कोई हलाक करने वाली चीज़ पीएँगे तो उन्हें कुछ तकलीफ़ न पहुँचेगी वो बीमारों पर हाथ रखेंगे तो अच्छे हो जाएँगे।"

¹⁹गरज़ खुदावन्द उनसे कलाम करने के बा'द आसमान पर उठाया गया और खुदा की दहनी तरफ़ बैठ गया।²⁰फिर उन्होंने निकल कर हर जगह मनादी की और खुदावन्द उनके साथ काम करता रहा और कलाम को उन मोजिज़ों के वसीले से जो साथ साथ होते थे साबित करता रहा; आमीन।

मुक़द्दस लूका की मा'रिफ़त इन्जील

Chapter 1

¹चूँकि बहुतों ने इस पर क़मर बाँधी है कि जो बातें हमारे दरमियान वाक़े ' हुई उनको सिलसिलावार बयान करें।²जैसा कि उन्होंने जो शुरू ' से खुद देखने वाले और कलाम के खादिम थे उनको हम तक पहुँचाया।³इसलिए ऐ मु'अज़िज़ थियुफ़िलूस ! मैंने भी मुनासिब जाना कि सब बातों का सिलसिला शुरू ' से ठीक-ठीक मालूम करके उनको तेरे लिए तरतीब से लिखूँ।⁴ताकि जिन बातों की तूने तालीम पाई है उनकी पुख़्तगी तुझे मालूम हो जाए।

⁵यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में अबिय्याह के फ़रीक़ में से ज़करियाह नाम एक काहिन था और उसकी बीवी हारून की औलाद में से थी और उसका नाम इलीशिबा ' था।⁶और वो दोनों खुदा के सामने रास्तबाज़ और खुदावन्द के सब अहक़ाम-ओ-क़वानीन पर बे- 'ऐब चलने वाले थे।⁷और उनके औलाद न थी क्योंकि इलीशिबा ' बाँझ थी और दोनों 'उम्र रसीदा थे।

⁸जब वो खुदा के हुज़ूर अपने फ़रीक़ की बारी पर इमामत का काम अन्जाम देता था तो ऐसा हुआ, ⁹कि इमामत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसके नाम की पर्ची निकली कि खुदावन्द के हुज़ूरी में जाकर खुशबू जलाए।¹⁰और लोगों की सारी जमा 'अत खुशबू जलाते वक़्त बाहर दुआ कर रही थी।

¹¹अचानक खुदा का एक फ़रिशता ज़ाहिर हुआ जो खुशबू जलाने की कुर्बानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया।¹²उसे देख कर ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया।¹³लेकिन फ़रिशते ने उस से कहा, "ज़करियाह, मत डर! खुदा ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उस का नाम युहन्ना रखना।

¹⁴वह न सिर्फ़ तेरे लिए खुशी और मुसरत का बाइस होगा, बल्कि बहुत से लोग उस की पैदाइश पर खुशी मनाएँगे।¹⁵क्योंकि वह खुदा के नज़दीक अज़ीम होगा। ज़रूरी है कि वह मय और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही रूह-उल-कुदूस से भरपूर होगा।

¹⁶और इसाईली क़ौम में से बहुतों को खुदा उन के खुदा के पास वापस लाएगा।¹⁷वह एलियाह की रूह और कुव्वत से खुदावन्द के आगे आगे चलेगा। उस की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़ माइल हो जाएँगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की अक्लमंदी की तरफ़ फिरेंगे। यूँ वह इस क़ौम को खुदा के लिए तय्यार करेगा।"

¹⁸ज़करियाह ने फ़रिशते से पूछा, "मैं किस तरह जानूँ कि यह बात सच्ची है? मैं खुद बूढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी उम्र रसीदा है।"¹⁹फ़रिशते ने जवाब दिया, "मैं जिब्राईल हूँ जो खुदावन्द के सामने खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक्सद के लिए भेजा गया है कि तुझे यह खुशख़बरी सुनाऊँ।²⁰लेकिन तूने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया इस लिए तू ख़ामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें अपने वक़्त पर ही पूरी होंगी।"

²¹इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इन्तिज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यों इतनी देर हो रही है।²²आखिरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उन से बात न कर सका। तब उन्होंने ने जान लिया कि उस ने खुदा के घर में ख़्वाब देखा है। उस ने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन ख़ामोश रहा।

²³ज़करियाह अपने वक़्त तक खुदा के घर में अपनी ख़िदमत अन्जाम देता रहा, फिर अपने घर वापस चला गया।

²⁴थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर में छुपी रही।²⁵ उस ने कहा, “खुदावन्द ने मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्योंकि अब उस ने मेरी फ़िक्र की और लोगों के सामने से मेरी रूस्वाई दूर कर दी।”

²⁶इलीशिबा छः माह से हामिला थी जब खुदा ने जिब्राईल फ़रिश्ते को एक कुंवारी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुंवारी का नाम मरियम था।²⁷ उस की मंगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नसल से था और जिस का नाम यूसुफ़ था।²⁸ फ़रिश्ते ने उस के पास आ कर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर खुदा का ख़ास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! खुदा तेरे साथ है।”²⁹ मरियम यह सुन कर घबरा गई और सोचा, “यह किस तरह का सलाम है?”

³⁰लेकिन फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ मरियम, मत डर, क्योंकि तुझ पर खुदा का फ़ज़ल हुआ है।³¹ तू हमिला हो कर एक बेटे को पैदा करेगी। तू उस का नाम ईसा (नजात देने वाला) रखना।³² वह बड़ा होगा और खुदावन्द का बेटा कहलाएगा। खुदा हमारा खुदा उसे उस के बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाएगा³³ और वह हमेशा तक इस्राईल पर हुकूमत करेगा। उस की सल्तनत कभी ख़त्म न होगी।”

³⁴मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, “यह क्यूँकर हो सकता है? अभी तो मैं कुंवारी हूँ।”³⁵ फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूह-उल-कुदूस तुझ पर नाज़िल होगा, खुदावन्द की कुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा कुदूस होगा और खुदा का बेटा कहलाएगा।

³⁶और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्ररसीदा है। गरचे उसे बाँझ करार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से हामिला है।³⁷ क्यूँकि खुदा के नज़दीक कोई काम नामुम्किन नहीं है।”³⁸ मरियम ने जवाब दिया, “मैं खुदा की ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप ने कहा है।” इस पर फ़रिश्ता चला गया।

³⁹उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाक़े के एक शहर के लिए रवाना हुई। उस ने जल्दी जल्दी सफ़र किया।⁴⁰ वहाँ पहुँच कर वह ज़करियाह के घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा को सलाम किया।⁴¹ मरियम का यह सलाम सुन कर इलीशिबा का बच्चा उस के पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा खुद रूह-उल-कुदूस से भर गई।

⁴²उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा, “तू तमाम औरतों में मुबारक है और मुबारक है तेरा बच्चा।⁴³ मैं कौन हूँ कि मेरे खुदावन्द की माँ मेरे पास आई।⁴⁴ जैसे ही मैं ने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में खुशी से उछल पड़ा।⁴⁵ तू कितनी मुबारक है, क्यूँकि तू ईमान लाई कि जो कुछ खुदा ने फ़रमाया है वह पूरा होगा।”

⁴⁶इस पर मरियम ने कहा, “मेरी जान खुदा की बड़ाई करती है⁴⁷ और मेरी रूह मेरे मुन्जी खुदावन्द से बहुत खुश है।

⁴⁸क्यूँकि उस ने अपनी ख़ादिमा की पस्ती पर नज़र की है। हाँ, अब से तमाम नसलें मुझे मुबारक कहेंगी,⁴⁹ क्यूँकि उस क़ादिर ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पाक है।

⁵⁰और ख़ौफ़ रहम उन पर जो उससे डरते हैं, पुश्त-दर-पुश्त रहता है।⁵¹ उसने अपने बाजू से ज़ोर दिखाया, और जो अपने आपको बड़ा समझते थे उनको तितर बितर किया।

⁵²उसने इख़्तियार वालों को तख़्त से गिरा दिया, और पस्तहालों को बुलंद किया।⁵³ उसने भूखों को अच्छी चीज़ों से सेर कर दिया, और दौलतमंदों को ख़ाली हाथ लौटा दिया।

⁵⁴उसने अपने ख़ादिम इस्राईल को संभाल लिया, ताकि अपनी उस रहमत को याद फ़रमाए।⁵⁵ जो अब्राहम और उसकी नस्ल पर हमेशा तक रहेगी, जैसा उसने हमारे बाप-दादा से कहा था।”

⁵⁶और मरियम तीन महीने के करीब उसके साथ रहकर अपने घर को लौट गई।⁵⁷ और इलीशिबा के वज़'ए हम्ल का वक़्त आ पहुँचा और उसके बेटा हुआ।

⁵⁸उसके पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने ये सुनकर कि खुदावन्द ने उस पर बड़ी रहमत की, उसके साथ खुशी मनाई।

⁵⁹और आठवें दिन ऐसा हुआ कि वो लड़के का ख़तना करने आए और उसका नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखने लगे।⁶⁰ मगर उसकी माँ ने कहा, “नहीं बल्कि उसका नाम युहन्ना रखा जाए।”⁶¹ उन्होंने कहा, “तेरे खानदान में किसी का ये नाम नहीं।”

⁶²और उन्होंने उसके बाप को इशारा किया कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है?⁶³ उसने तख़्ती माँग कर ये लिखा, “उसका नाम युहन्ना है,” और सब ने ता'ज्जुब किया।

⁶⁴उसी दम उसका मुँह और ज़बान खुल गई और वो बोलने और खुदा की हम्द करने लगा।⁶⁵ और उनके आसपास के सब रहने वालों पर दहशत छा गई और यहूदिया के तमाम पहाड़ी मुल्क में इन सब बातों की चर्चा फैल गई।⁶⁶ और उनके सब सुनने वालों ने उनको सोच कर दिलों में कहा, “तो ये लड़का कैसा होने वाला है?” क्यूँकि खुदावन्द का हाथ उस पर था।

⁶⁷और उस का बाप ज़करियाह रूह-उल-कुदूस से भर गया और नबुव्वत की राह से कहने लगा कि: “खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हम्द हो क्यूँकि उसने अपनी उम्मत पर तवज्जो करके उसे छूटकारा दिया।

⁶⁹और अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में हमारे लिए नजात का सींग निकाला,⁷⁰ (जैसा उसने अपने पाक नबियों की ज़बानी कहा था जो कि दुनिया के शुरू से होते आए हैं) या'नी हम को हमारे दुश्मनों से और सब बुज़्ज़ रखने वालों के हाथ से नजात बख़्शी।

⁷²ताकि हमारे बाप-दादा पर रहम करे और अपने पाक 'अहद को याद फ़रमाए।⁷³ या'नी उस कसम को जो उसने हमारे बाप अब्राहम से खाई थी,⁷⁴ कि वो हमें ये बख़्शिश देगा कि अपने दुश्मनों के हाथ से छूटकर,⁷⁵ उसके सामने पाकीज़गी और रास्तबाज़ी से 'उम्र भर बेख़ौफ़ उसकी 'इबादत करें

⁷⁶और ऐ लड़के तू खुदा ता'ला का नबी कहलाएगा क्यूँकि तू खुदावन्द की राहें तैयार करने को उसके आगे आगे चलेगा,⁷⁷ ताकि उसकी उम्मत को नजात का 'इल्म बख़्शे जो उनको गुनाहों की मु'आफ़ी से हासिल हो।

⁷⁸ये हमारे खुदा की 'ऐन रहमत से होगा; जिसकी वजह से 'आलम-ए-बाला का सूरज हम पर निकलेगा,⁷⁹ ताकि उनको जो अन्धेरे और मौत के साये में बैठे हैं रोशनी बख़्शे, और हमारे क़दमों को सलामती की राह पर डाले।”

⁸⁰और वो लड़का बढ़ता और रूह में कुव्वत पाता गया, और इस्राईल पर ज़ाहिर होने के दिन तक जंगलों में रहा।

Chapter 2

¹उन दिनों में ऐसा हुआ कि कैसर औगुस्तुस की तरफ से ये हुक्म जारी हुआ कि सारी दुनियाँ के लोगों के नाम लिखे जाएँ | ²ये पहली इस्म नवीसी सूरिया के हाकिम कोरिन्युस के 'अहद में हुई | ³और सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने शहर को गए |

⁴पस यूसुफ भी गलील के शहर नासरत से दाऊद के शहर बैतलहम को गया जो यहूदिया में है, इसलिए कि वो दाऊद के घराने और औलाद से था | ⁵ताकि अपनी होने वाली बीवी मरियम के साथ जो हामिला थी, नाम लिखवाए |

⁶जब वो वहाँ थे तो ऐसा हुआ कि उसके वज़ा-ए-हम्ल का वक़्त आ पहुँचा, ⁷और उसका पहलौठा बेटा पैदा हुआ और उसने उसको कपड़े में लपेट कर चरनी में रखखा क्योंकि उनके लिए सराय में जगह न थी |

⁸उसी 'इलाक़े में चरवाहे थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने गल्ले की निगहबानी कर रहे थे | ⁹और ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता उनके पास आ खड़ा हुआ, और ख़ुदावन्द का जलाल उनके चारोंतरफ़ चमका, और वो बहुत डर गए |

¹⁰मगर फ़रिश्ते ने उनसे कहा, "डरो मत ! क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़ी खुशी की बशारत देता हूँ जो सारी उम्मत के वास्ते होगी, ¹¹कि आज दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए एक मुन्जी पैदा हुआ है, या'नी मसीह ख़ुदावन्द | ¹²इसका तुम्हारे लिए ये निशान है कि तुम एक बच्चे को कपड़े में लिपटा और चरनी में पड़ा हुआ पाओगे |'

¹³और यकायक उस फ़रिश्ते के साथ आसमानी लश्कर की एक गिरोह ख़ुदा की हम्द करती और ये कहती ज़ाहिर हुई कि :¹⁴" 'आलम-ए-बाला पर ख़ुदा की तम्जीद हो और ज़मीन पर आदमियों में जिनसे वो राज़ी है सुलह | "

¹⁵जब फ़रिश्ते उनके पास से आसमान पर चले गए तो ऐसा हुआ कि चरवाहों ने आपस में कहा, "आओ, बैतलहम तक चलें और ये बात जो हुई है और जिसकी ख़ुदावन्द ने हम को खबर दी है देखें | "¹⁶पस उन्होंने जल्दी से जाकर मरियम और यूसुफ़ को देखा और इस बच्चे को चरनी में पड़ा पाया |

¹⁷उन्हें देखकर वो बात जो उस लड़के के हक़ में उनसे कही गई थी मशहूर की, ¹⁸और सब सुनने वालों ने इन बातों पर जो चरवाहों ने उनसे कहीं ता'ज्जुब किया |

¹⁹मगर मरियम इन सब बातों को अपने दिल में रखकर ग़ौर करती रही | ²⁰और चरवाहे, जैसा उनसे कहा गया था वैसा ही सब कुछ सुन कर और देखकर ख़ुदा की तम्जीद और हम्द करते हुए लौट गए |

²¹जब आठ दिन पुरे हुए और उसके खतने का वक़्त आया, तो उसका नाम ईसा' रखखा गया | जो फ़रिश्ते ने उसके रहम में पड़ने से पहले रखखा था |

²²फिर जब मूसा की शरी'अत के मुवाफ़िक़ उनके पाक होने के दिन पुरे हो गए, तो वो उसको यरूशलीम में लाए ताकि ख़ुदावन्द के आगे हाज़िर करें²³(जैसा कि ख़ुदावन्द की शरी'अत में लिखा है कि हर एक पहलौठा ख़ुदावन्द के लिए मुक़द्दस ठहरेगा)²⁴और ख़ुदावन्द की शरी'अत के इस क़ौल के मुवाफ़िक़ कुर्बानी करें, कि फ़ाख़ता का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे लाओ |

²⁵और देखो, यरूशलीम में शमा'ऊन नाम एक आदमी था, और वो आदमी रास्तबाज़ और ख़ुदातरस और इस्राईल की तसल्ली का मुन्तिज़र था और रूह-उल-कुहूस उस पर था | ²⁶और उसको रूह-उल-कुहूस से आगाही हुई थी कि जब तक तू ख़ुदावन्द के मसीह को देख न ले, मौत को न देखेगा |

²⁷वो रूह की हिदायत से हैकल में आया और जिस वक़्त माँ-बाप उस लड़के ईसा' को अन्दर लाए ताकि उसके शरी'अत के दस्तूर पर 'अमल करें | ²⁸तो उसने उसे अपनी गोद में लिया और ख़ुदा की हम्द करके कहा :²⁹"ऐ मालिक अब तू अपने खादिम को अपने क़ौल के मुवाफ़िक़ सलामती से रूख़सत करता है,

³⁰क्योंकि मेरी आँखों ने तेरी नजात देख ली है, ³¹जो तूने सब उम्मतों के रु-ब-रू तैयार की है, ³²ताकि ग़ैर कौमों को रौशनी देने वाला नूर और तेरी उम्मत इस्राईल का जलाल बने | "

³³और उसका बाप और उसकी माँ इन बातों पर जो उसके हक़ में कही जाती थीं, ता'ज्जुब करते थे | ³⁴और शमा'ऊन ने उनके लिए दु'आ-ए-ख़ैर की और उसकी माँ मरियम से कहा, "देख, ये इस्राईल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए मुक़र्रर हुआ है, जिसकी मुख़ालिफ़त की जाएगी | ³⁵बल्कि तेरी जान भी तलवार से छिद जाएगी, ताकि बहुत लोगों के दिली खयाल खुल जाएँ | "

³⁶और आशर के क़बीले में से हन्ना नाम फ़नूएल की बेटी एक नबीया थी - वो बहुत 'बूढ़ी थी - और उसने अपने कूँवारेपन के बा'द सात बरस एक शौहर के साथ गुज़ारे थे | ³⁷वो चौरासी बरस से बेवा थी, और हैकल से जुदा न होती थी बल्कि रात दिन रोज़ों और दु'आओं के साथ 'इबादत किया करती थी | ³⁸और वो उसी घड़ी वहाँ आकर ख़ुदा का शुक्र करने लगी और उन सब से जो यरूशलीम के छुटकारे के मुन्तिज़र थे उसके बारे में बातें करने लगी |

³⁹और जब वो ख़ुदावन्द की शरी'अत के मुवाफ़िक़ सब कुछ कर चुके तो गलील में अपने शहर नासरत को लौट गए | ⁴⁰और वो लड़का बढ़ता और ताक़त पाता गया और हिकमत से मा'मूर होता गया और ख़ुदा का फ़ज़ल उस पर था |

⁴¹उसके माँ-बाप हर बरस 'ईद-ए-फ़सह पर यरूशलीम को जाया करते थे | ⁴²और जब वो बारह बरस का हुआ तो वो 'ईद के दस्तूर के मुवाफ़िक़ यरूशलीम को गए | ⁴³जब वो उन दिनों को पूरा करके लौटे तो वो लड़का ईसा' यरूशलीम में रह गया - और उसके माँ-बाप को खबर न हुई | ⁴⁴मगर ये समझ कर कि वो क़ाफ़िले में है, एक मंज़िल निकल गए - और उसके रिश्तेदारों और उसके जान पहचानों में ढूँढ़ने लगे |

⁴⁵जब न मिला तो उसे ढूँढ़ते हुए यरूशलीम तक वापस गए | ⁴⁶और तीन रोज़ के बा'द ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे हैकल में उस्तादों के बीच में बैठा उनकी सुनते और उनसे सवाल करते हुए पाया | ⁴⁷जितने उसकी सुन रहे थे उसकी समझ और उसके जवाबों से दंग थे |

⁴⁸और वो उसे देखकर हैरान हुए | उसकी माँ ने उससे कहा, "बेटा, तूने क्यों हम से ऐसा किया? देख तेरा बाप और मैं घबराते हुए तुझे ढूँढ़ते थे ?"⁴⁹उसने उनसे कहा, "तुम मुझे क्यों ढूँढ़ते थे? क्या तुम को मा'लूम न था कि मुझे अपने बाप के यहाँ होना ज़रूर है?"⁵⁰मगर जो बात उसने उनसे कही उसे वो न समझे |

⁵¹और वो उनके साथ रवाना होकर नासरत में आया और उनके साथ' रहा और उसकी माँ ने ये सब बातें अपने दिल में रखखीं | ⁵²और ईसा' हिकमत और क़द-ओ-क़ामत में और ख़ुदा की और इंसान की मक़बूलियत में तरक्की करता गया |

Chapter 3

¹तिब्रियुस कैसर की हुकूमत के पंद्रहवें बरस पुनित्युस पिलातुस यहूदिया का हाकिम था, हेरोदेस गलील का और उसका भाई फिलिप्पुस इतुरिय्या और त्रखोनीतिस का और लिसानियास अबलेने का हाकिम था | ²और हन्ना और काइफ़ा सरदार काहिन थे, उस वक़्त ख़ुदा का कलाम वीराने में ज़क्रियाह के बेटे युहन्ना पर नाज़िल हुआ |

³और वो यरदन के आस पास में जाकर गुनाहों की मु'आफ़ी के लिए तौबा के बपतिस्मे का एलान करने लगा |

⁴जैसा यसा'याह नबी के कलाम की किताब में लिखा है : "वीराने में पुकारने वाले की आवाज़ आती है, 'ख़ुदावन्द की राह तैयार करो, उसके रास्ते सीधे बनाओ |

⁵हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा - नीचा है बराबर रास्ता बनेगा | ⁶और हर बशर ख़ुदा की नज़ात देखेगा" | "

⁷पस जो लोग उससे बपतिस्मा लेने को निकलकर आते थे वो उनसे कहता था, "ऐ सॉफ़ के बच्चो ! तुम्हें किसने जताया कि आने वाले ग़ज़ब से भागो?"

⁸पस तौबा के मुवाफ़िक़ फल लाओ- और अपने दिलों में ये कहना शुरू ' न करो कि अब्राहाम हमारा बाप है क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि ख़ुदा इन पत्थरों से अब्राहाम के लिए औलाद पैदा कर सकता है |

⁹और अब तो दरख़्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखबा है पस जो दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है | "

¹⁰लोगों ने उस से पूछा, "हम क्या करें?" ¹¹उसने जवाब में उनसे कहा, "जिसके पास दो कुर्ते हों वो उसको जिसके पास न हो बाँट दे, और जिसके पास खाना हो वो भी ऐसा ही करे | "

¹²और महसूल लेने वाले भी बपतिस्मा लेने को आए और उससे पूछा, "ऐ उस्ताद, हम क्या करें?" ¹³उसने उनसे कहा, "जो तुम्हारे लिए मुकर्रर है उससे ज़्यादा न लेना | "

¹⁴और सिपाहियों ने भी उससे पूछा, "हम क्या करें?" उसने उनसे कहा, "न किसी पर तुम जुल्म करो और न किसी से नाहक़ कुछ लो, और अपनी तनख़्वाह पर किफ़ायत करो | "

¹⁵जब लोग इन्तिज़ार में थे और सब अपने अपने दिल में युहन्ना के बारे में सोच रहे थे कि आया वो मसीह है या नहीं | ¹⁶तो युहन्ना ने उन से जवाब में कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, मगर जो मुझ से ताक़तवर है वो आनेवाला है, मैं उसकी जूती का फ़ीता खोलने के लायक़ नहीं; वो तुम्हें रूह-उल-कुदूस और आग से बपतिस्मा देगा | "

¹⁷उसका सूप उसके हाथ में है; ताकि वो अपने खलिहान को ख़ूब साफ़ करे और गेहूँ को अपने खत्ते में जमा' करे, मगर भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं | "

¹⁸पस वो और बहुत सी नसीहत करके लोगों को ख़ुशख़बरी सूनाता रहा | ¹⁹लेकिन चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की बीवी हेरोदियास की वजह से और उन सब बुराईयों के बा'इस जो हेरोदेस ने की थी, युहन्ना से मलामत उठाकर, ²⁰इन सब से बढ़कर ये भी किया कि उसको कैद में डाला |

²¹जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और ईसा' भी बपतिस्मा पाकर दु'आ कर रहा था तो ऐसा हुआ कि आसमान खुल गया, ²²और रूह-उल-कुदूस जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर नाज़िल हुआ और आसमान से ये आवाज़ आई : "तू मेरा प्यारा बेटा है, तुझ से मैं खुश हूँ | "

²³जब ईसा' ख़ुद ता'लीम देने लगा, क़रीबन तीस बरस का था और (जैसा कि समझा जाता था) यूसुफ़ का बेटा था; और वो 'एली का, ²⁴और वो मत्तात का, और वो लावी का, और वो मलकी का, और वो यन्ना का, और वो यूसुफ़ का,

²⁵और वो मत्तितियाह का, और वो 'आमूस का और नाहूम का, और वो असलियाह का, और वो नोगा का, ²⁶और वो म'अत का, और मत्तितियाह का, और वो शिम'ई का, और वो योसेख़ का, और वो यहूदाह का,

²⁷और वो युहन्ना का, और वो रोसा का, और वो ज़रुब्बाबूल का, और वो सियालतीएल का और वो नेरी का, ²⁸और वो मलकि का, और वो अद्दी का, और वो क्रोसाम का, और वो इल्मोदाम का, और वो 'एर का, ²⁹और वो यशु'अ का, और वो इली'अज़र का, और वो योरीम का, और वो मत्तात का, और वो लावी का,

³⁰और वो शमा'ऊन का, और वो यहूदाह का, और वो यूसुफ़ का, और वो योनाम का और वो इलियाक़ीम का, ³¹और वो मलेआह का, और वो मिन्नाह का, और वो मत्तितियाह का, और वो नातन का, और वो दाऊद का, ³²और वो यस्सी का, और वो ओबेद का, और वो बोअज़ का, और वो सल्मोन का, और वो नह्सोन का,

³³और वो 'अम्मीनदाब का, और वो अदमीन का, और वो अरनी का, और वो हस्नोन का, और वो फ़ारस का, और वो यहूदाह का, ³⁴और वो याक़ूब का, और वो इस्हाक़ का, और वो इब्राहीम का, और वो तारह का, और वो नहूर का, ³⁵और वो सरूज का, और वो र'ऊ का, और वो फ़लज का, और वो इबर का, और वो सिलह का,

³⁶और वो क़ीनान का और वो अर्फ़क्सद का, और वो सिम का, और वो नूह का, और वो लमक का, ³⁷और वो मत्तूसिलह का और वो हनूक का, और वो यारिद का, और वो महलल-एल का, और वो क़ीनान का, ³⁸और वो अनूस का, और वो सेत का, और आदम ख़ुदा से था |

Chapter 4

¹'फिर ईसा' रूह-उल-कुदूस से भरा हुआ यरदन से लौटा, और चालीस दिन तक रूह की हिदायत से वीराने में फिरता रहा;² और शैतान उसे आजमाता रहा | उन दिनों में उसने कुछ न खाया, जब वो दिन पुरे हो गए तो उसे भूख लगी |

³और शैतान ने उससे कहा, "अगर तू खुदा का बेटा है तो इस पत्थर से कह कि रोटी बन जाए | "⁴ईसा' ने उसको जवाब दिया, "कलाम में लिखा है कि, आदमी सिर्फ रोटी ही से जीता न रहेगा | "

⁵और शैतान ने उसे ऊँचे पर ले जाकर दुनिया की सब सल्तनतें पल भर में दिखाई | ⁶और उससे कहा, "ये सारा इस्त्रियार और उनकी शान-ओ-शौकत मैं तुझे दे दूँगा, क्योंकि ये मेरे सुपुर्द है और जिसको चाहता हूँ देता हूँ | "⁷पस अगर तू मेरे आगे सज्दा करे, तो ये सब तेरा होगा | "

⁸ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "लिखा है कि, तू खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा कर और सिर्फ उसकी 'इबादत कर | "

⁹और वो उसे यरूशलीम में ले गया और हैकल के कंगूरे पर खड़ा करके उससे कहा, "अगर तू खुदा का बेटा है तो अपने आपको यहाँ से नीचे गिरा दे | "¹⁰क्योंकि लिखा है कि, वो तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि तेरी हिफाज़त करें | "¹¹और ये भी कि वो तुझे हाथों पर उठा लेंगे, काश की तेरे पाँव को पत्थर से ठेस लगे | "

¹²ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "फ़रमाया गया है कि, तू खुदावन्द अपने खुदा की आजमाइश न कर | "¹³जब इब्लीस तमाम आजमाइशें कर चूका तो कुछ अर्से के लिए उससे जुदा हुआ |

¹⁴फिर ईसा पाक रूह की कुव्वत से भरा हुआ गलील को लौटा और आसपास में उसकी शोहरत फैल गई | ¹⁵और वो उनके 'इबादतखानों में ता'लीम देता रहा और सब उसकी बड़ाई करते रहे |

¹⁶और वो नासरत में आया जहाँ उसने परवरिश पाई थी और अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ सबत के दिन 'इबादतखाने में गया और पढ़ने को खड़ा हुआ | ¹⁷और यसाया नबी की किताब उसको दी गई, और किताब खोलकर उसने वो वर्क़ खोला जहाँ ये लिखा था :

¹⁸"खुदावन्द का रूह मुझ पर है, इसलिए कि उसने मुझे गरीबों को खुशख़बरी देने के लिए मसह किया; उसने मुझे भेजा है क़ैदियों को रिहाई और अन्धों को बीनाई पाने की ख़बर सूनाऊँ, कुचले हुआँ को आज़ाद करूँ | "¹⁹और खुदावन्द के साल-ए-मक़बूल का ऐलान करूँ |

²⁰फिर वो किताब बन्द करके और ख़ादिम को वापस देकर बैठ गया; जितने 'इबादतखाने में थे सबकी आँखें उस पर लगी थीं | ²¹वो उनसे कहने लगा, "आज ये लिखा हुआ तुम्हारे सामने पूरा हुआ | "²²और सबने उस पर गवाही दी और उन पुर फ़ज़ल बातों पर जो उसके मुँह से निकली थी, ता'ज्जुब करके कहने लगे, "क्या ये यूसुफ़ का बेटा नहीं?"

²³उसने उनसे कहा "तुम अलबता ये मसल मुझ पर कहोगे कि, 'ऐ हकीम, अपने आप को तो अच्छा कर ! जो कुछ हम ने सुना है कि क़फ़रनहुम में किया गया, यहाँ अपने वतन में भी कर' | "²⁴और उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि कोई नबी अपने वतन में मक़बूल नहीं होता | "

²⁵और मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह के दिनों में जब साढ़े तीन बरस आसमान बन्द रहा, यहाँ तक कि सारे मुल्क में सख़्त काल पड़ा, बहुत सी बेवायें इस्राईल में थीं | ²⁶लेकिन एलियाह उनमें से किसी के पास न भेजा गया, मगर मुल्क-ए-सैदा के शहर सारपत में एक बेवा के पास²⁷ और इलिशा नबी के वक़्त में इस्राईल के बीच बहुत से कोढ़ी थे, लेकिन उनमें से कोई पाक साफ़ न किया गया मगर ना'मान सूरयानी | "

²⁸जितने 'इबादतखाने में थे, इन बातों को सुनते ही गुस्से से भर गए,²⁹ और उठकर उस को बाहर निकाले और उस पहाड़ की चोटी पर ले गए जिस पर उनका शहर आबाद था, ताकि उसको सिर के बल गिरा दें | ³⁰मगर वो उनके बीच में से निकलकर चला गया |

³¹फिर वो गलील के शहर क़फ़रनहुम को गया और सबत के दिन उन्हें ता'लीम दे रहा था | ³²और लोग उसकी ता'लीम से हैरान थे क्योंकि उसका कलाम इस्त्रियार के साथ था |

³³इबादतखाने में एक आदमी था, जिसमें बदरूह थी | वो बड़ी आवाज़ से चिल्ला उठा कि, ³⁴"ऐ ईसा' नासरी हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें हलाक करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ कि तू कौन है -खुदा का कुदूस है | "

³⁵ईसा' ने उसे झिड़क कर कहा, "चुप रह और उसमें से निकल जा | " इस पर बदरूह उसे बीच में पटक कर बग़ैर नुक़सान पहुँचाए उसमें से निकल गई | ³⁶और सब हैरान होकर आपस में कहने लगे, "ये कैसा कलाम है?" क्योंकि वो इस्त्रियार और कुदरत से नापाक रूहों को हुक्म देता है और वो निकल जाती हैं | "³⁷और आस पास में हर जगह उसकी धूम मच गई |

³⁸फिर वो 'इबादतखाने से उठकर शमा'ऊन के घर में दाख़िल हुआ और शमा'ऊन की सास जो बुखार में पड़ी हुई थी और उन्होंने उस के लिए उससे 'अज़ की |

³⁹वो खड़ा होकर उसकी तरफ़ झुका और बुखार को झिड़का तो वो उतर गया, वो उसी दम उठकर उनकी ख़िदमत करने लगी |

⁴⁰और सूरज के डूबते वक़्त वो सब लोग जिनके यहाँ तरह-तरह की बीमारियों के मरीज़ थे, उन्हें उसके पास लाए और उसने उनमें से हर एक पर हाथ रख कर उन्हें अच्छा किया | ⁴¹और बदरूहें भी चिल्लाकर और ये कहकर कि, "तू खुदा का बेटा है" बहुतों में से निकल गई, और वो उन्हें झिड़कता और बोलने न देता था, क्योंकि वो जानती थीं के ये मसीह है |

⁴²जब दिन हुआ तो वो निकल कर एक वीरान जगह में गया, और भीड़ की भीड़ उसको ढूँढती हुई उसके पास आई, और उसको रोकने लगी कि हमारे पास से न जा | ⁴³उसने उनसे कहा, "मुझे और शहरों में भी खुदा की बादशाही की खुशख़बरी सुनाना ज़रूर है, क्योंकि मैं इसी लिए भेजा गया हूँ | "⁴⁴और वो गलील के 'इबादतखानों में ऐलान करता रहा |

Chapter 5

¹जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी और खुदा का कलाम सुनती थी, और वो गनेसरत की झील के किनारे खड़ा था तो ऐसा हुआ कि² उसने झील के किनारे दो नाव लगी देखीं, लेकिन मछली पकड़ने वाले उन पर से उतर कर जाल धो रहे थे³ और उसने उस नावों में से एक पर चढ़कर जो शमा'ऊन की थी, उससे दरख्वास्त की कि किनारे से ज़रा हटा ले चल और वो बैठकर लोगों को नाव पर से ता'लीम देने लगा ।

⁴जब कलाम कर चुका तो शमा'ऊन से कहा, " गहरे में ले चल, और तुम शिकार के लिए अपने जाल डालो । "⁵शमा'ऊन ने जवाब में कहा, "ऐ खुदावन्द ! हम ने रात भर मेहनत की और कुछ हाथ न आया, मगर तेरे कहने से जाल डालता हूँ । "⁶ये किया और वो मछलियों का बड़ा घेर लाए, और उनके जाल फ़टने लगे ।

⁷और उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे इशारा किया कि आओ हमारी मदद करो । पस उन्होंने आकर दोनों नावे यहाँ तक भर दीं कि डूबने लगीं ।

⁸शमा'ऊन पतरस ये देखकर ईसा' के पांव में गिरा और कहा, "ऐ खुदावन्द ! मेरे पास से चला जा, क्योंकि मैं गुनहगार आदमी हूँ । "⁹क्योंकि मछलियों के इस शिकार से जो उन्होंने किया, वो और उसके सब साथी बहुत हैरान हुए ।¹⁰और वैसे ही ज़ब्दी के बेटे या'कूब और युहन्ना भी जो शमा'ऊन के साथी थे, हैरान हुए । ईसा' ने शमा'ऊन से कहा, " ख़ौफ़ न कर, अब से तू आदमियों का शिकार करेगा । "¹¹वो नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए ।

¹²जब वो एक शहर में था, तो देखो, कोढ़ से भरा हुआ एक आदमी ईसा' को देखकर मुँह के बल गिरा और उसकी मिन्नत करके कहने लगा, "ऐ खुदावन्द, अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है । "¹³उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, तू पाक साफ़ हो जा । " और फ़ौरन उसका कोढ़ जाता रहा ।

¹⁴और उसने उसे ताकीद की, "किसी से न कहना बल्कि जाकर अपने आपको काहिन को दिखा । और जैसा मूसा ने मुकर्रर किया है अपने पाक साफ़ हो जाने के बारे में गुज़रान ताकि उनके लिए गवाही हो । "

¹⁵लेकिन उसकी चर्चा ज़्यादा फ़ैली और बहुत से लोग जमा' हुए कि उसकी सुनें और अपनी बीमारियों से शिफ़ा पाएँ¹⁶मगर वो जंगलों में अलग जाकर दु'आ किया करता था ।

¹⁷और एक दिन ऐसा हुआ कि वो ता'लीम दे रहा था और फ़रीसी और शरा' के मु'अल्लिम वहाँ बैठे हुए थे जो गलील के हर गाँव और यहूदिया और यरूशलीम से आए थे । और खुदावन्द की कुदरत शिफ़ा बख़्शने को उसके साथ थी ।

¹⁸और देखो, कोई मर्द एक आदमी को जो फ़ालिज का मारा था चारपाई पर लाए और कोशिश की कि उसे अन्दर लाकर उसके आगे रखें ।¹⁹और जब भीड़ की वजह से उसको अन्दर ले जाने की राह न पाई तो छत पर चढ़ कर खपरैल में से उसको खटोले समेत बीच में ईसा' के सामने उतार दिया ।

²⁰उसने उनका ईमान देखकर कहा, "ऐ आदमी ! तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए ! "²¹इस पर फ़क़ीह और फ़रीसी सोचने लगे, "ये कौन है जो कुफ़्र बकता है? खुदा के सिवा और कौन गुनाह मु'आफ़ कर सकता है ? "

²²ईसा' ने उनके खयालों को मा'लूम करके जवाब में उनसे कहा, "तुम अपने दिलों में क्या सोचते हो? "²³आसान क्या है? ये कहना कि 'तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए' या ये कहना कि 'उठ और चल फिर'?²⁴लेकिन इसलिए कि तुम जानो कि इब्न-ए-आदम को ज़मीन पर गुनाह मु'आफ़ करने का इख्तियार है; (उसने मफ़्लूज से कहा) मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी चारपाई उठाकर अपने घर जा । "

²⁵वो उसी दम उनके सामने उठा और जिस पर पड़ा था उसे उठाकर खुदा की तम्ज़ीद करता हुआ अपने घर चला गया ।²⁶वो सब के सब बहुत हैरान हुए और खुदा की तम्ज़ीद करने लगे, और बहुत डर गए और कहने लगे, "आज हम ने 'अजीब बातें देखीं ! "

²⁷इन बातों के बा'द वो बाहर गया और लावी नाम के एक महसूल लेनेवाले को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले । "²⁸वो सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया ।

²⁹फिर लावी ने अपने घर में उसकी बड़ी ज़ियाफ़त की; और महसूल लेनेवालों और औरों की जो उनके साथ खाना खाने बैठे थे, बड़ी भीड़' थी ।³⁰और फ़रीसी और उनके आलिम उसके शागिर्दों से ये कहकर बुदबुदाने लगे, "तुम क्यों महसूल लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते-पीते हो? "³¹ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "तन्दुरुस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं है बल्कि बीमारों को । "³²मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को तौबा के लिए बुलाने आया हूँ ।

³³और उन्होंने उससे कहा, "युहन्ना के शागिर्द अक्सर रोज़ा रखते और दु'आएँ किया करते हैं, और इसी तरह फ़रीसियों के भी; मगर तेरे शागिर्द खाते पीते हैं । "³⁴ईसा' ने उनसे कहा, "क्या तुम बरातियों से, जब तक दूल्हा उनके साथ है, रोज़ा रखवा सकते हो?³⁵मगर वो दिन आएँगे; और जब दूल्हा उनसे जुदा किया जाएगा तब उन दिनों में वो रोज़ा रखेंगे । "

³⁶और उसने उनसे एक मिसाल भी कही: "कोई आदमी नई पोशाक में से फाड़कर पुरानी में पैवन्द नहीं लगाता, वरना नई भी फटेगी और उसका पैवन्द पुरानी में मेल भी न खाएगा । "

³⁷और कोई शख्स नई मय पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नई मय मशकों को फाड़ कर खुद भी बह जाएगी और मशकें भी बर्बाद हो जाएँगी ।³⁸बल्कि नई मय नयी मशकों में भरना चाहिए ।³⁹और कोई आदमी पुरानी मय पीकर नई की ख्वाहिश नहीं करता, क्योंकि कहता है कि पुरानी ही अच्छी है । "

Chapter 6

¹फिर सबत के दिन यूँ हुआ कि वो खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके शागिर्द बालें तोड़-तोड़ कर और हाथों से मल-मलकर खाते जाते थे | ²और फ़रीसियों में से कुछ लोग कहने लगे, "तुम वो काम क्यों करते हो जो सबत के दिन करना ठीक नहीं |"

³ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "क्या तुम ने ये भी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे तो उसने क्या किया?" ⁴वो क्योंकर ख़ुदा के घर में गया, और नज़्र की रोटियाँ लेकर खाई जिनको खाना कहिनों के सिवा और किसी को ठीक नहीं, और अपने साथियों को भी दीं | ⁵"फिर उसने उनसे कहा, "इब्न-ए-आदम सबत का मालिक है |"

⁶और यूँ हुआ कि किसी और सबत को वो 'इबादतखाने में दाखिल होकर ता'लीम देने लगा | वहाँ एक आदमी था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था | ⁷और आलिम और फ़रीसी उसकी ताक में थे, कि आया सबत के दिन अच्छा करता है या नहीं, ताकि उस पर इल्ज़ाम लगाने का मौक़ा' पाएँ | ⁸मगर उसको उनके खयाल मा'लूम थे; पस उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा था कहा, "उठ, और बीच में खड़ा हो !"

⁹ईसा' ने उनसे कहा, "मैं तुम से ये पूछता हूँ कि आया सबत के दिन नेकी करना ठीक है या बदी करना? जान बचाना या हलाक करना?" ¹⁰और उन सब पर नज़र करके उससे कहा, "अपना हाथ बढ़ा !" उसने बढ़ाया और उसका हाथ दुरुस्त हो गया | ¹¹वो आपे से बाहर होकर एक दूसरे से कहने लगे कि हम ईसा' के साथ क्या करें |

¹²और उन दिनों में ऐसा हुआ कि वो पहाड़ पर दु'आ करने को निकला और ख़ुदा से दु'आ करने में सारी रात गुज़ारी | ¹³जब दिन हुआ तो उसने अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनमें से बारह चुन लिए और उनको रसूल का लक़ब दिया :

¹⁴या'नी शमा'ऊन जिसका नाम उसने पतरस भी रखखा, और अन्धियास, और या'कूब, और युहन्ना, और फ़िलिप्पुस, और बरतुल्माई, ¹⁵और मत्ती, और तोमा, और हलफ़ई का बेटा या'कूब, और शमा'ऊन जो ज़ेलोतेस कहलाता था, ¹⁶और या'कूब का बेटा यहुदाह, और यहुदाह इस्क़रियोती जो उसका पकड़वाने वाला हुआ |

¹⁷और वो उनके साथ उतर कर हमवार जगह पर खड़ा हुआ, और उसके शागिर्दों की बड़ी जमा'अत और लोगों की बड़ी भीड़ वहाँ थी, जो सारे यहुदिया और यरूशलीम और सूर और सैदा के बहरी किनारे से उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से शिफ़ा पाने के लिए उसके पास आई थी | ¹⁸और जो बंदरूहों से दुख पाते थे वो अच्छे किए गए | ¹⁹और सब लोग उसे छूने की कोशिश करते थे, क्योंकि कूवत उससे निकलती और सब को शिफ़ा बरख़्शती थी |

²⁰फिर उसने अपने शागिर्दों की तरफ़ नज़र करके कहा, "मुबारक हो तुम जो ग़रीब हो, क्योंकि ख़ुदा की बादशाही तुम्हारी है |" ²¹"मुबारक हो तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि आसूदा होगे "मुबारक हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हँसोगे

²²"जब इब्न-ए-आदम की वजह से लोग तुम से 'दुश्मनी रखेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और ला'न-ता'न करेंगे," ²³"उस दिन खुश होना और खुशी के मारे उछलना, इसलिए कि देखो आसमान पर तुम्हारा अज़्र बढ़ा है; क्योंकि उनके बाप-दादा नबियों के साथ भी ऐसा ही किया करते थे |

²⁴"मगर अफ़सोस तुम पर जो दौलतमन्द हो, क्योंकि तुम अपनी तसल्ली पा चुके |" ²⁵"अफ़सोस तुम पर जो अब सेर हो, क्योंकि भूखे होगे |" "अफ़सोस तुम पर जो अब हँसते हो, क्योंकि मातम करोगे और रोओगे |"

²⁶"अफ़सोस तुम पर जब सब लोग तुम्हें अच्छा कहें, क्योंकि उनके बाप-दादा झूटे नबियों के साथ भी ऐसा ही किया करते थे |

²⁷"लेकिन मैं सुनने वालों से कहता हूँ कि अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, जो तुम से 'दुश्मनी रखें उसके साथ नेकी करो |" ²⁸जो तुम पर ला'नत करें उनके लिए बरकत चाहो, जो तुमसे नफरत करें उनके लिए दु'आ करो |

²⁹जो तेरे एक गाल पर तमाँचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ़ फेर दे, और जो तेरा चोगा ले उसको कुर्ता लेने से भी मना' न कर | ³⁰जो कोई तुझ से माँगे उसे दे, और जो तेरा माल ले ले उससे तलब न कर |

³¹और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो | ³²"अगर तुम अपने मुहब्बत रखनेवालों ही से मुहब्बत रखो, तो तुम्हारा क्या अहसान है? क्योंकि गुनाहगार भी अपने मुहब्बत रखनेवालों से मुहब्बत रखते हैं |" ³³और अगर तुम उन ही का भला करो जो तुम्हारा भला करें, तो तुम्हारा क्या अहसान है? क्योंकि गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं |" ³⁴और अगर तुम उन्हीं को क़र्ज़ दो जिनसे वसूल होने की उम्मीद रखते हो, तो तुम्हारा क्या अहसान है? गुनाहगार भी गुनाहगारों को क़र्ज़ देते हैं ताकि पूरा वसूल कर लें

³⁵मगर तुम अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और नेकी करो, और बग़ैर न उम्मीद हुए क़र्ज़ दो तो तुम्हारा अज़्र बढ़ा होगा और तुम ख़ुदा के बेटे ठहरोगे, क्योंकि वो न-शुक्रों और बंदों पर भी महरबान है | ³⁶जैसा तुम्हारा आसमानी बाप रहीम है तुम भी रहीम दिल हो |

³⁷"ऐबजोई ना करो, तुम्हारी भी 'ऐबजोई न की जाएगी | मुजरिम न ठहराओ, तुम भी मुजरिम ना ठहराये जाओगे | इज़्ज़त दो, तुम भी इज़्ज़त पाओगे |

³⁸दिया करो, तुम्हें भी दिया जाएगा | अच्छा पैमाना दाब-दाब कर और हिला-हिला कर और लबरेज़ करके तुम्हारे पल्ले में डालेंगे, क्योंकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा |"

³⁹और उसने उनसे एक मिसाल भी दी" क्या अंधे को अँधा राह दिखा सकता है ? क्या दोनों ग़ड्ढे में न गिरेंगे?" ⁴⁰शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं, बल्कि हर एक जब कामिल हुआ तो अपने उस्ताद जैसा होगा |

⁴¹तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख के शहतीर पर ग़ौर नहीं करता? ⁴²और जब तू अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखता तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि भाई ला उस तिनके को जो तेरी आँख में है निकाल दूँ? ऐ रियाकार | पहले अपनी आँख में से तो शहतीर निकाल, फिर उस तिनके को जो तेरे भाई की आँख में है अच्छी तरह देखकर निकाल सकेगा |

⁴³"क्योंकि कोई अच्छा दरख़्त नहीं जो बुरा फल लाए, और न कोई बुरा दरख़्त है जो अच्छा फल लाए |" ⁴⁴हर दरख़्त अपने फल से पहचाना जाता है, क्योंकि झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते और न झड़बेरी से अंगूर |

⁴⁵"अच्छा आदमी अपने दिल के अच्छे खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है, और बुरा आदमी बुरे खज़ाने से बुरी चीज़ें निकालता है; क्योंकि जो दिल में भरा है वही उसके मुँह पर आता है ।"

⁴⁶जब तुम मेरे कहने पर 'अमल नहीं करते तो क्यों मुझे 'खुदावन्द, खुदावन्द' कहते हो | ⁴⁷जो कोई मेरे पास आता और मेरी बातें सुनकर उन पर 'अमल करता है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वो किसकी तरह है | ⁴⁸वो उस आदमी की तरह है जिसने घर बनाते वक़्त ज़मीन गहरी खोदकर चट्टान पर बुनियाद डाली, जब तूफ़ान आया और सैलाब उस घर से टकराया, तो उसे हिला न सका क्योंकि वो मज़बूत बना हुआ था । |

⁴⁹लेकिन जो सुनकर 'अमल में नहीं लाता वो उस आदमी की तरह है जिसने ज़मीन पर घर को बे-बुनियाद बनाया, जब सैलाब उस पर ज़ोर से आया तो वो फ़ौरन गिर पड़ा और वो घर बिलकुल बर्बाद हुआ ।"

Chapter 7

¹जब वो लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तो कफ़रनहूम में आया |

²और किसी सूबेदार का नौकर जो उसको 'प्यारा था, बीमारी से मरने को था | ³उसने ईसा' की खबर सुनकर यहूदियों के कई बुजुर्गों को उसके पास भेजा और उससे दरखास्त की कि आकर मेरे नौकर को अच्छा कर | 'वो ईसा' के पास आए और उसकी बड़ी खुशामद कर के कहने लगे, "वो इस लायक है कि तू उसकी खातिर ये करे |" ⁵क्योंकि वो हमारी क्रौम से मुहब्बत रखता है और हमारे 'इबादतखाने को उसी ने बनवाया |"

⁶ईसा' उनके साथ चला मगर जब वो घर के करीब पहुँचा तो सूबेदार ने कुछ दोस्तों के ज़रिये उसे ये कहला भेजा, "ऐ खुदावन्द तकलीफ़ न कर, क्योंकि मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए |" ⁷इसी वजह से मैंने अपने आप को भी तेरे पास आने के लायक न समझा, बल्कि ज़बान से कह दे तो मेरा खादिम शिफ़ा पाएगा | ⁸क्योंकि मैं भी दूसरे के ताबे में हूँ, और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ कि 'जा' वो जाता है, और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वो आता है; और अपने नौकर से कि 'ये कर' तो वो करता है |"

⁹ईसा' ने ये सुनकर उस पर ता'ज्जुब किया, और मुड़ कर उस भीड़ से जो उसके पीछे आती थी कहा, "मैं तुम से कहता हूँ कि मैंने ऐसा ईमान इस्राईल में भी नहीं पाया |" ¹⁰और भेजे हुए लोगों ने घर में वापस आकर उस नौकर को तन्दुरुस्त पाया |

¹¹थोड़े 'अरसे के बा'द ऐसा हुआ कि वो नाईन नाम एक शहर को गया | उसके शागिर्द और बहुत से लोग उसके हमराह थे | ¹²जब वो शहर के फाटक के नज़दीक पहुँचा तो देखो, एक मुर्दे को बाहर लिए जाते थे | वो अपनी माँ का इकलौता बेटा था और वो बेवा थी, और शहर के बहुतेरे लोग उसके साथ थे | ¹³उसे देखकर खुदावन्द को तरस आया और उससे कहा, "मत रो !" ¹⁴फिर उसने पास आकर जनाज़े को छुआ और उठाने वाले खड़े हो गए | और उसने कहा, ऐ जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ !" ¹⁵वो मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा | और उसने उसे उसकी माँ को सुपुर्द किया |

¹⁶और सब पर खौफ़ छा गया और वो खुदा की तम्जीद करके कहने लगे, "एक बड़ा नबी हम में आया हुआ है, खुदा ने अपनी उम्मत पर तवज्जुह की है |" ¹⁷और उसकी निस्बत ये खबर सारे यहूदिया और तमाम आस पास में फैल गई |

¹⁸और युहन्ना को उसके शागिर्दों ने इन सब बातों की खबर दी | ¹⁹इस पर युहन्ना ने अपने शागिर्दों में से दो को बुला कर खुदावन्द के पास ये पूछने को भेजा, कि "आने वाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की राह देखें |" ²⁰उन्होंने उसके पास आकर कहा, "युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास ये पूछने को भेजा है कि आने वाला तू ही है या हम दूसरे की राह देखें |

²¹उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और आफ़तों और बदरूहों से नजात बख़्शी और बहुत से अन्धों को बीनाई 'अता की | ²²उसने जवाब में उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना है जाकर युहन्ना से बयान कर दो कि अन्धे देखते, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी पाक साफ़ किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं मुर्दे ज़िन्दा किए जाते हैं, ग़रीबों को खुशख़बरी सुनाई जाती है |" ²³मुबारक है वो जो मेरी वजह से ठोकर न खाए |

²⁴जब युहन्ना के क़ासिद चले गए तो ईसा' युहन्ना' के हक़ में कहने लगा, "तुम वीरानों में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को?" ²⁵तो फिर क्या देखने गए थे? क्या महीन कपड़े पहने हुए शख्स को? देखो, जो चमकदार पोशाक पहनते और 'ऐश-ओ-इशरत में रहते हैं, वो बादशाही महलों में होते हैं |" ²⁶तो फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या एक नबी? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, बल्कि नबी से बड़े को |

²⁷ये वही है जिसके बारे में लिखा है : 'देख, मैं अपना पैग़म्बर तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरी राह तेरे आगे तैयार करेगा |' ²⁸मैं तुम से कहता हूँ कि जो 'औरतों से पैदा हुए है, उनमें युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं लेकिन जो खुदा की बादशाही में छोटा है वो उससे बड़ा है |"

²⁹और सब 'आम लोगों ने जब सुना, तो उन्होंने और महसूल लेने वालों ने भी युहन्ना का बपतिस्मा लेकर खुदा को रास्तबाज़ मान लिया | ³⁰मगर फ़रीसियों और शरा' के 'आलिमों ने उससे बपतिस्मा न लेकर खुदा के इरादे को अपनी निस्बत बातिल कर दिया |

³¹"पस इस ज़माने के आदमियों को मैं किससे मिसाल दूँ, वो किसकी तरह हैं?" ³²उन लड़कों की तरह हैं जो बाज़ार में बैठे हुए एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि हम ने तुम्हारे लिए बांसली बजाई और तुम न नाचे, हम ने मातम किया और तुम न रोए |

³³क्योंकि युहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न तो रोटी खाता हुआ आया न मय पीता हुआ और तुम कहते हो कि उसमें बदरूह है | ³⁴इब्न-ए-आदम खाता पीता आया और तुम कहते हो कि देखो, खाऊ और शराबी आदमी, महसूल लेने वालों और गुनाहगारों का यार | ³⁵लेकिन हिक्मत अपने सब लड़कों की तरफ़ से रास्त साबित हुई |"

³⁶फिर किसी फ़रीसी ने उससे दरखास्त की कि मेरे साथ खाना खा, पस वो उस फ़रीसी के घर जाकर खाना खाने बैठा | ³⁷तो देखो, एक बदचलन 'औरत जो उस शहर की थी, ये जानकर कि वो उस फ़रीसी के घर में खाना खाने बैठा है, संग-ए-मरमर के 'इत्रदान में 'इत्र लाई; ³⁸और उसके पाँव के पास रोती हुई पीछे खड़े होकर, उसके पाँव आँसुओं से भिगोने लगी और अपने सिर के बालों से उनको पोंछा, और उसके पाँव बहुत चूमे और उन पर इत्र डाला |

³⁹उसकी दा'वत करने वाला फ़रीसी ये देख कर अपने जी में कहने लगा, "अगर ये शख्स नबी 'होता तो जानता कि जो उसे छूती है वो कौन और कैसी 'औरत है, क्योंकि बदचलन है |" ⁴⁰ईसा, ने जवाब में उससे कहा, "ऐ शमा'ऊन ! मुझे तुझ से कुछ कहना है |" उसने कहा, "ऐ उस्ताद कह |"

⁴¹"किसी साहूकार के दो क़र्ज़दार थे, एक पाँच सौ दीनार का दूसरा पचास का |" ⁴²जब उनके पास अदा करने को कुछ न रहा तो उसने दोनों को बख़्श दिया | पस उनमें से कौन उससे ज़्यादा मुहब्बत रखेगा?" ⁴³शमा'ऊन ने जवाब में कहा, "मेरी समझ में वो जिसे उसने ज़्यादा बख़्शा |" उसने उससे कहा, "तू ने ठीक फ़ैसला किया है |"

⁴⁴और उस 'औरत की तरफ़ फिर कर उसने शमा'ऊन से कहा, "क्या तू इस 'औरत को देखता है? मैं तेरे घर में आया, तू ने मेरे पाँव धोने को पानी न दिया; मगर इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगो दिए, और अपने बालों से पोंछे |" ⁴⁵तू ने मुझ को बोसा न दिया, मगर इसने जब से मैं आया हूँ मेरे पाँव चूमना न छोड़ा |

⁴⁶तू ने मेरे सिर में तेल न डाला, मगर इसने मेरे पाँव पर 'इत्र डाला है |" ⁴⁷इसी लिए मैं तुझ से कहता हूँ कि इसके गुनाह जो बहुत थे मु'आफ़ हुए क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत की, मगर जिसके थोड़े गुनाह मु'आफ़ हुए वो थोड़ी मुहब्बत करता है |"

⁴⁸और उस 'औरत से कहा, "तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए !" ⁴⁹इसी पर वो जो उसके साथ खाना खाने बैठे थे अपने जी में कहने लगे, "ये कौन है जो गुनाह भी मु'आफ़ करता है?" ⁵⁰मगर उसने 'औरत से कहा, "तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया, सलामत चली जा । "

Chapter 8

¹थोड़े 'अरसे के बा'द यूँ हुआ कि वो ऐलान करता और खुदा की बादशाही की खुशखबरी सुनाता हुआ शहर-शहर और गावँ-गावँ फिरने लगा, और वो बारह उसके साथ थे।² और कुछ 'औरतें जिन्होंने बुरी रूहों और बिमारियों से शिफ़ा पाई थी, या'नी मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिसमें से सात बदरूहें निकली थीं,³ और युहन्ना हेरोदेस के दीवान खूज़ा की बीवी, और सूसन्ना, और बहुत सी और 'औरतें भी थीं; जो अपने माल से उनकी खिदमत करती थी।
⁴'फिर जब बड़ी भीड़ उसके पास जमा' हुई और शहर के लोग उसके पास चले आते थे, उसने मिसाल में कहा,⁵ "एक बोने वाला अपने बीज बोने निकला, और बोते वक़्त कुछ राह के किनारे गिरा और रौंदा गया और हवा के परिन्दों ने उसे चुग लिया।⁶ और कुछ चट्टान पर गिरा और उग कर सूख गया, इसलिए कि उसको नमी न पहुँची।

⁷और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने साथ-साथ बढ़कर उसे दबा लिया।⁸ और कुछ अच्छी ज़मीन में गिरा और उग कर सौ गुना फल लाया।" ये कह कर उसने पुकारा, "जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले।"

⁹उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि ये मिसाल क्या है।¹⁰ उसने कहा, "तुम को खुदा की बादशाही के राज़ों की समझ दी गई है, मगर औरों को मिसाल में सुनाया जाता है, ताकि 'देखते हुए न देखें, और सुनते हुए न समझें'।"

¹¹वो मिसाल ये है, कि बीज खुदा का कलाम है।¹² राह के किनारे के वो हैं, जिन्होंने सुना फिर शैतान आकर कलाम को उनके दिल से छीन ले जाता है ऐसा न हो कि वो ईमान लाकर नजात पाएँ।¹³ और चट्टान पर वो हैं जो सुनकर कलाम को खुशी से कुबूल कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते मगर कुछ 'अरसे तक ईमान रख कर आजमाइश के वक़्त मुड़ जाते हैं।

¹⁴और जो झाड़ियों में पड़ा उससे वो लोग मुराद हैं, जिन्होंने सुना लेकिन होते होते इस ज़िन्दगी की फ़िक्रों और दौलत और 'ऐश-ओ-इशरत में फँस जाते हैं और उनका फल पकता नहीं।¹⁵ मगर अच्छी ज़मीन के वो हैं, जो कलाम को सुनकर 'उम्दा और नेक दिल में सम्भाले रहते हैं और सब्र से फल लाते हैं।

¹⁶कोई शख्स चरागा जला कर बर्तन से नहीं छिपाता न पलंग के नीचे रखता है, बल्कि चिरागादान पर रखता है ताकि अन्दर आने वालों को रौशनी दिखाई दे।

¹⁷क्यूँकि कोई चीज़ छिपी नहीं जो जाहिर न हो जाएगी, और न कोई ऐसी छिपी बात है जो माँ लूम न होगी और सामने न आए।¹⁸ पस खबरदार रहो कि तुम किस तरह सुनते हो? क्यूँकि जिसके पास नहीं है वो भी ले लिया जाएगा जो अपना समझता है।"

¹⁹फिर उसकी माँ और उसके भाई उसके पास आए, मगर भीड़ की वजह से उस तक न पहुँच सके।²⁰ और उसे खबर दी गई, "तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से मिलना चाहते हैं।"²¹ उसने जवाब में उनसे कहा, "मेरी माँ और मेरे भाई तो ये हैं, जो खुदा का कलाम सुनते और उस पर 'अमल करते हैं।"

²²फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वो और उसके शागिर्द नाव में सवार हुए। उसने उनसे कहा, "आओ, झील के पार चलें वो सब रवाना हुए।"²³ मगर जब नाव चली जाती थी तो वो सो गया। और झील पर बड़ी आँधी आई और नाव पानी से भरी जाती थी और वो खतरे में थे।

²⁴उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा, "साहेब ! साहेब ! हम हलाक हुए जाते हैं !" उसने उठकर हवा को और पानी के ज़ोर-शोर को झिड़का और दोनों थम गए और अमन हो गया।²⁵ उसने उनसे कहा, "तुम्हारा ईमान कहाँ गया? वो डर गए और ता'अज्जुब करके आपस में कहने लगे, "ये कौन है? ये तो हवा और पानी को हुक्म देता है और वो उसकी मानते हैं।"

²⁶फिर वो गिरासीनियों के 'इलाक़े में जा पहुँचे जो उस पार गलील के सामने है।²⁷ जब वो किनारे पर उतरा तो शहर का एक मर्द उसे मिला जिसमें बदरूहें थीं, और उसने बड़ी मुद्दत से कपड़े न पहने थे और वो घर में नहीं बल्कि क़ब्रों में रहा करता था।

²⁸'वो ईसा' को देख कर चिल्लाया और उसके आगे गिर कर बुलन्द आवाज़ से कहने लगा, "ऐ ईसा ! खुदा के बेटे, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे 'अजाब में न डाल।"²⁹ क्यूँकि वो उस बदरूह को हुक्म देता था कि इस आदमी में से निकल जा, इसलिए कि उसने उसको अक्सर पकड़ा था; और हर चन्द लोग उसे जंजीरों और बेड़ियों से जकड़ कर क़ाबू में रखते थे, तो भी वो जंजीरों को तोड़ डालता था और बदरूह उसको वीरानों में भगाए फिरती थी।

³⁰'ईसा' ने उससे पूछा, "तेरा क्या नाम है ? उसने कहा, "लश्कर !" क्यूँकि उसमें बहुत सी बदरूहें थीं।³¹ और वो उसकी मिन्नत करने लगी कि हमें गहरे गड्ढे में जाने का हुक्म न दे।

³²वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा गोल चर रहा था। उन्होंने उसकी मिन्नत की कि हमें उनके अन्दर जाने दे; उसने उन्हें जाने दिया।³³ और बदरूहें उस आदमी में से निकल कर सूअरों के अन्दर गईं और गोल किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और डूब मरा।

³⁴ये माजरा देख कर चराने वाले भागे और जाकर शहर और गांव में खबर दी।³⁵ लोग उस माजरे को देखने को निकले, और ईसा' के पास आकर उस आदमी को जिसमें से बदरूहें निकली थीं, कपड़े पहने और होश में ईसा' के पाँव के पास बैठे पाया और डर गए।

³⁶और देखने वालों ने उनको खबर दी कि जिसमें बदरूहें थीं वो किस तरह अच्छा हुआ।³⁷ गिरासीनियों के आस पास के सब लोगों ने उससे दरख्वास्त की कि हमारे पास से चला जा; क्यूँकि उन पर बड़ी दहशत छा गई थी। पस वो नाव में बैठकर वापस गया।

³⁸लेकिन जिस शख्स में से बदरूहें निकल गई थीं, वो उसकी मिन्नत करके कहने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे, मगर ईसा' ने उसे रुख़्सत करके कहा,

³⁹"अपने घर को लौट कर लोगों से बयान कर, कि खुदा ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।" वो रवाना होकर तमाम शहर में चर्चा करने लगा कि ईसा' ने मेरे लिए कैसे बड़े काम किए।

⁴⁰जब ईसा' वापस आ रहा था तो लोग उससे खुशी के साथ मिले, क्यूँकि सब उसकी राह देखते थे।⁴¹ और देखो, याईर नाम एक शख्स जो 'इबादतखाने का सरदार था, आया और ईसा' के क़दमों पे गिरकर उससे मिन्नत की कि मेरे घर चल,⁴² क्यूँकि उसकी इकलौती बेटी जो तक्ररीबन बारह बरस की थी, मरने को थी। और जब वो जा रहा था तो लोग उस पर गिरे पड़ते थे।

⁴³और एक 'औरत ने जिसके बारह बरस से खून जारी था, और अपना सारा माल हकीमों पर खर्च कर चुकी थी, और किसी के हाथ से अच्छी न हो सकी थी;

⁴⁴उसके पीछे आकर उसकी पोशाक का किनारा हुआ, और उसी दम उसका खून बहना बन्द हो गया।

⁴⁵इस पर ईसा' ने कहा, "वो कौन है जिसने मुझे छुआ?" जब सब इन्कार करने लगे तो पतरस और उसके साथियों ने कहा, "ऐ साहेब ! लोग तुझे दबाते और तुझ पर गिरे पड़ते हैं ।" ⁴⁶मगर ईसा' ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ तो है, क्योंकि मैंने मा'लूम किया कि कुव्वत मुझ से निकली है ।"

⁴⁷जब उस 'औरत ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती, तो वो काँपती हुई आई और उसके आगे गिरकर सब लोगों के सामने बयान किया कि मैंने किस वजह से तुझे छुआ, और किस तरह उसी दम शिफ़ा पा गई । ⁴⁸उसने उससे कहा, "बेटी ! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है, सलामत चली जा ।"

⁴⁹वो ये कह ही रहा था कि 'इबादतखाने के सरदार के यहाँ से किसी ने आकर कहा, "तेरी बेटी मर गई : उस्ताद को तकलीफ़ न दे ।" ⁵⁰ईसा' ने सुनकर जवाब दिया, ख़ौफ़ न कर; फ़क़त 'ऐतिफ़ाद रख, वो बच जाएगी ।"

⁵¹और घर में पहुँचकर पतरस, युहन्ना और या'क़ूब और लड़की के माँ बाप के सिवा किसी को अपने साथ अन्दर न जाने दिया । ⁵²और सब उसके लिए रो पीट रहे थे, मगर उसने कहा, "मातम न करो ! वो मर नहीं गई बल्कि सोती है ।" ⁵³वो उस पर हँसने लगे क्योंकि जानते थे कि वो मर गई है ।

⁵⁴मगर उसने उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, "ऐ लड़की, उठ !" ⁵⁵उसकी रूह वापस आई और वो उसी दम उठी । फिर ईसा' ने हुक्म दिया, "लड़की को कुछ खाने को दिया जाए ।" ⁵⁶माँ बाप हैरान हुए । उसने उन्हें ताकीद की कि ये माजरा किसी से न कहना ।

Chapter 9

¹फिर उसने उन बारह को बुलाकर उन्हें सब बदरुहों पर इख्तियार बख्शा और बीमारियों को दूर करने की कुदरत दी।² और उन्हें खुदा की बादशाही का ऐलान करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा,

³और उनसे कहा, " राह के लिए कुछ न लेना, न लाठी, न झोली, न रोटी, न रूपये, न दो दो कुरते रखना ।"⁴और जिस घर में दाखिल हो वहीं रहना और वहीं से रवाना होना;

⁵और जिस शहर के लोग तुम्हें कुबूल ना करें, उस शहर से निकलते वक़्त अपने पावों की धूल झाड़ देना ताकि उन पर गवाही हो । "⁶पस वो रवाना होकर गाँव गाँव खुशख़बरी सुनाते और हर जगह शिफ़ा देते फिरे ।

⁷चौथाई मुल्क का हाकिम हेरोदेस सब अहवाल सुन कर घबरा गया, इसलिए कि कुछ ये कहते थे कि युहन्ना मुर्दों में से जी उठा है, ⁸और कुछ ये कि एलियाह ज़ाहिर हुआ, और कुछ ये कि क़दीम नबियों में से कोई जी उठा है ।⁹मगर हेरोदेस ने कहा, "युहन्ना का तो मैं ने सिर कटवा दिया, अब ये कौन जिसके बारे में ऐसी बातें सुनता हूँ?" पस उसे देखने की कोशिश में रहा ।

¹⁰फिर रसूलों ने जो कुछ किया था लौटकर उससे बयान किया; और वो उनको अलग लेकर बैतसैदा नाम एक शहर को चला गया ।¹¹ये जानकर भीड़ उसके पीछे गई और वो ख़ुशी के साथ उनसे मिला और उनसे ख़ुदा की बादशाही की बातें करने लगा, और जो शिफ़ा पाने के मुहताज थे उन्हें शिफ़ा बख़्शी ।

¹²जब दिन ढलने लगा तो उन बारह ने आकर उससे कहा, "भीड़ को रुख़सत कर के चारों तरफ़ के गावों और बस्तियों में जा टिकें और खाने का इन्तिज़ाम करें । "क्यूँकि हम यहाँ वीरान जगह में हैं ।"¹³उसने उनसे कहा, "तुम ही उन्हें खाने को दो "उन्होंने कहा, " हमारे पास सिर्फ़ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर हाँ हम जा जाकर इन सब लोगों के लिए खाना मोल ले आएँ । "¹⁴क्यूँकि वो पाँच हज़ार मर्द के क़रीब थे । उसने अपने शागिर्दों से कहा, "उनको तक्रीबन पचास-पचास की क़तारों में बिठाओ । "

¹⁵उन्होंने उसी तरह किया और सब को बिठाया ।¹⁶फिर उसने वो पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देख कर उन पर बरकत बख़्शी, और तोड़कर अपने शागिर्दों को देता गया कि लोगों के आगे रखें ।¹⁷उन्होंने खाया और सब सेर हो गए, और उनके बचे हुए बे इस्तेमाल खाने की बारह टोक़रियाँ उठाई गई ।

¹⁸जब वो तन्हाई में दु'आ कर रहा था और शागिर्द उसके पास थे, तो ऐसा हुआ कि उसने उनसे पूछा, "लोग मुझे क्या कहते हैं ?"¹⁹उन्होंने जवाब में कहा, "युहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और कुछ एलियाह कहते हैं, और कुछ ये कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है । "

²⁰उसने उनसे कहा, " लेकिन तुम मुझे क्या कहते हो?" पतरस ने जवाब में कहा, "ख़ुदावन्द का मसीह । "²¹उसने उनको हिदायत करके हुक्म दिया कि ये किसी से न कहना,²²और कहा, " ज़रूर है इब्न-ए-आदम बहुत दुख उठाए और बुजुर्ग और सरदार काहिन और आलिम उसे रद्द करें और वो क़त्ल किया जाए और तीसरे दिन जी उठे । "

²³और उसने सब से कहा, " अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इनकार करे और हर रोज़ अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले । "²⁴क्यूँकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे, वो उसे खोएगा और जो कोई मेरी ख़ातिर अपनी जान खोए वही उसे बचाएगा ।²⁵और आदमी अगर सारी दुनिया को हासिल करे और अपनी जान को खो दे या नुक़सान उठाए तो उसे क्या फ़ायदा होगा?

²⁶क्यूँकि जो कोई मुझ से और मेरी बातों से शरमाएगा, इब्न-ए-आदम भी जब अपने और अपने बाप के और पाक फ़रिश्तों के जलाल में आएगा तो उस से शरमाएगा ।²⁷लेकिन मैं तुम से सच कहता हूँ कि उनमें से जो यहाँ खड़े हैं कुछ ऐसे हैं कि जब तक ख़ुदा की बादशाही को देख न लें मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे ।

²⁸फिर इन बातों के कोई आठ रोज़ बा'द ऐसा हुआ, कि वो पतरस और युहन्ना और या'कूब को साथ लेकर पहाड़ पर दु'आ करने गया ।²⁹जब वो दु'आ कर रहा था, तो ऐसा हुआ कि उसके चेहरे की सूरत बदल गई, और उसकी पोशाक सफ़ेद बरफ़ि हो गई ।

³⁰और देखो, दो शख़्स या'नी मूसा और एलियाह उससे बातें कर रहे थे ।³¹ये जलाल में दिखाई दिए और उसके इन्तक़ाल का ज़िक़्र करते थे, जो यरूशीलम में वाक़े' होने को था ।

³²मगर पतरस और उसके साथी नींद में पड़े थे और जब अच्छी तरह जागे, तो उसके जलाल को और उन दो शख़्सों को देखा जो उसके साथ खड़े थे ।³³जब वो उससे जुदा होने लगे तो ऐसा हुआ कि पतरस ने ईसा ' से कहा, "ऐ उस्ताद ! हमारा यहाँ रहना अच्छा है : पस हम तीन डेरे बनाएँ, एक तेरे लिए एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए।" लेकिन वो जानता न था कि क्या कहता है।

³⁴वो ये कहता ही था कि बादल ने आकर उन पर साया कर लिया, और जब वो बादल में घिरने लगे तो डर गए ।³⁵और बादल में से एक आवाज़ आई, "ये मेरा चुना हुआ बेटा है, इसकी सुनो । " ।³⁶ये आवाज़ आते ही ईसा' अकेला दिखाई दिया; और वो चुप रहे, और जो बातें देखी थीं उन दिनों में किसी को उनकी कुछ ख़बर न दी ।

³⁷दूसरे दिन जब वो पहाड़ से उतरे थे, तो ऐसा हुआ कि एक बड़ी भीड़ उससे आ मिली ।³⁸और देखो एक आदमी ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा, "ऐ उस्ताद ! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरे बेटे पर नज़र कर;क्यूँकि वो मेरा इकलौता है । "³⁹और देखो, एक रूह उसे पकड़ लेती है, और वो यकायक चीख उठता है; और उसको ऐसा मरोड़ती है कि क़फ़ भर लाता है, और उसको कुचल कर मुश्किल से छोड़ती है ।⁴⁰मैंने तेरे शागिर्दों की मिन्नत की कि उसे निकाल दें, लेकिन वो न निकाल सके । "

⁴¹ईसा' ने जवाब में कहा, "ऐ कम ईमान वालों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारी बर्दाश्त करूँगा? अपने बेटे को ले आ।"⁴²वो आता ही था कि बदरूह ने उसे पटक कर मरोड़ा और ईसा' ने उस नापाक रूह को झिड़का और लड़के को अच्छा करके उसके बाप को दे दिया ।

⁴³और सब लोग खुदा की शान देखकर हैरान हुए । लेकिन जिस वक़्त सब लोग उन सब कामों पर जो वो करता था ता'ज्जुब कर रहे थे, उसने अपने शागिर्दों से कहा, ⁴⁴"तुम्हारे कानों में ये बातें पड़ी रहें, क्योंकि इब्न-ए-आदम आदमियों के हवाले किए जाने को है ।" ⁴⁵लेकिन वो इस बात को समझते न थे, बल्कि ये उनसे छिपाई गई ताकि उसे मा'लूम न करें; और इस बात के बारे में उससे पूछते हुए डरते थे ।

⁴⁶फिर उनमें ये बहस शुरू हुई, कि हम में से बड़ा कौन है? ⁴⁷लेकिन ईसा' ने उनके दिलों का खयाल मा'लूम करके एक बच्चे को लिया, और अपने पास खड़ा करके उनसे कहा, ⁴⁸"जो कोई इस बच्चे को मेरे नाम से कुबूल करता है, वो मुझे कुबूल करता है; और जो मुझे कुबूल करता है, वो मेरे भेजनेवाले को कुबूल करता है; क्योंकि जो तुम में सब से छोटा है वही बड़ा है"

⁴⁹युहन्ना ने जवाब में कहा, "ऐ उस्ताद ! हम ने एक शख्स को तेरे नाम से बदरूह निकालते देखा, और उसको मना' करने लगे, क्योंकि वो हमारे साथ तेरी पैरवी नहीं करता ।" ⁵⁰लेकिन ईसा ' ने उससे कहा, "उसे मना' न करना, क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ़ नहीं वो तुम्हारी तरफ़ है ।"

⁵¹जब वो दिन नज़दीक आए कि वो ऊपर उठाया जाए, तो ऐसा हुआ कि उसने यरूशलीम जाने को कमर बाँधी । ⁵²और आगे क़ासिद भेजे, वो जाकर सामरियों के एक गावँ में दाखिल हुए ताकि उसके लिए तैयारी करें ⁵³लेकिन उन्होंने उसको टिकने न दिया, क्योंकि उसका रुख यरूशलीम की तरफ़ था ।

⁵⁴ये देखकर उसके शागिर्द या'क़ूब और युहन्ना ने कहा, "ऐ खुदावन्द, क्या तू चाहता है कि हम हुक्म दें कि आसमान से आग नाज़िल होकर उन्हें भस्म कर दे [जैसा एलियाह ने किया?]" ⁵⁵मगर उसने फिरकर उन्हें झिड़का [और कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम कैसी रूह के हो । क्योंकि इब्न-ए-आदम लोगों की जान बर्बाद करने नहीं बल्कि बचाने आया है ।]" ⁵⁶फिर वो किसी और गावँ में चले गए।

⁵⁷जब वो राह में चले जाते थे तो किसी ने उससे कहा, "जहाँ कहीं तू जाए, मैं तेरे पीछे चलूँगा ।" ⁵⁸ईसा' ने उससे कहा, "लोमड़ियों के भट्ट होते हैं और हवा के परिन्दों के घोंसले, मगर इब्न-ए-आदम के लिए सिर रखने की भी जगह नहीं ।"

⁵⁹फिर उसने दूसरे से कहा, "ऐ खुदावन्द ! मुझे इजाज़त दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफ़्न करूँ ।" ⁶⁰उसने उससे कहा, "मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़्न करने दे, लेकिन तू जाकर खुदा की बादशाही की ख़बर फैला ।"

⁶¹एक और ने भी कहा, "ऐ खुदावन्द ! मैं तेरे पीछे चलूँगा, लेकिन पहले मुझे इजाज़त दे कि अपने घर वालों से रुख़सत हो आऊँ ।" ⁶²ईसा' ने उससे कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रख कर पीछे देखता है वो खुदा की बादशाही के लायक़ नहीं ।"

Chapter 10

¹इन बातों के बा'द खुदावन्द ने सत्तर आदमी और मुकर्रर किए, और जिस जिस शहर और जगह को खुद जाने वाला था वहाँ उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा | ²और वो उनसे कहने लगा, " फ़सल तो बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े हैं; इसलिए फ़सल के मालिक की मिन्नत करो कि अपनी फ़सल काटने के लिए मज़दूर भेजे | "

³जाओ; देखो, मैं तुम को गोया बरों को भेड़ियों के बीच मैं भेजता हूँ | ⁴न बटुवा ले जाओ न झोली, न जूतियाँ और न राह में किसी को सलाम करो |

⁵और जिस घर में दाखिल हो पहले कहो, 'इस घर की सलामती हो।' ⁶अगर वहाँ कोई सलामती का फ़र्ज़ होगा तो तुम्हारा सलाम उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम पर लौट आएगा | ⁷उसी घर में रहो और जो कुछ उनसे मिले खाओ-पीओ, क्योंकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है, घर घर न फिरो |

⁸जिस शहर में दाखिल हो वहाँ के लोग तुम्हें कुबूल करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए खाओ; ⁹और वहाँ के बीमारों को अच्छा करो और उनसे कहो, 'खुदा की बादशाही तुम्हारे नज़दीक आ पहुँची है | '

¹⁰लेकिन जिस शहर में तुम दाखिल हो और वहाँ के लोग तुम्हें कुबूल न करें, तो उनके बाज़ारों में जाकर कहो कि, ¹¹'हम इस गर्द को भी जो तुम्हारे शहर से हमारे पैरों में लगी है तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं, मगर ये जान लो कि खुदा की बादशाही नज़दीक आ पहुँची है | '¹²मैं तुम से कहता हूँ कि उस दिन सदोम का हाल उस शहर के हाल से ज़्यादा बर्दाश्त के लायक होगा |

¹³"ऐ ख़ुराज़ीन शहर, तुझ पर अफ़सोस ! ऐ बैतसैदा शहर, तुझ पर अफ़सोस ! क्योंकि जो मो'जिज़े तुम में ज़ाहिर हुए अगर सूर और सैदा शहर में ज़ाहिर होते, तो वो टाट ओढ़कर और खाक में बैठकर कब के तौबा कर लेते | "¹⁴मगर 'अदालत में सूर और सैदा शहर का हाल तुम्हारे हाल से ज़्यादा बर्दाश्त के लायक होगा | ¹⁵और तू ऐ कफ़र्नहूम, क्या तू आसमान तक बुलन्द किया जाएगा? नहीं, बल्कि तू 'आलम-ए-अर्वाह में उतारा जाएगा |

¹⁶"जो तुम्हारी सुनता है वो मेरी सुनता है, और जो तुम्हें नहीं मानता वो मुझे नहीं मानता, और जो मुझे नहीं मानता वो मेरे भेजेवाले को नहीं मानता | "

¹⁷वो सत्तर खुश होकर फिर आए और कहने लगे, "ऐ खुदावन्द, तेरे नाम से बदरूहें भी हमारे ताबे' हैं | "¹⁸उसने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली की तरह आसमान से गिरा हुआ देख रहा था | "¹⁹देखो, मैंने तुम को इस्तिथार दिया कि साँपों और बिच्छुओं को कुचलो और दुश्मन की सारी कुदरत पर गालिब आओ, और तुम को हरगिज़ किसी चीज़ से नुक़सान न पहुँचेगा | ²⁰तोभी इससे खुश न हो कि रूहें तुम्हारे ताबे' हैं बल्कि इससे खुश हो कि तुम्हारे नाम आसमान पर लिखे हुए है | "

²¹उसी घड़ी वो रु-उल-कुदूस से खुशी में भर गया और कहने लगा, "ऐ बाप ! आसमान और ज़मीन के खुदावन्द, मैं तेरी हम्द करता हूँ कि तूने ये बातें होशियारों और 'अक्लमन्दों से छिपाई और बच्चों पर ज़ाहिर कीं हों, ऐ, बाप क्योंकि ऐसा ही तुझे पसंद आया | "

²²मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया; और कोई नहीं जानता कि बेटा कौन है सिवा बाप के, और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवा बेटे के और उस शख्स के जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर करना चाहे | "

²³और शागिर्दों की तरफ़ मूखातिब होकर खास उन्हीं से कहा, "मुबारक है वो आँखें जो ये बातें देखती हैं जिन्हें तुम देखते हो | "²⁴क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से नबियों और बादशाहों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें मगर न देखी, और जो बातें तुम सुनते हो सुनें मगर न सुनीं | "

²⁵और देखो, एक शरा का आलिम उठा, और ये कहकर उसकी आजमाइश करने लगा, "ऐ उस्ताद, मैं क्या करूँ कि हमेशा की ज़िन्दगी का बारिस बनूँ?" ²⁶उसने उससे कहा, "तौरेत में क्या लिखा है? तू किस तरह पढ़ता है?" ²⁷उसने जवाब में कहा, 'खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपनी सारी ताक़त और अपनी सारी 'अक्ल से मुहब्बत रख और अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख | "²⁸उसने उससे कहा, "तूने ठीक जवाब दिया, यही कर तो तू जिएगा | "

²⁹मगर उसने अपने आप को रास्तबाज़ ठहराने की गरज़ से ईसा' से पूछा, "फिर मेरा पड़ोसी कौन है?" ³⁰ईसा' ने जवाब में कहा, " एक आदमी यरूशलीम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि डाकुओं में घिर गया | उन्होंने उसके कपड़े उतार लिए और मारा भी और अधमरा छोड़कर चले गए |

³¹इत्तफ़ाक़न एक काहिन उसी राह से जा रहा था, और उसे देखकर कतरा कर चला चला गया | ³²इसी तरह एक लावी उस जगह आया, वो भी उसे देखकर कतरा कर चला गया |

³³लेकिन एक सामरी सफ़र करते करते वहाँ आ निकला, और उसे देखकर उसने तरस खाया | ³⁴और उसके पास आकर उसके ज़ख्मों को तेल और मय लगा कर बाँधा, और अपने जानवर पर सवार करके सराय में ले गया और उसकी देखरेख की | ³⁵दूसरे दिन दो दीनार निकालकर भटयारे को दिए और कहा, 'इसकी देख भाल करना और जो कुछ इससे ज़्यादा खर्च होगा मैं फिर आकर तुझे अदा कर दूँगा |

³⁶इन तीनों में से उस शख्स का जो डाकुओं में घिर गया था तेरी नज़र में कौन पड़ोसी ठहरा?" ³⁷उसने कहा, "वो जिसने उस पर रहम किया ईसा' ने उससे कहा, "जा तू भी ऐसा ही कर | "

³⁸फिर जब जा रहे थे तो वो एक गाँव में दाखिल हुआ और मर्था नाम 'औरत ने उसे अपने घर में उतारा | ³⁹और मरियम नाम उसकी एक बहन थी, वो ईसा' के पाँव के पास बैठकर उसका कलाम सुन रही थी |

⁴⁰लेकिन मर्था खिदमत करते करते घबरा गई, पस उसके पास आकर कहने लगी, "ऐ खुदावन्द, क्या तुझे खयाल नहीं कि मेरी बहन ने खिदमत करने को मुझे अकेला छोड़ दिया है, पस उसे कह कि मेरी मदद करे | "⁴¹खुदावन्द ने जवाब में उससे कहा, "मर्था, मर्था, तू बहुत सी चीज़ों की फ़िक्क-ओ-तरहुद में है | ⁴²लेकिन एक चीज़ ज़रूर है और मरियम ने वो अच्छा हिस्सा चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा | "

Chapter 11

¹फिर ऐसा हुआ कि वो किसी जगह दु'आ कर रहा था; जब कर चुका तो उसके शागिर्दों में से एक ने उससे कहा, "ऐ खुदावन्द! जैसा युहन्ना ने अपने शागिर्दों को दु'आ करना सिखाया, तू भी हमें सिखा ।"

²उसने उनसे कहा, "जब तुम दु'आ करो तो कहो, ! ऐ बाप ! तेरा नाम नाम पाक माना जाए, तेरी बादशाही आए ।

³'हमारी रोज़ की रोटी हर रोज़ हमें दिया कर ।'⁴ और हमारे गुनाह मु'आफ़ कर, क्योंकि हम भी अपने हर कर्ज़दार को मु'आफ़ करते हैं, और हमें आज़माइश में न ला' ।"

⁵फिर उसने उनसे कहा, "तुम में से कौन है जिसका एक दोस्त हो, और वो आधी रात को उसके पास जाकर उससे कहे, 'ऐ दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ दे ।' क्योंकि मेरा एक दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया है, और मेरे पास कुछ नहीं कि उसके आगे रखूँ ।'⁷ और वो अन्दर से जवाब में कहे, 'मुझे तकलीफ़ न दे, अब दरवाज़ा बंद है और मेरे लड़के मेरे पास बिछोने पर हैं, मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता ।'⁸ मैं तुम से कहता हूँ, कि अगरचे वो इस वजह से कि उसका दोस्त है उठकर उसे न दे, तोभी उसकी बेशर्मी की वजह से उठकर जितनी दरकार है उसे देगा ।

⁹पस मैं तुम से कहता हूँ, माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूँढो तो पाओगे, दरवाज़ा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा ।¹⁰ क्योंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है, और जो ढूँढता है वो पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा ।

¹¹तुम में से ऐसा कौन सा बाप है, कि जब उसका बेटा रोटी माँगे तो उसे पत्थर दे; या मछली माँगे तो मछली के बदले उसे साँप दे ?¹² या अंडा माँगे तो उसे बिच्छू दे ?¹³ पस जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो आसमानी बाप अपने माँगने वालों को रूह-उल-कुदूस क्यों न देगा ।

¹⁴फिर वो एक गूँगी बदरूह को निकाल रहा था, और जब वो बदरूह निकल गई तो ऐसा हुआ कि गूँगा बोला और लोगों ने ता'ज्जुब किया ।¹⁵ लेकिन उनमें से कुछ ने कहा, "ये तो बदरूहों के सरदार बा'लज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता है ।"

¹⁶कुछ और लोग आज़माइश के लिए उससे एक आसमानी निशान तलब करने लगे ।¹⁷ मगर उसने उनके खयालात को जानकर उनसे कहा, "जिस सल्तनत में फूट पड़े, वो वीरान हो जाती है; और जिस घर में फूट पड़े, वो बर्बाद हो जाता है ।

¹⁸और अगर शैतान भी अपना मुखालिफ़ हो जाए, तो उसकी सल्तनत किस तरह क़ायम रहेगी? क्योंकि तुम मेरे बारे में कहते हो, कि ये बदरूहों को बा'लज़बूल की मदद से निकालता है ।¹⁹ और अगर मैं बदरूहों को बा'लज़बूल की मदद से निकालता हूँ, तो तुम्हारे बेटे किसकी मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारा फ़ैसला करेंगे ।²⁰ लेकिन अगर मैं बदरूहों को खुदा की कुदरत से निकालता हूँ, तो खुदा की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची ।

²¹जब ताक़तवर आदमी हथियार बाँधे हुए अपनी हवेली की रखवाली करता है, तो उसका माल महफूज़ रहता है ।²² लेकिन जब उससे कोई ताक़तवर हमला करके उस पर ग़ालिब आता है, तो उसके सब हथियार जिन पर उसका भरोसा था छीन लेता और उसका माल लूट कर बाँट देता है ।²³ जो मेरी तरफ़ नहीं वो मेरे खिलाफ़ है, और जो मेरे साथ जमा' नहीं करता वो बिखेरता है ।

²⁴"जब नापाक रूह आदमी में से निकलती है तो सूखे मुक़ामों में आराम ढूँढती फिरती है, और जब नहीं पाती तो कहती है, 'मैं अपने उसी घर में लौट जाऊँगी जिससे निकली हूँ ।'²⁵ और आकर उसे झड़ा हुआ और आरास्ता पाती है ।²⁶ फिर जाकर और सात रूहें अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो उसमें दाख़िल होकर वहाँ बसती हैं, और उस आदमी का पिछला हाल पहले से भी खराब हो जाता है ।

²⁷जब वो ये बातें कह रहा था तो ऐसा हुआ कि भीड़ में से एक 'औरत ने पुकार कर उससे कहा, "मुबारक है वो पेट जिसमें तू रहा और वो आंचल जो तू ने पिये ।"²⁸ उसने कहा, "हाँ, मगर ज़्यादा मुबारक वो है जो खुदा का कलाम सुनते और उस पर 'अमल करते हैं ।"

²⁹जब बड़ी भीड़ जमा' होती जाती थी तो वो कहने लगा, "इस ज़माने के लोग बुरे हैं, वो निशान तलब करते हैं; मगर युनाह के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा ।"³⁰ क्योंकि जिस तरह युनाह नीनवे के लोगों के लिए निशान ठहरा, उसी तरह इब्न-ए-आदम भी इस ज़माने के लोगों के लिए ठहरेगा ।

³¹दक्खिन की मलिका इस ज़माने के आदमियों के साथ 'अदालत के दिन उठकर उनको मुजरिम ठहराएगी, क्योंकि वो दुनिया के किनारे से सुलेमान की हिकमत सुनने को आई, और देखो, यहाँ वो है जो सुलेमान से भी बड़ा है ।

³²नीनवे के लोग इस ज़माने के लोगों के साथ, 'अदालत के दिन खड़े होकर उनको मुजरिम ठहराएँगे; क्योंकि उन्होंने युनाह के एलान पर तौबा कर ली, और देखो, यहाँ वो है जो युनाह से भी बड़ा है ।

³³"कोई शख्स चरागा जला कर तहखाने में या पैमाने के नीचे नहीं रखता, बल्कि चरागादान पर रखता है ताकि अन्दर जाने वालों को रोशनी दिखाई दे ।"³⁴ तेरे बदन का चरागा तेरी आँख है, जब तेरी आँख दुरुस्त है तो तेरा सारा बदन भी रोशन है, और जब खराब है तो तेरा बदन भी तारीक है ।³⁵ पस देख, जो रोशनी तुझ में है तारीकी तो नहीं !³⁶ पस अगर तेरा सारा बदन रोशन हो और कोई हिस्सा तारीक न रहे, तो वो तमाम ऐसा रोशन होगा जैसा उस वक़्त होता है जब चरागा अपने चमक से रोशन करता है ।

³⁷जो वो बात कर रहा था तो किसी फ़रीसी ने उसकी दा'वत की । पस वो अन्दर जाकर खाना खाने बैठा ।³⁸ फ़रीसी ने ये देखकर ता'अज्जुब किया कि उसने खाने से पहले गुस्ल नहीं किया ।

³⁹खुदावन्द ने उससे कहा, "ऐ फ़रीसियों ! तुम प्याले और तश्तरी को ऊपर से तो साफ़ करते हो, लेकिन तुम्हारे अन्दर लूट और बदी भरी है ।"⁴⁰ ऐ नादानों ! जिसने बाहर को बनाया क्या उसने अन्दर को नहीं बनाया ?⁴¹ हाँ ! अन्दर की चीज़ें ख़ैरात कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिए पाक होगा ।

⁴²"लेकिन ऐ फ़रीसियों ! तुम पर अफ़सोस, कि पुदीने और सुदाब और हर एक तरकारी पर दसवां हिस्सा देते हो, और इन्साफ़ और खुदा की मुहब्बत से ग़ाफ़िल रहते हो; लाज़िम था कि ये भी करते और वो भी न छोड़ते ।"

⁴³ऐ फ़रीसियों ! तुम पर अफ़सोस, कि तुम 'इबादतखानों में आ'ला दर्जे की कुर्सियाँ और और बाज़ारों में सलाम चाहते हो ।⁴⁴ तुम पर अफ़सोस ! क्योंकि तुम उन छिपी हुई क़ब्रों की तरह हो जिन पर आदमी चलते हैं, और उनको इस बात की खबर नहीं ।

⁴⁵फिर शरा' के 'आलिमों में से एक ने जवाब में उससे कहा, "ऐ उस्ताद ! इन बातों के कहने से तू हमें भी बे'इज़्ज़त करता है ।" ⁴⁶उसने कहा, "ऐ शरा' के 'आलिमो ! तुम पर भी अफ़सोस, कि तुम ऐसे बौझ जिनको उठाना मुश्किल है, आदमियों पर लादते हो और तुम एक उंगली भी उन बौझों को नहीं लगाते ।" ⁴⁷तुम पर अफ़सोस, कि तुम तो नबियों की क़ब्रों को बनाते हो और तुम्हारे बाप-दादा ने उनको क़त्ल किया था । ⁴⁸पस तुम गवाह हो और अपने बाप-दादा के कामों को पसन्द करते हो, क्योंकि उन्होंने तो उनको क़त्ल किया था और तुम उनकी क़ब्रें बनाते हो ।

⁴⁹इसी लिए ख़ुदा की हिक्मत ने कहा है, "मैं नबियों और रसूलों को उनके पास भेजूँगी, वो उनमें से कुछ को क़त्ल करेंगे और कुछ को सताएँगे ।" ⁵⁰ताकि सब नबियों के ख़ून का जो बिना-ए-'आलम से बहाया गया, इस ज़माने के लोगों से हिसाब किताब लिया जाए । ⁵¹हाबिल के ख़ून से लेकर उस ज़करियाह के ख़ून तक, जो कुर्बानगाह और मस्जिद के बीच में हलाक हुआ । मैं तुम से सच कहता हूँ कि इसी ज़माने के लोगों से सब का हिसाब किताब लिया जाएगा ।

⁵²ऐ शरा' के 'आलिमो ! तुम पर अफ़सोस, कि तुम ने मा'रिफ़त की कुंजी छीन ली, तुम ख़ुद भी दाख़िल न हुए और दाख़िल होने वालों को भी रोका ।"

⁵³जब वो वहाँ से निकला, तो आलिम और फ़रीसी उसे बे-तरह चिपटने और छेड़ने लगे ताकि वो बहुत से बातों का ज़िक्र करे, ⁵⁴और उसकी घात में रहे ताकि उसके मुँह की कोई बात पकड़े ।

Chapter 12

¹इतने में जब हज़ारों आदमियों की भीड़ लग गई, यहाँ तक कि एक दूसरे पर गिरा पड़ता था, तो उसने सबसे पहले अपने शागिर्दों से ये कहना शुरू किया, "उस खमीर से होशियार रहना जो फ़रीसियों की रियाकारी है।

²क्योंकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी, और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी।³इसलिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है वो उजाले में सुना जाएगा; और जो कुछ तुम ने कोठरियों के अन्दर कान में कहा है, छतों पर उसका एलान किया जाएगा।"

⁴"मगर तुम दोस्तों से मैं कहता हूँ कि उनसे न डरो जो बदन को क़त्ल करते हैं, और उसके बा'द और कुछ नहीं कर सकते।⁵लेकिन मैं तुम्हें जताता हूँ कि किससे डरना चाहिए, उससे डरो जिसे इच्छित्यार है कि क़त्ल करने के बा'द जहन्नूम में डाले; हाँ, मैं तुम से कहता हूँ कि उसी से डरो।

⁶क्या दो पैसे की पाँच चिड़िया नहीं बिकती? तो भी ख़ुदा के सामने उनमें से एक भी फ़रामोश नहीं होती।⁷बल्कि तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं; डरो, मत तुम्हारी क़द्र तो बहुत सी चिड़ियों से ज़्यादा है।

⁸"और मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई आदमियों के सामने मेरा इकरार करे, इब्न-ए-आदम भी ख़ुदा के फ़रिश्तों के सामने उसका इकरार करेगा।"⁹मगर जो आदमियों के सामने मेरा इन्कार करे, ख़ुदा के फ़रिश्तों के सामने उसका इन्कार किया जाएगा।"¹⁰और जो कोई इब्न-ए-आदम के खिलाफ़ कोई बात कहे, उसको मु'आफ़ किया जाएगा; लेकिन जो रूह-उल-कुहूसके हक में कुफ़्र बके, उसको मु'आफ़ न किया जाएगा।"

¹¹"और जब वो तुम को 'इबादतख़ानों में और हाकिमों और इच्छित्यार वालों के पास ले जाएँ, तो फ़िक्क न करना कि हम किस तरह या क्या जवाब दें या क्या कहें।"¹²क्योंकि रूह-उल-कुहूस उसी वक़्त तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिए।"

¹³"फिर भीड़ में से एक ने उससे कहा, "ऐ उस्ताद! मेरे भाई से कह कि मेरे बाप की जायदाद का मेरा हिस्सा मुझे दे।"¹⁴उसने उससे कहा, "मियाँ! किसने मुझे तुम्हारा मुन्सिफ़ या बाँटने वाला मुकर्रर किया है?"¹⁵और उसने उनसे कहा, "खबरदार! अपने आप को हर तरह के लालच से बचाए रखो, क्योंकि किसी की ज़िन्दगी उसके माल की ज़्यादाती पर मौकूफ़ नहीं।"

¹⁶और उसने उनसे एक मिसाल कही, "किसी दौलतमन्द की ज़मीन में बड़ी फ़सल हुई।"¹⁷पस वो अपने दिल में सोचकर कहने लगा, 'मैं क्या करूँ? क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं जहाँ अपनी पैदावार भर रखूँ?'¹⁸उसने कहा, 'मैं यूँ करूँगा कि अपनी कोठियाँ ढा कर उनसे बड़ी बनाऊँगा;'¹⁹और उनमें अपना सारा अनाज और माल भर दूँगा और अपनी जान से कहूँगा, कि ऐ जान! तेरे पास बहुत बरसों के लिए बहुत सा माल जमा है; चैन कर, खा पी खुश रह।'

²⁰मगर ख़ुदा ने उससे कहा, 'ऐ नादान! इसी रात तेरी जान तुझ से तलब कर ली जाएगी, पस जो कुछ तू ने तैयार किया है वो किसका होगा?'²¹ऐसा ही वो शख्स है जो अपने लिए खज़ाना जमा करता है, और ख़ुदा के नज़दीक दौलतमन्द नहीं।

²²फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, "इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि अपनी जान की फ़िक्क न करो कि हम क्या खाएँगे, और न अपने बदन की कि क्या पहनेंगे।"²³क्योंकि जान ख़ुराक से बढ़ कर है और बदन पोशाक से।

²⁴परिंदों पर ग़ौर करो कि न बोते हैं और न काटते, न उनके खत्ता होता है न कोठी; तोभी ख़ुदा उन्हें खिलाता है। तुम्हारी क़द्र तो परिन्दों से कहीं ज़्यादा है।"²⁵तुम में ऐसा कोन है जो फ़िक्क करके अपनी 'उम्र में एक घड़ी बढ़ा सके?'²⁶पस जब सबसे छोटी बात भी नहीं कर सकते, तो बाक़ी चीज़ों की फ़िक्क क्यों करते हो?

²⁷सोसन के दरख़्तों पर ग़ौर करो कि किस तरह बढ़ते हैं; वो न मेहनत करते हैं न कातते हैं, तोभी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलेमान भी बावजूद अपनी सारी शान-ओ-शौकत के उनमें से किसी की तरह मुलब्स न था।"²⁸पस जब ख़ुदा मैदान की घास को जो आज है कल तन्दूर में झोंकी जाएगी, ऐसी पोशाक पहनाता है; तो ऐ कम ईमान वालो! तुम को क्यों न पहनाएगा?

²⁹और तुम इसकी तलाश में न रहो कि क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, और न शक्की बनो।"³⁰क्योंकि इन सब चीज़ों की तलाश में दुनिया की क़ौमें रहती हैं, लेकिन तुम्हारा आसमानी बाप जानता है कि तुम इन चीज़ों के मुहताज हो।

³¹हाँ, उसकी बादशाही की तलाश में रहो तो ये चीज़ें भी तुम्हें मिल जाएँगी।"³²"ऐ छोटे गल्ले, न डर; क्योंकि तुम्हारे आसमानी बाप को पसन्द आया कि तुम्हें बादशाही दे।

³³अपना माल अस्बाब बेचकर ख़ैरात कर दो, और अपने लिए ऐसे बटवे बनाओ जो पुराने नहीं होते; या'नि आसमान पर ऐसा खज़ाना जो ख़ाली नहीं होता, जहाँ चोर नज़दीक नहीं जाता, और कीड़ा ख़राब नहीं करता।"³⁴क्योंकि जहाँ तुम्हारा खज़ाना है, वहीं तुम्हारा दिल भी रहेगा।

³⁵"तुम्हारी कमरें बँधी रहें और तुम्हारे चरागा जलते रहें।"³⁶और तुम उन आदमियों की तरह बनो जो अपने मालिक की राह देखते हों कि वो शादी में से कब लौटेगा, ताकि जब वो आकर दरवाज़ा खटखटाए तो फ़ौरन उसके लिए खोल दें।

³⁷मुबारक है वो नौकर जिनका मालिक आकर उन्हें जागता पाए; मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो कमर बाँध कर उन्हें खाना खाने को बिठाएगा, और पास आकर उनकी खिदमत करेगा।"³⁸अगर वो रात के दूसरे पहर में या तीसरे पहर में आकर उनको ऐसे हाल में पाए, तो वो नौकर मुबारक हैं।

³⁹लेकिन ये जान रखो कि अगर घर के मालिक को मा'लूम होता कि चोर किस घड़ी आया तो जागता रहता और अपने घर में नक़ब लगने न देता।"⁴⁰तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा, इब्ने-ए-आदम आ जाएगा।"

⁴¹पतरस ने कहा, "ऐ ख़ुदावन्द, तू ये मिसाल हम ही से कहता है या सबसे।"⁴²ख़ुदावन्द ने कहा, "कौन है वो ईमानदार और 'अक्लमन्द, जिसका मालिक उसे अपने नौकर चाकरों पर मुकर्रर करे हर एक की ख़ुराक वक़्त पर बाँट दिया करे।"⁴³मुबारक है वो नौकर जिसका मालिक आकर उसको ऐसा ही करते पाए।"⁴⁴मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल पर मुख़्तार कर देगा।

⁴⁵लेकिन अगर वो नौकर अपने दिल में ये कहकर मेरे मालिक के आने में देर है, गुलामों और लौंडियों को मारना और खा पी कर मतवाला होना शुरू करे।"⁴⁶तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन, कि वो उसकी राह न देखता हो, आ मौजूद होगा और ख़ूब कोड़े लगाकर उसे बेईमानों में शामिल करेगा।

⁴⁷और वो नौकर जिसने अपने मालिक की मर्जी जान ली, और तैयारी न की और न उसकी मर्जी के मुताबिक 'अमल किया, बहुत मार खाएगा | ⁴⁸मगर जिसने न जानकर मार खाने के काम किए वो थोड़ी मार खाएगा; और जिसे बहुत दिया गया उससे बहुत तलब किया जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया उससे ज़्यादा तलब करेंगे |

⁴⁹"मैं ज़मीन पर आग भड़काने आया हूँ, और अगर लग चुकी होती तो मैं क्या ही खुश होता | " ⁵⁰लेकिन मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वो हो न ले मैं बहुत ही तंग रहूँगा |

⁵¹क्या तुम गुमान करते हो कि मैं ज़मीन पर सुलह कराने आया हूँ? मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं, बल्कि जुदाई कराने | ⁵²क्योंकि अब से एक घर के पाँच आदमी आपस में दुश्मनी रखेंगे, दो से तीन और तीन से दो | ⁵³बाप बेटे से दुश्मनी रखेगा और बेटा बाप से, सास बहु से और बहु सास से | "

⁵⁴फिर उसने लोगों से भी कहा, "जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो तो फ़ौरन कहते हो कि पानी बरसेगा, और ऐसा ही होता है; ⁵⁵और जब तुम मा'लूम करते हो कि दख्खिना चल रही है तो कहते हो कि लू चलेगी, और ऐसा ही होता है | ⁵⁶ऐ रियाकारो ! ज़मीन और आसमान की सूरत में फ़र्क करना तुम्हें आता है, लेकिन इस ज़माने के बारे में फ़र्क करना क्यों नहीं आता?

⁵⁷"और तुम अपने आप ही क्यों फैसला नहीं कर लेते कि ठीक क्या है? " ⁵⁸जब तू अपने दुश्मन के साथ हाकिम के पास जा रहा है तो रास्ते में कोशिश करके उससे छूट जाए, ऐसा न हो कि वो तुझको फैसला करने वाले के पास खींच ले जाए, और फैसला करने वाला तुझे सिपाही के हवाले करे और सिपाही तुझे कैद में डाले | ⁵⁹मैं तुझ से कहता हूँ कि जब तक तू दमड़ी-दमड़ी अदा न कर देगा वहाँ से हरगिज़ न छूटेगा | "

Chapter 13

¹उस वक़्त कुछ लोग हाज़िर थे, जिन्होंने उसे उन गलीलियों की ख़बर दी जिनका ख़ून पिलातुस ने उनके ज़बीहों के साथ मिलाया था | ²उसने जवाब में उनसे कहा, "इन गलीलियों ने ऐसा दुख पाया, क्या वो इसलिए तुम्हारी समझ में और सब गलीलियों से ज़्यादा गुनहगार थे?" ³मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं; बल्कि अगर तुम तौबा न करोगे, तो सब इसी तरह हलाक होंगे |

⁴या, क्या वो अठारह आदमी जिन पर शेलोख का गुम्बद गिरा और दब कर मर गए, तुम्हारी समझ में यरूशलीम के और सब रहनेवालों से ज़्यादा कुसूरवार थे?

⁵मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं; बल्कि अगर तुम तौबा न करोगे, तो सब इसी तरह हलाक होंगे | "

⁶फिर उसने ये मिसाल कही, "किसी ने अपने बाग़ में एक अंजीर का दरख़्त लगाया था | वो उसमें फल ढूँढने आया और न पाया | " ⁷इस पर उसने बाग़बान से कहा, 'देख तीन बरस से मैं इस अंजीर के दरख़्त में फल ढूँढने आता हूँ और नहीं पाता | इसे काट डाल, ये ज़मीन को भी क्यों रोके रहे ?

⁸उसने जवाब में उससे कहा, 'ऐ ख़ुदावन्द, इस साल तू और भी उसे रहने दे, ताकि मैं उसके चारों तरफ़ थाला खोदूँ और खाद डालूँ | ' ⁹अगर आगे फला तो ख़ैर, नहीं तो उसके बा'द काट डालना' "

¹⁰फिर वो सबत के दिन किसी 'इबादतख़ाने में ता'लीम देता था | ¹¹और देखो, एक 'औरत थी जिसको अठारह बरस से किसी बदरूह की वजह से कमज़ोरी थी; वो झुक गई थी और किसी तरह सीधी न हो सकती थी |

¹²'ईसा' ने उसे देखकर पास बुलाया और उससे कहा, "ऐ 'औरत, तू अपनी कमज़ोरी से छूट गयी " ¹³और उसने उस पर हाथ रखे, उसी दम वो सीधी हो गई और ख़ुदा की बड़ाई करने लगी | ¹⁴'इबादतख़ाने का सरदार, इसलिए कि ईसा' ने सबत के दिन शिफ़ा बख़्शी, खफ़ा होकर लोगों से कहने लगा, "छः दिन हैं जिनमें काम करना चाहिए, पस उन्हीं में आकर शिफ़ा पाओ न कि सबत के दिन | "

¹⁵ख़ुदावन्द ने उसके जवाब में कहा, 'ऐ रियाकारो ! क्या हर एक तुम में से सबत के दिन अपने बैल या गधे को खूँटे से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?' ¹⁶पस क्या वाजिब न था कि ये जो अब्राहम की बेटी है जिसको शैतान ने अठारह बरस से बाँध कर रखवा था, सबत के दिन इस कैद से छुड़ाई जाती?"

¹⁷जब उसने ये बातें कहीं तो उसके सब मुख़ालिफ़ शर्मिन्दा हुए, और सारी भीड़ उन 'आलीशान कामों से जो उससे होते थे, ख़ुश हुई |

¹⁸पस वो कहने लगा, "ख़ुदा की बादशाही किसकी तरह है ? मैं उसको किससे मिसाल दूँ ? " ¹⁹वो राई के दाने की तरह है, जिसको एक आदमी ने लेकर अपने बाग़ में डाल दिया : वो उगकर बड़ा दरख़्त हो गया, और हवा के परिन्दों ने उसकी डालियों पर बसेरा किया | "

²⁰उसने फिर कहा, "मैं ख़ुदा की बादशाही को किससे मिसाल दूँ ? " ²¹वो ख़मीर की तरह है, जिसे एक 'औरत ने तीन पैमाने आटे में मिलाया, और होते होते सब ख़मीर हो गया | "

²²वो शहर-शहर और गाँव-गाँव ता'लीम देता हुआ यरूशलीम का सफ़र कर रहा था | ²³किसी शख्स ने उससे पुछा, "ऐ ख़ुदावन्द ! क्या नज़ात पाने वाले थोड़े हैं ? " ²⁴उसने उनसे कहा, "मेहनत करो कि तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से दाखिल होने की कोशिश करेंगे और न हो सकेंगे | "

²⁵जब घर का मालिक उठ कर दरावाज़ा बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े दरवाज़ा खटखटाकर ये कहना शुरू करो, 'ऐ ख़ुदावन्द ! हमारे लिए खोल दे, और वो जवाब दे, 'मैं तुम को नहीं जानता कि कहाँ के हो | ' ²⁶उस वक़्त तुम कहना शुरू करोगे, 'हम ने तो तेरे रु-ब-रु खाया-पिया और तू ने हमारे बाज़ारों में ता'लीम दी | ' ²⁷मगर वो कहेगा, 'मैं तुम से कहता हूँ, कि मैं नहीं जानता तुम कहाँ के हो | ऐ बदकारो, तुम सब मुझ से दूर हो |

²⁸वहाँ रोना और दांत पीसना होगा; तुम अब्राहम और इज़हाक़ और या'क़ूब और सब नबियों को ख़ुदा की बादशाही में शामिल, और अपने आपको बाहर निकाला हुआ देखोगे; ²⁹और पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन से लोग आकर ख़ुदा की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे | ³⁰और देखो, कुछ आखिर ऐसे हैं जो अव्वल होंगे और कुछ अव्वल हैं जो आखिर होंगे | "

³¹उसी वक़्त कुछ फ़रीसियों ने आकर उससे कहा, "निकल कर यहाँ से चल दे, क्योंकि हेरोदेस तुझे क़त्ल करना चाहता है | " ³²उसने उनसे कहा, "जाकर उस लोमड़ी से कह दो कि देख, मैं आज और कल बदरूहों को निकालता और शिफ़ा का काम अन्जाम देता रहूँगा, और तीसरे दिन पूरा करूँगा | " ³³मगर मुझे आज और कल और परसों अपनी राह पर चलना ज़रूर है, क्योंकि मुमकिन नहीं कि नबी यरूशलीम से बाहर हलाक हो |

³⁴"ऐ यरूशलीम ! ऐ यरूशलीम ! तू जो नबियों को क़त्ल करती है, और जो तेरे पास भेजे गए उन पर पथराव करती है | कितनी ही बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्गी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है, उसी तरह मैं भी तेरे बच्चों को जमा कर लूँ, मगर तुम ने न चाहा | " ³⁵देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे ही लिए छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूँ, कि मुझ को उस वक़्त तक हरगिज़ न देखोगे जब तक न कहोगे, 'मुबारक है वो, जो ख़ुदावन्द के नाम से आता है' | "

Chapter 14

¹फिर ऐसा हुआ कि वो सबत के दिन फ़रीसियों के सरदारों में से किसी के घर खाना खाने को गया; और वो उसकी ताक में रहे।² और देखो, एक शख्स उसके सामने था जिसे जलन्दर था।³ 'ईसा' ने शरा' के 'आलिमों और फ़रीसियों से कहा, "सबत के दिन शिफ़ा बख़्शना जायज़ है या नहीं?"

⁴वो चुप रह गए। उसने उसे हाथ लगा कर शिफ़ा बख़्शी और रुख़्सत किया,⁵ और उनसे कहा, "तुम में ऐसा कौन है, जिसका गधा या बैल कूएँ में गिर पड़े और वो सबत के दिन उसको फ़ौरन न निकाल ले?"⁶ वो इन बातों का जवाब न दे सके।

⁷जब उसने देखा कि मेहमान सद्र जगह किस तरह पसन्द करते हैं तो उनसे एक मिसाल कही,⁸ "जब कोई तुझे शादी में बुलाए तो सद्र जगह पर न बैठ, कि शायद उसने तुझ से भी किसी ज़्यादा 'इज़ज़तदार को बुलाया हो';⁹ और जिसने तुझे और उसे दोनों को बुलाया है, आकर तुझ से कहे, 'इसको जगह दे, 'फिर तुझे शर्मिन्दा होकर सबसे नीचे बैठना पड़े।

¹⁰बल्कि जब तू बुलाया जाए तो सबसे नीची जगह जा बैठ, ताकि जब तेरा बुलाने वाला आए तो तुझ देखे, 'ऐ दोस्त, आगे बढ़कर बैठ, 'तब उन सब की नज़र में जो तेरे साथ खाने बैठे हैं तेरी इज़ज़त होगी।¹¹ क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वो छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वो बड़ा किया जाएगा।"

¹²फिर उसने अपने बुलानेवाले से कहा, "जब तू दिन का या रात का खाना तैयार करे, तो अपने दोस्तों या भाइयों या रिश्तेदारों या दौलतमन्द पड़ोसियों को न बुला; ताकि ऐसा न हो कि वो भी तुझे बुलाएँ और तेरा बदला हो जाए।"

¹³बल्कि जब तू दावत करे तो ग़रीबों, लुन्जों, लंगड़ों, अन्धों को बुला।¹⁴ और तुझ पर बरकत होगी, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, और तुझे रास्बाज़ों की क्रयामत में बदला मिलेगा।"

¹⁵जो उसके साथ खाना खाने बैठे थे उनमें से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा, "मुबारक है वो जो ख़ुदा की बादशाही में खाना खाए।"¹⁶ उसने उसे कहा, "एक शख्स ने बड़ी दावत की और बहुत से लोगों को बुलाया।"¹⁷ और खाने के वक़्त अपने नौकर को भेजा कि बुलाए हुआँ से कहे, 'आओ, अब खाना तैयार है।'।

¹⁸इस पर सब ने मिलकर मु'आफ़ी मांगना शुरू किया। पहले ने उससे कहा, 'मैंने खेत खरीदा है, मुझे ज़रूर है कि जाकर उसे देखूँ; मैं तेरी खुशामद करता हूँ, मुझे मु'आफ़ कर।'¹⁹ दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल खरीदे हैं, और उन्हें आज़माने जाता हूँ; मैं तुझसे खुशामद करता हूँ, मुझे मु'आफ़ कर।'²⁰ एक और ने कहा, 'मैंने शादी की है, इस वजह से नहीं आ सकता।'"

²¹पस उस नौकर ने आकर अपने मालिक को इन बातों की खबर दी। इस पर घर के मालिक ने गुस्सा होकर अपने नौकर से कहा, 'जल्द शहर के बाज़ारों और कूचों में जाकर ग़रीबों, लुन्जों, और लंगड़ों को यहाँ ले आओ।'²² नौकर ने कहा, 'ऐ ख़ुदावन्द, जैसा तूने फ़रमाया था वैसा ही हुआ; और अब भी जगह है।'।

²³मालिक ने उस नौकर से कहा, 'सड़कों और खेत की बाड़ी की तरफ़ जा और लोगों को मजबूर करके ला ताकि मेरा घर भर जाए।'²⁴ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि जो बुलाए गए थे उनमें से कोई शख्स मेरा खाना चखने न पाएगा।"

²⁵जब बहुत से लोग उसके साथ जा रहे थे, तो उसने पीछे मुड़कर उनसे कहा,²⁶ "अगर कोई मेरे पास आए, और बच्चों और भाइयों और बहनों बल्कि अपनी जान से भी दुश्मनी न करे तो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।"²⁷ जो कोई अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न आए, वो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

²⁸क्योंकि तुम में ऐसा कौन है कि जब वो एक गुम्बद बनाना चाहे, तो पहले बैठकर लागत का हिसाब न कर ले कि आया मेरे पास उसके तैयार करने का सामान है या नहीं?²⁹ ऐसा न हो कि जब नीव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले ये कहकर उस पर हँसना शुरू करें कि,³⁰ 'इस शख्स ने 'इमारत शुरू तो की मगर मुकम्मल न कर सका।'।

³¹या कौन सा बादशाह है जो दूसरे बादशाह से लड़ने जाता हो और पहले बैठकर मशवरा न कर ले कि आया मैं दस हज़ार से उसका मुक़ाबला कर सकता हूँ या नहीं जो बीस हज़ार लेकर मुझ पर चढ़ आता है?³² नहीं तो उसके दूर रहते ही एल्ची भेजकर सुलह की गुज़ारिश करेगा।³³ पस इसी तरह तुम में से जो कोई अपना सब कुछ छोड़ न दे, वो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

³⁴नमक अच्छा तो है, लेकिन अगर नमक का मज़ा जाता रहे तो वो किस चीज़ से मज़ेदार किया जाएगा।³⁵ न वो ज़मीन के काम का रहा न खाद के, लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके कान सुनने के हों वो सुन ले।"

Chapter 15

¹सब महसूल लेनेवाले और गुनहगार उसके पास आते थे ताकि उसकी बातें सुनें।²और उलमा और फ़रीसी बुदबुदाकर कहने लगे, “ये आदमी गुनाहगारों से मिलता और उनके साथ खाना खाता है।”

³उसने उनसे ये मिसाल कही, ⁴“तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक गुम हो जाये तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर उस खोई हुई को जब तक मिल न जाये ढूँढता न रहेगा?” फिर मिल जाती है तो वो खुश होकर उसे कन्धे पर उठा लेता है,

⁶और घर पहुँचकर दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाता और कहता है, ‘मेरे साथ खुशी करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई।’⁷मैं तुम से कहता हूँ कि इसी तरह निन्नानवे, रास्तबाज़ों की निस्बत जो तौबा की हाजत नहीं रखते, एक तौबा करने वाले गुनहगार के बा'इस आसमान पर ज़्यादा खुशी होगी।

⁸“या कौन ऐसी” औरत है जिसके पास दस दिरहम हों और एक खो जाए तो वो चरागा जलाकर घर में झाड़ू न दे, और जब तक मिल न जाए कोशिश से ढूँडती न रहे।⁹और जब मिल जाए तो अपनी दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाकर न कहे, ‘मेरे साथ खुशी करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ दिरहम मिल गया।’¹⁰मैं तुम से कहता हूँ कि इसी तरह एक तौबा करनेवाला गुनाहगार के बारे में खुदा के फ़रिश्तों के सामने खुशी होती है।’

¹¹फिर उसने कहा, “किसी शख्स के दो बेटे थे।¹²उनमें से छोटे ने बाप से कहा, ‘ऐ बाप! माल का जो हिस्सा मुझे को पहुँचता है मुझे दे दे।’ उसने अपना माल-ओ-अस्बाब उन्हें बाँट दिया।

¹³और बहुत दिन न गुज़रे कि छोटा बेटा अपना सब कुछ जमा' करके दूर दराज़ मुल्क को रवाना हुआ, और वहाँ अपना माल बदचलनी में उड़ा दिया।¹⁴जब सब खर्च कर चुका तो उस मुल्क में सख्त काल पड़ा, और वो मुहताज होने लगा।

¹⁵फिर उस मुल्क के एक बाशिन्दे के वहाँ जा पड़ा। उसने उसको अपने खेत में खिंजीर चराने भेजा।¹⁶और उसे आरज़ू थी कि जो फलियाँ खिंजीर खाते थे उन्हीं से अपना पेट भरे, मगर कोई उसे न देता था।

¹⁷फिर उसने होश में आकर कहा, ‘मेरे बाप के बहुत से मज़दूरों को इफ़रात से रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ।’¹⁸मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, ‘ऐ बाप! मैं आसमान का और तेरी नज़र में गुनहगार हुआ।’¹⁹अब इस लायक नहीं रहा कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने मज़दूरों जैसा कर ले।’

²⁰“पस वो उठकर अपने बाप के पास चला। वो अभी दूर ही था कि उसे देखकर उसके बाप को तरस आया, और दौड़कर उसको गले लगा लिया और चूमा।

²¹बेटे ने उससे कहा, ‘ऐ बाप! मैं आसमान का और तेरी नज़र में गुनहगार हुआ। अब इस लायक नहीं रहा कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ।’

²²बाप ने अपने नौकरों से कहा, ‘अच्छे से अच्छा लिबास जल्द निकाल कर उसे पहनाओ और उसके हाथ में अँगूठी और पैरों में जूती पहनाओ;’²³और तैयार किए हुए जानवर को लाकर ज़बह करो, ताकि हम खाकर खुशी मनाएँ।²⁴क्योंकि मेरा ये बेटा मुर्दा था, अब ज़िन्दा हुआ; खो गया था, अब मिला है।’ पस वो खुशी मनाने लगे।

²⁵“लेकिन उसका बड़ा बेटा खेत में था। जब वो आकर घर के नज़दीक पहुँचा, तो गाने बजाने और नाचने की आवाज़ सुनी।²⁶और एक नौकर को बुलाकर मालूम करने लगा, ‘ये क्या हो रहा है?’²⁷उसने उससे कहा, ‘तेरा भाई आ गया है, और तेरे बाप ने तैयार किया हुआ जानवर ज़बह कराया है, क्योंकि उसे भला चंगा पाया।’

²⁸वो गुस्सा हुआ और अन्दर जाना न चाहा, मगर उसका बाप बाहर जाकर उसे मनाने लगा।²⁹उसने अपने बाप से जवाब में कहा, ‘देख, इतने बरसों से मैं तेरी खिदमत करता हूँ और कभी तेरी नाफ़रमानी नहीं की, मगर मुझे तूने कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि अपने दोस्तों के साथ खुशी मनाता।’³⁰लेकिन जब तेरा ये बेटा आया जिसने तेरा माल-ओ-अस्बाब कस्बियों में उड़ा दिया, तो उसके लिए तूने तैयार किया हुआ जानवर ज़बह कराया है।’

³¹उसने उससे कहा, बेटा, तू तो हमेशा मेरे पास है और जो कुछ मेरा है वो तेरा ही है।³²लेकिन खुशी मनाना और शादमान होना मुनासिब था, क्योंकि तेरा ये भाई मुर्दा था अब ज़िन्दा हुआ, खोया था अब मिला है।’

Chapter 16

¹फिर उसने शागिर्दों से भी कहा, "किसी दौलतमन्द का एक मुख्तार था; उसकी लोगों ने उससे शिकायत की कि ये तेरा माल उड़ाता है। ²पस उसने उसको बुलाकर कहा, 'ये क्या है जो मैं तेरे हक़ में सुनता हूँ? अपनी मुख्तारी का हिसाब दे क्योंकि आगे को तू मुख्तार नहीं रह सकता।'

³उस मुख्तार ने अपने जी में कहा, 'क्या करूँ? क्योंकि मेरा मालिक मुझ से ज़िम्मेदारी छीन लेता है। मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती और भीख माँगने से शर्म आती है। ⁴मैं समझ गया कि क्या करूँ, ताकि जब ज़िम्मेदारी से निकाला जाऊँ तो लोग मुझे अपने घरों में जगह दें।'

⁵पस उसने अपने मालिक के एक एक कर्ज़दार को बुलाकर पहले से पूछा, 'तुझ पर मेरे मालिक का क्या आता है?' ⁶उसने कहा, 'सौ मन तेल।' उसने उससे कहा, 'अपनी दस्तावेज़ ले और जल्द बैठकर पचास लिख दे।' फिर दूसरे से कहा, 'तुझ पर क्या आता है?' उसने कहा, 'सौ मन गेहूँ।' उसने उससे कहा, 'अपनी दस्तावेज़ लेकर अस्सी लिख दे।'

⁸"और मालिक ने बेईमान मुख्तार की तारीफ़ की, इसलिए कि उसने होशियारी की थी। क्योंकि इस ज़हान के फ़र्ज़न्द अपने हमवक्त्रों के साथ मु'आमिलात में नूर के फ़र्ज़न्द से ज़्यादा होशियार हैं। ⁹और मैं तुम से कहता हूँ कि नारास्ती की दौलत से अपने लिए दोस्त पैदा करो, ताकि जब वो जाती रहे तो ये तुम को हमेशा के मुक़ामों में जगह दें।

¹⁰जो थोड़े में ईमानदार है, वो बहुत में भी ईमानदार है; और जो थोड़े में बेईमान है, वो बहुत में भी बेईमान है। ¹¹पस जब तुम नारास्त दौलत में ईमानदार न ठहरे तो हक़ीक़ी दौलत कौन तुम्हारे ज़िम्मे करेगा। ¹²और अगर तुम बेगाना माल में ईमानदार न ठहरे तो जो तुम्हारा अपना है उसे कौन तुम्हें देगा?

¹³कोई नौकर दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता: क्योंकि या तो एक से 'दुश्मनी रखेगा और दूसरे से मुहब्बत, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज़ जानेगा। तुम खुदा और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते।

¹⁴फ़रीसी जो दौलत दोस्त थे, इन सब बातों को सुनकर उसे ठठ्ठे में उड़ाने लगे। ¹⁵उसने उनसे कहा, "तुम वो हो कि आदमियों के सामने अपने आपको रास्तबाज़ ठहराते हो, लेकिन खुदा तुम्हारे दिलों को जानता है; क्योंकि जो चीज़ आदमियों की नज़र में 'आला कद्र' है, वो खुदा के नज़दीक मकरूह है।

¹⁶"शरी'अत और अम्बिया युहन्ना तक रहे; उस वक़्त से खुदा की बादशाही की खुशख़बरी दी जाती है, और हर एक ज़ोर मारकर उसमें दाख़िल होता है।

¹⁷लेकिन आसमान और ज़मीन का टल जाना, शरी'अत के एक नुक्ते के मिट जाने से आसान है।

¹⁸"जो कोई अपनी बीवी को छोड़कर दूसरी से शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो शख्स शौहर की छोड़ी हुई 'औरत से शादी करे, वो भी ज़िना करता है।

¹⁹"एक दौलतमन्द था, जो इर्शवानी और महीन कपड़े पहनता और हर रोज़ खुशी मनाता और शान-ओ-शौकत से रहता था। ²⁰और ला'ज़र नाम एक ग़रीब नासूरों से भरा हुआ उसके दरवाज़े पर डाला गया था। ²¹उसे आरजू थी कि दौलतमन्द की मेज़ से गिरे हुए टुकड़ों से अपना पेट भरे; बल्कि कुत्ते भी आकर उसके नासूर को चाटते थे।

²²और ऐसा हुआ कि वो ग़रीब मर गया, और फ़रिश्तों ने उसे ले जाकर अब्राहम की गोद में पहुँचा दिया। और दौलतमन्द भी मरा और दफ़न हुआ; ²³उसने 'आलम-ए-अर्वाह के दरमियान 'अज़ाब में मुब्तिला होकर अपनी आँखें उठाई, और अब्राहम को दूर से देखा और उसकी गोद में ला'ज़र को।

²⁴और उसने पुकार कर कहा, 'ऐ बाप अब्राहम! मुझ पर रहम करके ला'ज़र को भेज, कि अपनी ऊँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी ज़बान तर करे; क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।'

²⁵अब्राहम ने कहा, 'बेटा! याद कर ले तू अपनी ज़िन्दगी में अपनी अच्छी चीज़ें ले चुका, और उसी तरह ला'ज़र बुरी चीज़ें ले चुका; लेकिन अब वो यहाँ तसल्ली पाता है, और तू तड़पता है। ²⁶और इन सब बातों के सिवा हमारे तुम्हारे दरमियान एक बड़ा ग़ड्ढा बनाया गया' है, कि जो यहाँ से तुम्हारी तरफ़ पार जाना चाहें न जा सकें और न कोई उधर से हमारी तरफ़ आ सके।'

²⁷उसने कहा, 'पस ऐ बाप! मैं तेरी गुज़ारिश करता हूँ कि तू उसे मेरे बाप के घर भेज, ²⁸क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; ताकि वो उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वो भी इस 'अज़ाब की जगह में आएँ।'

²⁹अब्राहम ने उससे कहा, 'उनके पास मूसा और अम्बिया तो हैं उनकी सुनें।' ³⁰उसने कहा, 'नहीं, ऐ बाप अब्राहम! अगर कोई मुर्दों में से उनके पास जाए तो वो तौबा करेंगे।' ³¹उसने उससे कहा, "जब वो मूसा और नबियों ही की नहीं सुनते, तो अगर मुर्दों में से कोई जी उठे तो उसकी भी न सुनेंगे।"

Chapter 17

¹फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, "ये नहीं हो सकता कि ठोकरें न लगें, लेकिन उस पर अफ़सोस है कि जिसकी वजह से लगें।² इन छोटों में से एक को ठोकर खिलाने की बनिस्बत, उस शख्स के लिए ये बेहतर होता है कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वो समुन्द्र में फेंका जाता।

³खबरदार रहो ! अगर तेरा भाई गुनाह करे तो उसे डांट दे, अगर वो तौबा करे तो उसे मु'आफ़ कर।⁴ और वो एक दिन में सात दफ़ा" तेरा गुनाह करे और सातों दफ़ा" तेरे पास फिर आकर कहे कि तौबा करता हूँ, तो उसे मु'आफ़ कर।"

⁵इस पर रसूलों ने खुदावन्द से कहा, "हमारे ईमान को बढ़ा।"⁶खुदावन्द ने कहा, "अगर तुम में राई के दाने के बराबर भी ईमान होता और तुम इस तूत के दरख्त से कहते, कि जड़ से उखड़ कर समुन्द्र में जा लग, तो तुम्हारी मानता।

⁷"मगर तुम में ऐसा कौन है, जिसका नौकर हल जोतता या भेड़ें चराता हो, और जब वो खेत से आए तो उससे कहे, जल्द आकर खाना खाने बैठ!"⁸ और ये न कहे, 'मेरा खाना तैयार कर, और जब तक मैं खाऊँ-पियूँ कमर बाँध कर मेरी खिदमत कर; उसके बा'द तू भी खा पी लेना'?

⁹क्या वो इसलिए उस नौकर का एहसान मानेगा कि उसने उन बातों को जिनका हुक्म हुआ ता'मील की?¹⁰ इसी तरह तुम भी जब उन सब बातों की, जिनका तुम को हुक्म हुआ ता'मील कर चुको, तो कहो, 'हम निकम्मे नौकर हैं जो हम पर करना फ़र्ज़ था वही किया है'।"

¹¹और अगर ऐसा कि यरूशलीम को जाते हुए वो सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था¹² और एक गाँव में दाखिल होते वक़्त दस कोढ़ी उसको मिले।¹³ उन्होंने दूर खड़े होकर बुलन्द आवाज़ से कहा, "ऐ ईसा" ! ऐ खुदावन्द ! हम पर रहम कर।

¹⁴उसने उन्हें देखकर कहा, "जाओ ! अपने आपको काहिनों को दिखाओ !" और ऐसा हुआ कि वो जाते-जाते पाक साफ़ हो गए।¹⁵ फिर उनमें से एक ये देखकर कि मैं शिफ़ा पा गया हूँ, बुलन्द आवाज़ से खुदा की बड़ाई करता हुआ लौटा;¹⁶ और मुँह के बल ईसा' के पाँव पर गिरकर उसका शुक्र करने लगा; और वो सामरी था।

¹⁷ईसा' ने जवाब मे कहा, "क्या दसों पाक साफ़ न हुए ; फिर वो नौ कहाँ है ?"¹⁸क्या इस परदेसी के सिवा और न निकले जो लौटकर खुदा की बड़ाई करते?"¹⁹ फिर उससे कहा, "उठ कर चला जा ! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है।"

²⁰जब फ़रीसियों ने उससे पूछा कि खुदा की बादशाही कब आएगी, तो उसने जवाब में उनसे कहा, "खुदा की बादशाही ज़ाहिरी तौर पर न आएगी।"²¹ और लोग ये न कहेंगे, 'देखो, यहाँ है या वहाँ है !' क्योंकि देखो, खुदा की बादशाही तुम्हारे बीच है।"

²²उसने शागिर्दों से कहा, "वो दिन आएँगे, कि तुम इब्न-ए-आदम के दिनों में से एक दिन को देखने की आरज़ू होगी, और न देखोगे।"²³ और लोग तुम से कहेंगे, 'देखो, वहाँ है !' या देखो, यहाँ है !' मगर तुम चले न जाना न उनके पीछे हो लेना।²⁴ क्योंकि जैसे बिजली आसमान में एक तरफ़ से कौंध कर आसमान कि दूसरी तरफ़ चमकती है, वैसे ही इब्ने-ए-आदम अपने दिन मे ज़ाहिर होगा।

²⁵लेकिन पहले ज़रूर है कि वो बहुत दुख उठाए, और इस ज़माने के लोग उसे रद्द करें।²⁶ और जैसा नूह के दिनों में हुआ था, उसी तरह इब्न-ए-आदम के दिनों में होगा;²⁷ कि लोग खाते पीते थे और उनमें ब्याह शादी होती थीं, उस दिन तक जब नूह नाव में दाखिल हुआ; और तूफ़ान ने आकर सबको हलाक़ किया।"

²⁸और जैसा लूत के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते-पीते और खरीद-ओ-फ़रोख़्त करते, और दरख़्त लगाते और घर बनाते थे।²⁹ लेकिन जिस दिन लूत सदूम से निकला, आग और गन्धक ने आसमान से बरस कर सबको हलाक़ किया।

³⁰इब्न-ए-आदम के ज़ाहिर होने के दिन भी ऐसा ही होगा।³¹ इस दिन जो छत पर हो और उसका अस्बाब घर में हो, वो उसे लेने को न उतरे; और इसी तरह जो खेत में हो वो पीछे को न लौटे।"

³²लूत की बीवी को याद रखो।³³ जो कोई अपनी जान बचाने की कोशिश करे वो उसको खोएगा, और जो कोई उसे खोए वो उसको ज़िंदा रखेगा।

³⁴मैं तुम से कहता हूँ कि उस रात दो आदमी एक चारपाई पर सोते होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।³⁵ दो औरतें एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।³⁶ दो आदमी जो खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।"³⁷ उन्होंने जवाब में उससे कहा, "ऐ खुदावन्द ! ये कहाँ होगा?" उसने उनसे कहा, "जहाँ मुरदार हैं, वहाँ गिद्ध भी जमा' होंगे।"

Chapter 18

¹'फिर उसने इस ग़रज़ से कि हर वक़्त दु'आ करते रहना और हिम्मत न हारना चाहिए, उसने ये मिसाल कही :²"किसी शहर में एक क़ाज़ी था, न वो खुदा से डरता, न आदमी की कुछ परवा करता था |

³और उसी शहर में एक बेवा थी, जो उसके पास आकर ये कहा करती थी, 'मेरा इन्साफ़ करके मुझे मुद्द'ई से बचा |'⁴उसने कुछ 'अरसे तक तो न चाहा, लेकिन आखिर उसने अपने जी में कहा, 'गरचे मैं न खुदा से डरता और न आदमियों की कुछ परवा करता हूँ |'⁵तोभी इसलिए कि ये बेवा मुझे सताती है, मैं इसका इन्साफ़ करूँगा; ऐसा न हो कि ये बार-बार आकर आखिर को मेरी नाक में दम करे |' "

⁶खुदावन्द ने कहा, "सुनो ये बेइन्साफ़ क़ाज़ी क्या कहता है ?'⁷पस क्या खुदा अपने चुने हुए का इन्साफ़ न करेगा, जो रात दिन उससे फ़रियाद करते हैं ?'⁸मैं तुम से कहता हूँ कि वो जल्द उनका इन्साफ़ करेगा | तोभी जब इब्न-ए-आदम आया, तो क्या ज़मीन पर ईमान पाया?

⁹फिर उसने कुछ लोगों से जो अपने पर भरोसा रखते थे, कि हम रास्तबाज़ हैं और बाक़ी आदमियों को नाचीज़ जानते थे, ये मिसाल कही,¹⁰"दो शख्स हैकल में दू'आ करने गए: एक फ़रीसी, दूसरा महसूल लेनेवाला |

¹¹फ़रीसी खड़ा होकर अपने जी में यूँ दु'आ करने लगा, 'ऐ खुदा मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि बाक़ी आदमियों की तरह ज़ालिम, बेइन्साफ़, ज़िनाकार या इस महसूल लेनेवाले की तरह नहीं हूँ |'¹²मैं हफ़्ते में दो बार रोज़ा रखता, और अपनी सारी आमदनी पर दसवाँ हिस्सा देता हूँ |'

¹³"लेकिन महसूल लेने वाले ने दूर खड़े होकर इतना भी न चाहा कि आसमान की तरफ़ आँख उठाए, बल्कि छाती पीट पीट कर कहा ऐ खुदा |, मुझ गुनहगार पर रहम कर |' "¹⁴मैं तुम से कहता हूँ कि ये शख्स दूसरे की निस्वत रास्तबाज़ ठहरकर अपने घर गया, क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वो छोटा किया जाएगा और जो अपने आपको छोटा बनाएगा वो बड़ा किया जाएगा | "

¹⁵फिर लोग अपने छोटे बच्चों को भी उसके पास लाने लगे ताकि वो उनको छूए; और शागिर्दों ने देखकर उनको झिड़का |¹⁶मगर ईसा' ने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना' न करो; क्योंकि खुदा की बादशाही ऐसों ही की है |'¹⁷मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई खुदा की बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल न करे, वो उसमें हरगिज़ दाख़िल न होगा | "

¹⁸फिर किसी सरदार ने उससे ये सवाल किया, "ऐ उस्ताद ! मैं क्या करूँ ताकि हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस बनूँ |'¹⁹ईसा' ने उससे कहा, "तू मुझे क्यूँ नेक कहता है ? कोई नेक नहीं, मगर एक या'नी खुदा |'²⁰तू हुक्मों को जानता है : ज़िना न कर, खून न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे; अपने बाप और माँ की 'इज़ज़त कर |'²¹उसने कहा, "मैंने लड़कपन से इन सब पर 'अमल किया है | "

²²ईसा' ने ये सुनकर उससे कहा, "अभी तक तुझ में एक बात की कमी है, अपना सब कुछ बेचकर ग़रीबों को बाँट दे; तुझे आसमान पर खज़ाना मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले |'²³ये सुन कर वो बहुत ग़मगीन हुआ, क्योंकि बड़ा दौलतमन्द था |

²⁴ईसा' ने उसको देखकर कहा, "दौलतमन्द का खुदा की बादशाही में दाख़िल होना कैसा मुश्किल है !'²⁵क्योंकि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इससे आसान है, कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाख़िल हो | "

²⁶सुनने वालो ने कहा, "तो फिर कौन नजात पा सकता है ?'²⁷उसने कहा, "जो इन्सान से नहीं हो सकता, वो खुदा से हो सकता है | "

²⁸पतरस ने कहा, "देख ! हम तो अपना घर-बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं |'²⁹उसने उनसे कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर या बीवी या भाइयों या माँ बाप या बच्चों को खुदा की बादशाही की खातिर छोड़ दिया हो;³⁰और इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा न पाए, और आने वाले 'आलम में हमेशा की ज़िन्दगी | "

³¹फिर उसने उन बारह को साथ लेकर उनसे कहा, "देखो, हम यरूशलीम को जाते हैं, और जितनी बातें नबियों के ज़रिये लिखी गई हैं, इब्न-ए-आदम के हक़ में पूरी होंगी |'³²क्योंकि वो ग़ैर क़ौम वालों के हवाले किया जाएगा; और लोग उसको ठठठों में उड़ाएँगे और बे'इज़ज़त करेंगे, और उस पर थूकेगे,³³और उसको कोड़े मारेंगे और क़त्ल करेंगे और वो तीसरे दिन जी उठेगा |

³⁴लेकिन उन्होंने इनमें से कोई बात न समझी, और ये कलाम उन पर छिपा रहा और इन बातों का मतलब उनकी समझ में न आया |

³⁵जो वो चलते-चलते यरीहू के नज़दीक पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि एक अन्धा रास्ते के किनारे बैठा हुआ भीख माँग रहा था |³⁶वो भीड़ के जाने की आवाज़ सुनकर पूछने लगा, "ये क्या हो रहा है ?'³⁷उन्होंने उसे खबर दी, "ईसा' नासरी जा रहा है | "

³⁸उसने चिल्लाकर कहा, "ऐ ईसा' इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम कर !'³⁹जो आगे जाते थे, वो उसको डाँटने लगे कि चुप रह; मगर वो और भी चिल्लाया, 'ऐ इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम कर !'

⁴⁰ईसा' ने खड़े होकर हुक्म दिया कि उसको मेरे पास ले आओ, जब वो नज़दीक आया तो उसने उससे ये पूँछा |⁴¹"तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ? उसने कहा, "ऐ खुदावन्द ! मैं देखने लगूँ | "

⁴²ईसा' ने उससे कहा, "बीना हो जा, तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया, "⁴³वो उसी वक़्त देखने लगा, और खुदा की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया; और सब लोगों ने देखकर खुदा की तारीफ़ की | " "

Chapter 19

¹'फिर ईसा' यरीहू में दाखिल हुआ और उस में से होकर गुजरने लगा।²उस शहर में एक अमीर आदमी ज़क्काई नाम का रहता था जो महसूल लेने वालों का अप्रस्नर था।

³वह जानना चाहता था कि यह ईसा' कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा' के आस पास बड़ा हुजूम था और ज़क्काई का क़द छोटा था।⁴इस लिए वह दौड़ कर आगे निकला और उसे देखने के लिए गूलर के दरख्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था।

⁵'जब ईसा' वहाँ पहुँचा तो उस ने नज़र उठा कर कहा, "ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।"⁶ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और खुशी से उस की मेहमान-नवाज़ी की।⁷जब लोगों ने ये देखा तो सब बुदबुदाने लगे, "कि वह एक गुनाहगार के यहाँ मेहमान बन गया है।"

⁸लेकिन ज़क्काई ने खुदावन्द के सामने खड़े हो कर कहा, "खुदावन्द, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैं ने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।"⁹ईसा' ने उस से कहा, "आज इस घराने को नजात मिल गई है, इस लिए कि यह भी इब्राहम का बेटा है।"¹⁰क्योंकि इब्न-ए-आदम खोये हुए को ढूँडने और नजात देने के लिए आया है।"

¹¹'अब ईसा' यरूशलम के क़रीब आ चुका था, इस लिए लोग अन्दाज़ा लगाने लगे कि खुदा की बादशाही ज़ाहिर होने वाली है। इस के पेश-ए-नज़र ईसा' ने अपनी यह बातें सुनने वालों को एक मिसाल सुनाई।¹²उस ने कहा, "एक जागीरदार किसी दूरदराज़ मुल्क को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस आना था।

¹³रवाना होने से पहले उस ने अपने नौकरों में से दस को बुला कर उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उस ने कहा, 'यह पैसे ले कर उस वक़्त तक कारोबार में लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।'¹⁴लेकिन उस की रियाया उस से नफ़रत रखती थी, इस लिए उस ने उस के पीछे एलची भेज कर इत्तिला दी, 'हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।'¹⁵तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया। इस के बाद जब वापस आया तो उस ने उन नौकरों को बुलाया जिन्हें उस ने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे कि उन्होंने ने यह पैसे कारोबार में लगा कर कितना मुनाफ़ा किया है।

¹⁶पहला नौकर आया। उस ने कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से दस हो गए हैं।'¹⁷मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े में वफ़ादार रहा, इस लिए अब तुझे दस शहरों पर इख्तियार दिया।'

¹⁸फिर दूसरा नौकर आया। उस ने कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से पाँच हो गए हैं।'¹⁹मालिक ने उस से कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर इख्तियार दिया।'

²⁰फिर एक और नौकर आ कर कहने लगा, 'जनाब, यह आप का सिक्का है। मैं ने इसे कपड़े में लपेट कर महफूज़ रखा,'²¹क्योंकि मैं आप से डरता था, इस लिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो पैसे आप ने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आप ने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।'

²²मालिक ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अलफ़ाज़ के मुताबिक़ तेरा फ़ैसला करूँगा। जब तू जानता था कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो खुद नहीं लगाए और वह फ़सल काटता हूँ जिस का बीज नहीं बोया,'²³तो फिर तूने मेरे पैसे साहूकार के यहाँ क्यों न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़्र कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।'

²⁴और उसने उनसे कहा, "यह सिक्का इससे ले कर उस नौकर को दे दो जिस के पास दस सिक्के हैं।"²⁵उन्होंने उससे कहा, 'ऐ खुदावन्द, उस के पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।'

²⁶उस ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता हूँ कि हर शख्स जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिस के पास कुछ नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस के पास है।'²⁷अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उन का बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी दे दो।'

²⁸इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे यरूशलीम की तरफ़ बढ़ने लगा।

²⁹जब वह बैत-फ़गे और बैत-अनियाह गाँव के क़रीब पहुँचा जो ज़ैतून के पहाड़ पर आबाद थे तो उस ने दो शागिर्दों को अपने आगे भेज कर कहा?,³⁰"सामने वाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बंधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोल कर ले आओ।"³¹अगर कोई पूछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे बता देना कि खुदावन्द को इस की ज़रूरत है।"

³²दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही है जैसा ईसा' ने उन्हें बताया था।³³जब वह जवान गधे को खोलने लगे तो उस के मालिकों ने पूछा, "तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?"³⁴उन्होंने ने जवाब दिया, "खुदावन्द को इस की ज़रूरत है।"³⁵वह उसे ईसा' के पास ले आए, और अपने कपड़े गधे पर रख कर उसको उस पर सवार किया।³⁶जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उस के आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

³⁷चलते चलते वह उस जगह के क़रीब पहुँचा जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर शागिर्दों का पूरा हुजूम खुशी के मारे ज़ुँची आवाज़ से उन मोजिज़ों के लिए खुदा की बड़ाई करने लगा जो उन्होंने देखे थे,³⁸"मुबारक है वह बादशाह जो खुदावन्द के नाम से आता है। आस्मान पर सलामती हो और बुलन्दियों पर इज़ज़त-ओ-जलाल।"

³⁹कुछ फ़रीसी भीड़ में थे उन्होंने ईसा' से कहा, "उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझा दें।"⁴⁰उस ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।"

⁴¹जब वह यरूशलीम के क़रीब पहुँचा तो शहर को देख कर रो पड़ा।⁴²और कहा, "काश तू भी उस दिन पहचान लेती कि तेरी सलामती किस में है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है।

⁴³क्योंकि तुझ पर ऐसा वक़्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे चारों तरफ़ बन्द बाँध कर तेरा घेरा करेंगे और तू तुझे तंग करेंगे।"⁴⁴वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अन्दर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तू ने वह वक़्त नहीं पहचाना जब खुदावन्द ने तेरी नजात के लिए तुझ पर नज़र की।"

⁴⁵फिर ईसा' बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर बेचने वालों को निकालने लगा,⁴⁶और उसने कहा, "लिखा है, 'मेरा घर दु'आ का घर होगा' मगर तुम ने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।"

⁴⁷ और वह रोज़ाना बैत-उल-मुकद्दस में तालीम देता रहा। लेकिन बैत-उल-मुकद्दस के रहनुमा इमाम, शरीअत के आलिम और अवामी रहनुमा उसे क़त्ल करने की कोशिश में थे।⁴⁸ अलबत्ता उन्हें कोई मौक़ा न मिला, क्योंकि तमाम लोग ईसा' की हर बात सुन सुन कर उस से लिपटे रहते थे।

Chapter 20

¹एक दिन जब वह बैत-उल-मुकद्दस में लोगों को तालीम दे रहा और खुदावंद की खुशखबरी सुना रहा था तो रहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुजुर्ग उस के पास आए।²उन्होंने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस इख्तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह इख्तियार दिया है?”

³ईसा' ने जवाब दिया, “मेरा भी तुम से एक सवाल है। तुम मुझे बताओ?”⁴“कि क्या युहन्ना का बपतिस्मा आस्मानी था या इन्सानी?”

⁵वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आस्मानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’⁶लेकिन अगर हम कहें ‘इन्सानी’ तो तमाम लोग हम पर पत्थर मारेंगे, क्योंकि वह तो यक्कीन रखते हैं कि युहन्ना नबी था।”

⁷इस लिए उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते कि वह कहाँ से था।”⁸ईसा' ने कहा, “तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।”

⁹फिर ईसा' लोगों को यह मिसाल सुनाने लगा, “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग लगाया। फिर वह उसे बागबानों को ठेके पर देकर बहुत दिनों के लिए बाहरी मुल्क चला गया।¹⁰जब अंगूर पक गए तो उस ने अपने नौकर को उन के पास भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन बागबानों ने उस की पिटाई करके उसे खाली हाथ लौटा दिया।

¹¹इस पर मालिक ने एक और नौकर को उन के पास भेजा। लेकिन बागबानों ने उसे भी मार मार कर उस की बे'इज़्जती की और खाली हाथ निकाल दिया।¹²फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी उन्होंने मार कर ज़ख्मी कर दिया और निकाल दिया।

¹³बाग के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उस का लिहाज़ करें।’¹⁴लेकिन मालिक के बेटे को देख कर बागबानों ने आपस में मशवरा किया और कहा, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इस की मीरास हमारी ही होगी।’”

¹⁵उन्होंने उसे बाग से बाहर फेंक कर क़त्ल किया। ईसा' ने पूछा, “अब बताओ, बाग का मालिक क्या करेगा?”¹⁶वह वहाँ जा कर बागबानों को हलाक करेगा और बाग को दूसरों के हवाले कर देगा।” यह सुन कर लोगों ने कहा, “खुदा ऐसा कभी न करे।”

¹⁷ईसा' ने उन पर नज़र डाल कर पूछा, “तो फिर कलाम-ए-मुकद्दस के इस हवाले का क्या मतलब है कि ‘जिस पत्थर को राजगीरों ने रद्द किया, वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया’?”¹⁸जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह खुद गिरेगा उसे पीस डालेगा।”

¹⁹शरीअत के उलमा और रहनुमा इमामों ने उसी वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि मिसाल में बयान होने वाले हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे।²⁰चुनाँचे वह उसे पकड़ने का मौक़ा ढूँढ़ते रहे। इस मक्सद के तहत उन्होंने उस के पास जासूस भेज दिए। यह लोग अपने आप को ईमानदार ज़ाहिर करके ईसा' के पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़ कर उसे रोमी हाकिम के हवाले कर सकें।

²¹इन जासूसों ने उस से पूछा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सही है। आप तरफ़दारी नहीं करते बल्कि दियानतदारी से खुदा की राह की तालीम देते हैं।²²अब हमें बताएँ कि क्या रोमी हाकिम को महसूल देना जायज़ है या नाजायज़?”

²³लेकिन ईसा' ने उन की चालाकी भाँप ली और कहा,²⁴“मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ। किस की सूरत और नाम इस पर बना है?” उन्होंने जवाब दिया, “कैसर का।”

²⁵उस ने कहा, “तो जो कैसर का है कैसर को दो और जो खुदा का है खुदा को।”²⁶यूँ वह अवाम के सामने उस की कोई बात पकड़ने में नाकाम रहे। उस का जवाब सुन कर वह हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

²⁷फिर कुछ सद्दूकी उस के पास आए। सद्दूकी नहीं मानते थे कि रोज़-ए-क्रयामत में मुर्दे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा' से एक सवाल किया,²⁸“उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे।

²⁹अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद मर गया।³⁰इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया।³¹फिर तीसरे ने उस से शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। इसके बाद हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया।³²आखिर में बेवा की भी मौत हो गई।

³³अब बताएँ कि क्रयामत के दिन वह किस की बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उस से शादी की थी।”

³⁴ईसा' ने जवाब दिया, “इस ज़माने में लोग ब्याह-शादी करते और कराते हैं।³⁵लेकिन जिन्हें खुदा आने वाले ज़माने में शरीक होने और मुर्दों में से जी उठने के लायक़ समझता है वह उस वक़्त शादी नहीं करेंगे, न उन की शादी किसी से कराई जाएगी।³⁶वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि वह फ़रिश्तों की तरह होंगे और क्रयामत के फ़र्ज़न्द होने के बाइस खुदा के फ़र्ज़न्द होंगे।

³⁷और यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे मूसा से भी ज़ाहिर की गई है। क्योंकि जब वह काँटेदार झाड़ी के पास आया तो उस ने खुदा को यह नाम दिया, ‘अब्राहम का खुदा, इस्हाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले मर चुके थे। इस का मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िन्दा हैं।³⁸क्योंकि खुदा मुर्दों का नहीं बल्कि ज़िन्दों का खुदा है। उस के नज़दीक़ यह सब ज़िन्दा हैं।”

³⁹यह सुन कर शरीअत के कुछ उलमा ने कहा, “शाबाश उस्ताद, आप ने अच्छा कहा है।”⁴⁰इस के बाद उन्होंने उस से कोई भी सवाल करने की हिम्मत न की।

⁴¹फिर ईसा' ने उन से पूछा, “मसीह के बारे में क्यों कहा जाता है कि वह दाऊद का बेटा है?”⁴²क्योंकि दाऊद खुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है, ‘खुदा ने मेरे खुदा से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ।’⁴⁴दाऊद तो खुद मसीह को खुदा कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का बेटा हो सकता है?”

⁴⁵जब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने शागिर्दों से कहा,⁴⁶“शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोगे पहन कर इधर उधर फिरना पसन्द करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उन की इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। उन की बस एक ही ख़्वाहिश होती है कि इबादतखानों और दावतों में इज़्ज़त की कुर्सियों पर बैठ जाएँ।⁴⁷यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लम्बी लम्बी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

Chapter 21

¹'ईसा' ने नज़र उठा कर देखा, कि अमीर लोग अपने हृदि ए बैत-उल-मुकद्दस के चन्दे के बक्से में डाल रहे हैं।²एक गरीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिस ने उस में तौबे के दो मामूली से सिक्के डाल दिए।³'ईसा' ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस गरीब बेवा ने तमाम लोगों की निस्बत ज़्यादा डाला है।⁴क्योंकि इन सब ने तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि इस ने ज़रूरत मन्द होने के बावजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

⁵उस वक़्त कुछ लोग हैकल की तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने खूबसूरत पत्थरों और मिन्नत के तोहफ़ों से सजा हुआ है। यह सुन कर ईसा ने कहा,⁶"जो कुछ तुम को यहाँ नज़र आता है उस का पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आने वाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।"

⁷उन्होंने ने पूछा, "उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिस से मालूम हो कि यह अब होने को है?"⁸'ईसा' ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत से लोग मेरा नाम ले कर आएँगे और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ' और कि 'वक़्त करीब आ चुका है।' लेकिन उन के पीछे न लगना।

⁹और जब जंगों और फ़ितनों की ख़बरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि ज़रूरी है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आख़िरत न होगी।"

¹⁰उस ने अपनी बात जारी रखी, "एक क्रौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़।¹¹बहुत ज़लज़ले आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाकिआत और आस्मान पर बड़े निशान देखने में आएँगे।

¹²लेकिन इन तमाम वाकिआत से पहले लोग तुम को पकड़ कर सताएँगे। वह तुम को यहूदी इबादतखानों के हवाले करेंगे, कैदखानों में डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने पेश करेंगे। और यह इस लिए होगा कि तुम मेरे पैरोकार हो।¹³नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का मौक़ा मिलेगा।

¹⁴लेकिन ठान लो, कि तुम पहले से अपनी फ़िक्र करने की तैयारी न करो,¹⁵क्योंकि मैं तुम को ऐसे अलफ़ाज़ और हिक्मत अता करूँगा, कि तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़ न उस का मुक़ाबला और न उस का जवाब दे सकेंगे।

¹⁶तुम्हारे वालिदैन, भाई, रिश्तेदार और दोस्त भी तुम को दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि तुम में से कुछ को क़त्ल किया जाएगा।¹⁷सब तुम से नफ़रत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे मानने वाले हो।¹⁸तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका नहीं होगा।¹⁹साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी जान बचा लोगे।

²⁰जब तुम यरूशलीम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो तो जान लो, कि उस की तबाही करीब आ चुकी है।²¹उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भाग कर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहने वाले उस से निकल जाएँ और दिहात में आबाद लोग शहर में दाख़िल न हों।²²क्योंकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिन में वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है।

²³उन औरतों पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस क्रौम पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल होगा।²⁴लोग उन्हें तलवार से क़त्ल करेंगे और कैद करके तमाम ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएँगे। ग़ैरयहूदी यरूशलीम को पाँवों तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर पूरा न हो जाए।

²⁵सूरज, चाँद और तारों में अजीब-ओ-ग़रीब निशान ज़ाहिर होंगे। क्रौम समुन्दर के शोर और ठाँठ मारने से हैरान-ओ-परेशान होंगी।²⁶लोग इस अन्देशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर ख़ौफ़ खाएँगे कि उन की जान में जान न रहेगी, क्योंकि आस्मान की ताक़तें हिलाई जाएँगी।

²⁷और फिर वह इब्न-ए-आदम को बड़ी कुद़रत और जलाल के साथ बादल में आते हुए देखेंगे।²⁸चुनाँचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े हो कर अपनी नज़र उठाओ, क्योंकि तुम्हारी नजात नज़दीक होगी।"

²⁹इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक मिसाल सुनाई। "अन्जीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर ग़ौर करो।³⁰जैसे ही कोंपलें निकलने लगती हैं तुम जान लेते हो कि गर्मियों का मौसम नज़दीक है।³¹इसी तरह जब तुम यह वाकिआत देखोगे तो जान लोगे कि ख़ुदा की बादशाही करीब ही है।

³²मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्त के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा।³³आस्मान-ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी।

³⁴ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल अघ्याशी, नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िक्रों तले दब न जाएँ। वर्ना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा,³⁵और फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्योंकि वह दुनिया के तमाम रहनेवालों पर आएगा।

³⁶हर वक़्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि तुम को आने वाली इन सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़ मिल जाए और तुम इब्न-ए-आदम के सामने खड़े हो सको।"

³⁷हर रोज़ ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा और हर शाम वह निकल कर उस पहाड़ पर रात गुज़ारता था जिस का नाम ज़ैतून का पहाड़ है।³⁸और सुबह सवेरे सब लोग उस की बातें सुनने को हैकल में उस के पास आया करते थे |

Chapter 22

¹बेखमीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद करीब आ गई थी।²रेहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा' को क़त्ल करने का कोई मौजूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्योंकि वह अवाम के रद्द-ए-अमल से डरते थे।

³उस वक़्त इब्लीस यहूदाह इस्करियोती में समा गया जो बारह रसूलों में से था।⁴अब वह रेहनुमा इमामों और बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अप्रसरों से मिला और उन से बात करने लगा कि वह ईसा' को किस तरह उन के हवाले कर सकेगा।

⁵वह खुश हुए और उसे पैसे देने पर मुत्तफ़ि़क़ हुए।⁶यहूदाह रज़ामन्द हुआ। अब से वह इस तलाश में रहा कि ईसा' को ऐसे मौक़े पर उन के हवाले करे जब मजमा उस के पास न हो।

⁷बेखमीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के मेमने को कुर्बान करना था।⁸ईसा' ने पतरस और यूहन्ना को आगे भेज कर हिदायत की, "जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैय्यार करो ताकि हम जा कर उसे खा सकें।"⁹उन्होंने ने पूछा, "हम उसे कहाँ तैय्यार करें?"

¹⁰उस ने जवाब दिया, "जब तुम शहर में दाखिल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस के पीछे चल कर उस घर में दाखिल हो जाओ जिस में वह जाएगा।¹¹वहाँ के मालिक से कहना, 'उस्ताद आप से पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?'

¹²वह तुम को दूसरी मन्ज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैय्यार करना।"¹³दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा' ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने ने फ़सह का खाना तैयार किया।

¹⁴मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा' अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया।¹⁵उस ने उन से कहा, "मेरी बहुत आरजू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिल कर फ़सह का यह खाना खाऊँ।"¹⁶क्योंकि मैं तुम को बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इस का मक़्सद खुदा की बादशाही में पूरा न हो गया हो।"

¹⁷फिर उस ने मय का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और कहा, "इस को ले कर आपस में बाँट लो।"¹⁸मैं तुम को बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पिऊँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे खुदा की बादशाही के आने पर पिऊँगा।"

¹⁹फिर उस ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उस ने कहा, "यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।"²⁰इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा, "मय का यह प्याला वह नया अह्द है जो मेरे खून के ज़रिए क़ाइम किया जाता है, वह खून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

²¹लेकिन जिस शख्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"²²इब्न-ए-आदम तो खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख्स पर अप्रसोस जिस के वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा।"²³यह सुन कर शागिर्द एक दूसरे से बह्स करने लगे कि हम में से यह कौन हो सकता है जो इस क्रिस्म की हरकत करेगा।

²⁴फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक दूसरे से बह्स करने लगे कि हम में से कौन सब से बड़ा समझा जाए।²⁵लेकिन ईसा' ने उन से कहा, "ग़ैरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही है जो दूसरों पर हुकूमत करते हैं, और इख्तियार वाले वही हैं जिन्हें 'मोहसिन' का लक़ब दिया जाता है।

²⁶लेकिन तुम को ऐसा नहीं होना चाहिए। इस के बजाय जो सब से बड़ा है वह सब से छोटे लड़के की तरह हो और जो रेहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो।

²⁷क्योंकि आम तौर पर कौन ज़्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों की खिदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन मैं खिदमत करने वाले की हैसियत से ही तुम्हारे बीच हूँ।

²⁸देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आज़माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो।²⁹चुनाँचे में तुम को बादशाही अता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे बादशाही अता की है।³⁰तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठ कर मेरे साथ खाओ और पियोगे, और तख़्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।

³¹शमाऊन, शमाऊन! इब्लीस ने तुम लोगों को गन्दुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है।³²लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़ कर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।"

³³पतरस ने जवाब दिया, "खुदावन्द, मैं तो आप के साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तय्यार हूँ।"³⁴ईसा' ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सुबह मुर्ग़ा के बाँग़ देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।"

³⁵फिर उसने उनसे कहा जब मैंने तुम्हें बटुए और झोली और जूती के बिना भेजा था तो क्या तुम किसी चीज़ में मोहताज़ रहे थे, उन्होंने कहा किसी चीज़ के नहीं।³⁶उस ने कहा, "लेकिन अब जिस के पास बटूवा या थैला हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिस के पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेच कर तलवार खरीद ले।

³⁷कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'उसे मुल्ज़ि़मों में शुमार किया गया' और मैं तुम को बताता हूँ, ज़रूरी है कि यह बात मुझ में पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।"³⁸उन्होंने ने कहा, "खुदावन्द, यहाँ दो तलवारें हैं।" उस ने कहा, "बस! काफ़ी है!"

³⁹फिर वह शहर से निकल कर रोज़ के मुताबिक़ ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया। उस के शागिर्द उस के पीछे हो लिए।⁴⁰वहाँ पहुँच कर उस ने उन से कहा, "दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।"

⁴¹फिर वह उन्हें छोड़ कर कुछ आगे निकला, तक़रीबन इतने फ़ासिले पर जितनी दूर तक पत्थर फेंका जा सकता है। वहाँ वह झुक कर दुआ करने लगा,⁴²"ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझ से हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।"

⁴³उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आस्मान पर से उस पर ज़ाहिर हो कर उस को ताक़त दी।⁴⁴वह सख़्त परेशान हो कर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने लगा। साथ साथ उस का पसीना खून की बूँदों की तरह ज़मीन पर टपकने लगा।

⁴⁵जब वह दुआ से फ़ारिग हो कर खड़ा हुआ और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के मारे सो गए हैं।⁴⁶ उस ने उन से कहा, “तुम क्यों सो रहे हो? उठ कर दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो।”

⁴⁷वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हुज़ूम आ पहुँचा जिस के आगे आगे यहूदाह चल रहा था। वह ईसा' को बोसा देने के लिए उस के पास आया।

⁴⁸लेकिन उस ने कहा, “यहूदाह, क्या तू इब्न-ए-आदम को बोसा दे कर दुश्मन के हवाले कर रहा है?”

⁴⁹जब उस के साथियों ने भौंप लिया कि अब क्या होने वाला है तो उन्होंने कहा, “खुदावन्द, क्या हम तलवार चलाएँ?”⁵⁰ और उनमें से एक ने अपनी तलवार से इमाम-ए-आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया।⁵¹ लेकिन ईसा' ने कहा, “बस कर!” उस ने गुलाम का कान छू कर उसे शिफ़ा दी।

⁵²फिर वह उन रेहनुमा इमामों, बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अप्रस्रों और बुज़ुर्गों से मुखातिब हुआ जो उस के पास आए थे, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे खिलाफ़ निकले हो?”⁵³ मैं तो रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर तुम ने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत करती है।”

⁵⁴फिर वह उसे गिरफ़्तार करके इमाम-ए-आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासिले पर उन के पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया।⁵⁵ लोग सहन में आग जला कर उस के इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उन के बीच बैठ गया।

⁵⁶किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उस ने उसे घूर कर कहा, “यह भी उस के साथ था।”⁵⁷ लेकिन उस ने इन्कार किया, “खातून, मैं उसे नहीं जानता।”⁵⁸ थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उन में से हो।” लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भाई! मैं नहीं हूँ।”

⁵⁹तक्ररीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने इस्सार करके कहा, “यह आदमी यज़ीनन उस के साथ था, क्योंकि यह भी गलील का रहने वाला है।”⁶⁰ लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो!” वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुर्ग की बाँग सुनाई दी।

⁶¹खुदावन्द ने मुड़ कर पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को खुदावन्द की वह बात याद आई जो उस ने उस से कही थी कि “कल सुबह मुर्ग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।”⁶² पतरस वहाँ से निकल कर टूटे दिल से खूब रोया।

⁶³पहरेदार ईसा' का मज़ाक़ उड़ाने और उस की पिटाई करने लगे।⁶⁴ उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँध कर पूछा, “नबुव्वत कर कि किस ने तुझे मारा?”⁶⁵ इस तरह की और बहुत सी बातों से वह उस की बेइज़्ज़ती करते रहे।

⁶⁶जब दिन चढ़ा तो रेहनुमा इमामों और शरीअत के आलिमों पर मुश्तमिल क़ौम के मजमा ने जमा हो कर उसे यहूदी अदालत-ए-आलिया में पेश किया।⁶⁷ उन्होंने ने कहा, “अगर तू मसीह है तो हमें बता!” ईसा' ने जवाब दिया, “अगर मैं तुम को बताऊँ तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे,⁶⁸ और अगर तुम से पूछूँ तो तुम जवाब नहीं दोगे।

⁶⁹लेकिन अब से इब्न-ए-आदम खुदा तआला के दहने हाथ बैठा होगा।”⁷⁰ सब ने पूछा, “तो फिर क्या तू खुदा का फ़र्ज़न्द है?” उस ने जवाब दिया, “जी, तुम खुद कहते हो।”⁷¹ इस पर उन्होंने ने कहा, “अब हमें किसी और गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्योंकि हम ने यह बात उस के अपने मुँह से सुन ली है।”

Chapter 23

¹फिर पूरी मजलिस उठी और 'ईसा को पीलातुस के पास ले आई'² और उन्होंने उस पर इल्ज़ाम लगा कर कहने लगे, "हम ने मालूम किया है कि यह आदमी हमारी क्रौम को गुमराह कर रहा है। यह कैसर को खिराज देने से मना करता और दा'वा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।"

³पीलातुस ने उस से पूछा, "अच्छा, तुम यहूदियों के बादशाह हो?" ईसा' ने जवाब दिया, "जी, आप खुद कहते हैं।"⁴ फिर पीलातुस ने रहनुमा इमामों और हुजूम से कहा, "मुझे इस आदमी पर इल्ज़ाम लगाने की कोई वजह नज़र नहीं आती।"⁵ मगर वो और भी ज़ोर देकर कहने लगे कि ये तमाम यहूदिया में बल्कि गलील से लेकर यहाँ तक लोगो को सिखा सिखा कर उभारता है

⁶यह सुन कर पीलातुस ने पूछा, "क्या यह शख्स गलील का है?"⁷ जब उसे मालूम हुआ कि ईसा' गलील यानी उस इलाक़े से है, जिस पर हेरोदेस अनतिपास की हुकूमत है तो उस ने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस वक़्त यरूशलीम में था।

⁸हेरोदेस ईसा' को देख कर बहुत खुश हुआ, क्योंकि उस ने उस के बारे में बहुत कुछ सुना था, और इस लिए काफ़ी दिनों से उस से मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी ख्वाहिश थी, कि ईसा' को कोई मौजिज़ा करते हुए देख सके।⁹ उस ने उस से बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा' ने एक का भी जवाब न दिया।

¹⁰रहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इल्ज़ाम लगाते रहे।

¹¹फिर हेरोदेस और उस के फ़ौजियों ने उसको ज़लील करते हुए उस का मज़ाक़ उड़ाया और उसे चमकदार लिबास पहना कर पीलातुस के पास वापस भेज दिया।¹² उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त बन गए, क्योंकि इस से पहले उन की दुश्मनी चल रही थी।

¹³फिर पीलातुस ने रहनुमा इमामों, सरदारों और अवाम को जमा करके,¹⁴ उन से कहा, "तुम ने इस शख्स को मेरे पास ला कर इस पर इल्ज़ाम लगाया है कि यह क्रौम को उकसा रहा है। मैं ने तुम्हारी मौजूदगी में इस का जायज़ा ले कर ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इल्ज़ामात की तस्दीक़ करे।

¹⁵हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम कर सका, इस लिए उस ने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा गुनाह नहीं हुआ कि यह सज़ा-ए-मौत के लायक़ है।¹⁶ इस लिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा दे कर रिहा कर देता हूँ।"¹⁷ [अस्ल में यह उस का फ़र्ज़ था कि वह ईद के मौक़े पर उन की खातिर एक क़ैदी को रिहा कर दे।]

¹⁸लेकिन सब मिल कर शोर मचा कर कहने लगे, "इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-अब्बा को रिहा करके हमें दें।"¹⁹ (बर-अब्बा को इस लिए जेल में डाला गया था कि वह क़ातिल था और उस ने शहर में हुकूमत के खिलाफ़ बगावत की थी।)

²⁰पीलातुस ईसा' को रिहा करना चाहता था, इस लिए वह दुबारा उन से मुखातिब हुआ।²¹ लेकिन वह चिल्लाते रहे, "इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें।"²² फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उन से कहा, "क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सज़ा-ए-मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती। इस लिए मैं इसे कोड़े लगवा कर रिहा कर देता हूँ।"

²³लेकिन वह बड़ा शोर मचा कर उसे मस्लूब करने का तक्राज़ा करते रहे, और आखिरकार उन की आवाज़ें ग़ालिब आ गईं।²⁴ फिर पीलातुस ने फ़ैसला किया कि उन का मुतालाबा पूरा किया जाए।²⁵ उस ने उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी हुकूमत के खिलाफ़ हरकतों और क़त्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा' को उस ने उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ उन के हवाले कर दिया।

²⁶जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन का रहने वाला था। उस का नाम शमाऊन था। उस वक़्त वह देहात से शहर में दाख़िल हो रहा था। उन्होंने ने सलीब को उस के कंधों पर रख कर उसे ईसा' के पीछे चलने का हुक्म दिया।

²⁷एक बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया जिस में कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीट कर उस का मातम कर रही थीं।²⁸ ईसा' ने मुड़ कर उन से कहा, "यरूशलम की बेटीयो! मेरे वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ।

²⁹क्यूँकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग कहेंगे, 'मुबारक हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्होंने ने न तो बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।'³⁰ फिर लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,' और पहाड़ियों से कि 'हमें छुपा लो।'³¹ क्यूँकि अगर हरे दरख़्त से ऐसा सुलूक किया जाता है तो फिर सूखे के साथ क्या कुछ न किया जायेगा?"

³²दो और मदों को भी मस्लूब करने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे।

³³चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिस का नाम खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ने ईसा' को दोनों मुजरिमों समेत मस्लूब किया। एक मुजरिम को उस के दाएँ हाथ और दूसरे को उस के बाएँ हाथ लटका दिया गया।³⁴ ईसा' ने कहा, "ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूँकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" उन्होंने ने पर्ची डाल कर उस के कपड़े आपस में बाँट लिए।

³⁵हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क्रौम के सरदारों ने उस का मज़ाक़ भी उड़ाया। उन्होंने ने कहा, "उस ने औरों को बचाया है। अगर यह खुदा का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आप को बचाए।"

³⁶फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उस के पास आ कर उन्होंने ने उसे मय का सिरका पेश किया³⁷ और कहा, "अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आप को बचा ले।"³⁸ उस के सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह है।"

³⁹जो मुजरिम उस के साथ मस्लूब हुए थे उन में से एक ने कुफ़्र बकते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आप को और हमें भी बचा ले।"⁴⁰ लेकिन दूसरे ने यह सुन कर उसे डाँटा, "क्या तू खुदा से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी मिली है।"⁴¹ हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्यूँकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इस ने कोई बुरा काम नहीं किया।"

⁴²फिर उस ने ईसा' से कहा, "जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।"⁴³ ईसा' ने उस से कहा, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दाँस में होगा।"

⁴⁴बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया।⁴⁵ सूरज तारीक़ हो गया और बैत-उल-मुक़द्दस के पाक़तरिन कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा दो हिस्सों में फट गया।

⁴⁶ईसा' ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कह कर उस ने दम तोड़ दिया।⁴⁷यह देख कर वहाँ खड़े फ़ौजी अप्रसर ने खुदा की बड़ाई करके कहा, "यह आदमी वाक़ई रास्तबाज़ था।"

⁴⁸और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देख कर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए।⁴⁹लेकिन ईसा" के जानने वाले कुछ फ़ासिले पर खड़े देखते रहे। उन में वह औरतें भी शामिल थीं जो गलील में उस के पीछे चल कर यहाँ तक उस के साथ आई थीं।

⁵⁰वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालत-ए-अलिया का रुकन था⁵¹लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतो पर रज़ामन्द नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह का रहने वाला था और इस इन्तिज़ार में था कि खुदा की बादशाही आए।

⁵²अब उस ने पिलातुस के पास जा कर उस से ईसा' की लाश ले जाने की इजाज़त माँगी।⁵³फिर लाश को उतार कर उस ने उसे कतान के कफ़न में लपेट कर चटान में तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिस में अब तक किसी को दफ़नाया नहीं गया था।

⁵⁴यह तैयारी का दिन यानी जुमआ था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था।⁵⁵जो औरतें ईसा' के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने ने क़ब्र को देखा और यह भी कि ईसा' की लाश किस तरह उस में रखी गई है।⁵⁶फिर वह शहर में वापस चली गई और उस की लाश के लिए खुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं।

Chapter 24

¹सबत का दिन शुरू हुआ, इस लिए उन्होंने ने शरीअत के मुताबिक आराम किया। इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले ले कर सुबह-सवेरे क्रब्र पर गईं।²वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने देखा कि क्रब्र पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है।³लेकिन जब वह क्रब्र में गई तो वहाँ खुदावन्द ईसा' की लाश न पाई।

⁴वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थी कि अचानक दो मर्द उन के पास आ खड़े हुए जिन के लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे।⁵औरतें खौफ़ खा कर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, “तुम क्यों ज़िन्दा को मुर्दों में ढूँड रही हो?

⁶वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उस ने तुम से उस वक़्त कही जब वह गलील में था।⁷जरूरी है कि इब्न-ए-आदम को गुनाहगारों के हवाले कर के, मस्तूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे।”

⁸फिर उन्हें यह बात याद आई।⁹और क्रब्र से वापस आ कर उन्होंने ने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया।¹⁰मरियम मगदलीनी, यूना, याक़ूब की माँ मरियम और चन्द एक और औरतें उन में शामिल थीं जिन्होंने ने यह बातें रसूलों को बताईं।

¹¹लेकिन उन को यह बातें बेतुकी सी लग रही थीं, इस लिए उन्हें यक़ीन न आया।¹²तो भी पतरस उठा और भाग कर क्रब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुक कर अन्दर झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न ही नज़र आया। यह हालात देख कर वह हैरान हुआ और चला गया।

¹³उसी दिन ईसा' के दो पैरोकार एक गाँव बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलीम से तक्ररीबन दस किलोमीटर दूर था।¹⁴चलते चलते वह आपस में उन वाक़ेआत का ज़िक्र कर रहे थे जो हुए थे।

¹⁵और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-ओ-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा' खुद करीब आ कर उन के साथ चलने लगा।¹⁶लेकिन उन की आँखों पर पर्दा डाला गया था, इस लिए वह उसे पहचान न सके।

¹⁷ईसा' ने कहा, “यह कैसी बातें हैं जिन के बारे में तुम चलते चलते तबादला-ए-खयाल कर रहे हो?” यह सुन कर वह गमगीन से खड़े हो गए।¹⁸उन में से एक बनाम क्लियुपाने ने उस से पूछा, “क्या आप यरूशलीम में वाहिद शख्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”

¹⁹उस ने कहा, “क्या हुआ है?” उन्होंने ने जवाब दिया, “वह जो ईसा' नासरी के साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में खुदा और तमाम क्रौम के सामने ज़बरदस्त ताक़त हासिल थी।²⁰लेकिन हमारे रहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, और उन्होंने ने उसे मस्तूब किया।

²¹लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इस्राईल को नजात देगा। इन वाक़ेआत को तीन दिन हो गए हैं।

²²लेकिन हम में से कुछ औरतों ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुबह-सवेरे क्रब्र पर गई थीं।²³तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने ने लौट कर हमें बताया कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने ने कहा कि ईसा' ज़िन्दा है।²⁴हम में से कुछ क्रब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था। लेकिन उसे खुद उन्होंने ने नहीं देखा।”

²⁵फिर ईसा' ने उन से कहा, “अरे नादानो! तुम कितने कुन्दज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं।²⁶क्या ज़रूरी नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेल कर अपने जलाल में दाखिल हो जाए?”²⁷फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा' ने कलाम-ए-मुक़द्दस की हर बात की तशरीह की जहाँ जहाँ उस का ज़िक्र है।

²⁸चलते चलते वह उस गाँव के करीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। ईसा' ने ऐसा किया गोया कि वह आगे बढ़ना चाहता है,²⁹लेकिन उन्होंने ने उसे मजबूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्योंकि शाम होने को है और दिन ढल गया है।” चुनौचे वह उन के साथ ठहरने के लिए अन्दर गया।

³⁰और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उस ने रोटी ले कर उस के लिए शुक़रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस ने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया।

³¹अचानक उन की आँखें खुल गईं और उन्होंने ने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लम्हे वह ओझल हो गया।³²फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हम से बातें करते करते हमें सहीफ़ों का मतलब समझा रहा था?”

³³और वह उसी वक़्त उठ कर यरूशलीम वापस चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत पहले से जमा थे³⁴और यह कह रहे थे, “खुदावन्द वाक़ई जी उठा है! वह शमाऊन पर ज़ाहिर हुआ है।”³⁵फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँवों की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा' के रोटी तोड़ते वक़्त उन्होंने ने उसे कैसे पहचाना।

³⁶वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा' खुद उन के दर्मियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो।”³⁷वह घबरा कर बहुत डर गए, क्योंकि उन का खयाल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं।

³⁸उस ने उन से कहा, “तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है?³⁹मेरे हाथों और पैरों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोल कर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”⁴⁰यह कह कर उस ने उन्हें अपने हाथ और पैर दिखाए।

⁴¹जब उन्हें खुशी के मारे यक़ीन नहीं आ रहा था और ता'अज्जुब कर रहे थे तो ईसा' ने पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?”⁴²उन्होंने ने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया⁴³उस ने उसे ले कर उन के सामने ही खा लिया।

⁴⁴फिर उस ने उन से कहा, “यही है जो मैं ने तुम को उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।”

⁴⁵फिर उस ने उन के ज़हन को खोल दिया ताकि वह खुदा का कलाम समझ सकें।⁴⁶उस ने उन से कहा, “कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, मसीह दुख उठा कर तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा।”⁴⁷फिर यरूशलम से शुरू करके उस के नाम में यह पैग़ाम तमाम क्रौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ।

⁴⁸तुम इन बातों के गवाह हो।⁴⁹और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिस का वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुम को आस्मान की ताक़त से भर दिया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।”

⁵⁰फिर वह शहर से निकल कर उन्हें बैत-अनियाह तक ले गया। वहाँ उस ने अपने हाथ उठा कर उन्हें बर्कत दी।⁵¹ और ऐसा हुआ कि बर्कत देते हुए वह उन से जुदा हो कर आस्मान पर उठा लिया गया।

⁵²उन्होंने उसे सिज्दा किया और फिर बड़ी खुशी से यरूशलम वापस चले गए।⁵³ वहाँ वह अपना पूरा वक्त बैत-उल-मुकद्दस में गुज़ार कर खुदा की बड़ाई करते रहे।

मुकद्दस यूहन्ना की मा'रिफ़त इन्जील

Chapter 1

¹इब्तिदा में कलाम था, और कलाम खुदा के साथ था, और कलाम ही खुदा था।²यही शुरू में खुदा के साथ था।³सब चीज़ें उसके वसीले से पैदा हुई, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से कोई चीज़ भी उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई।

⁴उसमें ज़िन्दगी थी और वो ज़िन्दगी आदमियों का नूर थी।⁵ और नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उसे कुबूल न किया।

⁶एक आदमी युहन्ना नाम आ मौजूद हुआ, जो खुदा की तरफ़ से भेजा गया था;⁷ ये गवाही के लिए आया कि नूर की गवाही दे, ताकि सब उसके वसीले से ईमान लाएँ।⁸ वो खुद तो नूर न था, मगर नूर की गवाही देने आया था।

⁹हक़ीकी नूर जो हर एक आदमी को रोशन करता है, दुनियाँ में आने को था।

¹⁰वो दुनियाँ में था, और दुनियाँ उसके वसीले से पैदा हुई, और दुनियाँ ने उसे न पहचाना।¹¹ वो अपने घर आया और और उसके अपनों ने उसे कुबूल न किया।

¹²लेकिन जितनों ने उसे कुबूल किया, उसने उन्हें खुदा के फ़र्ज़न बनने का हक़ बख़्शा, या'नी उन्हें जो उसके नाम पर ईमान लाते हैं।¹³ वो न खून से, न जिसम की ख्वाहिश से, न इंसान के इरादे से, बल्कि खुदा से पैदा हुए।

¹⁴और कलाम मुजस्सिम हुआ फ़ज़ल और सच्चाई से भरकर हमारे दरमियान रहा, और हम ने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल।

¹⁵युहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी, और पुकार कर कहा है, "ये वही है, जिसका मैंने ज़िक्र किया कि जो मेरे बा'द आता है, वो मुझ से मुकद्दम ठहरा क्योंकि वो मुझ से पहले था।"

¹⁶क्योंकि उसकी भरपूरी में से हम सब ने पाया, या'नी फ़ज़ल पर फ़ज़ल।¹⁷ इसलिए कि शरी'अत तो मूसा के ज़रिये दी गई, मगर फ़ज़ल और सच्चाई ईसा' मसीह के ज़रिये पहुँची।¹⁸ खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा, इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने ज़ाहिर किया।

¹⁹और युहन्ना की गवाही ये है, कि जब यहूदी अगुवो ने यरूशलीम से काहिन और लावी ये पूछने को उसके पास भेजे, "तू कौन है?"²⁰ तो उसने इक्लौता किया, "और इन्कार न किया बल्कि, इक्लौता किया, "मैं तो मसीह नहीं हूँ।"²¹ उन्होंने उससे पूछा, "फिर तू कौन है? क्या तू एलियाह है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" "क्या तू वो नबी है?" उसने जवाब दिया, कि "नहीं।"

²²पस उन्होंने उससे कहा, "फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को जवाब दें कि, तू अपने हक़ में क्या कहता है?"²³ "मैं जैसा यसायाह नबी ने कहा, वीराने में एक पुकारने वाले की आवाज़ हूँ, 'तुम खुदा वन्द की राह को सीधा करो'।"

²⁴ये फ़रीसियों की तरफ़ से भेजे गए थे।²⁵ उन्होंने उससे ये सवाल किया, "अगर तू न मसीह है, न एलियाह, न वो नबी, तो फिर बपतिस्मा क्यूँ देता है?"

²⁶युहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, "मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ, तुम्हारे बीच एक शख्स खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते।²⁷ या'नी मेरे बा'द का आनेवाला, जिसकी जूती का फ़ीता मैं खोलने के लायक़ नहीं।"²⁸ ये बातें यरदन के पार बैत'अन्नियाह में वाक़े' हुई, जहाँ युहन्ना बपतिस्मा देता था।

²⁹दूसरे दिन उसने ईसा' को अपनी तरफ़ आते देखकर कहा, "देखो, ये खुदा का बर्त है जो दुनियाँ का गुनाह उठा ले जाता है।"³⁰ ये वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, 'एक शख्स मेरे बा'द आता है, जो मुझ से मुकद्दम ठहरा है, क्योंकि वो मुझ से पहले था।'³¹ और मैं तो उसे पहचानता न था, मगर इसलिए पानी से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वो इस्राईल पर ज़ाहिर हो जाए।"

³²और युहन्ना ने ये गवाही दी: "मैंने रूह को कबूतर की तरह आसमान से उतरते देखा है, और वो उस पर ठहर गया।"³³ मैं तो उसे पहचानता न था, मगर जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा, 'जिस पर तू रूह को उतरते और ठहरते देखे, वही रूह-उल-कुद्दूस से बपतिस्मा देनेवाला है।'³⁴ चुनाँचे मैंने देखा, और गवाही दी है कि ये खुदा का बेटा है।"

³⁵दूसरे दिन फिर युहन्ना और उसके शागिर्दों में से दो शख्स खड़े थे,³⁶ उसने ईसा' पर जो जा रहा था निगाह करके कहा, "देखो, ये खुदा का बर्त है।"

³⁷वो दोनों शागिर्द उसको ये कहते सुनकर ईसा' के पीछे हो लिए।³⁸ ईसा' ने फिरकर और उन्हें पीछे आते देखकर उनसे कहा, "तुम क्या ढूँढ़ते हो?" उन्होंने उससे कहा, "ऐ रब्बी (या'नी ऐ उस्ताद), तू कहाँ रहता है?"³⁹ उसने उनसे कहा, "चलो, देख लो।" पस उन्होंने आकर उसके रहने की जगह देखी और उस रोज़ उसके साथ रहे, और ये चार बजे के करीब था।

⁴⁰उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर ईसा' के पीछे हो लिए थे, एक शमा'ऊन पतरस का भाई अन्द्रियास था।⁴¹ उसने पहले अपने सगे भाई शमा'ऊन से मिलकर उससे कहा, "हम को ख़ितुस, या'नी मसीह मिल गया।"⁴² वो उसे ईसा' के पास लाया ईसा' ने उस पर निगाह करके कहा, "तू यूहन्ना का बेटा शमा'ऊन है; तू कैफ़ा या'नी पतरस कहलाएगा।"

⁴³दूसरे दिन ईसा ने गलील में जाना चाहा, और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, "मेरे पीछे हो ले।"⁴⁴ फिलिप्पुस, अन्द्रियास और पतरस के शहर, बैतसैदा का रहने वाला था।⁴⁵ फिलिप्पुस से नतनएल से मिलकर उससे कहा, "जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरत में और नबियों ने किया है, वो हम को मिल गया; वो यूसुफ़ का बेटा ईसा' नासरी है।"

⁴⁶नतनएल ने उससे कहा, "क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है ?" फिलिप्पुस ने कहा, "चलकर देख ले ।" ⁴⁷ईसा' ने नतनएल को अपनी तरफ़ आते देखकर उसके हक़ में कहा, "देखो, ये फ़िल हक़ीक़त इस्राईली है ! इसमें मक्र नहीं ।" ⁴⁸नतनएल ने उससे कहा, "तू मुझे कहाँ से जानता है?" ईसा' ने उसके जवाब में कहा, "इससे पहले के फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के दरख़्त के नीचे था, मैंने तुझे देखा ।"

⁴⁹नतनएल ने उसको जवाब दिया, "ऐ रब्बी, तू खुदा का बेटा है ! तू बादशाह का बादशाह है !" ⁵⁰ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "मैंने जो तुझ से कहा, 'तुझ को अंजीर के दरख़्त के नीचे देखा, 'क्या। तू इसीलिए ईमान लाया है? तू इनसे भी बड़े-बड़े मो'जिज़े देखेगा ।" ⁵¹फिर उससे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि आसमान को खुला और खुदा के फ़रिश्तों को ऊपर जाते और इब्न-ए-आदम पर उतरते देखोगे।"

Chapter 2

¹फिर तीसरे दिन काना-ए-गलील में एक शादी हुई और ईसा' की माँ वहाँ थी | 'ईसा' और उसके शागिर्दों की भी उस शादी में दा'वत थी।

³और जब मय खत्म हो चुकी, तो ईसा' की माँ ने उससे कहा, "उनके पास मय नहीं रही |" ⁴ईसा' ने उससे कहा, "ऐ माँ मुझे तुझ से क्या काम है? अभी मेरा वक़्त नहीं आया है |" ⁵उसकी माँ ने खादिमों से कहा, "जो कुछ ये तुम से कहे वो करो।"

⁶वहाँ यहूदियों की पाकी के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पत्थर के छे:मटके रखे थे, और उनमें दो-दो, तीन-तीन मन की गुंजाइश थी। ⁷ईसा' ने उनसे कहा, "मटकों में पानी भर दो |" पस उन्होंने उनको पूरा भर दिया। ⁸फिर उसने उन से कहा, "अब निकाल कर मीरे मजलिस के पास ले जाओ |" पस वो ले गए।

⁹जब मजलिस के सरदार ने वो पानी चखा, जो मय बन गया था और जानता न था कि ये कहाँ से आई है (मगर खादिम जिन्होंने पानी भरा था जानते थे), तो मजलिस के सरदार ने दूल्हा को बुलाकर उससे कहा, ¹⁰"हर शख्स पहले अच्छी मय पेश करता है और नाक़िस उस वक़्त जब पीकर छक गए, मगर तूने अच्छी मय अब तक रख छोड़ी है |"

¹¹ये पहला मो'जिज़ा ईसा' ने काना-ए-गलील में दिखाकर, अपना जलाल ज़ाहिर किया और उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए |

¹²इसके बा'द वो और उसकी माँ और भाई और उसके शागिर्द कफ़रनहूम को गए और वहाँ चन्द रोज़ रहे |

¹³यहूदियों की 'ईद-ए-फसह नज़दीक थी, और ईसा' यरूशलीम को गया | ¹⁴उसने हैकल में बैल और भेड़ और कबूतर बेचनेवालों को, और सार्राफ़ों को बैठे पाया;

¹⁵फिर ईसा' ने रस्सियों का कोड़ा बना कर सब को बैत -उल-मुक़द्दस से निकाल दिया ,उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर निकाल कर हाँक दिया,पैसे बदलने वालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेंजें उलट दीं | ¹⁶और कबूतर फ़रोशों से कहा, "इनको यहाँ से ले जाओ ! मेरे आसमानी बाप के घर को तिजारत का घर न बनाओ |"

¹⁷उसके शागिर्दों को याद आया कि लिखा है, "तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी |" ¹⁸पस कुछ यहूदी अगुवों ने जवाब में उनसे कहा, "तू जो इन कामों को करता है, हमें कौन सा निशान दिखाता है ?" ¹⁹ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "इस हैकल को ढा दो, तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा |"

²⁰यहूदी अगुवों ने कहा, "छियालीस बरस में ये बना है, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा ?" ²¹मगर उसने अपने बदन के 'मक्बिदिस के बारे में कहा था"।

²²"पस जब वो मुर्दों में से जी उठा तो उसके शागिर्दों को याद आया कि उसने ये कहा था; और उन्होंने किताब-ए-मुक़द्दस और उस क़ौल का जो ईसा' ने कहा था, यक़ीन किया" |

²³जब वो यरूशलीम में फसह के वक़्त 'ईद में था, तो बहुत से लोग उन मो'जिज़ों को देखकर जो वो दिखाता था उसके नाम पर ईमान लाए | ²⁴लेकिन ईसा' अपनी निस्बत उस पर 'ऐतबार न करता था, इसलिए कि वो सबको जानता था | ²⁵और इसकी ज़रूरत न रखता था कि कोई इन्सान के हक़ में गवाही दे, क्योंकि वो आप जानता था कि इन्सान के दिल में क्या क्या है।

Chapter 3

¹फ़रीसियों में से एक शख्स निकुदेमुस नाम यहूदियों का एक सरदार था।²उसने रात को ईसा' के पास आकर उससे कहा, "ऐ रब्बी ! हम जानते हैं कि तू खुदा की तरफ से उस्ताद होकर आया है, क्योंकि जो मो'जिज़े तू दिखाता है कोई शख्स नहीं दिखा सकता, जब तक खुदा उसके साथ न हो।"

³ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक कोई नए सिरे से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही को देख नहीं सकता।"⁴निकुदेमुस ने उससे कहा, "आदमी जब बूढ़ा हो गया, तो क्यूँकर पैदा हो सकता है? क्या वो दोबारा अपनी माँ के पेट में दाखिल होकर पैदा हो सकता है?"

⁵ईसा' ने जवाब दिया, "मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक कोई आदमी पानी और रूह से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही में दाखिल नहीं हो सकता।"⁶जो जिस्म से पैदा हुआ है जिस्म है, और जो रूह से पैदा हुआ है रूह है।

⁷ता'अज्जुब न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।'⁸हवा जिधर चाहती है चलती है और तू उसकी आवाज़ सुनता है, मगर नहीं कि वो कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। जो कोई रूह से पैदा हुआ ऐसा ही है।"

⁹निकुदेमुस ने जवाब में उससे कहा, "ये बातें क्यूँकर हो सकती हैं?"¹⁰ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "बनी-इसाईल का उस्ताद होकर क्या तू इन बातों को नहीं जानता?"¹¹मैं तुझ से सच कहता हूँ कि जो हम जानते हैं वो कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही कुबूल नहीं करते।

¹²जब मैंने तुम से ज़मीन की बातें कहीं और तुम ने यक्कीन नहीं किया, तो अगर मैं तुम से आसमान की बातें कहूँ तो क्यूँकर यक्कीन करोगे?¹³आसमान पर कोई नहीं चढ़ा, सिवा उसके जो आसमान से उतरा या 'नी इब्न-ए-आदम जो आसमान में है।

¹⁴और जिस तरह मूसा ने पीतल के साँप को वीराने में ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरह ज़रूर है कि इब्न-ए-आदम भी ऊँचें पर चढ़ाया जाए;¹⁵ताकि जो कोई ईमान लाए उसमें हमेशा की ज़िन्दगी पाए।

¹⁶क्यूँकि खुदा ने दुनियाँ से ऐसी मुहब्बत रखी कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्श दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक़ न हो, बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए।¹⁷क्यूँकि खुदा ने बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सज़ा का हुक्म करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके वसीले से नजात पाए।

¹⁸जो उस पर ईमान लाता है उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता, जो उस पर ईमान नहीं लाता उस पर सज़ा का हुक्म हो चुका; इसलिए कि वो खुदा के इकलौते बेटे के नाम पर ईमान नहीं लाया।

¹⁹और सज़ा के हुक्म की वजह ये है कि नूर दुनियाँ में आया है, और आदमियों ने तारीकी को नूर से ज़्यादा पसन्द किया इसलिए कि उनके काम बुरे थे।²⁰क्यूँकि जो कोई बदी करता है वो नूर से दुश्मनी रखता है और नूर के पास नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर मलामत की जाए।²¹मगर जो सचाई पर 'अमल करता है वो नूर के पास आता है, ताकि उसके काम ज़ाहिर हों कि वो खुदा में किए गए हैं।"

²²इन बातों के बा'द ईसा' और शागिर्द यहूदिया के मुल्क में आए, और वो वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।²³और युहन्ना भी 'एनोन में बपतिस्मा देता था जो यरदन नदी के पास था, क्यूँकि वहाँ पानी बहुत था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।²⁴(क्यूँकि यहुन्ना उस वक़्त तक कैदखाने में डाला न गया था)।

²⁵पस यहुन्ना के शागिर्दों की किसी यहूदी के साथ पाकीज़गी के बारे में बहस हुई।²⁶उन्होंने यहुन्ना के पास आकर कहा, "ऐ रब्बी ! जो शख्स यरदन के पार तेरे साथ था, जिसकी तूने गवाही दी है ; देख, वो बपतिस्मा देता है और सब उसके पास आते हैं।"

²⁷युहन्ना ने जवाब में कहा, "इन्सान कुछ नहीं पा सकता, जब तक उसको आसमान से न दिया जाए।²⁸तुम खुद मेरे गवाह हो कि मैंने कहा, 'मैं मसीह नहीं, मगर उसके आगे भेजा गया हूँ।'

²⁹जिसकी दुल्हन है वो दूल्हा है, मगर दूल्हा का दोस्त जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हा की आवाज़ से बहुत खुश होता है; पस मेरी ये खुशी पूरी हो गई।

³⁰ज़रूर है कि वो बढ़े और मैं घटूँ।

³¹"जो ऊपर से आता है वो सबसे ऊपर है। जो ज़मीन से है वो ज़मीन ही से है और ज़मीन ही की कहता है 'जो आसमान से आता है वो सबसे ऊपर है।'³²जो कुछ उस ने खुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही कुबूल नहीं करता।³³जिसने उसकी गवाही कुबूल की उसने इस बात पर मुहर कर दी, कि खुदा सच्चा है।

³⁴क्यूँकि जिसे खुदा ने भेजा वो खुदा की बातें कहता है, इसलिए कि वो रूह नाप नाप कर नहीं देता।³⁵बाप बेटे से मुहब्बत रखता है और उसने सब चीज़ें उसके हाथ में दे दी है।³⁶जो बेटे पर ईमान लाता है हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है; लेकिन जो बेटे की नहीं मानता 'ज़िन्दगी को न देखगा बल्कि उसपर खुदा का ग़ज़ब रहता है।"

Chapter 4

¹फिर जब खुदावन्द को मा'लूम हुआ, कि फ़रीसियों ने सुना है कि ईसा' युहन्ना से ज़्यादा शागिर्द बनाता है और बपतिस्मा देता है, ²(अगरचे ईसा' आप नहीं बल्कि उसके शागिर्द बपतिस्मा देते थे), ³तो वो यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।

⁴और उसको सामरिया से होकर जाना ज़रूर था | ⁵पस वो सामरिया के एक शहर तक आया जो सूखार कहलाता है, वो उस क़त'ए के नज़दीक है जो या'कूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दिया था;

⁶और या'कूब का कुआँ वहीं था | चुनाँचे ईसा' सफ़र से थका-माँदा होकर उस कुँए पर यूँ ही बैठ गया | ये छठे घंटे के करीब था | ⁷सामरिया की एक 'औरत पानी भरने आई | ईसा' ने उससे कहा, "मुझे पानी पिला" ⁸क्यूँकि उसके शागिर्द शहर में खाना खरीदने को गए थे |

⁹उस सामरी 'औरत ने उससे कहा, "तू यहूदी होकर मुझ सामरी 'औरत से पानी क्यूँ माँगता है?" (क्यूँकि यहूदी सामरियों से किसी तरह का बर्ताव नहीं रखते |) ¹⁰ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "अगर तू खुदा की बख़्शिश को जानती, और ये भी जानती कि वो कौन है जो तुझ से कहता है, 'मुझे पानी पिला, 'तो तू उससे माँगती और वो तुझे ज़िन्दगी का पानी देता |"

¹¹'औरत ने उससे कहा, "ऐ खुदावन्द ! तेरे पास पानी भरने को तो कुछ है नहीं और कुआँ गहरा है, फिर वो ज़िन्दगी का पानी तेरे पास कहाँ से आया ?" ¹²क्या तू हमारे बाप या'कूब से बड़ा है जिसने हम को ये कुआँ दिया, और खुद उसने और उसके बेटों ने और उसके जानवरों ने उसमें से पिया ?"

¹³ईसा' ने जवाब में उससे कहा, "जो कोई इस पानी में से पीता है वो फिर प्यासा होगा, ¹⁴मगर जो कोई उस पानी में से पिएगा जो मैं उसे दूँगा, वो अबद तक प्यासा न होगा ! बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा, वो उसमें एक चश्मा बन जाएगा जो हमेशा की ज़िन्दगी के लिए जारी रहेगा |"

¹⁵'औरत ने उस से कहा, "ऐ खुदावन्द ! वो पानी मुझ को दे ताकि मैं न प्यासी होऊँ, न पानी भरने को यहाँ तक आऊँ |" ¹⁶ईसा' ने उससे कहा, "जा ,अपने शौहर को यहाँ बुला ला |"

¹⁷'औरत ने जवाब में उससे कहा, "मैं बे शौहर हूँ |" ईसा' ने उससे कहा, "तुने खूब कहा , 'मैं बे शौहर हूँ , ¹⁸क्यूँकि तू पाँच शौहर कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वो तेरा शौहर नहीं; ये तूने सच कहा |"

¹⁹'औरत ने उससे कहा, "ऐ खुदावन्द ! मुझे मा'लूम होता है कि तू नबी है | ²⁰हमारे बाप-दादा ने इस पहाड़ पर इबादत की, और तुम कहते हो कि वो जगह जहाँ पर इबादत करना चाहिए यरूशलीम में है |"

²¹ईसा' ने उससे कहा, "ऐ बहन ! मेरी बात का यकीन कर, कि वो वक़्त आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे और न यरूशलीम में |" ²²तुम जिसे नहीं जानते उसकी इबादत करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी इबादत करते हैं ;क्यूँकि नजात यहूदियों में से है |

²³मगर वो वक़्त आता है बल्कि अब ही है, कि सच्चे इबादतगार खुदा बाप की इबादत रूह और सच्चाई से करेंगे, क्यूँकि खुदा बाप अपने लिए ऐसे ही इबादतगार ढूँढता है | ²⁴खुदा रूह है, और ज़रूर है कि उसके इबादतगार रूह और सच्चाई से इबादत करें |

²⁵'औरत ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख़िस्तुस कहलाता है आने वाला है, जब वो आएगा तो हमें सब बातें बता देगा |" ²⁶ईसा ने उससे कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ |"

²⁷इतने में उसके शागिर्द आ गए और ताअ'ज्जुब करने लगे कि वो 'औरत से बातें कर रहा है, तोभी किसी ने न कहा, "तू क्या चाहता है?" या, "उससे किस लिए बातें करता है |"

²⁸पस 'औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और लोगों से कहने लगी, ²⁹"आओ, एक आदमी को देखो, जिसने मेरे सब काम मुझे बता दिए | क्या मुम्किन है कि मसीह यही है ?" ³⁰वो शहर से निकल कर उसके पास आने लगे |

³¹इतने में उसके शागिर्द उससे ये दरख्वास्त करने लगे, "ऐ रब्बी ! कुछ खा ले |" ³²लेकिन उसने कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा खाना है जिसे तुम नहीं जानते |" ³³पस शागिर्दों ने आपस में कहा, "क्या कोई उसके लिए कुछ खाने को लाया है ?"

³⁴ईसा' ने उनसे कहा, "मेरा खाना, ये है, कि अपने भेजनेवाले की मज़ी के मुताबिक़ 'अमल करूँ और उसका काम पूरा करूँ |" ³⁵क्या तुम कहते नहीं, 'फ़सल के आने में अभी चार महीने बाक़ी हैं'? देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर नज़र करो कि फ़सल पक गई है। ³⁶और काटनेवाला मज़दूरी पाता और हमेशा की ज़िन्दगी के लिए फल जमा' करता है, ताकि बोनवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर खुशी करें |

³⁷क्यूँकि इस पर ये मसल ठीक आती है, 'बोनवाला और काटनेवाला और |" ³⁸मैंने तुम्हें वो खेत काटने के लिए भेजा जिस पर तुम ने मेहनत नहीं की, औरों ने मेहनत की और तुम उनकी मेहनत के फल में शरीक हुए |"

³⁹और उस शहर के बहुत से सामरी उस 'औरत के कहने से, जिसने गवाही दी, "उसने मेरे सब काम मुझे बता दिए, "उस पर ईमान लाए |" ⁴⁰पस जब वो सामरी उसके पास आए, तो उससे दरख्वास्त करने लगे कि हमारे पास रह | चुनाँचे वो दो रोज़ वहाँ रहा |

⁴¹और उसके कलाम के ज़रिये से और भी बहुत सारे ईमान लाए ⁴²और उस औरत से कहा "अब हम तेरे कहने ही से ईमान नहीं लाते क्यूँकि हम ने खुद सुन लिया और जानते हैं कि ये हक़ीक़त में दुनियाँ का मुन्जी है |"

⁴³फिर उन दो दिनों के बा'द वो वहाँ से होकर गलील को गया | ⁴⁴क्यूँकि ईसा' ने खुद गवाही दी कि नबी अपने वतन में इज़ज़त नहीं पाता | ⁴⁵पस जब वो गलील में आया तो गलीलियों ने उसे कुबूल किया, इसलिए कि जितने काम उसने यरूशलीम में 'ईद के वक़्त किए थे, उन्होंने उनको देखा था क्यूँकि वो भी 'ईद में गए थे |

⁴⁶पस फिर वो क़ाना-ए-गलील में आया, जहाँ उसने पानी को मय बनाया था, और बादशह का एक मुलाज़िम था जिसका बेटा कफ़रनहुम में बीमार था | ⁴⁷वो ये सुनकर कि ईसा यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उससे दरख्वास्त करने लगा, कि चल कर मेरे बेटे को शिफ़ा बख़्श क्यूँकि वो मरने को था |

⁴⁸ईसा' ने उससे कहा, "जब तक तुम निशान और 'अजीब काम न देखो, हरगिज़ ईमान न लाओगे ।" ⁴⁹बादशाह के मुलाज़िम ने उससे कहा, "ऐ ख़ुदावन्द ! मेरे बच्चे के मरने से पहले चल ।" ⁵⁰ईसा ने उससे कहा, "जा; तेरा बेटा ज़िन्दा है ।" उस शख्स ने उस बात का यक़ीन किया जो ईसा ने उससे कही और चला गया । ⁵¹वो रास्ते ही में था कि उसके नौकर उसे मिले और कहने लगे, "तेरा बेटा ज़िन्दा है ।" ⁵²उसने उनसे पूछा, "उसे किस वक़्त से आराम होने लगा था ?" उन्होंने कहा, "कल एक बजे उसका बुखार उतर गया ।" ⁵³पस बाप जान गया कि वही वक़्त था जब ईसा' ने उससे कहा, "तेरा बेटा ज़िन्दा है ।" और वो ख़ुद और उसका सारा घराना ईमान लाया । ⁵⁴ये दूसरा करिश्मा है जो ईसा' ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया ।

Chapter 5

¹इन बातों के बा'द यहूदियों की एक 'ईद हुई और ईसा' यरूशलीम को गया | ²यरूशलीम में भेड़ दरवाज़े के पास एक हौज़ है जो 'इब्रानी में बैत हस्दा कहलाता है, और उसके पाँच बरामदे हैं | ³इनमें बहुत से बीमार और अन्ध और लंगड़े और कमज़ोर लोग [जो पानी के हिलने के इंतज़ार में पड़े थे | ⁴क्यूँकि वक्रत पर खुदावन्द का फ़रिश्ता हौज़ पर उतर कर पानी हिलाया करता था | पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता सो शिफ़ा पाता, उसकी जो कुछ बीमारी क्यूँ न हो || ⁵वहाँ एक शख्स था जो अड़तीस बरस से बीमारी में मुब्तिला था | ⁶उसको 'ईसा' ने पड़ा देखा और ये जानकर कि वो बड़ी मुदत से इस हालत में है, उससे कहा, "क्या तू तन्दरुस्त होना चाहता है ?"

⁷उस बीमार ने उसे जवाब दिया, "ऐ खुदावन्द ! मेरे पास कोई आदमी नहीं कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे हौज़ में उतार दे, बल्कि मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है | ⁸'ईसा'ने उससे कहा, "उठ, और अपनी चारपाई उठाकर चल फिर | "

⁹वो शख्स फ़ौरन तन्दरुस्त हो गया, और अपनी चारपाई उठाकर चलने फिरने लगा |

¹⁰वो दिन सबत का था | पस यहूदी अगुवे उससे जिसने शिफा पाई थी कहने लगे, "आज सबत का दिन है, तुझे चारपाई उठाना जायज़ नहीं | ¹¹उसने उन्हें जवाब दिया, "जिसने मुझे तन्दरुस्त किया, उसी ने मुझे फ़रमाया, 'अपनी चारपाई उठाकर चल फिर | ' "

¹²उन्होंने उससे पूछा, "वो कौन शख्स है जिसने तुझ से कहा, 'चारपाई उठाकर चल फिर' ?" ¹³लेकिन जो शिफ़ा पा गया था वो न जानता था कि वो कौन है, क्यूँकि भीड़ की वजह से 'ईसा' वहाँ से टल गया था |

¹⁴इन बातों के बा'द वो ईसा' को हैकल में मिला; उसने उससे कहा, "देख, तू तन्दरुस्त हो गया है ! फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तुझपर इससे भी ज़्यादा आफत आए | ¹⁵उस आदमी ने जाकर यहूदियों को खबर दी कि जिसने मुझे तन्दरुस्त किया वो ईसा' है |

¹⁶इसलिए यहूदी ईसा' को सताने लगे, क्यूँकि वो ऐसे काम सबत के दिन करता था | ¹⁷लेकिन ईसा' ने उनसे कहा, "मेरा आसमानी बाप अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ | ¹⁸इस वजह से यहूदी और भी ज़्यादा उसे क़त्ल करने की कोशिश करने लगे, कि वो न फ़क़त सबत का हुक्म तोड़ता, बल्कि खुदा को ख़ास अपना बाप कह कर अपने आपको खुदा के बराबर बनाता था

¹⁹पस ईसा' ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि बेटा आप से कुछ नहीं कर सकता, सिवा उसके जो बाप को करते देखता है; क्यूँकि जिन कामों को वो करता है, उन्हें बेटा भी उसी तरह करता है | ²⁰इसलिए कि बाप बेटे को 'अज़ीज़ रखता है, और जितने काम खुद करता है उसे दिखाता है; बल्कि इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम ता'ज्जुब करो |

²¹क्यूँकि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और ज़िन्दा करता है, उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है ज़िन्दा करता है | ²²क्यूँकि बाप किसी की 'अदालत भी नहीं करता, बल्कि उसने 'अदालत का सारा काम बेटे के सुपुर्द किया है; ²³ताकि सब लोग बेटे की 'इज़ज़त करें जिस तरह बाप की 'इज़ज़त करते हैं | जो बेटे की 'इज़ज़त नहीं करता, वो बाप की जिसने उसे भेजा 'इज़ज़त नहीं करता |

²⁴मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो मेरा कलाम सुनता और मेरे भेजने वाले का यक़ीन करता है, हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है और उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता बल्कि वो मौत से निकलकर ज़िन्दगी में दाखिल हो गया है | "

²⁵"मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि वो वक्रत आता है बल्कि अभी है, कि मुर्दे खुदा के बेटे की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिएँगे |

²⁶क्यूँकि जिस तरह बाप अपने आप में ज़िन्दगी रखता है, उसी तरह उसने बेटे को भी ये बख़्शा कि अपने आप में ज़िन्दगी रखे | ²⁷बल्कि उसे 'अदालत करने का भी इख़्तियार बख़्शा, इसलिए कि वो आदमज़ाद है |

²⁸इससे ता'अज्जुब न करो; क्यूँकि वो वक्रत आता है कि जितने क़ब्रों में हैं उसकी आवाज़ सुनकर निकलेंगे, ²⁹जिन्होंने नेकी की है ज़िन्दगी की क़यामत, के वास्ते, और जिन्होंने बदी की है सज़ा की क़यामत के वास्ते | "

³⁰"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ 'अदालत करता हूँ और मेरी 'अदालत रास्त है, क्यूँकि मैं अपनी मज़ी नहीं बल्कि अपने भेजने वाले की मज़ी चाहता हूँ | ³¹अगर मैं खुद अपनी गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं | ³²एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी गवाही जो वो देता है सच्ची है |

³³तुम ने यहूदा के पास पयाम भेजा, और उसने सच्चाई की गवाही दी है | ³⁴लेकिन मैं अपनी निस्बत इन्सान की गवाही मंज़ूर नहीं करता, तोभी मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ कि तुम नज़ात पाओ | ³⁵वो जलता और चमकता हुआ चरागा था, और तुम को कुछ 'अस तक उसकी रौशनी में खुश रहना मंज़ूर हुआ |

³⁶लेकिन मेरे पास जो गवाही है वो यहूदा की गवाही से बड़ी है, क्यूँकि जो काम बाप ने मुझे पूरे करने को दिए, या'नी यही काम जो मैं करता हूँ, वो मेरे गवाह हैं कि बाप ने मुझे भेजा है | ³⁷और बाप जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है | तुम ने न कभी उसकी आवाज़ सुनी है और न उसकी सूत्र देखी; ³⁸और उस के कलाम को अपने दिलों में क़ायम नहीं रखते, क्यूँकि जिसे उसने भेजा है उसका यक़ीन नहीं करते |

³⁹तुम किताब-ए-मुक़द्दस में ढूँढ़ते हो, क्यूँकि समझते हो कि उसमें हमेशा की ज़िन्दगी तुम्हें मिलती है, और ये वो है जो मेरी गवाही देती है; ⁴⁰फिर भी तुम ज़िन्दगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते |

⁴¹मैं आदमियों से 'इज़ज़त नहीं चाहता | ⁴²लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुम में खुदा की मुहब्बत नहीं |

⁴³मैं अपने आसमानी बाप के नाम से आया हूँ और तुम मुझे कुबूल नहीं करते, अगर कोई और अपने ही नाम से आए तो उसे कुबूल कर लोगे | ⁴⁴तुम जो एक दूसरे से 'इज़ज़त चाहते हो और वो 'इज़ज़त जो खुदा-ए-वाहिद की तरफ़ से होती है नहीं चाहते, क्यूँकर ईमान ला सकते हो ?

⁴⁵ये न समझो कि मैं बाप से तुम्हारी शिकायत करूँगा; तुम्हारी शिकायत करनेवाला तो है, या'नी मूसा जिस पर तुम ने उम्मीद लगा रखी है | ⁴⁶क्यूँकि अगर तुम मूसा का यक़ीन करते तो मेरा भी यक़ीन करते, इसलिए कि उसने मेरे हक़ में लिखा है | ⁴⁷लेकिन जब तुम उसके लिखे हुए का यक़ीन नहीं करते, तो मेरी बात का क्यूँकर यक़ीन करोगे ?"

Chapter 6

¹इन बातों के बा'द 'ईसा' गलील की झील या'नी तिबरियास की झील के पार गया | ²और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो मो'जिजे वो बीमारों पर करता था उनको वो देखते थे | ³'ईसा' पहाड़ पर चढ़ गया और अपने शागिर्दों के साथ वहाँ बैठा |

⁴और यहूदियों की 'ईद-ए-फ़सह नज़दीक थी | ⁵'पस जब 'ईसा' ने अपनी आँखें उठाकर देखा कि मेरे पास बड़ी भीड़ आ रही है, तो फ़िलिप्पुस से कहा, "हम इनके खाने के लिए कहाँ से रोटियाँ खरीद लें ?" ⁶"मगर उसने उसे आजमाने के लिए ये कहा, क्योंकि वो आप जानता था कि मैं क्या करूँगा |

⁷फ़िलिप्पुस ने उसे जवाब दिया, "दो सौ दिन मज़दूरी की रोटियाँ इनके लिए काफ़ी न होंगी, कि हर एक को थोड़ी सी मिल जाए |" ⁸उसके शागिर्दों में से एक ने, या'नी शमा'ऊन पतरस के भाई अन्धियास ने, उससे कहा, ⁹"यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर ये इतने लोगों में क्या हैं ?"

¹⁰'ईसा' ने कहा, "लोगों को बिठाओ |" और उस जगह बहुत घास थी | पस वो मर्द जो तक्ररीबन पाँच हज़ार थे बैठ गए | ¹¹'ईसा' ने वो रोटियाँ ली और शुक्र करके उन्हें जो बैठे थे बाँट दीं, और इसी तरह मछलियों में से जिस क़दर चाहते थे बाँट दिया | ¹²जब वो सेर हो चुके तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, "बचे हुए बे इस्तेमाल खाने को जमा' करो, ताकि कुछ ज़ायाने न हो |"

¹³चुनाँचे उन्होंने जमा' किया, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे बारह टोक़रियाँ भरीं ¹⁴'पस जो मो'जिज़ा उसने दिखाया, वो लोग उसे देखकर कहने लगे, "जो नबी दुनियाँ में आने वाला था हक़ीक़त में यही है |" ¹⁵'पस 'ईसा' ये मा'लूम करके कि वो आकर मुझे बादशाह बनाने के लिए पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया |

¹⁶फिर जब शाम हुई तो उसके शागिर्द झील के किनारे गए, ¹⁷और नाव में बैठकर झील के पार कफ़रनहूम को चले जाते थे | उस वक़्त अन्धेरा हो गया था, और 'ईसा' अभी तक उनके पास न आया था | ¹⁸और आँधी की वजह से झील में मौँजें उठने लगीं |

¹⁹'पस जब वो खेते-खेते तीन-चार मील के क़रीब निकल गए, तो उन्होंने 'ईसा' को झील पर चलते और नाव के नज़दीक आते देखा और डर गए | ²⁰मगर उसने उनसे कहा, "मैं हूँ, डरो मत |" ²¹'पस वो उसे नाव में चढ़ा लेने को राज़ी हुए, और फ़ौरन वो नाव उस जगह जा पहुँची जहाँ वो जाते थे |

²²दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी थी, ये देखा कि यहाँ एक के सिवा और कोई छोटी नाव न थी; और 'ईसा' अपने शागिर्दों के साथ नाव पर सवार न हुआ था, बल्कि सिर्फ़ उसके शागिर्द चले गए थे | ²³(लेकिन कुछ छोटी नावें तिबरियास से उस जगह के नज़दीक आईं, जहाँ उन्होंने खुदावन्द के शुक्र करने के बा'द रोटी खाई थी |)

²⁴'पस जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न 'ईसा' है न उसके शागिर्द, तो वो खुद छोटी नावों में बैठकर 'ईसा' की तलाश में कफ़रनहूम को आए | ²⁵और झील के पार उससे मिलकर कहा, "ऐ रब्बी ! तू यहाँ कब आया ?"

²⁶'ईसा' ने उनके जवाब में कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते कि मो'जिजे देखे, बल्कि इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर सेर हुए |" ²⁷फ़ानी खुराक के लिए मेहनत न करो, बल्कि उस खुराक के लिए जो हमेशा की ज़िन्दगी तक बाक़ी रहती है जिसे इब्न-ए-आदम तुम्हें देगा; क्योंकि बाप या'नी खुदा ने उसी पर मुहर की है |"

²⁸'पस उन्होंने उससे कहा, "हम क्या करें ताकि खुदा के काम अन्जाम दें ?" ²⁹'ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "खुदा का काम ये है कि जिसे उसने भेजा है उस पर ईमान लाओ |"

³⁰'पस उन्होंने उससे कहा, "फिर तू कौन सा निशान दिखाता है, ताकि हम देखकर तेरा यक़ीन करें ? तू कौन सा काम करता है ?" ³¹हमारे बाप-दादा ने वीराने में मन्ना खाया, चुनाँचे लिखा है, 'उसने उन्हें खाने के लिए आसमान से रोटी दी |' "

³²'ईसा' ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि मूसा ने तो वो रोटी आसमान से तुम्हें न दी, लेकिन मेरा बाप तुम्हें आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है |" ³³क्योंकि खुदा की रोटी वो है जो आसमान से उतरकर दुनियाँ को ज़िन्दगी बख़्शती है | ³⁴उन्होंने उससे कहा, "ऐ खुदावन्द ! ये रोटी हम को हमेशा दिया कर |"

³⁵'ईसा' ने उनसे कहा, "ज़िन्दगी की रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आए वो हरगिज़ भूखा न होगा, और जो मुझ पर ईमान लाए वो कभी प्यासा ना होगा |" ³⁶लेकिन मैंने तुम से कहा कि तुम ने मुझे देख लिया है फिर भी ईमान नहीं लाते | ³⁷जो कुछ बाप मुझे देता है मेरे पास आ जाएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा |

³⁸क्योंकि मैं आसमान से इसलिए नहीं उतरा हूँ कि अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ 'अमल करूँ, बल्कि इसलिए कि अपने भेजनेवाले की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ 'अमल करूँ | ³⁹और मेरे भेजनेवाले की मर्ज़ी ये है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है मैं उसमें से कुछ खो न दूँ, बल्कि उसे आखिरी दिन फिर ज़िन्दा करूँ | ⁴⁰क्योंकि मेरे बाप की मर्ज़ी ये है, कि जो कोई बेटे को देखे और उस पर ईमान लाए, और हमेशा की ज़िन्दगी पाए और मैं उसे आखिरी दिन फिर ज़िन्दा करूँ |"

⁴¹'पस यहूदी उस पर बुदबुदाने लगे, इसलिए कि उसने कहा, था, "जो रोटी आसमान से उतरी वो मैं हूँ |" ⁴²और उन्होंने कहा, "क्या ये यूसूफ़ का बेटा 'ईसा' नहीं, जिसके बाप और माँ को हम जानते हैं? अब ये क्योंकर कहता है कि मैं आसमान से उतरा हूँ?"

⁴³'ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "आपस में न बुदबुदाओ |" ⁴⁴कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि बाप जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले, और मैं उसे आखिरी दिन फिर ज़िन्दा करूँगा | ⁴⁵नबियों के सहीफ़ों में ये लिखा है : 'वो सब खुदा से ता'लीम पाये हुए लोग होंगे |' जिस किसी ने बाप से सुना और सीखा है वो मेरे पास आता है -

⁴⁶ये नहीं कि किसी ने बाप को देखा है, मगर जो खुदा की तरफ़ से है उसी ने बाप को देखा है | ⁴⁷मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो ईमान लाता है हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है |

⁴⁸ज़िन्दगी की रोटी मैं हूँ | ⁴⁹तुम्हारे बाप-दादा ने वीराने में मन्ना खाया और मर गए |

⁵⁰ये वो रोटी है कि जो आसमान से उतरती है, ताकि आदमी उसमें से खाए और न मरे। ⁵¹मैं हूँ वो ज़िन्दगी की रोटी जो आसमान से उतरी। अगर कोई इस रोटी में से खाए तो हमेशा तक ज़िन्दा रहेगा, बल्कि जो रोटी मैं दुनियाँ की ज़िन्दगी के लिए दूँगा वो मेरा गोश्त है।"

⁵²पस यहूदी ये कहकर आपस में झगड़ने लगे, "ये शख्स आपना गोश्त हमें क्यूँकर खाने को दे सकता है?" ⁵³ईसा' ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक तुम इब्न-ए-आदम का गोश्त न खाओ और उसका का खून न पियो, तुम में ज़िन्दगी नहीं।"

⁵⁴जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है, हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है; और मैं उसे आखिरी दिन फिर ज़िन्दा करूँगा। ⁵⁵क्यूँकि मेरा गोश्त हकीकत में खाने की चीज़ और मेरा खून हकीकत में पीनी की चीज़ है। ⁵⁶जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है, वो मुझ में क़ायम रहता है और मैं उसमें।

⁵⁷जिस तरह ज़िन्दा बाप ने मुझे भेजा, और मैं बाप के ज़रिये से ज़िन्दा हूँ, इसी तरह वो भी जो मुझे खाएगा मेरे ज़रिये से ज़िन्दा रहेगा। ⁵⁸जो रोटी आसमान से उतरी यही है, बाप-दादा की तरह नहीं कि खाया और मर गए; जो ये रोटी खाएगा वो हमेशा तक ज़िन्दा रहेगा। ⁵⁹ये बातें उसने कफ़रनहूम के एक 'इबादतखाने में ता'लीम देते वक़्त कहीं।

⁶⁰इसलिए उसके शागिर्दों में से बहुतों ने सुनकर कहा, "ये कलाम नागवार है, इसे कौन सुन सकता है?" ⁶¹ईसा' ने अपने जी में जानकर कि मेरे शागिर्द आपस में इस बात पर बुदबुदाते हैं, उनसे कहा, "क्या तुम इस बात से ठोकर खाते हो?"

⁶²अगर तुम इब्न-ए-आदम को ऊपर जाते देखोगे, जहाँ वो पहले था तो क्या होगा? ⁶³ज़िन्दा करने वाली तो रूह है, जिस्म से कुछ फ़ायदा नहीं; जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं, वो रूह हैं और ज़िन्दगी भी हैं।

⁶⁴मगर तुम में से कुछ ऐसे हैं जो ईमान नहीं लाए। "क्यूँकि ईसा' शुरू' से जानता था कि जो ईमान नहीं लाते वो कौन हैं, और कौन मुझे पकड़वाएगा। ⁶⁵फिर उसने कहा, "इसी लिए मैंने तुम से कहा था कि मेरे पास कोई नहीं आ सकता जब तक बाप की तरफ़ से उसे ये तौफ़ीक़ न दी जाए।"

⁶⁶इस पर उसके शागिर्दों में से बहुत से लोग उल्टे फिर गए और इसके साथ न रहे। ⁶⁷पस ईसा' ने उन बारह से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" ⁶⁸शमा'ऊन पतरस ने उसे जवाब दिया, "ऐ खुदावन्द! हम किसके पास जाएँ? हमेशा की ज़िन्दगी की बातें तो तेरे ही पास हैं?" ⁶⁹और हम ईमान लाए और जान गए हैं कि, खुदा का कुदूस तू ही है।"

⁷⁰ईसा' ने उन्हें जवाब दिया, "क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुन लिया? और तुम में से एक शख्स शैतान है।" ⁷¹उसने ये शमा'ऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की निस्बत कहा, क्यूँकि यही जो उन बारह में से था उसे पकड़वाने को था।

Chapter 7

¹इन बातों के बा'द 'ईसा' गलील में फिरता रहा क्योंकि यहूदिया में फिरना न चाहता था, इसलिये कि यहूदी अगुवे उसके क्रल की कोशिश में थे² और यहूदियों की 'ईद-ए-खियाम नज़दीक थी |

³पस उसके भाइयों ने उससे कहा, "यहाँ से खाना होकर यहूदिया को चला जा, ताकि जो काम तू करता है उन्हें तेरे शागिर्द भी देखें | "⁴क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मशहूर होना चाहे और छिपकर काम करे | अगर तू ये काम करता है, तो अपने आपको दुनियाँ पर ज़ाहिर कर | "

⁵क्योंकि उसके भाई भी उस पर ईमान न लाए थे | ⁶पस 'ईसा' ने उनसे कहा, "मेरा तो अभी वक़्त नहीं आया, मगर तुम्हारे लिए सब वक़्त है | "⁷दुनियाँ तुम से 'दुश्मनी नहीं रख सकती लेकिन मुझ से रखती है, क्योंकि मैं उस पर गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं |

⁸तुम 'ईद में जाओ; मैं अभी इस 'ईद में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा वक़्त पूरा नहीं हुआ | "⁹ये बातें उनसे कहकर वो गलील ही में रहा |

¹⁰लेकिन जब उसके भाई 'ईद में चले गए उस वक़्त वो भी गया, खुले तौर पर नहीं बल्कि पोशीदा | ¹¹पस यहूदी उसे 'ईद में ये कहकर ढूँढने लगे, "वो कहाँ है?"

¹²और लोगों में उसके बारे में चुपके-चुपके बहुत सी गुप्तगू हुई; कुछ कहते थे, "वो नेक है | " और कुछ कहते थे, "नहीं बल्कि वो लोगों को गुमराह करता है | "¹³तो भी यहूदियों के डर से कोई शख्स उसके बारे में साफ़ साफ़ न कहता था |

¹⁴जब 'ईद के आधे दिन गुज़र गए, तो 'ईसा' हैकल में जाकर ता'लीम देने लगा | ¹⁵पस यहूदियों ने ता'ज्जुब करके कहा, "इसको बग़ैर पढ़े क्यूँकर 'इल्म आ गया ? "¹⁶'ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "मेरी ता'लीम मेरी नहीं, बल्कि मेरे भेजने वाले की है | "

¹⁷अगर कोई उसकी मर्ज़ी पर चलना चाहे, तो इस ता'लीम की वजह से जान जाएगा कि खुदा की तरफ़ से है या मैं अपनी तरफ़ से कहता हूँ | ¹⁸जो अपनी तरफ़ से कुछ कहता है, वो अपनी 'इज़ज़त चाहता है; लेकिन जो अपने भेजनेवाले की 'इज़ज़त चाहता है, वो सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं |

¹⁹क्या मूसा ने तुम्हें शरी'अत नहीं दी? तो भी तुम में शरी'अत पर कोई 'अमल नहीं करता | तुम क्यूँ मेरे क्रल की कोशिश में हो?"²⁰लोगों ने जवाब दिया, "तुझ में तो बदरूह है ! कौन तेरे क्रल की कोशिश में है ? "

²¹'ईस' ने जवाब में उससे कहा, "मैंने एक काम किया, और तुम सब ताअ'ज्जुब करते हो | "²²इस बारे में मूसा ने तुम्हें खतने का हुक्म दिया है (हालाँकि वो मूसा की तरफ़ से नहीं, बल्कि बाप-दादा से चला आया है), और तुम सबत के दिन आदमी का खतना करते हो |

²³जब सबत को आदमी का खतना किया जाता है ताकि मूसा की शरी'अत का हुक्म न टूटे; तो क्या मुझ से इसलिए नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी को बिलकुल तन्दरुस्त कर दिया?"²⁴ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ फैसला न करो, बल्कि इंसाफ़ से फैसला करो |

²⁵तब कुछ यरूशलीमी कहने लगे, "क्या ये वही नहीं जिसके क्रल की कोशिश हो रही है?"²⁶लेकिन देखो, ये साफ़-साफ़ कहता है और वो इससे कुछ नहीं कहने | क्या हो सकता है कि सरदारों से सच जान लिया कि मसीह यही है?"²⁷इसको तो हम जानते हैं कि कहाँ का है, मगर मसीह जब आएगा तो कोई न जानेगा कि वो कहाँ का है | "

²⁸'पस 'ईसा' ने हैकल में ता'लीम देते वक़्त पुकार कर कहा, "तुम मुझे भी जानते हो, और ये भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ; और मैं आप से नहीं आया, मगर जिसने मुझे भेजा है वो सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते | "²⁹मैं उसे जानता हूँ, इसलिए कि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है | "

³⁰पस वो उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे, लेकिन इसलिए कि उसका वक़्त अभी न आया था, किसी ने उस पर हाथ न डाला | ³¹मगर भीड़ में से बहुत सारे उस पर ईमान लाए, और कहने लगे, "मसीह जब आएगा, तो क्या इनसे ज़्यादा मो'जिज़े दिखाएगा ? "³²जो इसने दिखाए | ³³फ़रीसियों ने लोगों को सुना कि उसके बारे में चुपके-चुपके ये बातें करते हैं, पस सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने उसे पकड़ने को प्यादे भेजे |

³³'ईसा' ने कहा, "मैं और थोड़े दिनों तक तुम्हारे पास हूँ, फिर अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा | "³⁴तुम मुझे ढूँढोगे मगर न पाओगे, और जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते | "

³⁵हमारे यहूदियों ने आपस में कहा, "ये कहाँ जाएगा कि 'हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास जाएगा जो यूनानियों में अक्सर रहते हैं, और यूनानियों को ता'लीम देगा?"³⁶ये क्या बात है जो उसने कही, 'तुम मुझे तलाश करोगे मगर न पाओगे, 'और, 'जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते' ? "

³⁷फिर 'ईद के आखिरी दिन जो खास दिन है, 'ईसा' खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिये | "³⁸जो मुझ पर ईमान लाएगा उसके अन्दर से, जैसा कि किताब-ए-मुक़द्दस में आया है, ज़िन्दगी के पानी की नदियाँ जारी होंगी | "

³⁹उसने ये बात उस रूह के बारे में कही, जिसे वो पाने को थे जो उस पर ईमान लाए; क्योंकि रूह अब तक नाज़िल न हुई थी, इसलिए कि 'ईसा' अभी अपने जलाल को न पहुँचा था |

⁴⁰पस भीड़ में से कुछ ने ये बातें सुनकर कहा, "बेशक यही वो नबी है | "⁴¹औरों ने कहा, "ये मसीह है | " और कुछ ने कहा, "क्यूँ? क्या मसीह गलील से आएगा?"⁴²क्या किताब-ए-मुक़द्दस में से नहीं आया, कि मसीह दाऊद की नस्ल और बैतलहम के गाँव से आएगा, जहाँ का दाऊद था?"

⁴³पस लोगों में उसके बारे में इख़्तिलाफ़ हुआ | ⁴⁴और उनमें से कुछ उसको पकड़ना चाहते थे, मगर किसी ने उस पर हाथ न डाला |

⁴⁵पस प्यादे सरदार काहिनों और फ़रीसियों के पास आए; और उन्होंने उनसे कहा, "तुम उसे क्यूँ न लाए?"⁴⁶प्यादों ने जवाब दिया कि, "इन्सान ने कभी ऐसा कलाम नहीं किया | "

⁴⁷फ़रीसियों ने उन्हें जवाब दिया, "क्या तुम भी गुमराह हो गए?"⁴⁸भला इख़्तियार वालों या फ़रीसियों में से भी कोई उस पर ईमान लाया?"⁴⁹मगर ये 'आम लोग जो शरी'अत से वाफ़िक़ नहीं ला'नती हैं | "

⁵⁰नीकुदेमस ने, जो पहले उसके पास आया था, उनसे कहा, ⁵¹" क्या हमारी शरी'अत किसी शख्स को मुजरिम ठहराती है, जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वो क्या करता है ? "⁵²उन्होंने उसके जवाब में कहा, "क्या तू भी गलील का है? तलाश कर और देख, कि गलील में से कोई नबी नाज़िल नहीं होने का | "

⁵³[फिर उनमें से हर एक अपने घर चला गया |

Chapter 8

¹तब ईसा' जैतून के पहाड़ पर गया | ²दूसरे दिन सुबह सवेरे ही वो फिर हैकल में आया, और सब लोग उसके पास आए और वो बैठकर उन्हें ता'लीम देने लगा |

³और फ़क्रीह और फ़रीसी एक 'औरत को लाए जो ज़िना में पकड़ी गई थी, और उसे बीच में खड़ा करके ईसा' से कहा,

⁴"ऐ उस्ताद! ये 'औरत ज़िना में 'ऐन वक़्त पकड़ी गई है | ⁵तौरते में मूसा ने हम को हुक्म दिया है, कि ऐसी 'औरतों पर पथराव करें | पस तू इस 'औरत के बारे में क्या कहता है?" ⁶उन्होंने उसे आज़माने के लिए ये कहा, "ताकि उस पर इज़ाम लगाने की कोई वजह निकालें | मगर ईसा' झुक कर उंगली से ज़मीन पर लिखने लगा | "

⁷जब वो उससे सवाल करते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, "जो तुम में बेगुनाह हो, वही पहले उसको पत्थर मारे | " ⁸और फिर झुककर ज़मीन पर उंगली से लिखने लगा |

⁹वो ये सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक-एक करके निकल गए, और ईसा ' अकेला रह गया और 'औरत वहीं बीच में रह गई | ¹⁰ईसा ' ने सीधे होकर उससे कहा, "ऐ 'औरत, ये लोग कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर सज़ा का हुक्म नहीं लगाया?" ¹¹उसने कहा, "ऐ खुदावन्द ! किसी ने नहीं | "ईसा ' ने कहा, "मैं भी तुझ पर सज़ा का हुक्म नहीं लगाता; जा, फिर गुनाह न करना | "

¹²ईसा ' ने फिर उनसे मुखातिब होकर कहा, "दुनियाँ का नूर मैं हूँ; जो मेरी पैरवी करेगा वो अन्धेरे में न चलेगा, बल्कि ज़िन्दगी का नूर पाएगा | " ¹³फ़रीसियों ने उससे कहा, "तू अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही सच्ची नहीं | "

¹⁴ईसा' ने जवाब में उनसे कहा, "अगरचे मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तो भी मेरी गवाही सच्ची है; क्योंकि मुझे मा'लूम है कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ | " ¹⁵तुम जिस के मुताबिक़ फ़ैसला करते हो, मैं किसी का फ़ैसला नहीं करता | ¹⁶और अगर मैं फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला सच है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, बल्कि मैं हूँ और मेरा बाप है जिसने मुझे भेजा है |

¹⁷और तुम्हारी तौरते में भी लिखा है, कि दो आदमियों की गवाही मिलकर सच्ची होती है | ¹⁸एक मैं खुद अपनी गवाही देता हूँ, और एक बाप जिसने मुझे भेजा मेरी गवाही देता है | "

¹⁹उन्होंने उससे कहा, "तेरा बाप कहाँ है?" ईसा' ने जवाब दिया, "न तुम मुझे जानते हो न मेरे बाप को, अगर मुझे जानते तो मेरे बाप को भी जानते | " ²⁰उसने हैकल में ता'लीम देते वक़्त ये बातें बैत-उल-माल में कहीं; और किसी ने इसको न पकड़ा, क्योंकि अभी तक उसका वक़्त न आया था |

²¹उसने फिर उनसे कहा, "मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँढोगे और अपने गुनाह में मरोगे | " ²²पस यहूदियों ने कहा, "क्या वो अपने आपको मार डालेगा, जो कहता है, 'जहाँ मैं जाता हूँ, तुम नहीं आ सकते'?"

²³उसने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूँ, तुम दुनियाँ के हो मैं दुनियाँ का नहीं हूँ | " ²⁴इसलिए मैंने तुम से ये कहा, कि अपने गुनाहों में मरोगे; क्योंकि अगर तुम ईमान न लाओगे कि मैं वही हूँ, तो अपने गुनाहों में मरोगे | "

²⁵उन्होंने उस से कहा, "तू कौन है? ईसा' ने उनसे कहा, "वही हूँ जो शुरू' से तुम से कहता आया हूँ | " ²⁶मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहना है और फ़ैसला करना है; लेकिन जिसने मुझे भेजा वो सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना वही दुनियाँ से कहता हूँ | " ²⁷वो न समझे कि हम से बाप के बारे में कहता है |

²⁸पस ईसा' ने कहा, "जब तुम इब्न-ए-आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता, बल्कि जिस तरह बाप ने मुझे सिखाया उसी तरह ये बातें कहता हूँ | " ²⁹और जिसने मुझे भेजा वो मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ जो उसे पसंद आते हैं | " ³⁰जब ईसा ये बातें कह रहा था तो बहुत से लोग उस पर ईमान लाए |

³¹पस ईसा' ने उन यहूदियों से कहा, जिन्होंने उसका यक़ीन किया था, "अगर तुम कलाम पर क़ायम रहोगे, तो हक़ीक़त में मेरे शागिर्द ठहरोगे | " ³²और सच्चाई को जानोगे और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी | " ³³उन्होंने उसे जवाब दिया, "हम तो अब्राहम की नस्ल से हैं, और कभी किसी की गुलामी में नहीं रहे | तू क्यूँकर कहता है कि तुम आज़ाद किए जाओगे?"

³⁴ईसा' ने उन्हें जवाब दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई गुनाह करता है गुनाह का गुलाम है | " ³⁵और गुलाम हमेशा तक घर में नहीं रहता, बेटा हमेशा रहता है | ³⁶पस अगर बेटा तुम्हें आज़ाद करेगा, तो तुम वाक़'ई आज़ाद होगे |

³⁷मैं जानता हूँ तुम अब्राहम की नस्ल से हो, तभी मेरे क़त्ल की कोशिश में हो क्यूँकि मेरा कलाम तुम्हारे दिल में जगह नहीं पाता | ³⁸मैंने जो अपने बाप के यहॉ देखा है वो कहता हूँ, और तुम ने जो अपने बाप से सुना वो करते हो | "

³⁹उन्होंने जवाब में उससे कहा, "हमारा बाप तो अब्राहम है | ईसा' ने उनसे कहा, "अगर तुम अब्राहम के फ़र्ज़न्द होते तो अब्राहम के से काम करते | " ⁴⁰लेकिन अब तुम मुझ जैसे शख्स को क़त्ल की कोशिश में हो, जिसने तुम्हें वही हक़ बात बताई जो खुदा से सुनी; अब्राहम ने तो ये नहीं किया था | ⁴¹तुम अपने बाप के से काम करते हो | "उन्होंने उससे कहा, "हम हराम से पैदा नहीं हुए | हमारा एक बाप है या'नी खुदा | "

⁴²ईसा' ने उनसे कहा, "अगर खुदा तुम्हारा होता, तो तुम मुझ से मुहब्बत रखते; इसलिए कि मैं खुदा में से निकला और आया हूँ, क्यूँकि मैं आप से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा | " ⁴³तुम मेरी बातें क्यूँ नहीं समझते? इसलिए कि मेरा कलाम सुन नहीं सकते | ⁴⁴तुम अपने बाप इब्लीस से हो और अपने बाप की ख्वाहिशों को पूरा करना चाहते हो | वो शुरू' ही से खूनी है और सच्चाई पर क़ाइम नहीं रहा, क्यूँकि उसमें सच्चाई नहीं है | जब वो झूठ बोलता है तो अपनी ही सी कहता है, क्यूँकि वो झूठा है बल्कि झूट का बाप है |

⁴⁵लेकिन मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिए तुम मेरा यक़ीन नहीं करते | ⁴⁶तुम में से कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है ? अगर मैं सच बोलता हूँ, तो मेरा यक़ीन क्यूँ नहीं करते? ⁴⁷जो खुदा से होता है वो खुदा की बातें सुनता है; तुम इसलिए नहीं सुनते कि खुदा से नहीं हो | "

⁴⁸यहूदियों ने जवाब में उससे कहा, "क्या हम सच नहीं कहते, कि तू सामरी है और तुझ में बदरूह है | " ⁴⁹ईसा ' ने जवाब दिया, "मुझ में बदरूह नहीं; मगर मैं अपने बाप की 'इज़ज़त करता हूँ, और तुम मेरी बे'इज़ज़ती करते हो | "

⁵⁰लेकिन मैं अपनी तारीफ़ नहीं चाहता; हाँ, एक है जो उसे चाहता और फ़ैसला करता है।⁵¹ मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर कोई इन्सान मेरे कलाम पर 'अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत को न देखेगा।"

⁵²यहूदियों ने उससे कहा, "अब हम ने जान लिया कि तुझ में बदरूह है! अब्रहाम मर गया और नबी मर गए, मगर तू कहता है, 'अगर कोई मेरे कलाम पर 'अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत का मज़ा न चखेगा।'⁵³ हमारे बुजुर्ग अब्रहाम जो मर गये, क्या तू उससे बड़ा है? और नबी भी मर गए।' तू अपने आपको क्या ठहराता है?"

⁵⁴ईसा' ने जवाब दिया, "अगर मैं आप अपनी बड़ाई करूँ, तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं; लेकिन मेरी बड़ाई मेरा बाप करता है, जिसे तुम कहते हो कि हमारा खुदा है।⁵⁵ तुम ने उसे नहीं जाना, लेकिन मैं उसे जानता हूँ; और अगर कहूँ कि उसे नहीं जानता, तो तुम्हारी तरह झूठा बनूँगा। मगर मैं उसे जानता और उसके कलाम पर 'अमल करता हूँ।'⁵⁶ तुम्हारा बाप अब्रहाम मेरा दिन देखने की उम्मीद पर बहुत खुश था, चुनांचे उसने देखा और खुश हुआ।"

⁵⁷यहूदियों ने उससे कहा, "तेरी 'उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं, फिर क्या तूने अब्रहाम को देखा है?"⁵⁸ ईसा' ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि पहले उससे कि अब्रहाम पैदा हुआ मैं हूँ।"⁵⁹ पस उन्होंने उसे मारने को पत्थर उठाए, मगर ईसा' छिपकर हैकल से निकल गया।

Chapter 9

¹'चलते चलते ईसा' ने एक आदमी को देखा जो पैदाइशी अंधा था।²उस के शागिर्दों ने उस से पूछा, "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इस का कोई गुनाह है या इस के वालिदेन का?"

³'ईसा' ने जवाब दिया, "न इस का कोई गुनाह है और न इस के वालिदेन का। यह इस लिए हुआ कि इस की ज़िन्दगी में खुदा का काम ज़ाहिर हो जाए।⁴अभी दिन है। ज़रूरी है कि हम जितनी देर तक दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आने वाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा।

⁵लेकिन जितनी देर तक मैं दुनियाँ में हूँ उतनी देर तक मैं दुनियाँ का नूर हूँ।"

⁶यह कह कर उस ने ज़मीन पर थूक कर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी।⁷उस ने उस से कहा, "जा, शिलोख के हौज़ में नहा ले।" (शिलोख का मतलब 'भेजा हुआ' है।) अंधे ने जा कर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

⁸उस के साथी और वह जिन्होंने ने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे, "क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?"⁹कुछ ने कहा, "हाँ, वही है।"

¹⁰उन्होंने उस से सवाल किया, "तेरी आँखें किस तरह सही हुई?"¹¹उस ने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा' कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उस ने मुझे कहा, 'शिलोख के हौज़ पर जा और नहाले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें सही हो गई।"¹²उन्होंने पूछा, "वह कहाँ है? उसने कहा, मैं नहीं जानता।"

¹³तब वह सही हुए अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए।¹⁴जिस दिन ईसा' ने मिट्टी सान कर उस की आँखों को सही किया था वह सबत का दिन था।¹⁵इस लिए फ़रीसियों ने भी उस से पूछ-ताछ की कि उसे किस तरह आँख की रौशनी मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, "उस ने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैं ने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"

¹⁶फ़रीसियों में से कुछ ने कहा, "यह शख्स खुदा की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।"¹⁷फिर वह दुबारा उस आदमी से मुखातिब हुए जो पहले अंधा था, "तू खुद उस के बारे में क्या कहता है? उस ने तो तेरी ही आँखों को सही किया है।"¹⁸यहूदी अगुवों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह सच में अंधा था और फिर सही हो गया है। इस लिए उन्होंने उस के वालिदेन को बुलाया।

¹⁹उन्होंने उन से पूछा, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिस के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?"²⁰उस के वालिदेन ने जवाब दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था।²¹लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किस ने इस की आँखों को सही किया है। इस से खुद पता करें, यह बालिग़ है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है।"

²²उस के वालिदेन ने यह इस लिए कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा' को मसीह़ क़रार दे उसे यहूदी जमाअत से निकाल दिया जाए।²³यही वजह थी कि उस के वालिदेन ने कहा था, "यह बालिग़ है, इस से खुद पूछ लें।"

²⁴एक बार फिर उन्होंने ने सही हुए अंधे को बुलाया, "खुदा को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।"²⁵आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ।"

²⁶फिर उन्होंने ने उस से सवाल किया, "उस ने तेरे साथ क्या किया? उस ने किस तरह तेरी आँखों को सही कर दिया?"²⁷उस ने जवाब दिया, "मैं पहले भी आप को बता चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस के शागिर्द बनना चाहते हैं?"²⁸इस पर उन्होंने ने उसे बुरा-भला कहा, "तू ही उस का शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं।"²⁹हम तो जानते हैं कि खुदा ने मूसा से बात की है, लेकिन इस के बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।"

³⁰आदमी ने जवाब दिया, "अजीब बात है, उस ने मेरी आँखों को शिफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है।"³¹हम जानते हैं कि खुदा गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो उस का ख़ौफ़ मानता और उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलता है।

³²शुरू ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को सही कर दिया हो।³³अगर यह आदमी खुदा की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।"³⁴जवाब में उन्होंने ने उसे बताया, "तू जो गुनाह की हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?" यह कह कर उन्होंने ने उसे जमाअत में से निकाल दिया।

³⁵जब ईसा' को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उस को मिला और पूछा, "क्या तू इब्न-ए-आदम पर ईमान रखता है?"³⁶उस ने कहा, "खुदावन्द, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।"³⁷ईसा' ने जवाब दिया, "तू ने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझ से बात कर रहा है।"³⁸उस ने कहा, "खुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ" और उसे सज्दा किया।

³⁹ईसा' ने कहा, "मैं अदालत करने के लिए इस दुनियाँ में आया हूँ, इस लिए कि अंधे देखें और देखने वाले अंधे हो जाएँ।"⁴⁰कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर पूछने लगे, "अच्छा, हम भी अंधे हैं?"⁴¹ईसा' ने उन से कहा, "अगर तुम अंधे होते तो तुम गुनेहगार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह क़ाइम रहता है।

Chapter 10

¹"मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाखिल नहीं होता बल्कि किसी ओर से कूद कर अन्दर घुस आता है वह चोर और डाकू है।²लेकिन जो दरवाज़े से दाखिल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है।

³चौकीदार उस के लिए दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम ले कर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है।

⁴अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उस की आवाज़ पहचानती हैं।

⁵लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उस से भाग जाएँगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं पहचानतीं।"⁶'ईसा' ने उन्हें यह मिसाल पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

⁷इस लिए 'ईसा' दुबारा इस पर बात करने लगा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ।⁸जितने भी मुझ से पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी।

⁹मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रिए अन्दर आए उसे नज़ात मिलेगी। वह आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा।¹⁰चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, ज़बह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ कि वह ज़िन्दगी पाएँ, बल्कि कसत की ज़िन्दगी पाएँ।

¹¹अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है।¹²मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उस की अपनी नहीं होतीं। इस लिए जूँ ही कोई भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाकियों को इधर उधर कर देता है।¹³वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िक्र नहीं करता।

¹⁴अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं,¹⁵बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ।¹⁶मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। ज़रूरी है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।

¹⁷मेरा बाप मुझे इस लिए मुहब्बत करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ।¹⁸कोई मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।"

¹⁹इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।²⁰बहुतों ने कहा, "यह बदरूह के क़ब्ज़े में है, यह दीवाना है। इस की क्यूँ सुनें!"²¹लेकिन औरों ने कहा, "यह ऐसी बातें नहीं हैं जो इन्सान बदरूह के क़ब्ज़े में हो। क्या बदरूह अंधों की आँखें सही कर सकती हैं?"

²²सर्दियों का मौसम था और ईसा बैत-उल-मुकद्दस की खास 'ईद तज्दीद के दौरान यरूशलम में था।²³वह बैत-उल-मुकद्दस के उस बरामदे में टहेल रहा था जिस का नाम सुलेमान का बरामदा था।²⁴यहूदी उसे घेर कर कहने लगे, "आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।"

²⁵'ईसा' ने जवाब दिया, "मैं तुम को बता चुका हूँ, लेकिन तुम को यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं।²⁶लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।

²⁷मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं।²⁸मैं उन्हें हमेशा की ज़िन्दगी देता हूँ, इस लिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा,

²⁹क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सपुर्द किया है और वही सब से बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता।³⁰मैं और बाप एक हैं।"³¹यह सुन कर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि 'ईसा' पर पथराव करें।

³²उस ने उन से कहा, "मैं ने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई ख़ुदाई करिश्मे दिखाए हैं। तुम मुझे इन में से किस करिश्मे की वजह से पथराव कर रहे हो?"³³यहूदियों ने जवाब दिया, "हम तुम पर किसी अच्छे काम की वजह से पथराव नहीं कर रहे बल्कि कुफ़्र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इन्सान हो ख़ुदा होने का दावा करते हो।"

³⁴'ईसा' ने कहा, "क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि ख़ुदा ने फ़रमाया, 'तुम ख़ुदा हो'?"³⁵उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम-ए-मुकद्दस को रद नहीं किया जा सकता।³⁶तो फिर तुम कुफ़्र बकने की बात क्यूँ करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं ख़ुदा का फ़र्ज़न्द हूँ? आखिर बाप ने ख़ुद मुझे खास करके दुनियाँ में भेजा है।

³⁷अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो।³⁸लेकिन अगर उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम से कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ।"³⁹एक बार फिर उन्होंने ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से निकल गया।

⁴⁰फिर 'ईसा' दुबारा दरया-ए-यर्दन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहून्ना शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा।⁴¹बहुत से लोग उस के पास आते रहे। उन्होंने ने कहा, "यहून्ना ने कभी कोई ख़ुदाई करिश्मा न दिखाया, लेकिन जो कुछ उस ने इस के बारे में बयान किया, वह बिल्कुल सही निकला।"⁴²और वहाँ बहुत से लोग 'ईसा' पर ईमान लाए।

Chapter 11

¹उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था।²यह वही मरियम थी जिस ने बाद में खुदावन्द पर खुशबू डाल कर उस के पैर अपने बालों से खुशक किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था।

³चुनाँचे बहनों ने ईसा' को खबर दी, "खुदावन्द, जिसे आप मुहब्बत करते हैं वह बीमार है।"⁴जब ईसा' को यह खबर मिली तो उस ने कहा, "इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह खुदा के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इस से खुदा के फ़र्ज़न्द को जलाल मिले।"

⁵ईसा' मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था।⁶तो भी वह लाज़र के बारे में खबर मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा।⁷फिर उस ने अपने शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।"

⁸शागिर्दों ने एतिराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आप पर पथराव करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?"⁹ईसा' ने जवाब दिया, "क्या दिन में रोशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख्स दिन के वक़्त चलता फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनियाँ की रोशनी के ज़रिए देख सकता है।

¹⁰लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उस के पास रोशनी नहीं है।"¹¹फिर उस ने कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।"

¹²शागिर्दों ने कहा, "खुदावन्द, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।"¹³उन का खयाल था कि ईसा' लाज़र की दुनियावी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हकीकत में वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था।¹⁴इस लिए उस ने उन्हें साफ़ बता दिया, "लाज़र की मौत हो गयी है

¹⁵और तुम्हारी खातिर मैं खुश हूँ कि मैं उस के मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उस के पास जाएँ।"¹⁶तोमा ने जिस का लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, "चलो, हम भी वहाँ जा कर उस के साथ मर जाएँ।"

¹⁷वहाँ पहुँच कर ईसा' को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं।¹⁸बैत-अनियाह का यरूशलम से फ़ासिला तीन किलोमीटर से कम था,¹⁹और बहुत से यहूदी मर्था और मरियम को उन के भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।²⁰यह सुन कर कि ईसा' आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही।

²¹मर्था ने कहा, "खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।"²²लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी खुदा आप को जो भी माँगेंगे देगा।"²³ईसा' ने उसे बताया, "तेरा भाई जी उठेगा।"

²⁴मर्था ने जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह क़यामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"²⁵ईसा' ने उसे बताया, "क़यामत और ज़िन्दगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िन्दा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए।"²⁶और जो ज़िन्दा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यकीन है?"

²⁷मर्था ने जवाब दिया, "जी खुदावन्द, मैं ईमान रखती हूँ कि आप खुदा के फ़र्ज़न्द मसीह हैं, जिसे दुनियाँ में आना था।"²⁸यह कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, "उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।"²⁹यह सुनते ही मरियम उठ कर ईसा' के पास गई।

³⁰वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से हुई थी।³¹जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने ने देखा कि वह जल्दी से उठ कर निकल गई है तो वह उस के पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।³²मरियम ईसा' के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उस के पैरों में गिर गई और कहने लगी, "खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।"

³³जब ईसा' ने मरियम और उस के लोगों को रोते देखा तो उसे दुख हुआ। और उसने ताअज्जुब होकर³⁴उस ने पूछा, "तुम ने उसे कहाँ रखा है?"³⁵ईसा' रो पड़ा।

³⁶यहूदियों ने कहा, "देखो, वह उसे कितना प्यारा था।"³⁷लेकिन उन में से कुछ ने कहा, "इस आदमी ने अंधे को सही किया। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?"

³⁸फिर ईसा' दुबारा बहुत ही मायूस हो कर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिस के मुँह पर पत्थर रखा गया था।³⁹ईसा' ने कहा, "पत्थर को हटा दो।"⁴⁰ईसा' ने उस से कहा, "क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो खुदा का जलाल देखेगी?"

⁴¹चुनाँचे उन्होंने ने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा' ने अपनी नज़र उठा कर कहा, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है।"⁴²मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैं ने यह बात पास खड़े लोगों की खातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।"

⁴³फिर ईसा' ज़ोर से पुकार उठा, "लाज़र, निकल आ!"⁴⁴और मुर्दा निकल आया। अभी तक उस के हाथ और पाँओ पट्टियों से बंधे हुए थे जबकि उस का चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा' ने उन से कहा, "इस के कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।"

⁴⁵उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत से ईसा' पर ईमान लाए जब उन्होंने ने वह देखा जो उस ने किया।⁴⁶लेकिन कुछ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा' ने क्या किया है।

⁴⁷तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदियों ने सदरे अदालत का जलसा बुलाया। उन्होंने ने एक दूसरे से पूछा, "हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत से खुदाई करिश्मे दिखा रहा है।"⁴⁸"अगर हम उसे यूँही छोड़ें तो आखिरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी हाकिम आ कर हमारे बैत-उल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।"

⁴⁹उन में से एक काइफ़ा था जो उस साल इमाम-ए-आज़म था। उस ने कहा, "आप कुछ नहीं समझते⁵⁰और इस का खयाल भी नहीं करते कि इस से पहले कि पूरी क्रौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।"

⁵¹उस ने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमाम-ए-आज़म की हैसियत से ही उस ने यह पेशेनगोई की कि ईसा' यहूदी क्रौम के लिए मरेगा।

⁵²और न सिर्फ़ इस के लिए बल्कि खुदा के बिखरे हुए फ़र्ज़न्दों को जमा करके एक करने के लिए भी।⁵³उस दिन से उन्होंने ने ईसा' को क़त्ल करने का इरादा कर लिया।

⁵⁴इस लिए उस ने अब से एलानिया यहूदियों के दरमियान वक्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्तान के करीब एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़्राईम में रहने लगा।⁵⁵फिर यहूदियों की ईद-ए-फ़सह करीब आ गई। देहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचे।

⁵⁶वहाँ वह ईसा' का पता करते और हैकल में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या खयाल है? क्या वह ईद पर नहीं आएगा?”⁵⁷लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, “अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा' कहाँ है तो वह खबर दे ताकि हम उसे गिरफ़्तार कर लें।”

Chapter 12

¹फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुर्दों में से ज़िन्दा किया था।

²वहाँ उस के लिए एक खास खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की खिदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा' और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था।

³फिर मरियम ने आधा लीटर खालिस जटामासी का बेशक़ीमती इत्र ले कर ईसा' के पैरों पर डाल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछ कर खुश किया। खुशबू पूरे घर में फैल गई।

⁴लेकिन ईसा' के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतिराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा' को दुश्मन के हवाले कर दिया)। उस ने कहा, ⁵“इस इत्र की कीमत लगभग एक साल की मज़दूरी के बराबर थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इस के पैसे ग़रीबों को दिए जाते?”⁶उस ने यह बात इस लिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िक्र थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का खज़ान्ची था और जमाशुदा पैसों में से ले लिया करता था।

⁷लेकिन ईसा' ने कहा, “उसे छोड़ दे! उस ने मेरी दफ़नाने की तय्यारी के लिए यह किया है।⁸ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

⁹इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ कि ईसा' वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा' से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उस ने मुर्दों में से ज़िन्दा किया था।¹⁰इस लिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का इरादा बनाया।¹¹क्योंकि उस की वजह से बहुत से यहूदी उन में से चले गए और ईसा' पर ईमान ले आए थे।

¹²अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा' यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा मजमा¹³ खज़ूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकल कर उस से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला कर नारे लगा रहे थे,

¹⁴ईसा' को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, ¹⁵“ऐ सिय्यून की बेटी, मत डर!”

¹⁶उस वक़्त उस के शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा' अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उस के साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम-ए-मुक़द्दस में इस का ज़िक्र भी है।

¹⁷जो मजमा उस वक़्त ईसा' के साथ था जब उस ने लाज़र को मुर्दों में से ज़िन्दा किया था, वह दूसरों को इस के बारे में बताता रहा था।¹⁸इसी वजह से इतने लोग ईसा' से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने न उस के इस खुदाई करिश्मे के बारे में सुना था।¹⁹यह देख कर फ़रीसी आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनियाँ उस के पीछे हो ली है।”

²⁰कुछ यूनानी भी उन में थे जो फ़सह की ईद के मौक़े पर इबादत करने के लिए आए हुए थे।²¹अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने ने कहा, “जनाब, हम ईसा' से मिलना चाहते हैं।”²²फ़िलिप्पुस ने अन्द्रियास को यह बात बताई और फिर वह मिल कर ईसा' के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई।

²³लेकिन ईसा' ने जवाब दिया, “अब वक़्त आ गया है कि इब्न-ए-आदम को जलाल मिले।²⁴मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्दुम का दाना ज़मीन में गिर कर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत सा फल लाता है।

²⁵जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनियाँ में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे हमेशा तक बचाए रखेगा।²⁶अगर कोई मेरी खिदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा। और जो मेरी खिदमत करे मेरा बाप उस की इज़ज़त करेगा।

²⁷अब मेरा दिल घबराता है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ।²⁸ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।”पस आसमान से आवाज़ आई कि मैंने उस को जलाल दिया है और भी दूंगा²⁹मजमा के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने ने यह सुन कर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने खयाल पेश किया, “कोई फ़रिश्ते ने उस से बातें की”

³⁰ईसा' ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी।³¹अब दुनियाँ की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनियाँ पे हुकूमत करने वालों को निकाल दिया जाएगा।

³²और मैं खुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास बुला लूँगा।”³³इन बातों से उस ने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।

³⁴मजमा बोल उठा, “कलाम-ए-मुक़द्दस से हम ने सुना है कि मसीह हमेशा तक क़ायम रहेगा। तो फिर आप की यह कैसी बात है कि इब्न-ए-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आखिर इब्न-ए-आदम है कौन?”³⁵ईसा' ने जवाब दिया, “रोशनी थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगी। जितनी देर वह मौजूद है इस रोशनी में चलते रहो ताकि अँधेरा तुम पर छा न जाए। जो अँधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है।³⁶रोशनी तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम खुदा के फ़र्ज़न्द बन जाओ।”

³⁷अगरचे ईसा' ने यह तमाम खुदाई करिश्मे उन के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए।³⁸यूँ यसायाह नबी की पेशेनगोई पूरी हुई,

³⁹चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है, ⁴⁰“खुदा ने उन की आँखों को अंधा किया”

⁴¹यसायाह ने यह इस लिए फ़रमाया क्योंकि उस ने ईसा' का जलाल देख कर उस के बारे में बात की।⁴²तो भी बहुत से लोग ईसा' पर ईमान रखते थे। उन में कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इस का खुला इक्रार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमाअत से निकाल देंगे।⁴³असल में वह खुदा की इज़ज़त के बजाये इन्सान की इज़ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

⁴⁴फिर ईसा' पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिस ने मुझे भेजा है।⁴⁵और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है।

⁴⁶मैं रोशनी की तरह से इस दुनियाँ में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह अँधेरे में न रहे।⁴⁷जो मेरी बातें सुन कर उन पर अमल नहीं करता मैं उसका इसाफ़ नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनियाँ का इसाफ़ करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए।

⁴⁸तो भी एक है जो उस का इंसान करता है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें कुबूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़यामत के दिन उस का इंसान करेगा।⁴⁹ क्योंकि जो कुछ मैं ने बयान किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजने वाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है।⁵⁰ और मैं जानता हूँ कि उस का हुक्म हमेशा की ज़िन्दगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही है जो बाप ने मुझे बताया है।”

Chapter 13

¹फ़सह की ईद अब शुरू होने वाली थी। ईसा' जानता था कि वह वक़्त आ गया है कि मुझे इस दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास जाना है। अगरचे उस ने हमेशा दुनियाँ में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उस ने आखिरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।²फिर शाम का खाना तय्यार हुआ। उस वक़्त इब्नीस शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा' को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चुका था।

³ईसा' जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे हवाले कर दिया है और कि मैं खुदा से निकल आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ।⁴चुनाँचे उस ने दस्तरख़वान से उठ कर अपना चोगा उतार दिया और कमर पर तौलिया बांध लिया।⁵फिर वह बासन में पानी डाल कर शागिर्दों के पैर धोने और बंधे हुए तौलिया से पोंछ कर खुशक करने लगा।

⁶जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा, “खुदावन्द, आप मेरे पैर धोना चाहते हैं?”⁷ईसा' ने जवाब दिया, “इस वक़्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।”⁸पतरस ने एतिराज़ किया, “मैं कभी भी आप को मेरे पैर धोने नहीं दूँगा!” ईसा' ने जवाब दिया “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरी कोई शराक़त नहीं।”⁹यह सुन कर पतरस ने कहा, “तो फिर खुदावन्द, न सिर्फ़ मेरे पैर बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!”

¹⁰ईसा' ने जवाब दिया, “जिस शख्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पैरो को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सब के सब नहीं।”¹¹(ईसा' को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इस लिए उस ने कहा कि सब के सब पाक-साफ़ नहीं हैं।)

¹²उन सब के पैरो को धोने के बाद ईसा' दुबारा अपना लिबास पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया है? ¹³तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘खुदावन्द’ कह कर मुखातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ।¹⁴मैं, तुम्हारे खुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे पैर धोए। इस लिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पैर धोया करो।¹⁵मैंने तुम को एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैं ने तुम्हारे साथ किया है।

¹⁶मैं तुम को सच बताता हूँ कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़म्बर अपने भेजने वाले से।¹⁷अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, तभी तुम मुबारक होगे।¹⁸मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, ‘जो मेरी रोटी खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई है।’

¹⁹मैं तुम को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ।²⁰मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो शख्स उसे कुबूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे कुबूल करता है। और जो मुझे कुबूल करता है वह उसे कुबूल करता है जिस ने मुझे भेजा है।”

²¹इन अलफ़ाज़ के बाद ईसा' बेहद दुखी हुआ और कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”²²शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने लगे कि ईसा' किस की बात कर रहा है।

²³एक शागिर्द जिसे ईसा' मुहब्बत करता था उस के बिलकुल करीब बैठा था।²⁴पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उस से पूछे कि वह किस की बात कर रहा है।

²⁵उस शागिर्द ने ईसा' की तरफ़ सर झुका कर पूछा, “खुदावन्द, वह कौन है?”

²⁶ईसा' ने जवाब दिया, “जिसे मैं रोटी का निवाला शोबे में डुबो कर दूँ, वही है।” फिर निवाले को डुबो कर उस ने शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे दिया।²⁷जैसे ही यहूदाह ने यह निवाला ले लिया इब्नीस उस में समा गया। ईसा' ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।”

²⁸लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा' ने यह क्यों कहा।²⁹कुछ का खयाल था कि चूँकि यहूदाह खज़ान्ची था इस लिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए ज़रूरी चीज़ें खरीद ले या ग़रीबों में कुछ बांट दे।³⁰चुनाँचे ईसा' से यह निवाला लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

³¹यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा' ने कहा, “अब इब्न-ए-आदम ने जलाल पाया और खुदा ने उस में जलाल पाया है।³²हाँ, चूँकि खुदा को उस में जलाल मिल गया है इस लिए खुदा अपने में फ़र्ज़न्द को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा।³³मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।

³⁴मैं तुम को एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैं ने तुम से मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो।³⁵अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।”

³⁶पतरस ने पूछा, “खुदावन्द, आप कहाँ जा रहे हैं?” ईसा' ने जवाब दिया जहाँ मैं जाता हूँ अब तो तू मेरे पीछे आ नहीं सकता लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जायेगा।”³⁷पतरस ने सवाल किया, “खुदावन्द, मैं आप के पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आप के लिए अपनी जान तक देने को तय्यार हूँ।”³⁸लेकिन ईसा' ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग के बाँग़ देने से पहले पहले तू तीन मर्तबा मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।

Chapter 14

¹“तुम्हारा दिल न घबराए। तुम खुदा पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो।²मेरे आसमानी बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तय्यार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ?³और अगर मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तय्यार करूँ तो वापस आ कर तुम को अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो।

⁴और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।”⁵तोमा बोल उठा, “खुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?”⁶ईसा' ने जवाब दिया, “राह हक़ और ज़िन्दगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।⁷अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब तुम उसे जानते हो और तुम ने उस को देख लिया है।”

⁸फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”⁹ईसा' ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के बावजूद तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’?”

¹⁰क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है? जो बातें में तुम को बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझ में रहने वाले बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा है।¹¹मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है। या कम से कम उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं।

¹²मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ।¹³और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को बेटे में जलाल मिल जाए।¹⁴जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ से चाहो वह मैं करूँगा।

¹⁵अगर तुम मुझे मुहब्बत करते हो तो मेरे हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे।¹⁶और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुम को एक और मददगार देगा जो हमेशा तक तुम्हारे साथ रहेगा।¹⁷यानी सच्चाई की रूह, जिसे दुनियाँ पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहती है और आइन्दा तुम्हारे अन्दर रहेगी।

¹⁸मैं तुम को यतीम छोड़ कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा।¹⁹थोड़ी देर के बाद दुनियाँ मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िन्दा हूँ इस लिए तुम भी ज़िन्दा रहोगे।²⁰जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में।

²¹जिस के पास मेरे हुक्म हैं और जो उन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आप को उस पर ज़ाहिर करूँगा।”²²यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, “खुदावन्द, क्या वजह है कि आप अपने आप को सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनियाँ पर नहीं?”

²³ईसा' ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे मुहब्बत करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख्स को मुहब्बत करेगा और हम उस के पास आ कर उस के साथ रहा करेंगे।²⁴जो मुझ से मुहब्बत नहीं करता, वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझ से सुनते हो, वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिस ने मुझे भेजा है।

²⁵यह सब कुछ मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम को बताया है।²⁶लेकिन बाद में रूह-ए पाक, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा, तुम को सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुम को हर बात की याद दिलाएगा जो मैं ने तुम को बताई है।²⁷मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुम को दे देता हूँ। और मैं इसे यूँ नहीं देता जिस तरह दुनियाँ देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे।

²⁸तुम ने मुझ से सुन लिया है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा। अगर तुम मुझ से मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर खुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझ से बड़ा है।²⁹मैं ने तुम को पहले से बता दिया है, कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ।³⁰अब से मैं तुम से ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनियाँ का बादशाह आ रहा है। उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है,³¹लेकिन दुनियाँ यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिस का हुक्म वह मुझे देता है।

Chapter 15

¹“अंगूर का हकीकती दरख्त मैं हूँ और मेरा बाप बाग़बान है।²वह मेरी हर डाल को जो फल नहीं लाती काट कर फैंक देता है। लेकिन जो डाली फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए।

³उस कलाम के वजह से जो मैं ने तुम को सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो।⁴मुझ में कायम रहो तो मैं भी तुम में कायम रहूँगा। जो डाल दरख्त से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में कायम नहीं रहो तो फल नहीं ला सकते।

⁵मैं ही अंगूर का दरख्त हूँ, और तुम उस की डालियां हो। जो मुझ में कायम रहता है और मैं उस में वह बहुत सा फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ नहीं कर सकते।⁶जो मुझ में कायम नहीं रहता और न मैं उस में उसे सूखी डाल की तरह बाहर फैंक दिया जाता है। और लोग उन का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं।⁷अगर तुम मुझ में कायम रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो, वह तुम को दिया जाएगा।

⁸जब तुम बहुत सा फल लाते और यूँ मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इस से मेरे बाप को जलाल मिलता है।⁹जिस तरह बाप ने मुझ से मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में कायम रहो।

¹⁰जब तुम मेरे हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हो तो तुम मुझ में कायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहक़ाम के मुताबिक़ चलता हूँ और यूँ उस की मुहब्बत में कायम रहता हूँ।¹¹मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि मेरी खुशी तुम में हो बल्कि तुम्हारा दिल खुशी से भर कर छलक उठे।

¹²मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है।¹³इस से बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे।

¹⁴तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुम को बताता हूँ।¹⁵अब से मैं नहीं कहता कि तुम गुलाम हो, क्योंकि गुलाम नहीं जानता कि उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाए मैं ने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैं ने तुम को सब कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप से सुना है।

¹⁶तुम ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया है। मैं ने तुम को मुकर्रर किया कि जा कर फल लाओ, ऐसा फल जो कायम रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम से माँगोगे।¹⁷मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

¹⁸अगर दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उस ने तुम से पहले मुझ से दुश्मनी रखी है।¹⁹अगर तुम दुनियाँ के होते तो दुनियाँ तुम को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनियाँ के नहीं हो। मैं ने तुम को दुनियाँ से अलग करके चुन लिया है। इस लिए दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखती है।

²⁰वह बात याद करो जो मैं ने तुम को बतायी कि 'गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता।' अगर उन्होंने ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्होंने ने मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे।²¹लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे भेजा है।²²अगर मैं आया न होता और उन से बात न की होती तो वह कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन के गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा।

²³जो मुझ से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है।²⁴अगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने ने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है।²⁵और ऐसा होना भी था ताकि कलाम-ए-मुक़द्दस की यह नबूवत पूरी हो जाए कि 'उन्होंने कहा है

²⁶जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है।²⁷तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम शुरु से ही मेरे साथ रहे हो।

Chapter 16

¹“मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ।² वह तुम को यहूदी जमाअतों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक्रत भी आने वाला है कि जो भी तुम को मार डालेगा वह समझेगा, ‘मैं ने खुदा की खिदमत की है।’

³वह इस क्रिस्म की हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्होंने ने न बाप को जाना है, न मुझे।⁴(जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक्रीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।)

⁵लेकिन अब मैं उस के पास जा रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, ‘आप कहाँ जा रहे हैं?’⁶ इस के बजाए तुम्हारे दिल उदास हैं कि मैं ने तुम को ऐसी बातें बताई हैं।⁷ लेकिन मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।

⁸और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनियाँ की ग़लती को बेनिक़्ाब करके यह ज़ाहिर करेगा :⁹ गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते,¹⁰ रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे,¹¹ और अदालत के बारे में यह कि इस दुनियाँ के हाकिम की अदालत हो चुकी है।

¹²मुझे तुम को बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक्रत तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।¹³ जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह खुद सुनेगा। वही तुम को भी। मुस्तक़बिल के बारे में बताएगा¹⁴ और वह इस में मुझे जलाल देगा कि वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा।

¹⁵जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस लिए मैं ने कहा, ‘रूह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा।’¹⁶ थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।”

¹⁷उस के कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, “ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे? और इस का क्या मतलब है, ‘मैं बाप के पास जा रहा हूँ?’”¹⁸ और वह सोचते रहे, “यह किस क्रिस्म की ‘थोड़ी देर’ है जिस का ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उन की बात नहीं समझते।”

¹⁹ईसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे में सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा, “क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे?’”²⁰ मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो कर मातम करोगे जबकि दुनियाँ खुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म खुशी में बदल जाएगा।²¹ जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला होता है तो उसे ग़म और तक्लीफ़ होती है क्योंकि उस का वक्रत आ गया है। लेकिन जूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ खुशी के मारे कि एक इन्सान दुनियाँ में आ गया है अपनी तमा म मुसीबत भूल जाती है।

²²यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम उदास हो, लेकिन मैं तुम से दुबारा मिलूँगा। उस वक्रत तुम को खुशी होगी, ऐसी खुशी जो तुम से कोई छीन न लेगा।

²³उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुम को देगा।²⁴ अब तक तुम ने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुम को मिलेगा। फिर तुम्हारी खुशी पूरी हो जाएगी।

²⁵मैं ने तुम को यह मिसालो में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक्रत मैं मिसालो में बात नहीं करूँगा बल्कि तुम को बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा।

²⁶उस दिन तुम मेरा नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी खातिर बाप से दरख्वास्त करूँगा।²⁷ क्योंकि बाप खुद तुम को प्यार करता है, इस लिए कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं खुदा में से निकल आया हूँ।²⁸ मैं बाप में से निकल कर दुनियाँ में आया हूँ, और अब मैं दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास वापस जाता हूँ।”

²⁹इस पर उस के शागिर्दों ने कहा, “अब आप मिसालो में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं।”³⁰ अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इस की ज़रूरत नहीं कि कोई आप की पूछ-ताछ करे। इस लिए हम ईमान रखते हैं कि आप खुदा में से निकल कर आए हैं।”³¹ ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो?”

³²देखो, वह वक्रत आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तितर-बितर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़ कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है।³³ मैं ने तुम को इस लिए यह बात बताई ताकि तुम मुझ में सलामती पाओ। दुनियाँ में तुम मुसीबत में फंसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनियाँ पर ग़ालिब आया हूँ।”

Chapter 17

¹यह कह कर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने बेटे को जलाल दे ताकि बेटा तुझे जलाल दे।²क्योंकि तू ने उसे तमाम इन्सानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सब को हमेशा की ज़िन्दगी दे जो तू ने उसे दिया हैं।

³और हमेशा की ज़िन्दगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा खुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तू ने भेजा है।⁴मैं ने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम को पूरा किया जिस की ज़िम्मेदारी तू ने मुझे दी थी।⁵और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनियाँ की पैदाइश से पहले तेरे साथ रखता था

⁶मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तू ने दुनियाँ से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने ने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है।⁷अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है।⁸क्योंकि जो बातें तू ने मुझे दीं मैं ने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने ने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझ में से निकल कर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू ने मुझे भेजा है।⁹मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनियाँ के लिए नहीं बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं।¹⁰जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उन में जलाल मिला है।¹¹अब से मैं दुनियाँ में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनियाँ में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। कुदूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफूज़ रख, उस नाम में जो तू ने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं।

¹²जितनी देर मैं उन के साथ रहा मैं ने उन्हें तेरे नाम में महफूज़ रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे दिया था। मैं ने यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़र्ज़न्द के। यूँ कलाम की पेशीनगोई पूरी हुई।¹³अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनियाँ में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उन के दिल मेरी खुशी से भर कर छलक उठें।¹⁴मैं ने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनियाँ ने उन से दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनियाँ के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ।

¹⁵मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनियाँ से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इब्लीस से महफूज़ रखे।¹⁶वह दुनियाँ के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ।¹⁷उन्हें सच्चाई के वसीले से मख्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है।

¹⁸जिस तरह तू ने मुझे दुनियाँ में भेजा है उसी तरह मैं ने भी उन्हें दुनियाँ में भेजा है।¹⁹उन की खातिर मैं अपने आप को मख्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाए।

²⁰मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के लिए है, बल्कि उन सब के लिए भी जो इन का पैग़ाम सुन कर मुझ पर ईमान लाएँगे²¹ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ उसी तरह वह भी हम में हों ताकि दुनियाँ यक़ीन करे कि तू ने मुझे भेजा है।

²²मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं,²³मैं उन में और तू मुझ में। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनियाँ जान ले कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन से मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझ से रखी है।

²⁴ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया है कि तू ने मुझे दुनियाँ को बनाने से पहले प्यार किया है।

²⁵ऐ रास्तबाज़, दुनियाँ तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तू ने मुझे भेजा है।²⁶मैं ने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझ से मुहब्बत उन में हो और मैं उन में हूँ।”

Chapter 18

¹यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादी-ए-क्रिद्रोन को पार करके एक बाग़ में दाखिल हुआ।²यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से वाकिफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था।³राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैत-उल-मुकद्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे।

⁴ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनौति उस ने निकल कर उन से पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”⁵उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

⁶जब “ईसा” ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर ज़मीन पर गिर पड़े।⁷एक और बार “ईसा” ने उन से सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

⁸उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इन को जाने दो।”⁹यूँ उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”

¹⁰शमाऊन पतरस के पास तलवार थी। अब उस ने उसे मियान से निकाल कर इमाम-ए-आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया (गुलाम का नाम मलखुस था)।¹¹लेकिन “ईसा” ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पिऊँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

¹²फिर फ़ौजी दस्ते, उन के अप्रसर और बैत-उल-मुकद्दस के यहूदी पहरेदारों ने “ईसा” को गिरिफ़्तार करके बांध लिया।¹³पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमाम-ए-आज़म काइफ़ा का ससुर था।¹⁴काइफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

¹⁵शमाऊन पतरस किसी और शागिर्द के साथ “ईसा” के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमाम-ए-आज़म का जानने वाला था, इस लिए वह ईसा के साथ इमाम-ए-आज़म के सहन में दाखिल हुआ।¹⁶पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमाम-ए-आज़म का जानने वाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उस ने दरवाज़े की निगरानी करने वाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अन्दर ले जाने की इजाज़त मिली।

¹⁷उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”¹⁸“ठंड थी, इस लिए गुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उस के पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था।

¹⁹इतने में इमाम-ए-आज़म “ईसा” की पूछ-ताछ करके उस के शागिर्दों और तालीमों के बारे में पूछ-ताछ करने लगा।²⁰ईसा ने जवाब में कहा, “मैं ने दुनियाँ में खुल कर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतखानों और हैकल में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैं ने कुछ नहीं कहा।²¹आप मुझ से क्यों पूछ रहे हैं? उन से दरयाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उन को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।”

²²इस पर साथ खड़े हैकल के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मार कर कहा, “क्या यह इमाम-ए-आज़म से बात करने का तरीका है जब वह तुम से कुछ पूछे?”²³ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं ने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने मुझे क्यों मारा?”²⁴फिर हन्ना ने ईसा को बंधी हुई हालत में इमाम-ए-आज़म काइफ़ा के पास भेज दिया।

²⁵शमाऊन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उस से पूछने लगे, “तुम भी उस के शागिर्द हो कि नहीं?”²⁶फिर इमाम-ए-आज़म का एक गुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैं ने तुम को बाग़ में उस के साथ नहीं देखा था?”²⁷पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और इन्कार करते ही मुर्ग की बाँग सुनाई दी।

²⁸फिर यहूदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह महल में दाखिल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते।²⁹चुनौति पिलातुस निकल कर उन के पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा रहे हो?”³⁰उन्होंने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आप के हवाले न करते।”

³¹पिलातुस ने अगुवों से कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शर्इ अदालतों में पेश करो।”³²ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह की मौत मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।

³³तब पिलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”³⁴ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में बताया है?”³⁵पिलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क्रौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुम से क्या कुछ हुआ है?”

³⁶ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनियाँ की नहीं है। अगर वह इस दुनियाँ की होती तो मेरे खादिम सख्त जद्-ओ-जह्द करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।”³⁷पिलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाकई बादशाह हो?”

³⁸पिलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”³⁹“लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिस के मुताबिक़ मुझे ईद-ए-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”⁴⁰लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इस को नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू था।)

Chapter 19

¹फिर पिलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए।²फ्रौजियों ने काँटदार टहनियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख दिया। उन्होंने ने उसे इर्गवानी रंग का चोगा भी पहनाया।³फिर उस के सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।

⁴एक बार फिर पिलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”⁵फिर ईसा काँटदार ताज और इर्गवानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पिलातुस ने उन से कहा, “लो यह है वह आदमी।”⁶उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाज़िम चीखने लगे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें!”

⁷यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इस ने अपने आप को ख़ुदा का फ़र्ज़न्द क़रार दिया है।”⁸यह सुन कर पिलातुस बहुत डर गया।⁹दुबारा महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”

¹⁰पिलातुस ने उस से कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब करने का इख़्तियार है?”¹¹ईसा ने जवाब दिया, “आप को मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”

¹²इस के बाद पिलातुस ने उसे छोड़ने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख चीख कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहन्शाह कैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह कैसर की मुख़ालफ़त करता है।”¹³इस तरह की बातें सुन कर पिलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुर्सी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह ग़बता कहलाती थी।)

¹⁴अब दोपहर के तक्ररीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियों की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आगाज़ था। पिलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”¹⁵लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मस्लूब करें!”¹⁶फिर पिलातुस ने ईसा को उन के हवाले कर दिया ताकि उसे मस्लूब किया जाए।

¹⁷वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिस का नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुल्गुता) था।¹⁸वहाँ उन्होंने ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने ने ईसा के बाएँ और दाएँ हाथ दो डाकू को मस्लूब किया।

¹⁹पिलातुस ने एक तख्ती बनवा कर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख्ती पर लिखा था, ‘ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।’²⁰बहुत से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि सलीब पर चढ़ाये जाने की जगह शहर के करीब थी और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था।

²¹यह देख कर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने ऐतराज़ किया, “‘यहूदियों का बादशाह’ न लिखें बल्कि यह कि ‘इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया।’”²²पिलातुस ने जवाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख दिया सो लिख दिया।”

²³ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ्रौजियों ने उस के कपड़े ले कर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ्रौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोगा बेजोड़ था। वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था।²⁴इस लिए फ्रौजियों ने कहा, “आओ, इसे फाड़ कर तक्सीम न करें बल्कि इस पर पर्ची डालें।” यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस की यह पेशीनगोई पूरी हुई, “उन्होंने ने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर पर्ची डाला।” फ्रौजियों ने यही कुछ किया।

²⁵ईसा की सलीब के करीब : उस की माँ, उस की ख़ाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं।²⁶जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उस ने कहा, “ऐ ख़ातून, देखें आप का बेटा यह है।”²⁷और उस शागिर्द से उस ने कहा, “देख, तेरी माँ यह है।” उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा।

²⁸इस के बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा काम मुक़म्मल हो चुका है तो उस ने कहा, “मुझे प्यास लगी है।” (इस से भी कलाम-ए-मुक़द्दस की एक पेशीनगोई पूरी हुई।)²⁹वहाँ सिरके से भरा हुआ एक बर्तन रखा था, उन्होंने सिरके में स्पंज डुबोकर जूफ़े की डाली पर रख कर उसके मुँह से लगाया।³⁰यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, “काम मुक़म्मल हो गया है।” और सर झुका कर उस ने अपनी जान ख़ुदा के सपुर्द कर दी।

³¹फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज़ और एक ख़ास सबत था। इस लिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मस्लूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनौचे उन्होंने ने पिलातुस से गुज़ारिश की कि वह उन की टोंगें तुड़वा कर उन्हें सलीबों से उतारने दे।³²तब फ्रौजियों ने आ कर ईसा के साथ मस्लूब किए जाने वाले आदमियों की टोंगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की।³³जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने ने देखा कि उसकी मौत हो चुकी है, इस लिए उन्होंने ने उस की टोंगें न तोड़ीं।

³⁴इस के बजाए एक ने भाले से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़्म से फ़ौरन खून और पानी बह निकला।³⁵(जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।)

³⁶यह यूँ हुआ ताकि कलाम-ए-मुक़द्दस की यह नबूवत पूरी हो जाए, “उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।”³⁷कलाम-ए-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने ने छेदा है।”

³⁸बाद में अरिमतिyah के रहने वाले यूसुफ़ ने पिलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इस की इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया।³⁹नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक्ररीबन 34 किलो ख़ुशबू ले कर आया था।

⁴⁰यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उन्होंने ने लाश पर ख़ुशबू लगा कर उसे पट्टियों से लपेट दिया।⁴¹सलीबों के करीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी।⁴²उस के करीब होने के वजह से उन्होंने ने ईसा को उस में रख दिया, क्योंकि फ़सह की तयारी का दिन था और अगले दिन ईद की शुरुआत होने वाली थी।

Chapter 20

¹हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मगदलीनी सुबह-सवेरे क्रब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँच कर उस ने देखा कि क्रब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है।²मरियम दौड़ कर शमाऊन पतरस और ईसा के प्यारे शागिर्द के पास आई। उस ने खबर दी, “वह खुदावन्द को क्रब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने ने उसे कहाँ रख दिया है।”

³तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क्रब्र की तरफ़ चल पड़ा।⁴दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज़्यादा तेज़ रफ़्तार था। वह पहले क्रब्र पर पहुँच गया।⁵उस ने झुक कर अन्दर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अन्दर न गया।

⁶फिर शमाऊन पतरस उस के पीछे पहुँच कर क्रब्र में दाखिल हुआ। उस ने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं⁷ और साथ वह कपड़ा भी जिस में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था।

⁸फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाखिल हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह ईमान लाया।⁹(लेकिन अब भी वह कलाम-ए-मुक़द्दस की नबूवत नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठना है।)¹⁰फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

¹¹लेकिन मरियम रो रो कर क्रब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उस ने झुक कर क्रब्र में झाँका¹² तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा उस के पैताने थे।¹³फ़रिश्तों ने मरियम से पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?”

¹⁴फिर उस ने पीछे मुड़ कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उस ने उसे न पहचाना।¹⁵ईसा ने पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँढ़ रही है?” उसने बाग़बान समझ कर उस से कहा मियाँ अगर तूने उसको यहाँ से उठाया हो तू मुझे बता दे कि उसे कहा रखा है ताकि मैं उसे ले जाऊँ

¹⁶ईसा ने उस से कहा, “मरियम ! उसने मुड़कर उससे इब्रानी जुबान में कहा रब्बोनी ए उस्तद ”¹⁷ईसा ने कहा, “मुझे मत छू , क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, ‘मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास’।”¹⁸चुनाँचे मरियम मगदलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तिला दी, “मैं ने ख़ुदावन्द को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें कहीं।”

¹⁹उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे। अचानक ईसा उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो,”²⁰ और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। ख़ुदावन्द को देख कर वह निहायत खुश हुए।

²¹ईसा ने दुबारा कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुम को भेज रहा हूँ।”²²फिर उन पर फूँक कर उस ने फ़रमाया, “रूह-उल-कुहुस को पा लो।”²³अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।”

²⁴बारह शागिर्दों में से तोमा जिस का लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था।²⁵चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हम ने ख़ुदावन्द को देखा है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यकीन नहीं आता। पहले मुझे उस के हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उन में अपनी उंगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उस के पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर ही मुझे यकीन आएगा।”

²⁶एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मर्तबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उन के दरमियान आ कर खड़ा हुआ। उस ने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!”²⁷फिर वह तोमा से मुखातिब हुआ, “अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतिक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।”

²⁸तोमा ने जवाब में उस से कहा, “ऐ मेरे ख़ुदावन्द! ऐ मेरे ख़ुदा!”²⁹फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इस लिए ईमान लाया है कि तू ने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

³⁰ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत से ऐसे ख़ुदाई करिश्मे दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं।³¹लेकिन जितने दर्ज हैं उन का मक़्सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी ख़ुदा का फ़ज़न्द है और आप को इस ईमान के वसीले से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

Chapter 21

¹इस के बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह तिबेरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यूँ हुआ।²कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतन-एल जो गलील के क्राना से था, ज़ब्दी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द।³शमाऊन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”

⁴सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है।⁵उस ने उन से पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?”⁶उस ने कहा, “अपना जाल नाव के दाएँ हाथ डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।” उन्होंने ने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल नाव तक न ला सके।

⁷इस पर खुदावन्द के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, “यह तो खुदावन्द है।” यह सुनते ही कि खुदावन्द है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़ कर पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।)⁸दूसरे शागिर्द नाव पर सवार उस के पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक्ररीबन सौ मीटर के फ़ासिले पर थे। इस लिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी खींच खींच कर खुशकी तक लाए।⁹जब वह नाव से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है।

¹⁰ईसा ने उन से कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुम ने अभी पकड़ी हैं।”¹¹शमाऊन पतरस नाव पर गया और जाल को खुशकी पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा।

¹²ईसा ने उन से कहा, “आओ, खा लो।” किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की ज़रूरत न की कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे कि यह खुदावन्द ही है।¹³फिर ईसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।¹⁴ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार था कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

¹⁵खाने के बाद ईसा शमाऊन पतरस से मुखातिब हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या तू इन की निस्वत मुझ से ज़्यादा मुहब्बत करता है?”¹⁶तब ईसा ने एक और मर्तबा पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझ से मुहब्बत करता है?”

¹⁷तीसरी बार ईसा ने उस से पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?”¹⁸“मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू खुद अपनी कमर बांध कर जहाँ जी चाहता घूमता फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बांध कर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।”

¹⁹(ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा था कि पतरस किस क्रिस्म की मौत से खुदा को जलाल देगा।) फिर उस ने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

²⁰पतरस ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उन के पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ़ सर झुका कर पूछा था, “खुदावन्द, कौन आप को दुश्मन के हवाले करेगा?”²¹अब उसे देख कर पतरस ने सवाल किया, “खुदावन्द, इस के साथ क्या होगा?”

²²ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”²³नतीजे में भाइयों में यह खयाल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उस ने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या?”

²⁴यह वह शागिर्द है जिस ने इन बातों की गवाही दे कर इन्हें क्रलमबन्द कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है।²⁵ईसा ने इस के अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उस का हर काम क्रलमबन्द किया जाता तो मेरे खयाल में पूरी दुनियाँ में यह किताबें रखने की गुन्जाइश न होती।

रसूलों के आ'माल

Chapter 1

¹‘ऐ थियुफ़िलुस’ मैंने पहली किताब उन सब बातों के बयान में लिखी जो ईसा शुरू में करता और सिखाता रहा।²उस दिन तक जिसमें वो उन रसूलों को जिन्हें उसने चुना था रूह-उल-कुदूस के वसीले से हुक्म देकर ऊपर उठाया गया।³ईसा ने तकलीफ़ सहने के बाद बहुत से सबूतों से अपने आपको उन पर ज़िन्दा ज़ाहिर भी किया, चुनाँचे वो चालीस दिन तक उनको नज़र आता और खुदा की बादशाही की बातें कहता रहा।

⁴और उनसे मिलकर उन्हें हुक्म दिया, “यरूशलीम से बाहर न जाओ, बल्कि बाप के उस वा'दे के पूरा होने का इन्तिज़ार करो, जिसके बारे में तुम मुझ से सुन चुके हो।⁵क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया मगर तुम थोड़े दिनों के बाद रूह-उल-कुदूस से बपतिस्मा पाओगे।”

⁶पस उन्होंने इकठ्ठा होकर पूछा, “ऐ खुदावन्द! क्या तू इसी वक्त इस्राईल को बादशाही फिर अता करेगा?”⁷उसने उनसे कहा, “उन वक्त्रों और मी'आदों का जानना, जिन्हें बाप ने अपने ही इस्ति'यार में रखखा है, तुम्हारा काम नहीं।”⁸लेकिन जब रूह-उल-कुदूस तुम पर नाज़िल होगा तो तुम ताकत पाओगे; और यरूशलीम और तमाम यहूदिया और सामरिया में, बल्कि ज़मीन के आखीर तक मेरे गवाह होंगे।

⁹ये कहकर वो उनको देखते देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादलो ने उसे उनकी नज़रों से छिपा लिया।¹⁰उसके जाते वक्त्र वो आसमान की तरफ़ ग़ौर से देख रहे थे, तो देखो, दो मर्द सफ़ेद पोशाक पहने उनके पास आ खड़े हुए,¹¹और कहने लगे, “ऐ गलीली मर्दों! तुम क्यों खड़े आसमान की तरफ़ देखते हो? यही ईसा जो तुम्हारे पास से आसमान पर उठाया गया है, इसी तरह फिर आएगा जिस तरह तुम ने उसे आसमान पर जाते देखा है।”

¹²तब वो उस पहाड़ से जो ज़ैतून का कहलाता है और यरूशलीम के नज़दीक सबत की मन्ज़िल के फ़ासले पर है यरूशलीम को फिरे।¹³और जब उसमें दाखिल हुए तो उस बालाखाने पर चढ़े जिस में वो या'नी पतरस और यूहन्ना, और या'कूब और अन्द्रियास और फ़िलिप्पुस, तोमा, बरतुलमाई, मत्ती, हलफ़ी का बेटा

या'कूब, शमा'ऊन ज़ेलोतेस और या'कूब का बेटा यहूदाह रहते थे।¹⁴ये सब के सब चन्द 'औरतों और ईसा' की माँ मरियम और उसके भाइयों के साथ एक दिल होकर दु'आ में मशगूल रहे।

¹⁵उन्ही दिनों पतरस भाइयों में जो तक्ररीबन एक सौ बीस शख्सों की जमा'अत थी खड़ा होकर कहने लगा,¹⁶“ऐ भाइयों उस नबूवत का पूरा होना ज़रूरी था जो रूह -उल -कुदूस ने दाऊद के ज़बानी उस यहूदा के हक़ में पहले कहा था, जो ईसा' के पकड़ने वालों का रहनुमा हुआ।

¹⁷क्योंकि वो हम में शुमार किया गया और उस ने इस खिदमत का हिस्सा पाया।”¹⁸उस ने बदकारी की कमाई से एक खेत खरीदा ,और सिर के बल गिरा और उसका पेट फ़ट गया और उसकी सब आँतें निकल पड़ीं।¹⁹और ये यरूशलीम के सब रहने वालों को मा'लूम हुआ, यहां तक कि उस खेत का नाम उनकी ज़बान में हैक़लेदमा पड़ गया या'नी [खून का खेत] ।

²⁰क्योंकि ज़बूर में लिखा है, 'उसका घर उजड़ जाए , और उसमें कोई बसने वाला न रहे और उसका मर्तबा दुसरा ले ले।'।

²¹पस जितने 'असैं तक खुदावन्द ईसा' हमारे साथ आता जाता रहा, यानी यूहन्ना के बपतिस्मे से लेकर खुदावन्द के हमारे पास से उठाए जाने तक-जो बराबर हमारे साथ रहे,²²चाहिए कि उन में से एक आदमी हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह बने।²³फिर उन्होंने दो को पेश किया। एक यूसुफ़ को जो बरसबा कहलाता है और जिसका लक़ब यूसतुस है। दूसरा मत्तय्याह को।

²⁴और ये कह कर दु'आ की, “ऐ खुदावन्द! तू जो सब के दिलों को जानता है, ये ज़ाहिर कर कि इन दोनों में से तूने किस को चुना है”²⁵ताकि वह इस खिदमत और रसूलो की जगह ले, जिसे यहूदाह छोड़ कर अपनी जगह गया।”²⁶फिर उन्होंने उनके बारे में पर्ची डाली, और पर्ची मत्तय्याह के नाम की निकली। पस वो उन ग्यारह रसूलों के साथ शुमार किया गया।

Chapter 2

¹जब ईद-ए-पन्तिकुस्त का दिन आया। तो वो सब एक जगह जमा थे।²एकाएक आस्मान से ऐसी आवाज़ आई जैसे ज़ोर की आँधी का सन्नाटा होता है। और उस से सारा घर जहाँ वो बैठे थे गूँज गया।³और उन्हें आग के शो'ले की सी फ़टती हुई ज़बानें दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरा।⁴और वो सब रूह-उल-कुहूस से भर गए और ग़ैर ज़बान बोलने लगे, जिस तरह रूह ने उन्हें बोलने की ताकत बख़्शी।

⁵और हर क्रौम में से जो आसमान के नीचे ख़ुदा तरस यहूदी यरूशलीम में रहते थे।⁶जब यह आवाज़ आई तो भीड़ लग गई और लोग दंग हो गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही बोली बोल रहे हैं।⁷और सब हैरान और ता'ज्जुब हो कर कहने लगे, "देखो ये बोलने वाले क्या सब गलीली नहीं?"

⁸फिर क्योंकि हम में से हर एक कैसे अपने ही वतन की बोली सुनता है।⁹हालांकि हम हैं : पार्थि, मादि, ऐलामी, मसोपुतामिया, यहूदिया, और कप्पदुकिया, और पुन्तुस, और आसिया,¹⁰और फ़रूगिया, और पम्फ़िलिया, और मिस्र और लिबुवा, के इलाक़े के रहने वाले हैं, जो कुरेने की तरफ़ है और रोमी मुसाफ़िर¹¹चाहे यहूदी चाहे उनके मुरीद, करेती और 'अरब हैं। मगर अपनी अपनी ज़बान में उन से ख़ुदा के बड़े बड़े कामों का बयान सुनते हैं।"

¹²और सब हैरान हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, "ये क्या हुआ चाहता है?"¹³और कुछ ने ठट्ठा मार कर कहा, "ये तो ताज़ा मय के नशे में हैं।"

¹⁴लेकिन पतरस उन ग्यारह रसूलों के साथ खड़ा हुआ "और अपनी आवाज़ बूलन्द करके लोगों से कहा कि "ऐ यहूदियों और ऐ यरूशलीम के सब रहने वाले ये जान लो, और कान लगा कर मेरी बातें सुनो।¹⁵कि जैसा तुम समझते हो ये नशे में नहीं।क्योंकि अभी तो सुबह के नौ ही बजे हैं।

¹⁶बल्कि ये वो बात है जो योएल नबी के ज़रिए कही गई है कि,¹⁷ख़ुदा फ़रमाता है, कि आखिरी दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपनी रूह में से हर आदमियों पर डालूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां नुबुव्वत करेंगी और तुम्हारे जवान रोया और तुम्हारे बुढ़े ख़्वाब देखेंगे।

¹⁸बल्कि मैं अपने बन्दों पर और अपनी बन्दियों पर भी उन दिनों में अपने रूह में से डालूंगा और वह नुबुव्वत करेंगी।¹⁹और मैं ऊपर आस्मान पर 'अजीब काम और नीचे ज़मीन पर निशानियां या'नी ख़ून और आग और धुएँ का बादल दिखाऊंगा।

²⁰सूरज तारीक और, चाँद ख़ून हो जाएगा पहले इससे कि ख़ुदावन्द का अज़ीम और जलील दिन आए।²¹और यूँ होगा कि जो कोई ख़ुदावन्द का नाम लेगा, नजात पाएगा।

²²ऐ इस्राईलियों! ये बातें सुनो ईसा' नासरी एक शख्स था जिसका ख़ुदा की तरफ़ से होना तुम पर उन मो'जिज़ों और 'अजीब कामों और निशानों से साबित हुआ; जो ख़ुदा ने उसके ज़रिये तुम में दिखाए।चुनांचे तुम आप ही जानते हो।²³जब वो ख़ुदा के मुकर्रर इन्तिज़ाम और इल्म से साबिक़ के मुवाफ़िक़ पकड़वाया गया तो तुम ने बेशरा लोगों के हाथ से उसे मस्लूब करवा कर मार डाला।²⁴लेकिन ख़ुदा ने मौत के बंद खोल कर उसे जिलाया क्योंकि मुम्किन ना था कि वो उसके क़ब्ज़े में रहता।

²⁵क्योंकि दाऊद उसके हक़ में कहता है।कि मैं ख़ुदावन्द को हमेशा अपने सामने देखता रहा; क्योंकि वो मेरी दहनी तरफ़ है ताकि मुझे जुम्बिश ना हो।²⁶इसी वजह से मेरा दिल खुश हुआ; और मेरी ज़बान शाद , बल्कि मेरा जिस्म भी उम्मीद में बसा रहेगा।

²⁷इसलिए कि तू मेरी जान को 'आलम-ए-अर्वाह में ना छोड़ेगा , और ना अपने पाक के सड़ने की नौबत पहुंचने देगा।²⁸तू ने मुझे ज़िन्दगी की राहें बताई तू मुझे अपने दीदार के ज़रिए खुशी से भर देगा।"

²⁹ऐ भाइयों! मैं क्रौम के बुजुर्ग, दाऊद के हक़ में तुम से दिलेरी के साथ कह सकता हूँ कि वो मरा और दफ़न भी हुआ; और उसकी क़ब्र आज तक हम में मौजूद है।³⁰पस नबी होकर और ये जान कर कि ख़ुदा ने मुझ से क़सम खाई है कि तेरी नस्ल से एक शख्स को तेरे तख़्त पर बिठाऊंगा।³¹उसने नबूव्वत के तौर पर मसीह के जी उठने का ज़िक़्र किया कि ना वो ' आलम' ए' अर्वाह में छोड़ेगा, ना उसके जिस्म के सड़ने की नौबत पहुंचेगी।

³²इसी ईसा' को ख़ुदा ने जिलाया; जिसके हम सब गवाह हैं।³³पस ख़ुदा के दहने हाथ से सर बलन्द होकर, और बाप से वो रूह-उल-कुहूस हासिल करके जिसका वा'दा किया गया था, उसने ये नाज़िल किया जो तुम देखते और सुनते हो।

³⁴क्योंकि दाऊद बादशाह तो आस्मान पर नहीं चढ़ा, लेकिन वो खुद कहता है, कि ख़ुदावन्द ने मेरे ख़ुदा से कहा, "मेरी दहनी तरफ़ बैठ।³⁵जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ तले की चौकी न कर दूँ।³⁶पस इस्राईल का सारा घराना यक़ीन जान ले कि ख़ुदा ने उसी ईसा' को जिसे तुम ने मस्लूब किया ख़ुदावन्द भी किया और मसीह भी।"

³⁷जब उन्होंने ने ये सुना तो उनके दिलों पर चोट लगी ,और पतरस और बाक़ी रसूलों से कहा, "ऐ भाइयों हम क्या करें?"³⁸पतरस ने उन से कहा, "तौबा करो और तुम में से हर एक अपने गुनाहों की मु'आफ़ी के लिए ईसा' मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले तो तुम रूह-उल-कुहूस इना'म में पाओगे।³⁹इसलिए कि ये वा'दा तुम और तुम्हारी औलाद और उन सब दूर के लोगों से भी है; जिनको ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।"

⁴⁰उसने और बहुत सी बातें जता जता कर उन्हें ये नसीहत की, कि अपने आपको इस टेढ़ी क्रौम से बचाओ।⁴¹पस जिन लोगों ने उसका क़लाम कुबूल किया,उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी रोज़ तीन हज़ार आदमियों के क़रीब उन में मिल गए।⁴²और ये रसूलों से तालीम पाने और रिफ़ाक़त रखने में , और रोटी तोड़ने और दु'आ करने में मशगूल रहे।

⁴³और हर शख्स पर ख़ौफ़ छा गया और बहुत से 'अजीब काम और निशान रसूलों के ज़रिए से ज़ाहिर होते थे।⁴⁴और जो ईमान लाए थे वो सब एक जगह रहते थे और सब चीज़ों में शरीक थे।⁴⁵और अपना माल-ओर अस्बाब बेच बेच कर हर एक की ज़रूरत के मुवाफ़िक़ सब को बांट दिया करते थे।

⁴⁶और हर रोज़ एक दिल होकर हैकल में जमा हुआ करते थे , और घरों में रोटी तोड़कर खुशी और सादा दिली से खाना खाया करते थे।⁴⁷और ख़ुदा की हम्द करते और सब लोगों को अज़ीज़ थे; और जो नजात पाते थे उनको ख़ुदावन्द हर रोज़ जमात में मिला देता था।

Chapter 3

¹पतरस और यूहन्ना दु'आ के वक्त्र या'नी दो पहर तीन बजे हैकल को जा रहे थे।²और लोग एक पैदाइशी लंगड़े को ला रहे थे, जिसको हर रोज़ हैकल के उस दरवाज़े पर बिठा देते थे, जो खूबसूरत कलहाता है ताकि हैकल में जाने वालों से भीख मांगे।³जब उस ने पतरस और यूहन्ना को हैकल जाते देखा तो उन से भीख मांगी।

⁴पतरस और यूहन्ना ने उस पर गौर से नज़र की और पतरस ने कहा, "हमारी तरफ़ देख।"⁵वो उन से कुछ मिलने की उम्मीद पर उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुआ।

⁶पतरस ने कहा, "चांदी सोना तो मेरे पास है नहीं! मगर जो मेरे पास है वो तुझे दे देता हूँ ईसा' मसीह नासरी के नाम से चल फिर"

⁷और उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसको उठाया,और उसी दम उसके पांव और टखने मज़बूत हो गए।⁸और वो कूद कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा; और चलता और कूदता और खुदा की हम्द करता हुआ उनके साथ हैकल में गया।

⁹और सब लोगों ने उसे चलते फिरते और खुदा की हम्द करते देख कर।¹⁰उसको पहचाना, कि ये वही है जो हैकल के खूबसूरत दरवाज़े पर बैठ कर भीख मांगा करता था;और उस माजरे से जो उस पर वाक़े' हुआ था, बहुत दंग और हैरान हुए।

¹¹जब वो पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत हैरान हो कर उस बरामदह की तरफ़ जो सुलेमान का कहलाता है; उनके पास दौड़े आए।

¹²पतरस ने ये देख कर लोगों से कहा; "ऐ इस्राईलियों इस पर तुम क्यूं ताअज्जुब करते हो और हमें क्यूं इस तरह देख रहे हो; कि गोया हम ने अपनी कुदरत या दीनदारी से इस शख्स को चलता फिरता कर दिया?

¹³अब्राहम, इज़हाक और या'कूब के खुदा या'नी हमारे बाप दादा के खुदा ने अपने खादिम ईसा' को जलाल दिया, जिसे तुम ने पकड़वा दिया और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का इरादा किया तो तुम ने उसके सामने उसका इन्कार किया।¹⁴तुम ने उस कुदूस और रास्तबाज़ का इन्कार किया; और पीलातुस से दरख्वास्त की कि एक खताकार तुम्हारी खातिर छोड़ दिया जाए।

¹⁵मगर ज़िन्दगी के मालिक को क़त्ल किया जाए; जिसे खुदा ने मुर्दों में से जिलाया; इसके हम गवाह हैं।¹⁶उसी के नाम से उस ईमान के वसीले से जो उसके नाम पर है,इस शख्स को मज़बूत किया जिसे तुम देखते और जानते हो।बेशक उसी ईमान ने जो उसके वसीला से है ये पूरी तरह से तन्दरूस्ती तुम सब के सामने उसे दी।"

¹⁷ऐ भाइयो! मैं जानता हूँ कि तुम ने ये काम नादानी से किया; और ऐसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी।¹⁸मगर जिन बातों की खुदा ने सब नबियों की ज़बानी पहले खबर दी थी, कि उसका मसीह दुख उठाएगा; वो उसने इसी तरह पूरी की।

¹⁹पस तौबा करो और फिर जाओ ताकि तुम्हारे गुनाह मिटाए जाएँ,और इस तरह "खुदावन्द के हुज़ूर से ताज़गी के दिन आएँ।"²⁰और वो उस मसीह को जो तुम्हारे वास्ते मुक़र्रर हुआ है, या'नी ईसा' को भेजे।

²¹जरूरी है कि वो असमान में उस वक्त्र तक रहे; जब तक कि वो सब चीज़ें बहाल न की जाएँ,जिनका ज़िक्र "खुदा" ने अपने पाक नबियों की ज़बानी किया है; जो दुनिया के शुरू से होते आए हैं।²²चुनांचे मूसा ने कहा, कि "खुदावन्द खुदा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझसा एक नबी पैदा करेगा जो कुछ वो तुम से कहे उसकी सुनना।"²³और यूं होगा कि जो शख्स उस नबी की न सुनेगा वो उम्मत में से नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया जाएगा।

²⁴बल्कि समुएल से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने क़लाम किया, उन सब ने इन दिनों की खबर दी है।²⁵तुम नबियों की औलाद और उस अहद के शरीक हो, जो "खुदा" ने तुम्हारे बाप दादा से बांधा, जब इब्रहाम से कहा, कि तेरी औलाद से दुनिया के सब घराने बरकत पाएंगे।²⁶खुदा ने अपने खादिम को उठा कर पहले तुम्हारे पास भेजा; ताकि तुम में से हर एक को उसकी बुराइयों से हटाकर उसे बरकत दे।"

Chapter 4

¹जब वो लोगों से ये कह रहे थे तो काहिन और हैकल का मालिक और सद्की उन पर चढ़ आए।² वो .।मगीन हुए क्योंकि ये लोगों को ता'लीम देते और ईसा की मिसाल देकर मुर्दों के जी उठने का ऐलान करते थे।³ और उन्होंने उन को पकड़ कर दुसरे दिन तक हवालात में रखवा; क्योंकि शाम हो गई थी।⁴ मगर कलाम के सुनने वालों में से बहुत से ईमान लाए; यहां तक कि मर्दों की ता'दाद पांच हज़ार के करीब हो गई।

⁵दुसरे दिन यूं हुआ कि उनके सरदार और बुजुर्ग और आलिमा⁶ और सरदार काहिन हन्ना और काइफ़ा, यूहन्ना, और इस्कंदर और जितने सरदार काहिन के घराने के थे, यरूशलीम में जमा हुए।⁷ और उनको बीच में खड़ा करके पूछने लगे कि "तुम ने ये काम किस कुदरत और किस नाम से किया?"

⁸उस वक़्त पतरस ने रूह-उल-कुददूस से भरपूर होकर उन से कहा।⁹ "ऐ उम्मत के सरदारों और बुजुर्गों; अगर आज हम से उस एहसान के बारे में पूछ-ताछ की जाती है, जो एक कमज़ोर आदमी पर हुआ; कि वो क्यूंकर अच्छा हो गया?¹⁰ तो तुम सब और इसाईल की सारी उम्मत को मा'लूम हो कि ईसा' मसीह नासरी जिसको तुम ने मस्लूब किया, और खुदा ने मुर्दों में से जिलाया, उसी के नाम से ये शख्स तुम्हारे सामने तन्दुरुस्त खड़ा है।

¹¹ये वही पत्थर है जिसे तुमने हक़ीर जाना और वो कोने के सिरे का पत्थर हो गया।¹² और किसी दूसरे के वसीले से नजात नहीं, क्यूंकि आसमान के तले आदमियों को कोई दुसरा नाम नहीं बख़्शा गया, जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।"

¹³जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना की हिम्मत देखी, और मा'लूम किया कि ये अनपढ़ और नावाक़िफ़ आदमी हैं, तो ता'अज्जुब किया; फिर ऊन्हें पहचाना कि ये ईसा' के साथ रहे हैं।¹⁴ और उस आदमी को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़ा देखकर कुछ ख़िलाफ़ न कह सके।

¹⁵मगर उन्हें सट्रे-ए-अदालत से बाहर जाने का हुक्म देकर आपस में मशवरा करने लगे।¹⁶ "कि हम इन आदमियों के साथ क्या करें? क्यूंकि यरूशलीम के सब रहने वालों पर यह रोशन है। कि उन से एक खुला मो'जिज़ा ज़ाहिर हुआ और हम इस का इन्कार नहीं कर सकते।¹⁷ लेकिन इसलिए कि ये लोगों में ज़्यादा मशहूर न हो, हम उन्हें धमकाएं कि फिर ये नाम लेकर किसी से बात न करें।"¹⁸ पस उन्हें बुला कर ताकीद की कि ईसा' का नाम लेकर हरगिज़ बात न करना और न तालीम देना।

¹⁹मगर पतरस और यूहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, "कि तुम ही इन्साफ़ करो, आया खुदा के नज़दीक ये वाजिब है कि हम खुदा की बात से तुम्हारी बात ज़्यादा सुनें?"²⁰ क्यूंकि मुम्किन नहीं कि जो हम ने देखा और सुना है वो न कहें।"

²¹उन्होंने उनको और धमकाकर छोड़ दिया; क्यूंकि लोगों कि वजह से उनको सज़ा देने का कोई मौक़ा; न मिला इसलिए कि सब लोग उस माजरे कि वजह से खुदा की बड़ाई करते थे।²² क्यूंकि वो शख्स जिस पर ये शिफ़ा देने का मो'जिज़ा हुआ था, चालीस बरस से ज़्यादा का था।

²³वो छूटकर अपने लोगों के पास गए, और जो कुछ सरदार काहिनों और बुजुर्गों ने उन से कहा था बयान किया।²⁴ जब उन्होंने ये सुना तो एक दिल होकर बुलन्द आवाज़ से खुदा से गुज़ारिश की, 'ऐ' मालिक तू वो है जिसने आसमान और ज़मीन और समुन्दर और जो कुछ उन में है पैदा किया।²⁵ तूने रूह-उल-कुददूस के वसीले से हमारे बाप अपने खादिम दाऊद की जुबानी फ़रमाया कि, "क्रौमों ने क्यूं धुम मचाई? और उम्मतों ने क्यूं बातिल खयाल किए?"

²⁶खुदावन्द और उसके मसीह की मुखालिफ़त को ज़मीन के बादशाह उठ खड़े हुए, और सरदार जमा हो गए।'

²⁷क्यूंकि वाक़ई तेरे पाक खादिम ईसा' के बरख़िलाफ़ जिसे तूने मसह किया।" हेरोदेस, और, पुन्तियुस पीलातुस, ग़ैर क्रौमों और इसाईलियों के साथ इस शहर में जमा हुए।²⁸ ताकि जो कुछ पहले से तेरी कुदरत और तेरी मसलेहत से ठहर गया था, वही 'अमल में लाएं।

²⁹अब, ऐ खुदावन्द" उनकी धमकियों को देख, और अपने बन्दों को ये तौफ़ीक़ दे, कि वो तेरा कलाम कमाल दिलेरी से सुनाएं।³⁰ और तू अपना हाथ शिफ़ा देने को बढ़ा और तेरे पाक खादिम ईसा' के नाम से मो'जिज़े और अजीब काम ज़हूर में आए।"³¹ जब वो दु'आ कर चुके, तो जिस मकान में जमा थे, वो हिल गया और वो सब रूह-उल-कुददूस से भर गए, और "खुदा" का कलाम दिलेरी से सुनाते रहे।

³²और ईमानदारों की जमा'अत एक दिल और एक जान थी; और किसी ने भी अपने माल को अपना न कहा, बल्कि उनकी सब चीज़ें मुश्तरका थीं।³³ और रसूल बड़ी कुदरत से खुदावन्द ईसा' के जी उठने की गवाही देते रहे, और उन सब पर बड़ा फ़ज़ल था।

³⁴क्यूंकि उन में कोई भी मुहताज न था, इसलिए कि जो लोग ज़मीनों और घरों के मालिक थे, उनको बेच बेच कर बिकी हुई चीज़ों की क्रीमत लाते।³⁵ और रसूलों के पावं में रख देते थे, फिर हर एक को उसकी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बांट दिया जाता था।

³⁶और यूसुफ़ नाम एक लावी था, जिसका लक़ब रसूलों ने बरनबास : या'नी नसीहत का बेटा रखवा था, और जिसकी पैदाइश कुप्रस टापू की थी।³⁷ उसका एक खेत था, जिसको उसने बेचा और क्रीमत लाकर रसूलों के पांव में रख दी।

Chapter 5

¹और एक शख्स हननियाह नाम और उसकी बीवी सफ़ीरा ने जायदाद बेची।²और उसने अपनी बीवी के जानते हुए क़ीमत में से कुछ रख छोड़ा और एक हिस्सा लाकर रसूलों के पांव में रख दिया।

³मगर पतरस ने कहा, “ऐ हननियाह! क्यूँ शैतान ने तेरे दिल में ये बात डाल दी, कि तू रूह-उल-कुदूस से झूट बोले और ज़मीन की क़ीमत में से कुछ रख छोड़े।

⁴क्या जब तक वो तेरे पास थी वो तेरी न थी? और जब बेची गई तो तेरे इख्तियार में न रही, तूने क्यूँ अपने दिल में इस बात का खयाल बांधा? तू आदमियों से नहीं बल्कि खुदा से झूठ बोला।”⁵ये बातें सुनते ही हननियाह गिर पड़ा, और उसका दम निकल गया, और सब सुनने वालों पर बड़ा खौफ़ छा गया।⁶कुछ जवानों ने उठ कर उसे कफ़नाया और बाहर ले जाकर दफ़न किया।

⁷तक़रीबन तीन घंटे गुज़र जाने के बाद उसकी बीवी इस हालात से बेखबर अन्दर आई।⁸पतरस ने उस से कहा, “मुझे बता; क्या तुम ने इतने ही की ज़मीन बेची थी?” उसने कहा हां इतने ही की।

⁹पतरस ने उससे कहा, “तुम ने क्यूँ खुदावन्द की रूह को आजमाने के लिए ये क्या किया? देख तेरे शौहर को दफ़न करने वाले दरवाज़े पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएँग।”¹⁰वो उसी वक़्त उसके क्रदमों पर गिर पड़ी और उसका दम निकल गया, और जवानों ने अन्दर आकर उसे मुर्दा पाया और बाहर ले जाकर

उसके शौहर के पास दफ़न कर दिया।¹¹और सारी कलीसिया बल्कि इन बातों के सब सुननेवालों पर बड़ा खौफ़ छा गया।

¹²और रसूलों के हाथों से बहुत से निशान और अजीब काम लोगों में ज़ाहिर होते थे, और वो सब एक दिल होकर सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते थे।

¹³लेकिन बे ईमानों में से किसी को हिम्मत न हुई, कि उन में जा मिले, मगर लोग उनकी बड़ाई करते थे।

¹⁴और ईमान लाने वाले मर्द -और-तक़रीबन “खुदावन्द”की कलीसिया में और भी कसरत से आ मिले।¹⁵यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर चार पाइयों और खटोलो पर लिटा देते थे, ताकि जब पतरस आए तो उसका साया ही उन में से किसी पर पड़ जाए।¹⁶और यरूशलीम के चारो तरफ़ के कस्बों से भी लोग बीमारों और नापाक रूहों के सताए हुए को लाकर कसरत से जमा होते थे, और वो सब अच्छे कर दिये जाते थे।

¹⁷फिर सरदार काहिन और उसके सब साथी जो सदूकियों के फ़िरके के थे, हसद के मारे उठे।¹⁸और रसूलों को पकड़ कर हवालात में रख दिया।

¹⁹मगर खुदावन्द के एक फ़रिश्ते ने रात को कैदखाने के दरवाज़े खोले और उन्हें बाहर लाकर कहा कि।²⁰“जाओ, हैकल में खड़े होकर इस ज़िन्दगी की सब बातें लोगों को सुनाओ।”²¹वो ये सुनकर सुबह होते ही हैकल में गए, और ता'लीम देने लगे; मगर सरदार काहिन और उसके साथियों ने आकर सद्दे-ऐ-अदालत वालों और बनी इस्राईल के सब बुज़ुर्गों को जमा किया, और कैद खाने में कहला भेजा उन्हें लाएं।

²²लेकिन सिपाहियों ने पहुंच कर उन्हें कैद खाने में न पाया, और लौट कर खबर दी²³“हम ने कैद खाने को तो बड़ी हिफ़ाज़त से बन्द किया हुआ, और पहरेवालों को दरवाज़ों पर खड़े पाया; मगर जब खोला तो अन्दर कोई न मिला!”

²⁴जब हैकल के सरदार और सरदार काहिनो ने ये बातें सुनी तो उनके बारे में हैरान हुए, कि इसका क्या अंजाम होगा?²⁵इतने में किसी ने आकर उन्हें खबर दी कि “देखो, वो आदमी जिन्हें तुम ने कैद किया था; हैकल में खड़े लोगों को ता'लीम दे रहे हैं।”

²⁶तब सरदार सिपाहियों के साथ जाकर उन्हें ले आया; लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्यूँकि लोगों से डरते थे, कि हम पर पथराव न करें।²⁷फिर उन्हें लाकर 'अदालत में खड़ा कर दिया, और सरदार काहिन ने उन से ये कहा।²⁸“हम ने तो तुम्हें सख़्त ताकीद की थी, कि ये नाम लेकर ता'लीम न देना; मगर देखो तुम ने तमाम यरूशलीम में अपनी ता'लीम फैला दी, और उस शख्स का खून हमारी गर्दन पर रखना चाहते हो।”

²⁹पतरस और रसूलों ने जवाब में कहा, कि; “हमें आदमियों के हुक्म की निस्वत खुदा का हुक्म मानना ज़्यादा फ़र्ज़ है।³⁰हमारे बाप दादा के खुदा ने ईसा' को जिलाया, जिसे तुमने सलीब पर लटका कर मार डाला था।³¹उसी को खुदा ने मालिक और मुन्जी ठहराकर अपने दहने हाथ से सर बलन्द किया, ताकि इस्राईल को तौबा की तौफ़ीक़ और गुनाहों की मु'आफ़ी बख़्शे।³²और हम इन बातों के गवाह हैं; रूह-उल-कुदूस भी जिसे खुदा ने उन्हें बख़्शा है जो उसका हुक्म मानते हैं।”

³³वो ये सुनकर जल गए, और उन्हें क़त्ल करना चाहा।³⁴मगर गमलीएल नाम एक फ़रीसी ने जो शरा' का मु'अल्लिम और सब लोगों में इज़ज़तदार था; अदालत में खड़े होकर हुक्म दिया कि इन आदमियों को थोड़ी देर के लिए बाहर कर दो।

³⁵फिर उस ने कहा, “ऐ इस्राईलियो; इन आदमियों के साथ जो कुछ करना चाहते हो होशियारी से करना।³⁶क्यूँकि इन दिनों से पहले थियूदास ने उठ कर दा'वा किय था, कि मैं भी कुछ हूँ; और तक़रीबन चार सौ आदमी उसके साथ हो गए थे, मगर वो मारा गया और जितने उसके मानने वाले थे, सब इधर उधर हुए; और मिट गए।³⁷इस शख्स के बाद यहूदाह गलीली नाम लिखवाने के दिनों में उठा; और उस ने कुछ लोग अपनी तरफ़ कर लिए; वो भी हलाक हुआ और जितने उसके मानने वाले थे सब इधर उधर हो गए।

³⁸पस अब मैं तुम से कहता हूँ कि इन आदमियों से किनारा करो और उन से कुछ काम न रखो, कहीं ऐसा न हो कि खुदा से भी लड़ने वाले ठहरो क्यूँकि ये तदबीर या काम अगर आदमियों की तरफ़ से है तो आप बर्बाद हो जाएंगा।³⁹लेकिन अगर खुदा की तरफ़ से है तो तुम इन लोगों को मगलूब न कर सकोगे।”

⁴⁰उन्होंने उसकी बात मानी और रसूलों को पास बुला उनको पिटवाया और ये हुक्म देकर छोड़ दिया कि ईसा' का नाम लेकर बात न करना।⁴¹पस वो अदालत से इस बात पर खुश होकर चले गए; कि हम उस नाम की खातिर बेइज़ज़त होने के लायक़ तो ठहरे।⁴²और वो हैकल में और घरों में हर रोज़ ता'लीम देने और इस बात की खुशख़बरी सुनाने से कि ईसा' ही मसीह है बाज़ न आए।

Chapter 6

¹उन दिनों में जब शागिर्द बहुत होते जाते थे, तो यूनानी माइल यहूदी इब्रानियों की शिकायत करने लगे; इसलिए कि रोज़ाना खबरगिरी में उनकी बेवाओं के बारे में लापरवाही होती थी।

²और उन बारह ने शागिर्दों की जमा'अत को अपने पास बुलाकर कहा, "मुनासिब नहीं कि हम खुदा के कलाम को छोड़कर खाने पीने का इन्तिज़ाम करें।³पस, ऐ भाइयों! अपने में से सात नेक नाम शख्सों को चुन लो जो रूह और दानाई से भरे हुए हों; कि हम उनको इस काम पर मुकर्रर करें।⁴लेकिन हम तो दु'आ में और कलाम की खिदमत में मशगूल रहेंगे।

⁵ये बात सारी जमा'अत को पसन्द आई, पस उन्होंने स्तिफ़नुस नाम एक शख्स को जो ईमान और रूह -उल-कुदूस से भरा हुआ था और फ़िलिप्पुस, व प्रुखुरुस, और नीकानोर, और तीमोन, और पर्मिनास और नीकुलाउस। को जो नौ मुरीद यहूदी अन्ताकी था, चुन लिया।⁶और उन्हें रसूलों के आगे खड़ा किया; उन्होंने दु'आ करके उन पर हाथ रखे।

⁷और "खुदा" का कलाम फैलता रहा, और यरूशलीम में शागिर्दों का शुमार बहुत ही बढ़ता गया, और काहिनों की बड़ी गिरोह इस दीन के तहत में हो गई।

⁸स्तिफ़नुस फ़ज़ल और कुव्वत से भरा हुआ लोगों में बड़े बड़े अजीब काम और निशान ज़ाहिर किया करता था; ⁹कि उस इबादतख़ाने से जो लिबिरतीनों का कहलाता है; और कुरेनियों शहर और इस्कन्दरियों क़स्बा और उन में से जो किलकिया और आसिया सूबे के थे, ये कुछ लोग उठ कर स्तिफ़नुस से बहस करने लगे।

¹⁰मगर वो उस दानाई और रूह का जिससे वो कलाम करता था, मुकाबला न कर सके।¹¹इस पर उन्होंने कुछ आदमियों को सिखाकर कहलवा दिया " हम ने इसको मूसा और खुदा केबर-ख़िलाफ़ कुफ़्र की बातें करते सुना।"

¹²फिर वो 'अवाम और बुज़ुर्गों और आलिमों को उभार कर उस पर चढ़ गए; और पकड़ कर सट्रे-ए-'अदालत में ले गए।¹³और झूठे गवाह खड़े किये जिन्होंने कहा, " ये शख्स इस पाक मुक़ाम और शरी'अत के बरख़िलाफ़ बोलने से बाज़ नहीं आता।¹⁴क्यूँकि हम ने उसे ये कहते सुना है; कि "वही ईसा' नासरी इस मुक़ाम को बर्बाद कर देगा, और उन रस्मों को बदल डालेगा, जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।"¹⁵और उन सब ने जो अदालत में बैठे थे, उस पर ग़ौर से नज़र की तो देखा कि उसका चेहरा फ़रिश्ते के जैसा है।

Chapter 7

¹फिर सरदार काहिन ने कहा, “ क्या ये बातें इसी तरह पर हैं?”² उस ने कहा, “ऐ भाइयों! और बुजुर्गों, सुनें। खुदा ऐ' जुल- जलाल हमारे बुजुर्ग अब्राहम पर उस वक़्त ज़ाहिर हुआ जब वो हारान शहर में बसने से पहले मसोपोतामिया मुल्क में था।³ और उस से कहा कि 'अपने मुल्क और अपने कुन्बे से निकल कर उस मुल्क में चला जा'जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा।

⁴इस पर वो कसदियों के मुल्क से निकल कर हारान में जा बसा; और वहां से उसके बाप के मरने के बा'द खुदा ने उसको इस मुल्क में लाकर बसा दिया, जिस में तुम अब बसते हो।⁵ और उसको कुछ मीरास बल्कि क्रदम रखने की भी उस में जगह न दी मगर वा'दा किया कि मैं ये ज़मीन तेरे और तेरे बा'द तेरी नस्ल के क्रब्जे में कर दूंगा, हालांकि उसके औलाद न थी।

⁶और खुदा ने ये फ़रमाया, तेरी नस्ल ग़ैर मुल्क में परदेसी होगी, वो उसको गुलामी में रखेंगे और चार सौ बरस तक उन से बदसलूकी करेंगे।⁷ फिर खुदा ने कहा, जिस क्रौम की वो गुलामी में रहेंगे उसको मैं सज़ा दूंगा; और उसके बा'द वो निकलकर इसी जगह मेरी इबादत करेंगे।⁸ और उसने उससे खतने का 'अहद बांधा; और इसी हालत में अब्राहम से इज़हाक पैदा हुआ, और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इज़हाक से या'कूब और या'कूब से बारह क्रबीलों के बुजुर्ग पैदा हुए।

⁹और बुजुर्गों ने हसद में आकर यूसुफ़ को बेचा कि मिस्र में पहुंच जाए; मगर खुदा उसके साथ था।¹⁰ और उसकी सब मुसीबतों से उसने उसको छुड़ाया; और मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के नज़दीक उसको मक्रबूलियत और हिक़मत बख़्शी, और उसने उसे मिस्र और अपने सारे घर का सरदार कर दिया।

¹¹फिर मिस्र के सारे मुल्क और कना'न में काल पड़ा, और बड़ी मुसीबत आई; और हमारे बाप दादा को खाना न मिलता था।¹² लेकिन याकूब ने ये सुनकर कि, मिस्र में अनाज है; हमारे बाप दादा को पहली बार भेजा।¹³ और दूसरी बार यूसुफ़ अपने भाइयों पर ज़ाहिर हो गया और यूसुफ़ की क्रौमियत फ़िर'औन को मा'लूम हो गई।

¹⁴फिर यूसुफ़ ने अपने बाप या'कूब और सारे कुन्बे को जो पछहत्तर जाने थीं; बुला भेजा।¹⁵ और या'कूब मिस्र में गया वहां वो और हमारे बाप दादा मर गए।¹⁶ और वो शहर ऐ' सिकम में पहुंचाए गए और उस मक्बरे में दफ़न किए गए' जिसको अब्राहम ने सिकम में रुपये देकर बनी हमूर से मोल लिया था।

¹⁷लेकिन जब उस वादे की मी'आद पुरी होने को थी, जो खुदा ने अब्राहम से फ़रमाया था तो मिस्र में वो उम्मत बढ़ गई; और उनका शुमार ज़्यादा होता गया।

¹⁸उस वक़्त तक कि दूसरा बादशाह मिस्र पर हुक्मरान हुआ; जो यूसुफ़ को न जानता था।¹⁹ उसने हमारी क्रौम से चालाकी करके हमारे बाप दादा के साथ यहाँ तक बदसलूकी की कि उन्हें अपने बच्चे फेंकने पड़े ताकि ज़िन्दा न रहें।

²⁰इस मौक़े पर मूसा पैदा हुआ; जो निहायत खूबसूरत था, वो तीन महीने तक अपने बाप के घर में पाला गया।²¹ मगर जब फेंक दिया गया, तो फ़िर'औन की बेटी ने उसे उठा लिया और अपना बेटा करके पाला।

²²और मूसा ने मिस्रियों के ,तमाम इल्मो की ता'लीम पाई, और वो कलाम और काम में ताकत वाला था।²³ और जब वो तक्ररीबन चालीस बरस का हुआ, तो उसके जी में आया कि मैं अपने भाइयों बनी इस्राईल का हाल देखूँ।²⁴ चुनांचे उन में से एक को ज़ुल्म उठाते देखकर उसकी हिमायत की, और मिस्री को मार कर मज़लूम का बदला लिया।²⁵ उसने तो खयाल किया कि मेरे भाई समझ लेंगे, कि खुदा मेरे हाथों उन्हें छुटकारा देगा, मगर वो न समझे।

²⁶फिर दूसरे दिन वो उन में से दो लड़ते हुआ के पास आ निकला और ये कहकर उन्हें सुलह करने की तरगीब दी कि 'ऐ जवानों तुम तो भाई भाई हो, क्यूँ एक दूसरे पर जुल्म करते हो?'²⁷ लेकिन जो अपने पड़ोसी पर जुल्म कर रहा था, उसने ये कह कर उसे हटा दिया तुझे किसने हम पर हाकिम और क़ाज़ी मुकर्रर किया?²⁸ क्या तू मुझे भी क्रल्ल करना चाहता है ? जिस तरह कल उस मिस्री को क्रल्ल किया था।

²⁹मूसा ये बात सुन कर भाग गया, और मिदियान के मुल्क में परदेसी रहा, और वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए।³⁰ और जब पूरे चालीस बरस हो गए, तो कोह-ए-सीना के वीराने में जलती हुई झाड़ी के शो'ले में उसको एक फ़रिश्ता दिखाई दिया।

³¹जब मूसा ने उस पर नज़र की तो उस नज़ारे से ताअज़्जुब किया, और जब देखने को नज़दीक गया तो खुदावन्द की आवाज़ आई कि³² मैं तेरे बाप दादा का खुदा या'नी अब्राहम इज़हाक और या'कूब का खुदा हूँ तब मूसा काँप गया और उसको देखने की हिम्मत न रही।

³³खुदावन्द ने उससे कहा कि अपने पाव से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वो पाक ज़मीन है।³⁴ मैंने वाक़ई अपनी उस उम्मत की मुसीबत देखी जो मिस्र में है। और उनका आह-व नाला सुना पस उन्हें छुड़ाने उतरा हूँ, अब आ मैं तुझे मिस्र में भेजूँगा।

³⁵जिस मूसा का उन्होंने ये कह कर इन्कार किया था, तुझे किसने हाकिम और क़ाज़ी मुकर्रर किया 'उसी को "खुदा " ने हाकिम और छुड़ाने वाला ठहरा कर, उस फ़रिश्ते के ज़रि'ए से भेजा जो उस झाड़ी में नज़र आया था।³⁶ वही शख्स उन्हें निकाल लाया और मिस्र और बहर-ए-कुलजुम और वीराने में चालीस बरस तक अजीब काम और निशान दिखाए।³⁷ ये वही मूसा है, जिसने बनी इस्राईल से कहा, खुदा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक नबी पैदा करेगा।

³⁸ये वही है, जो वीराने की कलीसिया में उस फ़रिश्ते के साथ जो कोह-ए-सीना पर उससे हम कलाम हुआ, और हमारे बाप दादा के साथ था उसी को ज़िन्दा कलाम मिला कि हम तक पहुँचा दे।³⁹ मगर हमारे बाप दादा ने उसके फ़रमाँबरदार होना न चाहा, बल्कि उसको हटा दिया और उनके दिल मिस्र की तरफ़ माइल हुए।⁴⁰ और उन्होंने हारून से कहा, हमारे लिए ऐसे मा'बूद बना' जो हमारे आगे आगे चलें, क्योंकि ये मूसा जो हमें मुल्क-ए मिस्र से निकाल लाया, हम नहीं जानते कि वो क्या हुआ।

⁴¹और उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाया, और उस बुत को कुर्बानी चढ़ाई, और अपने हाथों के कामों की खुशी मनाई।⁴² पस खुदा ने मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया कि आसमानी फौज को पूजें चुनांचे नबियो की किताबों में लिखा है ऐ इस्राईल के घराने क्या तुम ने वीराने में चालीस बरस मुझको ज़बीहे और कुर्बानियां गुज़रानी?

⁴³बल्कि तुम मोलक के खेमे और रिफ़ान देवता के तारे को लिए फिरते थे,या'नी उन मूरतों को जिन्हें तुम ने सज्दा करने के लिए बनाया था। पस मैं तुम्हें बाबुल के परे ले जाकर बसाऊँगा।

⁴⁴शहादत का खेमा वीराने में हमारे बाप दादा के पास था, जैसा कि मूसा से कलाम करने वाले ने हुक्म दिया था, जो नमूना तूने देखा है, उसी के मुवाफ़िक़ इसे बना।⁴⁵उसी खेमे को हमारे बाप दादा अगले बुजुर्गों से हासिल करके ईसा' के साथ लाए जिस वक़्त उन क्रौमों की मिलिकियत पर क़ब्ज़ा किया जिनको खुदा ने हमारे बाप दादा के सामने निकाल दिया, और वो दाऊद के ज़माने तक रहा।⁴⁶उस पर खुदा की तरफ़ से फ़ज़ल हुआ, और उस ने दरख्वास्त की, कि मैं या'क़ूब के खुदा के वास्ते घर तैयार करूँ।

⁴⁷मगर सुलेमान ने उस के लिए घर बनाया, ।⁴⁸लेकिन खुदा हाथ के बनाए हुए घरों में नहीं रहता "चुनौचे " नबी कहता है कि⁴⁹खुदावन्द फ़रमाता है, आसमान मेरा तख़्त और ज़मीन मेरे पाँव तले की चौकी है, तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे, या मेरी आरामगाह कौन सी है?⁵⁰क्या ये सब चीज़ें मेरे हाथ से नहीं बनीं '

⁵¹ऐ ग़र्दन कशो , दिल और कान के नामख़तूनों, तुम हर वक़्त रूह-उल-कुदूस की मुख़ालिफ़त करते हो; जैसे तुम्हारे बाप दादा करते थे,वैसे ही तुम भी करते हो।

⁵²नबियों में से किसको तुम्हारे बाप दादा ने नहीं सताया? उन्होंने ने तो उस रास्तबाज़ के आने की पेश-ख़बरी देनेवालों को क़त्ल किया, और अब तुम उसके पकड़वाने वाले और क़ातिल हुए।⁵³तुम ने फ़रिश्तों के ज़रिये से शरी'अत तो पाई, पर अमल नहीं किया।"

⁵⁴जब उन्होंने ये बातें सुनीं तो जी में जल गए, और उस पर दांत पीसने लगे।⁵⁵मगर उस ने रूह -उल-कुदूस से भरपूर होकर आसमान की तरफ़ ग़ौर से नज़र की, और खुदा का जलाल और ईसा' को खुदा की दहनी तरफ़ खड़ा देख कर कहा ।⁵⁶"देखो मैं आसमान को खुला, और इब्न- ए-आदम को खुदा की दहनी तरफ़ खड़ा देखता हूँ "

⁵⁷मगर उन्होंने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए, और एक दिल होकर उस पर झपटे।⁵⁸और शहर से बाहर निकाल कर उस पर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े साऊल नाम एक जवान के पाँव के पास रख दिए।

⁵⁹पस स्तिफ़नूस पर पथराव करते रहे, और वो ये कह कर दु'आ करता रहा "ऐ खुदावन्द ईसा' मेरी रूह को कुबूल कर।"⁶⁰फिर उस ने घुटने टेक कर बड़ी आवाज़ से पुकारा, "ऐ खुदावन्द ये गुनाह इन के ज़िम्मे न लगा।" और ये कह कर सो गया।

Chapter 8

¹और साऊल उस के क़त्ल में शामिल था। उसी दिन उस कलीसिया पर जो यरूशलीम में थी, बड़ा जुल्म बर्पा हुआ, और रसूलों के सिवा सब लोग यहूदिया और सामरिया के चारों तरफ़ फैल गये।²और दीनदार लोग स्तिफ़नुस को दफ़न करने के लिए ले गए, और उस पर बड़ा मातम किया।³और साऊल कलीसिया को इस तरह तबाह करता रहा, कि घर घर घुसकर और ईमानदार मर्दों और औरतों को घसीट कर कैद करता था,।

⁴जो इधर उधर हो गए थे, वो कलाम की खुशखबरी देते फिरे।⁵और फ़िलिप्पुस सूब-ए सामरिया में जाकर लोगों में मसीह का ऐलान करने लगा।

⁶और जो मो'जिज़े फ़िलिप्पुस दिखाता था, लोगों ने उन्हें सुनकर और देख कर बिल-इत्तफ़ाक़ उसकी बातों पर जी लगाया।⁷क्योंकि बहुत सारे लोगों में से बदरूहें बड़ी आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर निकल गईं, और बहुत से मफ़्लूज और लंगड़े अच्छे किए गए।⁸और उस शहर में बड़ी खुशी हुई।

⁹उस से पहले शामा'ऊन नाम का एक शख्स उस शहर में जादूगरी करता था, और सामरिया के लोगों को हैरान रखता और ये कहता था, कि मैं भी कोई बड़ा शख्स हूँ।¹⁰और छोटे से बड़े तक सब उसकी तरफ़ मुतवज्जह होते और कहते थे, ये शख्स खुदा की वो कुदरत है, जिसे बड़ी कहते हैं।¹¹वह इस लिए उस की तरफ़ मुतवज्जह होते थे, कि उस ने बड़ी मुद्दत से अपने जादू की वजह से उनको हैरान कर रखा था,।

¹²लेकिन जब उन्होंने फ़िलिप्पुस का यक़ीन किया जो "खुदा" की बादशाही और ईसा' मसीह के नाम की खुशखबरी देता था, तो सब लोग चाहे मर्द हो चाहे औरत बपतिस्मा लेने लगे।¹³और शामा'ऊन ने खुद भी यक़ीन किया और बपतिस्मा लेकर फ़िलिप्पुस के साथ रहा, और निशान और मो'जिज़े देखकर हैरान हुआ।

¹⁴जब रसूलों ने जो यरूशलीम में थे सुना, कि सामरियों ने "खुदा" का कलाम कुबूल कर लिया है, तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा।¹⁵उन्होंने जाकर उनके लिए दु'आ की कि रूह-उल-कुदूस पाएँ।¹⁶क्योंकि वो उस वक़्त तक उन में से किसी पर नाज़िल ना हुआ था, उन्होंने सिर्फ़ खुदावन्द ईसा' के नाम पर बपतिस्मा लिया था।¹⁷फिर उन्होंने उन पर हाथ रखे, और उन्होंने रूह-उल-कुदूस पाया।

¹⁸जब शामा'ऊन ने देखा कि रसूलों के हाथ रखने से रूह-उल-कुदूस दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा,¹⁹" मुझे भी यह इख्तियार दो, कि जिस पर मैं हाथ रखूँ, वो रूह-उल-कुदूस पाए।"

²⁰पतरस ने उस से कहा, " तेरे रुपये तेरे साथ खत्म हो , इस लिए कि तू ने खुदा की बख़्शिश को रुपियों से हासिल करने का खयाल किया।²¹तेरा इस काम में न हिस्सा है न बख़रा क्योंकि तेरा दिल खुदा के नज़दीक खालिस नहीं।"²²पस अपनी इस बुराई से तौबा कर और खुदा से दु'आ कर शायद तेरे दिल के इस खयाल की मु'आफ़ी हो।²³क्यूँकि मैं देखता हूँ कि तू पित की सी कड़वाहट और नारासती के बन्द में गिरफ़तार है।"

²⁴शामा'ऊन ने जवाब में कहा, "तुम मेरे लिए खुदावन्द से दु'आ करो कि जो बातें तुम ने कही उन में से कोई मुझे पेश ना आए।"

²⁵फिर वो गवाही देकर और खुदावन्द का कलाम सुना कर यरूशलीम को वापस हुए, और सामरियों के बहुत से गाँव में खुशखबरी देते गए।

²⁶फिर खुदावन्द के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उठ कर दक्खिन की तरफ़ उस राह तक जा जो यरूशलीम से गज़ज़ा शहर को जाती है, और जंगल में है,।"²⁷वो उठ कर रवाना हुआ, तो देखो एक हब्शी खोजा आ रहा था, वो हब्शियों की मलिका कन्दाके का एक वज़ीर और उसके सारे खज़ाने का मुख्तार था, और यरूशलीम में इबादत के लिए आया था।²⁸वो अपने रथ पर बैठा हुआ और यसा'याह नबी के सहीफ़े को पढ़ता हुआ वापस जा रहा था।

²⁹पाक रूह ने फ़िलिप्पुस से कहा, "नज़दीक जाकर उस रथ के साथ होले।"³⁰पस फ़िलिप्पुस ने उस तरफ़ दौड़ कर उसे यसा'याह नबी का सहीफ़ा पढ़ते सुना और कहा, "जो तू पढ़ता है उसे समझता भी है?"³¹ये मुझ से क्यूँ कर हो सकता है जब तक कोई मुझे हिदायत ना करे? और उसने फ़िलिप्पुस से दरखास्त की कि मेरे साथ आ बैठ।

³²किताब-ए-मुकद्दस की जो इबारत वो पढ़ रहा था, ये थी: " लोग उसे भेड़ की तरह ज़बह करने को ले गए, " और जिस तरह बर्बा अपने बाल कतरने वाले के सामने बे-ज़बान होता है " उसी तरह वो अपना मुह नहीं खोलता।³³उसकी पस्तहाली में उसका इन्साफ़ न हुआ, और कौन उसकी नसल का हाल बयान करेगा? क्यूँकि ज़मीन पर से उसकी ज़िन्दगी मिटाई जाती है।

³⁴खोजे ने फ़िलिप्पुस से कहा, "मैं तेरी मिन्नत करके पुछता हूँ, कि नबी ये किस के हक़ में कहता है , अपने या किसी दूसरे के हक़ में?"³⁵फ़िलिप्पुस ने अपनी ज़बान खोलकर उसी लिखे हुए से शुरू किया और उसे ईसा' की खुशखबरी दी।

³⁶और राह में चलते चलते किसी पानी की जगह पर पहुँचे; खोजे ने कहा, " देख पानी मौजूद है अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन सी चीज़ रोकती है?"³⁷[फ़िलिप्पुस ने कहा, "अगर तू दिल ओ-जान से ईमान लाए तो बपतिस्मा ले सकता है।" उसने जवाब में कहा, " मैं ईमान लाता हूँ कि ईसा' मसीह खुदा का बेटा है।"]³⁸पस उसने रथ को खड़ा करने का हुक्म दिया और फ़िलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में उतर पड़े और उसने उसको बपतिस्मा दिया।

³⁹जब वो पानी में से निकल कर उपर आए तो "खुदावन्द" का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया और खोजा ने उसे फिर न देखा, क्यूँकि वो खुशी करता हुआ अपनी राह चला गया।⁴⁰और फ़िलिप्पुस अशूद क्रस्बा में आ निकला और कैसरिया शहर में पहुँचने तक सब शहरों में खुशखबरी सुनाता गया।

Chapter 9

¹और साऊल जो अभी तक खुदावन्द के शागिर्दों को धमकाने और क़त्ल करने की धुन में था। सरदार काहिन के पास गया।²और उस से दमिश्क के इबादतखानों के लिए इस मज़मून के खत माँगे कि जिनको वो इस तरीके पर पाए, मर्द चाहे औरत, उनको बाँधकर यरूशलीम में लाए।

³जब वो सफ़र करते करते दमिश्क के नज़दीक पहुँचा तो ऐसा हुआ कि यकायक आसमान से एक नूर उसके पास आ, चमका।⁴और वो ज़मीन पर गिर पड़ा और ये आवाज़ सुनी "ऐ साऊल, ऐ साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"

⁵उस ने पूछा, "ऐ " "खुदावन्द, तू कौन है?" उस ने कहा,, " मैं ईसा' हूँ जिसे तू सताता है।" मगर उठ शहर में जा, और जो तुझे करना चाहिए वो तुझसे कहा जाएगा।" जो आदमी उसके हमराह थे, वो ख़ामोश खड़े रह गए, क्योंकि आवाज़ तो सुनते थे, मगर किसी को देखते न थे।

⁸और साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब आँखें खोलीं तो उसको कुछ दिखाई न दिया, और लोग उसका हाथ पकड़ कर दमिश्क शहर में ले गए।⁹और वो तीन दिन तक न देख सका, और न उसने खाया न पिया।

¹⁰दमिश्क में हननियाह नाम एक शागिर्द था, उस से खुदावन्द ने रोया में कहा, " ऐ हननियाह" उस ने कहा, "ऐ खुदावन्द, मैं हाज़िर हूँ।"¹¹खुदावन्द ने उस से कहा, "उठ, उस गली में जा जो सीधा' कहलाता है। और यहूदाह के घर में साऊल नाम तर्सुसी शहरी को पूछ ले क्योंकि देख वो दु'आ कर रहा है।"¹²और उस ने हननियाह नाम एक आदमी को अन्दर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकि फिर बीना हो।"

¹³हननियाह ने जावाब दिया कि "ऐ खुदावन्द, मैं ने बहुत से लोगों से इस शख्स का ज़िक्र सुना है, कि इस ने यरूशलीम में तेरे मुकद्दसों के साथ कैसी कैसी बुराइयाँ की हैं।"¹⁴और यहाँ उसको सरदार काहिनों की तरफ़ से इख्तियार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले।"¹⁵मगर खुदावन्द ने उस से कहा कि तू "जा, क्योंकि ये क़ौमों, बादशाहों और बनी इस्राईल पर मेरा नाम ज़ाहिर करने का मेरा चुना हुआ वसीला है।"¹⁶और मैं उसे जता दूंगा कि उसे मेरे नाम के खातिर किस क़दर दुख उठाना पड़ेगा

¹⁷पस हननियाह जाकर उस घर में दाखिल हुआ और अपने हाथ उस पर रखकर कहा, "ऐ भाई साऊल उस खुदावन्द या'नी ईसा' जो तुझ पर उस राह में जिस से तू आया ज़ाहिर हुआ था, उसने मुझे भेजा है, कि तू बीनाई पाए, और रूहे पाक से भर जाए।"¹⁸और फ़ौरन उसकी आँखों से छिल्के से गिरे और वो बीना हो गया, और उठ कर बपतिस्मा लिया।¹⁹फिर कुछ खाकर ताक़त पाई, और वो कई दिन उन शागिर्दों के साथ रहा, जो दमिश्क में थे।

²⁰और फ़ौरन इबादतखानों में ईसा' का ऐलान करने लगा, कि "वो 'खुदा' का बेटा है।"²¹और सब सुनने वाले हैरान होकर कहने लगे कि "क्या ये वो शख्स नहीं है, जो यरूशलीम में इस नाम के लेने वालों को तबाह करता था, और यहाँ भी इस लिए आया था, कि उनको बाँध कर सरदार काहिनों के पास ले जाए?"²²लेकिन साऊल को और भी ताक़त हासिल होती गई, और वो इस बात को साबित करके कि "मसीह यही है" दमिश्क के रहने वाले यहूदियों को हैरत दिलाता रहा।

²³और जब बहुत दिन गुज़र गए, तो यहूदियों ने उसे मार डालने का मशवरा किया।²⁴मगर उनकी साज़िस साऊल को मालूम हो गई, वो तो उसे मार डालने के लिए रात दिन दरवाज़ों पर लगे रहे।²⁵लेकिन रात को उसके शागिर्दों ने उसे लेकर टोकरे में बिठाया और दीवार पर से लटका कर उतार दिया।

²⁶उस ने यरूशलीम में पहुँच कर शागिर्दों में मिल जाने की कोशिश की और सब उस से डरते थे, क्योंकि उनको यक़ीन न आता था, कि ये शागिर्द है।²⁷मगर बरनबास ने उसे अपने साथ रसूलों के पास ले जाकर उन से बयान किया कि इस ने इस तरह राह में "खुदावन्द" को देखा और उसने इस से बातें की और उस ने दमिश्क में कैसी दिलेरी के साथ ईसा' के नाम से ऐलान किया।

²⁸पस वो यरूशलीम में उनके साथ जाता रहा।²⁹और दिलेरी के साथ खुदावन्द के नाम का ऐलान करता था, और यूनानी माइल यहूदियों के साथ गुप्तगू और बहस भी करता था, मगर वो उसे मार डालने के दर पै थे।³⁰और भाइयों को जब ये मा'लूम हुआ, तो उसे कैसरिया में ले गए, और तरसुस को रवाना कर दिया।

³¹पस तमाम यहूदियों और गलील और सामरिया में कलीसिया को चैन हो गया और उसकी तरक्की होती गई और वो "खुदावन्द" के ख़ौफ़ और रूह- उल - कुद्स की तसल्ली पर चलती और बढ़ती जाती थी।³²और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ उन मुकद्दसों के पास भी पहुँचा जो लुदा में रहते थे।

³³वहाँ ऐनियास नाम एक मफ़लूज को पाया जो आठ बरस से चारपाई पर पड़ा था।³⁴पतरस ने उस से कहा, ऐ "ऐनियास, ईसा' मसीह तुझे शिफ़ा देता है। उठ आप अपना बिस्तरा बिछा।" वो फ़ौरन उठ खड़ा हुआ।³⁵तब लुदा और शारून के सब रहने वाले उसे देखकर "खुदावन्द" की तरफ़ रुजू लाए।

³⁶और याफ़ा शहर में एक शागिर्द थी, तबीता नाम जिसका तर्जुमा हरनी है, वो बहुत ही नेक काम और ख़ैरात किया करती थी।³⁷उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि वो बीमार होकर मर गई, और उसे नहलाकर बालाखाने में रख दिया।

³⁸और चूँकि लुदा याफ़ा के नज़दीक था, शागिर्दों ने ये सुन कर कि पतरस वहाँ है दो आदमी भेजे और उस से दरख्वास्त की कि "हमारे पास आने में देर न कर।"³⁹पतरस उठकर उनके साथ हो लिया, जब पहुँचा तो उसे बालखाने में ले गए, और सब बेवाएँ रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुई और जो कुर्ते और कपड़े हरनी ने उनके साथ में रह कर बनाए थे, दिखाने लगीं।

⁴⁰पतरस ने सब को बाहर कर दिया और घुटने टेक कर दु'आ की, फिर लाश की तरफ़ मुतवज्जिह होकर कहा, "ऐ तबीता उठ पस उसने आँखें खोल दीं और पतरस को देखकर उठ बैठी।"⁴¹उस ने हाथ पकड़ कर उसे उठाया और मुकद्दसों और बेवाओं को बुला कर उसे ज़िन्दा उनके सुपुर्द किया।⁴²ये बात सारे याफ़ा में मशहूर हो गई, और बहुत सारे "खुदावन्द पर ईमान ले आए।"⁴³और ऐसा हुआ कि वो बहुत दिन याफ़ा में शमा'ऊन नाम दब्बा' के यंहा रहा।

Chapter 10

¹कैसरिया शहर में कुर्नेलियुस नाम एक शख्स था। वह सौ फ़ौजियों का सूबेदार था, जो अतालियानी कहलाती है।²वो दीनदार था, और अपने सारे घराने समेत खुदा से डरता था, और यहूदियों को बहुत ख़ैरात देता और हर वक़्त खुदा से दु'आ करता था

³उस ने तीसरे पहर के करीब रोया में साफ़ साफ़ देखा कि खुदा का फ़रिश्ता मेरे पास आकर कहता है, "कुर्नेलियुस!"⁴उसने उस को ग़ौर से देखा और डर कर कहा "खुदावन्द क्या है?" उस ने उस से कहा, "तेरी दु'आएँ और तेरी ख़ैरात यादगारी के लिए खुदा के हुज़ूर पहुँचीं।"⁵अब याफ़ा में आदमी भेजकर शमा'ऊन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।⁶वो शमा'ऊन दब्बाग़ के यहाँ मेंहमान है, जिसका घर समुन्दर के किनारे है।"

⁷और जब वो फ़रिश्ता चला गया जिस ने उस से बातें की थी, तो उस ने दो नौकरों को और उन में से जो उसके पास हाज़िर रहा करते थे, एक दीनदार सिपाही को बुलाया।⁸और सब बातें उन से बयान कर के उन्हें याफ़ा में भेजा।

⁹दूसरे दिन जब वो राह में थे, और शहर के नज़दीक पहुँचे तो पतरस दोपहर के करीब छत पर दु'आ करने को चढ़ा।¹⁰और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चहता था, लेकिन जब लोग तैयारी कर रहे थे, तो उस पर बेखुदी छा गई।¹¹और उस ने देखा कि आस्मान खुल गया और एक चीज़ बड़ी चादर की तरह चारों कोनों से लटकती हुई ज़मीन की तरफ़ उतर रही है।¹²जिसमें ज़मीन के सब क्रिस्म के चौपाए, कीड़े मकोड़े और हवा के परिन्दे हैं।

¹³और उसे एक आवाज़ आई कि ऐ पतरस, उठ ज़बह कर और खा,¹⁴मगर पतरस ने कहा, "ऐ खुदावन्द हरगिज़ नहीं क्योंकि मैं ने कभी कोई हराम या नापाक चीज़ नहीं खाई।"¹⁵फिर दूसरी बार उसे आवाज़ आई, कि "जिनको खुदा ने पाक ठहराया है तू उन्हें हराम न कह"¹⁶तीन बार ऐसा ही हुआ, और फ़ौरन वो चीज़ आसमान पर उठा ली गई।

¹⁷जब पतरस अपने दिल में हैरान हो रहा था, कि ये रोया जो मैं ने देखी क्या है, तो देखो वो आदमी जिन्हें कुर्नेलियुस ने भेजा था, शमा'ऊन के घर पूछ कर के दरवाज़े पर आ खड़े हुए।¹⁸और पुकार कर पूछने लगे कि शमा'ऊन जो पतरस कहलाता है? "यही मेंहमान है"

¹⁹जब पतरस उस ख़्वाब को सोच रहा था, तो रूह ने उस से कहा देख तीन आदमी तुझे पूछ रहे हैं।²⁰पस, उठ कर नीचे जा और बे-खटक उनके साथ हो ले; क्योंकि मैं ने ही उनको भेजा है।²¹पतरस ने उतर कर उन आदमियों से कहा, "देखो जिसको तुम पूछते हो वो मैं ही हूँ तुम किस वजह से आये हो।"

²²उन्होंने कहा, "कुर्नेलियुस सूबेदार जो रास्तबाज़ और खुदा तरस आदमी और यहूदियों की सारी क्रौम में नेक नाम है उस ने पाक फ़रिश्ते से हिदायत पाई कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से कलाम सुने।"²³पस उस ने उन्हें अन्दर बुला कर उनकी मेंहमानी की, और दूसरे दिन वो उठ कर उनके साथ रवाना हुआ, और याफ़ा में से कुछ भाई उसके साथ हो लिए।

²⁴वो दूसरे रोज़ कैसरिया में दाखिल हुए, और कुर्नेलियुस अपने रिश्तेदारों और दिली दोस्तों को जमा कर के उनकी राह देख रहा था।

²⁵जब पतरस अन्दर आने लगा तो ऐसा हुआ कि कुर्नेलियुस ने उसका इस्तक्रबाल किया और उसके क़दमों में गिर कर सिज्दा किया।²⁶लेकिन पतरस ने उसे उठा कर कहा खड़ा हो, "मैं भी तो इन्सान हूँ।"

²⁷और उससे बातें करता हुआ अन्दर गया और बहुत से लोगों को इकट्ठा पा कर।²⁸उसने कहा तुम तो जानते हो कि "यहूदी को ग़ैर क्रौम वाले से सोहबत रखना या उसके यहाँ जाना ना जायज़ है मगर "खुदा" ने मुझे पर ज़ाहिर किया कि मैं किसी आदमी को नजिस या नापाक न कहूँ।"²⁹इसी लिए जब मैं बुलाया गया तो बे'उज़्र चला आया, पस अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस बात के लिए बुलाया है?"

³⁰कुर्नेलियुस ने कहा "इस वक़्त पूरे चार रोज़ हुए कि मैं अपने घर तीसरे पहर दु'आ कर रहा था। और क्या देखता हूँ। कि एक शख्स चमकदार पोशाक पहने हुए मेरे सामने खड़ा हुआ।"³¹और कहा कि "ऐ'कुर्नेलियुस तेरी दु'आ सुन ली गई और तेरी ख़ैरात की खुदा के हुज़ूर याद हुई।"³²पस किसी को याफ़ा में भेज कर शमा'ऊन को जो पतरस कहलाता है अपने पास बुला, वो समुन्दर के किनारे शमा'ऊन दब्बाग़ के घर में मेंहमान है।³³पस उसी दम में ने तेरे पास आदमी भेजे और तूने खूब किया जो आ गया, अब हम सब खुदा के हुज़ूर हाज़िर हैं ताकि जो कुछ खुदावन्द ने फ़रमाया है उसे सुनें।"

³⁴पतरस ने ज़बान खोल कर कहा, "अब मुझे पूरा यक़ीन हो गया कि खुदा किसी का तरफ़दार नहीं।"³⁵बल्कि हर क्रौम में जो उस से डरता और रास्तबाज़ी करता है, वो उसको पसन्द आता है।

³⁶जो कलाम उस ने बनी इस्राईल के पास भेजा, जब कि ईसा' मसीह के ज़रिये जो सब का खुदा है, सुलह की खुशख़बरी दी।³⁷इस बात को तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मे की मनादी के बा'द गलील से शुरू होकर तमाम यहूदिया सूबा में मशहूर हो गई।³⁸कि खुदा ने ईसा' नासरी को रूह-उल-कुदूस और कुदरत से किस तरह महसूस किया, वो भलाई करता और उन सब को जो इब्लीस के हाथ से जुल्म उठाते थे शिफ़ा देता फिरा, क्योंकि खुदा उसके साथ था।

³⁹और हम उन सब कामों के गवाह हैं, जो उस ने यहूदियों के मुल्क और यरूशलीम में किए, और उन्होंने ने उस को सलीब पर लटका कर मार डाला।⁴⁰उस को खुदा ने तीसरे दिन जिलाया और ज़ाहिर भी कर दिया।⁴¹न कि सारी उम्मत पर बल्कि उन गवाहों पर जो आगे से खुदा के चुने हुए थे, या'नी हम पर जिन्होंने ने उसके मुद्दों में से जी उठने कि बा'द उसके साथ खाया पिया।

⁴²और उस ने हमें हुक्म दिया कि उम्मत में ऐलान करो और गवाही दो कि ये वही है जो खुदा की तरफ़ से ज़िन्दों और मुद्दों का मुन्सिफ़ मुक़र्रर किया गया।⁴³इस शख्स की सब नबी गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर ईमान लाएगा, उस के नाम से गुनाहों की मु'आफ़ी हासिल करेगा।"

⁴⁴पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि रूह-उल-कुदूस उन सब पर नाज़िल हुआ, जो कलाम सुन रहे थे।⁴⁵और पतरस के साथ जितने मख़तून ईमानदार आए थे, वो सब हैरान हुए कि ग़ैर क्रौमों पर भी रूह-उल-कुदूस की बख़्शिष जारी हुई।

⁴⁶क्योंकि उन्हें तरह तरह की ज़बानें बोलते और खुदा की तारीफ़ करते सुना; पतरस ने जवाब दिया।⁴⁷"क्या कोई पानी से रोक सकता है, कि बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने ने हमारी तरह रूह-उल-कुदूस पाया?"⁴⁸और उस ने हुक्म दिया कि "उन्हें ईसा' मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए इस पर उन्होंने ने उस से दरख़वास्त की कि चन्द रोज़ हमारे पास रह।"

Chapter 11

¹रसूलों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे, सुना कि ग़ैर क्रौमों ने भी खुदा का कलाम कुबूल किया है।²जब पतरस यरूशलीम में आया तो मख्तून ईमानदार उस से ये बहस करने लगे³ “तू, ना मख्तूनों ईमानदारों के पास गया और उन के साथ खाना खाया।”

⁴पतरस ने शुरू से वो काम तरीक़ीबवार उन से बयान किया कि।⁵“मै याफ़ा शहर में दु'आ कर रहा था, और बेखुदी की हालत में एक ख़्वाब देखा। कि कोई चीज़ बड़ी चादर की तरह चारों कोनों से लटकती हुई आसमान से उतर कर मुझ तक आई।⁶उस पर जब मैने ग़ौर से नज़र की तो ज़मीन के चौपाए और जंगली जानवर और कीड़े मकौड़े और हवा के परिन्दे देखे।

⁷और ये आवाज़ भी सुनी कि 'ऐ पतरस उठ ज़बह कर और खा!'”⁸लेकिन मै ने कहा “ऐ खुदावन्द हरगिज़ नहीं 'क्यूँकि कभी कोई हराम या नापाक चीज़ खाया ही नहीं।”⁹इसके जावाब में दूसरी बार आसमान से आवाज़ आई; “जिनको खुदा ने पाक ठहराया है; तू उन्हें हराम न कह।”¹⁰तीन बार ऐसा ही हुआ, फिर वो सब चीज़ें आसमान की तरफ़ खींच ली गई।

¹¹और देखो' उसी वक़्त तीन आदमी जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर के पास आ खड़े हुए जिस में हम थे।¹²रूह ने मुझ से कहा कि “तू बिला इम्तियाज़ उनके साथ चला जा और ये छे: भाई भी मेरे साथ हो लिए और हम उस शख्स के घर में दाखिल हुए।¹³उस ने हम से बयान किया कि मैने फ़रिश्ते को अपने घर में खड़े हुए देखा'जिसने मुझ से कहा, याफ़ा में आदमी भेजकर शमा'ऊन को बुलवा ले जो पतरस कहलाता है।¹⁴वो तुझ से ऐसी बातें कहेगा जिससे तू और तेरा सारा घराना नजात पाएगा।

¹⁵जब मै कलाम करने लगा तो रूह-उल-कुदूस उन पर इस तरह नाज़िल हुआ जिस तरह शुरू में हम पर नाज़िल हुआ था।”¹⁶और मुझे खुदावन्द की वो बात याद आई, जो उसने कही थी “यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया मगर तुम रूह -उल -कुदूस से बपतिस्मा पाओगे।

¹⁷पस जब खुदा ने उस को भी वही ने'मत दी जो हम को खुदावन्द ईसा' मसीह पर ईमान लाकर मिली थी ? तो मै कौन था कि खुदा को रोक सकता।¹⁸वो ये सुनकर चुप रहे और खुदा की बड़ाई करके कहने लगे, “फिर तो बेशक खुदा ने ग़ैर क्रौमों को भी ज़िन्दगी के लिए तौबा की तौफ़ीक़ दी है।”

¹⁹पस, जो लोग उस मुसीबत से इधर उधर हो गए थे जो स्तिफ़नुस कि ज़रिये पड़ी थी वो फिरते फिरते फ़ीनेकि सूबा और कुप्रुस टापू और आन्ताकिया शहर में पहुँचे; मगर यहूदियों के सिवा और किसी को कलाम न सुनाते थे।²⁰लेकिन उन में से चन्द कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो आन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी खुदावन्द ईसा' मसीह की खुशख़बरी की बातें सुनाने लगे।²¹और खुदावन्द का हाथ उन पर था और बहुत से लोग ईमान लाकर खुदावन्द की तरफ़ रुजू हुए।

²²उन लोगों की ख़बर यरूशलीम की कलीसिया के कानों तक पहुँची और उन्होंने ने बरनबास को आन्ताकिया तक भेजा।²³वो पहुँचकर और खुदा का फ़ज़ल देख कर खुश हुआ, और उन सब को नसीहत की कि दिली इरादे से खुदावन्द से लिपटे रहो।²⁴क्यूँकि वो नेक मर्द और रूह -उल -कुदूस और ईमान से मा'मूर था, और बहुत से लोग खुदावन्द की कलीसिया में आ मिले।

²⁵फिर वो साऊल की तलाश में तरसुस को चला गया।²⁶और जब वो मिला तो उसे आन्ताकिया में लाया और ऐसा हुआ कि वो साल भर तक कलीसिया की जमा'अत में शामिल होते और बहुत से लोगों को ता'लीम देते रहे और शागिर्द पहले आन्ताकिया में ही मसीही कहलाए।

²⁷उन ही दिनों में चन्द नबी यरूशलीम से आन्ताकिया में आए।²⁸उन में से एक जिसका नाम अग़बुस था खड़े होकर रूह की हिदायत से ज़ाहिर किया कि तमाम दुनियाँ में बड़ा काल पड़ेगा और क्लदिग़ुस के अहद में वाके हुआ।

²⁹पस, शागिर्दों ने तजवीज़ की अपने अपने हैसियत कि मुवाफ़िक़ यहूदियों में रहने वाले भाइयों की खिदमत के लिए कुछ भेजें।³⁰चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और साऊल के हाथ बुजुर्गों के पास भेजा।

Chapter 12

¹तक्ररीबन उसी वक़्त हेरोदेस बादशाह ने सताने के लिए कलीसिया में से कुछ पर हाथ डाला।²और यूहन्ना के भाई या'कूब को तलवार से क़त्ल किया।

³जब देखा कि ये बात यहूदी अगुवों को पसन्द आई, तो पतरस को भी गिरफ़्तार कर लिया। ये ईद 'ए फ़तीर के दिन थे।⁴और उसको पकड़ कर कैद किया और निगहबानी के लिए चार चार सिपाहियों के चार पहरो में रखा इस इरादे से कि फ़सह के बाद उसको लोगों के सामने पेश करे।

⁵पस, कैद खाने में तो पतरस की निगहबानी हो रही थी, मगर कलीसिया उसके लिए दिलो 'जान से "खुदा" से दु'आ कर रही थी।⁶और जब हेरोदेस उसे पेश करने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ दो सिपाहियों के बीच सोता था, और पहरे वाले दरवाज़े पर कैदखाने की निगहबानी कर रहे थे।

⁷कि देखो, खुदावन्द का एक फ़रिश्ता खड़ा हुआ और उस कोठरी में नूर चमक गया और उस ने पतरस की पसली पर हाथ मार कर उसे जगाया और कहा कि "जल्द उठ ! और जंजीरों उसके हाथ से खुल पड़ीं "।⁸फिर फ़रिश्ते ने उस से कहा, "कमर बाँध और अपनी जूती पहन ले।" उस ने ऐसा ही किया, फिर उस ने उस से कहा, " अपना चोगा पहन कर मेरे पीछे हो ले।"

⁹वो निकल कर उसके पीछे हो लिया, और ये न जाना कि जो कुछ फ़रिश्ते की तरफ़ से हो रहा है वो वाक़'ई है बल्कि ये समझा कि ख़्वाब देख रहा हूँ।¹⁰पस, वो पहले और दूसरे हलक़े में से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो शहर की तरफ़ है। वो आप ही उन के लिए खुल गया, पस वो निकलकर गली के उस किनारे तक गए; और फ़ौरन फ़रिश्ता उस के पास से चला गया।

¹¹और पतरस ने होश में आकर कहा कि "अब मैंने सच जान लिया कि खुदावन्द ने अपना फ़रिश्ता भेज कर मुझे हेरोदेस के हाथो से छुड़ा लिया, और यहूदी क्रौम की सारी उम्मीद तोड़ दी।"¹²और इस पर गौर कर के उस यूहन्ना की माँ मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है, वहाँ बहुत से आदमी जमा हो कर दु'आ कर रहे थे।

¹³जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई, तो रुदी नाम एक लौंडी आवाज़ सुनने आई।¹⁴और पतरस की आवाज़ पहचान कर खुशी के मारे फाटक न खोला, बल्कि दौड़कर अन्दर खबर की कि "पतरस फाटक पर खड़ा है!"¹⁵उन्होंने ने उस से कहा, " तू दिवानी है लेकिन वो यक़ीन से कहती रही कि यँ ही है!" उन्होंने कहा कि "उसका फ़रिश्ता होगा।"

¹⁶मगर पतरस खटखटाता रहा पस, उन्होंने ने खिड़की खोली और उस को देख कर हैरान हो गए।¹⁷उस ने उन्हें हाथ से इशारा किया कि चुप रहें। "और उन से बयान किया कि खुदावन्द ने मुझे इस तरह कैदखाने से निकाला "फिर कहा कि या'कूब और भाइयों को इस बात की खबर देना, और रवाना होकर दूसरी जगह चला गया।

¹⁸जब सुबह हुई तो सिपाही बहुत घबराए, कि पतरस क्या हुआ।¹⁹जब हेरोदेस ने उस की तलाश की और न पाया तो पहरे वालों की तहकीकात करके उनके क़त्ल का हुक्म दिया; और यहूदिया सूबे को छोड़ कर कैसरिया शहर में जा बसा।

²⁰और वो सूर और सैदा के लोगों से निहायत नाखुश था, पस वो एक दिल हो कर उसके पास आए, और बादशाह के दरबान बलस्तुस को अपनी तरफ़ करके सुलह चाही, इसलिए कि उन के मुल्क को बादशाह के मुल्क से इम्दाद पहुँचती थी।²¹पस, हेरोदेस एक दिन मुकरर करके और शाहाना पोशाक पहन कर तख़्त-ए ,अदालत पर बैठा, और उन से कलाम करने लगा।

²²लोग पुकार उठे कि "ये तो "खुदा" की आवाज़ है न इन्सान की।"²³उसी वक़्त "खुदा" के फ़रिश्ते ने उसे मारा; इसलिए कि उस ने "खुदा" की बड़ाई नहीं की और वो कीड़े पड़ कर मर गया।

²⁴मगर "खुदा" का कलाम तरक्की करता और फैलता गया।²⁵और बरनबास और साऊल अपनी खिदमत पूरी करके और यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लेकर, यरूशलीम से वापस आए।

Chapter 13

¹अन्ताकिया में उस कलीसिया के मुताअ'ल्लिक्र जो वहाँ थी, कई नबी और मु'अल्लिम थे या'नी बरनबास और शमा'ऊन जो काला कहलाता है, और लुकियुस कुरेनी और मनाहेम जो चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस के साथ पला था, और साऊल।²जब वो खुदावन्द की इबादत कर रहे और रोज़े रख रहे थे, तो रूह-उल-कुहूस ने कहा, "मेरे लिए बरनबास और साऊल को उस काम के वास्ते मख्सूस कर दो जिसके वास्ते मैं ने उनको बुलाया है।"³तब उन्होंने ने रोज़ा रख कर और दु'आ करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें रूखसत किया।

⁴पस, वो रूह-उल-कुहूस के भेजे हुए सिलोकिया को गए, और वहाँ से जहाज़ पर कुपुस को चले।⁵और सलमीस शहर में पहुँचकर यहूदियों के इबादतखानों में "खुदा" का कलाम सुनाने लगे और यूहन्ना उनका खादिम था।

⁶और उस तमाम टापू में होते हुए पाफुस शहर तक पहुँचे वहाँ उन्हें एक यहूदी जादूगर और झूठा नबी बरयिसू नाम का मिला।⁷वो सिरगियुस पौलुस सूबेदार के साथ था जो सहिब-ए-तमीज़ आदमी था, इस ने बरनबास और साऊल को बुलाकर "खुदा" का कलाम सुनना चाहा।⁸मगर इलीमास जादूगर ने (यही उसके नाम का तर्जुमा है), उनकी मुखालिफ़त की और सूबेदार को ईमान लाने से रोकना चाहा।

⁹और साऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है रूह-उल-कुहूस से भर कर उस पर गौर से देखा।¹⁰और कहा "ऐ इब्लीस की औलाद "तू तमाम मक्कारी और शरारत से भरा हुआ और हर तरह की नेकी का दुश्मन है। क्या "खुदावन्द" के सीधे रास्तों को बिगाड़ने से बाज़ न आएगा

¹¹अब देख तुझ पर "खुदावन्द" का ग़ज़ब है "और तू अन्धा होकर कुछ मुद्दत तक सूरज को न देखे गा। उसी वक़्त अँधेरा उस पर छा गया, और वो ढूँढ़ता फिरा कि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले।¹²तब सूबेदार ये माजरा देखकर और "खुदावन्द" की तालीम से हैरान हो कर ईमान ले आया।

¹³फिर पौलुस और उसके साथी पाफुस शहर से जहाज़ पर रवाना होकर पम्फ़ीलिया मुल्क के पिरगा शहर में आए; और यूहन्ना उनसे जुदा होकर यरूशलीम को वापस चला गया।¹⁴और वो पिरगा शहर से चलकर पिसदिया मुल्क के अन्ताकिया शहर में पहुँचे, और सबत के दिन इबादतखाने में जा बैठे।¹⁵फिर तौरेत और नबियों की किताब पढ़ने के बा'द इबादतखाने के सरदारों ने उन्हें कहला भेजा "ऐ भाइयों अगर लोगों की नसीहत के वास्ते तुम्हारे दिल में कोई बात हो तो बयान करो।"

¹⁶पस, पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से इशारा करके कहा "ऐ इस्राईलियो और "ऐ "खुदा"से डरनेवाले सुनो!¹⁷इस उम्मत इस्राईल के "खुदा" ने हमारे बाप दादा को चुन लिया और जब ये उम्मत मुल्के मिस्र में परदेसियों की तरह रहती थी, उसको सरबलन्द किया और ज़बरदस्त हाथ से उन्हें वहाँ से निकाल लाया।

¹⁸और कोई चालीस बरस तक वीरानों में उनकी आदतों की बर्दाश्त करता रहा,।

¹⁹और कना'न के मुल्क में सात क़ौमों को लूट करके तक्ररीबन साढ़े चार सौ बरस में उनका मुल्क इन की मीरास कर दिया।²⁰और इन बातों के बा'द शमुएल नबी के ज़माने तक उन में क़ाज़ी मुकर्रर किए।

²¹इस के बा'द उन्होंने ने बादशाह के लिए दरख्वास्त की और खुदा ने बिनयामीन के कबीले में से एक शख्स साऊल क्रीस के बेटे को चालीस बरस के लिए उन पर मुकर्रर किया।²²फिर उसे हटा करके दाऊद को उन का बादशाह बनाया। जिसके बारे में उस ने ये गवाही दी कि मुझे एक शख्स यस्सी का बेटा दाऊद मेरे दिल के मु'वाफ़िक़ मिल गया। वही मेरी तमाम मज़ी को पूरा करेगा।

²³इसी की नस्ल में से "खुदा" ने अपने वा'दे के मुताबिक़ इस्राईल के पास एक मुन्जी या'नी ईसा' को भेज दिया।²⁴जिस के आने से पहले यहून्ना ने इस्राईल की तमाम उम्मत के सामने तौबा के बपतिस्मे का ऐलान किया।²⁵और जब यहून्ना अपना दौर पूरा करने को था, तो उस ने कहा कि तुम मुझे क्या समझते हो?' में वो नहीं बल्कि देखो मेरे बा'द वो शख्स आने वाला है, जिसके पाँव की जूतियों का फीता मैं खोलने के लायक़ नहीं।'।

²⁶ऐ भाइयों! अब्रहाम के बेटों और ऐ खुदा से डरने वालों इस नजात का कलाम हमारे पास भेजा गया।²⁷क्योंकि यरूशलीम के रहने वालों और उन के सरदारों ने न उसे पहचाना और न नबियों की बातें समझीं, जो हर सबत को सुनाई जाती हैं। इस लिए उस पर फ़त्वा देकर उनको पूरा किया।

²⁸और अगरचे उस के क़त्ल की कोई वजह न मिली तोभी उन्होंने ने पीलातुस से उसके क़त्ल की दरख्वास्त की।²⁹और जो कुछ उसके हक़ में लिखा था, जब उसको तमाम कर चुके तो उसे सलीब पर से उतार कर क़ब्र में रखवा।

³⁰लेकिन "खुदा" ने उसे मुर्दों में से जिलाया।³¹और वो बहुत दिनों तक उनको दिखाई दिया, जो उसके साथ गलील से यरूशलीम आए थे, उम्मत के सामने अब वही उसके गवाह हैं।

³²और हम तुमको उस वा'दे के बारे में जो बाप दादा से किया गया था, ये खुशख़बरी देते हैं।³³कि "खुदा" ने ईसा' को जिला कर हमारी औलाद के लिए उसी वा'दे को पूरा किया। चुनांचे दूसरे मज़मूर में लिखा है, कि तू मेरा बेटा है, आज तू मुझ से पैदा हुआ।³⁴और उसके इस तरह मुर्दों में से जिलाने के बारे में फिर कभी न मरे और उस ने यूँ कहा, कि मैं दाऊद की पाक़ और सच्ची ने'अमतें तुम्हें ढूँगा।'।

³⁵चुनाचे वो एक और मज़मूर में भी कहता है, कि तू अपने मुक़द्दस के सड़ने की नौबत पहुँचने न देगा।'।³⁶क्योंकि दाऊद तो अपने वक़्त में "खुदा" की मज़ी के ताबे' दार रह कर सो गया, और अपने बाप दादा से जा मिला, और उसके सड़ने की नौबत पहुँची।³⁷मगर जिसको "खुदा" ने जिलाया उसके सड़ने की नौबत न पहुँची।

³⁸पस, ऐ भाइयो! तुम्हें मा'लूम हो कि उसी के वसीले से तुम को गुनाहों की मु'आफ़ी की खबर दी जाती है।, ³⁹और मूसा की शरी' अत के ज़रिये जिन बातों से तुम बरी नहीं हो सकते थे, उन सब से हर एक ईमान लाने वाला उसके जरिए बरी होता है।

⁴⁰पस, खबरदार! ऐसा न हो कि जो नबियों की किताब में आया है वो तुम पर सच आए।⁴¹ऐ तहकीर करने वालों, देखो, तअ'ज्जुब करो और मिट जाओ: क्योंकि में तुम्हारे ज़माने में एक काम करता हूँ ऐसा काम कि अगर कोई तुम से बयान करे तो कभी उसका यक़ीन न करोगे।"

⁴²उनके बाहर जाते वक़्त लोग मिन्नत करने लगे कि अगले सबत को भी ये बातें सुनाई जाएँ।⁴³जब मजलिस ख़त्म हुई तो बहुत से यहूदी और खुदा परस्त नए मुरीद यहूदी पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, उन्होंने ने उन से कलाम किया और तरगीब दी कि खुदा के फ़ज़ल पर क़ायम रहो।

⁴⁴दूसरे सबत को तकरीबन सारा शहर "खुदा" का कलाम सुनने को इकट्ठा हुआ।⁴⁵मगर यहूदी इतनी भीड़ देखकर हसद से भर गए, और पौलुस की बातों की मुखालिफ़त करने और कुफ़्र बकने लगे।

⁴⁶पौलुस और बरनबास दिलेर होकर कहने लगे "ज़रूर था, कि "खुदा" का कलाम पहले तुम्हें सुनाया जाए; लेकिन चूँकि तुम उसको रद्द करते हो | और अपने आप को हमेशा की ज़िन्दगी के नाक़ाबिल ठहराते हो, तो देखो हम ग़ैर क़ौमों की तरफ़ मुत्वज्जह होते हैं।"⁴⁷क्योंकि खुदा ने हमें ये हुक्म दिया है कि "मैंने तुझ को ग़ैर क़ौमों के लिए नूर मुकर्रर किया ताकि तू ज़मीन की इन्तिहा तक नजात का ज़रिया हो।"

⁴⁸ग़ैर क़ौम वाले ये सुनकर खुश हुए और "खुदा" के कलाम की बड़ाई करने लगे, और जितने हमेशा की ज़िन्दगी के लिए मुकर्रर किए गए थे, ईमान ले आए।

⁴⁹और उस तमाम इलाक़े में "खुदा" का कलाम फैल गया।

⁵⁰मगर यहूदियों ने "खुदा" परस्त और इज़्ज़त दार औरतों और शहर के रईसों को उभारा और पौलुस और बरनबास को सताने पर आमादा करके उन्हें अपनी सरहदों से निकाल दिया।⁵¹ये अपने पाँव की ख़ाक उनके सामने झाड़ कर इकुनियुम शहर को गए।⁵²मगर शागिर्द खुशी और रूह-उल-कुदूस से भरते रहे।

Chapter 14

¹और इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वो साथ साथ यहूदियों के इबादत खाने में गए। और ऐसी तकरीर की कि यहूदियों और यूनानियों दोनों की एक बड़ी जमा'अत ईमान ले आई।²मगर नाफ़रमान यहूदियों ने ग़ैर क़ौमों के दिलों में जोश पैदा करके उनको भाइयों की तरफ़ बदगुमान कर दिया।

³पस, वो बहुत ज़माने तक वहाँ रहे, और खुदावन्द के भरोसे पर हिम्मत से कलाम करते थे, और वो उनके हाथों से निशान और अजीब काम कराकर, अपने फ़ज़ल के कलाम की गवाही देता था।⁴लेकिन शहर के लोगों में फूट पड़ गई।कुछ यहूदियों की तरफ़ हो गए।कुछ रसूलों की तरफ़।

⁵मगर जब ग़ैर क़ौम वाले और यहूदी उन्हें बे'इज़्ज़त और पथराव करने को अपने सरदारों समेत उन पर चढ़ आए।⁶तो वो इस से वाक़िफ़ होकर लुकाउनिया मुल्क के शहरों लुस्तारा और दिरबे और उनके आस-पास में भाग गए।⁷और वहाँ खुशख़बरी सुनाते रहे।

⁸और लुस्तारा में एक शख्स बैठा था, जो पाँव से लाचार था। वो पैदाइशी लंगड़ा था, और कभी न चला था।⁹वो पौलुस को बातें करते सुन रहा था। और जब इस ने उसकी तरफ़ ग़ौर करके देखा कि उस में शिफ़ा पाने के लायक़ ईमान है।¹⁰तो बड़ी आवाज़ से कहा कि "अपने पाँव के बल सीधा खड़ा हो पस, वो उछल कर चलने फिरने लगा।"

¹¹लोगों ने पौलुस का ये काम देखकर लुकाउनिया की बोली में बुलन्द आवाज़ से कहा "कि आदमियों की सूरत में देवता उतर कर हमारे पास आए हैं"¹²और उन्होंने बरनबास को ज़ियूस कहा, और पौलुस को हरमेस इसलिए कि ये कलाम करने में सबक़त रखता था।¹³और ज़ियूस कि उस मन्दिर का पुजारी जो उनके शहर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटक पर लाकर लोगों के साथ कुर्बानी करना चाहता था।"

¹⁴जब बरनबास और पौलुस रसूलों ने ये सुना तो अपने कपड़े फाड़ कर लोगों में जा कूदे, और पुकार पुकार कर।¹⁵कहने लगे,लोगो तुम ये क्या करते हो ? हम भी तुमहारे हम तबी'अत इन्सान हैं और तुम्हें खुशख़बरी सुनाते हैं ताकि इन बातिल चीज़ों से किनारा करके ज़िन्दा "खुदा" की तरफ़ फिरो, जिस ने आसमान और ज़मीन और समुन्दर और जो कुछ उन में है, पैदा किया।¹⁶उस ने अगले ज़माने में सब क़ौमों को अपनी अपनी राह पर चलने दिया।

¹⁷तोभी उस ने अपने आप को बेगवाह न छोड़ा। चुनाचे, उस ने महरबानियों की और आसमान से तुम्हारे लिए पानी बरसाया और बड़ी बड़ी पैदावार के मौसम अता' किए और तुम्हारे दिलों को ख़ुराक और ख़ुशी से भर दिया।¹⁸ये बातें कहकर भी लोगों को मुश्किल से रोका कि उन के लिए कुर्बानी न करें।

¹⁹फिर कुछ यहूदी अन्ताकिया और इकुनियुम से आए और लोगों को अपनी तरफ़ करके पौलुस पर पथराव किया और उसको मुर्दा समझकर शहर के बाहर घसीट ले गए।²⁰मगर जब शागिर्द उसके आस पास आ खड़े हुए, तो वो उठ कर शहर में आया, और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे शहर को चला गया।

²¹और वो उस शहर में खुशख़बरी सुना कर और बहुत से शागिर्द करके लुस्तारा और इकुनियुम और अन्ताकिया को वापस आए।²²और शागिर्दों के दिलों को मज़बूत करते, और ये नसीहत देते थे, कि ईमान पर क़ायम रहो और कहते थे "ज़रूर है कि हम बहुत मुसीबतें सहकर "खुदा" की बादशाही में दाखिल हों।"

²³और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए बुज़ुर्गों को मुक़र्रर किया और रोज़ा रखकर और दु'आ करके उन्हें "खुदावन्द" के सुपुर्द किया, जिस पर वो ईमान लाए थे।²⁴और पिसदिया मुल्क में से होते हुए पम्फ़ीलिया मुल्क में पहुँचे।²⁵और पिरगे में कलाम सुनाकर अत्तलिया को गए।²⁶और वहाँ से जहाज़ पर उस अन्ताकिया में आए, जहाँ उस काम के लिए जो उन्होंने अब पूरा किया खुदा के फ़ज़ल के सुपुर्द किए गए थे।

²⁷वहाँ पहुँचकर उन्होंने कलीसिया को जमा किया और उन के सामने बयान किया कि "खुदा" ने हमारे ज़रिये क्या कुछ किया और ये कि उस ने ग़ैर क़ौमों के लिए ईमान का दरवाज़ा खोल दिया।²⁸और वो ईमानदारों के पास मुद्दत तक रहे।

Chapter 15

¹फिर कुछ लोग यहूदिया से आ कर भाइयों को यह तालीम देने लगे, “ज़रूरी है कि आप का मूसा की शरी'अत के मुताबिक़ खतना किया जाए, वरना आप नजात नहीं पा सकेंगे।”²पस, जब पौलुस और बरनबास की उन से बहुत तकरार और बहस हुई तो कलीसिया ने ये ठहराया कि पौलुस और बरनबास और उन में से चन्द शख्स इस मसले के लिए रसूलों और बुजुर्गों के पास यरूशलीम जाएँ।

³पस, कलीसिया ने उनको रवाना किया और वो ग़ैर क्रौमों को रूजू लाने का बयान करते हुए फ़ीनेके और सामरिया सूबे से गुज़रे और सब भाइयों को बहुत खुश करते गए।⁴जब यरूशलीम में पहुँचे तो कलीसिया और रसूल और बुजुर्ग उन से खुशी के साथ मिले। और उन्होंने ने सब कुछ बयान किया जो “खुदा” ने उनके ज़रीये किया था।

⁵मगर फ़रीसियों के फ़िर्कें में से जो ईमान लाए थे, उन में से कुछ ने उठ कर कहा “कि उनका खतना कराना और उनको मूसा की शरी'अत पर अमल करने का हुक्म देना ज़रूरी है।”⁶पस, रसूल और बुजुर्ग इस बात पर ग़ौर करने के लिए जमा हुए।

⁷और बहुत बहस के बाद पतरस ने खड़े होकर उन से कहा कि “ऐ भाइयों तुम जानते हो कि बहुत अर्सा हुआ जब “खुदा” ने तुम लोगों में से मुझे चुना कि ग़ैर क्रौमों मेरी ज़बान से खुशखबरी का कलाम सुनकर ईमान लाएँ।⁸और “खुदा” ने जो दिलों को जानता है उनको भी हमारी तरह रूह -उल -कुहूस दे कर उन की गवाही दी।⁹और ईमान के वसीले से उन के दिल पाक करके हम में और उन में कुछ फ़र्क़ न रखखा।

¹⁰पस, अब तुम शागिर्दों की गर्दन पर ऐसा जुआ रख कर जिसको न हमारे बाप दादा उठा सकते थे, न हम “खुदा” को क्यूँ आजमाते हो?¹¹हालाँकि हम को यकीन है कि जिस तरह वो “खुदावन्द” ईसा' के फ़ज़ल ही से नजात पाएँगे, उसी तरह हम भी पाएँगे।

¹²फिर सारी जमा'अत चुप रही और पौलुस और बरनबास का बयान सुनने लगी, कि “खुदा” ने उनके ज़रीये ग़ैर क्रौमों में कैसे कैसे निशान और अजीब काम ज़हिर किए।

¹³जब वो खामोश हुए तो या'कूब कहने लगा कि “ऐ भाइयो मेरी सुनो!”¹⁴शमा'ऊन ने बयान किया कि “खुदा” ने पहले ग़ैर क्रौमों पर किस तरह तवज्जह की ताकि उन में से अपने नाम की एक उम्मत बना ले।

¹⁵और नबियों की बातें भी इस के मुताबिक़ हैं। चुनाँचे लिखा है कि।¹⁶इन बातों के बाद मैं फिर आकर दाऊद के गिरे हुए खेमों को उठाऊँगा, और उस के फ़टे टूटे की मरम्मत करके उसे खड़ा करूँगा।¹⁷ताकि बाक़ी आदमी या'नी सब क्रौमों जो मेरे नाम की कहलाती हैं खुदावन्द को तलाश करें।¹⁸ये वही “खुदावन्द” फ़रमाता है जो दुनिया के शुरू से इन बातों की खबर देता आया है।

¹⁹पस, मेरा फ़ैसला ये है, कि जो ग़ैर क्रौमों में से खुदा की तरफ़ रूजू होते हैं हम उन्हें तकलीफ़ न दें।²⁰मगर उन को लिख भेजें कि बुतों की मकरूहात और हरामकारी और गला घोंटे हुए जानवरों और लहू से परहेज़ करें।²¹क्यूँकि पुराने ज़माने से हर शहर में मूसा की तौरत का ऐलान करने वाले होते चले आए हैं :और वो हर सबत को इबादतखानों में सुनायी जाती हैं।

²²इस पर रसूलों और बुजुर्गों ने सारी कलीसिया समेत मुनासिब जाना कि अपने में से चंद शख्स चुन कर पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें, या'नी यहूदाह को जो बरसब्बा कहलाता है। और सीलास को ये शख्स भाइयों में मुकद्दम थे।²³और उनके हाथ ये लिख भेजा कि “अन्ताकिया और सूरिया और किलकिया के रहने वाले भाइयों को जो ग़ैर क्रौमों में से हैं। रसूलों और बुजुर्ग भाइयों का सलाम पहुँचे “!

²⁴चूँकि हम ने सुना है, कि कुछ ने हम में से जिनको हम ने हुक्म न दिया था, वहाँ जाकर तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया। और तुम्हारे दिलों को उलट दिया।

²⁵इसलिए हम ने एक दिल होकर मुनासिब जाना कि कुछ चुने हुए आदमियों को अपने अज़ीज़ों बरनबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें।²⁶ये दोनों ऐसे आदमी हैं, जिन्होंने अपनी जानें हमारे “खुदावन्द” ईसा' मसीह के नाम पर निसार कर रखी हैं।

²⁷चुनाँचे हम ने यहूदाह और सीलास को भेजा है, वो यही बातें ज़बानी भी बयान करेंगे।²⁸क्यूँकि रूह-उल-कुहूस ने और हम ने मुनासिब जाना कि इन ज़रूरी बातों के सिवा तुम पर और बोझ न डालें²⁹कि तुम बुतों की कुर्बानियों के गोश्त से और लहू और गला घोंटे हुए जानवरों और हरामकारी से परहेज़ करो। अगर तुम इन चीज़ों से अपने आप को बचाए रखोगे, तो सलामत रहोगे, वस्सलाम।”

³⁰पस, वो रुख़सत होकर अन्ताकिया में पहुँचे और जमा'अत को इकट्ठा करके खत दे दिया।³¹वो पढ़ कर उसके तसल्ली बख़्श मज़मून से खुश हुए।³²और यहूदाह और सीलास ने जो खुद भी नबी थे, भाइयों को बहुत सी नसीहत करके मज़बूत कर दिया।

³³वो चँद रोज़ रह कर और भाइयों से सलामती की दु'आ लेकर अपने भेजने वालों के पास रुख़सत कर दिए गए।³⁴[लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।]³⁵मगर पौलुस और बरनबास अन्ताकिया ही में रहे: और बहुत से और लोगों के साथ “खुदावन्द” का कलाम सिखाते और उस का ऐलान करते रहे।

³⁶चँद रोज़ बाद'द पौलुस ने बरनबास से कहा “कि जिन जिन शहरों में हम ने “खुदा” का कलाम सुनाया था, आओ फिर उन में चलकर भाइयों को देखें कि कैसे हैं।”³⁷और बरनबास की सलाह थी कि यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है। अपने साथ ले चलें।³⁸मगर पौलुस ने ये मुनासिब न जाना, कि जो शख्स पम्फ़ीलिया में किनारा करके उस काम के लिए उनके साथ न गया था ; उस को हमराह ले चलें।

³⁹पस, उन में ऐसी सख़्त तकरार हुई; कि एक दूसरे से जुदा हो गए। और बरनबास मरकुस को ले कर जहाज़ पर कुप्रुस को रवाना हुआ।⁴⁰मगर पौलुस ने सीलास को पसन्द किया, और भाइयों की तरफ़ से खुदावन्द के फ़ज़ल के सुपुर्द हो कर रवाना किया।⁴¹और कलीसिया को मज़बूत करता हुआ सूरिया और किलकिया से गुज़रा।

Chapter 16

¹फिर वो दिरबे और लुस्तरा में भी पहुँचा। तो देखो वहाँ तीमुथियूस नाम का एक शागिर्द था। उसकी माँ तो यहूदी थी जो ईमान ले आई थी, मगर उसका बाप यूनानी था।²वो लुस्तरा और इकुनियूम के भाइयों में नेक नाम था।³पौलुस ने चाहा कि ये मेरे साथ चले। पस, उसको लेकर उन यहूदियों की वजह से जो उस इलाके में थे, उसका खतना कर दिया क्योंकि वो सब जानते थे, कि इसका बाप यूनानी है।

⁴और वो जिन जिन शहरों में से गुज़रते थे, वहाँ के लोगों को वो अहकाम अमल करने के लिए पहुँचाते जाते थे, जो यरूशलीम के रसूलों और बुजुर्गों ने जारी किए थे।⁵पस, कलीसियाएँ ईमान में मज़बूत और शुमार में रोज़-ब-रोज़ ज़्यादा होती गई।

⁶और वो फ़रोगिया और गलतिया सूबे के इलाक़े में से गुज़रे, क्योंकि रूह-उल-कुदूस ने उन्हें आसिया में कलाम सुनाने से मना किया।⁷और उन्होंने मूसिया के क़रीब पहुँचकर बितूनिया सूबे में जाने की कोशिश की मगर ईसा' की रूह ने उन्हें जाने न दिया।⁸पस, वो मूसिया से गुज़र कर त्रोआस शहर में आए।

⁹और पौलुस ने रात को ख़्वाब में देखा कि एक मकिदुनी आदमी खड़ा हुआ, उस की मिन्नत करके कहता है कि "पार उतर कर मकिदुनिया में आ, और हमारी मदद कर!"¹⁰उस का ख़्वाब देखते ही हम ने फ़ौरन मकिदुनिया में जाने का ईरादा किया, क्योंकि हम इस से ये समझे कि "ख़ुदा" ने उन्हें खुशख़बरी देने के लिए हम को बुलाया है।

¹¹पस, त्रोआस शहर से जहाज़ पर रवाना होकर हम सीधे सुमत्राकि टापू में और दूसरे दिन नियापुलिस शहर में आए।¹²और वहाँ से फ़िलिप्पी शहर में पहुँचे, जो मकिदुनिया का सूबा में है और उस क्रिस्मत का सद्र और रोमियों की बस्ती है और हम चँद रोज़ उस शहर में रहे।¹³और सबत के दिन शहर के दरवाज़े के बाहर नदी के किनारे गए, जहाँ समझे कि दु'आ करने की जगह होगी और बैठ कर उन औरतों से जो इकट्ठी हुई थीं, कलाम करने लगे।

¹⁴और थुआतीरा शहर की एक ख़ुदा परस्त औरत लुदिया नाम की, किर्मिज़ बेचने वाली भी सुनती थी, उसका दिल ख़ुदावन्द ने खोला ताकि पौलुस की बातों पर तवज्जुह करे।¹⁵और जब उस ने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया तो मिन्नत कर के कहा कि "अगर तुम मुझे ख़ुदावन्द की ईमानदार बन्दी समझते हो तो चल कर मेरे घर में रहो" पस, उसने हमें मजबूर किया।

¹⁶जब हम दु'आ करने की जगह जा रहे थे, तो ऐसा हुआ कि हमें एक लौंडी मिली जिस में पोशीदा रूह थी, वो ग़ैब गोई से अपने मालिकों के लिए बहुत कुछ कमाती थी।¹⁷वो पौलुस के, और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी "कि ये आदमी "ख़ुदा" के बन्दे हैं जो तुम्हें नजात की राह बताते हैं।"¹⁸वो बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही। आखिर पौलुस सख़्त रंजीदा हुआ और फिर कर उस रूह से कहा कि "मैं तुझे ईसा' मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ "कि इस में से निकल जा!" वो उसी वक़्त निकल गई।

¹⁹जब उस के मालिकों ने देखा कि हमारी कमाई की उम्मीद जाती रही तो पौलुस और सीलास को पकड़कर हाकिमों के पास चौक में खींच ले गए।²⁰और उन्हें फ़ौजदारी के हाकिमों के आगे ले जा कर कहा "कि ये आदमी जो यहूदी हैं हमारे शहर में बड़ी खलबली डालते हैं।"²¹और "ऐसी रस्में बताते हैं, जिनको कुबूल करना और अमल में लाना हम रोमियों को पसंद नहीं।"

²²और आम लोग भी मुत्तफ़ि़क़ होकर उनकी मुखालिफ़त पर आमादा हुए, और फ़ौजदारी के हाकिमों ने उन के कपड़े फ़ाड़कर उतार डाले और बेंत लगाने का हुक्म दिया।²³और बहुत से बेंत लगवाकर उन्हें क़ैद खाने में डाल दिया, और दरोगा को ताकीद की कि बड़ी होशियारी से उनकी निगहबानी करे।²⁴उस ने ऐसा हुक्म पाकर उन्हें अन्दर के क़ैद खाने में डाल दिया, और उनके पाँव काठ में ठोक दिए।

²⁵आधी रात के क़रीब पौलुस और सीलास दु'आ कर रहे और "ख़ुदा" की हम्द के गीत गा रहे थे, और क़ैदी सुन रहे थे।²⁶कि यकायक बड़ा भूचाल आया, यहाँ तक कि क़ैद खाने की नींव हिल गई और उसी वक़्त सब दरवाज़े खुल गए और सब की बेड़ियाँ खुल पड़ीं।

²⁷और दरोगा जाग उठा, और क़ैद खाने के दरवाज़े खुले देखकर समझा कि क़ैदी भाग गए, पस, तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा।²⁸लेकिन पौलुस ने बड़ी आवाज़ से पुकार कर कहा "अपने को नुक्सान न पहुँचा! क्योंकि हम सब मौजूद हैं।"

²⁹वो चरागा मँगवा कर अन्दर जा कूदा। और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा।³⁰और उन्हें बाहर ला कर कहा "ऐ साहिबो मैं क्या करूँ कि नजात पाऊँ?"³¹उन्होंने कहा, "ख़ुदावन्द ईसा' पर ईमान ला "तो तू और तेरा घराना नजात पाएगा।"

³²और उन्होंने ने उस को और उस के सब घरवालों को "ख़ुदावन्द" का कलाम सुनाया।³³और उस ने रात को उसी वक़्त उन्हें ले जा कर उनके ज़ख्म धोए और उसी वक़्त अपने सब लोगों के साथ बपतिस्मा लिया।³⁴और उन्हें ऊपर घर में ले जा कर दस्तरख़वान बिछाया, और अपने सारे घराने समेत "ख़ुदा" पर ईमान ला कर बड़ी खुशी की।

³⁵जब दिन हुआ, तो फ़ौजदारी के हाकिमों ने हवालदारों के ज़रिये कहला भेजा कि उन आदमियों को छोड़ दे।³⁶और दरोगा ने पौलुस को इस बात की ख़बर दी कि फ़ौजदारी के हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने का हुक्म भेज दिया है "पस अब निकल कर सलामत चले जाओ।"

³⁷मगर पौलुस ने उससे कहा, "उन्होंने हम को जो रोमी हैं कुसूर साबित किए बग़ैर "ऐलानिया पिटवाकर क़ैद में डाला।और अब हम को चुपके से निकालते हैं? ये नहीं हो सकता; बल्कि वो आप आकर हमें बाहर ले जाएँ।"³⁸हवालदारों ने फ़ौजदारी के हाकिमों को इन बातों की ख़बर दी। जब उन्होंने ने सुना कि ये रोमी हैं तो डर गए।³⁹और आकर उन की मिन्नत की और बाहर ले जाकर दरख़्वास्त की कि शहर से चले जाएँ।

⁴⁰पस वो क़ैद खाने से निकल कर लुदिया के यहाँ गए और भाइयों से मिलकर उन्हें तसल्ली दी। और रवाना हुए।

Chapter 17

¹फिर वो अफ्रिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीकी शहर में आए, जहाँ यहूदियों का इबादतखाना था।²और पौलुस अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ उनके पास गया, और तीन सबतो को किताब-ए-मुक़द्दस से उनके साथ बहस की।

³और उनके मतलब खोल खोलकर दलीलें पेश करता था, कि “मसीह को दुख उठाना और मुर्दों में से जी उठाना ज़रूर था और ईसा’ जिसकी मैं तुम्हें ख़बर देता हूँ मसीह है।”⁴उनमें से कुछ ने मान लिया और पौलुस और सीलास के शरीक हुए और “ख़ुदा” परस्त यूनानियों की एक बड़ी जमा’अत और बहुत सी शरीफ़ औरतें भी उन की शरीक हुईं।

⁵मगर यहूदियों ने हसद में आकर बाज़ारी आदमियों में से कई बदमा’शों को अपने साथ लिया और भीड़ लगा कर शहर में फ़साद करने लगे। और यासोन का घर घेरकर उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा।⁶और जब उन्हें न पाया तो यासोन और कई और भाइयों को शहर के हाकिमों के पास चिल्लाते हुए खींच ले गए “कि वो शख्स जिन्होंने ज़हान को बा’गी कर दिया, यहाँ भी आए हैं।”⁷और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है और ये सब के सब क्रैसर के अहकाम की मुखातिफ़ करके कहते हैं, “कि बादशाह तो और ही है या’नी ईसा”

⁸ये सुन कर आम लोग और शहर के हाकिम घबरा गए।⁹और उन्होंने ने यासोन और बाक़ियों की ज़मानत लेकर उन्हें छोड़ दिया।

¹⁰लेकिन भाइयों ने फ़ौरन रातों रात पौलुस और सीलास को बिरिया क्रस्बा में भेज दिया, वो वहाँ पहुँचकर यहूदियों के इबादतखाने में गए।¹¹ये लोग थिस्सलुनीकी कि यहूदियों से नेक ज़ात थे, क्योंकि उन्होंने ने बड़े शौक़ से कलाम को कुबूल किया और रोज़-ब-रोज़ किताब “ऐ मुक़द्दस में तहक़ीक़ करते थे, कि आया ये बातें इस तरह हैं ?”¹²पस, उन में से बहुत सारे ईमान लाए और यूनानियों में से भी बहुत सी ‘इज़्ज़तदार’ औरतें और मर्द ईमान लाए।

¹³जब थिस्सलुनीकी कि यहूदियों को मा’लूम हुआ कि पौलुस बिरिया में भी “ख़ुदा” का कलाम सुनाता है, तो वहाँ भी जाकर लोगों को उभारा और उन में खलबली डाली।¹⁴उस वक़्त भाइयों ने फ़ौरन पौलुस को रवाना किया कि समुन्दर के किनारे तक चला जाए, लेकिन सीलास और तिमुथियुस वहीं रहे।¹⁵और पौलुस के रहबर उसे अथेने तक ले गए। और सीलास और तिमुथियुस के लिए ये हुक्म लेकर रवाना हुए। कि जहाँ तक हो सके जल्द मेरे पास आओ।

¹⁶जब पौलुस अथेने में उन की राह देख रहा था, तो शहर को बुर्तों से भरा हुआ देख कर उस का जी जल गया।¹⁷इस लिए वो इबादतखाने में यहूदियों और “ख़ुदा” परस्तों से और चौक में जो मिलते थे, उन से रोज़ बहस किया करता था।

¹⁸और चन्द इपकूरी और स्तोइकी फ़ैलसूफ़ उसका मुक़ाबिला करने लगे कुछ ने कहा, “ये बकवासी क्या कहना चाहता है ?” औरों ने कहा “ये ग़ैर मा’बूदों की ख़बर देने वाला मा’लूम होता है इस लिए कि वो ईसा’ और क़यामत की खुशख़बरी देता है”

¹⁹पस, वो उसे अपने साथ अरियुपगुस जगह पर ले गए और कहा, “आया हमको मा’लूम हो सकता है। कि ये नई ता’लीम जो तू देता है। क्या है ?”²⁰क्योंकि तू हमें अनोखी बातें सुनाता है पस, हम जानना चाहते हैं, कि इन से गरज़ क्या है,²¹(इस लिए कि सब अथेनवी और परदेसी जो वहाँ मुक़ीम थे, अपनी फ़ुरसत का वक़्त नई नई बातें करने सुनने के सिवा और किसी काम में सर्फ़ न करते थे।)

²²पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े हो कर कहा “ऐ अथेने वालो, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।²³चुनाचे मैंने सैर करते और तुम्हारे मा’बूदों पर ग़ौर करते वक़्त एक ऐसी कुर्बानगाह भी पाई, जिस पर लिखा था, ना मा’लूम “ख़ुदा” के लिए पस, जिसको तुम ग़ैर मा’लूम किए पूजते हो, मैं तुम को उसी की ख़बर देता हूँ।

²⁴जिस “ख़ुदा” ने दुनिया और उस की सब चीज़ों को पैदा किया वो आसमान और ज़मीन का मालिक होकर हाथ के बनाए हुए मक़दिस में नहीं रहता।²⁵न किसी चीज़ का मुहताज होकर आदमियों के हाथों से ख़िदमत लेता है। क्योंकि वो तो ख़ुद सबको ज़िन्दगी और साँस और सब कुछ देता है।

²⁶और उस ने एक ही नस्ल से आदमियों की हर एक क्रौम तमाम रूप ज़मीन पर रहने के लिए पैदा की और उन की ‘तादाद और रहने की हदें मुक़रर कीं।²⁷ताकि “ख़ुदा” को ढूँढ़ें, शायद कि टटोलकर उसे पाएँ, हर वक़्त वो हम में से किसी से दूर नहीं।

²⁸क्योंकि उसी में हम जीते और चलते फिरते और मौजूद हैं, जैसा कि तुम्हारे शा’यरों में से भी कुछ ने कहा है। हम तो उस की नस्ल भी हैं।”²⁹पस, ख़ुदा” की नस्ल होकर हम को ये खयाल करना मुनासिब नहीं कि ज़ात-ए-इलाही उस सोने या रुपये या पत्थर की तरह है जो आदमियों के हुनर और ईजाद से गढ़े गए हों।

³⁰पस, ख़ुदा जिहालत के वक़्तों से चश्म पोशी करके अब सब आदमियों को हर जगह हुक्म देता है। कि तौबा करें।³¹क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वो रास्ती से दुनिया की अदालत उस आदमी के ज़रिये करेगा, जिसे उस ने मुक़रर किया है और उसे मुर्दों में से जिला कर ये बात सब पर साबित कर दी है।”

³²जब उन्होंने ने मुर्दों की क़यामत का ज़िक़्र सुना तो कुछ ठठा मारने लगे, और कुछ ने कहा कि “ये बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे।”³³इसी हालत में पौलुस उनके बीच में से निकल गया³⁴मगर कुछ आदमी उसके साथ मिल गए और ईमान ले आए, उन में दियुनुसियुस, अरियुपगुस, का एक हाकिम और दमरिस नाम की एक औरत थी, और कुछ और भी उन के साथ थे।

Chapter 18

¹इन बातों के बा'द पौलुस अथेने से रवाना हो कर कुरिन्थुस शहर में आया।²और वहाँ उसको अक्विला नाम का एक यहूदी मिला जो पुन्तुस शहर की पैदाइश था, और अपनी बीवी प्रिस्किल्ला समेत इतालिया से नया नया आया था; क्योंकि क्लौडियुस ने हुक्म दिया था, कि सब यहूदी रोमा से निकल जाएँ। पस, वो उसके पास गया।³और चूँकि उनका हम पेशा था, उन के साथ रहा और वो काम करने लगे; और उन का पेशा खेमा दोज़ी था।

⁴और वो हर सबत को इबादतखाने में बहस करता और यहूदियों और यूनानियों को तैयार करता था।⁵और जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस कलाम सुनाने के जोश से मजबूर हो कर यहूदियों के आगे गवाही दे रहा था कि ईसा' ही मसीह है।⁶जब लोग मुखालिफ़त करने और कुफ़्र बकने लगे, तो उस ने अपने कपड़े झाड़ कर उन से कहा, "तुम्हारा खून तुम्हारी गर्दन पर मैं पाक हूँ, अब से ग़ैर क्रौमों के पास जाऊँगा।"

⁷पस, वहाँ से चला गया, और तितुस युस्तुस नाम के एक "खुदा" परस्त के घर चला गया, जो इबादतखाने से मिला हुआ था।⁸और इबादतखाने का सरदार क्रिसपुस अपने तमाम घराने समेत "खुदावन्द" पर ईमान लाया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर ईमान लाए, और बपतिस्मा लिया।

⁹और खुदावन्द ने रात को रोया में पौलुस से कहा, "खौफ़ न कर, बल्कि कहे जा और चुप न रह।"¹⁰इसलिए कि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई शख्स तुझ पर हमला कर के तकलीफ़ न पहुँचा सकेगा; क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत से लोग हैं।"¹¹पस, वो डेढ़ बरस उन में रहकर खुदा का कलाम सिखाता रहा।

¹²जब गल्लियो अखिया सूबे का सुबेदार था, यहूदी एका करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे अदालत में ले जा कर।¹³कहने लगे "कि ये शख्स लोगों को तरगीब देता है, कि शरी'अत के बरखिलाफ़ खुदा की इबादत करें।"

¹⁴जब पौलुस ने बोलना चाहा, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "ऐ यहूदियो, अगर कुछ जुल्म या बड़ी शरारत की बात होती तो वाजिब था, कि मैं सब्र करके तुम्हारी सुनता।"¹⁵लेकिन जब ये ऐसे सवाल हैं जो लफ़्ज़ों और नामों और खास तुम्हारी शरी'अत से तअ'ल्लुक रखते हैं तो तुम ही जानो। मैं ऐसी बातों का मुन्सिफ़ बनना नहीं चाहता।"

¹⁶और उस ने उन्हें अदालत से निकलवा दिया।¹⁷फिर सब लोगों ने इबादतखाने के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ कर अदालत के सामने मारा, मगर गल्लियो ने इन बातों की कुछ परवाह न की।

¹⁸पस, पौलुस बहुत दिन वहाँ रहकर भाइयों से रुख़सत हुआ ; चूँकि उस ने मन्नत मानी थी, इसलिए किन्खरिया शहर में सिर मुंडवाया और जहाज़ पर सूरिया सूबे को रवाना हुआ ; और प्रिस्किल्ला और अक्विला उस के साथ थे।¹⁹और इफ़िसुस में पहुँच कर उस ने उन्हें वहाँ छोड़ा और आप इबादतखाने में जाकर यहूदियों से बहस करने लगा।

²⁰जब उन्होंने उस से दरख़वास्त की, "और कुछ अरसे हमारे साथ रह" तो उस ने मंज़ूर न किया।²¹बल्कि ये कह कर उन से रुख़सत हुआ "अगर "खुदा" ने चाहा तो तुम्हारे पास फिर आऊँगा "और इफ़िसुस से जहाज़ पर रवाना हुआ।

²²फिर कैसरिया में उतर कर यरूशलीम को गया, और कलीसिया को सलाम करके अन्ताकिया में आया।²³और चन्द रोज़ रह कर वहाँ से रवाना हुआ, और तरतीब वार गलतिया सूबे के इलाक़े और फ़ूगिया सूबे से गुज़रता हुआ सब शागिर्दों को मज़बूत करता गया।

²⁴फिर अपुल्लोस नाम के एक यहूदी इसकन्दरिया शहर की पैदाइश खुशतकरीर किताब-ए-मुक़द्दस का माहिर इफ़िसुस में पहुँचा।²⁵इस शख्स ने "खुदावन्द" की राह की ता'लीम पाई थी, और रूहानी जोश से कलाम करता और ईसा' की वजह से सहीह सहीह ता'लीम देता था। मगर सिर्फ़ यूहन्ना के बपतिस्मे से वाकिफ़ था।²⁶वो इबादतखाने में दिलेरी से बोलने लगा, मगर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने घर ले गए। और उसको खुदा की राह और अच्छी तरह से बताई।

²⁷जब उस ने इरादा किया कि पार उतर कर अखिया को जाए तो भाइयों ने उसकी हिम्मत बढ़ाकर शागिर्दों को लिखा कि उससे अच्छी तरह मिलना। उस ने वहाँ पहुँचकर उन लोगों की बड़ी मदद की जो फ़ज़ल की वजह से ईमान लाए थे।²⁸क्योंकि वो किताब -ए-मुक़द्दस से ईसा' का मसीह होना साबित करके बड़े ज़ोर शोर से यहूदियों को ऐलानिया क़ायल करता रहा।

Chapter 19

¹और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो ऐसा हुआ कि पौलुस ऊपर के पहाड़ी मुल्कों से गुज़र कर इफ़िसुस में आया और कई शागिर्दों को देखकर।²उन से कहा “क्या तुमने ईमान लाते वक़्त रूह-उल-कुदूस पाया?” उन्होंने ने उस से कहा “कि हम ने तो सुना नहीं। कि रूह-उल-कुदूस नाज़िल हुआ है।”

³उस ने कहा “तुम ने किस का बतिस्मा लिया?” उन्होंने ने कहा “यूहन्ना का बपतिस्मा।”⁴पौलुस ने कहा, “यूहन्ना ने लोगों को ये कह कर तौबा का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे पीछे आने वाला है ‘उस पर या’नी ईसा’ पर ईमान लाना।”

⁵उन्होंने ने ये सुनकर “खुदावन्द” ईसा’ के नाम का बपतिस्मा लिया।⁶जब पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे तो रूह-उल-कुदूस उन पर नाज़िल हुआ, और वह तरह तरह की ज़बानें बोलने और नबुव्वत करने लगे।⁷और वो सब तक्ररीबन बारह आदमी थे।

⁸फिर वो इबादतख़ाने में जाकर तीन महीने तक दिलेरी से बोलता और “खुदा” की बादशाही के बारे में बहस करता और लोगों को क़ायल करता रहा।⁹लेकिन जब कुछ सख़्त दिल और नाफ़रमान हो गए। बल्कि लोगों के सामने इस तरीक़े को बुरा कहने लगे, तो उस ने उन से किनारा करके शागिर्दों को अलग कर लिया, और हर रोज़ तुरन्तुस के मदरसे में बहस किया करता था।¹⁰दो बरस तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहने वालों क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने “खुदावन्द” का कलाम सुना।

¹¹और “खुदा” पौलुस के हाथों से ख़ास ख़ास मो’जिज़े दिखाता था।¹²यहाँ तक कि रूमाल और पटके उसके बदन से छुआ कर बीमारों पर डाले जाते थे, और उन की बीमारियाँ जाती रहती थीं, और बदरूहें उन में से निकल जाती थीं।

¹³मगर कुछ यहूदियों ने जो झाड़ फूँक करते फिरते थे। ये इख़्तियार किया कि जिन में बदरूहें हों “उन पर “खुदावन्द” ईसा’ का नाम ये कह कर फूँकें। कि जिस ईसा’ की पौलुस ऐलान करता है, मैं तुम को उसकी क्रसम देता हूँ”¹⁴और सिकवा, यहूदी सरदार काहिन, के सात बेटे ऐसा किया करते थे।

¹⁵बदरूह ने जवाब में उन से कहा, ईसा’ को तो मैं जानती हूँ, और पौलुस से भी वाकिफ़ हूँ “मगर तुम कौन हो?”¹⁶और वो शख्स जिस में बदरूह थी, कूद कर उन पर जा पड़ा और दोनों पर ग़ालिब आकर ऐसी ज़्यादती की कि वो नंगे और ज़ख्मी होकर उस घर से निकल भागे।¹⁷और ये बात इफ़िसुस के सब रहने वाले यहूदियों और यूनानियों को मा’लूम हो गई। पस, सब पर ख़ौफ़ छा गया, और “खुदावन्द” ईसा’ के नाम की बड़ाई हुई।

¹⁸और जो ईमान लाए थे, उन में से बहुतों ने आकर अपने अपने कामों का इकरार और इज़हार किया।¹⁹और बहुत से जादूगरों ने अपनी अपनी किताबें इकट्ठी करके सब लोगों के सामने जला दीं, जब उन की कीमत का हिसाब हुआ तो पचास हज़ार रुपये की निकली।²⁰इसी तरह “खुदा” का कलाम ज़ोर पकड़ कर फैलता और ग़ालिब होता गया।

²¹जब ये हो चुका तो पौलुस ने पाक रूह में हिम्मत पाई कि “मकिदुनिया और आखिया से हो कर यरूशलीम को जाऊँगा। और कहा, वहाँ जाने के बा’द मुझे रोमा भी देखना ज़रूर है।”²²पस, अपने खिदमतगुज़ारों में से दो शख्स या’नी तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ अर्सा, आसिया में रहा।

²³उस वक़्त इस तरीक़े की वजह से बड़ा फ़साद हुआ।²⁴क्यूँकि देमेत्रियुस नाम एक सुनार था, जो अरतमिस कि रूपहले मन्दिर बनवा कर उस पेशेवालों को बहुत काम दिलवा देता था।²⁵उस ने उन को और उनके मुताअ’ल्लिक़ और पेशेवालों को जमा कर के कहा, “ऐ लोगों! तुम जानते हो कि हमारी आसूदगी इसी काम की बदौलत है।

²⁶तुम देखते और सुनते हो कि सिर्फ़ इफ़िसुस ही में नहीं बल्कि तक्ररीबन तमाम आसिया में इस पौलुस ने बहुत से लोगों को ये कह कर समझा बुझा कर और गुमराह कर दिया है, कि हाथ के बनाए हुए हैं, “खुदा” नहीं हैं।²⁷पस, सिर्फ़ यही ख़तरा नहीं कि हमारा पेशा बेक्रद्द्र हो जाएगा, बल्कि बड़ी देवी अरतमिस का मन्दिर भी नाचीज़ हो जाएगा, और जिसे तमाम आसिया और सारी दुनिया पूजती है, खुद उसकी अज़मत भी जाती रहेगी।”

²⁸वो ये सुन कर क्रहर से भर गए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, “कि इफ़िसियों की अरतमिस बड़ी है!”²⁹और तमाम शहर में हलचल पड़ गई, और लोगों ने गयुस और अरिस्तरखुस मकिदुनिया वालों को जो पौलुस के हम-सफ़र थे, पकड़ लिया और एक दिल हो कर तमाशा गाह को दौड़े।

³⁰जब पौलुस ने मज्मे में जाना चाहा तो शागिर्दों ने जाने न दिया।³¹और आसिया के हाकिमों में से उस के कुछ दोस्तों ने आदमी भेजकर उसकी मिन्नत की कि तमाशा गाह में जाने की हिम्मत न करना।³²और कुछ चिल्लाए और मजलिस दरहम बरहम हो गई थी, और अक्सर लोगों को ये भी खबर न थी, कि हम किस लिए इकट्ठे हुए हैं।

³³फिर उन्होंने ने इस्कन्दर को जिसे यहूदी पेश करते थे, भीड़ में से निकाल कर आगे कर दिया, और इस्कन्दर ने हाथ से इशारा करके मज्मे कि सामने उज़्र बयान करना चाहा।³⁴जब उन्हें मा’लूम हुआ कि ये यहूदी है, तो सब हम आवाज़ होकर कोई दो घन्टे तक चिल्लाते रहे “कि इफ़िसियों की अरतमिस बड़ी है!”

³⁵फिर शहर के मुहर्रिर ने लोगों को ठन्डा करके कहा, “ऐ इफ़िसियो! कौन सा आदमी नहीं जानता कि इफ़िसियों का शहर बड़ी देवी अरतमिस के मन्दिर और उस मूरत का मुहाफ़िज़ है, जो ज़्यूस की तरफ़ से गिरी थी।³⁶पस, जब कोई इन बातों के ख़िलाफ़ नहीं कह सकता तो वाजिब है कि तुम इत्मीनान से रहो, और बे सोचे कुछ न करो।³⁷क्यूँकि ये लोग जिन को तुम यहाँ लाए हो न मन्दिर को लूटने वाले हैं, न हमारी देवी की बदगोई करनेवाले।

³⁸पस, अगर देमेत्रियुस और उसके हम पेशा किसी पर दा’वा रखते हों तो अदालत खुली है, और सुबेदार मौजूद हैं, एक दूसरे पर नालिश करें।³⁹और अगर तुम किसी और काम की तहकीक़ात चाहते हो तो बाज़ाब्ता मजलिस में फ़ैसला होगा।⁴⁰क्यूँकि आज के बवाल की वजह से हमें अपने ऊपर नालिश होने का अन्देशा है, इसलिए कि इसकी कोई वजह नहीं है, और इस सूरत में हम इस हंगामे की जवाबदेही न कर सकेंगे।”⁴¹ये कह कर उसने मजलिस को बरखास्त किया।

Chapter 20

¹जब बवाल कम हो गया तो पौलुस ने ईमानदारों को बुलवा कर नसीहत की, और उन से रुखसत हो कर मकीदुनिया को रवाना हुआ।² और उस इलाक़े से गुज़र कर और उन्हें बहुत नसीहत करके यूनान में आया।³ जब तीन महीने रह कर सूरिया की तरफ़ जहाज़ पर रवाना होने को था, तो यहूदियों ने उस के बरखिलाफ़ साज़िश की, फिर उसकी ये सलाह हुई कि मकीदुनिया होकर वापस जाए।

⁴ और पुरुस का बेटा सोपत्रुस जो बिरिया कसबे का था, और थिस्सलुनिकियों में से अरिस्तरखुस और सिकुन्दुस और गयुस जो दिरबे शहर का था, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफ़िमुस आसिया तक उसके साथ गए।⁵ ये आगे जा कर त्रोआस में हमारी राह देखते रहे।⁶ और ईद-ए-फ़तीर के दिनों के बा'द हम फ़िलिप्पी से जहाज़ पर रवाना होकर पाँच दिन के बा'द त्रोआस में उन के पास पहुँचे और सात दिन वहीं रहे।

⁷ सबत की शाम जब हम रोटी तोड़ने के लिए जमा हुए, तो पौलुस ने दूसरे दिन रवाना होने का इरादा करके उन से बातें कीं और आधी रात तक कलाम करता रहा।⁸ जिस बालाख़ाने पर हम जमा थे, उस में बहुत से चरागा जल रहे थे।

⁹ और यूतुखुस नाम एक जवान खिड़की में बैठा था, उस पर नींद का बड़ा ग़ल्बा था, और जब पौलुस ज़्यादा देर तक बातें करता रहा तो वो नींद के ग़ल्बे में तीसरी मंज़िल से गिर पड़ा, और उठाया गया तो मुर्दा था।¹⁰ पौलुस उतर कर उस से लिपट गया, और गले लगा कर कहा, “घबराओ नहीं इस में जान है।”

¹¹ फिर ऊपर जा कर रोटी तोड़ी और खा कर इतनी देर तक बातें करता रहा कि सुबह हो गई, फिर वो रवाना हो गया।¹² और वो उस लड़के को जिंदा लाए और उनको बड़ा इम्तिनान हुआ।

¹³ हम जहाज़ तक आगे जाकर इस इरादा से अस्सुस शहर को रवाना हुए कि वहाँ पहुँच कर पौलुस को चढ़ा लें, क्योंकि उस ने पैदल जाने का इरादा करके यही तजवीज़ की थी।¹⁴ पस, जब वो अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ा कर मितुलेने शहर में आए।

¹⁵ वहाँ से जहाज़ पर रवाना होकर दूसरे दिन ख़ियुस टापू के सामने पहुँचे और तीसरे दिन सामुस टापू तक आए और अगले दिन मिलेतुस शहर में आ गए।¹⁶ क्योंकि पौलुस ने ये ठान लिया था, कि इफ़िसुस के पास से गुज़रे, ऐसा न हो कि उसे आसिया में देर लगे; इसलिए कि वो जल्दी करता था, कि अगर हो सके तो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलीम में हो।

¹⁷ और उस ने मिलेतुस से इफ़िसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के बुजुर्गों को बुलाया।¹⁸ जब वो उस के पास आए तो उन से कहा, “तुम खुद जानते हो कि पहले ही दिन से कि मैंने आसिया में क्रदम रखवा हर वक़्त तुम्हारे साथ किस तरह रहा।¹⁹ या'नी कमाल फ़रोतनी से और आँसू बहा बहा कर और उन आजमाइशों में जो यहूदियों की साज़िश की वजह से मुझ पर वा'क़े हुई ख़ुदावन्द की ख़िदमत करता रहा।²⁰ और जो जो बातें तुम्हारे फ़ायदे की थीं उनके बयान करने और एलानिया और घर घर सिखाने से कभी न झिझका।²¹ बल्कि यहूदियों और यूनानियों के रू-ब-रू गवाही देता रहा कि “ख़ुदा” के सामने तौबा करना और हमारे ख़ुदावन्द ईसा' मसीह पर ईमान लाना चाहिए।

²² और अब देखो मैं रूह में बँधा हुआ यरूशलीम को जाता हूँ, और न मा'लूम कि वहाँ मुझ पर क्या क्या गुज़रे।²³ सिवा इसके कि रूह-उल-कुदूस हर शहर में गवाही दे दे कर मुझ से कहता है। कि क्रैद और मुसीबतें तेरे लिए तैयार हैं।²⁴ लेकिन मैं अपनी जान को अज़ीज़ नहीं समझता कि उस की कुछ क्रद करूँ; बावजूद इसके कि अपना दौर और वो ख़िदमत जो “ख़ुदावन्द ईसा'” से पाई है, पूरी करूँ। या'नी ख़ुदा के फ़ज़ल की ख़ुशख़बरी की गवाही दूँ।

²⁵ और अब देखो मैं जानता हूँ कि तुम सब जिनके दर्मियान मैं बादशाही का एलान करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे।²⁶ पस, मैं आज के दिन तुम्हें क्रतई कहता हूँ कि सब आदमियों के खून से पाक हूँ।²⁷ क्योंकि मैं ख़ुदा की सारी मज़ीं तुम से पूरे तौर से बयान करने से न झिझका।

²⁸ पस, अपनी और उस सारे गल्ले की ख़बरदारी करो जिसका रूह -उल कुदूस ने तुम्हें निगहबान ठहराया ताकि “ख़ुदा” की कलीसिया की गल्ले कि रख वाली करो, जिसे उस ने ख़ास अपने खून से ख़रीद लिया।²⁹ मैं ये जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुम में आयेंगे जिन्हें गल्ले पर कुछ तरस न आएगा;³⁰ आप के बीच से भी आदमी उठ कर सच्चाई को तोड़-मरोड़ कर बयान करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें।

³¹ इसलिए जागते रहो, और याद रखो कि मैं तीन बरस तक रात दिन आँसू बहा बहा कर हर एक को समझाने से बा'ज न आया।³² अब मैं तुम्हें “ख़ुदा” और उसके फ़ज़ल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ, जो तुमहारी तरक्की कर सकता है, और तमाम मुक़द्दसों में शरीक करके मीरास दे सकता है।

³³ मैंने किसी के पैसे या कपड़े का लालच नहीं किया।³⁴ तुम आप जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की हाजतपूरी कीं।³⁵ मैंने तुम को सब बातें करके दिखा दीं कि इस तरह मेंहनत करके कमज़ोरों को सम्भालना और “ख़ुदावन्द ईसा” की बातें याद रखना चाहिये, उस ने ख़ुद कहा, देना लेने से मुबारक है।

³⁶ उस ने ये कह कर घुटने टेके और उन सब के साथ दु'आ की।³⁷ और वो सब बहुत रोए और पौलुस के गले लग लगकर उसके बोसे लिए।³⁸ और ख़ास कर इस बात पर ग़मगीन थे, जो उस ने कही थी, “कि तुम फिर मेरा मुँह न देखोगे” फिर उसे जहाज़ तक पहुँचाया।

Chapter 21

¹जब हम उनसे बमुश्किल जुदा हो कर जहाज़ पर खाना हुआ, तो ऐसा हुआ की सीधी राह से कोस टापू में आए, और दूसरे दिन रूदुस में, और वहाँ से पतरा शहर में।²फिर एक जहाज़ सीधा फ़ीनेके को जाता हुआ मिला, और उस पर सवार होकर खाना हुआ।

³जब कुप्रुस शहर नज़र आया तो उसे बाएँ हाथ छोड़कर सुरिया को चले, और सूर शहर में उतरे, क्योंकि वहाँ जहाज़ का माल उतारना था।⁴जब शागिर्दों को तलाश कर लिया तो हम सात रोज़ वहाँ रहे; उन्होंने ने रूह के ज़रिये पौलुस से कहा, कि यरूशलीम में क्रदम न रखना।

⁵और जब वो दिन गुज़र गए, तो ऐसा हुआ कि हम निकल कर खाना हुआ, और सब ने बीवियों बच्चों समेत हम को शहर से बाहर तक पहुँचाया। फिर हम ने समुन्दर के किनारे घुटने टेककर दु'आ की।⁶और एक दूसरे से विदा होकर हम तो जहाज़ पर चढ़े, और वो अपने अपने घर वापस चले गए।

⁷और हम सूर से जहाज़ का सफ़र पूरा कर के पतुलिमयिस सूबा में पहुँचे, और भाइयों को सलाम किया, और एक दिन उनके साथ रहे।⁸दूसरे दिन हम खाना होकर कैसरिया में आए, और फ़िलिप्पुस मुबश्शिर के घर जो उन सातों में से था, उतर कर उसके साथ रहे,⁹उस की चार कुँवारी बेटियाँ थीं, जो नबुव्वत करती थीं।

¹⁰जब हम वहाँ बहुत रोज़ रहे, तो अगबुस नाम एक नबी यहूदिया से आया।¹¹उस ने हमारे पास आकर पौलुस का कमरबन्द लिया और अपने हाथ पाँव बाँध कर कहा, "रूह-उल-कुदूस यूँ फ़रमाता है" "कि जिस शाख्स का ये कमरबन्द है उस को यहूदी यरूशलीम में इसी तरह बाँधेगे और ग़ैर क़ौमों के हाथ में सुपुर्द करेंगे।"

¹²जब ये सुना तो हम ने और वहाँ के लोगों ने उस की मिन्नत की, कि यरूशलीम को न जाए।¹³मगर पौलुस ने जवाब दिया, "कि तुम क्या करते हो? क्यों रो रो कर मेरा दिल तोड़ते हो? मैं तो यरूशलीम में "खुदावन्द ईसा मसीह" के नाम पर न सिर्फ़ बांधे जाने बल्कि मरने को भी तैयार हूँ।"¹⁴जब उस ने न माना तो हम ये कह कर चुप हो गए "कि "खुदावन्द" की मज़ी पूरी हो।"

¹⁵उन दिनों के बा'द हम अपने सफ़र का सामान तैयार करके यरूशलीम को गए।¹⁶और कैसरिया से भी कुछ शागिर्द हमारे साथ चले और एक पुराने शागिर्द मनासोन कुप्री को साथ ले आए, ताकि हम उस के मेहमान हों।

¹⁷जब हम यरूशलीम में पहुँचे तो ईमानदार भाई बड़ी खुशी के साथ हम से मिले।¹⁸और दूसरे दिन पौलुस हमारे साथ या'कूब के पास गया, और सब बुजुर्ग वहाँ हाज़िर थे।¹⁹उस ने उन्हें सलाम करके जो कुछ खुदा ने उस की खिदमत से ग़ैर क़ौमों में किया था, एक एक कर के बयान किया।

²⁰"उन्होंने ये सुन कर खुदा की तारीफ़ की फिर उस से कहा, ऐ भाई तू देखता है, कि यहूदियों में हज़ारहा आदमी ईमान ले आए हैं, और वो सब शरी'अत के बारे में सरगर्म हैं।"²¹और उन को तेरे बारे में सिखा दिया गया है, कि तू ग़ैर क़ौमों में रहने वाले सब यहूदियों को ये कह कर मूसा से फिर जाने की ता'लीम देता है, कि न अपने लड़कों का खतना करो न मूसा की रस्मों पर चलो।

²²पस, क्या किया जाए? लोग ज़रूर सुनेंगे, कि तू आया है।²³इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं वो कर; हमारे यहां चार आदमी ऐसे हैं, जिन्होंने ने मन्नत मानी है।

²⁴उन्हें ले कर अपने आपको उन के साथ पाक कर और उनकी तरफ़ से कुछ खर्च कर, ताकि वो सिर मुँडाएँ, तो सब जान लेंगे कि जो बातें उन्हें तेरे बारे में सिखाई गयीं हैं, उन की कुछ असल नहीं बल्कि तू खुद भी शरी'अत पर अमल करके दुरुस्ती से चलता है।

²⁵मगर ग़ैर क़ौमों में से जो ईमान लाए उनके बारे में हम ने ये फ़ैसला करके लिखा था, कि वो सिर्फ़ बुतों की कुर्बानी के गोश्त से और लहू और गला घोंटे हुए जानवारों और हरामकारी से अपने आप को बचाए रखें।"²⁶इस पर पौलुस उन आदमियों को लेकर और दूसरे दिन अपने आपको उनके साथ पाक करके हैकल में दाखिल हुआ और खबर दी कि जब तक हम में से हर एक की नज़ न चढ़ाई जाए तक्रहुस के दिन पूरे करेंगे।

²⁷जब वो सात दिन पूरे होने को थे, तो आसिया के यहूदियों ने उसे हैकल में देखकर सब लोगों में हलचल मचाई और यूँ चिल्लाकर उस को पकड़ लिया।²⁸कि "ऐ इसाईलियो; मदद करो " ये वही आदमी है, जो हर जगह सब आदमियों को उम्मत और शरी'अत और इस मुक़ाम के खिलाफ़ ता'लीम देता है, बल्कि उस ने यूनानियों को भी हैकल में लाकर इस पाक मुक़ाम को नापाक किया है।"²⁹(उन्होंने उस से पहले त्रुफ़िमुस इफ़िंसी को उसके साथ शहर में देखा था। उसी के बारे में उन्होंने खयाल किया कि पौलुस उसे हैकल में ले आया है।)

³⁰और तमाम शहर में हलचल मच गई, और लोग दौड़ कर जमा हुए, और पौलुस को पकड़ कर हैकल के दरवाज़े के फाटक से बाहर घसीट कर ले गए, और फ़ौरन दरवाज़े बन्द कर लिए गए।³¹जब वो उसे क़ल्ल करना चाहते थे, तो ऊपर सौ फ़ौजियों के सरदार के पास खबर पहुँची "कि तमाम यरूशलीम में खलबली पड़ गई है।"

³²वो उसी वक़्त सिपाहियों और सूबेदारों को ले कर उनके पास नीचे दौड़ा आया। और वो पलटन के सरदार और सिपाहियों को देख कर पौलुस की मार पीट से बाज़ आए।³³इस पर पलटन के सरदार ने नज़दीक आकर उसे गिरफ़्तार किया" और दो ज़ंजीरों से बाँधने का हुक्म देकर पूछने लगा, "ये कौन है, और इस ने क्या किया है?"

³⁴भीड़ में से कुछ चिल्लाए और कुछ पस जब हुल्लड़ की वजह से कुछ हक़ीक़त दरियाफ़्त न कर सका, तो हुक्म दिया कि उसे क़िले में ले जाओ।³⁵जब सीढ़ियों पर पहुँचा तो भीड़ की ज़बरदस्ती की वजह से सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा।³⁶क्यूँकि लोगों की भीड़ ये चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी "कि उसका काम तमाम कर"

³⁷"और जब पौलुस को क़िले के अन्दर ले जाने को थे? उस ने पलटन के सरदार से कहा क्या मुझे इजाज़त है कि तुझ से कुछ कहूँ? उस ने कहा तू यूनानी जानता है?³⁸क्या तू वो मिस्री नहीं? जो इस से पहले गाज़ियों में से चार हज़ार आदमियों को बागी करके जंगल में ले गया "

³⁹पौलुस ने कहा "मैं यहूदी आदमी किलकिया के मशहूर सूबा तरसुस शहर का बाशिन्दा हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे लोगों से बोलने की इजाज़त दे।"⁴⁰जब उस ने उसे इजाज़त दी तो पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों को इशारा किया। जब वो चुप चाप हो गए, तो इब्रानी ज़बान में यूँ कहने लगा।

Chapter 22

¹‘ऐ भाइयों और बुजुर्गों, “मेरी बात सुनो, जो अब तुम से बयान करता हूँ।”²जब उन्होंने सुना कि हम से इब्रानी ज़बान में बोलता है तो और भी चुप चाप हो गए। पस उस ने कहा।

³“मैं यहूदी हूँ, और किलकिया के शहर तरसुस में पैदा हुआ हूँ, मगर मेरी तरबियत इस शहर में गमलीएल के क्रदमों में हुई, और मैंने बा'प दादा की शरी'अत की खास पाबन्दी की ता'लीम पाई, और "खुदा" की राह में ऐसा सरगर्म रहा था, जैसे तुम सब आज के दिन हो।⁴चुनांचे मैंने मर्दों और औरतों को बांध बांधकर और क्रैदखाने में डाल डालकर मसीही तरीक़े वालों को यहाँ तक सताया है कि मरवा भी डाला।⁵चुनांचे " सरदार काहिन और सब बुजुर्ग मेरे गवाह हैं, कि उन से मैं भाइयों के नाम ख़त ले कर दमिश्क़ को रवाना हुआ, ताकि ज़ितने वहाँ हों उन्हें भी बाँध कर यरूशलीम में सज़ा दिलाने को लाऊँ।

⁶जब मैं सफ़र करता करता दमिश्क़ शहर के नज़दीक पहुँचा तो ऐसा हुआ कि दोपहर के करीब यकायक एक बड़ा नूर आसमान से मेरे आस-पास आ चमका।

⁷और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा, और ये आवाज़ सुनी कि 'ऐ साऊल, ऐ साऊल ।, तू मुझे क्यों सताता है?'⁸मैं ने जवाब दिया कि 'ऐ खुदावन्द, तू कौन है?' उस ने मुझ से कहा 'मैं ईसा' नासरी हूँ जिसे तू सताता है?'

⁹और मेरे साथियों ने नूर तो देखा लेकिन जो मुझ से बोलता था, उस की आवाज़ न समझ सके।¹⁰मैं ने कहा, 'ऐ " खुदावन्द, मैं क्या करूँ?खुदावन्द ने मुझ से कहा, "उठ कर दमिश्क़ में जा। और जो कुछ तेरे करने के लिए मुर्करर हुआ है, वहाँ तुझ से सब कहा जाए गा।"¹¹जब मुझे उस नूर के जलाल की वजह से कुछ दिखाई न दिया तो मेरे साथी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दमिश्क़ में ले गए।

¹²और हनिन्याह नाम एक शख्स जो शरी'अत के मुवाफ़िक़ दीनदार और वहाँ के सब रहने वाले यहूदियों के नज़दीक नेक नाम था¹³मेरे पास आया और खड़े होकर मुझ से कहा, 'भाई साऊल फिर बीना हो!' उसी वक़्त बीना हो कर मैंने उस को देखा।

¹⁴उस ने कहा, 'हमारे बाप दादा के "खुदा" ने तुझ को इसलिए मुर्करर किया है कि तू उस की मर्ज़ी को जाने और उस रास्तबाज़ को देखे और उस के मुँह की आवाज़ सुने।¹⁵क्योंकि तू उस की तरफ़ से सब आदमियों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं।¹⁶अब क्यों देर करता है? उठ बपतिस्मा ले, और उस का नाम ले कर अपने गुनाहों को धो डाल।'

¹⁷जब मैं फिर यरूशलीम में आकर हैकल में दुआ कर रहा था, तो ऐसा हुआ कि मैं बेखुद हो गया।¹⁸और उस को देखा कि मुझ से कहता है, "जल्दी कर और फ़ौरन यरूशलीम से निकल जा, क्योंकि वो मेरे हक़ में तेरी गवाही कुबूल न करेंगे।"

¹⁹मैंने कहा, 'ऐ खुदावन्द! वो खुद जानते हैं, कि जो तुझ पर ईमान लाए हैं, उन को क्रैद कराता और जा'बजा इबादतखानों में पिटवाता था।²⁰और जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस का खून बहाया जाता था, तो मैं भी वहाँ खड़ा था। और उसके क्रल्ल पर राज़ी था, और उसके क्रातिलों के कपड़ों की हिफ़ाज़त करता था।²¹उस ने मुझ से कहा, "जा मैं तुझे ग़ैर कौमों के पास दूर दूर भेजूँगा।"

²²वो इस बात तक तो उसकी सुनते रहे फिर बुलन्द आवाज़ से चिल्लाए कि "ऐसे शख्स को ज़मीन पर से ख़त्म कर दे! उस का ज़िन्दा रहना मुनासिब नहीं

²³जब वो चिल्लाते और अपने कपड़े फ़ेंकते और खाक उड़ाते थे।²⁴तो पलटन के सरदार ने हुक्म दे कर कहा, कि उसे क्रिले में ले जाओ, और कोड़े मार कर उस का इज़हार लो ताकि मुझे मा'लूम हो कि वो किस वजह से उसकी मुख़ालिफ़त में यूँ चिल्लाते हैं।

²⁵जब उन्होंने उसे रस्सियों से बाँध लिया तो, पौलुस ने उस सिपाही से जो पास खड़ा था कहा, "क्या तुम्हें जायज़ है कि एक रोमी आदमी को कोड़े मारो और वो भी कुसूर साबित किए बग़ैर?"²⁶सिपाही ये सुन कर पलटन के सरदार के पास गया और उसे ख़बर दे कर कहा, "तू क्या करता है? ये तो रोमी आदमी है"

²⁷पलटन के सरदार ने उस के पास आकर कहा, "मुझे बता तो क्या तू रोमी है?" उस ने कहा, "हाँ।"²⁸पलटन के सरदार ने जवाब दिया "कि मैं ने बड़ी रक़म दे कर रोमी होने का रुत्बा हासिल किया" पौलुस ने कहा, "मैं तो पैदाइशी हूँ"²⁹पस, जो उस का इज़हार लेने को थे, फ़ौरन उस से अलग हो गए। और पलटन का सरदार भी ये मा'लूम करके डर गया, कि जिसको मैंने बाँधा है, वो रोमी है।

³⁰सुबह को ये हक़ीक़त मा'लूम करने के इरादे से कि यहूदी उस पर क्या इल्ज़ाम लगाते हैं। उस ने उस को खोल दिया। और सरदार काहिन और सब सद्र- ए-आदालत वालों को जमा होने का हुक्म दिया, और पौलुस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

Chapter 23

¹पौलुस ने सद्र-ए आदालत वालों को गौर से देख कर कहा “ऐ भाइयों, मैंने आज तक पूरी नेक नियती से “खुदा” के वास्ते अपनी उम्र गुजारी है।”²सरदार काहिन हननियाह ने उन को जो उस के पास खड़े थे, हुक्म दिया कि उस के मुँह पर तमाँचा मारो।³पौलुस ने उस से कहा, “ऐ सफ़ेदी फिरी हुई दीवार! “खुदा” तुझे मारेगा! तू शरी’अत के मुवाफ़िक़ मेरा इन्साफ़ करने को बैठा है, और क्या शरी’अत के बर-खिलाफ़ मुझे मारने का हुक्म देता है ”

⁴जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, “क्या तू “खुदा” के सरदार काहिन को बुरा कहता है?”⁵पौलुस ने कहा, “ऐ भाइयो, मुझे मालूम न था कि ये सरदार काहिन है, क्योंकि लिखा है कि अपनी क्रौम के सरदार को बुरा न कह।”

⁶जब पौलुस ने ये मा’लूम किया कि कुछ सद्दूकी हैं और कुछ फ़रीसी तो अदालत में पुकार कर कहा, “ऐ भाइयों, मैं फ़रीसी और फ़रीसियों की औलाद हूँ। मुद्दों की उम्मीद और क़यामत के बारे में मुझ पर मुक़द्दमा हो रहा है”⁷जब उस ने ये कहा तो फ़रीसियों और सद्दूकियों में तकरार हुई, और मजमें में फूट पड़ गई।

⁸क्योंकि सद्दूकी तो कहते हैं कि न क़यामत होगी, न कोई फ़रिश्ता है, न रूह मगर फ़रीसी दोनों का इक्करार करते हैं।

⁹पस, बड़ा शोर हुआ। और फ़रीसियों के फ़िरके के कुछ आलिम उठे “और यूँ कह कर झगड़ने लगे कि हम इस आदमी में कुछ बुराई नहीं पाते और अगर किसी रूह या फ़िरिशते ने इस से कलाम किया हो तो फिर क्या?”¹⁰और जब बड़ी तकरार हुई तो पलटन के सरदार ने इस खौफ़ से कि उस वक़्त पौलुस के टुकड़े कर दिए जाएँ, फ़ौज को हुक्म दिया कि उतर कर उसे उन में से ज़बरदस्ती निकालो और क़िले में ले जाओ।

¹¹उसी रात खुदावन्द उसके पास आ खड़ा हुआ, और कहा, “इत्मिनान रख; कि जैसे तू ने मेरे बारे में यरूशलीम में गवाही दी है वैसे ही तुझे रोमा में भी गवाही देनी होगी।”

¹²जब दिन हुआ तो यहूदियों ने एका कर के और ला’नत की क्रसम खाकर कहा “कि जब तक हम पौलुस को क़त्ल न कर लें न कुछ खाएँगे न पीएँगे।”¹³और जिन्होंने ने आपस में ये साज़िश की वो चालीस से ज़्यादा थे।

¹⁴पस, उन्होंने ने सरदार काहिनों और बुजुर्गों के पास जाकर कहा “कि हम ने सख़्त ला’नत की क्रसम खाई है कि जब तक हम पौलुस को क़त्ल न कर लें कुछ न चखेंगे।”¹⁵पस, अब तुम सद्र-ए-अदालत वालों से मिलकर पलटन के सरदार से अर्ज़ करो कि उसे तुम्हारे पास लाए। गोया तुम उसके मु’अमिले की हक़ीक़त ज़्यादा मालूम करना चाहते हो, और हम उसके पहुँचने से पहले उसे मार डालने को तैयार हैं ”

¹⁶लेकिन पौलुस का भांजा उनकी घात का हाल सुन कर आया और क़िले में जाकर पौलुस को ख़बर दी।¹⁷पौलुस ने सुबेदारों में से एक को बुला कर कहा “इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाए उस से कुछ कहना चाहता है।”

¹⁸उस ने उस को पलटन के सरदार के पास ले जा कर कहा कि “पौलुस क़ैदी ने मुझे बुला कर दरख्वास्त की कि जवान को तेरे पास लाऊँ। कि तुझ से कुछ कहना चाहता है।”¹⁹पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़ कर और अलग जा कर पूछा “कि मुझ से क्या कहना चाहता है?”

²⁰उस ने कहा “यहूदियों ने मशवरा किया है, कि तुझ से दरख्वास्त करें कि कल पौलुस को सद्र-ए-अदालत में लाए। गोया तू उस के हाल की और भी तहक़ीक़ात करना चाहता है।”²¹लेकिन तू उन की न मानना, क्योंकि उन में चालीस शख्स से ज़्यादा उस की घात में हैं जिन्होंने ला’नत की क्रसम खाई है, कि जब तक उसे मार न डालें न खाएँगे न पीएँगे और अब वो तैयार हैं, सिर्फ़ तेरे वादे का इन्तज़ार है।”

²²पस, सरदार ने जवान को ये हुक्म दे कर रुख़सत किया “कि किसी से न कहना कि तू ने मुझ पर ये ज़ाहिर किया।”²³और दो सुबेदारों को पास बुला कर कहा कि “दो सौ सिपाही और सत्तर सवार और दो सौ नेज़ा बरदार पहर रात गए, क़ैसरिया जाने को तैयार कर रखना।”²⁴और हुक्म दिया पौलुस की सवारी के लिए जानवरों को भी हाज़िर करें, ताकि उसे फ़ेलिक्स हाकिम के पास सहीह सलामत पहुँचा दें।”

²⁵और इस मज़मून का ख़त लिखा।²⁶“क्लौदियुस लूसियास का फ़ेलिक्स बहादुर हाकिम को सलाम।”²⁷इस शख्स को यहूदियों ने पकड़ कर मार डालना चाहा मगर जब मुझे मा’लूम हुआ कि ये रोमी है तो फ़ौज समेत चढ़ गया, और छुड़ा लाया।

²⁸और इस बात की दरियाफ़्त करने का इरादा करके कि वो किस वजह से उस पर लानत करते हैं; उसे उन की सद्र-ए-अदालत में ले गया।²⁹और मा’लूम हुआ कि वो अपनी शरी’अत के मस्लों के बारे में उस पर नालिश करते हैं; लेकिन उस पर कोई ऐसा इल्ज़ाम नहीं लगाया गया कि क़त्ल या क़ैद के लायक़ हो।³⁰और जब मुझे इत्तला हुई कि इस शख्स के बर-खिलाफ़ साज़िश होने वाली है, तो मैंने इसे फ़ौरन तेरे पास भेज दिया है और इस के मुद्द,इयों को भी हुक्म दे दिया है कि तेरे सामने इस पर दा’वा करें। ”

³¹पस, सिपाहियों ने हुक्म के मुवाफ़िक़ पौलुस को लेकर रातों रात अन्तिपत्रिस में पहुँचा दिया।³²और दूसरे दिन सवारों को उसके साथ जाने के लिए छोड़ कर आप क़िले की तरफ़ मुड़े।³³उन्होंने ने क़ैसरिया में पहुँच कर हाकिम को ख़त दे दिया, और पौलुस को भी उस के आगे हाज़िर किया।

³⁴उस ने ख़त पढ़ कर पूछा “कि ये किस सूबे का है ” और ये मा’लूम करके “कि किलकिया का है ।”³⁵उस से कहा “कि जब तेरे मुद्द’इ भी हाज़िर होंगे; मैं तेरा मुक़द्दमा करूँगा ।” और उसे हेरोदेस के क़िले में क़ैद रखने का हुक्म दिया ।

Chapter 24

¹पाँच दिन के बाद हननियाह सरदार काहिन के कुछ बुजुर्गों और तिरतुलुस नाम एक वकील को साथ ले कर वहाँ आया, और उन्होंने हाकिम के सामने पौलुस के खिलाफ़ फ़रियाद की।²जब वो बुलाया गया तो तिरतुलुस इल्ज़ाम लगा कर कहने लगा कि “ऐ फ़ेलिक्स बहादुर चूँकि तेरे वसीले से हम बड़े अमन में हैं और तेरी दूर अन्देशी से इस क्रौम के फ़ायदे के लिए ख़राबियों की इस्लाह होती है।³हम हर तरह और हर जगह क्रमाल शुक्र गुज़ारी के साथ तेरा एहसान मानते हैं।

⁴मगर इस लिए कि तुझे ज़्यादा तकलीफ़ न दूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू मेहरबानी से दो एक बातें हमारी सुन ले।⁵क्योंकि हम ने इस शख्स को फ़साद करने वाला और दुनिया के सब यहूदियों में फ़ितना अंगेज़ और नासरियों की बिद'अती फ़िरके का सरगिरोह पाया।⁶इस ने हैकल को नापाक करने की भी कोशिश की थी, और हम ने इसे पकड़ा। और हम ने चाहा कि अपनी शरी'अत के मुवाफ़िक़ इस की अदालत करें।

⁷लेकिन लूसियास सरदार आकर बड़ी ज़बरदस्ती से उसे हमारे हाथ से छीन ले गया।⁸और उसके मुद्दयों को हुक्म दिया कि तेरे पास जाएँ इसी से तहक़ीक़ करके तू आप इन सब बातों को मालूम कर सकता है, जिनका हम इस पर इल्ज़ाम लगाते हैं।⁹और दूसरे यहूदियों ने भी इस दा'वे में मुत्तफ़िक़ हो कर कहा कि ये बातें इसी तरह हैं।

¹⁰जब हाकिम ने पौलुस को बोलने का इशारा किया तो उस ने जवाब दिया, “चूँकि मैं जानता हूँ, कि तू बहुत बरसों से इस क्रौम की अदालत करता है, इसलिए मैं खुद से अपना उज़्र बयान करता हूँ।¹¹तू मालूम कर सकता है, कि बारह दिन से ज़्यादा नहीं हुए कि मैं यरूशलीम में इबादत करने गया था।¹²और उन्होंने मुझे न हैकल में किसी के साथ बहस करते या लोगों में फ़साद कराते पाया न इबादतख़ानों में न शहर में।¹³और न वो इन बातों को जिन का मुझ पर अब इल्ज़ाम लगाते हैं, तेरे सामने साबित कर सकते हैं।

¹⁴लेकिन तेरे सामने ये इक्रार करता हूँ, कि जिस तरीके को वो बिद'अत कहते हैं, उसी के मुताबिक़ मैं अपने बाप दादा के “ख़ुदा” की इबादत करता हूँ, और जो कुछ तौरेत और नबियों के सहीफ़ों में लिखा है, उस सब पर मेरा ईमान है।¹⁵और “ख़ुदा” से उसी बात की उम्मीद रखता हूँ, जिसके वो खुद भी मुन्तज़िर हैं, कि रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों की क़यामत होगी।¹⁶इसलिए मैं खुद भी कोशिश में रहता हूँ, कि “ख़ुदा” और आदमियों के बारे में मेरा दिल मुझे कभी मलामत न करे।

¹⁷बहुत बरसों के बाद मैं अपनी क्रौम को ख़ैरात पहुँचाने और नज़्में चढ़ाने आया था।¹⁸उन्होंने बग़ैर हंगामे या बवाल के मुझे तहारत की हालत में ये काम करते हुए हैकल में पाया, यहाँ आसिया के चन्द यहूदी थे।¹⁹और अगर उन का मुझ पर कुछ दा'वा था, तो उन्हें तेरे सामने हाज़िर हो कर फ़रियाद करना वाजिब था।

²⁰या यही खुद कहें, कि जब मैं सद्र-ए-अदालत के सामने खड़ा था, तो मुझ में क्या बुराई पाई थी।²¹सिवा इस बात के कि मैं ने उन में खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से कहा था कि “मुद्दों की क़यामत के बारे में आज मुझ पर मुक़द्दमा हो रहा है। ”

²²फ़ेलिक्स ने जो सहीह तौर पर इस तरीके से वाक़िफ़ था “ये कह कर मुक़द्दमे को मुलतवी कर दिया कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा तो मैं तुम्हारा मुक़द्दमा फ़ैसला करूँगा।”²³और सुबेदार को हुक्म दिया कि उस को कैद तो रख मगर आराम से रखना और इसके दोस्तों में से किसी को इसकी ख़िदमत करने से मना' न करना।

²⁴और चन्द रोज़ के बाद फ़ेलिक्स अपनी बीवी दुसिल्ला को जो यहूदी थी, साथ ले कर आया, और पौलुस को बुलवा कर उस से मसीह ईसा' के दीन की कैफ़ियत सुनी।²⁵और जब वो रास्तबाज़ी और परहेज़गारी और आइन्दा अदालत का बयान कर रहा था, तो फ़ेलिक्स ने दहशत खाकर जवाब दिया, “कि इस वक़्त तू जा; फ़ुरसत पाकर तुझे फिर बुलाऊँगा। ”

²⁶उसे पौलुस से कुछ रुपये मिलने की उम्मीद भी थी, इसलिए उसे और भी बुला बुला कर उस के साथ गुप्तगू किया करता था।²⁷लेकिन जब दो बरस गुज़र गये तो पुरकियुस फ़ेस्तुस फ़ेलिक्स की जगह मुक़र्रर हुआ और फ़ेलिक्स यहूदियों को अपना एहसान मन्द करने की गरज़ से पौलुस को कैद ही में छोड़ गया।

Chapter 25

¹पस, फ्रेस्तुस सूबे में दाखिल होकर तीन रोज़ के बा'द कैसरिया से यरूशलीम को गया।²और सरदार काहिनों और यहूदियों के रईसों ने उस के यहाँ पौलुस के खिलाफ़ फ़रियाद की।³और उस की मुखालिफ़त में ये रि'आयत चाही कि उसे यरूशलीम में बुला भेजे; और घात में थे, कि उसे राह में मार डालें।

⁴मगर फ्रेस्तुस ने जवाब दिया कि “पौलुस तो कैसरिया में कैद है और मैं आप जल्द वहाँ जाऊँगा।⁵पस तुम में से जो इच्छितार वाले हैं वो साथ चलें और अगर इस शख्स में कुछ बेजा बात हो तो उस की फ़रियाद करें।”

⁶वो उन में आठ दस दिन रह कर कैसरिया को गया, और दूसरे दिन तख़्त -ए-अदालत पर बैठकर पौलुस के लाने का हुक्म दिया।⁷जब वो हाज़िर हुआ तो जो यहूदी यरूशलीम से आए थे, वो उस के आस पास खड़े होकर उस पर बहुत सख़्त इल्ज़ाम लगाने लगे, मगर उन को साबित न कर सके।⁸लेकिन पौलुस ने ये उज़्र किया “मैंने न तो कुछ यहूदियों की शरी'अत का गुनाह किया है, न हैकल का न कैसर का।”

⁹मगर फ्रेस्तुस ने यहूदियों को अपना एहसानमन्द बनाने की गरज़ से पौलुस को जवाब दिया “क्या तुझे यरूशलीम जाना मन्ज़ूर है? कि तेरा ये मुक़द्दमा वहाँ मेरे सामने फ़ैसला हो”¹⁰पौलुस ने कहा, “ मैं कैसर के तख़्त- ए -अदालत के सामने खड़ा हूँ, मेरा मुक़द्दमा यहीं फ़ैसला होना चाहिए यहूदियों का मैं ने कुछ कुसूर नहीं किया। चुनाँचे तू भी ख़ूब जानता है।

¹¹अगर बदकार हूँ, या मैंने क़ल्ल के लायक़ कोई काम किया है तो मुझे मरने से इन्कार नहीं !लेकिन जिन बातों का वो मुझ पर इल्ज़ाम लगाते हैं अगर उनकी कुछ अस्ल नहीं तो उनकी रि'आयत से कोई मुझ को उनके हवाले नहीं कर सकता। मैं कैसर के यहाँ दरख़वास्त करता हूँ।¹²फिर फ्रेस्तुस ने सलाहकारों से मशवरा करके जवाब दिया, “कि तू ने कैसर के यहाँ फरियाद की है, तो कैसर ही के पास जाएगा।”

¹³और कुछ दिन गुज़रने के बा'द अग्रिप्पा बादशाह और बिरनीकि ने कैसरिया में आकर फ्रेस्तुस से मुलाक़ात की।¹⁴और उनके कुछ अर्से वहाँ रहने के बा'द फ्रेस्तुस ने पौलुस के मुक़द्दमे का हाल बादशाह से ये कह कर बयान किया। कि एक शख्स को फेलिक्स कैद में छोड़ गया है।¹⁵जब मैं यरूशलीम में था, तो सरदार काहिनों और यहूदियों के बुजुर्गों ने उसके खिलाफ़ फ़रियाद की; और सज़ा के हुक्म की दरख़वास्त की।¹⁶उनको मैंने जवाब दिया कि “रोमियों का ये दस्तूर नहीं कि किसी आदमियों को रि'आयतन सज़ा के लिए हवाले करें, जब कि मुद्द'अलिया को अपने मुद्द'इयों के रू-ब-रू हो कर दा'वे के जवाब देने का मौक़ा न मिले।”

¹⁷पस, जब वो यहाँ जमा हुए तो मैंने कुछ देर न की बल्कि दूसरे ही दिन तख़्त -ए अदालत पर बैठ कर उस आदमी को लाने का हुक्म दिया।¹⁸मगर जब उसके मुद्द'ई खड़े हुए तो जिन बुराइयों का मुझे गुमान था, उनमें से उन्होंने किसी का इल्ज़ाम उस पर न लगाया।¹⁹बल्कि अपने दीन और किसी शख्स ईसा' के बारे में उस से बहस करते थे, जो मर गया था, और पौलुस उसको ज़िन्दा बताता है।²⁰चूँकि मैं इन बातों की तहक़ीक़ात के बारे में उलझन में था, इस लिए उस से पूछा क्या तू यरूशलीम जाने को राज़ी है, कि वहाँ इन बातों का फ़ैसला हो?

²¹मगर जब पौलुस ने फरियाद की, कि मेरा मुक़द्दमा शहंशाह की अदालत में फ़ैसला हो तो , मैंने हुक्म दिया कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूँ, कैद में रहे।

²²अग्रिप्पा ने फ्रेस्तुस से कहा, “मैं भी उस आदमी की सुनना चाहता हूँ।” उस ने कहा “तू कल सुन लेगा।”

²³पस, दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बिरनीकि बड़ी शान- ओ शौकत से पलटन के सरदारों और शहर के र'ईसों के साथ दिवान खाने में दाखिल हुए। तो फ्रेस्तुस के हुक्म से पौलुस हाज़िर किया गया।²⁴फिर फ्रेस्तुस ने कहा, “ऐ अग्रिप्पा बादशाह और ऐ सब हाज़रीन तुम इस शख्स को देखते हो, जिसके बारे में यहूदियों के सारे गिरोह ने यरूशलीम में और यहाँ भी चिल्ला चिल्ला कर मुझ से अज़ की कि इस का आगे को ज़िन्दा रहना मुनासिब नहीं।

²⁵लेकिन मुझे मा'लूम हुआ कि उस ने क़ल्ल के लायक़ कुछ नहीं किया; और जब उस ने ख़ुद शहंशाह के यहाँ फरियाद की तो मैं ने उस को भेजने की तज्वीज़ की।²⁶उसके बारे में मुझे कोई ठीक बात मा'लूम नहीं कि सरकार -ए -आली को लिखूँ इस वास्ते मैंने उस को तुम्हारे आगे और खासकर -ऐ -अग्रिप्पा बादशाह तेरे हुज़ूर हाज़िर किया है, ताकि तहक़ीक़ात के बा'द लिखने के क़ाबिल कोई बात निकले।²⁷क्यूँकि कैदी के भेजते वक़्त उन इल्ज़ामों को जो उस पर लगाए गये हैं, ज़ाहिर न करना मुझे खिलाफ़-ए-अक्ल मा'लूम होता है।”

Chapter 26

¹अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “तुझे अपने लिए बोलने की इजाज़त है;” पौलुस अपना हाथ बढ़ाकर अपना जवाब यूँ पेश करने लगा कि, ²“ऐ अग्रिप्पा बादशाह जितनी बातों की यहूदी मुझ पर लानत करते हैं; आज तेरे सामने उनकी जवाबदेही करना अपनी खुशनसीबी जानता हूँ।³ खासकर इसलिए कि तू यहूदियों की सब रस्मों और मसलों से वाकिफ़ है; पस, मैं मिन्नत करता हूँ, कि तहम्मूल से मेरी सुन ले।

⁴सब यहूदी जानते हैं कि अपनी क्रौम के दर्मियान और यरूशलीम में शुरू जवानी से मेरा चालचलन कैसा रहा है।⁵ चूँकि वो शुरू से मुझे जानते हैं, अगर चाहें तो गवाह हो सकते हैं, कि मैं फ़रीसी होकर अपने दीन के सब से ज़्यादा पाबन्द मज़हबी फ़िरक़े की तरह ज़िन्दगी गुज़ारता था।

⁶और अब उस वा'दे की उम्मीद की वजह से मुझ पर मुक़द्दमा हो रहा है, जो “खुदा” ने हमारे बाप दादा से किया था।⁷ उसी वा'दे के पूरा होने की उम्मीद पर हमारे बारह के बारह क़बीले दिल'ओ जान से रात दिन इबादत किया करते हैं, इसी उम्मीद की वजह से “ऐ बादशाह यहूदी मुझ पर नालिश करते हैं।” जब कि “खुदा” मुर्दों को जिलाता है, तो ये बात तुम्हारे नज़दीक क्यों ग़ैर मो'तबर समझी जाती है?

⁹मैंने भी समझा था, कि ईसा' नासरी के नाम की तरह तरह से मुखालिफ़त करना मुझ पर फ़र्ज़ है।¹⁰ चुनाँचे मैंने यरूशलीम में ऐसा ही किया, और सरदार काहिनों की तरफ़ से इख़्तियार पाकर बहुत से मुक़द्दसों को कैद में डाला और जब वो क़त्ल किए जाते थे, तो मैं भी यही मशवरा देता था।¹¹ और हर इबादत ख़ाने में उन्हें सज़ा दिला दिला कर ज़बरदस्ती उन से कूफ़ कहलवाता था, बल्कि उन की मुखालिफ़त में ऐसा दिवाना बना कि ग़ैर शाहरों में भी जाकर उन्हें सताता था।

¹²इसी हाल में सरदार काहिनों से इख़्तियार और परवाने लेकर दमिश्क़ को जाता था।¹³ तो ऐ बादशाह मैंने दो पहर के वक़्त राह में ये देखा कि सूरज के नूर से ज़्यादा एक नूर आसमान से मेरे और मेरे हमसफ़रों के गिर्द आ चमका।¹⁴ जब हम सब ज़मीन पर गिर पड़े तो मैंने इब्रानी ज़बान में ये आवाज़ सुनी' कि ऐ साऊल, ऐ साऊल, तू मुझे क्यों सताता है? अपने आप पर लात मारना तेरे लिए मुश्किल है।'

¹⁵मैं ने कहा 'ऐ खुदावन्द, तू कौन हैं?' खुदावन्द ने फ़रमाया 'मैं ईसा' हूँ, जिसे तू सताता है।¹⁶ लेकिन उठ अपने पाँव पर खड़ा हो, क्योंकि मैं इस लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ हूँ, कि तुझे उन चीज़ों का भी ख़ादिम और गवाह मुक़र्रर करूँ जिनकी गवाही के लिए तू ने मुझे देखा है, और उन का भी जिनकी गवाही के लिए मैं तुझ पर ज़ाहिर हुआ करूँगा।¹⁷ और मैं तुझे इस उम्मत और ग़ैर क्रौमों से बचाता रहूँगा। जिन के पास तुझे इसलिए भेजता हूँ।¹⁸ कि तू उन की आँखें खोल दे ताकि अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ और शैतान के इख़्तियार से “खुदा” की तरफ़ रुजू लाएँ, और मुझ पर ईमान लाने के ज़रिये गुनाहों की मु'आफ़ी और मुक़द्दसों में शरीक हो कर मीरास पाएँ।'

¹⁹इसलिए ऐ अग्रिप्पा बादशाह! मैं उस आसमानी रोया का नाफ़रमान न हुआ।²⁰ बल्कि पहले दमिश्क़ियों को फिर यरूशलीम और सारे मुल्क यहूदिया के बाशिन्दों को और ग़ैर क्रौमों को समझाता रहा। कि तौबा करें और “खुदा” की तरफ़ रज़ू लाकर तौबा के मुवाफ़िक़ काम करें।²¹ इन्ही बातों की वजह से कुछ यहूदियों ने मुझे हैकल में पकड़ कर मार डालने की कोशिश की।

²²लेकिन “खुदा” की मदद से मैं आज तक क़ायम हूँ, और छोटे बड़े के सामने गवाही देता हूँ, और उन बातों के सिवा कुछ नहीं कहता जिनकी पेशीनगोई नबियों और मूसा ने भी की है।²³ कि “मसीह को दुखः उठाना ज़रूर है और सब से पहले वही मुर्दों में से ज़िन्दा हो कर इस उम्मत को और ग़ैर क्रौमों को भी नूर का इश्तिहार देगा।”

²⁴जब वो इस तरह जवाबदेही कर रहा था, तो फ़ेस्तुस ने बड़ी आवाज़ से कहा “ऐ पौलुस तू दिवाना है; बहुत इल्म ने तुझे दिवाना कर दिया है।”²⁵ पौलुस ने कहा “ऐ फ़ेस्तुस बहादुर; मैं दिवाना नहीं बल्कि सच्चाई और होशियारी की बातें कहता हूँ।²⁶ चुनाँचे बादशाह जिससे मैं दिलेराना कलाम करता हूँ, ये बातें जानता है और मुझे यक़ीन है कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं। क्योंकि ये माजरा कहीं कोने में नहीं हुआ।

²⁷ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या तू नबियों का यक़ीन करता है? मैं जानता हूँ, कि तू यक़ीन करता है।”²⁸ अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “तू तो थोड़ी ही सी नसीहत कर के मुझे मसीह कर लेना चाहता है।”²⁹ पौलुस ने कहा, “मैं तो “खुदा” से चाहता हूँ, कि थोड़ी नसीहत से या बहुत से सिर्फ़ तू ही नहीं बल्कि जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरी तरह हो जाएँ, सिवा इन ज़ंजीरों के।”

³⁰तब बादशाह और हाकिम और बरनीकि और उनके हमनशीन उठ खड़े हुए,।³¹ और अलग जाकर एक दूसरे से बातें करने और कहने लगे, “कि ये आदमी ऐसा तो कुछ नहीं करता जो क़त्ल या कैद के लायक़ हो।”³² अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, “कि अगर ये आदमी कैसर के यहाँ फरियाद न करता तो छूट सकता था।”

Chapter 27

¹जब जहाज़ पर इतालिया को हमारा जाना ठहराया गया तो उन्होंने पौलुस और कुछ और कैदियों को शहंशाही पलटन के एक सुबेदार अगस्तुस ने यूलियुस नाम के हवाले किया।² और हम अद्रमुतयुस के एक जहाज़ पर जो आसिया के किनारे के बन्दरगाहों में जाने को था। सवार होकर रवाना हुए और थिस्तुनीकि का अरिस्तार्खुस मकिदुनी हमारे साथ था।

³दूसरे दिन सैदा में जहाज़ ठहराया, और यूलियुस ने पौलुस पर मेंहरबानी करके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी। ताकि उस की खातिरदारी हो।⁴ वहाँ से हम रवाना हुए और कुप्रुस की आड़ में होकर चले इसलिए कि हवा मुखालिफ़ थी।⁵ फिर किलिकिया और पम्फ़ीलिया सूबे के समुन्दर से गुज़र कर लूकिया के शहर मूरा में उतरे।⁶ वहाँ सुबेदार को इस्कन्दरिया का एक जहाज़ इतालिया जाता हुआ, मिला पस, हमको उस में बैठा दिया।

⁷ और हम बहुत दिनों तक आहिस्ता आहिस्ता चलकर मुश्किल से कनिदुस शहर के सामने पहुँचे तो इसलिए कि हवा हम को आगे बढ़ने न देती थी सलमूने के सामने से हो कर करते टापू की आड़ में चले।⁸ और बमुश्किल उसके किनारे किनारे चलकर हसीन-बन्दर नाम एक मक्राम में पहुँचे जिस से लसया शहर नज़दीक था।

⁹ जब बहुत अरसा गुज़र गया और जहाज़ का सफ़र इसलिए खतरनाक हो गया कि रोज़ा का दिन गुज़र चुका था। तो पौलुस ने उन्हें ये कह कर नसीहत की।¹⁰ कि “ऐ साहिबो। मुझे मालूम होता है, कि इस सफ़र में तक्लीफ़ और बहुत नुकसान होगा, न सिर्फ़ माल और जहाज़ का बल्कि हमारी जानों का भी।”¹¹ मगर सुबेदार ने नाखुदा और जहाज़ के मालिक की बातों पर पौलुस की बातों से ज़्यादा लिहाज़ किया।

¹² और चूँकि वो बन्दरगाह जाड़ों में रहने कि लिए अच्छा न था, इसलिए अक्सर लोगों की सलाह ठहरी कि वहाँ से रवाना हों, और अगर हो सके तो फ़ेनिक्स शहर में पहुँच कर जाड़ा काटें; वो करते का एक बन्दरगाह है जिसका रुख़ शिमाल मशरिक् और जुनूब मशरिक् को है।¹³ जब कुछ कुछ दक्खिना हवा चलने लगी तो उन्होंने ने ये समझ कर कि हमारा मतलब हासिल हो गया लंगर उठाया और करते के किनारे के क़रीब क़रीब चले।

¹⁴ लेकिन थोड़ी देर बा'द एक बड़ी तूफ़ानी हवा जो यूरकुलोन कहलाती है करते पर से जहाज़ पर आई।¹⁵ और जब जहाज़ हवा के काबू में आ गया, और उस का सामना न कर सका, तो हम ने लाचार होकर उसको बहने दिया।¹⁶ और कौदा नाम एक छोटे टापू की आड़ में बहते बहते हम बड़ी मुश्किल से डोंगी को क़ाबू में लाए।

¹⁷ और जब मल्लाह उस को उपर चढ़ा चुके तो जहाज़ की मज़बूती की तदबीरें करके उसको नीचे से बाँधा, और सूरतिस के चोर बालू में धंस जाने के डर से जहाज़ का साज़ो सामान उतार लिया। और उसी तरह बहते चले गए।¹⁸ मगर जब हम ने आँधी से बहुत हिचकोले खाए तो दूसरे दिन वो जहाज़ का माल फेंकने लगे।

¹⁹ और तीसरे दिन उन्होंने ने अपने ही हाथों से जहाज़ के कुछ आलात-ओ-असबाब भी फेंक दिये।²⁰ जब बहुत दिनों तक न सूरज नज़र आया न तारे और शिद्वत की आँधी चल रही थी, तो आखिर हम को बचने की उम्मीद बिल्कुल न रही।

²¹ और जब बहुत फ़ाक्रा कर चुके तो पौलुस ने उन के बीच में खड़े हो कर कहा “ऐ साहिबो; लाज़िम था, कि तुम मेरी बात मान कर करते से रवाना न होते और ये तकलीफ़ और नुक़सान न उठाते।”²² मगर अब मैं तुम को नसीहत करता हूँ कि इत्मीनान रखो; क्योंकि तुम में से किसी का नुक़सान न होगा। मगर जहाज़ का।

²³ क्योंकि “खुदा” जिसका मैं हूँ, और जिसकी इबादत भी करता हूँ, उसके फ़रिश्ते ने इसी रात को मेरे पास आकर।²⁴ कहा, “पौलुस, न डर। ज़रूरी है कि तू कैसर के सामने हाज़िर हो, और देख जितने लोग तेरे साथ जहाज़ में सवार हैं, उन सब की खुदा ने तेरी खातिर जान बख़शी की।”²⁵ इसलिए “ऐ साहिबो; इत्मीनान रखो; क्योंकि मैं “खुदा” का यक़ीन करता हूँ, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।”²⁶ लेकिन ये ज़रूर है कि हम किसी टापू में जा पड़ें।

²⁷ जब चौधवीं रात हुई और हम बहर-ए-अद्रिया में टकराते फिरते थे, तो आधी रात के क़रीब मल्लाहों ने अंदाज़े से मा'लूम किया कि किसी मुल्क के नज़दीक पहुँच गए।²⁸ और पानी की थाह लेकर बीस पुरसा पाया और थोड़ा आगे बढ़ कर और फिर थाह लेकर पन्द्रह पुरसा पाया।²⁹ और इस डर से कि पथरीली चटानों पर जा पड़ें, जहाज़ के पीछे से चार लंगर डाले और सुबह होने के लिए दुआ करते रहे।

³⁰ और जब मल्लाहों ने चाहा कि जहाज़ पर से भाग जाएँ, और इस बहाने से कि गलही से लंगर डालें, डोंगी को समुन्द्र में उतारें।³¹ तो पौलुस ने सुबेदार और सिपाहियों से कहा “अगर ये जहाज़ पर न रहेंगे तो तुम नहीं बच सकते।”³² इस पर सिपाहियों ने डोंगी की रस्सियाँ काट कर उसे छोड़ दिया।

³³ और जब दिन निकलने को हुआ तो पौलुस ने सब की मिन्नत की कि खाना खालो और कहा कि “तुम को इन्तज़ार करते करते और फ़ाक्रा करते करते आज चौदह दिन हो गए; और तुम ने कुछ नहीं खाया।”³⁴ इसलिए तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि खाना खालो, इसी में तुम्हारी बहतरी मौकूफ़ है, और तुम में से किसी के सिर का बाल बाका न होगा।³⁵ ये कह कर उस ने रोटी ली और उन सब के सामने “खुदा” का शुक्र किया, और तोड़ कर खाने लगा।

³⁶ फिर उन सब की खातिर जमा हुई, और आप भी खाना खाने लगे।³⁷ और हम सब मिलकर जहाज़ में दो सौ छिहत्तर आदमी थे।³⁸ जब वो खा कर सेर हुए तो गेहूँ को समुन्द्र में फ़ेंक कर जहाज़ को हल्का करने लगे।

³⁹ जब दिन निकल आया तो उन्होंने उस मुल्क को न पहचाना, मगर एक खाड़ी देखी, जिसका किनारा साफ़ था, और सलाह की कि अगर हो सके तो जहाज़ को उस पर चढ़ा लें।⁴⁰ पस, लंगर खोल कर समुन्द्र में छोड़ दिए, और पत्वारों की भी रस्सियाँ खोल दी; और अगला पाल हवा के रुख़ पर चढ़ा कर उस किनारे की तरफ़ चले।⁴¹ लेकिन एक ऐसी जगह जा पड़े जिसके दोनों तरफ़ समुन्द्र का ज़ोर था; और जहाज़ ज़मीन पर टिक गया, पस गलही तो धक्का खाकर फंस गई; मगर दुम्बाला लहरों के ज़ोर से टूटने लगा।

⁴² और सिपाहियों की ये सलाह थी, कि कैदियों को मार डालें, कि ऐसा न हो कोई तैर कर भाग जाए।⁴³ लेकिन सुबेदार ने पौलुस को बचाने की गरज़ से उन्हें इस इरादे से बाज़ रखखा; और हुक्म दिया कि जो तैर सकते हैं, पहले कूद कर किनारे पर चले जाएँ।⁴⁴ बाक़ी लोग कुछ तख़्तों पर और कुछ जहाज़ की और चीज़ों के सहारे से चले जाएँ; इसी तरह सब के सब खुश्की पर सलामत पहुँच गए।

Chapter 28

¹जब हम पहुँच गए तो जाना कि इस टापू का नाम मिलिते है, ²और उन अजनबियों ने हम पर खास महरबानी की, क्योंकि बारिश की झड़ी और जाड़े की वजह से उन्होंने आग जलाकर हम सब की खातिर की।

³जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्टा जमा करके आग में डाला तो एक साँप गर्मी पा कर निकला और उसके हाथ पर लिपट गया। ⁴जिस वक़्त उन अजनबियों ने वो कीड़ा उसके हाथ से लटका हुआ देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, “बेशक ये आदमी खूनी है: अगरचे समुन्द्र से बच गया तो भी अदल उसे जीने नहीं देता।”

⁵पस, उस ने कीड़े को आग में झटक दिया और उसे कुछ तकलीफ न पहुँची। ⁶मगर वो मुन्तज़िर थे, कि इस का बदन सूज जाएगा: या ये मरकर यकायक गिर पड़ेगा लेकिन जब देर तक इन्तज़ार किया और देखा कि उसको कुछ तकलीफ न पहुँची तो और खयाल करके कहा, “ये तो कोई देवता है।”

⁷वहाँ से क़रीब पुबलियुस नाम उस टापू के सरदार की मिलकियत थी; उस ने घर लेजाकर तीन दिन तक बड़ी महरबानी से हमारी मेंहमानी की। ⁸और ऐसा हुआ, कि पुबलियुस का बाप बुखार और पेचिश की वजह से बीमार पड़ा था; पौलुस ने उसके पास जाकर दुआ की और उस पर हाथ रखकर शिफ़ा दी। ⁹जब ऐसा हुआ तो बाक़ी लोग जो उस टापू में बीमार थे, आए और अच्छे किए गए। ¹⁰और उन्होंने हमारी बड़ी 'इज़ज़त की और चलते वक़्त जो कुछ हमें दरकार था; जहाज़ पर रख दिया।

¹¹तीन महीने के बाद हम इसकन्दरिया के एक जहाज़ पर रवाना हुए जो जाड़े भर 'उस टापू में रहा था जिसका निशान दियुसकूरी था' ¹²और सुरकूसा में जहाज़ ठहरा कर तीन दिन रहे।

¹³और वहाँ से फेर खाकर रेगियूम बन्दरगाह में आए। एक रोज़ बाद दक्खिन हवा चली तो दूसरे दिन पुतियुली शहर में आए। ¹⁴वहाँ हम को भाई मिले, और उनकी मिन्नत से हम सात दिन उन के पास रहे; और इसी तरह रोमा तक गए। ¹⁵वहाँ से भाई हमारी ख़बर सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन सराय तक हमारे इस्तक्रबाल को आए। पौलुस ने उन्हें देखकर खुदा का शुक्र किया और उसके खातिर जमा' हुई।

¹⁶जब हम रोम में पहुँचे तो पौलुस को इजाज़त हुई, कि अकेला उस सिपाही के साथ रहे, जो उस पर पहरा देता था। ¹⁷तीन रोज़ के बाद ऐसा हुआ कि उस ने यहूदियों के रईसों को बुलवाया और जब जमा हो गए, तो उन से कहा, “ऐ भाइयों हर वक़्त पर मैंने उम्मत और बाप दादा की रस्मों के खिलाफ़ कुछ नहीं किया। तोभी यरूशलीम से कैदी होकर रोमियों के हाथ हवाले किया गया। ¹⁸उन्होंने मेरी तहक़ीक़ात करके मुझे छोड़ देना चाहा; क्योंकि मेरे क़त्ल की कोई वजह न थी।

¹⁹मगर जब यहूदियों ने मुखालिफ़त की तो मैंने लाचार होकर कैसर के यहाँ फ़रियाद की मगर इस वास्ते नहीं कि अपनी क़ौम पर मुझे कुछ इल्ज़ाम लगाना है, ।

²⁰पस, इसलिए मैंने तुम्हें बुलाया है कि तुम से मिलूँ और गुफ़्तगू करूँ, क्योंकि इस्राईल की उम्मीद की वजह से मैं इस ज़ंजीर से जकड़ा हुआ हूँ।”

²¹उन्होंने कहा “न हमारे पास यहूदिया से तेरे बारे में ख़त आए, न भाइयों में से किसी ने आ कर तेरी कुछ ख़बर दी न बुराई बयान की।” ²²मगर हम मुनासिब जानते हैं कि तुझ से सुनें, कि तेरे खयालात क्या हैं; क्योंकि इस फ़िर्के की वजह हम को मा'लूम है कि हर जगह इसके खिलाफ़ कहते हैं।”

²³और वो उस से एक दिन ठहरा कर कसरत से उसके यहाँ जमा हुए, और वो "खुदा" की बादशाही की गवाही दे दे कर और मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़ों से ईसा' की वजह समझा समझा कर सुबह से शाम तक उन से बयान करता रहा। ²⁴और कुछ ने उसकी बातों को मान लिया, और कुछ ने न माना।

²⁵जब आपस में मुत्तफ़िक़ न हुए, तो पौलुस की इस एक बात के कहने पर रुख़सत हुए; कि रूह -उल क़ुदूस ने यसा'याह नबी के ज़रिये तुम्हारे बाप दादा से ख़ूब कहा कि ²⁶इस उम्मत के पास जाकर कह कि “तुम कानों से सुनोगे और हर्गिज न समझोगे और आँखों से देखोगे और हर्गिज मा'लूम न करोगे।

²⁷क्योंकि इस उम्मत के दिल पर चर्बी छा गई है, और वो कानों से ऊँचा सुनते हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि आँखों से मा'लूम करें, और कानों से सुनें, और दिल से समझें, और रूजू लाएँ, और मैं उन्हें शिफ़ा बख़्शूँ”

²⁸“पस, तुम को मा'लूम हो कि खुदा! की इस नज़ात का पैग़ाम ग़ैर क़ौमों के पास भेजा गया है, और वो उसे सुन भी लेंगी” ²⁹[जब उस ने ये कहा तो यहूदी आपस में बहुत बहस करते चले गए।]

³⁰और वो पूरे दो बरस अपने किराये के घर में रहा। ³¹और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा; और कमाल दिलेरी से बग़ैर रोक टोक के "खुदा" की बादशाही का ऐलान करता और "खुदावन्द" ईसा' मसीह की बातें सिखाता रहा।

रोमियों के नाम पौलुस रसूल का ख़त

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से जो ईसा' मसीह का बन्दा है और रसूल होने के लिए बुलाया गया और खुदा की उस ख़ुशख़बरी के लिए अलग किया गया | ²पस मैं तुम को भी जो रोमा में हों ख़ुशख़बरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताक़त है मैं तैयार हूँ। ³अपने बेटे खुदावन्द ईसा' मसीह के बारे में वा'दा किया था जो जिस्म के ऐ'तिबार से तो दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ।

⁴लेकिन पाकीज़गी की रूह के ऐतबार से मुद्दों में से जी उठने की वजह से क़ुदरत के साथ खुदा का बेटा ठहरा। ⁵जिस के ज़रिए हम को फ़ज़ल और रिसालत मिली ताकि उसके नाम की खातिर सब क़ौमों में से लोग ईमान के ताबे हों। ⁶जिन में से तुम भी ईसा' मसीह के होने के लिए बुलाए गए हो।

⁷उन सब के नाम जो रोम में खुदा के प्यारे हैं और मुक़द्दस होने के लिए बुलाए गए हैं; हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

⁸पहले, तो मैं तुम सब के बारे में ईसा' मसीह के वसीले से अपने खुदा का शुक्र करता हूँ कि तुम्हारे ईमान का तमाम दुनिया में नाम हो रहा है।⁹चुनाँचे खुदा जिस की इबादत में अपनी रूह से उसके बेटे की खुशखबरी देने में करता हूँ वही मेरा गवाह है कि मैं बिना नागा तुम्हें याद करता हूँ।¹⁰और अपनी दुआओं में हमेशा ये गुज़ारिश करता हूँ कि अब आखिरकार खुदा की मज़ी से मुझे तुम्हारे पास आने में किसी तरह कामयाबी हो।

¹¹क्योंकि मैं तुम्हारी मुलाकात का मुश्ताक हूँ, ताकि तुम को कोई रूहानी ने'मत दूँ जिस से तुम मज़बूत हो जाओ।¹²गरज़ मैं भी तुम्हारे दर्मियान हो कर तुम्हारे साथ उस ईमान के ज़रिए तसल्ली पाऊँ जो तुम में और मुझ में दोनों में है।

¹³और ऐ भाइयो; मैं इस से तुम्हारा ना वाकिफ़ रहना नहीं चाहता कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आने का इरादा किया ताकि जैसा मुझे और ग़ैर क्रौमों में फल मिला वैसा ही तुम में भी मिले मगर आज तक रुका रहा।¹⁴मैं यूनानियों और ग़ैर यूनानियों दानाओं और नादानों का कर्ज़दार हूँ।¹⁵पस मैं तुम को भी जो रोमा में हों खुशखबरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताक़त है मैं तैयार हूँ।

¹⁶क्योंकि मैं इन्ज़ील से शर्माता नहीं इसलिए कि वो हर एक ईमान लानेवाले के वास्ते पहले यहूदियों फिर यूनानी के वास्ते नजात के लिए खुदा की कुदरत है।¹⁷इस वास्ते कि उसमें खुदा की रास्तबाज़ी ईमान से "और ईमान के लिए ज़ाहिर होती है जैसा लिखा है "रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा"

¹⁸क्योंकि खुदा का ग़ज़ब उन आदमियों की तमाम बेदीनी और नारास्ती पर आसमान से ज़ाहिर होता है।¹⁹क्योंकि जो कुछ खुदा के बारे में मालूम हो सकता है वो उनको बातिन में ज़ाहिर है इसलिए कि खुदा ने उनको उन पर ज़ाहिर कर दिया।

²⁰क्योंकि उसकी अनदेखी सिफ़तें या'नी उसकी अज़ली कुदरत और खुदाइयत दुनिया की पैदाइश के वक़्त से बनाई हुई चीज़ों के ज़रिए'ए मा'लूम हो कर साफ़ नज़र आती हैं यहाँ तक कि उन को कुछ बहाना बाक़ी नहीं।²¹इसलिए कि अगरचें खुदाई के लायक़ उसकी बड़ाई और शुक्रगुज़ारी न की बल्कि बेकार के ख़याल में पड़ गए, और उनके नासमझ दिलों पर अँधेरा छा गया।

²²वो अपने आप को अक्लमन्द समझ कर बेवकूफ़ बन गए।²³और ग़ैर फ़ानी खुदा के जलाल को फ़ानी इन्सान और परिन्दों और चौपायों और कीड़ों मकोड़ों की सूरत में बदल डाला

²⁴इस वास्ते खुदा ने उनके दिलों की ख़्वाहिशों के मुताबिक़ उन्हें नापाकी में छोड़ दिया कि उन के बदन आपस में बेइज़्ज़त किए जाएँ।²⁵इसलिए कि उन्होंने खुदा की सच्चाई को बदल कर झूठ बना डाला और मख़लूक़ात की ज़्यादा 'इबादत की बनिस्बत उस ख़ालिक़ के जो हमेशा तक महमूद है; आमीन।

²⁶इसी वजह से खुदा ने उनको गन्दी आदतों में छोड़ दिया यहाँ तक कि उनकी औरतों ने अपने तब;ई काम को खिलाफ़'ए तब'आ काम से बदल डाला।²⁷इसी तरह मर्द भी औरतों से तब;ई काम छोड़ कर आपस की शहवत से मस्त हो गए; या'नी आदमियों ने आदमियों के साथ रुसिहाई का काम कर के अपने आप में अपने काम के मुआफ़िक़ बदला पाया।

²⁸और जिस तरह उन्होंने खुदा को पहचानना नापसन्द किया उसी तरह खुदा ने भी उनको नापसन्दीदा अक्ल के हवाले कर दिया कि नालायक़ हरकतें करें।

²⁹पस वो हर तरह की नारासती बदी लालच और बदख़्वाही से भर गए, खूनरेजी, झगड़े, मक्कारी और अदावत से मा'मूर हो गए, और ग़ीबत करने वाले।³⁰बदग़ो खुदा की नज़र में नफ़रती औरो को बे'इज़्ज़त करनेवाला, मगरूर, शेखीबाज़, बदियों के बानी, माँ बाप के नाफ़रमान,³¹बेवकूफ़, वादा खिलाफ़, तबई तौर से मुहब्बत से ख़ाली और बे रहम हो गए।

³²हालाँकि वो खुदा का हुक्म जानते हैं कि ऐसे काम करने वाले मौत की सज़ा के लायक़ हैं फिर भी न सिर्फ़ खुद ही ऐसे काम करते हैं बल्कि और करनेवालो से भी खुश होते हैं।

Chapter 2

¹पस ऐ इल्ज़ाम लगाने वाले तू कोई क्यूँ न हो तेरे पास कोई बहाना नहीं क्यूँकि जिस बात से तू दूसरे पर इल्ज़ाम लगाता है उसी का तू अपने आप को मुजरिम ठहराता है इसलिए कि तू जो इल्ज़ाम लगाता है खुद वही काम करता है।²और हम जानते हैं कि ऐसे काम करने वालों की अदालत खुदा की तरफ़ से हक़ के मुताबिक़ होती है।

³ऐ भाई ! तू जो ऐसे काम करने वालों पर इल्ज़ाम लगाता है और खुद वही काम करता है क्या ये समझता है कि तू खुदा की अदालत से बच जाएगा।⁴या तू उसकी महरबानी और बरदाश्त और सब्र की दौलत को नाचीज़ जानता है और नहीं समझता कि खुदा की महरबानी तुझ को तौबा की तरफ़ माएल करती है।

⁵बल्कि तू अपने सख़्त और न तोबा करने वाले दिल के मुताबिक़ उस क्रहर के दिन के लिए अपने वास्ते ग़ज़ब का काम कर रहा है जिस में खुदा की सच्ची अदालत ज़ाहिर होगी।⁶वो हर एक को उस के कामो के मुवाफ़िक़ बदला देगा।⁷जो अच्छे काम में साबित क़दम रह कर जलाल और इज़ज़त और बक्रा के तालिब होते हैं उनको हमेशा की ज़िन्दगी देगा।

⁸मगर जो ना इत्फ़ाक़ी अन्दाज़ और हक़ के न माननेवाले बल्कि नारास्ती के माननेवाले हैं उन पर ग़ज़ब और क्रहर होगा।⁹और मुसीबत और तंगी हर एक बदकार की जान पर आएगी पहले यहूदी की फिर यूनानी की।

¹⁰मगर जलाल और इज़ज़त और सलामती हर एक नेक काम करने वाले को मिलेगी; पहले यहूदी को फिर यूनानी को।¹¹क्यूँकि खुदा के यहाँ किसी की तरफ़दारी नहीं।¹²इसलिए कि जिन्होंने बग़ैर शरी'अत पाए गुनाह किया वो बग़ैर शरी'अत के हलाक़ भी होगा और जिन्होंने शरी'अत के मातहत होकर गुनाह किया उन की सज़ा शरी'अत के मुवाफ़िक़ होगी

¹³क्यूँकि शरी'अत के सुननेवाले खुदा के नज़दीक़ रास्तबाज़ नहीं होते बल्कि शरी'अत पर अमल करनेवाले रास्तबाज़ ठहराए जाएँगे।¹⁴इसलिए कि जब वो क्रौमें जो शरी'अत नहीं रखते अपनी तबी'अत से शरी'अत के काम करती हैं तो बावजूद शरी'अत रखने के अपने लिए खुद एक शरी'अत हैं।

¹⁵चुनौचे वो शरी'अत की बातें अपने दिलों पर लिखी हुई दिखाती हैं और उन का दिल भी उन बातों की गवाही देता है और उनके आपसी ख़यालात या तो उन पर इल्ज़ाम लगाते हैं या उन को माज़ूर रखते हैं।¹⁶जिस रोज़ खुदा खुशख़बरी के मुताबिक़ जो मै ऐलान करता हूँ ईसा' मसीह की मारिफ़त आदमियों की छुपी बातों का इन्साफ़ करेगा।

¹⁷पस अगर तू यहूदी कहलाता और शरी'अत पर भरोसा और खुदा पर फ़ख़्र करता है।¹⁸और उस की मज़ी जानता और शरी'अत की ता'लीम पाकर उम्दा बातें पसन्द करता है।¹⁹और अगर तुझे इस बात पर भी भरोसा है कि मैं अँधों का रहनुमा और अँधेरे में पड़े हुएों के लिए रोशनी।²⁰और नादानों का तरबियत करनेवाला और बच्चो का उस्ताद हूँ और 'इल्म और हक़ का जो नमूना शरी'अत में है वो मेरे पास है।

²¹पस तू जो औरों को सिखाता है अपने आप को क्यूँ नहीं सिखाता? तू जो बताता है कि चोरी न करना तब तू खुद क्यूँ चोरी करता है? तू जो कहता है ज़िना न करना; तब तू क्यूँ ज़िना करता है।²²तू जो बुतों से नफ़रत रखता है? तब खुद क्यूँ बुतख़ानो को लूटता है?

²³तू जो शरी'अत पर फ़ख़्र करता है? शरी'अत की मुख़ालिफ़त से खुदा की क्यूँ बे'इज़ज़ती करता है?²⁴क्यूँकि तुम्हारी वजह से ग़ैर क्रौमों में खुदा के नाम पर कुफ़्र बका जाता है "चुनौचे ये लिखा भी है।"

²⁵ख़तने से फ़ाइदा तो है ब'शर्त तू शरी'अत पर अमल करे लेकिन जब तू ने शरी'अत से मुख़ालिफ़त किया तो तेरा ख़तना ना मख़तूनी ठहरा।²⁶पस अगर नामख़तून शख्स शरी'अत के हुक्मो पर अमल करे तो क्या उसकी ना मख़तूनी ख़तने के बराबर न गिनी जाएगी।²⁷और जो शख्स क्रौमियत की वजह से ना मख़तून रहा अगर वो शरी'अत को पूरा करे तो क्या तुझे जो बावजूद कलाम और ख़तने के शरी'अत से मुख़ालिफ़त करता है कुसूरवार न ठहरेगा।

²⁸क्यूँकि वो यहूदी नहीं जो ज़ाहिर का है और न वो ख़तना है जो ज़ाहिरी और जिस्मानी है।²⁹बल्कि यहूदी वही है जो बातिन में है और ख़तना वही है जो दिल का और रूहानी है न कि लफ़्ज़ी ऐसे की ता'रीफ़ आदमियों की तरफ़ से नहीं बल्कि खुदा की तरफ़ से होती है।

Chapter 3

¹उस यहूदी को क्या दर्जा है और खतने से क्या फ़ाइदा? ²हर तरह से बहुत ख़ास कर ये कि खुदा का कलाम उसके सुपुर्द हुआ।

³मगर कुछ बेवफ़ा निकले तो क्या हुआ क्या उनकी बेवफ़ाई खुदा की वफ़ादारी को बेकार करती है? ⁴हरगिज़ नहीं "बल्कि खुदा सच्चा ठहरे" और हर एक आदमी झूठा क्योंकि लिखा है तू अपनी बातों में रास्तबाज़ ठहरे और अपने मुक़द्दमे में फ़तह पाए।

⁵अगर हमारी नारास्ती खुदा की रास्तबाज़ी की खूबी को ज़ाहिर करती है, तो हम क्या करें? क्या ये कि खुदा बेवफ़ा है जो ग़ज़ब नाज़िल करता है मैं ये बात इन्सान की तरह करता हूँ। ⁶हरगिज़ नहीं वरना खुदा क्यूँकर दुनिया का इन्साफ़ करेगा।

⁷अगर मेरे झूठ की वजह से खुदा की सच्चाई उसके जलाल के वास्ते ज़्यादा ज़ाहिर हुई तो फिर क्यूँ गुनाहगार की तरह मुझ पर हुक्म दिया जाता है? ⁸और "हम क्यूँ बुराई न करें ताकि भलाई पैदा हो " चुनाँचे हम पर ये तोहमत भी लगाई जाती है और कुछ कहते हैं इनकी यही कहावत है मगर ऐसों का मुजरिम ठहरना इन्साफ़ है।

⁹पस क्या हुआ; क्या हम कुछ फ़ज़ीलत रखते हैं? बिल्कूल नहीं क्यूँकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर पहले ही ये इल्ज़ाम लगा चुके हैं कि वो सब के सब गुनाह के मातहत हैं। ¹⁰चुनाँचे लिखा है एक भी रास्तबाज़ नहीं।

¹¹कोई समझदार नहीं कोई खुदा का तालिब नहीं। ¹²सब गुमराह हैं सब के सब निकम्मे बन गए; कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी नहीं।

¹³उनका गला खुली हुई क्रब्र है उन्होंने अपनी ज़बान से धोका दिया उन के होंठों में साँपों का ज़हर है। ¹⁴उन का मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है।

¹⁵उन के क़दम खून बहाने के लिए तेज़ी से बढ़ने वाले हैं। ¹⁶उनकी राहों में तबाही और बदहाली है। ¹⁷और वह सलामती की राह से वाकिफ़ न हुए। ¹⁸उन की आँखों में खुदा का ख़ौफ़ नहीं।"

¹⁹अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ कहती है उनसे कहती है जो शरीअत के मातहत हैं ताकि हर एक का मुँह बन्द हो जाए और सारी दुनिया खुदा के नज़दीक सज़ा के लायक ठहरे। ²⁰क्यूँकि शरीअत के अमल से कोई बशर उसके हज़ूर रास्तबाज़ नहीं ठहरेगी इसलिए कि शरीअत के वसीले से तो गुनाह की पहचान हो सकती है।

²¹मगर अब शरीअत के बग़ैर खुदा की एक रास्तबाज़ी ज़ाहिर हुई है जिसकी गवाही शरीअत और नबियों से होती है। ²²यानी खुदा की वो रास्तबाज़ी जो ईसा मसीह पर ईमान लाने से सब ईमान लानेवालों को हासिल होती है; क्यूँकि कुछ फ़र्क़ नहीं।

²³इसलिए कि सब ने गुनाह किया और खुदा के जलाल से महरूम हैं। ²⁴मगर उसके फ़ज़ल की वजह से उस मख़लसी के वसीले से जो मसीह ईसा में है मुफ़्त रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं।

²⁵उसे खुदा ने उसके खून के ज़रिए एक ऐसा कफ़़ारा ठहराया जो ईमान लाने से फ़ाइदेमन्द हो ताकि जो गुनाह पहले से हो चुके थे? और जिसे खुदा ने बर्दाश्त करके तरज़ीह दी थी उनके बारे में वो अपनी रास्तबाज़ी ज़ाहिर करे। ²⁶बल्कि इसी वक़्त उनकी रास्तबाज़ी ज़ाहिर हो ताकि वो खुद भी आदिल रहे और जो ईसा पर ईमान लाए उसको भी रास्तबाज़ ठहराने वाला हो।

²⁷पस फ़ख़्र कहाँ रहा? इसकी गुन्जाइश ही नहीं कौन सी शरीअत की वजह से? क्या आमाल की शरीअत से? ईमान की शरीअत से? ²⁸चुनाँचे हम ये नतीजा निकालते हैं कि इन्सान शरीअत के आमाल के बग़ैर ईमान के ज़रिये से रास्तबाज़ ठहरता है।

²⁹क्या खुदा सिर्फ़ यहूदियों ही का है ग़ैर क़ौमों का नहीं? बेशक़ ग़ैर क़ौमों का भी है। ³⁰क्यूँकि एक ही खुदा है मख़तूनो को भी ईमान से और नामख़तूनो को भी ईमान ही के वसीले से रास्तबाज़ ठहराएगा।

³¹पस क्या हम शरीअत को ईमान से बातिल करते हैं। हरगिज़ नहीं बल्कि शरीअत को क़ायम रखते हैं।

Chapter 4

¹पस हम क्या कहें कि हमारे जिस्मानी बाप अब्रहाम को क्या हासिल हुआ? ²क्योंकि अगर अब्रहाम आमाल से रास्तबाज़ ठहराया जाता तो उसको फ़ख़ की जगह होती; लेकिन खुदा के नज़दीक नहीं। ³किताब ए मुकद्दस क्या कहती है “ये कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया। ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।”

⁴काम करनेवाले की मज़दूरी बख़्शिश नहीं बल्कि हक़ समझी जाती है। ⁵मगर जो शख्स काम नहीं करता बल्कि बेदीन के रास्तबाज़ ठहराने वाले पर ईमान लाता है उस का ईमान उसके लिए रास्तबाज़ी गिना जाता है।

⁶चुनौचे जिस शख्स के लिए खुदा बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ शुमार करता है दाऊद भी उसकी मुबारक हाली इस तरह बयान करता है। ⁷“मुबारक वो हैं जिनकी बदकारियाँ मुआफ़ हुई और जिनके गुनाह छुपाये गए।” ⁸मुबारक वो शख्स है जिसके गुनाह खुदावन्द शुमार न करेगा।

⁹पस क्या ये मुबारकबादी मख़तूनों ही के लिए है या नामख़तूनों के लिए भी? क्योंकि हमारा दावा ये है कि अब्रहाम के लिए उसका ईमान रास्तबाज़ी गिना गया।

¹⁰पस किस हालत में गिना गया? मख़तूनी में या नामख़तूनी में? मख़तूनी में नहीं बल्कि नामख़तूनी में।

¹¹और उसने खतने का निशान पाया कि उस ईमान की रास्तबाज़ी पर मुहर हो जाए जो उसे नामख़तूनी की हालत में हासिल था, वो उन सब का बाप ठहरे जो बावजूद नामख़तून होने के ईमान लाते हैं ¹²और उन मख़तूनों का बाप हो जो न सिर्फ़ मख़तून हैं बल्कि हमारे बाप अब्रहाम के उस ईमान की भी पैरवी करते हैं जो उसे ना मख़तूनी की हालत में हासिल था।

¹³क्योंकि ये वादा किया वो कि दुनिया का वारिस होगा न अब्रहाम से न उसकी नस्ल से शरीअत के वसीले से किया गया था बल्कि ईमान की रास्तबाज़ी के वसीले से किया गया था। ¹⁴क्योंकि अगर शरीअत वाले ही वारिस हों तो ईमान बेफ़ाइदा रहा और वादा से कुछ हासिल न ठहरेगा। ¹⁵क्योंकि शरीअत तो ग़ज़ब पैदा करती है और जहाँ शरीअत नहीं वहाँ मुख़ालिफ़त- ए- हुक्म भी नहीं।

¹⁶इसी वास्ते वो मीरास ईमान से मिलती है ताकि फ़ज़ल के तौर पर हो; और वो वादा कुल नस्ल के लिए कायम रहे सिर्फ़ उस नस्ल के लिए जो शरीअत वाली है बल्कि उसके लिए भी जो अब्रहाम की तरह ईमान वाली है वही हम सब का बाप है। ¹⁷चुनौचे लिखा है (“मैंने तुझे बहुत सी क्रौमों का बाप बनाया”) उस खुदा के सामने जिस पर वो ईमान लाया और जो मुर्दों को ज़िन्दा करता है और जो चीज़ें नहीं हैं उन्हें इस तरह से बुला लेता है कि गोया वो हैं।

¹⁸वो ना उम्मीदी की हालत में उम्मीद के साथ ईमान लाया ताकि इस क़ौल के मुताबिक़ कि तेरी नस्ल ऐसी ही होगी “वो बहुत सी क्रौमों का बाप हो।” ¹⁹और वो जो तक्ररीबन सौ बरस का था, बावजूद अपने मुर्दा से बदन और सारह के रहम की मुर्दगी पर लिहाज़ करने के ईमान में कमज़ोर न हुआ।

²⁰और न बे ईमान हो कर खुदा के वादे में शक़ किया बल्कि ईमान में बज़बूत हो कर खुदा की बड़ाई की। ²¹और उसको कामिल ऐतिक़ाद हुआ कि जो कुछ उसने वादा किया है वो उसे पूरा करने पर भी क़ादिर है। ²²इसी वजह से ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।

²³और ये बात कि ईमान उस के लिए रास्तबाज़ी गिना गया; न सिर्फ़ उसके लिए लिखी गई। ²⁴बल्कि हमारे लिए भी जिनके लिए ईमान रास्तबाज़ी गिना जाएगा इस वास्ते के हम उस पर ईमान लाए हैं जिस ने हमारे खुदावन्द ईसा' को मुर्दों में से जिलाया। ²⁵वो हमारे गुनाहों के लिए हवाले कर दिया गया और हम को रास्तबाज़ ठहराने के लिए जिलाया गया।

Chapter 5

¹पस जब हम ईमान से रास्तबाज़ ठहरे, तो खुदा के साथ अपने खुदावन्द ईसा' मसीह के वसीले से सुलह रखें।²जिस के वसीले से ईमान की वजह से उस फ़ज़ल तक हमारी रिसाई भी हुई जिस पर क़ायम हैं और खुदा के जलाल की उम्मीद पर फ़ख़्र करें।

³और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि मुसीबतों में भी फ़ख़्र करें ये जानकर कि मुसीबत से सब्र पैदा होता है।⁴और सब्र से पुख्तगी और पुख्तगी से उम्मीद पैदा होती है।

⁵और उम्मीद से शर्मिन्दगी हासिल नहीं होती क्योंकि रूह -उल- कुदूस जो हम को बख़्शा गया है उसके वसीले से खुदा की मुहब्बत हमारे दिलों में डाली गई है।

⁶क्योंकि जब हम कमज़ोर ही थे तो ऐ'न वक़्त पर मसीह बे'दीनों की खातिर मरा।⁷किसी रास्तबाज़ की खातिर भी मुश्किल से कोई अपनी जान देगा मगर शायद किसी नेक आदमी के लिए कोई अपनी जान तक दे देने की हिम्मत करे;

⁸लेकिन खुदा अपनी मुहब्बत की ख़ूबी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है कि जब हम गुनाहगार ही थे, तो मसीह हमारी खातिर मरा।⁹पस जब हम उसके खून के ज़रिये अब रास्तबाज़ ठहरे तो उसके वसीले से ग़ज़ब 'ए इलाही से ज़रूर बचेंगे।

¹⁰क्योंकि जब बावजूद दुश्मन होने के खुदा से उसके बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया तो मेल होने के बा'द तो हम उसकी ज़िन्दगी की वजह से ज़रूर ही बचेंगे।¹¹और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि अपने खुदावन्द ईसा' मसीह के तुफ़ैल से जिसके वसीले से अब हमारा खुदा के साथ मेल हो गया खुदा पर फ़ख़्र भी करते हैं।

¹²पस जिस तरह एक आदमी की वजह से गुनाह दुनिया में आया और गुनाह की वजह से मौत आई और यूँ मौत सब आदमियों में फैल गई इसलिए कि सब ने गुनाह किया।¹³क्योंकि शरी'अत के दिए जाने तक दुनिया में गुनाह तो था मगर जहाँ शरी'अत नहीं वहाँ गुनाह शूमार नहीं होता।

¹⁴तो भी आदम से लेकर मूसा तक मौत ने उन पर भी बादशाही की जिन्होंने उस आदम की नाफ़रमानी की तरह जो आनेवाले की मिसाल था गुनाह न किया था।

¹⁵लेकिन गुनाह का जो हाल है वो फ़ज़ल की नेअ'मत का नहीं क्योंकि जब एक शख्स के गुनाह से बहुत से आदमी मर गए तो खुदा का फ़ज़ल और उसकी जो बख़्शिष एक ही आदमी या'नी ईसा' मसीह के फ़ज़ल से पैदा हुई और बहुत से आदमियों पर ज़रूर ही इफ़्रात से नाज़िल हुई।

¹⁶और जैसा एक शख्स के गुनाह करने का अंजाम हुआ बख़्शिष का वैसा हाल नहीं क्योंकि एक ही की वजह से वो फ़ैसला हुआ जिसका नतीजा सज़ा का हुक्म था; मगर बहुतेरे गुनाहों से ऐसी नेअ'मत पैदा हुई जिसका नतीजा ये हुआ कि लोग रास्तबाज़ ठहरें।¹⁷क्योंकि जब एक शख्स के गुनाह की वजह से मौत ने उस एक के ज़रिए से बादशाही की तो जो लोग फ़ज़ल और रास्तबाज़ी की बख़्शिष इफ़्रात से हासिल करते हैं" वो एक शख्स या'नी ईसा" मसीह के वसीले से हमेशा की ज़िन्दगी में ज़रूर ही बादशाही करेंगे।

¹⁸गरज़ जैसा एक गुनाह की वजह से वो फ़ैसला हुआ जिसका नतीजा सब आदमियों की सज़ा का हुक्म था; वैसे ही रास्तबाज़ी के एक काम के वसीले से सब आदमियों को वो ने'मत मिली जिससे रास्तबाज़ ठहराकर ज़िन्दगी पाएँ।¹⁹क्योंकि जिस तरह एक ही शख्स की नाफ़रमानी से बहुत से लोग गुनाहगार ठहरे, उसी तरह एक की फ़रमाँबरदारी से बहुत से लोग रास्तबाज़ ठहरे।

²⁰और बीच में शरी'अत आ मौजूद हुई ताकि गुनाह ज़्यादा हो जाए मगर जहाँ गुनाह ज़्यादा हुआ फ़ज़ल उससे भी निहायत ज़्यादा हुआ।²¹ताकि जिस तरह गुनाह ने मौत की वजह से बादशाही की उसी तरह फ़ज़ल भी हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से हमेशा की ज़िन्दगी के लिए रास्तबाज़ी के ज़रिए से बादशाही करे।

Chapter 6

¹पस हम क्या कहें? क्या गुनाह करते रहें ताकि फ़ज़ल ज़्यादा हो? ²हरगिज़ नहीं हम जो गुनाह के ऐ'तिबार से मर गए क्यूँकर उस में फिर से ज़िन्दगी गुज़ारें? ³क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह ईसा' में शामिल होने का बपतिस्मा लिया तो उस की मौत में शामिल होने का बपतिस्मा लिया?

⁴पस मौत में शामिल होने के बपतिस्मे के वसीले से हम उसके साथ दफ़्न हुए ताकि जिस तरह मसीह बाप के जलाल के वसीले से मुर्दों में से जिलाया गया; उसी तरह हम भी नई ज़िन्दगी में चलें। ⁵क्यूँकि जब हम उसकी मुशाबहत से उसके साथ जुड़ गए, तो बेशक़ उसके जी उठने की मुशाबहत से भी उस के साथ जुड़े होंगे।

⁶चुनाँचे हम जानते हैं कि हमारी पूरानी इन्सानियत उसके साथ इसलिए मस्लूब की गई कि गुनाह का बदल बेकार हो जाए ताकि हम आगे को गुनाह की गुलामी में न रहें। ⁷क्यूँकि जो मरा वो गुनाह से बरी हुआ।

⁸पस जब हम मसीह के साथ मरे तो हमें यक़ीन है कि उसके साथ जिऐंगे भी। ⁹क्यूँकि ये जानते हैं कि मसीह जब मुर्दों में से जी उठा है तो फिर नहीं मरने का; मौत का फिर उस पर इख़्तियार नहीं होने का।

¹⁰क्यूँकि मसीह जो मरा गुनाह के ऐ'तिबार से एक बार मरा; मगर अब जो ज़िन्दा हुआ तो ख़ुदा के ऐ'तिबार से ज़िन्दा है। ¹¹इसी तरह तुम भी अपने आपको गुनाह के ऐ'तिबार से मुर्दा; मगर ख़ुदा के ऐ'तिबार से मसीह ईसा' में ज़िन्दा समझो।

¹²पस गुनाह तुम्हारे फ़ानी बदन में बादशाही न करे; कि तुम उसकी ख़्वाहिशों के ताबे रहो। ¹³और अपने आ'ज़ा नारास्ती के हथियार होने के लिए गुनाह के हवाले न करो; बल्कि अपने आपको मुर्दों में से ज़िन्दा जानकर ख़ुदा के हवाले करो और अपने आ'ज़ा रास्तबाज़ी के हथियार होने के लिए ख़ुदा के हवाले करो।

¹⁴इसलिए कि गुनाह का तुम पर इख़्तियार न होगा; क्यूँकि तुम शरी'अत के मातहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के मातहत हो।

¹⁵पस क्या हुआ? क्या हम इसलिए गुनाह करें कि शरी'अत के मातहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के मातहत हैं? हरगिज़ नहीं; ¹⁶क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी फ़रमाँबरदारी के लिए अपने आप को गुलामों की तरह हवाले कर देते हो, उसी के गुलाम हो जिसके फ़रमाँबरदार हो चाहे गुनाह के जिसका अंजाम मौत है चाहे फ़रमाँबरदारी के जिस का अंजाम रास्तबाज़ी है?

¹⁷लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि अगरचे तुम गुनाह के गुलाम थे तोभी दिल से उस ता'लीम के फ़रमाँबरदार हो गए; जिसके साँचे में ढाले गए थे। ¹⁸और गुनाह से आज़ाद हो कर रास्तबाज़ी के गुलाम हो गए।

¹⁹मैं तुम्हारी इन्सानी कमज़ोरी की वजह से इन्सानी तौर पर कहता हूँ; जिस तरह तुम ने अपने आ'ज़ा बदकारी करने के लिए नापाकी और बदकारी की गुलामी के हवाले किए थे उसी तरह अब अपने आ'ज़ा पाक होने के लिए रास्तबाज़ी की गुलामी के हवाले कर दो। ²⁰क्यूँकि जब तुम गुनाह के गुलाम थे, तो रास्तबाज़ी के ऐ'तिबार से आज़ाद थे। ²¹पस जिन बातों पर तुम अब शर्मिन्दा हो उनसे तुम उस वक़्त क्या फल पाते थे? क्यूँकि उन का अंजाम तो मौत है।

²²मगर अब गुनाह से आज़ाद और ख़ुदा के गुलाम हो कर तुम को अपना फल मिला जिससे पाकीज़गी हासिल होती है और इस का अंजाम हमेशा की ज़िन्दगी है। ²³क्यूँकि गुनाह की मज़दूरी मौत है मगर ख़ुदा की बख़्शिह हमारे ख़ुदावन्द ईसा' मसीह में हमेशा की ज़िन्दगी है।

Chapter 7

¹ऐ भाइयों, क्या तुम नहीं जानते में उन से कहता हूँ जो शरी'अत से वाकिफ़ हैं कि जब तक आदमी जीता है उसी उक्त तक शरी'अत उस पर इख्तियार रखती है?

²चुनाँचे जिस औरत का शौहर मौजूद है वो शरी'अत के मुवाफ़िक़ अपने शौहर की ज़िन्दगी तक उसके बन्द में है; लेकिन अगर शौहर मर गया तो वो शौहर की शरी'अत से छूट गई।³पस अगर शौहर के जीते जी दूसरे मर्द की हो जाए तो ज़ानिया कहलाएगी लेकिन अगर शौहर मर जाए तो वो उस शरी'अत से आज़ाद है; यहाँ तक कि अगर दूसरे मर्द की हो भी जाए तो ज़ानिया न ठहरेगी।

⁴पस ऐ मेरे भाइयों; तुम भी मसीह के बदन के वसीले से शरी'अत के ऐ'तिबार से इसलिए मुर्दा बन गए, कि उस दूसरे के हो; जाओ जो मुर्दों में से जिलाया गया ताकि हम सब ख़ुदा के लिए फल पैदा करें।⁵क्यूँकि जब हम जिस्मानी थे गुनाह की ख़्वाहिशें जो शरी'अत के ज़रि'ए पैदा होती थीं मौत का फल पैदा करने के लिए हमारे आ'ज़ा में तासीर करती थी।

⁶लेकिन जिस चीज़ की कैद में थे उसके ऐ'तिबार से मर कर अब हम शरी'अत से ऐसे छूट गए, कि रूह के नये तौर पर न कि लफ़्ज़ों के पुराने तौर पर ख़िदमत करते हैं।

⁷पस हम क्या करें क्या शरी'अत गुनाह है? हरगिज़ नहीं बल्कि बग़ैर शरी'अत के मैं गुनाह को न पहचानता मसलन अगर शरी'अत ये न कहती कि तू लालच न कर तो मैं लालच को न जानता।⁸मगर गुनाह ने मौक़ा पाकर हुक्म के ज़रिए से मुझ में हर तरह का लालच पैदा कर दिया; क्यूँकि शरी'अत के बग़ैर गुनाह मुर्दा है।⁹एक ज़माने में शरी'अत के बग़ैर मैं ज़िन्दा था, मगर अब हुक्म आया तो गुनाह ज़िन्दा हो गया और मैं मर गया।¹⁰और जिस हुक्म की चाहत ज़िन्दगी थी, वही मेरे हक़ में मौत का ज़रिया बन गया।

¹¹क्यूँकि गुनाह ने मौक़ा पाकर हुक्म के ज़रिए से मुझे बहकाया और उसी के ज़रिए से मुझे मार भी डाला।¹²पस शरी'अत पाक है और हुक्म भी पाक और रास्ता भी अच्छा है।

¹³पस जो चीज़ अच्छी है क्या वो मेरे लिए मौत ठहरी? हरगिज़ नहीं बल्कि गुनाह ने अच्छी चीज़ के ज़रिए से मेरे लिए मौत पैदा करके मुझे मार डाला ताकि उसका गुनाह होना ज़ाहिर हो; और हुक्म के ज़रिए से गुनाह हद से ज़्यादा मकरूह मा'लूम हो।¹⁴क्या हम जानते हैं कि शरी'अत तो रूहानी है मगर मैं जिस्मानी और गुनाह के हाथ बिका हुआ हूँ।

¹⁵और जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता क्यूँकि जिसका मैं इरादा करता हूँ वो नहीं करता बल्कि जिससे मुझको नफ़रत है वही करता हूँ।¹⁶और अगर मैं उस पर अमल करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो मैं मानता हूँ कि शरी'अत उम्दा है।

¹⁷पस इस सूरत में उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है जो मुझ में बसा हुआ है।¹⁸क्यूँकि मैं जानता हूँ कि मुझ में या'नी मेरे जिस्म में कोई नेकी बसी हुई नहीं; अल्बत्ता इरादा तो मुझ में मौजूद है, मगर नेक काम मुझ में बन नहीं पड़ते।

¹⁹चुनाँचे जिस नेकी का इरादा करता हूँ वो तो नहीं करता मगर जिस बदी का इरादा नहीं करता उसे कर लेता हूँ।²⁰पस अगर मैं वो करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है; जो मुझ में बसा हुआ है।²¹गरज़ मैं ऐसी शरी'अत पाता हूँ कि जब नेकी का इरादा करता हूँ तो बदी मेरे पास आ मौजूद होती है।

²²क्यूँकि बातिनी इंसानियत के ऐतबार से तो मैं ख़ुदा की शरी'अत को बहुत पसन्द करता हूँ।²³मगर मुझे अपने आ'ज़ा में एक और तरह की शरी'अत नज़र आती है जो मेरी अक्ल की शरी'अत से लड़कर मुझे उस गुनाह की शरी'अत की कैद में ले आती है; जो मेरे आ'ज़ा में मौजूद है।

²⁴हाय मैं कैसा कम्बख़्त आदमी हूँ इस मौत के बदन से मुझे कौन छुड़ाएगा?।²⁵अपने ख़ुदावन्द ईसा' मसीह के वासीले से ख़ुदा का शुक्र करता हूँ; गरज़ मैं ख़ुद अपनी अक्ल से तो ख़ुदा की शरी'अत का मगर जिस्म से गुनाह की शरी'अत का गुलाम हूँ।

Chapter 8

¹'पस अब जो मसीह ईसा' में है उन पर सज़ा का हुक्म नहीं क्योंकि जो जिस्म के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं? ²'क्योंकि ज़िन्दगी की पाक रूह को शरी'अत ने मसीह ईसा' में मुझे गुनाह और मौत की शरी'अत से आज़ाद कर दिया।

³इसलिए कि जो काम शरी'अत जिस्म की वजह से कमज़ोर हो कर न कर सकी वो खुदा ने किया; या'नी उसने अपने बेटे को गुनाह आलूदा जिस्म की सूरत में और गुनाह की कुर्बानी के लिए भेज कर जिस्म में गुनाह की सज़ा का हुक्म दिया। ⁴ताकि शरी'अत का तक्राज़ा हम में पूरा हो जो जिस्म के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलता है। ⁵'क्योंकि जो जिस्मानी है वो जिस्मानी बातों के खयाल में रहते हैं; लेकिन जो रूहानी हैं वो रूहानी बातों के खयाल में रहते हैं।

⁶और जिस्मानी नियत मौत है मगर रूहानी नियत ज़िन्दगी और इत्मीनान है। ⁷इसलिए कि जिस्मानी नियत खुदा की दुश्मन है क्योंकि न तो खुदा की शरी'अत के ताबे है न हो सकती है। ⁸और जो जिस्मानी है वो खुदा को खुश नहीं कर सकते।

⁹लेकिन तुम जिस्मानी नहीं बल्कि रूहानी हो बशर्ते कि खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है; मगर जिस में मसीह का रूह नहीं वो उसका नहीं। ¹⁰और अगर मसीह तुम में है तो बदन तो गुनाह की वजह से मुर्दा है मगर रूह रास्तबाज़ी की वजह से ज़िन्दा है।

¹¹और अगर उसी का रूह तुझ में बसा हुआ है जिसने ईसा' को मुर्दा में से जिलाया वो तुम्हारे फ़ानी बदनो को भी अपने उस रूह के वसीले से ज़िन्दा करेगा जो तुम में बसा हुआ है।

¹²पस ऐ भाइयों! हम क़र्ज़दार तो हैं मगर जिस्म के नहीं कि जिस्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। ¹³क्योंकि अगर तुम जिस्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो ज़रूर मरोगे; और अगर रूह से बदन के कामों को नेस्तोनाबूद करोगे तो जीते रहोगे।

¹⁴ ¹⁵'क्योंकि तुम को गुलामी की रूह नहीं मिली जिससे फिर डर पैदा हो बल्कि लेपालक होने की रूह मिली जिस में हम अब्बा "या'नी ऐ बाप "कह कर पुकारते हैं।

¹⁶पाक रूह हमारी रूह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं। ¹⁷और अगर फ़र्ज़न्द हैं तो वारिस भी हैं या'नी खुदा के वारिस और मसीह के हम मीरास बशर्ते कि हम उसके साथ दुख उठाएँ ताकि उसके साथ जलाल भी पाएँ।

¹⁸क्योंकि मेरी समझ में इस ज़माने के दुख दर्द इस लायक़ नहीं कि उस जलाल के मुकाबिल हो सकें जो हम पर ज़ाहिर होने वाला है। ¹⁹क्योंकि मख़लूक़ात पूरी आरज़ू से खुदा के बेटों के ज़ाहिर होने की राह देखती है।

²⁰इसलिए कि मख़लूक़ात बतालत के इख़्तियार में कर दी गई थी न अपनी खुशी से बल्कि उसके ज़रिए से जिसने उसको। ²¹इस उम्मीद पर बतालत के इख़्तियार कर दिया कि मख़लूक़ात भी फ़ना के क़ब्ज़े से छूट कर खुदा के फ़र्ज़न्दों के जलाल की आज़ादी में दाख़िल हो जाएगी। ²²क्योंकि हम को मा'लूम है कि सारी मख़लूक़ात मिल कर अब तक कराहती है और दर्द-ए-जेह में पड़ी तड़पती है।

²³और न सिर्फ़ वही बल्कि हम भी जिन्हें रूह के पहले फल मिले हैं आप अपने बातिन में कराहते हैं और लेपालक होने या'नी अपने बदन की मख़लूसी की राह देखते हैं। ²⁴चुनाँचे हमें उम्मीद के वसीले से नजात मिली मगर जिस चीज़ की उम्मीद है जब वो नज़र आ जाए तो फिर उम्मीद कैसी? क्योंकि जो चीज़ कोई देख रहा है उसकी उम्मीद क्या करेगा? ²⁵लेकिन जिस चीज़ को नहीं देखते अगर हम उसकी उम्मीद करें तो सब्र से उसकी राह देखते रहें।

²⁶इसी तरह रूह भी हमारी कमज़ोरी में मदद करता है क्योंकि जिस तौर से हम को दुआ करना चाहिए हम नहीं जानते मगर रूह खुद ऐसी आहें भर भर कर हमारी शफ़ा'अत करता है जिनका बयान नहीं हो सकता। ²⁷और दिलों का परखने वाला जानता है कि रूह की क्या नियत है; क्योंकि वो खुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मुक़द्दसों की शिफ़ा'अत करता है।

²⁸और हम को मा'लूम है कि सब चीज़ें मिल कर खुदा से मुहब्बत रखनेवालों के लिए भलाई पैदा करती है; या'नी उनके लिए जो खुदा के इरादे के मुवाफ़िक़ बुलाए गए। ²⁹क्योंकि जिनको उसने पहले से जाना उनको पहले से मुकर्रर भी किया कि उसके बेटे के हमशक्ल हों, ताकि वो बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे।

³⁰और जिन को उसने पहले से मुकर्रर किया उनको बुलाया भी; और जिनको बुलाया उनको रास्तबाज़ भी ठहराया, और जिनको रास्तबाज़ ठहराया; उनको जलाल भी बख़शा।

³¹पस हम इन बातों के बारे में क्या कहें? अगर खुदा हमारी तरफ़ है; तो कौन हमारा मुख़ालिफ़ है? ³²जिसने अपने बेटे ही की परवाह न की? बल्कि हम सब की खातिर उसे हवाले कर दिया वो उसके साथ और सब चीज़ें भी हमें किस तरह न बख़शेगा।

³³खुदा के बरगुज़ीदों पर कौन शिकायत करेगा? खुदा वही है जो उनको रास्तबाज़ ठहराता है। ³⁴कौन है जो मुजरिम ठहराएगा? मसीह ईसा' वो है जो मर गया बल्कि मुर्दा में से जी उठा और खुदा की दहनी तरफ़ है और हमारी शिफ़ा'अत भी करता है।

³⁵कौन हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? मुसीबत या तंगी या जुल्म या काल या गंगापन या ख़तरा या तलवार। ³⁶चुनाँचे लिखा है "हम तेरी खातिर दिन भर जान से मारे जाते हैं; हम तो ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर गिने गए।"

³⁷मगर उन सब हालतों में उसके वसीले से जिसने हम सब से मुहब्बत की हम को जीत से भी बढ़कर ग़लबा हासिल होता है। ³⁸क्योंकि मुझको यक़ीन है कि खुदा की जो मुहब्बत हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह में है उससे हम को न मौत जुदा कर सकेगी न ज़िन्दगी, ³⁹न फ़रिश्ते, न हुकूमतें, न मौजूदा, न आने वाली चीज़ें, न कुदरत, न ऊंचाई, न गहराई, न और कोई मख़लूक़।

Chapter 9

¹मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, और मेरा दिल भी रूह-उल-कुदूस में इस की गवाही देता है कि मुझे बड़ा ग़म है और मेरा दिल बराबर दुखता रहता है।

³क्योंकि मुझे यहाँ तक मंज़ूर होता कि अपने भाइयों की खातिर जो जिस्म के ऐतबार से मेरे करीबी हैं मैं खुद मसीह से महरूम हो जाता।⁴वो इसाईली हैं, और लेपालक होने का हक़ और जलाल और ओहदा और शरी'अत और इबादत और वा'दे उन ही के हैं।⁵और क्रौम के बुजुर्ग उन ही के हैं और जिस्म के ऐतबार से मसीह भी उन ही में से हुआ, जो सब के ऊपर और हमेशा तक खुदा'ए महमूद है; आमीन।

⁶लेकिन ये बात नहीं कि खुदा का कलाम बातिल हो गया इसलिए कि जो इसाईल की औलाद हैं वो सब इसाईली नहीं।⁷और न अब्रहाम की नस्ल होने की वजह से सब फ़र्ज़न्द ठहरे बल्कि ये लिखा है; कि "इज़्हाक़ ही से तेरी नस्ल कहलाएगी।"

⁸या'नी कि जिस्मानी फ़र्ज़न्द खुदा के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि वा'दे के फ़र्ज़न्द नस्ल गिने जाते हैं।⁹क्योंकि वा'दे का क्रौल ये है "मैं इस वक़्त के मुताबिक़ आऊँगा और सारा के बेटा होगा।"

¹⁰और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि रबेका भी एक शख्स या'नी हमारे बाप इज़्हाक़ से हामिला थी।¹¹और अभी तक न तो लड़के पैदा हुए थे और न उन्होंने नेकी या बदी की थी, कि उससे कहा गया, "बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।"¹²ताकि खुदा का इरादा जो चुनाव पर मुनहसिर है "आ'माल पर मबनी न ठहरे बल्कि बुलानेवाले पर।"¹³चुनाँचे लिखा है "मैंने या'क़ूब से तो मुहब्बत की मगर ऐसी को नापसन्द।"

¹⁴पस हम क्या कहें? क्या खुदा के यहाँ बे'इन्साफ़ी है? हरगिज़ नहीं;¹⁵क्योंकि वो मूसा से कहता है "जिस पर रहम करना मंज़ूर है और जिस पर तरस खाना मंज़ूर है उस पर तरस खाऊँगा।"¹⁶पर ये न इरादा करने वाले पर मुनहसिर है न दौड़ धूप करने वाले पर बल्कि रहम करने वाले खुदा पर।

¹⁷क्योंकि किताब-ए-मुक़द्दस में खुदा ने फिर'औन से कहा "मैंने इसी लिए तुझे खड़ा किया है कि तेरी वजह से अपनी कुदरत ज़ाहिर करूँ, और मेरा नाम तमाम रू'ए ज़मीन पर मशहूर हो।"¹⁸पर वो जिस पर चाहता है रहम करता है, और जिसे चाहता है उसे सख़्त करता है।

¹⁹पर तू मुझ से कहेगा, "फिर वो क्यों ऐब लगाता है? कौन उसके इरादे का मुकाबिला करता है?"²⁰ऐ' इन्सान, भला तू कौन है जो खुदा के सामने जवाब देता है? क्या बनी हुई चीज़ बनाने वाले से कह सकती है "तूने मुझे क्यों ऐसा बनाया?"²¹क्या कुम्हार को मिट्टी पर इख्तियार नहीं? कि एक ही लौन्दे में से एक बर्तन इज़ज़त के लिए बनाए और दूसरा बे'इज़ज़ती के लिए?

²²पस क्या त'अज्जुब है अगर खुदा अपना ग़ज़ब ज़ाहिर करने और अपनी कुदरत ज़ाहिर करने के इरादे से ग़ज़ब के बर्तनों के साथ जो हलाक़त के लिए तैयार हुए थे, निहायत तहम्मूल से पैश आए।²³और ये इसलिए हुआ कि अपने जलाल की दौलत रहम के बर्तनों के ज़रीए से ज़ाहिर करे जो उस ने जलाल के लिए पहले से तैयार किए थे।²⁴या'नी हमारे ज़रिए से जिनको उसने न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैर क्रौमों में से भी बुलाया।

²⁵चुनाँचे होसे'अ की किताब में भी खुदा यूँ फ़रमाता है, "जो मेरी उम्मत नहीं थी उसे अपनी उम्मत कहूँगा और जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूँगा।"²⁶और ऐसा होगा कि जिस जगह उनसे ये कहा गया था कि "तुम मेरी उम्मत नहीं हो, उसी जगह वो ज़िन्दा खुदा के बेटे कहलायेंगे।"

²⁷और यसायाह इसाईल के बारे में पुकार कर कहता है चाहे बनी इसाईल का शुमार समुन्दर की रेत के बराबर हो तोभी उन में से थोड़े ही बचेंगे।²⁸क्योंकि खुदावन्द अपने कलाम को मुकम्मल और ख़त्म करके उसके मुताबिक़ ज़मीन पर अमल करेगा।²⁹चुनाँचे यसायाह ने पहले भी कहा है कि अगर रब्बुल अफ़वाज़ हमारी कुछ नस्ल बाक़ी न रखता तो हम सदोम की तरह और अमूरा के बराबर हो जाते।

³⁰पस हम क्या कहें? ये कि ग़ैर क्रौमों ने जो रास्तबाज़ी की तलाश न करती थीं, रास्तबाज़ी हासिल की या'नी वो रास्तबाज़ी जो ईमान से है।³¹मगर इसाईल जो रास्तबाज़ी की शरी'अत तक न पहुँचा।

³²किस लिए? इस लिए कि उन्होंने ईमान से नहीं बल्कि गोया आ'माल से उसकी तलाश की; उन्होंने उसे ठोकर खाने के पत्थर से ठोकर खाई।³³चुनाँचे लिखा है देखो; "मैं सिय्यून में ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूँ और जो उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।"

Chapter 10

¹ऐ भाइयों; मेरे दिल की आरजू और उन के लिए खुदा से मेरी दुआ है कि वो नजात पाएँ।²क्योंकि मैं उनका गवाह हूँ कि वो खुदा के बारे में गैरत तो रखते हैं; मगर समझ के साथ नहीं।³इसलिए कि वो खुदा की रास्तबाज़ी से नावाकिफ़ हो कर और अपनी रास्तबाज़ी क़ायम करने की कोशिश करके खुदा की रास्तबाज़ी के ताबे न हुए।

⁴क्योंकि हर एक ईमान लानेवाले की रास्तबाज़ी के लिए मसीह शरी'अत का अंजाम है।⁵चुनाँचे मूसा ने ये लिखा है "कि जो शख्स उस रास्तबाज़ी पर अमल करता है जो शरी'अत से है वो उसी की वजह से ज़िन्दा रहेगा। "

⁶अगर जो रास्तबाज़ी ईमान से है वो यूँ कहती है, "तू अपने दिल में ये न कह'कि आसमान पर कौन चढ़ेगा?" या'नी मसीह के उतार लाने को।⁷या "गहराव में कौन उतरेगा?" यानी मसीह को मुर्दों में से जिला कर ऊपर लाने को।

⁸बल्कि क्या कहती है ; ये कि कलाम तेरे नज़दीक है "बल्कि तेरे मुँह और तेरे दिल में है कि ये वही ईमान का कलाम है जिसका हम ऐलान करते हैं।"⁹कि अगर तू अपनी ज़बान से ईसा' के खुदावन्द होने का इक़्रार करे और अपने दिल से ईमान लाए कि खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया तो नजात पाएगा।¹⁰क्योंकि रास्तबाज़ी के लिए ईमान लाना दिल से होता है और नजात के लिए इक़्रार मुँह से किया जाता है।

¹¹चुनाँचे किताब-ए-मुक़द्दस ये कहती है "जो कोई उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।"¹²क्योंकि यहूदियों और यूनानियों में कुछ फ़र्क़ नहीं इसलिए कि वही सब का खुदावन्द है और अपने सब दुआ करनेवालों के लिए फ़र्याज़ है।¹³क्योंकि "जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा।"

¹⁴मगर जिस पर वो ईमान नहीं लाए उस से क्यूँकर दुआ करें? और जिसका ज़िक्र उन्होंने सुना नहीं उस पर ईमान क्यूँ लाएँ? और बग़ैर ऐलान करने वाले की क्यूँकर सुनें?¹⁵और जब तक वो भेजे न जाएँ ऐलान क्यूँकर करें? चुनाँचे लिखा है "क्या ही खुशनुमा हैं उनके क़दम जो अच्छी चीज़ों की खुशख़बरी देते हैं।"

¹⁶लेकिन सब ने इस खुशख़बरी पर कान न धरा चुनाँचे यसायाह कहता है"ऐ खुदावन्द हमारे पैग़ाम का किसने यक़ीन किया है?"¹⁷पस ईमान सुनने से पैदा होता है और सुनना मसीह के कलाम से।

¹⁸लेकिन मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने नहीं सुना? चुनाँचे लिखा है, "उनकी आवाज़ तमाम रू'ए ज़मीन पर और उनकी बातें दुनिया की इन्तिहा तक पहुँची।"

¹⁹फिर मैं कहता हूँ, क्या इस्राईल वाकिफ़ न था? पहले तो मूसा कहता है, "उन से तुम को गैरत दिलाऊँगा जो क़ौम ही नहीं एक नादान क़ौम से तुम को गुस्सा दिलाऊँगा।"

²⁰फिर यसायाह बड़ा दिलेर होकर ये कहता है जिन्होंने मुझे नहीं ढूँढा उन्होंने मुझे पा लिया जिन्होंने मुझ से नहीं पूछा उन पर मैं ज़ाहिर हो गया।²¹लेकिन इस्राईल के हक़ में यूँ कहता है "मैं दिन भर एक नाफ़रमान और हुज्जती उम्मत की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाए रहा।"

Chapter 11

¹पस मैं कहता हूँ क्या खुदा ने अपनी उम्मत को रद्द कर दिया? हरगिज़ नहीं क्योंकि मैं भी इस्राईली अब्राहम की नस्ल और बिनयामीन के कबीले में से हूँ।²खुदा ने अपनी उस उम्मत को रद्द नहीं किया जिसे उसने पहले से जाना क्या तुम नहीं जानते कि किताब-ए-मुकद्दस एलियाह के ज़िक्र में क्या कहती है; कि वो खुदा से इस्राईल की यूँ फ़रियाद करता है?।³ऐ" खुदावन्द उन्होंने तेरे नबियों को क़त्ल किया "और तेरी कुरबानगाहों को ढा दिया; अब मैं अकेला बाक़ी हूँ और वो मेरी जान के भी पीछे हैं।"

⁴मगर जवाब'ए' इलाही उसको क्या मिला? ये कि मैंने "अपने लिए सात हज़ार आदमी बचा रखे हैं जिन्होंने बा'ल के आगे घुटने नहीं टेके।"⁵पस इसी तरह इस वक़्त भी फ़ज़ल से बरगुज़ीदा होने के ज़रिए कुछ बाक़ी हैं।

⁶और अगर फ़ज़ल से बरगुज़ीदा हैं तो आ'माल से नहीं; वर्ना फ़ज़ल फ़ज़ल न रहा।⁷पस नतीजा क्या हुआ? ये कि इस्राईल जिस चीज़ की तलाश करता है वो उस को न मिली मगर बरगुज़ीदों को मिली और बाक़ी सख़्त किए गए।⁸चुनाँचे लिखा है, खुदा ने उनको आज के दिन तक सुस्त तबी'अत दी और ऐसी आँखें जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।

⁹और दाऊद कहता है, उनका दस्तरख़वान उन के लिए जाल और फ़न्द़ा और ठोकर खाने और सज़ा का ज़रिया बन जाए।¹⁰उन की आँखों पर अंधेरा छा जाए ताकि न देखें और तू उनकी पीठ हमेशा झुकाये रख।

¹¹पस मैं पूछता हूँ क्या यहूदियों ने ऐसी ठोकर खाई कि गिर पड़े? हरगिज़ नहीं; बल्कि उनकी गलती से ग़ैर क़ौमों को नज़ात मिली ताकि उन्हें ग़ैरत आए।¹²पस जब उनका लड़खड़ाना दुनिया के लिए दौलत का ज़रिया और उनका घटना ग़ैर क़ौमों के लिए दौलत का ज़रिया हुआ तो उन का भरपूर होना ज़रूर ही दौलत का ज़रिया होगा

¹³मैं ये बातें तुम ग़ैर क़ौमों से कहता हूँ, चूँकि मैं ग़ैर क़ौमों का रसूल हूँ इसलिए अपनी ख़िदमत की बड़ाई करता हूँ।¹⁴ताकि किसी तरह से अपनी क़ौम वालों से ग़ैरत दिलाकर उन में से कुछ को नज़ात दिलाऊँ।

¹⁵क्यूँकि जब उनका अलग हो जाना दुनिया के आ मिलने का ज़रिया हुआ तो क्या उन का मक़बूल होना मुद्दों में से जी उठने के बराबर न होगा?¹⁶जब नज़्र का पहला पेड़ा पाक ठहरा तो सारा गुंथा हुआ आटा भी पाक है, और जब जड़ पाक है तो डालियाँ भी पाक ही हैं।

¹⁷लेकिन अगर कुछ डालियाँ तोड़ी गई, और तू जंगली ज़ैतून होकर उनकी जगह पैवन्द हुआ, और ज़ैतून की रौगनदार जड़ में शरीक हो गया।¹⁸तो तू उन डालियों के मुकाबिले में फ़ख़्र न कर और अगर फ़ख़्र करेगा तो जान रख कि तू जड़ को नहीं बल्कि जड़ तुझ को संभालती है।

¹⁹पस तू कहेगा, "डालियाँ इसलिए तोड़ी गई कि मैं पैवन्द हो जाऊँ।"²⁰अच्छा, वो तो बे'ईमानी की वजह से तोड़ी गई, और तू ईमान की वजह से क़ायम है; पस मगरूर न हो बल्कि ख़ौफ़ कर।²¹क्यूँकि जब खुदा ने असली डालियों को न छोड़ा तो तुझ को भी न छोड़ेगा।

²²पस खुदा की महरबानी और सख़्ती को देख सख़्ती उन पर जो गिर गए हैं; और खुदा की महरबानी तुझ पर बशर्ते कि तू उस महरबानी पर क़ायम रहे, वर्ना तू भी काट डाला जाएगा।।

²³और वो भी अगर बे'ईमान न रहें तो पैवन्द किए जाएँगे क्यूँकि खुदा उन्हें पैवन्द करके बहाल करने पर क़ादिर है।²⁴इसलिए कि जब तू ज़ैतून के उस दरख़्त से काट कर जिसकी जड़ ही जंगली है जड़ के बरखिलाफ़ अच्छे ज़ैतून में पैवन्द हो गया तो वो जो जड़ डालियाँ हैं अपने ज़ैतून में ज़रूर ही पैवन्द हो जाएँगी

²⁵ऐ भाइयों! कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आपको अक्लमन्द समझ लो इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस राज़ से ना वाकिफ़ रहो कि इस्राईल का एक हिस्सा सख़्त हो गया है और जब तक ग़ैर क़ौमों पूरी पूरी दाखिल न हों वो ऐसा ही रहेगा।

²⁶और इस सूरत से तमाम इस्राईल नज़ात पाएगा; चुनाँचे लिखा है, छुड़ानेवाला सिय्यून से निकलेगा और बेदीनी को या'क़ूब से दफ़ा करेगा।²⁷"और उनके साथ मेरा ये अहद होगा जब कि मैं उनके गुनाहों को दूर करूँगा।"

²⁸इज़ील के ऐ'तिबार से तो वो तुम्हारी खातिर दुश्मन हैं लेकिन बरगुज़ीदगी के ऐ'तिबार से बाप दादा की खातिर प्यार करें।²⁹इसलिए कि खुदा की ने'अमत और बुलावा ना बदलने वाला है।

³⁰क्यूँकि जिस तरह तुम पहले खुदा के नाफ़रमान थे मगर अब यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से तुम पर रहम हुआ।³¹उसी तरह अब ये भी नाफ़रमान हुए ताकि तुम पर रहम होने के ज़रिए अब इन पर भी रहम हो।³²इसलिए कि खुदा ने सब को नाफ़रमानी में गिरफ़्तार होने दिया ताकि सब पर रहम फ़रमाए।

³³वाह! खुदा की दौलत और हिक्मत और इल्म क्या ही अज़ीम है उसके फ़ैसले किस क़दर पहुँच से बाहर हैं और उसकी राहें क्या ही बे'निशान हैं।³⁴खुदावन्द की अक्ल को किसने जाना? या कौन उसका सलाहकार हुआ?

³⁵या किसने पहले उसे कुछ दिया है, जिसका बदला उसे दिया जाए?³⁶क्यूँकि उसी की तरफ़ से, और उसी के वसीले से और उसी के लिए सब चीज़ें हैं; उसकी बड़ाई हमेशा तक होती रहे आमीन।

Chapter 12

¹ऐ भाइयो! मैं खुदा की रहमतें याद दिला कर तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि अपने बदन ऐसी कुर्बानी होने के लिए पेश करो जो ज़िन्दा और पाक और खुदा को पसन्दीदा हो यही तुम्हारी मा'कूल इबादत है।² और इस जहान के हमशक्ल न बनो बल्कि अक्ल नई हो जाने से अपनी सूरत बदलते जाओ ताकि खुदा की नेक और पसन्दीदा और कामिल मर्ज़ी को तजुर्बा से मा'लूम करते रहो।

³मैं उस तौफ़ीक़ की वजह से जो मुझ को मिली है तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए उससे ज़्यादा कोई अपने आपको न समझे बल्कि जैसा खुदा ने हर एक को अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ ईमान तक्सीम किया है ऐ'तिदाल के साथ अपने आप को वैसा ही समझे।

⁴क्योंकि जिस तरह हमारे एक बदन में बहुत से आ'ज़ा होते हैं और तमाम आ'ज़ा का काम एक जैसा नहीं।⁵ उसी तरह हम भी जो बहुत से हैं मसीह में शामिल होकर एक बदन हैं और आपस में एक दूसरे के आ'ज़ा।

⁶और चूँकि उस तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ जो हम को दी गई; हमें तरह तरह की ने'अमते मिली इसलिए जिस को नबुव्वत मिली हो वो ईमान के अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ नबुव्वत करें।⁷ अगर ख़िदमत मिली हो तो ख़िदमत में लगा रहे अगर कोई मुअल्लिम हो तो ता'लीम में मशगूल हो।⁸ और अगर नासेह हो तो नसीहत में, ख़ैरात बाँटनेवाला सखावत से बाँटे, पेशवा सरगर्मी से पेशवाई करे, रहम करने वाला खुशी से रहम करे।

⁹मुहब्बत बे 'रिया हो बदी से नफ़रत रक्खो नेकी से लिपटे रहो।¹⁰ बिरादराना मुहब्बत से आपस में एक दूसरे को प्यार करो इज़ज़त के ऐतबार से एक दूसरे को बेहतर समझो।

¹¹कोशिश में सुस्ती न करो रूहानी जोश में भरे रहो; खुदावन्द की ख़िदमत करते रहो।¹² उम्मीद में खुश मुसीबत में साबिर दुआ करने में मशगूल रहो।¹³ मुक़द्दसों की ज़रूरतें पूरी करो।

¹⁴जो तुम्हें सताते हैं उनके वास्ते बरकत चाहो ला'नत न करो।¹⁵ खुशी करनेवालों के साथ खुशी करो रोने वालों के साथ रोओ।¹⁶ आपस में एक दिल रहो ऊँचे ऊँचे ख़याल न बाँधो बल्कि छोटे लोगों से रिफ़ाक़त रखो अपने आप को अक्लमन्द न समझो।

¹⁷बदी के बदले किसी से बदी न करो; जो बातें सब लोगों के नज़दीक अच्छी हैं उनकी तदबीर करो।¹⁸ जहाँ तक हो सके तुम अपनी तरफ़ से सब आदमियों के साथ मेल मिलाप रखो।

¹⁹“ऐ' अज़ीज़ो! अपना इन्तक़ाम न लो बल्कि ग़ज़ब को मौका दो क्योंकि ये लिखा है खुदावन्द फ़रमाता है इन्तक़ाम लेना मेरा काम है बदला मैं ही दूँगा।”²⁰ बल्कि अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उस को खाना खिला “अगर प्यासा हो तो उसे पानी पिला क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।

²¹“बदी से मग़लूब न हो बल्कि नेकी के ज़रिए से बदी पर ग़ालिब आओ।

Chapter 13

¹हर शख्स आ'ला हुकूमतों का ता'बेदार रहे क्योंकि कोई हुकूमत ऐसी नहीं जो खुदा की तरफ से न हो और जो हुकूमत मौजूद हैं वो खुदा की तरफ से मुकर्रर है।

²पस जो कोई हुकूमत का सामना करता है वो खुदा के इन्तिज़ाम का मुखालिफ़ है और जो मुखालिफ़ है वो सज़ा पाएगा।

³नेक कारों को हाकिमों से खौफ़ नहीं बल्कि बदकार को है, पस अगर तू हाकिम से निडर रहना चाहता है तो नेकी कर उसकी तरफ से तेरी तारीफ़ होगी।⁴क्योंकि वो तेरी बेहतरी के लिए खुदा का खादिम है लेकिन अगर तू बदी करे तो डर, क्योंकि वो तलवार बे'फ़ाइदा लिए हुए नहीं और खुदा का खादिम है कि उसके ग़ज़ब के मुवाफ़िक़ बदकार को सज़ा देता है⁵पस ताबे दार रहना न सिर्फ़ ग़ज़ब के डर से ज़रूर है बल्कि दिल भी यही गवाही देता है।

⁶तुम इसी लिए लगान भी देते हो कि वो खुदा का खादिम है और इस खास काम में हमेशा मशगूल रहते हैं।⁷सब का हक़ अदा करो जिस को लगान चाहिए लगान दो, जिसको महसूल चाहिए महसूल जिससे डरना चाहिए उस से डरो, जिस की इज़ज़त करना चाहिए उसकी इज़ज़त करो।

⁸आपस की मुहब्बत के सिवा किसी चीज़ में किसी के क़र्ज़दार न हो क्योंकि जो दूसरे से मुहब्बत रखता है उसने शरी'अत पर पूरा अमल किया।⁹क्योंकि ये बातें कि "ज़िना न कर, खून न कर, चोरी न कर, लालच न कर और इसके सिवा और जो कोई हुक्म हो उन सब का खुलासा इस बात में पाया जाता है अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।"¹⁰मुहब्बत अपने पड़ोसी से बदी नहीं करती इस वास्ते मुहब्बत शरी'अत की ता'मील है।

¹¹वक़्त को पहचानकर ऐसा ही करो इसलिए कि अब वो घड़ी आ पहुँची कि तुम नींद से जागो; क्योंकि जिस वक़्त हम ईमान लाए थे उस वक़्त की निस्बत अब हमारी नज़ात नज़दीक है।¹²रात बहुत गुज़र गई, और दिन निकलने वाला है पस हम अँधेरे के कामों को तर्क करके रौशनी के हथियार बाँध लें।

¹³जैसा दिन को दस्तूर है संजीदगी से चलें न कि नाच रंग और नशेबाज़ी से न ज़िनाकारी और शहवत परस्ती से और न झगड़े और हसद से।¹⁴बल्कि खुदावन्द ईसा' मसीह को पहन लो और जिस्म की ख्वाहिशों के लिए तदबीरें न करो।

Chapter 14

¹कमज़ोर ईमान वालों को अपने में शामिल तो कर लो, मगर शक़' और शुबह की तक़ारों के लिए नहीं।²हर एक का मानना है कि हर चीज़ का खाना जाएज़ है और कमज़ोर ईमानवाला साग पात ही खाता है।

³खाने वाला उसको जो नहीं खाता हकीर न जाने और जो नहीं खाता वो खाने वाले पर इल्ज़ाम न लगाए; क्योंकि खुदा ने उसको कुबूल कर लिया है।⁴तू कौन है, जो दूसरे के नौकर पर इल्ज़ाम लगाता है? उसका क़ायम रहना या गिर पड़ना उसके मालिक ही से मुता'ल्लिक है; बल्कि वो क़ायम ही कर दिया जाए क्योंकि खुदावन्द उसके क़ायम करने पर क़ादिर है।

⁵कोई तो एक दिन को दूसरे से अफ़ज़ल जानता है और कोई सब दिनों को बराबर जानता है हर एक अपने दिल में पूरा ऐ'तिक़ाद रखे।⁶जो किसी दिन को मानता है वो खुदावन्द के लिए मानता है और जो खाता है वो खुदावन्द के वास्ते खाता है क्योंकि वो खुदा का शुक्र करता है और जो नहीं खाता वो भी खुदावन्द के वास्ते नहीं खाता, और खुदावन्द का शुक्र करता है।

⁷क्योंकि हम में से न कोई अपने वास्ते जीता है, न कोई अपने वास्ते मरता है।⁸अगर हम जीते हैं तो खुदावन्द के वास्ते जीते हैं और अगर मरते हैं तो खुदावन्द के वास्ते मरते हैं; पस हम जियें या मरें खुदावन्द ही के हैं।⁹क्योंकि मसीह इसलिए मरा और ज़िन्दा हुआ कि मुर्दों और ज़िन्दों दोनों का खुदावन्द हो।

¹⁰मगर तू अपने भाई पर किस लिए इल्ज़ाम लगाता है? या तू भी किस लिए अपने भाई को हकीर जानता है? हम तो सब खुदा के तख़्त -ए-अदालत के आगे खड़े होंगे।¹¹चुनाँचे ये लिखा है; खुदावन्द फ़रमाता है मुझे अपनी हयात की क़सम, हर एक घुटना मेरे आगे झुकेगा और हर एक ज़बान खुदा का इक़रार करेगी।

¹²पस हम में से हर एक खुदा को अपना हिसाब देगा।¹³पस आइन्दा को हम एक दूसरे पर इल्ज़ाम न लगाएँ बल्कि तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने वो चीज़ न रखे जो उसके ठोकर खाने या गिरने का ज़रिया हो।

¹⁴मुझे मा'लूम है बल्कि खुदावन्द ईसा' में मुझे यक़ीन है कि कोई चीज़ बजातेह ह़राम नहीं लेकिन जो उसको ह़राम समझता है उस के लिए ह़राम है।¹⁵अगर तेरे भाई को तेरे खाने से रंज पहुँचता है तो फिर तू मुहब्बत के क़ा'इदे पर नहीं चलता; जिस शख्स के वास्ते मसीह मरा तू अपने खाने से हलाक न कर।

¹⁶पस तुम्हारी नेकी की बदनामी न हो।¹⁷क्योंकि खुदा की बादशाही खाने पीने पर नहीं बल्कि रास्तबाज़ी और मेल मिलाप और उस खुशी पर मौकूफ़ है जो रूह - उल - कुदूस की तरफ़ से होती है।

¹⁸जो कोई इस तौर से मसीह की खिदमत करता है; वो खुदा का पसन्दीदा और आदमियों का मक़बूल है।¹⁹पस हम उन बातों के तालिब रहें; जिनसे मेल मिलाप और आपसी तरक्की हो।

²⁰खाने की खातिर खुदा के काम को न बिगाड़ हर चीज़ पाक तो है मगर उस आदमी के लिए बुरी है; जिसको उसके खाने से ठोकर लगती है।²¹यही अच्छा है कि तू न गोश्त खाए न मय पिए न और कुछ ऐसा करे जिस की वजह से तेरा भाई ठोकर खाए।

²²जो तेरा ऐ'तिक़ाद है वो खुदा की नज़र में तेरे ही दिल में रहे, मुबारक वो है जो उस चीज़ की वजह से जिसे वो जायज़ रखता है अपने आप को मुल्ज़िम नहीं ठहराता।²³मगर जो कोई किसी चीज़ में शक़ रखता है अगर उस को खाए तो मुजरिम ठहरता है इस वास्ते कि वो ऐ'तिक़ाद से नहीं खाता, और जो कुछ ऐ'तिक़ाद से नहीं वो गुनाह है।

Chapter 15

¹गरज़ हम ताक़तवरों को चाहिए कि कमज़ोरों के कमज़ोरियों की रि'आयत करें न कि अपनी खुशी करें। हम में हर शख्स अपने पड़ोसी को उसकी बेहतरी के वास्ते खुश करे; ताकि उसकी तरक्की हो।

³क्यूँकि मसीह ने भी अपनी खुशी नहीं की "बल्कि यूँ लिखा है; तेरे लान तान करनेवालों के लान'तान मुझ पर आ पड़े।" "क्यूँकि जितनी बातें पहले लिखी गईं, वो हमारी ता'लीम के लिए लिखी गईं, ताकि सब और किताब'ए मुक़द्दस की तसल्ली से उम्मीद रखे।

⁵और खुदा सब और तसल्ली का चश्मा तुम को ये तौफ़ीक़ दे कि मसीह ईसा' के मुताबिक़ आपस में एक दिल रहो। ताकि तुम एक दिल और एक ज़बान हो कर हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के खुदा और बाप की बड़ाई करो। पस जिस तरह मसीह ने खुदा के जलाल के लिए तुम को अपने साथ शामिल कर लिया है उसी तरह तुम भी एक दूसरे को शामिल कर लो।

⁸मैं कहता हूँ कि खुदा की सच्चाई साबित करने के लिए मख़दूनों का ख़ादिम बना ताकि उन वा'दों को पूरा करूँ जो बाप दादा से किए गए थे।⁹ और ग़ैर क्रौमों भी रहम की वजह से खुदा की हम्द करें चुनाँचें लिखा है, "इस वास्ते मैं ग़ैर क्रौमों में तेरा इकरार करूँगा" और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।"

¹⁰और फिर वो फ़रमाता है "ऐ'ग़ैर क्रौमों" उसकी उम्मत के साथ खुशी करो।¹¹ फिर ये "ऐ'ग़ैर क्रौमों" खुदावन्द की हम्द करो और उम्मतें उसकी सिताइश करें!"

¹²और यसायाह भी कहता है यस्सी की जड़ ज़ाहिर होगी या'नी वो शख्स जो ग़ैर क्रौमों पर हुकूमत करने को उठेगा, उसी से ग़ैर क्रौमों उम्मीद रखेंगी।

¹³पस खुदा जो उम्मीद का चश्मा है तुम्हें ईमान रखने के ज़रिए सारी खुशी और इत्मीनान से मा'मूर करे ताकि रूह- उल कुदूस की कुदरत से तुम्हारी उम्मीद ज़्यादा होती जाए।

¹⁴ऐ मेरे भाइयो; मैं खुद भी तुम्हारी निस्बत यकीन रखता हूँ कि तुम आप नेकी से मा'मूर और मुकम्मल मा'रिफ़त से भरे हो और एक दूसरे को नसीहत भी कर सकते हो।

¹⁵तोभी मैं ने कुछ जगह ज़्यादा दिलेरी के साथ याद दिलाने के तौर पर इसलिए तुम को लिखा; कि मुझ को खुदा की तरफ़ से ग़ैर क्रौमों के लिए मसीह ईसा' के ख़ादिम होने की तौफ़ीक़ मिली है।¹⁶ कि मैं खुदा की खुशख़बरी की खिदमत इमाम की तरह अंजाम दूँ ताकि ग़ैर क्रौमों नज़ के तौर पर रूह- उल कुदूस से मुक़द्दस बन कर मक्बूल हो जाएँ।

¹⁷पस मैं उन बातों में जो खुदा से मुताल्लिक़ हैं मसीह ईसा' के ज़रिए फ़ख़्र कर सकता हूँ।¹⁸ क्यूँकि मुझे किसी और बात के ज़िक़्र करने की हिम्मत नहीं सिवा उन बातों के जो मसीह ने ग़ैर क्रौमों के ताबे करने के लिए क्रौल और फ़े'ल से निशानों और मोजिज़ों की ताक़त से और रूह- उल कुदूस की कुदरत से मेरे वसीले से की।¹⁹ यहाँ तक कि मैंने यरूशलीम से लेकर चारों तरफ़ इल्लुरिकुम सूबे तक मसीह की खुशख़बरी की पूरी पूरी मनादी की।

²⁰और मैं ने यही हौसला रखा कि जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया वहाँ खुशख़बरी सुनाऊँ ताकि दूसरे की बुनियाद पर इमारत न उठाऊँ।²¹ बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हो जिनको उसकी ख़बर नहीं पहुँची वो देखेंगे; और जिन्होंने नहीं सुना वो समझेंगे।

²²इसी लिए मैं तुम्हारे पास आने से बार बार रुका रहा।²³ मगर चूँकि मुझ को अब इन मुल्कों में जगह बाक़ी नहीं रही और बहुत बरसों से तुम्हारे पास आने का मुश्ताक़ भी हूँ।

²⁴इसलिए जब इस्फ़ानिया मुल्क को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा; क्यूँकि मुझे उम्मीद है कि उस सफ़र में तुम से मिलूँगा और जब तुम्हारी सोहबत से किसी क़दर मेरा जी भर जाएगा तो तुम मुझे उस तरफ़ रवाना कर दोगे।²⁵ लेकिन फिलहाल तो मुक़द्दसों की खिदमत करने के लिए यरूशलीम को जाता हूँ।

²⁶क्यूँकि मकिदुनिया और आख्या के लोग यरूशलीम के ग़रीब मुक़द्दसों के लिए कुछ चन्दा करने को रज़ामन्द हुए।²⁷ किया तो रज़ामन्दी से मगर वो उनके क़र्ज़दार भी हैं क्यूँकि जब ग़ैर क्रौमों रूहानी बातों में उनकी शरीक़ हुई हैं तो लाज़िम है कि जिस्मानी बातों में उनकी खिदमत करें।

²⁸पस मैं इस खिदमत को पूरा करके और जो कुछ हासिल हुआ उनको सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ इस्फ़ानिया को जाऊँगा।²⁹ और मैं जानता हूँ कि जब तुम्हारे पास आऊँगा तो मसीह की कामिल बरकत लेकर आऊँगा।

³⁰ऐ, भाइयो; मैं ईसा' मसीह का जो हमारा खुदावन्द है वास्ता देकर और रूह की मुहब्बत को याद दिला कर तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि मेरे लिए खुदा से दुआ करने में मेरे साथ मिल कर मेहनत करो।³¹ कि मैं यहूदिया के नाफ़रमानों से बचा रहूँ, और मेरी वो खिदमत जो यरूशलीम के लिए है मुक़द्दसों को पसन्द आए।

³²और खुदा की मर्ज़ी से तुम्हारे पास खुशी के साथ आकर तुम्हारे साथ आराम पाऊँ।

³³खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है तुम सब के साथ रहे; आमीन।

Chapter 16

¹मैं तुम से फ़ीबे की जो हमारी बहन और किंखिया शहर की कलीसिया की खादिमा है सिफ़ारिश करता है।²कि तुम उसे खुदावन्द में कुबूल करो, जैसा मुक़द्दसों को चाहिए और जिस काम में वो तुम्हारी मोहताज हो उसकी मदद करो क्योंकि वो भी बहुतों की मददगार रही है; बल्कि मेरी भी।

³प्रिस्का और अक्विला से मेरा सलाम कहो वो मसीह ईसा में मेरे हमखिदमत हैं।⁴उन्होंने मेरी जान के लिए अपना सिर दे रखवा था; और सिर्फ़ मैं ही नहीं बल्कि ग़ैर क्रौमों की सब कलीसियाएँ भी उनकी शुक्रगुज़ार हैं।⁵और उस कलीसिया से भी सलाम कहो जो उन के घर में है; मेरे प्यारे अपीनितुस से सलाम कहो जो मसीह के लिए आसिया का पहला फल है।

⁶मरियम से सलाम कहो; जिसने तुम्हारे वास्ते बहुत मेहनत की।⁷अन्ड्रीकुस और यून्यास से सलाम कहो वो मेरे रिश्तेदार हैं और मेरे साथ कैद हुए थे, और रसूलों में नामवर हैं और मुझ से पहले मसीह में शामिल हुए।⁸अम्पलियातुस से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेरा प्यारा है।

⁹उरबानुस से जो मसीह में हमारा हमखिदमत है और मेरे प्यारे इस्तरुस से सलाम कहो।¹⁰अपिल्लेस से सलाम कहो जो मसीह में मक़बूल है अरिस्तुबुलुस के घर वालों से सलाम कहो।¹¹मेरे रिश्तेदार हेरोदियून से सलाम कहो; नरकिस्सुस के उन घरवालों से सलाम कहो जो खुदावन्द में हैं।

¹²त्रफ़ैना त्रुफ़ोसा से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेहनत करती है प्यारी परसिस से सलाम कहो जिसने खुदावन्द में बहुत मेहनत की।¹³रूफ़ुस जो खुदावन्द में बरगुज़ीदा है और उसकी माँ जो मेरी भी माँ है दोनों से सलाम कहो।¹⁴असुक्रितुस और फ़लिगोन और हिरमेस और पत्रुबास और हिरमास और उन भाइयों से जो उनके साथ हैं सलाम कहो।

¹⁵फ़िलुलुगुस और यूलिया और नयरयूस और उसकी बहन और उलुम्पास और सब मुक़द्दसों से जो उन के साथ हैं सलाम कहो।¹⁶आपस में पाक बोसा लेकर एक दूसरे को सलाम करो मसीह की सब कलीसियाएँ तुम्हें सलाम कहती हैं।

¹⁷अब ऐ, भाइयो मैं तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि जो लोग उस ता'लीम के बरख़िलाफ़ जो तुम ने पाई फूट पड़ने और ठोकर खाने का ज़रिया हैं उन को पहचान लो और उनसे किनारा करो।¹⁸क्योंकि ऐसे लोग हमारे खुदावन्द मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की खिदमत करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सादा दिलों को बहकाते हैं;

¹⁹क्योंकि हमारी फ़रमाबरदारी सब में मशहूर हो गई है इसलिए मैं तुम्हारे बारे में खुश हूँ लेकिन ये चाहता हूँ कि तुम नेकी के ऐ'तिबार से अक्लमंद बन जाओ और बदी के ऐ'तिबार से भोले बने रहो।²⁰खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है शैतान तुम्हारे पावों से जल्द कुचलवा देगा। हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे।

²¹मेरे हमखिदमत तीमुथियुस और मेरे रिश्तेदार लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस तुम्हें सलाम कहते हैं।²²इस ख़त का कातिब तिरितियुस तुम को खुदावन्द में सलाम कहता है।

²³गयुस मेरा और सारी कलीसिया का मेहमानदार तुम्हें सलाम कहता है इरास्तुस शहर का ख़ज़ांची और भाई क्वारतुस तुम को सलाम कहते हैं।²⁴हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम सब के साथ हो; आमीन।

²⁵अब खुदा जो तुम को मेरी खुशख़बरी या'नी ईसा' मसीह की मनादी के मुवाफ़िक़ मज़बूत कर सकता है, उस राज़ के मुकाशफ़े के मुताबिक़ जो अज़ल से पोशीदा रहा।²⁶मगर इस वक़्त ज़ाहिर हो कर खुदा'ए अज़ली के हुक्म के मुताबिक़ नबियों की किताबों के ज़रिए से सब क्रौमों को बताया गया ताकि वो ईमान के ताबे हो जाएँ।

²⁷उसी वाहिद हकीम खुदा की ईसा' मसीह के वसीले से हमेशा तक बड़ाई होती रहे। आमीन।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस रसूल का पहला ख़त

Chapter 1

¹पौलुस रसूल की तरफ़ से, जो खुदा की मज़ी से ईसा' मसीह का रसूल होने के लिए बुलाया गया है और भाई सोस्थिनेस की तरफ़ से, ये ख़त, ²खुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस शहर में है, या'नी उन के नाम जो मसीह ईसा' में पाक किए गए, और मुक़द्दस होने के लिए बुलाए गए हैं, और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने खुदावन्द ईसा' मसीह का नाम लेते हैं।³हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

⁴मैं तुम्हारे बारे में खुदा के उस फ़ज़ल के ज़रिए जो मसीह ईसा' में तुम पर हुआ हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ।⁵कि तुम उस में होकर सब बातों में कलाम और इल्म की हर तरह की दौलत से दौलतमन्द हो गए, हो।⁶चुनाँचे मसीह की गवाही तुम में क़ायम हुई।

⁷यहाँ तक कि तुम किसी ने मत में कम नहीं, और हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के ज़हूर के मुन्तज़िर हो।⁸जो तुम को आख़िर तक क़ायम भी रखेगा, ताकि तुम हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के दिन बे'इल्ज़ाम ठहरो।⁹खुदा सच्चा है जिसने तुम्हें अपने बेटे हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह की शराक़त के लिए बुलाया है।

¹⁰अब ऐ भाइयो! ईसा' मसीह जो हमारा खुदावन्द है, उसके नाम के वसीले से मैं तुम से इल्तिमास करता हूँ कि सब एक ही बात कहो, और तुम में तफ़र्क़ न हों, बल्कि एक साथ एक दिल और एक राय हो कर कामिल बने रहो।¹¹क्योंकि ऐ भाइयो! तुम्हारे ज़रिए मुझे ख़लोए के घर वालों से मा'लूम हुआ कि तुम में झगड़े हो रहे हैं।

¹²मेरा ये मतलब है कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलुस का कहता है कोई अपुल्लोस का कोई कैफ़ा का कोई मसीह का।¹³क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारी खातिर मस्लूब हुआ? या तुम ने पौलुस के नाम पर बपतिस्मा लिया?।

¹⁴खुदा का शुक्र करता हूँ कि क्रिस्पुस और गयुस के सिवा मैंने तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया।¹⁵ताकि कोई ये न कहे कि तुम ने मेरे नाम पर बपतिस्मा लिया।¹⁶हाँ स्तिफनास के खानदान को भी मैंने बपतिस्मा दिया बाकी नहीं जानता कि मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया हो।

¹⁷क्यूँकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं भेजा बल्कि खुशखबरी सुनाने को और वो भी कलाम की हिक्मत से नहीं ताकि मसीह की सलीबी मौत बे'ताशीर न हो।

¹⁸क्यूँकि सलीब का पैगाम हलाक होने वालों के नज़दीक तो बे'वकूफ़ी है मगर हम नजात पानेवालों के नज़दीक खुदा की कुदरत है।¹⁹क्यूँकि लिखा है, "मैं हकीमों की हिक्मत को नेस्त और अक्लमन्दों की अक्ल को रद्द करूँगा। "

²⁰कहाँ का हकीम? कहाँ का आलिम? कहाँ का इस जहान का बहस करनेवाला? क्या खुदा ने दुनिया की हिक्मत को बे'वकूफ़ी नहीं ठहराया?।²¹इसलिए कि जब खुदा की हिक्मत के मुताबिक़ दुनियाँ ने अपनी हिक्मत से खुदा को न जाना तो खुदा को ये पसन्द आया कि इस मनादी की बेवकूफ़ी के वसीले से ईमान लानेवालों को नजात दे।

²²चुनाँचे यहूदी निशान चाहते हैं और यूनानी हिक्मत तलाश करते हैं।²³मगर हम उस मसीह मस्लूब का ऐलान करते हैं जो यहूदियों के नज़दीक ठोकर और ग़ैर क्रौमों के नज़दीक बेवकूफ़ी है।

²⁴लेकिन जो बुलाए हुए हैं यहूदी हों या यूनानी उन के नज़दीक मसीह खुदा की कुदरत और खुदा की हिक्मत है।²⁵क्यूँकि खुदा की बेवकूफ़ी आदमियों की हिक्मत से ज्यादा हिक्मत वाली है और खुदा की कमज़ोरी आदमियों के ज़ोर से ज़्यादा ताक़तवर है।

²⁶ऐ भाइयो! अपने बुलाए जाने पर तो निगाह करो कि जिस्म के लिहाज़ से बहुत से हकीम बहुत से इख़्तियार वाले बहुत से अशराफ़ नहीं बुलाए गए।²⁷बल्कि खुदा ने दुनिया के बेवकूफ़ों चुन लिया कि हकीमों को शर्मिन्दा करे और खुदा ने दुनिया के कमज़ोरों को चुन लिया कि ज़ोरआवरों को शर्मिन्दा करे।

²⁸और खुदा ने दुनिया के कमीनों और हक़ीरों को बल्कि बे वजूदों को चुन लिया कि मौजूदों को नेस्त करे।²⁹ताकि कोई बशर खुदा के सामने फ़ख़्र न करे।

³⁰लेकिन तुम उसकी तरफ़ से मसीह ईसा' में हो, जो हमारे लिए खुदा की तरफ़ से हिक्मत ठहरा, या'नी रास्तबाज़ी और पाकीज़गी और मख़्लसी।³¹ताकि जैसा लिखा है"वैसा ही हो जो फ़ख़्र करे वो खुदावन्द पर फ़ख़्र करे।"

Chapter 2

¹‘ऐ भाइयों! जब मैं तुम्हारे पास आया और तुम में खुदा के भेद की मनादी करने लगा तो आ'ला दर्जे की तक्ररीर या हिक्मत के साथ नहीं आया।²क्यूँकि मैंने ये इरादा कर लिया था कि तुम्हारे दर्मियान ईसा' मसीह, मसलूब के सिवा और कुछ न जानूँगा।

³और मैं कमज़ोरी और खौफ़ और बहुत थरथराने की हालत में तुम्हारे पास रहा।⁴और मेरी तक्ररीर और मेरी मनादी में हिक्मत की लुभाने वाली बातें न थीं बल्कि वो रूह और कुदरत से साबित होती थीं।⁵ताकि तुम्हारा ईमान इंसान की हिक्मत पर नहीं बल्कि खुदा की कुदरत पर मौकूफ़ हो।

⁶फिर भी कामिलों में हम हिक्मत की बातें कहते हैं लेकिन इस जहान की और इस जहान के नेस्त होनेवाले हाकिमों की अक्ल नहीं।⁷बल्कि हम खुदा के राज़ की हक़ीक़त बातों के तौर पर बयान करते हैं, जो खुदा ने जहान के शुरू से पहले हमारे जलाल के वास्ते मुकर्रर की थी।

⁸जिसे इस दुनिया के सरदारों में से किसी ने न समझा क्यूँकि अगर समझते तो जलाल के खुदावन्द को मसलूब न करते।⁹“बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हुआ जो चीज़ें न आँखों ने देखीं न कानों ने सुनीं न आदमी के दिल में आईं वो सब खुदा ने अपने मुहब्बत रखनेवालों के लिए तैयार कर दीं। ”

¹⁰लेकिन हम पर खुदा ने उसको रूह के ज़रिए से ज़ाहिर किया क्यूँकि रूह सब बातें बल्कि खुदा की तह की बातें भी दरियाफ़्त कर लेता है।¹¹क्यूँकि इंसानों में से कौन किसी इंसान की बातें जानता है सिवा इंसान की अपनी रूह के जो उस में है? उसी तरह खुदा के रूह के सिवा कोई खुदा की बातें नहीं जानता।

¹²मगर हम ने न दुनिया की रूह बल्कि वो रूह पाया जो खुदा की तरफ़ से है; ताकि उन बातों को जानें जो खुदा ने हमें इनायत की हैं।¹³और हम उन बातों को उन अल्फ़ाज़ में नहीं बयान करते जो इन्सान की हिक्मत ने हम को सिखाए हों बल्कि उन अल्फ़ाज़ में जो रूह ने सिखाए हैं और रूहानी बातों का रूहानी बातों से मुक़ाबिला करते हैं।

¹⁴मगर जिस्मानी आदमी खुदा के रूह की बातें कुबूल नहीं करता क्यूँकि वो उस के नज़दीक़ बेवकूफी की बातें हैं और न वो इन्हें समझ सकता है क्यूँकि वो रूहानी तौर पर परखी जाती हैं।¹⁵लेकिन रूहानी शख्स सब बातों को परख लेता है; मगर खुदा किसी से परखा नहीं जाता।¹⁶“खुदावन्द की अक्ल को किसने जाना कि उसको ता'लीम दे सके? मगर हम में मसीह की अक्ल है। ” ।

Chapter 3

¹ऐ भाइयो! मैं तुम से उस तरह कलाम न कर सका जिस तरह रूहानियों से बल्कि जैसे जिस्मानियों से और उन से जो मसीह में बच्चे हैं।²मैंने तुम्हें दूध पिलाया और खाना न खिलाया क्योंकि तुम को उसकी बर्दाश्त न थी, बल्कि अब भी नहीं।

³क्योंकि अभी तक जिस्मानी हो इसलिए कि जब तुम मैं हसद और झगड़ा है तो क्या तुम जिस्मानी न हुए और इंसानी तरीके पर न चले ?⁴इसलिए कि जब एक कहता है मैं पौलुस का हूँ और दूसरा कहता है मैं अपुल्लोस का हूँ तो क्या तुम इंसान न हुए ?⁵अपुल्लोस क्या चीज़ है? और पौलुस क्या? खादिम जिनके वसीले से तुम ईमान लाए और हर एक को वो हैसियत है जो खुदावन्द ने उसे बख्शी।

⁶मैंने दरख्त लगाया और अपुल्लोस ने पानी दिया मगर बढ़ाया खुदा ने।⁷पस न लगाने वाला कुछ चीज़ है न पानी देनेवाला मगर खुदा जो बढ़ानेवाला है।

⁸लगानेवाला और पानी देनेवाला दोनों एक हैं लेकिन हर एक अपना अज़्र अपनी मेहनत के मुवाफ़िक़ पाएगा।⁹क्योंकि हम खुदा के साथ काम करनेवाले हैं तुम खुदा की खेती और खुदा की इमारत हो।

¹⁰मैंने उस तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ जो खुदा ने मुझे बख्शी अक्लमंद मिस्त्री की तरह नींव रखी, और दूसरा उस पर इमारत उठाता है पस हर एक खबरदार रहे, कि वो कैसी इमारत उठाता है।¹¹क्योंकि सिवा उस नींव के जो पड़ी हुई है और वो ईसा' मसीह है कोई शख्स दूसरी नहीं रख सकता।

¹²और अगर कोई उस नींव पर सोना या चाँदी या बेशकीमती पत्थरों या लकड़ी या घास या भूसे का रद्दा रखे।¹³तो उस का काम ज़ाहिर हो जाएगा क्योंकि जो दिन आग के साथ ज़ाहिर होगा वो उस काम को बता देगा और वो आग खुद हर एक का काम आजमा लेगी कि कैसा है।

¹⁴जिस का काम उस पर बना हुआ बाक़ी रहेगा, वो अज़्र पाएगा।¹⁵और जिस का काम जल जाएगा, वो नुक्सान उठाएगा; लेकिन खुद बच जाएगा मगर जलते जलते।

¹⁶क्या तुम नहीं जानते कि तुम खुदा का मक़दिस हो और खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है ?¹⁷अगर कोई खुदा के मक़दिस को बर्बाद करेगा तो खुदा उसको बर्बाद करेगा, क्योंकि खुदा का मक़दिस पाक है और वो तुम हो।

¹⁸कोई अपने आप को धोका न दे अगर कोई तुम में अपने आप को इस ज़हान में हकीम समझे, तो बेवकूफ़ बने ताकि हकीम हो जाए।¹⁹क्योंकि दुनियाँ की हिक्मत खुदा के नज़दीक बेवकूफी है: चुनाँचे लिखा है, "वो हकीमों को उन ही की चालाकी में फँसा देता है।"²⁰और ये भी, खुदावन्द हकीमों के खयालों को जानता है "कि बातिल हैं।",,

²¹पस आदमियों पर कोई फ़ख़्र न करो क्योंकि सब चीज़ें तुम्हारी हैं।²²चाहे पौलुस हो, चाहे अपुल्लोस, चाहे कैफ़ा, चाहे दुनिया, चाहे ज़िन्दगी, चाहे मौत, चाहे हाल, की चीज़ें, चाहे इस्तक्रबाल की,²³सब तुम्हारी हैं और तुम मसीह के हो, और मसीह खुदा का है।

Chapter 4

¹आदमी हम को मसीह का खादिम और खुदा के हिकमत का मुख्तार समझे।²और यहाँ मुख्तार में ये बात देखी जाती है के दियानतदार निकले।

³लेकिन मेरे नज़दीक ये निहायत छोटी बात है कि तुम या कोई इंसानी अदालत मुझे परखे: बल्कि मैं खुद भी अपने आप को नहीं परखता।⁴क्योंकि मेरा दिल तो मुझे मलामत नहीं करता मगर इस से मैं रास्तबाज़ नहीं ठहरता, बल्कि मेरा परखनेवाला खुदावन्द है।

⁵पस जब तक खुदावन्द न आए, वक़्त से पहले किसी बात का फ़ैसला न करो; वही तारीकी की पोशीदा बातें रौशन कर देगा और दिलों के मन्सूबे ज़ाहिर कर देगा और उस वक़्त हर एक की ता'रीफ़ खुदा की तरफ़ से होगी।

⁶ऐ भाइयो! मैंने इन बातों में तुम्हारी खातिर अपना और अपुल्लोस का ज़िक्र मिसाल के तौर पर किया है, ताकि तुम हमारे वसीले से ये सीखो कि लिखे हुए से बढ़ कर न करो और एक की ताईद में दूसरे के बरखिलाफ़ शेखी न मारो।⁷तुझ में और दूसरे में कौन फ़र्क़ करता है? और तेरे पास कौन सी ऐसी चीज़ है जो तू ने दूसरे से नहीं पाई? और जब तूने दूसरे से पाई तो फ़ख़्र क्यों करता है कि गोया नहीं पाई?

⁸तुम तो पहले ही से आसूदा हो और पहले ही से दौलतमन्द हो और तुम ने हमारे बग़ैर बादशाही की: और काश कि तुम बादशाही करते ताकि हम भी तुम्हारे साथ बादशाही करते।⁹मेरी दानिस्त में खुदा ने हम रसूलों को सब से अदना ठहराकर उन लोगों की तरह पेश किया है जिनके क़ल्ल का हुक्म हो चुका हो; क्योंकि हम दुनिया और फ़रिश्तों और आदमियों के लिए एक तमाशा ठहरे।

¹⁰हम मसीह की खातिर बेवकूफ़ हैं मगर तुम मसीह में अक्लमन्द हो: हम कमज़ोर हैं और तुम ताक़तवर तुम इज़्ज़त दार हो: और हम बे'इज़्ज़त।¹¹हम इस वक़्त तक भुखे प्यासे नंगे हैं और मुक्के खाते और आवारा फिरते हैं।

¹²और अपने हाथों से काम करके मशक्कत उठाते हैं लोग बुरा कहते हैं हम दुआ देते हैं वो सताते हैं हम सहते हैं।¹³वो बदनाम करते हैं हम मिन्नत समाजत करते हैं हम आज तक दुनिया के कूड़े और सब चीज़ों की झड़न की तरह हैं।

¹⁴मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये नहीं लिखता: बल्कि अपना प्यारा बेटा जानकर तुम को नसीहत करता हूँ।¹⁵क्योंकि अगर मसीह में तुम्हारे उस्ताद दस हज़ार भी होते तोभी तुम्हारे बाप बहुत से नहीं: इसलिए कि मैं ही इन्ज़ील के वसीले से मसीह ईसा' में तुम्हारा बाप बना।¹⁶पस मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि मेरी तरह बनो।

¹⁷इसी वास्ते मैंने तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा; कि वो खुदावन्द में मेरा प्यारा और दियानतदार बेटा है और मेरे उन तरीक़ों को जो मसीह में हैं तुम्हें याद दिलाएगा; जिस तरह मैं हर जगह हर कलीसिया में ता'लीम देता हूँ।¹⁸कुछ ऐसी शेखी मारते हैं गोया कि तुम्हारे पास आने ही का नहीं।

¹⁹लेकिन खुदावन्द ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास जल्द आऊँगा और शेखी बाज़ों की बातों को नहीं, बल्कि उनकी कुदरत को मा'लूम करूँगा।²⁰क्योंकि खुदा की बादशाही बातों पर नहीं, बल्कि कुदरत पर मौकूफ़ है।²¹तुम क्या चाहते हो कि मैं लकड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ या मुहब्बत और नर्म मीज़ाजी से?

Chapter 5

¹यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो ग़ैर क्रौमों में भी नहीं होती: चुनौचे तुम में से एक शख्स अपने बाप की दूसरी बीवी को रखता है।²और तुम अफ़सोस तो करते नहीं ताकि जिस ने ये काम किया वो तुम में से निकाला जाए बल्कि शेखी मारते हो।

³लेकिन मैं अगरचे जिस्म के ऐ'तिबार से मौजूद न था, मगर रूह के ऐ'तिबार से हाज़िर होकर गोया बहालत'-ए-मौजूदगी ऐसा करने वाले पर ये हुक्म दे चुका हूँ।

⁴कि जब तुम और मेरी रूह हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह की कुदरत के साथ जमा हो तो ऐसा शख्स हमारे खुदावन्द 'ईसा' के नाम से।⁵जिस्म की हलाकत के लिए शैतान के हवाले किया जाए ताकि उस की रूह खुदावन्द ईसा' के दिन नजात पाए।

⁶तुम्हारा फ़ख़ करना खूब नहीं क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर सारे गुंधे हुए आटे को खमीर कर देता है।⁷पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को पाक कर लो ताकि ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाओ चुनौचे तुम बे खमीर हो क्योंकि हमारा भी फ़सह या'नी मसीह कुर्बान हुआ।⁸पस आओ हम ईद करें न पुराने खमीर से और न बदी और शरारत के खमीर से, बल्कि साफ़ दिली और सच्चाई की बे खमीर रोटी से।

⁹मैंने अपने खत में तुम को ये लिखा था कि हरामकारों से सुहबत न रखना।¹⁰ये तो नहीं कि बिल्कुल दुनिया के हरामकारों या लालचियों या ज़ालिमों या बुतपरस्तों से मिलना ही नहीं; क्योंकि इस सूरत में तो तुम को दुनिया ही से निकल जाना पड़ता।

¹¹यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो ग़ैर क्रौमों में भी नहीं होती: चुनौचे तुम में से एक शख्स अपने बाप की बीवी को रखता है। लेकिन मैंने तुम को दरहक़ीक़त ये लिखा था कि अगर कोई भाई कहलाकर हरामकार या लालची या बुतपरस्त या गाली देने वाला शराबी या ज़ालिम हो तो उस से सुहबत न रखो; बल्कि ऐसे के साथ खाना तक न खाना।¹²क्योंकि मुझे कलीसिया के बाहर वालों पर हुक्म करने से क्या वास्ता? क्या ऐसा नहीं है कि तुम तो कलीसिया के अन्दर वालों पर हुक्म करते हो।¹³मगर बाहर वालों पर खुदा हुक्म करता है, पस उस शरीर आदमी को अपने दर्मियान से निकाल दो।

Chapter 6

¹क्या तुम में से किसी को ये जुर'अत है कि जब दूसरे के साथ मुकद्दमा हो तो फ़ैसले के लिए बेदीन आदिलों के पास जाए; और मुकद्दसों के पास न जाए।²क्या तुम नहीं जानते कि मुकद्दस लोग दुनिया का इंसान करेंगे? पस जब तुम को दुनिया का इंसान करना है तो क्या छोटे से छोटे झगड़ों के भी फ़ैसले करने के लायक नहीं हो? ³क्या तुम नहीं जानते कि हम फ़रिशतो का इंसान करेंगे? तो क्या हम दुनियावी मु'आमिले के फ़ैसले न करें?

⁴पस अगर तुम में दुनियावी मुकद्दमे हों तो क्या उन को मुंसिफ़ मुकर्रर करोगे जो कलीसिया में हक़ीर समझे जाते हैं।⁵मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये कहता हूँ: क्या वाक़'ई तुम में एक भी समझदार नहीं मिलता जो अपने भाइयों का फ़ैसला कर सके।⁶बल्कि भाई भाइयों में मुकद्दमा होता है और वो भी बेदीनों के आगे!

⁷लेकिन दर'असल तुम में बड़ा नुक्स ये है कि आपस में मुकद्दमा बाज़ी करते हो; जुल्म उठाना क्यूँ नहीं बेहतर जानते? अपना नुक्सान क्यूँ नहीं कुबूल करते?

⁸बल्कि तुम ही जुल्म करते और नुक्सान पहुँचाते हो और वो भी भाइयों को।

⁹क्या तुम नहीं जानते कि बदकार खुदा की बादशाही के वारिस न होंगे धोखा न खाओ न हरामकार खुदा की बादशाही के वारिस होंगे न बुतपरस्त, न ज़िनाकार, न अय्याश, न लौंडे बाज़,¹⁰न चोर, न लालची, न शराबी, न गालियाँ बकनेवाले, न ज़ालिम,¹¹और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी, 'मगर तुम खुदावन्द ईसा मसीह के नाम से और हमारे खुदा के रूह से धुल गए और पाक हुए और रास्तबाज़ भी ठहरे।

¹²सब चीज़ें मेरे लिए जायज़ तो हैं मगर सब चीज़ें मुफ़ीद नहीं; सब चीज़ें मेरे लिए जायज़ तो हैं; लेकिन मैं किसी चीज़ का पाबन्द न हूँगा।¹³खाना पेट के लिए हैं और पेट खाने के लिए लेकिन खुदा उसको और इनको नेस्त करेगा मगर बदन हरामकारी के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द के लिए है और खुदावन्द बदन के लिए।

¹⁴और खुदा ने खुदावन्द को भी जिलाया और हम को भी अपनी कुदरत से जिलाएगा।¹⁵क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बदन मसीह के आ'ज़ा है? पस क्या मैं मसीह के आ'ज़ा लेकर कस्बी के आ'ज़ा बनाऊँ हरगिज़ नहीं।

¹⁶क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई कस्बी से सुहबत करता है वो उसके साथ एक तन होता है? क्यूँकि वो फ़रमाता है, "वो दोनों एक तन होंगे।"¹⁷और जो खुदावन्द की सुहबत में रहता है वो उसके साथ एक रूह होता है।

¹⁸हरामकारी से भागो जितने गुनाह आदमी करता है वो बदन से बाहर हैं; मगर हरामकार अपने बदन का भी गुनाहगार है।

¹⁹क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा बदन रूह- उल - कुदूस का मक़दिस है जो तुम में बसा हुआ है और तुम को खुदा की तरफ़ से मिला है? और तुम अपने नहीं।

²⁰क्यूँकि क़ीमत से खरीदे गए हो; पस अपने बदन से खुदा का जलाल ज़ाहिर करो।

Chapter 7

¹जो बातें तुम ने लिखी थीं उनकी वजह ये हैं मर्द के लिए अच्छा है कि औरत को न छुए।²लेकिन हरामकारी के अन्देश से हर मर्द अपनी बीवी और हर औरत अपना शौहर रखे।

³शौहर बीवी का हक़ अदा करे और वैसे ही बीवी शौहर का।⁴बीवी अपने बदन की मुख्तार नहीं बल्कि शौहर है इसी तरह शौहर भी अपने बदन का मुख्तार नहीं बल्कि बीवी।

⁵तुम एक दूसरे से जुदा न रहो मगर थोड़ी मुद्दत तक आपस की रज़ामन्दी से, ताकि दुआ के लिए वक़्त मिले और फिर इकट्ठे हो जाओ ऐसा न हो कि ग़ल्बा-ए-नफ़्स की वजह से शैतान तुम को आज़माए।⁶लेकिन मैं ये इजाज़त के तौर पर कहता हूँ हुक्म के तौर पर नहीं।⁷और मैं तो ये चाहता हूँ कि जैसा मैं हूँ वैसे ही सब आदमी हों लेकिन हर एक को खुदा की तरफ़ से ख़ास तौफ़ीक़ मिली है किसी को किसी तरह की किसी को किसी तरह की।

⁸पस मैं बे'ब्याहों और बेवाओं के हक़ में ये कहता हूँ कि उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है जैसा मैं हूँ।⁹लेकिन अगर सब्र न कर सकें तो शादी कर लें; क्योंकि शादी करना मस्त होने से बेहतर है।

¹⁰मगर जिनकी शादी हो गई है उनको मैं नहीं बल्कि खुदावन्द हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से जुदा न हो।¹¹(और अगर जुदा हो तो बे'निकाह रहे या अपने शौहर से फिर मिलाप कर ले) न शौहर बीवी को छोड़े।

¹²बाक़ियों से मैं ही कहता हूँ न खुदावन्द कि अगर किसी भाई की बीवी बा'ईमान न हो और उस के साथ रहने को राज़ी हो तो वो उस को न छोड़े।¹³और जिस 'औरत का शौहर बा'ईमान न हो और उसके साथ रहने को राज़ी हो तो वो शौहर को न छोड़े।¹⁴क्योंकि जो शौहर बा'ईमान नहीं वो बीवी की वजह से पाक ठहरता है; और जो बीवी बा'ईमान नहीं वो मसीह शौहर के ज़रिये पाक ठहरती है वरना तुम्हारे बेटे नापाक होते मगर अब पाक हैं।

¹⁵लेकिन मर्द जो बा'ईमान न हो अगर वो जुदा हो तो जुदा होने दो ऐसी हालत में कोई भाई या बहन पाबन्द नहीं और खुदा ने हम को मेल मिलाप के लिए बुलाया है।¹⁶क्योंकि ऐ 'औरत तुझे क्या ख़बर है कि शायद तू अपने शौहर को बचा ले? और ऐ मर्द तुझे क्या ख़बर है कि शायद तू अपनी बीवी को बचा ले।

¹⁷मगर जैसा खुदावन्द ने हर एक को हिस्सा दिया है और जिस तरह खुदा ने हर एक को बुलाया है उसी तरह वो चले; और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही मुक़र्रर करता हूँ।¹⁸जो मख़्तून बुलाया गया वो नामख़्तून न हो जाए जो नामख़्तूनी की हालत में बुलाया गया वो मख़्तून न हो जाए।¹⁹न खतना कोई चीज़ है नामख़्तूनी बल्कि खुदा के हुक्मों पर चलना ही सब कुछ है।

²⁰हर शख्स जिस हालत में बुलाया गया हो उसी में रहे।²¹अगर तू गुलामी की हालत में बुलाया गया तो फ़िक्र न कर लेकिन अगर तू आज़ाद हो सके तो इसी को इख़्तियार कर।²²क्योंकि जो शख्स गुलामी की हालत में खुदावन्द में बुलाया गया है वो खुदावन्द का आज़ाद किया हुआ है; इसी तरह जो आज़ादी की हालत में बुलाया गया है वो मसीह का गुलाम है।²³तुम मसीह के ज़रिए ख़ास क़ीमत से ख़रीदे गए हो आदमियों के गुलाम न बनो।²⁴ऐ भाइयो! जो कोई जिस हालत में बुलाया गया हो वो उसी हालत में खुदा के साथ रहे।

²⁵कुँवारियों के हक़ में मेरे पास खुदावन्द का कोई हुक्म नहीं लेकिन दियानतदार होने के लिए जैसा खुदावन्द की तरफ़ से मुझ पर रहम हुआ उसके मुवाफ़िक़ अपनी राय देता हूँ।²⁶पस मौजूदह मुसीबत के खयाल से मेरी राय में आदमी के लिए यही बेहतर है कि जैसा है वैसा ही रहे।

²⁷अगर तेरी बीवी है तो उस से जुदा होने की कोशीश न कर और अगर तेरी बीवी नहीं तो बीवी की तलाश न कर।²⁸लेकिन तू शादी करे भी तो गुनाह नहीं और अगर कुँवारी ब्याही जाए तो गुनाह नहीं मगर ऐसे लोग जिस्मानी तकलीफ़ पाएँगे, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।

²⁹मगर ऐ भाइयो! मैं ये कहता हूँ कि वक़्त तंग है पस आगे को चाहिए कि बीवी वाले ऐसे हों कि गोया उनकी बीवियाँ नहीं।³⁰और रोने वाले ऐसे हों गोया नहीं रोते; और खुशी करने वाले ऐसे हों गोया खुशी नहीं करते; और ख़रीदने वाले ऐसे हों गोया माल नहीं रखते।³¹और दुनियावी कारोबार करनेवाले ऐसे हों कि दुनिया ही के न हो जाएँ; क्योंकि दुनिया की शक्ल बदलती जाती है।

³²पस मैं ये चाहता हूँ कि तुम बेफ़िक्र रहो, बे ब्याहा शख्स खुदावन्द की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह खुदावन्द को राज़ी करे।³³मगर शादी हुआ शख्स दुनिया की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को राज़ी करे।³⁴शादी और बेशादी में भी फ़र्क़ है बे शादी खुदावन्द की फ़िक्र में रहती है ताकि उसका जिस्म और रूह दोनों पाक हों मगर ब्याही हुई औरत दुनिया की फ़िक्र में रहती है कि किस तरह अपने शौहर को राज़ी करे।

³⁵ये तुम्हारे फ़ाइदे के लिए कहता हूँ न कि तुम्हें फ़सॉने के लिए; बल्कि इसलिए कि जो ज़ेबा है वही अमल में आए और तुम खुदावन्द की ख़िदमत में बिना शक़ किये मशगूल रहो।

³⁶अगर कोई ये समझे कि मैं अपनी उस कुँवारी लड़की की हक़तल्फ़ी करता हूँ जिसकी जवानी ढल चली है और ज़रूरत भी मा'लूम हो तो इख़्तियार है इस में गुनाह नहीं वो उसकी शादी होने दे।³⁷मगर जो अपने दिल में पुख़्ता हो और इस की कुछ ज़रूरत न हो बल्कि अपने इरादे के अंजाम देने पर क़ादिर हो और दिल में अहद कर लिया हो कि मैं अपनी लड़की को बेनिकाह रखूँगा वो अच्छा करता है।³⁸पस जो अपनी कुँवारी लड़की को शादी कर देता है वो अच्छा करता है और जो नहीं करता वो और भी अच्छा करता है।

³⁹जब तक कि 'औरत का शौहर जीता है वो उस की पाबन्द है पर जब उसका शौहर मर जाए तो जिससे चाहे शादी कर सकती है मगर सिर्फ़ खुदावन्द में।

⁴⁰लेकिन जैसी है अगर वैसी ही रहे तो मेरी राय में ज़्यादा खुश नसीब है और मैं समझता हूँ कि खुदा का रूह मुझ में भी है।

Chapter 8

¹अब बुतों की कुर्बानियों के बारे में ये है हम जानते हैं कि हम सब इल्म रखते हैं इल्म गुरूर पैदा करता है लेकिन मुहब्बत तरक्की का ज़रिया है।²अगर कोई गुमान करे कि मैं कुछ जानता हूँ तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता।³लेकिन जो कोई खुदा से मुहब्बत रखता है उस को खुदा पहचानता है।

⁴पस बुतों की कुर्बानियों के गोश्त खाने के ज़रिए हम जानते हैं कि बुत दुनिया में कोई चीज़ नहीं और सिवा एक के और कोई खुदा नहीं।⁵अगरचे आसमान-ओ-ज़मीन में बहुत से खुदा कहलाते हैं चुनाँचे बहुत से खुदा और बहुत से खुदावन्द हैं।⁶लेकिन हमारे नज़दीक तो एक ही खुदा है या'नी बाप जिसकी तरफ़ से सब चीज़ें हैं और हम उसी के लिए हैं और एक ही खुदावन्द है या'नी 'ईसा' मसीह जिसके वसीले से सब चीज़ें मौजूद हुई और हम भी उसी के वसीले से हैं।

⁷लेकिन सब को ये इल्म नहीं बल्कि कुछ को अब तक बुतपरस्ती की आदत है इसलिए उस गोश्त को बुत की कुर्बानी जान कर खाते हैं और उसका दिल, चूँकि कमज़ोर है, गन्दा हो जाता है।

⁸खाना हमें खुदा से नहीं मिलाएगा; अगर न खाएँ तो हमारा कुछ नुक्सान नहीं और अगर खाएँ तो कुछ फ़ायदा नहीं।⁹लेकिन होशियार रहो ऐसा न हो कि तुम्हारी आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का ज़रिया हो जाए।¹⁰क्योंकि अगर कोई तुझ साहिब'ए इल्म को बुत खाने में खाना खाते देखे और वो कमज़ोर शख्स हो तो क्या उस का दिल बुतों की कुर्बानी खाने पर मज़बूत न हो जाएगा?

¹¹गरज़ तेरे इल्म की वजह से वो कमज़ोर शख्स या'नी वो भाई जिसकी खातिर मसीह मरा, हलाक हो जाएगा।¹²और तुम इस तरह भाइयों के गुनाहगार होकर और उनके कमज़ोर दिल को घायल करके मसीह के गुनाहगार ठहरते हो।¹³इस वजह से अगर खाना मेरे भाई को ठोकर खिलाए तो मैं कभी हरगिज़ गोश्त न खाऊँगा, ताकि अपने भाई के लिए ठोकर की वजह न बनूँ।

Chapter 9

¹क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं रसूल नहीं? क्या मैंने 'ईसा' को नहीं देखा जो हमारा खुदावन्द है? क्या तुम खुदावन्द में मेरे बनाए हुए नहीं? ²अगर मैं औरों के लिए रसूल नहीं तो तुम्हारे लिए बे'शक हूँ क्योंकि तुम खुदावन्द में मेरी रिसालत पर मुहर हो।

³जो मेरा इम्तिहान करते हैं उनके लिए मेरा यही जवाब है। ⁴क्या हमें खाने पीने का इख्तियार नहीं? ⁵क्या हम को ये इख्तियार नहीं कि किसी मसीह बहन को शादी कर के लिए फिरे, जैसा और रसूल और खुदावन्द के भाई और कैफ़ा करते हैं। ⁶या सिर्फ़ मुझे और बरनाबास को ही मेहनत मशक्कत से बाज़ रहने का इख्तियार नहीं।

⁷कौन सा सिपाही कभी अपनी गिरह से खाकर जंग करता है? कौन बाग़ लगाकर उसका फल नहीं खाता या कौन भेड़ों को चरा कर उन भेड़ों का दूध नहीं पीता? ⁸क्या मैं ये बातें इंसानी अंदाज ही के मुताबिक़ कहता हूँ? क्या तौरेत भी यही नहीं कहती?

⁹चुनोंचे मूसा की तौरेत में लिखा है "दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना" क्या खुदा को बैलों की फ़िक्र है? ¹⁰या खास हमारे वास्ते ये फ़रमाता है हाँ ये हमारे वास्ते लिखा गया क्योंकि मुनासिब है कि जोतने वाला उम्मीद पर जोते और दाएँ चलाने वाला हिस्सा पाने की उम्मीद पर दाएँ चलाए। ¹¹पस जब हम ने तुम्हारे लिए रूहानी चीज़ें बोईं तो क्या ये कोई बड़ी बात है कि हम तुम्हारी जिस्मानी चीज़ों की फ़सल काटें।

¹²जब औरों का तुम पर ये इख्तियार है, तो क्या हमारा इस से ज़्यादा न होगा? लेकिन हम ने इस इख्तियार से काम नहीं किया; बल्कि हर चीज़ की बर्दाश्त करते हैं, ताकि हमारी वजह मसीह की खुशख़बरी में हर्ज न हो। ¹³क्या तुम नहीं जानते कि जो मुक़द्दस चीज़ों की ख़िदमत करते हैं वो हैकल से खाते हैं? और जो कुर्बानगाह के ख़िदमत गुज़ार हैं वो कुर्बानगाह के साथ हिस्सा पाते हैं? ¹⁴इस तरह खुदावन्द ने भी मुकर्रर किया है कि खुशख़बरी सुनाने खुशख़बरी वाले के वसीले से गुज़ारा करें।

¹⁵लेकिन मैंने इन में से किसी बात पर अमल नहीं किया और न इस गरज़ से ये लिखा कि मेरे वास्ते ऐसा किया जाए; क्योंकि मेरा मरना ही इस से बेहतर है कि कोई मेरा फ़ख़्र खो दे। ¹⁶अगर खुशख़बरी सुनाऊँ तो मेरा कुछ फ़ख़्र नहीं क्योंकि ये तो मेरे लिए ज़रूरी बात है बल्कि मुझ पर अफ़सोस है अगर खुशख़बरी न सुनाऊँ।

¹⁷क्योंकि अगर अपनी मर्ज़ी से ये करता हूँ तो मेरे लिए अज़्र है और अगर अपनी मर्ज़ी से नहीं करता तो मुख्तारी मेरे सुपुर्द हुई है। ¹⁸पस मुझे क्या अज़्र मिलता है? ये कि जब इंजील का ऐलान करूँ तो खुशख़बरी को मुफ़्त कर दूँ ताकि जो इख्तियार मुझे खुशख़बरी के बारे में हासिल है उसके मुवाफ़िक़ पूरा अमल न करूँ।

¹⁹अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका गुलाम बना दिया है ताकि और भी ज़्यादा लोगों को खींच लाऊँ। ²⁰मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना, ताकि यहूदियों को खींच लाऊँ, जो लोग शरी'अत के मातहत हैं उन के लिए मैं शरी'अत के मातहत हुआ; ताकि शरी'अत के मातहतों को खींच लाऊँ अगरचे खुद शरी'अत के मातहत न था।

²¹बेशरा लोगों के लिए बेशरा' बना ताकि बेशरा' लोगों को खींच लाऊँ; (अगरचे खुदा के नज़दीक बेशरा' न था; बल्कि मसीह की शरी'अत के ताबे था)।

²²कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना, ताकि कमज़ोरों को खींच लाऊँ; मैं सब आदमियों के लिए सब कुछ बना हुआ हूँ; ताकि किसी तरह से कुछ को बचाऊँ। ²³मैं सब कुछ इन्जील की खातिर करता हूँ, ताकि औरों के साथ उस में शरीक होऊँ।

²⁴क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ने वाले दौड़ते तो सभी हैं मगर इन'आम एक ही ले जाता है? तुम भी ऐसा ही दौड़ो ताकि जीतो। ²⁵हर पहलवान सब तरह का परहेज़ करता है वो लोग तो मुरझाने वाला सेहरा पाने के लिए ये करते हैं मगर हम उस सेहरे के लिए ये करते हैं जो नहीं मुरझाता। ²⁶पस मैं भी इसी तरह दौड़ता हूँ या'नी बेठिकाना नहीं; मैं इसी तरह मुक्कों से लड़ता हूँ; यानी उस की तरह नहीं जो हवा को मारते हैं। ²⁷बल्कि मैं अपने बदन को मारता कूटता और उसे क़ाबू में रखता हूँ; ऐसा न हो कि औरों में ऐलान कर के आप ना मक़बूल ठहरूँ।

Chapter 10

¹ऐ भाइयों! मैं तुम्हारा इस से नावाकिफ़ रहना नहीं चाहता कि हमारे सब बाप दादा बादल के नीचे थे; और सब के सब लाल समुन्दर में से गुज़रे।²और सब ही ने उस बादल और समुन्दर में मूसा का बपतिस्मा लिया।³और सब ने एक ही रूहानी खुराक खाई।⁴और सब ने एक ही रूहानी पानी पिया क्योंकि वो उस रूहानी चट्टान में से पानी पीते थे जो उन के साथ साथ चलती थी और वो चट्टान मसीह था।

⁵मगर उन में अक्सरों से खुदा राज़ी न हुआ चुनाँचे वो वीराने में ढेर हो गए।⁶ये बातें हमारे लिए इबरत ठहरीं, ताकि हम बुरी चीज़ों की ख्वाहिश न करें, जैसे उन्होंने ने की।

⁷और तुम बुतपरस्त न बनो जिस तरह कुछ उनमें से बन गए थे।⁸चुनाँचे लिखा है।लोग खाने पीने को बैठे फिर नाचने कूदने को उठे।⁹और हम हरामकारी न करें जिस तरह उनमें से कुछ ने की, और एक ही दिन में तेईस हज़ार मर गए।

⁹और हम खुदा वन्द की आज़माइश न करें जैसे उन में से कुछ ने की और साँपों ने उन्हें हलाक किया।¹⁰और तुम बड़बड़ाओ नहीं जिस तरह उन में से कुछ बड़बड़ाए और हलाक करने वाले से हलाक हुए।

¹¹ये बातें उन पर 'इबरत के लिए वाक़े' हुई और हम आखरी ज़माने वालों की नसीहत के वास्ते लिखी गई।¹²पस जो कोई अपने आप को क़ायम समझता है, वो खबरदार रहे के गिर न पड़े।¹³तुम किसी ऐसी आज़माइश में न पड़े जो इंसान की आज़माइश से बाहर हो खुदा सच्चा है वो तुम को तुम्हारी ताक़त से ज्यादा आज़माइश में पड़ने न देगा, बल्कि आज़माइश के साथ निकलने की राह भी पैदा कर देगा, ताकि तुम बर्दाश्त कर सको।

¹⁴इस वजह से ऐ मेरे प्यारो! बुतपरस्ती से भागो।¹⁵मैं अक्लमन्द जानकर तुम से कलाम करता हूँ, जो मैं कहता हूँ, तुम आप उसे परखो।¹⁶वो बरकत का प्याला जिस पर हम बरकत चाहते हैं क्या मसीह के खून की शराकत नहीं? वो रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या मसीह के बदन की शराकत नहीं?।¹⁷चूँकि रोटी एक ही है इस लिए हम जो बहुत से हैं एक बदन हैं क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में शरीक होते हैं।

¹⁸जो जिस्म के ऐ'तिबार से इसाइली हैं उन पर नज़र करो क्या कुर्बानी का गोश्त खानेवाले कुर्बानगाह के शरीक नहीं?।¹⁹पस मैं क्या ये कहता हूँ कि बुतों की कुर्बानी कुछ चीज़ है या बुत कुछ चीज़ है?।

²⁰नहीं बल्कि मैं ये कहता हूँ कि जो कुर्बानी ग़ैर क़ौमों करती हैं शयातीन के लिए कुर्बानी करती हैं; न कि खुदा के लिए, और मैं नहीं चाहता कि तुम शयातीन के शरीक हो।²¹तुम खुदावन्द के प्याले और शयातीन के प्याले दोनों में से नहीं पी सकते; खुदावन्द के दस्तरख़वान और शयातीन के दस्तरख़वान दोनों पर शरीक नहीं हो सकते।²²क्या हम खुदावन्द की ग़ैरत को जोश दिलाते हैं? क्या हम उस से ताक़तवर हैं?

²³सब चीज़ें जाएज़ तो हैं, मगर सब चीज़ें मुफ़ीद नहीं; जाएज़ तो हैं मगर तरक्की का ज़रिया नहीं।²⁴कोई अपनी बेहतरी न ढूँडे बल्कि दूसरे की।

²⁵जो कुछ क्रस्साबों की दुकानों में बिकता है वो खाओ और दीनी इम्तियाज़ की वजह से कुछ न पूछो।²⁶क्योंकि ज़मीन और उसकी मा'मूरी खुदावन्द की है।

²⁷अगर बे'ईमानों में से कोई तुम्हारी दा'वत करे और तुम जाने पर राज़ी हो तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखवा जाए उसे खाओ और दीनी इम्तियाज़ की वजह से कुछ न पूछो।

²⁸लेकिन अगर कोई तुम से कहे; ये कुर्बानी का गोश्त है, तो उस की वजह से न खाओ।²⁹दीनी इम्तियाज़ से मेरा मतलब तेरा इम्तियाज़ नहीं बल्कि उस दूसरे का; भला मेरी आज़ादी दूसरे शख्स के इम्तियाज़ से क्यों परखी जाए?।³⁰अगर मैं शुक्र कर के खाता हूँ तो जिस चीज़ पर शुक्र करता हूँ उसकी वजह से किस लिए बदनाम किया जाता हूँ?।

³¹पस तुम खाओ या पियो जो कुछ करो खुदा के जलाल के लिए करो।³²तुम न यहूदियों के लिए ठोकर का ज़रिया बनो; न यूनानियों के लिए, न खुदा की कलीसिया के लिए।³³चुनाँचे मैं भी सब बातों में सब को खुश करता हूँ और अपना नहीं बल्कि बहुतों का फ़ाइदा ढूँडता हूँ, ताकि वो नजात पाएँ।

Chapter 11

¹तुम मेरी तरह बनो जैसा मैं मसीह की तरह बनता हूँ।²मैं तुम्हारी ता'रीफ़ करता हूँ कि तुम हर बात में मुझे याद रखते हो और जिस तरह मैंने तुम्हें रिवायतें पहुँचा दीं, उसी तरह उन को बरकरार रखो।³पस मैं तुम्हें खबर करना चाहता हूँ कि हर मर्द का सिर मसीह और 'औरत का सिर मर्द और मसीह का सिर खुदा है।' जो मर्द सिर ढके हुए दुआ या नबुव्वत करता है वो अपने सिर को बेहुरमत करता है।

⁵और जो 'औरत बे सिर ढके हुए दुआ या नबुव्वत करती है वो अपने सिर को बेहुरमत करती है; क्योंकि वो सिर मुंडी के बराबर है।⁶अगर 'औरत ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटाए; अगर 'औरत का बाल कटाना या सिर मुंडाना शर्म की बात है तो ओढ़नी ओढ़े।

⁷अलबत्ता मर्द को अपना सिर ढाँकना न चाहिए क्योंकि वो खुदा की सूरत और उसका जलाल है, मगर 'औरत मर्द का जलाल है।⁸इसलिए कि मर्द 'औरत से नहीं बल्कि 'औरत मर्द से है।

⁹और मर्द 'औरत के लिए नहीं बल्कि 'औरत मर्द के लिए पैदा हुई है।¹⁰पस फ़रिशतों की वजह से 'औरत को चाहिए कि अपने सिर पर महकूम होने की अलामत रखे।

¹¹तोभी खुदावन्द में न 'औरत मर्द के बग़ैर है न मर्द 'औरत के बग़ैर।¹²क्योंकि जैसे 'औरत मर्द से है वैसे ही मर्द भी 'औरत के वसीले से है मगर सब चीज़ें खुदा की तरफ़ से हैं।

¹³तुम आप ही इंसान करो; क्या 'औरत का बे सिर ढाँके खुदा से दुआ करना मुनासिब है।¹⁴क्या तुम को तब'ई तौर पर भी मा'लूम नहीं कि अगर मर्द लम्बे बाल रखे तो उस की बेहुरमती है।¹⁵अगर 'औरत के लम्बे बाल हों तो उसकी ज़ीनत है, क्योंकि बाल उसे पर्दे के लिए दिए गए हैं।¹⁶लेकिन अगर कोई हुज्जती निकले तो ये जान ले कि न हमारा ऐसा दस्तूर है न खुदावन्द की कलीसियाओं का।

¹⁷लेकिन ये हुक्म जो देता हूँ उस में तुम्हारी ता'रीफ़ नहीं करता इसलिए कि तुम्हारे जमा होने से फ़ाइदा नहीं, बल्कि नुक़सान होता है।¹⁸क्योंकि अव्वल तो मैं ये सुनता हूँ कि जिस वक़्त तुम्हारी कलीसिया जमा होती है तो तुम में तफ़्क़े होते हैं और मैं इसका किसी क्रदर यक़ीन भी करता हूँ।¹⁹क्योंकि तुम में बिद'अतों का भी होना ज़रूरी है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि तुम में मक़बूल कौन से हैं।

²⁰पस तुम सब एक साथ जमा होते हो तो तुम्हारा वो खाना अशा'ए -रब्बानी नहीं हो सकता।²¹क्योंकि खाने के वक़्त हर शख्स दूसरे से पहले अपना हिस्सा खा लेता है और कोई तो भूका रहता है और किसी को नशा हो जाता है।²²क्यूँ? खाने पीने के लिए तुम्हारे पास घर नहीं? या खुदा की कलीसिया को ना चीज़ जानते और जिनके पास नहीं उन को शर्मिन्दा करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी ता'रीफ़ करूँ? मैं ता'रीफ़ नहीं करता।

²³क्योंकि ये बात मुझे खुदावन्द से पहुँची और मैंने तुमको भी पहुँचा दी कि खुदावन्द ईसा' ने जिस रात वो पकड़वाया गया रोटी ली।²⁴और शुक्र करके तोड़ी और कहा; लो खाओ ये मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है; मेरी यादगारी के वास्ते यही किया करो।

²⁵इसी तरह उस ने खाने के बा'द प्याला भी लिया और कहा, ये प्याला मेरे खून में नया अहद है जब कभी पियो मेरी यादगारी के लिए यही किया करो।²⁶क्योंकि जब कभी तुम ये रोटी खाते और इस प्याले में से पीते हो तो खुदावन्द की मौत का इज़हार करते हो; जब तक वो न आए।

²⁷इस वास्ते जो कोई नामुनासिब तौर पर खुदावन्द की रोटी खाए या उसके प्याले में से पिए; वो खुदा वन्द के बदन और खून के बारे में कुसूरवार होगा।²⁸पस आदमी अपने आप को आज़मा ले और इसी तरह उस रोटी में से खाए और उस प्याले में से पिए।²⁹क्योंकि जो खाते पीते वक़्त खुदा वन्द के बदन को न पहचाने वो इस खाने पीने से सज़ा पाएगा।³⁰इसी वजह से तुम में बहुत सारे कमज़ोर और बीमार हैं और बहुत से सो भी गए।

³¹अगर हम अपने आप को जाँचते तो सज़ा न पाते।³²लेकिन खुदा हमको सज़ा देकर तरबियत करता है, ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

³³पस ऐ मेरे भाइयों! जब तुम खाने को जमा हो तो एक दूसरे की राह देखो।³⁴अगर कोई भूखा हो तो अपने घर में खाले, ताकि तुम्हारा जमा होना सज़ा का ज़रिया न हो; बाक़ी बातों को मैं आकर दुरुस्त कर दूंगा।

Chapter 12

¹ऐ भाइयों! मैं नहीं चाहता कि तुम पाक रूह की ने'मतों के बारे में बेखबर रहो।²तुम जानते हो कि जब तुम ग़ैर क़ौम थे, तो ग़ुँगे बुतों के पीछे जिस तरह कोई तुम को ले जाता था; उसी तरह जाते थे।³पस मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो कोई खुदा के रूह की हिदायत से बोलता है; वो नहीं कहता कि ईसा मला'ऊन है; और न कोई रूह उल-कुहूस के बग़ैर कह सकता है कि ईसा' खुदावन्द है।

⁴नेअ'मतें तो तरह तरह की हैं मगर रूह एक ही है।⁵और खिदमतें तो तरह तरह की हैं मगर खुदावन्द एक ही है।⁶और तासीरें भी तरह तरह की हैं मगर खुदा एक ही है जो सब में हर तरह का असर पैदा करता है।

⁷लेकिन हर शख्स में पाक रूह का ज़ाहिर होना फ़ाइदा पहुँचाने के लिए होता है।⁸क्यूँकि एक को रूह के वसीले से हिक्मत का कलाम इनायत होता है और दूसरे को उसी रूह की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ इल्मियत का कलाम।

⁹किसी को उसी रूह से ईमान और किसी को उसी रूह से शिफ़ा देने की तौफ़ीक़।¹⁰किसी को मोज़िज़ों की कुदरत, किसी को नबुव्वत, किसी को रूहों का इम्तियाज़, किसी को तरह तरह की ज़बानें, किसी को ज़बानों का तर्जुमा करना।¹¹लेकिन ये सब तासीरें वही एक रूह करता है; और जिस को जो चाहता है बाँटता है,

¹²क्यूँकि जिस तरह बदन एक है और उस के आ'ज़ा बहुत से हैं, और बदन के सब आ'ज़ा गरचे बहुत से हैं, मगर हमसब मिलकर एक ही बदन हैं; उसी तरह मसीह भी है।¹³क्यूँकि हम सब में चाहे यहूदी हों, चाहे यूनानी, चाहे गुलाम, चाहे आज़ाद, एक ही रूह के वसीले से एक बदन होने के लिए बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही रूह पिलाया गया।

¹⁴चुनौचे बदन में एक ही आ'ज़ा नहीं बल्कि बहुत से हैं।¹⁵अगर पाँव कहे चुँकि मैं हाथ नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं।

¹⁶और अगर कान कहे चुँकि मैं आँख नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं।¹⁷अगर सारा बदन आँख ही होता तो सुनना कहाँ होता? अगर सुनना ही सुनना होता तो सूँघना कहाँ होता?।

¹⁸मगर हकीक़त में खुदा ने हर एक 'उज़्व को बदन में अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ रखबा है।¹⁹अगर वो सब एक ही 'उज़्व होते तो बदन कहाँ होता?।²⁰मगर अब आ'ज़ा तो बहुत हैं लेकिन बदन एक ही है।

²¹पस आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मैं तेरी मोहताज नहीं," और न सिर पाँव से कह सकता है, "मैं तेरा मोहताज नहीं।"²²बल्कि बदन के वो आ'ज़ा जो औरों से कमज़ोर मा'लूम होते हैं बहुत ही ज़रूरी हैं।²³और बदन के वो आ'ज़ा जिन्हें हम औरों की तरह ज़लील जानते हैं उन्हीं को ज़्यादा इज़ज़त देते हैं और हमारे नाज़ेबा आ'ज़ा बहुत ज़ेबा हो जाते हैं।²⁴हालाँकि हमारे ज़ेबा आ'ज़ा मोहताज नहीं मगर खुदा ने बदन को इस तरह मुरक्कब किया है, कि जो 'उज़्व मोहताज है उसी को ज़्यादा 'इज़ज़त दी जाए।

²⁵ताकि बदन में जुदाई न पड़े, बल्कि आ'ज़ा एक दूसरे की बराबर फ़िक़र रखें।²⁶पस अगर एक 'उज़्व दुख पाता है तो सब आ'ज़ा उस के साथ दुख पाते हैं।

²⁷इसी तरह तुम मिल कर मसीह का बदन हो और फ़र्दन फ़र्दन आ'ज़ा हो।

²⁸और खुदा ने कलीसिया में अलग अलग शख्स मुकर्रर किए पहले रसूल दूसरे नबी तीसरे उस्ताद फिर मोज़िज़े दिखाने वाले फिर शिफ़ा देने वाले मददगार मुन्तज़िम तरह तरह की ज़बाने बोलने वाले।²⁹क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोज़िज़े दिखानेवाले हैं?

³⁰क्या सब को शिफ़ा देने की ताक़त हासिल हुई? क्या सब तरह की ज़बाने बोलते हैं? क्या सब तर्जुमा करते हैं?³¹तुम बड़ी से बड़ी ने'मत की आरज़ू रखो, लेकिन और भी सब से उम्दा तरीक़ा तुम्हें बताता हूँ।

Chapter 13

¹अगर मैं आदमियों और फ़रिश्तों की ज़बाने बोलूँ और मुहब्बत न रखूँ, तो मैं ठनठनाता पीतल या झनझनाती झाँझ हूँ।²और अगर मुझे नबूव्वत मिले और सब भेदों और कुल इल्म की वाक़फ़ियत हो और मेरा ईमान यहाँ तक कामिल हो कि पहाड़ों को हटा दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं।³और अगर अपना सारा माल ग़रीबों को खिला दूँ या अपना बदन जलाने को दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मुझे कुछ भी फ़ायदा नहीं।

⁴मुहब्बत साबिर है और मेहरबान, मुहब्बत हसद नहीं करती, मुहब्बत शेख़ी नहीं मारती और फूलती नहीं;⁵नाज़ेबा काम नहीं करती, अपनी बेहतरी नहीं चाहती, झुँझलाती नहीं, बदगुमानी नहीं करती;⁶बदकारी में खुश नहीं होती, बल्कि रास्ती से खुश होती है;⁷सब कुछ सह लेती है, सब कुछ यक़ीन करती है, सब बातों की उम्मीद रखती है, सब बातों में बर्दाशत करती है।

⁸मुहब्बत को ज़वाल नहीं, नबुव्वतें हों तो मौक़ूफ़ हो जाएँगी, ज़बानें हों तो जाती रहेंगी; इल्म हो तो मिट जायेंगे।⁹क्यूँकि हमारा इल्म नाक़िस है और हमारी नबुव्वत ना तमाम।¹⁰लेकिन जब कामिल आएगा तो नाक़िस जाता रहेगा।

¹¹जब मैं बच्चा था तो बच्चों की तरह बोलता था बच्चों की सी तबियत थी बच्चों सी समझ थी; लेकिन जब जवान हुआ तो बचपन की बातें तर्क कर दीं।¹²अब हम को आइने में धुँधला सा दिखाई देता है, मगर जब मसीह दुबारा आएगा तो उस वक़्त रू ब रू देखेंगे; इस वक़्त मेरा इल्म नाक़िस है, मगर उस वक़्त ऐसे पूरे तौर पर पहचानूँगा जैसे मैं पहचानता आया हूँ।¹³गरज़ ईमान, उम्मीद, मुहब्बत ये तीनों हमेशा हैं; मगर अफ़ज़ल इन में मुहब्बत है।

Chapter 14

¹मुहब्बत के तालिब हो और रूहानी ने 'मतों की भी आरजू रखो खुसूसन इसकी नबुव्वत करो।²क्यूँकि जो बेगाना ज़बान में बातें करता है वो आदमियों से बातें नहीं करता, बल्कि खुदा से; इस लिए कि उसकी कोई नहीं समझता, हालाँकि वो अपनी पाक रूह के वसीले से राज़ की बातें करता है।³लेकिन जो नबुव्वत करता है वो आदमियों से तरक्की और नसीहत और तसल्ली की बातें करता है।⁴जो बेगाना ज़बान में बातें करता है वो अपनी तरक्की करता है और जो नबुव्वत करता है वो कलीसिया की तरक्की करता है।

⁵अगरचे मैं ये चाहता हूँ कि तुम सब बेगाना ज़बान में बातें करो, लेकिन ज़्यादा तर यही चाहता हूँ कि नबुव्वत करो; और अगर बेगाना ज़बान बोलने वाला कलीसिया की तरक्की के लिए तर्जुमा न करे, तो नबुव्वत करने वाला उससे बड़ा है।⁶पस ऐ भाइयों! अगर मैं तुम्हारे पास आकर बेगाना ज़बानों में बातें करूँ और मुकाशिफ़ा या इल्म या नबुव्वत या ता'लीम की बातें तुम से न कहूँ; तो तुम को मुझ से क्या फ़ाइदा होगा?।

⁷चुनौचे बे'जान चीज़ों में से भी जिन से आवाज़ निकलती है, मसलन बांसुरी या बरबत अगर उनकी आवाज़ों में फ़र्क़ न हो तो जो फ़ूँका या बजाया जाता है वो क्यूँकर पहचाना जाए?⁸और अगर तुरही की आवाज़ साफ़ न हो तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा?⁹ऐसे ही तुम भी अगर ज़बान से कुछ बात न कहो तो जो कहा जाता है क्यूँकर समझा जाएगा? तुम हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।

¹⁰दुनिया में चाहे कितनी ही मुख्तलिफ़ ज़बानें हों उन में से कोई भी बे'मानी न होगी।¹¹पस अगर मैं किसी ज़बान के मा' ने ना समझूँ, तो बोलने वाले के नज़दीक मैं अजनबी ठहरूँगा और बोलने वाला मेरे नज़दीक अजनबी ठहरेगा।

¹²पस जब तुम रूहानी ने'मतों की आरजू रखते हो तो ऐसी कोशिश करो, कि तुम्हारी ने'मतों की अफ़ज़ूनी से कलीसिया की तरक्की हो।¹³इस वजह से जो बेगाना ज़बान से बातें करता है वो दुआ करे कि तर्जुमा भी कर सके।¹⁴इसलिए कि अगर मैं किसी बेगाना ज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक्ल बेकार है।

¹⁵पस क्या करना चाहिए? मैं रूह से भी दुआ करूँगा और अक्ल से भी दुआ करूँगा; रूह से भी गाऊँगा और अक्ल से भी गाऊँगा।¹⁶वरना अगर तू रूह ही से हम्द करेगा तो नावाक़िफ़ आदमी तेरी शुक्र गुज़ारी पर "आमीन" क्यूँकर कहेगा? इस लिए कि वो नहीं जानता कि तू क्या कहता है।

¹⁷तू तो बेशक अच्छी तरह से शुक्र करता है, मगर दूसरे की तरक्की नहीं होती।¹⁸मैं खुदा का शुक्र करता हूँ, कि तुम सब से ज़्यादा ज़बाने बोलता हूँ।¹⁹लेकिन कलीसिया में बेगाना ज़बान में दस हज़ार बातें करने से मुझे ये ज़्यादा पसन्द है, कि औरों की ता'लीम के लिए पाँच ही बातें अक्ल से कहूँ।

²⁰ऐ भाइयों! तुम समझ में बच्चे न बनो; बदी में बच्चे रहो, मगर समझ में जवान बनो।²¹पाक कलाम में लिखा है "खुदावन्द फ़रमाता है, "मैं बेगाना ज़बान और बेगाना होंटो से इस उम्मत से बातें करूँगा तोभी वो मेरी न सुनेंगे।"

²²पस बेगाना ज़बानें ईमानदारों के लिए नहीं बल्कि बे'ईमानों के लिए निशान हैं और नबुव्वत बे'ईमानों के लिए नहीं, बल्कि ईमानदारों के लिए निशान है।²³पस अगर सारी कलीसिया एक जगह जमा हो और सब के सब बेगाना ज़बानें बोलें और नावाक़िफ़ या बे'ईमान लोग अन्दर आ जाएँ, तो क्या वो तुम को दिवाना न कहेंगे।

²⁴लेकिन अगर जब नबुव्वत करें और कोई बे'ईमान या नावाक़िफ़ अन्दर आ जाए, तो सब उसे क़ायल कर देंगे और सब उसे परख लेंगे;²⁵और उसके दिल के राज़ ज़ाहिर हो जाएँगे; तब वो मुँह के बल गिर कर सज्दा करेगा, और इक़रार करेगा कि बेशक़ खुदा तुम में है।

²⁶पस ऐ भाइयों! क्या करना चाहिए? जब तुम जमा होते हो, तो हर एक के दिल में मज़मूर या ता'लीम या मुकाशिफ़ा, या बेगाना, ज़बान या तर्जुमा होता है; सब कुछ रूहानी तरक्की के लिए होना चाहिए।²⁷अगर बेगाना ज़बान में बातें करना हो तो दो दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन तीन शख्स बारी बारी से बोलें और एक शख्स तर्जुमा करे।²⁸और अगर कोई तर्जुमा करने वाला न हो तो बेगाना ज़बान बोलनेवाला कलीसिया में चुप रहे और अपने दिल से और खुदा से बातें करे।

²⁹नबियों में से दो या तीन बोलें और बाकी उनके कलाम को परखें।³⁰लेकिन अगर दूसरे पास बैठने वाले पर वही उतरे तो पहला ख़ामोश हो जाए।

³¹क्यूँकि तुम सब के सब एक एक करके नबुव्वत करते हो, ताकि सब सीखें और सब को नसीहत हो।³²और नबियों की रूहें नबियों के ताबे हैं।³³क्यूँकि खुदा अबतरी का नहीं, बल्कि सुकून का बानी है जैसा मुक़द्दसों की सब कलीसियायों में है।

³⁴औरतें कलीसिया के मज्में में ख़ामोश रहें, क्यूँकि उन्हें बोलने का हुक्म नहीं बल्कि ताबे रहें जैसा तौरत में भी लिखा है।³⁵और अगर कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने अपने शौहर से पूछें, क्यूँकि औरत का कलीसिया के मज्में में बोलना शर्म की बात है।³⁶क्या खुदा का कलाम तुम में से निकला या सिर्फ़ तुम ही तक पहुँचा है।

³⁷अगर कोई अपने आपको नबी या रूहानी समझे तो ये जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ वो खुदावन्द के हुक्म हैं।³⁸और अगर कोई न जाने तो न जानें।

³⁹पस ऐ भाइयों! नबुव्वत करने की आरजू रखो और ज़बानें बोलने से मना न करो।⁴⁰मगर सब बाते शाइस्तगी और क़रीने के साथ अमल में लाएँ।

Chapter 15

¹ऐ भाइयों! मैं तुम्हें वही खुशखबरी बताए देता हूँ जो पहले दे चुका हूँ जिसे तुम ने क़बूल भी कर लिया था और जिस पर क़ायम भी हो।²उसी के वसीले से तुम को नजात भी मिली है बशर्ते कि वो खुशखबरी जो मैंने तुम्हें दी थी याद रखते हो वरना तुम्हारा ईमान लाना बेफ़ाइदा हुआ।

³चुनाँचे मैंने सब से पहले तुम को वही बात पहुँचा दी जो मुझे पहुँची थी; कि मसीह किताब-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ हमारे गुनाहों के लिए मरा।⁴और दफ़न हुआ और तीसरे दिन किताब ऐ-मुक़द्दस के मुताबिक़ जी उठा।

⁵और कैफ़ा और उस के बा'द उन बारह को दिखाई दिया।⁶फिर पाँच सौ से ज्यादा भाइयों को एक साथ दिखाई दिया जिन में अक्सर अब तक मौजूद हैं और कुछ सो गए।⁷फिर या'क़ूब को दिखाई दिया फिर सब रसूलों को।

⁸और सब से पीछे मुझ को जो गोया अधूरे दिनों की पैदाइश हूँ दिखाई दिया।⁹क्योंकि मैं रसूलों में सब से छोटा हूँ, बल्कि रसूल कहलाने के लायक़ नहीं इसलिए कि मैंने खुदा की कलीसिया को सताया था।

¹⁰लेकिन जो कुछ हूँ खुदा के फ़ज़ल से हूँ और उसका फ़ज़ल जो मुझ पर हुआ वो बेफ़ाइदा नहीं हुआ बल्कि मैंने उन सब से ज्यादा मेहनत की और ये मेरी तरफ़ से नहीं हुई बल्कि खुदा के फ़ज़ल से जो मुझ पर था।¹¹पस चाहे मैं हूँ चाहे वो हों हम यही ऐलान करते हैं और इसी पर तुम ईमान भी लाए।

¹²पस जब मसीह की ये मनादी की जाती है कि वो मुर्दों में से जी उठा तो तुम में से कुछ इस तरह कहते हैं कि मुर्दों की क़यामत है ही नहीं।¹³अगर मुर्दों की क़यामत नहीं तो मसीह भी नहीं जी उठा है।¹⁴और अगर मसीह नहीं जी उठा तो हमारी मनादी भी बेफ़ाइदा है और तुम्हारा ईमान भी बेफ़ाइदा है।

¹⁵बल्कि हम खुदा के झूठे गवाह ठहरे क्योंकि हम ने खुदा के बारे में ये गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया हालाँकि नहीं जिलाया अगर बिलफ़र्ज़ मुर्दे नहीं जी उठते।¹⁶और अगर मुर्दे नहीं जी उठते तो मसीह भी नहीं जी उठा।¹⁷और अगर मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा ईमान बे'फ़ाइदा है तुम अब तक अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हो।

¹⁸बल्कि जो मसीह में सो गए हैं वो भी हलाक़ हुए।¹⁹अगर हम सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी में मसीह में उम्मीद रखते हैं तो सब आदमियों से ज़्यादा बदनसीब हैं।

²⁰लेकिन फ़िलवक़्त मसीह मुर्दों में से जी उठा है और जो सो गए हैं उन में पहला फल हुआ।²¹क्योंकि अब आदमी की वजह से मौत आई तो आदमी की वजह से मुर्दों की क़यामत भी आई।

²²और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसे ही मसीह में सब ज़िन्दा किए जाएँगे।²³लेकिन हर एक अपनी अपनी बारी से ; पहला फल मसीह फिर मसीह के आने पर उसके लोग।

²⁴इसके बा'द आख़िरत होगी; उस वक़्त वो सारी हुकूमत और सारा इख़्तियार और कुदरत नेस्त करके बादशाही को खुदा या'नी बाप के हवाले कर देगा।²⁵क्योंकि जब तक कि वो सब दुश्मनों को अपने पाँव तले न ले आए उस को बादशाही करना ज़रूरी है।²⁶सब से पिछला दुश्मन जो नेस्त किया जाएगा वो मौत है।

²⁷क्योंकि खुदा ने सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया है; मगर जब वो फ़रमाता है कि सब कुछ उसके ताबे' कर दिया गया तो ज़ाहिर है कि जिसने सब कुछ उसके ताबे कर दिया; वो अलग रहा।²⁸और जब सब कुछ उसके ताबे' कर दिया जाएगा तो बेटा खुद उसके ताबे' हो जाएगा जिसने सब चीज़ें उसके ताबे' कर दीं ताकि सब में खुदा ही सब कुछ है।

²⁹वरना जो लोग मुर्दों के लिए बपतिस्मा लेते हैं; वो क्या करेंगे? अगर मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यूँ उन के लिए बपतिस्मा लेते हो?।³⁰और हम क्यूँ हर वक़्त ख़तरे में पड़े रहते हैं?

³¹ऐ भाइयों! उस फ़ख़्र की क़सम जो हमारे ईसा' मसीह में तुम पर है मैं हर रोज़ मरता हूँ।³²जैसा कि कलाम में लिखा है कि अगर मैं इंसान की तरह इफ़्रिसुस में दरिन्दों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ाइदा? अगर मुर्दे न जिलाए जाएँगे "तो आओ खाएँ पीएँ क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।"

³³धोखा न खाओ "बुरी सोहबतें अच्छी आदतों को बिगाड़ देती हैं।"³⁴रास्तबाज़ होने के लिए होश में आओ और गुनाह न करो, क्योंकि कुछ खुदा से नावाक़िफ़ हैं; मैं तुम्हें शर्म दिलाने को ये कहता हूँ।

³⁵अब कोई ये कहेगा, "मुर्दे किस तरह जी उठते हैं? और कैसे जिस्म के साथ आते हैं?"³⁶ऐ, नादान! तू खुद जो कुछ बोता है जब तक वो न मरे ज़िन्दा नहीं किया जाता।

³⁷और जो तू बोता है, ये वो जिस्म नहीं जो पैदा होने वाला है बल्कि सिर्फ़ दाना है; चाहे गेहूँ का चाहे किसी और चीज़ का।³⁸मगर खुदा ने जैसा इरादा कर लिया वैसा ही उसको जिस्म देता है और हर एक बीज को उसका ख़ास जिस्म।³⁹सब गोश्त एक जैसा गोश्त नहीं; बल्कि आदमियों का गोश्त और है, चौपायों का गोश्त और; परिन्दों का गोश्त और है मछलियों का गोश्त और।

⁴⁰आसमानी भी जिस्म हैं, और ज़मीनी भी मगर आसमानियों का जलाल और है, और ज़मीनियों का और।⁴¹आफ़ताब का जलाल और है, माहाताब का जलाल और, सितारों का जलाल और, क्यूँकि सितारे सितारे के जलाल में फ़र्क़ है।

⁴²मुर्दों की क़यामत भी ऐसी ही है; जिस्म फ़ना की हालत में बोया जाता है, और हमेशा की हालत में जी उठता है।⁴³बेहुरमती की हालत में बोया जाता है, और जलाल की हालत में जी उठता है, कमज़ोरी की हालत में बोया जाता है और कुव्वत की हालत में जी उठता है।⁴⁴नफ़्सानी जिस्म बोया जाता है, और रूहानी जिस्म जी उठता है जब नफ़्सानी जिस्म है तो रूहानी जिस्म भी है।

⁴⁵चुनाँचे कलाम लिखा भी है, "पहला आदमी या'नी आदम ज़िन्दा नफ़्स बना पिछला आदम ज़िन्दगी बख़्शने वाली रूह बना।"⁴⁶लेकिन रूहानी पहले न था बल्कि नफ़्सानी था इसके बा'द रूहानी हुआ।

⁴⁷पहला आदमी ज़मीन से या'नी ख़ाकी था दूसरा आदमी आसमानी है।⁴⁸जैसा वो ख़ाकी था वैसे ही और ख़ाकी भी हैं और जैसा वो आसमानी है वैसे ही और आसमानी भी हैं।⁴⁹और जिस तरह हम इस ख़ाकी की सूरत पर हुए उसी तरह उस आसमानी की सूरत पर भी होंगे।

⁵⁰ऐ भाइयों! मेरा मतलब ये है कि गोश्त और ख़ून खुदा की बादशाही के वारिस नहीं हो सकते और न फ़ना बक़ा की वारिस हो सकती है।⁵¹देखो मैं तुम से राज़ की बात कहता हूँ हम सब तो नहीं सोएँगे मगर सब बदल जाएँगे।

⁵²और ये एक दम में, एक पल में पिछला नरसिंगा फूँकते ही होगा क्योंकि नरसिंगा फूँका जाएगा और मुर्दे ग़ैर फ़ानी हालत में उठेंगे और हम बदल जाएँगे।⁵³क्योंकि ज़रूरी है कि ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहने और ये मरने वाला जिस्म हमेशा की ज़िंदगी का जामा पहने।

⁵⁴जब ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहन चुकेगा और ये मरने वाला जिस्म हमेशा हमेशा का जामा पहन चुकेगा तो वो क़ौल पूरा होगा जो कलाम लिखा है “मौत फ़तह का लुक्मा हो जाएगी।⁵⁵ऐ मौत तेरी फ़तह कहाँ रही? ऐ मौत तेरा डंक कहाँ रहा?”

⁵⁶मौत का डंक गुनाह है और गुनाह का ज़ोर शरी'अत है।⁵⁷मगर खुदा का शुक्र है, जो हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के वसीले से हम को फ़तह बख़्शता है।

⁵⁸पस ऐ मेरे अज़ीज़ भाइयों! साबित क़दम और क़ायम रहो और खुदावन्द के काम में हमेशा बढ़ते रहो क्योंकि ये जानते हो कि तुम्हारी मेहनत खुदावन्द में बेफ़ाइदा नहीं है।

Chapter 16

¹अब उस चन्दे के बारे में जो मुकद्दसों के लिए किया जाता है; जैसा मैं ने गलतिया की कलीसियाओं को हुक्म दिया वैसे ही तुम भी करो।²हफ्ते के पहले दिन तुम में से हर शख्स अपनी आमदनी के मुवाफिक कुछ अपने पास रख छोड़ा करे ताकि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।

³और जब मैं आऊँगा तो जिन्हें तुम मंजूर करोगे उनको मैं खत देकर भेज दूँगा कि तुम्हारी ख़ैरात यरूशलीम को पहुँचा दें।⁴अगर मेरा भी जाना मुनासिब हुआ तो वो मेरे साथ जाएँगे।

⁵मैं मकिदूनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा; क्योंकि मुझे मकिदूनिया हो कर जाना तो है ही।⁶मगर रूहूंगा शायद तुम्हारे पास और जाड़ा भी तुम्हारे पास ही काटूँ ताकि जिस तरफ मैं जाना चाहूँ तुम मुझे उस तरफ रवाना कर दो।

⁷क्योंकि मैं अब राह में तुम से मुलाक़ात करना नहीं चाहता बल्कि मुझे उम्मीद है कि ख़ुदावन्द ने चाहा तो कुछ अरसे तुम्हारे पास रहूँगा।⁸लेकिन मैं ईद'ए पित्तेकुस्त तक इफ़िसुस में रहूँगा।⁹क्योंकि मेरे लिए एक वसी' और कार आमद दरवाज़ा खुला है और मुखालिफ़ बहुत से हैं।

¹⁰अगर तीमुथियुस आ जाए तो ख़याल रखना कि वो तुम्हारे पास बेख़ौफ़ रहे क्योंकि वो मेरी तरह ख़ुदावन्द का काम करता है।¹¹पस कोई उसे हक़ीर न जाने बल्कि उसको सही सलामत इस तरफ़ रवाना करना कि मेरे पास आजाए क्योंकि मैं मुन्तज़िर हूँ कि वो भाइयों समेत आए।¹²और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत इल्तिमास किया कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; मगर इस वक़्त जाने पर वो अभी राज़ी न हुआ लेकिन जब उस को मौक़ा मिलेगा तो जाएगा।

¹³जागते रहो ईमान में क़ायम रहो मर्दानगी करो मज़बूत हो।¹⁴जो कुछ करते हो मुहब्बत से करो।

¹⁵ऐ भाइयो! तुम स्तिफ़नास के खानदान को जानते हो कि वो अख़्या के पहले फल हैं और मुकद्दसों की ख़िदमत के लिए तैयार रहते हैं।¹⁶पस मैं तुम से इल्तिमास करता हूँ कि ऐसे लोगों के ताबे रहो बल्कि हर एक के जो इस काम और मेंहनत में शरीक हैं।

¹⁷और मैं स्तिफ़नास और फ़रतूनातूस और अख़ीकुस के आने से ख़ुश हूँ क्योंकि जो तुम में से रह गया था उन्होंने पूरा कर दिया।¹⁸और उन्होंने मेरी और तुम्हारी रूह को ताज़ा किया पस ऐसों को मानो।

¹⁹आसिया की कलीसिया तुम को सलाम कहती है अक्विवला और प्रिस्का उस कलीसिया समेत जो उन के घर में हैं, तुम्हें ख़ुदावन्द में बहुत बहुत सलाम कहते हैं।²⁰सब भाई तुम्हें सलाम कहते हैं पाक बोसा लेकर आपस में सलाम करो।

²¹मैं पौलुस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ।²²जो कोई ख़ुदावन्द को अज़ीज़ नहीं रखता मला'ऊन हो हमारा ख़ुदावन्द आने वाला है।²³ख़ुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे।²⁴मेरी मुहब्बत ईसा' मसीह में तुम सब से रहे। आमीन।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस रसूल का दूसरा खत

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ जो ख़ुदा की मज़ी से मसीह ईसा' का रसूल है और भाई तिमुथियुस की तरफ़ से ख़ुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस शहर में है और तमाम अख़्या के सब मुकद्दसों के नाम पौलुस का खत | हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मिनान हासिल होता रहे; आमीन।

³हमारे ख़ुदावन्द ईसा' मसीह के ख़ुदा और बाप की हम्द हो जो रहमतों का बाप और हर तरह की तसल्ली का ख़ुदा है।⁴वो हमारी सब मुसीबतों में हम को तसल्ली देता है; ताकि हम उस तसल्ली की वजह से जो ख़ुदा हमें बख़्शता है उनको भी तसल्ली दे सकें जो किसी तरह की मुसीबत में हैं।

⁵क्योंकि जिस तरह मसीह के दुःख हम को ज़्यादा पहुँचते हैं; उसी तरह हमारी तसल्ली भी मसीह के वसीले से ज़्यादा होती है।⁶अगर हम मुसीबत उठाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली और नजात के वास्ते और अगर तसल्ली पाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली के वास्ते; जिसकी तासीर से तुम सब के साथ उन दुखों को बर्दाश्त कर लेते हो; जो हम भी सहते हैं।⁷और हमारी उम्मीद तुम्हारे बारे में मज़बूत है; क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह तुम दुःखों में शरीक हो उसी तरह तसल्ली में भी हो।

⁸ऐ, भाइयो! हम नहीं चाहते कि तुम उस मुसीबत से ना वाकिफ़ रहो जो आसिया में हम पर पड़ी कि हम हद से ज़्यादा और ताक़त से बाहर पस्त हो गए; यहाँ तक कि हम ने ज़िन्दगी से भी हाथ धो लिए।⁹बल्कि अपने ऊपर मौत के हुक्म का यक़ीन कर चुके थे ताकि अपना भरोसा न रखें बल्कि ख़ुदा का जो मुर्दों को जिलाता है।¹⁰चुनाँचे उसी ने हम को ऐसी बड़ी हलाक़त से छुड़ाया और छुड़ाएगा; और हम को उसी से ये उम्मीद है कि आगे को भी छुड़ाता रहेगा।

¹¹अगर तुम भी मिलकर दुआ से हमारी मदद करोगे ताकि जो नेअ'मत हम को बहुत लोगों के वसीले से मिली उसका शुक्र भी बहुत से लोग हमारी तरफ़ से करें।

¹²क्योंकि हम को अपने दिल की इस गवाही पर फ़ख़्र है कि हमारा चाल चलन दुनिया में और खासकर तुम में जिस्मानी हिकमत के साथ नहीं बल्कि ख़ुदा के फ़ज़ल के साथ ऐसी पाकीज़गी और सफ़ाई के साथ रहा जो ख़ुदा के लायक़ है।¹³हम और बातें तुम्हें नहीं लिखते सिवा उन के जिन्हें तुम पढ़ते या मानते हो, और मुझे उम्मीद है कि आख़िर तक मानते रहोगे।¹⁴चुनाँचे तुम में से कितनों ही ने मान भी लिया है कि हम तुम्हारा फ़ख़्र हैं; जिस तरह हमारे ख़ुदावन्द ईसा' के दिन तुम भी हमारा फ़ख़्र रहोगे।

¹⁵और इसी भरोसे पर मैंने ये इरादा किया था, कि पहले तुम्हारे पास आऊँ; ताकि तुम्हें एक और नेअ'मत मिले।¹⁶और तुम्हारे शहर से होता हुआ मकिदूनिया सूबे को जाऊँ और मकिदूनिया से फिर तुम्हारे पास आऊँ, और तुम मुझे यहूदिया की तरफ़ रवाना कर दो।

¹⁷पस मैंने जो इरादा किया था शोखमिज़ाजी से किया था ? या जिन बातों का इरादा करता हूँ क्या जिस्मानी तौर पर करता हूँ कि हाँ हाँ भी करूँ और नहीं नहीं भी करूँ ?¹⁸ख़ुदा की सच्चाई की क्रसम कि हमारे उस कलाम में जो तुम से किया जाता है हाँ और नहीं दोनों पाई नहीं जाती।

¹⁹क्यूँकि खुदा का बेटा ईसा' मसीह जिसकी मनादी हम ने या'नी मैंने और सिलवानुस और तिमुथियुस ने तुम में की उस में हाँ और नहीं दोनों न थीं बल्कि उस में हाँ ही हाँ हुई।²⁰क्यूँकि खुदा के जितने वा'दे हैं वो सब उस में हाँ के साथ हैं | इसी लिए उसके ज़रि'ये से आमीन भी हुई ; ताकि हमारे वसीले से खुदा का जलाल ज़ाहिर हो।

²¹और जो हम को तुम्हारे साथ मसीह में क़ायम करता है और जिस ने हम को मसह किया वो खुदा है।²²जिसने हम पर मुहर भी की और पेशगी में रूह को हमारे दिलों में दिया।

²³मैं खुदा को गवाह करता हूँ कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इस वास्ते नहीं आया कि मुझे तुम पर रहम आता है।²⁴ये नहीं कि हम ईमान के बारे में तुम पर हुकूमत जताते हैं बल्कि खुशी में तुम्हारे मददगार हैं क्यूँकि तुम ईमान ही से क़ायम रहते हो।

Chapter 2

¹मैंने अपने दिल में ये इरादा किया था कि फिर तुम्हारे पास गमगीन हो कर न आऊँ।²क्योंकि अगर मैं तुम को गमगीन करूँ तो मुझे कौन खुश करेगा ? सिवा उसके जो मेरी वजह से गमगीन हुआ ।

³और मैंने तुम को वही बात लिखी थी ताकि ऐसा न हो कि मुझे आकर जिन से खुश होना चाहिए था, मैं उनकी वजह से गमगीन होऊँ; क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है कि जो मेरी खुशी है वही तुम सब की है।⁴क्योंकि मैंने बड़ी मुसीबत और दिलगिरी की हालत में बहुत से आँसू बहा बहा कर तुम को लिखा था, लेकिन इस वास्ते नहीं कि तुमको गम हो बल्कि इस वास्ते कि तुम उस बड़ी मुहब्बत को मा'लूम करो जो मुझे तुम से है।

⁵और अगर कोई शख्स गम का बा'इस हुआ है तो वो मेरे ही गम का नहीं बल्कि, (ताकि उस पर ज्यादा सख्ती न करूँ) किस क्रदर तुम सब के गम का ज़रि'या हुआ ।⁶यही सज़ा जो उसने अक्सरों की तरफ़ से पाई ऐसे शख्स के वास्ते काफ़ी है।⁷पस बर'अक्स इसके यही बेहतर है कि उस का कुसूर मु'आफ़ करो और तसल्ली दो ताकि वो गम की कसरत से तबाह न हो।

⁸इसलिए मैं तुम से गुजारिश करता हूँ कि उसके बारे में मुहब्बत का फ़तवा दो।⁹क्योंकि मैंने इस वास्ते भी लिखा था कि तुम्हें आजमा लूँ; कि सब बातों में फ़रमानबरदार हो या नहीं।

¹⁰जिसे तुम मु'आफ़ करते हो उसे मैं भी मु'आफ़ करता हूँ क्योंकि जो कुछ मैंने मु'आफ़ किया ; अगर किया, तो मसीह का क़ायम मुक़ाम हो कर तुम्हारी खातिर मु'आफ़ किया।¹¹ताकि बुरे लोगों का हम पर दौंव न चले क्योंकि हम उसकी चालों से नावाक़िफ़ नहीं।

¹²और जब मैं मसीह की खुशख़बरी देने को त्राऊस शहर में आया और खुदावन्द में मेरे लिए दरवाज़ा खुल गया।¹³तो मेरी रूह को आराम न मिला; इसलिए कि मैंने अपने भाई तितुस को न पाया; पस उन ईमानदारों से रुख़स्त होकर मकिदुनिया सूबे को चला गया।

¹⁴मगर खुदा का शुक्र है जो मसीह में हम को हमेशा कैदियों की तरह ग़श्त कराता है और अपने इल्म की खुशबू हमारे वसीले से हर जगह फैलाता है।¹⁵क्योंकि हम खुदा के नज़दीक़ नजात पानेवालों और हलाक़ होने वालों दोनों के लिए मसीह की खुशबू हैं।

¹⁶कुछ के वास्ते तो मरने के लिए मौत की बू और कुछ के वास्ते जीने के लिए ज़िन्दगी की बू हैं और कौन इन बातों के लायक़ हैं।¹⁷क्योंकि हम उन बहुत लोगों की तरह नहीं जो खुदा के कलाम में मिलावट करते हैं बल्कि दिल की सफ़ाई से और खुदा की तरफ़ से खुदा को हाज़िर जान कर मसीह में बोलते हैं।

Chapter 3

¹क्या हम फिर अपनी नेक नामी जताना शुरू करते हैं या हम को कुछ लोगों की तरह नेक नामी के खत तुम्हारे पास लाने या तुम से लेने की ज़रूरत है।²हमारा जो खत हमारे दिलों पर लिखा हुआ है; वो तुम हो और उसे सब आदमी जानते और पढ़ते हैं।³ज़ाहिर है कि तुम मसीह का वो खत जो हम ने खादिमों के तौर पर लिखा; स्याही से नहीं बल्कि ज़िन्दा खुदा के रूह से पत्थर की तख्तियों पर नहीं बल्कि गोشت या 'नी दिल की तख्तियों पर।

⁴हम मसीह के ज़रि'ये खुदा पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं।⁵ये नहीं कि बज़ात-ए-खुद हम इस लायक हैं कि अपनी तरफ से कुछ खयाल भी कर सकें बल्कि हमारी लियाक़त खुदा की तरफ से है।⁶जिसने हम को नये 'अहद के खादिम होने के लायक भी किया लफ़्ज़ों के खादिम नहीं बल्कि रूह के क्यूँकि लफ़्ज़ मार डालते हैं मगर रूह ज़िन्दा करती है।

⁷और जब मौत का वो अहद जिसके हरूफ़ पत्थरों पर खोदे गए थे ऐसा जलाल वाला हुआ कि इस्राईली लोग मूसा के चेहरे पर उस जलाल की वजह से जो उसके चहरे पर था ग़ौर से नज़र न कर सके हालाँकि वो घटता जाता था।⁸तो पाक रूह का अहद तो ज़रूर ही जलाल वाला होगा।

⁹क्यूँकि जब मुजरिम ठहराने वाला अहद जलाल वाला था तो रास्तबाज़ी का अहद तो ज़रूर ही जलाल वाला होगा।¹⁰बल्कि इस सूरत में वो जलाल वाला इस बे'इत्तिहा जलाल की वजह से बे'जलाल ठहरा।¹¹क्यूँकि जब मिटने वाली चीज़ें जलाल वाली थी तो बाकी रहने वाली चीज़ें तो ज़रूर ही जलाल वाली होंगी।

¹²पस हम ऐसी उम्मीद करके बड़ी दिलेरी से बोलते हैं।¹³और मूसा की तरह नहीं हैं जिसने अपने चेहरे पर नक्राब डाला ताकि बनी इस्राईल उस मिटने वाली चीज़ के अन्जाम को न देख सकें।

¹⁴लेकिन उनके खयालात कसीफ़ हो गए, क्यूँकि आज तक पूराने 'अहदनामे को पढ़ते वक़्त उन के दिलों पर वही पर्दा पड़ा रहता है, और वो मसीह में उठ जाता है।¹⁵मगर आज तक जब कभी मूसा की किताब पढ़ी जाती है तो उनके दिल पर पर्दा पड़ा रहता है।¹⁶लेकिन जब कभी उन का दिल खुदा की तरफ़ फिरेगा तो वो पर्दा उठ जाएगा।

¹⁷और खुदावन्द रूह है, और जहाँ कहीं खुदावन्द की रूह है वहाँ आज़ादी है।¹⁸मगर जब हम सब के बे'नक्राब चेहरों से खुदावन्द का जलाल इस तरह ज़ाहिर होता है; जिस तरह आ'इने में, तो उस खुदावन्द के वसीले से जो रूह है हम उसी जलाली सूरत में दर्जा ब दर्जा बदलते जाते हैं।

Chapter 4

¹पस जब हम पर ऐसा रहम हुआ कि हमें ये खिदमत मिली, तो हम हिम्मत नहीं हारते।²बल्कि हम ने शर्म की छिपी बातों को तर्क कर दिया और मक्कारी की चाल नहीं चलते न खुदा के कलाम में मिलावट करते हैं। बल्कि हक़ ज़ाहिर करके खुदा के रु-ब-रु हर एक आदमी के दिल में अपनी नेकी बिठाते हैं।

³और अगर हमारी खुशखबरी पर पर्दा पड़ा है तो हलाक होने वालों ही के वास्ते पड़ा है।⁴या'नी उन बे'ईमानों के वास्ते जिनकी अक़लों को इस जहाँन के खुदा ने अँधा कर दिया है ताकि मसीह जो खुदा की सूरत है उसके जलाल की खुशखबरी की रौशनी उन पर न पड़े।

⁵क्यूँकि हम अपनी नहीं बल्कि मसीह ईसा' का ऐलान करते हैं कि वो खुदावन्द है और अपने हक़ में ये कहते हैं कि ईसा' की खातिर तुम्हारे गुलाम हैं।⁶इसलिए कि खुदा ही है जिसने फ़रमाया कि "तारीकी में से नूर चमके" और वही हमारे दिलों पर चमका ताकि खुदा के जलाल की पहचान का नूर ईसा' मसीह के चहरे से जलवागर हो।

⁷लेकिन हमारे पास ये खज़ाना मिट्टी के बर्तनों में रखखा है ताकि ये हद से ज़्यादा कुदरत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि खुदा की तरफ़ से मा'लूम हो।⁸हम हर तरफ़ से मुसीबत तो उठाते हैं लेकिन लाचार नहीं होते हैरान तो होते हैं मगर ना उम्मीद नहीं होते।⁹सताए तो जाते हैं मगर अकेले नहीं छोड़े जाते; गिराए तो जाते हैं, लेकिन हलाक नहीं होते।¹⁰हम हर वक़्त अपने बदन में ईसा' की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा' की ज़िन्दगी भी हमारे बदन में ज़ाहिर हो।

¹¹क्यूँकि हम जीते जी ईसा' की खातिर हमेशा मौत के हवाले किए जाते हैं ताकि ईसा' की ज़िन्दगी भी हमारे फ़ानी जिस्म में ज़ाहिर हो।¹²पस मौत तो हम में असर करती है और ज़िन्दगी तुम में।

¹³और चूँकि हम में वही ईमान की रूह है जिसके बारे में कलाम में लिखा है कि मैं ईमान लाया और इसी लिए बोला; पस हम भी ईमान लाए और इसी लिए बोलते हैं।¹⁴क्यूँकि हम जानते हैं कि जिसने खुदावन्द ईसा' मसीह को जिलाया वो हम को भी ईसा' के साथ शामिल जानकर जिलाएगा; और तुम्हारे साथ अपने सामने हाज़िर करेगा।¹⁵इसलिए कि सब चीज़ें तुम्हारे वास्ते हैं ताकि बहुत से लोगों के ज़रिये से फ़ज़ल ज़्यादा हो कर खुदा के जलाल के लिए शुक्र गुज़ारी भी बढ़ाए।

¹⁶इसलिए हम हिम्मत नहीं हारते बल्कि चाहे हमारी ज़ाहिरी इन्सानियत ज़ा'इल हो जाती है फिर भी हमारी बातनी इन्सानियत रोज़ ब, रोज़ नई होती जाती है।

¹⁷क्यूँकि हमारी दम भर की हल्की सी मुसीबत हमारे लिए अज़, हद भारी और अबदी जलाल पैदा करती है।¹⁸जिस हाल में हम देखी हुई चीज़ों पर नहीं बल्कि अनदेखी चीज़ों पर नज़र करते हैं; क्यूँकि देखी हुई चीज़ें चँद रोज़ हैं; मगर अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

Chapter 5

¹क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा खेमे का घर जो ज़मीन पर है गिराया जाएगा तो हम को खुदा की तरफ़ से आसमान पर एक ऐसी इमारत मिलेगी जो हाथ का बनाया हुआ घर नहीं बल्कि अबदी है।²चुनाँचे हम इस में कराहते हैं और बड़ी आरज़ू रखते हैं कि अपने आसमानी घर से मुलबबस हो जाएँ।³ताकि मुलबबस होने के ज़रि'ये नंगे न पाए जाएँ।

⁴क्योंकि हम इस खेमे में रह कर बोझ के मारे कराहते हैं इसलिए नहीं कि ये लिबास उतारना चाहते हैं बल्कि इस पर और पहनना चाहते हैं ताकि वो जो फ़ानी है ज़िन्दगी में गर्क हो जाए।⁵और जिस ने हम को इसी बात के लिए तैयार किया वो खुदा है और उसी ने हमें रूह पेशगी में दिया।

⁶पस हमेशा हम मुतमइन रहते हैं और ये जानते हैं कि जब तक हम बदन के वतन में हैं खुदावन्द के यहाँ से जिला वतन हैं।⁷क्योंकि हम ईमान पर चलते हैं न कि आँखों देखे पर।⁸अगरचे, हम मुतमइन हैं और हम को बदन के वतन से जुदा हो कर खुदावन्द के वतन में रहना ज़्यादा मंज़ूर है।

⁹इसी वास्ते हम ये हौसला रखते हैं कि वतन में हूँ चाहे जेला वतन उसको खुश करें।¹⁰क्योंकि ज़रूरी है कि मसीह के तख़्त-ए- अदालत के सामने जाकर हम सब का हाल ज़ाहिर किया जाए ताकि हर शख्स अपने उन कामों का बदला पाए; जो उसने बदन के वसीले से किए हों ; चाहे भले हों चाहे बुरे हों।

¹¹पस हम खुदावन्द के खौफ़ को जान कर आदमियों को समझाते हैं और खुदा पर हमारा हाल ज़ाहिर है और मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे दिलों पर भी ज़ाहिर हुआ होगा।¹²हम फिर अपनी नेक नामी तुम पर नहीं जताते बल्कि हम अपनी वजह से तुम को फ़ख़्र करने का मौक़ा देते हैं ताकि तुम उनको जवाब दे सको जो ज़ाहिर पर फ़ख़्र करते हैं और बातिन पर नहीं।

¹³अगर हम बेखुद हैं तो खुदा के वास्ते हैं और अगर होश में हैं तो तुम्हारे वास्ते।¹⁴क्योंकि मसीह की मुहब्बत हम को मजबूर कर देती है इसलिए कि हम ये समझते हैं कि जब एक सब के वास्ते मरा तो सब मर गए।¹⁵और वो इसलिए सब के वास्ते मरा कि जो जीते हैं वो आगे को अपने लिए न जिए बल्कि उसके लिए जो उन के वास्ते मरा और फिर जी उठा।

¹⁶पस अब से हम किसी को जिस्म की हैसियत से न पहचानेंगे; हाँ अगरचे मसीह को भी जिस्म की हैसियत से जाना था मगर अब से नहीं जानेगे।¹⁷इसलिए अगर कोई मसीह में है तो वो नया मखलूक है पुरानी चीज़ें जाती रहीं; देखो वो नई हो गई।

¹⁸और वो सब चीज़ें खुदा की तरफ़ से हैं जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की खिदमत हमारे सुपुर्द की।

¹⁹मतलब ये है कि खुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया और उन की तक्सीरों को उनके ज़िम्मे न लगाया और उसने मेल मिलाप का पैग़ाम हमें सौप दिया।

²⁰पस हम मसीह के एल्ची हैं और गोया हमारे वसीले से खुदा इल्तिमास करता है; हम मसीह की तरफ़ से मिन्नत करते हैं कि खुदा से मेल मिलाप कर लो।²¹जो गुनाह से वाकिफ़ न था; उसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उस में हो कर खुदा के रास्तबाज़ हो जाएँ।

Chapter 6

¹हम जो उस के साथ काम में शरीक हैं, ये भी गुज़ारिश करते हैं कि खुदा का फ़ज़ल जो तुम पर हुआ बे फ़ायदा न रहने दो।²क्योंकि वो फ़रमाता है कि मैंने कुबूलियत के वक़्त तेरी सुन ली और नजात के दिन तेरी मदद की; देखो अब क़बूलियत का वक़्त है; देखो ये नजात का दिन है।³हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई मौका नहीं देते ताकि हमारी ख़िदमत पर हफ़ न आए।।

⁴बल्कि खुदा के खादिमों की तरह हर बात से अपनी खूबी ज़ाहिर करते हैं बड़े सब्र से मुसीबत, से एहतियात से तंगी से।⁵कोड़े खाने से, क़ैद होने से, हँगामों से, मेहनतों से, बेदारी से, फ़ाकों से,⁶पाकीज़गी से, इल्म से, तहम्मूल से, मेहरबानी से, रूह उल कुदूस से, बे-रिया मुहब्बत से,⁷कलाम'ए हक़ से, खुदा की कुदरत से, रास्तबाज़ी के हथियारों के वसीले से, जो दहने बाएँ हैं।

⁸इज़ज़त और बे'इज़ज़ती के वसीले से, बदनामी और नेक नामी के वसीले से, जो गुमराह करने वाले मा'लूम होते हैं फिर भी सच्चे हैं।⁹गुमनामों की तरह हैं, तो भी मशहूर हैं, मरते हुआ की तरह हैं, मगर देखो जीते हैं, मार खानेवालों की तरह हैं, मगर जान से मारे नहीं जाते।¹⁰ग़मगीनों की तरह हैं, लेकिन हमेशा खुश रहते हैं, कंगालों की तरह हैं, मगर बहुतेरों को दौलतमन्द कर देतग़ हैं, नादानों की तरह हैं, तौ भी सब कुछ देखते हैं।

¹¹ऐ कुरन्थ के ईमानदारों; हम ने तुम से खुल कर बातें कहीं और हमारा दिल तुम्हारी तरफ़ से खुश हो गया।¹²हमारे दिलों में तुम्हारे लिए तंगी नहीं मगर तुम्हारे दिलों में तंगी है।¹³पस मैं फ़र्ज़न्द जान कर तुम से कहता हूँ कि तुम भी उसके बदले में कुशादा दिल हो जाओ।

¹⁴बे'ईमानों के साथ ना हमवार जूए में न जुतो, क्योंकि रास्तबाज़ी और बेदीनी में क्या मेल ज़ोल? या रौशनी और तारीकी में क्या रिश्ता?¹⁵वो मसीह को बली'आल के साथ क्या मुवाफ़िक़त या ईमानदार का बे'ईमान से क्या वास्ता?¹⁶और खुदा के मक्दिस को बुतों से क्या मुनासिबत है? क्योंकि हम ज़िन्दा खुदा के मक्दिस हैं चुनाँचे खुदा ने फ़रमाया है, " मैं उनमें बसूँगा और उन में चला फिरा करूँगा और मैं उनका खुदा हूँगा और वो मेरी उम्मत होंगे।"

¹⁷इस वास्ते खुदावन्द फ़रमाता है कि उन में से निकल कर अलग रहो और नापाक चीज़ को न छुओ तो मैं तुम को कुबूल करूँगा।¹⁸मैं तुम्हारा बाप हूँगा और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होंगे, खुदावन्द क़ादिर-ए-मुतलक़ का क़ौल है।

Chapter 7

¹'पस ऐ' अज़ीज़ो चुँकि हम से ऐसे वा'दे किए गए, आओ हम अपने आपको हर तरह की जिस्मानी और रूहानी आलूदगी से पाक करें और खुदा के बेखौफ़ के साथ पाकीज़गी को कमाल तक पहुँचाएँ।

²हम को अपने दिल में जगह दो हम ने किसी से बेइन्साफी नहीं की किसी को नहीं बिगाड़ा किसी से दगा नहीं की।³मैं तुम्हें मुजरिम ठहराने के लिए ये नहीं कहता क्योंकि पहले ही कह चुका हूँ कि तुम हमारे दिलों में ऐसे बस गए हो कि हम तुम एक साथ मरें और जियें।⁴मैं तुम से बड़ी दिलेरी के साथ बातें करता हूँ मुझे तुम पर बड़ा फ़ख़्र है मुझको पूरी तसल्ली हो गई है; जितनी मुसीबतें हम पर आती हैं उन सब में मेरा दिल खुशी से लबरेज़ रहता है।

⁵क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए उस वक़्त भी हमारे जिस्म को चैन न मिला बल्कि हर तरफ़ से मुसीबत में गिरफ़्तार रहे बाहर लड़ाइयां थीं और अन्दर दहशतें।⁶तोभी आ'जिज़ों को तसल्ली बख़्शने वाले या'नी खुदा ने तितुस के आने से हम को तसल्ली बख़्शी।⁷और न सिर्फ़ उसके आने से बल्कि उसकी उस तसल्ली से भी जो उसको तुम्हारी तरफ़ से हुई और उसने तुम्हारा इश्तियाक़ तुम्हारा ग़म और तुम्हारा जोश जो मेरे बारे में था हम से बयान किया जिस से मैं और भी खुश हुआ।

⁸गरचे, मैंने तुम को अपने ख़त से ग़मगीन किया मगर उससे पछताता नहीं अगरचे पहले पछताता था चुनौचे देखता हूँ कि उस ख़त से तुम को ग़म हुआ गरचे थोड़े ही असें तक रहा।⁹अब मैं इसलिए खुश नहीं हूँ कि तुम को ग़म हुआ, बल्कि इस लिए कि तुम्हारे ग़म का अन्जाम तोबा हुआ क्योंकि तुम्हारा ग़म खुदा परस्ती का था, ताकि तुम को हमारी तरफ़ से किसी तरह का नुक़सान न हो।¹⁰क्योंकि खुदा परस्ती का ग़म ऐसी तोबा पैदा करता है; जिसका अन्जाम नजात है और उस से पछताना नहीं पड़ता मगर दुनिया का ग़म मौत पैदा करता है।

¹¹पस देखो इसी बात ने कि तुम खुदा परस्ती के तौर पर ग़मगीन हुए तो मैं किस क्रदर सरगर्मी और उज़्र और ख़फ़गी और खौफ़ और इश्तियाक़ और जोश और इन्तिक़ाम पैदा किया; तुम ने हर तरह से साबित कर दिखाया कि तुम इस काम में बरी हो।¹²पस अगरचे मैंने तुम को लिखा था मगर न उसके बारे में लिखा जिसने बे इन्साफी की और न उसके ज़रिए जिस पर बे इन्साफी हुई बल्कि इस लिए कि तुम्हारी सरगर्मी जो हमारे वास्ते है खुदा के हुज़ूर तुम पर ज़ाहिर हो जाए।

¹³इसी लिए हम को तसल्ली हुई है और हमारी इस तसल्ली में हम को तितुस की खुशी की वजह से और भी ज़्यादा खुशी हुई क्योंकि तुम सब के ज़रिए उसकी रूह फिर ताज़ा हो गई।¹⁴और अगर मैंने उसके सामने तुम्हारे बारे में कुछ फ़ख़्र किया तो शर्मिन्दा न हुआ बल्कि जिस तरह हम ने सब बातें तुम से सच्चाई से कहीं उसी तरह जो फ़ख़्र हम ने तितुस के सामने किया वो भी सच निकला।

¹⁵और जब उसको तुम सब की फ़रमाबरदारी याद आती है कि तुम किस तरह डरते और काँपते हुए उस से मिले तो उसकी दिली मुहब्बत तुम से और भी ज़्यादा होती जाती है।¹⁶मैं खुश हूँ कि हर बात में तुम्हारी तरफ़ से मुतमइन हूँ।

Chapter 8

¹ऐ, भाइयों! हम तुम को खुदा के उस फ़ज़ल की ख़बर देते हैं जो मकिदुनिया सूबे की कलीसियाओं पर हुआ है।²कि मुसीबत की बड़ी आज़माइश में उनकी बड़ी खुशी और सख़्त ग़रीबी ने उनकी सखावत को हृदय से ज़्यादा कर दिया।

³और मैं गवाही देता हूँ, कि उन्होंने हैसियत के मुवाफ़िक़ बल्कि ताक़त से भी ज़्यादा अपनी खुशी से दिया।⁴और इस ख़ैरात और मुक़द्दसों की ख़िदमत की शिराकत के ज़रिए हम से बड़ी मिन्नत के साथ दरख़वास्त की।⁵और हमारी उम्मीद के मुवाफ़िक़ ही नहीं दिया बल्कि अपने आप को पहले खुदावन्द के और फिर खुदा की मज़ी से हमारे सुपुर्द किया।

⁶इस वास्ते हम ने तितुस को नसीहत की जैसे उस ने पहले शुरू किया था वैसे ही तुम में इस ख़ैरात के काम को पूरा भी करे।⁷पस जैसे तुम हर बात में ईमान और कलाम और इल्म और पूरी सरगर्मी और उस मुहब्बत में जो हम से आगे हो गए हो, वैसे ही इस ख़ैरात के काम में आगे ले जाओ।

⁸मैं हुक्म के तौर पर नहीं कहता बल्कि इसलिए कि औरों की सरगर्मी से तुम्हारी सच्चाई को आज़माऊँ।⁹क्योंकि तुम हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के फ़ज़ल को जानते हो कि वो अगरचे दौलतमन्द था मगर तुम्हारी खातिर ग़रीब बन गया ताकि तुम उसकी ग़रीबी की वजह से दौलतमन्द हो जाओ।

¹⁰और मैं इस अम्र में अपनी राय देता हूँ, क्योंकि ये तुम्हारे लिए फायदेमंद है, इसलिए कि तुम पिछले साल से न सिर्फ़ इस काम में बल्कि इसके इरादे में भी अव्वल थे।¹¹पस अब इस काम को पूरा भी करो ताकि जैसे तुम इरादा करने में मुस्त'इद थे वैसे ही हैसियत के मुवाफ़िक़ पूरा भी करो।¹²क्योंकि अगर नियत हो तो ख़ैरात उसके मुवाफ़िक़ मक़बूल होगी जो आदमी के पास है न उसके मुवाफ़िक़ जो उसके पास नहीं।

¹³ये नहीं कि औरों को आराम मिले और तुम को तक्लीफ़ हो।¹⁴बल्कि बराबरी के तौर पर इस वक़्त तुम्हारी दौलत से उनकी कमी पूरी हो ताकि उनकी दौलत से भी तुम्हारी कमी पूरी हो और इस तरह बराबरी हो जाए।¹⁵चुनाँचे कलाम में लिखा है, "जिस ने बहुत मन्ना जमा किया उस का कुछ ज़्यादा न निकला और जिस ने थोड़ा जमा किया उसका कुछ कम न निकला।"

¹⁶खुदा का शुक्र है जो तितुस के दिल में तुम्हारे वास्ते वैसी ही सरगर्मी पैदा करता है।¹⁷क्योंकि उसने हमारी नसीहत को मान लिया बल्कि बड़ा सरगर्म हो कर अपनी खुशी से तुम्हारी तरफ़ रवाना हुआ।

¹⁸और हम ने उस के साथ उस भाई को भेजा जिस की तारीफ़ खुशख़बरी की वजह से तमाम कलीसियाओं में होती है।¹⁹और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि वो कलीसियाओं की तरफ़ से इस ख़ैरात के बारे में हमारा हमसफ़र मुकर्रर हुआ और हम ये ख़िदमत इसलिए करते हैं कि खुदावन्द का जलाल और हमारा शौक़ ज़ाहिर हो।

²⁰और हम बचते रहते हैं कि जिस बड़ी ख़ैरात के बारे में ख़िदमत करते हैं उसके बारे में कोई हम पर हर्फ़ न लाए।²¹क्योंकि हम ऐसी चीज़ों की तदबीर करते हैं जो न सिर्फ़ खुदावन्द के नज़दीक भली हैं बल्कि आदमियों के नज़दीक भी।

²²और हम ने उनके साथ अपने उस भाई को भेजा है जिसको हम ने बहुत सी बातों में बार हा आज़माकर सरगर्म पाया है मगर चूँकि उसको तुम पर बड़ा भरोसा है इसलिए अब बहुत ज़्यादा सरगर्म है।²³अगर कोई तितुस की बारे में पुछे तो वो मेरा शरीक और तुम्हारे वास्ते मेरा हम ख़िदमत है और अगर भाइयों के बारे में पूछा जाए तो वो कलीसियाओं के क्रासिद और मसीह का जलाल हैं।²⁴पस अपनी मुहब्बत और हमारा वो फ़ख़ जो तुम पर है कलीसियायों के रु-ब-रु उन पर साबित करो।

Chapter 9

¹जो खिदमत मुकद्दसों के वास्ते की जाती है, उसके ज़रिए मुझे तुम को लिखना फ़ज़ूल है।²क्योंकि मैं तुम्हारा शौक़ जानता हूँ, जिसकी वज़ह से मकिदुनिया के लोगों के आगे तुम पर फ़ख़्र करता हूँ कि अख़्या के लोग पिछले साल से तैयार हैं और तुम्हारी सरगर्मी ने अक़सर लोगों को उभारा।

³लेकिन मैंने भाइयों को इसलिए भेजा कि हम जो फ़ख़्र इस बारे में तुम पर करते हैं वो बे'असल न ठहरे बल्कि तुम मेरे कहने के मुवाफ़िक़ तैयार रहो।⁴ऐसा न हो कि अगर मकिदुनिया के लोग मेरे साथ आयें और तुम को तैयार न पायें तो हम ये नहीं कहते कि तुम उस भरोसे की वज़ह से शर्मिन्दा हो।⁵इसलिए मैंने भाइयों से ये दरख़वास्त करना ज़रूरी समझा कि वो पहले से तुम्हारे पास जाकर तुम्हारी मो'ऊदा बख़्शिश को पहले से तैयार कर रखें ताकि वो बख़्शिश की तरह तैयार रहें न कि ज़बरदस्ती के तौर पर।

⁶लेकिन बात ये है कि जो थोड़ा बोता है वो थोड़ा काटेगा और जो बहुत बोता है वो बहुत काटेगा।⁷जिस क़दर हर एक ने अपने दिल में ठहराया है उसी क़दर दे, न दरेग करके न लाचारी से क्योंकि खुदा खुशी से देने वाले को अज़ीज़ रखता है।

⁸और खुदा तुम पर हर तरह का फ़ज़ल क़सरत से कर सकता है। ताकि तुम को हमेशा हर चीज़ ज़्यादा तौर पर मिला करे और हर नेक काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ मौजूद रहा करे।⁹चुनौचे कलाम में लिखा है कि उसने बिखेरा है उसने कंगालों को दिया है उसकी रास्तबाज़ी हमेशा तक बाक़ी रहेगी।

¹⁰पस जो बोनो के लिए बीज और खाने के लिए रोटी एक दुसरे को पहुँचाता है वही तुम्हारे लिए बीज बहम पहुँचाएगा; और उसी में तरक्की देगा और तुम्हारी रास्तबाज़ी के फ़लों को बढ़ाएगा।¹¹और तुम हर चीज़ को बहुतायत से पाकर सब तरह की सखावत करोगे; जो हमारे वसीले से खुदा की शुक्रगुज़ारी के ज़रिए होती है।

¹²क्योंकि इस खिदमत के अन्जाम देने से न सिर्फ़ मुकद्दसों की ज़रूरतें पूरी होती हैं बल्कि बहुत लोगों की तरफ़ से खुदा की शुक्रगुज़ारी होती है।¹³इस लिए कि जो नियत इस खिदमत से साबित हुई उसकी वज़ह से वो खुदा की बड़ाई करते हैं कि तुम मसीह की खुशख़बरी का इक़रार करके उस पर ता'बेदारी से अमल करते हो और उनकी और सब लोगों की मदद करने में सखावत करते हो।¹⁴और वो तुम्हारे लिए दुआ करते हैं और तुम्हारे मुश्ताक़ हैं इसलिए कि तुम पर खुदा का बड़ा ही फ़ज़ल है।¹⁵शुक्र खुदा का उसकी उस बख़्शिश पर जो बयान से बाहर है।

Chapter 10

¹मैं पौलुस जो तुम्हारे रू-ब-रू आजिज़ और पीठ पीछे तुम पर दिलेर हूँ मसीह का हिल्म और नर्मी याद दिलाकर खूद तुम से गुज़ारिश करता हूँ।²बल्कि मिन्नत करता हूँ कि मुझे हाज़िर होकर उस बेबाकी के साथ दिलेर न होना पड़े जिससे मैं कुछ लोगों पर दिलेर होने का क्रस्द रखता हूँ जो हमें यूँ समझते हैं कि हम जिस्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

³क्यूँकि हम अगरचे जिस्म में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं मगर जिस्म के तौर पर लड़ते नहीं।⁴इस लिए कि हमारी लड़ाई के हथियार जिस्मानी नहीं बल्कि खुदा के नज़दीक क़िलों को ढा देने के क़ाबिल हैं।

⁵चुनाँचे हम तसव्वुरात और हर एक उँची चीज़ को जो खुदा की पहचान के बरखिलाफ़ सर उठाए हुए है ढा देते हैं और हर एक खयाल को क़ैद करके मसीह का फ़रमाँबरदार बना देते हैं।⁶और हम तैयार हैं कि जब तुम्हारी फ़रमाँबरदारी पूरी हो तो हर तरह की नाफ़रमानी का बदला लें।

⁷तो तुम उन चीज़ों पर नज़र करते हो जो आँखों के सामने हैं अगर किसी को अपने आप पर ये भरोसा है कि वो मसीह का है तो अपने दिल में ये भी सोच ले कि जैसे वो मसीह का है वैसे ही हम भी हैं।⁸क्यूँकि अगर मैं इस इख़्तियार पर कुछ ज़्यादा फ़ख़ भी करूँ जो खुदावन्द ने तुम्हारे बनाने के लिए दिया है; न कि बिगाड़ने के लिए तो मैं शर्मिन्दा न हूँगा।

⁹ये मैं इस लिए कहता हूँ, कि ख़तों के ज़रिए से तुम को डराने वाला न ठहरूँ।¹⁰क्यूँकि कुछ लोग कहते हैं कि पौलुस के ख़त तो अलबत्ता असरदार और ज़बरदस्त हैं लेकिन जब ख़ुद मौजूद होता है तो कमज़ोर सा मा'लूम होता है और उसकी तक़रीर लचर है।

¹¹पस ऐसा कहने वाला समझ रखे कि जैसा पीठ पीछे ख़तों में हमारा कलाम है वैसा ही मौजूदगी के वक़्त हमारा काम भी होगा।¹²क्यूँकि हमारी ये हिम्मत नहीं कि अपने आप को उन चँद लोगों में शुमार करें या उन से कुछ निस्बत दें जो अपनी नेक नामी जताते हैं लेकिन वो ख़ुद अपने आप को आपस में वज़न कर के और अपने आप को एक दूसरे से निस्बत देकर नादान ठहराते हैं।

¹³लेकिन हम अन्दाज़े से ज़्यादा फ़ख़ न करेंगे, बल्कि उसी इलाक़े के अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ जो खुदा ने हमारे लिए मुक़र्रर किया है जिस में तुम भी आगए, हो।

¹⁴क्यूँकि हम अपने आप को हद से ज़्यादा नहीं बढ़ाते जैसे कि तुम तक न पहुँचने की सूरत में होता बल्कि हम मसीह की खुशख़बरी देते हुए तुम तक पहुँच गए थे।

¹⁵और हम अन्दाज़े से ज़्यादा या'नी औरों की मेहनतों पर फ़ख़ नहीं करते लेकिन उम्मीदवार हैं कि जब तुम्हारे ईमान में तरक्की हो तो हम तुम्हारी वजह से अपने इलाक़े के मुवाफ़िक़ और भी बढ़ें।¹⁶ताकि तुम्हारी सरहद से आगे बढ़ कर खुशख़बरी पहुँचा दें न कि ग़ैर इलाक़ा में बनी बनाई हुई चीज़ों पर फ़ख़ करें

¹⁷गरज़ जो फ़ख़ करे वो खुदावन्द पर फ़ख़ करे।¹⁸क्यूँकि जो अपनी नेकनामी जताता है वो मक़बूल नहीं बल्कि जिसको खुदावन्द नेकनाम ठहराता है वही मक़बूल है।

Chapter 11

¹क़ाश कि तुम मेरी थोड़ी सी बेवकूफी की बर्दाश्त कर सकते; हाँ तुम मेरी बर्दाश्त करते तो हो।²मुझे तुम्हारे ज़रि'ए खुदा की सी ग़ैरत है क्योंकि मैंने एक ही शौहर के साथ तुम्हारी निस्बत की है ताकि तुम को पाक दामन कुंवारी की तरह मसीह के पास हाज़िर करूँ।

³लेकिन मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो कि जिस तरह साँप ने अपनी मक्कारी से हव्वा को बहकाया उसी तरह तुम्हारे खयालात भी उस खुलूस और पाकदामनी से हट जाएँ जो मसीह के साथ होनी चाहिए।⁴क्योंकि जो आता है अगर वो किसी दूसरे ईसा का ऐलान करता है जिसका हमने ऐलान नहीं किया या कोई और रूह तुम को मिलती है जो न मिली थी या दूसरी खुशखबरी मिली जिसको तुम ने कुबूल न किया था; तो तुम्हारा बर्दाश्त करना बजा है।

⁵मैं तो अपने आप को उन अप्रज़ल रसूलों से कुछ कम नहीं समझता।⁶और अगर तक्ररीर में बेश'ऊर हूँ तो इल्म के एतिबार से तो नहीं बल्कि हम ने इस को हर बात में तमाम आदमियों में तुम्हारी खातिर ज़ाहिर कर दिया।

⁷क्या ये मुझ से खता हुई कि मैंने तुम्हें खुदा की खुशखबरी मुफ्त पहुँचा कर अपने आप को नीचे किया ताकि तुम बुलंद हो जाओ।⁸मैंने और कलीसियाओं को लूटा या'नी उनसे उज़्रत ली ताकि तुम्हारी खिदमत करूँ।⁹और जब मैं तुम्हारे पास था और हाजत मंद हो गया था, तो भी मैंने किसी पर बोझ नहीं डाला क्योंकि भाइयों ने मकिदुनिया से आकर मेरी ज़रूरत को पूरा कर दिया था; और मैं हर एक बात में तुम पर बोझ डालने से बाज़ रहा और रहूँगा।

¹⁰मसीह की सदाक़त की क़सम जो मुझ में है अख़्या के इलाक़ा में कोई शख्स मुझे ये करने से न रोकेगा।¹¹किस वास्ते? क्या इस वास्ते कि मैं तुम से मुहब्बत नहीं रखता? इसको खुदा जानता है।

¹²लेकिन जो करता हूँ वही करता रहूँगा ताकि मौक़ा ढूँढने वालो को मौक़ा न दूँ बल्कि जिस बात पर वो फ़ख़्र करते हैं उस में हम ही जैसे निकलें।¹³क्योंकि ऐसे लोग झूठे रसूल और दगा बाज़ी से काम करने वाले हैं और अपने आपको मसीह के रसूलों के हमशक्ल बना लेते हैं।

¹⁴और कुछ अजीब नहीं शैतान भी अपने आपको नूरानी फ़रिश्ते का हम शक्ल बना लेता है।¹⁵पस अगर उसके खादिम भी रास्तबाज़ी के खादिमों के हमशक्ल बन जाएँ तो कुछ बड़ी बात नहीं लेकिन उनका अन्जाम उनके कामों के मुवाफ़िक़ होगा।

¹⁶मैं फिर कहता हूँ कि मुझे कोई बेवकूफ़ न समझे और न बेवकूफ़ समझ कर मुझे कुबूल करो कि मैं भी थोड़ा सा फ़ख़्र करूँ।¹⁷जो कुछ मैं कहता हूँ वो खुदावन्द के तौर पर नहीं बल्कि गोया बेवकूफी से और उस हिम्मत से कहता हूँ जो फ़ख़्र करने में होती है।¹⁸जहाँ और बहुत सारे जिस्मानी तौर पर फ़ख़्र करते हैं मैं भी करूँगा।

¹⁹क्योंकि तुम को अक्लमन्द हो कर खुशी से बेवकूफ़ों को बर्दाश्त करते हो।²⁰जब कोई तुम्हें गुलाम बनाता है या खा जाता है या फँसा लेता है या अपने आपको बड़ा बनाता है या तुम्हारे मुँह पर तमाँचा मारता है तो तुम बर्दाश्त कर लेते हो।²¹मेरा ये कहना ज़िल्लत के तौर पर सही कि हम कमज़ोर से थे मगर जिस किसी बात में कोई दिलेर है (अगरचे ये कहना बेवकूफी है) मैं भी दिलेर हूँ।

²²क्या वही इब्रानी हैं? मैं भी हूँ, क्या वही अब्रहाम की नस्ल से हैं? मैं भी हूँ।²³क्या वही मसीह के खादिम हैं? (मेरा ये कहना दीवानगी है) मैं ज़्यादा तर हूँ मेहनतों में ज़्यादा क़ैद में ज़्यादा कोड़े खाने में हद से ज़्यादा बारहा मौत के खतरों में रहा हूँ।

²⁴मैंने यहूदियों से पाँच बार एक कम चालीस चालीस कोड़े खाए।²⁵तीन बार बँत लगे एक बार पथराव किया गया तीन मर्तबा जहाज़ टूटने की बला में पड़ा रात दिन समुन्दर में काटा।²⁶मैं बार बार सफ़र में दरियाओं के खतरों में डाकुओं के खतरों में अपनी क़ौम से खतरों में ग़ैर क़ौमों के खतरों में शहर के खतरों में वीरान के खतरों में समुन्दर के खतरों में झूठे भाइयों के खतरों में।

²⁷मेहनत और मशक्क़त में बारहा बेदारी की हालत में भूक और प्यास की मुसीबत में बारहा फ़ाक़ा कशी में सर्दी और नंगें पन की हालत में रहा हूँ।²⁸और बातों के अलावा जिनका मैं ज़िक्र नहीं करता सब कलीसियायों की फ़िक्र मुझे हर रोज़ आती है।²⁹किसी की कमज़ोरी से मैं कमज़ोर नहीं होता, किसी के ठोकर खाने से मेरा दिल नहीं दुखता?।

³⁰अगर फ़ख़्र ही करना ज़रूर है तो उन बातों पर फ़ख़्र करूँगा जो मेरी कमज़ोरी से मुता'ल्लिक़ हैं।³¹खुदावन्द ईसा' का खुदा और बाप जिसकी हमेशा तक हम्द हो जानता है कि मैं झूठ नहीं कहता।

³²दमिश्क़ के शहर में उस हाकिम ने जो बादशाह अरितास की तरफ़ से था मेरे पकड़ने के लिए दमिश्क़ियों के शहर पर पहरा बिठा रखा था।³³फिर मैं टोकरे में खिड़की की राह दिवार पर से लटका दिया गया और मैं उसके हाथों से बच गया।

Chapter 12

¹मुझे फ़ख़र करना ज़रूरी हुआ अगरचे मुफ़्फ़ीद नहीं पस जो रोया और मुकाशफ़े खुदावन्द की तरफ़ से इनायत हुए उनका मैं ज़िक्र करता हूँ।²मैं मसीह में एक शख्स को जानता हूँ चौदह बरस हुए कि वो यकायक तीसरे आसमान तक उठा लिया गया न मुझे ये मा'लूम कि बदन समेत न ये मा'लूम कि बग़ैर बदन के ये खुदा को मा'लूम है।

³और मैं ये भी जानता हूँ कि उस शख्स ने बदन समेत या बग़ैर बदन के ये मुझे मा'लूम नहीं खुदा को मा'लूम है।⁴यकायक फ़िरदौस में पहुँचकर ऐसी बातें सुनी जो कहने की नहीं और जिनका कहना आदमी को रवा नहीं।⁵मैं ऐसे शख्स पर तो फ़ख़र करूँगा लेकिन अपने आप पर सिवा अपनी कमज़ोरी के फ़ख़र करूँगा।

⁶और अगर फ़ख़र करना चाहूँ भी तो बेवकूफ़ न ठहरूँगा इसलिए कि सच बोलूँगा मगर तोभी बा'ज़ रहता हूँ ताकि कोई मुझे इस से ज़्यादा न समझे जैसा मुझे देखा है या मुझ से सुना है।⁷और मुकाशफ़ों की ज़ियादती के ज़रिए मेरे फूल जाने के अन्देशे से मेरे जिस्म में कांटा चुभोया गया या'नी शैतान का क़ासिद ताकि मेरे मुक्के मारे और मैं फूल न जाऊँ।

⁸इसके बारे में मैंने तीन बार खुदावन्द से इल्तिमास किया कि ये मुझ से दूर हो जाए।⁹मगर उसने मुझ से कहा कि मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफ़ी है क्योंकि मेरी कुदरत कमज़ोरी में पूरी होती है पस मैं बड़ी खुशी से अपनी कमज़ोरी पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह की कुदरत मुझ पर छाई रहे।¹⁰इसलिए मैं मसीह की खातिर कमज़ोरी में बे'इज़्ज़ती में, एहतियाज में, सताए जाने में, तंगी में, खुश हूँ क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ उसी वक़्त ताक़तवर होता हूँ।

¹¹मैं बेवकूफ़ तो बना मगर तुम ही ने मुझे मजबूर किया, क्योंकि तुम को मेरी तारीफ़ करना चाहिए था इसलिए कि उन अफ़ज़ल रसूलों से किसी बात में कम नहीं अगरचे कुछ नहीं हूँ।¹²सच्चा रसूल होने की अलामतें कमाल सब्र के साथ निशानों और अजीब कामों और मोज़िज़ों के वसीले से तुम्हारे दर्मियान ज़ाहिर हुईं।¹³तुम कौन सी बात में और कलीसियाओं में कम ठहरे बा वजूद इसके मैंने तुम पर बौझ न डाला? मेरी ये बेइन्साफ़ी मु'आफ़ करो।

¹⁴देखो ये तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आने के लिए तैयार हूँ और तुम पर बौझ न डालूँगा इसलिए कि मैं तुम्हारे माल का नहीं बल्कि तुम्हारा चहेता हूँ, क्योंकि लड़कों को माँ बाप के लिए जमा करना नहीं चाहिए, बल्कि माँ बाप को लड़कों के लिए।¹⁵और मैं तुम्हारी रूहों के वास्ते बहुत खुशी से खर्च करूँगा, बल्कि खुद ही खर्च हो जाऊँगा। अगर मैं तुम से ज़्यादा मुहब्बत रखूँ तो क्या तुम मुझ से कम मुहब्बत रखोगे।

¹⁶लेकिन मुम्किन है कि मैंने खुद तुम पर बौझ न डाला हो मगर मक्कार जो हुआ इसलिए तुम को धोखा देकर फँसा लिया हो।¹⁷भला जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा कि उन में से किसी की जरिए दगा के तौर पर तुम से कुछ लिया?।¹⁸मैंने तितुस को समझा कर उनके साथ उस भाई को भेजा पस क्या तितुस ने तुम से दगा के तौर पर कुछ लिया? क्या हम दोनों का चाल चलन एक ही रूह की हिदायत के मुताबिक़ न था; क्या हम एक ही नक्शे क़दम पर न चले।

¹⁹तुम अभी तक यही समझते होगे कि हम तुम्हारे सामने उज़्र कर रहे हैं? हम तो खुदा को हाज़िर जानकर मसीह में बोलते हैं और ऐ, प्यारो ये सब कुछ तुम्हारी तरक्की के लिए है।

²⁰क्योंकि मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो कि आकर जैसा तुम्हें चाहता हूँ वैसा न पाऊँ और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ कि तुम में, झगड़ा, हसद, गुस्सा, तफ़क़े, बद गोइयों, ग़ीबत, शेखी और फ़साद हों।²¹और फिर जब मैं आऊँ तो मेरा खुदा तुम्हारे सामने आजिज़ करे और मुझे बहुतों के लिए अप्सोस करना पड़े जिन्होंने पहले गुनाह किए हैं और उनकी नापाकी और हरामकारी और शहवत परस्ती से जो उन से सरज़द हुई तोबा न की।

Chapter 13

¹ये तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूँ | दो या तीन गवाहों कि ज़बान से हर एक बात साबित हो जाएगी | ²जैसे मैंने जब दूसरी दफ़ा हाज़िर था तो पहले से कह दिया था, वैसे ही अब ग़ैर हाज़िरी में भी उन लोगों से जिन्होंने पहले गुनाह किए हैं और सब लोगों से, पहले से कहे देता हूँ कि अगर फिर आऊंगा तो दर गुज़र न करूँगा |

³क्योंकि तुम इसकी दलील चाहते हो कि मसीह मुझ में बोलता है, और वो तुम्हारे लिए कमज़ोर नहीं बल्कि तुम में ताक़तवर है | ⁴हाँ, वो कमजोरी की वजह से मस्लूब किया गया, लेकिन खुदा की कुदरत की वजह से ज़िन्दा है; और हम भी उसमें कमज़ोर तो हैं, मगर उसके साथ खुदा कि उस कुदरत कि वजह से ज़िन्दा होंगे जो तुम्हारे लिए है |

⁵तुम अपने आप को आजमाओ कि ईमान पर हो या नहीं | अपने आप को जाँचो तुम अपने बारे में ये नहीं जानते हो कि ईसा' मसीह तुम में है? वर्ना तुम नामक्रबूल हो | ⁶लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम मा'लूम कर लोगे कि हम तो नामक्रबूल नहीं |

⁷हम खुदा से दुआ करते हैं कि तुम कुछ बदी न करो ना इस वास्ते कि हम मक्रबूल मालूम हों ' बल्कि इस वास्ते कि तुम नेकी करो चाहे हम नामक्रबूल ही ठहरें |

⁸क्योंकि हम हक़ के बारखिलाफ़ कुछ नहीं कर सकते, मगर सिर्फ़ हक़ के लिए कर सकते हैं |

⁹जब हम कमज़ोर हैं और तुम ताक़तवर हो, तो हम खुश हैं और ये दुआ भी करते हैं कि तुम कामिल बनो | ¹⁰इसलिए मैं ग़ैर हाज़िरी में ये बातें लिखता हूँ ताकि हाज़िर होकर मुझे उस इख़्तियार के मुवाफ़िक़ सख़्ती न करना पड़े जो खुदावन्द ने मुझे बनाने के लिए दिया है न कि बिगाड़ने के लिये |

¹¹गरज़ ऐ भाइयों! खुश रहो, कामिल बनो, इत्मिनान रखो, यकदिल रहो, मेल-मिलाप रखो तो खुदा, मुहब्बत और मेल-मिलाप का चश्मा तुम्हारे साथ होगा |

¹²आपस में पाक बोसा लेकर सलाम करो |

¹³सब मुक़द्दस लोग तुम को सलाम कहते हैं

गलातियों के नाम पौलुस रसूल का ख़त

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से जो ना इन्सानों की जानिब से ना इन्सान की वजह से, बल्कि ईसा 'मसीह और खुदा बाप की वजह से जिसने उसको मुर्दों मे से ज़िलाया, रसूल है; ²और सब भाइयों की तरफ़ से जो मेरे साथ हैं, गलातिया सूबे की कालीसियाओ को ख़त :

³खुदा बाप और हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इतमिनान हासिल होता रहे | ⁴उसी ने हमारे गुनाहों के लिए अपने आप को दे दिया; ताकि हमारे खुदा और बाप की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हमें इस मौजूदा ख़राब ज़हान से ख़लासी बख़्शे | ⁵उसकी बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन | ⁶मैं ताअ'ज्जुब करता हूँ कि जिसने तुम्हें मसीह के फ़ज़ल से बुलाया, उससे तुम इस क्रदर जल्द फिर कर किसी और तरह की खुशख़बरी की तरफ़ माइल होने लगे, ⁷मगर वो दूसरी नहीं; अलबत्ता कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें उलझा देते और मसीह की खुशख़बरी को बिगाड़ना चाहते हैं |

⁸लेकिन हम या आसमान का कोई फ़रिश्ता भी उस खुशख़बरी के सिवा जो हमने तुम्हें सुनाई, कोई और खुशख़बरी सुनाए तो मला'उन हो | ⁹जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ कि उस खुशख़बरी के सिवा जो तुम ने कुबूल की थी, अगर तुम्हें और कोई खुशख़बरी सुनाता है तो मला'उन हो | ¹⁰अब मैं आदमियों को दोस्त बनाता हूँ या खुदा को? क्या आदमियों को खुश करना चाहता हूँ? अगर अब तक आदमियों को खुश करता रहता, तो मसीह का बन्दा ना होता |

¹¹ऐ भाइयों! मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जो खुशख़बरी मैं ने सुनाई वो इंसान की नहीं | ¹²क्योंकि वो मुझे इन्सान की तरफ़ से नहीं पहुँची, और न मुझे सिखाई गई, बल्कि खुदा' मसीह की तरफ़ से मुझे उसका मुकाशफ़ा हुआ |

¹³चुनांचे यहूदी तरीक़े में जो पहले मेरा चाल-चलन था, तुम सुन चुके हो कि मैं खुदा की कलीसिया को अज़हद सताता और तबाह करता था | ¹⁴और मैं यहूदी तरीक़े में अपनी क्रौम के अक्सर हम 'उम्रों से बढ़ता जाता था, और अपने बुजुर्गों की रिवायतों में निहायत सरगर्म था |

¹⁵लेकिन जिस खुदा ने मेरी माँ के पेट ही से मख्सूस कर लिया, और अपने फ़ज़ल से बुला लिया, जब उसकी ये मर्ज़ी हुई ¹⁶कि अपने बेटे को मुझ में ज़ाहिर करे ताकि मैं ग़ैर-क्रौमों मे उसकी खुशख़बरी दूँ, तो न मैंने गोश्त और खून से सलाह ली, ¹⁷और न युरुशलीम में उनके पास गया जो मुझ से पहले रसूल थे, बल्कि फ़ौरन अरब मुल्क को चला गया फिर वहाँ से दमिश्क़ शहर को वापस आया

¹⁸फिर तीन बरस के बाद मैं कैफ़ा से मुलाक़ात करने को गया और पन्द्रह दिन तक उसके पास रहा | ¹⁹मगर और रसूलों में से खुदावन्द के भाई या'कूब के सिवा किसी से न मिला | ²⁰जो बातें मैं तुम को लिखता हूँ, खुदा को हाज़िर जान कर कहता हूँ कि वो झूठी नहीं |

²¹इसके बा'द मैं सूरिया और किलिकीया के इलाक़ों में आया; ²²और यहूदिया सूबा की कालीसियाएँ, जो मसीह में थीं मुझे सूरत से न जानती थी, ²³मगर ये सुना करती थीं, "जो हम को पहले सताता था, वो अब उसी दीन की खुशख़बरी देता है जिसे पहले तबाह करता था | " ²⁴और वो मेरे ज़रि'ए खुदा की बड़ाई करती थी |

Chapter 2

¹आखिर चौदह बरस के बा'द मैं बरनबास के साथ फिर यरुशलीम को गया और तितुस को भी साथ ले गया।²और मेरा जाना मुकाशफ़ा के मुताबिक़ हुआ; और जिस खुशख़बरी की ग़ैर-क्रौमों में मनादी करता हूँ वो उन से बयान की, मगर तन्हाई मे उन्हीं के लोगों से जो कुछ समझे जाते थे, कहीं ऐसा ना हो कि मेरी इस वक्त्र की या अगली दौड़ धूप बेफ़ायदा जाए।

³लेकिन तीतुस भी जो मेरे साथ था और यूनानी है ख़तना करने पर मजबूर न किया गया।⁴और ये उन झूठे भाइयों की वजह से हुआ जो छिप कर दाख़िल हो गए थे, ताकि उस आज़ादी को जो तुम्हें मसीह ईसा' में हासिल है, जासूसों के तौर पर मालूम करके हमे गुलामी में लाएँ।⁵उनके ताबे रहना हम ने पल भर के लिए भी मंज़ूर ना किया, ताकि खुशख़बरी की सच्चाई तुम में क़ायम रहे।

⁶और जो लोग कुछ समझे जाते थे[चाहे वो कैसे ही थे मुझे इससे कुछ भी वास्ता नहीं; खुदा किसी आदमी का तरफ़दार नहीं] उनसे जो कुछ समझे जाते थे मुझे कुछ हासिल ना हुआ।⁷लेकिन बर'अक्स इसके जब उन्होंने ये देखा कि जिस तरह यहूदी मख़्तूनो को खुशख़बरी देने का काम पतरस के सुपुर्द हुआ⁸क्यूंकि जिसने मख़्तूनो की रिसालत के लिए पतरस में असर पैदा किया, उसी ने ग़ैर-यहूदी न मख़्तूनक्रौमों के लिए मुझ में भी असर पैदा किया];

⁹और जब उन्होंने उस तौफ़ीक़ को मा'लूम किया जो मुझे मिली थी, तो या'क़ूब और कैफ़ा और याहुन ने जो कलिसिया के सुतून समझे जाते थे, मुझे और बरनबास को दहना हाथ देकर शरीक कर लिया, ताकि हम ग़ैर क्रौमों के पास जाएँ और वो मख़्तूनो के पास;¹⁰और सिर्फ़ ये कहा कि ग़रीबों को याद रखना, मगर मैं खुद ही इसी काम की कोशिश में हूँ,

¹¹और जब कैफ़ा अंताकिया शहर में आया तो मैने रु-ब-रु होकर उसकी मुखालिफ़त की, क्यूंकि वो मलामत के लायक़ था।¹²इस लिए कि या'क़ूब की तरफ़ से चन्द लोगों के आने से पहले तो वो ग़ैर-क्रौम वालों के साथ ख़ाया करता था, मगर जब वो आ गए तो मख़्तूनो से डर कर बाज़ रहा और किनारा किया।

¹³और बाक़ी यहूदी ईमानदारों ने भी उसके साथ होकर रियाकारी की यहाँ तक कि बरनबास भी उसके साथ रियाकारी में पड़ गया।¹⁴जब मैंने देखा कि वो खुशख़बरी की सच्चाई के मुताबिक़ सीधी चाल नहीं चलते, तो मैने सब के सामने कैफ़ा से क़हा, "जब तू बावजूद यहूदी होने के ग़ैर क्रौमों की तरह ज़िंदगी गुज़ारता है न कि यहूदियों की तरह तो ग़ैर क्रौमों को यहूदियों की तरह चलने पर क्यूँ मजबूर करता है?"

¹⁵जबकि हम पैदाइश से यहूदी हैं, और गुनहगार ग़ैर क्रौमों में से नहीं।¹⁶तोभी ये जान कर कि आदमी शरीअत के आमाल से नहीं बल्कि सिर्फ़ ईसा' मसीह पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरता है खुद भी मसीह ईसा' पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरें न कि शरीअत के आमाल से क्यूंकि शरीअत के अमाल से कोई भी बशर रास्त बाज़ न ठहरेगा।

¹⁷और हम जो मसीह मे रास्तबाज़ ठहरना चाहते हैं, अगर खुद ही गुनाहगार निकलें तो क्या मसीह गुनाह का ज़रि'ए है? हरगिज़ नहीं!¹⁸क्यूंकि जो कुछ मैंने शरी'अत को ढा दिया अगर उसे फिर बनाऊँ, तो अपने आप को कुसुरवार ठहराता हूँ।¹⁹चुनाचे मैं शरी'अत ही के वसीले से शरी'अत के ए'तिबार से मारा गया, ताकि खुदा के ए'तिबार से ज़िंदा हो जाऊँ।

²⁰मैं मसीह के साथ मसलूब हुआ हूँ; और अब मैं ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझ में ज़िंदा है; और मैं जो अब जिस्म में ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ तो खुदा के बेटे पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ, जिसने मुझ से मुहब्बत रखी और अपने आप को मेरे लिए मौत के हवाले कर दिया।²¹मैं खुदा के फ़ज़ल को बेकार नहीं करता, क्यूंकि रास्तबाज़ी अगर शरी'अत के वसीले से मिलती, तो मसीह का मरना बेकार होता।

Chapter 3

¹ 'ऐ नादान गलितियो, किसने तुम पर जादू कर दिया? तुम्हारी तो गोया आंखों के सामने ईसा' मसीह सलीब पर दिखाया गया | ² 'मैं तुम से सिर्फ़ ये गुज़ारिश करना चाहता हूँ : कि तुम ने शरी' अत के आ'माल से पाक रूह को पाया या ईमान की खुशखबरी के पैग़ाम से? ³ क्या तुम ऐसे नादान हो कि पाक रूह के तौर पर शुरू करके अब जिस के तौर पर काम पूरा करना चाहते हो?

⁴ क्या तुमने इतनी तकलीफ़ें बे फ़ायदा उठाई? मगर शायद बे फ़ायदा नहीं | ⁵ पर जो तुम्हें पाक रूह बख़्शता और तुम में मो'जिज़े ज़ाहिर करता है, क्या वो शरी' अत के आ'माल से ऐसा करता है या ईमान के खुशखबरी के पैग़ाम से?

⁶ चुनाचे "अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया | " ⁷ पस जान लो कि जो ईमानवाले हैं, वही अब्रहाम के फ़रज़न्द हैं | ⁸ और किताब-ए- मुक़द्दस ने पहले से ये जान कर कि खुदा ग़ैर क़ौमों को ईमान से रास्तबाज़ ठहराएगा, पहले से ही अब्रहाम को ये खुशखबरी सुना दी, "तेरे ज़रिए सब क़ौमों में बरकत पाएँगी | " ⁹ इस पर जो ईमान वाले हैं, वो ईमानदार अब्रहाम के साथ बरकत पाते हैं |

¹⁰ क्यूँकि जितने शरी' अत के आ'माल पर तकिया करते हैं, वो सब ला'नत के मातहत हैं; चुनाँचे लिखा है, जो कोई उन सब बातों को जो किताब में से लिखी है; क़ायम न रहे वो ला'नती है | ¹¹ और ये बात साफ़ है कि शरी' अत के वसीले से कोई इन्सान खुदा के नज़दीक रास्तबाज़ नहीं ठहरता, क्यूँकि कलाम में लिखा है, "रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा | " ¹² और शरी' अत को ईमान से कुछ वास्ता नहीं, बल्कि लिखा है, "जिसने इन पर 'अमल किया, वो इनकी वजह से जीता रहेगा "

¹³ मसीह जो हमारे लिए ला'नती बना, उसने हमें मोल लेकर शरी' अत की लानत से छुड़ाया, क्यूँकि कलाम में लिखा है, "जो कोई लकड़ी पर लटकाया गया वो ला'नती है | " ¹⁴ ताकि मसीह ईसा' में अब्रहाम की बरकत ग़ैर क़ौमों तक भी पहुँचे, और हम ईमान के वसीले से उस रूह को हासिल करें जिसका वा'दा हुआ है |

¹⁵ 'ऐ भाइयों ! मैं इन्सानियत के तौर पर कहता हूँ कि अगर आदमी ही का 'अहद हो , जब उसकी तसदीक़ हो गई हो तो कोई उसको बातिल नहीं करता और ना उस पर कुछ बढ़ाता है | " ¹⁶ पस अब्रहाम और उसकी नस्ल से वा'दे किए गए | वो ये नहीं कहता, नस्लों से, "जैसा बहुतों के वास्ते कहा जाता है: बल्कि जैसा एक के वास्ते, तेरी नस्ल को और वो मसीह है |

¹⁷ मेरा ये मतलब है : जिस 'अहद की खुदा ने पहले से तसदीक़ की थी, उसको शरी' अत चार सौ तीस बरस के बा'द आकर बातिल नहीं कर सकती कि वो वा'दा लाहासिल हो | ¹⁸ क्यूँकि अगर मीरास शरी' अत की वजह से मिली है तो वा'दे की वजह से ना हुई, मगर अब्रहाम को खुदा ने वा'दे ही की राह से बख़्शी |

¹⁹ पस शरी' अत क्या रही? वो नाफ़रमानियों की वजह से बा'द मे दी गई कि उस नस्ल के आने तक रहे, जिससे वा'दा किया गया था; और वो फ़रिश्तों के वसीले से एक दरमियानी की मा'रिफ़त मुक़र्रर की गई | ²⁰ अब दरमियानी एक का नहीं होता, मगर खुदा एक ही है |

²¹ पस क्या शरी' अत खुदा के वा'दों के खिलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! क्यूँकि अगर कोई ऐसी शरी' अत दी जाती जो ज़िन्दगी बख़्श सकती तो, अलबत्ता रास्तबाज़ी शरी' अत की वजह से होती | ²² मगर किताब-ए-मुक़द्दस ने सबको गुनाह के मातहत कर दिया, ताकि वो वा'दा जो ईसा' मसीह पर ईमान लाने पर मौकूफ़ है, ईमानदारों के हक़ में पूरा किया जाए |

²³ ईमान के आने से पहले शरी' अत की मातहतती मे हमारी निगहबानी होती थी, और उस ईमान के आने तक जो ज़ाहिर होनेवाला था, हम उसी के पाबन्द रहे |

²⁴ पस शरी' अत मसीह तक पहुँचाने को हमारा उस्ताद बनी, ताकि हम ईमान की वज़ह से रास्तबाज़ ठहरें | ²⁵ मगर जब ईमान आ चुका, तो हम उस्ताद के मातहत ना रहे | ²⁶ क्यूँकि तुम उस ईमान के वसीले से जो मसीह ईसा' में है, खुदा के फ़र्ज़न्द हो |

²⁷ और तुम सब, जितनों ने मसीह मैं शामिल होने का बपतिस्मा लिया मसीह को पहन लिया ²⁸ न कोई यहूदी रहा, न कोई यूनानी, न कोई गुलाम, ना आज़ाद, न कोई मर्द, न औरत, क्यूँकि तुम सब मसीह 'ईसा' में एक ही हो | ²⁹ और अगर तुम मसीह के हो तो अब्रहाम की नस्ल और वा'दे के मुताबिक़ वारिस हो |

Chapter 4

¹और मैं ये कहता हूँ कि वारिस जब तक बच्चा है, अगरचे वो सब का मालिक है, उसमें और गुलाम में कुछ फ़र्क़ नहीं।²बल्कि जो मि'आद बाप ने मुकर्रर की उस वक़्त तक सरपरस्तों और मुख्तारों के इख्तियार में रहता है।

³इसी तरह हम भी जब बच्चे थे, तो दुनियावी इब्तिदाई बातों के पाबन्द होकर गुलामी की हालत में रहे।⁴लेकिन जब वक़्त पूरा हो गया, तो ख़ुदा ने अपने बेटे को भेजा जो 'औरत से पैदा हुआ और शरी'अत के मातहत पैदा हुआ, ताकि शरी'अत के मातहतों को मोल लेकर छुड़ा ले और हम को लेपालक होने का दर्जा मिले।

⁶और चूँकि तुम बेटे हो, इसलिए ख़ुदा ने अपने बेटे का रूह हमारे दिलों में भेजा जो 'अब्बा 'या'नी ऐ बाप, कह कर पुकारता है।⁷पस अब तू गुलाम नहीं बल्कि बेटा है, और जब बेटा हुआ तों ख़ुदा के वसीले से वारिस भी हुआ।

⁸लेकिन उस वक़्त ख़ुदा से नवाक़िफ़ होकर तुम उन मा'बूदों की गुलामी में थे जो अपनी ज़ात से ख़ुदा नहीं, मगर अब जो तुम ने ख़ुदा को पहचाना, बल्कि ख़ुदा ने तुम को पहचाना, तो उन कमज़ोर और निकम्मी शुरुआती बातों की तरफ़ किस तरह फिर रुजू होते हो, जिनकी दुबारा गुलामी करना चाहते हो?

¹⁰तुम दिनों और महीनों और मुकर्रर वक़्तों और बरसों को मानते हो।¹¹मुझे तुम्हारे बारे में डर लगता है, कहीं ऐसा न हो कि जो मेहनत मैंने तुम पर की है बेकार न हो जाए

¹²ऐ भाइयों! मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि मेरी तरह हो जाओ, क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह हूँ; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।¹³बल्कि तुम जानते हो कि मैंने पहली बार 'जिस्म की कमज़ोरी की वजह से तुम को खुशख़बरी सुनाई थी।¹⁴और तुम ने मेरी उस जिस्मानी हालत को, जो तुम्हारी आजमाईश का ज़रि'या थी, ना हक़ीर जाना, न उससे नफ़रत की; और ख़ुदा के फ़रिश्ते बल्कि मसीह ईसा' की तरह मुझे मान लिया।

¹⁵पस तुम्हारा वो खुशी मनाना कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ कि हो सकता तो तुम अपनी आंखे भी निकाल कर मुझे दे देते।¹⁶तो क्या तुम से सच बोलने की वजह से मैं तुम्हारा दुश्मन बन गया?

¹⁷वो तुम्हें दोस्त बनाने की कोशिश तो करते हैं, मगर नेक नियत से नहीं; बल्कि वो तुम्हें अलग करना चाहते हैं, ताकि तुम उन्हीं को दोस्त बनाने की कोशिश करो।

¹⁸लेकिन ये अच्छी बात है कि नेक अम्र में दोस्त बनाने की हर वक़्त कोशिश की जाए, न सिर्फ़ जब मैं तुम्हारे पास मौजूद हूँ।

¹⁹ऐ मेरे बच्चों! तुम्हारी तरफ़ से मुझे फिर जनने के से दर्द लगे हैं, जब तक कि मसीह तुम में सूरत न पकड़ ले।²⁰जी चाहता है कि अब तुम्हारे पास मौजूद होकर और तरह से बोलूँ क्योंकि मुझे तुम्हारी तरफ़ से शुबह है।

²¹मुझ से कहो तो, तुम जो शरी'अत के मातहत होना चाहते हो, क्या शरी'अत की बात को नहीं सुनते²²ये कलाम में लिखा है कि अब्राहम के दो बेटे थे; एक लौंडी से और एक आज़ाद से।²³मगर लौंडी का जिस्मानी तौर पर, और आज़ाद का बेटा वा'दे के वजह से पैदा हुआ।

²⁴इन बातों में मिसाल पाई जाती है: इसलिए ये 'औरतें गोया दो; अहद हैं। एक कोह-ए-सीना पर का जिस से गुलाम ही पैदा होते हैं, वो हाजरा है।²⁵और हाजरा 'अरब का कोह-ए-सीना है, और मौजूदा यरूशलीम उसका जवाब है, क्योंकि वो अपने लड़कों समेत गुलामी में है।

²⁶मगर 'आलम-ए-बाला का यरूशलीम आज़ाद है, और वही हमारी माँ है।²⁷क्योंकि लिखा है, 'कि ऐ बाँझ, जिसके औलाद नहीं होती खुशी मना, तू जो दर्द-ए-ज़िह से नावाक़िफ़ है, आवाज़ ऊँची करके चिल्ला; क्योंकि बेकस छोड़ी हुई की औलाद है शौहर वाली की औलाद से ज़्यादा होगी।'

²⁸पस ऐ भाइयों! हम इज़हाक़ की तरह वा'दे के फ़र्ज़न्द हैं।²⁹और जैसे उस वक़्त जिस्मानी पैदाईश वाला रूहानी पैदाईश वाले को सताता था, वैसे ही अब भी होता है।

³⁰मगर किताब-ए-मुक़द्दस क्या कहती है? ये कि "लौंडी और उसके बेटे को निकाल दे, क्योंकि लौंडी का बेटा आज़ाद के साथ हरगिज़ वारिस न होगा।"³¹पस ऐ भाइयों! हम लौंडी के फ़र्ज़न्द नहीं, बल्कि आज़ाद के हैं।

Chapter 5

¹मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए आज़ाद किया है; पस कायम रहो, और दोबारा गुलामी के जुवे में न जुतो। ²सुनो, मैं पौलुस तुमसे कहता हूँ कि अगर तुम खतना कराओगे तो मसीह से तुम को कुछ फ़ाइदा न होगा।

³बल्कि मैं हर एक खतना करने वाले आदमी पर फिर गवाही देता हूँ, कि उसे तमाम शरी'अत पर 'अमल करना फ़र्ज़ है। ⁴तुम जो शरी'अत के वसीले से रास्तबाज़ ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग हो गए और फ़ज़ल से महरूम।

⁵क्योंकि हम पाक रूह के ज़रिए, ईमान से रास्तबाज़ी की उम्मीद बर आने के मुन्तज़िर हैं। ⁶और मसीह ईसा' में न तो खतना कुछ काम का है न नामख़तूनी मगर ईमान जो मुहब्बत की राह से असर करता है। ⁷तुम तो अच्छी तरह दौड़ रहे थे किसने तम्हें हक़ के मानने से रोक दिया। ⁸ये तरगीब खुदा जिसने तुम्हें बुलाया उस की तरफ़ से नहीं है।

⁹थोड़ा सा खमीर सारे गूँधे हुए आटे को खमीर कर देता है। ¹⁰मुझे खुदावन्द में तुम पर ये भरोसा है कि तुम और तरह का खयाल न करोगे; लेकिन जो तुम्हें उलझा देता है, वो चाहे कोई हो सज़ा पाएगा।

¹¹और ऐ भाइयों! अगर मैं अब तक खतना का एलान करता हूँ, तो अब तक सताया क्यूँ जाता हूँ? इस सूरत में तो सलीब की ठोकर तो जाती रही। ¹²काश कि तुम्हें बेक्रार करने वाले अपना तअ'ल्लुक तोड़ लेते।

¹³ऐ भाइयों! तुम आज़ादी के लिए बुलाए तो गए हो, मगर ऐसा न हो कि ये आज़ादी जिस्मानी बातों का मौक़ा, बने; बल्कि मुहब्बत की राह पर एक दूसरे की ख़िदमत करो। ¹⁴क्योंकि पूरी शरी'अत पर एक ही बात से 'अमल हो जाता है, या; नी इससे कि "तू अपने पड़ौसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।" ¹⁵लेकिन अगर तुम एक दूसरे को फाड़ खाते हो, तो खबरदार रहना कि एक दूसरे का सत्यानास न कर दो।

¹⁶मगर मैं तुम से ये कहता हूँ, रूह के मुताबिक़ चलो तो जिस्म की ख्वाहिश को हरगिज़ पूरा न करोगे। ¹⁷क्योंकि जिस्म रूह के खिलाफ़ ख्वाहिश करता है और रूह जिस्म के खिलाफ़ है, और ये एक दूसरे के मुखालिफ़ हैं, ताकि जो तुम चाहो वो न करो। ¹⁸और अगर तुम पाक रूह की हिदायत से चलते हो, तो शरी'अत के मातहत नहीं रहे।

¹⁹अब जिस्म के काम तो ज़ाहिर हैं, या'नी कि हरामकारी, नापाकी, शहवत परस्ती, ²⁰बुत परसती, जादूगरी, अदावतें, झगड़ा, हसद, गुस्सा, तफ़रके, जुदाइयाँ, बिद'अतें, ²¹अदावत, नशाबाज़ी, नाच रंग और इनकी तरह, इनके ज़रिए तुम्हें पहले से कहे देता हूँ जिसको पहले बता चुका हूँ कि ऐसे काम करने वाले खुदा की बादशाही के वारिस न होंगे।

²²मगर पाक रूह का फल मुहब्बत, खुशी, इत्मिनान, सब्र, मेहरबानी, नेकी, ईमानदारी ²³हिल्म, परहेजगारी है; ऐसे कामों की कोई शरी'अत मुखालिफ़ नहीं। ²⁴और जो मसीह ईसा' के हैं उन्होंने जिस्म को उसकी रगबतों और ख्वाहिशों समेत सलीब पर खींच दिया है।

²⁵अगर हम पाक रूह की वजह से जिंदा हैं, तो रूह के मुवाफ़िक़ चलना भी चाहिए। ²⁶हम बेज़ा फ़ख़्र करके न एक दूसरे को चिढ़ायें, न एक दूसरे से जलें।

Chapter 6

¹ऐ भाइयों ! अगर कोई आदमी किसी कुसूर में पकड़ा भी जाए तो तुम जो रूहानी हो, उसको नरम मिज़ाजी*से बहाल करो, और अपना भी खयाल रख कहीं तू भी आजमाइश में न पड़ जाए।²तुम एक दूसरे का बोझ उठाओ, और यूँ मसीह की शरी' अत को पूरा करो।

³क्यूँकि अगर कोई शख्स अपने आप को कुछ समझे और कुछ भी न हो, तो अपने आप को धोखा देता है।⁴पस हर शख्स अपने ही काम को आजमाले, इस सूरत में उसे अपने ही बारे में फ़ख़ करने का मौक़ा' होगा न कि दूसरे के बारे में।⁵क्यूँकि हर शख्स अपना ही बोझ उठाएगा।

⁶कलाम की ता'लीम पानेवाला, ता'लीम देनेवाले को सब अच्छी चीज़ों में शरीक करे।⁷धोखा न खाओ; खुदा ठटों में नहीं उड़ाया जाता, क्यूँकि आदमी जो कुछ बोता है वही काटेगा।⁸जो कोई अपने जिस्म के लिए बोता है, वो जिस्म से हलाकत की फ़सल काटेगा; और जो रूह के लिए बोता है, वो पाक रूह से हमेशा की ज़िंदगी की फ़सल काटेगा।

⁹हम नेक काम करने में हिममत न हारें, क्यूँकि अगर बेदिल न होंगे तो 'सही वक़्त पर काटेंगे।¹⁰पस जहाँ तक मौक़ा मिले सबके साथ नेकी करें खासकर अहले ईमान के साथ।

¹¹देखो, मैंने कैसे बड़े बड़े हरफों में तुम को अपने हाथ से लिखा है।¹²जितने लोग जिस्मानी ज़ाहिर होना चाहते हैं वो तुम्हें खतना कराने पर मजबूर करते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि मसीह की सलीब के वजह से सताए न जायें।¹³क्यूँकि खतना कराने वाले खुद भी शरी' अत पर अमल नहीं करते, मगर तुम्हारा खतना इस लिए कराना चाहते हैं, कि तुम्हारी जिस्मानी हालत पर फ़ख़ करें।

¹⁴लेकिन खुदा न करे कि मैं किसी चीज़ पर फ़ख़, करूँ सिवा अपने खुदावन्द मसीह ईसा' की सलीब के, जिससे दुनिया मेरे ए'तिबार से।¹⁵क्यूँकि न खतना कुछ चीज़ है न नामख़तूनी, बल्कि नए सिरे से मख़लूक होना।¹⁶और जितने इस कायदे पर चलें उन्हें, और खुदा के इसाइल को इत्मिनान और रहम हासिल होता रहे।

¹⁷आगे को कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्यूँकि मैं अपने जिस्म पर मसीह के दाग लिए फिरता हूँ।¹⁸ऐ भाइयों ! हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम्हारे साथ रहे। अमीन

इफ़िसियों के नाम पौलुस रसूल का खत

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से जो खुदा की मर्ज़ी से ईसा' मसीह का रसूल है, उन मुक़द्दसों के नाम खत जो इफ़िसुस शहर में हैं और ईसा' मसीह 'में ईमानदार हैं' हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मिनान हासिल होता रहे।

³हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो, जिसने हम को मसीह में आसमानी मुक़ामों पर हर तरह की रूहानी बरकत बख़्शी।⁴चुनाँचे उसने हम को दुनियाँ बनाने से पहले उसमें चुन लिया, ताकि हम उसके नज़दीक मुहब्बत में पाक और बे'ऐब हों।

⁵खुदा अपनी मर्ज़ी के नेक इरादे के मुवाफ़िक़ हमें अपने लिए पहले से मुक़र्रर किया कि ईसा' मसीह के वसीले से खुदा लेपालक बेटे हों,⁶ताकि उसके उस फ़ज़ल के जलाल की सिताइश हो जो हमें उस 'अज़ीज़ में मुफ़्त बख़्शा।

⁷हम को उसमें 'ईसा के खून के वसीले से मख़लसी, या'नी कुसूरों की मु'आफ़ी उसके उस फ़ज़ल की दौलत के मुवाफ़िक़ हासिल है,⁸जो खुदा ने हर तरह की हिक्मत और दानाई के साथ कसरत से हम पर नाज़िल किया

⁹चुनाँचे उसने अपनी मर्ज़ी के राज़ को अपने उस नेक इरादे के मुवाफ़िक़ हम पर ज़ाहिर किया, जिसे अपने में ठहरा लिया था¹⁰ताकि ज़मानों के पूरे होने का ऐसा इन्तिज़ाम हो कि मसीह में सब चीज़ों का मजमू'आ हो जाए, चाहे वो आसमान की हों चाहे ज़मीन की।

¹¹उसी में हम भी उसके इरादे के मुवाफ़िक़ जो अपनी मर्ज़ी की मसलेहत से सब कुछ करता है, पहले से मुक़र्रर होकर मीरास बने।¹²ताकि हम जो पहले से मसीह की उम्मीद में थे, उसके जलाल की सिताइश का ज़रि'या हो

¹³और उसी में तुम पर भी, जब तुम ने कलाम-ए-हक़ को सुना जो तुम्हारी नजात की खुशख़बरी है और उस पर ईमान लाए, वादा की हुई पाक रूह की मुहर लगी।¹⁴पाक रूह ही खुदा की मिलकियत की मख़लसी के लिए हमारी मीरास की पेशगी है, ताकि उसके जलाल की सिताइश हो।

¹⁵इस वजह से मैं भी उस ईमान का, जो तुम्हारे दरमियान खुदावन्द ईसा' पर है और सब मुक़द्दसों पर ज़ाहिर है, हाल सुनकर।¹⁶तुम्हारे ज़रि'ए शुक्र करने से बा'ज़ नही आता, और अपनी दु'आओं में तुम्हें याद किया करता हूँ।

¹⁷कि हमारे खुदावन्द ईसा' 'मसीह का खुदा जो जलाल का बाप है, तुम्हें अपनी पहचान में हिक्मत और मुकाशफ़ा की रूह बख़्शे;¹⁸और तुम्हारे दिल की आँखें रौशन हो जाएँ ताकि तुम को मालूम हो कि उसके बुलाने से कैसी कुछ उम्मीद है, और उसकी मीरास के जलाल की दौलत मुक़द्दसों में कैसी कुछ है,

¹⁹और हम ईमान लानेवालों के लिए उसकी बड़ी कुदरत क्या ही अज़ीम है। उसकी बड़ी कुव्वत की तासीर के मुवाफ़िक़,²⁰जो उसने मसीह में की, जब उसे मुर्दों में से जिला कर अपनी दहनी तरफ़ आसमानी मुक़ामों पर बिठाया,²¹और हर तरह की हुकूमत और इख़्तियार और कुदरत और रियासत और हर एक नाम से बहुत ऊँचा किया, जो न सिर्फ़ इस ज़हान में बल्कि आनेवाले ज़हान में भी लिया जाएगा;

²²और सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया; और उसको सब चीज़ों का सरदार बनाकर कलीसिया को दे दिया,²³ये 'ईसा का बदन है, और उसी की मा'मूरी जो हर तरह से सबका मा'मूर करने वाला है।

Chapter 2

¹और उसने तुम्हें भी ज़िन्दा किया जब अपने कुसूरों और गुनाहों की वजह से मुर्दा थे।²जिनमें तुम पहले दुनियाँ की रविश पर चलते थे, और हवा की 'अमलदारी के हाकिम या'नी उस रूह की पैरवी करते थे जो अब नाफ़रमानी के फ़रज़न्दों में तासीर करती है।³इनमें हम भी सबके सब पहले अपने जिस्म की ख्वाहिशों में ज़िन्दगी गुज़ारते और जिस्म और 'अक्ल के इरादे पुरे करते थे, और दूसरों की तरह फ़ितरतन ग़ज़ब के फ़र्ज़न्द थे।

⁴मगर खुदा ने अपने रहम की दौलत से, उस बड़ी मुहब्बत की वजह से जो उसने हम से की,⁵कि अगर्चे हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया आपको खुदा के फ़ज़ल ही से नज़ात मिली है⁶और मसीह ईसा' में शामिल करके उसके साथ जिलाया, और आसमानी मुक़ामों पर उसके साथ बिठाया।⁷ताकि वो अपनी उस महरबानी से जो मसीह ईसा' में हम पर है, आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़ल की अज़ीम दौलत दिखाए।

⁸क्योंकि तुम को ईमान के वसीले फ़ज़ल ही से नज़ात मिली है; और ये तुम्हारी तरफ़ से नहीं, खुदा की बाख़्शिश है,⁹और न आ'माल की वजह से है, ताकि कोई फ़ख़्र न करे।¹⁰क्योंकि हम उसकी कारीगरी हैं, और ईसा मसीह में उन नेक आ'माल के वास्ते पैदा हुए जिनको खुदा ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया था।

¹¹पस याद करो कि तुम जो जिस्मानी तौर से ग़ैर-क्रौम वाले हो (और वो लोग जो जिस्म में हाथ से किए हुए ख़तने की वजह से कहलाते हैं, तुम को नामख़तून कहते हैं)।¹²अगले ज़माने में मसीह से जुदा, और इस्राईल की सल्तनत से अलग, और वा'दे के 'अहदों से नावाक़िफ़, और नाउम्मीद और दुनियाँ में खुदा से जुदा थे।

¹³मगर तुम जो पहले दूर थे, अब ईसा' मसीह' में मसीह के ख़ून की वजह से नज़दीक हो गए हो।¹⁴क्योंकि वही हमारी सुलह है, जिसने दोनों को एक कर लिया और जुदाई की दीवार को जो बीच में थी ढा दिया,¹⁵चुनाँचे उसने अपने जिस्म के ज़री'ए से दुश्मनी, या'नी वो शरी'अत जिसके हुक्म ज़ाबितों के तौर पर थे, मौक़ूफ़ कर दी ताकि दोनों से अपने आप में एक नया इन्सान पैदा करके सुलह करा दे;¹⁶और सलीब पर दुश्मनी को मिटा कर और उसकी वजह से दोनों को एक तन बना कर खुदा से मिलाए।

¹⁷और उसने आ कर तुम यहूदी जो खुदा के नज़दीक थे, और ग़ैर यहूदी जो खुदा से दूर थे दोनों को सुलह की खुशख़बरी दी।¹⁸क्योंकि उसी के वसीले से हम दोनों की, एक ही रूह में बाप के पास रसाई होती है।

¹⁹पस अब तुम परदेसी और मुसाफ़िर नहीं रहे, बल्कि मुक़द्दसों के हमवतन और खुदा के घराने के हो गए।²⁰और रसूलों और नबियों की नींव पर, जिसके कोने के सिरे का पत्थर खुद ईसा' मसीह है, तामीर किए गए हो।²¹उसी में हर एक 'इमारत मिल-मिलाकर खुदावन्द में एक पाक मक़्दिस बनता जाता है।²²और तुम भी उसमें बाहम ता'मीर किए जाते हो, ताकि रूह में खुदा का मस्कन बनो।

Chapter 3

¹इसी वजह से मैं पौलुस जो तुम गैर-क्रौम वालों की खातिर ईसा' मसीह का कैदी हूँ।²शायद तुम ने खुदा के उस फ़ज़ल के इन्तज़ाम का हाल सुना होगा, जो तुम्हारे लिए मुझ पर हुआ।

³या'नी ये कि वो भेद मुझे मुकाशफ़ा से मा'लूम हुआ। चुनौचे मैंने पहले उसका थोड़ा हाल लिखा है, 'जिसे पढ़कर तुम मा'लूम कर सकते हो कि मैं मसीह का वो राज़ किस क्रदर समझता हूँ।⁴जो और ज़मानों में बनी आदम को इस तरह मा'लूम न हुआ था, जिस तरह उसके मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर पाक रूह में अब ज़ाहिर हो गया है;

⁶या'नी ये कि ईसा' मसीह में गैर-क्रौम खुशख़बरी के वसीले से मीरास में शरीक और बदन में शामिल और वा'दों में दाख़िल हैं।⁷और खुदा के उस फ़ज़ल की बख़्शिश से जो उसकी कुदरत की तासीर से मुझ पर हुआ, मैं इस खुशख़बरी का खादिम बना।

⁸मुझ पर जो सब मुक़द्दसों में छोटे से छोटा हूँ, फ़ज़ल हुआ कि गैर-कौमों को मसीह की बेक्रयास दौलत की खुशख़बरी दूँ।⁹और सब पर ये बात रोशन करूँ कि जो राज़ अज़ल से सब चीज़ों के पैदा करनेवाले खुदा में छुपा रहा उसका क्या इन्तज़ाम है।

¹⁰ताकि अब कलीसिया के वसीले से खुदा की तरह तरह की हिक्मत उन हुक्मतवालों और इख़्तियार वालों को जो आसमानी मुक़ामों में हैं, मा'लूम हो जाए।

¹¹उस अज़ली इरादे के जो उसने हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह में किया था,

¹²जिसमें हम को उस पर ईमान रखने की वजह से दिलेरी है और भरोसे के साथ रसाई।¹³पस मैं गुज़ारिश करता हूँ कि तुम मेरी उन मुसीबतों की वजह से जो तुम्हारी खातिर सहता हूँ हिम्मत न हारो, क्योंकि वो तुम्हारे लिए 'इज़्ज़त का ज़रि'या हैं।

¹⁴इस वजह से मैं उस बाप के आगे घुटने टेकता हूँ,¹⁵जिससे आसमान और ज़मीन का हर एक खानदान नामज़द है।¹⁶कि वो अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ तुम्हें ये 'इनायत करे कि तुम खुदा की रूह से अपनी बातिनी इन्सानियत में बहुत ही ताक़तवर हो जाओ,

¹⁷और ईमान के वसीले से मसीह तुम्हारे दिलों में सुकूनत करे ताकि तुम मुहब्बत में जड़ पकड़ के और बुनियाद कायम करके,¹⁸सब मुक़द्दसों समेत बख़ूबी मा'लूम कर सको कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है,¹⁹और मसीह की उस मुहब्बत को जान सको जो जानने से बाहर है ताकि तुम खुदा की सारी मा'मूरी तक मा'मूर हो जाओ।

²⁰अब जो ऐसा क़ादिर है कि उस कुदरत के मुवाफ़िक़ जो हम में तासीर करती है, हमारी गुज़ारिश और खयाल से बहुत ज़्यादा काम कर सकता है,²¹कलीसिया में और ईसा' मसीह में पुश्त-दर-पुश्त और हमेशा हमेशा उसकी बड़ाई होती रहे। आमीन।

Chapter 4

¹पस मैं जो खुदावन्द में कैदी हूँ, तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि जिस बुलावे से तुम बुलाए गए थे उसके मुवाफ़िक़ चाल चलो, ²या'नी कमाल दरयादिली और नर्मदिल के साथ सब्र करके मुहब्बत से एक दुसरे की बर्दाश्त करो; ³सुलह सलामती के बंधन में रहकर रूह की सौगात क़ायम रखने की पूरी कोशिश करें ⁴एक ही बदन है और एक ही रूह; चुनाँचे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से उम्मीद भी एक ही है। ⁵एक ही खुदावन्द, है एक ही ईमान है, एक ही बपतिस्मा, ⁶और सब का खुदा और बाप एक ही है, जो सब के ऊपर और सब के दर्मियान और सब के अन्दर है।

⁷और हम में से हर एक पर मसीह की बाख़्तिश के अंदाज़े के मुवाफ़िक़ फ़ज़ल हुआ है। ⁸इसी वास्ते वो फ़रमाता है, “जब वो 'आलम-ए-बाला पर चढ़ा तो कैदियों को साथ ले गया, और आदमियों को इन'आम दिए।”

⁹(उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है? सिवा इसके कि वो ज़मीन के नीचे के 'इलाक़े में उतरा भी था। ¹⁰और ये उतरने वाला वही है जो सब आसमानों से भी ऊपर चढ़ गया, ताकि सब चीज़ों को मा'मूर करे।)

¹¹और उसी ने कुछ को रसूल, और कुछ को नबी, और कुछ को मुबशिश, और कुछ को चरवाहा और उस्ताद बनाकर दे दिया। ¹²ताकि मुक़द्दस लोग कामिल बनें और ख़िदमत गुज़ारी का काम किया जाए, ¹³जब तक हम सब के सब खुदा के बेटे के ईमान और उसकी पहचान में एक न हो जाएँ और पूरा इन्सान न बनें, या'नी मसीह के पुरे क़द के अन्दाज़े तक न पहुँच जाएँ।

¹⁴ताकि हम आगे को बच्चे न रहें और आदमियों की बाज़ीगरी और मक्कारी की वजह से उनके गुमराह करनेवाले इरादों की तरफ़ हर एक ता'लीम के झोंके से मौजों की तरह उछलते बहते न फिरें। ¹⁵बल्कि मुहब्बत के साथ सच्चाई पर क़ायम रहकर और उसके साथ जो सिर है, या'नी मसीह के साथ, पैवस्ता हो कर हर तरह से बढ़ते जाएँ। ¹⁶जिससे सारा बदन, हर एक जोड़ की मदद से पैवस्ता होकर और गठ कर, उस तासीर के मुवाफ़िक़ जो बक्रद-ए-हर हिस्सा होती है, अपने आप को बढ़ाता है ताकि मुहब्बत में अपनी तरक्की करता जाए।

¹⁷इस लिए मैं ये कहता हूँ और खुदावन्द में जताए देता हूँ कि जिस तरह ग़ैर-क्रौमें अपने बेहूदा खयालात के मुवाफ़िक़ चलती हैं, तुम आइन्दा को उस तरह न चलना। ¹⁸क्योंकि उनकी 'अक़ल तारीक़ हो गई है, और वो उस नादानी की वजह से जो उनमें है और अपने दिलों की सख़्ती के ज़रिए खुदा की ज़िन्दगी से अलग हैं। ¹⁹उन्होंने खामोशी के साथ शहवत परस्ती को इख़्तियार किया, ताकि हर तरह के गन्दे काम की हिर्स करें।

²⁰मगर तुम ने मसीह की ऐसी ता'लीम नहीं पाई। ²¹बल्कि तुम ने उस सच्चाई के मुताबिक़ जो ईसा' में है, उसी की सुनी और उसमें ये ता'लीम पाई होगी। ²²कि तुम अपने अगले चाल-चलन की पुरानी इन्सानियत को उतार डालो, जो धोके की शहवतों की वजह से ख़राब होती जाती है

²³और अपनी 'अक़ल की रूहानी हालात में नये बनते जाओ, ²⁴और नई इन्सानियत को पहनो जो खुदा के मुताबिक़ सच्चाई की रास्तबाज़ी और पाकीज़गी में पैदा की गई है।

²⁵पस झूट .बोलना छोड़ कर हर एक शख्स अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के 'बदन हैं। ²⁶गुस्सा तो करो, मगर गुनाह न करो। सूरज के डूबने तक तुम्हारी नाराज़गी न रहे, ²⁷और इब्लीस को मौक़ा न दो।

²⁸चोरी करने वाला फिर चोरी न करे, बल्कि अच्छा हुनर इख़्तियार करके हाथों से मेहनत करे ताकि मुहताज को देने के लिए उसके पास कुछ हो। ²⁹कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, बल्कि वही जो ज़रूरत के मुवाफ़िक़ तरक्की के लिए अच्छी हो, ताकि उससे सुनने वालों पर फ़ज़ल हो। ³⁰और खुदा के पाक रूह को ग़मगीन न करो, जिससे तुम पर रिहाई के दिन के लिए मुहर हुई।

³¹हर तरह की गर्म मिज़ाजी, और क्रहर, और गुस्सा, और शोर-ओ-ग़ुल, और बुराई, हर क्रिस्म की बद ख़्वाही समेत तुम से दूर की जाएँ। ³²और एक दूसरे पर मेंहरबान और नर्मदिल हो, और जिस तरह खुदा ने मसीह में तुम्हारे कुसूर मु'आफ़ किए हैं, तुम भी एक दूसरे के कुसूर मु'आफ़ करो।

Chapter 5

¹पस 'अज़ीज़ बेटों की तरह खुदा की तरह बनो,² और मुहब्बत से चलो जैसे मसीह ने तुम से मुहब्बत की, और हमारे वास्ते अपने आपको खुशबू की तरह खुदा की नज़र करके कुर्बान किया।

³जैसे के मुकद्दसों को मुनासिब है, तुम में हरामकारी और किसी तरह की नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो;⁴ और न बेशर्मी और बेहूदा गोई और ठट्ठा बाज़ी का, क्योंकि ये लायक नहीं; बल्कि बर'अक्स इसके शुक्र गुज़ारी हो।

⁵क्योंकि तुम ये खूब जानते हो कि किसी हरामकार, या नापाक, या लालची की जो बुत परस्त के बराबर है, मसीह और खुदा की बादशाही में कुछ मीरास नहीं।

⁶कोई तुम को बे फ़ायदा बातों से धोका न दे, क्योंकि इन्हीं गुनाहों की वजह से नाफ़रमानों के बेटों पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल होता है।⁷पस उनके कामों में शरीक न हो।

⁸क्योंकि तुम पहले अँधेरे थे; मगर अब खुदावन्द में नूर हो, पस नूर के बेटे की तरह चलो,⁹ (इसलिए कि नूर का फल हर तरह की नेकी और रास्तबाज़ी और सच्चाई है)।¹⁰ और तज़ुरबे से मा'लूम करते रहो के खुदावन्द को क्या पसंद है।¹¹ और अँधेरे के बे फल कामों में शरीक न हो, बल्कि उन पर मलामत ही किया करो।¹² क्योंकि उनके छुपे हुए कामों का ज़िक्र भी करना शर्म की बात है।

¹³और जिन चीज़ों पर मलामत होती है वो सब नूर से ज़ाहिर होती है, क्योंकि जो कुछ ज़ाहिर किया जाता है वो रोशन हो जाता है।¹⁴ इसलिए वो कलाम में फ़रमाता है, "ऐ सोने वाले, जाग और मुर्दों में से जी उठ, तो मसीह का नूर तुझ पर चमकेगा।"

¹⁵पस ग़ौर से देखो कि किस तरह चलते हो, नादानों की तरह नहीं बल्कि अक्लमंदों की तरह चलो;¹⁶ और वक़्त को ग़नीमत जानो क्योंकि दिन बुरे हैं।¹⁷ इस वजह से नादान न बनो, बल्कि खुदावन्द की मर्ज़ी को समझो कि क्या है।

¹⁸और शराब में मतवाले न बनो क्योंकि इससे बदचलनी पेश ' आती है, बल्कि पाक रूह से मा'मूर होते जाओ,¹⁹ और आपस में दु'आएं और गीत और रूहानी ग़ज़लें गाया करो, और दिल से खुदावन्द के लिए गाते बजाते रहा करो।²⁰ और सब बातों में हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के नाम से हमेशा खुदा बाप का शुक्र करते रहो।²¹ और मसीह के ख़ौफ़ से एक दुसरे के फ़र्माबरदार रहो।

²²ऐ बीवियों, अपने शौहरों की ऐसी फ़र्माबरदार रहो जैसे खुदावन्द की।²³ क्योंकि शौहर बीवी का सिर है, जैसे के मसीह कलीसिया का सिर है और वो खुद बदन का बचानेवाला है।²⁴ लेकिन जैसे कलीसिया मसीह की फ़र्माबरदार है, वैसे बीवियाँ भी हर बात में अपने शौहरों की फ़र्माबरदार हों।

²⁵ऐ शौहरो! अपनी बीवियों से मुहब्बत रखो, जैसे मसीह ने भी कलीसिया से मुहब्बत करके अपने आप को उसके वास्ते मौत के हवाले कर दिया,²⁶ ताकि उसको कलाम के साथ पानी से गुस्ल देकर और साफ़ करके मुकद्दस बनाए,²⁷ और एक ऐसी जलाल वाली कलीसिया बना कर अपने पास हाज़िर करे, जिसके बदन में दाग या झुर्री या कोई और ऐसी चीज़ न हो, बल्कि पाक और बे'ऐब हो।

²⁸इसी तरह शौहरों को ज़रूरी है कि अपनी बीवियों से अपने बदन की तरह मुहब्बत रखें। जो अपने बीवी से मुहब्बत रखता है, वो अपने आप से मुहब्बत रखता है।²⁹ क्योंकि कभी किसी ने अपने जिस्म से दुश्मनी नहीं की बल्कि उसको पालता और परवरिश करता है, जैसे कि मसीह कलीसिया को।³⁰ इसलिए कि हम उसके बदन के 'हिस्सा हैं।

³¹"इसी वजह से आदमी बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ रहेगा, और वो दोनों एक जिस्म होंगे।"³² ये राज़ तो बड़ा है, लेकिन मैं मसीह और कलीसिया के ज़रिए कहता हूँ।³³ बहरहाल तुम में से भी हर एक अपनी बीवी से अपनी तरह मुहब्बत रखे, और बीवी इस बात का खयाल रखे कि अपने शौहर से डरती रहे।

Chapter 6

¹ऐ फ़र्ज़न्दों! खुदावन्द में अपने माँ-बाप के फ़र्माबरदार रहो, क्योंकि ये ज़रूरी है।²अपने बाप और माँ की 'इज़ज़त कर (ये पहला हुक्म है जिसके साथ वा'दा भी है) "ताकि तेरा भला हो, और तेरी ज़मीन पर उम्र लम्बी हो।"

⁴ऐ औलाद वालो! तुम अपने फ़र्ज़न्दों को गुस्सा न दिलाओ, बल्कि खुदावन्द की तरफ़ से तरबियत और नसीहत दे देकर उनकी परवरिश करो।

⁵ऐ नौकरों! जो जिस्मानी तौर से तुम्हारे मालिक हैं, अपनी साफ़ दिली से डरते और काँपते हुए उनके ऐसे फ़र्माबरदार रहो जैसे मसीह के;⁶और आदमियों को खुश करनेवालों की तरह दिखावे के लिए ख़िदमत न करो, बल्कि मसीह के बन्दों की तरह दिल से खुदा की मर्ज़ी पूरी करो।⁷और ख़िदमत को आदमियों की नहीं बल्कि खुदावन्द की जान कर, जी से करो।⁸क्योंकि, तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे गुलाम हो या चाहे आज़ाद, खुदावन्द से वैसा ही पाएगा।

⁹और ऐ मलिको! तुम भी धमकियाँ छोड़ कर उनके साथ ऐसा सुलूक करो; क्योंकि तुम जानते हो उनका और तुम्हारा दोनों का मालिक आसमान पर है, और वो किसी का तरफ़दार नहीं।

¹⁰गरज़ खुदावन्द में और उसकी कुदरत के ज़ोर में मज़बूत बनो।¹¹खुदा के सब हथियार बाँध लो ताकि तुम इब्लीस के इरादों के मुकाबले में क़ायम रह सको।

¹²क्योंकि हमें खून और गोश्त से कुश्ती नहीं करना है, बल्कि हुक्मतवालों और इख़्तियार वालों और इस दुनियाँ की तारीकी के हाकिमों और शरारत की उन रूहानी फ़ौजों से जो आसमानी मुक़ामों में हैं।¹³इस वास्ते खुदा के सब हथियार बाँध लो ताकि बुरे दिन में मुकाबला कर सको, और सब कामों को अंजाम देकर क़ायम रह सको।

¹⁴पस सच्चाई से अपनी कमर कसकर, और रास्तबाज़ी का बख़्तर लगाकर,¹⁵और पाँव में सुलह की खुशख़बरी की तैयारी के जूते पहन कर,¹⁶और उन सब के साथ ईमान की सिपर लगा कर क़ायम रहो, जिससे तुम उस शरीर के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको;।

¹⁷और नजात का टोप, और रूह की तलवार, जो खुदा का कलाम है ले लो;¹⁸और हर वक़्त और हर तरह से रूह में दु'आ और मिन्नत करते रहो, और इसी गरज़ से जागते रहो कि सब मुक़द्दसों के वास्ते बिला नागा दु'आ किया करो,

¹⁹और मेरे लिए भी ताकि बोलने के वक़्त मुझे कलाम करने की तौफ़ीक़ हो, जिससे मैं खुशख़बरी के राज़ को दिलेरी से ज़ाहिर करूँ, ²⁰जिसके लिए ज़ंजीर से जकड़ा हुआ एल्वी हूँ, और उसको ऐसी दिलेरी से बयान करूँ जैसा बयान करना मुझ पर फ़र्ज़ है।

²¹तख़िकुस जो प्यारा भाई खुदावन्द में दियानतदार खादिम है, तुम्हें सब बातें बता देगा ताकि तुम भी मेरे हाल से वाक़िफ़ हो जाओ कि मैं किस तरह रहता हूँ।

²²उसको मैं ने तुम्हारे पास इसी वास्ते भेजा है कि तुम हमारी हालत से वाक़िफ़ हो जाओ और वो तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे।

²³खुदा बाप और खुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से भाइयों को इत्मीनान हासिल हो, और उनमें ईमान के साथ मुहब्बत हो।²⁴जो हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह से लाज़वाल मुहब्बत रखते हैं, उन सब पर फ़ज़ल होता रहे।

फ़िलिप्पियों के नाम पौलुस रसूल का ख़त

Chapter 1

¹मसीह ईसा' के बन्दों पौलुस और तिमुथियुस की तरफ़ से,फ़िलिप्पियों शहर के सब मुक़द्दसों के नाम जो मसीह ईसा में हैं;निगहबानों और खादिमों समेत ख़त।

²हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

³मैं जब कभी तुम्हें याद करता हूँ, तो अपने खुदा का शुक्र बजा लाता हूँ,⁴और हर एक दु'आ में जो तुम्हारे लिए करता हूँ, हमेशा खुशी के साथ तुम सब के लिए दरख़वास्त करता हूँ।⁵इस लिए कि तुम पहले दिन से लेकर आज तक खुशख़बरी के फैलाने में शरीक रहे हो।⁶और मुझे इस बात का भरोसा है कि जिस ने तुम में नेक काम शुरू किए हैं, वो उसे ईसा' मसीह के आने तक पूरा कर देगा।

⁷चुनांचे ज़रूरी है कि मैं तुम सब के बारे में ऐसा ही खयाल करूँ, क्योंकि तुम मेरे दिल में रहते हो,और क़ैद और खुशख़बरी की जवाब दिही और सुबूत में तुम सब मेरे साथ फ़ज़ल में शरीक हो।⁸खुदा मेरा गवाह है कि मैं ईसा' जैसी मुहबत करके तुम सब को चाहता हूँ।

⁹और ये दु'आ करता हूँ कि तूम्हारी मुहब्बत 'इल्म और हर तरह की तमीज़ के साथ और भी ज़्यादा होती जाए,।¹⁰ताकि 'अच्छी अच्छी बातों को पसन्द कर सको, और मसीह के दीन में पाक साफ़ दिल रहो,और ठोकर न खाओ;।¹¹और रास्तबाज़ी के फल से जो ईसा' मसीह के ज़रिए से है, भरे रहो, ताकि खुदा का जलाल ज़ाहिर हो और उसकी सिताइश की जाए।

¹²ए भाइयों! मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि जो मुझ पर गुज़रा,वो खुशख़बरी की तरक्की का ज़रिए हुआ।¹³यहाँ तक कि मैं कैसरी सिपाहियों की सारी पलटन और बाक़ी सब लोगों में मशहूर हो गया कि मैं मसीह के वास्ते क़ैद हूँ;।¹⁴और जो खुदावन्द में भाई हैं, उनमें अक्सर मेरे क़ैद होने के ज़रिए से दिलेर होकर बेखौफ़ खुदा का कलाम सुनाने की ज़्यादा हिम्मत करते हैं।

¹⁵कुछ तो हसद और झगड़े की वजह से मसीह का ऐलान करते हैं और कुछ नेक नियती से।¹⁶एक तो मुहब्बत की वजह से मसीह का ऐलान करते हैं कि मैं खुशख़बरी की जवाबदेही के वास्ते मुक़र्रर हूँ।¹⁷अगर दूसरे तफ़्फ़े की वजह से न कि साफ़ दिली से,बल्कि इस खयाल से कि मेरी क़ैद में मेरे लिए मुसीबत पैदा करें।

¹⁸पस क्या हुआ? सिर्फ़ ये की हर तरह से मसीह की मनादी होती है, चाहे बहाने से हो चाहे सच्चाई से, और इस से मैं खुश हूँ और रहूँगा भी।¹⁹क्योंकि मैं जानता हूँ कि तूम्हारी दु'आ और 'ईसा' मसीह के रूह के इन'आम से इन का अन्जाम मेरी नजात होगा।

²⁰चुनाँचे मेरी दिली आरजू और उम्मीद यही है कि, मैं किसी बात में शर्मिदा न हूँ बल्कि मेरी कमाल दिलेरी के ज़रिए जिस तरह मसीह की ताज़ीम मेरे बदन की वजह से हमेशा होती रही है उसी तरह अब भी होगी, चाहे मैं ज़िंदा रहूँ चाहे मरूँ।²¹ क्योंकि ज़िंदा रहना मेरे लिए मसीह और मरना नफ़ा।

²²लेकिन अगर मेरा जिस्म में ज़िंदा रहना ही मेरे काम के लिए फ़ायदा है, तो मैं नहीं जानता किसे पसन्द करूँ।²³ मैं दोनों तरफ़ फँसा हुआ हूँ; मेरा जी तो ये चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि ये बहुत ही बेहतर है;²⁴ मगर जिस्म में रहना तुम्हारी खातिर ज़्यादा ज़रूरी है।

²⁵और चूँकि मुझे इसका यकीन है इसलिए मैं जानता हूँ कि ज़िंदा रहूँगा, ताकि तुम ईमान में तरक्की करो और उस में खुश रहो;²⁶ और जो तुम्हें मुझ पर फ़ख़्र है वो मेरे फिर तुम्हारे पास आनेसे मसीह ईसा' में ज़्यादा हो जाए²⁷ सिर्फ़ ये करो कि मसीह में तुम्हारा चाल चलन मसीह के खुशख़बरी के मुवाफ़िक़ रहे ताकि; चाहे मैं आऊँ और तूम्हें देखूँ चाहे न आऊँ, तूम्हारा हाल सुनूँ कि तुम एक रूह में क़ायम हो, और ईन्जील के ईमान के लिए एक जान होकर कोशिश करते हो,।

²⁸और किसी बात में मुखालिफ़ों से दहशत नहीं खाते। ये उनके लिए हलाकत का साफ़ निशान है; लेकिन तुम्हारी नजात का और ये खुदा की तरफ़ से है।²⁹ क्योंकि मसीह की खातिर तुम पर ये फ़ज़ल हुआ कि न सिर्फ़ उस पर ईमान लाओ बल्कि उसकी खातिर दुख भी सहो;³⁰ और तुम उसी तरह मेहनत करते रहो जिस तरह मुझे करते देखा था, और अब भी सुनते हो की मैं वैसा ही करता हूँ।

Chapter 2

¹पर अगर कुछ तसल्ली मसीह में और मुहब्बत की दिलजम'ई और रूह की शराकत और रहमदिली और -दर्द मन्दी है,²तो मेरी खुशी पूरी करो कि एक दिल रहो,यकसाँ मुहब्बत रखो एक जान हो, एक ही खयाल रखो।

³तफ़्फ़े और बेज़ा फ़ख़्र के बारे में कुछ न करो,बल्कि फ़रोतनी से एक दूसरे को अपने से बेहतर समझो।⁴हर एक अपने ही अहवाल पर नहीं, बल्कि हर एक दूसरों के अहवाल पर भी नज़र रखे।

⁵वैसा ही मिज़ाज रखो जैसा मसीह ईसा' का भी था;⁶उसने अगरचे ख़ुदा की सूरत पर था, ख़ुदा के बराबर होने को क़ब्ज़े के रखने की चीज़ न समझा।⁷बल्कि अपने आप को ख़ाली कर दिया और ख़ादिम की सूरत इख़्तियार की और इन्सानों के मुशाबह हो गया।⁸और इन्सानी सूरत में ज़ाहिर होकर अपने आप को पस्त कर दिया और यहाँ तक फ़रमाबरदार रहा कि मौत बल्कि सलीबी मौत गवारा की।

⁹इसी वास्ते ख़ुदा ने भी उसे बहुत सर बुलन्द किया और उसे वो नाम बख़्शा जो सब नामों से आ'ला है¹⁰ताकि 'ईसा' के नाम पर हर एक घुटना झुके; चाहे आसमानियों का हो चाहे ज़मीनीयों का,चाहे उनका जो ज़मीन के नीचे हैं।¹¹और ख़ुदा बाप के जलाल के लिए हर एक ज़बान इकरार करे कि 'ईसा' मसीह ख़ुदावन्द है

¹²पस ए मेरे अज़ीज़ो जिस तरह तुम हमेशा से फ़र्माबरदारी करते आए हो उसी तरह न सिर्फ़ मेरी हाज़िरी में, बल्कि इससे बहुत ज़्यादा मेरी ग़ैर हाज़िरी में डरते और काँपते हुए अपनी नजात का काम किए जाओ,¹³क्योंकि जो तुम में नियत और 'अमल दोनों को,अपने नेक इरादे को अन्जाम देने के लिए पैदा करता वो ख़ुदा है।

¹⁴सब काम शिकायत और तकरार बग़ैर किया करो,¹⁵ताकि तुम बे ऐब और भोले हो कर टेढ़े और कजरौ लोगों में ख़ुदा के बेनुक्स फ़र्ज़न्द बने रहो [जिनके बीच दुनियां में तुम चराग़ों की तरह दिखाई देते हो,¹⁶और ज़िदिगी का कलाम पेश करते हो];ताकि मसीह के वापस के आने दिन मुझे तुम पर फ़ख़्र हो कि न मेरी दौड़-धूप बे फ़ायदा हुई, न मेरी मेहनत अकारत गई।

¹⁷और अगर मुझे तुम्हारे ईमान की कुर्बानी और ख़िदमत के साथ अपना ख़ून भी बहाना पड़े, तो भी खुश हूँ और तुम सब के साथ खुशी करता हूँ।¹⁸तुम भी इसी तरह खुश हो और मेरे साथ खुशी करो।

¹⁹मुझे ख़ुदावन्द' ईसा ' में खुशी है उम्मीद है कि तिमोथियूस को तुम्हारे पास जल्द भेजूंगा ,ताकि तुम्हारा अहवाल दरयाफ़्त करके मेरी भी खातिर जमा' हो।

²⁰क्योंकि कोई ऐसा हम खयाल मेरे पास नहीं,जो साफ़ दिली से तुम्हारे लिए फ़िक्रमन्द हो।²¹सब अपनी अपनी बातों के फ़िक्र में हैं,न कि ईसा' मसीह की।

²²लेकिन तुम उसकी पुख्तगी से वाक़िफ़ हो कि जैसा बेटा बाप की ख़िदमत करता है, वैसे ही उसने मेरे साथ ख़ुशख़बरी फैलाने में ख़िदमत की।²³पस मैं उम्मीद करता हूँ कि जब अपने हाल का अन्जाम मालूम कर लूँगा तो उसे फ़ौरन भेज दूँगा।²⁴और मुझे ख़ुदावन्द पर भरोसा है कि मैं आप भी जल्द आऊँगा।

²⁵लेकिन मैं ने ईपफ़ूदीतुस को तुम्हारे पास भेजना ज़रूरी समझा।वो मेरा भाई, और हम ख़िदमत, और हम सिपाह, और तुम्हारा कासिद,और मेरी हाज़त रफ़ा' करने के लिए ख़ादिम है।²⁶क्योंकि वो तुम सब को बहुत चाहता था, और इस वास्ते बे क्रार रहता था कि तूने उसकी बीमारी का हाल सुना था।²⁷बेशक वो बीमारी से मरने को था, मगर ख़ुदा ने उस पर रहम किया,सिर्फ़ उस ही पर नहीं बल्कि मुझ पर भी ताकि मुझे ग़म पर ग़म न हो।

²⁸इसी लिए मुझे उसके भेजने का और भी ज़्यादा खयाल हुआ कि तुम भी उसकी मुलाक़ात से फिर खुश हो जाओ, और मेरा भी ग़म घट जाए।²⁹पस तुम उससे ख़ुदावन्द में कमाल खुशी के साथ मिलना, और ऐसे शख्सों की ' इज़ज़त किया करो,³⁰इसलिए कि वो मसीह के काम की खातिर मरने के क़रीब हो गया था,और उसने जान लगा दी ताकि जो कमी तुम्हारी तरफ़ से मेरी ख़िदमत में हुई उसे पूरा करे।

Chapter 3

¹गरज़ मेरे भाइयों! खुदावन्द में खुश रहो। तुम्हें एक ही बात बार-बार लिखने में मुझे तो कोई दिक्कत नहीं, और तुम्हारी इसमें हिफाज़त है।²कुत्तों से खबरदार रहो, बदकारों से खबरदार रहो कटवाने वालों से खबरदार रहो।³क्योंकि मख़्तून तो हम हैं जो खुदा की रूह की हिदायत से खुदा की इबादत करते हैं, और मसीह पर फ़ख़्र करते हैं, और जिस्म का भरोसा नहीं करते।

⁴अगर्चे मैं तो जिस्म का भी भरोसा कर सकता हूँ। अगर किसी और को जिस्म पर भरोसा करने का खयाल हो, तो मैं उससे भी ज़्यादा कर सकता हूँ।⁵आठवें दिन मेरा ख़तना हुआ, इस्राईल की क़ौम और बिनयमीन के क़बीले का हूँ, इबरानियो, का इब्रानी और शरी'अत के ऐ'तिबार से फ़रीसी हूँ

⁶जोश के एतबार से कलिसिया का, सतानेवाला, शरी'अत की रास्तबाज़ी के एतबार से बे 'ऐब था, लेकिन जितनी चीज़ें मेरे नफ़े ' की थी उन्हीं को मैंने मसीह की खातिर नुक्सान समझ लिया है।

⁸बल्कि मैंने अपने खुदावन्द मसीह 'ईसा' की पहचान की बड़ी खूबी की वजह से सब चीज़ों का नुक्सान उठाया और उनको कूड़ा समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ⁹ और उस में पाया जाऊँ, न अपनी उस रास्तबाज़ी के साथ जो शरी'अत की तरफ़ से है, बल्कि उस रास्तबाज़ी के साथ जो मसीह पर ईमान लाने की वजह से है और खुदा की तरफ़ से ईमान पर मिलती है;¹⁰ और मैं उसको और उसके जी उठने की कुदरत को, और उसके साथ दुखों में शरीक होने को मा'लूम करूँ, और उसकी मौत से मुशाबहत पैदा करूँ¹¹ ताकि किसी तरह मुर्दों में से जी उठने के दर्जे तक पहुँचूँ।

¹²अगर्चे ये नहीं कि मैं पा चुका या कामिल हो चुका हूँ, बल्कि उस चीज़ को पकड़ने को दौड़ा हुआ जाता हूँ जिसके लिए मसीह ईसा 'ने मुझे पकड़ा था।¹³ऐ भाइयों! मेरा ये गुमान नहीं कि पकड़ चुका हूँ, बल्कि सिर्फ़ ये करता हूँ कि जो चीज़ें पीछे रह गई उनको भूल कर, आगे की चीज़ों की तरफ़ बढ़ा हुआ।¹⁴निशाने की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ, ताकि उस इनाम को हासिल करूँ जिसके लिए खुदा ने मुझे मसीह ईसा' में ऊपर बुलाया है।

¹⁵पस हम में से जितने कामिल हैं यही खयाल रखें, और अगर किसी बात में तुम्हारा और तरह का खयाल हो तो खुदा उस बात को तुम पर भी ज़ाहिर कर देगा।

¹⁶बहरहाल जहाँ तक हम पहुँचे हैं उसी के मुताबिक़ चलें।

¹⁷ऐ भाइयों! तुम सब मिलकर मेरी तरह बनो, और उन लोगों की पहचान रखो जो इस तरह चलते हैं जिसका नमूना तुम हम में पाते हो;¹⁸ क्योंकि बहुत सारे ऐसे हैं जिसका ज़िक्र मैंने तुम से बराबर किया है, और अब भी रो रो कर कहता हूँ कि वो अपने चाल-चलन से मसीह की सलीब के दुश्मन हैं।¹⁹उनका अन्जाम हलाकत है, उनका खुदा पेट है, वो अपनी शर्म की बातों पर फ़ख़्र करते हैं और दुनिया की चीज़ों के खयाल में रहते हैं।

²⁰मगर हमारा वतन असमान पर है हम एक मुन्जी यानी खुदावन्द 'ईसा' मसीह के वहाँ से आने के इन्तिज़ार में हैं।²¹वो अपनी उस ताक़त की तासीर के मुवाफ़िक़, जिससे सब चीज़ें अपने ताबे'कर सकता है, हमारी पस्त हाली के बदन की शक्ल बदल कर अपने जलाल के बदन की सूरत बनाएगा।

Chapter 4

¹इस वास्ते ऐ मेरे प्यारे भाइयों !जिनका मैं मुश्ताक हूँ जो मेरी खुशी और ताज हो।ऐ प्यारो !खुदावन्द में इसी तरह क़ायम रहो।²मैं यहूदिया को भी नसीहत करता हूँ और सुनतुखे को भी कि वो खुदावन्द में एक दिल रहे।³और ऐ सच्चे हमखिदमत,तुझ से भी दरख्वास्त करता हूँ कि तू उन 'औरतों की मदद कर,क्यूँकि उन्होने खुशखबरी फैलाने में क्लेमैंस और मेरे बाकी उन हम खिदमतों समेत मेहनत की, जिनके नाम किताब-ए-हयात में दर्ज हैं।

⁴खुदावन्द में हर वक़्त खुश रहो;मैं फिर कहता हूँ कि खुश रहो।⁵तुम्हारी नर्म मिज़ाजी सब आदमियों पर ज़ाहिर हो, खुदावन्द क़रीब है।⁶किसी बात की फ़िक्र न करो,बल्कि हर एक बात में तुम्हारी दरख्वास्तें दु'आ और मिन्नत के वसीले से शुक्रगुज़ारी के साथ खुदा के सामने पेश की जाएँ।⁷तो खुदा का इत्मिनान जो समझ से बिल्कुल बाहर है, वो तुम्हारे दिलो और खयालों को मसीह 'ईसा' में महफूज़ रखेगा।

⁸गरज़ ऐ भाइयों! जितनी बाते सच हैं, और जितनी बाते शराफ़त की हैं, और जितनी बाते वाजिब हैं, और जितनी बाते पाक हैं,और जितनी बाते पसन्दीदा हैं,और जितनी बाते दिलकश हैं;गरज़ जो नेकी और ता 'रीफ़ की बाते हैं, उन पर ग़ौर किया करो।⁹जो बातें तुमने मुझ से सीखीं, और हासिल की, और सुनीं, और मुझ में देखीं,उन पर अमल किया करो, तो खुदा जो इत्मिनान का चश्मा है तुम्हारे साथ रहेगा।

¹⁰मैं खुदावन्द में बहुत खुश हूँ कि अब इतनी मुद्दत के बा'द तुम्हारा खयाल मेरे लिए सरसब्ज़ हुआ; बेशक तुम्हें पहले भी इसका खयाल था,मगर मौक़ा न मिला।

¹¹ये नहीं कि मैं मोहताज़ी के लिहाज़ से कहता हूँ; क्यूँकि मैंने ये सीखा है कि जिस हालत में हूँ उसी पर राज़ी रहूँ¹²मैं पस्त होना भी जनता हूँ और बढ़ना भी जनता हूँ;हर एक बात और सब हालतों में मैंने सेर होना, भूका रहना और बढ़ना घटना सीखा है।¹³जो मुझे ताक़त बख़्शता है,उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

¹⁴तो भी तुम ने अच्छा किया जो मेरी मुसीबतों में शरीक हुए।¹⁵और ऐ फिलिप्प्यों! तुम खुद भी जानते हो कि खुशखबरी के शुरू में,जब मैं मक़दुनिया से रवाना हुआ तो तुम्हारे सिवा किसी कलिसिया ने लेने- देने में मेरी मदद न की।¹⁶चुनाँचे थिस्लुनीके में भी मेरी एहतियाज़ रफ़ा' करने के लिए तुमने एक दफ़ा नहीं, बल्कि दो दफ़ा' कुछ भेजा था।¹⁷ये नहीं कि मैं ईनाम चाहता हूँ बल्कि ऐसा फल चाहता हूँ जो तुम्हारे हिसाब से ज़्यादा हो जाए

¹⁸मेरे पास सब कुछ है, बल्कि बहुतायत से है; तुम्हारी भेजी हुई चीज़ों इफ़्रिदतुस के हाथ से लेकर मैं आसूदा हो गया हूँ, वो खुशबू और मक़बूल कुर्बानी हैं जो खुदा को पसन्दीदा है।¹⁹मेरा खुदा अपनी दौलत के मुवाफ़िक़ जलाल से मसीह 'ईसा' में तुम्हारी हर एक कमी रफ़ा' करेगा।²⁰हमारे खुदा और बाप की हमेशा से हमशा तक बड़ाई होती रहे आमीन

²¹हर एक मुक़द्दस से जो मसीह ईसा' में है सलाम कहो।जो भाई मेरे साथ हैं तुम्हें सलाम कहते हैं।²²सब मुक़द्दस ख़ुसूसन, क्रैसर के घर वाले तुम्हें सलाम कहते हैं।²³खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम्हारी रूह के साथ रहे।

कुलुस्सियों के नाम पौलुस रसूल का खत

Chapter 1

¹यह खत पौलुस की तरफ़ से है जो खुदा की मज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।²मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं : खुदा हमारा बाप आप को फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।³जब हम तुम्हारे लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त खुदा अपने खुदावन्द ईसा मसीह के बाप का शुक्र करते हैं,

⁴क्यूँकि हमने तुम्हारे मसीह ईसा' पर ईमान और तुम्हारी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है।⁵तुम्हारा यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ ज़ाहिर करता है जिस की तुम उम्मीद रखते हो और जो आस्मान पर तुम्हारे लिए महफूज़ रखा गया है। और तुम ने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है जब से तुम ने पहली मर्तबा सच्चाई का कलाम यानी खुदा की खुशखबरी सुनी।⁶यह पैग़ाम जो तुम्हारे पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह यह तुम में भी उस दिन से काम कर रहा है जब तुम ने पहली बार इसे सुन कर खुदा के फ़ज़ल की पूरी हक़ीक़त समझ ली।

⁷तुम ने हमारे अज़ीज़ हमखिदमत इपफ़्रास से इस खुशखबरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह वफ़ादार खादिम हमारी जगह तुम्हारी खिदमत कर रहा है।

⁸उसी ने हमें तुम्हारी उस मुहब्बत के बारे में बताया जो रूह-उल-कुद्दूस ने तुम्हारे दिलों में डाल दी है।

⁹इस वजह से हम तुम्हारे लिए दुआ करने से बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि खुदा तुम को हर रुहानी हिक्मत और समझ से नवाज़ कर अपनी मज़ी के इल्म से भर दे।¹⁰क्यूँकि फिर ही तुम अपनी ज़िन्दगी खुदावन्द के लायक़ गुज़ार सकोगे और हर तरह से उसे पसन्द आओगे। हाँ, तुम हर क्रिस्म का अच्छा काम करके फल लाओगे और खुदा के इल्म-ओ-'इरफ़ान में तरक्की करोगे।

¹¹और तुम उस की जलाली कुदरत से मिलने वाली हर क्रिस्म की ताक़त से मज़बूती पा कर हर वक़्त साबितक़दमी और सब्र से चल सकोगे।¹²और बाप का शुक्र करते रहो जिस ने तुम को उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक़ बना दिया जो उसकी रोशनी में रहने वाले मुक़द्दसीन को हासिल है।

¹³क्यूँकि वही हमें अँधेरे की गिरफ़्त से रिहाई दे कर अपने प्यारे फ़र्ज़न्द की बादशाही में लाया,¹⁴उस एक शख्स के इख़्तियार में जिस ने हमारा फ़िदया दे कर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

¹⁵खुदा को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो खुदा की सूरत और कायनात का पहलौठा है।¹⁶क्यूँकि खुदा ने उसी में सब कुछ पैदा किया, चाहे आस्मान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नज़र आए या न नज़र आएँ, चाहे शाही तख़्त, कुव्वतें, हुक्मरान या इख़्तियार वाले हों। सब कुछ मसीह के ज़रिए और उसी के लिए पैदा हुआ।¹⁷वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब कुछ क़ायम रहता है।

¹⁸और वह बदन यानी अपनी जमाअत का सर भी है। वही शुरुआत है, और चूँकि पहले वही मुद्दों में से जी उठा इस लिए वही उन में से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में पहले हो।¹⁹क्योंकि खुदा को पसन्द आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे²⁰और वह मसीह के ज़रीए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, चाहे वह ज़मीन की हों चाहे आस्मान की। क्योंकि उस ने मसीह के सलीब पर बहाए गए खून के वसीले से सुलह-सलामती क़ायम की।

²¹तुम भी पहले खुदा के सामने अजनबी थे और दुश्मन की तरह सोच रख कर बुरे काम करते थे।²²लेकिन अब उस ने मसीह के इन्सानी बदन की मौत से तुम्हारे साथ सुलह कर ली है ताकि वह तुमको मुकद्दस, बेदाग़ और बेइल्ज़ाम हालत में अपने सामने खड़ा करे।²³बेशक अब ज़रूरी है कि तुम ईमान में क़ायम रहो, कि तुम ठोस बुन्याद पर मज़बूती से खड़े रहो और उस खुशखबरी की उम्मीद से हट न जाओ जो तुम ने सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिस का एलान दुनिया में हर मख़्लूक के सामने कर दिया गया है और जिस का खादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

²⁴अब मैं उन दुखों के ज़रिए खुशी मनाता हूँ जो मैं तुम्हारी खातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमाअत की खातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं।²⁵हाँ, खुदा ने मुझे अपनी जमाअत का खादिम बना कर यह ज़िम्मेदारी दी कि मैं तुम को खुदा का पूरा कलाम सुना दूँ।²⁶वह बातें जो शुरू से तमाम गुज़री नसलों से छुपा रहा था लेकिन अब मुकद्दसीन पर ज़ाहिर की गयी हैं।²⁷क्योंकि खुदा चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज़ कितना बेशक़ीमती और जलाली है। और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह तुम में है। वही तुम में है जिस के ज़रिए हम खुदा के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं।

²⁸यूँ हम सब को मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं। हर मुम्किन हिक्मत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में खुदा के सामने पेश करें।²⁹यही मक्सद पूरा करने के लिए मैं सख़्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरे जद्द-ओ-जहद करके मसीह की उस ताक़त का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अन्दर काम कर रही है।

Chapter 2

¹मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि मैं तुम्हारे लिए किस क्रूर जाँफ़िशानी कर रहा हूँ - तुम्हारे लिए, लौदीकिया शहर वालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिन की मेरे साथ मुलाकात नहीं हुई।²मेरी कोशिश यह है कि उन की दिली हौसला अप्रज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस भरोसा हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह खुदा का राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह खुद।³उसी में हिक्मत और इल्म-ओ-इरफ़ान के तमाम खज़ाने छुपे हैं।

⁴गरज़ खबरदार रहें कि कोई तुमको बज़ाहिर सही और मीठे मीठे अलफ़ाज़ से धोका न दे।⁵क्योंकि गरचे मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं तुम्हारे साथ हूँ। और मैं यह देख कर खुश हूँ कि तुम कितनी मुनज़ज़म ज़िन्दगी गुज़ारते हो, कि तुम्हारा मसीह पर ईमान कितना पुख़्ता है।

⁶तुमने ईसा मसीह को खुदावन्द के तौर पर क़बूल कर लिया है। अब उस में ज़िन्दगी गुज़ारो।⁷उस में जड़ पकड़ो, उस पर अपनी ज़िन्दगी तामीर करो, उस ईमान में मज़बूत रहो जिस की तुमको तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो जाओ।

⁸होशियार रहो कि कोई तुम को फ़ल्सफ़ियाना और महज़ धोका देने वाली बातों से अपने जाल में न फंसा ले। ऐसी बातों का सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इन्सानी रिवायतें और इस दुनियाँ की ताक़तें हैं।⁹क्योंकि मसीह में खुदाइयत की सारी मा'मूरी मुजस्सम हो कर सुकूनत करती है।

¹⁰और तुम को जो मसीह में हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही हर हुक्मरान और इख़तियार वाले का सर है।¹¹उस में आते वक़्त तुम्हारा ख़तना भी करवाया गया। लेकिन यह ख़तना इन्सानी हाथों से नहीं किया गया बल्कि मसीह के वसीले से। उस वक़्त तुम्हारी पुरानी निस्बत उतार दी गई,¹²तुम को बपतिस्मा दे कर मसीह के साथ दफ़नाया गया और तुम को ईमान से ज़िन्दा कर दिया गया। क्योंकि तुम खुदा की कुदरत पर ईमान लाए थे, उसी कुदरत पर जिस ने मसीह को मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया था।

¹³पहले तुम अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत की वजह से मुर्दा थे, लेकिन अब खुदा ने तुमको मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया है। उस ने हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है।¹⁴और अहक़ाम की वह दस्तावेज़ जो हमारे खिलाफ़ थी उसे उस ने रद्द कर दिया। हाँ, उस ने हम से दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया।¹⁵उस ने हुक्मरानों और इख़तियार वालों से उन का हथियार छीन कर सब के सामने उन की रुस्वाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह खुदा के कैदी बन गए और उन्हें फ़तह के जुलूस में उस के पीछे पीछे चलना पड़ा।

¹⁶चुनाँचे कोई तुमको इस वजह से मुजरिम न ठहराए कि तुम क्या क्या खाते-पीते या कौन कौन सी ईदें मनाते हो। इसी तरह कोई तुम्हारी अदालत न करे अगर तुम हिलाल की ईद या सबत का दिन नहीं मनाते।¹⁷यह चीज़ें तो सिर्फ़ आने वाली हक़ीक़त का साया ही हैं जबकि यह हक़ीक़त खुद मसीह में पाई जाती है।

¹⁸ऐसे लोग तुम को मुजरिम न ठहराएँ जो ज़ाहिरी फ़रोतनी और फ़रिश्तों की इबादत पर इसरार करते हैं। बड़ी तफ़्सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान करते करते उन के ग़ैररुहानी ज़हन ख़्वाह-म-ख़्वाह फूल जाते हैं।¹⁹यूँ उन्होंने ने मसीह के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का सिर है। वही जोड़ों और पट्टों के ज़रीए पूरे बदन को सहारा दे कर उस के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यूँ पूरा बदन खुदा की मदद से तरक्की करता जाता है।

²⁰तुम तो मसीह के साथ मर कर दुनियाँ की ताक़तों से आज़ाद हो गए हो। अगर ऐसा है तो तुम ज़िन्दगी ऐसे क्यों गुज़ारते हो जैसे कि तुम अभी तक इस दुनिया की मिल्कियत हो? तुम क्यों इस के अहक़ाम के ताबे रहते हो?²¹मसलन "इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न छूना।"²²इन तमाम चीज़ों का मक्सद तो यह है कि इस्तेमाल हो कर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इन्सानी अहक़ाम और तालीमात हैं।²³बेशक यह अहक़ाम जो गढ़े हुए मज़हबी फ़राइज़, नाम-निहाद फ़रोतनी और जिस्म के सख़्त दबाओ का तकाज़ा करते हैं हिक्मत पर मुनहसिर तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की ख़्वाहिशात पूरी करते हैं।

Chapter 3

¹तुम को मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया गया है, इस लिए वह कुछ तलाश करो जो आस्मान पर है जहाँ मसीह ख़ुदा के दहने हाथ बैठा है।²दुनियावी चीज़ों को अपने खयालों का मर्कज़ न बनाओ बल्कि आस्मानी चीज़ों को।³क्योंकि तुम मर गए हो और अब तुम्हारी ज़िन्दगी मसीह के साथ ख़ुदा में छुपी है।⁴मसीह ही तुम्हारी ज़िन्दगी है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो तुम भी उस के साथ ज़ाहिर हो कर उस के जलाल में शरीक हो जाओगे।

⁵चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालो जो तुम्हारे अन्दर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी, नापाकी, शहवतपरस्ती, बुरी ख्वाहिशत और लालच (लालच तो एक क्रिस्म की बुतपरस्ती है)।⁶ख़ुदा का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की वजह से नाज़िल होगा।⁷एक वक़्त था जब तुम भी इन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे, जब तुम्हारी ज़िन्दगी इन के क़ाबू में थी।⁸लेकिन अब वक़्त आ गया है कि तुम यह सब कुछ यानी गुस्सा, तैश, बदसलूकी, बुह्तान और गन्दी ज़बान ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतार कर फेंक दो।

⁹एक दूसरे से बात करते वक़्त झूट मत बोलना, क्योंकि तुमने अपनी पुरानी फ़ितरत उस की हरकतो समेत उतार दी है।¹⁰साथ साथ तुमने नई फ़ितरत पहन ली है, वह फ़ितरत जिस की ईजाद हमारा ख़ालिक़ अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि तुम उसे और बेहतर तौर पर जान लो।¹¹जहाँ यह काम हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे कोई ग़ैरयहूदी हो या यहूदी, मख़्तून हो या नामख़्तून, ग़ैरयूनानी हो या स्कूती, गुलाम हो या आज़ाद। कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सब में है।

¹²ख़ुदा ने तुम को चुन कर अपने लिए ख़ास-और पाक कर लिया है। वह तुम से मुहब्बत रखता है। इस लिए अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नर्मदिली और सब्र को पहन लो।¹³एक दूसरे को बर्दाश्त करो, और अगर तुम्हारी किसी से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दो। हाँ, यूँ मुआफ़ करो जिस तरह ख़ुदावन्द ने आप को मुआफ़ कर दिया है।¹⁴इन के अलावा मुहब्बत भी पहन लो जो सब कुछ बाँध कर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है।

¹⁵मसीह की सलामती तुम्हारे दिलों में हुकूमत करे। क्योंकि ख़ुदा ने तुम को इसी सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बुला कर एक बदन में शामिल कर दिया है। शुक्रगुज़ार भी रहो।¹⁶तुम्हारी ज़िन्दगी में मसीह के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को हर तरह की हिक्मत से तालीम देते और समझाते रहो। साथ साथ अपने दिलों में ख़ुदा के लिए शुक्रगुज़ारी के साथ ज़बूर, हम्द-ओ-सना और रुहानी गीत गाते रहो।¹⁷और जो कुछ भी तुम करो ख़वाह ज़बानी हो या अमली वह ख़ुदावन्द ईसा' का नाम ले कर करो। हर काम में उसी के वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र करो।

¹⁸बीवियों, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि जो ख़ुदावन्द में है उस के लिए यही मुनासिब है।¹⁹शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखो। उन से तल्ख़मिज़ाजी से पेश न आओ।²⁰बच्चे, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही ख़ुदावन्द को पसन्द है।²¹वालियो, अपने बच्चों को गुस्सा न करें, वरना वह बेदिल हो जाएँगे।

²²गुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों के ताबे रहो। न सिर्फ़ उन के सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि खुलूसदिली और ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ मान कर काम करें।²³जो कुछ भी तुम करते हो उसे पूरी लगन के साथ करो, इस तरह जैसा कि तुम न सिर्फ़ इन्सानों की बल्कि ख़ुदावन्द की खिदमत कर रहे हो।²⁴तुम तो जानते हो कि ख़ुदावन्द तुम को इस के मुआवज़े में वह मीरास देगा जिस का वादा उस ने किया है। हक़ीक़त में तुम ख़ुदावन्द मसीह की ही खिदमत कर रहे हो।²⁵लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवज़ा भी मिलेगा। ख़ुदा तो किसी की भी तरफ़दारी नहीं करता।

Chapter 4

¹मालिको, अपने गुलामों के साथ मलिकाना और जायज़ सुलूक करें। तुम तो जानते हो कि आस्मान पर तुम्हारा भी मालिक जो कि खुदा है।

²दुआ में लगे रहो। और दुआ करते वक़्त शुक्रगुजारी के साथ जागते रहो।³साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करो ताकि खुदा हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़ पेश कर सकें। आखिर मैं इसी राज़ की वजह से कैद में हूँ।⁴दुआ करो कि मैं इसे यूँ पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।

⁵जो अब तक ईमान न लाए हों उन के साथ अक्रलमन्दी का सुलूक करो। इस सिलसिले में हर मौक़े से फ़ाइदा उठाओ।⁶तुम्हारी बातें हर वक़्त मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और तुम हर एक को मुनासिब जवाब दे सको।

⁷जहाँ तक मेरा ताल्लुक है हमारा अज़ीज़ भाई तुखिकुस तुमको सब कुछ बता देगा। वह एक वफ़ादार खादिम और खुदावन्द में हमखिदमत रहा है।⁸मैंने उसे खासकर इस लिए तुम्हारे पास भेज दिया ताकि तुम को हमारा हाल मालूम हो जाए और वह तुम्हारी हौसला अफ़ज़ाई करे।⁹वह हमारे वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमस के साथ तुम्हारे पास आ रहा है, वही जो तुम्हारी जमाअत से है। दोनों तुमको वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है।

¹⁰अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैद में है तुम को सलाम कहता है और इसी तरह बर्नबास का चचेरा भाई मरकुस भी। (तुम को उस के बारे में हिदायात दी गई हैं। जब वह तुम्हारे पास आए तो उसे खुशआमदीद कहना।)¹¹'ईसा' जो यूस्तुस कहलाता है भी तुम को सलाम कहता है। उन में से जो मेरे साथ खुदा की बादशाही में खिदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का ज़रिया रहे हैं।

¹²'मसीह ईसा' का खादिम इपफ़्रास भी जो तुम्हारी जमाअत से है सलाम कहता है। वह हर वक़्त बड़ी जद्द-ओ-जद्द के साथ तुम्हारे लिए दुआ करता है। उस की खास दुआ यह है कि तुम मज़बूती के साथ खड़े रहो, कि तुम बालिग़ मसीही बन कर हर बात में खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलो।¹³मैं खुद इस की तस्दीक़ कर सकता हूँ कि उस ने तुम्हारे लिए सख़्त मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की जमाअतों के लिए भी।¹⁴हमारे अज़ीज़ तबीब लूका और देमास तुमको सलाम कहते हैं।

¹⁵मेरा सलाम लौदीकिया की जमाअत को देना और इसी तरह नुम्फ़ास को उस जमाअत समेत जो उस के घर में जमा होती है।¹⁶यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौदीकिया की जमाअत में भी यह ख़त पढ़ा जाए और तुम लौदीकिया का ख़त भी पढ़ो।¹⁷अर्खिप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि तुम वह खिदमत तक्मील तक पहुँचाओ जो तुम को खुदावन्द में सौंपी गई है।

¹⁸मैं अपने हाथ से यह अलफ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरा यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी ज़न्जीरें मत भूलना! खुदा का फ़ज़ल तुम्हारे साथ होता रहे।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस रसूल पहला का ख़त

Chapter 1

¹पौलूस और सिलास और तीमुथियुस की तरफ़ से थिस्सलोनिकियो शहर की कलीसिया के नाम ख़त , जो खुदा बाप और खुदा वंद ईसा' मसीह में है, फ़ज़ल और इत्मिनान तुम्हें हासिल होता रहे |

²तुम सब के बारे में हम खुदा का शुक्र बजा लाते हैं और अपनी दु'आओं में तुम्हें याद करते हैं।³और अपने खुदा और बाप के हज़ूर तुम्हारे ईमान के काम और मुहब्बत की मेहनत और उस उम्मीद के सब्र को बिला नागा याद करते हैं जो हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह की वजह से है।

⁴और ऐ भाइयो! खुदा के प्यारों हम को मा'लूम है; कि तुम चुने हुए हो।⁵इसलिए कि हमारी खुशख़बरी तुम्हारे पास न फ़क़त लफ़ज़ी तौर पर पहुँची बल्कि कुदरत और रूह-उल-कुदूस और पूरे यक़ीन के साथ भी चुनाँचे" तुम जानते हो कि हम तुम्हारी खातिर तुम में कैसे बन गए थे।

⁶और तुम कलाम को बड़ी मुसीबत में रूह-उल-कुदूस की खुशी के साथ कुबूल करके हमारी और "खुदावन्द" की मानिन्द बने।⁷यहाँ तक कि मकिदुनिया और अख़्या के सब ईमानदारों के लिए नमूना बने।

⁸क्योंकि तुम्हारे हाँ से न फ़क़त मकिदुनिया और अख़्या में खुदावन्द के कलाम का चर्चा फैला है, बल्कि तुम्हारा ईमान जो "खुदा"पर है हर जगह ऐसा मशहूर हो गया है कि हमारे कहने की कुछ ज़रूरत नहीं।⁹इसलिए कि वो आप हमारा ज़िक़र करते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ और तुम बुतों से फिर कर "खुदा"की तरफ़ मुखातिब हुए ताकि ज़िन्दा और हक़ीक़ी "खुदा"की बन्दगी करो।¹⁰और उसके बेटे के आसमान पर से आने के इन्तिज़ार में रहो, जिसे उस ने मुर्दों में से जिलाया या'नी ईसा' मसीह" के जो हम को आने वाले ग़ज़ब से बचाता है।

Chapter 2

¹ऐ भाइयों! तुम आप जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना बेफ़ाइनदा न हुआ।²बल्कि तुम को मा'लूम ही है कि बावजूद पहले फ़िलिप्पी में दुःख उठाने और बेइज़्जत होने के हम को अपने "खुदा" में ये दिलेरी हासिल हुई कि "खुदा" की खुशख़बरी बड़ी जाँफ़िशानी से तुम्हें सुनाएँ।

³क्योंकि हमारी नसीहत न गुमराही से है न नापाकी से न धोखे के साथ।⁴बल्कि जैसे खुदा ने हम को मक्बूल करके खुशख़बरी हमारे सुपुर्द की वैसे ही हम बयान करते हैं; आदमियों को नहीं बल्कि खुदा को खुश करने के लिए जो हमारे दिलों को आजमाता है।

⁵क्योंकि तुम को मा'लूम ही है कि न कभी हमारे कलाम में खुशामद पाई गई न लालच का पर्दा बना "खुदा" इसका गवाह है।⁶और हम न आदमियों से इज़्जत चाहते हैं न तुम से न औरों से अगरचे मसीह के रसूल होने की वजह तुम पर बोझ डाल सकते थे।

⁷बल्कि जिस तरह माँ अपने बच्चों को पालती है उसी तरह हम तुम्हारे दर्मियान नमी के साथ रहे।⁸और उसी तरह हम तुम्हारे बहुत अहसानमंद होकर न फ़क़त "खुदा" की खुशख़बरी बल्कि अपनी जान तक भी तुम्हें देने को राज़ी थे; इस वास्ते कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे।⁹क्योंकि "ऐ भाइयो! तुम को हमारी मेहनत और मशक्क़त याद होगी कि हम ने तुम में से किसी पर बोझ न डालने की ग़रज़ से रात दिन मेहनत मज़दूरी करके तुम्हें "खुदा" की खुशख़बरी की मनादी की।

¹⁰तुम भी गवाह हो और खुदा भी कि तुम से जो ईमान लाए हो हम कैसी पाकीज़गी और रास्तबाज़ी और बे'ऐबी के साथ पेश आए।¹¹चुनाँचे तुम जानते हो। कि जिस तरह बाप अपने बच्चों के साथ करता है उसी तरह हम भी तुम में से हर एक को नसीहत करते और दिलासा देते और समझाते रहे।¹²ताकि तुम्हारा चालचलन खुदा के लायक़ हो जो तुम्हें अपनी बादशाही और ज़लाल में बुलाता है।

¹³इस वास्ते हम भी बिला नागा खुदा का शुक्र करते हैं कि जब खुदा का पैग़ाम हमारे ज़रिये तुम्हारे पास पहुँचा तो तुम ने उसे आदमियों का कलाम समझ कर नहीं बल्कि जैसा हक़ीक़त में है खुदा का कलाम जान कर कुबूल किया और वो तुम में जो ईमान लाए हो असर भी कर रहा है।

¹⁴इसलिए कि तुम ऐ भाइयो!, खुदा की उन कलीसियाओं की तरह बन गए जो यहूदिया में मसीह ईसा' में हैं क्योंकि तुम ने भी अपनी क़ौम वालों से वही तकलीफ़ें उठाई जो उन्होंने यहूदियों से।¹⁵जिन्होंने खुदावन्द को भी मार डाला और हम को सता सता कर निकाल दिया वो खुदा को पसंद नहीं आते और सब आदमियों के खिलाफ़ हैं।¹⁶और वो हमें ग़ैर कौमों को उनकी नज़ात के लिए कलाम सुनाने से मना करते हैं ताकि उन के गुनाहों का पैमाना हमेशा भरता रहे; लेकिन उन पर इन्तिहा का ग़ज़ब आ गया।

¹⁷ऐ भाइयों! जब हम थोड़े अर्से के लिए ज़ाहिर में न कि दिल से तुम से जुदा हो गए तो हम ने कमाल आरज़ू से तुम्हारी सूरत देखने की और भी ज़्यादा कोशिश की।¹⁸इस वास्ते हम ने या'नी मुझ पौलुस ने एक दफ़ा' नहीं बल्कि दो दफ़ा' तुम्हारी पास आना चाहा मगर शैतान ने हमें रोके रखा।¹⁹भला हमारी उम्मीद और खुशी और फ़ख़्र का ताज क्या है? क्या वो हमारे "खुदावन्द" " के सामने उसके आने के वक़्त तुम ही न होगे।²⁰हमारा ज़लाल और खुशी तुम्हीं तो हो |

Chapter 3

¹इस वास्ते जब हम ज़्यादा बर्दाश्त न कर सके तो अथेने शहर में अकेले रह जाना मन्जूर किया।²और हम ने तीमुथियुस को जो हमारा भाई और मसीह की खुशखबरी में खुदा का खादिम है इसलिए भेजा कि वो तुम्हें मज़बूत करे और तुम्हारे ईमान के बारे में तुम्हें नसीहत करे।³कि इन मुसीबतों के ज़रिये से कोई न घबराए, क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिए मुकर्रर हुए हैं।

⁴बल्कि पहले भी जब हम तुम्हारे पास थे, तो तुम से कहा करते थे; कि हमें मुसीबत उठाना होगा, चुनाँचे ऐसा ही हुआ और तुम्हें मा'लूम भी है।⁵इस वास्ते जब मैं और ज़्यादा बर्दाश्त न कर सका तो तुम्हारे ईमान का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा; कहीं ऐसा न हो कि आजमाने वाले ने तुम्हें आजमाया हो और हमारी मेहनत बेफ़ाइदा रह गई हो।

⁶मगर अब जो तीमुथियुस ने तुम्हारे पास से हमारे पास आकर तुम्हारे ईमान और मुहब्बत की और इस बात की खुशखबरी दी कि तुम हमारा ज़िक्र खैर हमेशा करते हो और हमारे देखने के ऐसे मुश्ताक़ हो जैसे कि हम तुम्हारे।⁷इसलिए ऐ भाइयों! हम ने अपनी सारी एहतियाज और मुसीबत में तुम्हारे ईमान के जरिये से तुम्हारे बारे में तसल्ली पाई।

⁸क्योंकि अब अगर तुम खुदावन्द में क़ायम हो तो हम ज़िन्दा हैं।⁹तुम्हारी वज़ह से अपने खुदा के सामने हमें जिस क्रदर खुशी हासिल है, उस के बदले में किस तरह तुम्हारे ज़रिये "खुदा" का शुक्र अदा करें।¹⁰हम रात दिन बहुत ही दु'आ करते रहते हैं कि तुम्हारी सूरत देखें और तुम्हारे ईमान की कमी पूरी करें।

¹¹अब हमारा "खुदा" और बाप खुद हमारा खुदावन्द ईसा' तुम्हारी तरफ़ से हमारी रहनुमाई करे।¹²और खुदावन्द ऐसा करे कि जिस तरह हम को तुम से मुहब्बत है उसी तरह तुम्हारी मुहब्बत भी आपस में और सब आदमियों के साथ ज़्यादा हो और बढ़े।¹³ताकि वो तुम्हारे दिलों को ऐसा मज़बूत कर दे कि जब हमारा खुदावन्द ईसा अपने सब मुक़द्दसों के साथ आए तो वो हमारे "खुदा" और बाप के सामने पाक़ीज़गी में बेऐब हों।

Chapter 4

¹गरज़ "ऐ भाइयो!, हम तुम से दरखास्त करते हैं और खुदावन्द ईसा में तुम्हें नसीहत करते हैं कि जिस तरह तुम ने हम से मुनासिब चाल चलने और "खुदा" को खुश करने की ता'लीम पाई और जिस तरह तुम चलते भी हो उसी तरह और तरक्की करते जाओ।² क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने तुम को खुदावन्द ईसा' की तरफ़ से क्या क्या हुक्म पहुँचाए।

³चुनाँचे खुदा की मज़ी ये है कि तुम पाक बनो, या'नी हरामकारी से बचे रहो।⁴ और हर एक तुम में से पाक़ीज़गी और इज़्ज़त के साथ अपने ज़रफ़ को हासिल करना जाने।⁵ न बुरी ख्वाहिश के जोश से उन कौमों की तरह जो खुदा को नहीं जानती⁶ और कोई शख्स अपने भाई के साथ इस काम में ज़्यादाती और दगा न करे क्योंकि खुदावन्द इन सब कामों का बदला लेने वाला है चुनाँचे हम ने पहले भी तुम को आगाह करके जता दिया था।

⁷इसलिए कि "खुदा" ने हम को नापाकी के लिए नहीं बल्कि पाक़ीज़गी के लिए बुलाया।⁸ पस, जो नहीं मानता वो आदमी को नहीं बल्कि "खुदा" को नहीं मानता जो तुम को अपना पाक़ रूह देता है।

⁹मगर भाई-चारे की मुहब्बत के ज़रिये तुम्हें कुछ लिखने की हाज़त नहीं क्योंकि तुम ने आपस में मुहब्बत करने की "खुदा" से ता'लीम पा चुके हो।¹⁰ और तमाम मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा ही करते हो "लेकिन ऐ भाइयो! हम तुम्हें नसीहत करते हैं कि तरक्की करते जाओ।¹¹ और जिस तरह हम ने तुम को हुक्म दिया चुप चाप रहने और अपना कारोबार करने और अपने हाथों से मेहनत करने की हिम्मत करो।¹² ताकि बाहर वालों के साथ संजीदगी से बरताव करो और किसी चीज़ के मोहताज न हो।

¹³ऐ भाइयों! हम नहीं चाहते कि जो सोते हैं उनके बारे में तुम नावाक़िफ़ रहो ताकि औरो की तरह जो ना उम्मीद है ग़म ना करो।¹⁴ क्योंकि जब हमें ये यक़ीन है कि "ईसा" मर गया और जी उठा तो उसी तरह "खुदा" उन को भी जो सो गए हैं "ईसा" के वसीले से उसी के साथ ले आएगा।¹⁵ चुनाँचे हम तुम से "खुदावन्द" के कलाम के मुताबिक़ कहते हैं कि हम जो ज़िन्दा हैं और "खुदावन्द" के आने तक बाक़ी रहेंगे सोए हुआँ से हरगिज़ आगे न बढ़ेंगे।

¹⁶क्योंकि "खुदावन्द" खुद आसमान से लल्कार और खास फ़रिश्ते की आवाज़ और "खुदा" के नरसिंगे के साथ उतर आएगा और पहले तो वो जो "मसीह" में मरे जी उठेंगे।¹⁷ फिर हम जो ज़िन्दा बाक़ी होंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे; ताकि हवा में "खुदावन्द" का इस्तक्रबाल करें और इसी तरह हमेशा "खुदावन्द" के साथ रहेंगे।¹⁸ पस, तुम इन बातों से एक दूसरे को तसल्ली दिया करो।

Chapter 5

¹मगर "ऐ भाइयो! इसकी कुछ जरूरत नहीं कि वक्रतों और मौकों के ज़रिये तुम को कुछ लिखा जाए।²इस वास्ते कि तुम आप खुद जानते हो कि "खुदावन्द" का दिन इस तरह आने वाला है जिस तरह रात को चोर आता है।³जिस वक्रत लोग कहते होंगे कि सलामती और अम्न है उस वक्रत उन पर इस तरह हलाकत आएगी जिस तरह हमिला को दर्द होता है और वो हरगिज़ न बचेंगे।

⁴लेकिन तुम "ऐ भाइयो, अंधेरे में नहीं हो कि वो दिन चोर की तरह तुम पर आ पड़े।⁵क्योंकि तुम सब नूर के फ़र्ज़न्द और दिन के फ़र्ज़न्द हो, हम न रात के हैं न तारीकी के।⁶पस, औरों की तरह सोते न रहो, बल्कि जागते और होशियार रहो।⁷क्योंकि जो सोते हैं रात ही को सोते हैं और जो मतवाले होते हैं रात ही को मतवाले होते हैं।

⁸मगर हम जो दिन के हैं ईमान और मुहब्बत का बख़्तर लगा कर और निजात की उम्मीद कि टोपी पहन कर होशियार रहें।⁹क्योंकि "खुदा" ने हमें ग़ज़ब के लिए नहीं बल्कि इसलिए मुक़र्रर किया कि हम अपने "खुदावन्द" ईसा मसीह" के वसीले से नजात हासिल करें।¹⁰वो हमारी खातिर इसलिए मरा, कि हम जागते हों या सोते हों सब मिलकर उसी के साथ जिएँ।¹¹पस, तुम एक दूसरे को तसल्ली दो और एक दूसरे की तरक्की की वजह बनो चुनाँचे तुम ऐसा करते भी हो।¹²और "ऐ भाइयो, हम तुम से दरख़वास्त करते हैं, कि जो तुम में मेहनत करते और "खुदावन्द" में तुम्हारे पेशवा हैं और तुम को नसीहत करते हैं उन्हें मानो।¹³और उनके काम की वजह से मुहब्बत के साथ उन की बड़ी इज़ज़त करो; आपस में मेल मिलाप रखो।¹⁴और "ऐ भाइयो, हम तुम्हें नसीहत करते हैं कि बे क़ाइदा चलने वालों को समझाओ कम हिम्मतों को दिलासा दो कमज़ोरों को संभालो सब के साथ तहम्मूल से पेश आओ।

¹⁵ख़बरदार कोई किसी से बदी के बदले बदी न करे बल्कि हर वक्रत नेकी करने के दर पै रहो आपस में भी और सब से।¹⁶हर वक्रत खुश रहो।¹⁷बिला नागा दुआ करो।¹⁸हर एक बात में शुक्र गुज़ारी करो क्योंकि मसीह ईसा' में तुम्हारे बारे में खुदा की यही मर्ज़ी है।

¹⁹रूह को न बुझाओ।²⁰नबुव्वतों की हिक़ारत न करो।²¹सब बातों को आज़माओ, जो अच्छी हो उसे पकड़े रहो।²²हर क्रिस्म की बदी से बचे रहो।

²³खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है आप ही तुम को बिलकुल पाक करे, और तुम्हारी रूह और जान और बदन हमारे "खुदावन्द" के आने तक पूरे पूरे और बेऐब महफ़ूज़ रहें।²⁴तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है वो ऐसा ही करेगा।

²⁵ऐ भाइयों! हमारे वास्ते दु'आ करो।²⁶पाक बोसे के साथ सब भाइयों को सलाम करो।²⁷मैं तुम्हें खुदावन्द की क्रसम देता हूँ, कि ये ख़त सब भाइयों को सुनाया जाए।²⁸हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

Chapter 1

¹पौलुस, और सिलास और तीमुथियुस की तरफ़ से थिस्सलुनीकियों शहर की कलीसिया के नाम ख़त जो हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा' मसीह में है।

²फ़ज़ल और इत्मीनान खुदा' बाप और खुदावन्द 'ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें हासिल होता रहे।

³ऐ भाइयो! तुम्हारे बारे में हर वक्रत खुदा का शुक्र करना हम पर फ़र्ज़ है, और ये इसलिए मुनासिब है, कि तुम्हारा ईमान बहुत बढ़ता जाता है; और तुम सब की मुहब्बत आपस में ज़्यादा होती जाती है।⁴यहाँ तक कि हम आप खुदा की कलीसियाओं में तुम पर फ़ख़्र करते हैं कि जितने ज़ुल्म और मुसीबतें तुम उठाते हो उन सब में तुम्हारा सब्र और ईमान ज़ाहिर होता है।⁵ये खुदा की सच्ची अदालत का साफ़ निशान है; ताकि तुम खुदा की बादशाही के लायक ठहरो जिस के लिए तुम तकलीफ़ भी उठाते हो।

⁶क्यूँकि खुदा के नज़दीक ये इन्साफ़ है के बदले में तुम पर मुसीबत लाने वालों को मुसीबत।⁷और तुम मुसीबत उठाने वालों को हमारे साथ आराम दे; जब खुदावन्द 'ईसा' अपने मज़बूत फ़रिश्तों के साथ भड़कती हुई आग में आसमान से ज़ाहिर होगा।⁸और जो खुदा को नहीं पहचानते और हमारे खुदावन्द 'ईसा' की खुशख़बरी को नहीं मानते उन से बदला लेगा।

⁹वह खुदावन्द का चेहरा और उसकी कुदरत के जलाल से दूर हो कर हमेशा हलाकत की सज़ा पायेंगे।¹⁰ये उस दिन होगा जबकि वो अपने मुक़द्दसों में जलाल पाने और सब ईमान लाने वालों की वजह से ता'अज्जुब का बाइस होने के लिए आएगा; क्यूँकि तुम हमारी गवाही पर ईमान लाए।

¹¹इसी वास्ते हम तुम्हारे लिए हर वक्रत दु'आ भी करते रहते हैं कि हमारा खुदा तुम्हें इस बुलावे के लायक जाने और नेकी की हर एक ख़्वाहिश और ईमान के हर एक काम को कुदरत से पूरा करे।¹²ताकि हमारे खुदा और खुदावन्द 'ईसा' मसीह के फ़ज़ल के मुवाफ़िक़ हमारे खुदावन्द 'ईसा' का नाम तुम में जलाल पाए और तुम उस में।

Chapter 2

¹‘ऐ भाइयों! हम अपने खुदा वन्द ईसा’ मसीह के आने और उस के पास जमा’ होने के बारे में तुम से दरख्वास्त करते हैं।’ कि किसी रूह या कलाम या खत से जो गोया हमारी तरफ़ से हो ये समझ कर कि खुदावन्द के वापस आने का आ पहुँचा है तुम्हारी अक्ल अचानक परेशान न हो जाए और न तुम घबराओ।

³किसी तरह से किसी के धोके में न आना क्योंकि वो दिन नहीं आएगा जब तक कि पहले बरगश्तगी न हो और वो गुनाह का शख्स या ‘नी हलाकत का फ़र्ज़न्द ज़ाहिर न हो।’ ⁴जो मुखालिफ़त करता है और हर एक से जो खुदा या मा’बूद कहलाता है अपने आप को बड़ा ठहराता है; यहाँ तक कि वो खुदा के मन्दिरे में बैठ कर अपने आप को खुदा ज़ाहिर करता है।

⁵क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे पास था तो तुम से ये बातें कहा करता था? ⁶अब जो चीज़ उसे रोक रही है ताकि वो अपने खास वक़्त पर ज़ाहिर हो उस को तुम जानते हो। ⁷क्यूँकी बेदीनी का राज़ तो अब भी तासीर करता जाता है मगर अब एक रोकने वाला है और जब तक कि वो दूर न किया जाए रोके रहेगा।

⁸उस वक़्त वो बेदीन ज़ाहिर होगा, जिसे खुदावन्द अपने मुँह की फूँक से हलाक और अपनी आमद के जलाल से मिटा देगा। ⁹और जिसकी आमद शैतान की तासीर के मुवाफ़िक़ हर तरह की झूठी कुदरत और निशानों और अजीब कामों के साथ, ¹⁰और हलाक होने वालों के लिए नारास्ती के हर तरह के धोके के साथ होगी इस वास्ते कि उन्होंने ने हक़ की मुहब्बत को इख़्तियार न किया जिससे उनकी नजात होती।

¹¹इसी वजह से खुदा उन के पास गुमराह करने वाली तासीर भेजेगा ताकि वो झूट को सच जानें। ¹²और जितने लोग हक़ का यक़ीन नहीं करते बल्कि नारास्ती को पसंद करते हैं; वो सज़ा पाएँगे।

¹³लेकिन तुम्हारे बारे में ऐ भाइयों! खुदावन्द के प्यारों हर वक़्त खुदा का शुक्र करना हम पर फ़र्ज़ है क्यूँकि खुदा ने तुम्हें शुरू से ही इसलिए चुन लिया था कि रूह के ज़रि‘ए से पाकीज़ा बन कर और हक़ पर ईमान लाकर नजात पाओ। ¹⁴जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारी खुशख़बरी के वसीले से बुलाया ताकि तुम हमारे खुदा वन्द ‘ईसा’ मसीह का जलाल हासिल करो। ¹⁵पस ऐ भाइयो! साबित क़दम रहो, और जिन रवायतों की तुम ने हमारी ज़बानी या ख़त के ज़रिये से ता’लीम पाई है उन पर क़ायम रहो।

¹⁶अब हमारा खुदावन्द ‘ईसा’ मसीह खुद और हमारा बाप खुदा जिसने हम से मुहब्बत रखी और फ़ज़ल से हमेशा तसल्ली और अच्छी उम्मीद बख़्शी ¹⁷तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे और हर एक नेक काम और कलाम में मज़बूत करे।

Chapter 3

¹गरज़ ऐ भाइयो और बहनों ! हमारे हक़ में दु'आ करो कि खुदावन्द का कलाम जल्द ऐसा फैल जाए और जलाल पाए; जैसा तुम में।² और कजरौ और बुरे आदमियों से बचे रहें क्योंकि सब में ईमान नहीं।³ मगर खुदावन्द सच्चा है वो तुम को मज़बूत करेगा; और उस शरीर से महफूज़ रखेगा।

⁴और खुदावन्द में हमें तुम पर भरोसा है; कि जो हुक्म हम तुम्हें देते हैं उस पर अमल करते हो और करते भी रहोगे।⁵ खुदावन्द तुम्हारे दिलों को खुदा की मुहब्बत और मसीह के सब्र की तरफ़ हिदायत करे।

⁶ऐ भाइयो! हम अपने खुदावन्द 'ईसा' मसीह के नाम से तुम्हें हुक्म देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से किनारा करो जो बे क़ाइदा चलता है और उस रिवायत पर अमल नहीं करता जो उस को हमारी तरफ़ से पहुँची।⁷ क्योंकि आप जानते हो कि हमारी तरह किस तरह बनना चाहिए इसलिए कि हम तुम में बे क़ाइदा न चलते थे।⁸ और किसी की रोटी मुफ़्त न खाते थे, बल्कि मेहनत और मशक्क़त से रात दिन काम करते थे ताकि तुम में से किसी पर बोझ न डालें।⁹ इसलिए नहीं कि हम को इख़्तियार न था बल्कि इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे वास्ते नमूना ठहराएँ ताकि तुम हमारी तरह बनो

¹⁰और जब हम तुम्हारे पास थे उस वक़्त भी तुम को ये हुक्म देते थे ; कि जिसे मेहनत करना मन्ज़ूर न हो वो खाने भी न पाए।¹¹ हम सुनते हैं कि तुम में कुछ बेक़ाइदा चलते हैं और कुछ काम नहीं करते; बल्कि औरों के काम में दख़ल अंदाजी करते हैं।¹² ऐसे शख्सों को हम खुदावन्द 'ईसा' मसीह में हुक्म देते और सलाह देते हैं कि चुप चाप काम कर के अपनी ही रोटी खाएँ।

¹³और तुम ऐ भाइयो! नेक काम करने में हिम्मत न हारो।¹⁴ और अगर कोई हमारे इस ख़त की बात को न माने तो उसे निगाह में रखो और उस से त'अल्लुक़ न रखो ताकि वो शर्मिन्दा हो।¹⁵ लेकिन उसे दुश्मन न जानो बल्कि भाई समझ कर नसीहत करो।

¹⁶अब खुदावन्द जो इत्मीनान का चश्मा है आप ही तुम को हमेशा और हर तरह से इत्मीनान बख़्शे; खुदावन्द तुम सब के साथ रहे।¹⁷ मैं, पौलुस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ; हर ख़त में मेरा यही निशान है; मैं इसी तरह लिखता हूँ।¹⁸ हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम सब पर होता रहे।

तीमुथियुस के नाम पौलुस रसूल का पहला ख़त

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से जो हमारे मुन्जी खुदा और हमारे उम्मीद गाह मसीह ईसा' के हुक्म से मसीह ईसा' का रसूल है,।² तीमुथियुस के नाम जो ईमान के लिहाज़ से मेरा सच्चा बेटा है: फ़ज़ल, रहम और इत्मीनान खुदा बाप और हमारे खुदावन्द मसीह ईसा' की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे ।

³जिस तरह मैंने मकिदुनिया जाते वक़्त तुझे नसीहत की थी, कि ईफ़िसुस में रह कर कुछ को शख्सों हुक्म कर दे कि और तरह की ता'लीम न दें,।⁴ और उन कहानियों और बे इन्तिहा नसब नामों पर लिहाज़ न करें, जो तकरार का ज़रिया होते हैं, और उस इंतज़ाम-ए-इलाही के मुवाफ़िक़ नहीं जो ईमान पर मब्नी है, उसी तरह अब भी करता हूँ ।

⁵हुक्म का मक़सद ये है कि पाक दिल और नेक नियत और बिना दिखावा ईमान से मुहब्बत पैदा हो।⁶ इनको छोड़ कर कुछ शख्स बेहूदा बकवास की तरफ़ मुतवज्जह हो गए,⁷ और शरी'अत के मु'अल्लिम बनना चाहते हैं, हालाँकि जो बातें कहते हैं और जिनका यक़ीनी तौर से दावा करते हैं, उनको समझते भी नहीं।

⁸मगर हम जानते हैं कि शरी'अत अच्छी है, बशरते कि कोई उसे शरी'अत के तौर पर काम में लाए।

⁹या'नी ये समझकर कि शरी'अत रास्तबाज़ों के लिए मुकर्रर नहीं हुई, बल्कि बेशरा' और सरकश लोगों, और बेदीनों, और गुनहगारों, और नापाकों, और रिन्दों, और माँ-बाप के क़ातिलों, और खूनियों,¹⁰ और हारामकारों, और लौंडे-बाज़ों, और बर्दा-फ़रोशों, और झूटों, और झूटी क़सम खानेवालों, और इनके सिवा सही ता'लीम के और बरखिलाफ़ काम करनेवालों के वास्ते है।¹¹ ये खुदा-ए-मुबारक के जलाल की उस खुशख़बरी के मुवाफ़िक़ है जो मेरे सुपुर्द हुई।

¹²मैं अपनी ताक़त बख़्शने वाले खुदावन्द मसीह ईसा' का शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे दियानन्दार समझकर अपनी ख़िदमत के लिए मुकर्रर किया।¹³ अगरचे मैं पहले कुफ़्र बकनेवाला, और सताने वाला, और बे'इज़ज़त करने वाला था; तो भी मुझ पर रहम हुआ, इस वास्ते कि मैंने बेईमानी की हालत में नादानी से ये काम किए थे।¹⁴ और हमारे खुदावन्द का फ़ज़ल उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो मसीह ईसा' में है बहुत ज़्यादा हुआ।

¹⁵ये बात सच और हर तरह से कुबूल करने के लायक़ है कि मसीह ईसा' गुनहगारों को नजात देने के लिए दुनिया में आया, उन गुनहगारों में से सब से बड़ा मैं हूँ,

¹⁶लेकिन मुझ पर रहम इसलिए हुआ कि ईसा' मसीह मुझ बड़े गुनहगार में अपना सब्र ज़ाहिर करे, ताकि जो लोग हमेशाकी ज़िन्दगी के लिए उस पर ईमान लाएँगे उनके लिए मैं नमूना बनूँ।¹⁷ अब हमेशा कि बादशाही या'नी ना मिटने वाली, नादीदा, एक खुदा की 'इज़ज़त और बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे। आमीन।

¹⁸ऐ फ़र्ज़न्द तीमुथियुस! उन पेशीनगोइयों के मुवाफ़िक़ जो पहले तेरे ज़रिए की गई थीं, मैं ये हुक्म तेरे सुपुर्द करता हूँ ताकि तू उनके मुताबिक़ अच्छी लड़ाई लड़ता रहे; और ईमान और उस नेक नियत पर क़ायम रहे,¹⁹ जिसको दूर करने की वजह से कुछ लोगों के ईमान का जहाज़ ग़र्क़ हो गया।²⁰ उन ही में से हिमुन्युस और सिकन्दर है, जिन्हें मैंने शैतान के हवाले किया ताकि कुफ़्र से बा'ज़ रहना सीखें।

Chapter 2

¹पस मैं सबसे पहले ये नसीहत करता हूँ, कि मुनाजातें, और दू'आएँ और, इल्तिजायें और शुक्रगुजारियाँ सब आदमियों के लिए की जाएँ, ²बादशाहों और सब बड़े मरतबे वालों के वास्ते इसलिए कि हम कमाल दीनदारी और सन्जीदगी से चैन सुकून के साथ ज़िन्दगी गुजारें। ³ये हमारे मुन्जी खुदा के नज़दीक 'उम्दा और पसन्दीदा है। ⁴वो चाहता है कि सब आदमी नजात पाएँ, और सच्चाई की पहचान तक पहुंचें।

⁵क्यूँकि खुदा एक है, और खुदा और इन्सान के बीच में दर्मियानी भी एक या 'नी मसीह ईसा' जो इन्सान है। ⁶जिसने अपने आपको सबके फ़िदिये में दिया कि मुनासिब वक्तों पर इसकी गवाही दी जाए। ⁷मैं सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, कि मैं इसी गरज़ से ऐलान करने वाला और रसूल और ग़ैर-क़ौमों को ईमान और सच्चाई की बातें सिखाने वाला मुकर्रर हुआ।

⁸पस मैं चाहता हूँ कि मर्द हर जगह, बग़ैर गुस्सा और तकरार के पाक हाथों को उठा कर दु'आ किया करें। ⁹इसी तरह 'औरतें हयादार लिबास से शर्म और परहेज़गारी के साथ अपने आपको सँवारें; न कि बाल गूँधने, और सोने और मोतियों और क्रीमती पोशाक से, ¹⁰बल्कि नेक कामों से, जैसा खुदा परस्ती का इक्रार करने वाली 'औरतों को मुनासिब है।

¹¹'औरत को चुपचाप कमाल ताबेदारी से सीखना चाहिये। ¹²और मैं इजाज़त नहीं देता कि 'औरत सिखाए या मर्द पर हुक्म चलाए, बल्कि चुपचाप रहे।

¹³क्यूँकि पहले आदम बनाया गया, उसके बाद हव्वा, ¹⁴और आदम ने धोखा नहीं खाया, बल्कि 'औरत धोखा खाकर गुनाह में पड़ गई, ¹⁵लेकिन औलाद होने से नजात पाएंगी, बशर्ते कि वो ईमान और मुहब्बत और पाकीज़गी में परहेज़गारी के साथ क़ायम रहें।

Chapter 3

¹और ये बात सच है, कि जो शख्स निगहबान का मर्तबा चाहता है, वो अच्छे काम की ख्वाहिश करता है।²पस निगहबान को बेइल्जाम, एक बीवी का शौहर, परहेज़गार, खुदापरस्त, शाइस्ता, मुसाफ़िर परवर, और ता'लीम देने के लायक़ होना चाहिये।³नशे में शोर मचाने वाला या मार-पीट करने वाला न हो; बल्कि नर्मदिल, न तक़रारी, न ज़रदोस्त।

⁴अपने घर का अच्छी तरह बन्दोबस्त करता हो, और अपने बच्चों को पूरी नर्मी से ताबे रखता हो।⁵(जब कोई अपने घर ही का बन्दोबस्त करना नहीं जानता तो खुदा कि कलीसिया की देख भाल क्या करेगा?)।

⁶नया शागिर्द न हो, ताकि घमण्डकरके कहीं इब्लीस की सी सज़ा न पाए।⁷और बाहरवालों के नज़दीक भी नेक नाम होना चाहिए, ताकि मलामत में और इब्लीस के फन्दे में न फँसे

⁸इसी तरह खादिमों को भी नर्म होना चाहिए दो जुबान और शराबी और नाजाएज़ नफ़ा का लालची ना हो⁹और ईमान के भेद को पाक दिल में हिफ़ाज़त से रखें।¹⁰और ये भी पहले आजमाए जाएँ, इसके बा'द अगर बे गुनाह ठहरें तो खिदमत का काम करें।

¹¹इसी तरह औरतों को भी संजीदा होना चाहिए; तोहमत लगाने वाली न हों, बल्कि परहेज़गार और सब बातों में ईमानदार हों।¹²खादिम एक एक बीवी के शौहर हों और अपने अपने बच्चों और घरों का अच्छी तरह बन्दोबस्त करते हों।¹³क्योंकि जो खिदमत का काम बखूबी अंजाम देते हैं, वो अपने लिए अच्छा मर्तबा और उस ईमान में जो मसीह ईसा' पर है, बड़ी दिलेरी हासिल करते हैं।

¹⁴मैं तेरे पास जल्द आने की उम्मीद करने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूँ,¹⁵ कि अगर मुझे आने में देर हो, तो तुझे मा'लूम हो जाए कि खुदा के घर, या'नी ज़िन्दा खुदा की कलीसिया में जो हक़ का सुतून और बुनियाद है, कैसा बर्ताव करना चाहिए।

¹⁶इसमें कलाम नहीं कि दीनदारी का भेद बड़ा है, या'नी वो जो जिस्म में ज़ाहिर हुआ, और रूह में रास्तबाज़ ठहरा, और फ़रिश्तों को दिखाई दिया, और ग़ैर-क़ौमों में उसकी मनादी हुई, और दुनिया में उस पर ईमान लाए, और जलाल में ऊपर उठाया गया।

Chapter 4

¹लेकिन पाक रूह साफ़ फ़रमाता है कि आइन्दा ज़मानों में कुछ लोग गुमराह करनेवाली रूहों, और शयातीन की ता'लीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर ईमान से फिर जाएँ।²ये उन झूठे आदमियों की रियाकारी के ज़रिए होगा, जिनका दिल गोया गर्म लोहे से दागा गया है;।

³ये लोग शादी करने से मना'करेंगे, और उन खानों से परहेज़ करने का हुक्म देंगे, जिन्हें ख़ुदा ने इसलिए पैदा किया है कि ईमानदार और हक़ के पहचानने वाले उन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ खाएँ।⁴क्योंकि ख़ुदा की पैदा की हुई हर चीज़ अच्छी है, और कोई चीज़ इनकार के लायक़ नहीं; बशर्ते कि शुक्रगुज़ारी के साथ खाई जाए,।

⁵इसलिए कि ख़ुदा के कलाम और दु'आ से पाक हो जाती है।

⁶अगर तू भाइयों को ये बातें याद दिलाएगा, तो मसीह ईसा' का अच्छा खादिम ठहरेगा; और ईमान और उस अच्छी ता'लीम की बातों से जिसकी तू पैरवी करता आया है, परवरिश पाता रहेगा।⁷लेकिन बेहूदा और बूढ़ियों की सी कहानियों से किनारा कर, और दीनदारी के लिए मेहनत कर।⁸क्योंकि जिस्मानी मेहनत का फ़ायदा कम है, लेकिन दीनदारी सब बातों के लिए फ़ाइदामन्द है, इसलिए कि अब की और आइन्दा की ज़िन्दगी का वा'दा भी इसी के लिए है।

⁹ये बात सच है और हर तरह से कुबूल करने के लायक़।¹⁰क्योंकि हम मेहनत और कोशिश इस लिए करते हैं कि हमारी उम्मीद उस ज़िन्दा ख़ुदा पर लगी हुई है, जो सब आदमियों का खास कर ईमानदारों का मुन्जी है।

¹¹इन बातों का हुक्म कर और ता'लीम दे।¹²कोई तेरी जवानी की हिक्कारत न करने पाए; बल्कि तू ईमानदरों के लिए कलाम करने, और चाल चलन, और मुहब्बत, और पाकीज़गी में नमूना बन।¹³जब तक मैं न आऊँ, पढ़ने और नसीहत करने और ता'लीम देने की तरफ़ मुतवज्जह रह।

¹⁴उस ने'अमत से ग़ाफ़िल ना रह जो तुझे हासिल है, और नबुव्वत के ज़रिए'ए से बुजुर्गों के हाथ रखते वक़्त तुझे मिली थी।¹⁵इन बातों की फ़िक्र रख, इन ही में मशगूल रह, ताकि तेरी तरक्की सब पर ज़ाहिर हो।¹⁶अपना और अपनी ता'लीम की ख़बरदारी कर। इन बातों पर क़ायम रह, क्योंकि ऐसा करने से तू अपनी और अपने सुनने वालों को झूठे उस्ताद की ता'लीम से भी नजात का ज़रिया होगा।

Chapter 5

¹'किसी बड़े'उम्र वाले को मलामत न कर,बल्कि बाप जान कर नसीहत कर;²और जवानों को भाई जान कर, और बड़ी 'उम्र वाली 'औरतों को माँ जानकर,और जवान 'औरतों को कमाल पाकीज़गी से बहन जानकर।

³उन बेवाओं की,जो वाक़'ई बेवा हैं 'इज़्ज़त कर।⁴और अगर किसी बेवा के बेटे या पोते हों,तो वो पहले अपने ही घराने के साथ दीनदारी का बर्ताव करना,और माँ-बाप का हक़ अदा करना सीखें,क्यूँकि ये खुदा के नज़दीक पसन्दीदा है।

⁵जो वाक़'ई बेवा है और उसका कोई नहीं,वो खुदा पर उम्मीद रखती है और रात-दिन मुनाज़ात और दु'आ में मशगूल रहती है;⁶मगर जो'ऐश-ओ-'इशरतमें पड़ गई है,वो जीते जी मर गई है।

⁷इन बातों का भी हुक्म कर ताकि वो बेइज़ाम रहें।⁸अगर कोई अपनों और खास कर अपने घराने की खबरगिरी न करे,तो ईमान का इंकार करने वाला और बे-ईमान से बदतर है।

⁹वही बेवा फ़र्द में लिखी जाए जो साठ बरस से कम की न हो,और एक शौहर की बीवी हुई हो,¹⁰और नेक कामों में मशहूर हो,बच्चों की तरबियत की हो,परदेसियों के साथ मेंहमान नवाज़ी की हो,मुक़द्दसों के पाँव धोए हों,मुसीबत ज़दों की मदद की हो और हर नेक काम करने के दरपै रही हो।

¹¹मगर जवान बेवाओं के नाम दर्ज न कर,क्यूँकि जब वो मसीह के खिलाफ़ नफ़्स के ताबे'हो जाती हैं,तो शादी करना चाहती हैं,¹²और सज़ा के लायक़ ठहरती हैं,इसलिए कि उन्होंने अपने पहले ईमान को छोड़ दिया।¹³और इसके साथ ही वो घर घर फिर कर बेकार रहना सीखती हैं,और सिर्फ़ बेकार ही नहीं रहती बल्कि बक बक करती रहती है औरों के काम में दखल भी देती है और बेकार की बातें कहती हैं।

¹⁴पस मैं ये चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ शादी करें, उनके औलाद हों,घर का इन्तिज़ाम करें, और किसी मुखालिफ़ को बदगोई का मौक़ा न दें।¹⁵क्यूँकि कुछ गुमराह हो कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं।¹⁶अगर किसी ईमानदार'औरत के यहाँ बेवाएँ हों,तो वही उनकी मदद करे और कलीसिया पर बोझ न डाला जाए,ताकि वो उनकी मदद कर सके जो वाक़'ई बेवा हैं।

¹⁷जो बुजुर्ग अच्छा इन्तिज़ाम करते हैं,खास कर वो जो कलाम सुनाने और ता'लीम देने में मेंहनत करते हैं,दुगनी 'इज़्ज़त के लायक़ समझे जाएँ।¹⁸क्यूँकि किताब-ए-मुक़द्दस ये कहती है, "दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना,"और मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।"

¹⁹जो दा'वा किसी बुजुर्ग के बरखिलाफ़ किया जाए,बग़ैर दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।²⁰गुनाह करने वालों को सब के सामने मलामत कर ताकि औरों को भी ख़ौफ़ हो।

²¹खुदा और मसीह ईसा' और बरगुज़ीदा फ़रिश्तों को गवाह करके मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि इन बातों पर बिला ता'अस्सूब'अमल करना,और कोई काम तरफ़दारी से न करना।²²किसी शख्स पर जल्द हाथ न रखना,और दूसरों के गुनाहों में शरीक न होना,अपने आपको पाक रखना।

²³आइन्दा को सिर्फ़ पानी ही न पिया कर,बल्कि अपने मे'दे और अक्सर कमज़ोर रहने की वजह से ज़रा सी मय भी काम में लाया कर।²⁴कुछ आदमियों के गुनाह ज़ाहिर होते हैं,और पहले ही'अदालत में पहुँच जाते हैं कुछ बाद में जाते हैं।²⁵इसी तरह कुछ अच्छे काम भी ज़ाहिर होते हैं,और जो ऐसे नहीं होते वो भी छिप नहीं सकते।

Chapter 6

¹जितने नौकर जुए के नीचे हैं, अपने मालिकों को कमाल 'इज़्ज़त के लाइक जानें, ताकि खुदा का नाम और ता'लीम बदनाम न हो।² और जिनके मालिक ईमानदार हैं वो उनको भाई होने की वजह से हक़ीर न जानें, बल्कि इस लिए ज़्यादातर उनकी ख़िदमत करें कि फ़ाइदा उठानेवाले ईमानदार और 'अज़ीज़ हैं तू इन बातों की ता'लीम दे और नसीहत कर।

³अगर कोई शख्स और तरह की ता'लीम देता है और सही बातों को, या 'नी खुदावन्द ईसा' मसीह की बातें और उस ता'लीम को नहीं मानता जो दीनदारी के मुताबिक़ है, ⁴वो मगरूर है और कुछ नहीं जानता; बल्कि उसे बहस और लफ़्ज़ी तकरार करने का मज़ है, जिनसे हसद और झगड़े और बदगोइयाँ और बदगुमानियाँ, ⁵और उन आदमियों में रदो बदल पैदा होता है जिनकी अक्ल बिगड़ गई हैं और वो हक़ से महरूम है और दीनदारी को नफ़े ही का ज़रिया समझते हैं

⁶हैं दीनदारी सब्र के साथ बड़े नफ़े का ज़रिया है। ⁷क्योंकि न हम दुनियाँ में कुछ लाए और न कुछ उसमें से ले जा सकते हैं। ⁸पस अगर हमारे पास खाने पहनने को है, तो उसी पर सब्र करें।

⁹लेकिन जो दौलतमन्द होना चाहते हैं, वो ऐसी आज़माइश और फन्दे और बहुत सी बेहूदा और नुक्सान पहुँचानेवाली ख्वाहिशों में फँसते हैं, जो आदमियों को तबाही और हलाकत के दरिया में ग़र्क़ कर देती हैं। ¹⁰क्योंकि माल की दोस्ती हर क्रिस्म की बुराई की जड़ है। जिसकी आरजू में कुछ ने ईमान से गुमराह होकर अपने दिलों को तरह तरह के ग़मों से छलनी कर लिया।

¹¹मगर ऐ मर्द-ए-खुदा! तू इन बातों से भाग और रास्तबाज़ी, दीनदारी, ईमान, मुहब्बत, सब्र और नर्म दिली का तालिब हो। ¹²ईमान की अच्छी कुश्ती लड़; उस हमेशा की ज़िन्दगी पर क़ब्ज़ा कर ले जिसके लिए तू बुलाया गया था, और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा इक़रार किया था।

¹³में उस खुदा को, जो सब चीज़ों को ज़िन्दा करता है, और मसीह ईसा' को, जिसने पुनितयुस पिलातुस के सामने अच्छा इक़रार किया था, गवाह करके तुझे नसीहत करता हूँ। ¹⁴कि हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के उस मसीह के आने तक हुक्म को बेदाग़ और बेइलज़ाम रख,।

¹⁵जिसे वो मुनासिब वक़्त पर नुमायाँ करेगा, जो मुबारक और वाहिद हाकिम, बादशाहों का बादशाह और खुदावान्दों का खुदा है; ¹⁶बक़ा सिर्फ़ उसी की है, और वो उस नूर में रहता है जिस तक किसी की पहुँच नहीं हो सकती, न उसे किसी इन्सान ने देखा और न देख सकता है; उसकी 'इज़्ज़त और सल्तनत हमेशा तक रहे। आमीन।

¹⁷इस मौजूदा ज़हान के दौलतमन्दों को हुक्म दे कि मगरूर न हों और नापाएदार दौलत पर नहीं, बल्कि खुदा पर उम्मीद रखें जो हमें लुफ़ उठाने के लिए सब चीज़ें बहुतायत से देता है। ¹⁸और नेकी करें, और अच्छे कामों में दौलतमन्द बनें, और सखावत पर तैयार और इम्दाद पर मुस्त'ईद हों, ¹⁹और आइन्दा के लिए अपने वास्ते एक अच्छी बुनियाद क़ायम कर रखें ताकि हकीक़ी ज़िन्दगी पर क़ब्ज़ा करें।

²⁰ऐ तीमुथियुस! इस अमानत को हिफ़ाज़त से रख; और जिस 'इल्म को इल्म कहना ही ग़लत है, उसकी बेहूदा बकवास और मुखालफ़ित पर ध्यान न कर। ²¹कुछ उसका इक़रार करके ईमान से फिर गए हैं तुम पर फ़ज़ल होता रहे।

तीमुथियुस के नाम पौलुस रसूल का दूसरा खत

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से जो उस ज़िन्दगी के वा'दे के मुताबिक़ जो मसीह ईसा' में है खुदा की मज़ी से मसीह 'ईसा' का रसूल है। ²प्यारे बेटे तीमुथियुस के नाम खत : फ़ज़ल रहम और इत्मीनान खुदा बाप और हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे।

³जिस खुदा की इबादत में साफ़ दिल से बाप दादा के तौर पर करता हूँ; उसका शुक्र है कि अपनी दुआओं में बिला नागा तुझे याद रखता हूँ। ⁴और तेरे आँसुओं को याद करके रात दिन तेरी मुलाक़ात का मुशताक़ रहता हूँ ताकि खुशी से भर जाऊँ। ⁵और मुझे तेरा वो बे रिया ईमान याद दिलाया गया है जो पहले तेरी नानी लूडस और तेरी माँ यूनीके रखती थीं और मुझे यक़ीन है कि तू भी रखता है।

⁶इसी वजह से मैं तुझे याद दिलाता हूँ कि तू "खुदा" की उस ने'अमत को चमका दे जो मेरे हाथ रखने के ज़रिये तुझे हासिल है। ⁷क्योंकि खुदा ने हमें दहशत की रूह नहीं बल्कि कुदरत और मुहब्बत और तरबियत की रूह दी है।

⁸पस, हमारे खुदावन्द की गवाही देने से और मुझ से जो उसका क़ैदी हूँ शर्म न कर बल्कि खुदा की कुदरत के मुताबिक़ खुशख़बरी की खातिर मेरे साथ दुःख उठा। ⁹जिस ने हमें नज़ात दी और पाक बुलावे से बुलाया हमारे कामों के मुताबिक़ नहीं बल्कि अपने खास इरादा और उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो मसीह 'ईसा' में हम पर शुरू से हुआ। ¹⁰मगर अब हमारे मुन्जी मसीह 'ईसा' के आने से ज़ाहिर हुआ जिस ने मौत को बर्बाद और बाक़ी ज़िन्दगी को उस खुशख़बरी के वसीले से रौशन कर दिया। ¹¹जिस के लिए मैं ऐलान करने वाला और रसूल और उस्ताद मुकर्रर हुआ।

¹²इसी वजह से मैं ये दुःख भी उठाता हूँ, लेकिन शर्माता नहीं क्योंकि जिसका मैं ने यक़ीन किया है उसे जानता हूँ और मुझे यक़ीन है कि वो मेरी अमानत की उस दिन तक हिफ़ाज़त कर सकता है। ¹³जो सही बातें तू ने मुझ से सुनी उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो "मसीह ईसा' में है उन का खाका याद रख। ¹⁴रूह -उल -कुहुस के वसीले से जो हम में बसा हुआ है इस अच्छी अमानत की हिफ़ाज़त कर।

¹⁵तू ये जानता है कि आसिया सूबे के सब लोग मुझ से खफ़ा हो गए; जिन में से फ़ूगलुस और हरमुगिनेस हैं। ¹⁶खुदावन्द उनेस्फ़िरुस के घराने पर रहम करे क्योंकि उस ने बहुत मर्तबा मुझे ताज़ा दम किया और मेरी क़ैद से शर्मिन्दा न हुआ। ¹⁷बल्कि जब वो रोमा शहर में आया तो कोशिश से तलाश करके मुझ से मिला।

¹⁸खुदावन्द उसे ये बख़्शे कि उस दिन उस पर खुदावन्द का रहम हो और उस ने इफ़िसुस में जो जो ख़िदमतें कीं तू उन्हें ख़ूब जानता है।

Chapter 2

¹पस,ऐ मेरे बेटे, तू उस फ़ज़ल से जो मसीह 'ईसा' में है मज़बूत बन ।²और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं उनको ऐसे ईमानदार आदमियों के सुपुर्द कर जो औरों को भी सिखाने के क़ाबिल हों।

³पस मसीह 'ईसा' के अच्छे सिपाही की तरह मेरे साथ दुःख उठा।⁴कोई सिपाही जब लड़ाई को जाता है अपने आपको दुनिया के मु'आमिलों में नहीं फँसाता ताकि अपने भरती करने वाले को खुश करे।⁵दँगल में मुक़ाबिला करने वाला भी अगर उस ने बा' क़ाइदा मुक़ाबिला न किया हो तो सेहरा नहीं पाता।

⁶जो किसान मेहनत करता है, पैदावार का हिस्सा पहले उसी को मिलना चाहिए।⁷जो मैं कहता हूँ उस पर शौर कर क्योंकि खुदावन्द तुझे सब बातों की समझ देगा।

⁸'ईसा' मसीह को याद रख जो मुर्दों में से जी उठा है और दाऊद की नस्ल से है मेरी उस खुशख़बरी के मुवाफ़िक़।⁹जिसके लिए मैं बदकार की तरह दुःख उठाता हूँ यहाँ तक कि कैद हूँ मगर खुदा का कलाम कैद नहीं।¹⁰इसी वजह से मैं नेक लोगों की खातिर सब कुछ सहता हूँ ताकि वो भी उस नजात को जो मसीह 'ईसा' में है अबदी जलाल समेत हासिल करें।

¹¹ये बात सच है कि जब हम उस के साथ मर गए तो उस के साथ जियेंगे भी।¹²अगर हम दुःख सहेंगे तो उस के साथ बादशाही भी करेंगे अगर हम उसका इन्कार करेंगे; तो वो भी हमारा इन्कार करेगा।¹³अगर हम बेवफ़ा हो जाएँगे तो भी वो वफ़ादार रहेगा, क्योंकि वो अपने आप का इन्कार नहीं कर सकता।

¹⁴ये बातें उन्हें याद दिला और खुदावन्द के सामने नसीहत कर के लफ़्ज़ी तकरार न करें जिस से कुछ हासिल नहीं बल्कि सुनने वाले बिगड़ जाते हैं।¹⁵अपने आपको खुदा के सामने मक़बूल और ऐसे काम करने वाले की तरह पेश करने की कोशिश कर; जिसको शर्मिन्दा होना न पड़े, और जो हक़ के कलाम को दुरुस्ती से काम में लाता हो।

¹⁶लेकिन बेकार बातों से परहेज़ कर क्योंकि ऐसे शख्स और भी बेदीनी में तरक्की करेंगे।¹⁷और उन का कलाम सड़े घाव की तरह फैलता चला जाएगा; हुमिनयुस और फ़िलेतुस उन ही में से हैं।¹⁸वो ये कह कर कि क़यामत हो चुकी है; हक़ से गुमराह हो गए हैं और कुछ का ईमान बिगाड़ते हैं।

¹⁹तो भी खुदा की मज़बूत बुनियाद क़ायम रहती है और उस पर ये मुहर है, " खुदावन्द अपनों को पहचानता है," और "जो कोई खुदावन्द का नाम लेता है नारास्ती से बाज़ रहे।"²⁰बड़े घर में न सिर्फ़ सोने चाँदी ही के बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी कुछ 'इज़ज़त और कुछ ज़िल्लत के लिए।'²¹पस, जो कोई इन से अलग होकर अपने आप को पाक करेगा वो 'इज़ज़त का बर्तन और मुक़द्दस बनेगा और मालिक के काम के लायक़ और हर नेक काम के लिए तैयार होगा।

²²जवानी की ख़्वाहिशों से भाग और जो पाक दिल के साथ खुदावन्द से दुआ करते हैं; उन के साथ रास्तबाज़ी और ईमान और मुहब्बत और मेलमिलाप की चाहत हो।²³लेकिन बेवकूफी और नादानी की हुज्जतों से किनारा कर क्योंकि तू जानता है; कि उन से झगड़े पैदा होते हैं।

²⁴और मुनासिब नहीं कि "खुदावन्द" का बन्दा झगड़ा करे बल्कि सब के साथ रहम करे और ता'लीम देने के लायक़ और हलीम हो।²⁵और मुख़ालिफ़ों को हलीमी से सिखाया करे शायद खुदा उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ बख़्शे ताकि वो हक़ को पहचानें²⁶और खुदावन्द के बन्दे के हाथ से खुदा की मर्ज़ी के कैदी हो कर इब्लीस के फन्दे से छूटें।

Chapter 3

¹लेकिन ये जान रख कि आखिरी ज़माने में बुरे दिन आएँगे।²क्योंकि आदमी खुदगर्ज एहसान फ़रामोश, शेखीबाज़, मगरूर बदगो, माँ बाप का नाफ़रमान' नाशुक, नापाक,³ज़ाती मुहब्बत से खाली संगदिल तोहमत लगानेवाले बेज़ब्त तुन्द मिज़ाज नेकी के दुश्मन।⁴दगाबाज़, ढीठ, घमन्ड करने वाले, खुदा की निस्बत ऐश-ओ-इशरत को ज़यादा दोस्त रखने वाले होंगे।

⁵वो दीनदारी का दिखावा तो रखेंगे मगर उस पर अमल न करेंगे ऐसों से भी किनारा करना।⁶इन ही में से वो लोग हैं जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं और उन बद चलन 'औरतों को क़ाबू कर लेते हैं जो गुनाहों में दबी हुई हैं और तरह तरह की ख्वाहिशों के बस में हैं।⁷और हमेशा ता'लीम पाती रहती हैं मगर हक़ की पहचान उन तक कभी नहीं पहुँचती।

⁸और जिस तरह के यत्रेस और यम्ब्रेस ने मूसा की मुखालिफ़त की थी ये ऐसे आदमी हैं जिनकी अक्ल बिगड़ी हुई है और वो ईमान के ऐ'तिबार से खाली हैं।⁹मगर इस से ज़यादा न बढ़ सकेंगे इस वास्ते कि इन की नादानी सब आदमियों पर ज़ाहिर हो जाएगी जैसे उन की भी हो गई थी।

¹⁰लेकिन तू ने ता'लीम, चाल चलन, इरादा, ईमान, तहम्मुल, मुहब्बत, सब्र, सताए जाने और दुःख उठाने में मेरी पैरवी की।¹¹या'नी ऐसे दुःखों में जो अन्ताकिया और इकुनियुस और लुस्त्रा शहरों में मुझ पर पड़े दीगर दुःखों में भी जो मैंने उठाए हैं मगर खुदावन्द ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया।¹²बल्कि जितने मसीह में दीनदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं वो सब सताए जाएँगे।¹³और बुरे और धोकेबाज़ आदमी फ़रेब देते और फ़रेब खाते हुए बिगड़ते चले जाएँगे।

¹⁴मगर तू उन बातों पर जो तू ने सीखी थीं, और जिनका यक़ीन तुझे दिलाया गया था, ये जान कर क़ायम रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था।¹⁵और तू बचपन से उन पाक नविशतों से वाकिफ़ है, जो तुझे मसीह 'ईसा' पर ईमान लाने से नजात हासिल करने के लिए दानाई बख़्श सकते हैं।

¹⁶हर एक सहीफ़ा जो खुदा के इल्हाम से है ता'लीम और इल्ज़ाम और इस्लाह और रास्तबाज़ी में तरबियत करने के लिए फ़ाइदे मन्द भी है।¹⁷ताकि मर्दे खुदा कामिल बने और हर एक नेक काम के लिए बिल्कुल तैयार हो जाए।

Chapter 4

¹खुदा और मसीह 'ईसा' को जो ज़िन्दों और मुर्दों की अदालत करेगा; गवाह करके और उस के ज़हूर और बादशाही को याद दिला कर मैं तुझे नसीहत करता हूँ।
²कि तू कलाम की मनादी कर वक़्त और बे वक़्त मुस्त'इद रह, हर तरह के तहम्मल और ता'लीम के साथ समझा दे और मलामत और नसीहत कर।
³क्यूँकि ऐसा वक़्त आयेगा कि लोग सही ता'लीम की बर्दाशत न करेंगे; बल्कि कानों की खुजली के ज़रिए अपनी अपनी ख्वाहिशों के मुवाफ़िक़ बहुत से उस्ताद बना लेंगे।⁴और अपने कानों को हक़ की तरफ़ से फ़ेर कर कहानियों पर मुतवज्जह होंगे।⁵मगर तू सब बातों में होशियार रह, दुःख उठा बशारत का काम अन्जाम दे अपनी ख़िदमत को पूरा कर।
⁶क्यूँकि मैं अब कुर्बान हो रहा हूँ, और मेरे जाने का वक़्त आ पहुँचा है।⁷मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका, मैंने दौड़ को ख़त्म कर लिया, मैंने ईमान को महफूज़ रखखा।
⁸आइन्दा के लिए मेरे वास्ते रास्तबाज़ी का वो ताज रखा हुआ है, जो आदिल मुन्सिफ़ या 'नी' "ख़ुदावन्द" मुझे उस दिन देगा और सिर्फ़ मुझे ही नहीं बल्कि उन सब को भी जो उस के ज़हूर के आरज़ूमन्द हों।
⁹मेरे पास जल्द आने की कोशिश कर।¹⁰क्योंकि देमास ने इस मौजूदा ज़हान को पसन्द करके मुझे छोड़ दिया और थिस्सलुनी को चला गया और क्रेसकेन्स गलतिया को और तीतुस दलमतिया को।
¹¹सिर्फ़ लूका मेरे पास है मरकुस को साथ लेकर आजा; क्यूँकि ख़िदमत के लिए वो मेरे काम का है।¹²युखिकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है।¹³जो चोगा मैं त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ जब तू आए तो वो और किताबें खास कर रक्क के तुमार लेता आइये।
¹⁴सिकंदर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयाँ की ख़ुदावन्द उसे उसके कामों के मुवाफ़िक़ बदला देगा।¹⁵उस से तू भी खबरदार रह, क्यूँकि उस ने हमारी बातों की बड़ी मुख़ालिफ़त की।¹⁶मेरी पहली जवाबदेही के वक़्त किसी ने मेरा साथ न दिया; बल्कि सब ने मुझे छोड़ दिया काश कि उन्हें इसका हिसाब देना न पड़े।
¹⁷मगर ख़ुदावन्द मेरा मददगार था, और उस ने मुझे ताक़त बख़शी ताकि मेरे ज़रिये पैग़ाम की पूरी मनादी हो जाए और सब ग़ैर कौमों में सुन लें और मैं शेर के मुँह से छुड़ाया गया।¹⁸ख़ुदावन्द मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा और अपनी आसमानी बादशाही में सही सलामत पहुँचा देगा उसकी बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन।
¹⁹प्रिस्का और अक्विला से और अनेसफ़रुस के ख़ानदान से सलाम कह।²⁰इरास्तुस कुरिन्थुस में रहा, और त्रुफ़िमुस को मैंने मीलेतुस में बीमार छोड़ा।²¹जाइँ से पहले मेरे पास आ जाने की कोशिश कर यूबूलुस और पूदेंस और लीनुस और क्लोदिया और सब भाई तुझे सलाम कहते हैं।²²ख़ुदावन्द तेरी रूह के साथ रहे तुम पर फ़ज़ल होता रहे।

तितुस के नाम पौलुस रसूल का ख़त

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से तीतुस को ख़त, जो ख़ुदा का बन्दा और 'ईसा' मसीह का रसूल है। ख़ुदा के बरगुज़ीर्दों के ईमान और उस हक़ की पहचान के मुताबिक़ जो दीनदारी के मुताबिक़ है।²उस हमेशा की ज़िन्दगी की उम्मीद पर जिसका वा'दा शुरू ही से ख़ुदा ने किया है जो झूट नहीं बोल सकता।³और उस ने मुनासिब वक़्तों पर अपने कलाम को जो हमारे "मुन्जी ख़ुदा"के हुक्म के मुताबिक़ मेरे सुर्पुद हुआ।
⁴ईमान की शिरकत के रूह से सच्चे फ़र्ज़न्द तितुस के नाम फ़ज़ल और इत्मीनान ख़ुदा बाप और हमारे मुन्जी 'ईसा' मसीह की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे।
⁵मैंने तुझे करते में इस लिए छोड़ा था, कि तू बक़िया बातों को दुरुस्त करे और मेरे हुक्म के मुताबिक़ शहर बा शहर ऐसे बुजुर्गों को मुक़रर करे।
⁶जो बे इल्ज़ाम और एक एक बीवी के शौहर हों और उन के बच्चे ईमानदार और बदचलनी और सरकशी के इल्ज़ाम से पाक हों।⁷क्यूँकि निगेहबान को "ख़ुदा"का मुख़्तार होने की वजह से बेइल्ज़ाम होना चाहिए; न ख़ुदराय हो न गुस्सावर, न नशे में गुल मचानेवाला, न मार पीट करने वाला और न नाजायज़ नफ़े का लालची;
⁸बल्कि मुसाफ़िर परवर, ख़ैर दोस्त, परहेज़गार, मुन्सिफ़ मिज़ाज, पाक और सब्र करने वाला हो;⁹और ईमान के कलाम पर जो इस ता'लीम के मुवाफ़िक़ है क़ायम हो ताकि सही ता'लीम के साथ नसीहत भी कर सके और मुख़ालिफ़ों को क़ायल भी कर सके।
¹⁰क्यूँकि बहुत से लोग सरकश और बेहूदा गो और दगाबाज़ हैं खासकर ईमानदार यहूदी मख़तून में से।¹¹इन का मुँह बन्द करना चाहिए ये लोग नाजायज़ नफ़े की ख़ातिर नशाइस्ता बातें सीखकर घर के घर तबाह कर देते हैं।
¹²उन ही में से एक शख्स ने कहा है, जो खास उन का नबी था "करेती हमेशा झूटे, मूज़ी जानवर, वादा ख़िलाफ़ होते हैं।"¹³ये गवाही सच है, पस, उन्हें सख़्त मलामत किया कर ताकि उन का ईमान दुरुस्त होजाए।
¹⁴और वो यहूदियों की कहानियों और उन आदमियों के हुक्मों पर तवज्जह न करें, जो हक़ से गुमराह होते हैं।
¹⁵पाक लोगों के लिए सब चीज़ें पाक हैं, मगर गुनाह आलूदा और बेईमान लोगों के लिए कुछ भी पाक नहीं, बल्कि उन की 'अक्ल और दिल दोनों गुनाह आलूदा हैं।¹⁶वो ख़ुदा की पहचान का दा'वा तो करते हैं, मगर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं क्यूँकि वो मकरूह और नाफ़रमान हैं, और किसी नेक काम के क़ाबिल नहीं।

Chapter 2

¹और तू वो बातें बयान कर जो सही ता'लीम के मुनासिब हैं।²या'नी ये कि बूढ़े मर्द परहेज़गार, सन्जीदा और मुत्तक़ी हों और उन का ईमान और मुहब्बत और सब्र दुरूस्त हो।

³इसी तरह बूढ़ी 'औरतों की भी वज़'अ मुकद्दसों सी हों, इल्जाम लगाने वाली और ज़्यादा मय पीने में मशगूल न हों, बल्कि अच्छी बातें सिखाने वाली हों;⁴ताकि जवान 'औरतों को सिखाएँ कि अपने शौहरों को प्यार करें बच्चों को प्यार करें;⁵और परहेज़गार और पाक दामन और घर का कारोबार करने वाली, और मेहरबान हों अपने और अपने शौहर के ताबे रहें, ताकि खुदा का कलाम बदनाम न हो।

⁶जवान आदमियों को भी इसी तरह नसीहत कर कि परहेज़गार बनें।⁷सब बातों में अपने आप को नेक कामों का नमूना बना तेरी ता'लीम में सफ़ाई और सन्जीदगी⁸और ऐसी सेहत कलामी पाई जाए जो मलामत के लायक़ न हो ताकि मुखालिफ़ हम पर 'ऐब लगाने की कोई वजह न पाकर शर्मिन्दा होजाए।

⁹नौकरों को नसीहत कर कि अपने मालिकों के ताबे' रहें और सब बातों में उन्हें खुश रखें, और उनके हुक्म से कुछ इन्कार न करें,¹⁰चोरी चालाकी न करें बल्कि हर तरह की ईमानदारी अच्छी तरह ज़ाहिर करें, ताकि उन से हर बात में हमारे मुन्जी "खुदा"की ता'लीम को रौनक़ हो।

¹¹क्यूँकि खुदा का वो फ़ज़ल ज़ाहिर हुआ है, जो सब आदमियों की नजात का ज़रिया है,¹²और हमें तालीम देता है ताकि बेदीनी और दुनयावी ख्वाहिशों का इन्कार करके इस मौजूदा जहान में परहेज़गारी और रास्तबाज़ी और दीनदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें,¹³और उस मुबारक उम्मीद या'नी अपने बुजुर्ग़ खुदा और मुन्जी ईसा' मसीह के जलाल के ज़ाहिर होने के मुत्तज़िर रहें।

¹⁴जिस ने अपने आपको हमारे लिए दे दिया, ताकि फ़िदिया होकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाले, और पाक करके अपनी ख़ास मिल्कियत के लिए ऐसी उम्मत बनाए जो नेक कामों में सरगर्म हो।

¹⁵पूरे इख्तियार के साथ ये बातें कह और नसीहत दे और मलामत कर। कोई तेरी हिक्मत न करने पाए।

Chapter 3

¹उनको याद दिला कि हाकिमों और इख्तियारवालों के ताबे रहें और उनका हुक्म मानें, और हर नेक काम के लिए मुस्त'इद रहें, ²किसी की बुराई न करें तकरारी न हों; बल्कि नर्म मिज़ाज हों और सब आदमियों के साथ कमाल हलीमी से पेश आएँ।

³क्योंकि हम भी पहले नादान नाफ़रमान फ़रेब खाने वाले रंग बिरंग की ख्वाहिशों और ऐश-ओ-इशरत के बन्दे थे, और बदख्वाही और हसद में ज़िन्दगी गुज़ारते थे, नफ़रत के लायक़ थे और आपस में जलन रखते थे।

⁴मगर जब हमारे मुन्जी "खुदा" की मेहरबानी और इन्सान के साथ उसकी उल्फ़त ज़ाहिर हुई ⁵तो उस ने हम को नजात दी; मगर रास्तबाज़ी के कामों के ज़रिये से नहीं जो हम ने खुद किए, बल्कि अपनी रहमत के मुताबिक़ पैदाइश के गुस्ल और रूह-उल-कुदूस के हमें नया बनाने के वसीले से।

⁶जिसे उस ने हमारे मुन्जी 'ईसा' मसीह के ज़रिये हम पर इफ़रात से नाज़िल किया, ⁷ताकि हम उसके फ़ज़ल से रास्तबाज़ ठहर कर हमेशा की ज़िन्दगी की उम्मीद के मुताबिक़ वारिस बनें।

⁸ये बात सच है, और मैं चाहता हूँ, कि तू इन बातों का याक़ीनी तौर से दावा कर ताकि जिन्होंने "खुदा" का यक़ीन किया है, वो अच्छे कामों में लगे रहने का ख़याल रखें ये बातें भली और आदमियों के लिये फ़ायदेमन्द हैं।

⁹मगर बेवकूफी की हुज्जतों और नसबनामों और झगड़ों और उन लड़ाइयों से जो शरी'अत के बारे में हों परहेज़ करे इसलिए कि ये ला हासिल और बेफ़ायदा हैं।

¹⁰एक दो बार नसीहत करके झूठी ता'लीम देने वाले शख्स से किनारा कर, ¹¹ये जान कर कि ऐसा शख्स मुड़ गया है और अपने आपको मुजरिम ठहरा कर गुनाह करता रहता है।

¹²जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुख़िकुस को भेजूँ तो मेरे पास नीकुपुलिस शहर आने की कोशीश करना क्यूँकि मैंने वहीं जाड़ा काटने का इरादा कर लिया है।

¹³ज़ेनास आलिम-ए-शरा और अपुल्लोस को कोशिश करके रवाना कर दे इस तौर पर कि उन को किसी चीज़ की कमी न रही।

¹⁴और हमारे लोग भी ज़रूरतों को रफ़ा करने के लिए अच्छे कामों में लगे रहना सीखें ताकि बेफल न रहें।

¹⁵मेरे सब साथी तुझे सलाम कहते हैं। जो ईमान के रूह से हमें 'अज़ीज़ रखते हैं उन से सलाम कह। तुम सब पर फ़ज़ल होता रहे।

फ़िलेमोन के नाम पौलुस रसूल का ख़त

Chapter 1

¹पौलुस की तरफ़ से जो मसीह ईसा' का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की तरफ़ से अपने 'अज़ीज़ और हम ख़िदमत फ़िलेमोन, ²और बहन अफ़िया, और अपने हम सफ़र आख़िप्पुस और फ़िलेमोन के घर की कलीसिया के नाम ख़त : ³फ़ज़ल और इत्मिनान हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें हासिल होता रहे।

⁴मैं तेरी उस मुहब्बत का और ईमान का हाल सुन कर, जो सब मुक़द्दसों के साथ और खुदावन्द ईसा' पर है ⁵हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ, और अपनी दु'आओं में तुझे याद करता हूँ। ⁶ताकि तेरे ईमान की शिराकत तुम्हारी हर ख़ूबी की पहचान में मसीह के वास्ते मु'अस्सिर हो। ⁷क्योंकि ऐ भाई ! मुझे तेरी मुहब्बत से बहुत खुशी और तसल्ली हुई, इसलिए कि तेरी वजह से मुक़द्दसों के दिल ताज़ा हुए हैं।

⁸पस अगरचे मुझे मसीह में बड़ी दिलेरी तो है कि तुझे मुनासिब हुक्म दूँ। ⁹मगर मुझे ये ज़्यादा पसंद है कि मैं बूढ़ा पौलुस, बल्कि इस वक़्त मसीह 'ईसा' का कैदी भी होकर मुहब्बत की राह से इल्तिमास करूँ।

¹⁰सो अपने फ़र्ज़न्द उनेस्मुस के बारे में जो कैद की हालत में मुझ से पैदा हुआ, तुझसे इल्तिमास करता हूँ। ¹¹पहले तो तेरे कुछ काम का ना था मगर अब तेरे और मेरे दोनों के काम का है। ¹²खुद उसी को या'नी अपने कलेजे के टुकड़े को, मैंने तेरे पास वापस भेजा है। ¹³उसको मैं अपने ही पास रखना चाहता था, ताकि तेरी तरफ़ से इस कैद में जो खुशख़बरी के ज़रिये है मेरी ख़िदमत करे।

¹⁴लेकिन तेरी मर्ज़ी के बग़ैर मैंने कुछ करना न चाहा, ताकि तेरे नेक काम लाचारी से नही बल्कि खुशी से हों। ¹⁵क्योंकि मुम्किन है कि वो तुझ से इसलिए थोड़ी देर के वास्ते जुदा हुआ हो कि हमेशा तेरे पास रहे। ¹⁶मगर अब से गुलाम की तरह नही बल्कि गुलाम से बेहतर होकर या'नी ऐसे भाई की तरह रहे जो जिस्म में भी और खुदावन्द में भी मेरा निहायत 'अज़ीज़ हो और तेरा इससे भी कहीं ज़्यादा।

¹⁷पस अगर तू मुझे शरीक जानता है, तो उसे इस तरह कुबूल करना जिस तरह मुझे। ¹⁸और अगर उस ने तेरा कुछ नुक़सान किया है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो उसे मेरे नाम से लिख ले। ¹⁹मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ कि खुद अदा करूँगा, इसके कहने की कुछ ज़रूरत नहीं कि मेरा क़र्ज़ जो तुझ पर है वो तू खुद है ²⁰ऐ भाई ! मैं चाहता हूँ कि मुझे तेरी तरफ़ से खुदावन्द में खुशी हासिल हो। मसीह में मेरे दिल को ताज़ा कर।

²¹मैं तेरी फ़रमाँबरदारी का यक़ीन करके तुझे लिखता हूँ, और जानता हूँ कि जो कुछ मैं कहता हूँ, तू उस से भी ज़्यादा करेगा। ²²इसके सिवा मेरे लिए ठहरने की जगह तैयार कर, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हारी दु'आओं के वसीले से तुम्हें बख़्शा जाऊँगा।

²³इफ़्रास जो मसीह ईसा' में मेरे साथ कैद है, ²⁴और मरकुस और अरिस्तर्खुस और दोमास और लुका, जो मेरे हम ख़िदमत हैं तुझे सलाम कहते हैं। ²⁵हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम्हारी रूह पर होता रहे। आमीन।

इब्रानियों के नाम खत

Chapter 1

¹पुराने ज़माने में खुदा ने बाप- दादा से हिस्सा-ब-हिस्सा और तरह-ब-तरह नबियों के ज़रिए कलाम करके, ²इस ज़माने के आखिर में हम से बेटे के ज़रिए कलाम किया, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस ठहराया और जिसके वसीले से उसने आलम भी पैदा किए | ³वो उसके जलाल की रोशनी और उसकी ज़ात का नक़्श होकर सब चीज़ों को अपनी कुदरत के कलाम से सम्भालता है | वो गुनाहों को धोकर 'आलम-ए-बाला पर खुदा की दहनी तरफ़ जा बैठा;

⁴और फ़रिश्तों से इस क़दर बड़ा हो गया ,जिस क़दर उसने मीरास में उनसे अफ़ज़ल नाम पाया | ⁵क्योंकि फ़रिश्तों में से उसने कब किसी से कहा, "तू मेरा बेटा है, आज तू मुझ से पैदा हुआ?" और फिर ये, "मैं उसका बाप हूँगा?"

⁶और जब पहलौठे को दुनियाँ में फिर लाता है, तो कहता है, "ख़ुदा के सब फ़रिश्ते उसे सिज्दा करें | " ⁷और "वो अपने फ़रिश्तों के बारे में ये कहता है, "वो अपने फ़रिश्तों को हवाएँ, और अपने ख़ादिमों को आग के शो'ले बनाता है | "

⁸मगर बेटे के बारे में कहता है, "ऐ खुदा, तेरा तख़्त हमेशा से हमेशा तक रहेगा, और तेरी बादशाही की 'लाठी रास्तबाज़ी की 'लाठी है | ⁹तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बदकारी से 'अदावत रख्खी, इसी वजह से खुदा, या'नी तेरे खुदा ने खुशी के तेल से तेरे साथियों की बनिस्बत तुझे ज़्यादा मसह किया | "

¹⁰और ये कि, "ऐ खुदावन्द ! तू ने शुरू में ज़मीन की नीव डाली, और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है | ¹¹वो मिट जाएँगे, मगर तू बाक़ी रहेगा; और वो सब पोशाक की तरह पुराने हो जाएँगे | ¹²तू उन्हें चादर की तरह लपेटेगा, और वो पोशाक की तरह बदल जाएँगे : मगर तू वही है और तेरे साल ख़त्म न होंगे | "

¹³लेकिन उसने फ़रिश्तों में से किसी के बारे में कब कहा, "तू मेरी दहनी तरफ़ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव तले की चौकी न कर दूँ" ? ¹⁴क्या वो सब ख़िदमत गुज़ार रूहें नहीं, जो नजात की मीरास पानेवालों की खातिर ख़िदमत को भेजी जाती हैं ?

Chapter 2

¹इसलिए जो बातें हम ने सुनी, उन पर और भी दिल लगाकर गौर करना चाहिए, ताकि बहक कर उनसे दूर न चले जाएँ ।

²क्योंकि जो कलाम फ़रिश्तों के ज़रिए फ़रमाया गया था, जब वो क़ायम रहा और हर कुसूर और नाफ़रमानी का ठीक ठीक बदला मिला,³ तो इतनी बड़ी नज़ात से ग़ाफ़िल रहकर हम क्यूँकर चल सकते हैं? जिसका बयान पहले ख़ुदावन्द के वसीले से हुआ, और सुनने वालों से हमें पूरे-सबूत को पहुँचा ।⁴ और साथ ही ख़ुदा भी अपनी मज़ी के मुवाफ़िक़ निशानों, और 'अजीब कामों, और तरह तरह के मो'जिज़ों, और रूह-उल-कुदूस की ने'मतों के ज़रिए से उसकी गवाही देता रहा ।
⁵उसने उस आनेवाले ज़हान को जिसका हम ज़िक्र करते हैं, फ़रिश्तों के ताबे' नहीं किया ।⁶ बल्कि किसी ने किसी मौक़े पर ये बयान किया है, "इन्सान क्या चीज़ है जो तू उसका खयाल करता है ? या आदमज़ाद क्या है जो तू उस पर निगाह करता है ?

⁷तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर जलाल और 'इज़ज़त का ताज रखखा, और अपने हाथों के कामों पर उसे इख़्तियार बख़्शा ।⁸ तू ने सब चीज़ें ताबे' करके उसके क़दमों तले कर दी हैं । " पस जिस सूरत में उसने सब चीज़ें उसके ताबे' कर दीं, तो उसने कोई चीज़ ऐसी न छोड़ी जो उसके ताबे, न हो । मगर हम अब तक सब चीज़ें उसके ताबे' नहीं देखते ।

⁹अलबत्ता उसको देखते हैं जो फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया गया, या'नी ईसा ' को मौत का दुख सहने की वज़ह से जलाल और 'इज़ज़त का ताज उसे पहनाया गया है, ताकि ख़ुदा के फ़ज़ल से वो हर एक आदमी के लिए मौत का मज़ा चखे ।¹⁰ क्योंकि जिसके लिए सब चीज़ें है और जिसके वसीले से सब चीज़ें हैं, उसको यही मुनासिब था कि जब बहुत से बेटों को जलाल में दाखिल करे, तो उनकी नज़ात के बानी को दुखों के ज़रिए से कामिल कर ले ।

¹¹इसलिए कि पाक करने वाला और पाक होनेवाला सब एक ही नस्ल से हैं, इसी ज़रिए वो उन्हें भाई कहने से नहीं शरमाता ।¹² चुनाँचे वो फ़रमाता है, "तेरा नाम मैं अपने भाइयों से बयान करूँगा, कलीसिया में तेरी हम्द के गीत गाऊँगा । "

¹³और फिर ये, "देख मैं उस पर भरोसा रखूँगा । और फिर ये, "देख मैं उन लड़कों समेत जिन्हें ख़ुदा ने मुझे दिया । "¹⁴ पस जिस सूरत में कि लड़के ख़ून और गोश्त में शरीक हैं, तो वो ख़ुद भी उनकी तरह उनमें शरीक हुआ, ताकि मौत के वसीले से उसको जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी, या'नी इब्लीस को, तबाह कर दे;¹⁵ और जो 'उम्र भर मौत के डर से गुलामी में गिरप्रतार रहे, उन्हें छुड़ा ले ।

¹⁶क्योंकि हकीक़त में वो फ़रिश्तों का नहीं, बल्कि अब्राहम की नस्ल का साथ देता है ।¹⁷ पस उसको सब बातों में अपने भाइयों की तरह बनना ज़रूरी हुआ, ताकि उम्मत के गुनाहों का कफ़ारा देने के वास्ते, उन बातों में जो ख़ुदा से ता'अल्लुक रखती है, एक रहम दिल और दियानतदार सरदार काहिन बने ।¹⁸ क्योंकि जिस सूरत में उसने ख़ुद की आजमाइश की हालत में दुख उठाया, तो वो उनकी भी मदद कर सकता है जिनकी आजमाइश होती है ।

Chapter 3

¹पस ऐ पाक भाइयों ! तुम जो आसमानी बुलावे में शरीक हो, उस रसूल और सरदार काहिन ईसा' पर गौर करो जिसका हम करते हैं;²जो अपने मुकर्रर करनेवाले के हक में दियानतदार था, जिस तरह मूसा उसके सारे घर में था ।³क्यूँकि वो मूसा से इस क्रदर ज़्यादा 'इज़्ज़त के लायक समझा गया, जिस क्रदर घर का बनानेवाला घर से ज़्यादा इज़्ज़तदार होता है ।⁴चुनौचे हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, मगर जिसने सब चीज़ें बनाई वो खुदा है ।

⁵मूसा तो उसके सारे घर में खादिम की तरह दियानतदार रहा, ताकि आइन्दा बयान होनेवाली बातों की गवाही दे ।⁶लेकिन मसीह बेटे की तरह उसके घर का मालिक है, और उसका घर हम हैं; बशर्ते कि अपनी दिलेरी और उम्मीद का फ़ख़्र आखिर तक मज़बूती से क़ायम रखें ।

⁷पस जिस तरह कि रूह-उल-कुदूस फ़रमाता है, "अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो,"⁸तो अपने दिलों को सख़्त न करो, जिस तरह गुस्सा दिलाने के वक़्त आज़माइश के दिन जंगल में किया था ।

⁹जहाँ तुम्हारे बाप-दादा ने मुझे जाँचा और आजमाया और चालीस बरस तक मेरे काम देखे ।¹⁰इसलिए मैं उस पीढ़ी से नाराज़ हुआ, और कहा, 'इनके दिल हमेशा गुमराह होते रहते हैं, और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना ।'¹¹चुनौचे मैंने अपने गुस्से में क्रसम खाई, 'ये मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे' । "

¹²ऐ भाइयों! खबरदार ! तुम में से किसी का ऐसा बुरा और बे-ईमान दिल न हो, जो ज़िन्दा खुदा से फिर जाए ।¹³बल्कि जिस रोज़ तक आज का दिन कहा जाता है, हर रोज़ आपस में नसीहत किया करो, ताकि तुम में से कोई गुनाह के धोके में आकर सख़्त दिल न हो जाए ।

¹⁴क्यूँकि हम मसीह में शरीक हुए हैं, बशर्ते कि अपने शुरुआत के भरोसे पर आखिर तक मज़बूती से क़ायम रहें ।¹⁵चुनौचे कहा जाता है, "अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने दिलों को सख़्त न करो, जिस तरह कि गुस्सा दिलाने के वक़्त किया था । "

¹⁶किन लोगों ने आवाज़ सुन कर गुस्सा दिलाया? क्या उन सब ने नहीं जो मूसा के वसीले से मिस्र से निकले थे?¹⁷और वो किन लोगों से चालीस बरस तक नाराज़ रहा? क्या उनसे नहीं जिन्होंने गुनाह किया, और उनकी लाशें वीराने में पड़ी रहीं?¹⁸और किनके बारे में उसने क्रसम खाई कि वो मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे, सिवा उनके जिन्होंने नाफ़रमानी की?¹⁹गरज़ हम देखते हैं कि वो बे-ईमानी की वजह से दाखिल न हो सके ।

Chapter 4

¹पस जब उसके आराम में दाखिल होने का वादा बाक़ी है तो हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि तुम में से कोई रहा हुआ मालूम हो²क्योंकि हमें भी उन ही की तरह खुशख़बरी सुनाई गई, लेकिन सुने हुए कलाम ने उनको इसलिए कुछ फ़ाइदा न दिया कि सुनने वालों के दिलों में ईमान के साथ न बैठा ।

³और हम जो ईमान लाए, उस आराम में दाखिल होते हैं; जिस तरह उसने कहा, "मैंने अपने गुस्से में क्रसम खाई कि ये मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे ।" अगरचे दुनिया बनाने के वक़्त उसके काम हो चुके थे ।⁴चुनाँचे उसने सातवें दिन के बारे में किसी मौक़े पर इस तरह कहा, "ख़ुदा ने अपने सब कामों को पूरा करके, सातवें दिन आराम किया ।"⁵और फिर इस मुक़ाम पर है, "वो मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे ।"

⁶पस जब ये बात बाक़ी है कि कुछ उस आराम में दाखिल हों, और जिनको पहले खुशख़बरी सुनाई गई थी वो नाफ़रमानी की वजह से दाखिल न हुए,⁷तो फिर एक ख़ास दिन ठहर कर इतनी मुद्दत के बा'द दा'ऊद की किताब में उसे "आज का दिन" कहता है । जैसा पहले कहा गया, "और आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने दिलों को सख़्त न करो ।"

⁸और अगर ईसा' ने उन्हें आराम में दाखिल किया होता, तो वो उसके बा'द दुसरे दिन का ज़िक्र न करता ।⁹पस ख़ुदा की उम्मत के लिए सब्त का आराम बाक़ी है¹⁰क्योंकि जो उसके आराम में दाखिल हुआ, उसने भी ख़ुदा की तरह अपने कामों को पूरा करके आराम किया ।¹¹पस आओ, हम उस आराम में दाखिल होने की कोशिश करें, ताकि उनकी तरह नाफ़रमानी कर के कोई शख्स गिर न पड़े ।

¹²क्योंकि ख़ुदा का कलाम ज़िन्दा, और असरदार, और हर एक दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़ है; और जान और रूह और बन्द, बन्द और गूदे को जुदा करके गुज़र जाता है, और दिल के खयालों और इरादों को जाँचता है ।¹³और उससे मख़लूक़ात की कोई चीज़ छिपी नहीं, बल्कि जिससे हम को काम है उसकी नज़रों में सब चीज़ें खुली और बेपर्दा हैं ।

¹⁴पस जब हमारा एक ऐसा बड़ा सरदार काहिन है जो आसमानों से गुज़र गया, या'नी ख़ुदा का बेटा ईसा', तो आओ हम अपने इक्रार पर क़ायम रहें ।¹⁵क्योंकि हमारा ऐसा सरदार काहिन नहीं जो हमारी कमज़ोरियों में हमारा हमदर्द न हो सके; बल्कि वो सब बातों में हमारी तरह आजमाया गया, तोभी बेगुनाह रहा ।¹⁶पस आओ, हम फ़ज़ल के तख़्त के पास दिलेरी से चलें, ताकि हम पर रहम हो और फ़ज़ल हासिल करें जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद करे ।

Chapter 5

¹अब इन्सानों में से चुने गए इमाम-ए-आज़म को इस लिए मुकर्रर किया जाता है कि वह उन की खातिर खुदा की खिदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और कुर्बानियाँ पेश करे।²वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नर्म सुलूक रख सकता है, क्योंकि वह खुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरफ्त में होता है।³यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी कुर्बानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।

⁴और कोई अपनी मज़ी से इमाम-ए-आज़म का 'इज़ज़त वाला उह्दा नहीं अपना सकता बल्कि ज़रूरी है कि खुदा उसे हारून की तरह बुला कर मुकर्रर करे।⁵इसी तरह मसीह ने भी अपनी मज़ी से इमाम-ए-आज़म का 'इज़ज़त वाला उह्दा नहीं अपनाया। इस के बजाए खुदा ने उस से कहा, "तू मेरा बेटा है आज तू मुझसे पैदा हुआ है।"

⁶कहीं और वह फ़रमाता है,

⁷'जब ईसा' इस दुनिया में था तो उस ने ज़ोर ज़ोर से पुकार कर और आँसू बहा बहा कर उसे दुआएँ और इल्तिजाएँ पेश कीं जो उसको मौत से बचा सकता था और खुदा तरसी की वजह से उसकी सुनी गयी।⁸वह खुदा का फ़र्ज़न्द तो था, तो भी उस ने दुख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी।

⁹जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सब की अबदी नज़ात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं।¹⁰उस वक़्त खुदा ने उसे इमाम-ए-आज़म भी मुतअय्युन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।¹¹इस के बारे में हम ज़्यादा बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इस का खुलासा कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं।

¹²असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आप को खुद उस्ताद होना चाहिए। अप्रसोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आप को इस की ज़रूरत है कि कोई आप के पास आ कर आप को खुदा के कलाम की बुन्यादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक सख़्त ग़िज़ा नहीं खा सकते बल्कि आप को दूध की ज़रूरत है।¹³जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से ना समझ है।¹⁴इस के मुकाबले में सख़्त ग़िज़ा बालिगों के लिए है जिन्होंने अपनी बलूग़त के ज़रिए अपनी रुहानी ज़िन्दगी को इतनी तर्बियत दी है कि वह भलाई और बुराई में पहचान कर सकते हैं।

Chapter 6

¹इस लिए आएँ, हम मसीह के बारे में बुन्यादी तालीम को छोड़ कर बलूग़त की तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें दोहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिन से ईमान की बुन्याद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचाने वाले काम से तौबा,²बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुर्दों के जी उठने और हमेशा सज़ा पाने की तालीम।³चुनौचे ख़ुदा की मर्ज़ी हुई तो हम यह छोड़ कर आगे बढ़ेंगे।

⁴नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान छोड़ दिया हो। उन्हें तो एक बार ख़ुदा के नूर में लाया गया था, उन्होंने ने आसमान की ने'अमत का मज़ा चख़ लिया था, वह रूह-उल-कुदूस में शरीक हुए,⁵उन्होंने ने ख़ुदा के कलाम की भलाई और आने वाले ज़माने की ताक़तों का तजर्बा किया था।⁶और फिर उन्होंने ने अपना ईमान छोड़ दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने से वह ख़ुदा के फ़र्ज़न्द को दुबारा मस्तूब करके उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

⁷ख़ुदा उस ज़मीन को बरकत देता है जो अपने पर बार बार पड़ने वाली बारिश को ज़ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करने वाले के लिए फायदामंद हो।⁸लेकिन अगर वह सिर्फ़ कांटे दार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत भेजी जाए। अन्जाम-ए-कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

⁹लेकिन ऐ अज़ीज़ो! अगरचे हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा भरोसा यह है कि आप को वह बेहतरीन बरकतें हासिल हैं जो नज़ात से मिलती हैं।

¹⁰क्योंकि ख़ुदा बेइन्साफ़ नहीं है। वह आप का काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आप ने उस का नाम ले कर ज़ाहिर की जब आप ने पाक लोगों की खिदमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं।

¹¹लेकिन हमारी बड़ी ख़्वाहिश यह है कि आप में से हर एक इसी सरगर्मी का इज़हार आखिर तक करता रहे ताकि जिन बातों की उम्मीद आप रखते हैं वह हकीक़त में पूरी हो जाएँ।¹²हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उन के नमूने पर चलें जो ईमान और सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिस का वादा ख़ुदा ने किया है।

¹³जब ख़ुदा ने क्रसम खा कर अब्राहम से वादा किया तो उस ने अपनी ही क्रसम खा कर यह वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उस से बड़ा था जिस की क्रसम वह खा सकता।¹⁴उस वक़्त उस ने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत दूँगा, और मैं यक़ीनन तुझे ज़्यादा औलाद दूँगा।"¹⁵इस पर अब्राहम ने सब्र से इन्तिज़ार करके वह कुछ पाया जिस का वादा किया गया था।

¹⁶क्रसम खाते वक़्त लोग उस की क्रसम खाते हैं जो उन से बड़ा होता है। इस तरह से क्रसम में बयानकरदा बात की तस्दीक़ बह्स-मुबाहसा की हर गुन्जाइश को ख़त्म कर देती है।¹⁷ख़ुदा ने भी क्रसम खा कर अपने वादे की तस्दीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उस का इरादा कभी नहीं बदलेगा।¹⁸गरज़, यह दो बातें क़ायम रही हैं, ख़ुदा का वादा और उस की क्रसम। वह इन्हें न तो बदल सकता न इन के बारे में झूट बोल सकता है। यूँ हम जिन्होंने ने उस के पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पा कर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है।

¹⁹क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी बैत-उल-मुक़द्दस के पाकतरीन कमरे के पर्दे में से गुज़र कर उस में दाख़िल होती है।²⁰वहीं ईसा' हमारे आगे आगे जा कर हमारी खातिर दाख़िल हुआ है। यूँ वह मलिक-ए-सिदक़ की तरह हमेशा के लिए इमाम-ए-आज़म बन गया है।

Chapter 7

¹यह मलिक-ए-सिदक़, सालिम का बादशाह और खुदा-ए-तआला का इमाम था। जब अब्राहम चार बादशाहों को शिकस्त देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिक-ए-सिदक़ उस से मिला और उसे बरकत दी।²इस पर अब्राहम ने उसे तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिक-ए-सिदक़ का मतलब रास्तबाज़ी का बादशाह है। दूसरे, सालिम का बादशाह का मतलब सलामती का बादशाह।³न उस का बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उसकी ज़िन्दगी की न तो शुरुआत है, न ख़ात्मा। खुदा के फ़र्ज़न्द की तरह वह हमेशा तक इमाम रहता है।

⁴ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे बापदादा अब्राहम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया।⁵अब शरीअत मांग करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उन के भाई अब्राहम की औलाद हैं।⁶लेकिन मलिक-ए-सिदक़ लावी की औलाद में से नहीं था। तो भी उस ने अब्राहम से दसवाँ हिस्सा ले कर उसे बरकत दी जिस से खुदा ने वादा किया था।

⁷इस में कोई शक नहीं कि कम हैसियत शख्स को उस से बरकत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का हो।⁸जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक है ख़त्म होने वाले इन्सान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिक-ए-सिदक़ के मु'आमले में यह हिस्सा उस को मिला जिस के बारे में गवाही दी गई है कि वह ज़िन्दा रहता है।⁹यह भी कहा जा सकता है कि जब अब्राहम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उस के ज़रीए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह खुद दसवाँ हिस्सा लेता है।¹⁰क्योंकि अगरचे लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ था तो भी वह एक तरह से अब्राहम के जिस्म में मौजूद था जब मलिक-ए-सिदक़ उस से मिला।

¹¹अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत मुन्हसिर थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और क्रिस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिक-ए-सिदक़ जैसा?¹²क्योंकि जब भी कहानत बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरीअत में भी तब्दीली आए।

¹³और हमारा खुदावन्द जिस के बारे में यह बयान किया गया है वह एक अलग क़बीले का फ़र्द था। उस के क़बीले के किसी भी फ़र्द ने इमाम की खिदमत अदा नहीं की।¹⁴क्योंकि साफ़ मालूम है कि खुदावन्द मसीह यहूदाह क़बीले का फ़र्द था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों की खिदमत में शामिल न किया।

¹⁵मुआमला ज़्यादा साफ़ हो जाता है। एक अलग इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिक-ए-सिदक़ जैसा है।¹⁶वह लावी के क़बीले का फ़र्द होने से इमाम न बना जिस तरह शरीअत की चाहत थी, बल्कि वह न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी की कुव्वत ही से इमाम बन गया।¹⁷क्योंकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, कि तू मलिक-ए-सिदक़ के तौर पर अबद तक काहिन है।

¹⁸यूँ पुराने हुक्म को रद कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था।¹⁹(मूसा की शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहय्या की गई है जिस से हम खुदा के क़रीब आ जाते हैं।

²⁰और यह नया तरीक़ा खुदा की क़सम से क़ायम हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने।²¹लेकिन ईसा' एक क़सम के ज़रीए इमाम बन गया जब खुदा ने फ़रमाया,

²²इस क़सम की वजह से ईसा' एक बेहतर अहद की ज़मानत देता है।²³एक और बदलाव, पुराने निज़ाम में बहुत से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की खिदमत मद्दूद किए रखी।²⁴लेकिन चूँकि ईसा' हमेशा तक ज़िन्दा है इस लिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी।

²⁵यूँ वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उस के वसीले से खुदा के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िन्दा है और उन की शफ़ाअत करता रहता है।²⁶हमें ऐसे ही इमाम-ए-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेकुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलन्द हुआ है।

²⁷उसे दूसरे इमामों की तरह इस की ज़रूरत नहीं कि हर रोज़ कुर्बानियाँ पेश करे, पहले अपने लिए फिर क़ौम के लिए। बल्कि उस ने अपने आप को पेश करके अपनी इस कुर्बानी से उन के गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया।²⁸मूसा की शरीअत ऐसे लोगों को इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरीअत के बाद खुदा की क़सम फ़र्ज़न्द को इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़र्ज़न्द हमेशा तक कामिल है।

Chapter 8

¹जो कुछ हम कह रहे हैं उस की खास बात यह है, हमारा एक ऐसा इमाम-ए-आज़म है जो आसमान पर जलाली खुदा के तख्त के दहने हाथ बैठा है।²वहाँ वह मस्जिद में खिदमत करता है, उस हकीकती मुलाकात के खेमे में जिसे इन्सानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि खुदा ने।

³हर इमाम-ए-आज़म को नज़राने और कुर्बानियाँ पेश करने के लिए मुकर्रर किया जाता है। इस लिए लाज़िम है कि हमारे इमाम-ए-आज़म के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके।⁴अगर यह दुनिया में होता तो इमाम-ए-आज़म न होता, क्योंकि यहाँ इमाम तो हैं जो शरी'अत के लिहाज़ से नज़राने पेश करते हैं।⁵जिस मस्जिद में वह खिदमत करते हैं वह उस मस्जिद की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि खुदा ने मूसा को मुलाकात का खेमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, “गौर कर कि सब कुछ बिल्कुल उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।”

⁶लेकिन जो खिदमत ईसा' को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की खिदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अहद जिस का दरमियानी ईसा' है पुराने अहद से बेहतर है। क्योंकि यह अहद बेहतर वादों की बुनियाद पर बांधा गया।⁷अगर पहला अहद बेइल्ज़ाम होता तो फिर नए अहद की ज़रूरत न होती।

⁸लेकिन खुदा को अपनी क़ौम पर इल्ज़ाम लगाना पड़ा। उस ने कहा, खुदावन्द फ़रमाता है कि देख! वो दिन आते हैं कि मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से एक नया 'अहद बांधूंगा |⁹यह उस अहद की तरह नहीं होगा जो मैंने उनके बाप दादा से उस दिन बांधा था, जब मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाने के लिए उनका हाथ पकड़ा था, इस वास्ते कि वो मेरे अहद पर क़ायम नहीं रहे और खुदा वन्द फ़रमाता है कि मैंने उनकी तरफ़ कुछ तवज्जह न की |

¹⁰खुदावन्द फ़रमाता है कि,जो अहद इस्राईल के घराने से उनदिनों के बाद बांधूंगा, वो ये है कि मैं अपने क़ानून उनके ज़हन में डालूँगा, और उनके दिलों पर लिखूँगा, और मैं उनका खुदा हूँगा,और वो मेरी उम्मत होंगे |

¹¹और हर शख्स अपने हम वतन और अपने भाई को ये तालीम न देगा कि तू खुदावन्द को पहचान, क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे |¹²क्योंकि मैं उन का कुसूर मुआफ़ करूँगा

¹³इन अल्फ़ाज़ में खुदा एक नए अहद का ज़िक्र करता है और यूँ पुराने अहद को रद कर देता है। और जो रद किया और पुराना है उस का अन्जाम करीब ही है।

Chapter 9

¹जब पहला अहद बांधा गया तो इबादत करने के लिए हिदायात दी गई। ज़मीन पर एक मन्दिरेस भी बनाया गया,²एक खेमा जिस के पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मख्सूस की गई रोटियाँ थीं। उस का नाम “मुकद्दस कमरा” था।

³उस के पीछे एक और कमरा था जिस का नाम “पाकतरीन कमरा” था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान बाक़ी दरवाज़े पर पर्दा लगा था।⁴इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने की कुर्बानगाह और अहद का सन्दूक था। अहद के सन्दूक पर सोना मढ़ा हुआ था और उस में तीन चीज़ें थीं : सोने का मर्तबान जिस में मन भरा था, हारून की वह लाठी जिस से कौपलें फूट निकली थीं और पत्थर की वह दो तख्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम लिखे थे।⁵सन्दूक पर इलाही जलाल के दो करूबी फ़रिश्ते लगे थे जो सन्दूक के ढकने को साया देते थे जिस का नाम “कफ़फ़ारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़सील से बयान नहीं करना चाहते।

⁶यह चीज़ें इसी तरीक़ीब से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करते हैं तो बाक़ाइदगी से पहले कमरे में जाते हैं।⁷लेकिन सिर्फ़ इमाम-ए-आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ ख़ून ले कर जाता है जिसे वह अपने और क़ौम के लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने भूलचूक में किए होते हैं।

⁸इस से रूह-उल-कुद्दूस दिखाता है कि पाकतरीन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था।⁹यह मिजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है। इस का मतलब यह है कि जो नज़राने और कुर्बानियाँ पेश की जा रही हैं वह इबादत गुज़ार दिल को पाक-साफ़ करके कामिल नहीं बना सकती।¹⁰क्यूँकि इन का ताल्लुक सिर्फ़ खाने-पीने वाली चीज़ों और गुस्ल की मुख्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायात जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।

¹¹लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमाम-ए-आज़म जो अब हासिल हुई हैं। जिस ख़ेमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा अज़ीम और कामिल है। यह खेमा इन्साऩी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का हिस्सा नहीं है।¹²जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ेमे के पाकतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उस ने कुर्बानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का ख़ून इस्तेमाल न किया। इस के बजाए उस ने अपना ही ख़ून पेश किया और यूँ हमारे लिए हमेशा की नजात हासिल की।

¹³पुराने निज़ाम में बैल-बकरों का ख़ून और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उन के जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ।¹⁴अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के ख़ून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के ज़रीए उस ने अपने आप को बेदाग़ कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूँ उस का ख़ून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचाने वाले कामों से पाक-साफ़ करता है ताकि हम ज़िन्दा ख़ुदा की ख़िदमत कर सकें।¹⁵यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का दरमियानी है। मक्क़सद यह था कि जितने लोगों को ख़ुदा ने बुलाया है उन्हें ख़ुदा की वादा की हुई और हमेशा की मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इस लिए मुमकिन हुआ है कि मसीह ने मर कर फ़िदया दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उन से उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत थे।

¹⁶जहाँ वसीयत है वहाँ ज़रूरी है कि वसीयत करने वाले की मौत की तस्दीक़ की जाए।¹⁷क्यूँकि जब तक वसीयत करने वाला ज़िन्दा हो वसीयत बे असर होती है। इस का असर वसीयत करने वाले की मौत ही से शुरू होता है।

¹⁸यही वजह है कि पहला अहद बांधते वक़्त भी ख़ून इस्तेमाल हुआ।¹⁹क्यूँकि पूरी क़ौम को शरीअत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का ख़ून पानी से मिला कर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और किर्मिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत की किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का।²⁰उस ने कहा, “यह ख़ून उस अहद की तस्दीक़ करता है जिस की पैरवी करने का हुक्म ख़ुदा ने तुम्हें दिया है।”

²¹इसी तरह मूसा ने यह ख़ून मुलाक़ात के ख़ेमे और इबादत के तमाम सामान पर छिड़का।²²न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत तक्राज़ा करती है कि तक्ररीबन हर चीज़ को ख़ून ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि ख़ुदा के हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती।

²³गरज़, ज़रूरी था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक-साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें ख़ुदा ऐसी कुर्बानियों की तलब करती हैं जो इन से कहीं बेहतर हों।²⁴क्यूँकि मसीह सिर्फ़ इन्साऩी हाथों से बने मन्दिरेस में दाख़िल नहीं हुआ जो असली मन्दिरेस की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि वह आसमान में ही दाख़िल हुआ ताकि अब से हमारी ख़ातिर ख़ुदा के सामने हाज़िर हो।

²⁵दुनिया का इमाम-ए-आज़म तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का ख़ून ले कर पाकतरीन कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन मसीह इस लिए आसमान में दाख़िल न हुआ कि वह अपने आप को बार बार कुर्बानी के तौर पर पेश करे।²⁶अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की पैदाइश से ले कर आज तक बहुत बार दुख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के ख़ातमें पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आप को कुर्बान करने से गुनाह को दूर करे।

²⁷एक बार मरना और ख़ुदा की अदालत में हाज़िर होना हर इन्सान के लिए मुकर्रर है।²⁸इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठा कर ले जाने के लिए कुर्बान किया गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत से उस का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

Chapter 10

¹मूसा की शरीर अत आने वाली अच्छी और असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है। यह उन चीज़ों की असली शक्ल नहीं है। इस लिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल-ब-साल और बार बार खुदा के हुज़ूर आ कर वही कुर्बानियाँ पेश करते रहते हैं।² अगर वह कामिल कर सकती तो कुर्बानियाँ पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्योंकि इस सूरत में इबादत करने से एक बार सदा के लिए पाक-साफ़ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न रहता।

³लेकिन इस के बजाए यह कुर्बानियाँ साल-ब-साल लोगों को उन के गुनाहों की याद दिलाती हैं।⁴ क्योंकि मुमकिन ही नहीं कि बैल-बकरों का खून गुनाहों को दूर करे।

⁵इस लिए मसीह दुनिया में आते वक़्त खुदा से कहता है, कि तूने “ कुर्बानी और नज़र को पसंद ना किया बल्कि मेरे लिए एक बदन तैयार किया | “राख होने वाली कुर्बानियाँ और गुनाह की कुर्बानियों से तू खुश न हुआ | ”⁷ फिर मैं बोल उठा, ऐ खुदा, मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मर्ज़ी पूरी करूँ।

⁸पहले मसीह कहता है, “न तू कुर्बानियाँ, नज़रें, राख होने वाली कुर्बानियाँ या गुनाह की कुर्बानियाँ चाहता था, न उन्हें पसन्द करता था” अगरचे शरीर अत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है।⁹ फिर वह फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मर्ज़ी पूरी करूँ।” यूँ वह पहला निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम क़ायम करता है।¹⁰ और उस की मर्ज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा' मसीह के बदन के वसीले से ख़ास-ओ-मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक ही बार सदा के लिए हमारे लिए कुर्बान किया गया।

¹¹हर इमाम रोज़-ब-रोज़ मस्जिद में खड़ा अपनी खिदमत के फ़राइज़ अदा करता है। रोज़ाना और बार बार वह वही कुर्बानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकती।¹² लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही कुर्बानी पेश की, एक ऐसी कुर्बानी जिस का असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह खुदा के दहने हाथ बैठ गया।¹³ वहीं वह अब इन्तिज़ार करता है जब तक खुदा उस के दुश्मनों को उस के पाँओ की चौकी न बना दे।¹⁴ यूँ उस ने एक ही कुर्बानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें पाक किया जा रहा है।

¹⁵रूह-उल-कुद्दस भी हमें इस के बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है, “¹⁶” खुदा फ़रमाता है कि, जो 'अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बांधूंगा वो ये है कि मैं अपने क़ानून उन के दिलों पर लिखूंगा और उनके ज़हन में डालूंगा | ”

¹⁷फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उन के गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।”¹⁸ और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को दूर करने की कुर्बानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

¹⁹चुनौचे भाइयों, अब हम ईसा के खून के वसीले से पूरे यक़ीन के साथ पाकतरीन कमरे में दाख़िल हो सकते हैं।²⁰ अपने बदन की कुर्बानी से ईसा' ने उस कमरे के पर्दे में से गुज़रने का एक नया और ज़िन्दगीबख़्श रास्ता खोल दिया।²¹ हमारा एक अज़ीम इमाम-ए-आज़म है जो खुदा के घर पर मुक़र्रर है।²² इस लिए आएँ, हम खुलूसदिली और ईमान के पूरे यक़ीन के साथ खुदा के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर मसीह का खून छिड़का गया है ताकि हमारे मुजरिम दिल साफ़ हो जाएँ। और, हमारे बदनो को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है।

²³आएँ, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिस का इज़्ज़ार हम करते हैं। हम लड़खड़ा न जाएँ, क्योंकि जिस ने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार है।²⁴ और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकें।²⁵ हम एकसाथ जमा होने से बाज़ न आएँ, जिस तरह कुछ की आदत बन गई है। इस के बजाए हम एक दूसरे की हौसला अफ़ज़ाई करें, ख़ासकर यह बात मद-ए-नज़र रख कर कि खुदावन्द का दिन क़रीब आ रहा है।

²⁶ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान-बूझ कर गुनाह करते रहें तो मसीह की कुर्बानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी।²⁷ फिर सिर्फ़ खुदा की अदालत की हौलनाक उम्मीद बाक़ी रहेगी, उस भड़कती हुई आग की जो खुदा के मुखालिफ़ों को ख़त्म कर डालेगी।

²⁸जो मूसा की शरीर अत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर दो या इस से ज़्यादा लोग इस जुर्म की गवाही दें तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।²⁹ तो फिर क्या ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लायक़ होगा जिस ने खुदा के फ़र्ज़न्द को पाँओ तले रौंदा? जिस ने अह्द का वह खून हक़ीर जाना जिस से उसे ख़ास-ओ-मुक़द्दस किया गया था? और जिस ने फ़ज़ल के रूह की बेइज़्ज़ती की?

³⁰क्योंकि हम उसे जानते हैं जिस ने फ़रमाया, “इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उस ने यह भी कहा, “ खुदा अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा।”³¹ यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िन्दा खुदा हमें सज़ा देने के लिए पकड़े।

³²ईमान के पहले दिन याद करें जब खुदा ने आप को रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख़्त मुक़ाबले में आप को कई तरह का दुख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितक़दम रहे।³³ कभी कभी आप की बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ा रसानी होती थी, कभी कभी आप उन के साथी थे जिन से ऐसा सुलूक हो रहा था।³⁴ जिन्हें जेल में डाला गया आप उन के दुख में शरीक हुए और जब आप का माल-ओ-ज़ेवर लूटा गया तो आप ने यह बात खुशी से बर्दाश्त की। क्योंकि आप जानते थे कि वह माल हम से नहीं छीन लिया गया जो पहले की तरह कहीं बेहतर है और हर सूरत में क़ायम रहेगा।

³⁵चुनौचे अपने इस भरोसे को हाथ से जाने न दें क्योंकि इस का बड़ा अज़्र मिलेगा।³⁶ लेकिन इस के लिए आप को साबित क़दमी की ज़रूरत है ताकि आप खुदा की मर्ज़ी पूरी कर सकें और यूँ आप को वह कुछ मिल जाए जिस का वादा उस ने किया है।³⁷ और “अब बहुत ही थोड़ा वक़्त बाक़ी है कि आने वाला आयेगा और देर न करेगा |

³⁸लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा, और अगर वो हटेगा तो मेरा दिल उससे खुश न होगा।”³⁹ लेकिन हम उन में से नहीं हैं जो पीछे हट कर तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उन में से हैं जो ईमान रख कर नजात पाते हैं।

Chapter 11

¹ईमान क्या है? यह कि हम उस में कायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उस का यकीन रखें जो हम नहीं देख सकते।²ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को खुदा की क़बूलियत हासिल हुई।³ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि कायनात को खुदा के कलाम से पैदा किया गया, कि जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आने वाली चीज़ों से नहीं बना।

⁴यह ईमान का काम था कि हाबिल ने खुदा को एक ऐसी कुर्बानी पेश की जो क़ाइन की कुर्बानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर खुदा ने उसे रास्तबाज़ ठहरा कर उस की अच्छी गवाही दी, जब उस ने उस की कुर्बानियों को क़बूल किया। और ईमान के ज़रीए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुर्दा है।

⁵यह ईमान का काम था कि हनूक न मरा बल्कि ज़िन्दा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँड कर पा न सका क्योंकि खुदा उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह खुदा को पसन्द आया।⁶और ईमान रखे बग़ैर हम खुदा को पसन्द नहीं आ सकते। क्योंकि ज़रूरी है कि खुदा के हुज़ूर आने वाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज़्र देता है जो उस के तालिब हैं।

⁷यह ईमान का काम था कि नूह ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे आने वाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने खुदा का ख़ौफ़ मान कर एक नाव बनाई ताकि उस का खानदान बच जाए। यूँ उस ने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुजरिम करार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

⁸यह ईमान का काम था कि अब्राहम ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है।⁹ईमान के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह खेमों में रहता था और इसी तरह इज़्हाक़ और या'क़ूब भी जो उस के साथ उसी वादे के वारिस थे।¹⁰क्योंकि अब्राहम उस शहर के इन्तिज़ार में था जिस की मज़बूत बुनियाद है और जिस का नक्शा बनाने और तामीर करने वाला खुद खुदा है।

¹¹यह ईमान का काम था कि अब्राहम बाप बनने के क़ाबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन नहीं सकती थी। लेकिन अब्राहम समझता था कि खुदा जिस ने वादा किया है वफ़ादार है।¹²अगरचे अब्राहम तक्ररीबन मर चुका था तो भी उसी एक शख्स से बेशुमार औलाद निकली, तादाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़रों के बराबर।

¹³यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिस का वादा किया गया था। उन्होंने उसे सिर्फ़ दूर ही से देख कर खुश हुए।¹⁴जो इस क्रिस्म की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की तलाश में हैं।

¹⁵अगर उन के ज़हन में वह मुल्क होता जिस से वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे।¹⁶इस के बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की तमन्ना कर रहे थे। इस लिए खुदा उन का खुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उस ने उन के लिए एक शहर तैयार किया है।

¹⁷यह ईमान का काम था कि अब्राहम ने उस वक्रत इस्हाक़ को कुर्बानी के तौर पर पेश किया जब खुदा ने उसे आजमाया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को कुर्बान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे खुदा के वादे मिल गए थे।¹⁸कि “तेरी नस्ल इज़्हाक़ ही से कायम रहेगी।”¹⁹अब्राहम ने सोचा, “खुदा मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है,” और तबियत के लिहाज़ से उसे वाकई इज़्हाक़ मुर्दों में से वापस मिल गया।

²⁰यह ईमान का काम था कि इज़्हाक़ ने आने वाली चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और 'ऐसव को बरकत दी।²¹यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते वक्रत यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगा कर खुदा को सिज्दा किया।²²यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक्रत यह पेशगोई की कि इस्राईली मिस्र से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक्रत मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

²³यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने ने देखा कि वह ख़ूबसूरत है। वह बादशाह के हुक्म की खिलाफ़ वरज़ी करने से न डरे।²⁴यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़ कर इन्कार किया कि उसे फ़िरऔन की बेटी का बेटा ठहराया जाए।²⁵आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुत्फ़अन्दोज़ होने के बजाए उस ने खुदा की क़ौम के साथ बदसलूकी का निशाना बनने को तर्ज़ीह दी।²⁶वह समझा कि जब मेरी मसीह की खातिर रुस्वाई की जाती है तो यह मिस्र के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा क़ीमती है, क्योंकि उस की आँखें आने वाले अज़्र पर लगी रहीं।

²⁷यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के गुस्से से डरे बग़ैर मिस्र को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे खुदा को लगातार अपनी आँखों के सामने रखता रहा।²⁸यह ईमान का काम था कि उस ने फ़सह की ईद मना कर हुक्म दिया कि खून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करने वाला फ़रिश्ता उन के पहलौठे बेटों को न छुए।

²⁹यह ईमान का काम था कि इस्राईली बहर-ए-कुल्जुम में से यूँ गुज़र सके जैसे कि यह खुश्क़ ज़मीन थी। जब मिस्रियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए।³⁰यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर गई।³¹यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी नाफ़रमान रहने वालों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि उस ने इस्राईली जासूसों को सलामती के साथ खुशआमदीद कहा था।

³²मैं ज़्यादा क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक्रत नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, सम्सून, इफ़ताह, दाऊद, समूएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ।³³यह सब ईमान की वजह से ही कामयाब रहे। वह बादशाहियों पर ग़ालिब आए और इन्साफ़ करते रहे। उन्हें खुदा के वादे हासिल हुए। उन्होंने ने शेर बबरों के मुँह बन्द कर दिए।³⁴और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें ताक़त हासिल हुई। जब जंग छिड़ गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने ने ग़ैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी।

³⁵ईमान रखने के ज़रिए से औरतों को उन के मुर्दा अज़ीज़ ज़िन्दा हालत में वापस मिले।³⁶कुछ को लान-तान और कोड़ों बल्कि ज़न्जीरों और क़ैद का भी सामना करना पड़ा।³⁷उनपर पथराव किया गया, उन्हें आरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। कुछ को भेड़-बकरियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा। ज़रूरतमन्द हालत में उन्हें दबाया और उन पर जुल्म किया जाता रहा।³⁸दुनिया उन के लायक़ नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, ग़ारों और ग़ड्ढों में आवारा फिरते रहे।

³⁹ इन सब को ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिस का वादा खुदा ने किया था।⁴⁰ क्योंकि उस ने हमारे लिए एक ऐसा मन्सूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग हमारे बगैर कामिलियत तक न पहुँचें।

Chapter 12

¹गरज़, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से घिरे रहते हैं, इस लिए आएँ, हम सब कुछ उतारें जो हमारे लिए रुकावट का ज़रिया बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है। आएँ, हम साबितकदमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुकर्र की गई है।² और दौड़ते हुए हम ईसा' को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे तक्मील तक पहुँचाने वाला भी। याद रहे कि गो वह खुशी हासिल कर सकता था तो भी उस ने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज़्जती की परवाह न की बल्कि उसे बर्दाश्त किया। और अब वह खुदा के तख्त के दहने हाथ जा बैठा है।³ उस पर गौर करें जिस ने गुनाहगारों की इतनी मुखालफ़त बर्दाश्त की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो जाएंगे।

⁴देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आप को जान देने तक इस की मुखालफ़त नहीं करनी पड़ी।⁵ क्या आप कलाम-ए-मुकद्दस की यह हिम्मत बढ़ाने वाली बात भूल गए हैं जो आप को खुदा के फ़र्ज़न्द ठहरा कर बयान करती है, 'क्योंकि जो खुदा को प्यारा है उस की वह हिदायत करता है, क्योंकि जिसको फ़रज़न्द बनालेता है उसके कोड़े भी लगाता है

⁷अपनी मुसीबतों को इलाही तर्बियत समझ कर बर्दाश्त करें। इस में खुदा आप से बेटों का सा सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिस की उस के बाप ने तर्बियत न की?⁸ अगर आप की तर्बियत सब की तरह न की जाती तो इस का मतलब यह होता कि आप खुदा के हक़ीक़ी फ़र्ज़न्द न होते बल्कि नाजायज़ औलाद।

⁹देखो, जब हमारे इन्सान की बाप ने हमारी तर्बियत की तो हम ने उस की इज़्ज़त की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने रुहानी बाप के ताबे हो कर ज़िन्दगी पाएँ।¹⁰ हमारे इन्सान बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए तर्बियत दी। लेकिन खुदा हमारी ऐसी तर्बियत करता है जो फ़ायदे का ज़रिया है और जिस से हम उस की कुदूसियत में शरीक होने के क़ाबिल हो जाते हैं।¹¹ जब हमारी तर्बियत की जाती है तो उस वक़्त हम खुशी महसूस नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिन की तर्बियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

¹²चुनौचे अपने थकेहारे बाज़ुओं और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें।¹³ अपने रास्ते चलने के क़ाबिल बना दें ताकि जो अज़ब लंगड़ा है उस का जोड़ उतर न जाए ¹⁴सब के साथ मिल कर सुलह-सलामती और कुदूसियत के लिए जिद्द-ओ-जहद करते रहें, क्योंकि जो पाक नहीं है वह खुदावन्द को कभी नहीं देखेगा।¹⁵ इस पर ध्यान देना कि कोई खुदा के फ़ज़ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़ कर तक्लीफ़ का ज़रिया बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे।¹⁶ गौर करें कि कोई भी ज़िनाकार या 'ऐसव जैसा दुनियावी शख्स न हो जिस ने एक ही खाने के बदले अपने वह मौरूसी हुकूक बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे।¹⁷ आप को भी मालूम है कि बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उस ने आँसू बहा बहा कर यह बरकत हासिल करने की कोशिश की।

¹⁸आप उस तरह खुदा के हुज़ूर नहीं आए जिस तरह इस्राईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल रही थी।¹⁹ जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और खुदा उन से हमकलाम हुआ तो सुनने वालों ने उस से गुज़ारिश की कि हमें ज़्यादा कोई बात न बता।²⁰ क्योंकि वह यह हुक्म बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि "अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसपर पथराव करना है।"²¹ यह मन्ज़र इतना डरावना था कि मूसा ने कहा, "मैं खौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।"

²²नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िन्दा खुदा के शहर आसमानी यरूशलम के पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और ज़श्र मनाने वाली जमाअत के पास आ गए हैं,²³ उन पहलौठों की जमाअत के पास जिन के नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इन्सानों के मुन्सिफ़ खुदा के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की रूहों के पास।²⁴ नेज़ आप नए अह्द के बीच ईसा' के पास आ गए हैं और उस छिड़के गए खून के पास जो हाबिल के खून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज़्यादा असरदार है।

²⁵चुनौचे ख़बरदार रहें कि आप उस की सुनने से इन्कार न करें जो इस वक़्त आप से हमकलाम हो रहा है। क्योंकि अगर इस्राईली न बचे जब उन्होंने दुनियावी पैग़म्बर मूसा की सुनने से इन्कार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम उस की सुनने से इन्कार करें जो आसमान से हम से हमकलाम होता है।²⁶ जब खुदा सीना पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उस ने वादा किया है, "एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।"

²⁷"एक बार फिर" के अल्फ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि पैदा की गई चीज़ों को हिला कर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें क़ायम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता।²⁸ चुनौचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्योंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी की इस रूह में एहतिराम और खौफ़ के साथ खुदा की पसन्दीदा इबादत करें,²⁹ क्योंकि हमारा खुदा हक़ीक़तन राख कर देने वाली आग है।

Chapter 13

¹एक दूसरे से भाइयों की सी मुहब्बत रखते रहें।²मेहमान-नवाज़ी मत भूलना, क्योंकि ऐसा करने से कुछ ने अनजाने तौर पर फ़रिश्तों की मेहमान-नवाज़ी की है।
³जो क़ैद में हैं, उन्हें यूँ याद रखना जैसे आप खुद उन के साथ क़ैद में हों। और जिन के साथ बदसलूकी हो रही है उन्हें यूँ याद रखना जैसे आप से यह बदसलूकी हो रही हो।⁴ज़रूरी है कि सब के सब मिली हुई ज़िन्दगी का एहतिराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के वफ़ादार रहें, क्योंकि खुदा ज़िनाकारों और शादी का बंधन तोड़ने वालों की अदालत करेगा।

⁵आप की ज़िन्दगी पैसों के लालच से आज़ाद हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आप के पास है, क्योंकि खुदा ने फ़रमाया है, “मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।”⁶इस लिए हम यक़ीन से कह सकते हैं कि “खुदावन्द मेरा मददगार है, मैं ख़ौफ़ न करूँगा इन्सान मेरा क्या करेगा ?”

⁷अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आप को खुदा का कलाम सुनाया। इस पर गौर करें कि उन के चाल-चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और उन के ईमान के नमूने पर चलें।⁸ईसा' मसीह कल और आज और हमेशा तक यक्साँ है।

⁹तरह तरह की और बेगाना तालीमात आप को इधर उधर न भटकाएँ। आप तो खुदा के फ़ज़ल से ताक़त पाते हैं और इस से नहीं कि आप मुख्तलिफ़ खानों से पहेज़ करते हैं। इस में कोई ख़ास फ़ायदा नहीं है।¹⁰हमारे पास एक ऐसी कुर्बानगाह है जिस की कुर्बानी खाना मुलाक़ात के खेमे में खिदमत करने वालों के लिए मना है।¹¹क्योंकि अगरचे इमाम-ए-आज़म जानवरों का खून गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पाक तरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उन की लाशों को खेमागाह के बाहर जलाया जाता है।

¹²इस वजह से ईसा' को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क्रौम को अपने खून से ख़ास -ओ-पाक करे।¹³इस लिए आएँ, हम खेमागाह से निकल कर उस के पास जाएँ और उस की बेइज़्ज़ती में शरीक हो जाएँ।¹⁴क्योंकि यहाँ हमारा कोई क़ायम रहने वाला शहर नहीं है बल्कि हम आने वाले शहर की शदीद आरजू रखते हैं।

¹⁵चुनौचे आएँ, हम ईसा' के वसीले से खुदा को हम्द-ओ-सना की कुर्बानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उस के नाम की तारीफ़ करने वाला फल निकले।¹⁶नेज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बरकतों में शरीक करना मत भूलना, क्योंकि ऐसी कुर्बानियाँ खुदा को पसन्द हैं।¹⁷अपने राहनुमाओं की सुनें और उन की बात मानें। क्योंकि वह आप की देख-भाल करते करते जागते रहते हैं, और इस में वह खुदा के सामने जवाबदेह हैं। उन की बात मानें ताकि वह खुशी से अपनी खिदमत सरअन्जाम दें। वरना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मादारी निभाएँगे, और यह आप के लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

¹⁸हमारे लिए दुआ करें, गरचे हमें यक़ीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के ख्वाहिशमन्द हैं।¹⁹मैं ख़ासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दु'आ करें कि खुदा मुझे आप के पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

²⁰अब सलामती का खुदा जो अबदी 'अहद के खून से हमारे खुदावन्द और भेड़ों के अज़ीम चरवाहे ईसा' को मुदों में से वापस लाया²¹वह आप को हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा' मसीह के ज़रीए हम में वह कुछ पैदा करे जो उसे पसन्द आए। उस का जलाल शुरू से हमेशा तक होता रहे! आमीन।

²²भाइयों! मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर सन्जीदगी से गौर करें, क्योंकि मैंने आप को सिर्फ़ चन्द अल्फ़ाज़ लिखे हैं।²³यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ ले कर आप से मिलने आऊँगा।

²⁴अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आप को सलाम कहते हैं।²⁵खुदा का फ़ज़ल आप सब के साथ रहे।

या'क़ूब का 'आम ख़त

Chapter 1

¹खुदा के और खुदावन्द 'ईसा' मसीह के बन्दे या'क़ूब की तरफ़ से उन बारह ईमानदारों के क़बीलों को जो जगह-ब-जगह रहते हैं सलाम पहुँचे।²ऐ, मेरे भाइयो जब तुम तरह तरह की आज़माइशों में पड़ो।³तो इसको ये जान कर कमाल खुशी की बात समझना कि तुम्हारे ईमान की आज़माइश सब पैदा करती है।

⁴और सब्र को अपना पूरा काम करने दो ताकि तुम पूरे और कामिल हो जाओ और तुम में किसी बात की कमी न रहे।⁵लेकिन अगर तुम में से किसी में हिकमत की कमी हो तो खुदा से माँगे जो बग़ैर मलामत किए सब को बहुतायत के साथ देता है। उसको दी जाएगी।

⁶मगर ईमान से माँगे और कुछ शक न करे क्योंकि शक करने वाला समुन्दर की लहरों की तरह होता है जो हवा से बहती और उछलती है।⁷ऐसा आदमी ये न समझे कि मुझे खुदावन्द से कुछ मिलेगा।⁸वो शख्स दो दिला है और अपनी सब बातों में बे'क्रयाम।

⁹अदना भाई अपने आ'ला मर्तबे पर फ़ख़्र करे।¹⁰और दौलतमन्द अपनी अदना हालत पर इसलिए कि घास के फूलों की तरह जाता रहेगा।¹¹क्योंकि सूरज निकलते ही सख्त धूप पड़ती और घास को सुखा देती है और उसका फूल गिर जाता है और उसकी खूबसूरती जाती रहती है इस तरह दौलतमन्द भी अपनी राह पर चलते चलते खाक में मिल जाएगा।

¹²मुबारक वो शख्स है जो आज़माइश की बर्दाश्त करता है क्योंकि जब मक़बूल ठहरा तो ज़िन्दगी का वो ताज हासिल करेगा जिसका खुदावन्द ने अपने मुहब्बत करने वालों से वा'दा किया है।¹³जब कोई आज़माया जाए तो ये न कहे कि मेरी आज़माइश खुदा की तरफ़ से होती है क्योंकि न तो खुदा बदी से आज़माया जा सकता है और न वो किसी को आज़माता है।

¹⁴हाँ हर शख्स अपनी ही ख्वाहिशों में खिंचकर और फ़ँस कर आज़माया जाता है।¹⁵फिर ख्वाहिश हामिला हो कर गुनाह को पैदा करती है और गुनाह जब बढ़ गया तो मौत पैदा करता है।¹⁶ऐ, मेरे प्यारे भाइयों धोका न खाना।

¹⁷हर अच्छी बख्शिष और कामिल इनाम ऊपर से है और नूरों के बाप की तरफ़ से मिलता है जिस में न कोई तब्दीली हो सकती है और न गरदिश के वजह से उस पर साया पड़ता है।¹⁸उसने अपनी मर्ज़ी से हमें कलाम-ऐ-हक़ के वसीले से पैदा किया ताकि उसकी मुखालिफ़त में से हम एक तरह के फ़ल हो।

¹⁹ऐ, मेरे प्यारे भाइयो ये बात तुम जानते हो; पस हर आदमी सुनने में तेज़ और बोलने में धीमा और क्रहर में धीमा हो।²⁰क्योंकि इन्सान का क्रहर खुदा की रास्तबाज़ी का काम नहीं करता।²¹इसलिए सारी नजासत और बदी की गंदगी को दूर करके उस कलाम को नरमदिली से कुबूल कर लो जो दिल में बोया गया और तुम्हारी रूहों को नजात दे सकता है।

²²लेकिन कलाम पर अमल करने वाले बनो, न महज़ सुनने वाले जो अपने आपको धोका देते हैं।²³क्योंकि जो कोई कलाम का सुनने वाला हो और उस पर अमल करने वाला न हो वो उस शख्स की तरह है जो अपनी कुदरती सूरत आईना में देखता है।²⁴इसलिए कि वो अपने आप को देख कर चला जाता और भूल जाता है कि मैं कैसा था।²⁵लेकिन जो शख्स आज़ादी की कामिल शरी'अत पर गौर से नज़र करता रहता है वो अपने काम में इसलिए बर्कत पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं बल्कि अमल करता है।

²⁶अगर कोई अपने आपको दीनदार समझे और अपनी ज़बान को लगाम न दे बल्कि अपने दिल को धोका दे तो उसकी दीनदारी बातिल है।²⁷हमारे खुदा और बाप के नज़दीक खालिस और बेऐब दीनदारी ये है कि यतीमों और बेवाओं की मुसीबत के वक़्त उनकी ख़बर लें; और अपने आप को दुनिया से बे'दाग़ रखें।

Chapter 2

¹ऐ, मेरे भाइयो; हमारे खुदावन्द जुलजलाल 'ईसा' मसीह का ईमान तुम पर तरफ़दारी के साथ न हो।²क्यूँकि अगर एक शख्स तो सोने की अँगूठी और 'उम्दा पोशाक' पहने हुए तुम्हारी जमात में आए और एक गरीब आदमी मैले कुचैले पहने हुए आए।³और तुम उस 'उम्दा पोशाक' वाले का लिहाज़ कर के कहो तू यहाँ अच्छी जगह बैठ और उस गरीब शख्स से कहो तू वहाँ खड़ा रह या मेरे पाँव की चौकी के पास बैठ।⁴तो क्या तुम ने आपस में तरफ़दारी न की और बद नियत मुन्सिफ़ न बने?।

⁵ऐ, मेरे प्यारे भाइयो सुनो; क्या खुदा ने इस जहान के ग़रीबों को ईमान में दौलतमन्द और उस बादशाही के वारिस होने के लिए बरगुज़ीदा नहीं किया जिसका उसने अपने मुहब्बत करने वालों से वा'दा किया है।⁶लेकिन तुम ने गरीब आदमी की बे'इज़्ज़ती की; क्या दौलतमन्द तुम पर जुल्म नहीं करते और वही तुम्हें आदालतों में घसीट कर नहीं ले जाते।⁷क्या वो उस बुजुर्ग नाम पर कुफ़्र नहीं बकते जिससे तुम नाम ज़द हो।

⁸तोभी अगर तुम इस लिखे हुए के मुताबिक़ अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रखो उस बादशाही शरी'अत को पूरा करते हो तो अच्छा करते हो।⁹लेकिन अगर तुम तरफ़दारी करते हो तो गुनाह करते हो और शरी'अत तुम को क्रसूरवार ठहराती है

¹⁰क्यूँकि जिसने सारी शरी'अत पर अमल किया और एक ही बात में खता की वो सब बातों में क्रसूरवार ठहरा।¹¹इसलिए कि जिसने ये फ़रमाया कि ज़िना न कर उसी ने ये भी फ़रमाया कि खून न कर पस अगर तू ने ज़िना तो न किया मगर खून किया तोभी तू शरी'अत का इन्कार करने वाला ठहरा।

¹²तुम उन लोगों की तरह कलाम भी करो और काम भी करो जिनका आज़ादी की शरी'अत के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ होगा।¹³क्यूँकि जिसने रहम नहीं किया उसका इन्साफ़ बग़ैर रहम के होगा रहम इन्साफ़ पर ग़ालिब आता है।

¹⁴ऐ, मेरे भाइयो; अगर कोई कहे कि मैं ईमानदार हूँ मगर अमल न करता हो तो क्या फ़ाइदा? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दे सकता है।¹⁵अगर कोई भाई या बहन नंगे हो और उनको रोज़ाना रोटी की कमी हो।¹⁶और तुम में से कोई उन से कहे कि सलामती के साथ जाओ गर्म और सेर रहो मगर जो चीज़ें तन के लिए जरूरी हैं वो उन्हें न दे तो क्या फ़ाइदा।¹⁷इसी तरह ईमान भी अगर उसके साथ आ'माल न हों तो अपनी ज़ात से मुर्दा है।

¹⁸बल्कि कोई कह सकता है कि तू तो ईमानदार है और मैं अमल करने वाला हूँ अपना ईमान बग़ैर आ'माल के मुझे दिखा और मैं अपना ईमान आ'माल से तूझे दिखाऊँगा।¹⁹तू इस बात पर ईमान रखता है कि खुदा एक ही है ख़ैर अच्छा करता है शियातीन भी ईमान रखते और थरथराते हैं।²⁰मगर ऐ, निकम्मे आदमी क्या तू ये भी नहीं जानता कि ईमान बग़ैर आ'माल के बेकार है।

²¹जब हमारे बाप अब्रहाम ने अपने बेटे इज़हाक़ को कुर्बानगाह पर कुर्बान किया तो क्या वो आ'माल से रास्तबाज़ न ठहरा।²²पस तूने देख लिया कि ईमान ने उसके आ'माल के साथ मिल कर असर किया और आ'माल से ईमान कामिल हुआ।²³और ये लिखा पूरा हुआ कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया और वो खुदा का दोस्त कहलाया।²⁴पस तुम ने देख लिया के इन्सान सिर्फ़ ईमान ही से नहीं बल्कि आ'माल से रास्तबाज़ ठहरता है।

²⁵इसी तरह राहब फ़ाहिशा भी जब उसने क़ासिदों को अपने घर में उतारा और दूसरे रास्ते से रुख़्सत किया तो क्या काम से रास्तबाज़ न ठहरा।²⁶गरज़ जैसे बदन बग़ैर रूह के मुर्दा है वैसे ही ईमान भी बग़ैर आ'माल के मुर्दा है।

Chapter 3

¹ऐ, मेरे भाइयो; तुम में से बहुत से उस्ताद न बनें क्योंकि जानते हो कि हम जो उस्ताद हैं ज़्यादा सज़ा पाएँगे।²इसलिए कि हम सब के सब अक्सर खता करते हैं; कामिल शख्स वो है जो बातों में खता न करे वो सारे बदन को भी क़ाबू में रख सकता है;

³देखो हम अपने क़ाबू में करने के लिए घोड़ों के मुँह में लगाम देते हैं तो उनके सारे बदन को भी घुमा सकते हैं।⁴और जहाज़ भी अगरचे बड़े बड़े होते हैं और तेज़ हवाओं से चलाए जाते हैं तो भी एक निहायत छोटी सी पतवार के ज़रिए माँझी की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ घुमाए जाते हैं।

⁵इसी तरह जबान भी एक छोटा सा 'उज़्व है और बड़ी शेखी मारती है | देखो थोड़ी सी आग से कितने बड़े जंगल में आग लग जाती है |⁶ज़बान भी एक आग है ज़बान हमारे आज़ा में शरारत का एक आ'लम है और सारे जिस्म को दाग लगाती है और दाइरा दुनिया को आग लगा देती है और जहन्नुम की आग से जलती रहती है।

⁷क्योंकि हर क्रिस्म के चौपाए और परिन्दे और कीड़े मकोड़े और दरयाई जानवर तो इन्सान के क़ाबू में आ सकते हैं और आए भी हैं।⁸मगर ज़बान को कोई क़ाबू में नहीं कर सकता वो एक बला है जो कभी रुकती ही नहीं ज़हर-ए-क़ातिल से भरी हुई है।

⁹इसी से हम खुदावन्द अपने बाप की हम्द करते हैं और इसी से आदमियों को जो खुदा की सूरत पर पैदा हुए हैं बहूआ देते हैं।¹⁰एक ही मुँह से मुबारक बाद और बहूआ निकलती है! ऐ मेरे भाइयो; ऐसा न होना चाहिए।

¹¹क्या चश्मे के एक ही मुँह से मीठा और खारा पानी निकलता है।¹²ऐ, मेरे भाइयो! क्या अंजीर के दरख्त में ज़ैतून और अँगूर में अंजीर पैदा हो सकते हैं? इसी तरह खारे चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

¹³तुम में दाना और फ़हीम कौन है? जो ऐसा हो वो अपने कामों को नेक चाल चलन के वसीले से उस हिल्म के साथ ज़ाहिर करे जो हिक्मत से पैदा होता है।

¹⁴लेकिन अगर तुम अपने दिल में सख्त हसद और तफ़र्क़े रखते हो तो हक़ के खिलाफ़ न शेखी मारो न झूट बोलो।

¹⁵ये हिक्मत वो नहीं जो ऊपर से उतरती है बल्कि दुनियावी और नफ़्सानी और शैतानी है।¹⁶इसलिए कि जहाँ हसद और तफ़र्का होता है फ़साद और हर तरह का बुरा काम भी होता है।¹⁷मगर जो हिक्मत ऊपर से आती है अव्वल तो वो पाक होती है फिर मिलनसार नर्मदिली और तरबियत पज़ीर रहम और अच्छे फलों से लदी हुई बेतरफ़दार और बे-रिया होती है।¹⁸और सुलह करने वालों के लिए रास्तबाज़ी का फल सुलह के साथ बोया जाता है।

Chapter 4

¹तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन ख्वाहिशों से नहीं जो तुम्हारे आज्ञा में फ़साद करती हैं।²तुम ख्वाहिश करते हो, और तुम्हें मिलता नहीं, खून और हसद करते हो और कुछ हासिल नहीं कर सकते; तुम लड़ते और झगड़ते हो। तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि मांगते नहीं।³तुम मांगते हो और पाते नहीं इसलिए कि बुरी नियत से मांगते हो: ताकि अपनी ऐश-ओ-इशरत में खर्च करो।

⁴ऐ, बे ईमानी करने वालियों क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि दुनिया से दोस्ती रखना खुदा से दुश्मनी करना है? पस जो कोई दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वो अपने आप को खुदा का दुश्मन बनाता है।⁵क्या तुम ये समझते हो कि किताब-ऐ-मुकद्दस बे'फ़ाइदा कहती है? जिस पाक रूह को उसने हमारे अन्दर बसाया है क्या वो ऐसी आरजू करती है जिसका अन्जाम हसद हो।

⁶वो तो ज़्यादा तौफ़ीक़ बख़्शता है इसी लिए ये आया है कि खुदा मगरूरों का मुकाबला करता है मगर फ़िरोतनों को तौफ़ीक़ बख़्शता है।⁷पस खुदा के ताबे हो जाओ और इबलीस का मुकाबला करो तो वो तुम से भाग जाएगा।

⁸खुदा के नज़दीक जाओ तो वो तुम्हारे नज़दीक आएगा; ऐ, गुनाहगारो अपने हाथों को साफ़ करो और ऐ, दो दिलो अपने दिलों को पाक करो।⁹अफ़सोस करो और रोओ तुम्हारी हँसी मातम से बदल जाए और तुम्हारी खुशी ऊदासी से।¹⁰खुदावन्द के सामने फ़िरोतनी करो, वो तुम्हें सरबलन्द करेगा।

¹¹ऐ, भाइयो एक दूसरे की बुराई न करो जो अपने भाई की बुराई करता या भाई पर इल्ज़ाम लगाता है; वो शरी'अत की बुराई करता और शरी'अत पर इल्ज़ाम लगाता है और अगर तू शरी'अत पर इल्ज़ाम लगाता है तो शरी'अत पर अमल करने वाला नहीं बल्कि उस पर हाकिम ठहरा।¹²शरी'अत का देने वाला और हाकिम तो एक ही है जो बचाने और हलाक़ करने पर क़ादिर है तू कौन है जो अपने पड़ोसी पर इल्ज़ाम लगाता है।

¹³तुम जो ये कहते हो कि हम आज या कल फ़लाँ शहर में जा कर वहाँ एक बरस ठहरेंगे और सौदागरी करके नफ़ा उठाएँगे।¹⁴और ये जानते नहीं कि कल क्या होगा; ज़रा सुनो तो; तुम्हारी ज़िन्दगी चीज़ ही क्या है? बुखारात का सा हाल है अभी नज़र आए अभी ग़ायब हो गए।

¹⁵यूँ कहने की जगह तुम्हें ये कहना चाहिए अगर खुदावन्द चाहे तो हम ज़िन्दा भी रहेंगे और ये और वो काम भी करेंगे।¹⁶मगर अब तुम अपनी शेखी पर फ़ख़ करते हो; ऐसा सब फ़ख़ बुरा है।¹⁷पस जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता उसके लिए ये गुनाह है।

Chapter 5

¹ऐ, दौलतमन्दो ज़रा सुनो; तुम अपनी मुसीबतों पर जो आने वाली हैं रोओ; और मातम करो; ²तुम्हारा माल बिगड़ गया और तुम्हारी पोशाकों को कीड़ा खा गया।
³तुम्हारे सोने चाँदी को ज़ँग लग गया और वो ज़ँग तुम पर गवाही देगा और आग की तरह तुम्हारा गोशत खाएगा; तुम ने आखिर ज़माने में खज़ाना जमा किया है।
⁴देखो जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेत काटे उनकी वो मज़दूरी जो तुम ने धोका करके रख छोड़ी चिल्लाती है और फ़सल काटने वालों की फ़रियाद रबब'उल अफ़वाज़ के कानों तक पहुँच गई है।⁵तुम ने ज़मीन पर ऐश'ओ इशरत की और मज़े उड़ाए तुम ने अपने दिलों को ज़बह के दिन मोटा ताज़ा किया।⁶तुम ने रास्तबाज़ शख्स को कुसूरवार ठहराया और क़त्ल किया वो तुम्हारा मुकाबला नहीं करता।
⁷पस, ऐ भाइयो; खुदावन्द की आमद तक सब्र करो देखो किसान ज़मीन की क़ीमती पैदावार के इन्तज़ार में पहले और पिछले बारिश के बरसने तक सब्र करता रहता है।⁸तुम भी सब्र करो और अपने दिलों को मज़बूत रखो, क्योंकि खुदावन्द की आमद क़रीब है।
⁹ऐ, भाइयो! एक दूसरे की शिकायत न करो ताकि तुम सज़ा न पाओ, देखो मुन्सिफ़ दरवाज़े पर खड़ा है।¹⁰ऐ, भाइयो! जिन नबियों ने खुदावन्द के नाम से कलाम किया उनको दुःख उठाने और सब्र करने का नमूना समझो।¹¹देखो सब्र करने वालों को हम मुबारक कहते हैं; तुम ने अय्यूब के सब्र का हाल तो सुना ही है और खुदावन्द की तरफ़ से जो इसका अन्जाम हुआ उसे भी मा'लूम कर लिया जिससे खुदावन्द का बहुत तरस और रहम ज़ाहिर होता है।
¹²मगर ऐ, मेरे भाइयो; सब से बढ़कर ये है क्रसम न खाओ, न आसमान की न ज़मीन की न किसी और चीज़ की बल्कि हाँ की जगह हाँ करो और नहीं की जगह नहीं ताकि सज़ा के लायक़ न ठहरो।
¹³अगर तुम में कोई मुसीबत ज़दा हो तो दुआ करे, अगर खुश हो तो हम्द के गीत गाए।¹⁴अगर तुम में कोई बीमार हो तो कलीसिया के बुजुर्गों को बुलाए और वो खुदावन्द के नाम से उसको तेल मलकर उसके लिए दुआ करें।¹⁵जो दुआ ईमान के साथ होगी उसके ज़रि'ए बीमार बच जाएगा; और खुदावन्द उसे उठा कर खड़ा करेगा, और अगर उसने गुनाह किए हों, तो उनकी भी मु'आफ़ी हो जाएगी।
¹⁶पस तुम आपस में एक दूसरे से अपने अपने गुनाहों का इक़रार करो और एक दूसरे के लिए दुआ करो ताकि शिफ़ा पाओ रास्तबाज़ की दुआ के असर से बहुत कुछ हो सकता है।¹⁷एलियाह हमारी तरह इन्सान था, उसने बड़े जोश से दुआ की कि पानी न बरसे, चुनाँचे साढ़े तीन बरस तक ज़मीन पर पानी न बरसा।
¹⁸फिर उसी ने दुआ की तो आसमान से पानी बरसा और ज़मीन में पैदावार हुई।
¹⁹ऐ, मेरे भाइयो! अगर तुम में कोई राहे हक़ से गुमराह हो जाए और कोई उसको वापस लाए।²⁰तो वो ये जान ले कि जो कोई किसी गुनाहगार को उसकी गुमराही से फेर जाएगा; वो एक जान को मौत से बचा लेगा और बहुत से गुनाहों पर पर्दा डालेगा।

पतरस का पहला 'आम खत

Chapter 1

¹पतरस की तरफ़ से जो ईसा' मसीह का रसूल है, उन मुसाफ़िरों के नाम खत, जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पुदुकिया, असिया और बीथुइनिया सूबे में जा बजा रहते हैं, और खुदा बाप के 'इल्म-ए-साबिक़ के मुवाफ़िक़ रूह के पाक करने से फ़रमाँबरदार होने और ईसा' मसीह का खून छिड़के जाने के लिए बरगुज़ीदा हुए हैं। फज़ल और इत्मीनान तुम्हें ज़्यादा हासिल होता रहे।

³हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो, जिसने ईसा' मसीह के मुर्दों में से जी उठाने के ज़रिये, अपनी बड़ी रहमत से हमें जिन्दा उम्मीद के लिए नए सिरे से पैदा किया, ताकि एक ग़ैरफ़ानी और बेदाग़ और लाज़वाल मीरास को हासिल करें; ⁴वो तुम्हारे वास्ते [जो खुदा की कुदरत से ईमान के वसीले से, उस नजात के लिए जो आख़री वक़्त में ज़ाहिर होने को तैयार है, हिफ़ाज़त किये जाते हो] आसमान पर महफ़ूज़ है।

⁶इस की वजह से तुम खुशी मनाते हो, अगरचे अब चंद रोज़ के लिये ज़रूरत की वजह से, तरह तरह की आज़माइशों की वजह से ग़मज़दा हो; ⁷और ये इस लिए कि तुम्हारा आज़माया हुआ ईमान, जो आग से आज़माए हुए फ़ानी सोने से भी बहुत ही बेशकीमत है, ईसा' मसीह के ज़हूर के वक़्त तारीफ़ और जलाल और 'इज़ज़त का ज़रिया ठहरे।

⁸उससे तुम अनदेखी मुहब्बत रखते हो और अगरचे इस वक़्त उसको नहीं देखते तो भी उस पर ईमान लाकर ऐसी खुशी मानाते हो जो बयान से बाहर और जलाल से भरी है; ⁹और अपने ईमान का मक़सद या'नी रूहों की नजात हासिल करते हो। ¹⁰इसी नजात के बारे में नबियों ने बड़ी तलाश और तहक़ीक़ की, जिन्होंने उस फ़ज़ल के बारे में जो तुम पर होने को था नबूवत की।

¹¹उन्होंने इस बात की तहक़ीक़ की कि मसीह का रूह जो उस में था, और पहले मसीह के दुखों और उनके ज़िन्दा हो उठने के बा'द उसके जलाल की गवाही देता था, वो कौन से और कैसे वक़्त की तरफ़ इशारा करता था। ¹²उन पर ये ज़ाहिर किया गया कि वो न अपनी बल्कि तुम्हारी खिदमत के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनकी खबर अब तुम को उनके ज़रिये मिली जिन्होंने रूह-उल-कुहुस के वसीले से, जो आसमान पर से भेजा गया तुम को खुशख़बरी दी; और फ़रिशते भी इन बातों पर गौर से नज़र करने के मुश्ताक़ हैं।

¹³इस वास्ते अपनी 'अक्ल की कमर बाँधकर और होशियार होकर, उस फ़ज़ल की पूरी उम्मीद रखो जो ईसा' मसीह के ज़हूर के वक़्त तुम पर होने वाला है।

¹⁴और फ़रमाँबरदार बेटा होकर अपनी जहालत के ज़माने की पुरानी ख्वाहिशों के ताबे' न बनो।

¹⁵बल्कि जिस तरह तुम्हारा बुलानेवाला पाक, है, उसी तरह तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पाक बनो; ¹⁶क्योंकि पाक कलाम में लिखा है, "पाक हो, इसलिए कि मैं पाक हूँ।" ¹⁷और जब कि तुम 'बाप' कह कर उससे दुआ करते हो, जो हर एक के काम के मुवाफ़िक़ बग़ैर तरफ़दारी के इन्साफ़ करता है, तो अपनी मुसाफ़िरत का ज़माना ख़ौफ़ के साथ गुज़ारो।

¹⁸क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादा से चला आता था, उससे तुम्हारी खलासी फ़ानी चीज़ों या 'नी सोने चाँदी के ज़रि'ए से नहीं हुई,¹⁹ बल्कि एक बे'ऐब और बेदाग़ बर्रे, या 'नी मसीह के बेश क़ीमत खून से ।

²⁰उसका 'इल्म तो दुनियाँ बनाने से पहले से था, मगर ज़हूर आखिरी ज़माने में तुम्हारी खातिर हुआ,²¹ कि उस के वसीले से खुदा पर ईमान लाए हो, जिसने उस को मुद्दों में से जिलाया और जलाल बख़्शा ताकि तुम्हारा ईमान और उम्मीद खुदा पर हो ।

²²चूँकि तुम ने हक़ की ताबे 'दारी से अपने दिलों को पाक किया है, जिससे भाइयों की बे'रिया मुहब्बत पैदा हुई, इसलिए दिल-ओ-जान से आपस में बहुत मुहब्बत रखो ।²³क्योंकि तुम मिटने वाले बीज से नहीं बल्कि ग़ैर फ़ानी से खुदा के कलाम के वसीले से, जो जिंदा और क़ायम है , नए सिरे से पैदा हुए हो ।

²⁴चुनाँचे हर आदमी घास की तरह है, और उसकी सारी शान-ओ-शौकत घास के फूल की तरह । घास तो सूख जाती है, और फूल गिर जाता है ।²⁵लेकिन खुदावंद का कलाम हमेशा तक क़ायम रहेगा । ये वही खुशख़बरी का कलाम है जो तुम्हें सुनाया गया था ।

Chapter 2

¹पस हर तरह की बदख्वाही और सारे फ़रेब और रियाकारी और हसद और हर तरह की बदगोई को दूर करके,²पैदाइशी बच्चों की तरह ख़ालिस रूहानी दूध के इंतज़ार में रहो, ताकि उसके ज़रि'ये से नजात हासिल करने के लिए बढ़ते जाओ,³अगर तुम ने खुदावन्द के मेहरबान होने का मज़ा चखा है ।

⁴उसके या'नी आदमियों के रद्द किये हुए ,पर खुदा के चुने हुए और क़ीमती ज़िन्दा पत्थर के पास आकर,⁵तुम भी ज़िन्दा पत्थरों की तरह रूहानी घर बनते जाते हो, ताकि काहिनो का मुकद्दस फ़िरका बनकर ऐसी रूहानी कुबानियाँ चढ़ाओ जो ईसा' मसीह के वसीले से खुदा के नज़दीक मक़बूल होती है ।

⁶चुनौचे किताब-ए-मुकद्दस में आया है : देखो, मैं सिय्युन में कोने के सिरे का चुना हुआ और क़ीमती पत्थर रखता हूँ; जो उस पर ईमान लाएगा हरगिज़ शर्मिन्दा न होगा ।

⁷पस तुम ईमान लाने वालों के लिए तो वो क़ीमती है, मगर ईमान न लाने वालों के लिए जिस पत्थर को राजगीरों ने रद्द किया वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया ।⁸और ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हुआ, क्योंकि वो नाफ़रमान होकर कलाम से ठोकर खाते हैं और इसी के लिए मुक़रर भी हुए थे ।

⁹लेकिन तुम एक चुनी हुई नसल, शाही काहिनो का फ़िरका, मुकद्दस क़ौम, और ऐसी उम्मत हो जो खुदा की ख़ास मिलकियत है ताकि उसकी ख़ूबियाँ ज़ाहिर करो जिसने तुम्हें अंधेरे से अपनी 'अजीब रौशनी में बुलाया है ।¹⁰पहले तुम कोई उम्मत न थे मगर अब तुम खुदा की उम्मत हो, तुम पर रहमत न हुई थी मगर अब तुम पर रहमत हुई ।

¹¹ऐ प्यारों ! मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि तुम अपने आप को परदेसी और मुसाफ़िर जान कर, उन जिस्मानी ख़्वाहिशों से परहेज़ करो जो रूह से लड़ाई रखती हैं ।¹²और ग़ैर-कौमों में अपना चाल-चलन नेक रखो, ताकि जिन बातों में वो तुम्हें बदकार जानकर तुम्हारी बुराई करते हैं, तुम्हारे नेक कामों को देख कर उन्हीं की वजह से मुलाहिज़ा के दिन खुदा की बड़ाई करें ।

¹³खुदावन्द की ख़ातिर इन्सान के हर एक इन्तिज़ाम के ताबे' रहो; बादशाह के इसलिए कि वो सब से बुज़ुर्ग है,¹⁴और हाकिमों के इसलिए कि वो बदकारों को सज़ा और नेकोकारों की तारीफ़ के लिए उसके भेजे हुए हैं ।¹⁵क्योंकि खुदा की ये मज़ी है कि तुम नेकी करके नादान आदमियों की जहालत की बातों को बन्द कर दो ।¹⁶और अपने आप को आज़ाद जानो, मगर इस आज़ादी को बदी का पर्दा न बनाओ; बल्कि अपने आप को खुदा के बन्दे जानो ।¹⁷सबकी 'इज़ज़त करो, बिरादरी से मुहब्बत रखो, खुदा से डरो, बादशाह की 'इज़ज़त करो ।

¹⁸ऐ नौकरों! बड़े ख़ौफ़ से अपने मालिकों के ताबे' रहो, न सिर्फ़ नेकों और हलीमों ही के बल्कि बद मिज़ाजों के भी ।¹⁹क्योंकि अगर कोई खुदा के खयाल से बेइन्साफ़ी के बा'इस दुःख उठाकर तकलीफ़ों को बर्दाशत करे तो ये पसन्दीदा है ।²⁰इसलिए कि अगर तुम ने गुनाह करके मुक्के खाए और सब्र किया, तो कौन सा फ़ख़ है? हाँ, अगर नेकी करके दुख पाते और सब्र करते हो, तो ये खुदा के नज़दीक पसन्दीदा है ।

²¹और तुम इसी के लिए बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे वास्ते दुख उठाकर तुम्हें एक नमूना दे गया है ताकि उसके नक़््श-ए-क़दम पर चलो ।²²न उसने गुनाह किया और न ही उसके मुँह से कोई मक़ की बात निकली,²³न वो गालियाँ खाकर गाली देता था और न दुख पाकर किसी को धमकाता था; बल्कि अपने आप को सच्चे इन्साफ़ करने वाले खुदा के सुपुर्द करता था ।

²⁴वो आप हमारे गुनाहों को अपने बदन पर लिए हुए सलीब पर चढ़ गया, ताकि हम गुनाहों के ऐ'तबार से जिएँ; और उसी के मार खाने से तुम ने शिफ़ा पाई ।

²⁵अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया खुदा का कलाम है, अगर कोई खिदमत करे तो उस ताक़त के मुताबिक़ करे जो खुदा दे, ताकि सब बातों में ईसा' मसीह के वसीले से खुदा का जलाल ज़ाहिर हो । जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी की है । आमीन ।

Chapter 3

¹ऐ बीवियों! तुम भी अपने शौहर के ताबे' रहो, ²इसलिए कि अगर कुछ उनमें से कलाम को न मानते हों, तोभी तुम्हारे पाकीज़ा चाल-चलन और खौफ़ को देख कर बग़ैर कलाम के अपनी अपनी बीवी के चाल-चलन से खुदा की तरफ़ खिंच जाएँ |

³और तुम्हारा सिंगार ज़ाहिरी न हो, या'नी सर गूँधना और सोने के ज़ेवर और तरह तरह के कपड़े पहनना, ⁴बल्कि तुम्हारी बातिनी और पोशीदा इंसानियत, हिल्म और नर्म मिज़ाज की ग़ुरबत की ग़ैरफ़ानी आराइश से आरास्ता रहे, क्योंकि खुदा के नज़दीक इसकी बड़ी क़द्र है |

⁵और अगले ज़माने में भी खुदा पर उम्मीद रखनेवाली मुक़द्दस 'औरतें, अपने आप को इसी तरह संवारती और अपने अपने शौहर के ताबे' रहती थीं | ⁶चुनाँचे सारह अब्रहाम के हुक्म में रहती और उसे खुदावन्द कहती थी | तुम भी अगर नेकी करो और किसी के डराने से न डरो, तो उसकी बेटियाँ हुई |

⁷ऐ शौहरों! तुम भी बीवियों के साथ 'अक्लमन्दी से बसर करो, और 'औरत को नाज़ुक ज़र्फ़ जान कर उसकी 'इज़ज़त करो, और यूँ समझो कि हम दोनों ज़िन्दगी की ने'मत के वारिस हैं, ताकि तुम्हारी दु'आएँ रुक न जाएँ |

⁸गरज़ सब के सब एक दिल और हमदर्द रहो, बिरादराना मुहब्बत रखखो, नर्म दिल और फ़रोतन बनो | ⁹बदी के 'बदले बदी न करो और गाली के बदले गाली न दो, बल्कि इसके बर'अक्स बरकत चाहो, क्योंकि तुम बरकत के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो |

¹⁰चुनाँचे "जो कोई ज़िन्दगी से खुश होना और अच्छे दिन देखना चाहे, वो ज़बान को बदी से और होंटों को मक्र की बात कहने से बाज़ रखखे | ¹¹बदी से किनारा करे और नेकी को 'अमल में लाए, सुलह का तालिब हो, और उसकी कोशिश में रहे | ¹²क्योंकि खुदावन्द की नज़र रास्तबाज़ों की तरफ़ है, और उसके कान उनकी दु'आ पर लगे हैं, मगर बदकार खुदावन्द की निगाह में हैं |"

¹³अगर तुम नेकी करने में सरगर्म हो, तो तुम से बदी करनेवाला कौन है? ¹⁴और अगर रास्तबाज़ी की खातिर दुख सहो भी तो तुम मुबारक हो, न उनके डराने से डरो और न घबराओ;

¹⁵बल्कि मसीह को खुदावन्द जानकर अपने दिलों में मुक़द्दस समझो; और जो कोई तुम से तुम्हारी उम्मीद की वज़ह पूछे, उसको जवाब देने के लिए हर वक़्त मुस्त'ईद रहो, मगर हिल्म और खौफ़ के साथ | ¹⁶और नियत भी नेक रखखो ताकि जिन बातों में तुम्हारी बदगोई होती है, उन्हीं में वो लोग शर्मिदा हों जो तुम्हारे मसीही नेक चाल-चलन पर ला'न ता'न करते हैं | ¹⁷क्योंकि अगर खुदा की यही मज़ी हो कि तुम नेकी करने की वज़ह से दुःख उठाओ, तो ये बदी करने की वज़ह से दुख उठाने से बेहतर है |

¹⁸इसलिए कि मसीह ने भी या'नी रास्तबाज़ ने नारास्तों के लिए, गुनाहों के बा'इस एक बार दुख उठाया ताकि हम को खुदा के पास पहुँचाए; वो जिस्म के ऐ'तबार से मारा गया, लेकिन रूह के ऐ'तबार से तो ज़िन्दा किया गया | ¹⁹इसी में से उसने जा कर उन कैदी रूहों में मनादी की, ²⁰जो उस अगले ज़माने में नाफ़रमान थीं जब खुदा नूह के वक़्त में तहम्मूल करके ठहरा रहा था और वो नाव तैयार हो रही थी, जिस पर सवार होकर थोड़े से आदमी या'नी आठ जानें पानी के वसीले से बचीं |

²¹और उसी पानी का मुशाबह भी या'नी बपतिस्मा, ईसा' मसीह के जी उठने के वसीले से अब तुम्हें बचाता है, उससे जिस्म की नजासत का दूर करना मुराद नहीं बल्कि खालिस नियत से खुदा का तालिब होना मुराद है | ²²वो आसमान पर जाकर खुदा की दाहनी तरफ़ बैठा है, और फ़रिश्ते और इख्तियारात और कुदरतें उसके ताबे' की गई हैं |

Chapter 4

¹पस जबकि मसीह ने जिस्म के ऐ'तिबार से दुःख उठाया, तो तुम भी ऐसे ही मिज़ाज इस्तियार करके हथियारबन्द बनो; क्योंकि जिसने जिस्म के ऐ'तबार से दुख उठाया उसने गुनाह से छुटकारा पाया | ²ताकि आइन्दा को अपनी बाक़ी जिस्मानी ज़िन्दगी आदमियों की ख्वाहिशों के मुताबिक़ न गुज़ारे बल्कि खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ |

³इस वास्ते कि ग़ैर-क्रौमों की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ काम करने और शहवत परस्ती, बुरी ख्वाहिशों, मयख़वारी, नाचरंग, नशेबाज़ी और मकरूह बुत परस्ती में जिस क्रदर हम ने पहले वक़्त गुज़ारा वही बहुत है | ⁴इस पर वो ताअ'ज्जुब करते हैं कि तुम उसी सख़्त बदचलनी तक उनका साथ नहीं देते और ला'न ता'न करते हैं, ⁵उन्हें उसी को हिसाब देना पड़ेगा जो ज़िन्दों और मुर्दों का इन्साफ़ करने को तैयार है | ⁶क्योंकि मुर्दों को भी खुशख़बरी इसलिए सुनाई गई थी कि जिस्म के लिहाज़ से तो आदमियों के मुताबिक़ उनका इन्साफ़ हो, लेकिन रूह के लिहाज़ से खुदा के मुताबिक़ ज़िन्दा रहें |

⁷सब चीज़ों का ख़ातिमा जल्द होने वाला है, पस होशियार रहो और दु'आ करने के लिए तैयार | ⁸सबसे बढ़कर ये है कि आपस में बड़ी मुहब्बत रखो, क्योंकि मुहब्बत बहुत से गुनाहों पर पर्दा डाल देती है | ⁹बग़ैर बड़बड़ाए आपस में मुसाफ़िर परवरी करो |

¹⁰जिनको जिस जिस क्रदर ने'मत मिली है, वो उसे खुदा की मुख्तलिफ़ ने'मतों के अच्छे मुख्तारों की तरह एक दूसरे की खिदमत में सफ़र करें | ¹¹अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया खुदा का कलाम है, अगर कोई खिदमत करे तो उस ताक़त के मुताबिक़ करे जो खुदा दे, ताकि सब बातों में ईसा' मसीह के वसीले से खुदा का जलाल ज़ाहिर हो | जलाल और सलतनत हमेशा से हमेशा उसी की है | आमीन |

¹²ऐ प्यारो ! जो मुसीबत की आग़ तुम्हारी आजमाइश के लिए तुम में भड़की है, ये समझ कर उससे ता'ज्जुब न करो कि ये एक अनोखी बात हम पर ज़ाहिर' हुई है | ¹³बल्कि मसीह के दुखों में जूँ जूँ शरीक हो खुशी करो, ताकि उसके जलाल के ज़हूर के वक़्त भी निहायत खुश-ओ-खुर्रम हो | ¹⁴अगर मसीह के नाम की वजह से तुम्हें मलामत की जाती है तो तुम मुबारक हो, क्योंकि जलाल का रूह या'नी खुदा का रूह तुम पर साया करता है |

¹⁵तुम में से कोई शख्स ख़ूनी या चोर या बदकार या औरों के काम में दस्तअन्दाज़ होकर दुःख न पाए | ¹⁶लेकिन अगर मसीही होने की वजह से कोई शख्स पाए तो शरमाए नहीं, बल्कि इस नाम की वजह से खुदा की बड़ाई करे |

¹⁷क्योंकि वो वक़्त आ पहुँचा है कि खुदा के घर से 'अदालत शुरू' हो, और जब हम ही से शुरू' होगी तो उनका क्या अन्जाम होगा जो खुदा की खुशख़बरी को नहीं मानते? ¹⁸और "जब रास्तबाज़ ही मुश्किल से नजात पाएगा, तो बेदीन और गुनाहगार का क्या ठिकाना ?" ¹⁹पस जो खुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ दुख पाते हैं, वो नेकी करके अपनी जानों को वफ़ादार ख़ालिक़ के सुपुर्द करें |

Chapter 5

¹तुम में जो बुजुर्ग हैं, मैं उनकी तरह बुजुर्ग और मसीह के दुखों का गवाह और ज़ाहिर होने वाले जलाल में शरीक होकर उनको ये नसीहत करता हूँ | ²कि ख़ुदा के उस गल्ले की गल्लेबानी करो जो तुम में है; लाचारी से निगहबानी न करो, बल्कि ख़ुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ ख़ुशी से और नाजायज़ नफ़े' के लिए नहीं बल्कि दिली शौक से | ³और जो लोग तुम्हारे सुपुर्द हैं उन पर हुक्मत न जताओ, बल्कि गल्ले के लिए नमूना बनो | ⁴और जब सरदार गल्लेबान ज़ाहिर होगा, तो तुम को जलाल का ऐसा सहारा मिलेगा जो मुरझाने का नहीं |

⁵ऐ जवानो ! तुम भी बुजुर्गों के ताबे' रहो, बल्कि सब के सब एक दूसरे की ख़िदमत के लिए फ़रोतनी से कमर बस्ता रहो, इसलिए कि "ख़ुदा मगरूरों का मुकाबला करता है, मगर फ़रोतनों को तौफ़ीक़ बख़्शता है |" ⁶पस ख़ुदा के मज़बूत हाथ के नीचे फ़रोतनी से रहो, ताकि वो तुम्हें वक़्त पर सरबलन्द करे | ⁷अपनी सारी फ़िक़र उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारी फ़िक़र है |

⁸तुम होशियार और बेदार रहो; तुम्हारा मुखालिफ़ इब्लीस गरजने वाले शेर-ए-बबर की तरह ढूँढता फिरता है कि किसको फाड़ खाए | ⁹तुम ईमान में मज़बूत होकर और ये जानकर उसका मुकाबला करो कि तुम्हारे भाई जो दुनिया में हैं ऐसे ही दुःख उठा रहे हैं

¹⁰अब ख़ुदा जो हर तरह के फ़ज़ल का चश्मा है, जिसने तुम को मसीह में अपने अबदी जलाल के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी मुद्दत तक दुःख उठाने के बा'द आप ही तुम्हें कामिल और क़ायम और मज़बूत करेगा | ¹¹हमेशा से हमेशा तक उसी की सल्लतनत रहे | आमीन |

¹²मैंने सिल्वानुस के ज़रिये, जो मेरी दानिस्त में दियानतदार भाई है, मुख़्तसर तौर पर लिख कर तुम्हें नसीहत की और ये गवाही दी कि ख़ुदा का सच्चा फ़ज़ल यही है, इसी पर क़ायम रहो | ¹³जो बाबुल में तुम्हारी तरह बरगुज़ीदा है, वो और मेरा मरकुस तुम्हें सलाम कहते हैं | ¹⁴मुहब्बत से बोसा ले लेकर आपस में सलाम करो | तुम सबको जो मसीह में हो, इत्मीनान हासिल होता रहे |

पतरस का दूसरा 'आम ख़त

Chapter 1

¹शमा'ऊन पतरस की तरफ़ से, जो ईसा' मसीह का बन्दा और रसूल है, उन लोगों के नाम ख़त, जिन्होंने हमारे ख़ुदा और मुंजी ईसा' मसीह की रास्तबाज़ी में हमारा सा क़ीमती ईमान पाया है | ²ख़ुदा और हमारे ख़ुदावन्द ईसा' की पहचान की वजह से फ़ज़ल और इत्मीनान तुम्हें ज़्यादा होता रहे |

³क्योंकि ख़ुदा की इलाही कुदरत ने वो सब चीज़ें जो ज़िन्दगी और दीनदारी के मुता'ल्लिक़ हैं, हमें उसकी पहचान के वसीले से 'इनायत की, जिसने हम को अपने ख़ास जलाल और नेकी के ज़रिए'ए से बुलाया | ⁴जिनके ज़रिए उसने हम से क़ीमती और निहायत बड़े वा'दे किए; ताकि उनके वसीले से तुम उस ख़राबी से छूटकर, जो दुनिया में बुरी ख़्वाहिश की वजह से है, ज़ात-ए-इलाही में शरीक हो जाओ |

⁵पस इसी ज़रिये तुम अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करके अपने ईमान से नेकी, और नेकी से मा'रिफ़त, ⁶और मा'रिफ़त से परहेज़गारी, और परहेज़गारी से सब्र और सब्र से दीनदारी, ⁷और दीनदारी से बिरादराना उल्फ़त, और बिरादराना उल्फ़त से मुहब्बत बढ़ाओ |

⁸क्योंकि अगर ये बातें तुम में मौजूद हों और ज़्यादा भी होती जाएँ, तो तुम को हमारे ख़ुदावन्द ईसा' मसीह के पहचानने में बेकार और बेफल न होने देंगी | ⁹और जिसमें ये बातें न हों, वो अन्धा है और कोताह नज़र अपने पहले गुनाहों के धोए जाने को भूले बैठा है |

¹⁰पस ऐ भाइयों ! अपने बुलावे और बरगुज़ीदगी को साबित करने की ज़्यादा कोशिश करो, क्योंकि अगर ऐसा करोगे तो कभी ठोकर न खाओगे; ¹¹बल्कि इससे तुम हमारे ख़ुदावन्द और मुन्जी ईसा' मसीह की हमेशा बादशाही में बड़ी 'इज़ज़त के साथ दाखिल किए जाओगे |

¹²इसलिए मैं तुम्हें ये बातें याद दिलाने को हमेशा मुस्त'इद रहूँगा, अगरचे तुम उनसे वाकिफ़ और उस हक़ बात पर क़ायम हो जो तुम्हें हासिल है | ¹³और जब तक मैं इस ख़ेमे में हूँ, तुम्हें याद दिला दिला कर उभारना अपने ऊपर वाजिब समझता हूँ | ¹⁴क्योंकि हमारे ख़ुदावन्द ईसा' मसीह के बताने के मुवाफ़िक़, मुझे मा'लूम है कि मेरे ख़ेमे के गिराए जाने का वक़्त जल्द आनेवाला है | ¹⁵पस मैं ऐसी कोशिश करूँगा कि मेरे इन्तक़ाल के बा'द तुम इन बातों को हमेशा याद रख सको |

¹⁶क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने ख़ुदा वन्द ईसा' मसीह की कुदरत और आमद से वाकिफ़ किया था, तो दगाबाज़ी की गढ़ी हुई कहानियों की पैरवी नहीं की थी बल्कि ख़ुद उस कि अज़मत को देखा था ¹⁷कि उसने ख़ुदा बाप से उस वक़्त 'इज़ज़त और जलाल पाया, जब उस अफ़ज़ल जलाल में से उसे ये आवाज़ आई, "ये मेरा प्यारा बेटा है, जिससे मैं खुश हूँ |" ¹⁸और जब हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे, तो आसमान से यही आवाज़ आती सुनी |

¹⁹और हमारे पास नबियों का वो कलाम है जो ज़्यादा मौ'तबर ठहरा | और तुम अच्छा करते हो, जो ये समझ कर उसी पर ग़ौर करते हो कि वो एक चराग़ है जो अन्धेरी जगह में रौशनी बख़्शता है, जब तक सुबह की रौशनी और सुबह का सितारा तुम्हारे दिलों में न चमके | ²⁰और पहले ये जान लो कि किताब-ए-मुक़द्दस की किसी नबुव्वत की बात की तावील किसी के ज़ाती इख़्तियार पर मौकूफ़ नहीं, ²¹क्योंकि नबुव्वत की कोई बात आदमी की ख़्वाहिश से कभी नहीं हुई, बल्कि आदमी रूह-उल-कुदुस की तहरीक की वजह से ख़ुदा की तरफ़ से बोलते थे |

Chapter 2

¹जिस तरह उस उम्मत में झूठे नबी भी थे उसी तरह तुम में भी झूठे उस्ताद होंगे, जो पोशीदा तौर पर हलाक करने वाली नई-नई बातें निकालेंगे, और उस मालिक का इन्कार करेंगे जिसने उन्हें खरीद लिया था, और अपने आपको जल्द हलाकत में डालेंगे।² और बहुत सारे उनकी बुरी आदतों की पैरवी करेंगे, जिनकी वजह से राह-ए-हक़ की बदनामी होगी।³ और वो लालच से बातें बनाकर तुम को अपने नफ़े की वजह ठहराएँगे, और जो ज़माने से उनकी सज़ा का हुक्म हो चुका है उसके आने में कुछ देर नहीं, और उनकी हलाकत सोती नहीं।

⁴क्योंकि जब ख़ुदा ने गुनाह करने वाले फ़रिश्तों को न छोड़ा, बल्कि जहन्नम भेज कर तारीक़ ग़ारों में डाल दिया ताकि 'अदालत के दिन तक हिरासत में रहें',⁵ और न पहली दुनिया को छोड़ा, बल्कि बेदीन दुनिया पर तूफ़ान भेजकर रास्तबाज़ी के ऐलान करने वाले नूह समेत सात आदमियों को बचा लिया;⁶ और सदोम और 'अमूरा के शहरों को मिट्टी में मिला दिया और उन्हें हलाकत की सज़ा दी और आइन्दा ज़माने के बेदीनों के लिए जा-ए-'इबरत बना दिया,

⁷और रास्तबाज़ लूत को जो बेदीनों के नापाक चाल-चलन से बहुत दुखी था रिहाई बख़्शी।⁸ [चुनोंचे वो रास्तबाज़ उनमें रह कर और उनके बेशरा'कामों को देख देख कर और सुन सुन कर, गोया हर रोज़ अपने सच्चे दिल को शिकंजे में खींचता था।]⁹ तो ख़ुदावन्द दीनदारों को आज़माइश से निकाल लेना और बदकारों को 'अदालत के दिन तक सज़ा में रखना जानता है,

¹⁰खुसूसन उनको जो नापाक ख़्वाहिशों से जिस्म की पैरवी करते हैं और हुक्मत को नाचीज़ जानते हैं। वो गुस्ताख़ और नाफ़रमान हैं, और 'इज़ज़तदारों पर ला'न ता'न करने से नहीं डरते,¹¹ बावजूद ये कि फ़रिश्ते जो ताकत और कुदरत में उनसे बड़े हैं, ख़ुदावन्द के सामने उन पर ला'न ता'न के साथ नालिश नहीं करते।

¹²लेकिन ये लोग बे'अक़ल जानवरों की तरह हैं, जो पकड़े जाने और हलाक होने के लिए हैवान-ए-मुतलक़ पैदा हुए हैं, जिन बातों से नावाक़िफ़ हैं उनके बारे में औरों पर ला'न ता'न करते हैं, अपनी ख़राबी में ख़ुद ख़राब किए जाएँगे।¹³ दूसरों को बुरा करने के बदले इन ही का बुरा होगा। इनको दिन दहाड़े अय्याशी करने में मज़ा आता है। ये दाग़ और ऐबदार हैं। जब तुम्हारे साथ खाते पीते हैं, तो अपनी तरफ़ से मुहब्बत की ज़ियाफ़त करके 'ऐश-ओ-'इशरत करते हैं।¹⁴ उनकी आँखें जिनमें ज़िनाकार 'औरतें बसी हुई हैं, गुनाह से रुक नहीं सकतीं; वो बे क़याम दिलों को फँसाते हैं। उनका दिल लालच का मुश्ताक़ है, वो ला'नत की औलाद हैं।

¹⁵वो सीधी राह छोड़ कर गुमराह हो गए हैं, और ब'ऊर के बेटे बिल'आम की राह पर हो लिए हैं, जिसने नारास्ती की मज़दूरी को 'अज़ीज़ जाना;¹⁶ मगर अपने कुसूर पर ये मलामत उठाई कि एक बेज़बान ग़धी ने आदमी की तरह बोल कर उस नबी को दीवानगी से बाज़ रखवा।

¹⁷वो अन्धे कुएँ हैं, और ऐसे बादल हैं जिसे आँधी उड़ाती है; उनके लिए बेहद तारीकी घिरी है।¹⁸ वो घमण्ड की बेहूदा बातें बक बक कर बुरी आदतों के ज़रिए से, उन लोगों को जिस्मानी ख़्वाहिशों में फँसाते हैं जो गुमराही में से निकल ही रहे हैं।¹⁹ जो उनसे तो आज़ादी का वा'दा करते हैं और आप ख़राबी के गुलाम बने हुए हैं, क्योंकि जो शख्स जिससे मग़लूब है वो उसका गुलाम है।

²⁰जब वो ख़ुदावन्द और मुन्जी ईसा' मसीह की पहचान के वसीले से दुनिया की आलूदगी से छुट कर, फिर उनमें फँसे और उनसे मग़लूब हुए, तो उनका पिछला हाल पहले से भी बदतर हुआ।²¹ क्योंकि रास्तबाज़ी की राह का न जानना उनके लिए इससे बेहतर होता कि उसे जान कर उस पाक हुक्म से फिर जाते, जो उन्हें सौंपा गया था।²² उन पर ये सच्ची मिसाल सादिक़ आती है, "कुत्ता अपनी क़ै की तरफ़ रूजू करता है, और नहलाई हुई सूअरनी दलदल में में लोटने की तरफ़।"

Chapter 3

¹ऐ 'अज़ीज़ो! अब मैं तुम्हें ये दूसरा खत लिखता हूँ, और याद दिलाने के तौर पर दोनों खतों से तुम्हारे साफ़ दिलों को उभारता हूँ, ²कि तुम उन बातों को जो पाक नबियों ने पहले कहीं, और खुदावन्द और मुन्जी के उस हुक्म को याद रखो जो तुम्हारे रसूलों की ज़रिये आया था।

³और पहले जान लो कि आखिरी दिनों में ऐसी हँसी ठट्ठा करनेवाले आएँगे जो अपनी ख्वाहिशों के मुवाफ़िक़ चलेंगे, ⁴और कहेंगे, "उसके आने का वा'दा कहाँ गया? क्योंकि जब से बाप-दादा सोए हैं, उस वक़्त से अब तक सब कुछ वैसा ही है जैसा दुनिया के शुरू' से था।"

⁵वो तो जानबूझ कर ये भूल गए कि खुदा के कलाम के ज़री'ए से आसमान पहले से मौजूद है, और ज़मीन पानी में से बनी और पानी में क़ायम है; ⁶इन ही के ज़री'ए से उस ज़माने की दुनिया डूब कर हलाक हुई। ⁷मगर इस वक़्त के आसमान और ज़मीन उसी कलाम के ज़री'ए से इसलिए रखे हैं कि जलाए जाएँ; और वो बेदीन आदमियों की 'अदालत और हलाकत के दिन तक महफूज़ रहेंगे

⁸ऐ 'अज़ीज़ो ! ये खास बात तुम पर पोशीदा न रहे कि खुदावन्द के नज़दीक एक दिन हज़ार बरस के बराबर है, और हज़ार बरस एक दिन के बराबर। ⁹खुदावन्द अपने वा'दे में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; बल्कि तुम्हारे बारे में हलाकत नहीं चाहता बल्कि ये चाहता है कि सबकी तौबा तक नौबत पहुँचे।

¹⁰लेकिन खुदावन्द का दिन चोर की तरह आ जाएगा, उस दिन आसमान बड़े शोर-ओ-गुल के साथ बर्बाद हो जाएँगे, और अजराम-ए-फ़लक हरात की शिद्दत से पिघल जाएँगे, और ज़मीन और उस पर के काम जल जाएँगे।

¹¹जब ये सब चीज़ें इस तरह पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पाक चाल-चलन और दीनदारी में कैसे कुछ होना चाहिए, ¹²और खुदा की 'अदालत के दिन के आने का कैसा कुछ मुन्तज़िर और मुश्ताक़ रहना चाहिए, जिसके ज़रिये आसमान आग से पिघल जाएँगे, और अजराम-ए-फ़लक हरात की शिद्दत से गल जाएँगे।

¹³लेकिन उसके वादे के मुवाफ़िक़ हम नए आसमान और नई ज़मीन का इन्तज़ार करते हैं, जिनमें रास्तबाज़ी बसी रहेगी।

¹⁴पस ऐ 'अज़ीज़ो ! चूँकि तुम इन बातों के मुन्तज़िर हो, इसलिए उसके सामने इत्मीनान की हालत में बेदाग़ और बे-ऐब निकलने की कोशिश करो, ¹⁵और हमारे खुदावन्द के तहम्मूल को नजात समझो, चुनौतें हमारे प्यारे भाई पौलूस ने भी उस हिकमत के मुवाफ़िक़ जो उसे 'इनायत हुई, तुम्हें यही लिखा है ¹⁶और अपने सब खतों में इन बातों का ज़िक्र किया है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना मुश्किल है, और जाहिल और बे-क़ायम लोग उनके मा'नों को और सहीफ़ो की तरह खींच तान कर अपने लिए हलाकत पैदा करते हैं।

¹⁷पस ऐ 'अज़ीज़ो ! चूँकि तुम पहले से आगाह हो, इसलिए होशियार रहो, ताकि बे-दीनों की गुमराही की तरफ़ खिंच कर अपनी मज़बूती को छोड़ न दो।

¹⁸बल्कि हमारे खुदावन्द और मुन्जी ईसा' मसीह के फ़ज़ल और 'इरफ़ान में बढ़ते जाओ। उसी की बड़ाई अब भी हो, और हमेशा तक होती रहे। आमीन।

यूहन्ना का पहला 'आम खत

Chapter 1

¹उस ज़िन्दगी के कलाम के बारे में जो शुरू से था, और जिसे हम ने सुना और अपनी आँखों से देखा बल्कि, ग़ौर से देखा और अपने हाथों से छुआ। ²[ये ज़िन्दगी ज़ाहिर हुई और हम ने देखा और उसकी गवाही देते हैं, और इस हमेशा की ज़िन्दगी की तुम्हें खबर देते हैं जो बाप के साथ थी और हम पर ज़ाहिर हुई है।]

³जो कुछ हम ने देखा और सुना है तुम्हें भी उसकी खबर देते हैं, ताकि तुम भी हमारे शरीक हो, और हमारा मेल मिलाप बाप के साथ और उसके बेटे ईसा' मसीह के साथ है। ⁴और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारी खुशी पूरी हो जाए।

⁵उससे सुन कर जो पैग़ाम हम तुम्हें देते हैं, वो ये है कि खुदा नूर है और उसमे ज़रा भी तारीकी नहीं। ⁶अगर हम कहें कि हमारा उसके साथ मेल मिलाप है और फिर तारीकी में चलें, तो हम झूठे हैं और हक़ पर 'अमल नहीं करते। ⁷लेकिन जब हम नूर में चलें जिस तरह कि वो नूर में हैं, तो हमारा आपस में मेल मिलाप है, और उसके बेटे ईसा' का खून हमें तमाम गुनाह से पाक करता है।

⁸अगर हम कहें कि हम बेगुनाह हैं तो अपने आपको धोका देते हैं, और हम में सच्चाई नहीं। ⁹अगर अपने गुनाहों का इकरार करें, तो वो हमारे गुनाहों को मु'आफ़ करने और हमें सारी नारास्ती से पाक करने में सच्चा और 'आदिल है। ¹⁰अगर कहें कि हम ने गुनाह नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका कलाम हम में नहीं है।

Chapter 2

¹ 'ऐ मेरे बच्चों! ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ तुम गुनाह न करो ;और अगर कोई गुनाह करे ,तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है ,या'नी ईसा' मसीह रास्तबाज़ ;² और वही हमारे गुनाहों का कफ़ारा है ,और न सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।³ अगर हम उसके हुक्मों पर 'अमल करेंगे ,तो इससे हमें माँ'लूम होगा कि हम उसे जान गए हैं ।

⁴ 'जो कोई ये कहता है, "मैं उसे जान गया हूँ "और उसके हुक्मों पर 'अमल नहीं करता ,वो झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं ।⁵ 'हाँ ,जो कोई उसके कलाम पर 'अमल करे ,उसमें यकीनन खुदा की मुहब्बत कामिल हो गई है ।हमें इसी से मा'लूम होता है कि हम उसमें हैं :⁶ 'जो कोई ये कहता है कि मैं उसमें क़ायम हूँ ,तो चाहिए कि ये भी उसी तरह चले जिस तरह वो चलता था ।

⁷ 'ऐ अज़ीज़ो! मैं तुम्हें कोई नया हुक्म नहीं लिखता , बल्कि वही पुराना हुक्म जो शुरू से तुम्हें मिला है ;ये पुराना हुक्म वही कलाम है जो तुम ने सुना है ।⁸ फिर तुम्हें एक नया हुक्म लिखता हूँ ,ये बात उस पर और तुम पर सच्ची आती है ;क्योंकि तारीकी मिटती जाती है और हक़ीक़ी नूर चमकना शुरू हो गया है ।

⁹ 'जो कोई ये कहता है कि मैं नूर में हूँ और अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है, वो अभी तक अंधेरे ही मैं है ।¹⁰ 'जो कोई अपने भाई से मुहब्बत रखता है वो नूर में रहता है और ठोकर नहीं खाता ।¹¹ लेकिन जो अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है वो अंधेरे में है और अंधेरे ही में चलता है ,और ये नहीं जानता कि कहाँ जाता है क्योंकि अंधेरे ने उसकी आँखें अन्धी कर दी हैं ।

¹² 'ऐ बच्चो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि उसके नाम से तुम्हारे गुनाह मु'आफ़ हुए ।¹³ 'ऐ बुजुर्गो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि जो इब्तिदा से है उसे तुम जान गए हो ।ऐ जवानो !मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम उस शैतान पर ग़ालिब आ गए हो ।ऐ लड़कों ! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम बाप को जान गए हो।¹⁴ 'ऐ बुजुर्गो! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि जो शुरू से है उसको तुम जान गए हो ।ऐ जवानो !मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम मज़बूत हो ,और खुदा का कलाम तुम में क़ायम रहता है ,और तुम उस शैतान पर ग़ालिब आ गए हो ।

¹⁵ 'न दुनिया से मुहब्बत रखो ,न उन चीज़ों से जो दुनियाँ में हैं। जो कोई दुनिया से मुहब्बत रखता है ,उसमें बाप की मुहब्बत नहीं ।¹⁶ 'क्योंकि जो कुछ दुनिया में है ,या'नी जिसकी ख़्वाहिश और आँखों की ख़्वाहिश और ज़िन्दगी की शेखी ,वो बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ़ से है ।¹⁷ 'दुनियाँ और उसकी ख़्वाहिश दोनों मिटती जाती है ,लेकिन जो खुदा की मर्ज़ी पर चलता है वो हमेशा तक क़ायम रहेगा ।

¹⁸ 'ऐ लड़कों ! ये आखिरी वक़्त है ;जैसा तुम ने सुना है कि मुख़ालिफ़-ए-मसीह आनेवाला है ,उसके मुवाफ़ि़क़ अब भी बहुत से मुख़ालिफ़-ए-मसीह पैदा हो गए हैं । इससे हम जानते हैं ये आखिरी वक़्त है¹⁹ वो निकले तो हम ही में से ,मगर हम में से थे नहीं ।इसलिए कि अगर हम में से होते तो हमारे साथ रहते ,लेकिन निकल इस लिए गए कि ये ज़ाहिर हो कि वो सब हम में से नहीं हैं ।

²⁰ 'और तुम को तो उस कुदूस की तरफ़ से मसह किया गया है ,और तुम सब कुछ जानते हो ।²¹ 'मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम सच्चाई को नहीं जानते ,बल्कि इसलिए कि तुम उसे जानते हो ,और इसलिए कि कोई झूट सच्चाई की तरफ़ से नहीं है ।

²² 'कौन झूठा है? सिवा उसके जो ईसा'के मसीह होने का इन्कार करता है। मुख़ालिफ़-ए-मसीह वही है जो बाप और बेटे का इन्कार करता है ।²³ 'जो कोई बेटे का इन्कार करता है उसके पास बाप भी नहीं :जो बेटे का इकरार करता है उसके पास बाप भी है ।

²⁴ 'जो तुम ने शुरू से सुना है अगर वो तुम में क़ायम रहे ,तो तुम भी बेटे और बाप में क़ायम रहोगे ।²⁵ 'और जिसका उसने हम से वा'दा किया, वो हमेशा की ज़िन्दगी है ।²⁶ 'मैंने ये बातें तुम्हें उनके बारे में लिखी हैं ,जो तुम्हें धोखा देते हैं ;

²⁷ 'और तुम्हारा वो मसह जो उसकी तरफ़ से किया गया ,तुम में क़ायम रहता है; और तुम इसके मोहताज नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए ,बल्कि जिस तरह वो मसह जो उसकी तरफ़ से किया गया ,तुम्हें सब बातें सिखाता है और सच्चा है और झूठा नहीं ;और जिस तरह उसने तुम्हें सिखाया उसी तरह तुम उसमें क़ायम रहते हो ।²⁸ 'गरज़ ऐ बच्चो !उसमें क़ायम रहो ,ताकि जब वो ज़ाहिर हो तो हमें दिलेरी हो और हम उसके आने पर उसके सामने शर्मिन्दा न हों ।²⁹ 'अगर तुम जानते हो कि वो रास्तबाज़ है ,तो ये भी जानते हो कि जो कोई रास्तबाज़ी के काम करता है वो उससे पैदा हुआ है ।

Chapter 3

¹देखो ,बाप ने हम से कैसी मुहब्बत की है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द कहलाए ,और हम है भी | दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती कि उसने उसे भी नहीं जाना |

²'अज़ीजो! हम इस वक़्त खुदा के फ़र्ज़न्द हैं ,और अभी तक ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे !इतना जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे ,क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वो है | ³और जो कोई उससे ये उम्मीद रखता है ,अपने आपको वैसा ही पाक करता है जैसा वो पाक है |

⁴जो कोई गुनाह करता है ,वो शरीयत की मुखालिफ़त करता है; और गुनाह शरीयत ' की मुखालिफ़त ही है | ⁵और तुम जानते हो कि वो इसलिए ज़ाहिर हुआ था कि गुनाहों को उठा ले जाए ,और उसकी ज़ात में गुनाह नहीं | ⁶जो कोई उसमें क़ायम रहता है वो गुनाह नहीं करता ;जो कोई गुनाह करता है ,न उसने उसे देखा है और न जाना है |

⁷ऐ बच्चो !किसी के धोखे में न आना | जो रास्तबाज़ी के काम करता है ,वही उसकी तरह रास्तबाज़ है | ⁸जो शख्स गुनाह करता है वो शैतान से है, क्योंकि शैतान शुरू' ही से गुनाह करता रहा है | खुदा का बेटा इसलिए ज़ाहिर हुआ था कि शैतान के कामों को मिटाए |

⁹जो कोई खुदा से पैदा हुआ है वो गुनाह नहीं करता ,क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है ;बल्कि वो गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि खुदा से पैदा हुआ है |

¹⁰इसी से खुदा के फ़र्ज़न्द और शैतान के फ़र्ज़न्द ज़ाहिर होते हैं | जो कोई रास्तबाज़ी के काम नहीं करता वो खुदा से नहीं ,और वो भी नहीं जो अपने भाई से मुहब्बत नहीं रखता |

¹¹क्योंकि जो पैग़ाम तुम ने शुरू' से सुना वो ये है कि हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें | ¹²और क्राइन की तरह न बनें जो उस शरीर से था ,और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया ;और उसने किस वास्ते उसे क़त्ल किया ?इस वास्ते कि उसके काम बुरे थे ,और उसके भाई के काम रास्ती के थे |

¹³ऐ भाइयों !अगर दुनिया तुम से 'दुश्मनी रखती है तो ताअ'ज्जुब न करो | ¹⁴हम तो जानते हैं कि मौत से निकलकर ज़िन्दगी में दाखिल हो गए ,क्योंकि हम भाइयों से मुहब्बत रखते हैं | जो मुहब्बत नहीं रखता वो मौत की हालत में रहता है | ¹⁵जो कोई अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है , वो खूनी है और तुम जानते हो कि किसी खूनी में हमेशा की ज़िन्दगी मौजूद नहीं रहती |

¹⁶हम ने मुहब्बत को इसी से जाना है कि उसने हमारे वास्ते अपनी जान दे दी ,और हम पर भी भाइयों के वास्ते जान देना फ़र्ज़ है | ¹⁷जिस किसी के पास दुनिया का माल हो और वो अपने भाई को मोहताज देखकर रहम करने में देर करे ,तो उसमें खुदा की मुहब्बत क्यूंकर क़ायम रह सकती है ? ¹⁸ऐ बच्चो! हम कलाम और ज़बान ही से नहीं, बल्कि काम और सच्चाई के ज़रिए से भी मुहब्बत करें |

¹⁹इससे हम जानेंगे कि हक़ के हैं ,और जिस बात में हमारा दिल हमें इल्ज़ाम देगा ,उसके बारे में हम उसके हुज़ूर अपनी दिलजम'ई करेंगे ; ²⁰क्योंकि खुदा हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है | ²¹ऐ 'अज़ीजो! जब हमारा दिल हमें इल्ज़ाम नहीं देता ,तो हमें खुदा के सामने दिलेरी हो जाती है ; ²²और जो कुछ हम माँगते हैं वो हमें उसकी तरफ़ से मिलता है ,क्योंकि हम उसके हुक्मों पर अमल करते हैं और जो कुछ वो पसन्द करता है उसे बजा लाते हैं |

²³और उसका हुक्म ये है कि हम उसके बेटे ईसा' मसीह" के नाम पर ईमान लाएँ ,जैसा उसने हमें हुक्म दिया उसके मुवाफ़िक़ आपस में मुहब्बत रखें | ²⁴और जो उसके हुक्मों पर 'अमल करता है,वो इसमें और ये उसमें क़ायम रहता है ;और इसी से या'नी उस पाक रूह से जो उसने हमें दिया है ,हम जानते हैं कि वो हम में क़ायम रहता है |

Chapter 4

¹ऐ 'अज़ीज़ो! हर एक रूह का यक़ीन न करो, बल्कि रूहों को आज़माओ कि वो ख़ुदा की तरफ़ से हैं या नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे नबी दुनियाँ में निकल खड़े हुए हैं। ²ख़ुदा के रूह को तुम इस तरह पहचान सकते हो कि जो कोई रूह इकरार करे कि ईसा' मसीह" मुजस्सिम होकर आया है, वो ख़ुदा की तरफ़ से है; ³और जो कोई रूह ईसा' का इकरार न करे, वो ख़ुदा की तरफ़ से नहीं और यही मुख़ालिफ़-ऐ-मसीह की रूह है; जिसकी ख़बर तुम सुन चुके हो कि वो आनेवाली है, बल्कि अब भी दुनिया में मौजूद है।

⁴ऐ बच्चों! तुम ख़ुदा से हो और उन पर ग़ालिब आ गए हो, क्योंकि जो तुम में है वो उससे बड़ा है जो दुनिया में है। ⁵वो दुनिया से हैं इस वास्ते दुनियाँ की सी कहते हैं, और दुनियाँ उनकी सुनती है। ⁶हम ख़ुदा से हैं। जो ख़ुदा को जानता है, वो हमारी सुनता है; जो ख़ुदा से नहीं, वो हमारी नहीं सुनता। इसी से हम हक़ की रूह और गुमराही की रूह को पहचान लेते हैं।

⁷ऐ अज़ीज़ो! हम इस वक़्त ख़ुदा के फ़र्ज़न्द हैं, और अभी तक ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे, क्योंकि उसको वैसे ही देखेंगे जैसा वो है। ⁸जो मुहब्बत नहीं रखता वो ख़ुदा को नहीं जानता, क्योंकि ख़ुदा मुहब्बत है।

⁹जो मुहब्बत ख़ुदा को हम से है, वो इससे ज़ाहिर हुई कि ख़ुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा है ताकि हम उसके वसीले से ज़िन्दा रहें। ¹⁰मुहब्बत इसमें नहीं कि हम ने ख़ुदा से मुहब्बत की, बल्कि इसमें है कि उसने हम से मुहब्बत की और हमारे गुनाहों के कफ़ारे के लिए अपने बेटे को भेजा।

¹¹ऐ 'अज़ीज़ो! जब ख़ुदा ने हम से ऐसी मुहब्बत की, तो हम पर भी एक दूसरे से मुहब्बत रखना फ़र्ज़ है। ¹²ख़ुदा को कभी किसी ने नहीं देखा; अगर हम एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं, तो ख़ुदा हम में रहता है और उसकी मुहब्बत हमारे दिल में कामिल हो गई है। ¹³चूँकि उसने अपने रूह में से हमें दिया है, इससे हम जानते हैं कि हम उसमें क़ायम रहते हैं और वो हम में। ¹⁴और हम ने देख लिया है और गवाही देते हैं कि बाप ने बेटे को दुनिया का मुन्जी करके भेजा है।

¹⁵जो कोई इकरार करता है कि ईसा' ख़ुदा का बेटा है, ख़ुदा उसमें रहता है और वो ख़ुदा में। ¹⁶जो मुहब्बत ख़ुदा को हम से है उसको हम जान गए और हमें उसका यक़ीन है। ख़ुदा मुहब्बत है, और जो मुहब्बत में क़ायम रहता है वो ख़ुदा में क़ायम रहता है, और ख़ुदा उसमें क़ायम रहता है।

¹⁷इसी वजह से मुहब्बत हम में कामिल हो गई, ताकि हमें 'अदालत के दिन दिलेरी हो; क्योंकि जैसा वो है वैसे ही दुनिया में हम भी हैं। ¹⁸मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता, बल्कि कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को दूर कर देती है; क्योंकि ख़ौफ़ से 'अज़ाब होता है और कोई ख़ौफ़ करनेवाला मुहब्बत में कामिल नहीं हुआ।

¹⁹हम इस लिए मुहब्बत रखते हैं कि पहले उसने हम से मुहब्बत रखी। ²⁰अगर कोई कहे, "मैं ख़ुदा से मुहब्बत रखता हूँ" और वो अपने भाई से 'दुश्मनी रखे तो झुटा है: क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता, वो ख़ुदा से भी जिसे उसने नहीं देखा मुहब्बत नहीं रख सकता। ²¹और हम को उसकी तरफ़ से ये हुक्म मिला है कि जो ख़ुदा से मुहब्बत रखता है वो अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

Chapter 5

'जिसका ये ईमान है कि ईसा' ही मसीह है, वो खुदा से पैदा हुआ है; और जो कोई बाप से मुहब्बत रखता है, वो उसकी औलाद से भी मुहब्बत रखता है।² जब हम खुदा से मुहब्बत रखते और उसके हुक्मों पर 'अमल करते हैं', तो इससे मा'लूम हो जाता है कि खुदा के फ़र्ज़न्दों से भी मुहब्बत रखते हैं।³ और खुदा की मुहब्बत ये है कि हम उसके हुक्मों पर 'अमल करें, और उसके हुक्म सख्त नहीं।

⁴जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो दुनिया पर ग़ालिब आता है; और वो ग़ल्बा जिससे दुनिया मग़लूब हुई है, हमारा ईमान है।⁵ दुनिया को हराने वाला कौन है? सिवा उस शख्स के जिसका ये ईमान है कि ईसा' खुदा का बेटा है।

⁶यही है वो जो पानी और खून के वसीले से आया था, या 'नी ईसा' मसीह: वो न फ़क़त पानी के वसीले से, बल्कि पानी और खून दोनों के वसीले से आया था।

⁷और जो गवाही देता है वो रूह है, क्योंकि रूह सच्चाई है।⁸ और गवाही देनेवाले तीन हैं: रूह पानी और खून; ये तीन एक बात पर मुत्तफ़ि़क़ हैं।

⁹जब हम आदमियों की गवाही कुबूल कर लेते हैं, तो खुदा की गवाही तो उससे बढ़कर है; और खुदा की गवाही ये है कि उसने अपने बेटे के हक़ में गवाही दी है।¹⁰ जो खुदा के बेटे पर ईमान रखता है, वो अपने आप में गवाही रखता है। जिसने खुदा का यक़ीन नहीं किया उसने उसे झूटा ठहराया, क्योंकि वो उस गवाही पर जो खुदा ने अपने बेटे के हक़ में दी है, ईमान नहीं लाया।

¹¹और वो गवाही ये है, कि खुदा ने हमें हमेशा की ज़िन्दगी बख़्शी, और ये ज़िन्दगी उसके बेटे में है।¹² जिसके पास बेटा है, उसके पास ज़िन्दगी है, और जिसके पास खुदा का बेटा नहीं, उसके पास ज़िन्दगी भी नहीं।

¹³मैंने तुम को जो खुदा के बेटे के नाम पर ईमान लाए हो, ये बातें इसलिए लिखी कि तुम्हें मा'लूम हो कि हमेशा की ज़िन्दगी रखते हो।¹⁴ और हमें जो उसके सामने दिलेरी है, उसकी वजह ये है कि अगर उसकी मज़ी के मुवाफ़ि़क़ कुछ माँगते हैं, तो वो हमारी सुनता है।¹⁵ और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम माँगते हैं, वो हमारी सुनता है, तो ये भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उससे माँगा है वो पाया है।

¹⁶अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका नतीजा मौत न हो तो दु'आ करे खुदा उसके वसीले से ज़िन्दगी बख़्शेगा। उन्हीं को जिन्होंने ऐसा गुनाह नहीं किया जिसका नतीजा मौत हो, गुनाह ऐसा भी है जिसका नतीजा मौत है; इसके बारे में दु'आ करने को मैं नहीं कहता।¹⁷ है तो हर तरह की नारास्ती गुनाह, मगर ऐसा गुनाह भी है जिसका नतीजा मौत नहीं।

¹⁸हम जानते हैं कि जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो गुनाह नहीं करता; बल्कि उसकी हिफ़ाज़त वो करता है जो खुदा से पैदा हुआ और शैतान उसे छूने नहीं पाता।¹⁹ हम जानते हैं कि हम खुदा से हैं, और सारी दुनिया उस शैतान के क़ब्ज़े में पड़ी हुई है।

²⁰और ये भी जानते हैं कि खुदा का बेटा आ गया है, और उसने हमें समझ बख़्शी है ताकि उसको जो हक़ीक़ी है जानें और हम उसमें जो हक़ीक़ी है, या 'नी उसके बेटे ईसा' मसीह" में हैं, | हक़ीक़ी खुदा और हमेशा की ज़िन्दगी यही है।²¹ ऐ बच्चों! अपने आपको बुतों से बचाए रखवो।

यूहन्ना का दूसरा 'आम खत

Chapter 1

¹मुझ बुजुर्ग की तरफ़ से उस बरगुज़ीदा बीवी और उसके फ़र्ज़न्दों के नाम खत, जिनसे मैं उस सच्चाई की वजह से सच्ची मुहब्बत रखता हूँ, जो हम में क़ामय रहती है, और हमेशा तक हमारे साथ रहेगी,² और सिर्फ़ मैं ही नहीं बल्कि वो सब भी मुहब्बत रखते हैं, जो हक़ से वाकिफ़ हैं।³ खुदा बाप और बाप के बेटे 'ईसा' मसीह की तरफ़ से फ़ज़ल और रहम और इल्मीनान, सच्चाई और मुहब्बत समेत हमारे शामिल-ए-हाल रहेंगे।

⁴मैं बहुत खुश हुआ कि मैंने तेरे कुछ लड़कों को उस हुक्म के मुताबि़क़, जो हमें बाप की तरफ़ से मिला था, हक़ीक़त में चलते हुए पाया।⁵ अब ऐ बीवी! मैं तुझे कोई नया हुक्म नहीं, बल्कि वही जो शुरू' से हमारे पास है लिखता और तुझ से मिन्नत करके कहता हूँ कि आओ, हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें।⁶ और मुहब्बत ये है कि हम उसके हुक्मों पर चलें। ये वही हुक्म है जो तुम ने शुरू' से सुना है कि तुम्हें इस पर चलना चाहिए।

⁷क्योंकि बहुत से ऐसे गुमराह करने वाले दुनिया में निकल खड़े हुए हैं, जो 'ईसा' मसीह के मुजस्सिम होकर आने का इक़रार नहीं करते। गुमराह करनेवाला मुख़ालिफ़-ए-मसीह यही है।⁸ अपने आप में खबरदार रहो, ताकि जो मेहनत हम ने की है वो तुम्हारी वजह से ज़ायान न हो जाए, बल्कि तुम को पूरा अज़्र मिले।

⁹जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की ता'लीम पर क़ायम नहीं रहता, उसके पास खुदा नहीं। जो उस ता'लीम पर क़ायम रहता है, उसके पास बाप भी है और बेटा भी।¹⁰ अगर कोई तुम्हारे पास आए और ये ता'लीम न दे, तो न उसे घर में आने दो और न सलाम करो।¹¹ क्योंकि जो कोई ऐसे शख्स को सलाम करता है, वो उसके बुरे कामों में शरीक होता है।

¹²मुझे बहुत सी बातें तुम को लिखनी हैं, मगर कागज़ और स्याही से लिखना नहीं चाहता; बल्कि तुम्हारे पास आने और रू-ब-रू बातचीत करने की उम्मीद रखता हूँ, ताकि तुम्हारी खुशी कामिल हो।¹³ तेरी बरगुज़ीदा बहन के लड़के तुझे सलाम कहते हैं।

यूहन्ना का तीसरा 'आम खत

Chapter 1

¹मुझ बुजुर्ग की तरफ से उस प्यारे गियुस के नाम खत ,जिससे मैं सच्ची मुहब्बत रखता हूँ | ²ऐ प्यारे ! मैं ये दु'आ करता हूँ कि जिस तरह तू रूहानी तरक्की कर रहा है ,इसी तरह तू सब बातों में तरक्की करे और तन्दुरुस्त रहे | ³क्योंकि जब भाइयों ने आकर तेरी उस सच्चाई की गवाही दी ,जिस पर तू हक़ीक़त में चलता है ,तो मैं निहायत खुश हुआ | ⁴मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं कि मैं अपने बेटो को हक़ पर चलते हुए सुनूँ |

⁵ऐ प्यारे !जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है जो परदेसी भी हैं ,वो ईमानदारी से करता है | ⁶उन्होंने कलीसिया के सामने तेरी मुहब्बत की गवाही दी थी | अगर तू उन्हें उस तरह रवाना करेगा ,जिस तरह खुदा के लोगों को मुनासिब है तो अच्छा करेगा | ⁷क्योंकि वो उस नाम की खातिर निकले हैं ,और ग़ैर-क्रौमों से कुछ नहीं लेते | ⁸पस ऐसों की खातिरदारी करना हम पर फ़र्ज़ है ,ताकि हम भी हक़ की ताईद में उनके हम ख़िदमत हों |

⁹मैंने कलीसिया को कुछ लिखा था , मगर दियुत्रिफ़ेस जो उनमे बड़ा बनना चाहता है ,हमें कुबूल नहीं करता | ¹⁰पस जब मैं आऊँगा तो उसके कामों को जो वो कर रहा है ,याद दिलाऊँगा ,कि हमारे हक़ में बुरी बातें बकता है ; और इन पर सब्र न करके खुद भी भाइयों को कुबूल नहीं करता ,और जो कुबूल करना चाहते हैं उनको भी मना' करता है और कलीसिया से निकाल देता है |

¹¹ऐ प्यारे !बदी की नहीं बल्कि नेकी की पैरवी कर |नेकी करनेवाला खुदा से है; बदी करनेवाले ने खुदा को नहीं देखा | ¹²देमेत्रियुस के बारे में सब ने और खुद हक़ ने भी गवाही दी ,और हम भी गवाही देते हैं ,और तू जानता है कि हमारी गवाही सच्ची है |

¹³मुझे लिखना तो तुझ को बहुत कुछ था ,मगर स्याही और क़लम से तुझे लिखना नहीं चाहता | ¹⁴बल्कि तुझ से जल्द मिलने की उम्मीद रखता हूँ , उस वक़्त हम रू-ब-रू बातचीत करेंगे | ¹⁵तुझे इत्मीनान हासिल होता रहे | यहाँ के दोस्त तुझे सलाम कहते हैं | तू वहाँ के दोस्तों से नाम-ब-नाम सलाम कह |

यहूदाह का 'आम खत

Chapter 1

¹यहूदाह की तरफ़ से जो मसीह 'ईसा' का बन्दा और या'कूब का भाई ,और उन बुलाए हुआओं के नाम जो खुदा बाप में प्यारे और 'ईसा' मसीह के लिए महफूज़ हैं | ²रहम , इत्मीनान और मुहब्बत तुम को ज़्यादा हासिल होती रहे |

³ऐ प्यारों! जिस वक़्त मैं तुम को उस नजात के बारे में लिखने में पूरी कोशिश कर रहा था जिसमें हम सब शामिल हैं , तो मैंने तुम्हें ये नसीहत लिखना ज़रूर जाना कि तुम उस ईमान के वास्ते मेहनत करो जो मुकद्दसों को एक बार सौंपा गया था | ⁴क्योंकि कुछ ऐसे शख्स चुपके से हम में आ मिले हैं ,जिनकी इस सज़ा का ज़िक्र पाक कलाम में पहले से लिखा गया था :ये बेदीन हैं ,और हमारे खुदा के फ़ज़ल को बुरी आदतों से बदल डालते हैं ,और हमारे वाहिद मालिक और खुदावन्द 'ईसा' मसीह का इन्कार करते हैं |

⁵पस अगरचे तुम सब बातें एक बार जान चुके हो ,तोभी ये बात तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि खुदावन्द ने एक उम्मत को मुल्क-ए-मिस्र में से छुड़ाने के बा'द ,उन्हें हलाक किया जो ईमान न लाए | ⁶और जिन फ़रिश्तों ने अपनी हुकुमत को क़ायम न रखखा बल्कि अपनी ख़ास जगह को छोड़ दिया ,उनको उसने हमेशा की क़ैद में अंधेरे के अन्दर रोज़-ए-'अज़ीम की 'अदालत तक रखखा है

⁷इसी तरह सदोम और 'अमूरा और उसके आसपास के शहर ,जो इनकी तरह ज़िनाकारी में पड़ गए और ग़ैर जिस्म की तरफ़ राग़िब हुए ,हमेशा की आग की सज़ा में गिरफ़्तार होकर जा-ए-'इबरत ठहरे हैं | ⁸तोभी ये लोग अपने वहमों में मशगूल होकर उनकी तरह जिस्म को नापाक करते ,और हुकुमत को नाचीज़ जानते ,और 'इज़ज़तदारों पर ला'न ता'न करते हैं |

⁹लेकिन मुकर्रब फ़रिश्ते मीकाईल ने मूसा की लाश के बारे में इब्लीस से बहस-ओ-तकरार करते वक़्त , ला'न ता'न के साथ उस पर नालिश करने की हिम्मत न की ,बल्कि ये कहा , " खुदावन्द तुझे मलामत करे | " ¹⁰मगर ये जिन बातों को नहीं जानते उन पर ला'न ता'न करते हैं ,और जिनको बे अक्ल जानवरों की तरह मिज़ाजी तौर पर जानते हैं ,उनमें अपने आप को खराब करते हैं | ¹¹इन पर आफ़सोस! कि ये क़ाईन की राह पर चले ,और मज़दूरी के लिए बड़ी लालच से बिल'आम की सी गुमराही इख्तियार की ,और कोरह की तरह मुख़ालिफ़त कर के हलाक हुए |

¹²ये तुम्हारी मुहब्बत की दावतों में तुम्हारे साथ खाते -पीते वक़्त ,गोया दरिया की छिपी चटानें हैं | ये बेधड़क अपना पेट भरनेवाले चरवाहे हैं | ये बे-पानी के बादल हैं ,जिन्हें हवाएँ उड़ा ले जाती हैं | ये पतझड़ के बे-फल दरख़्त हैं ,जो दोनों तरफ़ से मुर्दा और जड़ से उखड़े हुए ¹³ये समुन्दर की पुर जोश मौँजें ,जो अपनी बेशर्मी के झाग उछालती हैं | ये वो आवारा गर्द सितारे हैं ,जिनके लिए हमेशा तक बेहद तारीकी धरी है |

¹⁴इनके बारे में हनूक ने भी ,जो आदम से सातवीं पुश्त में था ,ये पेशीनगोई की थी , "देखो ,खुदावन्द अपने लाखों मुकद्दसों के साथ आया , ¹⁵ताकि सब आदमियों का इन्साफ़ करे ,और सब बेदीनों को उनकी बेदीनी के उन सब कामों के ज़रिये से ,जो उन्होंने बेदीनी से किए हैं ,और उन सब सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसकी मुख़ालिफ़त में कही हैं कुसूरवार ठहराए | " ¹⁶ये बड़बड़ाने वाले और शिकायत करने वाले हैं ,और अपनी ख़्वाहिशों के मुवाफ़ि़क़ चलते हैं ,और अपने मुँह से बड़े बोल बोलते हैं ,और फ़ायदे ' के लिए लोगों की ता'रीफ़ करते हैं |

¹⁷लेकिन ऐ प्यारों! उन बातों को याद रखो जो हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के रसूल पहले कह चुके हैं | ¹⁸वो तुम से कहा करते थे कि , "आखिरी ज़माने में ऐसे ठठा करने वाले होंगे ,जो अपनी बेदीनी की ख़्वाहिशों के मुवाफ़ि़क़ चलेंगे | " ¹⁹ये वो आदमी हैं जो फूट डालते हैं ,और नफ़सानी हैं और रूह से बे-बहरा |

²⁰मगर तुम ऐ प्यारों! अपने पाक तरीन ईमान में अपनी तरक्की करके और रूह-उल-कुदूस में दु'आ करके , ²¹अपने आपको 'खुदा' की मुहब्बत में क़ायम रखो; और हमेशा की ज़िन्दगी के लिए हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह की रहमत के इन्तिज़ार में रहो |

²²और कुछ लोगों पर जो शक़ में हैं रहम करो; ²³और कुछ को झपट कर आग में से निकालो ,और कुछ पर ख़ौफ़ खाकर रहम करो ,बल्कि उस पोशाक से भी नफ़रत करो जो जिस्म की वजह से दागी हो गई हो |

²⁴अब जो तुम को ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपने पुर जलाल हुज़ूर में कमाल खुशी के साथ बे'ऐब करके खड़ा कर सकता है, ²⁵उस खुदा-ए-वाहिद का जो हमारा मुन्जी है, जलाल और 'अज़मत और सल्तनत और इख्तियार, हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के वसीले से, जैसा पहले से है, अब भी हो और हमेशा रहे।आमीन।

यूहन्ना 'आरिफ़ का मुकाशफ़ा

Chapter 1

¹ईसा ' मसीह का मुकाशफ़ा, जो उसे खुदा की तरफ़ से इसलिए हुआ कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाए जिनका जल्द होना ज़रूरी है; और उसने अपने फ़रिश्ते को भेज कर उसकी मा'रिफ़त उन्हें अपने अपने बन्दे यूहन्ना पर ज़ाहिर किया | ²यूहन्ना ने खुदा का कलाम और ईसा' मसीह की गवाही की या'नी उन सब चीज़ों की जो उसने देखी थीं गवाही दी | ³इस नबू'व्वत की किताब का पढ़ने वाले और उसके सुनने वाले और जो कुछ इस में लिखा है, उस पर अमल करने वाले मुबारक हैं; क्योंकि वक्त्र नज़दीक है |

⁴यूहन्ना की जानिब से उन सात कलीसियाओं के नाम जो आसिया सूबा में हैं | उसकी तरफ़ से जो है, और जो था, और जो आनेवाला है, और उन सात रुहों की तरफ़ से जो उसके तख़्त के सामने हैं | ⁵और ईसा ' मसीह की तरफ़ से जो सच्चे गवाह और मुर्दों में से जी उठनेवालों में पहलौठा और दुनियाँ के बादशाहों पर हाकिम है, तुम्हें फ़ज़ल और इल्मीनान हासिल होता रहे | जो हम से मुहब्बत रखता है, और जिसने अपने खून के वसीले से हम को गुनाहों से मु'आफ़ी बख़्शी, ⁶और हम को एक बादशाही भी दी और अपने खुदा और बाप के लिए काहिन भी बना दिया | उसका जलाल और बादशाही हमेशा से हमेशा तक रहे | आमीन | ⁷देखो, वो बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, और जिन्होंने उसे छेदा था वो भी देखेंगे, और ज़मीन पर के सब क़बीले उसकी वजह से सीना पीटेंगे | बेशक | आमीन | ⁸खुदावन्द खुदा जो है और जो था और जो आनेवाला है, या'नी क़ादिर-ए-मुल्क़ फ़रमाता है, "मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ | " ⁹मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और ईसा ' की मुसीबत और बादशाही और सब्र में तुम्हारा शरीक हूँ, खुदा के कलाम और ईसा ' के बारे में गवाही देने के ज़रिए उस टापू में था, जो पत्मुस कहलाता है, कि ¹⁰खुदावन्द के दिन रूह में आ गया और अपने पीछे नरसिंगे की सी ये एक बड़ी आवाज़ सुनी, ¹¹"जो कुछ तू देखता है उसे एक किताब में लिख कर उन सातों शहरों की सातों कलीसियाओं के पास भेज दे या'नी इफ़्रिसुस, और सुमरना, और परिगमुन, और थुवातीरा, और सरदीस, और फ़िलदिल्फ़िया, और लौदोकिया में | "

¹²मैंने उस आवाज़ देनेवाले को देखने के लिए मुँह फेरा, जिसने मुझ से कहा था; और फिर कर सोने के सात चिराग़दान देखे, ¹³और उन चिराग़दानों के बीच में आदमज़ाद सा एक आदमी देखा, जो पाँव तक का जामा पहने हुए था |

¹⁴उसका सिर और बाल सफ़ेद ऊन बल्कि बर्फ़ की तरह सफ़ेद थे, और उसकी आँखें आग के शो'ले की तरह थीं | ¹⁵और उसके पाँव उस ख़ालिस पीतल के से थे जो भट्टी में तपाया गया हो, और उसकी आवाज़ ज़ोर के पानी की सी थी | ¹⁶और उसके दहने हाथ में सात सितारे थे, और उसके मुँह में से एक दोधारी तेज़ तलवार निलकती थी; और उसका चेहरा ऐसा चमकता था जैसे तेज़ी के वक्त्र आफ़ताब |

¹⁷जब मैंने उसे देखा तो उसके पाँव में मुर्दा सा गिर पड़ा | और उसने ये कहकर मुझ पर अपना दहना हाथ रखखा, " ख़ौफ़ न कर ; मैं अव्वल और आखिर, " ¹⁸और ज़िन्दा हूँ | मैं मर गया था, और देख हमेशा से हमेशा तक रहूँगा; और मौत और 'आलम-ए-अर्वाह की कुन्जियाँ मेरे पास हैं |

¹⁹पस जो बातें तू ने देखीं और जो हैं और जो इनके बा'द होने वाली हैं, उन सब को लिख ले | ²⁰या'नी उन सात सितारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दहने हाथ में देखा था , और उन सोने के सात चिराग़दानों का : वो सात सितारे तो सात कलीसियाओं के फ़रिश्ते हैं, और वो सात चिराग़दान कलीसियाएँ हैं |

Chapter 2

¹इफ्रिसुस की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख : "जो अपने दहने हाथ में सितारे लिए हुए है, और सोने के सातों चरागादानों में फिरता है, वो ये फ़रमाया है कि ।

²"मैं तेरे काम और तेरी मशक्कत और तेरा सब्र तो जानता हूँ; और ये भी कि तू बदियों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को रसूल कहते हैं और हैं नहीं, तू ने उनको आजमा कर झूटा पाया ।"

³और तू सब्र करता है, और मेरे नाम की खातिर मुसीबत उठाते उठाते थका नहीं ।⁴मगर मुझ को तुझ से ये शिकायत है कि तू ने अपनी पहली सी मुहब्बत छोड़ दी ।⁵पस खयाल कर कि तू कहाँ से गिरा । और तौबा न करेगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरे चिरागादान को उसकी जगह से हटा दूँगा ।

⁶अलबत्ता तुझ में ये बात तो है कि तू निकुलियों के कामों से नफ़रत रखता है, जिनसे मैं भी नफ़रत रखता हूँ ।⁷जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है । जो ग़ालिब आए, मैं उसे उस ज़िन्दगी के दरख़्त में से जो ख़ुदा की जन्नत में है, फल खाने को दूँगा ।

⁸"और समुरना की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख : "जो अव्वल-ओ-आखिर है, और जो मर गया था और ज़िन्दा हुआ, वो ये फ़रमाता है कि "⁹मैं तेरी मुसीबत और ग़रीबी को जानता हूँ (मगर तू दौलतमन्द है), और जो अपने आप को यहूदी कहते हैं, और हैं नहीं बल्कि शैतान के गिरोह हैं, उनके ला'न ता'न को भी जानता हूँ ।

¹⁰जो दुख तुझे सहने होंगे उनसे ख़ौफ़ न कर, देखो शैतान तुम में से कुछ को कैद में डालने को है ताकि तुम्हारी आजमाइश पूरी हो और दस दिन तक मुसीबत उठाओगे जान देने तक वफ़ादार रहो तो मैं तुझे ज़िन्दगी का ताज दूँगा ।¹¹जिसके कान हों वो सुने कि पाक रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है । जो ग़ालिब आए, उसको दूसरी मौत से नुक्सान न पहुँचेगा ।

¹²"और पिरगुमन की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख : "जिसके पास दोधारी तेज़ तलवार है, वो फ़रमाता है कि¹³"मैं ये तो जानता हूँ कि शैतान की तख़्त गाह में सुकूनत रखता है, और मेरे नाम पर क़ायम रहता है; और जिन दिनों में मेरा वफ़ादार शहीद इन्तपास तुम में उस जगह क़त्ल हुआ था जहाँ शैतान रहता है, उन दिनों में भी तू ने मुझ पर ईमान रखने से इनकार नहीं किया ।

¹⁴लेकिन मुझे चन्द बातों की तुझ से शिकायत है, इसलिए कि तेरे यहाँ कुछ लोग बिल'आम की ता'लीम माननेवाले हैं, जिसने बलक़ को बनी-ईसराइल के सामने ठोकर खिलाने वाली चीज़ रखने की ता'लीम दी, या'नी ये कि वो बुतों की कुर्बानियाँ खाएँ और हरामकारी करें ।¹⁵चुनाँचे तेरे यहाँ भी कुछ लोग इसी तरह नीकुलियों की ता'लीम के माननेवाले हैं ।

¹⁶पस तौबा कर, नहीं तो मैं तेरे पास जल्द आकर अपने मुँह की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा ।¹⁷जिसके कान हों वो सुने कि पाक रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है । जो ग़ालिब आएगा, मैं उसे आसमानी खाने में से दूँगा, और एक सफ़ेद पत्थर दूँगा । उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ होगा, जिसे पानेवाले के सिवा कोई न जानेगा ।

¹⁸"और थुवातीरा की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख : "ख़ुदा का बेटा जिसकी आँखें आग के शो'ले की तरह और पावें ख़ालिस पीतल की तरह हैं, ये फ़रमाता है कि¹⁹"मैं तेरे कामों और मुहब्बत और ईमान और ख़िदमत और सब्र को तो जानता हूँ, और ये भी कि तेरे पिछले काम पहले कामों से ज़्यादा हैं ।

²⁰पर मुझे तुझ से ये शिकायत है कि तू ने उस औरत ईज़बिल को रहने दिया है जो अपने आपको नबिया कहती है, और मेरे बन्दों को हरामकारी करने और बुतों की कुर्बानियाँ खाने की ता'लीम देकर गुमराह करती है²¹मैंने उसको तौबा करने की मुहलत दी, मगर वो अपनी हरामकारी से तौबा करना नहीं चाहती ।

²²देख, मैं उसको बिस्तर पर डालता हूँ; और जो ज़िना करते हैं अगर उसके से कामों से तौबा न करें, तो उनको बड़ी मुसीबत में फँसाता हूँ;²³और उसके मानने वालों को जान से मारूँगा, और सब कलीसियाओं को मा'लूम होगा कि गुर्दों और दिलों का जाचने वाला मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के जैसा बदला दूँगा ।

²⁴मगर तुम थुवातीरा के बाक़ी लोगों से, जो उस ता'लीम को नहीं मानते और उन बातों से जिन्हें लोग शैतान की गहरी बातें कहते हैं ना जानते हो, ये कहता हूँ कि तुम पर और बोझ न डालूँगा ।²⁵अलबत्ता, जो तुम्हारे पास है, मेरे आने तक उसको थामे रहो ।

²⁶जो ग़ालिब आए और जो मेरे कामों के जैसा आख़िर तक 'अमल करे, मैं उसे क़ौमों पर इख़्तियार दूँगा;²⁷और वो लोहे के 'असा से उन पर हुकूमत करेगा, जिस तरह कि कुम्हार के बर्तन चकना चूर हो जाते हैं : चुनाँचे मैंने भी ऐसा इख़्तियार अपने बाप से पाया है,²⁸और मैं उसे सुबह का सितारा दूँगा ।²⁹जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है ।

Chapter 3

¹और सरदीस की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख कि जिसके पास खुदा की सात रूहें और सात सितारे हैं जागता रहता, और उन चीज़ों को जो बाक़ी है और जो मिटने को थीं मज़बूत कर, क्योंकि मैंने तेरे किसी काम को अपने खुदा के नज़दीक पूरा नहीं पाया ।

³पस याद कर कि तू ने किस तरह ता'लीम पाई और सुनी थी, और उस पर क़ायम रह और तौबा कर । और अगर तू जागता न रहेगा तो मैं चोर की तरह आ जाऊँगा, और तुझे हरगिज़ मा'लूम न होगा कि किस वक़्त तुझ पर आ पड़ूँगा । ⁴अलबत्ता, सरदीस में तेरे यहाँ थोड़े से ऐसे शख्स हैं जिहोने अपनी पोशाक आलूदा नहीं की । वो सफ़ेद पोशाक पहने हुए मेरे साथ सैर करेंगे, क्योंकि वो इस लायक हैं ।

⁵जो ग़ालिब आए उसे इसी तरह सफ़ेद पोशाक पहनाई जाएगी, और मैं उसका नाम किताब-ए-हयात से हरगिज़ न काटूँगा, बल्कि अपने बाप और उसके फ़रिश्तों के सामने उसके नाम का इक़रार करूँगा । ⁶जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है ।

⁷और फिलदिल्फिया की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: जो कुहूस और बरहक़ है, और दाऊद की कुन्जी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं करता और बन्द किए हुए को कोई खोलता नहीं, वो ये फ़रमाता है कि ⁸"मैं तेरे कामों को जानता हूँ (देख, मैंने तेरे सामने एक दरवाज़ा खोल रख्खा है, कोई उसे बन्द नहीं कर सकता) कि तुझ में थोड़ा सा ज़ोर है और तू ने मेरे कलाम पर "अमल किया और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया ।

⁹देख, मैं शैतान की उन जमा'त वालों को तेरे क़ाबू में कर दूँगा, जो अपने आपको यहूदी कहते हैं और है नहीं, बल्कि झूट बोलते हैं - देख, मैं ऐसा करूँगा कि वो आकर तेरे पावों में सिद्धा करेंगे, और जानेंगे कि मुझे तुझ से मुहब्बत है । ¹⁰चूँकि तू ने मेरे सब्र के कलाम पर 'अमल किया है, इसलिए मैं भी आजमाइश के उस वक़्त तेरी हिफ़ाज़त करूँगा जो ज़मीन के रहनेवालों के आजमाने के लिए तमाम दुनियाँ पर आनेवाला है । ¹¹मैं जल्द आनेवाला हूँ । जो कुछ तेरे पास है थामे रह, ताकि कोई तेरा ताज न छीन ले ।

¹²जो ग़ालिब आए, मैं उसे अपने खुदा के मक्दिस् में एक सुतून बनाऊँगा । वो फिर कभी बाहर न निकलेगा, और मैं अपने खुदा का नाम और अपने खुदा के शहर, या'नी उस नए यरूशलीम का नाम जो मेरे खुदा के पास से आसमान से उतरने वाला है, और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा । ¹³जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है ।

¹⁴और लौदीकिया की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख : "जो आमीन और सच्चा और बरहक़ गवाह और खुदा की कायनात की शुरुआत है, वो ये फ़रमाता है कि ¹⁵"मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि न तू सर्द है न गर्म । काश कि तू सर्द या गर्म होता ! ¹⁶पस चूँकि तू न तो गर्म है न सर्द बल्कि नीम गर्म है, इसलिए मैं तुझे अपने मुँह से निकाल फेंकने को हूँ ।

¹⁷और चूँकि तू कहता है कि मैं दौलतमन्द हूँ और मालदार बन गया हूँ और किसी चीज़ का मोहताज नहीं; और ये नहीं जानता कि तू कमबख्त और आवारा और ग़रीब और अन्धा और नंगा है । ¹⁸इसलिए मैं तुझे सलाह देता हूँ कि मुझ से आग में तपाया हुआ सोना खरीद ले, ताकि तू उसे पहन कर नंगे पन के ज़ाहिर होने की शर्मिन्दगी न उठाए; और आँखों में लगाने के लिए सुर्मा ले, ताकि तू बीना हो जाए ।

¹⁹मैं जिन जिन को 'अज़ीज़ रखता हूँ, उन सब को मलामत और हिदायत करता हूँ; पस सरगर्म हो और तौबा कर । ²⁰देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोलेगा, तो मैं उसके पास अन्दर जाकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वो मेरे साथ ।

²¹जो ग़ालिब आए मैं उसे अपने साथ तख़्त पर बिठाऊँगा, जिस तरह मैं ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त पर बैठ गया । ²²जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है ।

Chapter 4

¹इन बातों के बा'द जो मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि आसमान में एक दरवाज़ा खुला हुआ है, और जिसको मैंने पहले नरसिंगो की सी आवाज़ से अपने साथ बातें करते सुना था, वही फ़रमाता है, "यहाँ ऊपर आ जा; मैं तुझे वो बातें दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बा'द होना ज़रूर है।" ²फ़ौरन मैं रूह में आ गया; और क्या देखता हूँ कि आसमान पर एक तख़्त रखखा है, और उस तख़्त पर कोई बैठा है। ³और जो उस पर बैठा है वो संग-ए-यशब और 'अक़ीक़ सा मा'लूम होती है, और उस तख़्त के गिर्द ज़मरूद की सी एक धनुक मा'लूम होता है।

⁴उस तख़्त के पास चौबीस बुजुर्ग सफ़ेद पोशाक पहने हुए बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के ताज हैं। ⁵उस तख़्त में से बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजें पैदा होती हैं, और उस तख़्त के सामने आग के सात चिराग़ जल रहे हैं; ये खुदा की साथ रूहें हैं,

⁶और उस तख़्त के सामने गोया शीशे का समुन्द्र बिल्लौर की तरह है। और तख़्त के बीच में और तख़्त के पास चार जानवर हैं, जिनके आगे-पीछे आँखें ही आँखें हैं।

⁷पहला जानवर बबर की तरह है, और दूसरा जानदार बछड़े की तरह, और तीसरे जानदार का इन्सान का सा है, और चौथा जानदार उड़ते हुए 'उक्राब की तरह है। ⁸और इन चारों जानदारों के छः छः पर हैं; और रात दिन बग़ैर आराम लिए ये कहते रहते हैं, "कुदूस, कुदूस, कुदूस, खुदावन्द खुदा क़ादिर- ए-मुतलक़, जो था और जो है और जो आनेवाला है!"

⁹और जब वो जानदार उसकी बड़ाई -ओ- 'इज़ज़त और तम्जीद करेंगे, जो तख़्त पर बैठा है और हमेशा से हमेशा ज़िन्दा रहेगा; ¹⁰तो वो चौबीस बुजुर्ग उसके सामने जो तख़्त पर बैठा है गिर पड़ेंगे और उसको सिज्दा करेंगे, जो हमेशा हमेशा ज़िन्दा रहेगा और अपने ताज ये कहते हुए उस तख़्त के सामने डाल देंगे, ¹¹"ऐ हमारे खुदावन्द और खुदा, तू ही बड़ाई और 'इज़ज़त और कुदरत के लायक़ है; क्योंकि तू ही ने सब चीज़ें पैदा कीं और वो तेरी ही मर्ज़ी से थीं और पैदा हुईं।"

Chapter 5

¹जो तख्त पर बैठा था, मैंने उसके दहने हाथ में एक किताब देखी जो अन्दर से और बाहर से लिखी हुई थी, और उसे सात मुहरें लगाकर बन्द किया गया था। फिर मैंने एक ताक़तवर फ़रिश्ते को ऊँची आवाज़ से ये ऐलान करते देखा, "कौन इस किताब को खोलने और इसकी मुहरें तोड़ने के लायक़ है?"

³और कोई शख्स, आसमान पर या ज़मीन के नीचे, उस किताब को खोलने या उस पर नज़र करने के क़ाबिल न निकला।⁴ और मैं इस बात पर ज़ार ज़ार रोने लगा कि कोई उस किताब को खोलने और उस पर नज़र करने के लायक़ न निकला।⁵ तब उन बुजुर्गों में से एक ने कहा मत रो, यहूदा के क़बीले का वो बबर जो दाउद की नस्ल है उस किताब और उसकी सातों मुहरों को खोलने के लिए ग़ालिब आया।

⁶और मैंने उस तख्त और चारों जानदारों और उन बुजुर्गों के बीच में, गोया ज़बह किया हुआ एक बर्ग़ खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात आँखें थीं; ये ख़ुदा की सातों रूहें हैं जो तमाम रु-ए-ज़मीन पर भेजी गई हैं।⁷ उसने आकर तख्त पर बैठे हुए दाहने हाथ से उस किताब को ले लिया।

⁸जब उसने उस किताब को लिया, तो वो चारों जानदार और चौबीस बुजुर्ग उस बरें के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में बर्बत और 'ऊद से भरे हुए सोने के प्याले थे, ये मुक़द्दसों की दु'आएँ हैं।

⁹और वो ये नया गीत गाने लगे, "तू ही इस किताब को लेने, और इसकी मुहरें खोलने के लायक़ है; क्योंकि तू ने जबह होकर अपने खून से हर क़बीले और अहले ज़बान और उम्मत और क़ौम में से ख़ुदा के वास्ते लोगों को ख़रीद लिया।"¹⁰ और उनको हमारे ख़ुदा के लिए एक बादशाही और काहिन बना दिया, और वो ज़मीन पर बादशाही करते हैं।

¹¹और जब मैंने निगाह की, तो उस तख्त और उन जानदारों और बुजुर्गों के आस पास बहुत से फ़रिश्तों की आवाज़ सुनी, जिनका शुमार लाखों और करोड़ों था,

¹²और वो ऊँची आवाज़ से कहते थे, "ज़बह किया हुआ बर्ग़ की कुदरत और दौलत और हिकमत और ताक़त और 'इज़ज़त और बड़ाई और तारीफ़ के लायक़ है!"

¹³फिर मैंने आसमान और ज़मीन और ज़मीन के नीचे की, और समुन्दर की सब मख़लूक़ात को या'नी सब चीज़ों को उनमें हैं ये कहते सुना, "जो तख्त पर बैठा है उसकी और बरें की, तारीफ़ और इज़ज़त और बड़ाई और बादशाही हमेशा हमेशा रहे!"¹⁴ और चारों जानदारों ने आमीन कहा, और बुजुर्गों ने गिर कर सिज्दा किया।

Chapter 6

¹फिर मैंने देखा कि बरें ने उन सात मुहरों में से एक को खोला, और उन चारों जानदारों में से एक गरजदार सी ये आवाज़ सुनी, "आ !"²और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद घोड़ा है, और उसका सवार कमान लिए हुए है | उसे एक ताज दिया गया, और वो फ़तह करता हुआ निकला ताकि और भी फ़तह करे |

³जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो मैंने दुसरे जानदार को ये कहते सुना, "आ !" ⁴फिर एक और घोड़ा निकला जिसका रंग लाल था | उसके सवार को ये इख्तियार दिया गया कि ज़मीन पर से सुलह उठा ले ताकि लोग एक दुसरे को क़त्ल करें; और उसको एक बड़ी तलवार दी गई |

⁵जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे जानदार को ये कहते सुना, "आ !" और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक काला घोड़ा है, और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है | ⁶और मैंने गोया उन चारों जानदारों के बीच में से ये आवाज़ आती सुनी, "गेहूँ दीनार के सेर भर, और जौ दीनार के तीन सेर, और तेल और मय का नुक़सान न कर |

⁷जब उन्होंने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे जानदार को ये कहते सुना, "आ !" ⁸मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक ज़र्द सा घोड़ा है, और उसके सवार का नाम 'मौत' है और 'आलम-ए-अर्वाह' उसके पीछे पीछे है; और उनको चौथाई ज़मीन पर ये इख्तियार दिया गया कि तलवार और काल और वबा और ज़मीन के दरिन्दों से लोगों को हलाक करें |

⁹जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने कुर्बानगाह के नीचे उनकी रूहें देखी जो ख़ुदा के कलाम की वजह से और गवाही पर क़ायम रहने के ज़रिए मारे गए थे |

¹⁰और बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर बोलीं, "ए मालिक, ए कुदूस-ओ-बरहक़, तू कब तक इन्साफ़ न करेगा और ज़मीन के रहनेवालों से हमारे ख़ून का बदला न लेगा?" ¹¹और उनमें से हर एक को सफ़ेद जामा दिया गया, और उनसे कहा गया कि और थोड़ी मुद्दत आराम करो, जब तक कि तुम्हारे हमख़िदमत और भाइयों का भी शुमार पूरा न हो ले, जो तुम्हारी तरह क़त्ल होनेवाले हैं |

¹²जब उसने छठी मुहर खोली, तो मैंने देखा कि एक बड़ा भौंचाल आया, और सूरज कमल की तरह काला और सारा चाँद ख़ून सा हो गया | ¹³और आसमान के सितारे इस तरह ज़मीन पर गिर पड़े, जिस तरह ज़ोर की आँधी से हिल कर अंजीर के दरख़्त में से कच्चे फल गिर पड़ते हैं | ¹⁴और आसमान इस तरह सरक गया, जिस तरह ख़त लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़ और टापू अपनी जगह से टल गया |

¹⁵और ज़मीन के बादशाह और अमीर और फ़ौजी सरदार, और मालदार और ताक़तवर, और तमाम गुलाम और आज़ाद पहाड़ों के गारों और चट्टानों में जा छिपे,

¹⁶और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, "हम पर गिर पड़ो, और हमें उनकी नज़र से जो तख़्त पर बैठा हुआ है और बरें के ग़ज़ब से छिपा लो | ¹⁷क्योंकि उनके ग़ज़ब का दिन 'अज़ीम आ पहुँचा, अब कौन ठहर सकता है?"

Chapter 7

¹इसके बा'द मैंने ज़मीन के चारों कोनों पर चार फ़रिश्ते खड़े देखे | वो ज़मीन की चारों हवाओं को थामे हुए थे, ताकि ज़मीन या समुन्दर या किसी दरख़्त पर हवा न चले | ²फिर मैंने एक और फ़रिश्ते को, जिन्दा खुदा की मुहर लिए हुए मशरिक़ से ऊपर की तरफ़ आते देखा; उसने उन चारों फ़रिश्तों से, जिन्हें ज़मीन और समुन्द्र को तकलीफ़ पहुँचाने का इख़्तियार दिया गया था, ऊँची आवाज़ से पुकार कर कहा, ³"जब तक हम अपने खुदा के बन्दों के माथे पर मुहर न कर लें, ज़मीन और समुन्द्र और दरख़्तों को तकलीफ़ न पहुँचाना | "

⁴और जिन पर मुहर की गई उनका शुमार सुना, कि बनी-इसाइल के सब क़बीलों में से एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर की गई : ⁵यहुदाह के क़बीले में से बारह हज़ार पर मुहर की गई : रोबिन के क़बीले में से बारह हज़ार पर, ज़द के क़बीले में से बारह हज़ार पर, ⁶आशर के क़बीले में से बारह हज़ार पर, नफ़्ताली के क़बीले में से बारह हज़ार पर, मनस्सी के क़बीले में से बारह हज़ार पर,

⁷शमा'ऊन के क़बीले में से बारह हज़ार पर, लावी के क़बीले में से बारह हज़ार, इश्कार के क़बीले में से बारह हज़ार पर, ⁸ज़बलून के क़बीले में से बारह हज़ार पर, युसूफ़ के क़बीले में से बारह हज़ार पर, बिनयमिन के क़बीले में से बारह हज़ार पर मुहर की गई |

⁹इन बातों के बा'द जो मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि हर एक क़ौम और क़बीला और उम्मत और अहल-ए-ज़बान की एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई शुमार नहीं कर सकता, सफ़ेद जामे पहने और खज़ूर की डालियाँ अपने हाथों में लिए हुए तख़्त और बर्रे के आगे खड़ी है, ¹⁰और बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहती है, "नज़ात हमारे खुदा की तरफ़ से !"

¹¹और सब फ़रिश्ते उस तख़्त और बुजुर्गों और चारों जानदारों के पास खड़े हैं, फिर वो तख़्त के आगे मुँह के बल गिर पड़े और खुदा को सिज्दा कर के ¹²कहा, "आमीन ! तारीफ़ और बड़ाई और हिकमत और शुक्र और 'इज़ज़त और कुदरत और ताक़त हमेशा से हमेशा हमारे खुदा की हो ! आमीन |

¹³और बुजुर्गों में से एक ने मुझ से कहा, "ये सफ़ेद जामे पहने हुए कौन हैं, और कहाँ से आए हैं?" ¹⁴मैंने उससे कहा, "ऐ मेरे खुदावन्द, तू ही जानता है | " उसने मुझ से कहा, "ये वही हैं; उन्होंने अपने जामे बर्रे के कुर्बानी के खून से धो कर सफ़ेद किए हैं |

¹⁵"इसी वजह से ये खुदा के तख़्त के सामने हैं, और उसके मक़्दिस में रात दिन उसकी 'इबादत करते हैं, और जो तख़्त पर बैठा है, वो अपना खेमा उनके ऊपर तानेगा | ¹⁶इसके बा'द न कभी उनको भूक लगेगी न प्यास और न धूप सताएगी न गर्मी | ¹⁷क्योंकि जो बर्दा तख़्त के बीच में है, वो उनकी देखभाल करेगा, और उन्हें आब-ए-हयात के चश्मों के पास ले जाएगा और खुदा उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा | "

Chapter 8

¹जब उसने सातवीं मुहर खोली, तो आधे घंटे के करीब आसमान में खामोशी रही | ²और मैंने उन सातों फ़रिश्तों को देखा जो खुदा के सामने खड़े रहते हैं, और उन्हें सात नरसिंगे दीए गए |

³फिर एक और फ़रिश्ता सोने का 'ऊद्सोज़' लिए हुए आया और कुर्बानगाह के ऊपर खड़ा हुआ, और उसको बहुत सा 'ऊद दिया गया, ताकि अब मुकद्दसों की दु'आओं के साथ उस सुनहरी कुर्बानगाह पर चढ़ाए जा सकें | ⁴और उस 'ऊद का धुआँ फ़रिश्ते के सामने है | ⁵और फ़रिश्ते ने 'ऊद्सोज़ को लेकर उसमें कुर्बानगाह की आग भरी और ज़मीन पर डाल दी, और गरजें और आवाज़ें और बिजलियाँ पैदा हुईं और भौंचाल आया |

⁶और वो सातों फ़रिश्ते जिनके पास वो सात नरसिंगे थे, फूँकने को तैयार हुए | ⁷जब पहले ने नरसिंगा फूँका, तो खून मिले हुए ओले और आग पैदा हुई और ज़मीन जल गई, और तिहाई दरख़्त जल गए, और तमाम हरी घास जल गई |

⁸जब दूसरे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, गोया आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुन्दर में डाला गया; और तिहाई समुन्दर खून हो गया | ⁹और समुन्दर की तिहाई जानदार मखलूक़ात मर गई, और तिहाई जहाज़ तबाह हो गए |

¹⁰जब तीसरे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो एक बड़ा सितारा मशा'ल की तरह जलता हुआ आसमान से टूटा, और तिहाई दरियाओं और पानी के चश्मों पर आ पड़ा | ¹¹उस सितारे का नाम नागदौना कहलाता है; और तिहाई पानी नागदौने की तरह कड़वा हो गया, और पानी के कड़वे हो जाने से बहुत से आदमी मर गए |

¹²जब चौथे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो तिहाई सूरज चाँद और तिहाई सितारों पर सदमा पहुँचा, यहाँ तक कि उनका तिहाई हिस्सा तारीक हो गया, और तिहाई दिन में रौशनी न रही, और इसी तरह तिहाई रात में भी |

¹³जब मैंने फिर निगाह की, तो आसमान के बीच में एक 'उक्राब को उड़ते और बड़ी आवाज़ से ये कहते सुना, "उन तीन फ़रिश्तों के नर्सिंगों की आवाज़ों की वजह से, जिनका फूँकना अभी बाक़ी है, ज़मीन के रहनेवालों पर अफ़सोस, अफ़सोस, अफ़सोस !"

Chapter 9

¹जब पाँचवें फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो मैंने आसमान से ज़मीन पर एक सितारा गिरा हुआ देखा, और उसे अथाह गड्ढे की कूँजी दी गई | ²और जब उसने अथाह गड्ढे को खोला तो गड्ढे में से एक बड़ी भट्टी का सा धुवाँ उठा, और गड्ढे के धुवें के ज़रिए से सूरज और हवा तारीक हो गई |

³और उस धुवें में से ज़मीन पर टिड्डियाँ निकल पड़ीं, और उन्हें ज़मीन के बिच्छुओं की सी ताक़त दी गई | ⁴और उससे कहा गया कि उन आदमियों के सिवा जिनके माथे पर ख़ुदा की मुहर नहीं, ज़मीन की घास या किसी हरियाली या किसी दरख़्त को तकलीफ़ न पहुँचे |

⁵और उन्हें जान से मारने का नहीं, बल्कि पाँच महीने तक लोगों को तकलीफ़ देने का इख़्तियार दिया गया; और उनकी तकलीफ़ ऐसी थी जैसे बिच्छु के डंक मारने से आदमी को होती है | ⁶उन दिनों में आदमी मौत ढूँढ़ेंगे मगर हरगिज़ न पाएँगे, और मरने की आरज़ू करेंगे और मौत उनसे भागेगी |

⁷उन टिड्डियों की सूरतें उन घोड़ों की सी थीं जो लड़ाई के लिए तैयार किए गए हों, और उनके सिरों पर गोया सोने के ताज थे, और उनके चहरे आदमियों के से थे, ⁸और बाल 'औरतों के से थे, और दांत बबर के से | ⁹उनके पास लोहे के से बख़्तर थे, और उनके परो की आवाज़ ऐसी थी रथों और बहुत से घोड़ों की जो लड़ाई में दौड़ते हों |

¹⁰और उनकी दुमों बिच्छुओं की सी थीं और उनमें डंक भी थे, और उनकी दुमों में पाँच महीने तक आदमियों को तकलीफ़ पहुँचाने की ताक़त थी | ¹¹अथाह गड्ढे का फ़रिश्ता उन पर बादशाह था; उसका नाम 'इब्रानी अबदून और यूनानी में अपुल्ल्योन है | ¹²पहला अफ़सोस तो हो चुका, देखो, उसके बा'द दो अफ़सोस और होने हैं |

¹³जब छठे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो मैंने उस सुनहरी कुर्बानगाह के चारों कोनों के सींगों में से जो ख़ुदा के सामने है, ऐसी आवाज़ सुनी ¹⁴कि उस छठे फ़रिश्ते से जिसके पास नरसिंगा था, कोई कह रहा है, "बड़े दरिया, या'नी फ़ुरात के पास जो चार फ़रिश्ते बँधे हैं उन्हें खोल दे |" ¹⁵पस वो चारों फ़रिश्ते खोल दिए गए, जो ख़ास घड़ी और दिन और महीने और बरस के लिए तिहाई आदमियों के मार डालने को तैयार किए गए थे;

¹⁶और फ़ौजों के सवार में बीस करोड़ थे; मैंने उनका शुमार सुना | ¹⁷और मुझे उस रोया में घोड़े और उनके ऐसे सवार दिखाई दिए जिनके बख़्तर से आग और धुवाँ और गंधक निकलती थी |

¹⁸इन तीनों आफ़तों यानी आग, धुआँ, और गंधक, सी जो उनके मुंह से निकलती थी, तिहाई लोग मारे गए | ¹⁹क्यूँकि उन घोड़ों की ताक़त उनके मुँह और उनकी दुमों में थी, , इसलिए कि उनकी दुमों साँपों की तरह थीं और दुमों में सिर भी थे, उन्हीं से वो तकलीफ़ पहुँचाते थे |

²⁰और बाक़ी आदमियों ने जो इन आफ़तों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से तौबा न की, कि शयातीन की और सोने और चाँदी और पीतल और पत्थर लकड़ी के बुतों की इबादत करने से बा'ज़ आते, जो न देख सकती हैं न सुन सकती हैं न चल सकती हैं; ²¹और जो ख़ून और जादूगरी और हरामकारी और चोरी उन्हीं की थी, उनसे तौबा न की |

Chapter 10

¹फिर मैंने एक और ताक़तवर फ़रिश्ते को बादल ओढ़े हुए आसमान से उतरते देखा। उसके सिर पर धनुक थी, और उसका चेहरा आफ़ताब की तरह था, और उसका पाँव आग के सुतूनों की तरह।² और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई किताब थी। उसने अपना दहना पैर तो समुन्दर पर रखखा और बायाँ खुशकी पर।

³और ऐसी ऊँची आवाज़ से चिल्लाया जैसे बबर चिल्लाता है और जब वो चिल्लाया तो सात आवाज़ें सुनाई दीं⁴ जब गरज की सात आवाज़ें सुनाई दे चुकीं तो मैंने लिखने का इरादा किया, और आसमान पर से ये आवाज़ आती सुनी, "जो बातें गरज की इन सात आवाज़ों से सुनी हैं, उनको छुपाए रख और लिख मत।

⁵और जिस फ़रिश्ते को मैंने समुन्दर और खुशकी पर खड़े देखा था उसने अपना दहना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया⁶ जो हमेशा से हमेशा ज़िन्दा रहेगा और जिसने आसमान और उसके अन्दर की चीज़ें, और ज़मीन और उसके ऊपर की चीज़ें, और समुन्दर और उसके अन्दर की चीज़ें, पैदा की हैं, उसकी क़सम खाकर कहा कि अब और देर न होगी।⁷ बल्कि सातवें फ़रिश्ते की आवाज़ देने के ज़माने में, जब वो नरसिंगा फूंकने को होगा, तो खुदा का छुपा हुआ मतलब उस खुशख़बरी के जैसा, जो उसने अपने बन्दों, नबियों को दी थी पूरा होगा।

⁸और जिस आवाज़ देनेवाले को मैंने आसमान पर बोलते सुना था, उसने फिर मुझ से मुखातिब होकर कहा, "जा, उस फ़रिश्ते के हाथ में से जो समुन्द्र और खुशकी पर खड़ा है, वो खुली हुई किताब ले ले।"⁹ तब मैंने उस फ़रिश्ते के पास जाकर कहा, "ये छोटी किताब मुझे दे दे।" उसने मुझ से कहा, "ले, इसे खाले; ये तेरा पेट तो कड़वा कर देगी, मगर तेरे मुँह में शहद की तरह मीठी लगेगी।"

¹⁰पस मैं वो छोटी किताब उस फ़रिश्ते के हाथ से लेकर खा गया। वो मेरे मुँह में तो शहद की तरह मीठी लगी, मगर जब मैं उसे खा गया तो मेरा पेट कड़वा हो गया।¹¹ और मुझ से कहा गया, "तुझे बहुत सी उम्मतों और क़ौमों और अहल-ए-ज़बान और बादशाहों पर फिर नबुव्वत करना ज़रूर है।"

Chapter 11

¹और मुझे 'लाठी की तरह एक नापने की लकड़ी दी गई, और किसी ने कहा, "उठकर खुदा के मन्दिर और कुर्बानगाह और उसमें के 'इबादत करने वालों को नाप | ²और उस सहन को जो मन्दिर के बाहर है अलग कर दे, और उसे न नाप क्योंकि वो गैर-क्रौमों को दे दिया गया है; वो मुकद्दस शहर को बयालीस महीने तक पामाल करेंगी |

³और मैं अपने दो गवाहों को इख्तियार दूँगा, और वो टाट ओढ़े हुए एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक नबुव्वत करेंगे | ⁴"ये वही जैतून के दो दरख्त और दो चिरागदान हैं जो ज़मीन के खुदावन्द के सामने खड़े हैं | ⁵और अगर कोई उन्हें तकलीफ़ पहुँचाना चाहता है, तो उनके मुँह से आग निकलकर उनके दुश्मनों को खा जाती है; और अगर कोई उन्हें तकलीफ़ पहुँचाना चाहेगा, तो वो ज़रूर इसी तरह मारा जाएगा |

⁶उनको इख्तियार है आसमान को बन्द कर दें, ताकि उनकी नबुव्वत के ज़माने में पानी न बरसे, और पानियों पर इख्तियार है कि उनको खून बना डालें, और जितनी दफ़ा 'चाहें ज़मीन पर हर तरह की आफ़त लाएँ | ⁷जब वो अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वो हैवान जो अथाह गड्डे से निकलेगा, उनसे लड़कर उन पर गालिब आएगा और उनको मार डालेगा |

⁸और उनकी लाशें उस यरूशलीम के बाज़ार में पड़ी रहेंगी, जो रूहानी ऐ'तिबार से सदोम और मिस्र कहलाता है, जहाँ उनका खुदावन्द भी मस्लूब हुआ था |

⁹उम्मतों और क्रबीलों और अहल-ए-ज़बान और क्रौमों में से लोग उनकी लाशों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनकी लाशों को क़ब्र में न रखने देंगे |

¹⁰और ज़मीन के रहनेवाले उनके मरने से खुशी मनाएँगे और शादियाने बजाएँगे, और आपस में तुहफ़े भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों नबियों ने ज़मीन के रहनेवालों को सताया था | ¹¹और साढ़े तीन दिन के बाद खुदा की तरफ़ से उनमें ज़िन्दगी की रूह दाखिल हुई, और वो अपने पावों के बल खड़े हो गए और उनके देखनेवालों पर बड़ा खौफ़ छा गया | ¹²और उन्हें आसमान पर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, "यहाँ ऊपर आ जाओ !" पस वो बादल पर सवार होकर आसमान पर चढ़ गए और उनके दुश्मन उन्हें देख रहे थे |

¹³फिर उसी वक़्त एक बड़ा भौंचाल आ गया, और शहर का दसवाँ हिस्सा गिर गया, और उस भौंचाल से सात हज़ार आदमी मरे और बाक़ी डर गए, और आसमान के खुदा की बड़ाई की | ¹⁴दूसरा अफ़सोस हो चुका; देखो, तीसरा अफ़सोस जल्द होने वाला है |

¹⁵जब सातवें फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो आसमान पर बड़ी आवाज़ें इस मज़मून की पैदा हुई : "दुनियाँ की बादशाही हमारे खुदावन्द और उसके मसीह की हो गई, और वो हमेशा बादशाही करेगा |"

¹⁶और चौबीसों बुजुर्गों ने जो खुदा के सामने अपने अपने तख़्त पर बैठे थे, मुँह के बल गिर कर खुदा को सिज्दा किया | ¹⁷और कहा, "ऐ खुदावन्द खुदा, क़ादिर-ए-मुतलक़ ! जो है और जो था, हम तेरा शुक्र करते हैं क्योंकि तू ने अपनी बड़ी कुदरत को हाथ में लेकर बादशाही की |

¹⁸और क्रौमों को गुस्सा आया, और तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वो वक़्त आ पहुँचा है कि मुर्दों का इन्साफ़ किया जाए, और तेरे बन्दों, नबियों और मुकद्दसों और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए और ज़मीन के तबाह करने वालों को तबाह किया जाए |

¹⁹और खुदा का जो मन्दिर आसमान पर है वो खोला गया, और उसके मन्दिर में उसके 'अहद का सन्दूक दिखाई दिया; और बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजें पैदा हुई, और भौंचाल आया और बड़े ओले पड़े |

Chapter 12

¹फिर आसमान पर एक बड़ा निशान दिखाई दिया, या'नी एक 'औरत नज़र आई जो अफ़ताब को ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँव के नीचे था, और बारह सितारों का ताज उसके सिर पर | ²वो हामिला थी और दर्द-ए-ज़ेह में चिल्लाती थी, और बच्चा जनने की तक्लीफ़ में थी |

³फिर एक और निशान आसमान पर दिखाई दिया, या'नी एक बड़ा लाल अज़दहा, उसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात ताज;⁴ और उसकी दुम ने आसमान के तिहाई सितारे खींच कर ज़मीन पर डाल दिए | और वो अज़दहा उस औरत के आगे जा खड़ा हुआ जो जनने को थी, ताकि जब वो जने तो उसके बच्चे को निगल जाए |

⁵और वो बेटा जनी, या'नी वो लड़का जो लोहे के 'लाठी से सब क्रौमों पर हुकूमत करेगा, और उसका बच्चा यकायक खुदा और उसके तख़्त के पास तक पहुँचा दिया गया;⁶ और वो 'औरत उस जंगल को भाग गई, जहाँ खुदा की तरफ़ से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी, ताकि वहाँ एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक उसकी परवरिश की जाए |

⁷फिर आसमान पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके फ़रिश्ते अज़दहा से लड़ने को निकले; और अज़दहा और उसके फ़रिश्ते उनसे लड़े,⁸ लेकिन ग़ालिब न आए, और इसके बा'द आसमान पर उनके लिए जगह न रही | ⁹और बड़ा अज़दहा, या'नी वही पुराना साँप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे दुनियाँ को गुमराह कर देता है, ज़मीन पर गिरा दिया गया और उसके फ़रिश्ते भी उसके साथ गिरा दिए गए |

¹⁰फिर मैंने आसमान पर से ये बड़ी आवाज़ आती सुनी, "अब हमारे खुदा की नजात और कुदरत और बादशाही, और उसके मसीह का इख़्तियार ज़ाहिर हुआ, क्योंकि हमारे भाईयों पर इल्ज़ाम लगाने वाला जो रात दिन हमारे खुदा के आगे उन पर इल्ज़ाम लगाया करता है, गिरा दिया गया |

¹¹और वो बर्रे के खून और अपनी गवाही के कलाम के ज़रिये उस पर ग़ालिब आए; और उन्होंने अपनी जान को 'अज़ीज़ न समझा, यहाँ तक कि मौत भी गवारा की | ¹²पस ऐ आसमानो और उनके रहनेवालो, खुशी मनाओ | ऐ खुशकी और तरी, तुम पर अफ़सोस, क्योंकि इब्लीस बड़े क्रहर में तुम्हारे पास उतर कर आया है, इसलिए कि जानता है कि मेरा थोड़ा ही सा वक़्त बाक़ी है |"

¹³और जब अज़दहा ने देखा कि मैं ज़मीन पर गिरा दिया गया हूँ, तो उस 'औरत को सताया जो बेटा जनी थी | ¹⁴और उस 'औरत को बड़े उक्राब के दो पर दिए गए, ताकि साँप के सामने से उड़ कर वीराने में अपनी उस जगह पहुँच जाए, जहाँ एक ज़माना और जमानों और आधे ज़माने तक उसकी परवरिश की जाएगी |

¹⁵और साँप ने उस 'औरत के पीछे अपने मुँह से नदी की तरह पानी बहाया, ताकि उसको इस नदी से बहा दे | ¹⁶मगर ज़मीन ने उस 'औरत की मदद की, और अपना मुँह खोलकर उस नदी को पी लिया जो अज़दहा ने अपने मुँह से बहाई थी | ¹⁷और अज़दहा को 'औरत पर गुस्सा आया, और उसकी बाक़ी औलाद से, जो खुदा के हुक्मों पर 'अमल करती है और ईसा' की गवाही देने पर क़ायम है, लड़ने को गया और समुन्दर की रेत पर जा खड़ा हुआ |

Chapter 13

¹और मैंने एक हैवान को समुन्दर में से निकलते हुए, देखा, उसके दस सींग और सात सिर थे; और उसके सींगों पर दस ताज और उसके सिरों पर कुफ़्र के नाम लिखे हुए थे | ²और जो हैवान मैंने देखा उसकी शक्ल तेन्दवे की सी थी, और पाँव रीछ के से और मुँह बबर का सा, और उस अज़दहा ने अपनी कुदरत और अपना तख़्त और बड़ा इख़्तियार उसे दे दिया |

³और मैंने उसके सिरों में से एक पर गोया ज़ख़्म-ए-कारी अच्छा हो गया, और सारी दुनियाँ ता'ज्जुब करती हुई उस हैवान के पीछे पीछे हो ली | ⁴और चूँकि उस अज़दहा ने अपना इख़्तियार उस हैवान को दे दिया था इस लिए उन्होंने अज़दहे की 'इबादत की और उस हैवान की भी ये कहकर 'इबादत की कि इस के बराबर कौन है कौन है जो इस से लड़ सकता है |,

⁵और बड़े बोल बोलने और कुफ़्र बकने के लिए उसे एक मुँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम का इख़्तियार दिया गया | ⁶और उसने ख़ुदा की निस्बत कुफ़्र बकने के लिए मुँह खोला कि उसके नाम और उसके ख़ेमे, या'नी आसमान के रहनेवालों की निस्बत कुफ़्र बके |

⁷और उसे ये इख़्तियार दिया गया के मुक़द्दसों से लड़े और उन पर ग़ालिब आए, और उसे हर क़बीले और उम्मत और अहल-ए-ज़बान और क़ौम पर इख़्तियार दिया गया | ⁸और ज़मीन के वो सब रहनेवाले जिनका नाम उस बर्रे की किताब-ए-हयात में लिखे नहीं गए जो दुनियाँ बनाने के वक़्त से ज़बह हुआ है, उस हैवान की 'इबादत करेंगे

⁹जिसके कान हों वो सुने | ¹⁰जिसको कैद होने वाली है, वो कैद में पड़ेगा | जो कोई तलवार से क़त्ल करेगा, वो ज़रूर तलवार से क़त्ल किया जाएगा | पाक लोग के सब्र और ईमान का यही मौक़ा' है |

¹¹फिर मैंने एक और हैवान को ज़मीन में से निकलते हुए देखा | उसके बर्रे के से दो सींग थे और वो अज़दहा की तरह बोलता था | ¹²और ये पहले हैवान का सारा इख़्तियार उसके सामने काम में लाता था, और ज़मीन और उसके रहनेवालों से उस पहले हैवान की 'इबादत कराता था, जिसका ज़ख़्म-ए-कारी अच्छा हो गया था |

¹³और वो बड़े निशान दिखाता था, यहाँ तक कि आदमियों के सामने आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल कर देता था | ¹⁴और ज़मीन के रहनेवालों को उन निशानों की वजह से, जिनके उस हैवान के सामने दिखाने का उसको इख़्तियार दिया गया था, इस तरह गुमराह कर देता था कि ज़मीन के रहनेवालों से कहता था कि जिस हैवान के तलवार लगी थी और वो ज़िन्दा हो गया, उसका बुत बनाओ |

¹⁵और उसे उस हैवान के बुत में रूह फूँकने का इख़्तियारदिया गया ताकि वो हैवान का बुत बोले भी, और जितने लोग उस हैवान के बुत की इबादत न करें उनको क़त्ल भी कराए | ¹⁶और उसने सब छोटे-बड़ों, दौलतमन्दों और गरीबों, आज़ादों और गुलामों के दहने हाथ या उनके माथे पर एक एक छाप करा दी, ¹⁷ताकि उसके सिवा जिस पर निशान, या'नी उस हैवान का नाम या उसके नाम का 'अदद हो, न कोई खरीद-ओ-फ़रोख़्त न कर सके |

¹⁸'हिकमत का ये मौक़ा' है : जो समझ रखता है वो आदमी का 'अदद गिन ले, क्योंकि वो आदमी का 'अदद है, और उसका 'अदद छः सौ छियासठ है | |

Chapter 14

¹फिर मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि वो बर्बा कोहे यिखून पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चवालीस हजार शख्स हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा हुआ है।² और मुझे आसमान पर से एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जो ज़ोर के पानी और बड़ी गरज की सी आवाज़ मैंने सुनी वो ऐसी थी जैसी बर्बत नवाज़ बर्बत बजाते हों।

³वो तख्त के सामने और चारों जानदारों और बुजुर्गों के आगे गोया एक नया गीत गा रहे थे; और उन एक लाख चवालीस हजार शख्सों के सिवा जो दुनियाँ में से खरीद लिए गए थे, कोई उस गीत को न सीख सका।⁴ ये वो हैं जो 'औरतों के साथ अलूदा नहीं हुए, बल्कि कुँवारे हैं। ये वो हैं जो बर्रे के पीछे पीछे चलते हैं, जहाँ कहीं वो जाता है; ये खुदा और बर्रे के लिए पहले फल होने के वास्ते आदमियों में से खरीद लिए गए हैं।⁵ और उनके मुँह से कभी झूट न निकला था, वो बे'ऐब हैं।

⁶फिर मैंने एक और फ़रिश्ते को आसमान के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास ज़मीन के रहनेवालों की हर क्रौम और क़बीले और अहल-ए-ज़बान और उम्मत के सुनाने के लिए हमेशा की खुशख़बरी थी।⁷ और उसने बड़ी आवाज़ से कहा, "खुदा से डरो और उसकी बड़ाई करो, क्योंकि उसकी 'अदालत का वक़्त आ पहुँचा है; और उसी की 'इबादत करो जिसने आसमान और ज़मीन और समुन्दर और पानी के चश्मे पैदा किए।"

⁸फिर इसके बाद एक और दूसरा फ़रिश्ता ये कहता आया, "गिर पड़ा, वह बड़ा शहर बाबुल गिर पड़ा, जिसने अपनी हरामकारी की ग़ज़बनाक मय तमाम क़ौमों को पिलाई है।"

⁹फिर इन के बाद एक और, तीसरे फ़रिश्ते ने आकर बड़ी आवाज़ से कहा, "जो कोई उस हैवान और उसके बुत की 'इबादत करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले ले;¹⁰ वो खुदा के क्रहर की उस ख़ालिस मय को पीएगा जो उसके गुस्से के प्याले में भरी गई है, और पाक फ़रिश्तों के सामने और बर्रे के सामने आग और गन्धक के 'अज़ाब में मुब्तिला होगा।

¹¹और उनके 'अज़ाब का धुँवा हमेशा ही उठता रहेगा, और जो उस हैवान और उसके बुत की 'इबादत करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।"¹² मुक़द्दसों या'नी खुदा के हुक्मों पर 'अमल करनेवालों और ईसा ' पर ईमान रखनेवालों के सब्र का यही मौक़ा है।

¹³फिर मैंने आसमान में से ये आवाज़ सुनी, "लिख ! मुबारक हैं वो मुर्दे जो अब से खुदावन्द में मरते हैं।" रूह फ़रमाता है, "बेशक, क्योंकि वो अपनी मेंहनतों से आराम पाएँगे, और उनके आ'माल उनके साथ साथ होते हैं।"

¹⁴फिर मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद बादल है, और उस बादल पर आदमज़ाद की तरह कोई बैठा है, जिसके सिर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरान्ती है।¹⁵ फिर एक और फ़रिश्ते ने मक्दिसे से निकलकर उस बादल पर बैठे हुए एक बड़ी आवाज़ के साथ पुकार कर कहा, "अपनी दरान्ती चलाकर काट, क्योंकि काटने का वक़्त आ गया, इसलिए कि ज़मीन की फ़सल बहुत पक गई।"¹⁶ पस जो बादल पर बैठा था उसने अपनी दरान्ती ज़मीन पर डाल दी, और ज़मीन की फ़सल कट गई।

¹⁷फिर एक और फ़रिश्ता उस मक्दिसे में से निकला जो आसमान पर है, उसके पास भी तेज़ दरान्ती थी।¹⁸ फिर एक और फ़रिश्ता कुर्बानगाह से निकला, जिसका आग पर इख़्तियार था; उसने तेज़ दरान्ती वाले से बड़ी आवाज़ से कहा, "अपनी तेज़ दरान्ती चलाकर ज़मीन के अंगूर के दरख़्त के गुच्छे काट ले जो बिल्कुल पक गए हैं।

¹⁹और उस फ़रिश्ते ने अपनी दरान्ती ज़मीन पर डाली, और ज़मीन के अंगूर के दरख़्त की फ़सल काट कर खुदा के क्रहर के बड़े हौज़ में डाल दी;²⁰ और शहर के बाहर उस हौज़ में अंगूर रौंदे गए, और हौज़ में से इतना खून निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया, और सोलह सौ फ़रलाँग तक वह निकाला।"

Chapter 15

¹फिर मैंने आसमान पर एक और बड़ा और 'अजीब निशान, या'नी सात फ़रिश्ते सातों पिछली आफ़तों को लिए हुए देखे, क्योंकि इन आफ़तों पर खुदा का क्रहर ख़त्म हो गया है ।

²फिर मैंने शीशे का सा एक समुन्द्र देखा जिसमें आग मिली हुई थी; और जो उस हैवान और उसके बुत और उसके नाम के 'अदद पर ग़ालिब आए थे, उनको उस शीशे के समुन्द्र के पास खुदा की बर्बतें लिए खड़े हुए देखा ।

³और वो खुदा के बन्दे मूसा का गीत, और बरें का गीत गा गा कर कहते थे, "ऐ खुदा ! क़ादिर-ए-मुतलक़ ! तेरे काम बड़े और 'अजीब हैं । ऐ अज़ली बादशाह ! तेरी राहें रास्त और दुरुस्त हैं ।"⁴"ऐ खुदावन्द ! कौन तुझ से न डरेगा? और कौन तेरे नाम की बड़ाई न करेगा? क्योंकि सिर्फ़ तू ही कुदूस है; और सब क़ौमें आकर तेरे सामने सिज्दा करेंगी, क्योंकि तेरे इन्साफ़ के काम ज़ाहिर हो गए हैं ।"

⁵इन बातों के बा'द मैंने देखा कि शहादत के ख़ेमे का मक़्दिस आसमान में खोला गया;⁶और वो सातों फ़रिश्ते जिनके पास सातों आफ़तें थीं, आबदार और चमकदार जवाहर से आरास्ता और सीनों पर सुनहरी सीना बन्द बाँधे हुए मक़्दिस से निकले ।

⁷और उन चारों जानदारों में से एक ने सात सोने के प्याले, हमेशा ज़िन्दा रहनेवाले खुदा के कहर से भरे हुए, उन सातों फ़रिश्तों को दिए;⁸और खुदा के जलाल और उसकी कुदरत की वजह से मक़्दिस धुँए से भर गया और जब तक उन सातों फ़रिश्तों की सातों मुसीबतें ख़त्म न हों चुकीं कोई उस मक़्दिस में दाखिल न हो सका

Chapter 16

¹फिर मैंने मक्ब्रिदेस में से किसी को बड़ी आवाज़ से ये कहते सुना, "जाओ ! खुदा के क्रहर के सातों प्यालों को ज़मीन पर उलट दो ।

²पस पहले ने जाकर अपना प्याला ज़मीन पर उलट दिया, और जिन आदमियों पर उस हैवान की छाप थी और जो उसके बुत की इबादत करते थे, उनके एक बुरा और तकलीफ़ देनेवाला नासूर पैदा हो गया ।

³दूसरे ने अपना प्याला समुन्दर में उलटा, और वो मुर्दे का सा खून बन गया, और समुन्दर के सब जानदार मर गए ।

⁴तीसरे ने अपना प्याला दरियाओं और पानी के चश्मों पर उलटा और वो खून बन गया । ⁵और मैंने पानी के फ़रिश्ते को ये कहते सुना, "ऐ कुदूस! जो है और जो था, तू 'आदिल है कि तू ने ये इन्साफ़ किया । ⁶क्योंकि उन्होंने मुक़द्दसों और नबियों का खून बहाया था, और तू ने उन्हें खून पिलाया; वो इसी लायक़ हैं ।" फिर मैंने कुर्बानगाह में से ये आवाज़ सुनी, "ए खुदावन्द खुदा !, क़ादिर-ए-मुतलक़ ! बेशक़ तेरे फ़ैसले दुरुस्त और रास्त हैं ।"

⁸चौथे ने अपना प्याला सूरज पर उलटा, और उसे आदमियों को आग से झुलस देने का इख़्तियार दिया गया । ⁹और आदमी सख़्त गर्मी से झुलस गए, और उन्होंने खुदा के नाम के बारे में कुफ़्र बका जो इन आफ़तों पर इख़्तियार रखता है, और तौबा न की कि उसकी बड़ाई करते ।

¹⁰पाँचवें ने अपना प्याला उस हैवान के तख़्त पर उलटा, और लोग अपनी ज़बाने काटने लगे, ¹¹और अपने दुखों और नासूरों के ज़रिए आसमान के खुदा के बारे में कुफ़्र बकने लगे, और अपने कामों से तौबा न की ।

¹²छठे ने अपना प्याला बड़े दरिया या 'नी फ़ुरात पर पलटा, और उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक़ से आने वाले बादशाहों के लिए रास्ता तैयार हो जाए ।

¹³फिर मैंने उस अज़दहा के मुँह से, और उस हैवान के मुँह से, और उस झूटे नबी के मुँह से तीन बदरूहें मेंढकों की सूरत में निकलती देखीं । ¹⁴ये शयातीन की निशान दिखानेवाली रूहें हैं, जो क़ादिर-ए-मुतलक़ खुदा के रोज़-ए-'अज़ीम की लड़ाई के वास्ते जमा' करने के लिए, सारी दुनियाँ के बादशाहों के पास निकल कर जाती हैं ।

¹⁵("देखो, मैं चोर की तरह आता हूँ: मुबारक वो है जो जागता है और अपनी पोशाक की हिफ़ाज़त करता है ताकि गंगा न फिरे, और लोग उसका गंगापन न देखें ।") ¹⁶और उन्होंने उनको उस जगह जमा' किया, जिसका नाम 'इब्रानी में हरमजद्दोन है ।

¹⁷सातवें ने अपना प्याला हवा पर उलटा, और मक्ब्रिदेस के तख़्त की तरफ़ से बड़े ज़ोर से ये आवाज़ आई, "हो चूका !" ¹⁸फिर बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजें पैदा हुईं, और एक ऐसा बड़ा भौंचाल आया कि जब से इन्सान ज़मीन पर पैदा हुए ऐसा बड़ा और सख़्त भूचाल कभी न आया था । ¹⁹और उस बड़े शहर के तीन टुकड़े हो गए, और क़ौमों के शहर गिर गए; और बड़े शहर-ए-बाबुल की खुदा के यहाँ याद हुई ताकि उसे अपने सख़्त गुस्से की मय का जाम पिलाए ।

²⁰और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया और पहाड़ों का पता न लगा । ²¹और आसमान से आदमियों पर मन मन भर के बड़े बड़े ओले गिरे, और चूँकि ये आफ़त निहायत सख़्त थी इसलिए लोगों ने ओलों की आफ़त के ज़रिए खुदा की निस्बत कुफ़्र बका ।

Chapter 17

¹और सातों फ़रिश्तों में से, जिनके पास सात प्याले थे, एक ने आकर मुझ से ये कहा, "इधर आ ! मैं तुझे उस बड़ी कस्बी की सज़ा दिखाऊँ, जो बहुत से पानियों पर बैठी हुई है;"²और जिसके साथ ज़मीन के बादशाहों ने हरामकारी की थी, और ज़मीन के रहनेवाले उसकी हरामकारी की मय से मतवाले हो गए थे ।

³पस वो मुझे पाक रूह में जंगल को ले गया, वहाँ मैंने क़िरमिज़ी रंग के हैवान पर, जो कुफ़्र के नामों से लिपा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सींग थे, एक 'औरत को बैठे हुए देखा ।⁴ये औरत इरावानी और क़िरमिज़ी लिबास पहने हुए सोने और जवाहर और मोतियों से आरास्ता थी और एक सोने का प्याला मक़ूहात का जो उसकी हरामकारी की नापकियों से भरा हुआ था उसके हाथ में था ।⁵और उसके माथे पर ये नाम लिखा हुआ : था "राज़; बड़ा शहर-ए-बाबुल कस्बियों और ज़मीन की मकरूहात की माँ ।"

⁶और मैंने उस 'औरत को मुकद्दसों का खून और ईसा' के शहीदों का खून पीने से मतवाला देखा, और उसे देखकर सख़्त हैरान हुआ ।⁷उस फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "तू हैरान क्यों हो गया मैं इस औरत और उस हैवान का, जिस पर वो सवार है जिसके सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद बताता हूँ ।

⁸ये जो तू ने हैवान देखा है, ये पहले तो था मगर अब नहीं है; और आइन्दा अथाह ग़ड्डे से निकलकर हलाकत में पड़ेगा, और ज़मीन के रहनेवाले जिनके नाम दुनियाँ बनाने से पहले के वक़्त से किताब-ए-हयात में लिखे नहीं गए, इस हैवान का ये हाल देखकर कि पहले था और अब नहीं और फिर मौजूद हो जाएगा, ता'अज्जुब करेंगे ।

⁹यही मौक़ा' है उस ज़हन का जिसमें हिकमत है : वो सातों सिर पहाड़ हैं, जिन पर वो 'औरत बैठी हुई है ।¹⁰और वो सात बादशाह भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक मौजूद, और एक अभी आया भी नहीं और जब आएगा तो कुछ 'अरसे तक उसका रहना ज़रूर है ।

¹¹और जो हैवान पहले था और अब नहीं, वो आठवाँ है और उन सातों में से पैदा हुआ, और हलाकत में पड़ेगा ।

¹²और वो दस सींग जो तू ने देखे दस बादशाह हैं । अभी तक उन्होंने बादशाही नहीं पाई, मगर उस हैवान के साथ घड़ी भर के वास्ते बादशाहों का सा इख्तियार पाएँगे ।¹³इन सब की एक ही राय होगी, और वो अपनी कुदरत और इख्तियार उस हैवान को दे देंगे ।¹⁴वो बरें से लड़ेंगे और बर्रा उन पर ग़ालिब आएगा, क्योंकि वो खुदावन्दों का खुदावन्द और बादशाहों का बादशाह है; और जो बुलाए हुए और चुने हुए और वफ़ादार उसके साथ हैं, वो भी ग़ालिब आएँगे ।"

¹⁵फिर उसने मुझ से कहा, "जो पानी तू ने देखा जिन पर कस्बी बैठी है, वो उम्में और ग़िरोह और क़ौमें और अहले ज़बान हैं ।

¹⁶और जो दस सींग तू ने देखे, वो और हैवान उस कस्बी से 'अदावत रखेंगे, और उसे बेबस और नंगा कर देंगे और उसका गोश्त खा जाएँगे, और उसको आग में जला डालेंगे ।¹⁷क्योंकि खुदा उनके दिलों में ये डालेगा कि वो उसी की राय पर चलें, वो एक -राय होकर अपनी बादशाही उस हैवान को दे दें ।

¹⁸और वो 'औरत जिसे तू ने देखा, वो बड़ा शहर है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है ।"

Chapter 18

¹इन बातों के बा'द मैंने एक और फ़रिश्ते को आसमान पर से उतरते देखा, जिसे बड़ा इख़्तियार था; और ज़मीन उसके जलाल से रौशन हो गई | ²उसने बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर कहा, "गिर पड़ा, बड़ा शहर बाबुल गिर पड़ा ! और शयातीन का मस्कन और हर नापाक और मकरूह परिन्दे का अड्डा हो गया | ³क्योंकि उसकी हरामकारी की ग़ज़बनाक मय के ज़रिए तमाम क़ौमों गिर गई हैं और ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ हरामकारी की है, और दुनियाँ के सौदागर उसके 'ऐशो-ओ-इश्रत की बदौलत दौलतमन्द हो गए | "

⁴फिर मैंने आसमान में किसी और को ये कहते सुना, "ऐ मेरी उम्मत के लोगो ! उसमें से निकल आओ, ताकि तुम उसके गुनाहों में शरीक न हो, और उसकी आफ़तों में से कोई तूम पर न आ जाए | ⁵क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं, और उसकी बदकारियाँ खुदा को याद आ गई हैं | ⁶जैसा उसने किया वैसा ही तुम भी उसके साथ करो, और उसे उसके कामों का दो चन्द बदला दो, जिस क्रदर उसने प्याला भरा तुम उसके लिए दुगना भर दो |

⁷जिस क्रदर उसने अपने आपको शानदार बनाया, और अय्याशी की थी, उसी क्रदर उसको 'अज़ाब और ग़म में डाल दो; क्योंकि वो अपने दिल में कहती है, 'मैं मलिका हो बैठी हूँ, बेवा नहीं; और कभी ग़म न देखूँगी | ⁸इसलिए उस एक ही दिन में आफ़तें आएँगी, या'नी मौत और ग़म और काल; और वो आग़ में जलकर खाक कर दी जाएगी, क्योंकि उसका इन्साफ़ करनेवाला खुदावन्द खुदा ताक़तवर है |

⁹"और उसके साथ हरामकारी और 'अय्याशी करनेवाले ज़मीन के बादशाह, जब उसके जलने का धुवाँ देखेंगे तो उसके लिए रोएँगे और छाती पीटेंगे | ¹⁰और उसके 'अज़ाब के डर से दूर खड़े हुए कहेंगे, 'ऐ बड़े शहर ! अफ़सोस ! अफ़सोस ! घड़ी ही भर में तुझे सज़ा मिल गई | '

¹¹"और दुनियाँ के सौदागर उसके लिए रोएँगे और मातम करेंगे, क्योंकि अब कोई उनका माल नहीं खरीदने का; ¹²और वो माल ये है : सोना, चाँदी, जवाहर, मोती, और महीन कतानी, और इर्ग़वानी और रेशमी और क़िरमिज़ी कपड़े, और हर तरह की खुशबूदार लकड़ियाँ, और हाथीदाँत की तरह की चीज़ें, और निहायत बेशक़ीमत लकड़ी, और पीतल और लोहे और संग-ए-मरमर की तरह तरह की चीज़ें, ¹³और दारचीनी और मसाले और 'ऊद और 'इत्र और लुबान, और मय और तेल और मैदा और गेहूँ, और मवेशी और भेड़ें और घोड़े, और गाड़ियाँ और गुलाम और आदमियों की जानें | " "

¹⁴अब तेरे दिल पसन्द मेवे तेरे पास से दूर हो गए, और सब लज़ीज़ और तोहफ़ा चीज़ें तुझ से जाती रहीं, अब वो हरगिज़ हाथ न आएँगी |

¹⁵इन दिनों के सौदागर जो उसके वजह से मालदार बन गए थे, उसके 'अज़ाब ले ख़ौफ़ से दूर खड़े हुए रोएँगे और ग़म करेंगे | ¹⁶और कहेंगे, अफ़सोस ! अफ़सोस ! वो बड़ा शहर जो महीन कतानी, और इर्ग़वानी और क़िरमिज़ी कपड़े पहने हुए, और सोने और जवाहर और मोतियों से सजा हुआ था | ¹⁷घड़ी ही भर में उसकी इतनी बड़ी दौलत बर्बाद हो गई, 'और सब नाखुदा और जहाज़ के सब मुसाफ़िर, और मल्लाह और जितने समुन्द्र का काम करते हैं,

¹⁸जब उसके जलने का धुवाँ देखेंगे, तो दूर खड़े हुए चिल्लाएँगे और कहेंगे, 'कौन सा शहर इस बड़े शहर की तरह है? ¹⁹और अपने सिरों पर खाक डालेंगे, और रोते हुए और मातम करते हुए चिल्ला चिल्ला कर कहेंगे, 'अफ़सोस ! अफ़सोस ! वो बड़ा शहर जिसकी दौलत से समुन्द्र के सब जहाज़ वाले दौलतमन्द हो गए, घड़ी ही भर में उजड़ गया | ²⁰ऐ आसमान, और ऐ मुक़द्दसों और रसूलो और नबियो ! उस पर खुशी करो, क्योंकि खुदा ने इन्साफ़ करके उससे तुम्हारा बदला ले लिया ! "

²¹फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट की तरह एक पत्थर उठाया, और ये कहकर समुन्द्र में फेंक दिया, "बाबुल का बड़ा शहर भी इसी तरह ज़ोर से गिराया जाएगा, और फिर कभी उसका पता न मिलेगा | ²²और बर्बत नवाज़ों, और मुतरिबों, और बाँसली बजानेवालों और नरसिंगा फूंकनेवालों की आवाज़ फिर कभी तुझ में न सुनाई देगी; और किसी काम का कारीगर तुझ में फिर कभी पाया न जाएगा | और चक्की की आवाज़ तुझ में फिर कभी न सुनाई देगी |

²³और चिराग़ की रौशनी तुझ में फिर कभी न चमकेगी, और तुझ में दुल्हे और दुल्हन की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी; क्योंकि तेरे सौदागर ज़मीन के अमीर थे, और तेरी जादूगरी से सब क़ौमों गुमराह हो गई | ²⁴और नबियों और मुक़द्दसों, और ज़मीन के सब मक़तूलों का खून उसमें पाया गया | "

Chapter 19

¹इन बातों के बा'द मैंने आसमान पर गोया बड़ी जमा'अत को ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना, "हेल्लिलुइयाह ! नजात और जलाल और कुदरत हमारे खुदा की है | ²क्योंकि उसके फ़ैसले सहीह और दुरुस्त हैं, इसलिए कि उसने उस बड़ी कस्बी का इन्साफ़ किया जिसने अपनी हरामकारी से दुनियाँ को खराब किया था, और उससे अपने बन्दों के खून का बदला लिया | "

³फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, "हल्लीलुइया ! और उसके जलने का धुवाँ हमेशा उठता रहेगा | "⁴और चौबीसों बुजुर्गों और चारों जानदारों ने गिर कर खुदा को सिज्दा किया, जो तख़्त पर बैठा था और कहा, "आमीन ! हल्लीलुइया !"

⁵और तख़्त में से ये आवाज़ निकली, "ऐ उससे डरनेवाले बन्दो ! चाहे छोटे हो चाहे बड़े !

⁶फिर मैंने बड़ी जमा'अत की सी आवाज़, और ज़ोर की सी आवाज़, और सख़्त गरजो की सी आवाज़ सुनी : " हल्लीलुइया ! इसलिए के खुदावन्द हमारा खुदा क़ादिर-ए-मुतलक़ बादशाही करता है |

⁷आओ, हम खुशी करें और निहायत शादमान हों, और उसकी बड़ाई करें; इसलिए कि बरें की शादी आ पहुँची, और उसकी बीवी ने अपने आपको तैयार कर लिया;⁸और उसको चमकदार और साफ़ महीन कतानी कपड़ा पहनने का इख़्तियार दिया गया, " क्योंकि महीन कतानी कपड़ों से मुक़द्दस लोगों की रास्तबाज़ी के काम मुराद हैं |

⁹और उसने मुझ से कहा, "लिख, मुबारक हैं वो जो बरें की शादी की दावत में बुलाए गए हैं | " फिर उसने मुझ से कहा, "ये खुदा की सच्ची बातें हैं | "¹⁰और मैं उसे सिज्दा करने के लिए उसके पाँव पर गिरा | उसने मुझ से कहा, "ख़बरदार ! ऐसा न कर | मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमख़िदमत हूँ, जो ईसा ' की गवाही देने पर क़ायम हैं | खुदा ही को सिज्दा कर | " क्योंकि ईसा ' की गवाही नबुव्वत की रूह है |

¹¹फिर मैंने आसमान को खुला हुआ, देखा, और क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद घोड़ा है; और उस पर एक सवार है जो सच्चा और बरहक़ कहलाता है, और वो सच्चाई के साथ इन्साफ़ और लड़ाई करता है | ¹²और उसकी आँखें आग के शो'ले हैं, और उसके सिर पर बहुत से ताज हैं | और उसका एक नाम लिखा हुआ है, जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता | ¹³और वो खून की छिड़की हुई पोशाक पहने हुए है, और उसका नाम कलाम-ए-खुदा कहलाता है |

¹⁴और आसमान की फ़ौजें सफ़ेद घोड़ों पर सवार, और सफ़ेद और साफ़ महीन कतानी कपड़े पहने हुए उसके पीछे पीछे हैं | ¹⁵और क़ौमों के मारने के लिए उसके मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है; और वो लोहे की 'लाठी से उन पर हुकूमत करेगा, और क़ादिर-ए-मुतलक़ खुदा के तख़्त गज़ब की मय के हौज़ में अंगूर रौंदेगा | ¹⁶और उसकी पोशाक और रान पर ये नाम लिखा हुआ है : "बादशाहों का बादशाह और खुदावन्दों का खुदावन्द | "

¹⁷फिर मैंने एक फ़रिश्ते को आफ़ताब पर खड़े हुए देखा | और उसने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर आसमान में के सब उड़नेवाले परिन्दों से कहा, "आओ, खुदा की बड़ी दावत में शरीक होने के लिए जमा' हो जाओ;¹⁸ताकि तुम बादशाहों का गोश्त, और फ़ौजी सरदारों का गोश्त, और ताक़तवरों का गोश्त, और घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त, और सब आदमियों का गोश्त खाओ; चाहे आज़ाद हों चाहे गुलाम, चाहे छोटे हों चाहे बड़े | "

¹⁹फिर मैंने उस हैवान और ज़मीन के बादशाहों और उनकी फ़ौजों को, उस घोड़े के सवार और उसकी फ़ौज से जंग करने के लिए इकट्ठे देखा | ²⁰और वो हैवान और उसके साथ वो झूटा नबी पकड़ा गया, जिनसे उसने हैवान की छाप लेनेवालों और उसके बुत की इबादत करनेवालों को गुमराह किया था | वो दोनों आग की उस झील में ज़िन्दा डाले गए, जो गंधक से जलती है | " "

²¹और बाक़ी उस घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी क़त्ल किए गए; और सब परिन्दे उनके गोश्त से सेर हो गए |

Chapter 20

¹फिर मैंने एक फ़रिश्ते को आसमान से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह गड्ढे की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी।² उसने उस अज़दहा, या 'नी पुराने साँप को जो इब्लीस और शैतान है, पकड़ कर हज़ार बरस के लिए बाँधा,³ और उसे अथाह गड्ढे में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, ताकि वो हज़ार बरस के पूरे होने तक क्रौमों को फिर गुमराह न करे। इसके बाद ज़रूर है कि थोड़े 'अरसे के लिए खोला जाए।

⁴फिर मैंने तख़्त देखे, और लोग उन पर बैठ गए और 'अदालत उनके सुपुर्द की गई; और उनकी रूहों को भी देखा जिनके सिर ईसा ' की गवाही देने और खुदा के कलाम की वजह से काटे गए थे, और जिन्होंने न उस हैवान की इबादत की थी न उसके बुत की, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वो ज़िन्दा होकर हज़ार बरस तक मसीह के साथ बादशाही करते रहे।

⁵और जब तक ये हज़ार बरस पूरे न हो गए बाक़ी मुर्दे ज़िन्दा न हुए। पहली कयामत यही है।⁶ मुबारक और मुकद्दस वो है, जो पहली कयामत में शरीक हो। ऐसों पर दूसरी मौत का कुछ इख़्तियार नहीं, बल्कि वो खुदा और मसीह के काहिन होंगे और उसके साथ हज़ार बरस तक बादशाही करेंगे।

⁷जब हज़ार बरस पूरे हो चुकेंगे, तो शैतान क्रैद से छोड़ दिया जाएगा।⁸ और उन क्रौमों को जो ज़मीन की चारों तरफ़ होंगी, या 'नी याजूज-ओ-माजूज को गुमराह करके लड़ाई के लिए जमा' करने को निकाले; उनका शुमार समुन्दर की रेत के बराबर होगा।

⁹और वो तमाम ज़मीन पर फैल जाएँगी, और मुकद्दसों की लश्करगाह और 'अज़ीज़ शहर को चारों तरफ़ से घेर लेंगी, और आसमान पर से आग नाज़िल होकर उन्हें खा जाएगी।¹⁰ और उनका गुमराह करने वाला इब्लीस आग और गंधक की उस झील में डाला जाएगा, जहाँ वो हैवान और झूटा नबी भी होगा; और रात दिन हमेशा से हमेशा तक 'अज़ाब में रहेंगे।

¹¹फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त और उसको जो उस पर बैठा हुआ था देखा, जिसके सामने से ज़मीन और आसमान भाग गए, और उन्हें कहीं जगह न मिली।

¹²फिर मैंने छोटे बड़े सब मुर्दों को उस तख़्त के सामने खड़े हुए देखा, और किताब खोली गई, या 'नी किताब-ए-हयात; और जिस तरह उन किताबों में लिखा हुआ था, उनके आ'माल के मुताबिक़ मुर्दों का इन्साफ़ किया गया।

¹³और समुन्दर ने अपने अन्दर के मुर्दों को दे दिया, और मौत और 'आलम-ए-अर्वाह ने अपने अन्दर के मुर्दों को दे दिया, और उनमें से हर एक के आ'माल के मुताबिक़ उसका इन्साफ़ किया गया।¹⁴ फिर मौत और 'आलम-ए-अर्वाह आग की झील में डाले गए। ये आग की झील आखरी मौत है,¹⁵ और जिस किसी का नाम किताब-ए-हयात में लिखा हुआ न मिला, वो आग की झील में डाला गया।

Chapter 21

¹फिर मैंने एक नये आसमान और नई ज़मीन को देखा, क्योंकि पहला आसमान और पहली ज़मीन जाती रही थी, और समुन्दर भी न रहा। ²फिर मैंने शहर-ए-मुकद्दस नये यरूशलीम को आसमान पर से ख़ुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दुल्हन की तरह सजा था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार किया हो। ³फिर मैंने तख़्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना, "देख, ख़ुदा का खेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुकूनत करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका ख़ुदा होगा। ⁴और उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा; इसके बा'द न मौत रहेगी, और न मातम रहेगा, न आह-ओ-नाला न दर्द; पहली चीज़ें जाती रहीं।"

⁵और जो तख़्त पर बैठा हुआ था, उसने कहा, "देख, मैं सब चीज़ों को नया बना देता हूँ।" फिर उसने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये बातें सच और बरहक़ हैं।" ⁶फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें पूरी हो गईं। मैं अल्फ़ा और ओमेगा, या'नी शुरू और आख़िर हूँ। मैं प्यासे को आब-ए-हयात के चश्मे से मुफ़्त पिलाऊँगा।"

⁷जो ग़ालिब आए वही इन चीज़ों का वारिस होगा, और मैं उसका ख़ुदा हूँगा और वो मेरा बेटा होगा। ⁸मगर बुज़दिलों, और बेईमान लोगों, और घिनौने लोगों, और खूनियों, और हरामकारों, और जादूगरों, और बुत परस्तों, और सब झूटों का हिस्सा आग और गन्धक से जलने वाली झील में होगा; ये दूसरी मौत है।

⁹फिर इन सात फ़रिश्तों में से जिनके पास प्याले थे, एक ने आकर मुझ से कहा, "इधर आ, मैं तुझे दुल्हन, या'नी बरें की बीवी दिखाऊँ।" ¹⁰और वो मुझे रूह में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और शहर-ए-मुकद्दस यरूशलीम को आसमान पर से ख़ुदा के पास से उतरते दिखाया।

¹¹उसमें ख़ुदा का जलाल था, और उसकी चमक निहायत कीमती पत्थर, या'नी उस यशब की सी थी जो बिल्लौर की तरह शफ़फ़ाफ़ हो। ¹²और उसकी शहरपनाह बड़ी और ऊँची थी, और उसके बारह दरवाज़े और दरवाज़ों पर बारह फ़रिश्ते थे, और उन पर बनी-इसाईल के बारह क़बीलों के नाम लिखे हुए थे।

¹³तीन दरवाज़े मशरिक की तरफ़ थे, तीन दरवाज़े शुमाल की तरफ़, तीन दरवाज़े जुनूब की तरफ़, और तीन दरवाज़े मगरिब की तरफ़।

¹⁴और उस शाहर की शहरपनाह की बारह बुनियादे थीं, और उन पर बरें के बारह रसूलों के बारह नाम लिखे थे। ¹⁵और जो मुझ से कह रहा था, उसके पास शहर और उसके दरवाज़ों और उसकी शहरपनाह के नापने के लिए एक पैमाइश का आला, या'नी सोने का गज़ था।

¹⁶और वो शहर चौकोर वाक़े' हुआ था, और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी; उसने शहर को उस गज़ से नापा, तो बारह हज़ार फ़रलॉग निकला: उसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी। ¹⁷और उसने उसकी शहरपनाह को आदमी की, या'नी फ़रिश्ते की पैमाइश के मुताबिक़ नापा, तो एक सौ चवालीस हाथ निकली।

¹⁸और उसकी शहरपनाह की ता'मीर यशब की थी, और शहर ऐसे ख़ालिस सोने का था जो साफ़ शीशे की तरह हो। ¹⁹और उस शहर की शहरपनाह की बुनियादें हर तरह के जवाहर से आरास्ता थीं; पहली बुनियाद यशब की थी, दूसरी नीलम की, तीसरी शब चिराग़ की, चौथी ज़मूर्द की, ²⁰पाँचवीं 'आक्रीक़ की, छठी ला'ल की, सातवीं सुन्हरे पत्थर की, आठवीं फ़ीरोज़ की, नवीं ज़बरजद की, और बारहवीं याक़ूत की।

²¹और बारह दरवाज़े बारह मोतियों के थे; हर दरवाज़ा एक मोती का था, और शहर की सड़क साफ़ शीशे की तरह ख़ालिस सोने की थी। ²²और मैंने उसमें कोई मक्बिदेस न देखे, इसलिए कि ख़ुदावन्द ख़ुदा क़ादिर-ए-मुतलक़ और बर्रा उसका मक्बिदेस हैं।

²³और उस शहर में सूरज या चाँद की रौशनी की कुछ हाज़त नहीं, क्योंकि ख़ुदा के जलाल ने उसे रौशन कर रखखा है, और बर्रा उसका चिराग़ है। ²⁴और क़ौमों उसकी रौशनी में चले फिरेंगी, और ज़मीन के बादशाह अपनी शान-ओ-शौकत का सामान उसमें लाएँगे। ²⁵और उसके दरवाज़े दिन को हरगिज़ बन्द न होंगे, और रात वहाँ न होगी।

²⁶और लोग क़ौमों की शान-ओ-शौकत और इज़ज़त का सामान उसमें लाएँगे। ²⁷और उसमें कोई नापाक या झूटी बातें गढ़ता है, हरगिज़ दाख़िल न होगा, मगर वुही जिनके नाम बरें की किताब-ए-हयात में लिखे हुए हैं।

Chapter 22

¹फिर उसने मुझे बिल्लौर की तरह चमकता हुआ आब-ए-हयात का एक दरिया दिखाया, जो खुदा और बर्रे के तख्त से निकल कर उस शहर की सड़क के बीच में बहता था | ²और दरिया के पार ज़िन्दगी का दरख्त था | उसमें बारह क्रिस्म के फल आते थे और हर महीने में फलता था, और उस दरख्त के पत्तों से क़ौमों को शिफ़ा होती थी |

³और फिर ला'नत न होगी, और खुदा और बर्रे का तख्त उस शहर में होगा, और उसके बन्दे उसकी 'इबादत करेंगे | ⁴और वो उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा | ⁵और फिर रात न होगी, और वो चिराग़ और सूरज की रौशनी के मुहताज न होंगे, क्योंकि खुदावन्द खुदा उनको रौशन करेगा और वो हमेशा से हमेशा तक बादशाही करेंगे |

⁶फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें सच और बरहक़ हैं; चुनौचे खुदावन्द ने जो नबियों की रूहों का खुदा है, अपने फ़रिश्ते को इसलिए भेजा कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाए जिनका जल्द होना ज़रूर है | ⁷" और देख मैं जल्द आने वाला हूँ | मुबारक है वो जो इस किताब की नबुव्वत की बातों पर 'अमल करता है | "

⁸मैं वही युहन्ना हूँ, जो इन बातों को सुनता और देखता था; और जब मैंने सुना और देखा, तो जिस फ़रिश्ते ने मुझे ये बातें दिखाई, मैं उसके पैर पर सिज्दा करने को गिरा | ⁹उसने मुझ से कहा, "ख़बरदार ! ऐसा न कर, मैं भी तेरा और तेरे नबियों और इस किताब की बातों पर 'अमल करनेवालों का हम ख़िदमत हूँ | खुदा ही को सिज्दा कर |

¹⁰फिर उसने मुझ से कहा, "इस किताब की नबुव्वत की बातों को छुपाए न रख; क्योंकि वक्रत नज़दीक है, ¹¹जो बुराई करता है, वो बुराई ही करता जाए; और जो नजिस है, वो नजिस ही होता जाए; और जो रास्तबाज़ है, वो रास्तबाज़ी करता जाए; और जो पाक है, वो पाक ही होता जाए | "

¹²"देख, मैं जल्द आने वाला हूँ; और हर एक के काम के मुताबिक़ देने के लिए बदला मेरे पास है | ¹³मैं अल्फ़ा और ओमेगा, पहला और आखिर, इब्तिदा और इन्तहा हूँ | "

¹⁴मुबारक है वो जो अपने जामे धोते हैं, क्योंकि ज़िन्दगी के दरख्त के पास आने का इख़्तियार पाएँगे, और उन दरवाज़ों से शहर में दाख़िल होंगे | ¹⁵मगर कुत्ते , और जादूगर, और हरामकार, और ख़ूनी, और बुत परस्त, और झूठी बात का हर एक पसन्द करने और गढ़ने वाला बाहर रहेगा |

¹⁶"मुझ ईसा' ने, अपना फ़रिश्ता इसलिए भेजा कि कलीसियाओं के बारे में तुम्हारे आगे इन बातों की गवाही दे | मैं दाऊद की अस्ल-ओ-नस्ल और सुबह का चमकता हुआ सितारा हूँ | "

¹⁷और रूह और दुल्हन कहती हैं, "आ | " और सुननेवाला भी कहे, "आ | " "आ | " और जो प्यासा हो वो आए, और जो कोई चाहे आब-ए-हयात मुफ़्त ले |

¹⁸मैं हर एक आदमी के आगे, जो इस किताब की नबुव्वत की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ : अगर कोई आदमी इनमें कुछ बढ़ाए, तो खुदा इस किताब में लिखी हुई आफ़तें उस पर नाज़िल करेगा | ¹⁹और अगर कोई इस नबुव्वत की किताब की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो खुदा उस ज़िन्दगी के दरख्त और मुक़द्दस शहर में से, जिनका इस किताब में ज़िक़्र है, उसका हिस्सा निकाल डालेगा | "

²⁰जो इन बातों की गवाही देता है वो ये कहता है, "बेशक, मैं जल्द आने वाला हूँ | " आमीन ! ऐ खुदावन्द ईसा ' आ ! ²¹खुदावन्द ईसा ' का फ़ज़ल मुक़द्दसों के साथ रहे | आमीन |